संपादक : सिद्धराज ढड्ढा
वाराणसी : शुक्रवार | ६ जनवरी '६१ | वर्ष ७ : अंक १४

जीवन की शोध

।रे १९१० में गुजरात-सौराष्ट्र में ...र्तिन, शिक्षण-संस्था की स्थापना ...दक्षिणामूर्ति के जरिये विद्यार्थियों ...र्म में परिवर्तन लाना और इस ...लय की सेवा करना ही मुझ जैसे ...ब्राह्मण का धर्म हो सकता है, ...स्पष्ट दर्शन हुआ। फलतः आसन, ...याम, प्रत्याहार आदि सिद्ध करने ...के प्रयत्न मैंने अब तक किये, वे ...अपने आप छूट गये, और अपनी ...बुद्धि द्वारा विद्यार्थी-जीवन को ...बनाने की नूतनयुगी उपासना का ...जीवन में आरम्भ हुआ।

...जब तक मुझे नगरों में रहना पड़ा, ...कि मेरे विद्यार्थी सफेदपोश नागरिक-...के रहे। उनमें हरिजन या निम्न ...के विद्यार्थी नहीं थे। इसके कारण ...कुछ खोया-खोया सा लगता रहा। ...भावनगर छोड़ कर आंबला की ...कदम बढ़ाये।

...इसके बाद 'लोक-भारती' की ...ना की और दक्षिणामूर्ति महादेवजी ...र की भावना का अभिषेक किया।

सन् १९१० से लेकर अब तक दक्षिणामूर्ति देव की मेरी उपासना चल रही है और ठीक अंतिम क्षण तक चलेगी। दक्षिणामूर्ति देव चित्र में अंकित मानवआकृति धारण करने वाले देव मात्र नहीं हैं, वे तो समग्र विश्व-वृक्ष के मूल में बसे हुए परम तत्त्व हैं।

लगता है कि मेरा रास्ता साफ है। अपने रास्ते पर मेरी गति मंथर होगी, लेकिन मार्ग और मंजिल आँखों के सामने स्पष्ट हैं। और चाहे जैसी आंधी या तूफान अथवा बादल आयें, वह उनको दूर करने में समर्थ है।

मेरे जीवन की लब्धि अगर कोई है, तो वह एक ही है -

मानव जाति को शिक्षण और संस्कार के द्वारा ऊपर उठाने के लिए और जीवन को बनाने के लिए शिक्षण ही एक महत्त्व का जरिया है।

इन सब सिद्धियों की खोज में आप मेरी सतत सहायता करें, यही भीख आज के दिन आपसे माँगता हूँ। मुझ जैसा शिक्षक इसके अलावा और माँग भी क्या सकता है।

—नानाभाई भट्ट

शतं जीव शरदः !

श्री नानाभाई भट्ट, जन्म : २१ अगस्त, १८८० !

सच्चा ब्राह्मण ! सौराष्ट्र के सपूत इस नानाभाई भट्ट को सारा गुजरात गांधी-युग के ऋषि के रूप में पहचानता है। इस विचार-ब्राह्मण पर 'गांधी' की मुहर लगा देने में कुछ तथ्य-दोष का डर रहता है। ब्रह्मवादी, ध्यान-धारणा, संध्या आदि कर्मनिष्ठ, अस्पृ...को मानने वाले इस पक्के सनातनी ब्राह्मण पर अपने गुरु और परंपरागत ब्राह्मण-जीवन का गहरा असर था। गांधी-युग की उषा के ...दय को उन्होंने देखा, उसकी स्वर्ण-रश्मियों को अपनी आँखों में झेला और जिस सतर्कता से साँप केंचुली उतारता है, उतनी ही सतर्कता विचारपूर्वक, अत्यन्त व्यथित हृदय से, लेकिन पूर्ण और दृढ़ मनोबल के साथ गुरु का संबंध छोड़ा और गांधी-विचार बन कर अवतरने वाले ...ग की साधना को अंगीकार किया !

...वे अध्ययन-अध्यापन का सच्चा ब्राह्मण-धर्म पहले से ही अपनाये हुए थे। किसी हाईस्कूल के हेडमास्टर, किसी कॉलेज के प्राध्यापक ऐसे श्री नानाभाई ने ...न-परिवर्तन ... खोज आगे बढ़ने पर उसको छोड़ना भी आवश्यक लगा। एक केंचुली और छोड़ी ! ...गहरे उतरे ... में लोकभारती की स्थापना की। इसी बीच राष्ट्रीय आजादी के साथ सौराष्ट्र ...दय हुआ ... कारण विवश हुए। लेकिन सरस्वती का रूप धर कर आयी हुई सत्तादेवी को पहचाना। ...रा ऋषि ... न में आया और सत्तादेवी को प्रणाम करके फिर से वीणावादिनी के अंक में ...बैठ गये !

...पिछले अगस्त में जीवन के अस्सी वर्ष का फासला तय किया। पिछले कुछ वर्षों से बीमारी के कारण शय्याग्रस्त हैं। लेकिन वहाँ लेटे-लेटे उनकी चिंतन-प्रभा हमारे ...प्रदेश को उतना ही आलोकित करती है, उतनी ही ताजगी देती है। दिमाग आज भी उतना ही स्वस्थ, ताजा और तरुण है। अभी-अभी भूदान-यज्ञ के सिलसिले ...होंने कहा था : "अगर मेरे बस की बात होती तो मैं यह सारा छोड़ कर देश भर में परिव्रज्या करने निकल पड़ता।" ता० २ दिसम्बर '६० के "भूदान-यज्ञ" में ...उनके लेख से उनके चिन्तन की कुछ झलक मिल सकेगी। उनको हमारे शत-शत प्रणाम !

ललित कलाएँ किस दिशा में ?

पिटरिम सोरोकिन

[श्री पिटरिम सोरोकिन की एक अत्यन्त ही प्रेरक रचना है—'रिकन्सट्रक्शन आफ ह्यूमैनिटी'। सर्व सेवा संघ-प्रकाशन की ओर से शी ही उसका अनुवाद प्रकाशित हो रहा है—'मानवता की नवरचना' शीर्षक से। अनुवादक हैं—श्रीकृष्णदत्त भट्ट

उक्त पुस्तक के निम्नांकित अंश में लेखक ने बताया है कि हमारी ऐंद्रिय संस्कृति ने ललित कलाओं की क्या दुर्दशा कर रखी है और उत्तम दिशा में मोड़ने का उपाय क्या है ? —सं०]

[illegible] पर मुखरित होती थी। उसकी महानतम वास्तुकलाकृतियाँ ई ईश्वरार्पित [illegible] चेत्रित बाइबिल। उसके संगीत और साहित्य में भी इसी की प्रतिध्व[illegible] उस युग की कला में ईश्वरार्पण और रचयिता के साथ मान तादात्म्य की ही भावना भरी थी। उसमें 'ईश्वर के अदृश्य साम्राज्य के प्रत्यक्ष चिह्न' थे, जो मनुष्य की आत्मा को इस ऊँचाई तक ले जाते थे। ईश्वर, देवदूत और संत-महात्माओं को वीर माना जाता था। उसकी प्रबन्ध-योजनाएँ थीं—अवतार, ईसा का क्रास पर लटकना, पुनरुज्जीवन आदि के रहस्य। उसके कलाकार ईश्वरीय गौरव और महत्ता के अधिकतर प्रसार के लिए, मानवीय आत्मा की मुक्ति के लिए विशेष रूप से थे। मानव को ऊपर उठाने तथा मानवता में भ्रातृत्व की भावना का प्रसार करने में ऐसी कला अत्यन्त महान शक्ति थी।

बारहवीं से पन्द्रहवीं शताब्दी के बीच में जो कला विकसित हुई, उसने इसके आधार को और अधिक विस्तृत किया। ईश्वरीय राज्य के अतिरिक इन्द्रिय जगत् की भी अभिव्यक्ति करने लगी, परन्तु उसमें उसकी सर्वोत्तम और उत्कृष्टतम भावनाएँ ही व्यक्त की जाती थीं। ईश्वर तो उनकी था ही, अर्द्ध-दैवी वीर भी उसके साथ जुड़ गये थे। उसने ऐसी किसी वस्तु का अंकन नहीं किया, जो असुन्दर, भद्दी, पतनशील अथवा विकृत हो। अत्यन्त मूल्यवान कला थी; धर्म, ज्ञान अथवा गुणों से उसका संबंध-विच्छेद नहीं हुआ था। वह पतित को उत्कृष्ट बनाती थी, असुन्दर को सुन्दर और नश्वर को शाश्वत। वह मनुष्य को शिक्षण देती थी, उसमें प्रेरणा फूँकती थी, उसे शुद्ध करती थी और उसे उठा कर महान आदर्शों के क्षेत्र में पहुँचा देती

बाद की शताब्दियों में हमारी ऐन्द्रिय संस्कृति के विकास के साथ-साथ कला में भी उत्तरोत्तर इन्द्रियपरायणता आती गयी। वह वस्तुकथा में लौकिक थी, स्वरूप में दर्शनीय अथवा प्राकृतिक थी। वह अपने धार्मिक और नीतिशास्त्रीय मिशन को उत्तरोत्तर छोड़ती गयी। 'कला कला के लिए', यह उसका आदर्श हो गया। धर्म और दर्शन, विज्ञान और नीतिशास्त्र से उसका संबंध-विच्छेद हो गया। फलतः वह विषयों की न सही, इन्द्रियों की तृप्ति का मुख्यतः परिष्कृत साधन बन गयी।

मध्ययुगीन कला संबंधी मूल्य फिर भी पृष्ठभूमि में थे, इसलिए ऐन्द्रिय कला को अनेक गड्ढों और घातक बीमारियों में गिरने और फँसने से वे बचा सके। विकृति-पूर्व के इस स्तर में उसने साहित्य और नाटक, चित्र-कला और मूर्तिकला, वास्तुकला और संगीत में महानतम मूल्यों की प्रस्थापना की। परन्तु मध्ययुगीन कला संबंधी मूल्यों के ह्रास के साथ-साथ उसका अन्तर्वर्ती रोग धीरे-धीरे पनपने लगा, जिसके कारण कला की सृजन-शीलता क्रमशः कम होती गयी और वह अधिकाधिक रुग्ण, पतनशील, नकारात्मक और असंगत बनती गयी। मध्ययुगीन कला के उत्तुंग शिखर से और तेरहवीं से पन्द्रहवीं शताब्दी की कला की आदर्शवादी चोटी से वह ऐसी नीचे गिरी कि सामाजिक पनाले के गर्त में जा डूबी! पहले जहाँ उसके आदर और श्रद्धा का पात्र था ईश्वर, वहाँ अब उसकी आराधना और पूजा के पात्र बने—पाखण्डी, डाकू, अपराधी, वेश्याएँ, पागल, मानसिक रूप से विकृत मानव आदि। उसके परम प्रिय स्थल बने—फरार अपराधियों के छिपने के गुप्त स्थान, पुलिस के चोरघर, पागलखाने; किसी नायिका, स्वैरिणी, वारांगना अथवा भ्रष्टाचारी का शयन-कक्ष, नाइट क्लब, मदिरालय या सैलून, षड्यन्त्रकारियों और पाखण्डियों का अड्डा अथवा शहर की वह सड़क, जहाँ सनसनीखेज हत्या अथवा अन्य अपराध हो रहे हैं! उसके मुख्य दो विषय हैं—फ्रायड के दो भाव—अपने सभी संभव रूपों में नरहत्या अथवा आत्महत्या—और विशेषतः—यौनसंबंधी। वह कन्दरानिवासी के रूप में भी हो सकती है, 'रोमाण्टिक' विलक्षण रूप में भी। वह भिन्न-लिंगीय संबंधों की भी हो सकती है, सम-लिंगीय संबंधों की भी। साधारण रूप में भी हो सकती है, विकृत रूपों में भी। इस प्रकार कला ने अपने को गिराकर हत्या और विषय-भोग की तृप्ति के उत्तेजक साधन का रूप ग्रहण कर लिया। वह विनोद और मनोरंजन तथा परिश्रम से थकी हुई मांसपेशियों को उकसाने का एक साधन बन गयी! वह रेचक पदार्थों, रबड़, बीयर-शराब, साबुन, ब्लेड आदि विज्ञापित वस्तुओं के हाथ की कठपुतली मात्र बन कर रह गयी। वह 'पट्टी पहनने वाले नर्तकों' अथवा कोकशास्त्र के सम्भोग संबंधी आसनों के गुप्त चित्रों के स्तर पर उतर आयी!

कला के इस स्तर पर उतर जाने का अर्थ यह हुआ कि वह केवल एक बाजारू चीज बन कर रह गयी, जिसे बाजारू चीजों की भाँति खरीदा और बेचा जा सकता है। अच्छा दाम पाने के लिए वह इस बात के लिए विवश की गयी कि वह भ्रष्ट मांगों की पूर्ति करे। कारण, भ्रष्ट मांगों की संख्या परिष्कृत मांगों की अपेक्षा सदा ही अधिक रहा करती है। बाजारू चीज बन जाने के कारण यह स्वाभाविक था कि वह व्यापारियों और व्यापारिक स्थितियों पर निर्भर करे। इसलिए दिन-दिन उसका स्तर निम्न से निम्नतर होता गया है। अपने इस गुणगत ह्रास की पूर्ति उसने संख्या-गत वृद्धि (जितना ज्यादा उतना अच्छा), असम्बद्ध विभिन्नताओं, समसनीदार 'मार्गों', और सनसना देने वाले उपायों द्वारा करने की कोशिश की है। इस प्रकार उत्कृष्ट कलाकृति का स्थान सबसे बाजारू चीज ने ले लिया है। स्थायी पुरुष का पद व्यावसायिक विक्रेता ने ले लिया है। सच्चे कला-पारखी का स्थान 'मधु पेय के सौंदर्य-शास्त्री' लोगों ने ले लिया है। कुशल कला-आलोचक का स्थान पत्र-संवाददाता ने ले रखा है। सृजनशील कलाकारों का स्थान तस्वीर बनाने वालों, तमाशा करने वालों और गाने-बजाने वालों को दिया जाता है। आंतरिक उत्कृष्टता के स्थान पर चमचमाते चेहरों को महत्त्व दिया जाता है। प्रतिभा का स्थान, कार्यपद्धति को दे दिया जाता है। मौलिकता का स्थान नकल को दे दिया जाता है। शाश्वत मूल्यों का स्थान बाजारू सफलताओं को दे दिया जाता है। कला की एकेडमियों और सृजनशील कलाकारों के संघटनों का स्थान 'कला-संघों' और 'प्रतिदिन एक पुस्तक वाली क्लब' जैसी व्यापारी संस्थाओं को दे दिया जाता है।

विज्ञान और दर्शन, धर्म और नीति-शास्त्र से संबंधविच्छेद हो जाने के कला उत्तरोत्तर छूछी और [illegible] हो गयी है।* इसने कलात्मक [illegible]शील प्रतिभा को प्रेरणा देना बन्द [illegible] दिया है। इतना ही नहीं, वह उसे निर[illegible] बनाती है और उसका गला घोटती [illegible] इसी प्रकार इसने कला के संरक्षकों [illegible] नैतिक दृष्टि से उन्नत करना और मान[illegible] दृष्टि से उन्हें समग्रता की ओर ले [illegible] बन्द कर दिया है। इसके बजाय वह [illegible] पतन की ओर ले जाती है और उन्हें [illegible] गिराती है तथा सामाजिक पनाले में ढके[illegible] देती है। मानवीय भ्रातृत्व और [illegible] की दिशा में जनता को बढ़ाना तो [illegible] उल्टे यह स्वार्थपरता, विद्वेष, संघर्ष [illegible] अपराध की वृत्ति को उकसाती है।

इसके निरर्थकतापूर्ण प्रभाव को देख[ने] के लिए हम यदि समकालीन कलाकृति[यों] पर दृष्टि डालें, तो सारी बात स्पष्ट [हो] जायगी। वास्तुकला में तो अवश्य ही कु[छ] वास्तविक सृजनशीलता के चिह्न दीख[ते] हैं, पर उसे छोड़ कर कला के प्रायः [अ]न्य सभी क्षेत्रों में वस्तुतः किसी भी मह[ान] कलाकृति का जन्म नहीं हुआ। शेक्सपीयर, दांते, सर्वेंटे, गेटे, शिलर, ह्यूगो, टाल्सटा[य] और दोस्तोवस्की जैसे कलाकार पिछ[ली] शताब्दियों के ही हैं। उसी प्रकार [बा]ख, मोझार्ट, बीथोवेन, वागनेर, शैकोवस्की और ब्राह्म से भी पहले के हैं। राफेल, रेम्ब्रा[ण्ट] और माइकेल एँजिलो जैसे कलाकारों की भी वही बात है। कला के किसी भी क्षेत्र में बीसवीं शताब्दी ने पिछली शताब्दियों की भाँति वैसा कोई भी महान कलाकार उत्पन्न नहीं किया, यहाँ तक कि उन्नीसवीं शताब्दी के महान कलाकारों जैसा भी आदमी नहीं दिया। आज हम जिस युग में रहते हैं, वह कला का 'बौना' युग है।

---

* देखिये, डिनेमिक्स, खण्ड ?; अध्याय ?—??।

'बहुत चालू' उपन्यास आते हैं, लाखों की संख्या में उनकी बिक्री होती है और चन्द ही महीनों या सालों के भीतर 'हवा के साथ उड़ जाते हैं' और विस्मृति के गर्भ में समा जाते हैं।

हमारी कला के पतनशील प्रभाव, सिनेमा चलचित्रों, ठुमरी-टप्पों और जासूसी कहानियों के कुप्रभाव अनेक शोधों से स्पष्ट हो गये हैं। जितनी अधिक संख्या में ऐसे चलचित्र देखने जाते हैं, उतनी ही अधिक मात्रा में परार्थवाद की, सहकार की मात्रा कम होती जाती है और वे अधिक पतित होते जाते हैं।* अपराध और सभी समाज-विरोधी भावनाओं को बढ़ावा देने में अधिकांश चलचित्रों का बड़ा हाथ रहता है। जो बात चलचित्रों की है, वही बात थोड़े से हेरफेर के साथ हमारे अधिकांश साहित्य (विशेषतः सस्ती पत्रकारिता और 'गुदगुदी पैदा करने वाली' पत्र-पत्रिकाओं) ठुमरी-टप्पे, नाटक, नौटंकी आदि के विषय में भी कही जा सकती है।

स्पष्ट है कि पतन की ओर अग्रसर होने वाली कला अपनी पहले की सृजनशीलता फिर से प्राप्त नहीं कर सकती। वह न तो परार्थवादी पुरुषों का सृजन कर सकती है और न परार्थवादी समाज-व्यवस्था का निर्माण कर सकती है। इसलिए यह आवश्यक है कि उसके स्थान पर एक नई कला का उदय हो, जिसका आधार हमारी आदर्शवादी संस्कृति की मूल भावना हो। ईसा-पूर्व पाँचवीं शताब्दी की यूनानी कला अथवा तेरहवीं शताब्दी की यूरोपियन कला की भाँति इस नई आदर्शवादी कला को 'कला कला के लिए' इस थोथी कल्पना का त्याग कर देना चाहिए। सत्य और शिव के साथ पुन. सुन्दरम् का योगदान होना चाहिए। पर यह केवल इसलिए नहीं कि उसे विज्ञान और दर्शन, न्याय और नीतिशास्त्र अथवा धर्म की सेवा करने का एक साधन-मात्र बनना है, बल्कि इसलिए कि उसे सर्वोच्च मूल्यों के साथ समानता के साझेदार के रूप में कार्य करना है। ऐसी कला का सौंदर्य अत्यन्त मूल्यवान, सच्चा सौंदर्य होता है, उसमें 'विषरस भरा कनक घट जैसे' दिखावटी सुन्दरता नहीं रहती। केवल इसी प्रकार का मूल्यवान सौंदर्य अभी तक टिका और अमर रहा है। ऐसी ही स्थितियों में कला फिर से अपनी सृजनशीलता प्राप्त कर सकती है। ऐसी ही स्थिति में वह साध्य मूल्य बन सकती है फिर वह केवल एक बाजारू चीज नहीं रहेगी, और न वह विषय-तृप्ति का एक खिलौना बन कर रहेगी। वह ऊपर उठ कर साध्य मूल्य की कोटि में पहुँच जायगी तो उसके सेवक फिर से साधु, सन्तों, पैगम्बरों, शिलाधारियों, नये होमरों, शेक्सपियरों, बच्चों, बीथोवनों, फिडिअसों, माइकेल एंजिलों के रूप में पुनः एक बार मानव-संस्कृति का संवर्द्धन करेंगे। व्यावसायिकता के पाश से, भद्दी माँगों से, गन्दी और निष्ठुर कला-आलोचनाओं से मुक्त होकर और कामुकता, सनसनीवाद और निरर्थकता से कला का संबंध विच्छेद हो जाने से तब कलाकार फिर से अपनी सृजनात्मक प्रतिभा का विकास कर सकते हैं और फिर से अपनी अमर और महानतम रचनाएँ उत्पन्न कर सकते हैं।

यह कहना व्यर्थ है कि ऐसी कला विकृति और पतनशील निरर्थकता से मुक्त रहती है। अमरों को मारने के स्थान पर वह मरणशीलों को अमरत्व प्रदान करती है, उत्तमों को निकृष्ट बनाने के स्थान पर वह निकृष्टों को उत्तम बनाती है, सुन्दरों को असुन्दर बनाने के स्थान पर वह असुन्दरों को सुंदर बनाती है। सामाजिक पनालों से निकल कर वह पुन पर्वत शिखरों के पवित्र वायुमण्डल में पहुँचती है और अत्यन्त उच्च मूल्यों को भी उपलब्ध करती है। वह पुन ऐसी शक्ति बन जाती है, जो अपना प्रकाश फैलाती है, प्रेरणा देती है और लोगों को ऊपर उठाती है। वह दैवी सौंदर्य की झाँकी कराती है, मनुष्य को दाम्भिकता से उठा कर पवित्र बनाती है और सारी मानव जाति को अत्यन्त घनिष्ट भ्रातृत्व के दृढ़ बन्धन में बाँधती है।

* ऐसा परिणाम प्रदर्शित करने वाले अध्ययनों के लिए देखिये : एच० हार्टशोर्न, एम० ए० और जे० मालर : "स्टडीज इन दी नेचर आफ कैरेक्टर" (न्यूयार्क, १९२९), पृष्ठ २६९, एफ० ईस्टमैन : दी सीनस आफ मूवीज (शिकागो, १९२७) और १४ खण्डोंवाली पुस्तक-माला—मोशन पिक्चर्स एण्ड यूथ (दी पेयन फण्ड स्टडीज, प्रधान सम्पादक, डब्ल्यू० डब्ल्यू० चार्टर्स, न्यूयार्क १९३०-३४)।

प्यार से हृदय-परिवर्तन

अखंड भारत पदयात्रा के दौरान में एक दिन नौ मील चलने पर पारली नदी के किनारे जब हम लोग जलपान कर रहे थे, तो एक सम्भ्रान्त सज्जन शराब पीकर आये और हमारे पास बैठ गये। मेरे साथी, अमर बहादुर नेपाली को बुरा लगा। परन्तु मुझे उस सज्जन पर तरस आयी। मैंने उसे प्यार से समझाया। प्रभु की कृपा से उनमें सद्बुद्धि जागृत हुई और उन्होंने सदैव के लिए शराब छोड़ दी! इसके अतिरिक्त हमारे साथ उन्होंने दण्डकारण्य वन पार करते हुए नासिक नगर तक पदयात्रा की और फलस्वरूप दो एकड़ भूमि तथा लगभग पन्द्रह सौ रुपये की लागत का पक्का कुआँ अपने गाँव, अमदा में दान में दिया। उनकी ऐसी इच्छा है कि वहाँ पर सर्वोदय-आश्रम खोला जाय, जिसमें बालिकाओं के शिक्षण के निमित्त काम हो। भविष्य में तीन एकड़ और जमीन दान देने का वचन दिया। इस घटना का मेरे मन काफी असर हुआ है। —रामकुमार 'कमल'

कार्यकर्ताओं के अनुभव

"हम विचार समझने आये हैं!"

[कस्तूरी बहन महिलाश्रम, वर्धा की छात्रा है। महिलाश्रम की ओर से बिहार में भी वह भूदान का काम कर चुकी है। हाल में महिलाश्रम की छात्राएँ जबलपुर गयी थीं। वहाँ उन्होंने सर्वोदय-पात्र रखवाने का कार्य किया। उसमें जो अनुभव आये, उसका रोचक वर्णन 'भूदान-यज्ञ' के पाठकों के लिए उत्साहवर्धक साबित होगा, ऐसी आशा है।

—विमला बहन]

हम लोग ता० ४ नवम्बर को वर्धा से जबलपुर के लिए रवाना हुई और रात को करीब ८ बजे हमारी 'बस' वहाँ पहुँची। ता० ५ को सबेरे हम लोगों ने प्रभात-फेरी निकाली और करीब ६-७ मील घूमीं। दोपहर को सभा हुई और सर्वोदय-पात्र रखवाते समय लोगों को क्या समझाना है, इसके बारे में पूज्य विजयाताई ने काफी बताया। प्रश्नोत्तर हुए। शाम को हम लोग सर्वोदय पात्र का प्रचार करने और सर्वोदय-पात्र रखवाने के लिए दस टोलियों में बँट गयीं। हमारे साथ पाँच शिक्षक थे। हमारी संख्या करीब ७० थी। शिक्षकों का कार्यक्रम स्कूलों में रहता था, तो हमारा घरों में। विचार-प्रचार में बड़ा आनंद आता था।

पहले दिन तो काफी डर लग रहा था कि कोई शिक्षक भी साथ नहीं है। हम लोग क्या समझायेंगी और कैसे लोग सर्वोदय-पात्र रखेंगे? लेकिन उसके उलटा हुआ। पहले घर गयी, समझाया, तो झट से उन्होंने सर्वोदय-पात्र रख दिया और बड़े प्यार से घर में बिठाया, बातें कीं। उसके बाद तो उत्साह खूब बढ़ा और करीब एक घंटे में हमारी टोली ने १३ सर्वोदय-पात्र रखवाये।

दूसरे दिन शाम-सबेरे, दोनों समय हम लोग सर्वोदय-पात्र रखवाती गयीं। वैसे ही चौथे और पाँचवें दिन भी हुआ। जब सर्वोदय पात्र रखवाने जाती थी, तब बड़ा आनंद आता था। हम लोगों को कहीं-कहीं तो बड़े आदर से घर में ले जाती थी और दिलचस्पी से हमारे विचार सुनते थे और कहीं-कहीं तो देख कर दरवाजा ही बंद कर देते थे और कहीं खूब सुनाते भी थे! लेकिन क्या हम लोग डरने वाली थीं? हम लोग कहती थीं,

> "आप अपने घर में सर्वोदय-पात्र रखिये या न रखिये; लेकिन हम तो आपको विचार समझाने और विनोबाजी का संदेश सुनाने आयी हैं।"

ऐसा कहने पर सब घर के लोग आ जाते और समझाना पूरा होने पर सर्वोदय-पात्र रख देते थे।

५ दिन में हम लोगों ने १४०० से भी अधिक पात्र रखवाये और २४ 'सर्वोदय-मित्र' बनाये। कुछ साहित्य बेचा, खास-कर 'गीता-प्रवचन'। आखिरी दिन एक १० साल के लड़के को मैंने 'सर्वोदय-मित्र' बनाया।

हम लोग कम-से-कम १०-१२ मील तो रोज चलती ही थीं; फिर भी कभी थकान महसूस नहीं हुई। जब शाम को हम लोग इकट्ठी होती थीं, तो एक-दूसरे के कड़वे-मीठे अनुभव सुन कर बड़ी प्रसन्नता होती थी। ऐसे काम करने के लिए हम लोग नागपुर-अधिवेशन में भी गयी थीं। वहाँ भी कड़वे मीठे अनुभव हुए और आनंद हुआ। फिर भी जबलपुर के प्रसंग बहुत ही आनन्ददायक थे। जीवन में ऐसा मौका शायद ही मिले!

हम लोगों ने ऐसा तय किया था कि अपना सामान हम लोग खुद उठायेंगी। जब हम लोग सामान लेकर 'प्लेटफार्म' पर जाती थीं, तो सब लोग हमारी ओर बड़े गौर से देखते थे, क्योंकि हम लोग करीब ७० बहनें थीं और सबके हाथ में पेटी-बिस्तर था, कइयों के मुँह से तो ऐसे भी निकला कि ऐसे ही विद्यार्थियों की भारत को जरूरत है। मैंने अभी तक यही देखा था कि स्वावलम्बी की ओर लोग नीची दृष्टि से देखते हैं, लेकिन इस बार मुझे अनुभव हुआ कि ऐसी बात नहीं है। स्वावलंबन के प्रति समाज आदर भी करता है। अब जहाँ तक हो सकेगा, अपना सामान मैं खुद उठाने की कोशिश करूँगी।

हम लोग ता० १० को तिलवारा घाट पूज्य विनोबाजी से मिलने गयीं। उस दिन बाबा ने हम लोगों को १ घंटा मिलने का मौका दिया। भाषण करते-करते उनको माताजी की बात आयी और उनकी आँखों में पानी आ गया! उसके बाद आम सभा में उनका भाषण हुआ।

दूसरे दिन, ११ तारीख को बाबा जबलपुर जाने वाले थे। हम लोगों ने चार बजे उठ कर प्रार्थना की और बाबा का स्वागत करने के लिए चल पड़ीं। जबलपुर पहुँचते ही १० मिनट के बाद उनका भाषण और शाम को बहनों की सभा थी। बहनों को क्या करना चाहिए, इस पर बहुत ही बोधप्रद भाषण हुआ। पोस्टर आदि के बारे में भी कहा। १२ तारीख को प्रार्थना के बाद हम लोगों को बाबा ने समय दिया था, उस समय उनसे कुछ प्रश्न पूछे गये। उन प्रश्नों के उत्तर उन्होंने संक्षेप में बहुत सुन्दर तरीके से दिया।

—कस्तूरी बहन

बापू के काम को आगे बढ़ाना सर्वोदय-मित्रों का परम कर्तव्य

डा० राजेन्द्रप्रसाद

[अहमदाबाद के सर्वोदय-मित्रों का एक सम्मेलन १६ दिसम्बर को गुजरात के राजभवन में राष्ट्रपति के साथ आयोजित किया गया। गुजरात सर्वोदय-मण्डल के अध्यक्ष डॉ० द्वारकादास जोशी ने प्रार्थना की कि आप हमें, राष्ट्र को अचेतन से चेतन की ओर तथा हिंसा से अहिंसा की ओर आगे बढ़ने में मार्गदर्शन और प्रेरणा दें। इसके बाद राष्ट्रपति ने जो भाषण दिया, उसके आवश्यक अंश यहाँ दिये जा रहे हैं। —सं०]

डा० राजेन्द्रप्रसाद

आपने मुझे एक धर्मसंकट में डाल दिया, अन्त में आपने कहा कि यद्यपि हम अहिंसा की बात करते हैं, फिर भी सशस्त्र सेना रखते हैं, और आप चाहते हैं कि मेरे द्वारा कुछ ऐसी प्रेरणा पायें कि सशस्त्र सेना से आप अशस्त्र सेना की ओर बढ़ें, बढ़ सकें। मैं इतना ही कहूँगा कि मुझमें यह शक्ति नहीं है। मैं आपसे यही चाहूँगा कि आप अपनी शक्ति से शस्त्र-सेना, जो सशस्त्र सेना है, उस सेना को अशस्त्र बना देने का प्रयत्न करें।

आजकल हम एक ऐसे जमाने से गुजर रहे हैं, जिसमें दो प्रकार की विचार-शैलियों का संघर्ष है। एक विचारशैली, जो पश्चिम से मिली है, वह समष्टि पर अधिक जोर देती है। बापू की दी हुई हमारी शैली समष्टि पर नहीं, व्यक्ति पर अधिक जोर देती है। पश्चिमी विचारधारा का यह आदर्श रहता है कि यदि सारा समाज दूषित हो गया, तो व्यक्ति भी दूषित हो जायगा। हम यह जानते हैं कि जब तक व्यक्ति दूषित न हो, तब तक सारा समाज दूषित नहीं हो सकता। ये दो विचारधाराएँ हैं। मैं इस योग्य नहीं हूँ कि मैं यह कह सकूँ कि जो समष्टिवाद वाले लोग हैं, वे बिलकुल गलत हैं। पर मैं इतना जरूर कह सकता हूँ कि मैं इस पर पूरा विश्वास रखता हूँ कि व्यक्तिवादी जो विचारशैली है, वह अपनी जगह पर अत्यंत शुद्ध है, अत्यंत प्रभावशाली है और अत्यंत सत्य है। उस पर हम लोग चलते रहेंगे, तो उसका असर हुए बिना नहीं रह सकता है।

व्यक्ति-सुधार से ही समाज-सुधार

इस वक्त जो शासन की पद्धति है, उस शासन-पद्धति में सबसे मुख्य चीज यह है कि व्यक्ति अपने अधिकार को समष्टि के हाथ में सौंप देता है। चुनावों के जरिये हम अपनी सारी शक्ति दे देते हैं, तो उसका अर्थ ही यह हो जाता है कि जब तक हमारे चुने हुए लोग काम करते जायेंगे, तब तक काम ठीक-ठीक होता जायगा और उन पर हम भरोसा रखते हैं कि वे काम ठीक करेंगे। इस तरह भरोसे से ऐसी शक्ति को हम उनके साथ दे देते हैं और उनसे चाहते हैं कि उस शक्ति का वे ऐसा इस्तेमाल करें कि जिसमें केवल अपनी, व्यक्ति की ही उन्नति न हो, बल्कि उनकी सेवा से सारे देश की, सब लोगों की उन्नति हो। यह एक ऐसा झगड़ा है, जिसके संबंध में वाद-विवाद करने से कोई विशेष लाभ हमको नहीं होगा। हमको तो यह देखना है कि जिस रास्ते पर हम चल रहे हैं, वह रास्ता कहाँ तक ठीक है और हम कहाँ तक ठीक ढंग से चलने का प्रयत्न कर रहे हैं। मेरा यह विश्वास है कि यदि व्यक्ति सुधर जाय, तो वह समाज को सुधार सकता है।

आपने जो काम यहाँ शुरू किया है और तमाम आश्रमों में, जिनका संबंध महात्मा गांधीजी से रहा है, उन सभी आश्रमों और सभी संस्थाओं का मुख्य उद्देश्य यही है कि व्यक्ति को अच्छा बनायें। व्यक्ति को अच्छा बनाने का अर्थ यह है कि वह अपने शरीर से भी मजबूत हो, उसके विचार शुद्ध हों और उसका चरित्र शुद्ध हो। जब ये तीनों चीजें शुद्ध हो जायें, याने शरीर भी मजबूत, दिमाग भी साफ और चरित्र भी शुद्ध, तभी उस मनुष्य की शक्ति ठीक ढंग से बढ़ी, ऐसा माना जायगा। तब वह अपनी शक्ति से दूसरों को भी अपनी ओर खींच सकता है। इन आश्रमों का जो काम है, वह यही है कि मनुष्य को दुरुस्त करें।

अभी हम चारों ओर इस बात की शिकायत सुनते हैं कि हमारे लोगों का चरित्र कुछ कमजोर देखने में आ रहा है। कहीं चोरबाजारी चलती है, कहीं घूसखोरी चलती है, तो कहीं जिनके जिम्मे जो काम दिया जाता है, उस काम को वह पूरा करेगा, इसका पूरा भरोसा नहीं होता है। हमें इस बात का डर रहता है कि जो काम आरम्भ किया गया, वह कब पूरा होगा और पूरा होगा भी या नहीं, पूरा करने में सब लोग सच्चाई से काम करेंगे या नहीं, इस तरह के अनेक संदेह होते रहते हैं।

बापू का काम आगे चलायें

मतलब यह कि कमजोरी व्यक्ति में है और यह सही भी है। हमारे देश में आज की नहीं, बहुत दिनों की गुलामी रही है, उसका असर हमारे चरित्र पर पड़ा ही है। इस कमजोरी को बापू के समान महान् आत्माएँ ही दूर कर सकती हैं। उन्होंने इसमें एक हद तक सफलता प्राप्त की। आज बापू नहीं हैं, मगर हमें यह नहीं समझना चाहिए कि बापू का काम पूरा हो गया, उस काम को आगे चलाने की जरूरत नहीं है, बल्कि अब जो रह गये हैं और जिनका विशेष करके बापू से संपर्क हुआ था, उनका यह और भी कर्तव्य हो जाता है कि उनके काम को आगे बढ़ायें।

आप लोग—जो आज बापू के काम में लगे हुए हैं—मैं आप लोगों को दूसरा क्या कहूँ, सिवा इसके कि आप जो कर रहे हैं, उसको और ठीक तरह से चलाओ और अच्छी तरह से चलाओ और काम को आगे बढ़ाओ।

सर्वोदय-पात्र

सर्वोदय-पात्र की योजना मुझे अच्छी लगी थी। मैं इस समय देखता हूँ कि सर्वोदय-पात्र सब जगह रख तो दिये जाते हैं, रखने के लिए माँग भी होती है, लेकिन पीछे सर्वोदय-पात्र में क्या हुआ, इसकी खबर लेने वाले कोई नहीं रहते! अभी आपने जिक्र किया कि राष्ट्रपति-भवन में सर्वोदय-पात्र रखा गया है, यह सही बात है। फिर हमारे पास से उसमें से कोई जमा करके ले जाने वाला कोई नहीं आया! और इस वजह से कुछ दिनों के बाद वह बन्द हो गया! हमने दुबारा शुरू किया, तिबारा शुरू किया। लेकिन बार-बार वही होता है। जब कोई उसका पूछने वाला नहीं रहता है, तो लोगों का उसमें से उत्साह और भरोसा भी कम हो जाता है। मैं यही चाहूँगा कि आपने यहाँ बड़े पैमाने पर इस काम को शुरू किया है, और खास करके जब रविशंकर महाराज ने इस काम को हाथ में लिया है, तो हम आशा कर सकते हैं कि उनका उत्साह इस प्रकार का होगा कि सब लोगों तक पहुँच सकेगा और लोगों से काम करा सकेगा। शायद इस शहर में ४० हजार या ऐसे ही कुछ सर्वोदय-पात्र रखे गये हैं। इन पात्रियों में से आप मुझे भी एक 'पात्री परिवार' समझिये।

पात्रों का इन्तजाम करें

एक पात्र का अगर आप ठीक ढंग से संचालन कर सकते हैं, तो लोग परिवार में भी आपके कार्यक्रम का कुछ अंश डाल सकते हैं और परिवार को कुछ हद तक इस कार्यक्रम की ओर आकृष्ट कर सकते हैं। इस तरह से उस पात्र के काम का ठीक तरह से इन्तजाम करने का अर्थ है कि यह एक प्रकार का केन्द्र आप पैदा करते हैं, जिस केन्द्र से रोशनी फैल सकती है और फैलेगी। मैं यह भी कह सकता हूँ कि यदि ठीक तरह से चलाया जाय, तो हमें कुछ आर्थिक लाभ भी हो सकता है, क्योंकि मेरा खयाल है कि सन् १९२०-२१ में हमारे ... हिसाब से तो नहीं कहते थे, ये, 'एक मुट्ठी अन्न दे देना', में एक-एक हंडी रख दी गयी जब घर की रसोई के लिए अन्न ... जाता था, तब एक-एक मुट्ठी अन्न ... पात्र में भी डाल देते थे। इस तरह ... करते थे। मैं आपको बताऊँ कि ... डेढ़-दो (सन् '२१-'२२) साल तक ... का सारा काम उसीसे चलता रहा। ... सब तनख्वाहें चलती थीं। घर-घर ... गाँव-गाँव से वह अन्न कार्यकर्ता ... करते थे। बिहार-कांग्रेस का संगठन ... २१ साल में हुआ। वह संगठन बहुत ... संगठन था और उसका असर अभी ... है, गया नहीं है। यह ठीक है कि अब ... जैसी हालत नहीं है, भारत की हवा ... बदल गयी है। मगर उसकी जड़ ... थी। इसका कुछ-न-कुछ असर अभी यहाँ ... मैं चाहता हूँ कि इस चीज को अगर ... ठीक तरह से चलायेंगे, तो इसका असर बहुत दूर तक जा सकता है।

मैं तो यही आशा करूँगा कि सर्वोदय का काम यहाँ तो कम-से-कम हमेशा चलना चाहिए, क्योंकि यही तो एक उद्गम-स्थान है। यहाँ से ही उत्साह का, सच्चरित्र का प्रवाह आरम्भ हुआ था। इस उद्गम-स्थान से हमेशा प्रवाह नहीं चलता रहे, तो दूसरी अन्य जगह वह कम हो ... इसमें कोई आश्चर्य की बात नहीं है।

मैं तो यह चाहूँगा कि आप ... ऐसे स्थान के रहने वाले हैं, जिस ... बड़ा नाम है, पर बड़े नाम के ... अपनी जिम्मेदारी भी उतनी बड़ी है। वह यह है कि इस काम ... आप बराबर जारी रखें और ... बढ़ाते रहें, जिससे आपके यहाँ ... लोग भी लाभान्वित हों और ... देश के लोग भी इससे लाभ ... सकें।

श्री नानाभाई भट्ट की जीवन-साधना

वसंत व्यास

"बड़ों की अल्पता बहुत देखी, छोटों की महानता देख कर जीता हूँ।" गुजरात के अग्रगण्य कवि श्री उमाशंकर जोशी ने जिस छोटे आदमी की महिमा गायी है, वैसे एक छोटे आदमी के बड़े जीवन-काव्य का आज हम रसास्वाद और अवगाहन करेंगे।

परिवार की आर्थिक गरीबी की वजह से श्री नानाभाई के लिए आगे पढ़ने का कोई इन्तजाम नहीं था। इसीलिए पूरा परिश्रम करके वे मैट्रिक में ऊँचे नंबर से उत्तीर्ण हुए और शिष्यवृत्ति (मेरिट स्कॉलरशिप) प्राप्त की। आर्थिक गरीबी थी, पर बौद्धिक और आंतरिक समृद्धि थी। इसीलिए तो अपने पास एक ही जोड़ कपड़े होते हुए भी उनके आत्मगौरव में कोई कमी नहीं आयी। हर रोज रात को कपड़े धो लेते थे और सुबह उन्हीं स्वच्छ कपड़ों को पहन कर कॉलेज जाते थे। हर रोज के पाँच-छह घण्टे के नियमित स्वाध्याय से इतिहास और साहित्य का अच्छा ज्ञान उन्होंने प्राप्त कर लिया। २१ वें साल की उम्र में बी० ए० होकर कॉलेज के 'फेलो' बने, २२ वें वर्ष में हाईस्कूल के हेडमास्टर बने। पर उन्होंने राज्य के दीवान के पास अपने लिए प्राथमिक शाला के शिक्षक की जगह की माँग की। इस समय उनको एम० ए० होने की तीव्रता महसूस होने लगी। एक शिवालय में रहते थे और घर पर सिर्फ खाने के लिए आते थे। यहाँ उन्होंने रोमन और ग्रीक साहित्य का गहरा अध्ययन करके दो साल का अभ्यास-क्रम एक ही साल में पूरा किया। एम० ए० होते ही भावनगर के शामलदास कॉलेज में इतिहास के प्राध्यापक बने।

दूसरा प्रवाह

अर्वाचीन शिक्षा के साथ-साथ एक दूसरा भी जोरदार प्रवाह उनके जीवन में चल रहा था। उनके कुछ पुरखे, जो ब्राह्मण-धर्म की निष्ठा के स्वरूप में बिलकुल अकिंचन वृत्ति से सेवा-परायण जीवन बिताते थे, उनके संस्कार बचपन में नानाभाई को मिले थे और जवानी में उपनिषद्, ब्रह्मसूत्र, योगदर्शन आदि के परिशीलन से तथा उनके गुरु श्रीमन्नथुराम महाराज के सान्निध्य से ये ब्राह्मण-परंपरा के संस्कार और भी दृढीभूत हुए। दोनों प्रवाह अपना-अपना काम करते जाते थे।

प्रोफेसर का तमाशा!

अब प्रोफेसर के मन में स्वधर्म के निर्णय के लिए थोड़ी खींचातानी चली और उसके भावात्मक परिणामस्वरूप १९१० में भावनगर की एक पुरानी धर्मशाला में अपने गुरु के इष्टदेव 'श्री दक्षिणामूर्ति भगवान' के नाम से एक छात्रालय शुरू किया। फिर तो वे एकनिष्ठा से रसोई, कोठार, बीमारों की सेवा, विद्यार्थियों के अध्ययन में मार्गदर्शन और संस्था के लिए फंड वगैरह काम में ऐसे मग्न हो गये कि शिक्षित वर्ग और जात बिरादरी के लोग हमारे इस 'प्रोफेसर' का यह अजीब तमाशा आश्चर्य से देखते ही रह गये!

बापू से मुलाकात

सन् १९१५ में गांधीजी श्री दक्षिणामूर्ति में आये। उन्होंने अपनी लाक्षणिकता से संस्था देख कर, छात्रालय के साथ शिक्षण की व्यवस्था नहीं है, उस ओर ध्यान खींचा। नानाभाई की पुरुषार्थ-शक्ति को इतना इशारा काफी था। अब तो उन्होंने अपना पूरा सत्त्व और स्वत्व लगा कर प्रयत्न शुरू कर दिया और देखते-देखते नये मकान, नये कार्यकर्ता और नयी प्रवृत्तियों से विद्यालय अच्छी तरह जम गया और श्री दक्षिणामूर्ति एक प्रसिद्ध संस्था बन गयी।

क्रांत-कदम

सन् १९२० में गांधी-युग की शुरुआत हो चुकी थी। गांधीजी ने अस्पृश्यता के पाप को हटाने का आदेश दिया। इस ब्राह्मण को उस वणिक के विचार में और आचार में एक नये ब्राह्मण-धर्म का दर्शन हुआ। दक्षिणामूर्ति के वातावरण में खलबली मच गयी। नानाभाई के जीवन में एक प्रचण्ड प्रतिघोष हुआ और तीव्र मनोमंथन के बाद हिन्दू-धर्म के हार्द को परख कर, गुरु-परंपरा की मर्यादा को छोड़ कर, उन्होंने सब प्रकार के विद्यार्थियों को समान भाव से संस्था में प्रवेश दिया। इस तरह उन्होंने खुद को और संस्था को एक नये परिष्कृत मार्ग पर मोड़ दिया।

लोक-शिक्षक

दूसरी ओर नानाभाई ने साहित्य की एक नई दिशा का प्रारम्भ किया। जिससे हमारे देश के संत, कवि, धर्म-प्रचारक और नेताओं को अविरत रूप से नयी दृष्टि और प्रेरणा प्राप्त हुई है, और समाज को हरएक समय धारण और पोषण करने वाले तत्त्व मिलते रहे हैं। रामायण, महाभारत और भागवत वगैरह ग्रंथों के मूल तक पहुँच कर उनका रसपान कराया। भारत की इस प्राचीन देन को नये युग की आकांक्षा के अनुरूप बना कर नई पीढ़ी के पास रखना शुरू किया। स्वातंत्र्य संग्राम के जेल-निवास में उन्होंने 'लोकभागवत' तैयार किया और बाहर आकर जगह-जगह उसका पारायण किया। इसके श्रवण से लोगों की धार्मिक कल्पना और आध्यात्मिक वृत्ति काफी हद तक शुद्ध और स्पष्ट होती है, ऐसा दिखायी दिया। ग्राम-सेवकों ने इस प्रयास की काफी सराहना करते हुए उसे लोक-शिक्षा का एक सफल प्रयोग कहा। सचमुच लोक-भागवत लोकशिक्षा की उनकी प्रतिभा का उच्च प्रतीक है। 'रामायण और महाभारत के पात्र,' 'शिक्षा की पगडण्डी,' 'लोक-भागवत,' 'घड़तर और चणतर' (उनके जीवन और संस्था का विकास-दर्शन), 'मुठपति से' आदि पुस्तकें उनकी प्रमुख रचनाएँ हैं।

कुलपति

गुजरात विद्यापीठ राष्ट्रीय शिक्षा का आधार-स्तंभ था। वहाँ अग्रणी व्यक्तियों का एक ऐसा समुदाय था, जिनके जीवन में विद्वत्ता, राष्ट्रीय भावना और त्याग के तत्त्व भरे पड़े थे। उसमें जरूरत थी सिर्फ वहाँ के सामूहिक जीवन में एक संवादी संगीत का आयोजन करने वाले एक योजक की। मानव-परख की दृष्टिवाले बापू नानाभाई की इस शक्ति को जान गये थे। नानाभाई को विद्यापीठ का कुलपति बनाया गया।

राष्ट्रीय जंग में

आंदोलन में राष्ट्रीय भावना और राजनीति के बीच के भेद को समझना आम तौर से कठिन हो जाता है। नानाभाई के जीवन में इस सूक्ष्म विवेक का दर्शन होता है। उस जमाने में भावनगर जैसे राज्य के साथ बहुत अच्छा संबंध रख कर भी उन्होंने इतनी बड़ी राष्ट्रीय संस्था का विकास किया।

दूसरी मिसाल। सन् १९२८ के बारडोली के संघर्ष में एक कार्यकर्ता कूद पड़े, तो जिन नानाभाई ने उनको इस्तीफा देकर जाने को या तो काम पर चले आने को कहा था, वही नानाभाई सन १९३० की जंग में अपने दो बच्चों को मौत की गोद में सुला कर, शारीरिक और मानसिक यातना से व्यथित अपनी पत्नी को ईश्वर के भरोसे अकेली छोड़ कर और दक्षिणामूर्ति के नियामक पद से इस्तीफा देकर चल पड़े!

जिसका काम जो करे

जेल में नानाभाई को गांधीजी के दिये हुए मूल्यों को टटोलने का, उन पर गहराई से चिंतन करने का और उन पर अपनी निष्ठा स्थिर करने का अच्छा मौका मिला। विरमगाम कैम्प में वे अत्यन्त लोकप्रिय सरदार भी बन गये थे। कई नेता उनकी सलाह भी लेते थे। उस समय राजकीय नेताओं की जरूरत भी थी। मगर नानाभाई की जीवन-निष्ठा के मूल अधिक गहरे थे। जेल से छूटते ही वे सब राजकीय आकर्षण छोड़ कर सीधे दक्षिणामूर्ति के अपने विद्यार्थियों के बीच पहुँच गये। गांधीजी ने उनके इस कार्य को पूरी सम्मति दी।

नई तालीम की खोज में

सन् १९३७ में गांधीजी ने देश के सामने 'नई तालीम' का विचार रखा और *नानाभाई बिलकुल ही सहज भाव से इतनी* बड़ी संस्था छोड़ कर, ५५ साल की उम्र में अकेले आंबला नाम के गाँव में जाकर बैठ गये। दक्षिणामूर्ति के नियामक ग्रामदक्षिणामूर्ति की प्राथमिक शाला के 'महेताजी' बन गये। वहाँ उनको ग्राम-जीवन के अच्छे और बुरे तत्त्वों का दर्शन हुआ। हरिजन बच्चों को शाला में प्रवेश देने की बात पर ग्रामजनों ने उनका विरोध किया। उनको वापस चले जाने को भी कहा गया। वे कैसे जाते, बापू के सैनिक जो ठहरे! निःस्वार्थ सेवा और समर्पण-भाव का असर कुछ और ही होता है! जिन ग्रामनिवासियों ने विरोध किया था, वे ही कुछ अरसे के बाद हरिजन बच्चों को गाते-बजाते, प्रेम से शाला में लाये और उन्होंने उनके साथ भोजन भी किया। बाद में तो उस क्षेत्र के देहातों के और दूसरे लोग भी संस्था के जीवन में रस लेने लगे और ग्रामदक्षिणामूर्ति का विकास होता गया। सैकड़ों विद्यार्थी संस्था में बुनियादी विनीत बन कर गुजरात और देश-विदेश में फैले, जो आज भी हर साल अपनी मातृसंस्था को याद करके वार्षिकोत्सव पर कुछ-न-कुछ ऋण दान भेजते रहते हैं।

शान्ति-सैनिक नानाभाई

एक दफा भेमला नाम का डाकू आंबला में डाका डालने के लिए आने वाला था। संस्था को तो कोई दहशत नहीं थी, पर ग्रामसेवक के नाते नानाभाई को यह एक चुनौती थी। वे और उनके प्रिय साथी श्री मूलशंकर भाई रास्ते पर खड़े रह गये। डाकू निकला, तो उसे कहा गया कि तुम हमारी लाश पर से ही गाँव में जा सकते हो! डाकू पिघल कर संस्था में आया। नानाभाई के घर पर भोजन किया और उसने वचन दिया कि आंबला और नजदीक के देहातों में वह डाका नहीं डालेगा! भेमला नानाभाई के पास एक युवक को

[शेष पृष्ठ १० पर]

सच्ची घटना के आधार पर एक कहानी

ग्रामदान से क्या होगा ?

गणेशलाल कर्ण

रात के ग्यारह बजे होंगे, लक्ष्मी की आँखें मुन्दने लगी। वह बैठी-बैठी अपने पति के आने की प्रतीक्षा कर रही थी। फिर वह झुंझला कर उठी और दरवाजा बन्द करती हुई बोली, "शायद वे नहीं आयेंगे आज! सारा घर सो गया, मैं कब तक बैठ कर तपस्या करती रहूँगी? एक दिन की बात हो तो सही, सभी दिनों की यही कहानी!" वह किवाड़ बन्द कर बिछौने पर चली गयी।

अभी आधा घण्टा हुआ होगा कि किवाड़ पर किसी ने दस्तक दी। कई बार जोर-जोर से खटखटाने के बाद लक्ष्मी की आँखें खुली और झुंझला कर किवाड़ खोलने दरवाजे की ओर बढ़ी। किवाड़ खोल कर उसने अपने पति से पूछा—"ऐसा कौनसा काम है, जो दिन भर के करने से नहीं होता और रात-रात भर यों भटकते फिरते हैं?"

"काम ही कुछ ऐसा है, जो दिन-रात तो क्या, सारा जीवन देकर भी कर सका, तो भी सस्ता पड़ेगा!" —जगदीश ने कमरे में प्रवेश कर कहा।

"आखिर मैं भी तो सुनूं, ऐसा क्या काम है, जिसका मोल जिन्दगी से किया जाता है? क्या मेरे सुनने लायक नहीं है?"—लक्ष्मी ने पूछा।

"हाँ-हाँ भला क्यों नहीं, तुम्हें न केवल सुनना ही चाहिए, बल्कि उसमें सक्रिय रूप से भाग भी लेना चाहिए। एक-दो की समस्या नहीं, यह तो सारे गाँव की समस्या है, देश की समस्या है। आज ग्रामदान की बैठक हो रही थी। यह हमारे लिए प्रगति का नया कदम है। हम सारे गाँववालों को इस पर विचार करना चाहिए। इसे सफल बनाने का पूर्ण प्रयास करना चाहिए।"

"क्या कहा, ग्रामदान? क्या मतलब है ग्रामदान का? यह फिर क्या रंग खिला ग्रामदान का? इससे क्या होगा?"—लक्ष्मी ने पूछा।

"ग्रामदान देश की सारी समस्याओं का निदान है। अगर सच मानो तो ग्रामदान से ही देश की सारी समस्या सुलझ सकती है। और बिना समस्या के सुलझे हमारी स्वतंत्रता टिक नहीं सकती।"—जगदीश बाबू ने अपनी पत्नी से कहा।

"मैं बिलकुल भी नहीं समझ सकी कि ग्रामदान और देश की समस्या में क्या सम्बन्ध है?"—लक्ष्मी ने नितान्त निर्बोध होकर प्रश्न किया।

"केवल तुम ही नहीं समझती हो, ऐसी बात नहीं, बहुत से पुरुष भी ग्रामदान के नये विचार को, समस्या के मौलिक निदान को नहीं समझते हैं। हमारा सूत्र ही शायद वैसा सुदृढ़ और व्यापक नहीं है, जो इस राष्ट्रीय संदेश को सर्वव्यापी बना सके।" —जगदीश बाबू ने स्वर को गम्भीर बना कर कहा।

"हाँ, तो 'ग्रामदान' का क्या मतलब?"—लक्ष्मी ने जिज्ञासु भाव से पूछा।

"तुम तो पढ़ी-लिखी हो न! लगाओ 'ग्रामदान' का क्या अर्थ हो सकता है? डिग्री पाने की विशेषता केवल बात बनाना और उपन्यास ही है क्या?"—जगदीश बाबू ने हँसी के भाव से कहा।

"मैं तो समझती हूँ कि ग्रामदान का मतलब है, गाँवों का दान। लेकिन गाँव का दान कैसे होगा, कौन करेगा और इससे क्या होगा?"—लक्ष्मी ने अपनी शंका प्रकट की।

"ग्रामदान सचमुच गाँवों का दान ही है। यह तो तुम ठीक समझी। इस बारे में तुम्हारी जो-जो शंका है, वह किसी के भी मन में उठ सकती है। तो सुनो, तुम्हारी शंका का समाधान किये देता हूँ। तुम्हारा प्रश्न है कि ग्रामदान कौन करेंगे, यही न?

"गाँव में रहने वाले ग्रामीण सम्मिलित होकर ग्रामदान करेंगे। सभी लोग अपना भौतिक स्वत्व-विसर्जन कर देंगे। 'मेरा कुछ नहीं' होगा, 'हमारा सब कुछ' होगा। हम सारे ग्रामीण 'एक परिवार' बनेंगे, सभी के सम्मिलित श्रम से हमारी जीवन की अनिवार्य आवश्यकताओं की पूर्ति होगी।

"और इससे हम-सारे ग्रामीणों के अभाव मिट जायेंगे। हम सभी लोग सुखी बनेंगे। आज की तरह समाज या गाँव में विषम परिस्थिति नहीं रहेगी कि किसी के पास सब कुछ हो और किसी के पास कुछ भी नहीं!"

लक्ष्मी ने कहा—"जी हाँ, सो तो ठीक है! कहने के लिए हम स्वतंत्र हैं, लेकिन हमारी परिस्थिति वैसी नहीं हो सकी है, जो स्वतंत्रता के लिए अपेक्षित हो!"

"तो फिर तुम इसके लिए क्या करती हो? स्वतंत्रता संरक्षण के लिए तुम्हें भी तो कुछ करना चाहिए न? हम सारे लोगों को ऐसा समझना चाहिए कि स्वतंत्रता के संरक्षण की जिम्मेवारी हमारे ऊपर है। हम भी अपनी स्वतंत्रता की एक कड़ी हैं, अपनी जिम्मेवारी तो हमें निभानी ही चाहिए, तभी स्वतंत्रता का सूत्र सुदृढ़ और सुव्यवस्थित हो सकेगा।

"अपनी आवश्यकताओं के प्रति हम इतने सजग रहते हैं कि किसी भी तरह उनकी पूर्ति करने की कोशिश करते हैं। वैसी ही सचेष्टता हमें अपने ग्रामीणों की आवश्यकताओं, राष्ट्र की आवश्यकताओं की पूर्ति की होनी चाहिए। तभी सम्भव होगा कि हमारा राष्ट्र सुखी और समुन्नत हो।"

लक्ष्मी ध्यान से सुन रही थी अपने पति का स्वर, जो राष्ट्रीय भावनाओं से सराबोर था, उसके हृदय में मानवता को कुरेद-कुरेद कर जगा रहा था। अपना वैभव-विलास उसे असह्य लगने लगा। सोचने लगी कि सचमुच यह तो अन्याय है कि हमारे पड़ोस के लोग दाने के अभाव में भूखों तड़पें, वस्त्र के अभाव में अर्धनग्न रहें और वैसे लोगों के बीच हमारा जीवन विलास में बीते, यह कहाँ का न्याय है?

लक्ष्मी के हृदय में एक शक्ति का आविर्भाव हुआ। उससे उसे नई चेतना मिली। उसने आज समझा अपने पति के जीवन को कि वह किस धुन में खोये-खोये रहते हैं! उसके हृदय में अपने देश के प्रति, कम-से-कम अपने सारे गाँव को समान स्तर पर लाने की कैसी आकांक्षा है! आज तक वह अपने पति के विचार को नहीं समझ रही थी। इसी से वह उसकी सदयता की उपेक्षा किया करती थी।

"तो मुझे क्या करना होगा? कुछ मेरे करने से भी हो सकेगा तो बतलाइये।"—लक्ष्मी ने धवल स्वर में पति से जिज्ञासा की।

जगदीश विस्मय से जैसे चौंक पड़ा! उसे अपने कानों पर विश्वास नहीं हुआ कि वह क्या सुन रहा है। लक्ष्मी को अपने रास्ते पर लाने के लिए वह वर्षों से प्रयास कर रहा था। आज वह आप ही उस मार्ग पर आ मिली। फिर आश्चर्य क्यों न हो?

"तुम्हें आधा काम अकेले ही पड़ेगा।"—जगदीश ने कहा।

"अच्छा, लेकिन उतना ही दीजिये, जितना मैं संभाल सकूं।" —लक्ष्मी ने कहा।

"देवी! मैं अपने हिस्से का आज वर्षों से करता आ रहा हूँ। आज आयी हो। खैर, समय-समय भी सहयोग करूँगा। लेकिन लक्ष्मी, एक बात अच्छी तरह सोच लो न कि तुम किस रास्ते पर जाना हो? कहीं ऐसा न हो कि रास्ते लौटना पड़े!"

"आप आगे-आगे चलते रहेंगे, कैसे लौटूँगी? सच पूछिये तो पीछा करती-करती ही तो मैं पहुँची। अब फिर अकेली लौट जाऊँगी कहाँ?"

"अच्छा तो सुनो, 'ग्रामदान' मेरा विचार है। मैं चाहता हूँ, घर के लोगों को समझाओ और सारे की महिलाओं को भी समझाना काम है। युग-युग से एक संकुचित रह कर आज मनुष्य की मानवता संकीर्ण हो गयी कि वह परिकल्पना भी नहीं कर पाते। महि हमारी आधी शक्ति है। उनकी कर हमारी प्रगति कभी सम्भव नहीं होगी।

"ग्रामदान की बात उनको समझाओ। इससे हमें क्या मिलेगा, यह क्यों जरूरी है, यह सब विचार समझाओ और उन्हें चार-छह आने मजूरी पर काम करने के बजाय स्वतंत्र रूप से जीवन की आवश्यकताओं की पूर्ति करने के लिए सचेष्ट बनाओ।

"तुम जब इतना कर सकोगी, उसी दिन ग्रामदान सफल हो सकेगा। इसलिए 'ग्रामदान' की भूमिका मैंने तैयार कर दी है। अब आगे तुम्हारे हिस्से का काम बाकी है।"

●

जनता की महानता

ओ हरे-भरे खेतों में, गोपद-चिह्नित कुटीरों में, सुन्दर लोकगीतों में गूँजते हुए गाँवों में वास करने वाली, सूर्य की किरणों के समान निष्पाप और उज्ज्वल, आनन्द बिखेरने वाली महान् जनता! राष्ट्र की सच्ची शक्ति तुम्हीं हो। ये लहलहाती फसलें तुम्हारे ही श्रम का वरदान हैं, दुनिया को जीवन की देन देने वाली तुम हो। जिस प्रकार मधुर जलवाली नदियाँ एक-दूसरे से मिल कर अनन्त विस्तारवाली हो जाती हैं, इसी प्रकार तुम्हारे सभी वर्ग आपस में घुल-मिल कर अनन्त सौन्दर्य एवं अनन्त शक्ति को प्राप्त हों!

—यजुर्वेद

●

..._७ के चौंसाला गाँव का

महिलाओं में नवजीवन

—राधा भट्ट

[इस लेख की लेखिका सुश्री कु. राधा भट्ट श्री लक्ष्मी आश्रम, कौसानी की संस्थापिका सुश्री सरला बहन की मुख्य सहायक हैं। पिछले कई वर्षों से आश्रम में नई तालीम .. कार्य कर रही थीं। पूर्णतया सर्वोदय के लिए आत्मोत्सर्ग करने की भावना से श्री राधा बहन ने अब अपने सेवा-कार्य के लिए पिथौरागढ़ जिले में पुंगराऊ पट्टी के चौंसाला गाँव को केन्द्र चुना है। आपने अपना सारा जीवन भूदानमूलक अहिंसक क्रान्ति के लिए अर्पित कर दिया। —सम्पादक]

चौंसाला गाँव पुंगराऊ पट्टी का एक अच्छा गाँव है। हम पिछले वर्ष अप्रैल माह में यहाँ आयी थीं। गाँव का उत्साह वास्तव में सराहनीय था और उस उत्साहपूर्ण वातावरण में एक अच्छे काम की बुनियाद पड़ गयी, वह थी इस गाँव की महिलाओं की एक महिला सर्वोदय-समिति। उस दिन महिलाओं की भरी सभा में अनायास ही हमने महिला-समिति बनाने की बात रखी, तो सभी महिलाओं के मुँह पर एक अविश्वासपूर्ण फीकी मुस्कराहट व अधिकांश पुरुषों के मुँह से उपहास को व्यक्त करते हुए कुछ उपेक्षापूर्ण शब्द प्रकट हुए। पर दो-तीन ऐसे उत्साही सज्जन थे, जो चाहते थे कि महिला-समाज में नवजीवन का संचार हो। इसके लिए क्रियात्मक कदम उठाने की ताकत व प्रभाव उनमें था, तब महिला-संगठन के लिए सभानेत्री, मंत्री आदि का चुनाव होने लगा, तो महिलाएँ कहाँ तक समझ पायी कि हम एक विशेष कदम उठा रही हैं और कहाँ तक केवल संकोच व स्वाभाविक सहिष्णुतावश उन्होंने वह सब अनजाने ही स्वीकार कर लिया, यह उस समिति की सभानेत्री के इस वाक्य से स्पष्ट होता है : "मैंने सोचा नकार की भनि अच्छी नहीं होती, इसलिए मैं सभानेत्री बनने के लिए राजी हो गयी, पर मुझे आता कुछ नहीं !"

गाँव में महिलाओं की सभा बन गयी, यह एक अनोखी व आश्चर्यजनक घटना थी। आज तक उन्हें केवल पशुतुल्य माना जाता था। उन्होंने आज तक हाड़-तोड़ मेहनत कर अनाज के भंडार भरे थे, परन्तु उसमें से एक मुट्ठी तक खर्च करने का उन्हें अधिकार नहीं था, उन्हें हिम्मत भी नहीं थी ! जन्म होने के बाद उन्होंने पिता का घर, ससुराल, जंगल, खेत और कभी-कभी मेले के दिन बाजार के अलावा कुछ नहीं देखा था।

ऐसी महिलाएँ किस तरह सभा करेंगी, इस पर विचार हुआ। हमारे लौटने के आठ-दस दिन बाद सभा बुलायी गयी। किसी ने कहा, "भजन-कीर्तन करेंगी।" परन्तु और भजनों से ही तो जीवन-सुधार नहीं हो सकता। समाज में प्रचलित भद्दे गीतों का स्थान भक्तिरसपूर्ण भजन ले लेंगे, पर उसके आगे ?

समाज के लिए नियमपूर्वक कुछ अर्पित कर स्वयं रखने की मातृ-शक्ति को भी हमारे कार्यक्रम में प्रकट होना चाहिए, इसलिए घर-घर में सर्वोदय-पात्र रखे गये, उनकी व्यवस्था तथा एकत्र करने की जिम्मेदारी महिलाओं ने सँभाली।

इससे भी बड़ा एक और निर्णय हुआ : "गाँव के पुरुषों का हम पर आरोप है कि हमारी सुबह अपशब्दों से प्रारम्भ होती है और दिन भी उन्हीं के साथ गुजरता है, तो फिर मुँह से गाली निकालना छोड़ देने का ही संकल्प क्यों न कर लें ?"

सर्वसम्मति से इसका निर्णय कर लिया गया, परन्तु पुराने संस्कारों पर इतनी जल्दी कैसे विजय पा सकते हैं ?

इसके लिए सामूहिक शक्ति प्रकट हुई कि एक-दूसरे से गलती होने पर सब उसको बचायेंगी, रोकेंगी। इससे एक वातावरण बना, अब भी कुछ भूलें होती हैं, पर एक हवा बन रही है।

गाँव जागृत हो रहा था

अब एक साल बाद, जब हमारी टोली सर्वोदय का पैगाम सुनाने चौंसाला गाँव में गयी, तो सारे गाँव का नक्शा बदला हुआ था। हमारे पहुँचते ही गाँव की पंचायती जगह पर आग के चारों ओर सारे गाँव के स्त्री पुरुष और बच्चे जमा हो गये। लोगों ने बड़ी सुन्दर चर्चा छेड़ी। कृषि में उपज कैसे बढ़े ? हमारे रोजगार खत्म होते जा रहे हैं। लकड़ी चीरने के लिए यदि मशीन का उपयोग होने लगे, तो वह उद्योग भी गया, दस वर्ष के बाद हमारे एक कुटुम्ब के जब तीन कुटुम्ब हो जायेंगे, तब हमारी गुजर इसी सीमित भूमि के आधार पर कैसे होगी ? ये सब ऐसे बुनियादी प्रश्न थे, जिनके आधार पर हम उन्हें ग्रामदान, ग्रामराज्य व ग्राम की संगठित पुरुषार्थ-शक्ति जगाने की बात समझा पाये। यह बात तो सामने खड़े भूत को भगाने की थी। अतः उन्होंने ध्यानपूर्वक सुनी।

उनमें उत्साह था, भोजन के बाद फिर वह स्थान लोगों से भर गया। एक ओर बहनें भी अच्छी संख्या में बैठी थीं और सभा की समाप्ति पर उन्होंने स्वयं ही बड़े मधुर स्वर से कीर्तन शुरू कर दिया—"शंकर भोलानाथ दिगंबर !"

दूसरे दिन, फिर सब महिलाएँ महिला सर्वोदय-समिति की सभा के लिए जुट गयीं। इधर पुरुषों की सभा में भी ग्रामराज की मंजिल पर पहुँचने के लिए कौनसे कदम उठाये जा सकते हैं, इस पर अच्छा विचार-मंथन चल रहा था। आज गाँव से धन के बाहर जाने के जरियों को बन्द कर दें, इसके लिए व्यसन-मुक्ति का विचार आया। एक नवयुवक भाई बताते थे, उनका मासिक प्राथवेट खर्च पन्द्रह रुपये है। खर्च के मद हैं—बीड़ी, माचिस, चाय-पत्ती व चीनी।

उन्हीं नवयुवक ने सारे ग्रामवासियों को साक्षी रख कर धूम्रपान न करने की प्रतिज्ञा ली। तभी एक वयस्क सज्जन ने अपनी सुरती की डिबिया बिखरा कर प्रण किया—"इस नाशकारी कमाली की जड़ को त्याग दिया।"

इसी समय फिजूल-खर्ची के एक दूसरे पहलू पर लोगों का ध्यान गया। वह था महिलाओं के परमप्रिय गहने ! गहनों के त्याग की बात आते ही महिलाओं की ओर से एक चुभती हुई खरी चुनौती पेश की गयी—"यदि पुरुष-समाज स्वीकृति दे कि गहने न पहने जायें, तो हम गहने त्यागने को तैयार हैं !" भला कौन पुरुष है, जो अपनी पत्नी को गहने पहना कर अपनी शान व अमीरी का प्रदर्शन नहीं करना चाहता ? स्त्री को केवल व्यक्तित्वहीन गुड़िया बनाये रखने की उनकी मनोवृत्ति भी तो इस गहने की प्रथा को टिकाये हुए है। बहनों ने अपना गहनों के प्रति गलत मोह समझा और पुरुषों को भी उनकी गलती का एहसास कराया।

ग्राम-समाज के समग्र विकास के लिए पुरुष व स्त्री, दोनों को हरएक समस्या का हल साथ-साथ खोजना है। उसका निवारण भी दोनों की सम्मिलित शक्ति से ही होगा। महिलाओं की स्वतंत्र शक्तियाँ, उनकी मातृ-शक्ति, उनकी प्रेम-शक्ति, शांति-साधना विकसित हो, इसके लिए पुरुषों को भी चाहिए कि वे विशाल दृष्टि से निष्पक्षतापूर्वक सोचें। आज के गाँव के लिए हम जिस स्वस्थ व समृद्ध जीवन की कल्पना करते हैं, वह तभी आ सकेगा, जब सभी पुरुष तथा महिलाएँ इस मूलभूत पहलू पर सही रुख अख्तियार करें।

चौंसाला गाँव में इस अनुभव ने हमारे सामने यह बात स्पष्ट कर दी।

• • •

उत्तराखण्ड में खादी-ग्रामोद्योगों का विकास

गोचर में हुए उत्तराखण्ड शांति-सेना शिविर में श्री ध्वजाप्रसाद साहू के मार्गदर्शन में उत्तराखण्ड में खादी-ग्रामोद्योगों के विकास के सम्बन्ध में चर्चा हुई। कार्यकर्ताओं ने इस क्षेत्र के जनता की हीन आर्थिक स्थिति और मोटर-सड़कों के बढ़ने तथा तिब्बत के साथ होने वाले व्यापार की अनिश्चित स्थिति के कारण फैलने वाली भयंकर बेकारी का चित्र उपस्थित करते हुए बताया कि ऊन, रिंगाल, चमड़ा व विभिन्न वन-उपजों से प्राप्त कच्चे माल के उद्योगों—रेशा, कागज आदि के लिए यहाँ पर भारी संभावनाएँ हैं। मुख्य कठिनाई कार्यकर्ताओं, संगठन व पूँजी की कमी की है। सारे पर्वतीय क्षेत्र की एक खादी-ग्रामोद्योग समिति को संगठित करने और उसमें शामिल होने के लिए सब पक्षरहित कार्यकर्ताओं को आमंत्रित करने का निश्चय हुआ। खादी-कमीशन इस संस्था को मान्यता प्रदान करेगी और पर्वतीय क्षेत्र के लिए एक खादी ग्रामोद्योग प्रशिक्षण-विद्यालय खोलेगी। यहाँ पर कार्य प्रारंभ करने के लिए पर्वतीय क्षेत्र के बाहर काम करने वाले कार्यकर्ताओं व अन्य उत्सुक कार्यकर्ताओं से अपील की गयी।

पर्वतीय क्षेत्र में स्त्री-पुरुषों का दैनिक जीवन इतनी व्यस्त और कष्टप्रद है कि नये उद्योगों के लिए उनसे अधिक समय की अपेक्षा करना शक्य नहीं है। अतः धुनाई-पिंजाई के काम को सुलभ बनाने के लिए ढेकियों व सुधरी हुई चक्कियों का प्रचलन करने का भी निश्चय किया गया।

—सुन्दरलाल बहुगुणा

वाराणसी में विनोबा

—मणीन्द्रकुमार

चौथा दिन : १८ दिसम्बर !

आज सुबह ४ बजे से व्यक्तिगत चर्चाएँ और मुलाकातों का दौर प्रारम्भ हुआ। ५ से ६ बजे के बीच साधना-केन्द्र व सर्व सेवा संघ के कार्यकर्ताओं को विनोबाजी ने साधना के स्वरूप पर मार्गदर्शन दिया।

कार्यकर्ता-वर्ग के बाद विनोबाजी विश्वेश्वरगंज के पास मच्छोदरी पार्क में राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ द्वारा आयोजित स्वयंसेवकों की सभा में गये। विनोबाजी और दल के पहुँचने पर संघ के कायदे के मुताबिक कुछ रस्म-अदायगी हुई। इसके बाद संघ के एक अधिकारी द्वारा विनोबाजी का गीता के महान् प्रवक्ता के रूप में परिचय कराया गया। इस अवसर पर बोलते हुए विनोबाजी ने कहा कि "सब मानव एक है, यह विचार लेकर मैं घूम रहा हूँ। मेरा कोई झंडा नहीं है। 'जय जगत्' के उद्घोष में सबकी जय-विजय सन्निहित हो है, पराजय किसी की नहीं। इस भावना को पुष्ट करने के लिए दिलों को जोड़ने की जरूरत है। भूदान के अतिरिक्त अन्य कार्यक्रमों में नागरी लिपि के प्रचार को जितना हो सकता है, प्रोत्साहित करता हूँ, क्योंकि यह भी एक भारत को जोड़ने का साधन है।"

अंत में विश्वव्यापक दृष्टि रखने की सलाह देते हुए कहा, "जितना अच्छा अंश दुनिया में है, हमारा है और जितना बुरा है, वह भी हमारा ही किया हुआ है। आपका दिल और मेरा दिल साथ जुड़ा है। मैं चाहता हूँ, आपका दिल पूरे विश्व के साथ जुड़ जाय।"

विश्वेश्वरगंज से करीब ७॥ बजे विनोबाजी फिर साधना-केन्द्र पहुँचे। ८ से ९ तक सर्व सेवा संघ के कार्यकर्ताओं की बैठक में भाग लिया। कार्यकर्ताओं ने अपनी व्यावहारिक दिक्कतें बतायीं और इस सम्बन्ध में कई सवाल पूछे। बाबा ने एक सवाल के जवाब में कहा कि "आज व्यक्ति 'छिन्नात्मा' बनता जा रहा है। उसका घर का, आफिस का और टेनिस क्लब का अगर फोटो लिया जाय, तो तीनों की मुद्राओं में काफी अन्तर आयेगा! जिनसे हमारा प्रेम-सम्बन्ध है, वे हमारे कार्य के साथी नहीं हैं, और जो कार्य के साथी हैं, उनसे प्रेम-सम्बन्ध नहीं है। हमारा प्रेमक्षेत्र और कर्मक्षेत्र मिल जाय, तो धर्मक्षेत्र बन जायगा। कर्म और प्रेम का विच्छेद गलत है। छिन्नात्मा—छिन्न व्यक्तित्व से पूर्णात्मा—पूर्ण मानव बनना चाहिए।"

आज की प्रार्थना-सभा का मुख्य विषय था 'शिक्षक और शिक्षा।' आज शिक्षकों की जो हालत है, उस पर दुख प्रकट करते हुए विनोबाजी ने कहा, "हिन्दुस्तान पर बड़ा संकट आया है कि जीवन के मार्गदर्शक, गुरु समाप्त हो गये हैं, क्योंकि आचार्य और गुरु की हैसियत नौकरों की हो गयी।" देश का यह जो सलाहकार-वर्ग, शिक्षक है, इसको फिर से जागृत होना चाहिए।"

शिक्षकों को सलाह देते हुए विनोबा ने कहा कि "शिक्षक अपने को नौकर न मानें। शिक्षक सम्मेलन करें और शिक्षा कैसी होनी चाहिए, क्या पढ़ाना चाहिए, कैसे पढ़ायें, इसकी चर्चा करें। आज तो जो ऊपर से 'आर्डर' आता है, वही शिक्षकों को पढ़ाना पड़ता है! यह सब गलत है। शिक्षकों में मत-स्वातंत्र्य होना चाहिए।"

विनोबा ने जोर देकर कहा, "जिस प्रकार आज सरकार न्यायाधीशों की स्वतंत्र हैसियत को मानती है, वही हैसियत शिक्षकों की होनी चाहिए। लोकशाही में जागृति की कीमत है। अगर लोग जागृत नहीं रहेंगे, तो लोकशाही का रूपांतर सुल्तानशाही में हो सकता है। शिक्षक स्वयं जाग्रत रहें और देश को जाग्रत रखें।"

आज की शिक्षा की चर्चा करते हुए विनोबा ने कहा कि "वह त्रिदोष-ग्रस्त है। उसमें न तो चित्त-विकास होता है, न वाणी विकास और न शरीर-विकास ही होता है।"

५॥ बजे काशी के पत्रकार विनोबाजी से मिले। भूदान, असम-यात्रा, शान्ति-सेना, स्त्री-शक्ति, अशोभनीय पोस्टर्स, पंजाबी सूबा, मन्दिर-प्रवेश, मद्यनिषेध, वानप्रस्थ मंडल और बेरूबाड़ी एवं विनोबाजी की पाकिस्तान-यात्रा आदि विभिन्न विषयों पर खुल कर चर्चा हुई।

बेरूबाड़ी के संबंध में पूछे गये एक सवाल के जवाब में विनोबा ने बताया कि "ऐसे मामलों पर व्यापक दृष्टि से सोचना पड़ता है। करार हमेशा मीठा हो मीठा नहीं होता है, वह खतरे की तरह खट्टा-मीठा होता है। दुनिया में सबसे बड़ी बात समाधान है, न्याय नहीं है। लोगों ने इस समस्या को सही 'परस्पेक्टिव' में नहीं उठाया।"

आगे चर्चा करते हुए कहा, "एक वक्त हमने लंका के हाई कमिश्नर को कहा था कि ए. (अफगानिस्तान), बी. (भारत) और सी (लंका), इस त्रिकोण में रहने वाले सब नागरिक, इन तीनों देशों के माने जायें। इन देशों में आने-जाने के लिए, रहने के लिए कोई प्रतिबंध नहीं होना चाहिए।"

पाँचवाँ दिन : १९ दिसम्बर !

यह काशी में बाबा का अंतिम दिन था। आज कोई सार्वजनिक कार्यक्रम नहीं रखा गया। कार्यकर्ताओं से चर्चा और मुलाकातों में दिन बीता। प्रातःकाल कार्यकर्ता वर्ग में चर्चा करते हुए विनोबा ने कहा, "पारमार्थिक जीवन में शक्ति बढ़ेगी, तो जीवन में आयेगा।" आगे कहा, ... में करना अनिवार्य है। सेवा-कार्य मूलक ही होना चाहिए।"

गांधी स्मारक निधि द्वारा शिविर काशी में चलाया जा ... उसका समाप्ति-समारोह विनोबाजी द्वारा कराया गया। शिविर बड़ा काम पड़ा है, इसको करते हुए विनोबा ने कहा कि ५ करोड़ जमीन प्राप्त करना ... किन्तु सफाई के लिए सोचता हूँ, ... ही घटा हो जाता है! सफाई याने सारे देश की आदत बदलने की बात है।"

काशी जैसे शहर को स्वच्छ, सुथरा बनाने का विचार करते हुए विनोबा ने लंदन की व्यापक आग की याद दिलायी। "लंदन को व्यापक आग लगी। गन्दी बस्ती और उस पर परमात्मा की कृपा हुई!—काशी की सफाई के लिए सबकी शक्ति-युक्ति और भक्ति लगेगी, तब काम होगा।"

पाँच दिन वाराणसी में बिता बाबा मुगलसराय की ओर बढ़ गये। ... के उस पार सब कार्यकर्ताओं ने बाबा को प्रणाम किया।

[श्री नानाभाई भट्ट की जीवन-साधना···शेष पृष्ठ ७ का]

सुधारने के लिए छोड़ गया था, जो आज प्रामाणिक पेशा करता है।

भीमा नाम का दूसरा डाकू लोगों के नाक और कान काटता था! नानाभाई उसके पास जा पहुँचे और उन्होंने उसे समझाया। तब से उसने वह काम छोड़ दिया!

रस्सी काटना

नानाभाई के व्यक्तिगत जीवन के और सामूहिक जीवन के कुछ निश्चित विचार हैं, और उनका वे आग्रहपूर्वक पालन करते आये हैं। इसीलिए तो उन्होंने राजकुमार के शिक्षक बनने की ओर एक राज्य के शिक्षा-विभाग के अधिकारी के पद के प्रस्तावों को स्वीकार नहीं किया। जैसे-जैसे अनावश्यकता महसूस की, वे कालेज की प्रोफेसरी, बड़ी संस्था का नियामक-पद और सौराष्ट्र के शिक्षा-मंत्री का स्थान छोड़ते गये!

अब तो वे अपने पीछे की पीढ़ी को पूरा कारभार सौंप कर मुक्त हो गये हैं और उनके साथियों में जो मनुभाई, मूलशंकर भाई, बुचभाई वगैरह ने सारा काम करीब उतनी ही दक्षता और समता से सामूहिक रूप से उठा लिया है।

इस तरह उन्होंने अपने जीवन में मान-प्रतिष्ठा और पद के छोटे बड़े अनेक मौकों को सहज, प्रसन्नता और दृढ़तापूर्वक एक तरफ हटा दिया; अपने मन, वाणी और कर्म तीनों को जोड़ कर एकाग्र चिंतन किया, जीवन-कार्य के लिए आवश्यक शक्ति और सद्गुण प्राप्त किये, गुजरात में तालीम का नया युग शुरू किया और मनुष्य अपने स्वधर्माचरण से किस तरह श्रेय-साधना कर सकता है, उसका जीवंत उदाहरण पेश किया। फिर भी वे अपने को तो शाला का एक 'महेताजी' (शिक्षक) ही मानते रहे, और अपने नाम के अनुसार खुद को 'नाना' (गुजराती में 'नाना' माने 'छोटा') छोटा मानव समझ कर उसीमें संतोष, आनन्द और गौरव का अनुभव करते रहे। ऐसे आत्मवीर नानाभाई भट्ट के जीवन की कुछ झाँकी हमने आज की।

आज तो उनका जीवन एक पक्व और मिष्ट फल जैसा मधुर बन गया है। ... कई समय पहले ही तो उन्होंने कहा था :

"मैं परमतत्त्व की प्राप्ति के लिए ही जीता हूँ। परमतत्त्व की खोज करने के भाव से जीवन में कदम बढ़ाता चल रहा हूँ। जिस दिन मुझे लगेगा कि यह मार्ग मुझे उधर नहीं ले जा रहा है, उस दिन मैं संस्था छोड़ने में जरा भी हिचकिचाहट नहीं करूँगा। मैं कोई लेखक नहीं, गुरु नहीं, सुधारक नहीं, सिर्फ मुमुक्षु हूँ।"

इसी शम की ... ईश्वर के ... और ... मन में सवाल उठता है कि इनके जीने में ... को क्या नहीं ... है।

अशोभनीय पोस्टरों के खिलाफ बढ़ते हुए जनमत का प्रवाह

सिनेमा : राष्ट्र का एक गंभीर प्रश्न

सिनेमा के नये खेल का विज्ञापन करने के लिए जो पोस्टर नगरों की दीवारों पर और प्रदर्शन-गृहों की दीवारों पर लगाये जाते हैं, युग-सन्त विनोबा की कृपा से उनकी अश्लीलता के विरुद्ध देश में उत्तेजना की एक लहर आयी है और इन्दौर में कुछ पोस्टर उतारे, फाड़े, जलाये गये हैं। सिनेमा के निर्माताओं, वितरकों और प्रदर्शकों की ओर से नागरिक के मूल अधिकारों के नाम पर, हरएक भारतीय की स्वतन्त्रता के नाम पर इस कार्य का विरोध हुआ है और कानूनी कार्रवाई की धमकी दी गयी है।

सूचना और प्रसारण-मन्त्री श्री केसकर ने लोकसभा में बताया है कि सर्वोदय-कार्यकर्ताओं की प्रार्थना के कारण भारत का स्वराष्ट्र-मन्त्रालय सिनेमा पोस्टरों पर नियन्त्रण लगाने की समस्या पर विचार कर रहा है।

सर्वोदय-मंडल ही नहीं, देश की मूक आत्मा यह चाहती है कि स्वराष्ट्र-मंत्रालय लाल फीताशाही से बच कर शीघ्रतापूर्वक इस प्रश्न पर विचार करे और उस विचार पर दृढ़तापूर्वक अमल किया जाय।

सिनेमा के पोस्टरों की गन्दगी मर्यादा की सब हदों को पार कर गयी है। अब उसे बर्दाश्त करना खतरे का खेल होगा। जहाँ बैठ कर मैं यह लिख रहा हूँ, उस स्थान के सामने ही पोस्टर लगे हैं। एक में एक नौजवान एक युवती को आलिंगन में लपेटे खड़ा है और दूसरे में एक नवयुवक एक नवयुवती को गोद में बैठाये हुए है। ये पोस्टर दो प्रसिद्ध फिल्मों के हैं।

मैं अपने स्थान पर बैठे-बैठे देखता कि आने-जाने वाले बालक-बालिकाएं और बड़ी उम्र की छात्र-छात्राएं उन्हें गौर से देखती हैं और नये संस्कार लेती हैं! क्या यह भी कहना पड़ेगा कि ये संस्कार देश-भक्ति या नैतिकता के नहीं होते, सस्ती भावुकता के होते हैं। ये संस्कार बहुत गहराई तक पहुँच गये हैं।

कुसंस्कार की यह गहराई किस सीमा तक जा पहुँची है, इस सम्बन्ध में एक आँखों देखी बात बताता हूँ। एक दिन मैंने अपने कमरे की खिड़की से देखा कि दो बालक चलते-चलते रुके और सामने ही लगे सिनेमा के उस पोस्टर को उत्सुकता से देखने लगे, जिसमें एक नौजवान एक नवयुवती को आलिंगन में लपेटे खड़ा है। तभी उन्होंने आपस में कुछ बातचीत की और दोनों ने ठीक उसी प्रकार आलिंगन किया, जैसे चित्र में प्रदर्शित था। आलिंगन की इस व्यस्तता में भी उनकी आँखें चित्र की ओर ही थीं, क्योंकि वही तो उनके इस कुसंस्कार की प्रेरणा का मूल स्रोत था।

इस स्थिति में यदि इन गन्दे पोस्टरों के विरुद्ध जनता में गहरा विरोध है और युग-सन्त विनोबा उस विरोध को विद्रोह का रूप देने की बात करते हैं, तो क्या यह अनुचित है? अनुचित नहीं, उचित है, आवश्यक है, पर इससे भी उचित और आवश्यक प्रश्न यह है कि क्या यह प्रश्न केवल सिनेमा पोस्टरों तक ही सीमित है।

ना, सिनेमा-पोस्टरों की बात के साथ सिनेमा-सुधार का प्रश्न जुड़ा है। आश्चर्य है कि देश के नेताओं और विचारकों ने उस नुकसान की तरफ वास्तविक ध्यान नहीं दिया, जो सिनेमा से हो रहा है। संक्षेप में कहना हो, तो मैं कहूँगा कि सिनेमा ने पिछले १४ वर्षों में देश को नैतिक रूप से अस्त-व्यस्त कर दिया है।

मुझे मालूम हुआ कि मेरा आरोप भयंकर है, पर मैं गहरे अध्ययन, अवलोकन और चिन्तन के बाद ही देश के सिनेमा-व्यवसाय पर यह आरोप लगा रहा हूँ। इस आरोप की सिद्धि में बहुत कुछ कहा जा सकता है, पर मैं एक ही बात कहना चाहता हूँ कि फौजदारी कानून के अनुसार यदि कोई मनुष्य किसी कुमारी का कौमार्य भंग करे, तो वह कई साल की सजा का हकदार माना जाता है, पर सिनेमा ने देश की नयी कन्या-पीढ़ी का मानसिक कौमार्य भंग कर दिया है, क्या इसमें किसी को सन्देह है?

आज की ६-७ वर्ष की लड़की इतनी अधिक यौन जानकारी रखती है, जितनी पहले १६-१७ वर्ष की लड़की नहीं रखती थी। फिर यह जानकारी केवल जानकारी ही तो नहीं होती। जो विज्ञान का सिद्धांत है कि जब हम चुम्बन का विचार करते हैं, तो वह विचार कोरा विचार ही नहीं होता, उसका एक दृश्य हमारे हृदय पर कल्पना की कलम से खिंच जाता है। फिर सिनेमा में तो यौन सम्बन्धों के विचार और चित्र साफ-साफ और अत्यन्त भड़कीले रूप में दिखाये जाते हैं। इस स्थिति में यदि आज उम्र में ६-७ वर्ष की लड़की अपने मन-जीवन में पूर्ण नारी बन जाती है, तो क्या यह कोई अनहोनी घटना है? यही हाल लड़कों का भी है।

फिर बात यहीं तक तो नहीं है इससे बहुत आगे तक है। एक ही उदाहरण से बात हल हो जायगी। प्रख्यात फिल्म 'मुगले आजम' का एक गीत है—'प्यार किया, तो डरना क्या?' यह आजकल देश की गली-गली में गूँज रहा है। इसके लेखक, फिल्म-निर्माता और रिकार्ड बनाने वालों ने कभी सोचा है कि यह गीत क्या करेगा, क्या कर रहा है?

इस प्रकार प्रश्न सिनेमा के पोस्टरों का ही नहीं है, सिनेमा के गीतों का है और पूरे सिनेमा का भी है, जिसने नयी पीढ़ी को नैतिक रूप में गिरा दिया है।

सिनेमा की कहानी का 'सेंसर' होता है पर वर्तमान कानून इतना निकम्मा है कि उस कहानी पर बने फिल्म की काट-छाँट नहीं हो सकती! सरकार इस कानून को बदले, यह आवश्यक है, पर सरकार का तरीका प्रधान मंत्री के शब्दों में 'जड़' होता है, इसलिए आवश्यक है कि लोकमत जागे, उग्र हो और ऐसी परिस्थितियाँ पैदा करे कि फिल्म-निर्माता फिल्म-व्यवसाय को राष्ट्रीय दृष्टिकोण से देखने-चलाने को मजबूर हों।

—कन्हैयालाल मिश्र 'प्रभाकर'
सं॰ 'नया-जीवन', 'विकास', सहारनपुर

अभिनव सत्याग्रह

आचार्य विनोबा और उनके साथी इस प्रयत्न में हैं कि इन्दौर 'सर्वोदय-नगर' बने। इसके लिए नगर-सफाई, सर्वोदय-पात्र, शांति-सैनिक इत्यादि उपक्रम वहाँ जोरों से शुरू हो गये हैं। परन्तु इसके साथ साथ इस महान् कार्य के लिए लोक-मानस में नैतिक क्रान्ति की भी अत्यन्त आवश्यकता है। इस हेतु से इन्दौर में गत ५ नवम्बर को एक अशोभनीय चित्र के अग्नि-संस्कार द्वारा अभिनव सत्याग्रह का प्रारंभ हुआ है।

हम देखते हैं कि चल-चित्रों के विज्ञापनों में स्त्रियों के बड़े-बड़े अर्धनग्न और कामोद्दीपक चित्र गाँवों और शहरों में लगाये जाते हैं। यह नैतिक क्रान्ति की परिसमाप्ति नहीं, केवल प्रारंभ है। जनता में अनीति के प्रति जो असहिष्णुता होनी चाहिए, वह आजकल प्रायः समाप्त हो रही है। उसे पुनः जाग्रत करके न्याय की और संस्कृति की मर्यादा तथा मांगल्य की अभिरुचि समाज में निर्माण करने के पवित्र यज्ञ का यह केवल श्रीगणेश है। एक बार जनता में यह शुभ, सौन्दर्य और मांगल्य की सुरुचि उत्पन्न हो, तो चलचित्रों के समान साहित्य अर्थात् कहानियों, कविताओं और उपन्यासों में भी वह अश्लीलता को बरदाश्त नहीं करेगी। समाज में सर्वांगीण शुचिता की स्थापना का या उसके पुनर्जीवन का यह शुभारंभ है। अतः इस शुभ यज्ञ का सत्याग्रही प्रयोग इन्दौर की भाँति दूसरे शहरों में भी अवश्य होना चाहिए।

परन्तु हमें यह देख कर आश्चर्य होता है कि इस पक्षातीत और दलातीत सत्याग्रह की आलोचना करने वाले भी पड़े ही हैं! वे कहते हैं कि अश्लीलता वस्तु में नहीं, मन में होती है। परन्तु हम उनसे पूछना चाहते हैं कि कुछ शब्द ऐसे होते हैं या नहीं कि जिनका उच्चारण वे अपनी माताओं, बहनों और बेटियों के सामने नहीं करना चाहेंगे!

इसलिए अश्लीलता के शास्त्रार्थ में पड़ने की बजाय सरकार से हमारी यही सलाह है कि वह कोई ऐसा कानून बना दे कि चल चित्रों के विज्ञापनों में चित्र हों ही नहीं। केवल शब्दों में ही चलचित्र विज्ञापित किये जायें।

इससे श्लीलता और अश्लीलता का झगड़ा ही समाप्त हो जायेगा।

इंदौर के मित्रों का यह प्रयत्न एकदम नया भी नहीं है। पहले भी ऐसे प्रयत्न हुए हैं। केन्द्रीय सरकार तक बात पहुँची है। परन्तु शासन का यन्त्र बहुत भारी-भरकम होता है, उसे गति पकड़ने में जरा देर ही लगती है! इसलिए स्वयं समाज को ही जाग्रत और समर्थ बन जाना चाहिए। इंदौर की तरह यदि दूसरे शहरों और कस्बों के लोग भी जाग्रत और सुसंगठित होकर सक्रिय प्रयत्न शुरू कर देंगे, तो संस्कृति और शील पर आक्रमण करने वाले ये भित्तिचित्र दीवारों पर से हट जायेंगे और उनके स्थान पर संतों के सुन्दर वचन हमें जहाँ-तहाँ दिखाई देने लगेंगे। अच्छा हो कि बहनें इस काम को अपने हाथ में ले लें।

गांधीजी ने जब सत्याग्रह का शंख फूँका, तो उसे सुन कर हजारों-लाखों बहनें दौड़ पड़ीं और गैरकानूनी नमक बनाने लग गयीं। उसमें उन्होंने लाठियाँ खायीं और जेलों में भी गयीं। अब फिर ऐसा ही प्रसंग है। बहनें संस्कृति की प्रत्यक्ष मूर्ति हैं। इस सत्य को वे अब अपनी कृति से सिद्ध करके दिखा दें।

—दा॰ न॰ शिखरे, स॰ 'महात्मा'

महिला-सम्मेलन का प्रस्ताव

अभी हाल में सूरत में हुए अखिल भारत महिला-सम्मेलन में एक प्रस्ताव में भद्दे पोस्टर्स और विज्ञापनों में महिला जाति को विकृत रूप में चित्रित करने की निन्दा की और कहा गया है कि इससे देश का नैतिक धरातल गिरता है।

सर्वोदय-पात्र

छपरा

छपरा नगर में २३ अगस्त से सर्वोदय-पात्र चल रहे हैं। अभी तक कुल १०४ सर्वोदय-पात्र रखे गये हैं। लगातार ७५ सर्वोदय-पात्र चलते हैं। गरीबी और भुखमरी के कारण यहाँ पर सर्वोदय-पात्र भी अच्छी तरह नहीं चल रहे हैं। छपरा नगर के दहियावाँ मुहल्ले को सघन क्षेत्र चुना गया है, जहाँ दधीचि ऋषि का आश्रम है। इस मुहल्ले के अधिकतर लोग धार्मिक हैं। १ दिसम्बर से प्रति दिन सुबह प्रभात फेरी निकाली जाती है। लोगों के अन्दर उत्साह नजर आता है, लेकिन सर्वोदय-पात्र के प्रति उत्साह नजर नहीं आता है। सघन क्षेत्र के लिए यहाँ पर कार्यक्रम रखा गया है—सफाई, मुहल्ले के मुकदमे का फैसला, नगर में सर्वोदय स्वाध्याय-केन्द्र चलाना, भूदान-पत्रिकाएँ देना, खादी का प्रचार, भंगी-मुक्ति का प्रयास। इस तरह धीरे-धीरे जन-जागृति की तरफ जाना है। सर्वोदय-पात्र में उतना उत्साह नहीं नजर आता है, जितना अन्य कार्यक्रमों में। यहाँ पर तीन शांति-सैनिक हैं, जो प्रति दिन एक-एक घर जाकर संपर्क स्थापित करते हैं। ये तीन शांति-सैनिक सक्रिय हैं.(१) शुकदेव मुनि, (२) दिनेशचन्द्र प्रसाद, (३) महावीर प्रसाद और शांति-सहायक: श्री परमहंस प्रसाद।

मेरठ

मेरठ शहर में सर्वोदय-पात्रों का कार्य पूर्ण उत्साह के साथ चल रहा है। इस समय तक लगभग ८०० सर्वोदय-पात्र रखे जा चुके हैं और इन पात्रों द्वारा १०२८ रुपये ४४ नये पैसे एकत्रित किये हैं। इसमें से करीब ४५० रु० सर्व सेवा संघ, प्रान्त तथा जिले को भेज दिये गये हैं और १४४ रु० का साहित्य खरीदा गया है, जो नगर में विभिन्न सर्वोदय-मित्रों को प्रचारार्थ दिया गया है। इसका वे लाईब्रेरी के रूप में उपयोग करेंगे। इस प्रकार के २० क्षेत्रों में कार्य प्रारम्भ किया गया है। कुछ विद्यार्थी बहनों ने अपना समय गरीब बच्चों की शिक्षा तथा सर्वोदय-पात्रों को एकत्रित करने को दिया है। शिक्षा-कार्य भी प्रारम्भ हो गया है।

'कुमारप्पा-स्मारक-निधि' में

वाराणसी स्थित सर्व सेवा संघ के केन्द्रीय कार्यालय, प्रकाशन और पत्रिका विभाग के कार्यकर्ताओं ने कुमारप्पा-स्मारक निधि' में ७९ रुपये ७० नये पैसे उनके जन्म-दिन, ४ जनवरी के निमित्त समर्पित किये।

मुजफ्फरपुर जिला, ग्रामराज्य सर्वोदय-सम्मेलन

गत २ दिसम्बर को मुजफ्फरपुर टाउन हाल में जिला सर्वोदय-मंडल की ओर से जिला ग्रामराज्य सर्वोदय-सम्मेलन श्री ध्वजा प्रसाद साहू के सभापतित्व में हुआ। प्रारंभ में जिला पंचायत-परिषद के अध्यक्ष श्री रत्नेश्वरी नन्दन सिंह ने जिले से आये हुए मुखियों एवं ग्रामनिर्माण में लगे हुए कार्यकर्ताओं का स्वागत किया तथा ग्रामोद्योग के कामों में नवजीवन डालने एवं शांति-सेना की स्थापना पर जोर डाला।

सम्मेलन में अध्यक्ष के अलावा भारत सरकार के उपयोजना-मंत्री श्री श्यामनन्दन मिश्र, बिहार सर्वोदय-मंडल के संयोजक श्री श्यामसुन्दर प्रसाद, बिहार सरकार के उपमंत्री श्री हृदय नारायण चौधरी, जिला भारत सेवक समाज के अध्यक्ष श्री मधुसूदन अग्रवाल आदि के सामयिक एवं सारगर्भित भाषण हुए। गाँवों के उत्थान के लिए सर्वोदय के रास्ते से निर्विरोध मुखियों का चुनाव, सहकारिता के आधार पर गाँवों के उद्योगों का संचालन, ग्रामदान एवं शांति-सेना के संघटन की जोरदार तैयारी का संकल्प लिया गया। ३ दिसम्बर की बैठक में बिहार शान्ति-सेना के संयोजक श्री विद्यासागरजी एवं श्री कालीप्रसाद सिंह के शान्ति-सेना के उद्देश्य एवं संघटन पर बोधप्रद भाषण हुए। यह निर्णय लिया गया कि इस तरह के सम्मेलन सबडिविजन एवं थाना के आधार पर किये जायँ तथा ज्यादा-से-ज्यादा तादाद में लोगों को शांति-सेना में दीक्षित किया जाय।

अ० भा० सर्व सेवा संघ का आय का विवरण

(माह दिसम्बर '६०)

प्रांत	सर्वोदय-पात्र रु.-न.पै.	सूत्रांजलि रु. न. पै.	सूत्रदान रु.-न.पै.	फुटकर दान रु. न. पै.	कुल रु.-न.पै.
उत्तर प्रदेश	४०—०५		२४—१०	२—००	६६—१५
मध्यप्रदेश				२,७८३—३४	२,७८३—३४
बंगाल	६—००			८,५००—००	८,५०६—००
केरल		१,६०७—००			१,६०७—००
कुल	४६—०५	१,६०७—००	२४—१०	११,२८५—३४	१२,९६२—४९

प्रकाशन-समाचार

"भूदान-यज्ञ, की ओर फेनो"के सुप्रसिद्ध लेखक श्री चारुबाबू की राष्ट्रीय शिक्षण पर लिखी गयी किताब अद्यतन सामग्री से परिपूर्ण है। सर्वांगीण अभ्यास और समग्र दर्शन चारुबाबू की खास विशेषता है, जिसकी झाँकी भूदान-यज्ञ वाली किताब के समान राष्ट्रीय शिक्षण की इस किताब में भी मिलती है। "ना मूलं लिख्यते किंचित्"वाली विवरण-शैली का अंगीकार करने के कारण इसमें पाठकों को एक ही पुस्तक में अनेक पुस्तकें पढ़ने का लाभ सहज मिल जाता है। आशा करता हूँ, सर्वोदय-सेवक इसका लाभ उठायेंगे।*

बिहार-यात्रा, २८-१२-६० —विनोबा का जय जगत्

---

* सर्व सेवा संघ-प्रकाशन, काशी से शीघ्र प्रकाशित होने वाली 'हमारा राष्ट्रीय शिक्षण' पुस्तक की प्रस्तावना। मूल्य रु. २-००; सजिल्द रु. २-५० न. पै.।

सूचना:

ग्रामसहायक भर्ती

खादी के 'नये मोड़' के अनुसार ग्राम-इकाई के आधार पर कृषि, पशुपालन-शिक्षण, निर्माण … सभी काम साथ-साथ चलाने हैं। इसके प्रशिक्षित कार्यकर्ताओं की बड़ी … है, जो 'एग्रो-इंडस्ट्रियल कम्यूनिटी' की कल्पना साकार कर … अम्बर का प्रशिक्षण (नौ माह का) प्राप्त युवकों को एक साल का यह … ग्राम में देकर 'ग्राम-सहायक' के नियुक्ति ग्राम-इकाई के कार्य के लि… इस 'कोर्स' में भर्ती उन्हींको हो… जो ९ माह के अम्बर-प्रशिक्षण के … रिक्त एक साल का कार्य के … हों। खादी-कार्यकर्ता प्रशिक्षण … साल) प्राप्त किये युवक भी … भर्ती हो सकते हैं। … कर्ता प्रशिक्षण (एक साल) प्राप्त व्यक्ति एक साल के कार्य के … बिना भर्ती हो सकते हैं। यही छूट बुनियादी का प्रमाण-पत्र प्राप्त व्यक्तियों को है। उत्तर बुनियादी प्रमाण-पत्र प्राप्त किये व्यक्तियों के दो साल के कार्य का अनुभव … सकते हैं। तीन साल का प्रत्यक्ष खादी-… का अनुभव रखने वाले व्यक्तियों भी भर्ती हो सकेगी।

प्रशिक्षण-काल में ४० रु० मासि… छात्रवृत्ति दी जायगी। सत्र १ … '६१ से चलेगा। भर्ती के लिए आवेदन… ३१ जनवरी, '६१ तक आ जाने चाहिए…

श्रमभारती, खादीग्राम —पारसनाथ…
जिला मुंगेर (बिहार) प्राचा…

समाचार

जिला सीधी:

विन्ध्यप्रदेश भूदान-यज्ञ बोर्ड … नवम्बर की रिपोर्ट के अनुसार रीवाँ … विनोबाजी के आने के कारण … समय उसीमें बीता। भूमिहीनों को बाँ… गयी जमीन के प्रमाण-पत्र दिये … तथा उनकी सूची बनायी गयी। पदयात्रा में ५७० बीघा भूदान में प्राप्त हुआ। ३६० रु. की साहित्य-बिक्री हुई तथा ५०… रु. की थैली विनोबाजी को भेंट में … गयी। रीवाँ शहर में विनोबाजी … ४०० रु की थैली मिली तथा ८५० रु का साहित्य बिका।

जिला बुलढाणा:

शांति-सेना कार्य को संगठित करने … लिए एक जिला शांति-सेना समिति बनाई गयी। फरवरी, '६१ के अन्त में या मार्च के प्रारंभ में आदर्श खादीग्राम-सम्मेलन तथा जिला … करने का तय किया गया।

श्रीकृष्णदत्त भट्ट, अ० भा० सर्व सेवा संघ द्वारा भार्गव भूषण प्रेस, वाराणसी में मुद्रित और प्रकाशित। पता: राजघाट, वाराणसी-१, फोन नं० ४३९१
वार्षिक मूल्य ६) पिछले अंक की छपी प्रतियाँ ११,९२६ : इस अंक की छपी प्रतियाँ ११,९५० एक प्रति: १३ नये पैसे

संपादक : सिद्धराज ढड्ढा

वाराणसी : शुक्रवार | १३ जनवरी '६१ | वर्ष ७ : अंक १५

सर्वोदय के लिये दुनिया उत्सुक है !

काशी की विशाल सार्वजनिक सभा में श्री विनोबा का निवेदन

विज्ञान और आत्मज्ञान की रसधारा बहानी होगी !

सर्वोदय-विचार इतना व्यापक है कि वह शहरों को, देहातों को ; सबको लागू होता है। इसीलिए दुनिया भर के लोग हमारे यहाँ आते हैं। हमारे साथ यात्रा में रहते हैं और अपने देश में वापिस जाकर इस आन्दोलन पर लेख और ग्रंथ लिख कर प्रचार भी करते हैं। दुनिया समझ गयी है कि पुराने सियासत के तरीके चलेंगे, तो कोई भी मसला हल होने वाला नहीं है। बारह साल हुए, कोई मसला हल नहीं हुआ है, बल्कि नये-नये मसले पैदा हो रहे हैं और पुराने कायम हैं। जब तक सियासी तरीके चलेंगे, पुराने मसले कायम रहेंगे। इसलिए दुनिया उत्सुकता से देख रही है कि कोई अलग राह मिल जाय, तो अच्छा है। इस तरह दुनिया को मसले हल करने की तलाश है। बहुमत और अल्पमत के झगड़े चल रहे हैं। पुराने झगड़ों का निस्तार नहीं हुआ है। इन सबका कोई जोरदार हल निकलना चाहिए, जिससे लोगों को राहत मिले।

[illegible]

[illegible] कि बुद्धि आधुनिक जमाने की होनी चाहिए और पुराने संस्कारों से जो हृदय बना है, उसका आदर होना चाहिए। [illegible]ने हृदय पुरानी संस्कृति के अनुभवों के साथ जुड़ा हो और बुद्धि अद्यतन हो। सायंस के जमाने में दिमाग तो इसी [ज]माने का काम करने वाला होना चाहिए, लेकिन दिल पुरानी संस्कृति से जुड़ा हो, जो वर्षों का अनुभवी है। अब एक [ब]ाजू ऐसे लोग हैं, जिनका दिल पुराना है तो दिमाग भी पुराने जमाने में सैर करता है। इस जमाने में सैर नहीं [क]रता है। दूसरी बाजू दिल भी पुराने जमाने से कटा है और दिमाग भी कटा है। पुरानी सभ्यता से सटा हुआ दिल [हो] और आधुनिक जमाने से सटी हुई बुद्धि हो, इस तरह दुहरा योग होना चाहिए। इसीको मैंने नाम दिया है—[वि]ज्ञान और आत्म-ज्ञान का मेल, बल्कि यही आज के जमाने का मुख्य विचार है।

विश्वास

●

एक जमाना था, जब अग्नि की खोज हुई। तब अग्नि का उपयोग चूल्हा सुल[गा]ने में और घर जलाने में भी हो सकता है, यह ध्यान में आया। याने अग्नि एक [ऐ]सी ताकत है कि चाहे जिस काम में आप उसका उपयोग कर सकते हैं—नीति [के] काम में या नीति-विरोधी काम में भी। उसी तरह आज 'एटम' की मदद हम चाहे जिस काम में ले सकते हैं। कुछ बनाना है या बिगाड़ना है—चाहे जिसमें उसकी मदद मिल सकती है। मानव-जीवन समृद्ध बनाने में उसका उपयोग हम करें, लेकिन उसके साथ-साथ मूल्य भी पुराने जमाने के अनुभव से बने [हु]ए हम लें। अनुभव के साथ जो दिल रहेगा, वह विज्ञान की शक्ति का विकास करने के साथ जुड़ जाय। इसके अलावा सियासत में संशय के आधार पर सारा काम चलता है। संशय को ही कुशलता माना जाता है। उसके बदले विश्वास की शक्ति का विकास होना चाहिए। सामनेवाले पर विश्वास कर के काम करना चाहिए। [त]भी से काम बनेगा। आज एक-दूसरे पर अविश्वास होता है। 'यूनो' में आमने-सामने बैठते हैं, लेकिन परस्पर विश्वास नहीं, इसलिए वहाँ 'कोल्ड वार' (शीत-युद्ध) चलता है।

इस वक्त भारत ने एक सादा सा प्रस्ताव 'यूनो' में रखा। 'यूनो' में वह पसंद नहीं आया, तो वैसा जाहिर किया, लेकिन जो ढंग उसके लिए अख्तियार किया गया, वह बेहूदा था, वह शोभादायक नहीं था। वह कोई सीधा तरीका नहीं था। दूसरे तरीके से भी वे जाहिर कर सकते थे। इसलिए मेरा खयाल है कि इस वक्त पण्डितजी कुछ 'डिसइल्यूजन' होकर, भ्रम-निरास होकर आये हैं।

क्यों ?

●

ऐसा क्यों होता है ? इसलिए कि आमने-सामने बैठते तो हैं, लेकिन एक-दूसरे पर अविश्वास करते हैं। पुराने जमाने में संशय पर ही राजनीति चलती थी। अगरचे कृष्ण ने "संशयात्मा विनश्यति" कहा है, इस पर भी आज जगह-जगह राजनीति में संशय दीखता है। अपने इस उत्तर प्रदेश में भी है, और प्रदेशों में भी है, दुनिया में भी है। गांधीजी आये और राजनीति को 'स्पिरिच्युअलाइज' करने की कोशिश उन्होंने की। लेकिन उनके इस देश में भी संशय से राजनीति चलती है। पार्टियों में एक-दूसरी पार्टी के लिए तो संशय होता ही है, लेकिन पार्टी के अन्दर-अन्दर भी संशय चलता है। संशय को ही एक शक्ति मानते हैं। वास्तव में इसके आगे विश्वास पर ही सारी दुनिया चलने वाली है और उसका प्रयोग राजनीति में करना होगा। विश्वास के सिवाय दूसरा कोई मार्ग नहीं है, इसलिए हमने तो एक श्लोक ही बनाया है—

"वेदान्तो विज्ञानं विश्वासश्चेति
शक्तयस्तिस्रः ।
यासां स्थैर्ये नित्यं शान्ति-
समृद्धी भविष्यतो जगति ॥"

वेदान्त, विज्ञान और विश्वास—ये तीन शक्तियाँ हैं। ये तीन शक्तियाँ जहाँ स्थिर होंगी, वहाँ दुनिया में शान्ति और समृद्धि रहेगी। वेदान्त याने सब मानी हुई कल्पनाओं का, रूढ़ियों का अन्त। वेदान्त याने वेद का अन्त, पुराण का अन्त। मजहब के नामपर, पंथ के नाम पर जितने विचार चलते हों, उन सबका खात्मा।

दूसरी शक्ति है विज्ञान, याने साइंस और तीसरी है विश्वास। इन्हीं से दुनिया को शांति और समृद्धि मिलेगी। आज दुनिया यों ही दो चीजें चाहती है। इन तीन शक्तियों का आधार लेकर सर्वोदय-*विचार दुनिया में काम करना चाहता है।*

प्रक्रिया

●

हमने कहा है कि सर्वोदय करुणामूलक साम्य लाना चाहता है और मत्सरमूलक साम्य है साम्यवाद। मत्सरमूलक साम्य की प्रक्रिया ऊपर वाले को नीचे खींचने की और एक 'लेवल' में लाने की है। इस प्रक्रिया में हर कोई ऊपर देखता है और नीचे खींचने की कोशिश करता है। लख-पति भी अपने लाख रुपयों में संतुष्ट नहीं रहता है, करोड़पति की तरफ देखेगा और उसे नीचे खींचने की कोशिश करेगा। सहस्रपति लखपति की तरफ देखेगा और उसे नीचे खींचने की कोशिश करेगा। *शतपति सहस्रपति की तरफ देखेगा,* दश-पति शतपति की तरफ देखेगा—यह प्रक्रिया मत्सरमूलक साम्य में होती है। करुणामूलक साम्य में यह प्रक्रिया नहीं होती है, उसमें तो जैसे मैं कहता हूँ, "पानी से मति ले, *पानी से बोध ले।"* दो प्रकार की मिसालें मैं देता हूँ। मैंने पानी को गुरु माना है। गौरीशंकर पर जो पानी गिरता है, वह नीचान की तरफ जाता है। जहाँ मैं बैठा हूँ, वहाँ पानी डाला जायगा, तो वह भी अपनी नीचान की तरफ दौड़ेगा। समुद्र की सतह से दस फीट ऊपरवाला पानी पाँच फीट पर जायगा। पाँच फीटवाला पानी दो फीट पर जायगा। दो फीटवाला पानी छः इंच पर जायगा। ऐसा सर्वोदय में होगा। हर कोई दुखी भी, सिर्फ सुखी नहीं, यह सोचेगा कि मुझसे भी कोई दुखी है, उसे मदद करने के लिए हमें जाना चाहिए। *जैसे कन्या के लिए वर को ढूंढते* हैं और वर-प्राप्ति होने पर प्रसन्नता होती है, वैसे ही अपने से दुखी की तलाश में ढूंढना चाहिए। खुद तो दुखी है, दो रोटी की भूख है, लेकिन थाली में एक ही रोटी है, तो खुद थोड़ा भूखा रहेगा, अपना पेट पूरा नहीं भरेगा, लेकिन उस रोटी का टुकड़ा निकाल कर दूसरे को देगा, जिसकी *थाली में एक भी रोटी नहीं है।*

करुणा

●

सर्वोदय में जो जहाँ है, वहाँ से करुणा का स्रोत बहायेगा। जैसे, गंगा-यमुना-धारा बहती है, वैसे ही अखंड संपत्ति की धारा बहती रहे, करुणा की धारा बहती रहे। यह एक महान् मिसाल है कि चाहे अपने को खाना कम पड़ रहा हो, तो भी आपको समझना चाहिए कि उससे भी नीचे कई लोग हैं, जिनको बिल्कुल खाना नहीं मिल रहा है। इस तरह करुणा से प्रेरित होकर नीचे की तरफ जायेंगे और अपने से दुखी को मदद करेंगे तो जो हवा पैदा होगी, उससे 'लैंड स्लाइड' होगा—ऊपर का हिस्सा ढह जायगा। अगर नीचे के स्तर पर करुणा बहनी आयगी तो ऊपरवालों को ऐसे ही नीचे आना पड़ेगा। इसी तरीके से मुझे इस भूदान में जमीन मिली है। मैंने लोगों से कहा कि जो दुखी को देता है, खुद दुखी होता है, तिसपर भी करुणा-प्रेरित होकर मदद करता है तो इसमें शक नहीं है कि ऊपरवाले लोग भी देना शुरू करेंगे। भारतीय हृदय पर हमारी श्रद्धा है। यह करुणामूलक साम्य लाने की प्रक्रिया है।

मत्सर

●

साम्यवाद की प्रक्रिया मत्सरमूलक है। माँ बच्चे को सुलाती है। धीरे-धीरे थपका रही है। वह सोता नहीं है, तो गुस्से से माँ बच्चे को तमाचा मारती है! तमाचा *मारने से लड़का कतई सोने वाला नहीं है।* तो साम्यवाद याने तमाचा मारना और साम्ययोग याने धीरे-धीरे थपका कर बच्चे को सुलाना। माँ बच्चे को तमाचा मारती है, तो बच्चा चिल्लाता है। उसी तरह दुनिया आज चिल्ला रही है। और आज ख्रुश्चेव काशी के ब्राह्मण के जैसा 'ॐ शांतिः शांतिः' कह रहा है।

अब उनके ध्यान में भी यह बात आ रही है। जब शुरू में साम्यवाद निकला था, तब वे सोचते थे कि जब तक सारी दुनिया भर में साम्यवाद नहीं फैलेगा, तब तक हमारे देश में साम्यवाद सुरक्षित नहीं रहेगा। इसलिए दूसरे देश पर आक्रमण करना चाहिए और उसको साम्यवादी बनाना चाहिए, ऐसा उनका शास्त्र कहता था। इसलिए हिंसा और अहिंसा के पचड़े में क्या पड़ते हो। इस तरह पथ्य हम नहीं मानते हैं। ऑपरेशन करने की जरूरत *पड़ेगी, तो करेंगे, ऐसी ऐंठ में वे थे।*

लेकिन अब ध्यान में यह बात आयी है कि जो हिंसाशक्ति मूढ़ शक्ति है, वह सज्जनों के ही हाथ में रहेगी, ऐसा भरोसा नहीं है। *जितनी शक्ति है, उतनी सब कम्यु-निस्टों के हाथ में रहेगी, पूंजीवादियों* के हाथ में नहीं रह सकती है, ऐसा नहीं है। वह जितनी कम्युनिस्टों के हाथ में रहती है, उतनी ही पूंजी-वादियों के भी हाथ में रहती है। वह पतिव्रता नहीं है। मैं अहिंसा का भक्त हूँ, लेकिन मुझसे भी अगर कोई *पूछेगा, तो मैं कहूँगा कि हिंसा-शक्ति* कल अगर कसम खाती है और कहती है कि मैं दुर्जनों के हाथ में नहीं जाऊँगी, सज्जनों के हाथ में ही रहूँगी, तो मैं उसका स्वीकार करूंगा। [अपूर्ण]

[वाराणसी, १५-१२-६०]

नागरी लिपि द्वारा तेलुगु सीखिये : ७

[अगला सर्वोदय सम्मेलन अप्रैल में आंध्र प्रदेश में विजयवाड़ा के स्थान पर होगा। जिस प्रदेश में सम्मेलन होने जा रहा है, उस प्रदेश की भाषा तेलुगु है। इसीलिए यह पाठमाला चल रही है। इसकी जानकारी चुके हैं। इस पाठमाला के माध्यम से जो पाठक तेलुगु भाषा सीख रहे हैं, *प्रगति का विवरण हमें भेजेंगे, तो आगे के पाठ तैयार करने* में ... क्रम हमने अपनाया वह क्रम आसान है या नहीं, यह भी हमारे पाठक लिखें। इस पाठ में हम कुछ क्रियाएँ तथा कुछ संज्ञाएँ दे रहे हैं। पहले में भी इसी तरह से कुछ क्रियाएँ, संज्ञाएँ और अव्यय दिये गये थे। —सं०]

[क्रियाएँ]

हिन्दी	तेलुगु
सीखना	नेर्चुकोनुट
सिखाना	नेर्पुट
करना	चेयुट
तैयार करना	तयारु चेयुट
लेना	तीसिकोनुट
देना	इच्चुट
लाना	तेच्चुट
परोसना	वड्डिंचुट
खाना	तिनुट
पीना	त्रागुट
देखना	चूचुट
धोना	कडुगुट
पोंछना	तुडुचुट
नहाना	स्नानमु चेयुट
तैरना	ईदुट
डूबना	मुनुगुट
साफ करना	शुभ्रमु चेयुट
उतरना	दिगुट
चढ़ना	येक्कुट
चलना	नडचुट
सैर करना	षिकारु वेल्लुट
दौड़ना	परुगेत्तुट
कहना	चेप्पुट
पढ़ना	चदुवुट
सोना	निद्रपोवुट
जागना	मेल्कोनुट
खोलना	तेरचुट
बंद करना	मूयुट
गाना	पाडुट
ताला लगाना	तालमु वेयुट
प्रार्थना करना	प्रार्थन चेयुट
खेलना	आडुट

[संज्ञाएँ]

हिन्दी	तेलुगु
कपड़ा	वस्त्रमु,
धोती	
साड़ी	
कुर्ता	
तौलिया	
दुपट्टा	
ओढ़नी	
साफा	
टोपी	
बिस्तर	
छड़ी	चेति
किसान	रैतु, व्यवसा
पटेल	मु
मुखिया	पेद्द, मु
नौकर	नौ
गाँव, खेड़ा	ग्राममु, पल्ले,
शहर	पट्टणमु, न
जिला	जि
प्रदेश, प्रांत	प्रदेशमु, प्रा
देश	दे
नक्शा	देश पटमु, म
तालाब	
कुँआ	बावि, नु
घर	इ
पाठशाला	बडि, पाठश
दवाखाना	आस्पत्रि, वैद्यशा
अध्यापक	उपाध्यायुडु, पंतुलु
नाम	पे
पता	चिरुना
कमरा	ग

विनोबाजी की पदयात्रा का कार्यक्रम

विनोबाजी ने १ जनवरी को गया जिले में प्रवेश किया था। १७ जनवरी तक कार्यक्रम ३० दिसम्बर के अंक में दे चुके हैं। आगे १८ जनवरी से २५ जनवरी मुंगेर जिले में पदयात्रा करेंगे। २६ जनवरी से ३० जनवरी तक भागलपुर जिले पद-यात्रा करके ३१ जनवरी को पूर्णियाँ जिले में प्रवेश करेंगे।

जनवरी माह की तारीख और पड़ाव-क्रम यहाँ दे रहे हैं।

१८ अलीगंज	२२ लखमीपुर	२६ सुल्तानगंज	३० मौगाछिया
१९ चकोर	२३ बनहरा	२७ गौरीपुर-मकन्दपुर	३१ भौवा (जि० पूर्णियाँ)
२० जमुई	२४ तारापुर	२८ भागलपुर	१ फरवरी दन्दिया
२१ खादीग्राम	२५ बेराई	२९ सुलतानपुर	२ फरवरी हुसैनाबाद

विनोबाजी का पता

ता० १७ जनवरी तक : मार्फत—जिला सर्वोदय-मंडल, पो० बुनियादगंज (गया)
„ १८ से २५ तक : „ जिला सर्वोदय-मंडल, तिलक मैदान, मुंगेर
„ २६ से ३० तक : „ जिला सर्वोदय-मंडल, रेशम घर, भागलपुर

सत्यं जगद् स्फूर्तिः जीवनं सत्यशोधनम्

भूदानयज्ञ

लोकनागरी लिपि*

जानेवाले बड़ों की जगह आनेवाले जवान लें

कबीर और तुलसीदास की भूमि को छोड़ कर हम बुद्ध और महावीर के प्रदेश में आ रहे हैं। ये ही हमारे मार्गदर्शक हैं। सब प्रान्तों में ऐसे ही मार्गदर्शक हमें मिलते गये।

हमें याद है कि आठ साल पहले किसी तरह से हम उत्तर प्रदेश से बिहार आये थे। लेकिन उधर से बाबा राघवदासजी बिदाई के लिये आये थे और गौरी बाबू लक्ष्मी बाबू स्वागत के लिये। आज हमारे वे दोनों साथी नहीं हैं। जाने वाले जाते हैं, नदी बहती रहती है। लेकिन उनकी जगह लेने वाले आगे आते हों, तो प्रवाह अखंड टिकेगा।

हमारे जवान साथियों से हमारी प्रार्थना है कि भगवान का नाम लेकर आप हिम्मत कीजिये और जो गये, उनका काम उठाने की, बल्कि उनसे भी अधिक काम करने की प्रतिज्ञा करें, तो भगवान का आशीर्वाद हासिल होगा। हम देखते हैं कि हर प्रान्त में हमारा यानी सर्वोदय का नेता गया है। इसलिए बहुत जरूरी है कि जो प्रेरणा भगवान से शुरू हुई है, वह ठीक ढंग से हम जारी रखें। जवानों के पास यह प्रेरणा पहुँचा देने का और ठीक समय पर अपने पद से हट जाने का काम बड़े लोग करें। आशा है, बिहार के जवान फिर से एक बार जोर करेंगे।

२४-१२-'६० —विनोबा

* लिपि-संकेत : ि = ी ; ी = ी ख=ख, संयुक्ताक्षर हलंत चिह्न से।

टिप्पणियाँ

एक चुनौती !

केरल के मालमंत्री, जो उस प्रांत के मद्य-निषेध के चार्ज में भी हैं, उन्होंने अभी हाल ही में भुवनेश्वर (उड़ीसा) में अपनी पार्टी यानी प्रजा-समाजवादी पार्टी की राष्ट्रीय सभा के सामने मद्य-निषेध के बारे में बोलते हुए कहा कि मद्य निषेध के कारण "लोगों के स्वास्थ्य का नाश हो रहा है और सामाजिक जीवन दूषित होता जा रहा है।" सामाजिक जीवन दूषित होने से शायद मंत्री महोदय का मतलब यह था—जो कि मद्य-निषेध के विरोधियों की प्रिय दलील है—कि मद्य-निषेध के कानूनों के कारण गैर-कानूनी ढंग से शराब बनाने का काम चल पड़ा है और इस प्रकार भ्रष्टाचार बढ़ गया है। यह तो ठीक, लेकिन मंत्री महोदय ने शराब-बंदी के कारण लोगों के स्वास्थ्य बिगड़ने की जो बात कही है, वह सचमुच दिलचस्प है। शराब न पीने से लोगों का स्वास्थ्य बिगड़ता है, शायद इसीलिए बहुत-सी जगहों पर शराब-बंदी का कानून होते हुए और भारत-सरकार की सामान्य नीति मद्यपान के खिलाफ होते हुए भी हर शाम को थोड़ी-बहुत "पी लेना" वाजिब समझा जाता है और ज्यादातर इस प्रकार कानून का उल्लंघन करने वाले ही गैरकानूनी ढंग से शराब बनाये जाने और बेचे जाने की बात को लेकर मद्य-निषेध के कानून की खिल्ली भी उड़ाते रहते हैं। यह भी एक मनोरंजक बात है कि मंत्रीगण और सरकारी अधिकारी नशा-बंदी के कानून से जो भ्रष्टाचार हो रहा है—जैसा कि हर रोकथाम के कानून के कारण कुछ न कुछ होता है—उसके बारे में तो इतने चिंतित हैं और बार-बार उसका उल्लेख करते हैं, लेकिन आम तौर पर हर सरकारी विभाग में जो भ्रष्टाचार पिछले वर्षों में बढ़ा है, उसके बारे में वे न केवल मौन रहते हैं, बल्कि आये दिन सभाओं में यह भी कहते रहते हैं कि भ्रष्टाचार बढ़ने की बात गलत है। कुछ समय पहले भारत-सरकार के वित्तमंत्री जैसे जिम्मेदार व्यक्ति ने भी इस बात का प्रतिवाद किया था कि सरकारी कामों में पहले से भ्रष्टाचार बढ़ा है।

मालूम होता है कि मंत्रीगण ज्यों ज्यों शासन का अनुभव प्राप्त कर रहे हैं, त्यों त्यों अपनी पुरानी बातों की गलती उन्हें महसूस होती जा रही है। तभी तो एक के बाद एक वे उन सिद्धान्तों व आदर्शों को छोड़ते जा रहे हैं या छोड़ने के लिए प्रचार कर रहे हैं जिन आदर्शों और सिद्धान्तों को भारतीय विधान में स्वीकार किया गया है और जिस विधान के बनाने में उनमें से बहुत-सों का हाथ रहा है। भारतीय विधान में यह स्पष्ट आदेश दिया गया था कि राज-भाषा के तौर पर जल्दी से जल्दी अंग्रेजी के स्थान पर हिन्दी को जारी किया जाय। सरकार ने अपनी ओर से १९६५ तक की अवधि इस काम के लिए मांगी थी, पर आज अंग्रेजी का स्थान फिर से मजबूत करने की कोशिशें जारी हैं और प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष रूप में हमारे मंत्रीगण और अखबार उसका प्रचार करते रहते हैं। यह एक उदाहरण है।

दूसरा उदाहरण शराब बंदी का है। विधान में यह स्पष्ट आदेश है कि केंद्रीय और प्रान्तीय सरकारें जल्दी-से-जल्दी मुल्क में शराब बंदी करने की कोशिश करें और नशाखोरी से होने वाले नुकसान से लोगों को और मुल्क को बचायें। जब तक कि विधान में यह आदेश कायम है, तब तक लोगों को अपने चुने हुए नुमाइन्दों से यह आशा रखने का हक है कि वे न केवल उस आदेश का आदर और समर्थन करेंगे बल्कि उसे पूरा करने के लिए सक्रिय कदम भी उठाते रहेंगे। इसके खिलाफ जब मंत्रीगण ही, जिन्हें विधान और कानून के अनुसार शासन चलाने के लिए जनता ने नियुक्त किया है, विधान के आदेश के खिलाफ प्रचार करते हैं, यह सोचने का सवाल है कि उनका यह काम किस हद तक वैधानिक है और विधान की प्रतिष्ठा के अनुकूल है। इसमें कोई शक नहीं कि हमारे मुल्क में हर व्यक्ति को अपनी राय रखने का और उसके प्रचार करने का भी अधिकार है, लेकिन अगर मंत्रीगण विधान के खिलाफ जाकर इस आजादी का उपभोग करना चाहते हैं, तो हमारी नम्र राय में पहले उन्हें अपने पद से अलग हो जाना चाहिए और फिर एक सामान्य नागरिक की हैसियत से अपनी बात का प्रचार करना चाहिए। ऐसा करने में किसी को एतराज नहीं हो सकता।

केरल के इन मंत्री महोदय श्री चन्द्रशेखरन् ने प्रजा-समाजवादी पार्टी की कौंसिल में यह भी सुझाव दिया बतलाया कि नशाबंदी के कानूनों को रद्द करने के प्रश्न को उनकी पार्टी अपनी नीति का एक आवश्यक अंग बनाये और आगे आने वाले आम चुनावों के लिए जो घोषणा-पत्र पार्टी की ओर से जारी किया जाय, उसमें अपनी यह नीति साफ जाहिर करे कि वह पार्टी नशाबंदी के खिलाफ है। हम इस सुझाव का स्वागत करते हैं और चाहते हैं कि प्रजा-समाजवादी पार्टी, या देश की प्रमुख पार्टियों में से अन्य कोई पार्टी, नशाबंदी को रद्द करने के प्रश्न को आगे आने वाले आम चुनावों में अपनी नीति का एक मुख्य अंग बना कर जनता के सामने आये। क्योंकि ऐसा होगा, तो जनता को इस प्रश्न पर साफ-साफ अपनी राय जाहिर करने का मौका मिलेगा कि वह शराबखोरी के पक्ष में है या शराबबंदी के पक्ष में। हमें आशा है कि अगर ऐसा होता है और कोई भी राजनैतिक दल इस प्रश्न को मत प्राप्त करने का आधार बनाता है तो इस देश के आम लोग और रचनात्मक कार्यकर्ता इस चुनौती को स्वीकार करेंगे, जो कि बार-बार गैर-जिम्मेदार राजनैतिक नेताओं के द्वारा उनके सामने फेंकी जाती है।

'सभ्य' समाज का नमूना !

नई दिल्ली का एक समाचार है कि ता० ३१ दिसंबर की रात को राजधानी के सबसे प्रमुख होटल, "अशोक" में शहर के तीन व्यापारी—सुभाषचन्द्र, राजकुमार और घनश्यामदास तथा भारत सरकार के प्रतिरक्षा विभाग के एक कर्मचारी रघुनाथ—ये चारों 'शरीफ' लोग शराब के नशे में औरतों के साथ बदतमीजी और छेड़छाड़ करने के अभियोग में पकड़े गये। अदालत ने चारों अभियुक्तों को औरतों के साथ छेड़छाड़ करने के अभियोग में दो-दो सौ रुपये जुर्माने की और पचास-पचास रुपये—नशे की हालत में बदतमीजी करने के जुर्म में सजा दी।

केरल के नशा बंदी (?) मंत्री श्री चन्द्रशेखरन् और उनकी तरह सोचने वाले नशा-बन्दी के विरोधी अन्य लोग शराबखोरी को जारी रख कर जिस 'शाह' और सभ्य समाज का निर्माण करना चाहते हैं, उसका यह एक नमूना है !

अनुकरणीय कदम

"भूदान-यज्ञ" के पिछले एक अंक में 'कुमारप्पा-स्मारक निधि' के लिए अपील की गयी थी। इस अपील से प्रेरित होकर मानुभाई अमरचंद विद्यालय, रींगस (राजस्थान), जो महिलाओं के शिक्षण और उत्थान से सम्बन्धित संस्था है, उसके कार्यकर्ता भाई-बहनों ने, छात्राओं ने और अम्बर निर्माण विभाग में काम करने वाले कामगारों, मिस्त्रियों आदि ने सबने मिल कर श्री कुमारप्पाजी की स्मृति में अपना एक-एक दिन का पारिश्रमिक देने का तय किया। करीब पचहत्तर रुपये इस संस्था में काम करने वाले कार्यकर्ताओं और छात्राओं के एक दिन के पारिश्रमिक से इकट्ठे हुए। कुछ और रुपया कार्यकर्ताओं ने अपने सम्पत्ति-दान से मिलाया और इस प्रकार एक सौ एक रुपया कुमारप्पा स्मारक-निधि के लिए उन्होंने भेजा है।

—सिद्धराज

सब मानव हममें हैं : हम सबमें हैं !

[आरम्भ में ध्वज-वंदन हुआ और 'जय स्वदेश, जय संस्कृति' का गीत गाया गया और उसके बाद 'आर० एस० एस०' (राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ) के कार्यकर्ताओं की तरफ से एक भाई ने विनोबाजी का स्वागत करते हुए कहा कि "जिस हिन्दू धर्म की परिपूर्णता ने मानव-धर्म को जन्म दिया, उसी मानव-धर्म के प्रवर्तक विनोबा हम लोगों के बीच आये हैं, यह हमारे लिए बड़े सौभाग्य की बात है। हम उनके 'गीता-प्रवचन' का बड़ी निष्ठा से और आनंद से अध्ययन करते हैं। हम उनसे प्रार्थना करते हैं कि वे हमें गीता पर उपदेश करें।" उस वक्त, ता० १८ दिसम्बर को काशी में विनोबाजी ने जो प्रवचन दिया है, वह अपने ढंग का अनूठा है। –सं०]

आप लोगों ने गीता का नाम लिया। गीता पर मेरा जो प्यार है, और आप पर भी जो प्यार है, उसके कारण मुझे यहाँ आना ही था। मुझे बहुत प्रसन्नता हो रही है कि मैं यहाँ आ सका। आपने यहाँ पर एक बहुत अच्छा भजन सुनाया, उसका भी असर मेरे चित्त पर हुआ है। आप हमारे हैं और हम आपके हैं। सब मानव एक हैं, यही विचार लेकर मैं घूम रहा हूँ।

यहाँ आपने जो झंडा फहराया, वह वैराग्य का झंडा है। मैं उसका आदर करता हूँ। मैं अपना कोई झंडा नहीं रखता। शंकराचार्य ने दम्भ की व्याख्या करते हुए कहा था, "दम्भो धर्मध्वजित्वम्"–दम्भ याने धर्म की ध्वजा फहराना। बहुत दफा झंडों से दम्भ और द्वेष फैलता है, लेकिन यह जरूरी नहीं है कि उनसे द्वेष फैले। इसीलिए मैं कहता हूँ कि सब झंडों की जय! जब मैं पहले-पहल उत्तर-प्रदेश में भूदान के काम के लिए आया था, तब एक दफा कांग्रेसवाले मेरे स्वागत में अपना झंडा लाये, फिर दूसरी पार्टीवाले लाये और फिर तीसरी पार्टीवाले लाये! तब मैंने कहा था कि सब झंडों की जय! अब मैं 'जय-जगत्' कहता हूँ, तो उसके पेट में सबकी जय, विजय आती है, किसी की पराजय नहीं आती है।

'गीता-प्रवचन' : संस्कृत में भी

गीता के विषय में मैंने जो कुछ लिखा है, वह आपके पास पहुँच गया है और मुझे कई लोगों ने सुनाया कि आपकी इस जमात में सारे भारत में गीता की और 'गीता-प्रवचन' की इज्जत होती है और सब बहुत प्यार से उसे पढ़ते हैं। आपने हमें अभी कुछ संस्कृत गीत भी सुनाया। मैंने संस्कृत विश्वविद्यालय के व्याख्यान में संस्कृत के विषय में मेरा जो आदर था, वह प्रकट किया है। आपको यह जान कर खुशी होगी कि 'गीता-प्रवचन' का अनुवाद संस्कृत में करवाया गया है। वैसे मैंने तो करवाया नहीं, करने वाले सहज मिल गये। पूर्वाश्रम के महामहोपाध्याय श्रीधर शास्त्री पाठक, जो ब्रह्मावर्त में रहते हैं, उन्होंने उसका तर्जुमा किया है। उसको कुछ संशोधित भी किया गया और अब वह छप रहा है। सारे भारत में एकता लाने के लिए वह एक साधन बनेगा और हर भाषा का शख्स उसे पढ़ेगा, उसके जरिये संस्कृत भाषा का माधुर्य चखेगा और संस्कृत के जरिये भारत के हृदय की जो एकता हो सकती है, वह होगी।

भारत की एकता : नागरी लिपि

आपको यह जानकर खुशी होगी कि 'गीता प्रवचन' के तर्जुमे भारत की सब भाषाओं में उन-उन लिपियों में छपे हैं और उसके अलावा वे सारे तर्जुमे नागरी लिपि में भी छपवाना शुरू किया है। तेलुगु, कन्नड और गुजराती तर्जुमा नागरी में छप चुका है। हम दूसरी लिपियों का निषेध नहीं करते, लेकिन सारे भारत में नागरी चलती है, तो बहुत एकता होगी और भाषाएँ सीखने के लिए बहुत सहूलियत होगी। इस तरह से भारत की एकता के लिए अपने ढंग से जो हम कर सकते हैं, वह कर रहे हैं। हमारा बहुत बड़ा कारखाना भूदान का चलता है। उसके जरिये कारुण्य का आविर्भाव होता है। वह हमारे कारखाने का बड़ा माल है। उसके साथ-साथ जो कुछ गौण चीजें, 'बायप्राडक्ट' बनती हैं, उनमें बहुत बड़ी चीज है—सारे भारत में गीता का प्रचार। उसके लिए 'गीता-प्रवचन' के द्वारा हम जितना उत्तेजन दे सकते थे, दे रहे हैं।

दूसरों के सुख-दुख को अपना ही अनुभव करो

गीता किसी मार्ग विशेष का आग्रह नहीं करती है। भक्ति से ही मुक्ति मिलेगी या ज्ञान से ही या कर्म से ही मुक्ति मिलेगी, ऐसी एकांगी बातें वह नहीं करती है, बल्कि साम्ययोग की बात करती है। वह कहती है :

योगियों में भी वह परमयोगी है, जो अपने सुख-दुःख के जैसे ही दूसरों के सुख-दुःख का अनुभव करता है और दूसरों के सुख-दुःख की उतनी ही चिन्ता करता है, जितनी अपने सुख दुःख की करता है।

यह बहुत बड़ी बात गीता ने बतायी है कि दूसरों के सुख की उतनी ही चिंता करो, जितनी अपने सुख की करते हो।

ईसा मसीह, जो कि ब्रह्मचर्य की आदर्श मूर्ति थे, कारुण्य-मूर्ति, प्रेम-मूर्ति थे, उन्होंने कहा कि 'लव दाय नेबर एज़ दायसेल्फ।'–पड़ोसी पर उतना ही प्रेम करो, जितना अपने पर करते हो। उन्होंने सिर्फ पड़ोसी पर प्यार करो, इतना ही नहीं कहा, बल्कि जितना और जैसा अपने पर करते हो, उतना ही और वैसा ही पड़ोसी पर करो, यह जो बात कही, वह बहुत बड़ी बात है।

हम सोचते हैं कि दिन भर में हम अपने लिए क्या-क्या करते हैं! खाना खाते हैं, सोते हैं आदि। अपने लिए जितना प्यार करना है, उतना ही दूसरों पर करना है–याने दूसरों की भी वैसी ही चिंता करनी है। यह बहुत बड़ी बात गीता ने सिखायी है, जो उसकी आध्यात्मिक बुनियाद है, वह भी गीता ने बतायी है। लेकिन उस आध्यात्मिक बुनियाद की चर्चा किये बिना ही ईसा मसीह ने वही बात कही है। आत्मा की एकता का भान किये बिना, अद्वैत माने बिना, परमेश्वर की सत्ता माने बिना, मनुष्य अपने पर जितना प्यार करता है, उतना ही पड़ोसी पर करे, यह असंभव है। इसलिए इसमें आत्मज्ञान, अद्वैत और ईश्वर निष्ठा जरूरी है।

सब हमारे हैं

बुद्ध भगवान ने कहा था :

"नहि वेरेन वेराणि सम्मन्तीध कुदाचन।"

–वैर से वैर का शमन नहीं होता है।

"अक्कोधेन जिने कोधं,
असाधुं साधुना जिने।
जिने कदरियं दानेन
सच्चेनालीकवादिनम्।"

अक्रोध से क्रोध को जीतो, उदारता से कंजूसी को जीतो, सत्य से असत्य को जीतो। इसमें आत्मौपम्य की कितनी बड़ी मिसाल और आदर्श हमारे सामने रखा है! महात्मा बुद्ध, ईसा मसीह, गीता–सब हमारे ही हैं, ऐसा हमें महसूस होना चाहिए।

अभी आपने अपने गीत में विवेकानंद, रामदास, दयानंद, गुरु गोविंद आदि के नाम लिये। जैसे हम तर्पण करने बैठते हैं, तो 'विश्वामित्रं तर्पयामि, वसिष्ठं तर्पयामि' आदि दो-चार नाम लेकर फिर 'सर्वान् ऋषीन् तर्पयामि', ऐसा कह देते हैं। हम जिन ऋषियों का नाम लेते हैं उतने ही ऋषियों की इज्जत करते हैं, ऐसी बात नहीं है। कुछ का नाम हम लेते हैं, लेकिन इज्जत हम सबकी करते हैं।

कुरान शरीफ ने एक बहुत बड़ी बात कही है कि अल्लाह ने हर जमात के लिए पैगम्बर भेजे हैं। यह इस्लाम का एक उसूल है। उसमें यह कहा है कि कुछ पैगंबर ऐसे हैं जिनके नाम हम जानते हैं और कुछ ऐसे हैं कि जिनके नाम हम नहीं जानते हैं। लेकिन जिनके नाम हम नहीं जानते

गीता का महान् आदर्श

आप 'गीता-प्रवचन' का अध्ययन करते हैं। मेरा दिल आपके साथ जुड़ा हुआ है। आपका दिल सारे विश्व के साथ जुड़ा रहे। हम सारे विश्व की सेवा करेंगे, आक्रमण किसी पर नहीं करेंगे। इसमें हम सूर्यनारायण से बोध लेंगे। वह हमारे दरवाजे पर हाजिर रहते हैं, वहाँ खड़े रहते हैं। उनके किरण याने हाथ उनसे चिपके रहते हैं। वे सेवा के लिए हाजिर रहते हैं। आपने दरवाजा थोड़ा-सा खोला तो थोड़े अंदर घुसेंगे। आधा खोला, तो आधे आयेंगे और पूरा खोला तो पूरे आयेंगे, लेकिन किसी पर आक्रमण नहीं करेंगे, बल्कि सेवा के लिए तैयार रहेंगे। गीता ने कहा है :

"इमं विवस्वते योगं प्रोक्तवानहमव्ययम्।
विवस्वान्मनवे प्राह मनुरिक्ष्वाकवेऽब्रवीत्॥"

[illegible] गीता ने हमारे सामने उपस्थित किया है। उनको [illegible] प्रकार का भेद न करें [illegible] में वर्णन आया है कि हरएक को लगता है कि सूर्य नारायण मेरे हैं। वह मेरे घर के सामने उगा, मेरी कोठी के सामने उगा है। 'मां प्रति मा प्रति इति सर्वेण समम्–तेन साम।" वे सबके लिए समान हैं। यह उनकी महिमा है। वही आदर्श गीता ने हमारे लिए रखा है।

, उनमें और जिनके बन्दे हैं, उनमें हम कोई फर्क नहीं करते हैं। हम रसूल में कोई फर्क नहीं करते हैं। "ला नुफर्रिकु बैन अहदिम् मिर् रूसुलिह।"

आचरण और उसूल !

यह इस्लाम का बुनियादी उसूल है। लेकिन आचरण में फर्क होता है। इस्लाम का उपदेश तो यह है कि अल्लाह ने सब मुल्कों में पैगम्बर भेजे हैं और उनमें हम कोई फर्क नहीं करते हैं, सबकी समान इज्जत करते हैं, लेकिन यह उसूल कहाँ और आचरण कहाँ ! वैसे ही हमारा भी है। हम इधर बात तो अद्वैत की करेंगे, परमेश्वर में और हममें भी फर्क नहीं करेंगे। जीव और ब्रह्म में अद्वैत, ब्रह्म और जड़ में अद्वैत याने इस 'माईक' में और हममें अद्वैत, माईक में और पेड़ में अद्वैत। पेड़ में और पत्थर में अद्वैत।

आप और मैं एक हूँ, हम सब मानते हैं और उतना मानने से ही हमारा समाधान नहीं होता है, इसलिए हम यहाँ तक कहते हैं कि परमेश्वर और हम एक हैं। इस तरह हम सोचने बैठते हैं, तो परमेश्वर में और हममें माया इस का फासला भी सहन नहीं करते हैं। इस तरह एक बाजू इतना विशाल, भव्य, उदार विचार और दूसरी बाजू छुआछूत, धर्म भेद, जाति भेद, पंथ भेद; इन सब भेदों से हमारे हृदय के टुकड़े-टुकड़े कर दिये हैं। इस तरह हमारे आचरण का अद्वैत के साथ कोई मेल नहीं है।

दुनिया के सब सत्पुरुषों ने हमें एक ही बात अलग-अलग शब्दों में समझायी है। लेकिन हमने वह एकता नहीं समझी। गीता ने कहा है कि सब लोगों को भगवान के पास जाना ही है। "हे पार्थ, मनुष्यों को सब तरफ से मेरे पास आना ही है। अरेबियन नाइट्स में एक कहानी है कि किश्तियाँ समुंदर में आगे बढ़ती ही नहीं थीं, पहाड़ पर टकराती थीं, पता चलता था कि बात क्या है। बाद में मालूम हुआ कि किश्तियों में लोहे के टुकड़े थे और पहाड़ पर लोहचुम्बक था, जो लोहे के टुकड़ों को खींच लेता था। उसी तरह हम सबको परमेश्वर खींच रहा है। हम जानते नहीं हैं कि हमें ईश्वर के पास जाना ही है, लेकिन वह हमें ले जाने वाला ही है। "मम वर्त्मानुवर्तन्ते मनुष्याः पार्थ सर्वशः" कोई मुझसे कहे कि इसका ठीक अरबी तर्जुमा करो, तो मैं कहूँगा: कुरान शरीफ में ठीक यही बात कही है।

मानवता का ग्रहण करो

बाइबल, कुरान, ग्रंथ-साहब, तुलसी-दास, कबीर, बुद्ध, महावीर, गीता; सर्वत्र मुझे एक ही समान विचार दीख रहा है। हे मानवो, तुम सब एक हो और किसी चीज का ग्रहण मत करो, मानवता का ही ग्रहण करो।

ऋग्वेद दुनिया का सबसे प्राचीन ग्रंथ कहलाता है। यह वाद का विषय हो सकता है, लेकिन कम-से-कम भारत का तो वह सबसे प्राचीन ग्रंथ है। उसमें कहा है, "मनुर्भव जनया दैव्यं जनम्।" हे बुद्धिमानो, मानव का ग्रहण करो। इस तरह की आज्ञा वेद के दसवें मंडल में दी गयी है।

वैश्वानर वृत्ति अपनाइये

मानवता से भिन्न और जो लेबल चिपके हुए हैं कि मैं फलाने जातिवाला, फलाने कौम वाला, फलाने देश वाला, ये सारे भेद अब इस विज्ञान के युग में नहीं टिकेंगे। हम अपना छोटा-सा देश रखेंगे, तो इस युग में नहीं टिकेंगे। हमें तुकाराम महाराज के जैसी वृत्ति रखनी चाहिए।

"आमुचा स्वदेश,
भुवनत्रयामध्ये वास।
मायबापाचीं लाडकीं,
कळों आले हे लोकीं।"

हम सब माता-पिता के प्यारे हैं, भगवान के प्यारे हैं। हमारा स्वदेश याने भुवनत्रय है।

शंकराचार्य, जिनका हम बहुत अभिमान रखते हैं, कहते हैं, "स्वदेशो भुवनत्रयम्"-तीनों भुवन हमारा स्वदेश है।

इस तरह 'स्वदेश' की व्याख्या व्यापक और विशाल बनायेंगे, तो आप सब दूर पहुँच सकते हैं। फिर आपके लिए कहीं भी प्रतिबंध नहीं रहेगा। आपकी गति कुंठित नहीं होगी। जिनकी गति कुंठित नहीं होती, वह 'वैकुंठ' में रहेगा। इसलिए आप वैकुंठ में रहेंगे। हम सब पर प्यार करते हैं और सब हम पर प्यार करते हैं, ऐसा होगा। पानी को सब चाहते हैं। गाय प्यासी होने पर पानी के पास पहुँचती है और प्यासा शेर भी पानी के पास पहुँचता है। पानी सबका प्यारा बनता है। वैसे ही आप और हम सारी दुनिया के प्यारे बनेंगे और सारी दुनिया अपने विशाल उदर में समाविष्ट होगी। इस तरह की वैश्वानर वृत्ति रखो। सारे मानव हममें हैं और हम सबमें हैं, ऐसा समझो।

आपने गुरु गोविन्द, दयानन्द आदि नाम लिये, यह ठीक ही है। हम नजदीक के बाप का नाम लेते हैं, लेकिन बाकी के सारे बाप हमारे नहीं हैं, ऐसा नहीं है। हमें महसूस होना चाहिए कि ईसा मसीह ने जो तालीम दी, वह हम ही ने दी।

वह सब हमारा ही पराक्रम है और सब महापुरुषों ने जो पराक्रम किया, हमने ही किया। अंग्रेज, जर्मन, चीनी, जापानी आदि सबने जो जो पराक्रम किये, वह हमने ही किये। दुनिया में जितना अच्छा अंश पड़ा है, वह सब हमारा ही अंश है और दुनिया में जितनी बुराई हुई है, सारी हमारे ही हाथ से हुई है। इस तरह अपनी विशाल व्यापक वृत्ति होगी, तो फिर 'जगत्स्वदेश' होगा और जहाँ हम जायेंगे, वह 'हमारा स्वदेश' ही होगा। फिर 'जय जगत्' होगा।

गीता ने कहा है कि अनेक आश्रय मत ढूँढ़ो, बल्कि मेरी शरण आ जाओ. "मामेकं शरणं व्रज"। बुद्ध भगवान ने तीन शरण बताये हैं: "बुद्धं शरणं गच्छामि, संघं शरणं गच्छामि, धर्मं शरणं गच्छामि।" समाज को अपनी सेवा अर्पण करो याने 'संघं शरणं गच्छामि,' ज्ञानियों के वचन सुनो याने 'बुद्धं शरणं गच्छामि' और उन्होंने जो धर्म सिखाया है—सत्य, अहिंसा आदि धर्म—उसकी शरण में जाओ, इसके मानी है 'धर्मं शरणं गच्छामि।' इस तरह सत्य, अहिंसा आदि धर्म की शरण में जाना, ज्ञानियों के उपदेश को ग्रहण करना और समाज को अपनी सेवा समर्पित करना, यह बातें तीन शरण के रूप में कही गयी हैं।

गीता में कहा कि मुझ अकेले की शरण आ जा, उसमें सब आ जाता है। जैसे समुद्र-स्नान किया तो कुल नदियों के स्नान का पुण्य हासिल होता है, वैसे ही भगवत्-शरण जाने से सबके शरण का पुण्य हासिल होता है, इसलिए भगवत् शरण जाओ।

लेकिन यह कठिन मालूम होता हो, तो फिर "बुद्धौ शरणम् अन्विच्छ"—बुद्धि की शरण में जाओ। मन के ऊपर उठो। मानसिक क्षोभ मत होने दो, अक्षोभ चिन्तन करो। मन के ऊपर उठ कर बुद्धि की शरण में जाओ। यह तो सर्वसामान्य बात हुई। उससे ऊपर उठ कर फिर 'मामेकं शरणं व्रज' वाली बात आती है।

'अपना जो कर्म करना है, वह सब भगवत् उपासना समझ कर करो,' ऐसा संदेश गीता ने दिया है। गीता में किसी भी प्रकार की संकुचितता नहीं है। उसमें न भाषा का उल्लेख है, न पूजा का, न विधियों का। परमेश्वर की उपासना करनी चाहिए। उसके लिए कर्म, ज्ञान, भक्ति, योग आदि सारे बताये हैं और कहा है कि भगवान की शरण में जाओ।

विनोबाजी के आदेश से पठानकोट शहर के बिल्कुल साथ ही खानपुर ग्राम में सर्व सेवा संघ के नाम से जो जमीन ली गयी थी, उस जगह आश्रम-निर्माण का कार्य हाथ में लिया गया और २० मई को उसका श्रीगणेश हुआ। तभी नये स्थान के साथ ही कुछ और जमीन भी मिल गयी। शहर में सघन कार्य की दृष्टि से सरना से रोज पठानकोट आना-जाना हम सबको बहुत असुविधाजनक पड़ता था अतः रहने लायक थोड़ा सा प्रबन्ध करके सरना से नये आश्रम में ही 'शिफ्ट' करना उचित लगा। निर्माण-कार्य की देखभाल में भी समय ही लगता था, अतः नये स्थान के बिल्कुल पास ही अस्थायी निवास के लिए एक मकान प्राप्त कर हम जून में ही यहाँ आ गये। यह आश्रम शहर से दो-तीन फरलांग बाहर, माधोपुर जाने वाली पक्की सड़क पर है। एक प्रकार से शहर का हिस्सा ही है। अब हमारे सब कामों में काफी सुविधा हो गयी। फिर तो हमारा मन बना कि सरना और खानपुर (पठानकोट) दो दो स्थानों पर आश्रमों की व्यवस्था रखने की बजाय खानपुर में ही सब प्रवृत्तियाँ हों तो व्यवस्था, कार्यकर्ता, खर्च, सभी दृष्टियों से ज्यादा ठीक होगा। जमीन भी यहाँ सरना से ड्योढ़ी है और बढ़ने की सम्भावना है। ऐसी हालत में सरना आश्रम पंजाब-खादी ग्रामोद्योग संघ को सौंप देने का सुझाव बना। विनोबाजी ने भी यह सुझाव पसन्द किया और लिखा कि दो-दो आश्रमों का झमेला सम्भालना अशक्य होगा।

अब हम उस दृष्टि से निर्माण-कार्य में और भी अधिक ध्यान से लग गये और मुख्यतः पठानकोट शहर से ही दान जमा कर स्थानीय आधार से अब तक दो कमरे १२'×१४' प्रत्येक, एक छोटा रसोई घर, दो स्टोर ६'×१४' प्रत्येक, बना पाये हैं। कुआँ भी बन चुका है। ८ नवम्बर से हम यहाँ रहने भी आ गये हैं और साथ साथ कार्यालय भी यहीं ले आये हैं। श्री सत्यम् भाईजी और कमरे बनने पर आ जायेंगे।

निर्माण के कार्य में संलग्न रहने से शहर का हमारा कार्य कुछ पिछड़ गया। केवल एक और कार्यकर्ता की ही व्यवस्था कर सके हैं। सर्वोदय-पात्र, कुछ सम्पत्ति-दान की प्रवृत्ति है। अब साप्ताहिक सत्संग आदि शुरू कर रहे हैं। आगे स्वाध्याय-मण्डल आदि बनाने का विचार है। विचार-प्रचार, सम्पर्क को भी बढ़ायेंगे। सर्वोदय पुस्तक-भण्डार की शाखा अगस्त से खुल गयी है। बिक्री अभी कम ही है।

मार्च में बाबा ने सलाह दी थी कि मुझे अभी जिले भर में घूमने की बजाय अधिक ध्यान पठानकोट के कार्य की ओर ही देना चाहिए। ठीक-ठीक बहुत आवश्यकता होने पर कभी-कभी गाड़ी, मोटर से जिन-स्थानों पर जाऊँ या फिर डाक-पत्र से ही सम्पर्क रखूँ, वैसा ही किया। पठानकोट की दृष्टि से तो कुछ ठीक हुआ, परन्तु जिले का कार्य इससे काफी शिथिल पड़ गया। बाद में दस दिन तक प्रति मास जिले में देने की मेरी बात बाबा ने स्वीकार कर ली, परन्तु निर्माण में उलझ जाने से वह भी पूरा-पूरा सम्भव न हुआ। अब उधर भी ध्यान देना है।

श्री सुमतिजी पू० बाबा के पास गयी थीं और भिण्ड तक उनके साथ यात्रा में रहीं। उस क्षेत्र में उन्हें कार्य का विशेष अनुभव आया। —यशपाल मित्तल

[मित्तलजी का सर्वोदय आश्रम, खानपुर से लिखा पत्र]

बाबा राघवदास का पुण्य स्मरण

कपिलदत्त अवस्थी

सन् १९५५ की बात है! उन दिनों विनोबाजी द्वारा प्रेरित भूदान-यज्ञ आन्दोलन अपनी अत्यधिकता की पराकाष्ठा पर था। जिधर देखो उधर बस भूदान, ग्रामदान की ही चर्चा होती थी। १८ अप्रैल १९५१ से आचार्य विनोबा भावे भूदान का सन्देश लेकर भारतीय गाँवों के हर कोने में ग्रामस्वराज्य की स्थापना का सफलतम प्रयास करते रहे हैं। ग्रामराज्य में से "ग" यानी गर्व तथा गरीबी को निकाल कर बाबा राघवदास भी रामराज्य की स्थापना के लिये उत्तर प्रदेश के हर गाँव में पहुँचे। बाबा राघवदास से सारा उत्तर भारत परिचित हो गया था।

भारतीय मानव का मुख्य ध्येय ईश्वर का ज्ञान प्राप्त करना है। इसके समस्त सामाजिक, धार्मिक तथा राजनीतिक कार्यों का संचालन ईश्वरीय भावना की दृष्टि से होता चला आया है, उसके कार्यों में समस्त मानवों की सेवा एक आवश्यक अंग रही है। अध्यात्म-तत्त्ववेत्ता बाबाजी के दर्शनों का सौभाग्य जिन्हें प्राप्त हुआ है, उनके ऊपर सर्वप्रथम करुणा से ओतप्रोत उनका वरदहस्त ही रहा होगा। वह इतनी आत्मीयता से मिलते थे कि जो एक बार भी उनके पास पहुँचा, उनका ही होकर आया। अजनबी कभी यह महसूस ही नहीं कर पाता कि मैं बाबा से पहली बार मिल रहा हूँ। बाबा की स्मरण-शक्ति इतनी तीव्र थी कि चाहे जहाँ आप उनसे मिले हों, वह तुरन्त मिलते ही कह देते थे कि आप तो अमुक स्थान पर हमसे मिले थे।

बाबा राघवदासजी का जन्म १२ दिसम्बर, सन् १८९६ में महाराष्ट्र में हुआ था। इनका बचपन का नाम राघवेन्द्र था। राघवेन्द्र ऐसे महापुरुषों में थे, जिनका सारा जीवन जनता के लिये ही था। इनको न कोई निजी स्वार्थ ही था और न अहम् भाव ही। वैसे तो हर मनुष्य को दूसरे के दुख में दुखी तथा दूसरे के सुख में सुखी होना ही चाहिए। यह केवल सत्पुरुषों की ही पहचान है, मानव के अन्तर्निहित मानवता की परीक्षा तथा पहचान है। परन्तु राघवेन्द्र इससे भी अधिक और आगे थे, वे दूसरे के दुख से केवल दुखी ही नहीं होते थे, बल्कि दूसरों के पापों से अपने को पापी मानते थे और उसके प्रायश्चित्त के लिये कटिबद्ध हो जाते थे। दूसरे के पाप को अपने सिर ओढ़ने वाले खुद को ही सजा देते हैं और उसे भुगतने के लिये सदैव तत्पर रहते हैं। इनमें भी यह खूबी असीम मात्रा में थी, इसलिए अनन्त महाप्रभु ने इनका नाम "राघवदास" रखा और सर्वसाधारण ने उन्हें "बाबा राघवदास" ही जाना।

परिवार के सदस्यों को एक के बाद एक तात्कालिक दुर्घटनाओं ने इनको सांसारिकता से विरक्त कर दिया और जब यह महाराष्ट्र से अनन्त की खोज में चल पड़े, तो पहले सीधे रेल द्वारा प्रयागराज आये। रेल पर सफर करते हुए उनका एक पंडाजी से साथ हो गया। हिन्दी यह जानते न थे, इसलिए हिन्दी भाषी प्रान्त में उनके लिये एक विकट समस्या आ खड़ी हुई। इनकी अंटी में केवल तीन आने पैसे थे। राघवेन्द्र ने भाव-भंगिमा से अपनी भूख लगने की बात बतायी। उस पण्डे ने हलवाई की दूकान से पूड़ियाँ दिलवायीं। इसके पहले कभी भी अस्वच्छ भोजन इन्होंने किया नहीं था, इसलिए भूख रहते हुए भी इन्कार कर दिया! इनको लगा था कि किसी हरिजन की दूकान है। बस प्रयाग के पण्डे तो प्रसिद्ध हैं ही। उन्होंने डांटना शुरू कर दिया। अन्ततोगत्वा धर्माधर्म का विचार किये बिना भोजन कर ही लिया। इनकी मनोदशा पर बुरी प्रतिक्रिया हुई और कोई २५ मिनट बाद कै हो गयी!

पण्डे ने इनकी कुलीनता और शालीनता देख कर अपने दोस्त के यहाँ उन्हें संस्कृत पढ़ाना शुरू किया। इनका परिचय हिन्दी साहित्य सम्मेलन के लाइब्रेरियन से हो गया। वहाँ जाकर चुनी हुई पुस्तकें पढ़ते तथा अच्छे-अच्छे हिन्दी नोट्स लेते थे। एक दिन वहीं पर राजर्षि टण्डनजी से भेंट हो गयी। टण्डनजी ने अध्ययन की सातत्यता देख कर इनको गांधीजी के विचारों से अवगत कराया और सत्साहित्य पढ़ने की प्रेरणा दी।

भारत की आजादी के लिए महात्मा गांधी ने जब देश के नवयुवकों का आह्वान किया, तो बाबा राघवदास अपने को रोक न सके। गांधी ने भारत की स्वतन्त्रता के लिये प्रयास किया, अपनी स्वयं की आजादी के लिए भी प्रयत्न किया। इसीलिए वह राष्ट्रपुरुष होते हुए भी सन्त महापुरुष थे। बाबा राघवदास को सन्त विनोबा की ही तरह गांधीजी "आदर्श सत्याग्रही" कहते थे।

बाबा राघवदासजी चाहते थे कि गाँवों में हर व्यक्ति के पास भूमि तथा जीविका के साधन रहें और इसीके लिए आचार्य विनोबाजी द्वारा संचालित भूदान-यज्ञ आन्दोलन में वह तन-मन-धन से कूद पड़े और अन्तिम समय तक भूमिहीनता मिटाने के प्रयास में लगे रहे। वह कहते थे कि गाँव का राजा गाँव का किसान बने। उसकी अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति स्वयं करे।

बाबा राघवदास स्वयं तो कुछ नहीं, पर संस्थाओं के समूह थे। गोरखपुर का कुष्टाश्रम उनकी सर्वोत्तम देन है। वैसे तो जितनी भी जन-संस्थाएँ आज तक यहाँ पनपी हैं, उनके मूल में बाबा का हाथ अवश्य रहा है, फिर भी हिन्दी-जगत्, ह[illegible] जनोद्धार, प्राकृतिक चिकित्सा, [illegible] ग्रामोद्योग, भूदान-यज्ञ आन्दोलन, [illegible] स्मारक निधि, समाज-सुधार, रेल [illegible] मोटर यात्री जगत् उनकी अनुपम सेवा[illegible] को कभी भूल ही नहीं सकता। बहुत दि[illegible] तक उत्तर प्रदेश गांधी-स्मारक निधि [illegible] संचालक पद पर रहे हैं। यहीं से उन[illegible] जीवन में एक नया मोड़ आया और [illegible] कुछ छोड़ कर अखण्ड भूदान-पदयात्रा [illegible] लिए निकल पड़े। उत्तर प्रदेश की प[illegible] यात्रा समाप्त करके मध्यप्रदेश की प[illegible] यात्रा करते हुए सिवनी में १५ जनवरी १९५८ को बाबा राघवदास परलोकवासी हुए। उनके बरहज-आश्रम का परिवा[illegible] विभिन्न प्रकार के आध्यात्मिक विचारों का एक विशाल समूह है। शिक्षित तथा अशिक्षित पुरुष, स्त्री, धनी तथा निर्धन, राजा और प्रजा सभी उनकी कृपा के पात्र थे।

उत्तर प्रदेश में हम लोग जिस तरह ईसा मसीह की जयन्ती २५ दिसम्बर को 'कुष्ट-रोगी-सेवा दिवस' के रूप में मनाते हैं, क्योंकि ईसा ही कुष्टरोगियों को अपनाने वाले महात्मा थे। उन्हींका अनुसरण करने वाले बाबा राघवदासजी की जयन्ती से लेकर पुण्यतिथि (१२ दिसम्बर से १५ जनवरी) तक कुष्ट सेवा का कार्य मुख्यतः किया जाय। अन्तिम दिन सभी लोग कुष्ट रोगी भाई-बहनों के पास पहुँचें तथा उनके सुस्वास्थ्य की मंगल कामना करें। इससे उन रोगियों को बड़ा बल मिलेगा। स्वास्थ्य-सुधार में भी इस सहानुभूति से सहायता मिल जाती है। १५ जनवरी को बाबा राघवदास की पुण्यतिथि आ रही है। उत्तर प्रदेश के साथ-साथ सारे भारत में यह कुष्ट-रोगी-सेवा दिवस मनाया जाय, ऐसी हमारी प्रार्थना है।

ऐसे महापुरुष का स्मरण करने से हमें अपनी आत्मा की ताकत का भान होता है। जो ताकत ऐसे महापुरुषों में होती है, वही ताकत हम सबमें भी हो सकती है। इसकी प्रेरणा ऐसे पवित्र दिन पर वे हमें देते हैं। ●

जनशक्ति के संगठक बाबाजी

गोरखपुर से बहरगंज को जाने वाली पक्की सड़क के किनारे गगहा एक बहुत बड़ा गाँव है। इस गाँव से बाबा राघवदासजी का घनिष्ठ सम्पर्क था। सन् १९३६ के जून में किसी कार्य से बाबाजी गगहा पधारे। ग्रामवासियों से गाँव के सम्बन्ध में चर्चा चली। लोगों ने बाबाजी को अवगत कराया कि वहाँ बाँध-निर्माण से हजारों एकड़ जमीन बच सकती है, जिससे हजारों मन अन्न की पैदावार बढ़ जायगी। बाबाजी ने गाँव वालों की इस अनुभूत आवश्यकता को समझ लिया और वहीं घोषणा कर दी कि नौ दिन में यह बाँध निर्मित हो जायगा! लोगों ने कार्य असम्भव समझा। बाबाजी से कुछ लोगों ने इस प्रकार का व्रत न लेने का आग्रह किया। बाबाजी व्रत ले चुके थे। बाबाजी ने अपने व्रत की घोषणा समीप के गाँवों में भी करा दी। दूसरे दिन प्रातः बाँध की नपाई हो गयी और डाग बेल पड़ने लगी। बाबा ने खाँची-फावड़ा लेकर मिट्टी डालने का कार्य शुरू कर दिया, यह समाचार बिजली की भाँति गाँवों में फैल गया। सभी लोग गो-पुकार की भाँति फावड़ा-खाँची लेकर टूट पड़े। हजारों की संख्या में लोग मिट्टी फेंकने लगे। १२०० आदमी प्रति दिन सुबह से शाम तक बाजा-गाजा के साथ नौ दिन लगातार काम करते रहे। मीलों लम्बा, १२ फीट चौड़ा और ६ फीट ऊंचा बाँध बन कर तैयार हो गया। बाबाजी ने इस बाँध का निर्माण करा कर जनता को छिपी शक्ति का आभास करा दिया तथा उनमें विश्वास पैदा करा दिया कि जनशक्ति के संगठन से महान् से महान् कार्य हो सकता है। इससे लोगों में बड़ा विश्वास पैदा हुआ। काशी के एक विद्वान ने इस बाँध का उल्लेख करते हुए पत्रों में लिखा था कि गोवर्धन के कृष्ण का यह रूप है।

—रामवचन सिंह

सर्वोदय आश्रम, देवगाँव, देवरिया,

हम क्या शांति-सैनिक बनें ?

सिद्धराज ढड्ढा

प्रश्न : विनोबा कहते हैं कि कस्तूरबा-केन्द्रों की हर ग्राम-सेविका को शांति-सैनिक होना चाहिए। इसी तरह वे खादी और दूसरे रचनात्मक काम करने वाले कार्यकर्ताओं से भी अपेक्षा रखते हैं कि वे शांति-सैनिक बनें। समझ में नहीं आता कि व्यक्ति क्या-क्या करे ! वह खादी का काम करे, ग्रामसेवक-ग्रामसेविका का काम करे या विनोबा की शांति-सेना का काम करे ?

उत्तर : शांति-सैनिक का काम हमारे रोजमर्रा के काम से कोई अलग चीज नहीं है, यह थोड़ा गहराई से हम सोचेंगे, तो समझ जायेंगे। हम जिसे 'व्यक्ति' कहते हैं, वह क्या चीज है ? व्यक्ति केवल अमुक नामधारी चलता-फिरता शरीर ही नहीं है। वह चलता-फिरता पुतला तो है ही, उसके अलावा भी बहुत कुछ है। अपने माँ-बाप का वह लड़का या लड़की है, अपनी संतान का पिता या माता, अपने भाई-बहनों का भाई-बहन। अर्थात्, वह अपने परिवार का एक अंग है। परिवार से आगे बढ़ कर फिर वह अपने चारों ओर के समाज का, जिसका दायरा बढ़ते-बढ़ते पूरी मानव-जाति तक पहुँचता है, उस मानव-समाज का एक अंग है। जैसे सामान्य तौर पर परिवार के बिना व्यक्ति का जीवन नहीं टिक सकता, उसी तरह समाज के बिना भी जीवन मुश्किल है। उससे भी आगे बढ़कर, व्यक्ति के जीवन का सम्बन्ध उसके चारों ओर फैले हुए चराचर जगत् से आता है। चाँद, सूरज, सितारे, हवा, पानी, बादल, पहाड़, नदी-नाले, पेड़-पौधे, पशु-पक्षी—सबका उसके जीवन से सम्बन्ध आता है और यह कहना अत्युक्ति नहीं होगी कि जगत् की सब चीजों के योग से ही समूचा जीवन चलता है।

इस तरह सोचें, तो हम देखेंगे कि व्यक्ति केवल व्यक्ति नहीं है। स्वयं शरीरधारी व्यक्ति होने के अलावा वह एक परिवार का अंग है, फिर मानव-समाज का अंग है और आखिर में इस सारे विश्व का अंग है। हर व्यक्ति सारी सृष्टि का केन्द्र-बिन्दु है। वृत्त के बिना केन्द्र का कोई अस्तित्व नहीं है और केन्द्र के बिना वृत्त की स्थिति नहीं है। केन्द्र और वृत्त—व्यक्ति और समष्टि—एक-दूसरे के साथ अभिन्न रूप से जुड़े हुए हैं और इस कारण, यानी जड़-चेतन सारे विश्व से सम्बन्धित होने के कारण, व्यक्ति के लिए विभिन्न प्रकार के कर्तव्य पैदा हो जाते हैं। व्यक्ति का जीवन इन सब सम्बन्धों और कर्तव्यों के समुच्चय से बनता है।

शरीर को दो-चार दिन खाना न मिले और उसकी सफाई न होती रहे, तो व्यक्ति का जीवन मुरझाने लगेगा, उसमें अशान्ति पैदा होगी। शरीर की शांति और समभौत अवस्था बनाये रखने के लिए व्यक्ति को शरीर के प्रति अपना कर्तव्य निभाना ही होता है। शरीर से आगे परिवार, मानव-समाज और चराचर जगत् इनके साथ के हमारे संबंध उत्तरोत्तर ज्यादा अस्पष्ट और अव्यक्त होते जाते हैं, इसलिए हमें उन सबके प्रति हमारे कर्तव्यों का भान अक्सर नहीं रहता। फिर भी थोड़ा विचार करने पर हम समझ जायेंगे कि जिस तरह शरीर के प्रति अपना कर्तव्य न निभाने से शरीर में अशांति पैदा होगी और जीवन चलना मुश्किल हो जायगा, उसी तरह परिवार, समाज और विश्व के प्रति अगर हमने अपने कर्तव्यों को नहीं समझा और उनका पालन नहीं किया, तो इन सब क्षेत्रों में अव्यवस्था और अशांति पैदा होने ही वाली है। अशांति और अव्यवस्था हुई, तो अन्ततोगत्वा हमारा जीवन भी निश्चय ही संकट में आयेगा, जैसा आज व्यक्ति के न चाहते हुए भी उसका जीवन खतरे में आ गया है। अतः हर व्यक्ति का धर्म है कि अपने शरीर, परिवार, समाज और विश्व के प्रति जो उसके कर्तव्य हैं, उन्हें वह ठीक से निभावे।

इस अर्थ में हर व्यक्ति शांति-सैनिक है ही। शांति-सैनिक बनने के लिए उसे और कुछ नहीं करना है। पहला काम यही करना है कि वह अपने कर्तव्यों को ठीक से निभाये। अगर एक शिक्षक अच्छा शिक्षक है, तो वह शांति-सैनिक है। रसोई पकाने वाली माँ खाना रुचिकर और स्वास्थ्य-वर्धक बनाती है, तो वह शांति-सैनिक है, खादी का कार्यकर्ता अपना काम ठीक से निभा रहा है, तो वह शांति-सैनिक है ही।

पर इतना ही काफी नहीं है। हम अपना कर्तव्य ठीक से निभाते जा रहे हैं, फिर भी कभी-कभी ऐसा होता है कि आस-पास अशांति या हिंसा फूट पड़ती है। ऐसे समय क्या जिसने शांति-सेना में नाम लिखाया है, उसका ही काम है कि इस अशांति का मुकाबला करे ? क्या यह हर व्यक्ति का फर्ज नहीं है ? विनोबा ने इसी बात की ओर हमारा ध्यान दिलाया है कि हम पड़ोस की आग बुझाने के हमारे इस कर्तव्य को न भूलें। जो भी इस फर्ज को निभाता है, वह शांति-सैनिक है ही। जो नहीं निभाता, वह शांति-सैनिक तो क्या "आदमी" भी नहीं है !

अपने सब कर्तव्य ठीक से निभाना और आसपास कभी प्रसंगवश अशांति फूट पड़े, तो शान्ति-स्थापना की कोशिश करना—इतना भी काफी नहीं है। हमारे आसपास होने वाली छोटी मोटी हिंसा और अशान्ति तो हमें प्रत्यक्ष दीखती है। उनके कारण भी हमको जल्दी समझ में आ जाते हैं, पर इन अचानक फूट पड़ने वाली 'अशांतियों' के अलावा ऐसे कितने सामाजिक और आर्थिक कारण हैं, जो धीरे धीरे समाज में अशांति और हिंसा की आग सुलगाते रहते हैं। तरह तरह के सामाजिक और आर्थिक अन्याय, खास करके आज की हमारी दुनिया में, भरे पड़े हैं। ये कारण कायम हैं, इसीलिए संघर्ष, अशान्ति, शीतयुद्ध और वास्तविक युद्ध की सम्भावना, आदि सब चीजें बनी हुई हैं और इनके रहते समाज में शान्ति नहीं हो पाती। आज तो हम ऐसी स्थिति में पहुँच गये हैं कि अगर समाज में से संघर्ष और युद्ध के ये कारण दूर नहीं हुए, तो सारी मानव जाति के मिट जाने का ही खतरा है। हर व्यक्ति का यह कर्तव्य हो जाता है कि वह अपनी-अपनी शक्ति के अनुसार अपने प्रभाव के छोटे या बड़े क्षेत्र में प्रचलित सामाजिक और आर्थिक अन्यायों का मुकाबला करे और उन्हें दूर करने की कोशिश करे। ऐसा करना आज तो सीधे उसके हित में भी आवश्यक हो

[शेष पृष्ठ १० पर]

स्व० बाबा राघवदासजी का एक करुण संस्मरण

ग्रामीण धन्धों को मिटाने का पाप

[सिवापुरी, बनारस के सर्वोदय-सम्मेलन में उपस्थित होने का सौभाग्य मुझे प्राप्त हुआ था। अधिवेशन में बाबा राघवदासजी का भाषण हुआ और उन्होंने अपने जीवन का एक संस्मरण सुनाया। वहाँ से लौटने पर मैंने बाबाजी से यह प्रार्थना की कि वे उसे मेरे लिए लिख भेजें। तदनुसार उन्होंने यह संस्मरण लिख भेजा था।

—बनारसीदास चतुर्वेदी]

१९१८ की बात है कि बरहज में पहले-पहल आटे की कल आयी। एक धनी व्यापारी ने उसको लगाया था। ४-५ दिन तक बाजार में उसका बड़ा कौतूहल था। छठे दिन मैं आश्रम पर बैठा हुआ था कि ५०-६० दुखिया औरतों का झुण्ड मेरे पास पहुँचा।

उनमें से एक बुढ़िया आगे बढ़ी और उसने कहा, "बाबा सेठ ई आटा क कल गड़के बा ऊ मर्द होवे हम दुखियन क औरतन का मुकाबला करत हवें, एमें कौन मर्दानगी बा ? हम बेबस गरीब मालिक के मुवले के बाद पिसौनी करके ओकर में आटा मिला के कवनों तरह से गुजारा करत रहलीं, ओमें इज्जत पानी से रहलीं। अब ई सेठ हमार रोजी छिनके पिसौना करके पइसा कमइहें, एमें कौन मर्दानगी बा ? मेहरारुन के बदले में मरदन की मोंछ के धिक्कार हव !"

यह बात जब मैंने सुनी, तो मैं काँप उठा। मुझे अपने मर्द होने पर शरम आयी !

एक वर्ष मिल के तेलों में मड़वाड़ के बीज मिलाये जाने के कारण भयंकर रूप से 'बेरी बेरी' रोग फैला। डाक्टरों ने हल्ला मचाया और प्रादेशिक सरकार ने 'मड़भाड़' के पौधे उखाड़ कर फेंकने के लिए आंदोलन किया। क्या ही अच्छा होता यदि हम सुधरे हुए तेलघानी का सहारा लेकर शुद्ध तेल गाँवों में ही तैयार करने और गाँव वालों तथा शहर वालों को खिलाते ! उससे गाँव के तेलियों को भी रोजगार मिल जाता और बैलों को अच्छी खली भी और रोग के लिए रुकावट।

हमने देखा कि हम गाँव के इन छोटे और अत्यन्त आवश्यक रोजगारों को मिटा कर किस प्रकार असहायों के डोटी बन जाते हैं। इसी तरह हम लोगों ने कपड़े की मिलों के द्वारा गाँव के लाखों कत्तिनों और जुलाहों को उजाड़ा ! 'बाटा' और 'फ्लेक्स' के जूतों-चप्पलों के द्वारा हजारों हरिजनों के परिवारों को बर्बाद किया और चीनी की मिलों के द्वारा गाँवों में गुड़, राब और खाँडसारी बनाने वाले लाखों परिवारों को मजबूर बना कर मजदूरी करने के लिए शहरों में भिजवाया, फिर भी हम देश सेवक बनने का दम भरते हैं !

—राघवदास, १६-४-'५२

तेलंगाना में अशांति-शमन कर, विंध्याचल को लांघते हुए गंगा-यमुना के विशाल मैदान में एक बार यात्रा हुई थी। उसके बाद गौतम बुद्ध के बिहार में लाखों एकड जमीन प्राप्त करके चैतन्य महाप्रभु की भूमि में प्रेम-यात्रा चली, यात्रिक के कदम बढ रहे थे। फिर वह वीरभूमि—'चंड अशोक' को 'धर्म अशोक' बनाने वाली कलिंग भूमि—भूमिपुत्रों को उनका हक प्राप्त हो गया था, हजारों गाँवों ने 'ग्रामदान' का संकल्प किया। आंध्र प्रदेश में कम्युनिस्टों से स्नेह से 'हस्तमिलाप' हुआ था। तमिलनाड में माता मीनाक्षी की कृपा से शिक्षित लोगों को 'ग्रामदान' की प्रेरणा हुई थी। शंकराचार्य और ईसामसीह के केरल में चारों चर्चों ने कह दिया—"यह यात्रा देवपुत्र—ईसा का संदेश देती है।" 'विचार-क्रांति' की निशानी, एलवाल की ग्रामदान-परिषद कर्नाटक में हुई। महाराष्ट्र के 'अम्राणी महाल' में शांति की ज्योति प्रकट हुई। पंढरपुर के मंदिर के दरवाजे मानव मात्र के लिए खुल गये। बापू के गुजरात में तो भक्त की तीर्थयात्रा हुई। उसके बाद मीरा के मेवाड में कितने ही गाँवों की बहनों ने जाहिर किया :" घर-घर में सर्वोदय-पात्र रखा है।" गुरु नानक के पंजाब ने सुना—"कृपाण नहीं कृपा के दिन आये हे।" असंख्य ऋषि-मुनियों की तपस्या से श्वेत और ऊँचे बने हुए नगाधिराज हिमालय का दर्शन लेकर कश्मीर घाटी और हिमालय प्रदेश में यात्रा हुई। चम्बल के बेहड़ो में 'अहिंसा' का साक्षात्कार हुआ। देवी अहिल्या की इंदौर नगरी में एक अनोखा प्रयोग-क्षेत्र बनी। आसेतु हिमाचल एक प्रदक्षिणा पूरी हुई। फिर से यात्रिक के चरण कबीर और तुलसीदास की भूमि से आगे बढे और 'कर्मनाशा' नदी को पार करके बुद्ध और महावीर की भूमि में घूम रहे हैं।

सचमुच ही यह प्रेमभूमि है! दौड़े आते हैं लोग! रास्ते से चलते हैं तो रोज दीखता है—जगह-जगह छोटे-छोटे गाँव हैं, सारा गाँव उमड़ आता है। सड़क के किनारे क्षितिज तक फैले हुए खेत और जंगल को पार करके लोग दौड़े आते हैं। वे दर्शन के प्यासे हैं, लेकिन पेट के भूखे हैं, पर उसकी पर्वाह नहीं है! हजारों की तादाद में आते हैं-दर्शन से तृप्त होते हैं। दिन भर पड़ाव को घेरे रहते हैं, खिड़की से झाँकते हैं, दरवाजे से देखते हैं और जब दर्शन हो जाते हैं, तो हाथ जुड़ जाते हैं, सिर झुक जाता है, नेत्र-दीप चमक उठते हैं! दो-तीन दिन से यह दृश्य देख कर एक बहन ने कहा, "कितने प्यार से आते हैं!" मन को खुशी हो रही थी, लेकिन कल बाबा ने उस मन को धक्का दिया! विशाल सभा पर नजर स्थिर करके कहा :

"इन दिनों बड़ी-बड़ी सभाओं का मुझे डर मालूम होता है! हजारों लोग एक आशा लेकर आते हैं! अगर काम नहीं बना, तो इतने लोग निराश होंगे! इसका सामाजिक नतीजा क्या आयेगा? इससे बाबा सिर्फ बेकार ही नहीं आयेगा, बल्कि समाज में दूसरी ताकतें खड़ी होंगी। करोड़ों लोगों ने बाबा को सुना है-उनमें एक भूख पैदा हुई है। उनकी तृप्ति नहीं हुई, तो नुकसान हो सकता है। और यह डर है कि हिंदुस्तान में दूसरे प्रकार की शक्तियाँ खड़ी होंगी। इस पर बाबा ने सोचा बहुत है और यह खतरा उठा कर बाबा घूम रहा है।"

बिहार के प्रमुख सेवक सर्वश्री ध्वजाबाबू, रामदेवबाबू, वैद्यनाथबाबू, श्याम-बाबू, गौरीबाबू सोच रहे थे कि "यात्रा का स्वरूप कैसा रहेगा?"

उनसे विनोबाजी ने कहा : "करुणामूलक क्रांति यह हमारा उसूल है। बिहार में ज्योति जल सकती है। इसलिए भूदान को छोड़ कर और किसी कार्यक्रम में हमें उत्साह नहीं आता है। सरकार 'लेवी' (लगान) का सोचती है—एक बीघे में एक कट्ठा जमीन लेने की बात करती है। मैं 'देवी' की बात करता हूँ और कहता हूँ कि आप एक बीघे में एक कट्ठा दान दीजिये। भारत में घूम कर आया हूँ। मेरा निरीक्षण कहता है कि भूदान के सिवाय मैदान में दूसरा कोई विचार नहीं है। कश्मीर से कन्याकुमारी तक मैंने यही विचार समझाया है।

आप लोगों के सामने चाहे मेरे पचास गुण गाइये। लेकिन लोग नहीं भूल *सकते कि वह 'भूदानी-बाबा' है। इसलिए मुख्य बात करुणा का मूल कार्यक्रम* छोड़ना नहीं है।

जब से बिहार में प्रवेश हुआ है, विनोबाजी लोगों को एक इशारा दे रहे हैं और याद दिलाते हैं, "हमारे प्रिय, पूज्य, बिहार के एकमात्र अद्वितीय पुरुष जो आज सबसे श्रेष्ठ स्थान पर हैं, डॉ० राजेंद्रप्रसाद के घर में सर्वोदय-पात्र रखा है। अगर हमारे देश में चेतना होती, तो हिन्दुस्तान के घर-घर में सर्वोदय-पात्र रखा जाता। कम-से कम बिहार में तो यह बात होनी ही चाहिए थी। अब राष्ट्रपति के अगले जन्म-दिन तक यह काम आप पूरा कीजिये।"

इतने से विनोबाजी का समाधान नहीं होता है। आगे जाकर वे कहते हैं, "जो सर्वोदय-पात्र रखेगा, उसके कान में यह तारक-मंत्र सुनाइये कि 'एक बीघे में से एक कट्ठा जमीन देनी है।' भारत माता का समाधान तब तक नहीं होगा, जब तक हर भूमिहीन को जमीन नहीं मिलेगी।' इसलिए खास करके बिहार वालों से मैं अपील करता हूँ कि आप इतने लोगों को बुलाते मत जाइये। काम नहीं होगा, धर्मशक्ति नहीं जागेगी, तो बुरे परिणाम आयेंगे। बाबा चाहता है कि अच्छे परिणाम आयें। इसलिए यह घूम रहा है। घूमना बंद करेगा, तो भी अपक्रांति टलेगी नहीं। लोग कहेंगे बाबा निराश हो गया और बैठ गया। बाबा घूमता है, तो लोगों को थोड़ी आशा है कि बाबा घूमता है, तो शायद कुछ होगा। इसीलिए हम दुबारा बिहार में आये हैं।"

बाबा कहते हैं, "सारे हिन्दुस्तान में मुझे बहुत प्रेम मिला है, लेकिन बिहार को हम अपने बाप की इस्टेट मानते हैं। और यह परंपरा बहुत पुरानी मानते हैं—जनक, बुद्ध, महावीर इसी भूमि के हैं। गांधीजी भी यहीं आये थे।"

बेटा बाप के घर आया है, तो अपना हक माँगता है। कहना है—बिहार कांग्रेस ने आठ साल पहले प्रस्ताव किया था, "३२ लाख एकड जमीन प्राप्त करेंगे", उसके अनुसार २२ लाख एकड जमीन प्राप्त हुई है। बची हुई १० लाख एकड़ जमीन अब दे दीजिये।

"बीघे में कट्ठा दान और रोज एक मुट्ठीभर धान"—यही हमारी माँग है—क्या बेटे को निराश करके आप भेजेंगे?

संध्या-समय जब गायें जंगल से लौटती हैं और सूर्यनारायण का अस्त होता है, तब दिन भर पड़ाव को घेरे हुए लोग वापस घर लौटते हैं—एक दिन उसे देख कर बाबा ने कहा, "कौन जा रहा है? यह तो 'सहस्रशीर्ष सहस्रपाद्' वेद में भगवान का रूप वर्णन किया है। हजार हाथवाला, हजार पाँववाला, हजार आँखोंवाला, हजार सिरवाला भगवान! वही भगवान है।"

सासाराम के एक भाई आये थे। बाबा से कह रहे थे, "आपने इतना बड़ा कार्यक्रम उठाया है कि इसमें आप यदि निष्फल रहे, तो भी आपको उज्ज्वल यश मिलेगा।"

बाबा : "हमारा उज्ज्वल यश आपके क्या काम का हमारा नाम नहीं, गरीबों का काम ही होने दीजिये! झाँसी की रानी और शिवाजी महाराज का नाम इतिहास में रोशन है। उन्होंने बहुत काम किया। लेकिन यश नहीं मिला। हम ऐसी असफलता के लिए नहीं निकले हैं। हम अपनी जगह तो बहुत प्रसन्न थे। गांधीजी के आदेश के अनुसार काम करते थे, ध्यानधारणा, रचनात्मक काम इत्यादि करते ही थे।

हम चाहते हैं कि गरीबों की आशा भंग न हो।

तमोगुण देह का धर्म ही है। बीच में वह सुस्त हो जाता है। बिहार के कुछ कार्यकर्ता कहते हैं, "उत्साह कम हुआ था, अच्छा हुआ कि करने बाबा दुबारा आये हैं।"

बाबा कहते हैं, "आठ साल पहले एक पौधा लगा कर हम गये थे। उसे पानी देने दुबारा आये हैं।"

संथाल परगना के निष्ठावान अनन्य सेवक मोतीबाबू भगवान की निर्माण की हुई इस बाह्य सृष्टि के विविध रंग नहीं देख सकते हैं। उनकी आँखें भगवान ले गया है, फिर भी उनका दिल संथाल परगना की हालत खूब जानता है। एक शाम को बाबा के पास वे संथाल-परगना के दारिद्र्य का वर्णन कर रहे थे, "वहाँ की बहनों को पूरा वस्त्र भी नहीं मिल सकता है।" उनकी अंधी आँखें रो रही थीं।

बाबा ने कहा, "हिंदुस्तान में मैं दूर-दूर जहाँ-जहाँ गया, मैंने ऐसी गरीबी देखी है। अब हमें फिर से *जप करना होगा। तप करने का* काम जवानों का है। यह गरीबी मिटाने के लिए उनको कमर कसनी चाहिए। आप और मैं जप करते-करते घूमेंगे। हम जप करेंगे। जवान तप करेंगे, गरीब यज्ञ करेंगे, अमीर दान दें। फिर ऐसा समय आयेगा कि हम ध्यान करेंगे। दूसरे तप करने लगेंगे। जवान 'जप' करने लगेंगे। इस तरह यज्ञ, दान, तप, जप और ध्यान ऐसी श्रेणी रहेगी। हमारा अभी ध्यान का अधिकार नहीं है, जप का है। अभी जवान तप करेंगे, तो उनको वाणी में ताकत आयेगी। फिर वे जप करेंगे और हमारा केवल सङ्कल्प *मात्र से होगा। बोलना कुछ नहीं,* सिर्फ संकल्प।"

बिहार के दूसरे कार्यकर्ताओं को संबोधन करते हुए बाबा ने कहा, "बीघे में कट्ठा दान और मुट्ठी भर धान, यह मंत्र लेकर आप सब निकल पड़िये। *संकल्प*

गोबर का अर्थशास्त्र

एन. ए. मजूमदार

भारतीय कृषि के अर्थशास्त्र को अक्सर उपहासपूर्वक 'गोबर का अर्थशास्त्र" कहा जाता है! लेकिन गोबर का वास्तविक मूल्य आज तक किसी ध्यान में आया हो, ऐसा नहीं लगता। देश में कुल गोबर का कितना हिस्सा जला दिया जाता है, इसकी भी जानकारी नहीं है। उसके दुरुपयोग के लिए परिस्थितियाँ कहाँ तक जिम्मेदार हैं, अलग-अलग क्षेत्रों में यह समस्या किस प्रकार कम या ज्यादा तीव्र है और उसका निराकरण करने हेतु किस प्रकार के समोजन की आवश्यकता है आदि मुद्दों के बारे में आँकडेवार अध्ययन करने की जरूरत है, ऐसा किसी को महसूस होते नहीं दिखता। राष्ट्रीय सम्पत्ति के अधिकतम उपयोग की दृष्टि से रासायनिक उर्वरकों की अपेक्षा ग्रामसुलभ खाद का परिपोषण करना कितना लाभदायक होगा, इस ओर भी कोई ध्यान देना नहीं चाहता। इन सब बातों की ओर ध्यान देना चाहिए, ऐसा भी लोग सोचते नहीं दीखते!

हम स्थूल आँकड़ों पर ही नजर डालें। सिर्फ पशुओं का ही खाद प्रतिवर्ष ८० करोड़ टन होता है, जिसमें [illegible]० करोड़ टन ईंधन के रूप में तथा १६ करोड़ टन जंगलों में अथवा रास्तों पर जहाँ-तहाँ सूख कर सड़ कर नष्ट हो जाता है। गाँव-गाँव में गोबर को ईंधन के रूप में उपयोग करने से होने वाली आर्थिक हानि का अन्दाज यह छोटा-सा गणित करा देगा। अगर ३० करोड़ टन गोबर का खाद बना कर कृषि में उपयोग किया जाय, तो ९० लाख टन अनाज अधिक पैदा होगा।

डाक्टर होलकर का गणित और प्रश्न : आज ही नहीं, किन्तु आज से ६७ वर्ष पहले ही डाक्टर होलकर ने भारतीय कृषि पर किये गये अपने अध्ययन के आधार पर उपर्युक्त निष्कर्ष दिया था। किन्तु ईंधन के रूप में जला दिये जाने वाले इस गोबर को खेती के कार्य में उपयोग करने के बारे में इतने लम्बे अरसे में भी कुछ प्रगति न हो सकी, इसका एकमात्र कारण यह है कि डा० होलकर द्वारा उपस्थित किये गये प्रश्न का आज तक उत्तर नहीं दिया जा सका है। वह प्रश्न यह है कि "गोबर के खाद के परिपोषण व उसके फायदों पर सरकार चाहे जितने भरोसेमन्द प्रयोग करके दिखलाये, किन्तु जब तक खेतीहर किसान को अपनी रसोई के लिए कोई वैकल्पिक ईंधन नहीं मिल जाता, तब तक ऊपरी प्रयोगों का क्या लाभ? गोबर जो जला दिया जाता है, उसकी मात्रा अलग-अलग क्षेत्रों में कम-ज्यादा होती पायी गयी है। बेलगाँव, धारवाड़, बीजापुर, कारवार आदि भूतपूर्व बम्बई राज्य के कन्नड क्षेत्र में इस सम्बन्ध में हाल में ही जानकारी प्राप्त की गयी। इस क्षेत्र को सूखा, दलदली, मध्य, समुद्रवर्ती, ऐसे चार भागों में बाँटने के पश्चात् अलग-अलग आँकडे इकट्ठे किये गये। अध्ययन से यह प्रकट हुआ कि औसतन पूरे क्षेत्र में २० प्रतिशत गोबर जला दिया जाता है, जब कि दलदली भाग में ३७ प्रतिशत तथा समुद्रवर्ती भाग में जला दिये जाने वाले गोबर का प्रमाण १२ प्रतिशत तक पहुँचा है। अतएव यह स्पष्ट हो जाता है कि गोबर का जलाना अन्य ईंधनों की उपलब्धि पर अवलम्बित है, [illegible]किसी ही मिलनी चाहिए, ऐसा नहीं। ढोरों द्वारा कुचल दिया जाने वाला कडबा, बिनौले तथा ज्वार के उपले तक जलाने के लिए लोग तैयार रहते हैं। उपर्युक्त दलदली हिस्से में इनमें से कोई भी ईंधन प्राप्त नहीं होता। वहाँ मुख्य उपज चावल होने से 'दारण' में बची हुई भूसी जलाने के काम नहीं आ सकती। समुद्रवर्ती प्रदेश में जंगलों की बहुतायत होने से ग्रामवासियों को जलाने हेतु लकडी प्राप्त करने में कठिनाई नहीं पडती। इसके और उल्टे, दलदली विभाग में सूखे अथवा समुद्रवर्ती विभाग की अपेक्षा गोबर का उत्पादन ज्यादा ही होता है। पशुओं की संख्या तो कम है, किन्तु प्रति पशु गोबर ज्यादा होता है।

गैस प्लेन्ट का महत्त्व : जला दिये जाने वाले २० करोड़ टन गोबर से 'गोबर गैस-प्लान्ट' के द्वारा ९ लाख टन नायट्रोजन याने ४५ लाख टन अमोनियम सल्फाइट के बराबर खाद मिल सकती है। सिन्द्री स्थित उर्वरक कारखाने का वार्षिक उत्पादन ७५ हजार टन नायट्रोजन (पौने चार लाख टन अमोनियम सल्फाइट) इतना है। अर्थात् गोबर गैस-प्लेन्ट के द्वारा मिलने वाले उपर्युक्त ९ लाख टन नायट्रोजन के उत्पादन के लिए सिन्द्री जैसे १२ कारखाने और बनाने होंगे। सिन्द्री कारखाने में लगी मूल पूंजी २५ करोड़ रुपया है। इस सबका मतलब यह होगा कि सिंद्री जैसे और कारखाने बनाने के लिए ३०० करोड़ रुपये मूल पूंजी के रूप में खर्च करने होंगे।

लगभग इतनी ही पूँजी से 'गोबर गैस-प्लान्ट' के द्वारा इसी मात्रा में खाद प्राप्त करना सम्भव है। लेकिन एक अन्य महत्त्वपूर्ण लाभ है, जिसकी वजह 'गोबर गैस-प्लान्ट' स्वयमेव एक श्रेष्ठ साधन ठहरता है। वह लाभ यह है कि गैस प्लान्ट से प्रचुर खाद तो मिलेगा ही, लेकिन घर-घर में सुविधाजनक रूप से जलाया जा सकने वाला निःशुल्क ईंधन भी हासिल होगा। इस ईंधन की पैसों में कीमत आँकना अनुभव से ही सम्भव होगा, फिर भी सरसरी तौर पर निम्नानुसार हिसाब किया जा सकता है।

> भारत में इस समय ६ करोड़ चूल्हे जलते हैं और उनमें ३।। करोड़ टन पत्थर के कोयले के बराबर गोबर जला दिया जाता है। गैस-प्लान्ट से इतना ही ईंधन यदि मिल गया, तो उसकी कीमत २१० करोड़ रुपया होगी और प्रत्यक्षतः तो ईंधन उससे ज्यादा मिलेगा।

ये आँकडे यद्यपि अनुमानित हैं, फिर भी गैस प्लान्ट में पैसा लगाना लाभदायक है, इतना दर्शाने में वे समर्थ हैं।

विदेशी मुद्रा की बचत : सिर्फ इतना ही नहीं, गैस-प्लान्ट के अन्यान्य लाभ हैं। आजकल की परिस्थिति में गैस-प्लान्ट से होने वाला सबसे बड़ा लाभ विदेशी मुद्रा की बचत का होगा। सिंद्री कारखाने पर की गयी २५ करोड़ की मूल पूंजी में से १० करोड़ रुपये विदेशी विनिमय के रूप में हैं। याने इस प्रकार के १२ कारखानों की स्थापना के लिए १२० करोड़ रुपयों की विदेशी विनिमय मुद्रा की जरूरत होगी। इसके ठीक विपरीत गैस-प्लान्ट में उपयोग होने वाला सारा सामान तथा कुशलता हमारे देश में सुलभ नहीं है। उसके लिए लम्बे समय तक प्रतीक्षा की भी आवश्यकता नहीं, रासायनिक खादों का कारखाना खड़ा करने के लिए कम-से-कम ३ साल लगते हैं, तो गैस-प्लान्ट साल भर में बना कर खड़ा किया जा सकता है।

मितव्ययिता

अन्य महत्त्व की बात यह भी है कि 'गोबर गैस-प्लान्ट' की मदद से नायट्रोजन के उत्पादन पर आने वाली लागत का परिमाण काफी कम होगा। यह नीचे लिखे मुद्दों से स्पष्ट होता है।

(१) 'गोबर गैस-प्लान्ट' के लिए उपयोग होने वाला कच्चा माल रासायनिक खादों में उपयोग होने वाले कच्चे माल से काफी सस्ता होगा।

(२) खादों की ढुलाई पर भी अभी भारी व्यय किया जा रहा है। 'गोबर गैस-प्लान्ट' जगह जगह बिखरे रहने से यह खर्च बचेगा।

(३) 'गोबर गैस-प्लान्ट' में व्यवस्था पर खर्च भी अल्प ही होगा। रासायनिक उर्वरकों के कारखानों में व्यवस्था के लिए जो भारी भरकम तन्त्र खडे किये जाते हैं। गोबर गैस-प्लान्ट के लिए उनकी जरूरत नहीं होगी। इतनी सारी मितव्ययिता की वजह खादों के उत्पादन पर होने वाले कुल खर्च में कम-से-कम ३० प्रतिशत कमी तो होगी ही। इस बचत का सामान्य कृषि उत्पादनों पर जो सुपरिणाम होगा, उसको अधिक स्पष्ट करने की आवश्यकता नहीं मालूम पडती।

('दि इकॉनामिक वीकली", दिल्ली से)

कीजिये कि जब तक बिहार में यह काम नहीं होगा, तब तक घर का अनाज नहीं खायेंगे।

इन दिनों बाबा की गति कुछ धीमी हो गयी है। मोतीबाबू ने पूछा, "क्या इसकी वजह आपकी तबियत नरम हुई है, यह है?"

बाबा : "गति कुछ कम हो हुई है। इसका कारण अहिंसा बढ़ी है, शांति आयी है! और सबको साथ लेकर भी तो चलना है! इसलिए अब हमारी चलुए की गति बनी है।"

सन्ध्या-समय बाबा 'विनय-पत्रिका' से तुलसीदासजी की वाणी यात्री-दल के भाई-बहनों को समझा रहे थे। भगीरथ-नंदिनी-गंगा का स्तोत्र समझाने के बाद उन्होंने कहा इसकी आखिरी पंक्ति—

तुलसी तव तीर-तीर सुमिरत रघुवंश बीर।
विचरत मति देहि मोह-महिष कालिका।

स्मरण में रह गयी है। मुझे भास होता है कि मैं हमेशा गंगा के किनारे ही घूमता हूँ। सिर्फ इतना' ही है कि कभी हजार मील इस बाजू घूमता हूँ, कभी हजार मील उस बाजू।"

राजस्थान में भूमि-प्राप्ति और वितरण-कार्य

राजस्थान भूदान-यज्ञ बोर्ड, जयपुर की सूचनानुसार राजस्थान के २६ जिलों में नवम्बर १९६० के अन्त तक के कुल आँकडे यहाँ दिये जा रहे हैं।"

८,६४० दाताओं से कुल ४,३३,२२२ एकड़ भूमि २६ जिलों में अब तक मिली है।

भूमि वितरण : मार्च '६० तक	८७,३९६	एकड	१०,३७७	परिवारों में
अप्रैल से नवम्बर ६० तक	९,११०	एकड	१,०५१	परिवारों में
कुल	९६,५०६	एकड कुल	११,४२८	परिवारों में

अब तक १५ जिलों से विवरण प्राप्त हुआ है, उसके अनुसार नाकाबिल-काश्त, अगढालू एवं दाताओं को वापस की हुई भूमि कुल ३५,१६४ एकड है, जो २,४७८ दाताओं को वापस की गयी है। शेष भूमि में से ३,०१,६५२ एकड भूमि २६ जिले में वितरित होना अभी बाकी है। इसमें करीब ढाई लाख का एक चक ही है, जिसको गोसंवर्धन के काम में लाने का विचार है।

उत्तर प्रदेश के कार्यकर्ताओं के बीच विनोबा

सुन्दरलाल बहुगुणा

भूदान-यज्ञ आन्दोलन के प्रणेता आचार्य विनोबा भावे को जिस प्रदेश में अपने आन्दोलन की गंगोत्री का प्रवाह तीव्र करने के लिए प्रारंभ में सबसे अधिक सहयोग मिला, वह सर्वोदय के कार्य की दृष्टि से उनके लिए हमेशा 'प्रश्न प्रदेश' बना रहा है। इन्दौर जाते हुए मई के प्रारंभ में आखिर उन्होंने स्वयं ही इस 'प्रश्न' को हल करने की कोशिश की। सारे प्रदेश में सघन कार्य के लिए चम्बल घाटी, उत्तराखण्ड और काशी के क्षेत्र निश्चित करना इस दिशा में पहला कदम था। प्रदेश के निष्ठावान् कार्यकर्ता सेनापति के आदेशानुसार वहाँ काम पर जुट गये। अन्य स्थानों के काम में भी कुछ गति आयी और हाल ही में जब आसाम जाते हुए विनोबाजी जमनिया में अपने अंतिम पड़ाव पर थे, तो उन्होंने उत्तर प्रदेश के प्रश्न का इन शब्दों में उत्तर दिया :

"उत्तर प्रदेश में कार्यकर्ताओं की अच्छी जमात बनी है। प्रदेश बहुत बड़ा है। उस हिसाब से संख्या कम पड़ती है। नेता बहुत बड़े-बड़े हैं, इसलिए छोटे लोगों का प्रभाव देर में पड़ेगा। लेकिन प्रभाव पड़ेगा अवश्य। धीरे-धीरे हृदय में प्रवेश होना है। उनको नेतृत्व करना है और हमको सेवकत्व करना है। लोगों का अन्तरंग हम पर न चढ़े। इतनी सावधानी, इतनी तटस्थता हममें हो। सच्चाई, प्रेम, करुणा, सतत काम करने की लगन, तटस्थ बुद्धि हो। इस दृष्टि से कार्यकर्ता अच्छे हैं। कोई छोटे-मोटे मतभेद होते हैं, उनकी चिंता नहीं करनी चाहिए।

अनुशासन

मुगलसराय से आगे की पदयात्रा में शांति-सेना के 'कमाण्डर' ने अपने सैनिकों को बौद्धिक शिक्षण के साथ-साथ व्यावहारिक शिक्षण दिया। पदयात्री टोली को वाराणसी कलकत्ता की व्यस्त सड़क पर निरंतर दौड़ने वाले ट्रकों को रास्ता देने के लिए एक क्षण में किनारे होने का आदेश मिलता था। विनोबा शुरू से सारी कतार का स्वयं निरीक्षण करते। इस प्रकार का अभ्यास वे कभी-कभी ट्रकों के न आने पर भी कराते।

अपने क्षेत्र में अनुशासित ढंग से काम करने की सीख देते हुए विनोबा ने कहा : "जहाँ भी आप दस-पाँच लोग इकट्ठा होकर काम करते हैं, वहीं पर मुखिया की आज्ञा मानें। समझना चाहिए कि पत्थर पर सिंदूर लगा कर 'हनुमान' बनाते हैं। हमने ही बनाया, पर हम उसके सामने साष्टांग करते हैं।"

क्या हुक्म मानने की बात का शांति-सेना के विचार के साथ विरोध नहीं है ? इसका उत्तर देते हुए बाबा ने कहा :

"विचार करें कि शांति सेना के विरोध में कौन सेना खड़ी है, जो हुक्म की पाबंद है। एकदिल होकर काम करने की बात हिंसावालों ने दिखा दी है। हमारे विचार भले ही आजाद रहें—मिल कर निर्णय करें और न कर सकें, तो मुखिया की आज्ञा अंतिम होगी। मतभेदों का आरंभ जवानों में बहुत होता है। *वासना होती है, अहंकार होता है।* फौरन बेमेल हो जाते हैं। काम बनता ही नहीं। जवानों को वाद-विवाद करना चाहिए, लेकिन निर्णय एक ही होना चाहिए।"

उत्तर प्रदेश का संकल्प

जमानिया से बाबा की विदाई के अवसर पर उत्तर प्रदेश के कार्यकर्ताओं ने मार्च तक अपना पूरा समय भूमि वितरण और प्राप्ति पर लगाने का संकल्प प्रगट किया। उत्तर प्रदेश में अभी पाँच लाख एकड़ में से लगभग पौने चार लाख एकड़ भूमि बँटने को शेष है। सारे आन्दोलन को पूर्णतया जनाधारित बनाने के लिए सूता-ञ्जलि संग्रह पर विशेष जोर दिया जायगा। श्री करण भाई ने इसका दायित्व लिया है और दस लाख गुंडी सूताञ्जलि-संग्रह करने की योजना पेश की है। उन्होंने जनाधार के एक नये स्रोत, फसल पर खलिहान इकट्ठा करने की ओर भी कार्यकर्ताओं का ध्यान दिलाया। इसकी शुरुआत छोटे पैमाने पर उत्तराखण्ड में हुई थी और हाल ही में देवपुरी के आसपास भी प्रयोग किया जा रहा है।

कार्यकर्ताओं में स्वाध्याय और ज[...] में साहित्य के प्रचार के सवाल को प्रदेशीय सर्वोदय-मंडल ने छुआ है। [...] व्यवस्था की जा रही है कि सर्व सेवा सं[घ] प्रकाशन की प्रत्येक नई पुस्तक की [...] प्रति छपते ही जिला सर्वोदय-मंडल [में] पहुँच जायगी, जिससे कार्यकर्ता उसे स्व[यं] पढ़ सकें तथा जनता में भी रुचि [पैदा] कर सकें।

सार्वजनिक जीवन में परिवार-भाव

कार्यकर्ताओं में आपस में परिवार-भावना बढ़े। इसके लिए दस-दस आ[द]मियों के पीछे एक-एक ऐसे हों, जो [पूरे] परिवार के लिए सोचें। परिवार-भाव[ना] बिना व्यक्तिगत आकर्षण और प्रेम के न[हीं] आ सकती। *काम और प्रेम के साथी ए[क]* ही होने चाहिए। इस संबंध में बाबा ने श्री पुजारी रायजी और उनके साथियों के परिवार सहित घूमने के प्रयोग का आदरपूर्वक स्मरण किया।

उत्तराखण्ड में काम करने वाली बहनों को उन्होंने सलाह दी कि वे एकसाथ रह कर काम करें। इसी प्रकार पुरुष-कार्यकर्ता भी रहें। वो एकसाथ रह कर एक-दूसरे के गुणों को स्नेहपूर्वक बढ़ाने, दोषों को प्रेम से ढँकने और दूर करने वाले होंगे।

प्रकाशन का प्रश्न सहज ही आ गया, इस पर बाबा ने कहा :

"जो कुछ होता है, उसका प्रकाशन अवश्य होना चाहिए और सारे देश में होना चाहिए। उससे एक-दूसरे को प्रेरणा मिलती है। आन्दोलन को बल मिलता है। दूसरों का भी गुण गाना चाहिए और अपने *भी गुण गाना चाहिए, यह मेरी नई* खोज है।"

[हम क्यों शांति-सैनिक बनें : पृष्ठ ७ का शेष]

गया है, क्योंकि वह अगर इसके लिए गम्भीरतापूर्वक सोच-समझ कर अब कदम नहीं उठायेगा, तो वह भी बच नहीं सकेगा। यह शान्ति-सैनिक का तीसरा काम है, जो हर व्यक्ति को अपने निज के स्वार्थों में भी हाथ में लेना चाहिए।

सामाजिक अन्याय का मुकाबला करने की ताकत हममें कहाँ से आयेगी ? अब तक लोग सोचते रहे हैं कि हमने लाठी, तलवार, बन्दूक या राजसत्ता हाथ में ले ली, तो अन्याय का मुकाबला कर सकेंगे। अब तक भी यह मृग-मरीचिका ही साबित हुई है, पर अब तो इस तरह सोचना खतरे से भी खाली नहीं रहा है। समाज हमारी बात सुने, इसके लिए अब हमें अपने में दूसरे ही प्रकार की ताकत पैदा करनी होगी और वह ताकत हमारी सेवा से पैदा होगी। जो जितनी सेवा समाज की निरंतर करेगा, उतना ही ज्यादा उसका असर समाज पर होगा और उतना ही ज्यादा वह सामाजिक और आर्थिक अन्यायों को दूर करने में कारगर हो सकेगा। इसलिए निरन्तर सेवा, यह आवश्यक चीज है।

इस प्रकार हमने देखा कि हर मनुष्य के लिए, उसके जीवन के ही अस्तित्व के लिए, ये चार बातें आज आवश्यक हो गयी हैं :—

(१) हर व्यक्ति अपने शरीर, परिवार, समाज और विश्व के प्रति अपने कर्तव्यों को ठीक से निभाये।

(२) आसपास कहीं तात्कालिक अशांति या हिंसा फूट पड़े, तो शांति स्थापना की कोशिश करे।

(३) युद्ध और सर्वनाश का खतरा टालने के लिए इनके कारणों को—यानी सामाजिक और आर्थिक अन्यायों को—दूर करने का भरसक प्रयत्न करे।

(४) ऐसा करने की अपनी ताकत बढ़ाने के लिए निरंतर सेवा का मार्ग अपनाये।

इससे ज्यादा विनोबा शान्ति-सैनिक से और क्या चाहते हैं ? जो इतना करता है, वह शान्ति-सैनिक है ही, चाहे वह शान्ति-सेना में नाम लिखाये या न लिखाये।

आज हम ऐसी स्थिति में पहुँच गये हैं कि हर व्यक्ति को आँख खोल कर, समझ-बूझ कर ये सब काम करने ही होंगे।

इसलिए विनोबा जब यह कहते हैं कि हर ग्राम-सेवक या ग्राम-सेविका, हर खादी या रचनात्मक कार्यकर्ता या हर व्यक्ति शान्ति-सैनिक बने, तो आज एक मनुष्य के नाते आपका जो साधारण कर्तव्य है, उससे कुछ भी ज्यादा की माँग वे नहीं कर रहे हैं। अपनी-अपनी शक्ति, क्षमता और योग्यता के अनुसार हर व्यक्ति को शान्ति-सैनिक बनना ही है। शान्ति-सैनिक बनने के लिए अपने मानवोचित सामान्य कर्तव्य निभाने के अलावा उसे और कुछ नहीं करना है।★

★ ता० २८-१२-६० को कस्तूरबाग्राम (इंदौर, दक्षिण भारत) में शिविर-छात्रों के बीच दिये गये भाषण के आधार पर।

अपना मालिक मैं खुद हूँ!

मैं एक दिन मेरे एक मित्र के साथ एक दूकान में गया। मेरे मित्र ने वहाँ से अख-बार खरीदा और दूकानदार को नम्रता-पूर्वक धन्यवाद दिया। दूकानदार ने मेरे मित्र की तरफ देखा तक नहीं, धन्यवाद का उत्तर तो दूर।

मैंने बाहर आने पर मेरे मित्र से कहा : 'कैसा घमंडी है, यह दुकानदार ?'

मेरे मित्र ने कंधे उचकाते हुए कहा, "ओह, रोज ही वह ऐसा करता है।"

"तो फिर तुम इतनी नम्रता क्यों दिखाते हो ?"—मैंने पूछा।

"क्यों नहीं ?"—मेरे मित्र ने प्रतिप्रश्न किया। "मुझे कैसा बर्ताव करना चाहिए, इसका निर्णय मैं उस पर क्यों छोड़ूँ ? अपने व्यवहार का मालिक मैं खुद हूँ।"

—सिद्धराज

चम्बल घाटी की डायरी

भिण्ड जिले के परगना लहार में १८ गाँवों के शान्ति-मित्रों की एक सभा चम्बल घाटी शान्ति-समिति के अध्यक्ष स्वामी कृष्णस्वरूप की अध्यक्षता में १३ दिसम्बर को काथा ग्राम में हुई। प्रत्येक गाँव से एक शान्ति मित्र लेकर १८ गांवों के १८ शान्ति मित्रों की एक क्षेत्रीय शान्ति-समिति बनी। श्री तोताराम जी संयोजक बनाये गये। स्वामी कृष्णस्वरूप और महावीर सिंह ने समिति के कार्यक्रम के बारे में बताया। इस क्षेत्र में घूम रहे शान्ति-सैनिक सर्वश्री राजनारायण त्रिपाठी, मुरलाल और चेतसिंहजी के प्रयत्नों के परिणाम-स्वरूप यह शुभारंभ हुआ और ८२ नये शान्ति-मित्र भी मिले।

समिति की बैठक १० दिसम्बर को प्रधान कार्यालय भिण्ड में हुई, जिसमें समिति के विधान, रजिस्ट्रेशन तथा आगे के कार्यक्रम पर चर्चा हुई।

जनवरी, १९६१ में होने वाले चम्बल घाटी शान्ति एवं विकास-सम्मेलन के स्वरूप और कार्यक्रम पर विचार-विमर्श के लिए क्षेत्र के सार्वजनिक कार्यकर्ताओं की एक सभा ११ दिसम्बर को हुई, जिसमें सात व्यक्तियों की समिति बनी।

अभियुक्त मटरे बरी

विनोबाजी के समक्ष आत्मसमर्पणकारी बागी मटरे आगरा के अतिरिक्त सेशन जज श्री आफताब अहमद की अदालत से धारा ३९५ और ३९७ के आरोपों से निर्दोष बरी हुआ। विद्वान जज ने अपने फैसले में सबूत की कहानी को भ्रामक और साक्षी को अपर्याप्त मानते हुए उसे मुक्त किया। बचाव पक्ष की ओर से एडवोकेट श्री रामदुलारे तिवारी ने निःशुल्क पैरवी की।

भिण्ड में बेड़ियाँ कटीं!

१८ दिसम्बर को प्रातः भिण्ड जिला-जेल आत्मसमर्पणकारी बागियों के पैरों की बेड़ियाँ काट दी गयीं।

सब बरी हुए!

भिण्ड में चल रहे मुकदमों में, २३ सितम्बर, '६० को लोकमन, तेजसिंह, रामसनेही, डक, विद्याराम, कन्हई, रामदयाल, बदनसिंह, भूपसिंह धारा ३०७ के आरोप से सब निर्दोष बरी घोषित किये गये। पूरे गैंग के एक साथ बरी होने की यह पहली घटना है।

आरोप की कहानी थी कि भिण्ड जिले के गोरमी पुलिस-थाने के अन्तर्गत जमसारा बेहड़ में २६ मार्च और ३० मार्च '६० उपरोक्त बागियों की पुलिस से मुठभेड़ हुई। २६ मार्च की मुठभेड़ में लोकमन, तेजसिंह, रामसनेही, डक, कन्हई और विद्याराम थे तथा ३० मार्च की मुठभेड़ में लोकमन व रामसनेही, कन्हई, विद्याराम, रामदयाल, बदनसिंह और भूपसिंह थे। विद्वान न्यायाधीश ने दोनों पक्षों से गोली चलने की बात को भ्रामक माना, क्योंकि एक भी खाली कारतूस व गोली का निशान घटना-स्थल पर नहीं बताया गया है!

पुलिस के गवाहों का २००-३०० गज की दूरी पर झाड़ियों की आड़ में पहचानना भी भ्रामक समझा गया! बागी विद्याराम का नाम तो आत्मसमर्पण के बाद शामिल किया दीखता है! दोनों मुकदमे जिला सेशन्स जज श्री मजूर अली रिजवी के न्यायालय में चले और शासन के खिलाफ बचाव-पक्ष की ओर से क्रमशः श्री लालसिंह कुशवाहा और श्री मुन्नासिंह कुशवाहा ने निःशुल्क पैरवी की।

भिण्ड, लश्कर, अम्बाह और आगरा, इन चारों स्थानों की अदालतों में आत्मसमर्पणकारियों के मुकदमे चल रहे हैं। भिण्ड में रामदयाल और बदनसिंह पर अब कोई अभियोग न होने से उनका आगरा जेल के लिए स्थानान्तरण किया गया है। आगरे के पैरवी-कार्य की जिम्मेदारी श्री बाबूलाल मित्तल ने सँभाल ली है।

विनोबाजी के सान्निध्य में आयोजित उत्तर प्रदेश शान्ति-सेना रैली में स्वामी कृष्णस्वरूप, लल्लूलाल, महावीर सिंह और भगवत सिंह वाराणसी गये।

मासिक बुलेटिन का निश्चय

समिति के समाचारों का प्रकाशन नये वर्ष, १९६१ से चार पृष्ठों के मासिक बुलेटिन के रूप में होने का निश्चय हुआ, जिसका नाम 'शान्ति की राह पर' और सम्पादक स्वामी कृष्णस्वरूप, हेमदेव शर्मा और सुदर्शन रहेंगे। पहला अंक १५ जनवरी '६१ को प्रकाशित होगा।

शहरों में पोस्टर-आंदोलन सक्रिय

मेरठ

स्त्री आर्य-समाज सदर मेरठ की बैठक में निम्नलिखित प्रस्ताव सर्वसम्मति से २६ दिसम्बर को पास हुआ।

"सार्वजनिक स्थानों पर अशोभनीय पोस्टरों का प्रदर्शन नागरिक हितों पर कुठाराघात है। साथ ही देश के नवयुवकों के तथा बालकों के नैतिक पतन का कारण है। अतः स्त्री-आर्य-समाज सदर की समस्त बहनें इस प्रकार के पोस्टरों को बन्द कराने की माँग करती हैं। पोस्टरों से सम्बन्धित व्यक्तियों से हम अनुरोध करती हैं कि इस प्रकार के पोस्टर सार्वजनिक स्थानों से तुरन्त वापिस ले लें। हम लोग जिला-अधिकारियों का भी ध्यान इस ओर आकर्षित करना चाहती हैं कि वे ऐसे पोस्टरों के प्रदर्शन पर प्रतिबंध लगायें तथा हम जनता से अपील करती हैं कि वे अपने मकानों की दीवारों पर इस प्रकार के पोस्टरों को लगाने की आज्ञा न दें।"

मेरठ लेडीज क्लब की ५ दिसम्बर की साप्ताहिक मीटिंग में बहनों ने यह प्रस्ताव पास किया कि सड़कों पर जो अश्लील चित्रों के विज्ञापन (पोस्टर) लगाये जाते हैं, उनका विरोध किया जाय तथा इसके विरुद्ध उचित कार्यवाही की जाय, क्योंकि इसका प्रभाव जनता पर बुरा पड़ता है।

लखनऊ

लखनऊ के ५२ प्रतिष्ठित नागरिकों ने, जिनमें विश्वविद्यालय के प्राध्यापक, स्कूलों और कालेजों के प्रिंसिपल, राजनैतिक पक्षों के नेता, बार-असोसियेशन के सेक्रेटरी, विधान सभा के डिप्टी स्पीकर, कारपोरेशन के सदस्य एवं अन्य सामाजिक, रचनात्मक संस्थाओं के प्रमुख भी हैं, एक अपील में समस्त नागरिकों से अनुरोध किया है कि अशोभनीय पोस्टरों को हटायें।

कानपुर

अशोभनीय पोस्टर हटाओ आन्दोलन यहाँ प्रगति पर है। सर्व सेवा संघ के इस सम्बन्ध में जो प्रस्ताव किया था, उसकी प्रतियाँ नागरिकों में वितरित की गयीं। ऐक सौ से ज्यादा प्रतिष्ठित नागरिकों के हस्ताक्षर से एक अपील नागरिकों के नाम प्रकाशित की गयी है। सिनेमा-मालिकों से भी सम्पर्क साधा जा रहा है, जिससे वे लोग स्वयं अशोभनीय पोस्टर लगाने से इन्कार कर दें।

आगरा

आगरे में एक फिल्म का अश्लील पोस्टर नजर में आने से कार्यकर्ताओं ने सिनेमा वालों को उसे हटाने के लिए निवेदन किया। जब वह नहीं हटाया गया, तो जिलाधीश को और सिनेमा वालों को सूचना दी गयी कि ता० ५ जनवरी को कार्यकर्ता उस पोस्टर को हटा देंगे। शहर में प्रचार भी जारी हुआ। ता० ४ जनवरी को सिनेमा वालों ने वह पोस्टर हटा लिया और उस जगह दूसरा भी अनापत्तिजनक दूसरा पोस्टर लगा दिया। शहर में दो और जगह ऐसे पोस्टर हैं, जिनके बारे में भी सूचना दी जा चुकी है।

अशोभनीय पोस्टर संबंधी आन्दोलन में जन-बल का भी काफी सहयोग है।

रायपुर

सिनेमा-मालिकों ने अशोभनीय पोस्टर न लगाने का वचन दिया है और निर्णायक समिति के निर्णय को मान्य करके सहयोग देने का भी तय किया है। चार स्थानों से गन्दे पोस्टर विनती करने पर हटा दिये गये हैं। स्थानीय रामकृष्ण मिशन के संचालक स्वामी आत्मानंदजी ने २४ दिसम्बर को अभियान का उद्घाटन किया। स्थानीय महिला-संस्थाओं का एक सम्मिलित प्रस्ताव भी इसके सम्बन्ध में पारित हुआ है।

इस अंक में

श्रीकृष्णदत्त भट्ट, अ० भा० सर्व सेवा संघ द्वारा भार्गव भूषण प्रेस, वाराणसी में मुद्रित और प्रकाशित। पता : राजघाट, वाराणसी-१, फोन नं० ४१९१
वार्षिक मूल्य ६) पिछले अंक की छपी प्रतियाँ ११,९५० : इस अंक की छपी प्रतियाँ ११,९५० एक प्रति : १३ नये पैसे

भूदान-यज्ञ मूलक ग्रामोद्योग प्रधान अहिंसक क्रान्ति का सन्देश वाहक

संपादक : सिद्धराज ढड्ढा

वाराणसी : शुक्रवार　　२० जनवरी '६१　　वर्ष ७ : अंक १६

केवल अपनी मनुष्यता को याद रखें, बाकी सब भूल जायँ

आणविक शस्त्रों के खिलाफ जनमत संगठित किया जाय

इंगलैण्ड के प्रसिद्ध वयोवृद्ध दार्शनिक और लेखक लार्ड बर्ट्रेन्ड रसल और विख्यात मानवतावादी पादरी माइकेल स्कोट की दुनिया के तमाम स्त्री-पुरुषों के नाम अपील

हम आणविक युद्ध और सामूहिक विनाश के शस्त्रों के खिलाफ अहिंसात्मक प्रतिरोध के आन्दोलन का समर्थन प्राप्त करने के लिए यह अपील कर रहे हैं।

पूर्व और पश्चिम की सरकारों ने मानव जाति को जिस भयानक खतरे के सामने लाकर खड़ा कर दिया है, उसको महसूस करते हुए हम यह अपील कर रहे हैं। किसी भी दिन, और हर दिन के किसी भी क्षण, एक मामूली घटना के कारण, बम फेंकने वाले विमान और टूटते हुए तारे के बीच फरक न कर सकने के कारण या किसी एक भी आदमी की तात्कालिक सनक के कारण दुनिया में आणविक युद्ध शुरू हो सकता है, जो सम्भवतः पृथ्वी पर से मनुष्य और अन्य सब प्रकार के प्राणियों का अस्तित्व खतम कर देगा। पूर्वी या पश्चिमी दोनों गुटों की आम जनता अधिकांश में इस खतरे की भयंकरता से अनभिज्ञ है। ऐसे करीब-करीब सब वैज्ञानिक, जो सरकारों की नौकरी में नहीं हैं, इस नतीजे पर पहुँचे हैं कि अगर सरकारों की आज की नीति जारी रही, तो थोड़े ही समय में सर्वनाश निश्चित है।

इस खतरे की भयंकरता के बारे में दुनिया के साधारण लोगों तक सही जानकारी पहुँचाना बहुत मुश्किल हो गया है, क्योंकि दुनिया की सरकारें लोगों के सामने ये चीजें पेश करना नहीं चाहतीं। अगर लोगों को जानकारी हो जाय, तो उनमें सरकारों की नीति के प्रति असंतोष फैलेगा। हालाँकि धीरज और बारीकी के साथ अगर अध्ययन किया जाय, तो आणविक शस्त्रों के परिणामों के बारे में सही अन्दाज लगाना मुश्किल नहीं है। लेकिन ऐसे लोगों को जिनके पास इस प्रकार गहराई से अध्ययन करने का समय नहीं है, धोखा देने के लिए सरकारों की ओर से इस तरह के तथ्य रखे जाते हैं, जिनमें किसी प्रकार की वैज्ञानिक सचाई नहीं होती। नागरिक सुरक्षा के बारे में अमरीका या इंगलैण्ड में सरकारों द्वारा जो कुछ अधिकृत रूप से कहा जा रहा है, वह एकदम भुलावे में डालने वाला है। आणविक शस्त्रों के प्रयोग और उपयोग से गिरने वाली धूलि से होने वाला खतरा जितना सरकारी अधिकारी गण जनता को बतलाते हैं, उससे कहीं ज्यादा है। इसके अलावा, सम्पूर्ण आणविक युद्ध कितना घातक है, इस बात को राजनैतिक नेताओं के बयानों में और अधिकांश अखबारों में या तो जान-बूझ कर या अज्ञान के कारण बहुत कम महत्त्व दिया जाता है। अतः इन बातों से इसके सिवा और कोई नतीजा निकालना मुश्किल है कि

आज जो जनमत को प्रभावित करने वाले हैं (यानी राजनेता और शासक), उनमें से अधिकांश लोग "शत्रु" की हार को ज्यादा महत्त्व देते हैं, बजाय इसके कि मानव जाति का अस्तित्व कायम रहे। "शत्रु" की हार का मतलब हमारी खुद की भी हार है, यह तथ्य लोगों की जानकारी से बहुत सावधानी-पूर्वक छिपाया जाता है।

सर्वनाश की योजनाएँ

आणविक शस्त्रों के खिलाफ जनता में भावना तो काफी हद तक जाग्रत हुई है, पर अभी वह भावना इतनी पर्याप्त नहीं हुई है कि सरकारों के ऊपर असर डाल सके। लेकिन सर्वनाश का खतरा इतना बढ़ गया है कि हम हमारे सहयोगियों द्वारा और अन्ततोगत्वा सारी मानव जाति द्वारा आज की सरकारों की नीति में जल्दी-से-जल्दी बुनियादी परिवर्तन करने की आवश्यकता को महसूस कराने के लिए हर सम्भव कदम उठाना अनिवार्य मानते हैं। हम चाहते हैं कि ऐसे हर माता-पिता जिनके छोटे-छोटे बच्चे हैं, और ऐसा हर व्यक्ति जिसके दिल में थोड़ी भी दया और सहानुभूति की भावनाएँ हैं, वह इस बात को महसूस करे कि इस समय उसका सबसे बड़ा कर्तव्य यह देखने का है कि दुनिया में आज जो नन्हें-नन्हें बच्चे-बच्चियाँ हैं, वे असमय ही मौत के मुँह में न चले जायँ और सामान्य तौर पर अपनी पूरी जिन्दगी जी सकें, ऐसी स्थिति कायम रहे। इन सब व्यक्तियों को यह भी समझना चाहिए कि आज की सरकारें अपनी नीति से इस प्रकार की सम्भावना को करीब-करीब असम्भव बना रही हैं।

आज की सरकारें सामूहिक कत्ले-आम की जो विशाल योजनाएँ बना रही हैं—जिनका उद्देश्य ऊपर-ऊपर से तो हमारी रक्षा का बतलाया जाता है, लेकिन वास्तव में जो सर्वनाश के लिए हैं। वे बीभत्स और भयानक हैं। इस भयानक परिणाम से मानव जाति को बचाने के लिए हम जो कुछ भी कर सकें, उसे करना हमारा सर्वोपरि कर्तव्य मानते हैं।

हमें कहा जा रहा है कि हम शिखर-परिषदों, कमेटियों और सभा-सम्मेलनों द्वारा जो कोशिशें की जा रही हैं, उनका इन्तजार करें और धीरज रखें, लेकिन कड़ुए अनुभव से हम इस नतीजे पर पहुँचे हैं कि जब तक बड़े राष्ट्र आपस में किसी प्रकार के समझौते को न होने देने की जिद पर अड़े हुए हैं, तब तक यह सलाह बिल्कुल निरर्थक है। जनमत को बनाने वाले आज जो प्रमुख साधन हैं, उनके खिलाफ होकर सामान्य वैधानिक तरीकों से एक मर्यादित सफलता से ज्यादा कुछ हासिल कर सकना मुश्किल है।

कानून का उल्लंघन अनिवार्य हो गया है

हमें यह भी कहा जाता है कि जनतंत्र में मत-परिवर्तन के जो सामान्य कानूनी तरीके हैं, वे ही इस्तेमाल किये जाने चाहिए। पर दुर्भाग्य से जो लोग सत्ता में हैं, वे करुणा और अक्लमंदी से इतने दूर हैं कि सामान्य तरीकों से उनके मत-परिवर्तन की कोशिश बहुत धीमी और मुश्किल है। नतीजा यह होगा कि अगर हम इन्हीं तरीकों पर कायम रहे, तो हम अपने उद्देश्य में सफल हों, उससे पहले ही शायद हम सब लोग समाप्त हो चुके होंगे। इसमें कोई संदेह नहीं कि कानून की इज्जत करना जरूरी है और बहुत असाधारण मौकों पर और अनिवार्य आवश्यकता महसूस होने पर ही कानून का उल्लंघन क्षम्य माना जा सकता है। अतीत में भी ऐसे कानून-विरोधी कार्यों को आम तौर पर ठीक ठहराया गया है। प्राचीन इतिहास में (हम देखते हैं कि) ईसाई शहीदों ने कानून को तोड़ा था और निःसंदेह उस वक्त बहुमत ने उनकी इस बात के लिए निंदा की थी, पर आज उनकी प्रशंसा होती है। हमें कहा जाता है कि हम सक्रिय रूप से या कम-से-कम अप्रत्यक्ष रूप से उन कामों का समर्थन करें, जिनका परिपाक ऐसी अत्याचारपूर्ण बर्बरताओं में होने वाला है, जिनकी तुलना में भूतकाल के सब अत्याचार फीके पड़ जाते हैं। जैसे ईसाई क्रान्तिकारी तत्कालीन सम्राट की हाँ में हाँ नहीं मिला सके, उसी प्रकार हम भी आज की सरकारों की नीति से सहमत नहीं हो सकते। ईसाई शहीद अपनी बात पर दृढ़ रहे और अंत में उनको सफलता मिली। हमें भी उसी तरह का धीरज रखने और कठिनाइयाँ सहन करने की तैयारी रखनी होगी, जिससे हम दुनिया को यह विश्वास दिला सकें कि हमारा कदम भरोसा रखने लायक है।

हमें आशा और विश्वास है कि जो लोग हमारी तरह महसूस करते हैं और

एक महिला की पुकार

[एक पाठक ने इंग्लैण्ड से प्रकाशित होने वाले "वायस यूनीवर्सल" नाम की पत्रिका में एक अमेरिकन महिला की ओर से छपी हुई अपील की नकल भेजी है, वह हम नीचे दे रहे हैं।

विनोबा ने जब अशोभनीय पोस्टरों और चित्रों के खिलाफ आवाज उठायी, तो एक दलील यह भी दी गयी कि शोभनीय और अशोभनीय का मापदण्ड भिन्न-भिन्न युगों में और मुल्कों में—और भिन्न-भिन्न व्यक्तियों का भी—अलग-अलग हो सकता है, इसलिए यह तय करना बहुत मुश्किल है कि क्या शोभनीय और क्या अशोभनीय है। इस दलील के समर्थन में यह कहा जाता है कि जिन बातों को हम अशोभनीय और अभद्र मानते हैं, उन्हें पश्चिमी देशों के लोग वैसा नहीं मानते।

यह सही है कि आदर्शों में और मूल्यों में भिन्नता होती है, रुचि-भिन्नता भी होती है, फिर भी कुछ ऐसी बातें हैं, जिनके बारे में अशोभनीयता-शोभनीयता का निर्णय करना कठिन नहीं होता। जिस पश्चिमी सभ्यता और पश्चिमी लोगों के भिन्न मापदण्ड होने की दुहाई दी जाती है, उसी सभ्यता और वातावरण में पली हुई एक 'पश्चिमी' महिला की यह पुकार है। जैसा हमने अन्यत्र लिखा है, सच तो यह है कि आज जो कुछ जनमत के नाम से चलता है और चलाया जाता है, वह अधिकतर कुछ चन्द स्वार्थ-प्रेरित लोगों की आवाज होती है। सामान्य स्त्री-पुरुष, चाहे वह पूरब का हो या पश्चिम का, शायद एक ही-सी तरह सोचता है।

इस अमेरिकन महिला की पुकार समस्त स्त्री-जाति की पुकार है! हमारी आँखें खुलनी चाहिए कि हम आये दिन अखबारों में, सिनेमा-घरों में, विज्ञापनों आदि में स्त्रियों के हावभाव का प्रदर्शन करके मातृ-जाति का कितना अपमान कर रहे हैं। —सं०]

स्त्री हूँ

मैं आपकी पत्नी हूँ, आपकी प्रेयसी हूँ, आपकी माता हूँ, आपकी बहन हूँ, आपकी मित्र हूँ।

मेरी मदद कीजिये

मैं इसलिए बनायी गयी थी कि मैं दुनिया को सौम्यता, आश्वासन, गम्भीरता, सुन्दरता और प्रेम दे सकूं। लेकिन मैं देखती हूँ कि मेरे अस्तित्व के इस उद्देश्य की पूर्ति *करना मेरे लिए उत्तरोत्तर कठिन होता जा रहा है।* सिनेमा और टेलीविजन वाले तथा विज्ञापनबाज मेरी जो अन्य विशेषताएँ और गुण हैं, उन सबको भुला कर मेरा इस्तेमाल केवल एक ही काम के लिए कर रहे हैं—*कामोत्तेजन के लिए।*

इसके कारण मैं अपमानित हुई हूँ; इसने मेरी आबरू को नष्ट कर दिया है; इसके कारण मैं वह बन सकने में असमर्थ हूँ, जो आप चाहते हैं कि मैं बनूँ—सुन्दरता, प्रेरणा और प्रेम का स्रोत। प्रेम की मूर्ति—मेरे बच्चों के लिए, मेरे पति के लिए, मेरे परमेश्वर के लिए।

मैं फिर से मेरा सही स्थान प्राप्त करने में आपकी मदद चाहती हूँ, ताकि जिस उद्देश्य के लिए मेरा सर्जन हुआ है, उसको मैं पूरा कर सकूँ।

हमारी जैसी मान्यता रखते हैं, वे मिल कर असर डालने वाली ऐसी ताकत पैदा करेंगे, जिसका रास्ता रोकना मुश्किल होगा और जिसके सबब से आज के पूर्व और पश्चिमी गुटों का पागलपन दूर होकर सारी मानव *जाति को एक नई आशा और उज्ज्वल* भविष्य का एहसास पैदा हो और यह दृढ़ निश्चय हो कि आइन्दा मनुष्य एक-दूसरे को मारने के लिए ऐसे दीवानी तरीके काम में लेने की ओर प्रवृत्त नहीं होगा, बल्कि आपस का प्यार और सहयोग बढ़ाने की दिशा में आगे बढ़ेगा।

तात्कालिक उद्देश्य

हमारा तात्कालिक उद्देश्य तो इतना ही है कि ब्रिटेनिया सरकार यह बात समझ ले कि रक्षा के लिए आणविक शस्त्रों पर निर्भर रहना केवल भ्रम है और इससे वह मुक्त हो जाय। इसमें अगर हम सफलता प्राप्त कर सकें, तो हमारे सामने और व्यापक कर्तृत्व का क्षेत्र खुल जायेगा। हम प्रकृति की उन विशाल सम्भावनाओं से परिचित हैं, जो कि आदमी की बुद्धि और क्रिया-शक्ति को शांति की कला और सिद्धि *के लिए लगाने से हासिल हो सकती है।* जब तक हम जिन्दा रहेंगे, तब तक जागतिक शांति और सारी मानव जाति के परस्पर भाईचारे के उद्देश्य की पूर्ति में लगे रहेंगे।

हम हर व्यक्ति से एक मनुष्य के नाते अपील करना चाहते हैं कि आप केवल अपनी मनुष्यता को याद रखें और अन्य सब बातों को भूल जायँ। अगर आप ऐसा कर सकें, तो हमारे सामने एक नये स्वर्णिम युग का रास्ता प्रशस्त हो जायेगा; अगर आप ऐसा न कर सकें, तो हमारे सामने सामूहिक मृत्यु के अलावा और कुछ बाकी नहीं रहेगा। (मूल अंग्रेजी से)

नागरी लिपि द्वारा तेलुगु सीखिये : ७

हिन्दी	तेलुगु
अभ्यास वाक्य	अभ्यासमु कोरकु वाक्यमुलु
मैं तेलुगु सीख रहा / रही हूँ।	नेनु तेलुगु नेर्चुकोनुचुन्नानु।
हम भूदान-यज्ञ पत्रिका के द्वारा तेलुगु सीख रहे / रही हैं।	मेमु भूदान यज्ञ पत्रिक द्वारा तेलुगु नेर्चुकोनुचुन्नामु।
तेलुगु भाषा सीख कर हम आंध्र प्रांत में जायेंगे / गी।	तेलुगु भाष नेर्चुकोनि मेमु आंध्र प्रांतमुनकु पोवुदुमु।
आप वहाँ क्यों जाना चाहते / ती हैं?	तमरु अचटिकि येंदुकु वेल्लदलचुचुन्नारु?
इस साल, अप्रैल महीने में वहाँ सर्वोदय-सम्मेलन होनेवाला है।	ई संवत्सरमु येप्रियलु नेललो अचट सर्वोदय सम्मेलनमु जरुगनुन्नदि।
क्या, आप भी आयेंगे / गी?	तमरुकूड वच्चेदरा?
हाँ, हम भी उसमें भाग लेंगे / गी।	अवुनु, मेमुकूड अंदु पालगोनेदमु।
मैं रेलगाडी में सफर करूँगा / गी।	नेनु रैलुलो प्रयाणमु चेयुदुनु।
मैं भी आपके साथ रेलगाडी में ही आऊँगा / गी।	नेनुकूड तमतो रैलुलोने वच्चेदनु।
वहाँ के लोग कौन भाषा बोलते हैं?	अचटि प्रजलु ये भाष माटलाडेदरु?
वे तेलुगु बोलते / ती हैं।	वारु तेलुगु माटलाडुचुन्नारु।
उनसे आप किस भाषा में बोलेंगे / गी?	वारितो तमरु ये भाषलो माटलाडेदरु?
मैं उनसे तेलुगु में बोलूँगा / गी।	नेनु वारितो तेलुगुलो माटलाडेदनु।
सम्मेलन कितने दिन चलेगा और कब?	सम्मेलनमु येन्नि रोजुलु जरुगुनु? येप्पुडु?
अप्रैल महीने-अठारह, उन्नीस बीस तारीखों में, कुल तीन दिन चलेगा।	येप्रियलु नेल-पद्देनिमिदि, पंदोम्मिदि, इरवै तारीखुललो मोत्तमु मूडु रोजुलु जरुगुनु।
सम्मेलन किस जिले में, कहाँ होनेवाला है?	सम्मेलनमु येजिल्लालो येच्चट जरुगनुन्नदि?
आंध्र प्रदेश के पश्चिम गोदावरी जिले में सम्मेलन होनेवाला है।	आंध्र प्रदेशमुलो पश्चिम गोदावरि जिल्लालो सम्मेलनमु जरुगुनु।
वहाँ पहुँचने के लिए चेन्नोलु रेलवे स्टेशन में उतरना होगा।	अचटिकि चेरुटकु चेन्नोलु रैलु स्टेषनुलो दिगवलेनु।

एक आवश्यक सूचना

संस्थाओं तथा पुस्तकालयों के लिए

सेवाग्राम से निकलने वाली अ० भा० सर्व सेवा संघ की हिन्दी मासिक पत्रिका "नई तालीम" के जनवरी १९६१ के अंक में पत्रिका के सम्पादकों ने "शिक्षा, शान्ति और अहिंसा" से सम्बन्धित विभिन्न भाषाओं में साहित्य की बहुत उपयोगी सूची प्रकाशित की है। हम पाठकों का ध्यान इस साहित्य-सूची की ओर आकर्षित करते हैं। इस सूची में शान्ति और अहिंसा के बुनियादी विचार, अहिंसक प्रतिरोध के आधुनिक प्रयोग, शान्ति-स्थापना की शैक्षणिक और सामाजिक बुनियाद, उसकी आर्थिक और राजनैतिक बुनियाद, युद्ध और अहिंसक सुरक्षा आदि विषयों पर प्रकाशित मौलिक पुस्तकों का नाम, प्राप्ति-स्थल आदि की पूरी जानकारी दी गयी है। यह सूची सभी शिक्षण-संस्थाओं और रचनात्मक संस्थाओं के पुस्तकालयों के लिए अत्यन्त उपयोगी सन्दर्भ का काम करेगी। हमारी सिफारिश है कि हर संस्था और पुस्तकालय इस सूची को मँगाकर देखें। अपने यहाँ के पुस्तक संग्रह में जो कमी नजर आये, उसे पूरी करने में यह सूची बहुत सहायक होगी। —सं०

खादीग्राम में ग्रामदान-सम्मेलन

२१ जनवरी को आचार्य विनोबा भावे के सान्निध्य में खादीग्राम, मुंगेर में एक सम्मेलन होगा, जिसमें प्रदेश भर के ग्रामदानी और ग्रामसंकल्पी गाँवों के प्रतिनिधि कार्यकर्ता आदि सम्मिलित होकर आगे के कार्य के लिए मार्ग-दर्शन प्राप्त करेंगे। स्मरण रहे कि बिहार में लगभग १६० ग्रामदान घोषित हुए हैं। सितम्बर '६० तक ८१ के बारे में जाँच-पड़ताल करके अभिपुष्टि हो चुकी है। मुंगेर जिले में ही ग्रामदानी गाँव बेगाई है, जिसकी ख्याति दूर-दूर तक फैली है। खादीग्राम के आस-पास ४ ग्रामदानी गाँव हैं। कई गाँवों में आंशिक ग्रामदान हुआ है। ग्राम-संकल्पी गाँवों में सामूहिक जीवन की ओर बढ़ने का कुछ निश्चित संकल्प होता है। जैसे प्रति व्यक्ति कम-से-कम एक गज खादी तैयार करके उपयोग करने से शुरू होकर ५ वर्ष के भीतर प्रति व्यक्ति १२ गज तक पहुँचना। इसी तरह से किसी या कई ग्रामोद्योगी वस्तुओं के बारे में भी संकल्प होता है। प्रदेश में ग्राम-संकल्पी गाँवों की संख्या काफी बड़ी है।

—पारसनाथ, मंत्री,

लोकनागरी लिपि*

छोटे गांव ग्रामपरीवार बन सकते हैं

छोटे गांव में हरअेक अेक-दूसरे को पहचानते हैं। बड़े शहरों में पता नहीं चलता। अैसी हालत में शहरों में सबका अेकपरीवार बनना मुश्कील है। परंतु गांवों की भूमीका को देखते हुअे छोटे गांव अेक परीवार बन सकते हैं।

ग्राम-परीवार अेक सरल कल्पना है। यह आवश्यक नहीं की गांव की सब जमीन अीकट्ठी कर दी जाय; परंतु मालकीयत मीटा दी जाय। लोग अपनी जमीन में से षष्ठांश भूमीहीनों को दें, जीससे वे भूमीहीन भी गांव-परीवार के अंग बन जायेंगे। अब ग्राम-सभा बना कर गांव की सारी जमीन की मालकीयत अुसके नाम से कर दी। ग्राम-सभा में सर्वसम्मती से काम चलेगा। बच्चे, बूढ़े, बेवा, बीमार और बेकार अीनका अींतजाम गांव में करना है-अीसका अर्थ है ग्राम-स्वराज्य।

जब ग्राम-स्वराज्य होगा, तब सरकार की मदद मीलेगी, दखल नहीं। आज तो अलग-अलग मालकीयत के कारण सरकारी मदद कम तथा सरकारी दखल ही ज्यादा है। ग्रामदान-भूदान का वीचार यही है की गांवों में सरकार का दखल कम हो, गांव कोर्ट, पुलीस आदी से मुक्त रहें, 'पंच बोले परमेश्वर' के आधार पर गांव की व्यवस्था चले, यही हमारा वीचार है।

—वीनोबा

* लिपि-संकेत : ि = ी ; ी = ी ; ख = ख, संयुक्ताक्षर हलंत चिह्न से।

सिनेमा-व्यवसाय को मुनाफाखोरों के दायरे से बाहर निकाला जाय

सिद्धराज ढड्ढा

अशोभनीय पोस्टरों और चित्रों को सार्वजनिक स्थानों से हटाये जाने की बात उठा कर विनोबा ने जन-मानस की एक सुप्त भावना को जागृत कर दिया है। आसपास के सारे जीवन में-क्रिया-कलाप में-अभद्रता, असभ्यता, अश्लीलता और अशोभनीयता जो बढ़ती जा रही है, उससे कितने हृदय क्षुब्ध थे, दुखी थे, मन ही मन कुढ़ते थे—पर कौन मुँह खोले? जब सारा प्रवाह एक ही ओर बह रहा हो, तो उसके खिलाफ बोलने वाला हँसी का पात्र होगा, यह डर स्वाभाविक था। 'यह तो आज की सभ्यता है'—ऐसा ही सब मन ही मन समझते थे, और सोचते थे कि शायद हम ही 'समय से पीछे' हैं, कुछ कहेंगे तो लोग समझेंगे 'कैसा दकियानूसी है, जमाने की रफ्तार को भी नहीं समझता, पुराने विचारों से अभिभूत है' आदि।

विनोबा की आवाज उठने के बाद भी इस तरह की कुछ प्रतिक्रियाएँ प्रगट न हुई हों, सो बात नहीं है। कुछ तो अज्ञान के कारण और कुछ अपने हितों को नुकसान पहुँचने के कारण, विनोबा द्वारा उठाये गये कदम के विरुद्ध भी ऐसा होना स्वाभाविक था—यह प्रतिक्रिया तो इस बात का सबूत है कि प्रहार ठीक जगह पर हुआ है—परन्तु चारों ओर से, और सब तरह के लोगों द्वारा जिस तरह विनोबा की बात का समर्थन और अनुमोदन हुआ है, वह सचमुच आश्चर्यजनक है। इससे यह जाहिर होता है कि आम लोगों का हृदय अभी कलुषित नहीं हुआ है। हम धोखे में और भ्रम में थे। हम खामख्वाह अपने-अपने मनों में डरते थे कि 'जमाना आगे जा रहा है, हम ही पिछड़ रहे हैं।'

> वास्तव में जीवन के सनातन मूल्यों के प्रति—शिष्टाचार, संयम, सदाचार आदि के प्रति—लोगों के मन में उतनी ही और वैसी ही भावना है, जितनी और जैसी पहले कभी थी।

पर बात यह है कि आज की केंद्रित व्यवस्था के कारण स्थिति ऐसी बनी है कि न सिर्फ आर्थिक और राजनैतिक सत्ता कुछ थोड़े-से हाथों में केन्द्रित हो गयी है, बल्कि प्रचार के सारे साधन भी इन्हीं लोगों के हाथों में चले गये हैं। अखबार, रेडियो, टेलीविजन, सभा मंच, विज्ञापन-बाजी, अधिकार के सारे स्थान—ये सब जो जनमत को बनाने और उसे प्रभावित करने के प्रबल साधन हैं, ये आज आम जनता की पकड़, पहुँच और प्रभाव के बाहर हैं।

> इन पर चंद लोगों का कब्जा है और इसलिए जो ये चंद लोग चाहते हैं, वही आवाज चारों ओर से निकलती है। सामान्य नागरिक हालांकि संख्या में अधिक है, लेकिन वह अकेला अकेला पड़ गया है। चारों ओर से निकलने वाली आवाज, हालांकि वह चन्द लोगों की ही होती है, फिर भी चूंकि विविध तरीकों से एक ही स्वर निकलता है, इसलिए अकेला नागरिक सहम जाता है और समझता है कि सारा जमाना एक तरफ जा रहा है, वही अकेला दूसरी तरफ है। पर उसे समझना चाहिए कि वह जिसे जमाने की आवाज समझ बैठा है, वह अक्सर चन्द स्वार्थी लोगों की हथकण्डेबाजी ही होती है।

पानी का बुलबुला

अशोभनीय पोस्टरों की बात उठा कर विनोबा ने इस बात को स्पष्ट कर दिया है। पानी का यह बुलबुला अब फूट गया है। विनोबा ने आवाज उठाई और अचानक सब लोगों ने महसूस किया कि विनोबा तो हमारे ही मन की बात कह रहा है। उन्हें भान हुआ कि हम अकेले नहीं हैं। चारों ओर से देश में अशोभनीय पोस्टरों और चित्रों के खिलाफ जो आवाज उठी और विभिन्न तबकों के लोगों के जरिये प्रकट हुई, वह जाहिर करता है कि मन ही मन इस बात का अहसास तो करीब-करीब सब लोगों को था कि जो कुछ चल रहा है, वह गलत है, पर बोलने की हिम्मत कोई नहीं करता था।

'भूदान-यज्ञ' के पृष्ठों में पाठकों ने देखा होगा कि किस तरह देश के विभिन्न हिस्सों में न्यायाधीश, राजनेता, समाज-नेता, शिक्षक, विद्यार्थी, जवान, बूढ़े, व्यापारी, कर्मचारी, कार्यकर्ता, स्त्री-पुरुष, छात्र-अध्यापक—सभी तरह के लोगों ने अपने अपने ढंग से जाहिर किया है कि विनोबा ने जो बात उठायी है वह उठाने लायक थी और बहुत जरूरी थी। अशोभनीय पोस्टरों और सिनेमाओं के कारण किस तरह देश के सैकड़ों-हजारों नौजवानों के जीवन गलत रास्ते पर लगे होंगे, उसका अन्दाजा हम नौजवानों और विद्यार्थियों के उन कुछ पत्रों से लगा सकते हैं, जो हमने 'भूदान-यज्ञ' में प्रकाशित किये हैं। दूसरे छोर पर समाज के अपेक्षाकृत ज्यादा सयाने और विचार-शील तबकों की प्रतिक्रिया है, जिसके प्रतीक इसी अंक में अन्यत्र प्रकाशित भारत सरकार के सूचनामंत्री, डा० केसकर द्वारा विज्ञापन-कर्ताओं के संघ को दी गयी सलाह और कानपुर जैसे प्रमुख नगर-महापालिका के उपाध्यक्ष का पत्र है।

सौम्यतम सत्याग्रह

विनोबा की आवाज की प्रतिध्वनि इन सबको अपने अन्दर में सुनायी दी है। यह सही है कि तफसील में जाने पर शोभनीय क्या और अशोभनीय क्या, अशोभनीय को किस प्रकार हटाया जाय, हटाने के साथ-साथ या पहले किस तरह जनमत तैयार किया जाय आदि बातें उठती हैं, पर कुल मिला कर यह प्रत्यक्ष है कि इस प्रश्न को लेकर विनोबा ने जिस प्रकार का धक्का जन-मानस को दिया, वह जरूरी था। जनतन्त्र के होते हुए भी सत्याग्रह की कहाँ और किस प्रकार जरूरत है, यह पोस्टर वाले मामले से बहुत कुछ स्पष्ट हुआ है।

> किसी भी प्रश्न के बारे में लोगों का सक्रिय चिन्तन चलता हो और उस चिन्तन के फलस्वरूप यह जाहिर हो कि लोगों की रायों में प्रामाणिक मतभेद है, तो ऐसी परिस्थिति में कोई भी पक्ष अपनी राय के प्रचार की पूरी गुंजाइश होते हुए भी 'सत्याग्रह' के जरिए अपनी बात मनवाना चाहे तो निश्चय ही ऐसा करना गलत होगा। पर जहाँ विचारों के मतभेद का कोई सवाल न हो, सिर्फ घोर निष्क्रियता हो, वहाँ उस निष्क्रियता को दूर करने के लिए 'सत्याग्रह' जैसा कदम उठाया जाय, तो वह जनतंत्र के उसूल के खिलाफ नहीं होगा। बल्कि, जैसा विनोबा ने कहा है, ऐसी परिस्थिति में जो सत्याग्रह होगा, वह सौम्यतम की कोटि में गिना जायगा।

अशोभनीय पोस्टरों को लेकर जो बात उठी है, उसका दायरा पोस्टरों तक ही सीमित नहीं है। पोस्टर तो प्रतीक हैं। जो आवाज विनोबा ने उठायी है, वह आवाज समाज में फैलती जा रही उस सब प्रकार की अश्लीलता और अभद्रता के खिलाफ है, जो जीवन की बुनियाद को खोखला कर रही है। और इसलिए, हालांकि पोस्टरों के मामले में शायद केन्द्रीय सरकार और प्रांतीय सरकारें कुछ कानून बना दें जिससे अशोभनीय पोस्टरों के सार्वजनिक प्रदर्शन पर रोक लग सके, फिर भी हमारा काम उससे खतम नहीं हो जाता। अन्ततोगत्वा जनता में समाज-शुद्धि की भावना पैदा होनी चाहिए और इस प्रकार की जागृति हो जानी चाहिए कि चंद लोग अपने हित के लिए उसकी भावनाओं, उसके आदर्शों और उसके मूल्यों पर इस तरह आक्रमण न कर सकें।

छोटी-सी माँग : बीघे में कट्ठा

आज नवीन वर्षारंभ का दिन है और पूर्णमासी भी है। आप सब लोग जानते हैं कि गया की पुण्य-भूमि से हमने कितना प्यार किया है। गये वक्त हम बिहार में आये थे, उसके पहले सारनाथ हमारा जाना हुआ था, तो वहाँ के भिक्षुओं ने गौतम बुद्ध के धर्मचक्र-प्रवर्तन की याद करते हुए हमारा स्वागत किया था और कहा कि उन्हींके चरण-चिह्नों पर चल कर हम भी उसी धर्मचक्र-प्रवर्तन में लगे हैं। यह कह कर आशीर्वाद के तौर पर 'धम्मपद' की एक प्रति दी। वह लेकर ही हमने बिहार में प्रवेश किया था।

इसी भूमि में हमने कहा कि वेदांत और अहिंसा का समन्वय होना चाहिए। हमें बोधगया में जमीन दान में मिली। उस पर आश्रम भी शुरू किया। और लाख एकड़ जमीन हासिल करने का प्रथम संकल्प यहीं बोला गया। हजारों लोगों ने दान दिया और सैकड़ों लोगों ने इसके लिए कोशिश की। ये सब संस्मरण हमारे दिल में हैं। हमारे जीवन के ये पावन-प्रसंग हैं।

सत्य, प्रेम, करुणा

इस जिले में हमारा बार-बार आना हुआ है। इस मर्तबा हम असम के रास्ते पर हैं। असम में कुछ घटना बनी है, इस ख्याल से हम वहाँ जा रहे हैं। वही एक प्रांत रह गया था और वहाँ जाना ही था। लेकिन एक आवाहन भी हुआ। हमें वहाँ जाना चाहिए, ऐसी इच्छा सैकड़ों लोगों ने प्रकट की और हमारे पंत-प्रधान ने भी जाने के लिए कहा, तो हम वहाँ जा रहे हैं।

कुल दुनिया में समस्याएँ हैं। हमारे देश में भी हैं। उन सब समस्याओं का निरसन अहिंसा से होगा, ऐसा हमारा विश्वास है। उस अहिंसा को हमने तीन शब्दों में प्रकाशित किया है—'सत्य, प्रेम और करुणा।' भारत की यह बहुत बड़ी विरासत है। दुनिया के संतों के जीवन का सार उसमें है और यह सब धर्मों का निचोड़ है। भारतीय संस्कृति का समग्र दर्शन उसमें है।

प्रभु रामचन्द्र का स्मरण 'सत्य' शब्द से, भगवान कृष्ण का स्मरण 'प्रेम' शब्द से होता है और महात्मा गौतम बुद्ध का स्मरण [करुणा] शब्द से होता है।

विनोबा

ईश्वरार्पण

दस साल से हमारा जप ... है। भगवान से हमारी प्रार्थना है कि शब्द वह हमारे मुख से निकले, उसके लायक वह हमें बनाये। सब कुछ उसकी कृपा पर निर्भर है। इन दिनों कभी हम अपने मन में महसूस नहीं करते कि हम बोल रहे हैं। हम हमेशा यही महसूस करते हैं कि [वह] हमसे बुलाता है। इस वास्ते बोलते हुए हम जरा भी सोचते नहीं—फिर हम व्यक्ति के साथ बोलते हों, या ... के, समाज के साथ। बल्कि यह [सोचने] में हमें डर मालूम होता है कि—हम सोचेंगे तो 'हम' बोलेंगे। इस वास्ते बिना सोचे बोलते हैं। उसमें गलती होती है, तो वह दोष उसीको अर्पण करते हैं। [और] अच्छा परिणाम आता हो, तो वह पुण्य भी उसीको अर्पण करते हैं। जो शब्द निकलना है, वह बड़ा ही निकलता है। छोटे शब्द निकलते ही नहीं। अब परमेश्वर हमें उस शब्द के लायक बनाये और सबको ऐसी बुद्धि और शक्ति दे, उनसे ऐसा काम हो, जिससे कि दुनिया विशुद्ध बने।

एक ही नाव में

आज ये विदेश के पाँच भाई ● हमारे साथ आये, बहुत प्यारे भाई हैं। प्रेम और करुणा की शक्ति को मानते हैं। किसी *प्रकार का भेदभाव मन में नहीं रखते हैं।* अभी हम एक ही नौका में बैठ कर आये। मैंने उनसे कहा—"वी आर इन दी सेम बोट"—हम सब भगवान के रखे हुए एक ही विचार में रहते हैं। हम सब साथ ही जायेंगे और साथ ही मरेंगे। हम ऐसा संकल्प करते हैं कि हम सब मानव हैं, मानव से कम नहीं होंगे और मानव से ज्यादा होना नहीं चाहते हैं। हम अपने को परमेश्वर के हाथ में सौंपना चाहते हैं।

हम आशा करते हैं कि गया जिले के लोग फिर से जोर करेंगे।

हमारी छोटी सी माँग है। बीघे में कट्ठा दान दें, ऐसी माँग है।

गया जिले में एक संकल्प किया था, वह अक्षरार्थ में भी क्यों न हो, पूरा हुआ—हमने आशा की थी कि यहाँ हजारों दानपत्र मिलें—और वैसा ही हुआ। अब इस जिले में बीघे में कट्ठा वाली बात चले और गया जिला आगे हो। हम फिर से महात्मा गौतम के राज्य में आते हैं।

● पीसवॉक के दूध मीरोसी सम्मेलन में भाग लेकर आये हुए पाँच विदेशी मित्र।

बिहारवासियों के नाम विनोबा का सन्देश

दान दो इकट्ठा : बीघे में कट्ठा

असम की ओर जाते हुए ता० २५ दिसम्बर को भगवान् ईसा-मसीह की जन्म-जयन्ती के पवित्र दिन पर विनोबा ने अपनी भूदान-यात्रा के दौरान में दुबारा बिहार प्रान्त में प्रवेश किया। पहली बार विनोबा ता० १३ सितम्बर १९५२ से ३१ दिसम्बर १९५४ तक यानि करीब २७॥ महीने बिहार में घूमे थे। उस यात्रा के समय बिहार प्रान्त ने ३२ लाख एकड़ जमीन भूदान में प्राप्त करने का संकल्प किया था, जिसमें से करीब २१ लाख एकड़ जमीन हासिल हुई। इस बार बिहार प्रान्त में प्रवेश करने पर विनोबा ने प्रान्तवासियों को पुराने संकल्प की याद दिलाते हुए ३२ लाख एकड़ की कमी पूरी करने के लिए फिर से आह्वान किया और इसके लिए उन्होंने "बीघे में कट्ठा" यानी हर जमीन-मालिक अपनी जमीन में से प्रति बीघा एक कट्ठा (बीघे का बीसवाँ हिस्सा) दान में दे, यह मंत्र दिया। आज विनोबा के यात्रा-मार्ग पर हर गाँव में लोगों की जबान पर और हर सभा में यही नारा चल पड़ा है—

"दान दो इकट्ठा, बीघे में कट्ठा।"

गाँव-गाँव से ऐसी कोशिश हो रही है कि गाँव में जितने बीघा जमीन है, उतने कट्ठे गाँव की ओर से इकट्ठा ही विनोबा को दान में दिया जाय।

विनोबा ने स्वयं बिहार-निवासियों के नाम नीचे लिखा सन्देश दिया है :

"बिहार ने बत्तीस लाख एकड़ भूमि भूदान में देने का संकल्प किया था। इसके पहले या इसके बाद किसी दूसरे प्रान्त ने इस प्रकार का बड़ा संकल्प नहीं किया था। बिहार के लिए यह एक गौरव की बात है और खुशी की बात है कि उस संकल्प को पूरा करने में सब लोगों ने काफी शक्ति लगायी थी और नतीजा भी उसका अच्छा आया था।

फिर भी वह संकल्प अभी पूरा होना बाकी है। संकल्प अधूरा छोड़ने से आत्म-शक्ति कुंठित हो जाती है और कोई कारण नहीं, संकल्प अधूरा क्यों रह जाय। फिर से जोर लगाया जाय तो वह पूरा हो सकता है। हिसाब बताता है कि उसका आसान तरीका यह होगा कि हर कोई बीघे में एक कट्ठा दे। उससे गाँव-गाँव में करुणा का स्रोत फूट निकलेगा और देखते-देखते उसकी बड़ी नदी बन जायेगी।

मेरा तो विश्वास है कि इस प्रयत्न से ही अहिंसा की कुंजी हमारे हाथ में आयेगी, जिससे बहुत सारे दूसरे मसले भी हल होने की राह खुलेगी। मैंने देखा कि इस बार की यात्रा में हजारों लोग सुनने आते हैं, और उनके सामने जब मैं 'बीघे में कट्ठा' यह एक छोटा-सा मन्त्र रखता हूँ, तो लोगों के चेहरे पर बहुत आशा और उत्साह की झलक दीख पड़ती है। मुझे आशा है, सब कार्यकर्ता चाहे वे किसी राजनैतिक दल के हों, चाहे रचनात्मक कार्य करने वाले हों, इस काम में सम्मिलित शक्ति लगायेंगे और अपना मूल संकल्प सिद्ध करके ही रहेंगे।

पड़ाव—भगवान

ता० २९-१२-६०

—विनोबा का जय जगत्

[पृष्ठ ३ से]

मुनाफाखोरी न हो

इस सिलसिले में एक प्रश्न और विचारणीय है। सिनेमा प्रचार का बहुत बड़ा और सरल साधन है। अखबार और रेडियो भी उसी प्रकार प्रचार के जबर-दस्त साधन हैं, पर वे दोनों ही चीजें अमुक प्रकार का केंद्रीकरण माँगती हैं। अखबार और रेडियो आदि की कमी आगे जाकर शायद ऐसी व्यवस्था हो सकती है कि वह गाँव-गाँव या हर कस्बे और शहर के नियंत्रण में रहे, पर सिनेमा के लिए आज भी यह सम्भव है। आज सिनेमा-व्यवसाय निजी मुनाफे के लिए चलता है और इसलिए सिनेमा में क्या दिखाना, क्या न दिखाना, इस पर समाज का बहुत कुछ नियंत्रण नहीं रहता। 'सेन्सर' की व्यवस्था अवश्य है, पर हर केंद्रित व्यवस्था में इस तरह के नियंत्रण जिस तरह सिर्फ नाम मात्र के रह जाते हैं उसी तरह से वह भी है। आज के सेन्सर-बोर्डों के बारे में जितना कम कहा जाय, उतना ही अच्छा है। पर सिनेमा के व्यवसाय को मुनाफाखोरी के दायरे से बाहर निकाल कर उसे शुद्ध मनोरंजन और शिक्षण के रूप में एक सार्वजनिक प्रवृत्ति की तरह सामाजिक नियंत्रण के अन्तर्गत चलाया जाय, तो आज सिनेमा के जरिए राष्ट्र के जीवन में जो जहर फैला है, वह बहुत हद तक दूर हो जाय। इस प्रश्न पर भी ध्यान दिये जाने की अत्यन्त आवश्यकता है।

समाज-शुद्धि

[पोस्टर-आंदोलन के संदर्भ में काका कालेलकर का एक मननीय लेख]

अस्पृश्यता-निवारण के आन्दोलन का ताजा अनुभव हमारे पास है। अछूतों को पाठशाला में आने नहीं देना, सार्वजनिक रास्ते पर से चलने नहीं देना, कुएँ में से पानी निकालने की सहूलियत उन्हें न रहे, मन्दिर में कीर्तन आदि सुनने के लिए बैठने की बात तो दूर। ऐसी जब हालत थी और अंग्रेज सरकार भी इस रिवाज को बरदाश्त करती थी, कभी उसका समर्थन करती थी, तब समाज के नेताओं ने लोगों की धर्मबुद्धि जाग्रत करने की कोशिश की। इस ढंग का आन्दोलन जगह-जगह चला, तब गांधीजी ने इस सारे सवाल को राजनैतिक क्षेत्र में लाकर राष्ट्रीय पैमाने पर इस सामाजिक अन्याय और पाप का निवारण करने का ठाना।

तब से सवर्ण और अस्पृश्य दोनों कहने लगे कि इसके लिए कानून बनाना जरूरी है। देश के सभी सुधारकों ने अस्पृश्यता-निवारक कानून बनाने पर जोर दिया। प्रांतीय सरकारों ने छोटे-बड़े कानून बनाये। और स्वराज की स्थापना होते ही राष्ट्रीय विधान के द्वारा राष्ट्र ने घोषित किया कि किसी के भी प्रति अस्पृश्यतामूलक बर्ताव करना न केवल पाप है, किन्तु गुनाह है। राष्ट्र की सरकार ऐसा गुनाह करने वाले को सजा करेगी। सवर्ण और अछूत, हिन्दू और अहिन्दू—सब लोगों ने सर्वानुमति से अस्पृश्यता-निवारक कानून पारित किया। कानून में कहीं भी कचास न रही।

लेकिन जिस दिन कानून बना, उसी दिन से लोग कहने लगे कि कानून से क्या होगा? कानून तो कागज पर रह गया है। प्रत्यक्ष रूप में अस्पृश्यता कहाँ गई है? असल बात यह है कि अस्पृश्यता ९० फी-सदी तो चली गई, लेकिन जो दस टका रही है, वह अब समाज को असह्य हुई है। कानून हुआ इसलिए नहीं, किन्तु कानून बनाते-बनाते जो लोक-जागृति हुई और समाज धर्म-अधर्म का असली स्वरूप समझने लगा, इस कारण अस्पृश्यता चली गई। कानून बनने से एक तरफ समाज-सुधारकों के हाथ मजबूत हुए, लेकिन दूसरी तरफ अस्पृश्यता-निवारण के लिए लड़ते रहनेवाला हृदय कुछ ढीला-सा पड़ गया है। जो काम लोकनेताओं को करना चाहिए, वही जब न्यायालय और पुलिस पर हम छोड़ देते हैं, तब सुधार की तेजस्विता कुछ कम हो ही जाती है।

मद्यपान-निषेध का भी ऐसा ही हुआ है। बम्बई का अनुभव हमारे पास है ही। वहाँ की सरकार ने मद्यपान-निषेध का कार्यक्रम बड़े ही उत्साह से अपनाया, कानून पास किये। पुलिस महकमे की सारी शक्ति इस कार्यक्रम के पीछे लगायी। लेकिन उसके साथ मद्यपान-निषेध का आन्दोलन रिवाजी आन्दोलन बना। रचनात्मक कार्यक्रम में भी अस्पृश्यता-निवारण का हिस्सा रस्म अदा करने की एक बात हो गई।

कानून कानून है। उसकी सारी शक्ति, उसका वीर्य पुलिसों के द्वारा और न्यायालयों के द्वारा समाज-नियन्त्रण करने में लगाया जाता है। अब श्री विनोबा भावे ने अश्लील अथवा अशोभनीय पोस्टरों को हटाने की बात उठायी है। भूदान का कार्य भी नैतिक था, ग्रामदान का कार्यक्रम जीवनपरिवर्तन का था। सर्वोदय-पात्र का आन्दोलन सामाजिक जिम्मेवारी की ओर लोगों का हृदय जाग्रत करने का था। इन सब आन्दोलनों में आर्थिक बाजू थी ही। पर लोगों में त्याग की भावना जाग्रत करके बहुजन समाज को आर्थिक लाभ पहुँचाने की बात उसमें था। आन्दोलनों का प्रत्यक्ष लाभ जनता देख सकती थी।

सार्वजनिक स्थानों में से अशोभनीय पोस्टरों को हटाने का कार्यक्रम प्रधानतया नैतिक है, जीवन-शुद्धि का है। श्री विनोबा ने यह आन्दोलन योग्य समय पर उठाया है। साथ साथ उन्होंने उसकी मर्यादा भी बाँध दी है। सिनेमा घर में जहाँ लोग दाम देकर स्वेच्छा से प्रवेश करते हैं, उन घरों का नैतिक वायुमण्डल सुधारने की बात इस आन्दोलन में नहीं है, फिलहाल उसे उठाया नहीं है। उनका कहना है, मैं इस देश का एक नागरिक हूँ। शहर के और गाँव के रास्ते आने-जाने का मेरा अधिकार है। मेरी भावना का खयाल न करते हुए अगर कोई रास्ते पर मल-मूत्र करे, दुर्गंध चीजें रास्ते पर फेंक दे, तो वह मेरे जन्म-सिद्ध अधिकार पर आक्रमण है। मैं उसे बरदाश्त नहीं करूँगा। रात को बारह बजे या दो बजे अगर कोई जोर-जोर से गाना-बजाना चलाये, शोर-गुल करे और मेरी नींद में खलल पहुँचाये, तो शिकायत करने का मेरा अधिकार है। शान्ति का भंग करनेवाले को प्रतिबन्ध करने की सूचना मैं नगर-पालिका को और सरकार को कर सकता हूँ और रक्षा की माँग कर सकता हूँ। मेरी नजर को, मेरी सामाजिक और नैतिक अभिरुचि को कलुषित करनेवाली, आघात पहुँचाने वाली चीज को रोकने का अधिकार मुझे होना चाहिए।

हम मानते हैं कि श्री विनोबा की माँग न्यायोचित है। ऐसा कानून बनना ही चाहिए। हम यह भी मानते हैं कि श्री विनोबा के जैसे राष्ट्रपुरुष ने जब एक सामाजिक बदी की ओर राष्ट्र का ध्यान खींचा है, तब ऐसे कानून बनेंगे भी। कानून बनाना कठिन नहीं है। इसके लिए घोर आन्दोलन की भी आवश्यकता नहीं है। यह बदी इतनी बढ़ी है, बेरोक बढ़ी है कि इसकी दुर्गन्ध हर-एक की नाक तक पहुँच गयी है। रशिया और चीन में स्टैलिन और माओ के महाकाय पोस्टर खड़े किये जाते हैं। ऐसे जमाने में हमारे देश में गांधीजी के सौ-सौ फीट ऊँचे पोस्टर कोई खड़े कर देता, तो बात समझ में आती। लेकिन पश्चिम का अनुकरण करके हमारे यहाँ समाज-सेवकों के नहीं, किन्तु समाज की अभिरुचि भ्रष्ट करनेवाले चित्र बनाये जाते हैं। इसका कोई इलाज हो जाना चाहिए। हमें विश्वास है कि थोड़े ही दिनों में कानून तो बन जायगा।

उसके बाद अश्लील और श्लील का भेद क्या है, शोभनीय किसे कहें, अशोभनीय किसे कहें, इसकी चर्चा करेंगी।

अश्लील और श्लील और अशोभनीय किसे कहें, इसकी व्याख्या सिनेमा पर अंकुश रखनेवाले कानूनों में है ही। इतना ही नहीं, ऐसे कानून का भंग करने वाले सिनेमा को शुद्ध करने के लिए सरकार की ओर से सेंसर बोर्ड—शुद्धिमण्डल भी स्थापित है। लेकिन क्या उससे लोगों को सन्तोष है? कानून को व्याख्या में न आते हुए कामोत्तेजक प्रसंग दिखाने की और लोकरंजन करके धन कमाने की विशिष्ट कला का काफी विकास हुआ है।

इस कला ने हमारी धार्मिक भावना पर भी आक्रमण किया है। आजकल हरएक घर में पंचांग की जगह कैलेण्डर रखने की प्रथा बढ़ रही है। ये कैलेण्डर कभी-कभी इतने सुन्दर होते हैं कि उनको देखकर चित्तवृत्ति प्रसन्न होती है, कलात्मक अभिरुचि तुष्ट होती है। सामाजिक अभिरुचि का विकास करने का वह एक उत्तम साधन है। लेकिन कभी-कभी सर्वोच्च कला कामवासना बढ़ाने की ओर भी लगायी जाती है और और इसमें अगर पौराणिक प्रसंग पसन्द किये और श्रीकृष्ण और राधा को बीच में ले आये, तो कोई भी चीज कोई अश्लील गिन ही नहीं सकता।

हमारी धार्मिक भावना में इतनी अराजकता है कि गणपति की मूर्तियाँ बनाने में सब तरह की कामुकता आ सकती है। हमारी कविताओं और संस्कृत स्तोत्रों में भी धार्मिक प्रसंगों को लेकर चाहे जितनी अश्लीलता ठूस-ठूस कर भर दी जाती है।

हमारे पुराने मन्दिरों के अन्दर और बाहर दीवारों पर और शिखरों पर ऐसी अश्लील, कामोत्तेजक, बीभत्स और अश्ला-इतनी बातें भी बतायी जाती हैं कि देखते शरम आती है।

पश्चिम में एक नया वायु चल रहा है। उसका पुरस्कार करने वाले कहते हैं कि कामोत्तेजना में बुरा क्या है, अश्लील क्या है? ऐसे लोग टूरिस्ट के रूप में भारत में आकर हमारे मन्दिरों के फोटो लेते हैं। महीनों तक मन्दिरों के पास रहकर अन्यान्य कला-कृतियों के साथ अश्लील मूर्तियों के चित्र भी खींचते हैं और हमारी कलात्मक अभिरुचि की तारीफ भी करते हैं। अभी-अभी की बात है—एक पक्ष कहता है कि फलाना उपन्यास अश्लील है, उसमें स्त्री-पुरुष के सम्भोग के प्रसंग और क्रिया का निर्लज्ज शब्दों में वर्णन किया है, तो दूसरा पक्ष कहता है कि माँ-बाप को चाहिए कि वे अपनी अठारह बरस की लड़कियों को, अपरिणीत कुमारिकाओं को यह उपन्यास खरीद कर भेंट दें। और पश्चिम के लोग तो हमारे हर क्षेत्र में गुरु हैं। उन्होंने जिस चीज को पाक माना, उसका समर्थन तो हम करेंगे ही।

और दुख की बात यह है कि हमारी प्राचीन संस्कृति का गुणगान करनेवाले कई देशभक्त हमारे मन्दिरों में, धार्मिक ग्रन्थों और उत्सवों के रिवाजों में जो अश्लील तत्त्व कभी-कभी आते हैं, उनका गम्भीरता से समर्थन करते हैं। (जब मिस मेयो ने भारत की पेटभर के निन्दा करनी चाही, और एक किताब लिखी, तब उसने हमारे धर्म-मन्दिरों की दीवारों पर और शिखरों पर कैसी कैसी मूर्तियाँ होती हैं और काम-सूत्र में वर्णन किये हुए भोग-आसन बताये जाते हैं, उसका जिक्र किया। तब मिस मेयो को जवाब देते हुए गांधीजी इतना ही लिख सके कि मन्दिरों में आनेवाले भक्त लोगों का ध्यान इन चीजों की ओर जाता ही नहीं।)

सवाल बड़ा कठिन है। सामाजिक कुरीतियों का रोग पुराना है। और इसमें एक ओर रूढ़िवादी धार्मिकों का पुरातन वायुमण्डल और दूसरी ओर यूरोप-अमेरिका की भोगैश्वर्य-प्रधान अभिरुचि का आक्रमण—इसमें से रास्ता निकालना है।

बड़े काम के लिए प्रचण्ड उत्साह से, दृढ़ संकल्प से ही प्रारम्भ करना चाहिए।

('मंगल प्रभात' से)

—•—

अशोभनीय पोस्टर्स हटने चाहिए : देश के विभिन्न शहरों की माँग

अशोभनीयता-निवारण बुनियादी नैतिक कार्य है

कानपुर नगर-महापालिका के उपप्रमुख का आश्वासन

कानपुर-कारपोरेशन (नगर-महापालिका) के उपप्रमुख (डिप्टी मेयर) श्री शिवनारायण टण्डन ने अशोभनीय पोस्टर हटाने के आन्दोलन के संबंध में कानपुर-महापालिका के सहयोग का आश्वासन देते हुए विनोबा को लिखा है :

परम पूज्य विनोबाजी,

अशोभनीय पोस्टरों को हटाने का कार्य जो सर्वोदय-कार्यकर्ताओं ने आपके आदेशानुसार प्रारम्भ किया है, यह सर्वथा उचित, प्रशंसनीय और स्तुत्य है। इस कार्य के द्वारा एक ओर तो कार्यकर्ताओं का संगठन सुगठित हो सकता है, और दूसरी ओर नागरिकों के बीच अशुद्ध बातों की ओर निरोध करने की जन-जागरण शक्ति उत्पन्न हो सकती है, जिससे कि जीवन के व्यापक क्षेत्र में विशुद्ध भावना की संगठित शक्ति उदीयमान हो सकती है। मैं तो इस कार्य को स्वराज्य-आन्दोलन के नमक-सत्याग्रह की तरह बुनियादी नैतिक कार्य ही मानता हूँ।

इस संबंध में आदरणीय कल्याणभाई से बातचीत हुई है और उन्होंने जो सुझाव दिये हैं, वे सादर और सप्रेम मुझे मान्य हैं। मैंने कानपुर के अपने सम्मानित सर्वोदय-कार्यकर्ताओं से प्रार्थना की है कि वे तत्सम्बन्धी कार्यक्रम शीघ्र बनायें और उसे कार्य-रूप में परिणत करें, जिसके लिए प्रारम्भिक प्रयास प्रारम्भ हो चुके हैं। इस सत्कार्य में महापालिका का जो भी सहयोग आवश्यक होगा, उसे महापालिका अवश्य देगी, ऐसा मेरा विश्वास है। हम लोग तो आपके भक्त और सेवक हैं। आपके दिये हुए संदेश को पूरा करने में जो भी सेवा मैं स्वयं कर सकूँ, उसे सदैव अपना अहोभाग्य ही मानता हूँ। मैं अभी तक आपके दर्शन करने के लिए हाजिर न हो सका, इसका मुझे खेद है। मेरा प्रयत्न होगा कि मैं शीघ्र ही आपकी सेवा में उपस्थित होकर चरण स्पर्श करने का सौभाग्य प्राप्त कर सकूँ।

कार्यालय उपप्रमुख
नगरपालिका कानपुर,
२१-१२-'६०

आपका सेवक
शिवनारायण टण्डन
उपनगर प्रमुख

किसी भी कीमत पर पोस्टर आन्दोलन सफल हो !

[कौशिक, कानपुर से एक भाई ने अशोभनीय पोस्टर-उन्मूलन आन्दोलन का समर्थन करते हुए अपने दिल की व्यथा इन शब्दों में प्रकट की है कि "यह आन्दोलन सफल हो, चाहे इसके लिए प्राणों की आहुति क्यों न देनी पड़े।" —सं.]

जिस दिन, प्रथम बार 'भूदान-यज्ञ' में विनोबाजी के अशोभनीय पोस्टरों के खिलाफ आन्दोलन को पढ़ा, एक भावना नस-नस में दौड़ गयी। कुछ ऐसा लगा, जैसे विनोबाजी ने मेरे मन का कार्य किया है। 'भूदान-यज्ञ' से आन्दोलन की गति का ज्ञान हो रहा है और आज अपने आपको लिखने से नहीं रोक पा रहा हूँ, जब कि ३० दिसम्बर के अंक में भाई रामचन्द्र सिंह कुशवाह के शब्द पढ़े। मैं विश्वासपूर्वक कह सकता हूँ कि इस भाई का रोग अभी लाइलाज नहीं हुआ है। आप अभी उस सीढ़ी पर पैर रख रहे हैं, जिसमें फिसलने पर तो सँभाला जा सकता है, किन्तु गिरने पर नहीं !

मैं एक ऐसा ही गिरा हुआ व्यक्ति हूँ, जिसके भविष्य को फिल्म और रेलवे-स्टेशनों पर बिकने वाले साहित्य ने निगल लिया है। मैं उन व्यक्तियों की प्रशंसा ही करूँगा, जो इस मार्ग पर गुजरे और चोर-डाकू इत्यादि की श्रेणी में आ गये। लेकिन मुझ जैसा व्यक्ति इस तरह की किसी श्रेणी को नहीं अपना सका ! परिणाम मुझ तक ही सीमित रहता, तो भी ठीक था। किन्तु परिवार का स्नेह, बड़ों का सम्मान, सुख और शान्ति पूर्णतया नष्ट हो चुकी है ! कर्तव्य से च्युत होने का इससे अच्छा प्रमाण और क्या हो सकता है कि स्वयं को पहचान कर भी अपने आप को न सँभाल सके।

जिसे व्यथा की सजा दी जाती है, वह भी नष्ट हो चुकी है। केवल रिक्तता ही शेष है ! संभावनाएँ सभी नष्ट हो चुकी हैं, सिर्फ विनोबा जैसे संत का मार्गदर्शन मिल जाय, तो पुनः कुछ उद्धार सकता हो है। अब अंतिम इच्छा यही है कि भारत के भविष्य का इस तरह पतन न हो, जैसा कि आज समाज का अनिश्चित दिशा में हो रहा है। मैं चाहूँगा कि यह आन्दोलन सफल हो, चाहे इसके लिए प्राणों की आहुति ही क्यों न देनी पड़े।

कलकत्ता के नागरिकों की सभा की माँग

अधिकारी वर्ग उचित कार्यवाही करें

सर्वोदय-विचार-परिषद्, कलकत्ता की प्रेरणा से अशोभनीय पोस्टरों के विरुद्ध आवाज उठाने के लिए कलकत्ते के नागरिकों की एक सभा ता० ८ जनवरी को हुई, जिसमें कलकत्ता-कार्पोरेशन के मेयर श्री केशवचन्द्र वसु, काजी अब्दुल वदूद, श्री बी० पी० केडिया, श्री सुधीन्द्रचन्द्र लाहा, श्री जेठालाल गोविन्दजी आदि सज्जनों ने इस आन्दोलन के प्रति अपनी शुभेच्छा प्रकट की और कलकत्ते के नागरिकों से इस आन्दोलन में भाग लेने के लिए अपील की।

मेयर श्री केशवचन्द्र वसु ने अपने भाषण में कहा : "इस समय यदि पश्चिमी देशों की नकल करके हमारे लड़के-लड़कियाँ चरित्रहीन बनती हैं, तो निश्चय ही यह एक गंभीर प्रश्न है। हो सकता है कि भारत में पश्चिम की बातें आज से पचास या सौ साल बाद आयें भी या न आयें। लेकिन इसके पूर्व हम अभी से उसकी तैयारी क्यों करें ? उसे क्यों समाज पर लादें ?"

उन्होंने अपील करते हुए कहा कि "इस पर ध्यान देना चाहिए और हम सबको यह प्रस्ताव करना चाहिए कि जो श्लील हों, शोभनीय हों, ऐसे ही पोस्टर लगने चाहिए।"

इस आन्दोलन को चलाने के लिए तेरह सदस्यों की एक सलाहकार समिति का गठन हुआ, जिसमें कलकत्ता-कार्पोरेशन के मेयर और अन्य १२ प्रमुख नागरिक हैं।

इस सभा में एक प्रस्ताव भी पारित हुआ, जिसका मुख्य अंश यहाँ दे रहे हैं :

"देखा गया है कि ऐसे चित्र, जिनके साथ कला का कोई सम्बन्ध नहीं है, सिर्फ जनसाधारण की काम-वासना जाग्रत कर अर्थोपार्जन का ही एक व्यावसायिक तरीका है एवं वे ही आम रास्तों पर प्रदर्शित होते हैं। ऐसा मालूम हुआ कि केन्द्रीय सरकार पोस्टरों के निर्वाचन की मुख्य जिम्मेदारी राज्य-सरकार की बताती है। राज्य सरकार यह बहाना देती है कि अशोभनीय पोस्टर हटाने के लिए आवश्यक शक्ति उनके पास नहीं है। कारण जो भी हो, यह सभा विश्वास करती है कि जनसाधारण के लिए हानिकर तथा समाज के लिए लज्जास्पद पोस्टरों को हटाने के लिए अधिकारी-वर्ग उचित कार्यवाही अवश्य करेंगे। सभा यह भी मानती है कि देश की भावी सन्तानों पर ऐसी अनैतिकता का विष फैल जाने से कोई भी योजना अन्त में सफल नहीं हो सकती। सभा निःसन्देह यह घोषित करती है कि अशोभनीय पोस्टरों के हटाने का मकसद सिनेमा-उद्योग को हानि पहुँचाना तथा विज्ञापन-अधिकार पर हस्तक्षेप करना नहीं है।

अतः आज की यह सभा पूर्ण विश्वास करती है कि कलकत्ता के नागरिकों को यह कर्तव्य-पालन करने का अवसर ही न आये। इसके पूर्व ही सिनेमा-व्यवसाई वर्ग तथा अधिकारी वर्ग अशोभनीय पोस्टर हटाने पर कदम उठायेंगे।"

विज्ञापन का सांस्कृतिक और सामाजिक महत्त्व

जनवरी के प्रारम्भ में बम्बई में 'एडवर्टाईजिंग कौंसिल आफ इण्डिया' का उद्घाटन करते हुए केन्द्रीय सूचना और प्रसार-मंत्री डा० बी० वी० केसकर ने इस बात पर जोर देते हुए कहा कि

> किसी देश का विज्ञापन वहाँ की सांस्कृतिक और सामाजिक मर्यादाओं के अनुरूप होना चाहिए, नहीं तो विज्ञापन की प्रभावोत्पादकता ही समाप्त हो जाती है।

साथ ही उन्होंने यह भी बतलाया कि

> हमारी आधुनिक विज्ञापन-प्रणाली, जो पाश्चात्य ढंग पर चल रही है, उसे भारतीय भावनाओं और विचारों को व्यक्त करना चाहिए। यह जरूरी है कि वह लोगों के मानसिक प्रवृत्तियों को समझे और उन पर प्रभाव डाले।

अनैतिक (गन्दे) विज्ञापनों का जिक्र करते हुए डाक्टर केसकर ने कहा कि

> जरूरत इस बात की है कि विज्ञापन करने वाले लोगों के भीतर आत्मपरीक्षण द्वारा आत्मनियन्त्रण और आत्मानुशासन आये।

'एडवर्टाइजिंग कौंसिल आफ इण्डिया', की नींव १९५९ में पड़ी थी। इस संस्था का उद्देश्य विज्ञापन को स्वस्थ और सुसंगठित रास्तों पर ले जाना है। इस संस्था ने कुछ नैतिक नियम भी बनाये और यह अपेक्षा की गयी कि इन नियमों का पालन होगा और जो इन नियमों को तोड़ेंगे, उन्हें सहज प्रयत्नों द्वारा समझाने का भी प्रयत्न किया जायगा।

अशोभनीय पोस्टरों के खिलाफ बढ़ते हुए जनमत का प्रवाह

अशोभनीय चित्र और कैलेण्डर जलाये गये ! चरित्र-निर्माण और नैतिक उत्थान की आवश्यकता

इलाहाबाद के मनफोर्डगंज मुहल्ले में सार्वजनिक सभा

"हम-आप सब अन्दर से बदल सकें तो आर्थिक, सामाजिक, राजनीतिक तथा नैतिक—सब तरह के परिवर्तन सहज सम्भव होंगे। हमारा कर्तव्य है कि नई पीढ़ी को सही ढंग से बना कर छोड़ जायें। यही

उपर्युक्त उद्‌गार मनफोर्डगंज की एक सार्वजनिक सभा में अध्यक्ष पद से भाषण करते हुए, प्रयाग विश्वविद्यालय के सुप्रसिद्ध अर्थशास्त्री, प्रो० महेशचन्द्र ने प्रकट किये। इनके भाषण के बाद अशोभनीय चित्र तथा कैलेण्डर अग्नि में वेद-मंत्रों के साथ जलाये गये। सभा में माताएँ भी उपस्थित थीं।

कार्यक्रम का श्रीगणेश दो मिनट की मौन प्रार्थना से हुआ। फिर रामायण-पाठ किया गया। उसके बाद श्री त्रिलोचन दुबे ने विनोबाजी के इस महत्त्वपूर्ण आन्दोलन की भूमिका समझायी और परिचय दिया। उन्होंने बताया कि इस आन्दोलन का आरम्भ इन्दौर से हुआ और अब यह देश की विभिन्न नगरियों में ओर पकड़ रहा है।

सुश्री कमला पोद्दार, एम. ए. ने कहा कि "अशोभनीय चित्रों, पोस्टरों, विज्ञापनों आदि से हम बहनों को बड़ी हानि होती है। दुनिया में ऐसा कौन है, जो यह दावा कर सके कि आँख से गन्दी चीज देखने, कान से गन्दा गाना सुनने और जीभ से तेज चीज चखने पर उसके मन पर खराब असर नहीं पड़ता? इन अशोभनीय चित्रों-पोस्टरों आदि से चरित्र-निर्माण में बाधा पड़ती है और जिस मनुष्य का चरित्र ऊँचा नहीं, वह कर ही क्या सकता है? चरित्र की महानता ही सुन्दर चीज है। आप सब ऐसा वातावरण बना दीजिये कि सरकार मजबूर हो जाये और यह गन्दी चीजें खत्म हों।"

'जागरूक' संस्था के संयोजक श्री प्रकाशचन्द्र ने कहा कि "इस आन्दोलन की बड़ी आवश्यकता है। यह समय की माँग है। गन्दे पोस्टरों और चित्रों के अलावा, गन्दे साहित्य के घातक प्रभाव को भी हमें नहीं भूलना है। यह सब चीजें बन्द होनी चाहिए। और फिर सिविल लाइन्स में या अन्य स्थानों पर जो चलती-फिरती तसवीरें नजर आती हैं, उनको भी सही रास्ते पर लाना नवयुवकों का उत्तरदायित्व है। हमें समाज बदलना है।"

विश्वविद्यालय की रिसर्च छात्रा, सुश्री सुवेशा बहन ने कहा कि "आज अशोभनीय चित्रों, पोस्टरों आदि के कारण, कला के नाम पर कला का सत्यानाश हो रहा है। इस सभ्यता ने हमें कहाँ से कहाँ ला दिया है? यूनिवर्सिटी और कालेज में पढ़ने वाली हमारी बहनें कपड़ों पर ज्यादा से ज्यादा पैसा खर्च करती हैं और बदन को कम से कम ढाँकना चाहती हैं। संस्कृति के नाम पर विडम्बना चल रही है। अपने जीवन की सबसे बड़ी शक्ति धर्म है और धार्मिक आधार पर ही समाज का गठन होना चाहिए।"

इलाहाबाद सर्वोदय-मण्डल के मंत्री, सुरेशराम ने कहा कि इस आन्दोलन का मकसद है जन-शक्ति खड़ी हो और लोगों में अपने सवालों को खुद ही हल करने की हिम्मत आये।

इसके बाद श्री त्रिलोचन दुबे ने बताया कि मुहल्ले के निवासियों ने अशोभनीय चित्र तथा कैलेण्डर दिये हैं, ताकि उन्हें जला दिया जाय। तब अध्यापक महोदय ने सभा से पूछा कि क्या वह जलाने के कार्यक्रम से सहमत है? सबके हाथ उठाने पर प्रो० महेशचन्द्र ने इस कार्यक्रम की अनुमति दी।

तब वेद-मंत्रों के साथ अशोभनीय चित्र तथा कैलेण्डर जलाये गये। अंत में एक गीत और राम-नाम तथा जय-जयकार के साथ सभा विसर्जित की गयी।

सुबह के समय मनफोर्डगंज में इस सम्बन्ध में प्रभात-फेरी भी निकली थी।

आगरा में सिनेमा-मालिकों ने अशोभनीय पोस्टर हटाये

पिछले अंक में प्रकाशित समाचार के अनुसार आगरा शहर में लगे हुए कुछ अशोभनीय सिनेमा-पोस्टरों के हटाने के लिए सिनेमा-संचालकों से निवेदन किया गया था। अगर पोस्टर न हटें तो ता० ५ जनवरी को सर्वोदय-कार्यकर्ता स्वयं उन्हें हटा देंगे, ऐसी सूचना भी दे दी गयी थी। पर ता० ४ को ही उस जगह से, जहाँ प्रतीकात्मक सत्याग्रह करने की कार्यकर्ताओं ने सूचना दी थी, वह पोस्टर हटा लिया गया। ता० ५ जनवरी को आगरा के सर्वोदय-कार्यालय में एक प्रेस कान्फ्रेंस बुलायी गयी, जिसमें इस बात पर प्रसन्नता प्रगट की गयी।

अन्य सार्वजनिक स्थानों पर लगे 'मुगले आजम' और 'बरसात की रात' वाले पोस्टर को ६ जनवरी तक हटा लेने के लिए सिनेमा-मालिकों को सूचना दी गयी। अगर ये पोस्टर वहाँ से नहीं हटेंगे, तो ७ जनवरी से पूरे शहर में उन्हें फाड़ा जायेगा या उन पर रंग पोता जायेगा, यह भी बताया गया। पता चला कि सूचना के अनुसार 'मुगले आजम' का 'बाहु-पाश' वाला पोस्टर सारे शहर में से हटा दिया गया। इस कार्य के लिए सिनेमा-संचालकों को बधाई दी गयी।

प्रेस-कान्फ्रेन्स में पूछा गया कि सरकारी 'सेन्सर-बोर्ड' के खिलाफ सर्वोदय-मण्डल कोई कदम क्यों नहीं उठाता? इसके बारे में प्रांतीय सर्वोदय-मण्डल के मंत्री श्री ओमप्रकाश गौड़ ने बताया कि सर्वोदय का काम जनमत तैयार करने का है। जनमत के आगे सरकार को झुकने में देर नहीं लगती। आन्दोलन को गति देने की दृष्टि से इस कार्य की जिम्मेदारी मुहल्ले-मुहल्ले में जनता अपने हाथ में ले ले, इस प्रकार की योजना भी सर्वोदय-मण्डल बनाने जा रहा है।

गंदे साहित्य की ओर भी लोगों का ध्यान आकर्षित किया जा रहा है कि वे इसका बहिष्कार करें।

'बरसात की रात' के सिनेमा-संचालकों ने ता० ७ तक गंदे पोस्टरों को नहीं हटाया। तब सर्वोदय सेवा-मंडल के सहयोगी कार्यकर्ताओं और लोकसेवकों का दल पोस्टर के स्थान, मोरा हुसैनी चौराहे पर पहुँच गया। वे जनता के सामने उस पोस्टर के अशोभनीय होने का विचार समझाने का कार्य कर ही रहे थे, इतने में सिनेमा-संचालक उस पोस्टर वाले बोर्ड को उखाड़ कर ले गये। उसके बाद कार्यकर्ताओं का दल कलक्टरी कचहरी के सामने लगे गंदे चित्र को उखाड़ने के लिए गया। वहाँ पर लगभग दो हजार व्यक्ति इकट्ठे हो गये थे। उनके सामने उस पोस्टर पर स्वामी कृष्णस्वरूपजी ने रंग पोत दिया और उसे फाड़ डाला। उसके बाद दल नजदीक के दूसरे चौराहे धाकरान पर गया। वहाँ पर जिस भाई के मकान पर गंदे चित्र का बोर्ड लगा हुआ था, उसने उतार कर उसको उलटा दिया। आगे चल कर गंदे चित्र वहाँ न लगाने की बात को भी उस भाई ने स्वीकार किया।

अशोभनीय पोस्टर-निर्णायक समिति ने अपनी मीटिंग में दो अन्य पोस्टरों को अशोभनीय घोषित किया। अतः २४ घंटों के अंदर सिनेमा-संचालकों को उन्हें हटाने की सूचना दी गयी कि अगर उन्होंने अवधि के अंदर पोस्टर नहीं हटाये, तो पूर्व-नीति के अनुसार जिलाधीश को सूचना देकर उन्हें हटाने या फाड़ने का काम कार्यकर्ता शुरू कर देंगे।

इस सूचना के परिणामस्वरूप खास बाजार में लगा हुआ एक पोस्टर तो सिनेमा वालों ने पहले ही उठा लिया।

इस तरह १० जनवरी को सत्याग्रह होने के पहले ही सिनेमा-मालिकों ने कार्यकर्ताओं द्वारा अशोभनीय घोषित किये गये बड़े पोस्टर शहरों से लगभग सभी प्रमुख स्थानों पर से हटा कर उनकी जगह छोटे पोस्टर लगा दिये हैं। इससे शहर में अच्छा वातावरण बन रहा है।

आशा है, एक माह के अन्दर आगरे शहर भर के सब अशोभनीय चित्र हट जायेंगे। श्री चिमनलालजी और उनके साथी इस कार्य में पूरी तरह जुटे हुए हैं।

डिप्टी कमिश्नर से नागरिक शिष्ट-मण्डल की भेंट

ता० ५ जनवरी की सुबह लखनऊ के डिप्टी कमिश्नर श्री एस० सी० सिंघा से एक सर्वदलीय नागरिक शिष्ट-मण्डल ने सिनेमाओं के अश्लील सिनेमा-पोस्टर विरोधी अभियान के समर्थन में भेंट की। शिष्ट-मण्डल में थे, श्री महावीर प्रसाद श्रीवास्तव, एम० एल० ए०, श्री त्रिलोकी सिंह, नेता विरोधी दल, विधान सभा, श्री निर्मलचन्द्र चतुर्वेदी, एम० एल० सी०, डा० कंचनलता सब्बरवाल, प्रिंसिपल, महिला विद्यालय, श्रीमती गौरी देवी कल्त्री, जनसंघी सदस्या, लखनऊ कारपोरेशन, श्रीमती कृष्णा निकुंज, प्रिंसिपल, सर्वोदय बाल निकुंज, प्रिंसिपल भारती गांधी, प्रो० यू० ए० आसरानी, अशोभनीय पोस्टर विरोधी समिति, श्री दरबारीलाल अरगाना तथा श्री जे० के० टण्डन भी उस समय उपस्थित थे।

काफी विचार विनिमय के बाद डिप्टी कमिश्नर साहब ने सिनेमा प्रदर्शकों को आवश्यक निर्देश देने का आश्वासन दिया। यह भी निश्चय हुआ कि डिप्टी कमिश्नर साहब शिष्ट-मण्डल तथा सिनेमा-प्रदर्शकों की एक सम्मिलित बैठक बुला कर इस सम्बन्ध में और विचार विमर्श करेंगे तथा प्रतिष्ठित नागरिकों की एक निर्णायक समिति समय-समय पर पोस्टरों का निरीक्षण करके अधिकारियों को यह निर्णय करने में मदद देगी कि कौनसे पोस्टर आपत्तिजनक हैं।

मेरठ

मेरठ में श्री रघुनाथ भाई को अशोभनीय पोस्टरों के कार्य का भार सौंपा गया। उनके यत्न से सर्वमान्य व्यक्तियों की एक निर्णायक समिति बनायी गयी। समिति ने एक चित्र के पोस्टर को अशोभनीय होने का निर्णय किया तथा उसे तुरंत हटाने की माँग की है। नगरपालिका के सदस्यों से भी मिल कर इस सम्बन्ध में एक प्रस्ताव लाने का प्रयत्न किया जा रहा है।

विनोबा यात्री-दल से

कुसुम देशपांडे

शान्तिः शान्तिः शान्तिः !

ब्रह्मवेत्ता ऋषि शान्ति की उपासना शान्ति के लिए, शान्ति से करते थे। विश्वात्मक भाव से वे उनका प्रिय शान्ति-गीत गाते थे। शान्ति-गीत के सुर भारत-भूमि की हवा में पड़े हैं। उन सुरों को व्यक्त किया जा रहा है। 'भूदान' की वीणा से शान्ति-गीत के सुर दुनिया सुन रही है।

नीले आकाश के नीचे मैदान में गाँववाले शांति की वाणी शांति से सुन रहे थे। "बापू के निर्वाण के बाद हमारी यात्रा शुरू हुई—एक शान्ति-सैनिक के नाते हम घूम रहे हैं। तेलंगाना में अशांति थी। सरकार को सेना भेजनी पड़ी। कम्युनिस्टों ने गलत तरीके आजमाये थे। लोग डरे हुए थे। हम वहाँ पहुँचे। वहीं भूदान शुरू हुआ। भूदान के परिणामस्वरूप वहाँ शान्ति हुई। सरकार वहाँ से सेना हटा सकी। कम्युनिस्टों ने रवैया बदला। लोगों को इतमीनान हुआ। इतिहास लिखेगा कि भूदान का आरंभ शान्ति के काम के लिए हुआ था। इसलिए हमारा कहना है कि शान्ति-सैनिक के लिए, रोज के लिए 'भूदान' के सिवाय दूसरा श्रेष्ठ कार्य नहीं है। रोज एक एकड़ जमीन हासिल हुई, तो भी समझना चाहिए कि शान्ति के लिए काम हुआ। करीब पाँच हजार शान्ति-सैनिक देश में हैं। वे रोज एक एकड़ जमीन प्राप्त करेंगे तो साल भर १०-१२ लाख एकड़ जमीन प्राप्त हो सकती है। इस दृष्टि से शान्ति-सैनिक काम करें। भूदान के बिना शान्ति हो ही नहीं सकती है।"

अशांति की आग में भुने जाने वाले विदेशी भाई आते हैं, शांति-यात्रा में शामिल होते हैं और कहते हैं, "सच-मुच ! दुनिया को युद्ध की आग से बचाने वाली यह राह है।" हाल ही में गांधीग्राम में ऐसे युद्ध-विरोधी, शांतिप्रिय सेवकों की परिषद् हुई थी। जिसमें करीब २० देशों के प्रतिनिधि शरीक हुए थे। उनमें से कुछ भाई विनोबाजी से मिलने आये थे। उनमें घाना, अमेरिका, फ्रान्स के प्रतिनिधि थे। और उनको लेकर श्रीमती आशादेवी भी साथ आयी थीं। श्रीमती आशादेवी ने कहा, "विश्व-शांति-सेना का विचार एक पूर्ण विचार है, ऐसा मुझे लगता है। हम जहाँ भी काम कर रहे हैं, विश्व शांति का ही काम कर रहे हैं, इस भावना से करें। इस काम के लिए अनुशासनयुक्त वैज्ञानिक मनोवृत्ति वाले कार्यकर्ताओं की आवश्यकता है। सारी दुनिया में आज आपके प्रति जो आदर-भाव है, वैसा दूसरे किसी के प्रति नहीं है। इसलिए इस काम में आपसे मार्गदर्शन की अपेक्षा है।"

विनोबाजी : "इस विषय में हमारा एक विचार है, जो लोगों की दृष्टि से 'मिस्टिक' बन जाता है। जितना छोटा क्षेत्र हम लेते हैं, उतना ठोस कार्य (कॉंक्रिट वर्क) हम कर सकते हैं और जितना व्यापक क्षेत्र हम लेंगे, उतना हमारा काम भावनात्मक रहेगा। अपनी जगह स्वच्छ करनी है, तो झाड़ू लेकर स्वच्छ करेंगे। स्वच्छ-विश्व का कार्य मानसिक होगा। उस स्थान के लिए शारीरिक काम और विश्व के लिए मानसिक। हम अपने मन में गन्दगी [illegible]

[illegible] कम चीज मेरे [illegible] वह विश्वेश्वर ! [illegible] र कर-'पीछे मे

कड़' की बात करता हूँ।

हम सब एक अनार के दाने हैं। हम सबका अपना-अपना व्यक्तित्व है। सबके अलग-अलग जाति, पंथ हैं। उनको मिटाने के पक्ष में मैं नहीं हूँ। एक विश्व के अन्दर छिपे हुए दाने हैं। सब मिल कर एक सुंदर अनार बनता है। उन दानों को पीस कर उनमें से रस निकाला जाय, तो बीमार के लिए खाने की चीज हो जाती है। पर उसके दर्शन का और स्वाद का जो आनंद है, वह अलग-अलग दाना देखने में और सेवन करने में है। इस दृष्टि से मैं विश्व-शान्ति की तरफ देखता हूँ।

मेरा अपना खयाल है कि विश्व-शान्ति बहुत वेग से आ रही है। सबके मन में जो भावना है, वह सब लोग शब्दों में नहीं व्यक्त कर सकते हैं। उसके प्रकाशन के लिए एकाध निकले हैं। उनकी कृति से या शब्दों से सबको टच पहुँचता है। कितनी आश्चर्य की बात है कि टॉल्स्टाय जैसा, रूस के एक कोने में विश्व शान्ति के लिए, विश्व के एक होने के लिए लिखता है। उन दिनों रूस आज के जैसा आगे बढ़ा हुआ राष्ट्र नहीं था। लेकिन सबको लगता था कि वह अपना ही आदमी है। मैं कभी कभी सोचता हूँ कि जब ईसा और बुद्ध पैदा हुए थे, तब लोगों में इतना ज्ञान नहीं था। लेकिन उनके प्रति पशु-पक्षी तक का प्रेम था। इस प्रकार का मन हम बनायें। यही विश्व-शान्ति का सर्वोत्तम साधन है। इस वास्ते हमारी कृति जितनी कम होगी और आत्मिक भाव से ध्यान जितना बढ़ेगा, उतना ही काम सुलभ होगा।

छोटे क्षेत्र में कृति जोरदार, उससे कम जोर शब्दों में होगा। बड़े क्षेत्र में कृति में भी कम जोर, उससे ज्यादा जोर शब्द में और उससे भी ज्यादा जोर मौन में।"

* * *

संगम-विद्यापीठ में कई तरह के सवाल विनोबाजी के सामने उपस्थित किये जाते हैं। कभी कोई साधक साधना में मार्ग-दर्शन चाहता है, कभी कोई जिज्ञासु भी पूछ लेता है। ऐसे ही रांची से आये हुए एक सेवक ने रास्ते में चलते हुए पूछा :

"हम प्रार्थना करते हैं लेकिन उसमें चित्त नहीं लगता है। ऐसी प्रार्थना से क्या लाभ होगा?"

विनोबा : प्रार्थना में हम चित्त को ईश्वर की तरफ जाने के लिए प्रेरणा देते हैं, इतना बस है। उस समय हम मन में चिंतन-शक्ति जगाते हैं। उसके अनुसार हमारा चिंतन चलता है। इसलिए मेरे लिए यह जो प्रार्थना होती है, वह अनुकूल है। शब्द से अमुक तरह का भाव पैदा होता है, बाकी शब्द का अर्थ 'डिक्शनरी' में नहीं, लेकिन विश्व में होता है। 'अश्व' शब्द का अर्थ हिन्दी में 'घोड़ा' करते हैं। लेकिन सिर्फ 'घोड़ा' कहने से क्या अर्थ होता है? जब तक विश्व में हम न देखें, तब तक मालूम नहीं होता है। यह ठीक है कि लड़के ने 'घोड़ा' शब्द माता पिता से सुना है, इसलिए उसे उसकी कल्पना आ जाती है। चित्त को एकाग्र करना है, तो चित्त-शुद्धि होनी चाहिए, मन से ऊपर उठना चाहिए। हम चित्त के गुलाम न बनें। चित्त को हम गुलाम न बनायें।

प्रश्न : उसके लिए 'फिजिकल प्रोसेस' है क्या?

विनोबा : "फिजिकल प्रोसेस हो, तब भी यह ठीक है, ऐसा मैं नहीं कहता हूँ। कोई 'क्लोरोफार्म' देकर मनुष्य को 'समाधिस्थ' बनाते हैं। उसे पता नहीं चलता है कि उसके शरीर पर क्या शस्त्र-क्रिया होती है। लेकिन उसे मैं समाधि नहीं मानता। प्राणायाम से शरीर को आरोग्य मिलता है। लेकिन उससे चित्त-शुद्धि होती ही है, ऐसा मैं नहीं मानता हूँ। प्राणायाम से एक चीज यह होती है कि अपना श्वासोच्छ्वास समान बन[illegible] है। जब कामक्रोधादि विकार आते हैं तब श्वासोच्छ्वास का परिमाण बढ़ता है उसे प्राणायाम से रोक सकते हैं। चि[illegible] एकाग्र करने के लिए संगीत, अपनी [illegible] मूर्ति जिसे श्रद्धा से सामने रखने से एका[illegible]ग्रता सध सकती है। लेकिन मैं स[illegible] नाटक ही मानूँगा। असल चीज अन्दर की है। जितना बन सके, अंदर डूबने की आदत डालनी चाहिए। इसलिए जि[illegible] चीज की हममें कमी है, उसे दूर करना चाहिए। इसे योग-सूत्र की भाषा में 'प्रतिपक्ष-भावना' कहते हैं। कठोरता है तो करुणा पैदा करनी चाहिए। प्रेममय मन बनाना चाहिए—इससे चित्त शुद्ध हो जायगा और बाद में 'प्रसन्न चेतसो ह्याशु बुद्धिः पर्यवतिष्ठते।' चित्तशुद्धि को 'प्रिऑरिटी' प्राथमिकता देनी चाहिए।

एक कार्यकर्ता से चर्चा हो रही थी। उनसे बात करते हुए बाबा ने कहा, "कार्यकर्ताओं में आपस-आपस में खूब प्यार होना चाहिए। लेकिन होता यह है कि एक होता है प्रेम-क्षेत्र और दूसरा होता है कर्म-क्षेत्र। ऑफिस में काम के साथी अलग, क्लब में टेनिस के साथी अलग, प्रेम के साथी घर में। उनसे काम का ताल्लुक नहीं। इसे मैं 'स्प्लिट् पर्सनालिटी' (छिन्न व्यक्तित्व) कहता हूँ। इसके कारण हमें सफलता नहीं मिलती है। यह सिर्फ सर्वोदय के कार्यकर्ताओं के लिए नहीं कह रहा हूँ। आगे सब दूर, सरकार में भी यही होता है।"

प्रश्न : घरवालों को इस काम में रुचि न हो तो?

विनोबा : रुचि पैदा करनी चाहिए। शिक्षक भी कहते हैं—हम दूसरों को सिखा सकते हैं, लेकिन घर में पत्नी को नहीं सिखा सकते। आप अपने कार्य में उनके मन में रस पैदा करना चाहते हैं, तो आपको भी उनके गृह-कार्य में रस लेना चाहिए। तरकारी काटने में, रसोई बनाने आदि में उनकी मदद करनी चाहिए। जिनको समाज का कार्य करने की है, उनको शादी करना मुनासिब नहीं

हुआ, कहते हैं। ऐसी शादी में बच्चा पैदा हुआ, वह भी आप 'एक्सीडेंट' ही मानेंगे। ऐसी हालत में शिक्षक बाहर पढ़ाने जाता है या सार्वजनिक सेवा में लगा हुआ भाई बाहर काम पर जाता है। लेकिन अपने बच्चों को एक घड़ा समय नहीं देता है। क्या बच्चे को सिखाना, वगैरह सिर्फ माँ की जिम्मेवारी है? बालक तो माता-पिता दोनों का है। फिर ऐसे त्यागी पति की पत्नी बच्चे को सिखाती है कि 'बेटे तू चाहे जो बन, पर अपने पिता के जैसा बेवकूफ मत बन!' यदि बालक का जन्म आप 'एक्सीडेंट' मानते हैं, इरादा-पूर्वक आपने उसे जन्म नहीं दिया है, तो उसके संस्कार आपके जैसे हों, ऐसा आप क्यों चाहते हैं?"

रास्ते में प्रश्नकर्ता कभी-कभी ऐसे मजेदार सवाल पूछते हैं। एक दिन एक भाई ने कहा, 'बाबा उपदेश दीजिये।"

बाबा ने कहा, "अरे भाई! डॉक्टर के पास जाओगे, रोग नहीं दिखाओगे और दवा माँगोगे, तो डॉक्टर क्या कहेगा? पानी पियो! वैसे उपदेश दूँ याने क्या? यही कहूँगा—'रामनाम' लो। सब संतों ने सब दुःखों की दवा बतायी है—'रामनाम'।"

यह कह कर बाबा ने एक किस्सा सुनाया, "महाराष्ट्र में एक वैद्य थे। हर चीज में वे नमक का इलाज बताते थे। आँख में नमक का पानी डालो, एनिमा में नमक लो, तरकारी में ज्यादा नमक लो वगैरह। आखिर हुआ क्या? उन्होंने संन्यास लिया। संन्यास लेने के बाद पुराना नाम बदलना पड़ता है। उन्होंने अपना नया नाम रख लिया—"लवणानंद"। याने संन्यास में भी उनका 'नमक' नहीं छूटा।"

फिर धीरे से हँस कर बाबा ने कहा, "वैसे हम हैं 'भूदानानंद'। हम तुम्हें यही उपदेश देंगे कि 'भूदान' करो। उससे अध्यात्म भी सधेगा और भौतिक विकास भी।"

सब खिलखिला कर हँस पड़े!

इन दिनों बाबा 'भूदान-प्राप्ति' पर विशेष जोर दे रहे हैं। हर रोज चर्चा में, प्रवचन में यही बात दुहरा रहे हैं। आज पंजाब के कार्यकर्ताओं को संदेश में लिखा:

> "हमारा मुख्य लक्ष्य गाँव-गाँव में ग्रामस्वराज्य की स्थापना का है। यह हमारी आँखों से ओझल नहीं होने देना चाहिए। उसका आधार है गाँव वालों का आपस-आपस में प्रेम। उसके लिए हमने भूमिहीनों को भूमिदान के जरिये जमीन देने की बात देश के सामने रखी है। इस मुख्य चीज को अलग रखकर और हमारा कोई काम जोर नहीं पकड़ेगा। जैसे शुरू में पदयात्राएँ चलती थीं, वैसी चलनी चाहिए। नई जमीन हासिल करनी चाहिए और हासिल करते ही फौरन बाँट देनी चाहिए।"

●

विनोबा : एक रेखाचित्र !

[१]

अक्तूबर १९५१ की दिवाली की रात थी और विनोबाजी का बरारी (मथुरा) में कैंप। मैं कैंप में प्रबन्धक की भूमिका अदा करने पहुँचा था, किन्तु दिव्य विभूति के दर्शन कर अपने को कृतार्थ समझ रहा था। मथुरा जिले की सीमा में प्रवेश करते समय प्रातःकालीन उषा के अरुण वातावरण में सौम्य सन्त की प्रथम झाँकी आज भी मेरी स्मृति को पुलकित कर देती है। आगे-आगे दो बच्चे और अगल-बगल में कार्यकर्ताओं से घिरे हुए बाबाजी सिर पर एक खद्दर का टुकड़ा बाँधे हुए तीव्र गति से आगे बढ़ते आते थे, नौसिखिए और स्वागत हेतु एकत्रित भीड़ उनके पीछे, बगलों में और कोई-कोई कौतुकी आगे भी दौड़ता चलता। बाबा ने शरीर पर एक खद्दर का चदरा डाल रखा था और धोती घुटनों तक ही थी। पैरों में चमड़े की चप्पलें थीं, जिनमें अँगूठे में पोया जाने वाला चमड़े का छल्ला खद्दर की चीर से लिपटा हुआ था। बाबा के मुख पर अपूर्व तेज बरसता था—देखने वाला एकबारगी अभिभूत हो जाता और न देख पा सकने वाला बार-बार दौड़ कर सामने जाता, किन्तु रुक कर जब तक निगाह जमाने का प्रयत्न करता कि बाबा सर्र से आगे खिसक आते! इस प्रयत्न में एक सज्जन को तो अच्छी पटक भी लगी, किन्तु इससे उनकी उत्कंठा तीव्र हो गयी और अन्त में वह दर्शनों से तृप्त होकर ही सन्तुष्ट हुए।

उस समय बाबाजी की दाढ़ी काली थी और सिर के बाल विरल। चेहरा सूखा हुआ और गालों में बड़े-बड़े गड्ढे थे। बाबाजी ने विश्राम-स्थल पर पहुँच कर अपना संक्षिप्त प्रवचन दिया और उसके बीच में ही जब चदरा उतार कर एक ओर रख दिया, तो मुझे उनके वक्षस्थल की सारी हड्डियाँ साफ-साफ दिखाई देने लगीं। उन्हें कोई भी गिन सकता था!

आग्रहपूर्वक निवेदन करने पर मुझे १० मिनट का समय मिला। मैं अन्दर गया। बाबाजी चारपाई पर बैठ कर ध्यान-मग्न कर रहे थे, किंतु चिंतन में लीन थे। उनके पास 'धम्मपद' पुस्तक खुली रखी थी। उस मूर्तिमान तपस्या ने कमरे में मेरे घुसते ही आँखें खोलीं और दोनों हाथ जोड़ दिये। मैं प्रणाम कर बैठ गया।

बाबा ने धीरे-धीरे मृदुलता भरे स्वर में पूछा—"कहिये, आप क्या करते हैं?"

मैंने उत्तर दिया—"यहाँ सरकारी कर्मचारी हूँ।"

अगला प्रश्न हुआ—"काम में मन लगता है?"

मजबूरन सत्य बोलना पड़ा—"काम तो बुरा नहीं, किन्तु पद्धति अरुचिकर है। पैसा तो मिलता है, किन्तु मन का समाधान नहीं है। क्या करूँ?"

बाबा ने 'हूँ' बड़े जोर से कहा और फिर आदेश के स्वर में बोले—

"कुछ और पढ़ो और तब रुचि का काम मिलने पर करना।"

मेरी शंका का समाधान हो चुका था। मुझे जिस मार्गदर्शन की आवश्यकता थी, वह हृदय को जानने वाले ने प्रदान कर कृतार्थ कर दिया था। अतः मैंने तुरन्त ही प्रणाम किया और निर्धारित समय से पूर्व ही बाहर चला आया।

फिर सोनई (मथुरा) कैम्प तक मैं बाबाजी के साथ रहा, किन्तु बाबाजी ने मुझसे कुछ न कहा (जब कि सोनई कैम्प पर बाबा ने सभी लोगों से उनकी-उनकी बातें पूछी थीं, किन्तु मेरी ओर देख कर केवल मंद हास्य किया और मुझसे अगले व्यक्ति की ओर आँखें फेर ली थीं और वह अपनी बात कहने लगा था) और न मैं ही कुछ पूछ सका।

* * *

[२]

इस वर्ष (१९६०) बाबाजी घूम कर फिर इसी क्षेत्र में पधारे। मैं आगरे में था। बाबाजी के दूर से दर्शन किये। जनता में दिया हुआ भाषण सुना, किन्तु पास जाकर कुछ पूछने का साहस नहीं हुआ, क्योंकि इस ९ वर्ष की अवधि में मैं अपनी रुचि के कार्य को प्रारम्भ नहीं कर सका था। (यद्यपि आदेश के पूर्वार्ध का अक्षरशः पालन कर चुका था।) किन्तु इस बार उन्होंने आगरा से जो माँग रखी, उससे मुझे 'कुछ' पा जाने का-सा भान हुआ।

अब बाबाजी की काली दाढ़ी सफेद हो गयी है! सम्भवतः उसकी लम्बाई भी बढ़ गयी होगी। मुझे उनकी छाती और शरीर के अन्य अंगों पर पहले की अपेक्षा अब कुछ अधिक माँस प्रतीत हुआ। कपड़े के टुकड़े के स्थान पर इस बार वे हरे रंग का टोपा-सा सिर पर धारण किये हुए थे और उसमें कुछ इस प्रकार की व्यवस्था भी थी कि धूप आदि से रक्षा हो सके। बाबाजी का वर्ण उस सन्ध्या में ईदगाह पार्क की सभा में तप्त ताम्रपत्र-सा दमक रहा था और उनकी वाणी से अदम्य अमृत-वर्षा हो रही थी!

आगरा —मक्खनलाल शर्मा

●

पदयात्री-दल के साथियों से

कार्यकर्ताओं को निरंतर कार्यरत रहना चाहिए और क्षणभर के लिए भी चिंतायुक्त नहीं रहना चाहिए। सदैव स्वतन्त्र–मुक्त–हूँ, ऐसा अनुभव होना चाहिए। मुक्ति का आनन्द खोते हैं, उतने अंश में हम दुनिया का नुकसान करते हैं। चिंता का अनुभव नास्तिकता का लक्षण है और फिर आस्तिक होकर स्वयं ही ईश्वर बन कर उसका बोझ अपने सिर पर ढोना पड़ता है।

चाहते हैं हम क्रान्ति—सामाजिक मूल्य बदलना। ईश्वरी योजना में यह जब होगा, तब होगा; परंतु हमारे काम में आलस न हो और चित्त में उतावलापन न हो। रात को बहुत देर मत जागो। लोग इकट्ठा नहीं होते हों, तो जितने इकट्ठे हों, उतने को ही समझाओ।

जैसे बगैर खाये हम कुछ काम नहीं करते, वैसे ही अध्ययन का भी रखो। तीन घण्टे की पदयात्रा चार घण्टे की मानो। आगे भी कर्तव्य नहीं है, पीछे भी नहीं है। अपनी बादशाही को हमें खोना नहीं चाहिए।

हमने देखा—खेत है, छाँव है, कुछ थकान भी है, तो ध्यान किया। शरीर को थोड़ा आराम हुआ।

मैंने उड़ीसा प्रदेश में भागवत की कथा पढ़ी, वह भी उड़िया भाषा में। इससे उड़िया भाषा सीखी। भाषा सीखने में कई लोगों से संपर्क हुआ। सिखाने वालों को भी बाबा का गुरु बनने में आनन्द आया! हमेशा हम ही हम गुरु बने रहें, यह ठीक नहीं, थोड़े समय उनको भी गुरु बनना चाहिए। इस तरह पदयात्रा में स्वाध्याय तथा नई भाषा का ज्ञान दोनों बातें सधीं। मैत्री भी बनी। तात्पर्य यह कि—

> हम आलस्य छोड़ेंगे, तो सब सधेगा। मन में उतावलापन हो, तो नहीं सधेगा। बोझ से निवृत्त होकर स्वाध्याय करना चाहिए, क्योंकि जब भूत और भविष्य दोनों चित्त पर आक्रमण करते हैं, तो ध्यान-ज्ञान कुछ नहीं होता।

आजकल प्रवाह अनुकूल है, परंतु आज की पीढ़ी का मानसिक प्रवाह अनुकूल नहीं है। विज्ञान का युग है। विज्ञान अभी दूर तक फैला नहीं है। जैसे-जैसे विज्ञान फैलेगा, वैसे-वैसे मनुष्य को अपरिग्रही बनना पड़ेगा। अपरिग्रह याने वस्तु का अभाव नहीं, बल्कि मालकियत का न रहना है।

सियासत और मजहब जायेंगे, यह स्पष्ट दीखता है। जाते-जाते कुछ कर जायें, यह संभव है। परन्तु आध्यात्मिक बल-सेवन के बिना हमारा एक दिन नहीं जाना चाहिए, इसमें हम सुरक्षित हैं।

(सोहागपुर १९-१०-'६०) —विनोबा

—

सर्वोदय के लिए दुनिया उत्सुक है !

सर्वोदय ही करुणामूलक साम्य लायेगा !

विनोबा

इन दिनों हिंसा-शक्ति ने संहारक शक्ति का रूप धारण किया है।

पन्द्रह साल पहले हिरोशिमा पर जो बम गिरा था, *उससे सहस्र गुना ताकत*वाला बम आज बना है ! हिंसा में क्रोध, क्षोभ, आवेश गुस्सा होता है। मेरे हाथ में तलवार आयेगी, तो मैं गुस्से से या क्रोध से सामने वाले पर हमला करूँगा, लेकिन अगर 'बैलेस्टिक वेपन' फेंकना है, तो शान्ति से, गणित के साथ, सत्तर डिग्री के 'एंगल' (कोन) से दो हजार मील पर फेंकना है, तो गणित के साथ प्रयोग करना होगा। उसमें न गुस्सा रहेगा, न क्रोध और न आवेश, उसमें आपका चेहरा भी शस्त्र फेंकने वाला नहीं देखता है। इसलिए बहुत ज्यादा हिंसा होती है, तिसपर भी इस प्रकार की लड़ाई में क्रूरता नहीं रहती है। पुराने जमाने में जो लड़ाइयाँ होती थीं, उनमें क्रूरता ज्यादा थी। वह क्रूरता आधुनिक लड़ाई में नहीं है।

आधुनिक लड़ाई में संहार बहुत ज्यादा होता है, मकान ढहते हैं, हास्पिटल खत्म होते हैं, लाइब्रेरी जलती है, बहनें और भाई, बच्चे, बूढ़े-सबके सब समान तकलीफ पाते हैं। जैसे भूकम्प होता है, ऐसा ही इसमें होता है। यह नहीं कि भाई बचेंगे और बहनें मरेंगी ! मतलब, इस लड़ाई में हिंसा बहुत होती है, लेकिन वह हिंसक शक्ति नहीं है, संहारक शक्ति है।

जब हिंसा शक्ति ने संहार-शक्ति का रूप ले लिया, तो अब मसला हल करने के लिए शांति का तरीका अपनाना होगा। इसीलिए ख्रुश्चेव शांति का जप कर रहा है। लेकिन वह बोलते-बोलते करता क्या है ? वह नरसिंह अवतार है। पहले तो मत्स्य, कुर्म, वराह अवतार हो गये, बाद में नरसिंह अवतार हुआ। यह ख्रुश्चेव, वह आईक, माईक ये सब नरसिंह अवतार हैं ! मतलब, हिंसा से श्रद्धा हट गयी है और अहिंसा पर बैठी नहीं है, ऐसी बीच की हालत में वे हैं। मानो पुराना पशु का रूप थोड़ा है और थोड़ा नया मानव है, लेकिन पूरा मानव का रूप अभी आया नहीं है। इसीलिए वह कहता है कि हमें हिंसा नहीं करनी है। लेकिन जब कभी अमेरिका से बात करने के लिए जाता है, तो एक 'स्पुतनिक' छोड़ कर जाता है, यह दिखाने के लिए कि हमारे पास यह ताकत है और इतनी है ! इस तरह आज दुनिया की हिंसा में तो श्रद्धा रही नहीं और अहिंसा पर पूरी श्रद्धा नहीं आयी, ऐसी स्थिति में सर्वोदय ही एक विचार है, जो करुणामूलक साम्य ला सकेगा। सर्वोदय का विचार शांतिमय क्रांति का है, शांति के साथ क्रांति लाने का विचार है। वह आज के समाज में परिवर्तन करना चाहता है और आध्यात्मिक तरीका अख्तियार करना चाहता है। [गतांक से समाप्त]

[वाराणसी, ता० १५-१२-'६० के भाषण से]

नाम की महिमा !

अफ्रीका के एक और देश 'युगांडा' ने ता० ३१ दिसम्बर की रात को १२ बजे अपने सहोदर 'बुगांडा' से अलग होकर स्वतंत्र हो जाने का तय किया है। 'बुगांडा' और 'युगांडा' दोनों इंग्लैंड के अधीन हैं और हालांकि 'बुगांडा' की धारासभा 'लुकीको' ने करीब-करीब सर्वसम्मति से स्वतंत्र हो जाने की घोषणा की है, यह निर्णय इंग्लैण्ड सरकार की मोहर लग जाने पर ही पक्का माना जायगा।

पर जैसे भविष्यवेत्ता लोग बच्चे के 'चीकने पात' देख कर उसके उज्ज्वल भविष्य का अन्दाज लगा लेते हैं, उस तरह अगर 'बुगांडा' के 'चिकने चुपड़े' नामों पर से हम अन्दाज लगायें, तो ऐसा मालूम होगा कि 'बुगांडा' की आजादी के और आजादी के बाद उसके भविष्य के आसार 'कांगो' की तरह बुरे नहीं हैं। 'बुगांडा' और 'युगांडा' की जोड़ी कैसी कण-मधुर है ! कांगो के 'कीवू', 'कसाई' की तरह अटपटा नहीं। कहाँ बुगांडा के राजा 'कबाका', उसकी धारासभा 'लुकीको' के अध्यक्ष 'कल्ले', उसके प्रधान मन्त्री श्री 'किन्तु', शिक्षा-मंत्री श्री 'मयंजा' आदि जबान पर से फिसलने वाले नाम, और कहाँ कांगो के राष्ट्रपति 'कसावुबु', लापता प्रधान मन्त्री 'लुमुम्बा', सेनापति 'मोबुतु', विदेश मन्त्री (हम क्षमा चाहते हैं—हम ज्यादा तमीज नहीं कर सकते कि कांगो के वैधानिक मंत्री-गण कौन हैं और अवैधानिक कौनने ? —सं०) बोम्बोको, पुलिस-अध्यक्ष 'पोंगो' आदि ! नामों की अगर कुछ महिमा है, तो अब हमें कांगो की दुर्भाग्यपूर्ण स्थिति का कुछ कारण समझ में आता है। हम आशा करते हैं कि *इंग्लैण्ड की सरकार* बुगांडा-युगांडा को जोड़ी के खंडित होने का ज्यादा क्लेश नहीं करेगी और बुगांडा का भविष्य ज्यादा निर्विघ्न होगा। बुगांडा के लिए हमारी अनेक शुभ कामनाएँ।

—सिद्धराज

आगामी सम्मेलन

हमारी जिम्मेवारियाँ

आगामी सर्वोदय-सम्मेलन की तारीखें अब १६, १७, १८ की बजाय १८ और २० अप्रैल तय हो गयी हैं। सम्मेलन का स्थान पेंद्रोल (जि० ... आन्ध्र) निश्चित हुआ।

हमेशा की भाँति सम्मेलन से तुरन्त पूर्व छह-आठ दिन सर्व सेवा संघ में मिलेगा। संघ की प्रबंध-समिति की बैठक भी साथ ही चलेगी।

सम्मेलन 'भू-क्रांति दिवस' से आरम्भ होगा। भूदान के क्रांति-कार्यक्रम को हुए दस साल का एक युग पूरा हो रहा है। ऐसे अवसर पर होने वाले ... या सर्वोदय के सिपाहियों के मेले तथा सर्व सेवा संघ के अधिवेशन का महत्त्व उसकी जिम्मेवारियाँ स्वतः जाहिर हैं।

आंदोलन के सिलसिले में कई कार्यक्रम सामने आये हैं। कई प्रकार के ... हैं। क्रिया-प्रतिक्रिया और फलश्रुतियाँ प्रकट हुई हैं। देश, दुनिया में परिस्थि... है, बदली हैं, नयी बनी हैं। इस सबका लेखा-जोखा लेना, अनुभवों का ... और आगे कार्यक्रम निश्चित करना आज की सबसे बड़ी जरूरत है।

सर्व सेवा संघ से सम्मेलन को और सम्मेलन से देश को, आशा व अपेक्षा है कि यह जरूरत पूरी की जायेगी।

इस दृष्टि से आगामी संघ-अधिवेशन के कार्यक्रम और सम्मेलन के स्वरूप के बारे में *अभी से विचार करना और उसकी कुछ* स्पष्ट रूपरेखा बना लेना ठीक होगा।

कौनसे मुख्य विषय विचारार्थ लिये जायँ ? चर्चा व्यवस्थित और ठोस नतीजे पर पहुँचने वाली हो, उसके लिए क्या तैयारी की जाय ? समय का बँटवारा किस प्रकार हो कि मुख्य मुद्दों पर चर्चा के लिए पर्याप्त समय मिल सके ? यह सब जल्दी जाहिर करने की जरूरत है।

सम्मेलन व संघ-अधिवेशन के कार्यक्रम के बारे में आखिरी निर्णय तो किसी समिति के सुपुर्द किया जा सकता है। लेकिन इस सम्बन्ध में सुझाव अभी से आयेंगे, तो समिति को भी विचार के लिए काफी मसाला मिल जायगा और निर्णय करने में सुविधा होगी।

विचारणीय खास-खास विषयों के बारे में निम्नलिखित सुझाव हैं :

(१) दस वर्ष (१९५१ से १९६१) के *भूदान आन्दोलन का* लेखा-जोखा और मूल्यांकन।

(२) क—ग्रामदानी, ग्राम-संकल्पी तथा 'नया मोड़' के क्षेत्रों में निर्माण कार्य और जनता को अपने पुरुषार्थ का एहसास कराने के कार्य-क्रम की रूपरेखा।

ख—नई तालीम, खादी ग्रामोद्योग, कृषि-गोसेवा कार्यक्रम।

(३) सत्याग्रह या 'डायरेक्ट ऐक्शन।' (भूदान व ग्रामदान होने वाली बेदखली, ... का प्रयोग हो, वहाँ मिल की ... की प्रतिस्पर्धा, अशोभनीय व चित्रों का सार्वजनिक ... सीमावर्ती क्षेत्रों की स्थिति ... सन्दर्भ में)।

(४) आन्दोलन की संयोजना।

(५) राजस्थान, आन्ध्र ... राज्यों में आरम्भ हुए पंचायतों ... का प्रयोग।

(६) तृतीय पंचवर्षीय *योजना।*

(७) आगामी चुनाव।

श्री विनोबाजी ने सर्वोदय-विचार ... कार्यक्रम के लिए नई प्रेरणा और ... दिशाएँ दी हैं। कार्यक्रम के अन्तर्गत ... कई मुद्दे जोड़े जा सकते हैं। लेकिन वि... थोड़े होंगे, चर्चा गहरी होगी और नि... स्पष्ट व ठोस होंगे, तो रास्ता सहज सुगम ... आन्दोलन को वेग मिलेगा।

यह सब सुझाव रूप में है। जल... हो तो विषय और जोड़े जा सकते हैं ... अधिक महत्त्व का विषय लेकर इनमें ... अपेक्षाकृत कम महत्त्व के विषय को छो... जा सकता है या उसे कम समय दि... जा सकता है। जो भी थोड़े या बहुत ... तय हों, उनसे संबंधित अध्ययन का जि... सम्मेलन व संघ-अधिवेशन के काफी स... पहले कुछ साथियों को लेना चाहिए ... भूदान पत्र-पत्रिकाओं में विचारणीय वि... के निर्धारण वगैरह के बारे में चर्चा हो ... तो ठीक रहेगा। विभिन्न विषयों पर ... विचार प्रकट किये जाने चाहिए।

काशी, ८-१-६१ —पूर्णचन्द्र जैन, ...

संग्रह करना ही मृत्यु

तुम प्रायः कहते हो, 'मैं सुपात्र को ही दान दूँगा।' पर तुम्हारी वाटिका ... वृक्ष ऐसा नहीं कहते, न तुम्हारे चरागाह की भेड़ें ही। वे देते हैं, ताकि जी सकें, क्यों... संग्रह करना ही मृत्यु है। अवश्य ही, जो दिवस और रात्रियों का दान पाने का अधि... कारी है, वह तुमसे शेष सब कुछ पाने का हकदार है। —खलील जिब्रान

सम्पादक के नाम पत्र

सार्वजनिक पैसे के खर्च में मितव्ययता

"आदरणीय सम्पादकजी,

पिछले दिनों श्री विनोबाजी सेवापुरी और काशी आये। यहाँ के कार्यकर्ताओं में बाबा के आगमन के अवसर पर एक सहज उत्साह व्याप्त हो गया। उसके अनुसार विनोबाजी के स्वागत की व्यवस्था में भी उत्साह था। लेकिन उस उत्साह के साथ बाबा जो सादगी और सात्विकता का आदर्श है, उसे हम लोग उस उत्साह में भूल गये ऐसा मुझे लगता है। कुल मिला कर के मुझे ऐसा लगा कि खाने-पीने, ठहराने, सभा के आयोजन करने इत्यादि में जो मितव्ययता होनी चाहिए थी, वह नहीं रह पायी। कई अनावश्यक खर्च की थीं, जिन्हें टालना संभव था।

यह गलती कोई जानबूझ कर की गयी, ऐसा मेरे कहने का तात्पर्य नहीं है। बाबा के आगमन, स्वागत, प्रबंध इत्यादि में मैं स्वयं भी शामिल था। पर जो ध्यान सार्वजनिक पैसे के खर्च के लिए हमें रखना चाहिए, वह हम नहीं रख पाये, इतना ही आशय है। हमें अपने कर्तव्य का बोध हो, यह जरूरी है। आशा है, आपके पत्र के माध्यम से मेरी यह भावना हमारे सभी कार्यकर्ताओं तक पहुँच सकेगी और भविष्य में इस तरफ जरूरी ध्यान दिया जायगा।

—सतीश कुमार"

श्री सतीश कुमार ने बहुत जरूरी बात की ओर हमारा ध्यान आकर्षित किया है। औरों की ओर से जब कभी ऐसा होता है, तो अक्सर हम खर्च में मितव्ययता रखनी चाहिए, इस बात पर जोर देते हैं और अनावश्यक खर्च नहीं हुआ हो, तो उसकी आलोचना भी करते हैं! हमी ने उत्साह में आकर असावधानी से कुछ ज्यादा खर्च किया है, क्या इसका हमें आत्मनिरीक्षण करना चाहिए? हमारा अपना अनुभव भी है कि आजकल हम लोग सार्वजनिक पैसे के उपयोग के बारे में बहुत सतर्क नहीं रहते हैं। फिजूलखर्ची व्यक्ति के लिए भी अच्छी नहीं है, परन्तु सार्वजनिक कामों में हमें बहुत ही सावधान रहने की जरूरत है। अपना पैसा और पराया पैसा, ऐसा भेद ही असल तो गलत है—पर किसी के मन में ऐसा भेद हो, तब भी 'पराया' पैसा जो हमारे पास धरोहर के रूप में है, उसके खर्च में तो और भी ज्यादा सावधान रहने की जरूरत है।

—सिद्धराज

'राष्ट्रपति भवन' में सर्वोदय-पात्र

महोदय,

ता० ६ जनवरी के "भूदान यज्ञ" के पृष्ठ १ पर राष्ट्रपति, आदरणीय डॉ० राजेन्द्रप्रसादजी के गुजरात के राजभवन में दिये हुए एक भाषण का सार छपा है। उसमें सर्वोदय-पात्र के बारे में अपना अभिप्राय प्रगट करते हुए राष्ट्रपतिजी ने यह जाहिर किया कि "राष्ट्रपति भवन में सर्वोदय-पात्र रखा गया है, यह सही बात है। पर उसमें से जमा करके ले जाने वाला कोई हमारे पास नहीं आया और इस वजह से कुछ दिनों के बाद वह बन्द हो गया।" सन् १९५८ के सर्वोदय-पक्ष के बाद से ही 'राष्ट्रपति-भवन' में सर्वोदय-पात्र रखा गया था। फरवरी, १९६० से मैंने दिल्ली में सर्वोदय का काम सँभाला। ता० ७ फरवरी को मैंने एक पत्र लिख कर 'राष्ट्रपति-भवन' के सर्वोदय-पात्र के बारे में पूछा और यह भी लिखा कि पात्र के अनाज को इकट्ठा करने के लिए मैं खुद आने को तैयार हूँ। जवाब में राष्ट्रपतिजी की प्रायवेट सेक्रेटरी (बहन) ने मुझे नीचे लिखे अनुसार उत्तर दिया—

"राष्ट्रपति भवन में पहले पात्र रखा था, पर आजकल राष्ट्रपतिजी का परिवार यहाँ पर नहीं है, इसलिए वह बन्द है। अब फिर से उसे शुरू करेंगे। पात्र भर जाने पर हम स्वयं आपके यहाँ राजघाट उसे भेज देंगे। इसके लिए आप 'राष्ट्रपति-भवन' आने का कष्ट न करें।"

हम सब महसूस करते हैं कि 'राष्ट्रपति भवन' का सर्वोदय-पात्र बहुत महत्त्वपूर्ण चीज है, इसलिए कोई भी कार्यकर्ता उसकी अवगणना नहीं करेगा। जैसा मैंने ऊपर लिखा है, काम सँभालने के तुरन्त बाद ही मैंने इस बारे में 'राष्ट्रपति-भवन' से सम्पर्क किया, पर जो उत्तर मिला, उसके बाद स्वाभाविक ही हम इस इंतजार में थे कि वह पात्र भरने पर राजघाट पहुँचा दिया जायगा या फिर से हमें सूचना मिलेगी। राष्ट्रपतिजी के भाषण से ऐसा लगता है कि उन्हें उपरोक्त पत्र-व्यवहार की जानकारी नहीं करायी गयी थी। इसलिए मैंने यह पत्र लिख कर "भूदान-यज्ञ" द्वारा स्पष्टीकरण करना आवश्यक समझा। मैंने एक पत्र फिर राष्ट्रपतिजी की प्रायवेट सेक्रेटरी को भी लिखा है।

नई दिल्ली
११-१-'६१

—सी० ए० मेनन,
(कार्यकर्ता, सर्व सेवा संघ)

कुमारप्पा-स्मारक निधि

[ता० ३० दिसबर के 'भूदान-यज्ञ' में हमने पाठकों तथा रचनात्मक कार्यकर्ताओं आदि से 'कुमारप्पा-स्मारक निधि' में योग देने की अपील की थी। अब तक इस निधि के लिए हमारे पास नीचे लिखे अनुसार रकम प्राप्त हुई है। सर्वोदय-विचार के प्रति जिनकी सहानुभूति है, उनमें से हरएक से अपेक्षा है कि वे अपनी-अपनी मर्यादा के अनुसार इस निधि में अवश्य योग दें। आशा है, जिन पाठकों ने अब तक अपनी ओर से कुछ न भेजा हो, वे अवश्य इन पंक्तियों को पढ़कर अपना हविर्भाग भेजेंगे। रकम 'पोस्टल आर्डर' के जरिये, बड़ी रकम बैंक के जरिये भी—संपादक, 'भूदान-यज्ञ' राजघाट, काशी—इस पते से भेजी जा सकती है। —सं०]

	रुपये न०पै०
ता० १३ जनवरी के अंक में प्राप्ति-स्वीकार कुल	१८५—७०
समग्र सेवा आश्रम, रतनूपुर, पो० चंदवक (जौनपुर)	१५—००

१० जनवरी '६१ तक कुमारप्पा-स्मारक निधि के मद्रास कार्यालय को इतनी रकम प्राप्त हुई :

नाम	स्थान	रु.—न.पै.
डा० जे० पी० चोथुआ	मद्रास	५—००
श्री सी० मादकंदर	कोडाइकनाल	२५—००
श्री के० एन० कुल्लन	उटकमंड	५—००
डा० जाकिर हुसेन, राजभवन	पटना	१०१—००
श्रीमती राजकुमारी अमृत कौर	नई दिल्ली	१००—००
श्री एच० विश्वनाथन	मद्रास-१५	१०—००
श्री एस. आर. आर. अय्यर	निदामंगलम	५—००
श्री एम. एस. एम. नागराज अय्यर	निदामंगलम	५—००
प्रो. एन. आर. मल्कानी	नई दिल्ली	२५—००
श्री वी. वी. गिरी, राजभवन	त्रिवेंद्रम	१००—००
सातपुड़ा सर्वोदय-मण्डल	धुलिया	५०—००
श्री आर. एस. हुक्केरीकर	धारवाड़	१०—००
श्री एम. आर. एन. स्वामी	कलकत्ता-२९	२१—००
श्री मेहरचन्द खन्ना	नई दिल्ली	५०—००
डा० पी० जीवराज मेहता	अहमदाबाद-१५	१०१—००
डा० पी० सुब्बरायन	नई दिल्ली	५०—००
सुश्री ए० मारगारेट बार	असम	५०—००
श्री रामेश्वर जोहारमल	धुलिया	१०—००
श्री बेचरदास पंडित	अहमदाबाद-६	११—००
श्री नवल चन्द शाह	बम्बई ६	२५—००
श्री टी० एस० अविनाशीलिंगम्	कोइम्बतूर	२५—००
श्री एम० एस० राउत, धंतोली	नागपुर	५०—००
श्रीमती रामेश्वरी नेहरू	दिल्ली-९	२५—००
	कुल	८९९—००
	कुल रकम	१०५९—७०

इन्दौर नगर में सर्वोदय-कार्य की प्रगति

इन्दौर नगर में सर्वोदय-कार्यों के निमित्त स्थापित विसर्जन आश्रम से प्राप्त एक जानकारी के अनुसार माह दिसम्बर में कार्यकर्ताओं द्वारा लगभग ५००० घरों से व्यक्तिगत संपर्क साधा गया। सर्वोदय-पात्रों से करीब ७०० रु० का अनाज अथवा नकद रकम एकत्रित हुई। इस प्रकार अब तक सर्वोदय-पात्र-निधि में २४०० रु० नगर-कार्यालय में जमा हो चुके हैं, जिसमें से वार्डों में चल रहे चल-पुस्तकालयों, गरीब छात्रों, बहनों एवं कार्यकर्ताओं की मदद हेतु तथा अन्य सेवाओं में लगभग ४०० रु० खर्च हुए तथा इसी उद्देश्य से वार्डों की अमानत के रूप में शेष ८०० रु० आश्रम में जमा हैं। नियमानुसार उक्त रकम का षष्ठांश यानी ४०० रु० अ० भा० सर्व सेवा संघ को तथा शेष ८०० रु० नगर एवं प्रांतीय सर्वोदय मंडल के कार्यालय में जमा हुए, जिसकी ओर से अभी तक नगर में इस कार्य का संचालन किया जा रहा है।

नगर में इस समय पूरे समय के २० कार्यकर्ता भाई-बहनें काम कर रही हैं तथा लगभग इतने ही स्थानीय सहयोगी आंशिक, लेकिन नियमित रूप से सर्वोदय का कार्य कर रहे हैं।

नगर के फिलहाल ५ वार्डों में चल-पुस्तकालय शुरू किये गये हैं, जिसके अन्तर्गत कार्यकर्ता घर-घर संपर्क के समय साहित्य-बिक्री तथा पठन-पाठन के लिए पुस्तक-वितरण का कार्य भी करते हैं। इस माह इस योजना के अन्तर्गत ६०० व्यक्तियों ने लाभ उठाया। समुचित साधन एवं सुविधा प्राप्त होने पर नगर के अन्य वार्डों में भी सर्वोदय चल-पुस्तकालय प्रारंभ करने की योजना है।

('सर्वोदय प्रेस सर्विस' इंदौर)

लोकसेवकों, शान्ति-सैनिकों तथा बुनियादी शालाओं के अध्यापकों के लिए प्रशिक्षण की व्यवस्था

बहन मार्जरी साईक्स के नाम से सर्वोदय-कार्यकर्ता परिचित हैं। मार्जरी बहन दक्षिण भारत में नीलगिरी के पहाड़ियों के बीच कोटगिरी में बस गयीं। वर्षों तक वे हिन्दुस्तानी तालीमी संघ में कार्य कर चुकी हैं और एक जन्मजात शिक्षक हैं। उनकी बहुत दिनों से यह कल्पना थी कि एक परिवार की तरह साथ-साथ रहते हुए और काम करते हुए कार्यकर्ता कुछ शिक्षण भी पा सकें और अध्ययन भी कर सकें।

अब आगामी महीने, अर्थात् फरवरी १९६१ से कोटगिरी में कुछ कार्यकर्ताओं या कार्यकर्त्रियों के एक छोटे-से समूह के लिए जीवन और काम के जरिए अहिंसा के विकास और अध्ययन की योजना वहाँ चालू हो रही है। शान्ति-सैनिक के काम की तैयारी भी उसका एक अंग होगा। प्रशिक्षार्थी मार्जरी बहन के साथ एक परिवार की तरह रहेंगे और वहाँ करीब ४॥ एकड़ खेती की जमीन है, उस पर साथ मिल कर काम भी करेंगे। मार्जरी बहन के मार्गदर्शन में अध्ययन और नियमित चर्चाओं के द्वारा सर्वोदय और अहिंसा के सिद्धान्त और प्रक्रिया की गहराई में प्रशिक्षार्थी जा सकेंगे।

आशा है कि यह सहयोगिक जीवन और उत्पादक शरीर-श्रम वहाँ रहने और काम करने वालों के बौद्धिक और आध्यात्मिक विकास का साधन बन सकेगा।

पहला प्रशिक्षण-सत्र फरवरी ९ या १० से आरम्भ होगा। करीब ५-६ प्रशिक्षार्थियों के रहने और एकसाथ कार्य करने की गुंजाइश वहाँ है।

प्रशिक्षार्थी १८ वर्ष से ऊपर की उम्र के हों, अपने रोजमर्रा के जीवन के जरिए गान्धीजी के अहिंसा और सर्वोदय के सिद्धान्तों के समझने के इच्छुक हों और हिन्दी, अंग्रेजी या तमिल; इन तीन भाषाओं में से किसी एक भाषा को समझ और इस्तेमाल कर सकते हों। आने-जाने का मार्गव्यय और करीब २५ रु०,मासिक भोजन इत्यादि का प्रशिक्षार्थी, या अगर वे किसी संस्था के जरिए आते हों तो वह संस्था बर्दाश्त करेगी। मासिक खर्च की रकम अभी अन्दाजन ही मानना चाहिए, अनुभव से उसमें तबदीली हो सकती है। खेती के काम से जो उपज होगी, वह जमीन और उस स्थान के विकास में ही खर्च हो। यह कम-से-कम शुरू के दो वर्षों के लिए जरूरी होगा।

नई तालीम का विशेष अनुभव होने से मार्जरी बहन बुनियादी शालाओं के अध्यापकों को अपने काम में आने वाली कठिनाइयों और समस्याओं में खास तौर से मदद कर सकेंगी। सन् १९६१ के लिए प्रशिक्षण का नीचे लिखे अनुसार कार्यक्रम सोचा गया है। तारीखों में तथा सत्रों की अवधि में कोई परिवर्तन सुझाया जायगा, तो उसका विचार हो सकेगा :

(१) फरवरी १० से अप्रैल १०—सामान्य प्रशिक्षण—शान्ति-सैनिक, शान्ति के कार्य में लगे कार्यकर्ता और लोकसेवकों का प्रशिक्षण।

(२) अप्रैल १५ से मई १५

(३) मई १९ से जून १९ तक—नैशिक स्कूल के अध्यापकों का प्रशिक्षण।

(४) जुलाई १४ से अक्तूबर १६ तक—सामान्य प्रशिक्षण क्रम १ के अनुसार।

सूचनाएँ :

(अ) जून १९ से जुलाई १४ और अक्तूबर २० से नवम्बर ३० तक मार्जरी बहन आवश्यकतानुसार केन्द्र से बाहर जा सकेंगी, क्योंकि फार्म की सुविधा से यही समय उनके लिए बाहर जाने के लिए उपयुक्त होगा।

(आ) गर्मी की छुट्टियों में प्रशिक्षण-क्रम (२) और (३) के लिए भारतीय रेल्वे की पहाड़ी स्थानों को मिलने वाली छूट भी सुलभ हो सकेगी।

(इ) प्रशिक्षण सम्बन्धी अन्य जानकारी के इच्छुक निम्नलिखित पते पर लिखें :

श्री मार्जरी बहन (स्थायी पता)—मु० इल्कली, पो० कोटगिरि, नीलगिरि हिल्स (दक्षिण भारत)।

या जनवरी २९ तक—

मार्फत—फ्रेण्ड्स इण्टरनेशनल सेण्टर, २४ राजपुर रोड, दिल्ली-८।

बंगाल में विनोबा के स्वागत की तैयारी

विनोबाजी असम जाते समय ता० १० फरवरी को बिहार से बंगाल पहुँचेंगे। पश्चिम बंगाल में २३ दिनों की पदयात्रा करने के पश्चात् असम की ... पहुँचेंगे। विनोबाजी की पश्चिम बंगाल में यह दुबारा पदयात्रा है। ... जाते समय १९५५ के ता० १ से २५ जनवरी तक वे उस प्रान्त में कर चुके हैं। विनोबाजी की पदयात्रा का इंतजाम करने के लिये बंगाल के कार्यकर्ताओं ने एक स्वागत-समिति का संगठन किया है, जिसके ... निधि की प्रान्तीय शाखा के संयोजक श्री शक्तिरंजन बसु हैं। श्री ... स्वागत-निधि प्राप्त करने के लिए एक अनोखा तरीका अपनाया है। ... से अधिक रकम न लेकर अधिक-से-अधिक व्यक्तियों से थोड़ा-थोड़ा धन ... जा रहा है। जनता से इस काम के लिए अच्छी सहायता मिल रही है। सर्वोदय-मंडल के संयोजक श्री चारुबाबू उत्तर बंगाल के जिस इलाके में ... की पदयात्रा होगी, वहाँ पूर्वतैयारी के लिए प्रचार-यात्रा कर रहे हैं।

बंगाल में सर्वोदय-साहित्य सप्ताह

पश्चिम बंगाल सर्वोदय प्रकाशन समिति की ओर से ता० १ से ८ जनवरी तक बड़ी धूमधाम से सर्वोदय-साहित्य सप्ताह मनाया गया। इस अवसर पर कलकत्ते के कई प्रमुख पुस्तक-विक्रेताओं ने अपने-अपने 'शो-केस' में सर्वोदय-साहित्य सजाया था तथा कार्यकर्ताओं ने घर-घर घूम कर सर्वोदय-साहित्य बेचा। इस सप्ताह को सफल बनाने के लिए बंगाल के प्रायः सभी प्रमुख साहित्यकारों ने भी जनता से अपील की थी। इसके फलस्वरूप न केवल कलकत्ते, में बल्कि बंगाल के दूसरे शहरों में भी सर्वोदय-साहित्य की बिक्री हुई है।

जिला पुरुलिया : जिले के ... तथा झालदा थाने ... का एक प्राथमिक सर्वोदय मंडल का ... हुआ। श्री गोलक सिंह, मंडल के ... बनाये गये।

जिला मिदनापुर : १० दि... को गोकुलनगर सर्वोदय-सेवाश्रम नंदीग्राम थाने के तीन सर्वोदय-... का सम्मिलित अधिवेशन हुआ। गोकुल... बड़ानगर व खोदामबाड़ी में प्राथ... सर्वोदय-मंडल का गठन हुआ, जिसके ... सर्वश्री धीरेन्द्रनाथ माईती, सतीश ... पाना तथा श्री गुनधर मंडल संयो... चुने गये। गोकुलनगर प्राथमिक सर्वो... मंडल में दस सदस्य तथा खोदाम... प्राथमिक सर्वोदय ... ने

महाराष्ट्र सर्वोदय-सम्मेलन

महाराष्ट्र सर्वोदय-परिषद् का सम्मेलन ता० ३१ दिसम्बर '६० से २ जनवरी तक धुलिया जिले के ग्रामदानी क्षेत्र अक्राणी महाल में धड़गाँव में राजस्थान श्री गोकुलभाई भट्ट की अध्यक्षता में हुआ। सम्मेलन में सर्वश्री शंकरराव देव, आर. पाटील, अप्पासाहब पटवर्धन, आचार्य भिसे आदि ने मार्गदर्शन किया।

महाराष्ट्र सर्वोदय-मंडल के नये अध्यक्ष श्री आर. के. पाटील बनाये गये।

—हरदोई नगर में उत्तर प्रदेश ... विख्यात मेला श्री रामलीला ता० ८ जन... से ३१ जनवरी ६१ तक हो रहा है। उ... अवसर पर १ फरवरी से १५ फरवरी तक ख... ग्रामोद्योग व विकास-प्रदर्शिनी भी होने वा... है। इस मेला और प्रदर्शिनी में श्री रामली... व प्रदर्शिनी कमेटी के प्रधान मंत्री हरिक... दुर श्रीवास्तव ने सर्वोदय-साहित्य-प्रचार हेतु दो दुकानों की जगह का पूरा खर्च औ... एक कार्यकर्ता का भोजन-खर्च सहाय... के रूप में दान दिया है।

प्राप्ति-स्वीकार

"असम राष्ट्रभाषा प्रचार समि... गुवाहाटी" (असम) के दो प्रकाश...

(१) असमीया पाठमाला, पह... भाग : असमी हिन्दी पाठमाला। मूल्य २५ नं.पै.

(२) माधव देव कृत "नाम-घोषणा" पन्द्रहवीं शताब्दी के वैष्णव गुरु और क... श्री माधव देव रचित "नाम-घोषणा" ... मूलसहित पद्यात्मक हिन्दी रूपान्तर : पृष्ठ-संख्या १५७, मूल्य ३ रु. ०६ न.पै.

इस अंक में

श्रीकृष्णदत्त भट्ट, अ० भा० सर्व सेवा संघ द्वारा भार्गव भूषण प्रेस, वाराणसी में मुद्रित और प्रकाशित। पता : राजघाट, वाराणसी-१, फोन नं० ४३९१
वार्षिक मूल्य ६) पिछले अंक की छपी प्रतियाँ ११,९४० : इस अंक की छपी प्रतियाँ ११,८४० एक प्रति : १३ नये पैसे

भूदान-यज्ञ

साप्ताहिक

भूदान-यज्ञ मूलक ग्रामोद्योग-प्रधान अहिंसक क्रान्ति का सन्देशवाहक

संपादक : सिद्धराज ढड्ढा

वाराणसी : शुक्रवार | २७ जनवरी '६१ | वर्ष ७ : अंक १७

विश्व शांति-सेना के सन्दर्भ में

रचनात्मक काम का विशेष स्थान

–विनोबा

[दिसम्बर के आखिर में गांधीग्राम (दक्षिण भारत) में युद्ध-विरोधी अन्तर्राष्ट्रीय का त्रैवार्षिक सम्मे-न हुआ था। उस सम्मेलन में एक "विश्व शांति-सेना" बनाने का तय हुआ। उस कान्फ्रेन्स के बाद श्रीमती शादेवी विनोबा से मिलने गयी थीं और उन्होंने विश्व शांति-सेना के स्वरूप, कार्यक्रम इत्यादि के संबंध विनोबा का मार्ग-दर्शन चाहा। उत्तर में विनोबा ने एक "प्रकट चिन्तन" के रूप में कुछ बातें कहीं, जो ने दी जा रही हैं। —सं०]

हमें यह समझना चाहिए कि विश्व-शांति की बात एक वैचारिक वस्तु। सारे विश्व में एक विचार फैलाने की बात विशेष पुरुष के द्वारा ही हो कती है। इस जमाने में हमने देखा कि टालस्टाय ने शांति का प्रचार अपने हित्य के जरिये किया और गांधीजी ने अपने कर्म के जरिये किया। उतना वार साधारण लोग नहीं कर सकते हैं। विशिष्ट पुरुषों का ही वह काम। लेकिन विश्व शांति-सेना की जो बात आयी है, उसमें उस विचार को धार देने की बात है। अभी ज्यादातर तो यही होगा कि कोई खास मसले डे हों, तो उन पर अपनी राय कायम करें और कन' के तौर पर कुछ कार्यकर्ताओं को भेजें। उसे पैदा करना राजनैतिक लोगों के हाथ में है। बीच वे हमारी मदद चाहते हैं, ऐसा भी नहीं बल्कि वे मदद नहीं चाहते हैं। हम अपना काम ना चाहते हैं। इस परिस्थिति में हमें काम ना है।

तो इसके लिए अलग-अलग देशों में विचार के सज्जनों के समूह बनाने हिए। इस तरह से एक-एक जमात नी होगी और ये लोग अपने-अपने में शांति-सेना का कुछ काम करेंगे उनको उसका अभ्यास होगा। जहाँ प्रकार के काम हैं, वहाँ दूसरे देश के ग इस काम को देखने आयें और एक-रे के काम का परिचय प्राप्त करें। म में कुछ न्यूनता हो तो एक-दूसरे के ाह-मशविरे से उसे पूरा करें। १०- लोग मिलकर जगह-जगह काम देख आयें। जो आयेंगे, वे चार छह महीने म करेंगे और कुछ सोचेंगे भी। इस दूसरे देशों के लोग आते रहें और भेजते रहें। यह इसका आरम्भ ा।

कहीं कोई खास सवाल खड़ा हुआ, वाँ जाकर के "प्रोटेस्ट" करने की बात है। उसका भी एक असर होता है। हर देश के पाँच पाँच, छह-छह लोग वहाँ जायें, यह एक उसका दूसरा प्रकार होगा। तीसरा प्रकार यह होगा कि किसी एक छोटे क्षेत्र में अगर हम शासन-मुक्त समाज बना सकें, तो कोशिश करें। अपने देश में हो सकता है, तो करें। उसमें दूसरे देश की मदद हम लें। इस तरह एक-दूसरे के प्रयोग में हम शामिल हों। यानी सरकार पर कुछ असर डालने का प्रयत्न करें, यह भी इसका एक प्रकार होगा। यह एक विशेष विचार है। जिसका नैतिक असर सरकार पर कुछ-न-कुछ पड़ सकता है, वे इसकी कोशिश कर रहे हैं। यह सारा धुंधला-सा, अस्पष्ट सा विचार है। अभी तो विश्व शान्ति-सेना के विचार का भी उगम ही हुआ है।

यह हमारा ज्यादा भाग्य है कि भारत में यह बात समझाना और समझना मुश्किल नहीं है। लोग हमें पागल समझ कर पत्थर नहीं मारते और हमारी बात सुनते हैं। दूसरे देश में हम सेना को बरखास्त करने की बात करेंगे, तो सुनने को भी लोग नहीं आयेंगे। यहाँ भारत में लोगों को यह सुनने की आदत है। यह भारत की विशेषता है कि यहाँ के देहातियों को राष्ट्रप्रेम सिखाना मुश्किल है। कुल मानव एक है, विश्व एक है, ऐसी बातें सुनने में उनको ज्यादा आनन्द आता है और सुनने के लिए श्रोता भी काफी मिल जाते हैं। शिक्षित लोग भले ही कुछ शंका करें, लेकिन जनता को ऐसा सोचने में आनन्द आता है।

इसके अलावा रचनात्मक कार्यक्रम की हमारी जो भूमिका है, वह अपने ढंग की विशेष चीज है। हमारे काम के लिए यह एक "स्पेअर-हेड" होता है। इस कार्यक्रम के जरिये अहिंसा का विचार फैलाना आसान होता है। अहिंसा का विचार फैलाने के लिए भूदान, ग्रामोद्योग और नयी तालीम ये तीनों चीजें हमें ऐसी मिली हैं कि हमारे आत्यंतिक और पूरे के पूरे विचार लोग पसन्द न करते हों, लेकिन ये तीनों चीजें देश में चलती हैं और देश कबूल करता है। मुझे मालूम नहीं कि पश्चिम के देशों में कौनसा ऐसा अनिवार्य विचार लोग मानते हैं, जैसे यहाँ ग्रामोद्योग को मानते हैं। हमारे देश में यह माना जाता है कि बीस प्रतिशत या चालीस प्रतिशत भी क्यों न हो, यह काम बड़े और उससे देश को लाभ होगा। काम के बारे में अगर सलाह करनी है, तो इसी जमात के साथ करनी चाहिए, ऐसा भी माना जाता है। इस प्रकार यहाँ की समाज-रचना में जैसा हमारा स्थान है, वैसा और देशों में शान्तिवादियों का नहीं है। यह स्थान उन्हें बनाना होगा, जिससे कि उनकी जमात की उनके राष्ट्र को आवश्यकता महसूस हो। हमारे अहिंसा के आत्यंतिक विचार कुछ लोग नहीं मानते होंगे, लेकिन खादी के लिए सरकार भी मान्यता देती है।

मैं जितना सोचता हूँ, मुझे इस चीज का महत्त्व महसूस होता है कि यह बहुत बड़ी चीज गांधीजी ने हमारे लिए दी है। यह खादी हमारे हाथ में तो हम सेना-विघटन आदि की ये सब बातें कैसे करते ? और करते भी तो हमारा एक दार्शनिक प्रवचन होकर रह जाता। हम एक दार्शनिकों की जमात बनते।

हमारे हाथ में ऐसा रचनात्मक कार्यक्रम होना चाहिए, जिसके बारे में देश को प्रतीत हो कि यह काम दूसरे नहीं कर सकते, यही लोग कर सकते हैं। हमारा विचार फैलाने के लिए हमें यह जरिया मिल गया है, भूदान, ग्रामोद्योग और नई तालीम। वैसे सरकार भी रचनात्मक काम करती है। सड़कें बनाना, तालीम आदि, लेकिन हमारा "रोल" अनिवार्य है। वैसे ही वे लोग अपना अनिवार्य "रोल" उनके देश में बनायें, यह हमारा खास सुझाव है।

(औरंगाबाद, दि० गया, २–१–'६१)

काशी का शांति-विद्यालय

अगले बापू निर्वाण दिन–३० जनवरी १९६१ से काशी में भाइयों के लिए प्रथम शान्ति-सेना विद्यालय का आरम्भ होगा। इससे पूर्व १५ दिसम्बर, १९६० को बहनों के विद्यालय का आरम्भ हो चुका है, जिसका उद्घाटन पू० विनोबाजी ने किया था। दोनों विद्यालय काशी के साधना-केन्द्र में चलेंगे। बहनों के विद्यालय में कस्तूरबा स्मारक निधि की ३० बहनों को तालीम दी जा रही है। भाइयों के विद्यालय में देश के शान्ति-सैनिकों में से ३० शान्ति-सैनिकों को लिया जायगा। प्रत्येक प्रान्त के सर्वोदय-मण्डलों से इस प्रथम वर्ग के लिए सैनिकों के नाम माँगे गये हैं। कल्पना यह है कि प्रथम वर्ग में ऐसे लोगों को लिया जाय, जिनके कारण शान्ति-सैनिक विद्यालय की परिपाटी भी अच्छी बने तथा जो वापस अपने प्रान्तों में जाकर शान्ति-सेना के कार्य को सुव्यवस्थित कर सकें। विद्यालय का प्रत्यक्ष प्रयोग-क्षेत्र काशी नगर रहेगा। नगर की समस्याओं को समझना तथा सर्वोदय की दृष्टि से उसमें सेवा-कार्य का संगठन करना, यह विद्यालय का प्रमुख कार्य होगा। शिविर-कार्यों के अलावा साधना-केन्द्र में शारीरश्रम के कार्यक्रम भी रहेंगे। प्रत्यक्ष कार्यक्रमों में उपस्थित होने वाले प्रश्नों की गहराई में जा कर उनका अध्ययन करना–यह सैद्धान्तिक विषयों में से एक मुख्य विषय रहेगा। शान्ति-सैनिक में अखिल भारतीय नागरिकत्व का विकास हो, इस दृष्टि से भारतीय समस्याओं का विशेष अध्ययन यह दूसरा मुख्य विषय रहेगा। जगत के शान्ति-आन्दोलन तथा जागतिक समस्याओं का परिचय यह और एक विषय रहेगा। विद्यार्थी स्वयं विषयों का अध्ययन करेंगे, विभिन्न विषयों के तज्ञों से सहायता प्राप्त करेंगे तथा कुछ विषयों पर व्याख्यान भी होंगे।

विद्यालय में दादा धर्माधिकारी और शंकरराव देव की बराबर मदद मिलती रहेगी। काशी के तथा बाहर के अन्य विद्वानों की भी सहायता ली जायगी।

अध्ययन की अवधि साढ़े पाँच महीने की रहेगी। आम तौर पर विद्यालय के लिए जो छात्र चुने जायँगे, उनके नाम प्रान्तीय सर्वोदय मण्डलों से मिलेंगे। किन्तु सूचना में विलम्ब होने के कारण यदि कोई प्रान्तीय सर्वोदय-मण्डल से सम्पर्क न कर सका हो, तो वह एक पत्र हमें भेजे तथा उसकी प्रतिलिपि प्रान्तीय सर्वोदय-मण्डल को भेज दे। विद्यालय में वही सैनिक लिये जायँगे, जिनके नाम से यहाँ से सम्मति-पत्र गये हों। बिना सम्मति के कोई सीधा आने का कष्ट न करे।

शान्ति-सैनिकों को २९ जनवरी की शाम तक साधना-केन्द्र काशी में पहुँच जाना चाहिए। लेकिन यदि किसी कारणवश देरी हो, तो उसकी पूर्वसूचना हमें भेज देनी चाहिए। १२ फरवरी के बाद नये सैनिक नहीं लिये जायँगे।

आज हमारा आन्दोलन इस अवस्था से गुजर रहा है कि हमें गहराई में पैठने का निश्चय करना चाहिए। शान्ति-सेना विद्यालय इसीका एक प्रयत्न है।

अ० भा० सर्व सेवा संघ, —नारायण देसाई
राजघाट, काशी

शांति-सैनिकों के लिए

शान्ति-सैनिकों के व्यवस्थित शिक्षण का विचार काफी अरसे से चलता रहा है। अभी तक भी उसका कोई इन्तजाम नहीं हो पाया, यह कमी स्वयं विनोबा को और आन्दोलन में काम करने वाले सभी को खटकती थी। मुख्य बाधा इस काम में शिक्षण का चार्ज लेने वाले उपयुक्त व्यक्ति की थी। शान्ति-सैनिकों के लिए अखिल भारतीय स्तर का एक अल्पकालीन शिविर पिछले वर्ष सेवाग्राम में मार्जरी बहन के संचालन में हुआ था। प्रान्तों में भी जगह-जगह शिविर हुए, पर बिना एक योग्य और कुशल आचार्य के विद्यालय जैसी स्थायी शिक्षण-प्रवृत्ति शुरू करना संभव नहीं था।

यह सन्तोष का विषय है कि अब भाई नारायण देसाई द्वारा इस काम की जिम्मेदारी उठाने का तय होने से शान्ति-सेना विद्यालय की शुरुआत साधना केन्द्र, काशी में होने जा रही है। बहनों के लिए इसी प्रकार के विद्यालय का प्रारंभ पिछले महीने विनोबा के काशी-आगमन के अवसर पर पहले ही हो चुका है। इस समय करीब ३० बहनें इस विद्यालय में छह महीने की ट्रेनिंग के लिए आयी हैं। बहनों के विद्यालय का संचालन उत्कल की अन्नपूर्णादेवी–अन्नपूर्णा महाराणा और अन्नपूर्णा दास कर रही हैं। श्री नारायण भाई पुरुष शान्ति-सैनिकों के विद्यालय के आचार्य होंगे।

शान्ति-सैनिक का काम जितने महत्त्व का है, उसे देखते हुए सैनिकों को विचार की और कार्य-पद्धति की दोनों की गहराई में जाना जरूरी है। आशा है, काशी में शुरू होने वाला 'शान्ति-विद्यालय' इस आवश्यकता की पूर्ति में सहायक होगा और सर्वोदय-कार्यकर्ता व शान्ति-सैनिक इस शिक्षण योजना से पूरा लाभ उठायेंगे।

—सिद्धराज

नागरी लिपि द्वारा तेलुगु सीखिये : *९

अब तक आपको तेलुगु भाषा के वर्तमान काल के समय का परिचय दिया गया होगा। क्रियापद के बारे में इस पाठ में बताया जा रहा है। इसमें—विधि, प्रार्थना, आशीर्वाद, शाप, निषेधार्थक आदि कई भेद हैं। मध्यम व अन्य पुरुष में इसका प्रयोग होता है।

साधारणतः मध्यम पुरुष एक वचन में तेलुगु धातु के साथ "मु" और बहुवचन में 'अण्डि' 'ण्डु' या 'डु' प्रत्यय लगाया जाता है।

एकवचन 'तू=नीवु' कर्ता होने पर क्रियापद के अंत के 'टं' को हटा कर केवल धातु रूप कहने से विधिवाचक बन जाता है। कभी-कभी 'मु' भी जोड़ देते हैं।

"आ=वच्चु" क्रिया का विधि में "रा, रम्मु" हो जाता है।

मध्यम पुरुष एक वचन 'तू=नीवु' का प्रयोग–देवता, भाई, बहन, पत्नी, मित्र, नौकर आदि के लिए किया जाता है। साधारणतः "तुम=मीरु"; "आप=तमरु" का प्रयोग करना उचित माना जाता है।

	हिन्दी	तेलुगु
	तू कर	नीवु चेयुमु।
	तुम करो	मीरु चेयुडु।
	आप कीजिए	तमरु चेयुडु, चेयण्डि।
	तू दे	नीवु इम्मु।
	तुम दो	मीरु इव्वण्डि।
	आप दीजिये	तमरु इव्वण्डि।
	तू पी	नीवु त्रागुमु।
	तुम पीयो	मीरु त्रागुडु, त्रागण्डि।
	आप पीजिए	तमरु त्रागण्डि।
विधि :—	तू जा	नीवु वेल्लु, वेल्लुमु।
	तुम जाओ	मीरु वेल्लुडु।
	आप जाइये	तमरु वेल्लण्डि।
प्रार्थना :—	तू बचा	नीवु रक्षिंचु, रक्षिंचुमु।
	तुम बचाओ	मीरु रक्षिंचुडु।
	आप बचाइये	तमरु रक्षिंचण्डि।
आशीर्वाद —	तू सुखी रह	नीवु सुखमुगा उण्डु।
	तुम सुखी रहो	मीरु सुखमुगा उण्डण्डि।
	आप सुखी रहें	तमरु सुखमुगा उण्डण्डि।

हिन्दी	तेलुगु
मुझे एक पुस्तक दे।	नाकु ओक पुस्तकमु इम्मु।
मुझे एक पुस्तक दो।	नाकु ओक पुस्तकमु इव्वण्डि।
आप मुझे एक पुस्तक दीजिये।	तमरु नाकु ओक पुस्तकमु इव्वण्डि।
थोड़ा शरबत पी।	कोंचेमु षरबतु त्रागुमु।
थोड़ा शरबत पीजिये।	कोंचेमु षरबतु त्रागण्डि।
इधर आओ।	इक्कडिकि रम्मु।
शान्त रहो।	शान्तमुगा उण्डुमु।
एक बात सुनिये।	ओक माट विनण्डि।
उसके नाम एक पत्र लिखिये।	वानि पेर ओक उत्तरमु व्रायण्डि।
मेरे कपड़े लाओ।	ना बट्टलु तेम्मु।
मेरा बिस्तर यहाँ बिछाओ।	ना पक्क इक्कड वेयुमु।
खिड़की बन्द करो।	किटिकी मूयुमु।
मेरे नौकर को बुलाओ।	ना नौकरनु पिलुवुमु।
इसे तैयार कीजिये।	दीनिनि तैयारु चेयण्डि।
जल्दी स्नान कीजिये।	त्वरगा स्नानमु चेयण्डि।
अपने हाथ साफ धो।	नी चेतुलु शुभ्रमुगा कडुगुकोनुडु।
अखबार लाओ।	वार्तापत्रिक तेम्मु।
कुछ अच्छी पुस्तकें भेजो।	कोन्नि मंचि पुस्तकमुलु पंपुमु।
बाजार से अच्छे फल खरीद कर लाओ।	बजारु नुंडि मंचि पंड्लु कोनि तेम्मु।
थोड़ी देर बाद आओ।	कोंचेमु सेपु तरुवात रम्मु।

* गत अंक में भूल से ७ छपा है, उसे पाठक सुधार कर ८ पढ़ें।

सर्वं आत्म(?) ... जीवनं सत्यशोधनम्

भूदानयज्ञ

लोकनागरी लिपि*

श्रम का महत्व

आज हम मेहनत करने वालों को नीच मानते हैं। यह बिलकुल गलत विचार है। जो खाता है, उसे मेहनत करनी चाहिये। उत्पादक-परिश्रम किये बगैर कोई भी खाने का हकदार नहीं हो सकता। गीबन ने लिखा है कि "रोम के लोग जब तक मेहनत करने में प्रतिष्ठा मानते थे, तब तक रोम का उत्थान हुआ। पर जब वे फैशन में पड़े, नाजुक बने, तभी रोम का पतन हुआ।" आज हमारी भी यही हालत है। आज भी लड़कों को ऐसी तालीम दी जा रही है, जिससे वे नाजुक बनते हैं, काम करने के लिये नाकाबिल होते हैं। अगर ऐसी ही तालीम चले, तो भारत का भला कुछ नहीं होगा। यही बात महाभारत में व्यास ने लिखी है, 'अगर उन्नति करना चाहते हो, तो मेहनत करो।' भगवान कृष्ण ने गीता में कहा है:

यदि ह्यहं न वर्तेयं जातु
कर्मण्यतन्द्रितः।
मम वर्त्मानुवर्तन्ते
मनुष्याः पार्थ सर्वशः॥

—'मैं एक क्षण के लिये भी आलसी रहूं, तो ये सारे लोग खतम हो जायेंगे। इसीलिये मैं निरंतर मेहनत करता हूं।' आज हम इस बात को भूल गये हैं। जो जमीन पर मजदूरी करते हैं, वे अब तक जमीन के मालिक नहीं बनते, जब तक उन्हें प्रतिष्ठा नहीं दी जाती, तब तक देश का उत्थान नहीं होगा। —विनोबा

* लिपि-संकेत : ि = ी; ी = ी ख=ख, संयुक्ताक्षर हलंत चिह्न से।

शांति-स्थापना में रचनात्मक काम का महत्त्व

सिद्धराज ढड्ढा

विश्व शांति-सेना के स्वरूप और कार्यक्रम के बारे में बोलते हुए विनोबा ने एक बहुत ही महत्त्वपूर्ण बात की ओर दुनिया के शांति-सेवकों का ध्यान आकर्षित किया है (इसी अंक में पृष्ठ १)। यह बात है, शांति-स्थापना के लिए रचनात्मक कार्यक्रम के महत्त्व की। साधारणतया रचनात्मक काम राहत का ही काम समझा जाता है, पर गांधीजी ने रचनात्मक कार्यक्रम को एक नया स्वरूप दिया। उनकी दृष्टि में रचनात्मक काम सिर्फ जन-सम्पर्क का साधन या जनता तक अहिंसा का संदेश पहुंचाने का एक आसान और व्यावहारिक तरीका मात्र नहीं था, बल्कि वह नई समाज-रचना की प्रत्यक्ष बुनियाद डालने का काम भी था।

हिन्दुस्तान म ही नहीं, दुनिया के भिन्न-भिन्न देशों में और हर युग में शांति चाहने वाले और समझ-बूझ कर शांति-स्थापना के लिए प्रयत्न करने वाले लोगों की कमी नहीं रही है। पर अभी तक अन्य देशों के शांतिवादियों का मुख्य कार्यक्रम सीधे युद्ध के विरोध का और युद्ध के कामों से असहयोग करने का रहा है। अब उत्तरोत्तर उनको इस बात का एहसास हो रहा है कि सामाजिक और आर्थिक व्यवस्था में बुनियादी परिवर्तन हुए बिना स्थायी शांति सम्भव नहीं है।

प्रत्यक्ष हिंसा और युद्ध का न होना ही अहिंसा नहीं है। अहिंसा इस प्रकार की केवल निषेधात्मक चीज नहीं है, वह एक जीवन-पद्धति है। अहिंसा के पुजारी के लिए इतना काफी नहीं है कि वह युद्ध का विरोध करे और उसमें हिस्सा लेने से इन्कार करे, जबकि दूसरी ओर दूसरे लोग युद्ध की परिस्थिति पैदा करने का और युद्ध करने का काम चलाते रहें।

अहिंसा में मानने वाले को पहल अपने हाथ में लेनी होगी और उन सामाजिक मूल्यों को बदलने की कोशिश करनी होगी, जिनके कारण युद्ध होता है। उसे आज की समाज-रचना की बुनियादें बदलने का यानी आमूल क्रांति का काम हाथ में लेना होगा।

अभी गांधीग्राम में जो युद्ध विरोधी सम्मेलन हुआ, उसने भी अपने निर्णयों में इस तथ्य को स्वीकार किया।

क्रांति की कल्पना में क्रांति

जाहिर है कि क्रांति अगर ऐसी करनी है, जिसके फलस्वरूप दुनिया में अहिंसा और शांति कायम हो सके, तो वह क्रांति विद्वेष, हिंसा और खून के जरिए नहीं हो सकती। दूसरे किसी विकल्प के अभाव में, अब तक यही माना जाता रहा है कि चाहे उसके लिए हिंसा करनी पड़े, पर पहले सत्ता हाथ में ली जाय और फिर उसके जरिए समाज में शांति लाई जाय। गांधीजी की विशेष देन मानव-जाति को यही थी कि उन्होंने क्रान्ति की इस कल्पना में ही क्रान्ति की। उन्होंने इस बात पर जोर दिया कि अगर हमारा साध्य अहिंसा और शान्ति है, तो उसका साधन भी अहिंसक ही होना चाहिए। गांधीजी ने रचनात्मक कार्यक्रम को क्रान्ति के अहिंसक साधन के रूप में हमारे सामने रखा। उन्होंने ऐसे रचनात्मक काम देश के सामने रखे, जिनके जरिए पुराने मूल्यों को बदलने का काम हो सकता है। मसलन खादी-ग्रामोद्योग, नयी तालीम, छुआछूत निवारण आदि। ये केवल राहत के काम नहीं हैं। इन कामों से समाज के सबसे शोषित और दलित वर्गों को राहत तो मिलने ही वाली है, लेकिन राहत के साथ-साथ सामाजिक और आर्थिक जीवन के पुराने मूल्य टूटते हैं और नये मूल्य प्रगट होते हैं। विनोबा ने भूदान के जरिए इस क्रान्ति की प्रक्रिया को आगे बढ़ाया। इस प्रकार हिन्दुस्तान में रचनात्मक काम सिर्फ राहत का काम न रह कर क्रान्ति का काम बन गया है। राष्ट्र के जीवन में इन रचनात्मक कामों का और इनमें लगे हुए कार्यकर्ताओं का एक विशेष 'रोल' (स्थान) बन गया है, जो शायद और किसी मुल्क में नहीं है। यह दूसरी बात है कि उस काम के करने वालों की कमजोरी के कारण आज उसमें से क्रान्ति प्रत्यक्ष प्रगट होती हुई नहीं दिखाई देती हो। पर यह कमी हम काम करने वालों की है, गांधी और विनोबा की कल्पना की नहीं है।

रचनात्मक काम 'पिछड़े' मुल्कों के लिए ?

दूसरे देशों के लोग अक्सर यह समझते हैं कि खादी-ग्रामोद्योग या भूदान जैसे रचनात्मक काम सिर्फ हिन्दुस्तान जैसे आर्थिक दृष्टि से "पिछड़े हुए" मुल्कों के लिए हैं। यह समझ-बूझ की कमी ही माननी चाहिए। अगर शांति-स्थापना के काम को यशस्वी होना है, उसे केवल निषेधात्मक काम बन कर नहीं रह जाना है, तो शांति-प्रेमियों को इस प्रकार की रचनात्मक प्रवृत्तियों के जरिए मौजूदा सामाजिक व्यवस्था को अहिंसक तरीके से पलटने का काम हाथ में लेना पड़ेगा।

इसका यह मतलब नहीं है कि हर देश में रचनात्मक कार्यक्रम का स्वरूप एक सा होगा। हर देश की सामाजिक, आर्थिक परिस्थिति के अनुसार इसका स्वरूप भिन्न-भिन्न हो सकता है। उदाहरण के लिए, अमेरिका, इंगलैण्ड, जर्मनी आदि सम्पन्न देशों की जनता के लिए भूमि के बँटवारे का नहीं, लेकिन दुनिया के दूसरे गरीब और आर्थिक दृष्टि से कमजोर मुल्कों को सहायता पहुँचाने का एक अच्छा कार्यक्रम हो सकता है। आज पश्चिम के लोगों की भावनाओं की अभिव्यक्ति का रास्ता न मिलने से जीवन में जो सूनापन मालूम होता है, वह इस प्रकार के कार्यक्रम से दूर हो सकता है। इंगलैण्ड में पिछली बार जब आम चुनाव हुए, तो वहां की जनता कहती थी कि इससे अच्छी परिस्थिति हमारी पहले कभी नहीं थी, तो अब हमें और अधिक क्या पाना है। इसलिए देखा गया कि चुनाव में बहुत-से लोग उदासीन रहे। विनोबा ने उस समय सुझाया था कि इंग्लैण्ड की जनता में उत्साह और प्रेरणा भरनी हो, तो एक ऐसी राजनैतिक पार्टी वहां खड़ी होनी चाहिए, जो यह कहे कि अगर जनता हमें वोट देगी, तो हम हमारे राष्ट्र की सम्पत्ति का, हमारी कुशलता का और हमारी मनुष्य-शक्ति का कम से-कम दसवां हिस्सा दुनिया के हमसे कम सपन्न मुल्कों की जनता की भलाई के लिए खर्च करेंगे।

पश्चिम के मुल्कों के लिए सिर्फ इस प्रकार दूसरे देशों को मदद पहुंचाने का ही काम नहीं है, और भी कई तरह के काम वे हाथ में ले सकते हैं। यह प्रत्यक्ष है कि

अफ्रीका और एशिया के अधिकांश मुल्कों में आज जो अभाव और गरीबी की परिस्थिति है, उसके लिए यूरोप के मुल्कों की साम्राज्य-लिप्सा बहुत हद तक जिम्मेदार रही है। पिछले दो-तीन सौ वर्षों में उन मुल्कों ने अपने-अपने साम्राज्य इन मुल्कों में फैलाये और वहां का शोषण किया। इस शोषण पर उनका आज का अस्वाभाविक जीवन स्तर बना है और टिका है। आज भी, चाहे अप्रत्यक्ष रूप से सही, बाजार के नियंत्रण की आर्थिक शक्ति के जरिए उनके द्वारा अफ्रीका और एशिया के कमजोर मुल्कों का शोषण जारी है। पश्चिमी देशों के शांतिवादी मित्र अपने देशवासियों की मनः स्थिति और उससे पैदा हुई इस परिस्थिति को बदलने का कार्यक्रम हाथ में ले सकते हैं और उन्हें वह लेना चाहिए; क्योंकि यह परिस्थिति युद्ध को आमंत्रण देती है।

शांति-स्थापना के उनके कार्यक्रम में अगर इस प्रकार का विधायक तत्त्व दाखिल न होगा, तो शांति-स्थापना का काम अधूरा रहेगा। इस प्रकार की विधायक दृष्टि उनके कार्यक्रम में दाखिल होने पर ही अपने-अपने देश के सामाजिक जीवन में उनका

[शेष पृष्ठ ४ पर]

क्या हमने वह पानी पीया है, जिसमें गांधीजी की भस्म प्रवाहित की गयी थी ?

गांधीजी की याद में हम आत्म-निरीक्षण करें

दादा धर्माधिकारी

करीब तेरह साल होने आये गांधीजी का शरीरान्त हुए । गांधीजी के शरीर की भस्म इस देश के मुख्य-मुख्य जलाशयों में प्रवाहित की गयी थी । उस वक्त शायद हम लोगों ने सोचा होगा कि अब इस देश के लोग जो पानी पीयेंगे, उसमें गांधीजी की कुछ तासीर होगी । आपने जब बच्चों को या बूढ़ों को आपस में लड़ते देखा होगा, तो यह कहते सुना होगा कि हम भी अपनी माँ का दूध पीये हुए हैं । इस देश का मनुष्य दुनिया के सामने खड़ा होकर आज, यह कह सकता है कि मैंने वह पानी पीया है, जिसमें गांधीजी की भस्म प्रवाहित की गयी थी ! अगर हम यह नहीं कह सकते हैं, तो हमारे लिए यह सोचने का विषय है । *यह विचार इस देश के अन्य लोगों के लिए आज जितना प्रस्तुत है, उससे कहीं अधिक* प्रस्तुत हम लोगों के लिए है, जो दावा करते हैं कि हम गांधीजी के विचार को समझते हैं और उस पर चलने की कोशिश करते हैं ।

पहली बात जो गांधीजी ने हमें सिखायी थी, वह यह है कि सत्ता, संपत्ति और शस्त्र-इन तीनों से देश में हम निरपेक्ष पुरुषार्थ का विकास करें । क्या इसका विकास हम अपने में कर सके हैं ? पेशवाओं के जमाने में एक न्यायाधीश था-रामशास्त्री प्रभुणे । राघोबा ने अपने भतीजे का खून किया, जो पेशवा था । रामशास्त्री पेशवाओं का न्यायाधीश था । उनकी तनख्वाह पाता था । राघोबा पेशवा ने उन्हें अपने दरबार में बुलाया । पेशवा की रानी ने उनसे पूछा कि भतीजे पेशवा ने खून किया है, अब तुम क्या करना चाहते हो ? तो रामशास्त्री ने कहा कि न्यायासन पर बैठ कर मैं एक ही चीज सीखा हूँ कि इस राज्य में जो कोई दूसरे का खून करेगा, उसे देहान्त प्रायश्चित्त करना चाहिए । रानी ने दुबारा, तिबारा वही सवाल पूछा और उन्होंने हर बार देहान्त प्रायश्चित्त की ही बात कही । रानी ने कहा कि क्या तुम जानते हो कि हम तुम्हारी जीभ काट सकते हैं, तुम्हारे शरीर की बोटी-बोटी काट सकते हैं, तुम्हें काल-कोठरी में बन्द कर सकते हैं । रामशास्त्री ने जवाब दिया कि प्राणों के मोह के कारण मेरे मुँह से कोई कमजोरी का शब्द निकलने से पहले अच्छा होगा कि आप इस जीभ को कटवा लें ।

सत्ता और शस्त्रधारी के सामने इस प्रकार का सत्यनिष्ठा का आचरण और उच्चारण करने की शक्ति क्या हममें रह गयी है ? सत्ता से मेरा मतलब सरकार, म्युनिसिपैलिटी, युनिवर्सिटी आदि से नहीं है, बल्कि मेरा मतलब है अन्याय के खिलाफ आवाज उठाने से । क्या विद्यार्थियों में यह शक्ति है कि विद्यार्थियों की ज्यादती के खिलाफ वे आवाज उठा सकें ? क्या मजदूरों में यह शक्ति है कि मजदूरों के असत्याचरण के खिलाफ वे आवाज उठा सकें ? क्या हमारे कार्यकर्ताओं में यह शक्ति है कि हम जो असत्याचरण करते हैं, हमारे अपने जीवन में जो लोभ, मोह है, उसका उच्चारण हम कर सकें ? रामशास्त्री ने पेशवाओं के दरबार में सत्य का उच्चारण किया । गांधीजी ने लोगों के दरबार में अपने पापों का उच्चारण किया और घर की आलमारी में चार रुपये निकले, तो उस बूढ़े ने अखबार में लिख दिया कि मैं अपरिग्रही हूँ, तो मेरे लिए यह लज्जा का विषय है कि मेरी धर्मपत्नी ने चार रुपये रख लिये । इस तरह अपनी गलतियों का, कमजोरियों का, बेईमानियों का उच्चारण मित्रों के, सहयोगियों के सामने हम लोगों ने किया है ?

आज के संसार में दो पार्टियाँ क्रांतिकारी मानी जाती हैं । एक कम्युनिस्ट पार्टी और दूसरी पार्टी नहीं है, बल्कि समुदाय है, जिसे आज गांधी परायण व्यक्तियों का समुदाय कहते हैं । गांधी निष्ठ व्यक्तियों के समुदाय में इस देश के लोग ही नहीं, दुनिया के लोग भी अपने को मानते हैं; क्योंकि दुनिया के लोग संपत्ति से अघा गये हैं; उनके पास इतनी संपत्ति है कि अब वे उसे बाँटने लगे हैं । दुनिया के लोग सत्ता से ऊब गये हैं और शस्त्रास्त्रों से भयभीत हो गये हैं । हमारे देश में अभी भूख और बेकारी है । इसलिए वैभव की लोलुपता भी है ।

हमारे यहाँ हम सत्ता की आकांक्षा का नंगा नाच देख रहे हैं । ग्राम-पंचायत में सत्ता चाहिए, डिस्ट्रिक्ट कौंसिल, म्युनिसिपैलिटी में सत्ता चाहिए । कांग्रेस कमिटी, पी० एस० पी० की कमेटी में सत्ता चाहिए और अन्त में लोक-सेवकों के क्षेत्र में निवेदक बनना चाहिए, सर्वोदय-मंडल में भी सत्ता चाहिए । आप यह न समझें कि सिर्फ राजाओं में ही गद्दी का झगड़ा हुआ है । शंकराचार्य की गद्दी के लिए भी झगड़े हुए हैं । सिर्फ दो मंत्रियों में ही आपस-आपस में झगड़ा होता है, ऐसा नहीं, दो पुजारियों में भी होता है । इस तरह के झगड़े जब राज्य का और युद्ध का क्षेत्र छोड़ कर धर्म के क्षेत्र में प्रवेश करते हैं, तब कोई बाधा नहीं रहती है ।

अन्यक्षेत्रे कृतं पापं पुण्यक्षेत्रे विनश्यति ।
पुण्यक्षेत्रे कृतं पाप वज्रलेपो भविष्यति ।

दूसरी जगह पाप करें, तो काशी में धो सकते हैं, लेकिन काशी में पाप करें, तो कहाँ धोयेंगे ? सत्ता, संपत्ति और शस्त्र का उन्माद संघर्ष पैदा करता है । संघर्ष की प्रतियोगी मनोवृत्ति बाजार में, लड़ाई में, दरबार में है । यह अगर कहीं इन गांधीवालों के क्षेत्र में आ गयी, तो फिर आप खूब समझ लीजिये कि दुनिया के लिए कोई आशा नहीं रहेगी ।

मैंने आपसे निवेदन किया कि हमारे जितने लोक-सेवक हैं, क्या उन्होंने कभी अपने दिल को टटोला है ? उन्होंने कभी इसका विचार किया है कि आखिर इस देश की यह परिस्थिति क्यों है ? यहाँ भूख है । यह न समझिये कि यह संयमी लोगों का देश है । *अमेरिका के आदमी को डकार लेते हुए सुन कर यहाँ के भूखे की आत्मा कराहती है ।* यही हाल शस्त्र का है । उन लोगों के पास इतने शस्त्र हो गये हैं कि इधर तो लड़ाई के लिए वे छटपटा रहे हैं, लेकिन उधर शस्त्रों से तंग आ गये हैं, भयभीत हो गये हैं । लेकिन हमारे यहाँ हम एक-दूसरे से इतने भयभीत हैं कि शस्त्रों के सिवाय कोई आधार नहीं मालूम हो रहा है । हमें पाकिस्तान और चीन का डर मालूम होता है, यह तो अलग, लेकिन जिस देश में एक प्रांत दूसरे *प्रांत से डर रहा है, उसके लिए क्या* कहा जाय ?

इसका प्रतिबिंब आप अपने भीतर देखिये । हम मुट्ठी भर हैं, लेकिन मुट्ठी भर आदमियों में अगर सिफत हो, गुण हों, तो मुट्ठी भर आदमी दुनिया को भारी हो सकते हैं । हममें कौनसा गुण हो सकता है जिन्होंने सत्ता, संपत्ति और शस्त्र-तीनों छोड़ दिये । सत्ता से आप दूर रहते हैं, संपत्ति आपके पास है नहीं, हथियार आपके पास थे नहीं और हैं नहीं, अब आपके पास कौनसी ताकत है, जिसके भरोसे आप इस देश में क्रांति करना चाहते हैं ? गांधीजी के गुणों के सिवाय और कोई ताकत आज हमारे पास नहीं है ।

सरकार गांधीजी का नाम लेकर बिलकुल दूसरे रास्ते से जा रही है । हम गांधीजी का नाम लेकर किसी भी रास्ते से नहीं जा रहे हैं । आप देखते हैं कि गांधीजी के जीते जी इस देश में इतने सत्याग्रह कभी नहीं हुए थे, जितने अब हर हफ्ते हो रहे हैं । आप पूछेंगे कि उसमें क्या बुराई है ? मैं उसकी निंदा नहीं करता हूँ, बल्कि सवाल पूछता हूँ कि *जिस देश में इतने सत्याग्रह होते हैं, उस* देश में अहिंसा की शक्ति का आविष्कार

सरकार गांधीजी का नाम लेकर बिलकुल दूसरे रास्ते जा रही है, पर हम तो गांधीजी का नाम लेकर किसी भी रास्ते से नहीं जा रहे हैं !

[पृष्ठ १ का शेष]

कोई विशेष स्थान और महत्त्व होगा, जो कि आज करीब-करीब नहीं है ।

जैसा कि हमने ऊपर कहा है, हिन्दुस्तान में सारा रचनात्मक काम इसी दृष्टि से या इसी तरह से हो रहा हो, सो बात नहीं है । हमारी कमजोरियाँ स्पष्ट हैं । लेकिन यह जरूरी नहीं है कि गांधी और विनोबा का संदेश हिन्दुस्तान ही आगे ले जाय । हो सकता है कि दुनिया का दूसरा कोई मुल्क युग के इस संदेश को आगे बढ़ाने में ज्यादा कामयाब हो । युग की यह पुकार किसके जरिए पूरी होती है, यह गौण बात है । मुख्य बात उसके पूरी होने की है । ●

महात्मा गांधी के राम

सीताराम द्विवेदी 'समन्वयी'

महात्मा गान्धी के जीवन सम्बन्धी अनेक घटनाओं का संग्रह हुआ है, परन्तु उनके किस कार्य से किस पर क्या प्रभाव पड़ा, यह सब संग्रह नहीं हो पाया है। होना संभव भी नहीं है, पर मैं अपनी बात कहना चाहता हूँ। यद्यपि मुझे महात्मा गांधी के विचारों से आत्मोन्नति की प्रेरणा असहयोग-आन्दोलन के पूर्व से ही मिल रही थी, फिर भी सन् १९२५ की कानपुर-कांग्रेस में कम्युनिस्ट प्रभाव में चले जाने तथा नमक सत्याग्रह के पश्चात् कांग्रेस समाजवादी दल का सक्रिय सदस्य हो जाने के कारण सत्याग्रह आदि आन्दोलनों में महात्माजी के बतलाये हुए मार्ग पर चलते हुए भी इन आन्दोलनों के प्रति मेरी भावना वह नहीं थी, जो महात्मा गान्धी की तथा उनके अनुयायियों की थी।

हृदय परिवर्तन की प्रक्रिया पर मेरा कोई विश्वास नहीं था। मेरे विचार में अवसरवाद सफलता की प्रधान कुन्जी थी और इसीके अनुसार चलने पर देश, समय, व्यक्ति की कल्पना मैं मानता था और जब कभी किसी नेता को अवसर से लाभ उठाने में चूकता हुआ देखता था, तब उसका विरोध कर बैठता था। अतः जब दूसरे विश्वयुद्ध के अवसर पर महात्माजी ने सत्याग्रह को कुछ दिनों के लिए टाल दिया और ब्रिटिश सरकार के सामने मांगें रखने लगे, तो मैं अधीर हो गया और उन लोगों में मिल गया, जो शीघ्र सत्याग्रह के पक्ष में थे।

रामगढ़ कांग्रेस में एक दल महात्माजी को शीघ्र सत्याग्रह के औचित्य को समझाने के लिए गया। मैं भी इस दल में था। बातें बड़ी खुल कर हुईं। महात्माजी जिसको मैं अब समझ पा रहा हूँ, उस नैतिक दृष्टिकोण से, सत्याग्रह की उपयोगिता समझा रहे थे और हम लोग विश्वयुद्ध में अंग्रेजों की मजबूरी से लाभ उठाने की बात कर रहे थे। हम दोनों के दो दृष्टिकोण थे, जिससे हम लोग एक-दूसरे को समझ न सके। इसी बीच महात्माजी के मुंह से निकला :

"सत्याग्रह मेरे लिए तो कष्टकारक नहीं है। सत्याग्रह करने पर मुझे जेल हो जायगी। वहाँ मुझे बाहर के झगड़ों से फुरसत मिल जायगी। वहाँ केवल रामभजन और चरखा कातना मेरा काम होगा। कष्ट आप लोगों को है, जो गृहस्थी के अनेक उपयोगी कार्यों को छोड़ कर जेल-यात्रा करेंगे। पर मेरी समझ में अभी उसके लिए उपयुक्त समय नहीं आया है। मेरा राम कह रहा है कि अभी उपयुक्त समय नहीं है। जब वह उपयुक्त समय बतला देगा, तब मैं एक मिनट की भी देर नहीं करूँगा।"

महात्माजी के मुख से इस बात को सुन कर मैंने कहा, "महात्माजी! आपका एक राम कहता है कि यह समय सत्याग्रह के लिए उपयुक्त नहीं है, परन्तु हम लोगों का राम कहता है कि यही उपयुक्त समय है। अंग्रेज लड़ाई में इस समय फंसे हुए हैं, जिससे उन पर चारों ओर से प्रहार हो रहा है। यदि उन पर एक हमारा भी प्रहार हो जाय, तो वे घुटने टेक दें और जिस काम को हम चाहते हैं, उनसे करा लें। आप मतगणना करके देखें, तो आपको विदित हो जायगा कि हम लोगों के राम की संख्या आपके राम से बहुत अधिक है। आपको बहुमत के अनुसार चलना चाहिए। अपने एक राम के कहने पर बहुमत के राम के निर्णय को ठुकराना नहीं चाहिए।" इस पर महात्माजी ने मुझको सम्बोधित करके कहा :

मैं तो सबमें विराजमान राम को समान रूप में ही ग्रहण करता हूँ। आपका राम मेरा राम है। राम किसी को न गलत मार्ग-निर्देश करता है और न किसी को धोखा देता है। उसके निर्णय के अनुसार कार्य करने से सर्वथा कल्याण है। यदि आप लोगों का राम तुरन्त सत्याग्रह के पक्ष में है, तो आप लोग सत्याग्रह करें। हम किसी प्रकार की बाधा उपस्थित नहीं करेंगे। पर यह सत्याग्रह आपका स्वतंत्र सत्याग्रह होगा। इससे मेरा कोई सम्बन्ध न होगा। यदि इस स्वतंत्र सत्याग्रह के पक्ष में आपका राम न हो और वह मेरा नेतृत्व चाहता हो, तो आप उसके अनुसार चलें। आप सत्याग्रह की तैयारी करें और जब मेरा राम आपको आज्ञा दे तब आप अपने राम के अनुसार सत्याग्रह करें। इस भाँति चलने से हम दोनों के राम का उपयोग हो जायगा और अभीष्ट सिद्धि में किसी प्रकार विघ्न नहीं होगा।"

महात्माजी के इस उत्तर से हम लोग निरुत्तर हो गये और उनको प्रणाम कर वापस चले आये।

उस समय तो मैं यही सोचता था कि महात्माजी अपने आग्रह के कारण व्यर्थ विलम्ब कर रहे हैं। पर आज जब इस पर विचार करता हूँ, तो विदित होता है कि यह महात्मा गांधीजी का आग्रह नहीं था, बल्कि सहज बुद्धि का निर्णय था, जिसके लिए भी उपयुक्त नाम सत्याग्रह ही है। आज भी गांधीजी के अनुयायियों में यदि कोई आग्रह है, तो सत्याग्रह ही है। यह सत्याग्रह किसी के विरुद्ध नहीं होता है, बल्कि इससे अपने 'राम' द्वारा प्रशस्त मार्ग पर चलने की प्रेरणा होती है। मैंने दो बार विनोबा-पदयात्रा में भाग लिया है। इन दोनों पदयात्राओं ने मुझे इस बात की दृढ़ता प्रदान करने में सहायता पहुँचाई है कि अपने राम, अर्थात् अपनी सहज बुद्धि जिसमें स्वाभाविक निर्णय होता है और जो कभी किसी को धोखा नहीं देती है, उसके अनुसार चलने में मनुष्य को दृढ़ संकल्प रहना चाहिए। इससे विचलित होने वाला मनुष्य अनेक विपत्तियों में फँस जाता है और दूसरों को भी अपने व्यवहार से हानि पहुँचाता है। जिस राम का उल्लेख महात्माजी ने मेरे धृष्टतापूर्ण व्यवहार पर रामगढ़-कांग्रेस के अवसर पर किया था, उसका स्पष्ट अनुभव आज मुझे विनोबा-साहित्य तथा सत्संग से हो रहा है। किसी समय मैं केवल कानून-भंग को सत्याग्रह समझता था, पर आज प्रत्येक क्षण सत्याग्रह के अनुभव से आत्मविभोर हो जाता हूँ। मनुष्य को यह सहज वृत्ति हृदय की ग्रन्थियों के खुल जाने पर होती है और यह केवल राम की अहेतुकी कृपा का परिणाम है।

●

अनुकरणीय कदम

लेबर कालोनी कानपुर से श्री सुरेन्द्र घोष लिखते हैं कि '४ जनवरी से ३० जनवरी तक नियमित सूत्रयज्ञ का आयोजन करेंगे और उससे जो भी रकम प्राप्त होगी, उसे कुमारप्पा-स्मारक-निधि में भेजेंगे।' यह एक अनुकरणीय कदम है। अब तो समय हो गया है, फिर भी जो भाई इस दिशा में प्रयत्न करना चाहेंगे, वे ३० जनवरी से १२ फरवरी तक इस प्रकार की कोशिश कर सकते हैं और इस प्रकार स्वर्गीय कुमारप्पाजी को श्रद्धांजलि दे सकते हैं।

क्यों नहीं हो रहा है? हर हमने सत्याग्रह हो और उसके बाद भी लोग कहें कि अहिंसा अव्यवहार्य है, तो बात समझ में नहीं आती है। अहिंसा अव्यवहार्य है, इसलिए गांधीजी के बाद सत्याग्रह नहीं होगा, मारपीट होगी, ऐसा लोग कहते, तो हम समझ सकते, लेकिन कम्युनिस्टों से लेकर रामराज्य-परिषद् तक सब सत्याग्रह ही करते हैं और सबका दावा है कि हम अहिंसात्मक सत्याग्रह करते हैं। तो इसके बाद भी अहिंसा की शक्ति विकसित क्यों नहीं हो रही है? जनता में अहिंसा का प्रत्यय क्यों नहीं आ रहा है? हमारे जमाने में एक गीत गाया जाता था—"कदम अर्जन के बढ़ते हैं, फतह सरकार की होती है।" पहली लड़ाई के समय यह गाया जाता था। रोज गोली चले, मारपीट हो और दुहाई अहिंसा की हो, जय अहिंसा की बोली जाती हो। हमें सोचना चाहिए कि जब अहिंसात्मक प्रतिकार के इतने प्रयोग जगह-जगह हो रहे हैं, तो अहिंसात्मक वीरता का प्रत्यय क्यों नहीं आता?

आप सब लोक-सेवक इस पर सोचिये। आज इस देश में इतने सत्याग्रह हो रहे हैं कि एक विनोबा को छोड़ कर और सब सत्याग्रह कर रहे हैं! और वे यह भी कहते हैं कि विनोबा को सत्याग्रह करना चाहिए। आज देश में जितने सत्याग्रही हैं, वे कहते हैं कि विनोबा सत्याग्रह करें। वे कहते हैं कि

"मैं आपके जैसा करूँ, तो मैं तुम ही बनूँगा। तुम तो कर ही रहे हो। मेरी अपेक्षा तुम में कौनसी कमी है? क्या वीरता, देशभक्ति में कोई कमी है? फिर कौनसा गुण है, जो तुममें नहीं है और मुझमें है? तो फिर मेरे करने से क्या होगा? अगर मेरे करने से होगा, तो इसीलिए होगा कि मैं अपनी समझ से काम करूँगा और उस अपनी समझ में भगवान के आदेश का मुख्य अंश है। अतः मेरे करने से होगा, तो भगवान का होगा।"

यह जो जीवन-समर्पण की बुद्धि है, वह जिस राष्ट्र में नहीं है, उसमें आत्म-प्रत्यय पैदा नहीं होगा।

पठानकोट में सर्व सेवा संघ ने जब संविधान के क्षेत्र में पदार्पण किया, तब मैंने कहा था कि यह असिधारा का क्षेत्र है—"क्षुरस्य धारा निशिता दुरत्यया" जैसा क्षेत्र है। हमने एक नृत्याचार्य का नृत्य देखा था। पैर में चूना लगा कर वे तलवार की धार पर नाचे। तलवार को चूना लगा, लेकिन पैर नहीं कटा! यह कमाल संविधान-क्षेत्र में आप कर दिखायेंगे, तो आपका ठीक चलेगा। नहीं तो यह तलवार आपके पैर काटने वाली है। संविधान का क्षेत्र अनोखा है। जो चुनाव का, संविधान का क्षेत्र नहीं है, वह सुरक्षित है। लेकिन हमने कुछ खतरे का क्षेत्र जान-बूझ कर अपनाया है। इस क्षेत्र में हमें सोच-विचार कर चलना है। क्या हम गांधीजी का-सी समर्पण-वृत्ति इस क्षेत्र में दाखिल कर सकेंगे? अगर हमने यह कर दिया, तो मैं आप लोगों से विश्वासपूर्वक कह सकता हूँ कि मुट्ठी भर आदमी भी इस देश को उबार नहीं सके, तो भी कम-से-कम उसमें सज्जनता, वीरता के बीज का संरक्षण कर सकेंगे, जो एक बहुत बड़ी बात होगी।

[एक भाषण के आधार पर]

१९६० में सर्वोदय-आन्दोलन के चार विशेष प्रयोग-क्षेत्र

महावीर सिंह, चम्बल घाटी शांति समिति, भिण्ड

विनोबा गत १० वर्ष से भूदान, सम्पत्तिदान, ग्रामदान, शान्ति सेना व सर्वोदय-पात्र जैसे विचार क्रांति के लिये नये-नये कार्यक्रम देश के सामने रखते रहे हैं और हजारों कार्यकर्ता इस क्रांति-कार्य में काम भी कर रहे हैं। परन्तु फिर भी अब तक समाज क्रांति का दर्शन नहीं हो सका। कइयों का विचार है कि आन्दोलन की सफलता के लिए सरकार को भी नियंत्रित करना चाहिए तथा जन शक्ति को जगा कर सौम्य सत्याग्रही प्रक्रिया से धन, धरती का भी शीघ्र बँटवारा करना चाहिए।

इस विचार को रखने से कुछ ऐसा लगता है कि कार्यकर्ताओं में विनोबा के दिये हुए वर्तमान कार्यक्रम भूदान, ग्रामदान, सम्पत्ति-दान आदि पर आस्था नहीं है। बात ऐसी नहीं है। कार्यकर्ताओं को कार्यक्रम पर पूरी आस्था है, मगर समाज में जो स्वामित्व-भावना को पुष्ट करने वाली शक्तियाँ काम कर रही हैं, वे हमसे अधिक शक्तिशाली हैं। इसीलिए समाज धन, धरती के स्वामित्व को और भी जोर से पकड़ रहा है। ऐसी स्थिति में साधारण कार्यकर्ता जो भी काम कर रहे हैं, वह क्षुब्ध होते हुए भी उसका समाज पर असर नहीं हो रहा है। अब हमें अपनी कठिनाइयों के प्रति जागरूक रहना है और उन्हें हल करने के लिए रास्ते खोजते रहना है। इसी दृष्टि से विनोबा ने चार प्रयोग-क्षेत्र चुने हैं और सारे देश की क्रान्तिकारी सेवक-शक्ति इसमें लगे, इसकी ओर ध्यान खींचा है। हम इन चारों प्रयोग-क्षेत्रों की स्थितियों पर थोड़ा विचार करेंगे।

इन्दौर

कश्मीर-यात्रा में बाबा ने जब इन्दौर नगर को सर्वोदय नगर बनाने की प्रेरणा दी, तभी से प्रान्त के मुख्य सेवकों की एक 'टीम' इन्दौर नगर में काम करने के लिए बैठ गयी। सर्वोदय-सेवकों के अलावा विभिन्न रचनात्मक संस्थाओं तथा नगर-निगम के नेताओं व कार्यकर्ताओं की भी शक्ति इन्दौर में लगी। कार्यक्रम की दृष्टि से सर्वोदय-पात्र का तथा सफाई का काम उठाया गया। लगातार कई महीनों तक शक्ति लगायी, करीब एक माह तक विनोबा की उपस्थिति में भी प्रत्यक्ष काम किया गया। परन्तु जब विनोबा वहाँ से विदा हुए, तो लगा सर्वोदय-पात्र कम होते जा रहे हैं, सफाई का खड़ा किया गया ढाँचा भी लड़खड़ा रहा है। इसके बाद बाबा की प्रेरणा और उनके आशीर्वाद से गन्दे पोस्टर हटाने का निषेधात्मक कार्य हाथ में लिया गया। फलस्वरूप आन्दोलन के विधायक पहलू की ओर भी समाज का ध्यान आकर्षित हुआ। इस कार्यक्रम से इन्दौर नगर में एक नैतिक शक्ति का विकास हुआ तथा सारे देश के जनमानस को बुराई के विरुद्ध अहिंसक प्रतिकार की एक शानदार प्रेरणा मिली।

इतना सब होने के बाद भी इन्दौर नगर में अभी तक सम्पत्ति के स्वामियों का विचार-परिवर्तन नहीं हुआ। साधन-हीनों की दुर्दशा इन्दौर में भी आज तक उसी प्रकार है, जिस तरह दूसरे साधन सम्पन्न नगर बम्बई, कलकत्ता आदि में। प्रश्न यह है कि क्या सफाई-आन्दोलन से या भंगी-मुक्ति से क्रांति सम्भव है। नगरों की (धनिकों की) ऊपर बताई हुई शोचनीय स्थिति से देश की भयानक गरीबी किस प्रकार दूर हो सकेगी, किस प्रकार गाँव, नगर में परिवार भावना जगेगी। इस युग प्रश्न को हल करने का विचार हमें करना है, ताकि ग्राम-राज्य व नगर-राज्य की कल्पना साकार हो सके।

चम्बल घाटी

चम्बल घाटी में बीसियों वर्षों से डाकू और पुलिस के आतंक से जनता पिस रही थी। सैकड़ों की तादाद में सशस्त्र बागियों की समस्या को पुलिस द्वारा समाधान करने वाले उपायों ने दिन दूने डाकुओं को जन्म दिया और गाँव-रक्षा के नाम पर हजारों हथियार ग्रामीणों को बाँटे गये। २५००० पुलिस के 'जवान' रात-दिन गाँवों में अपने थाने कायम किये पड़े थे। क्षेत्रीय जनता की माँग पर आचार्य विनोबा इस क्षेत्र में मई सन् १९६० को आये। अहिंसक प्रक्रिया से डाकुओं का मसला किस प्रकार हल किया जाय, यह शान्ति-सेना के सामने सवाल था। हमारे इस प्रयास में सरकार का भी पूरा सहयोग था। फलस्वरूप २० बागी भाइयों के विचार बदले। उन्होंने मय हथियारों के बाबा के सामने अपने को समर्पित किया। दुनिया ने इस घटना को बड़े आश्चर्य की दृष्टि से देखा। पर बाबा के क्षेत्र से निकलते ही सरकारी रुख में परिवर्तन हुआ। शान्ति-सैनिकों के सामने इस कार्यवाही को आगे बढ़ाने में प्रतिकूलताएँ आयीं। फलस्वरूप अन्य बागियों का समर्पण-कार्य बन्द ही हो गया। जो हाजिर आये थे, उन पर जेल में सख्ती (बेड़ी, हथकड़ी, भोजन में कमी, जेल व पुलिस कर्मचारियों का बुरा बर्ताव आदि) की जाने लगी। मुकदमों में बरी होने पर जेल के फाटक से पुनः गिरफ्तार करना, पुलिस कस्टडी में रख कर मारपीट, बिजली के करेंट लगाने जैसी गैरकानूनी अमानवीय कार्यवाहियाँ भी की गयीं। सरकार ने बाबा को वचन दिया था कि उनके साथ ज्यादती न होगी, न्याय मिलेगा। पर दिये हुए वचन को भी भंग किया गया। शाहूत को मारा-पीटा गया। इस प्रकार न्याय में भी हस्तक्षेप किया गया। समय-समय पर इन घटनाओं की सूचना सरकार को दी गयी, परन्तु सरकार ने कानूनी खानापूर्ति करके वास्तविकता से मुँह मोड़ लिया।

नैतिक संकट की इस स्थिति में शान्ति-समिति के कार्यकर्ता क्या करें? यह सवाल है उनके सामने। बाबा का बागियों को दिया गया आश्वासन समिति के लिए नैतिकता का प्रश्न है और समाज के प्रति भी नैतिक दायित्व का प्रश्न है। आये दिन बढ़ते हुए अपराधों को रोकने में हम असमर्थ हो गये। फरार बागियों को भी अपराध-विरत नहीं कर पा रहे हैं। जो हाजिर आये हैं, उनकी भी हिफाजत करने में हम असफल साबित हो रहे हैं। ऐसी स्थिति में कार्यकर्ता क्या करें, यह सवाल हम कार्यकर्ताओं के सामने ही नहीं, बल्कि दुनिया के उन समस्त अहिंसा में विश्वास करने वालों के सामने है, जो अहिंसक पद्धति से समाज के समस्त प्रश्नों को हल करने का दावा करते हैं। सरकारी सहयोग से जो सफलता इस क्षेत्र में मिली, क्या उसमें प्रतिकूलता आने पर कोई दूसरी शक्ति भी हमारे हाथ में है, जिससे हम इस समस्या का समाधान कर सकें, यह खोजबीन आज चम्बल घाटी शान्ति-समिति के साथियों के सामने है।

उत्तराखण्ड

उत्तराखण्ड की समस्या साम्यवादी चीन के हमले का खतरा नहीं, बल्कि देश में व्याप्त गरीबी, भुखमरी, बेरोजगारी, सामाजिक विषमताओं, छूतछात और ऊँच-नीच की समस्या है। जब तक देश की आर्थिक, सामाजिक समस्याओं का समाधान नहीं होता, तब तक चीनी खतरों से देश की रक्षा हो नहीं सकती। खतरा दरवाजा खटखटा रहा है, परिस्थितियों की माँग है कि या तो अपनी आन्तरिक समस्याओं का शीघ्र समाधान करो, गाँव-देश को एक परिवार मान लो और बुद्धिमान अंग्रेज जाति की भाँति तुम भी धन, धरती के स्वामित्व का विसर्जन कर डालो, अन्यथा सारा देश तानाशाही साम्यवाद के घेरे में आ जायेगा। स्वामित्व-विसर्जन का आदर्श आज हमारी आवश्यकता बन गया है। समय रहते देश के सम्पत्तिवान, भूमिवान, विचारवान यदि नहीं चेतते, तो दुनिया की कोई ताकत भारत को संघर्षजनित क्रांति या खूनी हमले से बचा नहीं सकती। वैसे तो बाबा और उनके साथी इस दिशा में देश को जगा रहे हैं, परन्तु अब इतना अवसर नहीं है कि हम उपदेश देकर ही अपने कर्तव्य की इतिश्री कर लें, अब तो अवसर हमारे हाथ में नहीं रह गया, बल्कि हमलावरों के हाथ में है। इसलिए समय रहते काम कर डालने में ही बुद्धिमानी है, देश की सुरक्षा है। भयानक गरीबी, अज्ञान, बेरोजगारी का शिकार होकर उत्तराखण्ड अपनी जिन्दगी जी रहा है और अपनी मौत मर रहा है। लेकिन तथाकथित राष्ट्रवादी भारत में कानपुर, कलकत्ता, बम्बई जैसी महानगरियों में सम्पत्ति वालों की अठखेलियाँ चल रही हैं, मानो देश के इस खतरे से उन्हें कोई सरोकार ही नहीं!

हम सब अहिंसावादियों के लिए यह समस्या एक चुनौती के रूप में है। संगीनी हिंसा से आने वाले साम्यवाद का हम किस प्रकार मुकाबला करें। पूज्य बापू ने कहा था कि यदि स्वतंत्र भारत में एक ओर करोड़पति और दूसरी ओर भूखे-नंगे, मजदूर जैसी विषम स्थिति रही, तो दुनिया की कोई ताकत भारत में हिंसक क्रांति को रोक नहीं सकती। यह युग पुरुष की चेतावनी हमें बराबर चेतावनी दे रही है कि स्वतंत्र भारत में हम अभी तक कुछ नहीं कर सके हैं। इसलिए ऐसा होना कोई अनहोनी घटना नहीं होगी। समय रहते हम सब चेतें। इस गंभीर समस्या के समाधान के लिए देश की शांति सेना सामूहिक शक्ति से धन धरती का बँटवारा करा कर देश की रक्षा करे। यह कार्य उत्तराखण्ड के चन्द शांति-सैनिकों का नहीं, अपितु समूचे देश की शांति-सेना का प्रश्न है।

काशी

इन्दौर के बाद देश की श्रद्धा-नगरी काशी की ओर बाबा आये। काशी नगरी में भी कुछ समय से बाबा के आवाहन पर हमारे साथी कार्यकर्ता बैठे थे। कुछ समय के लिए वैतनिक कार्यकर्ताओं की भरती भी की गयी, कुछ कार्यकर्ता तो पहले से ही काम कर ही रहे थे। लेकिन इन सबकी सीमित कार्यशक्ति अथवा विचार-शक्ति ने दीवारों पर कुछ नारे मात्र ही लिखवाये। गंदगी हटाने के काम में भी कार्यकर्ता झाड़ू लेकर लगे, लेकिन गंदगी करने वालों ने भी अपना काम कम नहीं किया! स्थिति ज्यों-की-त्यों आज भी बनी है! सर्वोदय-पात्र की स्थापना का काम भी उठाया गया है। मगर श्रद्धाहीन सर्वोदय-पात्र अधिक दिन टिकने वाले नहीं। सर्वोदय-पात्र टिकाने के लिए सर्वोदय-सेवकों के प्रति उतनी ही श्रद्धा समाज में चाहिए, जितनी कि अंधी श्रद्धा गेरुआ वस्त्रधारियों पर है। इनकी श्रद्धा बिना यह पात्र नहीं टिकेंगे—चाहे आज हम उसका कितना ही विज्ञापन करके श्रेय कमा लें।

इन सारे प्रश्नों पर हम बारीकी से ईमानदारी से व गहराई से विचार करना चाहिए।

आजाद भारत की नारी से मेरी अपेक्षाएँ

विमला ठकार

स्वतंत्र हिन्दुस्तान में—सामान्यतया सभी देशों में—आधी लोक-संख्या महिलाओं की है। यदि महिला निष्क्रिय रहेंगी, तो आजादी का रक्षण करना, लोकशाही का विकास होना मुश्किल है। देहातों में जो लोग हैं—और ८० प्रतिशत लोग देहातों में ही रहते हैं—उनमें से बहुत से लोग अशिक्षित हैं, पढ़ना-लिखना भी नहीं जानते। स्त्रियों की स्थिति तो और भी बुरी है। यदि आजादी को सम्भालना हो, तो स्त्रियों को पहले साक्षर, सुशिक्षित बनाना चाहिए। सुशिक्षित स्त्रियों का और संस्थाओं का यह पहला कर्तव्य है।

भारत के कुछ प्रांतों में परदा-पद्धति और दहेज की प्रथा प्रचलित है। ये दोनों पद्धतियाँ स्त्री का अपमान करती हैं। उनके खिलाफ प्रचार करना और ममता के लिए प्रान्तव्यापी आन्दोलन करना स्त्री-संस्थाओं का आवश्यक कार्य है।

आज के समाज में एक नई समस्या खड़ी है। लड़की कितनी भी पढ़ी-लिखी हो, बड़ी और सम्मान पाने वाली हो, तो भी उसके संरक्षण की समस्या आज माता-पिता और सज्जन नागरिकों के सामने खड़ी ही रहती है! लड़की कहीं भी जायेगी, तो चिन्ता पैदा होती है। इसके लिए तरुण स्त्री-पुरुष जिम्मेदार हैं।

मैं पुरातनवादी नहीं हूँ। लेकिन आज की लड़कियों की वेश-भूषा, प्रसाधन आदि उत्तेजक होते हैं, यह कहना आवश्यक मानती हूँ। जो चरित्र का और पवित्रता का संरक्षण करे, वही पहनना चाहिए। शृङ्गार और प्रसाधन का जो समय और स्थान रहता है। उनके बारे में विवेकशील रहना होगा। स्त्री-संस्थाओं को यह बात उठानी चाहिए। सभ्यता और शिष्टता के लिए समाज में वेशभूषा और प्रसाधन के साधनों पर नियन्त्रण चाहिए। कलात्मकता और सुन्दरता के नाम पर उत्तानता और उच्छृङ्खलता नहीं आनी चाहिए। स्वस्थ सौंदर्य-दृष्टि के विकास के लिए संगठित प्रयत्न होना आज आवश्यक है।

इससे भी अधिक महत्त्व की बात यह है कि समाज में जब तक गरीबी और अमीरी रहेगी, तब तक लोकशाही स्थापित नहीं होगी। जब तक समाज में झूठ, लूट और घूसखोरी, बेईमानी चलेगी, तब तक न्यायपूर्ण, शोषणरहित समाज प्रत्यक्ष में नहीं आयेगा। आज सब लोगों की सब लोगों के खिलाफ एक ही शिकायत है कि लोग अनैतिक बर्ताव करते हैं। इसका एक हल मेरी समझ में आता है।

हमारा समाज एक परिवार है। वह कुटुम्बों का बना है। हरएक कुटुम्ब में स्त्री केन्द्र में रहती है। तो क्या स्त्रियाँ इनके बारे में कुछ कर नहीं सकतीं? जो अंतिम मूल्य माने जाते हैं—जैसे सत्य, न्याय और भक्ति—ये सब आज के समाज में कमीरों से दब जाते हैं। सबके मन में अमीरी की आकांक्षा है। जो सफल होते हैं, वे अमीर बनते हैं। असफल अमीर गरीब कहलाते हैं। स्त्री यदि अच्छी प्रेरणा दे सकेगी, तो समाज और व्यक्ति का उत्थान कर सकेगी। समाज में भ्रष्टाचार तथा शोषण नष्ट करने के लिए वह अच्छी प्रेरणा दे सकती है। जैसे, पाप का पैसा घर में नहीं आना चाहिए, झूठ बोलने से लाभ हो तो भी वह नहीं बोलना चाहिए, अधर्म का, अन्याय का धन घर में नहीं लाना चाहिए इत्यादि।

आज की समाज-रचना और अर्थ-रचना बदलना नितांत आवश्यक हो गया है। आज देश में स्त्री राष्ट्र का घटक मानी गयी है। वह मतदाता है। व्यक्तिगत जीवन में कैसे परिवर्तन लाया जा सकता है, यह गांधी ने दिखाया है। तो स्त्रियों की अभिक्रमशीलता से समाज का उत्थान हो सकता है। स्त्री अपने परिवार का आर्थिक जीवन परिशुद्ध बना दे, तो समाज-रचना, अर्थ-रचना स्वयं ही बदल जायेगी।

सर्वोदय का विचार जब तक घर-घर में नहीं पहुँचेगा और बच्चों को माँ के दूध के साथ नहीं मिलेगा, तब तक समाज-क्रांति की आशा रखना व्यर्थ है।

मैं आशा करती हूँ कि महिलाएँ यह चुनौती ग्रहण करेंगी।*

---

* *महिला चरखा समिति, पटना की* प्रकाशित होने वाली पुस्तिका के लिए भेजे गये लेख से।

लोकशिक्षा के आचार्य का सम्मान

तीन-तीन पीढ़ियों को जीवनदायी और आत्मनुलक्षी जीवन-शिक्षा देनेवाले, ग्रामप्रजा को आख्यान-पारायण, कथा-वार्ता कहनेवाले, उनके *छोटे-मोटे प्रश्नों को सुलझाने में मददगार बन कर ग्रामजीवन के साथ* तादात्म्य साधने के लिए सदा प्रयत्नशील रहनेवाले लोक-शिक्षा के आचार्य श्री नानाभाई भट्ट का उनके भूतपूर्व और वर्तमान विद्यार्थी वर्ग, अन्य शुभेच्छक और सामाजिक जीवन के विविध क्षेत्र के अग्रणियों ने मिल कर आदर और हृदयपूर्वक श्रद्धांजलि अर्पित करके सम्मान किया।

६ जनवरी को सवेरे दस बजे 'लोकभारती' संस्था, सणोसरा (गुजरात) में विद्यार्थियों द्वारा तैयार और सुशोभित किये गये भव्य मण्डप में शांति-*पाठ और मंगल प्रार्थना के साथ मानव-जीवन की महत्ता और गांभीर्यसूचक* बने हुए पवित्र वातावरण में समारम्भ का प्रारम्भ हुआ।

आरंभ में श्री नानाभाई के जीवन और कार्य को श्रद्धांजलि के अर्घ्य देते हुए गुजरात के साहित्यकार, कवि, शिक्षाकार और समाज के अग्रपुरुषों तथा उद्योगपतियों के संदेश सुनाये गये।

भारतीय संस्कृति का प्रतिनिधि

इस अवसर पर बोलते हुए भारत के वित्तमंत्री श्री मुरारजी देसाई ने श्री नानाभाई द्वारा की गयी ज्ञानोपासना और लोकसेवा का गौरव करते हुए कहा : "हिन्दुस्तान में जिन लोगों ने संस्कृति के बीज बोये, उनमें श्री नानाभाई एक हैं। आपने आजीवन गुजरात को शिक्षण की नयी दृष्टि देने का प्रयास किया है, फिर भी कभी मैं कुछ दे रहा हूँ, ऐसा अहंभाव उनके मन में नहीं आता है।"

अपना श्रद्धाभाव व्यक्त करनेवाले अन्य लोगों में श्री बैकुंठभाई मेहता, श्री ढेबरभाई, गुजरात के अग्रगण्य कवि श्री उमाशंकर जोशी, लोकसेवक श्री जुगतराम दवे, श्री बलवंतराय मेहता तथा राजस्थान के लोकसेवक श्री गोकुलभाई भट्ट, मुख्यमंत्री श्री सुखाड़ियाजी एवं श्री हरिभाऊ उपाध्याय भी थे।

अंत में पूज्य रविशंकर महाराज ने इस प्रसंग पर समाज की ओर से दो लाख, आठ हजार रुपये की एक थैली श्री नानाभाई को समर्पित की।

स्वागत का उत्तर देते हुए आचार्य श्री नानाभाई ने कहा :

"विद्यार्थियों के हृदय में प्रतिष्ठित होना ही शिक्षक का सबसे बड़ा सम्मान है। सरकार या समाज अपनी ओर से चाहे जितना धन या सम्मान शिक्षक को दे, पर उससे शिक्षक की प्रतिष्ठा घटती या बढ़ती नहीं है। इस सम्मान-थैली का विचार वस्तुतः मुझे पसंद नहीं था, परन्तु यदि मैं उसका विरोध करता, तो मुझे वह अपने मन में 'प्राइड आफ वर्च्यु'—सद्गुण का अभिमान—लगता। सद्गुण का भी एक अभिमान होता है। इस कारण अपनी शिक्षण-संस्थाओं को गति देने के लिए सभी ने मिल कर जो कुछ दिया, मैंने निःसंकोच उसे स्वीकार किया है।

जिस शिक्षा में आत्मा की खोज को बिलकुल स्थान नहीं है, उस शिक्षा या संस्था में चाहे कितनी बाहरी दिखावट हो, फिर भी वह गलत ही है। बड़े-बड़े मकान और बड़ी तनख्वाह पाने वाले अध्यापक झूठी शिक्षा को सच्ची नहीं बना सकते। पर आज तो तालीम को एक बाजार कर दे दिया गया है। एक तरह का पेशा ही चल रहा है! यह बड़ी भयानक बात है! हमारे समाज और सरकार के समझदार वर्ग को यह बात जितनी जल्दी समझ में आयेगी, उतना ही हमारा सद्भाग्य होगा। शिक्षकों के, लोगों के और सरकार के मानस में परिवर्तन होगा, तभी पुरानी तालीम के स्थान पर नई तालीम आ सकेगी और उसका विकास होगा। आज सभी जगह आत्मश्रद्धा की कमी दिखाई दे रही है। मेरी आन्तरिक इच्छा है कि युग के अनुरूप आत्मानुलक्षी तालीम की पुनः स्थापना हो।

"मैं चाहता हूँ कि इस थैली के मिलने के बाद अब हमारी संस्था के जीवन में संयम और सादगी बढ़े। यदि हमारी फिजूलखर्ची बढ़ेगी, तो हम नई तालीम को कलंकित करेंगे। इस थैली का सदुपयोग करने का बल संस्था को मिले, यह मेरी ईश्वर से प्रार्थना है।

"अब मेरे मन में न 'लोकभारती' है, न ग्राम दक्षिणामूर्ति, परन्तु पंखहीन पक्षी-शावक जिस प्रकार अपनी माता की राह देखते हैं, जिस प्रकार गाय के भूखे बच्चे माता के दूध के लिए आतुर बनते हैं, ठीक उसी प्रकार मेरा मन अब ईश्वर-दर्शन के लिए उत्सुक बना है। आप सबके आशीर्वाद से दक्षिणामूर्ति भगवान का मैं साक्षात् अनुभव कर सकूँ, इतनी ही एक मेरी अन्तरतम आकांक्षा है।"

—वसन्त व्यास

महात्मा गांधी और कुमारप्पा का अन्तिम और प्रथम मिलन

[बापू की मृत्यु के ठीक बारह साल बाद, उसी दिन '३० जनवरी' १९६० को कुमारप्पाजी कादेहावसान हुआ। उन दोनों के पुण्य स्मरण के निमित्त यह संस्मरण दे रहे हैं। —सं०]

—मणीन्द्रकुमार

पिछले साल की बात है, श्री कुमारप्पाजी मद्रास-अस्पताल में थे। एक बहन ने, जो उनसे मिलने गयी थी, उनसे ३० जनवरी की शाम को कहा, "मैं बापू की पुण्यतिथि की सभा में शरीक होना चाहती हूँ, इसलिए आपसे विदा लेती हूँ।" श्री कुमारप्पाजी ने सहज मुस्कुरा कर कहा, "मैं भी वहाँ हाजिर रहूँगा!" बहन सोचती ही रही कि यह जर्जर शरीर वहाँ तक कैसे आ पायेगा?

उस बहन को बाद में मालूम हुआ कि कुमारप्पा का कथन सत्य था। वे बापू को स्मरण करने के लिए जो गये, सो वापस इस दुनिया में नहीं आये। भक्त की भगवान् को इससे बड़ी क्या श्रद्धांजलि हो सकती है?

गांधीजी

Dr. J C KUMARAPPA

यह तो था अन्तिम मिलन। किन्तु उनका बापू से प्रथम मिलन भी कम आकर्षक नहीं था। सन् १९२९ की बात है। कुमारप्पाजी अमेरिका से अपना शिक्षण समाप्त कर लौटे ही थे। वे जब अमेरिका में कोलम्बिया विश्वविद्यालय में अध्ययन करते थे, तब उन्होंने एक मौलिक निबंध लिखा था "राजस्व और हमारी गरीबी" (पब्लिक फाइनेन्स एण्ड अवर पावर्टी)। तब वहाँ पर एक हिंदी प्राध्यापक ने उनसे कहा, "तुम्हारे इस निबंध में सम्भवतः गांधी अच्छी दिलचस्पी लेंगे।"

अप्रैल १९२९ के अन्त में जब गांधीजी किसी कार्यवश बम्बई आये हुए थे, कुमारप्पाजी ने इस वक्त बापू से मिलना उचित समझा। वे बापू के निवास 'मणिभुवन' पहुँचे। बापू के निजी सचिव श्री प्यारेलालजी ने कहा कि बापू कांग्रेस की प्रबंध समिति की बैठक में व्यस्त हैं, इसलिए उनसे आज मुलाकात नहीं हो सकती है। कुमारप्पा तुरन्त यह कह कर चले गये कि यह निबंध गांधी को दे दीजिये। उसी दिन बाद में प्यारेलालजी ने कुमारप्पा को फोन पर कहा कि वे बापू से साबरमती-आश्रम में ९ मई १९२९ की दोपहर को २॥ बजे मिलें। गांधीजी ने इतना लम्बा समय इसलिए दिया था कि उस निबंध को देख कर ही वे कुमारप्पा से मिलना उचित समझते थे। कुमारप्पाजी उस वक्त एकदम पश्चिमी प्रभाव में थे। वे यूरोपियन तरीके से कपड़े पहनते थे और एक छड़ी लेकर चलते थे। जब कुमारप्पा साबरमती-आश्रम पहुँचे, तब उनको अतिथिगृह में ठहराया गया। उनको बड़ी निराशा हुई, क्योंकि अतिथिगृह में फर्नीचर के नाम पर केवल एक चारपाई थी और हाथ-मुँह धोने व स्नान करने के लिए कोई भी आधुनिक व्यवस्था नहीं थी। उन्होंने मन में सोचा, जितनी जल्दी अपना काम हो जावे, यहाँ से भागें। करीब २ बजे वे बापू से मिलने के लिए अपने तरीके से निकले। बापू साबरमती के किनारे एक झोपड़ी में रहते थे। रास्ते में उन्होंने देखा, एक वृद्ध आदमी गोबर से लिपे पुते आँगन में एक झाड़ के नीचे अर्द्धनग्न दशा में बैठ कर चरखा कात रहा है। कुमारप्पा ने इसके पहले चरखा नहीं देखा था और उनके पास १० मिनट का समय, निश्चित समय में बचाया था, इसलिए छड़ी के सहारे टिक कर चलता चरखा देखने लगे। करीब पाँच मिनट बाद उस वृद्ध आदमी ने मुस्कुराते हुए इनसे पूछा, "क्या तुम कुमारप्पा हो?" कुमारप्पा को उसी क्षण महसूस हुआ कि यह वृद्ध आदमी गांधी ही हो सकता है, इसलिए कुमारप्पा ने पूछा "क्या आप गांधी हैं?" जब गांधीजी ने सिर हिला कर स्वीकृति दी, तब तुरन्त कुमारप्पा अपनी साहबी और कीमती पोशाक का खयाल किये बिना ही गोबर से लिपे आँगन पर बैठ गये। पैर फैला कर बैठे देख कर पास ही खड़ा आदमी दौड़ा-दौड़ा एक कुर्सी लाया। गांधीजी ने कुमारप्पा को उस पर बैठने को कहा। कुमारप्पा ने कहा कि जब मैं नीचे बैठ ही गया हूँ, इसलिए यहीं ठीक हूँ।

इसके बाद बातचीत के दौरान में गांधीजी ने कुमारप्पा से कहा, "मुझे तुम्हारा निबंध बेहद पसंद है। तुम्हारा और मेरा आर्थिक दृष्टिकोण मिलता है, इसलिए क्यों न मुझे ग्राम पुनर्निर्माण के काम में मदद करो और शुरुआत में गुजरात के गाँवों के आर्थिक 'सर्वे' (परीक्षण) में मदद करो?" कुमारप्पा ने बीच में टोक कर कहा, "मुझे न तो गुजराती और न हिन्दी आती है। ऐसा आदमी गुजरात के गाँवों का क्या अध्ययन कर सकता है?" बापू ने कहा, "गुजरात विद्यापीठ के अध्यापक और छात्र तुम्हें मदद करेंगे।" बापू ने आगे कहा, "विद्यापीठ के वाइस चांसलर काका साहब कालेलकर से मिल लो।" और साथ ही मुस्कराते हुए बापू ने कहा, "जो व्यक्ति तुम्हारे लिए कुर्सी लाये थे, वे ही काका साहब हैं।"

थोड़ी देर बाद कुमारप्पा गुजरात विद्यापीठ में काकासाहब से मिलने गये। यहाँ कुमारप्पा को निराश होना पड़ा। काकासाहब ने उनको इस काम के लिए अयोग्य ठहराया। उनका मानना था कि ऐसा आरामतलब और साहबी ठाट-बाट से रहने वाला व्यक्ति गुजरात के गाँवों की कठिनाइयाँ कैसे बर्दाश्त कर सकेगा। कुमारप्पा भी अपने स्वभाव के मुताबिक बिना बापू से मिले, साबरमती से बम्बई भी चले गये और वहाँ पहुँचने पर उन्होंने लिखा कि काका ने उनको इस काम के लिए ठीक नहीं समझा, किन्तु फिर भी आप जो काम सौंपेंगे, उसे करने को तैयार रहूँगा।

मानव-पारखी गांधी ने कुमारप्पा की संभावनाओं को पहचान लिया था। वे कुमारप्पा को छोड़ना नहीं चाहते थे। उन्होंने कुमारप्पा को पत्र लिखा कि उन्हें तुरन्त साबरमती आकर पूर्व निर्दिष्ट काम संभाल लेना चाहिए। कुमारप्पा को लगा कि बापू ने काकासाहब को राजी कर लिया है। इसलिए वे साबरमती आ गये।

किन्तु कुमारप्पा बापू की पक्की पकड़ में तब आये, जब वे अपनी किताब 'राजस्व और हमारी गरीबी' की भूमिका लिखवाने के लिए बापू के पास गये। बापू उन दिनों अपनी प्रसिद्ध 'डांडी मार्च' पर थे। कुमारप्पा ने सोचा कि बापू को फुरसत नहीं मिलेगी, इसलिए उन्होंने भूमिका का मसविदा खुद तैयार कर लिया और चाहा कि बापू उस पर हस्ताक्षर कर दें। यह मुलाकात भी एक विशिष्ट मुलाकात थी। गांधी ने हँसते हुए उनसे कहा कि उन्होंने जिस किसी भी भूमिका पर हस्ताक्षर किया है, वह खुद उनकी ही लिखी थी।

आगे बापू ने कहा कि मैं चाहता हूँ कि तुम मेरी गिरफ्तारी के बाद महादेव देसाई को 'यंग इण्डिया' के संपादन में मदद करो। इससे कुमारप्पा को बहुत ताज्जुब हुआ। उस वक्त 'यंग इण्डिया' हिन्दुस्तान का उच्च दर्जे का पत्र था, जो सोया हुई भारतीय आत्मा को झकझोर रहा था। कुमारप्पा ने सोचा कि मेरे जैसा नया आदमी इसमें क्या कर सकता है। किन्तु गांधीजी ने फिर एक बार कुमारप्पा की दलीलों को एक ओर रख कर पूरे विश्वास के साथ उनको कहा कि सम्पादन के लिए तुम सर्वथा योग्य हो। कुमारप्पा को मानना पड़ा और संयोगवश गांधीजी की गिरफ्तारी के पहले ही महादेव देसाई गिरफ्तार कर लिये गये और कुछ अरसे बाद गांधीजी भी गिरफ्तार कर लिये गये। इसलिए अन्ततः कुमारप्पा पर ही सारा बोझ आ पड़ा। कुमारप्पा ने अपनी कृति से बापू के विश्वास को परिपुष्ट किया और वे एक अच्छे एकाउण्टेण्ट से अच्छे पत्रकार बन गये। यह थी कुमारप्पा की बापू से पहली मुलाकात! तब से कुमारप्पा अन्तिम दिन तक बापू का काम करते रहे। उन्होंने बापू के आर्थिक सिद्धांतों को शास्त्रीय स्वरूप दिया। ग्रामोद्योगों को पुनर्जीवन दिया और ग्राम-सजीवन पर स्थायी महत्व का साहित्य लिखा है। वे गांधी-अर्थशास्त्र के महान् प्रवक्ता के रूप में देश विदेश में प्रख्यात थे।

[गांधीग्राम.... पृष्ठ ६ का शेष]

किया, वह थी अनिवार्य राष्ट्रीय सेवा की योजना के बारे में। इस योजना से, और जिस प्रकार पिछले १०-१२ वर्षों में सरकार का रुख चल रहा है उससे, जाहिर होता है कि धीरे धीरे भारत सरकार प्रत्यक्ष नहीं तो अप्रत्यक्ष अनिवार्य सैनिक-शिक्षण की ओर बढ़ रही है। सम्मेलन ने इस खतरनाक वृत्ति की ओर भारत के लोगों का ध्यान आकर्षित किया, और आशा प्रकट की कि भारत के शान्ति-प्रेमी लोग इस खतरे के प्रति सावचेत रहेंगे और समय रहते इसके खिलाफ अपनी आवाज उठायेंगे।

सबसे उत्साहजनक बात, जो इस सम्मेलन में हुई, वह अन्तर्राष्ट्रीय शान्तिसेना के बारे में। जैसा कि आशादेवी ने सम्मेलन में कहा, सम्मेलन में उपस्थित लोगों ने यह महसूस किया कि जिस क्षण जयप्रकाशजी अन्तर्राष्ट्रीय शान्ति-दल के बारे में बोल रहे थे, उस क्षण मानो दुनिया में अन्तर्राष्ट्रीय शान्ति-सेना का उदय हो रहा था। ऐसा कहना अत्युक्ति नहीं होगी कि अन्तर्राष्ट्रीय शान्ति सेना की स्थापना के विचार को स्पष्ट रूप से मान्य करने और उसे कार्यान्वित करने के लिए कदम बढ़ाने के ऐतिहासिक निश्चय के कारण गांधीग्राम का यह अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन दुनिया के इतिहास में अपना विशिष्ट स्थान रखेगा।

अशोभनीय पोस्टरों के खिलाफ बढ़ते हुए जनमत का प्रवाह

अशोभनीय चित्रों और पोस्टरों का निर्माण बन्द हो, चलचित्र दिखाने वालों का और सरकार का कर्तव्य

विनोबाजी के आन्दोलन को जनता उठाये

राजर्षि पुरुषोत्तमदास टण्डन का आवाहन

राष्ट्र के परम मनीषी, राजर्षि पुरुषोत्तमदासजी टण्डन अरसे से अस्वस्थ हैं। लेकिन जनहित की चिन्ता उन्हें निरन्तर लगी रहती है। उन्होंने सदैव चरित्र-निर्माण पर जोर दिया है और देश के नवयुवकों को इसकी प्रेरणा दी है। देश में चलने वाले चलचित्रों से उनका हृदय बहुत व्यथित रहता है। अशोभनीय पोस्टरों को भी देख कर उनको अत्यन्त वेदना हुई है। इस सम्बन्ध में सन्त विनोबा ने जो आन्दोलन उठाया है, उसका समर्थन करते हुए उन्होंने अपने आशीर्वाद दिये हैं।

इलाहाबाद सर्वोदय-मण्डल को भेजे गये अपने सन्देश में श्री पुरुषोत्तमदासजी टण्डन ने कहा है :

"जैसे चलचित्र हमारे देश में बनाये और दिखलाये जा रहे हैं, वे मुझे समाज के लिए बहुत अहितकर जान पड़ते हैं। चलचित्रों के निर्माण में मुझे आमूल परिवर्तन की आवश्यकता दिखाई देती है। इनके सम्बन्ध में जहाँ मनोरंजन का एक दृष्टिकोण है, वहाँ उससे अधिक आवश्यक दृष्टिकोण यह होना चाहिए कि वे दर्शकों पर, विशेषकर युवकों और युवतियों पर, उनके चरित्र पर क्या प्रभाव डालते हैं। चित्रों द्वारा अथवा रंगमंच के पात्रों द्वारा मनोभावना को अप्राकृतिक रीति से उत्तेजित करने में बहुत संभाल और विचार की आवश्यकता है, चाहे वह उत्तेजना अच्छे कामों के लिए भी हो। किन्तु जब उत्तेजना निम्न कोटि की इन्द्रियवासनाओं को बढ़ाने वाली होती है, तब तो यह बहुत ही निन्दनीय है और रोकने के योग्य है।

"चलचित्रों के विज्ञापन के लिए जो चित्र नगरों में लोगों को आकर्षित करने के लिए दिखाये जाते हैं, उनकी ओर श्रद्धेय विनोबाजी ने ध्यान खींचा है। मुझे बताया गया है कि ऐसे चित्रों में कुछ अश्लील न होते हुए भी अशोभनीय होते हैं। उनका विज्ञापनों में देना अनुचित है। विनोबाजी ने इनको रोकने के लिए आन्दोलन उठाया है। मैं आशा करता हूँ कि चलचित्र दिखाने वाले सिनेमा-घरों के मालिक इस बात में आपत्ति न करेंगे कि उनके विज्ञापनों में किसी प्रकार की अश्लीलता अथवा अशोभनीयता न आने पाये। यह तो बड़ा प्रश्न नहीं है, छोटी-सी बात है। वास्तविक आवश्यकता तो यह है कि कोई ऐसा चलचित्र दिखाया ही न जाय, जिससे अशोभनीय रीति से भावनाएँ उत्तेजित की गयी हों। जनता की ओर से इसके लिए दृढ़ मांग देश भर में होनी चाहिए। मुझे विश्वास है कि ऐसी दृढ़ मांग पर केन्द्रीय सरकार के चलचित्र विभाग के मन्त्री स्वयं ध्यान देंगे और ऐसे चलचित्रों का निर्माण बन्द करायेंगे।"

पोस्टरों की पंक्ति में अशोभनीय गाने

अशोभनीय पोस्टरों के विरुद्ध आंदोलन चलाने का आह्वान सर्व सेवा संघ ने किया है। यह सही कदम उठाया गया है, परन्तु कानों पर जो रात-दिन आक्रमण होता है, इन पोस्टरों से कम चरित्रनाशक नहीं है। ग्रामोफोन के रेकार्ड लाउडस्पीकर पर दूकानदार बजाते रहते हैं। इनमें बहुत-से गाने ऐसे होते हैं कि कानों में उंगली देते ही बनता है! बच्चे उनको सुनते हैं, तो माता-पिता से पूछते ही हैं कि यह क्या कहा जा रहा है और फिर प्रश्न टालना पड़ता है!

पोस्टरों को दीवारों पर से हटाया जा सकता है, पर इन गानों को इस तरह नहीं टाला जा सकता! इनको बन्द करना एक समस्या है। इन्द्रिय-लोलुपता जो बढ़ती जा रही है, युवकों में जो उच्छृंखलता देखने को मिलती है, इन्द्रिय-भोग ही जीवन का लक्ष्य है, यह मान्यता जो फैलती जा रही है, इन सबका एकमात्र कारण ये सिनेमा और गाने ही हैं। घर में बैठ कर हम जो कुछ चाहें ग्रामोफोन पर सुनें, परन्तु लाउडस्पीकर द्वारा उन गानों को दूसरों को सुनने के लिए बाध्य करना याने शान्त वातावरण को भंग करना है और दुष्ट वासनाओं को जगाना है। मेरे विचार से यह बुराई पोस्टरों से कम घातक नहीं है और इससे बचने का कोई उपाय हमें ढूँढ़ निकालना चाहिए। इसके लिए पहले हमें सरकारी सहायता ही लेनी पड़ेगी।

> जैसे फिल्मों का 'सेन्सर' होता है, वैसे ग्रामोफोन-रेकार्डों का भी 'सेन्सर' होना चाहिए और लाउड-स्पीकर का प्रयोग भी कुछ मर्यादित करना पड़ेगा।

सरकार की तरफ से बहुधा कहा जाता है कि वे जनता के प्रतिनिधि हैं और जनता की माँगों को पूरा करना उनका कर्तव्य है! वनस्पति घी के विरोध का उत्तर देते हुए ऐसा ही कहा गया था। क्या सरकार का कर्तव्य नहीं है कि वह लोक-रुचि को सही दिशा में मोड़े! सरकार लोभ का नियन्त्रण अधिक टैक्स लेकर करती है, वैसे ही प्रचार में अनैतिकता न हो, इसलिए प्रचार का ही नियंत्रण करना पड़ेगा। *इससे व्यक्ति की स्वतंत्रता* पर आघात नहीं पहुँचता, क्योंकि व्यक्ति की स्वतंत्रता जनता की अनाध्यता से जुड़ी हुई है। जितना अधिकार व्यक्ति को अश्लील गाने सुनाने का है, उतना ही जनता को उन्हें न सुनने का है।

विनोबाजी कहते हैं कि रजोगुण का इंजन सतोगुण की पटरी पर चलना चाहिए, इसी तरह विज्ञान की प्रगति पर नैतिकता का अंकुश रहना चाहिए। अतः लाउडस्पीकर के प्रयोग के लिए 'लाइसेन्स' देने चाहिए और वे जन-सभा और विवाह आदि उत्सवों के लिए ही दिये जायें।

—शीतलप्रसाद तायल, धनबाद

विलासिता से राष्ट्र का निर्माण नहीं किया जा सकता !

अशोभनीय पोस्टरों के विरुद्ध मुरादाबाद में प्रचार शुरू कर दिया गया है। हाल ही में श्री ओमप्रकाशजी गौड़ (मन्त्री, उत्तर प्रदेश सर्वोदय-मंडल) एक दिन के लिए मुरादाबाद गये। उन्होंने इस बात को तात्कालिक बताते हुए कहा कि जनता में अब जीवन के बदलने की लहर आयी है। जनता ने इस विचार का समस्त प्रदेशों में स्वागत किया है। अतः मुरादाबाद में तुरन्त गन्दे पोस्टरों के विरुद्ध एक सर्वोदय की सभा बुलायी गयी और उपरोक्त शीर्षक के आधार पर पोस्टर बाँटे गये। जब यह विज्ञापन जनता के हाथ में पहुँचा, तो काम छोड़ कर लोगों ने इसे पढ़ा और कहा, बड़ी जरूरी बात अब सामने आयी। बारह वर्ष के बाद आज हमने कानों से बुराई के विरोध की बात सुनी। जिसका प्रभाव हर पुरुष, बच्चे और महिला पर पड़ा। मुक्त कंठ से हजारों व्यक्तियों ने महिला वर्ग के साथ इस दुर्व्यवहार की निन्दा की और यह भी कहा कि यह सब हमारी मर्जी के खिलाफ होता था। परन्तु कोई रास्ता नहीं सूझता था। आप लोगों ने बड़ा अच्छा कदम उठाया है। क्या नाई की दूकान में भी औरतों का कोई काम है? जगह-जगह महिलाओं के गन्दे फोटो याने मातृशक्ति का अपमान है और भी कई उदाहरण उन्होंने दलील के साथ पेश किये।

ता० १० जनवरी को एक जुलूस निकाला गया, जिसमें महिलाएँ, पुरुष तथा बच्चे भारी संख्या में शामिल हुए। "जन-जन की है यही पुकार, गन्दे पोस्टर दो उतार" का तुमुल घोष करता हुआ यह जुलूस टाउन हाल के मैदान में जाकर आम सभा के रूप में परिवर्तित हो गया।

श्रीमती प्रो० शान्तिदेव बाला की अध्यक्षता में एक सभा में सामाजिक, राजनैतिक, धार्मिक—सभी पार्टियों एवं संस्थाओं के प्रतिनिधियों ने मुक्त कंठ से इस पोस्टर-आंदोलन का समर्थन किया। एक प्रस्ताव भी सभा ने पास किया कि सिनेमा के मैनेजरों, मालिकों जिला-अधिकारियों तथा भारत सरकार से अनुरोध किया जाय कि अशोभनीय पोस्टर तुरन्त हटाये जायँ, वरना सौम्य, सौम्यतर, सौम्यतम ढंग से सर्वोदय-मंडल इन पोस्टरों के हटाने में कदम उठाने को बाध्य होगा।

हिसार में अशोभनीय पोस्टर आंदोलन

८ जनवरी को हिसार जिले में गान्धी अध्ययन-केन्द्र के तत्त्वावधान में एक सभा हुई, जिसमें देश की सभी प्रमुख पार्टियों के प्रतिनिधि आमन्त्रित थे। सभा में पोस्टर-आन्दोलन संबंधी चर्चा प्रमुख रूप से हुई। विभिन्न व्यक्तियों ने अपने-अपने विचार रखे। *सभा में एक सदस्य ने रेड क्रास के सालाना मेले में युवतियों के डान्स, क्लबों* में सरकारी अधिकारियों का मद्यपान, अखबारों में अशोभनीय चित्रों का छपना तथा स्वागत-समारोहों के अवसर पर लड़कियों का नाच आदि बातों के अनौचित्य पर लोगों का ध्यान आकृष्ट कराया। इस सन्दर्भ में यह भी तय हुआ कि अशोभनीय पोस्टरों को रोकने के लिए नगर में एक विराट् प्रदर्शन किया जाय।

होली के शुभ अवसर पर शराब-बन्दी के लिए दूकानों पर पिकेटिंग करने का सुझाव भी आया।

हिसार नगर के 'परिजात' सिनेमा के मैनेजर श्री दत्ता ने विश्वास दिलाया कि आइन्दा 'परिजात' सिनेमा के प्रमुख गेट पर तथा नगर-मुनादी के समय अशोभनीय पोस्टर का सार्वजनिक प्रदर्शन नहीं किया जायगा।

इसी प्रकार 'बांसल' सिनेमा, सिरसा के श्री प्रेमसुखदासजी व उनके साथियों ने अशोभनीय पोस्टर के प्रदर्शन न होने देने का शुभ संकल्प किया है।

जिला सर्वोदय-मण्डल, हिसार पंजाब ने म्युनिसिपल-बोर्ड के अध्यक्ष और जिले की धार्मिक, राजनैतिक संस्थाओं एवं ग्रामपंचायतों से अपील की कि वे भी प्रस्ताव पास करके इस आन्दोलन को क्रियात्मक रूप दें।

माह दिसम्बर में ७२ मील की एक पदयात्रा जिले भर में हुई, जिसमें एक विशेष अनुभव यह आया कि गाँवों में सिनेमा के अशोभनीय पोस्टर्स ऐसे ग्रामवासियों के मकानों पर थे, जिनका विशेष सम्बन्ध शहर से अधिक है।

कुमारप्पा-स्मारक निधि

[ता० ३० दिसम्बर के 'भूदान-यज्ञ' में हमने पाठकों तथा रचनात्मक कार्यकर्ताओं आदि से 'कुमारप्पा-स्मारक निधि' में योग देने की अपील की थी। अब तक इस निधि के लिए हमारे पास नीचे लिखे अनुसार रकम प्राप्त हुई है। सर्वोदय-विचार के प्रति जिनकी सहानुभूति है, उनमें से हरएक से अपेक्षा है कि वे अपनी-अपनी मर्यादा के अनुसार इस निधि में अवश्य योग दें। आशा है, जिन पाठकों ने अब तक अपनी ओर से कुछ न भेजा हो, वे अवश्य इन पंक्तियों को पढ़ कर अपना हविर्भाग भेजेंगे। रकम 'पोस्टल आर्डर' के जरिए, बड़ी रकम चेक के जरिए भी—सम्पादक, 'भूदान-यज्ञ' राजघाट, काशी—इस पते से भेजी जा सकती है। —सं०]

		रुपये-न०पै०
ता० २० जनवरी के अंक में प्राप्ति-स्वीकार	कुल	१,०६९-७०
श्रीमती सरलादेवी साराभाई,	अहमदाबाद	१००-००
श्री रामकिशनदास,	हैदराबाद	४-००
श्री मोतीलाल भाई, चोरीआवी,	आनन्द (गुजरात)	११-००
अ० भा० सर्व सेवा संघ प्रकाशन, कार्यकर्ता-गण,	वाराणसी	३०-३५
श्री दातारामजी मक्कड़,	कलकत्ता	११-००
श्री हनुमानमलजी मार्फत श्री दातारामजी	,,	११-००
श्री वल्लभदासजी ,,	,,	११-००
श्री गोपालदासजी ,,	,,	१०-००
श्री चरनदासजी ,,	,,	५-००
श्री विनयकुमार आरथी,	रानपुर	५-००
श्री कैलाशचन्द्र अग्रवाल	हनुमानगढ़ (राजस्थान)	५-००
डॉ० दरशरामजी,	गाजीपुर (उ० प्र०)	४-००
श्री अमरसिंह प्रधान,	बुलन्दशहर (उ० प्र०)	२५-००
श्री हकीम श्यामदास मिश्री, आश्रम बाग,	लखनऊ	१०-००
श्री राजेन्द्र नारायण झा,	सुरौल, बिरौल (दरभंगा)	५-००
श्री एम० एस० गुसाईं, कंडोल,	पो० तोन्दी (गढ़वाल)	५-००
गांधी स्मारक निधि-तामिलनाड शाखा		५०,०००-००

११ से १७ जनवरी '६१ तक नीचे लिखी रकम मद्रास-कार्यालय को प्राप्त हुई

खादी ग्रामोद्योग विद्यालय-परिवार,	मावला	३१-४०	
स्वराज्य आश्रम,	बारडोली	१५-००	
श्री वैकुण्ठलाल मेहता,	बम्बई	१००-००	
		१४६-४०	१४६-४०
		कुल रकम	५१,४०९-८५

पक्ष की डायरी : १९ जनवरी तक

संघ-प्रधान कार्यालय

(साधना केन्द्र, काशी)

● नये वर्ष की शुभ वेला में जो मेहमान यहाँ आये, उनमें दो विदेशी मित्र थे—एक "पीस न्यूज" (इंग्लैण्ड) के सम्पादक श्री ह्यू ब्राक तथा दूसरे फ्रांस में रहने वाले "विश्व नागरिक" श्री गेरी मारसा। गांधीग्राम में जो युद्ध विरोधी सम्मेलन हुआ था, उसमें भाग लेने के बाद पाँच विदेशी मित्रों का एक दल विनोबाजी से मिलने के लिए उत्तर आया था। विनोबाजी से मिलने के बाद ब्राक और मारसा साधना-केन्द्र में भी आये। ह्यू ब्राक ने इंग्लैण्ड में पिछले दस वर्षों में जो अहिंसक प्रतिकार की कार्रवाइयाँ हुईं, उनका दिलचस्प वर्णन हम लोगों को सुनाया।

● हमारे दूसरे सम्माननीय मेहमान गुजरात प्रजा-समाजवादी पार्टी के मन्त्री श्री ईश्वरलाल देसाई थे। पारडी का नाम वहाँ हुए भूमिहीनों के सत्याग्रह के कारण मशहूर हो चुका है। श्री ईश्वरभाई पारडी के किसानों के प्रिय नेता हैं। उन्होंने नव-निर्मित गुजरात प्रान्त की भूमि-समस्या की जानकारी दी।

● "दादा" की तबीयत कुछ दिनों से नरम चली आ रही थी। वे इलाज के लिए ता० ५ को यहाँ से बम्बई गये हैं। शंकररावजी महाराष्ट्र-सम्मेलन से लौट कर ता० ६ को वापस साधना-केन्द्र आ गये और सिद्धराजजी डब्ल्यू० आर० आई० कान्फ्रेंस में भाग लेकर ता० ३ जनवरी को वापस आये।

● विमला बहन दो-तीन दिन के लिए पूर्णिया जिले में हो आयीं। वहाँ जिले का महिला शिविर था। करीब ४० बहनों ने शिविर में भाग लिया।

● संघ के मंत्री श्री पूर्णचन्द्रजी ने आगामी सर्वोदय-सम्मेलन के लिए विचारणीय मुद्दों के बारे में एक परिपत्र निकाल कर कार्यकर्ताओं का ध्यान आकर्षित किया है।

● पिछले महीने के अन्त में निर्मला बहन की तबीयत खराब हो गयी थी। कमजोरी काफी बढ़ गयी थी। अब वे कुछ ठीक हैं, लेकिन डाक्टरों की सलाह से कुछ दिन विश्राम के लिए अपने घर नागपुर गयी हैं।

भूमि-प्राप्ति, वितरण, ग्रामदान, लोक-सेवक आदि सम्बन्धी आँकड़े

[दिसम्बर '६० अन्त तक प्राप्त जानकारी के आधार पर]

क्रम	प्रदेश	सन् '६० माह तक	भूमि-प्राप्ति (एकड़)	भूमि वितरण (एकड़)	वितरण अयोग्य (एकड़)	ग्रामदान	लोक-सेवक
१	आसाम	सितम्बर	२३,१९६.००	२२५.००		१७२	५१२
२	आन्ध्र	,,	२,४१,९५०.००	९९,२७८.००		४८३	३३४
३	उत्कल	जनवरी	३,९६,४६६.००	१,१८,३३५.००		१,९४६	३७६
४	उत्तर प्रदेश	१६ अक्तूबर	४,३५,४१२.००	१,१७,३०७.००	१८,८२३.००	६०	१,२४१
५	केरल	मार्च	२९,००२.००	२,५५४.००	४,०००.००	५४३	५०८
६	तमिलनाड	सितम्बर	७०,८२३.००	१७,४२२.९६		२५२	४०७
७	दिल्ली	,,	३९६.००	१५७.००			१९
८	पंजाब पेप्सू	,,	२२,१५०.००	४२१७.००		१९	२२७
९	बिहार	जुलाई	२१,०७,०२३.०५	२,५२२,०६.०६	९,८८,४७७.००	१५२	१०,२८
१०	महाराष्ट्र	अक्तूबर	१,५८,५०४.००	६६,१७६.००		६०३	२८९
११	गुजरात	सितम्बर	७८,३३८.१६	४५,५०५.३६		१४४	३१९
१२	बंगाल	,,	१२,३५२.८१	२९७२.८०		२६	२९८
१३	मध्य प्रदेश	सितम्बर	४,०५,१०२.३६	९३,८०५.८७	१,९,५३.४५	७४	४५८
१४	मैसूर	,,	१९,९७३.००	३,५२७.०७		९९	१४४
१५	राजस्थान	नवम्बर	४,३३,३२३.००	९६,५०६.००	३५,१९४.००	२४१	२९९
१६	हिमाचल प्रदेश	जून	१,५६८.००	२१.००		४	६
१७	जम्मू-काश्मीर						९
		कुल	४४,३५,४१९.३८	९,१४,२२६.०८	१०,६८,४१७.४५	४,७८५	६,५०४

अशोभनीय पोस्टर्स हटने चाहिए : देश के विभिन्न शहरों की माँग

ग्वालियर

ता० ३ जनवरी १९६१ को ग्वालियर की महिला-संस्थाओं की प्रतिनिधि तथा विचारशील नागरिकों व रचनात्मक और सार्वजनिक कार्यकर्ताओं की एक सभा हुई। सभा में विचार-विमर्श के बाद अशोभनीय पोस्टर्स निर्णायक समिति का गठन हुआ। रानी लक्ष्मीबाई राजवाडे समिति की अध्यक्षा चुनी गयी हैं।

●

जबलपुर

ता० २ जनवरी को गांधीग्राम से लौटते वक्त श्री सिद्धराजजी कुछ घंटों के लिए जबलपुर रुके। उनकी उपस्थिति में इसी दिन ४ बजे सायं सिनेपोस्टर्स समिति की बैठक हुई। उसमें समिति-सदस्यों के अलावा नगर के ७ सिनेमागृहों के प्रतिनिधियों ने भाग लिया। बैठक में सिने-प्रदर्शकों ने यह व्यक्त किया कि वे उन पोस्टरों को जिनके बारे में शोभन-अशोभन के निर्णय की बात आयेगी, उन्हें सिनेप्रदर्शक स्थानीय समिति के निर्णय के लिए भेजेंगे तथा समिति की स्वीकृति के बाद ही प्रदर्शित करेंगे।

●

सासाराम

नागरिक समिति, सासाराम (जिला शाहाबाद, बिहार) ने नागरिकों के नाम अपील करते हुए एक पत्रक में कहा कि अशोभनीय सिनेमा-पोस्टर्स विषयासक्ति की मुफ्त और लाजिमी तालीम है। ऐसे पोस्टरों के खिलाफ लोकमत तैयार करें।

●

छपरा

छपरा (बिहार) के नागरिकों के नाम एक निवेदन प्रकाशित करते हुए जिले व नगर की प्रमुख सामाजिक, राजनैतिक एवं रचनात्मक संस्थाओं के प्रतिनिधि एवं अन्य प्रतिष्ठित नागरिकों ने अशोभनीय पोस्टर तुरन्त हटाने की माँग की है।

●

काशी विद्यापीठ में सर्वोदय नवयुवक मंडल

स्थानीय राष्ट्रीय शिक्षण-संस्था, काशी विद्यापीठ में ता० १८ जनवरी को सर्वोदय नवयुवक मंडल के नाम से विद्यार्थियों की एक संस्था का उद्घाटन श्री सिद्धराजजी ढड्ढा द्वारा हुआ।

उद्घाटन-समारोह की अध्यक्षता विद्यापीठ के आचार्य श्री राजारामजी शास्त्री ने की। प्राध्यापक श्री दूधनाथ चतुर्वेदी ने प्रारम्भ में संस्था की स्थापना के उद्देश्य पर प्रकाश डाला। सदस्यों के लिए खादी पहनने और किसी राजनैतिक पक्ष से सम्बन्ध न रखने के नियम रखे गये हैं।

इस अवसर पर सुश्री विमला बहन ने विद्यार्थियों के नाम भेजे हुए संदेश में कहा :

"आशा है कि आपका संगठन स्नेह तथा सहयोग के आधार पर खड़ा होगा, न कि विधान और नियमों के आधार पर। अहिंसात्मक क्रान्ति के लिए जो संगठन बनेंगे, उनके आधार, स्वरूप तथा कार्य-पद्धति में क्रान्ति के मूल्यों की झलक मिलनी चाहिए।

युवकों का संगठन बनेगा, इसलिए अपेक्षा है कि उसमें पूर्वग्रहमुक्त दृष्टि, वैज्ञानिक दृष्टि एवं वैज्ञानिक वृत्ति को अपनाया जायगा।

सर्वोदय का प्रारम्भ व्यक्तिगत जीवन से होता है। व्यक्तिगत जीवन अहिंसात्मक क्रान्ति का नूतन परिमाण है।"

जिला सर्वोदय-मंडल, पूना

जिला सर्वोदय मंडल, पूना की ओर से सन् १९६० में सर्वोदय से संबंधित विविध कार्यक्रम हुए। पदयात्रा महाराष्ट्र के हाडसी, पिंपरी, वेल्हाड, वडगांव, लोनावला आदि स्थानों में हुई। ५०० परिवारों में विचार-दृष्टि से विशेष प्रचार हुआ। साहित्य बिक्री १०० रु० की हुई। ८ लोगों ने सर्वोदय-पात्र की स्थापना की। 'साम्ययोग' साप्ताहिक के ६ ग्राहक बने।

राजस्थान समग्र सेवा संघ

राजस्थान समग्र सेवा संघ के नये विधान के अनुसार प्रान्त के विभिन्न जिलों के लोकसेवकों द्वारा संघ के लिए निर्वाचित प्रतिनिधियों की प्रथम सभा ३१ दिसम्बर को संघ के दुर्गापुरा कार्यालय में हुई। प्रतिनिधियों ने संघ की सदस्यता के लिए ३६ सदस्यों का सहवरण (कोऑप्शन) किया। सहवरण करते समय इस बात का पूरा ध्यान रखा गया है कि प्रान्त के समस्त जिलों—जिनमें अब तक जिला सर्वोदय मंडलों का गठन हो चुका है और जहाँ गठन होने जा रहा है—का प्रतिनिधित्व हो सके तथा सर्वोदय के कार्य में लगे पुराने कार्यकर्ताओं को भी संघ में सम्मिलित किया जा सके। यह स्मरण रहे कि प्रान्त के २६ जिलों में से अब तक १९ जिलों में जिला सर्वोदय-मंडल सक्रिय हैं और शेष जिलों में शीघ्र ही मंडलों का गठन किया जा रहा है।

●

जिला सर्वोदय-मंडल, हिसार

जिला सर्वोदय-मण्डल, हिसार के दिसम्बर माह की रिपोर्ट के अनुसार विचार-प्रचार की दृष्टि से सिरसा तहसील में ६२ मील की जो पदयात्रा १३ गाँवों में हुई। तय हुआ कि लोकसेवक प्रति मास सम्पत्ति-दान दें, घर में सर्वोदय-पात्र रखें और साल भर में हाथकता ६ गुण्डी सूत दें।

सम्पत्ति-दान में अब तक २७ दाताओं से १४७ रुपये २८ नये पैसे और १०० सर्वोदय-पात्रों से २२ रुपये ३३ नये पैसे प्राप्त हुए।

सर्वोदय पुस्तक-भण्डार, सिरसा द्वारा और कुछ व्यक्तियों के प्रयत्न से अब तक कुल ३८२ रुपये की साहित्य-बिक्री हुई।

सर्वोदय-मण्डल का दिसम्बर माह का कुल खर्च ७०४ रुपये ९३ नये पैसे हुआ। 'भूदान' साप्ताहिक की ५० प्रतियों की बिक्री हुई।

जिला सर्वोदय-मंडल, यवतमाल

जिला सर्वोदय-मंडल, यवतमाल की सभा ता० १८ दिसम्बर को हुई। २५ लोकसेवक इस सभा में हाजिर थे। सभा में इस वर्ष के लिए नीचे दिये कार्यक्रम करना तय हुआ।

(१) जिले में सूताजलि का अधिक-से-अधिक प्रचार। (२) "साम्ययोग" मराठी साप्ताहिक के ५०० नये ग्राहक बनाना। (३) सर्वोदय विचार प्रचार की दृष्टि से जिले में कुछ शिविर लिये जायें। उसी प्रकार भंगी-मुक्ति के कार्यक्रम की दिशा में भी प्रयत्न किये जायें। (४) आर्थिक मदद की दृष्टि से जिले में पदयात्रा का कार्यक्रम बनाया जाय।

जयपुर जिला सर्वोदय-मंडल

३० दिसम्बर को जयपुर जिला सर्वोदय मण्डल का गठन करने हेतु समग्र सेवा संघ के तत्वावधान में जयपुर में एक सभा आयोजित की गयी। सभा में जिला सर्वोदय-मंडल का गठन होकर मंडल के संयोजक तथा अ० भा० सर्व सेवा संघ और समग्र सेवा संघ के जिला-प्रतिनिधियों का क्रमशः श्री सरदारमल जैन, श्री बनारसीलाल जैन तथा श्री रामसहाय पुरोहित का निर्वाचन किया गया। सभा में मंडल का विधान, भावी कार्यक्रम की रूपरेखा, बजट बनाने आदि कार्यों के लिए एक उपसमिति का गठन किया गया।

गोरखपुर जिला सर्वोदय-मंडल

१४ जनवरी को गोरखपुर जिले के समस्त लोकसेवकों की सालाना बैठक श्री शकुन्तला देवी की अध्यक्षता में की गयी। बैठक में साल भर के किये गये कार्यों का सिंहावलोकन किया गया। सूतांजलि तथा सम्पत्ति-दान एकत्र करने पर जोर दिया गया।

इस अंक में

श्रीकृष्णदत्त भट्ट, अ० भा० सर्व सेवा संघ द्वारा भार्गव भूषण प्रेस, वाराणसी में मुद्रित और प्रकाशित। पता : राजघाट, वाराणसी-१, फोन नं० ४३९१
वार्षिक मूल्य ६) पिछले अंक की छपी प्रतियाँ ११,८४० : इस अंक की छपी प्रतियाँ ११,८४० एक प्रति : १३ नये पैसे

संपादक : सिद्धराज ढड्ढा

वाराणसी : शुक्रवार | ३ फरवरी '६१ | वर्ष ७ : अंक १८

अगर सरकार फौजी तालीम चलाती है, तो उसका डटकर मुकाबिला करना होगा—शिक्षा जगत् को चुनौती —विनोबा

यहाँ की सरकार ने देरी से क्यों न हो, नई तालीम को पूर्णतया मान्य किया है। यह एक सन्तोष का विषय है। इस प्रकार के राज्यों में नई तालीम के कुछ शुद्ध प्रयोग होने चाहिए। लेकिन यदि सरकारी पाठशालाओं में नई तालीम की कल्पना के अनुसार उत्तम शिक्षण न दिया जा सके, यदि उसमें कुछ दोष रह जायँ, तो भी उसकी निंदा नहीं करनी चाहिए। जो काम इतने व्यापक प्रमाण में उठाया जाता है, उसमें कुछ-न-कुछ दोष तो रह ही जाते हैं।

हमारे देश का इतिहास ही ऐसा रहा है कि शरीरश्रम की यहाँ सामाजिक प्रतिष्ठा ही कम नहीं मानी गयी है, उसका आर्थिक मूल्य भी कम आँका जाता है। अब शरीरश्रम की सामाजिक प्रतिष्ठा बढ़ाने का काम कुछ बड़े लोग श्रमयज्ञों में हिस्सा लेकर कर रहे हैं। लेकिन शरीरश्रम का जो आर्थिक मूल्य होता। शारीरिक परिश्रम का मूल्य जब तक शरीर-परिश्रम का आर्थिक तक नई तालीम केवल शिक्षण-पद्धति

आजकल ऐसा खतरा दीख रहा है कि धीरे-धीरे देश फौजी तालीम की ओर जायेगा। यह कहा जाता है कि उसमें देश में 'डिसिप्लिन' आयेगी और यों भी कहा जाता है कि इर्दगिर्द का वातावरण देखते हुए हमें भी तैयार रहना चाहिए। कुछ नेता इस विचार को रोक रहे हैं। यदि वे ऐसा न करते तो फौजी तालीम के विचार और भी जोर पकड़ते और उससे शिक्षण को बहुत ही नुकसान होता। 'डिसिप्लिन' के नाम से यदि सिपाहियों का मारना सिखाया जाता है, तो इससे हिंसा की शक्ति तो बढ़ेगी नहीं और वृत्ति बढ़ेगी। यह बड़ा खतरनाक है। उससे हम अहिंसा की शक्ति, जो कि भारत की अपनी शक्ति है, खोयेंगे और हिंसा की शक्ति भी पायेंगे नहीं। 'इत च शान्ति पर न सम्पते'—जैसे हाल हमारे होंगे। इसलिए फौजी तालीम के बारे में चौकन्ना हो जाना चाहिए। देश में जगह-जगह राइफल क्लब खुले हैं। उत्तर प्रदेश में कोई सौ-डेढ़ सौ ऐसे क्लब हैं और बंगाल में भी उतने ही होंगे। लेकिन इन दोनों के बीच बिहार में सिर्फ दो ही ऐसे क्लब हैं। मैं इसे बिहार का गुण मानता हूँ। इस गुण को आप न खोयें। आप सावधान रहें कि हिंसा-शक्तिरहित हिंसा-वृत्ति रहेगी, तो हम अत्यन्त क्षीण बनेंगे।

किस उमर तक बुनियादी तालीम गिनी जाय—आठ साल या पाँच साल तक आदि प्रश्न नई तालीम के सामने हैं। अपने में वे महत्त्वपूर्ण हैं। किन्तु फौजी तालीम के प्रश्न के सामने ये सब बिलकुल गौण हैं।

तालीम का रुख यदि फौज की तरफ रहेगा तो देश को बड़ा खतरा है, इससे न सिर्फ नई तालीम को, लेकिन पूरी तालीम को ही खतरा है।

इस प्रकार एक ओर मैं सरकार के प्रयोग के बारे में उदार दृष्टि से देखने को कहता हूँ,' लेकिन दूसरी ओर इस ओर चौकन्ना कर देने को कहता हूँ। यदि फौजी तालीम होगी, तो इसका सख्त मुकाबला करना होगा।

कहा जाता है कि आस-पास के देशों में वातावरण ऐसा है कि बाहर की सेना के हमले से बचने के लिये फौजी तालीम लेनी चाहिए। लेकिन यदि हमारे देश की सेना ही कब्जा कर ले तो नेपाल और पाकिस्तान जैसे हमारे हाल हो जायेंगे। वहाँ सेना के कारण देखते देखते ही लोकशाही का रूपान्तर सुल्तानशाही में हो गया। उसके पीछे प्रक्रिया यह है कि देश की लोकशाही ने सेना के रक्षण को आखिरी अधिष्ठान माना था। क्या हम भी वैसा ही करेंगे? इसमें मुझे बुनियादी खतरा दीखता है। देश और दुनिया का उद्धार फौजी मनोवृत्ति बढ़ाने में नहीं है। यदि वैसा होगा तो उसका पूर्ण विरोध करना चाहिए।

वैसे तो मैंने अंग्रेजी के बारे में अपने मन को कुछ हद तक तैयार कर लिया है। अंग्रेजी दाखिल करने से दूसरा ज्ञान कुछ कम मिलेगा। आज तो खेती के शिक्षण के लिए अंग्रेजी को आवश्यक समझा जा रहा है। अब बैलों को अंग्रेजी सिखाना ही उन्होंने बाकी रखा है! मेरी यह टीका अंग्रेजी के बारे में है ही, और वह मैं करता रहूँगा। लेकिन फिर भी यदि मान लें कि अंग्रेजी की टीका थोड़ी-बहुत नहीं करूँगा, जितनी इसकी करूँगा। यह तो बड़ी खतरनाक चीज है।

तीसरी बात मैं आपसे यही कहना चाहता हूँ कि शिक्षक के जीवन में नई तालीम दाखिल होना चाहिए। आज तो शिक्षक जिंदगी भर शिक्षक रहता है और उसकी पत्नी जिंदगी भर पत्नी रहती है। वह उसकी सहधर्मचारिणी नहीं बनती। किसान की पत्नी और बुनकर की पत्नी अपने पति के काम में मदद करती है, लेकिन शिक्षक की पत्नी वैसा नहीं करती! उससे यह अपेक्षा नहीं रखी जाती कि वह भी सिखाये। यह हमारे मूलभूत विचार के विरुद्ध है।

शिक्षक जिसके संपर्क में आवे, उसे उसके ज्ञान का स्पर्श होना ही चाहिए। उसके घर का वातावरण ही शिक्षणमय होना चाहिए।

यह कहा जाता है कि मण्डन मिश्र के घर में उसके घर के तोते भी दिलचस्पी लेते थे। सूर्य जहाँ जाता है, वहाँ अपनी किरणों के साथ ही जाता है। वह यह नहीं सोचता कि अभी मैं 'प्राइवेट' काम पर हूँ, इसलिए किरणों को नहीं ले जाऊँगा और अभी 'आन ड्यूटी' हूँ, इसलिए ले जाऊँगा। उसी प्रकार शिक्षक को होना चाहिए। यदि ऐसा होगा तो सरकारी योजना के खतम होने के बाद भी या उसमें पानी मिलते मिलते बिलकुल पतली हो जाने के बाद ही नई तालीम अपने शुद्ध स्वरूप में टिकी रहेगी।

अभी मैं जो काम कर रहा हूँ, वह भी एक बड़ा लोक-शिक्षण का काम है। वातावरण में जो कुछ है उसकी जिम्मेवारी मेरी भी है, मुझे अपने गुण को बाँटना चाहिए। —इस चीज का ध्यान हो, यह एक बड़ा लोक शिक्षण है। आप भी इसे लोक शिक्षण का काम समझ कर इसमें दिलचस्पी लीजिये। इसे अपने काम से अलग समझ कर अलग हिस्सा करना, यह नई तालीम की दृष्टि से ही विरुद्ध है। इसे यदि मैं शिक्षण का काम न समझता तो सर्वोदय-पात्र में छोटे बालक के हाथ की मुट्ठी के बदले उसकी माँ के हाथ की मुट्ठी की बात करता। छोटे बालक की मुट्ठी कहने से मुझे जो मिल रहा था, उसमें कमी हुई है, लेकिन फिर भी शिक्षण की दृष्टि से मैंने इसका आग्रह रखा है।*

---

* बिहार राज्य नई तालीम अधिकारी सम्मेलन में, ता० २६–१–६१

शंकररावजी से सतत स्नेह मिलता रहे

—जयप्रकाश नारायण

२० जनवरी '६१ को साधना केन्द्र, काशी में श्री शंकरराव देव का ६६ वाँ जन्म-दिन मनाया गया। श्री जयप्रकाश नारायण ने सारे परिवार की ओर से उन्हें सूतहार पहनाया और शुभकामना प्रकट की कि उनका सान्निध्य और स्नेह हम सबको, देशवासियों, मानव मात्र को सतत मिलता रहे।

साम्ययोग के उपासक के नाते असम आ रहा हूँ

श्री आशादेवी,

अब तो असम की दिशा में हम प्रयाण कर रहे हैं। सुबह रास्ते में पूरब की तरफ अभिमुख होकर नाश्ता करने का प्रसंग आता है, तो मैं सोचता हूँ कि सामने असम दीख रहा है। मैं वहाँ 'दयालु' के नाते नहीं जा रहा हूँ, साम्ययोग के उपासक के नाते जा रहा हूँ। विज्ञान के जमाने में हर चीज की तरफ वैज्ञानिक ढंग से ही देखना पड़ेगा, ऐसी सब मानसिक तैयारी करके भगवान की इच्छा से यथासमय वहाँ पहुँच जाऊँगा। वहाँ कुछ घटनाएँ घटीं, वे भूतकाल में शामिल हुईं। मैं भूतकाल में नहीं जाना चाहता। भविष्य में पैठना नहीं चाहता। अतीत-अनागत छोड़ कर वर्तमान में ही काम करूँगा। भारत-यात्रा में असम प्रान्त रह गया था। पूरे दस साल के बाद वहाँ पहुँचूँगा। मुझे उम्मीद है, किसी पर मेरा कोई आक्रमण नहीं रहेगा। प्रेम का आक्रमण भी अनासक्ति-युक्त होगा।

आपने "नामघोष" वाली किताब दी थी। वही नागरी में छपी अमलप्रभा ने दी। उसका अध्ययन मैंने शुरू कर दिया है। मेरा यही नसीब है। कोई भी भाषा सीखता हूँ, तो उसमें से ऊँचे से-ऊँचे विचार का मुझे परिचय हो जाता है।

जाकर जेहि पर सत्य सनेहू।
सो तेहि मिलत न कछु सन्देहू॥

स्त्री-शक्ति, ब्रह्मविद्या, सर्वोदय-पात्र मिल कर एक चीज, भूदान, ग्रामदान, सम्पत्तिदान मिल कर दूसरी चीज और दोनों को जोड़ने वाली 'नई तालीम', ऐसा अपना कार्यक्रम रहेगा। सबको प्रणाम।*

पड़ाव : कटनी (म. प्र.) ता. १८-११-'६० —विनोबा का जय जगत्

* सुश्री आशादेवी आर्यनायकम् के नाम लिखा पत्र।

प्राप्ति-स्वीकार

पुस्तक का नाम	लेखक	पृष्ठ-संख्या	मूल्य रु०—नये पैसे
शुचिता से आत्मदर्शन	विनोबा	५६	०—४०
कार्यकर्ता क्या करें ?	,,	११२	०—३५
एक सहारा	रामचेत वर्मा	४८	०—३५
युगाञ्जलि	वि० न० आत्रेय	२८	०—२०
स्वामित्व-विसर्जन (नाटक)	भोलानाथ सिंह	४८	०—३३
नवप्रभात (नाटक)	विजयशंकर राय	१२४	१—००
पत्र-व्यवहार : ३ (जमनालाल बजाज)	सं० रामकृष्ण बजाज	२१६	१—२५
प्यारे भूले भाइयो : पाँच भाग (१) वैर न कर काहू सन कोई! (२) डरने की क्या बात है! (३) मक्खन बनाओ अपना दिल (४) शत्रु भी शत्रु बनते हैं (५) आओ सही राह पर	श्रीकृष्णदत्त भट्ट	प्रति भाग ४८	हरएक का ०—३०

प्रकाशक : अ० भा० सर्व सेवा संघ-प्रकाशन, राजघाट, काशी

नागरी लिपि द्वारा तेलुगु सीखिये : १०

विध्यर्थक के बारे में पिछले पाठ में बताया गया है। अब निषेधार्थक कैसे बनता है, इसके बारे में कुछ सीख लीजिये। तेलुगु धातु के अंत के 'उ' को 'अ' करके उसके साथ 'वद्दु' या (वद्दु+अण्डि')='वद्दण्डि' जोड़ देने से निषेधार्थक बनता है या उक्त रीति से धातु के अंत के 'उ' को 'अ' करके उसके साथ मध्यम पुरुष एकवचन में 'कु' या 'कुमु' और बहुवचन में 'कुडु' या 'कण्डि' भी जोड़ दिया जाता है।

मत बैठ = (कूर्चोनु + अ = कूर्चोन + वद्दु) = कूर्चोनवद्दु।
मत करो = (चेयु + अ = चेय + वद्दु) = चेयवद्दु।
मत पीजिये = (त्रागु + अ = त्राग + वद्दु + अण्डि) = त्रागवद्दण्डि।
मत पढ़ = (चदुवु + अ = चदुव + कु) = चदुवकु।
या
= (चदुवु + अ = चदुव + कुमु) = चदुवकुमु।
मत जाओ = (वेल्लु + अ = वेल्ल + कुडु) = वेल्लकुडु।
मत सुनिये = (विनु + अ = विन + कुडु) = विनकुडु।
या
= (विनु + अ = विन + कण्डि) = विनकण्डि।

हिन्दी	तेलुगु
तू मत लिख।	(१) नीवु व्रायवद्दु। (२) नीवु व्रायकु। (३) नीवु व्रायकुमु।
तुम मत लिखो।	(१) मीरु व्राय वद्दु। (२) मीरु व्रायकुडु।
आप मत लिखिये।	(१) तमरु व्रायकुडु। (२) तमरु व्रायकण्डि।
यहाँ मत बैठ।	इक्कड कूर्चोननवद्दु।
उसे मत बुलाओ।	वानिनि/आमेनु/दानिनि पिलुवनद्दु।
कल यहाँ मत आइये।	रेपु अक्कडिकि वेल्लकण्डि।
आप उन्हें अन्दर मत आने दीजिये।	तमरु वारिनि लोपलिकि रानिव्वकण्डि।
तुम उसको पाँच रुपये मत दो।	मीरु वानिकि/आमेकु/दानिकि अइदु रुपायलु इव्वकुडु।
आप आज की सभा में भाषण मत कीजिये।	तमरु नेटि सभलो माटलाडकण्डि।
तू यह काम मत कर।	नीवु ईपनि चेयकुमु।
तुम इतने पैसे खर्च मत करो।	मीरु इंत डब्बु खर्च चेयकुडु।
ज्यादा मत खाओ।	मितिमीरि तिनकुमु।
जोर से मत बोलो।	येग्गरगा माटलडकुमु।
दरवाजा बन्द मत करो।	तलुपु मूयवद्दु।
इसे मत छोड़ो, पुलिस के हवाले कर दो।	वीनिनि विडुव वद्दु पोलीसुलकु अप्पगिंचुडु।

क्रियाएँ

हिन्दी	तेलुगु	हिन्दी	तेलुगु
पधारना	दयचेयुट	भाषण देना	माटलाडुट, उपन्यसिंचुट
बुलाना	पिलुचुट	छोड़ देना	वदलिवेयुट, विडुचुट
बिछाना	परचुट	खरीदना	कोनुट
खोलना	तीयुट, तेरचुट	बेचना	अम्मुट
चाहना	कोरुट	तोलना	तूचुट

भोजन की चीजें

हिन्दी	तेलुगु	हिन्दी	तेलुगु
दाल	पप्पु	हलदी	पसुपु
भात	अन्नमु	तेल	नूने
चावल	बिय्यमु	घी	नेय्यि
कढ़ी	पुलुसु	मट्ठा	मज्जिग
रोटी	रोट्टे	मक्खन	वेन्न
उड़द की दाल	मिनप पप्पु	मलाई	मीगड
चने की दाल	सेनग पप्पु	खीर	पायसमु, परमान्नमु
अरहर की दाल	कंदि पप्पु	रायता	पेरुगु पच्चडि
मूँग की दाल	पेसर पप्पु	दही	पेरुगु
गेहूँ का आटा	गोधुम पिंडि	शक्कर	पंचदार
नमक	उप्पु	पापड़	अप्पडं
गुड़	बेल्लमु	इमली का रस	चारु
मिर्च	मिरपकायलु, कारमु	अचार	ऊरगाय
मेथी	मेंतुलु	शरबत	पानकमु
राई	आवालु	मैदा	मैदा पिंडि

ब्रह्म सत्यं जगत् स्फूर्तिः जीवनं सत्यशोधनम्

भूदानयज्ञ

लोकनागरी लिपि*

वृत्ती व्यापक हो

मानव की शक्ती मर्यादीत है, क्योंकी अुसका शरीर मर्यादीत शक्तीवाला है। अिसलीअे अुससे सेवा भी मर्यादीत ही होगी; परंतु वृत्ती मर्यादीत नहीं रखनी चाहीअे। भले मेरे कार्य-क्षेत्र के बाहर हो तो हर्ज नहीं, परंतु सहानुभूती के वीचार के क्षेत्र से बाहर हो जाने से तो मैं अपनी शक्ती खोता हूं, मेरी शक्ती मर्यादीत हो जाती है। अिसलीअे चाहे सेवा का क्षेत्र मर्यादीत हो, पर भावना और सहानुभूती का क्षेत्र अमर्याद रहे। मनुष्य को मनुष्य के नाते ही देखो; नहीं तो हींदू-धर्म की आत्मा को हम खो देंगे। हींदू-धर्म कहता है की सबमें अेक ही आत्मा है। यह अेक अैसा वीशाल धर्म है, जीसमें कीसी भी तरह का संकुचीत भाव नहीं रह सकता। यदी हम यह बात ध्यान में नहीं रखते हैं, तो धर्म की बुनीयाद ही खोते हैं।

'अेकं सत् वीप्राः
बहुधा वदंती।'

'सत्य अेक ही है। अुसे बुद्धीमान लोग कभी नामों से पुकारते हैं।' अिसमें 'वीप्राः बहुधा वदंती' कहा गया है, 'मूर्खाः बहुधा वदंती' नहीं कहा गया। हींदू-धर्म कहता है की सत्य अेक है, परंतु अुपासना के लीअे वह अलग-अलग हो सकता है। अैसी व्यापक वृत्ती रखोगे, तो हींदूओं की सेवा कर सकोगे। —वीनोबा

*लिपि-संकेत : ि = ी ; े = ॆ ख = ख, संयुक्ताक्षर हलंत चिह्न से।

सर्व सेवा संघ की खादी-ग्रामोद्योग समिति का महत्त्वपूर्ण निर्णय

'नये मोड़' के संदर्भ में ६ अप्रैल को देश भर में 'ग्रामस्वराज्य' दिवस

सर्व सेवा संघ की खादी-ग्रामोद्योग समिति की कार्य-समिति की एक सभा ता० २६ जनवरी को साधना केन्द्र, काशी में श्री ध्वजा प्रसाद साहू की अध्यक्षता में हुई। सभा में सर्वश्री ठाकुरदास बंग, सिद्धराज ढड्ढा, कपिल भाई, के० अरुणाचलम, पूर्णचंद्र जैन, करणभाई, राधाकृष्ण बजाज, रामेश्वर अग्रवाल आदि उपस्थित थे। समिति ने खादी-कमीशन द्वारा नये मोड़ के कार्यक्रम को देशव्यापी पैमाने पर उठाने का स्वागत करते हुए नीचे लिखा प्रस्ताव स्वीकृत किया। समिति ने निश्चय किया है कि आगामी ६ अप्रैल को ग्रामस्वराज्य-आन्दोलन को जन-आन्दोलन का रूप देने के लिए देश भर में ग्राम-स्वराज्य दिवस मनाया जाय, जिसमें गाँव-गाँव के लोग ग्रामस्वराज्य की स्थापना का और उसके लिए आवश्यक कदम उठाने का संकल्प करें। खादी-समिति द्वारा स्वीकृत प्रस्ताव इस प्रकार है :

"नये मोड़ के संबंध में गत वर्ष मई मास में कोरा पेन्द्र में हुए सम्मेलन में खादी-कमीशन, खादी-ग्रामोद्योग समिति और सारे देश की खादी-संस्थाओं के लोगों ने सर्वसम्मति से निश्चय किया था कि देश भर में फैले हुए चालू खादी-काम को क्रमशः नये मोड़ की दिशा में परिवर्तित करने का प्रयत्न करें और तृतीय पंचवर्षीय योजना की अवधि में कुल ३,००० नये मोड की ग्राम-इकाइयों के केन्द्र खोले जायँ। प्रथम वर्ष में ४०० ऐसी इकाइयों का प्रारम्भ किया जाय।

इस संबंध में खादी-कमीशन ने [आगामी वित्तीय वर्ष] १ अप्रैल '६१ से इसकी योजना प्रारम्भ करने का निर्णय लिया है। कमीशन ने जिस मुस्तैदी के साथ इस कार्यक्रम को अपनाया है, उसका हम स्वागत करते हैं।

नये मोड का कार्यक्रम खादी और ग्रामोद्योगों के साथ सारे गाँव के जीवन को क्रांतिकारी स्वरूप देने वाला कार्यक्रम है। जनमत के आधार पर जनशक्ति जागृत हो और जनता की प्रेरणा से ही समाज-परिवर्तन का कार्य चले, यह अभीष्ट है। खादी-ग्रामोद्योग समिति की कार्यकारिणी समिति यह महसूस करती है कि इस कार्यक्रम को देशव्यापी आंदोलन का स्वरूप देना आवश्यक है। नये मोड़ के आधार पर ग्राम-इकाइयाँ बनें, वे ग्राम-स्वराज्य की कल्पना को साकार रूप दे सकें, गाँव के लोग यह महसूस करें कि गाँव को बनाने की और सारे गाँव के समग्र विकास की जिम्मेदारी गाँव की है और वह इस प्रकार का संकल्प लें, ताकि ग्रामीण जनता में एक चेतना पैदा हो। जिस तरह स्वतंत्रता-प्राप्ति के लिए २६ जनवरी को हमने संकल्प और व्रत लिया था और उस प्रतिज्ञा की पूर्ति के लिए सारे देशवासी जुट पड़े, उसी तरह अब एक संकल्प और प्रतिज्ञा लेकर ग्रामस्वराज्य की स्थापना के प्रयत्न का भी आंदोलन बने यह जरूरी है।

६ अप्रैल हमारे राष्ट्रीय जीवन के इतिहास में बहुत बडे महत्त्व का दिन है। उस दिन महात्मा गांधी ने सारे देश को स्वतंत्रता-संग्राम के जन-आंदोलन का रूप देने के लिए आह्वान किया था। ग्रामस्वराज्य को जन-आंदोलन का रूप देने के लिए ६ अप्रेल का दिन सारे देश में मनाया जाय, गाँव-गाँव में सार्वजनिक सभाएँ हों और निम्नलिखित संकल्प दोहराया जाय, ऐसा सर्वसम्मति से निश्चय किया गया—

संकल्प

"हमें विश्वास है–

–कि मानवीय मूल्यों को छोटे-छोटे समुदायों में ही सुरक्षित रखा जा सकता है। वहीं व्यक्ति को अपने पूर्ण विकास का सबसे अच्छा अवसर और वातावरण मिल सकता है, जहां मनुष्य साथ-साथ रहते हों और परम्परागत प्राप्त गुणों का लाभ उठा सकते हों।

–कि यदि जनतंत्र को जीवित रख कर सबके हित को प्राप्त करना है, तो लोगों को न केवल उत्पादक कार्यों में, वरन् जीवन के अन्य उपयोगी क्षेत्रों–जैसे राजनैतिक, सामाजिक और शैक्षणिक–में भाग लेना सुलभ होना चाहिए।

–कि विश्व में स्थायी शांति स्थापित हो सके, इसके लिए आवश्यक है कि प्रारम्भिक समुदाय (ग्राम-इकाई) अपने सदस्यों की मूलभूत आवश्यकताओं की पूर्ति करने का उत्तरदायित्व अपने ऊपर ले और इस ओर अपना अभिक्रम जागृत करे, जिससे समुदाय में व्यक्ति सुरक्षा और स्वतंत्रता की भावना का अनुभव करे।

–कि भौतिक आवश्यकताओं की पूर्ति व्यक्ति के आध्यात्मिक विकास में सहायक होगी तथा व्यक्ति के भौतिक और आध्यात्मिक सपन्नता के समन्वय के द्वारा मानव-समाज जीवन के नवीन और उच्च कोटि के विभिन्न स्वरूपों को विकसित करेगा, जिनमें सत्य, प्रेम और करुणा प्रतिबिंबित होंगे।

जीवन की पद्धति के रूप में हम बजाय प्रतिद्वंद्विता के सहयोग में विश्वास रखते हैं, क्योंकि प्रतिद्वंद्विता मानव के निम्न स्तर के तत्त्वों को उभारने में सहायक होती है, जब कि सहयोग के द्वारा उसकी ऊँची भावनाओं का प्रकटीकरण होता है और उन्हें बल मिलता है।

हमें यह दुखद रूप से अनुभव हो रहा है कि आज के समाज में जीवन के इन मूल्यों को अहितकर समझा जा रहा है। भौतिक सुखों की उत्कृष्टता और नैतिक गुणों की अवहेलना की ओर जो आज कि मानव का झुकाव है, वह एक बड़ी ही भद्दी सभ्यता को जन्म दे रहा है। कुछ समाज-विरोधी तत्त्व आज के समाज को विनष्ट करने की ओर अग्रसर हैं। हम इन तत्त्वों का विरोध करना चाहते हैं।

अत —

आज हम अपनी शक्ति को सहयोग, समता और एकरूपता के आधार पर समाज को सगठित करने के प्रयास में लगाने के लिए समर्पित करते हैं।

हम अपने जीवन के आर्थिक पहलू में विविधता लाने की ओर आवश्यक कदम उठायेंगे, जिससे कि हमारा जीवन समुन्नत हो और समाज के प्रत्येक व्यक्ति को लाभकर और समाजोपयोगी काम मिल सके एवं गाँवों से योग्य व्यक्तियों का पहले से ही घने बसे हुए शहरों की ओर जाने का आज जो प्रवाह है, वह रुक सके। इसलिए हम गाँवों में ही ऐसा आर्थिक आयोजन करेंगे कि जिसके अंतर्गत गाँवों के योग्य व्यक्तियों को गाँवों में ही अपनी क्षमता और योग्यता का उपयोग और विकास करने का व्यावहारिक और लाभकर अवसर प्राप्त हो।

खादी अहिंसक समाज का प्रतीक है। स्वतंत्रता-संग्राम में इसका अविस्मरणीय स्थान रहा है। आज भी खादी का उद्योग ही एक ऐसा उद्योग है, जो ग्रामीण क्षेत्र के सबसे गरीब और उपेक्षित व्यक्ति को काम देकर उसे हिम्मत और सहारा प्रदान करता है। नये मोड़ के कार्य से आज हमें प्रोत्साहन मिल रहा है। इसका यह अर्थ है कि गांवों का छोटे-छोटे समूहों के रूप में आयोजित होकर उनका समग्र विकास हो। हम कृषि-उद्योगप्रधान समुदायों के संगठन के महत्त्व को समझते हैं। हम अपने आर्थिक ढांचे को ऐसा रूप प्रदान करना चाहते हैं, जिनमें इन समुदायों का प्रमुख स्थान रहेगा और जो कि ऐसे समाज की रचना करने में सहायक होंगे, जिसमें स्वतन्त्रता और समता सबको ही प्राप्त हो।

हम संकल्प करते हैं कि हमारे गांव में कोई भी भूखा और बेकार नहीं रहेगा। हम भूमिहीनों को भूमि अथवा अन्य ग्रामोद्योग देंगे, जिनसे वे अपनी जीविका चला सकें। हम गांव का सर्वेक्षण करके उपलब्ध साधनों की जांच करेंगे, जिससे उनका अधिकतम उपयोग किया जा सके। प्रथमतः हम इनका उपयोग गांव की स्थानीय आवश्यकताओं की पूर्ति के लिये करेंगे, परन्तु हम आसपास के क्षेत्रों की आवश्यकताओं की पूर्ति करने में सहायक होने के अपने कर्तव्य का भी ध्यान रखेंगे।

हम अनुभव करते हैं कि मुकद्दमेबाजी के कारण गांव की सम्पत्ति और समय का बहुत अपव्यय हो रहा है। अतः हम संकल्प करते हैं कि गांव के झगड़े हम गांव में ही सुलझाने का प्रयत्न करेंगे, उन्हें बाहर अदालतों में फैसले के लिए नहीं ले जायेंगे।

हम जानते हैं कि गांव के बच्चों को उन्नति करने के लिए अच्छी-से-अच्छी शिक्षा और समुचित वातावरण की आवश्यकता है, जिससे कि वे विरासत में प्राप्त संस्कृति को ग्रहण कर सकें और उनमें ऐसी शक्ति पैदा हो सके, जिससे वे अपने आसपास की चीजों में वांछित परिवर्तन स्वयं कर सकें। इस ध्येय को प्राप्त करने के लिए हमें आज की चालू शिक्षा-पद्धति में उचित परिवर्तन आवश्यक प्रतीत होते हैं। इस दिशा में अग्रसर होने के लिए जीवन के मूल्यों में उचित परिवर्तन करने का हम संकल्प करते हैं।

हम अनुभव करते हैं कि गांव की सुरक्षा के लिए हमारा स्वयं का उत्तरदायित्व है, जिसके लिए हम आवश्यक प्रयत्न करेंगे।

हम संकल्प करते हैं कि सबके भले के लिए हम हृदय से प्रयत्न करेंगे, क्योंकि हमें विश्वास है कि इसीमें अपना भी भला निहित है। अपने निश्चय हम इस प्रकार करने का आयोजन करेंगे कि जिससे सबकी सहमति और जिसमें सबका संतोष प्रकट हो। गांव की चर्चाओं और कार्यों में सब व्यक्तियों को सक्रिय भाग लेने का उत्साह उत्पन्न हो, ऐसा हम प्रयास करेंगे। हम विशेष रूप से यह ध्यान रखने का प्रयत्न करेंगे कि गांव में कोई भी व्यक्ति अपने को पीड़ित अनुभव न करे और अपने विचारों व विरोध को व्यक्त करने में वह स्वतंत्र और निर्भीक रहे। इस प्रकार जनतंत्र के वातावरण को समाज में बनाये रखने में सहायता मिलेगी।

ईश्वर हमें अपनी सहायता स्वयं करने के अपने दृढ़ निश्चय को पूरा करने में सहायता प्रदान करे, जीवन के ध्येय प्राप्त करने के हमारे प्रयास में उसका मार्गदर्शन हमें मिले यही प्रार्थना है।

जय जगत्!"

"कटनी" में कटनी

उत्तर प्रदेश की अखंड पदयात्रा करने के बाद हम तीन भाई—सर्वश्री पुजारी राय, रुद्रप्रताप तथा मैं विनोबाजी के पास जबलपुर गये। १० दिन साथ रख कर बाबा ने कहा—"तुम तीनों से मिल कर बड़ी खुशी हुई। बोलो, आगे का क्या कार्यक्रम होगा? क्योंकि 'कटनी' (जबलपुर में कटनी नाम की तहसील) में कटनी होगी (जाना होगा)।"

मैंने कहा—"बाबा, यों तो जीवन-समर्पण के फैसले से आपका जहां भी, जब भी आदेश होगा, वैसी तैयारी है ही। पर मैं सोचता हूं, काशी में एक संस्कार पड़ा है, शक्ति भी लगाने की बात है, तो जैसा आप कहें!"

"हां, ठीक है, काशी तुम चलो।"

श्री रुद्रप्रताप भाई ने अपने जिले या आसपास के जिलों में रहने का जाहिर किया, तो बाबा ने उन्हें इलाहाबाद भेजा। श्री पुजारी राय को इंदौर के लिए कहा कि "आजकल मेरी आधी शक्ति वहां लग रही है। तुममें से एक वहां चलो।"

मैंने बाबा से कहा कि 'काशी के लिए मार्गदर्शन चाहिए,' तो सहज ही हंस कर बाबा ने पूछा, 'कितने दिन हुए घूमते?' जवाब दिया, 'करीब ४ वर्ष।'

"तो फिर अनुभव की क्या बात? फिर भी सर्व सेवा संघ के हमारे लोग हैं ही वहां। सुन्दरलाल को भेजा है वहां। जाओ, उनकी मदद करो"—ऐसा बाबा ने कहा।

—अलख नारायण

सर्वोदय और यंत्र-विज्ञान

विनोबा

हमने 'गीता-प्रवचन' में सांख्य और योग, ऐसे दो विभाग बताये हैं। ये दो विभाग मिल कर परिपूर्ण जीवन-शास्त्र बनता है। जीवन-शास्त्र का एक अंश है सांख्य व एक है योग। सर्वोदय के भी सांख्य व योग, ऐसे दो अंश हैं। दोनों मिल कर परिपूर्ण सर्वोदय-विचार बनता है। सर्वोदय का जो सांख्य (यानी 'थियरी') है, वह मैं आज कहूंगा।

सर्वोदय का मूलभूत विचार है कि परस्पर हितों का विरोध न हो। मेरे हित में आपका हित है। आपके हित में मेरा हित है। दोनों के हित में देश का हित है। देश के हित में मेरा व आपका हित है। देशहित का विश्व के हित को विरोध नहीं। विश्व के हित का देश के हित को विरोध नहीं। इस तरह सर्वोदय अविरोधी है। यह है बुनियाद।

सर्वोदय-विचार में ग्रामोद्योग व यंत्रोद्योग भी परस्पर अविरोध से एकसाथ रह सकते हैं। उनका क्षेत्र विभाजित करना होगा। किस क्षेत्र में ग्रामोद्योग रखा जाय व किस क्षेत्र में यंत्रोद्योग रखा जाय, ऐसा विभाजन हो जाय तो एक ही देश में ग्रामोद्योग व यंत्रोद्योग चल सकते हैं। ग्रामोद्योग व यंत्रोद्योग एक-दूसरे के विरोधी होने ही चाहिए, ऐसा नहीं। दोनों का समन्वय कर सकते हैं।

यंत्र तीन प्रकार के हैं: एक संहारक यंत्र, दूसरा समय-साधक यंत्र व तीसरा उत्पादक यंत्र।

"संहारक यंत्र यानी 'मशिनगन्स', तोपें, जिसका उपयोग मानव-संहार में ही होता है। ऐसे जो शस्त्रास्त्र इत्यादि बनाते हैं, उसका नाम है संहारक यंत्र। सर्वोदय में संहारक यंत्रों के लिए अवकाश नहीं। संहारक यंत्र का हम सर्वोदय-विचार के लोग विरोध करते हैं।

समयसाधक यंत्र संहार भी नहीं करते व उत्पादन भी नहीं करते, समय बचाते हैं। जैसे मोटर है, रेलवे है, हवाई जहाज है। इन सबसे उत्पादन नहीं होता, न संहार होता है, समय बचता है। हवाई जहाज में इतनी गति है कि बम्बई से लंदन बारह घंटे में जाते हैं। ४०० साल पहिले दो साल लगते थे, अब १२ घंटे लगते हैं व समय बचता है। तो ये समयसाधक यंत्र हैं। सर्वोदय में इसका विरोध नहीं। सर्वोदय को वे पसंद हैं, मान्य हैं। नये यंत्र हमको मान्य हैं। कल यहां से चन्द्रमा पर भी चलेंगे। इसलिए रॉकेट बनेंगे। रॉकेट भी सर्वोदय को मान्य है। संहारक यंत्र सर्वथा अमान्य हैं, समय-साधक यंत्र सर्वथा मान्य हैं।

अब उत्पादक यन्त्र रहे। उत्पादक यन्त्र भी निर्माण-कारक हैं। उत्पादक यन्त्र दो प्रकार के होते हैं। एक प्रकार—मनुष्यों के श्रम की पूर्ति करते हैं। हमारे हाथों के श्रम से हम जो काम नहीं कर सकते हैं, वह करने में सहायता देते हैं वे यंत्र। 'पूरक' नाम है उनका। उत्पादक यंत्र का एक प्रकार पूरक यंत्र, मनुष्य के श्रम की पूर्ति करने वाले हैं। हम हाथ से सूत कातेंगे, तो हमारा काम पूरा नहीं होगा। तकली से थोड़ी मदद हुई, चरखे से ज्यादा मदद होगी, अम्बर चरखे से उससे भी ज्यादा मदद होगी। इस तरह से श्रम की पूर्ति में जो यन्त्र हैं, वे पूरक, उत्पादक यन्त्र हैं। जो यन्त्र उत्पादन करते हैं ज्यादा, लेकिन मजदूरों को कम करते हैं, वे हैं 'मारक' यन्त्र। उत्पादक यन्त्र के दो प्रकार—पूरक व मारक।

कौनसा यन्त्र पूरक है व कौनसा मारक, इसका निर्णय देश-काल की परिस्थिति के अनुसार बदलेगा। अमेरिका में जो यन्त्र पूरक होगा, वह हिन्दुस्तान में मारक हो सकता है। आज जो यन्त्र मारक होगा, वह कल पूरक भी हो सकता है। इसका रूप कालमानानुरूप, स्थलमानानुरूप व परिस्थिति के अनुरूप बदलेगा।

सर्वोदय का एक बहुत बड़ा विचार है कि 'साइंस' का हम पूर्ण उपयोग करना चाहते हैं। हमें 'इलेक्ट्रिसिटी' व 'एटॉमिक एनर्जी' चाहिए। लेकिन 'साइन्स' का उपयोग कहां किया जाय, इस विषय में सर्वोदय के अपने विचार हैं। साइंस को अध्यात्म शास्त्र मार्गदर्शन करेगा।

अग्नि का उपयोग घर जलाने में करना या पकाने में करना, यह मानव का अध्यात्म शास्त्र तय करेगा। ऐसे ही 'एटॉमिक एनर्जी' कल आ जायेगी, तो उसका उपयोग कैसे करना इसका निर्णय हम करेंगे, परन्तु साइंस को हमारा विरोध नहीं। साइंस का आदर है। उसका अप्लीकेशन कहां करना, यह सोचना होगा और उसका नियमन, नियंत्रण करना होगा। नियमन, नियंत्रण परिस्थिति के अनुसार बदलता रहेगा।

यह थोड़े में सर्वोदय के सांख्य का विवरण है। इसमें किसी के हित में विरोध नहीं, पूरा अविरोध है। यंत्र-उद्योग व ग्रामोद्योग का विरोध नहीं। परिस्थिति को देख कर उनको 'एडजस्ट' कर सकते हैं।*

---

* समाज-विकास विभाग के अधिकारियों के समक्ष दिये गये प्रवचन से।
पड़ाव-कुंडा, ता. २८-१२-६०

विनोबा-यात्री दल : जयप्रकाशजी के आश्रम में

• कुसुम देशपांडे

दो दिन से मलेरिया बाबा के शरीर को पीड़ा दे रहा था। दूसरे दिन जयप्रकाशजी के आश्रम में जाना था। १३ मील से अधिक अन्तर था। गौरी बाबू हैरान हो गये थे। कार्यक्रम बदलने का सोचा गया। उधर जयप्रकाशजी भी चिंतित थे। उन्होंने बाबा को आश्रम से चिट्ठी लिखी—"आप हमारे आश्रम में इस वक्त नहीं आयेंगे तो भी चलेगा। आसाम से लौटें, तब आइयेगा। कार्यक्रम में बदल कर गाँव वालों को निराशा मत कीजियेगा।" काफी चर्चा हुई। बाबा ने फैसला किया, 'नीचे का एक गाँव टाला जाय और एक दिन में दो गाँव किये जायँ।' वारसलीगंज से 'रोह' १३ मील था। रास्ता कच्चा था, बीच में खेत की पगडंडी और धूल भी अत्यधिक थी। सुबह ४॥ बजे से १०॥ बजे तक चले, तब 'रोह' पहुँचे। दोपहर में दो बजे सभा करके तीन बजे फिर से चले। अगला गाँव ६ मील दूर था। सभा में आयी हुई भीड़ तीन मील तक साथ थी। फिर से कच्चा रास्ता और धूल! भीड़ को ठीक अनुशासन में चलने के लिए समझाते समझाते यात्री-दल की बहनें और भाई थक गये थे। बाबा को धूल से ज्यादा तकलीफ होती है। आखिर शाम को ५॥ बजे दूसरे मुकाम पर पहुँचे। उस गाँव को दो-तीन घंटे की नोटिस मिली थी। फिर भी छोटे-से 'रूपा' गाँव ने कोई कमी नहीं रखी थी। छोटी सी सभा में "शांति-पात्र और बीघे में कट्ठा" देने की बात समझा कर बाबा कमरे में आये। गरम पानी से हाथ-मुँह धो लिया। लगा कि बाबा अब लेट जायेंगे। लेकिन वे आसन पर बैठे। 'विनय-पत्रिका' खोली और यात्री दल की बहनों को तुलसीदासजी की रसमयी वाणी समझाने लगे।

१९ मील चलना हुआ था, बुखार की हरारत थी, जुकाम का जोर था, लेकिन भक्ति की मस्ती जोर जोर से गा रही थी :

"रघुवरहिं कबहुं मन लागि है ", तू यहि बिधि सुख-सयन सोइ है जियकी जरनि भूरि भागि है।"

बिहार की यात्रा शुरू हुई, तब से प्रभावतीजी यात्री-दल में शामिल हो गयी हैं। आश्रम में कल बाबा आयेंगे, इसलिये तैयारी के लिए वह आगे बढ़नेवाली थीं। उस दिन वह खुद भी १९ मील चली थी। जब वह जाने लगी, बाबा ने उनसे कहा, "जयप्रकाशजी को कहिये कि बाबा थका नहीं है•••" और वे लड़कियों को भजन का अर्थ समझाने में मग्न हो गये—"अरे मन! तू नित्य भगवान का नाम लेगा और कुटिलता का त्याग करेगा तो सुख की नींद सोयेगा। तेरे मन की बड़ी भारी जलन भाग जायेगी'।"

दूसरे दिन हरे-भरे खेत और ऊँचे ताड़ के पेड़ों को निहारते हुए काफिला आगे बढ़ रहा था। शरीर अस्वस्थ था। बाबा चुपचाप मौन-से चल रहे थे। किसी ने कहा, "आज साढ़े दस मील की राह है।"

बाबा ने जवाब दिया, "यह थोड़ा थकना नहीं है। हमारी तो १० साल से आराम यात्रा चल रही है। आराम में छुट्टी की जरूरत नहीं होती है। सरकारी नौकर तीस साल में 'रिटायर' होते हैं—हमने भी आश्रम में रह कर बापू के आदेश के अनुसार ३०—३२ साल सेवा की और अब सेवा निवृत्त होकर घूम रहे हैं। हमारा यह आराम चल रहा है।"

"प्रकृति जितनी सुंदर है, उतना ही चित्त भी उसकी संगति में सुंदर बनता है। प्रकृति से चित्त अलग होता है, तो विकृति आती है, वह नीचे गिरता है। जब मानव प्रकृति से ऊपर उठता है, तब संस्कृति की तरफ आता है और उसका जो मूल स्वरूप है—आत्मा, उसका दर्शन होता है।"

छोटे बच्चों के लिये प्रायोगिक पाठशाला चला रहे हैं। बाबा ने उनसे पूछा, "क्या आप आस्ट्रेलियन बच्चों में और हिन्दुस्तान के बच्चों में 'साइकॉलाजिकल डिफरेन्स' (मनोवैज्ञानिक फर्क) पाते हैं?"

उन्होंने जवाब दिया, "नहीं! बच्चों का नैतिक, मानसिक और शारीरिक विकास समान ही दीखता है"

इस पर बाबा ने कहा, "चिल्ड्रन आर निअरर टु गॉड-छोटे बच्चे ईश्वर के ज्यादा नजदीक होते हैं। इसलिये दुनिया के सब बच्चे समान होते हैं। बड़ी उम्र में ही फर्क आ जाता है।"

" मैं सच कहता हूँ कि आराम करने को मिले तो अच्छा लगता है।

[illegible]

को मीठा लगेगा, लेकिन दिल कहेगा कि 'अरे, ये लोग मर रहे हैं, तू उठ जा! नहीं तो अहिंसा का अपना दावा छोड़ दे।' इसलिए घूम रहा हूँ। "

—विनोबा

बाबा, ढोल बजा कर नाचते हुए सोखोदेवरा ग्राम ने स्वागत किया। पूरा गाँव साफ-सुथरा, लिपा-पोता था। जगह-जगह बंदनवार थे। "दान की इकट्ठा, मैं कट्ठा" के नारे से वातावरण गूँज उठा। गाँव से थोड़ी ही दूरी पर नीचे पहाड़ों की तराई में आश्रम की कुटिया नजर आयी। जयप्रकाशजी, प्रभावतीजी, गौरी-बाबू, आश्रम के अन्य भाई-बहनों के साथ स्वागतार्थ खड़े थे। आश्रम-स्थित एक कलाकार ने बाँस का सुंदर द्वार बनाया था। कुंकुम, आरति, पुष्पांजलि से स्वागत हुआ। सादे से मिट्टी से बनाये हुए, लिपे-पोते और अल्पना से चित्रित मंच पर बाबा बैठे। सामने पहाड़ खड़े हैं, सुबह की प्रसन्न बेला है, प्रकृति का नयन मनोहर दृश्य और नीरव शांति ने बाबा को वेद भगवान की याद दिलायी—"उपह्वरे गिरीणां संगथे च नदीनाम्। धिया विप्रो अजायत।" पहाड़ों की सन्निधि में जहाँ टेढ़े-मेढ़े रास्ते हैं, नदियों का संगम है, वहीं ज्ञानी का जन्म होता है। कैसे होता है? ध्यान करने से।

दोपहर को तीन बजे आश्रम-स्थित चार जापानी भाई बाबा से मिले। तीन भाई आश्रम में खेती और एक भाई लुहार का काम करते हैं। उनसे बाबा ने कहा, "जापानी भाषा के लिए नागरी लिपि अच्छी है।" और फिर समझाया कि जापानी भाषा की रचना, दक्षिण हिंदुस्तान की भाषा की रचना के समान है।"

बाबा के कहने पर उनमें से एक भाई ने भजन सुनाया। जब वे विदा लेने लगे, तब बाबा ने पूछा, "जापान की जन-संख्या कितनी है?"

"नौ करोड़"

"दूसरे देश में जमीन मिलेगी, तो आप लोग जायेंगे?"

"जी हाँ?"

"आस्ट्रेलिया के एक भाई अभी आने वाले हैं। आस्ट्रेलिया में जमीन बहुत है।"

इस सुझाव पर जापानी भाई खुश होकर लौटे। उनके बाद आस्ट्रेलियन दंपति मिले। वे दोनों सोखोदेवरा गाँव में एक

उनसे शिक्षा पर चर्चा करते हुए बाबा ने कहा, "इन दिनों इतिहास में बड़े-बड़े लोगों के झगड़े सीखाये जाते हैं! हिंसा का इतिहास सीखाने के बदले शांति का इतिहास सीखाना चाहिये।"

दूसरे दिन सुबह आश्रम के अवलोकन के लिए बाबा निकले। बार-बार उनकी नजर पहाड़ पर जाती थी। बीच-बीच में पूछते भी थे कि पहाड़ कितना दूर होगा, कितना समय लगेगा आने-जाने में! कहते थे—"पहाड़ देख कर उस पर चढ़ने की इच्छा होती है।"

यहाँ की पहाड़ी, ऊबड़-खाबड़ जमीन में अद्भुत परिवर्तन हुआ है। अमरूद, अनार, कटहल, शरीफा, पपीता आदि फलों के पेड़ हैं। इसके अलावा धान की खेती और सब्जी भी है।

दूसरे दिन दोपहर में आश्रम के और गया जिले के शान्ति-सैनिक पीले रंग का साफा सिर पर लगा कर बाबा के पीछे कपसिया ग्राम की ओर अनुशासन में दो-दो की कतार में चल रहे थे। बाबा की 'हरि टोपी' और बाकी सबका पीला रंग—चलते हुए गा रहे थे—"रोकने तबाही चले—लेके सरस्वाहीं चले"—लंबी कतार थी।

चारों ओर पहाड़ी थी, शाम हो रही थी। 'तबाही रोकने' की मनीषा, प्रतिज्ञा लिये शान्ति के सिपाही जा रहे थे। उन शब्दों को कृति में लाने की चेष्टा वे अपने जीवन में करेंगे!—लंबी कतार के आगे-आगे, बाबा मौनपूर्वक चल रहे थे। किसी ने हलकी आवाज में पूछा—"जयप्रकाशजी नहीं दीख रहे हैं?" प्रश्नकर्ता को बताया गया कि वे आखिरी लाइन में हैं। इस पर किसी तीसरे ने समीक्षा की "हाँ! 'निर्भयता' आगे चल रही है और 'नम्रता' पीछे।"

कपसिया ग्राम में श्री रविशंकर शर्मा कुष्ठ-रोगियों की सेवा कर रहे हैं। १९५५ से वे यहाँ इस काम में हैं। इसके पहले वे वर्धा के नजदीक दत्तपुर में विनोबाजी के मार्गदर्शन में कुष्ठ-रोगियों की सेवा कर रहे थे। कपसिया में हरिजनों के २५ घर बनाये हैं। घरों की दो कतारें आमने-सामने खड़ी हैं। घर के आँगन, दीवारें साफ-सुथरी थीं। इस बस्ती को 'गांधी-धाम' नाम दिया है।

दूसरे दिन मुंगेर जिले में प्रवेश था। फिर से रास्ते की चर्चा चली। १३ मील की लंबी राह, बीहड़ पथरीली, ऊँची-नीची! बाबा का बुखार हटा नहीं था। बुखार को साथ देने के लिए खाँसी भी शुरू हुई है।

जयप्रकाशजी, गौरी बाबू, प्रभावतीजी, महादेवीताई और सब साथी सोच में पड़े थे। शान्ति-सैनिक का जत्था उस दिन साथ था। चर्चा चली—जयप्रकाशजी ने निर्णय लिया कि रात में शांति सेना के के लोग जायेंगे और रास्ता साफ करेंगे, पत्थर हटायेंगे।"आठ बजे प्रार्थना खत्म हुई—बाबा 'ब्रह्मलोक' में गये! यात्रीदल की भाई-बहनें बिस्तर बिछा कर सोने की तैयारी में थे।

ठंडी हवा चल रही थी, कमरे का दरवाजा बंद करने गयी तो देखा—काला गरम ओवरकोट और गरम टोपी पहने हुए जयप्रकाशजी जा रहे थे। प्रभावतीजी से पूछा, "इस वक्त कहाँ जा रहे हैं?"

"रास्ता साफ करने!"—वह बोली! और उस रात में साढ़े बारह बजे तक ठंडी में वे उस काम में लगे थे, अन्य शान्ति-सैनिकों के साथ। रास्ते पर बोझे पत्थर थे, उन्हें हटाया गया। एक बहन ने दूसरे कार्यकर्ता से पूछा, "आप इस काम के लिए उनको क्यों जाने देते हैं?"

कार्यकर्ता ने कहा, "हम करें क्या? बहुत मना किया! पर आखिर जय-प्रकाशजी ने कहा, शान्ति-सेना का काम है। मैं सबको हुक्म दूँ और खुद मैं वह काम न करूँ, यह कैसे बनेगा?"

—

लक्ष्मी-आश्रम, कौसानी : एक परिचय

सरला बहन

[पाठक लक्ष्मी आश्रम, कौसानी की सचालिका मूक सेविका सरला बहन से पूर्वपरिचित हैं ही। वे अब आश्रम जनाधार और मित्राधार से चलाना चाहती हैं। आशा है, पाठक इस प्रयोग में दिलचस्पी लेंगे। –सम्पादक]

महात्मा गांधी के आशीर्वाद से लड़कियों की नई तालीम द्वारा पहाड़ी समाज की सेवा करने के लक्ष्य से कस्तूरबा महिला उत्थान मण्डल, लक्ष्मी आश्रम, कौसानी (जि० अलमोड़ा) की स्थापना सन् १९४६ में हुई थी। इस संस्था का स्वरूप बदलता रहा। शुरू में छोटी लड़कियों के लिए बुनियादी तालीम देने का लक्ष्य रहा। पहले-पहल ६ छोटी लड़कियों को लेकर एक मित्र के छोटे मकान में काम शुरू हुआ। संस्था जल्दी-जल्दी बढ़ने लगी। जंगलात के पास की जमीन लेकर 'मण्डल' के निजी मकान बने तथा कुछ कृषि और बाद को बुनाई का काम शुरू हुआ। चारों पहाड़ी जिलों से छात्राएं आने लगीं। हमारी यह कल्पना थी कि घर वाले लड़कियों को सिर्फ बारह-चौदह साल की उम्र तक ही यहाँ पर रहने देंगे, पर यह गलत साबित हुआ तथा पूरी बुनियादी शाला बनने के बाद कुछ छात्राएं उत्तर बुनियादी शिक्षा पाने के लिए सेवाग्राम भी गयीं।

उस दरमियान में भूदान का आवाहन सुन कर महसूस हुआ कि यदि हम भी उसमें कुछ भाग न लें, तो हमारा अस्तित्व व्यर्थ है। हमें अपनी चहार-दीवारी को सीमित नहीं रखना चाहिए। अतः स्थानीय राजनैतिक कार्यकर्ताओं के साथ कुछ दौरे हुए तथा बच्चों को लेकर अलमोड़ा, पौड़ी और टिहरी जिलों में जहाँ भी हम अपनी लड़कियों को लेकर जाती थीं, हम पाती थीं कि पहाड़ी जनता इस सन्देश को सुनने के लिये भूखी है; सुन कर तृप्त होती है। सन्देश पहुँचाने वालों की ही कमी है। फिर भी पौड़ी और टिहरी में कुछ कार्यकर्ता निकले।

उस दरमियान में एक कार्यकर्त्री विनोबाजी के सान्निध्य में दस महीनों तक गया जिले में भी काम करती रहीं। इन दौरों के फलस्वरूप आश्रम में छात्राओं की संख्या एकदम बढ़ी। परिवार की संख्या ८५ तक हो गयी। लेकिन आश्रम में लोगों ने अपनी लड़कियों को एक बाहरी आकर्षण में भेज दिया, विचार और लक्ष्य समझ कर नहीं। वे सिर्फ इतना समझते थे कि अच्छी शिक्षा पाने के साथ ही साथ उनकी लड़कियाँ वर्तमान समाज की खराब प्रवृत्तियों से दूर-दूर रहेंगी। विचार और कार्यकर्ताओं के अभाव से इस वृद्धि में सृजनात्मक अर्थ नहीं निकला तथा निश्चय हुआ कि संख्या को कम करते जाना चाहिये। इसके फलस्वरूप हम पाते हैं कि लगभग ३० लोगों का परिवार हमारे लिए सबसे उत्तम संख्या है। इसमें व्यक्तिगत सम्पर्क और पारिवारिक भावना रहने की सम्भावना है। अपनी सीमित स्त्री-शक्ति से हम ज्यादा संख्या में उस भावना को कायम नहीं रख सकती हैं।

हमने पाया कि लड़कियों को सेवाग्राम भेजना बहुत सफल नहीं है। विभिन्न सामाजिक वातावरण और बड़े परिवार में रहने की वजह से बाद में हमारे छोटे परिवार और पहाड़ का संकुचित सामाजिक वातावरण उनके लिए बहुत अनुकूल नहीं होता है। इसके साथ-साथ सब लड़कियों का वहाँ जाना सम्भव भी नहीं था। इसलिए निश्चय हुआ कि चाहे हमारे साधन कितने सीमित क्यों न हों, कौसानी में ही उत्तर बुनियादी शिक्षा शुरू करने का प्रयोग होना चाहिए। ज्यादा जमीन उपलब्ध न होने के कारण हम ज्यादा जोर सेवा-कार्यों और सामाजिक कार्यों की ओर दें तथा लड़कियाँ धीरे-धीरे करके आश्रम में विभिन्न जिम्मेवारियों का भार उठायें।

यह काम सन् १९५६ में शुरू हुआ। सन् १९५६ में देश की अन्य संस्थाओं का दौरा करने के बाद तीन छात्राएँ पूर्वी रामगंगा के आसपास के एक सघन-क्षेत्र में बसने गयीं तथा चार छात्राएँ आश्रम में विभिन्न काम की जिम्मेदारियाँ उठाने लगीं।

विनोबाजी के मार्गदर्शन में सर्वोदय का विचार उत्तरोत्तर बढ़ता जा रहा है। संस्था में सीमित रहने से सब कार्यकर्ताओं के मन में उथलपुथल होती रही है कि कहाँ तक इस सीमित दायरे में रहना उचित है। कई बार आश्रम का विसर्जन करने का विचार हुआ, लेकिन किसी भी जिम्मेदार कार्यकर्ता से उसका समर्थन नहीं मिला। आखिर में सन् '५८ में 'चालीसगाँव-सम्मेलन' के समय विनोबाजी ने स्पष्ट इंकार किया कि यह 'पाइनियर' काम है। तुम उसे बन्द नहीं कर सकतीं, चाहो तो उसका रूप बदल सकती हो।

इसके फलस्वरूप काफी हृदय-मंथन और विचार-विनिमय चला। कुछ निराशा भी हुई। आखिर में निश्चय हुआ कि

> बुनियादी और उत्तर बुनियादी शाला के बदले में हम एक 'नई तालीम-परिवार' में परिणित हो जायें। इस परिवार के सदस्य कम-से-कम २३-२५ वर्ष की उम्र तक रहें। शिक्षा पूरी पाने के बाद ये व्यावहारिक रूप में आश्रम और समाज में काम करें। हम यदि समाज में खुद सीधा काम न कर सकें, तो कम-से-कम हम आश्रम की सीमाओं में रह कर उस काम का साधन बन जायें।

सन् '६१ के नये साल से हम उस योजना को प्रारम्भ करना चाहती हैं। कार्यकर्ताओं के व्यक्तिगत साधनों तथा समाज के उत्पादन से मिल कर हम सारे परिवार की खुराक और वस्त्र की व्यवस्था करना चाहती हैं। इस नई व्यवस्था से हम यह आशा करती हैं कि जो मित्र अपने बच्चों को आश्रम में भेजेंगे, विचार समझ कर भेजेंगे तथा किशोर अवस्था में उन पर अनमेल विचार कर विवाह नहीं थोपेंगे। कुछ वर्ष तक समाज में इस काम करने की कठिनाइयों का सामना करने के बाद लड़कियाँ खुद अपनी जिन्दगी के बारे में फैसला करने की शक्ति रख पायेंगी कि उन्हें अपने पुराने समाज में रहना चाहिए कि सर्वोदय-परिवार में तथा उस फैसले को करने के बाद उनमें यह शक्ति रहेगी कि उस फैसले से पैदा होने वाली कठिनाइयों का सामना भी करें। हमारी नई परिवार की स्थापना सन् १९६१ से प्रारम्भ हो रही है।

सम्बन्धित ग्राम-सेवा केन्द्र

हल्दुखाता

सन् १९५४ में हमारी स्नातिका कुमारी सष्टी नेगी और उनके पति श्री मानसिंह रावत, दोनों ने मिल कर गढ़वाल में पदयात्राएँ कीं। बाद में एक सेवा-केन्द्र स्थापित करने का निश्चय किया। उन्होंने तराइ भाबर के बोक्सर आदिवासियों का एक गाँव चुना। गाँववालों ने उन्हें एक कच्ची झोपड़ी रहने को दी। मानसिंहजी ने अपनी यात्राएँ जारी रखीं। सष्टी बहन अकेली अपने दो बच्चों के साथ उन शराबियों तथा जुआरियों के बीच उस खुली झोपड़ी में रह कर बालवाड़ी तथा अन्य पद्धतियों के द्वारा सेवा करती रहीं। मानसिंहजी की पदयात्राएँ खास करके उत्तराखंड में जारी रहीं तथा उनकी इच्छा है कि यदि कोई साथी भाबर के केन्द्र की जिम्मेवारी उठाने को तैयारी होते तो वे उत्तराखण्ड में एक स्थायी केन्द्र खोलते। हाल ही गोचर के शिविर में उनकी पाँच साल की मौन तपस्या के फलस्वरूप चमोली जिले में पूरा समय देने वाले पाँच शान्ति सैनिक निकले।

पर्वतीय नवजीवन मंडल

सन् १९५५ में आश्रम की कार्यकर्त्री विमला बहन नौटियाल और उनके पति टिहरी के पुराने कार्यकर्ता श्री सुन्दरलाल बहुगुणा ने इस संस्था की स्थापना कच्ची झोपड़ी में की। टिहरी की एक किसानी बहन कुछ महीनों तक कौसानी में ट्रेनिंग पाकर उनके साथ हो ली। सन् १९५९ में विमला बहन की दो छोटी बहिनें कौसानी और सेवाग्राम में शिक्षा पाने के बाद

मित्रों से निवेदन

कस्तूरबा महिला उत्थान मंडल, लक्ष्मी आश्रम, कौसानी सन् १९४६ में पूज्य महात्मा गांधी के आशीर्वाद से स्थापित हुआ। उसका मुख्य लक्ष्य लड़कियों की नई तालीम द्वारा सारे पहाड़ी समाज की सेवा करना है। उसका एक पर्व बीत चुका है तथा अभी जगह-जगह पर आश्रम की स्नातिकाएँ पहाड़ के दूर-दूर गाँवों में भिन्न-भिन्न स्वरूपों में काफी कठिनाइयों का सामना करके हिम्मत से काम कर रही हैं।

पहले पहल धनी मित्रों से चन्दा माँग कर, सरकार से, कस्तूरबा और महात्मा-गांधी-स्मारक निधियों से मदद लेकर काम चलता रहा। लेकिन अब जमाना बदल रहा है तथा सन्त विनोबाजी का कहना सही लगता है कि हमें ज्यादा-से-ज्यादा जनाधिकार (जनाधार) पर रहने का प्रयत्न करना चाहिए, सेवक का काम सारे समाज की सहमति पर आधारित होना चाहिए। जनता की मुट्ठी-मुट्ठी से उसका पोषण होना चाहिए। तब मालूम हो जायेगा कि वह सचमुच जनता की एक आवश्यक सेवा करता है, या नहीं और तब वह नम्रता के साथ अपना काम करता रहेगा। इसके साथ-साथ इस वक्त इन दोनों निधियों का निश्चय भी हुआ है कि भविष्य में ये स्वतंत्र संस्थाओं को मदद नहीं देंगी। लेकिन ऐसी उम्मीद करना गलत मालूम होता है कि इस प्रकार की संस्था, जिसमें दूर-दूर की लड़कियाँ पढ़ती हैं, अपना खर्च स्थानीय गाँवों की गरीब जनता से वसूल करें। हमें लगता है कि उनकी बुनियाद ज्यादा विस्तृत करने के लिए हमें मित्राधार की शरण लेनी चाहिए।

इसलिए हम एक 'लक्ष्मी आश्रम मित्र-मण्डल' स्थापित करके अपने पुराने मित्रों और साथियों से तथा आश्रम में जो मित्र समय-समय पर देखने आया करते हैं, निवेदन करना चाहते हैं कि यदि वे इस काम को हमारे पहाड़ी प्रदेश की उन्नति के लिए उपयोगी मानते हों, तो जिस प्रकार से भी वे हमें काम चलाने में मदद दे सकें, उसी प्रकार निम्नलिखित वायदा-पत्र भर कर हमारे पास भेजें।

(१) लक्ष्मी आश्रम के कामों में मेरी सहमति है। मैं चाहता (चाहती) हूँ कि यह काम चलता रहे।

(२) उस काम में योग देने के हेतु से मैं वायदा करता (करती) हूँ कि मैं एक साल में उसको मदद के लिए :–

(अ) मैं.. रुपये का चन्दा भेजा करूँगा (करूँगी)।

(आ) अपने हाथ की कती हुई .. गुंडी सूत भेज दूँगा (दूँगी)।

(ई) अपने मित्रों से मदद दिलवाने में... समय-दान दूँगा (दूँगी)।

—सरला बहन

भूदान-आन्दोलन और राष्ट्रीय सुरक्षा

विगत १० वर्षों से बाबा गाँव-गाँव में घूम रहे हैं और विचारपूर्वक आर्थिक एवं सामाजिक क्रांति के लिए देश को जगा रहे हैं, परन्तु खेद है कि साधारण जन से लेकर बड़े-बड़े नेताओं तक ने आन्दोलन की प्रशंसा करते हुए भी प्रायः काम की दृष्टि से उपेक्षा ही की है। लाखों एकड़ भूमि-प्राप्ति और वितरण होने पर भी देश में अर्थ, धरती के स्वामित्व-विसर्जन की भावना परिपुष्ट नहीं हुई है। कुछ दिनों से चीन-भारत सीमा-विवाद के कारण, राष्ट्रीय खतरे की चर्चाएँ देश की बड़ी-बड़ी राजनैतिक पार्टियाँ बड़े जोरे शोर से कर रही हैं, सरकार भी सीमा-सुरक्षा का भरसक प्रयत्न करने में लाखों, करोड़ों रुपया पानी की तरह बहा रही है, लेकिन बावजूद इतने शोर-सरोक के राष्ट्रीय खतरा आज भी ज्यों का त्यों सामने है, क्योंकि यह खतरा कोई बाहरी खतरा नहीं, बल्कि आन्तरिक खतरा देश की गरीबी, भुखमरी, बेरोजगारी और छूतछात के विचार का है। जब तक इस खतरे से हम देश को नहीं बचाते, तब तक यह थोथे राष्ट्रीय खतरे के नारे व फौज, पुलिस की शक्ति देश को कतई नहीं बचा सकती। इसलिए अब बाबा यह कह रहे हैं कि भूदान-आन्दोलन देश का 'डिफेंस मेजर' है। इसी से देश की रक्षा सम्भव है।

देश की सरकार और कुछ राजनैतिक पार्टियाँ मिल कर यदि देश की भूमिहीनता व साधनहीनता का कोई व्यापक एवं तीव्र कार्यक्रम नहीं उठाती, तो इस राष्ट्रीय खतरे से हम देश को नहीं बचा सकेंगे। आज यही थोड़ा सा अवसर है उनके सामने, जिनको अपने देश की स्वतन्त्रता के प्रति हमदर्दी है कि वे मिल कर देश में आर्थिक एवं सामाजिक क्रान्ति को सफल बनायें और अपने देश तथा लोकतंत्र की इस भीषण खतरे से रक्षा करें। यह विचार हम अपने सोधा-क्षेत्र के कार्यकर्ताओं के निजी अनुभवों के आधार पर समाज के सामने प्रस्तुत कर रहे हैं, ताकि वे इस पर गम्भीरता से विचार कर सकें।

चम्बलघाटी,
शांति-समिति, भिण्ड —महावीरसिंह

"हम गाफिल रहेंगे, तो कमनसीबी होगी"

भगवान की हम पर बड़ी कृपा है कि हम १४ मास से गुजरात प्रान्तीय पदयात्रा के जरिये सातत्य से घूम रहे हैं। कुल आठ जिले का प्रवास पूरा करके अभी हम राजकोट जिले में आये हैं। विनोबाजी के जाने के बाद हमारे प्रान्त में गर्मी पैदा करने में इस यात्रा ने उचित हिस्सा उठाया है।

पदयात्रा में भूदान, सर्वोदय और शान्ति-सेना का कार्य वैचारिक और व्यावहारिक ढंग से हम यथाशक्ति कर रहे हैं। ५-७ लोग हमारे साथ रहते हैं।

पदयात्रा में हमारे देश की परिस्थिति विचित्र-सी दिखती है। साधु-बाबाओं ने भाग्यवाद और नसीबवाद की बात फैलायी है। हमारी सरकार और पक्षवालों ने चुनाव के जरिये या कानून से सारा सवाल हल हो जायगा, यह भ्रम फैलाया है। दो चुनाव के बाद गाँवों में जो पार्टी और सत्ता की कशमकश चली है, इससे जनता आज बेकरार हो रही है। लोकशाही में से श्रद्धा हटाने की पूरी कोशिश हो रही है। इस संक्रान्ति के अवसर पर अगर हम जनता के बीच नहीं घूमेंगे तो ग्रामस्वराज्य की प्रतिष्ठा नहीं होगी। निष्पक्ष और सर्वानुमति से चुनाव कैसे कर सकते हैं, उद्योगों का समाजीकरण कैसे किया जाय, सिनेमा और पोस्टरों का हल क्या हो सकता है, इन प्रश्नों के बारे में गहराई से विचार विनिमय की भूमिका पैदा करने का समय आ चुका है। हम गाफिल रहेंगे तो हमारी कमनसीबी होगी।

कठौदा —हरीश व्यास

उनके साथ हो ली। सिल्यारा में एक बुनियादी शाला गाँव के बच्चों के लिए चलती है। जो लड़कियाँ कृषि कार्य के भार की वजह से दिन में नहीं आ पाती हैं, उनके लिए रात्रिशाला 'हाई बोर्डिंग' के रूप में चलती है। वे शाम की प्रार्थना में हाजिर होकर, आश्रम में सोकर सुबह की प्रार्थना के बाद घर चली जाती हैं। ये छात्राएँ आश्रम में भी रहती हैं।

कार्यकर्ता अपने जीवन के निर्वाह के लिए श्रमाधारित या जनाधारित रहते हैं। वे किसी संचित निधि से अपने निर्वाह का खर्च नहीं लेते हैं। आश्रम के काम के साथ-साथ सुन्दरलालजी का सार्वजनिक काम भी जारी रहा है। मुख्यतः उन्होंने अपनी पट्टी में २२ सहकारी संघों को स्थापना बहुत कठिनाइयों का सामना करके की। ये संघ अब बहुत सफल साबित हुए हैं। अब मजदूरी डेढ़ रुपये रोज के बदले में आजकल कभी-कभी साढ़े चार रुपये रोज तक पहुँचती है। इसके साथ-साथ संगठन शक्ति तथा स्वाभिमान की स्थापना के साथ ही साथ एक आशा दिखाई देती है कि उस पट्टी के लोग धीरे धीरे अपने को प्रचलित भ्रष्टाचार और आतंक से मुक्त कर सकेंगे। इस कार्यक्रम के बल पर शराब-बन्दी का कार्यक्रम भी सफल हो पा रहा है।

माह मई १९६० में विनोबाजी ने सुन्दरलालजी को उत्तराखण्ड शान्ति-सेना के संगठन की जिम्मेवारी सौंप दी है। आश्रम के संचालन का सवाल उठा, तब विमला बहन की छोटी बहन चन्द्रिका और उनके पति हरिजन कार्यकर्ता श्री सुरेन्द्रदत्त भट्ट ने मिल कर विमला बहन के सहारे से आश्रम का संचालन करना स्वीकार किया। तब से सुन्दरलालजी ने उत्तराखण्ड में तीन यात्राएँ कीं तथा हाल ही में पौचार में पहाड़ के रचनात्मक कार्यकर्ताओं का शिविर चलाया।

शान्तिपुरी में बालवाड़ी

सन् १९५७ में श्रीमती नारायणी देवी की यह इच्छा हुई कि वह जनाधार की बुनियाद पर अपनी सेवा करने की ताकत अपनायें। इस हेतु से उन्होंने शान्तिपुरी जाने का निश्चय किया था। लेकिन कई कारणों से वे कुछ समय के बाद गांधी स्मारक निधि की तरफ से वहाँ पर बालवाड़ी चलाने लगीं। वहाँ पर भी अपनी सेवा और प्रेमभाव की वजह से वह लोकप्रिय हो गयी हैं।

रामगंगा सघन क्षेत्र

सन् १९५९ में पूर्वी रामगंगा की दोनों तरफ से आश्रम की तीन छात्राएँ गाँव में श्री हीरसिंहजी कार्की के मार्गदर्शन में काम करने लगीं। जनाधार की ओर बढ़ने का प्रयास हो रहा है। वे रोज बारी-बारी से एक ग्रामीण परिवार में भोजन पाती हैं। इससे ये लोगों के निकट सम्पर्क में आती हैं तथा गृहस्थी शिक्षा व्यावहारिक रूप में दे पाती हैं। इसके साथ सर्वप्रथम उनका ध्यान ग्राम सफाई और आरोग्य की ओर गया। बच्चों के शौचालयों के निर्माण से ग्राम का गन्दा स्वरूप बदल गया। अब घर-घर के सामने तरकारी और फूल की क्यारियाँ खिल रही हैं। बालवाड़ी और एक घण्टे की पाठशाला के साथ-साथ रात्रि-पाठशाला का प्रयास हो रहा है। लेकिन अब तक कई कारणों से वह कोई स्थायी या निश्चित रूप नहीं ले पा रही है। जनता की व्यक्तिगत अभिक्रम-शक्ति को जाग्रत करने के साथ साथ ये गाँववालों के साथ मिल कर स्थानीय समस्याओं को हल करने की कोशिश किया करती हैं।

कुछ महीनों से निर्माण समिति की तरफ से श्री लक्ष्मीचन्दजी भी उस क्षेत्र में बस गये हैं। इसी प्रकार चार गाँवों के आसपास दस गाँवों का एक सघन क्षेत्र लेकर वे एक छोटी-सी "सर्वोदय-योजना" की स्थापना का प्रयास कर रहे हैं, जिसमें लोग अपनी व्यक्तिगत अभिक्रम-शक्ति के द्वारा अपना विकास करने की कोशिश कर, अनिश्चित सरकारी धन और अधिकारियों के बल पर।

ग्रामोद्योग विद्यालय, मासवाड़ी की छात्राएं कम्बर ट्रेनिंग ले रही हैं।

समाचार :

छतरपुर में शिविर

गांधी स्मारक निधि, मध्य प्रदेश शाखा के ग्राम-सेवा-केन्द्रों और तत्त्व-प्रचार-केन्द्रों के कार्यकर्ताओं का एक शिविर २० से २४ दिसम्बर तक गांधी स्मारक भवन, छतरपुर में सानन्द सम्पन्न हुआ। शिविर में सभी कार्यकर्ताओं ने अपने केन्द्रों पर सन् '६० में हुए कार्यों का विस्तार से लेखा जोखा प्रस्तुत किया और नये वर्ष सन् '६१ के लिए निधि की योजनानुसार कार्य के अपने लक्ष्य निर्धारित किये।

शिविर की चर्चाओं में निधि के केन्द्रों पर चल रहे काम को और अधिक गतिशील और तेजस्वी बनाने तथा ग्राम-स्वराज्य की दिशा में दृढ़ता से कार्य करने की सलाह दी गई। सर्वोदय की दृष्टि से प्रदेश की सभी रचनात्मक प्रवृत्तियों के समन्वय के सम्बन्ध में भी चर्चाएं हुईं। शिविर में कुछ केन्द्रों के कार्य की जानकारी के पोस्टर्स और एक छोटी-सी सफाई-प्रदर्शिनी भी लगायी गयी थी। शिविर में १० शिविरार्थियों ने भाग लिया।

शिविरार्थियों ने शिविर-जीवन में प्रतिदिन नगर के विभिन्न मुहल्लों में प्रचारार्थ प्रभात-फेरियाँ निकालीं। पड़ोस के एक किसान के खेत में बाँध पर मिट्टी डालने का श्रमदान भी किया। सभी शिविरार्थी नया उत्साह और प्रेरणा लेकर लौटे।

●

मेरठ

पं० श्री सुन्दरलालजी की अध्यक्षता में लोकसेवकों की एक बैठक में सर्वोदय-कार्यों में प्रगति लाने और सर्वोदय-पात्रों के कार्य को सुचारु रूप से चलाने पर विचार हुआ। श्री चिरञ्जीलालजी चड्ढा को इस कार्य को संगठित रूप से चलाने का कार्य सौंपा गया।

नगर में सर्वोदय-कार्य का प्रचार तथा बापू की आगामी पुण्यतिथि पर सूताञ्जलि के लिए भी एक समिति बनी, जिसके संयोजक श्री राजाराम भाई बनाये गये।

शासन-मुक्ति का संकल्प

जिला कामरूप : गुवाहाटी के चाँदमारी आश्रम में कामरूप जिले के लोकसेवकों का एक सम्मेलन ता० २७ दिसम्बर को हुआ। उसमें २० लोकसेवकों ने भाग लिया। विनोबाजी की पदयात्रा की पूर्वतैयारी कैसे की जाय, इस पर आपसी चर्चा हुई। प्रत्येक पड़ाव पर एक-एक स्थानिक स्वागत-समिति का संगठन करके उनके द्वारा भूदान, संपत्तिदान, साहित्य-प्रचार, ग्रामदान-प्राप्ति तथा प्रत्येक पड़ाव पर कम-से-कम १००० सर्वोदय-पात्र की स्थापना करवाने का निश्चय किया गया। इसके अतिरिक्त गुवाहाटी में शासन-मुक्ति के प्रयोग, निष्पक्ष चुनाव आदि काम करने का भी तय किया गया।

●

खादीग्राम में विनोबा : ग्रामदान-सम्मेलन

ता० २१ जनवरी को विनोबा का पड़ाव श्रमभारती, खादीग्राम (मुंगेर जिला) में रहा। उस दिन यहाँ बिहार राज्य के ग्रामदानी गाँवों के प्रतिनिधियों और कार्यकर्ताओं का एक सम्मेलन हुआ, जिसमें बोलते हुए विनोबा ने कहा कि जिस तरह आग की छोटी-सी चिनगारी घास के बड़े ढेर को भी खाक कर देती है, उसी तरह ग्रामदानी गाँवों में किया हुआ काम का छोटा-सा आरंभ आसपास के सब गाँवों पर और समाज पर असर करेगा। विनोबाजी की तबियत कुछ दिनों से खराब चल रही है। हरारत भी रहती है, खाँसी और जुकाम भी है। इसलिए बोलने में कुछ कठिनाई होती थी। विनोबा ने ग्रामदानी गाँवों के लोगों को आगे सम्बोधित करते हुए कहा :

"ग्रामदान में डरने की कोई बात नहीं है। ग्रामदान का यह अर्थ नहीं है कि गाँव का दान देकर हम सब गाँव से बाहर चले जायें। ग्रामदान का मतलब है कि सब बाँट कर खायें। जो बेजमीन हैं, उन्हें अपनी जमीन से थोड़ा-थोड़ा देकर उन्हें अपने परिवार में लायेंगे, तब गाँव की ताकत बनेगी। दिलों को जोड़ने के लिए नरम दिल की जरूरत होती है। नरम दिल जुड़ेंगे तो ग्रामदान होगा। नरम दिल के लिए दिल में स्नेह चाहिए, वह सख्त न हो। उसके लिए हमने जोत की जमीन में से 'बीघे में कट्ठा' की बात कही है। इस काम को हर कोई उठा सकता है। यह जमीन जिसे वे चाहे दें, अपने मजदूरों को ही दें और उसे अपने परिवार में दाखिल करें। इस प्रकार मालिक और मजदूर एक होंगे, कोई बेजमीन नहीं रहेगा। उसके बाद लोग ग्रामदान की बात कबूल करेंगे। जो ग्रामदान हो चुके हैं, उन्हें हिम्मत रखनी चाहिए और उन ग्रामदानों को नमूने के बनाना चाहिए। सारे बिहार के हर गाँव में 'बीघे में एक कट्ठा' के हिसाब से दान माँगें। आप देखेंगे कि इस प्रकार हजारों ग्रामदान बनेंगे। यह होने ही वाला है।

हमसे एक भाई पूछ रहे थे कि आप जमीन का हिस्सा तो मांगते हैं, और वह मिलता भी है, लेकिन कारखानों का भी हिस्सा मांगते हैं क्या और यदि मांगते हैं तो मिलता भी है क्या? मैं उन्हें कहता हूँ कि किसी मकान का नीचे का हिस्सा अगर गिरता है, तो क्या ऊपर की मंजिल टिकेगी? बाबा सबसे प्रेम करना चाहता है, वह ऊपर वालों पर भी प्रेम करेगा, उनके पास भी जायगा। वे भी ऐसा ही करेंगे। यदि नीचे के लोग इतना कर लेंगे तो उन्हें अपनी मिलकियत बाँटे बिना चारा नहीं है। वे भी अपने कारखाने को समाज का बनायेंगे। मैं विश्वास दिलाता हूँ कि अगर जमीन का मसला हल होता है, तो ऊपर की मंजिल तोड़ने में मैं साथ दूँगा, अगर मैं जिन्दा रहा तो, मैं न रहा तो हमारे साथी करेंगे।"

• • •

तमकुही रोड (देवरिया) में सर्वोदय-आंदोलन

[तमकुही रोड देवरिया जिले का बहुत ही छोटा बाजार है। इसमें ५०० के लगभग घर हैं। यहाँ पर एक इंटर कालेज है, जिसके प्रिंसिपल श्री सुदामा शुक्ल और बाजार के एक प्रमुख चिकित्सक श्री हरिहर प्रसाद पांडेय के सम्मिलित प्रयास के आधार पर इस कस्बे में सर्वोदय-आंदोलन का कार्य बहुत ही प्रेरक एवं व्यवस्थित ढंग से चल रहा है। —सं०]

२९ अगस्त १९५८ को 'सर्वोदय स्वाध्याय मंडल' तमकुही रोड की स्थापना श्री ब्रह्मदेव वाजपेयी के हाथों से हुई। उत्तरप्रदेशीय गांधी स्मारक-निधि के सपर्क में स्वाध्याय-मंडल का कार्यक्रम चलना प्रारंभ हुआ। नियमित रूप से मास में दो बार मंडल के सदस्यों, सहयोगियों की बैठकें हुईं। समय-समय पर विशेष कार्यक्रम गांधी-विनोबा जयंती, सर्वोदय पक्ष आदि चलते रहते हैं। इसके ३७ सदस्य इस समय हैं। यह मुक्त विचार की संस्था है।

सर्वोदय-मण्डल—सर्वोदय-कार्य का संचालन करने के लिये २६ नवम्बर १९६० से इस मण्डल की स्थापना की गयी है। इसके सदस्यों के लिये लोकसेवक के पंचविध निष्ठाओं की मान्यता तथा आदतन खादीधारी होना आवश्यक माना गया है। मण्डल में अभी १२ नियमित सदस्य, ३ विशेष-सदस्य और १ स्थायी निमन्त्रित, इस तरह कुल १६ व्यक्ति हैं। अब से इस क्षेत्र के सर्वोदय-कार्य का संचालन इसी मण्डल के द्वारा होगा।

सर्वोदय-पात्र—२९ अगस्त १९५८ से ही सर्वोदय-पात्र की स्थापना प्रारम्भ कर दी गयी थी। प्रथम और द्वितीय छहमाही, अर्थात् सितम्बर १९५९ तक इनकी संख्या ३५ रही है। तृतीय छहमाही, अर्थात् फरवरी १९६० तक १८ पात्र बढ़कर ५३ हो गये। चतुर्थ छहमाही, अर्थात् १ सितम्बर १९६० तक २३ और पात्र बढ़ गये, अर्थात् कुल ७६ पात्र हो गये। १६ अक्तूबर १९६० को श्री निर्मला बहन की उपस्थिति में द्वितीय वार्षिकोत्सव मनाया गया। १६ अक्तूबर '६० तक उनकी संख्या १०५ हो गयी है। जब तक इनकी संख्या कम थी, तब तक हफ्ते में एक दिन नियमित रूप से इनको इकट्ठा किया जाता था। अब पात्रों के बढ़ जाने से प्रति दिन १-२ सर्वोदय मित्र के द्वारा १८-१८ सर्वोदय-पात्र हफ्ते में ६ दिन इकट्ठे किये जाते हैं। हम यहाँ सर्वोदय-पात्र के द्वारा सघन काम करना चाहते हैं। इसी के माध्यम से सर्वोदय-साहित्य का प्रचार करके सर्वोदय का प्रचार-प्रसार चाहते हैं। सर्वोदय-मित्र पात्र इकट्ठा करने के साथ-साथ सभी को नई पुस्तक देते हैं और पुरानी पुस्तकें वापस लाते हैं। ५०० घरों की यह ग्राम-सभा है। १०५ सर्वोदय-पात्र नियमित रूप से चलने पर घर घर में सर्वोदय का सन्देश पहुँच जायगा। सर्वोदय-पात्र के संस्थापक बड़े ही उत्साह से और भावनापूर्वक पात्रों में अनाज डालते रहते हैं और अपने निश्चित दिन पर सर्वोदय-मित्र को पात्र का अनाज देने को उत्सुक रहते हैं। किसी कारण से सर्वोदय-मित्र अगर नहीं पहुँच पाते, तो उनको उलाहना सुनना पड़ता है और पात्र अनियमित होने लगता है।

सर्वोदय-पात्र से अब तक ३७६ रु० ६२ न० पै० प्राप्त हो चुके हैं, जिसमें से ४९ रु० ८५ न० पै० सर्व सेवा संघ को और ३० रु० जिले का हिस्सा दिया गया है। इतने ही पात्रों के द्वारा इसको प्रेम-क्षेत्र मान कर सघन रूप से काम करने विचार है।

सम्पत्ति-दान—८ सदस्यों ११ सितम्बर, '५९ को 'विनोबा जयन्ती' के अवसर पर सम्पत्ति-दान का संकल्प किया गया। ६ सदस्यों ने दूने मूल्य की खादी खरीद कर अपना संकल्प पूरा किया। ६ सदस्यों से १२० रु० नकद प्राप्त हुए, जिनमें से ७० रु० की एक अल्मारी बनवायी गयी और ५० रु० की पुस्तकें मँगायी गयीं। ११ सितम्बर '६० को 'विनोबा जयन्ती' के अवसर पर २२ व्यक्तियों ने सम्पत्ति-दान में हिस्सा लिया, जिसमें कुल ५८४ रु० २८ न० पै० का संकल्प हुआ। इसमें से १२ व्यक्ति अपने संकल्प के दूने मूल्य की खादी खरीदेंगे। १० व्यक्तियों के द्वारा ४२५ रु० ४० न० पै० नकद प्राप्त होगा, जो यहाँ के सर्वोदय तत्त्व-प्रचार के काम में लगाया जायेगा। सबका विचार है कि एक आधार विचार में सर्वोदयी कार्यकर्ता को निर्वाह वेतन दिया जायेगा और उसके द्वारा यहाँ के सारे सर्वोदय-कार्य का संचालन होगा, जिससे काम में कुछ और तेज आयेगा।

सूतांजलि—पिछले 'सर्वोदय-दिवस' पर सदस्यों के द्वारा ७ गुण्डी सूत सूतांजलि के रूप में प्राप्त हुआ। इस साल इसको और बढ़ाने का विचार और प्रयत्न किया जा रहा है।

ग्राम-सेवा कार्य—स्वाध्याय मण्डल की स्थापना के बाद सबके विचार से नजदीक के सेवरही टोले पर ग्राम सेवा कार्य प्रारम्भ किया गया। इसके द्वारा गाँव की सफाई, गाँव का सर्वे, सार्वजनिक स्थान का निर्माण एवं रात्रि-पाठशाला का सफल आयोजन किया गया। रात्रि-पाठशाला में १०० व्यक्ति साक्षर हुए।

सर्वोदय 'स्टाल'—विकास-विभाग एवं कृषि-विकास के स्थानीय मेले में सर्वोदय-स्टाल दुकान का दो दिन संचालन किया गया। 'स्टाल' में मुख्यतः खादी के कपड़े और ग्रामोद्योगी चीजें रखी गयी थीं। सामान बेचने के लिये कोई दुकानदार नहीं था। प्रारम्भ के दो-तीन घंटे में बिना दुकानदार के दुकान का उद्देश्य नहीं समझ सकने के कारण और नई चीज होने के कारण ११ रु० ७० न० पै० के मूल्य का सामान नहीं प्राप्त हो सका। पर बाद में फाटक पर 'स्टाल' के विचार को समझा देने से और नैतिक भावनाओं के आरोपण से फिर वैसी घटना नहीं घटी और अन्त तक स्टाल सफलतापूर्वक चला। इसके द्वारा नैतिक मूल्यों के स्थापना में बड़ी मदद मिलती है।

यहाँ के सभी सदस्य अपना-अपना व्यापार एवं नौकरी आदि करते हुए बचे हुए समय में सर्वोदय का काम स्वान्तः-सुखाय समाज-सेवा के द्वारा ईश्वर भक्ति मान कर करते हैं।

—हरिहरप्रसाद पांडेय, संयोजक
सर्वोदय मण्डल, तमकुही रोड
जि० देवरिया, पो० सेवरही

•

बेराई का असर : दो नये ग्रामदान

ता० २० जनवरी को विनोबाजी बिहार के प्रसिद्ध ग्रामदानी गाँव बेराई पहुँचे। यहाँ दो और गाँवों के ग्रामदान की घोषणा बाबा के आगमन पर हुई —अद्रास और सज्जनपुरा। दोनों गाँव बेराई के पास हैं।

भिन्न प्रदेशों के समाचार

हमारे कार्यकर्ता श्री पी० के० पणिक्कर, जो पुरमेरी ग्रामदानी गाँव में काम करते थे, अब भूमि-वितरण के लिए निकल पड़े हैं। केरल सर्वोदय-मंडल के संयोजक श्री रामजी भाई सुन्दरदास जब इन्दौर में बाबा से मिले, तो बाबा ने भूमि-वितरण के काम को गति देने के लिए लाम सुझाया था।

केरल

केरल सर्वोदय-सम्मेलन : केरल में एक महत्त्व की बात यह हुई कि गत नवंबर में ता० ९ से ११ तक, तीन दिन का सेमिनार और दो दिन का सम्मेलन हुआ, जिसमें सर्वश्री शंकरराव देव, केलप्पन, इकबाल बारियर, ए० के० कुमारन्, जनार्दनन् पिल्ले, सत्यनजी, त्रिचुर बेसिक ट्रेनिंग कालेज के प्रिन्सिपल शंकर पिल्ले, राधाकृष्ण मेनन, पी० गोपीनाथन् नायर, श्रीमती कमला मनायन, रेवरेण्ड के० के चांडी, आर० आर० दैवान आदि उपस्थित थे। करीब ४०० कार्यकर्ता इस संमेलन में आये थे। शिविर में जिन महत्त्वपूर्ण विषयों पर चर्चा हुई, उनके आधार पर संमेलन में कुछ प्रस्ताव स्वीकृत हुए।

भूदान : भूदान-आन्दोलन का स्वाभाविक व क्रांतिकारी विकास तो ग्रामदान ही था, पर जब से शक्ति ग्रामदान में लगी, तब से भूदान का और कम होता गया। प्राप्त भूमि के बँटवारे की बात भी गौण हो गयी। अब अगले छह महीने के अंदर भूदान में मिली जमीन जितनी भी बाँटने लायक हो, सब बाँट देने का तय हुआ।

विनोबाजी की केरल-यात्रा के समय ग्रामदान का काम जोर से चला था। डेढ़ मास के अन्दर ५०० से ज्यादा ग्रामदान मिले। ग्रामदान के कामों को गति देने के लिए एक कमेटी बनाने का तय हुआ। यह कमेटी केरल के बाहर ग्रामदानी क्षेत्रों में जाकर काम का निरीक्षण करके अनुभव के आधार पर केरल में सुव्यवस्थित कार्यक्रम चलायेगी, सरकार से ग्रामदान का कानून बनवाने की कार्रवाई करेगी और ग्रामदानी गाँवों में काम करने वालों के लिए शिविर चलायेगी।

नशाबंदी : गांधीजी ने कहा था, "अगर एक घंटे के लिए भी मैं भारत का सर्वाधिकारी बन जाऊँ, तो मैं सबसे पहले शराब की सभी दुकानें किसी भी मुआवजे के बिना बंद करूँगा।" केरल के श्री नारायण गुरु का नारा था, "ताड़ी बनाओ मत, बेचो मत, पीओ मत।" केरल सरकार ने तो एक तरफ शराबबंदी का कानून लागू किया है, दूसरी तरफ—त्रावणकोर कोचिन में—शराब की नदियाँ बहायी हैं। शराब की दुकानों से मिलने वाली आय का मोह रख कर नैतिक बातों को भूलना नहीं चाहिए। शराबबंदी से होने वाले नुकसान के एवज में ही बिक्री-कर लगाया गया था। सरकार की आय को बढ़ाने के और भी उपाय हो सकते हैं। पाँच साल में शराबबंदी का कानून लागू करने के लिए जरूरी वातावरण बनाने का निर्णय सर्वोदय-कार्यकर्ताओं ने लिया है। शराब-बंदी तभी अमल में आयेगी, जब पार्टी-भेद को भूल कर सब एक होकर काम करेंगे।

नई तालीम : "केरल में नई तालीम से कोई लाभ नहीं, उलटे नुकसान ही है," ऐसी रिपोर्ट केरल सरकार की एस्टिमेट कमेटी ने अखबारों में दी है। पर शरीर-श्रम की प्रतिष्ठा बढ़ाते हुए सत्य, प्रेम, करुणा की राह पर सभी प्रश्नों का वैज्ञानिक ढंग से हल करने वाली नई तालीम ही इस देश में सामाजिक, आर्थिक व आध्यात्मिक उन्नति के लिए उपयुक्त है। वास्तव में शराबबंदी, नई तालीम, खादी-ग्रामोद्योग आदि के बारे में केरल सरकार का रुख गांधीजी के आदर्शों से दूर है। हम आशा करते हैं कि सरकार गांधीजी के आदर्शों व कार्यक्रमों को अपनायेगी।

केरल सर्वोदय-मंडल ने शान्ति-सैनिकों के लिए शिक्षण-शिविर चलाने का भी तय किया है। "भूदान काहलम" मलयालम साप्ताहिक जनवरी से "सर्वोदय" के नाम से निकलेगा, जो पाक्षिक होगा।

सर्वोदय पात्र, सम्पत्ति-दान, भूदान, ग्रामदान आदि के साथ-साथ पंचायत के चुनाव आदि तात्कालिक कार्यों पर भी हम सर्वोदय दृष्टि से प्रकाश डालें। पंचायत के चुनाव पक्ष-निरपेक्ष होने चाहिए। उसके लिये गाँव वालों को समझाना अत्यन्त आवश्यक है।

विद्यार्थियों व अध्यापकों के जरिए शिक्षण-संस्थाओं में सर्वोदय-विचार का प्रचार होना अनिवार्य है। इसलिए विद्यार्थियों के बीच यह कार्यक्रम खास तौर से उठाने का तय हुआ।

तिरुनावाय के मेले के संबंध में तवनूर में तीन बार सभाएँ हुईं, जिनमें कुछ महत्त्वपूर्ण निर्णय लिये गये। नडुवण्णूर में एक दिन का सम्मेलन हुआ, जिसमें नशाबंदी की ही मुख्य चर्चा हुई। बडगरा में नशाबंदी का एक सम्मेलन गत ७ जनवरी को हुआ। आलुवोरी में नशाबंदी का काम अभी चल रहा है।

केरल गांधी स्मारक निधि के कार्यकर्ताओं का तीन दिन का सेमिनार मलमपुझा (पालघाट) में हुआ। श्री आर. आर. दिवाकर, श्री जी. रामचन्द्रन आदि विशिष्ट अतिथि उपस्थित थे।

तवनूर में एक शिशु विहार शुरू हुआ।

तिरुनावाय में तीन गुफाएँ मिली हैं। तवनूर, तपस्वियों का गाँव था, ऐसा माना जाता है। ये गुफाएँ शान्ति-कुटीर की जमीन से निकली हैं। यहाँ खोदने पर पुरानी गुफाएँ निकलती हैं। देखने के लिए दूर-दूर से लोग आते रहते हैं।

तवनूर (केरल) —एस० गोविन्दन्

जिला सर्वोदय-मंडल, रत्नागिरि

महाराष्ट्र

जिला सर्वोदय-मंडल की सभा ता० १९ दिसम्बर को वेंगुर्ले में हुई। इस वर्ष के संयोजक के रूप में श्री माधवराव चव्हाण नियुक्त किये गये। आन्दोलन की आर्थिक गतिविधि का निरीक्षण करने के लिए एक अर्थ समिति की योजना हुई।

सघन क्षेत्र में इस वर्ष २ हजार सर्वोदय-पात्र निरन्तर चलते रहें, इसके लिए भी प्रयत्न करना तय हुआ। ग्रामदानी गाँवों में २० अम्बर चरखे और चलाने की बात भी तय हुई।

एक साल के दरमियान आन्दोलन में संबद्ध जो कार्य हुआ, उसे दो विभागों में बाँटा जा सकता है (१) प्रचार कार्यक्रमों के जरिये व्यापक विचार प्रचार और (२) ग्रामदानी गाँवों का नवनिर्माण-कार्य।

जिले में २० लोक-सेवक हैं। इनमें अप्पासाहब पटवर्धन जैसे वयोवृद्ध कार्यकर्ताओं के साथ-साथ तरुण कार्यकर्ता भी हैं।

ग्रामदानी गाँवों में, विशेषतया कुडाल तालुका के माणगाँव तथा सावंतवाड़ी तालुका के थोरल्ये गाँव में सघन क्षेत्र की दृष्टि से अच्छा कार्य हो रहा है। आसपास के गाँवों में व्यापक विचार प्रचार करने की दृष्टि से शिविर तथा एक सप्तदिनीय पदयात्रा का कार्यक्रम हुआ, जिसमें श्री वल्लभस्वामी आदि का मार्गदर्शन प्राप्त हुआ। इस पदयात्रा में रत्नागिरि के ५ तथा कोल्हापुर के २ गाँवों ने ग्रामदान का संकल्प जाहिर किया।

जिले का सारा आन्दोलन किसी भी संस्था, निधि या व्यक्ति की मदद पर न चल कर स्वावलम्बन, सर्वोदय-पात्रों के आधार पर चले, इसके लिए श्री अप्पासाहब की राय से तय हुआ कि गोपुरी आश्रम को आन्दोलन का केन्द्र मान कर काम किया जाय।

जिले में भूदान में मिली कुल जमीन ५५०० एकड़ है। २५०० एकड़ जमीन का बँटवारा दो वर्ष पहले ही हो चुका था। शेष जमीन का बँटवारा यथाशीघ्र करने की दृष्टि से दस स्थानों पर बँटवारे का आयोजन किया गया।

जिले में सर्वोदय विचार का वातावरण निरन्तर रहे, इस दृष्टि से "नवप्रकाश" मराठी साप्ताहिक की स्थापना तीन वर्ष पहले ही हुई है।

जिले में १५० गाँवों का ग्रामदान हुआ था, जिनमें से ३० गाँवों में पुनर्निर्माण-कार्य चल रहा है। ग्रामदानी गाँवों में कुल ९ कार्यकर्ता काम कर रहे हैं। कुछ ग्रामसमूही क्षेत्र ऐसा है, जहाँ प्रयत्न करने से ५ साल के अन्दर-अन्दर अधिक-से-अधिक वस्त्र-स्वावलम्बन हो, ऐसी योजना बनी है। इस क्षेत्र में ५ अम्बर-परिश्रमालय में इस वक्त २८ चरखे चल रहे हैं।

माणगाँव तालुका में कई जगह 'समाज-कल्याण बोर्ड' की मदद से स्त्री-बच्चों के विकास की तीन वर्षीय योजना बनायी गयी है। ग्रामदानी गाँव 'ओरलिये' की एक पंद्रह वर्षीय विकास योजना बनी है।

जिला धुलिया :

प्रो० ठाकुरदास बंग के पत्र के अनुसार गत दिसम्बर में ४० मील की पदयात्रा हुई। ३ केन्द्रों का निरीक्षण कर उनके काम में मदद पहुँचायी। ५६१ सर्वोदय-पात्रों की स्थापना हुई।

जिला अहमदनगर :

जिला सर्वोदय-मण्डल, अहमदनगर के सन् '६० के कार्य विवरण के अनुसार पाथर्डी तालुके में जुलाई में ४ कार्यकर्ताओं ने १२ गाँवों में ४० मील की पदयात्रा की।

३ परिवारों में २ एकड़ भूमि का वितरण हुआ। कोपरगाँव में महाशिवरात्रि के समय १०५ रुपये की साहित्य-बिक्री हुई। अहमदनगर और श्रीगोंदा ग्राम में करीब ३०० सर्वोदय-पात्र चल रहे हैं। इन पात्रों से ३२३ रुपये ६० नये पैसे प्राप्त हुए। इसका छठा भाग सर्व सेवा संघ को भेजा गया। जिले में गत वर्ष १३,१७० गुण्डियाँ सूताञ्जलि में प्राप्त हुईं।

जिला सर्वोदय-मंडल, रोहतक

पंजाब

माह दिसम्बर में सर्वोदय-पात्र से ३३ रुपये ५४ नये पैसे, सम्पत्ति दान से ८६ रुपये ६२ नये पैसे, अंकित दान से ५१ रुपये तथा साहित्य बिक्री द्वारा करीब ७३ रुपये प्राप्त हुए। पत्र-पत्रिकाओं के ३ ग्राहक बनाये गये।

११ दिसम्बर से २१ दिसम्बर तक श्री श्रीकान्त आपटे द्वारा जो विभिन्न कार्यक्रम हुए, उनमें महिम में महिला की सभा, विद्यार्थियों तथा अध्यापकों की सभाएँ उल्लेखनीय हैं।

सन् '६० में जिला सर्वोदय मंडल की कुल आय ५८४६ रुपये २७ नये पैसे और व्यय ५६२० रु. ३० नये पैसे हुआ।

रोहतक में २१ दिसम्बर को लोकसेवकों की सभा हुई। इसमें यह प्रस्ताव पारित किया गया कि नगरपालिकाओं, ग्राम-पंचायतों, धार्मिक तथा राजनैतिक संस्थाओं को प्रार्थना की जाय कि वे पोस्टर आन्दोलन में अपना योग दें।

कानूनन शराबबन्दी होने के बावजूद छिपे तौर पर जो शराब चलती है, उसके निवारण के लिए नागरिकों से अपील की गयी कि वे लोग इस कार्य में पूरी मदद दें।

नव-निर्वाचित जिला-प्रतिनिधियों की नामावली

उत्तर प्रदेश

जिला	प्रतिनिधियों के नाम व पते
(१) मथुरा	श्री जयन्ती प्रसाद, सर्वोदय आश्रम, प्र० का० सादाबाद, मथुरा
(२) बदायूँ	श्री त्रिवेणी सहाय, श्रीगांधी सेवासदन, आसफपुर, बदायूं
(३) फतेहपुर	श्री छेदासिंह, जिला सर्वोदय कार्यालय, फतेहपुर
(४) लखीमपुर खीरी	श्री शिवदत्त मिश्र, हाथीपुर, लखीमपुर खीरी
(५) कानपुर	श्री ब्रजलाल मिश्र, जिला भूदान-समिति, तिलक हाल, कानपुर
(६) मेरठ	श्री मास्टर सुन्दरलाल, जिला सर्वोदय-मंडल, मेरठ
(७) बाराबंकी	श्री रामकिशोर त्रिपाठी, जिला सर्वोदय-कार्यालय, बाराबंकी
(८) बहराइच	श्री विद्याप्रसाद वर्मा वैद्य, ग्राम-मिट्ठीपुरवा, बहराइच
(९) इलाहाबाद	श्री सुरेशराम भाई, सर्वोदय-कार्यालय, ६७ बी, शाहगंज बाग, इलाहाबाद
(१०) पीलीभीत	श्री रामकरन त्रिपाठी, जिला सर्वोदय मंडल, पीलीभीत
(११) उन्नाव	श्री राजनारायण भाई, स्वराज्य आश्रम, खादी मंडार, उन्नाव
(१२) देवरिया	श्री मथुरा प्रसाद शाही, सर्वोदय-मंडल, देवरिया
(१३) मिर्जापुर	श्री बंगाली प्रसाद सिंह, जिला सर्वोदय-मडल, दुद्धी, मिर्जापुर

राजस्थान

जिला	प्रतिनिधियों के नाम व पते
(१) अजमेर	श्री यज्ञदत्त उपाध्याय, आदर्शनगर, अजमेर
(२) नागौर	श्री बद्रीप्रसाद स्वामी, नागौर जिला सर्वोदय मंडल, मकराना
(३) डूंगरपुर	श्री माणिक्यलाल विद्यार्थी, जिला सर्वोदय मंडल, डूंगरपुर
(४) टोंक	श्री मुरलीधर चतुर्वेदी, जिला खादी ग्रामोद्योग समिति, पो० टोंक
(५) झुंझनू	श्री भवानी भाई, मार्फत शान्ति सैनिक चंबलघाटीनाह (आगरा)
(६) सिरोही	श्री देवीचंद सागरमल, शिवगंज, पो० एरनपुरा
(७) भरतपुर	श्री देवकीनंदनजी वैद्य, श्री रामऔषधालय, सेठ का मठ, भरतपुर
(८) चुरू	श्री बनवारीलालजी, वेदी, गांधी आश्रम, सुजानगढ़
(९) जयपुर	श्री जवाहरलाल जैन, खादी ग्रामोद्योग आयोग, हीराबाग, सवाई रामसिंह रोड, जयपुर
(१०) अलवर	श्री हजारीलालजी शर्मा, किशनगढ़ (अलवर)
(११) जोधपुर	श्री बद्रीनारायणजी मोणोत, खादी सघ, खादी मंडार, जोधपुर

मध्यप्रदेश

जिला	प्रतिनिधियों के नाम व पते
(१) नरसिंहपुर	श्री श्रीनाथजी भट्ट
(२) शाजापुर	श्री वल्लभ वकील, अशोक भवन, सोमवारिया, शाजापुर
(३) सागर	श्री विजयभाई, सर्वोदय कार्यालय, देवरी, सागर
(४) होशंगाबाद	श्री हरिदास मंजुल, होशंगाबाद जिला सर्वोदय मंडल पो० इटारसी
(५) मुरैना	श्री लखमीचन्द्र वैद्य, जिला सर्वोदय मंडल, मुरैना
(६) सिवनी	श्री सत्यनारायण शर्मा, सर्वोदय कार्यालय, सिवनी
(७) पन्ना	श्री गोविन्द प्रसाद खरे, मदला-बेनीसागर, पन्ना

बंगाल

जिला	प्रतिनिधियों के नाम व पते
(१) चौबीस परगना	श्री श्रीकृष्णकांत चक्रवर्ती, मार्फत-खादी मंदिर, पो० डायमंड हर[illegible]
(२) बांकुड़ा	श्री मोहनी मोहनराय, ग्राम-नारायनपुर, पो० इन्दनारायनपुर
(३) मुर्शिदाबाद	श्री अहिभूषण मुखर्जी, ग्राम-पो० केदार चांदपुर
(४) प० दिनाजपुर	श्री डा० हेमचन्द्र सिन्हा, ग्राम-गौरीपुर, पो० कालियागंज
(५) वीरभूम	श्री सन्ध्यारानी सिंह, सर्वोदय आश्रम, जाजीग्राम, वीरभूम

बिहार

जिला	प्रतिनिधियों के नाम व पते
(१) राँची	श्री योगेन्द्र सिंह, जिला सर्वोदय-मंडल, राँची
(२) पूर्णिया	श्री वैद्यनाथ प्रसाद चौधरी, सर्वोदय आश्रम, पो० रानीपतरा (पूर्णिया)
(३) धनबाद	श्री रामनरेश सिंह, बि० खा० ग्रा० संघ, झरिया (धनबाद)
(४) हजारीबाग	श्री श्यामसुन्दर प्रसाद, बिहार सर्वोदय मडल, कदम कुंआँ, पटना

महाराष्ट्र

जिला	प्रतिनिधियों के नाम व पते
(१) बुल्ढाणा	श्री नारायणराव बखरे, जिला सर्वोदय-मंडल कार्यालय, शान्तावर्ष, पो० मुनगाव
(२) नागपुर	श्री वसंत गाडे, सर्वोदय-कार्यालय, अभ्यंकर भवन, सुभाष रोड, नागपुर-२
(३) पूना	श्री गायत्रीदेवी चिंचलीकर, सीताराम बाग, नारायणपेठ, पूना-२
(४) अहमदनगर	श्री रा० वि० पाटणकर, सर्वोदय केन्द्र, राजूर, ता० अकोले

असम

जिला	प्रतिनिधियों के नाम व पते
(१) जलपाईगुड़ी	श्री रासालचंद्र दे, जिला सर्वोदय-मंडल, जलपाईगुड़ी
(२) दरंग	श्री हेमनेत्र बरा, सर्वोदय उद्योग-केन्द्र, पो० केतकीबारी
(३) कामरूप	श्री खगेश्वर भूइयाँ, असम सर्वोदय-मंडल, चांदमारी, गुवाहाटी

आन्ध्र

जिला	प्रतिनिधियों के नाम व पते
(१) महबूबनगर	श्री भिक्षापति रेड्डी, सर्वोदय-कार्यालय, नागर, करनूल
(२) नेल्लोर	श्री देवता कुमारस्वामी

उत्कल

जिला	प्रतिनिधियों के नाम व पते
(१) सुन्दरगढ़	श्री भजनचन्द्र माहतो, ग्राम-मोगरा, पो० कुलीरोस
(२) सम्बलपुर	श्री मदनमोहन साहू, उड़ीसा भूदानयज्ञ-समिति, पो० भुवनेश्वर
(३) केऊंझर	श्री कीर्तन बिहारी महान्ती, आनन्दपुर, केऊंझर

केरल

जिला	प्रतिनिधियों के नाम व पते
(१) त्रिवेन्द्रम	श्री जनार्दन पिल्ले, गांधी स्मारक निधि, त्रिवेन्द्रम

तमिलनाड

जिला	प्रतिनिधियों के नाम व पते
(१) कन्याकुमारी	श्री तिरुवो कुमार दास, कस्तूरबा-केन्द्र पालकोड, पो० कुमारकियारहम

पंजाब-पेप्सू

जिला	प्रतिनिधियों के नाम व पते
(१) गुड़गाँव	श्री वीरदेव कपूर, क्वार्टर नं० २५ बी, नजदीक रेलवे गोदाम, रेवाड़ी
(२) करनाल	श्री उदयचन्द आचार्य, खादी विद्यालय, समल्खाँ (करनाल)
(३) अमृतसर	श्री बख्तावर सिंह, जिला सर्वोदय मंडल, अमृतसर
(४) होशियारपुर	श्री भगवन्त प्रकाश, मार्फत गांधी खद्दर भंडार, होशियारपुर
(५) लुधियाना	श्री सरदार उजागर सिंह, जिला सर्वोदय कार्यालय, लुधियाना

गुजरात

जिला	प्रतिनिधियों के नाम व पते
(१) महेसाणा	श्री गोपालदास पटेल

हिमाचल प्रदेश

जिला	प्रतिनिधियों के नाम व पते
(१) मण्डी	श्री प्यारेलाल शर्मा, सर्वोदय-कार्यालय, ७० माल रोड, शिमला

उत्तर-प्रदेश

जिला मथुरा :

सर्वोदय आश्रम, सादाबाद के संचालक श्री जयंती प्रसादजी के पत्र के अनुसार कस्बा सादाबाद में २ अक्तूबर, '६० को ३५ घरों में सर्वोदय-पात्र रखवाये गये, जो दिसंबर तक ५० हो गये हैं। दिसम्बर, '६० तक इन ५० पात्रों से ६१ रुपये ८१ नये पैसे संग्रहित हुए तथा संपत्ति-दान से दिसम्बर में ५० रुपये प्राप्त हुए। इन दोनों रकमों का पचास प्रतिशत सर्व सेवा संघ को भेजा गया। सर्वोदय-पात्र हर घर में रखे जायँ, इस दृष्टि से कार्य चल रहा है। सादाबाद तहसील में ३० जनवरी से एक पदयात्रा प्रारम्भ होगी, जो सतत १ वर्ष तक चलेगी।

जिला फैजाबाद :

सर्वोदय-मण्डल, मीटी के संयोजक की रिपोर्ट के अनुसार मण्डल के अंतर्गत ग्राम-पंचायतों के चुनाव में काफी तनाव हो गया था। इसे कम कर जनता में आपसी सद्भाव बनाये रखने का प्रयास चला।

गुजरात

जिला बड़ौदा

बड़ौदा जिला सर्वोदय-मंडल के १९६० के वार्षिक विवरण के अनुसार जिले में १० प्राथमिक सर्वोदय-मण्डलों की रचना की गयी। जिले में १० लोकसेवक हैं।

सर्वोदय-मेले का आयोजन नर्मदा नदी के तट पर स्थित करनाली में किया गया। इसमें एक प्रदर्शनी का भी आयोजन किया गया था। जिले के विभिन्न स्थानों से १२८० गुंडियाँ प्राप्त हुईं।

२ अक्तूबर का कार्यक्रम बड़ौदा शहर तथा अन्य क्षेत्रों में भी चला। सांढासाल सर्वोदय-क्षेत्र में दो शिविर हुए।

बड़ौदा को सर्वोदय नगर बनाने की दृष्टि से भी कुछ कार्य बड़ौदा नगर में चले। २ अक्तूबर को 'चरखा-जयंती सप्ताह' मनाया गया। एक दवाखाने का भी उद्घाटन हुआ। "भूमिपुत्र" के ग्राहक बनाने तथा नागरिकों से संपर्क का कार्य चला है।

जिला बाराबंकी

दिसंबर महीने में ९ दाताओं से करीब ७८ बीघा २ बिस्वा भूमि प्राप्त हुई तथा करीब १५ बीघा ९ बिस्वा भूमि का वितरण हुआ। १० सर्वोदय-पात्र रखे गये।

अशोभनीय पोस्टरों के खिलाफ बढ़ते हुए जनमत का प्रवाह

अशोभनीय पोस्टरों का निर्माण व प्रचार बन्द हो

इलाहाबाद के छात्रों और नवयुवकों की एक सभा में शुक्रवार, ता० २० जनवरी १९६१ को निम्नलिखित प्रस्ताव सर्वसम्मति से पारित किये गये :

फिल्म-व्यवसाय सम्बन्धी प्रस्ताव

इलाहाबाद के छात्रों और नवयुवकों की यह सभा इस बात पर अपना बहुत खेद और चिन्ता प्रगट करती है कि देश में बनने वाली फिल्मों के स्वरूप और तथ्य में निरन्तर गिरावट आ रही है और इनके प्रचार के लिए जो विज्ञापन तथा पोस्टर बनाये जाते हैं, वे भी अश्लील तथा अशोभनीय होते हैं। ये चीजें नवयुवकों और युवतियों की कोमल तथा निर्दोष भावनाओं का दुरुपयोग करते हैं और उनका ध्यान एवं चिन्तन उच्च पराक्रम और सदाचारी जीवन के प्रति आकर्षित करने के बजाय, उनको गलत रास्तों पर और भयानक आदतों की ओर उत्तेजित करते हैं। इस कुप्रवृत्ति के कारण देश भर के नवयुवकों के चरित्र का बड़ा हनन हो रहा है और इससे न केवल राष्ट्रीय प्रगति में बाधा पहुँचेगी, बल्कि उसकी आजादी भी खतरे में पड़ जायेगी। इसलिये यह सभा फिल्म-व्यवसाय से अनुरोध करती है कि इस भयानकता की तरफ गम्भीरतापूर्वक विचार करें और फिल्म-निर्माण और उनके विज्ञान की सारी पद्धतियों में ऐसे मौलिक और दूरगामी परिवर्तन और सुधार करें, ताकि इनका नवयुवकों के ऊपर स्वस्थ असर पड़े और उनके बौद्धिक तथा नैतिक उत्थान और शिक्षण में सहायक हों।

सिनेमा-मालिकों और महा-पालिका सम्बन्धी प्रस्ताव

इलाहाबाद के छात्रों और नवयुवकों की यह सभा इस बात पर अपना दुःख प्रगट करती है कि नगर की दीवारों पर सिनेमा के जो पोस्टर और विज्ञापन लगे हुए हैं, वे अधिकांश में बहुत अशोभनीय हैं। इनके कारण हमारे युवकों, छात्रों और बालकों के दिल व दिमाग पर खराब संस्कार पड़ते जाते हैं और वे गलत रास्ते पर और कुमार्ग की ओर बहक रहे हैं। यह सभा इलाहाबाद के सिनेमा-मालिकों से अनुरोध करती है कि इस भयानकता की तरफ अपना ध्यान दें और नगर की दीवालों से अशोभनीय पोस्टर हटा लें। और आगे के लिए भी लगाना, लगवाना बन्द कर दें। साथ, यह सभा इलाहाबाद की महापालिका से निवेदन करती है कि इस मामले में सावधानी बरते और ऐसा उपाय करे कि अशोभनीय पोस्टरों और चित्रों से नगर को मुक्ति मिले।

प्रान्तीय और केन्द्रीय सरकार सम्बन्धी प्रस्ताव

इलाहाबाद के छात्रों, नवयुवकों की यह सभा प्रान्तीय और केन्द्रीय सरकारों का ध्यान इस दुःखद बात की तरफ खींचना चाहती है कि हमारे देश में बनने वाली फिल्मों का स्तर लगातार गिरता जा रहा है और उनके सम्बन्ध में जिस अश्लील तथा अशोभनीय विज्ञापन का प्रचार देश भर में किया जाता है, उनसे भी बड़ा अनर्थ हो रहा है। इस बढ़ती हुई भयानकता के कारण युवकों और छात्रों के चरित्र-बल और इच्छा-शक्ति पर सतत चोट लग रही है और राष्ट्र की स्वाधीनता और प्रजातन्त्र की सुरक्षाओं की बुनियादों पर भी आघात पहुँच रहा है, इसलिए यह सभा भारत सरकार और उत्तर प्रदेश सरकार से आग्रह करती है कि वे परिस्थिति की गंभीरता के प्रति जागृत होकर अहितकर फिल्मों और उनके अशोभनीय पोस्टरों का निर्माण बन्द करें।

●

बर्मा में भी अशोभनीय पोस्टरों के खिलाफ आवाज

श्री यशपालजी, संपादक 'जीवन साहित्य' को रंगून से उनके मित्र डा० ओम् प्रकाशजी ने अपने ८ जनवरी के पत्र में लिखा है कि बर्मा में भी अशोभनीय पोस्टरों के खिलाफ आन्दोलन छेड़ा जाय।

पत्र इस प्रकार है :

"२१ दिसम्बर '६० से १ जनवरी '६१ तक माण्डले में आर्य-सम्मेलन हुआ। अध्यक्ष पूज्य श्री आनन्द स्वामीजी थे। १३ नगरों से ५४ प्रतिनिधि आये। उसमें कई उपयोगी प्रस्ताव पारित हुए। एक प्रस्ताव सिनेमा के संबंध में था, जो इस प्रकार है :

युवक और युवतियों में सिनेमा द्वारा जो भ्रष्टाचार बढ़ने में प्रेरणा मिलती है, उसको ध्यान में रखते हुए यह सम्मेलन भारत तथा बर्मा के फिल्म सेंसर-बोर्ड से प्रार्थना करता है कि वह इस दिशा में अधिक जागरूक रहे तथा यौन-प्रधान फिल्मों और अशोभनीय पोस्टरों का का प्रदर्शन बंद करवायें। साथ ही जनता और संस्थाओं से प्रार्थना करता है कि अश्लील चित्रों, अशोभनीय पोस्टरों, अश्लील गीतों तथा साहित्य के विरोध में लोकमत स्थापित करें।"

सरकार अशोभनीय पोस्टरों पर पाबन्दी लगाये

आर्य समाज, फिरोजपुर छावनी के १ जनवरी के साप्ताहिक सत्संग में पारित किया गया प्रस्ताव इस प्रकार है :

"आर्य समाज, लुधियाना रोड, फिरोजपुर छावनी की यह सभा आम स्थानों पर स्त्रियों के नग्न तथा दूसरे अश्लील चित्रों और तसवीरों को बुरी दृष्टि से देखती है। यह हमारी धार्मिक संस्कृति के विरुद्ध है और युवकों के चरित्र के लिए हानिकारक है। यह युवा विद्यार्थियों में अनुशासनहीनता लाते हैं। हम सरकार से अनुरोध करते हैं कि वह अश्लील चित्रों, अश्लील फिल्मों तथा गन्दे साहित्य पर पाबन्दी लगाये। हम साधारण जनता से भी प्रार्थना करते हैं कि वह आम स्थानों पर लगे गन्दे पोस्टरों तथा चित्रों को हटा दें और घरों में भी ऐसे चित्र न लगा कर देश का चरित्र बनाने में सहायता दें और अपनी पुरानी संस्कृति की रक्षा करें।"

काशी में मौन जुलूस

१९ जनवरी को जुलूस निकलना था, किन्तु कैसा? मौन! सत्याग्रह का सौम्यतम प्रयोग। नगर भर में इसकी खबर फैल चुकी थी। उत्सुकतापूर्वक शान्ति-सेना विद्यालय की बहनें, सर्व सेवा संघ, सर्वोदय नगर अभियान, गांधी तत्त्व-प्रचार तथा काशी की विभिन्न संस्थाओं के कार्यकर्ता साधना केन्द्र में एकत्र हो रहे थे। बहनों के हाथों में शोभनीय पोस्टर थे, जिन पर लिखा था, "सुसंस्कृत नगरी काशी में अशोभनीय पोस्टर क्यों", "शराब पीना बंद हो," "स्वच्छ काशी सर्वोदय नगरी बने।"

बीच बीच में जुलूस की गति, मंथर होते-होते रुकती थी, और फिर "प्रेम मुदित मन से कहो राम, राम, राम" के स्वर जनसमुदाय में आध्यात्मिक उत्कर्ष के साथ बिखर जाते थे। और तब जन-समुदाय उद्घोष करता था, अरे! यह पोस्टर क्या अब भी नहीं हटेंगे, धर्मनगरी काशी में शराब की नई दुकानें खुलेंगी तो जनता का मौन अवश्य टूटेगा। लेकिन! यह सब कौन कर रहा है! ये सदस्य आगे बढ़ तो रहे हैं, पर मौन क्यों हैं? अच्छा, इनके मन में अवश्य कुछ छिपा है! इनके सौम्य चेहरे क्या चाहते हैं! शायद स्वयं मौन रहें, और काशी का जनमानस जागृत होकर इन अशोभनीय पोस्टरों को हटाये, इतना ही नहीं, शराब पीना बंद हो, इस लक्ष्य की ओर भी बढ़े। और अंततः काशी सर्वोदय नगरी बने!

टाउनहाल पार्क निकट आया, बा और बापू की मूर्तियाँ मुस्करायीं! सभी निश्छल नतमस्तक हुए, और तब रामधुन की निर्मल धारा बह चली, सभी आह्लादित बिदा हुए।

सर्वोदय नगर अभियान
काशी
—विनोद भास्कर,

●

संपादक के नाम पत्र

आदरणीय श्री सम्पादकजी,

"भूदान-यज्ञ" के ता० २० जनवरी '६१ के अंक में श्री सतीश कुमारजी द्वारा 'सार्वजनिक पैसे के खर्च में मितव्ययता' शीर्षक सम्पादक के नाम पत्र और उस पर आपकी टिप्पणी पढ़ी। उसे पढ़ कर आश्चर्य और दुःख हुआ। श्री सतीश कुमारजी ने पत्र में लिखा है कि पूज्य विनोबाजी के सेवापुरी आगमन पर यहाँ पर अनावश्यक और अधिक खर्च हुआ है, सादगी और मितव्ययता का अभाव रहा है। मेरा यह विनम्र निवेदन है कि सेवापुरी के सम्बन्ध में श्री सतीश कुमारजी का यह दोषारोपण न्याय-संगत नहीं है। बाबा के स्वागत हेतु हमने पूर्णमासी में ही योजना बनायी थी और स्थानीय नागरिकों के साथ मिल कर एक स्वागत समिति बनायी थी। इस समिति ने ही स्वागत की समस्त व्यवस्था की थी। स्थानीय सहायता से ही खर्च की व्यवस्था की गयी और अधिक-से-अधिक सादगी हमने स्वागत में रखी है। शामियाना आदि अनेक सामानों के लिए हमें केवल लाने-ले जाने की मजदूरी देनी पड़ी है। वस्तुतः सार्वजनिक सभा के स्थल पर शामियाना हमारी इच्छा न होते हुए भी शामियाने वाले भाई के अत्यधिक उत्साह और आग्रह के कारण लगा। सजावट के नाम पर हमने केवल घर, बाहर, भोजनालय आदि को अधिक-से-अधिक साफ-सुथरा रखने का प्रयास किया। भोजनालयों में भी हमारा खर्च इस बार प्रत्येक शिविर-सम्मेलन से कम आया है।

सब मिल कर इस बार हमें संतोष है कि हमारी व्यवस्था ठीक रही। फिजूल-खर्ची भी नहीं हुई और कोई खटकने वाली कमी भी नहीं रही।

आशा है कि सेवापुरी के सम्बन्ध में आप मेरा प्रस्तुत स्पष्टीकरण प्रकाशित कर लोगों का भ्रम-निवारण करेंगे।

सेवापुरी

विनीत
चन्द्रभूषण

कुमारप्पा-स्मारक निधि

[ता० ३० दिसम्बर के 'भूदान-यज्ञ' में हमने पाठकों तथा रचनात्मक कार्यकर्ताओं आदि से 'कुमारप्पा-स्मारक निधि' में योग देने की अपील की थी। अब तक इस निधि के लिए हमारे पास नीचे लिखे अनुसार रकम प्राप्त हुई है। सर्वोदय विचार के प्रति जिनकी सहानुभूति है, उनमें से हरएक से अपेक्षा है कि वे अपनी-अपनी मर्यादा के अनुसार इस निधि में अवश्य योग दें। आशा है, जिन पाठकों ने अब तक अपनी ओर से कुछ न भेजा हो, वे अवश्य इन पंक्तियों को पढ़ कर अपना हविर्भाग भेजेंगे। रकम 'पोस्टल आर्डर' के जरिए, बड़ी रकम चेक के जरिए भी—सम्पादक, 'भूदान-यज्ञ' राजघाट, काशी—इस पते से भेजी जा सकती है। —सं०]

	रु०—न०पै०	रु०—न०पै०
श्री आचार्य, वल्लभ विद्यालय, बोचासण (गुजरात)	६२—२६	
श्री उपाध्यक्ष, खादी-ग्रामोद्योग परिषद, रायपुर (म०प्र०)	५१—००	
श्री मंत्री, नवनिर्माण-संघ, उदयपुर (राजस्थान)	२५—००	
श्री मंत्री, सदर कोआपरेटिव सोसाइटी लि०, मैसूर	२१—००	
श्रीमती सविताबेन कण्डा, मंत्री, जैन महिला संघ, ब्राड वे, मद्रास-१	२०—००	
श्री शांतिदेवी, शांति-सैनिक, बी० वी० आश्रम, रेवाड़ी	२२—००	
श्रीमती लज्जावती दत्त, मोडल टाउन, करनाल	१०—००	
श्री लालबिहारी सिंह, मंत्री सर्वोदय आश्रम, जाजिग्राम, वीरभूमि	१०—००	
श्री हरलालजी रामसाहुजी, हिसार (पंजाब)	१०—००	
श्री लक्ष्मीचंदजी, विद्यालय-उपनिरीक्षक, सहारनपुर	५—००	
श्री छोटुप्रसादजी, सहायक अभियंता, मुंगेर	५—००	
श्री व्यवस्थापक, सर्वोदय-मंडल, एलनाबाद, हिसार	५—००	
श्री खादी उत्पादक संघ सहकारी समिति, कैथून (कोटा)	५—००	
श्री घानारामजी ठाकरे, टेंगनी खुर्द, पो० कबर्ड (बालाघाट)	५—००	
श्री गिरजाशंकर अवस्थी, बादशाही नाका, कानपुर	५—००	
श्री ओमप्रकाशजी, कूचा सीताराम, बरेली	३—००	
श्री बनारसी मंडल, सहायक शिक्षक, वेलदोरे, मुंगेर	२—००	
श्री अम्बुनाथ शर्मा, राजकीय चिकित्सक, पेसारा, जौनपुर	२—००	२७२-२६
ता० २७ जनवरी के अंक में प्राप्ति स्वीकार कुल		५१,४५९—८५
कुल रकम		५१,७३२—११

महाराष्ट्र का द्वितीय सर्वोदय-सम्मेलन

महाराष्ट्र राज्य का दूसरा सर्वोदय-सम्मेलन धड़गाँव (जिला धुलिया) में ३१ दिसम्बर और १ जनवरी को हुआ। लगभग २५० कार्यकर्ता सम्मिलित हुए थे। सम्मेलन-स्थान धड़गाँव अक्राणी क्षेत्र में, जहाँ ३०० गाँव ग्रामदान में मिले, ऐसे आदिवासी लोगों की बस्ती का गाँव है। सम्मेलन में अण्णासाहब सहस्रबुद्धे, अप्पासाहब पटवर्धन, आर० के० पाटिल, श्री शंकरराव देव, श्री दादाभाई नाईक आदि का मार्ग-दर्शन प्राप्त हुआ।

पहले दिन सबके द्वारा एक खेत में मेंड़ बाँधने के श्रमदान-कार्य से सम्मेलन का प्रारंभ हुआ। दोपहर को आदिवासी कार्यकर्ता श्री जनार्दन पोद्दार वलवी ने अपने स्वागत-भाषण में, वहाँ के आदिवासियों की पूर्वस्थिति और अब ग्रामदान के बाद की सुस्थिति का वर्णन किया। भाई धोत्रेजी ने सम्मेलन के अध्यक्ष राजस्थान के जेठ कार्यकर्ता श्री गोकुलभाई भट्ट का परिचय दिया।

महाराष्ट्र राज्य के मालविभाग के उपमंत्री श्री मधुकर चौधरी ने भी सर्वोदयी कार्यकर्ता के रूप में सम्मेलन में भाषण किया। प्रो० बंग और श्री दामोदरदास मूँदड़ा ने सम्मेलन का एक निवेदन प्रस्तुत किया।

शांति-सेना, निर्माण-कार्य, भूदान, पदयात्रा, लोकनीति, संगठन आदि विषयों पर अलग-अलग बैठकों में चर्चाएँ हुईं। संगठन, लोकनीति और रचनात्मक संस्थाओं की कार्य-पद्धति के बारे में श्री शंकरराव देव ने दिग्दर्शन किया। अशोभनीय विज्ञापनों, नई तालीम आदि विषय पर भी चर्चा हुई।

इस वर्ष के लिए श्री आर० के० पाटिल महाराष्ट्र सर्वोदय-मंडल के अध्यक्ष चुने गये। मराठवाडा प्रदेश में महाराष्ट्र के कार्यकर्ताओं द्वारा पदयात्रा भूदान प्राप्त किया जाय और आर्थिक मदद प्राप्त करने के लिए श्री जयप्रकाशजी का महाराष्ट्र में दौरा हो, यह भी तय किया गया।

महाराष्ट्र सर्वोदय-मंडल की बनी नयी कार्यकारिणी समिति की बैठक धड़गाँव में १ जनवरी को हुई। बैठक में श्री गोविंदराव शिन्दे के संयोजकत्व में निर्माण-समिति, श्री आचार्य भिडे के संयोजकत्व में अर्थ समिति, श्री माणिकचन्द दोशी के संयोजकत्व में शांति-सेना समिति, श्री देवीभाई के संयोजकत्व में नई तालीम समिति, डॉ० सुमन बंग के संयोजकत्व में 'साम्ययोग' समिति और श्री राम देशपांडे के संयोजकत्व में भंगी-मुक्ति समिति का गठन हुआ।

● गुजरात प्रान्त के लोकसेवकों तथा शांति-सैनिकों का एक सम्मेलन ता० ५ फरवरी १९६१ को बड़ौदा में श्री शंकरराव देव की उपस्थिति में आयोजित किया गया है। भूदान-आन्दोलन के गत दस वर्ष के काम का सिंहावलोकन तथा आज की परिस्थिति में आगामी कार्यक्रम निर्धारित करने के प्रश्नों पर सम्मेलन में खास चर्चा होगी। गुजरात प्रान्त में इस समय विभिन्न स्थानों में १७ प्राथमिक सर्वोदय-मंडल और ११ जिला सर्वोदय-मंडल काम कर रहे हैं। लोकसेवकों की संख्या प्रान्त में लगभग ३५० है।

विनोबाजी की पदयात्रा का कार्यक्रम

३१ जनवरी से ९ फरवरी तक बिहार के पूर्णियाँ जिले में पदयात्रा चलेगी। बाद में प० बंगाल में विनोबाजी प्रवेश करेंगे। माह फरवरी की तारीख और पड़ाव क्रमशः दे रहे हैं: ३ सहरा; ४ रानीपतरा; ५ पूर्णियाँ; ६ ललना; ७ रौटा; ८ कंजिया; ९ किशनगंज; ता० १० को प० बंगाल में प्रवेश। विनोबाजी का ९ फरवरी तक का पता:

मार्फत—सर्वोदय आश्रम, पो० रानीपतरा (जिला—पूर्णियाँ), बिहार।

पंचसालाना योजना-परिसंवाद संपन्न

तीसरी पंचसालाना योजना पर चर्चा करने के लिए ता० २२ जनवरी से २५ जनवरी तक परिसंवाद साधना केन्द्र, काशी में श्री शंकरराव देव की अध्यक्षता में हुआ। परिसंवाद में सर्वश्री आर० के० पाटिल, झवेरभाई पटेल, सिद्धराज ढड्ढा, विमलबहन के० अरुणाचलम्, कर्णभाई, भोलानाथ पंत, प्रेमनारायण माथुर, ध्वजा प्रसाद साहू, नारायण देसाई, मनमोहन चौधरी आदि कार्यकर्ताओं ने भाग लिया। परिसंवाद में विशेष तौर से कृषि-औद्योगिक अर्थव्यवस्था का विकास और आयोजन, विकेन्द्रित योजना की टेकनिक में प्रयोग, शिक्षा का नवसंस्करण, शहरीकरण की रोक-थाम और विकेन्द्रित यंत्रवाद (टेक्नोलोजी) की शोध (रिसर्च) आदि विषयों पर गहराई से चर्चा हुई। यह भी तय किया गया कि अगर सम्भव हो तो फरवरी के दूसरे-तीसरे सप्ताह में फिर से एक बार चर्चा दिल्ली में हो।

● दिल्ली का प्रदेशीय सर्वोदय-सम्मेलन आगामी ४-५ फरवरी को नजफगढ़ में होने जा रहा है। सम्मेलन की अध्यक्षता श्री जयप्रकाशजी करेंगे और राष्ट्रपतिजी उद्घाटन करेंगे।

इस अंक में

भूल-सुधार

ता० १३ जनवरी '६१ के अंक में पृष्ठ-संख्या १० के चौथे स्तम्भ के अंत में दिया हुआ उद्धरण "अपना मालिक मैं खुद हूँ" में लेखक के स्थान पर सिद्धराज का नाम दिया गया है। लेकिन पता चला कि वह उनके द्वारा अंग्रेजी से अनूदित है।

ता० २७ जनवरी '६१ के 'भूदान-यज्ञ' के पृष्ठ-संख्या १ के चौथे स्तम्भ में दूसरे पैराग्राफ की चौथी-पाँचवीं पंक्ति में "यह खादी हमारे हाथ में तो" की जगह "यह खादी हमारे हाथ में न होती तो" पढ़ने की कृपा करें।

श्रीकृष्णदत्त भट्ट, अ० भा० सर्व सेवा संघ द्वारा भार्गव भूषण प्रेस, वाराणसी में मुद्रित और प्रकाशित। पता : राजघाट, वाराणसी-१, फोन नं० ४३९१
वार्षिक मूल्य ६) पिछले अंक की छपी प्रतियाँ ११,८४० : इस अंक की छपी प्रतियाँ ११,८४० एक प्रति : १३ नये पैसे

संपादक : सिद्धराज ढड्ढा

वाराणसी : शुक्रवार | १० फरवरी '६१ | वर्ष ७ : अंक १९

शांति-सैनिक का आधारभूत विश्वास

सबके हृदय में भगवान है, हर मनुष्य परिवर्तनीय है

विनोबा

आँखों का यह एक भ्रम है कि आँखों को छोटे-बड़े नाना आकार दीखते हैं, पर उन सब आकारों में एक ही असली होता है। हमारी माँ हमारे बचपन में गोभी की तरकारी काटते हुए ऊपर का एक छिलका उतार देती थी और फिर शेष बचे हुए हिस्से की तरकारी बनाती थी। गोभी का ऊपर का छिलका कभी खराब होता है और कभी अच्छा, साफ भी होता है, तो मैंने माँ से पूछा कि उसको क्यों निकाला, साफ तो था। वह कहती थी कि ऊपर के छिलके पर कोई-न-कोई हवा का असर होता ही है। इसी तरह से मनुष्य के मन के ऊपर जो छिलका होता है, उसमें भी कई बातों का असर होता है—शिक्षण का असर होता है, घर का असर होता है, समाज का असर होता है—उसको हटा कर देखने से स्वच्छ मन का दर्शन होता है। ऊपर के ज्यादा स्तर खराब होते हैं, तो दो-तीन स्तर निकालने होते हैं, तब कहीं अच्छा स्तर मिलता है। मनुष्य का मन ऊपर से—जब आँख ऊपर के दिल को ही देखती है तो, वह कई दफा खराब दीखता है। तब यह मान लेना कि मनुष्य खराब है, यह गलत है।

इसलिए शान्ति-सैनिकों को यह आदत होनी चाहिए कि ऊपर के छिलके को चाहे वह अच्छा दीखता हो, हटा दें, तब अन्दर भगवान् के बहुत ही सुन्दर दर्शन हो जाते हैं। जब आँखों को अभ्यास हो जाता है तो ऊपर का चश्मा, जैसे कम्बल देखता है, वैसे ही आँखों को भी भगवान दीखता है। जिस किसी ने माना कि भगवान अव्यक्त है, उसने धोखा खाया। भगवान अव्यक्त भी है। व्यक्त भी है। दोनों में वह रहता है। कोई मनुष्य प्रेम से हमारी सेवा करता है तो सेवा व्यक्त है, प्रेम अव्यक्त है। आँखों को सेवा दिखेगी, प्रेम का अनुमान होगा। उसी तरह से भगवान स्थूल-अव्यक्त रूप में है। स्थूल रूप से परिस्थिति का छिलका हटाना पड़ता है।

हम भिंड-मुरैना गये थे। भिंड-मुरैना डाकू-क्षेत्र घोषित किया था सरकार ने। हमने पहले व्याख्यान में ही कहा था कि हम नहीं मानते कि कौन डाकू है, कौन नहीं। हम तो सज्जन-क्षेत्र में जा रहे हैं। जहाँ-जहाँ गये, सज्जन-क्षेत्र ही मिला। मैं भिंड-मुरैना को सज्जन-क्षेत्र ही समझता हूँ। हमने वहाँ जो बात कही वह सुनने के लिए डाकू तो नहीं, लेकिन उनके साथी आते थे। बाबा के काम के लिए यह भावना सब देश में भरी है। उनमें भी विश्वास था कि बाबा कतई किसी का बुरा नहीं चाहेगा, उसके हाथों में अपने को सौंप देते हैं तो कोई खतरा नहीं। मुझे आश्चर्य नहीं हुआ, इसलिए कि वर्षों के अभ्यास से आदत हो गयी है—आँखों से ईश्वर का रूप देखने की। और जहाँ ईश्वर का रूप दीखता है, वहाँ उस मनुष्य का भी परिवर्तन होता है—परिवर्तन क्या होना, वह तो अन्दर से अच्छा होता ही है—बाहर से विकृत रूप दीखता है, वह टल जाता है।

इसलिए शान्ति-सैनिकों का मुख्य आधार, सबके हृदय में अन्तर्यामी भगवान है, इस विश्वास पर होना चाहिए।

इस विश्वास के आधार पर प्रयोग करेंगे और आँखों को शिक्षण देंगे तो दर्शन होगा। दर्शन नहीं हुआ तो बुनियादी श्रद्धा कि हर हृदय में भगवान है, होनी चाहिए। इसलिए कोई भी मनुष्य अन्दर से बुरा नहीं होता। इससे उल्टी श्रद्धा, जिसको मैं 'क्रिमिनल मेन्टेलिटी' कहता हूँ, वह कई राजनीतिज्ञों में, वकीलों में, व्यापारियों में होती है। वे मनुष्य को बदमाश ही मानते हैं। कोर्ट में अगर उलटा साबित हो तो लाचारी से सज्जन मानते हैं; नहीं तो सहजरूपेण आदमी को बुरा मानते हैं। और ऐसा मानने को सावधानी समझते हैं। मानते हैं कि विश्वास करना गलत है, इसलिए सावधान रहो, ऐसा कहते हैं। हम भी चाहते हैं कि सावधानी से रहो, अन्दर भगवान् है, यह भूलो नहीं, इसलिये हम सावधान हैं। उनकी सावधानी यह है कि मनुष्य मामूली तरह से बुरा है, "यह मनुष्य-स्वभाव है," ऐसा कहते हैं। ठगा गया तो मूर्ख है, सावधान नहीं रहा इसलिये ठगा गया, उसे समझना चाहिए था "मनुष्य-स्वभाव।" इस तरह बोलते हैं कि मनुष्य का स्वभाव ही है—चोरी करना, झूठ बोलना। इसलिए राजनीतिक पार्टी में, व्यापार में, सामाजिक कार्य में—यहाँ तक कि परीक्षा में भी संशय है।

एक मर्तबा १९१३ में मैं मैट्रिक की परीक्षा के लिए अहमदाबाद गया था। परीक्षा के हॉल में हजारों लड़के बैठे थे, ऐसा दृश्य देखा, और देखा कि वहाँ गश्त लगा रहे हैं निगरानी रखने वाले, क्योंकि लड़के चोरी न करें, एक-दूसरे का न देखें, साथ में छिपा कर लायी हुई पुस्तक में से न देखें। इतना भी विश्वास नहीं! मैंने कहा कि क्या परीक्षा लेंगे, पहले ही 'फेल' कर दिया है। जहाँ माना कि चोरी करेंगे, वहाँ और क्या परीक्षा लेंगे? उसका मेरे दिल पर असर हुआ। दुबारा मैं परीक्षा के लिए बैठा ही नहीं! भारतन् कुमारप्पा मेरे साथ जेल में थे। उनके साथ रोज चर्चा होती थी—तत्त्वज्ञान, मानस-शास्त्र, हिंदी, तुलसीदास-रामायण आदि विषयों पर। उनमें से अनेक सवाल निकल आते थे। एक बार मैंने पूछा कि क्या आपको सपने आते हैं? उन्होंने कहा, "अक्सर मैं स्वप्न देखता हूँ कि परीक्षा हो रही है, मैं पर्चे लिख रहा हूँ।—अब मानता हूँ कि जीवन में कभी परीक्षा नहीं होने वाली, लेकिन भय कम नहीं हुआ।" तो मेरे ध्यान में आया कि यह कितना भयंकर प्रयोग है! मुझे परीक्षा का भय था नहीं, लेकिन 'सुपरवीजन'-निगरानी-से घृणा पैदा हुई। सार यह कि वह जो सुपरवाइजर है, उसका विश्वास यह है कि लड़के नकल करेंगे, बदमाश हैं। मैं जब शिक्षक बना आश्रम में, तब लड़कों को परीक्षा में पुस्तक देखने और एक दूसरे से पूछने की स्वतन्त्रता दे दी। तात्पर्य, एक ऐसी मनःस्थिति दुनिया में काम करती है कि मनुष्य मनुष्य को धोखा देगा, एक-दूसरों के साथ मैत्री, विश्वास का व्यवहार नहीं रखेगा। उल्टे मनोवृत्ति यह होनी चाहिए कि

हर मनुष्य की आत्मा में परमेश्वर है, इसलिए हर कोई मनुष्य परिवर्तनीय है। बुराई हट सकती है। ऐसे विश्वास से काम करें, यही मुख्य शक्ति है शांति-सैनिकों की। शान्ति-सैनिकों में जनता के प्रति अविश्वास रहा, तो वे शान्ति-सैनिक कतई नहीं बन सकते।

शांति-सैनिक के लिए यही मुख्य वस्तु है, जिसके आधार पर सत्याग्रह करना है। मनुष्य के अन्दर परमेश्वर-तत्त्व भरा है, यह विश्वास न होकर मुकाबला करेगा और अन्दर अविश्वास होकर भी अहिंसा का नाटक करेगा तो स्वयं परिवर्तित होगा, सामने वालों को परिवर्तित करने के बजाय।

एकनाथ महाराज की एक कहानी है। वह बहुत बड़े सत्याग्रही थे। वह स्नान करने के लिए नदी पर गये और स्नान करके वापस लौटे, तो रास्ते में एक व्यक्ति ने उनके ऊपर थूका। उन्होंने दुबारा स्नान किया। उस व्यक्ति ने फिर उन पर थूका, तो उन्होंने फिर से स्नान किया। इस तरह वह थूकता गया और वह स्नान करते गये। आखिर हार कर वह उनकी शरण आया। इसका जिक्र करते हुए हमने कहा है कि यह कोई 'टेक्निक्' नहीं है, यह तो अन्दर की शक्ति है, वृत्ति है कि भगवान् मेरे सामने है, मेरी कसौटी कर रहे हैं, चलो परीक्षा दे दें। यह शान्ति और सबमें भगवद् भाव देखने की वृत्ति ही ऐसा कर सकती है।

हमने शान्ति-सैनिकों के लिए कुछ शर्तें बनायी हैं। मुख्य शर्तें तो जानते ही हैं—राजनीति में न पड़ना, जातिभेद न मानना इत्यादि। एक और शर्त है मनुष्य के अन्दर में भगवद् रूप दर्शन है, इस पर विश्वास रखना। शान्ति-सैनिक इस शर्त पर मुख्य जोर दे। कामयाबी बाहर से मिले या नहीं, यह कोई बात नहीं। जो शान्ति से पेश आये और मार खाये और प्रसंग पर मर मिटे, वह है शान्ति-सैनिक!

[शांति-सैनिकों के बीच, अलीगंज, बिहार, १८–१–६१]

शांति-सैनिक की प्रथम शिक्षा आत्मानुशासन की होनी चाहिए

—नारायण देसाई

शांति-विद्यालय के अभ्यासक्रम के मुख्य अंग

शांति-विद्यालय की रूपरेखा की थोडी जानकारी देते हुए विद्यालय के आचार्य श्री नारायण देसाई ने इन शब्दों के साथ जयप्रकाशजी को विद्यालय का उद्‌घाटन करने का निवेदन किया :

"इस शांति-विद्यालय के शिक्षा-क्रम के मुख्य तीन हिस्से हैं: एक प्रत्यक्ष दैनिक कार्य, दूसरा प्रयोगक्षेत्र और तीसरा सैद्धांतिक विषय।

दैनिक कार्यक्रम के लिये शिक्षक की ओर से कोई नियम नहीं रखा जायगा। *शांति-सैनिक की प्रथम शिक्षा आत्मानुशासन की होनी चाहिये।* इसलिये विद्यालय में वही नियम चलेंगे, जो सैनिकों ने स्वयं सोच-विचार कर बनाये हों।

विद्यालय साधना-केन्द्र के अहाते में प्रारंभ हो रहा है। *अतएव अनायास ही हमें* साधना-केन्द्र के वातावरण से लाभ मिलेगा। शंकररावजी, दादा आदि की सत्संगति हमें प्राप्त होगी।

काशी नगर प्रयोग-क्षेत्र

प्रयोग-क्षेत्र हमारा काशी नगर रहेगा। यहाँ के काम की पद्धति गीता में कहे हुए प्रणिपात, परिप्रश्न और सेवा के मार्ग से होगी। काशी को सर्वोदय नगरी बना देने का दावा शांति-विद्यालय का नहीं है। हम तो इस नगर में सीखने के लिये जायेंगे। नम्रता से हम काशी के विभिन्न प्रकार के लोगों के पास जायेंगे। प्रश्न-परिप्रश्नों के द्वारा हम समाज में अशांति के कारणों का अध्ययन करेंगे। उसके बाद यदि नगरजनों के द्वारा कोई कार्यक्रम शुरू होगा तो उसमें हम यथाशक्ति सेवा देंगे। यह काम एक दृष्टि से नया ही है। इसलिये इसमें संशोधन-कार्य के लिये काफी *गुंजाइश* है।

सैद्धान्तिक विषयों के तीन अंग

सैद्धान्तिक विषयों से हमारा मतलब तीन चीजों से है। शांति-सैनिक की कुछ-न-कुछ जीवन-निष्ठा होनी चाहिये, जिनके कारण वह *किसी भी* कसौटी के प्रसंग पर टिक सके। सर्वोदय-कार्यकर्ता की जो जीवन-निष्ठाएँ हैं, उनमें गहराई से अवगाहन करने का हम यत्न करेंगे। शांति-सैनिक के जीवन-व्यवहार में कुछ विशिष्ट प्रवृत्ति दीखनी चाहिये। मतलब् आज हमें भारतीय नागरिक कहीं नहीं दीखता। कहीं गुजराती है, कहीं मराठी, *कहीं ब्राह्मण है, कहीं ब्राह्मणेतर, कहीं हिन्दू* है, कहीं सिख। विनोबा और वेद के विश्वमानुष की बात तो दूर रही, लेकिन हमारे सैनिकों में अखिल भारतीय वृत्त तो आयें। इस दृष्टि से पाठ्यक्रम में देश की *मुख्य भाषाओं के प्रमुख ग्रंथों का परिचय, संतों का परिचय आदि विषय सोचे गये हैं।*

पाठ्यक्रम में कुछ ऐसे काम होंगे, जिनसे शांति-सैनिक की *सर्वसामान्य* कार्यक्षमता बढ़े। उदाहरण के लिए, उसे साइकिल चलाना, तैरना, आग बुझाना, प्राथमिक चिकित्सा, भीड़ को सम्हालना आदि जानना चाहिये। पाठ्यक्रम का यह तीसरा हिस्सा *रहेगा।*

इस सारे काम में हमें हमारे बुजुर्गों का मार्गदर्शन तथा सहायता मिलेगी ही। काशी के कुछ स्थानिक विद्वानों ने भी हमें सहायता करने का वचन दिया है। लेकिन *सैनिक मुख्य शिक्षा अपने स्वाध्याय आदि* प्रयास से पायेंगे। मैं इसमें न आचार्य हूँ, न शिक्षक। मैं तो इनका साथी सैनिक हूँ, जो इनके साथ-साथ सीखता रहूँगा।

अंत में एक बात शांति-सैनिकों से। 'यानि अस्माकम् सुचरितानि तानि सेवितानि।' जो हम लोगों के सत्कृत्य होंगे उन्हीं से सीखियेगा। हम लोगों के जीवन में बहुत-सा कचरा भी आप लोगों को मिल सकता है। उसे आप थोथा समझ कर छोड़ दीजियेगा।

महाराष्ट्र सर्वोदय-कार्यकर्ता शिक्षण-केन्द्र

महाराष्ट्र में सर्वोदय-कार्यकर्ताओं के शिक्षण-केन्द्र की आवश्यकता बहुत दिनों से महसूस की जा रही थी। *विनोबाजी की प्रेरणा से करीब चार साल से ऐसा एक केन्द्र* स्थापित करने की कोशिशें चल रही थीं, जो भूदान-आन्दोलन में सक्रिय काम करने वाले कार्यकर्ताओं के लिए अध्ययन और अल्पकालीन विश्राम की दृष्टि से उपयोगी हों। उरुळी के निसर्गोपचार आश्रम के पास इस केन्द्र के लिए जमीन भी प्राप्त की गयी, ताकि श्री बालकोबाजी के सत्संग और मार्गदर्शन का लाभ कार्यकर्ताओं को मिल सके।

ता० १० जनवरी की शाम को "ग्रामराज्य ट्रस्ट" के नाम से इस संस्था का श्रीगणेश हुआ। श्री बालकोबाजी द्वारा भूमि-पूजन के साथ समारोह का आरम्भ हुआ। श्री बालकोबाजी ने इस अवसर पर कार्यकर्ताओं के शिक्षण पर जोर दिया और करीब दो वर्ष पहले विनोबाजी ने इस सम्बन्ध में उन्हें जो पत्र लिखा था, वह भी पढ़ कर सुनाया। ग्रामराज्य ट्रस्ट के ट्रस्टी श्रीमती सुचरहन मेहता, श्री गोविन्दराव देशपांडे और श्री मणीभाई देसाई हैं। श्री गोविन्दराव इसके संचालक रहेंगे।

नागरी लिपि द्वारा तेलुगु सीखिये : ११

[बातचीत और रोजमर्रा के काम काज के लिए आवश्यक संख्या, संज्ञा, विशेषण, फल और शाक-भाजी के नाम दिये जा रहे हैं। —सं०]

संख्याएँ

हिन्दी	तेलुगु	हिन्दी	तेलुगु
एक	ओकटि	तेरह	पदमू
दो	रेंडु	चौदह	पदुनालुगु
तीन	मूडु	पन्द्रह	पदिहेनु
चार	नालुगु	सोलह	पदहा
पाँच	अइदु	सत्रह	पदिहेडु
छः	आरु	अठारह	पदुनेनिमिदि
सात	येडु	उन्नीस	पंदोम्मिदि
आठ	येनिमिदि	बीस	इरवै
नौ	तोम्मिदि	इक्कीस	इरवै ओकटि
दस	पदि	बाईस	इरवै रेंडु
ग्यारह	पदकोंडु	तेईस	इरवै मूडु
बारह	पन्नेंडु	चौबीस	इरवै नालुगु
		पच्चीस	इरवै अइदु

संज्ञाएँ

हिन्दी	तेलुगु	हिन्दी	तेलुगु
लड़का	पिल्लवाडु, बालुडु	पिता	तंड्रि, नान्न
लड़की	पिल्ल, बालिक	व्यापारी	वर्तकुडु
मित्र	स्नेहितुडु	धनवान	धनवंतुडु
भाई	सोदरुडु	गरीब	बीदवाडु
बड़े भाई	अन्न	रसोइया	वंटवाडु
छोटा भाई	तम्मुडु	पुत्र	कोडुकु
बहन	सोदरि	बेटी	कूतुरु
बड़ी बहन	अक्क	पत्नी	भार्य
छोटी बहन	चेल्लेलु	बहू	कोडलु
माता	तल्लि, अम्म	दादा	तात

विशेषण

हिन्दी	तेलुगु	हिन्दी	तेलुगु
गरम	वेडि	ऊँचा	येत्तैन
ठंडा	चल्लनि	सरल, आसान	तेलिक
नया	कोत्त	सस्ता	चौक
पुराना	पात	महँगा	प्रियमु
बड़ा	पेद्द	अच्छा	मंचि
छोटा	चिन्न	बुरा	चेडु
तंग	इरुकैन	पतला	सन्ननि
चौड़ा	वेडल्पैन	कमजोर	बलहीन
लंबा	पोडवैन	गहरा	लोतैन
खाली	खाली अइन	मोटा	लावैन

फल

हिन्दी	तेलुगु	हिन्दी	तेलुगु
आम	मामिडि	अंगूर	द्राक्ष
नारियल	कोब्बरि	अनार	दानिम्म
नींबू	निम्म	ताड	ताटि
नारंगी	नारिंज	फल	पंडु
केला	अरटि	कच्चा फल	काय
अमरूद	जाम	खजूर	खर्जूरं

शाक-भाजी

हिन्दी	तेलुगु	हिन्दी	तेलुगु
भाजी	आकुकूर	परवल	पोट्ल
शाक	कूर	तोरई	बीरकाय
कंद	दुंप	करेला	काकर
बैंगन	वंकाय	ककड़ी	दोसकाय
भिंडी	बेंडकाय	हरी मिर्च	पच्चिमिरपकाय
सेम	चिक्कुडु	आलू	बंगाळादुंप

ब्रह्म सत्यं जगत् स्फूर्तिः जीवनं सत्यशोधनम्

भूदानयज्ञ

टिप्पणियां

लोकनागरी लिपि*

मांगना नहीं, देना है

आजकल हर शहर में कुछ गंदी बस्तीयां होती हैं। दरअसल होना यह चाहीअे की गंदी बस्ती अगर शहर में है, तो अुसका अींतजाम नगर-नीगम को करना चाहीअे। लेकीन आजकल म्युनीसीपालीटी काम करने के बदले पार्टीयों के झगड़ने में ही समय खोती है। नतीजा यह होता है की काम बनता नहीं। गंदी बस्तीयां कायम ही रहती हैं।

हरीजन याद रखें की हरीजन-परीजन में भेद अब कानून में नहीं रहा है। कानून ने अपना काम कीया है, अब नागरीक को करना है। हरीजन अगर हमें यह संकट है, वह संकट है, अैसा कह कर मांगेंगे तो अुनकी अीज्जत नहीं बढ़ेगी। मांगने के बदले देना चाहीअे, तभी समाज में अीज्जत बढ़ेगी। सामाजीक प्रतीष्ठा मांग कर, झगड़ा करके, दीन होकर, खीर झुका कर नहीं होती। हम सेवक-वर्ग हैं, अैसा समझ कर सेवा करनी चाहीअे। यानी मांगना छोड़ कर देना शुरू करना चाहीअे। दूसरे लोग प्रतीष्ठा दीलायेंगे, अीसकी राह नहीं देखनी चाहीअे। प्रतीष्ठा पानी है, तो देने की बात करो। संपत्तीदान देंगे, जमीन का हीस्सा देंगे और सर्वोदय-पात्र तो रखेंगे ही। तभी सारे समाज में से हरीजन-परीजन का भेद मीटेगा और अुद्धार होगा।

(गया, ९-१-६१) —वीनोबा

*लिपि-संकेत : ि = ी ; े = ै
ख = ष, संयुक्ताक्षर हलंत चिह्न से।

अपने में आत्म-विश्वास पैदा करें

श्री कुमारप्पाजी की स्मृति में ग्रामोद्योगों का एक संग्रहालय और एक ग्रामोद्योग केन्द्र स्थापित करने की दृष्टि से देश के चुने हुए गणमान्य लोगों ने पाँच लाख रुपये की धनराशि के लिए अपील निकाली थी। हम सब जानते हैं कि आजकल इस प्रकार सार्वजनिक कामों के लिए धन-संग्रह करना कितना मुश्किल हो गया है। आजादी के बाद एक दुर्भाग्यपूर्ण मनोवृत्ति देश में बनी है। इसका मुख्य कारण यह है कि लोक-कल्याण के नाम पर सार्वजनिक सेवा के सारे क्षेत्रों में सरकार का दखल बढ़ता जा रहा है। लोग कहते हैं कि सरकार इन सब कामों के नाम पर टैक्स वसूल करती है, फिर हम सार्वजनिक प्रवृत्तियों के लिए अलग से धन क्यों दें—हालाँकि यह दलील धनिकों को या ऐसे ही खुशहाल लोगों को लागू होती है, जिनकी आय इन्कम टैक्स की न्यूनतम सीमा से ऊपर है। मुट्ठी भर धनिकों को एक ओर छोड़ दें तो भी देश में लाखों ऐसे लोग हैं, जिनके थोड़े-थोड़े सहयोग से बड़े-बड़े काम पार पड़ सकते हैं।

"भूदान यज्ञ" में जब हमने कुमारप्पा-निधि के लिए अपील निकाली, तब इस बात की जानकारी हजारों पाठकों तक पहुँचाने और धन-संग्रह में उनका सहयोग प्राप्त करने के अलावा जो मुख्य बात हमारे मन में थी, वह यह थी कि इस बहाने मुल्क भर में फैले हुए हजारों पाठकों में—जो अधिकांश में आय की दृष्टि से मध्यम वर्ग या निचले मध्यम वर्ग के ही लोग होंगे—आत्म-विश्वास और अभिक्रम जाग्रत हो। आज देश में एक तरह का अजीब, ओछा और निष्क्रियता का वातावरण छाया हुआ है। लोगों को भान नहीं है कि उनके अन्दर कितनी शक्ति छिपी पड़ी है। अक्सर लोग ऐसे कामों के लिए कुछ करने में झिझकते हैं, पर अगर इस झिझक को छोड़ कर हम काम में प्रवृत्त हो जाय तो अपने-अपने दायरे में हम कितना काम कर सकते हैं, यह नीचे के एक पत्र से मालूम होगा .

"मैं 'भूदान यज्ञ' पत्र का एक स्थायी ग्राहक हूँ। ३० दिसम्बर के पत्र में 'कुमारप्पा-निधि' के लिए रुपये एकत्रित करने की जो अपील आपने भूदान यज्ञ में की, उससे मुझे अपना निजी रुपया भेजने की इच्छा हुई। परन्तु मेरे मन में यह विचार उठता रहा कि क्या इसके लिए अपने कालेज के विद्यार्थी और शिक्षक साथियों से भी उस निधि में दान देने की प्रार्थना की जाय? कई रोज तक विचार करने के उपरान्त मैंने अपने शिक्षक पर विजय पायी और निश्चय किया कि इस भले कार्य के लिए अवश्य प्रयत्न किया जाना चाहिए। विद्यार्थियों में ऐसे कार्यों के लिए भावना उत्पन्न करने का मैंने अपने शिक्षण-कार्य का एक अंग भी समझा। इसलिए कालेज के प्रधानाचार्य से मैंने पहले बातचीत की और उनकी अनुमति मिलने पर विद्यार्थियों से इस विषय पर बातचीत की, जिसमें उनको गांधी, अर्थ-विचार और थोड़ा सर्वोदय के ऊपर समझाया तथा इस विचार में कुमारप्पाजी का योग और निधि के बारे में भी बताया। दान देने में मैंने रकम के मुकाबले भावना पर ही अधिक बल दिया, इसीलिए दान की रकम कम-से-कम एक नया पैसा और अधिक-से-अधिक एक रुपया रखी।

हमारा कालेज कृषि कालेज है, जिसमें तेरहवीं और चौदहवीं, केवल दो कक्षाएँ हैं। नीचे लिखे अनुसार विद्यार्थियों ने इस कार्य में भाग लिया।

कक्षा	विद्यार्थियों की कुल संख्या	दान देने वालों की संख्या	रकम रु०—न०पै०
१३	१३०	७४	३७—६९
१४	९५	७७	५९—५३
		योग	९७—२२

तत्पश्चात् अपने शिक्षक साथियों से भी मैंने दान देने के लिए आग्रहपूर्वक प्रार्थना की और सभी साथियों ने इच्छानुसार दान दिया।

जाट डिग्री कालेज
मुजफ्फरनगर (उ० प्र०)

हरवंश सिंह
अध्यक्ष, रसायन शास्त्र विभाग"

विद्यार्थियों तथा साथी शिक्षकों से जो रकम प्राप्त हुई, उसके अलावा इन अध्यापक महोदय ने अपने एक-दो अन्य मित्रों से भी निधि के लिए सहायता प्राप्त की। "रकम के मुकाबले भावना पर ही अधिक बल" देकर श्री हरवंश सिंह ने उचित ही किया है। सवा दो सौ विद्यार्थियों में से डेढ़ सौ विद्यार्थियों ने स्वेच्छापूर्वक इस यज्ञ में भाग लिया, यह कम बात नहीं है। इतना ही नहीं, कम-से-कम तनख्वाह पाने वाले कालेज के चपरासियों ने भी इस संग्रह में अपना योग दिया।

आशा है, हमारे अन्य पाठक भी इससे प्रेरणा लेंगे।

—सिद्धराज

आंदोलन के लिए शुभ चिह्न

३० जनवरी के दिन साधना केन्द्र, काशी में शांति-सैनिक विद्यालय का आरंभ श्री जयप्रकाशजी के हाथों हुआ और उधर पूना के पास उरुली कांचन में श्री बालकोबाजी के हाथों महाराष्ट्र के कार्यकर्ताओं के एक शिक्षण केन्द्र और आश्रम का। दोनों घटनाएं आन्दोलन की दृष्टि से महत्वपूर्ण हैं। शांति-सैनिक बहनों के लिए विद्यालय दिसंबर में ही शुरू हो चुका है। हममें से बहुत कम लोग शिक्षण का महत्त्व अभी समझ पाये हैं। कार्यकर्ता अक्सर समझते हैं कि 'अपना काम' छोड़ कर महीनों वे कैसे एक जगह शिक्षण-केन्द्र में मर्यादित होकर बैठ जायें? हम सबको इस बात का भान होने की आवश्यकता है कि अगर भूदान जैसे सर्वस्पर्शी आन्दोलन को सफल बनाना है तो उसके लिए विचार की गहराई में जाना अत्यन्त आवश्यक है। भूदान आन्दोलन समाज-रचना के परिवर्तन का आरोहण है। उसका व्याप न देश की सीमाओं से मर्यादित है, न जीवन के किसी अंग-विशेष से। स्वराज्य का आन्दोलन अपने आप में एक बड़ा आन्दोलन था, परन्तु आखिरकार उसका ध्येय सीमित ही था। ऐसा इस आरोहण का नहीं। समाज का परिवर्तन के माने हैं मूल्यों का परिवर्तन, याने लोगों के विचारों और उनकी मान्यताओं में परिवर्तन। इसलिए इस काम में लगे हुए कार्यकर्ताओं को दुनिया का विभिन्न विचार-धाराओं, जीवन के विविध अंगों और प्रचलित मान्यताओं की मनोवैज्ञानिक बुनियादों की गहराई में जाने की बहुत आवश्यकता है। शांति-सैनिक को इनके अलावा और भी कुछ व्यावहारिक बातों का ज्ञान हासिल कर लेना जरूरी है, जिससे वह अशांति और अव्यवस्था के मौके पर व्यवस्था और शांति कायम करने में कामयाब हो सके।

इस दृष्टि से इन शिक्षण-केन्द्रों की शुरुआत आन्दोलन के लिए एक शुभ चिह्न है। आशा है, कार्यकर्ता इनसे लाभ उठायेंगे। —सिद्धराज

'नया मोड़' : क्या, क्यों और कैसे ?

सिद्धराज ढड्ढा

'नया मोड' वास्तव में कोई नई चीज नहीं है, बरसों पुरानी है। आज के यंत्रयुग में जिस दिन गांधीजी को चरखे की बात सूझी उसी दिन 'नया मोड' शुरू हुआ। ५० वर्ष पहले की बात है, उधर दुनिया में उत्तरोत्तर बड़े और जटिल यंत्र बनाने की दौड़ चल रही थी और इधर गांधी को चरखा सूझा। यह अपने आप में ही एक नई चीज थी। *स्पष्ट है कि गांधी को जिस चरखे का दर्शन हुआ, वह वह चरखा नहीं था, जो पहले सदियों से चला आ रहा था। अठारहवीं शताब्दी के अंत में 'औद्योगिक क्रान्ति' हुई यानी* मनुष्य और पशु-शक्ति के अलावा भाप आदि दूसरी शक्ति से भी यंत्र चलाये जा सकते हैं, इसका आविष्कार हुआ। उसके पहले तो सारी दुनिया का कपड़ा चरखे-करघे से, अर्थात् हाथ-कताई, हाथ-बुनाई से ही बनता था। पर वह लाचारी और मजबूरी की बात थी। १९०८ में बापू को जिस चरखे का दर्शन पहली बार हुआ, वह चरखा उस प्रकार की लाचारी का प्रतीक नहीं था। मिलों से कपड़ा बनने लगा था और केवल कपड़ा बनाने की दृष्टि से चरखे की कोई जरूरत नहीं रही थी। ऐसे वक्त में, जब गांधीजी को फिर से चरखे की आवश्यकता मालूम हुई, तो स्पष्ट ही है कि उस चरखे के पीछे कोई विचार था। गांधीजी को चरखा चलाते हुए और उसका प्रचार करते हुए देख कर जो यह समझते थे कि गांधी नई दुनिया को फिर पुरानी दुनिया में ढकेलना चाहता है, वे खुद पुराने और दकियानूसी ख्यालों से जकड़े हुए लोग थे। आज के अर्थशास्त्र के बहुत से 'पंडित' वैसे ही हैं। ऐसे लोग समझ ही नहीं सकते कि विज्ञान के आधुनिक विकास का यही तर्कशुद्ध परिणाम आने वाला है कि बड़े-बड़े कल-कारखानों का युग समाप्त हो और घर-घर, गांव-गांव में उद्योग चलें। जो यह नहीं समझते, वे न विज्ञान को समझते हैं, न नये जमाने की नई हवा को।

गांधीजी का चरखा इस नये युग के नये विज्ञान और नई हवा का प्रतीक है। अब तक दुनिया में हिंसा-अहिंसा दोनों चलती रही हैं, पर अब हिंसा ने सर्वसंहारकारिणी शक्ति का रूप धारण कर लिया है और इसलिए अब इससे आगे मानव को अपने परस्पर संबंधों में हिंसा को छोड़ कर अहिंसा की ही शरण लेनी होगी, अन्यथा सारी मानव जाति का ही संहार होगा। यह बात महसूस हो जाने के कारण ही आज संहारक शस्त्रों के अधिपति भी शांति-पाठ और शांति की कामना कर रहे हैं। पर जैसा विनोबा कहते हैं, हिंसा पर से तो उनकी श्रद्धा उठ गयी है, लेकिन अहिंसा पर अभी श्रद्धा बैठी नहीं है। इसलिए शांति-पाठ केवल पाठ ही रह जाता है। *उसकी परिणति कर्म में* नहीं हो रही है। हम हिंसा और अहिंसा के बीच के युग में रह रहे हैं। पौराणिक काल में एक समय आया था, जब मनुष्य ने अपनी प्राकृतिक पशुता को छोड़ कर मानवता में प्रवेश किया था। नरसिंहावतार उस युग का प्रतीक था। उसके पहले के जितने अवतार थे, वे पशुओं की संज्ञा से संबोधित हैं—कूर्मावतार, मत्स्यावतार, वराहावतार आदि। नरसिंहावतार के बाद जो अवतार हुए, वे मानव-अवतार थे, परशुराम, राम आदि। नरसिंहावतार पशु और मानव के बीच की कड़ी थी, इसलिए वह अवतार बहुत ही भयानक भी था।

आज फिर हम इसी प्रकार दो युगों की संधि के बीच में खड़े हैं। हिंसा का युग *बीत रहा है, अहिंसा के युग की उषा नजर आ रही है।* विज्ञान की अद्यतन शक्ति इस युग का नरसिंहावतार है। उसका भूतकाल वाला मुँह हिंसा की तरफ है और भविष्य का मुँह अहिंसा की ओर। गांधी और विनोबा इस संधिकाल के पुरोहित हैं। गांधी ने आने वाले युग को पहचाना और चरखे को उस आने वाले अहिंसा के युग के प्रतीक के रूप में हमारे सामने रखा।

पर हमने न गांधी को पहचाना, न चरखे को। *इसलिए आज वर्षों के बाद फिर हम* नये मोड की बात कर रहे हैं। गांधी ने तो सन् १९४४ में ही कहा था :

"मैंने जो चरखा आपको दिया है, वह अहिंसा के प्रतीक के तौर पर दिया है।.... हमें चरखे का प्रताप सिद्ध करना चाहिए कि चरखे के दर्शन मात्र से अहिंसा का दर्शन हो जाय, लेकिन हम आज कंगाल बने बैठे हैं।"

"....जो चरखा सदियों तक कंगालियत, लाचारी, जुल्म, बेगारी का प्रतीक रहा, उसे हमने संसार की सबसे बड़ी अहिंसक शक्ति, संगठन तथा अर्थ-व्यवस्था का प्रतीक बनाने का बीड़ा उठाया है।....आज की तारीख से जो मेरे साथ रहना चाहते हैं, वे मुझको लिख कर दें कि चरखे को हम अहिंसा का प्रतीक मानते हैं। अगर आप चरखे को अहिंसा का प्रतीक नहीं मानते हैं, नहीं मान सकते हैं, तथापि आप मेरा साथ देते रहेंगे तो खुद तो खतरा खायेंगे ही और मुझे भी डुबो देंगे।"

इससे अधिक स्पष्ट आगाही और क्या हो सकती थी? गांधीजी ने उसी वक्त नये मोड की बात कही थी, पर हम अपने ही रास्ते चलते रहे। लाखों में जिस खादी का लेखा होता था, उसको हमने करोड़ों की गिनती तक पहुँचा दिया। पर हम भी अपने दिल में जानते हैं कि आखिरकार वह 'ताश *का महल' ही है। झोंका आया नहीं कि* गिरा। यह तो निश्चित है कि हमारी चलायी हुई यह खादी भले ही गिर जाय, पर गांधी के चरखे की—यानी अहिंसा के प्रतीक *चरखे की—विजय होने ही वाली है।* पर हमारा उल्लेख इस सिलसिले में होता तो इतना ही है कि हमें अवसर मिलने पर हम उस नये युग को लाने में साधक नहीं; थोड़े बाधक ही सिद्ध हुए।

तो खादी-काम को नया मोड देना है, यानी हमें अपने मानस को ही नया मोड देना है। क्या इसके लिए हमारी तैयारी है? क्या हम इस बात को समझ गये हैं या हमको यह भरोसा है कि खादी इस *युग में सरकार के, या किसी के भी पैसे* या संगठन के बल पर नहीं चल सकती, वह विचार के बल पर ही कायम रह सकती है? क्या हममें यह आत्मविश्वास है कि हम गांव-गांव में लोगों के अपने *संकल्प और उनके अपने अभिक्रम के जरिए* खादी को खड़ा कर सकते हैं? और खादी का मतलब सिर्फ खादी ही तो नहीं है—'ग्रामोद्योगप्रधान अर्थ-रचना'। और इसलिए हम कहते हैं खादी का मतलब है कि २-२, ४-४, ५-५ *हजार जन-समूह की छोटी इका-*इयाँ मुख्यतः स्वावलम्बन के लिए खादी को चलायें, और खादी गांव की सारी आर्थिक योजना के एक अभिन्न अंग के रूप में चले, तब नया मोड़ होगा।

मेरे साथी यह कहने के लिए मुझे माफ करेंगे कि मुझे इस बात का भरोसा कुछ कम है। मेरा भी खादी-काम से घनिष्ट सम्बन्ध है और सैकड़ों खादी-कार्यकर्ताओं से संपर्क आता है और अपने अनुभव पर मुझे डर है कि यह नया मोड भी उसी पुरानी लकीर पर चलेगा और फिर किसी दिन किसी को नये सिरे से नये मोड़ की बात करनी होगी। क्या गांधीजी का वचन सत्य होगा कि हमीं गांधी को डुबाने वाले साबित होंगे?

गांधी का चरखा यानी आगे आने वाले युग का संकेत। क्या इस ऐतिहासिक जिम्मेदारी को हम पहचान रहे हैं? यह खादी के मोड़ का सवाल नहीं है, इतिहास के मोड़ का सवाल है। मुझे लगता है, इस बड़ी जिम्मेदारी के लिए हम खादीवाले बहुत छोटे साबित हो रहे हैं। और 'खादी वाले' से मेरा मतलब सिर्फ उन्हीं से नहीं है, जो प्रत्यक्ष सूत-पूनी-खादी के काम में लगे हुए हैं, लेकिन मेरा मतलब उन तमाम लोगों से है, जो सर्वोदय का और गांधी का नाम लेकर काम कर रहे हैं। विनोबा बार-बार याद दिलाते हैं कि हम खादी का या सर्वोदय का पोषण नहीं कर रहे हैं, खादी और सर्वोदय ही हमारा पोषण कर रहा है। ऐसी ही हालत रही तो यह पोषण एक दिन जल्दी ही खत्म होने वाला है। हम *नये मोड़ की बात करते हैं, अखबारों में* लेख लिखते हैं, भाषण देते हैं, हमारे साथी कार्यकर्ता सब सुनते हैं और हमारी पीठ पीछे हँस कर कहते हैं कि ये भाषण तो यों ही चलते रहेंगे और हमारी खादी भी यों *ही चलती रहेगी। ईश्वर करे, इस भ्रम* का निरास जल्दी ही हो और आज की खादी खत्म हो।

तो नया मोड़ लाना यानी हमारे अपने मानस को पहले बदलना। प्रत्यक्ष खादी के काम में आज करीब २५ हजार कार्यकर्ता देश भर में लगे हुए हैं। नये मोड़ की हमारी सारी योजनाएँ और हमारी सारी बात ज्यों की त्यों धरी रह जाने वाली हैं—अगर इन कार्यकर्ताओं के मन में नया मोड नहीं आया, और इसीलिए नये मोड में पहला काम कार्यकर्ताओं के वैचारिक शिक्षण का है—कार्यकर्ताओं के बाद फिर हमारी लाखों कत्तिनें और बुनकर और खादी इस्तेमाल करने वाला उससे भी बड़ा समाज! इतना व्यापक काम का क्षेत्र हमारे सामने पड़ा है। नये मोड़ की योजनाएं हम जरूर बनायें और चलायें, लेकिन साथ-साथ यह मानस-परिवर्तन का कार्यक्रम नहीं चला और हम खुद खादी की बुनियाद को, उसके विचार को, उसके संकेत को, उसके सन्देश को नहीं समझ पाये तो हम खतरा खायेंगे और गांधी को भी डुबोयेंगे।

नये मोड के लिए दूसरा कदम होगा गांव की संकल्प-शक्ति को जागृत करना। चरखा और खादी आज के युग की प्रचलित मान्यताओं के खिलाफ बगावत है, यानी उन सबके खिलाफ पड़ते हैं। इसलिए वह किसी भी बाहरी आधार पर कायम नहीं रह सकते। सरकार का पैसा, कार्यकर्ताओं की संगठन-शक्ति, संस्थाओं का पीठबल, ये कोई भी खादी को जीवित नहीं रख सकते। खादी जिन्दा रह सकती है तभी, जब लोग उसे जिन्दा रखना चाहेंगे, यानी वे समझ-बूझ कर इस बात को तय करें कि उन्हें बाहर का कपड़ा नहीं पहनना है, खुद अपना कपड़ा बना लेना है। जब तक उनकी समझ में यह नहीं आयेगा कि बाहर का कपड़ा यानी शोषण और गरीबी, तब तक न वे खादी को अपनायेंगे और न खादी टिकेगी। लोगों में यह बोध पैदा करना और उनकी संकल्प-शक्ति को जागृत करना खादी के कार्यकर्ताओं का काम है। पहली बात अगर हो गयी, यानी कार्यकर्ता खुद खादी के विचार को समझ गये, आज की सामाजिक और आर्थिक परिस्थिति उनके लिए असह्य हो गयी और उसे बदलने की तीव्र आकांक्षा उनके मन में पैदा हो गयी, तो दूसरी बात होने में देर नहीं लगेगी। ये कार्यकर्ता 'आग' बनकर लोगों के दिल में आग लगा देंगे।

पर इतना ही काफी नहीं है। लोगों में स्वावलम्बन की इच्छा और उसके लिए संकल्प-शक्ति जागृत करने के साथ-साथ कार्यकर्ताओं का कर्तव्य है कि वे उस संकल्प के अनुसार काम को आगे बढ़ायें

नई तालीम : नया जीवन-मूल्य

रामचन्द्र

"आपका शुभ नाम ?

वेग से दौड़ती हुई रेलगाड़ी से अवनके धान के खेत और दूर पर दिखाई देते पहाड़ पीछे छूट रहे थे। मैं सोचता जा रहा था—"इतिहास मंजिलें तय करता आगे बढ़ रहा है। हम अक्सर भूल जाते हैं कि उसके साथ हम भी आगे बढ़ रहे हैं। काश! हम सभी अपनी मंजिल को समझ पाते!"

"जी! लोग मुझे ··· कहते हैं।"—सहयात्री के प्रश्न से चौंक-सा गया।

"मेरा मतलब ··· आप कौन हैं ?"—थोड़ी झिझक के साथ पतलून की जेब से सिगरेट निकाल कर इतमीनान से उसे दियासलाई की डिबिया पर ठोंकते हुए उन सज्जन ने पूछा।

"जैसा कि आपको दीख रहा है : मैं एक आदमी हूँ।"—मैंने कुछ मजा लेते हुए कहा।

"आखिर! साहब आप करते क्या हैं, क्या जाति है आपकी ?"—हल्के रोब के साथ उन्होंने पूछा।

"जी! कहा तो कि आदमी हूँ। मेरा ख्याल है, इस पर शंका नहीं होनी चाहिए। और रही बात काम की, तो मैं परती जमीन को खोद कर कुछ पैदा करने का अभ्यास करता हूँ। मोटे तौर पर आप यों समझ लीजिये कि कमाने-खाने की कोशिश के सिवा विशेष और कुछ नहीं करता, शायद आप मुझे मजदूर जाति का मानें, लेकिन मैं तो अपने को इन्सान मात्र मानता हूँ।"—कुछ विनोद के भाव में मैंने कहा।

"तो क्या आप सर्वोदय वाले हैं ? मैंने तो आपको 'कालेज स्टुडेण्ट' समझ लिया था!"—उदासीन भाव से चेहरे को बदलते हुए उन्होंने अपनी सिगरेट सुलगायी।

मैं फिर बाहर के दृश्यों में खोने की कोशिश करने लगा, लेकिन तब तक पूरी तरह उन बाबू के प्रश्नों में उलझ चुका था!

"आखिर आप करते क्या हैं ? क्या जाति है आपकी ··· ?"

हमारी ये विशिष्टताएँ धन (मनी), अधिकार (पावर), सम्मान (पोजिशन) के रूप में एक ओर तो हमारी संकुचित भावनाओं को पोषण देती हैं, दूसरी ओर हमारे बीच आपसी भेद की दीवारें खड़ी करती हैं। और सबसे प्रमुख बात यह कि मनुष्य का उपहास करती है।

"सर्वोदय-आन्दोलन को वर्ग-संघर्ष का विकल्प पेश करना है, चूंकि क्रांति अब दबाव की प्रक्रिया नहीं कर शिक्षण की प्रक्रिया हो गयी है, इसलिए नई तालीम ही वर्ग-संघर्ष का विकल्प है। नित्य नई तालीम संस्था की चहार-दीवारी के बाहर सामान्य समाज में ही सम्भव है।"

आदि विचार नई तालीम के बारे में सामने आते रहते हैं और इसके साथ यह प्रश्न भी जुड़ा रहता है कि इसे करे कौन! ठीक उसी प्रकार, जैसे कि यह प्रश्न उठा करता है कि सर्वोदय-आन्दोलन में कौनसा कार्यक्रम ऐसा लिया जाय, जो इसमें गति पैदा करे, गर्मी लाये; जब कि दूसरी ओर विनोबा एक के बाद एक कार्यक्रम रखते जा रहे हैं। सारा काम जनाधारित होना चाहिए, लेकिन जनाधार के लिए यह जरूरी है कि व्यक्ति के साथ कुछ विशेष व्यक्तित्व जुड़ा हो, कार्यक्षेत्र के लिए जिम्मेदार हो तो फिर आन्दोलन में लगे सामान्य कार्यकर्ताओं, नये जोश वाले नवयुवकों के लिए क्रांति की कौन-सी प्रक्रिया होगी ?

नई तालीम! नया मानव!!

नया समाज!!!

इसके लिए अनिवार्य है स्वतन्त्र व्यक्तित्व का निर्माण! क्योंकि 'वादों' (इज्म) के इस युग में मनुष्य का, मनुष्य के नाते समाज में कोई स्थान नहीं। उसे कुछ-न-कुछ और होना ही चाहिए। तब वह जिस श्रेणी के योग्य होगा, उसमें गिना जायगा।

हमारे पेट की भूख मिटाने के लिए हमें रोटी चाहिए। मानसिक भूख की तृप्ति के लिए सम्मान चाहिए। हम सब भूखे हैं। *हम अपनी रोटी खुद नहीं तैयार कर* सकते, अपना सम्मान दूसरों से प्राप्त करना चाहते हैं, *इसलिए हम आपस में लड़ते हैं*, क्योंकि हमें विश्वास है कि अपनी रोटी बर-करार रखने के लिए अपना डण्डा मजबूत होना चाहिए। हम प्रतिष्ठित रहें, इसके लिए दूसरों को झुकना चाहिए। क्या यह वर्ग-संघर्ष की बुनियाद नहीं है ? और चूंकि मनुष्य अपना दायरा बढ़ाना जानता है, इसलिये वर्ग-संघर्ष की भी बुनियाद है। वर्ग-संघर्ष की इस भूमिका में हमें इस डण्डे के बल पर रोटी और सम्मान प्राप्त होता है। लेकिन यह कितना खोखला है ?

हम अपने से कमजोर को अपना उपकरण (टूल) बनाते हैं, तो अपने से ताकतवर का उपकरण बनने को मजबूर होते हैं। मानवीय सम्बन्धों के अभाव में हम मानव नहीं रह जाते। नये समाज के लिए नये मानव की रचना नई तालीम द्वारा होगी, और वह स्वावलम्बी तालीम होगी।

अब तक की नई तालीम के काम के अनुभव के बाद हम इस नतीजे पर पहुँचे हैं कि संस्था, चूंकि न तो शिक्षक की स्वाभाविक जगह है और न विद्यार्थी की, इसलिए इसकी चहारदीवारी के अन्दर का शिक्षण अस्वाभाविक ही होगा, मानो वह जीवन-दर्शन की तालीम नहीं हो सकती। सामान्य समाज में प्रवेश करने के लिए जब हम संस्था के दरवाजे पर आकर खड़े होते हैं, तो दो धाराएँ दिखाई पड़ती हैं—

एक तो वर्तमान समाज को यथा-स्थिति में चलाने के लिए प्रचलित तालीम। दूसरी, वर्ग-निराकरण के लिए बापू की नई तालीम, जिसका प्रवाह वास्तव में अब तक बहुत सीमित है। समाज एक को त्याज्य मानते हुए भी छोड़ने को तैयार नहीं और दूसरे की सराहना करते हुए भी अपनाने को तैयार नहीं। यह एक संकटकालीन स्थिति है।

तालीमी संघ और सर्व सेवा संघ के संगम के बाद पूरा सर्वोदय-आन्दोलन ही नई तालीम का काम घोषित किया गया। अतएव संस्था की तालीम तो लगभग बंद हो गयी (जो होनी ही थी)। लेकिन आंदोलन के कार्य में नई तालीम का आधार व्यवहार में आया है, ऐसा नहीं लगता। परिस्थिति ऐसी है कि प्रचलित तालीम की उपेक्षा कर हम अपनी एक विशिष्टता के साथ अलग खिचड़ी पकायेंगे तो उसका समाजव्यापी असर नहीं होने को है और प्रचलित तालीम के प्रवाह को वर्गनिरा-करण की ओर मोड़ा जाय, यह भी तत्काल सम्भव नहीं जान पड़ता।

स्वराज्य का आंदोलन प्रत्यक्ष प्रति-कार और असहयोग के आधार पर चला। अपने मुल्क से विदेशियों को भगाने के लिए जन-जागृति हुई और सम्पूर्ण देश की आवाज ने "अंग्रेजो भारत छोड़ो" का नारा अप-नाया। लेकिन जीवन के मूल्यों को बदलने के लिए निश्चय ही उद्घोष मात्र काफी नहीं है। जिन मूल्यों को हम समाज में व्याप्त देखना चाहते हैं, उनको अपने जीवन का आधार बावजूद सारी प्रतिकूलताओं के बनाना ही पड़ेगा। हर पहलू पर नये मानवीय मूल्यों की तलाश, अपने लिए उनका आग्रह *और इस मार्ग की रुकावटों* को दूर करने का प्रयास सत्याग्रह और प्रतिकार, इन दो पहियों पर ही नई तालीम की गाड़ी आगे खिसकेगी।

सत्याग्रह और सत्याग्रही तथा नई तालीम और नई तालीम के साधक में कोई भेद नहीं।

नई तालीम जगत् में आज मुख्य रूप से तीन प्रवाह दिखायी पड़ रहे हैं—

(क) प्रचलित तालीम में नई तालीम के तत्त्वों को स्थान देने के लिए सरकार से *आग्रह किया जाय* और नई तालीम के विद्यालयों को सरकार द्वारा प्रमाणित कराया जाय।

(ख) देश में नई तालीम के सम्पूर्ण चित्र को समाज के सामने प्रस्तुत करने के लिए कुछ विद्यालय नमूने और प्रयोग के रूप में चलाये जायें।

(ग) अब तक के अनुभव को समाजार्पण कर नई तालीम की अगली मंजिल की *तलाश की जाय।*

जहाँ तक प्रचलित तालीम का प्रश्न है, आज की आर्थिक परिस्थिति में उत्पादन बढ़ाने में विश्व का हर राष्ट्र पूरी ताकत से लगने की कोशिश कर रहा है। अधिक सक्षम नागरिक तैयार हो सकें, इसके लिए शिक्षण में प्रत्यक्ष उत्पादन-कार्य भी जोड़ा जा रहा है। चीन का तो नारा ही है "वर्क व्हाइल यू रीड"—पढ़ाई करते वक्त काम करो। अपने देश में सरकार की बुनियादी शिक्षा-नीति के अनुसार छोटे-छोटे विद्यालयों में खेती, बागवानी, कताई आदि चलता तो है, लेकिन ऊँची शिक्षा में उत्पादन-कार्य का कोई स्थान नहीं होने तथा अन्य सामाजिक कारणों से उसका स्थान उपहासास्पद ही कहा जा सकता है। अधिक सफलता की अपेक्षा न रखते हुए प्रभावशाली व्यक्ति अगर सरकार से शुरू से आखिर तक की शिक्षा में उत्पादन-कार्य जोड़ने का आग्रह करें, तो शायद कुछ परिणाम नजर आये।

नमूने और प्रयोग के लिए नई तालीम *के नाम पर संस्थाएँ खड़ी करना अब* 'आउट ऑफ डेट' हो चुका है। हमारी जिन्दगी और सारे काम ही शिक्षणमय हों, इसके लिए स्वाभाविक जीवन और स्थान अनिवार्य है। हमारी रोटी का आधार हमारा उद्यम और भावना का संबंध पड़ोसी परिवारों, गाँवों से जुड़ना ही चाहिए। इसके लिए दो कार्यक्रम हो सकते हैं।

(१) जिनके अन्दर नई तालीम के लिये तड़प है, ऐसे शिक्षकों और विद्यार्थियों का—जिस प्रकार भूमिहीनों के गाँव बसाये जा रहे हैं—गाँव बसना चाहिये। अधिक विस्तार से इस पर सोचा जा सकता है, लेकिन एक पहली और अनिवार्य तैयारी यह होनी चाहिये कि अपनी रोटी के लिए कहीं बाहर से पैसा नहीं लेंगे, अन्यथा वह गाँव भी संस्था का ही एक रूप हो जायगा और उसमें रहने वालों को नई तालीम के प्रयोग और अभ्यास के लिए नहीं, संस्था को ढोने के लिए प्रयत्न करना होगा।

(२) जिनके अन्दर आत्मविश्वास है और खेती तथा उद्योगों द्वारा अपनी जीविका चला सकने की क्षमता है, वे भिन्न-भिन्न किसी गाँव के सदस्य बन जायें, जहाँ कृषिमूलक उद्योगप्रधान या उद्योगमूलक कृषिप्रधान [illegible] हो सके। परस्पर-स्नेह का सम्बन्ध रखने वाले मित्रों की टोली का ऐसे गाँवों में, जहाँ पूरे या अधिक-से अधिक

कार्यकर्ताओं की ओर से

दान दो इकट्ठा, वीघे में कट्ठा

'भूदान यज्ञ' के २० जनवरी के अंक में पृष्ठ ४ पर विनोबाजी का जो सन्देश छपा है, वह पढ़ कर मन में आन्दोलन के एक नये मोड़ का सहज एहसास हुआ।

भूदान-आन्दोलन के सिलसिले में विनोबा एक द्रष्टा की भाँति विचारों को नई से नई कड़ियाँ देते गये। ग्रामदान आया, शान्तिसेना, सर्वोदय पात्र, लोकनीति, इत्यादि। हम कार्यकर्तागण इस विचार-सरणि में कुछ उलझ गये। सभी कार्यक्रमों को समान रूप से उठा लेने की क्षमता तो थी नहीं, भूदान के काम में कुछ कठिनाइयाँ भी थीं। नये-नये कार्यक्रम में एक प्रकार का आकर्षण भी रहता है, इसलिए हमने भूदान के काम को कुछ गौण करके दूसरे कार्यक्रमों को उठाने का प्रयत्न किया। हालांकि वे सभी कार्यक्रम महत्वपूर्ण थे, पर वे कार्यक्रम स्वतंत्र नहीं थे, बल्कि भूदान के ही अंग थे। यह बात ध्यान से कुछ हट गयी।

विनोबा आन्दोलन के सूत्रधार हैं। इन्होंने इस परिस्थिति को समझ कर अब हम को सजग किया है। विनोबा का बिहार को दिया हुआ सन्देश हम सब लोगों के लिए एक संकेत है।

विनोबा चाहते हैं कि हम फिर से सन् '५१-'५२ की तरह पदयात्रा पर निकलें तथा जमीन माँगें और तुरन्त बाँटते भी जायँ। बाबा राघवदास और लक्ष्मी बाबू की तरह हमारे वर्तमान नेतागण भी प्रान्त-प्रान्त में पदयात्रा करके भूमि माँगने को निकल पड़ें। हमारे मन में एक ही तड़प है कि ग्राम स्वराज्य की स्थापना के पहले के क्रम के तौर पर कम से कम जमीन की समस्या को हम जनशक्ति के माध्यम से हल करके बतायें। हमें अब फिर से नया मंत्र मिला है 'दान दो इकट्ठा-बीघे में कट्ठा।'

—सतीशकुमार

वनवासियों का शोषण

दण्डकारण्य वन में आदिवासियों के बीच पदयात्रा चल रही थी। गरीबी इतनी है कि खाने को रोटी नहीं मिलती! यहाँ के लोग जंगली कंद-मूल, जिसको उधर 'कांकडी' कहते हैं, खाकर रहते हैं। इसके अलावा जो भी मांस मिल जाता, वह भी खा लेते रहे। हमको केवल उधी 'कांकडी' खा-खाकर दिन बिताने पड़े। एक दिन 'डिमसन' में एक भाई के बगले पर पड़ाव था। वहाँ हमने सीधे-सादे आदिवासियों के शोषण का नंगा नाच देखा। उनसे रात्रि के दो बजे से लेकर दूसरे दिन रात्रि के दस बजे तक कार्य कराया जाता है, और मजदूरी के नाम पर केवल आठ आने दिये जाते हैं। यहाँ के आदिवासी अत्यन्त आदिम जमाने के हैं। लगभग सभी शिकारी धनुर्धारी, निपट अज्ञानी मांस-भक्षी बाँस की छोटी-छोटी झोपड़ियों में रहते हैं।

—रामकुमार 'कमल'

लोग अन्नदाता किसान हों, बसना अधिक उपयुक्त होगा। इस प्रकार प्रभावशाली व्यक्तित्व और दिव्य धन का प्रश्न भी हल हो जाता है।

जीवन-मूल्यों के परिवर्तन के लिए आज यह आवश्यक हो गया है कि हम [illegible] खुद [illegible] बनें। हमारा सारा परिवार कपड़ा बनाने की सारी प्रक्रियाओं को करे। हमारे बच्चे अच्छे बुनकर बनें, वैज्ञानिक दृष्टि रखने वाले किसान बनें। क्या हम क्रांति के वाहकों की यह आकांक्षा बन पायी है? विचार के अनुसार आचार करने की। चेष्टा के इसी क्रम में हम वर्ग-संघर्ष का विकल्प भी प्राप्त कर सकते हैं। अन्यथा यह प्रश्न उठता ही रहेगा कि कहीं क्रांति की बात कहते-कहते हम प्रतिक्रांति को पोषण तो नहीं दे रहे हैं? क्या हमें आत्माभिव्यक्ति (सेल्फ-एक्सप्रेशन) के द्वारा क्रियाशील (ऐक्टिव) होने की प्रेरणा मिल रही है? [illegible] में अक्सर हमारे सामने यह समस्या आती है कि समाज की प्रतिकूल परिस्थितियों में जब कि कत्तिन, बुनकर, किसान, बढ़ई का समाज में कोई स्थान नहीं, यह कैसे सम्भव है कि हमारे बच्चों का जीवन उत्पादकों का हो जाय?

हमारे कार्य नई तालीम के तभी हो सकते हैं, जब हमारा हर अगला कदम नये मानवीय मूल्यों की तलाश के लिये हो। मानवीय मूल्य से हमारा मतलब है—हर मानव का मात्र एक मानव के नाते हम आदर करें, न कि इस नाते कि वह क्या है, क्या नहीं। जिस प्रकार हम चमड़ी की विभिन्नता के आधार पर सामाजिक विभिन्नता की श्रृंखला को अस्वीकार कर रहे हैं उसी प्रकार समाज में व्यक्ति की विशिष्टता के आधार पर जो अमानवीय भेद पैदा हुआ है, उसको समाप्त करने की ओर बढ़ें। दुनिया में मनुष्य का स्वतंत्र व्यक्तित्व विकसित हो, यह नई तालीम का काम है। जिसे करने की जिम्मेदारी नई तालीम के लिए तड़प रखने वाले हम सबके कन्धों पर है। हमें समाज की प्रतिकूलताओं से संघर्ष करने का खतरा (रिस्क) उठाना पड़ेगा; क्योंकि सत्याग्रह ऐसा कोई 'एटम बम' नहीं है, जिसके विस्फोट होते ही सारी प्रतिकूलताएँ एकाएक दूर हो जायें।

काश! हम अपने सहयात्री को यह समझा पाते कि जाति, धर्म, सम्प्रदाय, सम्पत्ति आदि सभी प्रकार के धन, अधिकार, सम्मान से मुक्त हम इन्सान हैं, आपके भाई। मित्र!!

['ग्रामभारती', खादीग्राम, मुंगेर]

साहित्य-समीक्षा

श्री जमनालालजी बजाज के पत्र-व्यवहार का प्रकाशन

पत्र-व्यवहार : १ : जमनालाल बजाज का देश के नेताओं के नाम। पृष्ठ-संख्या २२६; मूल्य तीन रुपया, सजिल्द।

पत्र-व्यवहार : २ : जमनालाल बजाज का देशी रियासतों के कार्यकर्ताओं से पृष्ठ-संख्या २३०; मूल्य तीन रुपया, सजिल्द।

पत्र-व्यवहार : ३ : जमनालाल बजाज का रचनात्मक कार्यकर्ताओं से पृष्ठ-संख्या २१६; मूल्य सवा रुपया।

संपादक तीनों भाग के : श्री रामकृष्ण बजाज

प्रकाशक : पत्र-व्यवहार भाग १ और २ को जमनालाल बजाज सेवा ट्रस्ट वर्धा, बम्बई की ओर से सस्ता साहित्य मंडल, नई दिल्ली और तीसरे भाग का प्रकाशन अखिल भारत सर्व सेवा संघ-प्रकाशन, राजघाट, काशी ने किया।

श्री जमनालालजी बजाज उन अनमोल रत्नों में से थे, जिन्हें गांधी जैसे जौहरी ने देश के सामने प्रकट किया। गांधी-परिवार के वे उन चंद लोगों में थे, जिन्होंने समाज के लिए सर्वस्व-समर्पण किया। जमनालाल जी को बापू का 'पाँचवाँ पुत्र' कहा जाता है। और वे हर तरह से इसके हकदार थे। बापू की सत्य और अहिंसा की खोज में जमनालालजी का स्थान अद्वितीय ही माना जाता है। १९४२ में, जब भारत मुक्ति आंदोलन के चरम सीमा पर आ पहुँचा था, तभी बापू का यह 'अनोखा पुत्र' पार्थिव शरीर से मुक्त हो गया। आज जमनालालजी को गये करीब २० वर्ष हो चुके हैं, * किन्तु उनकी कृतियों से वे आज भी हमारे प्रेरणा-स्तंभ बने हुए हैं।

बापू की तरह जमनालालजी का सम्बन्ध बड़ा विशाल था। उनका पत्र-व्यवहार देश के कोने-कोने से और हर तरह के व्यक्तियों से था। जमनालालजी के सुपुत्र श्री रामकृष्ण बजाज ने उनके पत्र-व्यवहार [illegible] किया है। अपने संपादकीय निवेदन में श्री रामकृष्णजी ने ठीक ही लिखा, "बच्चों की सहज-स्वाभाविक इच्छा होती है कि अपने दिवंगत पिता के लिए कोई उपयुक्त स्मारक तैयार करें। स्थूल स्मारक का समय अब गया। अतः हमने सोचा कि उनके साहित्य के संकलन तथा प्रकाशन के लिये जो कुछ किया जा सके, करें।"

पहले भाग में देश के राजनैतिक नेताओं के साथ जमनालालजी के पत्र-व्यवहार का संकलन है। इसकी प्रस्तावना राजाजी ने लिखी है। इसमें कुल २७९ पत्र हैं। ये अधिकतर अन्य लोगों द्वारा जमनालालजी को समय-समय पर लिखे गये हैं। इन पत्रों द्वारा राष्ट्रीय आंदोलन के जानकारी के साथ जमनालालजी की सूझ-बूझ, सहज निर्णय और उदारता के सहज दर्शन होते हैं।

दूसरे भाग में देशी रियासतों के कार्यकर्ताओं के साथ पत्र-व्यवहार है। इसकी प्रस्तावना देशी रियासतों के लिए जाने माने नेता स्वर्गीय पट्टाभि ने लिखी है। इसमें अधिकतर राजस्थान के कार्यकर्ताओं के साथ का पत्र व्यवहार का संकलन है।

तीसरे भाग में रचनात्मक कार्यकर्ताओं के साथ पत्र-व्यवहार का संकलन है। इसकी प्रस्तावना श्री जयप्रकाशजी ने लिखी है।

इन तीनों भागों को अलग-अलग सुविधा की दृष्टि से रखा गया है, किन्तु हमको इस प्रकार का भेद ठीक नहीं लगता है, और न जमनालालजी के पत्र-व्यवहार में भी ऐसा कोई भेद दिखता है। श्री रामकृष्णजी की दृष्टि, सम्भवतः आज की राजनीतिक और रचनात्मक काम के अंतर पर पड़ी होगी। यह कहने की जरूरत नहीं है, पत्र-व्यवहार का मुख्य विषय आर्थिक हो रहा। चूँकि जमनालालजी कई संस्थाओं के कोषाध्यक्ष थे, कई कार्यकर्ताओं को मदद करते थे, अलावा इसके उनसे कई लोग आर्थिक मामलों में सलाह भी माँगते थे। दूसरे भाग में जयपुर और सीकर में जमनालालजी के नेतृत्व में जो सफल सत्याग्रह चला, उस पर अच्छा प्रकाश पड़ता है। तीसरे भाग में रचनात्मक कार्यकर्ताओं से जो पत्र-व्यवहार हुआ, रखा गया है, जयप्रकाशजी ने प्रस्तावना में ठीक ही लिखा रचनात्मक शब्द यहाँ कुछ व्यापक अर्थ में प्रयुक्त हुआ है, क्योंकि सर जगदीशचन्द्र बसु के भी पत्र इसमें मिलेंगे—"यह अच्छा ही हुआ है।"

संपादक, प्रकाशक दोनों बधाई के पात्र हैं। इन पत्र-व्यवहार को पढ़ने से जमनालालजी और उनके साथ अनेक देश भक्तों की याद ताजी हो जाती है।

—मणीन्द्रकुमार

* मृत्यु : ११ फरवरी, १९४२

आन्ध्र प्रदेश में नई तालीम गोष्ठी

प्रभाकर

जनवरी १५-१६ को आन्ध्र प्रदेश सर्वोदय-मण्डल के तत्त्वावधान में प्रदेश के नई तालीम-कार्यकर्ताओं की एक गोष्ठी हुई। गोष्ठी में भाग लेने वालों में सर्वोदय-मण्डल के कुछ सदस्य, सरकार से नियुक्त बुनियादी तालीम-समिति के अध्यक्ष व भूतपूर्व शिक्षा-मंत्री श्री गोपालराव एकबोटे, शिक्षा-विभाग के श्री आनन्दराव, अखिल भारत सर्व सेवा संघ के सहमंत्री श्री राधाकृष्णन् आदि उपस्थित थे। प्रान्तीय सर्वोदय-मण्डल की तरफ से ऐसी गोष्ठी का आयोजन यह पहली बार हुआ। करीब ३० व्यक्तियों ने गोष्ठी में भाग लिया।

इस गोष्ठी के सामने ३-४ विचारणीय मुद्दे रहे। पिछले २०-२२ सालों से, जब से हिन्दुस्तानी तालीमी संघ की स्थापना हुई तब से, आन्ध्र में बुनियादी तालीम का काम करने वाली स्वतन्त्र संस्थाएँ रही हैं। आन्ध्र जातीय कलाशाला, मछली बन्दर ने दक्षिण भारत में सबसे पहले बुनियादी तालीम के काम को उठाने का श्रेय पाया। उस समय तैयार किये गये कार्यकर्ता आज भी इसी काम में लगे हैं। हिन्दुस्तानी तालीमी संघ के नई तालीम-भवन में प्रशिक्षित कुछ कार्यकर्ता स्वतन्त्र रूप से कई सालों से बुनियादी तालीम का प्रयोग करते आये। लेकिन पिछले ५-६ साल की परिस्थिति यह है कि ऐसे काफी केन्द्रों में अब काम बन्द-सा हो रहा है या सरकारी नीति-नियमों के अनुकूल मोड़ा जा रहा है।

कार्यकर्ताओं के सामने यह एक मुख्य प्रश्न है कि कैसी व्यवस्था जारी करे, जिससे बुनियादी तालीम की स्वतन्त्र शालाओं में पढ़ने वाले विद्यार्थियों को नई तालीम की मूलभूत पद्धतियों से शिक्षण मिले और आदर्श समझ में आये। इतना ही नहीं, उनमें से जिन लोगों की ऊँची तालीम के लिए योग्यता हो, वे उसे प्राप्त कर सकें ऐसी सुविधा उपलब्ध हो। आज दुर्भाग्य से वैसी परिस्थिति नहीं है। बुनियादी शालाओं में पढ़ाई होने के बाद उसी पद्धति की उत्तर और उत्तम बुनियादी शाला में पढ़ सकें और जीवन में उन सिद्धांतों को अमल में लाने की औद्योगिक, सांस्कृतिक और सामाजिक क्षमता मिल सके, ऐसी व्यवस्था नहीं है। इसे कैसे बदलें, यह सबके सामने एक बड़ा सवाल हो गया है। यह परिस्थिति कार्यकर्ताओं के अपने बच्चों के लिए और गाँव के बच्चों के लिए सामान्य है।

आज आन्ध्र में करीब १४ शालाएँ ऐसी हैं, जो स्वतन्त्र रूप से इस ओर प्रयत्न कर रही हैं। इन सबको नजदीक कैसे ला सकें, परस्पर अनुभव का उपयोग एक दूसरे को कैसे हो, उनमें आपसी संगठन कैसे हो, यह भी सोचने की समस्या है।

दूसरी ओर व्यापक नई तालीम की समस्याएँ हैं। भाषावार प्रान्तीय पुनर्संगठन के पहले मद्रास सरकार के साथ पश्चिमी आन्ध्र में और हैदराबाद सरकार के साथ तेलंगाना में उस समय की सरकारों ने कुछ कार्यक्रम आरम्भ किया था। दोनों हिस्सों में करीब १०० शिक्षक हैं, जो सेवाग्राम नई तालीम-भवन से प्रशिक्षित हैं। लेकिन प्रान्तों की पुनर्रचना के बाद वह काम नहीं-सा हो रहा है, यद्यपि प्रान्तीय सरकार ने अपनी नीति यह जाहिर की है कि वह प्राथमिक शिक्षण बुनियादी शिक्षा के स्वरूप में ही देगी। आज उस ढंग का कुछ काम नहीं हो रहा है। प्रान्त में ६ से १४ वर्ष की उम्र के शाला में जाने योग्य बच्चों की संख्या आज ५३ लाख है। इनमें से सिर्फ २५ लाख ही शालाओं में जाते हैं। २३ लाख विद्यार्थी पुरानी पद्धति से चलने वाली शालाओं में शिक्षण पाते हैं। बुनियादी तालीम की पद्धति से चलने वाली सिर्फ २ हजार शालाएँ हैं, जिनमें २ लाख विद्यार्थी शिक्षण पाते हैं। सिर्फ २७८ शालाओं में बुनियादी शाला के आखिर के ३ दर्जों की पढ़ाई होती है, जब कि ४६० मिडिल स्कूल हैं, जिनका पाठ्यक्रम बुनियादी तालीम की पद्धति या उद्देश्य के साथ विशेष समन्वय नहीं रखता है। एक उत्तर बुनियादी विद्यालय है जिसके विद्यार्थी ३ साल का पाठ्यक्रम पूरा करने के बाद मामूली मैट्रिक की परीक्षा देते हैं। शिक्षक प्रशिक्षण विद्यालय १२० हैं, जिनमें हर साल ५-६ हजार शिक्षक निकलते हैं, पर उनमें से आधे ऐसे हैं, जिनमें बुनियादी तालीम का नाम नहीं है, बाकी नाम मात्र के लिए बुनियादी प्रशिक्षण-विद्यालय हैं, ऐसा कहने में कोई असत्य नहीं होगा। वस्तुस्थिति यह है कि आज आन्ध्र बुनियादी तालीम के बारे में कोई खास स्थान नहीं रखता है। जो शालाएँ या प्रशिक्षण विद्यालय बुनियादी तालीम के नाम से चलते हैं, उनके काम से भी किसी को संतोष नहीं है और समस्याएँ इतनी हैं, जिनका कि कुछ हल ढूँढ़ना होगा।

गोष्ठी ने सर्वोदय-मण्डल को यह सुझाया कि इस सारी परिस्थिति के बारे में समय-समय पर मिल कर विचार करने के लिए, जो स्वतन्त्र विद्यालय चलते हैं, जिनमें बुनियादी तालीम के मौलिक गुण हैं, ऐसे सब विद्यालयों की एक बिरादरी स्थापित करने के लिए सर्वोदय-मण्डल के अन्तर्गत एक नई तालीम-समिति का गठन किया जाय। वह समिति स्वतन्त्र रूप से चलने वाली बुनियादी शालाओं का समय-समय पर निरीक्षण और समीक्षा करके उस प्रयोग को सुव्यवस्थित करने की कोशिश करे। सरकार के अन्तर्गत चलने वाली बुनियादी शालाओं में जो काम होता है उसके बारे में समय-समय पर राय प्रकट करें, लोगों को विचार समझाये और अच्छे ढंग से काम चल सके ऐसी सलाह देकर संस्थाओं की मदद करे। समिति सरकार और स्वतन्त्र चलने वाली संस्थाओं के बीच कड़ी का काम करे।

नई तालीम-समिति में ९ सदस्य हैं। श्री आनन्दरावजी और राजगोपालरावजी उसके संयोजक नियुक्त किये गये। समिति की चर्चाओं में निम्न प्रकार विचार किया गया :

(१) स्वतन्त्र रूप से जो शालाएँ चलती हैं, उनका काम आजादी के वातावरण में चले ऐसी परिस्थिति तैयार की जाय। सरकार की नीति और नियमों से इनका काम कठिन न हो तथा इस तरह प्रयोग करने के लिए नई तालीम-समिति को और उसकी संलग्न संस्थाओं को आजादी मिले, ऐसी सरकार से चर्चा की जाय।

(२) ऐसी संस्थाएँ जहाँ-जहाँ हैं, उनमें जो प्रयोग चलता है, उसके २-३ पहलुओं पर विशेष ध्यान दिया जाय, जिससे बाकी शालाओं को शैक्षणिक मार्गदर्शन प्राप्त हो और वे शालाएँ आसपास के क्षेत्र सामाजिक, सांस्कृतिक और आर्थिक विकास-काम से सीधा सम्बन्ध बनायें, जिससे शालाओं को कार्यक्रम में इन विकास कार्यक्रमों का पूरा सहयोग मिले। शालाओं में विकास-कार्यक्रमों के फलस्वरूप प्रौढ़ों और बच्चों को शिक्षण का अवसर मिले। ऐसे प्रयोगों से सम्भव है कि हमें आगे जाकर शालाओं के लिए अलग जमीन, उद्योग आदि की दृष्टि से नहीं सोचना पड़ेगा, वरन् गाँव की अच्छी खेती या उद्योगशाला ही बच्चों के शिक्षण का स्थान होगी। शाला चहारदीवारी से बाहर निकलेगी। एक ही क्षेत्र में एक ही तरह की व्यवस्था करने के लिए अलग-अलग साधनों की आवश्यकता नहीं होगी।

(३) बुनियादी शालाओं में विज्ञान का शिक्षण स्वाभाविक तौर पर आना चाहिए, क्योंकि बच्चा हर चीज को 'क्यों और कैसे' से ही सीखता है, लेकिन उसी को क्रमबद्ध करने के लिए और विज्ञान-शिक्षण को बुनियादी शाला के कार्यक्रम में मुख्य स्थान देने के लिए हमारी विशेष कोशिश रहे।

(४) बुनियादी तालीम के प्रसार के लिए सिर्फ शिक्षण-विभाग का नियम और कार्यक्रम पर्याप्त नहीं होंगे। यह अति आवश्यक है कि एक तरफ अधिकारी वर्ग, जिसके हाथ में संचालन का काम है और दूसरी तरफ पालक या ग्रामीण नेता, जैसे पंचायतों के सदस्य आदि को अच्छी तरह समझाने का प्रयास किया जाय कि आज में बुनियादी तालीम के उसूलों के पर कार्यक्रम बनाना कितना और उससे न सिर्फ शिक्षा में सुधार हो, बल्कि वह सत्य और अहिंसा के आधार पर जीवन और समाज-रचना की तैयारी है।

(५) यह भी तय हुआ कि आन्ध्र प्रदेश में बुनियादी तालीम के संगठन के लिए जो समिति सरकार ने नियुक्त की है, उसके सामने एक विस्तृत योजना रखी जाय, जिससे प्रान्त भर में बुनियादी तालीम के लिए अनुकूल वातावरण बने और जहाँ विशेष क्षेत्रीय प्रयोग सम्भव हों वहाँ आरम्भ किये जा सकें। जो प्रशिक्षण चलता है, वह सब बुनियादी प्रशिक्षण हो और उस काम को व्यवस्थित ढंग से विकसित किया जाय। बुनियादी तालीम में आज बच्चों की किताबों की एक बड़ी समस्या है। उद्योग, उत्पादन और उद्योगों के शैक्षणिक पहलुओं के बारे में संशोधन व विचार करना है। ऐसे अनुसंधान के कामों के लिए प्रान्तीय स्तर पर अनुसंधान-केन्द्र आरम्भ किये जायें। अगले १० साल की योजना बनाकर प्रान्त की तमाम शालाएँ बुनियादी तालीम की कैसे हों उसके बारे में विचार, व्यवस्था और सरकार को मदद करने के हेतु एक 'स्टेचुअरी कमेटी' सरकार नियुक्त करे ऐसी प्रार्थना की जाय।

यह तो शुरुआत हुई। हमें आशा करते हैं कि आन्ध्र प्रदेश में नई तालीम के काम में अब गति आयेगी और सरकार, जनता और कार्यकर्ता मिल कर शिक्षण की समस्याओं को जो कि आज काफी जटिल बन गयी हैं, एक व्यवस्थित रास्ते में और समाज-पुनर्रचना के अनुकूल बनाने के लिए काम करेंगे।

●

स्वामीजी के साथ सात दिन

कपिलदत्त अवस्थी, सेवापुरी

जानकारी मिली थी कि परमहंस बाबा राघवदासजी की पावन स्मृति में विनोबाजी की इच्छानुसार चल रही तृतीय उ० प्र० अखण्ड भूदान-पदयात्रा में अवकाश-प्राप्त जज श्री कामतानाथजी गुप्त रहेंगे। इसलिए उत्सुकता बढ़ी और पदयात्रा में भाग लेने चल पड़ा। मधुबन पड़ाव पर पहुँचा, तो वहाँ श्री करणभाई के संचालन में आयी हुई टोली से भेंट हुई। शाम को उ० प्र० सर्वोदय-मण्डल के अध्यक्ष मास्टर सुन्दरलालजी भी पहुँच गये। इन लोगों के साथ ४ दिन लगभग १० सभाओं में रहा। यात्रा करते हुए मार्ग में हम लोगों ने सर्वोदय सम्बन्धी चर्चाएँ कीं। विशेषतया भूमिदान, सर्वोदय-पात्र और शान्ति-सेना तथा आगामी पंचायतों के निष्पक्ष चुनाव ही चर्चा के मुख्य विषय थे। कुछ हरिजन भाइयों को उनके परिवार की सफाई, आचार-विचार, रहन-सहन आदि के सस्ते और सुलभ उपाय बताये। ४० शहीदों के स्मारक-स्वरूप चल रहे विद्यालय में भी जाने का अवसर मिला।

मऊ में देखा, तो जज साहब के बजाय चम्बल घाटी शान्ति-समिति के अध्यक्ष स्वामी कृष्णस्वरूपजी आ चुके थे। पूछने पर पता लगा कि जज साहब के अकस्मात् बीमार पड़ जाने से स्वामीजी को तार देकर बुलाया गया है। सोचा, चलो भगवान् जो कुछ भी करता है, अच्छा ही करता है। चम्बल घाटी में विनोबाजी की शान्ति-यात्रा में साथ तो अवश्य रहा, पर जो जानकारी वहाँ नहीं मिल सकी, अब स्वामीजी से कर लूँगा। आजमगढ़ तथा गाजीपुर की पदयात्रा में उनके साथ-साथ रहा।

पड़ावों पर पहुँचते ही भीड़ इकट्ठी हो जाती, उन्हें यह पता लग गया था कि आत्म-समर्पित-बागीक्षेत्र के स्वामीजी आये हैं। कुछ कांग्रेसी, कम्युनिस्ट, कुछ समाजवादी तथा अन्य दलों के लोग डाकुओं के आत्म-समर्पण की कहानी सविनय पूछते। फिर सायंकालीन प्रार्थना-सभा का तो कहना ही क्या? वह था बिना प्रचार का प्रचार! पता नहीं, उस वर्णन में क्या जादू होता, लोग टस से मस होने का नाम ही न लेते! श्री सुमेर पाण्डेय, प्रधानाचार्य कासिमाबाद चले थे चौराहे तक बिदाई देने, और फिर वहीं एक चादर ओढ़े ही चल पड़े सतिहान तक। अन्ततः आप तीन दिन लगातार पदयात्रा में साथ रहे। चर्चाओं का संक्षिप्त अंश यहाँ दिया जा रहा है:

"दो व्यक्तियों में होड़ लगी। दोनों सम्पन्न घराने के थे। एक ने कहा, हमारी चलेगी और दूसरे ने अपनी धाक जमानी चाही। बात बढ़ी, मार-पीट हुई, कत्ल हो गया और जेल चले गये। जब छूटे, तब बदला लिया और फिर बागी होकर बेहड़ में फरार हो गये। यहीं से उस समस्या का प्रारम्भ होता है।"

स्वामीजी कह रहे थे: "चम्बल में ७ दल सक्रिय कार्य कर रहे थे। आगरा की दो तहसीलें तथा मध्य-प्रदेश के भिण्ड-मुरैना जिले इनके आतंक से आतंकित थे। पहले रामप्रसाद बिस्मिल जैसे क्रान्तिकारियों की कार्य-भूमि में मानसिंह का प्रादुर्भाव हुआ। एक मुकदमे में विरोधियों ने इन्हें व्यर्थ ही फँसा दिया। जब ये जेल में थे, तभी एक लड़के को कत्ल करा दिया! सुना जाता है कि उस क्षेत्र में यह एक आम रिवाज है कि यदि किसी का पति आमने-सामने की लड़ाई में मारा जाता है, तो पत्नी सिन्दूर तब तक नहीं उतारेगी, जब तक मारने वाले से 'बदला' न ले लिया जायगा। वह समय-समय पर अपने परिवारवालों को इस मंगल चिह्न के उतरवाने के लिए ताने मार कर उकसाती रहती है।

"इस समस्या के पीछे सबसे बड़ी यही बदले की भावना काम कर रही थी। हमने सभी बागियों से मिल कर उनकी पारिवारिक कठिनाइयों को समझा, सबने अपने भाई, चाचा और बहनोई आदि किसी-न-किसी का इसी प्रकार से उत्तेजित होकर बदला लिया और फिर बरबस चम्बल के बेहड़ों में राइफलें लेकर कूद गये। इस तरह एक-दूसरे के जान लेवा दुश्मन बने रहते हैं। यह बैर कभी मिटता ही नहीं, बढ़ता ही रहता है। वहाँ इनके सगे रहते ही हैं, उन्हीं की 'गोल' में शामिल हो गये। शामिल होने के लिए खून करना प्राथमिक शर्त है, ताकि वह भी समाज एवं पुलिस वालों से डरता रह कर कभी धोखा न दे सके। क्षुधा निवारण तथा परोपकार की भावना तो थी ही, यदि किसी ने मुखबिरी की, तो उसे भी अपनी जान से हाथ धोना पड़ता था। हाँ, स्त्रियों तथा बेटियों पर कभी भूल से भी हाथ नहीं उठाते थे, यही उनकी अपनी विशेषता थी।"

आगे कहते गये—"१० मई को सन्त विनोबा का उस क्षेत्र में दैवी प्रेरणा से आगमन हुआ। स्व० मेजर जनरल यदुनाथ सिंह की सरल भाषा, मृदु स्वभाव, स्नेह-पूर्ण व्यवहार से कौन परिचित नहीं है? परन्तु 'वज्रादपि कठोराणि, मृदूनि कुसुमा-दपि,' यह उक्ति उनके व्यक्तित्व का यथार्थ वर्णन करती है। कश्मीर लोकसेवा आयोग के अध्यक्ष जनरल साहब विनोबा के शान्ति-सैनिक बन कर बागी-क्षेत्र में आये। हुआ वही, जो होना था। इनके सत्प्रयास एवं अनन्य निष्ठा से २० बागियों ने संत विनोबा के समक्ष बिना किसी शर्त के आत्म-समर्पण कर दिया। तभी से उक्त क्षेत्र में शान्ति-स्थापना का प्रयास करते हुए बागी बनने के कारणों को समूल नष्ट किया जा रहा है।

चम्बल-घाटी का हृदयस्पर्शी वर्णन सुन कर सब लोगों को दाँतों तले उंगली दबानी पड़ी, क्योंकि भारतीय इतिहास में अंगुलिमाल डाकू के आत्म-समर्पण के बाद यह दूसरा अध्याय विनोबाजी ने जोड़ दिया है।

मुसलमान भाइयों के बीच स्वामीजी ने कहा—"मैं एक दरवेश का सवाल आपकी खिदमत में हाजिर करने आया हूँ। उसका मकसद तथा ख्वाहिश बताने आया हूँ। हर इन्सान को रोटी चाहिए ही, चाहे वह कितना ही महान् क्यों न हो। परन्तु यहाँ खीरे के भरे भूस (यहाँ की भाषा में उसे 'घोटा' कहते हैं) देख कर यहाँ की भुखमरी का अन्दाज लगा है। इसे तो पश्चिमी जिलों में बैलों को भी नहीं दिया जाता! एक ही प्रदेश में यह पूर्वी और पश्चिमी, कैसी विषमता है? गरीब इसी से अपनी जिन्दगी बसर करते हैं। इतना ही नहीं साल के कुछ महीने तो पेड़ों की छाल तथा उबाले हुए बेल खाकर ही बिताने पड़ते हैं! पौष्टिक खाद्य पदार्थों की कौन कहे, कुछ लोग गोबर से निकाला हुआ अन्न, जिसे यहाँ 'गोबरी' कहते हैं, खाकर दिन गुजारते हैं! क्या इसी को हम स्वराज्य मान लें? बड़े लोग छोटों की ओर तनिक झुकें और सहारा दें, अन्यथा यह नाव पार नहीं जा पायेगी।"

वास्तव में इस कारुणिक दृश्य को देख कर हम सबका मन खिन्न हो उठा था, क्योंकि कहीं तो अट्टालिकाओं पर जगमगाती दीपावलि और कहीं झोपड़ों में प्रकाश की एक रेखा तक न हो; मन-मंदिर में उजियाले की बात तो दूर रही!

स्कूल-कालेजों में विद्यार्थियों के बीच भी कई स्थानों पर भाषण हुए। स्वामीजी के साथ लोगों का समूह एक पड़ाव से दूसरे पड़ाव तक तो अवश्य ही चलता। साथ में गाजीपुर के प्रतिनिधि श्री गजानन्दजी भी चल रहे थे। इनका परिचय व प्रेम-क्षेत्र तो व्यापक है ही, प्रभाव-क्षेत्र भी कम नहीं है। एक स्थान पर धार्मिक विवाद था। वहाँ की सार्वजनिक सभा में आपने बताया—"हम सब भाई-भाई हैं। इबादत के तरीकों में फर्क हो सकता है, पर जिन्दगी गुजारने के तरीकों में कतई फर्क नहीं होना चाहिए। प्रेम और विश्वास ही ईश्वर है। इससे बाइबिल, कुरान, गीता आदि कोई भी भिन्न नहीं है। जमाने की माँग का हम मुँह नहीं दबा सकते। डंडा यानी कानून और मुहब्बत का असर देखा जा चुका है। मुहब्बत का असर अमिट पड़ता है। जब हर व्यक्ति का वोट बराबर है, तब 'रोट' बराबर है और फिर नोट तो बराबर रहना ही चाहिए।"

अन्तिम पड़ाव, जमानियाँ से स्वामीजी गाजीपुर शहर की सार्वजनिक सभा में भाग लेकर आगरा के लिए विदा हो गये। उनके साथ हमारे जो ये सात दिन व्यतीत हुए, उनमें उन्हें नजदीक से देखने का अवसर मिला। हमें आशा है कि पूर्वी क्षेत्र के कार्यकर्ता इस यात्रा के परिणामस्वरूप जो अनुकूलता निर्माण हुई है, उससे विशेष लाभ उठा कर ग्राम-स्वराज्य तथा स्वावलम्बन की ओर कदम बढ़ायेंगे।

•

मजदूरी का पैसा !

एक बार टाल्सटाय अत्यंत साधारण कपड़े पहने स्टेशन के प्लेटफार्म पर घूम रहे थे। एक स्त्री ने उन्हें कुली समझ कर बुलाया और कहा "ए कुली, यह पत्र सामने के होटल में मेरे पति को दे आ। मैं तुझे दो रूबल दूँगी!"

टाल्सटाय ने चुपचाप उसका कार्य कर दिया और दो रूबल ले लिये! कुछ ही देर बाद टाल्सटाय के एक दोस्त वहाँ आ गये और बहुत अदब से उन्हें "काउण्ट" कह कर बातें करने लगे! उक्त महिला का माथा ठनका! उसने उस व्यक्ति से उनका परिचय पूछा। उस व्यक्ति ने आश्चर्य चकित होकर उत्तर दिया—"अरे, आप नहीं जानतीं, यही हैं, काउण्ट लियो टाल्सटाय!"

महिला को काटो तो खून नहीं! उसने टाल्सटाय से बार-बार क्षमा माँगते हुए कहा—"कृपया रूबल लौटा दीजिये। मैंने आपका बहुत अनादर किया! हे परमात्मा मुझे क्षमा कर!"

टाल्सटाय ने हँस कर कहा—"देवीजी, क्षमा करना तो ईश्वर का काम है ही, पर मैंने तो काम कर के पैसे लिये हैं, मैं क्यों वापस दूँ? क्या मैंने आपका कार्य नहीं किया है?"

[साप्ताहिक 'हिन्दुस्तान' से]

अशोभनीय पोस्टर्स हटने चाहिये : देश के विभिन्न शहरों की माँग

फिरोजपुर

अशोभनीय सिनेमा-पोस्टरों के विरुद्ध जो आन्दोलन देश में चल रहा है, उसका विचार करने के लिए ११ जनवरी को फिरोजपुर शहर सर्वोदय महिला-मण्डल की बैठक हुई। बहिन सोहनदेवीजी ने बताया कि यह आन्दोलन फिरोजपुर के स्त्री-समाज ने तीन वर्ष पहले भी आरम्भ किया था। उस समय नगर के अश्लील चित्रों का बहिष्कार किया गया था, पर तब वह आन्दोलन बीच में ही रह गया, क्योंकि वह सार्वजनिक न हो सका। उपस्थित बहिनों ने हर्ष प्रकट किया कि आज के *आन्दोलन की तरफ महान् विभूतियों का ध्यान गया है और लोकमत भी जागृत* हो रहा है।

इसके बाद सभा ने तय किया कि गलियों, बाजारों में घूम कर अशोभनीय पोस्टर, गन्दे चित्रों को हटाने के लिये लोगों से प्रार्थना स्वयं करें। साथ ही बहिनें नगर के सिनेमा-मालिकों से मिलें, स्कूल के अध्यापकों से तथा नगर के श्रेष्ठ व्यक्तियों से मिलें और आन्दोलन को आगे बढ़ायें। नगर में उचित स्थानों पर सन्त-वाणियाँ लिखाने की कोशिश भी की जायगी।

●

आगरा

आगरा शहर में अशोभनीय चित्रों के १३० बोर्ड, जो दुकानों या होटलों पर लगे थे, उन्होंने उतार कर रख लिये। १५ पोस्टर फाड़े गये और १ बड़ा पोस्टर कपड़े सहित फाड़ा गया।

शहर में चल रहे कमला सर्कस के एक अशोभनीय चित्र के हटाने के लिए सूचना देने पर भी वह नहीं हटा, इसलिए उसको पोत दिया गया, यानी अदर्शनीय किया गया।

आगरा में छोटी-मोटी १३६ सभाएँ की गयीं। पोस्टरों को फाड़ने या उतारने के पहले उस जगह सभा द्वारा जनता को समझाया जाता है। इस समय शहर में से केवल एक सिनेमा को छोड़ कर बाकी सब अशोभनीय चित्र करीब-करीब हट गये हैं।

एक सिनेमा-संचालक ने अपने यहाँ आने वाले एक चित्र के पोस्टर शहर में लगाने के पहले उनमें से अशोभनीय हिस्से को मिटा कर हम लोगों को पूर्ण सहयोग देने का आश्वासन दिया। इस प्रकार ११ सिनेमा वालों में से ४ सिनेमा वाले पूर्ण सहयोग दे रहे हैं।

पूरा समय देने वाले शहर के १० लोक-सेवकों ने इस आन्दोलन को नजदीक के शहरों में भी सक्रिय बनाने का सोचा है। आगरा जिले के फिरोजाबाद शहर के दोनों सिनेमा में अगर अशोभनीय चित्र लगेंगे, तो उनके खिलाफ आन्दोलन शुरू किया जायेगा। एक सप्ताह पहले एक कार्यकर्ता मथुरा शहर में गये और १७ जनवरी को वहाँ सबसे सम्पर्क स्थापित करके शहर के अशोभनीय चित्र हटाने के लिए एक समिति का गठन किया। वहाँ दो दिन के लिए आगरा के १७ कार्यकर्ता वातावरण निर्माण करने के लिए जायेंगे।

●

सहारनपुर

सहारनपुर में २२ जनवरी को जिला सर्वोदय मण्डल की ओर से शहर के कुछ प्रतिष्ठित व्यक्तियों तथा सिनेमा-एसोसिएशन के प्रतिनिधियों की एक बैठक हुई, जिसमें अशोभनीय पोस्टरों को सार्वजनिक स्थानों से हटाने के बारे में विचार हुआ। सभी ने इस आन्दोलन को समाज के लिए आवश्यक माना। बच्चों के संस्कार बनाने में जो सहायता इस आन्दोलन से मिलेगी, वह उल्लेखनीय है। सिनेमा-एसोसिएशन के प्रतिनिधियों से बातें हुईं। इनमें एक श्री ओंकारनाथजी थे, जो 'नावल्टी' तथा 'न्यू' टाकीजों के मालिक हैं। इन लोगों ने इस आन्दोलन का समर्थन किया और कहा, "हम हर तरह से आप लोगों का सहयोग देने को तैयार हैं। पोस्टर लगाने से पहले हम लोग आपके प्रतिनिधि को बुला कर यह बता कर लेंगे कि कौन पोस्टर नहीं लगाना चाहिये। इस पर भी यदि कहीं अशोभनीय पोस्टर लगाया जायगा, तो हम उसको उतरवाने के लिये हर समय तैयार हैं और अगर आप लोग पोस्टर फाड़ेंगे भी तो हम कोई रुकावट नहीं डालेंगे।"

इस प्रकार उनका पूरा सहयोग मिलने की आशा है। उन लोगों ने यह भी प्रस्ताव रखा कि "यदि फिल्म प्रोड्यूसर्स और वितरक लोग ही इस प्रकार के पोस्टर न भेजें, तो सभी दिक्कत हल हो सकती है, अतः वहीं पर रोक लग जानी चाहिये।"

सहारनपुर शहर में भी कन्हैयालाल मिश्र 'प्रभाकर' तथा श्री रघुवीर दयालजी सर्वोदय-मंडल की ओर से प्रतिनिधि होंगे।

●

इलाहाबाद

इलाहाबाद में अशोभनीय पोस्टरों के खिलाफ जनमत तैयार करने के लिए मुहल्ले-मुहल्ले में सभाएँ आयोजित की जा रही हैं।

नये कटरे मुहल्ले के निवासियों द्वारा आयोजित सभा में डा० कृष्णमोहन गुप्त, सहायक उपसंचालक शिक्षा विभाग; श्री प्राणनाथ शर्मा, मंत्री उत्तर प्रदेश स्काउट मंडल; अरविन्द प्रकाश, राजकीय इन्टर कालेज के शिक्षक एवं अन्य शिक्षित वान नागरिकों ने कहा कि चरित्र-निर्माण के लिए आवश्यक है कि इस प्रकार के *अशोभनीय पोस्टर हटने चाहिए।*

२२ जनवरी को चक और मोहनसिंग गंज के निवासियों द्वारा आयोजित अग्रवाल डिग्री कालेज के प्रांगण में डा० मुरलीधर गुप्त की अध्यक्षता में सभा हुई। कालेज के आचार्य रामसहायजी, आर्य समाज के कार्यकर्ता श्री मूलचन्द्रजी अवस्थी आदि महानुभावों ने अपने विचार प्रकट करते हुए कहा कि विनोबाजी ने ठीक समय पर आंदोलन छेड़ा है। इसे प्रतीक समझना चाहिए, ताकि जो भी अश्लीलता हो, उसे दूर किया जा सके।

२० जनवरी को क्रिश्चियन कॉलेज में गांधी प्रार्थना समाज की साप्ताहिक बैठक में भी इस विषय पर चर्चा की गयी। डा० एस० एम० गिडियन, कालेज के आचार्य, पं० गोपीनाथ शर्मा हिन्दी विभाग के अध्यक्ष और श्रीवास्तवजी, संयोजक, गांधी प्रार्थना समाज ने अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि पोस्टर-आंदोलन का आशय यह है कि जीवन के हर क्षेत्र से अशोभनीयता मिटनी चाहिए।

बुलंदशहर

२० जनवरी को 'अशोभनीय पोस्टर हटाओ समिति' द्वारा आयोजित एक सभा स्थानीय कालेज के भूतपूर्व आचार्य श्री अनन्त प्रसादजी की अध्यक्षता में हुई। सभा में दो प्रस्ताव पास किये गये। एक प्रस्ताव में भारत सरकार से अनुरोध किया गया है कि वे अश्लील और अशोभनीय फिल्मों पर कड़ा सेन्सर लगायें। दूसरे प्रस्ताव में उत्तर प्रदेश सरकार से माँग की गयी है कि सिनेमा, बिड़ी, सिगरेट आदि के अशोभनीय पोस्टरों के प्रदर्शन की अनुमति न दे। सभा में यह भी माँग की गयी कि बुलंदशहर में होने वाली नुमाइश में इस प्रकार के अशोभनीय पोस्टर न लगाये जायें।

लखनऊ नगर-निगम की सक्रियता

नगर-निगम के अभियंता ने ९ जनवरी '६१ को नगर के समस्त सिनेमा-मालिकों के नाम एक पत्र मे आदेश दिया है कि विज्ञापन के उपनियम के अन्तर्गत पोस्टरों के प्रदर्शन के पूर्व तीन रोज पहले निगम के पास जाँच और अनुमति के लिए भेजना चाहिए। ऐसा नहीं करने पर आवश्यक दंड के अलावा निगम को ऐसे अनधिकृत पोस्टरों को मिटाने के लिए बाध्य होना पड़ेगा।

फिरोजाबाद

फिरोजाबाद शहर में अशोभनीय पोस्टरों के खिलाफ जनमत तैयार करने के लिए मुहल्ले-मुहल्ले में करीब २० सभाएँ की गयीं। इस प्रकार जनमत तैयार करने के बाद ३० जनवरी को शाम को चार बजे सब पक्षों के नेताओं और समाज-सेवकों की टोली जुलूस के रूप में छत्री और बाजार के दुकान-दुकान में लगे हुए अशोभनीय कैलेंडर और चित्रों को उतार। मुख्य चौराहे पर उन दो सौ से अधिक चित्रों का अग्निदाह किया गया। इसी बीच सिनेमा वालों ने ऐलान किया कि वे गन्दे पोस्टर हटा लेंगे और आगे भी नहीं लगायेंगे।

●

कानपुर

नगर सर्वोदय-समिति की ओर से सर्वोदय-कार्यकर्ताओं तथा नागरिकों का एक प्रतिनिधि-मण्डल, जिसमें सर्वश्री बद्रीलाल मिश्र, प्रो० कृष्णकुमार, श्री देव सहाय बोरे, श्री शिवदत्त मिश्र, श्री रामनारायण त्रिपाठी श्री हृदयनाथ मिश्र, श्री विनय अवस्थी तथा श्री कैलाशनाथ सम्मिलित थे, ता० २२ जनवरी को जिलाधीश महोदय से मिला और उनसे नगर में होने वाले अशोभनीय विज्ञापनों के सार्वजनिक प्रदर्शन बन्द करने का निवेदन किया। जिलाधीश महोदय ने इस कार्य से अपनी सहमति प्रकट करते हुए शीघ्र उचित कार्रवाई द्वारा गन्दे पोस्टरों के प्रदर्शन रोकने का आश्वासन दिया।

मेरठ

सर्वोदय-मंडल, मेरठ से प्राप्त एक समाचार में बताया गया है कि नगर के आर्य कन्या इन्टर कालेज और विश्व महिला कालेज ने अलग-अलग अपने प्रस्तावों में कहा है कि सार्वजनिक स्थानों पर अशोभनीय पोस्टरों का प्रदर्शन नागरिक दृष्टि से कुरुचिपूर्ण है। अतः सरकार और जनता से अपील करती हैं कि इस प्रकार के पोस्टर, चित्र, कैलेंडर आदि सार्वजनिक स्थान और निजी मकानों में न लगने दें।

संघ-प्रधान कार्यालय

[साधना केन्द्र, काशी]

● यह पखवाड़ा यहाँ प्रधान केन्द्र पर काफी महत्त्वपूर्ण और व्यस्त कार्यक्रम का रहा। ता० २२ से २५ जनवरी तक तीसरी पंचवर्षीय योजना के बारे में संघ की ओर से एक परिसंवाद का आयोजन श्री शंकरराववी की अध्यक्षता में हुआ।

● ता० ३० जनवरी को प्रातःकाल श्री जयप्रकाशजी के आशीर्वाद के साथ शांति-सैनिक विद्यालय का शुभारम्भ हुआ। स्त्री शान्ति-सैनिकों का विद्यालय तो पहले से ही यहाँ चल रहा है। अब पुरुष शान्ति-सैनिकों के विद्यालय का भी आरम्भ हुआ है। १२ फरवरी तक इसमें प्रवेश हो सकेगा। छः महीने का अभ्यास-क्रम है।

● ता० २९ जनवरी को इंग्लैण्ड के डा० ई० एफ० शूमाखर को लेकर श्री जयप्रकाशजी यहाँ आये। ता० ३० जनवरी को दोनों वापस गये। डा० शूमाखर ब्रिटेन के राष्ट्रीय कोयला-मण्डल [नेशनल कोल बोर्ड] के आर्थिक सलाहकार हैं। अर्थशास्त्र में गांधीजी के विचारों के प्रति उनकी गहरी निष्ठा है और "अहिंसक या मानवीय अर्थशास्त्र" को वे अर्थशास्त्र का अगला कदम मानते हैं। यहाँ जो गांधी अध्ययन संस्थान स्थापित हुआ है, उसमें डा० शूमाखर का सक्रिय योग मिलेगा ऐसी आशा है।

● सर्व सेवा संघ के कार्यकर्ताओं में एक महत्त्वपूर्ण बढ़ोतरी हुई है। गुजरात के श्री नारायण देसाई शान्ति-सेना विद्यालय के नाते यहाँ आ गये हैं—श्रीमती उत्तरा-बहन और परिवार के साथ।

● ता० २० जनवरी से संघ दफ्तर के कार्यकर्ताओं की दैनिक सामूहिक कताई प्रारंभ हुई। कताई के साथ-साथ सामूहिक अध्ययन भी शुरू हुआ है।

● ता० २१ जनवरी को वसंत पंचमी के उपलक्ष में सरस्वती-वंदना और स्नेह-सम्मेलन का आयोजन हुआ। ता० ३० जनवरी को श्रद्धेय शंकररावजी का ६७ वाँ जन्म दिवस मनाया गया।

● श्री शंकररावजी ता० ३० जनवरी को राजस्थान तथा गुजरात के दौरे पर गये हैं।

ज्यों-ज्यों समय बीतता है, गांधीजी के व्यक्तित्व और विचारों के प्रति दुनिया में आदर और श्रद्धा बढ़ती जा रही है, और वह विभिन्न तरीकों से व्यक्त होती है। अभी गत २६ जनवरी को अमेरिका ने महात्मा गांधी के प्रति आदर व्यक्त करने की
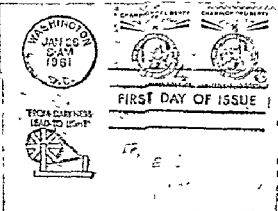
दृष्टि से दो डाक-टिकट जारी किये हैं, जिनमें 'स्वतंत्रता के उपासक' के शीर्षक से गांधीजी का चित्र दिया है। इस स्वतंत्रता के स्वातन्त्र्य-पुजारी महापुरुषों के नाम से डाक-टिकट जारी किये गये हैं—उदाहरण के लिए इटली के गेरीबाल्डी, चेकोस्लोवाकिया के राष्ट्रपति मजारिक आदि।

● उत्कल के श्री मनमोहन चौधरी कुछ दिनों के लिए शान्ति-सेना विद्यालय के शिक्षण-कार्य में योग देने के लिए आये हैं। परिसंवाद के निमित्त श्री बबेरभाई पटेल, वनस्थली विद्यापीठ के श्री प्रेमनारायण माथुर, श्री आर० के० पाटिल, श्री दामोदरदास मूँदड़ा, तमिलनाड के श्री के० अरुणाचलम् आदि आये थे।

● ता० २६ जनवरी को सर्व सेवा संघ की खादी-ग्रामोद्योग समिति की कार्यकारिणी सभा श्री ध्वजाप्रसाद साहू की अध्यक्षता में हुई।

● सर्व सेवा संघ के ट्रस्टी-मण्डल की बैठक ता० २६ व २७ जनवरी के दिनों में श्री राधाकृष्ण बजाज की अध्यक्षता में हुई।

● ता० २६-२७ जनवरी को सर्व सेवा संघ की प्रकाशन-समिति की बैठक श्री सिद्धराज ढड्ढा की अध्यक्षता में सम्पन्न हुई। सर्वोदय-साहित्य प्रकाशन की योजना पर सविस्तार विचार करने के लिए विभिन्न भाषाओं के कुछ लब्ध-प्रतिष्ठ साहित्यकारों की एक सभा मार्च के मध्य में बुलाने का तय किया गया है।

सर्वोदय-सम्मेलन, सर्वोदयपुरम्, चेब्रोलू

आगामी अप्रैल ता० १८, १९ व २० को अखिल भारत सर्व सेवा संघ ने १३ वाँ सर्वोदय-सम्मेलन पश्चिम गोदावरी जिले में चेब्रोलू के पास 'सर्वोदयपुरम्' में आयोजित करने का निश्चय किया है। सम्मेलन के पूर्व ६ दिन सर्व सेवा संघ का अधिवेशन होगा।

चेब्रोलू दक्षिण रेलवे पर विजयवाडा से वाल्टेयर लाइन में विजयवाडा से ९७ किलोमीटर की दूरी पर स्थित है। सम्मेलन के समय वहाँ मेल तथा एक्सप्रेस गाड़ियाँ रुकें, इसकी व्यवस्था की जा रही है। विजयवाडा, एलूरु तथा ताड़ेपल्लिगूडेम्—तीनों स्थानों से मोटर से आने की व्यवस्था भी की जायगी। स्वागत समिति का दफ्तर इस माह से आरम्भ किया गया है। उसका पता पोस्ट नारायणपुरम्, द्वारा चेब्रोलू, जिला पश्चिम गोदावरी, आन्ध्र प्रदेश है।

हर साल के जैसे सफाई-शिविर २० मार्च से आयोजित किया जायगा। उसमें हर सर्वोदय-मण्डल अपने कार्यकर्ताओं को भेजेंगे ऐसी अपेक्षा है।

१८ अप्रैल १९५१ को आन्ध्र में ही भूदान-आन्दोलन का जन्म हुआ और आज ठीक १० वर्ष के बाद उसी प्रदेश में सर्वोदय-कार्यकर्ता इकट्ठे होंगे। इस अवसर पर इन १० सालों के कार्यक्रम, भूदान-आन्दोलन की गतिविधि तथा सर्वोदय-आन्दोलन के आगे के कार्य के बारे में विचार किया जायगा। आशा है कि देश भर के कार्यकर्ता सम्मेलन में उपस्थित होकर भावी कार्यक्रम के बारे में गम्भीरता और तीव्रता से विचार करेंगे।

सम्मेलन में भाग लेने वाले प्रतिनिधियों के निवास की व्यवस्था हेतु ३ रुपये प्रतिनिधि शुल्क रखा गया है। हर साल की तरह ही प्रतिनिधियों को आने-जाने के लिए रेलवे-रियायत मिल सकेगी, जिससे एक तरफ के किराये से दोनों तरफ का सफर किया जा सकेगा। रेलवे कन्सेशन प्राप्त करने और प्रतिनिधियों के नाम दर्ज करने के लिए प्रतिनिधि-शुल्क भेज कर सम्मेलन-मंत्री, अखिल भारत सर्व सेवा संघ, सेवाग्राम, वर्धा (महाराष्ट्र) से रेलवे-रियायत पत्र और प्रतिनिधि कार्ड मंगाये जा सकेंगे। इस साल रेलवे-रियायत पत्र भेजने और रजिस्ट्रेशन का काम अलग-अलग केन्द्रों से न करके सिर्फ सेवाग्राम से ही करने का सोचा गया है।

सम्मेलन के तीनों दिन के भोजन और नाश्ते की व्यवस्था ५ रुपये देने पर की जा सकेगी। भोजन में जो लोग चाहेंगे, उनके लिए पूर्वसूचना मिलने पर ग्रामोद्योगी वस्तुओं एवं गाय के घी का प्रबन्ध किया जा सकेगा।

सर्व सेवा संघ, सेवाग्राम (वर्धा) —राधाकृष्ण, मंत्री सर्वोदय सम्मेलन

भूल-सुधार

'भूदान-यज्ञ' के ता० ३ फरवरी '६१ के अंक में प्रथम पृष्ठ पर तीसरी और चौथी पंक्ति में 'शोध' शब्द की जगह 'बोध' शब्द होना चाहिए।

उसी पृष्ठ में दूसरे पैराग्राफ के छठवीं-सातवीं पंक्ति में 'भौतिक' शब्द की जगह 'मार्मिक' शब्द होना चाहिए। इन दो मुख्य भूलों के लिए पाठकों से हम क्षमा-प्रार्थी हैं। —सं०

जिला सर्वोदय-मंडल धनबाद

४ जनवरी १९६१ को जिला सर्वोदय-मंडल, धनबाद की एक सभा हुई। सभा में नीचे दिये हुए निर्णय लिये गये।

जिले के कार्यकर्ता विनोबाजी को एक थैली अर्पण करें। थैली के लिए धन-संग्रह करने का कार्य भी शुरू हो गया है।

बिहार भूदान-यज्ञ कमेटी के निश्चय के अनुसार यहाँ बामनडाडिया गाँव में सर्वोदय-केन्द्र खोला जाय।

भूली नगर में सर्वोदय मित्र-मंडल का गठन हुआ है। लगभग ५० सर्वोदय-पात्र भी रखे गये हैं। नगर के इस भाग को सघन क्षेत्र बनाने का भी निश्चय किया गया।

धनबाद जिले के गोविन्दपुर टुण्डी रोड पर खुदिया नदी के किनारे २६ जनवरी से ३० जनवरी तक सर्वोदय मेला लगा। इन चार दिनों में रचनात्मक कार्यक्रम के विभिन्न अंगों पर सम्मेलन-सभाएँ की गयीं। पहली बार मेला लगाने पर भी जनता ने आशातीत उत्साह दिखाया। अंतिम दिन करीब १५ हजार की तादाद में लोग उपस्थित थे।

साथी कार्यकर्ता की सहायता

सर्वोदय आश्रम, सोखोदेवरा के खादी-कार्यकर्ताओं ने अपने एक साथी कार्यकर्ता की पत्नी, जो आग से जल गयी है, की चिकित्सा के लिये करीब २०० रुपये की सहायता की है।

समाचार-सार

● राजस्थान के श्री गंगानगर जिले के हनुमानगढ़ शहर में श्री विनोबाजी के आगमन पर २९ दिसम्बर '५९ को 'सर्वोदय पुस्तक भंडार' की स्थापना हुई थी। पिछले साल वहाँ लगभग ७०० रु० की साहित्य-बिक्री हुई। हनुमानगढ़ में करीब १०० सर्वोदय-पात्र चालू हैं। 'सर्वोदय-पुस्तक भंडार' में बालकों को पढ़ाने का कार्य भी चलता है। महिलाओं में "रामचरित मानस" कथादि द्वारा शिक्षा-प्रसार किया जाता है।

● श्री गांधी आश्रम, ताजपुर (जिला-सारण, बिहार) में १८ जनवरी को सर पर्चों के कार्यकर्ताओं की एक सभा में सर्वसम्मति से भूदान में जमीन का बीसवाँ अंश देने का प्रस्ताव पास हुआ और थाने में यह कार्य करने के लिए एक समिति भी बनायी गयी।

● कानपुर के आर्यनगर क्षेत्र में चलने वाले १२० सर्वोदय-पात्रों से दिसम्बर माह में कुल ४८ रुपये का अन्न एकत्रित हुआ। छठवाँ भाग अ० भा० सर्व सेवा संघ को भेजा गया। कार्यकर्ता को पारिश्रमिक के रूप में २० रु० दिये गये। मुहल्ले के असहाय महिलाओं को साढ़े दस रुपये देकर ५ रु० 'कुमारप्पा-स्मारक निधि' में दिये गये।

● श्री विनोबा के बिहार-आगमन के अवसर पर ग्रामसेवा-केन्द्र, रघुनाथपुर के श्री बीवेश्वर मिश्र ने अपनी पत्नी श्रीमती अभिरामा देवी और श्रीराम मंडल के साथ ता० २९ दिसम्बर '६० से ८ जनवरी '६१ तक रघुनाथपुर से बोधगया तक की कुल १६४ मील की पदयात्रा की।

● कर्नाटक राज्य में ४० शान्ति-सैनिक हैं। बेलगाँव में शान्ति-सैनिक केन्द्र में २ कार्यकर्ता शान्ति का प्रचार और सर्वोदय पात्र का कार्यक्रम चला रहे हैं। यहाँ एक आन्तर भारती केन्द्र भी है।

● उत्तरप्रदेश विधान-सभा के सदस्य श्री गेंदासिंह ने एक वक्तव्य में प्रसिद्ध बौद्ध-स्मृति स्थान कुशीनगर के पास पडरौना में स्व० बाबा राघवदासजी द्वारा स्थापित 'श्री रवीन्द्र आश्रम' की मौजूदा स्थिति की ओर ध्यान आकर्षित करते हुए अपील की है कि इस वर्ष देश भर में मनायी जाने वाली रवीन्द्र जन्म-शताब्दी के सिलसिले में इस आश्रम की ओर उसकी प्रवृत्तियों को भी सुदृढ़ बनाने की ओर ध्यान दिया जाना चाहिये। १५ फरवरी को श्री करण भाई इस उद्देश्य से पडरौना जा रहे हैं।

कुमारप्पा-स्मारक निधि

[ता० ३० दिसम्बर के 'भूदान यज्ञ' में कुमारप्पा-स्मारक निधि के लिए पाठकों के नाम अपील निकालते हुए हमने सुझाया था कि श्री कुमारप्पाजी के जन्म-दिवस, ४ जनवरी से उनके निधन-दिवस, ३० जनवरी तक कुमारप्पा स्मारक निधि, के लिए निधि संग्रह करने में विशेष शक्ति लगायी जाय। हर सप्ताह हमारे पास निधि के लिए छोटी-बड़ी रकमें आ रही हैं। हालाँकि ता० ३० जनवरी बीत चुकी, पर संग्रह का काम अभी जारी है, यह उचित ही है। जिन पाठकों तथा कार्यकर्ताओं ने अभी तक अपनी तथा अपने मित्रों से प्राप्त करके रकमें न भेजी हों, वे अब भी भिजवाने की कृपा करें। फिलहाल 'भूदान यज्ञ' में दाताओं की सूची प्रकाशित की जाती रहेगी। —सं०]

काशी में प्राप्त रकम	रु०—न०पै०	रु०—न०पै०
श्री कीर्तन घारिया, बम्बई २	२५०—००	
श्री जाट डिग्री कालेज के छात्र व शिक्षक, मुजफ्फरनगर	१२१—००	
श्री गांधी आश्रम, ग्राम सेवा मंडल, गांधी स्मारक निधि के कार्यकर्ता तथा अन्य नागरिक, दमोह	५९—१२	
श्री खादी-ग्रामोद्योग विद्यालय का संकलन, मधुबनी	५०—००	
श्री यशवन्तराव लेले, इलाहाबाद	१०—००	
श्री सदानन्द ताजन, कोयसिंघ, लंकाहाडा (सुन्दरगढ़)	१०—००	
श्री जीतमल लूणिया, ब्रह्मपुरी, अजमेर	१०—००	
श्री सोमाभाई कीकाभाई पटेल, सुणाव (गुजरात)	१०—००	
श्री कन्हैयालाल मालपुरवाला, नन्दुरबार (धुलिया)	५—००	
श्री सिद्धेश्वर शुक्ल, फतेहपुर (रायबरेली)	५—००	
श्री कृपाशंकर गर्ग, एडवोकेट, बुलन्दशहर	५—००	
श्री केशवचन्द्र सइकिया, गोहाटी	५—००	
श्री बटकृष्ण महान्ति, रायकेला, मनोहरपुर (सिंहभूमि)	२—००	
श्री खेदू महतो, मार्फत ,, ,, ,,	१—००	
श्री रामसुबक सिंह, मार्फत ,, ,, ,,	१—००	
श्री मोसोनिन्दा, मार्फत ,, ,, ,,	१—००	
श्री राधारमण अग्रवाल, बम्बई ४	५—००	
श्री जीतेन्द्र सिंह, दुर्गाकुण्ड, वाराणसी	१—००	५५१-१२
ता० ३ फरवरी के अंक में प्राप्ति-स्वीकार कुल		५१,७३२-११
कुल रकम		५२,२८३-२३

सूचना : ता० २७ जनवरी के 'भूदान यज्ञ' में प्रकाशित कुमारप्पा-स्मारक निधि की सूची में कानपुर से ५ रु० श्री विनय कुमार अवस्थी के नाम से दर्ज है। वह 'सर्वोदय-मित्र मंडल, आर्यनगर' के नाम से होना चाहिये।

इस अंक में

जिला बुलंदशहर

जिला सर्वोदय-मंडल की ओर से 'कुमारप्पा-स्मारक निधि' के लिये निधि एकत्रित की जा रही है। १२०० रुपये का सर्वोदय-साहित्य बेचा गया। अशोभनीय पोस्टर हटाने के लिये सभाएँ की जा रही हैं। सूत्रांजलि एकत्रित करने में गांधी आश्रम का विशिष्ट योग मिल रहा है। गांधी आश्रम द्वारा एक ... प्रदर्शिनी भी लगायी गयी है। इसके अलावा छात्रों में गांधी-विचार के प्रचार के लिये स्थानीय कालेज में भाषण प्रतियोगिता आयोजित की गयी, जिसमें बुलन्दशहर, मेरठ, मुरादाबाद जिले के ५० छात्रों ने भाग लिया।

● अनरणी-अक्कलकुवा के १०० ग्रामदानी गाँवों के निर्माण-कार्य की योजना के लिए सर्वश्री अण्णासाहब सहस्रबुद्धे, मार्तंड घोत्रे, आर० के० पाटील और श्री गोविंदराव शिंदे इन चार सदस्यों की एक समिति बनी।

● **जिला गोंडा :** दिसंबर माह की रिपोर्ट के अनुसार ५ एकड़ ७९ डि० भूमि प्राप्त हुई तथा ८४ परिवारों में २३८ एकड़, ९२ डि० भूमि बाँटी जा चुकी है। पदयात्राएँ चलीं। "भूदान-यज्ञ" साप्ताहिक की ९० प्रतियाँ बेची गयीं।

भूमिहीनों में जमीन बँटी

रतलाम जिले के आलोट, जावरा, रतलाम तहसील के २२ ग्रामों में म० प्र० भूदान यज्ञ पर्षद द्वारा ३२ भूमिहीन परिवारों को १०० बीघा भूमि के पक्के पट्टे देकर भूमिवान बनाया। पट्टे मिलने पर परिवारों में नई चेतना एवं उत्साह आया।

प्रदेशीय कार्यकर्ताओं की बैठक

१७ व १८ फरवरी को विसर्जन आश्रम, इन्दौर में म० प्र० के जिला-संयोजक एवं प्रतिनिधियों की बैठक का आयोजन किया गया है, जिसमें श्री पूर्णचन्द्रजी जैन, मंत्री अ० भा० सर्व सेवा संघ भाग लेंगे। बैठक में प्रांतीय संगठन तथा कार्य संबन्धी विचार किया जायगा।

प्रबंध समिति की बैठक

अखिल भारत सर्व सेवा संघ की प्रबंध समिति की बैठक ता० ६, ७, ८ मार्च को श्री विनोबाजी की उपस्थिति में गोलाघाट (असम) में होगी। बैठक में चर्चा के मुख्य मुद्दों में आगामी संघ-अधिवेशन तथा सर्वोदय-सम्मेलन के लिए विचारणीय विषय, कार्यक्रम, आगामी आम चुनावों के बारे में संघ की नीति, तीसरी पंचवर्षीय योजना, यथा जिले तथा सेवाग्राम के सघन कार्य की योजना आदि होंगे।

श्रीकृष्णदत्त भट्ट, अ० भा० सर्व सेवा संघ द्वारा भार्गव भूषण प्रेस, वाराणसी में मुद्रित और प्रकाशित। पता : राजघाट, वाराणसी-१, फोन नं० ४३९१
वार्षिक मूल्य ६) पिछले अंक की छपी प्रतियाँ ११,८४० : इस अंक की छपी प्रतियाँ १२,०५० एक प्रति : १३ नये पैसे

संपादक : सिद्धराज ढड्ढा

वाराणसी : शुक्रवार | १७ फरवरी '६१ | वर्ष ७ : अंक २०

आज केवल सर्वोदय ही लोकतंत्र की रक्षा कर सकता है • —विनोबा

असम में जाने के बाद भारतवर्ष की मेरी एक प्रदक्षिणा पूरी होगी। वैसे तो सीधे रास्ते से हिन्दुस्तान की एक प्रदक्षिणा तीन-चार साल में ही पूरी कर सकते हैं, लेकिन हम कई प्रान्तों में गाँव-गाँव में घूमे हैं। भूदान के सिलसिले में हमें छोटे-छोटे गाँवों में जाना पड़ा और कई प्रांतों में तो दो दफा यात्रा हो गयी। इस यात्रा में असम पहली बार जाने का हो रहा है।

वहाँ जाने के बाद आगे यात्रा का क्रम क्या रहेगा, यह सोचना हूँ तो मुझे लगता है कि कहीं विशेष क्रान्तिकारी काम हुआ हो, और वहाँ अगर बुलाया जाय तो जाऊँगा, या तो १०-१५ मील लम्बा-चौड़ा प्रदेश लेकर उसी में यात्रा करूँगा। सामाजिक क्रांति का कार्य करने वाले १००-१५० कार्यकर्ता वहाँ इकट्ठे हों। परमात्मा की कृपा से हमारे अन्दर सब पक्षों से मुक्त, सब प्रकार की संकुचित भावनाओं से मुक्त, ऐसे कार्यकर्ता हैं। उनमें से जिनको इस प्रकार के कार्य में जुटना होगा, वे आयेंगे। सामाजिक क्रांति का एक छोटे क्षेत्र में उपयोग करना ठीक होगा, यह विचार मेरा चल रहा है। अभी तो मेरी व्यापक यात्रा चल रही है, इसके आगे शायद विशिष्ट यात्रा चलेगी। सर्व-सामान्य तौर पर भारत में दस-बारह साल की यात्रा के बाद हवा बने तो कोई आश्चर्य की बात नहीं है। अब आगे विशिष्ट यात्रा होनी चाहिए, यह मेरे मन में चल रहा है। जो काम आज चल रहा है, उससे मैं उदासीन हूँ। असम और बंगाल नहीं पहुँचना, तब तक विचार समझाना इतना यात्रा का उद्देश्य रहेगा। पर इस वक्त अपने देश की हालत ऐसी नहीं है कि मैं चैन से बैठ सकूँ। इसलिए घूमना तो है ही, और बोलना भी है।

स्वराज कहाँ ?

हिन्दुस्तान में स्वराज्य आया, यह माना, लेकिन स्वराज्य का अर्थ अभी हम समझे नहीं हैं। अंग्रेज गये, यही स्वराज्य नहीं है। स्वराज्य आता तो हर मनुष्य देश के लिए मर मिटने के लिए तैयार होता। लेकिन ऐसा नहीं है। चारों ओर असंतोष है।

जो लोकशाही आयी है, वह भी नाम-मात्र की है। बिहार में सरकार ने गोवध-बन्दी की है, लेकिन शराबबंदी नहीं की। उधर महाराष्ट्र और गुजरात ने शराब-बंदी की, गोवधबंदी नहीं की। तो क्या यह समझा जाय कि महाराष्ट्र और गुजरात के लोकमत तथा बिहार के लोकमत में इतना फर्क है कि गुजरात के लोग गोवध-बंदी नहीं चाहते और बिहार के लोग शराब-बंदी नहीं चाहते ? बात यह है कि यहाँ लोकमत का सवाल ही नहीं है। प्रांत के मुख्यमंत्री और उनके साथियों के दीमाग में जो बैठ जाता है, वही होता है। डा० काटजू ने मध्यप्रदेश में आजकल सब स्कूलों में संस्कृत का शिक्षण अनिवार्य किया है। संस्कृत मेरा प्रिय विषय है। पर अब जहाँ काशी, मथुरा, प्रयाग, अयोध्या और हरिद्वार जैसे तीर्थ-स्थल हों, वहाँ संस्कृत-प्रिय हो सकती है। पर सवाल लोकमत का नहीं है। डा० काटजू को संस्कृत प्रिय है तो वह अनिवार्य हो गयी। इस तरह जैसे पुराने जमाने में अयोध्या के नवाब, लखनऊ के नवाब होते थे, उसी प्रकार आज के ये नवाब हैं। इतना ही कह सकते हैं कि इन नवाबों की पाँच साल की मुद्दत है, पाँच साल के बाद ये हट सकते हैं। लेकिन पुराने जमाने में जो पचास साल की कीमत थी, वह आज पाँच साल की है। उस जमाने में पचास साल में जितना काम नहीं होता था, उतना इस विज्ञान के जमाने में पाँच साल में होता है। असम के सरदार को औरंगजेब ने संदेश भेजा तो उसे पहुँचने में दो महीने लगते थे। उस सरदार का उत्तर पहुँचने में भी दो महीने लगे। तो इस तरह संदेश भेजने और उत्तर पाने में चार महीने लग गये। जो हुक्म भेजा गया, उससे अगर सरदार ने इन्कार किया तो दिल्ली से फौज लेकर वहाँ पहुँचें, इतने में तो महीना निकल जाता था ! तो इस तरह उस जमाने में दिल्ली का बादशाह नाम-मात्र का ही बादशाह था। उसका अधिकार, उसका हुक्म पहुँचता कहाँ था ? और पहुँचने पर भी फौरन ताकत कहाँ लगती थी ? आज क्या है ? आज तो अगर दिल्ली वाले कहते हैं कि केरल का राज्य शाम को ६ बजे खतम होगा, तो ठीक ६ बजे वह खतम होता है। अब कहाँ दिल्ली और कहाँ केरल ? आज के जमाने में को मदद में विज्ञान खड़ा है। इसलिए इस जमाने में पाँच साल में वह काम होता है, जो पहले पचास साल में नहीं होता था। यानी आज के "बादशाहों" की मुद्दत पाँच साल की होते हुए भी आज उनकी ताकत बहुत है।

लोकशाही बनाम राजशाही

उदाहरण के लिए, बड़ी-बड़ी योजनाएँ बननी हैं। मान लीजिये, एक योजना के बारे में प्रदेश से करार हुआ। उस करार का आधा काम हुआ और बीच में "चुनाव के कारण" दूसरी पार्टी का राज भी आ गया तो वह आधा काम जो बाकी रहा है, वह उस दूसरी पार्टी को पूरा करना पड़ेगा। इस तरह से लोकशाही नाममात्र की ही रहती है। इसको अगर हम लोकशाही कहेंगे तो राजशाही किसको कहेंगे ?

लोगों को लोकशाही या किसी "शाही" से प्यार नहीं है। उनको तो प्यार है, उससे जिससे सब सुखी हों। किसी विशेष पद्धति का अभिमान उनको नहीं होता। डाक्टरों को अपनी-अपनी पैथी का अभिमान होता है—किसी को एलोपैथी का, किसी को होमियोपैथी का, तो किसी को नेचरोपैथी का। लेकिन रोगी कहता है कि कोई भी पैथी हो, हमें तो निरोग होना है। रोग से मुक्ति मिले, यही रोगी की इच्छा रहती है। फिर वह किसी भी तरीके से क्यों न हो, इसलिए लोग तो चाहते हैं कि सर्वत्र शांति हो, प्रेम हो, पद्धति कोई भी क्यों न हो।

हिन्दुस्तान के लिए बाहर से भी और अन्दर भी खतरा है। पहले हिन्दू-मुस्लिम का भारी मसला था वह मसला अब नहीं रहा, तो सिख और हिन्दुओं का मसला पैदा हुआ, भाषा का मसला पैदा हुआ। इस हालत में अगर हमने हिन्दुस्तान को सुरक्षित माना तो यह कहना होगा कि हम समझे नहीं हैं। तो बाबा यह खतरा देखता है, इसीलिए उससे बैठा नहीं जाता और घूमता है।

पंचायतें पार्टीबाजी से ऊपर हों

हिंदुस्तान में ताकत तब आयेगी, जब गाँव-गाँव में स्वराज होगा। सरकार विकेंद्रित राज्य-व्यवस्था करने जा रही है। राजस्थान में आरम्भ हुआ है। मगर उसमें कुछ दोष हैं तो उसे दुरुस्त करना चाहिए। जो पंचायत बने, उसका सदस्य पक्षमुक्त हो।

पता चला है कि राजस्थान में ऐसा चल रहा है कि पंचायतों के सरपंच कांग्रेस के होने चाहिए। इसका अर्थ यह है कि आगे के चुनाव में उनसे काम लेना चाहिए। ऐसी बात से क्या कांग्रेस की नैतिक इज्जत बढ़ती है ? कांग्रेस का यह निर्णय अदूरदर्शिता का है। अगर वे उदार भाव से पंचायतों में पक्षमुक्ति करते तो उसमें उनकी इज्जत थी। कांग्रेस का दावा था कि गाँव-गाँव में स्वराज्य हो और अगर इसके लिए सच्चाई के साथ कांग्रेस प्रयत्न करती तो उसकी नैतिक इज्जत बढ़ती।

अन्तरकलह

मैं कहना चाहता हूँ कि हिन्दुस्तान की सेवा के लिए सब पक्षों से अलग एक समाज हो, जो गाँव गाँव को खड़ा करने के लिए कटिबद्ध हो। ऐसा समाज हो तो गाँव-गाँव में स्वराज्य लाने का काम सुकर होगा। इंग्लैण्ड में ऐसा मानते हैं कि विधान में विरोधी पक्ष का अस्तित्व होना चाहिए। सो हमारे देश में भी मानते हैं। यहाँ तो

रचनात्मक कार्यों का ध्येय

शंकरराव देव

[कार्यकर्ताओं के बीच हुई चर्चा के दौरान में पूछे गये प्रश्नों के श्री शंकरराव देव द्वारा दिये गये उत्तर हम यहाँ दे रहे हैं। —सं०]

प्रश्न : गांधीजी की प्रेरणा से देश में कई रचनात्मक कार्य चल रहे हैं। हम स्पष्ट नहीं समझ पा रहे हैं कि इन सब रचनात्मक कार्यों का *ध्येय क्या है ?*

उत्तर : बहुत पहले खुद गांधीजी ने ही इसका उत्तर दिया है। उनके ये शब्द हैं कि रचनात्मक कार्यों की पूर्ति ही स्वराज्य है। इसके माने यह हुआ कि रचनात्मक कार्यक्रमों का लक्ष्य स्वराज्य है।

यह स्वराज्य पार्लियामेण्टरी स्वराज्य नहीं है, कल्याणकारी राज्य नहीं है, समाजवादियों का स्वराज्य नहीं है, समाजवादी ढंग का समाज नहीं है और साम्यवादियों का स्वराज्य भी नहीं है। गांधीजी का स्वराज्य तो उन्होंने अपनी पुस्तक 'हिन्द स्वराज्य' में जिसे आत्मराज्य या रामराज्य कहा है, वह है। आज के राजनैतिक पारिभाषिक शब्दों में उसे अराज्यवाद भी कह सकते हैं; क्योंकि अपने बारे में खुद गांधीजी ने कहा कि वे एक फिलासफीकल अनार्किस्ट–सैद्धांतिक अराज्यवादी–हैं। *यह कहने की आवश्यकता नहीं है कि इस आत्मराज्य या अराज्यवाद में कोई दण्ड* या शासन नहीं रहेगा, यानी इसमें शासक और शासित, ऐसे दो वर्ग नहीं रहेंगे। महाभारत में जिस स्थिति का वर्णन निम्न श्लोक में किया गया है, वही यह आत्मराज्य है।

"नैव राज्यं न राजाऽसीत् न दण्डो न च दाण्डिकः।
धर्मेणैव प्रजाः सर्वा रक्षन्ति स्म परस्परम् ॥"

—उस राज्य में न कोई राज्य-संगठन था, न राजा था, न दण्ड था, न कोई दण्ड देने वाला था, बल्कि सारी प्रजा धर्म-बुद्धि से ही परस्पर का रक्षण किया करती थी।

प्रश्न : *क्या यह कल्पना व्यावहारिक है ?*

उत्तर : जरा ठहरिये। इस संबंध में गांधीजी की दृष्टि क्या थी, यह हम समझ लें। गांधीजी के लिये साध्य और साधन, ये दो भिन्न चीजें नहीं थीं। उनकी दृष्टि में साध्य और साधन के बीच बीज और वृक्ष का संबंध है। बीज से वृक्ष पैदा होता है, वृक्ष में फल लगते हैं, फलों में बीज होते हैं। इसके माने यह हुए कि *जिस राज्य में शासन या दण्ड नहीं* होगा, उस राज्य का निर्माण भी शासन या दण्ड के बिना ही होगा। और ये रचनात्मक कार्यक्रम ही उस राज्य की स्थापना के साधन हैं, क्योंकि रचनात्मक काम सर्वहित-बुद्धि से स्वयं-स्फूर्ति से किया हुआ काम है। यही कारण है कि गांधीजी ने जैसे ऊपर कहा, उस तरह से लोग स्वेच्छापूर्वक, सर्वहित-बुद्धि से जीवन के सारे काम करेंगे तो उसका फल या परिणाम ऐसे समाज की स्थापना में होगा, जिसमें दण्ड या शासन की आवश्यकता नहीं रहेगी। इसे ही हम आज शासनमुक्त समाज कहते हैं।

प्रश्न : लेकिन जैसा आज का मानव है, उसको देखते हुए यह असम्भव लगता है कि वह स्वेच्छापूर्वक स्वार्थ का त्याग करने और परार्थ के लिये प्रयत्न करने लग जायगा।

उत्तर : *यदि आज का मानव जैसा का* तैसा बना रहेगा और कुछ भी परिवर्तन *अपने में नहीं करेगा तो मानना होगा कि* शासनमुक्त समाज की स्थापना असम्भव है। खुद गांधीजी ने कहा है कि यह एक आदर्श स्थिति है। लेकिन हम सब लोगों की कोशिश होनी चाहिये कि हम उस आदर्श व्यवस्था की तरफ बढ़ते रहें। इस प्रयत्न से उस आदर्श की ओर बढ़ने की *प्रेरणा प्राप्त करते रहें।*

प्रश्न : क्या यह सब गांधीजी की कोरी कल्पना की चीज नहीं है ?

उत्तर : *गांधीजी आदर्शवादी जरूर थे,* लेकिन वे खुद कहते थे कि वे व्यावहारिक-आदर्शवादी हैं। याने आदर्श अवस्था तक पहुँचने का एक-न-एक व्यावहारिक कार्यक्रम देने का वे बराबर प्रयत्न करते थे और देते भी थे। यह उनकी प्रतिभा थी कि वे ऐसा कर सके थे। गांधीजी की व्यावहारिकता इसमें थी कि वे जानते थे कि जब तक मनुष्य को कोई दूसरी बेहतर व्यावहारिक चीज या रास्ता नहीं मिलता, तब तक वह पुरानी चीज या पुराना रास्ता नहीं छोड़ेगा। मिसाल के तौर पर अहिंसा को लें। गांधीजी अहिंसावादी थे। वे आत्मरक्षा के लिये भी हिंसा का उपयोग करने के पक्ष में नहीं थे। लेकिन वे जानते थे कि जब तक *आत्मरक्षा का कोई दूसरा बेहतर यानी* अहिंसक तरीका मनुष्य को प्राप्त नहीं होगा, तब तक वह हिंसा या शस्त्र को नहीं छोड़ेगा। यही कारण है कि गांधीजी कायरता की अपेक्षा हिंसा को पसंद करते थे। परन्तु इसके माने ये नहीं कि वे हिंसा में मानते थे। उनका आशय यही था कि *जब तक अहिंसा से आत्म-रक्षा करने* का रास्ता मनुष्य के हाथ में नहीं आता, तब तक वह आत्मरक्षा के प्रसंग में या तो हिंसा करेगा या कायर बन जायगा। मनुष्य के लिये कायरता हिंसा से अधिक हानिकारक है। पर यह भी वे जानते थे कि अहिंसा के बदले हिंसा को अपनाना मनुष्य के लिए कम हानिकारक नहीं है। इसलिए उनका यही प्रयत्न रहा कि मनुष्य के पास आत्मरक्षा का कोई अहिंसात्मक तरीका हो, जिससे मनुष्य कायरता और हिंसा दोनों से बच सके। गांधीजी का यह जो व्यावहारिक आदर्शवादी स्वभाव था उसी ने सत्याग्रह को जन्म दिया।

प्रश्न : रचनात्मक कार्य और सत्याग्रह का क्या संबंध है ?

उत्तर : गांधीजी कहते थे कि सत्याग्रह हिंसक युद्ध के लिए एक नैतिक विकल्प है और इस नैतिक विकल्प के प्रति मनुष्य के हृदय में श्रद्धा पैदा करने का पदार्थ-पाठ ही ये सारे रचनात्मक कार्यक्रम हैं, क्योंकि इस विकल्प में जो नैतिकता है वह, रचनात्मक कार्यों में से ही फलित होती है। जैसे पहले कहा है, रचनात्मक काम सर्वहित-बुद्धि से स्वेच्छापूर्वक किया हुआ काम है, इसके पीछे न किसी प्रलोभन की प्रेरणा है, न भय की। केवल सर्वहित-बुद्धि की यानी धर्म-बुद्धि की प्रेरणा है और स्वेच्छापूर्वक सर्वहित के लिए किये जाने वाला काम ही नैतिक काम है।

रचनात्मक कार्य शुद्ध नैतिक कार्य है। इसीलिए इनसे मनुष्य में नैतिकता का निर्माण होता है। और यही कारण है कि रचनात्मक कार्य मनुष्य के हाथ में युद्ध और राज्य (मिलिटरी और सिविल) दोनों के निराकरण के लिए एक सशक्त साधन बन जाता है।

पार्टी के अन्दर-अन्दर ही अन्तरकलह होने लगा है।

यह अन्तरकलह तब तक नहीं जायगा, जब तक सब लोग सत्ता के इर्दगिर्द घूमने वाले हैं। सत्ता से दूर अगर एक स्वतंत्र जमात ऐसी हो, जो सत्ता हाथ में न ले तो सत्ता-संस्था भी शुद्ध होगी। यह जमात "विरोधी पार्टी" नहीं होगी। लोकशाही जैसी है, वैसी ही रहेगी क्या ? सोचने पर ध्यान में आयेगा कि यह जैसी है, वैसी कायम नहीं रह सकेगी।

एक बड़ा पक्षमुक्त समाज होना चाहिए, तभी लोकशाही कायम रहेगी। इसलिए मुझे सर्वोदय के सिवाय कुछ सूझता ही नहीं है। मैं साम्प्रदायिक नहीं हूँ, न तो कोई सम्प्रदाय की स्थापना करने का मेरा संकल्प है। हिन्दुस्तान की किसी भी संस्था का सदस्य *नहीं हूँ। मैं तो परमेश्वर* का पैदा किया हुआ एक व्यक्ति-मात्र हूँ। किसी पंथ का कोई अभिमान रखने की कोई जरूरत नहीं है। तटस्थ भाव से जो दीखता है, वह कहता हूँ। अगर इसमें मेरी कोई गलती हो और मुझे कोई समझाये तो मैं समझना चाहूँगा। पर मुझे जो सूझता है, वह मैंने कहा है।

नागरी लिपि द्वारा तेलुगु सीखिये : १२

तेलुगु भाषा में विशेषण तीन तरह के हैं : गुणवाचक, संख्यावाचक और क्रियावाचक विशेषण। संज्ञा के पहले ही विशेषण प्रयुक्त होता है। लिंग, वचन के अनुसार इसका रूप-परिवर्तन नहीं होता।

इस पाठ में गुणवाचक और संख्यावाचक विशेषण के उदाहरण दे रहे हैं।

गुणवाचक विशेषण संज्ञा के गुण को बताता है

हिन्दी	तेलुगु	हिन्दी	तेलुगु
छोटा लड़का	चिन्न पिल्लवाडु	बड़ा धनवान	गोप्प धनवंतुडु
छोटी लड़की	चिन्न पिल्ल	सफेद कागज	तेल्ल कागितमु
बड़ा घर	पेद्द इल्लु	काली बिल्ली	नल्ल पिल्लि
		लाल स्याही	येर्र सिरा

सूचना : कभी-कभी विशेषण के साथ 'नि', 'अइन' भी जोड़ देते हैं।

सफेद घोड़ा = (तेल्ल+नि) तेल्लनि गुर्रमु

जरूरी बात = (मुख्यमु+अइन) = मुख्यमइन संगति

सरल काव्य = (सरस+मइन) = सरसमइन काव्यमु

संख्यावाचक विशेषण के दो प्रकार

(अ) संख्यार्थक विशेषण

एक कलम	ओक कलमु	छः विरोधी (दुश्मन)	आरुगुरु शत्रुवुलु
दो घोड़े	रेंडु गुर्रमुलु	सात लड़के	येडुगुरु बालुरु
तीन किताबें	मूडु पुस्तकमुलु	आठ रुपये	येनिमिदि रूपायलु
चार कुत्ते	नालुगु कुक्कलु	नौ घड़ियाँ	तोम्मिदि गडियारमुलु
पाँच आदमी	अइदुगुरु मनुष्युलु	दस बच्चे	पदुगुरु पिल्ल

(आ) पूर्णार्थक विशेषण

पहला पाठ	मोदटि पाठमु	छठा	आर[illegible]
दूसरा लड़का	रेंडव बालुडु	सातवाँ	येड[illegible]
तीसरी लड़की	मूडव पिल्ल (बालिक)	आठवाँ	येनिमिद[illegible]
चौथा घर	नाल्गव इल्लु	नवाँ	तोम्मिद[illegible]
पाँचवाँ सदस्य	अइदव सभ्युडु	दसवाँ	पद[illegible]

सत्यं जगत् स्फूर्तिः जीवनं सत्यशोधनम्

भूदान-यज्ञ

लोकनागरी लिपि*

राष्ट्रपती का अिशारा

राष्ट्रपती ने दो साल पहले ही, जब मैं गुजरात में था, अपने यहां सर्वोदय-पात्र रखा। अगर कुल देश राष्ट्रपती का यह अिशारा है, अैसा समझ कर सर्वोदय-पात्र को अुठाता है, तो अद्भुत असर होता है! दूसरे देश में हम देखते हैं की सुलतान छोड़े हुअे हैं। सुलतान बुरे हैं, अैसा नहीं, अच्छे भी हो सकते हैं। लेकीन वहां भय से अमल होता है। दूसरी चीज मेरे सामने यह आयी की अेक देश अैसा हो सकता है की जीसका अमल प्रेम से होता है, भय से बीलकुल नहीं। अैसा होगा तो बहुत बुलंद शक्ती नीर्माण होगी। हींदुस्तान में करीब आठ करोड़ परीवार हैं। मैं नहीं मानता की आठ लाख परीवारों में भी अीनकी जानकारी होगी। जानकारी पहुंचाने का कोअी साधन नहीं है। अीन्दौर के नजदीक के गांव में चीन और हींदुस्तान के बीच का मसला मैं समझा रहा था, तो मुझे मालूम हुआ की वहां के लोगों को चीन क्या है, मालूम नहीं था। मुख्य सवाल है, जानकारी पहुंचाने का। राष्ट्रपती ने अिशारा कीया सर्वोदयपात्र रख कर। देश अुनका अनुकरण कर सकता था—बशर्ते की देश के गांव-गांव में यह जानकारी पहुंचाने का कोअी जरीया होता।

(अीन्दौर, १७-१-६१)

—वीनोबा

*लिपि-संकेत : ि = ी ; ी = ी ; ख = ख, संयुक्ताक्षर हलंत चिह्न से।

चालीसगाँव के प्रस्ताव का अमल

श्री धीरेंद्रभाई हमारे अग्रगण्य सेवकों और नेताओं में से हैं। क्रांति के मर्म को और उसकी प्रक्रिया को जितना वे समझते हैं, उतना बहुत कम लोग समझते हैं। उनकी सबसे बड़ी खूबी यह है कि जिस बात को वे सही मानते हैं, उसके अनुसार तुरत ही स्वयं आचरण शुरू कर देते हैं।

लगभग ढाई वर्ष पहले चालीसगांव में सर्व सेवा संघ ने यह तय किया था कि हमारा आन्दोलन सर्व जन-आधार पर चले। केंद्रित निधि का सहारा तो उससे दो वर्ष पहले ही छोड़ दिया गया था। पर हमें यह मंजूर करना चाहिए कि इन सब प्रस्तावों के बावजूद हममें से अधिकांश लोगों ने इस चीज को नहीं अपनाया है, न उसके लिए कोई विशेष प्रयत्न किया है। किसी भी आन्दोलन या काम के लिए आर्थिक आधार जुटाने का अब तक जो प्रचलित तरीका है उसको एकदम छोड़ कर, सारे काम को और अपने आपको जनता के भरोसे, अर्थात् भगवान के भरोसे, छोड़ देने का कदम बहुत नया और साहस का है। पर हमारे आन्दोलन का जो स्वरूप है और हम जिस क्रांति की ओर बढ़ना चाहते हैं, उसे देखते हुए वही रास्ता आवश्यक है और सम्भव भी। भूदान-आन्दोलन के प्रमुख लोगों में से शायद धीरेंद्रभाई ही अकेले हैं, जिन्होंने अपने आपको और सब कामों से हटा कर इस प्रयोग में ही लगा लिया है। एक तरह से आज उनका अज्ञातवास-सा ही चल रहा है। सब ओर से अपने को समेट कर वे बिहार में पूर्णिया जिले के एक छोटे-से गांव में अपने दो-तीन साथियों के साथ बैठ गये हैं। धीरेंद्रभाई उस गांव में (बलिया में) जिस तरह से काम कर रहे हैं, वह हम सब लोगों के लिए प्रेरणादायी है। वे समय समय पर वहां का अपना अनुभव पत्र के जरिए भेजते रहते हैं। कुछ महीनों पहले उनके पत्रों में से कुछ अंश 'भूदान-यज्ञ' में प्रकाशित किये गये थे।

जन आधार का क्या मतलब लिया जाय? क्या कार्यकर्ता गांव में आकर बैठ जायें और गांव वाले तैयार न हों, तब भी उनसे ही अपना निर्वाह प्राप्त करने का आग्रह रखें—इत्यादि बातें हमारे सामने भी स्पष्ट नहीं हैं, यह हमें स्वीकार करना चाहिए। इस बार के अपने पत्र में धीरेंद्रभाई ने कार्यकर्ता के निर्वाह और जनाधार के प्रश्न को लेकर विस्तार से चर्चा की है। कार्यकर्ता का निर्वाह किस-किस प्रकार चल सकता है और किस प्रकार चलना चाहिए, इसका उन्होंने विश्लेषण किया है, जो इसी अंक में अन्यत्र दिया गया है। शरीरश्रम से स्वावलम्बी होकर जनसेवा करना अत्यंत कठिन होते हुए भी, यह सही है कि जिस प्रकार के समाज की हम कल्पना करते हैं उसको ध्यान में रखते हुए इसके सिवा कोई चारा नहीं है कि सेवक धीरे धीरे नागरिक की भूमिका पर आ जाय। पूरा स्वावलम्बन उसका न भी सधे, तब भी बापू ने जैसा सुझाया था, कार्यकर्ता अपने श्रम के साथ जनता के प्रेम का आधार भी जोड़ ले और उस भरोसे गांव में बैठे। इसी आधार पर धीरेंद्रभाई ने गांव वालों से कार्यकर्ताओं के लिए जमीन मांग कर उसे फिर सामूहिक खेती में शामिल करके अपना निर्वाह चलाने की जो योजना सामने रखी है, वही उचित मालूम होती है। लोगों में आज अपने ही गांव के सामुदायिक या सामाजिक काम के लिए भी अत्यधिक उदासीनता और उपेक्षा है, इसमें कोई संदेह नहीं है। जनता अपनी शक्ति को पहचानती नहीं है और सोयी हुई है। यह आवश्यक है कि जनता को जागृत किया जाय, जन-शक्ति को संगठित किया जाय और जनता में अपने ही सामूहिक उत्थान के लिए कुछ-न-कुछ करने की व देने की, प्रेरणा पैदा की जाय। पर यह प्रेरणा पैदा करने के लिए कार्यकर्ता सीधा लोगों पर ही अपना भार डालें, जैसा कि धीरेंद्रभाई इस समय कह रहे हैं, वह आवश्यक नहीं मालूम होता। शायद वह उचित भी नहीं है। गांव में जमीन लेकर उस जमीन को सम्मिलित खेती में शामिल करके, कार्यकर्ता खुद भी उस पर श्रम करें या कोई दूसरा उद्योग अपनायें और उसमें जो कमी रह जाय, उसकी पूर्ति गांव वालों के प्रेम पर छोड़ दें, यही उचित मालूम होता है।

हम वर्गविहीन और श्रेणीविहीन समाज की बात करते हैं, हर व्यक्ति को उत्पादक और समाजोपयोगी काम में हिस्सा बंटाना चाहिए ऐसा कहते हैं, तो हमें अपने जीवन में श्रम को उसका स्वाभाविक स्थान देना ही चाहिए। कभी-कभी ऐसी दलील दी जाती है कि पदयात्रा आदि में लगे हुए कार्यकर्ताओं के लिए यह सब कैसे संभव है। इसका उत्तर एक से अधिक बार विनोबा खुद दे चुके हैं। श्रम अगर हमारे जीवन का अंग बन गया हो, तो किसी भी परिस्थिति में वह हमारे रोजमर्रा के व्यवहार में प्रकट होता ही। जिस चीज को हम बुनियादी मानते हैं उसकी सिद्धि के लिए अगर जरूरी हो तो हमारे कामों के तरीके भी हमें बदलने होंगे और बदलने चाहिए।

अत श्री धीरेंद्रभाई ने कार्यकर्ता के निर्वाह के प्रश्न को लेकर जो चर्चा उठायी है, वह बहुत सामयिक है। पहली के निधि-मुक्ति और चालीसगांव के सर्व-जन-आधार के प्रस्ताव के बावजूद हमारा अधिकांश काम आज उन्हीं पुराने तरीकों से चल रहा है, यह क्या इस बात का लक्षण नहीं है कि हमारे विचारों और आचार में जड़ता आयी है? क्रांति को आगे बढ़ाना हो तो इस जड़ता को हमें दूर करना ही होगा। आशा है, सर्व सेवा संघ की प्रबंध समिति में और बाद में सम्मेलन के समय होने वाले संघ के अधिवेशन में, इस प्रश्न पर गम्भीरता से हम सब चर्चा करके किसी नतीजे पर पहुंचेंगे।

—सिद्धराज ढड्ढा

पंचायतों से अपील

राजस्थान समग्र सेवा संघ के कार्य-वाहक अध्यक्ष श्री जवाहिरलाल जैन और प्रो. गोकुलभाई भट्ट ने राजस्थान के अभी हाल के पंचायत-चुनावों में सफल हुए उम्मीदवारों को सम्बोधन करके एक संयुक्त अपील जारी की है। अपील में यह आशा प्रकट की है कि वे अपने-अपने क्षेत्रों में जो सबसे गरीब और निराधार हैं, उनका ध्यान सबसे अधिक और सबसे पहले रखेंगे तथा अपने सारे काम-काज में बहुमत से निर्णय करने की प्रथा की बजाय सर्वसम्मति से निर्णय करने की परम्परा को स्थान देंगे। अपील में आगे कहा है :

"ग्राम-पंचायतों और पंचायत-समितियों का मुख्य कार्य विकास और लोक-शिक्षण का है। इसमें आपसी होड़ और मन-मुटाव को स्थान नहीं होना चाहिए। साधन कम हैं, काम अनेक हैं। सभी आवश्यक भी हैं, इसलिए सबके मेल-जोल से प्राथमिकताएँ तय करनी चाहिए और योजनाबद्ध तरीके से काम करके जनता और सरकार से प्राप्त हो सकने वाले साधनों का सही और अधिकतम उपयोग करना चाहिए। इसमें गरीब, पिछड़े हुए, बीमार और अशिक्षितों की भलाई का पहले ध्यान रखा जाना चाहिये। सबको रोजगार मिल सके, इसका खयाल रखने की जरूरत है। कृषि, गो और ग्रामोद्योग विकसित हों, रोगियों की सेवा हो, सबको रोटी, सबको काम मिला करे, प्रौढ़ों और बालकों का शिक्षण चले, सच्ची सहकारिता बढ़े, इन सब कामों में जनता रुचिपूर्वक भाग ले, यह प्रयत्न रहना चाहिये। ईश्वर सबको शुभ कार्य करने की प्रेरणा और दृढ़ता दे।"

कार्यकर्ता का निर्वाह और सर्व-जन-आधार

धीरेन्द्र मजूमदार

[श्री धीरेन्द्रभाई सर्व-जन-आधार की दुनिया की तलाश में बिहार के एक गाँव में बैठे हैं, इससे पाठक परिचित हैं। कुछ अरसे पहले उनके कुछ अनुभव 'भूदान-यज्ञ' में हमने दिये थे। इस बार श्री धीरेन्द्रभाई ने अपने पत्र में इस प्रश्न की विस्तार से चर्चा की है। उनके पत्र में से संबंधित अंश नीचे दिया जा रहा है। इस संबंध में इसी अंक में अन्यत्र प्रकाशित संपादकीय की ओर भी हम पाठकों का ध्यान आकर्षित करते हैं। —सं०]

मुझे इतने दिन यहाँ रह कर जो अनुभव हुआ है, उस पर से "जन-आधार" के प्रश्न पर अपना विचार साफ कर लेना चाहिए और उसकी व्यूह-रचना क्या होगी, इसे भी सोच लेना चाहिए। हममें से कम ही ऐसे हैं, जो जनाधार के तत्त्व को मानते हैं, जो मानते हैं, उनकी मान्यता भी वहाँ तक नहीं है कि हमारा काम सर्व-जनाधारित हो और उसी क्षेत्र का जन-आधारित हो, जिस क्षेत्र में प्रत्यक्ष काम हो रहा हो। अतएव आंदोलन का आधार क्या हो, और उसकी व्यूह-रचना कैसी हो, इस प्रश्न पर विचारों की स्पष्टता कर लेनी चाहिए। नहीं तो हम क्रांति के मार्ग से भटक जायेंगे।

कार्यकर्ता का आधार मुख्यतः पाँच प्रकार का हो सकता है :

(१) किसी केंद्रीय निधि या फंड का आधार'
(२) तात्कालिक सम्पत्ति-दान, या चंदा
(३) सर्व-जनाधार
(४) श्रम-आधार और
(५) [जैसे दादा कहते हैं] आत्म-आधार

(१) केन्द्रीय निधि आधार : केन्द्रीय निधि का मतलब है सरकारी कोष या कोई गैर-सरकारी ट्रस्ट या फंड या कार्पोरेशन। जहाँ तक गैर-सरकारी फण्ड का सवाल है, मैं नहीं समझता हूँ कि गांधी-निधि के बाद निकट भविष्य में कोई बड़ा फण्ड बन सकेगा; दूसरे जो दातव्य ट्रस्ट हैं, उनके संदर्भ में हमारा काम नहीं बैठता है। क्रांति के काम के लिए कोई 'कार्पोरेशन' बनेगा, ऐसा भी नहीं दीखता। अर्थात् केन्द्रीय निधि का मतलब है—अन्ततोगत्वा सरकारी अनुदान, चाहे वह खादी-कमीशन के मार्फत, भूदान-कमिटी के मार्फत या ऐसे अन्य बोर्डों के मार्फत हों। कुमारप्पाजी हमेशा कहा करते थे कि हर चीज की एक "कारोलरी"—फलित—होता है। हम किसी चीज को ग्रहण करके उसके फलित को छोड़ नहीं सकते। सरकारी कोष के आधार पर वैतनिक कार्यकर्ता द्वारा काम चलाने का फलित क्या होगा, इसे अत्यन्त गम्भीरता के साथ विचार करने की आवश्यकता है।

(२) संपत्ति-दान या तात्कालिक चन्दा : सपत्तिदान या तात्कालिक चन्दे से वैतनिक कार्यकर्ता जनता में जाकर काम करें, यह कुछ चल सकता है। लेकिन उसकी भी गुंजाइश अब तक बहुत दिखाई नहीं पड़ी। यद्यपि मैं मानता हूँ कि आन्दोलन के अंग के रूप में सपत्ति-दान का काम काफी तीव्रता के साथ चलाने की जरूरत है, और अगर मान लिया जाय कि सम्पत्ति-दान का काम निकट भविष्य में खूब चलेगा और उसके आधार पर काफी कार्यकर्ता देहातों में काम कर सकेंगे, तब भी देश की मौजूदा मानसिक परिस्थिति के संदर्भ में सोचना पड़ेगा कि ऐसे कार्यकर्ता जन-शक्ति निर्माण का काम कर सकेंगे क्या ? कार्यकर्ताओं का वेतन कहाँ से आता है, यह जनता नहीं देख सकेगी। जब हम सरकारी कोष से कुछ हजार कार्यकर्ताओं को गाँव में भेजते हैं और उनके साथ १००-५० संपत्ति-दान से भी भेज देते हैं तो जनता उन्हें एक ही डिपार्टमेंट के लोग समझती है। जनशक्ति-निर्माण की क्रांति इससे नहीं होगी। सम्पत्ति-दान से अगर हम अपना प्रधान कार्यालय तथा शिक्षण-प्रवृत्ति जैसे केन्द्रीय संस्थाओं को चला सकें तो समझना होगा कि क्रान्ति की व्यूह-रचना में काफी सफलता मिल गयी है। व्यावहारिक दृष्टि से भी दफ्तर-व्यवस्था, शिक्षण आदि के उपरान्त क्षेत्रीय लोकसेवकों को इस आधार पर टिकाना सम्भव होगा, ऐसा नहीं दीखता।

(३) सर्व-जनाधार : सर्व-जन-आधार की हिम्मत आज लोक सेवकों में कम है, अगर हो भी जाय तो जनता में भी उसकी चेतना नहीं है। अतः इस चेतना के निर्माण में विशेष पुरुषार्थ करना होगा, ताकि सेवकों की हिम्मत बढ़े और लोकशक्ति का अधिष्ठान हो। लेकिन स्थायी रूप से लोकसेवक के पोषण के रूप में यह प्रक्रिया भी बहुत इष्ट नहीं होगी, क्योंकि अनुभव से यह देखा गया है कि इस पद्धति में सेवक के नैतिक पुरुषार्थ को शिथिलता का खतरा निरन्तर बना रहता है। लेकिन आज की बेहोश तथा उदासीन जनता में जिम्मेदारी का बोध निर्माण करने के लिए सर्व-जनाधार आवश्यक है। नहीं तो किसी काम के लिए जनता का अभिक्रम नहीं जगेगा।

(४) श्रम-आधार : शरीरश्रम से स्वावलम्बी होकर जनसेवा करना अत्यन्त कठिन है। अव्वल तो मध्यम वर्ग के कार्यकर्ताओं में विरले ही ऐसे निकलेंगे जो इसे सिद्ध कर सकें। दूसरी बात है कि यह जो कोई सिद्ध कर सकेंगे, उनमें से विरले कोई ऐसे निकलेंगे, जो समय निकाल कर जनसेवा कर सकें। अतः इसे क्रान्ति की व्यूह-रचना में सामान्य प्रकार नहीं माना जा सकता। यद्यपि, यही प्रक्रिया स्वाभाविक है, क्योंकि उससे सेवक धीरे-धीरे नागरिक की भूमिका हासिल करके दूसरे नागरिकों को भी जन-सेवा की प्रेरणा दे सकेगा।

(५) आत्म-आधार : यानी अपने मेल-मिलाप के मित्रों से लेकर काम चलाना। यह उन्हीं कार्यकर्ताओं के लिए सम्भव होगा, जिनके अच्छी आर्थिक स्थिति वाले लोगों से घनिष्ठ सम्बन्ध हों। ऐसे लोग भी बहुत थोड़े ही होंगे। स्वभावतः वे अच्छे मध्यम वर्ग के लोग होंगे। इस पर से एक बुनियादी सवाल यह भी उठता है कि क्या ऊपर के मध्यम वर्ग के सेवकत्व से, यानी नेतृत्व से, सर्वोदय यानी अन्त्योदय की क्रान्ति होगी। सामन्तवाद या पूंजीवाद के निराकरण में शायद इस वर्ग का माध्यम ठीक था। लेकिन मैनेजरवाद के निराकरण में यह नेतृत्व योग्य है क्या ?

उपरोक्त प्रकारों पर मैं हमेशा विचार करता रहा।

अब तक मैंने जो कुछ विचार किया है, उससे इस नतीजे पर पहुँचा हूँ कि हमारी क्रांति के कार्यकर्ताओं के लिए, बापू ने ७ लाख नौजवानों के लिए जो अपेक्षा रखी थी कि वे अपना श्रम तथा जनता के प्रेम के आधार पर गाँव-गाँव में बैठें वही कुछ ठीक व व्यवहारिक है। सेवकों को उसी पद्धति का मार्ग ढूंढ़ना होगा।

बलिया में [बिहार में पूर्णिया जिले का गाँव जिसमें धीरेंद्रभाई बैठे हैं] भी मैं अपने साथियों से तथा गाँव के मित्रों से इसी दिशा में चर्चा करता रहता हूँ।

यह सब चर्चा मैंने साथियों के विचार के लिए की है, मेरी अपनी भावना तथा मान्यता तो तुम लोग जानते ही हो। मैं कहता रहता हूँ कि 'मेरे तो एक बजरंग बली दूसरो न कोई।' मैं जानता हूँ कि सर्व-जन के पास अगर कोई सम्पत्ति है तो वह केवल श्रम ही है। सेवकों के बारे में भी मेरी निश्चित राय है कि सेवकों को श्रम-आधार की पद्धति खोजना होगा।

क्रान्ति-सेवक को नागरिक की भूमिका में अपने को प्रतिष्ठित करना होगा। अगर कार्यकर्ता के रूप में कोई विशिष्ट वर्ग खड़ा होता है तो समाज स्वावलम्बी न होकर वर्ग-आधारित होगा। स्वावलम्बी समाज में रक्षण, पोषण तथा शिक्षण नागरिक-आधारित होगा, सेना-आधारित नहीं होगा, चाहे वह शान्ति-सेना या सेवा सेना के रूप में अहिंसक सेना ही क्यों न हो।

इस विचार को मैं शुरू से ही गाँव के लोगों के सामने रख रहा हूँ। जनता की भिक्षा पर टिकने वाले लोकसेवकों का नैतिक आधार कैसे टूटा, यह सब बताता हूँ। जिस समय मैं अपने बैठने के लिए गाँव देखने गया था, उसी समय से ही इसकी चर्चा चलायी है। गाँववालों से मैंने पूछा कि आप यहाँ की जमीन की हैसियत देख कर बतायें कि कितनी जमीन होने पर एक साधारण मध्यम वर्ग का परिवार अपना गुजारा कर सकता है। उन लोगों ने कहा कि ८ एकड़ से काम चल सकता है। उसी समय मैंने उनसे यह बात कह दी थी कि हमें डेढ़ परिवार के हिसाब से १२ एकड़ जमीन दीजिये, ताकि हम स्वावलम्बी हो सकें। बाद में नरेंद्रभाई के साथ बैठ कर हम लोगों ने हिसाब जोड़ा। अगर गाँव के मध्यम वर्ग के लोग मजदूर लगा कर ८ एकड़ के मुनाफे से अपना गुजारा कर सकते हैं, तो हमको अपने श्रम से पैदा करके ६ एकड़ से काम चलाना चाहिए। इसके उपरान्त, अगर हम कार्यकर्ता हैं तो हमारा काम ही है कि किसानों को अधिक उत्पादन की प्रक्रिया बतायें। यह तभी हो सकता है, जब हम खुद ज्यादा पैदा करके बतायें। अतः ५ एकड़ से हमारा काम चलना चाहिए, ऐसा हमने माना। पद्धति यह सोची कि सामूहिक खेती में जैसे दूसरे परिवारों ने अपनी आंशिक जमीन मिलायी है, वैसे हम अपनी पूरी जमीन मिलादें, और ६० प्रतिशत से अपनी मजदूरी के अनुपात में प्राप्त करें तथा ३० प्रतिशत से ५ एकड़ के अनुपात में हिस्सा लें।* इस तरह हमारी हैसियत नागरिक की हो सकेगी। अभी तक हमने इस हिसाब पर अमल शुरू नहीं किया है, क्योंकि पहले मैं जन-मानस में 'देने' का अभ्यास पैदा करना चाहता हूँ, ताकि हमारे स्वावलम्बी हो जाने के बाद भी वे अन्य कामों के लिए अन्न-दान देते रहें।

---

* बलिया में सामूहिक खेती के लिये जो जमीन गाँववालों ने अलग निकाली है, उस पर सब गाँववाले भूमिवान और भूमिहीन—मिल कर खेती करते हैं। उसकी उपज में से ६० प्रतिशत हिस्सा उस जमीन पर जिन्होंने काम किया हो (चाहे वे भूमिहीन हों या भूमिवान) उनमें बँटता है, ३० प्रतिशत जिन्होंने अपनी जमीन मिलायी है उसके परिमाण में उनमें बँट जाता है और शेष १० प्रतिशत गाँव के सामूहिक कामों के लिये अलग रखा जाता है।

विनोबा के विचार

स्त्रियाँ, शांति-सेना और सर्वोदय-पात्र

मानव-समाज बहनों के कारण टिका हुआ है। हिन्दुस्तान में बहनों ने पीछे रह कर और सुझाया कि समाज में सद्भावनाएं टिकें। भारत में जो सद्भावनाएँ टिकी हैं, वह बहनों के कारण। पुरुष बाहर काम करते हैं, परन्तु उन पर भाई, पिता, पति, पुत्र इत्यादि के नाते अंकुश रखना, धर्म-पथ को वे छोड़ कर न जायें, उन पर नैतिक वजन डालना, यह काम चुपचाप बहनों ने किया है। इसलिए कहा जाता है कि धर्म रक्षा का काम बहनों ने किया है, इसमें कोई शक नहीं।

अब बहनों को थोड़ा बाहर निकल कर भी काम करना होगा। गाँव में झगड़ा होता है तो बाहर निकल कर कौन झगड़ता है—पुरुष। अब बहनों में यह शक्ति और हिम्मत आनी चाहिए कि जहाँ सुना कि झगड़ा हो रहा है, वहाँ फौरन पहुँच जायें और बीच में पड़ कर कहें कि हम तुमको झगड़ने नहीं देंगे। इसे हमने शांति-सेना का नाम दिया है। झगड़ा शांत कराने में बहनें घायल भी हो जायें तो इसकी परवाह उन्हें नहीं करनी है, मर-मिटने का भी मौका आये तो तैयार रहना होगा। तभी बहनें अपना कर्तव्य पूरा कर सकती हैं। यह सब हिम्मत से होगा।

शान्ति-सेना का काम भाई भी करें, ऐसा न हो कि वे लड़ते रहें। आज तो कलकत्ता, दिल्ली, कानपुर, अहमदाबाद आदि शहर अशांति के घर हैं। यदि एक बहन ने भार सहन की तो दंगा बंद हो जायगा। इतिहास की एक कहानी है कि राघोबा दादा ने आक्रमण किया—बेलकूदी से। तो अहिल्याबाई ने मुकाबले के लिए बहनों की सेना भेज दी। आखिर उसे वापस जाना पड़ा। इसलिए बहनें शान्ति-सेना बनायें।

अब झगड़ों के मौके पर हम पहुँचना चाहते हैं तो घर-घर से पूर्वपरिचय होना चाहिए, तभी शान्ति के मौके पर काम कर सकेंगे। वैसे लड़ाई-झगड़े के मौके हमेशा नहीं आते, तब शान्ति-सैनिक बहनें क्या काम करें? उन्हें घर-घर परिचय करना होगा।

अब अम्बर चरखे चलते हैं। इसका कपड़ा कौन खरीदेगा? शहर वाले। परन्तु बहनों को चाहिए कि वे खादी लेकर घर-घर जायें और कहें कि यह अपने गाँवों की बहनों की खादी है, इसे खरीदो। यह शान्ति के मौके पर करने का काम है। साथ ही साथ सर्वोदय-पात्र, सम्पत्ति-दान का काम भी बहनें कर सकती हैं। पुरुष भी ये काम करेंगे ही। साहित्य बिक्री का काम भी बहनें कर सकती हैं। विचार-प्रचार की विशेष आवश्यकता है और यह सब बहनों से सध सकता है। इस तरह बहनों का द्विविध कार्यक्रम होगा।

(१) अशांति के समय लड़ाई-झगड़े शांत करना।

(२) शांति के समय सर्वोदय-पात्र, खादी प्रचार, साहित्य प्रचार आदि।

बहनें राजनीति में न पड़ें

राजनीति का क्षेत्र पुरुषों के लिए छोड़ दें। सेवा और प्रेम का काम बहनें करें। उपरोक्त द्विविध निष्ठा से समाज को बहनों द्वारा बल मिलेगा। बहनों के राजनीति में पड़ने से समाज का नैतिक बल घटेगा। बहनें राजनीतिक पार्टी से अलग रह कर ही उन्हें बचा सकती हैं।

(महिलाओं की सभा,
बैतूल, १८-१०-६०)

शरीर-श्रम ईश्वर-भक्ति से हो

ध्यान धारणादि काम तो आज तक हम करते ही थे; लेकिन शरीर-परिश्रम नहीं करते थे। जैन, बौद्ध, हिन्दू धर्म ने ध्यान-धारणा का आदेश दिया है, लेकिन ध्यान धारणा करने वाले झाड़ नहीं लगायेंगे, उत्पादन का काम नहीं करेंगे; इसलिए कि भिक्षु और श्रमण के लिए यह उचित नहीं है। जो खेती होगी, जो उत्पादन का काम होगा, वह ध्यान योग की भावना के लिए ही होगा। पौधे ध्यानपूर्वक लगाये जायेंगे। बहुतों का यह ख्याल है कि एकांत में ध्यान होता है और पौधों की सेवा में नहीं होता है, यह गलत है। कोई ध्यान करता है, तो वह आध्यात्मिक कार्य नहीं होता। ध्यान एक शक्ति है, जैसे कर्म एक शक्ति है। विमान काम करते हैं। वे भक्त हैं, लेकिन कर्मयोगी नहीं। कर्म में चारों ओर ध्यान देना पड़ता है। माता रसोई करती है, तो उधर चूल्हा जल रहा है, इधर रोटी सेंकती है, आटा भी गूंधना है, तीन चार चीजों की तरफ एकसाथ ध्यान देना पड़ता है। इसका नाम है कर्मशक्ति।

इस तरह से सब विषयों को छोड़ कर किसी एक पर ध्यान देना यह एक शक्ति है भक्ति नहीं। इस तरह की एकाग्रता गणित, भूगोल, *साइन्स आदि विषय में हो सकती* है। वह भक्ति नहीं कही जायगी। साइन्स में ऐसी शक्ति ईजाद की गयी है कि शस्त्र से दुनिया का नाश हो सकता है। शास्त्र में भी कहा है कि दुनिया का योग से विनाश भी हो सकता है और उन्नति भी। इस वास्ते ध्यान पारमार्थिक काम नहीं है।

कर्म जब ईश्वर को अर्पण होता है, तब वह कर्मयोग होता है। वैसे ही ध्यान ईश्वर को अर्पण होता है, ईश्वर के लिए होता है, तब वह पारमार्थिक बनता है।

वैसे ही खेती का काम ईश्वर की भक्ति की दृष्टि से करेंगे, तो वह पारमार्थिक काम होगा। इसलिए खेती का काम मामूली है, ऐसा नहीं।

हम चाहते हैं कि जैन श्रमण, बौद्ध भिक्षु, सब परिश्रम करें। सब काम उपासना की बुद्धि से हो। अगर वे शरीर-परिश्रम नहीं करते हैं, तो वे पुराने जमाने के खंडहर होंगे, इस जमाने के लायक नहीं होंगे। साधना का जो विचार आज तक हो गया, वह परिपूर्ण हो गया, ऐसा नहीं। जैसे साइन्स उत्तरोत्तर विकसित हो रहा है, वैसे ही साधना के विचार का भी उत्तरोत्तर विकास हो रहा है।

(बोधगया, ७-१-'६१)

बैल बनाम ट्रैक्टर

ट्रैक्टर अमेरिका में चल सकता है। अमेरिका में प्रति व्यक्ति बारह एकड़ जमीन है। हिन्दुस्तान में प्रति व्यक्ति एक एकड़ जमीन है। हिन्दुस्तान से बारह गुना जमीन अमेरिका में पड़ी है। वहाँ भूमि अधिक व मनुष्य संख्या कम है, इसलिए मनुष्य की मदद में, उसकी पूर्ति में ट्रैक्टर आता है। हिन्दुस्तान में मनुष्य ज्यादा व जमीन कम है। यहाँ अगर ट्रैक्टर का उपयोग करेंगे, तो मनुष्यों को मजदूरी नहीं मिलेगी। मनुष्य बेकार बनेगा। इसलिए ट्रैक्टर यहाँ मारक होगा। अमेरिका में वह पूरक होगा। अमेरिका में ट्रैक्टर बनते हैं, हिंदुस्तान में बनते नहीं, इसलिए भी हिन्दुस्तान में वह मारक बनेगा। अमेरिका में गाय का दूध पीते हैं, लेकिन बैलों को खाते हैं और खेती ट्रैक्टर से करते हैं। हिन्दुस्तान में गाय का दूध पियेंगे, बैलों को मारेंगे नहीं। भारतीय संस्कृति यह मान्य नहीं करती कि बैलों को खाया जाय। फिर ट्रैक्टर हमको बहुत महँगा होगा। हमको ट्रैक्टर को भी खिलाना पड़ेगा और बैलों को भी खिलाना पड़ेगा। यह 'अनइकॉनॉमिकल' हो जायेगा।

पड़ती जमीन को तोड़ने में ट्रैक्टर का उपयोग कर सकते हैं। उसमें कोई बाधा नहीं, विरोध नहीं, लेकिन खेती के काम में यदि उपयोग करेंगे ट्रैक्टर का, तो बैलों को मारना पड़ेगा। यह हम चाहते नहीं। बैल खाद देते हैं, ट्रैक्टर खाद नहीं देता। तो विदेश का 'मेन्यूअर' खरीदना पड़ेगा। हिन्दुस्तान की 'इकॉनॉमी' गाय और बैल पर खड़ी है।

(कुंडा, ता० २८-१२-६०)

गाँवों में सत्संग की आवश्यकता

कभी-कभी यात्रा में हमें बहुत छोटे गाँव मिलते हैं। ऐसे गाँवों में भाषण देने के बजाय दूसरे ही ढंग से बात करना होता है। एक बात हम महसूस करते हैं कि हर छोटे गाँव में क्या हो? तो हमको लगता है कि सत्संग होना चाहिए। पाँच-पचास बातें ग्राम में करने की हम बता सकते हैं। परन्तु सबसे प्रथम बात होनी चाहिए—सत्संग। गाँव वालों में ज्ञान और भक्ति बढ़े और धर्म-भावना दृढ़ हो, ऐसी कोशिश करने वाला एक शख्स मिलना चाहिए। लोग एक-दूसरे की मुखालफत न करें, इतना ही बस नहीं। यदि आपके गाँव में कोई सज्जन न हो, तो लंका से भी बदतर है, क्योंकि रावण की नगरी में विभीषण जैसा एक सज्जन था, तो क्या आपके गाँव में सज्जन नहीं हो सकता?

सरकार गाँव में स्कूल बना सकती है, परन्तु सज्जनों की नियुक्ति गाँव-गाँव नहीं कर सकती। इसलिए गाँव में सज्जन लायें और श्रवण-भक्ति की योजना करें। जिसके जीवन में धर्म-भावना भरी हो, ऐसा सज्जन चाहिए और श्रवण-भक्ति चलनी चाहिए। कान की तुलना तुलसीदासजी ने समुद्र से की है, "जिनके श्रवण समुद्र समाना।" जिनके कानों में भगवान की कथाएँ भरती रहती हैं, वैसे ही कान होने चाहिए, फिर भी जो अधूरे ही रहते हैं।

एक बार महाराज युधिष्ठिर जंगल में घूमते थे, तो द्रौपदी को बहुत कष्ट उठाना पड़ता था। ऋषि उनसे मिलने जाते तो धर्मराज उनसे पूछते कि ऋषि श्रेष्ठ, क्या प्राचीन काल में किसी साध्वी स्त्री को इस प्रकार कष्ट उठाना पड़ा है? तो ऋषि सीताजी का नाम लेते। धर्मराज कहते, बताइये वह कहानी। अब क्या युधिष्ठिरजी को कहानी मालूम नहीं थी? परन्तु युधिष्ठिर महाराज ज्ञान-चर्चा सुनने के आदी थे। गोमुख से बहने वाली नदी जैसी पवित्र होती है, वैसे ही ऋषि-मुख से निकलने वाला ज्ञान भी पवित्र होता है। इस प्रकार सारा 'महाभारत' कहानियों से भरा है।

कहने का मतलब यह कि श्रवण करने की हवस होनी चाहिए। जैसे देह में भूख बनी रहती है, वैसे ही हवस ज्ञान सुनने की होनी चाहिए।

मुझे मालूम नहीं, यहाँ गाँव वालों ने कोई सज्जन प्राप्त किया है या नहीं। सज्जन बिना गाँव स्मशान जैसा लगता है। यदि गाँव में सज्जन न हो, तो बाहर से लाकर बैठाने की कोशिश करनी चाहिए।

आज 'सोशल एज्यूकेशन' के नाम पर देश में पैसा खर्च हो रहा है। स्कूल और किताबें कब पढ़ेंगे लोग? और जो पढ़ेंगे, उसमें से अधिकांश भूल जायेंगे! इसलिए गाँव-गाँव सत्संग चलना चाहिए और कान को ही ज्ञान-प्राप्ति का साधन बनाना चाहिए। (सोहागपुर, ता० १९-१०-'६०)

संगमों का मेला

काका कालेलकर

प्राग्-ऐतिहासिक संस्कृति के शुद्ध प्रतिनिधि आदिवासियों के बीच, पश्चिम की अद्यतन संस्कृति का विजय जिसमें पाया जाता है, ऐसे लोहे और इस्पात के प्रचण्ड, राक्षसी कारखाने स्थापित करना—यही एक अद्भुत, अभूतपूर्व संगम है। बंगाल, बिहार की पुण्य संस्कृति की पुण्य सीमा पर जहाँ पुण्यसलिला स्वर्णरेखा बहती है और भोली-भाली खरकाई के प्रेमजल का स्वीकार करती है, वहाँ भारतपुत्र पारसी जमशेद ने संकल्प किया कि भारत में ऐसे असाधारण सामर्थ्यशील यन्त्रोद्योग का प्रारम्भ करूँ, जिसकी हस्ती का स्वीकार वैभवोन्मत्त पश्चिम को भी आदर के साथ करना पड़ेगा। और उस संकल्प का मुहूर्त भी कैसा ! उन्नीसवीं सदी का अन्धकार कम होकर बीसवीं सदी के उषःकाल का जब प्रारम्भ हो रहा था। अंधकार और प्रकाश का जिसमें संगम है, ऐसे ब्राह्ममुहूर्त को ऋषियों ने ध्यान के लिए पवित्र, अनुकूल समय माना है। उद्योगवीर जमशेदजी टाटा ने ध्यान के साथ युगान्तरकारी पुरुषार्थ के लिए इस मुहूर्त को पसन्द किया और सोचा कि आदिवासी *नाम धारण करने वाली नदी खरकाई जहाँ वैभवशाली संस्कृति की सूचना करने वाली स्वर्णरेखा** को अपना पानी समर्पण करती है, वहीं पर भूमिगत लोहे को बाहर निकाल कर उद्योगों का प्रारम्भ करूँ। भूगर्भ विद्या के प्रवीणों ने उन्हें विश्वास दिलाया कि स्वर्णभूमि भारत के पेट में कृष्णायस (लोहा) कम नहीं है। और पता नहीं किस प्राचीन युग के वानस्पत्य कांतारों ने इसी भूमि में कोयला भी तैयार करके रखा था। लोहा और कोयले का एक ही प्रदेश में संगम होना, यह कोई मामूली भाग्य नहीं है।

आर्य और ईरानी संस्कृति ने एकत्र आकर अशोक के दिनों में इसी बिहार की भूमि में एक अद्भुत प्रासाद खड़ा कर दिया था। मुगल काल में ईरानी और भारतीय संगीत का जब संगम हुआ, तब तानसेन के गुरु, गायनऋषि हरिदास ने हिंदुस्तानी संगीत को जन्म दिया था। यमुना के किनारे मुगल वैभव का स्मरण दिलाने वाला ताजमहल भी *संगम-संस्कृति* का एक उज्ज्वल द्योतक है।

संगम-लीला की समृद्धि में रममाण होने वाली इस भारतभूमि में साकची संगम के पास जो नया भाग्यतीर्थ खड़ा हुआ है, उसका फिर से दर्शन करने के लिए हमें समय मिला सन् उन्नीस सौ साठ और इकसठ के सन्धिकाल का।

मेरे सामने साधना-केन्द्र, वाराणसी और समन्वय-आश्रम, बोधगया के आमन्त्रण खड़े ही थे। इसलिए राज्यसभा का बेरूबाड़ी-सत्र खतम होते ही हम चल पड़े।

अमरपुरी वाराणसी और ऋषिपत्तन सारनाथ देख कर हम अशोक के पाटलीपुत्र पहुँचे। वहाँ से भगवान महावीर के निर्वाणधाम पावापुरी हो आये। चीनी यात्री ने जिसका वर्णन किया है, उस नालन्दा का महाविहार देखा। जरासन्ध का संघर्ष और महायान का समन्वय, दोनों जहाँ पाये जाते हैं उस उष्णजल राजगृह का दर्शन किया और विष्णुपद की धर्मशिला को स्पर्श करके बोधिगया के उस स्थान पर पहुँचे, जहाँ कोशकार अमरसिंह ने बुद्ध भगवान को संकल्प-सिद्धि का उत्तुंग स्मारक खड़ा किया है। बोधगया आज पूर्व एशिया का आकर्षण-केन्द्र बना है और एक तरह से उसे अन्तर्राष्ट्रीय महत्त्व भी प्राप्त हुआ है।

गांधीजी के सुरेन्द्रजी और जयप्रकाशजी के द्वारकोजी के सत्संग में दो दिन बिता कर हम कलकत्ता के रास्ते जमशेदपुर यानी टाटानगर पहुँच गये।

हमने जमशेदपुर पहुँचते ही हमारे आतिथ्य के प्रतिनिधि श्री प्रेमनाथजी से पूछा कि यहाँ सरोवर के दर्शन का लाभ तो मिलेगा ही न ? उन्होंने कहा, "डिमना सरोवर के दर्शन से ही आपकी यात्रा *का मंगलाचरण होगा।*"

डिमना सरोवर जमशेदपुर से आठ-एक मील की दूरी पर है। यह कोई *प्राचीन सरोवर नहीं है।* आसपास की ऊँची-ऊँची पहाड़ियों की तलहटी में बरसात का थोड़ा पानी इकट्ठा होता था, वहाँ एक अनुकूल जगह देख टाटाओं ने एक अच्छा-खासा बाँध बाँधा और मील की परिधिवाले नये सरोवर को जन्म दिया। कुदरत ने इस सरोवर के बीच एक टापू को अवकाश देकर इस जलराशि को सौन्दर्य-राशि बना दिया।

भावनगर के बोर तालाब के जैसे यहाँ पर भी आखिर तक सरोवर का दर्शन नहीं होता। आखिरी चढ़ाई पूरी करते ही यकायक सारा वारि-विस्तार नजर के सामने प्रगट होता है। सौन्दर्य के साथ चमत्कृति का मिलाप होने से आनन्द द्विगुणित होता है। जमशेदपुर के नगरवासियों के लिए पीने का शुद्ध पानी यहीं से जाता है। वे इस सरोवर के किनारे वनभोजन के लिए अपनी कृतज्ञता व्यक्त करते हैं। सुन्दर चमकीले पृष्ठभाग पर रंगों की लहरी बताने की कला सरोवर ने संगमरमर से सीखी या संगमरमर ने सरोवरों से सीखी—इसका जवाब दोनों नहीं दे सकते। पानी में अपना प्रतिबिम्ब देखने वाले बादल हमारे अनुत्तरित प्रश्न को हँसते रहते हैं। अथवा उनको भी आश्चर्य होता होगा कि पृथ्वी के इन छोटे-छोटे आइनों में इतना बड़ा आसमान कैसे समाता होगा। रात को जब बादल नहीं होते, तब आकाश के सितारे इसी शान्त सरोवर में अपने-अपने प्रकाश की तुलना करके अपने स्थान की गहराई का नाप लगाते हैं।

लेकिन सरोवर के साथ सच्ची दोस्ती करनेवाली तो हैं पवन की लहरें और उनको भी सबक सिखाने वाले परिन्दे। एक शिखर से दूसरे शिखर तक दौड़ने वाली हवा की लहरें सीधी-सीधी कभी नहीं जायेंगी। जरा नीचे उतर कर सरोवर के कपोल को गुदगुदी किये बिना एक भी लहर आगे नहीं जाती है। और पक्षी भी सरोवर पर से पसार होते बीच-बीच में नीचे उतरे बिना नहीं रहते। यह कहना कि वे तो मछलियों की खोज में ही नीचे उतरते हैं, उनके प्रति सरासर अन्याय है। मछलियों को उदरस्थ करके उनके साथ अद्वैत सिद्ध करने का व्यापार तो कुदरत ने ही उन्हें सिखाया है। उसमें कोई अनोखी या अनहोनी बात नहीं। लेकिन पक्षियों को इस पार से उस पार जाते बीच-बीच में मन हो ही जाता है कि *सरोवर के शैत्यपावनत्व का थोड़ा-सा* स्पर्श अपने सीने को करायें।

हमारी नजर और हमारी स्मृति ने इन सब पूर्वाचार्यों का स्मरण करके सरोवर के *विस्तार का विहार किया* और अनुभव किया कि अपनी गहराई सरोवर की गहराई और आसमान की गहराई से अलग ही कोटि की है।

बढ़ती हुई मीनी सन्ध्या ने अपनी बूँदों के द्वारा हमें स्मरण दिलाया कि आगे देखने की बहुत-सी चीजें हैं। हम चढ़े थे, वैसे उतरे। स्वर्णरेखा के *प्रवाह को फिर से लांघा और देखते-देखते हम वृन्दावन* पहुँचे।

वृन्दावन शब्द की यात्रा भी सोचने लायक है। श्रीकृष्ण के जमाने में, मथुरा के *पास वृन्दा के पौधों का एक आकर्षक वन* होगा। श्रीकृष्ण-गोपियों के रास के कारण उस वन का नाम अजरामर हुआ। अब दक्षिण के कृष्णराज सागर के भक्तों को *इच्छा हुई कि पानी के फव्वारों की रंग*-भरी रासक्रीड़ा खड़ी करें। बिजली ने उस रास में इंद्रधनुष का इन्द्रजाल बढ़ाने का ठेका लिया और लोगों ने देखा कि इस *कलात्मक सौन्दर्य को व्यक्त करने के लिए* वृन्दावन से बढ़कर कोई शब्द है नहीं। इस तरह मैसूर में वृन्दावन पहुँचा। अब जमशेदपुर के सर्जकों को दक्षिण वृन्दावन *की ईर्ष्या हुई और उन्होंने अपने पुरवासियों* के आमोद-प्रमोद के लिए एक वृन्दावन खड़ा किया। आकाश के सब तारे मिल कर भी अगर रात्रि के अंधकार का नाश *नहीं कर सकते,* तो इस उद्यान के चरणपथ को प्रकाशित करने वाले दीये रात्रि का दिन बनाने की महत्त्वाकांक्षा कैसे धारण करें ?

अब की बार भी अच्छे-अच्छे आतिथेय (मेजबान) मिलने के कारण थोड़े समय में बहुत कुछ समझने का सन्तोष हमें मिला था। लेकिन मेरे मन में एक ईर्ष्या रह गयी। सोमवार की रात को मैं जल्दी सो गया और अहसन तैयबजी का सारा परिवार आकर चि० सरोज को चाँदनी रात की सैर कराने के लिए ले गया। चाँदनी तो मनुष्य को पागल करती ही है, उस पर संगम की शोभा ! उसका *वर्णन सुन कर मेरी आँखें ईर्ष्या से नीली* हो गयीं। दूसरे दिन सुबह देखा, तो हमारे

---

* स्वर्णरेखा कितना काव्यमय और आकर्षक नाम है ! विमान में बैठ कर इस नदी की लकीर को देखने वाले को ही ऐसा नाम सूझ सकता है।

कहते हैं कि इस नदी की रेती धो-धोकर इसमें से सोने के कण इकट्ठा करने वाले सुवर्णकारों ने ही *इसका नाम स्वर्णरेखा रखा था। हम मानते हैं कि ऐसा होता, तो* नदी का नाम सुवर्णकणिका रखा जाता। जो हो, नदी का दर्शन करके हमें इतना आनन्द हुआ कि हम उसे सुवर्णमुखी कहना चाहते हैं। लेकिन रेखा ही सही।

कहते हैं कि इस नदी का उगम राँची शहर से दस मील की दूरी पर है। वहाँ से उत्तर पूरब *की ओर बहती यह नदी त्रिमुहानी की ओर से दक्षिणवाहिनी बनती है।* जमशेदपुर के पास पश्चिम से आकर उसे आदिवासी नदी खरकाई मिलती है। आगे जाकर यह नदी 'मिदनापुर जिले के जंगल में प्रवेश करती है और आखिरकार बालसोर जिले में दाहिनी और बाईं ओर मुड़ती-मुड़ती नागमोड़ी आकार से बंगाल के *उपसागर में विलीन हो जाती है।*

नदी की कुल लम्बाई तीन सौ मील से कुछ कम है। आखिरी सोलह मील में इस नदी के प्रवाह पर समुद्र के ज्वारभाटे का असर होता है और धान से लदी हुई नौकाओं के लिए आवागमन आसान हो जाता है।

पास दो-तीन घंटों की पूँजी थी। प्रेमनाथ भी प्रसन्न हुए और हम तेजवाहन की गति से उत्तर-पश्चिम की ओर दौड़े। सूरज की सुनहरी किरणें भी पीछे से आकर हमें प्रोत्साहन देने लगीं। वायुयान की छोटी-सी विरामस्थली पसार करके आगे बढ़े और हम एक गहरे उपवन में पैठ गये। उपवन बड़ा हो या छोटा, अच्छा धुंधला रास्ता उसकी शोभा बढ़ाता ही है, दूसरे आधुनिक साधनों के जैसे उसे विथी नहीं कर देता।

अगर आगे संगम का आकर्षण नहीं होता, तो भी इस उपवन के दर्शन से हमारा प्रातःकाल कृतार्थ होता। यहाँ हवा का जोर विशेष नहीं होगा। सबके-सब पेड़ सज्जनों के जैसे सीधे ही खड़े थे। टेढ़ा-मेढ़ा वृक्ष ढूँढने पर भी नहीं मिला। आगे जाकर देखा कि उस उपवन की चन्द लताओं को यह पसन्द नहीं आया कि यह सारे सज्जन पेड़ गुमसुम खड़े रहें। लताएँ उनके गले पड़ीं और उन्होंने वृक्ष-वृक्ष के बीच दोस्ती बाँध ली।

उपवन पूरा हुआ और हमने देखा कि सामने की गहराई में खरकाई नदी स्वर्णरेखा से मिलने आगे बढ़ रही है। खरकाई अपना प्रवाह मोड़ कर यहाँ उत्तरवाहिनी बनी है। स्वर्णरेखा प्रसन्न-गम्भीर मुद्रा धारण कर पश्चिम से पूर्व की ओर बढ़ रही है। दोनों को पता नहीं है कि आगे आते उनका करभार लेने के लिए एक बड़ा बन्ध उनके सामने खड़ा होने वाला है और तुरन्त एक पुल दोनों की अवज्ञा करके डिमना सरोवर की ओर जाने वालों की मदद करेगा।

संगम का वायुमण्डल हमेशा ध्यान-गम्भीर और संस्कृतिसमृद्ध होता ही है। और जब उस पर चन्द्रिका की वर्षा हुई अथवा कोमल सूर्यकिरणों ने उस पर कुमकुम चढ़ाया, तब तो पूछना ही क्या? संगम का दृश्य देखते-देखते हम पेड़ों के नीचे खड़े थे और भारत का सारा इतिहास नजर के सामने से गुजरने लगा। हमारे आदिवासियों की स्वतन्त्रता और उनके स्वच्छन्द जीवन के बारे में श्रीकृष्ण के जमाने से हम सुनते आये हैं। भागवत के प्रारम्भ में ही, वैष्णव भक्तों ने इन आदिवासियों के बीच जो धर्मकार्य किया था, उसका जिक्र है। इतिहास काल में अनेक राजाओं ने और सम्राटों ने इनको परेशान किया, लेकिन इनकी दुर्दमनीय प्राणशक्ति ने ही इन्हें बचाया। इन आदिवासी भाइयों को यथार्थ रूप से समझने का प्रयत्न हम पहली बार कर रहे हैं। अगर मेरे पास समय होता, तो आदिवासियों के इस प्रदेश में घूम घूम कर इनके लोकगीतों का और लोककथाओं का संग्रह करता। हमने सुना कि पौष की संक्रान्ति के दिन, इस संगम पर आदिवासियों का मेला लगता है। इस भूमि के हजारों बालक-नरनारी इन नदियों को साक्षी रख कर अपने यौवन के आनन्द को गहरा बनाते हैं।

जो लोग इन प्राकृतिक लोगों से सहयोग पाते हैं और जिन्हें इनकी भाषा आती है, उनका काम है कि वे उनके जीवन में ओत-प्रोत बनें और नवयुग की प्रवृत्तियों के द्वारा उन्हें अपना जीवन समृद्ध करने में मदद करें।

आज तो केवल आर्थिक सम्बन्ध के कारण संस्कृतिनाश ही हो रहा है।

संगम, समन्वय, सहानुभूति, सहयोग और समृद्धि—यही है आज का युगधर्म। पौष संक्रान्ति के दिन इस संगम पर केवल आदिवासी इकट्ठा हो जायें, इतना ही बस नहीं है। जमशेदपुर में भारत के सब प्रान्त के लोग, सब भाषा बोलनेवाली जमातें और सब धर्म के अनुयायी एकत्र रहते हैं। इनके सहजीवन से एक समर्थ और समृद्ध संस्कृति रूप पकड़ रही है। पश्चिम के थोड़े लोग भी अब शुद्ध सहयोग के वायुमण्डल में उनके बीच आ बसे हैं। इन सबको चाहिए कि वे यहाँ के आदिवासियों के साथ मिल-जुलकर एक नया ही मेला लगायें और दो जीवन-स्रोतों के संगम से दीक्षा पाकर सर्वोदयकारी नवसंस्कृति का संकल्प करें। संगम, समन्वय, सहानुभूति, सहयोग और समृद्धि ही नवयुग की दीक्षा है। यही है इस युग का सार्वभौम धर्म।

['मंगल प्रभात' से]

हमारी फिल्में क्या संस्कृति पर लांछन हैं?

लीलावती मुन्शी

एक पत्र-संपादक ने मुझे इस विषय पर कुछ लिखने को कहा है—'हमारी फिल्में क्या संस्कृति पर लांछन हैं?' मैं समझती हूँ कि मेरा उत्तर सभी के लिए रोचक सिद्ध होगा।

प्रारंभ में ही मैं अपनी स्थिति स्पष्ट कर दूँ। वास्तव में मैं फिल्में बहुत कम देखती हूँ और इन दिनों मनोरंजन की दृष्टि से शायद ही कभी। सच तो यह है कि आजकल जो फिल्में दिखायी जा रही हैं, उन सब पर मैं अपनी राय नहीं दे सकती। फिर भी, इतना तो जरूर कहूँगी कि जो अस्वस्थ प्रवृत्ति केवल भारतीय ही नहीं, विदेशी चित्रों में भी दिखायी पड़ती है, उससे मैं अपरिचित नहीं, और इसलिए जहाँ कहीं भी मुझे इसका आभास होता है, उसका विरोध करने की भरसक चेष्टा करती हूँ।

सन् १९५९ में भारत के चालीस करोड़ लोगों ने फिल्में देखीं और इसका कारण यह है कि फिल्में केवल आकर्षक ही नहीं, बल्कि जनसाधारण की पहुँच के भीतर भी हैं। सामान्यतया उनमें से अधिकांश की कथावस्तु अथवा उनका निरूपण यौन तथा अपराध-वृत्ति पर ही आधारित होता है। यह हो सकता है कि यौन अथवा अपराध-वृत्ति का अंश अलग-अलग फिल्मों में कम या ज्यादा हो, किसी में एक अधिक है तो किसी में दूसरा; लेकिन यह तो निश्चित है कि आज झुकाव उसी तरफ है, केवल भारत में ही नहीं, संसार के अधिकांश देशों में। सिनेमा की कला मूलतः पश्चिमी है, और हमारे चित्र भी आजकल पश्चिम की फिल्मों की हलकी नकल मात्र है। जब हमारे यहाँ फिल्में बनना शुरू हुई थीं, तब हमने पौराणिक तथा सामाजिक विषय उनके लिए चुने थे,

लेकिन धीरे-धीरे अब हम पश्चिमी देशों के अनुरूप हो रहे हैं। हमने यौन और अपराध-वृत्ति के विषयों पर फिल्में बनाना शुरू कर दिया और उन्हें अधिकाधिक आकर्षक बनाते गये। यह कुछ ऐसा ही है जैसे शरीर में थोड़ा-थोड़ा जहर देकर उसे इस काबिल बना देना कि बाद में अधिक मात्रा में विष देने पर भी उसका असर न हो। यौन और अपराध-वृत्ति का विष भी इसी प्रकार हलका-हलका युवा मस्तिष्कों में दिये जाने पर फिर अधिक मात्रा के प्रति उनकी सचेतनता नष्ट कर देता है।

आजकल के कुछ युवक स्त्रियों के प्रति वह आदर-भाव नहीं रखते, जिसकी एक माता, बहिन अथवा पत्नी अधिकारिणी होती है, वे उन्हें उपभोग की वस्तु मात्र समझते हैं, जो उनको उत्तेजित करती है और उनकी वासना की तृप्ति करती है। दलील यह दी जाती है कि भूख लगने पर आप कहीं भी जाकर भोजन कर सकते हैं उसी प्रकार वासना की तृप्ति भी जहाँ भी मौका मिले, कर सकते हैं।

हमारे समाज में स्त्रियों का आदर होता था, लेकिन नई मनोवृत्ति युवकों को उन्हें मात्र उपभोग की वस्तु समझ कर सुविधानुसार, काम निकलने पर छोड़ देना सिखाती है। इस नूतन मनोवृत्ति में सब कुछ मान्य है, यहाँ तक कि स्वयं अपनी पुत्री के साथ प्रेम करना भी, जैसा कि 'लोलिता' में है। हत्या करना और हत्यारे को 'हीरो' मानना, सामाजिक न्याय के नाम पर अथवा समानता स्थापित करने के लिए किसी की सम्पत्ति का अपहरण करना भी उसमें चलता है। ईमानदारी और सदाचार आजकल घाटे में हैं। विदेशी चित्रों में, और ऐसे चित्रों की संख्या कुछ कम नहीं है, नृशंसता को देख कर लोग एक प्रकार का तामसिक आनन्द प्राप्त करते हैं।

प्रत्येक बार जब हम कोई अस्वस्थ फिल्म देखते हैं तो हमारे मन पर, विशेषकर युवा और अनुभवहीन लोगों के मन पर, जो एक प्रकार की रोक या लगाम रहती है, वह हट जाती है। प्रारम्भ में इसका असर शायद इतना अधिक नहीं हो, लेकिन इस प्रकार के चित्र अक्सर देखते रहने से मन भी वैसा ही हो जाता है। फिर जानबूझ कर या अनजाने ही लोग उनका अनुकरण करने लग जाते हैं। प्रारम्भ में यह केवल वस्त्र, बातचीत या हावभाव इत्यादि बाहरी बातों तक ही सीमित हो, लेकिन धीरे धीरे वह उनके चरित्र का अंग बन जाता है। हो सकता है कि यह प्रभाव सभी पर नहीं पड़े, लेकिन कई लोग, विशेषकर युवक, इसके शिकार निश्चित होते हैं। इस प्रकार सदा से चले आ रहे सामान्य आचरण के कवच में छेद हो जाते हैं।

सिनेमा का असर सब पर पड़ता है। किसी फिल्म को देखने के बाद, यदि वह प्रभावशाली रही तो, उसका कोई विशेष दृश्य, कोई गीत या संवाद मन में घर कर लेता है, यदि अधिक दिनों के लिए नहीं तो कम-से-कम कुछ समय के लिए तो अवश्य ही। आज किसी भी भद्र पुरुष के घर जाइये, सिनेमा के गाने आपको वहाँ गाये जाते मिलेंगे। यहाँ तक कि छोटे-छोटे बच्चे भी प्यार प्रीत के गीत गाते रहते हैं और फिल्मों के खल-नायकों की नकल करते हैं!

सिनेमा का प्रभाव ही कुछ ऐसा है, चाहे वह भले के लिए हो या बुरे के लिए, निस्सन्देह वह एक शक्तिशाली माध्यम है। यदि उसका सदुपयोग किया जाय, तो इसके द्वारा अपार शक्ति से इस देश का, जिसने स्वतन्त्रता हाल ही में हासिल की है, कितना भला किया जा सकता है! सिनेमा के माध्यम से हमारे युवा-युवतियों को चरित्रवान बनाया जा सकता है, उन्हें वीरोचित कर्म करने की शिक्षा दी जा सकती है, उनके भीतर छिपी संभावनाओं को बाहर लाकर उनमें सद्गुणों का विकास किया जा सकता है और उन्हें अच्छे पुत्र या पुत्रियाँ, अच्छे पति अथवा पत्नियाँ, अच्छे मात-पिता और अच्छे नागरिक बनाया जा सकता है।

लेकिन दुर्भाग्यवश यही सशक्त माध्यम आज हमारे युवक-युवतियों का मन और चरित्र खराब कर रहा है। हमारे प्रिय राष्ट्रपति, डा० राजेन्द्र प्रसाद तक को सिनेमा के बुरे प्रभाव के प्रति लोगों को सावधान करना पड़ा और विनोबा भावे जैसे संत ने भी देश भर में शहर-शहर में प्रदर्शित सिनेमा के अश्लील 'पोस्टरों' के प्रति अभियान आरम्भ किया है। इन 'आकर्षक' पोस्टरों से लुभायमान होकर लोग सिनेमाघरों में जाने को बाध्य होते हैं। सिनेमा हमारी संस्कृति पर लांछन है या नहीं, कम-से-कम इस समय तो वह हमारे लोगों का चरित्र बिगाड़ कर अपार हानि कर रहा है। कहावत मशहूर है कि 'जब चरित्र का नाश हो जाता है, तो फिर कुछ शेष नहीं रहता।'

['भारती' पाक्षिक से]

चम्बल घाटी की समस्या और उसका हल

महावीर सिंह

चम्बल घाटी में भी देश के अन्य भागों की ही भाँति आर्थिक, सामाजिक समस्याएँ हैं। लेकिन दूसरे भागों में इस प्रकार की बागी-समस्या क्यों नहीं है, यह एक प्रश्न है, जिस पर सबको विचार करना चाहिए। इस क्षेत्र का नागरिक होने के नाते तथा चल रहे बाबा के शान्ति-मिशन का एक सदस्य होने के नाते, प्राप्त अनुभवों के आधार पर, नीचे मैं कुछ कारण देश के सामने रख रहा हूँ। शायद इस समस्या पर विचार करने वाले विचारकों और प्रशासकों को भी इससे कोई सहायता मिल सके।

चम्बल घाटी क्षेत्र ब्रिटिश-काल में देशी रियासतों के मातहत रहा है। इसलिए यहाँ शिक्षा की बहुत कमी रही है। शिक्षा की कमी तथा रियासती प्रशासन के कारण यहाँ का जन-मानस प्रायः सामंतकालीन संस्कार लिये हुए है। यहाँ इस युग का विकार, लोभ तो आया ही है, लेकिन सामंत-काल के विकार, अहंकार का विशेष प्रभाव बना हुआ है। लोभ से अधिक चल्दी का सवाल है। अपनी-अपनी चल्दी के झगड़ों को लेकर ही यहाँ बगावत की समस्या ने जन्म लिया है और धीरे-धीरे उसीमें वृद्धि होती जा रही है। अहंकार का सामंती स्वभाव, बदले की भावना का फल ही *बागी बनाता है।*

अब दूसरे कारणों पर भी ध्यान दीजिये। बगावत की गिरोहबन्दी मानसिंह के जमाने से प्रारम्भ होती है। उसी समय दूसरे विश्वयुद्ध की शुरुआत हुई थी। फलस्वरूप किन्हीं जरियों से उन्हें अच्छे-अच्छे आधुनिक अस्त्र शस्त्र प्राप्त हो गये और भारत को सन् १९४७ में जब आजादी मिली, तो उस समय भी बड़े-बड़े राजा-महाराजा, जागीरदारों ने अपने हथियारों को बेचना शुरू कर दिया। फलस्वरूप वह हथियार भी बागियों के हाथ आ गये। एक ओर आधुनिक शस्त्रों से लैस गिरोहबन्द बागी, जो किसी भी पुलिस-टुकड़ी का सामना करने में सशक्त थे, दूसरी ओर यहाँ की भौगोलिक स्थिति, चम्बल के खार, जिनमें *छिपने का पूरा-पूरा अवसर रहता है।* यह दुहरी सुरक्षा की दृष्टि से बागी हो जाना यहाँ के लोगों का सहज काम बन गया। साधारणतया गिरोह में शामिल हो जाने के बाद पुलिस द्वारा मारे जाने का भय मिट गया। छिपने का स्थान प्रकृति से ही मिल गया था, हथियार-*प्राप्ति के जरिये जहाँ से भी खुल चुके थे,* वे खुले हुए ही हैं। इन सब कारणों के अलावा समस्या के समाधान के फलस्वरूप जो गाँवों की हथियारबन्दी प्रारम्भ हुई, उसने आये दिन समस्या को सुलझाने के बजाय बढ़ाने में ही मदद दी और आज भी दे रही है। एक ओर समाज को बागियों का और उनके मुखबिरों का भय, दूसरी ओर पुलिस और उनके सहायकों का भय, इस दुहरे भय से आतंकित चम्बल घाटी क्षेत्र की जनता आज भी त्रस्त है। *अहिंसक प्रक्रिया से समस्या के समाधान का* जो विनोबा द्वारा प्रयोग किया गया, उसे भी समाज और सरकार की ओर से उचित सहकार नहीं मिला, बल्कि कुछ प्रतिकूल ही वातावरण बनाया जा रहा है और प्रयोग को असफल बताया जा रहा है।

अब क्षेत्र तथा देश के समस्त नागरिकों के सामने यह सवाल पेश है कि इस समस्या का वह किस प्रकार समाधान करते हैं, उनके मुख्य चार कारणों की ओर मैंने ध्यान दिलाया है।

(१) यहाँ की अहंकारयुक्त सामंती मनोवृत्ति (बदले की भावना, 'जिसकी लाठी उसकी भैंस')।

(२) आधुनिक शस्त्रों की प्राप्ति और उनसे लैस बड़े गिरोह।

(३) चम्बल के बीहड़ (छिपने के *लिये*)।

(४) गाँवों की हथियारबन्दी और पुलिस की डाकू उन्मूलन पद्धति।

उपरोक्त कारणों में सर्वप्रथम शस्त्रों के तस्कर व्यापार को कड़ाई से रोकना *—जिससे बड़े गिरोहों को समाप्त करना और* गाँवों की हथियारबन्दी और पुलिस राज्य का अंत करना चाहिए। यह कार्य अहिंसक प्रक्रिया से यदि सम्भव हो, तो प्रतिक्रियाएँ नहीं होंगी। आगे के लिए कोई कारण शेष नहीं रहेंगे और शांति स्थापित होगी। उसके साथ ही भौगोलिक कारणों, चम्बल के पहाड़ों *को समतल करने या खेती योग्य बनाने का* काम करना ही होगा। यातायात के साधनों का विकास करना होगा तथा धार्मिक शिक्षा व वर्तमान शिक्षा से पुराने मानस को बदलने का काम करना होगा। इन चार कारणों को दूर करने से ही इस समस्या का समाधान सम्भव है।

आशा है, देश के विचारवान् नागरिक और प्रशासक तथा शांति-सैनिक इन कारणों पर गम्भीरता से विचार करेंगे।

चम्बल घाटी शांति-समिति,
भिण्ड म० प्र०

कहानी

अमरत्व !

सिद्धेश्वर प्रसाद चौधरी 'मंजु'

बागमती अपनी अल्हड़ धारा लिये पार्श्ववर्ती किनारों को चूमती-इठलाती हुई द्रुत गति से उत्तर से दक्षिण की ओर चली जा रही है। पूरबी तट पर एक कदंब-वृक्ष पीले-पीले फलों से लदा समदर्शी की तरह अचल-अटल खड़ा है। मानो मूक स्वर में कह रहा हो—मेरे इस अक्षय कोष से, जितना चाहो ले सको, ले लो। अंशुमाली की सप्तरंगी किरणें बागमती के वक्ष पर तैर रही हैं, उसकी प्रखर उष्णता से बचने के लिए एक युवक गले में जनेऊ, एक हाथ में मछली पकड़ने वाली बाँस की बंसी और दूसरे में फँसाने वाला चारापात्र लिये बंसी नदी में फेंक कर आतुरता से किसी मछली के फँसने की प्रत्याशा में खड़ा है। अभी वह मुश्किल से एक ही फँसा पाया था कि सामने एक किशोरी गेहुँआ रंग, छींट के सलवार और तन पर ओढ़नी रखे, कानों को चाँदी के कई कुंडलों से बिंधाये आकर खड़ी हो गयी और वेदना भरे स्वर में बोली—

"भैया, बेचारी इस नन्हीं-सी जान को जल से छुड़ा कर तड़पा रहे हो ?"

युवक ने सहमे हुए संयत स्वर में कहा, "खाने के लिए फँसा रहा हूँ, जमालो !"

किशोरी ने फिर उलाहने के शब्दों में कहा—"अपने पेट के लिए एक बे-जबान जीव की हत्या ? बामन का बेटा होकर मछली मारते हो ? क्या दूध-दही का अकाल हो गया ? साग-सब्जी से भूख नहीं मिटा सकते, भैया ?"

"अरे, तू जो आज बड़ा ज्ञान बघारने लगी है, पगली ! जल्दी बता, किससे यह सब सीख कर आयी है, तो मैं पहले तेरे गुरु से ही बातें करके उसे समझाऊँ।"

"इतनी-सी बात क्या सीखने की चीज है ? यह तो हर कोई आसानी से समझता है। कसम खाओ कि आज से ऐसी हरकत आइंदा नहीं करोगे। क्या अपनी इस छोटी बहन को इतनी भी भीख नहीं दे सकते, मेरे राजा भैया ?"

'बामन के बेटे' पर न मालूम इन शब्दों ने कौनसा जादू कर दिया ! "विश्वास करो, जमालो, आज से विमल कभी मछली न मारेगा।"—कह कर विमल ने उसी क्षण बागमती की लहरों पर बंसी फेंक दी और किशोरी जमालो को पूरी आँखों से देख कर पुनः सिर झुका कर चल पड़ा।

जमालो की आँखें आँसुओं से तर हो गयीं। खिसकती ओढ़नी के सिरे से आँखें पोंछ रही थी और विमल की पीठ देख रही थी।

* * *

"जय बजरंग बली, मारो इन पतितों को ! देखो, इन्हें तनिक भी छोड़ा तो भगवान् कभी क्षमा नहीं करेगा। अरे ...
दौड़ो हिन्दो—सब एक जगह जमा हो जाओ। गोल बाँध कर चलो और जो छूट गये हों, उन्हें पुकार कर जमा कर लो। आज दिखा देना है कि इन हाथों में अब भी कितनी ताकत है।"

दूसरी ओर से 'अल्ला हो अकबर' के गगनभेदी नारों से आसमान दहल रहा था ! "रशीद, इन कुफ्रपरस्त काफिरों को किसी कीमत पर छोड़ना गुनाह होगा। इन्हें अपने बाजुओं के करिश्मे दिखाने हैं। मुसलमान का बच्चा-बच्चा कुरबान हो जायगा, मगर दुश्मन के सामने घुटने नहीं टेकेगा। क्या समझा है इन नाचीजों ने। जरा जोर से अल्ला हो ..... अकबर... !!"

* * *

"मेरे घायल मालिक को जरा पानी पिला दो भाई ! बड़ा सवाब होगा, भगवान् भला करेगा !"

अरे विमल, देख तो कोई औरत चीख रही है। "अरे, इस अंधेरे में तू कौन है और क्यों रो रही है ?"

"क्या कहूँ भाई, सारा गाँव हिन्दू-मुसलमान के दंगे में बुरी तरह तबाह हो गया—वीरान हो गया। मेरा मालिक दंगे में घायल होकर पानी के लिए मछली की तरह तड़प रहा है ! भगवान के लिए इतनी मेहरबानी करो। जरा पानी लाकर पिला दो। मैं एक मुसलमान औरत हूँ।"

"क्या कहा ? मुसलमान ! जरा मुँह तो ऊपर उठाओ ! अरे, जमालो ! तू यहाँ कैसे आयी पगली ?"

"हाँ भैया विमल, ससुराल में हूँ न ! *सब माजरा सुन तो चुके।*"

"अच्छा ठहरो, घबराओ नहीं, मैं अभी पानी लाता हूँ।"—कह कर विमल दौड़ा हुआ चला गया और अंगोछे को जल में भिगोये आकर जमालो के घायल प्यासे पति को जल पिलाने लगा। इतने में हल्ला हुआ कि विमल एक मुसलमान को पानी पिला कर जान बचा रहा है। बिजली की तरह बीसों लाठियाँ एकसाथ विमल पर गिर पड़ीं ! वह 'आह' करके गिर पड़ा ! दूसरी ओर से गोली की आवाज सुन कर दंगायी भाग चले। वातावरण शून्य ! मृत्यु की तरह शान्त हो गया।

विमल की चिता जल उठी। एक मुट्ठी राख रह गयी थी शेष ! आज उस पर एक समाधि बन गयी है। एक युवती काले कपड़ों में गमगीन बनी वहाँ खड़ी है। उसके पास एक पुरुष नीचा सिर किये उसका दर्द-शरीक बना खड़ा है। युवती थाल में रंग बिरंगे फूलों के साथ दीप और गुलाब का सुगन्धित खुशनुमा गुँथा हार समाधि पर चढ़ा रही है। मोमबत्तियाँ जला कर दामन पसारे *आँखों से टप-टप* अश्रुकण बिखेर रही है। पुरुष जो स्वयं रोता हुआ रुमाल से आँखें पोंछ रहा था, भर्राये गले से युवती का हाथ पकड़ कर आर्द्र स्वर में बोला—"जमालो, उठो, अब न रोओ अधिक !"

मासिक चिट्ठियाँ

उत्कल की चिट्ठी

जब पिछली बार मैंने उत्कल के बारे में लिखा था, तब से महीनों बीत गये हैं। इस अरसे में उत्कल में सबसे महत्त्वपूर्ण घटना कोरापुट के ग्रामदानों के बारे में है। इस जिले में इन पहले सबसे अधिक ग्रामदान हुए थे और एक तरह से सारी दुनिया की दृष्टि उस ओर गयी थी। १४०० से अधिक ग्रामदान वहाँ हुए थे। वहाँ उसके बाद तुरन्त ही निर्माण का काम भी शुरू किया गया, मगर धीरे-धीरे कुछ ऐसी प्रतिकूल परिस्थितियाँ खड़ी हुईं, जिसमें यह काम ठंडा पड़ गया। निर्माण का काम जिस पैमाने पर शुरू किया गया था, उसे समेट लेना पड़ा और छोटे पैमाने पर ही वह काम जारी रहा। उधर निधि-मुक्ति के बाद भूदान-कार्यकर्ताओं के लिए जन आधारित व्यवस्था भी ठीक तरह से खड़ी नहीं की जा सकी, इससे उनकी संख्या भी घट गयी। सरकारी विभागों की ढिलाई के कारण ग्रामदानी गाँवों को सहकारी विभाग या किसी दूसरे सहकारी सूत्र से कर्ज नहीं के बराबर मिला। इससे उनको काफी कठिनाई भुगतनी पड़ी। ४-५ साल पहले यहाँ के ७०० गाँवों में जमीन का पुनर्वितरण हुआ था और उसके कागजात भूदान-कानून के अनुसार मंजूरी के लिए रेवेन्यू विभाग में दाखिल किये गये थे, पर उस समय कोई कार्रवाई नहीं की गयी। उल्टे उस समय में उस जिले में जो सर्वे-सेटलमेंट चल रहा था, उसका कर्मचारियों ने कई जगहों पर पुराने व्यक्तिगत मालकियत के पट्टों के आधार पर ही रेकार्ड बनाना चाहा, जिससे लोगों को ऐसा लगा कि मानों ग्रामदान को सरकार स्वीकार करना चाहती ही नहीं। उस समय कुछ ग्रामदान वापस भी हो गये थे।

सरकारी भूदान-समिति भी उस समय दो साल से अधिक समय तक निष्क्रिय रही थी। अब डेढ़ साल से अधिक हुए, इस समिति का पुनर्गठन होकर उसने फिर से काम शुरू किया और तब से भूदान में प्राप्त जमीन का बँटवारा तथा ग्रामदानों के रेकार्डिंग का प्रश्न फिर से शुरू हुआ है। सौभाग्य से रेवेन्यू कर्मचारी अब अधिक तत्पर हुए हैं और उनकी ओर से आवश्यक कार्रवाई भी होने लगी। अब इस नव-प्रयास में कोरापुट के दो सौ ग्रामदानों के बँटवारे की नये सिरे से जाँच होकर फिर से कागजात तैयार करके दाखिल किये जा चुके हैं। इस समय उनके ग्रामदान संकल्प का ही एक तरह से पुनरुच्चारण हुआ है। नियमों के अनुसार यह आवश्यक है कि कागजात मिलने पर सरकार की ओर से उनके बारे में जाँच-पड़ताल की जानी चाहिए और फिर कोई गल्ती या शिकायत न हो तो उन गाँवों को ग्रामदान के तौर पर सरकारी स्वीकृति मिल जानी चाहिए। अब तक इन २०० गाँवों में से ८४ गाँवों की जाँच हो चुकी है और उनमें से ६६ गाँव ग्रामदानी घोषित किये जा चुके हैं। ऐसी आशा है कि १५ गाँव और घोषित हो जायेंगे। सिर्फ ३ गाँव नामंजूर कर दिये गये हैं, क्योंकि वहाँ के कुछ लोगों ने जाँच के समय शिकायत की थी। जिस स्वागत-योग्य तत्परता का दर्शन अब सरकारी कर्मचारियों में हो रहा है, यह अगर जारी रहा तो इन २०० गाँवों को शीघ्र ही मंजूरी मिल जायगी, ऐसी अपेक्षा की जा सकती है। इसी आशा से अब अगले बरसात तक कोरापुट जिले में भूदान तथा ग्रामदानों के बँटवारे पर अधिक जोर लगाने का तय हुआ है। ऐसी उम्मीद है कि ५०० तक गाँव आसानी से इस प्रकार से पक्के बन जायेंगे।

इस घटना के कारण अब कोरापुट के कार्यकर्ताओं में नया उत्साह आया है, कोरापुट के बारे में दूसरों को भी आशा बंधी है। यहाँ की जनता के लिये यह कम गौरव का विषय नहीं है कि चार साल तक कई प्रकार की कठिनाइयों, उपेक्षा तथा विरुद्ध प्रचार के शिकार बनने के बाद भी उनमें ग्रामदान की निष्ठा इतनी दृढ़ रही है।

अभी कोरापुट के आगे के काम के बारे में विनोबाजी से सलाह लेने के लिये वहाँ के मुख्य कार्यकर्ता गये थे। लोगों की श्रद्धा के बारे में तो विनोबाजी के मन में कोई शंका नहीं थी, पर उनको लगता था, कि वहाँ की स्थिति को सम्हालने के लिए प्रांत की जितनी शक्ति वहाँ लगनी चाहिए थी, उतनी आज तक लगी नहीं। उन्होंने यही सलाह दी कि आगे वहाँ प्रांत को अधिक-से-अधिक शक्ति लगानी चाहिए। खास करके कार्यकर्ताओं के लिए जन आधारित व्यवस्था खड़ी करने के बारे में उन्होंने विशेष जोर दिया। उनकी सूचना के अनुसार वहाँ इस साल ३० कार्यकर्ताओं के निर्वाह के लिए अन्न-दान, सर्वोदय पात्र, सम्पत्ति-दान तथा चन्दे से कम-से-कम १८ हजार रुपया इकट्ठा करने का तय हुआ है और इसके अनुसार अब खलिहानों से अनाज का दान संग्रह शुरू भी हो गया है। अगले महीने में वहाँ ग्रामदानी गाँवों के आठ क्षेत्रीय सम्मेलन किये जायेंगे, जिनमें लोगों को एक साथ बैठ कर विचार विनिमय करने का तथा भाईचारा बढ़ाने का मौका मिलेगा।

अब वहाँ २ क्षेत्रों में खादी कमीशन की ओर से सघन क्षेत्र-योजना के अनुसार काम चल रहा है और उनमें से एक क्षेत्र में सरकारी खण्ड विकास-योजना को सर्व सेवा संघ की ओर से पायलेट प्रोजेक्ट के तौर पर चलाये जाने का तय होकर काम शुरू हो गया है।

एक चौथे क्षेत्र में, जो नौरंगपुर महकमे में है, शासन-मुक्ति तथा ग्रामस्वराज्य का सघन प्रयोग शुरू करने का प्रयत्न हुआ है। इस क्षेत्र में कुल १२ सौ गाँव हैं, जिनमें २०० ग्रामदान हैं। ५० लोक-सेवक हैं। सर्वोदय-पात्र के आधार पर कुछ काम वहाँ अभी जारी है।

अब इस जिले में लोकसेवक तालीम केन्द्र गोपालपाटी में जनाधार पर चल रहा है। यहाँ सिर्फ एक शिक्षक का वेतन नव-जीवन मण्डल की ओर से मिलता है। यहाँ अभी १५ भाई तथा ५ बहनें छह महीने की तालीम ले रही हैं।

श्री गोविंद रेड्डी अब कोरापुट में लौट आये हैं और उन्होंने स्थानी रूप से गण्डा में बैठ कर काम करना तय किया है। उत्कल नवजीवन मण्डल ने उनकी सहायता लेने का निर्णय लिया है। इस तरह से अब कोरापुट का काम आरोहण की दिशा में है।

—मनमोहन चौधरी

पंजाब की चिट्ठी

पंजाब सर्वोदय-मंडल की ओर से शान्ति-सेना समिति बनायी गयी, जिसके संयोजक श्री यशपाल मित्तल नियुक्त किये। यह समिति प्रदेश में शान्ति-सेना के संगठन का काम करेगी। शान्ति-सैनिकों के साथ शान्ति-सहायकों और शान्ति-सेवक भी बनाये जायेंगे।

पंजाब सर्वोदय-मंडल की ता० १५ जनवरी की बैठक में दादा गणेशीलाल, श्री बनारसीदास और श्री युगलकिशोरजी ने अपने-अपने जिलों में जारी किये गये शराबबन्दी तथा अशोभनीय पोस्टर-आन्दोलन की जानकारी दी। पंजाब सर्वोदय-मंडल ने तय किया है कि अशोभनीय पोस्टरों के खिलाफ आन्दोलन के लिए सारे पंजाब में वातावरण तैयार किया जाय और जालन्धर में विशेष रूप से काम को हाथ में लिया जाय।

१२ फरवरी, १९६१ से फिरोजपुर से प्रान्तीय पदयात्रा निकालने का निश्चय किया गया है। यह पदयात्रा जालंधर, होशियारपुर तथा कांगड़ा में सभी होगी। यात्रा का एक उद्देश्य यह भी रहेगा कि पहले से मिली हुई जमीन का यथासंभव बँटवारा किया जाये। यह भी तय हुआ कि सम्बन्धित जिलों में यात्रा को सफल बनाने के लिए पूर्व-तैयारी की जाय।

गांधी-जयन्ती के अवसर पर पट्टी कल्याणा में सफाई-प्रदर्शनी तथा गोबर गैस-प्लान्ट का आयोजन किया गया। पंजाब भर से लोग यह सफल आयोजन देखने के लिए पट्टी कल्याणा आ रहे हैं।

ग्राम अशावटी, जिला गुड़गाँव में दस दिन का एक सफाई शिविर दिसंबर मास में लगाया गया। एक हजार की जनसंख्या के इस पूरे गाँव को सफाई का आदर्श नमूना बनाने का सफल प्रयोग किया गया। ग्रामवासियों ने बड़ा उत्साह दिखाया। गांधी स्मारक निधि के अध्यक्ष श्री दिवाकरजी ने शिविर के दीक्षान्त समारोह में अपने विचार शिविरार्थियों को दिये और प्रत्यक्ष ग्राम सफाई के काम को देखा। इसी प्रकार सर्वोदय-मंडल की तरफ से जालन्धर नगर में एक नगर सफाई-शिविर का आयोजन किया जा रहा है।

पंजाबी सूबा का अकाली आन्दोलन मास्टर तारासिंह की रिहाई तथा संत फतेहसिंह का मरण-व्रत खत्म हो जाने के कारण पंजाब का वातावरण 'नार्मल' हो गया है। इस आन्दोलन के कारण जो तलखी पैदा हुई थी, वह अब नहीं रही।

साम्प्रदायिक विचार के लोग जन-गणना के समय मातृभाषा हिन्दी अथवा पंजाबी लिखवाने पर जोर देंगे, जिससे फिर से वातावरण बिगड़ने का अंदेशा है। पंजाब सर्वोदय मंडल की ओर से जाहिर किया गया है कि भावी जनगणना में सबको अपनी सही भाषा लिखवाने की पूरी स्वतंत्रता हो। भाषा का 'कालम' भरवाने के लिए कोई दबाव न डाला जाय और न कोई दबाव में आये। पंजाब सर्वोदय-मंडल का यह प्रस्ताव छपवा कर लोगों में बाँटा जा रहा है।

पट्टी कल्याणा —ओमप्रकाश त्रिखा

दो नये प्रकाशन

(१) हमारा राष्ट्रीय शिक्षण

ले० श्री चांदचन्द्र भंडारी, पृष्ठ-संख्या २४२, मूल्य रु० २.५० न० पै०, सजिल्द ३.००।

शिक्षण के सम्बन्ध में देश के सारे विद्वान और चिंतक चिंतित हैं। लेखक ने यह पुस्तक बड़े परिश्रम से तैयार की है और बताया है कि भारतीय वातावरण में हमारे बालकों की शिक्षा की बुनियाद क्या है और कैसी शिक्षा दी जानी चाहिए। ऐतिहासिक विश्लेषण से परिपूर्ण इस ग्रंथ की प्रस्तावना आचार्य विनोबाजी ने लिखी है।

अनेक ग्रन्थों को, इस ग्रंथ में ही प्राञ्जल, शैली में पढ़ने का आनन्द।

(२) मानवता की नवरचना

लेखक : डा० पितिरिम ए० सोरोकिन, पृष्ठ-संख्या ३२०, मूल्य रु० २.५० न० पै०, सजिल्द रु० ३.००।

विश्व के सुपरिचित वैज्ञानिक समाज-शास्त्री डा० सोरोकिन की इस प्रसिद्ध कृति का अनुवाद श्री श्रीकृष्णदत्तजी भट्ट ने किया है। समाज-शास्त्र का गंभीर अध्ययन करने वालों के लिए यह पुस्तक बड़ी महत्त्वपूर्ण है। विदेशी लेखक ने सर्वोदय-दर्शन को किस खूबी से व्यक्त किया है, यह देखते ही बनता है।

—अ० भा० सर्व सेवा संघ-प्रकाशन,
राजघाट, काशी

जिला सर्वोदय-मंडल, रोहतक (पंजाब) का सन् १९६० का आय-व्यय पत्रक तथा तलपट

[सर्व सेवा संघ के नये विधान के अनुसार संगठन का एक प्रकार से विकेन्द्रीकरण हुआ है। सर्व सेवा संघ एक जोड़ने वाली कड़ी के रूप में काम करता है, मुख्य कार्यवाहक, इकाइयाँ जिला सर्वोदय-मंडल हैं। अतः हिसाब-किताब आदि केन्द्रित नहीं है। सार्वजनिक काम का ब्योरेवार हिसाब रखना और समय-समय पर उसे लोगों की जानकारी के लिए प्रकाशित करना अत्यंत आवश्यक है। जिला सर्वोदय-मंडल, रोहतक, पंजाब ने सन् १९६० के अपने आय-व्यय का हिसाब भेजा है, जो नमूने के तौर पर नीचे दिया जा रहा है। सभी जिला सर्वोदय-मंडल अपना अपना हिसाब छपवा कर क्षेत्र में वितरण करें तो उचित होगा। जानकारी के लिए प्रांतीय संगठन और सर्व सेवा संघ को भी हिसाब भेजें। -सं०]

आय		व्यय	
नाम मद	रु०–न०पै०	रु०–न०पै०	नाम मद
संपत्ति-दान	२,७८९–१३	२,६९९–१६	कार्यकर्ता-निर्वाह
सर्वोदय-पात्र	३००–०६	८७६–१०	प्रचार
अंकित दान	२,३६९–९१	३७२–५८	सफर
साहित्य-कमीशन	१२८–७२	४४३–२६	मकान-किराया, रोशनी
पंजाब भूदान-समिति	२६२–४५	१०६–९९	घाटा, गत वर्ष
		५२–०५	स्टेशनरी
		२००–८५	सामान तथा मरम्मत
		२०५–४६	अतिथि-सत्कार
		८१–२६	डाक-खर्च
		२७०–९९	सभा-सम्मेलन
		११४–७७	फुटकर
		११६–०७	सर्वोदय-पात्र का भाग सर्व सेवा संघ तथा पंजाब सर्वोदय-मंडल
कुल आय	५,८४६–२७	५,६२०–३०	कुल खर्च

देनदारी		लेनदारी	
सर्वोदय-मंडल, हिसार	१६३–७५	२२५–०७	पेशगी
खादी आश्रम, रोहतक	४३–८४	४६८–१९	साहित्य-खाता
सर्वोदय-पुस्तक भंडार अम्बाला	३४५–०७	११–९४	डाक-पेशगी
		७३–४३	अंतिम रोकड़
	५५२–६६	७७८–६३	
कुल जोड़	६३९८–९३	६३९८–९३	कुल जोड़

राजस्थान समग्र सेवा संघ के नये निर्वाचन

श्री जवाहिरलाल जैन अध्यक्ष व श्री बद्रीप्रसाद स्वामी मंत्री निर्वाचित

राजस्थान समग्र सेवा संघ की साधारण सभा गत ३१ जनवरी को संघ के दुर्गापुरा (जयपुर) स्थित कार्यालय में हुई। इस सभा में संघ के नये विधान के अनुसार पहली बार कार्यकारिणी का चुनाव हुआ। इसके बाद संघ की नवनिर्वाचित कार्यकारिणी की सभा भी वहीं पर हुई, जिसमें संघ के पदाधिकारियों का निर्वाचन किया गया।

सभा में अवकाश ग्रहण करने वाली संघ की पुरानी कार्यसमिति, विशेष रूप से उसके अध्यक्ष श्री सिद्धराज ढड्ढा तथा मंत्री श्री छीतरमल गोयल, की सेवाओं की सराहना करते हुए यह व्यक्त किया गया कि इन लोगों के प्रत्यक्ष मार्गदर्शन तथा नेतृत्व से राजस्थान में संघ की प्रतिष्ठा बढ़ी है और उसका अपना एक महत्त्व का स्थान बना है।

सभा के संचालक श्री जवाहिरलाल जैन ने कहा कि १९६० के साथ भूदान-आन्दोलन का एक चरण, अर्थात् दस वर्ष का काल समाप्त हो रहा है। ऐसे संधिकाल में राजस्थान समग्र सेवा संघ नया रूप लेकर नया अध्याय प्रारम्भ कर रहा है। साथ ही नये स्थान 'गोकुल' में उसका कार्यालय भी आया है। इस प्रकार नये स्थान पर नये रूप में जो काम शुरू हो रहा है, वह शुभ लक्षण है और आशा है कि राजस्थान में इससे भूदान-आन्दोलन को नया जीवन प्राप्त होगा।

नई कार्यकारिणी

संघ की नई कार्यकारिणी नीचे लिखे अनुसार है :

सर्वश्री जवाहिरलाल जैन (अध्यक्ष), केशरपुरी गोस्वामी (उपाध्यक्ष), बद्रीप्रसाद स्वामी (मंत्री), हरिश्चन्द्र स्वामी (सहमंत्री),

सदस्य : सिद्धराज ढड्ढा, छीतरमल गोयल, यज्ञदत्त उपाध्याय, पूलचन्द अग्रवाल, रामेश्वर अग्रवाल, तिलोकचन्द जैन, ब्रह्मदत्त शर्मा, महेश व्यास, बनवारीलाल बेदी और कौशल्या शर्मा।

सभा ने कार्यकारिणी की हर सभा के लिए स्थायी निमंत्रितों के नाम भी तय किये, जिनमें सर्वश्री गोकुलभाई भट्ट, पूर्णचन्द्र जैन आदि हैं।

श्री बद्रीप्रसाद स्वामी ने मंत्री-पद की नई जिम्मेदारी सम्हालते हुए ... शिक्षण, सघन कार्य तथा ... प्रयोग की सिद्धि सब कार्यकर्ता ... अपने जीवन में कर सकें तो उससे ... में आन्दोलन आगे बढ़ सकेगा। ... प्रसादजी ने जाहिर किया कि वे जयपुर में ही रह कर समग्र सेवा ... काम के लिए अपना पूरा समय देंगे।

इस सभा में यह भी निर्णय ... कि कुमारप्पा-स्मारक निधि के लि... से २५ हजार के धन-संग्रह की ... गयी है। उसके पूरा करने का काम ... व तेजी से किया जाय।

सर्व सेवा संघ के द्वारा नवनिर्वाचित प्रतिनिधियों की नामावली

(३१ जनवरी, १९६१ तक प्राप्त)

उत्तर प्रदेश

जिला	नाम
१. गाजीपुर	श्री गजानन्दभाई
२. सुल्तानपुर	,, माताप्रसाद पांडेय
३. गोंडा	,, श्यामसुन्दर लाल
४. आगरा	श्रीमती कपूरी देवी
५. आजमगढ़	श्री मियालाल
६. इटावा	,, दिनेशचन्द्र
७. फर्रुखाबाद	,, यमुनाप्रसाद शाक्य
८. वाराणसी	,, अक्षयकुमार करण
९. बस्ती	,, विश्रामभाई
१०. बांदा	,, अर्जुनभाई
११. बिजनौर	,, ओमप्रकाश गौड़
१२. मुजफ्फरनगर	,, कन्हैयालालजी
१३. मुरादाबाद	,, लखीचन्दभाई
१४. हरदोई	,, शंकरनाथ गुप्त
१५. रायबरेली	,, श्रीकान्तभाई
१६. अलीगढ़	,, घनश्याम सिंह
१७. हमीरपुर	सुश्री शकुन्तला पांडेय

मध्यप्रदेश

जिला	नाम
१. सीधी	श्री विजयबहादुर सिंह
२. रीवा	,, मथुराप्रसाद गौतम
३. बैतूल	,, गं० ऊ० पाटणकर
४. रतलाम	,, दीपचंद जैन
५. रायगढ़	,, नंदलाल छगीमल
६. सतना	,, तीर्थप्रसाद अग्रवाल
७. दुर्ग	,, पंथराम
८. मंडला	,, रतनचंद कोचर
९. टीकमगढ़	श्री कामताप्रसाद तिवारी
१०. छतरपुर	,, चतुर्भुज पाठक
११. [illegible]	,, पुरुषोत्तम भाऊ देशमुख

असम

जिला	नाम
१. नार्थ लखीमपुर	श्री गुणदा भूयाँ
२. शिवसागर	,, रेणुप्रभा बरकिया

प० बंगाल

जिला	नाम
१. हुगली	श्री पंचानन बसु

आंध्र

जिला	नाम
१. अनन्तपुर	श्री प्रभाकर
२. कडप्पा	,, आर० के० रम...
३. गुंटूर	,, जी० आंजनेयुलु
४. कृष्णा	,, गोरा
५. पू० गोदावरी	,, ए० सूर्यनारायण...
६. विशाखापट्टम	,, हीरालाल जैन
७. खम्मम	श्री कोमारगिरि नारायण...
८. प० गोदावरी	श्री पी० रामचन्द्रराव
९. वरंगल	,, डा० गोपालराव
१०. निजामाबाद	,, सी० वी० चारी
११. करीमनगर	,, वी० वेंकट राम...
१२. हैदराबाद	,, उ० केशवराव
१३. मेदक	,, बालचंद श्रीनिवास...
१४. नलगोंडा	,, वी० रामचन्द्र रेड्डी

पंजाब

जिला	नाम
१. हिसार	श्री दादा गणेशीलाल
२. जालंधर	,, लाला हीरालालजी ...
३. फिरोजपुर	,, बनारसीदास गोयल

मैसूर

जिला	नाम
१. कारवार	श्री वामनराव होदिके
२. बेंगलूर	,, गुंडाचार
३. बेल्लारी	,, वासुदेवाचार
४. धारवाड़	,, सरदार वी० डी० पाटील
५. मंगलूर	,, एस० यू० रामचन्द्र...
६. मैसूर	,, सुरेन्द्रनाथ कोलगे

महाराष्ट्र

जिला	नाम
१. बंबई	श्री अनन्तराव निंबाळकर

गुजरात

जिला	नाम
१. बनासकांठा	श्रीमती निर्मला मेहता
२. बड़ौदा	श्री गोरधनभाई मोतीभाई पटेल

उड़ीसा

जिला	नाम
१. बलांगीर	श्री सुंदरेश्वर दास

कुमारप्पा-स्मारक निधि

[ता० ३० दिसम्बर के 'भूदान-यज्ञ' में कुमारप्पा-स्मारक निधि के लिए पाठकों के नाम अपील निकालते हुए हमने सुझाया था कि श्री कुमारप्पाजी के जन्म-दिवस, ४ जनवरी से उनके निधन-दिवस, ३० जनवरी तक कुमारप्पा स्मारक-निधि के लिए निधि संग्रह करने में विशेष शक्ति लगायी जाय। हर सप्ताह हमारे पास निधि के लिए छोटी-बड़ी रकमें आ रही हैं। हालांकि ता० ३० जनवरी बीत चुकी, पर संग्रह का काम अभी जारी है, यह उचित ही है। जिन पाठकों तथा कार्यकर्ताओं ने अभी तक अपनी तथा अपने मित्रों से प्राप्त करके रकमें न भेजी हों, वे अब भी भिजवाने की कृपा करें। फिलहाल 'भूदान-यज्ञ' में दाताओं की सूची प्रकाशित की जाती रहेगी। —सं०]

	रु०—न०पै०	रु०—न०पै०
गत अंक में प्राप्ति-स्वीकार		कुल ५२,२८३—२३
काशी में ११ फरवरी तक प्राप्त रकम	रु०—न०पै०	
सर्वोदय मंडल, 'मणिभुवन,' बम्बई—७ द्वारा संकलित	८६—००	
श्री अर्जुन खिमजी एण्ड कंपनी, बम्बई—१.	५१—००	
सहयोगी समाज, मार्फत-छोटुभाई देसाई, मालाड, बम्बई	५१—००	
बसुमत्ती पालन-केन्द्र, धारवाड के कार्यकर्ताओं का संकलन,	२७—००	
सघन क्षेत्र, अजगरा (वाराणसी) के कार्यकर्ताओं के द्वारा	२५—००	
श्री यादवजी भाऊ, रामगंज, खंडवा द्वारा संकलित	२०—००	
क्षेत्र खादी-कार्यालय, पिलखुवा (मेरठ)	१०—००	
श्री काशीचरण कियान, मार्फत श्री दाताराम जी, कलकत्ता	१०—००	
श्री जीवनलाल भिवानी ,, ,, ,,	५—००	
श्री मदनगोपाल अग्रवाल ,, ,, ,,	५—००	
श्री हरिबक्स केजरीवाल ,, ,, ,,	५—००	
दामोदर चौबे कंपनी, ,, ,, ,,	५१—००	
श्री हंसराज सौभाग्यचन्द्र कोठारी, बड़ौदा	१०—००	
श्री गंडूराम, अमरबू स्टोर, पट्टी (अमृतसर)	१०—००	
श्री शिवनंदन प्रसाद सिंह, अंचल कार्यालय, हँसुआ (गया)	५—००	
श्री सत्यम् भाई, पठानकोट (पंजाब)	५—००	
श्री के० डी० मेहता, राजमहल रोड, बड़ौदा (गुजरात)	५—००	
श्री टी० एम० मंगुण्णवर, हुबिनाल (बेलगाँव)	५—००	
श्री एम० सुकुमारन् पापुर (पालघाट) द्वारा संकलित	३—००	
श्री रामराव मारुतीराव देशमुख, ललपुरी (अकोला)	१—००	३८९—००
	कुल रकम	५२,६७२—२३

ग्राहकों तथा एजेंटों से आवश्यक निवेदन

प्रायः ग्राहकों की ओर से ऐसी शिकायतें आती रहती हैं कि चंदे की रकम मनिआर्डर से भेजने या ग्राहक बनाने वाले को दे देने के बावजूद भी अंक जल्दी चालू नहीं किये जाते हैं। चंदे की रकम भेज देने या दे देने के बाद जल्दी-से-जल्दी अंक पाने की उत्सुकता ग्राहकों को होना स्वाभाविक है; पर होता यह है कि अव्वल तो मनीआर्डर पहुँचने में दो-चार दिन की देरी स्वाभाविक ही हो जाती है। इसके अलावा चूँकि हर सप्ताह काफी संख्या में मनीआर्डर आते हैं, इसलिए पोस्टआफिस वालों से यह व्यवस्था की हुई है कि वे सप्ताह में दो दिन, बुधवार और शनिवार को, हमारे मनीआर्डर देते हैं। पत्र साप्ताहिक होने से अगर डिस्पैच की तारीख के एक दिन बाद भी मनीआर्डर पहुँचा, तो स्वाभाविक ही पत्र चालू होने में एक सप्ताह और देरी हो जाती है।

अतः सामान्य तौर पर चंदे की रकम का मनीआर्डर भेजने या ग्राहक बनाने वाले को रकम दे देने के तीन सप्ताह तक धीरज रखने की प्रार्थना है। अगर तीन सप्ताह में अंक न मिले तो अवश्य इस कार्यालय को सूचना करें। जो सज्जन ग्राहक बनाते हैं, वे भी कृपया ग्राहकों से पैसा लेते समय निवेदन कर दें। कई बार चंदे की रकम भेजते समय मनीआर्डर में कोई तफसील नहीं लिखी रहती। नये बनने वाले या पुराने ग्राहक मनीआर्डर के नीचे वाले भाग में भी अपना पूरा नाम, पता और अन्य तफसील लिख दें।

पुराने ग्राहकों से

पुराने ग्राहकों का चंदा समाप्त होने की सूचना हर ग्राहक को कार्ड द्वारा करीब चार-पाँच सप्ताह पहले यहाँ से भेजी जाती है। सूचना मिलने के तुरंत बाद अगर नये साल का चंदा भेज दिया जायगा तो अंक मिलने का सिलसिला नहीं टूटेगा। पुराने ग्राहक चंदा भेजते समय कृपा करके मनीआर्डर फार्म के नीचे वाले भाग में अपनी ग्राहक-संख्या व चंदा-समाप्ति की तारीख अवश्य लिखें। ये दोनों चीजें 'रैपर' पर ग्राहकों के पते के ऊपर में छपी रहती हैं।

एजेंटों से

हर महीने के पहले सप्ताह में पिछले महीने के बिल यहाँ से एजेंटों को भेज दिये जाते हैं। बिल में चालू माह में भेजे गये अंकों का विवरण, मूल्य, कमीशन तथा पिछले माह का बकाया और कुल लेनी या जमा रकम यह सब जानकारी दे दी जाती है। एजेंटों से प्रार्थना है कि वे बिल प्राप्त होते ही अपना हिसाब मिलान कर लें और बिल की रकम जल्दी भेज दें। एजेंटों को अंक तभी तक चालू रहते हैं, जब तक भेजे जाने वाले अंक की कीमत एजेंटों की जमा-पेशगी रकम से कम रहती है। अतः पेशगी की रकम बराबर कायम रहे इस दृष्टि से हर माह के बिल की रकम कृपा करके समय पर भेजते रहें।

—अवधबिहारी द्विवेदी, व्यवस्थापक
भूदान-पत्रिका-विभाग

दिल्ली प्रदेशीय सर्वोदय-सम्मेलन

दिल्ली प्रदेश का सर्वोदय-सम्मेलन गत ३, ४ और ५ फरवरी को नजफगढ़ में सम्पन्न हुआ। इसमें दिल्ली और आस-पास के प्रदेशों के करीब १०० कार्यकर्ताओं ने भाग लिया।

सम्मेलन का प्रारम्भ श्री वी० रामचन्द्रन् द्वारा एक छोटी-सी प्रदर्शिनी के उद्घाटन से हुआ। ४ तारीख को प्रभात फेरी और सूत्रयज्ञ के बाद श्री जी० रामचंद्रन्, मंत्री, गांधी स्मारक निधि की अध्यक्षता में भारतीय संसद के अध्यक्ष श्री अनन्तशयनम् आयंगार ने सम्मेलन का उद्घाटन करते हुए कहा कि सर्वोदय-आन्दोलन मौजूदा सामाजिक स्थितियों को बदल कर नया मानव और नया समाज बनाना चाहता है। श्री जी० रामचंद्रन् ने नौजवान कार्यकर्ताओं को इंगित करते हुए कहा कि वे रचनात्मक कार्यक्रम पर जोर दें। श्री सी. के नैयर, सदस्य लोकसभा, ने कहा कि ऐसे सर्वोदय-सम्मेलन राजनीतिक और सामाजिक कार्यकर्ताओं के लिए तीर्थस्वरूप हैं।

दोपहर को कार्यकर्ताओं ने जमीन का बँटवारा, सर्वोदय-पात्र, अशोभनीय पोस्टरों के खिलाफ आन्दोलन और पंचायती राज के लिए निर्दलीय चुनाव पर चर्चा की। सर्वोदय-पात्र की संख्या कम-से-कम दिल्ली में एक लाख होनी चाहिए, ऐसा तय किया गया। अशोभनीय पोस्टरों के सम्बन्ध में एक परिसंवाद आयोजित करने का विचार है, साथ ही जनमत तैयार करने के लिए जनता को शिक्षित करने का भी निर्णय किया गया।

५ तारीख को प्रभात-फेरी के बाद कार्यकर्ता अलग-अलग दलों में बँट कर सर्वोदय-पात्र की स्थापना के लिए गये। एक घंटे में नजफगढ़ के मुहल्लों में करीब १०० सर्वोदय-पात्र रखे गये। साढ़े दस बजे श्री काकासाहब कालेलकर ने नजफगढ़ क्षेत्र के बुनियादी स्कूलों के अध्यापकों को ध्यान में रख कर कहा, बुनियादी शिक्षा गांधीजी की विश्व को एक आध्यात्मिक और लोकतंत्रीय देन है। इसके बाद श्री श्रीमन्नारायण ने कहा कि केवल चरखा और मिट्टी के काम से स्कूल, बुनियादी स्कूल नहीं बन जाता है। बुनियादी शिक्षा के लिए उपयुक्त शिक्षक और वातावरण की आवश्यकता है।

उन्होंने आगे कार्यकर्ताओं से कहा कि आप लोग दिल्ली प्रदेश में कितने भूमिहीन हैं इसका सर्वे करें, जिससे सरकार द्वारा भी इस दिशा में कुछ मदद ले सकें।

दोपहर को श्री वियोगी हरि द्वारा सम्मेलन समाप्त हुआ। श्री वियोगी हरि ने अपने भाषण में बताया कि आजकल सेवा के कामों में भी सरकार पर निर्भर रहने की वृत्ति खतरनाक है। लोगों में आत्मनिर्भरता जगाना, सर्वोदय का मुख्य काम होना चाहिए।

सम्मेलन में २१ लोकसेवकों का सर्वोदय मण्डल बना, जो तय किये हुए कार्यक्रम, प्रस्ताव और निर्णयों को अमली रूप देगा।

मातृ-मंगल अम्बर विद्यालय, रींगस का नया सत्र

मातृ-मंगल अम्बर विद्यालय, रींगस का नया सत्र १ मार्च, १९६१ को प्रारम्भ होने जा रहा है। इस विद्यालय में देश के विभिन्न भागों की छात्राएँ अम्बर-प्रशिक्षण के लिए आती हैं। सर्वोदय-विचार के अनुसार छात्राओं का सामूहिक जीवन और आस-पास के ग्रामीण क्षेत्रों में सम्पर्क, यह इस विद्यालय की विशेषता है। महिला-शिविर और छात्राओं की शिक्षण-यात्रा तथा भूदान-पदयात्राओं के आयोजन भी यहाँ समय-समय पर आयोजित होते रहते हैं। अम्बर प्रशिक्षण के साथ-साथ छात्राएँ यहाँ से एक मौलिक विचार और जीवन-दर्शन अपने साथ लेकर जाती हैं, जो उन्हें भविष्य के जीवन में स्थायी रूप से काम आता है।

एक सत्र की अवधि ९ मास की है। इस अवधि में प्रत्येक छात्रा को खादी-कमीशन की योजना के अनुसार ४५ रु० मासिक छात्रवृत्ति तथा विद्यालय तक आने-जाने का तृतीय श्रेणी का रेल व मोटर-किराया भी मिलता है। प्रत्येक छात्रा को विद्यालय के छात्रावास में रहना, सामूहिक भोजनालय में भोजन करना और खादी पहनना अनिवार्य है। विद्यालय केवल महिलाओं के लिए है। १६ से ४० वर्ष की आयु की जो छात्राएँ इस सत्र में प्रवेश चाहती हों, उन्हें अपने आवेदन-पत्र पूर्ण विवरण सहित २० फरवरी '६१ तक आचार्य मातृ-मंगल अम्बर विद्यालय, पो० रींगस, राजस्थान के पते पर भेज देने चाहिए।

—आचार्य

अशोभनीय पोस्टर्स हटने चाहिये : देश के विभिन्न शहरों की माँग

इलाहाबाद • इलाहाबाद में अशोभनीय पोस्टरों के खिलाफ जनमत तैयार करने की दृष्टि से पिछले दिनों मुहल्ले-मुहल्ले में सभाएँ की गयी थीं। गत ५ फरवरी रविवार को इलाहाबाद के नागरिकों की एक सभा हिन्दी साहित्य-सम्मेलन के संग्रहालय में श्री कमलाकान्त वर्मा अवकाश-प्राप्त मुख्य न्यायाधीश की अध्यक्षता में, ... के तत्त्वावधान में हुई। सभा में राजर्षि टंडन का संदेश [देखें 'भूदान-यज्ञ', ता० २७ जनवरी '६१ का अंक] पढ़ा गया, जिसमें उन्होंने अशोभनीय पोस्टर और चित्रों ... करने की माँग कुछ दिन पहले की थी।

सभा में सर्वश्री सुरेशराम भाई, मंत्री, प्रयाग सर्वोदय-मंडल; बैजनाथ कपूर, नगर कांग्रेस के अध्यक्ष; सत्यप्रकाश मालवीय, मंत्री नगर प्रजा-समाजवादी दल; रजनीकान्त वर्मा, मंत्री, नगर समाजवादी दल; सैमुयल एस० लाल, श्रीमती राजेन्द्रकुमारी वाजपेयी, प्रिंसिपल बी० एन० सरकार, सुश्री सुचेता गोइन्दी, अवधनारायण पांडेय, अध्यक्ष विश्वविद्यालय छात्र-संघ, डा० अम्बिकाप्रसाद तिवारी, आचार्य, गांधी स्वाध्याय संस्थान और हकीम अहमद उस्मानी के भाषण हुए।

सभा में फिल्म-व्यवसाय से संबन्धित सब लोगों से अपील करते हुए प्रस्ताव पास किया कि वे देश की नई पीढ़ी के चरित्र-निर्माण के लिये अशोभनीय पोस्टर एवं फिल्म न बनायें। सरकार से भी अनुरोध किया गया है कि वह स्थिति की गंभीरता को महसूस करें और ऐसी व्यवस्था करें, जिससे सार्वजनिक स्थानों में इस प्रकार की चीजें न आयें। प्रस्ताव में सिनेमा-मालिकों से भी अनुरोध किया गया है कि वे स्वयं आगे बढ़कर इस प्रकार के पोस्टर हटा लें और आगे अशोभनीय पोस्टर प्रदर्शित न करने का निश्चय करें।

सभा में अशोभनीय पोस्टरों के निर्णय करने के लिए १० प्रतिष्ठित नागरिक भाई-बहनों की समिति बनायी, जिसके अध्यक्ष श्री कमलाकान्त वर्मा हैं।

•

मुरादाबाद

मुरादाबाद में जिला सर्वोदय-मंडल के तत्त्वावधान में ३१ जनवरी को एक जुलूस निकला, जिसने जगह-जगह शहर में लगे एक फिल्म के अशोभनीय पोस्टरों को हटाया। अन्त में जुलूस टाउन हाल में सभा में परिवर्तित हो गया। सभा के अन्त में पोस्टरों को जला दिया गया। सारा कार्यक्रम शान्ति से सम्पन्न हुआ। इसके पहले नगर में जनमत तैयार करने के लिये सभाएँ की गयीं और विभिन्न संस्थाओं द्वारा अपील निकाली गयी। सब कार्यक्रमों में सर्वोदय-मंडल की अशोभनीय पोस्टर निरोधक समिति, जनता सेवक समाज, जैन सभा एवं महिला कल्याण समाज का योग उल्लेखनीय है।

•

कानपुर

कानपुर नगर सर्वोदय-समिति पिछले दिसम्बर माह से अशोभनीयता-विरोधी अभियान का संचालन कर रही है। सिनेमा विज्ञापनों की अशोभनीयता के निर्णय के सम्बन्ध में समिति ने नगर के तटस्थ विद्वानों की एक कमेटी बना कर सार्वजनिक रूप से प्रदर्शित सिनेमा-विज्ञापनों का निरीक्षण कराया। कमेटी ने एक चित्र के एक विज्ञापन को अश्लील ठहराया। इस आधार पर सर्वोदय-समिति ने नगर-अधिकारियों तथा सिनेमा-संचालकों से उन्हें हटाने का निवेदन किया। सिनेमा-संचालकों ने इस अश्लील विज्ञापन का प्रदर्शन समाप्त कर दिया है।

•

पटना

२४ जनवरी को पटना नगर के नागरिकों की एक सभा श्री कामताप्रसाद, प्राध्यापक, पटना विश्वविद्यालय की अध्यक्षता में हुई। सभा में आज के चलन और अशोभनीय विज्ञापनबाजी की निन्दा की गयी। अशोभनीय पोस्टरों के खिलाफ आन्दोलन को चलाने के लिये एक समिति बनायी गयी, जिसमें पत्रकार, कारपोरेशन के पदाधिकारी, रचनात्मक संस्था और शिक्षण-संस्थाओं के प्रतिनिधि भी हैं। समिति ने फिलहाल निम्न कार्यक्रम अपने हाथ में लिये हैं. पटना नगर में विचार-प्रचार, जनसम्पर्क, पटना नगर-निगम से सहयोग-प्राप्ति, सिनेमा-मालिकों से सम्पर्क।

२९ जनवरी को सर्वोदय मित्र-मंडल के तत्त्वावधान में अशोभनीय पोस्टरों एवं अश्लील फिल्मों के विरोध में एक जुलूस निकाला गया। जुलूस में नागरिकों और कार्यकर्ताओं के अतिरिक्त स्थानीय विद्यालयों के लगभग ६०० छात्रों ने भाग लिया। जुलूस आर्य समाज मंदिर में सभा के रूप में परिणत हो गया। सभा की अध्यक्षता श्री केदारनाथ सहाय ने की। सभा में एक प्रस्ताव द्वारा सरकार से अनुरोध किया गया कि वह कानून द्वारा अशोभनीय एवं गंदे चित्रों व पोस्टरों का प्रदर्शन बन्द करें।

•

मथुरा

मथुरा नगर में अशोभनीय अभियान के सम्बन्ध में मथुरा सार्वजनिक कार्यकर्ता एवं और विचारकों की एक सभा १८ को बृज ग्रामसेवा मण्डल, मथुरा में ... २१ महानुभावों की कमेटी बनायी गयी। सर्वसम्मति से पाँच प्रतिष्ठित नागरिकों का एक निर्णायक बोर्ड चुना गया है।

अशोभनीय पोस्टर-अभियान के सम्बन्ध में निम्न प्रस्ताव सर्वसम्मति से पारित किया गया।

"सिनेमा-संचालकों से निवेदन किया जाय कि मथुरा नगर के आम रास्तों सार्वजनिक स्थानों पर व चौराहों पर अशोभनीय पोस्टर न लगाये जाय, क्योंकि वे छोटे-छोटे बच्चों, माता, बहनों के नैतिक बल पर प्रहार जैसा है। मथुरा नगर में शादियों व उत्सवों में गन्दे रिकार्ड नहीं बजने चाहिए। इन दोनों कार्यों के लिए आवश्यक विचार, प्रचार एवं जनमत तैयार किया जाय।"

हिसार

हिसार की प्रमुख महिलाओं की एक सभा फतहचन्द कन्या महाविद्यालय के भवन में हुई। सभा में अशोभनीय पोस्टर आन्दोलन के बारे में चर्चा हुई। आन्दोलन को आगे बढ़ाने के लिये सर्वसम्मति से ११ बहनों की समिति नियुक्त की गयी। एक प्रस्ताव में यह माँग की गयी है, कि अशोभनीय पोस्टरों के साथ अन्य कुरुचिपूर्ण विज्ञापन भी सार्वजनिक स्थानों से हटाने चाहिए। इनके अलावा सार्वजनिक स्थान, दुकान, होटल और शादी-ब्याहों के स्थानों में कुरुचिपूर्ण फिल्मी गानों के रिकार्ड बजाने पर भी प्रतिबन्ध लगाया जाय।

•

विनोबाजी की पदयात्रा

विनोबाजी ने बिहार की पदयात्रा समाप्त करके १० फरवरी को प० बंगाल में प्रवेश किया। फरवरी ता० १० से १३ तक पश्चिम दिनाजपुर जिले में और १४ से १६ तक दार्जिलिंग जिले में पदयात्रा करके १७ को जलपाइगुड़ी जिले में प्रवेश करेंगे। १७ से २२ फरवरी तक निम्न स्थानों पर उनका पड़ाव रहेगा।

जिला जलपाइगुड़ी

ता०	पड़ाव	स्टेशन
१७	अम्बारी फालकाटा	अं० फालाकाटा
१८	बेलाकोबा	बेलाकोबा
१९	जलपाइगुड़ी	जलपाइगुड़ी
२०	मोहमागुड़ी	माल जंक्शन
२१	हुल्दु बंगा	"
२२	विद्याश्रम, मुगुड़ो	"

इस अंक में

कोटगिरि अध्ययन-शिविर

ता० २० जनवरी के 'भूदान यज्ञ' में बहन मार्जरी साइकस के निलगिरी जिला (दक्षिण भारत) आश्रम में कार्यकर्ताओं के लिए इस वर्ष चलने वाले अध्ययन-वर्गों तथा शिविरों की जानकारी दी गयी थी। गरमियों में बेसिक स्कूलों के अध्यापकों के लिए जो एक-एक महीने के दो शिविर वहाँ चलने वाले हैं, उनकी तारीखों में सर्वोदय सम्मेलन के कारण कुछ परिवर्तन किया गया है। अब उन दो वर्गों की अवधि क्रमशः नीचे लिखे अनुसार होगी :

पहला सत्र—अप्रैल २२ से मई १९ तक

दूसरा सत्र—मई २० से जून १७ तक

श्रीकृष्णदत्त भट्ट, अ० भा० सर्व सेवा संघ द्वारा भार्गव भूषण प्रेस, वाराणसी में मुद्रित और प्रकाशित। पता : राजघाट, वाराणसी-१, फोन नं० ४१९१
वार्षिक मूल्य ६) पिछले अंक की छपी प्रतियाँ १२,०५० : इस अंक की छपी प्रतियाँ ११,९०० एक प्रति : १३ नये पैसे

संपादक : सिद्धराज ढड्ढा

वाराणसी : शुक्रवार | २४ फरवरी '६१ | वर्ष ७ : अंक २१

भूदान का सौम्यतर स्वरूप

विनोबा

[इस बार बिहार की पदयात्रा में विनोबा ने लोगों के सामने एक नया कार्यक्रम रखा है—"बीघे में कट्ठा", यानी हर जमीन-मालिक अपनी जमीन में से प्रति बीघा एक कट्ठा भूदान में दे। विनोबा ने जब भूदान आन्दोलन शुरू किया तो लोगों से छठे हिस्से की मांग की। अब वे बीघे में कट्ठा यानी बीसवें हिस्से की माँग कर रहे हैं, यह एक तरह से लोगों को पीछे हटने जैसा लगना स्वाभाविक था। पर विनोबा ने इस चीज को सौम्य से सौम्यतर की ओर बढ़ना कहा। वह क्यों—वह इस भाषण में उन्होंने बताया है। —सं०]

छह-सात वर्ष पहले हम बिहार में गये थे। वहाँ हमने लोगों के सामने दो बातें रखी थीं। एक तो मूल सिद्धान्त यह बताया कि जमीन की मालकियत नहीं रहनी चाहिए। हम अहिंसक ढंग से उस मालकियत को हटाना चाहते हैं। हम यानी आप-हम सब मिल कर। तो जमीन की मालकियत मिटाना यह हमारा लक्ष्य है। वह लक्ष्य सामने रख कर हमने कहा था कि छठा हिस्सा दान में दीजिये। कुछ लोगों ने अपना छठा हिस्सा दिया भी। काफी जमीन बिहार में मिली। लेकिन फिर भी अभी बहुत ज्यादा काम बाकी है।

इस बार की यात्रा में हमने बिहार में कहा कि आप हमें "बीघे में कट्ठा" यानी बीसवाँ हिस्सा दीजिये। इस पर एक कम्यूनिस्ट भाई ने हमें पत्र लिखा—"आपकी यह कैसी दुर्गति हुई है! आपने शुरू किया 'स्वामित्व-विसर्जन' के मंत्र से। उसके लिए शुरू किया छठे हिस्से से और अब आप बीसवाँ हिस्सा माँग रहे हैं। क्या यह आपकी अधोगति नहीं है?" हमने उत्तर दिया कि भाई यह अधोगति नहीं है, यह ऊर्ध्वगति है। क्योंकि, हमने सिर्फ बीघे में कट्ठा नहीं माँगा है, हमारी एक और माँग है, हमने कहा है— "दान दो इकट्ठा, बीघे में कट्ठा" यानी कुल लोग दान दें। जितने मालिक हैं, उतने दान-पत्र! आप ही सोचिये, इससे हवा नहीं बनेगी? पहले हमारी जो मांग थी, वह सौम्य थी। यह सौम्यतर माँग है। इसमें सक्रियता बढ़ी है या घटी? क्योंकि अब इसमें तो हमें हरएक के पास जाना होगा और दान प्राप्त करना होगा। पहले क्या होता था? एक भाई के पास हम गये। उसने दो सौ एकड़ दान दिया। बस हो गया! दिन भर का काम हो गया। यह दान तो अच्छा है, लेकिन उससे ताकत नहीं पैदा होती। मान लीजिये, सारे गाँव के कुल किसानों ने दान दिया तो कितनी शक्ति प्रगट होगी?

एक शर्त हमने और लगायी है। पहले हम 'पतित' जमीन लेते थे। जिसे बंगला में 'पतित' कहते हैं, वैसी जमीन लेते थे। मतलब हम पहले 'पतितपावन' थे। अब पतितपावन नहीं हैं—इस बार हम धनुर्धारी राम बन गये हैं। इस बार हम जोत की जमीन का हिस्सा माँगते हैं, यानी चाहे वैसी जमीन नहीं, अच्छी काश्त में आ रही, जमीन का बीसवाँ हिस्सा। एक तीसरी बात और है। इस बार हमने कहा है कि देने वाले ही बाँटेंगे, बीच में 'दलाल' नहीं रहेगा। भूदान का कार्यकर्ता आपको वितरण काम में मदद जरूर करेगा, लेकिन बाँटेंगे आप ही। परिणामस्वरूप देने वाले और लेने वाले, दोनों के दिल जुड़ेंगे, एक होंगे। बीच में एजेंट रहता है तो दिल एक नहीं होता। इसलिए हमने उसे हटाया है। वह प्रचार के लिए आपके पास आयेगा, लेकिन दाता के हाथ से ही दान मिलेगा।

इसलिए मैं बीघे में कट्ठे वाली बात को सौम्यतर प्रक्रिया कहता हूँ। इसमें हरएक से लेना है, अच्छी जमीन लेना है और दाता को ही बाँटना है। परिणाम क्या होगा? हवा बनेगी, जमीन अच्छी मिलेगी और क्रियाशीलता बढ़ेगी। इसे मैं सौम्यतर, सरलतर प्रक्रिया कहता हूँ।

कुछ लोगों ने हमसे पूछा कि क्या जिन्होंने दिया है, वह दुबारा देंगे? मैंने कहा, यह कैसा सवाल है? जिन्होंने पहले छठा हिस्सा दे दिया है, वे आज खाते हैं या नहीं? खाते हैं तो देना भी चाहिए। और छठा हिस्सा दिया तो अब बीसवाँ हिस्सा देने में क्या तकलीफ होगी? उन लोगों को बात जच गयी। अभी बिहार में जो जमीन दान में मिली है, वह अधिकतर उन्होंने भी दी है, जिन्होंने पहले दी थी। जिन्होंने दान नहीं दिया, उनको देने का मौका दुबारा मिलता है। इसलिए वे दें। जिन्होंने दिया है, वे तो देंगे ही। इस तरह जिन्होंने दिया, वे भी देंगे और जिन्होंने नहीं दिया, वे भी देंगे। कुछ लोग पूछते हैं, आप तीसरी बार आयेंगे तो फिर माँगेंगे। हमने कहा, तीसरी बार आप खायेंगे न? फिर भी इतना विश्वास दिलाता हूँ कि हम तीसरी बार भूदान नहीं माँगेंगे। तब हम ग्रामदान माँगेंगे। क्योंकि हर मनुष्य ने कट्ठा-कट्ठा जमीन दान में दी होगी तो गाँव में प्रेम तो बन गया। प्रेम बना तो ग्रामदान की बात कर सकते हैं।

हमारा आपसे निवेदन है कि छोटे-बड़े सब कार्यकर्ता, अलग-अलग पार्टी के लोग, सब मिल कर इसमें लगें। माँग बहुत थोड़ी है। बाबा ज्यादा माँगता नहीं है। प्रेम की माँग है। प्रेम से माँगा जाय तो कुल बंगाल देगा। ऐसे भ्रम में मत रहिये कि सरकार को जमीन दे दी है यानी "सीलिंग" हो गयी है, तो दान नहीं मिलेगा। हम कश्मीर में गये थे। वहाँ हमारे जाने से पहले "सीलिंग" हो गया था। साढ़े बारह एकड़ का 'सीलिंग' था, उसके बावजूद भी हमें वहाँ काफी दान मिला। दान और सीलिंग में फर्क है। माँ बच्चे को सुलाती है और धीरे-धीरे थपथपाती है, इसका नाम है दान और बच्चे को तमाचा मार कर सुलाने की कोशिश, यह है 'सीलिंग'। तमाचा मारने से बच्चा सोयेगा नहीं, वह चिल्लायेगा। इसलिए सरकार को सीलिंग में जमीन मिलेगी तो भी दिल से दिल नहीं जुड़ेगा, बल्कि मुकदमेबाजी होगी। सार यह है कि दान और सीलिंग, दोनों की तुलना नहीं हो सकती। यह खूब ध्यान में रखना चाहिए।

कहते हैं कि सरकार को सीलिंग के बाद दो लाख एकड़ जमीन मिलेगी। इतना बड़ा काम करके सिर्फ दो लाख एकड़ जमीन मिलेगी?—इसे मैं "गुनाहबेलज्जत" कहता हूँ। यानी नाहक तमाचा मारा। मान लीजिये, सीलिंग के कारण ५० लाख एकड़ जमीन सरकार को मिलती है तो कुछ बात थी। हम कहते हैं कि चलो भाई तमाचा तो मारा, लेकिन परिणाम अच्छा आया। यहाँ दो करोड़ एकड़ जमीन है। बीघे में कट्ठे की माँग बहुत बड़ी नहीं है, पर वह पूरी हो तो बीसवाँ हिस्सा यानी १० लाख एकड़ जमीन मिलेगी और क्या फर्क होगा? हमें जोत की जमीन मिलेगी। सीलिंग से सरकार को खराब जमीन मिलेगी और सरकार को मुआवजा भी देना पड़ेगा। हमें मुआवजा नहीं देना पड़ेगा। मुकदमेबाजी नहीं करनी पड़ेगी। सीलिंग के बाद तो 'लिटीगेशन'—मुकदमेबाजी चलेगी। और हम क्या कहेंगे? "अरे भैया, तुमने जमीन तो दी, अब पहले साल के लिए बीज भी दे दो।" ऐसा हम कहते भी हैं, लोग देते भी हैं। यानी कितना फर्क हो जाता है। सीलिंग के खिलाफ तो "स्वतंत्र पार्टी" खड़ी है। दान के खिलाफ कोई पार्टी बोलेगी!

इसलिए हमारी अधोगति नहीं, ऊर्ध्वगति है। हमारी प्रक्रिया सौम्यतर है, उससे क्रियाशीलता बढ़नी चाहिए, घटेगी नहीं।

[इस्लामपुर (बंगाल) ११-२-'६१]

कुरुचि का बहिष्कार और सुरुचि का निर्माण

दोहरा प्रयत्न करना होगा

हिन्दी के प्रसिद्ध उपन्यासकार और 'धर्मयुग' साप्ताहिक के सम्पादक श्री धर्मवीर भारती ने पिछले १२ फरवरी के 'धर्मयुग' में 'कहनी-अनकहनी' स्तंभ के अन्तर्गत समाज में सिनेमा द्वारा व्याप्त अश्लीलता और कुरुचि की कड़ी आलोचना करते हुए लिखा है, "हर आदमी अश्लील पोस्टरों के विरोध से पूर्णतया सहमत होगा।" किन्तु साथ ही उन्होंने शंका व्यक्त की है कि इससे समस्या का समाधान नहीं होगा। आज यह कुरुचि समाज में गहरी बद्ध कर गयी। सिनेमा के पोस्टरों के साथ कैलेंडरों में देवी-देवताओं को अशोभनीय और अश्लील ढंग से चित्रित किया जाता है, यहाँ तक कि कथा पढ़ने वाले, कीर्तन करने वाले भी 'मोहे छोड़ गये बालम' की जगह 'मोहे छोड़ गये मोहन, हाय अकेला छोड़ गये' गाते सुने जाते हैं। श्री भारती के कहने के अनुसार केवल खंडनात्मक आन्दोलन के बजाय समाज में सुरुचि जगाने का काम होना चाहिये—"इस ऊपरी समाधान के बजाय जरा धीरज, मेहनत और लगन से लोगों के मन में कलात्मक सुरुचि जमाने की कोशिश कीजिये, तो देखिये कि कुरुचि कैसे काई की तरह फट जाती है और निर्मल जल निखर आता है।"

जब विनोबाजी ने इन्दौर में अशोभनीय पोस्टरों के खिलाफ आवाज उठायी थी, तब वह एकाकी आवाज थी, किन्तु आज सर्वत्र इस पर चर्चा हो रही है। देश के विभिन्न शहरों में नागरिकों और खास तौर से महिलाओं ने इस आन्दोलन को उठा लिया है। सब लोग महसूस कर रहे हैं कि समाज में दिन-ब-दिन अभद्रता और कुरुचि बढ़ रही है, नैतिक मूल्यों की उपेक्षा की जा रही है। इन्दौर और अन्य स्थानों में विनोबाजी ने गहरी वेदना व्यक्त करते हुए मातृशक्ति का आवाहन किया कि वे 'शील-रक्षा' के लिए स्वयं आगे आयें। अशोभनीय पोस्टरों के खिलाफ जो आवाज उठायी जा रही है, वह केवल पोस्टरों तक सीमित है, ऐसा नहीं है। पोस्टर तो केवल प्रतीक मात्र हैं, वह तो समाज में व्याप्त समस्त अभद्रता और कुरुचि के खिलाफ आवाज है। आज हम देख रहे हैं, अशोभनीय पोस्टरों के खिलाफ इस इन्दौलन ने समाज में फैली निष्क्रियता और जड़ता पर भी प्रहार किया है। सर्वत्र चर्चा, परिसंवाद, सभा और प्रस्तावों द्वारा यह माँग की जा रही है कि समाज में व्याप्त किसी भी प्रकार की अशोभनीयता सहन नहीं करना चाहिए। यह ठीक है कि केवल नकारात्मक आंदोलन से काम पूरा नहीं होगा। हम इस बात से पूरी तरह सहमत हैं कि समाज में सुरुचि जगाने की हर संभव कोशिश करनी चाहिए। इसके लिये देश के समस्त प्रबुद्ध और पढ़े-लिखे नागरिकों का कर्तव्य है कि वे इस अपना काम माने और जनता में सुरुचि जगायें। अभद्रता और कुरुचि का बहिष्कार और कलात्मक सुरुचि पैदा करना, इस दुहरे प्रयत्न से ही समाज में सच्ची सौन्दर्य-दृष्टि जगेगी।

—मणीन्द्रकुमार

धरती का अभिशाप कटेगा

ऋषे!

तुम्हारी सतत साधना मंगलमय अभिलाषा।
करती है सँवरण मही का घन कर स्वर्णिम आशा॥
यह प्रकाश का पुंज, स्नेह, सौन्दर्य, सत्य का स्रोत।
प्रवहमान हो भर देगा धरती माता की गोद॥
भर जावेगी माँ धरती की गोद योग्य लालों से।
विहँस पड़ेगी धरा किलकते हुए मधुर बालों से॥
धरती का अभिशाप कटेगा वरद हस्त छायेगा।
प्रभु का आशीर्वाद प्राप्त कर नया सूर्य आयेगा॥
बुद्धिवाद, आदर्शवाद, विज्ञानवाद का काल।
विभीषिका बन कर धरती का बना हुआ है भाल॥
छिन्न-भिन्न होकर बिखरेगा जब प्रकाश छायेगा।
भावपुंज रागात्म तत्त्व वह धीरे से आयेगा॥
हे यति प्रवर! तुम्हारा मंगलमय अभियान प्रयाण।
मन्द-मन्द संचरित धरा पर बहे अभय वरदान॥
पाते रहें सदा हम तेरा, यह संसार महान।
बने, सतत संघर्ष-पंथ पर चमक उठे 'भूदान'॥

—अमरनाथ पाण्डेय

नागरी लिपि द्वारा तेलुगु सीखिये : १३

पिछले पाठ में गुणवाचक और संख्यावाचक विशेषणों के उदाहरण दिये गये हैं। अब यहाँ क्रियावाचक विशेषण के उदाहरण दे रहे हैं।

धातु के साथ 'चुन्न', 'चुन्नट्टि' आदि प्रत्यय जोड़ देने से क्रि. विशेषण बनते हैं।

बोलता हुआ = (माटलाडु + चुन्न) = माटलाडुचुन्न,
(माटलाडु + चुन्नट्टि) = माटलाडुचुन्नट्टि

पढ़ती हुई = (चदुवु + चुन्न) = चदुवुचुन्न,
(चदुवु + चुन्नट्टि) = चदुवुचुन्नट्टि

सूचना : भूतकाल में 'इन' प्रत्यय लगाया जाता है।

खाया हुआ = (तिनु + इन) = तिनिन
गया हुआ = (वेल्ल + इन) = वेल्लिन
आया हुआ = (वच्चु + इन) = वच्चिन

सूचना : यह और ये के लिए 'ई' तथा वह और वे के लिए 'आ' का प्रयोग करते हैं।

हिन्दी	तेलुगु	हिन्दी	तेलुगु
यह पुस्तक	ई पुस्तकमु	वह कुर्सी,	आ कुर्ची
ये लोग	ई मनुष्युलु	वे औरतें	आ स्त्रीलु
यह, ये	ई, ई	वह, वे,	आ, आ
ऊँचा	येत्तैन.	मीठा	तियनि
बुरा	चेड्ड	छोटा	[illegible]
अच्छा	मंचि	बड़ा	पेद्द, गोप्प
लंबा	पोड़वैन	चौड़ा	वेड़ल्पैन
मोटा	पोट्टि	पतला	सन्ननि, पलुचनि
गहरा	लोतैन	कडुवा	चेदुगैन

बिहार-बंगाल की सीमा पर

१० फरवरी को विनोबाजी बिहार प्रदेश से बंगाल में प्रविष्ट हुए। विदाई देने वाले बिहार के कार्यकर्ता और स्वागत करने वाले बंगाल के कार्यकर्ताओं को सम्बोधित करते हुए विनोबाजी ने कहा :

"यह अधिक बताने का अवसर नहीं है। यह तो प्रेम से अभिवादन करने का समय है। चारु बाबू ने कहा कि बंगाल पर हमारा प्रेम है। लेकिन केवल प्रेम ही नहीं, आदर और विश्वास भी है। आदर इसलिए है कि बंगाल के महापुरुषों का हमारे सिर पर बहुत ऋण है। बचपन में हम उधर दूर महाराष्ट्र में रहते थे, फिर भी हमारे हृदय के बनाने में बंगाल के महापुरुषों का बहुत ही उपकार रहा है। इसलिए हमें इस प्रदेश के लिए बहुत आदर है। विश्वास इसलिए है कि यहाँ के लोगों के दिल में भावना है। उस भावना को योग्य दिशा मिलेगी तो आश्चर्यजनक काम बंगाल कर सकता है ऐसा हमें विश्वास है। हम प्रेम, आदर और विश्वास तीनों लेकर यहाँ प्रवेश कर रहे हैं।

बिहार से हम विदा हो रहे हैं। लेकिन बिहार वाले जानते हैं कि हमने बिहार पर कितना प्यार किया है। उनके बीच हमने सवा दो साल बिताये हैं। इस मर्तबा की बिहार-यात्रा में जो दर्शन हमें हुआ, वह अद्भुत ही था। इसीलिए हमने कहा है कि बिहार हमारे बाप की इस्टेट है। यह वचन सिद्ध होगा, ऐसा हम मानते हैं। अभी हम किधर भी जायेंगे तो भी बिहार-बंगाल आदि पूर्व भारत का जो हिस्सा है, उसी में हमारी यात्रा होगी। काशी से हमने बिहार में प्रवेश किया। दरअसल काशी ही पूर्व भारत का आखिरी स्थान है। और काशी के इधर सारा पूर्व-भारत है। ऐसा ही हमारे पूर्वजों ने भी माना था। इसलिए वे किसी एक जिले में रहते थे, तो भी उसका असर दूसरे जिले पर होता था।

कल ही छपरा से हमें तार आया कि बीघे में कट्ठा की हिसाब से सौ दानपत्र द्वारा साठ एकड़ जमीन प्राप्त हुई है। अब हम छपरा तो नहीं गये थे, पर छपरा पर असर हुआ। मतलब, सारा बिहार एक ही है। उसी तरह से मैं यह भी कहूँगा कि पूर्व भारत और समग्र भारत एक ही प्रदेश है। लेकिन खैर! पूर्व भारत तो एक है ही। इसलिए एक-एक साल हमारी यात्रा कहीं भी हो, पूर्व भारत में ही हम रहेंगे। पूर्व भारत में बिहार, बंगाल, असम, उड़ीसा तो है ही—मैं तो यहाँ तक कहूँगा कि पूर्व पाकिस्तान भी पूर्व भारत में है। हमारी आखिरी दृष्टि में हम कहीं भी होते हैं, तो भी हम विश्व में ही होते हैं। इसलिए देश को हमने कहुँ ओर मंत्र दिया 'जय-जगत्'। आशा करते हैं कि इस मंत्र के लायक हम सबका जीवन बने।"

…म सत्यं जगत् स्फूर्तिः जीवनं सत्यशोधनम्

भूदानयज्ञ

टिप्पणियां

लोकनागरी लिपि*

सर्वोदय के काम के लीअे गहराअी में अुतरीये

सर्वोदय का काम गहराअी में गये बगैर नहीं बनेगा। अिस लिहाज से अब में सोचता हूँ, तो आशा दीखाअी देती है की भारत के वातावरण में अेक अैसा प्रवाह गुप्त रूप से वीद्यमान है की सारी चीजें आयेंगी और जायेंगी। लेकीन अिस पर कोअी प्रभाव नहीं पड़ने वाला है। अनेक साम्राज्य आये और गये, अुनका कोअी पता नहीं, अुनका कोअी असर जनता के हृदय पर नहीं पड़ा। हाँ, अिस जमाने में वे आये, अुस जमाने में जनता को सुखी या दुःखी कर गये। सीकंदर से लेकर अंग्रेजों तक अनेक हमले हुअे, लेकीन कुछ अैसा अंतरप्रवाह है की वे लोक-हृदय को छू नहीं सके। आज लाखों लोग कुम्भ-मेले में आते और ठंडे जल में नहाते हैं। अुन्हें आप कितना ही समझाअीये की 'पानी से पाप नहीं धुलते' आदी, पर वे नहीं मानेंगे। हाँ, यह बात दूसरी है की अगर हम समझायें की साबुन से मैल धुल जाता है, तो साबुन से नहा लेंगे। लेकीन जब तक आप अुन्हें दूसरा रास्ता नहीं बताते, तब तक अुन पर अिसका कोअी असर नहीं पड़ता।

अगर हींदुस्तान के अिस गहरे अंतरप्रवाह की पकड़ आ सकती है,-तो काम बन सकेगा और पकड़ नहीं आती, तो काम नहीं बनेगा।

—वीनोबा

* लिपि-संकेत : ि = ी; ी = ी; अ=अ, संयुक्ताक्षर हलंत चिह्न से।

साम्राज्यवाद के कफन की आखिरी कील

गत सप्ताह कांगो में जो दुखद घटना घटी है, उस पर विचार करते समय कई बातें सामने आती हैं। जहाँ तक उस घटना के शिकार होने वाले मुख्य व्यक्ति लुमुम्बा का सवाल है, उसके बारे में और जो कुछ भी कहा जाय, कम-से-कम यह निर्विवाद है कि कांगो में राष्ट्रीय भावना जगाने का प्रमुख श्रेय उसी को था। गत जून में जब कांगो की आजादी की घोषणा हुई, तब से दुनिया का एक अत्यन्त दिलचस्प, पर साथ ही अत्यन्त खेदजनक राजनैतिक नाटक उस देश के रंगमंच पर खेला गया। लुमुम्बा के खिलाफ शुरू से ही आतरिक और बाहरी षड्यन्त्र रचे गये और आखिरकार षड्यन्त्रकारियों ने उसकी हत्या कर दी—और वह भी बड़े निर्मम ढंग से। दुर्भाग्यवश राजनैतिक हत्याएँ इतिहास में कम नहीं हुई हैं, पर लुमुम्बा की हत्या जिस तरह 'दिनदहाड़े' सारी दुनिया की आँखों के सामने और सारे सभ्य समाज के विरोध को जिस प्रकार चुनौती देकर की गयी, वह सचमुच आश्चर्यजनक है। पिछले दो-तीन सप्ताह से बराबर यह सम्भावना दुनिया के अखबारों में और दुनिया के राजनैतिक क्षेत्रों में प्रकट की जा रही थी कि लुमुम्बा की जान को खतरा है और षड्यन्त्रकारी की शायद उसकी हत्या कर देंगे। पर दुनिया असहाय की तरह खड़ी देखती रही और इस हत्या को न बचा सकी। शायद इसका यही कारण था कि कोई भी बाहरी शक्ति अगर इस मामले में दखल देती तो सारे विश्व में युद्ध की आग भड़क उठती, ऐसा सब महसूस करते थे। हत्या करने वाले षड्यंत्रकारी इस सम्भावना से परिचित थे और उन्होंने इसका फायदा उठाया। लुमुम्बा की हत्या इस बात का सबक सिखाती है कि दुनिया में आज जो दो बड़े 'दानव' हैं, उनके आपसी झगड़े के बीच छोटे-छोटे राष्ट्र और उन राष्ट्रों के राजनैतिक पुरुष किस प्रकार पिस सकते हैं।

पर व्यक्तिगत या स्थानीय पहलू के अलावा लुमुम्बा की हत्या का एक दूसरा महत्त्व का पहलू और है। पिछले १२ महीनों में अफ्रीका में यह दूसरी बड़ी दुखद घटना है, जिसने सारी दुनिया का ध्यान अपनी ओर खींचा है। गत वर्ष मार्च में दक्षिण अफ्रीका में रंगभेद की नीति की समर्थक वहाँ की सरकार ने जिस निर्दयता के साथ निहत्थे अफ्रीकन लोगों को मशीनगन से भूना, उससे रंगभेद या इस प्रकार की किसी भी संकुचित नीति की भयंकरता और वीभत्सता सारी दुनिया के सामने प्रकट हो गयी। आगे आने वाला इतिहास इस बात को साबित करेगा कि जोहान्सवर्ग के पास शार्पवील का वह हत्याकाण्ड रंगभेद की संकुचित नीति के कफन की आखिरी कील थी। इसी तरह अफ्रीका का यह दूसरा हत्याकाण्ड, जिससे सारी दुनिया सिहर उठी है, शायद साम्राज्यवाद के कफन की आखिरी कील साबित होगा। मानव-जाति के अब तक के इतिहास में न्याय और स्वतंत्रता के लिए हजारों बलिदान हुए हैं और उन बलिदानों ने मानवता की ज्योति को जगाये रखा है। लुमुम्बा का बलिदान उसी परम्परा की सबसे ताजा कड़ी है।

—सिद्धराज

समाज-विरोधी कार्रवाइयों के खिलाफ जनमत

राजनैतिक दाँव-पेंच निर्दोष चीज को भी दूषित कर देते हैं। अभी हाल ही में जो जनगणना हुई है, उस अवसर पर पंजाब में सम्बन्धित दलों की ओर से इस बात का काफी प्रचार किया गया कि लोग अपनी मातृभाषा अमुक ही लिखायें। अपने-अपने राजनैतिक हितों को आगे बढ़ाने के लिए पंजाबी और हिंदी भाषा को लेकर पंजाब में काफी विवाद पिछले दो-तीन सालों से चल रहा है। चूँकि आजकल फैसले अक्सर बहुमत-अल्पमत के आधार पर होते हैं, इसलिए अपना-अपना स्वार्थ साधने के लिए सम्बन्धित पार्टियाँ लोगों का बहुमत अपनी ओर खींचने की कोशिश करती हैं। जनगणना के मौके को भी इन लोगों ने अपना साधन बनाने की कोशिश की और तरह-तरह के प्रचार के द्वारा बेचारे अनपढ़ लोगों पर एक या दूसरी ओर से अपनी मातृभाषा पंजाबी या हिन्दी लिखवाने का दबाव डाला गया। जनगणना में जो आँकड़े या तथ्य इकट्ठे किये जाते हैं, उनके आधार पर आगे चल कर महत्त्वपूर्ण योजनाएँ बनती हैं और बड़े-बड़े फैसले होते हैं। ये फैसले निष्पक्ष और सही हों, ऐसा अगर हम चाहते हों तो जनगणना जैसी चीजों में इस प्रकार असर डालने की कोशिश करना उचित नहीं है। एक तरह से यह समाज-विरोधी कार्य है। किसी की मातृभाषा क्या है, इसके लिए भी क्या किसी को कहने की या याद दिलाने की जरूरत है। 'मातृभाषा' शब्द से ही यह जाहिर है कि यह वह भाषा है, जो किसी व्यक्ति के साथ बचपन में उसकी माता बोलती थी अथवा परिवार में बोली जाती थी। पंजाब सर्वोदय-मण्डल ने उस प्रान्त के लोगों को यह चेतावनी देकर एक बड़ी सार्वजनिक सेवा की है कि वे किसी व्यक्ति या संस्था के दबाव में आकर अपनी मातृभाषा गलत न लिखायें। जैसा सर्वोदय-मण्डल ने अपने पर्चे में कहा है, मातृभाषा के मामले में 'न कोई किसी पर दबाव डाले, न कोई किसी के दबाव में आये।' जो लोग या दल इस मामले में दूसरों पर दबाव डालने की कोशिश करते हैं, वे एक तरह से नैतिक और सामाजिक अपराध के दोषी हैं। वे उन आँकड़ों को ही गलत करना चाहते हैं, जिनके आधार पर समाज महत्त्व के फैसले करता है। जाग्रत जनमत ही इस प्रकार की समाज-विरोधी कार्रवाइयों का मुकाबला कर सकता है, इसलिए पंजाब सर्वोदय-मण्डल ने सही दिशा में कदम उठाया है।

—सिद्धराज

शहरों के आकर्षण का दूसरा पहलू

आलीशान इमारतें, बढ़िया सड़कें, रोशनी की जगमगाहट, शानदार मोटरों का जमघट, सोने-चाँदी के जेवरों और हर तरह के साज-सामान से भरी हुई चमचमाती दुकानें, समारोहों और मनोरंजनों की भरमार, खिलखिलाहट, मुस्कराहट, अभिवादन और शिष्टता का अतिरेक, भीमकाय कारखाने, व्यवसायगृह तथा कार्यालय, लाखों लोगों की व्यस्ततापूर्ण दौड़-भाग—ये शहरी जिंदगी के मोहक और मद भरे आकर्षण हैं, जो देश-विदेश के कोने-कोने से लोगों को अपनी ओर खींचते हैं। जितने खिंच कर आ जाते हैं, उनसे कई गुने शहरों में जाने के लिए छटपटाते रहते हैं, वहाँ सपना देखते रहते हैं।

अभी हाल में बृहत्तर बंबई के जीवन का अध्ययन करने के लिए तियालीस लाख लोगों के, सारे देश की आबादी के दशमांश के जीवन की निकट से जानकारी करने के लिए-एक अध्ययन-मण्डल की नियुक्ति की गयी थी। उसने जो हाल ही में रिपोर्ट दी है, उसका एक अंश इस प्रकार है :—

"बालकों तथा नागरिक-समूह के खेल के मैदानों और मनोरंजन के लिए स्थानों का अत्यधिक अभाव; आगामी पीढ़ी के लिए बिलकुल अनुपयुक्त पाठशाला-भवन; सारी आबादी के एक-तिहाई भाग के लिए रहने के मकानों की कमी और इसी के कुप्रभाव, जो थोड़ी आमदनी वाले लोगों को ही पूरी तरह भुगतने पड़ते हैं; लाखों आदमियों के रहने की गंदी बस्तियों की असहनीय और अपमानपूर्ण स्थिति; लाखों लोगों की जबर्दस्ती अपने परिवार तथा पारिवारिक जीवन से अलग और दूर रहने की परिस्थिति तथा सामाजिक जीवन पर इस अभाव के पड़ने वाले अनिवार्य कुप्रभाव; अन्तहीन झगड़े, मुकदमेबाजी और 'शीत-युद्ध' की लगातार परिस्थिति जो मकान-मालिकों और किरायेदारों में बनी रहती है; पानी के नलों और पेशाबघरों व पाखानों के सामने लगने वाली

चम्बल घाटी की समस्या

प्रेम का रास्ता विफल होता है, तो यह मानवता की असफलता है

पुलिस की ग़ैरकानूनी ज्यादतियाँ बंद हों

—जयप्रकाश

[गत ९ फरवरी, '६१ को भिण्ड की सार्वजनिक सभा में दिये गये जयप्रकाशजी के विचारप्रेरक भाषण के मुख्य अंश। —सं०]

मेरा मानना है कि चम्बल घाटी की समस्या पेचीदा और मुश्किल है। जब से यहाँ आया हूँ, तब से यहाँ की परिस्थिति समझने का प्रयत्न कर रहा हूँ। चम्बल घाटी शांति-समिति के सदस्यों से और यहाँ के विभिन्न राजनैतिक दलों के लोगों व सार्वजनिक कार्यकर्ताओं से अभी जो मैंने सुना, उस पर से कोई निश्चित राय तो नहीं दे सकता, पर इतना जरूर कहूँगा कि प्रेम और अहिंसा के रास्ते के लिए यहाँ का प्रश्न आज अन्तर्राष्ट्रीय कसौटी का है।

बाबा का जब यह काम शुरू हुआ, तब मैं योरोप में था। वहाँ के समाचार-पत्रों ने इस घटना को बड़ा ही महत्वपूर्ण और चमत्कारिक माना; पर यह देख कर अजीब लगा कि यहाँ इस घटना को विशेष महत्व नहीं दिया और कुछ लोगों ने बिना जानकारी और अध्ययन के भी इसकी आलोचना की है।

कुछ दिनों पहले मध्यप्रदेश के डी० आई० जी० पुलिस श्री रुस्तम का बयान अखबारों में छपा, जिससे काफी परेशानी बढ़ी। वह बयान भी नासमझदारी का एक नमूना ही था! आत्मसमर्पण की घटना मानव-इतिहास का एक नया परिच्छेद है। स्वराज्य की लड़ाई में हम गांधीजी के प्रेम और करुणा का रास्ता आँखों देख चुके हैं, फिर हाथ-कंगन को आरसी क्या! यह एक नई विधा है, जो गांधीजी के अहिंसक आन्दोलन से साबित हो चुकी है। यदि यह मानव-कल्याण का मार्ग है तो वह आना चाहिए। यह भविष्य का आशा-मार्ग है, तो उसमें किसी किस्म की रुकावट डालना अन्याय है। आज दुनिया भर में चारों तरफ से शांति-शांति की बात जोरों से चल रही है। हमें तय करना होगा कि संहार की तरफ जाना है या सत्य, प्रेम, करुणा, अहिंसा और सहयोग की ओर।

यहाँ इस क्षेत्र में बीस बागियों ने आत्मसमर्पण किया, इक्कीसवाँ नहीं आया तो विनोबा असफल हुआ, ऐसा मैं नहीं मानता। ईसा और गांधीजी ने दुनिया को सत्य और अहिंसा का संदेश दिया अगर ईसा की बात आज ईसाई और गांधी की बात हम अमल में नहीं लाते, तो इसमें उन महापुरुषों की असफलता नहीं है। उनका काम हम सबका है, सब सार्वजनिक कार्यकर्ताओं का है। आज यदि प्रेम का रास्ता विफल होता है, तो यह मानवता की असफलता है।

यहाँ इस क्षेत्र में दमन काफी अरसे से चल रहा है। दण्ड-शक्ति से समस्या हल नहीं हो रही है। कोई जन्मजात डाकू नहीं होता। कुम्हार जिस तरह मिट्टी से तरह-तरह के बर्तन बनाता है, उसी तरह मौजूदा समाज आदमियों को बनाता है। मेरे एक अमेरिकन प्रोफेसर की 'थ्योरी' है कि बीमार को जेल होनी चाहिए और गुनहगार को अस्पताल भेजना चाहिए। आपका लड़का अगर बिगड़ जाता है, तो क्या आप उसे अपने हाथ से फाँसी देते हैं?

यहाँ की समस्या को देखने की दृष्टि प्रबुद्ध और उन्नत होनी चाहिए। अठारहवीं सदी का दण्ड-शासन आज नहीं चलने वाला है। क्या आज दाँत के बदले दाँत और आँख के बदले आँख फोड़ना पसन्द करेंगे? परशुराम का अवतार हुआ, वे तो फरसा रख कर चले गये, पर लगता है कि परसा अपनी जगह पर जहाँ का तहाँ है। सुधार, सजा और जेल से ही नहीं हो सकता। आजादी की लड़ाई में अंग्रेजों ने कितना दमन किया, पर उन्हें यहाँ से जाना ही पड़ा। उसी तरह आज भी आतंक, दमन और दण्ड नहीं टिकने वाला है। यह नीति कब तक टिकेगी? जब तक जनता सोयी है, तभी तक टिकने वाली है। उसके जगते ही इसका खात्मा होने वाला है। आज रूस में केवल राजनैतिक कैदियों को छोड़ कर अन्य सब सामान्य कैदियों के साथ सज्जनता का व्यवहार किया जाता है, उन्हें उद्योग सिखाये जाते हैं। 'प्रोबेशन' पर घर पर भेजा जाता है, उन्हें एक भला नागरिक बनाने का हर सम्भव प्रयास किया जाता है, पर यहाँ भारत का अजीब हाल है और वह भी तब, जब कि यहाँ के शासकों पर गांधीजी की छाप भी है!

ऐसा समझना कि शासन के द्वारा समस्या नहीं सुलझी और विनोबाजी को अनायास श्रेय मिल गया, इससे पुलिस की कुछ प्रतिष्ठा कम हुई तो मैं इसे बेकार की बात समझता हूँ। यहाँ व्यक्ति का प्रश्न नहीं, विचार का प्रश्न है। शासन की नहीं, वरन् हिंसा और दमन की मर्यादा घटी है।

विनोबा तो महान् हैं ही, उनकी बड़ाई-छोटाई का क्या सवाल! उनका तो घोर तप है। वे वन में नहीं, जन-जन में जाकर काम कर रहे हैं, तपस्या कर रहे हैं।

पुलिस मर्यादा की बात करती है, तो मैं पूछना चाहूँगा कि क्या मार-पीट कर गवाह बनाना, झूठी गवाहियाँ दिलाना पुलिस की मर्यादा में है? किस 'पेनल कोड' में लिखा है कि सत्य को छिपाया जाय?

आत्मसमर्पण हुआ इसी को न बताकर कहा जाय कि विनोबाजी इस क्षेत्र में आये इसकी भी पुलिस के एक बड़े जिम्मेदार अफसर को जानकारी नहीं, जब कि उन दिनों उसकी 'ड्यूटी' उसी काम की देख-भाल में थी! भरी अदालत में कोई पुलिस अधिकारी ऐसी असत्य बात कह जाय, इसके लिए कोई दफा होनी चाहिए। जज को उस पर मुकदमा चलाना चाहिए। रुस्तमजी ने जो बयान प्रकाशित किया, उससे क्या लाभ हुआ? हर आदमी के अन्दर सद् और असद् का महाभारत मचा रहता है, देवासुर संग्राम छिड़ा रहता है। यदि किसी में पुण्य, धर्म, नेकी का विचार प्रकट हुआ तो पुलिस के मानी यह नहीं है कि उसे सता-सता कर मार डाले। सत्य से आँखें बंद करना तो किसी पुलिस-कोड में नहीं है। कानून में कम उम्र वाले को फाँसी नहीं होती। गुस्से में हुए गलत काम की सजा में रिआयत दी जाती है।

फिर इन आत्म-समर्पणकारियों का क्या यह कोई गुनाह है कि इन्होंने विनोबाजी के समक्ष आत्म-समर्पण किया? इनको एक मुकदमे से छूटने पर दूसरे में फँसाने के लिए बिजली के झटके लगाये जाते हैं। इनके पक्ष में आये गवाहों को मारा-पीटा जाता है। जिन्होंने जान हथेली पर रख कर बन्दूकें रख दीं, आत्म-समर्पण किया उनके साथ इन्सान का बर्ताव होना चाहिए। अन्य सब डाकुओं के जैसा उनके साथ पेश आना अहिंसा और विनोबा के मुँह पर थप्पड़ है। चाहे जिस तरह से काम निकालना कानून का [illegible] थोंपना है।

मैं यह नहीं कहता कि विनोबा [illegible] चन्द लोग इस समस्या को हल कर [illegible] मेरे कथन में कोई विरोधाभास नहीं है। मैं मानता हूँ कि विनोबा का मार्ग सही है, पर मुट्ठी भर शांति-सैनिक कहाँ-कहाँ [illegible] करेंगे? इसके लिए सबको इकट्ठा होना पड़ेगा। मिल कर इस समस्या पर मनोवैज्ञानिक, सामाजिक और आर्थिक दृष्टि से विचार करके इसे हल करना होगा।

यह क्षेत्र उत्तर प्रदेश, मध्यप्रदेश और राजस्थान के टुकड़ों का ही नहीं, वरन् राष्ट्रीय महत्व का है। समस्या के हल के लिए और क्षेत्र-विकास के लिए इन तीन प्रदेशों के अलावा केन्द्र को भी सोचना होगा। यह कोई जादू का काम नहीं है। लोक-शक्ति और समाज-शक्ति का [illegible] है। समाज में जो जादू की शक्ति है, उसे जगाना होगा।

इस सबके लिए तीन बातें आवश्यक हैं,

(१) सब मिल कर विचार करके एक कार्यक्रम बनायें। मतैक्य का प्रतिशत सदैव अधिक रहता है, पर विरोध का ढोल पीट-पीट कर हम कटुता बढ़ाते रहते हैं।

(२) इस समस्या का समाज शास्त्र की दृष्टि से व्यापक अध्ययन हो।

(३) आत्म-समर्पणकारी बागियों के परिवारों की देखभाल की जाय। आदमी को दुश्मन नहीं बनाना है, उसकी बुराई को अच्छाई में बदलना है।

अन्त में मैं भिण्ड, लश्कर, अम्बाह, आगरा के उन वकीलों को धन्यवाद देता हूँ, जो अपनी कमाई छोड़ कर इनकी निःशुल्क पैरवी कर रहे हैं। जनता से प्रार्थना है, यहाँ उपस्थित लोगों से निवेदन है कि वे अपने घर में शांति-पात्र रख कर उसमें एक नया पैसा या एक-एक मुट्ठी अन्न डालें। जय-जगत्!

लम्बी कतारों और झगड़ों की शर्मनाक और अधःपतनयुक्त हालत; लाखों लोगों का प्रति दिन काम पर आने-जाने के लिए डेढ़-डेढ़, दो-दो घण्टों तक भीड़ भरी रेलगाड़ियों में चलना; शहर भर में अत्यन्त अपर्याप्त सड़कों पर तेजी से आने-जाने के लिए प्रयत्नशील सवारियों और पैदल चलने वालों का विशाल समूह और उसमें सैकड़ों जगहों पर रुकावटों से होने वाली झुंझलाहटें और बदमजगियाँ—यह नंगा चित्र है उस जिंदगी का उस हालत का, जिसमें भारत के एक प्रधान शहर की ४३ लाख जनता को सामान्यतः रहना पड़ता है।"

यह हमें ठंडे दिल और दिमाग से सोचने के लिए चुनौती है कि हम किधर जाना चाहते हैं।

—जवाहिरलाल जैन

जन-जागृति और जन-संगठन के लिये क्या करें ?

धीरेन्द्र मजूमदार

[अहिंसक क्रान्ति के लिए कटिबद्ध कार्यकर्ता के जीवन-निर्वाह का क्या जरिया हो, इस सवाल पर पिछले अंक में धीरेन्द्रभाई के पत्र का संबंधित अंश और उस पर अपने कुछ विचार हमने प्रकाशित किये थे।

कार्यकर्ता का मुख्य काम लोगों की अपनी शक्ति को जागृत करना और उसे सतत जागरूक रहने के लिए संगठित और योग्य बनाने का है, जिससे वह किसी प्रकार की बाहरी केंद्रित सत्ता—चाहे वह शासन की हो या आर्थिक—के शोषण का शिकार न बन सकें। इसलिये तर्कसंगत और आदर्श स्थिति यही हो सकती है कि कार्यकर्ता नाम से भी कोई व्यक्ति या वर्ग सामान्य नागरिक से अलग समाज में न रह जाय। अगर कार्यकर्ता के रूप में कोई अलग वर्ग खड़ा होता है, तो समाज स्वावलम्बी न होकर कार्यकर्ता-आधारित रह जायगा। इसलिये आखिरकार कार्यकर्ता जैसा कोई व्यक्ति अलग न रहे, यही इष्ट है। इसका फलित यही है कि आज जो अहिंसक क्रान्ति का कार्यकर्ता है उसे यह कोशिश करनी चाहिये कि वह जल्दी-से-जल्दी नागरिक की भूमिका में आ जाय—याने यथासंभव अपने श्रम पर आधारित हो। बीच की स्थिति में या अपनी मेहनत में जो कमी रहे उसकी पूर्ति वह भले ही जनता के प्रेम से प्राप्त 'प्रसाद' से कर ले, पर उसका मुख्य प्रयत्न श्रम-आधारित स्वावलम्बी जीवन का ही होना चाहिये। इस तरह स्वावलम्बी जीवन की कोशिश में जनता को जागृत और संगठित करने के काम के लिये पर्याप्त अवकाश नहीं मिलेगा ऐसी शंका उठना वाजिब है। इसका उपाय जैसा विनोबा ने सुझाया है, यह है कि एक-एक क्षेत्र में दो-दो, चार-चार कार्यकर्ताओं की टोली हो जिनमें कुछ स्थावर हों, कुछ जंगम, या सब बारी-बारी से दोनों काम करें। मुख्य बात यह है कि जनता को यह भरोसा होना चाहिये कि ये लोग बाहर से वेतन पाकर 'सेवा' करने वाले 'कार्यकर्ता' नहीं हैं, हमारी ही तरह सामान्य नागरिक हैं, पर जिनका एक विशिष्ट ध्येय है।

अब प्रश्न यह रह जाता है कि इस तरह जो कार्यकर्ता गाँवों में बैठें वे जनशक्ति को जागृत और संगठित करने के लिए क्या करें। इस सवाल के जवाब में धीरेन्द्रभाई के पत्र का साथ का दूसरा अंश मददगार साबित होगा। धीरेन्द्रभाई ने सामूहिक 'कटनी (फसल-कटाई) यज्ञ' का जो कार्यक्रम उठाया है और जिसका प्रयोग उन्होंने पिछले बरस सफलता के साथ किया था, उसमें जन-जागृति, जन-संगठन और साथ ही पुराने सामाजिक मूल्यों के बदलने की बहुत संभावनाएँ हैं। अपने पत्र के इस अंश में धीरेन्द्रभाई ने इन संभावनाओं की विस्तार से चर्चा की है। आशा है, इस प्रयोग को जगह-जगह कार्यकर्तागण उठायेंगे और अपने जो अनुभव हों वे सबके साथ बाँटेंगे। —सं०]

बिहार के देहातों की स्थिति ऐसी है कि करीब-करीब सारी जमीन बहुत थोड़े से लोगों के पास है, और बाकी सब भूमि-हीन हैं। इसलिए हम जो अन्न-संग्रह करते हैं, वह कुछ लोगों के पास से ही मिल सकता है। अत: अगर सर्व-जन-आधार सिद्ध करना है तो स्पष्ट है कि अन्नदान की अपेक्षा श्रमदान का कोई तरीका निकालना होगा। अपने गाँव के विभिन्न निर्माण-कार्य के लिए तो गाँव के लोगों का श्रमदान प्राप्त किया जा सकता है, लेकिन क्षेत्र भर के लोगों से श्रमदान की प्राप्ति का स्वरूप क्या हो, यह सवाल है। मैंने फसल-कटनी के रूप में इसे संगठित करने का सोचा।

फसल-कटनी का विचार मेरे लिए नया नहीं है। यों तो पिछले ६-७ साल से मैं साथियों को, तथा अपने भाषणों में, इसके बारे में कहा करता था, लेकिन पिछले दो वर्षों से इसके लिए सक्रिय कार्यक्रम बनाने लग गया था। यहाँ आकर इसको एक एक व्यवस्थित रूप दिया और पिछले अगस्त महीने में १८ पड़ावों पर १५ स्थानों में कटनी के लिए कुल २४०० नागरिकों का श्रमदान मिला। ३ पड़ावों पर वर्षा के कारण यह अनुष्ठान नहीं हो सका।

कटनी-यज्ञ की रूपरेखा

व्यवस्था यह रखी थी कि तीसरे पहर गाँव में पहुँच कर जन-सभा में विचार समझाया जाय और रात को विशेष लोगों से उसकी चर्चा की जाय, ताकि सुबह काफी लोग श्रमदान में भाग ले सकें। मैं उनको जो विचार समझाता था, उसका सार इस प्रकार है :

चूँकि प्राचीन व्यवस्था के अनुसार विभिन्न वर्णों के लिए विशिष्ट कर्म सुरक्षित न रह कर आज हरएक के लिए हरएक काम का अवसर खुल गया है, इसलिए हर मनुष्य के लिए ऊँची-से-ऊँची शिक्षा प्राप्त करना इस युग की आकांक्षा तथा आवश्यकता दोनों ही बन गयी है। इसके बिना खुली प्रतियोगिता (ओपन कम्पीटीशन) में कामयाब नहीं हो सकते। दूसरे, बालिग मताधिकार वास्तविक हो, इसलिए भी आवश्यक है कि १८ वर्ष और उससे ऊपर के हरएक स्त्री-पुरुष को इतनी शिक्षा मिले कि वह विभिन्न राजनैतिक पार्टियों के घोषणा-पत्रों में से इनके राष्ट्रीय तथा वैदेशिक नीति संबंधी आर्थिक तथा राजनैतिक विचार क्या हैं, यह अच्छी तरह से विश्लेषण कर सके। निःसंदेह काफी उच्च शिक्षा के बिना यह योग्यता हासिल नहीं हो सकती। सबको उच्च शिक्षा मिलने के लिए शिक्षा-पद्धति ऐसी होनी चाहिए कि जो जिस काम में लगा हुआ है, उसी में से ज्ञान-प्राप्ति का अवसर निर्माण हो। साथ ही तालीम के मूल तत्त्व भी जहाँ तक जनता समझ सके, समझाने की कोशिश मैं करता था। इस प्रकार काफी विस्तार से ग्रामभारती का विचार बतला कर बलिया में उसके प्रयोग के लिए लोग श्रमदान दें, इसकी अपील करता था। इसके लिए कटनी ही क्यों उसके पीछे जो मूलभूत विचार है, उसे भी समझाता था।

मैं उनसे कहता था कि मैं मुख्यतः तीन प्रश्नों का हल करना चाहता हूँ :

(१) स्वराज्य की समस्या :

आज स्वराज्य यानी लोकशाही नहीं है, नौकरशाही है, यानी समाज के समस्त कार्य नौकरों के सहारे चलते हैं, जनता में संगठन नहीं है, वह बेहोश है। जब तक संगठित जनशक्ति प्रकट नहीं होगी, तब तक नौकरशाही के स्थान पर लोकशाही की स्थापना नहीं हो सकती। एक दिन के लिए ही सही, जब सौ-दो सौ या तीन सौ अमीर-गरीब एक लाइन से खड़े होकर एकसाथ फसल-कटनी के काम में लगते हैं, तो जनता को संगठित जनशक्ति की सम्भावना का प्रत्यक्ष दर्शन हो जाता है। इससे जनता को आत्म शक्ति की एक झलक मिल जाती है। इसी को धीरे धीरे बढ़ाने पर जिस लोकशक्ति का निर्माण होगा, निःसंदेह वह नौकरशाही को पूर्ण रूप से बेकार और विघटित करने में समर्थ होगी।

(२) अन्न-समस्या : देश के राष्ट्रपति से लेकर साधारण नागरिक तक अन्न-संकट से परेशान हैं। हरएक के मुँह से "उत्पादन बढ़ाओ" का नारा लग रहा है। पर जमीन के मामले में आज स्थिति यह है कि जमीन के मालिक का दिल तो जमीन पर है, लेकिन उसके हाथ-पैर घर पर रहते हैं, और जमीन के मजदूर के हाथ-पैर जमीन पर, लेकिन दिल घर पर रहता है। इस तरह की स्थिति रहते हुए चाहे जितने साधन मिलते रहें, उत्पादन में विशेष वृद्धि नहीं होगी। इसलिए मालिक-मजदूर सबको साथ मिल कर जमीन पर मेहनत करने की जरूरत है। साथ ही साथ मजदूरों को भी मालिक बनाने की आवश्यकता है। इसकी शुरुआत बाबू और मजदूर दोनों के साथ मिल कर कटनी के कार्यक्रम से होती है। अन्न-समस्या के हल के लिए दूसरी बात यह भी जरूरी है कि खेती में विज्ञान का सहारा लिया जाय, खेती वैज्ञानिक ढंग से हो, इसके लिए यह आवश्यक है कि बौद्धिक वर्ग अपने हाथ से खेती करे। चीन, जापान, इजराइल आदि देशों का विवरण देकर इसे समझाता था। इस विचार को मैं अपने विनोदी ढंग से पेश करता था। उन्हें कहता था—"आप लोगों के पास उर्वर और ऊसर दोनों प्रकार की जमीन होती हैं। अधिक अन्न हो, इसके लिए आप उर्वर जमीन जोतते हैं और ऊसर जमीन को परती छोड़ देते हैं। लेकिन आदमी के बारे में उल्टा करते हैं। ऊसर (बुद्धिहीन) मनुष्य को तो जोतते हैं और उर्वर मनुष्य को परती छोड़ देते हैं। इस पद्धति से उत्पादन की वृद्धि नहीं हो सकती है। इसलिए मैं इस कटनी-अभियान द्वारा जो उर्वर मनुष्य-शक्ति 'परती' पड़ी हुई है, उसे जोतने का श्रीगणेश करना चाहता हूँ।"

(३) वर्ग-संघर्ष की समस्या :

आगे चल कर यह बताता था कि किस तरह वर्गहीन समाज इस युग की माँग है और उसकी पूर्ति के लिए वर्ग-संघर्ष तथा वर्ग-निराकरण में से एक प्रक्रिया अवश्य ही अपनानी पड़ेगी। इस सिलसिले में मैं अपना पुराना हुजूर और मजूरवाला 'प्लेट' दुहराता था।

अन्त में मैं उन्हें कहता था कि यह तमाम विचार जो लोग समझते हैं, वे भी सामाजिक रूढ़ि के कारण शुरू करने की हिम्मत नहीं करते। कटनी-यज्ञ जैसे राष्ट्रीय-यज्ञ का अवसर आने पर सबके लिए इसमें शामिल होना आसान हो जाता है।

दो साल पहले इलाहाबाद जिले में जब मैंने कटनी-यात्रा की थी, तो हमारे बहुत से साथी कहते थे कि अगर श्रम का ही दान लेना है तो लोगों से श्रम-उत्पादित सामग्री अन्न-सूत आदि ले सकते हैं। उस प्रक्रिया से कम प्रयत्न से अधिक प्राप्ति हो सकेगी। लेकिन उससे उपरोक्त विचार-प्रचार का इतना अच्छा अवसर नहीं मिल सकेगा, यह स्पष्ट है। दूसरी बात यह है कि अन्न-दान, सूत-दान आदि से प्राचीन संस्कार के अनुसार भिक्षा की भावना बनी रहती है, लेकिन कटनी अभियान में लोग हमारे साथ फसल काटते हैं तो वे हमारे सहकर्मी यानी साथी बनते हैं। सामुदायिक समाज के अधिष्ठान के लिए बुनियादी आवश्यकता सख्य-भावना के विकास की है, यह तो सभी समझ सकते हैं।

इस बार जिले के कार्यकर्ताओं के सामने कटनी का विचार नया था। घोर बरसात के बीच में मेरी यात्रा चल रही थी, इसलिए इसका उतना संगठित रूप नहीं बन पाया। आशा है, अगहन में धान-कटनी के लिए संगठन बेहतर हो सकेगा।

आज की सरकारी योजनाएँ और रचनात्मक कार्य

शंकरराव देव

[पिछले अंक में हमने 'रचनात्मक कार्यों का ध्येय' शीर्षक से कार्यकर्ताओं द्वारा पूछे गये प्रश्नों के श्री शंकररावजी के दिये हुए उत्तर प्रकाशित किये थे। खुशी की बात है कि खादी-ग्रामोद्योग समिति के श्री ति० न० आत्रेय के प्रयत्नों से बीच-बीच में यह क्रम चलता रहेगा। —सं०]

प्रश्न : आज हमारी सरकार भी कल्याणकारी राज्य-स्थापना को अपना ध्येय मानती है और पंचवर्षीय योजनाएँ बना कर प्रत्येक नागरिक को खाना, कपड़ा, शिक्षण आदि सारी सुविधाएँ प्राप्त कराने का प्रयत्न कर रही है, तब रचनात्मक कार्यों को साधने को बाकी क्या रह जाता है ?

उत्तर : हमने कहा ही है कि रचनात्मक कार्यक्रम में से जो स्वराज्य स्थापित होगा, वह आत्मराज्य यानी सही माने में लोकराज्य होगा। उस राज्य में लोगों को अन्न, वस्त्र आदि जो भौतिक आवश्यकताएँ मिलनी चाहिए वे तो मिलेंगी ही, लेकिन साथ-साथ उसमें मानवीय मूल्यों का भी विकास और रक्षण होगा। मानवीय मूल्यों का मुख्य अर्थ है, लोगों में परस्पर स्नेह और स्नेह-जन्य सहयोग। जैसा हमने कहा है, लोग जहाँ स्नेह और सहयोग से अपनी सारी भौतिक, सांस्कृतिक, नैतिक और आध्यात्मिक भूख मिटा लेते हैं और जहाँ मानवीय मूल्यों का राज्य है, वहाँ सही माने में लोकतंत्रीय राज्य है।

आज सारी दुनिया जिसे 'लोकराज्य' के नाम से पहचानती है, वह तो नाममात्र का लोकराज्य है। वह तो असल में मुट्ठी भर लोक-प्रतिनिधियों का राज्य है। लिंकन ने लोकराज्य की व्याख्या की है—लोगों का, लोगों के लिये और लोगों के द्वारा संचालित राज्य। आज पश्चिम में या पूर्व में कहीं भी जहाँ-जहाँ लोकराज्य है, वहाँ-वहाँ लोगों का राज्य और लोगों के लिये राज्य देखने में आता है, लेकिन लोगों के द्वारा चलाया जाने वाला राज्य तो अपने अभाव में ही प्रकट होने वाला है (कान्स्पीक्युअस बाइ इट्स एब्सेन्स), यानी कहीं नहीं दिखता है।

आज की यह जो परिस्थिति है, इसका दोष किसी व्यक्ति का या खुद लोकतन्त्र के मूल तत्त्व का नहीं है। जिस तरह से अर्वाचीन युग में पश्चिमी देशों में लोकराज्य का विकास हुआ है, उसका यह गुण कहिये या दोष कहिये, है। जहाँ लोकशाही का विकास हुआ, वे तो बड़े-बड़े देश थे और लोकशाही के जन्म के साथ ही साथ पूंजीवाद भी प्रारम्भ हुआ। नतीजा यह आया कि राज्य-सत्ता और उद्योग, दोनों जिस तरह से बड़े और केन्द्रित होते गये, जिसके फलस्वरूप मुट्ठी भर लोगों के हाथ में सत्ता और संपत्ति केन्द्रित होती गयी और उसमें जैसा हमने ऊपर कहा है, मानवीय मूल्यों का ह्रास होता गया। ऐसा होना अपरिहार्य था, क्योंकि वे मानवीय मूल्य या लोकशाही छोटे-छोटे समाज में ही पनप सकती है और टिक सकती है। इसका कारण यह है कि आज के सर्व-साधारण मनुष्य के लिये छोटे-छोटे समूह में ही स्नेह और सहयोगपूर्वक व्यवहार करना संभव है। जहाँ बड़े-बड़े समाज हो जाते हैं, वहाँ जीवन का सारा कारोबार अप्रत्यक्ष और दूर का हो जाता है, जिसमें परिचय और परिचय-जन्य स्नेह तथा सहयोग के लिये अवसर या गुंजाइश नहीं रहती है।

आज सारी दुनिया के सामने और खासकर उन लोगों के सामने जो अपने समाज को लोकतंत्रीय समाज कहते हैं, यह एक बड़ी जटिल समस्या खड़ी है कि वे सच्ची लोकशाही को किस तरह से कायम कर सकें और उन मानवीय मूल्यों की रक्षा कैसे कर सकें।

पिछली तीन-चार सदियों का अनुभव कहता है कि भौतिक जीवन को सम्पन्न और समृद्ध ही नहीं, बल्कि विलासी बनाने की होड़ में आज के सभ्य संसार ने जो तरीके अपनाये हैं, उनसे राजनैतिक और आर्थिक सत्ता का केन्द्रीकरण और बड़ी-बड़ी बस्तियों का निर्माण एक अटल परिणाम बन कर आया है और इसके लिए मानव-समाज को अपने मानवीय मूल्यों की कीमत चुकानी पड़ती है। इसलिये मानवीय मूल्यों की रक्षा यदि करनी है तो जिस रास्ते पर आज तक दुनिया चली आयी है, उससे भिन्न कोई नया रास्ता हमें खोजना होगा।

इसके लिये आज की जो लोकशाही समाज-व्यवस्था है या जो साम्यवादी समाज-व्यवस्था है, ये दोनों ही काम नहीं दे सकतीं, क्योंकि साम्यवादी समाज ने पूंजीवाद को खतम तो किया, लेकिन पूंजीवाद के जो अनिवार्य अंग है—सत्ता और अर्थ का केन्द्रीकरण व बड़ी-बड़ी बस्तियों का निर्माण—इनको भी ज्यों का त्यों स्वीकार कर लिया। लोकशाही की तरह ही साम्यवादी समाज के भी ये दोनों अंग बने हुए हैं। इसका कारण यह है कि साम्यवाद ने उत्पादन के औजारों में व्यक्तिगत मालकियत को तो खतम किया, लेकिन यंत्र और उत्पादन-पद्धति को बड़े पैमाने पर केन्द्रित ही रखा। मालिक को हटाया, पर यंत्र के रूप में कोई परिवर्तन नहीं किया। यही कारण है कि लोकशाही की तरह ही 'यंत्रारूढानि मायया'—जैसी ही साम्यवाद की भी हालत है। इस मामले में दोनों में रत्ती भर भी फरक नहीं है।

इसके लिये नया रास्ता यह हो सकता है कि जहाँ मानवीय मूल्यों की रक्षा हो सकती है और जहाँ मानवीय मूल्य पनप सकते हों, ऐसे छोटे-छोटे समाजों का निर्माण, कम-से-कम प्राथमिक इकाई के रूप में करना होगा और यंत्रों में क्रांतिकारी परिवर्तन करने होंगे। इसमें विज्ञान की मदद लेनी होगी।

दूसरी बात यह कि राज्य-सत्ता को एक अनिवार्य बुराई के रूप में मान कर उसका क्षेत्र न्यूनतम करना होगा और लोकनीति व लोक-व्यवहार का क्षेत्र अधिक-से-अधिक व्यापक करना होगा।

इतने विवेचन से आप समझ गये होंगे कि आज की योजनाएँ हमारे लक्ष्य की पूर्ति में नाकाम होंगी या कम-से-कम अपर्याप्त तो जरूर ही हैं, क्योंकि कल्याणकारी सरकार के माने यह है कि राज्य की सत्ता को कम करने के बजाय बढ़ाते जाना। आज राज्य-सत्ता ने करीब-करीब नागरिकों के समग्र जीवन को व्याप्त कर लिया है। इसके पहले लोग अपना-अपना व्यवहार शान्ति से और बेरोकटोक कर सके, इसलिये पुलिस और फौज के आधार पर शांति और सुव्यवस्था को कायम रखने का ही सरकार का काम समझा जाता था। लेकिन पूंजीवाद ने ऐसी परिस्थिति का निर्माण किया कि जिससे सरकार के हाथ से अपनी रक्षा का अधिकार वापस अपने हाथ में लेने के बजाय उलटे जनता ने रक्षा के साथ-साथ अपनी रोटी का सवाल भी सरकार के सिपुर्द कर दिया! (यह आपके ध्यान में आया ही होगा कि यहाँ हमने 'रोटी' शब्द का उपयोग भौतिक आवश्यकता मात्र के अर्थ में उपयोग किया है।) इसका परिणाम यह आया कि जनता का परावलंबन और कमजोरी बढ़ी। जैसा ईसा ने कहा है—जिनके पास कुछ होता है, उनको और दिया जाता है और जिनके पास कुछ नहीं होता है, उनसे सब कुछ छीन लिया जाता है—ऐसी ही स्थिति जनता की है।

प्रश्न : जनता ने अपनी स्वतन्त्रता और अधिकार इस तरह क्यों छोड़ दिये ?

उत्तर : आपने यह सवाल ठीक पूछा। इसका कारण समझने लायक है। मानव-समाज में हमेशा बलवान थोड़े होते हैं और दुर्बल अधिक। सनातन मानवीय समस्या यह रही है कि इन दुर्बलों की बलवानों से रक्षा कैसे की जाय। अभी तक शस्त्र ही आत्मरक्षा का एकमात्र साधन माना गया और शस्त्र के आधार पर बलवानों से दुर्बलों की रक्षा करना ही राज्यतंत्र का धर्म माना गया। इसी कारण एक अनिवार्य बुराई होते हुए भी सत्ता को अच्छा माना गया। "परित्राणाय साधूनां विनाशाय च दुष्कृताम्" यह भगवद्वाक्य है। यही कारण है कि दुर्बलों ने हजारों बरस सत्ता के सामने केवल सिर ही नहीं झुकाया, बल्कि सत्ता की पूजा की। और इस पूजा में अनजान में अपनी स्वतंत्रता की बलि चढ़ायी। दुर्बलों के सामने आत्मरक्षा की एक समस्या खड़ी ही थी, उसके साथ पूंजीवाद ने एक समस्या और जोड़ दी—आर्थिक शोषण की। इस शोषण से अपने को बचाने के लिये दुर्बलों ने राज्यसत्ता से माँग की कि उनके जीवन का अन्य आर्थिक और सांस्कृतिक आदि अंगों की बागडोर राज्य सत्ता अपने हाथ में ले। यही कल्याणकारी राज्य के जन्म और विकास का मूल कारण है।

जहाँ तक हम जानते हैं, इसका प्रारम्भ अमरीका के अध्यक्ष रूजवेल्ट ने 'न्यू डील' के नाम से किया। 'न्यू डील' का अर्थ यह कि पूंजीपति और उद्योगपतियों पर कर लगा कर उनके पास से संपत्ति को सरकार के खजाने में लाना और उसका उपयोग जिनता के तथाकथित आर्थिक व सामाजिक विकास के काम में करना। एक तरह से हम कह सकते हैं कि पूंजीपतियों ने दुर्बलों के शोषण का मुआवजा सरकार के दण्डभय से यों चुकाया। यह न होता तो हमें लगता है कि सर्व कल्याणकारी सरकार का तथा साम्यवाद का उदय न हुआ होता, क्योंकि उसकी आवश्यकता नहीं थी।

भूदान और 'सीलिंग'

ऐसे भ्रम में मत रहिये कि सरकार को जमीन दे दी है—याने सीलिंग हो गया है—तो दान नहीं मिलेगा। दान और सीलिंग में फर्क है। माँ बच्चे को सुलाती है—, धीरे-धीरे थपथपाती है—इसका नाम है भूदान! और बच्चे को तमाचा मार के सुलाने की कोशिश—यह है सीलिंग। तमाचा मारने से बच्चा सोयेगा नहीं, वह चिल्लायेगा। इसलिये सीलिंग से सरकार को जमीन मिलेगी तो भी दिल से दिल नहीं जुड़ेगा। सार यह है कि दान और सीलिंग दोनों की तुलना हो नहीं हो सकती।

—विनोबा

इससे हुआ यह कि लोगों की स्वतंत्रता के साथ-साथ उनका अभिक्रम भी नष्ट हो गया और उनकी सेवा के लिये सरकारी नौकरों का एक बहुत बड़ा गुट खड़ा हो गया और राज्य-संचालन के साथ-साथ अपने जीवन के कारोबार में भी लोगों का प्रत्यक्ष हिस्सा नहीं रह गया। इस तरह आप देखेंगे कि गांधीजी की लोकराज्य की जो कल्पना थी कि रचनात्मक कार्यक्रम में से स्वराज्य आये यानी लोग अपने सारे के सारे कारोबार खुद ही चलायें, उससे यह बिल्कुल विपरीत स्थिति है। आज सरकार की सत्ता और सरकारी नौकर वर्ग का ही राज्य चलता है।

प्रश्न : लेकिन आप यह भी इन्कार नहीं कर सकते कि आज सत्ता पण्डित जवाहरलाल नेहरू जैसे उन लोगों के हाथ में ही है, जो गांधीजी के विचारों को मानने वाले हैं और आज भी गांधीजी का नाम लेकर ही सारा काम किया जाता है।

उत्तर : इसमें कोई शक नहीं कि आज के सत्ताधारी ईमानदारी के साथ यह मानते हैं कि वे गांधीजी के विचारों को ही अमल में लाने का प्रयत्न कर रहे हैं। लेकिन जैसा हमने ऊपर कहा है, उनके काम का परिणाम गांधीजी चाहते थे, बिल्कुल उसका उल्टा ही आ रहा है। इसमें उनका दोष नहीं है। जिस तरह से वे देश का विकास कर रहे हैं, उससे गांधीजी के विचार साकार होंगे ऐसा ही वे मानते हैं। लेकिन कहा जा सकता है कि दो चीजें नजरअन्दाज करके वे बड़ी भूल कर रहे हैं। पहली यह कि गांधीजी के विचारों को अमल में लाने के लिये वे राज्यसत्ता का उपयोग कर रहे हैं, जो गांधीजी की अहिंसा की कल्पना के बिल्कुल विपरीत है। रचनात्मक काम में से ही स्वराज्य–यह जो गांधीजी का, लोकतंत्र के निर्माण का बुनियादी विचार है उसमें रचना की शक्ति अहिंसा है। उसमें राज्यसत्ता कहीं नहीं आती। जिस मात्रा में राज्यसत्ता का उपयोग होगा उस हद तक लोकतन्त्र बाधित ही होगा, यह निसर्ग का अनिवार्य सत्य है। दूसरी यह कि जिस तरह से आज देश की आर्थिक योजना बन रही है, उनमें जिन कामों को प्रथम स्थान दिया जा रहा है, उसका अनिवार्य परिणाम यह है कि ग्रामोद्योग व ग्राम विकास के बजाय बड़े-बड़े उद्योग और बड़े बड़े शहरों का ही निर्माण होगा। हम मन में कुछ भी चाहें, पर जैसा बीज बोयेंगे वैसा ही पेड़ उगेगा। मानवीय सदिच्छा निसर्ग के नियम को काट नहीं सकती। इसलिये आज के आर्थिक योजनाकारों के लक्ष्य और कार्यक्रम में फरक करना चाहिये।

कुल-मिला कर हमारा आर्थिक नियोजन एक शहरी और बृहद् उद्योग-प्रधान संस्कृति का निर्माण करना चाहती है, ऐसा हम न कहें, पर हां, यह कह सकते हैं कि जो समाज वह निर्माण करना चाहती है, उसमें कहीं गांधीजी के चित्र का दर्शन नहीं होता है, वे जो चाहते थे उसकी थोड़ी सी रूपरेखा भी नहीं दिखती है। आधा ग्रामोद्योग-आधा बृहद् उद्योग, आधा ग्रामीण-आधा शहरी, आधा समाजवादी-आधा पूंजीवादी, अर्धनारी नटेश्वर, और समाज का जो कोई भी चित्र हमारे योजनाकार चाहते हों, उनके जहां तक साधनों का प्रश्न है, अन्य योजनाकारों के साधनों में खास भेद हमें दिखा नहीं है। दोनों के साधन समान ही हैं–सरकारी कानून, सरकारी कर, सरकारी सबसिडी, सरकारी ठेका और सरकारी नियंत्रण। अब आप देख सकते हैं कि कहां वह गांधीजी की स्वराज्य की कल्पना और फिलासफिकल अनार्किज्म (सैद्धांतिक अराज्यवाद) और कहां यह आज की पंचवार्षिक योजनाएं और कल्याणकारी सरकार?

प्रश्न : हां, आपने जो कहा, जो दो प्रकार के चित्र खींचे और उन दोनों में जो भेद है, वह सत्य प्रतीत होता है। लेकिन इसका इलाज क्या? माना कि गाड़ी गलत रास्ते पर जा रही है, लेकिन उसको ठीक रास्ते पर किस तरह से लायें, लाना सम्भव है या नहीं?

उत्तर : सम्भव है या नहीं, यह निर्भर करता है हमारी श्रद्धा पर। 'यो यत्श्रद्ध स एव स।' गांधीजी का चित्र आज एक काल्पनिक-सा चित्र लगता है, इसमें संदेह नहीं। लेकिन सच्चा लोकतंत्र कायम करना है और मानवीय मूल्यों की रक्षा करनी है तो जहां तक हो सकता है, उस हद तक गांधीजी की कल्पना को सगुण और साकार करने की कोशिश होनी चाहिये। तो हमने जैसे अभी कहा है, सच्ची लोकशाही और मानवीय मूल्यों की रक्षा छोटे-छोटे समाजों में ही हो सकती है, इसलिये हमारे नियोजन के केवल लक्ष्य ही नहीं, बल्कि कार्यक्रम और प्राथमिकता भी ऐसी होनी चाहिये, जिससे कम-से-कम बुनियादी इकाई के तौर पर छोटे-छोटे समाज का निर्माण होगा। और जैसे गांधीजी कहते थे (एवर वाइडनिंग कान्सेंट्रिक ओशनिक सर्किल)–एक समुद्रीय तरंगों के वतुल की तरह, जो एक केन्द्र से बराबर विस्तृत होता जाता है, के रूप में व्यापक बनाना होगा और इस सारी प्रक्रिया में राज्यसत्ता का स्थान कम-से-कम हो, ऐसी व्यवस्था होनी चाहिए।

प्रश्न : तो सर्व सेवा संघ की खादी-ग्रामोद्योग समिति ने पिछले दिनों यह जो प्रस्ताव स्वीकार किया है कि खादी-ग्रामोद्योगों के काम को ५-५ हजार की आबादी की छोटी-छोटी इकाइयों में फैला कर ग्राम की समग्र विकास-योजना बना कर काम किया जाय, वह आपकी दृष्टि से ठीक ही होगा?

उत्तर : कुछ विलम्ब से ही सही, पर इसका आरम्भ जो हुआ या हो रहा है, यह ठीक ही हुआ या हो रहा है।

और खादी-समिति के इस निर्णय को देश या कम-से-कम देश के सारे रचनात्मक कार्यकर्ता और संस्थाएं अमल में लाने की पूरी शक्ति से प्रयत्न करें, तो गांधीजी की जो कल्पना थी कि रचनात्मक कार्य की सिद्धि ही स्वराज्य है, उसकी यानी सच्चे लोकतंत्र की मजबूत नींव डाली जा सकेगी। हमें आशा है कि इससे देश में जो एक अहिंसात्मक और रचनात्मक शक्ति पैदा होगी उससे हमारे आज के योजनाकारों पर प्रभाव पड़ेगा और योजना पर पुनर्विचार करेंगे।

नये जमाने की गुलामी

आज दुनिया की कोई भी चीज या जीवन का कोई भी क्षेत्र व्यापार और 'बाजार' के दायरे से बाहर नहीं रहा है। हर चीज के दाम हैं, हर चीज बाजार में बिकती है और पैसे से खरीदी जा सकती है। कुछ अरसे पहले मैंने एक लेख में यह बताया था कि किस तरह क्रिकेट, फुटबाल आदि के खेल और ये बड़े बड़े निर्दोष-से दीखने वाले 'मैच' जिनका अखबार, रेडियो, टेलीवीजन आदि पर इतना प्रचार होता है और हजारों लाखों व्यक्ति जिनके कारण 'बेवकूफ' बनाये जाते हैं, अखबार वालों, तथाकथित राष्ट्रीय खेल-कूद की संस्थाओं और पूंजीपतियों के फायदे के लिए चलाये जाते हैं। इन खेलों में खेलने वाले 'खिलाड़ी', जो अपनी प्रसिद्धि के लिए इन लोगों के हाथ बिक जाते हैं, और हजारों-लाखों दर्शक इन चन्द षड्यन्त्रकारियों की धन-लिप्सा के शिकार बन कर शोषित होते रहते हैं।

इंग्लैण्ड के एक सम्मान्य साप्ताहिक 'न्यू स्टेट्समैन' में अभी हाल ही में उस देश के नामी और संगठित खेल 'फुटबाल' के सम्बन्ध में एक लेख प्रकाशित हुआ है, जिसमें कुछ आंखें खोल देने वाले तथ्य दिये गये हैं। इंग्लैंड में 'फुटबाल लीग' के नाम से 'मैच' होते रहते हैं, जिनमें लाखों दर्शक टिकट देकर मनोरंजन के लिये जाते हैं। उस देश में ९२ 'लीग क्लब' हैं। इन क्लबों में से जो छः सबसे बड़े और नामी क्लब हैं, उनमें से एक के मैनेजर ने बतलाया कि 'अखबार वाले अपने अखबार में कुछ सनसनीपूर्ण खबर छाप कर पाठकों को आकर्षित करने के लिये मेरे खिलाड़ियों को (यानी इस क्लब द्वारा किराये पर तय किये हुए खिलाड़ियों को।–स०) इस बात के लिये घूस देते हैं कि वे हमारा क्लब छोड़ कर दूसरे क्लब में जाने की मांग करें।' 'खिलाड़ी' के द्वारा ऐसी मांग करने पर वह अखबार वाला फिर फौरन उस खबर को सनसनीपूर्ण ढंग से छापता है। इन्हीं अखबारों के कारण ये खिलाड़ी लाखों-करोड़ों लोगों में प्रसिद्धि पाये हुए होते हैं। खेलों में लाखों आदमी हारजीत लगाते हैं और करोड़ों रुपये का जुआ चलता है, इसलिये इन खिलाड़ियों के इधर से उधर जाने की खबर में लाखों लोगों की दिलचस्पी होती है और वे उस अखबार को खरीदने के लिये दौड़ते हैं। इस प्रकार 'परस्पर भावयन्त' का खेल चलता है—अखबार खिलाड़ी को 'लोकप्रिय' बनाते हैं और ये 'लोकप्रिय खिलाड़ी' अखबार वालों से घूस देकर उनके लिये अच्छी खबर (गुड स्टोरी) मुहय्या करते हैं। आगे चल कर मैनेजर महोदय कहते हैं—"इससे भी बदतर बात यह है कि हर पहली और दूसरी श्रेणी के क्लब में से कम-से-कम एक खिलाड़ी को कोई-न-कोई अखबार वाले इसलिये पैसा देते रहते हैं कि वह उन्हें न केवल खबरें दे सके, बल्कि खेल के संबंध में उस क्लब में जो गुप्त दांवपेंच सोचे जाते हों, उनकी जानकारी भी दे सके।...मैं अच्छे-अच्छे नौजवानों को छांट कर लेता हूं, लेकिन एक-दो बरस में वे भ्रष्ट हो जाते हैं।"

इन क्लबों में 'खिलाड़ियों' को नौकर रखा जाता है। वे उसी क्लब की तरफ से खेल सकते हैं–उसके अलावा नहीं। एक क्लब से दूसरे क्लब में जाना हो तो सामने वाले क्लब को कभी-कभी हजारों पौंड कीमत देनी पड़ती है, पर उसमें से 'खिलाड़ी' को कुछ नहीं मिलता। इस प्रकार गुलामों की तरह वे एक क्लब से दूसरे क्लब को बेचे जाते हैं। ऊपर जिस लेख का जिक्र है, उसमें बताया गया है कि इसी प्रकार के एक सौदे में एक क्लब को दूसरे क्लब से 'खिलाड़ी' लेने के लिये ५० हजार पौंड देने पड़े, पर 'खिलाड़ी' को उसमें से सिर्फ २० पौंड दिये गये।

क्लब वालों को अपनी 'टीम' मैच में दाखिल कराने के लिये लीग के अधिकारियों को सौ-सौ पौंड घूस देनी पड़ती है। कभी-कभी अच्छे खिलाड़ियों को क्लब में रखने के लिये क्लबों के मालिक पूंजीपति उनको अच्छी-अच्छी बेकाम की नौकरियों का लालच देकर रखते हैं।

इस तरह खेल-कूद और तथाकथित मनोरंजन भी आज व्यापार की, खरीद-बिक्री की चीज बन गयी है। अखबारों के, क्लबों के और खिलाड़ियों के भी मालिक, चंद पूंजीपति लाखों लोगों को बेवकूफ बना कर पैसा ऐंठते रहते हैं। अखबारवाले हवा बनाते हैं, खिलाड़ियों को 'लोकप्रिय' बनाते हैं और लोग शहद पर मक्खियों की तरह इन खेलों को देखने के लिये टूट पड़ते हैं। वे समझते हैं हमारा मनोरंजन हो रहा है।

–सिद्धराज

विहार-केसरी श्री श्री बाबू का महान्, किन्तु गुप्त दान

पिछली ३१ जनवरी को बिहार के मुख्यमंत्री श्रीकृष्ण सिंह का आकस्मिक अवसान हो गया! वे एक राजनेता के अलावा सुहृदय भावनावान मानव भी थे। श्री दामोदरदासजी के कलम से लिखे गये इस संस्मरण से उनको विशाल व्यापक मानवता के सहज दर्शन होंगे। —सं०

—दामोदरदास मूँदड़ा

उन दिनों विनोबाजी चांडिल में प्राणघातक (मेलिग्नंट) मलेरिया से पीड़ित थे। पिछले कई वर्षों में औषधी का प्रयोग नहीं किया था। इसी बीच भगवान ने भूदान-आन्दोलन के लिये उन्हें अपना साधन बना लिया था और तत्पश्चात् पहली बार ही ऐसी खतरनाक बीमारी ने आक्रमण किया था, मामूली ज्वर कई बार आये और बिना औषधी-सेवन के चले भी गये थे, लेकिन इस बार कसौटी होने वाली थी—कसौटी सबकी, भक्त की और भगवान की, और साथियों की भी, जिन सबके द्वारा ही भगवान प्रकट होते हैं।

विनोबाजी की हालत तेजी से बिगड़ती जा रही थी। स्थिति ऐसी थी कि शायद काया उस कष्ट को अधिक बर्दाश्त न कर सके। दिल्ली से श्रद्धेय राजेन्द्र बाबू तथा प्रधानमंत्रीजी के आग्रह भरे संदेश आये थे कि औषधी का सेवन किया जाय। औषधी ली या नहीं, इस बारे में फोन पर बार-बार पूछा भी जाता था। किन्तु औषधी-सेवन के लिये विनोबाजी को प्रेरणा नहीं हो रही थी, न लेने का आग्रह ही हो सकता था। परन्तु लेने की वृत्ति नहीं थी, जन्म-मृत्यु के क्षणों को कोई नहीं टाल सकता यह उनका विश्वास तब भी था, और अभी भी है। इसलिये "औषधीम् जान्हवी तोयम् वैद्यो नारायणो हरिः"—यही उनकी भावना तब भी थी, और अब भी है।

किन्तु विनोबा अब एक व्यक्ति नहीं रह गये थे। उनके शारीरिक, मानसिक आधि-व्याधियों से चिंतित व अस्वस्थ होने वाला एक बहुत बड़ा सुहृद् समुदाय इर्दगिर्द था, इसलिए समस्या ने गंभीर रूप धारण कर लिया था। किसी गंभीर क्षण की कल्पना से सभी कांप उठे थे, सब ओर चिंता का वातावरण था।

श्री श्री बाबु ने स्वयं कई बार आकर विनोबा से औषधी लेने के लिये विनय किया। हर बार वे कभी पटना से, तो कभी जमशेदपुर से, तो कभी दोनों जगह से और कभी-कभी तो कलकत्ते से भी डाक्टरों और वैद्यों को ले आया करते। हर बार नया उल्लास लेकर आते और निराश होकर लौटते, हिम्मत नहीं हारते, पर बढ़ते हुए दुःख व चिंता का अनुभव किये बिना नहीं रहते।

दोपहर के ठीक बारह बजे का समय था। श्री बाबु विनोबाजी से मिल कर हताश होकर पड़ोस के कमरे में, चिंतामग्न मनस्थिति में बैठे थे: "बिहार पर पहले एक कलंक लग ही चुका है, मगनलाल भाई गांधी के देहावसान से। अब अगर बाबा नहीं मानते हैं, तो हम तो कहीं के नहीं रहेंगे!" श्री बाबु के मुख से वेदना भरे शब्द प्रकट होने लगे, सारे प्रदेश की करुणा-भक्ति मानो उनकी वाणी और आँखों में साकार हो उठी।

"एक बार फिर क्यों न चला जाय विनोबाजी के पास?" हमने अपने आपको व श्री बाबू को सांत्वना देने और पुन. एक बार प्रयत्न करने के ख्याल से कहा, "संभव है, वे इस बार मान भी लें, और मान लीजिये कि नहीं माना,' तो भी हमें तो समाधान रहेगा कि आखिर तक प्रयत्न करते रहे।"

श्री बाबु तत्काल उठ खड़े हुए। मानो उस मलेरिया के कारण निर्मित संकट पर विजय पाने के लिये प्रभु-प्रेरणा ही उठ खड़ी हुई! श्री बाबू की वह कारुण्यभरी चिंतामग्न वामन मूर्ति, मृत्यु-शय्या पर आखिरी क्षणों की प्रतीक्षा करती हुई त्रिभुवन-विजयी वामन मूर्ति के सम्मुख मृत्युंजय की तरह आकर खड़ी हो गयी। प्रेम ने मानो यमराज को ही ललकारा था उस समय। उधर विनोबाजी का सारा बदन भीतर ही भीतर अत्यधिक दाह के कारण अक्षरशः जल ही रहा था। और उस असहाय अवस्था में भी वे एक विशिष्ट आनन्द का अनुभव कर रहे थे, जिसका वर्णन करना आज तक उन्हें शक्य नहीं हुआ है, उल्लेख तो वे आज भी कर देते हैं कि कैसे उन्होंने उस समय अपने को दयामय प्रभु के बाहुपाशों में ही पाया था, आज भी वह सगुण स्पर्श उनके आनन्द का विषय बना हुआ है।

लेकिन उस समय उस कमरे में उस गंभीर, किन्तु भयानक शांति का एक-एक क्षण, सबके लिए एक-एक युग के समान हो रहा था। विनोबा पूर्णरूपेण अंतर्मुख थे। उनकी वह ज्योति व्यापक तेज-तत्त्व की देहलीज पर खड़ी थी, भिन्नत्व का चोला छोड़ कर विशाल में तद्रूप होने के लिये, उस ज्योति के संभाव्य अभाव की कल्पना भी असह्य थी। उस शांति को भंग करना आवश्यक था, विनोबाजी के कानों के पास धीरे से कहा गया 'विनोबा, श्री बाबु आये हैं।"

मानो प्रगाढ़ समाधि से योगी को जगाया गया। आँखों को प्रयत्नपूर्वक खोलते हुए और नमस्कार के लिये दोनों हाथ एकत्र लाते हुए धीमे स्वर में विनोबा ने सस्मित सहज पूछा:

"क्या कहते हैं श्री बाबु?"

विनोबा के मुँह से ये शब्द निकलने को ही थे कि पुनः श्रद्धा से जुड़े हुए हाथों को आगे किये अश्रुपूर्ण नयनों से और गद्गद होकर श्री बाबु ने कहा:

"महाराज, औषधी का सेवन किया जाय। हमारी इतनी प्रार्थना अब स्वीकार की जाय। हम आपको वचन देते हैं कि आपका काम हम करेंगे।"

विनोबाजी पुनः अंतर्मुख हो गये। कोई महान् मंथन वहाँ चलता दिखाई दिया। जीवन-मृत्यु के परिणामों की कल्पनाओं से वे सबके ऊपर उठ चुके थे। औषधी लेना, न लेना जीवन का अकाट्य तत्त्व नहीं हो सकता था। नम्रता व निरहंकारिता की उस मूर्ति पर श्री बाबु के शब्दों ने रामबाण का-सा असर करना शुरू कर दिया। जीवन-डोर मजबूत होगी व प्रभु को अपना यह साधन सुरक्षित रखना ही होगा, तो वह किसी भी प्रकार से उसे संभाल लेगा, किन्तु फिर वह एक अद्भुत, किन्तु अननुकरणीय घटना बन जायगी। सामान्यों के लिए उसमें आश्वासन नहीं उपलब्ध होगा। क्षण भर पुनः गंभीर शान्ति छा गयी।

विनोबा ने सजल नेत्रों से श्री बाबू की ओर देखा: "मैं देखता हूँ कि मित्रों को मेरी इस बीमारी के कारण मैंने बहुत चिन्ता में डाल दिया है, यह चिंता दूर होनी चाहिए।"

श्री बाबु के आनंद का पार नहीं रहा! जीवन भर का ही नहीं, जन्म-जन्म का पुण्य इस समय काम आया, ऐसा अनुभव उन्होंने किया, सारे कमरे में आनंद की आशा छा गयी।

डाक्टर लोग 'कैमोक्वीन' लिये खड़े ही थे। पानी के अनुपान के साथ सिर्फ आधी गोली ही दी गयी। डाक्टरों को विश्वास था कि इतनी मात्रा ही काफी होगी, वैसा ही हुआ।

लोग उसी तरह परिणाम की प्रतीक्षा में शांत, किंतु आशा भरे मानस से खड़े थे। पाँच मिनिट भी पूरे नहीं हो पाये थे, ज्वरमान उतरना शुरू हुआ। क्षण में सारा वातावरण जादू की तरह बदल गया। श्री बाबू की आँखें विनोबा की ओर कृतज्ञता के भावों से एकाग्र थी। सबके हृदय कृतज्ञता से ओतप्रोत थे—कृतज्ञता विनोबाजी के लिए कि उन्होंने सबके चित्त से चिंता का बोझ हटा लिया; कृतज्ञता श्री बाबू के लिए कि वे इस महामानव के चित्त को घुमाने में सफल हो सके, उनका पार्थिव पुनः पृथ्वी पर कुछ अरसे तक सचेतन सगुण विचरते रहने व इस तरह करोड़ों दरिद्र-नारायणों की आशाओं को पुनः हरी-भरी कर देने के निमित्त बन सके।

और सबसे अधिक कृतज्ञता परमपिता परमात्मा के लिए कि सबको उचित प्रेरणा प्रदान की और एक महान् संकट टल गया; क्योंकि यदि उस समय श्री बाबू ने उस उत्कटता से विनोबाजी से आग्रह नहीं किया होता, तो क्या होता, कहना कठिन है! उस कल्पना से आज भी शरीर कांप उठता है। ईश्वरी इच्छाओं और दैवी संकेतों को हम जान नहीं सकते, परन्तु उस समय तो दैवी संकेत और ईश्वरी इच्छा श्री बाबू के मुख से ही प्रकट हुई थी, इसमें संदेह नहीं।

श्री बाबू का पार्थिव शरीर अब नहीं रहा, उनको उनकी अनेकविध सेवाओं ने ऐसे भी बिहार के व देश के इतिहास में महत्त्वपूर्ण स्थान प्रदान किया है, परन्तु उपरोक्त घटना के कारण श्री बाबू की स्मृति इतिहास में अमर रहेगी, इसमें संदेह नहीं।

और श्री बाबू ने अपना वचन भी निबाहने का पूरा प्रयत्न किया। बिहार की कुल जोतने योग्य भूमि का षष्ठांश भूदान से प्राप्त करने का संकल्प बिहार कांग्रेस ने स्वीकार किया व उसके लिए यथासंभव प्रयत्न भी किया। क्या श्री बाबू के संपूर्ण सहयोग के बिना यह संभव हो सकता था? स्वयं श्री बाबू ने प्रदेश के कितने ही जिलों में यात्रा की व भूदान प्राप्त किया। इतना ही नहीं, भूदान-कार्यकर्ताओं की मांग पर विनोबाजी के बिहार छोड़ने के पूर्व, विधान-सभा को एक सप्ताह की छुट्टी दे दी, ताकि सदस्य-गण अपने-अपने इलाकों

श्री बाबू बिहार के महान विभूति थे

श्री बाबू बिहार की महान् विभूति थे। उन्होंने ४० वर्ष से भी अधिक समय तक देश की सेवा की। वृद्धावस्था तथा निरन्तर बीमार रहने के बावजूद वह अन्तिम क्षणों तक देश-सेवा में रत रहे।

उनके हृदय में गरीब व्यक्तियों के लिए स्नेह तथा सहानुभूति थी। गरीबों की व्यथाओं का जिक्र करते-करते उनकी आँखें छलछला आती थी। उनका हृदय एक स्वच्छ तालाब के साफ पानी की तरह था, जिसमें से कोई भी व्यक्ति झाँक कर यह स्पष्ट रूप से देख सकता था कि उसकी तलहटी में क्या है।

—विनोबा

भोग-विलास राष्ट्र को निर्वीर्य बनाते हैं

वैजनाथ महोदय

कुछ ही महीनों पूर्व इटली में खेलों की जागतिक प्रतियोगिता हुई थी। उसमें भाग लेने के लिये भारत ने भी अपने खिलाड़ियों को भेजा था। परन्तु इन प्रतियोगिताओं में भारत अत्यन्त पिछड़ा हुआ और कमजोर साबित हुआ। ऊपर से गिनती करने के बजाय नीचे से देखा जाय तो शायद उसका नंबर दूसरा या तीसरा था! खेलों से ज्ञात होता है कि राष्ट्र के युवकों का स्वास्थ्य कैसा है, उनमें कितना प्राण है। इन प्रतियोगिताओं में रूस सर्वश्रेष्ठ रहा। बहुत से महत्त्वपूर्ण और बड़े-बड़े पुरस्कार वही जीत कर ले गया। संयुक्त राज्य अमेरिका यों आजकल संसार में हर बात में अग्रणी माना जाता है। परन्तु खेलों और व्यायाम में वह भी रूस से पीछे रह गया। अमेरिका के नये राष्ट्रपति कैनेडी ने इस पर बड़ी चिन्ता प्रकट की है और सारे राष्ट्र से अपील की है कि वह शरीर-स्वास्थ्य और शरीर-बल के बारे में उदासीन नहीं रहे। उन्होंने कहा है कि :

"हमारी रहन-सहन संसार में सबसे ऊंची है। हमारी खुराक भी अच्छी है। खेल के अगणित मैदान हमारे यहां हैं। विद्यालयों में व्यायाम और खेलों की तरफ बहुत ध्यान दिया जाता है। परन्तु फिर भी इन प्रतियोगिताओं में यूरोप के युवकों के मुकाबले में हमारे अमेरिका के जवान बहुत पीछे रहे।"

स्नायविक बल की छह परीक्षाएं ली गयी, जिनमें ५७.९ प्रतिशत अमेरिकन असफल रहे, जब कि यूरोप के केवल ८.७ प्रतिशत जवान ही असफल रहे।

शरीर-बल की परीक्षाओं में ३५.७ प्रतिशत अमेरिकन जवान असफल रहे, जब कि यूरोप के जवानों में केवल १.१ प्रतिशत ही असफल रहे। इनमें भी आस्ट्रिया और स्विट्जरलैंड का प्रतिशत तो केवल .५ प्रतिशत ही था।

इन परीक्षाओं में भारत की तो कहीं गिनती ही (उल्लेखनीय) नहीं थी!

कैनेडी ने लिखा है कि इस शोचनीय स्थिति को दूर करने के लिए भूतपूर्व राष्ट्रपति आइजेन हावर ने मन्त्रीमण्डलीय स्तर पर एक और नागरिकों की भी एक कमेटी बना दी थी। और पिछले पांच वर्षों से इनकी सिफारिशों के अनुसार ही युवकों को शारीरिक शिक्षण दिया जाता रहा है। फिर भी देश के आरोग्य और बल का यह हाल!

राष्ट्रपति कैनेडी आगे कहते हैं—

"सबसे अधिक दुःख की बात तो यह है कि अमेरिका के अधिकाधिक नौजवान सुस्त, आराम-पसन्द और विलासी बनते जा रहे हैं। शरीर को बलवान बनाने की तरफ उनका कोई ध्यान ही नहीं है। नौजवान हमारे राष्ट्र का प्राण है। वही आराम-पसन्द कमजोर और निर्वीर्य बन गये तो संसार की दौड़ में हम कैसे टिक सकेंगे? संसार में हमारे सामने खड़ी अगणित चुनौतियों का मुकाबला हम कैसे करेंगे? अब तक अनेक बार हमारी स्वाधीनता पर खतरे आये हैं, परन्तु हमारे नौजवानों ने उन्हें हवा में उड़ा दिया है। उन्होंने युद्धों के कष्टों का और खतरों का बहादुरी के साथ मुकाबला किया है।

"परन्तु इसके लिए जिस दृढ़ता और बल की जरूरत होती है, वह दो-चार हफ्तों या महीने-दो-महीने के प्रशिक्षण से नहीं प्राप्त किया जा सकता। उसके लिए तो सम्पूर्ण जीवन भर अच्छी आदतों, व्यायामों और परिश्रम के कार्यों में शरीर को लगा कर उसे और मन को भी मजबूत सिपाहियों को यह प्रशिक्षण और बल अपने खेल के मैदानों और निरन्तर के परिश्रमी जीवन में अभी-अभी तक मिलता रहा था। परन्तु अब हम ढीले और सुख-लोलुप होते जा रहे हैं। यह चिन्ता का विषय है।"

कैनेडी जानते हैं कि कम्युनिस्ट विचार-धारा ही केवल अमेरिका के जीवन-दर्शन के लिए एक महान् खतरा नहीं है, बल्कि सोवियत रूस शरीर-बल में भी अमेरिका को बुरी तरह मात दे रहा है। अमेरिका हर बात में सर्वश्रेष्ठ था, वह बात चली ही गयी। परन्तु कैनेडी इसमें अपनी स्वाधीनता को भी खतरा महसूस करते हैं। वे कहते हैं, "बलवान शरीर केवल युद्धों में विजय पाने के लिए ही आवश्यक नहीं है, बल्कि शान्ति-काल की सफलताओं के लिए भी वह उतना ही आवश्यक है। बलवान शरीर में ही बलवान मन और बलवान मस्तिष्क का भी विकास होता है। इसलिए किसी भी हालत में उसकी उपेक्षा नहीं होनी चाहिए।"

स्वाधीनता के बाद "अब हमने सब कुछ पा लिया", इस कृतार्थता का अनुभव करने वाले जो भारतीय अपने आपको विलासों में आकण्ठ डुबोये हुए हैं, क्या वे राष्ट्रपति कैनेडी की चिन्ता के मर्म को समझने की कोशिश करेंगे?

यन्त्रों का पागलपन मानव शरीर को किस प्रकार निकम्मा बनाता जा रहा है, इसके बारे में भी अमेरिका का यह नई रोशनी वाला यंत्र विज्ञान-प्रेमी नौजवान राष्ट्रपति कहता है—

"फुरसत और विपुलता का यह युग हमारे शरीर को बड़ी तेजी से निकम्मा बनाता जा रहा है। आज शरीर-श्रम हमारे जीवन से बड़ी तेजी से घटता जा रहा है। और बहुत से अर्थशास्त्रियों तथा वैज्ञानिकों का कथन है कि सन् १९७० तक तो हाथों से काम करने वाले आदमी ढूंढे भी नहीं मिलेंगे! ऐसे बहुत से काम जिन्हें हमारे पुरखे अपने हाथों से करते थे, अब हमारे जीवन में से अदृश्य हो गये। मामूली-मामूली स्कूलों के सामने भी मोटरों की लम्बी-लम्बी कतारों को देख कर मैं तो हैरान हो जाता हूं! कहां गया वह युग, जब हम अपने पांवों से चल कर स्कूलों में जाया करते थे?

"शरीर-श्रम शरीर को निरोग और काम के लायक रखता है। परन्तु सिनेमा, टेलीविजन और आजकल के हजारों आविष्कारों ने हमारे युवकों के शरीरों को एकदम निकम्मा बना दिया है।"

"यह एक राष्ट्रव्यापी समस्या है और इसे हल करने के लिए सारे राष्ट्र को प्रयास करना होगा।"

इस प्रकार सारे राष्ट्र का ध्यान इस अत्यन्त महत्त्वपूर्ण प्रश्न की तरफ दिलाते हुए कैनेडी ने केन्द्रीय मन्त्री-मण्डल से लेकर ठेठ नीचे वाले शासकीय अधिकारियों, शिक्षा-संस्थाओं और नागरिकों तक को इसमें जुट जाने के लिए सावधान किया है।

जो बात इस विषय में संयुक्त राज्य अमेरिका जैसे बलवान और सबसे अधिक समृद्ध राष्ट्र को लागू होती है, क्या वह हमारे लिए हजार गुनी अधिक जरूरी नहीं है?

अशोभनीय पोस्टरों के गन्दे चित्र यों देखने में एक बहुत छोटी चीज है। परन्तु ये हमारे युवकों को विलासी, कामुक और निर्वीर्य बनाने वाला वातावरण निर्माण करते हैं। इसलिए समस्त राष्ट्र के लिए अत्यन्त खतरनाक हैं। राष्ट्रपति कैनेडी अपने राष्ट्र पर जो खतरा अनुभव कर रहे हैं, वह तो शायद उनकी सीमाओं से हजारों मील दूरी पर है। फिर भी वे इतने जागरूक और चिन्तित हैं। परन्तु हमारी तो प्रत्यक्ष सीमाएं भी दबा ली गयी हैं! इतने पर भी जो लोग विनोबा के इस ढोल को सुनने से इन्कार करते हैं और न केवल अपने कानों में उंगली डाले बैठे हैं, बल्कि उन्हें हास्यास्पद बना रहे हैं, उनकी बुद्धि को क्या कहा जाय?

('सर्वोदय प्रेस सर्विस', इन्दौर)

में अधिक से-अधिक भूदान प्राप्त करके कोटा-पूर्ति में सक्रिय सहयोग दे सके। लेकिन इन सबसे बढ़कर एक महान् दान, जो श्री बाबू की ओर से विनोबा को मिला है, उसका तो मूल्यमापन होना भी कठिन है। जब प्रदेश कांग्रेस की ओर से एक प्रभावी कार्यकर्ता की सेवा भूदान-कार्य के लिए देने का प्रश्न उपस्थित हुआ तो श्री बाबू ने श्री वैद्यनाथ प्रसाद चौधरी के लिये अपनी स्वीकृति सहर्ष प्रदान कर दी। बिहार की राजनीति में श्री वैद्यनाथ बाबू का महत्त्वपूर्ण स्थान तो था ही, परन्तु श्री बाबू के वे माने हुए आधार-स्तम्भ थे। ऐसे प्रभावी सक्रिय सहायक मित्र की सेवाओं से स्वयं वंचित होने के लिये तैयार होना, राजनैतिक नेता के लिए कम त्याग नहीं था। हो सकता है, उन्हें स्वयं इस त्याग में निहित परिणामों की पूरी कल्पना तब न आयी हो, पर ज्यों-ज्यों वैद्यनाथ बाबू भूदान की ओर अधिकाधिक आकर्षित होते गये, त्यों-त्यों उनका बिहार की दलबन्दी की राजनीति से सम्बन्ध तेजी से टूटता ही गया। वे पिछले आठ वर्षों में कहां से कहां चले आये? क्रियाशील प्रभावी कांग्रेसी नेता से बदल कर आज वे पक्षमुक्त सर्वोदयी सेवक बन गये हैं। बिहार की शान्ति-सेना के प्रमुख प्रेरक हैं, बिहार भूदान यज्ञ बोर्ड के मंत्री हैं और उनके इस सारे बढ़ते हुए कदमों से श्री बाबू खुश होते रहे थे। आज वैद्यनाथ बाबू के बिना हम बिहार के भूदान-आन्दोलन के काम की कल्पना भी नहीं कर सकते। इतनी बड़ी देन श्री बाबू से मिली है हमें! और सबसे बड़ी बात तो यह है कि यह सारी उनकी गुप्त देन है, देश को व दुनिया को और गुप्त दान का महत्त्व हमारे यहां कौन नहीं जानता?

देश-विदेश में सफाई-कार्य कैसे होता है?

- बेलजियम में सफाई-मजदूरों को दो रुपया प्रति घंटा मेहनताना दिया जाता है। झाडू लगाने और पाखाना-सफाई का काम वहां औरतें करती हैं।
- टर्की में अनुसूचित जातियां नहीं हैं। सफाई कार्य जन-साधारण द्वारा साधारण तौर पर किया जाता है।
- डेनमार्क में सफाई-काम अन्य धंधों के मुताबिक चलता है। उसका मेहनताना भी अन्य धंधों की तुलना में ठीक रहता है।
- कनाडा में मैला-सफाई और सड़क-सफाई-धुलाई मशीन से होती है।

विनोबा-यात्री दल से

—कुसुम देशपांडे

"हमारी यात्रा एक आश्रम से दूसरे आश्रम जा रही है।"—बाबा ने कहा था। काशी में वरुणा के किनारे 'साधना-केन्द्र', बुद्धगया में बुद्ध मंदिर के निकट 'समन्वयाश्रम', रमणीय निसर्ग की गोद में खड़ा श्री जयप्रकाशजी का सोखोदेवरा का 'सर्वोदय-आश्रम'—इस तरह यात्रा हो रही थी और अभी हाल में श्रद्धेय धीरेन्द्रभाई की प्रेरणा से चलने वाले खादीग्राम के 'श्रम-भारती' में बाबा पहुँचे थे। धीरेन्द्रभाई तो इन दिनों पूर्णिया जिले के एक गाँव में 'लोकाधारित जीवन' का प्रयोग कर रहे हैं। उनके पीछे 'श्रम-भारती' की धुरा उठाने का जिम्मा आचार्य राममूर्तिजी ने ले लिया है। विनोबाजी का स्वागत करते हुए उन्होंने बताया कि "धीरेन्द्रभाई दूर हैं, फिर भी उनकी आत्यंतिक साधना हमें चुनौती देती रहती है कि सम्पूर्ण जीवन को क्रांतिमय बनाये बिना आरोहण की मंजिलें नहीं तय होंगी।"

मुंगेर जिला खादी-ग्रामोद्योग संघ का उद्घाटन करते हुए विनोबाजी ने कहा, "विकेंद्रीकरण के जैसे कई अच्छे काम बिहार में शुरू होते हैं। लेकिन उनका पूरा महत्त्व शायद बिहार के लोग नहीं जानते हैं और भारत को उसका संदेश नहीं पहुँचाते हैं। खादी का सम्बन्ध गांधीजी ने स्वराज्य के आंदोलन के साथ लगाया था। उन दिनों खादी को चालना देने के लिये देश की सर्वश्रेष्ठ शक्ति महात्मा गांधी के रूप में हमें मिली थी। इन ४० साल में हमने १ प्रतिशत खादी तैयार की है। हमें सौ प्रतिशत खादी बनानी है। उस लक्ष्य तक कैसे पहुँचेंगे? पहले गाँव स्वावलम्बी बनें और बाद में शहरों को कपड़ा दें। शहरों में दूसरे स्वतन्त्र धंधे हों। खादीवालों के सामने यह सवाल है कि आज तक जैसे चली वैसी ही पद्धति रहेगी या दूसरी अपनानी होगी?

"लेकिन आज का जमाना खादी के लिये प्रतिकूल है और हम संकट-काल में हैं, इस विचार से मैं सहमत नहीं हूँ। इस वक्त तो मैं खादी के विचार के लिये देश में अत्यंत अनुकूलता देख रहा हूँ। हमें यह समझना चाहिये कि जन-मानस को आप किस तरह पकड़ सकते हैं।

हमारे कुछ काम ऐसे हैं, जो सरकार नहीं कर सकती। सरकार जो भी हो वह औसत होती है, उससे ऊपर वह सोच नहीं सकती। भिंड-मुरैना का काम सबको पसंद आया। वहाँ की सरकार ने पहले तो सहकार दिया। लेकिन बाद में उसे लगा कि उसके 'मोरल' पर प्रहार हो रहा है, तो उसने उस घटना का लाभ नहीं लिया। शरण आये हुए डाकुओं पर मुकदमे चल रहे हैं और सत्य की कसम खाकर वहाँ के पुलिस कोर्ट में कह रहे हैं कि हमने डाकुओं को इसलिये पकड़ा कि वे जेल के इर्द-गिर्द घूम रहे थे। और न्यायाधीश पूछते हैं कि क्या आपको *मालूम नहीं* कि विनोबाजी की यात्रा इधर हुई थी? तो कहते हैं "ना!" बात यह है कि नैतिक काम सरकार की शक्ति के बाहर का होता है।

अब इन दिनों पार्टी-पॉलीटिक्स से कुछ नहीं बनेगा, यह सबके ध्यान में आ रहा है। शांति-सेना की आवश्यकता सब महसूस कर रहे हैं। वह काम बड़े-बड़े लोगों को, नेताओं को पसंद है। लेकिन कोई भी पार्टी वह काम करने के लिये अपने को असमर्थ मानती है। उसी तरह दान की प्रक्रिया का है। मतलब, यह काम हम ही कर सकते हैं, दूसरा कोई नहीं कर सकता ऐसी भावना देश में है। विकेन्द्रीकरण, शान्ति-सेना, नैतिक कार्य, दान-प्राप्ति इन कार्यों के लिये देश में अच्छा वातावरण है।"

खादीग्राम में शाम को ग्रामदानी गाँवों का सम्मेलन हुआ। उस वक्त संथाल परगना के चार 'ग्रामदान' की प्राप्ति की घोषणा हुई और कुल बिहार के ग्रामदानी गाँवों में कहाँ क्या काम हो रहा है, इसकी जानकारी दी गयी।

विनोबाजी ने कहा, "यह छोटा-सा आरम्भ है। लेकिन जैसे अग्नि की चिनगारी घास के बड़े ढेर को खाक कर सकती है, वैसे ही यह ग्रामदान का काम सारी दुनिया पर असर डाल सकता है।"

सन्ध्या-समय श्री मोती बाबू अपने चंद साथियों के साथ विनोबाजी से मिले। उन्होंने बताया कि आज हम कार्यकर्ताओं ने तय किया है कि हम लोग अब 'वारबेसिस' (युद्ध-स्तर) पर काम करेंगे।

विनोबाजी ने सावधानी का इशारा दिया और कहा, "इसमें एक बात ध्यान में रखनी होगी। शिवाजी एक-एक किला फतह करता गया और उधर पहले का किला हारता भी गया! ऐसा न हो।

खादीग्राम में विनोबाजी की तबीयत अच्छी नहीं थी। उसके पहले दो दिन से रात में खाँसी के कारण नींद में खलल पहुँची थी।

दूसरे दिन सुबह सवा चार बजे 'श्रमभारती' के परिवार के बीच विनोबाजी थोड़ी देर बैठे। उस वक्त आचार्य राममूर्ति ने विनोबाजी से कहा कि "श्रमभारती के सब कार्यकर्ता लोकाधार—जनाधार—बनें, यह कल्पना अभी तक साकार नहीं हुई है। यद्यपि कुछ कार्यकर्ता जनाधार तथा मित्राधार बन रहे हैं। अब यहाँ (१) खेती, (२) खादी-कमीशन की ओर से कार्यकर्ताओं का प्रशिक्षण तथा (३) जिले के संगठन का कार्य चल रहा है। तेल, साबुन, सरंजाम का काम खादी-ग्रामोद्योग संघ पर सौंपा है।"

खादीग्राम से बिदा होकर विनोबाजी अगले मुकाम की ओर जा रहे थे। रास्ते में खादीग्राम से ढाई-तीन मील पर 'भूदानपुरी' नाम की छोटी-सी बस्ती है, वहाँ वे ठहरे। वहाँ २६ परिवार बसे हैं, जिनमें १९२ व्यक्ति हैं। ये लोग मिल कर ७० एकड़ जमीन की खेती करते हैं। आवास के लिये हर परिवार को १०० फीट लम्बी और ५० फीट चौड़ी जमीन मिली है। वहाँ कुआँ, तालाब, प्रार्थनाशाला, मकान आदि का काम हुआ है। इन लोगों की अपनी सहयोग समिति है। इस समिति ने बाहरी महाजनों का कर्जा अदा कर दिया है। सामूहिक श्रमदान से इन्होंने अपने धर्म-गोले में १६०० रुपये जमा किये हैं। विवाह और श्राद्ध यहाँ सबकी सहायता से संपन्न होता है। "भूदानपुरी आज जैसी है, उससे कहीं अधिक खुशहाल दिखाई देगी, अगर जाड़े की खेती के लिये पानी का इन्तजाम हो जाय और पूरक उद्योग मिल जाय। अंबर और धानकुटाई का काम देने की योजना है।" यह जानकारी देते हुए राममूर्तिजी ने बताया कि इन लोगों ने शराब की आदत से अपना छुटकारा करने का महत्त्वपूर्ण काम किया है।

विनोबाजी ने गाँव के काम की सराहना करते हुए कहा, "ये छोटे-छोटे काम दीखने में छोटे, लेकिन परिणाम में बड़े हैं। आपने शराब छोड़ी, उससे जितना पाया उतना पानी आने से भी आप नहीं पाते। शराब छोड़ने से आपने सद्गुण पाया। पानी आता है तो जमीन नरम बनती है, लेकिन दिल सख्त बनता है। शराब छोड़ने में खतरा नहीं होगा। पानी आने से खतरा भी हो सकता है।"—यों कह कर विनोबाजी गाँववालों को एक दिलचस्प कहानी सुनायी:

'तुलसीदासजी ने गाँव बसाने की कोशिश की। उस गाँव में उन्होंने 'शम', 'दम', 'संतोष', 'सत्संग' को बसाया। लेकिन 'कलि' को वह पसंद नहीं आया तो उसने "नारी, अरि, धन" लेकर गाँव में प्रवेश किया। यहाँ 'नारी' का मतलब है 'काम-वासना' ('स्त्री', नहीं) अरि याने क्रोध और धन लाया तो गाँव चौपट हो गया। तुलसीदासजी फिर भगवान से प्रार्थना करते हैं कि हे भगवान! तू इस गाँव पर कृपा कर। जहाँ पानी आया वहाँ सत् चारित्र्य, शील, परस्पर अनुराग बढ़ेगा, तो वह पानी कल्याणकारी होगा, अन्यथा गाँव का नुकसान होगा।"

मुंगेर जिले के प्रसिद्ध ग्रामदानी गाँव 'बेराई' में विनोबाजी का एक दिन निवास रहा। इस गाँव के पीछे जिनकी प्रेरणा काम करती रही थी "लक्ष्मी बाबू" 'स्मृति' रूप में उस गाँव में उपस्थित थे, और उस दिन के आनन्द के समारोह में शरीक हो गये थे। गाँव में प्रसन्नता छायी थी। विनोबाजी गाँव में घूमने गये थे। गाँव के हर व्यक्ति के बदन पर खादी थी। कई बहनें अंबर चरखा चला रही थीं। उस ग्रामदान में जो मालिक शामिल नहीं हुए थे, वे गाँव के प्रमुख भाइयों के विनोबाजी से मिले और उनसे "इसमें शामिल होने की बात हम सोचेंगे।

अपने भाषण में विनोबाजी ने गाँव के लोगों को धन्यवाद देते

"आपने जो काम किया है दीखने में छोटा है, लेकिन बहुत के समान है। जो बुद्धि आपको है वह अब तक दुनिया में नहीं चले हम चैन नहीं लेंगे।"

आगे चल कर यह सूचना भी दी "जो लोग आज आपसे अलग हैं, उनको प्यार से जीतना है। इस वास्ते धर्म-शक्ति बढ़ानी होगी।"

गाँव में छोटे और बड़ों के बीच राम-लक्ष्मण-सा प्यार हो, यह कहते हुए विनोबाजी ने बड़े लोगों से कहा कि "ये लोग आपके बच्चे हैं। बच्चा माँ के स्तन को चूसते-चूसते कभी काटता भी है, तो उसे थोड़ी देर अलग करके माँ उसे फिर से पिलाती है। आपको समझना चाहिये कि ये आपके बच्चे हैं, मूरख हैं।"

जब से पूर्णिया जिले की यात्रा शुरू हुई, विनोबाजी कहने लगे हैं कि "इस जिले में तो डबल इंजिन लगा है—जहाँ धीरेन्द्र और वैद्यनाथ बाबू बैठे हैं, वहाँ तो पूरा काम होना ही चाहिये।"

बलिया गाँव में, जहाँ धीरेन्द्रभाई अपने परिवार के साथ 'लोकाधार-जीवन' का प्रयोग कर रहे हैं, विनोबाजी ने कहा, "धीरेन्द्रभाई यहाँ लोकजीवन में एकरस होने के लिये, सर्व-जन-आधार के लिये आये हैं। सर्वजन याने परमेश्वर! जन-रूप में जो परमेश्वर है, उसकी सेवा करेंगे। वह जो कुछ खिलायेगा वह खायेंगे। वह भूखा होगा तो हम भी भूखे रहेंगे। वे यहाँ बैठे हैं, इसमें परीक्षा उनकी नहीं, हमारी और आपकी हो रही है। अब वे निश्चय करके यहाँ आये हैं तो जवानों को साथ चाहिये और उनके आस-पास मस्ती में रम जाना चाहिये।"

श्री धीरेन्द्रभाई का कठोर-व्रती जीवन मस्ती में चल रहा है। उन्होंने विनोबाजी से कहा कि "मैं तो अभी टटोल रहा हूँ, खोज रहा हूँ। लेकिन लगता है कि अभी हम दंड-शक्ति से भिन्न और हिंसा के विरोध में काम खड़ा करने में पूरे कामयाब नहीं हुए हैं।"

विनोबाजी ने कहा है कि असम जाने के बाद भारत-दर्शन पूरा होगा। फिर हमारी 'प्रायॉरिटी' होगी—कहाँ काम हो सकेगा, कहाँ शक्ति है—हम बता सकेंगे। उसके बाद आन्दोलन के बारे में और ज्यादा सोच सकेंगे।

पूर्णिया जिले में श्री वैद्यनाथ बाबू के मार्गदर्शन में काम चलता है, वह देख कर विनोबाजी की इस जिले से अपेक्षा बड़ी है। तीन दिन जिले के शान्ति-सैनिकों का शिविर हुआ। उसमें विनोबाजी ने बताया कि अब साधुत्व व्यापक होना चाहिए। यह इस जमाने की माँग है। शान्ति-सेना के हाथ में हम दो शस्त्र दे रहे हैं: एक प्रेम, और दूसरा, क्रांति की भावना।

कुमारप्पा-स्मारक निधि

[३० दिसम्बर के 'भूदान-यज्ञ' में कुमारप्पा-स्मारक निधि के लिए पाठकों के नाम अपील निकालते हुए हमने सुझाया था कि श्री कुमारप्पाजी के जन्म-दिवस, ४ जनवरी से उनके निधन-दिवस, ३० जनवरी तक कुमारप्पा स्मारक निधि के लिए निधि संग्रह करने में विशेष शक्ति लगायी जाय। हर सप्ताह हमारे पास निधि के लिए छोटी-बड़ी रकमें आ रही हैं। हालांकि ता० ३० जनवरी बीत चुकी, पर संग्रह का काम अभी जारी है, यह उचित ही है। जिन पाठकों तथा कार्यकर्ताओं ने अभी तक अपनी तथा अपने मित्रों से प्राप्त करके रकमें न भेजी हों, वे अब भी भिजवाने की कृपा करें। फिलहाल 'भूदान यज्ञ' में दाताओं की सूची प्रकाशित की जाती रहेगी। —सं०]

	रु०–न०पै०	
गत अंक में प्राप्ति-स्वीकार कुल		५२,६७२–२३
काशी में १८ फरवरी तक प्राप्त रकम		
श्री मंत्री, पंजाब खादी-ग्रामोद्योग संघ,	रु०–न०पै०	
आदमपुर दोआबा, जालंधर के कार्यकर्ताओं के द्वारा संकलित	१,०४२–०८	
खादी ग्रामोद्योग बोर्ड, चंडीगढ़ द्वारा संकलित	२६१–८७	
श्री रामचरणजी, सदस्य लोकसभा, दिल्ली	१०१–००	
श्री गांधी आश्रम, रामपुर मनिहारिन (सहारनपुर) के कार्यकर्ताओं द्वारा संकलित	६०–५५	
खादी-ग्रामोद्योग विद्यालय, समालखा (करनाल) संकलित	५३–००	
सर्वोदय मंडल क्षेत्र, अमरसिंहपुर (मेरठ) द्वारा संकलित	५१–००	
श्री जेठमल चौधरी, केकरी, अजमेर	२५–००	
डा० गोपीचन्द भार्गव, द्वारा पंजाब खा० ग्रा० संघ	२५–००	
सर्वोदय आश्रम, सादाबाद (मथुरा) द्वारा संकलित	२१–००	
श्री केशरी और देवकी बहन, कस्तूरबा बालमंदिर, काशी	१५–००	
श्री बच्चूभाई अम्बालाल शाह, अहमदाबाद	११–००	
श्री संयोजक, सर्वोदय मंडल, रोहतक (पंजाब)	८–२१	
श्री विलासराय कानोडिया, छपरा (बिहार)	५–००	
डा० एस० पी० वर्मा, रानहरा, दुर्ग (म० प्र०)	५–००	
प्रो० एच० सी० गुप्ता, पिलानी (राजस्थान)	५–००	
श्री वासुदेव नटवरलाल त्रिपाठी, अहमदाबाद	५–००	
श्री चुनीभाई भावसार, सोसाइटी स्टोर, अहमदाबाद	५–००	
श्री हिम्मतलाल, मदनलाल, मगनलाल, अहमदाबाद	५–००	
श्री हिम्मतलाल केशवलाल शाह, अहमदाबाद	५–००	
श्री मूलचन्द, मार्फत-बद्रीराम मूलचन्द, कानपुर	५–००	
श्री द्वारका प्रसाद सिंह, एडवोकेट, सीधी (म० प्र०)	५–००	
श्री केशव प्रसाद सिंह, एडवोकेट, सीधी (म० प्र०)	५–००	
श्री रणबहादुर सिंह, मंत्री प्र० सो० पार्टी, सीधी (म० प्र०)	५–००	
श्री इन्द्रनाथ चोपड़ा, नई दिल्ली ५	४–००	
डा० वाजिद अली शाह, ग्राम बड़ा, पो० रदिपुर (बिहार)	१–००	
श्री जानकी प्रसाद, खद्दर भंडार, सीधी (म० प्र०)	१–२५	
श्री बलदेव कुमार मिधानी, करनाल	१–००	
श्री सुरजलाल सिंह, प्र० अ०, आजन, पो० नीमा (गया)	१–००	
श्री कन्हैयालाल करवा, मार्फत निसर्गोपचार आश्रम, उरुली कांचन	१–००	
श्री भगत, सीधी (म० प्र०)	१–००	१,७४०–३३
कुल रकम		५४,४१२–५६

सर्वोदय-सम्मेलन की तैयारियाँ

तेरहवाँ अखिल भारत सर्वोदय-सम्मेलन ता० १८,१९ और २० अप्रैल को पेद्दापुरम में हो रहा है, उसके सम्बन्ध में श्री प्रभाकरजी एक पत्र में लिखते हैं :—

"आंध्र में रचनात्मक अंग बल (मनुष्य-बल) कम होने पर भी आत्म-बल पर निर्भर होकर ही हमने सम्मेलन को आवाहन दिया है। अंग-बल कम है, लेकिन दम है, ऐसा हमें प्रगट करना होगा।

सर्वोदय-सम्मेलन की व्यवस्था में होने वाले खर्च के लिए हमने 'लोक-सम्मति यज्ञ' करने का तय किया है। ता० १ जनवरी से यह यज्ञ शुरू हुआ है। अप्रैल १८ तक १०८ दिन होते हैं। इस अवधि में एक लाख लोगों से सम्मति के रूप में कम-से-कम एक लाख रुपये जमा करना चाहते हैं। आंध्र में खादी, भूदान, गांधीनिधि, हरिजन-सेवक, कस्तूरबा ट्रस्ट इत्यादि क्षेत्रों में काम करने वाले लगभग ५ हजार कार्यकर्ता हैं। सब मिल कर करीब इतने ही गाँवों में काम चल रहा है। एक एक कार्यकर्ता २०–२० लोगों से सम्पर्क करे तो एक लाख लोगों से सम्पर्क होगा। इस प्रयोग का नतीजा १५ मार्च तक मालूम होगा।

पश्चिम गोदावरी जिले से, जहाँ सम्मेलन हो रहा है, करीब २ हजार बोरे धान के जमा करने का कार्य चालू है। पिछले १२ दिनों में करीब ५ सौ बोरे जमा हुए हैं। हमारा प्रयत्न रहेगा कि सम्मेलन में पूरा ग्रामोद्योगी चावल ही उपयोग में आये।

सम्मेलन जिस स्थान में हो रहा है, वह जगह नाम से 'रिजर्व्ड फारेस्ट' याने सुरक्षित जंगल है। पर इस भूमि पर वृक्ष नहीं हैं, छोटी-छोटी झाड़ियाँ ही हैं। इसमें से १०० एकड़ जमीन सम्मेलन के लिए सरकार दे रही है। यह झाड़ियों वाले वन ऋषिवन कैसे बनें, इसकी कल्पना हम कर रहे हैं। सम्मेलन का स्थान बेकार न जावे, इसके लिए यहाँ एक संस्था बना रहा हूँ। उसका नाम "ऋषिवनम्" याने ऋषिवन ऐसा होगा।

सर्वोदय-सम्मेलन के स्थान का नाम तेलुगु की दृष्टि से हमने 'सर्वोदयपुरम्' दिया है।"

इन्दौर का सर्वोदयनगर अभियान

इन्दौर के सर्वोदय प्रवृत्तियों के केन्द्र, विसर्जन-आश्रम से प्राप्त जानकारी के अनुसार माह जनवरी में २० कार्यकर्ताओं ने विभिन्न मोहल्लों के ९,११७ परिवारों से व्यक्तिगत सम्पर्क किया तथा उनके सुख-दुःख की कहानियाँ जानी। १८५९ सर्वोदय-पात्रों से प्रति दिन परिवार के सबसे छोटे बालक के हाथ से डाले जाने वाले धान्य अथवा एक नये पैसे के रूप में, ५४० रुपये, ७२ नये पैसे की रकम संग्रहित हुई। ९०२ परिवारों में सर्वोदय-पात्र स्थापित किये गये।

वार्डों में सत्साहित्य के पठन पाठन की प्रवृत्ति बढ़ाने हेतु प्रारंभ किये गये सर्वोदय चल-पुस्तकालयों से ७४७ पाठक-पाठिकाओं ने लाभ उठाया।

नगर के सार्वजनिक स्थानों पर लगे घोषित अशोभनीय फिल्म-पोस्टर को सभी उचित प्रयत्नों के बावजूद मालिक द्वारा निश्चित अवधि में न हटाये जाने पर माह में एक बार श्री तात्यासाहब शिखरे के नेतृत्व में सत्याग्रही टोली को "सीधी कार्यवाही" द्वारा उसे हटाना पड़ा। व्यक्तिगत स्थानों पर लगे कुछ अशोभनीय पोस्टर भी समझा-बुझा कर हटाये गये। कुछ घरों से परिवारों ने स्वेच्छापूर्वक भद्दे और भद्दे कैलेण्डर निकाल फेंकने के उदाहरण भी प्रस्तुत किये हैं।

"स्वच्छ दीवार स्वच्छ विचार" मुहिम के अन्तर्गत मोहल्लों की कई दीवारें साफ की गयी और उन्हें "संत-वाणी" से विभूषित किया गया।

भूदान पत्र-पत्रिकाओं की ८१८ प्रतियों की फुटकर बिक्री की गयी।

विसर्जन आश्रम में प्रति रविवार को ३ से ५ बजे तक चिकित्सा अनुभवी एवं नगर के लोकप्रिय वैद्य श्री कन्हैयालालजी अजमेरा तथा श्री हरिनारायणजी लखनवी ने निःशुल्क चिकित्सा करने का संकल्प किया है।

घर-घर में 'कचरा-पात्र'

काशी नगरी सर्वोदय-अभियान प्रगति पर है। जब से काशी में शांति-सैनिक विद्यालय प्रारम्भ हुआ, तब से बहनें भी इस काम में मदद देने लगी हैं। स्वच्छ काशी हो, इस निमित्त घर घर सर्वोदय-पात्र के साथ 'कचरा-पात्र' भी रखा जा रहा है और निवासियों को समझाया जाता है कि घर का कूड़ा-करकट कचरा-पात्र में ही डालें और महापालिका की गाड़ी जब आये तब डाल दें।

पाक्षिक डायरी : १५-२-६१ तक

संघ-प्रधान कार्यालय

[साधना केन्द्र, काशी]

● इस पक्ष में श्री आशादेवी आर्यनायकम् और श्री धीरेन्द्रभाई एक-एक दिन के लिए साधना-केन्द्र पर आ गये। श्री धीरेन्द्रभाई ने कार्यकर्ताओं से अपने जनाधार के प्रयोग के बारे में बातचीत की।

● श्री शंकरराव़जी राजस्थान-गुजरात के दौरे से ता० ९ को वापस आये। उसी दिन दादा भी बंबई से वापस आये। स्वास्थ्य पहले से ठीक है।

● श्री विमला बहन ठकार ता० १० को यहाँ से करीब २० दिन के लिए आसाम के दौरे पर गई हैं। उनके कान की तकलीफ मिटी नहीं है। शायद इलाज के लिए अगले अप्रैल माह में उन्हें इंग्लैण्ड जाना होगा।

● श्री कृष्णराज मेहता करीब दस दिन विनोबा के साथ पदयात्रा में रह आये। साधना केन्द्र तथा संघ के कामकाज के बारे में विस्तार से चर्चा हुई।

● श्री निर्मला देशपांडे की तबीयत ठीक है ऐसे समाचार उनकी ओर से मिले हैं।

● सर्व सेवा संघ के मंत्री श्री पूर्णचन्द्र जैन गत २९ जनवरी से प्रवास पर हैं। वे दिल्ली और राजस्थान, मद्रास और केरल प्रदेश होते हुए सम्प्रति आंध्र प्रदेश में दौरा कर रहे हैं। २८ फरवरी तक उनके काशी पहुँचने की संभावना है।

भूदान-यज्ञ रजिस्टर्ड नंबर ए० ३५४ [पहले से डाक-महसूल दिये बिना भेजने का परवाना प्राप्त, लायसेन्स नं० ए ३४] २४ फरवरी,

देश के कोने-कोने में सर्वोदय-पक्ष और सर्वोदय-मेले आयोजित

[गांधी-पुण्यतिथि ३० जनवरी से श्राद्ध-दिवस १२ फरवरी तक देश में सर्वत्र सर्वोदय-पक्ष, भूदान-पदयात्रा, साहित्य-प्रचार, सर्वोदय-पात्र, अशोभनीय पोस्टरों के खिलाफ मुहिम, सार्वजनिक सफाई, सूतांजलि, सूत्रयज्ञ, सर्वोदय-मेला आदि विभिन्न कार्यक्रमों द्वारा मनाया गया। कुछ स्थानों से प्राप्त विवरण हम नीचे दे रहे हैं। —सं०]

—३० जनवरी से १२ फरवरी सर्वोदय-पखवाडे के अन्तर्गत इन्दौर नगर में हुई पदयात्रा में ६० भाई-बहनों ने भाग लिया, जिसमें मायला परिवार के ४० भाई-बहनें थीं। पदयात्रा टोलियों ने ४०६४ घर से सम्पर्क कर सर्वोदय का विचार-प्रचार किया। १५१८ घरों में सर्वोदय-पात्र की स्थापना की। ५५५ घरों से सर्वोदय-पात्र से १३८ रुपये तथा छः मन अठारह सेर अनाज संग्रहित किया। 'भूमि-क्रांति' की १५० प्रतियाँ बिकीं एवं २२५ रुपये का सर्वोदय-साहित्य बेचा गया।

निरंजन आश्रम इन्दौर के तत्त्वावधान में १२ फरवरी को सामूहिक रूप से सूताञ्जली अर्पित कर श्रद्धांजलि दी गयी। अखण्ड सूत्रयज्ञ, गुरुजनों के भाषण भी हुए।

—ता० ३१ जनवरी को परमकुडी से रामनाथपुरम् (तमिलनाड) जिले के सर्वोदय तथा भूदान-कार्यकर्ताओं की एक टोली धनुष्कोटी तथा रामेश्वर के सर्वोदय-मेले में १५ गाँवों में पदयात्रा द्वारा विचार-प्रचार करते हुए १२ फरवरी को पहुँची। इस पदयात्री दल में मैसूर राज्य के कार्यकर्ता श्री कुट्टी भी शामिल हुए। पदयात्रा में २१-५० एकड भूमि का वितरण किया गया। सर्वोदय की पत्र-पत्रिकाएँ और साहित्य की करीब १०० रु० की बिक्री हुई। संपत्तिदान और श्रम-दान भी मिला।

—जयप्रकाशजी की जन्म-भूमि सिताबदियारा गाँव में प्रतिवर्ष की तरह इस बार ३० जनवरी से १२ फरवरी तक सर्वोदय-पक्ष मनाया गया। १२ फरवरी को इस बार सर्वोदय-मेला बडे व्यापक पैमाने पर मनाया गया। खादी ग्रामोद्योग और पशु-प्रदर्शनी लगायी गयी। इस अवसर पर विशाल समुदाय के सम्मुख भाषण करते श्री जयप्रकाशजी ने कहा कि आज लोकतंत्र खतरे में है। एशिया और अफ्रीका की राज्य-व्यवस्था उलटे खडे पिरामिड की तरह है। ग्राम-स्वराज्य की स्थापना के बिना सच्चा स्वराज्य नहीं आ सकता है। इस अवसर पर श्री करणभाई और बिहार प्रजा-समाजवादी पार्टी के अध्यक्ष श्री बसावन सिंह के भी भाषण हुए।

—जिला सर्वोदय-मंडल, चित्तौडगढ़ की ओर से चित्तौडगढ़ किले पर मीरा मंदिर में सर्वोदय-कार्यकर्ताओं ने अपने-अपने क्षेत्र से ४५० गुंडियाँ संग्रहित करके गांधीजी को श्रद्धांजलि के रूप में अर्पित की गयी।

—दरभंगा जिले के प्रायः अधिकतर खादी और भूदान में लगे कार्यकर्ताओं की एक बैठक ता० १२ फरवरी को कुशेश्वर की खादी-प्रदर्शनी में विनोबाजी के चतुःसूत्री कार्यक्रम (१)—भू वितरण, (२)—बिघा में एक कट्ठा का दान लेना (३)—सर्वोदय-पात्र और (४) शान्ति-सेना-को जिले भर में पूर्ण रूप से चालू करने के लिये बिहार खादी-ग्रामोद्योग संघ के अध्यक्ष श्री रामदेव ठाकुर के सभापतित्व में हुई। सभी कार्यकर्ताओं ने एक राय होकर इस काम को जोरों से चालू करने की सहमति प्रकट की और इसकी योजना पर चर्चा की। प्रदर्शनी का उद्घाटन श्री रामदेव ठाकुर ने किया।

—बिहार खादी-ग्रामोद्योग संघ, शेरघाटी के कार्यकर्ताओं द्वारा ३० जनवरी से १२ फरवरी तक सर्वोदय-पक्ष मनाया गया। इस पक्ष में व्यवस्थापक खादी-भण्डार, श्री सबलदेव शर्मा, श्री बालगोविन्द प्रसाद आदि कार्यकर्ताओं ने ३५ मील पैदल यात्रा से १० गाँवों में पहुँच कर सर्वोदय-विचार समझाया। इस अवसर पर २५० रुपये की खादी बिक्री हुई तथा भूदान पत्र-पत्रिका और भूदान-साहित्य बेचा गया और सूताञ्जलि में सूत तथा भूदान में 'बीघा में कट्ठा' जमीन देने का लोगों से आग्रह किया गया।

शेरघाटी के खादी भंडार में अखण्ड सूत्र-यज्ञ का समारोह किया गया, जिसमें स्थानीय महिलाओं का भी सहयोग मिला।

—ग्राम सेवा केन्द्र, सरोला (दुमका) के तत्त्वावधान में ता० १२ फरवरी को सरोला में प्रभात फेरी, ग्राम-सफाई, अखंड सूत्र-यज्ञ, सूताञ्जलि-समर्पण, आम सभा एवं प्रार्थना का आयोजन किया गया। इस अवसर पर शान्ति-सैनिकों की रैली की गयी। यह भी तय किया गया कि हर रविवार को रैली का आयोजन करके गाँव-गाँव में सर्वोदय, ग्रामदान-विचार का प्रचार किया जाय।

—नरसिंहपुर (म० प्र०) जिला सर्वोदय-मंडल की ओर से सर्वोदय-पक्ष में लोक-सेवक श्री ज्वाला प्रसादजी कृषक, लक्ष्मीनारायण जैन और लक्ष्मीकान्त पाठक ने समनापुर सघन क्षेत्र में सामाजिक विषमता उन्मूलन के लिए १६ गाँवों में पदयात्रा की। १२ फरवरी को समनापुर में पदयात्रा के समाप्ति-समारोह में सघन क्षेत्र के सोलह गाँव के प्रतिनिधियों ने भाग लिया।

—रतलाम जिला सर्वोदय-मण्डल के तत्त्वाधान में १२ फरवरी को सूताञ्जलि समारोह में मध्यप्रदेश के योजना एवं विकास उपमन्त्री श्री सीतारामजी जाजू और विन्ध्य प्रदेश के भूतपूर्व वित्त-मंत्री श्री गोपालशरणजी ने गांधीजी के जीवन पर प्रकाश डालते हुए श्रद्धांजलि अर्पित की। सूताञ्जलि-समारोह में ग्राम सेवा-केन्द्र, आगरोद; सर्वोदय ग्राम सेवा संघ, लूणी; ग्राम विद्यापीठ, रूपाखेडा; बुनियादी प्रशिक्षण विद्यालय, रतलाम की ओर से सूताञ्जलि के रूप में सौ गुंडियाँ अर्पित की गयीं।

—छतरपुर के राजकीय बुनियादी शिक्षण विद्यालय, गांधी स्मारक निधि, सेवक संघ और खादी-भण्डार के कार्यकर्ताओं द्वारा ७३६ गुंडियाँ समर्पित की गयीं। अखण्ड सूत्रयज्ञ, प्रभात फेरी, हरिजन बस्ती में सामूहिक सफाई, साहित्य-बिक्री के कार्यक्रम हुए।

—पंजाब में रोहतक जिले के गोहाना नगर में हुई कताई-प्रतियोगिता में ५० बहनों ने भाग लिया। सभा में अस्पृश्यता-निवारण, अशोभनीय पोस्टर हटाना, सूताञ्जलि और सर्वोदय-पात्र के कार्य का प्रचार किया गया।

—भिवानी (हिसार) में गांधी पुण्यतिथि के अवसर पर गांधी अध्ययन केन्द्र की ओर से आयोजित एक सभा में हिन्दी के वयोवृद्ध पत्रकार श्री सत्यदेव विद्यालंकार ने कहा कि यह आत्म-निरीक्षण का पर्व है।

राजस्थान में रचनात्मक कार्यकर्ता प्रशिक्षण-शिविर

राजस्थान की विभिन्न रचनात्मक संस्थाओं की दृष्टि से कार्यकर्ताओं को समग्र दृष्टि से प्रशिक्षण देने हेतु राजस्थान समग्र सेवा संघ ने नई प्रवृत्ति के रूप में प्रशिक्षण-शिविर आरम्भ किये हैं। फरवरी के दूसरे और तीसरे सप्ताह में क्रमशः राजस्थान खादी संघ, खादीबाग (चोमूं) तथा टोंक जिला खादी-ग्रामोदय समिति, टोंक में ता० ११ से १७ व ता० १९-२० को शिविर आयोजित किये गये हैं। नागौर जिला सर्वोदय-मंडल की ओर से जिले के समस्त कार्यकर्ताओं का एक शिविर ता० २४, २५, २६ मार्च को हो रहा है। इसके अलावा अलवर, भीलवाडा व बीकानेर जिले में भी शिविर लगेंगे।

विनोबाजी की पदयात्रा

जिला जालपाईगुडी

फरवरी ता०	पड़ाव	स्टेशन
२५	सिलबाडी	अलीपुर दौर जं०
२६	सोनापुर हाट	"
२७	अलीपुर दौर	"

जिला कुचबिहार

२८	बनेश्वर	बनेश्वर
मार्च १-२	कुचबिहार	कुचबिहार
३	मारुगंज	"
४	तुफानगंज	"

५ मार्च को असम में प्रवेश करेंगे।

इस अंक में

श्रीकृष्णदत्त भट्ट, अ० भा० सर्व सेवा संघ द्वारा भार्गव भूषण प्रेस, वाराणसी में मुद्रित और प्रकाशित। पता: राजघाट, वाराणसी-१, फोन नं० ४३९१
वार्षिक मूल्य ६) पिछले अंक की छपी प्रतियाँ ११,९०० : इस अंक की छपी प्रतियाँ ११,९०० एक प्रति : १३ नये पैसे

जातियों की स्त्रियों के शरीर सौन्दर्य" को भी इसने नहीं छोड़ा ।

[हरिजन सेवक, २१ नवम्बर १९३६]

अश्लील विज्ञापन-सम्बन्धी मेरा लेख देख कर एक सज्जन लिखते हैं—

"जो अखबार, आपने लिखा, वैसी अश्लील चीजों के इश्तहार देते हैं, उनके नाम जाहिर करके आप अश्लील विज्ञापन का प्रकाशन रोकने के लिए बहुत कुछ कर सकते हैं ।"

इन सज्जन ने जिस सेंसरशिप की मुझे सलाह दी है उसका भार मैं नहीं ले सकता, लेकिन इससे अच्छा एक उपाय मैं सुझा सकता हूँ ।

जनता को अगर यह अश्लीलता अखरती हो, तो जिन अखबारों या मासिक-पत्रों में आपत्तिजनक विज्ञापन निकले उनके ग्राहक यह कर सकते हैं कि उन अखबारों का ध्यान इस ओर आकर्षित करें और अगर फिर भी वे ऐसा करने से बाज न आयें तो उन्हें खरीदना बन्द कर दें ।

पाठकों को यह जान कर खुशी होगी कि जिस बहन ने मुझे अश्लील विज्ञापनों की शिकायत भेजी थी, उसने इस दोष के भागी मासिक-पत्र के सम्पादक को भी इस बारे में लिखा था, जिस पर उन्होंने इस भूल के लिए खेद-प्रकाश करते हुए उसे आगे से न छापने का वादा किया है।

यह कहते हुए भी मुझे खुशी होती है कि मैंने इस बारे में जो-कुछ लिखा, उसका कुछ अन्य पत्रों ने भी समर्थन किया है। "निस्पृह" (नागपुर) के सम्पादक लिखते हैं :

"अश्लील विज्ञापनों के बारे में 'हरिजन' में आपने जो लेख लिखा है उसे मैंने बहुत सावधानी के साथ पढ़ा। यही नहीं, बल्कि मैंने उसका अविकल अनुवाद भी 'निस्पृह' में दिया है और एक छोटी-सी सम्पादकीय टिप्पणी भी उस पर मैंने लिखी है।

मैं बतौर नमूने के एक विज्ञापन इस पत्र के साथ भेज रहा हूँ, जो अश्लील न होते हुए भी एक तरह से अनैतिक तो है ही। इस विज्ञापन में साफ झूठ है। आम तौर पर गाँव वाले ही ऐसे विज्ञापनों के चक्कर में फँसते हैं। मैं ऐसे विज्ञापन लेने से इन्कार करता रहा हूँ और इस विज्ञापन-दाता को भी यही लिख रहा हूँ। जैसे अखबार में निकलने वाली समस्त पाठ्य-सामग्री पर सम्पादक की निगाह रहना जरूरी है, उसी तरह विज्ञापनों पर नजर रखना भी उसका कर्तव्य है। और कोई सम्पादक अपने अखबार का ऐसे लोगों द्वारा उपयोग नहीं होने दे सकता, जो भोले-भाले देहातियों की आंखों में धूल झोंक कर उन्हें ठगना चाहते हैं ।

['हरिजन-सेवक'
१९ दिसम्बर, १९३६]

नागरी लिपि द्वारा तेलुगु सीखिये : १४

पिछले दो पाठों में तेलुगु भाषा के तीन तरह के विशेषणों की गयी थी। नीचे कुछ ऐसे वाक्य दे रहे हैं, जिनमें विशेषणों का उपयोग [illegible]

हिन्दी	तेलुगु
यह छोटा गाँव है।	[illegible]
गाय मीठा दूध देती है।	आवु तिय्यनि पालु इच्चुं
राम अच्छा लड़का है।	रामुडु मंचि पिल्लवाडु
शान्ता गुणवती लड़की है।	शान्त गुणवतुरालु
आज रोटी बड़ी पतली है।	नेडु रोट्टे पलुचगा उन्दि
एक सफेद कागज दो।	ओक तेल्ल कागितमु इम्मु
ये घर बहुत छोटे हैं।	ई इंड्लु चाला चिन्नवि
चेब्रोलु स्टेशन के पास	चेब्रोलु स्टेशनु
नारायणपुरम् एक छोटा गाँव है।	नारायणपुरमु ओक चिन्न ग्राममु
यहाँ जंगल को काट कर	अक्कड अडविनि कोट्टिवेसि पेद्द
सर्वोदयपुर को	सर्वोदयपुरमु
बड़े पैमाने पर बसाने का	निर्मिंचुट
प्रयत्न हो रहा है।	प्रयत्नमु जरुगुचुन्नदि
नारायणपुर बहुत अच्छा गाँव है।	नारायणपुरमु चाला मंचि ग्राममु

अव्यय

हिन्दी	तेलुगु	हिन्दी	तेलुगु
सामने	येदुट, मुंदर	बाजू में	प्रक्क
पीछे	वेनक	देर से	आलस्यमु
बाद	तर्वात	जल्दी	त्वर

दो उल्लेखनीय प्रसंग

'कुमारप्पा-स्मारक निधि' ने कार्यकर्ताओं की सोयी हुई शक्ति को किस तरह जगाया है, उसका एक उदाहरण नीचे के पत्र से मिलता है :

'भूदान यज्ञ' में प्रकाशित कुमारप्पा-स्मारक निधि के लिए धन संग्रह की अपील पढ़ी तथा निर्णय किया कि मैं स्वर्गीय कुमारप्पाजी के स्मारक के लिए शरीर-श्रम द्वारा अर्जित धन भेजूं। शरीर-श्रम का काम और कोई नजर नहीं आया, इसलिए रोहतक नगर में इस कार्य के लिए छः दिन रिक्शा चला कर मैंने ८ रुपये २१ नये पैसे मजदूरी के रूप में प्राप्त किये। दिन में तो समय नहीं मिलता था, इसलिए लगातार पाँच रोज रात को ७ से ११ बजे तक रिक्शा चलाया, जिससे मजदूरी के अलावा और बहुत कुछ सीखने को भी मिला, साथ ही संतोष व आनन्द प्राप्त हुआ।

—जयनारायण, संयोजक, जिला सर्वोदय-मंडल, रोहतक (पंजाब)

स्वर्गीय कुमारप्पाजी की समवेदना का दायरा कितना व्यापक था यह गोरखपुर (उत्तर प्रदेश) जिले के सर्वोदय-मंडल के अध्यक्ष के पत्र से मालूम होता है :

"आपकी अपील के आधार पर तहसील फरेंदा, जिला गोरखपुर क्षेत्र से 'कुमारप्पा-स्मारक निधि' में अब तक १०१ रु० संग्रह कर चुका हूँ।

श्री कुमारप्पाजी का उपकार तहसील फरेंदा के क्षेत्र पर उनकी सार्वजनिक सेवाओं के अतिरिक्त भी रहा है। सन् १९५२ में आम निर्वाचन के बाद इस क्षेत्र में कड़ा सूखा पड़ा था, तब वे उस समय की किसान-मजदूर प्रजा-पार्टी के इस क्षेत्र के अगुआ श्री शिब्बनलाल सक्सेना के आमरण अनशन से उत्पन्न स्थिति के अवलोकनार्थ आये थे। अपनी रक्तचाप की बीमारी के बावजूद २ दिन आनंद नगर में रह कर सूखे क्षेत्र का दौरा किया। उनके अभिमत के आधार पर ही इस क्षेत्र की जनता को सरकार से सहायता मिली।"

अशोभनीय पोस्टरों की समस्या

फिल्मी जगत् तथा सरकार का रुख सहयोगपूर्ण

[श्री गोकुलभाई भट्ट, श्री महेश कोठारी तथा श्री देवेंद्रकुमार गुप्ता सर्व सेवा संघ की ओर से अशोभनीय पोस्टरों के संबंध में बम्बई तथा दिल्ली में फिल्म-उद्योग से संबंधित तथा सरकारी क्षेत्रों के जिम्मेदार व्यक्तियों से मिल कर बातचीत कर रहे हैं। खुशी की बात है कि देश भर में अशोभनीय पोस्टरों का प्रदर्शन बंद हो, इससे सरकार तथा फिल्मी क्षेत्र के जिम्मेदार व्यक्ति भी सहमत हैं। इस दिशा में अब तक जो प्रयास हुआ है, उसकी थोड़ी जानकारी नीचे दी जा रही है। —सं०]

देश में फिल्मी उद्योग में लगे हुए लोगों की संस्था "इंडियन मोशन पिक्चर्स प्रोड्यूसर्स एसोसिएशन" ('इम्पा') है। 'इम्पा' के अध्यक्ष श्री विमल राय सांस्कृतिक फिल्मों के निर्माता की हैसियत से ही नहीं, बल्कि फिल्म-उद्योग के बाहर सार्वजनिक जीवन में भी अपना स्थान रखते हैं। कुछ समय पहले उन्होंने एक पत्र द्वारा अशोभनीय पोस्टरों का निर्माण तथा प्रदर्शन रोकने के काम में अपना पूरा सहयोग देने का आश्वासन विनोबाजी को दिया था।

अभी फरवरी के शुरू में बम्बई में 'इम्पा' की प्रबन्ध-समिति की बैठक हुई थी। उस सभा में देश के प्रमुख फिल्म-निर्माता हाजिर थे। भारत के वित्तमंत्री, श्री मुरारजी देसाई के परामर्श का लाभ भी 'इम्पा' की प्रबंध-समिति को मिला। इंदौर के जिस अशोभनीय पोस्टर के खिलाफ सीधी कार्रवाई की गयी थी, उस पोस्टर के बारे में फिल्म-निर्माताओं ने भी स्वीकार किया कि वह सचमुच अशोभनीय था और नहीं लगना चाहिए था। सम्बन्धित फिल्म-निर्माता को समझा कर देश भर में से उस पोस्टर को हटाने की बात तय हो गयी है, ऐसा जाहिर किया गया। श्री विमल राय ने यह सूचित किया कि जल्द ही 'इम्पा' के सदस्यों में से एक समिति नियुक्त की जायगी, जो फिल्म, पोस्टर्स और अन्य विज्ञापन-सामग्री की जाँच निर्मिति के पहले ही करेगी और उस समिति की मंजूरी के बाद ही पोस्टर छापे जायेंगे।

नये पोस्टरों में शोभनीय-अशोभनीय का प्रश्न तो बहुत हद तक इस समिति की नियुक्ति से हल हो जायगा, लेकिन जो पोस्टर्स अभी जारी हो चुके हैं, उनके बारे में भी श्री विमल राय की सूचना है कि जहाँ कहीं अशोभनीय पोस्टर्स ध्यान में आयें, उनकी सूचना उन्हें अर्थात् फिल्म-संघ ('इम्पा') को दी जाय, ताकि संघ निर्माताओं से बातचीत करके उन्हें अशोभनीय पोस्टर्स हटाने के लिए राजी कर सकें। उनका यह भी सुझाव था कि स्थानीय तौर पर कदम उठाने से पहले अगर इस प्रकार की सूचना 'इम्पा' को मिलेगी तो ज्यादा अच्छा रहेगा।

अतः जहाँ-जहाँ अशोभनीय पोस्टरों के विरुद्ध आन्दोलन संगठित हुआ है, वहाँ सम्बन्धित लोगों को चाहिए कि जो पोस्टर अशोभनीय मालूम हो, उसके तीन चित्र लेकर एक अपने पास रखें, एक श्री विमल राय, अध्यक्ष, 'इम्पा', सेन्ट्रल बिल्डिंग, सरदार पटेल रोड, बम्बई-४ को भेज दें और एक सर्व सेवा संघ के प्रधान कार्यालय को भेज दें। विदेशी फिल्मों के पोस्टरों के बारे में सरकारी स्तर पर आवश्यक कार्रवाई की जायगी, ऐसा आश्वासन भी मिला है।

जो पोस्टर्स अब तक लग चुके हैं, उनके बारे में या आगे भी 'इम्पा' की समिति जिन्हें स्वीकृत कर ले, उनके बारे में भी अगर स्थानीय जिम्मेदार समितियाँ तथा नागरिकों को यह लगे कि वे अशोभनीय हैं तो उसके बारे में सीधे आवश्यक कार्रवाई तो वे आज की तरह कर ही सकते हैं।

सत्यं जगत् स्फूर्तिः जीवनं सत्यशोधनम्

भूदान-यज्ञ

लोकनागरी लिपि*

मनुष्य स्वभावतः सज्जन है

मानव परीस्थीतीवश दुराचारी बनता है, दुराचार के प्रवाह में वह जाता है। लेकीन जीस क्षण असे वस्तु का स्वच्छ दर्शन हो जायगा, तब वह कीसी भी नीमीत्त से क्यों न हो, फौरन बदल जायगा। दुनीया में जो पाप होते हैं, वे अज्ञान के कारण ही होते हैं। सच्चे दुराचारीयों की अेक खूबी यह होती है की उनमें भगवान के प्रती अधीक श्रद्धा होती है। जो सच्चे दुराचारी होते हैं, वे सच्चे सदाचारी के अत्यंत नजदीक होते हैं, जैसे वर्तुल के दो सीरे। अीसलीअे दुराचारीयों में परीवर्तन लाना बीलकुल आसान है। दुर्जन अत्यंत सज्जन बन सकते हैं। मनुष्य की मानवता में और मानव-हृदय की सज्जनता में अगर हमारी श्रद्धा नहीं, तो यह मानव का जीवन जीने लायक नहीं रहेगा। लेकीन सत्य का कभी नाश नहीं हो सकता। असत्य की कोअी हस्ती नहीं है। प्रकाश के सामने अंधकार टीकता नहीं। अंधकार अभाव रूप है और प्रकाश भाव रूप। दुर्गुण शरीर के होते हैं और सद्गुण आत्मा के। शरीर बदलता है, तो दुर्गुण भी बदलते हैं। आत्मा स्थीर है, अीसलीअे उसके गुण भी स्थीर रहते हैं। जैसे हंस दूध और पानी को अलग अलग कर लेता है, वैसे ही हमें सद्गुण और दुर्गुणों को पृथक करना चाहीअे।

—वीनोबा

*लिपि-संकेत : ि = ी ; ी = ी ख=ख, संयुक्ताक्षर हलंत चिह्न से।

कार्यकर्ताओं तथा पाठकों से आवश्यक निवेदन

होली का त्यौहार उत्तर भारत में, खासकर हिन्दी भाषी प्रान्तों में, बहुत व्यापक पैमाने पर मनाया जाता है और लोकमानस पर उसका बड़ा आकर्षण है। पिछले वर्षों में कुल मिला कर लोगों के नैतिक और सामान्य शिष्टाचार के स्तर में काफी गिरावट आयी है, यह जीवन के हर क्षेत्र में हम देख रहे हैं। होली के मौके पर तो अशिष्टता और उच्छृंखलता सीमा को पार कर जाती है। एक अलिखित कानून भी ऐसा माना जाने लगा है कि होली में जो कुछ भी किया जाय वह सब जायज और क्षम्य है। यहाँ तक नौबत आयी है कि सार्वजनिक सम्पत्ति की तोड़-फोड़, उसकी बिगाड़ आदि भी खुले आम होता रहता है और 'होली में सब कुछ माफ है और लोगों को कुछ भी करने का अधिकार है'—इस मान्यता के आधार पर कानून तथा शान्ति-सुरक्षा के पहरेदार भी निःसहाय खड़े-खड़े इस दुरुपयोग को देखते रहते हैं। होली के दिनों में अश्लीलता भी अपनी हद पार कर जाती है, बड़े छोटे की, स्त्री पुरुष की सब मर्यादा एक ओर रख कर सारा व्यवहार चलता है।

इस बढ़ती जाती दुरवस्था और अश्लीलता का एक बड़ा कारण यह है कि इस वृत्ति का प्रतिवाद करने की कोई हिम्मत नहीं करता। लोग मन ही मन इस सारी स्थिति को देख कर कुढ़ते हैं, दुःखी होते हैं आपस की चर्चा में 'जमाने' को दोष देते हैं, पर सार्वजनिक तौर पर बोलने की या बुराई को चुनौती देने की हिम्मत कोई नहीं करता। इसमें कोई शक नहीं है कि भलाई की निष्क्रियता ही बुराई के बढ़ते रहने की जिम्मेदार है। अगर हिम्मत करके कोई आवाज उठाता है तो जरूर आम लोग उसका समर्थन करते हैं, जैसा कि अशोभनीय पोस्टर-आन्दोलन के सिलसिले में हुआ है। इसलिए जिम्मेदार और भले लोगों का कर्तव्य है कि वे अपने-अपने स्थान पर होली के 'हुड़दंग' को रोकने, उसे नियंत्रित करने और सारे उत्सव को तथा लोगों की स्वाभाविक प्रेरणा को अच्छी राह में मोड़ने के लिये कोशिश करें। कुछ जगहों पर जहाँ इस तरह की कोशिश शुरू की गयी है, वहाँ उसका नतीजा अच्छा आया है—जैसे जबलपुर में और कुछ हद तक गया में। समाज के नेताओं का कर्तव्य है कि वे ऐसे मौकों पर चुपचाप और निःसहाय प्रेक्षक न रह कर बुराई का सक्रिय मुकाबला करें।

इस बार तो होली करीब-करीब आ गयी है। पर अभी भी अगर पाठक जगह जगह इस बारे में कुछ प्रयत्न करेंगे तो बुराई को रोकने की शुरुआत हो सकेगी

—सिद्धराज

जबलपुर कांड

जबलपुर की दुःखद घटना की कहानी अब काफी प्रकाश में आ चुकी है। घटना बहुत शर्मनाक होते हुए भी वह ऐसी असाधारण नहीं थी कि उसकी इतनी बड़ी और व्यापक प्रतिक्रिया होती। एक मासूम लड़की के शील पर आक्रमण हुआ, उसने शर्म के मारे उसने आत्महत्या कर ली। संयोग से आक्रमणकारी मुसलमान थे—पर वे हिन्दू या और कोई भी हो सकते थे। लेकिन अधिकारियों की और समाज के स्वाभाविक नेताओं तथा 'भले लोगों' की अदूरदर्शिता, निष्क्रियता और उनके समय पर कदम न उठाने के कारण मामले ने भीषण साम्प्रदायिक रूप ले लिया। जबलपुर तथा आसपास के अन्य शहरों में जो दंगे हुए उसके पीछे पाकिस्तान का कुछ हाथ है ऐसी बात भी कही गयी। इसमें सचाई हो या न हो, ऐसी बातों से हमें अपनी कमजोरी और निष्क्रियता को छिपाने का मौका तो मिल ही जाता है। अंग्रेजों के जमाने में हर बुराई की जिम्मेदारी हम अंग्रेजी शासन के सिर मढ़ते थे, आज हर बुराई या अव्यवस्था की जिम्मेदारी हम असामाजिक तत्त्वों पर, साम्यवादियों पर या पाकिस्तान आदि पर डाल कर लोगों का ध्यान दूसरी ओर खींचने की और अपने को बचाने की कोशिश करते हैं। इस तरह दूसरों को और अपने को भुलावे में डालना और धोखा देना राष्ट्र के लिये घातक है। बाहरी कारण रहे हों या न रहे हों, यह तो साफ ही है कि बाहरी कुछ साजिश रही हो तब भी जबलपुर जैसी घटनाओं की बहुत कुछ जिम्मेदारी हमारी अपनी निष्क्रियता और अधिकारियों की अयोग्यता पर है। आशा है, हम अपनी कमजोरियों को ऐसे प्रसंगों से परखने की कोशिश करेंगे।

जबलपुर का दंगा इस बात का भी दुःखद सबूत है कि हमारी राष्ट्रीयता कितनी कच्ची है और साम्प्रदायिकता का जहर हमारी रग-रग में कैसा घुसा है, जो जरा-सा मौका पाकर फूट निकलता है। आसाम ने उसका एक रूप दिखाया, जबलपुर में दूसरा प्रकट हुआ। राष्ट्र के नेताओं तथा सब शुभचिन्तकों के लिये यह गंभीर चिन्तन और कर्म का अवसर है।

—सिद्धराज

●

चुनाव और नागरिक कर्त्तव्य

[बम्बई सर्वोदय-मंडल ने वहाँ के कारपोरेशन के होने वाले चुनावों के अवसर पर नागरिकों के कर्त्तव्य के बारे में नीचे लिखी अपील निकाली है। उसमें जो सुझाव दिये गये हैं वे बम्बई के लिये ही नहीं, जहाँ भी चुनाव होते हैं वहाँ के लिये लागू होते हैं। —सं०]

बम्बई कारपोरेशन का चुनाव शीघ्र ही होने वाला है। स्वायत्त शासन के चुनावों से मतदाता का अधिक निकट का और प्रत्यक्ष सम्बन्ध होता है। अतः उसे उन चुनावों में अधिक दिलचस्पी होती है, और उसके लिए उनका महत्त्व भी अधिक है। वास्तव में चुनाव नागरिक शिक्षण का सुअवसर है। सत्ता के नीलाम में बोली बोलने का मौका नहीं है। हरएक मतदाता को इस तथ्य का प्रत्यय दिलाना जरूरी है। इस दृष्टि से मतदाता, उम्मीदवार और सारी पार्टियों से अनुरोध है कि वे नीचे लिखे सुझावों पर अमल करने की भरसक कोशिश करें।

(१) कोई उम्मीदवार मतदाता से यह आश्वासन कदापि न ले कि मतदाता अपना वोट उसी को देगा। वोट डालने के आखिरी क्षण तक अपना मत बनाने और बदलने की स्वतंत्रता मतदाता को होनी चाहिए।

(२) मतदाता को चाहिए कि वह सभी उम्मीदवारों का या पार्टियों का कहना आदरपूर्वक और खुले दिल से सुने, लेकिन किसी को वचन न दे। नगर के हित की दृष्टि से जो उम्मीदवार प्रामाणिक, निष्ठावान् तथा योग्य मालूम हो उसीको अपना वोट दे। किसीके लिहाज, मुरौवत, संकोच के कारण या किसी पर एहसान करने के लिए अथवा डर या लालच के सबब से कोई मतदाता अपने इस स्वनिर्णय के अधिकार से वंचित न हो।

(३) जो उम्मीदवार या पार्टी सम्प्रदाय, जाति या भाषा के आधार पर मत-याचना करे। उसे मत देने से साफ इन्कार करना चाहिए। सम्प्रदाय को नागरिकता का आधार बनाना सम्प्रदायवाद है, जाति को या भाषा को नागरिकता का आधार बनाना जातिवाद और भाषावाद है। संप्रदायवाद, जातिवाद और भाषावाद लोकतंत्र की जड़ खोदते हैं।

(४) आज के समाज में मालिक-मजदूर का रिश्ता शोषण के लिए मौके देता है। यह सम्बन्ध संपूर्ण रूप से नष्ट होना चाहिए। कोई किसीका मालिक नहीं, और कोई किसीका मजदूर नहीं, यही सम्बन्ध मानवोचित है। उसकी स्थापना लोकतंत्र की पद्धति से होनी चाहिए।

[शेष पृष्ठसंख्या १० पर]

अंतर्राष्ट्रीय मामले में युद्ध का विकल्प

शंकरराव देव

भारत-चीन प्रश्न के सिलसिले में दोनों देशों के कुछ सरकारी अफसरों का मण्डलियाँ विवादग्रस्त विषय के तथ्यों की जाँच करने के लिए एकत्र बैठी थीं। उन दोनों मण्डलियों की रिपोर्ट अभी हाल ही में प्रकाशित हुई है। वास्तव में रिपोर्ट एक नहीं, दो अलग-अलग रिपोर्ट ही हैं—अर्थात् भारतीय अफसरों की ओर से पेश की गयी रिपोर्ट एक, और दूसरी चीनी अफसरों की। भारतीय दल की ओर से जो तथ्य इकट्ठे किये गये हैं, उन पर से ऐसा लगता है कि चीन सरकार की ओर से पिछले वर्षों में जानबूझ कर कुछ ऐसी कार्रवाइयाँ की गयी हैं, जिनसे उनकी नीयत साफ नहीं होने का पता चलता है।

भारत अपने पक्ष को न्याययुक्त मानता है और चीन अपने पक्ष को। तब फिर सवाल यह है कि इस विवाद का फैसला कैसे हो? भारत और चीन दोनों स्वतंत्र राष्ट्र हैं। अब तक ऐसे अंतर्राष्ट्रीय विवादों के हल की एक ही प्रक्रिया रही है—जहाँ तक संभव हो वहाँ तक दोनों ओर के स्वतंत्र राष्ट्रों की सरकारें और उनके प्रतिनिधि विवाद-ग्रस्त विषय के बारे में आपस में चर्चा करते हैं और समझौता करने की कोशिश करते हैं, पर इस प्रकार अगर समझौता नहीं होता है तो जो राष्ट्र मानता है कि उसके प्रति अन्याय हुआ है, वह अन्याय का प्रतीकार करने के लिए शस्त्र उठाता है, अर्थात् हिंसक मार्ग ग्रहण करता है।

भारत की विदेश-नीति

अंतर्राष्ट्रीय मामलों में भारत सरकार ने पं० जवाहरलाल नेहरू के नेतृत्व में यह नीति अपनायी है कि वह अंतर्राष्ट्रीय प्रश्नों के हल के लिए शस्त्र का, अर्थात् हिंसा का उपयोग नहीं करेगी।

भारत सरकार की आज की यह विदेश-नीति केवल श्री जवाहरलाल *नेहरू की या केवल कांग्रेस पक्ष की* नहीं है, बल्कि समूचे भारत ने उसे स्वीकार किया है—ऐसा कहें तो *अत्युक्ति नहीं होगी।* वह हमारे प्राचीन इतिहास में से, निकट के भूतकाल में से और इसी तरह अपने राष्ट्रीय स्वतंत्रता-आंदोलन के दिनों में समय-समय पर हमने जो घोषणाएँ कीं, उन विविध आदर्शों में से प्रतिफलित हुई है।

भारत सरकार की विदेश-नीति का ध्येय विश्व-शांति स्थापित करना है, अतः जो बातें विश्व को युद्ध की ओर खींचती हों या युद्ध को विश्व के समीप लाती हों, उन सबका विरोध करना उसकी नीति है। अणु-शस्त्रों आदि के उद्भव से आज तो ऐसी स्थिति बनी है कि सिद्धांततः जिन लोगों का विश्वास अभी अहिंसा में नहीं जमा है और हिंसा की नीति को जो उस प्रकार हेय नहीं मानते हैं, वे भी कम-से-कम इतना मानने लगे हैं कि अंतर्राष्ट्रीय विवादों में हिंसा का आश्रय लेना उचित नहीं है, क्योंकि आज युद्ध का स्वरूप ही इस प्रकार का हो गया है कि उसका परिणाम एकमात्र सर्वनाश ही है, *सत्य और असत्य—दोनों का सर्वनाश* है। इसलिए आज के संसार में 'धर्मयुद्ध' का कोई स्थान और अर्थ नहीं रहा है। जहाँ सर्वनाश है वहाँ धर्म कहाँ टिकेगा और कहाँ रहेगा?

अगर हिंसा का मार्ग त्याज्य है, तब फिर अंतर्राष्ट्रीय अन्याय का मुकाबला या निराकरण करने का दूसरा क्या तरीका है? भारत-चीन विवाद को ही लें। जहाँ तक तथ्यों का और दलीलों का सवाल है, ऐसा लगता है कि भारत का पक्ष सबल है। पर चीन उसे मानने को तैयार नहीं है और हमारी दृष्टि से उसने जो गलत कार्रवाई की है, उसे वापस लेने को भी वह तैयार नहीं है। हिंसा की प्रवृत्ति का आश्रय तो हमें लेना नहीं है, तब फिर ऐसी परिस्थिति में *अन्याय का निराकरण* किस प्रकार करें यह प्रश्न उपस्थित होता है।

अन्याय-निराकरण के मार्ग

हिंसा के अलावा दो प्रकार की शक्तियाँ (सैंक्शन्स) अन्याय के निराकरण के लिए हो सकती हैं—एक नैतिक शक्ति और दूसरी *आध्यात्मिक।* जहाँ तक आध्यात्मिक शक्ति से अन्याय के निराकरण का सम्बन्ध है, मानव का आज तक का *जो विकास हुआ है उस अवस्था में आध्यात्मिकता एक प्रकार से इने-गिने व्यक्तियों* की चीज है। चूंकि कोई सत्य केवल सत्य है, इसलिए *सर्व-साधारण मनुष्य की बुद्धि* और हृदय को ग्राह्य नहीं होता है। उसे ग्राह्य करवाने के लिए सत्य को अपने से भिन्न किसी दूसरे बल का सहारा लेना पड़ता है। आज तक वह हिंसा का बल लेता रहा और इसीलिए खुद सत्य का नाश हुआ है। पर अपना बहुत कुछ बचाव करने के लिए सत्य को किसी श्रेष्ठ बल का सहारा लेना जरूरी है। सत्य जब तक अपने ही बल पर अपना बचाव नहीं कर सकेगा, तब तक दूसरा कोई बल उसका पूरा-पूरा बचाव नहीं कर सकता। पर दुःख की बात यह है कि आज, मानव के लिए यह संभव नहीं है। इसलिए

यदि सत्य को यानी मानव को अपना नाश टालना है तो हिंसा-बल से श्रेष्ठ किसी दूसरे बल का सहारा लेना ही होगा और वह है नैतिक बल। इस नैतिक बल का उपयोग आज भी अधिकांश व्यक्तिगत रूप से और छोटे-छोटे समूहों के पारस्परिक सम्बन्धों में किया जाता है। लेकिन अब जमाने का तकाजा है कि मानव यह खोज करे कि उस नैतिक बल को व्यापक कर दे और सामूहिक तौर पर काम में लाने की कौनसी प्रक्रिया हो सकती है, तथा उस प्रक्रिया पर अमल करे।

गांधीजी ने हिंसक शक्ति के विकल्प में सत्याग्रह की नैतिक शक्ति का आविष्कार किया। राष्ट्रीय स्वतंत्रता-आंदोलन में हमने उस शक्ति का उपयोग किया और सफलता प्राप्त की। भारत अब स्वतंत्र है। अब समय आया है कि वह इस नैतिक शक्ति का उपयोग अंतर्राष्ट्रीय विवादों में करे और यह कोशिश करे कि उसके पड़ोसियों के साथ या अन्य किसी के साथ उसका कोई विवाद हो तो वह यथासंभव समझौते से, और समझौता न हो सके तो नैतिक शक्ति के यानी सत्याग्रह के उपयोग से, उसका हल करे।

नैतिक शक्ति का प्रयोग

पर इस सत्याग्रह की नैतिक शक्ति का प्रयोग सरकार के द्वारा नहीं हो सकता है। वह तो जनता ही कर सकती है। भारत सरकार के पास फौज है और हालाँकि अंतर्राष्ट्रीय विवादों में हिंसा का उपयोग न करने' की उसकी नीति है, तथापि उसकी यह प्रतिज्ञा है कि अगर कोई बाहरी आक्रमण हो, तो उसका मुकाबला वह हिंसा से भी करेगी, अर्थात् हिंसा का या सैन्य का उसने सर्वथा त्याग नहीं किया है। और, कोई सरकार वैसा कर भी नहीं सकती, क्योंकि सरकार का अर्थ ही दण्डशक्ति है। इसलिए सरकार और सत्याग्रह—इन दोनों का अन्तर्विरोध स्वयंसिद्ध है। अतः जो लोग चाहते हैं कि राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय व्यवहार में सत्याग्रह का उपयोग हो, उनका यह अपेक्षा रखना गलत होगा कि सत्याग्रह सरकार के जरिये हो। सत्याग्रह करना खुद लोगों का काम है, क्योंकि उनमें हिंसात्मक और अहिंसात्मक दोनों शक्तियाँ मौजूद हैं। उनमें से हिंसा-शक्ति का प्रतिरूप (प्रोजेक्शन) सरकार है। यानी व्यवहार की भाषा में कहें, तो जनता ने अपने में विद्यमान हिंसा-शक्ति का उपयोग करने का काम सरकार को सौंपा है (डेलिगेट किया है)। अहिंसा की जो शक्ति है वह अभी वैसी ही है। लोगों को सत्याग्रह करना है तो उस अहिंसात्मक शक्ति का उपयोग करना है और वह खुद ही यह कर सकते हैं।

अंतर्राष्ट्रीय सत्याग्रह

लेकिन अंतर्राष्ट्रीय सत्याग्रह में एक और शर्त का पालन करना होगा। वह यह है कि ऐसे सत्याग्रह में केवल एक ही देश के लोग दूसरे देश के लोगों के या उनकी सरकार के विरुद्ध सत्याग्रह करें तो वह पर्याप्त नहीं होगा, क्योंकि उसमें राष्ट्रीयता की बू आ जायगी, उसका स्वरूप राष्ट्रीयता का हो जायगा। यह जरूरी है कि ऐसे सत्याग्रह के अन्य देशों के वे लोग भी जो अहिंसक शक्ति में निष्ठा रखते हैं और अहिंसा के जरिये समस्याओं के हल करने के ... को प्रशस्त करना चाहते हैं, ... यानी अंतर्राष्ट्रीय व्यवहार में सत्याग्रह ... अर्थ है अनेक देशों का किया हुआ सत्याग्रह ...

हिंसा के क्षेत्र में भी आज ऐसी ... स्थिति निर्माण हुई है कि उसका ... भी अंतर्राष्ट्रीय व्यवहारों में करना हो ... संयुक्त राष्ट्रसंघ के तत्त्वावधान में ... सदस्य-राष्ट्रों को मिल कर करना ... है। आज का संयुक्त राष्ट्रसंघ विभिन्न ... देशों के लोगों का नहीं बना है, ... विभिन्न सरकारों का बना हुआ है। ... लिए संयुक्त राष्ट्रसंघ आज अंतर्राष्ट्रीय ... विरोधों का निराकरण करना चाहे ... तो उसके पास भी शस्त्रबल ही है, नैतिक ... बल नहीं। आज कामों में संयुक्त राष्ट्रसंघ ... की असफलता का मुख्य कारण यही है। ... लेकिन चूंकि वह सरकारों का बना हुआ ... है इसलिए, जैसे आज भारत सरकार की ... स्थिति है, वैसे वह चाहे तो भी नैतिक ... का उपयोग नहीं कर सकता है। ... संयुक्त राष्ट्रसंघ जब हिंसा का उपयोग ... करता है तो अनेक देशों की संयुक्त-हिंसा ... का उपयोग करता है। अहिंसा को ... अंतर्राष्ट्रीय क्षेत्र में लाना है तो इस शर्त ... का पालन करना होगा, यानी भिन्न-भिन्न ... देशों के लोगों को मिल कर सत्याग्रह ... करना होगा।

लोक-प्रतिनिधियों का विश्व-संघ

इसलिए अगर अंतर्राष्ट्रीय क्षेत्र ... नैतिक शक्ति के प्रयोग से समस्याओं का ... हल करना है तथा विश्व-शांति स्थापित ... करनी है तो 'लोक-प्रतिनिधियों का विश्व-... संघ' स्थापित होना जरूरी है। ... मानवों में जो जाति-निष्ठा, धर्म-निष्ठा ... राष्ट्र-निष्ठा है वह सब सक्षम हो ... मानव के अंतःकरण में एकमात्र ... निष्ठा निर्माण हो तभी यह संभव है। ... अंतर्राष्ट्रीय क्षेत्र में किया जाने वाला ... यह ही इस मानव-निष्ठा को ... सकेगा और उसे पोषण दे सकेगा, ... मानवता पर प्रेम और मानवता पर ... ही सत्याग्रह का आधार-तत्त्व है।

अगर भारत-चीन जैसी समस्या ... हल अहिंसक ढंग से करना हो तो ... लिए एकमात्र उपाय यही है कि ... के लोक-प्रतिनिधियों के विश्व-संघ ... द्वारा ऐसे प्रश्न हाथ में लिये जायें। ... प्रतिनिधियों के विश्व संघ का ... अंतर्राष्ट्रीय दल ऐसे मामलों में ... का कदम उठाये। इस प्रकार के ... ही अंतर्राष्ट्रीय क्षेत्र में अहिंसा को ... उतारना संभव है।

फिर इस पर कोई कहेगा कि ... सरकार का कोई काम नहीं रहा ... उसके अस्तित्व का कोई मूल्य नहीं ... हाँ, यही आदर्श स्थिति है। ...

बागियों का मूल्यांकन होने के साथ शासन का भी मूल्यांकन हो

• गुरुशरण

हाल ही में प्रथम आत्म-समर्पणकारी बागी रामऔतार को फाँसी की सजा, लोकमन, तेजसिंह और रामसनेही को आजन्म कारावास तथा अन्य बागियों को पाँच-पाँच, सात सात और आठ-आठ साल की सजाएँ सुनायी गयीं।

डाकुओं के आत्मसमर्पण की घटना में विनोबा से बढ़कर श्रेय शायद उन बागियों को देना चाहिए, जिन्होंने हथेली पर जान रख कर एक संत के चरणों में हथियार समर्पित किये, अपराध का प्रायश्चित्त और भविष्य में अपराध न करने का संकल्प किया।

हर डाकू कानून जानता है कि बिना लाइसेंस हथियार रखने में सजा होती है, वही हथियार उन्होंने स्वेच्छा से सौंप दिये। इसमें उनके मन को समझने में दो रायें हो ही नहीं सकतीं। पहला मुकदमा भी यही चला, उन्होंने अदालत में स्वीकार भी किया, क्या यह मन पर बिना किसी असर के हुआ?

भयभीत जीवन बिताते-बिताते उससे विरक्ति हो जाने पर और लोभवश भी आत्मसमर्पण होते हैं, पर किसी भी समय दुःख का प्रभाव पड़ने पर—मन में नेकी का विचार उदय होने पर, कि अब तो निरपराधी जीवन में मरूँगा—अपराध विरत होकर भी व्यक्ति अपने को समाज व कानून को सौंप देता है।

आत्मसमर्पणकारी बागियों के सरदार लोकमन से भिण्ड की अदालत में पचासों बार भेंट हुई। मैंने उनके चेहरे पर सदैव एक भाव पाया "वीतरागिता" का। उन्होंने कई बार मुझसे कहा भी "अब यह शरीर बाबा का है।" विनोबाजी को ऐसे पत्र भी लिखे, जिसमें प्रायश्चित्त का भाव स्पष्ट झलकता था, जिसका उत्तर भी विनोबा ने भेजा। "उल्टा नाम जपत जग जाना, बाल्मीकि भये ब्रह्म समाना। दीन न बनते हुए नम्रता से बरतो।" जिस दिन आजन्म कारावास की सजा सुनायी गयी, उस दिन उनके चेहरे पर ऐसा ही भाव था, जैसा कि दूसरे मुकदमों में बरी होने की खबर सुनने पर था।

ईश्वरीय विधान

लोकमन के अतिरिक्त अन्य बागियों के मन में वीतरागिता अपेक्षाकृत कम रही। किसीमें नहीं भी कही जा सकती। उसकी जिम्मेदार सरकार है, जो अपने को गांधी के विचार का बताती है। यह घटना मामूली नहीं है। विनोबाजी ने बागियों को शासन के सिपुर्द करते समय कहा था कि "गैरकानूनी ज्यादती नहीं होगी" और मध्यप्रदेश के मुख्यमंत्री गांधी-भक्त डा० काटजू को लिखा था कि आपके जिम्मे छोड़ कर मैं निश्चिन्त होना चाहता हूँ। लिखते दुःख होता है कि इनके साथ पुलिस ने अन्य अपराधियों जैसा ही अमाननीय व्यवहार किया। बीसों मुकदमें मध्यप्रदेश में और पचासों उत्तरप्रदेश में लगा कर लम्बा चक्रव्यूह तैयार किया। कानून का नाटक आरम्भ हुआ। पुलिस ने गवाहों को मारा-पीटा, जो कुछ वह कर सकती थी, किया। मध्यप्रदेश के आई० जी० श्री रुस्तम ने आमसभा का बयान दिया। उस बयान में बतायी गयी धाराऐं असंगत प्रलाप हैं। एक धारा तो १९४२ में ही रद्द हो गयी थी। उस वक्तव्य को खूब परिपोष और पुष्टि दी गयी। विनोबाजी ने तो एक ही उत्तर दिया कि वे ईश्वरीय विधान जानते हैं और कोई कानून नहीं।

ईश्वरीय विधान यह हो सकता है कि अपराधी अपराध स्वीकार कर आगे

तक पहुंचने के लिए हमें सतत प्रयत्न-शील रहना है। पर आज भारत सरकार का यह धर्म है कि भारत की जनता यदि सत्याग्रह के काम में अभिक्रम ले और प्रयत्नशील हो तो उसे प्रोत्साहन दे, उसमें मदद दे, क्योंकि उसे गांधीजी की विरासत प्राप्त है।

निरपराध जीवन बिताने का तय करे कि अब अपराध-विरत की स्थिति में मरूँगा, पर बड़ी-से-बड़ी सजा की तैयारी रखे, तो समाज को उसे क्षमा कर देना चाहिये, ताकि चारित्र्य-शक्ति का विकास हो। एक व्यक्ति ने किसीकी हत्या की, हत्या को स्वीकार कर प्रायश्चित्त करना चाहे तो कानून ने उसे फाँसी दे दी। इससे कानून का पालन भले ही हो, पर मन का और मानवता का समाधान नहीं होता।

कानून का नाटक

व्यक्ति के मन में नेक विचार जागृत होने पर वह बुराई छोड़ता है तो उसका न्याय वह स्वयं ही कर सकता है। दूसरा क्या करेगा? दूसरा उसकी बुराई का अधिक दण्ड देता है तो उसके मन में क्रोध उत्पन्न होगा और वह अधिक अपराध करेगा। यदि कम दण्ड मिलता है तो लोभ का उदय होता है। अगली बार वह और बच कर अपराध करेगा। आज सरकार एक ओर सेल्स-टैक्स आफीसर नियुक्त करती है, दूसरी ओर सेल्स-टैक्स एक्सपर्ट वकील तैयार होते हैं। कानून बनते हैं और बुद्धिपूर्वक वे तोड़े जाते हैं। यह सब नाटक है, इस नाटकीय परम्परा में स्वेच्छा से आत्मसमर्पण की घटना विचार की घड़ी थी। उनको सजाएँ होतीं, पर वे सुधार की दृष्टि रख कर होतीं, उनके लिए अन्य देशों की तरह विशेष जेल और विशेष बदल की ओर ध्यान रखा जाता तो इससे अपराध शास्त्र में नई परम्पराओं के नये बीज पड़ते।

आत्मसमर्पण की घटना से शासन, कानून और गांधी-भक्त कांग्रेस-सरकार का हृदय-परिवर्तन नहीं हुआ, बल्कि उल्टा ही हुआ कि पुलिस द्वारा आत्मसमर्पण की घटना को छिपाया गया, सत्य पर पर्दा डाला गया। भरी अदालत में यहाँ तक कहा कि विनोबा को न वे जानते हैं और न उनको यह जानकारी है कि उनके समक्ष कभी आत्मसमर्पण हुआ! इतना बड़ा झूठ उन्होंने सिर्फ इस प्रलोभन से कहा कि इनके साथ कोई रिआयत न होने पाये। पुलिस के सामने डाकू हाजिर नहीं हुए, विनोबाजी के सामने हुए तो इसमें पुलिस की अप्रतिष्ठा का प्रश्न नहीं है। दण्ड-शक्ति के सामने प्रेम और करुणा की प्रतिष्ठा हुई, उसे स्वीकारने में शासन की इज्जत देश दुनिया में बढ़ती ही। पुलिस दसों डाकुओं को मार लेती है तो बीसों पैदा भी हो जाते हैं, इस सत्य को सामने रख कर यह घटना प्रोत्साहन देने वाली होनी चाहिए थी।

अखबारों का रवैया

दुनिया ने जहाँ इस घटना को खुली आँखों देखा वहाँ भारत के अग्रणी अंग्रेजी अखबारों ने इसकी आलोचना की। नेक और उन्नत जीवन की माँग के बजाय उन्हें समाज की वृत्ति की फिक्र है।

उनकी बला से नैतिकता फैले चाहे न फैले, अखबार बिकना चाहिए। इसलिए विनोबा या अन्य किसी नेता को काले झंडे दिखाये जाते हैं तो उनके लिए वह मुखपृष्ठ पर छापने का विषय है, यदि उसका काला-मुँह हो जाये तो विशेषांक का अवसर है, पर यदि कहीं प्रकाश फैलता है, ईमानदारी उठती है, सच्चाई पनपती है तो वे आँख मींच लेना चाहते हैं। दिल्ली या बम्बई से भिण्ड आकर आँखों देखा जा सकता था कि विनोबा के हृदय-परिवर्तन अभियान का कितना असर समर्पित-असमर्पित बागियों पर और इलाके की जनता पर पड़ा।

आश्चर्य का विषय है कि समर्पित-असमर्पित का मूल्यांकन करने के साथ-साथ शासन को क्यों छोड़ दिया जाता है? क्या उसका काम आजाद हिन्दुस्तान में भी हर दिन जनता पर गोली-बारी करना और हंटर चलाना ही रहेगा?

आत्मसमर्पण की घटना का असर असमर्पित डाकुओं पर क्या होगा? वे तो पहले से ही इसे पसन्द नहीं करते थे। इनको फाँसी की सजा से उन्हें आत्मसमर्पण की प्रेरणा होना अस्वाभाविक है। बीस बागियों के बाद इक्कीसवें का न आना आत्मसमर्पण के मूल्य को कम नहीं करता। बीस का भी न होकर एक का ही आत्मसमर्पण होता तो उसका भी इतना गुणात्मक महत्त्व होता। सारा दारोमदार आत्मसमर्पण के बाद के व्यवहार पर निर्भर करता था। बाद के सोच विचार से इसका महत्त्व उजागर होता। जरा सी कस्तूरी बहुत सुगन्धि फैला देती है। उन्होंने जो किया उसी परिपाटी पर सरकार अमल करती तो उस थोड़े-से दही से और भी दही बन सकता था। उसको दही न मान कर खटाई माना, इसलिए दूध फट गया। असमर्पित बागियों के दिल फट गये। इलाके की जनता का उत्साह ठंडा पड़ गया और सारा आनन्द खटाई में पड़ गया।

जहाँ तक अभियान के औचित्य-अनौचित्य का प्रश्न है, संत महात्मा अपनी बात कह कर चले जाते हैं। विवेकशील उसे अपना कर अपने जीवन में सुधार कर लेते हैं। विनोबाजी ने अपने साथियों से एक बार कहा कि गत वर्ष १९६० में किसीको शान्ति-पुरस्कार नहीं मिला। यदि किसीको लेने का हक था तो लोकमन को था, जिसने शान्ति के लिए अपने जीवन की राह बदली।

ईसा ने एक बात कही थी, उसे अनुचित मान कर उस समय के समाज ने उसे फाँसी पर चढ़ा दिया, पर उसकी बात में वजन था तो उसका औचित्य कालान्तर में प्रकट हुआ। ईसा की बात को फैलाने में उन मिशनरियों की सेवा सराहनीय है जिन्होंने पाँच-पाँच हजार मील पैदल चल कर एक बाइबिल बेच कर ईसा का सन्देश फैलाया। वैसी लगन और व्यथा वाले लोग जब विनोबा के शान्ति-अभियान का सन्देश घर-घर पहुँचायेंगे तो इस पथ के साथ उनकी प्रीति और सेवा जुड़ कर प्रकाश फैला देगी।

सहयोगी पत्र-पत्रिकाओं से

अक्सर "भूदान-यज्ञ" में से लेख आदि अन्य पत्र-पत्रिकाओं में उद्धृत किये जाते हैं या अनुवाद करके प्रकाशित किये जाते हैं। इसके लिए हम सहयोगी पत्र-पत्रिकाओं के आभारी हैं। 'भूदान-यज्ञ" पत्रिका सर्वोदय-विचार के प्रचार के लिए समर्पित है, उसका और कोई उद्देश्य नहीं है। अत: "भूदान-यज्ञ" में प्रकाशित कोई भी सामग्री बिना हमें पूर्वसूचना दिये भी अन्य पत्र-पत्रिकाओं के सम्पादक अपनी पत्रिकाओं के लिए उपयोग में ला सकते हैं। पर यह सामग्री "भूदान-यज्ञ" से मूल रूप में, सार रूप में या अनुदित करके दी गयी है, इस प्रकार का उल्लेख करेंगे तो कृपा होगी। —सम्पादक

गुणदर्शन, गुणग्रहण और गुणविकास : सत्याग्रह की मूल श्रद्धा और प्रक्रिया

– विनोबा

आज हम सब महात्मा गांधी का श्राद्ध-दिन मना रहे हैं। एक छोटा-सा समर्पण आज के दिन हम करते हैं। यहाँ मेरे सामने कुछ गुण्डियाँ आयी हैं। साल भर में एक गुण्डी सूत आज के दिन श्रद्धांजलि के तौर पर हम देते हैं। लेकिन इसमें दो गुण्डियाँ ऐसी आयी हैं, जिनमें ६४० तार नहीं हैं। सम्मान के लिए सूत कम-ज्यादा दे तो चल सकता है, दान में भी ले सकते हैं। लेकिन आज के समर्पण में कम भी नहीं ले सकते और ज्यादा भी नहीं ले सकते, यह सब लोगों को सिखाना है। इसमें लोगों का कोई दोष नहीं है। हमने उनको तालीम नहीं दी है।

चार साल पहले मैं तमिलनाड में था। उस वक्त गुजरात के महान् शिक्षण-शास्त्रज्ञ नानाभाई भट्ट मेरे पास आये थे। उन्होंने हमसे कहा, "मैं वृद्ध नहीं होता तो निरन्तर घूमता।" मैंने उनसे पूछा था कि "इस समय हमारा कर्तव्य क्या है ?" वे हमसे वृद्ध हैं। आज उनकी अस्सी साल की उम्र है। उन्होंने कहा, "हमारे जैसे सर्वोदयी कार्यकर्ताओं को सतत घूमना चाहिए। उनके लिए अभी बैठने का समय नहीं है।" मैं तो घूम रहा था, लेकिन उनके शब्दों से मुझे बल मिला। इस वक्त लोगों के पास पहुँच कर यह सब समझाने का हमारा काम है।

आज के दिन हम सर्वोदय-विचार में मानने वाले लोग यह संकल्प करें कि हम लोगों के पास जाकर यह विचार समझायेंगे। विचार वह समझा सकता है, जो खुद विचार समझा है और उस पर अमल करता है। सर्वोदय-विचार इतना गहरा है कि हम उस पर अमल करने की कोशिश ही कर सकते हैं, पूरा अमल नहीं हो सकता है। सर्वोदय के पूरे अमल के लिए परमेश्वर के दर्शन की जरूरत रहेगी। बापू खुद कहते थे कि उनका कुल जीवन, साधना, सत्याग्रह आदि काम परमेश्वर की खोज के लिए है। अक्सर ईश्वर की खोज करने वाले एकांत में ध्यान-धारणा आदि करते जाते हैं। बापू एकान्त में नहीं गये थे, लोगों के बीच काम करते थे। यह ठीक है कि ध्यान, प्रार्थना के लिए पंद्रह-बीस मिनट निकालते थे। लेकिन वे कहते थे कि

"ध्यान तो हमारे काम में हर क्षण होना चाहिए। और एकान्त तो जनता में काम करते-करते प्रति क्षण मिलना चाहिए।" एकान्त में हम जाते हैं तो हमारा मन घूमता है। वह कैसा एकान्त हुआ ? सच्चा एकान्त तो वह होगा, जहाँ हम मन से अलग होंगे। वैसे दुनिया से थोड़े ही अलग होना है ! इसलिए मन से अलग होकर जनसेवा में एकांत का अनुभव वे हमेशा करते थे और कहते थे कि ईश्वर की खोज के लिए और दर्शन के लिए मेरा जीवन है।

गुणग्रहण से ईश्वर दर्शन

ईश्वर-दर्शन याने क्या यह समझना चाहिए। हिन्दुस्तान में ईश्वर के लिए बहुत भक्तिभाव है, बल्कि चीनी लेखक लीन यु टाग ने लिखा है कि हिन्दुस्तान 'गॉड इन्टॉक्सिकेटेड लैंड'—ईश्वर से अभिभूत भूमि—है। बात उनकी सही है। लेकिन ईश्वर की खोज किस तरह होगी, यह सोचने की बात है। ईश्वर गुणमय है। सत्य, प्रेम, करुणा आदि मंगल गुण जिसमें भरे हैं, इन सब गुणों की परिपूर्णता ही ईश्वर है। सामने जो-जो मनुष्य आते हैं, उनमें गुणदर्शन होना चाहिए। अगर हमें किसी में दोषों का दर्शन हुआ तो हमें "माया" का दर्शन हुआ, ईश्वर का नहीं। किसीमें गुण का और दोष का दर्शन हुआ तो माया और ईश्वर, दोनों का थोड़ा-थोड़ा दर्शन हुआ। वह स्वच्छ दर्शन नहीं गिना जायेगा।

स्वच्छ दर्शन तो तब होगा, जब हम हरएक को देख कर गुण का ही दर्शन करेंगे। ईश्वर का एक-एक अंश एक-एक रूप में प्रकट हुआ है और दोष जो दीखते हैं वह माया का ऊपर का छिलका है—जैसे बीज के ऊपर छिलका होता है, जैसे बादाम पर छिलका होता है। उस माया के आवरण को भेद करके स्वच्छ, शुद्ध दर्शन होना चाहिए, अलग-अलग गुणों का दर्शन होना चाहिए। इस तरह ईश्वर का एक-एक अंश देखने को मिलेगा तो उसके बाद ईश्वर का समग्र दर्शन होगा। इस वास्ते हमेशा गुणग्रहण, गुणचर्चा और गुणस्मरण करना चाहिए। दोषग्रहण, दोषचर्चा, दोष-स्मरण कतई नहीं करना चाहिए। इसलिए हमने कहा कि "अनिंदा" का व्रत होना चाहिए।

किसी का दोष हमें दीखता है, वह हमारा ही दोष है, यह मानना चाहिए। उसकी निंदा करना दूसरा दोष होगा और उसके पीछे उस दोष की चर्चा या निंदा करना, यह तीसरा दोष हो गया। इस तरह एक के बाद एक दोष का संपुट चढ़ेगा तो गुणदर्शन नहीं ही होगा, और गुणदर्शन नहीं होगा तो ईश्वर का दर्शन कोरा होगा। इसलिए हमें अपने भी दोषों का दर्शन नहीं करना चाहिए। अपने भी गुणों का ही दर्शन करना होगा। इस तरह सर्वत्र गुणस्तवन, गुणदर्शन, गुणवर्धन होना चाहिए। इसीको भगवान के गुणों का स्तवन कहते हैं। हम सत्य, प्रेम और करुणा कहते हैं। जहाँ-जहाँ हमें सत्य का अल्प दर्शन हुआ, वहाँ हमें ईश्वर का दर्शन हुआ। वालू के कण पड़े हैं, उसमें थोड़े शर्कराकण पड़े हैं। चींटी उसमें से शर्कराकण लेती है। उसी तरह सत्य का अल्प दर्शन ले लिया। कहीं प्रेम का दर्शन हुआ, वह ले लिया। कहीं करुणा का दर्शन हुआ, वह ले लिया। कहीं और कोई देखा, उसे ले लिया। इस तरह हर-एक का गुणग्रहण करते-करते हमारा हृदय गुणभंडार होगा, तब हमें भगवान का परिपूर्ण दर्शन होगा।

इस वास्ते बापू कहते थे कि मैं कोशिश में हूँ कि भगवान का परिपूर्ण दर्शन हो। माया-कवच, दोषों का दर्शन न हो। आज हालत यह है कि गुणों का दर्शन नहीं होता है, दोषों का ही होता है। वे दोष ही सामने आते हैं। वे होते ही हैं ऐसा नहीं। जब तक मनुष्य के हृदय में प्रवेश नहीं होता, बुराई ही दीखती है, क्योंकि हेतु का पता कहाँ लगता है ? इस वास्ते कानून में भी संशय का लाभ अपराधी को, गुनहगार को दिया जाता है, जिसे 'बेनिफिट ऑफ डाउट' कहते हैं। जब तक हेतु का दर्शन नहीं होता है, तब तक उसे अपराधी नहीं कह सकते हैं। इस तरह हम एक-एक मनुष्य के दोषों के परीक्षक होंगे तो हमें दूसरा धंधा ही नहीं होगा। वह काम हमसे नहीं होगा। वह तो ईश्वर का काम है। इसलिए हमें गुणग्रहण करना चाहिए। किसी का दोष देख कर वह स्मरण में रह गया, दूसरे किसीका दोष देख कर वह स्मरण में रह गया, तीसरे का तीसरा दोष स्मरण में रह गया और ये सब दोष मेरे हृदय में बैठे—जैसे गाँव के हर घर का कचरा घूरे पर जमा होता है, वैसे हमारा हृदय सबके दोषों के संग्रह-स्थान होगा। उससे परमेश्वर का पूर्ण आच्छादन होता है, याने माया के आच्छादन के कारण परमेश्वर का दर्शन नहीं हो सकता है। भक्ति के बिना परमेश्वर की खोज, उसका दर्शन नहीं हो सकता और गुणदर्शन के बिना, गुण-विकास के बिना भक्ति नहीं हो सकती है।

गुणग्रहण से गुणविकास

सामनेवाले में जो गुण है, उसका दर्शन होना चाहिए। उसका स्वीकार करके उसे अपने हृदय में स्थान देना चाहिए। इसका नाम है गुणग्रहण। फिर उस गुण का विकास करना चाहिए। सामने वाले का गुण हमारी हृदय-भूमि में हमने बोया। खेत में किसान एक बीज बोता है तो वह चौगुना होता है, शतगुना होता है। वैसे हमारी मनोभूमि शुद्ध हो और उसमें सामने वाले का गुण बो दिया तो वह शतगुणित होगा। इसका नाम है गुणविकास। प्रथम गुणदर्शन, पीछे गुण ग्रहण और बाद में गुणविकास; यह भक्ति की प्रक्रिया है। इस प्रक्रिया से सर्वत्र छिपी परमेश्वर की ह[illegible] का दर्शन होगा।

> प्रत्येक व्यक्ति में कुछ न कुछ गुण उनको होते हैं, सबके गुणों का ही दर्शन करना, अपनाना और अपने प्रयत्नों से उसका विकास करना ही सच्चा ईश्वर-दर्शन है।

फिर हमारा दान का, सेवा का, त्याग का, सत्याग्रह का कार्यक्रम सबका सब भगवान की छिपी शक्ति के दर्शन के लिए है। सत्याग्रह में हम क्या करते हैं ? सुख-दुःख सहन करते हैं और उसमें जो अच्छा अंश है वह बाहर निकालते हैं। सामने अच्छा अंश होना चाहिए न ? अच्छा अंश न हो तो वह कहाँ से लायेंगे ? इस वास्ते सत्याग्रह में यह श्रद्धा होती है कि सामने अच्छा अंश है। यही है गुणदर्शन।

इस गुणदर्शन के आधार पर ही सत्याग्रह है। सामने जो व्यक्ति है, उसमें जो गुण है वह प्रभावी हो, शक्तिशाली हो ऐसी कोशिश करेंगे तो दोष-निरसन होगा। उस गुण को प्रभावी करने के लिए जो दुःख सहन करना पड़ता है, वह सत्याग्रही ही करता है। सत्याग्रही में यही गुण है कि वह सामनेवाले में जो गुण है, उस[illegible]

पैदा करता है। इसी श्रद्धा पर सत्याग्रह खड़ा है, इसी श्रद्धा पर दान का कार्यक्रम चलता है।

कुछ लोग इधर-उधर से, किसी भी मार्ग से संपत्ति बटोर के लाते हैं। कभी-कभी बेजमीन की परवाह नहीं करते हैं, बेदखल भी करते हैं। फिर भी उनके पास हम जाते हैं और कहते हैं "भैया ! प्रेम से दान करो रे !" लोग हमसे कहते हैं, "कैसे मूरख हैं आप ! क्या ये लोग दान देंगे ? ये लोग तो कंजूस हैं।" हम समझाते हैं, ये लोग कंजूस नहीं हैं। ये परिस्थिति के कारण कंजूस बने हैं। इनके हृदय में प्रेम है, ऐसी हमारी श्रद्धा है। इस श्रद्धा के आधार पर ही हम दान माँग रहे हैं। श्रद्धा न हो तो दान माँगना मूर्खता होगी। फिर तो छीनना ही होगा। अगर श्रद्धा नहीं है तो दान का काम नहीं चलेगा। मतलब, दान के लिए भी गुणग्रहण चाहिए। इसीलिए उपनिषद् ने कहा है कि भगवान् के राज्य में ही दाता की प्रशंसा होगी। भगवान का शासन नहीं होता, तो दाता की प्रशंसा नहीं होती। उसे मूर्ख मानते, दान का विचार भी नहीं लाते, डिठावे और छेड़ने, डाका डालते, छीनने का कार्यक्रम करते। लेकिन यहाँ तो दान की बात चलती है और हम तो दान द्वारा भूमि-समस्या हल करने आ रहे हैं। अगर हृदय में भरे हुए भगवान का दर्शन नहीं होता तो क्या यह कार्यक्रम होता ?

सर्वोदय : गुणदर्शन का कार्यक्रम

इसीलिए कुल का कुल सर्वोदय-कार्यक्रम गुण-दर्शन पर आधारित है। यह गुणदर्शन हो तो ईश्वर का दर्शन होगा। उसका अंश मात्र दर्शन भी क्यों न हो, वह होगा। पूर्ण अंश का दर्शन एकदम तो नहीं होगा। आज एक अंश का दर्शन होगा, कल दूसरे। मान लीजिये, आज दान का कार्यक्रम हुआ। हमें एक अंश का दर्शन हुआ। लोगों के हृदय में जो उदारता है, उसका दर्शन हुआ। शान्ति-सेना का काम चला, लोग मर मिटने के लिए राजी हो गये, दंगा मिटाने को तैयार हो गये, तो लोगों के हृदय में जो निर्भयता है उसका दर्शन हुआ। भूदान के जरिये उदारता का दर्शन, शांति-सेना के कार्यक्रम द्वारा "अभय" का दर्शन, खादी के द्वारा मनुष्य में स्वावलम्बन वृत्ति है, आत्मोद्धार की वृत्ति है, उसका दर्शन होगा। "स्वच्छ भारत" आंदोलन चला तो स्वच्छता का, शुचिता का, पावित्र्य का दर्शन होगा। इस तरह एक-एक व्यापक सामाजिक कार्यक्रम करते-करते एक-एक में गुणदर्शन करते-करते हम आगे बढ़ेंगे तो हमें दर्शन होगा। यही परमेश्वर के समग्र दर्शन की प्रक्रिया है। यह एकदम नहीं होगा। जब तक शरीर है, तब तक कोशिश चलेगी। इस वास्ते बापू कहते थे कि हमारी खोज चल रही है। हमें अभी तक दर्शन नहीं हुआ है। इस खोज के लिए ही हमारा जीवन है। हमारे जीवन में ही खोज पूरी हो गयी तो हम ही ईश्वर हो गये ऐसा होगा। इस वास्ते हमने एक श्लोक बनाया है, जिसमें हमारा सर्वोदय का विचार रखा है—

"ब्रह्म सत्यं जगत् स्फूर्ति जीवनं
सत्यशोधनम् ।"

ब्रह्म सत्य है और विश्व में भरा है, विश्व उसकी स्फूर्ति है। उस प्रकाश में इस विश्व में उस सत्य की खोज करना यह हमारे जीवन का कार्यक्रम है।

महापुरुषों ने अपने जीवन में जिन गुणों का विकास किया उन व्यक्तिगत गुणों का सामाजिक मूल्य बनाना, उनकी अभिवृद्धि करना, सर्वोदय का कार्यक्रम है।

अनिंदा का व्रत लें

आज के बापू के श्राद्ध के दिन ये कुछ विचार जो आजकल बार-बार मेरे मन में आते हैं, आपके सामने रखे हैं। उसके लिए इतना तो कीजिये कि "अनिंदा" व्रत ले लें। अनिंदा-व्रत के माने हैं, वाणी से निंदा न करना, मन से भी दोष हटाते जाना और अपने में निरंतर गुण बढ़ाते जाना। यही प्रक्रिया हो तो अनिंदा व्रत का पालन होगा।

इस "अनिंदा" व्रत की हम सर्वोदय में मानने वालों को बहुत जरूरत है। राजनैतिक पार्टी वालों की बात छोड़िये, उनका धंधा ही अलग है। वे 'सत्य" की खोज में नहीं लगे हैं, "सत्ता" के पीछे लगे हैं। हमारा काम इसीलिये बिगड़ता है कि हम एक-दूसरे के पीछे दोषों की चर्चा करते हैं। इसलिए दिल के साथ दिल जुड़ने के बदले दिल टूट जाते हैं। हमारी संख्या कम है, इसका हमें दुःख नहीं है। थोड़े भी हों, लेकिन सबका हृदय जुड़ा हो तो बहुत ताकत प्रकट होगी।

इसलिए अनिंदा-व्रत की जरूरत है। ऐसे तो अहिंसा के पेट में अनिंदा व्रत आ ही जाता है। आज के दिन हम यह व्रत लें, तो बापू का बहुत अच्छा काम हमने किया, उनके उपदेश का पालन किया ऐसा होगा।

व्यक्तिगत गुणविकास का सामाजिक रूपांतर हो

जिन्होंने आज दान दिया है, उनको हम धन्यवाद देते हैं। अब उनका काम है कि वे दूसरों को समझायें, दान दिलायें, "बोये से कट्ठा" का मन्त्र सबको सुनाइये। एकाध दूसरा व्यक्ति दान देता है तो आत्मा की उदारता का परिचय नहीं होता है। जब समूह दान देता है, तब आत्मा की उदारता प्रकट होती है। सामूहिक आत्मा का दर्शन हो यही हमारा काम है।

विष्णुपुर में जिस तालाब के किनारे रामकृष्ण को समाधि लगी थी, वहाँ हम छह साल पहले पहुँचे थे। सुबह की सभा में हमने कहा था कि रामकृष्ण देव को जो समाधि लगी थी वह हम सामूहिक बनाना चाहते हैं, समाज को देना चाहते हैं। सत्य या कोई भी गुण प्रथम व्यक्ति में प्रकट होता है—जैसे विज्ञान का प्रयोग पहले 'लेबोरेटरी" में होता है। व्यक्ति का जीवन एक "लेबोरेटरी" है। उसमें जो प्रयोग सफल हुए, उसे बाद में समाज में व्यापक प्रमाण में लागू करना चाहिए। जिन गुणों के विकास का प्रयोग व्यक्ति के जीवन में सफल हुआ उसे समाजव्यापी बनाना है। इसलिए व्यक्तिगत साधना के बाद जो समाधि रामकृष्ण देव को लगी वह समाज को लागू हो यही हम चाहते हैं।

> व्यापक समाधि, व्यापक सत्य, व्यापक प्रेम, व्यापक करुणा यही हमारा कार्य है। ऐसा अप्रतिम कार्य भगवान ने हमारे सामने रखा है। यह हम सोचते हैं तो दिल में उत्साह पैदा होता है। इतना उदात्त कार्य भगवान् ने जिनको दिया है वे धन्य हैं। सतों ने जो प्रयोग अपने जीवन में किये, वे गुण समाजव्यापक करने का हमारा कार्य है।

गांधीजी इसीमें लगे थे। इसलिए वे कहते थे कि हम अपूर्ण हैं। अगर व्यक्तिगत प्रयोग करके उनको पार होना था तो वह प्रयोग जल्दी खत्म होता। लेकिन जहाँ सामाजिक प्रयोग करते हैं वहाँ हमारे भाग्य से अपूर्णता रहेगी। आज हमारे भाग्य में अपूर्णता है। लेकिन हमारे बाद जो आयेंगे वे और ज्यादा पूर्णता लायेंगे। उनसे आगे जो आयेंगे वे और ज्यादा पूर्णता लायेंगे। यों होते-होते आखिर कभी न कभी पूर्ण दर्शन होगा।

सर्वत्र आनन्द ही आनन्द

फासला लंबा है। लेकिन कदम-कदम पर आनंद है। इसलिए इस मार्ग पर थकान नहीं है। रोज नित्य नूतन दृश्य, नूतन आनंद मिलता है। आज नूतन आनंद है। कल का आनंद आज फीका मालूम होता है। आज का आनंद कल फीका होगा। ऐसा उत्साह है। पथ अनंत है। हम चलते ही रहेंगे। हमारी निरंतर यात्रा रहेगी—चिरयात्री ! और उसमें मदद करने के लिए यह चिरसाथी ! कोई हर्ज नहीं। हमें अनेक जन्म लेने पड़े तो भी परवाह नहीं। लेकिन करेंगे तो यही कार्य करेंगे। रुक्मिणी ने कृष्ण को पत्र लिखा : 'इस जन्म में तुम्हारी प्राप्ति नहीं होगी तो अनेक जन्म साधना करके, व्रत करके, शरीर को क्षीण करूँगी, तप करूँगी और तुम्हारी प्राप्ति करूँगी। तुम्हारी प्राप्ति के लिए चाहे "शतजन्म" मुझे लेने पड़े तो भी मैं लूँगी। तुम्हें प्राप्त करके रहूँगी।"

लोग हमसे पूछते हैं, "आखिर चलते-चलते आपको दस साल हो गये हैं। कब तक चलेंगे ?" हम कहते हैं, १० साल से क्या हुआ रे ? हमारे स्वामी रामचन्द्रजी १४ साल घूमे। हमें २८ साल घूमना पड़े तो भी हर्ज नहीं। हमें खुशी होगी। उनको अगर रावण के लिए १४ साल घूमना पड़ा, हमें महामोह रावण के निरसन के लिए २८ जन्म लेने पड़े तो भी हर्ज नहीं। हमें खुशी होगी। उसी आनंद में और मस्ती में हम घूम रहे हैं।

'करो या मरो' की मस्ती

आज हमें ज्वर है और खाँसी भी है। लेकिन क्या अभी यह महसूस किया ? जब हम बोलते हैं, तब एक-दूसरा ही आवेश सवार करता है। फिर समाप्त होने पर भले ही वह (खाँसी) आवे। सार यह है कि एक मस्ती हम महसूस कर रहे हैं और हम चल रहे हैं। हमारे आगे रामजी आ रहे हैं। उनके पीछे सीता जा रही है। बाद में लक्ष्मणजी जा रहे हैं। उनके पीछे ये बंदा जा रहा है और उसके पीछे ये सब हनुमान आ रहे हैं। हम जा रहे हैं तो हमारा रक्षण एक बाजू से लक्ष्मणजी और दूसरी बाजू से हनुमानजी कर रहे हैं। और यह अखंड यात्रा चल ही रही है।

> गांधीजी हमें आगे धकेल रहे हैं कि आगे-आगे चलो। थकान नहीं आनी चाहिए। "करो या मरो"—तीन शब्दों में संदेश देकर वे गये, और हमारे लिए नमूना पेश करके गये। तो हमें कैसे थकान आ सकती है ?

हम चाहते हैं कि यह मस्ती सर्वोदय के कार्यकर्ता महसूस करें। तो फिर वे देखेंगे कि दुनिया में रामराज्य होगा ही।
[रामपुरहाट, बंगाल, १२-२-'६१]

भाग्योदय का योग

—काका कालेलकर

[काकासाहेब कालेलकर ने यह लेख 'भूदान-यज्ञ' में छपने के लिए हमारे पास भेजा है। 'मंगल प्रभात' में भी यह छपा है। काकासाहब हमारे देश के प्रमुख विचारकों में से हैं। देश की और प्रजा की उन्नति के लिए उनके दिल में दर्द है, चिन्ता है। अतः उनकी बात सब संबंधित लोगों के लिए गहराई से और गंभीरता से सोचने लायक है। उनका यह कहना सही है कि 'पंचायती राज' का कदम देश के भविष्य के लिए असाधारण महत्व का है, और यह चिन्ता भी उनकी सही है कि अगर यह तंत्र गांव के अधिकारलोलुप लोगों के हाथ में चला गया तो 'सारा काम मटियामेट हो जाएगा।' इस बात को महसूस करके ही सर्व सेवा संघ ने और उसके प्रमुख कार्यकर्ताओं ने पिछले दो वरसों में बार-बार इस पर जोर दिया है कि सर्वोदय-कार्यकर्ताओं को पंचायतीराज के प्रयोग की ओर ध्यान देना चाहिए और व्यापक लोक-शिक्षण का कार्यक्रम बना कर लोगों की शक्ति जागृत करनी चाहिए, जिससे पंचायतीराज का जो उद्देश्य सत्ता के विकेन्द्रीकरण का है, वह सफल हो और इस प्रयोग का दुरुपयोग न हो सके। पर खेद है कि राजनैतिक पार्टियों ने, और खास तौर से सत्तारूढ़ दल ने, इस मामले में भी अपना पार्ट ठीक से अदा नहीं किया। उन्होंने पंचायतों, पंचायत-समितियों और जिला परिषदों के चुनावों को प्रान्तीय सरकारों में और केन्द्रीय सरकार में सत्ता-प्राप्ति का जरिया मान कर उन्हें भी पार्टीबन्दी में घसीटा है, जिसका नतीजा वही हुआ है और होने वाला है, जिसकी काकासाहब ने आशंका प्रकट की है। देश के सब हितैषियों के लिए काकासाहब की चेतावनी गंभीरता से सोचने का अवसर उपस्थित करती है।

काकासाहब ने दूसरी महत्त्व की चेतावनी इस लेख में यह दी है कि राष्ट्र की उन्नति के लिए योजना की अपेक्षा लोगों की मनोरचना पर अधिक ध्यान देना चाहिए। हम नम्रतापूर्वक काकासाहब से निवेदन करना चाहते हैं कि भूदान, ग्रामदान और लोकराज्य के कार्यक्रमों में मनोरचना का उद्देश्य ही मुख्य है, योजना गौण है—योजना उसका साधन मात्र है। मनोरचना मुख्य है, इस कारण ही विनोबा ने इस बार बिहार की दूसरी यात्रा में ग्रामदान की या छठे हिस्से जमीन की बात न करके 'दान दो इकट्ठा, बोधे में कट्ठा' का नया मंत्र दिया है। फिर भी हम सब सर्वोदय-कार्यकर्ताओं को इस बारे में सावधान रहने की जरूरत है कि हमारा काम भी योजना या तंत्र-प्रधान ही न पड़ जाय, लोकमानस के परिवर्तन का मुख्य उद्देश्य हमेशा हमारी नजरों के सामने रहे। —सं०]

देश की परिस्थिति अच्छी नहीं है इतनी बात तो सब कोई देख सके हैं। लेकिन हमारी चिन्ता का कारण कुछ और ही है। दुनिया में जो राजनैतिक आदर्श आज प्रचलित हैं, सबके सब एकांगी हैं, कच्चे हैं। इन सबमें राजनीति का नशा अधिक है। जीवन-व्यवहार में औद्योगिक संगठन, अर्थ-व्यवस्था और राजनैतिक अधिकार तीनों का प्राधान्य इतना बढ़ गया है कि कहीं भी जीवन का स्वास्थ्य संतोषकारक नहीं रहा।

हम मानते थे कि स्वराज्य प्राप्त होते ही गांधीजी देश की राजनीति को नया ही रूप देंगे। वे कहते थे कि सबसे पहला काम तो अंग्रेजों का राज हटा कर उसकी जगह पार्लमेंटरी स्वराज्य की स्थापना करने का है। उसके बिना चारा ही नहीं। वे कहते थे कि पार्लमेंटरी स्वराज्य का मैं कायल नहीं हूं, लेकिन अंग्रेजी हुकूमत अगर हटानी है, तो उसकी जगह पार्लमेंटरी स्वराज्य ही हम स्थापित कर सकते हैं। स्वराज्य पाने के बाद जब देश को स्वास्थ्य मिलेगा तब देश की संस्कृति के अनुरूप और दुनिया की परिस्थिति में निभ सके ऐसा रूप हम अपने स्वराज्य को देंगे।

इसीलिए वे चाहते थे कि स्वराज्य मिलते ही कांग्रेस का परिवर्तन किया जाय और उसका लोकसेवक संघ बनाया जाय।

स्वराज्य-प्राप्ति के साथ देश का बँटवारा हुआ। इस बड़े अभिशाप के कारण देश का स्वास्थ्य—मन स्वास्थ्य ऐसा बिगड़ा कि उसकी चिन्ता में ही गांधीजी को अपना बलिदान देना पड़ा।

अब राष्ट्र-मानस में अगर हम आमूलाग्र परिवर्तन न करेंगे तो हमारे लिए भविष्य संकटग्रस्त ही रहेगा। देश की आजादी, देश की एकता और देश का स्वास्थ्य तब तक ही टिक सकता है, जब तक समाज के नेताओं के हृदय में दीर्घ-दृष्टि और हृदय की उदारता हो। 'भद्रमनाः स्यात् सद् धर्म' यही है स्वतन्त्रता की उन्नति का और सुरक्षा का मूल्यवान् मन्त्र। इसके लिए राज्यकर्ताओं की तरफ से और लोकनेताओं की तरफ से विविध कार्यक्रम चलना चाहिए।

हम पहले से कहते आये हैं कि भारत सरकार के लिए 'सोशलिस्टिक पेटर्न' ही ठीक है और भारत की जनता के लिए 'सर्वोदय'।

इन दोनों के बीच अगर समन्वय हो सका तो राष्ट्र का स्वास्थ्य देखते-देखते सुधर जायेगा। लेकिन दोनों ओर से योजना पर भार अधिक है और मनोरचना का ध्यान कुछ कम है। एक ओर पंचवर्षीय योजनाओं पर ध्यान केन्द्रित है तो दूसरी ओर भूदान, ग्रामदान और लोकराज्य की योजना का ही सोचा जाता है। इन दोनों का समन्वय तब होगा जब लोगों की मनोरचना के स्वास्थ्य का इलाज होगा और सामाजिक मूल्यों की लोकहृदय में स्थापना होगी।

पंचवर्षीय योजना और कम्युनिटी प्रोजेक्ट्स अपने ढंग से चलते हैं। भूदान, ग्रामदान की प्रवृत्ति अपने ढंग से चलती है। सौभाग्य की बात है कि इन दोनों में कहीं भी संघर्ष नहीं है। दोनों समानान्तर चल रहे हैं। लेकिन हम भूल नहीं सकते कि दोनों में हार्दिक सहयोग भी नहीं है। यह कहां तक चलेगा?

कुछ आशा पैदा हुई थी जब येलवाल में श्री विनोबा का लोकतन्त्र और जवाहरलालजी का राजतन्त्र एक-दूसरे के नजदीक आये। इस एकत्र आने से बहुत कुछ काम होता, अगर विनोबा ने अपने तन्त्र का विसर्जन नहीं किया होता। सहयोग दो सुव्यवस्थित तन्त्रों के बीच ही हो सकता है। समर्थ लोकतन्त्र और समर्थ राजतन्त्र के सहयोग से प्रजा-मानस में स्वास्थ्य आता और देश आरोग्य के वायु-मंडल में प्रजा की प्राणशक्ति भी खिल उठती।

लेकिन येलवाल का सहयोग नाममात्र ही रहा और उसमें तनिक भी आश्चर्य नहीं है। अब फिर से ऐसा ही एक मौका आ रहा है। भावनगर के कांग्रेस-अधिवेशन में पंचायतराज का जो प्रस्ताव पास हुआ है, उसका महत्त्व असाधारण है, लेकिन हमें डर है कि यह पंचायतराज अगर गांव के रूढ़िवादी अधिकारलोलुप जबरदस्त लोगों के हाथ में चला जाय तो हमारा सारा काम मटियामेट हो जायेगा। हरएक गांव में ऐसे लोग हमेशा होते हैं जो जमीन, पूंजी और सामाजिक प्रतिष्ठा के बल पर पिछड़े हुए लोगों को दबा कर रखते हैं और उनका शोषण करते हैं। जालिम बनते उन्हें देरी नहीं लगती। यह लोग सरकारी तन्त्र से डरते नहीं। गांव में आने वाले बड़े-बड़े सरकारी अमलों की वे खुशामद करते हैं। आतिथ्य अच्छा करते हैं। छोटे …
तो खरीदते हैं या धमकाते हैं और … का सारा अधिकार अपने हाथ में … उनके लिए एक मामूली खेल है। पंचायतराज ऐसों के हाथ में … स्वराज्य की बुनियाद ही सड़ … पिछड़े हुए लोग स्वभाव से … हैं। अब वे अज्ञान दशा में नहीं हैं। सि… ऊंचा करने की ताकत उनमें आ गयी। लेकिन अपना हित-अनहित वे समझ नहीं पाते। उनके थोड़े नेताओं को खरीदना जबरदस्तों के लिए आसान है। लोगों को अन्दर-अन्दर लड़ाना यह तो उनका … का खेल है।

पंचायतराज का यह खतरा तभी … हो सकता है, जब गांधीजी के रचनात्मक कार्य करने वाली सब संस्थाएं … पहचान कर लोकराज—पंचायतराज चलाने का भार अपने सिर पर लें। … सेवा संघ का यह काम है। भूदान-ग्रामदान की तपस्या का सारा फल … सेवा संघ को मिल सकता है। अगर … मौका खो दिया, तो फिर ऐसा … मौका आसानी से हाथ आने वाला नहीं।

भारत सरकार सारे देश में पंचायत-राज स्थापन करने का काम तुरन्त … करे और सर्व सेवा संघ अपनी … तन्त्र-शक्ति के द्वारा पंचायतराज लोकराज्य के नाम से चलाने को तैयार हो जाय। ऐसा हुआ तो देश की नैतिक शक्ति और स्वराज्य सरकार की संगठन-शक्ति दोनों का सहयोग होगा। इसी में से राजनीति का परिवर्तन लोकनीति में हो सकेगा और 'सोशलिस्टिक पेटर्न' सर्वोदय का … धारण करेगी।

चुनाव का सारा वायुमंडल इसी … कल्पना और योजना से अनुप्राणित होना चाहिए।

"भूदान-यज्ञ" साप्ताहिक का प्रकाशक-वक्तव्य

[न्यूजपेपर-रजिस्ट्रेशन एक्ट (फार्म नं० ४, नियम ८) के अनुसार हरएक अखबार के प्रकाशक को निम्न जानकारी पेश करने के साथ-साथ अपने अखबार में भी यह प्रकाशित करनी होती है। तदनुसार यह प्रतिलिपि यहाँ दी जा रही है। —सं०]

(१) प्रकाशन का स्थान	वाराणसी
(२) प्रकाशन का समय	सप्ताह में एक बार
(३) मुद्रक का नाम	श्रीकृष्णदत्त भट्ट
राष्ट्रीयता	भारतीय
पता	"भूदान-यज्ञ" साप्ताहिक, राजघाट, वाराणसी-१
(४) प्रकाशक का नाम	श्रीकृष्णदत्त भट्ट
राष्ट्रीयता	भारतीय
पता	"भूदान-यज्ञ" साप्ताहिक, राजघाट, वाराणसी-१
(५) संपादक का नाम	सिद्धराज ढड्ढा
राष्ट्रीयता	भारतीय
पता	"भूदान-यज्ञ" साप्ताहिक, राजघाट, वाराणसी-१
(६) समाचार-पत्र के संचालकों का नाम-पता	अखिल भारत सर्व सेवा संघ (सोसायटीज रजिस्ट्रेशन ऐक्ट १८६० के सेक्शन २१ के अनुसार रजिस्टर्ड सार्वजनिक संस्था)

मैं श्रीकृष्णदत्त भट्ट यह स्वीकार करता हूँ कि मेरी जानकारी के अनुसार उपर्युक्त विवरण सही है।

वाराणसी, २८-२-६१

—श्रीकृष्णदत्त भट्ट, प्रकाशक

विनोबा-यात्रीदल से

—कुसुम देशपांडे

बिहार-यात्रा के आखिरी दिनों में पूर्णिया जिले में यात्रा हुई। विनोबाजी बार-बार कहते थे, "इस जिले में दो बड़े व्यक्ति हैं—धीरेन्द्रभाई और वैद्यनाथ बाबू। इसलिए इस पूर्णिया जिले में पूर्ण काम होना चाहिए।"

वर्षा ऋतु के दिन नहीं थे। फिर भी मौसम ऐसा बन गया था कि दस-बारह दिन सतत बारिश हुई। पूर्णिया शहर में सार्वजनिक सभा बारिश में ही हुई। एक भाई ने सवाल पूछा था, "आपको आज की व्यवस्था पसन्द नहीं है। उस पर आप टीका करते हैं, तो आप राज्यकर्ताओं को क्यों नहीं समझाते ?" उसके जवाब में विनोबाजी ने उस सभा में कहा, "लोकशाही में जहाँ लोग राज्यकर्ताओं को चुनते हैं, वहाँ लोगों पर असर होता है, बाद में सरकार पर होता है। आज लोग सरकार की सरकार हैं। आज जो राज्यकर्ता हैं, उनसे हमारा परिचय है, उनमें हमारे कई मित्र हैं। उनके लिए हमारे मन में स्नेह भी है, आदर भी है। वे लोग गांधीजी के साथ रहे हुए हैं। गांधीजी की बातें उन्होंने सुन रखी हैं। गांधीजी ने कहा था कि कांग्रेस लोक-सेवक संघ बने। लेकिन उनकी वह बात नहीं मानी गयी। उनकी बात जहाँ नहीं मानी गयी, वहाँ आपकी और हमारी बातें वे सुनेंगे यह मृगजल की आशा है। मेरा कहने का मतलब यह नहीं है कि उनके कुछ विचार विरुद्ध हैं। लेकिन उनका अपना दिमाग बना है। पश्चिम से जो विचार आते हैं उनसे हमारी ताकत बनती है, ऐसा वे मानते हैं। इसलिए हम सीधे जनता में जाते हैं और समझाते हैं।"

रानीपतरा में सर्वोदय-आश्रम है। श्री वैद्यनाथ बाबू उस आश्रम के प्रमुख आधार हैं। दो बार नाव से नदी पार करनी पड़ी। आश्रम का आठवाँ वार्षिक उत्सव भी था। आश्रम में पहुँचने के बाद पहले ही भाषण में विनोबाजी ने कहा, "मुझसे सवाल पूछा जाता है कि अगर हम व्यापक प्रचार करते हैं तो गहराई कम होती है। अगर गहरे काम करने जाते हैं तो सब दूर हवा नहीं फैलती है। इसमें से छुटकारा कैसे हो?" इसे हम गलत विचार मानते हैं। जिस काम में हम सबका सहयोग होता है, उससे बढ़कर अधिक गहराई और शुद्धि नहीं हो सकती है। 'जय-जगत्' का मंत्र ४० करोड़ जबानों ने उच्चारण किया और ८० करोड़ कानों ने सुना। इतनी एक बात के लिए अरबों रुपयों का खर्च होगा तो भी हम कम मानेंगे। सन्तों ने हमें 'रामनाम' दिया। बड़े-बड़े ऋषियों ने मन्त्र, यज्ञ-याग, जप-तप आदि साधन बनाये, पर उन्हें सब लोग काम में नहीं ला सके। आम लोगों के लिए 'रामनाम' ही बताया। जो शुद्धि वेद और उपनिषदों से नहीं हो सकी, वह 'रामनाम' से हुई। वेद और उपनिषद् अपने में बड़े ग्रंथ हैं। लेकिन जीवन भर इतना सारा काम करके भगवान के पास जाने का मौका आया, तब गांधीजी 'रामनाम' लेकर गये। वह 'रामनाम' मरते हुए को, बीमारों को, भाई-बहन, अमीर-गरीब, सबको हर हालत में काम देगा। 'बीघे में कट्ठा वाली' बातें "रामनाम" है।

पूर्णिया जिले में एक विशेष बात यह रही कि सर्वपक्षीय लोगों की एक सभा रानीपतरा में हुई। धीराबाबू के निधन के कारण, प्रादेशिक कांग्रेस की सभा होने वाली थी, वह नहीं हुई। इस सर्वपक्षीय सभा में बिहार के मन्त्रीगण, एम. एल. ए., बिहार पी. एस. पी. के सेक्रेटरी तथा सदस्य आदि लोग हाजिर थे। सर्वोदयी नेताओं में श्री जयप्रकाशजी, वैद्यनाथ बाबू, ध्वजा बाबू, रामदेव बाबू, करणभाई, श्याम बाबू हाजिर थे।

विनोबाजी ने आरम्भ में कहा,

"बिहार कांग्रेस ने ३२ लाख एकड़ जमीन का संकल्प किया था और अन्य पक्षों ने उसका समर्थन भी किया था। ऐसी घटना न उसके पहले हुई, न बाद। पुराना संकल्प हम अधूरा छोड़ देते हैं तो आत्म-शक्ति कुंठित हो जाती है, जनता में भी प्रतिष्ठा नहीं रहती है। "बीघे में कट्ठा" का जो नया मन्त्र हमने दिया है, उसके मुताबिक १२ लाख एकड़ जमीन कुल बिहार में मिल सकती है। तो पुराना संकल्प भी पूरा हो जाता है। आज हो यह रहा है कि भूदान के लिए सर्वत्र अनुकूल वातावरण है। इस अनुकूलता का लाभ लेना चाहिए। हमें अधिक सक्रिय होना चाहिए। आम लोगों का व्यवहार ऐसा होता है कि अच्छी हवा का झोंका आता है तो जनता अच्छा काम कर डालती है। आज हवा अच्छी बनी है। इसका लाभ आप उठाइये।"

बिहार पी एस पी के सेक्रेटरी ने कहा, "आपके सतत घूमने के कारण हवा अच्छी बनी है। जनता ने इस आंदोलन को स्वीकार किया है। लेकिन दूसरी तरफ से सरकार जो 'सीलिंग' बनाने जा रही है वह स्थिति हमें आशाजनक नहीं मालूम होती है। फिर भी हम सब लोग लगन से इस काम में लगेंगे। आप एक बार आकर चले गये तो हम लोगों के और से थोड़ी ढिलाई जरूर हुई। लेकिन अब नव जागरण आया है। इसलिए संकल्प पूरा होगा ऐसी उम्मीद है।"

कांग्रेस के एम० एल० ए० श्री यदुनन्दन बाबू ने कहा, "आंदोलन की शिथिलता का बहुत बड़ा कारण हम जमीन का बँटवारा नहीं कर सके, यह है। आपके नये मंत्र से उत्साह पैदा हुआ है। धीरा बाबू के जाने से, उस दुर्घटना से हम लोगों में निराशा आयी है। फिर भी हम स्वस्थ नहीं बैठेंगे। इस क्रांति को हम टाल नहीं सकते हैं। कोई भी पार्टी क्रांति को नहीं टाल सकती है।"

श्री जयप्रकाशजी ने इस बात पर जोर दिया और सबका ध्यान खींचा कि 'यह कार्यक्रम अलग-अलग नहीं करना है, हम अलग-अलग जमीन इकट्ठा करेंगे ऐसा न हो। सब मिल कर एकसाथ काम करेंगे। गाँव गाँव में जाकर गाँव एक हो, ग्राम-स्वराज की तरफ जाये, लोकशक्ति निर्माण हो, यह कोशिश होनी चाहिए।"

बिहार पर विनोबाजी की श्रद्धा है और बिहार भी उनकी पुकार सुनता और काम करता है, यह अनुभव आता है। बिहार में पीले साफे पहने हुए शान्ति-सैनिक जनता का ध्यान खींचते थे। विनोबाजी को पीला रंग पीताम्बरधारी विष्णु का स्मरण कराता है। जिसने यह पीला साफा सिर पर बाँधा है, उस पर जिम्मेदारी है। 'उसे मुल्क के अमन के लिए मर मिटना है। क्रोध, गुस्सा नहीं करना है। निरंतर भक्ति में मस्त रहना है और त्याग की तैयारी रखनी है।" शान्ति सैनिक जब विदा हो रहे थे और 'कमांडर' को आदरपूर्वक प्रणाम करते थे, तब 'कमांडर' ने कहा, "पीले साफे की इज्जत कायम रखो।"

हार्मोनियम, ढोल लेकर गाँव के लोग भजन करते हुए महानंदा के किनारे खड़े थे। महानंदा के उस पार किसनगंज शहर है। वही बिहार का आखिरी मुकाम था। 'बोलो सीताराम बोलो, बीघा कट्ठा दान दे दो।' लोगों ने नया मंत्र कबूल किया है, इसकी यह साक्षी थी। विनोबाजी ने कहा, "जनसमाज चीज को पूर्णतया उठायेगा तो चिड़ियाँ भी बोलने लगेंगी।"

बिहार प्रदेश के १०० शांति सैनिकों की 'रैली' हुई। वे कंजीया से किसनगंज दस मील साथ चले। बीच में रुक कर, घूम कर सेना का निरीक्षण करने का काम विनोबाजी ने किया। धीराबाबू के बाद कुछ दिन के लिए बने बिहार के मुख्य-मंत्री श्री दीपनारायण सिन्हा किसनगंज में विनोबाजी से मिले। उनको देखते ही विनोबाजी ने कहा, "हमने बिहार में प्रवेश किया तो धीराबाबू स्वागत के लिए आये थे। विदाई लिए आप आये हैं।" श्री दीपबाबू ने सार्वजनिक सभा में कहा, 'हमारा मुल्क ऋषि मुनियों का है। ऐसे महापुरुषों के दर्शन का मौका हमें मिला है, यह हमारा भाग्य है। हम अपनी संस्कृति को भूल गये थे। बाबा हमें उसकी याद दिला रहे हैं। इसलिए उनका काम करना हम सबका फर्ज है।"

विनोबाजी ने आखिरी भाषण में कहा, "गंगा की धारा के समान दान की धारा बहती रहनी चाहिए। इस जमाने को साम्य की भूख है। गरीबों का समाधान करने में सब लोग, सब पक्ष लगे हैं, ऐसा स्पष्ट दीखेगा तो हिंदुस्तान का बचाव है। नहीं तो कोई बचाव नहीं है।"

श्री श्याम बाबू ने विदाई के समय हिसाब पेश किया :

बिहार में ४९ दिन की यात्रा में १४,०९४ कट्ठा जमीन प्राप्त हुई। सर्वोदय के काम के लिए और असम के काम के लिए जो रकम प्राप्त हुई थी, उसकी संख्या १ लाख ६२९ रुपये थी। ३५० लोगों ने शांति-सेना में नाम दिये। शान्ति-सेना की कुल संख्या ९०१ हो गयी।

किसनगंज में रात में सोने के पहले विनोबाजी को एक तार मिला। छपरा जिले में १०० दान-पत्र द्वारा ६० एकड़ जमीन प्राप्त हुई, यह खबर उसमें थी। विनोबाजी ने खुश होकर कहा, "मुझे उस दान का उतना आनन्द नहीं है, जितना उस तार (टेलीग्राम) का है। यही है 'मिलीटरी आपरेशन'। अलग-अलग फ्रंट्स पर जीत हासिल हो रही है और उसके तार आ रहे हैं, ऐसा होना चाहिए।"

१० फरवरी का दिन दुःख-सुख की सम्मिश्र भावना लेकर आया। सरल हृदयी, प्रेमी बिहार के साथी भावभरे हृदय से और गीली आँखों से प्रणाम करके दूर हो गये। अरुणोदय हो रहा था। भक्ति-भाव से, आनन्द से बंगाल के साथियों ने विनोबाजी का स्वागत किया। चार-पाँच साथी प्रसन्न वदन गीत गा रहे थे। "नव अरुणोदय जय होक जय होक। क्रंदन दूर बंधन होक क्षय।"

श्री चारुचन्द्र भंडारी जो अविरत सेवा-कार्य में लगे हैं, स्वागत के लिए बोल रहे थे—"अशांत वातावरण में आप आशा का दीप लेकर आ रहे हैं। आपके पुनरागमन से बंगाल में प्राण-संचार होगा। आपके पुण्यस्पर्श से बंगाल जाग उठेगा।"

बाबा ने 'प्रथम अभिवादन' करते हुए कहा, "बंगाल के महापुरुषों का ऋण हमारे सिर पर है। इसलिए इस भूमि के लिए हमारे दिल में आदर है। हमारा दिल यहाँ के सत्पुरुषों ने बनाया है। यहाँ के लोगों के हृदय में जो भावना है उसे योग्य दिशा मिलेगी तो बंगाल चमत्कार का काम कर सकता है। इसलिए इस भूमि के लिए हमारे दिल में विश्वास है। हमारा प्रेम तो इस भूमि पर है ही। प्रेम, आदर और विश्वास लेकर हम यहाँ आ रहे हैं।"

बंगाल का पहला पड़ाव इकाछाला था। यह हिस्सा भाषावार प्रांत-रचना के पहले बिहार में था। दोपहर में कुछ मुसलमान भाई विनोबाजी से मिलने आये थे। उनकी शिकायत थी। वे उर्दू जानते हैं। बंगला भाषा अभी तक सीखे नहीं हैं। वे जो अर्जियाँ देते हैं, वे वह उर्दू में लिखते हैं। उसे स्वीकार नहीं किया जाता है। उससे उनको तकलीफ होती है। इसका जिक्र उस दिन शाम की सभा में करते हुए विनोबाजी ने कहा, "वे लोग बंगला सीखेंगे। लेकिन उनकी अर्जियाँ उर्दू में जानी चाहिए। जिले के दफ्तर में उर्दू जानने वाले भाई को रखने का इन्तजाम होना चाहिए। यह इन्तजाम सरकार की तरफ से हो इसकी मैं ताईद करता हूँ। उन लोगों को भी मैंने कहा कि आप लोगों को बंगाली सीखनी चाहिए, नहीं तो घाटे में रहोगे। व्यापार के लिए, नौकरी के लिए बंगाली सीखना जरूरी है। जिस प्रदेश में हम रहते हैं, वहाँ की भाषा सीखनी चाहिए।"

संध्या समय बंगाल के कुल जिलों से कांग्रेस के मन्त्री (सेक्रेटरी), अधिकारी आदि विनोबाजी से मिले। उन सबका बहुत ज्यादा आग्रह था कि विनोबाजी को 'कलकत्ता' जाना चाहिए। कलकत्ता बंगाल का 'ब्रेन' (दिमाग) है। वहाँ जो असर होगा वही पूरे बंगाल में फैलेगा, ऐसा उनका कहना था।

विनोबाजी ने चर्चा में कहा, "देखिये, कलकत्ता में कुल बंगाल की जनसंख्या का पाँचवाँ हिस्सा है। लंदन में दुनिया भर के लोग हैं। इसलिए लन्दन इंग्लैण्ड को नहीं चूसता (एक्सप्लॉइट)। कलकत्ता तो थोड़ा बिहार को और ज्यादा बंगाल को ही चूसता है। महाराष्ट्र में इतना भूदान का काम हुआ, लेकिन पूना में कुछ नहीं हुआ। उत्तर प्रदेश में यही हुआ—लखनऊ में कुछ काम नहीं हुआ। बिहार में इतना काम हुआ, लेकिन पटने में कुछ नहीं हुआ। कलकत्ता तो 'हॉट बेड ऑफ पोलीटिक्स' है। चैतन्य महाप्रभु के जमाने में कलकत्ता नहीं था। आज वह है। फिर भी 'वार स्ट्रेटेजी' देखनी पड़ती है। इसलिए पहले आसपास के जिले में, देहाती और पिछड़े मुल्क में काम करना चाहिए और वह शक्ति लेकर कलकत्ता पर हमला करना चाहिए। कलकत्ता में काम करना है तो रामकृष्ण, विवेकानन्द ऐसे 'स्टेलवार्ट्स' चाहिए। इलाहाबाद में टण्डनजी, मालवीयजी, नेहरूजी ऐसे लोग हुए। पूना में लोकमान्य तिलक थे। इसलिए वहाँ काम हुआ था। कलकत्ता में आज ऐसा कौन व्यक्ति है, जिसका सारे भारत पर असर है?"

बंगाल की हालत पर बोलते हुए विनोबाजी ने कहा, 'बंगाल की समस्या आर्थिक ज्यादा नहीं है, आध्यात्मिक है।" (बेंगाल्स प्रॉब्लेम इज मोर स्पिरिच्युअल दैन इकानॉमीकल)

गुजरात की चिट्ठी

दिसम्बर और जनवरी

श्री रविशंकर महाराज ने अजमेर सर्वोदय-सम्मेलन के पश्चात् अहमदाबाद में घर-घर, गली-गली घूम कर ४४,००० सर्वोदय-पात्र स्थापित किये थे। उनकी व्यवस्था के काम में सहयोग देने वाले सर्वोदय-मित्रों का स्नेह-सम्मेलन १६ दिसम्बर को आयोजित किया गया था। इसमें राष्ट्रपति श्री राजेन्द्रप्रसाद का मार्गदर्शन प्राप्त हुआ।

नवम्बर के अन्त तक अहमदाबाद के सर्वोदय-पात्रों की कुल आय १४,३३२ रुपये ६२ न० पै० हुई। इसमें से ६००० रुपये असम शांति-कार्य के लिये और १६०० रुपये सर्व सेवा संघ के केन्द्रिय खर्च के लिये भेजे गये हैं।

बड़ौदा नगर-कार्य

राष्ट्रपिता के पुण्य-दिन से श्राद्ध-दिन तक का सर्वोदय-पर्व बड़ौदा नगर में मनाने के लिये जनवरी मास में पूर्वतैयारी होती रही। तीन क्षेत्रों में व्यक्तिगत सम्पर्क, साहित्य-प्रचार, सामूहिक सर्व-प्रार्थना, आरोग्य-केन्द्र, संस्कार-केन्द्र—जैसे कार्यक्रमों के जरिये शहर के कार्यकर्ता सम्पर्क बढ़ा रहे हैं। शहर में १३ भित्तिपत्र भी लिखे जाते हैं। 'भूदान-गंगा' पुस्तक के अवतरणों से भित्ति-पत्र का साहित्य तैयार किया जाता है।

१८ दिसम्बर को शहर के सर्वोदय-प्रेमी मित्रों की सभा हुई। सभा में ५० भाई बहनों ने परस्पर विचार-विनिमय किया और इस प्रकार की चर्चा को स्थायी स्वरूप देने की दृष्टि से प्रति मास के दूसरे रविवार को सबके एकत्र मिलने का तय किया, इसीलिए ऐसी सभा को 'रवि-सभा' कहते हैं।

सामाजिक कुटुम्बियों के प्रतिकार से लेकर सफाई की श्रम, जनता के समस्याएँ हल करने में सहयोग देना आदि विविध कार्यक्रम सर्वोदय-मित्रों ने सुझाये। एक ने इस काम के लिये मासिक समयदान दिया और दो मित्रों ने संपत्ति-दान देने का निश्चित घोषित किया।

शहर की एक सघन बस्ती नवापुरा को प्रत्यक्ष सेवा-क्षेत्र का केन्द्र बना कर छोटे-बड़े कार्यक्रम चलाने का प्रयास जारी है। व्यापक विचार-प्रचार भी शहर में होता है। नवापुरा के अनुभव उत्साहप्रद और आशास्पद हैं। फिर भी आर्थिक स्वराज्य का कोई प्रत्यक्ष कार्यक्रम अभी तक हाथ में नहीं लिया गया है।

गुजरात सर्वोदय पदयात्रा

गुजरात की अखण्ड पदयात्रा श्री हरीश भाई व्यास के सानिध्य में १४ मास से सतत चल रही है। करीब ४५ भाई पदयात्रा में रहते हैं। गत दो मास में अहमदाबाद, सुरेन्द्रनगर जिलों की यात्रा पूरी करके अभी राजकोट जिले में पदयात्रा-टोली आगे बढ़ रही है। पदयात्रियों ने लिखा है :

"बहुत उत्साह से हम आगे बढ़ रहे हैं। जनता प्रेम से स्वागत करती है। स्थानिक सेवकों की सहायता मिलती रहती है!"

सूतांजलि-सूत्रयज्ञ का आयोजन

इस साल शिक्षण की दृष्टि से सूतांजलि का आयोजन किया गया। सूतांजलि-विचार और आयोजन के बारे में विभिन्न हेतु ५ प्रचार-पत्रक प्रचारित किये। प्रांत भर के २२५ सूतांजलि-सेवकों से सम्पर्क रखा। प्रत्येक जिले में सूतांजलि के लिये जिला-संयोजक और अन्य सेवक प्रयास करते हैं।

प्रचार-पत्रकों द्वारा विद्यार्थी-वर्ग से काफी सम्पर्क हुआ। जिला शाला-मंडलों के अध्यक्ष तथा खादी-बोर्ड के जिला-संगठकों ने सहयोग दिया। इसके अलावा प्रांत के दैनिक पत्रों में सूतांजलि-विचार प्रतिदिन प्रकाशित हो, इसकी व्यवस्था की। इस तरह शैक्षणिक दृष्टि से सूतांजलि-संग्रह का आयोजन करने का प्रयास इन दो मास में हुआ।

अहमदाबाद शहर में विभिन्न ११ स्थानों पर सूत्रयज्ञ का आयोजन हुआ। करीब २१०० भाई-बहनों ने सूत्र-यज्ञ में हिस्सा लिया। साबरमती जेल में भी सूत्र-यज्ञ का आयोजन हुआ, जिसमें कैदी भाइयों ने भी हिस्सा लेकर हविर्भाग दिया। गुजरात के तपस्वी त्रिमूर्ति श्री रविशंकर महाराज, बबलभाई मेहता और जुगतराम दवे ने भी इन सूत्र-यज्ञों में उपस्थित रह कर मार्गदर्शन किया।

सूरत के मांगरोल तहसील के ४ गाँवों में भी ऐसे सूत्र-यज्ञ हुए। ४१ भाई-बहिनों ने कताई में भाग लिया। महेसाणा जिले में ब्राह्मणवाडा गाँव के सूत्रयज्ञ में ७० कत्तिनें शरीक हुईं। सामूहिक सूत्रयज्ञ में कताई करके राष्ट्रपिता को स्मरणांजलि अर्पित की गयी।

जन-आधारित जीवन

अहमदाबाद जिले में धोलेरा गाँव में श्री नन्दलालभाई ठक्कर एक साल से जन-आधारित जीवन जीने का प्रयास कर रहे हैं। धोलेरा के इर्दगिर्द के करीब १०-१२ गाँवों में नियमित प्रवास करते हैं, सर्वोदय का सन्देश सुनाते हैं और यथावकाश जन-सेवा के काम भी करते हैं। करीब ४०० सर्वोदय-पात्र स्थापित किये गये हैं। इसके अलावा प्रेम-क्षेत्र के मित्रों से प्राप्त रकम मिला कर कुल ९५६ रुपये ५४ नये पैसे साल भर में मिले। परिवार के ५ छोटे और ४ बड़े सदस्यों का घर खर्च ११०१ रुपये २७ नये पैसे हुआ। इस तरह बारह मास में सिर्फ १४४ रुपये ४३ नये पैसे जन-आधारित रीति से नहीं मिले। फिर भी प्रति मास सर्वोदय-पात्र से करीब ६० रुपये मिलते हैं।

मेहसाणा जिले के प्रतिनिधि और युवक शांति-सैनिक श्री गोपालदास पटेल ने अपने निवास-स्थान वाले क्षेत्र में सेवा की प्रवृत्ति आरम्भ की है। वहाँ सुबह में भित्ति-पत्र पर सुविचार लिखते हैं। बिना फीस के वहाँ बाल-मन्दिर चलाते हैं। इसका असर शहर के अन्य बाल-मन्दिर के बालकों पर भी होता है। किशोर-वर्ग से सम्पर्क स्थापित करके सेवा के काम करते रहते हैं। ७५ सर्वोदय-पात्र भी नियमित ढंग से चलाते हैं।

भूमि-वितरण

सूरत जिले में व्यारा और सोनगढ़ तहसील की पदयात्रा में भूमि-वितरण और सर्वोदय-पात्र का कार्यक्रम हुआ। भूमिवानों ने भी अपने किसान-मजदूरों को भूमि का कब्जा स्वेच्छापूर्वक छोड़ा। १२ गाँवों में ५० एकड़ २९ गुंठा भूमि का वितरण हुआ।

कच्छ के ७० वर्षीय वयोवृद्ध जनसेवी श्री वालजी प्रागजी दशा की एकाकी पदयात्रा में तीन तहसील में २२६ एकड़ भूमि का वितरण हुआ और १३३ एकड़ भूमि की जाँच की गयी ५० एकड़ की इस पदयात्रा में प्राप्ति भी हुआ है।

—अमृत मोदी

[पृष्ठ-संख्या ३ का शेष]

जिस उम्मीदवार की यह भूमिका और संकल्प हो वही वोट पाने का पात्र है।

(५) उम्मीदवार चाहे पार्टी का ही क्यों न हो, परन्तु चुनाव में सफल होने पर तो वह अपने क्षेत्र के सभी नागरिकों का प्रतिनिधि बनता है। मतदाता और उम्मीदवार, दोनों इस मूलभूत तथ्य का ध्यान रखें। उम्मीदार अपने पक्ष की शान और सफलता की अपेक्षा नागरिकों के हित को श्रेष्ठ माने तथा अपने प्रचार से और कार्य से लोकनिष्ठा का वातावरण बनाने की चेष्टा करे। लोकतंत्र की यह मूलभूत निष्ठा है कि उम्मीदवार चाहे पक्ष का भले ही हो, परन्तु प्रतिनिधि तो पक्ष-निरपेक्ष नागरिकों का हो सकता है।

(६) मतदाता को मतदान की जगह ले जाने के लिए उम्मीदवार या उसके एजेंटों को हरगिज आना न पड़े। मतदाता को यह स्पष्ट रूप से और दृढ़तापूर्वक कह देना चाहिए कि उसके लिए किसी सवारी का इन्तजाम उम्मीदवार या पक्ष न करे। मतदान नागरिक का पवित्र कर्तव्य है। उसे अपने कर्तव्य का पालन स्वयस्फूर्ति से करना चाहिए।

(७) यदि मतदाता अपने इस कर्तव्य का पालन भलीभाँति करेगा, तो चुनावों का खर्च काफी कम हो जायगा और साधारण नागरिक भी चुनाव में खड़ा हो सकेगा।

(८) सब उम्मीदवारों की ओर से एक ही सभा में एक ही मंच से मत-प्रचार हो। उम्मीदवार या उनके समर्थक दूसरे उम्मीदवारों के या उनके समर्थकों की उपस्थित में अपने विचार नागरिकों के सामने रखें। इससे एक-दूसरे पर झूठे इल्जाम लगाने की प्रवृत्ति कम होगी।

कुमारप्पा-स्मारक निधि

[३० दिसम्बर के 'भूदान-यज्ञ' में कुमारप्पा-स्मारक निधि के लिए पाठकों के नाम अपील निकालते हुए हमने सुझाया था कि श्री कुमारप्पाजी के जन्म-दिवस, ४ जनवरी से उनके निधन दिवस, ३० जनवरी तक कुमारप्पा स्मारक-निधि के लिए निधि संग्रह करने में विशेष शक्ति लगायी जाय। हर सप्ताह हमारे पास निधि के लिए छोटी-बड़ी रकमें आ रही हैं। हालांकि ता० ३० जनवरी बीत चुकी, पर संग्रह का काम अभी जारी है, यह उचित ही है। जिन पाठकों तथा कार्यकर्ताओं ने अभी तक अपनी तथा अपने मित्रों से प्राप्त करके रकमें न भेजी हों, वे अब भी भिजवाने की कृपा करें। फिलहाल 'भूदान यज्ञ' में दाताओं की सूची प्रकाशित की जाती रहेगी। —सं०]

		रु०—न०पै०
गत अंक में प्राप्ति-स्वीकार कुल		५४,४१२-५६

काशी में २५ फरवरी तक प्राप्त रकम	रु०—न०पै०	
खादी-ग्रामोद्योग कमीशन, बम्बई द्वारा संकलित	१३८-७०	
जिला सर्वोदय-मण्डल, गोरखपुर द्वारा संकलित	१०१-००	
श्री टी. एन. भास्कर, सर्वोदय-मण्डल, दिल्ली	६५-००	
खादी-ग्रामोद्योग भवन, नई दिल्ली द्वारा संकलित	४५-००	
श्री विनय सेन स्कूल, डाँगा, पो० बाकुरा	१०-००	
श्री बालमुकुंद बेले, आगरा	१०-००	
श्री शंकरलाल रतिलाल शाह, आनंद (खेड़ा)	१०-००	
श्रीमती भागीरथी वैद्य, नई दिल्ली	१०-००	
समवाय समिति लि०, टेनया, मुर्शिदाबाद द्वारा संकलित	६-५०	
श्री पी. डी. दत्ताणी, मार्फत "जन्मभूमि", बम्बई-१	५-००	
श्री अगद, दाहोद (पंचमहाल-गुजरात)	५-००	
श्री अलख पटरा भगा, लक्ष्मीपुर (कोरापुट-उड़ीसा)	५-००	
डा० चन्द्र रा० जोशी, राजापुर, भुज (कच्छ)	५-००	
श्री धर्मदत्त जिज्ञासु, हिसार (पंजाब)	५-००	
श्री टीकाराम पाठक, प्रधानाध्यापक, पाण्डे (अल्मोड़ा)	४-००	
श्री दादा गणेशीलाल, जिला सर्वोदय मण्डल, हिसार(पंजाब)	२-००	
श्री रामलालजी, कुँवरगढ़, रायपुर (म०प्र०)	२-००	
श्री शंकरलाल, सर्वोदय पुस्तक, भण्डार, सिरसा (पंजाब)	१-००	
श्री रामगोपाल सिंह, मार्फत श्री दातारामजी, कलकत्ता	११-००	
श्री दयालदासजी ,, ,, ,,	५-००	
श्री रामनिवास सर्राफ ,, ,, ,,	५-००	
श्री शिवचरण अग्रवाल ,, ,, ,,	५-००	
श्री किशोरीलाल मेहरा ,, ,, ,,	५-००	
श्री कृष्णलाल वर्मा ,, ,, ,,	५-००	
श्री रामनारायणजी ,, ,, ,,	५-००	
श्री भुवनेश्वरजी ,, ,, ,,	२-००	
श्री जगदीशजी ,, ,, ,,	२-००	
श्री त्रिभुवन पाण्डे ,, ,, ,,	२-००	
श्री शिवभगवान ,, ,, ,,	१-००	
श्री प्रयागदत्त शर्मा ,, ,, ,,	१-००	
श्री मोहनराज वनिक ,, ,, ,,	१-००	४८०-२०

मद्रास-कार्यालय में २२ फरवरी तक प्राप्त रकम		
कुमारप्पा जन्म-समारोह समिति, मद्रास	४,८०५-००	
श्री अनन्तशयनम् अय्यंगार, अध्यक्ष-लोकसभा, दिल्ली	२५-००	
खादी-ग्रामोद्योग कमीशन, मेरठ द्वारा संकलित	३२०-३८	
नरसिंहपुर खादी-केन्द्र सहकारी समिति, मुजफ्फरपुर	२३३-००	
खादी ग्रामोद्योग महाविद्यालय, नासिक	६५-००	
श्री एम० आर० एन० स्वामी, कलकत्ता के २५ मित्रों का	११६-००	
श्री एस० रामचन्द्रराव, बंगलोर १२	१००-००	
कस्तूरबा सेवा केन्द्र, राजपुरा (पंजाब)	५०-६९	
खादी-ग्रामोद्योग विद्यालय, बलरामपुर (प० बंगाल)	२६-००	
भारतीय विज्ञान संस्थान, बंगलोर-१२	२५-००	
डा० टी० आर० अनंतरामन, बंगलोर १२	२५-००	
श्री सी० एन० शाह, लोकभारती, सणोसरा (सौराष्ट्र)	५-००	५,७९६-०७
	कुल रकम	६०,६८८-८३

मंगी-मुक्ति और शोषण-मुक्ति के लिए अप्पासाहब पटवर्धन की पदयात्रा

विनोबाजी ने श्री अप्पासाहब को इन्दौर सर्वोदय नगर बने, इस हेतु सफाई सम्बन्धी सलाह और मार्गदर्शन के लिए इन्दौर बुलाया था। दो महीने से ज्यादा इन्दौर में शहर के सफाई-कार्यक्रम का प्रात्यक्षिक स्वरूप में मार्गदर्शन देने के बाद वापस लौटते समय उन्होंने महाराष्ट्र में भंगी-मुक्ति व शोषण मुक्ति की दृष्टि से पदयात्रा शुरू करने का अपना पूर्व निर्णय अमल में लाने की शुरुआत की।

पहले पूर्व खानदेश, बाद में पश्चिम खानदेश जिले में व उसके बाद ब्यारा के सफाई विद्यालय की ओर से तथा श्री जुगतरामभाई से सूरत जिले में पदयात्रा की दृष्टि से आमंत्रण मिलने के बाद सूरत जिले के कुछ हिस्से में अपनी पदयात्रा की। उसके बाद थाना और कोलाबा जिले की पदयात्रा पूरी करके आजकल अप्पासाहब पटवर्धन की पदयात्रा रत्नागिरी जिले में चल रही है। मंडणगड, दापोली, खेड तालुके की ८० मील की पदयात्रा करके वे १२ फरवरी को चिपलूण के सर्वोदय-मेले में पहुँचे।

अप्पासाहब अपनी पदयात्रा में एक गाँव से दूसरे पड़ाव की जगह तक अपने साथियों के साथ सुबह पैदल चलते हैं। वहाँ पहुँचने पर ग्रामवासियों से अपना कार्यक्रम निश्चित कर लेने के बाद हर रोज नियमानुसार आधा घंटा सफाई-कार्य कर लेते हैं। दोपहर से शाम तक ग्रामवासियों से चर्चा व उनकी अलग-अलग सभाओं में वे अपने विचार रखा करते हैं और साथ साथ भंगी-मुक्ति, शोषण-मुक्ति, गैस प्लांट वगैरा साहित्य का भी प्रचार करते हैं।

पदयात्रा में किसी विशेष पड़ाव पर २-३ दिन का मुकाम रख कर अपने साथियों की सहायता से यात्रा में पाखाना-सफाई का शिविर भी चलाते हैं, जिसमें कुछ ग्रामवासी भी शरीक होकर सफाई का काम करते हैं। इससे ग्रामवासियों को भंगी भाई बहनों की परिस्थिति का व उनको काम करते वक्त होते हुए कष्ट का पूरा खयाल आ जाता है।

पदयात्रा में हरिजन बस्तियों में मुलाकात, भंगी भाई बहनों की परिस्थितियों का निरीक्षण व उनको इस काम में से मुक्त हो जाने के लिए समझाना, सवर्णों को भंगी-कार्य में शरीक होने के लिए समझाना, भारत सफाई-मण्डल में हर रोज की सफाई का व्रत लेकर सदस्य बनाना, मौका पड़ने पर सवर्णों को साथ में लेकर भंगी भाइयों के घर जाकर स्वच्छतापूर्वक सह-भोजन भी करते हैं। गाँव की बहनों और शालाओं के विद्यार्थियों को चालू भंगी कार्य की कल्पना देकर उसमें वे किस तरह भाग ले सकते हैं और उनका काम व कष्ट किस तरह कम कर सकते हैं, इस बारे में समझाना, सुधरे हुए पाखाने व औजारों के नमूने बताना वगैरा बातें हुआ करती हैं।

अप्पासाहब को कभी कभी दूसरे स्थानों की खास सभा या सम्मेलन के लिए अपनी पदयात्रा रोक कर रेल या मोटर से आना पड़ता है, तो वैसा वे कर लेते हैं और फिर से अपनी रुकी हुई पदयात्रा शुरू कर देते हैं।

गुजरात के शांति-सैनिकों का वार्षिक सम्मेलन

गुजरात के लोकसेवकों और शांति-सैनिकों का पहला वार्षिक सम्मेलन २ फरवरी को बड़ौदा में सम्पन्न हुआ। गुजरात में कुल ३५० लोकसेवक और ११५ शांति-सैनिक हैं। सम्मेलन में करीब ११५ की उपस्थिति थी। सम्मेलन का उद्घाटन श्री शंकररावजी ने किया।

बड़ौदा शहर में चल रहे नगर-कार्य, प्रांतीय सर्वोदय-पदयात्रा और वितरण के काम को जारी रखने का निर्णय लिया गया। वितरण जहाँ तक हो सके, आगामी ४ महीने में समाप्त कर लिया जाय, यह निश्चय हुआ। विभिन्न विषयों पर परिसंवाद और कार्यकर्ताओं के शिक्षण की दृष्टि से शिविरों की योजना भी सम्मेलन ने स्वीकार की। आगामी चुनाव के विषय पर एक परिसंवाद मार्च महीने में करने का तय हुआ है और मई-जून में विद्यार्थियों के शिविर। गुजरात प्रांत का आगामी सर्वोदय-सम्मेलन भी मई-जून में आयोजित करने का तय किया गया। इस अवसर पर गुजरात प्रांत सर्वोदय-मण्डल की बैठक भी हुई। मण्डल ने ग्रामदानी गाँवों में नव निर्माण के काम के संयोजन के लिए एक नव-निर्माण समिति का गठन किया, जिसके संयोजक हर्षकांत वोरा हैं। सदस्यों में श्री जुगतराम दवे, कृष्णदास गांधी, मनुभाई पंचोली, मोहन परीख आदि हैं। मण्डल ने शांति-सैनिकों के साथ सम्पर्क रखने के लिए एक शांति सेना समिति का भी निर्माण किया है। इस सम्मेलन में यह भी निर्णय किया गया कि गुजरात के सब शांति-सैनिक, लोकसेवक तथा सहायक वर्ष में कम-से-कम दो बार मिलें। इसी प्रकार जिले-जिले के लोकसेवक, शांति सैनिक और सहायक भी हर दो-तीन महीने में सुविधानुसार मिलते रहें।

भूदान-यज्ञ रजिस्टर्ड नंबर ए. ३५४ [पहले से डाक-महसूल दिये बिना भेजने का परवाना प्राप्त, लायसेन्स नं० ए ३४] ३ मार्च, '६१

अशोभनीय पोस्टर्स हटने चाहिये : देश के विभिन्न शहरों की माँग

बम्बई

बम्बई के नागरिकों की एक सार्वजनिक सभा ता० २८ जनवरी की शाम को अशोभनीय और अश्लील सिनेमा-चित्रों और पोस्टरों के जाहिर प्रदर्शन के विषय पर विचार करने के लिये श्री केदारनाथजी की अध्यक्षता में हुई। इसमें बम्बई के नगरपति श्री विष्णुप्रसाद देसाई, श्री गगनविहारी देसाई, श्री लीलावती मुन्शी, दक्षिण और उत्तर बम्बई की संयुक्त स्त्री-संस्थाओं की प्रतिनिधि बहनें श्री इंदिरा गोखले और श्री अन्नपूर्णा भांडारकर तथा श्री शांतिलाल शाह, श्री विट्ठलराव पागे, श्री जस्टीस पटवर्धन आदि बम्बई के प्रमुख नागरिकों के तथा इंदौर और राजस्थान से आये हुए श्री देवेन्द्रकुमार गुप्ता, श्री महेश कोठारी और श्री गोकुलभाई भट्ट के भाषण इस अनिष्ट प्रवृत्ति के विरोध में हुए। सभी वक्ताओं का इस विषय पर एकमत रहा कि प्रबल जनमत जाग्रत कर इस अनिष्ट को तुरंत रोका जाना चाहिये।

उपरोक्त सभा में सभी संबंधित व्यक्तियों, फिल्म-व्यवसायी संस्थाओं, स्थानिक स्वराज्य-संस्थाओं तथा केन्द्रीय और प्रांतीय सरकारों से आग्रहपूर्वक निवेदन किया गया कि वे जनमानस पर अनैतिक असर करने वाले अशोभनीय और अश्लील सिनेमा-चित्रों और पोस्टरों को रोकने की आवश्यक कार्रवाई करें।

आम रास्तों पर लगाये जाने वाले सिनेमा के अशोभनीय और अश्लील पोस्टर, जिनका आक्रमण सिनेमा में न जाने वाले नागरिकों की आँखों पर भी होता है, उनको रोकने की आवश्यक कार्रवाई तो शीघ्र होनी ही चाहिये। निम्नलिखित बातें सहज और शीघ्र की जा सकती हैं।

(१) फिल्म तथा विज्ञापन-व्यवसायी निम्न स्तर की वासनाओं को उत्तेजन देने वाले चित्रों और पोस्टरों के प्रकाशन और प्रदर्शन न करने की मर्यादा खुद ही बाँध सकते हैं।

(२) शहर के नगर-निगम तथा नगर-पालिकाएँ ऐसे चित्र और पोस्टर जाहिर स्थानों पर न लगाये जावें, ऐसी रोक लगा सकती हैं।

(३) आज जो कानून है, उसका योग्य और सावधानी से उपयोग करके सरकार ऐसे चित्रों तथा पोस्टरों के जाहिर प्रदर्शन पर रोक लगा सकती है।

अहमदाबाद म्यूनिसिपल कारपोरेशन का सर्वसम्मत प्रस्ताव

ता० १० फरवरी को अहमदाबाद के डिप्टी मेयर श्री चन्द्रकांत गांधी की अध्यक्षता में म्यूनिसिपल कारपोरेशन की सभा में सर्वसम्मति से स्वीकृत प्रस्ताव नीचे दे रहे हैं :—

"राष्ट्र की उन्नति का आधार उसकी प्रजा के चारित्र्य और नीतिमत्ता के स्तर पर अवलम्बित है। इस प्रकार के सद्गुण जिस प्रजा में से नष्टप्राय हो जाते हैं, वह प्रजा अति विलासिता में डूब जाती है और उसमें फिर राष्ट्र के गुलाम बनने का समय आ जाता है। इस प्रकार की निन्दनीय परिस्थिति को उपस्थित करने में आज के फिल्मी अश्लील गाने तथा निन्दनीय दृश्य मुख्य तौर से जिम्मेदार माने जा सकते हैं। प्रजा का चारित्र्य और नीतिमत्ता का स्तर ऊँचा उठाया जा सके, इसलिए फिल्मी अश्लील गाने तथा निन्दनीय दृश्यों पर प्रतिबंध लगाने के लिए राज्य-सरकार को आवश्यक कदम उठाने की यह सभा निवेदन करती है। साथ ही राज्य-सरकार को प्रार्थना करती है कि प्रजा को स्वदेशाभिमान, चारित्र्य, नीतिमत्ता इत्यादि सद्गुणों का विकास हो सके, ऐसी फिल्मों को उत्तेजन देने की व्यवस्था करें।"

गोरखपुर

पोस्टर-विरोधी आंदोलन के सम्बन्ध में कई सभाएँ की गयीं। अशोभनीय चित्र हटाने व प्रकाशित न करने के लिए दूकानदारों, प्रकाशकों, सिनेमा-मालिकों, म्यूनिसिपल सदस्यों को समझाया गया। सबने सहयोग का आश्वासन दिया। मौजूदा सेन्सर-बोर्ड के सदस्य और गोरखपुर विश्वविद्यालय के उपकुलपति श्री भैरवनाथ झा ने इस आन्दोलन को आगे बढ़ाने के लिए पूरी मदद देने का कबूल किया। 'कल्याण' मासिक-पत्रिका के संपादक श्री हनुमानप्रसाद पोद्दार ने इस आंदोलन का हार्दिक समर्थन करते हुए कहा कि यह हमारे लिए 'करो या मरो' का प्रश्न है। 'कल्याण' के हर अंक में इस संबंध में वे लिखते रहेंगे। इसके अलावा स्वप्रेरणा से अपने प्रवास के दौरान में बड़े-बड़े शहरों में जनमत जाग्रत करने की दृष्टि से काम करेंगे, ऐसा भी उन्होंने तय किया।

जिला फिरोजपुर

जनवरी माह में १६५ घरों से ६६ रु० १२ न० पै० प्राप्त हुए। १२ नये सर्वोदय-पात्र रखे गये। ५ रुपये ४० न० पै० का संपत्ति-दान मिला। महिला मंडल की बहनों ने घर-घर जाकर अशोभनीय चित्रों के हटाने का कार्यक्रम हाथ में लिया। श्री श्रीकान्त आपटे ने २० से २६ जनवरी तक शहर के स्कूलों, कालेजों और धार्मिक संस्थाओं में सर्वोदय विचार-प्रचार किया।

जिला मथुरा

३० जनवरी से १२ फरवरी तक 'सर्वोदय-पक्ष' मनाया गया। सादाबाद तहसील में पदयात्रा चली। ४४ ग्रामों में भ्रमण तथा १०० मील की पदयात्रा हुई। सर्वोदय-मेला मथुरा शहर में संपन्न हुआ। सूतांजलि में ५ मन, १२ सेर, आधा पाव सूत प्राप्त हुआ। २ दाताओं से १ एकड़ २१ डि० भूमि प्राप्त हुई। १७४ रुपये ६७ न० पै० की साहित्य बिक्री हुई। 'भूदान-यज्ञ' के १४ ग्राहक बने। १४० नये परिवारों में सर्वोदय-पात्र रखे गये।

हिमाचल प्रदेश

जनवरी में ग्रामदान, ग्रामोद्योग, शांति-सेना का विचार समझाने के लिए पदयात्राएँ हुईं। पदयात्रा में २२६ रुपये ८८ न० पै० की साहित्य-बिक्री हुई।

दिल जोड़ने के लिए उपवास

शिवदासपुरा (जयपुर) में न्याय-पंचायत के चुनाव में दो दल हो गये। इस गाँव में सब काम मिलजुल कर करने की परम्परा रही है। दोनों दलों के लोगों के मत प्राप्त करने के लिए अवांछनीय तरीकों का उपयोग किया। यद्यपि कोशिशों के बावजूद चुनाव तो निर्विरोध ही हुआ, फिर भी वातावरण में तनाव बढ़ गया। लोगों के दिलों को जोड़ने के लिए खादी-ग्रामोद्योग विद्यालय, शिवदासपुरा के आचार्य श्री त्रिलोकचन्द्र जैन और श्री रामजी लालजी मीढ़ा व्यवस्थापक खादी-भंडार ने तीन दिन का उपवास किया।

नया प्रकाशन

महादेव भाई की डायरी (भाग १)

इस पहले भाग में सन् १९१७, १८ और १९ की डायरी है। हिन्दी में पहली बार प्रकाशित हो रही है। इसमें उक्त तीनों वर्षों का बापू का पत्र-व्यवहार, राजनीतिक विचारधारा का चढ़ाव-उतार, समर्थन-विरोध, सत्याग्रह का चिंतन, सब कुछ पाठकों को बापू के विचारों के क्रम-विकास को समझने के लिए ऐतिहासिक दृष्टि से महत्त्वपूर्ण है। लगभग ५०० पृष्ठों के सजिल्द ग्रंथ का मूल्य सिर्फ पाँच रुपया।

—अ. भा. सर्व सेवा संघ-प्रकाशन
राजघाट, काशी

इस अंक में

जिला गोंडा

जिले में अब तक कुल ६,८८७ एकड़ ८९ डि० भूमि प्राप्त हुई है, जिसमें से ३,७५७ एकड़ ३४ डि० भूमि बँट चुकी है। जनवरी में करीब २३७ एकड़ भूमि बाँटी गयी। 'भूदान-यज्ञ' की फुटकर ७२ प्रतियाँ बिकीं। १५३ मील की पदयात्रा हुई।

संथाल परगना

"ग्राम-स्वराज्य साधक आश्रम" के लोक-सेवक श्री सच्चिदानंद प्रसाद 'सेवक' अपने ८ साथियों को एक टोली बना कर बाबा के वचन मंत्र "दान दो इकट्ठा, बीघे में कट्ठा" का प्रचार कर रहे हैं।

गोड्डा थाना के अंतर्गत सर्वोदय पखवारा मनाने के लिए थाने के शांति-सैनिकों की ओर से श्री हरिहर साह के मार्गदर्शन में एक पदयात्रा टोली प्रचार-कार्य किया।

हिसार

जिला सर्वोदय-मण्डल, हिसार की जनवरी माह की रिपोर्ट के अनुसार ३१८ रु० ७४ न० पै० की साहित्य-बिक्री हुई। ८७ भूदान-सर्वोदय पत्रिकाओं की भी बिक्री हुई। ४७ सम्पत्तिदान दाताओं से ५०१ रु० ८० न० पै० और ५०७ सर्वोदय-पात्रों से १४५ रु० १५ न० पै० प्राप्त हुए। १४ ग्रामों में ६० मील की पदयात्रा हुई।

भटटूकला की ग्राम-पंचायत ने सरकार से भटटूकला गाँव से शराब के ठेके को बंद कर देने का प्रस्ताव किया है।

श्रीकृष्णदत्त भट्ट, अ० भा० सर्व सेवा संघ द्वारा भार्गव भूषण प्रेस, वाराणसी में मुद्रित और प्रकाशित। पता : राजघाट, वाराणसी-१, फोन नं० ४३९१
वार्षिक मूल्य ६) पिछले अंक की छपी प्रतियाँ ११,९०० । इस अंक की छपी प्रतियाँ १२,०५० एक प्रति : १३ नये पैसे

संपादक : सिद्धराज ढड्ढा

वाराणसी : शुक्रवार — १० मार्च '६१ — वर्ष ७ : अंक २३

शान्ति-सैनिकों के दो शस्त्र : प्रीति और क्रान्ति

विनोबा

शान्ति-सैनिक के हाथ में शस्त्र कौनसे होंगे ? हिंसा की जो सेना होती है, उसके हाथ में शस्त्रों का बल है। नये-नये शस्त्रों की खोज हो ही रही है। वैज्ञानिक उसे मदद दे रहे हैं। आधुनिक शस्त्रों से सेना जब लैस बनती है, तब उसके सामने पुराने शस्त्र नहीं टिकते हैं। हमारी जो सेना होगी, उसके प्रीति और क्रान्ति ये दो शस्त्र होंगे।

कोई भी शान्ति-सैनिक अपने जीवन में पूर्ण प्रेम विकसित नहीं करेगा, तो कारगर नहीं होगा। उसका सारा दारोमदार, उसकी शक्ति यही है, जिससे सामने वाले का हृदय-परिवर्तन होता है और वे शान्त होते हैं। जिस शक्ति से हृदय-परिवर्तन होता है, उस शक्ति का दारोमदार प्रेम-शक्ति पर है। इस प्रेम में वह ताकत है, जो परिवर्तन करती है और वह प्रेम यानी आत्मवत प्रेम। मतलब, जितना प्रेम खुद पर है, उतना और वैसा ही दूसरे पर। आत्मवत प्रेम सीखने की बात है।

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है

सोचने से मालूम होगा कि आत्मवत प्रेम क्यों करना चाहिये। जैसे हम अपने को अपना स्वरूप समझते हैं—वह चाहे देह का हो, मन-बुद्धि से केवल अपना ही नहीं होता है। अपना देह भी जो हृष्ट-पुष्ट हुआ है, वह अनेक की मदद से हुआ है। वैसे यह देह निर्माण ही हुआ माता-पिता के त्याग से। इस देह पर हम जितना प्रेम करते हैं, उतना ही माता-पिता पर होना चाहिये, समाज पर होना चाहिये, जिसने इस देह को पाला-पोसा है। हमारी मन-बुद्धि भी समाज की है। हमें शिक्षण घर में मिला, बाहर भी मिला। उसे देने में सबका हाथ है, हमारे पूर्वजों का भी हाथ है। इसलिये वह भी चीज सामाजिक होती है। हम भी द्रष्टा के रूप में सबको देखते हैं।

आत्मवत प्रेम क्यों आवश्यक ?

हम क्या हैं, इसका स्वरूप हम सोचेंगे तो यही पायेंगे कि जो चीज दूसरे में है वही हममें है। हम रात में सो जाते हैं, हाथी भी सोता है, दोनों में कोई फर्क नहीं है। गाढ़ निद्रा में प्राणी मूल रूप में प्रवेश करता है। गाढ़ निद्रा का आनन्द जागृति में महसूस होता है। मूर्च्छा से उठने पर आनन्द का अनुभव मनुष्य नहीं करता, शून्यत्व का अनुभव करता है। गाढ़ निद्रा से उठता है तो अच्छी नींद आयी ऐसा महसूस होता है। गाढ़ निद्रा में मनुष्य मनुष्य में और मनुष्य और प्राणी में कोई फरक नहीं होता है। सबके शरीर भी उन्हीं पंचभूतों से बने हैं, लेकिन हमारी जो शरीर की बनावट है वह सामाजिक है। यह सब सोचते हुए खयाल आता है कि मनुष्य के पास बुद्धि है, वह दूसरे प्राणी के पास नहीं है। इसलिये हम ठीक ढंग से सोचें तो दूसरे पर आत्मवत प्यार करना यानी हम शरीर को दुःख जितना प्रतीत होता है, उतना दूसरे के शरीर का भी होना चाहिये। हम कल्पना से दूसरे के शरीर के दुःख का अनुमान करते हैं तो दूसरे का दुःख कम महसूस करने का कोई कारण नहीं, अधिक भी हो सकता है। सामनेवाले को बिच्छू काटता है तो मैं उसके दुःख का खयाल कर सकता हूँ। उसके लिये प्यार भी वैसा ही होना चाहिए। ऐसे ही सुख का भी है। पानी पीने का जो आनन्द है, उससे ज्यादा आनन्द प्यासे को पानी पिलाने का है, क्योंकि आत्मा का उतना विकास हुआ है। इसलिये पानी पिलाने का आनन्द उत्तम है। अपना दुःख सहन करना चाहिये। हमें एक दिन खाना नहीं मिला तो सहन होना चाहिये। लेकिन अगर दूसरे को दुःख हुआ या दूसरे को खाना नहीं मिला तो वह असह्य होना चाहिये। यह आत्म-विकास का सवाल है। मतलब यह है कि अपने पर जो प्रेम है वही दूसरे पर न हो तब तक हृदय-परिवर्तन अशक्य है। मैं आप पर उतना ही प्यार नहीं करता हूँ, तो आपका विचार-परिवर्तन बुद्धि से मैं कर सकता हूँ। विचार-परिवर्तन के लिये अच्छे विचार की जरूरत है। उसमें प्रेम कितना है यह सवाल नहीं है।

लेकिन सामने वाले का हृदय-परिवर्तन करना हूँ तो जितना अपने पर प्यार है, उतना उस पर भी होना चाहिये। यह शान्ति-सेना के हाथ का शस्त्र है कि दूसरे के लिये अपने से अधिक ही प्रेम हो, कम तो होना ही नहीं चाहिए।

शांति-सेना और निहत्थी पुलिस

शान्ति-सेना की दूसरी शक्ति है क्रान्ति की भावना। आज की समाज की परिस्थिति जिसे सहन होती है, वह शान्ति-स्थापना की कोशिश करेगा तो उसे यश हासिल नहीं होगा, क्योंकि परिस्थिति का जो दुःख दूसरे सहन करते हैं, वह उसे महसूस नहीं होगा। उस प्रकार की अवस्था में हालत बदलने की तीव्रता नहीं होती है। जैसे शान्ति करने के लिये जाने वाली पुलिस से कहा जाय कि तुम्हें डंडे से पीटना नहीं है, लेकिन शान्ति करनी है। उस हालत में उस परिस्थिति से जो अशान्ति पैदा हुई है, उतनी ही अशान्ति को रोक सकेगा, जो नाहक पैदा हुई है। कुछ अशान्ति तो मूर्खता से भी होती है, अकारण भी झगड़े होते हैं। वहाँ पुलिस जाकर शान्ति कर सकती है। लेकिन जहाँ झगड़े के मूल में सकारण असन्तोष है, उस परिस्थिति को बदलने की युक्ति जिसके पास नहीं है, उसके पास शान्ति की शक्ति नहीं है। इसलिये ऐसी स्थिति में शान्ति सेना के पास प्रीति और क्रांति, ये दो शस्त्र होंगे तो वह कारगर होगी। उसके लिये आज के समाज के दोष बदलने हैं, ऐसा मानसिक निश्चय और साथ साथ प्रीति होनी चाहिये।

सबको समाधान

क्रान्ति की भावना हो ही तो हम सकारण हुई लड़ाई में भी एक का पक्ष ले सकते हैं। जैसे मालिक और मजदूर की लड़ाई में होता है। उसमें एक का कहना ठीक है, यह सोच कर शान्ति-सैनिक किसी एक का पक्ष लेगा तो बिना सोचे काम करेगा, ऐसा अर्थ होगा और फिर शान्ति-स्थापना में कारगर नहीं होगा। इसलिये उसे अपने में यह गुंजाइश रखनी चाहिये कि मुझे न्याय नहीं देना है, समाधान करना है। शान्ति-स्थापना के लिये जो जायेगा वह न्याय-प्रधान नहीं, समाधान-प्रधान होगा। बीमार की, दुखियों की नित्य सेवा करता रहेगा, जिससे प्रेम प्रकाशन होगा और समाज-परिवर्तन के क्रान्ति के काम में लगा रहेगा। ये जो दो शस्त्र बताये उनको विकसित करने के लिये कार्यक्रम भी होना चाहिये।

कुछ दिन पहले आशादेवी हमारे पास आयी थीं। तीन दिन साथ रहीं। जाते हुए उन्होंने कहा कि "लोक हृदय में प्रवेश करने के लिये शान्ति-सैनिकों को दुखियों को दिलासा देने का, बीमार की सेवा करने का काम करना चाहिये। यह तो ठीक है। लेकिन मुझे अभी लगता है कि सब शान्ति-सैनिक भूदान प्राप्ति में लग जायें और उसके साथ-साथ दूसरा सेवा-कार्य करते रहें। भूदान को भुला कर शान्ति-सैनिक काम करेगा तो वह कारगर नहीं होगा। जो सद्भावना समाज में पैदा करना हम चाहते हैं वह भूदान से सम्भव हो सकेगी।" यह उनकी बात सही है। यह बात स्पष्ट ही है कि 'स्टेटस को' का बचाव करनेवाले क्रान्ति-कार्य नहीं कर सकते। आज की हालत में भी हमें शान्ति-कार्य करना है और अशान्ति मिटानी है। लेकिन उसमें सावधानी रखनी होगी और वह यह कि जहाँ जमीन का झगड़ा है और जालिम जमीन्दार मजदूर को सताता है तो उस जमीन्दार की जान की रक्षा भी हमें करनी होगी, यह जानते हुए भी कि उसीने क्षोभ का कारण पैदा किया था, उसके लिये हमारे प्राण को खतरे में डालेंगे। अगर हम यह नहीं समझते हैं और ऐसा मानते हैं कि वह जमीन्दार जैसा करता है वैसा भरना है, तो शान्ति-सेना का विचार हमने समझा नहीं। इसलिये जमीन्दार को बचाना चाहिये। अन्यथा हमारा विचार 'कम्युनिज्म' की तरफ जायगा। किसी की भी जान को अगर खतरा है, तो उसे बचाना हमारी जिम्मेदारी है। और वह जमीन्दार झगड़े का कारण बना, ऐसा कह कर हम उसे अगर नहीं बचाते हैं, तो हमने अपनी जिम्मेदारी टाली, ऐसा होगा।

दिवंगत पंतजी !

एक के बाद एक गांधी-युग के स्तम्भ गिरते ही रहे हैं। अभी कुछ दिन हुए बिहार के श्री बाबू चले गये और अब पंडित गोविन्द वल्लभ पन्त ! ऐसा लगता है, मानों एक युग समाप्त हो रहा है !

राजमार्ग पर जैसे मील के पत्थर होते हैं, जिन्हें देख कर हम यह अन्दाज लगा सकते हैं कि सफर कितना हुआ और कितना बाकी है, उसी तरह मानव-इतिहास के राजमार्ग पर बीच-बीच में कुछ महापुरुष आते हैं, जिनसे हम अपनी स्थिति का कुछ अन्दाजा आंक सकते हैं। ये महापुरुष मानों एक-एक युग का प्रतिनिधित्व करते हैं। गांधीजी उसी तरह भारत के इतिहास में एक नया युग लेकर आये थे।

उस नये युग में इस देश में नई प्रेरणाएँ, नई उमंगें, नई भावनाएँ नया कर्तृत्व प्रकट हुआ था और उसी के साथ इन सब चीजों के वाहन बनने वाले छोटे-बड़े सैकड़ों व्यक्तित्व ! कुछ नक्षत्रों की तरह देदीप्यमान, कुछ ज्यादा चमकीले, कुछ कम चमकीले ! पंतजी इन्हीं नक्षत्रों में एक चमकदार नक्षत्र थे। पिछले ४५ वर्षों में आजादी की लड़ाई के एक वीर सेनानी थे। ज्यों-ज्यों समय बीतता जा रहा है, त्यों-त्यों आजादी की लड़ाई के दिनों की याद मद्धम होती जा रही है। नई पीढ़ी को तो उन दिनों का प्रत्यक्ष अनुभव भी नहीं है, जो अनुभव है वह इन आजादी के बाद के पिछले करीब १५ सालों का और इसलिए पंतजी जैसे व्यक्तियों के व्यक्तित्व को आंकना उनके लिए जरा मुश्किल है। हमारी आँखों के सामने उत्तर प्रदेश के मुख्य मंत्री या भारत के गृहमंत्री 'पंडित गोविन्द वल्लभ पंत' नहीं हैं, आजादी की लड़ाई के युग के सेनानी 'पंतजी' ही हैं। कैसा दबंग, निर्भीक योद्धा ! एक शेर की तरह दहाड़ने वाला वक्ता, जो हजारों-लाखों की जनमेदिनी को स्पंदित कर देता था और उनमें बलिदान की चाह फूंक देता था।

सचमुच वह युग बीतता जा रहा है। आज भी उसी मिट्टी के बने हुए पुतले छोटे-बड़े अपने-अपने देश के महान् व्यक्ति इस देश में, दुनिया में हैं और आगे भी होते रहेंगे, परन्तु कभी-कभी ऐसा युग आता है, जब छोटे छोटे पत्ते भी हवा में उड़ने लगते हैं, गिलहरी, बन्दर और भालू जैसे भी ऐसे काम कर गुजरते हैं, जिनकी याद सदियों तक बनी रहती है और मानव को प्रेरणा देती रहती है। वह युग ही ऐसा होता है कि मनुष्य के गुणों को प्रकट होने का अनुपम अवसर मिलता है। मनुष्य-जीवन यों तो गुण-अवगुण का ताना-बाना ही है, पर इतिहास में ऐसी घड़ियाँ आती हैं, जब गुणों के ही प्रकटीकरण की माँग परिस्थिति में होती है और तब देखते-देखते अनेक 'महान्' व्यक्तित्व हमारे सामने प्रकट हो जाते हैं। बाकी आदमी तो वे ही 'साढ़े तीन हाथ के पुतले' होते हैं—सबमें गुण-अवगुण मौजूद हैं। ऐसे अवसरों पर हमें गुणों की याद ताजी करके उनसे अपने जीवन के लिए प्रेरणा लेनी चाहिए।

हम श्रद्धा से दिवंगत पंतजी की स्मृति में अपना सिर झुकाते हैं !

—सिद्धराज ढड्ढा

ग्रामदान और भूदान मांगने का अधिक हक हमें तभी प्राप्त होगा, जब मालिक के प्राण के लिए हम प्राण त्याग करने के लिये तैयार होंगे। इसका दर्शन होगा तो हम बाहर होंगे और सामनेवाला हमारी मांग का इन्कार नहीं करेगा। वह समझेगा कि हमारे भी हित की ही बात ये लोग कर रहे हैं। इसलिए हमने कहा था कि शान्ति-सेना से ग्रामदान की रक्षा होगी। उसके बिना ग्रामदान सम्भव नहीं है। जहाँ जिगर का टुकड़ा देने की बात है, वहाँ हमारे पास ज्यादा प्रेम होना चाहिए। देनेवालों को आप पर एकदम भरोसा हो जाना चाहिये।

लेकिन कुल काम तब बनेगा, जब हमारे सेवाकार्य के लिये लोगों को विश्वास होगा, ये लोग हमारे हित चाहनेवाले हैं, ऐसा भरोसा जनता को होगा। हम सर्व-अनाधार होंगे, इसलिये कि सबका ही हित हम चाहते हैं। किसी का हित चाहते हैं, और किसी का नहीं चाहते हैं ऐसा नहीं होना चाहिये। हमारे हृदय में सबके लिये प्रतिष्ठा होनी चाहिए—जो देता हो उसके लिए भी प्रतिष्ठा हो, जो नहीं देते हैं, उसके लिए भी प्रतिष्ठा हो और उसे भी सुझा दे। इसीसे लोगों के हम विश्वास-पात्र बनेंगे।

सेवा के कुछ काम करना और समाज बदलने के काम करने में शान्ति-सैनिक का काम-रोल-रचनात्मक कार्यकर्ताओं से अलग पड़ेगा। शान्ति-सैनिक सेवा करेगा। लेकिन शरीर से जितना हो सकेगा उतना करेगा। बाकी समाज से करायेगा। उसके लिये कोई मंच या संघ खड़ा नहीं करेगा। रचनात्मक कार्यकर्ता उसके लिये मंच खड़ा करेगा, संघ बनायेगा। लेकिन शान्ति-सैनिक ये सब करायेगा, खुद करेगा नहीं। अपने शरीर को ही औजार समझ कर शामिल होगा।

[बलिया, जि० पूर्णिया, १-२-६१]

नागरी लिपि द्वारा तेलुगु सीखिये : १५

हिन्दी भाषा के व्याकरण में दो ही लिंग हैं। लेकिन तेलुगु भाषा के व्याकरण में—महत्=(पुरुष) पुंलिंग; महती = स्त्रीलिंग और अमहत् = नपुंसक लिंग के भेद से तीन लिंग माने गये हैं।

मनुष्य और देवताओं के पुरुषबोधक शब्द—राम, कृष्ण, इन्द्र, नारायण, वेंकटेश्वर और उनके विशेषण शब्द महत् = पुंलिंग कहलाते हैं। स्त्रियों के नाम—रुक्मी, सरोजिनी, सीता आदि और उनके विशेषण शब्द—महती = स्त्रीलिंग हैं, और जीवजन्तु, चीजें, जड़ पदार्थ के नाम व विशेषण शब्द अमहत् = नपुंसक लिंग कहलाते हैं। जैसे—
गाय = आवु; बैल = येद्दु; चिड़िया = पिट्ट; पहाड़ = पर्वतमु; गाँव = ऊरु; चींटी = चीम।

संस्कृत भाषा के अकारान्त पुंलिंग शब्दों के अंत को 'उ' में बदल कर उसके साथ 'डु' जोड़ देते हैं। जैसा—

राम = रामु + डु = रामुडु

कृष्ण = कृष्णु + डु = कृष्णुडु

देव = देवु + डु = देवुडु

इकारान्त संस्कृत शब्दों में कुछ भी परिवर्तन नहीं होता। जैसा—

हरि = हरि; मुनि = मुनि,

संस्कृत भाषा के अकारान्त नपुंसक लिंग के शब्दों के अंत में तेलुगु प्रत्यय 'मु' जोड़ दिया जाता है। जैसे—

वन = वन + मु = वनमु

जल = जल + मु = जलमु

पुस्तक = पुस्तक + मु = पुस्तकमु

संस्कृत उकारान्त शब्दों के अंत में 'वु' जोड़ा जाता है। जैसे—

(पुंलिंग लिंग) गुरु = गुरु + वु + गुरुवु

(स्त्रीलिंग) वधु = वधु + वु = वधुवु

(नपुंसक लिंग) वस्तु = वस्तु + वु = वस्तुवु

इसके अलावा पूर्व पद-प्रयोग से भी शब्दों का लिंग जाना जाता है। हिन्दी भाषा में 'नर' और 'मादा' शब्द जोड़ने से जैसे शब्द का लिंग मालूम होता है, वैसे ही तेलुगु भाषा में भी कुछ शब्दों के पहले नर = 'मग' और मादा = 'आड' जोड़ कर शब्दों का लिंग जाना जाता है।

पक्षा = मग पिट्ट (पिट्टगाडु)	सिंहिनी = आड सिंहमु
पक्षी = आड पिट्ट (पिट्ट)	मोर = मग नेमलि
सिंह = मग सिंहमु,	मोरनी = आड नेमलि

ग्रामदानी गाँवों के अंचल से

असम का ग्रामदानी गाँव : कोकिलासुर

असम के शिवसागर जिले में ग्रामदानी गाँव कोकिलासुर में १९ परिवार रहते हैं, जिनकी कुल जनसंख्या १२६ है। कुल १६१ बीघा जमीन है। चार परिवार भूमिहीन थे। यहाँ असम सर्वोदय सेवा संघ ने ग्राम निर्माण समिति गठित की। गाँव के ४ परिवारों की जमीन बंधक थी। उसे मुक्त करने के लिए सरकार द्वारा संघ को प्राप्त सहायता में से ढाई हजार रुपये उन परिवारों को कर्ज रूप में दिये गये। कर्ज वापस करने के लिए बंधन-मुक्त भूमि की धान-उपज में से एक भाग अलग करके रख दिया जाता है।

दो वर्षों में गाँव की सारी जमीन सामूहिक कृषि के अंतर्गत आ गयी। इस वर्ष की फसल का बंटवारा ग्रामसभा ने परिवारों की सदस्य-संख्या के अनुसार सर्व-सम्मत एक मत के हिसाब से हुआ। ग्राम-सभा की बैठक ग्रामीणों की समस्याओं पर विचार करने के लिए करीब-करीब प्रतिदिन ही हुआ करती है। ग्राम-सभा द्वारा संचालित प्राथमिक पाठशाला में गाँव के सभी बच्चे पढ़ने जाते हैं। सामूहिक बुनाई के लिए एक करघा, एक मंदिर, एक नामघर भी है।

२० जनवरी की सभा में ग्रामीणों ने निश्चय किया है कि—

(१) प्रति बीघा २५ प्रतिशत धन की उपज बढ़ाने की कोशिश करेंगे।

(२) गाँव की अतिरिक्त मनुष्य-शक्ति का उपयोग गाँव के मकान सुधारने तथा अन्य कामों में करेंगे।

(३) कपड़े की आवश्यकता पूरी करने की दृष्टि से अभ्र चरखे शुरू करेंगे।

ब्रह्म सत्यं जगत् स्फूर्तिः जीवनं सत्यशोधनम्

भूदानयज्ञ

लोकनागरी लिपि*

भूदान-आंदोलन भी मजदूर-आंदोलन है

अेक सवाल पूछा गया है की कारखाने के मजदूर भूदान-यज्ञ में कीस तरह सहयोग दे सकते हैं ? मेरे मन में भूदान-यज्ञ का जो स्वरूप है, अुसमें अेक स्वरूप यह भी है की मैंने भूमीहीन मजदूरों का आंदोलन अुठाया है। यह आंदोलन बुनीयादी है, अूपर का नहीं। देहात के भूमीहीन मजदूरों की हालत सबसे खराब है। अुनकी तरफ से बोलने वाला कोअी नहीं है। शहर के मजदूरों की तरफ से बोलने वाले कअी हैं। अिसीलीअे भूदान-आंदोलन भी मजदूर-आंदोलन है। जब मेरा यह काम समाप्त होगा, तब मैं अन्य मजदूरों का सवाल अुठाअूंगा। आखीर यह भूदान-यज्ञ देश का अुत्पादन बढाने के लीअे है। अुत्पादन कीये बगैर कोअी चारा नहीं, यह बात मैं कहना चाहता हूं। रवी ठाकूर ने अेक बार कहा था की हम सारे वीभाजन तो करते हैं, पर गुणन नहीं। अिस पर हर कोअी गंभीरता से सोचे। मैंने जेल में भी सबके लीअे अुत्पादक काम मांगा था, जीससे सबको काम की तालीम मीले। मेरा मजदूरों से कहना है की हमारा आंदोलन शरीर-परीश्रम की नीष्ठा बढाने वाला और अुत्पादन बढाने वाला है। अिसलीअे मैं अुनसे प्रार्थना करूंगा की आप अुत्तम-से-अुत्तम नीष्ठा रखकर अधीक से-अधीक अुत्पादन कीजीये। काम कम करने की बात कम कीजीये।

—वीनोबा

*लिपि-संकेत : ि = ी ; ी = ई, ख = ख, संयुक्ताक्षर हलंत चिह्न से।

विचार-प्रवाह

- मानसिक ईमानदारी की अपेक्षा
- गंभीर आरोप
- दबाव नहीं, शिक्षण

राजस्थान के वित्तमंत्री, श्री हरिभाऊ उपाध्याय ने, जो गांधीजी की जीवन-दृष्टि के एक बड़े समर्थक हैं, कोटा शहर की एक आम सभा में बोलते हुए कहा बतलाते हैं कि यह सौभाग्य का विषय है कि कोटा शहर जल्दी ही हिन्दुस्तान का दूसरा कानपुर बन जायगा। श्री हरिभाऊजी के मन में कानपुर के किस 'सौभाग्य' की कल्पना थी, यह सवाद में साफ नहीं था। निश्चय ही उनकी आँखों के सामने कानपुर के बड़े-बड़े कल-कारखानों का, लाखों मजदूरों को काम मिलने का, करोड़ों और अरबों की सम्पत्ति निर्माण होने का चित्र रहा होगा। बड़े शहर की बड़ी-बड़ी भव्य इमारतें, शानदार सड़कें, रोशनी की जगमगाहट, तरह-तरह के सामानों से भरी हुई दुकानों, मनोरंजन के लिए सिनेमाघरों आदि का 'सौभाग्य' भी जरूर इसमें शामिल होगा। कोटा शहर के निवासी वास्तव में बड़े 'भाग्यवान' हैं कि कोटा में बड़े बड़े कारखानों के बनने के कारण अनायास ही उन्हें इन सब बातों का लाभ मिलेगा।

पर कानपुर जैसे शहर के दूसरे भी कुछ 'सौभाग्य' हैं, जिनका ख्याल श्री हरिभाऊजी को अवश्य आया होगा। कानपुर की गन्दी बस्तियाँ—स्लम्स—प्रसिद्ध हैं। लाखों मजदूरों को किस प्रकार तंग, गंदी, बदबूदार बस्तियों में नारकीय जीवन बिताना पड़ता है यह भी कानपुर का एक 'सौभाग्य' है। वहाँ के कल-कारखानों में पैदा होने वाला माल किस तरह हिन्दुस्तान के देहातों को उजाड़ रहा है यह दूसरा 'सौभाग्य' है, और वह बढ़ता जाता उत्पादन मिल-मालिकों और अमीरों के भंडार भर रहा है यह तीसरा सौभाग्य है। जिन मजदूरों को कारखानों में काम मिलता है उनके पारिवारिक जीवन का छिन्न भिन्न होना, शराबखोरी, आपस के दंगे-फिसाद, लूट मार, छुरेबाजी आदि का बढ़ना—यह सब 'सौभाग्य' भी आज के शहरी जीवन के अनिवार्य परिणाम बन गये हैं।

आम लोगों से वोट प्राप्त करने के लिए उन्हें सब्ज बाग दिखाना बहुत जरूरी हो, तब भी जिम्मेदार लोगों से थोड़ी और मानसिक ईमानदारी की अपेक्षा रखना क्या गलत है ?

* * *

हमारे देश के 'विकास' के लिए और लोगों को भरपूर खाना मिले इसके लिए हमारी सरकार विदेशों से अरबों-खरबों का कर्ज और अनाज ले रही है। आगे आनेवाली पीढ़ियाँ बापदादों के इस कर्ज को किस तरह चुकायेंगी इसकी चिन्ता वे करेंगी, पर आज भी इस कर्ज का और इस अन्न का किस तरह उपयोग हो रहा है इसकी कुछ झांकी अभी हाल ही में हिन्दुस्तान में करीब दो सप्ताह तक रह कर गये हुए एक अमेरिकन राजनैतिक नेता ने दी है। श्री स्टीवेन डेरुनियन जो अमेरिका संसद के सदस्य हैं, पिछले महीने विश्व स्वास्थ्य संस्था के सम्मेलन में भाग लेने के लिए हिन्दुस्तान आये थे, उन्होंने वापस अमेरिका लौटने पर हिन्दुस्तान के अपने अनुभवों के बारे में वहाँ के रेडियो पर बोलते हुए कहा : "मैंने हिन्दुस्तान में बहुत ही खराब परिस्थिति पायी। यह देख कर तो मैं एक तरह से दंग ही रह गया कि हमने पिछले तीन सालों में हिन्दुस्तान को ३५० करोड़ डालर (करीब १७॥ अरब रुपया) दिया है, लेकिन वह रुपया और जो मुफ्त गेहूँ, हमने दिया है वह गरीबों तक नहीं पहुँच रहा है। यह सब हिंदुस्तान के व्यापारियों के हाथों में जा रहा है, बल्कि मेरी राय में तो वह उनकी जेबों में जा रहा है।" यह आवश्यक है कि एक जिम्मेदार व्यक्ति के इस कथन पर भारत सरकार की तरफ से कुछ सफाई हो।

* * *

दिल्ली में मौलाना आजाद मेडिकल कालेज के छात्रों को सम्बोधित करते हुए प्रधान-मंत्री ने इस बात की याद दिलायी कि उन छात्रों को उच्च शिक्षा प्राप्त करने का जो अवसर मिला है वह बहुत कम नौजवानों को मिलता है और इसलिए उन पर समाज का ऋण है जो उन्हें पैसे के रूप में नहीं, लेकिन सेवा के रूप में चुकाना चाहिए। इसी सिलसिले में पंडितजी ने आगे कहा कि मेडिकल कालेज से पढ़ कर जो विद्यार्थी निकलते हैं, उनको आवश्यक हो तो "कानून से इस बात के लिए मजबूर किया जाना चाहिए" कि वे कम-से-कम एक वर्ष देहातों के लिए अपनी सेवाएँ दें।

इसमें कोई संदेह नहीं कि समाज की सेवा और, जो भाग्यशाली हैं वे अपने से कम भाग्यशाली लोगों को मदद पहुँचायें, ये दोनों बातें जरूरी हैं। पर बाहरी दबाव या भय निश्चित ही वे साधन नहीं हैं, जिनके जरिए नौजवानों में ये भावनाएँ या वृत्ति पैदा की जा सके। उल्टे, इस प्रकार के दबाव और मजबूरी से नौजवानों में समाज के प्रति एक प्रकार का विद्रोह और अलगाव की भावना ही पैदा हो सकती है। वास्तव में जिन गुणों का जिक्र पंडितजी ने किया है, उन गुणों की जीवन में निरन्तर आवश्यकता है। वे साल-दो साल या "कर्ज चुका देने" के लिए ही जरूरी नहीं हैं, बल्कि एक सुखी, समृद्ध और शान्तिमय समाज के लिए आवश्यक चिरंतन तत्त्व हैं। अतः सिर्फ साल-दो साल के लिए समाज के उपकार का बदला चुका देने की भावना से नहीं, बल्कि हमेशा के लिए नौजवानों के जीवन में यह गुण उतरें, ऐसी कोशिश करना हमारा फर्ज है। यह स्पष्ट है कि यह काम कानून से या मजबूरी से नहीं हो सकता, निरंतर शिक्षण, और उससे भी ज्यादा अपने उदाहरण से ही यह हासिल हो सकता है। गांधीजी ने आर्थिक विषमता और शोषण के निराकरण के लिए ट्रस्टीशिप का जो सिद्धान्त प्रतिपादित किया था, वह यही चीज थी। हमारी निश्चित राय है कि इस प्रकार की किसी भी वृत्ति या गुण के विकास के लिए दण्ड का भय, कानून या जबरदस्ती उचित साधन नहीं है।

पिछले दिनों जिस तरह एक से अधिक बार पंडितजी ने—जो स्वयं लोकशाही में पूरी निष्ठा रखने वाले व्यक्ति हैं—कानून और दबाव के पक्ष में अपना झुकाव बतलाया है वह सचमुच चिन्ता का विषय है। पंडितजी खुद इस बात को बहुत से और लोगों की अपेक्षा ज्यादा अच्छी तरह जानते और समझते हैं कि दबाव या दण्ड के भय से चाहे काम होता हुआ नजर आये, पर अव्वल तो वह काम ही ऊपरी और दिखाऊ होता है, इसके अलावा उसके जो दूरगामी परिणाम हैं, वे लोकशाही के हमारे आदर्श के लिए घातक साबित हो सकते हैं। मौलाना आजाद मेडिकल कालेज में भाषण करते हुए पंडितजी ने कहा बतलाया कि "विद्यार्थियों को राष्ट्रीय सेवा के लिए मजबूर करने की कल्पना कोई असाधारण बात नहीं है। कई दूसरे देशों में हरएक नौजवान व्यक्ति को दो वर्ष के अनिवार्य सैनिक शिक्षण में से गुजरना पड़ता है।" हालाँ कि तुरत ही पंडितजी ने इस बात को साफ किया कि वे यह नहीं चाहते हैं कि हिन्दुस्तानियों में लड़ाकू-वृत्ति विकसित हो, फिर भी "अनुशासन और साथ मिल कर काम करने" के "सैनिक" गुणों का विकास जरूरी है। हम नम्रतापूर्वक पंडितजी का ध्यान इस ओर आकर्षित करना चाहते हैं कि "अनुशासन और मिल कर काम करने की भावना," ये "सैनिक" गुण नहीं हैं, बल्कि 'नागरिक' गुण हैं। और इन दोनों का विकास बन्दूक लेकर कवायद करने से नहीं, लेकिन शिक्षण से ही सम्भव है। हमें प्रधान-मंत्री से पूरी आशा है कि वे समाज में ऐसी वृत्तियों को प्रोत्साहन देने के बजाय, जो तानाशाही की ओर ले जाने वाली हों, उन्हें रोकने में अपनी शक्ति लगायेंगे।

—सिद्धराज ढड्ढा

बापू की आखिरी "सनक"

आचार्य कृपलानी ने एक बार नई तालीम को गांधीजी की 'सबसे ताजा सनक' कह कर संबोधित किया था। नई तालीम पर जो उन्होंने पुस्तक लिखी है, उसका नाम ही उन्होंने यही दिया है। पर असल में गांधीजी की 'आखिरी सनक' तो प्राकृतिक चिकित्सा थी। यह बहुत कम लोगों को मालूम है कि उनकी मृत्यु से करीब दो साल पहले बापू ने खुद पूना के पास उरुली कांचन में रह कर प्राकृतिक चिकित्सक का काम किया था। बात यह है कि जीवन एक समग्र वस्तु है। इसलिए जिस दर्शन को हम जीवन के लिए लागू करना चाहते हैं, वह उसके सब पहलुओं पर लागू होगा, किसी एक पर नहीं। इसीलिए बापू की प्रवृत्तियों में खादी, ग्रामोद्योग, नई तालीम, हरिजन-सेवा, आदिवासी-सेवा, स्त्रियों और विद्यार्थियों का प्रश्न, कौमी-एकता, प्राकृतिक चिकित्सा आदि अनेक बातें एक के बाद एक दाखिल होती गयीं।

प्राकृतिक चिकित्सा का विचार लोगों को आकर्षित करता है और धीरे-धीरे उसका प्रचार बढ़ भी रहा है। योरोप और अमेरिका में भी पिछले सौ वर्षों में प्राकृतिक चिकित्सा की प्रवृत्ति काफी पनपी है। जैसा कि ऊपर कहा गया है, जीवन समग्र वस्तु है। उसके टुकड़े नहीं हो सकते, इसलिए प्राकृतिक चिकित्सा प्राकृतिक जीवन तथा सात्विक जीवन से अलग न चल सकती है, न ठहर सकती है। इस दृष्टि से प्राकृतिक चिकित्सा के क्षेत्र में भारतीय परम्परा, चिंतन और जीवन-दृष्टि का विशेष उपयोग हो सकता है।

अभी कुछ दिन पहले श्री शंकरराव देव जयपुर के प्राकृतिक चिकित्सालय में गये थे। उनका इस विषय में चिंतन चलता रहता है। उन्होंने सुझाया है कि प्राकृतिक चिकित्सकों को इस देश की संस्कृति और दर्शन के आधार पर चिकित्सा-शास्त्र को निर्माण की दिशा में शोध करना चाहिए। उन्होंने दो-तीन बातों की ओर खास तौर से प्राकृतिक चिकित्सकों का ध्यान खींचा है -

(१) प्राकृतिक चिकित्सा में रोगी को स्वाभाविक प्रकृति का मान क्या है, यह पंचमहाभूतों की परिभाषा में तय होना चाहिए, अर्थात् रोगी की प्रकृति में इन पंचमहाभूतों में से कौनसे महाभूत की कमी है, या अधिकता है, यह रोगी की प्रकृति के निदान करने का तरीका होना चाहिए।

(२) जैसे निदान वैसे चिकित्सा भी, पंचमहाभूतों की ही परिभाषा में होनी चाहिए। यानी जिस पंच-महाभूत की कमी होगी, उसकी पूर्ति करने के लिए कौनसी प्रक्रिया होगी? किस इलाज या आहार के जरिए यह पूर्ति हो सकेगी? यह वैद्य और रोगी दोनों को साफ मालूम होना चाहिए और बतलाना चाहिए।

(३) जब हम आहार के बारे में सोचते हैं तो आज की परिभाषा प्रोटीन, कारबोहाइड्रेट्स, साल्ट्स वगैरह की है। इन चीजों का शरीर पर क्या असर होगा यह सोचते हैं। व्याधि का संबंध जैसे शरीर के साथ है, वैसे ही मन के साथ भी है। मन निरोगी रहने में मदद होगी। हमारे धर्म, संस्कृति और वैद्यक शास्त्र में मन की बीमारी सत्व, रज, तम—इन तीन गुणों में तौली जाती है। इसलिए हमारे आहार-शास्त्र में सात्विक राजसिक, तामसिक इस प्रकार आहार का विश्लेषण किया जाता है। हमारे प्राकृतिक चिकित्सालयों में, आहार के ये जो तीन गुण हैं, उनके बारे में चिंतन और संशोधन होना चाहिए और पाश्चात्य शास्त्र में जैसे आहार में प्रोटीन वगैरह की आवश्यकता या अनावश्यकता मानी जाती है, वैसे हमारी दृष्टि से सात्विक, राजसिक आदि आहार की आवश्यकता या अनावश्यकता मानी जानी चाहिए।"

अभी कुछ दिन पहले जब विनोबाजी काशी आये थे, तब बनारस के पास दुल्हीपुर के प्राकृतिक चिकित्सा-केन्द्र में बोलते हुए उन्होंने कहा था—"मैंने प्राकृतिक चिकित्सा का नाम सत्व-चिकित्सा दिया है और प्राकृतिक चिकित्सक को मैं सात्विक-चिकित्सक कहता हूँ। हर कोई सत्व-चिकित्सक बन सकता है।"

चिकित्सालय में एक जगह लिखा हुआ था—

"सब रोगों की एक दवा,
मिट्टी, पानी, धूप, हवा।"

उसे देख कर विनोबाजी ने तुरन्त कहा "मैं इसमें थोड़ा संशोधन करना चाहूँगा, मिट्टी, पानी, धूप, हवा के साथ "आसमान" को भी जोड़ूँगा। आसमान बहुत जरूरी है। बाबा इतने सालों से घूम रहा है। उसको शक्ति कहाँ से मिलती है? बाबा को शक्ति आकाश से मिलती है। वह सबसे ज्यादा आकाश खाता है। और चीजों के बारे में परिग्रह कर सकते हैं, किन्तु आकाश के बारे में परिग्रह अनावश्यक है। आदमी को ज्यादा-से-ज्यादा सेवन आकाश का और कम-से-कम सेवन अनाज का करना चाहिए।"

ऊपर शंकररावजी ने पंचमहाभूतों की जो बात सुझायी है, वह ध्यान में हो तो चिकित्सा के अंग के तौर पर "आकाश को खाने की बात" तुरन्त प्राकृतिक चिकित्सक के ध्यान में आयेगी। इस प्रकार अगर मौलिक तत्वों के आधार पर चिंतन चले तो प्राकृतिक चिकित्सा का शास्त्र किस तरह विकसित और समृद्ध हो सकता है, उसका यह एक उदाहरण है।

आशा है, हमारे देश के प्राकृतिक चिकित्सक जर्मनी, इंग्लैण्ड और अमेरिका आदि से आये हुए प्राकृतिक-चिकित्सा के ज्ञान को तो अवश्य अपनायेंगे, पर साथ ही भारतीय परम्परा का पुट देकर उसे और समृद्ध और पूर्ण बनायेंगे।

—सिद्धराज ढड्ढा

कार्यकर्ताओं के साथ विनोबाजी की चर्चा

[विनोबाजी की बिहार की पदयात्रा में उनसे सर्वश्री आर० के० पाटील, मोतीलाल केजरीवाल और राममूर्तिजी ने विभिन्न विभिन्न विषयों पर आन्दोलन की दृष्टि से उपयोगी चर्चा की थी। उसको हम विनोबा-पदयात्री दल की डायरी नीचे दे रहे हैं। —सं०]

महाराष्ट्र सर्वोदय-मंडल के नये अध्यक्ष श्री आर० के० पाटील बीच में एक दिन यात्रा में रह कर गये। उनसे पोस्टर-आंदोलन की भी चर्चा हुई। पाटील साहब ने कहा, "जो राष्ट्र मनोविकार पर नियंत्रण रख सकेगा वही उन्नति करेगा।"

विनोबाजी ने कहा :

"मेटर ऑफ फैक्ट व्ह्यू" (वस्तु-स्थिति को समझ) लें तो भी दरिद्र राष्ट्र को भोग-विलास में रममाण होना शोभा नहीं देता है। दारिद्र्य के साथ विलास आयेगा तो रोग बढ़ेंगे। उसमें अमीरों के लिए दवा-दारू का इन्तजाम होगा। पर गरीबों का क्या होगा? अगर लोकशाही ठीक चले यह आप चाहते हैं तो 'जनमत' (पब्लिक ओपीनियन) बनाना होगा। इसलिए मेरा कहना यह है कि जनता के मन (पब्लिक माइन्ड) पर प्रभाव डालना चाहिए। वैसी समता, सामर्थ्य मामूली रचनात्मक काम से नहीं आयेगा। पोस्टर-आंदोलन की प्रति-ध्वनि बड़े-बड़े शहरों में सुनाई दी। जनता जागृत हो सकती है। बापू के जमाने में हमने यही देखा कि जब-जब आन्दोलन जोर करता था, तब रचनात्मक काम भी जोरदार चले, खादी की खपत भी बढ़ी।

यहाँ बिहार में मैं देहातों में तीन चीजें कह रहा हूँ : (१) शान्ति-पात्र (सर्वोदय-पात्र का नया नाम) (२) शान्ति-सेना और (३) बीघे में कट्ठा दान। ३ दिसम्बर को राजेन्द्र बाबू का जन्मदिन है। उस दिन तक की मुहलत दी है। शहरों में पोस्टर्स की बात करता हूँ। मुझे उम्मीद है, बिहार जाग उठेगा। आन्दोलन के शुरू में भी बिहार ने ही हिंदुस्तान को धक्का दिया था। हमारी गलती यह हुई है कि हम लोगों ने भूदान-यात्राएँ बंद कर दीं। अनुभव आता है कि माँगते हैं, तो मिलता है।"

श्री मोती बाबू बीच-बीच में यात्रा में रह कर जाते हैं। एक दिन उनसे चर्चा करते हुए विनोबाजी ने कहा, "लोग कहते हैं कि १९५७ में काम में जोश था। मैं कहता हूँ कि इस वक्त होश है। गीता में सात्विक कर्ता का वर्णन आया है : "धृत्युत्साह समन्वितः"—जिसमें धीरज और उत्साह दोनों हैं, वह अच्छा काम करने वाला है। दूध में एकदम उफान आता है तो दूध नीचे गिर जाता है। धीरज और उत्साह दोनों हों तो कार्यकर्ता टिकता है। धीरज से सातत्य रहता है।"

फिर आगे चर्चा और चली।

एक कार्यकर्ता ने कहा, "हम ऊपर-ऊपर का देखने वाले हैं। इसलिए हमें लगता है कि सन् '५२ और '५३ का जोश नहीं है। लेकिन आप अन्दर का देखते हैं। इसलिए विचार गहराई में गया है, यह आप देख सकते हैं।"

विनोबाजी : "हाँ! यह होता है कि जब आँधी नहीं होती है, तब परिंदे उड़ते हैं। आँधी होती है, तब पत्ते भी उड़ते हैं। क्या आप पत्ते उड़ाने वाली आँधी की राह देख रहे हैं? आज की तो परिंदे उड़ाने वाली आँधी है। विचार गहराई में गया, ऐसा आप कहते हैं, लेकिन इतना ध्यान रखिये कि वह इतना गहरा न जाय कि मारवाड़ जैसा पानी जमीन में छिप जाये।"

आचार्य राममूर्तिजी तीन दिन यात्रा में थे। बेराई गाँव जाते हुए उन्होंने कर्मभूमि में काम करने के बाद उनके दिल में उठे कई सवाल विनोबाजी के सामने रखे। उनमें एक यह था कि "भूदान देने वाले कुछ दाता और भूमि प्राप्त करने वाले 'भूमिपुत्र' किसान के बीच माधुर्य कैसे पैदा हो? क्या 'बीघे में कट्ठे' के नये नारे से कुछ अंतर पड़ेगा?"

विनोबाजी ने जवाब में कहा, "यही चिंतन का सही तरीका है। हमारे कार्य की यह कसौटी होनी चाहिए कि उससे परस्पर संबंध में माधुर्य पैदा हो। अगर वह नहीं होता है तो कहीं-न-कहीं कोई भूल हो रही है, ऐसा मान कर चिंतन करना चाहिए और कारणों को तलाश कर उसे दूर करने की कोशिश करनी चाहिए। अगर वास्तव में दान की प्रक्रिया से दान हुआ है तो उसमें से माधुर्य की निष्पत्ति होनी ही चाहिए। भूदान-आन्दोलन के आरंभ में मैं भी यह सोचता था कि कोई दाता है और कोई

बंगाल में नई तालीम कार्यकर्ता-गोष्ठी

श्री शमधर, नई तालीम संघ, बलरामपुर

ता० १५ और १६ फरवरी को बार-वासुदेवपुर में नई तालीम कार्यकर्ताओं की एक गोष्ठी का आयोजन हुआ। उसमें नई तालीम संघ, बलरामपुर, लोकभारती बार-वासुदेवपुर तथा राष्ट्रीय बुनियादी विद्यालय, शशिहिड्डा के प्रतिनिधियों ने भाग लिया। बंगाल की शिशु-रक्षा समिति, खादी-आयोग तथा बुनियादी तालीम के दूसरे कार्यकर्ता भी उपस्थित थे। इनके अलावा उत्कल के श्री नवकृष्ण चौधरी, अखिल भारत सर्व सेवा संघ के सह-मन्त्री श्री राधाकृष्णन्, 'नई तालीम' पत्रिका के संपादक श्री देवीप्रसाद, आन्ध्र के जीवन-निकेतन की श्रीमती एनिड जेमिन और श्री सेमसन तथा सेवाग्राम के श्री शंकरन् आदि भी उपस्थित थे। गोष्ठी डाक्टर प्रफुल्लचन्द्र घोष की अध्यक्षता हुई। लगभग ५० लोगों ने गोष्ठी में भाग लिया।

गोष्ठी में मुख्य चर्चा देश में नई तालीम काम के विकास में आने वाली समस्याओं पर हुई। करीबन् हर प्रान्त में स्वतन्त्र रूप से काम करने वाली नई तालीम संस्थाओं को यह दिक्कत आ रही है कि उनसे निकलने वाले विद्यार्थियों को, आज की प्रचलित शिक्षा-पद्धति के समकक्ष विद्यार्थियों को जो सरकारी सुविधाएँ व सहूलियतें मिलती हैं, वे प्राप्त नहीं हैं। वास्तव में होना तो यह चाहिये कि नई तालीम के अच्छे-से-अच्छे प्रयोग सफल हों, इस दृष्टि से काम करने वाले शिक्षकों तथा संस्थाओं को अपने काम में पूरी आजादी हो, क्योंकि स्वतन्त्र वातावरण में ही नई तालीम विकसित हो सकती है। लेकिन आज वह वायुमण्डल नहीं है। इस ओर बढ़ने में दो मुख्य दिक्कतें हैं: भाषा का प्रश्न तथा सरकारी काम्पीटिटिव परीक्षाओं का माध्यम। गोष्ठी की राय रही कि आज देश भर में ऊँची-से-ऊँची तालीम अपनी मातृभाषा में हो सके, इसकी व्यवस्था और सरकारी काम्पीटिटिव परीक्षाओं में भी लोग अपनी मातृभाषा में जवाब लिख सकें, यह सुविधा होनी चाहिए। इससे नई तालीम के काम को गति मिलेगी और राष्ट्र के बच्चों के सर्वांगीण विकास में मदद होगी। इस कदम से आज नई तालीम में पढ़ने वाले विद्यार्थियों के मन में जो एक न्यूनता की भावना है वह भी बहुत कुछ नष्ट हो सकेगी।

तालीम की अवधि में मातृभाषा के अलावा अन्य कौनसी भाषा पढ़ाई जाय, इस विषय पर भी चर्चा हुई। गोष्ठी की राय थी कि बुनियादी तालीम के ८ साल की अवधि में अन्तिम २-३ साल में मातृभाषा के अलावा देश की कोई एक भाषा का अध्ययन विद्यार्थी करे और १४ साल की उम्र के बाद कोई भी आधुनिक विदेशी भाषा का व्यवस्थित अभ्यास करे। यह माना गया कि सामान्य तौर पर यह भाषा अंग्रेजी होगी, लेकिन यदि काफी मात्रा में विद्यार्थियों से ऐसी माँग आती है तो अन्य कोई विदेशी भाषा भी सिखायी जानी चाहिये। ३-४ साल की उत्तर बुनियादी तालीम की अवधि में व्यवस्थित अंग्रेजी शिक्षण से ऐसी योग्यता आनी चाहिये, जिससे अंग्रेजी के मामूली वार्तालाप, भाव-प्रकटन और अंग्रेजी में लिखा सामान्य या टेक्निकल साहित्य समझने की शक्ति हो।

आज के नई तालीम विद्यालयों की प्रगति में एक बाधा है कि देश में नई तालीम पद्धति के अनुसार शिक्षण देने वाली संस्थाएं नहीं हैं। सेवाग्राम में इसकी शुरुआत हुई थी, पर वह अभी बन्द है। उत्तर बुनियादी शिक्षण के बाद प्रचलित पद्धति में जाना चाहने वाले विद्यार्थी तो रहेंगे ही, पर ऐसे विद्यार्थी भी होंगे, जो नई तालीम के सिद्धान्तों पर आधारित विश्वविद्यालय के स्तर की तालीम लेना चाहेंगे और वैसी व्यवस्था हो इसकी अपेक्षा करेंगे। देश में कम-से-कम २-३ ऐसे स्थान हों, जहाँ विश्वविद्यालय के स्तर पर विविध विषयों की शिक्षा दी जाय। गोष्ठी ने अपेक्षा की कि नई तालीम कार्यकर्ता व संस्थाएँ इस ओर यथाशीघ्र ध्यान दें। इसके अलावा यह अपेक्षा जाहिर की गयी कि आज के विद्यालयों में राष्ट्रीय एकता (इन्टिग्रेशन) की दृष्टि से प्रान्तीय के अलावा अन्य भाषाओं के अध्ययन की सुविधा भी हो।

गोष्ठी ने इस बात को महसूस किया कि बुनियादी और उत्तर बुनियादी तालीम की अवधि में प्रयोग सफल होने की दृष्टि से इस बात पर जोर देने की आवश्यकता है कि आज सामान्य विज्ञान के शिक्षण को विशिष्ट स्थान दिया जाय। बुनियादी तालीम की पद्धति में विज्ञान शिक्षण का अच्छा संयोजन स्वाभाविक ही हो सकता है, इस ओर संस्थाएँ विशेष ध्यान दें। दूसरी ओर यह भी कहा गया कि नई तालीम की प्रगति तभी हो सकती है, जब एक तरफ हमारा काम सर्वांगीण विकास की दृष्टि से हो और दूसरी ओर संस्था के आसपास के क्षेत्र के लोग इन उसूलों को समझें। जहाँ-जहाँ बड़ी संस्थाएँ काम कर रही हैं, वहाँ यह अपेक्षा रखना स्वाभाविक है कि यह लोक-शिक्षण का व्यापक काम संस्थाएँ हाथ में लेंगी और हर संस्था अपना सेवा-क्षेत्र तैयार करेगी, जहाँ की स्थानीय समस्याओं के हल के लिये जनता और संस्था के बीच में सेवा का सम्बन्ध बना रहेगा।

हर प्रान्त में नई तालीम का काम करने वाली संस्थाओं का आपसी सम्बन्ध कैसा हो और कैसे संगठन किया जाय, जिससे भ्रातृभावना बढ़े और हर संस्था की अच्छाई को सब समझें तथा कमी को सब मिल कर पूरी करें। यह सुझाव रखा गया कि जितनी संस्थाएँ आज बंगाल में काम कर रही हैं, उनका एक संगठन खड़ा किया जाय—नई तालीम संघ बनाया जाय। यह संघ प्रान्त के नई तालीम के काम को संगठित करने का काम करे और ऐसे लोगों के साथ सम्पर्क करे जो इस काम में लगे हैं या जिन्हें इस काम में दिलचस्पी है। इसके अलावा नई तालीम संघ दो उपसमितियों का गठन करे:

(१) समीक्षा-समिति: संस्थाओं में समय-समय पर निरीक्षण करके काम का स्तर उठाने के लिये कोशिश करे।

(२) सम्पर्क-समिति: सरकार के साथ नीति स्पष्टीकरण तथा निश्चित समस्याओं के समाधान के लिये सम्पर्क साधने का काम करे।

आज बंगाल में १२ साल से नई तालीम संघ काम करता ही है। यह सोचा गया कि उसे ही और व्यापक तथा मजबूत बनाया जाय और प्रान्त में नई तालीम काम का संगठन करने के लिये अगले दो-तीन माह में कार्यवाही की जाय।

आदाता। (हैवज एण्ड हैव नॉट्स) लेकिन अब मैं सोचता हूँ कि 'हैव नाट' कोई है नहीं, सब 'हैवज' हैं और सबके पास कुछ-न-कुछ है। श्रम हो, भूमि हो, दूसरी संपत्ति हो या बुद्धि हो, समाज को उसकी जरूरत है और सबके संयोग से ही समाज का रक्षण और पोषण होता है। पर हमारे काम में बहुत बड़ी कठिनाई इस कारण पैदा हो जाती है कि हमारा चिन्तन 'सेक्शनल' (विभागीय) होता है और परिभाषा में फँस कर रह जाता है। सर्वोदय-विचार के लिए यह तत्त्व बुनियादी है कि हम सम्पूर्ण समाज का चिन्तन करें, उसकी विशिष्टताओं और विरोधों का नहीं। हम हरएक को मनुष्य मानते हैं। दाता-आदाता, मालिक-मजदूर आदि की भाषा में नहीं सोचते। अगर हमारे विचार में से यह संकुचितता दूर हो जाय तो हमारे काम या हमारी वाणी के 'इम्पेक्ट' में से भी संकुचितता दूर हो जायेगी।

आज मैं 'बीघे में एक कट्ठे' की माँग कर रहा हूँ। माँग हमारी कम-से-कम हो, माने सामान्य व्यक्ति के त्याग-शक्ति के बाहर न हो। एक कट्ठे की माँग कम-से-कम है। गाँव में जहाँ तक हो सके, हर व्यक्ति बीघे में कट्ठा दान दें और जोत की जमीन हो। इतना होता है तो गाँव में माधुर्य का वातावरण पैदा होगा और सहकार की नई दिशाएँ प्रकट होंगी माधुर्य की भूमिका में से जो भी कार्यक्रम बनाया जायेगा उसकी निष्पत्ति अनुकूल होगी और गाँव की समूह इच्छा-शक्ति (कलेक्टिव विल) उभर आयेगी। चाहे सौ प्रतिशत दान न भी हो, लेकिन देने की प्रवृत्ति प्रधान मालूम हो। हमें किसी भी दाता को नाराज नहीं करना है, बल्कि यह वातावरण बनाये रखना है कि उसकी और देते रहने की प्रवृत्ति बनी रहे।"

जब परिस्थिति असह्य हो उठती है!

मलयपुर से श्री रमावल्लभ चतुर्वेदी लिखते हैं:—

"शराबखोरी की बुराई इतनी बेहूद बढ़ रही है कि समाज का जो तबका इस बुराई से अब तक बचा था, शराब पीना जिन समाजों में अपराध माना जाता था, वहाँ भी यह खुलेआम चलने लगी है। अब शराब समाज-वर्जित काम नहीं रहा, बल्कि ऊँचे स्टैण्डर्ड—बड़प्पन—का प्रतीक बन गया है। बिहार में अब अंग्रेजी शराब की दुकानें जमुई, लखीसराय जैसी (छोटी) जगहों पर भी भद्र मुहल्लों में ठाटबाट से खुलती जा रही हैं। अपने प्रियजनों को भी इस लत में फँसते देख हम तिलमिला उठे हैं। हमारे गाँव मलयपुर में तो इसने तबाही मचा रखी है। मलयपुर की "कलाली" जहाँ है, वह मुहल्ला मुसहर नामक हरिजनों का है। इस कलाली ने उनका नैतिक पतन बहुत किया है। अब वे अपने घरों में वेश्यावृत्ति कराने लगे हैं। बगल में ही मिडिल स्कूल का बोर्डिंग हाउस है।

बापू की निधन तिथि, ३० जनवरी हम कैसे मनायें, यह सोचते हुए अचानक कलाली पर सात्त्विक निरोधन (पिकेटिंग) करने के विचार का उदय हुआ। इस विचार से बड़ा उत्साह मिला। हमने गाँव के मुखिया और एस० डी० ओ० को पत्र लिखा, जिसकी प्रतिलिपि आपको भेजी है। ता० ३० जनवरी से आज (ता० २४ फरवरी) तक लगातार, बरसते पानी में भी, बिना नागा हमने निरोधन किया है। इससे कितने लोगों ने पीना छोड़ा है, यह हम नहीं कह सकते। पर यह सत्य है कि पीने वालों में एक हिचक जरूर पैदा हो गयी है। यह काम समाज-वर्जित है, ऐसा फिर से महसूस करने लगे हैं। बहुत से पुराने पियक्कड़ों ने हमसे कहा कि अगर हमसे शराब छुड़ाना हो तो कलाली उठा दो। यह रहेगी तब तक हमसे छोड़ी नहीं जायगा। हमने प्रान्त के नये मुख्यमंत्रीजी को इस सम्बन्ध में लिखा है।"

श्री रमावल्लभजी ने जमुई के एस० डी० ओ० को जो पत्र लिखा है उसमें कहा है:

"प्रिय भाई,

शराब और दूसरे नशों से हमारे देश की बहुत हानि हो रही है, यह सभी समझदार मानते हैं। राष्ट्र ने जिन्हें अपना पिता घोषित किया है, वह गांधीजी अपने अन्तिम क्षण तक पूरी नशाबंदी के लिए कहते रहे। हमारा विधान भी नशाबंदी करना चाहता है। पर दुःख है कि बंद होने के बदले यह बुराई और बढ़ी है। इसलिए हरेक समझदार नागरिक को इसके लिए चिंतित होना चाहिए।

विनोबा-यात्री-दल से

कुसुम देशपांडे

रास्ते के दोनों किनारे फैले हुए चाय के बाग हैं। वहाँ के मैनेजर, मजदूर स्वागत करते हैं। 'उलुध्वनि' से स्वागत होता है। इधर बहनें मुँह से एक आवाज करती हैं—जब कोई शुभ कार्य होता है तो ऐसी आवाज करते हैं। विनोबाजी ने कहा, यह 'उलुध्वनि' है। उपनिषद् में इसका जिक्र आता है। पूर्व दिशा में जब सूर्य का आगमन होता है, तब पक्षी 'उल् उल्' आवाज करते हैं, ऐसा वर्णन उसमें है। पाँच-छह दिनों से यात्रा उत्तराभिमुख हो रही थी। दार्जिलिंग जिले में तीन दिन यात्रा हुई। सुबह जब प्रभात फैलती है, तब उसकी सूचना 'उत्तरा' देती है। सामने नगाधिराज हिमालय की चोटियाँ हैं। यात्रा के आरम्भ में तो नीले आकाश में तारकाओं का साम्राज्य दीखता है, बाद में कुहरे से वातावरण व्याप्त हो जाता है। आकाश में भी उसीका साम्राज्य! हलके-हलके सूर्य की कोमल किरणों से उत्तरा प्रकाशित होती है, तारकाएँ लुप्त होती हैं, शिखरों का वर्ण आरक्त हो जाता है। कुदरत का दिलकश नजर देख कर मन में होता है, काश! मैं चित्रकला जानती! तरह-तरह के रंगों का खेल वहाँ दीखता है चोटियाँ चमकती हैं, आरक्त श्वेत! खूबसूरत कुदरत का बयान लफ्जों में कैसे करें?

दार्जिलिंग से चन्द भाई-बहनें आयी थीं। विनोबाजी को आग्रह हुआ, वे दार्जिलिंग चलें तो अच्छा। परसों हम सीलीगुड़ी में थे। वहाँ से दार्जिलिंग ५० मील दूर है। वही इस जिले का सबसे बड़ा शहर है।

विनोबाजी ने कहा, "हम सीलीगुड़ी में पहुँचे। सीलीगुड़ी दार्जिलिंग का चरण है। हमने चरणस्पर्श कर लिया!"

इस जिले में 'नेपाली' लोगों की संख्या काफी है। यहाँ सार्वजनिक सेवा का काम करने वाले दंपति नेपाली हैं। श्रीमती मायादेवी पार्लमेंट की सदस्या हैं। उनके पति कांग्रेस के प्रमुख हैं। सीलीगुड़ी में वे दोनों अन्य नेपाली भाइयों के साथ विनोबाजी से मिलने आये थे। उस मजलिस में भूतान कांग्रेस के खादी वेशधारी एक भाई भी थे। श्रीमती मायादेवी ने विनोबाजी की दो किताबों का नेपाली में अनुवाद किया है। उन्होंने कहा, "इस प्रदेश के लोग बहुत डरते हैं। यह 'सीमा' का प्रदेश है—एक बाजू पाकिस्तान, दूसरी बाजू पाकिस्तान और तीसरी बाजू भूतान।"

विनोबाजी: "अभी मैं 'कल्चरल हिस्ट्री ऑफ असम' पढ़ रहा था। उसमें यह आया है कि जहाँ एक 'डैनेस्टी' बदली वहाँ इधर-उधर से हमला हुआ है। इतिहास में यही चला है। हर देश में हम यही देखते हैं। अब विज्ञान का जमाना आया है। विज्ञान के जमाने में यह 'हमले' की बात नहीं चलेगी। अगर चलेगी तो इन्सान का खात्मा होगा। इसलिए पुराने इतिहास सारे निकम्मे हैं। राजनीतिज्ञ यह समझे नहीं हैं। पुराना इतिहास पढ़-पढ़ कर उनके दिमाग बने हैं। इसलिए वे वैसा ही सोचते हैं। हमें तो यह सोचना चाहिए कि 'बोर्डर'—सीमा—है ही नहीं! सब पृथ्वी एक ही है। यह बात अलग है कि पहाड़ है, नदी है। एक जमाना था, जब बड़ी-बड़ी नदियाँ सीमा बनाती थीं। बारिश में नदियों में पानी ज्यादा भर जाता था तो नदी लाँघना मुश्किल हो जाता था। संस्कृत में 'कूल' शब्द का अर्थ 'किनारा' होता है। नदी के इस पार के लोग याने 'अनुकूल' और उस पार के लोग याने 'प्रतिकूल'। इस तरह नदी से ही 'अनुकूल', 'प्रतिकूल' होता था। नर्मदा के कारण उत्तर हिंदुस्तान और दक्षिण हिंदुस्तान, वैसे ही उधर गंगा के एक बाजू अवध और मगध—ऐसे प्रदेश बनते थे। जैसे-जैसे विज्ञान बढ़ा नदी, से प्रदेश बनना बन्द हो गया। नदी को पार कर सके। फिर पहाड़ से देश बनने लगे, फिर समुद्र की बात आयी। समुद्र से सीमा बनने लगी। लेकिन अब वह भी गया। पाकिस्तान देखिये, पूर्व और पश्चिम पाकिस्तान बना है। बीच में १४०० मील का फासला है। बेल्जियम को देखिये, कहीं दूर कोने में 'कांगो' है, उस पर प्रभुत्व रखना चाहता है। अब तो समुद्र, यानि 'हाथ में'! नदी से देश-भेद खत्म हो गया, पहाड़ से देश-भेद खत्म हो गया, समुद्र से देश-भेद बनना खत्म हो गया। अब आसमान का भेद बाकी है—चंद्र, मंगल आदि। आगे ये भेद भी खत्म होंगे। चंद्र में रहने वाले भाई की शादी मंगल में रहने वाली लड़की से हो सकेगी। जैसे-जैसे विज्ञान बढ़ेगा, जीवन का बाहर का ढाँचा बदलेगा। लेकिन अन्दर का तत्त्व कायम रहेगा। प्रेम से प्रेम बढ़ेगा, द्वेष से द्वेष बढ़ेगा, विश्वास से विश्वास बढ़ेगा, यह नहीं बदलेगा।"

श्रीमती मायादेवी ने कहा, "सीमा पर सेना तो है! फिर भी भय है।"

विनोबाजी: "सीमा है, इसलिए वहाँ 'आर्मी'-सेना-रखनी चाहिए, ऐसा माना जाता है। मतलब क्या हुआ? सामने वाले को लड़ने के लिए निमन्त्रण हो गया। जॉर्ज वाशिंगटन की स्कूल की नोट्स लिखने की कॉपी वैसी की वैसी छापी गयी थी। उसमें एक वाक्य था: 'फेन्स इज ए टेम्टेशन टु जम्प।' (बंधन मुक्ति का आह्वान है) सीमा को प्रेम से मजबूत बनाओ। वहाँ आश्रम बनाओ। दोनों देशों में लोगों का वहाँ प्रेम से स्वागत होता है, ऐसा होना चाहिए। प्रेम से व्यवहार हो। आजकल क्या होता है—इसके साथ मैत्री, उसके साथ 'ट्रीटी', इनके साथ 'अलायन्स' ऐसा चला है। दस-पाँच राष्ट्र इधर और दस-पाँच उधर। जब तक हम नहीं समझते हैं कि हम सब मानव एक हैं, तब तक ये झगड़े चलते रहेंगे।

इसलिए हम कहते हैं—भाई, ग्राम को परिवार मानो, दुनिया को देश। इधर हम अपना छोटा-सा परिवार मानते हैं और असम, बंगाल, नेपाल ये देश मानते हैं। अब हमें जरा व्यापक बनना होगा। ग्राम को परिवार और दुनिया को देश मानना होगा। इसमें 'ग्राम-परिवार' यह करने की बात है और कुल दुनिया एक है, ऐसी भावना बनानी होगी। ग्राम-परिवार करने की बात, विश्व एक है यह भावना की बात है। आगे वह भी सहज होगी, प्रत्यक्ष में आयेगी। आज वह चिंतन में है। गाँव में कोई किसी को लूटे, चूसे, यह नहीं होना चाहिए। होता यह है कि आज हम काम करते हैं घर का, चिंतन करते हैं जाति का, धर्म का, प्रान्त का या देश का।

हम जरा फैल जायें, ग्राम हमारा सेवा-क्षेत्र बने और कुल विश्व हमारा चिंतन-क्षेत्र बने, तो मजा आयेगा, खतरा नहीं होगा। आज आप दोनों नहीं करते हैं। गाँव को 'युनिट' नहीं मानते, प्रेम नहीं रखते। इससे गाँव में भी झगड़े और विश्व में भी झगड़े होते हैं। 'हम बंगाली एक,' ऐसा कहते हैं याने क्या? 'गाँव में सब एक हैं,' ऐसा नहीं। बंगाली एक हैं याने असम से भिन्न हैं, बिहार से अलग हैं, उड़ीसा से अलग हैं—इतना ही उसका अर्थ है।"

इतना कहने के बाद विनोबाजी ने एक कोरा कागज माँगा। उस पर अपने हाथ से कलम से पृथ्वी का गोल खींचा। उसके चार-छः टुकड़े दिखाये और कोने में छोटे-छोटे गाँव दिखा कर उसके भी टुकड़े दिखाये। वह चित्र दिखा कर कहने लगे, "यह है आज की दुनिया का नक्शा।" उस चित्र के पास उन्होंने लिखा—"स्वदेशो भुवनत्रयम्" और उसके नीचे लिखा—'विश्वं पुष्टं ग्रामे अस्मिन् अनातुरम्।' श्लोक का अर्थ समझाते हुए कहा, "ऋग्वेद में यह आता है। ऋषि कहता है कि हमारे गाँव में परिपुष्ट आरोग्यवान विश्व हो।"

मायादेवी ने नम्रतापूर्वक कहा, "आप कहते हैं तो बहुत अच्छा लगता है। लेकिन आप तो महात्मा हैं। इसलिए आप दुनिया एक है, ऐसा मानते हैं। हम सबके लिए यह कैसे संभव होगा?"

विनोबाजी ने झट जवाब दिया—"हम 'महात्मा' नहीं हैं। महात्मा तो बुद्ध और महावीर हो गये हैं। हम विज्ञानात्मा हैं। विज्ञान के जमाने में इतना तो हो कि हम 'साइंटीफिक मैन' तो बनें।"

बीच में एक दिन 'बागडोगरा' नाम के गाँव में पड़ाव था। पड़ाव के पिछली बाजू मैदान में असम से आये हुए शरणार्थियों का एक कैम्प है। विनोबाजी ने उनके कैम्प में उनकी स्थिति देखी। शरणार्थियों ने अपनी कुछ लिखित माँगें पेश कीं। उनको सांत्वना देते हुए विनोबाजी ने कहा, "मैं यहाँ आया। पर मेरा आपको उपयोग तभी होगा, जब आप असम वापस जाने का सोचेंगे। दुःखों को भूल जाइये। खराब हवा के झोंके में मनुष्य खराब काम कर जाता है। अच्छी हवा में अच्छा भी काम करता है। दिल में प्रेम, विश्वास और हिम्मत रख कर आप वापस जाइये। मैं वहाँ जा ही रहा हूँ। आपको कोई तकलीफ नहीं होगी। इतना ही आश्वासन मैं दे सकता हूँ।"

विनोबाजी के पास कुछ 'रिपोर्ट्स' आती हैं। छोटे-बड़े नेता, कार्यकर्ता, नागरिक मिलते रहते हैं। पता चलता है कि कुछ राजनैतिक दल के लोग इस स्थिति का लाभ उठाने की कोशिश करते रहते हैं। इसका जिक्र करते हुए उन भाई, बहनों से विनोबाजी ने कहा, "आप राजनीतिज्ञों को इसमें घुसने मत दीजिये। उससे आपका बहुत नुकसान होगा। आपकी लिखित माँगें राजनीतिक हैं। अगर आप राजनीतिक माँग करते हैं, तो मैं आपके लिए कुछ कर नहीं सकूँगा। मान लीजिये, आपको मैं महाराष्ट्र आने का आमंत्रण देता हूँ। क्या आप वहाँ राजनीतिक माँग करेंगे? नहीं न? वैसे ही आपको असम में किसी भी राजनीतिक माँग के बिना जाना चाहिए। अगर आप यहीं रहना चाहते हैं तो आप रहिये, फिर मेरा आपको कोई उपयोग नहीं होगा।"

नशा रोकने के लिए शांतिपूर्ण पिकेटिंग करना गांधीजी ने जनता का हक माना था। गांधी-इर्विन पैक्ट में अंग्रेजी सरकार ने भी गांधीजी का यह दावा मान लिया था। इसलिए यह आत्मघाती कार्य रोकने के लिए हमने तय किया है कि गांधी-निर्वाण दिवस, ३० जनवरी की सन्ध्या के ४ बजे से ५ बजे तक मल्यपुर की कलाली में हम गांधीजी के बताये तरीके से एक प्रतीकात्मक पिकेटिंग करें। हमारे समर्थकों की संख्या जैसी बढ़ेगी वैसे हमारी पिकेटिंग का समय भी बढ़ता जायगा और धीरे-धीरे प्रतीकात्मक के बदले वास्तविक पिकेटिंग करेंगे।

आप हमारे यहाँ के आला अफसर हैं। इसलिए हम आपको अपने सभी मित्रों के साथ इस पुण्य अवसर पर पिकेटिंग का एक पुण्य कार्य कर राष्ट्रपिता को श्रद्धांजलि देने का निमन्त्रण देते हैं।"

धर्म-सम्प्रदायों का विघटन

—सिद्धराज ढड्ढा

ता० ३१ जनवरी और १ फरवरी, १९६१ को लाडनूं (राजस्थान) में "धार्मिक क्रांति" विषय पर एक परिसंवाद और सम्मेलन का आयोजन हुआ था। इसके अध्यक्ष श्री शंकरराव देव थे। परिसंवाद के मुख्य विचारणीय विषय धार्मिक सम्प्रदायों और साधु-संस्था के बारे में थे। यह सही है कि धर्म शास्त्रों एवं सम्प्रदायों में आबद्ध नहीं है, न उसका सम्बन्ध केवल परलोक साधना है। जैसा कि इस सम्मेलन की ओर से प्रकाशित किये गये निवेदन में कहा गया है, "धर्म जीवन सम्बन्धी उस ज्ञान और दृष्टि का नाम है, जो व्यक्ति और समाज से सीधा सम्बन्ध रखती है"। इस जीवन-दृष्टि के विकास का आधार सत्य ही हो सकता है, जिसकी शोध निरन्तर चल रही है और चलती रहनी चाहिए। जब कभी भी सत्य की उपलब्धि को अन्तिम मान कर इस शोध के मार्ग अवरुद्ध किये गये, तभी सम्प्रदायों को जन्म मिला, धर्म कुंठित हुआ और ज्ञानार्जन की गति बंद हो गयी। इन सम्प्रदायों ने अपने उपलब्ध सत्य को ईश्वरत्व अथवा सर्वज्ञत्व के नाम पर सनातन तत्त्व कहने का दावा किया, जो सर्वथा निराधार, कपोल-कल्पित और विकास का बाधक सिद्ध हुआ। परिणाम यह हुआ कि सत्य पीछे रह गया और अमुक भाषा, वेश और बाह्याचार ही धर्म के रूप में प्रतिष्ठित हो गये।"

धर्म वास्तव में व्यक्ति-सापेक्ष है। यों तो व्यक्ति एक अलग इकाई नजर आता है, वैसा वह है भी, फिर भी वह अपने चारों ओर फैली हुई चराचर सृष्टि का एक अंश है। प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष, सृष्टि की सारी चीजों से उसका सम्बन्ध है। वह सृष्टि के लिए है और सृष्टि उसके लिए है। व्यक्ति समष्टि के साथ एकाकार हो, यह उसकी स्वाभाविक प्रेरणा होती है, होनी चाहिए। व्यक्ति को इस प्रकार समष्टि के साथ एकाकार होने में जो मदद करे, वही धर्म है। वह धर्म भिन्न-भिन्न व्यक्ति का भिन्न-भिन्न होता है—उसके स्वभाव, उसकी परिस्थिति, उसकी वंशानुगतिकता इत्यादि बातों के कारण।

इस प्रकार धर्म की एकमात्र कसौटी व्यक्ति स्वयं हो सकता है। धर्म के नाम पर बनने वाले संगठन और सम्प्रदायों का वही और वैसा ही उपयोग है, जैसा किसी व्यक्ति के शरीर और इन्द्रियों का होता है। शरीर और इन्द्रियों की मदद से व्यक्ति आगे भी बढ़ सकता है और उनके दुरुपयोग से वह खड्डे में भी जा सकता है। व्यक्ति को अपने विविध उद्देश्यों की पूर्ति के लिए तरह-तरह की रचनाएँ और संगठन करने पड़ते हैं। इसी आवश्यकता में से धर्म संगठन और सम्प्रदाय भी खड़े होते हैं। यह व्यक्ति की मर्जी पर होना चाहिए कि वह किसी संगठन या रचना का उपयोग करता है या नहीं करता।

पर मुश्किल यह है कि संगठन का अपना एक धर्म होता है। संगठन की शुरुआत होती है व्यक्ति की सहूलियत के लिए, लेकिन उसके अनुशासन और नियंत्रण फिर व्यक्ति को ही बांधने लगते हैं और उसके मार्ग में रुकावट डालते हैं। मनुष्य ने अपनी सुरक्षा के लिए सामूहिक दण्ड-शक्ति का आविष्कार किया और राज्य-संस्था बनायी। पर वह जरा-सा बेखबर हुआ और राज्य संस्था उस पर हावी हो गया। आज व्यक्ति सर्वत्र सब जगह राज्य के भयंकर पाश में जकड़ा हुआ है। जो राज्य उसकी रक्षा के लिए बना था, वह उसका भक्षक बन गया है। इसीलिए आज हम शासन-मुक्त समाज की बात करते हैं।

वही हाल धर्म-सम्प्रदायों का हुआ है। व्यक्ति को विश्व के साथ एकाकार होने में मदद पहुँचाने के बजाय आज वे उस रास्ते में रुकावट बन गये हैं। एक जमाना रहा होगा, जब वे आदमी को आदमी से जोड़ते थे। उस समय शायद जोड़ने वाली और कोई शक्ति विकसित नहीं हुई थी। आज विज्ञान की शक्ति विकसित हुई है। यह शक्ति मनुष्य को समझ बूझ कर एक-दूसरे से जुड़ने की प्रेरणा दे सकती है, इसलिए आज मजहब और सम्प्रदाय बेकार हुए हैं। यह हमें समझना चाहिए। शरीर भी बेकार हो जाता है तो आत्मा उससे चिपटी नहीं रहती, तो फिर बेकार हुए सम्प्रदायों की तो बात ही क्या!

पर इस सम्बन्ध में एक सावधानी बरतने की आवश्यकता है। जब हम शासन-मुक्त समाज की बात करते हैं तब साथ में हम यह निहित मानते हैं कि शासन का जो प्रयोजन समाज में शांति, सुरक्षा और व्यवस्था कायम रखने का है, वह प्रयोजन स्वानुशासन के द्वारा सिद्ध होगा। जितनी मात्रा में स्वानुशासन होगा, उतनी ही मात्रा में हम शासन-मुक्त हो सकेंगे। इसी प्रकार धर्म सम्प्रदायों के बारे में भी समझना चाहिए। शिक्षण को, जिसमें माता-पिता द्वारा मिलने वाला ज्ञान शामिल है, धर्म सम्प्रदायों का स्थान लेना चाहिए। अत धर्म-सम्प्रदायों को समाप्त करने के साथ-साथ हमें यह सावधानी रखनी होगी कि न सिर्फ शिक्षण सम्पूर्ण तौर से मुक्त हो—आज की तरह सरकार के नियमों के पाश में जकड़ा हुआ न हो—साथ ही आर्थिक-सामाजिक व्यवस्था ऐसी हो कि किसीको भी मजबूरन उस शिक्षण से वंचित न रहना पड़े। तब धर्म सम्प्रदायों का विघटन सफल होगा। अर्थात्, क्रांति एक क्षेत्र में करने से काम नहीं चलेगा, जीवन में और समाज में सर्वतोमुखी क्रांति का आवाहन हमें करना होगा।

जहाँ तक 'साधु संस्था' का प्रश्न है, यह सही है कि "सत्य शोध की साधना में लगे हुए साधु पुरुषों की समाज में आवश्यकता है।" वास्तव में समाज ऐसे साधु-पुरुषों के आधार पर ही टिका हुआ है और उनके कारण ही, प्रगति कर सका है या कर सकता है। पर ऐसे साधु अलग वर्ग के रूप में समाज में नहीं रहेंगे। वास्तव में तो "साधुता के गुण का विकास उत्तरोत्तर समाज के सारे व्यक्तियों में व्याप्त हो जाना चाहिए।" "स्वस्थ समाज में श्रमिक और साधु" दो अलग अलग नहीं होंगे। यह दूसरी बात है कि संन्यासी समाज में हमेशा रहेंगे। मनुष्य जीवन का जो चार आश्रमों में विभाजन है, उससे अधिक वैज्ञानिक और भव्य कल्पना हमारी दृष्टि में दूसरी नहीं है। संन्यास जीवन का परिपाक है। वह जीवन की अत्यन्त मुक्तावस्था है। सच्चा संन्यासी और फकीर त्रिभुवन का बादशाह है। पर आज तो संन्यास को और साधुत्व को भी संगठन के दायरों में बाँध दिया गया है। असल में वह साधुत्व या संन्यास है ही नहीं, जो इस तरह संगठन के दायरों में बँधता है।

वास्तव में धर्म, संन्यास आदि से सम्बन्धित जो रूढ़ धारणाएँ हैं, उनमें संशोधन होने की नितान्त आवश्यकता है। जैसा विनोबा बार-बार कहते हैं, सम्प्रदायों के अर्थ में 'धर्म' के दिन अब समाप्त हो चुके हैं। विज्ञान ने समस्त मानव जाति को एक कर दिया है अत इस जमाने में एक ही धर्म, एक ही निष्ठा रहनी चाहिए और वह है—मानव-निष्ठा।

बंगाल की सरकार देखेगी। उससे बात करनी होगी।"

एक भाई ने बताया कि "हमारे यहाँ इस कैम्प में कोई राजनीतिक दल का प्रवेश नहीं है।"

विनोबा : "बड़ा भाग्य है। वे आ जायेंगे तो फिर तुम खत्म हो जाओगे।"

चर्चा आगे चली। विनोबाजी ने कहा, "जो बुराइयाँ हो गयी वह हो गयी। अब वह ईश्वर के पास पहुँच गयी। उसका बार-बार उच्चारण मत करो। बहुत हो गया है, उनको तुम दुहराओगे तो परिणाम बुरा आयेगा। चित्त पर और खराब असर होगा, हवा भी खराब होगी। इतिहास में ऐसा बहुत हुआ है।"

उनके मुखिया ने कहा, 'दुःख भूलना सम्भव नहीं है। हमें बहुत सहन करना पड़ा है।"

विनोबाजी : "मैं जानता हूँ, तुम्हारे चित्त में दुःख है। जो हिम्मत लेकर आप यहाँ आये हैं वही हिम्मत लेकर आप वहाँ जाइये। आप डरपोक बने रहेंगे तो आपके बच्चे भी डरपोक बनेंगे।"

उस दिन सभा में विनोबाजी ने कहा "बंगाल की कितनी दुर्दशा हो गयी है! एक जमाने में अंग्रेजों ने इसके दो टुकड़े करने का सोचा। उस वक्त इसके खिलाफ आन्दोलन हुआ तो वह नहीं हुए। दुबारा उसके दो टुकड़े हो गये। और 'वह बहुत खराब तरीके से हुआ—टुकड़े याने दो अलग देश ही हो गये। जनसंख्या बढ़ रही है। जमीन बहुत कम है। मैं तो बंगाल को निमंत्रण देता हूँ कि तुम सब भारत में फैल जाओ। आज हालत क्या है? एक जमाना था, जब बंगाल के दस-बारह नेता सारे भारत पर असर करते थे। आज ऐसा कौन है?

श्रीमती आशादेवी विनोबाजी के आदेश के अनुसार यात्रा में हैं। पूरे कैम्प की व्यवस्था आदि में वह लगी रहती हैं और इसके अलावा एक महत्त्वपूर्ण काम करती हैं—विनोबाजी के भाषणों का अनुवाद करने का। हर दो-तीन वाक्य के बाद 'बंगाली' भाषा में तर्जुमा होता है।

मजहबी इन्कलाब

आज मजहबों के भेदों के मारे हम परेशान हैं। इन भेदों ने जनता के टुकड़े कर दिया है। असल में इन मजहबों का असली धर्म से कोई वास्ता नहीं है। मैं किसी मजहब को माननेवाला नहीं हूँ। मैंने शुरू से ही किसी पंथ से अपना ताल्लुक नहीं रखा। यही सबब है कि मेरा दिमाग साफ है। वरना यह मुमकिन नहीं होता कि मैं "जय जगत्" का नारा देता। आज लोग "जय बुद्ध, जय महावीर, जय हिन्दू" आदि नारों में फँसे हुए हैं।

भगवान और भक्त के बीच पन्थ और मजहब की एजेन्सियाँ नहीं चाहिए। ये एजेन्सियाँ दिलों के टुकड़े करती हैं। ये बीचवाले मजहब हमें बचाने वाले नहीं, डुबाने वाले हैं। धर्म कोई व्यापार नहीं है कि जिसके बीच दलालों की जरूरत हो। ये सारे मजहब और पंथ दलालों का काम करते हैं। भगवान और भक्त का घाटा हो या नफा, इन दलालों को कमीशन जरूर मिलना चाहिए। नियरर दी चर्च, फारदर फ्रॉम गॉड" यानी चर्च से जितने नजदीक उतने ही भगवान् से दूर, यह अंग्रेजी कहावत बिलकुल सत्य है। इसलिए इन दलालों को छोड़ो और एजेंसियों के धोखे में मत आओ।

—विनोबा

स्त्रियाँ आत्मज्ञानी बनें

• विनोबा

[उनको काचन की सुश्री पद्मावहन पदयात्रा में थीं । उनके मन में 'ब्रह्मसूत्र' के अध्ययन करने की जिज्ञासा है । इसी सिलसिले में पद्मावहन के साथ प्रकट चिंतन करते हुए विनोबा ने जो कुछ कहा, उसे हम सुश्री कुसुम देशपाण्डे की डायरी से यहाँ दे रहे हैं । –सं०]

'ब्रह्मसूत्र' में चार योग्यताएँ बतायी हैं : (१) नित्यानित्य विवेक, (२) ऐहिक और पारलौकिक भोगों के बारे में वैराग्य । (३) शमदमादि साधन-संपत्ति और (४) मुमुक्षुत्व । ऐसी चार योग्यताएँ होंगी, तभी 'ब्रह्मसूत्र' का अध्ययन करना चाहिए । वैसे कॉलेज के विद्यार्थी 'दर्शन' (फिलसफी) विषय लेते हैं—आत्मा, परमात्मा, ब्रह्म आदि बातें करते हैं, पर उन्हें कोई ब्रह्म-जिज्ञासा नहीं होती है ।

गुरु का संपर्क शब्द के लिए नहीं, अनुभव के लिए है । गुरु के पास ज्ञान के लिए जाना है, ऐसी भावना रखेंगे तो सौदा होगा । गुरु-सेवा के लिए गुरु के पास जाना चाहिए । निस्वार्थ भाव से सेवा करनी चाहिए । निस्वार्थ भाव से दोनों को अपना अपना कर्तव्य करना चाहिए । *गुरु को सोचना चाहिए कि मेरे पास मेरा कुछ भी नहीं रहना चाहिए—जो कुछ ज्ञान है, वह सब शिष्य को* देकर उसे स्वतंत्र विचार करने लायक बनाना चाहिए । शिष्य को सोचना चाहिए कि मेरा स्वतन्त्र व्यक्तित्व ही न रहे, सब कुछ मुझमें विलीन हो जाय । अपने अंत-काल के समय भगवान् बुद्ध ने अपने शिष्यों को बुला कर कहा, "सच्चा बुद्ध तो वह होगा, जो अपने अंतःज्योति के समान काम करता है । मेरे पर या मेरे उपदेश पर निर्भर रहने की जरूरत नहीं है ।"

पूर्व-जन्म के सुकृत के कारण हरिकृपा हो गयी तो बेड़ापार ही है । हमारे संतों ने बहुत बड़ा काम किया है । जो वेदादि बड़े-बड़े ग्रन्थों में भरा पड़ा है, उसे उन्होंने लोकभाषा में लाया है । गाय खुद घास खाती है, पचाती है और बछड़े को दूध पिलाती है । गाय का काम संतों ने किया है ।

अभी आजकल मैं 'कुरान शरीफ' से कुछ सार संग्रह करने का काम कर रहा हूँ । कल्पना यह है कि सपूर्ण 'कुरान शरीफ' का अध्ययन करने के लिए हमें जितना समय देना पड़ता है, उससे कम समय हमारे बच्चों को लगे । उनकी शक्ति कम खर्च हो और नाहक बोझ सिर पर उठाना न पड़े, तो अच्छा ।

'ब्रह्मसूत्र' सीखना यह (अपने आप में) धर्म नहीं है । तुम्हारा धर्म तो आत्मज्ञान प्राप्त करने का होना चाहिये । 'ब्रह्मसूत्र' उसमें मदद-रूप होगा । यह ठीक है । कभी-कभी ग्रंथों की नाहक माया लग जाती है, ग्रंथों की भी आसक्ति हो जाती है । आत्मज्ञान की जरूरत है तो उसी की चर्चा करना । मुख्य बात यह है कि चित्त-शुद्धि होनी चाहिये । चित्त का मल जाना चाहिये । जैसे वैद्य की किताब में हजारों किस्म की दवाएँ होती हैं । पर हमें जिस दवा की जरूरत है, वही हम लेते हैं । वैसे ही चित्त में आलस्य, मत्सर, या अन्य कोई दोष हो उसे दूर करने के लिये जो साधना करना जरूरी है वह करें । उसके लिये योग्य गुरु चाहिये । सत्संग से दोषों का क्षय होता है । तुम्हें नदी पार करनी है । चार-पाँच नौकाएं सामने हैं । क्या उन सब पर सवार होगी ! एक में चढ़ कर ही पार करोगी ना ! वैसे ही कोई भी एक किताब ऐसी हो सकती है, जिससे तुम्हें सब कुछ मिल सकता है । हमें नदी पार करनी है, यही मुख्य चीज है । फलानी नौका में ही बैठना है ऐसा आग्रह तो नहीं होता है ।

वैसे ही मन में यह रखने की जरूरत नहीं है कि मैंने यह नहीं पढ़ा, वह नहीं पढ़ा । इससे मनुष्य नाहक पराधीन हो जाता है । हम अज्ञानी हैं, यह मानना ही एक बहुत बड़ा अज्ञान है । हमें जितनी जरूरत है, उतना ज्ञान है । मुझे घड़ा बनाना नहीं आता है, संगीत नहीं आता है यों कह कर मैं रोता बैठूँ तो कैसे चलेगा ? मुझे जो चीजें नहीं आती हैं, उनकी फेहरिस्त बनाने बैठूँ तो लोग तो मुझे ज्ञानी मानते हैं, लेकिन मैं 'अज्ञानी' ही साबित होऊँगा ! जैसे दुनिया भर के पैसे का संग्रह गलत है, वैसे ही दुनिया भर का ज्ञान का परिग्रह भी गलत है ।

हर चीज के, ज्ञान के पीछे दौड़ने के बजाय हम ऐसा मानें कि हम सब एक हैं । तुम्हारे पास ५० रु० हैं, तो मेरे पास अलग से ५० रु० की कोई जरूरत नहीं । जो चीज तेरे पास है, वह मेरे पास है ही । हम सब एक ध्येय पर चल रहे हैं । उसमें कोई एक विषय में प्रवीण है, कोई दूसरे । उसमें बिगड़ता नहीं है । हाँ, कुछ चीजें ऐसी हैं, जिनका ज्ञान सबको होना चाहिये, जैसे मुझे आरोग्य ज्ञान है और तुझे नहीं है तो मैं पहलवान बनूंगा और तू बीमार पड़ेगी । सार, तुम्हें भी आरोग्य-ज्ञान की जरूरत है । वैसे संस्कृत ज्ञान सबको होना चाहिये, यह जरूरी नहीं है । वैसे ही मुझे सुतार का काम आता है और तुझे बुनकाम आता है । मुझे वह नहीं आता है, तुझे सुतार का काम नहीं आता है, तो भी दोनों का चल सकता है । इसका नाम है वर्णधर्म ! कोई सुनार का काम करके समाज की सेवा करता है, कोई खेती से, कोई संगीत से ।

आत्मज्ञान यही सही 'ज्ञान' है, जिसकी सबको जरूरत है । वैसे आजकल लड़*कियाँ काफी पढ़ती हैं, नौकरियाँ करती हैं,* पर मुख्य तीन प्रकार का ज्ञान हरएक को होना चाहिये : (१) आरोग्य-ज्ञान, (२) नीतिज्ञान और (३) आत्मज्ञान ।

इन दिनों लोग कहते हैं कि बहनों को आगे आना चाहिये । लेकिन मैं दूसरे अर्थ *में कहता हूँ । बहनें फौज में, दफ्तर में,* सरकार में जायँ, इससे मेरा समाधान नहीं होता । मैं चाहता हूँ कि बहनों को आत्मज्ञानी बनना चाहिये ।

कुछ लोग मुझे कहते हैं, आप इन दिनों बहनों को ही ब्रह्मविद्या की ज्ञाता बनाना चाहते हैं । ऐसा क्यों ! मैंने कई बार इस पर कहा है । अभी तक बहनों को बाहर आने नहीं देते थे । बहनों को गृहस्थाश्रम ही करना चाहिये, ऐसी भावना आज तक थी । पुरुषों ने विषयासक्ति का साधन बहनों को बनाया है और वैराग्य का साधन भी उसी को माना है । कई बड़े-बड़े मुनि या योगी के बारे में सुनने में आता है कि वह 'स्त्री' का मुख देखते नहीं हैं । यह सारा संसार ही स्त्री के इर्दगिर्द इस तरह खड़ा कर दिया है । इसलिये वह 'स्त्री' ही वैराग्यवान, ब्रह्मचारिणी, संन्यासिनी बनेगी तो यह सब नहीं होगा । पर ऐसी स्त्री शंकराचार्य के समान प्रखर वैराग्यवान होनी चाहिये ।

कार्यकर्ताओं की ओर से

शांति-स्थापना की दिशा में एक प्रयत्न

आगरा की घनी बस्ती कटरा में एक जोगी के यहाँ शादी थी । उस वक्त ए गुंडा शराब पीकर आया और उत्पात मचाने लगा । सब लोग भाग गये । मात पिता किसी प्रकार लड़की को दूसरे मुहल्ले में ले गये और वहाँ शादी की रस्म दू दिन पूरी की । मुहल्ले में किसीने पुलिस को टेलीफोन किया । पुलिस ने उस वक्त उसको पकड़ लिया, किन्तु दूसरे दिन फिर छोड़ दिया, जिससे उसकी शरार खूब बढ़ गयी ।

मोहल्ले के प्रतिष्ठित नागरिक और नगर सर्वोदय सेवा-मंडल के सदस्य श्री नेमीचन्द्रजी जैन सर्राफ के मन में उस दिन से बड़ी छटपटाहट थी । उन्होंने इस समस्या के निराकरण के लिए एक सभा उसी आदमी के घर पर बुलायी, जिसके यहाँ शादी थी । उस दिन से उस मकान पर कोई नहीं रहता था । सभा में मोहल्ले के ३०-४० प्रतिष्ठित व्यक्तियों के आने की अपेक्षा थी, किन्तु हम दो-तीन लोगों के अलावा कोई नहीं आया, इतना आतंक था ! हम लोग दो-चार व्यक्तियों के यहाँ बाद में गये । सबने कहा कि पुलिस गुंडों को बढ़ावा देती है, उनसे धंधा करती है । समस्या कठिन थी । हम लोग भी यह कह कर चले आये कि "बिना बलिदान के समस्या का हल होना मुश्किल है ।"

दूसरे दिन नेमीचन्द्रजी ने उस शरारती व्यक्ति को बुलाया । वह आया, तब परिवार के अन्य सब लोगों को उन्होंने अलग भे दिया । वह व्यक्ति इन पर बहुत नारा था, जब से इसने सुना कि ये मेरे खिला बैठक करने का प्रयत्न कर रहे हैं, तभी छुरा मारने के लिए फिर रहा था । नेमीचन्द्रजी ने उससे कहा कि तू व्यर्थ परेशा होता है, यहाँ घर पर कोई व्यक्ति नहीं है तू मुझे मार सकता है । मैं कुछ नहीं कहूँगा किन्तु एक बात की प्रतिज्ञा करता हूँ, तू ज भी मुहल्ले में शराब पीकर घूमेगा, तेरा विरोध अवश्य करूँगा ।

फिर क्या था ! वह तुरन्त बदल गया और पैरों में पड़ कर माफी माँग कर कहने लगा कि आइन्दा शराब पीकर मुहल्ले में नहीं घूमूँगा । यह बात सब जगह फैल गयी और लोगों में नेमीचन्द्रजी के प्रति श्रद्धा बढ़ गयी ।

—चिम्मनलाल

गाँवों में सर्वसम्मति से चुनाव

आजकल गाँवों में पंचायतों के चुनाव में दलगत राजनीति के कारण झगड़े और हत्याओं तक की नौबत आ जाती है । जिला सर्वोदय-मंडल, मुरादाबाद की साप्ताहिक गोष्ठी में तय किया गया, हम लोगों को ऐसे स्थानों में जाकर शांति स्थापना करनी चाहिए । दूसरे रोज हम तीन साथी तहसील ठाकुरद्वारे के ग्रामों में चल दिये । हमारे पड़ावों में एक ऐसा गाँव आया, जिसमें तीन उम्मीदवार खड़े थे और एक-दूसरे के खिलाफ आपस नाजायज साजिशें कर रहे थे । हमने सब गाँववालों को एकत्रित करके पक्षरहित सर्वसम्मत चुनाव की महत्ता समझायी । गाँववालों को यह बात ठीक लगी और उन्होंने निर्विरोध चुनाव करने का आश्वासन दिया और कहा, आप लोग दूसरे गाँवों में जा सकते हैं । हम लोग सब शांति से चुनाव कर लेंगे । अन्य देहातों में भी इसी प्रकार के मीठे अनुभव आये ।

यदि हम लोग उम्मीदवारों के खड़ा होने के पहले गाँवों में इस प्रकार विचार समझाने के लिये निकलते तो मुमकिन था, अधिकतर स्थानों में सर्वसम्मत चुनाव होते ।

शांति-सेना कार्यालय
हसनपुर, मुरादाबाद

—लखीचन्द्र

अशोभनीय पोस्टरों के खिलाफ बढ़ते हुए जनमत का प्रवाह

लोक-रुचि को गड्ढे में ले जाने का काम बंद हो

विज्ञापनों में स्त्रियों के चित्रों के दुरुपयोग का विषय सचमुच विचारणीय है। इस मामले में बहुत सी स्त्रियों की सभाओं ने, मंडलों ने और महिला-परिषद् जैसी अखिल भारतीय संस्था ने भी विरोध किया है, फिर भी इन सबका कुछ भी असर हुआ नजर नहीं आता, बल्कि स्त्रियों की तस्वीरवाले विज्ञापन बढ़ते जाते हैं, ऐसा दिखाई देता है।

व्यापारी लोग अपने माल को लोकप्रिय बनाने के लिए तरह-तरह के विज्ञापन देते हैं। विज्ञापन करना शायद बुरा न हो, लेकिन बुरी बात यह है कि इन विज्ञापनों में १०० में से ९९ में स्त्री की तस्वीर रखी जाती है! स्त्री की देहाकृति को इतनी सस्ती किसलिए बनाया जा रहा है? विज्ञापन कपड़ों का हो या मोटर का, मंजन का हो या दवा का, बीमे का हो या फर्नीचर का, मिठाई का हो या फाउन्टेनपेन की स्याही का, गलीचे का हो या लुहार काम के औजारों का, सिगरेट का हो या साबुन का, तेल का हो या घी का, साइकिल का हो या बिस्कुट का, हवाई जहाज की यात्रा का हो या चाय-काफी का, बंगले का हो या रबर टायर का, रंग का हो या पालिश का, जुलाब का हो या बिजली के सामान का हो, उनमें तस्वीर तो सबमें यौवन-सम्पन्न स्त्री की देखने में आती है! इस वृत्ति के पीछे आज के युग की प्रजा का जो मानस है, वह स्पष्ट नजर आता है।

व्यापारी या उत्पादक लोग अपनी चीजें बाजार में चलाने के लिए विज्ञापन में स्त्री की तस्वीरों का उपयोग करते हैं, यह तो ठीक है, पर जीवन-बीमा या अल्प-बचत योजना जैसी प्रतिष्ठित सरकारी संस्थाएँ भी स्त्रियों के चित्र प्रदर्शित करके जन-समूह को अपनी ओर आकर्षित करने का प्रयत्न करती हैं, यह कितनी बेहूदी बात है?

क्या स्त्रियों के देह के सिवा लोगों को आकर्षित करने के लिए लोगों के पास और कुछ नहीं है?

सिनेमाघरों के ऊपर जो चित्र प्रदर्शित किये जाते हैं, वे तो अक्सर बहुत ही आपत्तिजनक होते हैं। आधा शरीर नंगा दिखाई दे, इस प्रकार से कपड़े पहने हुए अभिनेत्रियों की बैठी, खड़ी या सोयी हुई अवस्थावाले जो चित्र लगाये जाते हैं, उनको देखने के लिए अच्छी व खासी भीड़ इकट्ठी हो जाती है। उस भीड़ में जब कोमलवय बालकों को देखते हैं, तब हर संस्कारी व्यक्ति को शर्माना पड़ता है। इस प्रकार के अर्धनग्न शरीर वाले नारी के नंगे चित्रों को देखते हुए ये बालक क्या विचार करते होंगे?

सिनेमा-पोस्टरों की बातचीत के सिलसिले में एक भाई ने जो बात कही, वह मुझे बहुत तथ्य वाली लगी। उन्होंने कहा कि ऐसे पोस्टर देखने वाले तो पुरुष होते हैं, परन्तु ऐसे बेढंगे वस्त्र पहन कर तस्वीरें खिंचाने वाली अभिनेत्रियाँ तो स्त्री-वर्ग की ही होती हैं न? इस प्रकार तस्वीरें खिंचवाने में, अपने शरीर को अर्धनग्न रूप में मानव-समुदाय के समक्ष पेश करने में स्त्रियाँ क्या स्वयं विरोध नहीं करेंगी? इस प्रकार के चित्र खिंचवाने वाली स्त्रियाँ स्वयं अगर एक आवाज से इन्कार कर दें तो ऐसे शर्मनाक पोस्टर अपने आप बंद हो सकते हैं।

कलाकारों को तो लोकमानस को, लोक-रुचि को उन्नति के मार्ग पर ले जाने का काम करना चाहिए। इसकी अपेक्षा ऐसे पोस्टरों के लिए तस्वीरें खिंचा कर क्या ये अभिनेत्रियाँ लोक-रुचि को अवनति के गड्ढे में खींच ले जाने में मदद नहीं करती?

—विनोदिनी नीलकंठ

['गुजरात समाचार' से]

•

अश्लील चलचित्रों के विरुद्ध लोकमत तैयार करना जरूरी

पटना में "सामाजिक जीवन पर चलचित्रों का प्रभाव," इस विषय हुए पर एक विचार-गोष्ठी में अध्यक्ष पद से भाषण करते हुए भारत सरकार की विदेश उपमंत्री श्रीमती लक्ष्मी मेनन ने चलचित्रों के अशोभनीय पक्ष के विरुद्ध प्रबल लोकमत तैयार करने पर बल दिया।

श्रीमती मेनन ने कहा कि चलचित्र निर्माताओं को चिन्ता का जनमानस पर कैसा प्रभाव पड़ता है, इसका ध्यान नहीं रहता। वे केवल अधिक-से अधिक लाभ की चिंता में ही रहते हैं। किन्तु यदि जनता अश्लील चित्रों का जोरदार विरोध करे, तो वे वैसे चित्र बनाना बन्द कर देंगे।

विचार-गोष्ठी का आयोजन, स्थानीय श्रमजीवी महिला संघ के तत्वावधान में इंडियन मैडिकल एसोसिएशन हाल में किया गया था। गोष्ठी में स्वीकृत प्रस्ताव द्वारा चलचित्रों में भारतीय नारी की भद्दी पोशाक तथा मुद्रा में दिखाये जाने का विरोध किया गया था तथा नगरपालिकाओं से यह आग्रह किया गया कि वे सार्वजनिक स्थानों में भद्दे सिनेमा के पोस्टरों को न लगाने दें। प्रस्ताव में फिल्म सेंसर-बोर्ड से आग्रह किया गया है कि वह अन्य फिल्म-निर्माताओं पर इस प्रकार का प्रभाव डाले कि वे अच्छे फिल्म तैयार करें।

(दैनिक 'हिन्दुस्तान' से)

•

स्त्री-सौंदर्य का दुरुपयोग रोकिये!

आधुनिक युग में स्त्री सम्मान की भावना बढ़ती जाती है। स्त्री देवी है, शक्ति है और सम्माननीय है, ऐसी मान्यता आज के पुरुषों में फैलती जा रही है। स्त्रियों को भी पुरुषों में जितने अधिकार मिलने चाहिए, ऐसी भावना भी उनमें जागृत होती जा रही है। यह सब होते हुए भी एक मामले में स्त्रियों का जिस प्रकार से अपमान हो रहा है, उसे रोकने के लिए क्यों कोई प्रयास नहीं करता, यह आश्चर्यजनक लगता है।

आज हम कोई भी चीज खरीदने जायें तो उसकी पैकिंग के ऊपर स्त्री का फोटो मिलेगा। अखबारों में चाहे जिस चीज के विज्ञापन में भी स्त्रियों के चित्र होते हैं। चित्र हों तब भी ठीक, परन्तु पाउडर के डिब्बे जैसी चीजों के ऊपर स्त्रियों के अर्धनग्न चित्र होते हैं।

स्त्री के सौंदर्य का यह दुरुपयोग क्या स्त्रीत्व का अपमान नहीं है? क्या इस बारे में कुछ नहीं हो सकता? क्या स्त्री के सौंदर्य का बेदरी से लगा कर बच्चे के विज्ञापन तक किसी भी चीज में उपयोग हो सकता है? स्त्री के सौन्दर्य का ऐसा बेढंगा और बेहूदा उपयोग बंद करने के लिए क्या कोई उपाय नहीं हो सकता?

—ज्योत्स्ना रजनीकांत मेहता

[दैनिक 'गुजरात समाचार' से]

तन्द्रा को त्याग, उठ कुछ तो कर ले करनी

यह है कलंक या मान ध्यान से देखो।
क्या यही नारी सम्मान तनिक तो सोचो॥

यह चित्रपटों पर चित्र रंगे जो जाते,
कुत्सित कुवासना को उभार कर लाते।
वह मातृ-जाति अपमान तुम्हारा ही है,
यह अर्ध नग्न-सा चित्र तुम्हारा ही है॥

यह क्रूर करों में जकड़ी अबला देखो
यह खड़ी उभारे वक्ष नग्न-सी देखो।

यह बहन-भाई, माँ-बेटी चित्रपटों में,
यह पिता-पुत्र सह्-मित्र अनेक ढंगों में।
मनरंजन इनका होता शिक्षित होते,
या कि कुवासना से परिपूरित होते॥

यह बीज-वपन कर रहा अनैतिकता का।
यह सिखलाता है पाठ असमानता का॥

किस तरह बजाना सीटी आँख नचाना,
कब कहाँ और क्यों मुस्का कर इठलाना।
यह फैशन की धूम या कि बरबादी
हो रहे हाय अपने विनाश के आदी॥

ओ मातृ-शक्ति अब जाग, त्याग नादानी।
तू तो सबला है जाग जाग मर्दानी॥

माँ तूने ही तो गौतम शंकर जाये,
तेरी ही कोख ने गांधी लाल सजाये।
तू ही तो है माँ सन्त-भक्त की जननी,
तन्द्रा को त्याग, उठ कुछ तो कर ले करनी॥

—प्रह्लाद नारायण राजा

बिहार की चिट्ठी

गत २५ दिसम्बर '६० से ९ फरवरी '६१ तक संत विनोबाजी की पदयात्रा बिहार में हुई। आपने २५ दिसम्बर को शाहाबाद जिले के अंतर्गत दुर्गावती गांव के समीप कर्मनाशा नदी को पार कर बिहार की सीमा में प्रवेश किया और इस प्रदेश के शाहाबाद, गया, मुंगेर, भागलपुर तथा पूर्णियां जिलों के कुल ४७ पडावों से गुजरते हुए १० फरवरी '६१ को बिहार के अंतिम पड़ाव किशनगंज (पूर्णियां) से विदा हुए। इस डेढ़ महीनों में लगभग ४७५ मील की पदयात्रा हुई।

विनोबाजी की इस यात्रा से बिहार को एक नया उत्साह, नया प्रकाश और नया मंत्र मिला। हर पडाव पर जनता की अपार भीड उनके दर्शन करने तथा उनके विचारों को सुनने के लिए इकट्ठी होती थी। ग्रामीण क्षेत्रों के पडाव पर औसत कम-से-कम दस हजार और नागरिक क्षेत्रों के पडाव पर २० से लेकर ४० हजार तक लोगों की उपस्थिति हुई। इस प्रकार कुल मिला कर लगभग छः लाख लोगों ने विभिन्न पडावों पर उपस्थित होकर शान्तिपूर्वक, श्रद्धापूर्वक एवं प्रेमपूर्वक विनोबाजी के प्रवचन सुने। एकाध जगह को छोड कर कहीं भी कोई अशांति या अव्यवस्था नहीं हुई।

विनोबाजी की यात्रा का प्रबन्ध भार यद्यपि बिहार सर्वोदय-मंडल पर था, तथापि अन्य रचनात्मक संस्थाओं—विशेषकर गांधी स्मारक निधि बिहार शाखा, बिहार भूदान-यज्ञ कमिटी, बिहार खादी-ग्रामोद्योग संघ, महिला चरखा-समिति तथा मार्ग में पडने वाली अनेक छोटी-बडी रचनात्मक संस्थाओं का सहयोग प्राप्त हुआ। राजनीतिक संस्थाओं में कांग्रेस एवं प्रजा-समाजवादी पक्षों का हार्दिक सहयोग प्राप्त हुआ। कहीं-कहीं सोशलिस्ट पार्टी (लोहिया दल), स्वतंत्र पार्टी और कम्युनिस्ट पार्टी का भी सहयोग मिला। बिहार सरकार के अधिकारियों तथा ग्राम-पंचायतों के मुखियों आदि का भी सहयोग प्राप्त हुआ। बिहार के राज्यपाल डा० जाकिर हुसैन बिहार-प्रदेश के पांचवें दिन ही सासाराम पडाव पर आकर विनोबाजी से मिले। राजस्व-मन्त्री (अब मुख्य मंत्री) प० विनोदानन्द झा अनेक पडावों पर अपने राजस्व अधिकारियों के साथ पहुँच कर विनोबाजी से मिले। सरकार के स्थानीय कर्मचारियों का पूरा सहयोग हर पडाव पर हासिल हुआ। मार्ग में पड़ने वाले विद्यालयों के शिक्षकों एवं छात्रों का सहयोग एवं समर्थन भी प्राप्त हुआ।

विनोबाजी का बिहार में यह आगमन लगभग छः साल के बाद हुआ था। पिछली बार २७ महीने यहीं रह कर उन्होंने अहिंसक क्रांति का विचार बिहार के गांव-गांव में घूम-घूम कर प्रचारित किया था। उस समय उन्होंने इस प्रदेश से भूमिहीनों के लिए ३२ लाख एकड भूमि की मांग की थी और बिहार की विभिन्न रचनात्मक एवं राजनीतिक संस्थाओं ने इतनी भूमि प्राप्त करने का संकल्प भी किया था। विनोबाजी की प्रेरणा से लगभग २१ लाख एकड भूमि उसी समय यहां प्राप्त हो गयी थी। उनके बिहार से जाने के बाद भूमि-प्राप्ति के बजाय प्राप्त भूमि के वितरण-कार्य में ही शक्ति लगायी गयी, जिसके फलस्वरूप करीब ढाई-पौने तीन लाख एकड़ भूमि का बंटवारा भूमिहीन परिवारों के बीच हुआ। लेकिन ३२ लाख एकड़ भूमि प्राप्त करने का संकल्प अभी अधूरा ही रहा था। बिहार में प्रवेश करते ही विनोबाजी ने यहां की जनता एवं कार्यकर्ताओं को उस संकल्प की याद दिलायी और उसकी पूर्ति के लिए हर भूमिवान से 'बीघे में कट्ठा' (यानी कुल जमीन का बीसवां हिस्सा) प्राप्त करने का एक नया मंत्र घोषित किया। बीघे में कट्ठा जमीन के साथ विनोबाजी तीन शर्तें रखी हैं:

(१) सब जमीन के मालिक दान दें।

(२) जोत की अच्छी जमीन दें और

(३) दाता स्वयं अपने हाथ से भूमिहीनों में बांटें।

विनोबाजी ने पहले पहल इस नये मन्त्र का उच्चारण बिहार के प्रथम दुर्गावती पडाव पर किया और देखते-देखते यह मंत्र बिहार की हवा में परिव्याप्त हो गया है। कम-से-कम जिन पांच जिलों से विनोबाजी गुजरे हैं, उन जिलों के अधिकांश गांव एवं नगर इस नये मंत्र के उद्घोष से गूंज उठे हैं, और वह दिन दूर नहीं है, जब बिहार का कोना-कोना विनोबाजी के इस नये उद्घोष से प्रतिध्वनित हो उठेगा।

दुर्गावती पडाव पर जब विनोबाजी ने 'बीघे में कट्ठे' की बात शुरू की, तो बिहार के कार्यकर्ताओं को थोडा आश्चर्य हुआ, क्योंकि अपेक्षा यह कि इस यात्रा में बाबा शांति-सेना के कार्यक्रम पर ही जोर देंगे। लेकिन बिहार की भूमि पर कदम रखते ही "भूदानी बाबा" ने पुनः "भूदान-मंत्र" की जय शुरू कर दी और बिहार वालों से कहा कि '३२ लाख एकड का अपना मूल संकल्प पूरा करो।' बिहार के कार्यकर्ताओं ने श्रद्धापूर्वक इस मंत्र को स्वीकार किया और सर्वप्रथम विनोबाजी के मार्ग में पडने वाले गांवों से बीघे में कट्ठा प्राप्त करने का प्रयास किया गया। समय बहुत थोडा था। फिर भी जो प्रयास हुए, उनके परिणामस्वरूप दुर्गावती से किशनगंज तक के पडावों पर कुल मिला कर चौदह हजार कट्ठा जमीन प्राप्त हुई और यह उम्मीद पैदा हुई कि अगर प्रत्येक भूमिवान के पास पहुँचा जाय, तो बीघे में कट्ठे के हिसाब से पूरे बिहार से १०-१२ लाख "अच्छी" जमीन प्राप्त करना असंभव नहीं है।

इस यात्रा में विनोबाजी ने सबसे अधिक जोर बीघे में कट्ठा वाले कार्यक्रम पर ही डाला। लेकिन और भी दो बातें उन्होंने बिहार की जनता और कार्यकर्ताओं के सामने रखी। उन्होंने बिहारवालों से कहा कि राष्ट्रपति राजेन्द्र बाबू की जन्मतिथि आगामी ३ दिसम्बर तक बिहार के हर भूमिवान से (जिन्होंने पहले छठा हिस्सा दिया है, उनसे भी) बीघे के कट्ठे के हिसाब से जमीन प्राप्त की जाय, और साथ ही उस तिथि तक बिहार के हर घर में सर्वोदय-पात्र (अथवा शांति-पात्र) की स्थापना की जाय। इसके अलावा हर दस हजार की आबादी पर एक शांति-सैनिक के हिसाब से बिहार भर में कुछ ४००० शांति-सैनिकों की मांग भी उन्होंने की। बिहार के नौजवानों के समक्ष विनोबाजी ने अशोभनीय विज्ञापनों के निराकरण का कार्यक्रम रखा और मांग की कि दीपावली तक बिहार तथा भारत भर की दीवारें (ऐसे अशोभनीय विज्ञापनों से) "साफ" कर दी जायें। बिहार में यह कार्यक्रम उन्होंने सर्वोदय युवक-सम्मेलन के कार्यकर्ताओं को सौंपा है और यह अपेक्षा प्रकट की है कि बिहार के नौजवानों की पूरी शक्ति इस कार्यक्रम में लगेगी। उनकी प्रेरणा से युवक-संमेलन के कार्यकर्ताओं ने उनके यात्रा-मार्ग में पडने वाले लगभग एक दर्जन नगरों में अशोभनीय विज्ञापन विरोधी अभियान शुरू कर दिया है, जिसके पहले कदम के तौर पर उन नगरों में सज्जनों की "शुभाशुभ विज्ञापन समितियाँ" गठित की जा चुकी हैं।

इस अवधि में शान्ति-सैनिकों की भरती की दिशा में भी प्रगति तेजी से हुई है। विनोबाजी के बिहार-प्रवेश के पूर्व यहां लगभग ३०० शान्ति-सैनिक थे। उनके बिहार छोडने के समय यह संख्या ८०० तक पहुँच चुकी थी।

विनोबाजी की पदयात्रा के क्रम में उन्हें स्थानीय जनता, जन-संस्थाओं, विद्यालयों के शिक्षकों, छात्रों, युवकों और युवक-संगठनों तथा औद्योगिक मजदूरों की ओर से कुल मिला कर करीब १ लाख रुपये, जिनमें अधिकांश सर्वोदय-कार्य के निमित्त और करीब ९ हजार रुपये आसाम के बाढ़-पीड़ितों के सहायतार्थ प्राप्त हुए।

विनोबाजी की पदयात्रा के दरमियान विभिन्न पडावों पर कई महत्त्वपूर्ण आयोजन उनकी उपस्थिति में हुए।

९ जनवरी को गया नगर में बिहार-प्रदेश के सर्वोदय-कार्यकर्ताओं का सम्मेलन विनोबाजी की उपस्थिति में हुआ, जिसमें कार्यकर्ताओं ने बीघे में कट्ठा वाले कार्यक्रम में अपना विश्वास प्रकट किया। विनोबाजी ने अपने प्रेरक भाषण में ३२ लाख एकड़ के "सामूहिक एवं निर्माण" संकल्प की पूर्ति पर जोर दिया और कार्यकर्ताओं से निवेदन किया कि वे उसे पूरा करने में पूरी शक्ति लगावें। इस अवसर पर कार्यकर्ताओं ने अपनी-अपनी जमीन का बीसवां हिस्सा देने का संकल्प भी घोषित किया।

१० जनवरी को श्री जयप्रकाश नारायण सोखोदेवरा स्थित आश्रम में शान्ति-सेना का एक भव्य प्रदर्शन हुआ, जिसमें श्री जयप्रकाशजी ने उपस्थित शान्ति-सैनिकों को पीले रूमाल और 'शान्ति-सैनिक' के पीले बिल्ले भेंट किये। उन्होंने खुद भी अपने सिर पर पीला रूमाल और अपनी बांह पर पीला बिल्ला लगाया। उसी दिन संध्या में पीली वर्दी वाले शान्ति-सैनिकों का एक मार्च विनोबाजी के साथ सोखोदेवरा आश्रम से तीन मील दूर कपसिया कुष्ठ-सेवाश्रम तक हुआ। श्री जयप्रकाशजी स्वयं इस 'मार्च' की अगुवाई पर रहे थे।

२०-२१ जनवरी को धमधारती, खादीग्राम में द्वितीय बिहार प्रादेशिक ग्रामदान-सम्मेलन विनोबाजी की उपस्थिति में हुआ, जिसमें लगभग ८० ग्रामदानी एवं ४० ग्रामसंकल्पी गांवों के करीब २०० प्रतिनिधि एवं कार्यकर्ता शामिल हुए। इसी अवसर पर मुंगेर जिला खादी ग्रामोद्योग संघ का उद्घाटन भी विनोबाजी के द्वारा हुआ। २२ जनवरी को रहमीपुर पडाव पर गांधी स्मारक निधि, बिहार शाखा के कार्यकर्ताओं का और २६ जनवरी को सुलतानगंज (भागलपुर) पड़ाव पर बिहार राज्य के बुनियादी शिक्षकों एवं अधिकारियों का सम्मेलन हुआ। १ फरवरी को सर्वोदय-आश्रम, बलिया (पूर्णियां) का तृतीय वार्षिक समारोह और ४ फरवरी को सर्वोदय आश्रम, रानीपतरा (पूर्णियां) का आठवां वार्षिक समारोह विनोबाजी की उपस्थिति में संपन्न हुआ। पहले की अध्यक्षता श्री धीरेन्द्रभाई मजूमदार ने और दूसरे की श्री जयप्रकाश नारायण ने की।

४ फरवरी को रानीपतरा में ही बिहार के विभिन्न राजनीतिक पक्षों के प्रतिनिधियों की एक बैठक विनोबाजी तथा श्री जयप्रकाशजी की उपस्थिति में हुई। बैठक में कांग्रेस पक्ष की ओर से प्रांतीय कांग्रेस मंत्री श्री कारीनारायण चौधरी और श्री शत्रुघ्नशरण सिंह तथा प्रजा-समाजवादी पक्ष की ओर से श्री बसावन सिंह (अध्यक्ष, बिहार पी एस पी.) और श्री कस्तनलाल कपूर एम. एल ए शामिल हुए। बिहार सरकार के दो मंत्री, कुमार गंगानंद सिंह (अब भूतपूर्व) और श्री भोला पासवान तथा भारत सेवक समाज के एक प्रतिनिधि भी इस अवसर पर उपस्थित थे। बैठक में विनोबाजी के भाषण के बाद कांग्रेस की ओर से श्री शत्रुघ्नशरण सिंह तथा पी एस पी. की ओर से श्री बसावन सिंह ने ३२ लाख एकड़ के संकल्प की पूर्ति के लिए हार्दिक सहयोग देने का वचन दिया।

९ फरवरी को अन्तिम-विसर्जन पड़ाव पर बिहार के शान्ति-सैनिकों की

एक रैली श्रीमती आशादेवी आर्यनायकम् की अध्यक्षता में हुई जिसमें भाषण करते हुए विनोबाजी ने विश्वशान्ति-सेना की स्थापना पर जोर डाला।

बिहार के अन्तिम पड़ाव (किशनगंज) पर विनोबा को विदाई देने के लिए बिहार के स्थानापन्न मुख्य मंत्री श्री दीपनारायण सिंह, कल्याण विभाग के मंत्री श्री भोला पासवान तथा कांग्रेस एवं प्रजा-समाजवादी पक्षों के प्रतिनिधि उपस्थित थे। बिहार की रचनात्मक संस्थाओं की ओर से बिहार सर्वोदय-मंडल के संयोजक श्री श्यामसुन्दर प्रसाद तथा बिहार भूदान-यज्ञ कमेटी के मंत्री श्री वैद्यनाथ प्रसाद चौधरी ने विनोबाजी को विदाई देते हुए उनके कार्यक्रम को पूरा करने का आश्वासन दिया।

१० फरवरी को विनोबाजी बिहार से विदा हुए और पश्चिम बंगाल की सीमा में प्रविष्ट हुए।

—सच्चिदानन्द

कुमारप्पा-स्मारक निधि

[३० दिसम्बर के 'भूदान-यज्ञ' में कुमारप्पा-स्मारक निधि के लिए पाठकों के नाम अपील निकालते हुए हमने सुझाया था कि श्री कुमारप्पाजी के जन्म-दिवस, ४ जनवरी से उनके निधन दिवस, ३० जनवरी तक कुमारप्पा-स्मारक निधि के लिए निधि संग्रह करने में विशेष शक्ति लगायी जाय। हर सप्ताह हमारे पास निधि के लिए छोटी-बड़ी रकमें आ रही हैं। हालाँ कि ता० ३० जनवरी बीत चुकी, पर संग्रह का काम अभी जारी है, यह उचित ही है। जिन पाठकों तथा कार्यकर्ताओं ने अभी तक अपनी तथा अपने मित्रों से प्राप्त करके रकमें न भेजी हों, वे अब भी भिजवाने की कृपा करें। फिलहाल 'भूदान यज्ञ' में दाताओं की सूची प्रकाशित की जाती रहेगी। —सं०]

	रु०-न०पै०
गत अंक में प्राप्ति-स्वीकार कुल	६०,६८८-८३
काशी में २ मार्च तक प्राप्त रकम	रु०-न०पै०
खादी-ग्रामोद्योग कमीशन, मारवाड द्वारा संकलित	१४८-१०
खादी-ग्रामोद्योग प्रयोग समिति, अहमदाबाद द्वारा संकलित	१२१-२५
खादी-ग्रामोद्योग विद्यालय, मधुबनी, दरभंगा द्वारा संकलित	५०-००
श्री कंकणालपति रामानुजय्य, मोपरु, तेनाली (गुंटूर)	२५-००
श्री दुर्गादत्त पांडे, लोको फोरमैन, फतेहगढ़	११-००
श्री कुसुम और बसंतराव नारगोलकर, कैनाड (महाराष्ट्र)	१०-००
श्री मगनराम तोषनीवाल, भीलवाडा (राजस्थान)	५-००
श्री सत्यव्रत सिंह, सहायक शिक्षक, भिनगा, बहराइच	५-००
श्री पी० वेंकटरमन रेड्डी, जी० एस० पेडुलापुल्ले (आंध्र)	२-२२
श्री शिवकुमार पांडे, बीघापुर, उन्नाव (उ० प्र०)	२-००
कस्तूरबा महिला उत्थान लक्ष्मी आश्रम, कौसानी द्वारा संकलित	६-१३
श्री कन्हैयालाल ह० ठकार, भावनगर (सौराष्ट्र)	१-००
श्री चन्द्रशेखर चौधरी, आश्रम, शेरपुर, गया (बिहार)	१-००
श्री भीमसेन सुदरसेन, मार्फत श्री दाताराम मक्कड, कलकत्ता	५१-००
श्री जगमोहन दास लोहारीवाला ,, ,,	११-००
श्री आसाम स्टोर ,, ,,	५-००
श्री शारदाना ट्रेडिंग कंपनी ,, ,,	५-००
श्री नारायणदासजी सिंघी ,, ,,	५-००
श्री कीर्तनभाई सिंघी ,, ,,	५-००
श्री महावीरप्रसाद लोहारीवाला ,, ,,	५-००
श्री वैजनाथजी ,, ,,	२-००
श्री रामजी दुबे लोहारीवाला ,, ,,	२-००
श्री इन्द्रसेन श्यामलाल ,, ,,	२-००
	४८१-१०
कुल रकम	६१,१६९-९३

विनोबाजी ने बिहार छोड़ते समय बिहारवासियों को चार काम करने का सुझाव दिया :—

(१) 'बीघे में कट्ठा' के हिसाब से हरएक से अच्छी भूमि की भूदान-प्राप्ति और उन्हीं की इच्छानुसार भूमिहीनों में वितरण करा देना।

(२) पहले दान में प्राप्त भूमि का वितरण करना।

(३) हरएक के घर में सर्वोदय-पात्र हों।

(४) हरएक पंचायत-क्षेत्र में एक-एक शांति-सैनिक हो।

कानपुर के आर्यनगर क्षेत्र में

नागरिक शक्ति के विकास का प्रयोग

कानपुर नगर में गांधी विचार केन्द्र की ओर से आर्यनगर क्षेत्र में नागरिक-शक्ति के विकास और प्रेम शक्ति के निर्माण की दृष्टि से गत छह महीनों से एक यशस्वी प्रयोग चल रहा है। इस अवधि में घर घर से स्नेह-संपर्क स्थापित कर सर्वोदय-पात्र एवं शांति-सेना के कार्य पर जोर दिया गया।

सर्वोदय के जीवन मूल्यों को प्रत्यक्ष व्यवहार में लाने के लिये २१ से २३ अक्तूबर तक नगर के सर्वोदय कार्यकर्ता भाई-बहनों का सहजीवन-शिविर आयोजित किया गया।

अक्तूबर '६० से जनवरी '६१ तक १५५ सर्वोदय-पात्र रखे गये। इनसे इन चार महीनों में अनाज और नकद रूप में कुल १७१ रु० ५१ नये पैसे मिले।

इस काम को चलाने के लिए क्षेत्र के सर्वोदय-मित्रों का एक मित्र-मण्डल बनाया गया। मण्डल सामूहिक नैतिक शक्ति जगाने के लिए प्रयत्नशील है। पारिवारिक भावना के विकास के लिए क्षेत्र के किसी भी व्यक्ति के यहाँ विवाह में भेंट के तौर पर 'गीता-प्रवचन' आदि देते हैं।

स्त्री शक्ति को जगाने के लिए एक महिला सर्वोदय-मण्डल की स्थापना हुई है, जिसकी साप्ताहिक बैठक हर गुरुवार को होती है।

विचार प्रचार की दृष्टि से ४१ परिवारों में भूदान पत्र-पत्रिकाएँ नियमित रूप से पहुँचती हैं। १२० परिवारों के लगभग १७० व्यक्ति गांधी विचार केन्द्र के पुस्तकालय से लाभ उठाते रहते हैं। इस अवधि में लगभग १४०० पुस्तकों का अध्ययन हुआ।

सर्वोदय-क्षेत्र बनाने के लिए "स्वच्छ दीवार, स्वच्छ विचार" अभियान पर जोर दिया जा रहा है। साथ ही आपसी मन-मुटाव, झगड़े और मुकदमेबाजी न हो, इसकी कोशिश की जा रही है। बच्चे, बूढ़े, बीमार और बेसहाओं की सेवा, चिकित्सा आदि पहुँचाने का प्रयत्न चल रहा है।

इस प्रयोग के कारण यहाँ के नागरिकों के मन में सर्वोदय के प्रति निष्ठा बढ़ रही है। सर्वोदय के मूल्यों को अपनाने की इस क्षेत्र में काफी संभावनाएँ दीखती हैं।

शांति-सैनिक कार्यकर्ता श्री ओमप्रकाश चतुर्वेदी इस क्षेत्र में पूरा समय देंगे।

—विनय अवस्थी

पाक्षिक विवरण : १५-२-'६१ तक

चम्बल घाटी की डायरी

● चम्बल घाटी शांति-समिति के अध्यक्ष स्वामी कृष्णस्वरूप, श्री बाबूलाल मित्तल, श्री महावीरसिंह और श्री भागवतसिंह ४ फरवरी, '६१ को उत्तरप्रदेश के गृहमंत्री चौ० चरणसिंह से चम्बल घाटी-समस्या के बारे में चर्चा करने के लिए अलीगढ़ में मिले।

● भिण्ड जिले के ग्राम रामपुरा में भिण्ड के वकील श्री रामनारायण गुप्ता के भाई का अपहरण लोकमन द्वारा बात कर पुलिस ने जो अभियोग लगाया था, उसमें आत्मसमर्पण के सामाजिक महत्त्व को पहचानते हुए श्री गुप्ता ने बचाव पक्ष की ओर से निःशुल्क पैरवी करने का अपना अभिभावक-पत्र भर दिया तो पुलिस ने मुकदमा ही उठा लिया!

● ९ फरवरी, '६१ को श्री जयप्रकाश नारायण इटावा होते हुए भिण्ड पधारे। आपने भिण्ड जनपद के ग्राम फूफ में स्व० चन्द्रशेखर आजाद उच्चतर माध्यमिक विद्यालय का शिलान्यास किया।

● भिण्ड में चम्बल घाटी शांति-समिति के कार्यकर्ताओं, क्षेत्र के सभी दलों के सार्वजनिक कार्यकर्ताओं, भिण्ड डिग्री कालेज के छात्रों और सार्वजनिक सभा में भाषण किये।

● चम्बल के बेहड़ प्रज्ञाचक्षु स्वामी शरणानन्दजी की तपोभूमि रहे हैं। चम्बल के पावन तट पर उन्होंने वर्षों तक साधना की है। कई वर्षों बाद उनके इस क्षेत्र में पुनः आगमन पर चम्बल घाटी उपकार्यालय की ओर से बाह में और मानव सेवा संघ की ओर से भिण्ड में उनके भाषण हुए।

● उपकार्यालय बाह के निकटवर्ती गाँव चौरगढ़ार, सामरमऊ, मदेपुरा, पीछापुरा, पहाड़पुरा और वेदपुरा में शांति-पात्र रखे गये हैं, जिनका अनाज नियमित बाह कार्यालय पर आता रहता है। गत जनवरी मास में पचास रुपये का अन्न एकत्रित हुआ।

● मुरैना जिले की अम्बाह तहसील में शांति-सैनिक टोली घूम रही है, जो गाँव-गाँव में शांति-मित्र बना कर क्षेत्रीय शांति-सम्मेलनों की संयोजना कर रही है।

—गुरुशरण

—प्रादेशिक सर्वोदय-मंडल, बटाला (गुरदासपुर-पंजाब) ने ३५६ सर्वोदय-पात्रों से १११ रुपये ४४ न० पै० और ४१ रु० २५ न० पै० का साधन-दान प्राप्त किया।

—पठानकोट में सर्वोदय-आश्रम, शाहपुर द्वारा ५६ सर्वोदय-पात्र से जनवरी माह में २७ रुपये २० न० पै० प्राप्त हुए। साथ ही २ दाताओं से ४९० रु० संपत्ति-दान में मिले।

—पट्टी कल्याणा में गांधी स्मारक निधि के प्रधान कार्यालय में माता कस्तूरबा की पुण्यतिथि चरखा-कताई, सामूहिक सफाई आदि कार्यक्रमों द्वारा मनायी गयी।

—मुजफ्फरपुर जिले के सकरा(?) के सर्वोदय स्वाध्याय उपकेन्द्र द्वारा आयोजित "पूज्य बापू का ग्रामराज्य का सपना इस विज्ञान भौतिकवादी जमाने कैसे सम्भव हो सकता है," इस विषय की गोष्ठी में सर्वश्री ध्वजाप्रसाद साहू, श्यामसुन्दर प्रसाद, प्रो० कृष्णचन्द्रप्रसाद सिंह, नवलकिशोर आदि ने भाग लिया।

—बीरभूम (प० बंगाल) जिले में स्थान-स्थान पर सर्वोदय-मेले आयोजित हुए। रामपुर हाट शानघाटा के मेले में रचनात्मक संस्थाओं द्वारा सूत्रांजलि-अर्पित की गयी।

—सारन जिला सर्वोदय युवक संमेलन, जिला सर्वोदय-मंडल खादी ग्रामोद्योग संघ द्वारा छपरा नगर में सर्वोदय-दिवस मनाया गया। सितम्बर '६० से जनवरी '६१ तक सर्वोदय-पात्र से ४० रुपये मिले।

—प्रो० ठाकुरदास बंग, रतनलाल कोटेचा, मोतीलाल मंत्री आदि कार्यकर्ताओं ने महाराष्ट्र के बीड जिले में सर्वोदय विचार-प्रचार किया। तय हुआ कि माजलगाँव और गेवराई तालुका में से १५० गाँवों का एक क्षेत्र चुनकर वहाँ सामूहिक पदयात्रा का प्रयोग किया जाय।

गेवराई तहसील की सामूहिक पदयात्रा की पूर्वतैयारी में राक्षगाँव और संगाँव में दो दाताओं से १२ एकड़ भूदान मिला।

—अंदाज जिले में रेलवे स्टेशन से ६ मील दूरी पर सन्सारी गाँव में विशेष शिबिर पर गांधी-निर्वाण दिन, ३० जनवरी को मनाया गया। उस समय प्रो० बंग, श्री ठाकुरदास(?) वकील, मनोहर बापट आदि कार्यकर्ताओं ने ग्रामस्वराज्य का विचार लोगों को समझाया। गाँव के कुनबी परिवार के एक दाता ने भूदान दिया और स्वयं एक भूमिहीन को वह जमीन दे दी।

—सन्सरी गाँव में सिर्फ दो भूमिहीन परिवार थे। गाँव के दो भूमिवानों ने पाँच एकड़ भूमि उन भूमिहीनों को देकर गाँव से भूमिहीनता मिटा दी।

—आगरा शहर के लाजपत वार्ड में सर्वोदय-सहयोगियों की एक सभा हुई, जिसमें वार्ड में काम करने, के लिये एक सेवा-मंडल का गठन हुआ। मंडल के संयोजक सर्वसम्मति श्री गिरधारीलालजी, रिटायर्ड टेलीग्राफ मास्टर निर्वाचित हुए। मंडल अशोभनीय पोस्टर-आन्दोलन, सर्वोदय-पात्र, सूत्रांजलि आदि के काम को वार्ड में व्यवस्थित करेगा।

—अशोभनीय पोस्टर-विरोधी अभियान के अन्तर्गत कानपुर नगर में प्रदर्शित एक चित्र के एक अशोभनीय पोस्टर को सार्वजनिक प्रदर्शन से हटवाया तथा इसी चित्र के एक अन्य अशोभनीय पोस्टर के सार्वजनिक प्रदर्शन को रोकने के लिए नगर सर्वोदय समिति की ओर से सम्बन्धित सिनेमा-मालिकों एवं सिटी मैजिस्ट्रेट को सूचना दी गयी।

आगामी सर्वोदय-सम्मेलन के अवसर पर आंध्र की कतवारियों के सम्मेलन का बृहद् आयोजन

जनवरी के तीसरे सप्ताह में पश्चिमी गोदावरी जिले के नारायणपुरम् स्थान में आन्ध्र प्रदेश के खादी-कार्यकर्ताओं का वार्षिक सम्मेलन खादी-कमीशन के विभागीय संचालक श्री पी० राघवन की अध्यक्षता में हुआ। सम्मेलन ने 'नये मोड़' के कार्यक्रम का स्वागत करते हुए ग्राम और जिला-इकाइयाँ बनाने का निश्चय किया। सम्मेलन में करीब २०० कार्यकर्ता उपस्थित थे। आन्ध्र प्रदेश में अप्रैल मास में होने वाले अखिल भारतीय सर्वोदय-सम्मेलन के अवसर पर आन्ध्र के विभिन्न हिस्सों से करीब ५ हजार कतवारियों की एक बृहद् सभा का आयोजन करने का निश्चय भी किया गया।

अम्बर विद्यालय, रुद्रप्रताप आश्रम, नरसिंहपुर का नया सत्र १ अप्रैल से आरम्भ

स्व० ठाकुर रुद्रप्रताप स्मारक संघ श्री रुद्रप्रताप आश्रम, नरसिंहपुर द्वारा संचालित अंबर विद्यालय का आगामी सत्र १ अप्रैल से आरम्भ हो रहा है।

अंबर विद्यालय में प्रवेश पाने के इच्छुक विद्यार्थी आचार्य अंबर विद्यालय, नरसिंहपुर के द्वारा आवेदन-पत्र मँगा कर शीघ्र आवेदन करें। आवेदनकर्ता को खादी-ग्रामोद्योग कमीशन की ओर से ४५ रुपये की मासिक छात्रवृत्ति दी जाती है। अंबर विद्यालय की प्रशिक्षण-अवधि ९ माह की है, जिसमें ६ माह विद्यालय में प्रशिक्षण होता है, शेष ३ माह क्षेत्रीय अनुभव के होते हैं।

विद्यालय में प्रवेश पाने वाले विद्यार्थी की शिक्षण-योग्यता मैट्रिक या उसके समकक्ष होनी चाहिए। वह कड़ा परिश्रम कर सके तथा उसकी आयु सामान्यतः १८ वर्ष की होनी चाहिए। विद्यार्थियों को छात्रावास में रहना अनिवार्य है। विद्यालय की जीवनचर्या आश्रम की जीवन-चर्या होती है।

—जमनाप्रसाद साहू, आचार्य

बिहार सर्वोदय युवक-सम्मेलन सक्रिय

बिहार राज्य सर्वोदय युवक-सम्मेलन की गया में हुई बैठक में यह तय किया गया कि बिहार में पोस्टर-आन्दोलन की जिम्मेदारी सर्वोदय-युवक मंडल उठाये। इसके लिए विनोबाजी ने भी अपनी अनुमति दी है।

विनोबाजी के प्रवास-काल में सर्वोदय-युवक मंडल ने असम-पीड़ित सहायता-कोष के लिए ८८७० रुपये एकत्रित किया।

गोरखपुर में सर्वोदय-पक्ष

गोरखपुर में ३० जनवरी से १२ फरवरी तक सर्वोदय-पक्ष व्यापक रूप में मनाया गया। ३० जनवरी को पहली बार सार्वजनिक कार्यक्रम रखा गया, जिसमें सब राजनैतिक दलों, रचनात्मक संस्थाओं और शिक्षण-संस्थाओं के कार्यकर्ताओं ने भाग लिया। लगभग एक हजार गुण्डियाँ सूत्रांजलि में अर्पित की गयीं। इसी दिन 'भूदान-यज्ञ' पत्रिका के २० ग्राहक बनाये गये। ३१ रु० की साहित्य बिक्री हुई।

सर्वोदय-पक्ष में २१ स्थानों पर विचार-प्रचार के विभिन्न कार्यक्रम आयोजित किये गये। इन स्थानों में लोगों ने सर्वोदय-पात्र रखने एवं उसकी व्यवस्था करने की जिम्मेदारी उठायी। विचार-प्रचार के लिए सर्वश्री सिंहासन सिंह एम. पी., प्रो. सम्पाद(?), डा० शिवरत्न लाल, डा० महादेव प्रसाद, रामचन्द्र द्विवेदी, पचदेव, श्यामाचरण शास्त्री, करीमभाई, मोहनलाल बर्दी(?), रामवृक्ष शास्त्री आदि ने हिस्सा लिया।

विश्वविद्यालय में सर्वोदय-पक्ष का कार्यक्रम दर्शन-परिषद् के सहयोग से बड़े समारोह के साथ मनाया गया। इस अवसर पर विशेष 'गांधी व्याख्यान-माला' का आयोजन का शुभारंभ उपकुलपति श्री भैरवनाथ झा ने किया।

१२ फरवरी को मगहर में सर्वोदय-मेला लगा।

इस पक्ष में गोरखपुर के सभी मुहल्लों से गहरा संपर्क हुआ, जिसके कारण नगर में सर्वोदय आन्दोलन के लिए अच्छा वातावरण निर्माण हुआ।

'कमल' की अखंड पदयात्रा

श्री रामकुमार 'कमल' दिसंबर माह में महाराष्ट्र के सातारा, कोल्हापुर जिले में करीब २०० मील की पदयात्रा करते हुए २३ दिसंबर को बेलगांव (मैसूर राज्य) पहुँचे। आगे उत्तर और दक्षिण कॅनरा के तटीय इलाके से पदयात्रा करते हुए ११ जनवरी को मंगलोर पहुँचे। वहाँ इनके आगमन के निमित्त से सर्वोदय-वनिता आश्रम की ओर से ११२ सर्वोदय-पात्र रखे गये। बाद में केरल में १२ फरवरी को केरल के तिरुवनन्तपुरम(?) के सर्वोदय मेले में पहुँचे। मार्च माह के मध्य तक विचरण करते हुए कन्याकुमारी पहुँच रहे हैं।

विनोबाजी की पदयात्रा

विनोबाजी ने ५ मार्च को प० बंगाल से असम में प्रवेश किया। ७-८ मार्च को गोलपारा में थे। ता० ११ का पड़ाव ... और १२ का धुबरी है।

पता : विनोबा पदयात्री-दल, पो० गोलपारा, असम

इस अंक में

श्रीकृष्णदत्त भट्ट, अ० भा० सर्व सेवा संघ द्वारा भार्गव भूषण प्रेस, वाराणसी में मुद्रित और प्रकाशित। पता : राजघाट, वाराणसी-१, फोन नं० ४३९१
पिछले अंक की छपी प्रतियाँ १२,०५० : इस अंक की छपी प्रतियाँ १२,०५०
वार्षिक मूल्य ६) एक प्रति : १३ नये पैसे

विज्ञान के इस युग में भौगोलिक सीमाओं का कोई महत्व नहीं रह गया है!

संपादक : सिद्धराज ढड्ढा

वाराणसी : शुक्रवार | १७ मार्च '६१ | वर्ष ७ : अंक २४

संहारक शक्ति का मुकाबिला प्रेम शक्ति ही कर सकती है

–विनोबा

पुराने जमाने में लडाइयाँ रणांगण में लडी जाती थी। पलासी की लडाई छोटे रणांगण में हुई थी। ४ घंटे में फैसला हो गया था। सारा बंगाल अंग्रेजो के हाथों में चला गया। इन दिनों लडाइयाँ ऐसे रणांगण में नही होती है। सारे देशों में लडी जाती है। कुछ देश दूसरे कुछ देशों के खिलाफ खड़े हो जाते हैं। इधर कुछ देश उधर कुछ देश। करोडों लोग एक दूसरे के खिलाफ खडे हो जाते हैं। और यह लडाई–आर्थिक क्षेत्र में, सामाजिक क्षेत्र में, रण क्षेत्र में और 'साहित्य' के क्षेत्र मे भी होती है। एक देश के लोग लाखो, करोडो रुपये की किताबें दूसरे देशो में मुफ्त बांटते है। यह भी लडाई का एक फ्रंट है। इस तरह युद्ध आजकल एक क्षेत्र में नही होता है। ऐसी हालत में सीमा (बार्डर) का सवाल आज कहाँ है? मान लीजिये हिन्दुस्तान की लडाई दूसरे देश के साथ शुरू हो गयी। वह लडाई लखनऊ, कानपुर, बम्बई, कलकत्ता में लडी जायेगी।

इसलिये सीमा का कोई महत्त्व ही नहीं रह गया आज जो शस्त्रास्त्र बने हैं वे एक मर्यादा के बाहर हो गये हैं। आज के शस्त्र हिंसक नहीं हैं। वे हिंसा करते हैं लेकिन हिंसक नहीं है। वे संहारक हैं। इस लडाई में बीमार, प्राणी, बैल आदि जानवर भी मरेंगे, पेड़ भी खत्म, मकान भी खत्म होंगे। खेती की फसल भी नहीं बचेगी। सर्वनाश ही होगा। सर्व-संहार होगा। इसे हिंसा नहीं, संहार कहते हैं। मैं हाथ में खंजर लेता हूँ सामने वाले पर हमला करता हूँ–उसके पेट में खंजर घुसता है—यह हिंसा है क्रूरता, आवेश है, निष्ठुरता है। आवेश में क्रोध से लड़ते हैं। लेकिन जब बम गिराने वाले बैलेस्टीक वेपन भेजेंगे तो उनके चित्त में क्रोध नहीं होगा। बल्कि वे गणिती होंगे। कोण (एंगल) बम की ताकत, दूरी, गति नियंत्रण–यह सब सोचकर काम करना होगा। जरा कोण में गलती हो गयी तो इस देश के शस्त्र दूसरे देश पर जायेंगे, इसलिये शान्ति से, बिना क्षोभ के और हिसाब से काम करना होगा। क्षोभ से काम नहीं होगा। क्षोभ से हिंसा होती है, और बिना-क्षोभ के जो शस्त्र क्षेपण होता है, वह संहार है। हिंसा नहीं है—

ऐसी संहार शक्ति के खिलाफ प्रेम-शक्ति ही हो सकती है।—अंधेरे के सामने प्रकाश लेके ही ले जाना होगा।—उसके लिये आत्म-नियमन, अपने पर काबू, मिल-जुलकर काम, 'सब का एक हो जाना—यही करना होगा। उत्पादन बढ़ाकर ठीक ढंग से बांटा जा रहा है, गरीब को सुखी बनाया जा रहा है, देश में कोई बेकार नहीं है, जाति, धर्म, भाषा के भेद बाधा नहीं डालते है, हम सब एक हैं, हमारा सबका मिला जुला परिवार है, सब मिलकर उत्साह से काम में लगे है—ऐसा दृश्य सामने वाला देखेगा तो आक्रमण का साहस नहीं करेगा। देश में फूट हो, आलस हो तो बाहर से आक्रमण होगा। आलसी और परस्पर झगडा करने वाले लोग अब नही टीकेंगे। यही है प्रेम शक्ति

जो पिता अपने बेटे को कहेगा कि अरे बेटा! तुम काम मत करो, बैठे रहो, वह बेटे का शत्रु होगा। बेटे को खेत में एक घन्टा काम के बाद खिलानेवाली माँ का बेटे पर सही प्यार है—प्रेम जीवन में प्रकट होगा। हम उत्पादक परिश्रम नहीं करेंगे तो क्या होगा?

जो परिश्रम नहीं करते हैं वे दूसरे के परिश्रम का लाभ उठायेंगे। परिणामस्वरूप द्वेष बढ़ेगा, उत्पादन नहीं बढ़ेगा। काम में नफरत नहीं करनी चाहिये, काम से नफरत होगी तो मनुष्य की नफरत होगी। इसीलिये उपनिषद में कहा है "अन्न बहु कुर्वीतत्तद् व्रतम्"—अन्न बढ़ाने का व्रत हो। अन्न ही कम होगा तो करुणा, प्रेम नहीं रहेगा और फिर आपस में लडाई झगड़े होते रहेंगे।

फिर दूसरे देशों का हमला होता ही रहेगा।

यह सारा कहने का मतलब यही है कि यह सिर्फ सीमा का सवाल नहीं है। कुल दुनिया में हर एक देश दुनिया के मध्यबिन्दु में हैं। यह सीलीगुडी भी दुनिया के मध्य में है और लंदन भी। सायन्स चारों ओर से बढ़ रहा है। वह चुप नहीं बैठेगा। इधर से उधर जायेगा। उसे कोई रोक नहीं सकेगा। दिल बडा बनाना होगा। आज दिमाग बडा बना है और दिल छोटा रह गया है। इसी लिए सारी समस्या खड़ी हुई है।

२०० साल पहले पानीपत की लडाई में अहमद शाह अब्दाली ने जब देखा कि मराठों की सेना में जाति भेद है, वे एक दूसरे के हाथ की रसोई नहीं खाते है। तब उसने कहा कि अगर ऐसी स्थिति है तो मैंने मराठों को जीत ही लिया।—जो लोग एक दूसरे के हाथ का नहीं खाते, वे कन्धे से कन्धा लगाकर लडाई में कैसे लडेंगे? महात्मा गांधी कहते थे कि यह स्पृश्य अस्पृश्य भेद मिटा दो, तभी स्वराज्य आयेगा। कुछ लोग कहते हैं अब तो स्वराज्य आ गया अब हम यह भेद क्यों मिटायेंगे? अब है यह अकल की बात है। क्या स्वराज्य खोना है? गांधी जी ने स्वराज्य के लिए खादी का कार्यक्रम दिया था। कुछ लोग कहते है स्वराज्य में अपनी ही मीलें हैं–अब क्यों खादी? कुछ शहरों में मीलें हैं। कल लडाई शुरू होगी तो सर्व प्रथम इन शहरों पर बम गिरेंगे–तमाम मीलें बंद होगी–तो क्या नंगे रहेंगे?—प्रथम हमला शहरों पर ही होता है।

क्रुश्चेव महाशय कलकत्ता गये। वहाँ के १३ मंजिल वाले मकान देखकर उन्होंने कहा कि "इस जमाने में ये मकान काम के नहीं।" जितना ऊँचा मकान उतना बम के लिये नजदीक। शिवाजी महाराज ने औरंगजेब के खिलाफ लडने के लिए किले बनाये थे। इस जमाने में किले टीकेंगे? मतलब, पुराने जमाने का चीजें अब नहीं चलेंगी।

विज्ञान के जमाने में कुल उद्योग एक जगह रखने से काम नहीं चलेगा। उन्हें विकेन्द्रित करना होगा। गांव-गांव में धंधे बढ़ाने होंगे। पहले शहरों में लडाई होगी, इसलिए गांव-गांव के लोगों को आत्मनिर्भर होना पडेगा। १९४३ में कलकत्ते में अन्न न मिलने के कारण ३० लाख लोग मर गये। उस वक्त हम लोग जेल में थे। अंग्रेजों का राज है उनकी जिम्मेवारी है यो कहते थे और जेल में तीन बार खाते थे। फिर से आज लडाई होगी, अनाज के भाव आकाश तक पहुँचेंगे तो कौन जिम्मेवार माना जायेगा? हर एक गांव में दो साल का अनाज रहना चाहिए। गांव स्वावलम्बी होना चाहिए। कुछ लोग हमें दकियानुस पुराने जमाने के कहते हैं किन्तु मैं कहता हूँ यह अणु शक्ति का युग इसके आगे वैज्ञानिक ढाँचा यही होगा कि गांव-गांव में काम चलें। हम तो विज्ञान के कायल हैं। हमने कहा है कि अहिंसा और विज्ञान एक होगा तो दुनिया में स्वर्ग आयेगा। विज्ञान और हिंसा एक होगी तो सर्वनाश होगा।

आत्मज्ञान कह रहा है कि गांव २ को अपने पांव पर खडे करो। पूर्ण बनाओ। उसमें विज्ञान की मदद लेनी होगी। ये सब पूर्ण गांवों का हमारा परिपूर्ण देश बनेगा।" पूर्णमद: पूर्णमिदं।" अभीतक लोग क्या कहते थे? एक जगह पैदा करो, दूसरी जगह बांटो। परिणाम यही होगा कि दोनो भी अपूर्ण रहेंगे। बाहर के लोग लगडे-हाथों पांवों से काम नहीं कर सकते हैं।

गांव वालों को अकल नहीं, वे अंधे हैं। इन अंधों के कंधों पर लगडे सवार होंगे। लंगडा मार्ग दिखायेगा। गाँव वालों के कंधे पर

चाला, उसके ऊपर दार्जिलिंग, फिर कलकत्ता और उसके ऊपर दिल्ली-वाला। इसके माने क्या ? यही है कि यह भी अपूर्ण है और वह भी अपूर्ण। सब मिल के पूर्ण बनेगा।—हम चाहते हैं कि कोई भी अपूर्ण न हो—सब आँख वाले और पाँव वाले हों और दोनों को दो हाथ पकड़ के चलें।

सर्वोदय के मुताबिक गाँव की रचना करनी होगी। हर एक को पूर्ण अधिकार होगा, तालीम का काम का मौका, कोई भेद न हो,—गाँव-गाँव स्वावलम्बी हो। इस तरह हमारा अपना देश हम बनायें। यह नमूना देखकर दूसरे देश वाले भी वैसे ही बनायेंगे। फिर लड़ाई मिटेगी। शस्त्र अस्त्र कुछ नहीं रहेगा।

मेरे हाथ में यह दंड है। लेकिन सामनेवाली लड़कियाँ नहीं डरती हैं। क्योंकि वह जानती है कि ये दंड बाबा के हाथ में हैं, पुलिस के हाथ में नहीं। "दंडो यतिनाम्" दंड यति के हाथ में होना चाहिए। सन्यासी के हाथ में होना चाहिए। लेकिन आज "दंडो पुलिसानाम्" हो रहा है। चोरों से रक्षा हो इसलिये पुलिस रखो। पुलिस से रक्षा कैसे होगी ? देश रक्षा के लिए सेना रखो। सेना से कैसे बचाव होगा ? पाकिस्तान, नेपाल, इजिप्त, इराक—में क्या हुआ ? जिसका सेना पर कब्जा था वह प्रधान हो गया। इसका कारण यही था कि सारा दारोमदार सेना पर था। देश में एकता नहीं है, भ्रष्टाचार फैला है, एक दूसरे को चूसते हैं, राजनीतिक दल एक दूसरे के विरुद्ध काम करते हैं। ऐसी अवस्था में सुख-शांति से रहने का मौका नहीं रहेगा। फिर क्या होता है ? प्रजा तंत्र खतम होता है।

ऐसी हालत में भारत को क्या करना होगा ? भारत बहुत बड़ा, प्राचीन सस्कार वान, अनेक भाषा संपन्न, अनेक धर्मों का, जाति का, वंशों का सगमस्थान है। आपको क्या कहूँ ? आपके बंगाल के महाकवि ने कहा है—'भारत तीर्थ' कैसा है !

"येई भारतेर महामानवेर सागरतीरे

ऐसो रे आर्य, ऐसो अनार्य"

यह हिंदुस्तान की विशेषता है।—अभी आपने असम में भाषा विवाद से उत्पन्न दंगों का हाल का सुना। वह शान्त हुआ। इतने में अब हम जबलपुर का सुन रहे हैं। अनेक जाति, धर्म, वंश यहाँ रहते हैं। अनेक भाषा यहाँ है। यह सारा हमारे देश का वैभव है। लेकिन वह वैभव भी 'अभिशाप' होगा अगर उसका ठीक उपयोग नहीं होगा। सात स्वरों में जब मेल होता है तब संगीत होगा। हम कश्मीर में घूमते थे। वहाँ पीर-पंजाल का का १३॥ हजार फीट ऊँचा पहाड़ लांघते हुए चल रहे थे, उस वक्त एक जंगल विभाग के अधिकारी ने हमसे कहा "जिस जंगल में एक ही प्रकार के पेड़ होते हैं वह जंगल बढ़ता नहीं है। जिस जंगल में अनेक प्रकार के पेड़ होते हैं वह जंगल बढ़ता है।" हमने कहा कि हमारे पूर्वजों ने भारत को एक ऐसा ही जंगल बनाया है। चौदह संपन्न भाषाएँ हिंदुस्तान में हैं। सब भाषाओं का विकास होना चाहिए। एक भाषा के गौरव से दूसरी भाषा की ताकत बढ़ेगी।—इस तरह सब का गौरव बढ़ेगा तो हिंदुस्तान का भी गौरव बढ़ेगा। लेकिन ठीक योजना करनी होगी। हमारे हृदय में हम यह भावना रखें कि हम 'महामानव' हैं। हम छोटे छोटे मानव नहीं 'विश्वमानव' हैं।....और पुरानी सब बातें भूल जायें।

एक दफा एक भाई ने पूछा "क्या आप पुनर्जन्म को मानते हैं ?" मैंने कहा "हाँ"। उन्होंने पूछा, 'तो फिर पुराने स्मरण हमें याद क्यों नहीं रहते ?" मैंने कहा "स्मरण याद नहीं रहते यही अच्छा है"—यही देखिये। मैं यहाँ बैठ कर बोल रहा हूँ और आप यहाँ बैठकर सुन रहे हैं। मान लीजिए मुझे मेरा पुराने जन्म का स्मरण हुआ और मैंने आपको उठकर लात मारी। आप पूछेंगे "क्यों ?" मैं कहूँगा "पुराने जन्म में तुम कुत्ता थे और मैं गधा। तुमने मुझे उस वक्त काटा था। मुझे तुम्हें लात मारना बाकी रह गया था। वह अब मैं मार रहा हूँ।"—ऐसी हालत होता है। भगवान ने जो योजना की है पुराना भूलने की वह अच्छी ही है।—मुझे तो बचपन का भी स्मरण नहीं है। जैसे स्मरण शक्ति की महिमा है वैसे विस्मरण-शक्ति की भी एक महिमा है। माँ बच्चे के बुरे स्मरण याद नहीं रखती है। भूल जाती है। अच्छे काम याद रखती है। वैसे ही हमें करना चाहिए। मानव समाज में कौन ऐसी जाति है जिसने खराब काम नहीं किया है और अच्छा काम किया है ? हर जाति ने अच्छा और बुरा काम किया है। बुरी हवा आई बुरी हवा के झोंके में बुरे काम किये। अच्छी हवा के झोंके में अच्छे काम किये।

पुराना सब भूल जाना चाहिए। अंग्रेजों ने क्या-क्या अत्याचार किये थे, वे भूल जाइये। उनके भी अच्छे काम याद करो। मुगलों के बुरे काम याद मत करो। वह भूलो। अच्छे कामों को याद करो।—तो भारत की ताकत बढ़ेगी और दुनिया को भी ताकत बनेगी। फिर हर कोई बोलेगा "जय-जगत् !"

नागरी लिपि से तेलुगु सीखिये : १६

पिछले अंक में तेलुगु भाषा के लिंग-भेद बताये गये थे। अभ्यास से ही अन्य शब्दों का लिंग समझा जाता है।

हिन्दी	तेलुगु
यह आदमी जाता है।	ई मनिषि वेल्लुचुन्नाडु।
वह औरत फल बेचती है।	आ स्त्री पंड्लु अम्मुचुन्नदि।
गाय मीठा दूध देती है।	आवु तिय्यनि पालु इच्चुनु, इच्चुचुन्नदि।
बैल दौड़ रहा है।	येद्दु परुगेड्चुन्नदि।
वह लड़का खेलता है।	आ पिल्लवाडु आडुचुन्नाडु।
यह लड़की पढ़ती है।	ई पिल्ल चदुवुचुन्नदि।
मैं जा रहा हूँ।	नेनु वेल्लुचुन्नानु।
मैं जा रही हूँ।	नेनु वेल्लुचुन्नानु।
मैं उसको जानता हूँ।	नेनु वानिनि येरुगुदुनु
पहाड़ ऊँचा है।	पर्वतमु येत्तुगा उन्नदि।
नदी गहरी है।	नदि लोतुगा उन्नदि।
यह कौन है ? (पुं०)	वाडु येवडु ?
वह कौन है ? (स्त्री०)	आमे येवते ?
सीता गाती है।	सीत पाडुचुन्नदि।
राम आता है।	रामुडु वच्चु चुन्नाडु।
आप बहुत धीरे बोलते हैं।	तमरु चाल नेम्मदिगा माटलाडुचुन्नारु।
बच्ची जोर से रोती है।	पिल्ल पेद्दगा येड्चुचुन्नदि।
बच्चा हँस रहा है।	पिल्लवाडु नव्वुचुन्नाडु
घोड़ा तेज दौड़ता है।	गुर्रमु वेगमुगा परुगेत्तुचुन्नदि
कुत्ता भूँकता है।	कुक्क मोरुगुचुन्नदि।

हिंदी—तेलुगु : पाठमाला

हिन्दी भाषा द्वारा तेलुगु भाषा सिखाने का एक उपक्रम हमने भूदानयज्ञ के माध्यम से आरम्भ किया था। क्योंकि इस बार का सर्वोदय सम्मेलन आन्ध्र में हो रहा है, इसलिए यह उचित समझा गया कि सम्मेलन में आनेवाले हमारे पाठकों को वहाँ की भाषा का थोड़ा प्राथमिक ज्ञान हो जाय। अब सम्मेलन का समय निकट है और हमें उम्मीद है कि हमारे इस प्रयत्न से जो पाठक लाभ उठा रहे थे, उन्हें इस भाषा का प्राथमिक ज्ञान हुआ भी होगा। इसलिये तेलुगु पाठमाला का यह कॉलम बन्द कर रहे हैं। हमारे इस प्रयत्न ने यदि थोड़े से पाठकों के मन में भी दक्षिण की किसी एक भाषा को सीखने के लिए दिलचस्पी पैदा की होगी, तो हम इसे सफल मानेंगे। जिन पाठकों को तेलुगु सीखने में रुचि लगी हो, वे अब स्वतंत्र रूप से अपना अभ्यास चालू रखेंगे, बन्द नहीं करेंगे, ऐसी आशा है।

अतः अब अगले अंक से इस पाठमाला के क्रम को बन्द किया जा रहा है।

इस पाठमाला को प्रस्तुत करने में हैदराबाद के साथी श्री पोतराजु सीताराम रावने हमें सहयोग दिया तथा नियमित रूप से सामग्री भेजते रहे, इसके लिए हम उनके कृतज्ञ हैं। कुछ मदद हमने राष्ट्रभाषा समिति वर्धा की तेलुगु शिक्षक पुस्तिका से भी ली है अतः उनके भी हम कृतज्ञ हैं।

अब दक्षिण की किसी दूसरी भाषा की पाठमाला इसी तरह हम सर्वोदय सम्मेलन के बाद मई में चालू करने का प्रयत्न करेंगे।

—संपादक

तीन स्वतंत्र विचार

सर्व धर्म-समन्वय, मन से ऊपर उठना तथा तीसरा सत्याग्रह का विचार है। जब तक हम परस्पर-विरोधी बातों का बाह्य उपाय याने युद्ध आदि की बातें सोचेंगे, तब तक दुनिया का निस्तार नहीं होगा, इसलिए सत्याग्रह की आवश्यकता है। यह गांधीजी का विचार है, ये तीनों विचार *स्वतन्त्र हिन्दुस्तान की* बुद्धिमत्ता से निकली हुई स्वतन्त्र चीजें हैं।

—विनोबा

बेराई की ग्रामसभा का आदर्श

मुंगेर जिले के ग्रामदानी गाँव बेराई के नाम से पाठक परिचित हैं। बेराई के निवासी अपनी सारी आय पहले ग्रामकोष में जमा करते हैं। फिर समवेतन के आधार पर प्रति दिन एक रुपया के हिसाब से पारिश्रमिक लेते हैं। श्राद्ध, विवाह, पढ़ाई, बेकारों को काम, रोगियों की चिकित्सा आदि सारी जिम्मेदारी ग्राम-समाज पर है। कर्ज अदा करने या सभा-शिविरों के जैसे सार्वजनिक कार्य के लिए भी ग्रामकोष खर्च करता है। अगर किसी कारणवश किसीको कभी काम न मिला हो, तो अपने परिश्रमालय में ग्रामसभा उन्हें काम देती है। जो लोग काम करने में असमर्थ हैं, उनके भोजनादि की व्यवस्था ग्राम-सभा करती है। गाँव के बाहर भी हाईस्कूल तक की पढ़ाई का खर्च ग्रामसभा करती है। लड़कों के ७५ प्रतिशत कपड़ों की व्यवस्था ग्रामसभा करती है और २५ प्रतिशत की व्यवस्था लड़कों की कमाई में से होती है।

ब्रह्म सत्यं जगत् स्फूर्तिः जीवनं सत्यशोधनम्

भूदानयज्ञ

लोकनागरी लिपि*

गांव के लीअे चार बातें

खादी के कार्यकर्ता खादी का काम करते हैं। गांव में जाकर भी वे काम करते हैं। पर मैं अैसे कुछ खास काम हुआ, अैसा नहीं मानता। गांव की योजना अलग होनी चाहीअे। स्वावलम्बन होना चाहीअे। गांव के लोग अेक-दूसरे की सहायता करें, यह भी हमें देखना है। गांव में हमें क्या क्या करना है, जिसके लीअे मैं चार बातें जरूरी समझता हूं।

१. गरीब, नीरधन, बीमार दुखी, बेवा, बूढ़े और अपाहीजों की सहायता।

२. भूदान, सम्पतीदान का वीचार घर घर पहुंच जाय।

३. सर्वोदय पात्र के जरीये गांव के कम-से-कम २५ घरों में हमारा प्रवेश हो। घरों में कार्यकर्ता पात्र रख कर प्रेम पूर्ण मैत्री सम्बन्ध कायम करें तो लोग सर्वोदय पात्र में प्रतीदीन कुछ न कुछ डालना पसंद करेंगे, अैसा मेरा वीश्वास है।

४. अन्य साधन। अब मैं सम्पतीदान के बारे नहीं चाहता कि लोग खुद अपनी समझ से खर्च करें; यह तो अच्छी बात है ही पर मैं यह चाहता हूं की जीतना दान करना है, लोग मुझे अुसका अेक सील का 'अेडवान्स' में दे सकते हैं, फीर आप जैसी भी ईच्छा हो कर लें। जैसे सरकार को टैक्स आदी दीअे जाते हैं, वैसे ही लोग हमारे शान्ती सैनीक तथा सर्वोदय पात्र के कार्यक्रम को अपना मान लें।

—वीनोबा

*लिपि-संकेत : ि = ी ; ी = ी ख=ख, संयुक्ताक्षर हलंत चिह्न से।

चुनावों के बारे में सर्व सेवा संघ की नीति

आगामी सम्मेलन के अवसर पर संघ के विचारार्थ प्रबंध-समिति द्वारा स्वीकृत मसविदा

अखिल भारत सर्व सेवा संघ की प्रबंध-समिति ने ता० ६ से ८ मार्च तक गोलोकगंज (आसाम) में हुई बैठक में चुनावों के प्रश्न पर, खास कर अगले बरस होने वाले आम चुनावों के संदर्भ में, सर्वोदय के दृष्टिकोण को स्पष्ट करते हुए एक प्रस्ताव स्वीकार किया है। नीति से सम्बन्धित होने के कारण यह प्रस्ताव आगामी सर्वोदय सम्मेलन के अवसर पर होने वाले सर्व सेवा संघ के अधिवेशन में विचार और स्वीकृति के लिये पेश होगा। प्रस्ताव इस प्रकार है :

"सर्व सेवा संघ की यह मान्यता है कि अहिंसक समाज की रचना राजनैतिक सत्ता यानी शासन के जरिए नहीं, बल्कि लोगों के अपने अभिक्रम और उनकी संगठित और स्वाश्रयी शक्ति के आधार पर ही हो सकती है। अतः **सर्व सेवा संघ ने अपनी यह नीति स्थिर की है कि वह सत्ता प्राप्ति की राजनीति में प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष किसी प्रकार का हिस्सा नहीं लेगा।** भूदान-ग्रामदान आन्दोलन के पिछले वर्षों के अनुभव ने राजनीति के स्थान पर लोकनीति की प्रतिष्ठा के इस विचार को और भी पुष्ट किया है। सर्वोदय के लिए कृत संकल्प कार्यकर्ताओं अर्थात् लोकसेवकों के लिए यह जरूरी माना गया है

कि वे सत्ता की राजनीति और दलगत चुनावों से अलग रहें क्योंकि किसी एक पक्ष का सदस्य बन जाने या चुनाव में स्वयं खड़े होने या किसी दूसरे का समर्थन और प्रचार करने से लोकसेवक, सब लोगों का सहयोग और विश्वास हासिल कर सकने की तथा उनका हृदय-परिवर्तन कर सकने की पात्रता खो देता है।

स्पष्ट है कि सर्वोदय और लोकनीति के विचार को व्यापक मान्यता मिलने पर समाज व्यवस्था और चुनाव आदि की पद्धति आज के ढंग की नहीं रहेगी, पर ऐसा नहीं होता है, तब तक लोकतंत्र की रक्षा के लिए और उसे सही दिशा में ले जाने की दृष्टि से उन चीजों में परिवर्तन आवश्यक है, ऐसा पिछले वर्षों के हमारे अनुभव से जाहिर होता है। जहां तक व्यवस्था का सवाल है, यह खुशी की बात है कि उसके विकेंद्रीकरण की आवश्यकता की ओर मुल्क का ध्यान गया है और आम लोग लोकतांत्रिक व्यवस्था में सक्रिय भाग ले सकें, इसकी कोशिश हो रही है। हालांकि "पंचायती राज" की मौजूदा योजना में कुछ परिवर्तन आवश्यक है, फिर भी कुल मिलाकर उसकी दिशा सही है।

राजनैतिक पार्टियों का दखल

लोगों का अपना अभिक्रम और उनकी शक्ति ही अन्ततोगत्वा लोकतंत्र का अधिष्ठान है। लेकिन

राजनैतिक पार्टियों ने लोकतंत्र को अपने पाश में जकड़ लिया है। लोगों की निज की शक्ति को प्रगट करने के बजाय उन्होंने लोगों की मनोवृत्ति को छोटी-छोटी बातों में भी परमुखापेक्षी बना दिया है। हालांकि चुनावों में मतदान का अधिकार लोगों को प्राप्त है, फिर भी उनका स्वतंत्र अभिक्रम समाप्त-प्रायः हो गया है।

एक बार फिर से आम चुनाव सन्निकट है। सर्व सेवा संघ की राय में अब समय आया है जब चुनाव की पद्धति के बारे में हमें थोड़ी गहराई से सोचना चाहिए और लोकतंत्र को वास्तव में लोकनिष्ठ बनाने के लिए उसमें आवश्यक सुधार करने चाहिए। इस सिलसिले में संघ के सुझाव नीचे लिखे अनुसार हैं :

१—आज चुनावों में राजनैतिक पार्टियां अपने अपने उम्मीदवार खड़े करती हैं। लोगों का काम उन उम्मीदवारों में से किसीको वोट देने मात्र का रहता है। मतदान के पहले या बाद, लोकतन्त्र के संचालन में लोगों का प्रत्यक्ष कोई हिस्सा नहीं होता। लोकतन्त्र को सफल और सक्रिय बनाने के लिए यह आवश्यक है कि उम्मीदवारों का चयन लोग स्वयं करें। मतदान केंद्रों 'बूथ्स' के छोटे-छोटे दायरे में मतदाताओं के मण्डलों 'वोटर्स काउन्सिल्स' के जरिए यह काम हो सकता है। चुनाव के बाद मतदाताओं और प्रतिनिधियों में जीवित सम्पर्क भी इन मतदाता-मण्डलों के जरिए कायम रखा जा सकता है। आगे आनेवाले आम चुनावों के अवसर पर जगह-जगह मतदाता-मण्डल बनाकर जनता स्वयं सक्रिय हो इस विचार का व्यापक प्रचार करना चाहिए। यह कोशिश भी करनी चाहिए कि राजनैतिक पार्टियां स्वयं इस विचार को मान्य करें।

आचार-मर्यादा

२—जब तक राजनैतिक पार्टियां इस विचार को मान्य न कर सकें तब तक भी वे सब मिलकर कुछ ऐसी आचार मर्यादा के बारे में एकमत हो सकती हैं, जिससे आज के चुनावों में होनेवाली बहुत-सी बुराइयां, संघर्ष, तथा व्यापक फूट का वातावरण कम हो सके। उदाहरण के लिए—हर पार्टी अपनी ओर से अलग-अलग सभा आयोजित न करके एक ही मंच से सब पार्टियां या उम्मीदवार अपनी-अपनी बात मतदाताओं के सामने रखें, चुनाव-प्रचार में व्यक्तिगत आरोप-प्रत्यारोप न हों; उनमें विद्यार्थियों तथा छोटी उम्र के बालक-बालिकाओं का उपयोग न हो, चुनावों में खर्च कम हो, प्रचार के तरीके संयत तथा शुद्ध हों आदि।

३—'पंचायती राज' की योजना के अन्तर्गत जो पंचायत, पंचायत समितियां तथा जिला परिषद आदि गठित हो रही हैं, उनके तथा नगरपालिका आदि स्वायत्त संस्थाओं के चुनावों में यथासम्भव संघर्ष (कांटेस्ट) को टाला जाय और चुनाव आम सहमति से करने की कोशिश की जाय। पंचायती राज की या नगरों की लोकसंस्थाओं का अधिकांश काम जन-कल्याण का और स्थानीय व्यवस्था का होता है। ऐसे कामों में विभिन्न विचार-धाराओं की दृष्टि से कोई अधिक मतभेद होने की गुंजाइश नहीं है। अतः कम से कम इन संस्थाओं के चुनावों में राजनैतिक पार्टियां न पड़ें।

४—इस तरह चुनावों में लोकनीति का तत्व दाखिल करने के व्यापक प्रयत्न के साथ-साथ कुछ ऐसे क्षेत्रों में जहां सर्वोदय की दृष्टि से पर्याप्त काम हुआ हो तथा लोगों की मनोवृत्ति अनुकूल हो, अगले आम चुनावों के समय उम्मीदवारों के चयन आदि का काम स्वयं मतदाताओं के जरिए हो सके और चुनाव संघर्ष यथासम्भव टाला जा सके, ऐसा प्रयत्न किया जाय।

लोकसेवक सत्ताकांक्षी न हो

चुनावों से संबंधित इस सारे काम में लोकसेवकों की वृत्ति और काम एक शिक्षक के जैसा होना चाहिए।' शिक्षक सत्ताकांक्षी नहीं होता। अतः लोकसेवक न खुद किसी चुनाव में खड़ा होगा, न किसी दूसरे व्यक्ति या दल का समर्थन या प्रचार करेगा। लोगों की खुद की शक्ति किस प्रकार प्रगट हो और उसका संगठित उपयोग कैसे हो, यह लोकनीति की स्थापना के लिए आवश्यक है और उस शक्ति तथा संगठन को प्रगट करना तथा उसे सही दिशा में ले जाना, यह लोकसेवक का कर्तव्य है।

फतहग्राम
८-३-'६१

'आत्मा सत्य काम सत्य संकल्प।' —आत्मा में सत्य सिद्धि की शक्ति है। इसलिए अगर हम सत्य संकल्प करें तो वह सिद्ध होगा ही।

जबलपुर का संकेत

पूर्णचन्द्र जैन

यह खेदजनक ही मानना चाहिये कि बावजूद कटु अनुभवों के हमारे देश में सामूहिक तौर पर जाहिर होने वाली परस्पर की दुश्मनी और फूट की बुराई को रोकने व वक्त रहते उस पर काबू पाने का कोई कारगर रास्ता नहीं निकल रहा है। तवारीख की पुरानी बातों को छोड़ दें—गये डेढ़सौ-दोसौ सालों में मजहब, जाति, सम्प्रदाय के नाम पर एक के बाद दूसरी घटनाएँ ऐसी हुई हैं जिनसे देश की इज्जत को बट्टा लगा है और कुल मिला कर सामाजिक, आर्थिक हर क्षेत्र में देश को भारी नुकसान का शिकार होना पड़ा है—जबलपुर और मध्य प्रदेश के दूसरे कुछ हिस्सों में जो कुछ हाल ही में हुआ, वह सबसे ताजा आँख खोलने वाली मिसाल है।

कुछ विस्तृत समाचार वहाँ के मिले हैं। संसद में उस घटना को लेकर कुछ कहा गया है। अखबारों में समाचार निकले हैं। सारी कहानी दिल को दहलाने वाली और रोएँ खड़े करने वाली है। सामान्य जनता, उसकी रहनुमाई करने वाला नेतृवर्ग, सरकारी तन्त्र सभी के लिये सारी घटना शर्मनाक है। सभी को गहराई से सोचने के लिये मजबूर करती होगी, करनी चाहिये।

अक्सर शहरों में ऐसी बुराई की शुरुआत होती है। फिर वह गाँव, देहात में भी फैल जाती है। ऐसा मालूम देता है मानों निमित्त पाकर इन्सान में दबी हुई पशुता फूट पड़ती है। शहरों में जो जीवन बनता जा रहा है वह बड़ा खतरनाक और विस्फोटक आज हो गया है। वहाँ घर-परिवारों के, समाज के, परस्पर सम्बन्ध बड़े कच्चे धागे से जुड़े हैं। आपाधापी और दौड़धूप की जिंदगी में सब एक-दूसरे से मानो विच्छिन्न हैं। मिले-जुले एक पिण्ड की एवज आपस में टकराने की स्थिति ही जैसे वहाँ स्वाभाविक है। समस्या छोटी या बड़ी मिल कर उसे हल करने की चिन्ता तत्काल किसी तरफ भी नहीं होती दिखती।

जबलपुर के जो समाचार मिले हैं उनसे यही मालूम देता है कि सारी घटना का इतना भयंकर रूप बन जायगा ऐसा अनुमान शायद कोई नहीं कर सका। हमें एक बड़ी कमी साफ नजर आती है कि समाज की नब्ज को पहचानने वाले नेतृत्व की जगह-ब-जगह आज कमी है। सरकार के पास खुफिया विभाग होता है। पुलिस व फौज का अमला होता है। लेकिन वह सब इतना जड़ या यन्त्रवत् बनता जा रहा है कि लोगों के इरादों और उनकी हालत की पूर्ण जानकारी की उससे आशा करना मुश्किल है। दरअसल लोगों के दिल-दिमाग को, उनकी भावनाओं व उनके जज्बात को, जानने वाली सार्वजनिक जीवन से संबंधित, व्यक्तियों या कार्यकर्ताओं की जमात ही हो सकती है। वह जमात जब तक नहीं बनती तब तक विशेष परिस्थितियों में लोगों के संतुलन को कायम रखना, उनमें शांति व सौहार्द्र बना रहना बड़ा कठिन है। साफ है कि जबलपुर में भी ऐसे नेतृवर्ग की कमी रही। घटना-चक्र के काफी आगे बढ़ जाने के बाद स्थिति को संभालने व सेवा-कार्य की ओर ध्यान दिया गया। पहली जरूरत जगह-जगह, खास तौर से शहरों में ऐसी कमी दूर करने की है। यह साफ है कि यह जमात खुद दलगत, साम्प्रदायिक या दूसरे-दूसरे भेदभावों से जितनी मुक्त होगी उतना ही ठीक काम वह कर सकेगी।

एक विशेष स्थिति भी जबलपुर के समाचारों से प्रकट होती है। वह यदि कुछ भी तथ्य रखती है तो काफी गंभीर है और जाँच की जाने लायक है। एक बार सारी परिस्थिति शान्त हुई उसके बाद पुनः उत्पन्न फूट पड़े! इसके जो दो मुख्य कारण बताये जाते हैं वह एक-दूसरे के विपरीत लेकिन कुछ बुनियादी सवाल खड़े करने वाले हैं। कुछ का कहना है कि बाद में जो रात को गोली-काण्ड हुआ अर्थात् पुलिस ने गोली चलायी वह एक तरह पुलिस के खिलाफ आरम्भ में ढिलाई बरती जाने और आसन्न संकट के बारे में बेखबर होने का जो आरोप या उस सम्बन्धी खीज के परिणामस्वरूप था। इसके साथ यह भी कहा गया कि पुलिस के भी कुछ जिम्मेवार लोगों में सांप्रदायिक भावना थी। इस प्रकार खीझ और साम्प्रदायिकता की कुछ की वृत्ति ने अन्धाधुन्ध गोलीकाण्ड कराया। दूसरी ओर इस सबका कारण और औचित्य यह बताया गया कि एक सम्प्रदायवालों का दूसरे सम्प्रदायवालों पर हमला करने का नियोजित षडयन्त्र था, वैसी तैयारी की गयी थी और उसे रोकने के लिये इस प्रकार गोली चलाना अनिवार्य व आवश्यक था। यहाँ तक भी कहा गया कि इस प्रकार दमन नहीं होता तो भारी क्षति होती और अधिक भयंकर रूप बन जाता।

यदि पहले कारण में कुछ भी सचाई हो तो वह एक ऐसी बुरी और भयंकर स्थिति की ओर इशारा करती है जिसके रहते हिफाजत और निर्भयता नामुमकिन ही है। वह स्थिति "बाड़ ही खेत को खाय" या "रक्षक ही भक्षक हुआ" जैसी है। पुलिस व फौज का ऐसे जनून के समय, जनता में फैले उत्तेजनाभरे तनाव के समय, शान्ति व सुरक्षा कायम रखने तथा असामाजिक तत्त्वों को काबू में करने का जिम्मा होता है। दरअसल तो पुलिस से यह अपेक्षा है कि वह शहर के गुण्डा-तत्वों, झगड़े की घर टोलियों, विस्फोटक स्थलों और अरक्षित बस्तियों की जानकार होगी। जरा भी संकट की आशंका हुई कि खराब तत्त्वों पर नजर रखेगी, तुरन्त पाबन्दी लगा देगी और जरूरत है वहाँ रक्षा की व्यवस्था करेगी। इस अपेक्षा को पूरी न करके खुद साम्प्रदायिकता के बहाव में पुलिस या फौज का अधिकारी, कर्मचारी बह जाय तो यह बहुत खतरनाक है। उसकी पूरी छानबीन, जाँच और भविष्य के लिये ध्यान दिये जाने की जरूरत है। इस प्रकार के पक्षपात करने वाले अधिकारी सरकार के किसी भी विभाग के लिये अनुपयुक्त होंगे। पुलिस, फौज जैसे जनता के जीवन-मरण से सम्बन्धित उत्तरदायित्व के लिये तो बिलकुल ही निकम्मे, कर्त्तव्य से गिरे हुए और खतरे से भरे कहे जायेंगे।

ऐसे अवसरों पर आपस की हिफाजत और धन-जन की रक्षा के लिये थोड़े-बहुत लोगों का इकट्ठा हो जाना, सामूहिक रक्षा की कोशिश करना वगैरह तो ठीक है। अक्सर किसी बस्ती के बीच अल्प संख्या में पड़ गये वर्ग को इसके सिवाय दूसरा रास्ता नहीं रह जाता। लेकिन ऐसे लोगों की सुरक्षा की एवज हमलावर रूप अख्तियार करना बिलकुल ही नासमझी और नादानी होगी। अलग-अलग बस्तियों में अलग-अलग वर्ग अल्प संख्यक हो सकते हैं। यदि ये अपनी सुरक्षा के नाम पर गुट बना कर या हिंसा के साधन वगैरह जुटा कर हमला करने या मोर्चा लेने की नीति अपनायें तो सारा नगर भयंकर यादवस्थली हो सकता है। जबलपुर में ऐसा होने की बात कुछ भी सचाई रखती हो तो इस रहस्य की जाँच होनी चाहिये। उस हालत में हो सकता है कि इन सबके पीछे कुछ दूसरी ताकतें काम कर रही हों उनका भी भण्डाफोड़ हो। यह साफ है कि अल्प संख्यकों के ऐसी जटिल परिस्थिति में पड़ने के बाद बहुसंख्यक में से कुछ एक जो सही सलामत माथा रखते हों उनकी कुछ की कुरबानी ही उफान पर ठण्डा पानी छींटने का काम कर सकती है। यह कुरबानी सही और संतुलित नेतृत्व के बगैर मुश्किल है। इस प्रकार नेतृत्व की कमी का बुनियादी सवाल ही उभर कर सामने आता है। कहना नहीं होगा कि शान्ति-सेना का काम ऐसी कमी को पूरा करना है। सतत सेवा और संपर्क के द्वारा वह इस काम के लिये तथा ऐसे अवसरों पर सक्षम होनी चाहिये।

अखबारों और छोटी-बड़ी पत्र-पत्रिकाओं का ऐसे समय पर भारी जिम्मा होता है। उनका काम जन-मानस की अभिव्यक्ति है तो, उसके साथ ही उसे जिम्मेवार, संस्कार-युक्त और जन-जीवन को निर्भय व पवित्र बनाने का है। लेकिन अक्सर अखबार तनाव—साम्प्रदायिक द्वेषाग्नि को कम करने की एवज इसे बढ़ाने का काम कर डालते हैं। प्रामाणिकता के अभाव के नाम पर अफवाहों पर आधारित, रंगी हुई और अतिरंजित खबरें छप जाती हैं तो वह सब आग में घी का काम करती हैं। जबलपुर में भी कुछ पत्रों का ऐसा ही रोल रहा। किसी संस्था, व्यक्ति-समूह या नेताओं आदि को ऐसे वक्त पर दंगे, हत्या, लूटमार, आगजनी आदि की प्रमाणित किन्तु संक्षिप्त जानकारी प्रकाशित करना चाहिए। अफवाहों का खण्डन और जब तक कुछ बात स्पष्ट साबित न हो तब तक उस पर भरोसा न करने की अपील, परिस्थिति को संभालने का बेहतर तरीका है। जबलपुर के जो समाचार मिले उनमें इस तरह के व्यवस्थित प्रयत्न के समय पर किये जाने की खबर न होना भी एक खटकने वाली बात है।

जबलपुर से बाहर कुछ प्रतिक्रिया इस सिलसिले में एक-दो क्षेत्रों में जाहिर की गयी वह ठीक नहीं मालूम देती। उदाहरणतः भारत के प्रधान मंत्री श्री जवाहरलाल नेहरू के सामने यह विचार रखा गया बताया कि वे पाकिस्तान के भारत-स्थित आयुक्त को जबलपुर की स्थिति के निरीक्षण के लिए जाने की इजाजत न दें या जो भारत-पाक सांस्कृतिक सम्मेलन एक-दो माह में होने वाला है उसमें वे भाग न लें। पाकिस्तान में कुछ प्रदर्शन वगैरह हुये या वहाँ सांप्रदायिक मनोवृत्ति ऐसी दिखायी गयी उसकी प्रतिक्रिया रूप यह सुझाव या विचार कुछ लोगों ने रखे बताये। इस प्रकार सोचना न सिर्फ अभी तत्काल की घटना के संदर्भ में गलत है बल्कि इससे दूरगामी नतीजे भी बिगड़ने का भय है। आखिर किसी ने गलती की हो या गाली दी हो तो उसका जवाब दूसरी ओर से भी अधिक भयंकर गलती करना या गाली देना नहीं हो सकता। कम-से-कम मानव-समाज इस मंजिल पर पहुँचा है और हर समझदार वर्ग, यहाँ तक कि व्यक्ति भी, यह कहता है कि "घूँसे की एवज घूँसे" का विचार पशुता है, आदमियत का नहीं और उसे अमल में लाना गुनाह है। सामाजिक अपराध है। शायद आज के जमाने की सबसे ज्यादा बदकिस्मत बात यह है कि हर स्तर पर, हर काम में, कुछ पक्ष या सम्प्रदाय की तंग दृष्टि से ही देखने-सोचने की आदत लोगों में पड़ गयी है। काम चाहे सांस्कृतिक हो, साहित्य व मनोरंजन का हो या शिक्षा वगैरह का एक समय साम्प्रदायिक संकीर्णता सबके मिलने को रोकती थी। आज वह तो जहाँ-तहाँ कब कभी उभर ही आती है। पक्ष भेद उसके साथ और उसके अलावा मेलजोल और नजदीक आने के बीच दीवार खड़ा कर देता है। श्री नेहरू को भारत-पाक सांस्कृतिक कार्यक्रम के उद्घाटन से रोकने की सलाह देना सांप्रदायिकता की संकीर्णता का ही परिचायक है। पाकिस्तान के भारत स्थित आयुक्त को जबलपुर के उपद्रवग्रस्त क्षेत्र में न जाने देने की सलाह भी अदूरदर्शितापूर्ण है। इससे कुछ पोल खुल जाने या जो सही स्थिति है उसके छिपाने की कोशिश की जाने की आशंका पैदा हो सकती है।

जिस साम्प्रदायिकता के जहर को पी जाने और देश को जिस भारी खतरे से बचाने के लिए गांधीजी ने अपने प्राणों की बाजी लगायी उसका आज भी जब-तब राष्ट्र-जीवन में फूट पड़ना और उसकी नब्ज पर लोकनेताओं व सरकार का

आरोहण या अवरोहण ?

मोतीलाल केजरीवाल

[श्री मोतीलाल केजरीवाल बिहार के संथाल परगने के सर्मठ और निष्ठावान कार्यकर्त्ता है। निष्काम भाव से सेवा-कार्य में लगे हैं, पर आसपास जो कुछ देखते ('देखना' शब्द तो उनके लिए लाक्षणिक रूप में ही प्रयुक्त हो सकता है, वे प्रज्ञाचक्षु हैं), सुनते हैं तब स्वाभाविक ही उनका हृदय वेदना से भर जाता है। प्रस्तुत लेख में उनके हृदय की वेदना जाहिर होती है। वेदना के प्रकटीकरण में कहीं अतिरंजना भी हो सकती है, पर हमें उनकी भावना का स्तर ही ग्रहण करना है।—सं०]

जैसे समुद्र में ज्वार-भाटा अपरिहार्य है, वैसे ही किसी भी आन्दोलन में तीव्रता और मन्दता स्वाभाविक है। पर सर्वोदय-आरोहण में दिखाई पड़ने वाली मन्दता अल्प कालीन है ऐसा हम प्रतीत नहीं होता। वर्तमान गतिरोध हमारे उद्देश्यों के लिए घातक सिद्ध हो सकता है।

हम कहना चाहते हैं कि जिस लिप्सा ने गांधी के रहते हुए भी गांधी की विचार-धारा को उस समय कुंठित कर डाला था, वही लिप्सा आज हम लोगों में बहुरूपी होकर आ गयी है। धनैषणा और लोकैषणा ने ही हमारे हृदय को पथ भ्रष्ट बना दिया है। हम लोगों को यह नहीं सूझता, यह और भी बुरा है।

जनता पर बहुमुखी प्रभाव

देश की आम जनता पर केवल सर्वोदयी कार्यकर्ता के कार्मों का ही अच्छा या बुरा प्रभाव नहीं पड़ता। उस पर उन सबका प्रभाव पड़ता है, जो उसके सम्पर्क में आते हैं। शहरों की तो बात ही क्या करें? वहां तो, अर्थात् उस माया के बाजार में कोई भी ऐसी वस्तु नहीं है, जो उसके मन पर बुरा प्रभाव न डाले। सिनेमा गृहों, दुकानों पर रेडियो द्वारा बजाये जाने वाले अश्लील गाने, विलासमय वस्तुओं की आकर्षक दुकानें, वहां का कृत्रिम जीवन आदि शायद ही किसी को अपने बुरे प्रभाव से अछूता छोड़ता हो। गांवों में भी शिक्षा-प्रचार की दृष्टि से रहने वाले शिक्षक, कल्याण राज्य में कल्याण कार्य (?) करने के लिए आने वाले सरकारी सेवक, वोट मांगने के लिये जाने वाले राजनैतिक कार्यकर्ता, भूमिदान, ग्रामदान या सर्वोदय का संदेश ले जाने वाले सर्वोदय-सेवक, प्रखण्ड-विकास के नाम पर साहबी ठाट से या बाबुओं की वेष-भूषा में सज्जित अफसर, ग्राम पंचायतों के निर्वाचन मुखिया या सरपंच अथवा नियुक्त पंचायत सेवक और उनकी नित्य आवश्यकता को पूर्ण करने के सिलसिले में पड़े-पड़े होती रहने वाली घूसखोरी इत्यादि का प्रभाव देहाती जीवन पर भी पड़ रहा है। अभिमन्यु को सात महारथियों ने घेर कर एकसाथ आक्रमण किया तो फिर वह बेचारा क्या करता? अन्त में मारा ही गया! जहां सब ओर से बुरा प्रभाव पड़ता हो वहां एक विनोबा या उसके इने-गिने कुछ निष्ठालु कार्यकर्ताओं की बातें नक्कारखाने में तूती की आवाज की तरह भी नहीं होती।

एक सर्वोदय-सेवक गया और गांव में मादक द्रव्य विरोधी वातावरण तैयार कर आया। दूसरे ही दिन जंगल विभाग का एक कर्मचारी उस गांव में गया और उसने खुद शराब पी और गांव के प्रभावशाली व्यक्तियों को पिलायी तथा गैरकानूनी तरीके से शराब बनाने के कार्य को प्रश्रय दिया। एक खादी सेवक देहात में गया। चरखे चलाने के लिए लोगों को समझा आया। किन्तु दूसरे ही दिन कल्याण राज्य का सेवक (?) साहबी ठाट में वहां गया। कर्ज के रूप में किसान को खेती करने के लिए रुपये दे आया। साथ ही साथ देहात के कपड़िया भाई पहुंचे, अपने पुराने पावने के नाम पर कृषि-कर्ज में मिला हुआ रुपया ले लिया और इस तरह परिस्थिति ने किसान को बाध्य कर दिया कि वह अपने इस्तेमाल के लिए कपड़िये से उधार कपड़ा खरीद ले। चरखा जहां का तहां रह गया। एक कार्यकर्ता उनके पास गया और अपने पैरों पर खड़े होने के लिये कह आया। वे प्रोत्साहित भी हुए और सोचने लगे कि अपना भला हमको खुद ही कर लेना है। लेकिन दूसरे ही दिन राजनैतिक दल का उम्मीदवार उनके पास पहुंचा और आकर्षक शब्दों में उसने समझा दिया कि उसको वोट दे दिया जाय तो जनता की सारी तकलीफें दूर हो जायेंगी, कुछ करना ही नहीं पड़ेगा। इस तरह किये कराये पर पानी फिर जाता है।

इसके अलावा कभी कभी यह भी देखा जाता है कि खादी और सर्वोदय के कार्यकर्ता भी ऊंचे मासिक वेतन लेते हैं, बिना अनिवार्य कारण के भी हवाई जहाज में यात्रा करते हैं या उन्हीं की तरह खादीतर शासकों से सम्बन्धित हैं, तो इससे आम जनता और साधारण कार्यकर्ताओं के दिल पर कुछ और ही प्रभाव पड़ता है।

विनोबाजी नियमित जीवन की तरह पदयात्रा में संलग्न हैं। अनेक निष्ठावान कार्यकर्ता समर्पण बुद्धि से देश में काम कर रहे हैं। उनकी बुद्धिमत्ता, विद्वत्ता, सर्वोदय के प्रति निष्ठा और उनके त्याग से भी लाखों करोड़ों लोग परिचित हैं, किन्तु विपरीत वातावरण शुद्ध, भावना को पलने नहीं देता। उसका असर अन्तर्धान हो जाता है।

अहिंसा की भाषा बोलने वाले कार्यकर्ताओं को इस पर विचार करना चाहिए कि यदि देश की राजनीतिक सत्ता या तंत्र के द्वारा नशेबाजी को उत्तेजन दिया जाता हो और वे उसका विरोध न करें, किन्हीं के द्वारा सर्वोदय की भावना कुंठित की जाती हो और वे इसका प्रतिकार न करें, किसी वर्ग विशेष के द्वारा गरीबों की रोजी छीनी जाती हो, अर्थात् उनका रोजगार नष्ट किया जाता हो और वे इसका विरोध भी न करें, तो वे भी उसी दोष के दोषी बनते हैं। हम लोगों ने सर्वोदय आरोहण में आकर अपने को लोक सेवक घोषित किया है। अतएव हमें सर्वोदय विरोधी उन कार्यों या प्रवृत्तियों की भर्त्सना करनी चाहिये और उन्हें स्पष्ट बुरा बतलाना चाहिये, क्योंकि उनके द्वारा सर्वोदय-विचार की प्रगति में रुकावट आती है। हां, ऐसा करने में हमको अवश्य ही प्रेम एवं नम्रता से काम लेना होगा। जनता में प्रवेश करके हम उनका राजनैतिक चैतन्य जगाते रहें, उनको वर्तमान आर्थिक और सामाजिक दासता से मुक्त होने के लिए प्रेरित करते रहें और सर्वोदय-विरोधी भावनाओं से लोगों को सावधान भी करते रहें, तभी सर्वोदय आरोहण सिद्ध होगा।

कब्जा न कर पाना भारी चिन्ता का विषय होना चाहिए। जो धर्मविशेष पर आधारित या वाद पर खड़े किये गये राज्यों की कल्पना करते हैं, वे जब भी सही रास्ते पर आयें लेकिन गांधीजी के बताये सही रास्ते का समझ-बूझ के साथ अंगीकार करने वाले भारत की इस साम्प्रदायिकता के कलंक से बचने का कुछ पुख्ता विचार करना और मजबूत कदम उठाना चाहिए। जबलपुर की घटना ने फिर एक बार यह संकेत किया है।

तमिलनाडु में सत्याग्रह की तैयारी

तमिलनाडु में कई ग्रामदान हुए हैं। कुछ गांवों में अधिकांश छोटे-छोटे किसान अपना भूस्वामित्व समर्पित कर ग्रामदान में शामिल हुए हैं, पर वहां के कुछ जमीनों के मालिक, जो गांव से बाहर धंधा या रोजगार करते हैं, ग्रामदान के सामुदायिक जीवन में शामिल होने को तैयार नहीं होते हैं, कई जमींदारों ने खासकर भूदान में शामिल होने वाले लोगों की बेदखलियां भी की है। तमिलनाडु के प्रमुख सेवक श्री जगन्नाथन् ने इस स्थिति के प्रत्यक्ष निरीक्षण और निराकरण के लिए सामूहिक पदयात्रा द्वारा व्यापक लोक संपर्क का कार्यक्रम अपनाया और उसके बाद इस नतीजे पर पहुंचे हैं कि इसके लिए सत्याग्रह का कदम उठाया जाय। अखिल भारत सर्व सेवा संघ की २७ अक्तूबर से ४ नवम्बर तक हुई प्रबन्ध समिति में श्री जगन्नाथन्जी इस विषय को उठाया और चर्चा हुई। प्रबन्ध समिति ने एक प्रस्ताव भी पास किया, जिसमें जमींदारों को समझाने बुझाने और उनके जीवनमान को बनाये रखने के लिए आश्वासन देने के बावजूद भी वे ग्रामदान में शामिल नहीं होते हैं, तो उनकी जमीन पर काश्त न करके असहयोग का कदम उठाया जाय और यह भी सावधानी रखी जाय कि हर सूरत में असहयोग का यह कार्यक्रम, वर्ग-संघर्ष और हिंसा का रूप न ले। इसको ध्यान में रख कर पिछली २६ २७ और २८ दिसम्बर को मदुराई जिले के ऊथियरहम में सपन्न हुई तमिलनाडु सत्याग्रही लोकसेवकों की बैठक में विविध सत्याग्रही कार्यक्रम को मान कर निम्नलिखित प्रस्ताव पास किया गया।

"यह बात प्रत्यक्ष है कि तमिलनाडु के कई जिलों में भूदान स्थिति तक ही आंदोलन, बिना काफी प्रगति किये ही रुका हुआ है। इसलिए भूदान मांगने का काम आगे क्रमशः चलाना चाहिए। आगे प्राप्त भूमि का वितरण अपने हाथों ही जाना चाहिए। यह 'प्राप्तिदान' कहा जाय। ऐसे 'प्राप्तिदान' अधिक मिले, इसका पूर्ण प्रयास हमको करना ही चाहिए।

भूमिदान, ग्रामदान-आंदोलन बढ़े, हमारा लक्ष्य पूर्ण हो; इसलिए हमको सत्याग्रही रीति से सीधी कारवाई करनी होगी। हमें लोकसेवक महसूस करते हैं कि उसके योग्य काल आ गया है। इस सम्बन्ध में हम तमिलनाडु सर्वोदय मण्डल का प्रस्ताव तथा सर्व सेवा-संघ का प्रस्ताव दोनों का तहे दिल से अनुमोदन करते हैं।

(१) बेदखली के खिलाफ सीधी कारवाई करनी चाहिए।

(२) ग्रामदान में शामिल न होकर ग्रामराज्य के निर्माणकारी कामों में बाधा करने वाले गांव के या गांव के बाहर रहने वाले खेत के मालिकों के साथ असहयोग-आन्दोलन चलाना चाहिए।

(३) भूदान करने का वचन देकर फिर अपना वचन भंग करने वाले भूस्वामियों के सम्बन्ध में सीधी कारवाई करनी चाहिए।

इन तीनों मोर्चों पर सत्याग्रह करने के लिए जहां-जहां मौके रहते हैं, वहां अभी से तैयारियां शुरू करनी चाहिए। सत्याग्रह के लिए हजारों की संख्या में किसानों को तैयार कर इन कार्यों में लगा दें।

प्रस्ताव पास किया जाता है कि इस सम्बन्ध के कार्यक्रमों में सत्याग्रही लोकसेवक भाग लेकर कार्य करेंगे।"

शांति सैनिक के पीछे स्नेह की ही सम्मति हो सकती है

दादा धर्माधिकारी

शांति सेना के बारे में हमारे सामने आज सबसे बड़ी समस्या यह है कि आखिर हम शान्ति किसे कहते हैं ? सवाल नया नहीं है, लेकिन संदर्भ नया है। जिन परिस्थितियों में शान्ति के विषय में आज हमको सोचना पड़ रहा है, उन परिस्थितियों में हम शांति किसे कहेंगे ? दुनिया में साधारण नागरिक शान्तिप्रिय होता है। झंझट नहीं चाहता। लेकिन जो शान्तिप्रिय होता है, वह आश्वासन भी चाहता है, जिसे आप संरक्षण कहते हैं। वह (सिक्यूरिटी) सहारा चाहता है। कहीं एक आश्रय स्थान (रेफ्यूज) चाहता है, और इसलिए हमेशा ऐसी फिक्र में होता है कि उसको बचानेवाली कोई शक्ति हो। जैसे धूप के वक्त हम छाया खोजते हैं; 'आतपेन क्लान्ताः तरोर्मूलम् भजाम :'। हम बहुत तंग आ गये तो पेड़ के नीचे बैठ गये। वह हमारा सहारा हो गया। मकान बना लिया तो एक आश्रय सहारा हो गया।

साधारण मनुष्य की आज कुछ ऐसी तबियत बन गयी है कि वह किसी न किसी चीज का सहारा खोजता है। कभी ईश्वर का, कभी गुरु का, राज्य का, संस्था का, कभी पलटन का। पलटन में हर सिपाही हमेशा शूर नहीं होता है। लेकिन सारी पलटन मिल कर बहादुर होती है। कोई सिपाही बन गया इसका मतलब यह नहीं है कि उसने मौत को जीत लिया। सिपाही इतना ही सीखा है कि अगर पलटन में खड़ा हो जाय और हुक्म हो तो उस वक्त मरने के लिए तैयार हो जाता है। एक आदत उसको हो गयी होती है। एक क्षणिक उन्माद पैदा होता है। उस सिपाही की सिपाहीगीरी शान्ति के समय काम नहीं आती। जब तक झगड़ा न हो, उसके लिए मौका ही नहीं है; और झगड़ा न हो तो उसके लिए पेशा भी नहीं है। पर आज हम ऐसी परिस्थिति में पहुँच गये हैं कि लड़ाई से अगर सबसे ज्यादा कोई तंग आ गया हो तो सिपाही तंग आ गया है। आज की परिस्थिति ऐसी है, कि लड़ाई में कम से कम मजा अगर किसी को आता है तो सिपाही को आता है। क्योंकि उसमें किसी प्रकार की आशा अब नहीं रही है। जो एक पहले आशा थी वह अब नहीं रह गयी। इस दृष्टि से यह परिस्थिति हमारे बहुत अनुकूल है, लेकिन दूसरी तरफ से बहुत प्रतिकूल भी है। क्योंकि दुनिया भर का साधारण नागरिक अब रक्षणा-कांक्षी बन गया है। वह अब यह चाहता है कि कोई मेरा रक्षण करनेवाला हो।

आप लोग जो इस देश में शान्ति-सेना का काम करना चाहते हैं, उनके लिए तो और भी भयानक परिस्थिति है। यहाँ का पढ़ा-लिखा आदमी यह सोचने लगा है कि यहाँ कोई डिक्टेटर आ जाय तो बहुत अच्छा। यह परिस्थिति शान्ति के लिए अनुकूल नहीं है। इसका मतलब यह होता है कि यहाँ का नागरिक अब "एफिमिनेट', स्त्रैण बन रहा है। मैं 'फेमिनाईन' नहीं कह रहा हूँ, स्त्री के गुण तो बहुत बड़े होते हैं, लेकिन स्त्रैणता, जिसे भीरुता, कायरता कहते हैं। इस प्रकार से यहाँ का नागरिक स्त्रैण बन रहा है। स्त्री ने अनादि परम्परा से संरक्षण ही खोजा। इस तरह से अगर सभ्य नागरिक संरक्षण ही खोजता है, चाहे मंदिर में, मस्जिद में, गुरुद्वारा में, पुलिस के थाने में या अपनी मकान की चहार-दीवारी में या किले में सब जगह अगर वह संरक्षण ही खोजता है तो यह मान लेना चाहिए कि परिस्थिति शांति के लिए अत्यंत प्रतिकूल है।

किले में और घर में क्या अन्तर है ? किला दुर्ग कहलाता है। किले का अर्थ है जिसमें कोई आ नहीं सकता—दुर्गम। जो दुर्गम है, जो जाने के लिए मुश्किल है, उसे किला, दुर्ग कहते हैं। सिपाही वहाँ खड़ा रहता है। पहरा देता है। बगैर इजाजत के अगर कोई आता है तो उसको वह मार डालता है। यह दुर्ग का, किले का और राजा के महल का गुण है। क्योंकि वहाँ सत्ता को, सत्ताधारी को सुरक्षित रखना है। और मकान का, घर का क्या गुण है ? आतिथ्य। आनेवाले के लिए दरवाजा खुला है। जो आये उसका स्वागत है। घर में मनुष्य का संरक्षण दूसरे मनुष्य से करने की आवश्यकता नहीं है। किले में मनुष्य का मनुष्य से संरक्षण करने की आवश्यकता होती है। अंग्रेजी में कहावत है : "हर एक अंग्रेज का मकान उसका किला है।" (एवरी इगलिशमेन्स हाउस इज हिज कैसल)

क्या हर शहर वहाँ के नागरिकों का किला होगा ? क्या हर मकान, उस मकान में रहनेवालों का किला होगा ? मकान पवित्र हो, उसका 'वायोलेशन' न हो, उस पर आक्रमण न हो सके यह बात तो समझ में आ सकती है। उस अर्थ में पवित्र, जिस अर्थ में मंदिर पवित्र होता है। पड़ोसी का मकान मेरे लिए उसी तरह पवित्र है, जितना मंदिर पवित्र होता है। लेकिन क्या पड़ोसी का मकान मेरे लिए उतना ही दुर्गम होगा जितना किला दुर्गम होता है। यह आज का मुख्य सवाल है।

मनुष्य आश्रय नहीं खोजेगा—मित्र खोजेगा। आज वह आश्रय खोजता है। और आश्रय, संरक्षण किससे खोजना है ? पड़ोसी से। जितना पड़ोसी नजदीक होगा उतना उससे डर ज्यादा होगा। मेरा सबसे ज्यादा दुश्मन कौन होगा ? जो सबसे नजदीक होगा वह। मेरे पड़ोसी से मेरा झगड़ा हो जाये तो मुझे बताइये कि मेरा दुश्मन चीन या पाकिस्तान होगा या वह मेरा पड़ोसी होगा जो तलवार लेकर खड़ा है ? तो जो मेरा निकटतम पड़ोसी है वही मेरा सबसे कट्टर दुश्मन बनता है। अब इससे संरक्षण की अगर आवश्यकता हो तो पुलिस की संख्या आपको बढ़ानी होगी, जो बंबई में संयुक्त महाराष्ट्र के आंदोलन के समय हुआ, जो असम में अभी हुआ और जिसके होने की परिस्थिति अब पंजाब में है। पर जो परिस्थिति है, उसका मतलब यह है कि मनुष्य अपने पड़ोसी के बदले और किसी शक्ति का संरक्षण खोजता है। यह राज्यशक्ति है, तो राज्यशक्ति की बुनियाद कहाँ है ? लोक शक्ति कहाँ टूटती और कहाँ जड़ पकड़ती है—जब मेरे पड़ोसी का भरोसा मैं नहीं करता, तब मुझे तीसरे की जरूरत पड़ती है। और तीसरा वह ऐसा चाहिए जो इन दोनों का कोई न लगता हो। बंबई में अगर संरक्षण करना हो तो तीसरा ऐसा चाहिए जो मराठी भी न हो और गुजराती भी न हो असम जैसा चाहिए जो असमिया न हो और बंगाली न हो। कश्मीर में ऐसा चाहिए जो पाकिस्तानी भी न हो भारतीय भी न हो। तो मनुष्य-मनुष्य के बीच भी ऐसा चाहिए जो या तो पशु हो या देवता हो ! यही हुआ न इसका मतलब ? इस चीज को अभी हमने पकड़ा नहीं है।

शांति की बुनियादें कहाँ हैं ? 'यू.नो.' संयुक्तराष्ट्र संघने इतना तो लिख दिया कि युद्ध का आरम्भ मनुष्य के मन में होता है इसलिए शान्ति की स्थापना भी मनुष्यों के मन में होनी चाहिये। यह यू.नो. की पहली धारा है। मनुष्यों के मन में युद्ध का आरम्भ होता है इसलिए युद्ध का अन्त और शान्ति की स्थापना मनुष्यों के मन में होनी चाहिए। लेकिन मन में होनी चाहिए माने कहाँ होनी चाहिए ? उनकी परिस्थिति में होनी चाहिए। जहाँ वे रहते हैं वहाँ होनी चाहिए। न हो तो हमेशा संरक्षण करनेवाले की आवश्यकता होगी और संरक्षण करनेवाला वह होगा, जो संरक्षण कभी नहीं कर सकेगा। ईसा के बारे में कहा गया कि दूसरों को उसने बचाया, किन्तु अपने आपको वह नहीं बचा सका। उसे सूली पर टंगना पड़ा। पेड़ मुझे बचायेगा। अपने आपको नहीं बचा सकता। इसका मतलब यह है कि सैनिक वह होगा जो अपने आपको नहीं बचा सकेगा। तो समाज में यह दो हिस्से हो जायेंगे, एक सैनिकों का और दूसरा नागरिकों का, एक बचनेवालों का और एक बचानेवालों का। हथियार लेकर जो बचानेवाला होता है उसकी सैनिकता अधिकृत (लायसेंस्ड) है। पुलिस और फौज के सिपाही को हथियार चलाने का लायसेन्स होता है और उसके पीछे आपकी संमति और आपका टैक्स है। मेरी हिंसा में और पुलिस की हिंसा में यह बहुत बड़ा फर्क है। उसकी हिंसा के पीछे समाज का लायसेन्स है—समाज की सम्मति है। आपका टैक्स है और आपका वोट है। इस तरह से जिसकी लायसेन्स्ड हिंसा होती है, उसकी सैनिकता समाज मान्य होती है। आपकी अहिंसा समाज मान्य है लेकिन सैनिकता समाजमान्य नहीं है। आप किसी को मारना नहीं चाहते, झगड़ा मिटाना चाहते हैं, समाज कहता है, यह तो बहुत अच्छी बातें हैं। इससे अच्छा आदमी कौन हो सकता है ? लेकिन समाज आपसे कहता है तुम झगड़ा मिटाओ लेकिन हम आपकी बात नहीं मानेंगे। पुलिस के सिपाही को समाज यह कह नहीं सकता क्योंकि उसके पीछे हुकूमत है। आपकी सिपाहियत के पीछे सम्मति (सँक्शन) क्या है ?

आप २०-२५ आदमी हैं—कोई हर्ज नहीं। जो क्रांतिकारी रहे हैं वह थोड़े ही रहे हैं। थोड़े रहे हैं इसीलिये क्रांतिकारी रहे हैं। ज्यादा होते तो क्रांतिकारी कहलाते ही नहीं। लेकिन आपके पीछे सँगठन (शक्ति) क्या है ? लोग आपकी बात क्यों माने ? हमारे पीछे सँगठन कौन-सा हो सकता है, इसकी हमारी खोज है। जो बहुत-सी बातें विनोबा ने कही हैं, उनमें से एक मार्के की कही है। जैसे वे हवा पानी, जमीन की बात हर सभा में कहते हैं। उसी तरह से एक और बुनियादी बात वे कहते आये हैं। सिंह जैसे अत्यन्त हिंस्र पशु को मारने के लिए भी मनुष्य को बंदूक काफी मालूम होती है। शेर को मारने के लिए बंदूक से आगे जाने की जरूरत नहीं होती। लेकिन मनुष्य को मारने के लिए एटमबम तक जाना पड़ता है। इसका बिलकुल सही और सीधा अर्थ यह है कि ऐसा कोई हथियार ही नहीं है, जो मनुष्य का संरक्षण मनुष्य से कर सकता है। यह केवल निःशस्त्र राष्ट्र की बात मैं नहीं कर रहा हूँ। आप चाहे जितनी खोज कीजिये। विज्ञान शायद इस नतीजे पर पहुँच रहा है कि मनुष्य से मनुष्य का रक्षण हो सके, ऐसा कोई हथियार नहीं हो सकता। और अगर दुनिया में कोई ऐसा हथियार नहीं है, तो शांतिके लिए विज्ञानकी परिस्थिति बहुत अनुकूल है। किन्तु मनुष्य के मन और हृदय की परिस्थिति बहुत प्रतिकूल है। विज्ञान के साथ मनुष्य कदम नहीं मिला पा रहा है। इसका अर्थ यह है कि विज्ञान के माप का मनुष्य आज दुनिया में नहीं है। दुनिया में मनुष्यता के कुछ पैमाने हम बनाते आये हैं। हरएक ने एक न एक पैमाना बनाया। पुराने ग्रीक तत्वज्ञानियों का कहना था कि मनुष्य अपने में ही पैमाना है। लेकिन मनुष्य ने मनुष्य

को पैमाना नहीं माना। मनुष्यता के अलग-अलग पैमाने वह मानता गया। मनुष्य के कुछ ऐसे पैमाने बनाये जो मानवीय नहीं थे, या तो अतिमानवीय थे, या तो कुछ ऐसे थे जो मनुष्य से नीचे के स्तर के थे। मनुष्यता का पैमाना नहीं बनाया। मिसाल के लिये स्त्री है। या तो वह देवी है या पशु है, गुलाम है। मनुष्य नहीं हो सकती। इस तरह से मनुष्य ने मनुष्य को नापने के जितने पैमाने अब तक बनाये या तो अति-मानवीय बनाये या तो जिसे सब ह्यूमन कहते हैं, याने मनुष्य से निकृष्ट बनाये। उत्कृष्ट या निकृष्ट ऐसे पैमाने बनाये। एक राष्ट्र जब अपने आप को तौलने लगता है तो अतिमानवीय पैमाने लेता है और जब दूसरे राष्ट्र को नापने लगता है तो हीनवीय पैमाने लेता है। दोनों के लिए मानवीय पैमाने लेता हो यह अवसर नहीं बनता। आज विज्ञान मनुष्य का पैमाना हो रहा है। उस विज्ञान ने यह फैसला दिया है कि कोई हथियार ऐसा नहीं हो सकता, जो मनुष्य से मनुष्य का संरक्षण कर सके। मनुष्य का संहार करने वाला हथियार हो सकता है। लेकिन एक मनुष्य से दूसरे मनुष्य का संरक्षण करनेवाला हथियार विज्ञान नहीं दे सकता। अब विनोबा यह कहते हैं तो इसका मतलब यह है कि मनुष्य को कोई दूसरा पैमाना खोजना होगा। वे उसके लिये ब्रह्मविद्या, वेदान्त वगैरह शब्द इस्तेमाल करते हैं। मैं आप से इतना ही कहना चाहता हूँ कि वह पैमाना मनुष्यता का होना चाहिये। दैवी भी नहीं, और पाशविक भी नहीं। साधारण नागरिकों को अविरत रूप से, सतत अब आप इसका ध्यान दिलाइये कि नागरिकों को नागरिकों से भय नहीं होना चाहिये। मनुष्य को मनुष्य से भय नहीं होना चाहिये।

सवाल यह है कि क्या हमारा शान्ति-सैनिक निःशस्त्र पुलिसमैन होगा? क्या मैं अहिंसक पुलिसमैन हूँ? या फायर ब्रिगेड वाला हूँ? कौन हूँ? आग बुझानेवाला हूँ? निःशस्त्र पुलिसमैन अगर हूँ, तो मेरी वृत्ति में केवल शस्त्र नहीं रहेगा और सब पुलिस और सैनिक की मेरी वृत्ति रहेगी। आज की दुनिया में हम एक ऐसी परि-स्थिति में हैं कि जितना निःशस्त्र प्रतिकार होता है वह सारा का सारा हिंसात्मक ही होता है। निःशस्त्र है लेकिन हिंसात्मक है। मैं अगर आज उपवास करता हूँ तो क्या मेरे मन के मन में और आपके (याने सामने वाले के) मन में अहिंसा बढ़ती है? मैं जब उपवास करता हूँ तो मेरे मन में क्या बढ़ता है? अपने मन को टटोलकर मैं देखूँ तो पता चलेगा कि अक्सर मेरे मन में भी क्रोध बढ़ता है और प्रतिपक्षी के मन में भी क्रोध बढ़ता है या भय बढ़ता है। यह सोचना है कि यह यदि मर जायेगा तो कह नहीं सकते क्या क्या होगा! जितने आज निःशस्त्र आन्दोलन, प्रतिकार होते हैं उनसे समाज में आतंक बढ़ रहा है। कहीं आतंक और कहीं क्रोध। इसलिये मैंने आपसे कहा कि एक तरफ से वैज्ञानिक परिस्थिति बहुत अनुकूल है। लेकिन देश के सामान्य नागरिकों की मनोवृत्ति प्रतिकूल है। यहाँ जितने युद्ध-प्रति-रोधी—(वार रेझिस्टर्स) और टालस्टाय सेमिनार में विदेशों से लोग आये, वे हमसे कहने लगे कि हमने दूसरे तो माना था कि गांधी के देश में बहुत अहिंसा की मनो-वृत्ति होगी। लेकिन आपके देश में शस्त्रों की जितनी तृष्णा है, उतनी तो यूरोप में भी नहीं है। इसका मुख्य कारण यह है कि जिसने लड़ाई कभी देखी नहीं होती वह लड़ाई का बहुत शौक रखता है। हमारे देश ने संपत्ति भी नहीं देखी और शस्त्र नहीं देखा है। इसलिए दोनों का यहाँ बहुत आकर्षण है। स्टीफन स्पेंडर ने कहा कि आप लोग तो सब ह्यूमन लेवल निकृष्ट मानवीय स्तर पर जी रहे हैं, डी ह्यूमनायझेशन—अमानवीय करण की क्या बात करते हैं? आपके बंबई में फुटपाथ पर जो आदमी पड़े हुए हैं और लोग जिस तरह से स्टेशन पर और बाजारों में पड़े हुए होते हैं, वह क्या है? आप सब—ह्यूमन लेवल पर जी रहे हैं, तो हमसे क्या कहते हैं कि मशीन से डी ह्यूमनायझेशन'—मानवीयता की समाप्ति हो जायेगी?

इस परिस्थिति को हमें सुलझाना है। शस्त्र का आकर्षण हमारे देश में आज अधिक से-अधिक है। जिस देश में शस्त्र का आकर्षण अधिक हो, उस देश में सारा का सारा निःशस्त्र प्रतिकार सशस्त्र प्रतिकार का अनुगामी होता है, उसके पीछे-पीछे चलने वाला है। आज हमारे देश में यही हो रहा है। जितना अहिंसक, निःशस्त्र आंदो-लन होता है वह सशस्त्र आन्दोलन का अनुगामी होता है। संघर्ष और युद्ध की मनोवृत्ति को बढ़ानेवाला वह आन्दोलन होता है।

क्या रक्षणपरायणता को हम समाज में से कुछ कम कर सकते हैं? यह बुनि-यादी सवाल हमारे सामने है। इसे सजीव शान्ति लीविंग पीस-भावरूप शान्ति-पोझि-टिव पीस कहते हैं। जो शिव की विभूति लोगों ने बतलाई है। शिव की विभूति अद्भुत से अद्भुत है। वह श्मशान में रहता है और जीवन को जिलाता है, जगाता है। श्मशान में जीवन के बीज बोता है। उधर तो भभूत रमाता है, और इधर अर्धनारीनटेश्वर है। अपने आधे शरीर में ही स्त्री को रखता है और उधर कामदेव को भी जलाता है। कुछ अद्भुत लक्षण हैं। जो समाज के कुछ विरोधाभास हैं वह एक ही व्यक्तित्व में समन्वित कर देता है। हमारे देश में, दुनिया में, आज साधारण नागरिक की कुछ ऐसी परिस्थिति है। उसके सामने विज्ञान ने श्मशान खड़ा कर दिया है। उसमें अब जीवन के बीज बोना है।

मेरा निवेदन आपसे इतना ही है कि पुराना समाज विज्ञान अब हमारे काम का नहीं है। विज्ञान में आज इतनी प्रगति हो गयी है कि मनुष्य का पुराना मानसशास्त्र आज नहीं चल सकता। उसका सामूहिक मानसशास्त्र (मुर सायकोलोजी) भी अब पुराना नहीं रह सकेगा। इस दृष्टि से आज आपके सामने यह सवाल उपस्थित कर दिया है।

आज मैंने यहाँ केवल समस्या का उपक्रम किया है। आखिर जब हम कहते हैं कि दुनिया में शान्ति होनी चाहिए तो उस शान्ति का मतलब क्या है? आशय (कंटेंट) क्या है? टालस्टाय ने कहा था कि शान्ति जिस द्रव्य की बनी है उस द्रव्य का नाम प्रेम है। जैसे ईंट जिस द्रव्य की बनी है उस द्रव्य का नाम मिट्टी है। तो कहा गया कि प्रेम का सिद्धान्त व्यवहार्य नहीं है। बहुत से ऐसे लोग होते हैं, जिनपर हम प्यार ही नहीं कर सकते। जिनके साथ हम किसी प्रकार की मुहब्बत नहीं रख सकते, ऐसे कई लोग हैं। तब हमने कहा कि मनुष्य के जीवन का ही द्रव्य प्रेम है; केवल उसके सम्बन्धों का नहीं। पारस्परिक सम्बन्ध जिस चीज के, वस्तु के बने हुए हैं, जिस उपादान के बने हुए हैं, वह उपादान प्रेम है। यह जो प्रेम और सत्य है, यह पोझिटिव-भावरूप है, शान्ति पोझिटिव है। केवल दंगा-फसाद न हो लोग एक दूसरे को न मारें यह आवश्यक है, यह तो होना ही चाहिए। इसके लिए मरना भी पड़े तो मरना चाहिए। लेकिन यह शान्तिसैनिक का संविधान नहीं है। उसकी अंतिम संपत्ति स्नेह की शक्ति ही हो सकती है, दूसरी नहीं। ('मणिभवन', बंबई में शान्ति-सैनिकों के बीच दिये गये ता० ७-१-६१ के प्रवचन से)

आणविक अस्त्रों के खिलाफ लंदन में सत्याग्रह

गत १८ फरवरी को लंदन में ब्रिटेन के रक्षामंत्रालय के सामने विश्व-विख्यात दार्शनिक और चिंतक श्री बर्टण्ड रसल के नेतृत्व में करीब ४००० लोगों ने तीन घण्टे तक एक 'बैठे रहो' सत्याग्रह किया। उन्होंने अपनी मांगों को एक घोषणा के द्वारा व्यक्त किया था, जिसकी एक प्रति मंत्रालय के दरवाजे पर चिपकायी गयी थी—उसमें कहा था :

"हमारा आज प्रदर्शन अहिंसा-त्मक सविनय आज्ञा भंग के कार्यक्रम का पहला कदम है। इससे हम अपनी सरकार को सूचित कर देते हैं कि मानवता का विनाश करने की उनकी तैयारियों को अब हम चुपचाप खड़े होकर नहीं देख सकते हैं।"

आणविक अस्त्रों के खास करके अमेरिका के साथ पोलारिस संधि के प्रति विरोध प्रदर्शित करने का यह आयोजन बड़े शान्त एवं गंभीर वातावरण में हुआ। पुलिस द्वारा एक भी गिरफ्तारी नहीं हुई।

श्री रसल ने इस अवसर पर कहा कि भविष्य में वे इस सत्याग्रह को इस ढंग पर संचालित करेंगे कि उसकी प्रतिक्रिया अधिक उग्र हो ताकि अपने देश और दुनिया का ध्यान इस विभिषिका की ओर आकर्षित हो सके।

श्री रसल ने आगे कहा कि 'हमारी इस गड़बड़झाले की दुनिया में जिनके हाथों में समस्त मानवता के जीवन और विनाश की शक्ति है, वे लोग इतनी सामर्थ्य रखते हैं कि समाचार पत्रों और प्रचार के साधनों के जरिये अपने देश की समूची आबादी के मन में यह विचार बैठा दें कि हम जैसे आदमी जो मानव सुरक्षा को हिमायत करते हैं—पागल हैं। कोई आश्चर्य नहीं कि मेरे अन्तिम दिन किसी पागलखाने में ही बीतें। कम से कम वहाँ ऐसे लोगों की संगति तो मिलेगी जिनके अन्दर मानवीय भावनाएँ स्पंदित होती हैं।'

रचना और संहार में भेद न करने-वाली दुनिया की आँखें खोलने के लिए ही श्री बर्टण्ड रसल का यह सत्याग्रह चल रहा है। साम्राज्यवाद की मीनारें आज ढह रही हैं लेकिन विचारों और आदर्शों की ओट लेकर आज बड़ी शक्तियाँ फिर से सारी दुनिया को विनाश के कगार की ओर ढकेल रही हैं। इस दृष्टि से मानवता के इतिहास में श्री रसल का यह प्रयास अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है।

सबको सुख मिले

किरावली तहसील के भूमिहीनों के सम्मेलन के समय की बात है। सम्मेलन में एक भाई ने आठ बीघा जमीन दान में दी। आगरा के सर्वोदय-कार्यकर्ता श्री चिम्मन लालजी दाता की माँ से घर जाकर मिले और पूछा कि "तुम्हारे बेटे ने आठ बीघा जमीन भूमिहीनों के लिए दी है। तुम्हें कैसा लगा?" माँ ने उत्तर दिया :

"मैंने जिंदगी में दुःख ही दुःख देखे हैं, मेरे लड़के ने भूमि देकर दूसरे को सुख दिया, तो मुझे बहुत खुशी हुई। मैं तो चाहती हूँ कि सबको सुख ही सुख प्राप्त हो।"

इस अपढ़ विधवा माँ, जिसने अपनी जिन्दगी में काफी तकलीफें और परेशानियाँ सही थीं, उसके यह विचार सुनकर सबको बड़ी स्फूर्ति मिली।

सर्वोदय मंडल, किरावली (आगरा) —फूलचन्द

ग्राम स्वराज्य की दिशा में खादी-उद्योग बढ़े

शंकरराव देव

प्रश्न :—आपने कहा था कि हमारे आर्थिक नियोजन का आधार और प्राथमिकतायें ऐसी हों जिससे छोटे छोटे समाज का निर्माण हो और उससे लोकतंत्र की रक्षा होगी। हमारे देश में खादी का काम कई वर्षों से चल रहा है और वह कुछ हद तक छोटे गांवों और गांव समूहों में ही चल रहा है। आपका यह कथन यदि सत्य है तो फिर इस खादी काम में से छोटे-छोटे लोकतंत्रीय समाज का निर्माण हुआ हो, जिसमें स्नेह और *सहयोग हों, ऐसा नहीं दिखता है*, इसका आपकी राय से क्या कारण है।

उत्तर :—खादी का काम वर्षों से छोटे छोटे हजारों गांवों में हो रहा है यह सही है लेकिन उसमें से जो परिणाम आना चाहिए था, वह नहीं आया इसका कारण यह है कि खादी का यह काम गांधीजी की दृष्टि और गांधीजी के सुझाये ढंग से नहीं चला। केवल आर्थिक उत्पादन का छोटी ईकाई में चलता है और इतने से लोकतंत्र की स्थापना हो जाती है, ऐसा समझना गलत है। गांधी जी ने चरखे को अहिंसात्मक समाज-निर्माण का साधन या प्रतीक माना था छोटे-छोटे गांवों से केवल खादी उत्पादन का काम करने मात्र से खादी का वह दावा सिद्ध नहीं हो सकेगा। यह तब तक नहीं होगा जब तक खादी उत्पादन गांव के या ग्रामीण क्षेत्र के अन्य दूसरे सारे उत्पादनों के साथ और उनके शैक्षणिक सांस्कृतिक जीवन के साथ जुड़ न जाय और *इनका जरिया न बन जाय। यही कारण है कि गांधी जी ने चरखे को सारे रचनात्मक कार्यों के गृह-मंडल का सूर्य कहा था।*

प्रश्न :—बीच में बात पूछ लूं। यह मैं जानना चाहता हूं कि गांधीजी ने चरखे को अहिंसा का प्रतीक क्यों कहा?

उत्तर :—गांधी जी के हृदय में गरीबों के लिए प्रेम था, उन गरीबों के साथ तादात्म्य पाकर ही वे ईश्वर का साक्षात्कार करना चाहते थे। यह प्रेम और तादात्म्य गरीबों की गरीबी और भूखों की भूख मिटाने का रूप धारण नहीं करता, तो गांधी जी के लिए वह प्रेम और तादात्म्य निकम्मा होता। इसलिए गांधी जी के सामने यही बड़ा सवाल था कि यह गरीबी और भूख कैसे मिटे। उन्हें इस सवाल को हल करने का उपाय उस परिस्थिति में सहज ही चरखा ही सूझा।

क्योंकि आज की तरह ही उस समय भी भारत के सारे ग्राम उद्योगों में सबसे प्रमुख, प्राचीन और व्यवस्थित रूप से विकसित कोई उद्योग था, तो वह कपड़ा उद्योग ही था। और इसी के जरिये भारत के लाखों गांवों में रहने वाले *करोड़ों लोगों को रोजगार दिया जा* सकता था। खादी कार्य का इतिहास देखें तो मालूम होगा कि यह कितना सत्य है।

लेकिन केवल बेकारों को काम देना या भूखों को भोजन देना ही गांधीजी का लक्ष्य नहीं था, वे एक नये समाज का निर्माण करना चाहते थे जिसमें गरीबी और भूख हमेशा के लिए मिट जाय। यही कारण है कि गांधी जी को चरखे में एक संपूर्ण अहिंसात्मक समाज का दर्शन हुआ।

प्रश्न :—यह तो समझ में आया। अब मेरे पिछले प्रश्न पर कुछ प्रकाश डालिये कि खादी के द्वारा गरीबी और भूख हमेशा के लिए कैसे मिटे? और छोटे-छोटे लोकतंत्रीय समाज की स्थापना कैसे हो?

उत्तर :—ऐसे छोटे समाज का जिसमें लोकतंत्रीय मूल्यों की रक्षा और विकास हो, मुख्य लक्षण यह होगा कि उस समाज में रहने वाले लोगों के लक्ष्य, आकांक्षायें भौतिक से लेकर आध्यात्मिक तक सारी आवश्यकताएँ समान होंगी, और उनकी सिद्धि के लिए उन लोगों में सहयोग और परस्परावलंबन होगा। ये सारी चीजें गांधी जी के स्वदेशी धर्म में गृहीत तथा निहित है।

लेकिन हम लोगों ने स्वदेशी की बहुत संकुचित और उथली व्याख्या की है। पहले तो विदेशी वस्तुओं के विरोध में स्वदेशी भावना आयी और उसका स्थूल रूप यह हुआ कि विदेशी माल की जगह देशी कारखानों के बने माल का उपयोग हो। कुछ दिनों बाद इसी स्वदेशी भावना का कुछ विस्तार यह हुआ कि देशी मिलों की चीजों के बदले देहाती चीजों का उपयोग ही स्वदेशी धर्म माना गया है। लेकिन इस संकुचितता में से अहिंसात्मक समाज का, जैसे ऊपर कहा है, लोकतन्त्रीय छोटे-छोटे *समाज का निर्माण होना सम्भव नहीं है और* गांधीजी के स्वदेशी धर्म का अर्थ भी यह नहीं था। गांधीजी के स्वदेशी धर्म का अर्थ था, जीवन की सारी आवश्यकताओं की पूर्ति और समृद्धि परस्पर सेवा याने सहयोग से हो। यह सिद्ध होता है तो उसमें से एक सम्पूर्ण जीवन का निर्माण होगा।

यानी गांधी जी की स्वदेशी एक मानवीय जीवन धर्म था। आज का खादी उत्पादन जो हो रहा है वह सही और सम्पूर्ण अर्थ में इस मानवीय जीवन-धर्म पर आधारित नहीं है। यदि वह जीवन-धर्म पर आधारित होता है तो केवल कपड़े *की आवश्यकता को लीजिये वहां खादी* निर्माण होगी वह वहां के लोगों के उपयोग के लिए होगी।

लेकिन आज करीब करीब सारा खादी का उत्पादन जो हो रहा है उसमें गांधीजी की योजना के अनुसार होनेवाली खादी उत्पादन में उतना ही विरोध है, जितना कि जैसे हमने पिछली बार कहा था, कल्याणकारी शासन संस्था में *और सैद्धांतिक अराजकवाद (फिलासफिकल अनार्किज्म)* या अहिंसात्मक समाज में है, आज यह एक सामान्य नियम ही बन गया है कि खादी का उत्पादन बाजार के लिए, उपयोग के लिए, नहीं हो रहा है। इसका परिणाम यह आया है कि बड़े-बड़े शहरों में शानदार खादी भवनों का निर्माण हुआ, वहां दूर-दूर के विदेशी आकर खादी खरीदने लगे और हम इसका बड़ा *गौरव अनुभव करते हैं। भारत के* कोने में किसी देहात में निर्मित हुई खादी बम्बई दिल्ली में बिकती है और उसको पहनने वाले लण्डन और न्यूयार्क में रहते हैं। अब भला भारत के देहात में खादी पैदा करने वाला भाई या बहन का उस खादी को पहनने वाले लण्डन और न्यूयार्क में में रहने वाले भाई या बहन से कहां से परिचय हो, कहां सहजीवन हो और कहां उनके लक्ष्य व आकांक्षायें समान हों। सारा अव्यक्त है।

प्रश्न : तो क्या आप यह कहना चाहते हैं कि ये सारे खादी भवनों का निर्माण गलत है, इन्हें बंद कर देना चाहिये और बाहर वालों को खादी बेचनी नहीं चाहिये?

उत्तर :—मेरे कथन का शब्दशः आप अर्थ न लीजिये, उसका भाव ग्रहण कीजिये। मेरे कहने का भाव यह है कि खादी का उत्पादन मुख्यतः अपने पड़ोसी के उपयोग के लिये होना चाहिये और परिचितों की सेवा की भावना से होना चाहिये। ऐसा होगा तो ही अहिंसात्मक समाज या सच्चा लोकतंत्रीय समाज खड़ा हो सकेगा। *स्थानिक उपयोग के बाद* जो बचता है वह क्रमशः विस्तृत होते जाने वाले वर्तुल की तरह आस-पास के क्षेत्रों के दायरे के उपयोग में आवे (ऐक्सपाइडिंग सर्कल में काम आवे) ऐसी व्यवस्था होनी चाहिये। यही नहीं, बल्कि आस-पास के क्षेत्र के लोगों की आवश्यकता की पूर्ति के लिए *भी सुनियोजित उत्पादन होना चाहिये।* गांधीजी का यह बाइडनिंग सर्कल (विस्तृत होते जाने वाला वर्तुल) ओशनिक सर्कल है (समुद्रीय तरंगों की तरह है) उसमें इंग्लैंड और अमरीका भी आ जाते हैं। लेकिन सब अपनी-अपनी जगह और उचित समय पर। खादी के बारे में यह जो हम कह रहे हैं वही गांधीजी का भी विचार था। गांधीजी ने आगाखाँ महल से छूट कर आने पर खादी कार्यकर्ताओं के सामने अपने जो विचार रखे, उसमें विचिकित्सा या संशय के लिये कोई गुंजाइश नहीं है। गांधीजी के विचार नव-संस्करण के नाम से मशहूर हैं। उस समय तक चरखा संघ के द्वारा जो केन्द्रित और व्यापारी खादी का उत्पादन होता आया था, उसे एक दम बंद कर देने की *सलाह उन्होंने दी थी क्योंकि उससे अपेक्षित* अहिंसा शक्ति देश में पैदा नहीं हुई। उनकी स्पष्ट राय थी कि चरखा संघ का विघटन किया जाय और खादी कार्यकर्ता अपनी व्यक्तिगत जिम्मेदारी पर गांव-गांव में लोकशक्ति और लोकाभिक्रम जागृत करके खादी उत्पादन का काम खड़ा करें। लेकिन जो चीज एक दफे जन्म लेती है उसके जीवन का एक धर्म होता है और उस धर्म में उस जीवन को टिकाने की शक्ति भी रहती है। गांधी जैसा महान् व्यक्ति भी उसका उल्लंघन नहीं कर सकता। आज भी वही अनुभव आ रहा है। नया मोड़ शुरू हुआ। उसे दो वर्ष हुए। नया मोड तभी सफल होगा जब बड़ी-बड़ी संस्थाओं का काम जो आज चल रहा है वह विघटित हो और उसकी जिम्मेदारी गांव के लोग स्वयं ले लें। लेकिन आज संस्थावाले जो कुछ कर रहे हैं, उससे बड़ी संस्था छोटे क्षेत्रों में पुनर्जन्म *ले रहा है और इसे ही विकेन्द्रिकरण* समझा जा रहा है। इसमें शक नहीं कि इससे काम में कुछ सहूलियत जरूर होगी, खादी कुछ हद तक गांव और गांव वालों के कुछ नजदीक आयगी। लेकिन खादी का जो विकेन्द्रिकरण हम चाहते हैं, वह यह नहीं है, पिछले दो वर्षों से हम यह बात बराबर कहते आये हैं। लोग कहते हैं कि यह विचार सुनने में तो अच्छा लगता है, पर व्यवहार की दृष्टि से उनका *यह मानना है कि हम बड़ा विध्वंसक* कार्य कर रहे हैं। हमें इससे बड़ा दुख होता है।

प्रश्न ;—लेकिन मजबूरी यह है कि खादी बहुत महंगी है, देहातों के गरीब लोग उसे खरीद नहीं सकते। इसके लिये सरकार का सहारा लेना पड़ता है और *शहर वासियों के मन में कुछ त्याग वृत्ति* और गरीबों के प्रति कुछ सहानुभूति का आवाहन करके खादी को शहरों के बाजार में बेचना पड़ता है'।

उत्तर :—आज की हालत जैसा आप कह रहे हैं वैसी ही है। लेकिन यह स्थिति बदल सकती है, सुधार हो सकता है, बशर्ते

[शेष पृष्ठ ११ पर]

बागी और सरकार

श्री विमला ठकार को लिखे गये पत्र से :

"लोकमन तथा अन्य सभी आत्मसमर्पणकारी बागियों की अपील दाखिल कर दी गयी है। उत्तर प्रदेश की पुलिस की गैरकानूनी ज्यादतियों में बढ़ोतरी ही होती जा रही है। ग्वालियर से आगरा जाते समय इन बागियों को उत्तरप्रदेश-सीमा में सैयाँ थाने के पास रोक कर क्षेत्र की जनता और मुखबिरों के द्वारा अपमानित किया गया।

बागियों का तो परिवर्तन हुआ, पर सरकार के लगता है हृदय ही नहीं है। 'मैन' जैसे ही 'पुलिस-मैन' बनता है, उसे न जाने क्या हो जाता है? वह इन्सान रहता ही नहीं, इन्सानियत उसको न जाने कहाँ चली जाती है?"

—गुरुशरण

श्री विमला बहन का उत्तर :

"पत्र मिला। उत्तर प्रदेश की पुलिस गैरकानूनी ज्यादतियाँ बढ़ाती आ रही है, इससे मुझे न कोई दुख होता है, न आश्चर्य। पुलिस कोई साहसी बागी तो नहीं है कि एक बार दिये हुए वचन पर अटल खड़ी रहे। सरकार भी सत्याधिष्ठित शासन चलाने के लिए कोई 'राजा रामचन्द्र' नहीं है। हमारे भीतर दण्ड-शक्ति की जो प्रतिष्ठा है, उसी का मूर्त रूप है सरकार और उसकी पुलिस। अलावा इसके, लोकमन आदि आत्म-समर्पणकारी बागियों ने क्रांतिकारी विनोबा का हाथ पकड़ा है। दण्डशक्ति को चुनौती देने में वे विनोबाजी के साथ हो गये हैं। किसी भी देश की कोई भी सरकार क्रांतिकारी न बन सकती है, न क्रांतिकारियों का साथ दे सकती है। वह सुधार तक खुद कदम उठायेगी और सुधारवादियों को सर आँखों पर उठायेगी। बागियों को पुलिस अपमानित करायेगी, सतायेगी, इसका अंदाज मुझे पहले से ही था। दिल पर पत्थर रख कर लिख रही हूँ कि मेरे आत्मसमर्पणकारी भाई मुख-चैन की अपेक्षा जिस प्रकार नहीं रखेंगे उस प्रकार सरकार से सम्मान और प्रतिष्ठा की अपेक्षा भी न रखें।

इन बागी भाइयों ने विनोबाजी जैसे संत-हृदय को जीत लिया है। जयप्रकाश और जवाहरलाल के दिलों को झकझोर दिया है। भारत के ही नहीं, अपितु संसार के सभी दार्शनिक और विचारक व्यक्तियों के हृदय में स्नेह का सिंहासन पाया है। शायद ही कोई जीवन भर तपस्या करके इतना पाता। जो पाया है, वह उनसे छीनने की ताकत न पुलिस के डण्डे में है, न फांसी की रस्सी में है। मृत्यु मानव मात्र के लिए अटल है। सुखदुख मान-अपमान हर मनुष्य को प्रारब्ध के अनुसार सहन करने ही पड़ते हैं। इसलिए वे धीरज रखें, शांति रखें। कबीर के बेटे कमाल ने कहा है—"कहत कमाल प्रेम के मारग—सीस दिया अब रोना क्या रे?"

लोकमन और उनके साथी अब अमर हो गये—उनके शरीर जिन्दा रहें चाहे मुर्दा। विनोबा के क्रांति के इतिहास में चम्बल घाटी के बागियों का आत्म-समर्पण एक उज्ज्वल और उदात्त प्रकरण है।"

—विमला ठकार

विचार शिक्षण के लिये पदयात्रा

चर्खे से खादी, खादी से वस्त्र स्वावलम्बन और वस्त्र स्वावलम्बन से ग्राम स्वराज्य, इस व्यूह-रचना का प्रयोग करने की बात मन में थी। इस तरह का प्रयोग किसी विशिष्ट क्षेत्र में ही हो सकता है यह भी स्पष्ट था। ऐसा भी लगता था कि नया प्रयोग नये क्षेत्र में ही हो सकता है। मुंगेर जिले में गिद्धौर थाना झिमुलतला घराई का ऐसा क्षेत्र है जो अछूता कहा जा सकता है। रचनात्मक कार्य और राजनीति दोनों दृष्टियों से। इसलिए मन में आया कि इसी क्षेत्र को जरा करीब से देखना चाहिये।

३० जनवरी को सर्वोदय पक्ष के अवसर पर 'लक्ष्मी गाड़ी' में खादी और साहित्य रखकर हम १५ साथी, उसमें ११ अभी पिछले ही महीने प्रशिक्षित होकर निकले हैं, चल पड़े। कुल चौदह गावों में गये। सामान्यतः एक दिन में एक गाव जाते थे। बीच में मौसम अत्यन्त खराब हो गया फिर भी हम लोग चलते ही रहे। ४ ५-६ मील पर पड़ाव, सुबह ८ बजे पूर्व निश्चित पड़ाव पर पहुँचा। पहुँचते ही ग्राम प्रदक्षिणा श्रमदान, खादी बिक्री, ४ बजे शाम प्रार्थना और सभा। यही कार्यक्रम रहता था। भोजन परिवारों में बटकर होता था। सभा की चर्चा का मुख्य विषय होता था ग्राम स्वराज्य की भूमिका में खादी का नया विचार जिसका लक्ष्य है ग्राम परिवार का निर्माण।

हम लोगों ने देखा कि १३ वर्षों की पार्टी बन्दी, बढ़ते हुए शोषण गरीबी और बेकारी के बाद लोग अब ग्राम परिवार और ग्राम स्वावलम्बन के विचार को सुनने लगे हैं। हाँ ग्रामस्वराज्य अभी दिमाग में नहीं घुसता। लेकिन गाँव का काम सहकार शक्ति से होगा। इस बात की व्यवहारिकता स्पष्ट नहीं होती, भरोसा भी नहीं होता। सर्वोदय जिसे सर्व नाश समझता है। जनता उसमें ही कल्याण देखती है। गावों में एक प्रकार की वैचारिक शून्यता (आइडियोलोजिकल वेकुम) है। यह शून्यता भयकर है। क्योंकि इसमें असामाजिक विचारों के पनपने का खुला अवसर है। इसलिये हम लोगों को लगा कि सबसे पहले और सबसे अधिक प्रयत्न होना चाहिए। विचार शिक्षण द्वारा इस शून्यता को भरने की और उसके खाली स्थान के रूप में चर्खे का प्रवेश कराने की। चर्खा विवाद मुक्त है। इसके साथ गांधी की प्रतिष्ठा है, उसका अर्थशास्त्र गाव की बुद्धि में समा सकने वाला है उसमें तत्काल प्रत्यक्ष लाभ है, उससे तुरन्त गाँव का अभिक्रम और व्यवस्था शक्ति जगती है। शर्त यह है कि चर्खा कपड़े के लिये चलाया जाय, यानी उसके पीछे स्वावलम्बन संकल्प की शक्ति और प्रेरणा हो। विचार शिक्षण द्वारा व्यापक वातावरण निर्माण और चर्खे द्वारा सघन काम—यह व्यूहरचना कारगर सिद्ध होगी।

यह निश्चित रूप से मान लेना चाहिए कि सर्वोदय पदयात्रा द्वारा ही जनता तक पहुँचेगा। पदयात्रा विचार शिक्षण, कार्यकर्ता-प्रशिक्षण, संगठन आदि सबका सुलभ माध्यम है। काम के साथ-साथ यात्रा को अनिवार्य मानना चाहिये, विचार की ही मोर्चेबन्दी में चर्खा यशस्वी होगा। लेकिन पैदल चलना ही पदयात्रा नहीं है।

१२ दिनों में ३२० रुपया की खादी और ३० रु० का साहित्य बिका। पदयात्रा क्रम हर महिने जारी होगा। पहले चुने हुये गाँव फिर प्रत्येक गाँव, अंत में अंचल सचार यह क्रम मन में है।

रामसूर्ति

रत्नागिरी जिले के ग्रामदानी ग्राम-निवासियों का शिविर

रत्नागिरी जिले में वालावल के इर्द-गिर्द के ग्रामदानी गाँवों के ७० निवासियों का एक शिविर ता० ८-९ फरवरी को हुआ। जिले के तीस गाँवों में ग्रामनिर्माण-कार्य चल रहा है। सामूहिक खेती से फसल का उत्पादन बढ़ा है। खेती के साथ ही पूरक उद्योग के रूप में अंबर परिश्रमालयों में कपड़ा भी तैयार करते हैं। गाँवों में अनाज संग्रह, कुँए और ग्राम-भांडारों के लिए क्षेत्र-समितियाँ बनी हैं।

कोल्हापुर जिले के निजूर गाँव के श्री रत्ननाथ शिंदे ने वहाँ की जानकारी दी। निजूर गाँव में लगभग एक हजार एकड़ जमीन और ३५० लोगों की बस्ती है। फिर भी अनाज की कमी महसूस होती थी। लोगों को ग्रामदान का विचार जँचा। सब एक हुए, सारी जमीन गाँव की मान-कर सबने मिलजुल कर खेती की। गाँव की नदी के पानी का प्रयोग करके इस वर्ष २६ एकड़ जमीन में सिंचाई से बाग-बगीचा बनाया। अगले वर्ष और १६ एकड़ जमीन में उसको बढ़ायेंगे। अब खेती का काम इतना बढ़ा है कि लोगों को फुरसत नहीं मिलती। गृहोपयोगी वस्तुओं की एक दुकान गाँव में चलाते हैं। लड़कों को पढ़ाई के साथ कृषि-कार्य और व्यायाम की भी तालीम देते हैं।

रत्नागिरी के ग्रामदानी गाँव ओवलिये की जानकारी देते हुए श्री तिरोडकर ने बताया कि उनके "गाँव में जमीन कम है, लेकिन ग्रामदान के बाद कृषि-सुधार की ओर ध्यान देने से अब उत्पादन बढ़ गया है। इस साल नई सौ एकड़ भूमि पर खेती करने की योजना बनी है। गाँव में बाल मंदिर, पुस्तकालय है, चर्मालय भी शुरू हो रहा है। गाँव की ग्राम-स्वराज्य सोसाइटी बनायी गयी है।"

नानेली गाँव के श्री जनार्दन अणावकर ने कहा, "हम २६ परिवारों ने ग्रामदान को मान्यता दी। ४ भूमिहीन परिवारों को भूमि और साधन दिये गये। गाँव अब अनाज का भंडार बन गया है। अंबर चरखा हम चलाते हैं। जापानी ढंग की धान की खेती के कारण फसल बढ़ गयी है। हम यथा शीघ्र अनाज में स्वावलंबी बनेंगे ऐसी आशा है।"

इसी तरह अन्य ग्रामदानी गाँवों के लोगों ने अपने अपने गाँव की प्रगति की जानकारी दी।

गाँवों की समस्याओं की चर्चा करते हुए श्री गोविंदराव शिंदे ने कहा कि ग्रामदानी गाँवों की प्रारंभिक कठिनाइयाँ अब दूर हो गयी हैं। शुरू में लोग संदेह की दृष्टि से देखते थे, लेकिन वह स्थिति अब नहीं रही है। अब हमें सामूहिक जीवन के बारे में सोचना चाहिए। सामाजिक समानता लाने के लिए सबको विशाल दृष्टि अपनानी चाहिए। जिन पर गाँव का नेतृत्व है, उनको अपनी जिम्मेदारी का खयाल करना होगा। गाँव में सामूहिक खेती की ही तरह जानवरों की देखभाल, छोटे बच्चों की देखभाल सामूहिक रूप से करनी चाहिए। शादियाँ, सामूहिक भोजन, सार्वजनिक प्रार्थना आदि कार्यक्रम ग्राम-सभा को हाथ में लेने चाहिए।

वालावल ग्राम निवासियों से पूरी मदद मिली। शिविर के अंत में आगामी अप्रैल में माणगाँव क्षेत्र में शिविर लगाने का तय हुआ। उस समय सब लोग एक सप्ताह की पदयात्रा करके गाँव-गाँव ग्राम-स्वराज्य का संदेश पहुँचायेंगे।

जब मैंने रिक्शा चलाया

जयनारायण

[३ मार्च के अंक में हमने एक प्रसंग का उल्लेख किया था। 'कुमारप्पा-स्मारक निधि' के लिए धन-संग्रह की अपील पढ़ कर जिला सर्वोदय-मण्डल, रोहतक के संयोजक, श्री जयनारायण ने छः दिन रिक्शा चला कर उसकी कमाई कोष के लिए भेजी थी। रिक्शा चलाने के दिनों में उनको जो अनुभव हुए, उसमें से कुछ नीचे के लेख में उन्होंने दिये हैं।

ऐसे अनुभव रोज ही रिक्शा चलाने वालों को होते हैं। कभी-कभी हम भी ऐसी घटनाओं के कारण बन जाते हैं। इस तरह हम अपने आपको कभी-कभी दूसरों की स्थिति में रख सकें तो हमें इस बात का अन्दाजा हो कि दूसरों पर क्या बीतती है! —सं०]

फरवरी की बारह तारीख! बापू का श्राद्ध-दिवस!
ठीक इसी तरह कुमारप्पाजी का भी श्राद्ध-दिवस!
गांधी और कुमारप्पा! श्रमजीवी और आज का आर्थिक संयोजन!

आर्थिक संयोजन के इस ऊबड़-खाबड़ धरातल पर श्रमजीवियों का जीवन समाज के चतुर खिलाड़ियों के लिये गेंद की तरह ही तो है!

'भूदान-यज्ञ' हाथ में था; उसमें आर्थिक विचारों के क्षेत्र में क्रांति लाने वाले की पावन स्मृति में 'कुमारप्पा स्मारक निधि' के लिये अपील छपी थी। उसे पढ़ रहा था, सोच रहा था अपनी ओर से भी कुछ श्रद्धा-कण इस पुनीत स्मारक के लिये भेजूं—पर क्या भेजा जाय? कितना भेजा जाय? यही सोचते-सोचते दिन बीत गया।

• • •

रात हो चुकी थी। मैंने अपने आपको रिक्शा यूनियन के सामने पाया। कुछ थके-थके-से चेहरे वहाँ थे और उन्हीं के पास बैठे थे स्थानीय रिक्शा यूनियन के प्रेसिडेण्ट, 'कामरेड साहब'।

"कामरेड साहब! मुझे रिक्शा चाहिये!"

"जाओ भाई, छोड़ आओ बाबू-जी को!"

"नहीं-नहीं कामरेड साहब! आप मेरी बात समझे नहीं। मेरा मतलब यह नहीं है, मैं कहना यह चाहता था कि मुझे रात भर को चलाने के लिए किराये पर रिक्शा चाहिए।"

कामरेड साहब, जो मुझसे अच्छी तरह परिचित थे, कुछ स्तम्भित-से होकर लगे, सवाल पर सवाल करने। सारी बात समझ जाने के बाद एक खूबसूरत-सा रिक्शा मेरे सामने लाकर खड़ा कर दिया गया।

आर्थिक ढाँचा

•

तीन पहियों की इस बदनसीब (या खुशनसीब!) गाड़ी को, जिस पर दो व्यक्ति पीछे की सीट पर सवार होते हैं और तीसरा इस पर बैठ कर दोनों को खींचता है, लिए अपने ही नगर की सड़कों और बाजारों में, जहाँ जाने-पहिचाने चेहरे नजर आ रहे थे, कड़ाके की सर्दी और तेज हवा थी, दिल में एक निष्ठा और उमंग लिये मैं चला जा रहा था। चलता गया...बराबर तीन घण्टे! सारा शहर घूम चुका था। रात के ११ बजने को आये, मगर मेरी रिक्शा पर बैठने के लिए कोई नहीं आया... एक भी नहीं आया!

अन्त में थका-माँदा, निराश होकर रिक्शा को चौक में खड़ा किया और स्वयं भी बैठ गया उसी के सहारे। नींद तो क्या आनी थी इस सर्दी में, पर थकान के कारण आराम की ये घड़ियाँ कुछ प्यारी-प्यारी-सी लग रही थीं। अपने आपको विचारों में कुछ खोया सा अनुभव करने लगा ही था कि किसी की आवाज ने मुझे अचानक चौंका दिया:

"ऐ रिक्शा ... !"

"हाँ बाबूजी! बैठिये, कहाँ चलेंगे?"

"गली में ले चलो, स्टेशन जाना है।"

बाबू के आदेशानुसार दूर अंधेरी गली में एक मकान के सामने रिक्शा लगा दिया। लगा रिक्शा पर सामान लदने..... सामान का बोझ ही अढ़ाई-तीन मन से कम नहीं रहा होगा। ऊपर से बड़ी-सी *फलों या मिठाई की टोकरी लिये हुए* दोनों पति-पत्नी, जो नव-विवाहित मालूम हो रहे थे, आ बैठे रिक्शा पर।

इतना भारी बोझ लेकर रिक्शा चलाना, फिर ठंडी रात और स्टेशन का लम्बा सफर—यह सब देख कर कुछ सहम गया, घबरा-सा गया, पर चलना तो था ही। ज्यों-त्यों करके उन्हें रेलवे स्टेशन पर पहुँचाया और साहब ने मेरे हाथ में एक चवन्नी थमा दी..। न मालूम आज मुझे यह चार आने क्यों इतने प्यारे लग रहे थे, बहुत कीमती नजर आ रहे थे! काफी थक चुका था और रात भी बहुत जा चुकी थी, घुमा दिया अपना रिक्शा मैंने घर की तरफ जाकर सोने के लिये। धीरे-धीरे रिक्शा के पैडल पर मेरे पाँव चले आ रहे थे और दिमाग चल रहा था उस चवन्नी पर। बार-बार उलट-पलट कर देख रहा था, पच्चीस नये पैसे के इस गोल से, सफेद सिक्के को, जो मेरी रात के पाँच घंटे की मजदूरी के बदले में प्राप्त हुए थे। मुझे यह पच्चीस नये पैसे चाहे कितने ही प्यारे और मूल्यवान् क्यों न नजर आते हों, पर बाजार में तो इसकी कीमत पच्चीस नये पैसे ही थी—केवल पच्चीस नये पैसे!

"हाय रे! हमारा आर्थिक ढाँचा!"

सभ्य समाज

•

"चलो टी० बी० हास्पिटल" कह कर एक अधेड़-सी और दूसरी युवा लड़की दोनों मेरे रिक्शे पर सवार हो गयीं। मैं भी चल पड़ा। सफर लम्बा था, रिक्शा चलाते-चलाते काफी थक भी चुका था। "जरा तेज चलो, इस तरह हम कब पहुँचेंगे! देखते नहीं ९ बजने को आये हैं, अब तक तो हमें वहाँ पहुँच जाना चाहिये था!"

उधर तेज चलने का उनका आदेश, इधर थका हुआ शरीर, ऊपर से तेजी से चलती हुई सामने की हवा, पर चलना पड़ता था, क्योंकि उन्हें पैसे जो देने थे! खैर, ज्यों-त्यों करके पहुँच गये अस्पताल तक, वे दोनों रिक्शा से उतर कर मुझे *बिना पैसे* दिये और बिना कुछ कहे अन्दर दाखिल हो गयीं। मैं भी यही सोच कर कि अभी वापिस चलना होगा, वहीं रिक्शा खड़ी करके उनकी प्रतीक्षा करने लगा। करीब २ घंटे बाद वह बाहर निकलीं और रिक्शा पर बैठ कर मुझे चलने का आदेश दिया।

आदेश पाकर चल पड़ा। रिक्शा तेजी से बढ़ रहा था। काफी दूर निकल चुके थे। रात के दस बज चुके थे। ठंड काफी बढ़ चुकी थी।

आधुनिक फैशनेबुल पोशाक में लिपटी हुई, रिक्शा पर बैठी इस युवा लड़की को ठंड ने सताना शुरू किया था। उसे शौक आया—मुझे रिक्शा रोकने के लिये कहा और साथ की अधेड़ स्त्री से कहा: "मम्मी जरा इस होटल में चाय पी लें।" ठीक वही ढंग, बिना पैसे दिये सामने के रैस्टोराँ में दोनों उतर कर दाखिल हो गयीं। मैं बाहर रिक्शा रोक कर खड़ा हो गया। देख रहा था बाहर से उनकी मेज पर चाय या कॉफी के बर्तन तथा चम्मचों की आवाज और होटल में कुछ अट्टहास भी।

आधा घंटा हो चुका, मगर वे अभी भी बाहर नहीं आयी थीं। सर्दी और थकान के कारण मेरे भी जी में आया, "चलो, एक प्याली चाय पी जाये।" और उसी होटल में उनकी बगल वाली टेबुल पर जा बैठा। चाय लाने को कहा ही था कि उन दोनों की मेज के पास बैरे ने आकर बिल दिया। बिल के पैसे चुकाने पर बैरे ने सलाम बजाया, युवती ने सलाम के बदले एक रुपये का नोट थमाया। बैरे ने फिर झुक कर *सलाम किया।* वे बाहर निकलीं और मुझे रिक्शा के पास न पाकर कहना शुरू किया: "ए रिक्शा, रिक्शा वाले ••• सुनता ही नहीं, न मालूम कहाँ भाग गया!"

इधर मेरी मेज पर बैरे ने चाय का प्याला रखा ही था। ठीक उसी समय उनका मुझे पुकारना! आवाजें तेजी पकड़ रही थीं। बिना चाय पीये ही मेज पर तीन आने रख कर बाहर निकल आया और उन्हें *बैठा कर रिक्शा को दौड़ाया उनकी मंजिल* की तरफ, उनकी कोठी की ओर।

कुछ दूर चलने के बाद उनकी कोठी आ गयी और साथ ही मेरी मजदूरी मिलने की घड़ी भी। अधेड़ स्त्री ने आठ आने रख दिये मेरी हथेली पर और कहा,

"यह लो।"

"मगर माताजी, यह तो आठ आने ही हुए...इतना तो एक तरफ का ही किराया हो जाता है।

मैं तो आपको कहाँ-कहाँ घुमा कर ला रहा हूँ—तीन घंटे हो गये आपके आदेश पर मेरी रिक्शा को चलते-चलते और आप *आठ आने दे रही हैं!"*

"बहस मत करो, हमारे पास इतना समय नहीं है।"—कह कर वह अपनी कोठी के अन्दर चली गयी!

मेरे से न रहा गया—रिक्शा को एक तरफ खड़ा करके चला उनकी कोठी में। खट-खटाने पर दरवाजा खुला तो सामने कमरे में वही अधेड़ औरत नजर आयी। लड़की दिखाई नहीं पड़ रही थी, शायद अन्दर जा चुकी थी, किसी दूसरे कमरे में! मैंने कहा, "माताजी!" "कौन है? क्या बात है?"

"मैं ही हूँ रिक्शा वाला!"—कह कर ५० नये पैसे का *वह सिक्का,* जो उनसे मजदूरी में मिला था, उन्हें वापिस किया और मेरे मुंह से निकल ही गया:—"मैं यही समझ लूंगा कि मुझे आज कोई सवारी मिली ही नहीं, पर यह अठन्नी लेकर अपनी तीन घंटे की मेहनत का अपमान तो नहीं सह सकता!"

"बढ़-चढ़ कर बातें न बनाओ, अपनी औकात देख कर चलो"—इतना कह कर वे भद्र महिला अपने आपसे ही कहने लगीं, "बेरोजगारी के इस जमाने में इन लोगों को *काम मिल जाता है तो संतोष नहीं करते!* जब काम नहीं मिलता है तो कहते हैं—बेकारी है, गरीबी है, क्या करें? और जब काम मिलता है तो अकड़ दिखाने लगते हैं।" इतना कह कर कुछ रौब से कुछ क्रुद्ध-सी होकर वह अठन्नी मेरी तरफ फेंकी और कहा:—"ले जाओ अपने पैसे और भाग जाओ वरना धक्के देकर बाहर निकलवाना होगा—दिमाग चाट लिया! बदतमीज कहीं के!"

यह सब सुन कर मेरा मानस तिल-मिला उठा, चुप न रह सका—

"इतनी देर से आपको रिक्शा पर लाद कर चलता रहा, ५ मील का चक्कर मारा, आपको आपकी कोठी में पहुँचाया रात की इस ठंड में, यही है न मेरी बद-तमीजी! और आप मेरी मजदूरी मार रही हैं—ऊपर से मुझे ही डाँट रही हैं! इसलिये आपकी तमीज के गुण गाऊँ! यही है आपकी सभ्यता? और यही है आपका बड़प्पन?........"

यह शोर सुन कर वह लड़की बाहर निकली। मेरे चेहरे को जब उसने प्रकाश में देखा तो कुछ भौंचक्की-सी होकर कहने लगी:

"भाई साहब, आप! आप, यह रिक्शा, यह सब क्या है?"

इधर अधेड़ औरत जो मेरे से झगड़ रही थी, अपनी लाडली के मुंह से मेरे प्रति आदरसूचक शब्द सुन कर स्तम्भित-सी होकर मेरे मुँह की तरफ देखने लगी!

लड़की ने अपनी माता की तरफ सम्बोधित होकर कहा: "माताजी, आप तो विनोबाजी के कार्यकर्ता हैं। अभी पिछले माह ही हमारे कालिज में आये थे और बड़ी गम्भीर चर्चा हुई थी इनसे बहुत अच्छे व्यक्ति हैं, मम्मी!" फिर दोबारा मेरी तरफ मुड़ कर कहा:

"भाई साहब, माफ करना हमने आपको 'रिक्शा वाला' समझा था,"

यह सुन कर मन को और भी ठेस लगी, अब वहाँ रुकने की हिम्मत नहीं रह गयी थी। जल्दी से कोठी से बाहर निकल कर रिक्शा घुमाया। दिमाग में बोझ तथा परेशानी लिये हुए धीरे-धीरे चला जा रहा था अपने घर की तरफ। थका माँदा-सा परेशान, क्षुब्ध मन से आकर लेट गया अपनी चारपाई पर। न मालूम आज क्या इतनी थकान के बाद भी नींद नहीं रही थी!

कानों में बार-बार वही आवाज गूंज रही थी:

"हमने आपको 'रिक्शा वाला' समझा था"! दिमाग में हलचल, यही चक्कर चल रहा था—'क्या रिक्शा वालों का, मेहनत करने वाले मजदूरों का—इज्जत से कोई सम्बन्ध नहीं है!'—यही सब सोचने-सोचते न मालूम कब आँखें लग गयी "यह रिक्शा! यह मजदूरी! यह इज्जत! यह सभ्यता!"

पृष्ठ ८ का शेष

हम खादी को गरीबों को राहत पहुँचाने वाली और बेकारों को रोजगार देने वाली एक एकांगी चीज न समझें, बल्कि गाँव के समग्र और पूर्ण विकास के काम में इसे जोड़ दें। क्योंकि जब तक दूसरे ग्रामउद्योग, खेती, शिक्षण, आरोग्य आदि के साथ खादी को नहीं जोड़ा जाता है। तब तक फिर खादी में काम करने वाले कामगारों को आज से भी कम मजदूरी देकर भी खादी को उतनी सस्ती नहीं बना सकते कि देहात के गरीब लोग भी खरीद सकें। आज कामगारों को मजदूरी कम मिलती है इसलिए खादी के काम में उन्हें रस या उत्साह नहीं आता है। चूँकि खादी महँगी है इसलिए गरीब गाँव वालों को खादी खरीदने में जो तीव्रता चाहिये वह नहीं है। इसके लिए गाँव की पूरी आर्थिक हालत को ही ऊँचा उठाना होगा, यानी गाँव वालों की क्रयशक्ति बढ़ानी होगी और साथ-साथ उनमें लोकतंत्रीय मूल्यों की निष्ठा पैदा करने के लिये उनके शैक्षणिक और सांस्कृतिक अंगों का भी विकास करना होगा। गाँव में भिन्न भिन्न उद्योगों में लगे हुए जो लोग हैं उनके हित-सम्बन्धों में मेल बैठाना होगा। ऐसे समाज और ऐसी परिस्थिति में ही गांधी जी जैसा चाहते थे, खादी जीवन धर्म के पालन का माध्यम और अहिंसात्मक समाज का प्रतीक या साधन बन सकेगा।

प्रश्न :—इसका अर्थ यह हुआ कि नये मोड़ का जो विचार और कार्य-पद्धति आज देश के सामने प्रस्तुत हुई है उसे बड़े पैमाने पर और समग्रता के साथ अमल में लाना होगा।

उत्तर :—हाँ, केवल बड़े पैमाने पर और समग्रता के साथ अमल में लाना है यही नहीं, इसमें प्रमुख तत्व यह है कि इसे शीघ्र अमल में लाना है। क्योंकि क्रांति में काल एक बहुत महत्वपूर्ण तत्व है। उसे नजर अंदाज करके चलने की कोशिश करें तो उसका परिणाम या तो विपरीत आयेगा या अपूर्ण आयेगा। नतीजा यह होगा कि लोगों को खादी का जो दर्शन होना चाहिये वह नहीं होगा, और लोगों के विचार और व्यवहार में जो परिवर्तन हम लाना चाहते हैं, वह ला नहीं सकेंगे।

सर्वोदय कार्यालय, बाभुलगाँव (अकोला) का आय व्यय

महाराष्ट्र प्रदेश के अकोला जिले के सर्वोदय कार्यालय, बाभुल गाँव की सभा २२ फरवरी ६१ को हुई। तय हुआ कि आगामी सर्वोदय-सम्मेलन के पहले ही जिले की दान प्राप्त सब भूमि वितरित कर दी जाय। अशोभनीय पोस्टर्स और अश्लील चित्रों को हटाने का काम जिले में करें। हर एक सर्वोदय-कार्यकर्ता अपने घर सर्वोदय-पात्र रखकर बाद में अन्य जगह सर्वोदय-पात्र स्थापित करें।

सभा में गत दो वर्षों का आय-व्यय का हिसाब पेश किया गया। सन् १९५९ में कुल आय ९६२ रु० और व्यय का ८९२ रु० ४७ न० पै० हुआ। इस तरह ६९ रु० ५३ न० पै० बाकी रहे। लेकिन सन् ६० में सिर्फ २८ रु० प्राप्त हुए और व्यय कुल २०० रु० ८३ न० पै० हुआ। इसलिए १०३ रु० २० न० पै० जो अधिक व्यय हुए वह निवेदक श्री विट्ठल गावंडे ने अपने पास से खर्च किये।

—ग्राम सेवा केन्द्र, गोविंदगढ़ की ओर से ३० जनवरी से १२ फरवरी तक १४ ग्रामों में पदयात्राएँ हुईं। उनमें ग्राम सेवकों के अलावा ६ अन्य साथियों ने भी भाग लिया। १२ फरवरी को रीवां में भारत सेवक समाज के सहयोग से सर्वोदय-मेले का आयोजन किया गया। पदयात्रा में २ एकड़ का भूदान मिला।

—२० जनवरी से २६ जनवरी तक डिहिया गाँव में ग्राम सफाई प्रशिक्षण शिविर ग्रामसेवा केन्द्र, गोविन्दगढ़ की ओर से सम्पन्न हुआ।

—जिला सर्वोदय-मंडल जौनपुर की ओर से जौनपुर नगर एवं जनपद की महिलाओं की विचार गोष्ठी रामसखारी देवी के संयोजकत्व में हुई। गोष्ठी में 'सर्वोदय नगर' को बनाने में सब लोग अपना हाथ बटायें, इसके लिए अपील की गयी। गोष्ठी का उद्घाटन उत्तर प्रदेश सर्वोदय-मंडल के अध्यक्ष मा० सुन्दरलालजी ने किया।

—गोंडा महिला मंडल ने अपनी एक सभा में तय किया कि अश्लील चित्र और अशोभनीय पोस्टरों के खिलाफ जो आन्दोलन प्रारम्भ किया गया है, उसमें हम सबको साथ देना चाहिए और जनमत प्राप्त करने के लिए घर घर जाकर समझाते हुए हस्ताक्षर प्राप्त करें।

—जिला सर्वोदय-मंडल, बहराइच के तत्वावधान १२ फरवरी को सर्वोदय-मेले के अन्तर्गत कताई-प्रतियोगिता हुई। मेले में २०० गुण्डियाँ अर्पित की गयी।

—रत्नागिरी जिले के चिपलूण में गांधीघाट पर हुए सर्वोदय मेले में जिले के रचनात्मक कार्यकर्ताओं का सम्मेलन हुआ। उसी समय श्री अप्पासाहब पटवर्धन भी पदयात्रा करते हुए वहाँ पहुँचे थे। सम्मेलन में महाराष्ट्र सर्वोदय-मंडल के अध्यक्ष श्री आर० के० पाटील और मंत्री श्री एकनाथ भगत ने भी भाग लिया।

—सातारा जिले के सर्वोदय मंडल की सभा ता० १५ फरवरी को सातारा में हुई। उसमें श्री आर० के० पाटील और श्री एकनाथ भगत ने सर्वोदय विचार-प्रचार कार्य के बढ़ाने के लिए मार्गदर्शन किया। महाराष्ट्र में होने वाले श्री जयप्रकाशजी के दौरे के समय उनको एक थैली भेंट की जायेगी, उसके लिए एक स्वागत समिति बनायी गयी।

—कुलाबा जिले में उरण के सर्वोदय वाडी में सर्वोदय-मेला हुआ। ४२० गुण्डियाँ अर्पित की गयी। ता० १३ को राष्ट्र सेवा दल के कला पथक द्वारा 'भूदान की पुकार' नाट्य अभिनय प्रस्तुत किया गया।

—ता० २० जनवरी को आगरा जिले के किरावली तहसील के आरोटी गाँव में भूमिहीनों का पाँचवाँ सम्मेलन सम्पन्न हुआ। इस सम्मेलन की विशेषता यह थी कि भूमिहीनों के साथ भूमिवालों ने भी भाग लिया। सम्मेलन में जब भूमिहीनों के लिए भूदान की माँग की गयी, तो एक नौजवान किसान, जिसके पास ढाई बीघे जमीन थी, उसमें से उसने आधा बीघा अच्छी जमीन दी। यह देखकर सब लोग आश्चर्य चकित हो गये। इसके अलावा दो भाइयों ने क्रमश: आठ और पौन बीघा जमीन दी। इस भूमि का बँटवारा तुरन्त ही भूमिहीन परिवारों में कर दिया गया।

कुमारप्पा स्मारक निधि

३० दिसम्बर' ६० के अंक में 'भूदान यज्ञ' के पाठकों और रचनात्मक कार्यकर्ताओं से कुमारप्पा स्मारक निधि में योग देने के लिये निवेदन किया था, तब से अब तक बराबर छोटी मोटी रकमें इस निधि के लिये आ रही हैं, यह खुशी की बात है। अब ३१ मार्च के बाद हम प्राप्ति स्वीकार देना बंद करेंगे। इस बीच आवश्यकता के अनुसार प्राप्ति-स्वीकार देंगे। ३१ मार्च तक प्राप्त रकमों का आखिरी प्राप्ति स्वीकार ता० ७ अप्रैल के अंक में करेंगे। किन्तु इसका यह अभिप्राय नहीं है कि कुमारप्पा स्मारक निधि के लिये बाद में रकम नहीं ली जायगी बाद में आई हुई रकमों की रसीद आदि यथापूर्व भेजी जाती रहेगी। केवल भूदान यज्ञ में प्राप्ति स्वीकार का उल्लेख ७ अप्रैल, ६१ के अंक से बंद हो जायगा। —सम्पादक

पाक्षिक डायरी: २८-२-६१ तक

संघ-प्रधान कार्यालय

(साधना केन्द्र, काशी)

● संघ के मंत्री, श्री पूर्णचन्द्रजी जैन करीब १ महीने के दौरे के बाद ता० २८ फरवरी को लौट कर केन्द्र पर आये। मुख्यत: उनका दौरा दक्षिण में तामिलनाड, केरल तथा आन्ध्र प्रदेश में रहा।

● श्री शंकररावजी ता० २१ को नजदीक के जौनपुर के सघन क्षेत्र में गये। वहाँ से ता० २४ की रात को वापस आकर ता० २५ को संघ की खादी समिति तथा खादी कमीशन की समन्वय समिति की सभाओं में भाग लेने के लिए अहमदाबाद गये।

● बेल्जियम की एक शान्तिवादी महिला कुमारी जीन गेवार्ट ता० १६ फरवरी को साधनाकेन्द्र में आई और करीब एक सप्ताह यहाँ रहीं। कुमारी गेवार्ट अपने आप को विश्वनागरिक कहती हैं। अलग राज्यों के अस्तित्व को विश्वशान्ति के लिये खतरा मानती हैं। उन्होंने शान्ति सैनिक विद्यालय के छात्र छात्राओं से चर्चा की।

● इसी बीच श्री प्यारेलालजी नैयर भी कुछ घंटों के लिए साधना केन्द्र आ गये और शान्तिसैनिकों भाई-बहनों को सम्बोधन किया।

● एक लम्बे अर्से से श्री धीरेन्द्र भाई अस्वस्थ होने से साधनाकेन्द्र वाराणसी में स्वास्थ्य लाभ कर रहे हैं।

अशोभनीय पोस्टर्स हटने चाहिये : देश के विभिन्न शहरों की माँग

पटना

अशोभनीय पोस्टरों के खिलाफ आन्दोलन करने के लिए बिहार के १२ नगरों में प्रमुख नागरिकों की समितियाँ बन चुकी हैं जिसमें महिलाएँ भी हैं। गत सप्ताह पटना-सिटी में "पटना सिटी अशोभनीय पोस्टर समिति" की ओर से नगर में एक जुलूस निकाला गया। पटना नगर में अशोभनीय पोस्टरों के खिलाफ जो आन्दोलन चल रहा है उसने पटना निगम के अधिकारियों का ध्यान आकृष्ट किया है। परिणाम स्वरूप निगम के अधिकारियों ने इस काम में दिलचस्पी लेना शुरू कर दिया है।

गत २८ फरवरी को पटना कारपोरेशन की एक बैठक में अशोभनीय पोस्टरों के सम्बन्ध में काफी चर्चा हुई। निगम के मुख्य संचालक ने एक प्रश्न के उत्तर में सदस्यों को बतलाया कि अशोभनीय पोस्टरों के सम्बन्ध में आचार्य विनोबा भावे के आन्दोलन की ओर निगम का ध्यान गया है। उन्होंने आगे यह भी बताया कि ऐसे पोस्टरों के खिलाफ निगम कड़ी कार्रवाई करने की सोच रहा है। आवश्यकता हुई तो निगम की ओर से मुकदमें भी दायर किये जायेंगे।

पटना नगर अशोभनीय पोस्टर विरोधी समिति की ओर से पटना निगम के मेयर श्री रजनधारी सिंह, गांधी स्मारक-निधि बिहार शाखा के संचालक श्री सरयू प्रसाद तथा पटना विश्व विद्यालय के कुछ अध्यापक तथा अन्य लोग पटना नगर के सिनेमा घरों के मालिकों से मिले और अशोभनीय पोस्टरों के सम्बन्ध में बातें कीं। मालिकों ने उनके विचार के प्रति सहानुभूति प्रकट की। चूँकि सिनेमा विज्ञापन के पोस्टर बाहर से ही बनकर आते हैं इसलिए उनके सामने कठिनाई है, फिर भी उन्होंने आश्वासन दिया कि जहाँ तक संभव होगा इसको रोकने की कोशिश करेंगे।

हिसार

जिला सर्वोदय मंडल हिसार द्वारा आयोजित अशोभनीय पोस्टरों के खिलाफ और शराब-बन्दी के लिए एक जुलूस पिछले दिनों निकाला गया। उसमें सामाजिक, राजनीतिक, धार्मिक संस्थाओं के प्रतिनिधियों और नागरिकों ने भी भाग लिया। जुलूस की समाप्ति एक सभा में हुई। सभा में राज्यसभा के सदस्य बाबू जुगलकिशोरजी ने कहा कि कितनी शर्म की बात है कि आजाद भारत में बापू के अनुयायी शासकों के सामने शराबबंदी करने और अशोभनीय पोस्टर हटाने के लिए आन्दोलन करना पड़ता है। उसी दिन रात को एक सार्वजनिक सभा हुई, जिसमें सर्वोदय-कार्यकर्ता और सामाजिक, राजनीतिक, धार्मिक संस्थाओं के प्रतिनिधियों ने अपने विचार प्रकट किये और सर्वसम्मति से प्रस्ताव पारित किया कि जिला हिसार की समस्त नगरपालिकाओं और ग्राम पंचायतों को चाहिए कि अपने-अपने क्षेत्र में शराबबन्दी करें और अशोभनीय पोस्टर, गंदे गानों के रिकार्ड आदि के इस्तेमाल को रोकें। इसके अलावा सरकारी जन-सम्पर्क विभाग एवं समाचार-पत्रों से भी अपील की गयी कि वे इस आन्दोलन में सक्रिय योग दें।

ग्वालियर

लश्कर अशोभनीय पोस्टर आन्दोलन समिति द्वारा ग्वालियर, मुरार, लश्कर क्षेत्र में सिनेमा मालिकों द्वारा लगाये गये अशोभनीय चित्रों को हटाया गया तथा नगर में शोभनीय चित्र लगें, इस सम्बन्ध में प्रयास किया गया तथा सिनेमा एसोशियेशन ने भी अपनी बैठक में निर्णय लिया कि नगर में अशोभनीय पोस्टर न लगायें।

आन्दोलन समिति के सदस्य नगर के प्रत्येक वार्ड में घूम-घूमकर सिनेमा पोस्टरों का निरीक्षण करते रहते हैं, ताकि चौराहों पर अशोभनीय पोस्टर न लगने पायें।

मथुरा

मथुरा शहर में १७ फरवरी को अशोभनीय पोस्टरों के खिलाफ प्रभातफेरी निकाली गई और गली-गली में जनमत जाग्रत करने के लिए सभाएँ की गयीं। स्थानीय 'राजकमल' सिनेमागृह के अशोभनीय चित्र को हटाने के लिए २४ घंटे की सूचना दी। तदनुसार सिनेमा-मालिक ने ६ घंटे पूर्व ही हस्तलिखित पोस्टर से मूल अशोभनीय पोस्टर ढांक दिया। इसी प्रकार 'टिनेस' सिनेमागृह के मालिक ने भी एक अशोभनीय पोस्टर हटा दिया और आश्वासन दिया कि इस शुभ कार्य में हमारा भी योग रहेगा। ता० २१ फरवरी को जवाहर इंटर कॉलेज में आयोजित एक सभा में श्री दरबार सिंह चाहर ने भाषण में बताया कि अशोभनीय पोस्टर का निर्माण अगर बंद नहीं होता है, तो जनता को चाहिए कि संगठित होकर आवाज बुलन्द करें।

आजमगढ़

ता० १५ फरवरी को शहर के प्रतिष्ठित नागरिकों की सभा में अशोभनीय पोस्टर हटाने के लिए एक समिति बनी और तय हुआ कि मुहल्ले-मुहल्ले में सभा की जाय। यह भी तय हुआ कि समझाने-बुझाने के बावजूद अगर पोस्टर नहीं हटाये गये, तो सत्याग्रह भी किया जाय।

बुलन्द शहर

बुलन्द शहर के हजरत पुठरी ग्राम में अशोभनीय पोस्टरों के विरुद्ध एक सभा दि० २० फरवरी को हुई जिसमें आसपास के ग्रामों से भी लोग सम्मिलित हुए। सभा में निम्न प्रस्ताव सर्व सम्मति से पास हुए।

(१) विवाह आदि कार्यों में अश्लील रिकार्ड न बजाए जायें।

(२) ग्रामों में कोई भी अश्लील चित्र घरों में न लगाये।

(३) होली का त्योहार मेलजोल से मनाया जाय न कि गोबर, गारा आदि से व्यक्तियों के कपड़े गन्दे किए जायें।

तत्पश्चात् एक ग्रामोदय समिति का भी गठन हुआ।

काशी

पिछले दिनों काशी के अशोभनीय पोस्टर निर्णायक समिति की बैठक हुई। उसमें काशी के प्रतिष्ठित नागरिक भाई-बहन और शांति-सेना विद्यालय के कुछ भाई उपस्थित थे। 'इम्पा' की जानकारी समिति को करायी गयी। एक चित्र के अशोभनीय पोस्टर पर विशेष विचार करके सिनेमा-मालिकों से सम्पर्क किया गया। तदनुसार संबंधित पोस्टर हटवा दिया।

रोहतक

जिला सर्वोदय-मंडल के कार्यालय में जिले की प्रमुख महिलाओं की एक सभा श्रीमती लक्ष्मी देवी की अध्यक्षता में अशोभनीय पोस्टर विरोधी आन्दोलन के सम्बन्ध में हुई। जिले में सुव्यवस्थित कार्य संचालन हेतु "महिला सर्वोदय समिति" का गठन हुआ जिसकी संयोजक श्रीमती लक्ष्मी देवी तथा मन्त्री बहन करतार देवी बनीं।

समिति ने जिले भर के सिनेमा मालिकों व आम जनता तथा सम्बन्धित अधिकारियों से अशोभनीय पोस्टर, गन्दे कलैन्डर तथा अश्लील गानें व साहित्य को रोकने की अपील की ताकि देश के गिरते हुए चरित्र को रोका जा सके।

देहरादून

जिला सर्वोदय मंडल, देहरादून द्वारा आयोजित १५ फरवरी की विशेष बैठक देहरादून में हुई। अशोभनीय पोस्टर विरोधी प्रस्ताव सर्वसम्मति से पारित करके आन्दोलन को जारी रखने के लिए एक उपसमिति बनायी गयी।

सर्वोदय-सम्मेलन के लिये रियायती कंसेसन

आगामी सर्वोदय सम्मेलन के लिये रियायती पत्र (कंसेसन) इस बार केवल सेवाग्राम से ही प्राप्त होंगे। सम्मेलन में भाग लेने वाले तीन रुपये प्रतिनिधि शुल्क भेजकर, सम्मेलन मंत्री, अखिल भारत सर्व सेवा संघ, सेवाग्राम (वर्धा) महाराष्ट्र के नाम भेजकर रियायती पत्र और प्रतिनिधि कार्ड प्राप्त कर सकते हैं।

इस अंक में

विनोबा जी का पता
सरनिया-आश्रम
जिला गौहाटी (असम)

श्रीकृष्णदत्त भट्ट, अ० भा० सर्व सेवा संघ द्वारा भार्गव भूषण प्रेस, वाराणसी में मुद्रित और प्रकाशित। पता : राजघाट, वाराणसी-१, फोन नं० ४३९१
पिछले अंक की छपी प्रतियां १२,०५० : इस अंक की छपी प्रतियाँ १२,०५०
वार्षिक मूल्य ६) एक प्रति : १३ नये पैसे

संपादक : सिद्धराज ढड्ढा

वाराणसी : शुक्रवार | २४ मार्च '६१ | वर्ष ७ : अंक २५

खादी का नव संस्करण

हर-एक देहात आजाद हिन्दुस्तान का चक्र-बिन्दु बनें।

• महात्मा गांधी

[आज खादी के नये मोड की देश में बड़ी चर्चा है। सब महसूस कर रहे हैं, जिस ढंग से इस वक्त देश में खादी का काम चल रहा है, उस ढंग से वह न तो आगे बढ़ सकता है न अहिंसात्मक सर्वोदय समाज की स्थापना कर सकता है। किन्तु चरखे और खादी के प्रेरक बापू ने आज से १६ साल पहले इस चीज को साफ देख लिया था और खादी कार्यकर्ताओं को चेतावनी दी थी। तब हिन्दुस्तान आजाद नहीं था। देश में चर्खासंघ के माध्यम से खादी का काम चलता था, जब जब आजादी का आन्दोलन वेग पकड़ता था, तब तब सरकार चरखा संघ और उसकी खादी की प्रवृत्ति में रुकावट डालती थी। गांधीजीने सोचा अगर इस प्रकार खादी केन्द्रित रही तो सरकार इसको 'नेस्त नाबूद' कर सकती है। जेल से छूटने पर सन् १९४४ सितम्बर १, २, ३, को बापू ने सेवाग्राम में जो महत्त्वपूर्ण भाषण दिये थे, वे आजाद भारत में और भी ज्यादा लागू होते हैं। यद्यपि सरकार आज खादी काम को खतम नहीं करना चाहती है, जितनी बनती है, उतनी मदद देती है, किन्तु सरकारी मदद से आज खादी की ऐसी हालत बन गई है कि सरकार जब चाहे खादी को खतम कर सकती है। ऐसी हालत में हमको पुन खादी के नये मोड़ की बात सोचनी पड रही है। नीचे हम गांधीजी के भाषणों के मुख्य अंश दे रहे हैं, उससे उनकी वेदना, उत्कटता और तीव्रता की झलक पाठकों को मिलेगी।

—सं०]

सबसे बड़ी बात जो मैंने जेल में पायी, वह यह थी कि चरखा संघ की हस्ती मिट सकती है। सरकार ने उसे मिटाने की काफी चेष्टा की। हमारा काम कुछ न कुछ चलता तो रहा, लेकिन मैंने देख लिया कि सल्तनत चाहे तो हमें नाबूद कर सकती है। यानी मेरी जो कल्पना रही कि इस देश में अब चरखे की प्रवृत्ति तो किसी हालत में नाबूद नहीं हो सकती, सिद्ध नहीं हुई। मैं जल्दी से हार कबूल करने वाला आदमी नहीं हूँ। लेकिन जेल ही में मैंने पाया कि हम सरकार की दया पर जीते हैं। यह बात मुझे चुभती है। मेरा बस चले, तो केवल ईश्वर की ही दया पर जिन्दा रहूँ और किसी की नहीं। वैसे तो कोई भी आदमी दूसरों की सहायता बिना जिन्दा नहीं रह सकता। यह ईश्वरीय न्याय है। लेकिन मैं उस मदद की बात नहीं कर रहा हूँ।

× × × × ×

इसी विचार धारा में से विकेन्द्रीकरण की बात निकली है। मैंने सोचा, यदि यह सिद्ध हो सके, तो कितना अच्छा। मैंने यह भी सोचा कि मेरे मार्ग में कठिनाइयाँ बहुत हैं। मेरा दावा है कि चरखे के विषय में जितना विचार, जितनी साधना मैंने की है, इतनी शायद ही किसी ने की है। यह दावा बड़ा है, इसमें अभिमान भी हो सकता है। लेकिन यदि मैं मौके पर यह न कहूँ, तो वह भी झूठी नम्रता होगी। जेल में भी चर्खे को छोड़ मैंने अन्य किसी चीज का चिंतन नहीं किया।

× × ×

हमने चरखा चलाया, किन्तु सोच समझ कर नहीं, यन्त्र की तरह चलाया। चरखे में जितना अर्थ भरा पड़ा है, उसे आप अपना लेते, तो मैं उसमें से जितना अर्थ निकालता हूँ, उतना ही अर्थ आप भी उसमें से निकालते। राजकारण भी उसमें भरा पड़ा है। लेकिन वह धोखा-बाजी का राजकारण नहीं है। शुद्ध सात्त्विक राजकारण चरखे में जितना भरा पड़ा है, उतना अन्य किसी चीज में नहीं। यदि यह सही है, तो फिर हम जो कहते हैं कि सूत के धागे में स्वराज्य है उसका और क्या अर्थ है? उसका अर्थ यह हरगिज नहीं है कि सूत का धागा हुआ वैसे ही स्वराज्य भी हुआ।

× × × ×

जब हम अपने को अहिंसा के पुजारी बतलाते हैं, तब हम अहिंसा की शक्ति क्या है, यह बतला न सकें, तो हम कैसे अहिंसा-वादी? चरखा संघ का हर एक व्यक्ति अहिंसा की जीवित मूर्ति होना चाहिए। अहिंसावादी तेजस्वी होना चाहिए। हम अहिंसामय नहीं हैं सो स्वीकार कर लें यदि अहिंसामय होते तो आज हर एक देहात में चरखा पाते। मैं कबूल करता हूँ कि मैं यह नहीं कर सका। यदि यह इल्म मैंने पाया होता, तो कम से कम सेवाग्राम में तो उसका दर्शन करवाता लेकिन अभी, तो यहाँ के लोगों के हाथ में चरखा रख भी दूँ, तो भी वे उसे नहीं अपनाते। हम उन्हें ज्यादा पैसा देते हैं, सिखाते हैं, अन्य काम आदि देकर लालच भी दिखाते हैं तरह तरह से उनकी सेवा करते हैं, तो भी हमें सफलता नहीं मिल रही है। फिर भी चरखे की शक्ति पर मेरा विश्वास अटल है। मैं खुद चरखा संघ का अध्यक्ष बना, फिर भी नाकामयाब बैठा हूँ।

× × ×

आपके सामने एक कड़ा-सा नुस्खा रखता हूँ। अगर आप उसके लिए तैयार हैं, तो मुझे भी उसमें शामिल समझें। लेकिन यह उपाय अज्ञानवश नहीं स्वीकारना है, वह निरे शासन की भी बात नहीं है। बुद्धि पूर्वक विचार करके इस नतीजे पर पहुँच सकें, तो ही ठीक। यदि आप ठीक निर्णय पर पहुँचे, तो आप चरखा संघ को बिल्कुल बन्द कर देंगे। उसकी जो कुछ जायदाद है, पैसा है, सब कार्यकर्त्ताओं में काम के लिए बाँट देंगे। आगे का काम चलाने के लिए एक कौड़ी भी रखने की आवश्यकता नहीं। हम सब यही मानें कि चरखा ही अन्नपूर्णा है।

अगर चालीस करोड़ जनता यह समझ जाय तो फिर चरखे की प्रवृत्ति के लिए एक कौड़ी भी लगाने की जरूरत नहीं। फिर सल्तनत की ओर से निकलनेवाले फरमानों से घबड़ाने का कोई कारण नहीं। पूँजीपतियों के मुह की ओर ताकने की जरूरत नहीं। हम खुद ही केन्द्र बन जायेंगे और लोग दौड़ते हुए हमारे

बापू की योजना

चरखा संघ के सामने बापू ने उस वक्त निम्न योजना प्रस्ताव रूप में रखी।

चरखे की कल्पना की जड़ देहात में है और चरखा संघ की कामना पूर्ति उसके देहात में विभक्त होने में है। इस ध्येय को ख्याल में रखते हुए चरखा संघ की यह सभा इस निर्णय पर आती है कि कार्य की प्रणाली में निम्नलिखित परिवर्तन किये जायँ।

(अ) जितने कार्यकर्ता तैयार हों और जिनको संघ पसन्द करे, वे देहात में जायँ।

(आ) बिक्री भण्डार और उत्पत्ति केन्द्र मर्यादित किये जायँ।

(इ) जो शिक्षालय हैं, उन्हें विस्तृत रूप दिया जाय और अभ्यास क्रम बढ़ाया जाय।

(ई) जो सूबा या जिला स्वतंत्र और स्वावलंबी होना चाहे, उसे यदि संघ स्वीकार करे तो स्वतंत्रता दी जाय।

• • •

सर्व सेवा संघ की प्रबंध समिति के प्रस्ताव

हाल में गोलोकगंज आसाम में हुई सर्व सेवा संघ की प्रबंध समिति ने जो प्रस्ताव पास किये उनमें दो नीचे दिये जा रहे हैं :—

•वर्धा जिला विकास योजना

विविध चर्चाओं के संदर्भ में प्रबन्ध समिति ने वर्धा जिला विकास योजना पर भी चर्चा की। वर्धा जिला अधिकारियों की ओर से प्राप्त वर्धा तहसील की कृषि-उद्योग प्रधान समाज रचना संबंधी नोट श्री अण्णासाहब ने पेश किया। अण्णासाहब का लिखित नोट योजना की बुनियाद हो और विनोबाजी के चारों मुद्दे भी इसमें अन्तर्भूत हों, ऐसा सबने माना। विनोबाजी ने योजना के चार मुख्य मुद्दे निम्न प्रकार रखे :—

१. पूरा वर्धा जिला इस योजना के अन्तर्गत हो।

२. योजना प्रयोग रूप हो जिसे अन्यत्र भी लागू किया जा सके।

३. गांववाले अपने अभिक्रम से योजना बनाएं, अन्य लोग उसमें मदद करें।

४. योजना का उद्देश्य अन्त्योदय का रहे।

•जबलपुर के साम्प्रदायिक उपद्रव : एक गम्भीर चेतावनी

पिछले फरवरी मास में जबलपुर और मध्य-प्रदेश के अन्य कुछ नगरों व क्षेत्रों में हुए साम्प्रदायिक उपद्रवों ने देश के निवासियों, विशेषत: गांधीजी के विचार व कार्य में श्रद्धापूर्वक लगे हुए लोगों, के लिए एक आंख खोलने वाली चेतावनी देने का काम किया है।

स्वाधीनता की लड़ाई के दिनों में साम्प्रदायिक द्वेषाग्नि अकल्पनीय पैमाने पर भड़क उठी थी। उसके बाद आजादी मिलने पर देश के विभाजन को लेकर साम्प्रदायिक मार-काट का जो दुश्चक्र राष्ट्र के एक के बाद दूसरे भाग में भयानक रूप से चला और जिससे उत्पन्न विक्षोभ के कारण राष्ट्र की शांति और सुरक्षा भी खतरे में पड़ी हुई, मालूम दी उस सबका गांधीजी के बलिदान से एकबार अंत हुआ था। ऐसा मालूम देता है कि साम्प्रदायिक एकता का जो पौधा गांधीजी ने लगाया था और जिसे अक्षरश: उन्होंने अपने खून से सींचा था उसकी रक्षा का प्रयत्न निरन्तर चलते रहने की जरूरत है।

प्रबन्ध समिति सर्वोदय विचार प्रेमियों, विशेषत: शान्ति-सैनिकों से, जिनके लिए यह परिस्थिति एक चुनौती है, निवेदन करती है कि वे अपने सतत सेवा और संपर्क के कार्यक्रम के द्वारा जगह-जगह वातावरण को स्थायी रूप से अच्छा बनाने की कोशिश करें, तथा कहीं कुछ विस्फोट हो भी जाय तो उसे तुरन्त सम्हालने, व समर्पित सैनिक की तरह उस पर काबू पाने, के लिए कुछ उठा न रखें।

पास आयेंगे। काम ढूंढ़ने के लिए उन्हें कहीं जाना नहीं होगा। हर एक देहात आजाद हिन्दुस्तान का एक-एक चक्र बिन्दु बन जायगा। बम्बई, कलकत्ता जैसे शहरों में नहीं, किन्तु सात लाख देहातों में, चालीस करोड़ जनता में आजाद हिन्दुस्तान विभक्त हो जायगा।

फिर हिन्दू-मुसलमान का मसला अस्पृश्यता की समस्या, झगड़े-फसाद गन्दा पद्धतियाँ, प्रतिस्पर्धा कुछ न रहेगी। इसी काम के लिए संघ की हस्ती है। इसीलिए हम को जीना है और मरना भी है।

× × ×

अगर मैं कहता हूँ कि या तो मेरा साथ छोड़ दो या नयी चीज को ग्रहण करके मेरे साथ चलो। दो वर्ष की तपश्चर्या के बाद यह नयी चीज लेकर मैं आया हूँ। यह आपको दे सकूँगा या नहीं इसका मुझे पता नहीं, लेकिन देने की चेष्टा तो कर ही रहा हूँ। अब मुझे आपको साथ देना कठिन हो रहा है। अगर आपको समझा सका हूँ, तो एक चीज करो। आज की तारीख से जो मेरे साथ रहना चाहो हैं, वे सूत को निशानी दें कि चरखे को हम अहिंसा का प्रतीक मानते हैं। आज आपको निर्णय करना ही है। अगर आप चरखे को अहिंसा का प्रतीक नहीं मानो, नहीं मान सको, तो भी आज मेरा साथ दो रहेंगे तो खुद तो मजधार में जायेंगे ही और मुझे भी डुबो देंगे।

खादी के नये मोड़ के संदर्भ में

मानव ही नया बनाना है धरती ही नयी सजानी है

शालिग्राम 'पथिक'

'खादी को मोड़' अगर भाई।
'पूरी हो' कर दिखलानी है।
मानव ही नया बनाना है :
धरती ही नयी सजानी है।

•

तो : बाबा की 'नित नई बात' :
हम सब को भी अपनानी है॥

•

खादी विचार है, वस्त्र नहीं।
उद्योग नहीं है, नीति है।
यह धर्म नहीं है, धर्म शास्त्र।
कोई तंत्र नहीं है, मंत्र मात्र।

•

शोषण-विमुक्त : शासन विमुक्त :
जग कर पावे : हो राम राज्य॥
तब खादी सफल सयानी है।
इस सबकी रीति बनानी है॥

•

'गोबर' मल घास फूस की भी :
अब 'गैस' हमारी 'शक्ति' हो।
शोषण-विहीन : शासन विहीन।
यह शक्ति : हमें अब स्वीकृत हो॥
यह सीमित नहीं : असीमित है।
यह केन्द्रित नहीं : विकेन्द्रित भी।
इसमें बन्धन : शासन : शोषण :
इन सबकी कोई 'पहुँच' नहीं॥

•

इस 'शक्ति-स्रोत' का स्वागत हो।
यह नवयुग की नई 'कमाई' है॥
यह 'ग्राम उद्योग' चलायेगी।
यह 'गृह उद्योग' चलायेगी।
संयत-गति से चाकी घानी ?
द्रुत गति से 'वस्त्र' बनायेगी।
मिल से सस्ता कर पायेगी॥
झंझट 'रिबेट' की जायेगी॥

•

इसकी - बिजली से, स्वयं गाँव में :
'शीत-गृह' बन जावेंगे।
'फल संरक्षण' कर पावेंगे।
(सड़ने से गाँव बचायेंगे)।
गाँवों में काम बढ़ायेंगे॥

•

प्रति एकड़ उपज 'अनेक' गुनी।
प्रति एकड़ दाम 'अनेक' गुना॥
बेकाम रहेगा कोई ना :
'श्रम मूल्य' बढ़ेगा कई गुना॥

•

जिस एक जिले में पांच लाख की
खादी बन : बिक सकती है :
एक एक जिले में दो करोड़ :
कपड़े की लागत होती है॥
यह सब कपड़ा : मिल से सस्ता :
तब : गाँव गाँव बन पायेगा।
और : सौ प्रकार के नये नये :
उद्योग गाँव में लायेगा॥

मगर

पर : यह तो केवल 'राहत' हुई।
यह ही : खादी का काम नहीं
जन जन के मन मन में बैठे।
जब तक : जग पावे : राम नहीं।

•

यह बहुमत प्रथा अंत न हो :
अनि चुनाव की बुझे नहीं॥
तब तक : खादी झूंठी पोथी :
तब तक 'खादी का मोड़' नहीं॥

•

यह शर्त हमें अपनानी है।
और पूरी कर दिखलानी है॥
'एकाकी' अर्थ नीति से भी :
एकाकी राजनीति से भी :
(एकाकी धर्म नीति से भी)
सब काम नहीं बन पाते हैं।
आधे आधे रह जाते हैं॥

•

खादी कहती है : एक साथ
सब 'नीति योग' सम्भव कर दो।
हो राजकाज या अर्थ शास्त्र
सब 'धर्म शास्त्र' आधारित हो॥

•

ये सभी रहें : विज्ञान बढ़े :
अध्यात्म सभी की दृष्टि हो॥
सो 'ज्ञान और विज्ञान' योग :
खादी की नई कहानी हो॥
तब : खादी, क्रान्ति पूर्ण होगी।
तब आती हों : बिजली हों॥

नशाबन्दी अभियान

फिरोजपुर छावनी में फरवरी मास में नशाबन्दी के बारे में एक सभा जिला सर्वोदय कार्यालय में हुई जिसमें नशाबन्दी आन्दोलन को जिले भर में व्यापक बनाने के लिए एक कमेटी का निर्माण हुआ। कमेटी के मन्त्री श्री मनोहरलाल ने अपनी रिपोर्ट में बताया कि पंजाब रोडवेज अमृतसर के जनरल मैनेजर ने कमेटी को सूचना दी है कि १ मार्च ६१ से पंजाब रोडवेज की बसों में शराब की बिक्री सम्बन्धी विज्ञापन बन्द कर दिए जायेंगे। कमेटी ने १२ अप्रैल को जिला नशाबन्दी-परिषद करना भी तय किया।

एक सर्व जगत् स्फूर्ति, जीवन स्वयं-स्फूर्तम्

भूदानयज्ञ

लोकनागरी लिपि*

ग्राम स्वराज्य क्यों जरूरी।

सरकार चाहे कोअी भी हो वह गाँव में दखल नहीं देगी, तभी दुनिया बचेगी। नहीं तो आज दीखी कुल दुनिया को आग लगाना चंद, मुट्ठी भर लोगों के हाथ में है। अीतनी ताकत डेमोक्रेसी के नाम पर अुनके हाथ में आ गयी है। डेमोक्रेसी में पाँच साल के लीअे राज्य करने वालें के हाथ सत्ता सौंपी जाती है। पाँच साल में अरबों रुपयों का खर्च करके कोअी अैसी योजना बनाअी जाय जो नीरधारीत अवधी में खतम न हो तो अगले पाँच साल के लीअे शासन करने वाली दूसरी पार्टी को भी अुस योजना को आगे बढ़ाना ही पड़ता है। पुरानी गाड़ी टूटी, नयी आयी तो भी पटरी वही रहती है। कांग्रेस का अींजीन हटाया, पी० अेस० पी० का अींजीन लगाया तो भी पटरी कायम ही रही है। रफ्तार चाहे बदले या न बदले, लेकीन कहाँ जाना यह तय है पटरी तय है। यहाँ डेम बाँधना शुरू कीया, तो दूसरी पार्टी आने पर अुसे वह काम पूरा करना ही होगा। दूसरे देश के साथ कोअी करार कीया हो, अुस करार पर हस्ताक्षर कीया हो और अुधर से माल आना बाकी हो तो वह माल लेना ही होगा। यह समझने की बात है की गाँव अपने पाँव पर खड़े होंगे और गाँव की अेक जमात बनेगी तो अच्छी सरकार होगी तो दखल न देकर मदद देगी। अगर सरकार अच्छी न रही तो मान लो की अगर मदद न दे तो दखल भी नहीं दे सकेगी। —वीनोबा

*लिपि-संकेत : ि = ी ; े = ै ञ = ञ, संयुक्ताक्षर हलंत चिह्न से।

ग्राम-स्वराज्य का हार्द

• पूर्णचन्द जैन

ग्राम-स्वराज्य की बात से अक्सर लोग नाक-भौं सिकोड़ते देखे जाते हैं। उनमें दोनों ही शामिल हैं। आधुनिक सभ्यता के हामी लोग इसे दकियानूसी विचार कह देते हैं। पुरानी संस्कृति और सभ्यता वाले, डेढ़-दो सौ वर्ष की गिरी हालत से परेशान, लोग कहते हैं कि गाँवों को गरीबी और काहिली में पड़े रहने देने का यह विचार है। इसलिए ग्राम स्वराज्य की कल्पना स्पष्ट होने के लिए इस विषय पर जितनी चर्चा हो वह थोड़ी ही है।

कहना नहीं होगा कि गांधीजी ने देश की आजादी की लड़ाई के सिलसिले में इस विचार को देश के सामने रखा। उसकी अनेक तरह से व्याख्या की। उसे समझाया और फैलाया। अनेक विचार और उनके लिए कार्य करने के रास्तों की नवीनता की भाँति इस विचार को सामने लाने और उसकी प्राप्ति का रास्ता बताने का काम भी आज के युग को उनकी बड़ी देन है।

लेकिन एक बात लोगों के दिमाग में साफ होनी चाहिए। देश और दुनिया को कोई भी विचार सिर्फ इसलिए नहीं मान लेना चाहिए कि वह गांधीजी या अमुक ने दिया था। व्यक्ति के विकास में और खिरे समाज से संबंधित हर सवाल का हल खोजने में ऐसे बड़े व्यक्ति या व्यक्तियों के विचार मददगार हो सकते हैं, ऐसा समझकर ही नये या पुराने विचार को चिंतन में स्थान देना चाहिए।

साफ है कि हिन्दुस्तान गाँवों का मुल्क है। हर सैकड़े पचहत्तर, अस्सी लोग गाँवों में चलनेवाले धंधों से जिन्दगी बसर करते हैं या उन धंधों में लगे लोगों के सहारे अपना कुछ धन्धा करके अपनी जीविका प्राप्त करते हैं। तब हिन्दुस्तान की तरक्की का एक ही अर्थ हो सकता है कि देश के इन हजारों-लाखों गाँवों की तरक्की हो।

पर यह भी साफ समझ लेना चाहिए कि ग्राम-स्वराज्य का जो विचार है, उसमें "ग्राम" की कल्पना आज के ग्राम के स्वरूप से भिन्न है और "स्वराज्य" का चित्र भी आज के "राज्य" के सदर्भ से बिलकुल दूसरा। हिंदुस्तान का आज जो औसत गाँव है—अव्यवस्थित बसा हुआ, गंदा, रूढ़ियों में बंधा और अज्ञान में फँसा हुआ, आपस के भाई-चारे या कुटुम्ब-विचार से शून्य, दुनिया से बेखबर, बिखरा, टूटा-सा उसमें नये ग्राम की शक्ल, उसका नक्शा, उसमें रहनेवालों के चेहरे मोहरे, उनके दिल दिमाग कुछ दूसरे ही होंगे, होने चाहिए।

स्वराज्य की राज्य संबंधी जो आज धारणाएँ—एकतन्त्र, लोकतन्त्र, कल्याणराज्य आदि की चली आ रही हैं उनसे भिन्न होगी। असल में राज्य शब्द गांधीजी की कल्पना के ग्राम स्वराज्य में फिट बैठता ही नहीं, क्योंकि शासन, हुकूमत, वगैरह पर आधारित राज्य विषयक विचार वैसा व्यापक, मानवीय और सजीव नहीं है। आज के राज्य चाहे वह समाजवादी हो या पूँजीवादी, सत्ता, दंड व्यवस्थादि पर आधारित हैं जो एक प्रकार से हिंसा के ही प्रतीक हैं, जब कि गांधीजी की समाज-व्यवस्था और स्वराज्य-संबंधी कल्पना का हिंसा का कोई स्थान नहीं है। इस प्रकार ग्राम स्वराज्य के स्वरूप का अनुमान करने के लिए पुराने प्रचलित 'ग्राम' व 'राज्य' शब्द सही बोधक नहीं है। इन्हें नये संदर्भ और नये अर्थ के द्योतक मानकर ग्रहण करना चाहिए।

हिंदुस्तान में चूँकि परिवार-संस्था का विकास हुआ और बाहर की चोटों के बावजूद वह आज जिंदा भी है, इसलिए एक बड़े सहकारी ग्राम-स्वराज्य की कल्पना करना और उसके मूलतत्व को समझना इस देश के वासियों के लिए खास तौर से मुश्किल नहीं होना चाहिए। नया ग्राम समाज का अर्थ यह कि कुछ परिवारों का का ऐसा समुदाय जिसमें सम्मिलित शक्ति से कार्य करने के गुण आते हैं और साथ ही व्यक्ति के व्यक्तित्व को भी आँच नहीं पहुँचती।

आज जो सामूहिक जीवन राजनैतिक व आर्थिक क्षेत्र के दुर्भाग्यपूर्ण बढ़ रहे केन्द्रीकरण के कारण बन रहा है, उसमें आदमी भी पुर्जा बन गया है। उसका व्यक्तित्व कुचल गया है। उसका अस्तित्व और व्यक्तित्व तथा दोनों बड़े वर्ग, राष्ट्र या ऐसी किसी इकाई में खोता जा रहा है, खतरे में पड़ता जा रहा है। इसकी हालत भी उस पुर्जे की-सी बनती जा रही है जो किसी विशेष मशीन में फिट होने तक सहेजा-सम्हाला जाता है और अनफिट या या मिसफिट होने पर फेंक दिया जाता या अपनी किस्मत पर छोड़ दिया जाता है।

यह स्थिति गाँव समाज के लिये तो खतरनाक है ही, विश्व-मानव के संदर्भ में वह मानवता को खो देनेवाली के रूप में, अधिक आत्मघाती है। ग्राम-समाज का नव जीवनमय पुनर्निर्माण यों विश्व मानव की संजीवनी का कार्य कर सकता है।

परिवार संस्था में व्यक्ति और समुदाय की इकाइयों का अच्छा मेल है। बिना बाहरी दबाव के एक सहयोगी और सहकारी जीवन इसके अन्तर्गत चलता है। विज्ञान और नये युग की परिस्थितियों का तकाजा इस रूप में आज माना जाना चाहिए कि परिवार की इकाई आज रक्त-संबंध पर आधारित है, वह गाँव या गाँव-समूह में रहनेवाले सब लोगों को एक सूत्र में बाँधनेवाली बने।

परिवार-संस्था आज भारत में भी टूट रही है। बाहरी उपायों से या प्राचीनता की दुहाई से वह बच भी नहीं सकती। उसको यानी उसकी अच्छाई को जिंदा रखने का उपाय ही यह है कि पूरे ग्राम-समाज को घेरकर उसे व्यापक बनायें।

व्यक्ति का परिवार में जो स्थान और संबंध होता है, ग्राम-समाज की इकाई का मानव समुदाय के बीच वह स्थान और उसका परस्पर का यह संबंध होना चाहिए। यह मानव-समुदाय का वृत्त भी धीरे-धीरे अंचल, जिला, प्रदेश, राष्ट्र से बढ़ता-बढ़ता विश्व-मानव को अपने अंक में लेनेवाला बनाना चाहिए।

परिवार के बीच संबंधित व्यक्ति की तरह ग्राम-समाज की इकाई बड़े मानव-समुदाय के बीच एक सजीव, क्रियाशील, परस्पर स्पर्धा और शोषण करनेवाली नहीं, बल्कि मिल-जुल कर रहनेवाली और परस्पर पोषण करने वाली इकाई बननी चाहिए। माँ को संतान के पोषण की जैसे स्वयं प्रेरणा होती है और संतान को माँ के लिए अपने को न्यौछावर करने की जो तड़प होती है, वह ग्राम-समाज और बड़े समुदाय के संबंधों में चरितार्थ होगी, तब ग्राम स्वराज्य दकियानूसी और प्रगति बाधक नहीं रहेगा।

ग्राम स्वराज्य की यह परिवार-भावना का आधार वस्तुतः उसका हार्द है। यह अगर स्वस्थ रहता और सही दिशा में चलता है तो ग्राम की आर्थिक, सामाजिक, प्रशासनिक, सांस्कृतिक सभी परिस्थितियाँ बदल सकती हैं। आधुनिकतम यंत्रों का उपयोग वहाँ हो सकता है, लेकिन अपनी समृद्धि और दूसरे के शोषण के लिए नहीं, बल्कि दूसरे की कमी को पूरा करने और अपने समान दूसरे को भी सन्तुष्ट तथा समृद्ध बनाने के लिए।

एक ग्राम-समाज द्वारा स्वावलम्बन तो इसमें खाने-पीने का, कपड़े का, घर-झोंपड़े का, साधा जायगा। लेकिन उससे अधिक इसमें गाँव-समाज की चिन्ता यह होगी कि पड़ोसी गाँव या दूर का क्षेत्र सर्वथा भूखा, नंगा, बेघरबार तो नहीं है और यदि ऐसा है, तो उस स्थिति को बदलने में पहला गाँव समाज दूसरों के लिए क्या कर सकता है और जल्दी-से-जल्दी पहले वह क्यों नहीं कर पाता है। अपने से अधिक दूसरे की चिन्ता ग्राम स्वराज्य की घोषणा करनेवाले ग्राम समाज की होनी चाहिए। वरना राज्य की वर्तमान व्याख्यावाले एक दूसरे के प्रतिद्वंद्वी, गला-घोंटू और खींचतान करनेवाले चंद राज्यों की जगह अनेक राज्य खड़े हो जायेंगे।

इस प्रकार ग्राम स्वराज्य की आज की कल्पना में गाँव नया होगा, गाँववालों का मानस नया होगा

(शेष पृष्ठ १० पर)

राज्याश्रित खादी नहीं टिक सकती

—विनोबा

मध्यप्रदेश के खादी-ग्रामोद्योग एवं रचनात्मक कार्यकर्ताओं के सामने विनोबाजी ने अपने अंतर की व्यथा प्रकट करते हुए जो भाषण दिया, उसके मुख्य अंश यहाँ दिये जा रहे हैं। सं०

जिसे हम रचनात्मक कार्यकर्ता कहते हैं, वह एक बहुत बड़ी लेकिन् पस्त-हिम्मत जमात है। उदाहरणतः पंजाब में कुल २५००० गाँव हैं। मुझे कहा गया कि ८००० से ज्यादा गाँवों में इन कार्यकर्ताओं का प्रवेश है। खादी, ग्रामोद्योग, नयी तालीम, हरिजन सेवा आदि के जरिए पंजाब के एक तिहाई गाँवों में प्रवेश हुआ है। फिर मैंने अखिल भारत की जानकारी प्राप्त की। पता चला कि हिन्दुस्तान के पाँच लाख गाँवों में से एक लाख गाँवों में रचनात्मक कार्यकर्ताओं का प्रवेश है।

लेकिन हिन्दुस्तान पर हम कोई असर डाल सकते हैं, ऐसा यत्किंचित आत्म-विश्वास मैंने इन लोगों में नहीं देखा। जैसे लड़ाई के मैदान में लड़ाई खतम होने के बाद लाशें पड़ी रहती हैं, लगभग वैसा ही दृश्य मैंने स्वराज्य के बाद देखा।

दयनीय दृश्य

आठ-नौ साल भूदान का काम चला। अम्बर चर्खा निकला, सर्वोदय की ओर से ग्राम-स्वराज्य की आवाज बुलन्द हुई, शांति सेना की आवश्यकता देश में सबने महसूस की और माना कि सर्वोदय कार्यकर्ता शांति सैनिक बन सकते हैं। इतना सारा होने के बाद थोड़ी श्रद्धा देखी फिर भी जो दृश्य दिखता है, वह बड़ा दयाजनक है।

खादी के स्टाक्स् पड़े हैं। उसके उद्धार के लिए गांधी जयन्ती का लाभ लेकर पाँच आना रिबेट शुरू किया और इस थोड़ी मुद्दत के लिए जनता से अपील की जाती है। जहाँ गांधी के नाम से अपील निकलती है और वे इस प्रकार के महाशय जिनकी कोई हस्ती नहीं है और जिनका रचनात्मक काम के साथ कोई ताल्लुक नहीं, जिनके लिए समाज में कोई इज्जत नहीं है।

"राजप्रासादस्थो काकः न गरुड़ायते"

राजप्रासाद पर कोई कौवा बैठता है तो वह गरुड़ नहीं बन सकता लेकिन ऐसे लोगों के लेख, अपील, अखबारों में छापने से खादी बढ़ेगी, फैलेगी, उसका प्रचार होगा, ऐसा मानना बिलकुल गलत है। यह जो दृश्य मैंने देखा वह इतना दीन था कि मुझे आशा नहीं है कि इस तरह से खादी टिकेगी—यह खादी का ढंग नहीं है।

खादी से नाता

१९२० में खादी की खोज हुई तब से १९६० तक याने चालीस साल से मेरा खादी से सम्बन्ध रहा है। इससे अधिक खादी से सम्बन्ध रखने वाले कौन हैं मुझे मालूम नहीं। मैंने तकली पर प्रयोग किया, बुनाई के प्रयोग किये, उसी मजदूरी पर जीने की कोशिश की। इस तरह, तरह-तरह के प्रयोग किये। बापू के साथी यह सब जानते हैं।

लेकिन आज जिस ढंग से खादी का काम राज्याश्रय से चल रहा है, उस ढंग से खादी हरगिज आगे नहीं बढ़ सकती। मैं सरकार के खिलाफ नहीं हूँ। लेकिन यह जो ढंग है, यह चापलूसी, जीहाँ, हाँ-जी यह खादी के क्षेत्र में चलता है और सरकार ने इस क्षेत्र के लिए जो पैसा मंजूर किया है, वह खर्च होना ही चाहिए नहीं तो "लैप्स" होगा—इसमें कई तरह की बुराइयों आने की संभावना है। यह सब देखकर मुझे बड़ी वेदना होती है।

मदद नहीं, संरक्षण चाहिए

खादी अगर टिक सकती है तो वह मदद से नहीं टिक सकती, उसके पीछे संरक्षण चाहिए। सरकार खादी को संरक्षण देने को कतई तैयार नहीं है। मदद देने के लिए तैयार है। वैसे मदद तो मिल को भी देती है। इधर बैलघानी के तेल को भी मदद देती है और आयल मिल को भी मदद देती है। वह कहती है आप हमारे प्रजाजन हैं, वैसे वे भी हैं। वे भी एम्पलायमेण्ट चाहते हैं, और आप भी चाहते हैं। मेरा कहना यह है कि संरक्षण के बिना खादी टिकेगी यह नामुमकिन है। फिर चाहे आप अम्बर निकाले या साम्बर।

अगर सरकार संरक्षण नहीं देती है तो गाँव-गाँव में आपको पहुँचना चाहिए और यह समझाना चाहिए कि जनता यह तय करे कि हम अपने गाँव में कच्चे माल का पक्का माल करेंगे, गाँव का कपड़ा गाँव में ही बनायेंगे, ग्राम-स्वराज्य के लिहाज से यह हमें करना ही होगा। इतना प्रोटेक्शन अगर हम दें तो खादी टिकेगी। चालीस साल के प्रयत्न के बाद दो परसेण्ट खादी आई है। हर आदमी के पीछे बीस गज कपड़ा अगर चाहिए तो आठ सौ करोड़ गज कपड़ा चाहिए। अगर दो रुपया दाम होगा तो सोलह सौ करोड़ रुपए की खादी होगी।

आज सारे भारत में मुश्किल से दो परसेण्ट खादी आई है। इतनी खादी तो मैं अमरीका में खपा करके दिखा सकता हूँ, उसके लिए हिन्दुस्तान की और गांधीजी की कोई जरूरत नहीं है। अमरीका में वे लोग हाथ उद्योग को उत्तेजन देते हैं, इसीलिए खादी को भी अवश्य उत्तेजन देंगे। मतलब इतनी थोड़ी खादी हम पैदा करते हैं तो खादी की अपनी कोई हैसियत नहीं रहती है और इससे ताकत बनती है, ऐसा नहीं है।

शांति सेना की बात मैं करता हूँ। खादी लोगों की रक्षा करती है लेकिन खादी की रक्षा वे नहीं करते हैं। खादी उनको पोषण देती है, लेकिन वे खादी को पोषण नहीं देते हैं। इसीलिए मैंने कहा था कि जितने खादी के कार्यकर्ता हैं, वे सब शांति सैनिक हैं। अगर वे नहीं हैं तो वैसा मुझे लिख दें। लेकिन शांति-सैनिक हैं ऐसा कहने से क्या होगा? मैंने तो एक खादी भंडार का कार्यकर्ता ऐसा भी देखा है, जिसने सर्वोदय की मामूली किताब भी नहीं पढ़ी है, जो वह नहीं पढ़ता है, वही वह आज बेच रहा है और उससे कमीशन प्राप्त कर लेता है। इसीलिए हमें समझना चाहिए कि खादी और ग्रामोद्योगों के बीच में एक बल है, उसका प्रभाव डालने की कोशिश हमें अगर नहीं करेंगे तो गांधीजी तो जा चुके, अब हमारी जाने की तैयारी है हिंदुस्तान में साठ साल की उम्र के बाद इस दुनिया को छोड़कर जाने के लिए पासपोर्ट मिल जाता है। जिन लोगों ने पहले से खादी को देखा है, वे भी मरेंगे और जो सरकार में हैं, और जो गांधीजी के साथी रह चुके हैं, वे भी मरेंगे। तो आपकी मदद कौन करेगा? इसके बाद जो दूसरे लोग आयेंगे वे कहेंगे कि हम आपको मदद क्यों दें, आप अपने पाँव पर खड़े हो जाइए।

मैंने खादीवालों से पूछा कि सरकार अगर अपनी मदद हटा ले तो आपकी खादी पहले से ज्यादा खपेगी या कम खपेगी। तो वे बोले—ना, अगर मदद नहीं मिलती है तो खादी कम खपेगी। याने मदद वापस खींच ली, वहाँ खादी गिर गई। हिम्मत नहीं रही। कमान बनाने के लिए आधार के लिए ईंट रखते हैं। कमान जब पूरी और मजबूत हो जाती है तब ईंटें हटा लेते हैं, ईंटों को हटाने के बाद कमान टिकी है, ऐसा होना चाहिए। आज सरकार का आधार नहीं है, मदद है। याने सरकार ने ईंटें लगायी हैं। मतलब यह है कि बाद में ईंटें हटा लेंगे। लेकिन मदद नहीं रहती है तो आपकी कमान गिर जाती है। खादी का वह पैमाना नहीं रहता है। इसीलिए मुझे इन सब कामों में रस नहीं रहा है। मुझे एक भाई कह रहे थे कि हमसे इन सब कामों में से लोग बहुत मदद माँगते हैं। और हम लोग देते भी हैं। वे हमसे मदद माँगें और हम न दें तो अच्छा नहीं होगा, इसीलिए हम मदद देते भी हैं। हम चाहते भी हैं कि यह काम बढ़े, लेकिन हमसे वे मदद चाहते हैं, तो वे पीछे पड़ जाते हैं। इस तरह बोलनेवाले हमारे मित्र हैं, साथी हैं, वे चाहते भी हैं कि यह काम बढ़े लेकिन इस मदद से हम पीछे पड़ते हैं तो आपको और हमें सोचने के लिए बाध्य होना पड़ेगा।

पंजाब में गांधी निधि, नयी तालीम, खादी, ग्रामोद्योग कार्यकर्ताओं को हमने समझाया कि तीनों जमातें एक होती हैं और यह काम करती हैं तो अच्छा होगा। तीनों जमातें वहाँ एक हो गईं। और हमने जो सर्वोदय पात्र की बात की है वह उन लोगों ने उठा ली। मैंने खादीवालों से कहा कि आपके कार्यकर्ताओं का अगर इतने गाँवों में प्रवेश है तो २५००० हजार सर्वोदय पात्र क्यों नहीं बन सकते? हम देहातों में जाते हैं तो सिवाय मजदूरी देने के और कुछ नहीं करते। यह अच्छा नहीं करते हैं। इसके साथ साथ हम सर्वोदय पात्र की बात भी करें और इस तरह से समझाने पर लोगों ने इस काम को उठाया और पच्चीस हजार सर्वोदय पात्र बनाये। मैंने उनसे कहा कि इन सर्वोदय पात्रों की जरूरत इसलिए है कि आपके सपोर्टर्स कौन होंगे। आपको कितनी सम्मति है, आपका जो सर्वोदय विचार है उसके लिए कितने मतदाता हैं, इसका पता सर्वोदय पात्र से लगेगा। हिन्दुस्तान में ७ करोड़ घर हैं। उनमें से एक करोड़ घरों में अगर सर्वोदय पात्र होते हैं, और खत्म करते हैं, तो किसी पार्टी की कोई मजाल नहीं है कि वह आपको पूछे बिना राज करे। सर्वोदय पात्र की ताकत कितनी है और क्या है, यह आप आज महसूस करेंगे तो ध्यान में आयेगा कि केरल में कम्युनिस्टों को इतने वोट्स कैसे मिले। दुबारा भी जब चुनाव हुआ तब इतने कम वोट्स नहीं मिले। मुझसे कहा गया कि गाँव-गाँव में उन्होंने सेल्स बनाये। मैं कहना चाहता हूँ कि सर्वोदय वाले गाँव गाँव में अपने "सेल्स" बनाते हैं तो हिन्दुस्तान को अच्छा लगेगा। कम्युनिस्टों ने सेल्स बनाये तो वह चीज सबको प्रिय नहीं हुयी लेकिन आप सेल्स बनाते हैं तो सबको अच्छा लगेगा। शांति सेना का विचार हमने देश के सामने रखा, उसके खिलाफ कोई नहीं बोलता है यह तो शक्ति की प्रेरणा है वह प्रेरणा रचनात्मक कार्यकर्ताओं को न हो तो बापू का काम बनेगा न होगा। फिर जैसे सरकार के दूसरे महकमे हैं वैसे खादी का भी एक महकमा हो जायेगा। इसलिए अब सोचना है। आपकी ऐसी ताकत बननी चाहिए जो मजबूर करे, "आर्डर रेज" करें।

नये मोड़ के संदर्भ में

कार्यकर्ताओं की समस्या

शंकरराव देव

यह कहने की आवश्यकता नहीं है कि हमें सारे कार्यक्रम के कार्यकर्ताओं का कितना महत्व का स्थान है। नये मोड़ कार्यक्रम के सफल होने या विफल होने की असली जड़ कार्यकर्ता ही है। अब इस आन्दोलन में अहिंसक समाज की स्थापना की प्रक्रिया में कार्यकर्ताओं को अपना एक महत्वपूर्ण उत्तरदायित्व समझ कर अपना योग-दान देने को तैयार होना है। पर बदलों को आज ऐसे दक्ष और सुयोग्य कार्यकर्ताओं की कमी दिखाती है।

सुयोग्य कार्यकर्ता अपने आप कहीं से प्राप्त नहीं होते हैं, उन्हें तैयार करना होता है। आज जो कार्यकर्ता केवल उत्पादन-बिक्री का काम कर रहे हैं इनमें भी कई ऐसे मिलेंगे जिनकी रुचि और रुझान इस नये कदम के लिए है तथा उन्हें आवश्यक प्रशिक्षण दिलाया जाय तो वे यह काम संभाल सकेंगे। परिस्थिति को प्रतिकूल समझ कर सिर पकड़ कर बैठना हमें उचित नहीं लगता है। आज तक जो रचनात्मक काम करते आते हैं, जिनके पास सार्वजनिक सेवा का अनुभव है और जिनके मन में देश के लिए तड़प है उनका कर्तव्य है कि आज के कार्यकर्ताओं को सारी नयी चीज समझायें और अपने अनुभव और ज्ञान का लाभ पहुँचायें। तब इन साधारण कार्यकर्ताओं में भी स्फूर्ति पैदा होगी। फिर पर आज भी देश में ऐसे युवकों की कमी नहीं है जो देश के भले के लिए अपनी शक्ति और भावना समर्पित करें। हम उन्हें आज आकर्षित नहीं कर पा रहे हैं इसका कारण यह है कि रचनात्मक संस्थाओं के पास उनको देने के लिए एक ऊँचा ध्येय और व्यापक दृष्टि नहीं है।

रचनात्मक संस्थायें आज सीमित दायरे में ही काम करने की आदी हो गयी हैं। प्रत्येक को अपना अपना काम ही प्रमुख हो गया है और किसी संस्था के सामने जैसा होना चाहिए वैसा और परिपूर्ण चित्र नहीं है। नवयुवकों के सामने यदि हमारी संस्थायें एक समग्र चित्र प्रस्तुत करें, त्याग समता और श्रम का खुला क्षेत्र दिखायें तो इस कार्यक्रम के लिए नये युवकों कार्यकर्ता भी काफी संख्या में उपलब्ध होंगे, इसमें संशय नहीं। आज जो कार्यकर्ता वर्तमान कार्य में लगे हुए हैं, अनुभव अभ्यास और ज्ञान है तथा नये कार्यकर्ता जितने उपलब्ध हों, उन सबको संघटित करके काम में लगायें तो फिर सुयोग्य कार्यकर्ताओं की कमी नहीं रहेगी। कांग्रेस का इतिहास साक्षी है। उस समय भी कार्यकर्ताओं की कमी महसूस न हुई हो सो बात नहीं। कांग्रेस के वे नेता भी यही कहते कि स्वतंत्रता की जिम्मेदारी निभाने की योग्यता रखने वाले कार्यकर्ता कहाँ से आयेंगे और हम निराशा भरे विचार से वे यदि निष्क्रिय रह जाते तो जो आजादी मिली है, वह भी नहीं मिल पाती।

जनता की उपेक्षा

भूदान का काम निकला तो वह काम कांग्रेस वालों ने भी किया। पी० एस० पी० वालों ने भी किया। लेकिन मुझे कम से कम मदद किसी की मिली हो तो वह रचनात्मक कार्यकर्ताओं की ही है। वे अपने काम में कैद हो गये हैं। गाँव-गाँव में चेतना नहीं रही है तो गाँव-गाँव में संकल्प कौन करेगा? गाँव अगर एक रस नहीं बनेगा तो खादी का संकल्प कैसे होगा? लेकिन खादी वालों ने इसकी तरफ ध्यान नहीं दिया। कुछ लोगों ने मदद तो दी लेकिन कुल मिलाकर जो आशा रचनात्मक कार्यकर्ताओं से मैंने रखी थी वह पूरी नहीं हुई। कांग्रेस ने मदद दी क्योंकि उनको जनता की राय की कीमत थी।

लेकिन हम ऐसे देवता बन गये कि लोकमत हमारे पक्ष में आये या न आये देवता को पब्लिक ओपीनियन की जरूरत नहीं। हमारे हाथ में एक तरह से सत्ता आ गयी। तनख्वाह मिलती है, काम चलता है। ऐसे ही खादी वाले अगर तय करते हैं और ऐसा समझेंगे तो मानना होगा कि वे चार दिन के साथी हैं। आठ दस साल के खादी खतम होगी।

मेरी वेदना मैंने आपके सामने प्रकट की। उधर व्यापारवाद डाकू अन्दर से धकेल रहे हैं। कभी एक जगह वे बोले हैं कि "खादी वाले बाबा को शांति के अनुभव करेंगे।"

दूसरी बात आज कार्यकर्ता काम कर रहे हैं उनको भी नये काम के विषय में निःशंक हो कर हिम्मत के साथ जुटना चाहिए। किसी भी नये काम को हाथ में लेने से पहले एक प्रकार का भय और आशंका का अनुभव होता है, इसका असली कारण उस काम के विषय में सही ज्ञान का अभाव ही है। काम का स्वरूप और काम के पीछे निहित विचार का पूरा और सही ज्ञान प्राप्त हो जाय तो किसी प्रकार का भय या झिझक नहीं रहे। ज्ञान से ही भय मुक्ति मिलती है। नये काम को देखकर अक्सर लगने लगता है कि यह कठिन है। यों एक दम कठिनाई क्यों महसूस होती है? इसका भी कारण यही अज्ञान है।

यह अज्ञान जितने अंश में रहेगा उतने अंश में काम के प्रति भय और काम की कठिनाई का भान भी बना रहेगा। चन्द्रमा के पास जाने की कल्पना के बारे में एक साधारण मनुष्य और उस पर विचार तक ही नहीं करेगा। तुरत यह देखा यह तो कठिन है। यही एक वैज्ञानिक से पूछा जाय तो वह उसे कठिन तो मानेगा बल्कि तुरत चन्द्रमा के संबंध में हर प्रकार की जानकारी प्राप्त करने लगेगा और रास्ते में आ सकने वाली बाधाओं को दूर करने के उपाय सोचेगा। एक अज्ञानी और एक ज्ञानी के बीच का अन्तर यह है, यही कारण है कि आज अंतरिक्ष में ऐसी खोजें हो रही हैं जिनके बारे में एक समय मनुष्य कल्पना तक नहीं कर सकता था। छोटे से छोटे काम के बारे में हर एक व्यक्ति का यही अनुभव है। ऐसे भय को और कठिनाई को दूर करने का एक मात्र उपाय यही है कि उस काम की सही और पूरी जानकारी हासिल की जाय। ज्यों-ज्यों ज्ञान साफ होता जायगा और बढ़ता जायगा, त्यों त्यों यह भय और कठिनाई तो दूर होंगे ही बल्कि काम में आनन्द आने लगेगा। इस प्रकार कार्यकर्ता सामने आये तो काम के स्वरूप को ठीक तरह से समझ लेगा और उसे निर्भय होकर उठा लेगा।

नये विचार को अपनाने में तथा नये काम को शुरू करने में बड़ी बाधा पुरानी आदतों के कारण पैदा होती है। जब हम एक प्रकार का काम बरसों तक करते रहें, फिर उसे बदल कर नया काम हाथ में लेना चाहें तो इसमें अधिक दिक्कत महसूस होती है। मन एक दम तैयार नहीं होता है। पुराना संस्कार पुरानी स्मृति और पुरानी आदतें हमें पीछे की ओर ही खींचती हैं। इसलिए पुरानी स्मृति व संस्कारों का आवरण दूर करने का प्रश्न भी काफी महत्व पूर्ण है।

तीसरी बात यह कि अकसर देखा जाता है कि नये-मोड़ के कारण वर्तमान काम के बंद हो जाने का और इस कारण खुद का काम छिन जाने का कुछ डर कई कार्यकर्ताओं के मन में है। लेकिन इस डर की कोई आवश्यकता नहीं है। क्योंकि नये मोड़ के लिए कार्यक्षेत्र वही होगा जो आज व्यापारिक काम का क्षेत्र है। आज के काम के माध्यम से ही वहाँ की व्यापक योजना बनानी है और उसे कार्यान्वित करने का प्रयत्न करना है। अतः चालू काम को बंद करने का सवाल ही नहीं है। चालू काम को ही व्यापक बनाना, फैलाना ही तो नया-मोड़ है। नये केंद्रों को खोलने की बात छोड़ दें, केवल वर्तमान केंद्र को ही काम को नये मोड़ की दिशा में मोड़ने की योजना बनायें तो भी उस काम के लिए आज के दुगुने तिगुने कार्यकर्ताओं की जरूरत पड़ेगी। फिर पर चालू केंद्रों के अलावा नये भी सैकड़ों हजारों केन्द्र खोलने की योजना बनायी जा रही है तब काम के बंद होने का या कार्यकर्ताओं के काम के छिन जाने का प्रश्न ही कहाँ उठता है? इसके अलावा नये-मोड़ की योजना में भी खादी का उत्पादन होगा ही, उद्योग रहेगा ही, यही नहीं बल्कि वह बढ़ेगा भी, तब आज खादी आदि औद्योगिक, तकनीकी और कला का जो ज्ञान और अनुभव इन कार्यकर्ताओं में है उसका उपयोग तो है ही। इस दृष्टि से विचार करें तो आज के प्रत्येक कार्यकर्ता की ही नहीं; बल्कि ऐसे ही कई गुना अधिक कार्यकर्ताओं की जरूरत रहेगी।

नये-मोड़ की योजना में यह जरूर है कि सारा रचनात्मक काम संस्थाओं के हाथ से धीरे-धीरे जनता के हाथ में जायगा, [illegible] इकाई की जनता अपना संगठन बनाकर स्वयं सारा कार्यभार संभालेगी। इसलिए संस्थाओं पर आधारित आज के कार्यकर्ताओं को लगता है कि मानो वे समुद्र में फेंके जा रहे हों। अब तक छोटे से पोखर' में उनका जीवन सुरक्षित सा था और इस जनता रूपी सागर में वे अपने को निःसहाय और निराधार महसूस करते हैं।

इसमें कुछ विचार दोष है।

आज अधिकतर संस्थाओं में नौकरी करने वाले कार्यकर्ता अनुभव करते हैं कि वे संस्था के केवल मात्र नौकर हैं। नौकरी की भावना से काम करने वाले कार्यकर्ता के लिए ऐसा महसूस होना स्वाभाविक ही है। लेकिन कार्यकर्ता की असली भूमिका नौकरी की नहीं बल्कि लोक सेवक की है। रचनात्मक कार्यकर्ता जबतक अपनी इस भूमिका को समझेंगे नहीं तब तक चूंकि वे अपने को नौकर समझ कर काम करेंगे, इसलिए चाहे संस्था में रहें, चाहे जनता के हाथ में जाय, वे अपने को निराधार ही पायेंगे। सेवा में चिन्तन सर्वस्व अर्पित करने वाले कार्यकर्ता कभी इस प्रकार निराधार और निःसहाय अपने को नहीं पायेंगे।

संस्था तो आखिर मुट्ठी भर लोगों के अधीन चलनेवाली होती है। संस्था का दायरा सीमित होता है। शक्ति थोड़ी होती है। अतः इसमें आज अकसर ऐसा देखा जाता है कि कार्यकर्ता को अपने उदर भरण के लिए अपनी स्वतंत्रता और निर्भयता जैसे जीवन मूल्यों की किमत चुकानी पड़ रही है। लेकिन इन मूल्यों की रक्षा जहाँ हो सकती हो उस जनता रूपी सागर में एक हित-चिंतक मित्र और विचारक के रूप में जा मिलने में क्यों भय होना चाहिए? पानी की बूंद को समुद्र से छिटक कर अलग होने में ही सूख जाने का डर है, समुद्र के साथ मिल कर उसमें एक रूप हो कर रहने में क्या डर है?

ग्राम-स्वराज्य दिवस

६ अप्रैल १९६१ को ग्राम-स्वराज्य-दिवस मनायें

जगह-जगह घोषणा की जाय—सर्व सेवा संघ के मंत्री का निवेदन

अखिल भारत सर्व सेवा संघ की प्रबंध-समिति ने तय किया है कि आगामी ६ अप्रैल १९६१ को ग्राम-स्वराज्य की घोषणा देश के गाँव-गाँव में की जाय।

संघ की खादी समिति ने खादी ग्रामोद्योग कार्य को नया मोड़ देने की दृष्टि से योजना रखी थी कि ग्राम या ग्राम-समूह की छोटी इकाई के स्तर पर गाँव वालों के स्वयं के संकल्प के द्वारा खादी और गाँवों में तैयार हो सकने वाली *अन्य वस्तुओं के स्वावलम्बन साधन का प्रयोग व्यवस्थित रूप से चले।*

खादी ग्रामोद्योग आयोग ने इस योजना को मान्यता दी और आगामी पाँच वर्षों में पाँच हजार आबादी की ३००० करीब ग्राम-समूह इकाइयों में काम किये जाने की अपने नजर में तैयारी बतायी। ये इकाइयाँ धीरे-धीरे खड़ी होंगी, लेकिन संकल्प-घोषणा ६ अप्रैल को देश भर में जगह-जगह होनी चाहिए।

वातावरण निर्माण और नये मोड़ के कार्य की ओर जनता की, तथा विशेषतः सर्वोदय समाज-रचना में लगी खादी आदि संस्थाओं व व्यक्तियों की नजर केन्द्रित करने के लिए यह सोचा गया है कि इस योजना का प्रारम्भ ६ अप्रैल को जगह-जगह घोषणा करके किया जाय।

संघ की प्रबन्ध-समिति की बैठक हाल ही में श्री विनोबाजी के सान्निध्य में हुई थी। उसमें समिति ने इस अवसर के लिए निम्नलिखित घोषणा स्वीकार किया है।—

ग्राम-स्वराज्य-घोषणा

"आज हम घोषणा करते हैं कि हम अपनी शक्ति को एक सहकारी, समन्वित और *एकरस समाज* के निर्माण में लगायेंगे।

"हम मानते हैं कि प्राथमिक ग्राम-समाज को यह जिम्मेदारी लेनी चाहिए और स्वयं अपनी ओर से उसके लिए पहल करनी चाहिए कि समाज के सब सदस्यों को उनके जीवन की मूलभूत *आवश्यकताएँ सुलभ हों और वे समाज के* अन्दर रहते हुए अपनी सुरक्षा तथा स्वतंत्रता का अनुभव कर सकें।

"हम घोषणा करते हैं कि हमारे समाज में न तो कोई भूखा रहेगा और न कोई बेकार। इसके लिए हम बेजमीनों और बेकारों को जमीन दिलाने की व दूसरे उद्योग-धंधों में लगाने की व्यवस्था करेंगे। हम अपने गाँव के सभी प्राप्त साधनों का अनुमान लगाएँगे और मुख्यतः ग्राम-समाज की प्राथमिक आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए उनका पूरा या अधिकतम उपयोग करेंगे। यह करते हुए देश के उस बृहत् समाज की आवश्यकताओं की पूर्ति में पर्याप्त योग देना हम अपना कर्तव्य समझेंगे, जिसके कि हम एक अंग हैं।

"हम उन सब आवश्यक उपायों से *काम लेंगे जिनसे हमारे आर्थिक जीवन में* विविधता आए, रहन-सहन की हमारी स्थिति में सुधार हो, समाज के हर व्यक्ति को उपयोगी और समाज की दृष्टि से हितकारी काम मिले तथा गाँवों के पढ़े-लिखे वर्ग में अभी भी घनी आबादी से भरे शहरों की ओर जाने की जो वृत्ति बनी है, उसमें रोक-थाम हो। हम अपने आर्थिक जीवन का संयोजन इस तरह करेंगे कि जिससे हमारे नौजवानों की बुद्धि-शक्ति को अधिकतम सृजनात्मक रीति से वहीं गाँव में काम करने का पर्याप्त अवसर मिल सके।

"खादी अहिंसक समाज रचना का प्रतीक है। आज भी खादी गाँवों में हजारों-लाखों गरीबों और उपेक्षितों के लिए आशा का चिन्ह और रोजी-रोटी का साधन है। नये मोड़ के नये विचार से हमें बहुत प्रेरणा मिली है। उसकी मदद से हमें ग्राम-समाज का समग्र संयोजन और विकास करना चाहिए। कृषि उद्योग-प्रधान समाज की नयी रचना में खादी और ग्रामोद्योग के महत्त्व को हम मानते हैं, इसलिए हम अपने आर्थिक जीवन की पुनर्रचना इस तरह करेंगे कि जिससे उस नव-निर्माण में इनका महत्व का योगदान हो और समाज में सबके लिए स्वतंत्रता और समानता की स्थिति पैदा हो सके।

"इस लक्ष्य की पूर्ति के लिए हमारे सारे प्रयत्न सफल हों, यही हमारी कामना है।"

नोट—एक व्यक्ति घोषणा को धीरे-धीरे और एक-एक वाक्य पढ़ें तथा गाँव के लोग मिलकर उसे दुहराएँ।

घोषणा से पहले सारे विचार और कार्य पर प्रकाश

घोषणा करने से पूर्व इस संकल्प के पीछे क्या लक्ष्य है, खादी ग्रामोद्योग कार्य का देश की अर्थ-रचना में क्या स्थान है और यह महत्त्व का कार्य अपने पाँव पर आप कैसे खड़ा हो सकता है, इस सब पर रोशनी डाली जाय। गाँववालों को सारे कार्य की रूप-रेखा बतायी जाय।

उन्हें एहसास हो कि उस काम को हाथ में लेने व पूरा करने की जिम्मेदारी उनकी खुद की मूलतः है। जगह-जगह कार्यकर्ता बंधु इस दृष्टि से निम्न निवेदन या इसके आधार पर आवश्यक विचार लोगों के सामने रखें।

अपेक्षा यह है और यह बहुत जरूरी है कि गाँव के लोग सारी बात समझ कर *और अपना जिम्मा सँभालने की तैयारी* मानकर घोषणा जाहिर करें।

साफ है कि कार्यकर्ता बंधुओं को बाद में भी गाँववालों से बराबर सम्पर्क रखना होगा ताकि लोग अपनी घोषणा को पूरा करने के काम में सतत लगे रहें।

विषय-प्रवेश के तौर पर निम्न निवेदन या उस पर आधारित विचार जाहिर किया जाय :—

ग्राम-स्वराज्य संकल्प के समय विषय-प्रवेश की दृष्टि से कहे जाने के लिए

स्वतंत्र भारत ने लोकतांत्रिक समाज-रचना को अपना लक्ष्य माना है। भारत में लोकतंत्र के ऐसे स्वरूप का विकास करना है, जिसमें व्यक्ति अपनी स्वतंत्रता *और सामाजिक सुरक्षा के बारे में आश्वस्त* हो सके। इतिहास का अनुभव बताता है कि दोनों में से एक को भी खतरे में डाले बिना दोनों की सुरक्षा तभी सम्भव हो सकती है, जब कि समाज का काम छोटी छोटी इकाइयों में चले। भारत की अपनी एक परम्परा रही है, जिसमें ग्राम-*समाज इन दोनों कामों को चलाता था।* आज जरूरत है कि उस परम्परा को, समय की आवश्यकता के अनुसार संशोधित करते हुए, मजबूत किया जाय। अतएव आज ऐसी समाज-रचना के लिए प्रयत्न *करना अधिक आवश्यक है कि जिसमें* समाज की शान्ति को खतरे में डालनेवाले विविध संघर्षों, का निराकरण होते हुए *मनुष्य के व्यक्तित्व का अधिक से अधिक* समग्र विकास हो सके। इस समाज रचना में एक ओर व्यक्ति की स्वतंत्रता अक्षुण्ण होनी चाहिए और दूसरी ओर उसे वह सुरक्षा प्राप्त होनी चाहिए जो पहले के स्वयंपूर्ण समाज में उसे सुलभ थी। इसके द्वारा सारे काम शिक्षा के साधन रूप चलने चाहिए। और, सारी प्रवृत्तियों का कुछ ऐसा रूपान्तर होना चाहिए कि जिससे *शास्त्रनिक* और शरीर-श्रम के कामों के बीच के भेद मिट जायँ और यों आम तथा खास लोगों के बीच भी कोई भेद न रहे। इस समाज में विज्ञान और तकनीकी ज्ञान के सहारे आत्मज्ञान और भौतिक *समृद्धि दोनों का विकास ऐसे ढंग से होना* चाहिए जिससे कहीं किसी का शोषण न हो। सामाजिक सुरक्षा, समाज सेवा और व्यापक अवसरों की व्यवस्था के सहारे इसके द्वारा जनता को एक प्रतियोगिता *पूर्णजीवन और अर्थ-व्यवस्था* के बदले सहकारी जीवन और सहकारी अर्थ व्यवस्था को प्रेरणा मिलनी चाहिए। इस लक्ष्य की पूर्ति के लिए समाज-संगठन का भी ऐसा ढाँचा विकसित करना होगा जो संगठन के गुणों का लाभ पहुँचाते हुए भी व्यक्ति और समाज के बीच ऐसा सजीव संबंध बनाये रखेगा कि जिससे व्यक्ति के हित समाज के हितों से न टकरा सकें। ऐसे बृहत् संगठन की रचना गांधीजी के "एक केन्द्र से चारों ओर बढ़ते जाते अलवृत्त" के उस तत्व पर आधारित होगी, जिसमें गाँव की प्राथमिक इकाई का सम्बन्ध सहकारिता के आधार पर रचे गए और उत्तरोत्तर बड़े होते जानेवाले क्षेत्र के एक के बाद दूसरे संगठन से होगा। इसके द्वारा आज की अर्थ-व्यवस्था में बढ़ रहे केंद्रीकरण और प्राथमिक इकाइयों के विघटन की जगह एक विकेंद्रित सहकारी अर्थ-*व्यवस्था स्थापित होगी।* इससे छोटे-छोटे समाजों में रहनेवाले व्यक्तियों के बीच सीधे पारस्परिक सम्बन्ध बने रहेंगे और साथ ही उनकी दृष्टि-मर्यादा व्यापक बनेगी। इससे गाँवों में लोगों को व्यापक अवसर मिलेंगे और उन्हें आधुनिक सुविधाओं और सेवाओं का भी लाभ मिलेगा। शहरी और देहाती *अर्थ-व्यवस्था* के बीच का अन्तर कम करने में मदद मिलेगी। शहरी और देहाती सभ्यता का फर्क घटेगा और इस तरह देहाती समाज की बुद्धि शक्ति का जो प्रवाह शहरों की ओर जा रहा है, उस पर रोक *लगेगी।* इसके *परिणाम-स्वरूप* ग्राम-समाज को कृषि-उद्योग-प्रधान समाज का रूप एवं स्वभाव प्राप्त होगा और *मूलतः समानता और बन्धुता पर आधारित* एक ऐसा जीवन खड़ा होगा, जो सबके लिए लाभकारक और संतोषप्रद बनेगा।

साफ है कि इस तरह के समाज की रचना समुचित शिक्षा और विचार-परिवर्तन के सहारे करनी होगी। शिक्षा संस्थाओं को "सामुदायिक जीवन और उद्योग द्वारा शिक्षण" के सिद्धान्त के अनुसार अपना काम करना होगा। उद्योगों में कृषि, गोसेवा और ग्रामोद्योग मुख्य आधार होंगे। इससे आनेवाली पीढ़ी में देश के सांस्कृतिक उत्तराधिकार का आत्मसात करने की शक्ति का आवश्यक विकास होगा और नए जीवन-मूल्यों को गढ़ने और उन्हें अपनाने की शक्ति पैदा होगी। ऐसी समाज-रचना में जीवन बाहरी दण्ड-व्यवस्था से नियंत्रित न होकर व्यक्ति व्यक्ति के आत्मानुशासन द्वारा संचालित अथवा सामुदायिक इकाइयों द्वारा परस्पर नियंत्रित रहेगा। इसके परिणाम-स्वरूप समाज का हर व्यक्ति नीति-निर्माण और कार्यक्रमों की रचना में स्वयं सीधा योग देगा, और इस प्रकार देश में सच्चे ग्राम-स्वराज्य का उदय होगा।

श्रम, बुद्धि और पूंजी की सुखद साझेदारी हो

—राममूर्ति

ता० २१ जनवरी को विनोबा खादीग्राम : जिला मुंगेर, बिहार से गुजरे थे। "श्रम-भारती," खादीग्राम का श्री धीरेन्द्र भाई के प्रयोग-क्षेत्र के रूप में सर्वोदय जगत में अपना एक विशेष स्थान रहा है। श्री धीरेन्द्रभाई तो अब सर्व-जनआधार की कल्पना को साकार करने की दृष्टि से श्रम-भारती से दूर पूर्णियाँ जिले के एक गाँव में चले गए हैं। श्रम भारती का काम अब आचार्य राममूर्तिजी की देख-रेख में चलता है।

बिहार प्रान्त की प्रमुख खादी संस्था "बिहार खादी-ग्रामोद्योग संघ" ने विकेंद्रीकरण की अपनी नीति के अनुसार मुंगेर जिले का काम जिले के लोगों पर छोड़ने का तय किया है और उसके अनुसार मुंगेर जिले का एक खादी ग्रामोद्योग संघ बना है जिसने वह काम सम्हाला है। जिले के संघ का कार्यालय खादीग्राम ही रखा गया है और इस तरह "श्रम-भारती" की एक नयी प्रवृत्ति शुरू हुई है।

ता० २१ जनवरी को विनोबाजी की उपस्थिति में जिला खादी ग्रामोद्योग संघ के काम की शुरुआत की घोषणा की गयी। संघ के अध्यक्ष श्री राममूर्तिजी ने इस अवसर पर जो भाषण दिया, उसमें खादी के विकेन्द्रीकरण की कल्पना के बारे में उन्होंने जो विचार प्रगट किये हैं, वे नये मोड़ के सन्दर्भ में अन्य खादी कार्यकर्ताओं के लिए भी उपयोगी साबित होंगे। श्री राममूर्तिजी के भाषण का सार और विनोबा का उत्तर नीचे दिया गया है। सं०]

अभी तो विकेन्द्रीकरण का इतना ही अर्थ है कि बिहार खादी ग्रामोद्योग संघ अपने सिर से पगड़ी उतार कर मुंगेर के सिर पर रख रहा है। लेकिन जिला खादी ग्रामोद्योग संघ, मुंगेर को यह पगड़ी इस जिले के ३ हजार गाँवों के सिर पर बाँधनी है। मुजफ्फरपुर से मुंगेर आना आसान है। लेकिन मुंगेर से ३ हजार गाँवों में पहुँचना कठिन है—बहुत कठिन पड़ोस का मालिक दूर के मालिक से कहीं अधिक कठोर होता है। कौन जाने हम मुंगेर संघ वाले लोक कल्याण के नाम में सेवा का ऐसा निहित स्वार्थ बनालें कि जो थाती हमें मुजफ्फरपुर से प्राप्त हुई है उसे गाँव को सौंपने से मुंह मोड़ने लगें ? आज देश और दुनियाँ में मध्यम वर्ग व्यवस्था और विकास के नाम में यही कर रहा है। जिला खादी ग्रामोद्योग संघ, मुंगेर का आचरण इससे भिन्न होगा, यह दावा हम कैसे करें ?

पर प्रारम्भिक कदम के रूप में हम लोगों ने संघ की सदस्यता दो प्रकार की मानी है। साधारण सदस्यता के लिये पूर्ण खादीधारी होना, अपने घर में सर्वोदय-पात्र रखना तथा हर वर्ष अपने हाथ के या परिवार में कते सूत की एक गुंडी सूतांजलि के रूप में देना अनिवार्य है। सक्रिय सदस्यता के लिये इन अर्हताओं के अतिरिक्त यह भी आवश्यक है कि सदस्य अपने या परिवार के कते सूत की एक गुंडी सूतदान के रूप में प्रति माह संघ को देता हो, जिसने पूर्ण स्वामित्व-विसर्जन के प्रतीक स्वरूप अपनी चल या अचल सम्पति की मालकियत के किसी अंश का भूदान या सम्पत्ति-

इस तरह संघ की रचना में ही कुछ ऐसे तत्व रखे गये हैं जो स्थानीय अभिक्रम जगाने में सहायक होंगे, ऐसी आशा हमने की है।

विकेन्द्रीकरण की बात आज चारों ओर हवा में है। अक्सर विकेन्द्रीकरण की योजनाओं में सत्ता की नयी इकाइयाँ बनती हैं और नयी-नयी गुटबन्दियाँ खड़ी हो जाती हैं, उनसे स्वावलम्बन और सहकार नहीं पैदा होता। हमने अपने जिले में एक नया संघ तो बना लिया है लेकिन हम यह महसूस करते हैं कि चर्खे को गाँव में पहुँचाकर उसे घर घर में उतना ही व्यापक और सुलभ कर देना, जितना चूल्हा है, अत्यंत कठिन काम है। और इसके आगे चर्खे रूपी सूर्य के चारों ओर ग्रामोद्योग का पूरा सौर मण्डल सजाना और उस सौर मण्डल को पूरक रूप में खेती पशुपालन के साथ जोड़कर नयी तालीम की प्रक्रियाओं द्वारा गाँव की कौटुम्बिकता की ओर अग्रसर करना—यह केवल निर्माण का काम नहीं है, इसके लिए उस नयी औद्योगिक क्रान्ति की आवश्यकता है जो जिंदगी की शक्ल बदल दे। लेकिन क्या यह औद्योगिक क्रांति आज के समाज में मान्य साम्पत्तिक मूल्यों और सम्बन्धों के रहते हुए सम्भव है ? मालिक मजदूर का रिश्ता और सहकार-शक्ति, ये दोनों परस्पर-विरोधी तत्व हैं। इसलिए मुंगेर के विकेन्द्रीकरण की बात चली और यह बात सामने आयी कि हम भूदान के कार्यकर्ताओं को खादी ग्रामोद्योग के काम में भी पड़ना चाहिए तो मन में यह शंका उठी कि क्या हमें बुनियादी काम को छोड़कर व्यापार मिश्रित निर्माण के काम में पड़ना चाहिए। बहुत आगा-पीछा करने के बाद हमने अंत में यही तय किया कि पड़ना चाहिए।

ऐसी बात नहीं है कि हमें अपनी अत्यन्त सीमित शक्ति का या परिस्थिति की विषमताओं का भान नहीं है। हम जानते हैं कि मुंगेर जिले की ४० हजार कत्तिनों में से अधिकांश ऐसी ही हैं जो दो-चार आने माहवार की "पाकेट मनी" के लिए कताई करती हैं, जो खादी की कमाई को हाट पर चलाने या मिल की चीजें खरीदने में लगाती हैं, और जो परिवार के वस्त्र-स्वावलम्बन के लिए नहीं कातेंगी, भले ही कताई छोड़ देनी पड़े। चर्खा स्त्री की सम्पत्ति बन गया है और पुरुष कताई की ओर आकृष्ट नहीं होता, तो परिणाम यह होता है कि चर्खे का परिवार के जीवन में स्थान नहीं बन पाता। एक ओर कत्तिन का यह हाल है और दूसरी ओर कार्यकर्ता ने विच्छिन्न व्यक्तित्व विकसित कर रखा है। यह बात नहीं है कि अपवाद नहीं है, लेकिन सामान्यतः वह आम स्वावलम्बन के विचार में अपने महत्व और जीविका दोनों की अरक्षा देखता है, इसलिए उसका अचेतन मन लोक-शक्ति सहजीवन, स्वामित्व विसर्जन आदि के प्रति शंकित रहता है, भले ही प्रत्यक्षरूप से वह बात दूसरी बोले। यों भी परिवार की आवश्यकता और समाज की पुकार, पुराने संस्कार और नयी आकांक्षा, समर्पण और सुरक्षा, मन में उत्साह और मंडार का वातावरण, इनके दुष्चक्र में पड़ कर कार्यकर्ता की इतनी चोटें खानी पड़ती हैं कि अच्छे, उत्साही, युवक-कार्यकर्ता भी थोड़ा-हाथ पैर पटककर अंत में पराजय स्वीकार कर लेते हैं। अनास्था, अशक्ता और पराजय का मानस आज हमारा बन गया है। वर्षों पहिले आपने खादी और गादी की जिस लड़ाई का "सर्वोदय" के एक लेख में उल्लेख किया था, उसमें गादी जीती और खादी हारी है। खादी की हार दुहरी हार है, क्योंकि खादी मोर्चे ही छोड़कर हटती जा रही है। एक के बाद दूसरी पंचवर्षीय योजनायें देश में जो आबोहवा पैदा कर रही हैं और उनके कारण विकास के नाम पर समाज के सामने जो मूल्य प्रस्तुत हो रहे हैं वे खादी की समाज रचना और जीवन पद्धति से मेल नहीं खाते। गाँवों में वर्ग का शोषण और जाति का दमन तो पहिले से था ही उसके ऊपर नयी अर्थनीति और राजनीति तेजी से गांव गांव में एक ओर बाजार और दूसरी ओर सरकार के एजेन्ट तैयार करती जा रही है जिनके कारण एकता और सहकार की शक्तियाँ उभड़ने नहीं पातीं। जनता मोह और मूर्छा में है। वह योग और सहजीवन के तत्वों को समझने की न उसकी परिस्थिति है न प्रवृत्ति।

आशा और विश्वास को चूस लेनेवाला चित्र है यह। फिर भी मुंगेर ने संघ बनाने का निश्चय किया और हम भूदान कार्यकर्ता उसमें शामिल हुए ऐसा हमने क्यों किया ? निश्चित ही ऐसा इसलिए नहीं किया है कि हम कुछ खादी-भंडार और खोल लें या कुछ साबुन-तेल और बेच लें। वह रास्ता अपना नहीं है। हम सबकी आंखें ग्रामस्वराज्य की ओर लगी हुई हैं, और बराबर यही चिंता रहती है कि कौन-सा रास्ता जल्द से जल्द हमें अपने सपनों के देश में पहुँचा देगा। हमने यह देखा है कि पिछले ७-८ वर्षों में हम चलते चलते ऐसी जगह पहुँच गये हैं, जहाँ हमारे लिए समाज के सब दरवाजे बंद हैं। हमने देख लिया कि ग्रामस्वराज्य की लड़ाई स्वराज्य की तरह की तरह लंबी और अनिश्चित है। वह लड़ाई अधिक सौम्य है तो अधिक कठोर भी है। एक ओर अंतर्राष्ट्रीय परिस्थिति की भयंकरता और उसके कारण राष्ट्रीय सुरक्षा से जुड़ी हुई पंचवर्षीय योजनाओं का "स्टीम रोलर" चल रहा है। तो दूसरी ओर जनता अभेद्य मूर्च्छा में पड़ी हुई है, इन दोनों के बीच हमें ग्रामस्वराज्य की सौम्य, शैक्षिक प्रक्रिया चलाकर वास्तविक लोकशक्ति विकसित करनी है। यह कैसे हो ? मुंगेर जिले में लगभग २ हजार से अधिक भूमिहीन परिवार भूदान की जमीन जोत रहे हैं, लेकिन हम यह नहीं देखते कि भूदान देनेवाले दो हजार गाँवों में से किसी एक गाव में भी करुणा की निष्पत्ति हुई हो; यानी दाता और अदाता का सम्बन्ध किसी भी अंश में पहिले से मीठा हुआ हो। थोड़ी जमीन पा जाने से भूमिहीन

का आत्म-सम्मान बढ़ा है, आर्थिक दृष्टि से उसकी सौदा करने की शक्ति भी बढ़ी है और शायद इसीलिए यह मालिकी का नया हकदार और पुराने मालिक का नया प्रतिद्वंद्वी हुआ है, जिससे परस्पर विरोध तीव्र हुआ है, अविश्वास बढ़ा है, संघर्ष की भूमिका पुष्ट हुई है। यह देखकर मन में प्रश्न उठता है कि अब तक हमारा जो 'एप्रोच' रहा है, और हमारी जो कार्य-पद्धति रही है, उसमें कहीं कोई बुनियादी कमी तो नहीं रह गयी ? क्या हम वर्ग-संघर्ष का सफल विकल्प विकसित कर सके हैं ? क्या बात है कि जनता में अन्याय के प्रति तिलमिलाहट तक नहीं पैदा होती ? क्यों हम गृहस्थों में थोड़ी भी क्रियाशीलता नहीं जगा पाते ? क्या हमारा आन्दोलन मुट्ठी भर कार्यकर्ताओं की अस्पष्ट आकांक्षा तक ही सीमित रहेगा या समाज को भी सक्रिय करेगा ?

हम यह सोचते थे कि भूदान की प्रक्रिया से धीरे-धीरे कुछ ऐसा दृश्य प्रकट होगा कि कहीं-कहीं, चाहे जितने सीमित क्षेत्र में हो, पूंजी, श्रम और बुद्धि की सुखद साझेदारी (हैपी पार्टनरशिप) दिखाई देगी, क्योंकि अगर ऐसा नहीं होगा तो अबतक जो वर्ग-संघर्ष पूंजी और श्रम के बीच हुआ है, वह अब श्रम और बुद्धि के बीच होगा। योरोप तो एक संघर्ष से गुजर चुका है लेकिन हमारे सामने तो पूरी विभीषिका नाच रही है। हमें लगता है कि यह पूंजी, श्रम और बुद्धि के समन्वय की स्थिति तब आयेगी जब एक ही जमीन पर मालिक और मजदूर समझौता करके खेती करेंगे और खेती का खर्च काटकर उपज को परस्पर मान्य अनुपात में बांट लेंगे। जीविका के क्षेत्र में साझेदारी होगी तभी जीवन में सहकार की भूमिका बनेगी, अन्यथा नहीं। यह कहा जा सकता है कि ग्रामदान में साझेदारी नहीं तो और क्या है। है किसी अंश में, लेकिन ग्रामदान में अभी मालिक-मजदूर की हैपी पार्टनरशिप का दर्शन नहीं हुआ है; अधिक से अधिक मजदूरों का सीमित सहकार ही प्रकट हुआ है। ग्रामदान से पहिले ऐसी कोई प्रक्रिया निकलनी चाहिए जो गांव के स्तर पर पूंजी, बुद्धि और श्रम की साझेदारी की आबोहवा पैदा कर सके, जिसमें मालिक और मजदूर दोनों अपने को सुरक्षित ही नहीं परस्पर पूरक भी देख सकें, जो मालिक में भय और मजदूर में ऐंठ न पैदा करे, और जो धीरे-धीरे साझेदारी से सम्पूर्ण सहजीवन की ओर ले जा सके। अगर यह स्थिति मान्य हो तो मालिक की कानूनी मालिकी पर प्रहार करना सहजीवन के विकास के लिए संभवतः अनिवार्य नहीं होनी चाहिए। और शायद मालिकी का डंक तोड़ने के लिए यह प्रक्रिया अधिक सौम्य भी सिद्ध हो। स्वामित्व-विसर्जन के नारे से हम इस तरह का वातावरण अभी तक नहीं पैदा कर सके हैं, और आगे भी कर सकेंगे, यह साफ दिखायी नहीं देता। शायद इसलिए मालिक और मजदूर दोनों के दरवाजे हमारे लिए बंद होते जा रहे हैं।

बंद दरवाजों को खोलकर समाज के मानस में घुसना हमारी पहली आवश्यकता है, इसलिए उन्हें खोलने की दृष्टि से हम लोगों ने मुंगेर जिले में खादी ग्रामोद्योग संघ तथा सर्वोदय मंडल की सम्मिलित शक्ति से तीन बातों पर मुख्य रूप से जोर देने की बात सोची है।

१. खादी ग्रामोद्योग
२. साहित्य
३. भूदान-किसान

हमने यह महसूस किया कि अगर खादी ग्राम स्वराज्य की भूमिका छोड़ देती है तो शायद फिर हमारे पास कोई अस्त्र नहीं रह जायगा जिससे हम आज के बाजार की शक्ति का मुकाबिला कर सकें, और अगर हम बाजार की शक्ति का

शेष पृष्ठ १२ पर

ग्राम-स्वराज्य के लिये आज की परिस्थिति अनुकूल है

विनोबा

विकेन्द्रीयकरण का जो कार्य बिहार में हो रहा है बहुत ही महत्व का कार्य है। इस प्रकार के कई अच्छे काम यहां शुरु होते है, लेकिन उनका पूरा महत्व लोग नहीं समझते और यहां के लोग भारत के पास उसका संदेश नहीं पहुंचाते। एक बहुत ही सुव्यवस्थित निवेदन हमने अभी सुना उसमें जो दर्शन सुनने को मिला उससे चित्त को प्रसन्नता हुई, यहां जो भी काम करने को सोचा जा रहा है उसे इस बात का ध्यान रखकर किया जा रहा है कि उसमें क्या-क्या खतरें है।

हमने हिसाब लगाकर देखा है कि इन दिनों कपडे की खपत अधिक होती है कपडे की खपत अधिक हो यह जरूरी भी है। एक व्यक्ति को बीस गज कपड़ा चाहिए जिसका इस वक्त के मूल्य के अनुसार ४० रु० दाम होगा। इस तरह चालीस करोड लोगों के लिए सोलह सौ करोड़ रु० चाहिए। लेकिन इस समय केवल १२करोड की खादी बनती है। अभी कितनी कमी है। १% से भी कम खादी बनती है। खादी का काम १९२० में शुरू हुआ। उसे चालना देने वाली शक्ति महात्मा गांधी के रूप में हमें प्राप्त हुई। खादी का सबंध स्वराज्य के साथ जोडा गया। इतनी बडी शक्ति इस काम के प्रारम्भ में थी। फिर भी ४० वर्षो में हम १% से भी कम खादी प्राप्त कर सकें हैं। क्या हम कभी १००% तक पहूंचेगें ? क्या खादी बीच के उसी समय के लिए है जब तक हमें दूसरे धन्धे नहीं मिलते ? तो खादी के लिए ३०-४० साल का अवकाश और है। हमारा बुनियादी दावा यह था कि किसान खेती के साथ-साथ खादी भी कर ले यानी खादी स्वावलम्बन के लिए हो और गांव शहर को अनाज के साथ-साथ कपडा भी बना कर दें। शहर में इसके स्वतन्त्र धन्धे रहें। खादी पर विचार करने वालों के लिए प्रश्न है कि खादी का यह दावा इस गति से सिद्ध होगा या इसके लिए दूसरी पद्धति आवश्यक है।

आज विकेन्द्रीय करण की बात हो रही है। मुजफ्फरपुर विकेन्द्रित होकर मुंगेर आया है। यो भारत की सरकार केन्द्रित हैं। लेकिन दुनिया की भूमिका में हर देश की सरकार विकेन्द्रित हैं। क्या यही विकेन्द्रीयकरण है ? पत्थर के दो टुकडे होगें तो दोनों पत्थर ही रहेंगें पत्थर टुकड़ों में टूटकर मक्खन नहीं हो सकता। विकेन्द्रीकरण तब होगा। जब गांव गांव को काम सौंपा जायेगा। सरकार आज विकेन्द्रीकरण कर रही है। पचायती-राज कायम हो रहा है लेकिन मैंने कहा है कि जब तक भूमि समस्या हल नहीं होती तब तक गांव पंचायत की योजना विकेन्द्रित शोषण की योजना होगी। सरकार विकेन्द्रीकरण की बात करती है। उसकी नीयत साफ है, यह विश्वास मुझे है। नीयत ऊपर वालों की साफ है, लेकिन नीचे वालों की दूसरी नीयत भी हो सकती है। यह आक्षेप हमारे ऊपर भी हो सकता है हमारा विचार सही सही नीचे के कार्यकर्ताओ के पास पहुँचता नहीं। विचारों का अध्ययन सबको होना चाहिए।

मुंगेर में आपने सोचकर कदम उठाया है। सब मिलकर काम करें यह ठीक है ऐसा तो होना ही चाहिये। इसके बिना समग्रता नहीं आयेगी। प्रतिवेदन में कहा गया है कि किसी गांव में भूदान प्राप्ति और भूमि के वितरण से माधुर्य नहीं बढ़ा है। आप कहते हैं कि भूदान ग्रामदान के बीच की कोई स्थिति होनी चाहिये। लेकिन यह तो तब होगा जब दोनों के पास, मालिक और मजदूर के पास, मालिकी हो। बीघे में एक कट्ठे की बात कहकर मैंने यही बात कही है। बीघे में एक कट्ठा भूमि मालिक दे और अपने ही मजदूर को दें। या अपनी मर्जी से किसी दूसरे को दें। गांव की दो हजार एकड जमीन में से एक सौ एकड ही जमीन क्यों न मिले। उससे दोनों का हृदय जुडेगा, जमीनें बांटने वाला तीसरा था। पुरोहित नाकाबिल साबित हुआ है। अगर मालिक मजदूर में द्वेष बढा है तो ऐसा भूदान के परिणाम से नहीं हुआ है भूदान में स्नेह बढ़ाने में बहुत यश नहीं पाया है, इसीलिए तो हम पुरोहितों को हटाना चाहते हैं। लोग कहते हैं कि बीघा में एक कट्ठा मिल जाय तो क्या मांगोगे। मैंने कहा है कि ग्रामदान ही मांगूंगा, भूदान नहीं। मैं मानता हूं कि कि जोत की जमीन देने से दिल जुडेगा। बिहार में लगभग २१ लाख एकड जमीन में २१.४ लाख एकड बंटी है। और मैं मानता हूँ कि लगभग २॥ लाख और बंटेगी। बीघे में एक कट्ठा हर मालिक से मिले तो बारह लाख जोत की जमीन मिलेगी, मेरे इस विचार का सब समर्थन करते हैं। इसके लिए कोई ना नहीं कहेगा मैंने कहा है कि सरकार औसत की होती है, वह उससे ऊपर की योजना बना नहीं सकती, देखिये, मेरा भिंड मुरेना का काम सबको पसंद आया, लेकिन प्रांतीय सरकार को स्वीकार नहीं हुआ : कहा गया कि पुलिस का मोरेल खराब हुआ है अब शरण में आये हुए डाकुओं पर मुकदमें चलाये जा रहे हैं, बात यह है कि नैतिक काम सरकार की शक्ति के बाहर होता है। आज गृहस्थाश्रम की बुनियाद टूट रही है, इसलिए आश्रम धर्म स्थापना की बात मैं कर रहा हूं।

इन कामों को सरकार नहीं कर सकती हमारा काम ऐसा हो, जिसमें अधिक से अधिक लोग शरीक हो सकें हैं और उसे नैतिक पोषण मिले, पार्टी पालिटिक्स से कुछ बनेगा नहीं, यह सबके ध्यान में आ रहा है, शांति सेना का काम सबको पसन्द है, शांति सेना की आवश्यकता सब महसूस करते हैं, उसी तरह दान की प्रक्रिया है। बीघा पीछे एक कट्ठा की बात सबको पसन्द है कम्यूनिटी प्रोजेक्ट में भी सरकार हमारा सहयोग चाहती है। इन बातों में सरकार हमें अपनी तरह भारत व्यापी बनानी चाहती है। इस तरह (हमने बताया कि) हमारे काम के लिए चार अनुकूलतायें हैं–विकेन्द्रीकरण, शान्ति सेना नैतिक–कार्य और दान की प्राप्ति यह कार्य सबको पसन्द है।

अगर ये अनुकूलतायें है तो प्रतिकूलता क्या है ? प्रतिकूलता यह है कि सरकार आपको मदद देती है, मिलों को संरक्षण देती है, यह सही है कि बाजार की खादी के लिये परिस्थिति प्रतिकूल है, इसलिये खादी को मिलेजुले कार्य में ही लेना चाहिये।

हमें यह मानना चाहिये कि देश के २५ हजार खादी कार्यकर्ता सब हमारे ही है, जरूरत इस बात की है कि उन्हें ज्ञान मिलना चाहिये, हम शिविर आदि करें और उन्हें ज्ञान दें।

सबसे बडी बात यह है कि कार्यकर्ता एक दूसरे की निन्दा न करें, एक दूसरे का त्याग न देखें, त्याग का अहंकार छोड़े, ऊंचा चढ़ कर न गिरे।

खादीग्राम
२१-१-६१

जयजगत्

खादी का नया मोड़ और खादी का लक्ष्य

लक्ष्मीनारायण भारतीय

खादी के नये मोड़ की बात ने जब से जोर पकड़ा है, कई प्रश्न खादी के उद्देश्य को लेकर उठने लगे हैं। इनमें मुख्य प्रश्न यह है कि "खादी का मुख्य उद्देश्य क्या है और आज के बदले हुए जमाने को देखते हुए क्या उसमें किसी परिवर्तन की आवश्यकता नहीं है?" एक और भी प्रश्न इस सिलसिले में पूछा जाता है कि "खादी एवं अन्य ग्रामोद्योगों के बीच अब कोई फरक नहीं रहा है, दोनों समान स्तर पर हैं, अतः खादी को "सूर्य मंडल के मध्य" मानकर उसे बहुत महत्व देना भी ठीक नहीं है।"

हम यह मानते हैं कि जमाना बहुत बदल गया है एवं खादी का उद्देश्य जो भी रहा हो, उसे बदलते जमाने के तत्व को ग्रहण करना ही चाहिए। दूसरे, खादी सूर्य मण्डल के बीच मध्य स्थान पर रहे या न रहे, ग्रामोद्योग खादी के अब इतने समकक्ष अवश्य आ गये हैं कि ग्रामोद्योगों की ओर कतई दुर्लक्ष्य नहीं किया जा सकता।

लेकिन यदि हम खादी के विकास का इतिहास देखें तो सहज ही एक बात ध्यान में आ सकती है कि बदलते जमाने को उसने भी बड़ी ग्रहणशीलता के साथ अपनाया है। इसका सबूत यह है कि अम्बर का ईजाद हुआ। विनोबा ने तो उसे स्वराज्योत्तर पाँच सिद्धियों में से एक सिद्धि तक माना। अतः यह सही है कि खादी को बदलते जमाने के चरण हर हालत में पहचानने हैं और जमाना भी उस ओर उसे खींच ही रहा है, क्योंकि जमाने के साथ विज्ञान की शक्ति जुड़ी हुई है। पर खादी ने तो जमाने को भी अपनाया और विज्ञान को भी अपनाया। इसी लिए वह सोच रही है कि बिजली यदि शोषण में सहायक न हो, तो उसे भी अपनाया जा सकता है। उसने ग्रामोद्योगों को अपने समकक्ष लाकर अपने को व्यापक बनाया, यह भी उसकी गतिशीलता का ही प्रतीक है। बदलते जमाने को अब और कैसा अपनाया जा सकता है? खादी के विकास-क्रम में भूमि एवं खाद्य समस्या की भी जो कड़ी टूटी हुई थी और उसके परिणाम स्वरूप बिना आधार के वह जैसे आगे बढ़ रही थी, भूदान भी उसके साथ जुड़ गया एवं खादी ने अपने लिए उसका आधार स्वीकार करके मजबूत पाये पर वह खड़ी हो गयी। खादी एवं भूदान के समन्वय को कार्यरूप में लाने की प्रक्रिया यद्यपि अभी तक ठीक से विकसित नहीं हुई है, यह सही है, तथापि वैचारिक एवं सैद्धान्तिक रूप से खादी एवं भूदान जुड़ गये हैं, यह तथ्य है एवं इससे खादी की ग्रहणशीलता का ही व्यापक दर्शन होता है। अन्न समस्या एवं वस्त्र-समस्या में प्राथमिकता अन्न समस्या को ही दी जानी चाहिए, यह स्वीकार किये जाने के बावजूद दोनों का स्थान इतने निकट है कि दोनों अलग-अलग नहीं सोचे जा सकते और सोचे न जायें, यह भी इस समन्वय ने प्रकट कर दिया है।

अब, सूर्य-मण्डल के बीच खादी रहे या न रहे, इस प्रश्न में जाने की जरूरत नहीं रहती, क्योंकि दोनों के विकास की राह परस्पर अविरोध से खुली हुई है। दोनों परस्पर के लिये सहायक ही होने वाली है। खादी के कारण ग्रामोद्योगों को बढ़ावा मिला, तत्वज्ञान मिला, व्यापकता मिली एवं ग्रामोद्योगों के कारण खादी को विकास क्षेत्र प्राप्त हुआ, समग्रता की साधना के लिए उसका मार्ग प्रशस्त हुआ, उसका एकाकीपन गया एवं ग्राम-स्वराज्य की यात्रा में सहचारित्व मिला। इस तरह दोनों परस्पर अत्यन्त निकट हैं एवं परस्परावलम्बी भी। परन्तु खादी का सूर्य स्थान फिर भी कायम रखना होगा, क्योंकि उसके पीछे एक विचार है, एक जीवन मार्ग है, एक तत्वज्ञान है। इसलिए खादी सूर्य-स्थान में है। एक और भी महत्वपूर्ण बात है। आजकल ग्रामोद्योगों के साथ विविध हस्तोद्योग कलाकृतियाँ, अन्य छोटे उद्योगादि ऐसी तेजी से घुलमिल जा रहे हैं कि यदि 'सावधानी' न बरती जाय, तो 'ग्रामोद्योग' एवं अन्य 'स्माल स्केल इंडस्ट्रीज' समान स्तर पर आ जायेंगे। अतः खादी को अग्र-स्थान देना इसलिए भी जरूरी है कि वह ऐसी 'सावधानी' बरतने के लिए प्रेरणा देती रहे।

सूर्य-स्थान का एक और अर्थ है। सभी ग्रामोद्योगों में प्रथम स्थान कपड़े को ही प्राप्त हो सकता है। दोनों में कोई संघर्ष न होते हुए एवं परस्पर सहकार होते हुए भी अन्न के बाद कपड़े का स्थान ही सर्व-प्रथम रहने वाला है। फिर भी यदि खादी को केन्द्र स्थान में हम नहीं भी मानें, तो भी कम से कम उसे सर्वप्रथम स्थान उक्त दोनों दृष्टियों से देना ही होगा एवं जब खादी के समकक्ष आने का दावा ग्रामोद्योग करते हैं, तो खादी के विचार को भी उन्हें स्वीकारना होगा एवं जेठत्व का अधिकार उसे देना होगा।

इसके बाद हम खादी के मुख्य उद्देश्य के प्रश्न पर सोचें, तो काफी स्पष्टता आ जाती है।

वस्तुतः खादी के कई उद्देश्य उसके विकास-काल में प्रकट हुए हैं, जैसे—स्वराज्य का बाना, प्रतिकार का शस्त्र, उत्पादन वृद्धि की विकेन्द्रित प्रक्रिया, बेकारी निवारण, गरीबों को रोजी प्रदान करना—इत्यादि। परन्तु मुख्य उद्देश्य दो ही रूपों में प्रकट हुआ है, एक आर्थिक एवं दूसरा सैद्धान्तिक। आर्थिक स्वरूप का प्रतीक है, तकली एवं चरखे के बीच के फासले का मर्म तथा गरीबों को रोजी-रोटी देकर बेकारी दूर करने एवं सहयोग मुहैया करने का उसका स्वरूप। सैद्धान्तिक स्वरूप का प्रतीक है, उसके द्वारा समाज शक्ति के सर्जन का तत्वज्ञान एवं उस समाजशक्ति द्वारा खादी का संरक्षण। इनमें से आर्थिक स्वरूप तो खादी के जन्म काल से ही विकसित होता रहा है और सैद्धान्तिक स्वरूप अधिक स्पष्टता एवं व्यग्रता के साथ सामने आया है, खासकर आगाखां महल में बापू के चिन्तन में से।

खादी का तत्वज्ञान उस कारण और तेजस्वी बन गया। उस तत्वज्ञान की व्याख्या यहाँ करने की जरूरत नहीं, क्योंकि वह सर्व विदित है। पर यह स्पष्ट है कि इन दोनों ही स्वरूपों का विकास यदि समान रूप से न होता रहे, तो न खादी के मूल उद्देश्य की पूर्ति हो सकती है न खतरे से बच सकते हैं। खतरा यह है कि यदि केवल आर्थिक स्वरूप का ही विकास होता रहे तो खादी ग्रामोद्योग महज एक उद्योग भर रह जायेंगे एवं तत्व-ज्ञान से युक्त न होने के कारण किसी भी समय वे विरुद्ध प्रवाह में डूब जायेंगे। यदि केवल सैद्धान्तिक स्वरूप का ही विकास होता रहा, तो भूमि पर कदम नहीं ठहरेंगे, केवल हवाई बातें ही रह जायेंगी। अतः दोनों स्वरूपों का समन्वित विकास समान रूप में अनिवार्य है। तभी खादी के उद्देश्य की पूर्ति होगी। यह प्रश्न अलग है कि इसे किस प्रकार कार्यान्वित किया जाय, किस प्रकार दोनों का विकास हो एवं उसके लिए कर्तव्य विभाजन की भी आवश्यकता है या नहीं, इत्यादि। पर ये प्रश्न यहाँ चर्चा के विषय नहीं हैं। अभिप्रेत इतना ही है कि दोनों में कितना अभिन्नत्व है एवं किस प्रकार वह उद्देश्य को प्रकट करता है।

अब प्रश्न यह उठता है कि खादी के पीछे समाज शक्ति खड़ी रहने का क्या अर्थ होता है? इसके लिए हमें उस इतिहास का स्मरण करना होगा, जब पुरातन खादी अंग्रेजी मिलों के सामने नष्ट हो चुकी थी एवं स्वराज्यकालीन खादी स्वराज्य संघर्ष-काल के अन्तिम दौर में तत्वहीन बन चुकी थी। इस इतिहास की पुनरावृत्ति न हो, यही उस समाज शक्ति का अर्थ है। खादी समाज में अहिंसक शक्ति खड़ी कर सके या न कर सके, यह अलग प्रश्न है।

खादी से यह एक विशेष अपेक्षा है। परंतु खादी का संरक्षण "समाज" करे, यह तो खादी विचार एवं खादी कार्य में से ही उद्भुत अपेक्षा है एवं पूर्णतः उनसे संलग्न प्रश्न है। स्पष्ट है कि समाज शक्ति खादी के पीछे खड़ी होना अनिवार्य है। इस समाज शक्ति का वैज्ञानिक एवं व्यापक अर्थ क्या हो सकता है, इसकी गहराई में हम यहाँ न जाकर समाज शक्ति के स्वरूप की स्थूल व्याख्या सीधे-सादे शब्दों में यह कर सकते हैं कि समाज को खादी का स्वीकार इस तरह हो कि वह उसका अपना ही अंग बन जाय एवं वह समाज की अपनी चीज बने। आज जैसे भोजन उसकी अपनी चीज बन गयी है और जंगल में भी आदमी उसकी कुछ न कुछ व्यवस्था कर ही लेता है, उसी प्रकार समाज के लिए खादी अंग स्वरूप बने, उस पर वह लदी हुई हालत में न रहे। समाज उसके पीछे ऐसा खड़ा रहे कि उसे कोई नष्ट करने आये, तो वह उसका जमकर मुकाबला करे। इसीको गांधीजी कहा करते थे, "खादी को अपने पैरों पर खड़े रखना है।" इसी उद्देश्य की पूर्ति खादी को और नये मोड़ को करनी है। खादी को इसके लिए क्या क्या करना होगा, उसका आर्थिक स्वरूप भी साथ ही में कैसे विकसित होगा, विज्ञान का कितना उपयोग उसे लेना होगा, खादी विचार का प्रवेश जन-मानस में कैसे करना होगा, अन्न के जैसी ही पोषकता दूसरे किसी रूप में खादी द्वारा समाज को किस प्रकार प्राप्त करानी होगी, ये सब अलग चर्चा के विषय हैं, परन्तु यदि खादी को अन्नवत समाज-अंग बनना है, तो अन्नवत पोषक भी उसे बनना होगा एवं यह पोषण प्रकार आन्तरिक ही हो सकता है। इसी राह पर चलकर नया मोड़ अमल में लाना है ताकि खादी उद्देश्य साध्य हो सके।

अब यह स्पष्ट हो जाता है कि खादी-उद्देश्य का यह जो मूल रूप है, उसमें नित्य "बदलता हुआ जमाना" भी कोई परिवर्तन नहीं कर सकता, क्योंकि उसके दोनों स्वरूप "बदलते जमाने" को अपनाने में पूर्ण समर्थ हैं।

सच्चा जीवन दर्शन

हम ठीक समय में गृहस्थाश्रम से अलग नहीं होते हैं, तो बूढ़े होते हैं तो इन्द्रियशक्ति, बुद्धि-शक्ति, स्मरण-शक्ति क्षीण होती है। कुदरत में ऐसा नहीं है। कच्चा फल होता है। और वह जब पक्व बनता है, तब धीरे-धीरे अंदर का बीज मजबूत बनने लगता धीरे धीरे फल सड़ता है और अंदर का बीज अत्यन्त सख्त बनता है। शरीर पक जायेगा। पक्व बनने के बाद अंदर जो स्मरण-शक्ति, ज्ञान-शक्ति है, पराक्रम-शक्ति है, बुद्धि-शक्ति है, वह परिपक्व बनेगी। अत्यन्त ताजी बनेगी। सबको ऐसा अनुभव आ सकता है। अगर सच्चा जीवन दर्शन आपको होगा, तो आप ऐसा ही करेंगे। फिर मैं कहता हूँ कि आपको 'रीटायर' होना चाहिए। याने जरा टायर लगाना चाहिए। तो बचपन का जो उत्साह था, वही बुढ़ापे में रहेगा।

नये मोड़ के अन्तर्गत
ग्राम इकाई क्षेत्र का सर्वेक्षण

खादी ग्रामोद्योग कमीशन ने "नये मोड़" के सिद्धान्त को ग्राम रचना तथा क्षेत्रस्वावलंबन के सन्दर्भ में स्वीकार किया है। जिसके अनुसार ग्राम को मुख्य इकाई मानकर काम किया जाता है तीसरी पंचवर्षीय योजना अवधि में आयोग ने तीन हजार ग्राम इकाइयों की स्थापना का कार्यक्रम बनाया है। हर आबादी में ५,००० की आबादी होगी नये मोड़ के अन्तर्गत ग्राम इकाई कार्य में लगे ग्राम सहायकों के सर्वे व योजना निर्माण कार्य के उपयोग की दृष्टि से नीचे कुछ मुद्दे व उन मुद्दे के अन्तर्गत जिन बातों की तफील आवश्यक है वह नीचे दी जा रही है। इनको ध्यान में रखकर सर्वे व योजना तैयार करना समीचीन होगा। योजना आगामी पांच वर्ष की दृष्टि से तैयार की जानी चाहिये और वर्तमान में क्या स्थिति है तथा आगामी प्रथम वर्ष, द्वितीय वर्ष, तृतीय वर्ष, चतुर्थ वर्ष तथा पंचम वर्ष में कितना काम हो सकेगा, इस दृष्टि से अलग अलग लक्ष्यांक हर वर्ष के सोचे जाने चाहिए।

कृषि–स्थानीय राजकीय अधिकारी से कृषि सम्बन्धी अंक प्राप्त करके पुनः जांच करना चाहिए तथा सही आंकड़े प्राप्त करने चाहिए। इस मुद्दे के अन्तर्गत निम्न जानकारी संग्रह करनी चाहिये—१. गीली या नम, धरती २. बाग बगीचे, ३. सूखी, भूमि ४. चरागाह, ५. पडत जमीन जो कि खेती में परिवर्तित की जा सके, ६. भवन निर्माण की दृष्टि से, ७. बंजर भूमि, ८. स्थानीय अंशदान, ९. दूसरों से अंशदान।

सिंचाई–इस मुद्दे के अन्तर्गत नदी द्वारा सिंचाई, तालाबों द्वारा सिंचाई, कुओं द्वारा सिंचाई अन्य साधनों द्वारा सिंचाई रकम की आवश्यकता, स्थानीय अंशदान, अन्य अंशदान का विवरण तैयार करना चाहिए।

खाद–पशुओं के गोबर व पेशाब का समुचित उपयोग फसल की पैदावार व उपजाऊ खेती के लिए अत्यन्त लाभदायी है। इसी प्रकार वृक्षारोपण व मौजूदा स्थिति में जो वृक्ष हैं, उनकी पत्तियों का उपयोग हरी खाद के रूप में आसानी से किया जा सकता है। इस मुद्दे के अन्तर्गत जमीन को उपजाऊ करने के प्रसाधन, खाद का सम्मिश्रण हरी खाद, अन्य खाद का विवरण तैयार करना चाहिए।

कृषि उपज–ग्राम जनसंख्या की मुद्दे नजर रखते हुए तथा स्वास्थ्यप्रद भोजन *की मात्रा का भी खयाल रखते हुए कृषि* उत्पादन का लक्ष्य निर्धारित करना समुचित होगा : इस मुद्दे के अन्तर्गत अनाज, दालें, तिल्हन, सब्जी, फल, प्राणिज खाद्य पदार्थ, रूई, कपास आदि का विवरण तैयार करना चाहिये।

खादी–प्रति व्यक्ति इस समय मिल वस्त्र खपत औसत १८॥ गज है जिसे आवश्यकतानुसार बढ़ाया भी जा सकता है, लेकिन ग्रामीण जनता में वस्त्र खपत इस अनुपात से कम ही होगी। वस्त्र खपत को बढ़ाने का निश्चित लक्ष्य अगली पंचवर्षीय योजना में होना ही चाहिए। पंचवर्षीय कार्यक्रम का लक्ष्य ग्राम व क्षेत्रीय स्वावलम्बन होना चाहिए और जहां तक सम्भव हो अगले चार वर्षों में स्वावलम्बन का लक्ष्य शत-प्रतिशत प्राप्त किया जाना चाहिये। पांचवे वर्ष सारे कार्य का सिंहावलोकन तथा अगले वर्षों की योजना की रूपरेखा उस अनुभव के आधार पर तैयार करना समीचीन होगा।

निस्संदेह अम्बर चर्खे में परम्परागत *चर्खे के अनुपात में अधिक उत्पादन क्षमता* है। अतः अधिक से अधिक संख्या में अम्बर कार्यक्रम को प्रोत्साहन देना योजना की सफलता में सहायक होगा, लेकिन इसका यह कदापि अर्थ नहीं कि परम्परागत चर्खे निष्क्रिय किये जाय, उनका विकास अवरुद्ध किया जाय।

इस मुद्दे के अन्तर्गत १. खादी की आवश्यकता वर्ग-गजों में, २ खपत (क) मिल वस्त्र, (ख) हाथ कर्घा वस्त्र, (ग) खादी, ३. समस्त खादी की खपत का प्रतिशत, ४. प्रशिक्षित की जानेवाली कत्तिनों की संख्या (क) किसान, (ख) अम्बर, ५. वितरित किये जानेवाले चर्खों की संख्या (क) किसान, (ख) अम्बरों, ६. प्रशिक्षित किये जानेवाले बुनकरों की संख्या (क) पुराने, (ख) नये ६. मुहैय्या किये जानेवाले हाथकर्घों की संख्या (क) नये, (ख) परिवर्तित, ८. प्रशिक्षित किये जानेवाले सुतारों की संख्या, ९. सूत गुंडी उत्पादन संख्या, १०. आवश्यकता की रूई का वजन, ११. स्थानीय उत्पत्ति वजन में, १२. बाहर से मंगवाने की तादाद, १३. अन्यत्र बेची जानेवाली खादी (क) वर्ग गज, (ख) मूल्य, १४. बाहर से मंगवाई जानेवाली खादी (क) मूल्य, १५. उपरोक्त के लिये रकम की आवश्यकता, १६. स्थानीय मदद, १७, खादी-ग्रामोद्योग कमीशन की मदद, १८. अन्यत्र मदद।

ग्रामोद्योग–*ग्रामोद्योगों के काम में* आने वाला कच्चा माल जिस क्षेत्र में पैदा होता हो उसकी योजना बनाना ही अधिक श्रेयस्कर होगा। लेकिन यदि कुशल कारीगर परिवार यदि किसी विशिष्ट ग्राम में पहिले से ही निवास करते हों तो उन परिवारों के कार्य जुटाने की दृष्टि से कच्चा माल आयात भी करना पड़े तो वह करना पड़े तो वह करना चाहिये। उन्हीं ग्रामोद्योगी योजनाओं को विकसित करना व्यवहार्य होगा, जिनका उत्पादन ग्रामीण जनता की दैनिक आवश्यकता की दृष्टि से आवश्यक हो। *अन्य ग्रामोद्योगी योजनाएँ भी क्रियान्वित* करने में कोई हर्ज नहीं है–बशर्ते कि उनकी खपत का बाजार मिल जाय।

इस मुद्दे के अन्तर्गत हाथ कुटाई व पिसाई की चक्की संख्या, २. तेल पिराई (क) खाद्य तेल, (ख) अखाद्य तेल, ३ नई लगाई जाने वाली घानियों की संख्या, ४. प्रशिक्षित किये जानेवालों की संख्या, ५. कार्य दिलाये जानेवालों की संख्या, ६ खाद उत्पत्ति वजन ७ चर्म, (क) चमड़ा उतारने के केन्द्र, (ख) चमड़ा रंगाई केन्द्र, (ग) चर्म वस्तु निर्माण केन्द्र, ८ रेशा उद्योग, ९. मधु मक्खी पालन, १०. धन की आवश्यकता (क) स्थानीय अंशदान, (ख) खादी कमीशन से, (ग) अन्य स्रोतों से, ११. सम्पूर्ण उत्पादन आनुमानिक (क) कामगारों की संख्या, (ख) आनुमानिक प्राप्त मजदूरी अंक।

गृह निर्माण–प्रत्येक ग्रामीण के पास पक्का मकान हो यह हमारी योजना का लक्ष्य होना चाहिए परन्तु योजना का प्रारम्भ समाज की सबसे नीचे की इकाई से होना चाहिए। कच्चे मकानात पहिले रहने लायक खुशनुमा मकानों में बदलें, उनमें दरवाजे तथा खिड़कियाँ बनें, रसोई घर में मगन चूल्हा तथा धुंआ निकालने की चिमनी की व्यवस्था आवश्यक है। स्नानघर, मूत्रालय, शौचगृह का भी अनुकूल प्रबन्ध निवास के साथ करना उचित होगा। शौच गृह, खाद के गड्ढे व पशुशाला आदि का प्रावधान सामूहिक रूप में ग्राम में रखना उचित होगा।

इस मुद्दे के अन्तर्गत पक्के मकानात, कच्चे मकानात, कवेलू की छत, घास की छत, झोपड़ियाँ, परिवर्तित किये मकानात, नया निर्माण, अनुमानिक आवश्यक धन, स्थानीय अंशदान आदि का विवरण तैयार करना चाहिए।

स्थानीय उत्पादन का मूल्य निर्धारण–कृषि उपज का मूल्य निर्धारण त्रिवर्षीय औसत मूल्यों को ध्यान में रखकर किया जाना चाहिए। इस मुद्दे के अन्तर्गत कृषि, खादी, ग्रामोद्योग, दुग्ध, कुक्कुट शाला, श्रम, अन्य आदि का अलग अलग विवरण तैयार करना चाहिए। वस्तुओं की कीमत के साथ वजन का भी अंकन करना चाहिए।

बाहर से खरीद–अधिकांश वस्तुओं के अंक इस मुद्दे के अन्तर्गत *लगभग ही* लिए जा सकते हैं जिससे वस्तु विशेष की *कमी को स्थानीय लोग आसानी से आँक* सकें तथा आवश्यकतानुसार अपनी योजना में परिवर्तन परिवर्द्धन कर सकें। उदाहरण के लिए सौन्दर्य वृद्धि के उपकरणों का उपभोग कम किया जा सकता है अथवा स्थानीय साधन सरंजामों के जरिये उनकी तैयारी करने के उपाय भी किये जा सकते हैं। इस मुद्दे के अन्तर्गत खाद्य सामग्री, तेल, पशु, खादी, सौन्दर्य प्रसाधन, पुस्तकें, भवन निर्माण सामग्री, श्रमिक लगे हुए, विविध, के अलग अलग अंक तैयार किये जा सकते हैं।

शिक्षा–सभी बालक व बालिकाओं को पाठशाला भेजने का प्रयत्न होना चाहिए। उच्च एवं प्राविधिक शिक्षणार्थ बालक बालिकाओं के भेजने के पूर्व आर्थिक परिणाम तथा आवश्यकता पर पूरा विचार कर लिया जाना उचित रहेगा। इस मुद्दे के अन्तर्गत निम्न अंक तैयार करने चाहिए—बालक-बालिकाएँ बुनियादी शाला में ५ से १२ वर्ष, १२ से १६ वर्ष उत्तर बुनियादी, उच्च विश्वविद्यालय से सम्बन्धित, प्राविधिक विद्यालय में।

पुस्तकालय–इसके अन्तर्गत पुस्तकों तथा समाचार पत्रों की आवश्यकता को ध्यान में रखकर योजना बनानी चाहिए।

स्वास्थ्य योजनाएँ–इस मुद्दे के अन्तर्गत पीने का पानी, कुएँ, नल, शौचालय, मूत्रालय, खाद के गड्ढे, गैस बनाने का यन्त्र, आदि की योजना व अंक तैयार करने चाहिए।

अन्य–ग्रामदान, सर्वोदय पात्र तथा शान्ति सैनिक प्राप्त की दृष्टि से पंचवर्षीय योजना में स्पष्ट लक्ष्य रक्खा जाना चाहिए।

उपरोक्त मुद्दों को ध्यान में रखकर सर्वेक्षण के आधार पर ग्राम समृद्धि की दिशा में जो योजना तैयार की जायगी उसके लिए वित्तीय सहायता ग्राम के अपने स्रोतों का उपयोग करने के बाद, आवश्यक हो तो निम्न स्रोतों से प्राप्त की जा सकती है :–

१. राज्य सरकार से विभागीय बजटों के अन्तर्गत २. सामुदायिक विकास प्रशासन ३. खादी *ग्रामोद्योग कमीशन—विभिन्न* योजनाओं के अन्तर्गत ४. हाथ कर्घा मंडल ५. हस्तकला मंडल ६. क्वायर मंडल ७. रेशम मंडल ८. समाज कल्याण मंडल ९. गांधी स्मारक निधि १०. कस्तूरबा गांधी स्मारक ट्रस्ट ११. हरिजन सेवक संघ १२. आदिम जाति सेवक संघ १३. लघु उद्योग मंडल १४. सम्पत्तिदान १५. सर्वोदय पात्र

उपर्युक्त योजना बनाते समय क्षेत्र की जनसंख्या का विशेष ध्यान रक्खा जाना चाहिए। क्षेत्र की आबादी प्रतिवर्ष दो प्रतिशत बढ़ी हुई मानकर योजना तैयार की जानी चाहिए।

(शेष पृष्ठ २ का शेष)

और समग्र ग्राम-जीवन ही नया हो सकेगा। एक ग्राम या ग्राम-समूह की यह छूत दूसरे में और दूसरे की तीसरे में–इस तरह दूर-दूर तक देशव्यापी और विश्व-व्यापी होनी चाहिए। तब पशुता से मानव बचेगा, हिंसा से मुक्त शासन होगा, कानून और दबाव से निवृत्त समाज-जीवन की व्यवस्था होगी।

नये-मोड़ तथा ग्राम-स्वराज्य की दिशा में बढ़ते कदम

जलगाँव (महाराष्ट्र) जिले के रचनात्मक तथा कांग्रेस के कार्यकर्ताओं से ग्राम-स्वराज्य की स्थापना के सम्बन्ध में चर्चा करते हुए श्री शंकर राव देव ने कुछ माह पहिले उन्हें सुझाया था कि ग्राम पंचायतों को भी इस सम्बन्ध में कार्य-क्रम अपनाने की ओर प्रेरित करना चाहिए और उन्हें यह संकल्प करना चाहिए कि अपने गाँव में वे किसी को भूखा और बेकार नहीं रहने देंगे। इस सुझाव के अनुसार वहाँ के कार्यकर्ता तथा जिला सर्व-सेवा-समिति की ओर से प्रयत्न किये जा रहे हैं। यह उल्लेखनीय है कि उस क्षेत्र के एम० एल० ए० तथा पी० डी० ओ० आदि राज्य पक्ष के लोग इस कार्यक्रम में भाग ले रहे हैं और उनका सहयोग प्राप्त हो रहा है।

जिला सर्व-सेवा-समिति की ओर से श्री सीताराम त्रिलई एम० एल० ए० सूचित करते हैं कि जिले की समस्त ग्राम-पंचायतों द्वारा उपरोक्त संकल्प को प्रस्ताव के रूप में पास कराने का प्रयत्न किया जा रहा है और इस सम्बन्ध में विनती के रूप में प्रस्ताव तथा ग्राम-सर्वेक्षण के बारे में प्रश्नावली प्रकाशित की गई है, जिले के १३ तालुकों में से ६ तालुकों में शिविर आयोजित किये जा चुके हैं। जिनमें ग्राम-स्वराज्य सम्बन्धी विचार समझाये गये जिसके 'फलस्वरूप उन ६ तालुकों के गाँवों ने विनती में दिये गये' दोनों प्रस्तावों को पास करना स्वीकार कर लिया है अत. उन गाँवों को जिनकी संख्या ६०० है विनती पत्र तथा ग्राम सर्वेक्षण प्रश्नावली की प्रतियाँ भेज दी गई है। प्रस्ताव पास करने के पश्चात उन्हें भर कर समिति के कार्यालय को भेज दिया जावेगा। विनती में दिये गये प्रस्ताव यह है।

१-हमारी ग्राम' पंचायत के क्षेत्र में एक भी व्यक्ति बेकार अथवा भूखा नहीं रहेगा। ऐसा ग्राम पचायत् निश्चित करती है।

२-उपरोक्त ध्येय की पूर्ति के सम्बन्ध में गाँव का सर्वेक्षण तुरत प्रारम्भ किया जावे यह निश्चय सभा करती है। ऐसी आशा है कि शीघ्र ही शेष तालुकों में भी इसी प्रकार कार्य-क्रम आगे बढ़ेगा।

इसी प्रकार महाराष्ट्र सेवा संघ पूना से सूचना प्राप्त हुई है कि १०० गाँवों में ग्राम-स्वराज्य दिवस मनाये जाने की योजना बन रही है।

खादी ग्रामोद्योग समिति

पिछले कुछ समय से खादी ग्रामोद्योग के कार्य को नये मोड़ की दिशा में संगठित करने का प्रयास विभिन्न प्रदेशों में चल रहा है जिसकी सूचना समय-समय पर निकलती रहती है। उसी ध्येय से कार्य-क्रम को अधिक स्पष्ट रूप में और विस्तृत क्षेत्र में प्रसारित करने के उद्देश्य से ६ अप्रैल को ग्राम स्वराज्य दिवस मनाया जा रहा है जिससे कि इस कार्य को जन आंदोलन का रूप प्राप्त हो सके और ग्रामोद्योगों में ग्राम-इकाई के रूप में अपने क्षेत्र को संगठित करने की प्रेरणा और अभिक्रम जागृत हो। खादी ग्रामोद्योग समिति की ओर से इस सम्बन्ध में एक प्रारम्भिक निवेदन देश की प्रमुख खादी तथा ग्रामोद्योगों के कार्य में लगी एवं अन्य रचनात्मक संस्थाओं को भेजा जा चुका है कुछ संस्थाओं से इस बारे में जो सूचनायें प्राप्त हुई है वे इस प्रकार हैं।

नव-निर्माण संघ उदयपुर (राजस्थान)

संस्था की ओर से केन्द्र व्यवस्थापकों को सूचित किया गया है कि वे ६ अप्रैल को अपने क्षेत्र की ग्राम-पंचायतों तथा अन्य संस्थाओं के सहयोग से गाँवों-गाँवों में ग्राम स्वराज्य दिवस मनायें। प्रभात फेरियाँ निकाली जावें, जनसम्पर्क के कार्यक्रम आयोजित हों एवं अंत में सभायें की जावें और तत्पश्चात घोषणा-पत्र पढ़े जावें।

—वहाँ २० व्यक्ति ७-८ घंटे लगातार कताई करने को तत्पर हों तथा १ वर्ष में कताई द्वारा वस्त्रों का मूल्य किश्तों में अदा कर दें वहाँ अम्बर परिश्रमालय खोले जाने की व्यवस्था की जावें।

सीकर जिला खादी ग्रामोद्योग समिति (राजस्थान)

निश्चय किया है कि समिति का सारा खादी ग्रामोद्योग का कार्य नये मोड़ की दृष्टि से ही किया जावेगा।

पंजाब खादी ग्रामोद्योग संघ आदमपुर द्वारा

संघ की ओर से तीन ग्राम इकाइयाँ संगठित करना निश्चित हुआ है जहाँ सर्वेक्षण कार्य प्रारम्भ कर दिया गया है। ग्राम पट्टी अमृतसर जिला में, औयल होशियारपुर जिला में तथा लुधियाना में एक गाँव को अभी निश्चित होना है।

पंजाब खादी ग्रामोद्योग बोर्ड

कार्यकर्ताओं में वस्त्र स्वावलंबन का उपर्युक्त दृष्टि कोण उत्पन्न हो तथा वे खादी के विचार को समझें इस उद्देश्य से यह निश्चय किया गया है कि .—

१-प्रत्येक क्षेत्रीय कार्यकर्ता नियमित रूप से दैनिक कताई करें।

२-प्रत्येक केन्द्र पर एक छोटा-सा पुस्तकालय हो जिसका उपयोग कार्यकर्ता करें। कताई के समय किसी पुस्तक का अध्ययन भी चलाया जा सकता है।

३-प्रति शनिवार को कार्यकर्ताओं की एक गोष्ठी हो जिसमें किसी सर्वोदय विषय पर चर्चा व विचार विनिमय किया जाया करें।

इस प्रकार आशा है कार्यकर्ताओं में सामाजिक कार्यों के प्रति रुचि, समग्र-विचार और स्वावलंबन की ओर प्रेरणा प्राप्त होगी।

खादी ग्रामोद्योग परिषद् इंदौर

श्री लक्ष्मण सिंह चौहान की अध्यक्षता में खादी के कार्य में नये दृष्टिकोण को लाने तथा कार्यकर्ताओं में सर्वोदय-विचारों के प्रति निष्ठा उत्पन्न करने की ओर प्रयास हो रहा है।

१-परिषद तथा आयोग के कार्यकर्ताओं का एक शिविर वर्ग आरम्भ में इन्दौर तथा उज्जैन में १६ जनवरी से ४ फरवरी से तक हुआ जिसमें अन्य ग्रामोद्योगों के अतिरिक्त ग्राम स्वराज्य भूदान सूतांजलि आदि के बारे में विद्वज्जनों के भाषणों का आयोजन हुआ जिनमें श्री दादा भाई नाइक तथा श्री देवेन्द्र भाई का भी सहयोग प्राप्त हुआ।

२-क्षेत्र के गाँवों में ग्रामोद्योग प्रदर्शनियाँ आयोजित की जा रही हैं जिनके द्वारा विचार प्रचार में सहायता मिलती है। तथा ग्रामीणों में जागृति पैदा होती है।

३-कार्यकर्ताओं के मनोरंजन के लिए खादी ग्रामोद्योग क्लब खोले गये है जिनमें सर्वोदय पत्रिकायें भी आती है और कार्यकर्ता को आपस में विचार विनिमय का अवसर प्राप्त होता है।

४-क्षेत्र में काम कर रहे कार्यकर्ताओं में स्थायित्व का भाव रहे और वे मूविंग सेन्टर के रूप में कार्य करें एक क्षेत्र को स्वावलंबन के आधार पर संगठित करके वे दूसरे क्षेत्र में कार्य करें ऐसी योजना है।

५-समय-समय पर विभिन्न उद्योगों के कार्यकर्ताओं के सम्मेलन आयोजित होते है जिनमें वे अपनी समस्याओं अनुभवों तथा भावी कार्य-क्रम के बारे में विचार विनिमय करते हैं। इससे उनमें विचारों की स्पष्टता आती है, उनका विकास होता है। पिछले दिसम्बर में धान कुटाई उद्योग के कार्यकर्ताओं का सम्मेलन हुआ था।

६-इस वर्ष २३ ग्राम इकाइयों को संगठित करने की योजना है जिसके लिए ४४ प्रार्थना पत्र आ चुके हैं।

इन्दौर खादी संघ

१-इन्दौर नगर के आर्थिक विकास तथा खादी उत्पादन और बिक्री को प्रोत्साहित करने के लक्ष्य से नगर को ३६ वार्डों में से प्रत्येक ४ के बीच एक खादी भंडार खोला जावें जिसके साथ एक उत्पत्ति-उपकेंद्र संलग्न रहें तथा नगर के प्रमुख स्थान पर एक मुख्य भंडार तथा मुख्य उत्पत्ति केन्द्र रहे। प्रत्येक भंडार का एक कार्यकर्ता दोनों मिलकर अपने क्षेत्र के ४ वार्डों लगभग ६० हजार की आबादी) के परिवारों से संपर्क करके उनमें चर्खा, खादी व ग्रामोद्योग तथा साहित्य का प्रचार करेंगे तथा उन्हें वस्त्र स्वावलंबन की ओर प्रेरित करेंगे प्रतिवर्ष एक कार्यकर्ता ५०० परिवारों से संपर्क करे ऐसी अपेक्षा है। इस योजना को कार्यान्वित करने का प्रयास हो रहा है। खादी कमीशन से इस संबंध में उपयुक्त सहायता प्राप्त होने की आशा है।

२-पालिया तथा मन्दा नगर में इकाई संगठित करने की योजना है। इसी प्रकार रायपुर जिले में भी ग्रामइकाई संगठित की जावेंगी, सज्री, बसना तथा सिर्री-घोआ।

बिहार अखण्ड पदयात्रा टोली

पूज्य विनोबाजी को बिहार से विदा कर बिहार प्रदेश अखण्ड सर्वोदय-पदयात्रा टोली श्री बृजमोहन शर्मा के नेतृत्व में किशन गंज से प्रारम्भ हुई। आज कल सहर्षा जिले में पदयात्रा चल रही है। जनता में काफी उत्साह है। पूज्य विनोबाजी की यात्रा से अच्छा वातावरण बना है। दाता को स्वयं वितरण का अवसर मिलने से उत्साह से दान पत्र प्राप्त हो रहे हैं।

४ अप्रैल से भागलपुर जिले में यात्रा होगी। सहर्षा जिले के भरजपुर और घोसण ग्रामदान की तैयारी कर रहे हैं।

असम के आदिवासी क्षेत्रों में रचनात्मक कार्य

असम के आदिवासी क्षेत्रों में रचनात्मक कार्यों को प्रगति देने के लिए असम आदिवासी सेवा संघ विशेष रूप से सक्रिय है और अनेक नवीन योजनाओं पर अमल होने वाला है। कुटीर उद्योग कार्य को भी प्रोत्साहन मिल रहा है। इस दिशा में खादी ग्रामोद्योग आयोग ने असम आदिवासी सेवा संघ के मन्त्री श्री सुकुमार पगारे को विशेष सलाहकार के रूप में नियुक्त किया है।

श्री सुकुमार पगारे आदि वासी पहाड़ी इलाके में आचार्य विनोबा भावे के साथ पदयात्रा में भी सम्मिलित रहेंगे।

बिहार में भूदान के लिये सर्वदलीय समिति गठित

पटना के लेजिस्लेटर क्लब में ता० १३ मार्च को पं० विनोदानन्द झा मुख्य मंत्री बिहार राज्य के सभापतित्व में विधान सभा व परिषद दोनों के सदस्यों की सर्वदलीय बैठक हुई थी। उस बैठक में श्री जयप्रकाश नारायण, श्री गौरीशंकरशरण सिंह, श्री बैद्यनाथ प्रसाद चौधरी, श्री ख्वाजा प्रसाद साहू तथा दूसरे सर्वोदय के कार्यकर्ता भी उपस्थित थे श्री विनोबा जी की बीघे में एक कट्ठे की माँग का सर्व सम्मति से स्वीकार किया और मुख्य मंत्री की अध्यक्षता में एक कमेटी का गठन किया जिसका काम प्रान्त भर में इस सन्देश को सुनाना और जमीन वालों से जमीन की माँग करना होगा।

पृष्ठ ८ का शेष

मुकाबिला नहीं कर सकते तो अनिवार्य रूप से हमें सरकार की शरण में जाना ही पड़ेगा, पूंजीवाद पर काबू करने के लिए ही तो कम्यूनिस्ट सर्वाधिकारी राज्य का विकास हुआ है हम खादी के माध्यम से गांव-गांव में बाजार की शक्ति के मुकाबले जनता की संकल्प-शक्ति जगाना चाहते हैं, आशा यह है कि इस संकल्प में से स्थानीय अभिक्रम विकसित होगा, व्यवस्था-शक्ति जगेगी और गांव के लिए गृहस्थ कार्यकर्ता प्राप्त होंगे। खादी से ही गांव की साझेदारी शुरू होगी, बशर्ते खादी गांव की हो, बाहर की नहीं। खादी से बढ़कर हमें अहिंसक संगठन का दूसरा आधार दिखायी नहीं देता। नयी खादी के साथ गांव में सर्वोदय पात्र, धर्मगोला आदि के विचार सहज ही पहुँच जायंगे और जनाधारित कार्य की भूमिका भी तैयार होगी। गांव के जीवन में जातिगत और वर्गगत जो विविधता और विरोध है उसे कम करके ग्राम-भावना पैदा करने की शक्ति खादी और खादी के साथ जुड़े हुये लोक-शिक्षण में ही है।

दूसरा नंबर साहित्य का है। साहित्य यानी विचार-शिक्षण। शिक्षित समुदाय के हाथ में समाज का नेतृत्व है। उस समुदाय के पास धन है, अधिकार है, प्रभाव है, और कुछ प्रगतिशील चेतना है। और गांव के लिए कुछ करने की आकांक्षा भी है, लेकिन सर्वोदय का विचार नहीं है। प्रचलित समस्याओं के अनुबंध में सर्वोदय-विचार प्रस्तुत करना और समाज में चल रहे सर्वनाश के प्रति जागरूकता पैदा करना हमारा काम होगा ताकि शिक्षित समुदाय भले ही किसी कारण से उतना सक्रिय न हो सके जितना हम चाहते हैं, लेकिन कम से कम इतना तो हो कि उसे सर्वोदय के जीवन-दर्शन की सामर्थ्य मालूम हो जाय। विचार-शिक्षण का काम हम पदयात्राओं, मित्र मंडलों, गोष्ठियों, परिसंवादों आदि के माध्यम से जिले में व्यापक पैमाने पर करना चाहते हैं। विशेष रूप से हम कत्तिनों, कारीगरों और भूदान किसानों को छूना चाहते हैं।

भूदान किसान का हमारे आन्दोलन में क्या महत्व है यह प्रतीति अब हमें पहिले से अधिक हो रही है—हम यह देख रहे हैं कि समुचित शिक्षण और अहिंसक संगठन के अभाव में हमारा भूदान किसान जिसने जमीन के रूप में अपना खोया हुआ आत्म-सम्मान किसी अंश में वापस पाया है आसानी से असंतोष और संघर्ष के नारे का शिकार हो जायगा क्योंकि उसमें न्याय-अन्याय की चेतना पैदा हो गयी है। यह भी है कि जमीन देकर हमने उसकी दुहरी हैसियत कर दी है—एक किसान की, और दूसरी मजदूर की—मजदूर वह पहिले भी था और अब भी है, लेकिन मजदूर होने की यातनायें उसे अब पहिले से अधिक खलती हैं, उसकी मजदूर की स्थिति समाप्त करना और मालिक के साथ उसकी साझेदारी बटाईदारी नहीं स्थापित करना, यह हमारे निर्माण कार्य की नयी दिशा होगी। इस तरह भूदान के आधार पर नये मानवीय संबंधों की शुरुआत होगी मालिक-मजदूर के बीच जो आर्थिक और जातिगत तनाव (टेनशन) है, वही गाँव में अशांति का सबसे बड़ा कारण है, अशान्ति के इस पहलू को हम मुख्य रूप से हाथ में लेना चाहते हैं, इस निमित्त से हम अभी चुने हुए छोटे क्षेत्रों में, जो अलग अलग मुख्य कार्यकर्ताओं के प्रेम क्षेत्र होंगे, ग्रामभारती ग्राम स्वराज्य का प्रयोग करना चाहते हैं। खादी ग्रामोद्योग, साहित्य और भूदान किसान को हमने ग्रामभारती ग्रामस्वराज्य तक पहुँचने की प्रक्रिया का प्रारंभिक कदम माना है। इस पूरे कार्यक्रम को एक धागे में पिरोना और उसे अमल में लाने के लिए कार्यकर्ताओं को प्रशिक्षित करना तथा जन और धन की शक्ति जुटाना अगले महीनों में संघ का मुख्य नया काम होगा, पुराने काम पूर्ववत चालू रहेंगे जब हम अपने इस निश्चय की बात कह रहे हैं तो उसकी कठिनाई हमारे सामने है। खादी से शुरू करके हम किस तरह ग्रामभारती ग्रामस्वराज्य तक पहुँचेंगे, वे सब सीढ़ियाँ भी आज पूरे तौर पर साफ नहीं हैं, लेकिन अगर हम खादी के माध्यम से गाँव को एक रचनात्मक प्रवृत्ति दे सकें, गाँव में इतनी भी ग्राम-भावना पैदा कर सकें, और इस निमित्त से कुछ नये गृहस्थ-कार्यकर्ता तैयार कर सकें तो गाँव में कुछ आत्म विश्वास आयेगा और दूसरे कामों में ग्राम सहकार की स्थिति पैदा हो सकेगी। संकल्प और सहकार के मिलने से ग्राम-शक्ति का आधार तैयार होता है, और तब यह आशा की जा सकती है कि गाँव में प्रचलित अभाव अज्ञान, और अन्याय के निराकरण की कोई शांति पूर्ण सहकारी प्रक्रिया गाँव स्वयं निकालेगा, अभी भूदान-किसानों के कुछ गाँवों में रक्षण, पोषण और शिक्षण का संपूर्ण प्रयोग करके देखना है कि उद्योग और शिक्षण की सम्मिलित प्रक्रिया किस तरह सहकार और सहजीवन का वातावरण तैयार करती है।

सर्व-सेवा-संघ के प्रतिनिधि

१७ फरवरी के 'भूदान-यज्ञ' में छपी सूची के अतिरिक्त उ० प्रदेश के अन्य जिलों से अब तक प्राप्त प्रतिनिधियों की सूची इस प्रकार है:—

१—अल्मोड़ा और पिथौरागढ़—सुश्री राधा भट्ट, ग्राम बौंगाड, डा० पाखू, जि० पिथौरागढ़।

२—एटा—श्री स्वामी गोविन्दानन्द जी जिला सर्वोदय कार्यालय, अहमदाबाद पो० मिलावली।

३—मैनपुरी—श्री जगदीश नारायण शर्मा, पटी गली-सिरसागंज, जिला मैनपुरी

४—शाहजहाँपुर—श्री चोखेलाल—सत्यपाल, मुख्तार, द्वारा जिला सर्वोदय कार्यालय, आयुर्वेद उत्थान, सिविल लाइन्स, तिकुनियाँ शाहजहाँपुर।

५—प्रतापगढ़—श्री त्रिभुवननाथ; द्वारा जिला सर्वोदय कार्यालय, पल्टन-बाजार, प्रतापगढ़।

६—टिहरी—श्री कमला नौटियाल, नवजीवन आश्रम, सिल्यारा, टिहरी।

कहाँ क्या हो रहा है

● १६ मार्च से २० मार्च तक आचार्य राममूर्ति जी की सर्वोदय के विभिन्न पहलुओं पर गोरखपुर में व्याख्यान माला आयोजित हुई

● २६, २७, २८ मार्च को कलकत्ती नरौरा (बुलंदशहर) में ग्रामस्वराज्य का प्रयोग एक विशिष्ट क्षेत्र में सम्पूर्ण शक्ति लगाकर, जनशक्ति के माध्यम से किया जाय इस विषय पर एक परिसंवाद आयोजित हो रहा है।

● १७ और १८ मार्च को काशी में प्रकाशन समिति की बैठक हुई उसमें देश के कुछ प्रतिष्ठित साहित्यकार और भूदान पत्र-पत्रिकाओं के संपादक एवं सम्बन्धित कार्यकर्ताओं ने भाग लिया।

काशी सर्वोदय नगर अभियान

विनोबाजी के जाने के बाद काशी में विशेष तौर से राजघाट और दशाश्वमेध घाट को सघन क्षेत्र बनाकर कार्य किया जा रहा है। फिलहाल सतत पाँच कार्यकर्ता, सर्वश्री अलखनारायणजी, शनैश्वर भाई अभिमन्यु भाई हरिभाई और गुलाबभाई अपनी शक्ति लगा रहे हैं। जब से *शांति-सेना विद्यालय* शुरू हुआ है, तब से सब बहनें अपने अभ्यास क्रम के अन्तर्गत राजघाट में सप्ताह में दो दिन सामाजिक-आर्थिक जीवन के तनाव का अध्ययन करती है और पाँच बहनें नियमित खादी, सर्वोदय-पात्र, साहित्य-प्रचार में रोजाना समय देती हैं। जनवरी में १७५ नये सर्वोदय-पात्र रखे गये हैं और जनवरी फरवरी इन दो महिनों में करीब दो मन अनाज संग्रहीत हुआ है।

हिसार

जिला सर्वोदय मण्डल की फरवरी मास की रिपोर्ट के अनुसार ४१ शान्ति दाताओं से रु० ४९८.०० और ५०० सर्वोदय-पात्रों से रु० ६०, ८६ न० पै० तथा १२ भूदान सहयोगियों से रु. ४१ ८६ न० पै० का संग्रह हुआ। इस मास में महत्वपूर्ण कार्य यह रहा कि शराब तथा गांधी अध्ययन केन्द्र की ओर से अशोभनीय पोस्टर्स तथा शराब बंदी के संबंध में एक जुलूस निकाला गया तथा सभा हुई। इस जुलूस में धार्मिक, सामाजिक तथा राजनैतिक सभी प्रकार के नर-नारी सैकड़ों की तादाद में शामिल थे।

यह 'ग्राम स्वराज्य' अंक

६ अप्रैल १९६१ को देश में भर ग्राम स्वराज्य-दिवस मनाया जा रहा है। उसकी तैयारी और जानकारी निमित्त यह अंक 'ग्राम स्वराज्य' अंक के रूप में निकाला जा रहा है। आशा है यह आयोजन पाठकों को पसंद आयेगा। सं०

इस अंक में

विनोबा जी का पता

बरनिहा-आश्रम

जिला कोहाने (असम)

श्रीकृष्णदत्त भट्ट, अ० भा० सर्व सेवा संघ द्वारा भार्गव भूषण प्रेस, वाराणसी में मुद्रित और प्रकाशित। पता : राजघाट, वाराणसी-१, फोन नं० ४२११

वार्षिक मूल्य ५) पिछले अंक की छपी प्रतियां १२,०५० । इस अंक की छपी प्रतियाँ १२,०५० एक प्रति : १३ नये पैसे

भूदान-यज्ञ मूलक ग्रामोद्योग प्रधान अहिंसक क्रान्ति का संदेश वाहक

संपादक : सिद्धराज ढड्ढा

वाराणसी : शुक्रवार | ३१ मार्च '६१ | वर्ष ७ : अंक २६

जमीन माँगने का सामूहिक अभियान शुरू किया जाय

सर्वोदय सम्मेलन के लिये सूचनाएँ

विनोबा

यह बात जाहिर हो चुकी है कि दो से अधिक साल हुए हम शांति-सेना के विषय में गंभीरता से सोच रहे हैं। वैसे तो इस कल्पना का आरम्भ गांधीजी से हुआ और उनका जीवन इसमें समर्पित हुआ। इसके बाद हमें निकलना पड़ा था। शरणार्थियों के काम में साल-दो-साल समय हमारा गया। उस काम में भी हमने शांति-सेना की दृष्टि रखी थी और जब तेलंगाना में हमने प्रवेश किया तब भी शांति-सेना के नाते ही प्रवेश किया। दस साल से भूदान का आरम्भ

स्थान हो गया।

इधर (आसाम में) भी शांतिसैनिक के नाते आया हूँ। यहाँ आते हुए रास्ते में एक बहुत बड़ा शहर जबलपुर हमें मिला था और वहाँ दो दिन हम ठहरे। चार सभाएँ भी वहाँ बहुत शानदार हुई थीं। बहुत ज्यादा तादाद में लोग उनमें आये थे। चार हजार रुपयों का साहित्य भी दो दिनों में वहाँ बिका। इस प्रकार लोगों की सहानुभूति इस विचार के लिए देखी, लेकिन वहाँ अभी जो दुर्घटना हुई है उससे मैं बहुत ज्यादा सोच में पड़ गया। जहाँ हम जाते हैं और जहाँ अच्छे-से-अच्छा असर रहा, उसी शहर में ऐसी घटना होती है, इसका कारण क्या है? कारण यही है कि हमने वहाँ पहले कुछ काम नहीं किया। अपने परिचय में और प्रेम में लोगों को नहीं ला सके। होता यह है कि एक घटना हो जाती है और बाद में हम पहुँचते हैं।

उसका बहुत ज्यादा उपयोग नहीं है। बहुत दफा जब शांति की बात होती है, तब हम बॉर्डर के सवाल के बारे में सोचने लगते हैं। ठीक भी है, सोचें, लेकिन मैंने बहुत दफा कहा है और आज भी कहता हूँ कि अन्तर्गत शांति की स्थापना में अगर हम कामयाब नहीं होते हैं, तो हम अन्तर्राष्ट्रीय क्षेत्र में शांति को मदद नहीं पहुँचा सकते हैं। विश्व-शांति में भी कामयाब नहीं हो सकते हैं। सत्य बड़ा विलक्षण होता है, सुन के समान उसके दोनों बाजू होती है।

अभी हमने दो दिन पहले अखबार में पढ़ा कि पाकिस्तान के रंगपुर जिले में हिन्दू-मुसलमान के दंगे हुए। जबलपुर में जो घटना हुई उसके परिणाम में यह हुआ। अभी अय्यूब खाँ ने भी कहा कि "भारत में आये दिन ऐसी घटना होती है। हम यहाँ तो मायनारिटी (अल्पसंख्यकों) को अच्छी तरह से रखते हैं, लेकिन अगर हिन्दुस्तान में शांति नहीं रही, वहाँ मायनारिटी को अच्छी तरह से नहीं रखा गया, तो हम भी यहाँ की मायनारिटी को अच्छी तरह रख सकेंगे, ऐसा नहीं कह सकते।" यह सही भी है। इधर दंगे होते हैं, तो उधर दंगा होना स्वाभाविक है। इस बार जबलपुर का जो रूप देखा वह बहुत ही भयानक है। जिस काम के लिए बापू ने बलिदान दिया और आशा की गयी थी कि उस बलिदान से वातावरण शांत हो जायगा और फिर से ऐसी घटना नहीं बनेगी, वह सारा स्वप्नवत् सा हुआ। कोई त्याग किसी पीढ़ी ने या व्यक्ति ने किया तो वह हमेशा के लिए आगे काम देता रहेगा, यह मानना गलत होगा। इसलिए हमेशा सावधान रहना चाहिए।

तो देश की अन्तर्गत शांति कौन रखेगा? और, देश की अन्तर्गत अशांति का परिणाम अन्तर्राष्ट्रीय शांति पर भी होता है, यह जबलपुर की घटना ने थोड़ा दिखाया है।

ज्यादातर 'ट्रबल स्पाट्स'—उत्पात-स्थल—जो हैं, वे शहरों में होते हैं। विद्यार्थी, मजदूर, जाति भेद, धर्म भेद ये सब कारण शहरों में मिलते हैं। इन दिनों पोस्टर का आंदोलन हमने जो शुरू किया, वह सिर्फ पोस्टर की अश्लीलता के लिए नहीं, गंदे सिनेमा, गंदे गाने, गंदे साहित्य इन सब के खिलाफ है। उसमें हमने पोस्टर का काम शुरू किया याने एक छोर, एक सिरा पकड़ा है। आये दिन ऐसे सिनेमा दिखाये जाते हैं कि उसमें बलात्, चोरी वगैरह ऐसे दृश्य देखने को, पढ़ने को मिलते हैं। इसके कारण नैतिक स्तर बहुत ज्यादा गिर जाता है। अब यह कहा जाता है कि बुराई के 'शो'—चित्र—इसलिए दिखाये जाते हैं कि उससे घृणा पैदा हो। लेकिन अनुभव यह आता है कि घृणा के बदले उच्छृंखलता पैदा होती है। जबलपुर में इसी तरह हुआ। लड़की पर अत्याचार करने की हिम्मत लड़का करता है, लड़की आत्महत्या करती है। अब इसमें लड़कों का भी दोष नहीं, क्योंकि आस-पास का वातावरण ही ऐसा है।

समाज में उनको ऐसा ही देखने को मिलता है, ऐसे ही चित्र उनको देखने को मिलते हैं, ऐसा ही साहित्य उनको पढ़ने को मिलता है जिससे उनकी वृत्ति स्थिर नहीं रहती चंचल हो जाती है और अपने पर वे काबू नहीं रख पाते हैं। इसलिए हमारा जो शांति-सेना का विचार है उसके पीछे हमें ताकत लगानी होगी। तिस पर भी दूसरे कामों का महत्व भी होता ही है। फिर भी यह हमारा मुख्य काम होना चाहिए। बिहार में इसकी शक्यता मैंने देखी। वहाँ ९०२ शांति सैनिक बने हैं तीन दिसंबर तक हमने उनको काम भी सौंपा है, सर्वोदय पात्र रखने का और बीघे में कट्ठा जमीन हासिल करने का। शांति-सेना हम बनायें और उसे फौरन काम न दें तो शांति-सेना बनाना व्यर्थ ही है। इसलिए शांति सेना के लिए हमने काम दिया बीघे में कट्ठा। इससे शांति-सेना का और जनता का दोनों का अनुबंध लगा दिया। हम उम्मीद कर रहे हैं कि बिहार में तीन दिसंबर तक शान्ति-सेना के काम का कुछ रूप दीखेगा। बीघे में कट्ठा और शांति-सेना ये दोनों कार्यक्रम अलग नहीं हैं एक ही बात है। जमीन हासिल करने के लिए सर्वत्र घूमना पड़ता है और घूमते हुए शांति का विचार दें, और अशांति न हो इसकी यह पूर्व तैयारी है, ऐसा मानकर भूदान का काम करें।

शांति सेना और भूमि प्राप्ति दोनों जोड़ना चाहिए। साक्षात् संकट पर जब सेना को भेजना है, तब तो सेना के पास काम होता है, लेकिन मामूली समय में भी काम होना चाहिए। मैंने इस सिलसिले में एक बात पर विशेष जोर दिया है कि जो जमीन हम लें, वह अच्छी जमीन होनी चाहिए। अभी बिहार में जो जमीन मिली वह कुछ जमीनें जोत की हैं और अच्छी हैं।

मुझे लगता है कि इस वक्त सम्मेलन में शांति-सेना, सर्वोदय पात्र और बीघे में कट्ठा, इस पर जोर देना चाहिए। हमने यह सुझाया है कि अब बिहार में, बंगाल में और जगह-जगह जमीन प्राप्ति के काम पर जोर दिया जाय। बिहार में तो यह काम शुरू हुआ है। जोत की जमीन मांगने का काम शुरू किया जाय और उसमें शांति-सेना को लगाया जाय, इसका सामूहिक अभियान शुरू हो जाय। इस वक्त एक मौका है काम करने का।

वोटर्स को विचार समझाने का काम आपने अपने सेवकों को दिया है। शांति की बात वे करेंगे, जमीन हासिल करेंगे और लोकनीति का विचार भी समझायेंगे। यह बात अलग है कि सभी कार्यकर्ता यह विचार नहीं समझा सकते हैं, लेकिन थोड़े से जरूर हैं जो यह विचार समझा सकेंगे।

कार्यकर्ताओं के बच्चों की नयी तालीम

विद्यालय और शिक्षक कैसे हों ! —सिद्धराज

[नयी तालीम विद्यालय की योजना के बारे में एक मित्र को लिखे गये पत्र से—सं०]

"नयी तालीम का मुख्य हेतु वर्ग-निराकरण का है। मनुष्य का स्वार्थ और अहंकार आज अत्यधिक बढ़ गया है। इन दोनों विकारों के कारण समाज में सहयोग और परस्पर प्रेम के बजाय प्रतिद्वन्दिता और विद्वेष का वातावरण व्याप्त हो रहा है। शोषण और विषमता भी इन्हीं के परिणाम हैं। इन दोषों का निराकरण करना नयी तालीम का एक मुख्य हेतु होना चाहिए। व्यवहार की भाषा में कहें तो नयी तालीम का हेतु 'शिक्षित-श्रमिक' तैयार करने का है, न कि बाबू-वर्ग को बढ़ाने का। नयी तालीम की सारी प्रक्रिया इस प्रकार की होनी चाहिए कि उसमें से निकला हुआ नवजवान एक अच्छा मजदूर बनकर निकले। समाज में परस्पर सहयोग और प्रेम की दृष्टि से यह भी आवश्यक है कि शिक्षित समुदाय का जीवन-स्तर बहुजन समाज के जीवन-स्तर से भिन्न न हो। अतः नयी तालीम के विद्यालय का वातावरण, खास तौर से उसका आर्थिक मान और रहन-सहन का स्तर, आज के औसत गाँव के स्तर से बहुत भिन्न नहीं होना चाहिए। आदर्श तो यही है कि विद्यालय अलग हो ही नहीं, गाँव और गाँव का जीवन ही नयी तालीम की शाला हो। हर गाँव में एक एक नयी तालीम का शिक्षक हो, जो गाँव का जीवन जीता हुआ वहाँ के बच्चे-बच्चियों को, जहाँ जिस परिस्थिति में वे हैं, वहीं से एक-एक कदम आगे ले जाने का कार्यक्रम बनाये तभी नयी तालीम सार्वत्रिक हो सकती है।

पर मैं यह स्वीकार करता हूँ कि आज के कार्यकर्ताओं के बालकों के शिक्षण का सवाल इससे थोड़ा भिन्न है। हम अधिकांश कार्यकर्ता भिन्न-भिन्न ग्रामों से शहरों या कस्बों में रहते हैं। हममें से बहुत से प्रवास में ज्यादा रहते हैं, और बहुत से कार्यकर्ता ऐसे हैं, जिनको अंगीकृत काम के कारण कभी एक जगह और कभी दूसरी जगह अपना "घर" बदलना पड़ता है। पहली बात तो यह है कि कम से कम दस वर्ष की उम्र तक बच्चे-बच्ची अपने परिवार ही में रहने चाहिए। शिक्षण-शास्त्र, मानस-शास्त्र और समाज-शास्त्र सब दृष्टियों से यह आवश्यक है। इस उम्र तक जहाँ उसका परिवार है वहीं, चाहे परिवार में चाहे स्थानीय किसी शाला में बच्चे का शिक्षण चलते रहना चाहिए।

कार्यकर्ताओं के १० वर्ष से ऊपर के बच्चों के लिए सामान्य तौर पर दो विकल्प हो सकते हैं। एक तो यह कि वे अपने परिवार में रहते हुए आज के सामान्य स्कूलों में शिक्षण पाते रहें और चारित्र्य, सद्गुण, सदाचार आदि की कमी घर के वातावरण से पूरी हो सके ऐसा, अगर हम वास्तव में इस मामले में 'सीरियस' हैं तो, प्रयत्न करें। दूसरा विकल्प यह कि प्रांत में अधिक नहीं तो कम से कम एक-दो जगह ऐसे आवासयुक्त (रेजीडेंशियल) विद्यालय हों, जहाँ उन्हें नये ढंग की तालीम मिल सके। मैं भी मानता हूँ कि ऐसा एक विद्यालय हो तो अच्छा है।

अब सवाल यह है कि विद्यालय हो कैसा? मेरी दृष्टि से ऐसे विद्यालय का हेतु वर्ग-परिवर्तन और वर्ग-निराकरण का ही हो सकता है। ऐसा न हो तब तो सरकारी या अन्य सामान्य स्कूल हैं ही। केवल 'अच्छे बाबू' बनाना हमारा उद्देश्य नहीं हो सकता, होना भी नहीं चाहिए। वैसे 'अच्छे बाबुओं' के लिए और दूसरे स्कूल हैं ही और अच्छे बाबू बनाना हो तो उसका खर्चा मेरी राय में समाज को वहन नहीं करना चाहिए, जिनको अपने बच्चों को वैसी शिक्षा देनी हो, वे ही वहन करें। हमारे विद्यालय की सारी योजना, उसका वातावरण, उसका रहन-सहन सब मध्यम वर्ग के बच्चों के वर्ग-परिवर्तन के अनुकूल होना चाहिए, यानी उनको श्रमिक बनने की तरफ ले जानेवाला होना चाहिए। यह सही है कि गाँव-गाँव में, जो नयी तालीम की योजना होगी, उससे कुछ ज्यादा इन्तजाम कार्यकर्ताओं के बच्चों के लिए इस विद्यालय में करना होगा। निवास का इन्तजाम वहाँ करना जरूरी होने से भी कुछ इन्तजाम और खर्च बढ़ेगा। हमारे बच्चे चाहे वे मध्यम वर्ग के हों या गरीब मध्यम वर्ग के एक बात सबके लिए समान है कि वे श्रम के अभ्यस्त नहीं होंगे, उनके रहन-सहन और खाने-पीने का ढंग भी गाँव वालों से जरूर भिन्न होगा और शायद भिन्न रखना भी पड़ेगा। फिर भी हमारी कोशिश यथासम्भव सादगी और कम खर्च की तरफ होनी चाहिए।

तुमने अपनी योजना में जो शिक्षकों के लिए दो ढाई सौ प्रतिमाह का प्राविजन रखा है, वह आर्थिक दृष्टि से भी बोझिल होगा और श्रमिक जीवन की ओर बढ़ने के उद्देश्य के लिए भी थोड़ा बाधक होगा, ऐसा मुझे लगता है। मैं जानता हूँ कि आज हमारे जैसे साधारण परिवार के लिए दो सौ रुपया मासिक कोई बहुत ज्यादा नहीं है। जिसके बाल-बच्चे हैं, गृहस्थी है, उसको डेढ़ सौ दो सौ लेना या देना ही पड़ता है। लेकिन इससे दो प्रतिकूलताएँ पैदा होती हैं। एक तो यह कि विद्यालय का बजट बढ़ जाता है, कार्यकर्ता स्वयं अपने बच्चों की पढ़ाई के पीछे उतना खर्च करके उसे पूरा नहीं कर सकते, इसलिये फिर समाज या सरकार से दान लेने की नौबत आती है। जो दोनों बातें मुश्किल भी हैं और प्रतिकूल भी पड़ती हैं दूसरी प्रतिकूलता यह पैदा होती है कि ऐसे शिक्षकों के परिवार के रहन-सहन का असर सारे विद्यालय पर पड़ता है और विद्यालय का स्तर गाँव के रहन-सहन से बहुत दूर चला जाता है।

मैं मानता हूँ कि इस समस्या का हल करना आसान नहीं मुझे इस बारे में एक उपाय यह सूझता है और जितना मैं सोचता हूँ, उतना वह दृढ़ होता जाता है कि हमारी नयी तालीम विद्यालय के शिक्षक नयी या छोटी उम्र के ऐसे लोग न हों, जिनकी गृहस्थी बढ़ती हुई हो या जिन पर गृहस्थी का पूरा भार हो। हमारे शिक्षक ४५-५० वर्ष की उम्र के आसपास के लोग हों, जो गृहस्थी की जिम्मेदारी को पार कर चुके हों और जिनके खुद के बच्चे-बच्चियों की पढ़ाई इत्यादि समाप्त होकर वे लोग अपने-अपने काम में लग गए हों। दूसरे माने में ये शिक्षक 'वानप्रस्थी' हों। इस शब्द से मेरा जो आशय है वह मैंने ऊपर स्पष्ट कर दिया है। यानी शिक्षक ऐसे हों, जिनकी गृहस्थी की आर्थिक जवाबदारी कम से कम हो। अधिक से अधिक 'गुरु और गुरु-पत्नी' दो की ही जिम्मेदारी हो। मुझे भरोसा है कि अगर हम ऐसा निश्चय करके चलें और खोज करें तो एक विद्यालय के लिए उपरोक्त प्रकार के पाँच सात शिक्षक जरूर मिल सकते हैं, जो नयी तालीम के विचारों के भी अनुकूल हों। वे नयी तालीम के शिक्षक की बाकायदा ट्रेनिंग पाए हुए न हों तब भी कोई हर्ज नहीं। उनकी वृत्ति और विचार उसके अनुकूल हों, जीवन सादा हो और काम करने की रुचि हो तो अपने पुराने अनुभव के बल पर वे दो-चार महीने में अच्छे से अच्छे नयी तालीम के शिक्षक हो सकते हैं।

इस दिशा में हमें सोचना चाहिये और इसे सामने रखकर हमारे नयी तालीम विद्यालय की सारी योजना बनानी और शुरू करनी चाहिए। ऐसे शिक्षक न मिलें तब तक विद्यालय चालू न करना ज्यादा अच्छा है। कल परसों ही मैंने अखबार में एक मजाक पढ़ा था, वह याद आता है। एक माँ शादी के लायक अपनी लड़की के होनेवाले दामाद से बखान कर रही थी। कह रही थी—'मेरी लड़की बहुत शिक्षित और सुसंस्कृत है। बहुत अच्छा गाना जानती है, बजाना भी अच्छा जानती है, विज्ञान का भी उसे अच्छा अभ्यास है, सभा-सोसाइटियों में भी भाग लेती रही है, भाषण में निपुण है, चित्रकारी भी कर सकती है। आप क्या-क्या जानते हैं?' उम्मीदवार दामाद ने जवाब दिया—'आवश्यकता पड़ने पर खाना बनाने का और कपड़ा सीने का काम मैं कर लूँगा।' हमारी नयी तालीम का शिक्षित उस लड़की का-सा न रह जाय।

तो इस तरह भूदान के काम को फिर से भारत में जोर देना है और व्यापक बनाना है।

यह देखा गया है कि जहाँ आंदोलन मंद पड़ता है, वहाँ दूसरे काम भी मंद पड़ते हैं। नयी तालीम की बात देखिये। वह विचार ग्रहण हो रहा है, ऐसा नहीं दीखता है। जहाँ आंदोलन का जोर कम हो जाता है, वहाँ कुल विचार कमजोर हो जाता है। पर इस वक्त मैंने देखा कि कार्यकर्ताओं के मन की तैयारी है। इन्दौर से असम का रास्ता हमने लिया। रास्ता सीधा था। रास्ते में बैतूल नहीं आता था, लेकिन बैतूलवालों ने हमें आमंत्रण दिया। हमने पूछा कि आप कौनसा काम करेंगे, तो उन्होंने कहा हम सर्वोदय पात्र रखायेंगे। तब हमने कहा था कि सर्वोदय पात्र रखवाना जितना आसान है, उससे ज्यादा आसान बंद होना है। उन्होंने पूछा कि तो आप क्या चाहते हैं? हमने कहा कि हम भूदान चाहते हैं। पाटणकर और उनके मित्रों ने कबूल किया और भूदान हासिल किया। आश्चर्य की बात है कि बारह सौ एकड़ जमीन मिली और हजार एकड़ बंट भी गयी। दोनों काम हो गये। तो एक साथ अगर हम जोर लगाते हैं, तो काम हो सकता है, ऐसा अनुभव आया।

गोलकगंज (आसाम)

ता० ७।३।६१

कानपुर नगर सर्वोदय अभियान

कानपुर नगर में समय समय पर एक दिवसीय शिविर लगाए गये। इन शिविरों में प्रार्थना, सहयोग, विचार गोष्ठियाँ आदि का कार्यक्रम चलते हैं। बच्चों और युवकों के अशोभनीय विज्ञापन विरोधी आदि अनेकों कार्यक्रम भी समय समय पर किये गये। इनमें कार्यकर्ताओं के साथ प्रमुख नागरिकों ने भी भाग लिया। इन शिविरों के द्वारा सर्वोदय कार्यकर्ताओं की वैचारिक भूमिका दृढ़ करने का प्रयत्न चल रहा है। नगर में सर्वोदय आन्दोलन को जिला सर्वोदय मण्डल, नगर सर्वोदय समिति तथा गांधी स्मारक निधि के सम्मिलित रूप से प्रगति पथ पर ले जाने का प्रयास चल रहा है।

शीघ्र ही उद्योग दान समिति के अन्तर्गत नगर के विद्वानों और श्रमिक कार्यकर्ताओं की एक गोष्ठी का आयोजन किया जायगा जिसमें उद्योगों में ट्रस्टीशिप स्वरूप क्या हो इस विषय पर विचार विमर्श होगा तथा उसके विभिन्न पहलुओं पर सामूहिक चर्चा होगी।

ब्रह्म सत्यं जगत् स्फूर्तिः जीवनं सत्यशोधनम्

भूदानयज्ञ

लोकनागरी लिपि*

प्रेम से ही मसला हल होगा।

लोग मुझसे पूछते हैं की क्या प्रेम के तरीके से मसला हल होगा? मुझे ताज्जुब होता है की जीन्होंने सारा जीवन कुटुंब के प्रेम के आधार पर बीताया, प्रेम के अनुभव के बीना जीनका अेक भी दीन नहीं जाता, वे ही मुझसे अैसा सवाल कैसे पूछते हैं? मैं कहता हूँ की मानव में प्रेमशक्ती है या द्वेषशक्ती, ईसका फैसला अेक कसौटी पर रखकर हम कर सकते हैं। मानो, कहीं खून हुआ, तो फौरन तार जाता है और अखबार में भी वह बात छप जाती है। लेकीन ईससे उलटा दृश्य अगर कीसीने देखा की माँ बीमार बच्चों के लीअे रात को लगातार दस-दस दीन तक जाग रही है, तो क्या उस दृश्य का आप तार भेजेंगे और अखबार वाले भी छापेंगे?

आखीर वह क्यों नहीं होता? ईसलीअे की प्रेम तो मनुष्य का स्वभाव है। लेकीन उसके वीरुद्ध कोई चीज बनी, तो उसका रीकार्ड ईतीहास में आता है और अखबार में छापा जाता है। मनुष्य का जीवन प्रेममय है। वह प्रेम से ही आदी से अन्त तक रहता है। उसका जन्म प्रेम में होता है, प्रेम में उसका पालन होता है और प्रेम से उसकी मृत्यु होती है। मरनेवाले के दर्शन के लीअे लोग उसके भीतर दौड़ जाते हैं और वह भी उनका दर्शन पाकर समाधान से मरता है। तब भी मनुष्य कैसे संदेह प्रकट करते हैं की प्रेम से मसला हल हो सकता है? —वीनोबा

*लिपि-संकेत : ि = ी ; ी = ई ; ष = श संयुक्ताक्षर हलंत चिह्न से।

विचार-प्रवाह

• फिल्म व्यवसायियों से • सराहनीय प्रयास

अशोभनीय पोस्टरों के विरुद्ध आन्दोलन के कारण सिनेमा व्यवसाय और फिल्म से सम्बन्धित सारे प्रश्न की ओर ही लोगों का ध्यान गया है, यह खुशी की बात है। न केवल, बहुत-सी फिल्में अपने आप में गंदी होती हैं, और उनके विज्ञापन भी भद्दे पोस्टरों के जरिये किये जाते हैं, बल्कि फिल्मों के गाने और उनके नाम भी अक्सर इस तरह के होते हैं जो शोभनीय की कोटि में तो कम से कम नहीं गिने जा सकते।

एक मित्र ने अभी हाल ही में फिल्म पत्र-पत्रिकाओं में से फिल्मों के करीब दो दर्जन ऐसे नामों की सूची हमें भेजी है, जो सचमुच अशोभनीय हैं। पोस्टर्स के ही जरिये नहीं, बल्कि अन्य विविध प्रकारों से भी ये नाम हजारों-लाखों लोगों की आँखों के सामने और उनकी जबान पर आयेंगे। आशा है "इंडियन मोशन पिक्चर्स एसोसिएशन" इस बात की ओर भी ध्यान देगा और कोशिश करेगा कि फिल्म व्यवसाय के जरिये लोगों का नैतिक स्तर नीचे गिराने का ही काम न होता रहे, बल्कि जो यह अपेक्षा फिल्म व्यवसाय से की जाती है कि वह उत्तरोत्तर और वैसा दावा भी कभी र किया जाता है लोगों की सुरुचि को ऊँचा उठाये वह पूरी हो।

हमारे मित्र ने फिल्म पत्र-पत्रिकाओं में से नये बननेवाले कुछ चित्रों के आपत्तिजनक नामों की जो सूची भेजी है, उसमें से कुछ उदाहरण के लिए हम नीचे दे रहे हैं।

१—दिल से दिल मिला लो
२—एक बेवफा से प्यार किया
३—सदके तेरी चाल के
४—सजी बस रहने दो
५—जालिम तेरा जवाब नहीं
६—जरा पलट के देख
७—दिल भी तेरा हम भी तेरे
८—दिलेर हसीना
९—'गर्ल फ्रेंड'
१०—अकेली मत जइयो
११—तुम शमा हम परवाने

फिल्म व्यवसाय में लगे हुए लोग खुद अगर अपनी सामाजिक जिम्मेदारी महसूस नहीं करते हैं तो फिर अगर शुभाकांक्षी लोग इस सारे व्यवसाय के ही 'प्राइवेट सेक्टर' से हटा लेने की बात कहें तो उन्हें कोई दोष नहीं दे सकता।

•

फिरोजाबाद (उत्तर प्रदेश) के सर्वोदय मंडल ने ईद के त्यौहार पर एक अनुकरणीय कदम उठाया। कुछ महीनों पहले फिरोजाबाद में हिन्दू-मुस्लिम दंगा पैदा हो गया था और फलस्वरूप आपस में कटुता आ गयी थी। दंगे के अवसर पर भी फिरोजाबाद तथा आगरा के सर्वोदय कार्यकर्ताओं ने दोनों सम्प्रदायों में सौहार्द कायम करने में काफी मदद पहुँचायी थी। अभी फिरोजाबाद सर्वोदय मण्डल ने ईद के मौके पर एक सार्वजनिक मिलन का आयोजन किया, जिसमें सभी जाति और सम्प्रदायों के लोग शामिल हुए। आयोजन में मुस्लिम नागरिकों ने काफी सहयोग दिया। सर्वोदय मण्डल की ओर से ईद के पहले एक पर्चा निकाला गया था जिसमें सब नागरिकों को इस बात की याद दिलायी गयी थी कि "ईद का त्योहार प्रेम, खुशी और भाईचारे का त्योहार है। पूरे एक महीने तक रोजे (व्रत) रख कर मन और विचारों को पवित्र करके अंत में ईद के दिन छोटे बड़े अमीर गरीब सब इकट्ठे होकर अल्ला के प्रति कृतज्ञता प्रकट करने के लिए नमाज पढ़ते हैं और फिर सब भेद भाव भूलकर आपस में प्रेम से गले मिलते हैं।" हर सम्प्रदाय तथा जाति में ऐसे खुशी और प्रेम के त्योहार मनाये जाते हैं जब सब भेद भाव भूलकर लोग एक दूसरे से मिलते हैं। आपसी भाईचारा और मेल बढ़ाने के लिए यह जरूरी है कि ऐसे मौके पर हम एक दूसरे की खुशी में शरीक हों और सार्वजनिक रूप से इन त्योहारों को मनायें। कुछ दिन पहले होली के मौके पर भी फीरोजाबाद के सर्वोदय मण्डल ने इस तरह का सार्वजनिक 'मेला' आयोजित किया था। आपसी भेद भाव, कटुता और गलतफहमी का एक कारण यह भी होता है कि हम तरह एक दूसरे के सुख दुःख में हम शरीक नहीं होते। सर्वोदय कार्यकर्ताओं का और शांति सैनिकों का यह एक कार्यक्रम ही होना चाहिए कि वे इस तरह के मौके मुहय्या करें। यह खुशी की बात है कि जबलपुर में भी सार्वजनिक रूप से ईद मनाने की कोशिश की गई।

—सिद्धराज

बागियों के साथ न्यायोचित व्यवहार हो
आगरा के कार्यकर्ताओं की माँग

दिनांक ६.३.६१ को एक मीटिंग विभिन्न राजनीतिक पक्ष के प्रतिनिधियों एवं सार्वजनिक कार्यकर्ताओं की डाक्टर रत्ना के सभापतित्व में हुई जिसमें निम्न प्रस्ताव सर्व सम्मति से पारित हुआ।

"यह सभा चम्बल घाटी के प्रमुख बागी, जिन्होंने पूज्य विनोबाजी के समक्ष आत्म-समर्पण किया था, मध्य प्रदेश ग्वालियर से आगरा जब लाये जा रहे थे उनके साथ पुलिस ने सैया थाने के सामने मोटर ठेले रोक कर जो अमानुषिक व्यवहार किया और उनको पीटा गया जिसमें बन्दूक की बट तक का प्रयोग किया गया और हर प्रकार से जलील करने का प्रयत्न किया गया, पुलिस के इस अमानुषिक व्यवहार का तीव्र भर्त्सना करती है।

पुलिस के इस प्रकार के बर्बर अमानुषिक व्यवहार के प्रति यह सभा असंतोष प्रगट करते हुये जन प्रिय शासन से माँग करती है कि वह शीघ्रातिशीघ्र इस काण्ड की निष्पक्ष अदालती जाँच कराये और विनोबाजी द्वारा संचालित अहिंसक आन्दोलन के प्रति अपनी निष्ठा का परिचय दें।

आशा है कि हमारी प्रान्तीय सरकार हमारी इस मानवोचित माँग का स्वागत कर राष्ट्रीय भावनाओं का आदर करेगी।"

•

सर्व सेवा संघ का अधिवेशन

नवगठित संघ का अधिवेशन आगामी सर्वोदय सम्मेलन के अवसर पर चेब्रोलु (आन्ध्र) के निकट ता० १३ अप्रैल, १९६१ से आरम्भ होगा। सम्मेलन की तारीखें १८ से २० अप्रैल, १९६१ तय हुई हैं। इस प्रकार संघ अधिवेशन ता० १७ अप्रैल तक चलेगा।

संघ का यह अधिवेशन देश की स्वाधीनता के बाद सर्वोदय समाज रचना की दृष्टि से श्री विनोबाजी के नेतृत्व व मार्गदर्शन में जो भूदान-ग्रामदान आन्दोलन व कार्यक्रम चला उसके लगभग १० वर्ष का एक युग पूरा होने के ऐतिहासिक अवसर पर हो रहा है।

संघ के इस अधिवेशन में लगातार ४-५ दिन तक आन्दोलन के विविध स्वरूप एवं चारों ओर की परिस्थिति और उन सबसे संबंधित विभिन्न मुद्दों के बारे में गहराई से चिंतन मनन किया जायगा।

संघ अधिवेशन ता० १३ अप्रैल से आरम्भ होगा। भाग लेने वाले ता० १२ अप्रैल की शाम तक सम्मेलन स्थान पर पहुँच जायें। सम्मेलन के रेल्वे स्टेशन वहाँ के निवास-भोजन की व्यवस्था आदि के संबध में समुचित सूचनाओं के लिए सम्मेलन कार्यालय, सर्व-सेवा-संघ, सेवाग्राम (वर्धा) और स्वागत समिति कार्यालय, आन्ध्र प्रदेश सर्वोदय मंडल, गांधीनगर, हैदराबाद से पत्र व्यवहार करें।

•

आगामी सर्वोदय सम्मेलन के लिए विनोबा का सन्देश

सिद्धराज ढड्ढा

मार्च के शुरू में सर्व सेवा संघ की प्रबन्ध समिति की सभा जब आसाम में विनोबाजी की उपस्थिति में बुलाई गई तो उसका एक उद्देश्य यह भी था कि अप्रैल में होने वाले सर्वोदय सम्मेलन के लिए विनोबा का क्या सन्देश है, यह उनसे प्रत्यक्ष चर्चा करके जाना जाय।

इसप्रकार सर्वोदय सम्मेलन १८ अप्रैल को शुरू हो रहा है—ठीक उसी दिन जिस दिन दस बरस पहले पहल भूदान विनोबा को मिला था। सम्मेलन हो भी उसी प्रान्त में रहा है जिसमें भूदान की गंगोत्री प्रकट हुई थी। इस तरह भूदान आन्दोलन का एक वृत्त पूरा होता है। ठीक दस बरस बाद उसी दिन, उसी प्रान्त में, जिसमें भूदान आन्दोलन का श्री गणेश हुआ था हिन्दुस्तान भर के सर्वोदय सेवक मिलेंगे। उधर आसाम प्रवेश के साथ विनोबा की देश व्यापी एक परिक्रमा भी पूरी होती है।

८ मार्च १९५१ को विनोबा पवनार के अपने आश्रम से पैदल रवाना हुए थे—शिवराम पल्ली के सर्वोदय सम्मेलन में जाने के लिए—सो आजतक वे घूम ही रहे हैं। हिन्दुस्तान के सब प्रान्तों और प्रदेशों में घूम चुकने के बाद असम का ही एक प्रांत बचा था जहाँ वे अब तक नहीं पहुँचे थे। अब पवनार से निकलने के दस बरस बाद ५ मार्च १९६१ को विनोबा ने उस आखिरी बचे हुए प्रदेश की भूमि को भी स्पर्श किया और इस तरह उनकी भारत परिक्रमा का एक वृत्त पूरा हुआ।

इस दस बरस में हम कहाँ से कहाँ पहुँच गये! विनोबा ने भूमिहीनों के लिये जमीन की माँग बुलन्द की और प्रेम पूर्वक जमीन वाले को उसे पूरी करने का आह्वान किया। प्रेम और करुणा के आधार पर किस तरह भूमिहीनता जैसी जटिल समस्या भी हल हो सकती है और समाज के एक वर्ग के प्रति जो अन्याय हो रहा है उसका निराकरण हो सकता है, यही भूदान आन्दोलन का मुख्य उद्देश्य था। गणित के हिसाब से इसके लिये कुल जमीन के छठे हिस्से की प्राप्ति आवश्यक थी, इसलिये विनोबा ने छठे हिस्से की माँग पेश की। पर छठा हिस्सा जमीन मिलने पर भी आखिरकार समस्या का स्थूल हल ही होता क्योंकि सवाल सिर्फ जमीन का नहीं था। मुख्य सवाल यह था और है कि मनुष्य आज अपने ही स्वार्थ में डूबा हुआ है। हर व्यक्ति अपने अपने स्वार्थ के लिये कोशिश करता है इसलिये एक दूसरे से संघर्ष और होड हो रही है। स्वाभाविक ही है कि होड में ताकतवर जीतता है, कमजोर हारता है। इस तरह हर आदमी एक दूसरे से डरता है और असुरक्षा या खतरा महसूस करता है। सुरक्षा की ही कोशिश में वह रात दिन लगा रहता है और यह सुरक्षितता उसे संग्रह में दिखाई देती है। इस तरह स्वार्थ, होड, संघर्ष, असुरक्षा और संग्रह अर्थात् मालिकी की भावना इस कुचक्र में आज का मनुष्य और समाज फँस गया है. इस कुचक्र की गति ज्यों ज्यों तीव्र होती जा रही है त्यों-त्यों समाज में शोषण, अन्याय, विषमता और संघर्ष बढ़ता जा रहा है। समाज का हर व्यक्ति हर दूसरे व्यक्ति से, यानी कुल समाज से, डरता है और उसे अपना प्रतिद्वन्दी मानता है।

इस तरह प्रकृति, नियति या सृष्टि की योजना में जिस चीज की रचना मनुष्य की भलाई के लिये हुई थी, उसी को उसने अपना दुश्मन बना दिया। एक और एक मिलकर अगर सहयोग से काम करें तो 'ग्यारह' होते हैं। पर वही एक दूसरे को काटें तो शून्य हो जाते हैं। परस्पर प्रेम और सहयोग से जिस पृथ्वी को मनुष्य स्वर्ग बना सकता था, उसे उसने परस्पर के संघर्ष और द्वेष के कारण नरक बना दिया है। संघर्ष में से सुरक्षा की खोज हुई और सुरक्षा की खोज में से संग्रह और मालकियत की भावना पैदा हुई अत. मुख्य समस्या इस कुचक्र के निवारण की है। इसलिये भूदान की स्वाभाविक परिणति ग्रामदान अर्थात् मालकियत विसर्जन की शुरुआत में हुई। इस आधार पर एक नये समाज की रचना करनी थी, इसलिये विकेन्द्रित रचना, शान्ति सेना सर्वोदय-पात्र आदि की विविध लेकिन परस्पर पूरक और संबंधित कल्पनाएँ भी उनमें से प्रस्फुटित हुई।

यह सब होने से जहाँ एक ओर विचार पूर्ण और समृद्ध हुआ, वहाँ कृति का दायरा बढ़ जाने से वह क्षीण होती गई और इस तरह आन्दोलन में एक गतिरोध सा महसूस होने लगा। पिछले दस वर्षों के अनुभव का सिंहावलोकन करके अब आगे का कदम तय करने का समय आ गया है।

विनोबा इस सारे अनुभव से जिस नतीजे पर पहुंचे हैं उसका संकेत पिछले करीब एक बरस से वे दे रहे हैं। इन्दौर के पहले से ही उन्होंने कहना शुरू किया था कि गाँव-गाँव भूदान माँगने का जो सिलसिला हमने छोड़ दिया वह ठीक नहीं किया और हमें उसे फिर से जारी करना चाहिए। इंदौर से आसाम के लिये रवाना होने पर बेतूल के कार्यकर्ताओं ने उनसे पूछा कि उनकी यात्रा के सिलसिले में वे उस जिले में किस बात पर जोर दें तो विनोबा ने उन्हें एक ही बात सुझाई कि वे जितना हो सके भूदान प्राप्त करने की कोशिश करें। बेतूल के कार्यकर्ताओं ने इस संकेत का पालन भी किया और चंद दिनों में ही १२०० एकड़ भूमि भूदान में मिली, जिसमें से १००० एकड का बंटवारा भी साथ-साथ हो गया। बिहार पहुँचने पर तो विनोबाजी ने भूदान-प्राप्ति का एक निश्चित कार्यक्रम ही उस प्रान्त के कार्यकर्ताओं को दिया। 'बीघे में कट्ठा' के हिसाब से हर भूमिवान से जमीन प्राप्त करके ३२ लाख एकड़ जमीन के बिहार के पुराने संकल्पों में जो कमी रही, वह आगामी ३ दिसम्बर तक पूरा करने का नया ध्येय विनोबाजी ने बिहार के सामने रखा है। अभी हाल ही में बिहार की विभिन्न राजनैतिक पार्टियों के नेताओं की एक सभा पटना में हुई थी, जिसने इस कार्यक्रम में पूरा सहयोग देने का भी तय किया है।

ता० ७ मार्च को गोलकगंज : असम में प्रबंध-समिति के समक्ष बोलते हुए विनोबाजी ने आगामी सम्मेलन की दृष्टि से अपना स्पष्ट संकेत और संदेश रखा—"मुझे लगता है कि इस वक्त सम्मेलन में शांतिसेना, सर्वोदयपात्र और बीघे में कट्ठा इस पर जोर देना चाहिए। जोत की जमीन माँगने का काम शुरू किया जाय और उसमें शांति सेना को लगाया जाय, इसका सामूहिक अभियान शुरू हो जाय। १० साल पहले भूदान का काम आरम्भ हुआ और तब से हमारे मन में यही रहा है कि भूदान का काम शान्तिसेना के काम के लिये उत्तम तैयारी है। अशान्ति का बहुत बडा कारण इससे मिटता है। उसमें लोगों के पास जाने का, घर-घर पहुँचने का मौका मिलता है। हर घर की हालत क्या है, समाज में वातावरण क्या है, इसका पता चलता है। इसके साथ साथ सर्वोदय पात्र का काम भी हर घर में प्रवेश के लिए हमें मिल गया और सर्वोदयपात्र के रूप में हर घर में हमारे लिए स्थान हो गया।

इस प्रकार शान्तिसेना, सर्वोदय पात्र और बीघे में कट्ठा ये तीनों परस्पर संबंधित एक ही कार्यक्रम के अंग हैं। शान्ति सेना के विषय में विनोबाजी कितनी ही बार अपनी तीव्रता जाहिर कर चुके हैं। इधर जबलपुर में जो कुछ हुआ, उसने शान्ति सेना के महत्व को और भी रेखांकित किया है। स्वाभाविक ही विनोबाजी के मन पर जबलपुर की घटना का काफी असर था। बापू के बलिदान को याद करते हुए उन्होंने कहा—'जिस काम के लिए बापू ने बलिदान दिया और आशा की गयी थी कि उस बलिदान से वातावरण शान्त हो जायगा और फिर वैसी घटना नहीं बनेगी, वह सब स्वप्नवत्-सा साबित हुआ। कोई भी त्याग किसी पीढ़ी ने या व्यक्ति ने किया तो वह हमेशा के लिए आगे काम देता रहेगा, यह मानना गलत है। इसलिए हमेशा सावधान रहना चाहिए। इसलिए हमारा शान्ति-सेना का जो विचार और काम है, उसके पीछे हमें ताकत लगानी होगी। दूसरे कामों का महत्व भी है, फिर भी यह हमारा मुख्य काम होना चाहिए।"

विनोबा एक से अधिक बार स्पष्ट कर चुके हैं कि शान्ति-सेना का काम सिर्फ अशान्ति न होने देना, उसे टालना या अशान्ति हो जाने पर शान्ति स्थापना की कोशिश करना, इतना ही नहीं है। समाज में स्थायी शान्ति तभी सम्भव है जब आर्थिक और सामाजिक परिस्थिति में अशान्ति के जो कारण मौजूद हैं वे दूर हों। स्वार्थपरता, शोषण और अन्याय अशान्ति के बीज हैं, इसलिए शान्ति-सैनिक की निरन्तर यह कोशिश रहेगी कि वह समाज की सतत सेवा के जरिए लोगों का प्रेम हासिल करके उन्हें स्वेच्छापूर्वक समाज-परिवर्तन की दिशा में ले जाय। व्यापक पैमाने पर भूदान-प्राप्ति, समाज में वैसा वातावरण बनाने का एक कारगर तरीका है। हर व्यक्ति आस-पास के दुखी लोगों के लिए समाज के लिए कुछ दें ऐसा वातावरण बनता है तो एक बड़ी बात होती है।

१८ अप्रैल, १९६१ को भूदान आंदोलन को प्रारम्भ हुए एक दशक पूरा होता है। १० वर्ष बाद फिर से मालकियत विसर्जन की नहीं, छठे हिस्से की भी नहीं, २० वें हिस्से की माँग को फिर से लोगों के सामने रखना पीछे हटने जैसा कदम मालूम होता है। पर विनोबा ने बतलाया है (भूदानयज्ञ : २४ फरवरी, ६१ पृष्ठ-१) कि किस तरह बीघे में कट्ठे वाली बात आन्दोलन का 'सौम्यतर स्वरूप" है। भूदान-प्राप्ति के सिलसिले में विनोबा ने इस बार तीन शर्तें और जोड़ी हैं जिन पर हमें ध्यान रखना जरूरी है। पहली तो यह कि बीघे में कट्ठे, यानी बीसवें हिस्से की जो भी जमीन ली जाय, वह चाहे जैसी जमीन न हो बल्कि जोत की यानी अच्छी जमीन हो। दूसरी बात यह कि दो चार बड़े भूमिवानों से ही नहीं बल्कि हर भूमिवान से उसकी जमीन का बीसवाँ हिस्सा हासिल करने की कोशिश की जाय, कम-से-कम हर गाँव की कुल जमीन का बीसवाँ हिस्सा गाँव के भूमिहीनों के लिए मिले, इस बात पर जोर दिया जाय। और तीसरी बात यह कि इस प्रकार जो जमीन मिले उसे तत्काल दाता ही बाँट दे। अगर हम इन सब शर्तों का पालन करें तो व्यापक पैमाने पर "दान" का, अर्थात् सुख-दुःख के बँटवारे का और सामाजिक जिम्मेदारी का, वाता-

(शेष पृष्ठ ९ पर)

"भूदान-यज्ञ" साप्ताहिक वर्ष ७ : अंक २६ दिनांक ३१-३-६१ का परिशिष्ट

अखिल भारत सर्व-सेवा संघ

ग्राम-स्वराज्य घोषणा

(६ अप्रैल १९६१)

आज हम घोषणा करते हैं कि हम अपनी शक्ति एक सहकारी, समन्वित और एकरस समाज के निर्माण में लगायेंगे। हम मानते हैं कि प्राथमिक ग्राम-समाज को यह जिम्मेदारी लेनी चाहिये और स्वयं अपनी ओर से उसके लिए पहल करनी चाहिये कि समाज के सब सदस्यों को उनके जीवन की मूलभूत आवश्यकताएँ सुलभ हों और वे समाज के अन्दर रहते हुए अपनी सुरक्षा और स्वतंत्रता का अनुभव कर सकें।

हम घोषणा करते हैं कि हमारे समाज में न तो कोई भूखा रहेगा और न कोई बेकार। इसके लिए हम बे-जमीनों या बेकारों को जमीन दिलाने की और दूसरे उद्योग-धन्धों में लगाने की व्यवस्था करेंगे। हम अपने गाँव में सुलभ सभी साधनों का अनुमान लगायेंगे और खास कर ग्राम-समाज की जरूरी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए उनका पूरा या ज्यादा से ज्यादा उपयोग करेंगे। ऐसा करते हुए हम देश के उस बृहत् समाज की आवश्यकताओं की पूर्ति में भरपूर योग देना अपना कर्तव्य समझेंगे जिसके कि हम एक अंग हैं।

हम वे सब जरूरी उपाय बरतेंगे जिनसे हमारे आर्थिक जीवन में विविधता आये, जिनसे रहन-सहन की हमारी स्थिति में सुधार हो, जिनसे समाज के हर व्यक्ति को उपयोगी और समाज की दृष्टि से हितकारी काम मिले और गाँव में पढ़े-लिखे लोगों में अभी भी घनी आबादी से भरे शहरों की ओर जाने की जो वृत्ति बनी है, उसमें रोक-थाम हो। हम अपने आर्थिक जीवन की योजना इस तरह करेंगे कि जिससे हमारे नौजवानों की बुद्धि-शक्ति को ज्यादा से ज्यादा ठोस रीति से वहीं गाँव में काम करने का भरपूर मौका मिल सके।

खादी अहिंसक समाज रचना की प्रतीक है। आज भी खादी गाँवों में हजारों-लाखों गरीबों और उपेक्षितों के लिये आशा का चिन्ह और रोजी-रोटी का साधन है। नये मोड़ के नये विचार से हमें बहुत प्रेरणा मिली है। उसकी सहायता से हमें ग्राम-समाज का समग्र संयोजन और विकास करना चाहिए। कृषि-उद्योग-प्रधान समाज की नयी रचना में खादी और ग्रामोद्योगों के महत्त्व को हम मानते हैं, इसलिए हम अपने आर्थिक जीवन की नये सिरे से इस तरह रचना करेंगे कि जिससे उस नव-निर्माण में इनका महत्त्व का योग-दान हो और समाज में सबके लिए स्वतंत्रता और समानता की स्थिति पैदा हो सके।

इस लक्ष्य की पूर्ति के लिए हमारे सारे प्रयत्न सफल हों, यही हमारी कामना है।

नोट—यह घोषणा ६ अप्रैल १९६१ को भारत के गाँव-गाँव में गाँववासियों में से एक व्यक्ति एक-एक वाक्य पढ़े तथा गाँव के लोग मिलकर दोहरायें।

भार्गव भूषण प्रेस, वाराणसी

कार्यकर्त्ता व्यापक दृष्टि अपनाये

—शंकरराव देव

प्रश्न—आपने कहा था कि नये-मोड़ के आन्दोलन को न केवल व्यापक और ठोस बनाना है, बल्कि अमल में लाने में शीघ्रता करनी है। लेकिन यह दो वर्षों के प्रयत्न के बावजूद न तो व्यापक हो पाया है न वेग आ सका है। तो इसका कारण यह तो नहीं कि विचार में ही कहीं कोई दोष हो?

उत्तर—जहाँ तक विचार का सवाल है उसे शुद्ध और व्यवहारिक बनाने का यथा-प्रयत्न तो हम सब कर ही रहे हैं। फिर भी आन्दोलन में व्यापकता और शीघ्रता नहीं आ रही है, इसका कारण यह है कि जैसे हमने पहले कहा है, कोई भी चीज जब अस्तित्व में आती है, तो उसकी एक शक्ति, उसका एक धर्म उसी में होता है जो उस को टिकाये रखता है, खतम नहीं होने देता है। खादी कार्य जिस रूप में समाज में आया तब उसमें भी एक शक्ति थी राहत और रोजी देने की। उसी शक्ति के बल पर वह काम चला, बना रहा। फिर भी प्रकृति का यह भी नियम है कि प्रत्येक वस्तु की वह शक्ति कुछ समय के बाद खतम हो जाती है, और उस वस्तु का लोप होता है।

खादी की यह शक्ति यद्यपि आज खतम नहीं हो गयी है, बल्कि जैसा आज सरकार और पं॰ नेहरू जैसे बड़े लोग कहते हैं और मानते हैं, खादी में यह शक्ति अभी कई वर्षों तक रहने वाली है। इस अर्थ में इसकी उपयोगिता रहने वाली है, परन्तु हम एक बात भूल जाते हैं और वह यह कि गांधी जी की खादी का जन्म केवल राहत पहुँचाने और रोजी देने भर के लिए नहीं हुआ है। गांधीजी ने उसे अहिंसक समाज की स्थापना का साधन बताया था और समाज निर्माण करने की उसकी असली शक्ति है जिसकी तरफ हमने आज तक जितना ध्यान देना चाहिए था उतना नहीं दिया है। केवल उसकी राहत व रोजी देने की शक्ति पर अधिकतर निर्भर रहे हैं। इसका हमें एक प्रकार से मोह हो गया है। पुरानी चीज से चिपके रहने की मनुष्य मात्र की आदत है, स्वभाव है। हम सब उसके दोषी हैं।

असल में हमें समाज की सेवा और विकास में उसके किसी एक ही अंग से चिपके नहीं रहना चाहिए। समाज को पूर्ण और समग्र दृष्टि से देखना चाहिए। समाज का जो लक्ष्य है उसे प्राप्त करने के साधन और मार्ग में काल के अनुसार बराबर परिवर्तन होता रहता है। यही कारण है कि उन परिस्थितियों का तटस्थ अध्ययन करके उनके अनुरूप कार्यक्रम और नीति निर्धारित करने की हमारी नीति और शक्ति होनी चाहिए। इसी को एक अर्थ में पोलिटिकल दृष्टि कहते हैं। रचनात्मक कार्यकर्ताओं में आज इस दृष्टि का बहुत अभाव सा दिखता है।

प्रश्न—पोलिटिकल व्यू अपनाने को आप कह रहे हैं। तो क्या हम राजनीति में भाग लें? चुनाव आदि बातों में भी पड़ें?

उत्तर—आप उस शब्द का अर्थ समझ लीजिये। पोलिटिकल का अर्थ शासन या सत्ता का झगड़ा नहीं है। समूचे समाज की व्यवस्था को पोलिटीक्स कहते हैं। राज्य या समाज के हित के लिए, हम सोचें, केवल किसी एक अंग से चिपके रह कर बाकी अंगों को भूल न जायें—इसे ही पोलिटिकल व्यू कहता हूँ। खादी कार्यकर्ता कहें कि देश का भला अगर किसी में है तो वह केवल खादी में ही। गो सेवा के कार्यकर्ता कहें कि गाय की सेवा में ही सारे देश का भला है, और किसी में नहीं। इसी प्रकार प्रत्येक प्रवृत्ति में लगे हुए लोग अपने अपने काम को सर्वस्व मान बैठें, समाज का पूरा चित्र उनके सामने न हो, बदलती परिस्थिति का भान न हो, तो उनका काम चाहे जितना उपयुक्त हो तो भी वह एकांगी होने के कारण वे समाज का सही मार्ग दर्शन नहीं कर सकेंगे। इस लिए मैंने कहा कि प्रत्येक कार्यकर्ता को अपने हाथ के काम में निष्ठा पूर्वक लगने के साथ-साथ संपूर्ण और समग्र समाज के हित की दृष्टि से सोचना आवश्यक है।

नये-मोड़ का विचार यही है। परन्तु संस्थाओं में काम करने वाले अधिकतर कार्यकर्ता लोग अपने काम में व्यस्त हैं और इस विचार को जितना चाहिये, उतना कार्यान्वित नहीं कर रहे हैं। जो व्यापारिक काम चल रहा है उसी में एक प्रकार से जकड़े गये हैं, उलझ गये हैं। व्यापारिक काम ही ऐसा है। वह एक दुष्ट चक्र है। एक के बाद एक शृङ्खला में फँसे ही रहना पड़ता है। जो लोग बरसों से यही काम करते आये हैं उनके लिए यह छोड़ना केवल कठिन ही नहीं, बल्कि भयानक लगता है। यही कारण है कि नये मोड़ का विचार निर्दिष्ट और व्यवहारिक ही नहीं बल्कि जमाने का तकाजा बना हुआ है तो भी वह उनको एकदम अव्यवहारिक लगता है और उसे अपनाने की हिम्मत वे नहीं कर पा रहे हैं। आन्दोलन में वेग न आने का यही प्रमुख कारण है।

प्रश्न—तो इसके लिये फिर क्या करना चाहिए?

उत्तर—सीधी सी बात है। सबसे पहले प्रत्येक कार्यकर्ता के मन में नये-मोड़ के विचार की स्पष्टता कर देनी चाहिए। एक भी कार्यकर्ता इस बारे में संशय न रखे कि हमारा साध्य क्या है और उसका साधन कौन सा है। स्वतन्त्रता संग्राम के सिपाहियों में उनदिनों कम से कम इतनी बात तो भी बिलकुल साफ थी कि उनका साध्य "स्वराज्य प्राप्ति" था और शांतिमय उपायों से ही वह प्राप्त करना था। इसी तरह आज हमारे सभी कार्यकर्ता स्पष्ट और निःसंदिग्ध भाव से समझ लें कि सर्वोदय समाज की स्थापना हमारा आखरी लक्ष्य या साध्य है। उसे सिद्ध करने का उपाय कृषि-उद्योग-प्रधान समाज की स्थापना है। आज तक जिस प्रकार यह विचार केवल हवा में रह रहा है, उसके बदले विचार में प्राण लाना जरूरी है। इसके लिए निश्चय पूर्वक, व्यापक रूप से इसे हमें हाथ में लेना चाहिए। यह पहली बात।

दूसरी बात जहाँ जहाँ आज हमारे खादी उत्पादन के केन्द्र हैं उन्हें नये-मोड़ के कारण बंद करना होगा ऐसा जो आम तौर पर समझा जाता है वह गलत है। बल्कि उसी गाँव या ग्राम के समूह को हम अपना सम्पूर्ण विकास का क्षेत्र या इकाई मानें और अपनी कार्य पद्धति में जरूरी परिवर्तन करें। केवल खादी उत्पादन की या खादी के जरिये रोजगार देने भर की योजना बनाना छोड़ कर संपूर्ण क्षेत्र की समग्र योजना बनानी चाहिए। यानी उस क्षेत्र में क्या क्या साधन सामग्री उपलब्ध है, कितनी श्रमशक्ति है और क्या क्या आवश्यकताएँ हैं इन तीन बातों का विस्तृत और सूक्ष्म सर्वेक्षण करना चाहिए। सर्वेक्षण पूरा होने के बाद इकाई के सारे लोगों को एकत्रित करके सारी परिस्थिति उनके सामने रखें और उनकी सलाह और सूझ का उपयोग करके समग्र योजना बनायें। यानी खेती किस फसल की कितनी हो कौन-कौन से उद्योग कितने परिमाण में चलाना आवश्यक है, यह निर्धारित करना है। आरोग्य शिक्षण और रक्षण की क्या और कहाँ व्यवस्था हो, लड़ाई झगड़े आदि का गाँव में ही निपटारा करने के लिए किस प्रकार की व्यवस्था की जाय आदि सारी बातों का सब मिल कर तय करें। अर्थात् इकाई के सारे लोगों के सामने उनके गाँव या क्षेत्र का संपूर्ण चित्र (टोटल पिक्चर) होना चाहिए। यही खादी का नवसंस्करण है, खादी का नया मोड़ है।

फिर यदि गाँव की इस प्रकार की योजना बनती है तो लोगों को यह समझना होगा कि बेकारों को रोजी देना और खाने-पहनने भर की आवश्यकता की पूर्ति करना समाज का यानी गाँव के प्रत्येक व्यक्ति का कर्तव्य है। यह भी सामाजिक न्याय के आधार पर होना चाहिए। काम देने में और काम के मुआवजे के तौर पर जो मजदूरी देते हैं उसमें इस सामाजिक न्याय की दृष्टि प्रमुख रखनी चाहिए। मजबूरी की हालत में कोई भी व्यक्ति जितना मिले उतने में संतोष कर लेता है। पर समाज का कर्तव्य यह है कि इस प्रकार की मजबूरी किसी की न रहे। प्रत्येक को कम से कम जीवन-निर्वाह व्यय अमुक मात्रा में मिलना ही चाहिए, इस प्रकार का संकल्प समाज को करना चाहिए। एक दम उस हद तक आज इस न्याय को साध न पायें तो भी कम से कम इतना तो हो ही सकता है कि उस न्याय को दृष्टि में रख कर वर्तमान परिस्थिति के अनुरूप, कुछ कम ही सही, पर समझ बूझ कर एक किमान मर्यादा निर्धारित की जाय।

एक बात भूलनी नहीं चाहिए कि यह सारा काम बिलकुल आसान नहीं है। लोगों को इस के लिए तैयार करना होगा। यह सारा लोक शिक्षण का काम है। धीरे-धीरे लोग इस दिशा में शिक्षित होते जायेंगे। वे लाभ देखेंगे और प्रोत्साहित होंगे। हानि देखेंगे, और सुधार लेंगे। पर मुख्य बात यह कि यह लोक शिक्षण का काम हम रचनात्मक कार्यकर्ताओं को अपने हाथ में लेना चाहिए। यही ग्राम विकास की नयी तालीम पर आधारित प्रक्रिया है।

निकम्मी तालीम

मैं देखता हूँ कि जगह-जगह शालाएँ खुलती हैं, मगर मुझे वे सब प्राणहीन दिखाई देती हैं। थोड़ा-सा अक्षरज्ञान दे देते हैं। पर जीवनोपयोगी ज्ञान नहीं मिलता। अपने देश में दारिद्र्य है, इसका मुझे इतना दुःख नहीं जितना अज्ञान का है। और लोगों को अज्ञान से छुड़ानेवाले शिक्षित लोग दिखते ही नहीं। हम सब शिक्षितों को यह भूलना नहीं चाहिए कि उन सबने ही हमें सिखाया है। उन्होंने कष्ट करके अन्न पैदा किया और हमें खिलाया। तभी हम (शिक्षित लोग) यह शिक्षा प्राप्त कर सके यह बात हम भूल ही रहे हैं। गाँव गाँव में अज्ञान भरा पड़ा है और शिक्षित लोग अपने-अपने संसार में रत हैं। दूसरों की ओर देखने का उन्हें समय नहीं। इसका कारण यही है कि आज जो तालीम दी जा रही है, वह निकम्मी है। अब उसमें कोई पराक्रम ही बाकी नहीं रहा। आज की शिक्षा में धर्म विचार, चारित्र्य, शरीर-ज्ञान, अध्यात्म-विद्या कुछ भी नहीं मिलता। ऐसी तालीम के खिलाफ लोगों को आवाज उठानी चाहिए। सेना पर जो खर्च होता है, उसकी तुलना में तालीम पर कुछ खर्च नहीं होता। आज की तालीम पाकर कोई गाँव में नहीं रहता। परिणाम यह होता है कि श्रम-शक्ति और बुद्धि, दोनों गाँव को छोड़ कर चले जाते हैं। समझदार लोगों को चाहिए कि जगह जगह वे अपनी तालीम चलावें। सरकार को कहा जाय कि आप जो लगान लेते हैं, उसमें से एक हिस्सा इस शिक्षा के लिए दीजिए। लोग ऐसा अभिक्रम बतायेंगे, तभी आज की तालीम में फर्क हो सकेगा।

—विनोबा

केवल सेवकत्व, केवल नागरिकत्व, और नागरिक सेवकत्व

दामोदरदास मूंदड़ा

'भूदान-यज्ञ' के हाल के दो अंकों में श्रद्धेय धीरेन्द्र भाई ने सेवक की जनाधारितता व उसकी सेवा करने की योग्यता के संबंध में मूलभूत प्रश्नों की चर्चा की है। कुछ लोगों को उनके अनुभव पूर्ण सुझावों की यशस्विता के बारे में ही नहीं अपितु उनके औचित्य के बारे में भी संदेह होता हैं। यह स्वाभाविक भी है। मनुष्य जब किसी क्रांतिकारी कार्यक्रम का पूरी तरह साथ नहीं दे पाता तो अपनी स्थिति को सम्हालने के लिए वह कुछ तर्क दार्शनिक उसूल भी प्रस्तुत करने का प्रयत्न करता है। श्री धीरेन्द्र भाई के सुझावों पर हमें पूर्वाग्रह रहित होकर क्रांति की कसौटी के आधार पर सोचना चाहिए।

अभी-अभी मेरे पास लंदन के श्री अर्नेस्ट बॉडर का पत्र आया है। उन्होंने हमारे कार्यकर्ताओं के जीवन निर्वाह के साधन के बारे में जानने की इच्छा प्रकट करते हुए एक मार्मिक सवाल पूछा है कि आज जिस तरह से भूदान के कार्यकर्ताओं का निर्वाह चलता है उससे क्या शोषण रहित समाज रचना संभव है?

सवाल यह है कि हम अपने अनुभवों के आधार पर अपने आप में कितना सुधार करने के लिए तैयार हैं? *हमारी संवेदनशीलता कायम है या कम* रही है, *या कम* हो चुकी है, याने मुर्दा हो चुकी है। हम क्रांति के लिए केवल लालायित और उत्सुक हैं या उसके लिए आवश्यक पुरुषार्थ करने को भी तैयार हैं।

एक अनजान मित्र मोहनदास करमचन्द गांधी नाम के एक साधारण व्यक्ति को 'अन टू दि लास्ट' नाम की एक छोटी सी पुस्तिका प्रदान करता है और गांधी उसे तत्काल देख जाते हैं। परिणाम यह होता है कि उनकी संवेदनशीलता और ईमानदारी उन्हें मजबूर करती है कि अपना प्रेस और कारोबार शहरी जीवन के ठाठ बाट से दूर हटाकर देहात के श्रमाधारित वातावरण में ले जाया जाय।

कौन नहीं जानता कि गांधी स्वराज्य पूर्व विषम परिस्थिति में भी और हजारों महान् सामाजिक राजनैतिक *जिम्मेवारियों* का भार वहन करते हुए भी मगनवाडी से सिंधी तक चलकर जाकर भंगी के काम में प्रतिदिन दो घंटे का समय दिया करते थे। सेवाग्राम में शुरू-शुरू में स्वयं रसोई बनाने और अपने हाथों सबको परसने के काम को जीवन का आवश्यक अंग मानते थे, कुष्ठ पीडितों की रुग्ण सेवा को अपने हाथों संपन्न करते थे और अदालत में अपने को बुनकर या भंगी बताने में गौरव का अनुभव करते थे। और उनका यह दावा केवल भावनात्मक नहीं था, उनके निजाचरण के गौरव से *प्रकट हुआ था। और कौन नहीं जानता* कि श्रम की प्रतिष्ठा प्रस्थापित करने के लिए अनेक ग्रंथों को लिखने के बावजूद टॉलस्टाय को तब तक संतोष नहीं हुआ जब तक कुदाल लेकर खुद खेती में काम *करने के लिए वे घर से निकल नहीं पड़े।*

और कौन नहीं जानता कि भूदान यज्ञ के आवाहन पर आश्रम छोड़कर परिचर्या के लिए मजबूर होने के समय तक भूदान यज्ञ के पुरोहित स्वयं कूप निर्माण में पत्थर छोड़ने से लेकर मिट्टी ढोने तक की सभी क्रियाओं में घंटों पसीना बहाते रहे, रेतीली और पथरीली जमीन का खेत सुधारने के लिए एक मामूली मजदूर की तरह दिन-दिन भर परिश्रम करते रहे, और आठ घंटा सूत कताई से प्राप्त होने वाले चंद पैसों पर ही महीनों जीवन निर्वाह करते रहे।

माना कि स्वराज्योत्तर निर्मित परिस्थिति में भूदान यज्ञ के विधायक आवाहन ने हजारों कार्यकर्ताओं को देशभर में प्रचारात्मक ढंग से कार्य करने की आवश्यकता दी जिसका अपने आप में एक ऐतिहासिक मूल्य है और उस समय प्राप्त परिस्थिति में जो कुछ सुझाव किया गया उसमें दोष दर्शन की आवश्यकता नहीं न उसका औचित्य ही है। परन्तु उस वक्त भी एक जरूरी काम जो शायद यदि हमारी सूझ-बूझ के बाहर का नहीं था, तो हमारी *शक्ति के बाहर का होगा लोक-मानस में* निर्मित वैचारिक क्रांति को परिपुष्ट, प्रभावी व स्थायी बनाने के लिए कुछ आचाराधारित कार्यक्रम की बुनियादें डालकर एकाध परिश्रम द्वारा उसे सींचते रहने का, हमारी *कार्य-प्रणाली का अंग नहीं बन सका।* हमारी योजना से छूट गया।

और परिणाम यह हुआ कि आज, जब कि हमारी क्रांति की वैचारिक भूमिका से देश काफी परिचित हो चुका है, अपने काम के तरीकों में नवीनता लाने को हम तैयार नहीं है, उसकी कमियों को समझ कर उसे *पूरा करने में हमें संकोच हो* रहा है।

प्रचारक के नाते हमारा जीवन कितना ही त्यागपूर्ण क्यों न हो, हम लोगों की प्रशंसा के पात्र बन जाते हैं पर हमारा अनुकरण लोग नहीं करते। इसी लिए विनोबा ने हमेशा कहा कि-'शिवभूत्वा शिवं *यजेत्!' पदयात्रा यद्यपि अपने आप में एक* श्रमाधारित व जनाधारित जीवन का नमूना है, फिर भी जब तक बन सका, अल्सर की बीमारी के बावजूद विनोबा दस-बारह-पन्द्रह मील चल चुकने पर भी घन्टा घन्टा भर *श्रमदान का काम उत्साह से करते रहे।* जब उनके हाथों ने इनकार कर दिया, और वे चर्खा कातने के लिए भी अपने आपको असमर्थ पाने लगे, वह कार्य-क्रम उन्होंने अपनी हद तक पदयात्रा में स्थगित किया। परन्तु हमने समझा नहीं, उन्होंने बन्द किया तो हमें दुगुने उत्साह से चलाना चाहिए था, उन्हें जब रोक कर हमें उठा लेना चाहिए था हमने रोका तो नहीं, चलाया भी न हो। विनोबा की इच्छा रही कि वह चले परन्तु हमारी जड़ता ने हमारे अंगों को शिथिल बना दिया।

आज हमारे काम में यदि पुनः तेज लाने की हमारी इच्छा है, वह सर्व सामान्य जनता का कार्यक्रम बने ऐसी हमारी भावना है तो जैसा कि श्री धीरेन्द्र भाई ने साफ शब्दों में कह *दिया है, कि कार्यकर्ता नाम से कोई* अलग वर्ग समाज में न रहे, याने नागरिकत्व व सेवकत्व का भेद मिट कर नागरिकत्व में ही सेवकत्व प्रगट हो अर्थात् आज के सेवकत्व भी नागरिकत्व में, यानी श्रमाधारित नागरिकत्व में परिवर्तित हो जाय। विचार *प्रचार का कार्य भी सतत जारी रहे,* वह बन्द न रहे, इसलिए यह परिवर्तन नागरिकत्व एकाकी न हो, गण सेवकत्व के स्वरूप का याने एक समूह के रूप में हो ताकि उस समूह का एक अंग बारी बारी से, श्रमाधारिकता से अलग न दिखाई देने की लक्ष्मण की रेखा का पालन करते हुए, क्रांति के विचार प्रचार के आवश्यक अंग की पूर्ति भी करता रहे। जहां यह संभव *न हो, वहां हम निष्ठा से श्रमाधारित* जीवन अपने आप में स्वयं एक महान् *लाभ है, कार्यकर्ता अपने सेवकत्व* को नागरिकत्व में परिवर्तन करने में संकोच न करे।

लेकिन हमारा बदकिस्मती यह है कि हम अपने महापुरुषों के शब्दों को *पकड़ लेते हैं, उन शब्दों के संदर्भों* को नहीं समझते स्वयं उन महापुरुषों के जीवन को नहीं देखते। "विनोबा *ने कहा है कि हमें तो नारद की* तरह 'चरैवेति' करते रहना है, हमें तो *हनुमान की तरह आग लगाते रहना है,* हम तो समस्या निर्माण करने के लिए निर्माण हुए है, न कि सुलझाने के लिए"—आदि-आदि सूत्रों का आधार देकर हम विनोबा की नकल करने का प्रयत्न करते हैं। *भूल जाते हैं कि विनोबा की वाणी में सर*स्वती ने जो यह बल भर दिया है वह कोई *'अकस्मात्* नहीं है, उसके मूल में विनोबा की पूरी तीन तपों की श्रमनिष्ठ जीवन की कड़ी तपश्चर्या है। हमें ऐसी तपश्चर्या करने की प्रेरणा नहीं होती। विनोबा के गृहस्थाश्रम में निहित कड़ी परीक्षा से *अछूते रहकर उनकी वानप्रस्थ और* सन्यास अवस्था की नकल करने का प्रयत्न करते हैं। भारत का जनमानस अब हमारी प्रचारात्मक भूमिका से परिचित होने के कारण उसके प्रति विशेष आकृष्ट होने की स्थिति में नहीं है, जब तक हम अपने केवल वाद से याने केवल प्रचारात्मक भूमिका *से हटकर उनकी तरह श्रमनिष्ठ* जीवन को अपने सारे काम का आधार नहीं बना लेते। चूंकि हमारा श्रम मामूली श्रमिक के श्रम की तरह जड़ श्रम नहीं होगा—वह यज्ञ कर्म और चिन्मय होगा। उसके भीतर क्रांति की संभावनाएं निहित हैं।

जब हमारा जीवन एक सामान्य नागरिक के नाते सर्व सामान्य जनता के सामने चौबीसों घंटा प्रकट और स्पष्ट रहेगा तो आज की तरह हम जनता के केवल श्रद्धापात्र किन्तु अननुकरणीय दुर्लभ जीव नहीं बने रहेंगे—हमारा जीवन सर्व सामान्य के लिए परिवर्तनकारी गुण की *क्षमता रखेगा।*

चूंकि समाज के हर फ्रंट पर इस प्रकार के संयोजन की आवश्यकता है। कार्यकर्ता जहां भी और जैसी परिस्थिति में भी है, स्वधर्म की जिम्मेवारियों को न छोड़ते हुए, उसे सिर्फ अपने जीवन में आवश्यक परिवर्तन लाने की आवश्यकता है। थोड़े गंभीर चिंतन से प्राप्त परिस्थितियों से मार्ग अपने आप सूझ सकता है। कोई प्रश्न हो तो उसकी चर्चा होकर मार्ग निकालने का प्रयत्न किया जा सकता है। इसलिए श्री धीरेन्द्रभाई ने आज के संदर्भ में जो सुझाव रखा है कि कार्यकर्ता वर्ग *न रहे—सही और कारगर सुझाव प्रतीत* होता है आज के सेवकत्व को नागरिकत्व *में परिवर्तित होने की आवश्यकता है।* क्रान्ति की प्रक्रिया में आज परिस्थिति की यही मांग है।

मुक्ति

ईख एक बार भगवान के दरबार में उपस्थित हुई और रोकर अपनी फरियाद करने लगी।

'भगवान! जो भी मुझे देखता है खाने को दौड़ता है, मेरी रक्षा कीजिए।'

भगवान मुस्कराये और बोले—

'पगली! यही तेरा सौभाग्य है, और यही तेरी मुक्ति है।'

विनोबा-यात्री-दल से

कुसुम देशपांडे

कन्याकुमारी से कश्मीर तक और सौराष्ट्र से जगन्नाथपुरी तक एक प्रदक्षिणा पूरी हुई थी। अब असम में कदम रख कर भारत की यात्रा पूरी हो रही है। रात खतम हो रही थी दिन उगनेवाला ही था कि जब बाबा बंगाल-असम की सीमा पर पहुँची। बंगाल के कार्यकर्ताओं ने बाबा को प्रणाम करके विदाई दी और असम के कार्यकर्ताओं ने 'जय-जगत्' के नारे से स्वागत किया। पंचारती, कुंकुम और तिलक से बहनों ने मंगल स्वागत किया। सीमा पर रास्ते के किनारे छोटी सी मजलिस में, स्वागत-विदाई के भाषण हुये।

श्री चारुचन्द्र भंडारी ने कहा "हम अत्यन्त 'भार-भरे हृदय' (हेवी हार्ट) से विदा दे रहे हैं। बंगाल की यात्रा में बाबा बीमार हुये और उसी अवस्था में यहां से जा रहे है, हमारे मन में आता है कि जैसे बच्चे की व्याधि-दुःख, दर्द सब मां उठा लेती है, चाहती है कि बच्चा स्वस्थ हो और मैं खुद बीमार हो जाऊँ, उसी तरह से बंगाल प्रदेश के दुःख और व्याधि सब खुद लेकर बाबा यहां से जा रहे हैं।"

असम की ओर से स्वागत करते हुये अमियकुमार दास, एम० एल० ए० ने कहा "आप के आगमन से असम को अपनी जिम्मेदारी का भान होगा। आपकी वाणी हमें प्रेरणा देगी, हमारे हृदय को स्पर्श करेगी। यहां जो कुछ अप्रिय घटनाएँ हुई है, उसके लिये हमारे सब के मन में दुःख है। यहां कुछ भौगोलिक समस्याएँ भी है। जन संख्या भी बढ़ी है। देश के विभाजन का फल भी हमें भुगतना पड़ा है। हमें आशा है आपकी यात्रा से असम की सब समस्याओं का हल निकलेगा।"

असम-सरकार की ओर से मजदूर-मन्त्री श्री कामताप्रसाद त्रिपाठी ने स्वागत में कहा "आपके आगमन से मानवता के सूर्य का उदय इस भूमि में होगा और हमें नया-बल मिलेगा। असम को नैतिक और आध्यात्मिक शक्ति मिलेगी।"

विनोबाजी ने अपने छोटे से भाषण में कहा—"भारत में प्रथम सूर्योदय असम में होता है और उसके बाद दूसरे प्रदेशों में होता है। हम यहां प्रकाश लेने के लिये आये हैं। जो लेना चाहता है उसे देना भी पड़ता है। जो देना पड़ेगा वह हम देंगे। हमें यहां आना ही था। यहां आये बिना हमारी भारत-यात्रा पूरी न हो सकती। हम भारत का हृदय समझ चुके हैं। भारत के लोगों में बहुत श्रद्धा भरी है। बहुत प्रेम भरा है। कुल भारत का प्रेम और श्रद्धा साथ लेकर हम यहां आये है। दस साल के बाद हम यहां आ रहे हैं। अपरिपक्व विनोबा भारत में घूम चुका। अब आपके पास वह विनोबा आ रहा है, जो गलतियाँ उसने वहाँ की, वह यहां नहीं करेगा ऐसी आशा है। नम्र भाव से अपनी परिपक्व बुद्धि आपकी सेवा में अर्पित करेगा। परिपक्व बुद्धि होने पर भी गलती करेगा तो उसे आप क्षमा करें। एक बात मुझमें है। मैं निर्भय हूँ, इसलिये जो भास होगा वह बिना-संकोच के और बिना-डर से कहूँगा। लेकिन जो कुछ भी कहूँगा वह गुण ग्रहण-दृष्टि से ही कहूँगा। मुझे विश्वास है कि इस प्रदेश का पूरा प्रेम पाऊँगा। और पूरा प्रेम पाकर ही इसे छोडूंगा।"

असम के राज्यपाल जनरल श्री नागेश तथा उनकी पत्नी पहले दिन पड़ाव पर स्वागत के लिये आयी थी। असम प्रदेश कांग्रेस के अध्यक्ष, पार्लियामेन्ट की सदस्या श्रीमती पुष्पलतादास और अन्य छोटे बड़े सब नेता तथा कार्यकर्ताओं ने प्रथम अभिवादन किया। उस दिन विनोबाजी ने सुझाव रखा कि 'जैसे फारसी लिपि पश्चिम में ईरान से अल्जिरिया तक चलती है वैसे नागरी इधर से टोकियो तक चल सकती है। हम चाहते हैं कि असम में नागरी लिपि चले। उससे कई समस्यायें हल हो जायेंगी। पहाड़ी लोगों को हिंदी और असमी ऐसी दो लिपियाँ सीखनी होगी उससे दुहरी तकलीफ होगी। मराठी की लिपि नागरी है, हिंदी की भी लिपि नागरी है। इसलिये मराठी वाले को हिन्दी और संस्कृत सीखने में तकलीफ नहीं होती। वैसे आप नागरी चलायें तो आपके बच्चों को यह लाभ मिलेगा और दूसरे लोगों को भी असमी सीखने के लिये सुविधा होगी।"

"असम के महापुरुष शंकर देव ने जो धर्म ग्रन्थ लिखे हैं। उनको संक्षिप्त करके नागरी में छापा जाता तो वह भी चीज सारे भारत में जा सकती थी। सरकार के पास बहुत काम है। ऐसे काम के लिये आप में से किसी को स्वयं स्फूर्ति से आगे आना चाहिये।"

विनोबाजी जब असम के रास्ते पर थे, तब रोज सुबह रास्ते में नाश्ते के समय पूरब की ओर अभिमुख होकर कहा करते थे देखो यह है "असम का सूर्य।" अब वे असम के लोगों को यह बताते हैं और कहते है कि 'इस तरह असम का ध्यान करते करते मैं यहाँ आया हूं।" असम का नक्शा, असम का गजट कई बार देखा करते हैं। असम के विषय में प्रमुख साहित्य भी पढ़ते रहते है। ऐसे ही एक दिन कार्यकर्ताओं को पूछ रहे थे कि 'तेजपुर में मानसिक चिकित्सालय है। वहां हिन्दु स्त्री पुरुषों की संख्या का प्रतिशत दूसरों से ज्यादा है। ऐसा क्यों? इनका ज्यादा पागलपन होने का कारण क्या है?"

एक भाई ने धीरे से कहा "थोड़ा ज्यादा गांजा पीते है, शिव भक्ति का परिणाम है।" सब लोग खिलखिला कर हंस पड़े।

बाबा—गांजा पीना यह कारण (काज) है कि असर (इफेक्ट)? क्या धार्मिक लोगों ने विरोध नहीं किया?

फिर से सब लोग हंस पड़े।

एक भाई—वे भी पीते हैं! धर्म के लिए कुछ पागलपन जरूरी भी होता है न?

फिलहाल गोवालपाड़ा जिले में यात्रा शुरू है। इसलिए जिले में मुस्लिम जन-संख्या ज्यादा है। दाताओं में, स्वागत-समिति में, पड़ावों के इन्तजाम में मुस्लिम भाई दीखते है। रास्ते में चर्चा करने के *लिए एक दिन एक भाई आये थे। वे हायर* स्कूल के शिक्षक थे।

विनोबाजी—आपका नाम क्या है?

भाई—नैजू बासित्।

विनोबाजी—आपने कुरानशरीफ पढ़ी है।

भाई—जी हां।

विनोबाजी—कौन सा हिस्सा अच्छा लगा आपको?

भाई—"हम तुमको जांचते हैं बुराई और भलाई से आजमाने को।" यह जहां कहा है, वह अच्छा लगता है।

विनोबाजी—आपको भगवान् ने कितना दिया है? भूखा तो नहीं रखा है।

भाई—जी नहीं! आपकी दुआ से मैं सुखी हूं।

विनोबाजी—तब तो आपको देना चाहिए। अल्ला ने आप को ज्यादा इस लिये दिया है कि आप दूसरों को दें। आप की आजमाइश होगी। आप का नाम बासीत् है ना!

यों कह के बाबा ने कुरान की आयात गाकर सुनाई। वे भाई आश्चर्यवत् देखने लगे।

"अल्ला यबसुतुर् रिजक लिमन् यशाऊ व यक़दिर"

अल्लाताला चाहता है उसका जीवन साधन बढ़ाता है और चाहता है उसको कम करता है। यह आयात कुरान में आठ बार आयी है।

आप का नाम बासीत् है—याने व्यापक—तो आप इस काम को खूब फैलाइये"

इस तरह एक-एक के साथ दोस्ती हो रही है, खुले दिल से चर्चा हो रही है। विनोबाजी चाहते हैं कि असम के कार्यकर्ताओं के नाम याद रखूं। वे कहते हैं कि किसी को याद करना है तो उनके नाम, रूप, गुण और उसका कर्म यह चारों चीजें मालूम होनी चाहिए। रोज सुबह ११ बजे पद-यात्रा में साथ चलनेवाले असम के कार्य कर्ताओं से बात-चीत होती है। एक दिन विनोबाजी ने कहा "अब धीरे-धीरे आपके चेहरे मेरे ध्यान में रहने लगे है।—एक दफा आश्रम में मुझे एक चिट्ठी मिली। उसमें मुझे पूछा गया था कि आपके आश्रम में दो महीने रहे हुए भाई ने हमारे पास नौकरी मांगी है। आप की उस भाई के बारे में राय क्या है! उस भाई का नाम भी दिया था। लेकिन मुझे कुछ याद नहीं आ रहा था। अगर मैं यह लिखूं कि मुझे याद नहीं है तो वह शख्स झूठा माना जाता, बदनाम होता। इस-*लिए मैंने अपने साथियों को पूछा तो उन* लोगों ने बताया कि हां यह शख्स अपने आश्रम में दो महीने रहे थे और उन्होंने बहुत अच्छा काम किया था। अब ऐसी हालत थी। जो शख्स दो महीना मेरे आश्रम में रहा था, उसका मुझे न चेहरा याद आता है न रूप! ऐसे आदमी से आपका संपर्क आया है! फिर भी आप लोगों का बार बार संबंध आयेगा। अगर खुलेगा तब नाम, रूप याद रहेंगे। उसके लिए गुण और कर्म भी याद रहना चाहिए। तब आप को मेरा और आप का मुझे उप-योग होगा और मैं आपसे काम ले सकूँगा। अन्यथा मेरे आप भाषण सुना करें, ग्रंथ से भी कुछ मिल सकता है। पर साक्षात् कार्य करना है इसलिए अन्योन्य परिचय होना चाहिए।—लेकिन मेरी बहुत धीमी प्रक्रिया है। फिर भी इन दिनों गति जरा बढ़ी है।"

असम में तरह-तरह की जातियाँ, धर्म और भाषा हैं। पहाड़ी लोग है, नागा, आदि-वासी, हिन्दू मुसलमान इसाई हैं। असमी, बंगाली, आदिवासी इत्यादि की भाषायें है।—विनोबाजी कहते हैं जैसे एक बड़ा इन्लार्जड चित्र होता है और उसका छोटा रूप होता है। असम भारत का एक छोटा रूप है। यहां इतनी विविधता है। यह विविधता असम की शक्ति हो सकती है। इस विविधता का उपयोग विकास में करना है कि विनाश में—यह आपकी अक्ल पर है।"

कुछ लोग कहते हैं कि असम पिछड़ा है क्योंकि इस प्रदेश में शहर कम है। विनोबाजी गाँववाले से कहते है "शहर कम है तो अच्छा ही है। शहर देहातों को लूटते हैं। कलकत्ता आसपास के गाँवों को चूसता है। जब अकाल पड़ा था और ३० लाख लोग, अन्न नहीं मिला, इसलिए मर गये थे। वे लोग कलकत्ते के रास्ते पर मरे थे। शहर ने उनके लिये क्या किया? कुछ नहीं। आज सारे असम में लोग ९५% गाँवों में रहते हैं और ५% शहरों में। फिर भी आज राज शहर का क्यों है? क्योंकि गाँववाले एक नहीं होते। इसलिए उनकी आवाज बुलंद नहीं होती है। इसलिए तुम लोग एक हो जाओ। धर्मभेद, भाषाभेद जातिभेद, सब भेदों को भूल जाओ।"

डेढ़, दो साल पहले कश्मीर में १३॥ हजार फीट बुलंदी के पीर पंजाल को लांघते हुए कुछ घने जंगल से जाना हुआ था।

गरीबों की ताकत बढ़ाने की तीन मिसालें

विनोबा

[पिछले दिनों विनोबाजी अपनी पदयात्रा के दौरान में श्री धीरेन्द्र भाई के गांव बलिया पहुँचे, वहाँ धीरेन्द्र भाई स्वतंत्र जन शक्ति विकास के लिए सर्वजनाधार-धमाधार का क्रान्तिकारी प्रयोग कर रहे हैं। इसको ध्यान में रखकर विनोबाजी ने जो विचार प्रकट किये वे नीचे दिये जा रहे हैं —सं]

पहली

"सबसे ऊँची प्रेम सगाई", इस भजन में प्रेम की शक्ति का सूरदासजी ने जिक्र किया है। श्रीकृष्ण हस्तिनापुर गये थे, बातचीत के लिए कौरव-पाण्डव के बीच तैयारी हो रही थी। भगवान श्री कृष्ण कहाँ ठहरेंगे, इसके लिए चर्चा चली। धृतराष्ट्र की आज्ञा से बादशाह का महल तैयार था। लेकिन भगवान ने कहा कि नहीं, हम विदुर के घर ठहरेंगे, गरीब के घर जायेंगे। उस घर में उनको खाने में सिर्फ तरकारी मिली, वह उन्होंने खायी। "साग विदुर घर खायो।" क्यों? इसलिए कि विदुर की महिमा भगवान बढ़ाना चाहते थे, भक्त की शक्ति बढ़ाना चाहते थे। भगवान के लिए जगह की कमी तो नहीं थी। राजमहल भी उनके लिए रखा था। लेकिन वे अगर महल में ठहरते तो भक्त की महिमा में ताकत नहीं बढ़ती। भगवान की महिमा तो लोग गाते ही हैं, लेकिन विदुर के घर वे रहे तो सब लोग समझ गये कि विदुर की भक्ति अपनी महिमा है। इस तरह भक्त की ताकत बढ़ाने का काम भगवान ने किया।

दूसरी

राउण्डटेबुल कान्फ्रेंस के लिए महात्मा गांधी इंगलैंड गये थे। उनके रहने के लिए वहाँ महल तैयार था। वे हिन्दुस्तान के प्रतिनिधि बन कर वहाँ गये थे। बादशाह ने उनके साथ बात की, लेकिन गांधीजी ने वहाँ रहना कबूल नहीं किया। लन्दन में जो सबसे गरीब बस्ती थी, जिसकी उपेक्षा होती थी, वहाँ वे ठहरे। उनका हेतु यही था कि गरीबों की ताकत बढ़नी चाहिए।

तीसरी

यही काम अभी धीरेन्द्रभाई कर रहे हैं। लोग उनसे पूछते हैं कि आपका सम्बन्ध तो सरकार से भी है और दूसरे बड़ों से भी है। कहीं से भी पैसा ला सकते हैं। लेकिन उन्होंने लोगों के आधार पर रहने का तय किया है। वह इसलिए नहीं कि लोगों पर कोई भार पड़े, बल्कि इसलिए कि लोगों की ताकत बढ़नी चाहिए। इसी हेतु से वे यहां बसे हैं। लोगों की ताकत जगानी है तो लोगों में घुलमिल जाना चाहिए। *यहां के लोगों में घुलमिल जाने की कोशिश धीरेन्द्रभाई कर रहे हैं।* एक जमाना आयेगा, जब लोग इसके भी गाने गायेंगे।

सन् १९१६ में हम गांधीजी के पास थे, *तभी वे कहते थे कि हमें बिल्कुल देहात-देहात में बस जाना ही है और उनको* ताकत कैसे बढ़ेगी, यह हमें सोचना है। हम उनके आश्रम में ४५ साल पहले थे। वह जो उनकी सूझ थी, वह कितनी महत्त्व की थी और कारगर थी, उसका अनुभव अब हमें हो रहा है।

लोगों के पास जाकर उन्हीं के साधनों से दौलत और ताकत कैसे बन सकती है, यह हम बताना चाहते हैं। सरकार से ऊपर से मदद मिल सकती है, लेकिन गांव-गांव के लोग गुलाम बनेंगे, तो गुलाम गांव का *आजाद देश रहेगा। आज हर बात में* सरकार की तरफ ताकते हैं। अगर ऐसा ही चलता रहा तो लोग देखते-देखते गुलाम बनेंगे। देश कभी आधार नहीं रख सकेगा। दिल्ली और पटना वालों का ध्यान लड़ाई में ही रहेगा। गांव-गांव के लोग क्या देख पायेंगे? देश को कौन बचायेगा? इसलिए स्वराज्य में यह जरूरी है कि हरएक गांव अपनी ताकत पर खड़ा हो। मदद वे हर गांव को दे सकते हैं, उतनी ही वे आपके गांव को दें। मान लीजिये, आपके गांव में धीरेन्द्र भाई बैठे हैं, उस हालत में अगर गांव के लोग अपने पांव पर खड़े नहीं होंगे तो देश की ताकत नहीं बढ़ेगी। इसलिए अगर यह गांव कोशिश करता है तो अपने पांव पर खड़ा हो सकता *है और यदि ताकत नहीं बढ़ेगी तो गांव के* लोग आलसी बने रहेंगे और एक तरह से *गांव का नुकसान ही होगा। जिनको जमीन* नहीं मिली है, उनको हम जमीन बांट दें तो वातावरण अच्छा बनेगा। इस वास्ते ज्यादा अधिकार गांव का ही होगा, क्योंकि ताकत बढ़ाने का काम है। यह खोज अब चल रही है। यह बहुत जरूरी काम है कि गांव-गांव की ताकत बने।

> दौलत तीन बातों से बनती है—
> दो हाथों से काम करने से।
> दो हाथों का उपयोग करना हम सीखें। दूसरी बात, प्रेम से दो हाथ जोड़े जायँ, तीसरी बात सबकी अक्ल का उपयोग हो।
> *सबकी अक्ल, सबका प्रेम, सबके हाथ ये जो दौलत है, यह सबके सहकार से बनेगी।*

आज देश में हो यह रहा है कि एक-दूसरे की ताकत एक-दूसरे के साथ टकरा रही है। इसलिए देश को ताकत का लाभ नहीं मिल रहा है। दूसरी बात यह है कि कुछ लोग हाथ पर हाथ देकर पड़े रहते हैं और बड़े-बड़े लोग श्रम टालने की कोशिश करते हैं। इस तरह से दोनों *हाथों का उपयोग करना टालते हैं। तीसरी* बात यह है कि सबकी बुद्धि इकट्ठी होगी, *तो दौलत बढ़ेगी, और सबसे बड़ी बात* मानव-धर्म बढ़ेगा।

हमने चार प्रकार के कार्यक्रम दिये हैं।

"राम लक्ष्मण जान की,
जय बोलो हनुमान की।"

राम है ग्रामोद्योग,
सीताजी है भूदान
लक्ष्मणजी है नई तालीम और
हनुमान यानी शांतिसेना

यह कार्यक्रम होगा, तब गांव अपने पांवों पर खड़ा होगा। ऐसे ग्राम-स्वराज्य वाले गांव बनेंगे तो देश का स्वराज्य टिकेगा, नहीं तो वह स्वराज्य खतरे में है।

(बलिया, जि पूर्णियाँ, १-२-६१)

प्राप्ति-स्वीकार

हमारा राष्ट्रीय शिक्षण : लेखक श्री चारुचन्द्र भण्डारी; प्रकाशक अ० भा० सर्व सेवा संघ प्रकाशन, काशी
पृष्ठ ३१९ मूल्य ढाई रुपया

मानवता की नवरचना : लेखक डा० पिटरिम सोरोकिन „ „
पृष्ठ ३०४ मूल्य ढाई रुपया

साहित्य का धर्म : पृष्ठ ७५, मूल्य ५० नये पैसे „ „

चरखा संघ का नवसंस्करण : पृष्ठ १२२ मूल्य एक रुपया „ „

आगे का कदम : पृष्ठ १०० मूल्य पचहत्तर नये पैसे „ „

कल्याण : योगवाशिष्ठ विशेषांक प्रकाशक गीता प्रेस गोरखपुर
पृष्ठ ७०० मूल्य ७ रुपया ५० नये पैसे

पत्र व्यवहार और उनका उत्तर : श्री पूनमचन्द्र रांका
प्रकाशक सर्वोदय भवन नागपुर

भूदान चित्रावली : प्र० बिहार भूदान-यज्ञ कमिटी, पटना-३
पृष्ठ १४ मूल्य मात्र एक रुपया

सरद घोष, प्रे० प्र० हरखचन्द्र बोथरा, ७० नेताजी सुभाष रोड, कलकत्ता १
पृष्ठ-संख्या १०९

असम के बारहवाँ ... दय सम्मेलन सम्पन्न।

असम राज्य का बारहवाँ सर्वोदय सम्मेलन पिछले ८-९-१० और ११ फरवरी को जोरहाट-बरहोला में सम्पन्न हुआ इसमें असम के लगभग २०० कार्यकर्ताओं ने भागलिया। सम्मेलन का प्रारम्भ एक खादी ग्रामोद्योग प्रदर्शनी के उद्घाटन से हुआ।

दि० ९ फरवरी को प्रभात फेरी के बाद असम सर्वोदय-मंडलकी कार्यसमिति की बैठक हुई। सायंकाल विनोबा स्वागत समिति का अधिवेशन हुआ और विनोबाजी के *असम आगमन पर स्वागत समारोह* कार्यक्रम बनाया, विनोबाजी के हर पड़ाव में ५०० सर्वोदय पात्र स्थापन, १ शांति सैनिक १५ भूदान यज्ञ के ग्राहक बनाने का निर्णय किया।

दि० १० फरवरी को असम सर्वोदय मंडल का वार्षिक अधिवेशन सूत्र यज्ञ और पिछले वर्ष का कार्य विवरण और पूज्य विनोबा जी के कार्यक्रम के बारे में चर्चा हुई। सम्मेलन में गांधी, विनोबा और सर्वोदय आन्दोलन के बारे में विविध वक्ताओं के भाषण हुए। संध्या प्रार्थना के बाद असम शान्ति सैनिकों का अधिवेशन हुआ जिसमें लोक सेवक सेविकाओं ने भी भागलिया। शान्तिसेना प्रशिक्षण के सम्बन्ध में चर्चा हुई।

दि० ११ फरवरी को मंडल के अधिवेशन में मंडल के संविधान, रजिस्ट्रेशन आदि के बारे में चर्चा हुई। जिसमें असम सर्वोदय मंडल का रजिस्ट्रेशन, असम के तीन प्रमुख सर्वोदय संघों (असम समग्र सेवा संघ, आश्रम संघ और सर्वोदय संघ) का असम सर्वोदय मंडल में विलीनीकरण *तथा भूदान यज्ञ पत्रिका को साप्ताहिक* करने का निर्णय हुआ। तदुपरान्त 'सर्वोदय आन्दोलन' खादी ग्रामोद्योग' 'ग्राम स्वराज्य नई तालीम,' 'कृषि-गोपालन', 'प्राकृतिक चिकित्सा' आदि विषयों पर भाषण हुए। असम सर्वोदय मंडल की ओर से सर्वोदय पोस्टर, युवक संगठन, कुमारप्पा स्मारक निधि और मंडल के नये निर्वाचन के बारे में कार्यक्रम बनाया गया।

१२ फरवरी को बापू के अस्थि-विसर्जन स्थान में सूत्रांजलि का कार्यक्रम मनाया।

रींवा

श्री कौशल प्रसाद पटेल विद्यार्थी के पत्र के अनुसार १५ विद्यार्थियों ने सम्मलित शक्ति से आंदोलन में हाथ लेना प्रारम्भ किया है। अब तक २१ *सर्वोदय पात्रों की स्थापना की है।* कुमारप्पा स्मारक निधि के लिए रु० २-०० एकत्रित किया है। ४ गुंडी सूत्रांजलि संकलित हुए हैं।

भारत सफाई मंडल की सभा

चेब्रोलू (आंध्र) सर्वोदय संमेलन के अवसर पर

पिछले करीब डेढ़ साल से गांधी स्मारक निधि की भंगी मुक्ति समिति की तरफ से "भारत सफाई मण्डल" की स्थापना हुई थी जो सज्जन हर दिन कम से कम पन्द्रह मिनिट कुछ न कुछ आम सफाई का काम—जैसे पाखाने, पेशाब घर, रास्ते, नालियां जलाशय इत्यादि की सफाई करने का संकल्प करते हैं। वे इस मंडल के सदस्य गिने जाते हैं।

सदस्यों की नोंध १-१-६० से शुरू हुई और अबतक १३० सदस्यों के नाम दर्ज किये गये हैं इनमें ज्यादतर सर्वोदय कार्यकर्ता ही हैं

मैं इस मंडल का अस्थायी और स्वयं नियुक्त मंत्री या निमंत्रक रहा हूँ पहले से ऐसा ही सोचा गया था कि सर्वोदय समेलन जैसे सुविधा पूर्ण अवसर पर सदस्यों की सभा लेकर मंडल की घटना और कार्य पद्धति के बारे में निर्णय किये जाय,

इस दृष्टि से आगामी चेब्रोलू सर्वोदय समेलन के खुले अधिवेशन के पहले ता० १७-४-६१ शाम को या रातको भारत सफाई मंडल के सारे सदस्यों की सभा होगी ठीक स्थान और समय वहीं पर श्री कृष्णदास शाह के सफाई शिविर में और अन्य साधनों से जाहिर किया जायगा भंगीमुक्ति और स्वच्छ भारत में आस्था रखने वाले अन्य सज्जन भी उस सभा में जरूर आवें सभा में भारत सफाई मंडल के उद्देश, घटना, कार्यक्रम और कार्य-पद्धति के बारे मे विचार किया जायगा और कार्य भार उठाने वाले पदाधिकारियों की नियुक्ति की जायगी।

संभवतः सभा की बैठकें एक से अधिक बार भी करनी पड़े अगली बैठकों के स्थान और समय पहली बैठक में और अन्य साधनों से जाहिर किये जायेंगे।

सारे नाम दर्ज सदस्यों से और अन्य कार्य में भी सज्जनों से प्रार्थना है कि वे सभा में हाजिर रहने की और उसके लिये ता० १७ अप्रेल शाम के पहले चेब्रोलू समेलन के स्थान पर पहुँचने की कृपा करें।

पो० गोपुरी (रत्नागिरी) अप्पा पटवर्धन
महाराष्ट्र राज्य अस्थायी मंत्री
१७-३-६१ सफाई मंडल, भारत

मासिक चिट्ठियां

पंजाब की चिट्ठी

पंजाब में अशोभनीय पोस्टर और शराब के खिलाफ आंदोलन जोर पकड़ रहा है। गुड़गांव, करनाल, जालन्धर फिरोजपुर जिलों में अशोभनीय पोस्टर और शराब के खिलाफ आवाज, उठाई गयी है। जिला सर्वोदय मण्डल हिसार के संयोजक दादा गणेशी लाल ने पंजाब के नर-नारियों का इस दिशा मे जिस उचित ढंग से ध्यान खींचा है वह अत्यन्त सराहनीय है। ता० २५ फरवरी को हिसार नगर में एक विशाल प्रदर्शन किया गया। बहुत बड़ा जलूस सर्वोदय मण्डल के कार्यालय से निकाला गया, जो नगर के भिन्न-भिन्न बाजारों तथा रास्तों से गुजरता हुआ कटला राम लीला में पहुँच कर खतम हुआ। इस जुलूस में कांग्रेस, जन संघ, प्रजा समाजवादी पार्टी, गांधी स्मारक निधि, खादी आश्रम, आर्य समाज, सनातन धर्म, जैन सभा तथा अन्य सभी राजनैतिक, धार्मिक और सामाजिक संस्थाओं ने भाग लिया। "अशोभनीय पोस्टर हटाओ" "शराब के ठेके बन्द करो' 'गन्दे चित्र हटाओ, आदि नारों से आसमान गूंज उठा। सारे रास्ते में मकानों के आगे और मकानों की छतों पर मुक्त कंठ से आन्दोलन से सहानुभूति का भाव प्रकट करने के लिये नर-नारियों की एक बहुत बड़ी भीड़ थी। प्रदर्शन कारियों में पुरुषों के अतिरिक्त स्त्रियां भी भारी संख्या में मौजूद थीं।

रात को एक विशाल सार्वजनिक सभा का आयोजन किया गया जिसमें सर्व दलीय नेताओं ने प्रभावशाली भाषण दिये और प्रस्ताव पास किया कि जिला हिसार की सब नगरपालिकाओं और ग्राम पंचायतों को चाहिये कि अपने अपने क्षेत्र में शराब बन्दी करें और अशोभनीय पोस्टर, गन्दे गानों के रिकार्ड आदि के इस्तेमाल को रोकें। सर्व दलीय,नेताओं ने आन्दोलन के शुभ कार्य को आगे बढाने के लिये तन मन धन से मदद करने का विश्वास दिलाया। हिसार में विनोबा जी के इस अभियान की आकर्षक शुरूआत की चर्चा सब जगह हो रही है।

जन गणना के समय पंजाब के हिन्दी और पंजाबी दोनों क्षेत्रों में मातृ भाषा के कालम में दबाव डाल कर अथवा फुसला कर लोगों से गलत भाषा लिखवाने की संभावना थी। इस प्रकार लोगों का नैतिक स्तर गिर सकता था और जनगणना के आंकड़े भी गलत हो सकते थे जिसके लिये लाखों और करोड़ों रूपया खर्च किया जा रहा था। पंजाब सर्वोदय मण्डल ने समय रहते पंजाबी, उर्दू और हिन्दी में छपे हस्त-पत्रकों तथा विचार प्रचार द्वारा लोगों को सचेत किया कि वह अपनी सही मातृ भाषा लिखवायें। न कोई किसी से दबे और न कोई किसी को दबावे। परिणाम बहुत अच्छा रहा। आपस के प्रेम की भावना बनी रही और पंजाब संकीर्णता के दुष्परिणाम से बच गया।

श्री कान्त आप्टे के नेतृत्व में ता० १० मार्च से आदमपुर दोआबा जिला जालन्धर से भू-दान पद यात्रा चल रही है। श्री हरिराम चौहान, डा० रामरखा धीर तथा अन्य सर्वोदय कार्यकर्ता पद यात्रा मे भाग ले रहे हैं। पद यात्रा का उद्देश्य जालन्धर, होशियारपुर तथा कांगड़ा जिलों में विचार प्रचार द्वारा आन्दोलन को प्रभावशाली बनाना है।

ता० १६ मार्च को पंजाब के प्रमुख सर्वोदय कार्यकर्ताओं की पदाधिकारियों की एक विशेष बैठक में सर्व सेवा संघ के अध्यक्ष श्री वल्लभ स्वामी ने खादी के नये मोड़ की चर्चा करते हुए कहा कि पंजाब के कार्यकर्ताओं को विनोबाजी के सामने गिने गये दो लाख सर्वोदयपात्र के संकल्प को ध्यानमें रखना चाहिए।

ओमप्रकाश त्रिखा
सर्वोदय मंडल पंजाब संयोजक

प्रधान केन्द्र डायरी ता० २०—३—६१

(साधनाकेन्द्र, काशी)

● ता० ६–७–८ मार्च को विनोबा जी के पदयात्रा पड़ाव गोलकगंज .असम. में सर्व सेवा संघ की प्रबंध समिति की बैठक थी। उसके लिए करीब-करीब सभी यहाँ से गये थे। ता० १०-११ मार्च तक सब लोग वापस साधनाकेन्द्र पर लौट आये।

● श्री दादा धर्माधिकारी को पारिवारिक कार्य से नागपुर जाना पड़ा, वे अभी नागपुर ही हैं। श्री विमलाबहन ठकार इलाज के लिए विलायत जाने की तैयारी में डाक्टरी-परीक्षा इत्यादि कराने के लिये बम्बई-पूना गयी हुई हैं।

● श्री धीरेन्द्र भाई की अस्वस्थता कुछ लम्बी हो चली। पिछले कई दिनों तक उन्हें रोज साधारण ज्वर होता रहा। अभी वे साधनाकेन्द्र में ही हैं। अब तबीयत पहले से कुछ ठीक है।

● प्रसिद्ध अमेरिकन समाज-और शिक्षणशास्त्री मिस्टर राल्फ बोरसोदी तथा उनकी धर्म-पत्नी तीन दिन के लिये साधना केन्द्र आये थे। श्री बोरसोदी एक गहरे विचारक और लेखक हैं। उनका चिन्तन सर्वोदय-विचार के काफी निकट है। वे करीब डेढ़ साल से भारत में ही हैं। ऐसा तय हुआ है। कि अगले जुलाई महीने से वे यहाँ आकर गांधी विद्या स्थान—इन्स्टीट्युट आफ गांधियन स्टडीज—के काम में सहयोग देंगे।

● गोलकगंज की प्रबंध-समिति की मीटिंग से लौटते हुए श्री काशिनाथजी त्रिवेदी, श्री मालती देवी चौधरी आदि साधनाकेंद्र में रुके।

● सर्व सेवा संघ के प्रकाशन-विभाग की ओर से निमंत्रित विभिन्न भाषाओं के साहित्य-सेवियों की एक सभा सर्वोदय साहित्य के निर्माण तथा सम्पादन आदि की योजना पर विचार करने के लिये ता० १७-१८ मार्च को साधनाकेंद्र में हुई। इस सभा के निमित्त श्री वियोगी हरि, श्री जैनेन्द्रकुमार, श्री नीलमणि फूकन [असम] श्री अनन्तगोपाल शेवडे [नागपुर] श्री विनोद कानूनगो [उत्कल] श्री नारायण चौधरी [बंगाल] श्री जवाहरलाल जैन [राजस्थान] श्री सीताराम शाहरी [पंजाब] यहाँ आए थे। शान्ति-सैनिक विद्यालय के भाई-बहनों को भी अतिथियों के आगमन का लाभ मिला। श्री जैनेंद्रजी, वियोगीजी आदि ने शान्ति-सैनिकों को सम्बोधित किया।

● श्रमभारतीय, खादीग्राम के संचालक मण्डल की सभा ता० १९-२० मार्च को यहाँ हुई। उसके लिए श्री अण्णासाहब सहस्त्रबुद्धे, श्री ध्वजाबाबू, आचार्य राममूर्तिजी, श्री रामदेव ठाकुर तथा खादीग्राम के कई कार्यकर्ता आए थे।

● सर्व सेवा संघ की खादी ग्रामोद्योग समिति के सहमंत्री, श्री करणभाई खादी समिति के काम से आजकल अकसर यहाँ आते रहते हैं।

● शान्ति विद्यालय—बहनों और भाइयों के दोनों—यथावत चल रहे हैं। विद्यालय की बहनों का दल ता० ९ अप्रैल को यहाँ से रवाना होकर सर्वोदय सम्मेलन के लिए आन्ध्र जायगा। सम्मेलन के बाद उनका सत्र भी समाप्त होता है।

सफाई शिविर

तेरहवाँ वार्षिक सर्वोदय सम्मेलन दिनांक १८,१९ व २० अप्रैल, १९६१ को पश्चिम गोदावरी जिले में चेब्रोलू के पास सर्वोदयपुरम् में होने जा रहा है। इससे पहले ६ दिन याने दिनांक १२ से १७ अप्रैल तक सर्व सेवा संघ की बैठक बुलाई गयी है। संघ की बैठक में करीब ५०० लोक-सेवक तथा सम्मेलन में दस हजार प्रतिनिधि भाग लेंगे, ऐसी अपेक्षा है। सम्मेलन में लोक-सेवकों, कार्यकर्ताओं तथा दर्शकों की अधिकाधिक भीड़ होने पर भी सफाई का उत्तम प्रबन्ध रहे, जिसकी सावधानी स्वागत समिति ले रही है। सम्मेलन के समय इतने बड़े पैमाने पर सफाई-प्रबन्ध, सफाई की एक छोटी प्रदर्शनी तथा चेब्रोलू के नजदीक के एक-दो गाँवों में प्रत्यक्ष सफाई कार्य—इन विचारों से १० वर्ष चेब्रोलू में १ से १८ अप्रैल तक सफाई-शिविर होगा। इस शिविर का संचालन सफाई विज्ञान के तज्ञ श्री कृष्णदासजी शाह करेंगे। इसमें स्थानीय कार्यकर्ताओं के अलावा अन्य प्रांतों से कुल २५ जिम्मेवार कार्यकर्ता प्रवेश पा सकेंगे।

अशोभनीय पोस्टर्स हटने चाहिये : देश के विभिन्न शहरों की माँग

हिसार—जिला सर्वोदय मण्डल की फरवरी मास की रिपोर्ट के अनुसार इस मास में महत्त्वपूर्ण कार्य यह रहा कि मंडल तथा गांधी अध्ययन केन्द्र की ओर से अशोभनीय पोस्टर तथा शराब बंदी के सम्बन्ध में एक जुलूस निकाला गया तथा सभा हुई। इस जुलूस में धार्मिक, सामाजिक तथा राजनैतिक सभी प्रकार के नर-नारी सैकड़ों की तादाद में शामिल थे।

कानपुर—सिनेमा गृह प्रबन्धकों से कानपुर के नागरिकों के नाम से एक अपील की गई है जिसमें कहा गया है कि सिनेमा मालिक उन अशोभनीय पोस्टरों का प्रदर्शन स्वेच्छा से बन्द कर दें और इस कार्य की घोषणा जनता में भी कर दें, जिससे उनका गौरव बढ़ेगा और जनता को लाभ होगा।

आगरा—आगरा नगर में २२ फरवरी को एक महिला सम्मेलन का आयोजन किया गया। इन बहनों में से १० बहनें ऐसी निकलीं जिन्होंने एक सिनेमा घर पर लगे गंदे चित्र को हटाने के लिए सत्याग्रह का बीड़ा उठाया। जिस क्षेत्र में सम्मेलन हुआ था उस क्षेत्र को चार भागों में बाँट कर प्रति सप्ताह दो मुहल्ले में बैठकें और सर्वोदय-पात्र का कार्य सघन-रूप से करने का प्रोग्राम बनाया।

पूर्णियां—पूर्णियां नगर में एक शुभाशुभ-समिति का गठन शीघ्र ही होने वाला है। जो जन-जीवन की गंदगी और कुप्रवृत्तियों के निराकरण का काम करेगी और अशोभनीय सिनेमा पोस्टरों और गंदे गानों के खिलाफ शांति पूर्ण मोर्चा लेने वाला है।

कटिहार—कटिहार में स्थानीय महिलाओं ने सिनेमा मालिकों से मिलकर गंदे पोस्टर न लगाने का अनुरोध किया। इसके लिए वहाँ के उत्साही युवक महिलाओं का एक संगठन कायम हुआ है।

पटना—पटना सर्वोदय मित्र मंडल के तत्वावधान में नागरिकों, युवकों और प्रगतिशील कार्यकर्त्ताओं का एक जुलूस निकला। जिसमें लोगों से अभद्र आचरण, गन्दे गानों, अभद्र प्रदर्शनों तथा अश्लील चित्रों एवं पोस्टरों का बहिष्कार करने और उनकी होली जलाने का अनुरोध किया गया।

गाजीपुर—गाजीपुर को नागरिकों एक सभा बाबू श्री कान्हजी वकील, नगरपालिकाध्यक्ष की अध्यक्षता में हुई जिसमें गन्दे पोस्टरों और गन्दे गानों पर नियन्त्रण की दृष्टि से नागरिकों की एक समिति का गठन किया गया। सभा में गन्दे पोस्टरों और गानों के प्रचार के कारण गिरती हुई नैतिकता पर क्षोभ प्रकट किया गया।

अकोला—अकोला में अशोभनीय पोस्टरों के विरुद्ध जनमानस तैयार करने का कार्यक्रम बनाया है। इस प्रकार का आन्दोलन शीघ्र ही इस जिले में चलाया जायगा।

देश के विभिन्न भाषाओं के साहित्यकारों की गोष्ठी

अ० भा० सर्व सेवा संघ के प्रकाशन-विभाग की ओर से भारत भर के साहित्य-सेवियों की सभा दिनांक १७, १८ मार्च, १९६१ को साधना-केन्द्र, काशी में श्री वियोगी हरि की अध्यक्षता में सम्पन्न हुई जिसमें विभिन्न भाषाओं के साहित्यकार उपस्थित थे।

सभा में सर्वोदय-साहित्य के निर्माण, सम्पादन तथा प्रकाशन के विषय पर आम चर्चा हुई। सत्साहित्य के प्रकाशन की दृष्टि, प्रकाशन से संबंधित व्यावहारिक पहलू इत्यादि विषयों पर उपस्थित सज्जनों ने अपने-अपने विचार रखे।

देश-विदेश की विभिन्न भाषाओं में उत्तम साहित्य का आदान प्रदान, इसके लिए ग्रन्थों के चयन व अनुवाद की व्यवस्था, इन सबके लिए विभिन्न भाषाओं और विभिन्न विषयों का ख्याल रखते हुए सम्पादक मण्डल का गठन, सर्वोदय विचार से संबंधित एक साहित्यिक हिन्दी मासिक पत्रिका का प्रकाशन, देश की विभिन्न भाषाओं, हो सके तो विदेशी भाषाओं में भी, सर्वोदय-विचार संबंधी अनुकूल-प्रतिकूल जो भी प्रतिक्रियाएँ प्रकाशित हों, उनकी जानकारी देनेवाली एक "डाइजेस्ट" का प्रकाशन, आदि मुद्दों पर विस्तार से चर्चा हुई।

●

गुरुदासपुर—सर्वोदय मंडल की ओर से फरवरी मास के प्रारम्भ में सर्वोदय पक्ष के निमित्त जिला भर में सूतांजलि प्राप्ति के लिए विशेष प्रयत्न हुए। सर्वोदय आश्रम पठानकोट के निर्माण की दिशा में भी ज्यादा ध्यान रहा। व्यापक विचार प्रचार का भी कार्य चला। सरकार तथा नगरपालिका से भद्दे पोस्टर हटाने की अपील की गई।

लक्ष्मी आश्रम कौसानी के दो सहजीवन शिविर

सर्वोदय-आन्दोलन की गति तेज करने के लिए आवश्यक है कि बहनें इसमें सक्रिय दिलचस्पी लें। खुशी की बात है कि सरला बहन ने इस उद्देश्य को ध्यान में रखकर इस साल गर्मी में दो सहजीवन शिविर लक्ष्मी आश्रम कौसानी में आयोजित किये हैं।

प्रथम शिविर दि० १० मई से २५ मई तक होनेवाला है जिसमें गृहस्थ बहनों को सम्मिलित किया जायगा। वे कम से कम दो बच्चों को साथ में ला सकेंगी। बच्चों की देखभाल के लिए आश्रम की ओर से बालवाड़ी का प्रबन्ध होगा। ताकि शिविरार्थी बहनें आश्रम के सह-जीवन के कार्यक्रम में, प्रार्थना-प्रवचन में, वैचारिक वर्ग में समुचित रूप से भाग ले सकें, जिससे सर्वोदय-विचार को उसके दृष्टिकोण को पूर्णतया समझ सकें।

दूसरा शिविर दि० १ जून से १५ जून तक चलाया जायगा, जिसमें केवल शिक्षित बहनें भाग लेंगी। इस शिविर में चार घंटे बौद्धिकवर्ग में सर्वोदय के विभिन्न विषयों पर चर्चा होगी। इस शिविर में हस्तोद्योग, गृहउद्योग, मनोरंजन, खेल-कूद आदि के कार्यक्रम को भी स्थान दिया गया है।

बहनें इस तरह के शिविर में भाग लेकर सर्वोदय की विचारधारा को समझ कर समाज में व्याप्त कर सकें, यही शिविर का मुख्य उद्देश्य है।

●

सर्वोदय-सम्मेलन के अध्यक्ष श्री जयप्रकाश जी होंगे

१८, १९ और २० अप्रैल को होने वाले तेरहवें सर्वोदय-सम्मेलन के अध्यक्ष श्री जयप्रकाश नारायण होंगे। यह सम्मेलन आन्ध्र प्रदेश में बेजवाड़ा के नजदीक उगतुरू (चेब्रोलू) में हो रहा है। सम्मेलन के पूर्व १३ से १७ अप्रैल तक सर्व सेवा संघ का अधिवेशन भी होगा।

इस अंक में

संघ के अधिवेशन में सब लोक सेवक भाग ले सकते हैं

सर्व-सेवा-संघ के मन्त्री श्री पूर्णचन्द जैन ने एक वक्तव्य में सदस्यों का ध्यान संघ की नियमावली की निम्न धारा की ओर ध्यान खींचा है

"संघ के सदस्यों के अलावा कोई भी लोक सेवक संघ की बैठक में एक सदस्य की भांति भाग ले सकेगा। लेकिन उन्हें संघ की बैठक की सूचना दी जाना लाजिमी नहीं होगा।"

श्री जैन ने नवनिर्वाचित सदस्यों से निवेदन किया है कि इस धारा से क्षेत्र के सब कार्यकर्ताओं को जानकारी दे दें।

●

विभिन्न उप-समितियों का गठन

जयपुर में राजस्थान समग्र सेवा संघ की दिनांक १२ मार्च, ६१ की बैठक में कार्य संयोजना की दृष्टि से विभिन्न उप समितियों का गठन किया गया है।

●

पदयात्रा-समाचार

विनोबाजी का ३१ मार्च से ७ अप्रैल तक निम्न स्थानों पर पड़ाव रहेंगे

ता०	जगह	पो० आफिस
३१ मार्च ६१	सिरा	शिवा
१ अप्रैल ६१	मौमान	,,
२ ,, ६१	छमरिया	,,
३ ,, ६१	करकापार	,,
४ ,, ६१	छयगाँव	,,
५ ,, ६१	बाटर हाट	,,
६ ,, ६१	पलासबारी	पलासबारी
७ ,, ६१	जालुकबारी	जालुकबारी

स्थायी पता—शरनिया आश्रम गौहाटी (असम)

श्रीकृष्णदत्त भट्ट, अ० भा० सर्व सेवा संघ द्वारा भार्गव भूषण प्रेस, वाराणसी में मुद्रित और प्रकाशित। पता : राजघाट, वाराणसी-१, फोन नं० ४३९१
वार्षिक मूल्य ६) पिछले अंक की छपी प्रतियाँ १२,०५० : इस अंक की छपी प्रतियाँ १२,०५० एक प्रति : १३ नये पैसे

संपादक : सिद्धराज ढड्ढा

वाराणसी : शुक्रवार | ७ अप्रैल '६१ | वर्ष ७ : अंक २७

विश्वशांति और संयुक्त राष्ट्र-संघ

• विनोबा

अभी दक्षिण भारत में मदुराई में युद्ध-विरोधी शान्तिवादियों की परिषद हुई थी उसमें दुनिया के १५,२० देशों के लोग आये थे और उन्होंने अनेक विषयों की चर्चा की और कुछ प्रस्ताव पास किये उनमें से एक प्रस्ताव यह भी था कि विश्वशान्ति सेना स्थापना हो। उस प्रस्ताव में में कहा गया था कि विश्वशान्ति सेना की आवश्यकता यह परिषद महसूस करती है। चन्द दिनों से एक अमेरिकन भाई मेरे पास है। उन्होंने मुझे पूछा है कि विश्व शान्ति सेना किस प्रकार बनेगी, उसकी प्रक्रिया क्या होगी, कौन वह सेना बनायेगा ?

आज दुनिया में एक संस्था है जिसे युनाइटेड नेशन्स—संयुक्त-राष्ट्र-संघ कहते हैं। दुनिया के देशों के झगड़े और सवाल उसके सामने रखे जाते हैं। कुछ फैसले उसमें होते हैं और उसमें कुछ मदद दी जाती है। वैसे तो सेना की मदद दी जाती है। जिन राष्ट्रों का वह समूह है उनमें कई राष्ट्रों के पास बहुत ही ज्यादा लड़ाई का सामान है। मसलन-रूस अमेरिका, इंग्लैण्ड, फ्रांस इनके पास सेना और सामग्री बहुत है। राष्ट्र-संघ जिसको कह सकते हैं, ऐसी यह संस्था है। सब राष्ट्रों के बीच झगड़ों का सवाल हल करने के लिये और सब राष्ट्रों में शांति की स्थापना करने के लिये वह संस्था भी अपनी एक छोटी सी सेना रखती है। वह छोटी सी होने के कारण कोई खास मुकाबिला नहीं कर सकती है। जहाँ जरूरत है वह वहाँ सेना जाती है।

सहज ही यह सूझेगा कि जिन देशों के पास कहीं ज्यादा सामर्थ्य है, उनमें स्नेह और शान्ति की स्थापना के लिये जो प्रतिनिधि उस संस्था में आते हैं वे सेना क्यों रखें ? उससे क्या मतलब निकलेगा ? अनेक राष्ट्रों की सेना और बीच में यू० नो० की भी सेना होना कोई माने नहीं रखता। यह राष्ट्र समूह शान्ति की इच्छा से ही स्थापित हुआ है इसमें कोई शक नहीं है। अगरचे वह बहुत कुछ नहीं कर सका है, थोड़ा कर सकता है फिर भी उसका इरादा सच्चा है और उसका आज की दुनिया की हालत में कुछ उपयोग भी है। जब कि मसलों की चर्चा वहाँ हुआ करती है, उनका उद्देश्य शांतिस्थापना का है, इसमें शक नहीं है। सच्चाई के साथ शांति का उद्देश्य रखते हुए और जानते हुए भी कि वे राष्ट्र बहुत ज्यादा शस्त्रों से लैस हैं। बीच में उनको भी अपनी सेना रखने का सूझा इसका मतलब यही है कि अकल काम नहीं कर रही है। दिल चाहता है शांति की स्थापना हो लेकिन अकल तो पुरानी काम करती है। शांति की स्थापना सेना की मदद से करे, यह एक परीक्षा ही मालूम होती है। वैसे तो सब राष्ट्र सेना रखें और दुनिया के बचाव के लिये यू० नो० भी सेना रखे यह एक परिहास होता है। अगर कोई भी राष्ट्र सेना नहीं रखे और सिर्फ यू० नो० सेना रखे तो भी परिहास होगा

लेकिन वह छोटा परिहास होगा क्योंकि शांति की स्थापना या राष्ट्र का बचाव सेना से नहीं होता है यह उसका अर्थ होता है इसलिए परिहास होता है। अगर यू नो सेना रखे और बाकी राष्ट्र अपनी सेना हटाये तो भी छोटा परिहास होता है, इसलिए आज बड़े-बड़े राष्ट्र भी बड़ी-बड़ी सेना रखे और राष्ट्र समूह भी सेना रखे यह बहुत ही बड़ा परिहास मालूम होता है।

हमारे और आपके सामने जो उपहासास्पद विचार हैं वह उनके ध्यान में नहीं आता है ऐसा नहीं मानना चाहिए। मैं उनकी बात कर रहा हूँ जिनके हाथ में सत्ता है—मतलब जो राष्ट्र के कर्णधार हैं। मैं विश्वशान्ति के सदर्भ में बोल रहा हूँ जिसका एक भाग अपना देश भी है। मैं यह कह रहा था कि शांति की इच्छा होते हुए भी नया रास्ता नहीं सूझ रहा है, पुराना रास्ता ही सूझता है, कारण मैंने बार बार कहा है कि हिंसा से विश्वास उठा है और अहिंसा पर विश्वास नहीं बैठा है। ऐसी हालत उनकी है, जो राष्ट्रों के कर्णधार हैं। उनके पीछे लोकमत भी काफी है, ऐसा मानना चाहिये क्योंकि वे राष्ट्रों के कर्णधार है। मैं जानता हूँ कि चाहे डेमोक्रैसी हो उसमें आम जनता का मत प्रकट होता ही है ऐसा नहीं है। मिडिल क्लास और हायर क्लास का मत उसमें प्रकट होता है, बाकी लोग मत देते ही नहीं है। सर्व सामान्य जनता ऐसी ही रह जाती है लेकिन जिनका मत है उनमें से काफी लोगों का मत इन कर्णधारों के साथ है। कितना अच्छा होता अगर यू नो नैतिक सलाह देनेवाली संस्था होती और उसके द्वारा विश्वशान्ति का आयोजन होता। यह क्यों नहीं हुआ ? इसीलिए नहीं हुआ कि जिनके हाथों से यह होना था। उनके हाथ रंगे हुए हैं। वे तरह तरह के अन्याय कर रहे हैं फिर भी मैंने कहा कि शान्ति की इच्छा वे सच्चाई के साथ रखते हैं।

कुछ राष्ट्र के कर्णधार यानी कुछ राष्ट्र ही शान्ति इसलिये चाहते हैं कि शान्ति के बिना विकास होनेवाला नहीं है। ऐसा वे मानते हैं। विकास के लिये शान्ति जरूरी है इसीलिए वे शान्ति चाहते हैं। कुछ इसीलिए शान्ति चाहते हैं कि उनके पास वे शस्त्र नहीं है जो भयानक शस्त्र कुछ राष्ट्रों के पास हैं और तीसरे ऐसे हैं जो शान्ति इसलिये चाहते हैं कि वे देखते हैं अगर इनका उपयोग कहीं हुआ तो दुनिया का खात्मा होगा ऐसा डर उनको हैं। इन दिनों शान्तिवादियों का एक ऐसा पक्ष निकला है जो चाहता है कि आणविक शस्त्रास्त्र न बनाये जाय, उनका प्रयोग न किया जाय। माना जाता है कि ये लोग शान्तिवादी हैं। वे शान्तिवादी हैं लेकिन शान्तिके बारे में उनका चिन्तन गहरा है ऐसा असर मुझ पर नहीं पड़ा क्योंकि बहुत से राष्ट्र ऐसी बात इसलिये करते हैं कि आज तक के चालू शस्त्र, यानी पारम्परिक शस्त्र वे चाहते हैं। वे शस्त्र आज तक चले आये हैं और वे शस्त्र आगे चले ऐसा वे चाहते हैं। वे डरते हैं कि अगर आणविक शस्त्र रहेंगे तो उनकी कुछ नहीं चलेगी। नहीं मालूम कि किस तरह यह मुझे प्रतीत हुआ, १०—१२ साल से मैं यह बोल रहा हूँ कि शान्ति को आणविक शस्त्रों से उतना खतरा नहीं है जितना पारम्परिक और रूढ़शस्त्रों से है। ये रूढ़ शस्त्र अहिंसा को सामने नहीं आने देंगे। आणविक शस्त्र दुनिया के सामने ऐसा प्रश्न खड़ा करते हैं कि या तो दुनिया का खात्मा करो या शान्ति की स्थापना करो। इस वास्ते दुनिया के सामने वह दो विकल्प खड़े करते हैं।

इसलिए मैं कहता हूँ कि अहिंसा के ज्यादा नजदीक आणविक शस्त्र है। मैं इस विचार पर स्थिर हूँ। इसका मतलब यह नहीं है कि आणविक शस्त्र के भय को मैं पसंद करता हूँ। उसके प्रयोग से हवा दूषित होती है। लेकिन मुझे तो कहना ये है कि आणविक शस्त्र के ही खिलाफ हम नहीं है। उस हालत में हम सब लोगों को सिर्फ इतना ही नहीं कहना चाहिए कि अणुशस्त्र का प्रयोग मत करो बल्कि यह भी कहना चाहिए कि अपने-अपने स्थान में छोटे-छोटे शस्त्र का भी उपयोग न करो। स्कूल में छड़ी न चले, माता पिता अपने बच्चों को न मारे न पिटे, यहाँ तक हमारी बुद्धि निःशस्त्र होनी चाहिए। लेकिन आज वैसा नहीं है। यू० नो० याने जिस ढंग से यह बना है उनके सदस्यों के सामने शांति के मसले शांति से ही हल हो ऐसी चीज साफ सामने नहीं आ रही है।

अब सवाल आता है कि यू० नो० विश्व शान्ति सेना स्थापन करने में स्वरूपत असमर्थ है। उसका अमल कौन करे ? ऐसी कौन सी एजेन्सी है, जो विश्व शान्ति सेना बनायेगी ? इसका जवाब कुछ साफ तौर पर हमारे पास है ऐसा नहीं है। मै

पहला ही मौका है जब युद्ध-प्रतिनिधि परिषद् में ऐसा प्रस्ताव पास होता है। एक वस्तु स्पष्ट है कि जिन देशों की इच्छा है चाह है, शान्ति की उन देशों के अंदर तो शान्ति सेना होनी ही चाहिए। क्या दुनिया के कुछ देशों में नाम लेने लायक शांति सेना है? विश्वशांति के लिए ये करना होगा कि सब देशों में अपनी-अपनी शांति सेना बने और राष्ट्रीय तौर पर एक शांति सेना मंडल हर राष्ट्र में हो। उनके प्रतिनिधि मिलकर एक विश्वशांति सेना मंडल बने। उसे हम 'सेना' नहीं कहेंगे। वह मंडल विश्वशांति सेना बनाने का अधिकारी माना जायगा।

इस प्रकार का विचार मैं आज प्रकट कर रहा हूँ लेकिन दूसरे लोग भी इसपर विचार करेंगे तो कुछ बनेगा। सोचने-सोचते समय जायगा। लेकिन ये बहुत बड़ी चीज है। उस नमूने की सेना यहाँ बने जिस नमूने की दुनिया में बने, ऐसी अपेक्षा है। अन्तर्गत मसले जो होते हैं उन मसलों पर हम सोचें और सलाह दें। जहाँ-जहाँ अशान्ति का मौका आया, वहाँ पहुँचकर काम करें। यह तो मैंने अपने देश के लिए बात की।

स्वतंत्र डाक व्यवस्था हो

कल मैंने कहा था हमारी पोस्ट होनी चाहिए। मामूली पत्र तो सरकारी पोस्ट से जायेंगे। लेकिन हमारी एक संस्था हो और एक मंडल हो। हफ्ते में एक दफा हर गाँव में जाये नहीं तो १५ दिन में एक दफा जाये। साल भर में १२ दफा जायें तब भी चलेगा। हर गाँव में हम जायें और मासिक पत्रिका हम गाँव-गाँव में बाँटें। एक महीने का जो कार्यक्रम बनाये वह कार्यक्रम उस पत्रिका में हम छापें। कल मैंने ७ दिन में एक दफा जाने की बात की थी और आज ही मैं एक महीने की कल्पना पर आया। केवल कल्पना से तो कुछ नहीं बनता। असली काम तब बनता है—जब परिस्थिति सामने रखकर सोचा जाता है। ५ लाख गाँव में सर्वोदय का संदेश पहुँचाना है, दुनिया की कुल हलचल इकट्ठा करनी है और ये दोनों चीजें एक मासिक में या साप्ताहिक में प्रसिद्ध करें और वह लेकर हमारे शांति सैनिक गाँव-गाँव जाँय। उसको पढ़कर लोगों को समझा दें और उन लोगों को क्या क्या मुसीबतें हैं, क्या हालत है, उसकी रिपोर्ट करे। ५ लाख देहात हैं। एक आदमी २५ गाँव में जायेगा, तो ५ लाख गाँव में पहुँचने के लिए आपको २० हजार शान्ति सैनिक चाहिए। २० हजार शांति सैनिक इधर से उधर और उधर से इधर घूमते रहेंगे और रचनात्मक कार्य करते रहेंगे तो समाज का नक्शा बदल जायगा। इतना हम अगर कर सकते हैं; १२ महीने में १२ दफा हर गाँव में हमारा मनुष्य जाता है और सेवा करता है तो मैं कहना चाहता हूँ कि यह बहुत ही सस्ता सौदा होगा शान्ति के लिए। शांति के काम में इसका उपयोग होगा। इसका मतलब यह नहीं कि हम सरकार की पोस्ट पर बहिष्कार डालना चाहते हैं। *हम सरकार से असहकार नहीं करना चाहते।* लेकिन हमारे शांति सैनिक इस तरह घूमते रहेंगे और गाँव की सेवा करते रहेंगे तो अशांति का कारण नहीं रहेगा। आज सर्वत्र जो अज्ञान का साम्राज्य है, वह मिट जायगा। यह चीज हिन्दुस्तान में, कम से कम बिहार में या बिहार के एक जिले में अमल में लाते हैं। हर गाँव में हमारी डाक जाती है, शांति सैनिक पत्रिका लेकर जाता है, यह होगा तो आप बहुत बड़ा काम किया मैं मानूँगा।

समग्र विश्व में इस प्रकार से योजना हो जाय तो वह स्वागतार्ह होगी। सब उसे पसंद करेंगे। यह बहुत बड़ी बात नहीं मानी जायगी, अगर मैं इन घूमने वाले लोगों को परिव्राजक कहूँगा। इस नाम से घबड़ाने की जरूरत नहीं है। ये परिव्राजक ही होंगे, संन्यासी नहीं। संयमी-गृहस्थों की भी सेना बन सकती है। ऐसा काम किसी एक जिले में करके बताइये फिर काम आगे बढ़ेगा। सारे प्रान्त में कर दो यह कहने से नहीं होगा। एक जिले में करके दिखाइये तो अंदाजा लगेगा। किसी भी विचार का केवल कल्पना मात्र से काम नहीं होगा! पूर्णियाँ जिले में एक गाँव में धीरेन्द्रभाई बैठे हैं। वे कौन सा व्रत लेकर बैठे हैं, ये बात हिन्दुस्तान के ५ लाख देहातों को मालूम हो गई है क्या? कम से कम आपके इस जिले के हर गाँव को मालूम हो गई है क्या? आपके सर्वोत्तम सेवक जो प्रयोग कर रहे हैं वह लोगों को मालूम भी नहीं। इसलिए इसपर आप सोचिए। इसलिए मैं कहता हूँ कि कम से कम पूर्णियाँ जिले में यह काम आप पूर्ण कीजिए।

(किशनगंज पूर्णिया ९-२-६१ का प्रवचन)

अमेरिकी पदयात्री

डा० प्रभाकर माचवे

शान्तिवाद के लिए जीवन बिताने वाले एक परिवार की झांकी

शिकागो से ४० मील दूर मेकोना गांव में एक क्वेकर परिवार में रहने का मुझे विगत ११ फरवरी १९६१ को मौका मिला। वहां एक मां अपने दूसरे बेटे जेरी के हर हफ्ते आने वाले पोस्टकार्ड एक तख्ते पर लगा कर रखती हैं। जिसे गांव वाले आ कर पढ़ते हैं। शांति समाचार साप्ताहिक में सैन फ्रांसिस्को से मास्को पैदल जाने वाले ११ युवकों के दल की खबरें छपती रहती हैं। जेरी लेहमान की उम्र २४ बरस की है और वह विज्ञान में ग्रेजुएट है। पर मेक्सिको में रहते हुए उसके मन में यह तीव्र वेदना उठी कि अंतर्राष्ट्रीय शांति के लिए कुछ करना चाहिए। लिटिल नामक एक व्यक्ति इस दल के प्रमुख हैं। ये लोग नित्य २० मील पैदल चलते हैं; राह में कोई शस्त्रों का कारखाना या युद्ध सम्बन्धी कोई संस्था आती है, तो उसके दरवाजे पर सभा करते हैं। प्रार्थना करते जाते हैं, और आगे बढ़ते हैं।

गांधी की 'सत्याग्रह' पुस्तक उस के साथ है। कहीं-कहीं लोग सुनते हैं, कहीं विरोध भी होता है। १ दिसम्बर से यह जत्था चला। विनोबा भावे की याद दिलाने वाला यह दल १ अप्रैल को शिकागो पहुँचने वाला था। इस दल के साथ एक ट्रक 'कमिटी फार नानवायलेंट एक्शन'-अहिंसक आन्दोलन समिति की आगे चलती है; किसी चर्च के अहाते में या व्यक्ति के घर पर वे लोग ठहरते हैं। जो कुछ खाने को मिल जाता है, उस पर रह लेते हैं। भिक्षाटनवृत्ति स्वेच्छा से ली है। अब तक वे ९०० मील चल चुके हैं।

जेरी लेहमान के पत्रों के कुछ अंश हैं—

"४ दिसम्बर - कैलिफोर्निया-सभाओं में बोला। इस्पाहानी भाषा थी। चलने और सभाओं में बोलने में समय यों बीतता है कि *सोने को समय नहीं होता।* भगवान अन्न और निवास जुटा देते हैं। अलबर्ट श्वाइटजर ने कहा है कि 'निःशस्त्रीकरण में प्रगति इसलिए नहीं हुई है कि जनमत की मांग उतनी तीव्र नहीं।'

"६ जनवरी—आविरला, अरिजोना, रेगिस्तान है। कुछ लोग मिल जाते हैं। यहां विरोधी बहुत मिले। जो लोग आणविक परीक्षण केन्द्रों के निकट रहते हैं, वे अपने को बहुत अरक्षित पाते हैं। न तो उनका ईसाई धर्म में विश्वास है, न लोकशाही में। केवल आराम-भोग में लीन, भविष्य से डरते हैं।

"१५ जनवरी—टस्कन, औरिजोना *में इस्पाहानी में रेडियो पर बोला १५* मिनट। टी. वी पर हमारी तस्वीरें समाचारों में दी गई है पर समाचारपत्रों ने जैसे हम पर काला पर्दा डाल दिया है, बायकाट कर दिया है। शायद मालिक का ऐसा ही हुक्म है। मैं उन लोगों में विश्वास नहीं करता जो भय के मारे शान्तिवादी है। शान्तिवादी इसलिए होना चाहिए कि वह सच्ची नीति है। गांधी ने कहा था—"कायर की अहिंसा अहिंसा नहीं।"

मेरी जेरी की मा से, जिनका मूल नाम मर्शिया रिवर था, बहुत बातें हुई। वह एक छोटे बच्चों के स्कूल में ५२ बरस की उम्र में पढ़ाती है; काफी पढ़ती रहती हैं। उन्होंने पूछा—"तुम्हारा लोकतन्त्र में विश्वास है?

मैंने कहा—"अभी जो दुनिया में तंत्र हैं। उन में वही सब से कम खराब है।"

उन्होंने कहा 'अन्त में केवल एक ही तंत्र है, और वह ईश्वर की आंखों में मानव की एकता, शांति और समानता का तंत्र है।"

जेरी बचपन से धार्मिक वृत्ति का था; उसने बहुत साहित्य पढ़ा है, राजनीति पर भी उसके पास ग्रन्थ बहुत हैं। उसके व्यक्तिगत पुस्तक संग्रह में मैंने गांधीजी की छह पुस्तकें देखीं—'नान-वायलेंस इन पीस एंड वार' इत्यादि। मेक्सिको में गया और गरीबों के साथ रहा। उसका चित्त बदल गया। माँ ने कहा—कई लोग कहते हैं तुम्हारा बच्चा सनक गया है। कई लोग कहते हैं वामपन्थी लोग तरुणों का यों बुरा उपयोग कर रहे हैं। पर मेरे मत में वह हर चिट्ठी के नीचे जो लिखता है, वही उसका सच्चा मत है। वह पोस्टकार्ड के शुरू में लिखता है डायर के फोक्स (प्यारे लोगों) अंत में लिखता है। वीथ लव इन क्राइस्ट दी रिबेल (क्रान्तिकारी जीसस क्राइस्ट में प्रेम और श्रद्धा सहित)

इन लोगों का कार्यक्रम है, यों पैदल न्यूयार्क तक पहुँचना। फिर हवाई जहाज से लन्दन जाना। वहा से सारे यूरोप की पदयात्रा करते हुए मास्को पहुँचना। ये लोग किसी भी देश के आवागमन सम्बंधी नियमों की ओर से यदि विरोध हो, तो उन से अहिंसक असहकार करेंगे। इन नौजवानों के इस अद्भुत आदर्शवाद को देख कर मुझे बहुत आश्चर्य और आनन्द हुआ

अमेरिका में यह पहला परिवार मुझे ऐसा मिला, जिनके घर में शराब का व्यवहार नहीं होता। इस देश में ऐसा अपवाद रूप में पाया जाता है जेरी ने आजीवन शांतिवाद के लिए जीवन बिताने का व्रत लिया है। उन लोगों का नारा है—

"शांति के लिए कार्यक्रम के दो सिद्धांत हैं—हम समझते हैं कि सब शस्त्र-शक्ति अनैतिक है; और वह काम में नहीं आएगी हम चाहते हैं कि लोग माँग करें और शासनों को मनवाएं कि ऐसी नीति वे ग्रहण करें जिस से स्थायी शांति हो सके, युद्ध न हों!"

मैंने कहा जेरी की मा से कि उन्हें गर्व होना चाहिए कि उनका पुत्र विश्व शांति का प्रचारक है; तो उनकी आंखें नम हो गई। बोलीं—"बहुत थोड़े ऐसा सोचते हैं। और लोग तो इसे भी एक पागलपन समझते हैं।"

(साप्ताहिक हिन्दुस्तान से साभार)

अक्षर स्वयं जगत् स्फूर्ति, जीवनं सत्यशोधनम्

भूदानयज्ञ

लोकनागरी लिपि*

अखंड दान की धारा प्रवाहित हो

नदी के स्वरूप में ही चीन्तन धारा, वीचार धारा ये शब्द रूढ हो गये। यह बताता है की हमें कैसा काम करना चाहीये। येह भूदान की धारा है, वह अखंड बहती रहनी चाहीये। मलें "कम-बेसी दान मीलें। लेकीन दान मांगा जा रहा है और दान दीया जा रहा है, अैसा होना चाहीये। अखंड दान की धारा बहती रहनी चाहीये। अैसा कब होगा? जब बुनीयादी, आध्यात्मीक आधार जो है वह समझने वाले काम करते रहेंगे।

बाढ में प्रवाह ज्यादा बढता है और गरमी में थोडा सूख जाता है। अब क्या हो रहा है? बाढ आने की तैयारी है। औन दस सालों में खूब काम बढा और फीर कम हुआ, फीर अुससे थोडा कम हुआ। औस तरह औन दस सालों में अेक चक्कर पूरा हो गया। ५१ में भूदान की बाढ आयी, तीन-चार साल वह बाढ बढी फीर दो साल में कम होती गयी। दस साल में चार युग होते हैं। अुनमें से अूंचा युग कृत युग होता है वह चार साल का होता है। संस्कृत में कृत का अर्थ चार होता है। त्रेता युग तीन साल का द्वापर दो साल का और कली-युग अेक साल का। कली का अर्थ ही कलज माने अेक यूनीट कैसा होता है। अेक बार ये चार युग समाप्त हो गये हैं। अब कृत युग आ रहा है। काम का वेग बढना चाहीये यह औश्वरीय औच्छा है।

*लिपि-संकेत : ि = ी ; ी = ी ख = ख, संयुक्ताक्षर हलंत चिह्न से।

विचार-प्रवाह

• दोहरा अन्याय

उत्तर प्रदेश के गृह मंत्री श्री चरण सिंह ने पिछले सप्ताह कानपुर के पास आयोजित एक किसान सम्मेलन में बोलते हुए भूमिहीन लोगों को जमीन दी जाने का विरोध करते हुए यह राय जाहिर की है कि हमारे देश में जमीन पर पहले से ही भार अधिक है, इसलिए भूमिहीनों को जमीन बांटने से इस भार में और वृद्धि होगी तथा देश का अहित होगा।

श्री चरण सिंह की बात दीखने में सही मालूम होती है, पर थोडी गहराई से सोचें तो मालूम होगा कि वह एकांगी सत्य है। इस बात में तो सभी सहमत होंगे कि देश को समृद्धि बनाना है तो खेती के साथ-साथ उद्योग धन्धे भी देश में बढ़ाने होंगे। अगर ऐसा हो तो जमीन पर जिस बोझे की बात श्री चरणसिंह ने की है वह स्वाभाविक ही कम हो जायेगा, पर जैसा श्री चरण सिंह ने कहा है, पिछले वर्षों में हुआ इससे उल्टा है। जब कि इस देश में अंग्रेजी राज्य की शुरुआत के समय जमीन पर निर्भर रहने वाले लोगों का अनुपात कुल आबादी का ५३ प्रतिशत था, तब इस समय वह प्रतिशत ७० से भी ज्यादा हो गया है। यह बात इस बात का प्रमाण है कि खेती के साथ गांव-गांव में जो उद्योग धंधे चलते थे, वे सब पिछले २ सौ वर्षों में एक-एक करके समाप्त हुए हैं। ज्यों ज्यों उद्योग धंधे उजड़ते गये त्यों-त्यों स्वाभाविक तौर पर ही इसके परिणाम स्वरूप बेकार होने वाले लोगों की गिनती जमीन पर निर्भर रहने वाले लोगों में होने लगी। देहात के उद्योग धंधे उजड़ने का मुख्य कारण कारखानों में बने हुए माल की होड़ का रहा है। पहले यह होड़ विदेशों से आने वाले माल की थी, आज 'स्वदेशी' कारखानों के माल की ही होड़ देश के उद्योग-धन्धों को बरबाद कर रही है। कपड़े, जूते या तेल जैसी चीजों का एक यंत्रीकृत (मैकेनाइज्ड) कारखाना खुलता है तो जहां प्रत्यक्ष में दीखता यह है कि हजार आदमियों को काम मिला, वहां अप्रत्यक्षरूप से उससे कई गुनी संख्या में लोग बेकार हो जाते हैं। पिछले २ सौ वर्षों से बराबर यह होता रहा है और आजादी के बाद भी इस परिस्थिति में सुधार होने के बजाय वही चक्र देश के औद्योगीकरण के नाम पर और तेज गति से चल रहा है।

आदमी सामाजिक और आर्थिक परिस्थितियों के कारण बेकार तो हो जाता है, लेकिन दुर्भाग्य से बेकार होते ही वह मर नहीं जाता। जिन्दा रहने के लिए कुछ न कुछ कोशिश उसकी जारी रहती है, और जिधर उसे काम दीखता है उधर वह दौड़ता है। श्री चरणसिंह को शायद यह तो मालूम ही है कि पिछले वर्षों में जमीन पर निर्भर रहने वालों की ही संख्या नहीं बढ़ी है बल्कि शहरों में रिक्शा चलाकर घोड़ों और बैलों का काम करने वाले मनुष्यों की बेकार और बेघरबार हो कर फुटपाथ पर जिन्दगी बिताने वालों की और भूख से बेमौत मरने वालों की संख्या भी बढ़ी है। जिनके हाथ में किसी न किसी तरह से आज जमीन आ गयी है वे अगर अपने स्वार्थ से प्रेरित होकर यह कहें कि दूसरे बेकार लोगों को जमीन की मांग करने का हक नहीं है, समाज को चाहिए, कि उन्हें दूसरे धन्धे दें, तो एक बार के लिए यह बात समझी जा सकती है। पर श्री चरण सिंह को एक राज्य के मंत्री होने और अत: देश की सामाजिक और आर्थिक नीति को ढालने में अपना हाथ होने के कारण ज्यादा जिम्मेदारी के साथ अपनी राय बनानी और व्यक्त करनी चाहिए। जैसा श्री चरणसिंह ने खुद उसी भाषण में कहा बताया, धरती सबकी माता है, और इसलिए भूख लगने पर जैसे बच्चा दौड़ कर मां के पास जाता है, उसी तरह से भूखे और बेकार लोग अगर दौड़कर अपनी मां की गोद में जावें तो जिम्मेदार आदमी के लिए उनकी भूख और बेकारी का उपाय सोचने और करने के बजाय यह कहना कि उस भूखे को अपनी मां की शरण में जाने का अधिकार नहीं है, दोहरा अन्याय है।

श्री चरण सिंह ने कहा कि 'जमीन पर अगर और भार बढ़ा तो देश का अहित होगा।' तो क्या श्री चरणसिंह के 'देश' में अपनी किसी गलती से नहीं, लेकिन समाज के जिम्मेदार लोगों की नीति के कारण बेकार और भूखे बन जाने वाले लोग शामिल नहीं हैं? जमीन पर निर्भर रहने वालों की संख्या बढ़ती जाय इसे हम भी चिन्ता की बात मानते हैं, पर यह चिन्ता व्यक्त करने के साथ-साथ श्री चरण सिंह को यह भी बतलाना चाहिए था कि बेकारी और भुखमरी की समस्या का उन्होंने क्या उपाय सोचा है। एक जिम्मेदार आदमी के लिए इतना कह देना काफी नहीं है कि भूमिहीनों को जमीन देकर खेतिहरों की संख्या में और ज्यादा वृद्धि नहीं करनी चाहिए। जमीन आदमी की बनायी हुई नहीं है। न वह उसे घटा सकता है, न बढ़ा सकता है। वह उसे सुधार अवश्य सकता है, और उसकी उपज बढ़ा सकता है, और वैसा करना भी चाहिए, पर जमीन किसी व्यक्ति की मिलकियत नहीं हो सकती। जमीन सारे समाज की है और सारे समाज के भरण पोषण के लिए उसका अच्छा-से-अच्छा उपयोग होना चाहिए, पर सिर्फ इसलिए कि किसी भी संयोग से किसी व्यक्ति के पास जमीन का कब्जा आ गया है, वह या समाज दूसरे किसी इन्सान को धरती से वंचित रखे यह प्रकृति के प्रति, समाज के प्रति और ईश्वर के प्रति द्रोह है।

—सिद्धराज ढड्ढा

प्रत्येक व्यक्ति रोज पन्द्रह मिनट सफाई करें

यही भंगी मुक्ति का सर्वोत्तम और असली इलाज है

अप्पा पटवर्धन

[महाराष्ट्र गांधी निधि की ओर से एक भंगी-मुक्ति परिसंवाद इस माह की ता० १२ व १३ को महाराष्ट्र के एक सर्वोदय केन्द्र राजूर (अहमदनगर जिला) में आयोजित किया गया था, उसमें अप्पासाहब पटवर्धनने अध्यक्ष-पदसे परिसंवाद के आरंभ के सत्राओं में भंगियों के सबसे बड़े दुःख के बारे में अपनी दर्दभरी वाणी में जो मननीय विचार रखे थे, वे यहां दिये जा रहे हैं।]

भंगियों की बीसों दिक्कतें हैं। जहां 'जागीरदारी' या 'घराकी' प्रथा जारी है वहां उनका वेतन प्रायः जूठन ही होता है। उनके मकान स्वयं बुरे और बुरी जगहों में होते हैं। उनका काम तो साक्षात् नरकवास होता है, जो मानव को शोभा नहीं देता। लेकिन उनका सबसे बड़ा या असली दुःख है स्वाभिमान की हानि। पाखाना उठाना एक निंद्य, हीन, शर्मनाक काम माना जाता है। इसलिए हीन भंगी जाति के लिए ही वह सुरक्षित रखा गया है। इसमें जो स्वाभिमान-हानि है वह न इनको शोभा देती, न हमको।

स्वाभिमान एक परम मूल्यवान वस्तु है। उसका मूल्य जान से भी बढ़कर है। स्वाभिमान में सच्ची मानवता है। और मानवता सब मानवों की सामान्य मिल्कियत होती है। भंगी की मानवता दलित होते ही मेरी और आपकी मानवता भी दलित होती है। जैसे एक भी पारसी बम्बई के रास्तों पर भीख मांगता फिरे तो उससे सारी पारसी जमात को शरम लगती है, वैसे वह मेहतर अपनी स्वाभिमान-हानि बरदाश्त करके अगर सफाई काम करे, तो उसमें न केवल उसकी बल्कि हमारी भी शरम है। वह हमारा पाखाना उठाने को राजी हो, तो हमें भी चाहिये कि हम उसको वैसा न करने दें। क्योंकि वह उस

(शेष पृष्ठ ११ पर)

पंतजी की पावन स्मृति

दामोदरदास मूंदड़ा

हमें यह स्वप्न में कल्पना नहीं थी कि बिहार केसरी श्री श्रीबाबू के मृत्यु लेखों की स्याही तक नहीं सूख पायेगी कि देशपर पूज्य पंतजी को श्रद्धांजलि समर्पण करने का यह कठिन प्रसंग आजायेगा। यद्यपि पंतजी मृत्यु के साथ पंद्रह रोज तक जूझते रहे और यद्यपि यह सही है कि लोक मानस पंतजी के मृत्यु का आघात सहन करने के लिए एक हद तक तैयार भी हो चुका था, सबकी भावना और प्रार्थना इस प्रसंग को टालने के लिए ही थी। कारण देशकी वर्तमान परिस्थिति में पंतजी की उपस्थिति मानों सार्वभौम रूप से अनिवार्य सी प्रतीत होती थी। सरदार वल्लभ भाई के चले जाने के बाद देश में जो अभाव निर्माण हुआ था और जिसकी पूर्ति पंतजी ही अपनी दृढ़ता, मृदुता, बुद्धिमत्ता और रचना चातुर्य के कारण ही कर सके थे, अब पुनः एक नयी चिंता के रूप में देश के सामने उपस्थित होने वाला था।

गांधीजी के बाद विनोबा के बारे में देहात के लोगों को लगा कि मानों गांधीजी ही पुनः हमारे बीच आ गये। फरक इतना ही हुआ कि गांधीजी को दाढ़ी नहीं थी विनोबाजी को दाढ़ी है। वैसे ही सरदार के बाद पंतजी के बारे में भी लोगों को लगा कि देश के गृह मंत्री पद पर सरदार ही पंतजी के रूप में पुनः आये हैं और इस बार अपनी पहले की मूछें भी पुनः ले आये हैं और मूछों के साथ मृदुता भी विशेष रूपसे .... संघटना चातुर्य, पंतजी ने अपने कार्यकाल में जो प्रकट किया वह पग-पग पर सरदार का स्मरण दिलाने वाला ही था। सभी ने स्वीकार किया है कि रियासतों के सवाल को जैसे सरदार निबटा सके, भाषावार प्रांत रचना की इस कठिन समस्या को पंतजी ही सम्हाल व सुलझा सके।

पंतजी गांधी युग के अत्यन्त देदीप्यमान उज्वल प्रकाश स्तंभ थे। प्रकाश स्तंभ और आधार स्तम्भ भी, ऐसा दोहरा व्यक्तित्व था उनका। लोक संग्रह की उनकी कला और पथ प्रदर्शन की उनकी शक्ति अद्भुत थी। वे यद्यपि सदा ही अत्यन्त मृदु-भाषी रहे, समय पड़ने पर वज्र से भी कठोर और हिमाचल से भी धीर गंभीर योद्धा का रूप उनके व्यक्तित्व में प्रकट हुआ है। हमें अनेक बार उनसे मिलने का अवसर मिला है। परन्तु काकोरी कैदियों की रिहाई के प्रश्न पर गवर्नर के हस्तक्षेप के कारण मुख्य मन्त्री पद का त्याग-पत्र देकर वे एक वीर योद्धा की तरह जब हरिपुरा आये थे, और मंच के उच्चासन से उन्होंने जो सिंह गर्जना की, उस समय जिन्होंने उन्हें देखा व सुना वे उनका वह वीररस प्रधान योद्धा का रूप हरगिज नहीं भूल सकते, जन समूह के मानस महासागर पर उस समय उनकी वीरवाणी से उत्साह त्याग, और बलि-दान की भावना की ऐसी ऊंची लहरें उठ रही थीं कि पुनः एक बार ब्रिटिश साम्राज्य-शाहि से युद्ध पर्व की पुनरावृत्ति के लिए लोग तैयार हो गये थे। गवर्नर ने एक प्रकार से देश की प्रतिष्ठा को ही धक्का पहुँचाया था, मुख्य मंत्री के काम में हस्त-क्षेप गवर्नर बर्दाश्त करना पंतजी के लिए असंभव था। अगर राज्यपाल ने हस्तक्षेप करके जनता की शक्ति को चुनौती ही दी तो बदले में अपना त्याग पत्र देकर पंतजी ने भी अंग्रेजी हुकूमत के सामने प्रति-चुनौती उपस्थित कर दी थी। और अन्त में उस मामले में अंग्रेजों को भारतीय जन मानस की भावनाओं का आदर करना पड़ा, अपना आग्रह छोड़ना पड़ा।

भूदान यात्रा के सिलसिले में विनो-बाजी उत्तर प्रदेश में प्रवेश कर रहे हैं, यह जब पंतजी ने श्री करणभाई से सुना तो संत का स्वागत करने के लिए पंतका हृदय आनन्द विभोर हो उठा। अपनी ओर से अपने हृदय के भावों को समादर पूर्वक प्रकट करते हुए एक सुंदर पत्र तो विनोबा जी को उन्होंने लिखा ही, राज्य भर में विनोबाजी के काम में सम्पूर्ण सहयोग प्रदान करने का आदेश उन्होंने स्वयं स्फूर्ति से जारी कर दिया। करणभाई को आग्रह पूर्वक कहा कि उन्हें विनोबाजी के कार्यक्रम से बराबर वाकिफ रखा करें। मिलने का कार्यक्रम बना व नैनीताल के बाद तुरत एक देहात में संत और पंत की लम्बी देर तक हार्दिक चर्चा होती रही। "भूदान कितना मिलता है इसकी मुझे विशेष चिंता नहीं वह तो मिलेगा ही, परन्तु आपके आगमन से जो नैतिक वातावरण निर्माण हो रहा है वह आज देश के लिए अत्यन्त महत्व का है। बापू के बाद ऐसा नैतिक वातावरण निर्माण करने वाला हमारे बीच आपके सिवा और है ही कौन?" ये स्पष्ट उद्गार उनके थे। उन्होंने महसूस किया कि अब एक जुलाई १९५२ से जमींदारी उन्मूलन विधेयक राज्यभर में जारी हुआ तो उसे लेकर अनेक स्थानों पर संघर्ष होने की संभावना थी यदि पहिले कई महीनों तक विनोबाजी की पदयात्रा से अनुकूल वातावरण निर्माण नहीं हो पाता। जमींदारी उन्मूलन विधेयक के जारी होने के बाद जब बेदखलियां बहुत जोरों से होने लगीं व विनोबाजी के पास शिका-यतों का तांता बंधने लगा तो विनोबाजी का संदेश पाते ही पंतजी ने तत्काल बेदखलियों को रोकने के अहकाम जारी करवा दिये। यह भूलना नहीं चाहिए कि यह भूदान का प्रारंभिक काल था। भूदान की सभी स्वस्थ परंपराएं बनती और विकसित होती जा रही थीं। इनके बनने और विकसित करने में पंतजी का सहयोग ऐतिहासिक स्थान रखता है। भूदान में वितरित होने वाली जमीन के आलेख, खाता परिवर्तन, पट्टे देना वगैरा जाब्ते के कामों के लिए आवश्यक सचिवा-लयीन प्रक्रिया में अनेक बाधाएँ उपस्थित होने की संभावनाएँ थीं। पंतजी की निगाहों से यह परिस्थिति ओझल नहीं थी। सम्बन्धित अधिकारियों के मानस में ही एतदर्थ आवश्यक सहकार्य की स्वयंस्फूर्ति जाग उठनी चाहिए ऐसा वे मानते थे। इसलिए जब पदयात्रा के सिलसिले में संत विनोबा का राज्य की राजधानी लखनऊ में पदार्पण हुआ तो पंतजी ने सचिवालय के सभी प्रमुख अधिकारियों को मुलाकात के लिए संत के निवासस्थान पर भेज दिया। उस समय उन सभी अधिकारियों के साथ भूमि सुधार, भूमि वितरण, जोत की मर्यादा, सरकारी कानून में किये जाने योग्य परिवर्तन आदि प्रश्नों पर की, किन्तु मन मुक्त चर्चाएँ हुईं जिससे भविष्य में सरकारी विभागों का सहकार्य सहज उपलब्ध हो सका।

पंतजी ने ही यह परम्परा डाली कि भूदान के लिए जो भी विधेयक बने वह विनोबा की इच्छा-नुसार बने और उस विधेयक के अनुसार कार्य सम्पन्न करने के लिए जो भी बोर्ड या समिति नियुक्त हो उसमें सदस्य भी विनोबाजी की स्वीकृति से ही नियुक्त किये जायें। यह कोई साधारण बात नहीं थी। क्योंकि फिर तो सभी राज्यों के लिए उत्तर प्रदेश का कानून ही नमूने का बन गया था। पंतजी चाहते भी यही थे कि कानून ऐसा बने जिससे आगे सभी स्थानों पर सुविधा हो जाय।

जब उत्तर प्रदेश के मंगरौठ गांव में पहले ग्रामदान का चमत्कार हुआ और गांव के भूमिवानों ने जमीन की अपनी मालकियत गांव सभा के नाम कर दी तो सहकार और एकता के आधार पर गांव की जनशक्ति जाग्रत हो जाने के कारण प्रति-क्रियावादी शक्तियों ने ग्रामदान की इस अपूर्व घटना को असफल बनाने का पूरा प्रयत्न किया और इसमें पुलिस, साहुकार तथा लगान वसूल करने वाले अधिकारी सभी एक हो गये। ऐसी ही स्थिति कोरा-पुट में भी आगे चलकर खड़ी हो गयी थी और सरकारी सहानुभूति के अभाव में गांववालों को काफी दिक्कतों का सामना वहां करना पड़ा किन्तु यहां जैसे ही पंतजी को सारी परिस्थिति से परिचित कराया गया, उन्होंने फौरन आज्ञा जारी कर दी कि मंगरौठ का लगान मंगरौठ की नवगठित ग्रामदानी गांवसभा से ही वसूल किया जाय, लोगों को तंग न किया जाय, सारा वातावरण बदल गया। नैतिक आन्दोलन के महत्व को समझकर उसका स्वागत करने तथा उसे पूरा बल देने की इस दूर दृष्टि व सूझबूझ के अभाव में हम आज देखते हैं कि जनता को काफी कठि-नाइयों का सामना करना पड़ रहा है। भिण्ड इलाके में आज जो कुछ हो रहा है उससे हमारे कथन की सत्यता का अनुभव हो सकता है।

पन्तजी का व्यक्तित्व कितना महान् था इसकी पूरी कल्पना तब तक नहीं आ सकती जब तक उनके निकट सम्पर्क में आने का अवसर न मिला हो। उत्तर प्रदेश की ऐसी कोई विधायक शक्ति नहीं थी जिसका परिपूर्ण सहयोग प्राप्त करने का पूरा प्रयत्न पंतजी ने नहीं किया हो। स्वर्गीय बाबा राघवदास, विचित्र नारायण शर्मा व करण भाई इन त्रिमूर्तियों की शक्ति और संघटना का ठीक दर्शन उन्हें था, और इनका सहयोग वे विधान सभा के काम में भी लेते रहे। भूदान के क्रांतिकारी कार्यक्रम के कारण जब बाबाजी व करण भाई ने पुनः विधान सभा की सदस्यता को स्वीकार करने की अपनी असमर्थता प्रगट की तो उनके इस त्याग को सराह कर कम से कम रचनात्मक काम से सम्बन्ध रखने वाली सभी राज्य समितियों से इन दोनों का अधिक से अधिक सम्बन्ध कायम रखकर, अपना संपर्क भी पूरा बना रखा।

दीन दुखियों के लिए उनका हृदय भी पूज्य बापू व ठक्कर बापू की तरह ही सदा सर्वदा आर्त व द्रवित रहता। कुमायूं जिले की जनता में प्रचलित बेगार व अन्य शोषक प्रथाओं से उनका चित्त काफी विह्वल हो उठा था। इसलिए उनकी सेवा के लिए उन्होंने संघटन व योजनाएँ बना-कर अपनी वकालत को व्यक्तिगत आर्थिक लाभ का साधन बनाने के बजाय उन सहस्रों दीन दुखियों के अर्थात् दरिद्र नारा-यण के चरणों में समर्पित कर दिया। डगर और गांव, वे कभी घोड़े की सवारी पर तो कभी पैदल भी बराबर घूमते रहे, स्वर्गवासी जमनालालजी बजाज को भी एक बार अपने निवास स्थान नौकुचिया तालमें बुलाया। उनके साथ उस इलाके की आर्थिक योजना के बारेमें विस्तार से चर्चा की। उनके उस अनुभव के कारण भविष्य में आदिम जाति सेवा मंडल की अखिल भारतीय जिम्मेदारी भी उन्हीं पर आयी जिसे वे उत्तम प्रकार से सम्हाल सके। परंतु स्वतंत्रता पूर्व कालमें आन्दो-लन के बढ़ते चरणों के कारण उस समय आर्थिक या सामाजिक विकास की किसी योजना का ठीक कार्यान्वित होना संभव भी नहीं था। सभी का ध्यान सबसे पहले स्वतंत्रता के संग्राम में और उसके लिए

सर्वस्व समर्पण की प्रक्रिया में एकाग्र होने लगता था।

वह समय ही ऐसा था कि किसी भी समय प्राणों को न्योछावर करने का अवसर आ सकता था। और उसके लिए गांधीजी के अनन्य साथी की तरह वे सदा तैयार रहते। सायमन कमीशन के समय उनके इस समयोचित उत्साह मय निर्भय प्रवृत्ति का अद्भुत परिचय सारे देशको और देशके बाहर के लोगों को भी होगया। गांधीजी ने मूल्य ही ऐसे प्रचलित कर दिये थे कि उसमें युद्ध के सेनानी को सबसे आगे ही रहना पड़ता था। और मृत्यु को हथेली में लेकर चलना पड़ता था। पंतजी इस महान आरोहण में कभी पीछे नहीं रहे। यहांतक कि जब सायमन कमीशन का आगमन हुआ और उसपर देशव्यापी बहिष्कार डालने का निर्णय देश ने किया तो एक साधारण स्वयं सेवक की तरह पंतजी भी पिकेटिंग करने के लिए खड़े होगये। जुलूस में भी शरीक हुए। उधर पंजाब में लालाजी भी इसी तरह आगे बढ़ते गये। वहां लाहोर में जो लाठी चार्ज हुआ उसकी कीमत लालाजी को देकर हमें चुकानी पड़ी। और इधर इलाहाबाद में जो लाठी चार्ज हुआ उसमें पंडित नेहरू पर होने वाले घातक वारों को पंतजी ने हंसते हंसते अपने ऊपर झेलने का अद्भुत पहाड़ी पराक्रम प्रकट किया। पहाड़ी आदमी सदा से सबका बोझ अपने सिर पर ढोता ही रहा है। पंतजी ने राष्ट्र के प्रतीक नेहरू पर पड़ने वाले लाठियों के प्रहारों का बोझ अपने सिरपर झेल कर मातृ ऋण और भ्रातृ ऋण दोनों का साथ अदा कर दिया। उन्होंने उस समय वह लाठियों की बौछार सहन करके एक विश्वस्त की तरह बापूको अपनी धरोहर सुरक्षित सुपुर्द की। परन्तु इस प्रयासमें उनकी गर्दन पर जो खतरनाक असर हुआ वह अन्त तक कायम रहा। उस समय जो आघात व शारीरिक कष्ट पंतजी को पहुँचे, व उसके कारण जो शारीरिक दोष उनकी कायामें रह गया, हो सकता है, अंत समय की उनकी बीमारी उसी के परिणाम स्वरूप इस रूपमें प्रकट हुई हो। अक्सर ऐसा होता भी है। जो भी हो वे अन्ततक कार्य मग्न रहे व एक योद्धाकी तरह ही काम करते रहे। जीवनभर निष्काम भावसे, किंचित मात्र लोकैषणा का विचार मनमें न लाते हुए अतुल्य प्रतिभा व अपार मृदुता के साथ सबके प्रति संपूर्ण सौहार्द रखते हुए वे अंततक अखंड सेवाव्रत धारी बने रहे। राष्ट्रपति और पंडित नेहरू, गत चालीस वर्षों के उनके अत्यन्त निकटके साथी। उनके चिर विरह से अपने एक महान साथी और आधार स्तम्भ को खोने का आघात उन्हें लगना स्वाभाविक है। देशभर ने जैसी शोक मय मनःस्थिति का अनुभव किया, सबने देखा। पंतजी के चले जाने से सचमुच देशकी महान हानि हुई है। उनके गुणों का चिंतन और जीवन में उनका अनुशीलन व प्रकाशन ही उनकी सच्ची स्मृति हो सकती है।

कांगों में भारतीय सेना

सिद्धराज ढड्ढा

कांगो में जो अभी हाल में भारतीय सेना भेजी गई है उसके सम्बन्ध में एक भाई ने हमें एक लम्बा पत्र लिखकर अपना विरोध जाहिर किया है। उनके कहने का सार यह है कि हिन्दुस्तान एक शांति प्रिय राष्ट्र है आजादी के पहले भी उसके नेताओं ने हमेशा विश्वशांति का समर्थन और युद्ध की नीति का विरोध किया है, तथा आजादी के बाद भी उन्होंने अपनी विदेश नीति बराबर यही रखी है। गोआ के मामले में या पाकिस्तान और चीन के साथ सीमा विवाद आदि के मामलों में अब तक बराबर भारत सरकार ने हिंसा और सैन्य-शक्ति के उपयोग का निषेध स्वेच्छा से अपने ऊपर लगाया है। अब कांगो में फौजें भेजकर भारत इस नीति से विमुख हुआ है जो उचित नहीं है।

अहिंसा की नीति और किसी भी हालत में मनुष्य मनुष्य के बीच युद्ध और हिंसा को स्वीकार न करने की बात अलग है, लेकिन भारत सरकार की अब तक की विदेश नीति में और कांगो में अपनी फौजें भेजने की उसकी कार्रवाई में हमें कोई विरोध नजर नहीं आता। अगर हम विश्लेषण करें तो आसानी से समझ सकेंगे कि इन दोनों बातों में अन्तर है, उनमें तुलना नहीं हो सकती। हिन्दुस्तान का खुद का किसी किसी पड़ोसी या दूसरे देश से झगड़ा हो उसमें जहाँ तक हो सके सेना का उपयोग न करके यानी लड़ाई पर उतारू न होकर समझौते और बातचीत से मसले को हल करने की नीति रखना एक बात है और एक अन्तर्राष्ट्रीय निर्णय को कार्यान्वित करने के लिये आवश्यक हो तो अन्तर्राष्ट्रीय नियन्त्रण में बल का प्रयोग करने के लिये अपने हिस्से का सहयोग देना दूसरी बात है। अगर हम एक नागरिक और दूसरे नागरिक के बीच के झगड़े का उदाहरण लें तो यह बात स्पष्ट हो जायगी। दो व्यक्तियों में आपस में झगड़ा होता था और समझौते से वह नहीं निपटा तो पहले के जमाने में वे व्यक्ति आपस में बल और हिंसा का प्रयोग करके उस झगड़े का फैसला करते थे। धीरे धीरे कानून का साम्राज्य (रूल आफ लॉ) नागरिकों ने स्वीकार किया और आज दो व्यक्तियों के आपसी झगड़ों में हिंसा या बल का प्रयोग गैरकानूनी, असामाजिक और त्याज्य माना जाने लगा है। आज ऐसे झगड़ों का फैसला अदालतों में कानून के आधार पर होता है। हालाँकि कानून के पीछे भी जो ताकत है वह हिंसाशक्ति की यानी पुलिस, फौज और जेल की ही है, फिर भी दो व्यक्ति आपस में हिंसा का प्रयोग करें उससे समाज की संगठित हिंसा याने कानून उसका फैसला करे यह अहिंसा की दिशा में ही कदम माना जायगा। 'कतल' का रास्ता छोड़कर 'कानून' के रास्ते पर आ जाना अपने आप में अहिंसा की ओर एक कदम है। हाँ, उससे भी आगे का कदम कानून का सहारा भी छोड़कर 'करुणा' के मार्ग पर बढ़ना है।

जो बात पहले व्यक्तियों के बीच झगड़े में लागू होती थी वही बात आज तक एक देश और दूसरे देश के आपसी झगड़ों में लागू होती आई है। छोटी-छोटी बातों में राष्ट्रों के बीच के झगड़े लड़ाई का रूप धारण कर लेते हैं। और इसमें कोई बुराई नहीं मानी जाती रही है। पर पिछले बरसों में विज्ञान की प्रगति ने देशों को नजदीक ला दिया है। तो आज तक देश की और देश के अन्तर्गत नागरिकों की स्थिति बनी है, वह स्थिति धीरे धीरे दुनिया और दुनिया के अन्तर्गत देशों की बनती जा रही है। सारी दुनिया का विचार एक राज्य यानी एक व्यवस्था की ओर बढ़ रहा है। परिस्थिति भी उसी ओर बढ़ने के लिये मजबूर कर रही है। ऐसी स्थिति में हिन्दुस्तान ने दूसरे देशों के साथ अपने झगड़ों में सेना का उपयोग यथासम्भव न करने की जो नीति अख्तियार की है वह इस परिस्थिति और विचार के अनुकूल और उसकी पोषक है। हिन्दुस्तान ने इस दिशा में पहल की है पर इसमें कोई सन्देह नहीं है कि देशों के आपसी झगड़ों का फैसला खुद सम्बन्धित देश हिंसा-बल का उपयोग करके न करें और अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर संगठित हिंसा यानी 'कानून' से ऐसे झगड़ों का फैसला हो यह स्थिति जल्दी ही दुनिया को मंजूर करनी पड़ेगी। कांगो में 'संयुक्त राष्ट्र संघ' के तत्वावधान में सेना का उपयोग दुनिया के इतिहास में अन्तर्राष्ट्रीय क्षेत्र में 'कतल' के बजाय 'कानून' के मार्ग के अनुसरण का पहला उदाहरण है, और अहिंसा के विकास में एक महत्वपूर्ण कदम है। गोआ के मामले में पुर्तगाल के खिलाफ या सीमा विवादों में पाकिस्तान और चीन के खिलाफ सेना का उपयोग यथासम्भव न करने का संकल्प अन्तर्राष्ट्रीय क्षेत्र में अब तक का प्रचलित कतल का रास्ता छोड़ने का प्रयास है, और कांगो के साथ अपना कोई झगड़ा न होते हुए संयुक्त राष्ट्र संघ के तत्वावधान में उपयोग के लिये अपनी सेना भेजना उस क्षेत्र में 'कानून' का रास्ता प्रशस्त करने का एक कदम है। दोनों ही बातों में हिन्दुस्तान आगे रहा है इसके लिये निश्चय ही पंडित नेहरू अभिनन्दन के पात्र हैं।

हाँ, इसमें कोई सन्देह नहीं कि अन्तर्राष्ट्रीय क्षेत्र में भी कानून से आगे बढ़कर 'करुणा' याने अहिंसा और प्रेम के मार्ग का अवलम्बन और भी आगे का कदम है। हमें वही मार्ग अभीष्ट है, हम उसी की सिद्धि देखना चाहते हैं। पर आज की तरह बनी हुई सरकारों से उस ओर कदम बढ़ाने की अपेक्षा करना शायद कुछ ज्यादा होगा। जैसा श्री शंकररावजी ने 'भूदान-यज्ञ' के ता० ३ मार्च के अंक में (पृष्ठ ४) युद्ध के विकल्प संबंधी अपने लेख में लिखा था यह कदम न आज की सरकारें उठा सकती है न उन सरकारों के प्रतिनिधियों का बनाया हुआ संयुक्त राष्ट्र संघ ही शायद उठा सकता है। इसके आगे दुनिया के शांति चाहने वाले आम जनता के सेवकों को ही शायद पहल करनी होगी। अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर शांति सेना के संगठन और उपयोग की कल्पना धीरे-धीरे बलवती होती जा रही है और दुनिया की परिस्थिति भी हमें उस ओर बढ़ने के लिये मजबूर कर रही है। शांति चाहने वाले और अहिंसा के मार्ग प्रशस्त करने की आकांक्षा रखने वालों के लिये परिस्थिति चुनौती बन कर आई है। हमें अन्तर्राष्ट्रीय क्षेत्र में अहिंसा के उपयोग के प्रश्न पर गंभीरता से सोचना चाहिये और जल्दी से जल्दी सक्रिय कदम उठाना चाहिए।

स्थायी ग्राहक योजना

सर्व सेवा संघ प्रकाशन ने पिछले दिनों पाठकों को नियमित सर्व सेवा संघ के प्रकाशन पढ़ने को मिले इस हेतु एक 'स्थायी ग्राहक' योजना जारी करना तय किया है। ग्राहक योजना में निम्न बातें होंगी।

(अ) स्थायी ग्राहकों से एक रुपया प्रवेश शुल्क लिया जायगा।

(आ) स्थायी ग्राहकों के दो रुपये अमानत में जमा रहेंगे। ये रुपये ग्राहक न रहने की स्थिति में वापस लौटा दिये जायेंगे।

(इ) ग्राहकों को साहित्य पर २५ प्रतिशत कमीशन दिया जायगा। डाक खर्च ग्राहकों को देना होगा।

(ई) स्थायी ग्राहक बनने वालों को 'भूदान यज्ञ' हिन्दी और 'भूदान' अंग्रेजी का ग्राहक बनने पर एक रुपया तथा 'भूदान तहरीक' और 'नई तालीम' के ग्राहक बनने पर आठ आने की रियायत दी जायगी।

योजना की शुरूआत जल्द ही होने वाली है।

स्वाभाविक शांति दबाव से नहीं, समझाने से होगी

दादा धर्माधिकारी

मनुष्य का जीवन जिस प्रकार मृत्यु की प्रतिक्रिया नहीं है, उसी प्रकार हिंसा की प्रतिक्रिया का नाम शांति नहीं है। शांति अपने में एक भावरूप, सजीव, स्वाभाविक स्थिति है। कोई दंगाफसाद हो जाये, कहीं झगड़ा हो जाये, मारपीट हो जाये, किसी तरह की हिंसा हो, उसके बाद हम शांति की स्थापना करते हैं, वह शांति हिंसा की विरोधी शांति होती है। लेकिन ऐसी कल्पना कीजिये कि हिंसा हुई ही नहीं। झगड़ा हुआ ही नहीं। तो कौनसी स्थिति रहेगी? जीवन की या अन्त की? याने मनुष्य शव होकर रह जायेगा या उसमें जीवन का उल्लास, शांति, कला-सुन्दरता भी होगी? यह सब इसी शरीर में, दूसरे लोगों के साथ रहते हुए, दूसरे के साथ हमारे जो संबंध है, उन संबंधों को बनाये रखते हुए करना है।

एक शांति समाज-निरपेक्ष, मनुष्य-संसार निरपेक्ष। मैं उस शांति की बात नहीं कर रहा हूँ, जिस शांति की खोज यतियों ने पहाड़ की कंदराओं में बैठकर या समुद्र में टापुओं पर बैठकर की है। दूसरों के साथ हमको रहना है। जीवन हमेशा सहजीवन ही है। एकाकी जीवन जैसी वस्तु कम से कम मनुष्य के लिए नहीं है। मनुष्य का सारा का सारा जीवन सह-जीवन है, जो संबंध का बना हुआ है। एक मनुष्य को दूसरे मनुष्य के साथ जो कड़ी जोड़ती है, उसे हम संबंध कहते हैं। मनुष्यों के साथ हमारा संबंध होगा, हम दूसरों के साथ जीयेंगे, यह सब होते हुए भी, संघर्ष नहीं है, कलह नहीं है, ऐसी परिस्थिति में, क्या जड़ता होगी?

जो लोग द्वन्द्वात्मक भौतिकवाद को मानते हैं, जिनका यह विचार है कि नित्य संघर्ष में ही जीवन का उत्कर्ष होता है, जिंदगी की तरक्की हमेशा द्वन्द्व से होती है; दो परस्पर विरोधी तत्त्वों की द्वन्द्व होती है, उनका संघर्ष होता है, उनमें से जीवन का, उस संघर्ष में से जीवन का विकास होता है, यह विचार जिनके सामने है उनके सामने भी यह सवाल है, कि जब दुनिया में वर्गसंघर्ष नहीं रहेगा, कोई अमीर या गरीब नहीं होगा, एक मनुष्य दूसरे मनुष्य पर हुकूमत नहीं करेगा और एक मनुष्य दूसरे मनुष्य का शरीर अपने उपभोग का साधन नहीं मानेगा; ऐसी स्थिति में, जहाँ राज्य भी नहीं और शोषण भी नहीं होगा उसमें मनुष्य की कौनसी स्थिति होगी? क्या फिर भी संघर्ष रहेगा?

इसका जवाब एक दूसरे स्तर पर दिया गया जिससे समाधान नहीं हो सकता। लेकिन कभी कभी मनुष्य विवाद के लिए दलील दे दिया करता है। तो यह सिर्फ दलील दी गयी कि तब अंत में मनुष्य का और प्रकृति का संघर्ष होगा। इसका मतलब यह है कि जड वस्तु का जीवन के साथ संघर्ष होगा। प्रकृति और मनुष्य के बीच शांति कब होगी, यह एक स्वतंत्र विचार है।

मनुष्य और मनुष्य के बीच जो संघर्ष है, इस संघर्ष का अंत हो सकता है, होना चाहिए, हो कर रहेगा। सारे क्रान्तिकारी इस बात को मानते हैं। इसलिए मैंने इस द्वंद्वात्मक भौतिकवाद का उल्लेख किया। जिसको लोग मार्क्स के नाम से पहचानते हैं। सारे के सारे मार्क्सवादियों को एक ऐसी परिस्थिति की कल्पना करनी होती है, जिस परिस्थिति में वर्ग नहीं रहेंगे, और वर्ग नहीं होंगे इसलिए विग्रह, संघर्ष नहीं रहेगा। उस परिस्थिति में जो शान्ति होगी उसका क्या स्वरूप होगा? यह सवाल हमारे लिए महत्त्व का इसलिये है कि एक प्रतिक्रियात्मक शान्ति होती है, और दूसरी नित्य शांति होती है, जो मनुष्य का जीवन है। यह दो तरह की होती है। एक शांति जिसकी हमको स्थापना करनी होती है, और एक शांति वह, जिसका भंग हुआ है। हम कहते हैं न कि शांति का भंग हो गया। पीस का ब्रीच हो गया है। इसका मतलब शांति भंग होने से पहले शांति थी। और यह शांति किसीने स्थापित नहीं की थी। स्वाभाविक शांति थी। जिस शांति का अशांति में भंग होता है जिसे आप डिस्टर्बेन्स ऑफ दी पीस कहते हैं, जिस अमन में खलल होता है, क्षोभ पैदा होता है, वह शांति पहले होती है। जैसे पानी पहले है, तरंग बाद में। तरंग बाद में बहुत बड़ी लहर हो गया, तूफान हो गया—हवा आने से। तूफान शांत हो गया—आप कहते हैं समुद्र "शांत हो गया"। लेकिन समुद्र अशांत हुआ या उससे पहले क्या था? उससे पहले वह शांति ही था।

> **शांति सैनिक को यह खूब अच्छी तरह समझ लेना चाहिए, गाँठ बाँध लेनी चाहिए कि समाज की स्वाभाविक स्थिति ही शांति है। मनुष्य और मनुष्य का जो स्वाभाविक, नैसर्गिक सम्बन्ध है वह शांति का सम्बन्ध है, अशांति का सम्बन्ध नहीं है।**

यह जान लेने की बड़ी आवश्यकता इसलिए है कि पार्लमेन्ट में जब दो पक्ष हुए-यह यहाँ समझ लेना है कि पहले पार्लमेंट हुई बाद में पक्ष हुए-तो पार्लमेंट पर पुस्तकें लिखी जाने लगीं। इनमें से वोल्टर बेजोट की बिल्कुल बालबोध पुस्तक दी इंग्लिश कान्स्टीट्यूशन है, जो इंग्लैण्ड के संविधान पर लिखी है। उसमें वह एक बात बार-बार कहता है कि दो पक्ष अगर न हों तो मनुष्य में जो स्वाभाविक संघर्ष की भावना है, उसके लिए कोई अवसर नहीं रहेगा। मनुष्य चाहे हार जाने के लिए लड़ेगा, लेकिन बगैर लड़ाई के नहीं रहेगा, इतनी युयुत्सा, इतना झुझारूपन, इतनी झगड़ालू मनोवृत्ति उसके खून में है। इसलिए पार्लमेंट में भी थोड़े से झगड़े के लिए अवसर होना चाहिए, कुछ संघर्ष के लिए अवसर होना चाहिए। लोकनीति में अगर संघर्ष के लिए अवसर नहीं होगा तो अंत में मनुष्य क्या करेगा? लोकतांत्रिक राज्य-व्यवस्था या लोकतांत्रिक लोकनीति के विषय में जो लोग आजतक कहते आये हैं, उनमें से यह जो एक बड़ा राजनीतिशास्त्री माना गया है वह यह कहता है कि लोकतंत्र में भी नागरिकों के दो गिरोहों को लड़ने की सुविधा होनी चाहिए। जहाँ कुछ लड़ाई के लिए अवसर नहीं होगा, वहाँ मनुष्य की मनुष्यता का पूरा विकास नहीं होगा, यह हमने आजतक राजनीतिज्ञों की किताबों में पढ़ा। इसलिए मैंने आप लोगों के सामने यह मूलभूत प्रश्न उपस्थित किया है कि आखिर लड़ाई तो होती है और लड़ाई जब होती है, उसके बाद लड़ाई बंद होती है, वह बंद होने पर अमन, शांति, सुलह हो जाती है। लेकिन लड़ाई होने से पहले कौनसी स्थिति होती है? क्या उस स्थिति का नाम शांति नहीं है?

शांति के दो अर्थ

तो अब शांति के दो अर्थ हुए। एक शांति मनुष्य समाज के लिए स्वाभाविक, आवश्यकता के रूप में, नित्य रहती है। मनुष्य का समाज ही जिस शांति के आधार पर बना हुआ है, वह शांति और दूसरी शांति जो अशांति के कारणों को दूर करने के बाद कायम होती है। झगड़े की बुनियादें आज जितनी समाज में मौजूद हैं, उन्हें हटा देते हैं, तो उसके बाद अमन कायम हो जाता है। जो काम सारे क्रांतिकारियों को करना है। ऐसा समाज, जिसमें चोरी भी नहीं होगी और चोर भी नहीं होंगे, चोरी के लिए वजह भी नहीं होगी और मौका भी नहीं होगा। अब यह स्वप्न नहीं है। यूटोपिया नहीं है, इस प्रकार की चीज हर क्रान्तिकारी चाहता है।

यह किसी और के नहीं स्टेलिन के शब्द हैं। जिसने जोरजबर्दस्ती से शांति की स्थापना के लिये काम लिया। लेकिन वह कहना यह चाहता है कि हम ऐसी परिस्थिति पैदा करना चाहते हैं, जिसमें इस प्रकार का कोई मनुष्य रह ही नहीं सकेगा जो चोरी या गबन करेगा। अब यह परिस्थिति दो तरह पैदा से की जा सकती है।

आप लोगों ने अपनी बाल्यावस्था में एक अमीर की कहानी पढ़ी होगी, जिसमें उसका वजन बेतहाशा बढ़ रहा था। चल भी नहीं पाता था। बहुत दवाएँ लीं, कुछ फायदा नहीं हुआ। आखिर एक आदमी ने उससे कहा कि आपको कुछ नहीं हुआ है। यह लोग नाहक आपको दवा देते हैं। आप मेरे साथ रोज सौ कदम चला करें, बस इतना काफी है। और वह उसे भर दोपहरी में बारह बजे रेत में, गर्मी के दिनों में ले जाता था। आप जूता पहनता था और उसे कहता था कि नंगे पैर तुमको चलना होगा। वह आदमी वहाँ जाते ही दौड़ने लगता था। दस रोज में शरीर कुछ हल्का सा हो गया। फिर उसने कहा आपने तो कुछ वैसा उपचार किया जो आजतक किसीने नहीं किया था। हाँ, यह उपचार मैं आपसे कहता तो आप नहीं करते। मैंने परिस्थिति ऐसी पैदा कर दी कि जिस परिस्थिति में रोज आपको सौ कदम दौड़ना ही पड़ा। इसे कंपल्शन ऑफ दी सिच्युएशन कहते हैं। परिस्थिति में आप कुछ जैसे प्रेशर्स ऐसे कंस्ट्रेनस, इस प्रकार के दबाव, मजबूरियाँ, कुछ विवशतायें, और कुछ परिस्थिति का प्रभाव और आक्रमण ऐसा उपस्थित कर देते हैं कि उसको लाचार होकर परिस्थिति के अनुरूप आचरण करना ही पड़ता है। आप बहुत लोगों के मुँह से सुनेंगे कि गांधी ऐसी परिस्थिति ही पैदा कर देता था कि जिस परिस्थिति के कारण जबर्दस्ती हृदय परिवर्तन हो जाता। यह गांधी के प्रति अन्याय है, लेकिन जो लोग अपनी तरह से गांधी की बातों का अर्थ करना चाहते हैं वे यह कहते पाये जाते हैं कि गांधी को चिन्ता अपने प्रतिवादी के हृदय-परिवर्तन की उतनी नहीं थी, जितनी कि उसके आचरण को बदलने की थी। इन दो बातों में बहुत बड़ा फर्क है। मैं आपके बर्ताव को बदल दूँ, आपके व्यवहार को बदल दूँ, ऐसी परिस्थिति पैदा करूँ। इसमें हृदय-परिवर्तन नहीं है। परिस्थिति का परिवर्तन है। इसमें आपको समझाने की फिक्र नहीं है। समझाना (परस्यूएशन) कम है, दबाव (कोअर्शन) अधिक है। किसी न किसी तरह मैं वह बात आपसे कराना चाहता हूँ जो मेरे दिल की हो।

> **जब आप मनुष्य को समझाकर उसका आचरण बदलते है तो उसको ऊँचा उठाते हैं। जब मनुष्य को बगैर समझाये उसका आचरण बदलते हैं तो उसको ऊँचा उठाते, नहीं विवश करते हैं। वह लाचार हो जाता है। दोनों चीजों में यह बहुत बड़ा अन्तर है।**

अब भगवान ने मनुष्य को बनाया ही ऐसा है कि ज्यादा दिन वह लाचारी में नहीं रह सकता। यह तो ईश्वर की कृपा है। उसे जब मौका मिलेगा ऊपर को उठेगा। ईश्वर का इतना स्वभाव मनुष्य में है। ऊर्ध्वं गच्छन्ति सत्त्वस्थाः। उसके स्वभाव

जापान में अम्बर चर्खे का प्रदर्शन

अरविंद पंड्या

[पिछले साल श्री अरविंद पंड्या ने जापान मे अन्तर्राष्ट्रीय हस्त उद्योग प्रदर्शिनी में अम्बर चर्खे का प्रदर्शन किया, उसका रोचक विवरण उन्ही की जबानी खादी ग्रामोद्योग प्रायोगिक समिति के मासिक पत्र 'अंबर' से हम यहाँ दे रहे है। —सं०]

भारतीय दूतावास में एक परिपत्र आया था जिसमें दूतावास के कर्मचारियों को अन्तर्राष्ट्रीय हस्त-उद्योग प्रदर्शनी में शरीक होने के लिए निमंत्रित किया गया था। ठीक उसी वक्त मैं अम्बर की बात लेकर वहाँ पहुँचा।

सबको मेरी बात जँच गयी और मैं तुरन्त उसकी तैयारी में लग गया। सबसे पहले मैंने चार हजार प्रचार पत्रिकायें अंग्रेजी और जापानी भाषा में छपवायीं।

इस पत्रिका के अलावा चरखा तैयार करने का काम सबसे भारी था। क्योंकि चरखे के पुर्जे अलग करके मैं साथ ले गया था। पूरे दो दिन उसको जोडकर कताई करने योग्य तैयार करने में चले गये।

प्रदर्शनी के दो दिन पहले उसको दूतावास में ले गया। वहाँ पर बहुत लोगों ने अम्बर चरखे को पहली मरतबा ही देखा। लोग अपनी-अपनी राय देने लगे। ठीक उसी समय भारत के विधि मन्त्री श्री सेन भी आये और उन्होंने भी अपनी राय दी कि विज्ञान के जमाने में यह चीज चलनेवाली नहीं है। लेकिन चरखा किसी के आशीर्वाद अथवा शाप पर चलनेवाली बात तो नहीं है।

दूसरे दिन श्री बतनाबे नाम के एक सद्गृहस्थ चरखा देखने के लिए आये। आप जापानी छोटे उद्योगों के नेता हैं और अन्तर्राष्ट्रीय हस्त-उद्योग प्रदर्शनी के संचालक हैं। आपने चरखा देखा। सारी प्रक्रियाओं का अभ्यास किया, खुद चलाके देखा और कुछ देर के बाद जाहिर किया कि यह चरखा प्रदर्शनी में रखने लायक है। लोगों में बहुत दिलचस्पी पैदा करेगा।

१४ मई १९६० को अम्बर चरखा टोकियो की अन्तर्राष्ट्रीय हस्त-उद्योग प्रदर्शनी में पेश किया गया। इस प्रदर्शनी में हाथ से बनी हुई तरह तरह की चीजें रखी गयी थी। खास करके हाथ से स्वेटर, मोजे आदि बनाने के लिए तैयार की गयी मशीनें थीं। ये मशीनें कैसे काम करती हैं, यह सिखाया जाता था। घास, बांस, नेतर, प्लास्टिक आदि का उपयोग करके उसमें से भिन्न-भिन्न प्रकार की सस्ती और महँगी सभी चीजें बना कर रखी गयी थीं। इस प्रदर्शनी का हेतु हस्त-उद्योग का प्रचार करना था। सारे जापान के हस्त-उद्योग प्रेमी शिक्षकों को यहाँ पर न्योता दिया गया था। इसके अलावा दूसरे यंत्रज्ञों, बच्चे-बूढे सभी प्रकार के लोग और कुछ परदेशी लोग भी थे।

आये हुए लोगों में से कुछ अमेरिकनों ने चरखे का काम देखकर उसकी तारीफ की। यहाँ पर चरखे का प्रदर्शन सुबह साढे दस बजे से लेकर शाम को साढे पाँच बजे तक चला। काफी लोगों ने उसको घूमा कर भी देखा।

अंबर के प्रदर्शन में मैंने तकली, पेटी चरखा और अंबर चरखा चालू हालत में रखा था। हरेक के लिए अलग-अलग प्रक्रिया करके रूई से सूत और खादी के कुछ नमूने भी साथ में रखे थे। कुछ लोग ऐसा मानते थे कि मैं अंबर चरखा नाम का यंत्र जापान के बाजार में बेचने के लिए लाया हूँ। लेकिन जब मैंने दो शब्द कहते समय बताया कि मैं जापान के यंत्रज्ञों से सीखने आया हूँ और अंबर जैसा यह अधूरा यंत्र पूर्ण करने के लिए यांत्रिक मदद चाहता हूँ, तब सारी सभा का भ्रम दूर हो गया।

काफी यंत्रज्ञों ने सभा के बाद भी चरखे का निरीक्षण किया और कई लोगों ने अपना पता दिया। बाद में मिलने का वायदा किया। सभी लोग अंबर का सूत और खादी का नमूना देखकर बहुत प्रभावित हुए। यंत्रज्ञों के लिए चरखा माने एक सुधरी हुई सारी रिंग फ्रेम थी, लेकिन पेटी-चरखा एक जादू था। किसीका मन नहीं मानता था कि मैं रूई की बनी हुई पूनी से पक्का सूत कात रहा हूँ। सभी के खयाल में यही था कि मैं कच्चे धागे को अधिक बट देकर पक्का बनाने की मशीन लाया हूँ। लेकिन मैंने सबके सामने धुनी हुई रूई की पूनी बनाकर कताई की तब सबके आश्चर्य की सीमा न रही। यंत्रज्ञों से मैंने मजाक करते बताया कि यह हमारा हायड्राफ्टका चरखा है, क्योंकि १। अंक की पूनी से ४० अंक का सूत कातके बताया। उसका मतलब यह हुआ कि उँगलियों की मदद से मैंने ३२ गुणक से कताई की। साथ-साथ यह जाहिर किया कि पू० गांधीजी ने यरवडा जेल में इस चरखे का निर्माण किया था। तब बहुतों ने इस चरखे के साथ *तस्वीरें खिचवायीं।*

इस प्रदर्शनी के कारण अंबर चरखे को अच्छी प्रसिद्धि हुई और लोग मुझे अपना काम दिखाने के लिए बुलाने लगे।

सारे जापान का दौरा करने के लिए सब सुविधा हो गयी। २१ मई १९६० के दिन ओसाका शहर में होनेवाली दूसरी अंतर्राष्ट्रीय प्रदर्शनी में चरखा पेश करने का एक और आमंत्रण मिल गया।

मेरे पास मेरा चरखा था। उसीके आकर्षण से बहुतेरे लोग पूछने के लिए आया करते थे। इससे अंग्रेजी समझने वाले मिल सके। अपने यजमान का पता लगाकर आखिर में एक जापानी होटल में ठहरा।

यह होटल पूरे जापानी ढंग से चलता था। जूते उतारे बगैर आगे बढ़ नहीं सकते। इसमें स्नानगृह था ही नहीं। इसलिये स्नान का इन्तजाम करना पड़ा। दूसरी बात इस होटल में सारे के सारे जापानी भाषा के सिवा एक भी शब्द नहीं जानते थे। इसलिए मैं मुश्किल से समझा सका कि मुझे दूध और पानी चाहिये।

खैर, दूसरे दिन सुबह मैं चरखे का प्रदर्शन करने के लिए उसकी तैयारी में लग गया। शामको यजमान लोग मिल गये और समझ गये कि दूसरे दिन होनेवाले प्रदर्शन में वे मदद करेंगे।

सुबह १० बजे चरखा लेकर प्रदर्शनी के लिए चल पडा। साथ में मेरे मित्र और द्विभाषिया श्री मात्सुकावा थे। टोकियो प्रदर्शनी से यहाँ पर अधिक जगह थी। इसलिए प्रदर्शनी अच्छी तरह से सजाई गयी थी। प्रदर्शनी के दरवाजे पर चरखे का साहित्य बाँटने का इन्तजाम रखा था। प्रदर्शनी में जाने के पूर्व प्रचार पत्रिका के सहारे सबको मालूम हो जाता था कि मैं क्या कहना चाहता हूँ।

यहाँ पर भिन्न-भिन्न देश के प्रतिनिधि आये थे। भारतीय दूतावास की ओर से भी कुछ भाई-बहन आये थे। सबके सामने चरखा पेश करते हुए मैंने बताया कि चरखा गृह उद्योग विश्वशान्ति में काफी हिस्सा दे सकता है। सबने शांति से मेरी बातें सुनी और बाद में होनेवाले प्रदर्शन के इन्तजार में बैठे रहे।

यहाँ पर भी टोकियो की तरह लोगों का ध्यान पेटी चरखे ने आकर्षित किया। फिर भी कुछ वृद्धाओं ने कहा कि अगर इस चरखे से ऊन कात सकते हैं तो उनके लिए यह यंत्र उपयुक्त होगा। मैंने जवाब दिया कि कुछ फर्क करने से चरखे पर ऊन कात सकते हैं, तब सारे लोग खुशी के मारे तालियाँ बजाने लगे। बच्चे, बूढे सभी चरखे को चाव से देखने लगे। कुछ लोग प्रदर्शनी में रखी हुई खादी मांगने लगे। लेकिन उतनी खादी मेरे पास थी नहीं कि सबको दे सकूं। तज्ञों ने भी सूत और कपड़ा देख कर खुशी जाहिर की।

यहा पर एक बात नयी हुई कि कुछ यंत्र विशारदों ने यंत्र की डिजाइन और अन्य फर्क करने के लिए सुझाव भी दिए। ऐसी सूचनाएं मैंने नोट करके रख ली, ताकि भविष्य में प्रयोग कार्य में उसका फायदा उठा सकें।

ओसाका शहर यंत्र सामग्री का बाजार है। यहाँ पर सौ-सवा सौ मारवाड़ी व्यापारी हैं। ये लोग आम तौर पर आयात-निर्यात का काम करते हैं। इनमें से कुछ तो पूरे जापानी बन गये हैं, जैसे उनकी जापान मातृभूमि ही हो। ये लोग काम में अधिक व्यस्त होने से मुझको मदद नहीं दे सके। लेकिन एक-दो जापानी कम्पनी वालों ने मदद देने का वायदा किया। श्री ईशावाशी सान उनमें से एक हैं जिन्होंने मुझको काफी मार्गदर्शन दिया और खुदका समय निकाल कर मदद के लिए आये। आप बुद्ध भगवान के परम अनुयायी हैं और निचिमेन कम्पनी के स्पिनिंग विभाग के प्रमुख हैं। इतने बड़े धनी होने पर भी बहुत सादगी से रहते हैं। आम तौर पर बौद्ध मठ में रहना पसंद करते हैं। भारतवासियों को उनकी सबसे बड़ी मदद मिलती है। आपने अपनी कम्पनी के यंत्र विभाग की मदद देने के लिए वायदा किया।

इस तरह से ओसाका प्रदर्शनी का एक दिन बीत गया और मेरे लिए काफी सुविधाएं और मुलाकातों की चिरस्मरणीय भेंट दे गया।

कामवृत्ति और भूख

मूलवृत्ति जब सबसे पहला मानव बना चुके और उसके भीतर वृत्तियों का प्रवेश करा चुके तो वृत्तियाँ भीतर पहुँच कर अपने क्षेत्रों की स्वामिनी बन गईं और दूसरे क्षेत्रों पर अधिकार करने के लिए संघर्ष करने लगी। बुद्धि ने आगे बढ़कर सुझाव दिया लड़ने से क्या लाभ? बैठकर अपने अपने क्षेत्र निर्धारित कर लो और मिलकर रहो।

सुझाव सबको पसन्द आया। क्षेत्रों के बटवारे में प्रथम स्थान की अधिकारिणी दो वृत्तियाँ उठ खड़ी हुईं भूख और काम।

कामवृत्ति बोली—

मैं मानव की मूल वृत्ति हूँ। मानव की सारी क्रियाएँ और चेष्टाएँ मेरी तृप्ति के लिए होती हैं। मेरे विविध रूप हैं। अतः प्रथम स्थान मुझे मिलना चाहिये।

भूख ने उत्तर दिया—

काम के कथन में सत्य नहीं। मानव काम की ओर तभी प्रवृत्त होता है जब मेरी पूजा कर लेता है। भूखे पेट काम का ध्यान भी नहीं आता। मानव जीवन के सारे प्रयत्नों का उद्देश्य मैं हूँ। मेरे रहते काम को प्रथम स्थान कभी नहीं मिल सकता।

बुद्धि ने जो सभा का नेतृत्व कर रही थी प्रथम स्थान 'आनन्द' वृत्ति को दिया और अन्य वृत्तियों को उसकी सेवा का आदेश देकर स्वयं भी अपना सिर उसी के चरणों में झुका दिया। —माखनलाल शर्मा

अन्तिम आदमी की खोज

• रामप्रवेश शास्त्री

आज का युग वैज्ञानिक युग कहलाता है। विज्ञान के क्षेत्र मे बहुत बड़ी प्रगति हुई है। नित्य नए नए आविष्कार होते जा रहे हैं। तार, रेडियो, टेलीफोन, हवाई जहाज, एटम बम, हाइड्रोजन बम, राकेट ये सभी वैज्ञानिक आविष्कार हैं। इनके आविष्कर्ता बड़े ऊंचे वैज्ञानिक माने जाते हैं। यहां पर हम एक वैज्ञानिक की ही चर्चा करने जा रहे हैं जिसने अपने आविष्कार के द्वारा युग को आन्दोलित किया और एक नए समाज के निर्माण की प्रेरणा दी।

यह वैज्ञानिक हमारे राष्ट्र पिता महात्मा-गांधी हैं, जो आज से १०० साल पहले काठियावाड़ में पैदा हुए थे। इन्होंने "अन्तिम आदमी" की खोज की और उसी के लिए ताजिन्दगी संघर्ष करते रहे। उन्होंने अपने इस आविष्कार के साथ युग और जगत को एक दर्शन दिया, विचार दिया, जिसको हम सर्वोदय दर्शन अथवा सर्वोदय विचार के नाम से जानते हैं।

गांधी जी की समस्त साधना का केन्द्र बिन्दु है 'अन्तिम आदमी' उन्होंने स्पष्ट रूप से यह घोषणा की कि जब तक इस 'अन्तिम आदमी' का कल्याण नहीं होगा तब तक विश्व का अथवा समाज का कल्याण सम्भव नहीं है। इसलिए समाज कल्याण के लिए इस अन्तिम आदमी के कल्याण का मार्ग प्रशस्त करना है। देश की राजनीतिक स्वतन्त्रता इस अन्तिम आदमी के कल्याण की दिशा में एक कदम है।

गांधी जी जब तक अपने भौतिक देह से हमारे बीच मौजूद थे तब तक उनके द्वारा निर्देशित मार्ग पर हम यन्त्रवत् चलते रहे, उनके द्वारा निर्मित कार्यक्रम में सहयोग करते रहे। उनके जीवन काल में हम सफलता पूर्वक अन्तिम आदमी के उदय की ओर एक कदम चल सके। उन्होंने दूसरा कदम भी बढ़ाया। लेकिन हम उस कदम को पहचान न सके, और एक कदम के बाद रुक गये। कुछ लोगों ने उन्हें दूसरा कदम उठाते देखा भी और स्वयं भी उठाने की कोशिश की। परन्तु ऐसे लोग बहुत कम थे।

दुर्भाग्य वश दूसरा कदम रखने से पहले ही गांधी जी परलोकवासी हो गए। उनकी अनुपस्थिति में उनके थोड़े से सहगामियों के लिए विशेष कठिनाई उत्पन्न हो गई। क्योंकि पहले कदम के बाद रुके हुए बहु-संख्यक लोग जो गांधीजी की उपस्थिति में निष्क्रिय और मौन थे—दूसरे कदम के बारे में, उनके न रहने पर सक्रिय बाधक सिद्ध हुए। उन्हें अपनी जगह पर ही सिद्धि दिखने लगी, कल्याण दीखने लगा। ऐसा शायद अन्तिम आदमी का विस्मरण हो जाने के कारण हुआ हो।

गांधीजी ने अन्तिम आदमी का न केवल आविष्कार किया, बल्कि उसकी कसौटी भी समाज को दी। समाज ने उस कसौटी पर बहुत ध्यान नहीं दिया क्योंकि पारखी मौजूद था।

पारखी ने सब से पिछड़े व्यक्ति की ओर संकेत किया। हमारी दृष्टि 'भंगी' की ओर गयी। उसका संकेत भी उधर ही था। निःसन्देह वह 'अन्तिम आदमी' था और आज भी है। लेकिन वह एक मात्र 'अन्तिम आदमी' नहीं है। बहरहाल, भंगी नामधारी अन्तिम आदमी के उदय के लिए खूब चर्चा हुई, योजनाएँ भी बनीं। लेकिन वह अपनी जगह पर यथावत् कायम रहा। यदि कुछ खिसका तो युग की हवा से अपने स्वतः की साधना से। इतने दिनों के प्रयास का परिणाम कुछ भी नहीं—आखिर बात क्या है? शायद पहचानने में गल्ती हुई हो। अथवा प्रक्रिया ही गलत हो। अब तो ऐसा लग रहा है कि गांधी द्वारा आविष्कृत 'अन्तिम आदमी' कहीं खो गया है। उसे ढूँढना जरूरी है।

चूँकि पहले से भंगी को हम 'अन्तिम आदमी' मानते आये हैं, इसलिए आज भी उसी को मानते हैं। सब की दृष्टि उसी की ओर है। सभी उसी की सेवा में अपने को कृतार्थ मानने लगे हैं, और सबका परिणाम नगण्य ही दीख रहा है। कहीं ऐसा न हो कि अन्तिम आदमी की खोज में हमको भी उसी निष्कर्ष पर पहुँचना न पड़े, जिस निष्कर्ष पर कभी कबीर पहुँचे थे बुरे की खोज में।

भंगी अछूत माना जाता है। उसका पेशा घृणित समझा जाता है। उसके काम करने के साधन अवैज्ञानिक हैं और वह इसलिए अयोग्य है। गंदगी साफ करने का वह सामाजिक ठेकेदार है और यदि उस गंदगी से स्वर्ण पैदा होने लगे तो उस स्वर्ण को वह छूने का भी अधिकारी नहीं। गन्दे और अस्वास्थ्यकर मकानों में वह रहता है। सभ्यता संस्कृति का कभी स्वप्न देख ले तो दूसरी बात है वरन् उसे इसके लिए बिल्कुल अवसर नहीं है। इस प्रकार वह समाज का सब से अवहेलित और पिछड़ा हुआ प्राणी है। और शायद इसीलिए वह समाज में अन्तिम आदमी है।

लेकिन यह हमारा मानना है। इसकी प्रामाणिकता के लिए, भंगियों की भी बात जाननी चाहिए। आप किसी भंगी से बात करें तो पता चलेगा कि दूसरे प्रकार के लोग हैं जो उससे छोटे हैं, जिनके साथ वह खान-पान का सम्बन्ध नहीं रख सकता क्योंकि समाज में उसकी अप्रतिष्ठा होगी। यदि उस दूसरे प्रकार के लोगों के यहाँ भी जाकर आप पता लगाये तो उन्हें भी कुछ लोगों से ऊंचे स्थान पर ही पायेंगे। और सम्भवतः अन्तिम आदमी को इस प्रक्रिया से नहीं प्राप्त कर सकेंगे।

आखिरकार! इस प्रकार की उच्चता का भाव पैदा कैसे जब कि समाज की उपेक्षा के परिणामों के वे भुक्तभोगी हैं। सच पूछा जाय तो अन्तिम आदमी वही है जो स्वयं को ऊँचा और दूसरों को नीचा समझे। इस कसौटी पर हम कह सकते हैं कि हमारा पूरा समाज अन्तिम आदमी का समाज है। पूरे समाज में एक तत्त्व समान रूप से दीख पड़ता है, कि यहाँ हर आदमी ऊँचा है, श्रेष्ठ है—अपनी अपनी निगाह में। परिणाम स्वरूप हर आदमी अस्पृश्य है, किसी न किसी के लिए। लेकिन भंगी, हरिजन आदि बहुसंख्यक समाज के लिए अस्पृश्य हैं, सब के लिए अस्पृश्य हैं। अतएव वे अन्तिम आदमियों के समाज में भी अन्तिम आदमी हैं—ऐसा मानना चाहिए और इसीलिए उनके उदय में पूरे समाज का उदय दृष्टिगोचर होना चाहिए। परन्तु केवल उन्हीं के उदय की दृष्टि रही तो उनके उदय के बाद भी पूरा समाज, अन्तिम आदमियों का समाज बना रहेगा क्योंकि वे अन्तिमों में अन्तिम हैं। अतः स्वस्थ समाज के लिए पूरे समाज का दृष्टिकोण बदलना चाहिए।

सत्य तो यह है कि जिन्हें सारा समाज अस्पृश्य मानता है, वे लोग नकल्ची हैं। ऊंचा समझे जाने वाले लोगों की हर बुराई का अनुकरण वे लोग करते हैं। सबके लिए अस्पृश्य होते हुए भी आपस में अस्पृश्यता का व्यवहार करते हैं। शायद इसीलिए कि श्रेष्ठ माने जाने वाले लोग आपस में ऐसा ही व्यवहार करते देखे जाते हैं। बहुतायत में श्रेष्ठ जन का यह व्यवहार दिखावटी होता है। लेकिन सिद्धान्ततः अनुकरण वास्तविक हो जाया करता है। उदाहरण के लिए हम वकील और मुवक्किल को ले सकते हैं। दोनों पक्ष के वकीलों को आपस में बहस करते देखकर यही समझा जा सकता है कि ये झगड़ रहे हैं, इनमें दुश्मनी है—लेकिन केवल कचहरी के भीतर तक ही उनका यह रूप दीखता है और वह भी बनावटी। लेकिन मुवक्किल बेचारे सचमुच की लड़ाई लड़ते हैं। यहाँ तक कि कचहरी में जहाँ कि वे लड़ाई का फैसला कराने आते हैं वहाँ भी लड़ते हैं—सचमुच की लड़ाई, अपनी बरबादी की लड़ाई। वकील कचहरी में लड़ाई का स्वांग इसलिए बनाता है कि कहीं मुवक्किल बेचारे लड़ाई करना बन्द न कर दें और अपनी पुरोहिती छिन न जाये।

वस्तुतः वकीलाना युद्ध स्वयं वकीलों को बन्द करना चाहिए और सहयोगी लड़ाई का उदाहरण प्रस्तुत कर समाज को सहयोगमूलक बनाने में सहयोग देना चाहिए। अपने को श्रेष्ठ मानने वाले लोग जब तक अपने वास्तविक कर्तव्य को नहीं चेतेंगे, तब तक अन्त्योदय सम्भव नहीं है। अस्पृश्यों के उदय का मार्ग तब तक अवरुद्ध रहेगा जब तक दूसरे लोग, कल्पित उच्चता में छिपी हुई नीचता को पहचान कर उसे छोड़ न दें। ऐसा होने पर ही सर्वोदय सम्भव है।

चूँकि सर्वोदय के लिए पूरे समाज को जगाना है इसलिए कुछ लोगों को आगे आना चाहिए—ऐसे लोगों को जिन्होंने सर्वोदय विचार को ग्रहण किया है। ये लोग, जन जागरण द्वारा समाज को सर्वोदय की ओर ले जाने में सहायक होंगे। ऐसे ही लोग शान्ति सैनिक की संज्ञा के अधिकारी होंगे अपने विचार और आचार द्वारा। सर्वोदय के लिए शान्ति सेना का गठन अनिवार्यतः आवश्यक है।

हिंसा-शक्ति!

मैं अहिंसा का कायल हूँ, प्रेमी हूँ महात्मा गांधी ने जो राह दिखायी उस पर चलने वाला उनका बन्दा हूँ। लेकिन मुझे पूछेंगे कि क्या हिंसा-शक्ति कसम खायेगी कि सर्वोदय वालों के हाथ में ही रहेगी और किसी के हाथ में नहीं जायेगी, तो क्या कबूल करेंगे? मैं तो उसे कबूल करूँगा। लेकिन वह ऐसी कसम नहीं खाती है। वह सर्वोदय वालों के हाथ में भी रहेगी और सर्वनाश वालों के हाथ में भी जायगी। इसलिए उसका स्वीकार करना सर्वथा मूर्खता होगी। इसलिए कि हिंसा-शक्ति मूढ शक्ति है। बात ऐसी है कि आखिर सर्वोदय वाले सज्जन तो होंगे ही। सामने कोई बच्चा आयेगा तो सर्वोदय वालों का हाथ उसे मारने के लिए ऊपर नहीं उठेगा और सर्वनाश वाले बच्चों को साफ मार ही सकते हैं। सर्वोदय वाले दुष्टों को लेकर सामने आयेंगी तो उसे मार सकेंगी। लेकिन सर्वनाश वाले बच्चा सामने आयेगा तो यही सोचेगा कि सांप अगर छोटा है, रोग अगर छोटा है, तो क्या हुआ? उसे मारना ही चाहिए, काटना ही चाहिए। इसलिए ऐसे हिंसा-परायण लोगों से यह काम बन सकता है। हम कितनी भी कोशिश करेंगे तो भी हम क्रूर नहीं बन सकते हैं। लेकिन रूस ने देखा कि हम जितनी क्रूरता के साथ हिंसा का उपयोग करेंगे, उतनी ही क्रूरता के साथ अमेरिका उसका उपयोग करेगा। अब दोनों ईसाई हैं, लेकिन बाइबिल को उन्होंने क्या समझा? 'कौंसिल आफ परफेक्शन' परिपूर्ण इन्सान होगा तभी काम में आयेगा, ऐसा वह तत्वज्ञान है। इसलिए फांसी के मौके पर बाइबिल उस मनुष्य के हाथ में दी जाती है। यही हालत मुसलमानों की है। फिर भी आज ब्राह्मण निष्ठापूर्वक शांति-मंत्र का जप करते हैं, 'शांति शांति शांति.'—उतनी ही निष्ठा से सुदर्शन महाराज शान्ति का जप कर रहे हैं। इसलिए अब हमें भारत की अपनी नई शक्ति खड़ी करनी होगी। —विनोबा

शिक्षा-व्यवस्था सरकार-निरपेक्ष हो*

चारुचन्द्र भंडारी

प्राचीन काल में भारत में शिक्षा कम नही थी। शिक्षा सर्वप्रथम भारत में ही आरम्भ हुई थी। किन्तु राजा लोग कभी भी शिक्षा-व्यवस्था में हस्तक्षेप नही करते थे। गुरु ही यह निश्चय करते थे कि क्या शिक्षा दी जायेगी और किस प्रकार दी जायेगी। राजशक्ति शिक्षा के लिये सहायता प्रदान करती थी। राजपुत्र भी विद्यार्जन के लिये गुरु-गृह जाते थे, किन्तु उनके लिये कोई विशेष व्यवस्था नही रहती थी। वे साधारण विद्यार्थियों के साथ ही समान भाव से रहते थे। राजा शिक्षा के लिये सहायता अवश्य प्रदान करते थे। इस प्रकार, उस समय शिक्षा और शिक्षा-व्यवस्था को परिपूर्ण स्वतंत्रता प्राप्त थी शिक्षा के क्षेत्र में उतनी स्वतंत्रता रहने के कारण ही भारत में वास्तविक चिन्तन-स्वातंत्र्य और विचार-स्वातंत्र्य था विनोबाजी कहते है:

"जिसे संस्कृत भाषा का ज्ञान है, वह जानता है कि हिन्दू-धर्म में कितना विचार-स्वातन्त्र्य है। हमें ऐसा दूसरा धर्म मालूम नहीं है, जिसमें परस्पर-विरोधी विचार हैं। दूसरे धर्मों में एक ही विचार है, लेकिन हिन्दू-धर्म में कपिल, कणाद, जैमिनि इत्यादि के विचार परस्पर-विरुद्ध थे। परन्तु कोई नहीं कहता कि ये हिन्दू-धर्म के खिलाफ हैं।"

किंतु आजकल संसार के सभी देशों में राजशक्ति सर्वग्रासी बन गयी है। भारत में भी यही बात है। जीवन का ऐसा कोई क्षेत्र नही है, जहाँ राष्ट्रशक्ति अपना नियंत्रण अधिकार प्रतिष्ठित नहीं कर रही है। सर्वत्र शासन-व्यवस्था इस प्रकार परिचालित हो रही है कि जनता सरकार पर अधिकाधिक निर्भर होती जा रही है। सरकार लोगों को स्वावलम्बी बनाने के बजाय सरकारावलंबी बनाती जा रही है। सरकार ने माँ बाप का स्थान ग्रहण कर लिया है।

आज सारा संसार भय त्रस्त है। जिन देशों के पास पर्याप्त आणविक शस्त्रास्त्र हैं, वे भी परस्पर के भय से भीत बने हैं जिनके पास ये शस्त्रास्त्र नहीं हैं, मामूली शस्त्रास्त्र भी प्रचुर मात्रा में नहीं है, वे भी भयभीत हैं। सभी सरकारें अपने-अपने देश की जनता के मन में यह धारणा पैदा कर रही है कि जितने अधिक शस्त्रास्त्र उपलब्ध किये जायेंगे, उतना ही भय कम होगा। किन्तु आणविक शस्त्रास्त्रों की संख्या और परिमाण बढ़ाने के बावजूद भय कम नही हो रहा है। फिर भी, जनता को बताया जा रहा है कि शस्त्रास्त्रों की उपस्थिति के ही कारण शान्ति बनी हुई है। जनता के मन में इस धारणा को जन्म देना इसलिए सम्भव हो रहा है कि शिक्षा सरकार के हाथों में आ गयी है। आज संसार के सभी देशों में शिक्षा सरकार के हाथों में आ गयी है। बालक-बालिकाओं को जो कुछ सिखाया जा रहा है, वे उसे सीख रहे हैं। इसी कारण, स्वतन्त्र लोकमत का निर्माण नहीं हो रहा है। वोट देने का अधिकार तो सबको है, पर राष्ट्र-शक्ति वास्तव में कुछ थोड़े से लोगों के ही हाथों में है। गणतन्त्र का अस्तित्व नाममात्र के लिए है। शासक-वर्ग जो कुछ करेगा, वही ठीक है—यह धारणा जनता में जड़ पकड़ती जा रही है। इसीलिए विनोबाजी बार-बार यह बात कह रहे हैं: "शिक्षण का अधिकार सरकार के हाथों में नहीं होना चाहिए। वह तो ज्ञानियों के हाथों में होना चाहिए, क्योंकि यह काम सेवा-परायणता से ही होगा।"

इस क्रम-वृद्धि का फल यह हुआ है कि जनता पूरी तरह सरकार-मुखापेक्षी हो गयी है। लोगों में जितना पराक्रम था, वह भी नष्ट हो गया है। उनमें एक नयी तरह की जड़ता आ गयी है। जनता का काम केवल मनपसन्द दल के मनोनीत लोगों को वोट देना हो गया है। वोट दे देने के बाद लोगों का कर्तव्य समाप्त हो जाता है। मानों उनके लिए और कुछ करने को रह ही नहीं जाता। जो कुछ करना हो, वह सरकार ही करेगी। इस लिए, हर बात में सरकार को याद करने के अलावा कोई उपाय नही रह जाता।

इस परिस्थिति से परित्राण पाने का एकमात्र उपाय है, चिंतन और विचार के क्षेत्र में स्वातत्र्य प्रतिष्ठा। किन्तु शिक्षा स्वातंत्र्य के अभाव में चिंतन और विचार-स्वातन्त्र्य ठीक ढंग से नहीं पनप सकते। ऐसी स्थिति में, शिक्षा के सरकारी नियंत्रण में रहने के बावजूद, विद्यार्थियों को अपने चिंतन-स्वातंत्र्य की रक्षा करनी होगी। इसीलिए विनोबाजी कहते हैं: "परिपूर्ण स्वातंत्र्य का अधिकार अगर किसीको है, तो सबसे ज्यादा विद्यार्थियों को। विद्यार्थियों को चिंतन-स्वातंत्र्य का अपना अधिकार कभी नहीं खोना चाहिए। हमें अपने चिंतन स्वातंत्र्य पर प्रहार नहीं होने देना चाहिए—अपनी स्वतंत्रता का हक सुरक्षित रखना चाहिए। विद्यार्थियों का यह अधिकार आज की दुनिया में छीना जा रहा है, इसलिए मैं उन्हें आगाह कर देना चाहता हूँ। इन दिनों "डिसिप्लिन" अथवा अनुशासन के नाम पर विद्यार्थियों के दिमागों को यंत्रों में ढालने की कोशिश की जा रही है।"

ऐसी परिस्थिति में शिक्षा का सरकारी नियंत्रण में चला जाना और भी भयंकर सिद्ध हो रहा है। शिक्षा ऐसी दी जा रही है कि "सरकार ही सब कुछ है"—यह बात विद्यार्थियों के मस्तिष्क में बैठती जा रही है। फिर, जिस दल की सरकार होती है, उस दल-विशेष के आदर्शों और नीतियों के अनुसार ही शिक्षा का स्वरूप होता है। फलतः विद्यार्थियों की मनोवृत्ति उस दल के आदर्शों से प्रभावित हो जाती है। इस समय संपूर्ण संसार में इसी तरह छात्रों को एक विशेष साँचे में ढालने की चेष्टा चल रही है। विनोबाजी कहते हैं: "दुनिया के सभी देशों की सरकारें संपूर्ण शिक्षा-व्यवस्था को अपने हाथों में रखने के लिए आग्रहशील हैं। यह अवस्था बहुत ही खतरनाक है। इसके द्वारा बुद्धि पर भी नियंत्रण (रेजीमेन्टेशन) आ जाता है।" इसी कारण विनोबाजी बार-बार यह बात कहते आ रहे हैं कि आज चाहे संभव हो अथवा नहीं, यदि किसी विषय को सरकार के हाथों से मुक्त करना हो, तो सबसे पहले शिक्षा को सरकार के हाथों से मुक्त करने की आवश्यकता है। कम्युनिस्ट सरकार को भंग करने के लिए केरल में जब जन-आंदोलन चल रहा था, तब विनोबाजी ने शिक्षा को सरकारी नियंत्रण से मुक्त करने की आवश्यकता पर बल देते हुए कहा था: "इसकी आवश्यकता सर्वाधिक है, यह बात केरल में आज जो कुछ हो रहा है, उससे विशेष रूप से स्पष्ट हो जाती है। किंतु मुझे ऐसा नहीं लगता कि आज केरल में जो कुछ हो रहा है, वह अन्य प्रदेशों की स्थिति से भिन्न है। अन्य प्रदेशों में भी शिक्षा पर सरकार का पूरा नियंत्रण है। किसीको भी उसके विरुद्ध कुछ करने नहीं दिया जाता।"

आजकल सरकार की क्षमता सर्वव्यापी हो गयी है। अतएव सरकारी कार्य संचालन के लिए सरकार को सर्वापेक्षा अधिक संख्या में कर्मचारी नियुक्त करने पड़ते हैं। अर्थात सरकार ही आजकल सबसे बड़ी नियोग करनेवाली है। ऐसी स्थिति में प्रश्न उठ सकता है कि यदि सरकार के हाथों में शिक्षा का नियंत्रण न हो, तो जिस तरह की योग्यता-सम्पन्न कर्मचारियों की उसे आवश्यकता पड़ती है, वैसे लोग पाने में उसे विशेष असुविधा होगी। किंतु ऐसी आशंका का कारण नहीं है, क्योंकि यदि कर्मचारी नियुक्त करते समय सरकार उम्मीदवारों की विशद रूप से परीक्षा लेने की व्यवस्था रखे, तो कोई असुविधा नहीं होगी। साथ ही, सरकार-संचालित इस परीक्षा में उम्मीदवार होने के लिए ऐसा कोई प्रतिबन्ध नहीं होगा कि केवल अमुक परीक्षा में उत्तीर्ण लोग ही अमुक पद के लिए होनेवाली परीक्षा में भाग ले सकेंगे। ऐसी स्वतंत्रता रहने पर ही शिक्षा का स्वाभाविक विकास हो सकेगा। किसी विशेष शिक्षा-धारा या शिक्षा प्रणाली के प्रति सरकार को पक्षपात नहीं करना चाहिए। ऐसा होने पर ही विभिन्न शिक्षा-प्रणालियों और शिक्षा-धाराओं के गुणागुण के संबंध में अबाध रूप से गवेषणा चल सकेगी। सरकार भी शिक्षा-प्रणालियों को आर्थिक सहायता और अन्यान्य सुयोग-सुविधाएँ प्रदान करेगी। इस देश में प्राचीन काल में ऐसा ही होता था। ऐसी स्वतंत्रता रहने पर ही नई तालीम प्रसार के लिए उपयुक्त क्षेत्र तैयार होगा।

सरकारी अथवा गैर-सरकारी काम में नियुक्ति के लिए स्कूल-कालेज या विश्व-विद्यालय की किसी परीक्षा में उत्तीर्ण होने की शर्त न लगाकर नियुक्ति से पूर्व सरकारी अथवा गैर-सरकारी संस्थाओं को अभीष्ट पद के अनुकूल योग्यता जाँचने के लिए परीक्षा लेने की व्यवस्था करनी चाहिए। इस प्रस्ताव के सम्बन्ध में यह आपत्ति की गयी है कि ऐसा होने पर उम्मीदवारों की संख्या इतनी अधिक होगी कि परीक्षा व्यवस्था कर सकना कठिन हो जायगा। इसके उत्तर में विनोबाजी कहते हैं कि परीक्षा शुल्क अधिक रखने पर ऐसी कोई असुविधा सामने नहीं आयेगी। फिर तो, जो लोग सम्बन्ध पद उपयुक्त योग्यता नहीं रखेंगे, वे परीक्षा में शामिल नहीं होंगे साथ ही, शुल्क अधिक रखने से परीक्षा की व्यवस्था कर सकना भी विशेष कठिन नहीं होगा। इस सम्बन्ध में विनोबाजी ने प्रधान मन्त्री पं० जवाहरलाल नेहरू से बातचीत की थी और उन्होंने कई बातों पर सहमति प्रकट की थी। तदुपरान्त इस विषय पर विचार-विमर्श करने के लिए सरकार ने एक समिति नियुक्त की, किन्तु उक्त समिति ने जो राय दी, उससे प्रकट हुआ कि विषय की गम्भीरता और अन्तर्निहित उद्देश्य को समझने की चेष्टा न करके उसे कार्यतः अग्राह्य ही करार दिया गया।

---

* अ० भा० सर्व सेवा संघ प्रकाशन से प्रकाशित लेखक की 'हमारा राष्ट्रीय शिक्षण' नामक पुस्तक का एक अध्याय। पृष्ठ २००, किमत ढाई रुपया।

कुमारप्पा-स्मारक निधि

[१७ मार्च के अंक में हमने यह सूचना दी थी कि कुमारप्पा-स्मारक निधि प्राप्त रकमों का प्राप्ति स्वीकार अगले तीन अंकों में नहीं देंगे और तब से ३१ मार्च तक प्राप्त सब रकमों का प्राप्ति स्वीकार ७ अप्रैल के अंक में देंगे। तदनुसार इस अवधि में प्राप्त सब रकमों का प्राप्ति स्वीकार दे रहे हैं। हम फिर यहां दोहरा देते हैं कि केवल 'भूदान यज्ञ' में अब करने से प्राप्ति स्वीकार का क्रम बंद होगा। कार्यालय से कुमारप्पा स्मारक निधि के लिए आई हुई रकमों की रसीद प्राप्ति यथापूर्व भेजी जाती रहेगी—संपादक]

	रु०–न०पै०
१० मार्च के अंक में प्राप्ति स्वीकार कुल	
काशी में ३१ मार्च तक प्राप्त रकम	६१,१६६–९३

	रु०–न०पै०
जिला सर्वोदय मंडल श्री गांधी आश्रम मेरठ	२५१–००
श्री दाता रामजी, ५६ चकरिया स्ट्रीट कलकत्ता से संकलित	१९८–००
श्री यशस्वी प्रसाद गगल, सर्वोदय कार्यालय बुलन्द शहर	१३७–२५
आचार्य राजस्थान खादी ग्रा० विद्यालय शिवदासपुरा से संकलित	६७–५५
हिन्दुस्तान कार्पोरेशन हैदराबाद के कर्मचारीगण हैदराबाद	५१–००
खादी मंदिर प्रधान कार्यालय रथखाना बीकानेर	५०–००
कार्यकर्त्तागण खादीमंदिर कार्यालय रथखाना बीकानेर	५०–००
श्री सूर्यनारायण मिश्र सर्वोदय मण्डल गोरखपुर से संकलित	३३–००
श्री सी० ए० मेनन सर्व सेवा संघ दिल्ली द्वारा संकलित	३१–२५
ग्राम भारती आश्रम परिवार, टवलाई, धार मध्यप्रदेश	२५–००
आर्य अम्बर विद्यालय जसीडीह संथाल परगना (बिहार)	२१–००
गांधी अध्ययन केन्द्र एवं प्रयोगशाला फर्रुखाबाद	२०–००
रतन लाल गांधी, ग्राम विद्यापीठ रूपा खेड़ा रतलाम	२०–००
दीपराम हरि ॐ प्राथमिक सर्वोदय कार्यालय पटियाला	१५–००
हर प्रसाद अग्रवाल जिला सर्वोदय कार्यालय रामपुर से संकलित	१४–००
कीरतलाल टी. पारिख c/o बालगोविन्द कुबेरदास अहमदाबाद	११–००
बद्रीनारायण अग्रवाल, बिलास पुर	१०–००
निरंतन लाल एम० धारिया ८२/८४ सुतार चाल बम्बई-२	१०–००
रूप नारायण जी c/o अ० भा० सर्व सेवा संघ दिल्ली	१०–००
आर० आर० केथान सर्वोदय आश्रम, बाटलागुण्डु मदुराई	१०–००
जग लाल चौधरी, चौरिंग रोड पटना	१०–००
बालचन्द दुबे, १८ वीं हरतु की बगानलेन कलकत्ता ६	७–००
माता सोहनी मित्तल तथा प्रो० काली शंकरजी c/o विनयकुमार अवस्थी कानपुर	७–००
कार्यकर्तागण सर्वोदय आश्रम पठानकोट	६–००
संयम लाल ग्राम निर्माण संघ हस्तारिया तिरुपुर	६–८८
सल्लभ दास पूनमचन्द दोशी सेवा मंडल मेघरज साबरकांठा	५–००
कार्यकर्ता गण ग्राम सेवा केन्द्र नरेल वाया बड़ा खालसा पंजाब	५–००
केशव शरण रस्तोगी, चौबी बाजार मेरठ	५–००
सुरेश राम भाई, सर्वोदय कार्यालय इलाहाबाद से संकलित	५–००
करतार सिंह c/o गांधी खद्दर भंडार अमृतसर	५–००
हीरा लाल गुप्त, सरपंच मोस्तरी कुदरा शाहाबाद	५–००
उदयराम, चमरू सिंह, झगड़ू राम, शरर, सर्वोदय समाज सुपोस बिलासपुर	५–००
खेमी चन्द राजमल कोटेचा मु० तरोडा (आरूणी रोड)	५–००
अवतार चन्द मेहता c/o सत्यम भाई पठानकोट	५–००
श्री हृदय नारायण चौधरी वे लौरीड पटना	५–००
श्री मेवा लाल, सर्वोदय आश्रम आजमगढ़	५–००
श्री जय नारायण दिनकर जानी वारलेविले बम्बई	५–००
श्री मान भाई गांधी स्मारक निधि पट्टी कल्याण करनाल	५–००
श्री केदार नाथ बुकिंग आफिस बरका थाना हजारीबाग	५–००
श्री नवीन चन्द्र जैनमागी लाल करसडिया म० नं० कोटा	४–००
श्री लक्ष्मी नारायण सर्वोदय आश्रम पोखराम दरभंगा से संकलित	४–००
श्री राम प्रसादजी गुप्त श्रमिकबस्ती बाबू पुरवा कानपुर	२–००
श्री विजय बहादुर सिंह सीधी संकलित	२–००
श्री रामचन्द्र वर्मा c/o रोम लाल कुवरगढ़ रायपुर	२–००
श्री कन्हैया लाल संयोजक सर्वोदय समिति कानपुर	२–००
श्री कुन्दन लाल मलैया साहूमल झांसी	२–००
श्री मुरलीधरगोपल सर्वोदयपुस्तक भंडार हनुमानगढ़ राजस्थान	१–२५
द्वी विद्यार्थी जगदम्बा कुंज निवास तपोवन अमरावती	१–००
खादी श्रम बीबी संघ गांधी आश्रम भिनगा बहराइच	१–००
श्री रुद्राप्पा रामाप्पा पत्तार अध्यापक विजय श्री धारवाड	१–००
श्री सत्यनारायण तिवारी, अ० भा० सर्व सेवा संघ वाराणसी	१–००
	११६६·७४
कुल रकम	६२३३५·७७

पृष्ठ ३ का शेष

काम को स्वेच्छा से नहीं करता है। लाचारी से करता है; हमारे जुल्म के मारे करता है।

महाराष्ट्र भर के चमार अपनी मृत पशुओं की खालें निकालने का पुराना पेशा स्वाभिमान के लिये छोड़ रहे हैं। यह बिलकुल अच्छा काम है। असल में चर्मच्छेदन में कुछ बुराई नहीं है। वह एक समाजोपकारी और सामान्य काम है, लेकिन वह कुछ हद तक गंदा (गंदगी को हटाने वाला) काम है और हमारा समाज उस काम को "चमारों की गंदी जाति पर" छोड़ देता है। चमारों ने इस मान्यता को अस्वीकार किया, इसलिए वे धन्यवाद के पात्र हैं।

भगवान की पूजा और पाखाने की सफाई दोनों की समान प्रतिष्ठा होनी चाहिये। बल्कि पाखाना-सफाई ज्यादा प्रतिष्ठा-पात्र है। क्योंकि वह ज्यादा अनिवार्य है। पूजा करने में कुछ पुरुषार्थ नहीं है, लेकिन सफाई जैसा कष्टपूर्ण मगर परमावश्यक काम करने में ही सच्चा पुरुषार्थ है।

भंगी-काम की आज की प्रथा के पीछे हम सवर्णों का आलस्य, दंभ और पाखंड छिपा है। इनको मिटाने के लिए हमें चाहिए कि हम प्रतिदिन नियमित तौर पर कम से कम पंद्रह मिनट अपना धार्मिक और नागरिक कर्तव्य समझकर कुछ न कुछ सफाई का समाज निन्दित काम करें। भंगीमुक्ति का यही सर्वोत्तम और असली इलाज है।

पृष्ठ ७ का शेष

होनेवाला नहीं है। तो हम कहते हैं कि अगर यह कभी होनेवाला नहीं है तो हम को सबसे पहले तुमसे ही खतम करना होगा। क्योंकि तू ही हमारी बात नहीं मान रहा है। तो वह कहता है मुझे अपवाद के रूप में मानना होगा। इसका मतलब यह है कि दोनों को एक दूसरे को खतम नहीं करना चाहिये।

इसलिए लोकतांत्रिक समाज व्यवस्था में जोर समझाने पर होता है, जबर्दस्ती पर नहीं। समझाने पर जितना अधिक जोर होगा, उतना इच्छानिष्ठता का विकास होगा।

भूदान दशक का लेखा जोखा : जिलों की प्रगति

जिला नागोर–राजस्थान

[भूदान आंदोलन को १० साल पूरे होते हैं। हम यह चाहते हैं कि हरेक जिले की दस साल में हुई इस दिशा में प्रगति का विवरण दें। नमूने के तौर पर नागोर जिले का विवरण यहाँ दिया जा रहा है —संपादक]

नागोर राजस्थान के करीब करीब मध्य में एक जिला है। खेती और पशुपालन यहाँ के मुख्य व्यवसाय हैं। जिले में कुल ११९४ गाँव हैं और जनसंख्या करीब ८ लाख है।

भूदान के काम की शुरूआत इस जिले में १५ दिसम्बर १९५३ को हुई। जिले के एक प्रमुख वकील श्री बद्रीप्रसाद स्वामी जो अपने काम के सिलसिले में यहाँ के भूमिहीन लोग और किसानों की स्थिति से अच्छी तरह परिचित थे, इस ओर आकृष्ट हुए। उस समय के कांग्रेस तथा किसान आंदोलन के ये प्रमुख कार्यकर्ता थे। आज वे न केवल वकालत के पेशे से बल्कि राजनैतिक पक्ष आदि सबसे मुक्त होकर पूरा समय भूदान कार्य में लगा रहे हैं। शांति सैनिक हैं। अब प्रान्तीय समग्र सेवा संघ के मंत्री भी हैं।

पिछले सात वर्षों में इस जिले के ३१० गाँवों में २०९५ दाताओं द्वारा २३३८० एकड़ जमीन मिली। इस कुल जमीन का वितरण पूरा हो चुका है। इसमें से करीब आधी यानी ११ हजार एकड़ से कुछ ऊपर जमीन ६५२ भूमिहीन परिवारों को दी गई है। जमीन का पूरा ब्यौरा नीचे की तालिका से मिलेगा :—

नागोर जिला भूमि प्राप्ति विवरण
(मार्च १९६१ तक)

दाता संख्या	२०९५
कुल गाँवों से भूदान प्राप्त	३१०
प्राप्त भूमि	२३३८० एकड़
वितरित भूमि	११०२० एकड़
आदाता संख्या	९५२ परिवार
सार्वजनिक उपयोग के लिए निर्धारित	२०७५ एकड़
वापिस लौटाई	३६५० एकड़
खारिज भूमि	१५२० एकड़
ग्रामदान के लिए प्राप्त भूमि ग्रामदान न होने से लौटाई	५०६० एकड़

भूदान के इस कार्य के अलावा नागोर

हिसार में अशोभनीय पोस्टर विरोधी प्रदर्शन

"अशोभनीय पोस्टर हटाओ और शराब के ठेके बंद करो।"

यह नारा हिसार के एक बहुत बड़े जनसमूह ने पोस्टर विरोधी जुलूस के समय दिया। यह जुलूस २५ फरवरी को जिला सर्वोदय मंडल द्वारा आयोजित किया गया था। सारे पंजाब में इस अहिंसक प्रदर्शन का गहरा प्रभाव हुआ और अशोभनीय सिनेमा-पोस्टरों द्वारा होनेवाले समाज विरोधी वातावरण को शिथिल करने में विशिष्ट योग रहा।

श्री कुट्टी की पदयात्रा

श्री कुट्टी जो पिछले ४ वर्षों से मैसूर में चल रहे हैं अब १६ दिसम्बर १९६० से तमिलनाडु के कोने में भूदान का संदेश फैलाते घूम रहे हैं। मदुराई, तिरुनेलवाली और रामनद जिलों की यात्रा समाप्त कर अब आप तंजौर में प्रवेश कर रहे हैं। उन्होंने अबतक ७५० मील की दूरी तय की तथा १२० ग्रामों का निरीक्षण किया। उन्हें भूदान कार्यकर्ता का काफी सहयोग प्राप्त है तथा इस भाग के लोगों में भी भूदान के प्रति काफी आस्था प्रकट होती प्रतीत हुई है।

उत्तर बंगाल में श्री चारुचन्द्र भंडारी का पदयात्रा कार्यक्रम

विनोबाजी के बंगाल प्रदेश की यात्रा से सारे क्षेत्र में भूदान आंदोलन के लिए बड़ा अच्छा वातावरण तैयार हुआ है। कूचबिहार जिले के तूफानगंज खण्ड की जनता में काफी उत्साह है इसी उद्देश्य से पश्चिमी बंगाल सर्वोदय मंडल के संयोजक श्री चारुचन्द्र भंडारी ने तूफानगंज क्षेत्र में पदयात्रा गत ११ मार्च से प्रारम्भ कर दी

जिले में ग्रामदान की अच्छी संख्या में हुए हैं। राजस्थान का सर्वप्रथम ग्रामदान इसी जिले का गोराखा गाँव हुआ। अब तक जिले में कुल २१ ग्रामदान हुए हैं। दो गाव २५० परिवारों के हैं, एक १०० का शेष सब सौ परिवारों से नीचे की आबादी के हैं। ३ ग्रामदान १० परिवारों से भी कम वोट हैं। कुल १२६२ परिवार ग्रामदान में शामिल हुए हैं। अधिक से अधिक करीब १७५० एकड़ भूमि बाटे गाँव ग्रामदान में शामिल हुए हैं।

जिले में इस समय १७ लोक सेवक और १२ शांति सैनिक हैं।

इन्दौर में "समाधान समिति" की स्थापना

दिनांक १८ मार्च ६१ को म० प्र० सर्वोदय मंडल कार्यालय में श्री अमरनाथ सहगल की अध्यक्षता में बैठक हुई जिसमें नागरिकों के आपसी झगड़ों के सुलझाने के लिए एक "समाधान समिति" संगठित की गयी। इस समिति को नगर के सेवा-परायण प्रतिष्ठित जनों ने सहयोग देने का आश्वासन दिया है। यह तय हुआ कि समाधान-समिति के सदस्य प्रति शनिवार म० प्र० सर्वोदय मंडल कार्यालय, में मिला करेंगे तथा जो आपसी झगड़ों के बारे में समाधान चाहेंगे। समिति उस पर विचार कर समाधान कराने की कोशिश करेगी।

—सर्वोदय आश्रम, कनशाहपट्टी में महिलाओं के लिए ३ दिवसीय प्रशिक्षण शिविर का आयोजन किया गया जिसमें ५० महिलाओं ने भाग लिया। श्रीमती वैरन पिल्लई तथा श्रीमती कृष्णम् जगन्नाथन प्रशिक्षण की इन्चार्ज थीं। शिविर में हस्तकला, गृहविज्ञान आदि का प्रशिक्षण दिया गया।

मेरठ में गांधी विचार केन्द्र

मेरठ नगर में शांति-कुंज-छीपी तालाब पर गांधी स्मारक निधि के तत्त्व प्रचार विभाग का एक नया केन्द्र खुल गया है। सर्वोदय मंडल और गांधी स्मारक निधि की ओर से शहर नगर क्षेत्र को सर्वोदय कार्य के हेतु सघन कार्य-क्षेत्र मानकर कार्य प्रारम्भ कर दिया गया है। एक निःशुल्क विद्यालय भी इसी कार्यक्रम के अन्तर्गत चला दिया गया है जहां लगभग १०० विद्यार्थी प्रारम्भ से हाई स्कूल कक्षा तक के आते हैं। स्कूली पढ़ाई के अतिरिक्त सर्वोदयी विचारों का भी बोध कराया जाता है। इन सब का सारा व्यय सर्वोदय पात्रों से ही पूरा किया जाता है।

जिला परिषद का निर्णय

जैसलमेर की जिला पंचायत समितियों ने विनोबाजी के आंदोलन में सर्वसम्मति से अपनी आस्था रखते हुए "सर्वोदय-पात्र" के लिए सक्रिय सहयोग देने को सर्वसम्मत निर्णय का जैसलमेर जिला परिषद ने हार्दिक स्वागत किया है।

समाचार सार

—जिला सर्वोदय मंडल रेवाड़ी (गुड़गाँव) ने ६ अप्रैल से १२ अप्रैल तक सर्वोदय शिक्षण शिविर लगाना तय किया है और उसके लिए आधा सेर अनाज व पच्चीस नया पैसा सम्मति रूप में प्राप्त करने की कोशिश की जा रही है।

—ता० १७ मार्च से ३१ मार्च तक राना कालनी उमरेड रोड नागपुर में श्रम शिविर आयोजित हो रहा है।

—मिहिंपुरवा (बहराइच में) श्री हल्धर भाई के सभापतित्व में जिला कार्यकर्ताओं का सम्मेलन हुआ जिसमें जिले में ६ अप्रैल को गाँव-गाँव में ग्राम स्वराज्य दिवस मनाया जाय और बरसात के पहले प्राप्त जमीन का वितरण हो जाय ऐसा तय किया गया।

—संत तुकडोजी महाराज के नेतृत्व में २ मई से १५ जून १९६१ तक भारत दर्शन किसान रेल यात्रा होगी, इस यात्रा में भारत दर्शन के साथ-साथ नव निर्माण के लिए कुछ सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित होंगे। यात्रा की अवधि ४५ दिनों की होगी। हर व्यक्ति के लिए ५०५ रूपये खर्च आयेगा। अधिक जानकारी के लिए भारत दर्शन किसान रेल यात्रा कमिटी सच्ची टेकरी इतवारी नागपुर—२ से सम्बन्ध स्थापित करें।

—तामिलनाडु अखण्ड पदयात्रा आजकल तंजौर जिले में चल रही है। यह यात्रा १६ मई १९६१ को अपने छठे वर्ष में प्रविष्ट हो रही है।

इस अंक में

विनोबा जी का पता
सरनिया-आश्रम
जिला गौहाटी (असम)

श्रीकृष्ण भट्ट, अ० भा० सर्व सेवा संघ द्वारा भार्गव भूषण प्रेस, वाराणसी में मुद्रित और प्रकाशित। पता : राजघाट, वाराणसी-१, फोन नं० ४३९१
वार्षिक मूल्य ६) पिछले अंक की छपी प्रतियां १२,५०० : इस अंक की छपी प्रतियाँ १२,०५० एक प्रति : १३ नये पैसे

संपादक : सिद्धराज ढड्ढा

वाराणसी : शुक्रवार | १४ अप्रैल '६१ | वर्ष ७ : अंक २८

सर्वोदय-सम्मेलन के अध्यक्ष : श्री जयप्रकाश

तेरहवाँ अ० भा० सर्वोदय-सम्मेलन भूदान-आंदोलन शुरू होने के ठीक दस वर्ष बाद आंध्र प्रदेश, जहाँ से भूदान-आंदोलन का श्रीगणेश हुआ, होने जा रहा है। इस सर्वोदय-सम्मेलन की अध्यक्षता श्री जयप्रकाश नारायण करेंगे।

श्री जयप्रकाश नारायण का जन्म विक्रम सम्वत् १९५९ की विजया दशमी, अर्थात् ११ अक्तूबर १९०२ को बलिया (उत्तर प्रदेश) और सारन (बिहार) जिले की सीमा पर गंगा और सरयू नदियों के संगम-स्थान पर स्थित सिताबदियारा गाँव में हुआ। आपके पिता का नाम बाबू हरसूदयाल और माता का नाम श्रीमती फूलरानी देवी था। आपकी प्रारंभिक पढ़ाई सिताबदियारा की प्राथमिक पाठशाला में हुई। हायर सेकेंडरी और कालेज की शिक्षा पटना में हुई। उन्हीं दिनों भारतीय राजनीतिक हलचल भी बढ़ रही थी। गांधीजी और आजादी के आन्दोलन का प्रभाव उनके जीवन पर छाने लगा।

सन् १९२१ में गांधीजी के आवाहन पर असहयोग आंदोलन में उन्होंने कालेज छोड़ा और बिहार-विद्यापीठ में पढ़ना शुरू किया। बिहार-विद्यापीठ की स्थापना असहयोग-आंदोलन में कॉलेज से बाहर आने वाले छात्रों के लिए ही की गयी थी। जयप्रकाशजी ने इस विद्यापीठ से इंटरमिडिएट तक की पढ़ाई पूरी की, पर आगे की पढ़ाई की व्यवस्था यहाँ न होने से काशी चले आये। किंतु तत्कालीन सरकारी शिक्षण-संस्थाओं में नहीं पढ़ने के संकल्प से उनकी ज्ञान-पिपासा ने अमेरिका जाकर पढ़ाई पूरी करने को प्रेरित किया। अनेक विघ्न-बाधाओं को लाँघ कर सन् १९२२ के अक्तूबर में सैनफ्रांसिस्को (अमेरिका) पहुँचे। अगले सात साल तक कैलीफोर्निया, इवोआ, शिकागो और विस्कान्सिन विश्वविद्यालयों में अध्ययन करते रहे। साधारण मध्यम वर्गीय परिवार के होने के नाते आपने अमेरिका में तरह-तरह की मजदूरी करके अपना अध्ययन पूरा किया। इस अवधि की उनकी जिंदगी एक बड़ी साहस भरी कहानी है। अमेरिका में आपने गणित, कीटाणु शास्त्र, मनोविज्ञान, इतिहास आदि विभिन्न विषयों का अध्ययन किया। इसी बीच वे कम्युनिस्ट मित्रों के संपर्क में आये और कम्युनिज्म के सम्बन्ध का जितना साहित्य मिल सका, पढ़ गये। आखिर में आपने समाज-शास्त्र विषय में इवोआ विश्वविद्यालय से एम० ए० की परीक्षा उत्तीर्ण की। उसके बाद पढ़ाई जारी रखने की उनकी इच्छा थी। पर इस बीच में उनको माताजी की बीमारी के कारण भारत लौटना पड़ा।

सात वर्ष पूर्व जिस रूप में भारत को छोड़ कर श्री जयप्रकाशजी गये, वह भारत बहुत बदल चुका था। गांधीजी के नेतृत्व में देश प्रतिदिन आगे बढ़ रहा था, नई भावना, नये आदर्श से प्रेरित होकर बलिदान के लिए आतुर हो रहा था।

श्री जयप्रकाशजी जब इन्टर साइंस में पढ़ते थे, तभी बिहार-केसरी स्वर्गीय ब्रजकिशोर बाबू की कन्या प्रभावती के साथ उनका विवाह-संस्कार सम्पन्न हो गया था। जयप्रकाशजी के अमेरिका-प्रवास के समय श्रीमती प्रभावतीजी बापू के साबरमती आश्रम में चली गयी थीं। वहाँ उन्होंने अपने लिए 'बापू की बेटी' का स्नेह पाया था। सभी जानते हैं कि प्रभावती बहन छाया की तरह जयप्रकाशजी का अनुसरण करती हैं। स्वदेश वापस आने पर जयप्रकाशजी गांधीजी के आश्रम पहुँचे। गांधीजी के वात्सल्य और प्रेम से वे काफी प्रभावित हो गये। वे साबरमती से गांधीजी के साथ लाहौर-कांग्रेस में गये। लाहौर-कांग्रेस में गांधीजी ने जयप्रकाशजी का परिचय जवाहरलालजी से कराया। पहली भेंट में ही श्री जवाहरलालजी उनकी ओर आकृष्ट हो गये।

श्री जवाहरलालजी ने जयप्रकाशजी से अखिल भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के कार्यालय में मजदूर-विभाग के संगठन के लिए निवेदन किया।

जयप्रकाशजी, प्रभावती जी के साथ 'आनन्द भवन' (इलाहाबाद) पहुँचे। छह महीने तक काम करने के बाद वे अखिल भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के मंत्री बनाये गये।

अंग्रेजी सरकार का दमन इस बीच जारी था। मार्क्सवादी जयप्रकाश को लगा कि कांग्रेस में मध्यम-वर्ग के अलावा किसान-मजदूरों का संगठित आवाहन होना चाहिए। नासिक-जेल से निकलने के बाद जयप्रकाशजी ने बिहार की राजधानी, पटना में समाजवादी सिद्धान्तों में विश्वास करने वाले व्यक्तियों को आमंत्रित किया।

संयम का रास्ता ही श्रेयस्कर है

अभी-अभी हमारे देश में नई जनगणना हुई है। उसको लेकर बढ़ती हुई आबादी को रोकने की बात ने एक बार फिर जोर पकड़ा है। श्री काशिनाथजी ने कृत्रिम उपाय और आत्म-संयम के सनातन विवाद पर इसी अंक में प्रकाशित अपने लेख में कुछ प्रकाश डाला है।

पर हमारी दृष्टि से आबादी की बढ़ोतरी का जो "भूत" खड़ा किया जा रहा है और दुनिया के मिट जाने का जो खतरा बतलाया जा रहा है, उसमें मूल में ही विचार-दोष है। जैसा गांधीजी ने कहा था—"हमारी पृथ्वी का यह छोटा-सा गोला कोई आज का खिलौना नहीं है। अपने अनगिनत सालों के जीवन में इसने कभी बढ़ी हुई आबादी की पीड़ा का अनुभव नहीं किया है। ऐसी हालत में कुछ लोगों के मन में एकाएक न जाने कहाँ से इस सत्य (डर!-सं०) का उदय हुआ है कि अगर कृत्रिम उपायों से जनम-प्रमाण पर अंकुश न रखा जायगा, तो दुनिया मिट जायगी!"

आज के चन्द पढ़े-लिखे लोगों ने यह जो हौआ खड़ा कर लिया है, उसके पीछे उनके सुख मानस की संकुचित स्वार्थ-भावना काम कर रही मालूम होती है कि अधिक बच्चे होंगे तो हमारे सुख-भोग के साधनों में हिस्सा बँटायेंगे। वैज्ञानिकों और अर्थ-शास्त्रियों के अध्ययन से जो तथ्य सामने आये हैं, उनसे यह सिद्ध होता है कि आज खेती के लिए उपलब्ध जमीन और आज के साधनों का समुचित उपयोग हो तो आज की कुल आबादी से कम-से-कम चौगुनी आबादी तो इस पृथ्वी पर आराम से रह सकती है। संतति-नियमन के समर्थकों ने इसका कभी प्रतिवाद किया हो तो वह हमारे देखने में नहीं आया। और बातें जाने दें तो भी इतना तो स्पष्ट ही है कि आज भी मानव जाति की कुल शक्ति और सम्पत्ति का ज्यादा नहीं तो आधा हिस्सा जरूर विनाश की तैयारी में खर्च हो रहा है। इस पागलपन को रोकने के लिए कुछ न करना—उत्पादन की कुशलता और कार्यशक्ति बढ़ाने की कोशिश न करना—और आबादी का भूत लोगों के सामने खड़ा करना यह हमारी दृष्टि से निर्मोल्यता का ही चिह्न है।

आबादी बढ़ने के डर से लोगों को संयम की ओर प्रवृत्त किया जाय—संयम हर बात में और हर हालत में मनुष्य के विकास के लिए आवश्यक है—तब भी दूसरी बात होती, पर वैसा न करके कृत्रिम उपायों की ही बात करना कितना खतरनाक है, उसका कुछ संकेत काशिनाथजी के लेख में मिलता है।

कृत्रिम उपायों के समर्थक अक्सर ये दलील देते हैं कि संयम की शिक्षा हजारों वर्षों से मानव को दी जाती रही है, पर उसका कोई परिणाम नहीं हुआ। हमारी नम्र राय में यह धारणा और निष्कर्ष गलत है।

संयम की भावनाओं ने जनमानस में काफी गहरी जड़े जमायी थी और उसीका यह परिणाम क्यों न मानना चाहिए कि हजारों वर्षों के जीवन-काल में दुनिया ने कभी "बढ़ती हुई आबादी की पीड़ा का अनुभव नहीं किया।"

आज जो आबादी की अनियंत्रित बढ़ोतरी हम देखते हैं वह संयम के बावजूद नहीं हुई है, बल्कि संयम का रास्ता छोड़ देने से हुई है। —सिद्धराज

जमाना बदल रहा है!

उत्तराखण्ड के पिथौरागढ़ जिले का आस्कोट एक छोटा-सा गाँव है। वैसे हिसाब से तो ५-७ छोटी-सी दूकानें होने के कारण यह बाजार भी है। ९ दिसम्बर को सर्वोदय-यात्रा के सिलसिले में घूमते-घूमते हम वहाँ पहुँच गये। मैं और स्वामी गंगेगिरीजी, हम दो साथी थे। वहाँ की छोटी धर्मशाला नये खुले हुए सरकारी महकमे के कारण भरी हुई थी। और कहीं रहने का ठिकाना नहीं था। ज्यों-ज्यों पहाड़ी रात का समय निकट आने लगा, हमारी चिन्ता बढ़ने लगी। थोड़ी देर के लिए एक होटल के बाहर पीट्ठू (पीठ के झोले) रख कर बैठ गये, पर कब तक रहते!

मैं वहाँ से उठ कर बाजार में घूमने लगा। शायद कोई परिचित मिल जाये। पिथौरागढ़ से आने वाली मोटर में झाँका, कोई नहीं था। मोटर स्टैन्ड के पास ही एक छोटा-सा मकान बन रहा था और दो-तीन बढ़ई वहाँ किवाड़ बनाने में व्यस्त थे। एक अकेला ही रन्दा लगा रहा था। मैंने रन्दा खींचने के लिए हाथ बढ़ाया। काम करते-करते ५ मिनट में ही हमारी दोस्ती हो गयी। ये तीनों भाई इस घर में रात बिताते थे। हमें भी उन्होंने बगल के कमरे में रहने का न्योता दिया। उन्होंने हमें जगह दी और आग के चारों ओर हम बैठ गये। मैंने पूछा, "आपका खाना यहीं बनता है न? बर्तन तो होंगे ही। सबके लिए हम दोनों बना लेंगे।"

"परन्तु हम तो ...... आप जानते नहीं!"—एक भाई ने हिचकिचाते हुए उत्तर दिया।

"हाँ-हाँ शिल्पकार हैं न!"—मैंने उनकी बात पूरी करते हुए कहा: "हम इन्हीं भेद भावों को दूर करने का सन्देश लेकर तो घूम रहे हैं। जब हम दोनों को एक ही जैसी भूख लगती है और उसको मिटाने के लिए हमें एक ही जैसी रोटी चाहिये तो फिर वह एकसाथ क्यों नहीं बन सकती?"

पीढ़ियों से अस्पृश्यता के अभिशाप से संतप्त पहाड़ के शिल्पकार (जिनका छुआ सवर्ण नहीं खाते) भाइयों के लिए यह नई बात थी और उनके मुँह से एकदम निकल पड़ा: "सचमुच जमाना बदल रहा है!" हम सबने चूल्हे के पास बैठ कर मिल कर खाना बनाया। किसी ने आटा गूंधा, किसी ने सब्जी काटी। एक भाई पानी ले आये। मैंने रोटी सेंकने का काम संभाल लिया और उसके साथ-साथ स्वामीजी ने विनोबा और भूदान की कहानी सुनायी। तीनों भाइयों ने इसे खूब रस लिया।

मैं रोटियाँ सेंक-सेंक कर एक छोटे पत्थर पर रखता जाता था। जब खाने के लिए बैठे तो एक पत्थर बीच में रख दिया। हम इस पर से एक एक रोटी उठाते और प्रेमपूर्वक खाते थे।

हमारे पास ओढ़ने के लिए एक ही ऊनी चादर थी। स्वामीजी तो ओढ़ने बिछाने का काम अपने कम्बल के चोगे से निकाल लेते हैं। हमारे मित्रों ने कहा, दूसरा कमरा तो ठंडा होगा। वे इसी कमरे में तख्तों पर पुआल बिछा कर सोते थे। अपने नीचे के पुआल को कुछ आगे से फैला कर उन्होंने हमारे लिए बिस्तर बनाया और हमने मजे में रात बितायी।

सुबह को हम अपने मित्रों की सहृदयता से सीखे हुए बदलते हुए जमाने के पाठ को लेकर पिथौरागढ़ के लिए रवाना हो गये। —सुन्दरलाल बहुगुणा

सन् १९३४ में स्व० आचार्य नरेन्द्र देव की अध्यक्षता में काँग्रेस-समाजवादी दल का संगठन किया। संगठन का काम जयप्रकाश ने अपने कन्धे पर लिया। पार्टी के जन्म से लेकर अनवरत १९५२ तक वे पार्टी के प्रधान मंत्री बने रहे। सारे देश में लोकतान्त्रिक समाजवाद के आवाहन पर संगठन खड़ा किया।

सन् १९४२ की जन-क्रान्ति जब शुरू हुई, तब जयप्रकाशजी नजरबन्द हो चुके थे। पर हजारीबाग सेन्ट्रल जेल की ऊँची दीवालों को फाँद कर वे बाहर आ गये और कई महीनों तक गुप्त रह कर आंदोलन को गति देते रहे। अन्त में लाहौर रेलवे स्टेशन पर पकड़े गये। यातना का दौर शुरू बर्फ की चट्टानों पर सुलाने से हुआ। लेकिन मानवता को कलंकित करने वाली हर प्रकार की यातनाएं दी गयी। ब्रिटिश मंत्री-परिषद के भूतपूर्व भारत मंत्री श्री पैथिक लारेंस के नेतृत्व में एक 'मिशन' भारत आया। गांधीजी ने जयप्रकाशजी के जेल में रहते समझौता करने से इन्कार कर दिया। सन् '४६ में जयप्रकाशजी रिहा किये गये। सन् १९४८ में कांग्रेस छोड़ कर अलग सोशलिस्ट पार्टी का संगठन शुरू किया।

सन् १९५२ का साधारण चुनाव समाप्त हो गया था। सोशलिस्ट पार्टी भारत में भूमि-वितरण की समस्या को लेकर चुनाव लड़ी थी, पर पराजित हुई। इसी बीच में भूमि-समस्या के चमत्कारिक समाधान की किरण भूदान द्वारा प्रस्फुटित हो चुकी थी। इससे जयप्रकाशजी विनोबा की ओर खिंचे। सोशलिस्ट पार्टी को आवाहन किया कि वह विनोबाजी के इस यज्ञ में पूरा सहयोग करे। जयप्रकाशजी ने सर्वोदय-दर्शन की मीमांसा शुरू की। ज्यों-ज्यों मंथन किया, उनकी आस्था और निष्ठा बढ़ती गयी। समाजशास्त्री जयप्रकाशजी वैज्ञानिक विश्लेषण के साथ सर्वोदय-आन्दोलन में आये।

श्री जयप्रकाशजी ने सर्वोदय में विश्व शांति का दर्शन किया। विश्वास और निष्ठा के साथ कहा—"दुनिया युद्ध से केवल गांधीजी के मार्गों पर चल कर बच सकता है।"

श्री जयप्रकाशजी ने कहा, जन-क्रांति राज्य शक्ति से नहीं हो सकती। इसकी सफलता के लिए जन-सहयोग चाहिए। इसका वैज्ञानिक प्रमाण प्रस्तुत किया। ज्यों ज्यों समय बीतता गया जयप्रकाशजी विनोबा के रंग में रंगते गये। आखिर १८ अप्रैल, १९५४ का वह दिन भी आया, जब अहिंसक क्रांति के लिए विनोबा के समक्ष बोधगया सर्वोदय-सम्मेलन में अपना जीवन ही अर्पण कर दिया। सारा जगत् चकित हो गया। क्रान्तिकारी जयप्रकाश ने विनोबा की वाणी में, सर्वोदय के दर्शन में क्रांति का बीज देखा।

१९५६ में बम्बई में आयोजित एशियाई देशों के समाजवादी-सम्मेलन में उन्होंने कहा, "राज्य-सत्ता के जरिये समाजवाद लाने की कोशिश ज्यादा-से ज्यादा कल्याणकारी राज्य तक मानव जाति को ले जा सकती है, मनुष्य मात्र की आजादी, समता और भाईचारे के जो आदर्श है, उन तक नहीं।" उनके इन विचारों की ओर विदेश के विचारकों का ध्यान आकृष्ट हुआ और योरप के दो-तीन क्रांतिकारी और समाजवादी संस्थाओं ने उनको योरप आने का निमंत्रण दिया। सन् १९५८ में साढ़े चार महीने तक योरप और पश्चिमी एशिया के विभिन्न देशों व वहाँ के प्रतिष्ठित नागरिकों और विचारकों से सर्वोदय-विचार के बारे में चर्चाएं की। अपने विचारों को व्यवस्थित रूप से रखने के लिए उन्होंने एक प्रबन्ध 'भारतीय राजनीति की पुनर्रचना' नाम से लिखा जिस पर देश विदेश के विद्वान विचारकों का ध्यान आकर्षित हुआ।

... सत्यं जगत् स्फूर्तिः जीवनं सत्यशोधनम्

भूदान-यज्ञ

लोकनागरी लिपि*

समन्वय-कार्य

आज अिस चीज की बहुत जरूरत है कि सेवायोग और कर्मयोग को अेक ही माना जाय। अिसकी शुरुआत आधुनीक युग में वीवेकानंद ने की। शंकर का अद्वैत और अीसा का प्रेममय सेवा-भाव अीन दोनों का समन्वय वीवेकानंद ने कीया। खुशी की बात है की रामकृष्ण मीशन सेवा वृत्ती का समन्वय कर रहा है। अुस सेवा को नीर्माण-कार्य का स्वरूप देकर गांधीजी ने अुसमें वृद्धी की। सामने भूखा मनुष्य खड़ा है। अुसको खीलाना सेवा होगी, लेकीन अुसको चरखा देना, भूमी देकर कमा कर खाने को सीखाना, सेवा का यह जो रूप होगा, वह सच्ची और स्थायी सेवा होगी। अीस सेवा को नीर्माण-कार्य का रूप दीया गया। परीणामस्वरूप बढ़ीया काम भी हुआ और घटीया भी हुआ। बढ़ीया अीसलीअे हुआ की अीसमें भूतदया का वीचार था और सेवा-भाव के साथ-साथ नीर्माण-कार्य होता था। घटीया अीसलीअे हुआ की नीर्माण-कार्य करते-करते सेवा-भाव अेक ओर रहता है और चरखा ही बाकी रह जाता है, यानी अंदर का सेवा-भाव और अद्वैत भाव नहीं रहता है। केवल शुष्क कर्मयोग बाकी रह जाता है। अीस तरह सेवा के लीअे समन्वय की आवश्यकता की बात पहली बार अीसा ने और दूसरी बार गांधीजी ने रखी।

अींदौर, ६-८-'६० —वीनोबा

* लिपि-संकेत : ि = ी ; ी = ी, ख = ख, संयुक्ताक्षर हलंत चिह्न से।

भूदान-आंदोलन का दशक
सिंहावलोकन और सुझाव

भूदान-आंदोलन का एक दशक पूरा हो रहा है। इस अवसर पर पिछले दस वर्षों के सिंहावलोकन और उस अनुभव पर आगे के काम के लिए कुछ निष्कर्ष निकालने की ओर लोगों का ध्यान जाना स्वाभाविक है। जिनका भूदान-आंदोलन से निकट सम्पर्क रहा, और जिन्होंने वर्षों लग कर काम किया, ऐसे कई साथियों ने अपने अनुभव और सुझाव प्रकाशनार्थ भेजे हैं। हम उन सबके आभारी हैं। उन लेखों को ज्यों का त्यों पूरा देना संभव नहीं था, पर पाठकों के तथा सर्वोदय-सम्मेलन में शरीक होने वाले सब भाई-बहनों के सामने उन सुझावों को सार रूप में कुछ आवश्यक अंश दिये जा रहे हैं। —सं०

• • • •

हमारे कार्यक्रम के दो अंग हैं : एक वैचारिक, दूसरा आंदोलनात्मक।

जहाँ तक वैचारिक अंग का सवाल है, यह सभी मानते हैं कि भूदान का विचार सत्य पर आधारित है। रहा आंदोलनात्मक अंग। इसमें लाखों एकड़ की प्राप्ति का चमत्कार हुआ, हजारों ग्रामदान मिले। पर अब कुछ शिथिलता आयी मालूम होती है! लेकिन इससे यह सिद्ध नहीं होता कि विचार असफल रहा या आंदोलन असफल हुआ। अगर कोई असफल रहा हो तो हम।

महात्माजी ने 'एक साल में स्वराज्य' का नारा दिया था। लेकिन उसके लिए एक कार्यक्रम भी दिया था। अगर हमने कार्यक्रम पूरा किया होता, तो एक वर्ष में निश्चित रूप से अंग्रेज चले हो गये होते। विनोबा ने कहा, 'भूदान ग्रामदान तो ठीक है। तुम मुझे सिर्फ घर घर में सर्वोदय पात्र चला कर दिखाओ, मैं तुम्हें सर्वोदय लाकर दिखाता हूँ।

क्या हमने अमल किया? क्या अमल करने की वृत्ति भी हममें है?

तो नाकामयाब कार्यक्रम नहीं हुआ, हम नाकामयाब हुए।

कार्यक्रम तो कामयाब होगा ही। दुनिया में सर्वोदय आयेगा ही। उसे लाने का पराक्रम जो हमसे अपेक्षित है, वह हम करते हैं या हम उसमें नाकामयाब होते हैं, यही सवाल है।

सत्याग्रह हमारे काम का अपेक्षित अनिवार्य अंग है, क्योंकि हमारे काम के दरमियान चुनौतियाँ निर्माण होती हैं। हम अगर उन चुनौतियों को पीठ दिखा कर पलायमान होते हैं, तो काम को नुकसान पहुँचता है। पिछले दस वर्षों में ऐसी चुनौतियाँ कितनी ही आयीं। चुनौतियाँ बाह्य और आन्तरिक, दोनों प्रकार की आयीं। बेदखलियाँ ठौर-ठौर हो रही हैं। तेलघानी के इलाके में तेल की मिलें और धान-कुटाई के इलाके में चावल की मिलें खुल ही रही हैं। हमें इस प्रकार की परिस्थितियों में सत्याग्रह की इजाजत देनी चाहिए।

लेकिन आखिर आन्दोलन मंदा क्यों पड़ा? इसका कोई बुनियादी कारण है या नहीं? हमारी कहीं भूल हुई है क्या?

वह बुनियादी भूल हमारी भूदान में प्राप्त जमीन के वितरण के बारे में है। हमने जमीन प्राप्त की, परंतु उसके बाद हमारी जो नैतिक जिम्मेवारी थी, उसके वितरण की वह हमने नहीं निभायी। गत वर्ष हम सेवाग्राम में इकट्ठा हुए। करीब करीब सभी ने महसूस किया कि अगले वर्ष जमीन का वितरण हो जाना चाहिए। एक यही कार्यक्रम हम लेकर चलते व प्रतिज्ञा करके चलते कि वितरण योग्य जमीन का वितरण करके ही छोड़ेंगे तो आज हमारे सामने हमारी अनेक समस्याएँ उस एक प्रक्रिया में से ही हल हुई प्रतीत होतीं। उसके निमित्त हमें गाँव गाँव जाना होता, लोक-संपर्क बढ़ता, नये-नये कार्यकर्ता मिलते, शांति-सैनिक बनते, सर्वोदय-पात्र रखे जाते। पत्रों के ग्राहक बनते, पंचवार्षिक योजना, पंचायत योजना, पोस्टर सभी के बारे में हम कहते। एक ही साधे सब सधते चला जाता।

सारांश

(१) पूरे प्रांत के स्तर पर, या जिलावार, कार्यकर्ताओं की शक्ति के अनुसार, भूमि-वितरण के निमित्त यात्राओं का आयोजन करके उस यात्रा में नीचे लिखे अनुसार यथासंभव कमीबेशी बातों का संयोजन व निर्देश करना। नीचे का कार्यक्रम संकेत रूप है। अपनी अपनी सूझ बूझ और परिस्थिति के अनुसार उसमें कमीबेशी हो सकती है।

(क) वितरण के निमित्त गाँव का सर्वे करना।

(ख) वितरण के प्रसंग से सभी भूमि-हीनों के लिए आवश्यक भूमि प्राप्त करने का प्रयास करना।

(ग) सारे गाँव में ग्रामदान, गाँव-परिवार, कम-से-कम सर्विस कोऑपरेटिव भी बनता हो तो बनाने की कोशिश करना।

(घ) कम-से-कम नये भूमि पुत्रों का परिवार तो अवश्य ही बनाने का प्रयत्न किया जाय।

(ङ) चरखा, तेलघानी, गोपुरी संडास, गोबर गैसप्लैंट, धानकुटाई, नीरा आदि में से जिस निर्माण-काम का संयोजन किया जा सके, करना। इन सबमें कमीशन से जो सुविधा सहायताएँ मिलती हैं, उन्हें समझाना। इन सबके लिए प्रशिक्षित करने के हेतु गाँव से चार-पाँच युवकों की माँग करना।

(च) शांति सरक्षण के निमित्त भी जो तैयार हों, उनको प्रेरणा देना।

(छ) सर्वोदय पात्र रखना और रखवाना। उसके द्वारा मिलने वाली रकम के विनियोग की योजना बना देना, ताकि उन्हें अपने दिये पैसे के विनियोग की कल्पना आये व काम बंद न पड़ने पाये।

(ज) शांति सैनिक प्राप्त करना। उनकी भी प्रशिक्षण की योजना करना।

(झ) संपत्तिदान या फसल का हिस्सा या इसी तरह सतत सहायता प्राप्त करने का प्रयत्न करना।

(ञ) हो सके तो ऋण-सेवा का भी प्रबंध करना।

(ट) साहित्य बिक्री, ग्राहक-नोंद वगैरा।

(ठ) चुनाव सम्बन्धी विचार।

(२) शहरों के लिए पोस्टर-आन्दोलन तथा शान्ति-सेना का संयोजन।

(३) जहाँ पर सत्याग्रह की परिस्थिति अनिवार्य रूप से महसूस हो वहाँ उसकी इजाजत देना।

इस प्रकार से उपर्युक्त विविध काम का हम ठीक दृष्टि लेकर आयोजन करें तो हमारा ख्याल है कि आन्दोलन आगे बढ़ता जायेगा।

—दामोदरदास मूंदड़ा

• • •

हम मानते हैं, कि सर्वोदय का विचार एक सत्य विचार है और महासंहार या महाप्रलय के कगार पर खड़ी दुनिया के लिए आज यही एक विचार तारक विचार सिद्ध हो सकता है। फिर भी हम देख हैं कि आज का हमारा संपन्न और बुद्धिजीवी समाज इस विचार की ओर आकर्षित नहीं. हो रहा है। वह इससे दूर ही दूर रहना चाहता है और अपने मन में इसके लिए

एक प्रकार की धुन-सी पाले हुए है। यों, समाज का जो अंश इस सत्य विचार को समझने की शक्ति रखता है और समझने पर इसे जीवन में उतारने की तैयारी कर सकता है, वह स्वेच्छा से समझना नहीं चाहता है। और जो समझ नहीं सकता, उसमें इसके प्रति अनुराग और आकर्षण होने पर भी वह इसे ग्रहण करके आगे नहीं बढ़ सकता। इस तरह दोनों तरफ से एक भारी दुविधा की और कुण्ठा की स्थिति उत्पन्न हो गयी है और प्रगति के सारे मार्ग रुँधे-से लगने हैं। आज हममें से हरएक के सामने सवाल यही है कि जो मार्ग इस प्रकार अवरुद्ध हो चुके हैं, उन्हें हम किस युक्ति-प्रयुक्ति से खोलें। हमें इस विषय में बहुत गहराई से सोचना होगा।

सर्वोदय-आन्दोलन की एक बड़ी कमी आज यह भी लगती है कि इसके पास अपने पूरे पुरुषार्थ के साथ समाज और शासन की गलत धारणाओं और गतिविधियों से सतत जूझने वाले समर्थ कोटि के सैनिक और सरदार पर्याप्त संख्या में नहीं हैं। कुछ गिने-चुने लोगों के भरोसे ४४ करोड़ के महान राष्ट्र को सर्वोदय के मार्ग पर चला देना सरल नहीं है। जिस दिन देश के सभी सत्प्रवृत्त लोग सर्वोदय-विचार की सिद्धि के लिए अपनी पूरी शक्ति से जुटने का संकल्प करेंगे, उस दिन निश्चय ही न केवल देश में, बल्कि दुनिया में भी सर्वोदय विचार के जय-जयकार को हम सुन कर रहेंगे।

आरोहण के इन दस वर्षों में अनेक उतार चढ़ाव देखने के बाद आज हमारी जो हालत है, उस पर गहराई से सोचने का समय आ चुका है। निर्मम आत्म-निरीक्षण और कठोर आत्म-शोधन, के सहारे ही हम अपने में नवजीवन का संचार कर सकेंगे और तभी नये उत्साह और निश्चय के साथ हम सर्वोदय के अपने महान लक्ष्य की सिद्धि की दिशा में बराबर आगे बढ़ सकेंगे। देश और दुनिया की सारी हालत आज हमारे इस विचार के लिए एक भारी चुनौती बनकर खड़ी है। हमें अपने आचार और उज्ज्वल आचरण के द्वारा इस चुनौती का जवाब देना है, और दुनिया के सामने सर्वोदय के तारक मन्त्र को सिद्ध करके दिखाना है। आत्म निरीक्षण की इस घड़ी में आज हमारे लिए यही कर्तव्य है।

—काशिनाथ त्रिवेदी

* * *

पिछले १० वर्षों में विनोबा एक के बाद एक कार्यक्रम देते चले गये और हम एक को छोड़ कर दूसरे को उठाते गये, जिसका नतीजा यह हुआ कि सर्वोदय-विचार का समग्र रूप कहीं भी दर्शित नहीं हो सका। विनोबा ने जो भी कार्यक्रम दिये, वे एक-दूसरे के पूरक के रूप में उठाये जाने चाहिए थे, न कि एक को छोड़ कर दूसरे को उठाना था। अगर जहाँ भूदान सर्व-प्रथम अधिक-से-अधिक प्राप्त हुआ या ग्राम दान प्राप्त हुए, वहाँ बाद के कार्यक्रमों को उन्हीं कार्यक्रमों की सहायतार्थ पूरक रूप में हम प्रयोग करते तो प्रारम्भ के कार्यक्रम में सघनता व समग्रता आती और हम कुछ नतीजे पर पहुँचते। अहिंसक समाज-रचना में व्यक्ति से समाज की ओर बढ़ना होता है, अर्थात् सूक्ष्मता से व्यापकता की ओर जाना होगा, न कि व्यापकता से सूक्ष्मता की ओर। सूक्ष्मता, सघनता और समग्रता से अगर व्यापकता की ओर बढ़ा जायगा, तो एक पंथ दो काज होंगे। सर्वोदय-विचार का स्वरूप भी साकार हो सकेगा और समाज में व्यवहारिकता और व्यापकता भी प्रकट होगी।

व्यापक प्रचार के मोह को छोड़ कर फिलहाल हमें कुछ क्षेत्रों में सघन और समग्र रूप से कार्य सामूहिक शक्ति लगा कर करना होगा चाहे महानगर हों, चाहे नगर हों, चाहे गाँव उस क्षेत्र-विशेष की जनता अधिकतर जिस काम के लिए तैयार हो, उसी समस्या पर जन सहयोग द्वारा सामूहिक शक्ति से उस समस्या का समाधान किया जाना चाहिए। तभी जनशक्ति प्रकट होगी और यह आन्दोलन जन-आन्दोलन बन सकेगा। जहाँ-जहाँ भूदान अधिक प्राप्त हुआ है, वे क्षेत्र भूमिहीनता मिटाने के लिए सबसे अनुकूल स्थान हो सकते हैं और जहाँ ग्रामदान अधिक हुए हैं, उनके आसपास मालकियत विसर्जन का सामूहिक कदम उठाया जा सकता है। इसी प्रकार जाति-सम्प्रदाय और राजनैतिक पार्टियों के कारण जिन-जिन बड़े नगरों में ज्यादा शान्ति भंग होने की स्थिति है, वहाँ भी शांति कायम रखने और अशांति के कारणों के निराकरण का सघन कार्य किया जा सकता है।

इस प्रकार देश के कुछ क्षेत्रों में जिला तथा प्रान्त के सर्वोदय-मंडल सामूहिक शक्ति लगा कर सघन कार्य की ओर कदम बढ़ायेंगे तो निकट भविष्य में ही हम अव्यवहारिक कहे जाने वाले सर्वोदय विचार के व्यवहारिक स्वरूप को कुछ क्षेत्रों में प्रकट कर सकेंगे।

—बद्रीप्रसाद स्वामी

ब्रह्मचर्य वानप्रस्थ वृत्ति

लोग कहते हैं कि बुढ़ापा आता है तो मनुष्य थक जाता है, लेकिन ऐसा नहीं है। गांधीजी का जीवन देश ने देखा। नोआखाली में वे जब गये थे, तब उनकी उम्र क्या थी? लेकिन उस वक्त उन्होंने कहा कि मैं वहाँ अकेला जाऊँगा। सुशीला, प्यारेलाल, अमतुस्सलाम सबको कह दिया कि तुम चार-पाँच मील के फासले पर अलग-अलग गाँव में जाओ। बूढ़ा आखिरी उम्र में नोआखाली में अकेला गया। यह उत्साह कहाँ से आया? यह प्रसन्न वृत्ति है। उत्तरोत्तर उनकी उज्ज्वल प्रतिभा दीख पड़ी। एक के बाद एक ऐसी नई कल्पना उनको सूझी जो पुरानी से ज्यादा तेजस्वी थी और आखिर के दिन तक वह प्रतिभा उज्ज्वल होती रही। कहना यही चाहता हूँ कि कितनी महान उनकी कल्पना-शक्ति थी। कोई प्रतिभावान कवि होता तो कहता कि इतना उत्साह, इतना वीर्य, इतनी स्फूर्ति, इतना पुरुषार्थ, यह नव उन्मेषशालिनी प्रतिभा कहाँ से आयी थी? तो ब्रह्मचर्य से आयी थी।

—विनोबा

प्राप्त, वितरित, अयोग्य भूमि, ग्रामदान और शांति-सैनिक के आँकड़े

[मार्च '६१ तक प्राप्त विवरणों के अनुसार]

प्रदेश	जिला-संख्या	माह तक के आँकड़े	भूमि-प्राप्ति (एकड़ में)	दाता-संख्या	भूमि-वितरण (एकड़ में)	आदाता-संख्या	वितरण के अयोग्य भूमि	ग्रामदान संख्या	शांति सैनिक
आंध्र	२०	जनवरी, ६१	२,४१,९९२·००	१६,६२९	१६,९४७·००	२५,९८८	५८,३३३·००	५८७	१११
आसाम	११	,,	२३,१९६·००	२,६७०	२२५·००	—	—	१९७	४१
उत्कल	१३	,,	१,५३,०४५·६६	८३,६१३	११,९३९·११	६,१७६	२,२८१·४५	१,९२९	११६
उत्तर प्रदेश	५४	,,	४,३६,०९५·००	१,०७,२३७	१,२४,६४०·००	५०,०७५	३०,८५७·००	६३	३५२
केरल	१	मार्च, ६०	२६,००२·००	—	२,५५४·००	—	४,०००·००	५४३	८
तमिलनाड	१३	सितम्बर, ६०	७०,८२३·००	—	१५७·००	—	—	२५२	३१
दिल्ली	१	जनवरी, ६१	३००·००	२१८	१८०·००	३०	—	—	२६
पंजाब-पेप्सू	१८	,,	१२,८९७·००	२,४४७	३,७०६·००	६४९	१,७०६·००	६	८
गुजरात	१८	सितम्बर, ६०	७८,२३८·१६	—	४५,५०९·३९	—	—	१४४	१५१
महाराष्ट्र	२५	जनवरी, ६१	१,४८,०९१·२४	—	८८,९२३·५७	—	५,०८२·६८	५८४	२०८
मध्य प्रदेश	४३	सितम्बर, ६०	४,०६,१५२·७४	—	१,०६,२४१·७२	—	१७,४६०·४५	७४	३१
मैसूर	१९	,,	१९,९७३·००	—	२,५२७·००	—	—	६६	७३
बंगाल	१७	जनवरी, ६१	१२,३५४·६९	८,२१०	३,१८७·२१	३,१०४	६१७·९४	२६	६०
बिहार	१७	,,	२१,३०,६२२·००	२,९८,५८२	२,४७,७६७·००	२,४५,२२७	१०,५१,०६१·००	८२	७२०
राजस्थान	२६	,,	४,३३,३२३·००	८,६४०	९७,०७३·००	११,४१५	३७,११७·००	२३५	२०३
हिमाचल प्रदेश	६	मार्च, ६१	१,५६,८००·००	—	२,१००·००	—	—	४	२
जम्मू-कश्मीर	१५	—	—	—	—	—	—	—	१
कुल	३३३		४३,५२,८६६·४१		८,३३,४६६·८२		१२,७०,६६६·५२	४,७५२	२,१५०

हृदय-मंथन की वेला

नेमिशरण मित्तल

भारत का धर्म, यहाँ की संस्कृति और सभ्यता सभी अपने मानवीय आधारों के लिए प्रसिद्ध रहे हैं। भारत के बारे में यह माना गया था कि यहाँ मनुष्य को मनुष्य के रूप में देखा जाता है और उसी रूप में उसके साथ व्यवहार किया जाता है। परन्तु हमारे इतिहास में एक ऐसा समय आया, जब हमने मनुष्य के चारों ओर जाति, संप्रदाय, धर्म, वर्ग और वर्ण की रेखाएँ खींचनी आरंभ की तथा उसे उसके सीमित और परिभाषित रूप में देखना आरंभ किया। हम इस काल में से गुजर ही रहे थे कि हमारे देश में भारतीय संस्कृति का एक महान पुजारी पैदा हुआ। गांधी ने देश की विविधता और अनेकता के पीछे निहित एकता का दर्शन किया तथा समूची भारतीय जनता को एकता के सूत्र में पिरोने की चेष्टा की।

हमारे सामने बुनियादी प्रश्न यह है कि गांधीजी भारत को महान बनाने और बनाये रखने के लिए जो मार्ग हमें दिखला गये हैं, उस पर हम कितनी दूर चल पाये हैं? चले भी हैं या नहीं? यदि नहीं तो हमने क्या सोचा है अपने मन में? हमारे विचार से भारत की स्थिति इस समय ऐसी है, जब हमें थोड़ा हृदयमंथन करना चाहिये। कई क्षेत्रों में हमें ऐसा लगता है कि हम अपने मौलिक सिद्धान्तों से पीछे हट गये हैं तथा हमने प्रगति नहीं की है।

जाति और संप्रदाय का प्रश्न

उदाहरण के लिये हम जाति और सम्प्रदाय के प्रश्न को ही लें। हमने अपने संविधान के द्वारा शपथ ली थी कि हम अपने यहाँ से अछूतपन को मिटायेंगे।

परंतु आज समाज के भीतर एक ओर तो सवर्णों के भीतर उसके लिये कोई तैयारी नहीं दीखती है, दूसरी ओर देश के आर्थिक ढाँचे में कोई इस प्रकार का मौलिक परिवर्तन नहीं हुआ है कि आज तक जो लोग सफाई का काम करते रहे हैं या तो वह काम उनसे लेकर दूसरे लोगों को दे दिया जाता, या उनके काम को इस प्रकार वैज्ञानिक उपकरणों पर आधारित कर दिया जाता कि उसमें निहित घृणा का भाव निकल जाता तथा दूसरे लोग भी उस ओर आने के बारे में सोचने लगते, अर्थात् उनके काम को एक आर्थिक धन्धा बनाने की दिशा में हमने कोई कदम नहीं उठाया है। एक तीसरी बाधा इस मार्ग में और आयी है, वह स्वयं उन लोगों की ओर से आयी है, जो परिगणित जातियों के सदस्य मान लिये गये हैं। उनको लगता है कि वर्तमान स्थिति का बने रहना ही श्रेयस्कर है, क्यों कि उसमें उन्हें विशेष सुविधाएँ और विशेष अधिकार मिलते रह सकेंगे। कुल मिला कर हमने इस दिशा में बहुत ही नगण्य प्रगति की है तथा नये खतरे भी खड़े कर लिये हैं। हम विशेष सुविधाओं और विशेषाधिकारों के नाम पर एक निहित स्वार्थ का निर्माण कर रहे हैं, जो कि निश्चित रूप से समस्या के समाधान में बाधक बना है।

साम्प्रदायिक सहनशीलता

इसी प्रकार एक दूसरा प्रश्न हमारे सामने साम्प्रदायिक सहनशीलता का है। बापू इसी समस्या के सुलझाने में बलिदान हुए और उनके बलिदान से ऐसा लगा, जैसे देश समझ गया है तथा समस्या स्थायी रूप में हल हो गयी है, परन्तु समय जाते कुछ देर नहीं लगी और हम उस तपस्वी के रक्त की हौ गंध को भूल गये। जबलपुर हो या मुरादाबाद या देश का कोई दूसरा कोना, आखिर यह मानना ही होगा कि हमारे सिर से यह उन्माद उतरा नहीं है और हम राष्ट्रभक्ति की उच्चतर निष्ठा को अपने भीतर जगा पाने के स्थान पर संकीर्ण निष्ठाओं के जाल में अभी तक कसे पड़े हैं। हम यह भूल गये हैं, कि हमने अपने देश के भीतर मानव की गरिमा को प्रतिष्ठा दी है तथा धर्म के परिपालन का स्वातन्त्र्य व्यक्ति को दिया है। हमारे अपने नम्र विचार से बात धर्म की नहीं रह गयी है। वास्तव में

> देश के भीतर कुछ ऐसे संकीर्ण तत्त्व मौजूद हैं, जो लोकतन्त्र के सिद्धान्तों में विश्वास नहीं रखते तथा जनता को सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक प्रश्नों की ओर से हटा कर अन्धविश्वास और रूढ़ियों के जाल में फँसा देना चाहते हैं और इस प्रकार धर्म या मजहब के नाम पर उन्माद पैदा करके अपने संकीर्ण वर्गीय या दलीय हितों को सिद्ध करने का स्वप्न देखते हैं।

ऐसे लोग छोटे दिल और दिमाग से काम करते हैं। हमें समझना चाहिए कि हमारा देश बहुत बड़ा है और हमें बड़े दिल वाला बनना चाहिए।

सांस्कृतिक समन्वय

यहाँ हम इस समस्या के एक महत्त्वपूर्ण पक्ष की ओर ध्यान देना चाहते हैं, वह पक्ष है देश के भीतर एक सांस्कृतिक समन्वय का। आज हमारे लिये यह आवश्यक हो गया है कि हम कुछ बुनियादी बातों पर अपना दृष्टिकोण स्थिर कर लें, जैसे भाषा का प्रश्न है। इस बारे में हम यह निर्णय कर लेना चाहिये कि हम राष्ट्रीय-संचार के माध्यम के रूप में केवल राष्ट्रभाषा हिन्दी का ही प्रयोग करेंगे। इसी प्रकार देश की विभिन्न भाषाओं के लिये देवनागरी लिपि को स्वीकार कर लें। इसी तरह का प्रश्न कुछ वेशभूषा आदि के बारे में भी उठ सकता है। दूसरे शब्दों में ही सही, परन्तु हम कहना यह चाहते हैं कि हमें अपने जीवन का वर्तन कुछ इस प्रकार रखना चाहिये कि हमें देखते ही ऐसा आभास न हो कि हम दूसरों से कुछ भिन्न हैं। विविधता और भिन्नता दो अलग प्रकार की चीजें हैं। भिन्नता बनाये रखने के पीछे हठ या दुराग्रह होता है और ऐसा हठ सांस्कृतिक समन्वय के मार्ग में बाधक होता है। भारतीयता का विकास हमारे भीतर होना अनिवार्य है। यदि यह नहीं हुआ तो देश की एकता को फिर से नया संकट झेलना पड़ सकता है।

हमें देश के भीतर साम्प्रदायिक संगठनों को वैधानिक रीति से समाप्त करना चाहिए। आध्यात्मिक साधना के लिये संघ बनें यह अलग बात है, परन्तु हिंदू महासभा और मुस्लिम लीग जैसे साम्प्रदायिक राजनीतिक दल किस प्रकार एक धर्मनिरपेक्ष लौकिक राज्य के भीतर बनाये और चलाये जा सकते हैं, यह हमारी समझ में नहीं आ पाता है। कुछ उदाहरण देकर हमारा प्रयोजन यही यह निवेदन करना मात्र है कि हमें कुछ लेखा-जोखा करना चाहिये और भूलों को सुधार कर नये सिरे से आगे बढ़ने की शपथ लेनी चाहिये।

नई क्रान्ति की दिशा

इसी संदर्भ में हमें देश के भीतर आज से दस वर्ष पूर्व आरम्भ होने वाली नई क्रान्ति की ओर भी ध्यान देना चाहिये। कुछ लोग अब यह प्रश्न पूछते हैं कि विनोबाजी का भूदान-यज्ञ आंदोलन कितना सफल हुआ है तो बड़ा तरस आता है प्रश्नकर्ता की बुद्धि पर, जो बेचारा आंदोलन को विनोबाजी की जागीर और जिम्मेदारी मानता है और देश को जवाहरलालजी की बपौती, और अपने आपको केवल परभोक्ता ही मान बैठा है। लोग इतना भी नहीं समझ पाते हैं कि जब लोकतंत्र आता है और जनशक्ति का प्रादुर्भाव होता है तो उत्तरदायित्व सामूहिक हो जाया करते हैं। यदि हम किसी कार्यक्रम और योजना को पसंद करते हैं तो बजाय इसके कि उसके लिये दूसरों पर निर्भर रहें स्वयं उसे उठा लें और उसकी सफलता या असफलता के लिये प्रत्यक्षतः अपनी जिम्मेदारी स्वीकार करें।

जहाँ तक भूदान-यज्ञ आरोहण का प्रश्न है, उसके बारे में यह मानना होगा कि उसके माध्यम से देश के मानस में सम्पत्ति की व्यक्तिगत मालकियत से संबंधित परम्परागत विचार में मूलगामी परिवर्तन आया हो या न आया हो, उसकी अचूकता तथा पवित्रता के बारे में शंका अवश्य उत्पन्न हो गयी है। आज से दस वर्ष पहले संपत्ति के समान बँटवारे की बात इतनी निर्भीकता और नीतिमत्ता के साथ नहीं हो सकती थी, जितनी कि आज दस वर्ष तक देश के कोने-कोने में सर्वोदय का संदेश पहुँच जाने के बाद सार्वजनिक मंच से की जा सकती है। संपत्ति के वैयक्तिक स्वामित्व की जड़ें हिली हैं, और यह एक बड़ा भारी काम हुआ है। मार्क्स और लेनिन के सारे प्रचार आज तक जिन जड़ों पर आघात नहीं कर सके थे, वे जड़ें दस साल में हिल गयी हैं। भारत का लोकमानस संपत्ति के वितरण में उतना अन्तर या भेदभाव भी सहन करने के लिये तैयार नहीं है, जितना कि समाजवाद के नाम पर सोवियत संघ और चीन जैसे देशों में पाया जाता है। इसका कारण यह है कि सर्वोदय के सारे विचार में संपत्ति को दाम के रूप में स्वीकार नहीं किया गया है, वरन उसे जीवन का साधन मान कर उसकी साझेदारी का विचार रखा गया है।

लगभग ४५ वर्ष के पश्चात् भी साम्यवादी विचार आज तक यहाँ तक ही पहुँचा है कि 'काम के अनुसार दाम'। सर्वोदय विचार इससे बहुत आगे गया है, उसकी मान्यता रही है कि काम सामूहिक जीवन के प्रति मनुष्य का दायित्व है, व्यक्तिगत जीवन के प्रति नहीं, और जहाँ तक जीवन के भौतिक साधनों का प्रश्न है यह दायित्व समाज का है कि वह अपने सदस्यों को समान रूप से आर्थिक साधन प्रदान करे।

निष्ठावान, चरित्रवान बनें !

१८ अप्रैल आ रहा है। हम लोग जो सर्वोदय के कार्यकर्ता हैं, वे भी अपना हृदय टटोलें और देखने की चेष्टा करें कि हमने किस सीमा तक अपने विचारों को अपने जीवन में पिरोया है। हम देश की समस्या हल करने का दावा नहीं कर सकते। हम यदि कर सकते तो इतना कर सकते हैं कि देश को बता दें, जो राह हमें मालूम है नम्रता के साथ उसका बोध उसे दे दें। अपना विचार रख देना, जनता को जँचे तो वह उसे उठा ले तथा उसको अपनी जिम्मेदारी पर क्रियान्वित करे, न चाहे तो न करे। यही लोकतंत्रीय पद्धति है।

संघ के संगठनात्मक पहलू पर पुनर्विचार हो!

हरिवल्लभ परीख

चेंगलेट में हम सब मिल रहे हैं। साथियों के दिल में आंदोलन को गति देने के लिए तरह-तरह के विचार चल रहे होंगे। ऐसे पारस्परिक विचारों का आदान-प्रदान हो, इस दृष्टि से सम्मेलन में शरीक होने से पूर्व मैं सिर्फ संघ के मौजूदा संगठन की ही चर्चा करूँगा।

शुरू में हमने विभिन्न रचनात्मक संस्थाओं का संगम करने का भरसक प्रयत्न किया। उसमें सफलता भी मिली और उन मुख्तलिफ संस्थाओं का एक मिलाजुला संघ बना। इस संघ ने सर्वोदय-आन्दोलन के नाम से चलने वाली भूदान आदि सारी प्रवृत्तियों को चलाने का जिम्मा उठाया। संघ सच्चे अर्थ में व्यवस्थित संस्था बना। मुल्क के हर हिस्से में भूदान-समितियों का गठन किया गया। फिर १९५७ में हमने हिम्मतपूर्वक समितियाँ तोड़ डालीं। अतंत्र से तंत्र और तंत्र से फिर अतंत्र की ओर बढ़े। जिला-निवेदकों के सहारे संघ ने अपने सीधे सम्पर्क की प्रक्रिया ढूँढ़ निकाली निचौनियों से संघ को मुक्त करने का साहसी प्रयास किया।

"संगठन अहिंसा की कसौटी है," बापू के इस गुरु-वाक्य को चरितार्थ करने का हमारा यत्न है ही। किंतु मौजूदा वायुमंडल से हम अपने आपको अछूता नहीं रख सके और इसलिए हमने फिर से संघ को चुनाव मतदान के चक्कर में डाला। नीचे से चुने हुए प्रतिनिधियों वाली नकली लोकशाही की रस्म अदायगी हमने की। जिस प्रकार काँग्रेस की मण्डल-समितियाँ नाम मात्र की हैं, जिला और प्रांतीय समितियाँ ही सर्वस्व हैं, ठीक वैसे ही हमारे प्राथमिक सर्वोदय-मण्डलों की हालत है। जैसे आज के राज्य-मंत्री ऐसा संतोष लेते हैं कि मैं चुना हुआ प्रजा का प्रतिनिधि हूँ, ठीक वैसे ही हमारे संघ के साथी संतोष ले सकते हैं, किंतु इसकी बुनियाद न तो पक्की है, न सच्ची ही।

मेरा नम्र सुझाव है कि क्या हम प्रचलित तरीके को छोड़ कर अहिंसात्मक संगठन का कोई नया नमूना पैदा नहीं कर सकते? क्या हमारे लिए भी जिला, प्रांत व राष्ट्र के स्तर पर कृत्रिम संगठन का ढाँचा होना लाजमी है? प्राथमिक सर्वोदय-मण्डल, जिला-सर्वोदय-मण्डल, प्रांतीय सर्वोदय-मण्डल और फिर अ० भा० सर्व सेवा संघ; यहाँ हमने नाम भले ही बदले हों, किन्तु तरीका बहुत हद तक पुराने संगठन का ही अपनाया है। हमने विधान में प्राथमिक सर्वोदय-मंडलों से जो सहजीवन आदि बातों की अपेक्षा की है, वह क्या हम बना पाये हैं? बिना बुनियाद के सारी इमारत खड़ी की है और इसीलिए जो बल संगठन को मिलना चाहिए या संगठन से जिस अहिंसक शक्ति का आविर्भाव होना चाहिए, वह नहीं हो रहा है। परिणाम स्वरूप सात्विक और सौम्यतम शब्दों से ही सही, संघ के जिला, प्रान्त व राष्ट्र के संगठन में खींचातानी शुरू हुई है। राजकीय पक्षों में सत्ता की खींचातानी है, यह हमारी आये दिन की फरियाद है और यही प्रक्रिया हमारे संगठन में बिला वजह शुरू हो गयी है। लोक-सेवक को स्पीकरों की तरह संघ तक में बैठने व बोलने के समान अधिकार देकर भी हम पदलालसा को कम नहीं कर सके हैं।

मौजूदा संगठन की कुछ त्रुटियाँ हमारी नजर में आती हैं, उसके विकल्प भी मैं आगे सुझाना चाहता हूँ:

त्रुटियाँ:

(१) देश में प्रचलित राजकीय संगठनों की तरह ही हमने इसके जिला, प्रान्त व राष्ट्रव्यापी सिरके बनवाये हैं।

(२) हमारे प्राथमिक सर्वोदय-मंडलों की बुनियाद सहजीवन से बननी चाहिए। इसके बजाय सिर्फ कागजी संकल्प से बनती है।

(३) अन्य संगठनों में जिस प्रकार सत्याघाती विचार वाले योजनापूर्वक किसी भी द्वार से संगठन में घुस जाते हैं और उसे अन्दर से कमजोर करते हैं, ये अंदर के कीड़े किसी भी संगठन के लिए सबसे ज्यादा खतरनाक होते हैं। हमारे प्राथमिक जिला व प्रान्त के संगठन में इस प्रकार के तत्त्वों का प्रवेश सहज-सुलभ है और उनके सुधार या नियंत्रण की कोई योजना नहीं है।

(४) प्रचलित संगठनों की तरह हमारे जिला व प्रान्त आदि मण्डल भी औपचारिक ढंग से सिर्फ सिद्धांत, चर्चा या कार्यक्रम बनाने के लिए सभा सम्मेलन में मिलते हैं। यह मिलन जीवित नहीं होता, न ऐसे स्थानों पर जीवंत सम्पर्क ही बन पाता है।

(५) हमारा संगठन अगर अहिंसात्मक है और अहिंसा का पर्याय प्रेम है, तो प्रेम को प्रकट होने के स्वाभाविक प्रसंग प्राप्त हो सकें, ऐसा हमारा आयोजन आज नहीं है। परस्पर प्रेम, विश्वास और एकता निर्माण हो, यह बुनियादी बात संगठन की प्रक्रिया में से ही उपजनी चाहिए।

(६) आज हमारे शक्तिशाली चार क्या, दो साथ भी साथ नहीं रह सकते! उनमें उसी प्रकार राग फूट निकलता है, जिस प्रकार राजनैतिक संगठनों में। जगत् भर के लोगों पर विश्वास करने वाले हम अपने साथी पर विश्वास नहीं करते! अत्यंत दुष्ट का भी हृदय-परिवर्तन शक्य है, किन्तु अपने साथियों के साथ काम नहीं कर पाते।

मतलब, हमारे संगठन की पद्धति व प्रक्रिया में कोई ऐसी विशेषता या नवीनता नहीं है, जो प्रचलित संगठनों को दिशादर्शन करा सके और उसके दोषों से मुक्त रख सके।

सुझाव

इसके सुधार के बारे में मेरे निम्न सुझाव हैं:

(१) संघ के संगठन को एक बार फिर से हिम्मतपूर्वक तोड़ दिया जाय। नये सिरे से रचना स्वाभाविक हो। प्राथमिक सर्वोदय-परिवार बने, जिले व प्रांत का नहीं, किन्तु *गाँव या क्षेत्र का। ऐसे सर्वोदय-परिवार के* लिए लोकसेवक की निष्ठा जरूरी मानी जाय। *किन्तु सहजीवन उसकी प्राथमिक* शर्त हो। मालकियत विसर्जन करके प्रयत्नशील नहीं; मालकियत-विसर्जन करके शरीर-बल लोकप्रेम-बल और आत्मप्रेम बल पर रह कर काम करने की जिनकी तैयारी हो, ऐसे ही स्वाभाविक रूप से जितने साथ हो सकें, उनका एक सर्वोदय-परिवार बने। इसकी रचना ऐसी कि सर्वोदय-परिवार विकसित होते-होते ग्राम-परिवार में जामन की तरह मिल जाये। ऐसे ग्राम परिवार के गाँव आगे जाकर जामन की तरह क्षेत्र-परिवार में बदलते जायें। इसी क्रम को आगे बढ़ा कर विश्व परिवार तक ले जाया जाये। *किन्तु बुनियाद में जहाँ श्रम न हो, श्रद्धा न हो, परिवार की भावना न हो, वहाँ विश्व परिवार की, जय जगत् की* भाषा सिर्फ भाषा ही रहती है।

संघ ऐसे परिवारों से बने, याने ऐसे परिवारों के साथ संघ का जीवित संबंध हो। जैसे इजराइल का मुख्य मंत्री 'किबुत्स' में रहता हुआ राज्य धुरा चला सकता है, वैसे संघ का मंत्री या प्रमुख परिवार की इकाई में रह कर संघ का भार सँभाल सकता है। जिला व प्रांत के सर्वोदय-मण्डलों के गठन की कोई जरूरत नहीं है। यह हमारे मत्सर को बढ़ाते हैं और मकसद से हमारी नजर दूसरी ओर ले जाते हैं।

सवाल उठाया जा सकता है कि जिले व प्रांत के प्रश्नों पर विचार प्रकट कौन करेगा? प्रांत, जिले या तहसील के किसी विशेष मामले पर विचार प्रकट करना होगा तो नजदीक का सर्वोदय-परिवार विचार प्रकट करेगा। आवश्यकता हुई तो नजदीक के पाँच-पचीस सर्वोदय-परिवार मिल कर चर्चा करके विचार प्रकट करेंगे। न सिर्फ प्रांत या जिले के मसलों पर, किन्तु विश्व के किसी भी मसलों पर वे प्रकट चिंतन कर सकेंगे। किन्तु हमारे विचार व चिंतन को बल देने के लिए जिले व प्रान्त के कृत्रिम संगठन की जरूरत नहीं होनी चाहिए।

ये परिवार इकाइयाँ साल में तीन-चार बार नजदीक के परिवारों के साथ विचार-विमर्श करने के लिए उनके अपने स्थानों पर सहजीवन का संक्षिप्त आयोजन भी करेंगी। इसी प्रकार अखिल भारत संघ के लिए हर परिवार अपना एक या एक से अधिक व्यक्ति भी भेज सकता है। अ० भा० सर्व सेवा संघ इन व्यक्तियों के सहमिलन से बने। इसमें से कार्य-विभाजन की दृष्टि से कुछ व्यक्तियों को काम बाँटा भी जाये। संघ का यह स्वरूप गुजरात की 'सतमीसभा' जैसा कुछ रहे। यहाँ मुझे इस बात का दुःख के साथ जिक्र करना पड़ता है कि गुजरात की सतमीसभा का जिस प्रकार विकास हो रहा था, उसमें से सर्वोदय-संगठन का आगे चल कर सही नमूना शायद हमें मिलता, किन्तु संघ के नये विधान को लेकर सतमीसभा बन्द हुई! उसका स्थान वैधानिक मंडलों ने ले लिया। इस दिशा में फिर से प्रयोग शुरू होने चाहिए।

(२) ऐसे संकल्प वाले सर्वोदय-परिवार ही हमारे कार्यक्रम की बुनियाद हो सकते हैं। आज हमारी प्रक्रिया में जितने भी कार्यक्रम हैं, उनमें स्नेहन का जो अभाव है, वह इस 'परिवार' से पूरा हो सकता है। इसे आप सर्वोदय 'होम्स' कहें, सर्वोदय 'कम्युन' या सर्वोदय 'किबुत्स' कहें या सर्वोदय परिवार, यही बुनियाद हो सकती है हमारे कार्यकर्ताओं के जीवन की और कार्यक्रम के चिरस्थायित्व की।

(३) आज संस्थाओं के 'लेबल' सदस्य होते हैं। वैसे ही हमारे प्राथमिक मंडलों के लिए कोई कह सकता है। और इस प्रकार इस संगठन में आसानी से प्रवेश पाकर बिना कुछ कष्ट उठाये, बिना कुछ त्याग-तपश्चर्या किये, कुछ लोग पूरे संगठन को हानि पहुँचा सकते हैं। पहुँचा रहे भी हैं, ऐसा कई साथियों का अनुभव है। हम तो सबके सुधार में सबके हृदय परिवर्तन में श्रद्धा रखने वाले जो ठहरे। किन्तु इस प्रेम-स्पर्श की प्रक्रिया को पनपने के अवसर तो मिलने चाहिए न? यह तभी संभव है कि जब परिवार बनें, *साथ जीयें, साथ काम करें।* सहजीवन में से ही प्रेम प्रकट होगा। विश्व को प्रेम सिंचित करने वालों के जीवन में प्रेम के स्रोत सदा बहते रहने चाहिए। विज्ञान ने जिस प्रकार आज विनाश-शक्ति की शोध की है, उससे भी अधिक बलवती प्रेम शक्ति की शोध हमें करनी होगी। हम कितनों के बन सके और कितनों को अपने बना सकें, यही कसौटी हो।

(४) सभा सम्मेलनों का प्रचलित स्वरूप बदल कर सामूहिक श्रम—वह भी प्रदर्शनात्मक नहीं, परिणामकारी योजनाबद्ध हो। सम्मेलन या सभा के अन्त में कुछ काम का परिणाम लोगों को दीखे। यह तभी सम्भव हो सकता है, जब कुछ समय साथ रहा जाये, साथ काम किया जाय। एकसाथ काम करने से साथ साथ रहने से निकटता बढ़ेगी, प्रेम भी बढ़ेगा, जीवन-संपर्क भी बढ़ेगा।

(५) अहिंसा के लिए हमारे सारे कार्यक्रम आयोजित हों। आज हमारा मुख्य कार्यक्रम आर्थिक विषमता दूर करने का है। आर्थिक विषमता क्या चीज है और वह जन जीवन में कितनी पहुँच चुकी है, इसका प्रत्यक्ष अनुभव 'समभागी' बने बगैर नहीं हो सकता। अतः हमें आर्थिक दृष्टि से पिछड़े हुए क्षेत्रों को अपने प्रेम द्वेष और अहिंसा के प्रयोग-क्षेत्र बना कर उसे हमारे कार्यक्रम की धुरा बना कर सारे अन्य काम करने होंगे।

आज मैं सोचता हूँ कि जब हम खादी काम करते थे, तब हमारे बुजुर्ग साथी हमारे लिए बड़ी चिन्ता करते थे। हम बारह रुपया माहवार लेते थे। वे आग्रह करके हमें पंद्रह रुपये लेने को समझाते थे। घी दूध कुछ लेना ही चाहिए, ऐसा आग्रह करते थे। उस वक्त हमारी आँखों के सामने पूज्य बापूजी, श्री धीरेन्द्र भाई आदि का चित्र रहता था। उनकी विद्वत्ता, योग्यता और आवश्यकता के अनुपात में वे बहुत कम लेते थे। ये हमारे आदर्श थे। आज खादी-कार्यकर्ता हो या भूदान कार्यकर्ता सब किसी को प्रेरणा के लिए त्याग की तस्वीर चाहिये, जिंदा तस्वीर! कोरे उपदेश कुछ नहीं कर सकते। इसीलिये आज त्याग की बजाय हमारी संस्थाओं में और हमारे कामों में लगे हुए साथियों को अपने आर्थिक जीवन की अधिक चिन्ता रहती है। अगर अहिंसा को प्रकट होना है, तो त्याग तपश्चर्या से ही वह प्रकट हो सकती है। इसके जीवित प्रदर्शन हमारे सर्वोदय-परिवार हों।

(६) हम सर्वोदय-साथियों के लिये यह चुनौती है कि अन्य राजसिक वृत्तिवाले कार्यकर्ताओं की तरह सर्वोदय के दो शक्ति-सम्पन्न साथी भी साथ नहीं रह सकते। अगर हमारी शक्ति आत्मिक है और आत्मिकता, नैतिकता हमारे जीवन के आधार हैं, तो फिर राग विराग आदि धननस्वकारी तत्त्व हममें क्यों पनपते हैं? यह वास्तविकता है, कटु सत्य है। किंतु इस आक्षेप में बहुत तथ्यांश है। हमें इसका जवाब अपने जीवन से देना होगा। क्या यह उचित परस्पर प्रेम का अभाव, आध्यात्मिक मूल्यों की बौद्धिक अपेक्षा, वैचारिक प्रमाद, अपने लिए, अपने विचार के लिए 'आग्रह' की भूमिका, ये छोटे-छोटे दोष हमें और कार्यक्रम को बहुत नुकसान पहुँचाते हैं। राजनैतिक संगठनों में इनको दबाने वाली दंड-शक्ति नियंत्रण का काम करती है। यह सही है कि वह हर बार कारगर नहीं साबित होती। किन्तु दबाती जरूर है। अपने संगठन में स्वनियमन है। इसलिए ये बहुत दोष हानि पहुँचा सकते हैं। इन कमजोरियों के हम सब शिकार हैं। भुक्तभोगी के नाते यह मेरा निवेदन है कि हमें प्रेम के प्रसार की ऐसी नवीनतम पद्धति इजाद करनी होगी, जहाँ द्वेष को पनपने की कम-से-कम गुंजाइश हो और वह मेरी दृष्टि से है 'सर्वोदय-परिवार' की रचना। सहजीवन की आराधना!! और शान्ति की साधना!!!

इसीलिए संघ या नगर स्फुरण हो और साथियों का मनसस्कार हो, पद्धति और प्रक्रिया में नवीन आविष्कार हो। इस दिशा में सब साथी कुछ सोच-विचार करें। इसी दृष्टि से यह लिख रहा हूँ। ये सिर्फ मेरे ही अनुभव नहीं हैं, आप सबके हैं, जो हमें अपना महसूस करते हैं। संस्था, संगठन व साथी के बारे में हमारी निष्ठा हो:

"जीवन को जीवित करो हे!
हो साथी में आशा और विश्वास;
सत्य में प्रेम, प्रेम में कृतनिश्चय हो,
सख्य को (साथी को) जीवित करो हे॥"

आज से दस बरस पहले

गुरुशरण

१८ अप्रैल १९५१

पोचमपल्ली, जिला नलगोंडा (तेलगाना)

अपने देश के आन्ध्र प्रदेश का सात सौ घरों का छोटा-सा गाँव। प्रातः सवा नौ बजे विनोबाजी गाँव देखने के लिए निकले। सबसे पहले हरिजन-बस्ती पड़ी। पूरी हरिजन-बस्ती के लोग इकट्ठा होकर संत को देखने लगे और संत उनको।

"हम लोग पैदल चल कर आ रहे हैं। हमने सुना था, आपके इस क्षेत्र में दुखी लोग बहुत हैं। वैसे हमारे हिन्दुस्तान में हर जगह दुखी लोग हैं, पर आपके यहाँ बहुत ज्यादा तकलीफ है। हम इस गाँव के सभी लोगों को कहना चाहते हैं कि आप एक हो जाइये।"—विनोबाजी ने कहा।

"हम लोगों को खेती के लिये जमीन चाहिए। आज खेती के अभाव में कभी-कभी भूखों रहना पड़ता है। मजदूरी का कोई भरोसा नहीं है। अगर जमीन मिले, तो इज्जत की जिन्दगी बिता सकेंगे।"—गाँव के हरिजन ने कहा।

"जमीन कितनी चाहिये?"—विनोबा ने पूछा

"८० एकड़ (४० खुश्की, ४० तरी)"—हरिजनों की ओर से उत्तर आया।

"यदि सरकार की ओर से जमीन न मिल सके या देरी लगे तो उस हालत में गाँववालों की ओर से क्या कुछ किया जा सकता है?"—गाँववालों को लक्ष्य कर विनोबा ने सहज ही पूछा।

"मेरे स्वर्गीय पिताजी की इच्छा थी, कुछ जमीन इन भाइयों को दी जाय। लिहाजा, मैं अपनी ओर से, अपने पाँच भाइयों की ओर से, सौ एकड़, जिसमें पचास खुश्की और पचास तरी है, आपके द्वारा इन लोगों को भेंट करता हूँ।"—भूमिवालों में से एक, श्री रामचन्द्र रेड्डी ने घोषणा की।

*　　*　　*　　*

१५ अगस्त, १९४७ को पहला स्वतंत्रता दिवस दिल्ली में मनाया गया, जिसकी छाया प्रादेशिक राजधानियों में रंगीनी के साथ दिखाई दी और उसकी चर्चा गाँव के कुछ पढ़े लिखों तक थोड़ी-थोड़ी पहुँची। अनपढ़ों ने इतना समझा कि अंग्रेज चले गये, गाँधी महात्मा का राज आ गया! अब देश में सुराज होगा, रामराज्य स्थापित होगा। गांधीजी ने यह दिन कलकत्ते में उपवास और प्रार्थना में बिताया। जनता की भावनाएँ धीरे-धीरे घुलनी शुरू हो गयीं। अपनी-अपनी आपा धापी में बकरी पर बैल, बैल पर घोड़ा, घोड़े पर हाथी और हाथी पर मोटर सवार हो गयी। पहले अंग्रेज को कोस कर आँसू पोंछ लेते थे कि जब अपने देश में अपना राज होगा, तब यह सब नहीं चलेगा। इस देश प्रेम ने बड़े बड़े बैरिस्टरों की बैरिस्टरी छुड़ा दी। मोतीलाल नेहरू जैसे रईसों के कंधे पर खादी का गट्ठर रख कर गाँव-गाँव फेरी लगवा दी। स्कूल-कालेजों में पढ़ने वाले लड़के पढ़ना-लिखना छोड़ कर आजादी का गीत गाते गाँव-गाँव, गली-गली निकल पड़े। सुना कि वाइसराय के सामने बम फेंक दिया। कहीं सुना कि विलायती कपड़ों की होली जला दी। एक दिन सुना कि भगतसिंह को फाँसी लग रही है। इन सब वीरों ने आजादी की तमन्ना को जन जन में व्यापक बना दिया। गाँव की औरतें गीत गाने लगीं।

"घुनुर घुनुर बोले छोरे चरखवा टूटे न करले का तार। चरखवा चालू रहे।"

आदिवासी अंचल में जहाँ डाक-तार-अखबार कुछ नहीं थे, उन कोल, भील और संथालों में गीत गाये जाने लगे

"गांधीजी आवा बेबे धोती पहने, हाथे में बनाये लहा।

जय हो तिरंगा, जय हो तिरंगा"

गांधीजी और तिरंगा झंडा के लिये ही नहीं, वरन् सुभाषचन्द्र बोस और उन जैसे दूसरों के लिए भी ऐसा ही आदर था: "राम भइले तपसी, भरत भइले जुगिया।

लछमन बनगै फकीर बनरसिया,
मोरे तोरे कारन भये सुभाष परदेसिया"

*　　*　　*

स्वराज्य प्राप्ति के पहले के वातावरण से स्पष्ट है कि उस समय गुलामी से छुटकारा पाने की जबरदस्त माँग थी और उस माँग के लिये जान पर खेलने वाले बहादुर थे। प्रश्न गरम और नरम दलों का नहीं, वरन् जोश और उत्कटता का है। गांधीजी ने उस जोश के साथ अपने दैनिक जीवन के सत्य और अहिंसा के प्रयोगों से एक मिसाल जोड़ दी, जैसे किसी चीज को ढूँढने के लिए मजोर जोड़ देने पर निर्णय में मोड़ आ जाता है वही हुआ। गांधी की अहिंसक साधना ने अपना प्रभाव दिखाया। खूनी क्रांति की बात करने वाले लोहिया और जयप्रकाश नारायण सदृश नस नस से क्रांतिकारी लोगों ने कालान्तर में सत्याग्रह का मार्ग अपनाया। भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी ने रक्तिम क्रांति के बजाय शान्त और अहिंसक मार्ग से प्रजातंत्रीय पद्धति पर चुनाव के रास्ते केरल में सत्ता संभाली। मैं इन उदाहरणों के आधार पर यह कहना चाहता हूँ कि देश की आजादी की माँग को गांधीजी ने सत्याग्रह, असहयोग और रचनात्मक कार्यक्रमों से रास्ता दे दिया।

आजादी मिलने के बाद वह माँग मर गयी। रास्ता बता कर गांधीजी कुछ महीनों बाद ही चले गये! उनके साथ रहे, बड़े लोग अपनी अपनी बस्तियाँ, अपनी-अपनी नित नूतन पार्टियाँ बनाने के चक्कर में पड़ गये। जनता निष्क्रिय और अकर्मण्य होकर स्वराज्य के सुखों की प्रतीक्षा में हाथ फैलाये बैठी रही। देश आजाद हुआ, पर सामाजिक दृष्टि से चुनाव के रास्ते से जाति-भेद पनप उठा और आर्थिक दृष्टि से आवश्यकताओं के बाहुल्य और स्टैन्डर्ड के नाम पर देश मुँह फाड़-फाड़ कर रोने-चिल्लाने लगा! पहले तो विदेशी थे, चलती नहीं थी, अब अपने ही देश के पढ़े-लिखे और लूट सकने लायक लोग विकास और सुधार के नाम पर भोले लोगों का भोजन कर उदर-पोषण करने लगे, जैसे खारे समुद्र में बड़ी मछली छोटी मछली को हजम कर लेती है। तीन साल के अन्दर ही आजादी की माँग की तरह अन्न, वस्त्र स्वास्थ्य आदि की माँग राष्ट्रीय स्तर पर जागृत हुई। राष्ट्रमाता की यह माँग उसकी कोख से जन्मे एम० एल० ए० और एम० पी० से पूरी होने की रही, क्योंकि वे भारतमाता के भगतसिंह और चन्द्रशेखर आजाद जैसे सपूतों की तरह न भूखे रह कर जान पर खेलने वाले हैं, और न अब गांधीजी की तरह जन-जन की सेवा में लगे रहने वाले ही हैं।

•　　•　　•

राजनैतिक क्रांति के बाद सामाजिक क्रांति की इस व्यथा के गर्भ से पोचमपल्ली नामक ग्राम में १८ अप्रैल, १९५१ को भूदान-यज्ञ का उदय हुआ। उस दिन विनोबा ने पोचमपल्ली की हरिजन बस्ती के चौराहे पर खड़े होकर सार्वजनिक प्रार्थना की:

"गाँव में कुछ लोग दुखी हैं तो कुछ लोग सुखी भी हैं। जो लोग सुख में हैं, उनसे हम प्रार्थना करते हैं कि आप जरा अपने गाँव के दुखी लोगों की चिंता कीजिये"

नई जनगणना और बढ़ती हुई आबादी

काशिनाथ त्रिवेदी

आज देश में और दुनिया में लोगों की बस्ती बढ़ती ही जा रही है। अपने देश में १० वर्ष पहले हम कोई ३६ करोड़ थे, तो अब लगभग ४४ करोड़ हो गये हैं। मतलब यह कि १० बरस में हम कोई आठ करोड़ और बढ़ गये। अगर बढ़ने का यह सिलसिला इसी तरह जारी रहा, तो अगले ५० बरसों में हमारी बस्ती आज की अपनी बस्ती के मुकाबले दुगुनी से भी ज्यादा बढ़ जायेगी, यानी हम ८०-८५ करोड़ से भी ज्यादा हो जायेंगे। तो सवाल यह है कि क्या इस तरह बस्ती का बेहिसाब और बेलगाम बढ़ना बस्ती के अपने हित और भविष्य के लिए ठीक है? क्या देश की इतनी तैयारी है कि वह इस बढ़ती हुई बस्ती के लिए जरूरी सब तरह की सहूलियतें हर आदमी को मुहैया कर सके?

अगर देश की इतनी तैयारी नहीं है, और जाहिर ही है कि सचमुच आज हम इतने तैयार नहीं हैं कि अपनी धरती पर पैदा होने वाले हर इन्सान के लिए जरूरी सब तरह का सामान खड़ा कर सकें, तो हमें सोचना ही होगा कि अपने देश में हम अपनी संख्या को काबू में कैसे रखें? आज की इस बढ़ती हुई आबादी ने हमारे देश के नेताओं और हमारी सरकारों को गहरे सोच में डाल दिया है और अब पिछले ५ सालों से वे सब इस कोशिश में लगे हैं कि लोग अपनी औलाद पर रोक लगायें। घरों में कम-से-कम बच्चे पैदा हों, बढ़ती हुई आबादी कुछ रुके, थमे, तो आगे का कोई एक नक्शा बन सके और विकास-योजनाओं के जरिये देश की तरक्की का जो काम उठाया गया है, उसका फायदा देश के हर आदमी को मिल सके।

इसमें कोई शक नहीं है कि जैसी गरीबी, भुखमरी, बेकारी, लाचारी और नासमझी आज हम देश में है, उसके रहते आबादी की बेहिसाब बढ़ोतरी देश के लिए बहुत ही खतरनाक है। देश की असल ताकत उसके लोगों की ताकत है। लोगों में भी ताकत उन्हीं की काम आती है, जो अपने आप में ताकतवर होते हैं। इन्सान को भगवान ने तीन तरह की ताकतें दी हैं—तन की ताकत, मन की ताकत, आत्मा की ताकत। इन तीनों ताकतों से भरा-पूरा आदमी ही देश की असल ताकत होता है। ऐसी ताकत वाले लोग जिस देश में ज्यादा होते हैं, वही देश दुनिया में आगे बढ़ता है और वही दुनिया की दौड़ में टिक पाता है। हमारी मुसीबत यह है कि सैकड़ों सालों तक जो गुलामी हम पर लदी रही, उसके कारण हम अपने में तन, मन और आत्मा की ताकतों का सही विकास नहीं कर सके। गुलामी की वजह से पैदा हुई गरीबी, लाचारी और नासमझी ने हमें इन्सान के नाते इतना गिरा दिया कि आज उसका हिसाब लगाना मुश्किल है। ऐसी हारी, थकी और गिरी हालत में हमें अपने देश में अपना राज चलाने का मौका मिला। १४ बरस से हम अपना राज चला रहे हैं। अपने आप में हमारे लिए यह इस जमाने की एक बहुत बड़ी चीज हुई है। इससे हमारी जिम्मेदारी बढ़ी है। हमारी तरक्की के रास्ते खुले हैं। हमारी कई मजबूरियाँ दूर हुई हैं। हमें सोचने, काम करने और अपनी हालत अपने हाथों सुधारने का मौका भी मिला है। हमने पाँच साला योजनाएँ बनायी और उन पर अमल करना शुरू किया। पिछले १० सालों में देश ने कई तरह से तरक्की की है। बड़े-बड़े कल-कारखाने खुले हुए हैं। बड़े-बड़े बाँध बने हैं। पानी और बिजली की सुविधा बढ़ रही है। रेलें बढ़ी हैं, सड़कें बढ़ी हैं। डाक-तार, फोन और रेडियो आदि की सुविधाओं का विस्तार हुआ है। उद्योग-धन्धे बढ़े हैं। जो माल पहले दूसरे देशों से आता था, वह अब देश का देश में बनने लगा है। विज्ञान की दिशा में भी हम काफी कुछ आगे बढ़े हैं। विज्ञान की खोज के अनेक बड़े-बड़े केन्द्र देश में जगह-जगह काम करने लगे हैं। शिक्षा बढ़ी है। पैदावार बढ़ी, कुछ आमदनी भी बढ़ी है। लोगों की औसत उमर भी कुछ बढ़ी है। तरक्की और बेहतरी के और भी बहुत से काम हुए हैं और हो रहे हैं। अब तक अरबों रुपया खर्च हो चुका है और आगे अरब-खरब के खर्चों की योजनाएँ भी बनी हैं।

यह सब इसलिए किया जा रहा है कि देश खुशहाल हो। देश के लोगों को भरपूर खाने-पीने, पहनने-ओढ़ने, रहने और लिखने-पढ़ने आदि की सुविधाएँ मिलें। देश से गरीबी, भुखमरी, बेकारी, लाचारी और नासमझी का अन्त हो। इसी कोशिश का नतीजा यह है कि देश की बढ़ती हुई आबादी की तरफ भी जिम्मेदार लोगों का ध्यान गया है और उन्होंने देश में परिवार नियोजन की यानी औलाद घटाने की, कम बाल-बच्चे पैदा करने की एक बात देश के सामने जोर से रखी है। और, उसके लिए हर जरूरी इन्तजाम किया जा रहा है। क्या गाँवों में और क्या शहरों में, हर जगह आज परिवार को छोटा बनाने की बात समझायी जा रही है। डाक्टरों और नर्सों का एक बड़ा दल सारे देश में इसी काम पर लगा गया है। इस पर करोड़ों रुपये खर्च करने की योजनाएँ भी हमारी सरकारों ने मंजूर की हैं। तीसरी पाँच साला योजना में इस पर और भी ज्यादा ताकत लगाने की बात है।

ठीक ही तो है कि जब एक अहम सवाल पैदा हो गया है, तो उसका जवाब खोजना ही चाहिए। पर साथ ही यह सोचना भी जरूरी है कि जो जवाब सोचा गया है, उससे देश के आम लोगों को और आनेवाली पीढ़ियों को दरअसल कोई फायदा होगा या नहीं? कहीं ऐसा न हो कि हम बनाने बैठें गणपति और बन जाये बन्दर! कम औलाद पैदा करने के लिए जो तरीके आज हमारे सामने रखे जाते हैं, जो सामान हमें दिया जाता है, जिस तरह का जीवन अपनाने के लिए हमें समझाया जाता है और उसके जो फायदे बताये जाते हैं, क्या उनके बारे में गहराई से सोचना जरूरी नहीं है? कहीं ऐसा न हो कि बाहर से एक नई चीज हमारे सामने आयी है, तो झटपट उससे लुभा जायँ, उसके असर में आ जायँ, उसे अपना भी लें, और इस तरह उससे अपना और अपनी आने वाली औलाद का फायदा करने के बदले हम अपने लिए तन, मन और आत्मा के भारी नुकसान को और बरबादी को इस तरह न्योत में लें कि फिर पीढ़ियों तक उसके बुरे असर से बचना हमारे लिए भारी हो जाये। सवाल बहुत ही गहरा है और उतनी ही गहराई से सोचने लायक है। परिवार-नियोजन का जो तरीका आज देश में चलाया जा रहा है, उससे हो सकता है कि लोगों में औलाद कम पैदा करने की भावना बने और सच-मुच औलाद कम पैदा भी हो, पर इसके साथ जो सबसे बड़ा खतरा है, वह यह है कि एक बार समाज में बनावटी तरीकों से औलाद की पैदाइश को रोकने का सिलसिला चल पड़ा और उसे समाज में इज्जत मिल गयी, तो कुछ ही सालों के बाद एक ऐसा समय आ सकता है, जब देश के लोगों में लम्पटता की भारी बाढ़ आ जाय। वे नीति, सदाचार, मानवता, संयम और विवेक से हाथ धो बैठें और उनके तन-मन का स्वास्थ्य भी इतना गड़बड़ा जाय कि उसे सम्हालना, सुधारना बहुत ही भारी पड़ जाय। और फिर ऐसे लोगों के जीवन से पुरुषार्थ, पराक्रम और आत्मा का मान तो इस तरह लापता हो जाये, जैसे गधे के सिर से सींग!

एक राष्ट्र के नाते हमें यह समझना होगा कि भगवान् ने इन्सान को हैवान की तरह सिर्फ खाने पीने और भोग-विलास के जरिए अपनी वासना को तृप्त करने की ही शक्ति नहीं दी है, बल्कि उसे यह मौका दिया है कि वह हैवानियत से ऊपर उठे, इन्सान बने और फिर इन्सान के नाते जीकर भगवान् के नजदीक पहुँचे। इसी खयाल से हमारे यहाँ यह कहा गया है कि 'नर करनी करे, तो नारायण हो जाय।' इस देश में इस तरह 'करनी के जरिये' नर से नारायण बनने वाले लोगों की कभी नहीं रही है। हर जमाने में, हर मौके पर, भगवान् की दया से हमारे बीच ऐसे लोग आते रहे हैं, जिन्हें आम लोगों ने अवतार माना है और भगवान् की तरह पूजा है। मनुष्य के नाते हमारा यही धर्म और कर्तव्य है। हजारों सालों की हमारी परम्परा और संस्कृति भी हमें यही कह रही है। अब अगर अपनी इस सारी कीमती विरासत को भूल कर हम भटकते हैं, मानवता से हट कर पशुता की ओर जाते हैं, और फिर पशु से पिशाच बनने का रास्ता पकड़ते हैं, तो इसमें कोई शक नहीं कि हम देश और दुनिया के लिए नहीं, समूची मानवता के लिए एक बड़ा खतरा खड़ा करते हैं। इसलिए यह जरूरी है कि परिवार नियोजन के बारे में हम अपने ढंग से सोचें, नकल न करें। असल को पकड़ कर चलें और सारे देश में असल की परख का और पकड़ का जोरदार वातावरण बनायें।

हमें यह जानना-समझना होगा कि मनुष्य की मानवता भोग से नहीं संयम से बढ़ती है। भोग उसकी एक भूख है जरूर, पर भगवान् ने उसे ताकत दी है कि वह उस पर रोक लगाये। बेरोक भोग भोगने का रास्ता सर्वनाश का रास्ता है। उससे न मनुष्य का, न मानवता का, न देश का और न समाज का ही कोई हित कभी हुआ है, न आगे हो सकता है। उन्नति या उत्कर्ष की बात तो करना ही व्यर्थ है। अगर हमें सारे राष्ट्र की और मानवता की दृष्टि से ऊपर उठने का कोई इकट्ठा पुरुषार्थ करना है, तो उसकी दिशा भोग के रास्ते चौड़े करने से नहीं खुलेगी, बल्कि भोग को वश में रख कर संयम और सदाचार को जीवन का लक्ष्य बनाने से ही हम किसी कदर आगे बढ़ सकेंगे और ऊँचे उठ सकेंगे। मनुष्य के जीवन में संस्कारों का यही स्थान है। संस्कार ही मनुष्य को मनुष्य बनाते हैं। परिवार नियोजन की बनावटी रीतों में संयम और सदाचार के पोषण की कोई गुंजाइश नजर नहीं आती। मनुष्य की कमजोरी को ही वे बढ़ाती और पोसती हैं। उनके कारण आज की आफत हल्की दीखती है, पर कल का जीवन नई पुरानी, दोनों पीढ़ियों के लिए बहुत भयावना बन सकता है। इस सारे सवाल का यह एक ऐसा पहलू है, जिसे भुलाने या टालने से हम भारी मुसीबत में पड़ सकते हैं और अपनी मानवता से हाथ धोकर हर तरह बरबाद हो सकते हैं। तो अब हम यह देखें कि हमारे देश के मान्य महापुरुष इस सम्बन्ध में हमें क्या कह रहे हैं!

१५ सितम्बर, १९३५ को सन्तति नियमन पर लिखते हुए राष्ट्रपिता महात्मा गांधी ने कहा था :

"मेरे विचार में सन्तति नियमन एक अंधेरी खाई है। यह अज्ञात शक्ति के साथ एक खिलवाड़ है। माना कि अमुक परिस्थिति में कृत्रिम उपायों से सन्तति नियमन करना

उचित हो, तो भी करोड़ों लोगों से उसका अमल करवाना मुझे तो बिल्कुल अशक्य मालूम होता है। उन्हें गर्भाधान रोकने के उपायों द्वारा सन्तति नियमन करने के लिए समझाने की अपेक्षा तो संयम पालने की बात समझाना मुझे अधिक सरल मालूम होता है। हमारी पृथ्वी का यह छोटा-सा गोला कोई आजकल का खिलौना नहीं है। अपने अनगिनत सालों के जीवन में इसने कभी बढ़ी हुई आबादी की पीड़ा का अनुभव नहीं किया है। ऐसी हालत में कुछ लोगों के मन में एकाएक न जाने कहाँ से इस सत्य का उदय हुआ है कि अगर कृत्रिम उपायों से जन्म-प्रमाण पर अंकुश न रखा जायेगा, तो दुनिया मिट जायेगी!''

२० अगस्त, १९६० को इसी विषय पर अपने विचार प्रकट करते हुए सन्त विनोबा ने कहा था :

''इस सवाल का एक बहुत बड़ा आध्यात्मिक पहलू भी है। मान लीजिए, हम एक ऐसी व्यवस्था कर दें कि जिससे पति-पत्नी के सन्तान पैदा ही न हो और वे विषय-भोग में डूबे रहें, तो इससे उनके दिमागों को कोई सन्तुलन हासिल होगा ही नहीं। उस हालत में सारा देश वीर्यहीन बनेगा। सन्तान कम पैदा होगी तो लाभ होगा, ऐसा मान कर ये लोग इस व्यवस्था को बढ़ावा देंगे। लेकिन इससे न सिर्फ सन्तान पैदा होना घटेगा, बल्कि ज्ञान-तन्तु भी क्षीण होंगे। प्रभा कम होगी, प्रज्ञा मन्द होगी तेजस्विता घटेगी और उस हालत में फिर वह जरूरी नहीं रह जायेगा कि पति-पत्नी का ही समागम हो। जब आप ऐसी व्यवस्था कर देंगे कि सन्तान पैदा ही न हो, तो फिर क्या वजह है कि समाज में पति-पत्नी का ही समागम हो! यों, इस मसले पर जरा सोचा जाय, तो पता चलेगा कि यह कितना गहरा मसला है! इससे हमारी नीति कितनी गिरेगी! हम अपनी आध्यात्मिकता कितनी खोयेंगे! बुद्धि की प्रभा कितनी कम होगी! इसे हम सोच ही नहीं रहे हैं। फिर इसके सामाजिक पहलू पर भी हमारा ध्यान नहीं जा रहा है। रूस और चीन में औलाद बढ़ाने पर जोर दिया जा रहा है, हम घटाने पर जोर दे रहे हैं! इसका नतीजा क्या होगा? यों इस सवाल के अपने आध्यात्मिक, सामाजिक और नैतिक पहलू भी हैं। इस दृष्टि से हमारे पूर्वजों ने जो योजना बनायी थी, वह ठीक थी। ब्रह्मचर्याश्रम, गृहस्थाश्रम, वानप्रस्थाश्रम और संन्यासाश्रम की उस योजना को अपनाने और उसकी मर्यादा में जीवन बिताने से हमें लाभ होगा। आज १८ साल की उम्र में शादी होती है और ५८ साल की उमर तक गृहस्थजीवन चलता है। यों ४० साल तक सन्तान पैदा करते रहने की मर्यादा बनी हुई है। इसके बदले २५ साल की उम्र में शादी हो और ४५ साल की उम्र में स्त्री-पुरुष वानप्रस्थी बन जायँ, तो सन्तान पैदा करने के लिए २० साल का एक पैमाना बन जायेगा। इससे सन्तान के नियमन का भी लाभ मिलेगा और आध्यात्मिक शक्तियाँ भी मिलेंगी। अक्सर यह होता है कि जिन प्राणियों में पराक्रम कम, पुरुषार्थ कम, उनकी औलाद बढ़ती है। यह अनुभव की बात है कि अमीर देशों में जनसंख्या कम होती है और गरीब देशों में ज्यादा। जानवरों में देखना हो, तो शेर की सन्तान कम है और बकरियों की ज्यादा। सार यह है कि देश में बच्चों की शिक्षा का अच्छा प्रबन्ध होना चाहिए, उन्हें अच्छे संस्कार मिलने चाहिए। आप समाज को अच्छे पुत्र देंगे, तो वह समाज की सेवा ही होगी। सब निर्माण-कार्यों में पुत्र निर्माण से बढ़कर श्रेष्ठ निर्माण-कार्य दुनिया में नहीं है, इस ओर ध्यान न देते हुए अगर माता-पिता भोगवासना में लिप्त रहें, तो उनके बच्चे बुद्धि से इतने नालायक निकलेंगे कि वे किसी भी प्रकार पुरुषार्थ और पराक्रम नहीं कर सकेंगे। माता-पिता के लिए भी यह चीज लाभ की नहीं होगी। उनके हाथों भी कोई पराक्रम नहीं हो सकेगा। उनके जीवन में तेजस्विता नहीं रहेगी। इसलिए मैं यह कहता और समझाता रहता हूँ कि परिवार नियोजन की आपकी यह योजना न केवल अपने देश के लिए, बल्कि मानव मात्र के लिए खतरनाक है।

''इसे जरा यों भी सोच कर देखिये। एक आत्मा प्रकट होना चाहती है, आप उसे गर्भ में या उससे पहले ही खतम कर देते हैं। मान लीजिये, आपने एक बड़े आदमी की हत्या की और एक छोटे बच्चे की हत्या की, तो इसमें अधिक बड़ा अपराध कौनसा हुआ? बच्चे के पैदा होने पर उसे मार डालते हैं या गर्भ में आने पर उसे गिरा मारते हैं, तो आप उत्तरोत्तर मूल पर ही प्रहार करते हैं। जीवात्मा आगे आना चाहता है और आप उसे आगे आने नहीं देते, वहीं रोक देते हैं। आत्मा बाहर आने की कोशिश करती है और आप उसे नहीं आने देते हैं, तो सोचिये कि यह कितना बड़ा और गम्भीर अपराध होता है।''

परिवार नियोजन की आज की इस नई रीति पर देश के दो जाने माने महापुरुषों के ये सोचे समझे विचार हैं। हमें सवाल के इस पहलू पर भी गहराई से सोचना ही होगा, नहीं तो अगर एक बार सारा राष्ट्र एक गलत और खतरनाक रास्ते पर चल पड़ा, तो न केवल हमारा वर्तमान बिगड़ेगा, बल्कि आने वाली कई पीढ़ियों का भविष्य गहरे अन्धकार में डूब जायेगा। असल में राष्ट्र का सच्चा पुरुषार्थ तो इस बात में है कि वह परिस्थिति से घबरा कर छह महीनों का रास्ता न पकड़े, बल्कि शान्त, स्वस्थ सुस्थिर और सुनिश्चित भाव से बारह महीनों के रास्ते चलने का संकल्प करके अपने पुरुषार्थ को सही दिशा में मोड़े और अपने को सब प्रकार से समर्थ और सुदृढ़ बनाये। यदि हम सब इस दृष्टि से परिवार नियोजन की तरफ देखें और रास्ता बदलें तो इसमें सन्देह नहीं कि उससे देश ऊँचा उठेगा और उसकी सच्ची शक्ति बढ़ेगी।*

*५-४-६१ को आकाशवाणी, इन्दौर-भोपाल की ग्राम-सभा में प्रसारित वार्ता परिवर्द्धित और संशोधित रूप में।

आंध्र में प्राप्त और वितरित भूमि तथा ग्रामदान का लेखा

[जनवरी '६१ तक]

इस वर्ष का सम्मेलन आंध्र में हो रहा है, इस निमित्त वहाँ भूदान में प्राप्त, वितरित, अयोग्य और वितरण योग्य भूमि, ग्रामदान के आँकड़े दिये जा रहे हैं।

क्रम	जिला	प्राप्त भूमि : एकड़	दाता-संख्या	वितरित भूमि	आदाता-संख्या	अयोग्य भूमि : एकड़	वितरण योग्य शेष भूमि : एकड़	ग्रामदान
१	आदिलाबाद	११,२९२	२०४	१,८११	२,२४०	६००	८८१	१
२	हैदराबाद	२१,९२४	१,६९२	९,६९१	२,८८३	५,६००	६,६०२	१
३	करीमनगर	९,२६२	६४५	४,६००	१,६२९	२,८००	२,८६२	—
४	खम्मम	३२,०९३	५३८	६,८८१	१,३२९	१५,२८३	९,८२९	२
५	महबूबनगर	४१,७४६	४,३८३	१९,९९०	५,७१९	२,०००	१९,७५६	२०
६	नलगोंडा	२०,१०५	१,३३८	१४,५५८	५,५७७	७५०	४,७९७	२
७	मेदक	५,५०७	२४१	२,४२६	६३६	१,१००	१,९८१	—
८	निजामाबाद	२,०४१	१९९	१,२३६	४२४	—	८१३	—
९	वरंगल	१८,७६७	५६८	८,९०७	२,३०२	५,८००	४,०६०	२
१०	श्रीकाकुलम्	१३,३३७	४०६	११,०००	३,०००	१,०००	१,३३७	१२
११	विशाखापटनम्	२,४९२	३३५	९२७	३२५	—	५७५	—
१२	पश्चिम गोदावरी	२,३५८	२७४	३६३	६०	—	१,९९५	८
१३	पूर्व गोदावरी	२,२८९	२२०	१००	२०	—	२,१८९	—
१४	कृष्णा	८,२०१	४४	३	३	७,५००	५९८	—
१५	गुंटूर	५,०६६	४१	७२	६०	४,८००	१९४	४
१६	अनंतपुर	३,२८०	४७९	७००	२७५	—	२,५८०	—
१७	कडप्पा	१६,३४३	२,८३७	४,१०२	३०२	२,०००	९,२०१	५०६
१८	करनूल	२,७८४	१,३७१	—	—	५००	२,२८४	२६
१९	नेल्लूर	१०,०४०	३०४	४	४	५,५००	४,५३६	—
२०	चित्तूर	१४,११७	६५२	७५६	३००	४,०००	९,३६१	३
		कुल २,४१,९५२	१६,६२९	९६,९४७	२६,०८८	५८,३३३	८६,६७२	५८७

भूदान-आन्दोलन के दस वर्ष : एक सिंहावलोकन

१९५१

१८ अप्रैल, पोचमपल्ली में श्री रामचन्द्र रेड्डी से १०० एकड़ का प्रथम भूमिदान प्राप्त (भू-क्रांति दिवस)।

१८ अप्रैल से २७ जून, तेलंगाना-पदयात्रा में १२ हजार एकड़ भूमि मिली।

१२ दिसम्बर, परंधाम-पवनार से दिल्ली की ओर विनोबाजी की पदयात्रा आरम्भ।

१ नवम्बर, मथुरा में ५ लाख एकड़ भूमि-प्राप्ति का संकल्प।

१९५२

१३ अप्रैल, सेवापुरी-सर्वोदय-सम्मेलन। २५ लाख एकड का संकल्प।

२३ मई, 'मंगरोठ' का पहला ग्रामदान।

१३ सितम्बर '५२ से ३० दिसम्बर '५४ तक बिहार में पदयात्रा।

२३ अक्तूबर, पटना में संपत्तिदान-विचार का उद्‌भव।

१९५३

७-८ मार्च, चांडील-सम्मेलन। शासन-मुक्त, शोषण-विहीन समाज-रचना की घोषणा।

चरखा-संघ का सर्व-सेवा-संघ में विलीनीकरण।

१९५४

१८-१९-२० अप्रैल, बोधगया-सर्वोदय-सम्मेलन। जीवन-दान की घोषणा।

१९५५

१ जनवरी से २५ जनवरी तक बंगाल में पद-यात्रा।

२६ जनवरी से ३० सितम्बर तक उत्कल में पद-यात्रा।

७ से ९ मार्च, जगन्नाथपुरी-सर्वोदय-सम्मेलन।

१ अक्तूबर से १३ मई '५६ तक आन्ध्र में पद-यात्रा।

२४ दिसम्बर, विजयवाडा-सम्पत्तिदान की सभा।

१९५६

१४ मई, तमिलनाड-प्रवेश। कांचीपुरम्-सम्मेलन। ग्रामोदय की कल्पना।

२१-२२ नवम्बर, पलनी में तन्त्र-मुक्ति और निधि-मुक्ति का निर्णय।

१९५७

२५ जनवरी, मदुराई जिले में 'तालुका-दान', 'फिरका-दान' प्राप्ति की घोषणा।

१८ अप्रैल से २३ अगस्त, केरल में पद-यात्रा।

९-१० मई कालडी-सर्वोदय-सम्मेलन।

११ जुलाई गाँव-गाँव 'सेवा-सेना', 'शान्ति-सेना' प्रस्थापित करने की कल्पना।

२४ अगस्त से २२ मार्च, मैसूर-कर्नाटक यात्रा।

२०-२१ सितम्बर, एलवाल (मैसूर) में सब पक्षों की ग्रामदान-परिषद्।

२६-२७ सितम्बर, 'शान्ति-सेना' में अर्पित होने के लिए रचनात्मक संस्थाओं से अपील। निवेदक-शिविर।

८-९ नवम्बर, रचनात्मक कार्यकर्ता-परिषद्, आरसीकेरे (मैसूर)।

१९५८

२३ मार्च से २१ सितम्बर तक महाराष्ट्र में पद-यात्रा।

२० अप्रैल, श्री गोपबन्धु चौधरी का निधन।

८ मई, श्री लक्ष्मीबाबू का निधन।

२९ मई, पंढरपुर-मंदिर में विनोबाजी के साथ सर्वधर्मियों का प्रवेश।

३० मई, पंढरपुर-सर्वोदय-सम्मेलन।

८ अगस्त, सर्व-सेवा-संघ द्वारा कालीमगांव में सर्वजन-आधार का क्रान्तिकारी निर्णय।

२२ सितम्बर से १४ जनवरी तक गुजरात में पद-यात्रा।

१९५९

१५ जनवरी से २१ मार्च तक राजस्थान में पद-यात्रा।

२७ फरवरी, अजमेर-सर्वोदय-सम्मेलन।

१ अप्रैल से २० मई तक पंजाब में पद-यात्रा।

२२ मई, विनोबाजी का कश्मीर-प्रवेश।

८ जून, जम्मू में हिन्दुस्तानी तालीमी संघ का सर्व-सेवा-संघ के साथ संगम।

२ अक्तूबर, काशी में साधना-केन्द्र का आरम्भ।

११-१२ नवम्बर विनोबाजी का अज्ञात संचार, अमृतसर में साहित्यकार-परिषद्।

१९६०

१४ जन० से १४ फरवरी, काशी में अहिंसक प्रक्रिया पर सहअध्ययन सत्र।

२० मार्च से २८ मार्च, सेवाग्राम में संघ-अधिवेशन और सर्वोदय-सम्मेलन।

१८ अप्रैल, विश्वनीडम् बंगलोर का उद्‌घाटन।

१०-२२ मई चम्बल घाटी क्षेत्र में बागियों का आत्मसमर्पण।

२४ जुलाई से २५ अगस्त, इन्दौर में विनोबाजी, विसर्जन-आश्रम की स्थापना।

१० जुलाई से ११ सितम्बर, काशी में सर्वोदयनगर-अभियान।

२९ अक्तूबर से ३ नवम्बर, बंगलोर में सर्व-सेवा-संघ का अधिवेशन।

५ नवम्बर को इन्दौर में अशोभनीय पोस्टर-विरोधी अभियान की शुरुआत।

५ दिसम्बर से २४ दिसम्बर तक उत्तर-प्रदेश की तीसरी बार पदयात्रा

१८ दिसम्बर को काशी में प्रथम शान्ति-सेना विद्यालय का श्रीगणेश।

१९६१

२५ दिसम्बर, विनोबाजी की बिहार-पदयात्रा की शुरुआत।

'दान दो इकट्ठा, बाँधे में कट्ठा' का नया मंत्र।

१० फरवरी, विनोबाजी का बंगाल में प्रवेश।

५ मार्च, विनोबाजी का असम में प्रवेश।

श्री जयप्रकाश नारायण की महाराष्ट्र-यात्रा

श्री जयप्रकाशजी ता० २३ से २७ अप्रैल तक पूना में 'नियोजित आर्थिक विकास के मार्ग' इस विषय पर आयोजित परिसंवाद में भाग लेंगे। ता० २७ को शाम को पूना में सार्वजनिक सभा होगी।

ता० २८ को प्रातः उरुली कांचन, शाम को सातारा

ता० २९ प्रातः वाई, रात को अहमदनगर

ता० ३० श्रीरामपुर, कोपरगाँव से रात को मनमाड से मराठवाडा की ओर

ता० १ मई शाम को बसमतनगर, रात को नांदेड़।

ता० २ परळी, बीड, रात को मुकाम औरंगाबाद में

ता० ३ औरंगाबाद, पूना

ता० ४ विजूर, कोल्हापुर

ता० ५-६ कर्नाटक

ता० ६ शाम को बंबई रवाना

ता० ७ नासिक, धुळे

ता० ८ जलगाँव जिला

ता० ९ अमरावती

ता० १०-११ वर्धा और भंडारा जिला

'नियोजित आर्थिक विकास के मार्ग' पर परिसंवाद

ता० २३-२४-२५ अप्रैल को पूना में सर्व सेवा संघ और गोखले इन्स्टीट्यूट ऑफ पोलीटिक्स इकोनॉमिक्स के तत्वावधान में "भारतीय नियोजित आर्थिक विकास के मार्ग" पर परिसंवाद आयोजित होगा, जिसमें सर्वश्री जयप्रकाश नारायण, शंकरराव देव, अण्णासाहब, सिद्धराज ढड्ढा, वैकुण्ठलाल मेहता, गगनविहारी मेहता, ए० डी० श्रॉफ, प्रो० दांतवाला, रिजर्व बैंक के गवर्नर वेंकट पैया, डॉ० डी० एन० गाडगिल आदि भाग लेंगे।

नव सर्जन हो

नव सर्जन हो ! नव सर्जन हो !
मानवता नित नित विकसित हो !
दूर दूर दृष्टि के पथ पर,
उड़ो कल्पना चिर चरण पर,
हर जीव के प्रति आदर हो,
मन आदर्शों का दर्पन हो।
नित चेतना का सर्जन हो।

फिर से जीवन पल्लवित हो,
मुक्त हृदय और मुक्त जीवन हो।
धर्मीम शांति का अनुभव हो,
मेरा मन जन-जन में मग्न हो,
हम सब मिल कर जीवन एक हो।
—राजेन्द्र महन्त

अशोभनीय पोस्टर्स हटने चाहिये : देश के विभिन्न शहरों की माँग

लुधियाना

जिला सर्वोदय मण्डल, लुधियाना की फरवरी माह की रिपोर्ट के अनुसार जनवरी तथा फरवरी माह में सर्वोदय पखवारे की तैयारी तथा सूतांजलि आदि में समय बीता। जिन पंचायतों के सभापतियों का चुनाव सर्वसम्मति से हुआ है, ऐसी २० पंचायतों का एक सघन-क्षेत्र बना कर सर्वोदय के आधार पर काम करने की प्रेरणा गाँववालों को दी गयी। सूतांजलि में कुल १,२२,१८५ गुंडियाँ प्राप्त हुईं। दो माह में १६१ रु. २० नये पैसे सर्वोदय-पात्र से संग्रहित हुए। सर्वोदय-मण्डल की तरफ से दो बैठकें गंदे पोस्टरों के खिलाफ की गयी और इन पोस्टरों को शहर के अन्दर से हटाने की माँग की गयी। इसे हटाने के लिए बहनों की भी दो सभाएँ की गयी।

हिमाचल प्रदेश

फरवरी माह शिमला में भारी हिमपात होने के कारण काम में कुछ रुकावट चलती रही। २११ मील की यात्रा हुई। यात्रा में सर्वोदय-विचार के अलावा गंदे पोस्टरों पर विचार होता रहा। कण्डो नगर में आम सभा में गन्दे पोस्टरों को हटाने की अपील की गयी।

फिरोजपुर

फिरोजपुर नगर में बहनों ने अशोभनीय पोस्टर विरोधी अभियान के अन्तर्गत, घर-घर से अशोभनीय चित्रों का "दान" प्राप्त करना शुरू कर दिया है तथा साथ ही वे लोगों से ऐसे चित्रों को घरों में न लगाने का आश्वासन भी प्राप्त कर रही हैं।

जैसलमेर

जैसलमेर जिला परिषद ने अशोभनीय सिनेमा पोस्टर, बेहूदे कैलेन्डर एवं अश्लील गानों के विरुद्ध आवाज का सर्वसम्मति से समर्थन किया है तथा नगरपालिकाओं, शासनाधिकारियों व सिनेमा-मालिकों से अपने इस सम्बन्ध से उत्तरदायित्वों के प्रति सजग होने की अपील की है।

मेरठ

मेरठ जिला सर्वोदय-मंडल, गांधी स्मारक निधि एवं नागरिकों की ओर से बनी "अशोभनीय पोस्टर विरोधी अभियान समिति" की ओर से २६ फरवरी को एक मौन जुलूस निकाला गया, जिसकी समाप्ति एक सभा के रूप में हुई। जुलूस में महिलाओं ने भी काफी संख्या में भाग लिया।

सिरसा

सिरसा (हिसार) में १ अप्रैल को अशोभनीय पोस्टरों के खिलाफ और शराबबंदी के लिए एक बड़ी आम सभा श्री बाबू बजरंग दास की अध्यक्षता में हुई। सभा में पंजाब सर्वोदय-मंडल के संयोजक श्री ओम प्रकाश त्रिखा प्रमुख वक्ता थे। प्रो० बलदेव बख्शी व भा. नौजवान सभा; पंडित श्रीराम शर्मा आर्य समाज; डा० शान्तिस्वरूप भारतीय जन संघ, कामरेड चंदरलाल प्रजा-समाजवादी दल और सन्त तेजासिंह नामधारी समाज, इन्होंने विचार व्यक्त किये।

सभा के पूर्व शराबबंदी के लिए और अशोभनीय पोस्टरों के खिलाफ बड़ा जुलूस निकाला गया।

विनोबाजी का पता :
सरनिया-आश्रम
गौहाटी (असम)

६ अप्रैल को देश के कोने-कोने में "ग्राम-स्वराज्य दिवस" मनाया गया

प्राप्त समाचारों से मालूम होता है कि ६ अप्रैल को देश में सर्वत्र "ग्राम-स्वराज्य दिवस" बड़े उत्साह से मनाया गया। ग्राम-स्वराज्य की घोषणा और उसके आयोजन से *विशेषतः ग्रामीण जनता में नई चेतना आयी है। जगह-जगह समूह* में ग्राम-स्वराज्य का घोषणा-पत्र पढ़ा गया। कई जगह प्रभात फेरी और प्रदर्शिनी का भी आयोजन हुआ। दिल्ली, राजस्थान, उत्तर प्रदेश, बिहार, पंजाब, महाराष्ट्र आदि प्रदेशों से समाचार प्राप्त हो रहे हैं।

आवश्यक सूचना : २८ अप्रैल का अंक बंद रहेगा

५ मई को 'सम्मेलन-अंक' निकलेगा

१४ अप्रैल का अंक पाठकों की सेवा में पहुँच रहा है। ता. १८, १९ और २० अप्रैल को सर्वोदय-सम्मेलन हो रहा है। उसकी जानकारी हम २१ अप्रैल अंक में तो नहीं दे सकेंगे, किन्तु कोशिश करेंगे कि ता. २१ के अंक में सम्मेलन के अध्यक्ष जयप्रकाशजी का *भाषण और सर्व सेवा संघ के अधिवेशन के कुछ समाचार दे सकें।* सर्वोदय-सम्मेलन के समाचार हम ५ मई के विशेष अंक में देंगे। इसलिए २८ अप्रैल का अंक बंद रहेगा। कोशिश यह रहेगी कि ५ मई का अंक पाठकों को जल्दी मिल सके।

—संपादक

पश्चिमी बंगाल में विनोबा पदयात्रा की फलश्रुति

विनोबाजी की पश्चिमी बंगाल में हुई २३ दिन की पदयात्रा के परिणाम-स्वरूप निम्न दान प्राप्त हुए:

भूमिदान : ३०० दाताओं से १०,००० कट्ठा। सम्पत्ति दान : ३१,२५१ रु० सर्वोदय-कार्यों में विनियोग हेतु बाबा को समर्पित। इसमें से १,५२६ रु० असम के शरणार्थियों में व्यय होगा। साहित्य-बिक्री ८,००० रुपये की हुई।

बिहार प्रदेश सर्वोदय-सम्मेलन

बिहार प्रदेशीय सर्वोदय सम्मेलन आगामी २७ से २९ मई तक झुमरीतलैया (हजारीबाग) में किये जाने का निश्चय किया है। साथ ही बिहार खादी-ग्रामोद्योग संघ के कार्यकर्ताओं का सम्मेलन भी ३० और ३१ मई को उसी स्थान पर होगा। श्री जयप्रकाश नारायण, श्री यू० एन० ढेबर आदि गणमान्य नेताओं के पधारने की सम्भावना है।

दिल्ली में आंदोलन की प्रगति

जब से सेवाग्राम-सम्मेलन हुआ है, दिल्ली के सर्वोदय-कार्यकर्ता भूदान-वितरण, सर्वोदय-साहित्य, सर्वोदय-पात्र तथा शांति-सेना के कार्यों में जुट गये। ये लोग कताई, सफाई, नशाबन्दी आदि कार्यों को दूसरी रचनात्मक संस्थाओं के सहयोग से कर रहे हैं। सम्पर्क में भी वृद्धि है।

इस समय ७० लोकसेवकों से भी अधिक क्षेत्र में काम कर रहे हैं। पिछले वर्ष ९६८० रु० का साहित्य बिका। भूदान पत्र के २५० नियमित पाठक हैं। गत फरवरी मास में नजफगढ़ में एक सम्मेलन का भी आयोजन किया गया। सूतांजलि के कार्यक्रम में १२ फरवरी को १००० गुण्डियाँ एकत्र करने का संकल्प पूर्ण हुआ। *संपत्ति-दान में ४५ रु० मासिक मिलता है।* अशोभनीय पोस्टर-विरोधी आंदोलन के लिए एक समिति का गठन किया गया।

इस अंक में

श्रीकृष्णदत्त भट्ट, अ० भा० सर्व सेवा संघ द्वारा भार्गव भूषण प्रेस, वाराणसी में मुद्रित और प्रकाशित। पता : राजघाट, वाराणसी-१, फोन नं० ४३९१
वार्षिक मूल्य ६) पिछले अंक की छपी प्रतियाँ १२,०५० इस अंक की छपी प्रतियाँ ११,९०० एक प्रति : १३ नये पैसे

संपादक : सिद्धराज ढड्ढा

वाराणसी : शुक्रवार | २१ अप्रैल '६१ | वर्ष ७ : अंक २९

प्रेम और करुणा के मार्ग से मानवता बचेगी

विनोबा

जब से हम असम आये हैं, भूदान का ही विचार समझा रहे हैं, क्योंकि हमें विश्वास है कि भूदान का विचार करुणा का विचार है और वह विचार लोगों ने एक बार कबूल किया तो सबका भला होगा, क्योंकि हृदय में प्रेम और करुणा पैदा होगी तो जो घटना असम में हुई वह फिर हो ही नहीं सकेगी। इसलिए वही भूदान का करुणामूलक और प्रेम का विचार २० दिन से समझाते हुए आ रहे हैं। अभी तक उस बुरी घटना का उल्लेख हमने नहीं किया था, क्योंकि हम उन घटनाओं को भूल जाना चाहते हैं। इसलिए अभी तक इतना ही बताते थे कि सबको मिल-जुल कर रहना चाहिए, नहीं तो भारत खतरे में है। इतने में लोग समझते थे। लेकिन आज हम यहाँ आये हैं, तो थोड़ा उस विषय पर कुछ कहेंगे, क्योंकि वह घटना इस गाँव में भी हुई है।

आज मैं सारे गाँव में घूमने गया था। सुबह करीब दो घंटा घूमना हुआ था। असमी भाइयों के घर में भी गया था, परिचय के लिए, प्रेम के लिए! बहुत ज्यादा भाई घर में नहीं मिले। वे काम पर गये होंगे, बहनें मिलीं। सबका प्रेम हासिल करके हम वहाँ गये, जहाँ बंगाली भाई रहते हैं। उस बस्ती में जो मकान खास हमारे लिए बनाया था वहाँ बैठ कर सब मिल कर हमने भजन किया। आज हमारे मन पर बहुत अच्छा परिणाम हुआ। हमने बहुत प्रेम देखा। जिस भाग में असमी भाई रहते हैं, वहाँ भी बहुत प्रेम देखा और जहाँ बंगाली भाई रहते हैं, वहाँ भी बहुत प्रेम देखा। वापस आते हुए बचे हुए असमी भाइयों के घर में भी गये। फिर भी सब मकानों में नहीं जा सके, क्योंकि इतना समय नहीं था।

हम आपसे इतना कहना चाहते हैं कि हमारे मन में आपके लिए अत्यंत प्रेम भरा है। ऐसा उत्कट प्रेम भरा नहीं होता तो इस बुढ़ापे में दस दस साल घूमना सम्भव नहीं होता। यह प्रेम और करुणा ही है, जो हमें घुमा रही है।

मैं इस गाँव वालों को कहना चाहता हूँ कि यहाँ बुरी घटना हुई, अब यहाँ पूरे प्रेम की नदी बहनी चाहिए। यहाँ जो घटना बनी, उसमें मैं आपको दोष नहीं देता हूँ। गाँव के लोग भले, सज्जन और सरल होते हैं। लेकिन ये जो लोग शहरों में रहते हैं, बेकार चिन्तन करते हैं, वे ऐसी तरह-तरह की बुराइयाँ पैदा करते हैं। शहरों में सब ऐसे ही लोग होते हैं, ऐसा नहीं। लेकिन थोड़े-से ऐसे लोग होते हैं, जिनका धन्धा ही है, ऐसी घटना पैदा करने का। और वे लोकहृदय को जोड़ने के बदले तोड़ने का ही काम करते हैं। शिक्षितों में इन दिनों बहुत तरह-तरह के भेदभाव होते हैं।

अभी जबलपुर में एक बहुत बुरी घटना हुई। एक लड़की पर एक जवान लड़के ने अत्याचार किया। लड़की हिंदू थी और लड़का मुसलमान। इस घटना से हिन्दू और मुसलमानों में दंगे हुए। वे दंगे सागर और जबलपुर के आस-पास के गाँवों में गये और सब जगह हिंदू और मुसलमानों के दंगे हुए। इन दंगों का कोई कारण नहीं था। जिसने अत्याचार किया था, उसे गिरफ्तार किया था। एक व्यक्ति का यह काम था। उसमें किसी एक कौम ने किसी दूसरी कौम पर अत्याचार नहीं किया था। लेकिन उस घटना को हिंदू-मुसलमानों के दंगे का स्वरूप दे दिया। फिर सारे भारत में और पाकिस्तान में उस घटना का बुरा असर हुआ। पाकिस्तान में रंगपुर में हिन्दुओं पर मुसलमानों ने आक्रमण किया। नाहक! कोई कारण नहीं, कोई जरूरत नहीं थी। वहाँ के हिन्दुओं का दोष नहीं था। जबलपुर में भी वह घटना होने का कारण नहीं था, जरूरत नहीं थी। एक व्यक्ति पर अत्याचार था। उसकी सजा हो जाती, खतम होता। लेकिन इसका फायदा उठा कर वहाँ के हिन्दुओं ने मुसलमानों को तकलीफ दी।

ये सारे बहकाने वाले थोड़े लोग शहरों में होते हैं। कभी हिंदू और मुसलमानों के झगड़े करते हैं, कभी शिक्षक और विद्यार्थी, कभी मजदूर और मालिक, कभी यह जाति और वह जाति, इस तरह झगड़े पैदा करते हैं, कभी इस भाषा और उस भाषा में झगड़े करते हैं। इस प्रकार के झगड़ा बढ़ाने वाले कुछ लोग अपने देश में हैं। उनके बहकाने में आकर देहातों के लोग भी बुरे काम करते हैं। हिंदुस्तान और पाकिस्तान दो भाग बन गये। बन तो गये, लेकिन अब उनमें लड़ाई की क्या जरूरत थी? लेकिन झगड़े हुए और लाखों हिंदू और मुसलमान इधर से उधर गये और उधर से इधर आये। बहुत बुरे काम उस वक्त हुए। लड़कियाँ भगायी, घर जलाये, लूट हुई। इनका कोई कारण नहीं था। आज भी हिंदुस्तान में चार साढ़े चार करोड़ मुसलमान हैं। कम नहीं हैं और आज भी पाकिस्तान में अस्सी लाख या एक करोड़ से तो कम हिंदू नहीं होंगे। अब क्या इन मुसलमानों को यहाँ खतरा है? और हिंदुओं को वहाँ खतरा है? अपना अपना काम कर रहे हैं, भाई-भाई के समान गाँव में बसे हैं। जैसे वे बसे हैं, वैसे ये भी बस सकते थे। क्यों आये? कोई कारण नहीं था। लेकिन एक बुरी हवा फैली। बुरी हवा में मनुष्य के हाथ से बुरे काम होते हैं। फिर उसका पश्चात्ताप होता है। ठंडे दिमाग से, दिल से सोचते हैं कि हमारे हाथों से ऐसा बुरा काम क्यों हुआ!

ऐसी ही बात यहाँ हुई। यहाँ भी एक बुरी हवा आयी थी। अब आप सबको वह चीज भूल जानी चाहिये और यह करना चाहिये कि ज्यादा-से ज्यादा प्रेम कहीं है, तो वह यहीं है। असमी लोगों को बंगाली बस्ती में जाकर प्रेम करना चाहिए। उनके दुःख देख कर मदद करनी चाहिए। सबकी मिली-जुली सभा हो।

नाम लेने के लिए इकट्ठा बैठना चाहिए। अभी इस सभा में असमी और बंगाली, दोनों आये हैं, ऐसी प्रेम की सभा बार-बार होनी चाहिए। दुःखियों की मदद करनी चाहिए। सरकार मदद देती है, यह ठीक ही है। लेकिन क्या गाँव के लोगों का प्रेम करने का और मदद करने का अधिकार नहीं है? अगर नहीं है तो गाँव याने जंगल होगा। अगर आपस-आपस में प्रेम नहीं रखना है तो एक गाँव में रहते क्यों हैं? इस गाँव में हिंदू, मुसलमान, असमी, बंगाली हैं, तो इस गाँव का वह गौरव है। जैसे बगीचे में नाना प्रकार के फूल होते हैं वैसे ही अनेक भाषा के, धर्म के, जाति के लोग गाँव में हैं, यह खुशी की, गौरव की बात है। आपस आपस में प्रेम होना चाहिए।

मान लीजिये, कल चीन और हिंदुस्तान की लड़ाई हुई तो क्या आपस-आपस में आप लड़ते रहेंगे? समझना चाहिए कि इस वक्त भारत एक संकट-अवस्था में है। एक जमाना था, जब हिमालय हिंदुस्तान और दूसरे देशों में बीच में खड़ा था। अब साइन्स (विज्ञान) का जमाना है। हवाई जहाज से इधर से उधर और उधर से इधर चंद मिनटों में जा सकते हैं। इसलिए जो काम हिमालय पहले करता था, वह अब नहीं करेगा। अब चीन का और हमारा संबंध आ सकेगा। घबड़ाने की जरूरत नहीं है। जो संपर्क आयेगा, वह प्रेम का होना चाहिए। उससे नुकसान नहीं होगा। यह संपर्क द्वेष का होगा तो नुकसान होगा। विज्ञान के जमाने में संपर्क टलेगा नहीं। जहाँ चीन का संपर्क नहीं था, वह हो रहा है, वहाँ हम एक जगह, एक गाँव में रहते हैं तो क्या प्रेम

रहेंगे ? प्रेम से प्रेम बढ़ता है, द्वेष से द्वेष बढ़ता है।

हमें असमी बस्ती में भी प्रेम का दर्शन हुआ और बंगाली बस्ती में भी प्रेम का दर्शन हुआ। ये भी भगवान की भक्ति करते हैं और वे भी देवता की पूजा करते हैं। इनके भी बाल-बच्चे हैं, उनके भी हैं। दोनों प्रेम क्या चीज है जानते हैं, दोनों बाल-बच्चों पर प्रेम करते हैं। इसलिए दोनों घुलमिल जाइये, एक-दूसरे को प्यार से गले लगाइये, और जो कुछ बुरी घटना हुई, उसे भूल जाइये।

भारत बड़ा पुण्यवान देश है। शंकर देव ने लिखा है कि भारत में जन्म पाना भाग्य की बात है। उन्होंने संस्कृत में 'भक्ति-रत्नाकर' नाम का ग्रंथ लिखा है, उसमें अध्याय लिखा है—"अथ-भारत-भू-प्रशंसा-निरूप्यते।" उसमें लिखा है कि भारत में जन्म पाना बहुत भाग्य की बात है। यही बात माधव देव ने नामघोषा में लिखी है। दोनों ने यह नहीं लिखा कि असम में जन्म पाना भाग्य है। हमारे पूर्वजों के और महापुरुषों के दिल छोटे नहीं थे। आप ही सोचिये, शंकर देव के युग में सारे देश के साथ संपर्क रहना मुश्किल था। इन दिनों दिल्ली और गोहाटी का चन्द घंटों का रास्ता है। उन दिनों तो छह महीनों से कम समय नहीं लगता था। उस जमाने में भी शंकर देव भारत का नाम लेते हैं और हम इस जमाने में छोटे बने रहें तो कैसे होगा ? अब आप सब परमेश्वर के नाम से कसम खाइये कि इसके आगे हम भाई-भाई प्रेम से रहेंगे और जो कुछ बुरा काम हुआ उसे भूल जायेंगे।

भूदान की बात जो हम दूसरी जगह करते हैं, वह यहाँ भी लागू होती है। आज एक भाई ने हमें अपने घर बुलाया था। हमने उसे कहा कि आप हमें घर पर बुलाते हैं, लेकिन "दान दिव लागे", ऐसा हमने असमी में कहा। तो भाई कहने लगे, "हमारे पास जमीन नहीं है।" हमने कहा, जमीन नहीं है तो और भी कुछ होगा। गाँव के लिए कुछ-न-कुछ दिये बिना खाना नहीं चाहिए। समाज के लिए दान दो और बाद में खाओ। जमीन नहीं है तो सर्वोदय-पात्र रख सकते हैं। उसका उपयोग शान्ति के काम के लिए अमलप्रभा देवी करेंगी। उसका उपयोग हमारे घर के लिए नहीं, गाँव के लिए नहीं, दुनिया के लिए होगा। यह सर्वोदय-पात्र हर घर में रखना चाहिए। जिनके पास जमीन है, उनको अपना दिल खोलना चाहिए, 'बीघे में कट्ठा' दान देना चाहिए। भूमिहीनों को भूमि देनी चाहिए। जमीन लेने वाला हरिजन हो सकता है, मुसलमान, हिंदू, असमी, बंगाली भी हो सकता है। यह नहीं देखेंगे कि वह कौन है। इस प्रेम-मार्ग में हम सब एक हो जायेंगे। जो प्रेम गोकुल में पैदा हुआ था, वह यहाँ पैदा होगा। आप जानते हैं कि शंकर देव ने भागवत का दशम-स्कन्ध लिखा है। उनका 'कीर्तन घोषा' भी चलता है। दोनों में कृष्ण की बाल लीला का वर्णन है। बाल-गोपाल कैसे इकट्ठा होते थे, क्या आनंद था, ऊँच-नीच सब एक होते थे, दही, मक्खन खाते थे। सब एक-दूसरे पर प्यार करते थे। यह वर्णन शंकर देव ने भागवत के दशम-स्कंध में किया है। वह आनंद इस गाँव में भी आ सकता है। वह आनंद क्या सिर्फ पढ़ने के लिए है ? सुनने के लिए है या करने के लिए भी है। करने से आनंद होगा या सुनने से लाभ है ? लड्डू का नाम सुनने के लिए है या खाने के लिए भी है ? वैसे ही वृन्दावन का आनंद यहाँ आ सकता है। वही यहाँ करना है।

दोबागारा (गोआलपारा)
२३ मार्च, '६१

पाठकों की ओर से

अंगुलिमाल डाकू का हृदय-परिवर्तन

श्रीमान् सम्पादकजी,

३ मार्च १९६१ के 'भूदान-यज्ञ' के पाँचवें पृष्ठ पर "बागियों का मूल्यांकन होने के साथ-साथ शासन का भी मूल्यांकन हो," यह लेख पढ़ा। मैंने इस प्रसंग की प्रायः शुरू से अन्त तक की घटनाओं को पढ़ा है। मुझे लगता है कि बागियों ने आत्म-समर्पण किया, तो उन लोगों को पुरस्कार मिलना चाहिए था, इसकी जगह उन्हें फाँसी और बड़ी कैद की सजा दी जा रही है। क्या इस कपट-रूपी खटाई से हृदय-रूपी दूध जमेगा ? क्या इससे मानवता बढ़ेगी ?

विनोबाजी के वहाँ जाने के बाद से ही, जब कि बागी भाइयों ने आत्म समर्पण किया, उस समय से आज तक जो कुछ हुआ, उस पर सोचा जाना चाहिए।

इस सबंध में अंगुलिमाल और भगवान बुद्ध की कथा ध्यान देने योग्य है। अंगुलिमाल कोशल देश का एक प्रसिद्ध डाकू था। वह आदमियों को मार-मार कर उनके उँगलियों की माला बना कर अपने गले में पहनता था, ऐसा कहा जाता है। १००० आदमियों को मार कर उनकी उंगलियों की माला पहनना, ऐसा उसने व्रत ले लिया था। वह बहुतों को मार चुका था। जब वह अपनी माता को ही मारने वाला था, उस समय बुद्ध भगवान वहाँ पहुँच गये। अंगुलिमाल ने उन्हें देख कर तिरस्कारपूर्वक कहा, "अरे, खड़ा हो रह, आज तेरी ही जान लेकर अपना व्रत पूरा करूँगा।"

भगवान बुद्ध ने कहा, 'मैं खड़ा हूँ अंगुलिमाल, तू भी स्थित हो जा !" भगवान बुद्ध यों कहते हुए उसके तरफ बढ़ते आ रहे थे। यह देख कर अंगुलिमाल ने आश्चर्य से कहा—"स्वयं तुम चलते हुए अपने को स्थित कह रहे हो और मुझ खड़े हुए को कहते हो कि स्थित हो जा।"

बुद्ध ने कहा, "सारे प्राणियों से वैर छोड़ देने के कारण मैं सदा स्थित हूँ अंगुलिमाल ! तू ऐसा नहीं है।"

डाकू का हृदय बदल गया। उसने तथागत के पैरों की पूजा की। उसने अपने तलवार आदि शस्त्र झरनों में फेंक दिये और उनका शिष्य बन गया।

इधर तो यह हाल हुआ। दूसरी तरफ राजा प्रसेनजित् उसकी खोज में पीछा करते-करते पाँच सौ घुड़सवारों के साथ आ पहुँचा। भगवान बुद्ध ने उनको देखा और कारण पूछा। राजा ने कहा, "भगवान मेरे राज्य में अंगुलिमाल नामक डाकू ने बड़ा ही उपद्रव मचा रखा है। मैं उसी को पकड़ने की फिक्र में हूँ।"

बुद्ध भगवान ने कहा, "महाराज, यदि अंगुलिमाल अब डकैती का काम छोड़ कर साधु बन गया हो, यदि वह संन्यासी के रूप में हो, तब क्या करेंगे ?"

महाराज प्रसेनजित् ने कहा, "भगवान, अगर ऐसा हो तो मैं उठ कर उसका स्वागत करूँगा, आसन के लिए निमंत्रित करूँगा। वस्त्र, भोजन, निवास-स्थान, औषधि आदि के विषय में पूछ कर हर तरह की सुविधा दूँगा और धर्म से उसकी रक्षा करूँगा। परन्तु भगवान, ... सकता है ?"

भगवान बुद्ध ने अंगुलिमाल का हाथ पकड़ कर प्रसेनजित् के सामने करते हुए कहा, यही हैं अंगुलिमाल ?

प्रसेनजित् ने आश्चर्य से देखा और आदरपूर्वक पूछा, "आर्य, आप ही अंगुलिमाल हैं ?"

उसने उत्तर दिया, "हाँ महाराज" !

प्रसेनजित ने अत्यन्त सत्कार और प्रेम से कहा—"आर्य मार्ग मैत्रायणी-पुत्र आप आनन्द से रहें ! मैं आपके भोजन, वस्त्र और आवास का प्रबंध करूँगा। हर तरह की सेवा के लिए तैयार रहूँगा।"

इसका कारण यह था कि महाराज प्रसेनजित् समझते थे कि वास्तव में शस्त्र-बल से भी विशेष शक्तिशाली महर्षियों का वचन होता है।

उन्होंने भगवान बुद्ध से कहा—"आश्चर्य है, कैसा है, आपका अनोखा ढंग, जिससे अशान्तों को शान्त करते हैं, अमुक्तों को मुक्त करते हैं ! जिसको हम दण्ड से भी, शस्त्र से भी दमन न कर सके, उनको आपने बिना शस्त्र के, प्रेम से दमन कर दिया !"

इसके बाद आगे चल कर वह एक महान् भिक्षुक बन गया। उसे कई जगह दुख भी उठाना पड़ा। परन्तु उसमें प्रतिहिंसा की भावना नहीं आयी। राजा के मित्र जैसी भावना बनाने से यह कितनी बड़ी सफलता मिली !

यदि वह राजा अंगुलिमाल को दंड दे देता तो क्या उसकी भावना इसी तरह होती ?

सकसोहरा —रामजी प्रसाद
(पटना)

सर्वोदय-पात्र में सातत्य आवश्यक

[अक्सर यह अनुभव आता है कि सर्वोदय-पात्र कुछ समय चल कर बंद हो जाते हैं। वस्तुतः सर्वोदय-पात्र का चलना सेवा और सातत्य पर निर्भर है। कानपुर के आर्यनगर क्षेत्र में विचारपूर्वक काम करने से सर्वोदय-पात्र का कार्य आगे बढ़ा है इसकी झलक नीचे दिये जा रहे २३ मार्च '६१ के श्री विनय अवस्थी के पत्र में मिलेगी। —सं०]

कानपुर के आर्य नगर क्षेत्र में पात्र-संख्या तो उत्तरोत्तर बढ़ी ही है; जनवरी में १५५, फरवरी में १७५, अभी १८७ है। अभी तक स्थापित पात्रों में केवल ७ बन्द हुए, जिनमें ४ बाहर चले जाने वालों के हैं। अनुभव यह आया कि सर्वोदय पात्र विचारपूर्वक और व्यवस्थित रूप में चलें, इसके लिए निम्न बातों का ध्यान रखना पड़ता है :

शान्ति-सैनिक सतत 'प्रेम-क्षेत्र' में घूमते हुए नागरिकों को सत्साहित्य (बिक्री का व पुस्तकालय का) पहुँचाता रहे, परिवारों की कुशल-क्षेम लेता रहे और चरखे सम्बन्धी सेवा भी करता रहे। नागरिकों से स्नेह-सम्पर्क के माध्यम से उनके परिवार में प्रवेश पाता जाय और दुख-सुख में शामिल हो। बीमारी, झगड़े आदि दुर्घटनाओं में सेवा के लिए तत्पर रहे। ऐसा होने से पात्र चलते हैं, बढ़ते हैं और कार्य भी गहराई में जाता है। धीरे धीरे सर्वोदय के जीवन मूल्य नागरिक जीवन में प्रवेश पाते हैं।

अब हम 'प्रेम-क्षेत्र' की प्रत्येक लेन (गली) के निवासियों की सभाएँ ले रहे हैं, ताकि उनमें परिचय व परस्परता बढ़े और सामूहिक शक्ति भी जगे। आगे चल कर लोकनीति के विकास के लिए इनका उपयोग हो सकेगा।

सत्यं जगत् स्फूर्तिः जीवनं सत्यशोधनम्

भूदानयज्ञ

लोकनागरी लिपि*

सत्याग्रही का मन मुक्त हो

सत्याग्रह यानी सत्य का ग्रहण करना। सत्य का ग्रहण करना सीखेंगे, तभी सत्य हाथ में आयेगा। सत्य का ग्रहण करने के लिए मुक्त मन भी चाहिए। आज इस चीज की बहुत जरूरत है। लोग इस काम का महत्त्व नहीं करते हैं, बल्कि उस काम को चाहते हैं, वह है मुक्त मन। वह मुक्त मन आज नहीं है। वह बँटा है राष्ट्रों में, भाषाओं में, तरह-तरह के धार्मिक पंथों में, सियासत में। मन बँधा है। बद्ध मन से मुक्त चिंतन नहीं हो सकता। उस तरीके से आदमी जहाँ का वहाँ ठहर जाता है। आगे उसकी प्रगति नहीं होती। पर यह विज्ञान का जमाना है। मैं कभी-कभी विनोद में कहता हूँ कि जहाँ कुत्ता भी आठ सौ मील ऊपर आसमान में जाता है, वहाँ हम साँप की तरह जमीन पर रेंगने लगें, तो कैसे चलेगा? इसलिए दिमाग बिलकुल मुक्त रहना चाहिए। इसकी बहुत जरूरत है। उसके बिना विचार का ग्रहण ठीक से नहीं होगा और ठीक विचार किये बिना मुक्त मन नहीं रहेगा। मुक्त मन के बिना मुक्त विचार नहीं हो सकेगा। मेरे मन में विशेष दुःख है कि आज मुक्त मन नहीं है। हिंदुस्तान तब तक सुखी नहीं होगा, जब तक उसका मन मुक्त नहीं होगा।

इंदौर, ५-८-'६० ——विनोबा

---

* लिपि-संकेत : ि = ी ; ी = ी ख = ख, संयुक्ताक्षर हलंत चिह्न से।

दूसरा रास्ता नहीं है

काका कालेलकर

जीवन की सच्ची सफलता का गहरा चिन्तन करके ऋषि-मुनियों ने मानव जाति को एक रास्ता बताया। लेकिन हम कैसे कह सकते हैं कि सब लोगों को एक ही रास्ता पसन्द आयेगा? "भिन्नरुचिर् हि लोकः" इसलिए एक से अधिक रास्ते बनाने चाहिए थे।

ऋषि-मुनियों ने इस दृष्टि से भी सोच कर अनेक मार्ग बताये, जिनको वे निष्ठा कहते थे। एक निष्ठा के लोग फलाने रास्ते जायेंगे, दूसरी निष्ठा के लोग दूसरा मार्ग लेंगे, यह भी उन्होंने साफ कर दिया।

जैसे अभिरुचि के भेद के कारण अनेक मार्ग या निष्ठाएँ पायी जाती हैं, उसी तरह शक्ति-अशक्ति, योग्यता-अयोग्यता ऐसे भेद के कारण भी पन्थभेद हो सकते हैं। इसके लिए पुराना शब्द है, अधिकार-भेद। मनुष्य की दुर्बलता पहचान कर परम कारुणिक धर्मकारों ने तरह-तरह के रास्ते बताये और दुर्बलों से कहा कि कड़े रास्ते से जाने का आपका अधिकार नहीं है। आपको हम मना करते हैं। तिस पर भी कोई कड़े रास्ते से जाय, कठिन साधना करे तो अपनी हिम्मत पर कर सकता था। और सफलता पाने पर सब लोग उसका अभिनन्दन भी करते थे। उसकी प्रतिष्ठा बढ़ती थी।

लेकिन चन्द बातों में ऋषि-मुनि समाजहित का चिन्तन करके और मनुष्य की शक्ति-अशक्ति का पूरा खयाल करने के बाद भी कहते थे कि—

"नान्यः पन्था विद्यते अयनाय।"

—अगर जीना है, जीवन में सफलता हासिल करनी है तो दूसरा रास्ता है नहीं।

इतना कहने पर भी अगर समाज उस रास्ते न जाय तो उसकी मर्जी। कोई व्यक्ति या समाज अपने उद्धार के बारे में बेफिकर रहे तो दूसरे उसके लिए क्या कर सकते हैं?

पुराने जमाने में राजा लोग बीमार पड़ने पर कभी कभी कहते थे, "मैं विषय-सेवन नहीं छोड़ूँगा, अपथ्य तो करता ही रहूँगा। तो भी मुझे ऐसी दवा दीजिये कि मैं तगड़ा हो जाऊँ। दवा में बदल करो, मैं अपने जीवन में बदल नहीं कर सकता।" इतना कहने के बाद राजा लोग वैद्य को धमकी भी देते थे कि अगर आप दवा न बदल दें तो वैद्य बदलने का तो मेरे हाथ में है।

अच्छी तनख्वाह पाने के लोभ में और राजदरबार में रहने से प्राप्त होने वाली प्रतिष्ठा के मोह में राजा लोगों को हमेशा नये नये वैद्य मिलते ही थे। इनमें से चन्द होशियार वैद्य राजा को ऐसी दवा देते थे कि जिससे उस समय के लिए तो अच्छा लाभ दीख पड़े। लेकिन बाद में दस गुना नुकसान होता था, जिसकी ओर वैद्य का ध्यान गया तो भी वह क्यों बोले?

आजकल राजा लोग तो रहे नहीं। जवाबदार या बिनजवाबदार एक भी ढंग के राजा रहे नहीं। किन्तु उनकी जगह समाज समस्त ने ली है। समाज अगर बीमार है तो समाज विज्ञान जानने वाले लोगों की सलाह लेगा। उनका बताया हुआ इलाज अगर न जँचा अथवा अमल में नहीं आ सका तो आजकल का समाज तुरन्त इलाज बदलने पर उतारू होता है। एक वैद्य अगर समाज का विश्वास खो बैठा तो तुरन्त वह दूसरे वैद्य को बुलाता है और दूसरे वैद्य की आजमाइश शुरू होती है। अपना दोष नहीं देखना और वैद्य से सब तरह की चतुराई की अपेक्षा करना यही है आज की नीति अथवा अपेक्षा।

हमने स्वराज्य क्यों खोया? हमारी बुरी हालत क्यों हो गयी? और फिर से स्वराज्य हम कैसे पा सकते हैं? इसकी मीमांसा करके लोगों को रास्ता बताने का काम जिन लोगों ने किया, उनमें महात्मा गांधी ने विशेष सफलता पायी। उन्होंने रोग का सच्चा निदान समाज को समझाया। समाज की शक्ति-अशक्ति का बराबर खयाल किया। अपने पास कितनी तैयारी हुई है और समाज को कहाँ तक ऊँचा उठा सकते हैं, इसका अन्दाजा लगा कर गांधीजी ने देश का नेतृत्व किया और स्वराज्य तक तो पहुँच गये। बाकी का रास्ता तय करने का और मुकाम पर पहुँचने का इलाज भी उन्होंने बता रखा। मुकाम कौनसा है, कैसा है, वहाँ किस रास्ते जाया जा सकता है, यह सब बता कर वे चले गये।

अब स्वराज्य मिलते ही लोग शिथिल हो गये हैं। गांधीजी का रास्ता उन्हें कड़ा मालूम होने लगा। इसलिए सर्वमान्य हो सके ऐसा रास्ता ढूँढ़ना पड़ा। गांधीजी ने आते-जाते कह रखा—

"नान्यः पन्था विद्यते अयनाय।"

आत्मोद्धार के लिए दूसरा रास्ता है नहीं। तो भी अब सब लोग उस रास्ते जाने को तैयार नहीं हैं। लोगों को राजी करने के लिए श्री विनोबा ने जनता से कहा कि "चलो, मैं आपके साथ आता हूँ। हम साथ मिल कर मुकाम तक पहुँच जायेंगे।" चन्द लोग उनके पीछे जाने लगे, चन्द लोग नहीं गये। विनोबा को सफलता मिली। उसे देख कर ज्यादा लोग उनके पीछे जाने लगे और न जाने वाले लोग भी उनके रास्ते नजर रख कर उनकी सफलता का हिसाब लगाने लगे।

अब फिर वही बात शुरू हुई है— "दवा बदल दीजिये, नहीं तो हम वैद्य को बदल देंगे।" लोग मान बैठे हैं कि "अगर पूरी सफलता नहीं मिल रही है तो वह पथप्रदर्शक की ही गलती है। हम थोड़ी राह देखेंगे। चालू वैद्य को और भी थोड़ा चान्स देंगे, नहीं तो दूसरे वैद्य हमें मिलने वाले ही हैं।"

इलाज की सफलता निष्फलता पर था तो समाज की कसौटी होती है या वैद्य की। लोकशाही के दिनों में समाज की गलती कौन बतायेगा? हरएक आदमी चाहता है—"अजी, इलाज निष्फल हुआ। अब दूसरा इलाज ढूँढ़ निकालिये। दस बरस तक हमने आपको काम करने दिया। देश में घूमने दिया। आपको कितनी सफलता मिल सकती है, इसका अन्दाजा भी आपको मिला। अब कहिये, इसी रास्ते आगे जाना है? और एक मर्यादित पंथ होकर भारत के अनेकानेक पन्थों में से एक बन कर रहना है या कुछ नया इलाज ढूँढ़ना है?"

राजा लोगों के जीवन की मिसाल लेकर हम कह सकते हैं कि राजा को जो कोई युवती पसंद आये उसे वह अपनी रानी बनाता है। उसकी इच्छा शिरोधार्य बना कर राजा उसका वशवर्ती बनता है। कुछ समय व्यतीत करने के बाद जब उत्साह क्षीण हुआ और दूसरी युवती की ओर नजर गयी तो पहली रानी को अपने विशाल अंतःपुर में भेज देता है। अनेक रानियों में ये भी एक नई। खायें, पीयें और मौज करें!

भारत में लोकोद्धार के लिये जितने भी अध्यात्म प्रेरित प्रयोग हुए, सबके सब प्रयोगालय बनारस में जा पहुँचे हैं। वहाँ द्वैत, अद्वैत, विशिष्ट अद्वैत, सब दर्शन आराम से शास्त्रार्थ कर सकते हैं। बनारस में शाक्तमार्गी भी हैं और भक्ति-मार्गी भी हैं। कबीर और तुलसीदास बनारस में ही पनप सके। जैन और बौद्ध दोनों का वह तीर्थ-स्थान है। यज्ञमार्गी पूर्व-मीमांसा और ज्ञानमार्गी उत्तरमीमांसा, दोनों के लिये बनारस में स्थान है। ईसाई लोगों ने भी वहाँ अपना अड्डा जमाया है। थियोसोफी भी वहाँ चलती है और सर्वोदयवादी लोग भी अब वहाँ पहुँच गये हैं। अध्यात्म-परायण भारत का वह सर्व-संग्राहक अंतःपुर ही है।

लोग मानने लगे हैं कि "ठीक है। अनेक पन्थों में सर्वोदय पन्थ भी चलेगा। अच्छा हुआ कि उन्हें बनारस जाकर आराम करने का सूझा।"

लेकिन नहीं; सर्वोदय का रास्ता अनेक रास्तों में का एक रास्ता नहीं है। यह तो एकमात्र रास्ता है, जिसके द्वारा ही भारत और मानव वंश भविष्य के लिए जी सकता है। दूसरा रास्ता है नहीं।

परस्पर अविश्वास, विरोध, संघर्ष आदि के प्रकार मानव जाति ने आजमाये। अब ये सब प्रकार विराट रूप धारण करके मानवता का ह्रास करने के लिये तैयार हुए हैं। अविश्वास, होड़, संघर्ष, शीतयुद्ध आदि सब प्रकार विश्वरूप धारण करके मनुष्य-जाति के सामने खड़े हैं। रागद्वेष, वर्गसंघर्ष, पूँजीवाद, साम्यवाद आदि वादों का ठण्डा और गरम वादविवाद चल रहे हैं और हरएक पक्ष अपने-अपने प्रलयास्त्र तैयार कर रहा है। ऐसी हालत में नर के सामने नारायण खड़ा होकर कहता है कि प्रलयकारी यह मेरा विश्वरूप देख लो और इससे सबक सीखो। इससे बचने का एक ही मार्ग है। बचने के लिए तरह-तरह के मार्ग *आजमाने की गुंजाइश अब रही ही नहीं।* सर्वोदय के लिये, सर्व के कल्याण के लिये मानस-परिवर्तन, तदनुकूल जीवन-परिवर्तन और उसके फलस्वरूप समाज-परिवर्तन करने के लिए तैयार हो जाओ। इसके लिए उग्र चिन्तन करो। एकाग्र होकर प्रचार करो और सब संकल्प इकट्ठा करके एक ही प्रयोग को सफल करने के लिए अपनी सारी शक्ति लगा दो—

"नान्यः पंथा विद्यते अयनाय।"

अगर सर्वोदय का सिद्धान्त सार्वभौम है तो उसका चिंतन और विनिमय भी सार्वभौम होना चाहिए। हमें डर है कि ऐसा *सार्वभौम चिन्तन नहीं* हो रहा है। इसमें जितनी एकाग्रिता आयेगी, फलप्राप्ति में उतनी कमी रहेगी। अनेकविध, बहुविध, सर्वविध चिन्तन के फलस्वरूप जो सर्वोदय चलेगा, सफल होगा ही। इसीलिए तो *सर्वोदय का आविष्कार हुआ है।*

('मंगल प्रभात' से)

उत्तर प्रदेश भूदान-आन्दोलन के दस वर्ष

कपिलदत्त अवस्थी

भूदान-यज्ञ आन्दोलन के प्रणेता आचार्य विनोबा भावे हैदराबाद के शिवरामपल्ली सर्वोदय-सम्मेलन में भाग लेने के लिए पैदल ही परम धाम पवनार, जिला वर्धा से ८ मार्च, १९५१ को चले थे। सम्मेलन के बाद १५ अप्रैल '५१ से उन्होंने तेलंगाना के हिंसा-पीड़ित प्रदेश की यात्रा पैदल ही प्रारम्भ की। जिला नलगोंडा के पोचमपल्ली गाँव में १८ अप्रैल, १९५१ को पहला भूदान मिला। तदुपरान्त १० वर्षों से, विनोबाजी अनवरत पैदल ही चल रहे हैं। उनका दृढ संकल्प है कि जब तक भारत में ग्राम-स्वराज्य की स्थापना नहीं होगी, तब तक वे सतत घूमते ही रहेंगे। इस १८ अप्रैल को आंदोलन के दस वर्ष पूरे हो रहे हैं। उत्तर प्रदेश में इस आन्दोलन की संक्षिप्त रूपरेखा पाठकों के सामने प्रस्तुत है। —सं०

स्वराज्य मिले चौदह वर्ष हो गये, पर उसकी रोशनी गरीब की झोपड़ी तक *अब भी नहीं पहुँच पायी है।* राजनैतिक स्वतंत्रता के बाद हिन्दुस्तान में आर्थिक आजादी, गरीबी का निवारण और विनोबा के *शब्दों में 'साम्ययोग की स्थापना'* का कार्यक्रम प्रस्तुत हुआ। १८ अप्रैल सन् १९५१ को १०० एकड़ का प्रथम "भूदान" श्री रामचन्द्र रेड्डी ने किया और वहीं से इस भूदान-यज्ञ के लिए वातावरण बना, विनोबाजी को एक अन्तःप्रेरणा हुई और वे सतत पद-यात्रा करते हुए दरिद्रनारायण की सेवा में निकल पड़े।

भूदान-यज्ञ का श्रीगणेश हैदराबाद के तेलंगाना के जिलों में हुआ। उस समय का यह प्रारम्भिक अनुष्ठान शीघ्र ही एक शीघ्रगामी महान् धारा की भाँति विकसित हुआ है। आज भारत में भूदान-आन्दोलन की सुदृढ़ नींव पड़ चुकी है, जो वर्तमान आर्थिक एवं सामाजिक समस्याओं के *निराकरण का एक सुलभ साधन है।*

भूदान-आन्दोलन का उद्देश्य 'बहुजन' नहीं, 'सर्व-जन' हिताय, सर्व-जन सुखाय ही है। सर्व-जन में अमीर-गरीब सभी शामिल हैं, वे भी—जो सम्पन्न वर्ग द्वारा *पीछे ढकेल दिये गये हैं। आज समाज में दुर्भाग्य से उन्हीं की संख्या* ज्यादा है, जब तक सबसे पीछे के व्यक्ति को सुख-सुविधा का ख्याल नहीं किया जायेगा, तब तक समाज का उत्थान नहीं हो सकता। समाज का यही अन्त्यज वर्ग हमारी सेवा का *सबसे पहला अधिकारी है।*

अभी जब विनोबाजी का ८ अप्रैल १९६० को मेरठ की बागपत तहसील में उ० प्र० की चौथी भूदान-पदयात्रा के सिलसिले में प्रवेश हुआ था, तब विनोबाजी ने एक प्रश्न के उत्तर में कहा था कि "आज तक मैं भूदान माँग रहा था। जिनके पास जमीनें नहीं हैं, उनको मैं भूमि देना चाहता था। यह सारा गोरख धन्धा मैं क्यों कर रहा हूँ? इसलिए कि समाज के ऊँचे-नीचे माने जाने वाले दर्जे मिटने चाहिए और सबको शरीर-परिश्रम का मौका मिलना चाहिए, किन्तु अब तो मैं इससे कई कदम आगे जीवन दान, ग्रामदान, साधन-दान, सम्पत्तिदान को भी लाँघ कर *सर्वोदय-पात्र तथा शांति-सेना* के लिए घूम रहा हूँ। इन्सान के नाते सब भाई-भाई हैं, यही समझा रहा हूँ।"

ऊपर से देखने वालों के लिए यह एक *कृषि-सुधार या किसान-आन्दोलन* लगता है। लेकिन यह एक सर्वव्यापी सामाजिक तथा मानवीय क्रांति का आंदोलन है।

जब विनोबाजी १९५२ में दूसरी बार उत्तर प्रदेश आये थे, तो यहाँ के रचनात्मक *कार्यकर्ताओं ने तय किया था कि यदि* हम भूदान-आन्दोलन को लेकर आगे नहीं बढ़ते तो खादी-ग्रामोद्योग आदि सारे आर्थिक, *सामाजिक कार्य प्राणहीन हो जायेंगे।* इसी निश्चय के फलस्वरूप उत्तर प्रदेश में भूदान आन्दोलन का संयोजन हुआ और अब तक प्रदेश में के ५१ जिलों में ११,४७३ ग्रामों में कुल ४,३६,०९५ एकड़ भूमि प्राप्त *की गयी, जिसमें से* १,२४,६४० एकड़ भूमि ८,३३४ ग्रामों में ५१००० भूमिहीनों में अब तक वितरित हो चुकी है। २३१ कुएँ, १ ट्यूबवेल (बिजनौर में), ३४ बैलगाड़ी, हल, खेती के अन्य औजार तथा १९०० एकड़ कृषि के लिए उन्नतिशील बीज भी अन्य प्रकार के दान में प्राप्त हुआ है। उत्तर प्रदेश के हमीरपुर जिले में मंगरौठ का प्रथम ग्रामदान भी प्रेरणा का स्रोत बना और ग्रामदान-आन्दोलन का प्रारंभ हुआ।

विनोबा तो बिहार चले गये, किंतु उत्तर प्रदेश अखण्ड पदयात्रा का दायित्व *बाबा राघवदास ने सम्भाल लिया।* हवा और पानी की तरह जमीन भी भगवान की है, इस सिद्धांत को वे हिम्मत के साथ गाँव वालों को समझाते तथा जमीन किसी की सम्पत्ति न रहे, ऐसा प्रयास मृत्यु पर्यन्त करते रहे। १५ जनवरी, १९५८ को मध्य प्रदेश की भूदान-पदयात्रा करते हुए सिवनी में बाबा राघवदास गोलोकवासी हुए।

विनोबाजी ने जो माँग आज देश के सामने पेश की है, उसकी तुलना उन छोटी-छोटी माँगों से नहीं की जा सकती, जो स्वराज्य प्राप्ति के पहले अधिक करते थे। ५ करोड़ भूमिहीनों में से एक भी कुटुम्ब भूमिहीन न रहे, यह भूदान-यज्ञ का उद्देश्य है, इसे वे बार बार दुहराते रहते हैं और यही उनका कामनापूर्ति कदम है। *इस आन्दोलन में किसी वर्ग का ऐसा सङ्गठन नहीं है,* जो भूमि के लिए सत्याग्रह कर सके। यह तो सबका तथा सबके लिए है। भूदान-प्राप्ति के बाद उसके वितरण की समस्या आयी। वितरण के सम्बन्ध में *विनोबा के निर्देश की प्रतीक्षा के समय ही* प्रांतीय स्तर पर रायबरेली जिले में श्री श्रीकान्त सिंह चौहान के संचालन में सघन पदयात्रा-शिविर का आयोजन हुआ। वितरण के लिए व्यापक प्रयोग हुआ और उसमें सफलता मिली। यहीं के फलस्वरूप सारे देश के लिए वितरण संबंधी नियम-उपनियम बने। इस आन्दोलन के खिलाफ कुछ साम्प्रदायिक लोगों ने धार्मिकता को आगे रख कर प्रचार करना शुरू कर दिया। इस भ्रम-निवारण के लिए एक प्रेस-विज्ञप्ति जारी की गयी, जिसका सारांश यह था कि "प्रस्तुत आन्दोलन मोक्ष, 'स्वर्ग', मुक्ति से नहीं, बल्कि जमीन के समान वितरण से सबंधित है। इसलिए इस पर धार्मिकता का आरोप लगाना गलत होगा।" परन्तु हम नैतिक और आध्यात्मिक आधार पर भूमि को प्राप्त करते हैं तो उसमें गलत क्या है? मेरी राय में धर्म का भी अर्थ यही है, इसलिए भौतिकवाद की तुलना में श्रेष्ठ अध्यात्मवाद और नैतिकता पर यह आन्दोलन आधारित है। भूदान का लक्ष्य आमूल सामाजिक क्रांति है, इस बात की ओर दुर्लक्ष्य नहीं किया जा सकता।

सब 'तेरा' ही 'तेरा'!

गुरु नानक के पिताजी व्यापारी थे। एक दिन पिताजी को कुछ *काम था तो उन्होंने बेटे को दूकान पर बैठने के लिए कहा। नानक दूकान पर बैठे।* एक भाई कुछ खरीदने के लिए *आये—शायद अनाज खरीदने के लिए। अनाज वजन के* नाप को गिन-गिन कर देना होता है। नानक एक-एक नाप गिनते गये और ग्राहक के बोरे में डालते गये। "एक, दो, तीन, चार"—यों कहते-कहते नानक पहुँचे दस, ग्यारह पर—"दस, ग्यारा (ग्यारह), बारा, तेरा…।" जैसे ही मुँह से "तेरा" निकला, और कानों ने "तेरा" सुना तो नानक को लगा कि बस यह 'तेरा'-ही-'तेरा' है, क्योंकि वे तो भगवान के ध्यान में मस्त थे। तो 'तेरा', 'तेरा' कहते गये और नाप पर नाप भरते ही गये। "चौदह" उनका हुआ ही नहीं!

जनाधार का रहस्य

राधा भट्ट

गाँव मे जाकर काम करने की मेरी इच्छा क्यों पैदा हुई ? इसका कारण यह था कि मै प्रयोग करके यह जानना चाहती थी कि कौनसी ऐसी मुश्किलें है, जहाँ पर हम कार्यकर्ता हार जाते है ? कौनसे हमारे ऐसे सिद्धान्त है, जो प्रत्यक्ष व्यवहार मे बेमेल हो जाते है ? इसमे एक मुख्य प्रश्न जनाधार का भी था, जिसका स्वरूप इधर हमने रखा था—घर घर मे भोजन करना। मै देखना चाहती थी कि इसमें क्या मुश्किल है, क्या खूबियाँ है ?

मुझे इस गाँव बौंगाड़ में आये अभी १०-१२ रोज हुए है। अभी तक लगभग हर घर से, जहाँ मैंने भोजन किया, लोगों ने मुझे निमन्त्रण दिया, उसमें हर उम्र के व्यक्तियों ने बुलाया, कभी अधेड़ उम्र की 'भारती की माँ' ने कहा, तो कभी बूढ़ा 'पूना दीदी' ने, कभी चौदह वर्षीय कुंजी ने तो कभी छह वर्ष की सुची ने अधिकारपूर्वक कहा—"दीदी, कल जरूर हमारे ही घर पर खायेंगी।" कभी युवक भाई, कभी युवती बहन, कभी वयस्क तो कभी वृद्धा, कभी हमारे विचार के हिमायती व्यक्ति ने, तो कभी उदासीन व्यक्ति ने भी बुलाया और मै प्रेम से घर-घर खाने को जाती रही।

उस दिन शाम की प्रार्थना के बाद हम 'रामायण' पढ़ चुके थे। कुछ आम बातों पर चर्चा चल रही थी। गाँव के एक वृद्ध सज्जन बोले—"बहन, कल हमारे घर खाने को आतीं तो ..."

दूसरे रोज सुबह से मूसलधार वर्षा हो रही थी, इतने में उन वृद्ध का १३-१४ वर्ष का बेटा पानी में छप-छप करता हुआ आ पहुँचा और मुझे भोजन के लिए बुला ले गया। वर्षा की झड़ी जारी थी, हम दोनों कुछ भीग भी गये। माघ महीने की इस वर्षा ने बेहद ठंड बढ़ा दी थी। उनके घर के भीतर पहुँचते ही फौरन हम अँगीठी की जलती आग के चारों ओर डट गये। पूरा परिवार आग के चारों ओर बैठा था। मैने गौर से देखा, घर आज ही लीप-पोत कर साफ किया था। वृद्ध सज्जन ने केले की एक पत्ती पर रोली व अक्षत तैयार किया, मुझे टीका किया, और घर के सब सदस्यों को भी टीका करने लगे तो उनकी छोटी हठीली लड़की ने पूछ ही लिया—"बौज्यू, आज पिठ्याँ किलै लगूँणाछा? पैली बताओ तब मील्गूँल।" (पिताजी, आज रोली क्यों लगा रहे हैं ? पहले बताइये। तब मैं लगाऊँगी।) तब वे गम्भीर व भाव भरे शब्दों में बोले—"बेटी! आज एक तो 'माघीपूर्णिमा' का पुण्य पर्व है। फिर आज हमारे घर का विशेष सौभाग्य है, क्योंकि आज हमारे घर में 'जगन्माता' आयी है। ये विश्व भर की बहन हैं।" 'जगन्माता' के इस शक्तिशाली गौरवपूर्ण शब्द से मैं अत्यन्त संकोच से गड़ गयी, और सच कहती हूँ, आज भी इस शब्द को लिखते मुझे अत्यन्त संकोच हो रहा है! पर यह उनका शब्द है, उनके अन्तर की विशालता है, भारतीय संस्कृति का रूप है, मेरा व्यक्तिगत कुछ नहीं, न मेरी किसी योग्यता या गुण का प्रतिफल।

हाथों को सेंकते हुए हम लगभग आधा घंटा बैठे रहे। वृद्ध सज्जन ने पूरे परिवार के—पत्नी, पुत्रों तथा पुत्रियों—के सामने अपने परिवार का इतिहास बताया, किस प्रकार उनके भाई ने जमीन जायदाद को लुटा दिया, कैसे उन पर एक हजार रुपये का कर्जा चढ़ गया—और कैसे उन्होंने बर्मा में नौकरी करके व बाद को घर लौट कर सम्पत्ति जुटायी, घर बनाया, बच्चों की शादियाँ की, आखिर में बोले—"बहन, जब तक हम खायेंगे तब तक तुम भी हमारे घर पर खाने के लिए अवश्य आते रहना, जब हमारा अन्न समाप्त हो जायेगा, तब ..." आगे वे नहीं बोल सके, थोड़ा सँभल कर बोले—"हमारी खेती का अन्न अब खतम होने जा रहा है। अगले महीने से हमारे पास कुछ पैसे रहे तो खरीद लेंगे, नहीं तो कभी भूखे ही सही।" मेरे दिल में एक टीस उठी और मैं चुप रह गयी।

खाना खाने बैठी और सोचती रही—"मैं किस गरीब की पसीने की कमाई खा रही हूँ ? इस अन्न का कण-कण मेरे शरीर में से जाकर जो खून की बूँद-बूँद बनायेगा, उस पर किसका अधिकार है ? इस अन्न से मिलने वाली शक्ति, वह मानसिक हो या शारीरिक, किसके लिए खर्च होनी चाहिए ? किस तीव्रता से किस समर्पणभाव से व किस नम्रता से प्रेरित हो हमें आज यह काम करना चाहिए ? गरीब का यह अन्न खाकर मैं सेवा न करूँ तो मेरे बराबर धोखेबाज कौन होगा ? हम सभी प्रत्यक्ष न सही, अप्रत्यक्ष रूप से यही अन्न तो खा रहे हैं ? तभी मैं मन ही मन चिन्तन करती हुई दुहराने लगी, आश्रम (लक्ष्मी आश्रम, कौसानी) में भोजन के पूर्व गायी जाने वाली प्रार्थना—"हे प्रभु, जिस अन्न से हमारा पोषण हो रहा है, उसको हम कृतज्ञतापूर्वक यज्ञ का प्रसाद समझ कर ग्रहण कर रहे हैं। हमें यह शक्ति दें कि जब तक विश्व के समस्त गरीबों को इसी प्रकार पर्याप्त अन्न प्राप्त न हो, तब तक हम अहिंसक क्रान्ति के सपने से विश्राम न लें।" तब मैं अपने अन्दर इस पूर्ण समर्पण के भाव से अद्भुत शक्ति अनुभव करने लगी।

उस दिन से मैं सोचती हूँ बाबा (विनोबाजी) का 'चाणक' है। घर घर में खाओ, कह कर वह हमारे अन्दर यह तीव्रता भरना चाहता है, हमें यह पाठ पढ़ाना चाहता है. हमें दर्शन कराना चाहता है कि सरकारी कर्मचारियों का वेतन हो या संचित निधियों या संगठनों से प्राप्त सहायता हो, यह सब ऐसे गरीब के घर की खून-पसीने की कमाई है, जो साल के कुछ महीने भूखे ही बिता डालने की निश्चिततापूर्ण तैयारी रखता है, यदि उस अन्न को खाते हुए कभी भी हमने अपने सामने से उस गरीब के चित्र को हटा दिया तो हमारे बराबर गुनाहगार कोई न होगा। यदि उस अपने अन्नदाता मालिक का अन्न खाते हुए अपने रहन सहन में हमने अतिशयोक्ति की तो हमारे ऊपर विश्वासघात का कलंक लगेगा। हमारा चिन्तन, हमारा मनन, हमारा जीवन सब का सब उसी के लिए हो। यह सब साध सकने का हमारा प्रयास हो, तब जीवन का कुछ अर्थ है। यह सब वह हमें बताना चाहता है। उन गरीबों के घर की आँखों देखी प्रत्यक्ष जानकारी रख कर हम उस अन्न को खायें, और खायें यज्ञ का प्रसाद समझ कर, तब यह प्रसाद हमारे अन्दर अनिवार्य सेवा का बल भर देगा, क्रान्ति या आन्दोलन को सफल करने की लगन से जुटने वाले हम सबको वह यह समझा देना चाहते हैं कि आज यह हमारा 'स्वधर्म' है,

जनाधार का यह एक अद्भुत, नया रहस्य मेरी समझ में आया।

बौंगाड़, पो० पाँखू
पिथौरागढ़ (उ० प्र०)

आत्म-शक्ति की मधुर अनुभूति

मुरादाबाद में आपसी व्यक्तिगत लेन देन की साधारण घटना में कुछ लोगों ने हिंदू-मुस्लिम और राजनैतिक तत्वों को लेकर पूरे शहर को तबाह कर दिया दुकानदारों की दुकानें जबरदस्ती बन्द कर दी गयी। बात की बात में चन्द लोगों के कुचक्र से शहर का शान्त वातावरण भंग हो गया। जिला सर्वोदय मण्डल, मुरादाबाद ने इस स्थिति पर सोचा।

तय हुआ कि शहर के विशेष व्यक्तियों की मीटिंग बुलायी जाय। इस मीटिंग के प्रचारार्थ मैं शहर के मोहल्लों-मोहल्लों में घूम रहा था। मुझे एक ऐसी गली से गुजरना पड़ा, जिसमें केवल मुसलमान ही लोग रहते हैं। हिन्दू ने मना भी किया—"भाई, दूसरे रास्ते से जाओ, जिस पर पुलिस का पहरा है। इस गली में खतरे की शंका है।" पहले तो मुझे कुछ भय लगा, हो भी सकता है। लेकिन क्षण भर में ही मन ने धिक्कारा, हृदय के किसी कोने से आवाज आयी—"सब अपने भाई हैं। क्या भाई अपने भाई का अहित चाहेगा ? नहीं। वह प्यार करेगा, बुरा नहीं मानेगा। जरा उसके पास पहुँच तो।" मैं उन हिन्दू लोगों की बातों को अनसुना करके गली में घुस ही गया। अन्दर मुसलमान भाइयों की टोली की टोली मुझे खड़ी हुई मिली। उनके मध्य से निर्भर होकर चला गया। मै उनके बीच अधिक सुरक्षित हूँ, ऐसा मुझे लगा। मेरा हृदय प्रसन्नता से गद्गद हो रहा था, क्योंकि आत्मशक्ति की अनुभूति का मीठा रस चखने का यह मेरे जीवन में पहला अवसर था।

—लखीचन्द्र

सर्वोदय-पात्र की देन

सर्वोदय-पात्र की महत्ता का विचार मेरे मन में कालडी सर्वोदय सम्मेलन से लौटने पर आया। सर्वोदय पात्र का प्रचार का काम नब्बे प्रतिशत स्त्रियों के हाथ में रहता है. इस आशय से प्रत्येक घर में जाकर बहनों के सामने उसके महत्त्व तथा उपयोग की चर्चा की और बाद में उनकी सामूहिक सभा बुलायी गयी। लेकिन गाँव की स्त्रियाँ सुनती सबकी हैं, किन्तु करती अपने ही मन की हैं। फिर इसकी परवाह न करते हुए मैं डटा ही रहा और १९५७ से ही दुर्गाष्टमी त्योहार को गाँव के चंदे से ही मनाना शुरू किया। उसमें गाँव के छोटे छोटे बच्चों तथा बच्चियों के द्वारा नाटक एवं प्रहसनों का कार्यक्रम रात में तथा दिन में खेलकूद, कताई-दंगल, कबड्डी एवं २४ घंटे के सूत्र-यज्ञ का कार्यक्रम रखा गया। नाटक में बच्चों के द्वारा सर्वोदय पात्र के प्रचार की नकल भी करवायी गयी। तभी से जैसे-जैसे लोग प्रभावित होते गये, उन्होंने सर्वोदय-पात्र रखना शुरू किया। उसका संकलन हर सातवें दिन रविवार को मैं ही जाकर गाँव के बच्चों द्वारा इकट्ठा करवाता हूँ। उसके चंदे से अब तक जिला स्तर की दो पत्रिकाएँ आती थीं तथा रेडियो का कुछ खर्च चलता था। लेकिन इस वर्ष २ अक्तूबर से सबने घरों में सर्वोदय-पात्र रखने का अटल निश्चय किया और गाँव में इसी दिन से होमियोपैथिक दवा दी जाती है। अब तक ५७४ मरीजों को दवा दी जा चुकी है, जिनमें ४३५ पूर्ण स्वस्थ हुए।

—रामकिशोर त्रिपाठी (लोकसेवक)
ग्रा० सर्वोदय मंडल, पहुँची (फैजाबाद)

विनोबा-यात्री-दल से

कुसुम देशपांडे

लाल, पीले, नीले···तरह-तरह के रंग ! नन्हीं बच्चियाँ विविध रंग के कपड़े, फ्रॉक पहनी हुई, बालों में रिबन लगाये हुई दोनों कतारों में खड़ी थीं और हाथ ऊपर करके मंजुल स्वर में चिल्लाती थीं—"जय-जगत्" । जैसे ही बाबा नजदीक पहुँचे, फूल फेंकने लगीं, उनके भोले-भाले चेहरे चमक उठे । बाबा ने कहा, "ये सारी रंग-बिरंगी गुड़ियाँ हैं !" फिर उनमें से दो-चार ढीठ बच्चियों ने बाबा के हाथ दोनों बाजू से पकड़े और पड़ाव तक चलीं । उसी दिन भरी दुपहरी में जब आराम का समय था, बाबा कमरे के बाहर टोपी पहन कर निकले । कहाँ जा रहे थे, समझ में नहीं आया । स्कूल के सामने मैदान था, हरियाली थी । उस गाँव के लोग धूप में बाहर अलग-अलग टोलों में खड़े थे—कोई पेड़ की छाया में, कोई मूंगफली तथा चनेवाले के पास । बाबा ने मैदान में कदम रखा, चारों ओर से लोग इकट्ठे हुए । बाबा के इर्दगिर्द खड़े हुए बच्चों की भीड़ ज्यादा थी ! बाबा नीचे बैठ गये आसन लगा कर । एक लड़के को इशारे से पास बुलाया और पद्मासन सिखाया—"छाती सामने, कमर न झुके, सिर ऊपर ।" सब इशारे से—"ठीक किया काम ।" दूसरा कोई आता है । करीब एक-डेढ़ घंटा उस धूप में चौदह-पन्द्रह लड़कों को आसन सिखाने का काम किया । पसीने से तर हो गये थे सब ! पर बच्चे खुश थे, और बाबा सिखाने में तन्मय ! किसी लड़के का पद्मासन ठीक सध जाता था तो कहते थे, "हाँ, यह योगी हो सकता है !" कमलप्रभा सेन या मालतीदेवी में से किसीने पूछा, "बाबा इतनी धूप में आप क्यों बाहर चले गये थे ?" उनको जवाब मिला—"प्यार करने !"

एक दिन बाबा कहते थे, "कई बार मैं देखता हूँ, सभा में छोटे-छोटे बच्चे सामने बैठते हैं । उनमें से कई ऐसे होंगे, जिनकी तालीम का कोई इन्तजाम नहीं होगा । छोटे-छोटे लड़के गरीब के घर में कमाने वाले लोग होते हैं । भूदान-यज्ञ मैंने किसलिए शुरू किया ? इन्हीं बच्चों के लिए ! 'बालकृष्ण' की इतनी उपेक्षा हमारे देश में हो रहा है···" कहते-कहते उनकी आँखें गीली हो गयीं ।

* * *

हिमालय की गोदी से निकली हुई गंगामाई को पूछो, तुम किधर जा रही हो? वह कहेगी, "सागर से मिलने ।" बहते-बहते वह क्या नहीं करती है ? किनारे आने वाले तृषार्थियों की प्यास बुझाती है, फिर चाहे वह चोर हो या साधु, हिंदू हो या मुसलमान, किसी भी भाषा का हो, किसी भी जाति का हो । कितने ही वृक्षों को पानी देती है । उसके पानी के सहारे कितने ही खेतों में फसल खड़ी होती है । फिर भी वह कहती है कि मैं तो सागर से मिलने जा रही हूँ ।

कन्याकुमारी से कश्मीर तक और सौराष्ट्र से उड़ीसा, बंगाल तक प्रजासूय यज्ञ का अश्व घूम चुका था । असम में यात्रा तय हुई । वहाँ क्या कार्यक्रम रहेगा ? ऐसा पूछा गया तो विनोबा ने कहा था, "मैं वहाँ दयालु होकर नहीं, साम्ययोग के उपासक के नाते आ रहा हूँ । करुणामूलक भूदान का विचार देने आया हूँ । भूदान, सर्वोदय-पात्र, शान्ति-सेना, नई तालीम, यही कार्यक्रम वहाँ रहेगा !"

भारत जानता है, सात-आठ महीने पहले असम में वातावरण अशांत हो गया था और कुछ दुःखदायक घटनाएँ बनी थीं । जिन गाँवों में ऐसी घटनाएँ घटीं, उनमें से चार गाँवों में आज तक विनोबाजी का जाना हुआ है । गोआलपारा शहर के नजदीक, ८ मील पर दोबापारा नामक गाँव है । वहाँ साठ बंगालियों के घर जलाये गये थे और जुल्म के भय से नजदीक के पहाड़ों में और जंगल में उन्होंने सहारा लिया था । धीरे-धीरे वे वापस आरहे हैं और उसी गाँव में अलग जगह पर फिर से नई झोपड़ियाँ खड़ी कर रहे हैं । विनोबाजी के नाम से उन लोगों ने बाँस, बल्लियों से एक सुन्दर कुटी बनायी थी । उनके घर ऐसे ही होते हैं—बाँस और घास-फूस ! छोटी-छोटी झोपड़ियाँ, बीच का आँगन भी लीपा-पोता, स्वच्छ, निर्मल था ।

'विनोबा-कुटी' के सामने केलों के वंदनवार, चमेली के फूल और बंगाल की कला का नमूना, अल्पना थी । कुटी के अन्दर, बीच में अल्पना थी, जंगल के सफेद फूल गोलाकार में लगाये थे, कलश तथा दीपक था । विनोबा का स्वागत मंगल तिलक से, फूलों की माला से, भाव भरे हृदय से किया था । विनोबाजी कुटी के अन्दर सब भाई-बहनों के साथ बैठे । भाइयों ने भगवान का नाम-स्मरण किया और एक गीत गाया । उसका आशय था, "हमारे दुःख की रात्रि, निशा खत्म हो गयी है और प्रभात हो गयी है, क्योंकि बाबा का आगमन हुआ है । वन्य फूलों से, हम कुटी सजायेंगे और उनके दो चरण-युगल हमारी आँखों के आँसुओं से धोयेंगे । हमारे पास और कुछ नहीं है । 'आशादेवी' आयी तो आशा लेकर आयी थीं कि बाबा का आगमन होगा । अब हमें बाबा का संग मिल रहा है ।"—ढोलक पर भक्ति-भाव से गा रहे थे । बाद में पता चला कि उस गीत को बनाने वाला चटाइयाँ बनाने का काम करता है । थोड़ी देर शांति रही । धूप और अगरबत्ती के सुगन्धमय वातावरण में पावित्र्य बढ़ रहा था । अत्यन्त शान्त और गम्भीर भाव से विनोबाजी ने धीमी आवाज में गाया—

अद्वेष्टा सर्वभूतानां मैत्रः करुण एव च ।
निर्ममो निरहंकारः समदुःख सुखःक्षमी ॥

भक्त-लक्षण के ये आठ श्लोक (गीता, अ० १२ : १३ से २०) गाये । उसी दिन असमी भाइयों के घरों में भी विनोबाजी गये । सुबह १० से १२ तक गाँव में घूमना हुआ । सब शामिल हो गये थे । आनंद का वातावरण था । इस गाँव में चन्द महीने पहिले भय छाया था और भेदासुर प्रकट हुआ था । उस दिन उसका नामोनिशाँ नहीं था । शाम की सभा में असमी, बंगाली, भाई-बहनें, बच्चे एक-साथ बैठे थे ।

बीच में 'कृष्णई' नाम का गाँव था । जो गोआलपारा और गोहाटी के मोटर के रास्ते पर है । यह गाँव भी उनमें से एक है, जहाँ पर अशांति की आग की आँच पहुँची थी । उस गाँव के बंगाली लोग विनोबाजी से मिले । उनकी बातें विनोबाजी ने सुन लीं । विनोबाजी कहते हैं : "मुझे करुणा की अपील करने की जरूरत नहीं है । 'फैक्टस्' सत्य घटनाएँ दीजिये । यह चीज मेरे लिये नई नहीं है । जब देश का विभाजन हुआ था, तब भी ऐसी ही अशांति की आग सुलगी थी, और लाखों लोग अपना-अपना स्थान छोड़ कर इधर से उधर और उधर से इधर आये थे । उनके दुःख मैंने देखे हैं । उनकी सेवा करने का मौका हमें मिला था ।"

कृष्णई में शाम की सभा में आये हुए भाई-बहनों को सांत्वना देते हुए विनोबाजी ने कहा, "आज इस गाँव में १२ बज गये थे । कितने ही घरों को आग लगायी गयी—यह देखा । फिर से वहाँ घर बन रहे हैं । सरकार मदद दे रही है । याने कौन ? जिन्होंने जलाया, वे ही मदद देते हैं । सरकार के पास पैसा कहाँ से आया ? हम ही लोग टैक्स देते हैं । हमारे देश के ही मकान जलाना, इसमें कौनसा भला है ? सारे भारत को यह सुन कर बहुत धक्का लगा ।"

इस सबकी मीमांसा करते हुए विनोबाजी ने कहा, "यह सब इसलिये हो रहा है कि देश में मनुष्यों को तालीम ठीक नहीं मिल रही है । तालीम में बच्चों को उन्नति का साधन ही नहीं है । सरकार 'सेक्यूलर', निधर्मी कहलायी जाती है, इसलिये कोई धर्मग्रंथ नहीं सिखाया जाता है—न बाइबिल, न कुरान, न शंकरदेव का ग्रंथ ! यह अलग बात है कि असमी साहित्य पढ़ाते समय ऐसे विचार आ जाते हैं, पर बच्चों को नीति-शिक्षा नहीं दी गयी, धर्म-ग्रंथ का परिचय नहीं कराया तो आप कौन किताब देंगे बच्चों को ? क्या कोई शिक्षा-मंत्री नीति पर ग्रंथ लिखेगा, उसका असर होगा ? हमारी सब भाषाओं में जो उत्तम साहित्य है, वह संतों का है । अंग्रेजी में व्यावहारिक साहित्य है, उसी तरह से तरह-तरह का साहित्य जर्मनी, रूस में है । हमारी भाषा में अभी तक नहीं आया है, आगे आयेगा । यहाँ तक कि असम की अच्छी जानकारी चाहिये तो वह भी अंग्रेजी में मिलती है । उत्तम साहित्य संतों का है । और वहाँ ग्रंथ उत्तम सीखाया न जाय, तो चरित्र-निर्माण के लिये कौन किताब बच्चों को देंगे ? शंकरदेव और माधवदेव के ग्रंथ बच्चों को सीखाये जाते तो यहाँ जो बुरे काम हुए, जो घटना हुई, वह नहीं होती । यही तालीम का बहुत बड़ा दोष है कि उसमें ईश्वर के प्रति श्रद्धा नहीं होती है, सत्यनिष्ठा और प्रेमनिष्ठा नहीं होती है । यह तालीम का दोष है । इसलिये मैं लोगों को दोष नहीं देता ।"

जगह-जगह बंगाली भाई विनोबाजी से मिलते हैं । उनको विनोबाजी कहते हैं कि "तुम लोग डरो मत ! जो डरता है, उसे डरानेवाला भी मिलता है । अब दुबारा ऐसा काम नहीं होगा, यह विश्वास रखो ।" असमी भाइयों से कहते हैं कि "आपका इतिहास उज्ज्वल है । यहाँ की सृष्टि सौम्य है, वैसे आपके चेहरे भी सौम्य है । यहाँ सृष्टि भी उदार है । भर-भर कर देती है, तब मनुष्य कंजूस कैसे रह सकता है ? मैं आपसे बहुत आशा रखता हूँ । बुरी हवा के झोंके में कुछ काम यहाँ हुए । लेकिन उसे आप भूल जाइये और भूदान-यज्ञ के जैसे करुणामूलक काम में लग जाइये । आपके प्रदेश में विविध भाषाएँ हैं, यह आपका गौरव है ।"

दोरंगिरी की सभा में बाबा ने कहा, "उदार मनुष्य भी परिस्थिति में कंजूस बन सकता है । दयालु भी परिस्थिति से कठोर बन सकता है । पानी तो ठंडा होता है, लेकिन गरम चूल्हे पर रखो तो गरम हो जायेगा । "जलं शीतलं"—पानी स्वभाव से ठंडा है, लेकिन गरम बन सकता है । वैसे पानी हमेशा नीचे जाता है, लेकिन पंप से ऊपर भी जाता है । उसका स्वभाव ऊपर जाने का नहीं है, कारणों से ऊपर जाता है । मैंने देखा, इस प्रदेश में कुछ निठुर काम किये गये । लेकिन यहाँ की सृष्टि, यहाँ का हृदय सौम्य है, फिर भी ऐसी घटना यहाँ हुई । कभी-कभी ऐसी हवा आती है । अब आप सब लोग इसे भूल जाइये । हमारी भूमि 'सुजलाम् सुफलाम्' है, लेकिन उसके साथ-साथ हम 'सुमधुर भाषिणी सुहासिनी' नहीं बनेंगे तो यह भूमि हमें सुख नहीं देगी, दुःखी बनायेगी । इसलिये हम 'सुमधुर भाषिणी और सुहासिनी' बनें, तो असम अत्यंत सुंदर स्वर्ग बनेगा । इसीलिये भूदान निकला है, सबको भूमि मिले, सब सुहासिनी, सुमधुर भाषिणी बनें, प्रेम से रहें, मत्सर का नाम न हो, ऐसा अपना प्रांत बनें ।"

असम की सरकार ने दुःखियों को, पीड़ितों को मदद देने का आदेश निकाला है । उसकी एक प्रति विनोबाजी के पास आयी है । परंतु जिनके घर जले हैं, ऐसे लोगों को कहीं-कहीं शिकायत

थी कि अभी उनको पूरी मदद नहीं मिल रही है। गोआलपाड़ा के एक सरकारी अधिकारी इस सिलसिले में विनोबाजी से मिलने आये थे। उन्होंने विनोबाजी से कहा कि सरकार की ओर से मदद पहुँचाने का काम जल्द से जल्द होगा। विनोबाजी ने एक गाँव में कहा कि सरकार मदद कर रही है, करेगी, इसमें कोई शक नहीं है। सरकार को जो करना है, वह तो वह करेगी। लेकिन सवाल यह है कि यहाँ के लोग क्या करेंगे? लोगों को भी मदद करनी चाहिये।

यात्री-दल के कुछ साथी रोज गाँव में जाते हैं, विनोबा और सर्वोदय का साहित्य और विचार घर-घर पहुँचाने का काम करते हैं, कहीं-कहीं सांत्वना देने का काम होता है। एक गाँव में एक स्कूल-मास्टर कह रहे थे—"हमारा आपस आपस में बहुत लोगों से प्रेम था, आज भी है। बुजुर्ग लोगों को झगड़ा बिलकुल पसंद नहीं था। वे कहते हैं, आजकल के जवान हमारी बात सुनते कहाँ हैं?" दूसरे गाँव में एक अनपढ़ बूढ़ा कह रही थी, "बेटी, मेरा घर जला, सामान वगैरा सब कुछ खाक हो गया। मैं बच्चों को लेकर सामने जो पहाड़ और जंगल दीखता है, वहाँ भाग गयी थी। अब वापस आयी हूँ तो मेरे गाँव के ही एक भाई ने मेरी मदद की। उसी के घर की यह खटिया है। मेरी यह नई झोपड़ी उसी की मदद से खड़ी कर रही हूँ। भगवान् आखिर मनुष्य को जगाता ही है। मनुष्य भूल जाता है, पर भगवान उसे याद दिलाता है।" दूसरी एक बहन ने कहा, "अल्लाह के राज में देर है, अंधेर नहीं। हम सब्र रखते हैं तो सुख मिलता है। बाबाजी आये हैं, तो हमारे दिल में ठंडक पहुँची है।"

बीच में एक दिन ११ मील का लम्बा फासला था। इन दिनों सूर्यनारायण का उदय भी जल्दी हो जाता है, और गरमी भी बढ़ रही है। धूल, धूप और लम्बी राह! आखिर के तीन मील ढोलक लिये बाजा लिये हुए गाँव के भाई-बहन लगातार "हरि बोल" का मंत्रोच्चारण करते रहे। विनोबाजी ने पड़ाव पर पहुँचने पर जो भाषण किया, उसमें कहा, "आज हमें थकान महसूस नहीं हुई, क्योंकि रास्ते में हम 'हरि बोल' का नाम-स्मरण सुनते आये हैं। जहाँ यह मंत्र है, वहाँ भय नहीं होना चाहिए। अगर निर्भयता नहीं आती है, तो समझना चाहिए कि हम तोते के मुआफिक मंत्र बोलते हैं, हृदय से नहीं बोलते हैं। भय से हमें भागना नहीं चाहिये। आखिर क्या होगा? हम मरेंगे। अरे भाई प्रारब्ध खत्म नहीं होता है, तब तक कोई नहीं मर सकता है। कोई मारता है, जुल्म करता है, तो भी शांति नहीं खोनी चाहिये। निर्भयता से भाई-बहनें सब खड़े हैं, नामस्मरण कर रहे हैं और मार पड़ रही है! ऐसा दृश्य दीखना चाहिये। मारने वाले के हाथ आपकी शांति देख कर रुक जायेंगे।"

इधर-उधर छोटे-छोटे पहाड़, साल के ऊँचे पेड़ और विभिन्न रंगों के फूल दीखते हैं। कहीं भी नजर जाती है, तो सृष्टि हरी-भरी दीखती है। मार्च माह खत्म हो रहा है, पर सभा के मैदान पर भी हरियाली छायी दीखती है। एक दिन घने जंगल से, ऊँची-नीची पगडंडी वाली राह काटते हुए विनोबाजी ने कहा, "एक जमाना था, जब धर्म के नाम से झगड़े होते थे। अब इन दिनों भाषा के लिये झगड़े होते हैं। कुछ दिन के बाद ये भी झगड़े खत्म हो जायेंगे और फिर लोग कहेंगे कि प्राचीन काल में जैसे प्रांत थे, नदी के अनुसार वैसे प्रांत करेंगे, नर्मदा प्रांत, ब्रह्मपुत्रा प्रांत।"

इतने में एक गाँव आया। वहाँ के पाँच छह कुत्ते इतने जोर-जोर से भूकने लगे कि आखिर विनोबाजी ने चर्चा बंद करके कहा, "देखो रे! ये हमारे स्वागताध्यक्ष हैं! इनके सामने अब हमारी कुछ नहीं चलेगी। वे कभी-कभी विनोद में कहते, "मेरी यात्रा में कभी-कभी दो कारणों से नींद में खलल पहुँचती है—देहात में कुत्ते और शहर में रेडियो। कभी कभी कुत्तों का झगड़ना देख कर कहते हैं, "यह देखो यू० एन० ओ० की सभा हो रही है।" कभी कभी कहते हैं, कुत्तों के भूकने में मुझे 'ओम' 'ओम' सुनायी देता है। आज कह रहे थे, "एक कुत्ता है। दुनिया में हजार भाषाएँ होंगी, तो हजार भाषाओं में 'कुत्ते' के हजार नाम होंगे। मेरे मन में आता है, यह 'कुत्ता सहस्रनाम' याद रख कर मैं क्या करूँगा! आखिर कुत्ता तो एक ही है।"

चम्बल में जाकर डूब मरो!

श्रीकृष्णदत्त भट्ट

चम्बल घाटी की यात्रा में एक दिन एक डाकू का दामाद विनोबा से बोला—
'मेरी फजीहत हो रही है।'
'क्या बात है भाई?'—बाबा ने पूछा।
बोला—'मेरे लिए उधर कूआँ है, इधर खाई।

मेरी पत्नी डाकू की बेटी है, इसलिए पुलिस मुझे तंग करती रहती थी। आखिर तंग आकर मैंने उसे उसकी माँ के पास भेज दिया। मैंने उससे कहा, 'तू चली जा' वह बेचारी मेरी बात मान कर चली गयी। पुलिस के सताने से छुटकारा मिला, पर अब डाकू लोग मुझे तंग करते हैं। कहते हैं कि तूने यह क्या किया, दो बच्चों वाली बीबी को घर से निकाल दिया।'

बाबा—'उसके दो बच्चे भी हैं!'

बोला—'हाँ बाबा!'

बाबा—'मुझे खुशी है कि डाकू तुम्हें तंग करते हैं! तुम हो ही इसी लायक! जो डरता है उसे डरानेवाला मिल जाता है।'

बोला—'हाँ बाबा!'

बाबा—'अब तुम क्या करोगे?'

बोला—'क्या करूँ बाबा?'

बाबा—'जाकर चम्बल में डूब मरो! तैरना आता है क्या?'

बोला—'हाँ बाबा, आता है।'

बाबा—'तो गले में पत्थर बाँध कर कूदो चम्बल में, नहीं तो गंगा में जाकर कूदो!'

बोला—'गलती हुई बाबा मुझसे।'

बाबा—'तुमको सोचना था कि तुम डर कर क्या करने जा रहे हो। जो आदमी तकलीफ से बचने के लिए अपना धर्म छोड़ देता है, वह भी कोई आदमी है! उसमें भी कोई इन्सानियत है! तुमने तकलीफ से बचने के लिए अपनी पत्नी छोड़ दी, यह तो आदमी का काम नहीं, जानवर का काम है। सोचने की बात है कि पत्नी क्या केवल भोग-विलास के लिए होती है? तुम्हारे ऐसा करने से तो गृहस्थ आश्रम ही मिट गया, मनुष्यता ही जाती रही। भला ऐसा भी किया जाता है कि मानव जीवन में मानवता न रहे, इन्सानियत न रहे! हमदर्दी न रहे, संयम न रहे, भक्ति न रहे तो वह मनुष्य ही क्या!'

(लेखक की हाल में प्रकाशित 'प्यारे भूले भाइयो' के प्रथम पुष्प: 'डरने की क्या बात है?' का एक अंश।)

मध्य प्रदेश का खादी-काम

अब संगठित मध्य प्रदेश में भोपाल राज्य, विन्ध्य प्रदेश तथा मध्य भारत भी सम्मिलित हो गये हैं। यह विशाल प्रदेश वास्तव में भारत के मध्य भाग में ही स्थित है; जहाँ कपास का काफी उत्पादन होता है, जो अधिकतर बंबई आदि प्रदेशों को निर्यात होती है। मध्य प्रदेश खादी-ग्रामोद्योग पर्षद के आँकड़ों के अनुसार प्रदेश में लगभग २० लाख एकड़ भूमि में ४ लाख बेल्स गाँठ रूई पैदा होती है। लगभग हर क्षेत्र में बुनकरों की संख्या पर्याप्त है, जो अधिकतर अभी मिल का सूत प्रयोग में ला रहे हैं। अब उन्नत अम्बर चरखे के सुलभ हो जाने के कारण अधिक सूत भी काता जा सकता है और अच्छी किस्म का सूत, जो मिल के सूत के मुकाबले का होता है, काफी मात्रा में उपलब्ध किया जा सकता है, जिसे बुनकर पसंद भी करने लगे हैं।

प्रदेश में आदिवासी क्षेत्र भी अधिक हैं, जहाँ आदिवासियों को संगठित करके उनमें वस्त्र-स्वावलंबन के आधार पर अंबर का प्रचार किया जा सकता है।

फिलहाल प्रमुख रूप से प्रदेश में खादी ग्रामोद्योग पर्षद उज्जैन, मध्य भारत खादी संघ ग्वालियर, ग्राम-सेवा समिति रायपुर, भोपाल राज्य खादी ग्रामोद्योग संघ तथा कुछ सहकारी समितियाँ एवं सघन विकास क्षेत्र द्वारा खादी उत्पादन का कार्य हो रहा है।

केवल मध्य भारत खादी-संघ के द्वारा ही सन् '५९ में ६ लाख रुपये की खादी अन्य प्रान्त से खरीदी गयी, और १ लाख की म० प्र०, से जब कि कुल बिक्री लगभग १४ लाख की हुई थी। इस प्रकार कुल खपत की आधी के लगभग खादी बाहर से खरीद करनी पड़ती है तो स्पष्ट ही है कि यदि प्रयत्न किया जाय तो कम-से-कम यह लाखों रुपयों की बाहर से खरीदी जाने वाली खादी का अधिकांश भाग प्रदेश में ही उत्पन्न हो सकता है।

प्रान्त की उल्लिखित संस्थाओं के सम्मुख इस प्रकार खादी-उत्पादन के क्षेत्र को विस्तृत करने की काफी गुंजाइश है। प्रदेश के वयोवृद्ध अनुभवी कार्यकर्ता एवं उत्साही निष्ठावान युवक कार्यकर्ता, दोनों सम्मिलित रूप से मिल कर योजनापूर्वक सारे प्रदेश के उपलब्ध साधनों का अधिकतम रूप से उपयोग करें तो निश्चय ही इस दिशा में बहुत कुछ सफलता प्राप्त की जा सकती है। रहा उपयुक्त, क्षमतावान, प्रशिक्षित एवं परिश्रमी कार्यकर्ताओं का प्रश्न, जो गाँवों में बैठ कर इस कार्य में लगें तो विभिन्न संस्थाओं एवं खादी ग्रामोद्योग आयोग द्वारा संचालित विद्यालयों द्वारा प्रशिक्षित एवं क्षेत्र में कार्य कर रहे अनुभवी कार्यकर्ताओं के समूह को नैष्ठिक वर्गों, छोटे-छोटे शिविरों आदि के द्वारा प्रशिक्षित करके अधिक उपयोगी बनाया जा सकता है एवं गाँवों से अधिक संपर्क स्थापित करके स्थानीय कार्यकर्ता भी उपलब्ध हो सकते हैं। साथ-साथ प्रशिक्षण, तकनीकी एवं आर्थिक सहायता खादी ग्रामोद्योग आयोग द्वारा उचित मात्रा में उपलब्ध हो ही रही है और अधिक भी हो सकती है।

मुख्य वस्तु है इस ओर सम्यक् रूप से प्रदेशीय स्तर पर, प्रमुख संस्थाओं के पारस्परिक सहयोग के आधार पर योजना बनायी जाने की, जिसके अनुसार ग्राम-स्वराज्य के ध्येय को सम्मुख रखते हुए प्रदेश के सारे खादी के कार्य को एकरूपता लाते हुए एक दिशा में ले जाने की ओर अग्रसर हो सके।

प्रदेश के खादी के कार्य में लगे हुए विभिन्न कार्यकर्ता इस दिशा में सोच कर आगे बढ़ें, इस आकांक्षा के साथ नम्रतापूर्वक उपरोक्त सुझाव सामने रखने का साहस कर रहा हूँ।

—सतीशचन्द्र दुबे
[खादी ग्रामोद्योग समिति, काशी]

चम्बल घाटी की डायरी

आत्म-समर्पणकारी बागियों के मुकदमे भिण्ड (म० प्र०) में चल कर अब अधिकांश आगरा (उ० प्र०) में चल रहे हैं। लश्कर में बागी लच्छी के अलावा भिण्ड की अदालतों में दिये गये दण्ड की अपीलें चल रही हैं। अपीलें सुनवाई के लिए स्वीकार हो गयी हैं। बागी रामऔतार की हुई फाँसी की सजा की अपील इलाहाबाद उच्च-न्यायालय में चल रही थी। ४ अप्रैल को इलाहाबाद हाईकोर्ट से रामऔतार फाँसी की सजा से मुक्त हुआ। इसमें बचाव पक्ष की ओर से सर्वश्री सी० एस० सरन, जे० स्वरूप और एम० एस० चतुर्वेदी ने पैरवी की।

१५ मार्च को आगरे की पिनाहट तहसील के स्याहीपुर काण्ड में धारा ३६५ के अभियोग से रामऔतार निर्दोष बरी हुए। इसमें बचाव पक्ष की ओर से *श्री के० एन० वर्मा वकील ने पैरवी की।*

१६ मार्च को कुरथरी-काण्ड में धारा ३०२ के अभियोग से मटरे निर्दोष बरी हुए। इसमें बचाव पक्ष की ओर से श्री विष्णुशंकर माथुर ने पैरवी की।

२९ मार्च को सुतारी-काण्ड में धारा ३६५ के अभियोग से मटरे निर्दोष बरी हुए। इसमें बचाव पक्ष की ओर से श्री प्रताप सिंह चतुर्वेदी ने पैरवी की।

मध्यप्रदेश के आत्मसमर्पणकारियों द्वारा उत्तर प्रदेश की सीमा में हुए अपराधों की शिनाख्त में अधिकांश गवाह बागियों को पहचानने में असमर्थ रहे। किसी-किसी ने स्पष्ट कहा, "हम तो काऊ जानत *नाहीं हमें (पुलिस) मारपीट के ले आये हैं।"*

आत्मसमर्पणकारी बागियों के परिवारों *में उनकी स्थिति,* कार्य और मानस को जानने के लिए समिति के सदस्य श्री लल्लूसिंह अधिकांश गाँवों में गये। कहीं किसी की पत्नी ने पूछा, 'कब आय हैं।' कहीं किसी के नन्हें-मुन्ने बच्चों ने सोसचों की भीतर अपने पिता के बारे में पूछताछ की।

कुछ परिवारों की कहानियाँ दर्द से भरी हैं, तो कुछ की गुण-विकास की परम्परा में उज्ज्वल पृष्ठ-सी हैं। बागी सियाराम के भाई आदिराम ने, जो २०० रु० वार्षिक के पारिश्रमिक पर गाँव के पटेल थे *गाँव में स्कूल के लिए अपना पारि*श्रमिक दान करना चाहा तो दूसरे ग्रामीण ने पटेल होकर ५०० रु० दान की बात की, तो उन्होंने पारिश्रमिक के साथ-साथ पटेली भी स्कूल के हित में छोड़ दी।

बागी लच्छी के ग्राम, लहोत में एक निर्धन बारी ने गाँव के डर की फिक्र न करते हुए लच्छी के *परिवार को अपना* घर दे दिया। इससे औरों के मन पर भी अनुकूल असर ही हुआ।

एक गाँव में बागी-पीड़ित परिवार-प्रमुख ने बन्दूक का लाइसेन्स लेने से इन्कार *किया तो विरोधियों पर बड़ा ही शान्ति*मय असर हुआ कि अब वे बदला नहीं लेना चाहते।

बागी परिवारों की अधिकांश जमीनें वापिस मिल गयी हैं। बहुतों के निवास की समस्या हल हो गयी है। अन्य कठिनाइयाँ भी दूर करने का प्रयास किया जा रहा है।

शान्ति-स्थापन की दिशा में

क्षेत्र में शान्ति सैनिक घूम रहे हैं। श्री चरण सिंह की सलाह पर डोंडरी-मुरैना के श्री देवेन्द्रसिंह *पुलिस के भय से भागे* फिरने के बजाय हाजिर हो गये। माता का पुरा नामक ग्राम में हाल ही में एक हत्या-काण्ड हो गया था। उसके सब अपराधी स्वेच्छा से न्यायालय में हाजिर हो गये। सुरमति गाँव के श्री महाराजसिंह निर्भय होकर अपने घर रहने लगे हैं।

शिविर

भरतपुर (राजस्थान) जिले के राजाखेड़ा कस्बे में १८-१९ मार्च को श्री बद्रीप्रसाद स्वामी, संयोजक शान्ति-सेना मंडल *राजस्थान के संचालकत्व और में श्री भवानी* भाई के संयोजकत्व में एक कार्यकर्ता-शिविर आयोजित हुआ।

समिति की बैठक

चम्बल घाटी शान्ति-समिति की दसवीं बैठक २१, २२ मार्च, '६१ को स्वामी कृष्णस्वरूप की अध्यक्षता में उत्तर प्रदेशीय *सर्वोदय-मण्डल कार्यालय, कटिया मामू* भानजा, आगरा में हुई। हाल ही में विनोबाजी के पास से लौटे श्री महावीर सिंह भदौरिया और श्री बाबूलाल मित्तल ने बाबा की सलाह बतायी कि (१) जेल में बागी खुश रहने चाहिए। उन्हें घर की चिन्ता न रहे। (२) उनके घर वालों की *देखरेख व विरोधियों के बीच उनकी* रक्षा के लिए दो-चार गाँवों के बीच एक-एक दो कार्यकर्ता रहें। (३) बागियों पर अन्याय न होने पाये। अद्धेय श्री जयप्रकाश नारायण की उच्च स्तरीय चर्चा व सर्व सेवा संघ, प्रबंध-समिति के सुझावों से समिति अवगत हुई। तदनुरूप कार्यक्रम तय हुआ। दिसम्बर '६० तक के पिछले वर्ष के आय-व्यय की पुष्टि हुई।

सम्मेलन

मुरैना नगर में प्रदर्शनी पंडाल में ३१ मार्च, '६१ को स्वामी कृष्णस्वरूप की अध्यक्षता में शान्ति-सम्मेलन का आयोजन हुआ, जिसमें सर्वश्री लक्ष्मीचन्द जैन, रामचन्द्र मेहरोत्रा, महावीर सिंह और स्वामी कृष्णस्वरूप के भाषण हुए।

चैत्र प्रतिपदा सं० २०१८ को चम्बल घाटी मासिक बुलेटिन के प्रथम अंक का प्रकाशन हुआ। इसका वार्षिक शुल्क (डाक-व्यय) केवल १ रु० है।

—गुरुशरण

नागौर (राजस्थान) जिले में सर्वोदय-शिविर और सम्मेलन

नागौर जिला सर्वोदय-मंडल की ओर से २४ मार्च से २६ मार्च तक नागौर में सर्वोदय-शिविर व सम्मेलन बड़े उत्साह के साथ सम्पन्न हुआ। साथ में खादी ग्रामोद्योग की एक छोटी-सी प्रदर्शनी का आयोजन नागौर जिला खादी-ग्रामोद्योग संघ ने किया। शिविर का कुलपतित्व श्री जवाहरलाल जैन एवं श्री बद्रीप्रसाद स्वामी ने किया। सम्मेलन की अध्यक्षता श्री सिद्धराज ढड्ढा ने तथा प्रदर्शनी का उद्घाटन राज्य विधान-सभा के अध्यक्ष श्री रामनिवास मिर्धा ने की। में जिले के सभी रचनात्मक कार्यकर्ताओं ने भाग लिया। पड़ोसी कुछ जिले के प्रमुख सर्वोदय कार्यकर्ता श्री बनवारीलाल बेरी भी सम्मिलित हुए। शिविर *में खास तौर पर विकेन्द्रित राज्य एवं अर्थव्यवस्था और जिला की तात्कालिक समस्याओं* पर चर्चा हुई तथा उस चर्चा के आधार पर सम्मेलन में एक निवेदन भी प्रस्तुत किया गया।

इस अवसर पर जिला सर्वोदय-मंडल व खादी-ग्रामोद्योग संघ की बैठकें भी हुई जिनमें आगामी वर्ष के लिये कार्यक्रम बनाया गया, जिसके अनुसार इस जिले में दाता व आदाताओं के सहयोग द्वारा कुछ क्षेत्रों में भूमि-समस्या को सघन रूप से हल करने का प्रयास किया जायेगा। जिले में ग्रामदानी व ग्रामसंकल्पी गाँवों में ग्राम-स्वराज्य इकाइयाँ विकसित करने का प्रयास किया जायेगा। मकराना पंचायत समिति क्षेत्र में पंचायत राज की सफलता के लिए सर्वोदय-दृष्टिकोण से सघन कार्य किया जायेगा।

नागौर जिला-सर्वोदय सम्मेलन ने २६ मार्च को जो निवेदन प्रकट किया, वह यहाँ दे रहे हैं :

"भूदान-आन्दोलन को शुरू हुए दस साल होने जा रहे हैं। नागौर जिले में यह आन्दोलन सन् '५३ में शुरू हुआ, जिसके फलस्वरूप ५८,२०६ बीघा भूमिदान तथा २१ ग्रामदान संकल्प हुए। प्राप्त कुल भूमि का वितरण किया जा चुका है और ग्रामदानी ग्रामों में ग्रामदान अधिनियम के अन्तर्गत ग्राम-सभाएँ स्थापित करवाने का कार्य जारी है। डीडवाना तहसील के २ ग्राम, रायसिंहपुरा व श्रीरघुनाथपुर में गाँव-सभाएँ स्थापित हो भी गयी हैं।

पिछले ७ वर्षों में जिले में भूदान और ग्रामदान के इस विचार-प्रचार के जरिये भूमि-वितरण का वातावरण बन चुका है, परन्तु भूमिहीनों की समस्या अभी तक हल करना बाकी है। कानून से यह समस्या हल होना संभव नजर नहीं आ रही है। अत: भूदान-आन्दोलन के जरिये ही भूमि-समस्या हल की जा सकती है। भूमि की व्यक्तिगत मालकियत समाप्त करने के लिये जागीरदारी प्रथा को समाप्त किया गया, परन्तु उसकी समाप्ति के बाद व्यक्तिगत मालकियत और व्यापक रूप से प्रबल हुई है। इस भावना को रोकने में कानून असमर्थ है, इसलिए भूमि की मालकियत गाँव-समाज की हो, इसके लिये ग्रामनिवासी ग्राम-ग्राम में ग्रामदान-संकल्प के जरिये ही भूमि की गाँव-मालकियत घोषित कर सकते हैं। ऐसी स्थिति में भूमि की कुल व्यवस्था और उसका लगान गाँव-समाजों के हाथ में होना चाहिये। यह आज के समय समाज का तकाजा है, ऐसा यह सम्मेलन महसूस करता है।

राजस्थान में लोक-विकेन्द्रीकरण की योजना को पिछले २ साल से शुरू हुई है, वह विकेन्द्रित समाज-रचना की ओर एक सही कदम है। परन्तु जब तक गाँव-गाँव में लोक-शिक्षण द्वारा लोक-शक्ति को जागृत नहीं किया जायेगा तथा गाँव-गाँव में ग्राम-समाजों की राय से पंचायतें पक्षमुक्त होकर सर्वसम्मत कार्य नहीं करेंगी, तब तक पंचायत राज्य प्रजाराज्य में न तो परिणत होगा और न सफल ही होगा। इसकी सफलता के लिये आर्थिक विकेन्द्रीकरण भी उतना ही आवश्यक है, क्योंकि जब तक गाँव-गाँव अपनी आवश्यक वस्तुओं के लिये स्वावलम्बी नहीं होगा, तब तक ग्राम-स्वराज्य अधूरा साबित होगा।

आजकल क्या गाँव और क्या शहर, जाति और सम्प्रदाय और विभिन्न राजनैतिक दलों से तो छिन्न-भिन्न हो ही रहे हैं, परन्तु साथ ही साथ समाज में कुछ ऐसे कारण भी दिन प्रति-दिन बढ़ते जा रहे हैं, जिनसे समाज का निरन्तर नैतिक पतन हो रहा है, जिनमें मुख्यतया अश्लील पोस्टर, गाने, विज्ञापन, साहित्य, सिनेमा, भोजन की सामग्री में मिलावट आदि हैं, जिनसे समाज को बचाने के लिए सब लोगों को सामूहिक रूप से शीघ्र कदम उठाना अनिवार्य है।

नागौर जिले के बड़े नगर और कस्बों में जो व्यापक जल-संकट, भूमिहीनता और बेकारी की मुख्य समस्याएँ हैं, उनको हल करने में सब रचनात्मक कार्यकर्ता, सर्वोदय संगठन और समाज को मिल-जुल कर गांधी और विनोबा के बताये अहिंसक मार्ग से प्रयास करना चाहिये, ताकि [illegible] का यह जिला सर्वोदय समाज-रचना के लिये अग्रसर हो सके।"

वाराणसी में अशोभनीय-विज्ञापन-अभियान गोष्ठी

दिनांक १८ मार्च, '६१ को सायंकाल गांधी-तत्त्व-प्रचार विभाग, वाराणसी और सर्वोदय-मण्डल के सम्मिलित प्रयास से टाउनहाल में भारत में चल रहे पोस्टर-आन्दोलन को अधिक क्रियाशील बनाने के लिए डा० सम्पूर्णानन्दजी की अध्यक्षता में एक सार्वजनिक विचार-गोष्ठी हुई, जिसमें उत्तर प्रदेश के सर्वोदयी नेता तथा नगर के विचारवान् शिक्षक बन्धु एवं अ० भा० शांति-सेना विद्यालय के भाई-बहन उपस्थित थे।

कार्यवाही प्रारम्भ करते हुए उ० प्र० सर्वोदय मण्डल के अध्यक्ष मा० सुन्दरलालजी ने नगर में तथा अ० भा० स्तर पर चल रहे आन्दोलन पर प्रकाश डालते हुए कहा कि आज अशोभनीय विज्ञापनों को हटाने के सम्बन्ध में सारे देश में एक जन-शक्ति की लहर दौड़ गयी है। सभी लोग इन अश्लील चित्रों को देख कर अनुभव करते थे, किन्तु मूक दर्शक की भाँति कुछ कह नहीं सकते थे। होता यह है कि जो कुछ सिनेमा के अन्दर हाल में हम देखते हैं वह तात्कालिक मनोरंजन होता है और जो कुछ सामने बार बार आता रहता है उसका असर मानस पर पड़ता ही है। इन्दौर में जब बाबा थे तब उन्हें स्वच्छ दीवार और स्वच्छ विचार की बात सूझी और नागरिकों को इन भद्दे चित्रों को हटा देने के लिए प्रोत्साहित किया। इन्दौर के सिनेमा-मालिकों ने अशोभनीय प्रदर्शन न करने का आश्वासन दिया। वहीं से एक वातावरण बना और सार्वजनिक स्थानों से अशोभनीय विज्ञापन हटाये जाने लगे। उत्तर प्रदेश में भी पोस्टर निर्णायक समितियाँ बनीं और उनकी मदद से बहुत-सा काम हुआ। यहाँ काशी में सिनेमा-मालिकों ने थोड़ी-सी आपत्ति स्वीकार की, किन्तु सदा सहयोग ही देने का आश्वासन दिया है।

हमारा कभी दुराग्रह नहीं रहा है। बाबा ने भी कहा है कि जो अशोभनीय हो, उसमें रंग पोत दिया जाय या उखाड़ कर अलग किया जाय। उसी संबंध में शिक्षण के तौर पर यहाँ एक मौन जुलूस निकाला गया। साथ में सुसंस्कृत वाक्य लिखे हुए बड़े-बड़े (प्ले कार्ड्स) थे। उसका बड़ा अच्छा असर काशी वालों पर पड़ा तथा लोगों की पूर्ण सहानुभूति मिली।

श्री करण भाई ने कहा कि हम आज यहाँ स्पष्ट चर्चा के लिए ही इकट्ठे हुए हैं। विनोबाजी के मन में एक टीस है। वह कहते हैं कि काशी में कई बार इस संबंध में चर्चा हुई, किन्तु इसका प्रत्यक्ष असर कुछ नहीं दिखायी पड़ रहा है। जहाँ श्री भगवानदासजी जैसे महान् विचारक रहे हों, जहाँ डॉ० सम्पूर्णानन्दजी रहते हैं, वहाँ ये चार बातें होनी चाहिए—

(१) काशी नगरी स्वच्छ नगरी हो, घाट घाट व गली-गली, धर्मशालाएँ, पाठशालाएँ, मन्दिर, मस्जिद गुरुद्वारा सभी पूर्णतया साफ हों।

(२) पूर्ण शराबबन्दी हो।

(३) सुभाषित वाक्य जगह जगह लिखे जायें, जिनसे अच्छा असर बच्चों पर पड़े।

(४) गंदी तस्वीरों को हटाया जाय।

अखबारों में छपा था कि देश में शराब की सबसे अधिक खपत काशी तथा विदेशी शराब की बिक्री लखनऊ में है। ऐसा क्यों? जैसा कि पूर्व वक्ता महोदय ने कहा कि शिव-पार्वती जैसे मातृवत् चित्रों के प्रति कभी विचार दूषित हो ही नहीं सकता। लेकिन कहना यह है कि वही शिव के साथ पार्वती का, जिनको देख कर श्रद्धा आने आप उमड़ पड़ती है, ऐसा भद्दा नग्न प्रदर्शन किया जाय, जिसे देख कर सुसंस्कृत विचार बने ही नहीं। इसे विनोबाजी ने (फ्री ऐण्ड कम्पलसरी एजुकेशन) कहा है। इसका विरोध होना चाहिए।

बरेली और कानपुर में अधिक व्यापक रूप से अश्लील विज्ञापनों को रोकने का प्रयास चल रहा है। लखनऊ नगर पालिका ने भी अपने नियमों के अनुसार प्रदर्शन-सामग्री को 'सेन्सर' करके ही लगाने का निश्चय किया है। हम चाहते हैं कि काशी महापालिका भी, जिसके नगर-प्रमुख यहाँ बैठे हैं, इस संबंध में एक ठोस कदम उठा कर भारतीय संस्कृति पर होनेवाले सीधे कुठाराघात का अतिक्रमण करें और अपनी महानता का परिचय दें।

प्रो० दूधनाथ चतुर्वेदी ने कहा कि विनोबाजी के इन्दौर में कहने के बाद से हमारी यह कोशिश रही है कि हम अपनी संस्कृति के प्रति यह अत्याचार बरदाश्त नहीं करेंगे। प्राचीन काल से काशी को भारतीय संस्कृति का केंद्र माना गया है। बाहर से लोग अपनी कल्पना के अनुसार काशी का दर्शन करने आते हैं, किन्तु यहाँ धार्मिक भावना के विपरीत कृत्रिम भोग-विलास तथा आधुनिक फैशन में लिपटी काशी को देख कर आत्म शांति के बजाय चित्त-क्लान्ति लेकर ही वापस जाते हैं। शराब की गन्दगी तथा बुराइयों से यहाँ का वातावरण दूषित हो गया है। जो चीज गन्दी है उसे एकदम हटा दिया जाय। इस संबंध में किसी से पूछना या सहानुभूति प्राप्त नहीं करना है।

श्री सीताराम मिश्र (प्रधानाचार्य डी० ए० वी० कालेज) ने अशोभनीय की व्याख्या करते हुए कहा कि सार्वजनिक स्थानों पर लगे गन्दे पोस्टर या अवांछनीय प्रदर्शन जनता को नहीं बरदाश्त करने चाहिए। अशोभनीयता केवल स्त्रियों के सम्बन्ध की ही नहीं, पुरुषों के भी ऐसे गलत चित्र प्रकाशित होते हैं, जो वास्तविकता से बहुत दूर रहते हैं, जिसको कोई सभ्य पुरुष नहीं मान सकता।

आपने नग्न की परिभाषा बताते हुए कहा कि संसार में एक बनने के लिए कुछ सीमाएँ भी होनी चाहिए। यह अशोभनीय-विरोधी आन्दोलन हमारी संस्कृति का प्रतीक है, किन्तु प्रश्न है आन्तरिक चरित्र के दृष्टिकोण का। यदि कोई व्यक्ति वास्तव में सभ्यता और संस्कृति का पोषक है, तब तो यह चल सकेगा। वरना क्या भावी पीढ़ी को हम बक्स में बन्द कर रखेंगे? तात्पर्य यह कि आन्दोलन की जड़ में अन्दरूनी चरित्र के शुद्ध दृष्टिकोण की बड़ी आवश्यकता है।

श्री कुंजबिहारी गुप्त (नगर प्रमुख, वाराणसी) ने कहा कि सिनेमा के अशोभनीय पोस्टरों का विज्ञापन सचमुच लज्जास्पद है। हमने अपनी संस्थाओं द्वारा गंदे कैलेण्डरों के प्रकाशन में रोक लगाने का प्रयास किया है। ऐसी स्थिति में जब तक सामाजिक दृष्टिकोण नहीं बदलेगा, तब तक कोई भी काम पूरा होनेवाला नहीं है। यहाँ की हर दीवार पर सुभाषित-वाक्य लिखे होने चाहिए और इसकी व्यवस्था हम करेंगे।

उन्होंने आगे बताया कि

> अभी जब महारानी एलिजाबेथ तथा प्रिंस फिलिप यहाँ आये थे, नौका-विहार करते समय मुझसे उन्होंने कहा कि घाटों पर किसी भी प्रकार के पोस्टर तथा विज्ञापन न लगने चाहिए। आप नगर महापालिका में नियम बदल कर इसकी व्यवस्था करें।

उनके सामने शोभनीय या अशोभनीय पोस्टर की बात तो नहीं थी, किन्तु धार्मिक स्थानों में इस पोस्टरबाजी से क्या संबंध? मुझे यह विचार जँच रहा है। मैं इस अशोभनीयता को मिटाने में कसर न उठा रखूँगा।

इसके बाद पोस्टर विरोधी आन्दोलन की संभावनाओं पर रुचि रखने वाले वक्ताओं ने अपने विचार व्यक्त किये।

अन्त में डा० सम्पूर्णानन्दजी ने इस आन्दोलन की सफलता की कामना करते हुए कहा कि "जिस विषय पर आज यहाँ विचार विमर्श हुआ है, इसके सम्बन्ध में मैं २५-३० वर्ष पहले से सोचता रहा हूँ। लेकिन किसी दृढ़ निश्चय पर नहीं पहुँच सका था। यह उतना आसान नहीं है, जितना लोग समझते हैं। मैं तो जितना ही इसकी तह में पहुँचता हूँ, उतनी ही जटिलता दृष्टिगोचर होती है। अश्लील शब्द का प्रयोग व्यापक रूप में होता है लेकिन अश्लील शब्द का पर्याय साहित्यकारों ने स्त्री तथा पुरुष के यौन सम्बन्धों से लगाया है। लेकिन कुछ ऐसा भी होता है, जो यौन सम्बन्ध से पृथक् होते हुए भी भोग्य रहता है।

आपने कालिदास के 'कुमार सम्भव' में शिव तथा पार्वती चरित्र को चित्रित करने पर अशोभनीय बताते हुए कहा कि क्या आज कोई कह सकता है कि कालिदास गन्दी चीजों के प्रचार करने वाले थे? कौन है ऐसा, जो शेक्सपियर को अश्लील प्रचारक कह सके? हाँ, यह बात सही है कि 'कुमार सम्भव' में वर्णित नखशिख-वर्णन को यदि कोई कलाकार अपने ढंग से चित्र में उतारेगा, तो वह अश्लील अवश्य होगा। यह कालिदास या शिव-पार्वती की कमी नहीं, कलाकार का दृष्टिकोण होगा। जहाँ कला की बात आती है, विश्व के प्रतिष्ठित कलाकारों ने जो चित्र विभिन्न स्थानों पर निर्मित किये हैं, जिनमें धार्मिक भावना समायी है, कोई ऐसा भी है, जिसको देख कर विचार दूषित हो जायें। यह आन्दोलन बड़ा ही कठिन तथा मनोवैज्ञानिक आन्दोलन है। उसकी गहराई में जाकर यथापेक्षित सहयोग सबको करना चाहिए।

लोग अक्सर यूरोप की बात करते हैं। अपने देश की तारीफ तथा यूरोप की बुराई करते हैं, किन्तु योरोप से कई बातों में भारत अभी पीछे है। आध्यात्मिकता तो पर्याप्त मात्रा में है, किन्तु भगवान् राम, कृष्ण, सीता के नाम पर जो व्यापार यहाँ होता है, मन्दिरों पर विज्ञापन लगाये जाते हैं वह यूरोप में नहीं मिलेगा। किसी चर्च की दीवार पर विज्ञापन या पोस्टर नहीं मिलेगा, ईसा के नाम का व्यापार में कहीं प्रयोग नहीं हो सकता। परन्तु भारत में न तो एक राम हैं, न एक पन्थ है। किस-किस पर विरोध की छाप लगायी जायगी? यहाँ तो एक के भगवान् का दूसरे के द्वारा गन्दा प्रचार किया जाता है। पश्चिमी देशों से आये चित्रों को यदि हम देखें तो उनमें धार्मिकता की पूरी रक्षा के साथ साथ प्रेरणा प्रदान करने की पूरी क्षमता विद्यमान है। कुछ चित्र तो ऐसे भी हैं, जिनसे समाज को प्रेरणा मिलेगी। अतः इस कार्य के लिए आवश्यक है कि हम मानव को जगायें, उसकी चेतना को उद्बुद्ध करें। सांस्कृतिक स्तर को नीचा न होने दें। हमारे देवताओं का जब कैलेन्डर के चित्र के रूप में सार्वजनिक अपमान होता है, तब हम उसे सहन न करें।

इस सन्दर्भ में एक बात जो सबसे महत्त्वपूर्ण विचारणीय है, वह यह कि जनता का सामाजिक दृष्टिकोण परिवर्तित करना है और लोगों के चित्त पर जो अनावश्यक रूप से जबरदस्ती अनैतिक दबाव पड़ रहा है, उसे समूल हटा देना है।"

अंत में अध्यक्ष तथा अन्य उपस्थित लोगों के प्रति आभार प्रदर्शित कर के गोष्ठी विसर्जित की गयी।

['गांधी के पथ पर' से साभार]

मासिक चिट्ठियाँ

बिहार की चिट्ठी

विनोबाजी की यात्रा से बिहार में भूदान-आन्दोलन के लिए जो एक वातावरण बना, उससे लाभ उठा कर 'प्रति बीघा एक कट्ठा' के आधार पर इस आन्दोलन को चलाने के निमित्त गत १३ मार्च को बिहार सर्वोदय-मंडल के तत्वावधान में एक सर्वदलीय सभा पटना नगर में हुई। सभा की अध्यक्षता बिहार के नये मुख्य मन्त्री पंडित विनोदानन्द झा ने की। सभा में कांग्रेस, प्रजा-समाजवादी, साम्यवादी, जनसंघ, झारखंड आदि पक्षों के प्रतिनिधि और नेता तथा बिहार विधान सभा एवं बिहार विधान परिषद के लगभग २०० सदस्य सम्मिलित हुए। सर्वोदय-परिवार की ओर से सर्वश्री जयप्रकाश नारायण, ध्वजाप्रसाद साहू (सदस्य खादी-कमीशन), रामदेव ठाकुर (अध्यक्ष, बिहार खादी-ग्रामोद्योग संघ), वैद्यनाथ प्रसाद चौधरी (मंत्री, बिहार भूदान-यज्ञ कमिटी), सरयूप्रसाद (संचालक, गांधी स्मारक निधि), श्यामसुन्दर प्रसाद (संयोजक, बिहार सर्वोदय मंडल) प्रभृति नेता सम्मिलित हुए।

आरम्भ में श्री श्याम बाबू ने संयोजक की हैसियत से सभा के उद्देश्य की चर्चा करते हुए विनोबाजी की प्रति बीघा में एक कट्ठे की माँग पर प्रकाश डाला। श्री जयप्रकाशजी ने भूदान-आंदोलन के आधारभूत सिद्धान्तों की व्याख्या करते हुए सभी पक्षों के लोगों से अपील की कि वे विनोबाजी की गई माँग की पूर्ति के लिए आवश्यक कदम उठायें। श्री जयप्रकाशजी के सुझाव पर प्रादेशिक स्तर पर ३० सदस्यों की एक सर्वपक्षीय भूप्राप्ति समिति गठित की गयी। समिति को और भी सदस्य निर्वाचित करने का अधिकार दिया गया। बिहार सर्वोदय-मंडल के संयोजक श्री श्याम बाबू समिति के संयोजक नियुक्त हुए।

इस समिति की प्रथम बैठक गत २० मार्च को बिहार सर्वोदय-मंडल के कार्यालय में हुई। बैठक में आगामी १ मई से 'बीघे में कट्ठा' के आधार पर एक प्रान्तव्यापी अभियान चलाने का निर्णय हुआ। तदनुसार विभिन्न दलों के नेताओं के दौरे प्रान्त भर में होने वाले हैं। श्री जयप्रकाशजी ने स्वयं २२ मई से २७ मई तक भिन्न-भिन्न जिलों में इस अभियान का शुभारंभ करने के लिए समय दिया है। आशा है, इस अभियान से बिहार द्वारा संकलित ३२ लाख एकड़ भूमि के लक्ष्यांक की पूर्ति की दिशा में एक जोरदार कदम उठ सकेगा।

विनोबाजी के जाने के बाद पटना में अशोभनीय सिनेमा चित्रों एवं विज्ञापनों के विरुद्ध चलाये गये आन्दोलन की अच्छी प्रगति हुई है। पटना नगर-निगम का भी ध्यान इस प्रश्न की ओर आकर्षित किया गया है और निगम की ओर से इस विषय में कार्रवाई करने का सोचा गया है। इस काम को विशेष चालना देने के लिए एक अशोभनीय पोस्टर-विरोधी समिति गठित की गयी है, जिसके सदस्यों में सात सिनेमा-मालिक तथा नगर के छः गण-मान्य नागरिक हैं। बिहार सर्वोदय-मंडल की ओर से मंडल के कार्यकर्ता श्री रामानंद सिंह समिति के एक सक्रिय सदस्य हैं।

पटना नगर के अन्तर्गत पटना सिटी क्षेत्र में सर्वोदय मित्र-मंडल के तत्वावधान में अशोभनीय चित्रों के विरुद्ध एक जोरदार अभियान पिछले कई महीनों से चलाया जा रहा है। गत १९ मार्च को नगर के समाज-सेवियों, सर्वोदय-मित्रों तथा 'गन्दे चित्र हटाओ समिति' के सदस्यों की एक संयुक्त बैठक हुई, जिसमें नगर के उच्च एवं माध्यमिक विद्यालयों में अशोभनीय चित्र-विरोधी प्रचार-कार्य करने का निश्चय किया गया। सिनेमा-मालिकों से मिलने के लिए एक समिति बनायी गयी और पटना नगर-निगम से निवेदन किया गया कि वह अशोभनीय चित्रों एवं विज्ञापनों के विरुद्ध सक्रिय कदम उठाने के अपने आश्वासन को पूरा करे।

पिछले कुछ महीनों में ग्रामदान-आंदोलन की एक अच्छी प्रगति हुई है। विगत जनवरी से मार्च तक १० नये ग्रामदान घोषित हुए हैं। इनमें से दो गाँवों में भूमि की पुनर्व्यवस्था भी हो चुकी है। आवश्यक जाँच के बाद तीन गाँव बिहार सर्वोदय मंडल द्वारा स्वीकृत परिभाषा के अनुसार ग्रामदानी मान्य किये गये हैं। पुराने ग्रामदानी गाँवों में से २१ गाँवों में जमीन की बन्दोबस्ती बिहार भूदान-यज्ञ कमेटी के द्वारा की गयी है और आगे के एक वर्ष के लिए ९५ गाँवों के निर्माण-कार्य की योजनाएँ बनायी गयी हैं। गत २४ मार्च को हजारीबाग जिले के अंतर्गत झुमरी तिलैया में एक भूमि प्रमाणपत्र वितरण समारोह का आयोजन बिहार हरिजन सेवक संघ के मन्त्री श्री नगेन्द्र नारायण सिंह की अध्यक्षता में हुआ, जिसमें जयनगर थाने के गाँवों के ५७ भूमिहीन परिवारों के बीच करीब ६४ एकड़ भूमि के प्रमाण-पत्र वितरित किये गये।

इस अवसर पर एक भूदान किसान-संमेलन भी हुआ। गत ३० मार्च से २ अप्रैल तक पटना नगर में इस प्रदेश की प्रमुख रचनात्मक संस्थाओं की महत्त्वपूर्ण बैठकें हुईं। ३० मार्च को बिहार सर्वोदय मंडल की कार्य-समिति, ३१ मार्च को बिहार भूदान यज्ञ कमिटी, १ अप्रैल को बिहार खादी-ग्रामोद्योग संघ के नियामक-मंडल तथा २ अप्रैल को गांधी स्मारक निधि बिहार की श्री रामदेव ठाकुर तथा श्री वैद्यनाथ प्रसाद चौधरी की अध्यक्षता में हुईं। इन बैठकों के अतिरिक्त उक्त संस्थाओं के प्रमुख लोगों के बीच आंदोलन की गतिविधि एवं विभिन्न समस्याओं के सम्बन्ध में अनौपचारिक ढंग से चर्चाएँ भी हुईं। इन बैठकों और चर्चाओं से कुछ ऐसे महत्त्वपूर्ण निर्णय निष्पन्न हुए हैं, जिनका परिणामकारी असर आन्दोलन के भावी स्वरूप एवं उसकी गतिविधि पर पड़ने की संभावना है।

गत २०-२१ मार्च को महिला चरखा समिति, जो इस प्रदेश की एक पुरानी एवं प्रतिष्ठित महिला-संस्था है, का वार्षिक समारोह सोत्साह संपन्न हुआ। प्रथम दिन के समारोह की अध्यक्षता बिहार के भूतपूर्व शिक्षामंत्री आचार्य बदरीनाथ वर्मा ने तथा दूसरे दिन की अध्यक्षता बिहार भूदान-यज्ञ कमिटी के चेयरमैन श्री गौरी शंकर शरण सिंह ने की। समारोह में पटना नगर की विभिन्न रचनात्मक संस्थाओं के प्रतिनिधि शामिल हुए। समिति के स्थायी अध्यक्ष श्री जयप्रकाश नारायण और श्रीमती प्रभावती ने आगत अतिथियों का अभिनन्दन किया। इस अवसर पर समिति द्वारा संचालित बाल-मन्दिर के बच्चों के द्वारा सांस्कृतिक मनोरंजन भी हुआ।

—सच्चिदानंद

---

३ दिसम्बर क्यों?

इस बार विनोबा ने बिहार के सामने यह कार्यक्रम रखा कि इस प्रान्त में उनकी पिछली यात्रा के समय ३२ लाख एकड़ जमीन भूदान में हासिल करने का जो संकल्प किया था, उसमें अभी करीब १२ लाख एकड़ की कमी है वह इस बरस "बीघे में कट्ठा" के हिसाब से हर भूमिवान से दान प्राप्त करके पूरी करनी चाहिए। इस काम को पूरा करने की अवधि उन्होंने ३ दिसम्बर मानी है।

३ दिसम्बर को श्रद्धेय राजेन्द्र बाबू का जन्म-दिन है। यह दिन विनोबा ने क्यों चुना, यह पूछने पर उन्होंने कहा :

"इस काम के लिए ३ दिसम्बर की तारीख कैसे सूझी यह मैं भी नहीं कह सकता हूँ। पूज्य पुरुषों की पूजा समाज की उन्नति का बहुत बड़ा साधन है। अगले साल राष्ट्रपति आपके पास मुक्त होकर आयेंगे ऐसा मान लेना चाहिए। इस काम से आप जो उनका स्वागत करेंगे उससे बेहतर स्वागत दूसरा नहीं होगा।"

धनबाद जिले का कार्य-विवरण

१० मार्च को जिला सर्वोदय-मंडल की बैठक हुई। बैठक में लोक-सेवकों के अलावा जिला कांग्रेस के अध्यक्ष और एक एम० एल० ए० भाई दूसरे सर्वोदय-मित्रों के साथ उपस्थित थे।

झरिया अंचल में सघन रूप से सर्वोदय-पात्र का काम करने का निश्चय हुआ। यहाँ सर्वोदय मित्र-मंडल बना है और अधिक संख्या सर्वोदय-पात्र चल रहे हैं। इनकी आय से एक पाठशाला चल रही है, जिसमें ६५ विद्यार्थी हैं।

अशोभनीय पोस्टरों को हटाने के लिये एक उपसमिति का गठन हुआ, जो सब सिनेमा-मालिकों को पत्र द्वारा इस आन्दोलन में सहयोग देने का आवाहन करेगी और पत्र देने के १५ दिन बाद से सीधी कार्रवाई करेगी।

६ अप्रैल से १२ अप्रैल तक पदयात्रा चली। ६ गाँव में ग्राम-स्वराज्य की घोषणा पढ़ी गयी। उपस्थित ग्रामवासियों ने चरखा अपनाने और उसके चारों ओर ग्रामस्वराज्य खड़ा करने का वचन दिया। चरखे के प्रदर्शन से लोग प्रभावित हुए और स्वयं सूत कात कर कपड़ा बनाने से कितना सस्ता कपड़ा मिल सकता है इस ओर आकर्षित भी हुआ। परन्तु गाँवों में आलस्य ने घर कर लिया है। सस्ता कपड़ा मिलने का प्रलोभन भी इस आलस्य को नहीं हटा सकता। इसे हटाना ही गाँव में करने का पहला काम है। इसी उद्देश्य से गाँवों में यात्रा दोहराने का निश्चय किया है।

दो दान-पत्रों द्वारा आठ कट्ठा जमीन भी मिली है।

—शीतलप्रसाद तायल

चारसूत्रीय कार्यक्रम

कानपुर के आर्य नगर क्षेत्र को सर्वोदय-क्षेत्र बनाने के लिए वहाँ के कार्यकर्ताओं ने निम्न चार मुद्दों पर विशेष जोर देने का निश्चय किया है, जो अन्य शहरों के लिये भी उपयोगी हो सकते हैं।

(१) अपनी दीवालों तथा दूकानों आदि में गन्दे और अशोभनीय पोस्टर आदि नहीं लगायेंगे, न लगाने देंगे।

(२) अपने घर, गली और सड़क को साफ रखने तथा परिवार के लोगों व पड़ोसियों को साफ रखने के लिए तैयार करेंगे।

(३) आपसी मनमुटाव, झगड़े व मुकदमेबाजी न करेंगे और हो जाने पर प्रेम से मुहल्ले के बुजुर्गों की मदद से निपटा लेंगे। पुलिस व अदालत की जरूरत न पड़ने देंगे।

(४) अपने पड़ोस के बच्चे, बूढ़े, बीमार और विधवाओं को शिक्षा, सेवा, चिकित्सा तथा सहायता पहुँचाने का प्रयत्न करेंगे।

देश के कोने-कोने में 'ग्राम-स्वराज्य दिवस' आयोजित

सर्व सेवा संघ के प्रस्ताव के अनुसार ६ से १३ अप्रैल तक गाँव-गाँव में 'ग्राम-स्वराज्य दिवस' और सप्ताह मनाया गया। इस अवसर पर जगह-जगह ग्राम-स्वराज्य के घोषणा को सामूहिक रूप से पढ़ा गया। इसके अलावा प्रभात फेरी, पदयात्रा, श्रमदान, सफाई-कार्य, सूत्रयज्ञ, प्रदर्शनी आदि कार्यक्रम हुए। सभाओं में ग्राम-स्वराज्य की आवश्यकता और महत्ता पर प्रकाश डाला गया। प्राप्त समाचारों से मालूम होता है कि ग्रामस्वराज्य के कार्यक्रमों से गाँवों में उत्साह का नवसंचार हुआ है। विभिन्न स्थानों से प्राप्त समाचारों का संक्षिप्त विवरण यहाँ दे रहे हैं।

ग्राम स्वावलंबन सघन क्षेत्र के तत्त्वावधान में वारिसलीगंज (गया) अंचल में ग्रामस्वराज्य दिवस धूमधाम से मनाया गया। लालबिगहा, अफपड, बलवापर, कतहा, कोचगाँव, खिरभोजना, थालपोश, गोड़ापर और पैंगरी गाँव के ग्रामीणों ने ग्राम इकाई के आधार पर वस्त्र-स्वावलंबन का संकल्प लिया। ग्रामोद्योग समितियाँ, बनायीं।

बिहार खादी-ग्रामोद्योग संघ, हाजीपुर (दरभंगा) से छह छह कार्यकर्ताओं की दो टोलियाँ दो दिशाओं की ओर गाँव-गाँव ग्रामस्वराज्य का प्रचार करने निकलीं। ४६ मील की पदयात्रा में दस कट्ठा भूदान मिला। कयोटी ग्राम पंचायत ने पाँच और ६ खादी-काम के लिए और गाँव की रेलसी की कटाई के लिए दो सौ रुपये दिये। इसके अतिरिक्त ग्राम-पंचायत के मुखिया श्री हरिनारायण दास ने पचास लोगों को परम्परागत चरखे और एक सेर रुई दान रूप में दी।

मुजफ्फरपुर से पन्द्रह मील दूर पोखरा गाँव में आयोजित सभा में श्री ध्वजाप्रसाद साहू ने ग्रामस्वराज्य की आवश्यकता पर प्रकाश डाला। इसी दिन १६ दाताओं ने १६ बीघा जमीन दान में दी।

खादी सदन, नरसिंहपुर (मुजफ्फरपुर) की ओर से नरसिंहपुर, तेवरी, दुस्हा, सोहो, बखरी, पोरापुर आदि केन्द्रों में ग्रामस्वराज्य दिवस मनाया।

औद्योगिक सहयोग समिति एवं खादी बोर्ड, मिलोत (मुजफ्फरपुर) में ताराचंद राष्ट्रीय ज्ञानमंदिर, रामपुर (मुंगेर) के कार्यकर्ताओं ने उत्साह के साथ ग्रामस्वराज्य दिवस मनाया।

सर्वोदय आश्रम, मेघबलिया में बिहार सर्वोदय मंडल के संयोजक श्री श्याम सुन्दर प्रसाद का भाषण हुआ। इस अवसर पर मार्च महीने के सर्वोदय-पात्र से करीब २० रुपये संग्रहीत हुए।

जिला सर्वोदय-मंडल, मुंगेर के मार्गदर्शन में जिले के ६० केन्द्रों तथा उपकेन्द्रों द्वारा लगभग २०० गाँवों में ग्राम-स्वराज्य की घोषणा दोहरायी गयी। जिले के मुख्य केन्द्र मुंगेर शहर में शांति-सैनिकों की रैली हुई। इस अवसर पर श्री ध्वजाप्रसाद साहू ने मार्गदर्शन किया।

बिहार खादी ग्रामोद्योग-संघ सीतामढ़ी के तत्त्वावधान में ६ अप्रैल को सीतामढ़ी से श्री रामप्रताप ठाकुर और नवलकिशोर भाई क्षेत्र के गाँवों में प्रचारार्थ निकले। रामपुर परोरी, मनचौरी, मिर्जापुर, मोहनपीढ़, बखरी, रेवासी, रीगा और भूसदी इन गाँवों में विशेष तौर से ग्राम-स्वराज्य के कार्यक्रम के अलावा अशोभनीय चित्र हटाने और सर्वोदय-पात्र की स्थापना की गयी।

ग्रामसेवा केन्द्र, नकौड़ी (गोरखपुर) के तत्त्वावधान में ७ अप्रैल को नकौड़ी में ग्राम-स्वराज्य सम्मेलन प्रमुख रचनात्मक कार्यकर्ता श्री कपिल भाई की अध्यक्षता में हुआ। इसमें श्री कपिल भाई, उपनियोजन अधिकारी, रामपति भाई एवं रमण भाई के भाषण हुए।

सघन विकास-क्षेत्र, रणोवां (फैजाबाद) के कार्यकर्ताओं ने क्षेत्र के १७ गाँवों में ग्रामस्वराज्य दिवस के कार्यक्रमों का आयोजन किया।

ग्राम शशवनी (नैनीताल) में ग्रामस्वराज्य-दिवस के अवसर पर ग्रामवासियों ने संकल्प किया कि रोज एक घंटा श्रमदान करके गाँव में सड़क एवं सार्वजनिक कार्यों के लिए भवन बनायेंगे।

सर्वोदय मंडल, भीटी (फैजाबाद) ने अपने क्षेत्र के तीस गाँवों में ग्रामस्वराज्य दिवस के कार्यक्रम १५ अप्रैल तक आयोजित किये।

जिला सर्वोदय-मंडल, बहराइच की ओर से भिनगा कस्बा के अंतर्गत ग्रामस्वराज्य दिवस मनाया, जिसमें विद्यार्थियों और अध्यापकों का विशेष योग रहा।

जिला सर्वोदय मंडल, हमीरपुर की ओर से चरखारी में विद्यार्थियों की भाषण-प्रतियोगिता हुई। अशोभनीय पोस्टरों के विरोध और प्रस्ताव किया गया।

श्री गांधी आश्रम, मीरानपुर कटरा (शाहजहाँपुर) के कार्यकर्ताओं ने ग्रामस्वराज्य दिवस के अवसर पर अन्य कार्यक्रमों के अलावा दस ग्रामवासियों को ग्राम प्रधान ने तिलक लगा कर सर्वोदय-पात्र भेंट किये।

गांधी स्मारक निधि, मेरठ की ओर से ग्रामस्वराज्य-दिवस मनाया गया।

सर्वोदय सेवा आश्रम, पाली रजापुर (जिला अलीगढ़) की ओर से ग्राम-स्वराज्य सप्ताह मनाया गया।

मंदसौर जिला सर्वोदय-मंडल, गरोठ की ओर से १ से १३ अप्रैल तक तहसील के मुख्य गाँवों में कार्यकर्ताओं ने पदयात्रा की। श्यामगढ़ में आयोजित सभा में निश्चय किया गया कि ५०० सर्वोदय-पात्र रखे जायँ।

गांधी स्मारक निधि, लश्कर (ग्वालियर) की ओर से मनाये गये ग्राम-स्वराज्य दिवस के कार्यक्रम में डा० दिवेकरजी का प्रवचन हुआ।

नरसिंहपुर जिला सर्वोदय मंडल करेली की ओर से इमलिया ग्राम में १३ अप्रैल तक कार्यक्रम आयोजित होते रहे।

नवनिर्माण संघ, भोपालसागर (राजस्थान) में विशाल पैमाने पर लोकराज्य-सम्मेलन का आयोजन किया गया, जिसमें आसपास के कई गाँवों के कृषकों ने भाग लिया। सम्मेलन का उद्घाटन श्री भूरेलाल बया ने किया।

जिला सर्वोदय मंडल, सवाई माधोपुर में ग्रामस्वराज्य दिवस की आयोजित सभा में गाँवों में अध्ययन-केन्द्र तथा बालजीवन विकास-समिति की स्थापना करने का निश्चय किया गया।

जयपुर जिले के लालसोट तहसील में एक पदयात्रा-टोली ने पदयात्रा की और बुर्जा ग्राम में ग्रामस्वराज्य दिवस मनाया।

हस्तेडा (राजस्थान) के ग्रामीणों ने ग्राम स्वराज्य-दिवस मनाया।

टोंक जिला खादी-ग्रामोद्योग समिति के तत्त्वावधान में अरनिया केदार में ग्राम स्वराज्य सम्मेलन का आयोजन किया गया। सम्मेलन के प्रमुख वक्ता श्री जवाहरलाल जैन और श्री मुरलीधर चतुर्वेदी ने नागरिकों को ग्राम स्वराज्य दिवस के बारे में जानकारी दी।

सीकर में जिला सर्वोदय-मंडल की ओर से भी ग्रामस्वराज्य दिवस का आयोजन श्री चन्द्रदत्त की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ। उसी दिन जिला सर्वोदय मंडल की एक बैठक हुई, जिसमें निम्न प्रस्ताव स्वीकृत किये।

(१) २८ से ३० मई तक ग्राम माधोपुरा मगलूना में सर्वोदय शिविर लगाने का निश्चय किया।

(२) सीकर जिले में अशोभनीय पोस्टर विरोधी आन्दोलन चालू किया जाय।

(३) लोक-सेवक शांति-सैनिक, सर्वोदय पात्र खुद रखें और नियमित कताई करें।

गांधी अध्ययन केन्द्र, अजमेर में ग्राम स्वराज्य दिवस श्री बालकृष्ण गर्ग की अध्यक्षता में मनाया गया। श्रीमती कान्ता पटेल ने ग्राम-स्वराज्य दिवस का महत्त्व बताया। केन्द्र की सलाहकार समिति की इस बैठक में अशोभनीय पोस्टर-विरोधी आन्दोलन के बारे में विचार विमर्श किया गया। ग्राम-स्वराज्य दिवस का आयोजन अजमेर जिले के कई ग्रामों में भी किया गया।

जयपुर जिला सर्वोदय-मंडल व गांधी अध्ययन केन्द्र के तत्त्वावधान में जयपुर शहर में भी स्वराज्य-दिवस मनाया गया। नगर में सर्वोदय साहित्य की बिक्री तथा सम्पर्क स्थापित किया।

गांधी अध्ययन-केन्द्र में श्री चिरंजीलाल शर्मा की अध्यक्षता में एक सभा का आयोजन किया गया। श्री पूर्णचन्द पाटनी, श्री सरदारमल जैन, श्री छीतरमल गोयल व अमरसिंह चतुर्वेदी ने ग्राम स्वराज्य दिवस का महत्त्व बताया।

राजस्थान खादी विकास मंडल, गोविन्दगढ़ मलिकपुर की ओर से ग्राम-स्वराज्य दिवस समारोह का आयोजन किया गया। अध्यक्षता गोविन्दगढ़ पंचायत-समिति के विकास-अधिकारी ने की।

अग्रगामी खादी-संघ सांपला द्वारा अपने क्षेत्र के कई ग्रामों में ग्राम-स्वराज्य दिवस बड़े उत्साह के साथ मनाया गया।

खादी आश्रम, चौमू द्वारा एक विचार-सभा हुई, जिसमें ग्राम-स्वराज्य पर प्रकाश डाला गया।

सीकर जिला खादी ग्रामोदय-समिति के तत्त्वावधान में ग्राम स्वराज्य दिवस के उपलक्ष्य में रींगस में आम सभा का आयोजन किया गया।

राजस्थान सेवा संघ द्वारा डूंगरपुर तथा उदयपुर जिले के विविध क्षेत्रों में सब रचनात्मक संस्थाओं के सहयोग से ६ से १३ अप्रैल तक ग्रामस्वराज्य-सप्ताह मनाया गया।

जयपुर जिले के निर्विरोध चुनी गयी ग्राम-पंचायत, बिदारा द्वारा १० सर्वोदय-पात्र रखे गये।

ग्रामोदय समिति, सादड़ी (मारवाड़-राजस्थान) के गाँव जूना और मादा ने ग्राम-स्वराज्य दिन मनाया।

करनाल जिला सर्वोदय-मंडल की ओर से पंजाब खादी ग्रामोद्योग विद्यालय, 'गुरुकुल किवाना' के अध्यापकों तथा विद्यार्थियों ने समालखा क्षेत्र के १२ गाँवों में जाकर ग्रामस्वराज्य दिवस मनाया। तीन गाँवों ने स्वावलंबी होने के लिए अपने गाँवों में खादी तथा अन्य ग्रामोद्योगों के उत्पादन-केंद्र खोलने का निश्चय किया।

दिल्ली में गांधी स्मारक निधि के नजदीक के पाँच ग्रामसेवा केन्द्रों में ग्राम-स्वराज्य-दिवस मनाया गया। इन गाँवों में डा० युद्धवीर सिंह, प्रो० रामशरण एम० पी०, श्री गोपीनाथ अमन आदि ने अपने विचार प्रकट किये।

रेशम खादी-समिति, चक इस्लामपुर, जि० मुर्शिदाबाद (प० बंगाल) ने अन्य खादी-संस्थाओं के सहयोग से ग्रामस्वराज्य दिवस मनाया।

ग्राम-स्वराज्य के लिए स्वामी रामानंद तीर्थ का शुभ संकल्प

हैदराबाद खादी-समिति के तत्त्वावधान में आयोजित रचनात्मक संस्थाओं एवं कार्यकर्ताओं की एक सभा में स्वामी रामानंद तीर्थ ने निम्न संकल्प घोषित किया :

"पिछले चंद दिनों से मैं अपनी पूरी शक्ति रचनात्मक कार्य में ही लगाने का विचार कर रहा था। आज के इस राष्ट्रीय सप्ताह और ग्राम-स्वराज्य सप्ताह के शुभ अवसर पर मेरे इस विचार को जाहिर तौर पर आपके सामने रख रहा हूँ। इसी संबंध में गत फरवरी माह में मैंने हमारे प्रधान मंत्री श्री जवाहरलाल नेहरू को पत्र द्वारा यह विनंती की थी कि मैं इसके बाद किसी चुनाव में खड़े न होते हुए पूरा समय रचनात्मक कार्य के लिए देना चाहता हूँ। मेरी इन भावनाओं को उन्होंने मान लिया है। इसके बाद मैं अपना पूरा समय भूदान, ग्रामदान, खादी-ग्रामोद्योग आदि रचनात्मक कामों में दे सकूँगा। मेरा विश्वास है कि आज की तरह आप सब बहनों का सहयोग मिलता रहेगा।"

—हैदराबाद खादी-समिति के समस्त केन्द्रों में ग्राम-स्वराज्य सप्ताह मनाया गया।

कस्तूरबा सेवा मंदिर, पंजाब से प्राप्त समाचार के अनुसार पटियाला, संगरूर, भटिंडा, महेन्द्रगढ और कपूरथला जिले के विभिन्न केन्द्रों में ग्राम-स्वराज्य दिवस मनाया गया।

ग्रामोदय आश्रम, नगला बारू (मेरठ) ने क्षेत्र के ४२ ग्रामों में आश्रम के कार्यकर्ताओं ने ६ से १३ अप्रैल तक पदयात्रा की।

सर्वोदय गुरुकुल आश्रम, "रामदयनगर" बैरगनिया (मुजफ्फरपुर) ने आसपास के छह गाँवों में ग्रामस्वराज्य दिवस मनाया।

म० प्र० ताड़गुड़ सहकारी संघ के सदस्य श्री घासीराम ने धार जिले में चार गाँवों में पदयात्रा द्वारा प्रचार किया।

वस्त्र-स्वावलंबन केन्द्र, नगरदेवले (पूर्व खानदेश); बिहार खादी ग्रामोद्योग संघ, कपसिया (मधुबनी); भारतीय ग्राम-समाज, चांदनी चौक, दिल्ली, ग्रामोदय विकास-मंडल, देवगढ (उदयपुर); श्री नागा बाबा निर्वाण आश्रम, जाजमऊ (कानपुर); बिहार खादी-ग्रामोद्योग संघ, सिंघवारा (दरभंगा); स्वराज्य आश्रम, खद्दर भंडार, जनरल गंज, कानपुर; इन संस्थाओं ने भी अपने आसपास के क्षेत्र में ग्रामस्वराज्य-दिन मनाया।

ग्रामदानी ग्रामीणों का मेला

अप्रैल के आखिरी सप्ताह में केरवडे में ग्रामदानी गाँव के ग्रामीणों का एक शिविर होगा। शिविर के अन्त में एक सप्ताह की ग्राम-स्वराज्य के विचार प्रचार के लिए पदयात्रा की जायेगी। पदयात्रा की समाप्ति विजूर में होगी और वहीं ग्रामीणों के मेले का मार्गदर्शन श्री जयप्रकाशजी करेंगे।

—रत्नागिरी जिले की ग्रामदान नवनिर्माण समिति की १९ मार्च को हुई सभा में तय हुआ कि पाचल कट्टा, वालवल, थोवलिये, निवजे और केरवडे में ग्रामइकाई बना कर काम किया जाय।

संथाल परगना के सातवें अधिवेशन का निवेदन

बिहार में संथाल परगना जिला सर्वोदय-मंडल की ओर से ता० २६-२७ मार्च को मिहिजाम (चित्तरंजन) में संथाल परगना जिला सर्वोदय-सम्मेलन का सातवाँ अधिवेशन हुआ। अधिवेशन में स्वीकृत निवेदन में कहा गया है कि प्रेम, समता और श्रम को आधार मान कर जमीन और कारखानों आदि पर से मनुष्य अपना स्वामित्व छोड़े अर्थात् ग्राम की जमीन का ग्रामीकरण हो जाय। इसके लिए प्रथम कदम के रूप में भूदान देकर भूमिहीनों में बाँट दें। जिले में प्राप्त जमीन वितरित कर दी जाय। गाँवों में अनिवार्य रूप से ग्रामोद्योग चलाये जायँ और उससे प्राप्त चीजों का ही उपयोग करें। शराब-बंदी हो, अशोभनीय पोस्टर हटाये जायँ, घर-घर सर्वोदय-पात्र की स्थापना हो, प्रत्येक पंचायत में एक शांति-सैनिक और चार शांति-सहायक हों तथा पंचायतों का निर्वाचन सर्वसम्मति के आधार पर हो।

सर्व सेवा संघ के नये अध्यक्ष : श्री नवकृष्ण चौधरी

अ० भा० सर्व सेवा संघ का वार्षिक अधिवेशन १३ अप्रैल से १७ अप्रैल तक आंध्र प्रदेश के सर्वोदयपुरम् (उगुटूर) में संपन्न हुआ। उड़ीसा के प्रसिद्ध लोकसेवक श्री नवकृष्ण चौधरी अ. भा. सर्व सेवा संघ के अध्यक्ष सर्वसम्मति से चुने गये।

संघ के मंत्री श्री पूर्णचन्द्र जैन ने बंगलोर-अधिवेशन से अब तक के कार्य का विवरण प्रस्तुत किया। सुश्री निर्मला बहन द्वारा पिछले अधिवेशन की कार्रवाई पढ़ी गयी और स्वीकृत की गयी।

सफाई-शिविर का समापन

सम्मेलन के अवसर पर १ अप्रैल से सफाई-शिविर का आयोजन नागुलपाड नामक ग्राम में किया गया। इसका समापन १३ अप्रैल को श्री वल्लभस्वामी द्वारा हुआ। इस शिविर में विभिन्न प्रदेशों के ५१ शिविरार्थियों ने भाग लिया। शिविर का संयोजन श्री कृष्णदास शाह ने किया।

नई तालीम सेमिनार

२७-२८ मार्च को खादी-ग्रामोद्योग विद्यालय, शिवदासपुरा (राजस्थान) में नई तालीम पर सेमिनार सर्व सेवा संघ के सह-मंत्री श्री राधाकृष्णन् की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ। इसमें प्रान्त एवं देश के अनेक शिक्षाविदों ने भाग लिया। इस सेमिनार में प्रान्त में नई तालीम की स्थिति एवं भविष्य में विकास की दृष्टि से नई तालीम के कार्यक्रम पर विचार किया गया।

पिथौरागढ़ (अल्मोड़ा)

जिला सर्वोदय-मंडल के अध्यक्ष श्री बद्रीदत्त पाठक व मंत्री, श्री विशनसिंह कार्की ने २० मार्च से २५ मार्च तक पदयात्रा की, जिसमें ग्रामदान, ग्राम-स्वराज्य व ग्राम की पुरुषार्थ शक्ति को जगाने के मुख्य विचार लोगों के सामने रखे। सभी गाँवों में विचार समझाया गया, लोगों ने उसे आनन्द सहित स्वीकार किया। लगभग १०० पात्र इस यात्रा में रखे गये।

राजस्थान

राजस्थान समग्र सेवा संघ की कार्यकारिणी की बैठक १२ मार्च, '६१ को श्री जवाहरलाल जैन की अध्यक्षता में हुई। बैठक में संघ का इस वर्ष का बजट तथा कार्यक्रम स्वीकृत हुआ। कार्यक्रम में मुख्य बल सघन कार्य और शिक्षण पर दिया गया है। पूरी शक्ति लगा कर १-२ सघन क्षेत्र तथा २०-२५ ग्राम इकाइयाँ विकसित करने का निश्चय किया है। शांति-सैनिकों के प्रशिक्षण की योजना भी बनायी है। इसके अतिरिक्त जिला सर्वोदय मंडलों को सक्षम और सबल बनाने का कार्यक्रम भी बनाया है।

खादी-ग्रामोद्योग प्रदर्शनी का उद्घाटन

सर्वोदय-सम्मेलन के अवसर पर खादी-ग्रामोद्योग आयोग द्वारा आयोजित खादी-ग्रामोद्योग प्रदर्शनी का उद्घाटन १३ अप्रैल को श्री शंकरराव देव द्वारा हुआ।

इंदौर में विद्यार्थियों के सहअध्ययन शिविर

गांधी-अध्ययन एवं तत्त्व प्रचार केन्द्र, इंदौर के तत्त्वावधान में १५ मई '६१ से इण्टरमीडिएट तथा पोस्ट ग्रेजुएट स्तर के विद्यार्थियों के लिए दस-दस दिवसीय दो शिविरों का आयोजन विसर्जन आश्रम, नौलखा, इन्दौर में करने का तय किया गया है। इसके अतिरिक्त छात्राओं के भी दस दिवसीय एक शिविर का आयोजन कस्तूरबाग्राम में करने का निश्चय किया गया है। प्रत्येक शिविर में तीस शिविरार्थियों को प्रवेश दिया जा सकेगा।

इन शिविरों में भाग लेने के इच्छुक भाई-बहिनों से निवेदन है कि वे अपने आवेदन-पत्र पूरी जानकारी के साथ ३० अप्रैल तक श्री महेन्द्रकुमार, संयोजक, गांधी अध्ययन एवं तत्त्व-प्रचार केन्द्र, ११२, स्नेहलतागंज, इन्दौर शहर के पते पर भेजने की व्यवस्था करें।

इस अंक में

श्रीकृष्णदत्त भट्ट, अ० भा० सर्व सेवा संघ द्वारा भार्गव भूषण प्रेस, वाराणसी में मुद्रित और प्रकाशित। पता : राजघाट, वाराणसी-१, फोन नं० ४३९१
वार्षिक मूल्य ६) पिछले अंक की छपी प्रतियाँ ११,९०० इस अंक की छपी प्रतियाँ ११,६०० एक प्रति : १३ नये पैसे

संपादक : सिद्धराज ढड्ढा

वाराणसी : शुक्रवार २८ अप्रैल : ५ मई '६१ वर्ष ७ : अंक ३०-३१

इस अंक में

भूदान, शांति-सेना और लोकनीति

अगले वर्ष के लिए त्रिविध कार्यक्रम

सम्मेलन के अवसर पर सर्व सेवा संघ का निवेदन

सर्व सेवा संघ का अधिवेशन इस बार आन्ध्र की उस भूमि पर हो रहा है, जहाँ दस साल पहले भूदान-यज्ञ का आरम्भ हुआ था।

भूदान-यज्ञ के जरिये देश में अहिंसक क्रान्ति का एक नया पहलू प्रकट हुआ। गांधीजी की मृत्यु के बाद जब देश में निराशा छायी हुई थी, भूदान-यज्ञ ने सर्वोदय की दिशा में एक निश्चित कदम उठाया और एक नई आशा पैदा की। गांधीजी ने सत्याग्रह के द्वारा राजनीतिक क्षेत्र में अहिंसा को प्रतिष्ठित किया था और अपने आन्दोलनों तथा रचनात्मक कार्यक्रमों द्वारा देश में एक लोकशक्ति जाग्रत की थी। स्वराज्य के बाद भूदान ने आर्थिक समता का तथा हिंसक शक्ति की विरोधी और दण्डशक्ति से निरपेक्ष लोकशक्ति के निर्माण का रास्ता खोल दिया है।

भूदान :

—नई भूदान-प्राप्ति का वितरण के साथ-साथ व्यापक प्रयत्न।

—पहले की शेष भूमि का वितरण पूरा करना।

शान्ति-सेना :

—शांति-सेना के लिये अशांति और हिंसा का मुकाबला।

—जातिवाद, सम्प्रदायवाद, भाषावाद आदि संकुचित भावनाओं का मुकाबला।

—नित्य कार्य के तौर पर सर्वोदय-पात्र और भूदान-शांति के कार्यक्रमों के जरिये लोगों को शान्ति, प्रेम और करुणा का शिक्षण।

लोकनीति :

—चुनावों में स्वयं लोगों द्वारा उम्मीदवार खड़े करने के कार्यक्रम का प्रचार।

—पंचायती राज के कार्यक्रम में सक्रिय हिस्सा लेने के लिये व्यापक लोक-शिक्षण।

—नये मोड़ के द्वारा आर्थिक विकेन्द्रीकरण।

अहिंसा द्वारा आर्थिक परिवर्तन का अनूठा उदाहरण

स्पष्ट ही भूदान-आन्दोलन को उतनी सफलता नही मिली, जितनी अपेक्षा थी। बाह्य दृष्टि से देखें तो पाँच करोड एकड भूमि प्राप्त करने या पाँच लाख गाँवों के ग्रामदान का जो लक्ष्य था, वह अब तक पूरा नही हो सका है। फिर भी इस काम में जितनी शक्ति लगी, उसके हिसाब से जन-सहयोग काफी मिला। दुनिया के इतिहास में अहिंसा द्वारा इतने बडे आर्थिक परिवर्तन का यह एक अनूठा उदाहरण है।

लेकिन भूदान-ग्रामदान आन्दोलन की सफलता उसके प्रत्यक्ष परिणाम में उतनी नही है, जितनी कि लोकमानस पर पडे, उसके प्रभाव में है। इस आन्दोलन ने लोकशक्ति के लिए अहिंसात्मक पुरुषार्थ के नये मार्ग खोल दिये है और इसके कारण केन्द्रित स्वराज्य से विकेन्द्रित ग्राम-स्वराज्य तक जाने की भूमिका बनी है। ग्रामदान के कारण देश में मालिकी और मिल्कियत की बुनियादें बदलने की हवा बनी है और लोक-स्वामित्व के लिये अनुकूलता पैदा हुई है।

किन्तु आर्थिक क्षेत्र में मूल्य-परिवर्तन ही हमारे लक्ष्य की प्राप्ति के लिये पर्याप्त नही है। देश में प्रचलित जातिवाद, सम्प्रदायवाद और भाषावाद लोक-स्वराज्य के निर्माण में बाधक है। सेवाग्राम-सम्मेलन के बाद इस वर्ष देश में कुछ अत्यन्त शोचनीय घटनाएँ घटी है, जिनसे कारण हम सावधान होना चाहिये। आसाम के दंगों में प्रान्तवाद का और जबलपुर आदि स्थानों में सम्प्रदायवाद का जो बीभत्स प्रदर्शन हुआ वह किसी भी नागरिक के लिये चिन्ताजनक है। ये घटनाएं सूचित करती हैं कि अहिंसक समाज-रचना से हम अभी कितने दूर है। किन्तु परिस्थिति की कठिनाई शान्ति के लिए प्रेरक होनी चाहिये। इस प्रकार की घटनाओं का उपाय व्यापक लोक-शिक्षण में, पारस्परिक विश्वास और सौहार्द बढाने में और त्याग तथा बलिदान में है। शांति-सेना और सर्वोदय-पात्र आन्दोलन में इन गुणों को प्रकट करने की सम्भावनाएँ हैं।

शांति की आकांक्षा

दुनिया में आज शान्ति की आकांक्षा बढी है और उसके लिये प्रयत्न भी हो रहे हैं। इस सिलसिले में संसार के शांति-प्रेमियों का ध्यान सहज ही भारत की ओर आकृष्ट हुआ है। अपेक्षा यह है कि भारत के अहिंसात्मक प्रयोगों से विश्व-शांति के विचार में और उसकी स्थापना में सहायता मिलेगी। "वार रेजिस्टर्स इण्टरनेशनल" ने अपने गान्धीग्राम-अधिवेशन में एक अन्तर्राष्ट्रीय शांति-सेना की अपेक्षा प्रकट की है, जिससे हमारी जिम्मे-दारी बढी है।

चम्बल-घाटी में डाकुओं का आत्म-समर्पण इस वर्ष की एक ऐतिहासिक और अपूर्व घटना है। डाकुओं की समस्या को सुशासन और सुप्रबन्ध की सामान्य समस्या मानना घोर अज्ञान और अविवेक है। उसका समाधान नैतिक साधनों से ही हो सकता है। जिन्हें हम समाजद्रोही और दुष्ट मानते है, उन पर भी सद्भावना और सज्जनता का कैसा प्रभाव पड सकता है, इसका यह एक उज्ज्वल उदाहरण है। अपराध और पाप के प्रतिकार की एक उदात्त और अहिंसात्मक पद्धति का संकेत हमें चम्बल के उदाहरण में मिलता है।

आर्थिक और राजनीतिक विकेन्द्रीकरण

शांति-स्थापना के इस कार्य के साथ ही हमारे ध्येय में लोक-स्वराज्य के लिए आर्थिक और राजनीतिक क्षेत्र में विकेन्द्रीकरण के कार्यक्रम को उठा लेना जरूरी है।

आर्थिक क्षेत्र में भूमि-प्राप्ति और भूमि-वितरण के कार्यक्रम पर

अ. भा. सर्व सेवा संघ के नये अध्यक्ष

श्री नवकृष्ण चौधरी : एक संक्षिप्त परिचय

लवणम्

सन् १९५५ सितंबर के अंतिम सप्ताह में उडीसा में विनोबाजी की पदयात्रा के अंतिम पड़ाव, कुजेन्द्री में मैं उनसे मिलने गया था। मुझे कुजेन्द्री जाते ही थकावट से थोड़ा बुखार चढ़ गया। कुजेन्द्री आश्रम के एक बरामदे में मैं लेटा हुआ था। शाम के करीब ६ बजे का समय; थोड़ी झपकी लग गयी। बाद में जब आँखें खुलीं तो देखता हूँ कि एक ओर श्रीमती मालतीदेवी चौधरी बैठी थीं, दूसरी ओर एक सज्जन बैठे थे। उनको उससे पहले मैंने देखा नहीं था। न ऊँचे, न नाटे, न दुबले, न मोटे। न गोरे, न काले। साधारण कद, साधारण रंग, साधारण-सा व्यक्तित्व, धोती और कुर्ता पहने, ऐनक लगाये! ज्यों ही मेरी आँखें खुलीं तो माथे पर हाथ रख कर पूछने लगे, "लवणम्! अब कैसे हो?" उन शब्दों में कितना वात्सल्य भरा था, उनकी मेरी ओर लगी उस दृष्टि में कितना स्नेह, कितना प्रेम भरा था! मेरे माथे पर लगे उनके हाथ में कितनी सेवा भरी थी! उनके शब्दों का वात्सल्य, उनकी दृष्टि का स्नेह, सेवा भरे उनके हाथों का स्पर्श उतने बुखार में भी शीतलता का अनुभव करने लगा। उस समय मुझे क्या मालूम था कि एक मामूली किसान जैसे लगने वाले वे व्यक्ति कौन हो सकते हैं। इतना ही मैं अनुभव कर रहा था कि मानों मेरे पिताजी आकर वहाँ बैठ गये! इतने में मालतीदेवी ने कहा—"लवणम् जानते नहीं? ये 'बाबी' हैं!"

'बाबी!' मैं प्रणाम करने उठने जा रहा था। लेकिन बाबी ने उठने नहीं दिया। तो लेटे ही लेटे हाथ जोड़े।

"बाबी!" उनका नाम तो काफी सुना था, लेकिन उनका दर्शन तो तभी पा सका था। "बाबी"—इसी नाम से सब कार्यकर्ता उनको अपनी श्रद्धा और स्नेह भरी मीठी आवाज में संबोधित करते हैं।

वे तभी कुजेंद्री आये थे बाबा से मिलने। शायद डेढ़-दो घंटे हुए होंगे। लेकिन जब उनको मालूम हुआ कि मैं बुखार से लेटा था तो बेचैनी का अनुभव करके आ गये थे मेरे पास। तभी तो सब उनको 'बाबी' कहते हैं।

उनके व्यक्तिगत परिवार और कार्यकर्ता-परिवार में कोई अंतर नहीं है। उनके इस विशाल परिवार के सदस्य उन्हें 'बाबी' कहते हैं। लेकिन बाकी दुनिया उनको श्री नवकृष्ण चौधरी के नाम से जानती है। जिस समय उनका दर्शन पहली बार मुझे हुआ, उस समय वे उड़ीसा के मुख्य मंत्री थे।

नवबाबू के निराडंबर सादे जीवन के बारे में जब एक बार मैंने उनसे जिक्र किया तो वे खुद बोले कि यह सादा जीवन हमें अपने पिताजी से विरासत में मिला।

नवबाबू के पिताजी श्री गोकुलानन्द चौधरी कटक के एक मशहूर वकील थे। उनकी प्रतिष्ठा काफी थी और वकालत में पैसा भी बहुत मिलता था। लेकिन खुद बहुत सामान्य, सादा जीवन बिताते थे। वे यह मानते थे कि पैसा और प्रतिष्ठा कितनी भी ज्यादा क्यों न हो, लेकिन सादा और निराडंबर जीवन बिताने से ही मानव मानव बना रह सकता है, भला तब वैसे पिताजी अपनी सन्तान को भी आदर्शमय जीवन बिताने के लिए प्रोत्साहन क्यों न देंगे? गोकुलानन्दजी के चार सन्तानें हुईं: दो लड़के और दो लड़कियाँ। नवबाबू के बड़े भाई थे श्री गोपबन्धु चौधरी। दोनों भाइयों पर बचपन-काल में ही अपने पिताजी की जीवन-दृष्टि का बड़ा प्रभाव पड़ा। सादगी, निराडम्बरता तथा मानवीय भावना, इन दोनों भाइयों में फलने-फूलने में उनका ऐश्वर्य बाधा नहीं डाल सका। बहुत कम चीजों से ही अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति कर लेते थे।

जब नवबाबू १४ वर्ष के थे, तभी उनके पिताजी का देहान्त हो गया। तब से नवबाबू के लिए उनके बड़े भाई ही मार्गदर्शक रहे। गोपबाबू डिप्टी मैजिस्ट्रेट थे। उन दिनों एक भारतीय का डिप्टी मैजिस्ट्रेट होना बड़ी बात थी।

जब १९२१ का असहयोग आंदोलन चला तो देश भर में गांधी की धूम मची। तब भला मानवतावादी विचार रखने वाले नवबाबू उससे प्रभावित हुए बिना रह कैसे सकते थे! २० वर्ष के विद्यार्थी नवबाबू ने अपने बड़े भाई को लिखा कि वे पढ़ाई छोड़ देना चाहते हैं और राष्ट्रीय आंदोलन में कूद पड़ना चाहते हैं। गोपबाबू अपने भाई के इस निर्णय से बहुत खुश हुए और उन्होंने लिखा कि वे भी अपनी नौकरी छोड़ने की बात सोचते हैं। बड़े भाई ने अंग्रेजों की नौकरी छोड़ी और छोटे भाई ने अंग्रेजों का स्कूल छोड़ा। राष्ट्रीय आंदोलन में दोनों कूद पड़े। तभी से उड़िया समाज ने अपने भावी नेताओं को पहचान लिया।

१९२६-२७ में नवबाबू "शान्तिनिकेतन" रहे। रवीन्द्र की सन्निधि में उनकी जीवन-दृष्टि निखर उठी। इतना ही नहीं, उनको जीवन-संगिनी भी मिलीं, वहाँ श्रीमती मालतीदेवी से परिचय हुआ। संगीत की सजीव मूर्ति मालतीदेवी ने अपना संगीत अपने आनन्द के लिए ही सीमित नहीं रखा। राष्ट्रीय जीवन के संगीत में जो अपस्वर हैं, उन्हें दुरुस्त करने का भार भी अपने ऊपर ले लिया।

नवबाबू ने बीच में राष्ट्रीय विद्यालय में शिक्षक का भी काम किया, अपने गाँव में जाकर खेती के भी प्रयोग किये। इतने में १९३० में राष्ट्र की पुकार हुई। दोनों भाई परिवार सहित जेल गये।

१९३३ में जेल से रिहा होने के बाद देश में उग्र विचार रखने वालों के संगठन में लगे रहे। कांग्रेस-सोशलिस्ट पार्टी की बागडोर भी आपने सम्हाली। बिहार और उड़ीसा में जो किसानों के आंदोलन चले, उन सबको नवबाबू और मालतीदेवी के नेतृत्व का सौभाग्य मिला। १९३६ में नवबाबू प्रान्तीय विधान सभा के सदस्य भी चुने गये।

[शेष पृष्ठ १७ पर]

एक बार फिर और जोर दिया जाय। उत्पादन के साधन उत्पादक के हाथ में जाने से ही आर्थिक क्रान्ति का आरम्भ होता है। भूदान के कारण इस प्रकार की प्रत्यक्ष क्रान्ति का कार्यक्रम हमारे हाथ में आया है। इस सिलसिले में हाल ही बिहार में "बीघे में कट्ठा" भूमिदान का जो आन्दोलन शुरू हुआ है, वह विशेष रूप से उल्लेखनीय है। उसके सफल होने पर बिहार का सकल्प पूरा होगा और साथ ही सारे देश में आन्दोलन की शक्ति बढ़ेगी। इस आन्दोलन के कारण भूमिदाताओं को इस ओर अभिमुख करने का एक सौम्यतर मार्ग हमें मिला है। देश भर में जहाँ भी सम्भव हो, वहाँ इस प्रकार के सौम्यतर मार्ग को उत्साहपूर्वक अपनाना इष्ट है। सेवाग्राम सम्मेलन के बाद भूमि-वितरण के कार्यक्रम पर शक्ति लगायी थी। महाराष्ट्र सर्वोदय-मण्डल ने अपने यहाँ वितरण-योग्य सारी भूमि का वितरण करके एक सुन्दर नमूना देश के सामने रखा है। इस साल वितरण के शेष काम को पूरा किया जाय।

खादी और ग्रामोद्योग के नये मोड़ के बाद ग्राम-संकल्प का जो मार्ग हमारे सामने आया है, उसने लोकशक्ति के निर्माण की एक नई दिशा प्रस्तुत की है। इस साल हमें अपनी शक्ति इस कार्यक्रम को पूरा करने में भी लगानी है।

अहिंसक क्रान्ति की प्रक्रिया शिक्षणात्मक होती है। शिक्षा के द्वारा ही हम लोकमानस का विकास कर सकते हैं। आगामी आम चुनाव लोकशिक्षण का एक अवसर है। सर्व सेवा संघ की नीति सत्तावादी राजनीति से सदा अलग रहने की है। परन्तु लोकशक्ति की अभिव्यक्ति के हर अवसर से वह लाभ उठाना चाहता है। इस वर्ष उसने चुनाव-सम्बन्धी अपने प्रस्ताव द्वारा उस दिशा में एक ठोस कदम उठाया है। चुनाव के सिलसिले में व्यापक लोकशिक्षण द्वारा कुछ निश्चित आचार-मर्यादा का प्रचार करना और जनता को अपने मतदाता-मंडल द्वारा उम्मीदवार खड़े करने की शिक्षा देना हमारा कार्यक्रम रहेगा।

शोषण-विहीन और शासन-मुक्त समाज तक पहुँचने में अभी काफी मंजिल तय करनी है। रास्ता आसान नहीं है, किन्तु आज भूदान, शांति-सेना और लोक-स्वराज्य का जो त्रिविध कार्यक्रम हमारे सामने है, उसके द्वारा हम इस दिशा में आगे बढ़ सकते हैं। सर्व सेवा संघ राष्ट्र के सभी नागरिकों से यह अपील करता है कि जनशक्ति के निर्माण के इस महान् यज्ञ में वे अपना योगदान अवश्य दें और इस प्रकार गांधीजी की कल्पना के स्वराज्य को स्थापित करने में सहायक बनें।

लोकनागरी लिपि*

शराब और कीर्तन !

रवीन्द्रनाथ ठाकुर ने लिखा है, यूरोप का मजदूर दिन भर काम करके थक जाता है। हिन्दुस्तान का मजदूर भी दिन भर काम करके थक जाता है। यूरोप के मजदूर थकान मिटाने के लिए रात को शराब पीकर सो जाते हैं। हिन्दुस्तान के मजदूर रात को कीर्तन करके सो जाते हैं। कीर्तन में नाम-स्मरण से थकान मिट जाती है और नींद अच्छी आती है। यूरोप के मजदूरों ने आराम का साधन शराब माना, हिन्दुस्तान के मजदूरों ने कीर्तन माना। यह फर्क रवीन्द्रनाथ ठाकुर ने बताया, जो विश्वव्यापक दृष्टि रखते थे, अपने देश का खास अभिमान रखते थे। पर अब दोनों रवीन्द्रनाथ ठाकुर की कही हुई बात खतम हो रही है। हिन्दुस्तान में नशाखोरी बढ़ रही है। तमाशा, सिनेमा देखने में बहुत समय जाता है। बहुत खर्च हो रहा है ऐसी चीजों पर। जीवन में खाने का खर्च कम और कभी तरह के विलासों में खर्च ज्यादा, ऐसी हालत आज है। अब तो रात को देहातों में भजन मुश्किल से लोग ही करते हैं। शहर में तो रात के बारह-एक बजे तक सिनेमा होगा। शांति का नाम नहीं। रात भगवान ने चैन के लिए पैदा की, लेकिन शहर में रात को अंधकार को भी आग लगाते हैं !

हीनापुर, १३-४-'६१ —विनोबा

* लिपि-संकेत : ि = ी ; ी = ई, ख = ख, संयुक्ताक्षर हलंत चिह्न से।

उंगुतुरू में दस दिन

(संक्षिप्त घटना-चक्र)

आंध्र प्रदेश का एक छोटा-सा गाँव १० दिन के लिए सहसा एक नगर बन गया। हिन्दुस्तान के कोने-कोने से आकर हजारों आदमी वहाँ रहे। उनके रहने के लिए देखते-देखते खजूर की पत्तियों से छाये हुए "भवन" खड़े हो गये। हजारों आदमी एकसाथ भोजन कर सकें, ऐसे भोजनालय चालू हुए। डाकघर, तार घर, बैंक और अस्पताल भी खुल गये। रेलवे वालों ने भी एक स्थायी प्लेटफार्म बना कर "सर्वोदयपुरम्" के नाम से एक स्टेशन खोल दिया, जहाँ सम्मेलन के दिनों में डाक, एक्सप्रेस आदि सब गाड़ियाँ ठहरीं।

ता० १२ अप्रैल को सर्वोदयपुरम्, उंगुतुरू में मानो एक नया जीवन शुरू हो गया। सर्व सेवा संघ की प्रबंध-समिति की बैठक उस दिन वहाँ आरम्भ हुई। प्रबंध-समिति की बैठक में विचाराधीन मुख्य विषय स्वाभाविक ही इस अवसर पर होने वाले संघ-अधिवेशन और सम्मेलन के कार्यक्रम का था।

सम्मेलन के कुछ दृश्य

ता० १३ अप्रैल की दोपहर को ढाई बजे सूत्रयज्ञ के साथ सर्व सेवा संघ का अधिवेशन आरम्भ हुआ। अधिवेशन के लिए एक सादा, पर सुरुचिपूर्ण ढंग से सजाया हुआ 'हाल' तैयार किया गया था, जिसकी खजूर के पत्तों की छत में से कहीं-कहीं छन कर धूप आती थी। संघ के अध्यक्ष श्री वल्लभस्वामी के प्रारंभिक निवेदन के बाद संघ के सामने पहला ही विषय नये अध्यक्ष के चुनाव का आया। संघ के नये विधान में सब लोकसेवकों द्वारा मिल कर सर्वसम्मति से अध्यक्ष के चुने जाने का नियम है। पर इस सर्वसम्मत चुनाव की पद्धति क्या हो, इसकी कोई निश्चित परम्परा अभी तक नहीं पड़ी है। श्री दादाभाई नाइक ने नये वर्ष के अध्यक्ष के लिए श्री नवकृष्ण चौधरी का नाम पेश किया, आन्ध्र के श्री गोराजी ने उसका समर्थन किया और फिर तो करीब-करीब हर प्रांत की ओर से प्रतिनिधियों ने उठ कर प्रस्ताव का समर्थन किया। इस प्रकार श्री नवकृष्ण चौधरी उनकी अनुपस्थिति में ही सर्वसम्मति से अध्यक्ष चुन लिये गये। "नवबाबू" अपने एक साथी के साथ हुई दुर्घटना के कारण संयोग से उस दिन नहीं पहुँच सके। वे दूसरे दिन शाम को सर्वोदयपुरम् पहुँचे। तब तक संघ की बैठकों की अध्यक्षता निवर्तमान अध्यक्ष, श्री वल्लभस्वामी ने की।

ता० १३ अप्रैल को दो और उल्लेखनीय बातें हुईं—एक सम्मेलन के अवसर पर खड़ी की गयी विशाल खादी ग्रामोद्योग प्रदर्शनी का उद्घाटन और दूसरा सफाई-शिविर का समारोप। प्रदर्शनी का उद्घाटन श्री शंकरराव देव ने किया और सफाई-शिविर का समारोप वल्लभस्वामी ने। हर साल की तरह प्रदर्शनी के मुख्य द्वार और मंडप की सजावट श्री अनिल सेनगुप्त ने की थी। स्थानीय चीजों से किस तरह सजावट की जाय, इस काम में अनिलभाई माहिर हो गये हैं।

सर्वोदय-सम्मेलनों में आने वाले जानते हैं कि हर साल सम्मेलन शिविर की सफाई का और उसे स्वच्छ रखने का काम सफाई-काम के अनन्य भक्त श्री कृष्णदास शाह अपने जिम्मे उठा लेते हैं। हर साल सम्मेलन से तीन-चार हफ्ते पहले ही कृष्णदास भाई सम्मेलन-स्थल पर पहुँच जाते हैं, विभिन्न प्रांतों से कुछ स्वयंसेवकों को इकट्ठा कर लेते हैं, दस-पन्द्रह रोज तक उन्हें सफाई-काम की तालीम देते हैं, साथ साथ सम्मेलन-स्थल पर सफाई की व्यवस्था खड़ी करते हैं और फिर स्वयंसेवकों की वह टुकड़ी सम्मेलन के दिनों में सम्मेलन-नगर की सफाई का काम अपने जिम्मे ले लेती है। इस प्रकार हर साल कुछ नये और कुछ पुराने स्वयंसेवक सफाई-काम के जानकार होते जाते हैं। इस साल सफाई-शिविर ता० १ अप्रैल को शुरू हुआ था और ता० १३ अप्रैल की रात को उसका समारोप हुआ। इस प्रशिक्षण-शिविर में करीब पचास स्वयंसेवक शामिल हुए थे, और आने वाले प्रतिनिधियों की सहायता से संघ-अधिवेशन और सम्मेलन के दस दिनों में इस टुकड़ी ने सर्वोदयपुरम् की सफाई का सारा काम सम्हाला।

× × ×

अगले तीन दिन यानी ता० १४, १५, १६ अप्रैल का मुख्य आकर्षण सर्व सेवा संघ का अधिवेशन था। हिन्दुस्तान के करीब ३३० जिलों में से २२० जिले से सर्व

सेवा संघ के लिए प्रतिनिधि निर्वाचित हुए थे। पर सर्व सेवा संघ के विधान के अनुसार इन निर्वाचित प्रतिनिधियों के अलावा हरेक लोकसेवक संघ की बैठक में पूरे सदस्य की हैसियत से भाग ले सकता है। इस बार संघ-अधिवेशन में देश के विभिन्न हिस्सों से करीब ५०० लोकसेवक पहुँचे थे। हर दिन प्रतिनिधियों की संख्या बढ़ती ही गयी। संघ के अधिवेशन में मुख्य विषय पिछले दस वर्ष के काम का सिंहावलोकन और अगले साल का कार्यक्रम निश्चित करने का था। पिछले माह गोलकगंज, आसाम में विनोबा की उपस्थिति में सर्व सेवा संघ की प्रबंध-समिति की जो बैठक हुई, उसमें विनोबा ने अगले साल कार्यक्रम के बारे में कुछ संकेत दिये थे। सम्मेलन के लिए भेजे हुए संदेश में भी विनोबा ने आशा प्रगट की थी कि एक बार फिर भूदान का मंत्र लेकर सर्वोदय-कार्यकर्ता देश भर में फैल जायेंगे और 'अलख जगायेंगे'। पिछले महीनों आसाम और जबलपुर में जो घटनाएँ हुईं, उन्होंने शांति-सेना की अनिवार्य आवश्यकता को और भी स्पष्ट रूप से सबके ध्यान में ला दिया था। इसके अलावा जयप्रकाशजी के शब्दों में, यह चुनाव का वर्ष होने से इस बारे में भी संघ को अपनी नीति स्पष्ट करनी थी। इस नीति का संकेत भी प्रबंध-समिति के गोलकगंज की अपनी बैठक में किया था। पंचायती राज अर्थात् लोकतांत्रिक विकेन्द्रीकरण का जो बड़ा प्रयोग देश में शुरू हुआ है, इस बारे में भी सोचना आवश्यक था। संघके अधिवेशन में इन सब विषयों पर अच्छी चर्चा हुई। विभिन्न विषयों पर संघ ने जो प्रस्ताव स्वीकृत किये, वे तथा उन प्रस्तावों के आधार पर सम्मेलन के लिए बनाया गया निवेदन इसी अंक में अन्यत्र दिये हैं।

* * *

सम्मेलन मे

ता० १७ की मुख्य घटना आंध्र प्रदेश का पंचायती राज सम्मेलन था। आंध्र प्रदेश सर्वोदय-मंडल ने पंचायती राज से सम्बन्धित सरकारी, गैर-सरकारी प्रमुख व्यक्तियों का यह प्रादेशिक सम्मेलन ता० १७-१८ अप्रैल को सर्वोदयपुरम् में आयोजित किया था। आंध्र प्रदेश सर्वोदय मण्डल की यह सूझ बहुत सामयिक और उपयुक्त रही। इस सम्मेलन की अध्यक्षता श्री जयप्रकाशजी ने की और संबंधित विभाग के आंध्र प्रदेश के मंत्री श्री रंगा रेड्डी तथा केन्द्रीय मंत्री, श्री एस० के० डे भी सम्मेलन में उपस्थित थे। दोनों ही मंत्रियों ने अपने भाषण में इस बात पर जोर दिया कि पंचायती राज की योजना के पीछे वही ग्रामस्वराज्य का आदर्श है, जो सर्वोदय का है, हालाँकि उस आदर्श को कागज पर मूर्त रूप देने में अवश्य कमियाँ रही होंगी। दोनों मंत्रियों ने खुले दिल से सर्व सेवा संघ और सर्वोदय-कार्यकर्ताओं से सहयोग की माँग की।

* * *

सम्मेलन की घड़ी ज्यों-ज्यों नजदीक आ रही थी, त्यों-त्यों सर्वोदयपुरम् में देश के कोने-कोने से आने वाले प्रतिनिधियों का ताँता-सा लग गया था। ता० १७ को दिन भर, रात भर सैकड़ों-हजारों प्रतिनिधि सर्वोदयपुरम् में पहुँचते रहे। ता० १७ की रात को दो-ढाई बजे करीब बिहार के कई सौ प्रतिनिधि एकसाथ सर्वोदयपुरम् पहुँचे। ता० १७ की सारी रात सर्वोदयपुरम् में चहल-पहल में बीती।

ता० १८ को सवेरा होने से पहले ही सैकड़ों की संख्या में शांति-सैनिक—स्त्री-पुरुष—"शांति-सेना रैली" के लिए स्वागत-समिति के बाहर मैदान में इकट्ठे हुए। रैली का दृश्य बड़ा प्रभावोत्पादक था। तीन-तीन की कतार में शांति-सैनिक बहन भाई प्रयाण-गीत गाते हुए निकले। शांति-सैनिकों ने सामूहिक प्रार्थना की और श्रम-यज्ञ किया। सिर पर पीला रूमाल और बाजू पर पीली पट्टी बाँधे हुए शांति-सैनिकों का दल अरुणोदय के प्रकाश में बड़ा भव्य मालूम हो रहा था।

ता० १८ अप्रैल का दिन सर्वोदय-आन्दोलन के इतिहास में अमर रहेगा। दस वर्ष पहले इसी दिन भूदान-आंदोलन का श्रीगणेश हुआ था। दस वर्ष बाद आंध्र प्रदेश के एक गाँव में फिर सर्वोदय-सम्मेलन आज शुरू हो रहा था। सम्मेलन के अध्यक्ष श्री जयप्रकाशजी थे। उन्होंने अपना लिखित भाषण सम्मेलन में पढ़ा। सर्वोदय-सम्मेलन में शायद पहला ही मौका था, जब कि अध्यक्षीय भाषण में देश-विदेश की घटनाओं पर सर्वोदय की दृष्टि से प्रकाश डाला गया था। श्री जयप्रकाश बाबू का भाषण सर्वोदय कार्यकर्ताओं के लिए मार्गदर्शक रहा।

अध्यक्ष के 'परिचय' जैसे शिष्टाचार के काम को भी दादा (दादा धर्माधिकारी) ने बहुत ही आकर्षक और आनन्दप्रद बना दिया। अपने सहज विनोदप्रिय ढंग से दादा ने कहा : "मुझे जो काम सौंपा है, उसकी जरूरत मुझे थी, जे० पी० को नहीं। प्रभाकरजी को इस बात की फिक्र थी कि मेरा सम्मान वे किस प्रकार करें। जे० पी० के 'परिचय' का भार मुझे सौंप कर उन्होंने मेरा गौरव किया।" सूर्य की किरणों की तरह विविध रंगों वाले जे० पी० के व्यक्तित्व का जिक्र करते हुए दादा ने बतलाया कि जे० पी० के जीवन की कहानी हिन्दुस्तान में समाजवाद की गतिविधि के परिवर्तन का इतिहास है। उन्होंने कहा :

> **"जे० पी० का सर्वोदय-क्षेत्र में पदार्पण हमारे देश और संसार के इतिहास में एक अनोखी घटना है। वे हमारे देश में समाजवाद के अध्वर्यु रहे हैं। पर वैज्ञानिक समाजवाद को उन्होंने भारतीय रूप दिया। उन्होंने कहा कि मनुष्य में सदाचार की प्रेरणा भौतिक कारणों से नहीं हो सकती। सच्चे समाजवाद की स्थापना के लिए हमें भौतिक प्रेरणाओं से किसी मूलभूत मानवीय प्रेरणा की ओर कदम बढ़ाना होगा। समाजवाद का यह आधुनिकतम स्वरूप उन्होंने संसार के सामने रखा।"**

ता० १९ को सवेरे सम्मेलन शुरू होने से पहले एक छोटा-सा, पर मंगल कार्यक्रम सम्मेलन-पंडाल में हुआ। वह था कस्तूरबा-सेविकाओं के काशी में चल रहे शांतिसेना विद्यालय के प्रथम सत्र का दीक्षान्त समारोह। इसका जिक्र और इस अवसर पर किये गये जयप्रकाशजी के भाषण का सार अन्यत्र दिया गया है। सम्मेलन की कार्रवाई के अलावा ता० १९ की दूसरी उल्लेखनीय घटना श्री सिद्धराज ढड्ढा की अध्यक्षता में हुई अखिल भारत सफाई-मंडल की प्रारम्भिक बैठक थी। इस बैठक में अखिल भारत सफाई मंडल का बाकायदा गठन किया गया। श्री अप्पासाहब पटवर्धन अध्यक्ष और श्री कृष्णदास शाह मंत्री नियुक्त किये गये।

ता० १९ को दोनों समय की कार्रवाई चलती रही। सर्व सेवा के मंत्री श्री पूर्णचन्द्र ... काम का विवरण प्रस्तुत किया उसके बाद पिछले चार-पाँच दिनों में सेवा संघ में जिन विषयों पर चर्चा थी और जो निर्णय सर्व सेवा संघ ने किये थे, उनमें से हरेक विषय पर विभिन्न वक्ताओं ने प्रकाश डाला योजना-आयोग के सदस्य श्री श्रीमन्नारायण तथा आन्ध्र के राज्यपाल, श्री भीमसेन सच्चर ने भी सम्मेलन में एकत्रित प्रतिनिधियों को सम्बोधन किया।

ता० २० अप्रैल को सवेरे सम्मेलन की अन्तिम बैठक थी। इसमें राष्ट्रपति श्री राजेंद्र बाबू भी उपस्थित रहे। श्री नारायण देसाई के द्वारा निवेदन पेश किये जाने के बाद श्री शंकररावजी का एक अत्यन्त सारगर्भित भाषण उस विषय पर हुआ। आन्ध्र प्रदेश के नौजवान मुख्यमंत्री श्री सजीवैया ने अपनी धाराप्रवाह और काव्यमय तेलुगू से श्रोताओं को मुग्ध कर दिया। तेलुगू भाषा नहीं समझते थे, उन्होंने भी उस भाषण का पूरा रस लिया। श्री राजेंद्र बाबू ने अपने भाषण के दौरान में यह घोषणा की कि वे चंद महीने बाद अपने पद से मुक्त होने वाले हैं। आन्ध्र के सुप्रसिद्ध गायक श्री घंटशाल वेंकटेश्वर के भावपूर्ण भजन के साथ तेरहवें सर्वोदय सम्मेलन की कार्रवाई समाप्त हुई।

ता० २० की शाम को एक विशाल जनसमूह के सामने राष्ट्रपति का सार्वजनिक भाषण हुआ। उंगुटूरु छोटा-सा गाँव लेकिन आसपास के गाँवों से हजारों लोग राष्ट्रपति को सुनने के लिए इकट्ठे हुए थे। पचास-साठ हजार स्त्री-पुरुषों के जनसमूह को करीब आधा घंटे तक राष्ट्रपति ने सम्बोधित किया।

ता० २० की शाम से ही सर्वोदयपुरम् खाली होना शुरू हुआ, पर रेलवे वालों की अदूरदर्शिता और अव्यवस्था से जाते समय लोगों को काफी कष्ट हुआ। ता० २० अप्रैल की शाम को सर्वोदयपुरम् से उत्तर और दक्षिण दोनों ओर के समीप-स्टेशनों तक अगर एक-एक स्पेशल गाड़ी छोड़ दी गयी होती तो देश भर से आये हुए सैकड़ों-हजारों प्रतिनिधियों को उस रोज जो परेशानी हुई, वह न होती। ता० २१ की शाम को जब एक स्पेशल

[शेष पृष्ठ १५ पर]

सर्व सेवा संघ के उंगूतुरू अधिवेशन में स्वीकृत प्रस्ताव

[१]

आगामी चुनाव और संघ की नीति

सर्व सेवा संघ की यह मान्यता है कि अहिंसक समाज की रचना राजनैतिक सत्ता यानी शासन के जरिये नहीं, बल्कि लोगों के अपने अभिक्रम और उनकी संगठित और स्वाश्रयी शक्ति के आधार पर ही हो सकती है। अतः सर्व सेवा संघ ने अपनी यह नीति स्थिर की है कि वह सत्ता-प्राप्ति की राजनीति में प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष किसी प्रकार का हिस्सा नहीं लेगा। भूदान-ग्रामदान आंदोलन के पिछले वर्षों के अनुभव ने राजनीति के स्थान पर लोकनीति की प्रतिष्ठा के इस विचार को और भी पुष्ट किया है। सर्वोदय के लिए कृत-संकल्प कार्यकर्ताओं अर्थात् लोकसेवकों के लिए यह जरूरी माना गया है कि वे सत्ता की राजनीति और दलगत चुनावों से अलग रहें, क्योंकि किसी एक पक्ष का सदस्य बन जाने पर या चुनाव में स्वयं खड़े होने या किसी दूसरे का समर्थन और प्रचार करने से लोकसेवक सब लोगों का सहयोग और विश्वास हासिल कर सकने की तथा उनका हृदय-परिवर्तन कर सकने की पात्रता खो देता है।

स्पष्ट है कि सर्वोदय और लोकनीति के विचार को व्यापक मान्यता मिलने पर प्रशासन, चुनाव आदि की पद्धति आज के ढंग की नहीं रहेगी। पर ऐसा नहीं होता जब तक लोकतंत्र की रक्षा के लिए, और उसे सही दिशा में ले जाने की दृष्टि से, उन चीजों में परिवर्तन आवश्यक है, ऐसा पिछले वर्षों के हमारे अनुभव से जाहिर होता है। जहाँ तक प्रशासन का सवाल है, उसके विकेंद्रीकरण की आवश्यकता की ओर मुल्क का ध्यान गया है। यद्यपि पंचायती राज की मौजूदा योजना में अभी भी कुछ बुनियादी परिवर्तन आवश्यक है, फिर भी यह खुशी की बात है कि आम लोग लोकतान्त्रिक व्यवस्था में भाग ले सकें इसकी कोशिश हो रही है।

लोगों का अपना अभिक्रम और उनकी शक्ति ही अन्ततोगत्वा लोकतन्त्र का अधिष्ठान है। लेकिन राजनैतिक पार्टियों का जो स्वरूप आज बन गया है और जिस प्रकार से आज उनका काम होता है, उस सबके कारण लोगों की निज की शक्ति प्रगट होने में रुकावट आ गयी है। चुनावों में मतदान का अधिकार तो लोगों को प्राप्त है, लेकिन उनका स्वतन्त्र अभिक्रम समाप्त प्राय हो गया है।

आम चुनाव सन्निकट है। सर्व सेवा संघ की राय में अब वह समय आ गया है, जब कि चुनाव की पद्धति के बारे में हमें थोड़ी गहराई से सोचना चाहिए और लोकतन्त्र को वास्तव में लोकनिष्ठ बनाने के लिए उसमें आवश्यक सुधार करने चाहिए। इस सिलसिले में संघ के सुझाव नीचे लिखे अनुसार हैं :—

(१) आज चुनावों में राजनैतिक पार्टियाँ अपने-अपने उम्मीदवार खड़े करती हैं। लोगों का काम उन उम्मीदवारों में से किसी को वोट देने मात्र का रहता है। मतदान के पहले या बाद लोकतंत्र के संचालन में लोगों का प्रत्यक्ष कोई हिस्सा नहीं होता। लोकतंत्र को सफल और सक्रिय बनाने के लिए यह आवश्यक है कि उम्मीदवारों का चयन लोग स्वयं करें। मतदान केन्द्रों (बुथ) के छोटे-छोटे दायरों में मतदाताओं के मंडलों (वोटर्स कौंसिल) के जरिये यह काम हो सकता है। चुनाव के बाद मतदाताओं और प्रतिनिधियों में जीवित संपर्क भी इन मतदाता-मंडलों के जरिये कायम रखा जा सकता है। आगे आने वाले आम चुनावों के अवसर पर जगह-जगह मतदाता-मंडल बना कर जनता स्वयं सक्रिय हो इस विचार का व्यापक प्रचार करना चाहिए। यह कोशिश भी करनी चाहिए कि राजनैतिक पार्टियाँ स्वयं इस विचार को मान्य करें।

(२) जब तक राजनैतिक पार्टियाँ इस विचार को मान्य न करें, तब तक भी वे सब मिल कर कुछ ऐसी आचार मर्यादा के बारे में एक मत हो सकती हैं, जिससे आज के चुनाव में होनेवाली बहुत-सी बुराइयाँ, संघर्ष तथा व्यापक फूट का वातावरण कम हो सके। उदाहरण के लिए पार्टी अपनी ओर से अलग-अलग सभा आयोजित न करके एक ही मंच से सब पार्टियाँ या उम्मीदवार अपनी-अपनी बात मतदाताओं के सामने रखें। चुनाव-प्रचार में व्यक्तिगत आरोप-प्रत्यारोप न हों। उनमें विद्यार्थियों तथा नाबालिगों का उपयोग न हो। चुनावों में कम खर्च हो। प्रचार के तरीके संयत तथा शुद्ध हों आदि।

(३) पंचायती राज की योजना के अन्तर्गत पंचायत समितियाँ तथा जिला परिषद आदि संगठित हो रही हैं। उनके तथा नगरपालिका आदि स्वायत्त संस्थाओं के चुनाव में संघर्ष (कन्टेस्ट) को टाला जाय और चुनाव आम सहमति से करने की कोशिश की जाय। पंचायती राज की या नगरों की लोक-संस्थाओं का अधिकांश काम जन-कल्याण का और स्थानीय व्यवस्था का होता है। ऐसे कामों में विभिन्न विचार धाराओं की दृष्टि से कोई अधिक मतभेद होने की गुंजाइश नहीं है। अतः कम-से-कम इन संस्थाओं के चुनावों में राजनैतिक पार्टियाँ न पड़ें।

(४) इस तरह चुनाव में लोकनीति का तत्त्व दाखिल करने के व्यापक प्रयत्न के साथ साथ कुछ ऐसे क्षेत्रों में जहाँ वातावरण तथा लोगों की मनोवृत्ति अनुकूल हो वहाँ अगले आम चुनावों के समय उम्मीदवारों का चयन मतदाता स्वयं करें और चुनाव संघर्ष यथा संभव टालने की कोशिश करें।

(५) जहाँ तक मतदान के अधिकार के प्रयोग की बात है ऐसी आशा और अपेक्षा है कि हर नागरिक अपने स्वतंत्र विवेक को काम में लेगा। स्वाभाविक ही वह हिंसा, जाति, पंथ, संप्रदाय, भाषा आदि की संकीर्ण भावना से प्रभावित होकर अपने वोट या मत का उपयोग नहीं करेगा।

चुनावों से सम्बन्धित इस सारे काम में लोकसेवक की वृत्ति और भूमिका लोक-शिक्षण की होनी चाहिए। लोकसेवक सत्ताकांक्षी नहीं हो सकता। लोकसेवक मतदाता-मंडल की पद्धति का प्रचार तो कर सकता है, लेकिन वह न किसी चुनाव में स्वयं खड़ा होगा, और न किसी भी उम्मीदवार के समर्थन या विरोध में कोई प्रचार करेगा। लोगों की खुद की शक्ति किस प्रकार प्रकट हो और उसका संगठित उपयोग कैसे हो, यह लोकनीति की स्थापना के लिए आवश्यक है और उस शक्ति तथा संगठन को प्रगट करना तथा उसे सही दिशा में ले जाना यह हर नागरिक का कर्तव्य है।

> **सर्वोदय-सम्मेलन के पूर्व ता० १३ से १७ अप्रैल तक अ० भा० सर्व सेवा संघ का अधिवेशन हुआ। अधिवेशन में जो पांच प्रस्ताव स्वीकृत हुए हैं, वे यहां दिये जा रहे हैं।**

[२]

पंचायती राज की योजना

देश की पंचायती राज की योजना सरकार द्वारा लागू की जा रही है, जिसके अन्तर्गत गांव से लेकर जिले के स्तर तक पंचायत, पंचायत-समिति तथा जिला परिषद का गठन होकर इन्हें विकास संबंधी, और एक हद तक प्रशासन के अधिकार दिये जाने की बात है। इस प्रकार सरकार द्वारा प्रशासन के विकेन्द्रीकरण का कार्यक्रम हाथ में लिया गया है। सर्वोदय की दृष्टि से जो समाज-रचना हम चाहते हैं वह भी आर्थिक, सामाजिक और राजनैतिक विकेन्द्रीकरण की ही है। अपेक्षा यह है कि गांव-गांव में जनता की अपनी शक्ति और उसका अपना अभिक्रम प्रकट हो तथा जीवन की आवश्यकताओं की व्यवस्था स्वयं करके वह स्वाश्रयी तथा स्वावलम्बी बन सके।

धीरे-धीरे ग्राम-स्तर तक की छोटी-से छोटी इकाई अधिक-से अधिक जिम्मेवारी और काम स्वयं सम्हाले, और ऊपर के स्तरों को वे ही काम सौंपे जायँ, जिन्हें छोटी इकाई के लिए सम्हालना सम्भव न हो अथवा राष्ट्रीय एकता की दृष्टि से जिन्हें बड़े क्षेत्र की इकाई के लिए आवश्यक माना जाय। स्पष्ट है इस प्रकार की विकेन्द्रित रचना राज्य या कानून के द्वारा केवल विकास सम्बन्धी कुछ काम ग्राम आदि स्तर की इकाइयों के सुपुर्द कर दिये जाने से सम्पन्न नहीं होगा। इसके लिए बुनियाद से ही ग्राम-स्वराज्य के विचार के आधार पर लोक-शक्ति को नई व्यवस्था के लिए जगाना तथा उसे सज्ज व तैयार करना होगा।

जब तक जनता की निज की शक्ति प्रगट नहीं होती, तब तक इस प्रकार के प्रयोग से यह खतरा है कि दलबन्दी, संप्रदायवाद और भ्रष्टाचार आदि बुराइयाँ अधिक व्यापक रूप धारण कर लें। जिन प्रदेशों में पंचायती राज कार्यक्रम लागू हुआ है, वहाँ पिछले कुछ दिनों के काम का अनुभव भी इस ओर संकेत करता है। पंचायती राज की मौजूदा योजना में इस दृष्टि से भी बुनियादी परिवर्तन आवश्यक है।

जनता को उसकी शक्ति का भान कराने व उसके अभिक्रम को जगाने का एक तरीका यह है कि गाँव-गाँव में सब बालिग स्त्री पुरुषों की ग्रामसभा के हाथों में ही क्षेत्र की विकास-योजना व व्यवस्था आदि का अधिकार हो। ग्राम-सभाएँ सक्रिय हों। वे ग्राम जीवन का पूरा ढाँचा खड़ा करें, समय-समय पर मिलें, ग्राम व क्षेत्र से संबंधित विभिन्न मुद्दों के बारे में वे स्वयं

निर्णय करें। ग्रामसभा, ग्राम-पंचायत, पंचायत-समिति, जिला-परिषद आदि के निर्णय सर्व-सम्मति या सर्वानुमति से होने चाहिए। यह भी जरूरी है कि आज का नौकरशाही का ढाँचा बदले। विभिन्न स्तरों पर सरकारी कर्मचारियों की नियुक्ति व नियंत्रण का अधिकार या तो इन पंचायती संस्थाओं को या जिला-स्तर पर संगठित एक स्वतंत्र सेवा-आयोग को हो।

पंचायती राज के इस कार्यक्रम को सफल करने के लिए यह जरूरी है कि पंचायती राज की संस्थाओं का निर्वाचन, गठन व कार्य-संचालन आदि को पूरी तौर पर दलीय राजनीति से बचाया जाय। सभी पक्षों को एकमत होकर पंचायती राज को सफल बनाने में पूरा सहयोग देना चाहिए। यह भी समझ लेना आवश्यक है कि आर्थिक विकेन्द्रीकरण के बिना केवल राजनैतिक *विकेन्द्रीकरण सफल नहीं हो सकता।* गाँव-समाज में परिवार की भावना जगाने और कायम रखने के लिए आर्थिक समता का वातावरण पैदा करना भी जरूरी है। इस दृष्टि से भूमि का ग्रामीकरण एक आवश्यक कदम हो जाता है।

यह खतरा साफ है कि पंचायती राज का प्रयोग अगर ग्राम-स्वराज्य की सही दिशा में नहीं मोड़ा गया तो देश की जनता की आस्था लोकतन्त्र पर से उठ जायगी। जाहिर है कि सर्वोदय-कार्यकर्ता इस सारे *कार्यक्रम से उदासीन नहीं रह सकते।* और इसलिए यह आवश्यक है कि इस प्रयोग की मर्यादाओं को ध्यान में रखते हुए ग्राम-स्वराज्य के अपने विचार को जनता तक पहुँचाने और उस संबंधी कार्यक्रम को अधिक गति देने का हम सब प्रयत्न करें, ताकि गाँव-गाँव की जनता ग्राम-स्वराज्य की स्थापना के लिए समर्थ और योग्य हो सके।

लोक-शिक्षण के इस बुनियादी कार्यक्रम में न सिर्फ लोगों का, बल्कि खुद कार्यकर्ताओं का, पंचों, सरपंचों आदि का तथा सम्बन्धित प्रशासनिक कर्मचारियों का शिक्षण भी शामिल है। प्रबंध-समिति इस बारे में आवश्यक कार्रवाई करे।

भूदान का मंत्र लेकर फिर से भारत में अलख जगाइये !

भूदान के दस साल समाप्त हुए। दस वर्षों में सामाजिक कार्य में फिर-फिर से नवीन उत्साह का संचार होता है, यह बात समाज-शास्त्रज्ञ जानते हैं। भूमि-समस्या के परिहार के लिये भूदान के सिवाय कोई रास्ता नहीं रहा है, इतना अब साबित हो चुका है। ऐसी हालत में जहाँ से भूदान-गंगा का जन्म हुआ उस आन्ध्र प्रदेश में अब दूसरी मर्तबा सर्वोदय-सम्मेलन हो रहा है। मैं आशा करता हूँ कि सर्वोदय के सब कार्यकर्ता भूदान का मन्त्र लेकर फिर से नये उत्साह से सारे भारत में अलख जगायेंगे। इससे दूसरा कोई सन्देश मैं क्या दे सकता हूँ! वास्तव में मेरी पदयात्रा ही सर्वोत्तम सन्देश है।

विनोबा का
जय जगत्

[३]

अनिवार्य राष्ट्रीय सेवा

भारत सरकार की ओर से विद्यार्थियों के लिए अनिवार्य "राष्ट्रीय सेवा" की एक योजना सोची जा रही है, जिसके अनुसार उच्च माध्यमिक या इण्टरमीडिएट की परीक्षा पास करने वाले हर विद्यार्थी के लिए कम-से-कम नौ महीने की "राष्ट्रीय सेवा" अनिवार्य होगी। इस "राष्ट्रीय सेवा" के दो मुख्य अंग माने गये हैं: एक सैनिक प्रशिक्षण, और दूसरा कम-से-कम चार घण्टा प्रतिदिन किसी-न-किसी ग्राम-विकास के काम में शरीर-श्रम।

जहाँ तक इस राष्ट्रीय सेवा का उद्देश्य देश के नौजवानों को देहाती जीवन से परिचित कराने, उनमें शरीर-श्रम के कामों के प्रति आदर और रुचि पैदा करने, सेवा की भावना भरने तथा अनुशासित जीवन के *संस्कार डालने का है, यह योजना स्वागत-*योग्य है। पर सर्व सेवा संघ की राय में इस योजना में सैनिक तालीम, हथियारबंद कवायद तथा हथियारों के उपयोग के शिक्षण आदि का जो अंश दाखिल किया गया है, वह नौजवानों में सेवा या अनुशासन की भावना पैदा करने के लिए कतई जरूरी नहीं है। बल्कि, आधुनिक शिक्षण-शास्त्र की दृष्टि से पूर्ण व्यक्तित्व तथा स्वयं अनुशासन के विकास में इस प्रकार की सैनिक पद्धति बाधक ही है।

सर्व सेवा संघ योजना के इस अंग को खतरनाक मानता है तथा इसका विरोध करता है। संघ यह भी अनुभव करता है कि आज जिस प्रकार इसे देश में स्त्रियों के प्रति भी लागू किया जा रहा है यह एक ऐसी चीज है, जो आज तक दुनिया के दूसरे किसी देश में नहीं हुई है और इससे स्त्री-सुलभ गुणों पर जो आघात होगा, वह समाज के लिए विशेष रूप से हानिकारक है।

राष्ट्रीय सेवा की कोई योजना उच्च *शिक्षण यानी विश्व-विद्यालय में प्रवेश पाने* की एक योग्यता के रूप में अनिवार्य की जाय, उसमें सर्व सेवा संघ हर्ज नहीं मानता, बल्कि इस प्रकार की शर्त से आज के एकांगी शिक्षण की कमी कुछ हद तक पूरी होती है, ऐसा उसका मानना है। पर आगे जाकर इस योजना को अमुक उम्र के तमाम व्यक्तियों के लिए अनिवार्य बनाने की जो कल्पना व्यक्त की गयी है, तथा सैनिक तालीम का जो इसमें समावेश किया गया है, उस पर से इस राष्ट्रीय सेवा में "अनिवार्य सैनिक सेवा" की पूर्वतैयारी का आभास होता है। सर्व सेवा संघ किसी भी प्रकार की अनिवार्य सेवा का, खासकर अनिवार्य सैनिक सेवा का, समर्थन नहीं कर सकता। इस प्रकार की किसी अनिवार्य योजना को वह व्यक्ति-स्वातन्त्र्य के बुनियादी हक के खिलाफ मानता है।

[४]

कार्यकर्ता-प्रशिक्षण

सर्वोदय-विचार की व्यापकता तथा गहराई बढ़ने के साथ-साथ काम के स्वरूप का भी विस्तार हो रहा है। इस बढ़ती हुई जिम्मेदारी को हम तभी निभा सकेंगे, जब कि हमारे लोकसेवक, शांति-सैनिक तथा अलग-अलग कामों में लगे हुए सारे सर्वोदय-कार्यकर्ताओं की वैचारिक भूमिका, बौद्धिक गहराई तथा कार्यक्षमता में उत्तरोत्तर विकास होता रहे। आवश्यक है कि उनकी भावना तथा *वृत्तियाँ भी विकसित तथा परिपक्व हों।* इसके लिए सर्व सेवा संघ आवश्यक समझता है कि इसके निमित्त एक हफ्ते से लेकर एक साल तक के अलग-अलग प्रकार के शिक्षण-क्रम तैयार किये जायँ तथा स्थायी विद्यालय, अस्थायी शिविर, विचार-गोष्ठी, पदयात्रा आदि विविध साधनों का उपयोग करके देश भर में ऐसी व्यवस्था की जाय, जिससे अगले दो वर्षों में हर कार्यकर्ता किसी-न-किसी शिक्षणक्रम में से गुजर सके।

अगले साल के लिये भूदान, लोकनीति तथा शांति-सेना का जो त्रिविध कार्यक्रम उठाया गया है उस दृष्टि से यह बहुत जरूरी है कि अगले छः महीनों में सारे कार्यकर्ताओं को एक अल्पकालीन शिक्षणक्रम के जरिये इस कार्यक्रम से अच्छी तरह परिचित कराया जाय। सब की प्रबंध समिति इस देशव्यापी कार्यक्रम के संयोजन के लिये समुचित कार्रवाई करे।

[५]

नया मोड़: ग्रामस्वराज्य

खादी और रचनात्मक कार्य अहिंसक समाज-रचना की एक गत्यात्मक शक्ति बने और लाखों गाँवों के लोग अपनी जिम्मेदारी, अपनी प्रेरणा और अपनी निश्चयात्मक शक्ति के आधार पर गाँव के रक्षण, शिक्षण और पोषण की जिम्मेवारी उठा लें; साथ ही अपने को एक बड़े समाज और बड़े परिवार के अंग मान कर एक सच्चे नागरिक के नाते जागरूक होकर गाँव, समाज और देश में मानवता के लिए नये संदेशवाहक बनें—यह गांधीजी का स्वप्न था।

इस स्वप्न को मूर्त रूप देने के लिए उन्होंने १९४५ में चरखा-संघ के नव-संस्करण के रूप में सारे रचनात्मक कार्य को नया स्वरूप देने की कल्पना देश के सामने रखी। उस कल्पना को नया जीवन देने के लिए पिछले १० वर्षों से पूज्य विनोबाजी सतत प्रयत्न कर रहे हैं। उस प्रयास के फलस्वरूप आज हम भी इस निश्चय पर पहुँचे हैं कि सारे रचनात्मक कार्य को नया मोड़ दिया जाय। चालीसगाँव, सेवाग्राम, पूसा रोड में हम लोग इस संबंध में विचार-विनिमय तथा इसके विभिन्न पहलुओं पर चर्चा करते आये हैं। और अन्त में कोयम्बतूर केन्द्र में हमने निश्चय किया कि खादी तथा रचनात्मक कार्यों को नया मोड़ देना चाहिए और सारे काम को ग्राम-इकाई के रूप में परिणत करना चाहिए। समय समय पर सर्व सेवा संघ की खादी-ग्रामोद्योग समिति और सारे खादी-जगत् ने इस विचार को मान्य किया है। उसी तरह खादी-ग्रामोद्योग आयोग ने भी इस कार्यक्रम को

हमारे संगठन का आधार क्या हो ? सजा, कानून या प्रेम ?

हम वर्ग-मनोवृत्ति से दूर रहें

दादा धर्माधिकारी

[ता० १७ अप्रैल को सर्वोदयपुरम् में सर्व सेवा संघ की सभा में संघ के विधान पर बहस हुई। संघ का जो नया विधान बना है, उसके अमल में कुछ कठिनाइयाँ खड़ी हुई हैं। लोकसेवक कौन बन सकता है ? लोकसेवक अगर निष्ठाओं का पालन न करे तो क्या हो ? सर्वसम्मति के नियम के कारण कभी-कभी काम में रुकावट आती है, उसका परिहार क्या हो ?—इत्यादि प्रश्न विचाराधीन थे। बहस में भाग लेने वाले कुछ सदस्यों के भाषणों से ऐसा लगता था कि हम पुराने ढंग के संगठनों की भाषा में ही सोच रहे हैं। कुछ भाषणों में कार्यकर्ताओं के परस्पर वैमनस्य और ईर्ष्या-द्वेष आदि की झलक भी थी। एक भाई ने तो कहा कि 'मुझमें "लोकेषणा" जागृत हुई है और इसलिए मैं संगठन में अमुक पद चाहता हूँ।' उनकी दृष्टि से शायद यह दूसरों की 'लोकेषणा' का जवाब था।

• 'दादा' ने व्यथित हृदय से सर्व सेवा संघ के सदस्यों को याद दिलाया कि सर्व सेवा संघ का संगठन न तो कोई फौजी संगठन है, न केवल वैधानिक संस्था। सर्व सेवा संघ जिस उद्देश्य को लेकर चला है, उसे ध्यान में रखते हुए इस संघ का एकमात्र आधार परस्पर विश्वास और स्नेह ही हो सकता है। —सं०]

आज सभापति महोदय से मैंने अपनी ओर से दरख्वास्त की कि मैं कुछ बोलना चाहता हूँ। मैं लोक-सेवक भी नहीं हूँ, शान्ति-सैनिक भी नहीं हूँ, सर्व सेवा संघ का सदस्य भी नहीं हूँ। लेकिन जब मैं यह बहस सुन रहा था तो मेरा हृदय अत्यन्त व्यथित हो रहा था। इतने बड़े समुद्र-मंथन के बाद क्या इसमें से वारुणी और विष ही निकलेगा ?

बुनियादी सवाल यह है कि सर्व सेवा संघ का सहारा क्या है ? उसके पीछे "सैंक्शन" क्या है ? सामान्य तौर पर दो तरह के सहारे होते हैं : एक सजा और दहशत का, दूसरा कानून और विधान का। मेरा अपना यह ख्याल पहले से रहा है कि सर्व सेवा संघ इन दोनों में से कहीं भी नहीं बैठ सकता और उसे बैठना भी नहीं चाहिए। वह फौजी संस्था नहीं है, न केवल वैधानिक संस्था ही ! काम की सहूलियत के लिए कुछ नियमों की जरूरत होती है, लेकिन उसका अर्थ प्रशासन नहीं है। अगर अनुशासन-भंग की कार्रवाई वगैरह के बारे में यहाँ पर हम लोगों को सोचना पड़े, तो हमको यह भी सोच लेना चाहिए कि यह संगठन टिकने वाला नहीं है। यादवस्थली का आरम्भ हो गया है, ऐसा मानना होगा।

• • •

सर्वोदय-सम्मेलन के लिए शुभकामना

मैं आशा करता था कि आन्ध्र प्रदेश में होने वाले सर्वोदय-सम्मेलन में मैं उपस्थित हो सकूँगा, पर मुझे खेद है कि मैं वैसा नहीं कर सका।

सर्वोदय के नाम पर कही जाने वाली कुछ बातों से मैं हमेशा सहमत नहीं हो सका हूं, लेकिन मैंने सदा उनकी कीमत मानी है। वे उस दृष्टि का प्रतिनिधित्व करती हैं, जिसने मुझे कई मानों में आकर्षित किया है, हालांकि हमारे बहुत से कामों का उससे मेल नहीं बैठता रहा है। मेरा खयाल है कि सर्वोदय का यह पहलू ध्यान देने लायक है। हमारे विचार और हमारे कामों में उससे मदद मिलेगी। भारत में हम कई बड़े-बड़े और उलझे हुए मसलों का सामना करना पड़ता है। और इन मसलों को सभी तरह की कसौटियों पर कसना वांछनीय है। खास तौर से, यह आवश्यक है कि हम उन बुनियादी मूल्यों को नजर-अन्दाज न करें, जिनका प्रतिनिधित्व सर्वोदय करता नजर आता है।

मैं सर्वोदय-सम्मेलन के लिए अपनी शुभकामनाएँ भेजता हूँ।

नई दिल्ली —जवाहरलाल नेहरू

१४ अप्रैल, १९६१

• • •

मूल चीज है ढंग बदलने की। मैं अपना ही उदाहरण देता हूँ। मैं बहुत अदब के साथ अर्ज कर देना चाहता हूँ कि मैं कभी श्रम पर नहीं जीने वाला हूँ, शौक से थोड़ा श्रम कर लूँ, वह अलग बात है। मैं लोकाधार पर भी नहीं रहने वाला हूँ। मैं एक साधारण नागरिक हूँ और आपके चरणों में बैठ कर काम करना चाहता हूँ। तो क्या मेरे लिए भी कोई जगह है ? या आप मुझसे कहेंगे कि जब तक तू हमारी तरह सूखी रोटी नहीं खाता, हमारा कोई नहीं रहता ! क्या गांधी जवाहरलाल से कहते थे कि जब तक तू अचकन और चूड़ीदार पाजामा पहनता है और सोफियाना ढंग से रहता है, तू मेरा वारिस नहीं हो सकता ! क्या गांधी मौलाना आजाद को कहते थे कि तेरी सिगरेट जब तक बन्द नहीं होती है, तब तक तू मेरा कुछ नहीं लगता ! ऐसा अगर होता है, तब तो यह आन्दोलन वैरागियों का और विधवा स्त्रियों का आन्दोलन बन जायगा !

त्याग है, तो ईर्ष्या क्यों ?

मेरे मित्रो, यह केवल कार्यकर्ताओं का आन्दोलन नहीं है। कार्यकर्ताओं और नागरिकों का अन्तर धीरे धीरे कम होना चाहिए। इसलिए जो अपनी मेहनत के भरोसे जीते हैं, उनके चरणों में मेरा मस्तक है। मैं उनकी इज्जत करता हूँ। लेकिन वे मुझे क्या मानते हैं ? मैं उनकी बराबरी में आता हूँ कि नहीं ? तो, यह सारी रुख को बदलने की बात है। अगर आपके परिवार में वही शामिल होगा जो परिश्रम करेगा, अपनी आमदनी सबकी आमदनी में मिला देगा, तो उसके साथ भी आपका झगड़ा नहीं होगा, इसका क्या भरोसा है ?

तो सबसे पहली चीज यह होनी चाहिए कि आप त्याग करते हैं और मैं भोग करता हूँ तो भी मेरे भोग से आपको कभी ईर्ष्या नहीं हो। आपने त्याग क्यों किया ? किसने कहा था आपको त्याग करने के लिए ? आपने अपनी मर्जी से अगर किया है तो फिर दूसरा अगर नहीं करता है तो उसकी ईर्ष्या क्यों ?

हमारे मन से वर्ग-मनोवृत्ति गयी नहीं है

तो हमारे संगठन का आधार स्नेह होना चाहिए। अपने रुख को हमें बदलना होगा, और उसमें पहली शर्त यह होगी कि जहाँ सत्ता और संपत्ति का सवाल है, वहाँ दूसरे के उत्कर्ष में मुझे आनंद होगा। बेटा ज्यादा खाता है, तो पिता को आनन्द होता है।

एक व्यक्ति त्याग करता है, वह ग्रामोद्योग का व्रत लेता है, और हमको भैंस के खोये के बने हुए पेड़े मिल रहे हैं और ग्रामोद्योगी शक्कर के बने हुए भी वे नहीं हैं, उन्हें देख कर उसके मुँह में पानी आ रहा है, उसकी आँखें सुर्ख हो रही हैं ! तो क्या इसमें से विकास होगा ? इसमें से किस कौटुंबिकता का विकास हो सकता है ? कौटुम्बिकता वह है जो विषमताओं में, दूसरे के उत्कर्ष में हर्षित होती है।

मेरा बेटा मुझसे ज्यादा खाये, मेरा भाई मुझसे ज्यादा अच्छे कपड़े पहन रहा है, मेरी बहू-बेटियों की साड़ियाँ अच्छी हैं, तो मुझे मजा आता है। पर हमारा कार्यकर्ता ऐसा है कि दरअसल उसका 'क्लास माइंड'—वर्ग-मनोवृत्ति—गयी ही नहीं है। ऐसा

मान्यता दी है, और अपने सारे काम को ग्राम-इकाइयों के रूप में मोड़ने का निश्चय किया है। रचनात्मक संस्थाएँ भी यह समझती हैं कि अगर रचनात्मक कार्यों को एक शक्तिशाली सामाजिक रचना की शक्ति में परिणत करना है, तो एकमात्र उपाय यही है कि लाखों गाँवों के लोग इस काम को अपना काम समझ कर उठा लें और जिस तरह अंग्रेजी सल्तनत से अपने को आजाद करने और स्वराज्य की स्थापना के लिए लाखों युवकों में और ग्रामवासियों में एक अपूर्व उत्साह था, उसी तरह गाँव की दरिद्रता, गाँव के शोषण और लाचारी दूर को करने में और सच्चे माने में ग्रामस्वराज्य स्थापित करने के लिए जन-जन का उत्साह हो।

खादी ग्रामोद्योग कमीशन तथा सर्व सेवा संघ की प्रबंध-समिति ने नये मोड़ को आंदोलन का रूप देने के लिए सारे देश में ६ अप्रैल, १९६१ को 'ग्राम-स्वराज्य दिवस' के रूप में मनाये जाने का आवाहन किया था और उसके लिए एक घोषणा-पत्र भी गाँव के लोगों द्वारा दुहराये जाने के लिए तैयार किया था। यह खुशी की बात है कि इस आवाहन का मुल्क ने स्वागत किया और देश में जगह-जगह ग्राम-स्वराज्य दिवस तथा सप्ताह मनाया गया।

खादी-कमीशन की योजना है कि तीसरी पंचवर्षीय योजना के दौरान में सारे देश में तीन हजार ग्राम इकाइयों की स्थापना की जाय, जहाँ कृषि ग्रामोद्योग-प्रधान समाज-रचना को सही रूप देने का पूरा प्रयास हो। खादी और रचनात्मक काम में लगी सारी संस्थाएँ तो यह काम करेंगी ही, भूदान तथा अन्य सर्वोदय-काम में लगे कार्यकर्ताओं का भी यह कर्तव्य है कि वे अपनी शक्ति के अनुसार इस महान प्रयोग को सफल बनाने में सक्रिय सहयोग दें, ताकि भूदानमूलक ग्रामोद्योगप्रधान अहिंसक समाजरचना को साकार रूप मिल सके।

सम्मेलन में राष्ट्रपति डा० राजेन्द्रप्रसाद का २

हो तो जिस संगठन का आधार स्नेह होना चाहिये वहाँ आने की अपेक्षा जहाँ 'कम्बाइन्ड माइंड' के आधार पर ही शांति होने वाली है, ऐसी जगह जाना चाहिए, उनका अनुयायी बन जाना चाहिए। कम-से-कम मुझे तो ऐसी परिस्थिति में उनका अनुयायी बनने में बिल्कुल लाज नहीं होगी। आप जरा गहराई के साथ सोचिये। हाथ जोड़ कर आप लोगों के कदमों में मेरी यह दरख्वास्त है। वरना आप विधान में *जितना भी फर्क करेंगे*, कुछ नहीं होगा।

दशरथ की गद्दी के उम्मीदवार

मैंने कई बार कहा है कि दशरथ के गद्दी के उम्मीदवार सिर्फ दो थे—कैकेयी और मंथरा। राम, लक्ष्मण, भरत और शत्रुघ्न में से कोई नहीं। यह मर्यादा है। हमने राजनीति और लोकनीति में यह अन्तर किया है। राजनीति है कैकेयी और मंथरा, लोकनीति है राम, भरत। यह हुई सत्ता की बात। इसी तरह से जहाँ संपत्ति का प्रश्न है, वहाँ हमारा रुख यह होना चाहिए कि *दूसरे को जो मिलता है उससे मुझे कम* मिले तो कोई हर्ज नहीं। दूसरों को अगर मुझसे ज्यादा मिलता है, तो मुझे कोई शिकायत नहीं होनी चाहिए।

आज इस चीज को आप लोगों के सामने रख देना मैंने बहुत जरूरी माना, वरना जो कमेटी* बनेगी, उनके सुझावों से कुछ नहीं होने वाला है। आज तक दुनिया में ऐसा कोई कानून नहीं बना है, जो नाकाफी साबित न हुआ हो। उससे अलग दूसरा कोई आधार आप खोज रहे हैं, तो वह मित्रता का ही हो सकता है। उसे आप कौटुंबिकता या पारिवारिकता कह लीजिये। कौटुंबिकता में 'शेअरिंग'—साझेदारी—तो है ही दावेदारी तो हो ही नहीं सकती, लेकिन सबसे बड़ी शर्त यह है कि दूसरे के सुख में मुझे दुगुना सुख होता है। दूसरे के उत्कर्ष को देख कर, उसकी तरक्की को देख कर मुझे खुशी होती है, मैं हर्षित होता हूँ। यह सर्वोदय के कार्यकर्ताओं के मानस की मूलभूत चीज होनी चाहिये।

हमें अपने मन को बदलने की जरूरत है। मन को बदलना ही हमने क्रांति का आधार माना है,पर किसका मन बदलेंगे? जैसे तुलसीदासजी ने किया था वैसे हम अपना मन साफ करेंगे। तुलसीदासजी ने 'गुरु-चरण रज' से अपना 'मनमुकुर' साफ किया था, हमारे जो साथी हैं उनके चरणों की रज से हमारे मन का आइना साफ हो सकता है।

---

*सर्व सेवा संघ के विधान में संशोधन का काम एक कमेटी के सिपुर्द कर दिया जाय यह सुझाव आया था। —सं०

मुझे इस बात की खुशी है कि मैं आज सम्मेलन के अंतिम दिन भी किसी तरह पहुँच सका। मेरी यहाँ आने की अनिच्छा नहीं थी, लेकिन इच्छा होते हुए भी कई प्रकार की कठिनाइयाँ थी।

यहाँ आकर मैं आप सब पर कोई एहसान नहीं करता; लेकिन इसलिए आता हूँ कि आपसे फिर से परिचय हो और उससे मैं लाभान्वित होऊँ। ऐसी सभा में आकर मुझे पुरानी बातें याद आ जाती हैं, वह समय और वे दिन मन की आँखों के सामने आ जाते हैं, जिनको पूज्य महात्माजी के समय हम देखा करते थे। उस वक्त भी देश के सामने मुश्किलें बहुत थीं,मगर तो भी हम एक मत,एक राय होकर दृढ़ निश्चय के साथ बढ़ते थे। महात्माजी के नेतृत्व, और उससे भी बढ़कर उनकी तपस्या में, हमें विश्वास था; और इसलिए उस रास्ते पर चलने में हम नहीं हिचकते थे; क्योंकि हम जानते थे कि हमसे कोई भूल नहीं होगी और होगी भी तो महात्माजी उसे सम्हाल लेंगे।

विकेंद्रीकरण का ही प्रश्न लीजिये। इसमें हमको बड़ी कठिनाई देखने में आती है! जहाँ एक तरफ हम चाहते हैं कि विकेंद्रीकरण हो, वहाँ दूसरी तरफ हम यह भी देख रहे हैं कि केंद्रीकरण बड़े जोरों से बढ़ता जा रहा है। राजनीति को ही लीजिये। इसमें कोई शक नहीं है कि आज देश में इस प्रकार की सत्ता चल रही है जो लोगों के मत से अपनी जगह पर पहुँचायी गयी है। पर इसमें भी मैं यह देखता हूँ कि जहाँ-तहाँ इस बात की कोशिश चलती रहती है कि यह सत्ता केवल व्यक्ति के अधिकार में आ जाय। मेरा इसमें कोई व्यक्ति-विशेष पर आक्षेप नहीं है। मैं इस चीज को देख रहा हूँ कि अब जनता पर विश्वास कम होकर व्यक्ति पर विश्वास बढ़ रहा है। महात्मा गांधी के दिनों में भी यह बात थी। मगर उस समय हमारा यह विश्वास था कि वे सत्य और अहिंसा से हट कर कुछ नहीं करेंगे और इस कारण किसी को हानि नहीं पहुँचा सकेंगे। आज भी अगर इस तरह के व्यक्ति केन्द्र में हों, जिनमें सत्य और अहिंसा कूट-कूट कर भरी हो तो कोई भय की बात नहीं है।

• • • • • •

चंद महीनों में फुरसत मिलेगी

सम्मेलन में राजेन्द्रबाबू का संकेत

"....अभी हाल में सन्त विनोबा बिहार में गये थे। वहाँ कई सभाओं में उन्होंने मेरा जिक्र किया। जो कुछ उन्होंने सुना है, वह सही है। हो सकता है कि चंद महीनों के बाद मुझे फुरसत हो जाय। और ऐसा होने पर—हालाँ कि अब मेरी वह शक्ति तो नहीं रही कि आप लोगों के साथ दौड़-धूप कर सकूँ, लेकिन एक जगह बैठ कर कुछ कर सकूँगा। विनोबाजी का मार्गदर्शन और आप लोगों का सहयोग मिलता रहा तो काम बढ़ता जायगा।"

• • • • • •

आज असत्य और हिंसा से बचने का रास्ता यह है कि जो चुनते हैं, वे चुने हुए लोगों को काबू में रखें; जनता इतनी जागृत होनी चाहिए। आज सभी जगहों पर, कांग्रेस के लोगों के बीच में ही, आपस में जगहों के पदों के लिए तनाव और झगड़े जारी हैं! जो कांग्रेस के बाहर हैं, उन लोगों के साथ तो हैं ही।

जब तक सत्ता हासिल करने की इच्छा से काम होता रहेगा, हम सच्चा काम नहीं कर सकेंगे। कहने के लिए तो हम सब सत्ता इसीलिए चाहते हैं कि हम सेवा कर सकें। अगर यह बात सच है, तो कोई डर की बात नहीं है। और इसका फैसला तो हरेक आदमी स्वयं ही कर सकता है कि क्या वह सचमुच सेवा के लिए सत्ता चाहता है या सत्ता के लिए सेवा करता है? जरूरत इस बात की है कि सेवा की जाय, लेकिन सत्ता के लिए नहीं; सत्ता भी ली जाय, लेकिन सेवा करने के लिए।

दूसरी चीज संपत्ति पैदा करने की ले लीजिये। उसमें भी हम विकेन्द्रीकरण चाहते हैं। मगर उसमें भी हम देखते हैं कि बहुत कुछ केन्द्रीकरण होता जा रहा है और वह केन्द्रीकरण एक प्रकार से अनिवार्य-सा है; क्योंकि हम जिस तरह से पैदा करना चाहते हैं वह तरीका ही ऐसा है कि केंद्रीकरण के बिना वह काम नहीं हो सकता और यदि हम अपने सामने उन्हीं आदर्शों को रखेंगे जो उन देशों के हैं, जिन्होंने इस रास्ते पर चल कर काम किया है, तो हमारे लिए भी दूसरा रास्ता नहीं रह जायगा।

मूल बात यह है कि सारी अशांति का कारण मनुष्य के हृदय में है। वह अनेक कुछ-न-कुछ चाहता है। जब तक इन इच्छाओं को, लालच को काबू में नहीं लायेंगे तब तक शांति नहीं हो सकती। जितना अधिक मिलता है,उतना अधिक लोभ बढ़ता जाता है। इसलिए इस लोभ का संयम आवश्यक है, और यह तभी हो सकता है, जब मनुष्य अपने हृदय की लिप्सा को शांत करे। उत्पादन के केन्द्रीकरण का सारा मौलिक कारण यही है। यदि मनुष्य अपने भोग के साधनों को इच्छापूर्वक कम कर सकता है तो वह अधिक सुखी रह सकता है। इसका अर्थ यह नहीं है कि हम हमेशा गरीबी में ही रहें। यह तो एक मानसिक वृत्ति की बात है। उसको दुरुस्त करना चाहिए। जो मानसिक वृत्ति को काबू में कर लेता है, उसके पास भोग के साधन होते हैं तो भी वह उनका गुलाम नहीं बनता। और जिसने अपनी इस मानसिक वृत्ति को शांत नहीं किया उसके पास चाहे जितना कुछ हो, वह अशांत ही रहेगा, शांत नहीं रह सकता। इसी भोग की लिप्सा के कारण लड़ाइयाँ होती हैं, दो देशों के बीच, चाहे दो व्यक्तियों के बीच हो इसलिए भोग की वस्तुओं को लेना मना नहीं है, लेकिन भोग-लिप्सा को काबू में रखना चाहिए। सर्वोदय का सर्वोत्तम काम यही होना चाहिए कि वह इस भावना को जगावे और दृढ़ करे।

(सर्वोदयपुरम, २०-४-६१)

•

कस्तूरबा-सेविकाओं को शान्ति-दीक्षा

श्री जयप्रकाशजी द्वारा उद्बोधन

ता० ११ अप्रैल को प्रातःकाल सम्मेलन की कार्रवाई शुरू होने से पहले सम्मेलन के पण्डाल में एक छोटा, किन्तु भव्य और प्रेरणादायी कार्यक्रम हुआ। पिछले चार महीने से साधना केन्द्र काशी में कस्तूरबा ट्रस्ट की सेविकाओं का एक शांति-विद्यालय चल रहा था। करीब ३२ सेविकाएँ शिक्षण के लिए आयी थीं। शान्ति-सैनिक की निष्ठा, उसका कर्तव्य, शान्ति-स्थापना के लिए आवश्यक बौद्धिक, मानसिक और शारीरिक तैयारी इत्यादि विषयों पर विद्यालय में उनका शिक्षण हुआ। विद्यालय के चार्ज में श्री शरयूताई धोत्रे तथा उत्कल की श्री अन्नपूर्णा महाराणा और अन्नपूर्णा दास थीं। सम्मेलन में आने के साथ इनके प्रशिक्षण की अवधि समाप्त हो रही थी, अतः वहीं पर श्री जयप्रकाशजी द्वारा इन बहनों को शान्ति-सैनिक की दीक्षा दी गयी। सिर पर शान्ति-सैनिक के चिह्न स्वरूप पीला रूमाल बाँधे हुए एक के बाद एक बहन ने आकर श्री जयप्रकाशजी से आशीर्वाद प्राप्त किया। अन्त में जयप्रकाशजी ने सब बहनों को उद्बोधन करते हुए कहा :—

अभी जो कुछ हम लोगों ने शांति-सैनिकाओं के विद्यालय का अहवाल सुना और उसके पहले भी जो कुछ मुझे व्यक्तिगत रूप से जानकारी मिली, उस पर से निस्संकोच कह सकता हूँ कि पिछले चार महीने में आप लोगों को उत्तम शिक्षण मिला है, कुछ काम करने का अनुभव भी मिला है।

जब अपने देश ने स्वराज्य, स्वातंत्र्य प्राप्त किया था, तब देश की परिस्थिति भयानक थी। देश के हिस्से बने। दोनों ही तरफ बहुत मार-काट हुई और लाखों भाई-बहनें इधर से उधर आयीं और गयीं। उसके बाद धीरे-धीरे शांति स्थापित हुई थी। और यद्यपि कभी-कभी जहाँ-तहाँ अशांति होती थी, पर ऐसा लगता था कि अब देशमें शांति की स्थापना होगी और हम सब एकाग्र चित्त होकर नये भारत के निर्माण में लगेंगे। परन्तु पि ले दो महीनों से, या एक-दो सालों से भी कह सकते हैं, ऐसा लगता है कि देश का मानस कुछ बिगड़ रहा है और तरह-तरह के झगड़े, संघर्ष पैदा हो रहे हैं। आज बहुत थोड़े ही भाई-बहन शांति के काम में लगे हुए हैं और अगर हम ऐसा सोचें कि जो कुछ अशांति का वातावरण देश में बन रहा है, उन सबके निराकरण का जिम्मा हमारे ऊपर है, तो हमारी भूल होगी।

पर जहाँ भी हम काम करते हों, जहाँ भी हमारा घर हो, जिस समाज से हमारा थोड़ा सम्पर्क है, वहाँ पर कस्तूरबा ट्रस्ट की ओर से जो कुछ भी कार्यक्रम आप चला रही हों—खादी, नई तालीम, बालवाड़ी या मातृ-सेवा—उसके साथ-साथ इस कार्यक्रम को—जो औरों से कुछ कम महत्त्व का नहीं है, बल्कि शायद वर्तमान परिस्थिति में अधिक ही महत्त्व का हो—आप अवश्य लें कि जिन लोगों के बीच आप काम कर रही हैं, उनका दिल एक-दूसरे से मिल सके, एक-दूसरे को वे समझ सकें, जो पुराने या नये भेद समाज में हैं, उनको हम किसी हद तक दूर कर सकें।

हर प्रकार के भेद को दूर कर सकें, ऐसी शक्ति तो हम लोगों में नहीं है। भेद तो बहुत प्रकार के हैं—आर्थिक भेद है, जाति-भेद है, विचार-भेद है, पक्ष-भेद है। लेकिन यह कोई आवश्यक नहीं है कि इन भेदों के कारण दंगा-फसाद हो, आपस में झगड़े हों, कटुता पैदा हो, कोई छोटी-सी बात हो जाय तो मनुष्य अपनी मनुष्यता भूल जाय और अपने पड़ोसी के घर में आग लगाये। इंग्लैंड के साथ हमारा सौ-डेढ़ वर्षों से सम्बन्ध रहा है। अब उनके देश में भाषा-भेद हैं, वर्ण-भेद हैं, जाति-भेद भी एक प्रकार का मान सकते हैं। लेकिन इनके कारण कभी आपस में मारकाट हुई ऐसी बात कोई १६५ साल पहले हुई होगी, इधर तो नहीं हुई।

आप बहनों का ध्यान खास तौर से मैं इस ओर दिला रहा हूँ कि आपका प्रवेश घरों में हो सकता है, महिलाओं में हो सकता है। अभी यहाँ बताया गया कि आपमें से करीब-करीब सभी बहनों ने शांति सैनिक बनने का तय किया है और यह भी लिख दिया कि आप जिस संस्था की सेविकाएँ हैं, उनकी इजाजत होगी तो जहाँ जाने का आदेश हुआ, वहाँ जाने के लिए आप तैयार हैं। मुझे बड़ी खुशी हुई कि आपने ऐसा किया। लेकिन जब तक अशांति नहीं होती है, तब तक भी हम सेवा का काम करें, बच्चों का काम करें, साहित्य-प्रचार का काम करें, विचार प्रचार का काम करें, सर्वोदय-पात्रों का काम करें। जब अशान्ति नहीं है तब भी ऐसा मानने का कारण नहीं है कि लोगों के दिल मिले हुए हैं। आप ऐसी हवा तैयार करें कि यह संभव ही न हो कि कहीं पर कोई झगड़ा हुआ। जितना एक-दूसरे को हम नजदीक से समझेंगे, उतना ही हम एक-दूसरे से एक हो सकेंगे। उदाहरण के लिये, हिन्दू कहे कि मुसलमान तो गाय खानेवाला है, इसलिए वह हमारा दुश्मन है, और मुसलमान कहे कि हिन्दू पत्थर को पूजता है, इसलिये हमारा दुश्मन है—तो न तो पहले वाला हिन्दू धर्म को समझता है और न दूसरा इस्लाम धर्म को। तो आपके काम का कुछ ऐसा प्रोग्राम होना चाहिए कि हिन्दू-मुसलमान दोनों साथ रहते हैं, तो दोनों एक-दूसरे को समझें। इस कार्यक्रम को और कोई ज्यादा ठोस तरीके से मूर्त रूप दिया जाय।

शांति-स्थापना का काम अशांति होने के बाद नहीं, उसके पहले करना चाहिए। शान्ति-स्थापना का काम अगर हम अशांति होने के बाद करते हैं, तो हम बाजी हार जाते हैं।

मैं आशा करता हूँ कि आपने इन चार-पाँच महीनों में जो कुछ भी सीखा, समझा उसका बराबर ध्यान रखेंगी और इस ढंग से आपका काम होगा कि सबको लगेगा कि शांति-सैनिक विद्यालय में जाने के बाद यह बहन बदल कर आयी है, कुछ ऊँची हो गयी है। भगवान आपका कल्याण करें और आपका काम यशस्वी करें।

—:०:—

हमने शांति सैनिकों के लिए कुछ शर्तें बनायी हैं। मुख्य शर्तें तो जानते ही हैं—राजनीति में न पड़ना, जातिभेद न मानना इत्यादि। एक और शर्त है—मनुष्य के अंतर में भगवद्रूप-दर्शन है, इस पर विश्वास रखना। शांति-सैनिक इस शर्त पर मुख्य जोर दे। कामयाबी बाहर से मिले या न मिले, बहुत महत्त्व की बात नहीं है। जो शांति से पेश आये, मार खाये, प्रसंग पर मर मिटे, वह है शांति-सैनिक!

—विनोबा

शांति-सैनिकों का कूच १८ अप्रल '६१

शांति के सिपाही चले !

शान्ति के सिपाही चले, शांति के सिपाही चले
लेके खैरख्वाही चले, रोकने तबाही चले
शान्ति के सिपाही चले चले।
वैर-भाव तोड़ने, दिल को दिल से जोड़ने
काम को संवारने, जान अपनी वारने।
विश्व के ये पासबाँ, लेके सेवा का निशाँ,
भीरुता से सावधाँ, चल पड़े हैं बेगमाँ।
सत्य की सम्हाल ढाल, अहिंसा की ले मशाल
धरती माँ के नौनिहाल हैं, निकल पड़े सवाल।
जय जगत् जय जगत् जय जगत्
पुकारते, बढ़ रहे बिना रुके,
लेके दिल के वलवले, अपने ध्येय को चले।

—दुखायल

सर्वोदय का संदेश आज की ...

तेरहवें ... ोद ...

दस वर्ष के भूदान-आन्दोलन की उपलब्धियां उसकी सारी भूलें और असफलताओं के बाद निस्सन्देह उल्लेखनीय हैं। सामाजिक जीवन के दायरे में उसने अहिंसा की पद्धति की उपयुक्तता ... है। यह ठीक है कि न तो इसके द्वारा एक ओर देश की भूमि-समस्या जैसा बड़ा प्रश्न हल हो पाया न उसकी तुलना में भूमिहीनों का छोटा मसला ही, पर भूदान ने भूमिहीनों के लिए जो कुछ भी किया और कोई न कर सका। इसी के एक अंग ग्रामदान द्वारा, जिसको हम भूदान रूपी वृक्ष का फल क... है, इसने यह स्पष्ट बनाया है कि किस प्रकार देश की विशिष्ट परिस्थिति के सन्दर्भ में भूमि समस्या हल की जा सकती है।

गम्भीर अध्ययन के बाद मैं इस निर्णय पर पहुँचता हूँ कि अब तक गाँव ...

व्यवस्था का मौजूदा तरीका अपने आप में ही अकेली एक ऐसी बात है कि जो गाँव में वर्ग-भेद, जाति-भेद, शोषण और मुकदमेबाजी का तथा गाँव-समाज में सम्पत्ति, सुरक्षा व शिक्षा की दृष्टि से भारी विषमता का कारण है। बढ़ती हुई आबादी के अनुपात में देश में भूमि इतनी कम है कि वह अब व्यक्तिगत मुनाफे का जरिया नहीं रहनी चाहिए। उसको अब सामूहिक हित का साधन बनाना ही होगा, ताकि समस्त गाँव को भोजन मिल सके। यह सामुदायिक स्वामित्व और व्यवस्था से ही सम्भव है। ग्रामदान की बड़ी देन यह है कि उसके द्वारा यह चीज अधिकांश मात्रा में सम्पन्न हो सकी है। इस प्रकार कुछ ग्रामदानी गाँवों में न केवल जीवन के भौतिक पहलू से, बल्कि सामाजिक, सांस्कृतिक व नैतिक दृष्टि से भी बड़ा उल्लेखनीय विकास हुआ है।

"...परम्परा के अनुसार अखिल भारतीय सर्वोदय-सम्मेलन के अध्यक्ष से बहुत कुछ कहने की अपेक्षा नहीं रखी जाती। इसके कुछ पिछले अध्यक्षों ने तो कोई प्रारम्भिक भाषण ही नहीं दिया। अध्यक्ष कोई भी रहे, किन्तु प्रत्येक सम्मेलन में मुख्य और मार्गदर्शक भाषण की अपेक्षा विनोबाजी से रहती थी और वे उसकी पूर्ति भी करते थे। यही होना भी चाहिए था। उनका मार्गदर्शन न मिलता तो स्वराज्य के बाद भारत में सर्वोदय के लिए अपने आपको अभिव्यक्त करना असम्भव हो जाता। उस समय सर्वोदय तेजी के साथ सत्ता की राजनीति का पिछलग्गू बनता चला जा रहा था और रचनात्मक कार्यक्रम सरकारी विकास-योजनाओं के पूरक के तौर पर रह गया था। विनोबाजी यदि उस समय सामने न आते और वैचारिक शुद्धता, निर्माण-शक्ति और आध्यात्मिक गहराई से परिपूर्ण उनके अद्भुत नेतृत्व का लाभ हमें न मिला होता तो यह सब विचार कि सर्वोदय का भी कोई एक स्वतन्त्र और निर्माणकारी कार्यक्रम है और अहिंसा का अर्थ हिंसा को टाल देना मात्र नहीं, बल्कि मनुष्य और समाज को बदलने के लिये प्रेम की शक्ति का प्रत्यक्ष उपयोग करना है, अत्यन्त धुंधले और दूर के आदर्श मात्र बन कर रह जाते।

दुर्भाग्य से गत सम्मेलन से अपनी चर्चाओं के समय हम विनोबाजी का वैयक्तिक मार्गदर्शन नहीं प्राप्त कर पा रहे हैं। इसमें शक नहीं कि जान-बूझ कर हमसे दूर रह कर वे हमें स्वयं सोचने के लिए मजबूर कर रहे हैं। यह बिला शक अच्छा ही है, क्योंकि नहीं तो उनके जैसे नेता के न रहने पर सर्वोदय-विचार की यह गंगा अन्ततोगत्वा शास्त्र को ही प्रमाण मान कर चलने वाले शास्त्रार्थ की ऊसर मरुभूमि में लुप्त हो जाती।..."

ग्रामदान का कार्यक्रम एकदम स्वैच्छिक रहा है और रहना चाहिये। ऐसे समय जब कि यह आन्दोलन अपने शिखर पर था, येलवाल में एक कान्फरेन्स हुई थी, जिसमें भारत के राष्ट्रपति, कांग्रेस, साम्यवादी तथा प्रजासमाजवादी पार्टी के नेता, प्रधान मन्त्री और केन्द्र के दूसरे मन्त्री, कई राज्यों के मुख्य मन्त्री, स्वयं विनोबाजी तथा सर्व सेवा संघ के प्रतिनिधियों ने भाग लिया था। शायद इस प्रकार की कान्फरेन्स देश में अपने ढंग की यह पहली ही थी। यह खुशी की बात हुई कि कान्फरेन्स ग्रामदान के सम्बन्ध में एक सर्वमान्य नीति पर सम्मत हुई और कान्फरेन्स की ओर से एक वक्तव्य प्रकाशित किया गया, जिसमें ग्रामदान को अच्छा बताया गया और देशवासियों का आह्वान किया गया कि वे इस काम में पूरा सहयोग दें, वक्तव्य में सामुदायिक विकास-योजना व ग्रामदान-आन्दोलन के बीच सहयोग की अपेक्षा पर भी जोर दिया गया।

मुझे इसमें कोई शका नहीं है कि यदि उस वक्तव्य में प्रकट की गयी भावनाओं के अनुरूप काम हुआ होता और सब मिल कर प्रयत्न में लग पाते तो ५ हजार की बजाय देश में ५० हजार ग्रामदान हुए होते, और तब बाकी बचे हुए गाँव निश्चय ही उस प्रवाह के साथ हो जाते।

पर सबकी शक्ति क्यों इस काम में नहीं लग पायी? शायद उसका कारण यह था कि राजनैतिक दल और उनके नेताओं का हृदय-परिवर्तन की शक्ति में पक्का विश्वास नहीं था। सच तो यह है कि ऐसा उन्होंने अक्सर कहा भी है। उनका विश्वास तो दरअसल कानून में है। यदि यह मान्यता सही हो तो मैं राजनैतिक नेताओं को यह बताना चाहता हूँ, और खासकर उनको कि जो अपने को समाजवादी कहते हैं, कि ग्रामदान ने समाजवाद के लिये राजमार्ग खोल दिया है। देश के तीनों प्रमुख राजनैतिक दल—काँग्रेस, प्रजा-समाजवादी तथा साम्यवादी—देश में समाजवाद के लिये काम करने के हामी हैं। देश में कुछ और छोटे-मोटे समाजवादी गिरोह हैं, जो इसके लिये काम करते हैं। सवाल यह है कि हमारे कृषि-प्रधान देश के लिये समाजवाद का अर्थ क्या है? जो कुछ थोड़ा-सा मुझे समाजवाद का ज्ञान है, उस पर मुझे तो केवल एक ही उत्तर सूझता है। न तो जागीरदारी उन्मूलन, न भूमि की अधिकतम सीमा का निर्धारण और न काश्तकारों को अपनी काश्त की जमीन पर सुरक्षित करना और न भूमियों का एकीकरण और न खेती का बीमा, और न ही कोई यह या वह, या सब मिल कर इस तरह की भूमि-सुधार की बातें, जिनके लिये कानून बने हैं, अथवा बनाने की चर्चा की जाती है, समाजवाद है। इस देश में भूमीय समाजवाद का केवल एक ही अर्थ है—भूमि का सामुदायिक स्वामित्व व व्यवस्था (इस व्यवस्था का मतलब सामूहिक खेती से नहीं है, गो व्यवस्था ऐसी भी हो सकती है)। यदि कानून द्वारा ही हमें लक्ष्य तक पहुँचना है तो ऐसे उपयुक्त कानून बनने चाहिये कि जिनके जरिये भूमि की व्यक्तिगत मालकियत ग्रामसभा के नाम हस्तांतरित हो जाय।

ग्रामी...

- राजनी...
- सम...
- जन-आं...
- सर्वो...
- पंचायत...
- आम चुनाव
- यो...
- ग्रामीण...
- चीन और पा...

तेनाली-विजयव... संगठित योजना ... रखते हुए डा० ... में २५ हजार ... नियमित चल ... पात्र संग्रह का ... भाषा के भूदान... वाले घरों में पहुं... योगमु' की २२ ह...

स्थिति का सर्वोत्कृष्ट समाधान है

जयप्रकाशजी का भाषण

कानून भी बनाया जा सकता है

ऐसा कहा जा सकता है कि इस प्रकार
ा कानून सम्भव नहीं है, क्योंकि इसका
यापक विरोध होगा। यह सही है। पर मैं
रन्तु ऐसा कानून बनाये जाने की बात नहीं
ाता। और बातों के अलावा यह लोक-
ंत्रीय भी नहीं होगा। लोकतंत्रीय प्रक्रिया
ो कानून बनने के पूर्व जनमत तैयार करना
आवश्यक है। अब यदि तीनों बड़ी राज-
नैतिक पार्टियाँ मिल जायँ और संयुक्त रूप
से या अलग-अलग जैसी उनकी इच्छा हो,
व्यापक लोक शिक्षण का कार्य चलायें तो
थोड़े ही समय में देश में ऐसे कानून के
लिये बड़े पैमाने पर अनुकूल वातावरण खड़ा
किया जाना बहुत मुश्किल न होगा। क्योंकि
ऐसे भूमिवानों की संख्या कि जिनके हितों
पर भूमि के ग्रामीकरण का प्रतिकूल असर
पड़ेगा, बहुत थोड़ी ही रहने वाली है।
अलावा इसके ग्रामीकरण की जो हमारी
कल्पना है, उसका मतलब उन किसानों की
सम्पत्ति का स्वामित्व हरण नहीं है। एक
तो इन किसानों को भी उपरोक्त ग्राम की
भूमि में से हिस्सेवार भूमि मिलेगी। दूसरे,
उस सब भूमि का जो उनके हिस्से के अलावा
होगी, कानून उसके लिये कुछ बरसों तक
ग्राम-समाज से खेती की उपज से मुआवजा
दिलाने की व्यवस्था करेगा। इसलिये यदि
इस कार्यक्रम को भूमिवानों को ठीक से
समझाया जाय तो कोई कारण नहीं है कि
वे इसका विरोध करें। खासकर जब यह
उनको दिखाया जा सके कि यह कानून
'ग्रामसमाज के सर्वांगीण विकास के हित में
आवश्यक है।

यह चुनाव का वर्ष है। सभी
समाजवादी दल इस बात पर गम्भीरतापूर्वक
विचार करके अपनी चुनाव घोषणाओं में
इसको स्थान दें। यदि समाजवादी पार्टियाँ
न तो स्वैच्छिक ग्रामदान के लिये तत्परता-
पूर्वक काम करती हैं और न उपरोक्त तरीके
पर कानून के लिये तैयारी करती हैं, तो
यही कहा जायगा कि जो कुछ वे
कहती हैं, उसके लिये वे सचमुच गम्भीर
नहीं हैं।

हमारे अपने लिये तो ग्रामदान
सारे आंदोलन का आधार है, क्योंकि
हमारी दिलचस्पी केवल आर्थिक
सुधार तक सीमित नहीं है—यद्यपि
यह निश्चय ही हमारे महत्त्वपूर्ण
उद्देश्य में से एक है—पर ग्रामदान के
अन्तर्भूत उस मनोवैज्ञानिक प्रक्रिया
में भी हमारी दिलचस्पी है, जिसका
लक्ष्य जीवन में प्रतिस्पर्धा के स्थान
पर सहयोग के मूल्यों की स्थापना
है। भूमि के ऐच्छिक ग्रामीकरण,
याने ग्रामदान से, दोनों बातें सधती
हैं, जब कि कानून द्वारा ग्रामीकरण
से एक ही—आर्थिक—बात बनती है।
मैंने जो यह चुनौती राजनैतिक दलों
को देने का साहस किया है, उसका
एक यही कारण है कि वे हृदय-परि-
वर्तन की प्रक्रिया में इतनी शंका
करते हैं और कानून में ही पूरी
आस्था रखते हैं।

भारत किधर ?

मैं अब जरा भारत की सामान्य स्थिति
की ओर आपका ध्यान आकृष्ट करूँ। यद्यपि
मैं यह नहीं मानता कि स्थिति असाध्य हो
गयी है, फिर भी आप लोग इस बात से सह-
मत होंगे कि स्थिति चिंताजनक जरूर है।
पिछले दिनों ऐसी कुछ घटनाएँ अपने देश
में हुई हैं, जो हमको बार-बार यह याद
दिलाती है कि राष्ट्रीय एकता का काम
बहुत बड़े अंश में अभी अधूरा ही पड़ा
हुआ है। भाषा-भक्ति ने कई बार राष्ट्र भक्ति
की भावना को दबा दिया है। साम्प्रदायिकता
और जातिवाद ने भी प्रायः अपना नग्न
नृत्य दिखाया है। इस पागलपन में सामान्य
मानवीय भावनाएँ और शिष्टाचार को भी
हमने तिलांजलि दे दी है।

एकमात्र तरीका

सर्वोदय का संदेश, जो प्रेम का संदेश
है, वास्तव में केवल यही इस खतरनाक
स्थिति का सर्वोत्कृष्ट उत्तर है। किन्तु दुर्भाग्य
से हम संख्या में भी कम हैं और हमारे प्रेम
की गहराई भी बहुत अपर्याप्त है। लेकिन
मुझे विश्वास है कि प्रेम की शक्ति के अति-
रिक्त कोई ऐसी शक्ति नहीं है, जो भारत को
एक राष्ट्र के, या यों कहें कि ऐसे समाज के,
जहाँ सब लोग एक समान आदर्शों की
प्राप्ति के लिए सामूहिक प्रयत्न करते हों,
रूप में गूथ सके। प्रेम की उस अद्‌भुत
शक्ति का उपयोग करने की योग्यता हमें
प्राप्त करनी है। पर यह भी हमारे काम का
एक अंश ही है। हमें यह भी सीखना है कि
उस शक्ति का अधिक प्रभावोत्पादक ढंग
से कैसे उपयोग किया जाय। विनोबाजी
इस क्षेत्र में हमारे आचार्य हैं। इसको
अमल में लाने के लिए उन्होंने हमें दो ठोस
तरीके बतलाये हैं—(क) शांति-पात्र (सर्वोदय-
पात्र) का प्रचार और प्रसार। (ख) शांति-
सेना का संगठन। शांति-पात्र के द्वारा हम
हर घर में शांति के संदेश को पहुँचा सकते
हैं। उसके द्वारा प्रेम की शक्ति का रास्ता
सुगम करने में बहुत मदद मिलेगी।

शांति-सेना पर जोर दें

शांति-सैनिक सामान्य स्थिति में अपनी
सेवा के द्वारा और अशांति की स्थिति में
शांति-स्थापना के प्रयत्न में आवश्यकता
पड़ने पर अपनी जान तक दे देने की तैयारी
के द्वारा प्रेम की शक्ति को मजबूत बनाता
है। परन्तु अंकित और अनांकित दोनों
मिला कर भी उनकी संख्या अभी बहुत कम
है। और जिन शक्तियों का उन्हें मुकाबला
करना है, वे बहुत ही बड़ी हैं। स्पष्ट है कि
अगले साल हमें अपनी पूरी शक्ति
लगा कर शांति-सेना के कार्य को आगे
बढ़ाना है।

• • •

गत वर्ष कुछ नये विचार और नये
कार्यक्रम हमने हाथ में लिये। इनमें ग्राम-
स्वराज्य के संकल्प का एक कार्यक्रम था।
आर्थिक विकेन्द्रीकरण और पंचवर्षीय
योजना जैसे प्रश्नों का भी अधिक सजगता
से अध्ययन किया गया। फिर भी यह सही
है कि हम आंदोलन को उस स्थिति में जिसमें
वह शुरू के दिनों में पहुँचा था, नहीं टिका
सके। मेरी राय में यह स्वाभाविक ही
था। कोई भी व्यक्ति सतत दौड़ता नहीं रह
सकता। उसको थकान लाजमी होती है
और उस थकान को मिटा कर पुनः ताजा
होने के लिये रुकना जरूरी होता है। थकान
मिटाने का ऐसा अवसर हम ले चुके हैं। १८
अप्रैल, १९५१ के दिन से, जब कि इसी
राज्य के पोचमपल्ली ग्राम से भूदान-आन्दो-
लन का जन्म हुआ, आज आन्दोलन को
१० वर्ष पूरे होते हैं और अब हम ऐसा कह
सकते हैं कि जन आन्दोलन का दूसरा दौर
शुरू होने का अवसर प्रस्तुत हुआ है।

व्यापक चिंतन आवश्यक

हमारी कुछ ऐसी आदत हो गयी है
कि हम जब आंदोलन की बात सोचते हैं
तो केवल भूदान अथवा उससे सम्बन्धित
ग्रामदान, सम्पत्ति-दान जैसे कार्यक्रम की
भाषा में ही सोचते हैं। यह भी सोचने का
एक संकीर्ण ही तरीका है। सच तो यह है
कि सघन व व्यापक सब विभिन्न कार्यक्रम
मिल कर आन्दोलन बनता है। वे सारे
कार्यक्रम एक-दूसरे पर आधारित होते हैं
और एक-दूसरे को बल देते हैं। सघन और
व्यापक दोनों प्रकार के कार्यक्रमों की सफलता
का अन्योन्याश्रयी सम्बन्ध होता है। एक
के बिना दूसरा सफल नहीं हो सकता।

भूदान-संग्रह हमारे कार्यक्रम का महत्त्व-
पूर्ण अंग रहा है और आगे भी रहेगा, पर
प्रश्न यह है कि क्या यह फिर एक जन-
आंदोलन का रूप ले सकता है, और ले
सकता है तो किस प्रकार ?

बिहार का संकल्प

सौभाग्य से जैसा कि आपको विदित
है, मेरे प्रदेश, बिहार में कुछ ऐसी परि-
स्थितियाँ बनी हैं कि जिन्होंने हमको न केवल
वहाँ जन-आन्दोलन के रूप में भूदान को
फिर से उठा लेने को प्रोत्साहित किया है,
बल्कि राष्ट्रपति राजेन्द्रबाबू के अगले जन्म-
दिन, ३ दिसंबर तक हमारे लक्ष्यांक पूरा
करने की तिथि भी हम निश्चित कर सके हैं।
"बीघे में कट्ठा" का नारा बिहार के
संदर्भ में एक विशेष अर्थ और संगति
रखता है। आपको स्मरण होगा कि अपनी
देशव्यापी पदयात्रा के दौरान में, यह
बिहार ही था कि जिसको विनोबा ने
यह सिद्ध करने को चुना था कि यदि
ठीक से प्रयत्न किया जाय तो हृदय-

ूमि-समस्या

•

को चुनौती

•

्या है ?

•

ा नया स्वरूप

•

राजनीति

•

ा ग्राम-स्वराज्य

•

हमारा दृष्टिकोण

•

में दोष

•

ो आयोग बनें

•

के प्रति हमारा रुख

•

त्रिकोण में सर्वोदय-पात्र की जो
उसका वर्णन सम्मेलन के सामने
राव ने बतलाया कि इस क्षेत्र
से ऊपर सर्वोदय-
पात्र रहे हैं। सर्वोदय-
एक उपयोग तेलुगू
'साम्ययोगम्' को सर्वोदय-पात्र
ि जा रहा है। इस प्रकार 'साम्य-
ी इतने कुटुम्बों में पहुँच रही है।

का प्रयोग

परिवर्तन की प्रक्रिया से भूमिहीनता के प्रश्न का हल संभव हो सकेगा। उस समय यह हिसाब लगाया गया था कि यदि ३२ लाख एकड़ कृषि-योग्य भूमि प्राप्त की जा सके तो वह प्रदेश के भूमिहीन श्रमिकों के लिए पर्याप्त होगी। इस तरह ३२ लाख एकड़ का लक्ष्यांक स्थिर किया गया और यह सभी ने मान्य किया। इस संकल्प-सिद्धि के लिये जो अभियान चला, उसमें एक समय इतनी तीव्रता और व्यापकता थी कि बिहार विधान-सभा ने भी एक सप्ताह के लिये अपना अधिवेशन स्थगित किया, ताकि लोग अपने-अपने क्षेत्रों में जाकर लक्ष्यांक की पूर्ति के लिये कार्य कर सकें। स्वयं विनोबा २७ माह तक बिहार में पदयात्रा करते रहे। हम सबको स्मरण होगा कि इस प्रेरणादायी सामूहिक प्रयत्न के फलस्वरूप २१ लाख एकड़ भूमि प्राप्त हुई। यह आंदोलन की ऐसी जाज्वल्यमान उपलब्धि थी कि जिसने भारत के इस कोने से उस कोने तक लोगों को रोमांचित किया और हिमालय की ऊँची चोटियों और समुद्रों के पार उसकी सौरभ फैली।

इस बात की बड़ी चर्चा चलायी गयी है कि उस समय भूदान में प्राप्त भूमि अधिकांश कृषि के अयोग्य है। यदि यह ठीक भी हो तो भी यह हमको नहीं भूलना चाहिये कि इस समय तक कानून की सहायता से प्राप्त बँटी भूमि से कहीं अधिक भूमि बिहार अथवा देश में भूदान-आंदोलन के माध्यम से बँट चुकी है। लेकिन सच तो यह है कि अभी तक यह भी नहीं कहा जा सकता कि वास्तव में कितनी भूदान की भूमि काश्त-योग्य नहीं है। कम-से-कम बिहार के ऐसे एक भूदाता ने तो, जिन्होंने बिहार के भूमि-दान-दाताओं में सबसे अधिक भूमि दान की है, अभी-अभी यहाँ तक कहा है कि उनके द्वारा दी गयी सारी भूमि का एक एक एकड़ काश्त-योग्य है। जो कुछ हो, जब विनोबा ने २७ माह की यात्रा के अन्त में बिहार छोड़ा तो हमको यह उम्मीद थी कि हम शेष ११ लाख एकड़ भूमि अपने प्रयास से इकट्ठा कर लेंगे, पर कुछ हजार एकड़ भूमि ही प्राप्त कर सके; क्योंकि हम पूर्व-प्राप्त भूमि के वितरण, हजारों आदाताओं के पुनर्संस्थापन तथा आन्दोलन के प्राथमिक वेग में आने वाले ग्रामदान, ग्राम-संकल्प, शान्ति-सेना आदि कार्यक्रमों में बुरी तरह फँसे रहे।

बिहार में भूदान-आंदोलन की इस पृष्ठ-भूमि में, विनोबा ने आसाम जाते हुए पुनः बिहार में प्रवेश किया और जैसे वे कुशल समाज-मनोवैज्ञानिक हैं, उन्होंने वहाँ प्रवेश करते ही पहला काम यह किया कि प्रदेश के सब लोगों को, उनके अपूर्ण संकल्प की याद दिलायी। इसका असर हुआ। चारों ओर से उस ऋण को पूरा करने की आवाजें आने लगीं। और तो और तत्कालीन मुख्य-मंत्री स्व० डा० श्रीकृष्ण सिन्हा स्वयं विनोबा के पड़ाव-स्थान पर दौड़े पहुँचे और उनको अपने पूरे सहयोग का विश्वास दिलाया। दूसरे राजनैतिक दलों के नेताओं ने भी उनका अनुगमन किया। विनोबा ने इस मनोवैज्ञानिक अवसर का लाभ उठाया और इसको ध्यान में रखते हुए कि बिहार राजेन्द्र बाबू का घर है, इनके अगले जन्मदिवस को इस महोत्सव के लिये तय किया कि जिस दिन बिहार के लोग राजेन्द्रबाबू को उनके प्रति स्नेह व श्रद्धा के प्रतीक स्वरूप विहित संकल्प की शेष ११ लाख एकड़ भूमि की भेंट करेंगे। उस प्रतीकात्मक संकेत की तीव्रता व भावना इससे और भी प्रबल होती है कि ३ दिसम्बर के आसपास ही राजेन्द्र बाबू देश के सर्वोच्च पद से मुक्त हो रहे हैं।

शुरू के भूदान-अभियान में सारा जोर भूमि के संग्रह पर था, वितरण बाद में कार्यकर्ताओं द्वारा होना था। यह कोई बहुत समझदारी की बात नहीं हुई, ऐसा लगता है।

इस बार विनोबा ने एक नई बात जोड़ी है, जिससे यह कार्यक्रम भूमि वालों के लिये अधिक आकर्षक और सर्वोदय कार्यकर्ताओं के लिये बहुत कुछ हल्का हो गया है। उन्होंने सलाह दी है कि दाता स्वयं अपनी भूमि को जिस किसी को भी वह चाहे बाँट दे, केवल इतना विचार रखते हुए कि वह आदाता भूमिहीन है और स्वयं उस जमीन को जोतने के लिए तैयार है। दान की इस प्रक्रिया से दाता को भी पूर्व-तैयारी का वह सारा काम, जो आवश्यक होता है, वह करना होता है। इससे आंदोलन की गति में बाधा डालने वाला तत्त्व निकल जाता है।

तीन सभापति !

श्री जयप्रकाश नारायण : अध्यक्ष सर्वोदय-सम्मेलन

श्री वल्लभस्वामी : निवर्तमान संघ-अध्यक्ष

श्री नवकृष्ण चौधरी : संघ के नये अध्यक्ष

बिहार के अलावा अन्य किसी प्रान्त में इस प्रकार की नाटकीय परिस्थिति के पुनर्निर्माण की कल्पना कठिन है। फिर भी दूसरे राज्यों में भी अगर किसी प्रकार अनुकूल परिस्थितियाँ पायी जायँ तो यह कार्यक्रम वहाँ भी उठाया जा सकता है।

लोकनीति और राजनीति

हम आम तौर से अपने बारे में सोचते हैं कि हमें राजनीति से कोई सरोकार नहीं है। दूसरे लोग भी हमारे बारे में ऐसा ही सोचते हैं। राजनीति के प्रति हमारी जो यह उपेक्षा वृत्ति है, इसके बारे में हम कुछ सोचें। आखिर इसका अर्थ क्या है? उसका अर्थ दरअसल यही है कि हम किसी राजनीतिक दल से जुड़े नहीं हैं, सत्ता या कोई पद पाने के लिए राजनीतिक स्पर्धा में प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप में न तो भाग लेते हैं और न लेंगे। लेकिन इसका क्या यह भी माने होता है कि राजनीतिक क्षेत्र में क्या हो रहा अथवा लोकतंत्र और उसकी संस्थाएँ किस तरह चल रही हैं, इससे भी हमारा कोई मतलब नहीं हो? यदि लोकतंत्र खतरे में हो या राजनीतिक अराजकता अथवा तानाशाही का खतरा हो तो भी क्या हम गरदन झुका कर यही सोचते हुए कि राजनीति से हमारा कोई मतलब नहीं है, जमीन कुरेदते रहेंगे? कदाचित यह बात अच्छी तरह स्पष्ट नहीं हुई है कि दल या सत्ता की राजनीति में न उलझने की हमारी नीति के पीछे कारण यही है कि हम अपने देश की राजनीति को बदलने में और भी ज्यादा विधायक और प्रभावशील कदम उठा सकें। हम लोग कहते हैं कि हम राजनीति से नहीं, लेकिन लोकनीति से संबंध रखते हैं। किन्तु ऐसा लगता है कि हमने इस कथन के पूरे आशय को नहीं समझा है।

खतरनाक स्थिति

जैसा मैं कहता आ रहा हूँ, अपने देश में आज राजनीतिक तनाव, चिंता और भय छाया हुआ है, उसे कौन नहीं जानता? लोकसभा की कार्यवाही से ही इसका सबूत मिल जाता है। अपने को ऐसी दुःखद परिस्थिति में पाकर लोगों को जो एकमात्र रास्ता सूझता है वह किसी ऐसे नेता की खोज करना है, जो उनकी रक्षा कर सके। "नेहरू के बाद कौन", यह प्रश्न जो आज सबके मन में उठता है, वह इसी राजनीतिक रोग का लक्षण है।

इस भयावह रोग का हमारे पास क्या उत्तर है? यह तो निश्चित है कि हम यह कह कर कि उससे हमारा कोई वास्ता नहीं, अपना मुँह नहीं मोड़ सकते। यह गैर-जिम्मेदारी की हद होगी।

हम जानते हैं कि नेता की खोज इस परिस्थिति का कोई उत्तर नहीं है। उससे लोगों के अन्दर केवल क्षोभ और बेबसी की भावना को ही उत्तेजना मिलेगी, तानाशाही का रास्ता साफ होगा। तब उत्तर क्या है?

लोकनीति के हमारे तत्त्वज्ञान को बतलाना चाहिए कि इसका उत्तर है लोगों में आत्म-विश्वास पैदा करना, अपनी व्यवस्था अपने आप संभालने के अवसर और उपकरण उन्हें प्रदान करना, सामने जो काम है उसे पूरा करने की क्षमता उनमें पैदा करना और इस प्रकार लोकतंत्र की बुनियादें डालना और मजबूत करना।

मुझे ऐसा लगता है कि हमें इस काम के सब पहलुओं का भान नहीं है। इसमें

सन्देह नहीं कि हम ग्राम-स्वराज्य की स्थापना के लिए प्रयत्नशील हैं। किन्तु इसके लिए थोड़े-से गाँवों में प्रयत्न करना पर्याप्त नहीं है। यदि निकट भविष्य में हम ग्रामस्वराज्य के लिए एक व्यापक आन्दोलन खड़ा करने में सफल नहीं होते हैं तो आखिर इस चुनौती का उत्तर हम किस प्रकार देंगे ?

पंचायती राज

सौभाग्य से एक ऐसा कार्यक्रम हमारे सामने है। कई राज्यों में पंचायत राज्य की स्थापना हो चुकी है और शीघ्र ही दूसरे राज्यों में भी होने वाली है। मैं यह नहीं कहता कि इस पंचायती राज का आज का स्वरूप वैसा ही है, जैसा हम चाहते हैं। किन्तु तीन बातों के बारे में मेरी राय निश्चित है—

(१) राजनैतिक विकेन्द्रीकरण के नाम पर सरकार और नौकरशाही की ताकत बढ़ाने के लिए लोगों को झूठा विश्वास दिलाने अथवा उनकी आँख में धूल झोंकने का यह प्रयत्न नहीं है।

(२) इसमें सुधार की काफी गुंजाइश है।

(३) यदि यह असफल होता है तो हमारा अपना ग्रामस्वराज्य का कार्यक्रम भी नष्ट हो जायगा।

हमारा योग

इसलिए मेरा यह जोरदार मत है कि हम दिल और ध्यान लगा कर पंचायती राज के आन्दोलन में, जो जितना सरकारी कार्यक्रम है उतना ही जन-आन्दोलन भी है, जुट जाना चाहिए। इस आन्दोलन में हमारा योगदान दो स्तरों पर होना चाहिये : (१) अध्ययन के स्तर पर, ताकि हम इस सम्बन्धी कानूनों और नियमों के दोष दूर करने में मदद कर सकें, और (२) लोक-शिक्षण (सामाजिक शिक्षण और प्रशिक्षण) तथा लोकशक्ति के स्तर पर यानी जनता के अन्दर आवश्यक क्षमता पैदा करना। जिस हद तक दूसरे स्तर पर हम सफल होंगे, उसी हद तक पहले स्तर पर हमारा प्रभाव पड़ेगा।

संस्थाएँ (खास तौर से सर्व सेवा संघ व उनके अनुरूप चलने वाली दूसरी संस्थाएँ) ही अच्छी तरह से कर सकती हैं। इस प्रकार से यदि पंचायती राज को सफल करने की एक संगठित कोशिश हुई तो मुझे लगता है, आश्चर्यजनक शीघ्रता से देश में सारा राजनीतिक वातावरण बदल जायगा और लोगों में आत्मविश्वास की एक नई भावना पैदा हो जायगी। इस तरह से वर्तमान चुनौती का हम उत्तर दे सकेंगे।

• • •

मतदाता-कौन्सिल

यह वर्ष चुनावों का वर्ष है, इसलिए लोगों का मानस राजनीतिक शिक्षण के लिए अधिक अनुकूल होगा ऐसा मान सकते हैं। आम चुनावों के सम्बन्ध में सर्व सेवा संघ ने कुछ क्रांतिकारी सुझाव पेश किये हैं। हमारा यह मानना है कि आज जिस तरह से उम्मीदवार खड़े किये जाते हैं, चूँकि उसमें मतदाताओं के चुनाव का अधिकार बहुत कुछ सीमित हो जाता है, यह लोकतंत्र को ही संकुचित कर देता है। इसीलिए हमने उम्मीदवारों के चयन के लिए "मतदाता-कौंसिल" का निर्माण करने का सुझाव रखा है। इस बात को ध्यान में रखते हुए कि बहुत से लोग विभिन्न दलों, गुटों और महत्वाकांक्षी राजनीतिज्ञों के सत्ता-संघर्ष से ऊब गये हैं और खास तौर से इसलिए कि जो तरीका हमने सुझाया है, उससे मतदाताओं को अधिक शक्ति मिलती है और दलों के प्रभुत्व से वे मुक्त हो सकते हैं, इस विचार को अमल में लाना कठिन नहीं होना चाहिए। कम-से-कम कुछ चुने हुए चुनाव-क्षेत्रों में तो ऐसा हो ही सकता है। यह बहुत संतोष की बात है कि सर्व सेवा संघ ने इस दिशा में प्रयास करने का निश्चय किया है। इस तरह से आपके सामने यह एक दूसरा शक्तिशाली और महत्वपूर्ण काम है।

गलतफहमी न हो, इसलिए यह स्पष्ट कर देना आवश्यक है कि हमारा ऐसा कोई इरादा नहीं है कि सर्व सेवा संघ या सर्वोदय-आन्दोलन किन्हीं उम्मीदवारों को खड़ा करे या उनका समर्थन करे या उस दृष्टि से चुनाव के साथ किसी प्रकार का संबंध रखे।

विशेषज्ञ और आयोजक अपने ढंग से सोचते और बरतते हैं,....और दरिद्रता बेकारी, भुखमरी और विपन्नता के कटु तथ्य बेशर्मी के साथ मुँह बाये खड़े हैं !

यद्यपि मैं सरकार की ओर से कुछ भी नहीं कह सकता, किन्तु मुझे विश्वास है कि सरकार हमारे सहयोग का केवल स्वागत ही नहीं करेगी, बल्कि उसके लिए इच्छुक भी रहेगी। सरकार विश्वास करती है कि खास तौर-से लोकशिक्षण और लोकशक्ति के संवर्धन का काम गैर सरकारी

हमारा काम केवल लोक शिक्षण का है। हम मतदाताओं को अपना दृष्टिकोण समझाने की कोशिश करेंगे और यदि उन्हें वह पसंद हो तो यह पूर्णतः उनका काम होगा कि वे उस पर अमल करें।

• • •

मैं देश की आर्थिक स्थिति के बारे में कुछ कहना चाहता हूँ। कहा जाता है कि 'राष्ट्रीय आय' में पिछले दस वर्षों में ४० प्रतिशत की वृद्धि हुई है। लेकिन हममें से जो लोग देहातों में काम करते हैं और रोज जनसाधारण के सम्पर्क में आते हैं, उनके लिए लोगों की हालत

पहुँचते-पहुँचते किसी भी देश में सौ से दो सौ वर्ष तक लगते हैं।

संभव है हमारी समाजवादी व्यवस्था में यह अवधि घट कर कुछ कम हो जाए, किन्तु सरकार द्वारा नियंत्रित उद्योग के मुनाफे का जिस तरह बँटवारा किया जा रहा है, उसे देखने से इस प्रकार की

इस देश में भूमि-समस्या का एकमेव समाजवादी तरीका है : भूमि का सामुदायिक स्वामित्व और व्यवस्था।

में इस तरह के किसी सुधार का पता चलाना बहुत ही कठिन है। यह दुःख की बात है कि हम लोग सरकार से, देश के आयोजकों से और विशेषज्ञों से जब कभी भी चर्चा करते हैं, तब वह केन्द्रीकरण और विकेन्द्रीकरण, स्वावलंबन के सिद्धांत की अस्पष्टता, विज्ञान के प्रति गलत और सही दृष्टिकोण और यन्त्रविज्ञान आदि मुद्दों में ही सिमट कर रह जाती है। विशेषज्ञ और आयोजक अब तक अपनी इच्छा के अनुसार ही बरतते रहे हैं। किन्तु दरिद्रता, बेकारी, भुखमरी या यों कहें कि 'विपन्नता' (क्योंकि स्वतन्त्रता-प्राप्ति के बाद से यद्यपि स्वयं भुखमरी पर नहीं, तो "भुखमरी" शब्द पर अवश्य ही कड़ी पाबन्दियाँ लगा दी गयी हैं।) बेशर्मी के साथ मुँह बाये खड़ी है। हम इस बात को मानने को तैयार हैं कि हमारे सभी कल्पित सिद्धान्त गलत या असामयिक हैं और अर्थशास्त्र के मानवीकरण पर जोर देकर हम केवल अपनी भावुकता प्रदर्शित करते रहे हैं। लेकिन लोग भोजन और काम चाहते हैं और जानवरों से कुछ भिन्न प्रकार का जीवन बिताना चाहते हैं। हमारे आयोजक ये सभी चीजें जनता को किस प्रकार मुहैया करेंगे ? क्या जब तक जनता भूखी और नंगी है, तब तक किसी को प्लास्टिक, रेयोन और सिंथेटिक रबड़ के उत्पादन करने का अधिकार है ? आखिर आयोजन का अर्थ क्या है ? आर्थिक विकास किसे कहें और उसका लाभ किसे मिलने वाला है ? बेशक, अधिक-से-अधिक धन पैदा किया जाय और यथासंभव कुशलता के साथ पैदा किया जाय। किन्तु एक गरीब और क्षुधापीड़ित देश में क्या यह अत्यावश्यक नहीं है कि सम्पत्ति का उत्पादन इस प्रकार से हो कि वह सीधे जनता के पास पहुँच सके ? विनोबाजी की भाषा में कहें तो, क्यों उपरोक्त उत्पादित दौलत को धीरे-धीरे टपक कर अपने पास आने तक जनता को प्रतीक्षा करनी पड़े और कब तक उन्हें इस तरह प्रतीक्षा करनी पड़ेगी ? और योजना तथा आर्थिक वृद्धि के आँकड़ों के किस जादू से उत्पीड़न के इस ज्वालामुखी के विस्फोट को रोकेंगे ? पश्चिम के कुछ निष्णात अर्थशास्त्रियों ने यह बताया है कि औद्योगीकरण का लाभ मजदूर वर्ग तक

आशा रखने की भी कोई गुंजाइश नहीं है। लेकिन यदि मान भी लें कि यह संभव है तो क्या हिन्दुस्तान के करोड़ों बदनसीब लोग ५० वर्ष भी प्रतीक्षा कर सकेंगे ? तब तक क्या लोकतंत्र या सर्वोदय के लिए कोई अवसर रहेगा ? शायद हमारे आयोजक वही कर रहे हैं, जो पहले किया जा चुका है। किन्तु पश्चिमी देशों में आर्थिक विकास हमारे देश की अपेक्षा कहीं अधिक स्वाभाविक, देशकाल के अनुकूल तथा समन्वित था। यहाँ जब कि एक बहुत विशाल जन-समुदाय जमीन के छोटे-छोटे टुकड़ों के आधार पर दैव-आधीन अर्थ-व्यवस्था में रहता है, उसे जब अचानक बाहर से थोपी हुई यन्त्र-केन्द्रित अर्थ-व्यवस्था से सामना पड़ता है तो विकास की समस्याएँ एक बिल्कुल नया ही स्वरूप ले लेती हैं। उनके समाधान के लिए नया ही तरीका चाहिए।

दो तरीके

इसलिए मैं बड़ी आशा के साथ यह सोचता हूँ कि तीसरी पंचवर्षीय योजना के इस अवसर पर इस प्रश्न पर कुछ नया विचार किया जायेगा। मुझे खुद को दो ही रास्ते दिखलाई पड़ते हैं :

(क) या तो हम यथासंभव अधिक-से-अधिक क्षमता के साथ कुछ केन्द्रों में दौलत पैदा करें और बाकी सारे देश को सरकारी सहायता के आधार पर छोड़ दें। या

(ख) हर घर, गाँव और शहर में दौलत पैदा करें। या यों कहें कि कुछ लोगों को रोजगार दिया जाय और बाकी सरकारी अनुदान पर जिन्दा रहें, या सबको रोजगार मिले और कुछ-न-कुछ रोजी मिले।

अस्सी प्रतिशत लोगों की अर्थात् देहाती जनता की दृष्टि से जब इस प्रश्न पर विचार करते हैं, तो लगता है कि खादी-ग्रामोद्योगों ने उनकी समस्या का मुश्किल से स्पर्श मात्र किया है। लघु उद्योग अभी उनके क्षेत्र में पहुँचे भी नहीं हैं और बड़े उद्योगों ने लाभ की अपेक्षा हानि ही अधिक पहुँचायी है ! देहाती लोगों के लिए उद्योगों के इस विभागीकरण का कोई अर्थ ही नहीं है। हमें जरूरत है एक बड़े पैमाने पर ग्रामीण औद्योगीकरण की, और इस काम के लिए मेरा सुझाव है

कि खादी-ग्रामोद्योग कमीशन तथा लघु-उद्योग बोर्ड, दोनों को मिला कर एक मिलाजुला "ग्रामीण उद्योग-संघ" बना दिया जाय। शहरी इलाकों में आवश्यकतानुसार लघु उद्योग-संघ काम करता रहे। इस संघ का काम होना चाहिए कि जितनी भी तेजी से हो सके उतनी तेजी से गाँवों की मौजूदा केवल कृषि-व्यवस्था को संतुलित कृषि-उद्योग-अर्थ-व्यवस्था के रूप में परिवर्तित करे। और यह काम इस तरह से हो कि शहरी शोषक अपना पैर वहाँ न जमा सकें और देहातों की आम जनता इस संघ के कामों और लाभों में प्रत्यक्ष रूप से हिस्सा ले सके। मुझे विश्वास है कि इस प्रकार के ग्रामीण विकास का शहरी क्षेत्र पर भी बहुत अच्छा असर पड़ेगा।

* * *

मैं यहाँ उन दो बड़े अन्तरराष्ट्रीय झगड़ों का जिक्र कर देना चाहता हूँ, जिनमें हमारा देश उलझा हुआ है। कश्मीर के बारे में पाकिस्तान से और सीमा के संबंध में चीन से हमारा झगड़ा चल रहा है। "वार रेजिस्टर्स" के गांधीग्राम सम्मेलन के अवसर पर मैंने भारत और चीन के झगड़ों का निपटारा करने के लिए पंच-फैसले की बात सुझायी थी। इस सुझाव का प्रकाशन और प्रचार तो बहुत हुआ, किन्तु जनता की उसके सम्बन्ध में प्रतिक्रिया बहुत प्रकट नहीं हुई। कुछ हलकों में इतनी आलोचना जरूर की गयी कि आक्रमण के मामले में मध्यस्थता का प्रश्न ही नहीं उठता। मैं इससे सोलह आने सहमत हूँ। किन्तु मेरा कहना यह है कि जब जिस भूमि के ऊपर झगड़ा है, दोनों दल उस पर अपनी मालिकी बताते हैं और उसके लिए सबूत देते हैं तो आक्रमण कह कर हम उस मामले को खत्म नहीं कर सकते। हमारा बेशक यह विश्वास है कि हमारे पास जो सबूत हैं उनके आधार पर जीत हमारी ही होगी। सम्भव है, चीन वाले भी इसी प्रकार अपने बारे में सोचते हों। इससे मेरी बात और भी मजबूत होती है। किसी के भी अपने अधिकार को छोड़ने की बात नहीं उठती। दोनों देशों के लिए शान्ति और समझदारी इसी में है कि वे इस प्रश्न पर मध्यस्थता के लिए राजी हो जायँ। मध्यस्थ एक व्यक्ति, अनेक व्यक्ति या कोई संस्था, जैसा कि दोनों देशों की सरकारें तय करें, हो सकते हैं। यदि इस झगड़े के फैसले के लिए यह शांतिपूर्ण तरीका स्वीकार नहीं होता है तो दूसरा कोई शान्तिपूर्ण विकल्प खोजना मुझे असम्भव लगता है। पुरानी खिंच, द्वेष और वैमनस्य ज्यों के त्यों बने रहें, यह दोनों देशों के, एशिया के और विश्वशांति और सद्भाव के हित में बुरा होगा।

मैं यहाँ एक बात और कहना चाहता हूँ कि इस तरह का मामला राजनैतिक पार्टियों के बीच फुटबाल की तरह दलबन्दी का कारण नहीं बनाया जाना चाहिए। सब दलों के नेता एक जगह बैठ कर इस बारे में कोई सर्वसम्मत नीति खोज निकालें, यह अच्छा होगा। पार्टियों के नेताओं को इकट्ठा करने का अभिक्रम विनोबाजी अथवा सर्व सेवा संघ की ओर से लिया जा सकता है। मैं यहाँ यह साफ कह देना चाहता हूँ कि इस प्रकार के सलाह-मशविरे की सलाह देकर मैं प्रधान मंत्री की कार्य-स्वतंत्रता को किसी भी प्रकार सीमित करने की बात नहीं सुझा रहा है। पर यह बात अवश्य है कि यह तरीका हमको कोई निश्चित हल निकालने और इस राष्ट्रीय प्रश्न को पक्षीय विवाद से ऊपर उठाने में मदद करेगा।

लोग रोटी और रोजी चाहते हैं और चाहते हैं जानवरों से भिन्न तरीके से जीवन विताना। यह सब आयोजक जनता को कैसे देंगे? ...उनके लिये योजना और आर्थिक विकास का क्या मतलब है?

मैं हिन्द-पाक विग्रह के सम्बन्ध में अपनी बात कहना चाहता हूँ। आज भी मैं उसी पक्की राय का हूँ, जो १९४७ में मेरी थी कि देश के विभाजन का कदम मूर्खतापूर्ण था। पर जब विभाजन हो ही गया तो मेरी यह राय है कि दोनों देश एक-दूसरे की सार्वभौम सत्ता और प्रादेशिक अखंडता की कद्र करें और पुरानी बातों को भूलते भुलाते मित्रता और सहकार के ऐसे सूत्रों में बँधें कि जिससे दोनों एक-दूसरे के समीप आयें। यह मेरा पक्का विश्वास है कि दोनों एक-दूसरे के बिना टिक नहीं सकते; असल में वे एक ही देश के अंग हैं, जिसको उप-महाद्वीप (सबकंटिनेन्ट) की संज्ञा देना गलत है।

खान अब्दुल गफ्फार खाँ की हाल की गिरफ्तारी पाकिस्तान की बदली हवा का एक संकेत है। किसी को भी इसका दुःख हुए बिना न रहेगा कि उन जैसे "इंसान-भक्त" के लिए इस उम्र में कैदखाने के सिवाय दूसरी और कोई जगह नहीं है! मेरे इन शब्दों को शायद पाकिस्तान के 'भीतरी मामलों' में हस्तक्षेप माना जाय, पर मैं कभी ऐसा मानने को तैयार नहीं हूँ कि पीड़ित मानवता का प्रश्न किन्हीं राष्ट्रीय सीमाओं से बँधा हुआ है। हमारे प्रश्न यह है कि हम सर्वोदयी ... देशों के बीच के संबन्धों के बारे में क्या कर सकते हैं। यह बहुत साफ है कि राजनैतिक स्तर पर हम कुछ नहीं कर सकते, सिवाय शायद इसके कि इस तरह के मामले में ढील छोड़ देने की नीति में जो खतरा है, उस पर तथा इस समस्या के अन्तर्राष्ट्रीय ढंग पर सोचने की आवश्यकता पर बल दें। पर इतना जरूर है कि हमें ऐसे मामले पर विशेष ध्यान देना चाहिये, इन बातों के संपर्क में रहना चाहिये, उनका अध्ययन करना चाहिये, दूसरों का दृष्टिकोण भी समझना चाहिये और लोगों को ऐसे मामलों में शिक्षित करना चाहिये।

हम जो सर्वोदय-आन्दोलन में हैं, यह विश्वास रखते हैं कि राष्ट्रों के बीच के सरकारी सम्बन्धों के अलावा भिन्न-भिन्न देशों के लोगों को सभी सम्भव तरीकों से गैर-सरकारी तौर पर भी अपने बीच सम्बन्ध स्थापित करने चाहिये। इसका क्या अर्थ है कि हम नित्य प्रति स्वदेशी के व्रत का तो जाप करें पर अपने पड़ोसी के साथ अच्छे सम्बन्ध स्थापित करने की दिशा में कुछ न करें! ● ●

एक गरीब और क्षुधापीड़ित देश में क्या यह अत्यावश्यक नहीं है कि संपत्ति का उत्पादन इस प्रकार से हो कि वह सीधे जनता के पास पहुँच सके?

सर्व सेवा संघ की नई प्रबंध समिति के महत्त्वपूर्ण निर्णय

सर्व सेवा संघ की नई प्रबंध समिति की पहली बैठक ता. २० अप्रैल की शाम को और २१ अप्रैल को सवेरे सर्वोदयपुरम् में श्री नवकृष्ण चौधरी की अध्यक्षता में हुई।

सर्व सेवा संघ के प्रकाशन विभाग की ओर से ता० १७-१८ मार्च को काशी में विभिन्न प्रान्तों के साहित्यसेवियों की एक सभा हुई थी। उसने यह सुझाया था कि सर्वोदय-साहित्य के निर्माण और सम्पादन के काम के लिये एक सम्पादक-मंडल नियुक्त किया जाय। संघ की प्रबन्ध समिति ने इस सिफारिश को मान्य करके नीचे लिखे प्रस्ताव द्वारा एक संपादन-मंडल नियुक्त किया है।

"सर्वोदय-साहित्य के निर्माण के बारे में समग्र रूप से विचार करके योजना बनाने, संपादन करने तथा विभिन्न भाषाओं में अनुवाद आदि के काम में सर्व सेवा संघ की प्रकाशन-समिति को मदद करने के लिये प्रबंध समिति एक सर्वोदय साहित्य संपादन मंडल की नियुक्ति करती है, जिसमें निम्नलिखित सदस्य रहेंगे—

१. श्री श्रीरामण शर्मा, बेंगलोर
२. ,, शशिभूषण दासगुप्त, कलकत्ता
३. ,, सिद्धराज ढड्ढा, काशी
४. ,, प्रबोध चोकसी, बड़ौदा
५. ,, अहद फातमी, काशी
६. श्री के० वी० एन० अप्पाराव, कोनूर
७. ,, लवणम्, पटामटा
८. ,, मनमोहन चौधरी, कटक (संयोजक)

संपादन-समिति में तीन तक सदस्यों को शामिल करने का अधिकार इस समिति को होगा।"

प्रबंध समिति ने एक दूसरे प्रस्ताव द्वारा संघ की खादी-ग्रामोद्योग समिति और निर्माण समिति, दोनों की जगह खादी-ग्रामोद्योग (ग्रामस्वराज्य) समिति का गठन किया है। इस समिति के अध्यक्ष श्री ध्वजाप्रसाद साहू, मंत्री श्री अक्षय कुमार करण तथा श्री आर० के० पाटिल और सहमंत्री श्री सोम भाई व श्री रामलाल मिश्रा हैं।

पिछले दशक का सिंहावलोकन

भूदान-यज्ञ आन्दोलन के पिछले दस वर्ष के काम का लेखा-जोखा लेने और मूल्यांकन करने के लिये सर्व सेवा संघ की प्रबन्ध समिति ने श्री वल्लभस्वामी के संयोजकत्व में एक समिति नियुक्त की है। समिति के अन्य सदस्य : ओमप्रकाश त्रिखा, गो० उ० पाटणकर, श्यामसुन्दर प्रसाद और क्षितीशराय चौधरी हैं। अगस्त अंत तक समिति अपनी रिपोर्ट पेश करे, यह तय हुआ है। सर्व सेवा संघ के अगले अधिवेशन में दस वर्ष के काम का यह मूल्यांकन पेश होगा।

—

हिंसाश्रित राजनीति और प्रेमाश्रित लोकनीति

जिस तरह युद्ध का विकल्प सत्याग्रह है,
उसी तरह नागरिक प्रशासन के लिए भी विकल्प खड़ा करना होगा

शंकरराव देव

[सर्वोदय-सम्मेलन के अवसर पर सर्व सेवा संघ की बैठक में आन्दोलन के पिछले दशक के सिंहावलोकन और अगले साल के कार्यक्रम के बारे में हुई चर्चा के फलस्वरूप जो निर्णय लिये गये, वे एक निवेदन के रूप में ता० २० अप्रैल को सवेरे सम्मेलन के खुले अधिवेशन में श्री नारायण देसाई द्वारा पेश किये गये।

निवेदन की भूमिका और उसके पीछे की दृष्टि का विश्लेषण करते हुए श्री शंकररावजी ने एक बड़ा ही प्रेरक और उद्बोधक भाषण दिया, जिसमें उन्होंने राजनीति और लोकनीति की स्पष्ट व्याख्या की और दोनों का अन्तर समझाया। अगले साल के कार्यक्रम के बारे में, खास कर आने वाले आम चुनाव तथा पंचायती राज की योजना के सन्दर्भ में, सर्व सेवा संघ ने इस बार जो निर्णय लिये हैं, उनके बारे में कई सदस्यों ने आशंका प्रकट की थी। पर सम्मेलन में श्री शंकररावजी का जो भाषण हुआ, उसमें उन्होंने सारी चीज बहुत खोल कर रखी। इस भाषण का जिक्र करते हुए सम्मेलन के अध्यक्ष श्री जयप्रकाशजी ने कहा : "हम सुना करते थे कि कभी-कभी किसी की जुबान पर सरस्वती उतर आती है। आज सुबह श्री शंकररावजी का जो भाषण हुआ, उसको सुनते वक्त ऐसा ही लग रहा था। सम्मेलन में और उसके पहले संघ के अधिवेशन में जो चर्चाएँ हुई थीं, उनको सुन कर जो कुछ अन्त में मैं कहना चाहता था, वह अब सर्वथा अनावश्यक मालूम हो रहा है।" साथ ही श्री जयप्रकाशजी ने यह आशा और विश्वास प्रकट किया कि शंकररावजी का भाषण सुनने के बाद "सभी लोकसेवक, सर्वोदय के सभी कार्यकर्ता निस्संशय और निस्संकोच होकर अपने-अपने स्थानों को लौटेंगे" और अगले वर्ष के लिए जो कुछ निर्णय सर्व सेवा संघ ने लिया है, "उनको अमल में लाने के लिए कटिबद्ध होकर मैदान में खड़े हो जायेंगे।" शंकररावजी का भाषण यहाँ दिया जा रहा है। —सं०]

गांधीजी हमेशा कहते थे कि मैं जो सत्य और अहिंसा के प्रयोग कर रहा हूँ, वे सनातन तत्त्व हैं, मैं कोई नई चीज देश या दुनिया के सामने नहीं ला रहा हूँ। इसके बावजूद गांधीजी के जो प्रयोग थे, वे केवल उनके जीवन में नहीं, बल्कि इस देश में एक क्रांतिकारी शक्ति की चीज बन गये। इसका कारण यह था कि तत्त्व तो सनातन थे, लेकिन गांधीजी ने इन तत्त्वों को जीवन के हर क्षेत्र और हर परिस्थिति में लागू किया। सर्वव्यापी जीवन में जब यह तत्त्व उन्होंने लागू किया तो वह जो प्रक्रिया थी, उसमें सत्य की जो नूतनता है और शक्तिशालिता है, वह प्रकट हुई। सत्य सनातन है, इसीलिए नित्य नूतन है। भारत ने सत्य के सनातन तत्त्व को पहिचाना, लेकिन उसके नूतनत्व को जितना पहिचानना आवश्यक था, नहीं पहिचाना। इसलिए भारत टिका, लेकिन एक शक्तिशाली समाज के रूप में नहीं टिक सका। गांधीजी ने उसमें एक नई जान, नये जीवन का संचार कर दिया।

आज जिस लोकशक्ति, लोकनीति और लोक-राज्य की हम बातें कर रहे हैं वे भी सनातन और प्राचीन चीजें हैं। ढाई हजार वर्ष पहले भगवान् बुद्ध ने और दो हजार वर्ष पहले ईसा ने इसी नीति का पुरस्कार और प्रचार किया था। "बहुजन हिताय, बहुजन सुखाय", ये जो भगवान् बुद्ध के शब्द हैं, वे आज के "ग्रेटेस्ट गुड आफ दी ग्रेटेस्ट नम्बर" का अनुवाद नहीं है। बहुजन के माने 'मेजारिटी'—बहुमत—नहीं है। उनके "बहुजन" के मानी सर्वोदय, सर्व-कल्याण यही है। उनका जो साधन था, वह यह बतलाता है कि इन शब्दों का अर्थ 'मेजारिटी, मायनारिटी' नहीं था, क्योंकि उन्होंने अपना साधन प्रेम और करुणा को बताया था। जहाँ प्रेम साधन है वहाँ साध्य बहुसंख्य का सुख ऐसा हो ही नहीं सकता, क्योंकि प्रेम, सत्य विश्वव्यापी है। बुद्ध का संदेश यही था, कि लोग आपस में प्रेम, मुहब्बत से, करुणा से व्यवहार करें। जब लोग आपस में प्रेम से, करुणा से व्यवहार करना शुरू कर देते हैं, तो सही माने में लोकनीति शुरू हो जाती है। आज सर्व सेवा संघ के मंच पर से यही पुराना संदेश नये रूप से आप सुन रहे हैं।

मानव-जीवन की सनातन समस्या

हम सब लोगों का सुख चाहते हैं, सबका कल्याण चाहते हैं तो प्रेम या करुणा के अलावा कोई दूसरा रास्ता हो नहीं सकता। लेकिन जब तक लोग इसको ठीक तरह से समझ नहीं सके हैं, तब तक उनकी इच्छा हो तो भी उनका कल्याण हो नहीं सकता है। आज भारत में किसी एक व्यक्ति का राज्य नहीं है। इस देश में लोगों का ही राज्य है, गणतंत्र ही है। लेकिन यह गणतंत्र लोकनीति के आधार पर काम नहीं कर रहा है। इसका कारण यह है कि लोग खुद इस चीज को ठीक समझ नहीं पाये हैं। इसलिए लोकतंत्र, लोक-राज्य होते हुए भी लोगों को हित और सुख की प्राप्ति नहीं हो रही है। हम यह मानते हैं कि इसमें अगर किसी चीज की कमी है तो वह लोगों की समझने की कमी है, किसी पक्ष या दल की कमी नहीं है, क्योंकि झगड़े तो हमेशा चलेंगे ही। इसलिए जब तक हम नैतिक स्तर से भी ऊपर नहीं उठेंगे, तब तक संघर्ष मानवी जीवन की एक कायम की समस्या बनी रहेगी।

आज यह जो समस्या है कि उसका हल दो तरह से निकल सकता है। एक

[उंगुटूरू में दस दिन : पृष्ठ ४ का शेष]

गाड़ी छोड़ी गयी तो वह करीब-करीब खाली ही गयी, जब कि उससे पहले २४ घंटे तक हर गाड़ी में लोग लटकते हुए गये!

इस एक घटना के अलावा इस बार सर्वोदय-सम्मेलन की व्यवस्था आन्ध्र के सर्वोदय-कार्यकर्ताओं की कर्तव्य-निष्ठा, उनकी योजना शक्ति और उनको आस-पास के देहात के लोगों और नेताओं से जो सहयोग मिला, उसका सबूत दे रही थी। आन्ध्र सरकार ने भी पानी, रोशनी इत्यादि के काम में पूरी मदद की। सुदूर देहात के एक छोटे-से गाँव में दस दिन तक करीब १५ हजार आदमियों के निवास, भोजन आदि का प्रबंध आसान नहीं था। फिर यह सारा काम बहुत जल्दी में भी करना पड़ा। स्वागत-समिति के अध्यक्ष, श्री प्रभाकरजी और मंत्री, श्री रामलिंग रेड्डी ने बताया कि नगर खड़ा करने के लिए उस जमीन पर पहली कुदाल ता० २२ मार्च को चलायी गयी थी। इस प्रकार महीने भर के अन्दर-अन्दर उंगुटूरू में एक स्वप्न-पुरी खड़ी हुई और बिखर गयी। लेकिन सर्वोदय के इतिहास में उंगुटूरू सम्मेलन की एक से अधिक कारणों से विशेष याद बनी रहेगी।

सर्व सेवा संघ के अधिवेशन में

तो आम तौर से माना जाता है कि इसका हल हिंसा से हो सकता है—यह एक तरीका हो सकता है। लेकिन पिछले हजारों वर्षों के अनुभव से ऐसा लगता है कि यह लोगों की भूल है, भ्रम है,। दुनिया के इतिहास में ऐसे महात्मा भी हुए हैं, जिन्होंने 'समस्या का हल हिंसा, युद्ध है', यह कहा है। यही कारण है कि 'धर्म-युद्ध' एक धर्म-मान्य संस्था बनी हुई है। लोग मानते थे कि दो दलों में लड़ाई है तो उसमें हिंसा से भी एक दल की हार और एक दल की जीत हो सकती है; और इसलिए धर्म की स्थापना युद्ध के जरिये हो सकती है। "परित्राणाय साधूनां विनाशाय च दुष्कृताम्। धर्मसंस्थापनार्थाय संभवामि युगे युगे।" —"जो सन्त, साधु, सत्पुरुष हैं उनकी रक्षा करने के लिए और, जो दुर्जन हैं, दुष्ट हैं, उनका दमन करने के लिए मैं युग-युग में अवतार लेता हूँ।" इसलिए तस्मात् 'युद्धस्व भारत' भगवान कृष्ण अर्जुन से कह रहे हैं—"अर्जुन, इसलिए तुम लड़ो, लड़ाई हमारा धर्म है।" हिंसा से तुरंत जो नतीजा आता था वह यह देखने में आता था कि दुर्जन नष्ट हुए और सज्जनों का राज्य हुआ—जैसे कौरवों का राज्य नष्ट हुआ और पांडवों का राज्य आया। तो मनुष्य को लगा कि धर्म की स्थापना हो गयी और संत पुरुषों की रक्षा भी हो गयी।

लेकिन पिछले दो हजार वर्षों का इतिहास यह कहता है कि ये घटनाएँ मानवी जीवन पर स्थायी असर नहीं डालती हैं, क्योंकि फिर जो दुष्ट हैं वे ऊपर उठते हैं और फिर भगवान को अवतार लेना पड़ता है। भगवान भी एक 'वीशस-सर्कल'—दुश्चक्र—में फँस जाता है। इससे मुक्ति पाना है, तो क्या करना चाहिए?

दुष्टों का संहार और सज्जनों की रक्षा यह उसका उपाय नहीं है, दुर्जनता का क्षय और सज्जनता की वृद्धि होनी आवश्यक है। तो दुर्जनता का क्षय और सज्जनता की वृद्धि कैसे होती है? दुष्टों का संहार करके दुर्जनता समाप्त नहीं होती और कुछ समय के लिए सज्जनों की रक्षा करने से सज्जनता नहीं बढ़ती है।

इसलिए आज हम क्या देख रहे हैं? जो संघर्ष है वह मिट नहीं गया है, उल्टे हिंसा और संहार अद्भुत रीति से बढ़ गये हैं।

नतीजा यह आया है कि सज्जन भी मानने लगे कि दुर्जनों का संहार करने से हम भी खत्म हो जायेंगे, इसलिए हिंसा शान्ति का उपाय नहीं है। राजसत्ता के बदले, एक राजा के राज्य के बदले, हम लोक-राज्य कायम करें तो भी वह शान्ति का रास्ता नहीं है, सुख का रास्ता नहीं है। इसके लिए एक ही रास्ता दीखता है: दुर्जनता का क्षय और सज्जनता की वृद्धि। और यह काम सज्जनता से ही हो सकता है। दुर्जनता से सज्जनता की वृद्धि नहीं हो सकती।

इसमें से ही गांधीजी के सत्याग्रह का जन्म हुआ है। गांधीजी ने कहा कि सत्याग्रह लड़ाई के लिए एक नैतिक विकल्प है।

लेकिन केवल युद्ध के लिए नैतिक विकल्प सामने रखने से भी काम नहीं होगा। वह अधूरी, अपूर्ण चीज होगी। जैसे युद्ध के लिए सत्याग्रह का पर्याय है, वैसे ही जो सत्ताधारी सरकार है, जो नागरिक प्रशासन (सिविल एडमिनि-स्ट्रेशन) है, उसका भी एक नैतिक विकल्प हमको खोजना होगा। जैसे फौज के लिए शांति-सेना विकल्प है, वैसे नौकरशाही के लिए भी हमें विकल्प देना होगा। गांधीजी एक ऐसे महान् पुरुष थे कि उन्होंने इस क्षेत्र में भी, जो खाली जगह थी—वैक्यूम—थी, उसे पूरा कर दिया। उन्होंने इस नौकरशाही और नागरिक प्रशासन, दोनों के लिए दो पर्याय दिये। उन्होंने कांग्रेस को कहा कि आप एक लोक-सेवक संघ बन जायँ और साथ ही यह भी कहा कि मेरा जो रचनात्मक कार्यक्रम है वही स्व-राज्य है: "—"फुलफिलमेंट ऑफ कन्स्ट्रक्टिव वर्क इज स्वराज"—तो सत्याग्रह एक नैतिक विकल्प हुआ युद्ध, लड़ाई के लिए, और गांधीजी का जो रचनात्मक कार्यक्रम है वह नागरिक प्रशासन के लिए एक नैतिक विकल्प है। इसी तरह सैनिक शक्ति का विकल्प शांति-सैनिक और नौकरशाही का विकल्प लोक-सेवक है।

हिंसा पर आश्रित आज की राजनीति के दो आधार हैं—युद्ध और नागरिक-प्रशासन; इन दोनों को चलाने वाली शक्तियाँ—सेना और नौकरशाही: इसके विकल्प स्वरूप प्रेम पर आश्रित लोकनीति के दो आधार होंगे—सत्याग्रह और रचनात्मक कार्यक्रम तथा इन दोनों को चलाने वाली शक्तियाँ होंगी—शांति-सैनिक और लोकसेवक।

इस तरह लोक-सेवक, शांति-सैनिक, रचनात्मक कार्यक्रम और सत्याग्रह—लोकनीति का यह सम्पूर्ण चित्र आपके सामने आ जाता है। यह द्वैत (लोकसेवक, शांति-सैनिक या रचनात्मक कार्यक्रम और सत्याग्रह) भी प्रारंभ में है, अन्त में तो अद्वैत ही है।

लोक-सेवक शांति-सैनिक से अलग नहीं हो सकता है; क्योंकि जो लोक-सेवक शांति-सैनिक नहीं है, वह लोक-सेवक सच्चे माने में हो नहीं सकता। और जो शांति-सैनिक लोक-सेवक नहीं है तो वह सही माने में शांति-सैनिक नहीं हो सकता। इसलिए लोक-सेवक और शांति-सैनिक दोनों एक ही चीज है, अद्वैत है। जैसे गांधीजी हमेशा कहते थे, रचनात्मक कार्यक्रम के बिना सत्याग्रह नहीं हो सकता और रचनात्मक कार्यक्रम भी सत्याग्रह के सिवाय आगे बढ़ नहीं सकता। विनोबाजी ने सत्याग्रह का जो सौम्य, सौम्यतर, सौम्यतम रूप आपके सामने रखा है, वही सत्याग्रह का व्यापक, व्यापकतर और व्यापकतम रूप है, यह सर्व सेवा संघ के निवेदन के पीछे की भूमिका है।

अहिंसा के लिए कोई क्षेत्र त्याज्य नहीं है

अब एक-दो बातें इस निवेदन के संदर्भ में कहना चाहता हूँ। लोगों को लगता है कि इस साल सर्व सेवा संघ एक ऐसा नया कदम उठा रहा है कि हो सकता है वह फिसल जाय और फँस जाय। वह नया कदम क्या है? आने वाले चुनाव के बारे में सर्व सेवा संघ की जो नीति है, वह नया कदम है। दुनिया में एक माने में नई कोई चीज होती ही नहीं है। पुरानी चीज ही नये रूप में हमारे सामने आती है। आपको पता होगा कि गांधीजी ने गांधी सेवा संघ के सदस्यों को कहा था कि आपको मिनिस्टर बन कर अहिंसा का पालन करना होगा। हमारे में से कुछ लोग ऐसे थे कि जो मिनिस्टर होने के लिए झिझकते थे। वे कहते थे कि मिनिस्टर होकर अहिंसा का पालन नहीं हो सकता है। गांधीजी का एक ही जवाब था कि मिनिस्टर बन कर जिस अहिंसा का पालन नहीं हो सकता है, वह मेरी अहिंसा नहीं है। हम भी चुनाव से क्यों घबराते हैं? क्योंकि हमने चुनाव और सत्ता का अनिवार्य संबंध जोड़ दिया है। जैसे उस जमाने के कुछ लोगों के दिमाग में था कि पुलिस का सत्ता और राजनीति के साथ अनिवार्य संबंध है। लेकिन 'मन्त्री' तो मंत्रणा करने के लिए और व्यवस्था करने के लिए है। वह मंत्रणा और व्यवस्था ठीक चले, इसलिए कभी जरूर पड़े तो पुलिस और फौज वहाँ खड़ी है, लेकिन मंत्री कह सकते हैं कि वह फौज वहीं खड़ी रहे, हम उसका उपयोग नहीं करेंगे। यह ठीक है कि ऐसा प्रयोग अभी तक देश और दुनिया में हुआ है। लेकिन आज तक जो नहीं हुआ है, वह कल नहीं होगा, यह मानना भी सही नहीं है और आज जो नहीं हुआ, वह कल नहीं होने वाला है, तो यह दुनिया खत्म होगी; क्योंकि यह बड़ बन जायगी।

सच्चा लोकराज्य क्यों नहीं!

हमने सारे लोकतंत्र का सम्बन्ध सत्ता, 'सैंक्शन', पुलिस और फौज के साथ जोड़ दिया है। आखिर जिनसे हमने यह लोकतंत्र लिया है, वे भी इसके क्या मानी कर रहे हैं? "गवर्नमेंट आफ दी पीपल्, बाय दी पीपल्, फार दी पीपल्।" हम गवर्नमेंट के बजाय मैनेजमेंट, शब्द रखना चाहते हैं—"मैनेजमेंट आफ दी पीपल्, बाय दी पीपल्, फार दी पीपल्", ऐसा फर्क करना चाहिये। जब मनुष्य खुद प्रबंध नहीं कर सकता है, तब उसे प्रबंध करवाना पड़ता है, तो हम सैंक्शन—आधार—पुलिस और फौज का लें या सत्याग्रह का लें, यह हमारे ऊपर निर्भर है।

आज तक लोग जो, यही मानते हैं कि हमारी व्यवस्था आखिर पुलिस, फौज और सत्ता पर ही चल सकती है। इसलिए सच्चा लोकराज्य नहीं कायम हो सका है।

इसलिए लोगों को यह समझ लेना है कि हम अपनी व्यवस्था खुद करेंगे और व्यवस्था में कोई रुकावट आती है, तो उसका निराकरण हम गांधी के सत्याग्रह से करेंगे, पुलिस और फौज से नहीं करेंगे। आज मनुष्य के विकास की जो अवस्था है, उसमें काफी समय तक ऐसी रुकावटें तो आती रहेंगी। इसके लिए कुछ-न-कुछ सैंक्शन की—शक्ति की—जरूरत रहेगी। हम लोगों को यही करना है कि वह शक्ति पाशविक और राजकीय नहीं होगी। गांधीजी ने उसके बदले में एक दूसरी शक्ति लोगों के सामने रखी है और वह है नैतिक शक्ति। इसलिए नैतिक शक्ति और सत्याग्रह यही हमारी शक्ति है, ऐसा समझ कर लोग आगे बढ़ेंगे तो लोक-राज्य और लोक-जीवन की व्यवस्था ये कोई दो अलग चीजें नहीं रहेंगी।

चुनाव का सम्बन्ध सत्ता के साथ जुड़ा है, इसलिए हम घबड़ाते हैं; क्योंकि हम सत्ता के नजदीक नहीं जाना चाहते हैं। लेकिन जहाँ पूर्ण लोक-राज्य कायम हुआ है, वहाँ भी कुछ व्यवस्था दूसरों से करवानी होगी, इसलिये चुनाव भी रहेगा। सवाल यह है कि चुनाव कैसा हो? हम लोगों को यह तालीम देना चाहते हैं कि अपनी व्यवस्था करने के लिए प्रतिनिधि की खोज, नियुक्ति और उसका चयन करना चाहिए। इस विषय पर एक प्रबंध जयप्रकाशजी ने देश के सामने रखा है। लोग अपने जीवन की व्यवस्था खुद करें, यह जो प्रबंध है, उसका अमल करना बहुत बड़ा, व्यापक कदम है।

दुहरा प्रयोग

हम देश में संविधान के रूप में एक व्यवस्था कायम है। जब तक उस संविधान में परिवर्तन नहीं हुआ है, तब तक जो व्यवस्था आज की है वह रहेगी, और वह रहे, यह देखना भी हमारा फर्ज है। क्योंकि हम भी अराजकता नहीं चाहते। लेकिन जब तक संविधान में परिवर्तन नहीं हुआ है, तब तक भी लोकतंत्र का विकेन्द्रीकरण का कदम उठाया जा सकता है। इसलिए हमको साथ-साथ दो प्रयोग करने हैं। एक तो, आज के संविधान के अनुरूप जो व्यवस्था है, उसमें परिवर्तन लाना है और उसके साथ-साथ जिसे पंचायती राज या लोक-राज कहते हैं, उसका भी प्रयोग सफल करके बतलाना है। इसलिए सर्व सेवा संघ ने यह प्रस्ताव किया है कि देश में जो पंचायती राज का प्रयोग सरकार की ओर से हो रहा है, उसको एक साधन समझ कर जो परिवर्तन लोकराज्य और लोकनीति की दृष्टि से हम उसमें चाहते हैं वह भी सरकारके सहकार से लाना है, यह भी हमारा कर्तव्य है, धर्म है। आज के पंचायती राज्य का निर्माण, प्रारम्भ और प्रेरणा दिल्ली से मिली है, इसलिए वह हमारे काम की चीज नहीं है, इतना ही नहीं, बल्कि वह नुकसानदेह है ऐसा समझना गलत होगा। चीज कहाँ से आयी है, यह महत्त्व की बात नहीं है। वह चीज आज चुनौती के रूप में हमारे सामने खड़ी है। हमारे में उतनी शक्ति है या नहीं कि उसका हम परिवर्तन कर सकें? लोग कहते हैं कि हमारे पास शक्ति बहुत कम है। हम मुट्ठी भर कार्यकर्ता हैं। हाँ, जहाँ तक सर्व सेवा संघ का और हमारा सवाल है, इसमें कोई शक नहीं है कि हमारी शक्ति और संख्या कम है। और हमारी ही शक्ति के आधार पर लोक-राज्य लोकनीति का प्रयोग हम करेंगे, ऐसा समझेंगे, तो हो सकता है कि हम भी फिर 'परित्राणाय साधूनाम्' वाली बात पर आयेंगे। सत्याग्रह की वृत्ति और अहिंसा की शक्ति हमें मजबूत करनी है तो देश में जो शक्ति है वह हमारी है और हम उनके हैं, यह समझकर आगे बढ़ना है। जैसे कल या परसों जयप्रकाश बाबू ने कहा था, हमको लोक-सेवकों और शांति-सैनिकों को 'जामन' के रूप में काम करना चाहिए। जब तक दही (जामन), यह मानता रहेगा कि दूध उससे भिन्न है, तब तक वह दूध को दही नहीं बना सकेगा और खुद भी कुछ काम नहीं आ सकेगा। इसलिए हम इतना ही करेंगे कि इस देश में, दुनिया में सत्याग्रह और लोकशक्ति के लिए जितनी शक्तियाँ, व्यक्ति काम कर रहे हैं, वे हम सब एक हैं। ऐसा समझ कर ही अपने कार्यक्रम के बारे में सोचना ठीक होगा।

हमारा साधन सत्ता नहीं, सेवा

फिर लोग पूछेंगे कि दूसरे में और आपमें क्या फर्क है? हाँ, फर्क तो जरूर है। वह फर्क यह है कि हमारा परिवर्तन का जो साधन है, वह सत्ता नहीं है। हमारा साधन सेवा और नैतिक बल है और जैसे पिछले ६ अप्रैल को हमने घोषणा की है ग्रामस्वराज्य की, उसके निर्माण के लिए हम अपनी सेवा और नैतिक शक्ति को लगायेंगे तो उस क्षेत्र में जो पंचायती राज का कारबार चलता है, उसको भी हम लोकराज्य और लोकनीति की दिशा में मोड़ सकेंगे। इस दृष्टि से कार्यकर्ताओं में विश्वास का होना अवश्य है—विश्वास, अपने ऊपर और दूसरे पर। सारे गाँवों में और देश में जो काम कर रहे हैं, वे हमारे खिलाफ हैं, और हम एक छोटा-सा गुट है, ऐसा समझना हमारे लिए और अहिंसा के लिए मारक चीज है। इसलिए आज देश का जो संविधान है, उसको परिवर्तित करना है, यह हम भूलेंगे नहीं, लेकिन साथ-साथ सेवा और नैतिक शक्ति के जरिये लोक राज्य निर्माण करने का जो पंचायती राज का प्रयोग है वह हमारा है, ऐसा समझ कर गाँवों में काम करेंगे और आखिर में हम यह बात समझ लें कि यह प्रयोग हमारा है, ऐसा समझकर काम करने के लिए विनोबाजी के भूदान-आंदोलन ने सारा क्षेत्र हमारे लिए खोल दिया। भू-समस्या को अहिंसा से हल करना है यह आज भी हमारा लक्ष्य है और कल से फिर इस पर जोर से अमल करने वाले हैं। लेकिन भूदान के मानी इतनी जमीन, इतना संपत्ति-दान, इतने ग्रामदान, इतना ही नहीं है। वह एक वृत्ति का सवाल है। भूमि की समस्या हल करने में वह एटिट्यूड—वृत्ति—भूदान के रूप में व्यक्त होती है। भूदान के साथ-साथ श्रमदान, संपत्ति-दान, साधन-दान हैं। यह सारे उसी वृत्ति—एटिट्यूड—के भिन्न-भिन्न पहलू हैं और यही सर्वोदय जीवन का रास्ता है।

[श्री नवकृष्ण चौधरी : एक परिचय पृष्ठ २ का शेष]

उड़ीसा में देशी रियासतों की स्वतन्त्रता के आंदोलन का नेतृत्व और आदिवासी जातियों की सेवा का भार श्रीमती मालती-देवी को उठाना पड़ा। कुछ समय तक मालतीदेवीजी कांग्रेस की अध्यक्षा भी रहीं।

१९४० और '४२ के आंदोलनों में आपके परिवार का निवास स्थान कारावास ही रहा।

१९४६ में श्री नवबाबू उड़ीसा सरकार में राजस्व मंत्री हुए। उसी समय किसानों के आंदोलनों के सारे अनुभव लेकर आपने 'अचल शासन' के सम्बन्ध में जो कानून उड़ीसा विधान सभा में पेश किया और पास कराया वह आज के पंचायती राज का भी मार्गदर्शन कर सकता है। गांधीजी के सपनों के ग्रामराज की सारी रूपरेखा आपने अपने उस 'अचल राज' में उतारी है। केन्द्रीकृत योजना-पद्धति और विकेन्द्रीकृत आर्थिक व राजनैतिक व्यवस्थाओं में किस तरह समन्वय बिठाया जा सकता है और 'अचल शासन' किस तरह विश्व संघटन तक विस्तार कर सकता है, इन सब विषयों को नवबाबू ने बड़ी खूबी के साथ 'अचल राज्य' कानून में स्थान दिया है। मंत्री रहते हुए नवबाबू को यह अनुभव हुआ कि स्वराज्य तो देश को और प्रांतों को मिला है, लेकिन उसे गाँव-गाँव में ले जाने के लिए लोक-शिक्षण का काफी कार्य करना पड़ेगा। तब उन्होंने १९४८ में मंत्री-मंडल से इस्तीफा दे दिया और उड़ीसा राज्य में बुनियादी शिक्षा का काम उठा लिया।

१९५० में जब उड़ीसा के मुख्य मंत्री श्री हरिकृष्ण मेहताब केन्द्रीय सरकार के मंत्री नियुक्त हुए तो मुख्य मंत्री पद की जिम्मेवारी किनको सौंपी जाय, यह प्रश्न खड़ा हुआ। सभी लोगों की दृष्टि नवबाबू की ओर गयी और नवबाबू १९५० से १९५६ तक छह साल उड़ीसा के मुख्य मंत्री रहे।

१९५५ में जब पूज्य विनोबाजी की पदयात्रा उड़ीसा में हुई तब समय की इन्तजारी में रहे। नवबाबू को सरकारी जिम्मेवारी से मुक्त होकर जनसाधारण में काम करने का मौका सामने दीखा। १९५६ में मुख्य मंत्री पद से उन्होंने इस्तीफा दे दिया।

नवबाबू के इस त्याग का वर्णन करते हुए अमेरिका से निकलने वाले पत्र 'प्रोग्रेसिव' ने बुद्ध और अशोक से उनकी तुलना की। इस चीज को आज हमारे देशवासी भले ही न पहचानें, लेकिन आने वाली पीढ़ी अवश्य पहचानेगी।

गोपबाबू और नवबाबू के परिवारों ने उड़ीसा में ग्रामदान की जो गंगा बहायी है, वह इतिहास में सदा स्मरणीय रहेगा। तीन साल पहले गोपबाबू के निधन से नवबाबू को बड़ा धक्का लगा। साथ ही देश ने अहिंसात्मक समाज-रचना में लगे एक महान् शिल्पी को खो दिया।

इस साल सर्व सेवा संघ ने नवबाबू को अपना अध्यक्ष चुन कर अपने आपको आभूषित किया है। सर्व सेवा संघ का अध्यक्ष होना उनके लिए कोई पद नहीं, जिन्होंने स्वेच्छा से मुख्य मंत्री पद छोड़ा है। मुख्य मंत्री-पद छोड़ने के बारे में जब किसीने कहा कि नवबाबू सत्ता छोड़ कर आये हैं, तो नवबाबू ने फौरन 'रिमार्क' किया—मैंने सत्ता नहीं छोड़ी, मुख्य मंत्री पद सत्ता के लिए छोड़ा है। नवबाबू मानते हैं कि सच्ची सत्ता जनता की है और जनता में है। इसलिए वे नागरिकत्व की सत्ता प्राप्त करने लगे हैं और हम सबको आदर्शोन्मुख आचरण का सबक सिखाते हैं।

आशा है, नवबाबू के नेतृत्व का लाभ उठा कर सर्वोदय-कार्यकर्ता, सर्वोदय-समाज की स्थापना की ओर अधिक तेजी से आगे बढ़ेंगे।

लोक-श्रम का एक सफल प्रयोग

श्रमदान की चेतना

आजादी के बाद दुर्भाग्य से देश में छोटे-मोटे सब सार्वजनिक कामों के लिये सरकार का मुँह ताकने की प्रवृत्ति आ गयी। होना तो यह चाहिये था कि आजादी के बाद स्वतंत्र जनशक्ति प्रकट होती और देश के नवनिर्माण में उसका बड़ा योग होता।

सवाल है कि ऐसा हुआ क्यों? क्यों नहीं जनता की ताकत बढ़ी? बहुत हद तक सरकार और उसकी योजनाएँ इसके लिए जिम्मेदार हैं और उनसे भी ज्यादा सत्ता प्राप्ति के लिए संघर्ष करने वाले राजनीतिक दल! राजनीतिक दलों ने, हम कह सकते हैं, हिन्दुस्तान की जनता की ताकत बढ़ाने की बजाय, उसको अपनी सत्ता प्राप्ति के लिये माध्यम बना कर, आश्वासन देकर, उकसा कर हर काम सरकार के मार्फत हो, यह मनःस्थिति जनता में उत्पन्न कर दी। लोककल्याणकारी सरकार का आदर्श भी इसी दिशा में बढ़ता है।

इन बारह-तेरह सालों में लोकशक्ति प्रकट करने वाले जो इनेगिने काम हुए, उसमें गढ़वाल में 'चौंदकोट जनशक्ति गाड़ी सड़क' का निर्माण अपना एक विशेष महत्त्व रखता है। सन् १९५१ में इस इलाके की जनता ने संगठित होकर ३० मील लम्बी सड़क बना कर एक अनुकरणीय आदर्श प्रस्तुत किया। पिछड़े साधनहीन, शोषित गाँव के कृषकों ने संगठित होकर अपनी 'जनता' की 'अनन्त शक्ति' का परिचय दिया। ३६ हजार लोगों ने एक 'टीम' की भावना से प्रेरित होकर काम किया।

जनता ने अपना यह सब काम खेती के काम से बचे हुए समय में, जाड़े की ऋतु में किया। इन लोगों से काम लेना और उनके उत्साह को एक लंबे अर्से तक कायम रखना कोई मामूली काम नहीं था। यहाँ के मुख्य कार्यकर्ताओं ने श्री दर्शनसिंह नेगी के नेतृत्व में वैज्ञानिक आधार पर जनता की विराट शक्ति का उपयोग किया।

पहाड़ी इलाकों में सड़क बनाना कोई साधारण बात नहीं है। इस बड़े 'श्रमयज्ञ' में स्त्री-पुरुष, बच्चे-बूढ़ों ने भाग लिया।

खुशी की बात है कि श्री नेगी ने अपने इन अमूल्य अनुभवों को पुस्तकाकार रूप में ला दिया है। 'श्रमदान की सफल चेतना' इस पुस्तक● में लोकश्रम के सफल संयोजन का रोचक वर्णन तस्वीरों के साथ है। इसमें बिना कानून और दंड शक्ति के प्रेम और सहयोग से जनता को अपने उत्थान के लिये कैसे प्रेरित और तैयार किया जाय, उसका वैज्ञानिक विश्लेषण मिलेगा।

जनता की शक्ति विकसित करने वाले सब जनसेवकों को हम सिफारिश करते हैं कि वे इस पुस्तक को एक बार अवश्य पढ़ें।

—मणीन्द्र कुमार

● पता : श्री दर्शनसिंह नेगी, संयोजक; ग्राम तथा डाकघर ढंगा, चौंदकोट, जिला गढ़वाल, उ.प्र.। मूल्य ? रु. ४० नये पैसे।

विनोबा-यात्री-दल से

—कुसुम देशपांडे

गौहाटी यूनिवर्सिटी में छात्र और छात्राओं के साथ विनोबाजी एक दिन रहे। सुबह की पहली सभा यूनिवर्सिटी के लिए थी। व्यवस्थापकों ने सभा की जो जगह चुनी थी, वह विनोबाजी के निवास-स्थान के छोटे-से कंपाउण्ड में थी। सब विद्यार्थी कंपाउण्ड के इर्द-गिर्द भीड़ में खड़े होकर सुनेंगे। इतनी छोटी-सी जगह, नजदीक-नजदीक मकान! विनोबाजी ने कहा, "सभा आकाश के नीचे मैदान में होगी।" सारा इन्तजाम बदला गया। उसमें समय भी ज्यादा गया और करीब तीन-चार फर्लांग दूरी पर विशाल मैदान में सभा हुई। विनोबाजी ने शुरू में कहा, "हमारे हृदय में विद्यार्थियों के लिये बहुत अधिक आशा, प्रेम और भक्ति है। इसलिये हमने इतना समय आपका और हमारा इन्तजाम बदलने में गँवाया। हम चाहते हैं कि हम हमारा हृदय विद्यार्थियों के सामने खोल दें। ऐसे खुले विशाल आकाश के नीचे सब एकसाथ बैठेंगे तो दिल खुलेगा।"

अपने व्याख्यान के दौरान में विद्यार्थियों से कहा, "अभी जो अभिनन्दन-पत्र पढ़ा गया, उसमें कहा है कि विद्यार्थी उच्छृंखल बने हैं। लेकिन दस साल की भारत-यात्रा में मुझे यह अनुभव नहीं आया। जिन जिन शहरों में मुझे कहा गया था कि यहाँ के विद्यार्थी उच्छृंखल हैं, उन शहरों की हमारी सभाएँ, विद्यार्थियों की खास सभाएँ भी अत्यंत शांति से हुईं। फिर भी लोग कहते हैं तो उनका भी अनुभव है, यह गलत नहीं है। मेरा सम्बन्ध एक दिन का होता है। फिर भी जब मैं चिंतन करता हूँ तो उसमें विद्यार्थियों का अपराध नहीं देखता, शिक्षण का अपराध देखता हूँ।

"मेरे अपने स्वतंत्र विचार हैं। मैं मानता हूँ कि विद्यार्थियों के दिमाग पर किसी का प्रभाव नहीं होना चाहिये। दिमाग की आजादी का सबसे ज्यादा अधिकार विद्यार्थियों को है। उपनिषद में समावर्तन-विधि का वर्णन आता है। बारह साल गुरु के घर रहने के बाद वापस जायेंगे और पराक्रम करेंगे तब गुरु कहते हैं, याने उनका 'कन्वोकेशनल एड्रेस' (दीक्षान्त भाषण) होता है—'देखो बेटो! तुम हमारे विद्यार्थी हो, हम आचार्य हैं; लेकिन परमेश्वर के समान निर्दोष नहीं हैं। इसलिये हमारे जो सुचरित्र हैं उन्हीं का अनुकरण करो। हमारे हाथों से दोषयुक्त काम हुए होंगे उनका अनुकरण मत करो।' ऐसी दिमागी आजादी देनी चाहिए। वह आज नहीं है। कुल दुनिया में विद्यार्थियों के दिमागों को ढाँचे में ढाला जा रहा है। और राजनैतिक पक्ष भी उनको अपने साधन बनाते हैं! विद्यार्थियों को इन सबसे बचना चाहिए और दिमाग खुले रखने चाहिए।"

सुबह ११ बजे प्राध्यापकों की सभा हुई। इन दिनों विनोबाजी नागरी लिपि पर बहुत जोर दे रहे हैं। प्राध्यापकों के सामने उन्होंने यही चर्चा छेड़ी। कॉलेज में शिक्षण का माध्यम मातृभाषा होनी चाहिये, यह भी चर्चा चली। बताया गया कि कालेजों में माध्यम अंग्रेजी है, किन्तु हाईस्कूल में असमी, बंगाली, हिंदी याने मातृभाषा का माध्यम है। विनोबाजी ने कहा, "भाषा के अनुसार प्रान्त बने हैं, उसका लाभ आप नहीं उठायेंगे तो हानि होगी। भाषा का बच्चों के दिमाग पर बहुत बोझ होता है। अंग्रेजों के लड़के ऐसा कोई बोझ नहीं उठाते हैं। माँ सीखाती है, तब से लेकर कॉलेज की पढ़ाई तक अंग्रेजी ही चलती है। फ्रेंच उनकी सहायक भाषा है, इसलिये जल्दी सीख लेते हैं। जर्मन, रूस, चीन आदि सब देशों में उनकी अपनी भाषा में शिक्षण होता है।"

एक प्राध्यापक: चीन में उनको अंग्रेजी सीखनी पड़ती है।

विनोबाजी: दूसरी भाषा सीखना एक बात है और शिक्षण का माध्यम होना दूसरी बात है।

प्राध्यापक: हिन्दुस्तान में बहुत-सी भाषाएँ हैं..!

उनका वाक्य खतम होते ही विनोबा ने कहा, "और इसका फायदा अंग्रेजी को मिलता है।" (एन्ड हेंस दी एडवान्टेज गोज टु इंग्लिश) सब हँस पड़े। चर्चा आगे चली। विनोबाजी ने कहा, "मैं समझता हूँ कि इस प्रदेश की एक विशिष्ट दशा है। लेकिन यह सवाल भाषा का इतना नहीं है। यह शैक्षणिक की अपेक्षा राजनीतिक अधिक है।"

नागरी लिपि के बारे में विनोबाजी ने कहा कि "दूरदृष्टि से हम सोचेंगे तो यह लिपि का सवाल बहुत ही महत्त्व का है। आप रोमन लिपि की बात करते हैं। लेकिन आप शायद जानते नहीं होंगे कि बर्नार्ड शा ने अपने वसीयत में इसके लिए पैसे रखे हैं कि रोमन लिपि बदली जाय, उसमें बहुत तकलीफ है। 'लन्दन टाइम्स' ने उसके सुधरे हुए नमूने छापे थे। मेरे पास आये थे। वह 'फोनेटिक' थी। रोमन के साथ उसका कोई ताल्लुक नहीं था, आपके नजदीक वह थी। टर्की में कमाल पाशा ने रोमन लिपि चलायी। मैंने वहाँ से कुरान शरीफ मँगवायी है। वह रोमन में है। लेकिन इससे वाक्य बहुत लंबा हो जाता है—'बिस्मिल्ला रहमानुर रहीम' लिखा जायगा तो लगेगा जैसे मालगाड़ी की लम्बाई होती है!"

फिर विनोबाजी ने 'कुरान' पढ़ कर सुनायी और नागरी लिपि में चलने वाली सिंधी, कन्नड, मराठी, ओड़िया की भूदान-पत्रिकाएँ दीखायी और पढ़ कर सुनायी।

गौहाटी शहर में प्रवेश किया, उस दिन विनोबाजी ने स्वयं अनुशासन चलाया। चार-चार की कतार में पूरी टोली चल रही थी। शहर के निवासियों को भी यही अनुशासन लागू हुआ। इसलिये अक्सर शहरों में भीड़ के कारण जो अव्यवस्था होती है, वह टली। म्युनिसिपल सीमा पर शहर के प्रतिष्ठित नागरिक और समिति की बहनें थीं। असम में महिलाएं विशेष उत्साह से काम करती हुई दीखती हैं। सभाओं में भी उनकी संख्या अधिक ही रहती है।

गौहाटी के अवकाश प्राप्त (रिटायर्ड) लोगों की एक सभा हुई। वानप्रस्थाश्रम का जीवन में क्या महत्त्व है, यह समझाते हुए विनोबाजी ने गांधीजी की मिसाल उनके सामने रखी और कहा, "वे इतना पुरुषार्थ का काम इसीलिये कर सके कि उन्होंने वानप्रस्थ की दीक्षा ली। असम के एक सत्पुरुष ने कहा है कि हमें मुक्ति में भी रस नहीं है, सेवा में रस है। आज सबका जीवन निःसार बना है। उसमें न सेवा है, न रस है। कुछ लोग राजनैतिक पक्ष में हैं, बाकी खेती, घर-गृहस्थी, नौकरी-चाकरी में लगे हैं। इस तरह सब गिरफ्तार हो गये हैं। समुद्र में लहरें उठा करती हैं और उसीमें वे डूब जाती हैं। संसार-सागर आज जितना भयानक हुआ है, उतना इसके पहले नहीं था। इसलिये जब सोचता हूँ कि निष्काम सेवक कहाँ मिलेंगे, तो मुझे अपने पूर्वजों की योजना का स्मरण होता है। वानप्रस्थाश्रम उस योजना में एक योजना है। ऐसे वानप्रस्थ निकलेंगे, तो समाज को निष्काम सेवक मिलेंगे।"

असम राष्ट्रभाषा प्रचार-समिति का दीक्षान्त समारोह हुआ। उसमें विनोबाजी की अध्यक्षता में समावर्तन विधि हुआ। विनोबाजी ने कहा, "हिंदी भाषा नम्रता से ही फैलेगी। वह किसी पर लादी नहीं जा सकती है। अखिल भारत में आप पराक्रम करना चाहते हैं तो आपको हिंदी का अध्ययन बढ़ाना होगा।"

इसके बाद उच्चतर माध्यमिक स्कूलों के शिक्षकों की सभा हुई। उसमें विनोबाजी ने कहा, "ऋग्वेद में एक वचन है, जिसमें शिक्षकों को 'हे शक्तिशाली, हे परम शक्तिशाली, और मार्ग-शोधन करने वाला' कहा है। शिक्षकों का लक्षण यही है कि वह अग्रसर है याने राष्ट्र को किस मार्ग से जाना चाहिये,' यह शिक्षक बतायेंगे। उत्तम मार्ग का ज्ञान आपको है, ऐसा ऋग्वेद का विश्वास है। आप अपने को ऐसे शक्तिशाली महसूस कीजिये। जो बलहीन होते हैं, उनको आत्मा की शक्ति की लब्धि नहीं होती है।'

जैसे कुम्हार के हाथ में मिट्टी होती है। उस मिट्टी का गणपति बनाना है या विष्णु-मूर्ति बनाना है—चाहे जो आकार देने का सामर्थ्य कुम्हार रखता है; वैसे ही शिक्षक राष्ट्र को आकार दे सकते हैं। सृष्टि हमारे हाथ में है, ऐसी शक्ति आप महसूस कीजियेगा। हमारे देश को आचार्यों ने बनाया, शंकराचार्य, रामानुजाचार्य ने आकार दिया।"

असम प्रदेश के कांग्रेस के असेंबली के सदस्य विनोबाजी से मिले। उसमें प्रदेश के मुख्यमंत्री श्री चालीहा तथा और अन्य मंत्री भी शामिल हुए थे। "अहिंसा की खोज के लिये मैं सब पक्षों से, संस्थाओं से मुक्त रहा।"—इसका इतिहास बता कर आगे विनोबाजी ने कहा कि "मेरा यह भाग्य है कि हर पक्ष में मेरे मित्र हैं। मेरा आपसे कहना है कि यह वर्ष पुण्य करने का है। अगले साल चुनाव होगा। मैं हर पक्ष को कहता हूँ, आपसे भी कहता हूँ कि भूदान का काम आप इस वर्ष में पूरा कीजिये। इससे आपको जनता के पास जाने का मौका मिलेगा। उस वक्त जेल में जाना होता था, उसको बापू 'गोइंग इन्टु वाइल्डरनेस' कहते थे। उससे चित्त शुद्धि होती थी। अब आपको जेल में कौन भेजेगा! इसलिये मैं आपसे कहता हूँ कि आप वनवास कीजिये। त्याग की परीक्षा करनी चाहिये। आपको खुद देना होगा, तब जनता के पास जायेंगे। यह बात आप 'सीरिएसली' उठायेंगे तो हमारी यात्रा आपके प्रदेश में चल रही है तो बहुत बड़ा काम होगा, शुद्धि होगी। अगले साल आप चुनाव के लिए लोगों के सामने जायेंगे तो गरीबों के लिये कुछ किया है यह समाधान होगा और जाने में शोभा होगी। नहीं तो सरकार ने यह किया, वह किया, ऐसे पंचवर्षीय योजना के गीत आप गायेंगे!

गौहाटी शहर में रहने वाले बंगाली भाई विनोबाजी से मिलने आये थे। उनका कहना था कि असमी भाषा के साथ-साथ बंगाली भी देश की राज-भाषा मानी जाय। विनोबाजी ने उनके सामने सुझाव रखे—"जो बुरी घटनाएँ हुई हैं, उन्हें भूल जाइये और जाहिर कर दीजिये कि 'हमने उन घटनाओं के लिये क्षमा कर दी है। असमी राज-भाषा है तो हम असमी सीखेंगे।' मैट्रिक तक बंगाली में सीखने की सुविधा हो, ऐसी माँग रखिये। असमी के साथ बंगाली भी राज-भाषा हो, ऐसा न सोचो।

शरणिया आश्रम गौहाटी शहर में ही है। फिर भी उसका स्थान एक ऊँचे टीले पर है। इसलिये शहर से दूर ही है, ऐसी शांति उस आश्रम में है। जिधर नजर जाती है, उधर गहरे हरे रंग के सिवा और कुछ दीखता ही नहीं है। सुपारी और नारियल के ऊँचे पेड़ सृष्टि की शोभा बढ़ाते हैं।

आश्रम के अहाते में रंगीन फूल खिले दीखते हैं। 'मेखला' और 'चादर' की असमी पोशाक पहनी हुई हँसमुख बहनें निरंतर सेवा में मग्न दीखती हैं। असम कस्तूरबा ट्रस्ट का यह मुख्य केन्द्र है। इन बहनों को सतत प्रेरणा देने का काम अमलप्रभा देवी का सौम्य तथा शांत व्यक्तित्व करता है। विनोबाजी कहते हैं—"कई वर्षों से हर काम के लिये असम में हम एक ही नाम सुनते आये हैं—अमलप्रभा का।" अब इन दिनों कस्तूरबा ट्रस्ट की प्रतिनिधि का काम श्री शकुन्तला बहन कर रही हैं। गौहाटी के आखिर के दो दिन खास बहनों के लिये थे। उस दिन शाम की प्रार्थना-सभा भी बहनों के लिये रखी गयी थी। असम प्रदेश की महिला-समिति की प्रमुख बहनें अन्य जिलों से आयी थीं। गौहाटी की सोशल वेलफेयर बोर्ड, भारत सेवक-समाज तथा महिला-समिति की बहनें भी थीं। इन सबने मिल कर विनोबाजी का स्वागत किया और कहा कि हम सर्वोदय-पात्र का काम उठायेंगी। अब तक ५६० सर्वोदय-पात्र की स्थापना हुई है। विनोबाजी ने बहनों को कहा कि "समाज में शांति रक्षा का काम मातृशक्ति कर सकती है। उस काम के लिये आपको आगे आना चाहिये।"

दूसरे दिन प्रातःकाल ४ बजे 'ईशावास्य' का पाठ आश्रम के आंगन में हुआ और उसके पश्चात् तुरंत ही आश्रम-कन्याओं के सामने 'ब्रह्म विद्या' का गुह्य खोलते हुए विनोबाजी ने कहा, "कस्तूरबा ट्रस्ट ने अब शांति सेना का काम उठाने का निश्चय किया है। यह काम आध्यात्मिक बुनियाद के बिना नहीं होगा। इसलिये मैंने इस पर जोर दिया कि बहनों को ब्रह्म-विद्या में पारंगत होना चाहिये।

> पुस्तकी विद्या ब्रह्म-विद्या नहीं है। ब्रह्म-विद्या आचरण की विद्या है। रोज के जीवन में आदर, प्रेम, विश्वास और श्रद्धा हो। हम सब एक ही हैं—बाहर से थोड़ा फर्क हो सकता है—लेकिन अंदर से सर्वत्र हम ही हम हैं, ऐसी दृढ़ श्रद्धा हो यही ब्रह्म-विद्या का आरम्भ का स्वरूप है।

फिर इसके आगे जाना है। सामने साँप आया, उसमें भी हम ही हैं, यह अनुभूति एकदम नहीं आयेगी। यह अभ्यास से होगा। इसका आरम्भ मनुष्य से होगा। फिर वे प्राणी जिनकी हम सेवा लेते हैं—गाय, बैल, घोड़ा आदि और उसके बाद वे प्राणी, जो जानबूझ कर हमला नहीं करते, फिर भी हानि कर सकते हैं—जैसे साँप, बिच्छु—इनके साथ भी एकता महसूस करनी है। इसके बाद वे प्राणी जो मनुष्य को खाते हैं—जैसे शेर हैं, यह बहुत आखिर की बात होगी। आरम्भ तो आपको अपने से मानो इस आश्रम से करना होगा। यहाँ जितनी बहनें हैं, उनमें अन्योन्य अनुराग हो, हम एक हैं यह भावना हो, तब यह प्रेम व्यापक रूप में फैलेगा। .."

विनोबाजी से अक्सर एक सवाल पूछा जाता है कि 'आप स्त्रियों के लिए ही ब्रह्मविद्या की बात क्यों करते हैं? क्या पुरुषों के लिए वह नहीं है?' इसका जिक्र उस भाषण में करते हुए विनोबाजी ने कहा, "पुरुषों ने ब्रह्म विद्या को गलत रूप दिया है। स्त्रियों को उसे सुधारना है। पुरुषों ने स्त्री को आसक्ति का विषय बनाया है। खास करके हिन्दुस्तान के साहित्य में मैंने यह देखा। आसक्ति और प्रेम में फर्क है। मैं दूध पीता हूँ, पर दूध मेरे प्रेम का विषय नहीं है। प्रेम का अर्थ है कि हम उस व्यक्ति के लिये त्याग करने के लिये तैयार हैं। जिसे हम भोग करने जाते हैं या खाने जाते हैं उसे प्रेम नहीं कहते। शेर हिरन का शिकार करता है तो क्या उसका हिरन पर प्रेम है? वह तो उसका भोग है। स्त्री को भोग-साधन बना कर आसक्ति का विषय बनाया। और दुःख की बात यह है कि स्त्री ने उसे कबूल किया। दूसरी ओर स्त्री से घृणा करेंगे, और उसे वैराग्य कहेंगे। इस तरह द्वेष और घृणा से भी लगाव होता है, ऐसा वर्णन भागवत में आया है। इसलिए मैं कहता हूँ कि आज तक ब्रह्म विद्या एकांगी थी। स्त्री से घृणा करना, या पुरुषों से घृणा करना, यह ब्रह्मविद्या नहीं होगी। सबमें परमेश्वर का दर्शन करना, यह है ब्रह्म विद्या।"

आश्रम में कस्तूरबा-ट्रस्ट के अभ्यास-क्रम (सिलेबस) की चर्चा हुई। विनोबाजी ने कहा कि प्रार्थना में यांत्रिकता महसूस हो तो प्रार्थना न करें, या उसकी जगह कुछ भजन गायें। प्रार्थना मातृभाषा में हो तो ज्यादा स्वाभाविक होगी। प्रार्थना का हेतु तो भक्ति के लिये है।

एक किस्सा उन्होंने बताया—'मेरी माँ की देवी अन्नपूर्णा की एक मूर्ति थी। उसे मैं उसकी मृत्यु के बाद आश्रम में ले आया। और चाहता था कि उसकी पूजा चले, क्योंकि मेरी माँ सतत उसकी पूजा करती थी। साबरमती में कृष्णदास गांधी की माँ, काशीबा ने उसे रखा। यह १९१८ की बात है। उसके बाद १९५८ में मैं भूदान यात्रा में वहाँ गया था। देखा कि ४० साल लगातार काशी बा उसकी पूजा करती रहीं। यहाँ तक कि बीमार हो या सफर में हो तो भी एक दिन भी वह मूर्ति बिना पूजा की नहीं रही। उसने मुझे कहा कि 'भोजन तो मैंने कई बार छोड़ा है, पर पूजा एक दिन भी नहीं छोड़ी।' इस तरह बहनें भक्ति से जब काम उठाती हैं तब ऐसी निष्ठा से उसे सतत करती हैं। प्रार्थना में चित्त शून्य हो जाय तो नींद आयेगी। अनेकाग्र हो जाय तो मन इधर-उधर दौड़ेगा। प्रार्थना में तैयारी करके आना चाहिये। नींद पूरी होनी चाहिये।"

गौहाटी में मद्रास के गवर्नर श्री विष्णुराम मेधी जो असम के हैं, विनोबाजी से मिले। उन्होंने सहानुभूति प्रकट की और विनोबाजी को असम में यश मिले, ऐसी शुभेच्छा व्यक्त की।

जन-आधारित सर्वोदय-कार्यकर्ता परिसंवाद

सर्वोदय जन-आन्दोलन बने, इस पर विचार करने के लिए चन्दपुरी नरौरा (जिला बुलन्दशहर) में २६, २७ और २८ मार्च को एक कार्यकर्ता-परिसंवाद हुआ। विभिन्न जिलों से आये हुए ३२ कार्यकर्ता इसमें सम्मिलित हुए।

चर्चा के मुद्दे थे : (१) लक्ष्य का स्पष्टीकरण। (२) उसके लिए कार्यक्रम। (३) कार्यकर्ता।

लक्ष्य का स्पष्टीकरण

मानवीय मूल्यों पर आधारित समाज की स्थापना करना ही हमारा उद्देश्य है। पर लक्ष्य, जिसका अर्थ हम यह लेते हैं कि जो हमारी पहुँच के नजदीक है वह है, लोकशक्ति जगाना अथवा ग्राम-स्वराज्य स्थापित करना।

ग्राम स्वराज्य का भी चित्रण आज जिस ढंग से हम लोग देश के सामने रख रहे हैं और उससे जो भाव जन-मानस से प्रकट होना चाहिए, उससे अधिक निखरा और स्वस्थ चित्र ग्राम-परिवार कह कर प्रकट कर सकते हैं। दूसरे शब्दों में परिवार-भावना पर आधारित ग्राम-स्वराज्य हमारा लक्ष्य है। इसके द्वारा प्रत्येक नागरिक को (१) सुरक्षा, (२) शिक्षा, (३) स्वास्थ्य की समान सुविधा रहेगी और (४) सम्पत्ति सामूहिक होगी।

कार्यक्रम : किसी भी कार्यक्रम की तेजस्विता उसके पीछे आधारित विचार पर निर्भर करती है। यदि विचार साफ नहीं है तो जो कार्यक्रम क्रांति का हो सकता है, वही राहत का भी बन सकता है और वही प्रतिक्रियावादी भी बन सकता है। इसलिए कार्यक्रम अच्छा है और कार्यकर्ता तेजस्वी हैं, केवल इतना ही पर्याप्त नहीं, बल्कि उसके पीछे जो विचार है उसे कभी नहीं भूलना है।

कार्यक्रम निर्धारित करते समय तीन बातों पर हमें सोचना चाहिए :

(१) समाज की सुव्यवस्था

सदियों से कानून और दण्ड पर आधारित हमारी सामाजिक सुरक्षा, सुव्यवस्था का शास्त्र विकसित हुआ है और यह हमारे मानस में घर कर गया है। आज की समस्याओं के सन्दर्भ में हमें समाज की सुव्यवस्था का नया शास्त्र बनाना है और वह होगा प्रेम और सहयोग के आधार पर। अतः एक ओर तो प्रेम और सहकार का विकास और दूसरी ओर कानून, दण्ड-व्यवस्था का बहिष्कार करना होगा।

(२) समाज-निर्माण

किसी केन्द्रीय निधि या संगठित तंत्र का सहारा लिये बिना निर्माण-कार्य नहीं कर सकते हैं, यह हमारी मान्यता और निष्ठा बनी हुई है। इसे छोड़ना होगा और लोक आधारित स्वावलम्बी इकाइयाँ बनानी होंगी, जो क्रमशः फैलती जायेंगी।

गाँव के लिए जो सर्वसम्मति-योजना गाँव की शक्ति और भरोसे पर खड़ी हो, वही ग्राम-परिवार का आधार बनेगी। संघ, वर्ग, खादी-कमीशन, गांधी-निधि, सरकार या बाहर की रचनात्मक संस्थाओं द्वारा चलायी गयी योजना लोक-अभिक्रम जगाने में बाधक है। अतः ऊपर से आयी हुई शक्ति का बहिष्कार तथा नीचे से उभड़ती हुई शक्ति को प्रोत्साहित करना होगा।

(३) जीवन-यापन

आज एक की मजदूरी पर दूसरे की रोटी चलती है। इसको अपने जीवन से हटायेंगे और पवित्र जीवन-साधन मिले, इसके लिए एक-दूसरे का सम्बल लेकर परस्पर जीवन बिताना और परस्पर स्नेह स्थापित करना होगा।

स्थूल कार्यक्रम वही होंगे, जो विनोबा ने सुझाये हैं : भूदान, संपत्ति-दान, ग्रामदान, शांति-सेना, सर्वोदय-पात्र साहित्य प्रचार-प्रकाशन आदि।

प्रयोग-प्रचार का स्वरूप

(१) पदयात्राएँ लम्बी और सघन हों।

अपने को नागरिक की भूमिका में रख कर अपने सहज और नैसर्गिक सीमा में एकाकी प्रयोग, जैसे व्यक्ति का निजी परिवार।

(२) कुछ साथियों द्वारा मिल कर एक सघन क्षेत्र में सामूहिक जीवन का प्रयोग।

इस प्रकार के कार्यक्रम को लेकर चलने वाले जन-आधारित कार्यकर्ता साथियों का आपसी स्नेह-सम्पर्क ही उनके गठन का आधार बनेगा और वे समय-समय पर आयोजित गोष्ठियों तथा पत्र-पत्रिकाओं द्वारा सम्पर्क बढ़ाते हुए एक-दूसरे की निजी तथा परिवार की समस्याओं को हल करने की कोशिश करेंगे।

परिसंवाद के परिणामस्वरूप रुहेलखण्ड, आगरा, मेरठ डिविजन सर्वोदय-परिवार की स्थापना हुई।

जिला सर्वोदय मंडल कार्यालय,

बुलन्दशहर

●

कानपुर में सहजीवन शिविर

१२ मार्च को आर्यनगर, कानपुर में सर्वोदय सहजीवन शिविर हुआ। उसमें ६७ कार्यकर्ताओं ने भाग लिया। इस अवसर पर "समाज-क्रांति की प्रक्रिया और नागरिक" इस विषय पर विचार-गोष्ठी भी हुई। गोष्ठी में नगर के अनेक विचारकों ने भाग लिया।

मार्च माह में आर्यनगर में ३८६ रु० का सर्वोदय-साहित्य बिका। इस माह में व्यवस्थित सर्वोदय-पात्रों की संख्या १७९ से २०० हो गयी।

अ० भा० सर्व सेवा संघ, प्रबंध-समिति : १९६१-६२

अ० भा० सर्व सेवा संघ-अधिवेशन ने श्री नवकृष्ण चौधरी को सर्वसम्मति से आगामी साल के लिए अध्यक्ष चुना। अध्यक्ष श्री नवकृष्ण चौधरी ने नीचे लिखे सदस्य प्रबंध समिति में लिये हैं।

१ श्री वल्लभस्वामी
२ श्री जयप्रकाश नारायण
३ श्री अण्णासाहब सहस्रबुद्धे
४ श्री ई० डब्ल्यू० आर्यनायकम्
५ श्रीमती आशादेवी आर्यनायकम्
६ सुश्री निर्मला देशपांडे
७ सुश्री अमलप्रभा दास
८ श्री वैद्यनाथ प्रसाद चौधरी
९ श्री भारतचन्द्र भण्डारी
१० श्री प्रभाकर
११ श्री एस० जगन्नाथन्
१२ श्री गोविंदराव शिंदे
१३ श्री जनार्दन सिंह
१४ श्री राधाकृष्ण बजाज
१५ श्री सिद्धराज ढड्ढा
१६ श्री दादाभाई नाईक
१७ श्री डा० द्वारकादास जोशी
१८ श्री मनमोहन चौधरी
१९ श्री नारायण देसाई
२० श्री पूर्णचन्द्र जैन (मंत्री)
२१ श्री राधाकृष्ण (सहमंत्री)

शेष तीन सदस्यों के नाम अध्यक्ष बाद में जाहिर करेंगे।

कानपुर के आर्य नगर-क्षेत्र में सर्वोदय-पात्र-आन्दोलन

आय-व्यय-विवरण : फरवरी ६१

आर्य नगर-क्षेत्र में फरवरी '६१ में चलने वाले १३१ सर्वोदय-पात्रों से अन्न व नकद रूप में रु० ७४.९१ न० पै० प्राप्त हुए। जनवरी की शेष रकम २७ नये पैसे थी। प्राप्ति का छठा भाग रु० १२-६१ न० पै० अ० भा० सर्व सेवा संघ को ४० रु० शान्ति सैनिक कार्यकर्ता को देने के बाद १० रु० सर्वोदय बाल पुस्तकालय की रोचक पुस्तकों की पूर्ति में, ७ रु० २१ न० पै० दैनिक दो बहनों की सहायता में, १ रु० २५ न० पै० 'गीता-प्रवचन' भेंट करने में तथा २ रु० ५० न० पै० व्यवस्था में खर्च हुए। १ रु० १७ नये पैसे शेष हैं।

आगामी सर्वोदय-सम्मेलन

आगामी वर्ष सर्वोदय-सम्मेलन के लिये गुजरात प्रान्त की ओर से निमंत्रण दिया गया है। गरमी के दिनों में सम्मेलन करने से प्रतिनिधियों को काफी परेशानी होती है, इसे ध्यान में रखते हुए सर्व सेवा संघ ने यह सुझाव इस बार स्वीकार किया है कि आइन्दा अखिल भारतीय सर्वोदय-सम्मेलन सितम्बर-अक्तूबर-नवम्बर में स्थान के हिसाब से किसी अनुकूल समय पर किया जाय। इस निर्णय के अनुसार अगला सर्वोदय सम्मेलन सन् १९६२ के सितम्बर-अक्तूबर में किसी समय होगा।

गोरखपुर में सर्वोदय-प्रचार

गांधी तत्त्व प्रचार विभाग की ओर से ता० १६ मार्च से १९ मार्च तक गोरखपुर में श्रमभारती, खादीग्राम के आचार्य श्री राममूर्ति के व्याख्यानों और गोष्ठी के रूप में मुलाकातों का आयोजन हुआ। इस आयोजन में आपने (१) सर्वोदय क्रांति-दर्शन, (२) सर्वोदय क्या चाहता है? (३) सर्वोदय की राजनीति, और (४) तालीम की समस्या; इन चार विषयों पर चर्चा की। इस आयोजन से विश्वविद्यालय के प्रोफेसर, विद्यार्थी एवं नगर के नागरिकों ने लाभ उठाया।

२ अप्रैल को एक बैठक में यह तय किया गया कि स्व० बाबा राघवदास की स्मृति में एक ग्रंथ एवं 'स्मृति-भवन' तैयार किया जाय।

विनोबाजी का १४ मई तक पता :
मार्फत–श्री चंद्रधर गोस्वामी
मंत्री, विनोबा स्वागत समिति
तेजपुर (असम)

महाराष्ट्र में ग्रामदानी ग्रामीणों का शिविर

महाराष्ट्र प्रदेश के रत्नागिरी, कोल्हापुर और सातारा जिले के ग्रामदानी गाँवों के ग्रामीणों का दो माह का एक शिविर गोपुरी आश्रम (रत्नागिरी) में चल रहा था। उसकी समाप्ति १९ मार्च को हुई। इस शिविर का १७ ग्रामीणों ने लाभ उठाया। शिविर-काल में गुजरी हुई खेती, बागबानी का काम और खाद देने आदि के बारे में प्रत्यक्ष कार्य किया गया। अंबर और किसान चरखा, बुनाई, सीमेंट, साबुन बनाना, धानकुटाई आदि ग्रामोद्योगों की जानकारी दी गयी। सफाई-कार्य, विविध पाखाने और देशावर, कम ईंधन वाला चूल्हा, आटा पीसने की हल्की हाथ चक्की के बारे में भी प्रयोग किये गये। देहातों से संबंधित कानून और संस्थाओं का ज्ञान दिया गया।

शिविर के समाप्ति-समारोह में शिविरार्थियों ने अपने अनुभव सुनाये कि इन दो महीनों में उनको ग्राम-सुधार, स्वावलंबन, ग्रामोद्योग की नई शक्ति दृष्टि प्राप्त हुई। महाराष्ट्र ग्रामदान नवनिर्माण समिति के संयोजक श्री गोविंदराव देशपांडे ने कहा, "गाँवों में कार्य करने के लिए इन कार्यकर्ताओं की शक्ति अधूरी है। अब गाँव-गाँव में रहने वाले आप जैसे लोगों को यह काम आसानी से करने में सुविधा हो, इसी उद्देश्य से यह शिविर चलाया गया। आशा है, आप अपने-अपने गाँवों में प्राप्त अनुभव और प्रयोगों को सफलतापूर्वक पूरी में लायेंगे।" खादी-ग्रामोद्योग कमीशन के स्वावलंबन विभाग के क्षेत्रीय संगठक श्री भेरवानी के द्वारा ग्रामीणों को खादी का एक सेट, किसान चरखा और सुलभ पाखाने का दर्शन दिया गया।

अशोभनीय पोस्टर और गुजरात सरकार

गुजरात राज्य के गृहमन्त्री श्री रसिकलाल परीख ने ता० ४ अप्रैल को गुजरात विधान-सभा में जाहिर किया कि अश्लील पोस्टर और अश्लील विज्ञापनों को रोकने के लिए 'बम्बई सिनेमा रेगुलेशन एक्ट (१९५३)' की धाराओं में संशोधन करने का कदम गुजरात सरकार ने उठाया है। इस संशोधन के अन्तर्गत ऐसे मामलों में लाइसेंस रद्द करने या उन्हें स्थगित रखने की कार्रवाई सरकार कर सकेगी।

गुजरात विधान-सभा की इस बैठक में सिनेमा के अश्लील पोस्टर और अश्लील विज्ञापनों को रोकने के लिए आवश्यक कदम उठाने की सिफारिश करने वाला एक गैर-सरकारी प्रस्ताव पेश हुआ था।

विधान-सभा के सात सदस्यों ने विस्तारपूर्वक सभा में इस प्रश्न का विवेचन किया और ऐसे पोस्टरों और विज्ञापनों से समाज का नैतिक स्तर नीचे गिरता जाता है, यह शिकायत की। प्रस्ताव पर हुई चर्चा का जवाब देते हुए गृहमन्त्री श्री परीख द्वारा यह घोषणा करने पर कि सिनेमा सम्बन्धी मौजूदा नियमों में परिवर्तन किये जा रहे हैं और केन्द्रीय सरकार भी इस प्रश्न पर विचार कर रही है, प्रस्ताव वापस ले लिया गया। श्री परीख ने कहा कि कानून में जो संशोधन किया जा रहा है और उसके अन्तर्गत जो शर्तें लागू की जायेंगी, उनका अनादर करने पर सम्बन्धित सिनेमा वालों के विरुद्ध कार्रवाई की जा सकेगी।

['गुजरात समाचार' से साभार]

सूचना : यह सम्मेलन-अंक हम पाठकों की सेवा में समय से पहले ही देना चाहते थे। लेकिन अनिवार्य कारणों से यह अंक कुछ विलंब से दे रहे हैं। इस अप्रत्याशित विलंब के लिए हम पाठकों से क्षमा चाहते हैं।

—सं०

श्री शंकरराव देव प्रदर्शिनी का उद्घाटन करते हुए श्री प्रभाकरजी साथ

श्रीकृष्णदत्त भट्ट, अ० भा० सर्व सेवा संघ द्वारा भार्गव भूषण प्रेस, वाराणसी में मुद्रित और प्रकाशित। पता : राजघाट, वाराणसी–१, फोन नं० ४३९१
वार्षिक मूल्य ६) पिछले अंक की छपी प्रतियाँ ११,६०० : इस अंक की छपी प्रतियाँ ११,६०० यह अंक : २५ नये पैसे

संपादक : सिद्धराज ढड्ढा

वाराणसी : शुक्रवार | १२ मई '६१ | वर्ष ७ : अंक ३२

रवीन्द्रवाणी का चिरंतन संदेश

काका कालेलकर

विश्वकवि रवीन्द्र

• • •

सच्चे कवियो की प्रतिभा की खूबी यही होती है कि वे समस्त जीवन का सम्पूर्ण आकलन कर सकते हैं और वह भी जीवनानुभव से सीधे-सीधा लिया हुआ होता है। रविबाबू अपनी इस कवि-प्रतिभा के कारण ही उपनिषद् के महान् ऋषियों के वचनों का गर्भितार्थ हमें इतनी अच्छी तरह समझा सके और भगवान बुद्ध या पारसियों के धर्मगुरु भगवान जरथुस्त्र की वाणी का मर्म दुनिया के सामने रख सके।

• • •

आज की पीढ़ी कविवर रवीन्द्रनाथ की जन्म-शताब्दी, उत्सव के आनन्द और कृतज्ञता-बुद्धि से मना सकती है। लेकिन जिन्होंने कवीन्द्र को प्रत्यक्ष देखा था, उनकी प्राणप्रिय संस्था म रह कर उनका दैवी संगीत सुना था, उनको अपने नाटक लिखते ही साथियों और विद्यार्थियो को पूरे उत्साह के साथ पढ़ सुनाते देखा था और उनके साथ देश के अनेकानेक महत्त्व के सवालो की चर्चा करने का सद्भाग्य जिनको मिला था, उनके मन को आज के उत्सव में शरीक होते विषाद की एक छटा छू जायेगी ही।

योरप का महायुद्ध शुरु हुआ था उस अरसे में मैंने शान्ति निकेतन में जो पाँच-छः महीने बिताये थे और शान्तिनिकेतन के गुरुदेव का सहवास पाया था, उसके मीठे संस्मरण आज ताजे होते हैं। उसके बाद बीच-बीच में उनसे कई दफा मिला हूँ। उनको आखिर मे सन् १९३७ में कलकत्ता में मिला था। उस वक्त वहाँ दुनिया के सभी धर्मो की एक अन्तर्राष्ट्रीय परिषद् हुई थी। उसमें एक दिन मैं अध्यक्ष था और दूसरे दिन गुरुदेव अध्यक्ष थे। उनके उस समय के दर्शन से भी मुझे कुछ दुःख ही हुआ था, क्योंकि वृद्धावस्था के कारण उनकी शरीरयष्टि कुछ झुक-सी गयी थी।

अष्टपहलू प्रतिभा के उस विश्वकवि के जीवन-पहलू भी बहुत थे। लेकिन उनकी विभूति मुख्यतः और सार्वभौम रूप में कवि की ही थी। शिक्षा-शास्त्री, देशभक्त, मौलिक चिन्तक, समाज-सेवक और मानवता के उपासक के तौर पर उन्होंने भले खूब ख्याति प्राप्त की हो, लेकिन उनकी काव्य-प्रतिभा के सामने बाकी सब बातें गौण हो जाती हैं।

महाकवि के तौर पर भी वे अपना निराला व्यक्तित्व रखते थे। कई कवियों की कविता-समृद्धि से, कल्पना की उड़ान से और विचार-गौरव से हम चकाचौंध हो जाते हैं, लेकिन ऐसे कवि कभी-कभी मानों हमसे कहते हैं कि हमारी कविता की भव्यता देख कर हमारे जीवन में भी ऐसी भव्यता की अपेक्षा न कीजियेगा। हमें भी आश्चर्य होता है कि ऐसी लोकोत्तर प्रतिभा का निवास-स्थान रूपी कवि का जीवन इतना मामूली और पामर क्यों? जिन लोगों का जीवन उनकी कविता के योग्य होता है ऐसे कवियों को मैंने देखा है। लेकिन वे इने-गिने ही हैं।

इस तरह रवीन्द्रनाथ का विचार करने पर श्री अरविन्द घोष का स्मरण स्वाभाविक हो आता है। लेकिन अरविन्द घोष की महत्ता कवि के तौर पर है, उसकी अपेक्षा तत्त्वचिन्तक और महायोगी के तौर पर अधिक है। रवीन्द्रनाथ तो नखशिखान्त मन, वाणी और कर्म से कवि ही हैं—क्रान्तदर्शी कवि हैं। उनकी उज्ज्वल देशभक्ति भी उनकी काव्य-प्रतिभा में से ही पैदा हुई हम देख सकते हैं। उनका तत्त्वचिन्तन भी, उनको कवि के तौर पर अपने जीवन में जो सामंजस्य और समन्वय के तत्त्व मिले थे, उनमें से ही खिला था। उन्होंने शिक्षा-क्षेत्र में जो नये विचार दिये और सुन्दर से सुन्दर प्रयोग कर दिखाये वे भी कवि के तौर पर उनके अपने आकलन से स्फुरे थे। बाल मानस का आकलन और सामाजिक जीवन में संस्कारों का महत्त्व समझे हुए होने के कारण ही वे शिक्षा के नये-नये प्रयोग कर सके।

हमारे एक देशबान्धव ने आयरलैण्ड के विख्यात कवि यीट्स से रवीन्द्रनाथ के बारे में बातचीत करके, उनकी खासियत एक ही वाक्य में प्रकट की थी: "हमारे देश के सन्तों में रवीन्द्रनाथ ही एक ऐसे थे, जिन्होंने जीवन के प्रति उदासीनता नहीं दिखायी, उनका जीवन-दर्शन जीवन-विमुख न था।" प्रेम और आनन्दमय जीवन के यह कवि दुनिया से उद्विग्न होकर एकान्तसेवी तपस्वी का जीवन क्योंकर पसन्द करते! उनका जीवन इतना अनुभव समृद्ध और कल्पनागहन था कि वैराग्य उसमें प्रवेश ही नही कर सकता था। उन्होंने साफ साफ कह दिया है—वैराग्य साधने मुक्ति से आमार नय।

महाकवि व्यास के वचन को रविबाबू ने अपना जीवन-मन्त्र बना लिया था—

"धर्मार्थकामाः समम् एव सेव्याः"—सामाजिक जीवन की सुस्थिति के लिए धर्म, जीवन समृद्धि के लिए अर्थ, और अन्तर बाह्य प्रकृति की सुन्दरता महसूस करने के लिए काम—तीनों पुरुषार्थों के बीच समप्रमाण सामंजस्य होना चाहिए।

"य एकसेवी स नरो जघन्यः"—इन तीनों पुरुषार्थों में से एक के पीछे पड़ता है और अन्य दो की जो उपेक्षा करता है, वह सचमुच पामर है।

अंतर मम विकसित करो

अंतर मम विकसित करो
अंतरतर हे!
निर्मल करो, उज्ज्वल करो
सुन्दर करो हे!
जाग्रत करो, उज्ज्वल करो
निर्भय करो हे,
मंगल करो, निरलस करो
निःसंशय करो हे!
युक्त करो हे सबके संग में,
मुक्त करो हे बंध,
करो संचरित सब कर्मों में
शांत तुम्हारा छंद!
चरण कमल में, मेरा मन
निस्पंदित करो हे!
अंतर मम विकसित करो
अंतरतर हे!

—रवीन्द्रनाथ ठाकुर

हमारे पुराने तत्त्वज्ञानी और योगीश्वर कहते थे कि यह दुनिया निःसार माया है। उसमें से निकल जाना, उसका त्याग करना यही तत्त्व प्राप्ति के लिए सच्ची साधना है। शान्ति का यही रास्ता है। लेकिन बाद के तत्त्वचिन्तकों ने यह एकान्तिक भूमिका छोड़ दी। वे इस निर्णय पर आये कि योग्य संयमित साधना के द्वारा जीवन के सब पुरुषार्थों के अन्दर समतुल सँभालना हो तो भोग और त्याग का समन्वय साधा जा सकता है और पूर्ण साक्षात्कार तो उसके जरिये ही हो सकता है—भुक्ति मुक्ति च विंदति।

हम देखते हैं कि रवीन्द्रनाथ भारतीय तत्त्वज्ञान की सर्व-समन्वयकारी, लेकिन अलिप्त साधना में मानने वाली और जीवन-दृष्टि के श्रेष्ठ प्रतिनिधि थे।

जीवन के भिन्न-भिन्न क्षेत्र और पहलुओं में समन्वय साधने की और समतुल लाने की अपनी शक्ति के कारण ही रवीन्द्रनाथ समग्र जीवन के सर्वांग सुन्दर कवि बने थे। रवीन्द्रनाथ बहिष्कार के नहीं, लेकिन सर्वस्वीकार के कवि तथा तत्त्वज्ञानी थे। उन्होंने किसी चीज का इन्कार या बहिष्कार किया हो तो वह बहिष्कार का ही। जीवन में जो कुछ विश्री हो, बेसुरा हो और प्रमाण के बाहर का हो, उसी का उन्होंने बहिष्कार किया है।

पूरे पूरी श्रद्धा और आस्तिकता से समग्र जीवन का स्वीकार करना—यही, मैं मानता हूँ कि भारतीय साहित्य-राशि के लिए रवीन्द्रनाथ की कायमी देन है। और भारतीय साहित्य को प्राप्त उनकी यह देन भारत के द्वारा सारे विश्व तक पहुँचेगी।

इस सर्व-समन्वयकारी सार्वभौम तत्त्व का रवीन्द्रनाथ ने जो साक्षात्कार किया वही भारतीय साहित्य के लिये उनकी उत्तम देन है।

हमारे श्रेष्ठ पुरुष, मनीषी और चिन्तनवीर जब-जब सृष्टि के रहस्य का चिन्तन करने बैठे, जीवन का रहस्य ढूँढने बैठे, तब-तब उन्होंने देखा कि रोज नये-नये ढंग से खिलने वाली अनन्त विविधता में अखण्ड एकता रही हुई ही है। हरएक क्षण यह अगर एकता प्रस्फुरित होती नजर आती है। अतः एक मंत्र के द्वारा यह अनुभूति उन्होंने व्यक्त की :

एकम् सत् : विप्रा बहुधा वदन्ति।

आखिर सत् तत्त्व तो एक ही है। सयाने लोग भले उसका वर्णन अपने-अपने अनुभव के मुताबिक अलग-अलग ढंग से करें।

सब धर्मों और वादों में से इस एकता का सार्वभौम तत्त्व पाकर ही भारतीय संस्कृति इतनी विविध रूप और सर्वसमन्वयकारी बनी है। भारत में आइन्दा जो संस्कृति विकसित होगी वह विश्वलोकोमुखी और सर्व-समन्वयकारी होगी। भारत की इस भावी संस्कृति का साक्षात्कार कर सकने से ही रवीन्द्रनाथ ने ऐसे गीत गाये हैं कि उनका सन्देश सभी देशों के सभी धर्मों के और संस्कृतियों के उपासकों को अपनाने योग्य मालूम हुआ है।

दुनिया के प्रचलित सभी धर्मों का प्रयत्न व्यक्ति के तथा समाज के जीवन में एक सार्वभौम व्यवस्था लाने का होता है। इस प्रकार की जो-जो अनेक सार्वभौम समन्वित व्यवस्थाएँ देश में प्रचलित थीं उन सबको एकत्र लाकर उन विविध समन्वयों में से सार्वभौम महद् समन्वय ढूँढ निकालने का काम हिन्दुस्तान के कवियों और मनीषियों के हिस्से आया। रवीन्द्रनाथ ने उपनिषत्काल से चले आये महद् समन्वय से प्रेरणा पाकर जो हृदय निर्मित किया, उसमें उन्होंने दुनिया की समस्त संस्कृतियों का रहस्य ढूँढ़ निकाला और उस वस्तु को बाद में कवि को ही सूझ सके ऐसी वाणी में और रागों में दुनिया के आगे गा बताया है। रवीन्द्रनाथ की इस जीवन-दृष्टि का प्रभाव आज की दुनिया पर और उसके गहरे चिन्तन पर स्पष्ट दिखाई देता है।

रविबाबू ने अपनी बुनियादी शिक्षा प्रकृति के विविध निरीक्षण और चिन्तन में से प्राप्त की थी सही, लेकिन इसके अतिरिक्त उनकी दूसरी शिक्षा उन्हें उनके चिन्तनपरायण महर्षि पिताश्री के सहवास में मिली। महर्षि ने ध्यान द्वारा जो देखा और पाया उसीका विस्तार और प्रचार उनके प्रतिभाशाली लड़के ने किया। भारतवर्ष के आज के चिन्तन पर यह भी रवीन्द्रनाथ का एक कायमी असर है।

हमारे देश का यह भारत नाम भी हमारी उभरती आध्यात्मिक अनुभूति की समृद्धि सूचित करता है—भरणात् भरतः; भरणात् भारतः। उन्होंने जाहिर किया कि भारत एक पुण्यतीर्थ है, जहाँ महा-मानव-सागर के किनारे सभी वंश के लोग इकट्ठे होंगे, अपना-अपना करभार लायेंगे और अन्त में सर्वोदय का मंगल अभिषेक जीवन देवता को सर्व-समन्वयकारी जल से करेंगे। इस देश में लुटेरे के तौर पर व विजेता के तौर पर कौन-कौन आये और आखिर किस तरह यहीं के होकर रहे और एक विराट संस्कृति में अपना हिस्सा किस तरह समर्पित किया उसकी बात कह कर इस अभिषेक के महोत्सव में शरीक होने के लिए वे सबको निमन्त्रण देते हैं। यह निमन्त्रण सबके लिये बिना किसी शर्त का है। इस समन्वय में सबसे पहले अपना घड़ा ले आने वाले ब्राह्मण को निमन्त्रण देते हुए कवि सिर्फ एक तीखी सम्मतमती सूचना करते हैं। "एस हे ब्राह्मण शुचि करि मन"

ज्ञान के अभिमान से फुले हुए हे ब्राह्मण! अपना मन शुद्ध करके ही आना। अपना मैल निकाल कर आना और वह मैल कौनसा था? अपना जीवन निर्मल, शुचि और पवित्र बनाने की धुन में उसने बहिष्कार का तत्त्व अपनाया। अपने-आप को सबसे अलग किया। और सर्वस्वीकार की विश्वव्यवस्था का द्रोह किया। इस द्रोह के कारण उसको खूब प्रायश्चित करना पड़ा है।

ईश्वर के दिये हुए दीर्घ आयुष्य में बचपन से ही रवीन्द्रनाथ ने यह संदेश बिना थके, बिना रुके सुनाया। और उनका कितना सद्भाग्य कि भारतवर्ष का यह सर्व-कल्याणकारी सर्वोदयी संदेश राजनीतिक क्रांति के द्वारा, सामाजिक नवरचना द्वारा और सांस्कृतिक समन्वय के द्वारा गांधी-नेहरू जैसे लोगों के हाथों अमल में आता वे देख सके। साम्राज्यमद का, वर्णविद्वेष का और हर तरह की अलगता का पराभव होता उन्होंने देखा और विश्व-वसंत की आगमनी भी उन्होंने सुनी।

सचमुच, रवीन्द्रनाथ इस युग की अद्भुत प्रेरणा के गायक थे। उनका अमर विश्व में दीर्घकाल तक फैलेगा।

['मंगल प्रभात' से]

आंदोलन के लिये अर्थ-संग्रह का कार्यक्रम

१५ जून से ३१ जुलाई, १९६१ के ६ सप्ताह में देश के हर छोटे-बड़े क्षेत्र, गांव, शहर में व्यापक जन-संपर्क और सघन अर्थ-संग्रह के कार्यक्रम हों।

सर्वोदयपुरम् (आंध्र) में हुए गत सर्वोदय-सम्मेलन के अवसर पर संघ-अधिवेशन और प्रबंध-समिति की बैठक में आन्दोलन संबन्धी आर्थिक स्थिति और आर्थिक संयोजना पर चर्चाएँ हुई। आज देश भर में सर्वोदय-कार्यक्रम का संयोजन प्राथमिक, जिला व प्रदेश सर्वोदय-मण्डल तथा सर्व सेवा संघ के द्वारा हो रहा है।

पलनी में निधि-मुक्ति का फैसला किया गया। उससे पहले खास तौर से भूदान-आन्दोलन की सारी आर्थिक जिम्मेदारी सर्व सेवा संघ ने गांधी स्मारक निधि की सहायता से उठा रखी थी। उस फैसले के बाद सारे कार्य को, जिसमें आर्थिक संयोजना भी शामिल है, विकेन्द्रित स्वरूप दिया गया।

आज अपेक्षा यह है कि हमारे आंदोलन की हरएक इकाई अपनी-अपनी आर्थिक जिम्मेदारी स्वयं उठाये। और हर छोटे क्षेत्र की इकाई जिला, प्रदेश आदि बड़े क्षेत्र की इकाई की आर्थिक पूर्ति में अपनी शक्ति भर योग दे।

इस प्रकार तंत्र का, कार्यक्रम का और आर्थिक संयोजना का विकेन्द्रीकरण जानबूझ कर हमने मंजूर किया था। यह कदम सही दिशा में था, इससे आज भी सब सहमत हैं। यह उत्तरोत्तर कामयाब हो, इसके लिए यह महसूस होना जरूरी है कि *विकेन्द्रीकरण का अर्थ संयोजना या व्यवस्था* का विघटन नहीं है।

बल्कि सबको अनुभव होना चाहिए कि काम का जिम्मा स्वतन्त्र रहे, लेकिन संयोजना सबको मिलजुल कर करनी है। इसी में से कार्यकर्ता को अधिक बल और उत्साह मिलेगा। कार्यक्रम के लिए अधिक अनुकूलताएँ पैदा होंगी। संगठन बुनियादी तौर पर मजबूत बनेगा।

आज हमारे संगठन की इकाइयाँ आंदोलन के काम के लिए अपने-अपने दायरे में अलग-अलग अर्थ की चिंता करती हैं। नतीजा यह हुआ है कि हर स्तर पर आर्थिक कठिनाई महसूस होती है। कहीं-कहीं काम भी घटने का अनुभव आया है। कार्यकर्ता की कठिनाई बढ़ी और संख्या घटी है।

चालीसगाँव में हमने अपना काम जनता के आधार पर चलाने का तय किया था। इसके लिए सर्वोदय-पात्र, सूतांजलि, सम्पत्तिदान, श्रमदान, अन्नदान, सूत्रदान आदि पर निर्भर रहना तय हुआ। इस दिशा में कुछ काम तो हुआ, पर कुल मिला कर हमें केंद्र में या प्रांतों में लोगों से सीधी आर्थिक सहायता भी लेनी पड़ी है।

अभी आंदोलन को एक दशक पूरा हुआ है। हाल ही के सर्वोदय-सम्मेलन के समय हम लोगों ने नये उत्साह के वातावरण में आगे का कार्यक्रम निश्चित किया है।

सम्मेलन के समय उपस्थित विभिन्न प्रदेशों के कुछ साथियों और प्रबन्ध-समिति के सदस्यों ने आर्थिक-संयोजना के प्रश्न पर भी विचार-विनिमय किया।

सबने महसूस किया कि अब समय आया है जब देश भर में चल रहे सारे सर्वोदय-आंदोलन के लिए जन-साधारण से अर्थ-संग्रह का एक सम्मिलित और संगठित प्रयत्न किया जाय।

सर्व सेवा संघ की ओर से एक अपील सहायता के लिए निकाली जाय और एक-डेढ़ महीने की एक पूर्वनिश्चित अवधि में देश भर में एकसाथ अर्थ-संग्रह का सामूहिक प्रयत्न किया जाय।

सम्मेलन में हमने भूदान, लोक-स्वराज्य और शांति-सेना का व्यापक कार्यक्रम उठाने का फैसला किया है। इसके लिए गाँव-गाँव और घर-घर से संपर्क करना होगा। उपस्थित साथियों ने महसूस किया कि विचार समझाने के व्यापक कार्यक्रम के साथ-साथ घर-घर से अर्थ-संग्रह भी किया जाय। यह जल्दी-से-जल्दी करना चाहिए।

इसलिए यह भी निश्चय किया गया है कि १५ जून से ३१ जुलाई, १९६१ के ६ सप्ताह में विशेष तौर से अर्थ-संग्रह का काम किया जाय। यह भी तय किया है कि छोटी-से-छोटी राशि की भी रसीद दी जाय और पूरा हिसाब अगस्त अंत तक जाहिर कर दिया जाय।

—पूर्णचन्द्र जैन
मंत्री, अ० भा० सर्व सेवा संघ

ब्रह्म सत्यं जगत् स्फूर्तिः जीवनं सत्यशोधनम्

भूदान-यज्ञ

टिप्पणियाँ

लोकनागरी लिपि*

आनंद शुद्ध हो !

आनंद प्राप्त करने की वस्तु नहीं है। वह आत्मा में ही रहती है। वह आत्मा का स्वरूप है। जहाँ प्राण है, वहाँ आनंद होता है। एक कीड़ा गोबर खाता है, तो उसको आनंद होता है। पर हम गोबर नहीं खाते, लड्डू खाते हैं। लेकिन लड्डू खाने में हमको जो आनंद आता है, वह उस कीड़े के गोबर खाने के आनंद से भिन्न नहीं है। इसलिए मनुष्य के सामने आनंद-प्राप्ती का सवाल नहीं; आनंद शुद्धी का सवाल है। एक मनुष्य को दूसरों को लूट कर खाने में आनंद आता है, दूसरे को परिश्रम करके खाने में आनंद आता है, तीसरे को परिश्रम करके जो मिला होगा, उसका एक हिस्सा दूसरे को देने के बाद खाने में आनंद आता है। याने दूसरों का खाने में भी आनंद होता है, मेहनत करके खाने से भी आनंद होता है और कमाया हुआ जो है, उसका थोड़ा हिस्सा दूसरों को देकर खाने में भी आनंद होता है। पहला आनंद तामस है। दूसरा आनंद राजस है। तीसरा आनंद सात्त्विक है। आनंद हर प्राणिमात्र के पास है। जिसका जितना आनंद शुद्ध, उतनी उसकी उन्नति होगी। इसलिए आनंद शुद्धी की जो योजना की जायेगी, उससे समाज सुखी होगा।

सोनागुर, १३-५-'६१ —विनोबा

*लिपि-संकेत : ि = ी ; ी = ी, ब = ख, संयुक्ताक्षर हलंत चिह्न से।

व्यापारी का आदर्श

करीब एक महीने पहले नागपुर शहर के मशहूर किराना व्यापारी श्री गोविंद दिनकर गोखले ने अपने व्यवसाय से निवृत्त होने के निमित्त एक सुन्दर समारोह किया। श्री गो० दि० गोखले सन् १९२६ से ईमानदारी और सचाई के साथ अपने व्यवसाय को चला रहे थे। अब आपने अपने कारोबार का सारा भार भतीजे पर सौंप कर वानप्रस्थ आश्रम में प्रवेश किया है। वानप्रस्थ आश्रम में प्रवेश करने के पहले आपने श्री सत्यनारायण की पूजा का आयोजन किया और उसमें अपने समस्त ग्राहक-वर्ग और हितचिंतकों को आमन्त्रित किया। इस अवसर पर श्री गोखले ने यह उद्गार प्रकट किये कि "अपनी शेष आयु भगवान की, मातृभूमि की और समाज की सेवा करने में लगाऊँगा।"

श्री गोखले ने आजीवन अपने व्यवसाय में निम्न सिद्धान्तों का पालन किया।

ग्राहकों को अन्नदाता मान कर कभी उनसे कपट नहीं किया, सामान कम नहीं तौला। स्त्री-समाज को हमेशा कन्या, भगिनी अथवा माता मान कर मंगल भावना से वे पेश आये और किसी का अपमान नहीं किया। ग्राहकों से उधारी वसूल करने में किसी को कभी दुःख नहीं दिया। पैसे प्राप्त करने में किसी प्रकार के अन्याय का आश्रय नहीं लिया। और तो और पैसे की वसूली के लिए कभी अदालत में नहीं गये। परिस्थिति का लाभ उठा कर मुनाफाखोरी अथवा काला बाजार का आश्रय नहीं लिया।

इस प्रकार श्री गोखले ने व्यापारी धर्म का पूरा आदर्श हमारे सामने रखा। आज के जमाने में हम देखते हैं कि जीवन के हर क्षेत्र में बेईमानी, धोखाधड़ी बढ़ रही है और यह प्रवृत्ति विशेष तौर से व्यापारी समाज में ज्यादा व्याप्त है। ऐसी स्थिति में समस्त प्रलोभनों से ऊपर उठ कर श्री गोखले ने जो आदर्श उपस्थित किया है, वह न केवल व्यापारी समाज के लिए, अपितु समस्त नागरिकों के लिए अनुकरणीय है।

श्री गोखले ने एक दूसरा आदर्श वानप्रस्थ वृत्ति को अंगीकार कर समाज के सामने रखा। एक उम्र के बाद गृहस्थाश्रम से मुक्त होकर निष्काम भावना से समाज की सेवा करना हिंदुस्तान की धार्मिक एवं सांस्कृतिक परंपरा का एक मुख्य अंग रहा। इस परंपरा के कारण समाज को समय पर योग्य मार्गदर्शक एवं सेवक मिलते थे, जिससे समाज का जीवन हर तरह से ऊँचा उठता था। दुर्भाग्य से पिछले दिनों यह परंपरा टूट गयी है। मरते दम तक आज व्यक्ति अपने घरबार अथवा कारबार में लगा रहता है। इससे उसके जीवन में भी बजाय आनंद-प्राप्ति के दुःख ही ज्यादा बढ़ता है।

पिछले दिनों विनोबाजी ने खास तौर से वानप्रस्थ वृत्ति अपनाने पर जोर दिया है। उनका कहना है : "विषय-वासना से अगर एक उम्र में ऊपर नहीं उठते हैं तो जीवन दुःखी और पुरुषार्थहीन बनता है।" विनोबाजी एक मिसाल इस संबंध में हमेशा दिया करते हैं कि शुरुआत में फल का छिलका कड़ा होता है और अंदर का बीज कच्चा होता है। फिर धीरे धीरे ऊपर का हिस्सा ढीला बनता है, वैसे-वैसे अंदर का बीज पक्का होता जाता है। अंत में जब फल फट जाता है, तब बीज सख्त और ठोस रहता है। इस प्रकार मनुष्य ज्यों ज्यों वृद्ध होगा, आकार जीर्णशीर्ण तो होगा ही, किन्तु उसका अंतस्तत्त्व, बुद्धि उत्तरोत्तर मजबूत होनी चाहिए। मरने की तैयारी है, किंतु बुद्धि अत्यंत मजबूत है। होना ऐसा चाहिए जवान है, शरीर थोड़ा मजबूत, बुद्धि थोड़ी कमजोर है। प्रौढ़ है, शरीर थोड़ा कमजोर हुआ, बुद्धि थोड़ी ज्यादा मजबूत हुई। यह है मनुष्य का सहज प्राकृतिक जीवन विकास का क्रम। किन्तु ऐसा आज होता दिखाई नहीं देता है। ऐसा तब होगा, जब कि लोग जिंदगी के शास्त्र के अनुसार चल कर देहासक्ति, विषयासक्ति और गृहासक्ति छोड़ेंगे।

इन्दौर में पेन्शनरों की सभा में विनोबाजी ने इस बात पर विशेष जोर दिया था कि वे वानप्रस्थ वृत्ति अपना कर सेवा-निवृत्त नहीं, सेवा प्रवृत्त होंगे। उसके बाद काशी, गया और गौहाटी आदि शहरों में भी इस बात पर काफी जोर दिया है। यह केवल सरकारी नौकरों के लिए ही नहीं, बल्कि हर गृहस्थ नागरिक भाई बहनों के लिए आवश्यक है। इस दिशा में श्री गोखले ने जो कदम उठाया है, उसका हम हृदय से स्वागत, अभिनन्दन करते हैं और समाज से अपेक्षा करते हैं कि वह उनके कदम का अनुसरण करे।

—मणीन्द्रकुमार

दो जन्म-शताब्दियाँ

इस सप्ताह देश के दो महान् सपूत श्री मोतीलाल नेहरू और श्री रवीन्द्रनाथ ठाकुर की जन्मशती मनायी जा रही है।

भारत के स्वतंत्रता-आंदोलन में श्री मोतीलाल नेहरू का महत्त्वपूर्ण और अद्वितीय योग रहा है। शान शौकत से रहने वाले, अपने समय के सफल एवं मशहूर बैरिस्टर ने देश-स्वतंत्रता की वेदी पर अपना सर्वस्व समर्पण कर दिया। इसलिये देश उनको 'त्यागमूर्ति' कहता रहा। उनका गृह का पूरा परिवार स्वतंत्रता आंदोलन का शक्तिशाली स्तम्भ बना हुआ था। दुनिया और खास तौर से हिन्दुस्तान को उनकी सबसे बड़ी देन है, जवाहरलाल, जो अपने पिता की तरह देश की अविरत सेवा में रत हैं।

* * *

विश्वकवि श्री रवीन्द्रनाथ ठाकुर की जन्मशती आजकल सारे संसार में मनायी जा रही है। रवि ठाकुर संसार के उन महान् साहित्यिकों में से थे, जिनका संदेश देश और काल की सीमा से ऊपर सार्वभौम और शाश्वत था। रविबाबू ने मनुष्य को संकीर्णता और स्वार्थपरता से परे विशाल, व्यापक मानवता का उदात्त संदेश दिया। वैदिक परिभाषा के अनुसार वे सचमुच 'कवि क्रांतिदर्शी' थे। आज जब कि संसार में भय और अविश्वास छाया हुआ है, उनके संदेश की सबसे अधिक जरूरत है। रविबाबू बहुमुखी प्रतिभा के धनी थे। साहित्य के सब अंगों में उनकी प्रतिभा समान थी। साथ ही उन्होंने शिक्षा और धर्म के क्षेत्र में नये विचार दिये। शान्तिनिकेतन के द्वारा उन्होंने अपने शिक्षा के आदर्शों को अमल में लाने की कोशिश भी की। रविबाबू उन लोगों में से थे, जो यह मानते थे कि भारत की श्री और समृद्धि गाँवों के उत्थान से ही हो सकती है। श्री निकेतन उनके इन विचारों का प्रतीक है।

आज जब कि देश में कभी-कभी साम्प्रदायिकता और भाषावाद की संकीर्णता फूट पड़ती है, कवि के इस शाश्वत संदेश की सबसे बड़ी आवश्यकता है—'एई भारतेर महामानवेर सागरतीरे।'

—मणीन्द्रकुमार

चमत्कारों का चंगुल

उत्तर प्रदेश की विधान-सभा में एक ध्यानाकर्षक प्रस्ताव पर दिये गये बयान पर से दूध पीने वाली तीन मूर्तियों के रहस्य का उद्घाटन हुआ है। सीतापुर जिले के सैराबाद गाँव में जमीन खोदते समय तीन मूर्तियाँ निकलीं और उनके बारे में जब यह शोहरत फैली या फैलायी गयी कि वे मूर्तियाँ दूध पीती हैं तो श्रद्धालु लोगों की भीड़ जुटने लगी। फिर आकर्षण कुछ कम होने लगा तो मूर्तियों की देख-रेख के लिये नियुक्त समिति ने जिला मजिस्ट्रेट को लिखा कि मूर्तियों के लिये आभ्यंतर की व्यवस्था की जाय। जाँच कराने पर मालूम हुआ कि मूर्तियों के भीतर रबड़ की ट्यूब लगी थी और मूर्तियों के दूध पीने के पीछे

भूक्रांति-दिवस का संदेश

विनोबा

आज 'अठारह अप्रैल' का दिन है। आज का दिन भूदान के लिए महत्व का दिन है। इस आन्दोलन को आज दस साल पूरे हुए। यही दिन था दस साल पहले, जब हमको पहला भूदान मिला था। यह दिन हम कभी भूलते नहीं, क्योंकि उस दिन हमको अहिंसा का साक्षात्कार हुआ। हम पदयात्रा करते हुए उस गाँव में पहुँचे, भूदान की कल्पना का जन्म तब नहीं हुआ था। तब वहाँ तेलंगाना में आतंक हुआ था। कई भूमि के मालिक कत्ल किये गये थे। सबको डर था। सरकार की सेना भी बन्दोबस्त के लिए वहाँ पहुँची थी। करोड़ों रुपयों का खर्च सेना के लिए सरकार का होता था। ऐसी हालत में हम वहाँ गये थे। वहाँ जाने पर गाँव देख लिया। सारा गाँव घूम करके हरिजन बस्ती में भी जाना पड़ा। तब वहाँ के हरिजनों ने अपने दुख हमारे सामने रखे। उनके पास कुछ व्यवसाय नहीं था। उनके पास कुछ जमीन भी नहीं थी। उन्होंने हमारे पास जमीन माँगी। हमने पूछा, कितनी जमीन चाहते हो? उन्होंने हिसाब करके बताया, अस्सी एकड़ जमीन मिलनी चाहिए। गाँववालों के सामने जब हमने यह बात रखी, तब गाँववालों में से एक भाई ने खड़े हो करके सौ एकड़ का दान दिया।

उस दिन से भूदान का आरम्भ हुआ। दूसरे दिन से हमने भूदान-यात्रा शुरू की गरीबों के लिए। उस दिन से आज तक हमारी पैदल यात्रा चल रही है। हमने जगह-जगह यह समझा दिया कि भूमिहीनों के लिए भूमि देनी चाहिए। हमसे पूछा जाता है कि यह यात्रा कब तक चलेगी? जब तक भगवान इस शरीर में शक्ति रखता है, या जब तक यह काम पूरा नहीं होगा। फिर पूछते हैं कि अकेला मनुष्य घूमेगा तो क्या करेगा? लेकिन इस बात पर हम कभी सोचते नहीं। हम मानते हैं, हमारा जन्म अकेले हुआ, और हम जाने वाले भी अकेले हैं। मनुष्य जन्म में अकेला होता है और मरने में भी अकेला होता है। जब हमने भूदान माँगने का निश्चय किया, तब हमने यह सोचा कि दूसरे लोग मदद करेंगे तो करें, नहीं करेंगे तो न करें, हमको यह काम करना है। ऐसा निश्चय परमेश्वर पर श्रद्धा के बिना नहीं हो सकता। यह परमेश्वर पर श्रद्धा हमारे मन में थी। उसके कारण हमने भूदान माँगने का निश्चय कर लिया।

धीरे धीरे अनेक साथी आये। भूदान के काम के लिए सारे भारत में से चार-पाँच हजार लोग मदद के लिए आये। और लोगों को ख्याल नहीं था, इतना भूदान हुआ। छह लाख लोगों ने दान दिया। कोई पैंतालीस लाख एकड़ जमीन दान में मिली। यह कोई छोटी चीज नहीं है। किन्तु इतने से भारत की भूमि-समस्या हल नहीं होगी। उसके लिए और प्राप्ति होनी चाहिए। हर गाँव में भूमिदान होना चाहिए। गाँव में कितने भूमिहीन हैं, यह देख कर उनके लिए हिसाब करके जमीन प्राप्त करनी चाहिए।

हर गाँववालों को यह काम करना चाहिए। भारत में जमीन कम है तो कहाँ से दान देंगे; यह बिलकुल अधर्म का विचार है। कम जमीन है तो कम दान देंगे। ज्यादा जमीन है तो ज्यादा दान देंगे। एक पिता गरीब है, फिर भी अपने बच्चों को खिलाता है, एक पिता अमीर है वह भी अपने बच्चों को खिलाता है। अमीर के पास ज्यादा सम्पत्ति है, तो वह अपने बच्चों को ज्यादा खिलायेगा। गरीब के पास उतनी संपत्ति नहीं तो उतना सुख नहीं दे सकता। लेकिन उसके पास जो है, उसमें से ज्यादा से ज्यादा देता है। तो हर मनुष्य को, उसके पास कम-ज्यादा जो कुछ है उसमें से ही कुछ देना है। जिसके पास जमीन कम है तो कम हिस्सा भूमिहीनों के लिए दिया जायेगा। जमीन ज्यादा है तो ज्यादा हिस्सा भूमिहीनों को दिया जायेगा। लेकिन हर कोई निश्चय करें कि हमको देना है।

यह समझाते हुए हम आज इस प्रदेश में आये हैं। दस वर्ष के बाद हम यहाँ इतना समाज देख रहे हैं। दस साल पहिले जो सभा हुई थी पोचमपल्ली में, जहाँ पहिला दान मिला, वहाँ इतने लोग नहीं थे। लोग कम थे, लेकिन काम बहुत हुआ। अचानक एक चिनगारी प्रकट हुई। अगर हम नहीं पहिचानते तो वह ऐसे ही रह जाती। अगर हम समझते कि यह अचानक से कोई घटना हो गई तो भूदान पदयात्रा का आरंभ भी नहीं होता।

इसके पहिले जमीन दान में मिली है, लेकिन वह मंदिर के लिए मिली है, मस्जिदों के लिए मिली है, मठों के लिए मिली है, मदरसों के लिए मिली है। लेकिन गरीबों के लिए, भूमिहीनों के लिए जमीन मिले, यह नई बात है। एक करोड़ भूमिहीन परिवार भारत में हैं। और हर परिवार को पाँच एकड़ जमीन इस हिसाब से पाँच करोड़ एकड़ जमीन की आवश्यकता है। इसलिए हमने कहा था कि हमको पाँच करोड़ एकड़ जमीन चाहिए।

हमको पूछते हैं इसको कितने दिन लगेंगे? मैं कहता हूँ कि तुम और मैं सब लोग मिल कर के ताकत लगायेंगे तो जल्दी नहीं तो देरी से होगा। लेकिन होगा जरूर। और नहीं होगा तो भी बाबा को पर्वाह नहीं। भगवान का आश्वासन है कि जो कोई शुभ कार्य करेगा उसकी दुर्गति नहीं होगी। कल्याण मार्ग में दुर्गति नहीं होती है। भगवद् गीता में, "न हि कल्याण-कृत् कश्चित् दुर्गतिं तात गच्छति।"

हमने वहाँ पैंतालीस लाख एकड़ जमीन मिली। उसमें से दस लाख एकड़ जमीन बँट गयी। बाकी की जमीन धीरे-धीरे बँटेगी। जो बँटने लायक है वह बँटेगी। अब नई जमीन हम माँग रहे हैं। मिल रही है—रास्ता खुला है। यह ठीक है कि पाँच करोड़ जमीन लंबी बात मालूम होती है। लेकिन सब मिल करके काम करेंगे तो काम होगा। अभी तक जितना काम हुआ है वह निराशाजनक नहीं, आश्चर्यकारक बात है।

अभी तक भारत में किसी भी पार्टी के जरिये दस लाख तो क्या बाकी जमीन भी नहीं बँटी है। कांग्रेस कहती है, भूमिहीनों को जमीन मिलनी चाहिए। पी. एस. पी., कम्यूनिस्ट और जनसंघ कहता है कि भूमिहीनों को जमीन मिलनी चाहिए। और सरकार भी कहती है, भूमिहीनों को जमीन मिलेगी। लेकिन सबने मिल करके भी अभी तक दस लाख एकड़ जमीन भी भूमिहीनों के लिए नहीं दी। हम मानते हैं कि हिन्दुस्तान की पराक्रमी पार्टियाँ और पराक्रमी सरकार मिल करके भी दस लाख नहीं दे सकी और भूदान से दस लाख मिल गयी।

इसलिए यह निराशाजनक तो है नहीं, लेकिन उत्साहवर्धक है और आश्चर्यकारक है। हमारे हृदय में हमने कभी निराशा का अनुभव नहीं किया। हमने देखा कि भूदान में जितना परिश्रम हमने किया, उससे ज्यादा फल परमेश्वर ने हमको दिया। भक्त थोड़ा-सा प्रयत्न करता है तो भगवान बहुत ज्यादा फल देता है। इसका पूरा अनुभव भूदान-यात्रा में आया है। बाबा ने और उसके साथियों ने जितनी मेहनत की उससे ज्यादा फल हमको मिला। यह हिसाब करिये न कि यहाँ के कितने लोगों ने अभी तक दान दिया है? शंकरराव देव यहाँ आये थे तब दो-चार दिन कुछ मिला था। अभी हम आये हैं, तो कुछ काम हो रहा है। दस वर्ष में कितने मनुष्यों ने कितना जोर लगाया? उस हिसाब से जो काम हुआ, उसका बहुत बड़ा फल मिला। आज के दिन हम भगवान के पास नम्रता से प्रार्थना करते हैं कि हे प्रभु, तुमने हमको कभी निराश नहीं किया है, जितना काम किया उससे ज्यादा फल की हम अपेक्षा नहीं करते। लेकिन मुझे अधिक भक्ति दे और मेरे साथियों की भक्ति बढ़ाओ। जो अभी तक हमारे साथी नहीं हुए, उनको हमारे साथी होने की प्रेरणा दें।

(धरमतूल, असम, १८-४-'६१)

यही रहस्य था। पुरातत्व विभाग का भी कहना बताया कि मूर्तियों का कोई ऐतिहासिक या पुरातत्वात्मक महत्व नहीं है। देवी-देवताओं के चमत्कार में भरोसा करने वाले और धर्म के नाम पर चलने वाली गलत मान्यताओं में अंधश्रद्धावश फँसने वाले हमारे देश के भाई-बहनों के लिये ऐसी घटनाएँ आँखें खोलने वाली होनी चाहिये। आये दिन तथाकथित वेषधारी साधुओं, फकीरों के पाखण्डपूर्ण व्यवहारों तथा पुराने-नये मन्दिरों, धर्म-स्थानों आदि के रहस्यों का भण्डाफोड़ होता है। लेकिन अज्ञानवश लोग एक या दूसरे प्रकार के धोखे के शिकार होते रहते हैं। रोग-मुक्ति, सन्तान-प्राप्ति, अमुक कार्य की सफलता, इम्तिहान में पास होने, नौकरी मिलने, शादी होने आदि अनेक इच्छा-आकांक्षाओं की पूर्ति के लिये मनौतियाँ मनायी जाती हैं। धर्म के नाम पर तथाकथित पूज्य, उनके पुजारी और उनके भक्तजन वे इस प्रकार के स्वार्थ-व्यापार का चमत्कारों के आये दिन के होते रहने वाले रहस्योद्घाटन के बाद भी, चलते रहना लोगों की जड़ता, अज्ञानता और अंधश्रद्धा की चरम सीमा ही बतलाता है। यह समाज का बड़ा कलंक है। इस ओर समझदार लोगों को विशेष ध्यान देना चाहिये और सही ज्ञान, सच्ची साधना तथा सद्धर्म-श्रद्धा को जाग्रत करना हरएक को अपना कर्तव्य मानना चाहिये। लोगों का अपना अभिक्रम जगे, इसके लिये भी यह बहुत जरूरी है कि वे चमत्कारों के चंगुल से बचें और सही श्रद्धा व ज्ञान के पुजारी बनें।

—पूर्णचन्द्र जैन

सम्मेलन का पैगाम

• पूर्णचन्द्र जैन

हर घड़ी की एक खासियत होती है। हर व्यक्ति में कुछ विशेषता है। हर सभा-सम्मेलन, अगर उसमें कुछ भी जान हो तो, वह अपना विशेष पैगाम देता है। आंध्र में जो तेरहवां सर्वोदय-सम्मेलन हुआ, उसका क्या पैगाम है ?

अब यह पैगाम का एहसास भी आसान तो नहीं है। अनुभूति और संवेदना जैसे अलग-अलग, तसवीर के जैसे अनेक पहलू, वैसे सभा-सम्मेलनों में से अलग-अलग को भिन्न-भिन्न पैगाम मिल सकते हैं।

फिर भी एक लहमा आता है, जब कई दिलों में अक्सर एक ही गूंज होती है। हजारों नजरों में किसी एक क्षण एक ही रागिनी आ बसती है। कई दिमाग कभी-कभी एक वक्त एक ही तरह सोचते हैं। सौ सयाने एकमत हो जाते हैं। इसलिए सभा-सम्मेलनों का औसत कोई पैगाम हो ही सकता है।

सर्वोदय-सम्मेलन का पैगाम एक सवाल के जवाब में से निकलेगा। हजारों लोग सम्मेलन में आये। नजदीक से खूद आये। दूर-दूर से भी अच्छे खासे आये। छोटे आये, बड़े आये। मानो अनुभव में कम, लेकिन उमंग से भरे जवान आये, अनुभव से भरे और साथ ही जोश को लगाम से साधे हुए बुजुर्ग आये। अनेक भाषा, भेष और भूषावाले, लेकिन एक ही सर्वोदय की उत्कटतावाले सैकड़ों, हजारों शांति-सैनिक, लोकसेवक, सर्वोदय-प्रेमी भाई-बहिन आये। विनोबा नहीं होंगे, इस जानकारी के साथ और इसके बावजूद आये।

मेले में आये, यह ठीक। सिर्फ मेला नहीं था, यह भी सब जानते हैं। इसलिये जो भी और जिस समझ से भी आयें, एक सवाल है। जाते वक्त इन हजारों दिलों के समुद्र में कौनसे तूफान की लहरें हिलोरें ले रही थीं? लौट रहे दिमागों की सरिता में कौनसी नई तरंग का वेग था? छह दिन, तीन दिन या आखिरी एक दिन साथ रहने, साथ चलने, साथ बैठने, साथ बोलने, बहस-मुबाहिसा करने के बाद सैकड़ों हजारों के दिलों में क्या बात बैठ गयी? और उन दिमागों में क्या बात उफनती रही? इन दिलों और दिमागों की यह बात, यह विचार बिन्दु, यह संचित शब्द-कोष ही सम्मेलन का पैगाम माना जायगा। सौ सवालों का यह जवाब ही सम्मेलन का पैगाम है, सर्वोदय का इस साल का संदेश है।

साफ है कि दिल-दिमागों में जमने वाली यह बात क्षणिक नहीं, बल्कि टिकने वाली और सबल रूप रहने वाली यह बात, सबके मथन, सबके चिंतन, सबकी चर्चा व बातचीत का कुछ परिणाम प्रस्तुत करने वाली यह बात ही सम्मेलन का पैगाम है।

संघ अधिवेशन हो या सम्मेलन की बैठक, इनकी चर्चाओं में जिन्होंने भी भाग लिया, उन सबको दिलचस्पी से देखा-सुना, उन सबकी एक अनुभूति स्पष्ट मालूम देती थी। वक्त वक्त पर जाहिर भी होती थी, कि विचार हमारा ठीक है, लक्ष्य असंदिग्ध है, लेकिन मंजिल दूर है और चाल धीमी है।

विनोबाजी ने ठीक संदेश भेजा कि उनके पास नया कोई संदेश नहीं है। भूदान का विचार संदेश है। उनकी पद-यात्रा अपने आप में संदेश है। सतत चलते हुए वे सतत संदेश दे ही रहे हैं। लोगों को जो अनुभूति हो रही थी उसी में मानों इजाफा (जोड़) हुआ कि संदेश बहुत दिये गये। उसकी इन्तजार मत करो। उसे समझे हो तो उस संबंधी सीधी कार्रवाई का रास्ता पकड़ो। चलो, जोर-शोर से चलो और चलो।

विदेश के भाई-बहिनों ने मेले के मौके के समय में कहा कि सही सुहाना सपना तो गांधी-विनोबा ने सामने रख दिया है। विज्ञान की दौड़ ने परिस्थिति पेचीदा करने के साथ इस पैगाम को उभार कर, किस्मत की रेखा के तौर पर मोटे अक्षरों में लिख दिया है कि परिवर्तन के लिए आज और अभी सबसे ज्यादा अनुकूलताएं हैं।

यों बाहर की, चारों ओर की, परिस्थितियाँ एक ओर ही संकेत करती हैं। सब तरफ मार्ग एक ही दीखती है। तड़प और अनुभूति एक ही है कि "चाल तेज हो। मंजिल दूर है, इसलिए रफ्तार बढ़े।"

सम्मेलन के अध्यक्ष श्री जयप्रकाश नारायण ने सम्मेलन की अब तक की चाल से कुछ अलग एक सुविचारित भाषण पेश किया। मन के उतार-चढ़ाव अर्थात् भावावेश के बावजूद वे यह कर पाते तो बहुत अच्छा रहा। सबको खुशी हुई, दृष्टि मिली। भीतर, बाहर की परिस्थितियों की तस्वीर सामने आयी। कुछ सीमित, बंधी हुई दृष्टियों को व्यापक 'पर्सपेक्टिव' मिला।

गांधी का हिंदुस्तान यों सोचे, यह बहुत जरूरी है। दुनिया से बेखबर हिन्दुस्तान नहीं हो सकता और हिन्दुस्तान मानव की आशाओं का आज भी केन्द्र है, इसे दुनिया नहीं भूल सकती। चलना तो होता है धरती ही पर, लेकिन आसमान के घात-अघात चेहरे, उसमें उठ रहे तूफान-बवण्डर, घन-गर्जन वगैरह का ध्यान रखना पड़ता है। यह ध्यान रहना चाहिये। इसी तरह क्षेत्र, वातावरण, समाज, सब हिन्दुस्तान का, प्रयोग भी यहीं, लेकिन आज की जागतिक समस्याओं, परिस्थितियों से अलग-थलग नहीं रहना है। यह संकेत श्री जयप्रकाश नारायण ही दे सकते थे। वह उन्होंने लोगों में बखूबी पहुँचा दिया।

विचार और कार्यक्रम दोनों के लिए ही व्यापकता व उसके साथ सघनता की दृष्टि इस बार संघ-अधिवेशन व सम्मेलन में रही। कार्यक्रम बहुत हो सकते हैं। बहुत सामने आ चुके हैं। लेकिन साधन, शक्ति, परिस्थिति, निश्चित कुछ निष्पत्ति की आवश्यकता वगैरह को देखते कार्यक्रम को सीमित व सघन किये जाने की सहमति सब तरफ से थी।

थोड़े में कहा जाय तो भूदान, शांति-सेना और लोकनीति, ये तीन इस बार संघ-अधिवेशन तथा सम्मेलन में सोचने-विचारने, बहस-चर्चा करने, कार्यक्रम स्थिर करने वगैरह के लिए केन्द्र-बिन्दु रहे।

भूदान एक विचार का, एक नई समाज-व्यवस्था का, पुराने संदर्भों को बदलने व नये मूल्यों की स्थापना का प्रतीक हो गया है। उस पर से दृष्टि हटी, उस रास्ते पर से कदम हटे या गति धीमी हुई, या उस रास्ते को छोड़ा, बीच के दिनों की यह स्थिति ठीक नहीं रही। सबने यह अनुभव किया। उसे बदल देने की जरूरत सबने मानी। विनोबाजी ने बिहार के लिए इस तब्दीली को फिर से लाने का नारा "बीघा में कट्ठा" का दिया। दूसरे क्षेत्रों में उसका प्रकार व रूप दूसरा कुछ हो सकता है। लेकिन भूमि-समस्या के हल और संपत्ति के स्वामित्व के मूल्यों में जड़मूल के परिवर्तन के लिए इस, दिखने में छोटे किन्तु भारी संभावना वाले, प्रोग्राम को उठाये जाने व चलाये जाने की जरूरत है।

बिहार में भूदान का यानी "बीघा में कट्ठा" आन्दोलन का सघन संयोजन हो रहा है। विभिन्न प्रदेशों के साथियों मित्रादियों को उसके लिए आह्वान है। उस आह्वान का तत्काल बड़ा अच्छा व उत्साहप्रद उत्तर मिला है। हर प्रदेश के प्राथमिक से प्रदेश स्तर तक के संगठनों को इसमें यथा शक्ति योग देने की दृष्टि से विचार करना और बिहार सर्वोदय-मंडल से संपर्क कर अच्छे योग्य साथियों को वहाँ जाने के लिए प्रेरित करना चाहिए। इसी प्रकार हर प्रदेश में भी जहाँ जैसे ठीक और मुमकिन हो उस रूप में पदयात्रा, गाँव-गाँव से संपर्क वगैरह के जरिये इस कार्यक्रम को पुनः उठाना चाहिए।

आज देश की भीतर-बाहर की परिस्थितियों का तकाजा है कि शान्ति-सेना का कार्य बढ़े। वह व्यवस्थित बने। वह व्यापक हो। वह गुणित हो और उसका गुणात्मक विकास हो। शान्ति-सेना कार्य की ट्रेनिंग, शान्ति-सैनिकों के योग-क्षेम, उनके परस्पर संपर्क, अशांति की परिस्थितियों के निराकरण में उनके सक्रिय योगदान, सामान्य समय में उनका शक्ति के संदर्भ में निश्चित व स्पष्ट कार्यक्रम, असाधारण परिस्थितियों की पूर्व-कल्पना और समय पर उन पर काबू करने की तैयारी व पद्धति, वगैरह के शास्त्र-निर्माण और उस पर आधारित आचरण का तौर-तरीका बनाना चाहिए।

फिर समाज नये मूल्यों को जब तक नहीं मान लेता है और अपने ढंग से चलता हुआ भला-बुरा जो कुछ करता जा रहा है उससे बेखबर होकर भी कुछ कार्य नहीं हो सकता।

इन्हें वक्त पर और साथ-साथ ही सँभालते रहने के बगैर प्रगति तो हो ही नहीं सकती, गति रुक भी सकती है। यह ठीक है कि बुनियादी तब्दीली के बगैर अशांति की परिस्थितियाँ खत्म नहीं हो सकतीं और समाज नये मूल्यों की अहमियत को मंजूर नहीं कर सकता। लेकिन यह सब अन्योन्याश्रित है। अहिंसक क्रांति में क्रिया और परिणाम अलग अलग नहीं, बल्कि प्रक्रिया स्वयं ही क्रांति व परिवर्तन को चरितार्थ करने वाली है। इसलिए चारों तरफ से लोकजीवन को प्रभावित करने वाली घटनाएं, परिस्थितियाँ, योजनाएं, कार्यक्रम आदि उन पर असर डालते हैं, उन्हें भी नई दिशा दे देने की जरूरत है। वह पंचायती राज या आगामी चुनावों के सिलसिले में हो या खादी-ग्रामोद्योग आदि के कार्यक्रम में, अथवा निर्माण-कार्य आदि के प्रसंग से, लोकजीवन जहाँ है वहाँ से उठाने हमारे लक्ष्य की ओर बढ़ने, उठ कर चलने के लिए उद्बुद्ध करना होगा। जन-जन की चेतना, उसकी क्रियाशीलता, उसकी संवेदना व सामाजिकता या समाज-भावना जागृत होनी चाहिए, ताकि हर काम व परिणाम में हरएक अपना हाथ शामिल करे, उसका अपना हिस्सा समझे और अनुभव करे कि उत्तरोत्तर उसे ही करना है, उसे ही भुगतना है, उसे स्वयं ही बिगाड़ना या तो बनाना है।

इस त्रिविध या त्रिसूत्र कार्यक्रम के पैगाम के संदर्भ में देश के सर्वोदय-प्रेमियों, खास तौर से लोकसेवकों, प्राथमिक सर्वोदय-मंडलों व उनकी जिला, प्रदेश आदि स्तर की इकाइयों को अपने-अपने क्षेत्र की परिस्थिति व अनुकूलता और अपनी शक्ति, सामर्थ्य, मर्यादा के अनुसार कार्य की विस्तृत रूपरेखा बनानी चाहिए। उसके अनुसार कार्य करने की संयोजना करनी चाहिए।

—

साहित्यिकों से विनोबाजी की अपेक्षा

साहित्यिक तटस्थ, विश्वव्यापी और शाश्वत चिंतन करें

विनोबा

साहित्यिकों की हमेशा आगे के समाज की तरफ दृष्टि रहती है। दो प्रकार के साहित्यिक होते हैं : एक वे, जो जिस समाज में रहते हैं, उस समाज की परिस्थिति का चित्र खड़ा करते हैं। दूसरे वे, जो आगे मानव बनने वाला है—भविष्य का मानव—उसका चित्र खिंचते हैं। एक को "रिअलिस्टिक" (वास्तववादी) और दूसरे को 'आइडियालिस्टिक' (आदर्शवादी) कहते हैं। जो साहित्यिक अपने जमाने से बद्ध रहते हैं, वे कालात्मा की परीक्षा में समाप्त होते हैं, टिकते नहीं। जब तक वह समाज, जिसमें वे पैदा हुए हैं चलते हैं, तब तक वे चलते हैं। उसके आगे नहीं। वाल्मीकि आज भी पढ़ा जाता है और बाकी सामान्य साहित्य जिस जमाने में पैदा हुआ उसी में खत्म हुआ! आप देखेंगे जब से ग्रंथ छापने की खोज हुई है, तब से विचार-प्रचार के लिये बहुत सरलता हो गयी है। ग्रंथ-प्रचार के लिए भी सुविधा हो गयी है।

लेकिन हिन्दुस्तान की किसी भी भाषा में आज का कौनसा ऐसा साहित्यिक है,जो घर-घर पढ़ा जाता है ? जैसे यहाँ असम में शंकरदेव, माधवदेव हैं; उत्तर प्रदेश में तुलसीदास, कबीर; महाराष्ट्र में ज्ञानदेव और तुकाराम महाराज आज तक पढ़े जाते हैं; जैसे नम्मालवार और माणिक्यवाचकर तमिलनाड में आज भी पढ़े जाते हैं। वाल्मीकि और व्यास आज भी भारत में पढ़े जाते हैं। ये सारे साहित्यिक छपाई-कला के पहले के हैं। इन्होंने ऐसे भजन और साहित्य लिखा है कि गाँव-गाँव में, घर-घर में किसानों के पास पहुँचे हैं, मार्गदर्शन देते हैं और दुखियों को देते सांत्वना हैं। मालूम नहीं, असम में आज कौन है, जिसका साहित्य घर-घर पढ़ा जाता है ? इतना देखता हूँ कि यूनिवर्सिटी में पुराने ग्रन्थों के शुद्ध संस्करण (एडीशन्स) दीखते हैं। एक अपवाद हो तो वह रवीन्द्रनाथ टागुर और भारती (तमिलनाड) का दीखता है। ऐसा एकाध दूसरा अपवाद हो, इसका क्या कारण है ?

उसका कारण यह है कि शाश्वत साहित्य जो होता है, उसकी विश्वव्यापी प्रतिभा होती है। जैसे सूर्यनारायण रोज उगता है, लेकिन प्रात:काल में उसकी लालिमा और प्रभा रोज नई-नई दिखाती है, नई-नई दर्शा होती है, पर उसकी अरुचि पैदा नहीं होती है। जिस तरह उसकी नई-नई प्रभाएँ जो रोज पैदा होती हैं, आप उसका फोटो लीजिये, रोज नया-नया ही दृश्य दीखेगा। उसी तरह से जो प्रतिभावान साहित्यिक होता है, उसके ग्रन्थ से नित्य नया अर्थ निकलता है। भगवद्गीता देखिये। शंकराचार्य से लेकर लोकमान्य और गांधी तक, संस्कृत में और हमारी दूसरी भाषाओं में पचासों भाष्यकार हुए और हर कोई उसमें से नई-नई चीज निकालता ही है। यह 'गीता-प्रवचन' है। आप क्या समझते हैं कि इसके आगे कोई ग्रन्थ नहीं निकलेगा ? 'गीता' छोटा-सा ग्रन्थ है—लेकिन नई-नई स्फूर्ति देता है, ताजा ग्रन्थ है। इस प्रकार का साहित्य उस जमाने में हुआ, पर वह सब जमाने में और सब देशों के लिये लागू होता है।

शब्द वही, लेकिन पुराने जमाने में उसका एक अर्थ निकला, आज उसका दूसरा अर्थ होता है। शब्द में यह सामर्थ्य है—शब्द नव-नव प्रसव होता है। ऐसी दृष्टि उस साहित्यिक को होती है, जो समाज का निर्लिप्त दर्शन करते हैं, साक्षी होते हैं। खेल में क्या मजा है, वह खेलने वाले को पता नहीं होता है। उसे समग्र दर्शन नहीं हो सकता है, वह अपना 'पार्ट प्ले' कर रहा है। थर्मामीटर बुखार इसीलिए नाप सकता है, क्योंकि उसे खुद को बुखार नहीं होता है। उसे बुखार होता तो आपका बुखार वह नहीं नाप सकता। जिन विकारों में सारा समाज फँसा है उसमें क्या-क्या लाभ है, हानि है, उसका क्या परिणाम आता है, यह दर्शन उसीको हो सकता है, जो उससे अलग है, तटस्थ है और जिसे सहानुभूति भी है। आप यहाँ हैं, मैं कैमरा लेकर आपका फोटो लेता हूँ, लेकिन आपके अभिमुख हूँ।

इस वास्ते साहित्यिक समाज से तटस्थ भी होने चाहिए और अभिमुख भी होने चाहिए। दृष्टि से तटस्थ भी और अभिमुख भी। "उपद्रष्टा"—नजदीक रह कर देखने वाला। यह गीता का शब्द है। अत्यंत नजदीक रह कर सहानुभूतिपूर्ण देखने वाला। जो सहानुभूतिपूर्ण नहीं देखेगा, वह साहित्यिक नहीं हो सकता। जो विकारों में बह जाते हैं, वे चाहे सांसारिक पराक्रम करने वाले हो सकते हैं, नेपोलियन बोनापार्ट जैसे वीरपुरुष हो सकते हैं, लेकिन साहित्यिक नहीं हो सकते हैं। वे लिख नहीं सकते ऐसा नहीं, लेकिन अमर 'साहित्य'—'अमर' याने शब्द सब काल और सब देशों को स्फूर्ति देने वाला—नहीं लिख सकते हैं। वे 'ऑर्डर ऑफ दी डे' जैसा लिख सकेंगे। आज का अखबार कल कोई नहीं पढ़ेगा।

लेकिन शंकरदेव का साहित्य चार सौ साल पहले लिखा हुआ हो तो भी आज पढ़ा जाता है। ये ही शंकरदेव अगर चार हजार साल पहले होते तो उनका साहित्य और अच्छी तरह पढ़ा जाता, क्योंकि चार हजार साल तक उस पर बार-बार चिंतन होता। इसीलिए तो पुराना साहित्य लोगों को हिला रहा है और डुला रहा है। वही कायम भी रहा है। इसलिए ऐसे साहित्यिक होने चाहिए जो समाज से, विकारी समाज से अलग हैं, जिनके मन में सहानुभूति है और जो तटस्थ हैं।

निर्लिप्त सहानुभूतिपूर्ण चिंतन

मैं आपसे भूदान नहीं माँगता। मैंने साहित्य पढ़ा है, पर मैं साहित्यिक नहीं हूँ। यह मेरा भाग्य रहा है कि अनेक भाषाओं का साहित्य मैंने पढ़ा है। इसलिए मैं जानता हूँ कि जो साहित्यिक समाज से अभिमुख होगा, तटस्थ होगा वह उत्तम लिख सकता है। वैसे ही जो भूदान के काम में शामिल होगा, वह चाहे लेख लिखेगा, लेकिन उसके मर्म की पहिचान उसी को होगी जो उससे अलग है। मैं आशा करता हूँ कि इस तरह निर्लिप्त होकर सहानुभूतिपूर्ण चिंतन आप करेंगे।

आज दुनिया में सर्वोदय एक विचार है, जिसमें शक्ति है, सत्व है। उसके सामने कम्यूनिज्म का विचार खड़ा है। इन सौ वर्षों में कम्यूनिज्म का विचार दुनिया में फैला है। उसमें भी विचार का तत्त्व है। ये दो विचार आमने-सामने खड़े हैं। वे एक-दूसरे के मित्र भी हैं और दुश्मन भी हैं। संस्कृत में भाई को 'सापत्न' कहते हैं। सापत्न याने शत्रु भी होता है। एक पति की दो पत्नियाँ होती हैं, उनके दो लड़के भाई-भाई होते हैं। माता अलग-अलग, लेकिन पिता एक ही। बहुत नजदीक का संबंध है। इसलिए शत्रु भी हो सकते हैं। सर्वोदय और साम्यवाद सापत्न हैं। उनका बाप एक है, माताएँ अलग-अलग हैं। दोनों करुणा से प्रेरित हैं।

लेकिन एक प्रतिक्रिया के रूप में आया है और दूसरा स्वयंभू है। पूँजीपतियों के समाज ने जो अन्याय किया, उसकी प्रतिक्रिया में कम्यूनिज्म का विचार आया है। इसलिए वह एकांगी हो गया है। समाज को एक ही बाजू खिंचता है। सर्वोदय में प्रतिक्रिया नहीं है, इसलिए वह सत्व रखता है। वह आहिस्ता-आहिस्ता आयेगा, लेकिन वही टिकेगा और कम्यूनिज्म जोर से आयेगा, लेकिन उसकी भी प्रतिक्रिया होगी। रूस में हो ही रही है। मार्क्स ने एक बात कही, लेनिन ने कुछ और कहा, स्टेलीन ने दूसरी बात कही और उसके लगभग विरुद्ध आज ख्रुश्चेव बोल रहा है। इस तरह दुनिया में आज उसकी प्रतिक्रिया हो रही है।

मेरा विश्वास है कि दुनिया में सर्वोदय ही खड़ा है और अगर सर्वोदय ने वाद ही वाद किया और काम नहीं किया, तो वह भी नहीं टिकेगा। गीता में आया है, "मैंने सूर्य को योग सिखाया, वह बहुत काल से नष्ट हो गया। वह फिर से मैं तुझे बता रहा हूँ।" [गीता ४ : १,२]

ऐसा क्यों हुआ ? इसलिए कि अमल में लाने वाले नहीं होते हैं। इसलिए विचार अविनाशी होता है। लेकिन अमल में नहीं लाया तो वह 'हवा' में रहेगा। इसलिए हम 'सर्वोदयवादी' नहीं होना चाहते। हम सर्वोदयकारी होना चाहते हैं। सर्वोदय का काम ही करना चाहते हैं।

अभी रवीन्द्रनाथ की शताब्दी मनाने जा रहे हैं। उनका दर्शन परिपूर्ण था, ऐसा वे भी नहीं कहते थे। लेकिन उनका जो भी दर्शन था, वह विश्वव्यापी था। उन्होंने 'विश्वभारती' की स्थापना की। उनकी कल्पना में संकोच नहीं था। वे विश्वव्यापी थे। इसीलिए उन्होंने 'भुवनेश्वर' की उपासना की। वे आगे आने वाले जमाने में भी टिकेंगे।

हम आशा करते हैं कि आप तटस्थ और अभिमुख होकर दर्शन करें और लिखें। आप दोष भी लिखें और कोई नई चीज देखी तो वह भी लिखें, और ऐसा साहित्य लिखें, जो आगे आने वाली पीढ़ी में टिकने योग्य हो।

इसी तरह टालस्टॉय भी एक बहुत बड़ा साहित्यिक हो गया। काल बढ़ेगा वैसे उसकी महिमा बढ़ेगी, घटेगी नहीं। क्योंकि उसने जो दर्शन दिया है, वह आटोमिक युग में रहेगा। आने वाली दुनिया में व्याप्त रहेगा और दुनिया उसका साहित्य पढ़ेगी। रूस के एक कोने में वह पैदा हुआ, लेकिन सारी दुनिया पर उसका असर पड़ा है। शायद ही कोई भाषा होगी, जिसमें उसकी कृति न हो। यह वस्तु है। जमाने के अन्दर रह कर, दूरदृष्टि रख कर, तटस्थ बुद्धि से, सहानुभूति पूर्वक निरीक्षण करने की शक्ति होगी तो उत्तम साहित्यिक निर्माण होंगे।

(गोहाटी, १०४-'६१)

राष्ट्र के पुरुषार्थ की रक्षा के लिये

सरकार आबकारी की नापाक आमदनी छोड़े!

मोतीलाल केजरीवाल

पंडित रमावल्लभ चतुर्वेदी मल्यपुर (मुंगेर) में कलाली पर गत ३० जनवरी से ही 'पिकेटिंग' कर रहे हैं। वे सन् १९२१ के असहयोग-आन्दोलन (स्वाधीनता-संग्राम) के बाद अब सर्वोदय को साकार करने के लिए जी-जान से लगे हुए हैं। इनके दिल में इस बात की टीस है कि पराधीनता के युग में राष्ट्र ने गांधीजी के नेतृत्व में जो व्रत लिया था वह अब तक पूरा नहीं हुआ है और गांधीजी का पवित्र नामोच्चारण करके स्थापित होने वाली इस सरकार ने आबकारी की 'नापाक आमदनी" को अपने खजाने में जमा करते रहने का कुत्सित कार्य छोड़ा नहीं है। बिहार के भागलपुर शहर से 'गांधी-सन्देश" नामक साप्ताहिक पत्र जब तक प्रकाशित होता रहा, तब तक उसके द्वारा और अवसर पाने पर अन्य तरीकों से उन्होंने अपना नशा-विरोधी कार्य जारी रखा।

फरवरी १९६१ के आरम्भ में मुझे चतुर्वेदीजी का एक पत्र मिला, जिसमें उन्होंने मुझे सूचित किया था कि बापू की निर्वाण तिथि—३० जनवरी, १९६१ से इन्होंने मल्यपुर की कलाली पर शान्तिमय निरोधन का कार्य प्रारम्भ कर दिया है। जमुई अवर प्रमंडलाधिकारी को इन्होंने एक पत्र लिख कर जानकारी भी दे दी थी कि वे उक्त पावन तिथि से दिन में ४ बजे से ५ बजे तक लाक्षणिक प्रतिकार की दृष्टि से निरोधन करेंगे। उन्होंने यह भी लिख दिया था कि जैसे-जैसे उनके समर्थकों की संख्या बढ़ती जायगी वैसे-वैसे उनके इस निरोधन-कार्य का समय भी बढ़ता जायगा।

श्री चतुर्वेदीजी का यह पत्र पाकर मुझे बहुत खुशी और उत्साह हुआ। मैंने तो यह सोचा कि मंगलमय प्रभु का यह एक सामयिक संकेत मिला है। मुझे उन पुराने दिनों की पावन स्मृति हो आयी, जब अंग्रेजी राज के बर्बरता भरे जमाने में नशाबन्दी करने की निगाह से हम लोग शराब एवं विदेशी कपड़ों की दूकानों में पिकेटिंग किया करते थे।

मैं इस कार्य को एक सामयिक और साहसिक कार्य समझता हूँ और मुझे खुशी है कि श्री जयप्रकाश बाबू ने भी श्री चतुर्वेदीजी को पत्र लिख कर उनके इस कदम का अनुमोदन किया है।

हाँ, मुझे दुख भी है, क्योंकि यह निरोधन-कार्य हमें ऐसे अवसर पर करना पड़ रहा है, जब बिहार की हुकूमत एक ऐसे व्यक्ति के हाथ में है, जो गांधी सेवा संघ का पुराना तथा निष्ठावान सदस्य एवं कार्यकर्ता था।

अपनी हत्या के ३० दिन पहले अर्थात् १ जनवरी, १९४८ को दिल्ली की अपनी एक प्रार्थना-सभा में प्रवचन करते हुए निम्नलिखित उद्गार बापू ने प्रकट किये थे।

"इसलिए सन् १९२० से शराबबन्दी कांग्रेस के कार्यक्रम में शामिल है। अब जब हम आजाद हो गये हैं, सरकार को अपना वादा पूरा करना चाहिये और आबकारी की नापाक आमदनी को छोड़ने के लिए तैयार हो जाना चाहिये। इससे लोगों का बहुत बड़ा लाभ होगा। हमारे लिए तरक्की का यही रास्ता है।"

स्वतन्त्रता हमारे देश के लिए ही नहीं, किन्तु संसार के सभी शासित, ताड़ित और दलित देशों के लिए वरदान सिद्ध हुई है। भारत के स्वतन्त्र होने के बाद संसार के सभी पराधीन राष्ट्रों ने केवल अंगड़ाई ही नहीं ली, बल्कि ताल ठोक कर खड़े हो गये। दूसरे देशों की बात तो मैं नहीं कह सकता, किन्तु हमारे देश में इस वरदान के साथ ही 'जड़ता' ने भी हमारे दिलों में घर कर लिया है। अच्छाई के साथ एक भयंकर बुराई भी हममें आ गयी। देश की जनता आज इतनी परावलम्बी अथवा इतनी सरकार-अवलम्बी हो गयी कि अपने गाँव के गंदे कुएँ को साफ करने के लिए भी वह अपने से कुछ नहीं करती! सरकारी अधिकारियों के चरणों में केवल निवेदन करके अपना दैन्य प्रकट कर देने में ही अभिक्रम या साहस रह गया है और यही कारण है कि आज जनता में अपनी ही सरकार से यह पूछने का भी साहस नहीं रहा कि "ऐ हमारे ही पौरुष तथा शक्ति से गठित सरकार! तू गांधी के स्पष्ट आदेशों को क्यों ठुकराती है! नशा बेच कर राष्ट्र के पुरुषार्थ और आत्मा की क्यों हत्या करती है! चरखे और ग्रामोद्योग को ईश्वरवत् उपास्य समझने वाले गांधी के उपदेशों के विरुद्ध गाँव के धन्धों और कुटीर शिल्पों को क्यों नाश करती है!" यही कारण है कि संत विनोबा द्वारा स्वामित्व विसर्जन के पाठ के रूप में अमृत पिलाये जाने पर भी भारतीय राष्ट्र सचेतन नहीं हो रहा है। अब जड़ता दूर होनी ही चाहिये। स्वामित्व-विसर्जन के हमारे आरोहण के साथ ही दुर्व्यसनों के प्रतिकार की वृत्ति से हमें कुछ करना ही चाहिये। नशाखोरी के विरुद्ध अभियान चलाना हमारे आरोहण को उत्तेजना देगा। मेरी राय में मल्यपुर से आरम्भ किया हुआ यह कार्य एक छोटे से, किन्तु दृढ़ बीज के रूप में है, जिससे सुदृढ़ आन्दोलन रूपी महान् वृक्ष उगेगा। देश के शुभचिन्तक कार्यकर्ताओं को इस ओर ध्यान देना चाहिये।

• •

बिहार के भूतपूर्व आबकारी मंत्री श्री जगलालजी चौधरी, जिन्होंने राज्य-सरकार के द्वारा नशाबंदी लागू नहीं करने के कारण मंत्रित्व से इस्तीफा दे दिया था, श्री रमावल्लभ चतुर्वेदीजी को अपने २९ अप्रैल पत्र में लिखते हैं :

" ...... जब से आपने कलाली पर पिकेटिंग करना शुरू की है, तब से मैं बराबर इस खोज में रहा हूँ कि सरकार क्या करने वाली है। 'भूदान-यज्ञ' से समाचार पाया था। अभी तक आपकी बधाई या धन्यवाद नहीं दे पाया हूँ। अभी क्या कहूँ? हृदय अपना काम करता है। मैं ६ मई '६१ को तूफान ट्रेन से आऊँगा और पिकेटिंग करूँगा। भगवान से प्रार्थना करता हूँ कि आपका प्रयास सफल हो!"

• •

['सर्वोदय संवाद' से]

शराबबन्दी आन्दोलन के अनुभव

३० जनवरी १९६१ से अपने गाँव (मलेपुर, मुंगेर) में हमने शराब की दूकान पर निरोधन करना शुरू किया है। इसी सिलसिले में हमने एक माँग-पत्र पर गाँव के लोगों के हस्ताक्षर संग्रह करना भी शुरू किया कि मलेपुर से कलाली तुरंत हटा दी जाय। इस माँग पत्र पर गाँव के मुखिया, सरपंच, पंच और पंचायत के सदस्यों के भी हस्ताक्षर लिये गये। गाँव के एम. एल ए. ने भी, जो पीछे संसदीय सचिव भी हो गये हैं, इस पर हस्ताक्षर किया। इस माँग-पत्र पर हस्ताक्षर करने में किसी ने थोड़ी भी आपत्ति नहीं की, केवल एक व्यक्ति को छोड़ कर। वह सज्जन मानते हैं कि समाज का संतुलन ठीक रखने के लिए चोरी, घूसखोरी और शराब भी चाहिए।

सबसे खुशी की बात यह है कि गाँव के प्राय: सभी नामी पियक्कड़ों ने हस्ताक्षर किये हैं। बुरी आदत में फँसे इन भाइयों ने कहा कि दूकान जरूर हटनी चाहिए, जिससे हम बिगड़े सो बिगड़े, पर अगली पीढ़ी तो बिगड़ने से बच जाय! जिन्हें हम बुरा कहते हैं, उनकी कैसी ऊँची भावना और दूरदर्शिता है!

जब हमने निरोधन शुरू किया, तब कुछ लोगों ने आशंका की थी कि कुछ खास-खास पियक्कड़ों के हाथ हम पीटे जायेंगे! पर अनुभव उलटा आया। हमारे निरोधन-कार्य के सबसे अधिक प्रशंसक पीने वाले भाई ही हैं! इनमें जो बहुत क्रोधी माने जाते थे भेंट होने और रोकने पर उन्होंने हमारे पैर भी छूये। मारना-पीटना तो सपने की बात सिद्ध हुई। हमें रिपोर्ट मिली है कि कुछ नामी पीने वालों ने कहा है कि काम तो चौबेजी बहुत अच्छा कर रहे हैं। एक ऐसे ही पीनेवाले नवयुवक ने हमसे ही कहा कि जल्दी यह कलाली हटवाइये, तो हमारी भी महीने में कुछ बचत हो।

अंग्रेजी राज के हटने के बाद देश में शराबखोरी कई गुना बढ़ी है। शराब पीना फैशन हो गया है। शराब पीना हिचक, और लज्जा की बात अब नहीं मानी जाती। उन जातों और खानदानों में भी जहाँ शराब की चलन नहीं थी, अब बेहिचक पी जाने लगी है। जिस संस्था के लोग कभी शराब पर पिकेटिंग करते थे, उसके उच्चपदस्थों को भी हमने सार्वजनिक तौर पर पीते देखा है। हमारी पिकेटिंग के बाद से हमारे गाँव में इस निर्लज्जता और निस्संकोच पर आघात हुआ। पीना बुरा है, लज्जाजनक है, सामाजिक अपराध है, यह फिर से लोग समझने लगे हैं।

पीनेवालों ने हमसे कहा कि आपका पैर छूकर हम नहीं पीने की कसम तो खा लें, पर हम अपना कौल पूरा नहीं कर सकेंगे! यह कलाली जब हमारी नजर में आयेगी या इसकी याद भी आयेगी हम अपना लालच रोक नहीं सकेंगे। यह कलाली रहेगी तो हमारा पीना छूट नहीं सकता। इसलिए यह कलाली तोड़वाइये। यह सुन हमें गांधीजी की बात याद आयी। २४ अगस्त '३७ के 'हरिजन' में उन्होंने लिखा था—'पीनेवाले को लुभाने के लिए उसके दरवाजे के पास ही शराब की दूकान जब तक रहे हम उससे कुछ कह नहीं सकते। यह तो उसी तरह निष्फल होगा जैसे कि किसी बीमार बच्चे के ही नहीं, सयाने के भी सामने मिठाई खोल कर रख दी जाय और उससे कहा जाय इसे मत छूना!"

—रमावल्लभ चतुर्वेदी

ग्राम-स्वराज्य दिवस के समारोह के पश्चात्

हमारा अगला कार्यक्रम क्या हो?

६ अप्रैल, '६१ को सारे देश में 'ग्राम-स्वराज्य दिवस' रचनात्मक काम में लगी विभिन्न संस्थाओं द्वारा मनाया गया तथा ७ से १३ अप्रैल तक 'ग्राम-स्वराज्य सप्ताह' के रूप में विभिन्न कार्यक्रमों का आयोजन देश के सभी प्रान्तों में हुआ, जिसमें हजारों गाँवों के लाखों ग्रामीणों ने भाग लिया और ग्राम-स्वराज्य के घोषणा-पत्र को सुना व उसे स्वयं दोहराया; इस प्रकार के विवरण देश के विभिन्न भागों से प्राप्त हुए हैं।

यह हर्ष का विषय है कि ग्रामीणों ने इस कार्यक्रम का उत्साहपूर्वक स्वागत किया और उसे पूरा करने का वचन भी दिया है। परन्तु गाँव में काम करने वाले कार्यकर्ताओं का कार्य यहीं समाप्त नहीं हो जाता है। यह तो जन-जागरण के महान् कार्य की ओर ग्रामीणों को ले जाने का प्रारम्भिक प्रयास मात्र ही है।

ग्रामीण ग्राम-स्वराज्य के रूप, विचार व भावना को समझें और उसे अपने गाँवों की परिस्थितियों, उपलब्ध साधनों तथा उपकरणों के आधार पर अपने ही अभिक्रम के द्वारा संगठित व संयोजित रूप से साकार रूप देने के लिए कृतसंकल्प होकर जुट जायें तभी हम अपने उद्देश्य की ओर बढ़ सकेंगे। इस सम्बन्ध में खादी-कमीशन की ग्राम इकाई योजना का पूरा लाभ भी हम उठाने का प्रयत्न करें और साथ-साथ ग्रामीणों में लोक-शिक्षण के कार्यक्रम को भी अपनायें। ग्रामीणों से हमारा सतत सम्पर्क रहे। हम उन्हें निरंतर परस्पर सहकार, स्व-हित से सर्व-हित की ओर चिंतन, सामूहिक जीवन के अंतर्गत व्यक्ति की सुरक्षा तथा विकास के कार्यक्रमों की योजनाएँ तथा विचार देते रहें, यह नितान्त आवश्यक है।

आज ग्रामीण अपने को गरीबी और असहाय अवस्था में पड़ा हुआ पा रहा है। अपनी स्वयं की सामूहिक श्रमशक्ति के ऊपर से उसका विश्वास उठ गया है। सम्पत्ति और सरकार की ओर ही वह आशा भरी दृष्टि से ताकने में अपना हित समझता है। हमें उन्हें इस गलत रास्ते की ओर जाने से सचेत करना है। परस्परावलम्बन, सहकार तथा सामूहिक श्रम के द्वारा उत्पादन की अपूर्व शक्ति का उन्हें भान हो, स्थानीय साधनों तथा प्राकृतिक स्रोतों का समुचित उपयोग, कृषि तथा गोपालन का मूलाधार लेकर अन्य ग्रामोद्योगों को वे संगठित करें और ग्रामीण लोग भोजन, वस्त्र, आवास शिक्षा और सुरक्षा के बारे में स्वावलंबी बन कर पूर्ण ग्राम-स्वराज्य की ओर बढ़ सकें, ऐसा प्रयत्न हमें सतत रूप से करते रहना है।

वास्तव में ग्राम-स्वराज्य का कार्य आन्दोलन का रूप तभी धारण कर सकेगा, जब ग्रामीण स्वयं उसे लाने की अनिवार्यता महसूस करने लगें और अपनी आज की परिस्थिति को जो व्यक्तिवाद, स्पर्धा, सत्ता और शोषण पर आधारित है, जो अधिक पतन की ओर ले जाने वाली है, ऐसा समझ कर उसके प्रति तीव्र असंतोष अनुभव करें। यदि हम उनमें विचारों की स्पष्टता ला सकें और उनमें सामूहिक व सह-जीवन की भावनाओं को प्रोत्साहित कर सकें तो वे स्वयं इस सारे कार्य को अपना ही कार्य समझ कर अपना लेंगे और हम अपना पूर्ण सहयोग उन्हें ग्रामस्वराज्य की कल्पना को साकार करने में दे सकेंगे।

अतः उपर्युक्त वातावरण के क्षेत्रों में कार्यकर्ता बैठें, ग्रामीणों के जीवन से एकरस होते हुए उनकी समस्याओं, कठिनाइयों, प्रश्नों आदि को समझें और भूदानमूलक, कृषि-ग्रामोद्योगप्रधान अहिंसक समाज की रचना करने में अपने त्याग, तपस्या और करुणामय जीवन के आधार पर उन्हें हर प्रकार से सहयोग और सहायता देने का प्रयत्न करें। यही हमारा आगे का कार्यक्रम होना चाहिये।

इस दिशा में, गाँवों में कार्य कर रही विभिन्न संस्थाएँ (*गांधी-निधि, श्री गांधी* आश्रम, कस्तूरबा ट्रस्ट, भारत सेवक समाज, सघन क्षेत्र विकास-समितियाँ, विकास विभाग, समाज-कल्याण, हरिजन सेवक संघ आदि) के कार्यकर्ता यदि सम्मिलित रूप से एक व्यापक कार्यक्रम बना सकें और गाँव में पारस्परिक सहयोग से काम करें, तो अधिक लाभकर होगा। यदि उपरोक्त संस्थाओं और संगठनों के उच्च अधिकारी आपस में मिल कर चर्चा करें और एक संयुक्त कार्यक्रम इस संबंध में बना लें तो ग्रामीण कार्यकर्ताओं को अधिक सुविधा हो जायेगी और हमारा नवसमाज-निर्माण का कार्य अधिक गति प्राप्त कर सकेगा ऐसी आशा है।

—सतीशचन्द्र दुबे

खादी-ग्रामोद्योग समिति, काशी

विज्ञान के साथ अहिंसा का मेल आवश्यक

शिक्षा-संस्थाओं में सैनिक शिक्षा की समस्या

इलाहाबाद में सर्वोदय-विचार-गोष्ठी में परिचर्चा

"हमारी शिक्षा-संस्थाओं में सैनिक शिक्षा का प्रश्न बहुत गम्भीर और महत्त्वपूर्ण है। इस पर बहुत ठंडे दिल से विचार करने की जरूरत है। मैं इस विचार के एकदम विरुद्ध हूँ कि सैनिक शिक्षण को हमारे विद्यालयों और शिक्षा-केन्द्रों में अनिवार्य बनाया जाय। सैनिक शिक्षण पर ज्यादा जोर देने का अर्थ यह होगा कि दृष्टि संकीर्ण बनेगी, विचार संकुचित होगा और कार्य में परवशता आयेगी। यह धारणा कि सैनिक शिक्षण से अनुशासन या दूसरे गुण पैदा होते हैं, गलत है और इसे हम प्रगतिशील पाखंड कह सकते हैं। शिक्षा के क्षेत्र में किसी तरह की जबरदस्ती शिक्षा के उद्देश्यों के खिलाफ है। चाहे तो आप सैनिक शिक्षण को ऐच्छिक विषय के तौर पर रखिये। लेकिन उसका अनिवार्य करने का मतलब है—नाजीवाद का वातावरण पैदा करना। इसके विपरीत आज दुनिया का मानस बदल रहा है और वह दिन दूर नहीं है, जब लोग युद्ध-मात्र की तिलाञ्जलि देंगे और महात्मा गांधी के बताये मार्ग पर अपनी समस्याओं का निराकरण किया करेंगे।"

उपर्युक्त उद्गार गत ८ अप्रैल १९६१ की संध्या को सर्वोदय विचार-गोष्ठी की पाक्षिक गोष्ठी में प्रयाग विश्वविद्यालय के इतिहास विभाग के प्राध्यापक प्रो० ओंकारप्रसाद भटनागर ने प्रकट किये। यह बैठक विश्वविद्यालय के हालैण्ड हाल कालेज में बुलायी गयी। चर्चा का *विषय था—"हमारे शिक्षण-केन्द्रों में सैनिक शिक्षा का प्रश्न।"*

विषय प्रवेश करते हुए प्रो० भटनागर ने कहा : "छात्रों या युवकों में अनुशासनहीनता शून्य में से नहीं पैदा हो जाती है। इसका असली कारण है आज की आर्थिक और सामाजिक दुर्व्यवस्था। आवश्यकता इस बात की है कि आर्थिक ढाँचे में मूलभूत परिवर्तन किये जायें। अगर हमारे घर व्यवस्थित रूप से चलते हों और समाज में वातावरण स्वस्थ हो तो एक भटका हुआ युवक भी सही रास्ते पर लाया जा सकता है। सैनिक शिक्षण को अनिवार्य बनाने में खतरा है। शिक्षा का उद्देश्य यह है कि सुसंस्कृत और सुशील मनुष्य तैयार करे।"

प्रयाग विश्वविद्यालय के राजनीति के प्राध्यापक प्रो० अम्बिका पन्त ने कहा : "सैनिकवाद एक ऐसी बुराई है, जिसका हमें अपनी पूरी शक्ति से मुकाबिला करना चाहिए। यह अन्तर्राष्ट्रीय सौहार्द तथा शांति के एकदम विरुद्ध है और मानव व्यक्तित्व का विनाशक है। लेकिन परिस्थिति का सामना करने की हमारी तैयारी तो सदा रहनी चाहिए। यह सही है कि युद्ध अनिवार्य या अवश्यम्भावी नहीं है। लेकिन आज परिस्थिति इतनी विस्फोटजनक है कि किसी समय भी युद्ध आ सकता है और इसलिए सदा तैयार रहना चाहिए। प्रेम की एक बड़ी शक्ति है, लेकिन अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर वह कोई प्रभावशाली अस्त्र सिद्ध नहीं हो सकी है।"

अन्त में प्रो० पन्त ने कहा कि "सच्चा अनुशासन तो सचमुच अन्दर से पैदा होता है और पारिवारिक परंपराओं तथा शिक्षण-संस्थाओं में इससे बड़ा योगदान मिल सकता है। लेकिन सैनिक शिक्षा से भी युवकों में विकृति पैदा हो जाती है। मैं फिर कहूँगा कि अगर सैनिक शिक्षा का आधार सैनिकवाद है तब तो हमें सावधान हो जाना चाहिए। लेकिन अगर इससे अनुशासन, श्रद्धा और साहस पैदा होते हों तो उससे डरने की बात नहीं है।"

इसके बाद विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो० एटली बोचो ने कहा कि "हमारे सामने बड़ी कठिन समस्या है। शिक्षा का लक्ष्य सामाजिक बुराई के सुधार करने के साथ-साथ यह भी है कि सामयिक प्रश्नों के हल करने में मदद दें। आज दुनिया में तनातनी है, घृणा है और अन्याय है। सब कुछ इस बात पर निर्भर है कि हम इनका सामना कैसे करते हैं। आज संसार भारत की तरफ देख रहा है कि वह अपनी समस्याओं का हल किस प्रकार करता है। भारत से हमको बहुत कुछ आशा है।"

सैनिक विज्ञान के प्राध्यापक श्री डॉ० डॉ० सक्सेना ने कहा कि यह भ्रम है कि अनिवार्य सैनिक शिक्षा द्वारा अनुशासन सुचारु ढंग से आ जायेगा। लेकिन देश की सुरक्षा की दृष्टि से, कुछ सीमित काल के लिए सैनिक शिक्षा बहुत जरूरी है।

अन्तिम व्याख्यान श्री सुरेशराम का हुआ। उन्होंने क्षमा चाही और कहा कि "मैं उन लोगों में से हूँ, जो यह मानते हैं कि हथियारों की हिंसा-शक्ति द्वारा भारत देश की सुरक्षा या बचाव कदापि नहीं हो सकता। केवल शांतिमय उपाय और अहिंसात्मक असहयोग की पद्धति ही हमको अनुकूल बैठेगी। आज दुनिया का हिंसा पर से विश्वास उठ गया है, लेकिन अहिंसा पर विश्वास नहीं बैठा है। एक असमंजस की स्थिति है। सारा संसार इस इन्तजारी में है कि कोई देश आगे आये और अहिंसा के खातिर अपने को बलिवेदी पर चढ़ा दे। विज्ञान के युग में अहिंसा के अलावा कल्याण नहीं है। शांति-सेना के द्वारा इस शक्ति के संगठन की कोशिश हो रही है। हमारी पीढ़ी का काम है कि इस दर्द के हित में काम आये और हम खाद बन कर धरती माता से एकरूप हो जायें, ताकि इस धरती पर अहिंसा और शांति के बाग की बहार आ सके और उसकी सुगन्ध चारों ओर फैल जाय।"

चम्बल घाटी क्षेत्र में श्री नवकृष्ण चौधरी

गुरुशरण

अखिल भारत सर्व सेवा संघ के नवनिर्वाचित अध्यक्ष श्री नवकृष्ण चौधरी का पहला दौरा चम्बल घाटी क्षेत्र में हुआ। आप गोखले रिसर्च इन्स्टीट्यूट पूना में आयोजित परिसंवाद में भाग लेने के बाद २६ अप्रैल की रात्रि को ग्वालियर आये। वहाँ से दूसरे दिन, २७ अप्रैल को मुरैना जिले के कस्बा अम्बाह में आपने अपराह्न तीन बजे चम्बल घाटी क्षेत्र मे शान्ति के लिए कृतसंकल्प कार्यकर्ताओं से लगभग २ घण्टे तक विचार-विनिमय किया। आपने कहा कि इस क्षेत्र की परिस्थिति बड़ी जटिल है। यहाँ की समस्या के लिए काफी धैर्य और लगन से काम करना होगा। कार्यकर्ताओं की कठिनाइयाँ तथा पुलिस के दुर्व्यवहार की घटनाएं सुन कर आपने चिंता प्रकट की और उसके समाधान के लिए उच्च स्तरीय प्रयत्न करने के लिए कहा। पर आपका निश्चित मानना रहा कि सही हल तो जनता के निज के अभिक्रम से ही सम्भव है।

रात्रि साढ़े आठ बजे आपने अम्बाह में दिगम्बर जैन मेले के शान्ति सम्मेलन की अध्यक्षता की। आपके साथ इलाहाबाद के श्री सुरेशराम भाई भी थे। उनके तथा श्री बाबूलाल मित्तल के भाषण के बाद आपने भगवान महावीर की दिगम्बर मूर्ति को देखते हुए कहा कि आज का सच्चा मानवधर्म निरुपाधिक मानव का जीवन है। उपाधियों से रहित होकर व्यक्ति सादा और नेक जीवन बिताये। मैं पचीस-तीस साल तक भाषण देने का काम करता रहा हूँ, पर अब मानता हूँ कि इससे कुछ होने वाला नहीं है। केवल व्याख्यान देने के तरीके से काम आगे चलने वाला नहीं है। अब तो बस सुनना, मिलना-जुलना और यहाँ क्या चलता है, यह समझना ही मैं अपना काम मानता हूँ और बाकी के दिन इसी स्थिति में बिताना चाहता हूँ।

चम्बल घाटी क्षेत्र के कार्यकर्ताओं का निमंत्रण खुशी से स्वीकार कर लेने और दिगम्बर जैन पंचकल्याणक मेले में शामिल होने के पहले अवसर पर प्रसन्नता प्रगट करते हुए कहा, "मेरे माता पिता हिन्दू थे, इसलिये लोग मुझे हिन्दू कहते हैं, पर मेरा विश्वास तो मानवधर्म में है। जहाँ जिस धर्म में मुझे मानवता का दर्शन होता है उसी के साथ मैं अपने को पाता हूँ। महावीर तीर्थंकर दिगम्बर थे। दिगम्बर मानव ही सच्चा मानव है। दुनिया के विभिन्न देशों में तरह-तरह की पोशाक पहनने वाले हैं, गोरे योरुपियनों की पोशाक अलग, मुसलमानों की अलग, हिन्दुओं की अलग है। पर इन पोशाकों के भीतर हम सब केवल मानव हैं, वहाँ हिन्दु मुसलमान और ईसाई का फर्क नहीं है। अहिंसा का सिद्धांत अति प्राचीन है। भारतीय पुरातन सभ्यता में हम अहिंसा का मानव-जीवन में स्थान पाते हैं। उसमें एक अहिंसक सभ्यता का चित्र मिलता है, जिसका प्रमाण मोहनजोदड़ो और हड़प्पा की खुदाई है। उसमें किले, दुर्ग आदि का और लड़ाई के अस्त्रों शस्त्रों का कहीं नाम भी नहीं है। जब से भेद-भाव बढ़ने लगे ये किले और दीवारें बनने लगीं। आज सबके सब हिंसा के अजीब चक्कर में पड़ गये हैं। इससे बचने के लिए हमें शुद्ध आचरण के साथ अपने दिलों में अहिंसा की बात उतारनी होगी। यह बात भारत के लिए ही नहीं, वरन् दुनिया के लिए भी लागू होती है।"

अम्बाह के बाद श्री नवबाबू दूसरे दिन, २८ अप्रैल को आगरा पहुँचे। वहाँ आपने जेल में आत्मसमर्पणकारी बन्दी बागियों से भेंट की। उनकी तरह-तरह की असुविधाओं और गैरकानूनी ज्यादतियों की करुण कहानी सुन कर द्रवित शब्दों में कहा:

"आप सब लोगों को धीरज रखना चाहिए। किसी भी समस्या के हल के लिए बड़े-से-बड़ा त्याग करना पड़ता है। गांधीजी ने जीवन भर त्याग किया और अन्त में उसीके लिए बलिदान हो गये। हमें तरह-तरह की कठिनाइयाँ सहनी पड़ेंगी। कोई भी काम एक-दो मिनट में नहीं बनता। सरकार के भी कई विभाग हैं, तरह-तरह के लोग हैं। आप सबसे जाने-अनजाने में जो गलत काम हुआ, उसका फल भोगने की अपनी तैयारी रखनी चाहिए।"

जेल के बाद श्री नवबाबू ने आत्मसमर्पणकारी बागियों की निःशुल्क पैरवी कर रहे वकीलों से भेंट की। मुकदमे आज जिस तरह चल रहे हैं, उनका पूरा विवरण सुना। एक बार सब अभियोग एकसाथ न चला कर एक-एक मुकदमा चलाये जाने और एक से छूटने के बाद फिर कोई नया मुकदमा पेश करने आदि की बातें सुन कर आपने वकीलों से इस सम्बन्ध में एक विस्तृत वक्तव्य तैयार करने का अनुरोध किया।

दोपहर बाद आगरा नगर में काम कर रहे सर्वोदय-कार्यकर्ताओं की बैठक में आपने हर कार्यकर्ता का परिचय प्राप्त किया और उनसे सुने क्षेत्र के काम पर प्रसन्नता प्रकट की। भूदान-आंदोलन के दस वर्ष के बाद आज काफी गहराई के साथ ठोस काम करने और सातत्य की बहुत जरूरत है।

गोवर्धन होटल में आयोजित प्रेस कान्फ्रेंस में पत्रकारों को सम्बोधित करते हुए आपने इसी बात पर विशेष बल दिया कि आत्मसमर्पणकारी बागियों के साथ शासन की ओर से गैरकानूनी ज्यादती न होने पाये और जनता की ओर से उनके प्रति सहानुभूति और सद्भावना का व्यवहार हो। एक पत्रकार के प्रश्न पर कि क्या विनोबाजी नागा लैंड जा रहे हैं, इसके उत्तर में आपने कहा कि अगर सब लोग मिल कर के चाहें तो विनोबाजी जायेंगे। इस समय नागा लैंड में तीन शक्तियाँ काम करती हैं: (१) वहाँ नई बनी सरकार, (२) केन्द्रीय सरकार और उसकी सेना तथा (३) फिजो के नेतृत्व में काम करने वाले विद्रोही नागा। ये सब मिल कर चाहें तभी विनोबाजी उस क्षेत्र में जायेंगे। जन शक्ति के सन्दर्भ में हाल ही में हुए तेरहवें सर्वोदय-सम्मेलन में स्वीकृत निवेदन को आपने पढ़ कर सुनाया और उसकी व्याख्या की।

सन्ध्या समय सार्वजनिक सभा में पहले श्री सुरेशराम भाई ने हाल ही में हुए तेरहवें सर्वोदय-सम्मेलन डंगुरुरू की जानकारी दी और फिर उसी सन्दर्भ में लोक-चेतना पर बोलते हुए श्री नवबाबू ने कहा,

"आज जनता को खुद जिम्मेदारी के साथ अपना काम उठा लेना चाहिए। स्वराज्य का अर्थ ही है जिम्मेदारी का राज्य। आज जनता के जो प्रतिनिधि कहे जाते हैं, वे दरअसल जनता के बजाय राजनैतिक दलों के प्रतिनिधि हैं। ये राजनैतिक दल ही उम्मीदवार खड़े करते हैं। इनके बजाय जनता स्वयं मतदाता-मंडलों के जरिये अपने उम्मीदवार खड़ा करें तो आज की स्थिति में परिवर्तन संभव है।

मैं सरकार में काफी समय तक रहा, भली भाँति जानता हूँ कि सरकार कुछ नहीं कर सकती, जब तक कि जनता कुछ न करे। आज यह अवसर आया है कि जनता सोचे और आगामी चुनाव में मतदाता स्वयं अपने उम्मीदवार खड़ा करके अपने को राजनैतिक दलों के फन्दे से मुक्त करे।

आगरे से लौटते समय श्री नवबाबू के वाक्य थे कि "आगरे में कार्यकर्ताओं से मिल कर मैं स्वयं उत्साहित हुआ हूँ और चाहता हूँ कि जगह-जगह यहाँ जैसा व्यवस्थित और संगठित काम चले।"

जब बापू ने स्वयं काफी बना कर पिलाई !

साबरमती आश्रम में एक मद्रासी नौजवान आये हुए थे। वे बीमार पड़े। काफी पीने का उनका व्यसन था, लेकिन आश्रम में तो काफी मिलती नहीं थी, इसलिए वे भाई परेशान थे। लेकिन अपनी मुश्किल के बारे में किसी को कुछ नहीं कह सकते थे।

प्राकृतिक इलाज से उनकी तबियत सुधरने लगी। बापू उनका बराबर ध्यान रखते थे। एक रोज मिलने गये। बापू ने पूछा—"तुम तो अब अच्छे हो गये। क्या भूख लगती है? दोसा या उपमा दूँ।"

नौजवान: "एक कप काफी मिल जाय तो बहुत अच्छा हो।"

बापू खिलखिला कर हँस पड़े। बोले—"अरे भाई, अभी काफी का शौक कम नहीं हुआ?"

नौजवान शर्माया, दुखी हुआ।

बापू समझ गये और बोले, "अच्छा, एक कप काफी पीने से कोई खास नुकसान नहीं होगा। साथ में क्या लोगे? डबल रोटी दूँ?" काफी की छूट मिलते ही नौजवान खुश हो गया।

शाम का वक्त था। आश्रम का रसोड़ा तो उस समय बन्द रहता था। बीस मिनट हो गये, कोई काफी लेकर नहीं आया। नौजवान ने सोचा कि बा (कस्तूरबा) आराम करती होंगी।

इतने में बापू के पैरों की आवाज सुनाई दी। नौजवान ने देखा कि बापू के हाथ में काफी और टोस्ट (सेंकी हुई डबल रोटी) की 'ट्रे' थी। नौजवान बहुत शर्माया।

आश्रम में काफी नहीं पीना चाहिए, यह नियम बापू ने बनाया था। और बापू ही इस नौजवान के लिए काफी ले आये। खाट के पास स्टूल पर ट्रे रख कर बापू बोले—

"लो भाई, यह तुम्हारी काफी और टोस्ट। देखो, काफी अच्छी न हो तो शिकायत मत करना। काफी मैंने बनायी है। तुम्हारे जैसी बनाना तो मुझे कहाँ से आये! लेकिन खराब भी नहीं है। काफी अच्छी बनी है, इसका प्रमाण-पत्र मुझे दोगे न?" और बापू फिर हँस पड़े।

नौजवान इतना ही बोल सका: "बापू, आपने मेरे लिए इतनी तकलीफ की!"

बापू बोले—"अरे भाई, काफी ठंडी हो रही है, अभी बात मत करो। तुम तो जानते हो कि इस समय बा आराम करती हैं। उनको कैसे जगाऊँ? इसलिए मैंने काफी तैयार कर ली, तो इसमें क्या हुआ?" इतना कह कर बापू हँसते-हँसते चले गये।

नौजवान देखता रहा। उसकी आँखों से आँसू गिर पड़े।

इतनी स्वादिष्ट काफी उसने कभी नहीं पी थी।

—दिलखुश दीवानजी

("लोकजीवन" से साभार)

विनोबा-यात्री-दल से

—कुसुम देशपांडे

उस दिन रात में जब हम बिस्तर पर लेटे थे—आकाश स्वच्छ था, तारे चमकते थे। सृष्टि शांत थी। रात में करीब ग्यारह-साढ़े ग्यारह बजे नींद खुली, दरवाजे और खिड़कियां खड़-खड़ आवाज करती थी और बादलों की आपस में टक्कर हो रही थी। उसकी आवाज तो ऐसी होती थी मानो पहाड़ ढह रहा हो! बिजली तो क्षण-क्षण में नृत्य की झलक दिखाती रही। खिड़की के बाहर नारियल के पेड़ बिजली के उजाले में स्पष्ट दीखते थे। जोर से वर्षा आरम्भ हुई। ऊपर का छत टीन का था। उस पर बारिश हो रही थी, उसकी आवाज में लगता था मानों पत्थर बरस रहे हैं। दरवाजे और खिड़कियाँ बंद की और कम्बल ओढ़ कर फिर से सोने की चेष्टा की। पता नहीं, कब वातावरण शांत हुआ। सुबह तीन बजे गौतम की घंटी ने जगाया। बाबा के कमरे से गीता के 'विश्वरूप-दर्शन' के स्वर सुनायी दे रहे थे। कमरे के बाहर पांव रखा, किचड़ था, चन्द्रमा बादलों में छिपा था। ठण्डी हवा थी।

ठीक चार बजे बाबा के पीछे-पीछे सबने चलना आरम्भ किया। बादलों का नृत्य फिर से शुरू हुआ। जोर से हवा बहने लगी। चलते-चलते 'ईशावास्य' का पाठ हुआ। बारिश की बूंदें भी बरसने लगी। कदम तो बाबा के पीछे-पीछे बढ़ रहे थे। आखिर हवा का जोर से झोंका आया। बाल और गौतम के हाथ के लालटेन बुझ गये। सृष्टि पागल बनी थी। चारों ओर घना अंधेरा था! किसी ने टार्च जलायी, बाबा ने कहा—"जरूरत नहीं है।" बाल और गौतम के हाथ पकड़ कर बाबा चल रहे थे। बाबा ने काला कम्बल ओढ़ा, चारों दिशाएँ अन्धकारमय थी। ऊपर भी सब काला ही काला! सर्वत्र एक ही रंग था""घनश्याम का।

सौरेंद्र भाई ने ऊँची आवाज में गुरुदेव का गीत आरम्भ किया—

भुवनेश्वर हे—मोचन करो बंधन, सब मोचन करो हे।
प्रभु मोचन करो भय, सब दैन्य करो हे लय···
तिमिर रात्रि अंधयात्री···
सम्मुखे तब दीप्त दीप तुलीया धरो हे···

घनदा, गुणदा, गीता सब साथ दे रही थीं—"तिमिर रात्रि अंधयात्री" मानों गीतलहरी उधर मेघगर्जना के साथ स्पर्धा कर रही थी। वर्षा का जोर बढ़ा। गीत गाते हुए सब आगे बढ़ रहे थे। घंटा भर इस तरह चलते रहे। फिर धीरे-धीरे हवा शान्त हुई, वर्षा का जोर कम हुआ। पड़ाव पर पहुँचने तक रिम-झिम वर्षा हो रही थी।

अभी नौगाँव जिले में यात्रा हो रही है। असम प्रदेश का यह तीसरा जिला है। इस जिले की विशेषता यह है कि असम के महापुरुष शंकरदेव का जन्म-स्थान इस जिले में है। दूसरी बात यह है कि यह जिला गांधीजी के काम में हमेशा अग्रसर रहा है। विनोबाजी इसका जिक्र करते हैं और कहते हैं, "इन दोनों कारणों से आपको आधुनिक पराक्रम करना होगा। शंकरदेव का यह जिला है, इसलिए आप पर विशेष जिम्मेवारी आती है। पुराने इतिहास की कहानी कब तक सुनायेंगे? यह भूदान, शांति सेना भी गांधीजी का ही काम है। इसमें भी आप अग्रसर हो जाइये। शंकरदेव को आनन्द होगा, ऐसा दिव्य और भव्य काम आपको करना होगा।"

रास्ते में तीन-चार गाँव छोटे या बड़े मिलते हैं। बाँस के जंगल यहाँ बहुत हैं। घरों के सामने छोटा-सा आंगन होता है, साफ-सुथरा, लिपा-पोता। आंगन में मोगिया गुलाब, या कई तरह के रंग-बिरंगे फूल दीखते हैं। अहाते में सुपारी तथा नारियल, कटहल, केला इनमें से दो-तीन प्रकार के पेड़ भी होते हैं। अहाते के सामने बाँस को काट कर उसके अलग-अलग किस्म के घेरे बने होते हैं।

जब से यह जिला शुरू हुआ है, आँखें एक मंगल दृश्य करीब-करीब रोज ही देखती हैं। ब्राह्म मुहूर्त में चार बजे यात्रा शुरू होती है। रास्ते में गाँव मिलते हैं, उनके घरों के सामने मंगल दीप रखते हैं। केले के पेड़ का बड़ा-सा पत्ता, उस पर एक दीप, एक छोटी-सी टोकरी में चावल और सुपारी, धूप, अगरबत्ती आदि रखी जाती हैं। कुछ गाँवों में तो 'दीपावली' ही दीखती है! परिवार के सब लोग विनम्र मुद्रा से खड़े होते हैं—माताएँ नन्हें-मुन्नों को गोद में लिये खड़ी होती हैं, बूढ़े-बच्चे सभी खड़े होते हैं। घर के सामने से विनोबाजी गुजरते हैं तो सब बहनें 'उल्ध्वनि' करती हैं।

विनोबाजी कहते हैं—"यह जागृत जिला है। यहाँ भक्ति-भाव का दर्शन बहुत हो रहा है। सौराष्ट्र से कृष्ण का स्तवन यहाँ कम नहीं चालू है। पर एक बात ध्यान में लेनी होगी। 'नाम-घोषा' में एक शब्द ने मेरा ध्यान खिंचा है। माधव देव कहते हैं—"दिया मोक सेवा-रस सार"—'मुझे सेवा का रस दीजिये'—इसमें 'सेवा-रस' यह शब्द बिल्कुल नया और सुंदर है। इसे आप भारत में ले आइये। भक्तिरस हवा में रहता है और सेवारस जमीन पर प्रकट होता है। माँ के लिये भक्ति है, लेकिन सेवा न करों तो क्या लाभ? भक्ति है, अप्रत्यक्ष और सेवा है, प्रत्यक्ष। भक्ति अंतर में अव्यक्त है, सेवा प्रकट है।"

पिछले जुलाई माह में यहाँ जो अशांति हुई थी, उसके बाद शांति प्रचार के काम के लिये भारत के विभिन्न प्रदेशों से शांति-सैनिक आये थे। इस जिले में विदर्भ के श्री शुक्लाजी तथा ओड़ीसा की मंगला बहन शांति-सैनिक के नाते पिछले नौ महीने से काम कर रही हैं। ये दोनों अभी पदयात्रा में साथ ही हैं। सर्वोदय-सम्मेलन से श्रीमती आशादेवी भी लौटी हैं। इसके अलावा बिहार के श्री उदित नारायणजी, उनके दो साथी, कर्नाटक के श्री तिमण्णा नाईक भी साथ हैं। इनमें से बहुत से शांति-सैनिक विनोबाजी के आदेश के अनुसार अब यहाँ से लौट रहे हैं। इनके काम के बारे में यहाँ समाधान व्यक्त किया जा रहा है।

असम प्रदेश के खादी-ग्रामोद्योग के मंत्री श्री हजारिकाजी इसी नौगाँव जिले के हैं। वे भी साथ हैं। विनोबाजी उनसे कभी-कभी विनोद में कहते हैं—"इस जिले में से हजारों दानपत्र दीजिये और अपना नाम सार्थ कीजिये।" उनकी पत्नी श्रीमती पुष्पेश्वरीजी अ० भा० कॉंग्रेस कमेटी की तथा विधान-सभा की सदस्या हैं। १९४५–४६ में वर्धा के महिलाश्रम में उन्होंने तालीम पायी है।

विनोबाजी इधर कार्यकर्ताओं को बिहार के पराक्रम की गाथा सुनाते हैं। कहते हैं, "वहाँ मुझे तीन लाख लोगों ने साल में २२ लाख एकड़ जमीन दान दी। इसका मतलब यह हुआ कि वहाँ रोज औसत ३६० दानपत्र मिलते थे। तो क्या वहाँ गन्धर्व रहते हैं? बिहार में गंगा है तो यहाँ भी तो ब्रह्मपुत्र है। वहाँ के लोग उदार हैं, पर यहाँ के लोग भी कम उदार नहीं हैं। यहाँ भी मुझे ३६० दानपत्र रोज मिलने चाहिये। ब्रह्मपुत्र की धारा के समान दान-धारा बहने दो!"

यहाँ के कार्यकर्ता कोशिश करते हैं। एक दिन २०४ दानपत्र उन्होंने हासिल किये थे। ज्यादा-से-ज्यादा एक दिन ६ हजार कठा दान मिला है। ३००-४०० कठा दान करीब रोज मिल रहा है। यहाँ का बीघा कामरूप और गोआलपारा जिले से बड़ा है। यहाँ यह ४ बीघे का एक 'पूरा' होता है। और इधर जो दान मिल रहा है, वह 'पूरे' में कठे के हिसाब से मिल रहा है।

असम प्रदेश में महिलाओं को काफी आजादी है। स्वागत में, सभाओं में उनकी संख्या अधिक रहती है। असम प्रदेश की महिला समिति की शाखाएँ जगह-जगह हैं। छोटे-छोटे गाँव में भी हैं। इसलिये विनोबा की डायरी में मुलाकात के लिये जो नाम लिखे जाते हैं, उनमें महिला-समिति का नाम रहता ही है। ये बहनें सर्वोदय-पात्र की स्थापना का काम जगह-जगह कर रही हैं। विनोबाजी कहते हैं, "असम में मुझे महिलाओं से ही ज्यादा अपेक्षा है। लेकिन बहनों को महत्त्व का काम यह करना चाहिये कि जब बाहर दंगे होते हैं, तब बाहर आकर उनको रोकना चाहिये। बाहर दंगे हों और आप लोग अंदर बैठी रहेंगी तो मैं कहूँगा कि यह महिला-समिति नहीं, अबला-समिति है। दूसरा काम है, शांति के लिये सर्वोदय-पात्र। और तीसरा महत्त्व का काम यह करना चाहिये कि *आपको ऐसी उत्तम हिंदी सीखनी चाहिये* कि दिल्ली जाकर हिन्दी में व्याख्यान दे सकें, मतलब यह कि वाक्शक्ति विकसित करनी चाहिये।"

दो-चार दिन पहले अखबार में खबर थी कि मध्यप्रदेश के कॉंग्रेस के सामने अपने दिल का दर्द प्रकट करते हुए पंडित नेहरू ने कहा था कि "मुझे इस बात का दुःख है कि जब जबलपुर और दूसरे शहर में दंगे हुए, तब वह मिटाने के लिये कोई कॉंग्रेसवाला नहीं गया, न कोई कॉंग्रेसवाला जख्मी हुआ! जैसी बहनें परदे में बैठती हैं, वैसे आप अंदर बैठे रहे!"

इसका जिक्र करते हुए एक जगह महिला समिति के सामने विनोबाजी ने कहा, 'देखिये, पंडितजी ने बहनों की उपमा दी है। इसमें सिर्फ कॉंग्रेसवाले नहीं, बहनें भी बदनाम हुई हैं! अब आप पंडितजी को यह दिखाइये कि हम बहनें भी बाहर आती हैं और फिर चाहे कॉंग्रेसवाले आयें या न आयें—हम बाहर आती हैं और शांति करती हैं, दंगे रोकती हैं।"

एक जगह महिलाओं ने शिकायत की "आजकल शिक्षा में इतना दोष है कि बेटियों के जीवन में उसका कोई लाभ नहीं होता है।" विनोबाजी ने सुझाव दिया—"आज की शिक्षा में जो दोष है, उसकी पूर्ति आप करें। जो वहाँ नहीं पढ़ाते, वह आप पढ़ाइये। जैसे कि वहाँ धर्म-ग्रन्थ नहीं पढ़ाते हैं, वह आप पढ़ाइये और जगह-जगह, गाँव-गाँव में महिला-समितियाँ यह प्रस्ताव करें कि आज की शिक्षा में दोष है और सरकार को कहें कि ये दोष दूर करें। यह प्रस्ताव पत्र-रूप में सरकार के पास भेज दें। तब सरकार जानेगी कि यह महिलाओं की मांग है। यह लोकशाही का लक्षण है। इससे जनता की आवाज सरकार के पास पहुँचेगी तब सरकार को उस मुताबिक कदम उठाने होंगे।"

नौगाँव शहर में विशाल सभा हुई थी। उस दिन यहाँ हुए दंगे-फसाद के बारे में स्पष्ट शब्दों में अपनी राय प्रकट की: "कहते हैं कि इस जिले में अशांति है। खुशी की बात है। लेकिन 'अशांति' के भी अनेक अर्थ होते हैं। एक मनुष्य सुन्दर

जाग गया तो उसका प्रथम ध्यान सिगरेट की तरफ जाता है। एक मनुष्य जाग्रत हुआ तो परमेश्वर का स्मरण करता है। यह उसकी जाग्रति का ही लक्षण है। न सोया हुआ मनुष्य सिगरेट पीता है, न सोया हुआ मनुष्य परमेश्वर का स्मरण करता है और जाग्रति अपने स्वार्थ के लिये होती है और एक जाग्रति परमार्थ के लिये होती है। एक जाग्रति विश्व के हित के लिये होती है। इस जमाने में छोटी जाग्रति काम नहीं देगी। दुनिया नजदीक आ रही है, देश की सीमाएँ टूट रही हैं। अभी एक मनुष्य १०० मिनट में पृथ्वी की प्रदक्षिणा करके वापस लौटा है। पाँच-सात सौ मील ऊपर जाकर उतने घेरे में २५ हजार मील वह घूमा। एक फ्रेंच राजदूत ने हमसे कहा था कि बिहार के एक व्यापारी ने चन्द्र पर अपने होटल के लिये जगह 'रिजर्व' कर रखी है। और यहाँ के लोग समझते हैं कि बाहर के व्यापारी असम पर हमला करते हैं! कौन पूछता है आपके असम को! यहाँ तो चन्द्र की बात चलती है! इसलिये हमें व्यापक बनना चाहिये। भूमा बनना चाहिए। उपनिषद् ने कहा है, 'यो वै भूमा तत् सुखम्। नाल्पे सुखमस्ति' ग्राम, जिला, भाषा, सौंदर्य, तरह-तरह के अभिमान होते हैं। इसमें कोई सार नहीं है।

"अब हम 'जय हिंद' से 'जय जगत्' तक पहुँचे हैं," यह कह कर विनोबाजी ने आगे कहा, "गत साल यहाँ दंगे हुए। यह सुन कर हमें बहुत दुःख हुआ था। हमें दुःख किस बात का हुआ? यहाँ कुछ लोगों को मारा-पीटा, कुछ लोग मारे गये; इसका दुःख नहीं हुआ। मरने वाला मरता है, जिंदा रहने वाला रहता है, आत्मा को कुछ नहीं होता है। दुःख इस बात का हुआ कि ऐसे व्यापक जमाने में संकुचित हवा कैसी फैली! वैसे ऐसी मारपीट की घटनाएँ इतिहास में हर कौम ने की है। बुरी हवा में बुरे काम हो गये। दुःख इसी बात का है कि इतनी अव्यापक बुद्धि इस जमाने के जवानों ने कैसी दिखायी! वैसे आपको जीवन में चेतना की जरूरत पड़ती है तो लड़ो, झगड़ो, मारो, काटो, पड़े रहने के बदले जरा व्यायाम होगा! मैं तो वेदांती हूँ। इसलिये मुझे उसका दुःख नहीं है। शरीर चन्द दिन का है। लेकिन आपकी बुद्धि जड़ न बने, संकुचित न बने, व्यापक होकर आप चिंतन करें। आज असम प्रदेश के लोग बाहर जाते ही नहीं। उनको भारत में जाना चाहिए, सारे हिंदुस्तान पर प्रभाव डाल रहे हैं ऐसा दीखना चाहिये। आप असम में कैदी हो गये हैं। और जो बाहर से आते हैं उनकी शिकायत करते हैं। आप लोग बाहर क्यों नहीं जाते! आप भारत में जाइये, विश्व-व्यापक धर्म समझाइये।"

रँगामाटी नाम के एक छोटे-से गाँव में जहाँ अशांति में आग के गोले पहुँचे थे और बंगालियों की झोपड़ियाँ जलायी गयी थीं—वहाँ एक नई तालीम के स्कूल के शिक्षक विनोबाजी से मिले। विनोबाजी ने अपना दुःख प्रकट करते हुए कहा कि "आपके जैसे सर्वोदय-विचार में मानने वाले लोग जब दंगे होते हैं, तब घर में कैसे बैठते हैं? क्या वे डरपोक हैं? या उनकी इस दंग में सहानुभूति है? अगर उनकी सहानुभूति है तो वे सर्वोदयवाले नहीं हैं और अगर वे डरपोक हैं तो वे सर्वोदय विचार की रक्षा नहीं कर सकेंगे। फिर निकम्मे होंगे। यहाँ कुछ लोगों ने मदद की है। आधार दिया है। लेकिन वह व्यक्तिगत पुण्य कार्य हुआ है। लेकिन सर्वोदय एक समाज है। महिला-समिति, खादी भंडार, भारत-सेवक समाज है, ये सब मिलकर मदद के लिये दौड़े क्यों नहीं गये?

अभी सरकार ने मदद दी है—यद्यपि पूरी नहीं है। यहाँ कुछ लोगों के घर लूटे गये। वह सामान उनके घरों में पड़ा है। उनको पश्चात्ताप होता है और वे सामान पहुँचाते हैं—ऐसी एक भी घटना होगी तो बहुत बड़ी घटना हुई ऐसा माना जायगा।"

इस दंगे-फसाद के समय कहीं-कहीं मानव का दर्शन हुआ है। कुछ मुसलमान भाइयों ने, कहीं असमी भाइयों ने भी बंगाली लोगों को आधार दिया है। रँगामाटी गाँव उनमें से एक है।

कहीं-कहीं दुःखी, पीड़ित बंगाली भाइयों से भी विनोबाजी दान माँगते हैं। कहते हैं, "अब सारा शांत हुआ है ऐसा आप कहते हैं, आप जमीन के मालिक भी हैं तो आपको देना चाहिये। पानी से मति लीजिये—जैसे पानी अपने से नीचे ढाल की तरफ दौड़ता है, वैसे अपने से भी जो दुःखी हैं उनकी मदद आपको करनी चाहिए।"

कुकनी गोदाम नाम के छोटे-से गाँव में नौगाँव के अखबारों के प्रतिनिधि विनोबाजी से मिले थे। उनके साथ चर्चा करते हुए विनोबाजी ने कहा :

> "डिस्टरबेन्स आर नेवर जस्टीफाइड, इट इज बायलेन्स। अगर आप दंगे-फसादों का समर्थन करेंगे तो यहाँ आर्मी (फौज) चलेगी, कोई सरकार फिर नहीं चलेगी। आर्मी की 'ग्रिप' (पकड़) होगी, गवर्नमेंट खत्म होगी। निर्दोष लोगों की झोपड़ियों को आग लगाना 'जस्टीफाइड' (न्याय युक्त) नहीं है। आप भारत में जाकर देखिये, आपको निगाहें नीची करनी होंगी। आपने पाया कुछ भी नहीं, खोया ही बहुत है।"

दूसरे एक सवाल के जवाब में विनोबाजी ने कहा कि आपको यह बात ध्यान में रखनी चाहिए कि इस विज्ञान के युग में 'एसीमिलेशन' की प्रक्रिया धीमी (स्लो) होगी। पुराने जमाने में बिहार का आदमी यहाँ आता था तो उसका संबंध 'कॉन्टैक्ट' बिहार के साथ नहीं रहता था। फिर यहाँ की भाषा, रीतिरिवाज आदि वह सीखता था। 'एसीमिलेशन' जल्दी होता था। आज भी गौहाटी से कलकत्ता दो घंटे में जा सकते हैं। एक मराठी परिवार यहाँ आया है। उनकी दो बेटियाँ दिल्ली में और एक पूना में पढ़ रही हैं। वे दोनों खुद यहाँ सेवा करते हैं। पुराने जमाने में यह संभव नहीं था। मतलब, इस जमाने में 'एसीमिलेशन' होगा। लेकिन वह धीरे-धीरे होगा। तब तक आपको 'लविंग कोएक्जिस्टेन्स' (स्नेहसिक्त सहअस्तित्व) की अपेक्षा रखनी चाहिये। मान लीजिये, कल युद्ध छिड़ जाय। यह सीमा प्रदेश है, बाहर से आर्मी ज्यादा आयेगी। उस हालत में एसीमिलेशन और भी होगा।"

अ० भा० सर्व सेवा संघ के अध्यक्ष द्वारा नामजद सदस्य

अखिल भारत सर्व सेवा संघ के अध्यक्ष श्री नवकृष्ण चौधरी ने संघ के विधान व नियमावली की धारा ३ (अ) के अन्तर्गत निम्नलिखित को संघ का सदस्य नामजद किया है :—

१.	श्री ई० डब्ल्यू० आर्यनायकम्	सेवाग्राम	३२.	श्री जी० वेंकण्णन	कालीकट
२.	,, आशादेवी आर्यनायकम्	,,	३३.	,, रामस्वामी	तंजौर
३.	,, पूर्णचन्द्र जैन	काशी	३४.	,, आर० आर० केथान	गांधीग्राम
४.	,, वल्लभस्वामी	बंगलोर	३५.	,, रामेश्वरी नेहरू	नई दिल्ली
५.	,, निर्मला देशपांडे	नागपुर	३६.	,, वियोगी हरि	नई दिल्ली
६.	,, नारायण देसाई	काशी	३७.	,, प्यारेलालजी	नई दिल्ली
७.	,, अण्णासाहब सहस्रबुद्धे	सेवाग्राम	३८.	,, अमतुस्सलाम	राजपुरा
८.	,, अमलप्रभा दास	गौहाटी	३९.	,, गोरा बहन	शिमला
९.	,, चारुचन्द्र भंडारी	कलकत्ता	४०.	,, नृपेन्द्रनाथ बोस	कलकत्ता
१०.	,, दादाभाई नाइक	इन्दौर	४१.	,, रविशंकर महाराज	बोचासन
११.	,, ओमप्रकाश त्रिखा	करनाल	४२.	,, जुगतराम भाई	वेड़छी
१२.	,, एस० जगन्नाथन्	बाटलागुंडु	४३.	,, ठाकुरदास बंग	धामणगाँव
१३.	,, डा० द्वारकादास जोशी	बड़नगर	४४.	,, रघुनाथ श्रीधर धोत्रे	वर्धा
१४.	,, राधाकृष्णन्	सेवाग्राम	४५.	,, अप्पासाहब पटवर्धन	रत्नागिरी
१५.	,, राधाकृष्ण बजाज	काशी	४६.	,, जानकीदेवी बजाज	बम्बई
१६.	,, सिद्धराज ढड्ढा	काशी	४७.	,, वसंतराव नारगोलकर	पैनाड
१७.	,, शंकरराव देव	काशी	४८.	,, देवीप्रसाद भाई	सेवाग्राम
१८.	,, दादा धर्माधिकारी	काशी	४९.	,, श्रीराम चिंचलीकर	लोनावला
१९.	,, धीरेन्द्र मजूमदार बलिया (पूर्णियाँ)		५०.	,, राममूर्ति सिंह	नीरपुर
२०	,, क्षितीशराय चौधरी	बलरामपुर	५१.	,, डोनाल्ड ग्रूम	इंदौर
२१.	,, एस० आर० सुब्रह्मण्यन	द० अर्काट	५२.	,, रामचन्द्र बड़वी	मंगलोर
२२.	,, ब्रह्मदेव वाजपेयी	कानपुर	५३.	,, देवेन्द्र गुप्ता	इन्दौर
२३.	,, बाबूलाल मित्तल	आगरा	५४.	,, बनवारीलाल चौधरी	सिहावा
२४	,, रा० कृ० पाटिल	नागपुर	५५.	,, रामानन्द दुबे	रायपुर
२५.	,, के० अरुणाचलम्	बाटलागुंडु	५६.	,, छितरमल गोयल, खादीबाग (जयपुर)	
२६.	,, डा० सूर्यनारायण	तेनाली	५७.	,, अमृतलाल नानावटी	नई दिल्ली
२७	,, रमादेवी चौधरी	कटक	५८.	,, मार्जरी साइक्स	कोटगिरी
२८.	,, मालतीदेवी चौधरी	अनुगुल	५९.	,, जी० रामचन्द्रन्	नई दिल्ली
२९.	,, ब्रजसुन्दर दास	गुण्डरीगुडा	६०.	,, रतनदासजी	रायगढ़
३०.	,, कृष्णराज मेहता	काशी	६१.	,, रावसाहब पटवर्धन	पूना
३१.	,, कपिल भाई	लखनऊ	६२.	,, काशिनाथ त्रिवेदी	इगतपुरी

सदस्यता की शर्तें

धारा ३ (आ) के अनुसार संघ की सदस्यता की निम्नलिखित शर्तें हैं :—

(१) जिन्हें संघ के उद्देश्य मान्य हों।

(२) जो आदतन खादीधारी हों, अर्थात् खुद के या घर के काते सूत की प्रमाणित खादी पहनते हों।

(३) नियमित कताई करते हों।

(४) किसी राजनैतिक पक्ष के सदस्य न हों।

छिंदवाड़ा में सूत्रांजलि

जिला सर्वोदय-मंडल, छिंदवाड़ा से प्राप्त रिपोर्ट के अनुसार, जिले में इस बार दो बक्त सूत्रांजलि-संग्रह का कार्य हुआ। पहली बार जब विनोबाजी इस जिले में आये थे, तब उनको १०० गुंडियों का दान दिया था। दूसरी बार १२ फरवरी के सर्वोदय-मेले के अवसर पर ३०४ गुंडियाँ एकत्रित हुईं। इसकी कुल रकम ५० रु० १२ नये पैसे होती है। इसका छठा हिस्सा अ० भा० सर्व सेवा संघ और छठा हिस्सा प्रांतीय सर्वोदय-मंडल को भेज दिया गया।

असम सर्वोदय-मंडल के निर्णय

ता० १५ और १६ अप्रैल को असम नई तालीम-केन्द्र शिविरा में असम सर्वोदय-मंडल का विशेष अधिवेशन विनोबाजी के मार्गदर्शन में हुआ।

ता० १५ को सुबह विनोबाजी ने सर्वोदय-मंडल के सदस्यों के साथ परिचय करके मंडल के गत साल के कार्य की चर्चा की और जल्दी-से-जल्दी भूदान और ग्रामदान में मिली हुई जमीन के वितरण की व्यवस्था, शांति-सेना का संगठन तथा सेवा-कार्य के विस्तृत कार्यक्रम को लेकर बाबा की पदयात्रा का पूरा लाभ उठाने के लिए उपदेश दिया।

विनोबाजी के उपदेश के अनुसार ता० १८ अप्रैल से ता० १ जून के अन्दर भूमिदान और ग्राम-दान में मिली हुई जमीन स्थानीय जनता और रचनात्मक कार्यकर्ताओं तथा अन्य दलसमूह के सहयोग से वितरण करने के लिए कार्यक्रम बनाया गया। हरएक महकमे में निर्दिष्ट लोगों पर जिम्मेदारी सौंपी गयी।

भूमि-वितरण का संयोजन श्री माणिक हजारिका करेंगे और १ जून को बाबा को उसकी जानकारी देंगे।

उत्तर लखीमपुर जिले में ग्रामस्वराज्य-स्थापना के बारे में चर्चा करके बाबा के उत्तर लखीमपुर में प्रवेश करने के पहले ही याने मई माह के पहले सप्ताह से प्राथमिक स्तर में गाँव-गाँव में ग्राम-स्वराज्य स्थापना का आन्दोलन चलाने का निश्चय किया गया।

इस कार्यक्रम में सभी दलों, संस्थाओं और मुख्य लोगों से सक्रिय सहायता पाने के लिए एक सर्वदलीय सम्मेलन हुआ। सम्मेलन की व्यवस्था श्री हरेश्वर भूयाँ, श्री सोमेश्वर फुकन और श्री भुवनचन्द्र दास करेंगे।

मंडल के एकमात्र मुखपत्र 'भूदान-यज्ञ' के बारे में चर्चा करके शीघ्र ही २५ सदस्यों ने ११२५ ग्राहक बनाने के लिए संकल्प किया।

मंडल के समितियों के बारे में निर्णय हुआ कि प्राकृतिक चिकित्सा समिति के संयोजक श्री देवेश्वर बरुवा के बदले श्री रूपलाल दास को मनोनीत किया जाय। ग्राम स्वराज्य, नई तालीम के सभापति श्री नवीनचन्द्र महंतजी किया।

पूज्य बाबा की पदयात्रा-कार्यक्रम के बारे में चर्चा करके तय हुआ कि श्री सोमेश्वर शास्त्री के मार्ग-दर्शन में बाबा की पदयात्रा के पहले प्रचार व पूर्व तैयारी के लिए एक टोली निकलेगी।

पिछले अशांति के बाद असमी और बाहर से आये हुए शरणार्थियों के बीच में जो अविश्वास हुआ, मनोमालिन्य पैदा हुआ उसके निराकरण के लिए श्री अमलप्रभा दास, श्री सोमेश्वर शास्त्री, श्री लीला बरा और श्री नवीन भागवती कोशिश करेंगे।

अधिवेशन के साथ सर्वोदय युवक संगठन-समिति की बैठक श्रीमती अमलप्रभा दास के मार्गदर्शन में हुई। स्कूल, कालेज, संस्था आदि के युवकों के बीच में सर्वोदय-प्रचार करने के लिये आठ युवक-शिविर चलाने का तय हुआ।

असम शाखा गांधी-निधि के कार्यकर्ताओं का एक अधिवेशन विनोबाजी की उपस्थिति में हुआ। अधिवेशन में असम सर्वोदय-मंडल, गांधी स्मारक निधि और कस्तूरबा स्मारक निधि के १२५ कार्यकर्ता उपस्थित थे।

असम सर्वोदय-मंडल —रविकान्त
गौहाटी

भूदान-भूमि पर श्रमदान से कूआँ

पंजाब के फिरोजपुर तहसील के फतूवाल ग्राम में २५ अप्रैल को भूदानी किसानों की ओर से नये कूएँ का उद्घाटन श्री टेकचंदजी ऑनिल द्वारा हुआ। कुछ वर्ष पहले इस ग्राम में श्री टेकचंदजी द्वारा भूदान में दी गयी ४० एकड़ जमीन ८ भूमिहीनों में बाँट दी गयी थी। इस जमीन पर पहले केवल एक ही कूआँ था, जिसके कारण पूरी जमीन को पानी नहीं मिल सकता था। इसलिए कूआँ बनवाने के लिए सरकार से तकावी की सहायता माँगी गयी थी। लेकिन जब वह नहीं मिली तो भूदानी किसानों ने श्रम करके यह काम करना तय किया। श्री सहाग और नवाब, इन दो भूदानी किसानों ने मजदूरी करके रुपया जमा करके एक हजार रु० लागत से यह नया कूआँ बनाया है। पंजाब के वित्तमंत्री डा० श्री गोपीचंद भार्गव ने भेजे अपने संदेश में किसानों के श्रम की सराहना की।

प्रदेश की पदयात्राएँ

बिहार सर्वोदय पदयात्रा टोली

लगभग दो महीने तक ११ थानों में बिहार प्रान्तीय अखण्ड सर्वोदय-पदयात्रा टोली द्वारा क्रमशः श्री वैद्यनाथ प्रसाद चौधरी, श्री व्रजमोहन शर्मा, श्री मोतीलाल केजरीवाल एवं श्री महेन्द्रजी के नेतृत्व में २२३ मील की पदयात्रा हुई। इस अवसर पर १७५ दानपत्रों के द्वारा १५०० कट्ठे का दान-पत्र मिला। भूदान-यज्ञ ४१ के ग्राहक बने। १६८ रु० थैली में मिले। २७५ रु० का साहित्य बिका एवं ५०० रु० की खादी बिकी। कुल ५८ पड़ाव हुए। १६७ ग्रामों से सम्बन्ध हुआ। विनोबाजी का नया मंत्र "दान दो इकट्ठा बीघे में कट्ठा" और 'दाता स्वयं वितरण कर दें', इससे जनता में काफी उत्साह आया।

टोली मुंगेर, पटना और गया जिले में घूमती हुई हजारीबाग जिले के झुमरी-तिलैया ग्राम में प्रवेश करेगी, जहाँ बिहार प्रान्तीय सर्वोदय-सम्मेलन होने जा रहा है।

स्मरण रहे यह टोली १५ अगस्त '५८ से निरंतर बिहार में पदयात्रा कर रही है। स्वर्गीय लक्ष्मी बाबू की स्मृति में अब तक सात हजार मील की पदयात्रा हुई।

सामूहिक कटाई और श्रमदान

श्री विजय बहादुरसिंह (प्रतिनिधि विन्ध्य प्रदेश भूदान-यज्ञ बोर्ड, जिला सीधी) अपनी रिपोर्ट में कठनार से लिखते हैं: ३ से ५ अप्रैल तक नौड़िया ग्राम में १९ भाइयों के साथ सामूहिक कटाई की गयी। भोजन फसल-मालिक के घर करते थे। ६ से ९ अप्रैल तक सार्वजनिक रूप से नौड़िया ग्राम में श्रमदान करके एक मील सड़क तैयार की गयी। सर्वोदय-पात्र गाँव में रखे। एक लोकमित्र बने।

गुजरात सर्वोदय-पदयात्रा

गुजरात प्रदेश में गत १६ महीनों से श्री हरीशभाई व्यास के मार्गदर्शन में एक अखण्ड पदयात्रा चल रही है। पदयात्रा में श्री बलवन्त देसाई, सुमंत व्यास, मोहन भाई मांडविया, आताभाई महेर आदि सेवक निष्ठापूर्वक घूम रहे हैं। पदयात्रा का शुभारंभ खेड़ा जिले से हुआ था। अब जाम-*नगर जिला समाप्त करके जूनागढ़ जिले* में पदयात्रा चल रही है। अब तक २१४० मील की पदयात्रा में ३४२ गाँव और ६३ नगर में हो जाना पड़ा। इस बीच ४६ श्रमयज्ञ, ६१ विचार-शिविर हुए। ११,०८३ रु. की साहित्य-बिक्री हुई। 'भूमिपुत्र', 'त्रिविध' आदि पत्रों के कुल ९२४ ग्राहक बनाये। २६ अभ्यास-वर्ग भी चलाये, जिसमें रवीन्द्रनाथ की कविता, जे० कृष्णमूर्ति का तत्त्वज्ञान, श्री अरविन्द की साधना, लोकतंत्र का विकास और संशोधन आदि विषयों पर चर्चा हुई। ४ एकड़ ७ गुंठा एकड़ भूदान मिला। २३८ एकड़ ३५ गुंठा भूमि का वितरण किया गया। १०४ एकड़ भूमिदान को रद्द किया। १ कूपदान, २ संपत्ति-पत्र और २५३ रु २६ नये पैसे की सेवक-सहायता मिली।

प्राप्ति-स्वीकार

(१) महादेवभाई की डायरी :

प्रथम खंड (१९१७ से १९१९) सं०—नरहरि द्वा० परीख, अनुवादक—रामनारायण चौधरी, पृष्ठ-संख्या ५४६, मूल्य पाँच रुपया।

(२) कपास ले० दादाभाई नाईक, पृष्ठ-संख्या १२+२६६; मूल्य दो रुपया पचास नये पैसे।

(३) अ० भा० सर्व सेवा संघ-अधिवेशन विश्वनीडम्, बंगलोर विवरण पृष्ठ-संख्या २१४, मूल्य एक रुपया।

(४) स्वराज फॉर दी पीपल (अंग्रेजी), ले० जयप्रकाश नारायण। पृष्ठ-संख्या ३२, मूल्य एक रुपया।

(५) विथ विनोबा (अंग्रेजी) ले० डोनाल्ड ग्रूम, पृष्ठ-संख्या ६०, मूल्य पचहत्तर नये पैसे

प्रकाशक—अ० भा० सर्व सेवा संघ-प्रकाशन, राजघाट, काशी

---

१४ मई तक विनोबाजी का पता :

मार्फत—श्री चन्द्रधर गोस्वामी
मंत्री, विनोबा स्वागत समिति
तेजपुर (असम)

इस अंक में

श्रीकृष्णदत्त भट्ट, अ० भा० सर्व सेवा संघ द्वारा भार्गव भूषण प्रेस, वाराणसी में मुद्रित और प्रकाशित। पता : राजघाट, वाराणसी-१, फोन नं० ४१९१
वार्षिक मूल्य ६) पिछले अंक की छपी प्रतियाँ ११,६०० : इस अंक की छपी प्रतियाँ ११,१०० यह अंक : १५ नये पैसे

इस बात का मुझे दुःख नहीं है। यह शरीर तो चंद दिन का ही होता है। लेकिन हमारी बुद्धि जड न बने। हम संकुचित न बनें, व्यापक बनें, व्यापक होकर चिंतन करें। इसकी मुझे चिंता है।

आज भारत-दर्शन भी छोड़ना पड़ेगा। विश्वव्यापक दर्शन होना चाहिये। फिर पुरानी, सडी हुई राजनीति जवानों को आकर्षित नहीं करेगी। पुराना धर्म नहीं रहेगा, याने 'पूरब की तरफ मुँह करके प्रार्थना करना कि पश्चिम की तरफ मुँह करके? अरबी में करना है कि संस्कृत में? भगवान् अरबी समझता है कि संस्कृत समझता है या अम्मी?' ऐसे संकुचित विचार रहेंगे तो कैसे होगा? कश्मीर में हमने अत्यंत स्पष्ट शब्दों में कहा था: "कश्मीर आपके बाप का था, होगा; लेकिन अभी आपका नहीं है। वह सबका है।" यह भूदान का विचार है। आस्ट्रेलिया के एक भाई हमारे पास संदेश मांगने लगे। हमने उनसे कहा, "आस्ट्रेलिया में भूदान चलाइये।" उन्होंने पूछा, "कैसे? वहाँ तो भूमिसमस्या नहीं है।" मैंने कहा, "आपके प्रदेश में आज जितने लोग रह रहे हैं, उससे दस गुना अधिक लोग रह सकते हैं। आप जापान को आमंत्रण दे दीजिये। यह हो गया भूदान का संदेश।" मतलब यही कि आस्ट्रेलिया सिर्फ आस्ट्रेलियावालों का नहीं, वह सारी दुनिया का है। हिंदुस्तान भी सारी दुनिया का है। कश्मीर कश्मीर का है, भारत का है और विश्व का भी है। असम असम का, भारत का और विश्व का है। अभी गुजरात में पेट्रोल मिला। पुराना जमाना होता, तो क्या होता? गुजरात के लोग कहते, यह पेट्रोल हमारे बाप का है! और दूसरे प्रदेश के लोग भी कहते कि अच्छा, तुम पेट्रोल में जल मरो! लेकिन अभी गुजरात ऐसा नहीं कह रहा है। वह कहता है—यह पेट्रोल गुजरात का भी है और भारत का भी है। यह बात अलग है कि उसका लाभ उस प्रांत को भी मिलेगा। अब यह जमाना बहुत जल्दी आ रहा है कि यह पेट्रोल सारे विश्व का होगा।

उस आगामी विश्व का आवाहन करने वाले हमारे जवान होने चाहिए! साठ सत्तर साल पहले बंगाल में ऐसे पुरुष थे कि जिनका असर सारे भारत पर पड़ता था—रामकृष्ण, विवेकानंद, अरविंद, रवींद्रनाथ। आज कौन है बंगाल में? पंजाब में भी आज कौन है? बचपन में हम मराठी में लाला लाजपतराय और स्वामी रामतीर्थ के बारे में पढ़ते थे। तो हमें लगता था कि लालाजी तो हमारे हैं। अभी पंजाब में हमने पूछा कि आज ऐसा कौन है? इसका मतलब यही हुआ न कि स्वराज्य के बाद हम छोटे पड़ गये। स्वराज्य के पहले हमारे सामने अखिल भारत का उद्देश्य था। इसलिये सारे भारत के बारे में सोचते थे। अब स्वराज्य के बाद हमें विश्वव्यापी बनना चाहिये। हमारे सामने विश्वव्यापी मिशन होना चाहिये। गांधीजी ने इसकी तैयारी पहले से ही की थी। और इसीलिये स्वराज्य के बाद 'सर्वोदय' का मंत्र दिया था।

आज हम हमारी पार्टी का सोचते हैं-पार्टी का उदय कैसे होगा, यह सोचते हैं। पार्टी में भी ग्रुप होते हैं। अब स्वराज्य आया है तो सर्वोदय नहीं, 'ग्रुपोदय' की बात सोचते हैं। पामरता की सीमा है!

यह इसलिये कि स्वराज्य के बाद हम 'निजोदय' में लगे हैं। 'मेरा अपना उदय हो, मुझे लाइसेंस मिले, ठेका मिले, पद मिले।' बाबा पदयात्रा करता है। बीच में कॉंग्रेस वालों ने भी पदयात्रा शुरू की थी। एक भाई ने कहा, "कॉंग्रेस की पदयात्रा पद-प्राप्ति के लिये है।" पाँच-सात दिन पदयात्रा करके चुनाव के पहले रिपोर्ट देना—'मैं तीन दिन बाबा के साथ पदयात्रा में था, उसकी यह फोटो है। एक दिन हरिजन बस्ती में झाड़ू लगाया था, उसकी यह फोटो है। अब हमें टिकट मिलना चाहिये!' यह सर्वोदय नहीं, 'निजोदय' है। हम चाहते हैं कि इस दलदल से हमारे जवान बाहर आयें। 'यह दल वह दल' सारा कीचड़ हो गया है।

मैं जवानों से बहुत आशा रखता हूँ। आप विश्व-व्यापक उद्देश्य रख कर हिंसा से लड़ना चाहें तो भी मैं पसंद करूँगा। अहिंसा या हिंसा यह गौण है। विश्वव्यापक बुद्धि होना, यह प्रधान है। यह अलग बात है कि विश्वव्यापक बुद्धि में अहिंसा हो जाती है।

पर इसमें जवानों का कोई दोष नहीं है, तालीम का दोष है। आजकल जवान अखबार पढ़ते हैं। उसमें जो लिखा है, उसको वेदवाक्य मानते हैं! जो कुछ उसमें लिखा जायेगा वह सही मानेंगे। पाकिस्तान के अखबारों में हिंदुस्तान की निंदा आती है, हिंदुस्तान के कुछ अखबारों में पाकिस्तान की निंदा आती है। यही बात रूस और अमेरिका में होती है। दोनों देशों के अखबार एक-दूसरे के खिलाफ लिखते हैं! उन-उन देशों के पढ़ने वाले जवान उस पर विश्वास कर लेते हैं। गंभीर अध्ययन खतम हो गया है। दोनों बाजू से विश्वव्यापक चिंतन करने की जरूरत है।

हिंदुस्तान के जवान विश्वव्यापक चिंतन करेंगे, तो हिंदुस्तान बचेगा!

गौहाटी, असम
२५-४-'६१

भारत सफाई मंडल

श्री अप्पासाहब पटवर्धन कई सालों से भंगी-मुक्ति की दृष्टि से अनेक कार्यक्रम आयोजित कर देश की जनता का ध्यान उस तरफ मोड़ रहे हैं, यह बात देश के काफी लोग जानते हैं। जब वे गांधी स्मारक निधि की भंगी-मुक्ति समिति के अध्यक्ष थे, तब से उनके आयोजनों में भारत सफाई मंडल प्रस्थापित करने का भी एक आयोजन था और १९६० के फरवरी से उसकी शुरुआत भी हुई। उस मंडल के सदस्य वे ही बन सकते हैं, जो कम से कम एक साल के लिए हर रोज नियमित रूप से १५ मिनट सफाई का काम करने का संकल्प करते हैं और प्रतिज्ञा-पत्र भर कर भेज देते हैं। मार्च '६१ के अंत तक सफाई-मंडल के १२९ सदस्य बने थे। श्री अप्पासाहब उस मंडल के अस्थाय मंत्री थे। मंडल के सदस्यों को यह भी बताया गया था कि वे अपने काम का विवरण २ अक्टूबर याने 'गांधी-जयंती' के अवसर पर भेज दिया करें। उसके अनुसार गत अक्टूबर को ६५ सदस्यों के विवरण आये थे, जिसका एक संक्षिप्त विवरण 'सफाई-दर्शन' पत्रिका में प्रकाशित किया गया था।

देश में निम्न प्रकार कुल १२९ सदस्य बने।

पंजाब–६	मध्य प्रदेश–१०
उत्तर प्रदेश–१४	उड़ीसा–१
राजस्थान–६	बंगाल–२
दिल्ली–३	बिहार–१०
गुजरात–७	मैसूर–३
बंबई–५	महाराष्ट्र–६२

ज्यादातर सदस्य लोकसेवक या सर्वोदय-कार्यकर्ता ही होने के कारण सर्वोदय-संमेलन के अवसर पर ही सभा लेने में सुविधा होती है। इसलिए इस बार सर्वोदयपुरम् (आंध्र) में होने वाले सर्वोदय-समेलन के अवसर पर ता० १९ अप्रैल को मंडल के सदस्यों की सभा श्री सिद्धराज ढड्ढा की अध्यक्षता में हुई। सभा में मंडल के लगभग २५ सदस्य और इस विषय में रुचि रखने वाले अन्य लगभग सौ भाई-बहनें उपस्थित थीं। श्री अप्पासाहब ने मंडल के चालू कार्य में और प्राप्त विवरणों के बारे में संक्षिप्त जानकारी दी। उसके बाद भंगी-मुक्ति व सफाई-कार्यों में दिलचस्पी रखने वाले कुछ सज्जनों ने अपने विचार व अनुभव व्यक्त किये। सभा में नीचे दिये अनुसार विभिन्न प्रदेशों के २१ भाई-बहन प्रतिज्ञा पत्र भर कर मंडल के सदस्य बने।

पंजाब–२	उत्तर प्रदेश–६	बिहार–६
राजस्थान–१	मैसूर–१	महाराष्ट्र–१
मध्यप्रदेश–६	प० बंगाल–१	आंध्र–२

सभा में पर्याप्त चर्चा होने के बाद एक समिति बनायी गयी, जो मंडल के कार्यक्रमों के बारे में विचार करेगी व मंडल के सदस्यों को भंगी-मुक्ति तथा सफाई-कार्यक्रमों के बारे में मार्गदर्शन किया करेगी।

समिति के सदस्य इस तरह हैं:

(१) श्री अप्पासाहब पटवर्धन, अध्यक्ष
(२) श्री कृष्णदास शाह, मंत्री
(३) श्री वल्लभस्वामी, सदस्य
(४) श्री दामोदरदासजी मूँदड़ा ,,
(५) श्री करणभाई ,,
(६) श्री चतुर्भुज पाठक ,,
(७) श्री प्रभाकरजी ,,

इस प्रकार समिति बन जाने के बाद श्री अप्पासाहब ने भारत सफाई-मंडल का दफ्तर श्री कृष्णदास शाह को सुपुर्द कर दिया व अब मंडल का कार्यालय बंबई में इस पते पर रहेगा। पता–११४ आ, विट्ठलभाई पटेल रोड, बंबई–४

इस समिति की पहली बैठक ता० २० अप्रैल को सफाई-शिविर में श्री अप्पासाहब की अध्यक्षता में हुई। उसमें पहले 'सफाई-दर्शन' मासिक पत्र चलाने के बारे में चर्चा हुई। तब हुआ कि 'सफाई-दर्शन' मासिक और भी एक वर्ष के लिए चलाया जाय तथा उसके खर्च के लिए गांधी स्मारक निधि से प्रार्थना की जाय। इसके अलावा श्री अप्पासाहब व मैं पहले सेवापुरी, उत्तर प्रदेश में और बाद में बिहार में सफाई-शिविरों का आयोजन करें, यह तय किया गया। उनके बाद शिविर के कुछ कार्यकर्ताओं को साथ रख कर उनको तालीम दी जायगी। यह समिति अगले सर्वोदय-सम्मेलन तक काम करेगी।

मंडल के सदस्य बनने के लिए बंबई के पते से आवेदन-पत्र मँगाये जा सकते हैं।

—कृष्णदास शाह
मंत्री
भारत सफाई मंडल

लोकतांत्रिक समाजवाद

लेखक–श्री अशोक मेहता; प्रकाशक–अ० भा० सर्व सेवा संघ, प्रकाशन, काशी; मूल्य–१ रु० ५० नये पैसे।

प्रस्तुत पुस्तक के लेखक जाने-माने समाजवादी नेता हैं, जिनके विचारों का महत्त्व हो सकता है। लेखक ने मार्क्सवाद और गांधीवाद को दृष्टि में रखते हुए आनुषंगिक विषयों पर अपना मत प्रकट किया है। नैतिकता के प्रति उनका आग्रह रहा है। वह उद्देश्य तथा आदर्श के साधनों की पवित्रता में अपनी आस्था प्रकट करता है। लेखक की मान्यताएँ विचारणीय हैं। आशा है, यह पुस्तक उन पाठकों के विशेष काम की होगी जो राजनीति के लिए चिन्तन किया करते हैं।

—'सम्मेलन पत्रिका', प्रयाग

ब्रह्म सत्यं जगत् स्फूर्तिः जीवनं सत्यशोधनम्

भूदानयज्ञ

लोकनागरी लिपि*

मनुष्य का लक्षण

हमारी समझ में मनुष्य के जीवन में कोओी आनंद है तो वह परोपकार का ही आनंद है। कुछ लोग कहते हैं की दूसरों के सुख से सुखी होना और दूसरों के दुख से दुखी होना यह सत्पुरुष का लक्षण है। हम अैसा नहीं समझते, हम समझते हैं की दूसरों के दुख से दुखी और दूसरों के सुख में सुखी होना, यह मानव का लक्षण है। अपने सुख से सुखी और अपने दुख से दुखी होना यह जानवर का लक्षण है। यह बात बहुतों के ध्यान में नहीं आती है। दूसरों के दुख में दुखी होने वाले 'वीरले' होते हैं अैसा कहते हैं। लेकीन यह पुराने जमाने में होगा; अीस जमाने में मनुष्य का लक्षण ही है की दूसरों के दुख में दुखी और दूसरों के सुख से सुखी होना। अैसे मनुष्य वीरले नहीं, सब ही होने चाहीअें। आज का जमाना ही अैसा है की अेक-दूसरों की मदद नहीं करेंगे तो सुख नहीं पा सकेंगे। अगर गांव में यह भावना आयेगी तो गांव आगे बढ़ेगा। परस्पर सहयोग से कभी कीसी का नुकसान नहीं हुआ है। परस्पर का आधार प्रेम और करुणा है। अीसी से मनुष्य का जीवन चलता है।

मोतीहारी, १२-४-'६१ —वीनोबा

*लिपि-संकेत : ि = ी; ी = ी; ख=ख, संयुक्ताक्षर हलंत चिह्न से।

कार्यकर्ता क्या करे ?

श्रमभारती, खादीग्राम से निकलने वाले बुलेटिन "आपस की बात" के ताजा अंक में खादीग्राम परिवार के एक साथी श्री कृष्णकुमार लिखते हैं :—

"इस वर्ष सात साल पूरे होंगे, जब कि मेरा संबंध इस आन्दोलन से हुआ। १९५४ में विनोबाजी बिहार में घूम रहे थे। भू-प्राप्ति तथा भू-वितरण का काम तेजी से हो रहा था। हम भी भू-प्राप्ति के काम में जुट गये। भूदान की एक लहर थी, वातावरण था, परिस्थिति थी। सैकड़ों कार्यकर्ता इस काम में लगे। फिर भी कार्यकर्ताओं की कमी महसूस होती थी।

"भूदान तथा ग्रामदान ने नेताओं में विश्वास, कार्यकर्ताओं में साहस, गरीबों में आशा तथा मालिकों में भय और कौतूहल का संचार किया।"'

ये सारी बातें सन् '५४ की हैं। आज सन् '६१ है। वातावरण और परिस्थिति बदली हुई नजर आती है।

आन्दोलन की गति धीमी हुई, क्योंकि आन्दोलन गहराई में जाने लगा। कार्यकर्ता आन्दोलन की गहराई के साथ उस गहराई तक नहीं गये। उनको गहराई में जाने में डर लगा। अब वे अपना सहारा ढूँढने लगे। जिन्हें संस्थाओं का सहारा मिल गया, वे वहाँ चले गये और बाकी बिखर गये। कुछ छिटपुट विचार का प्रचार करते रहे। संयोजन का अभाव हुआ, संगठन टूट गया। तंत्र-मुक्ति और निधि-मुक्ति के अधूरे विचार ने बड़ी गलतफहमी फैलायी। यह विचार हमारे लिए नया था। अब तक की क्रांतियों में कार्यकर्ता ही आन्दोलन की रीढ़ रहा है। वह संगठन बनाता आया है। संगठन से कार्यकर्ता बल प्राप्त करते थे, और कार्यकर्ताओं से संगठन को शक्ति मिलती थी।

"हमारा यह प्रयत्न है कि जनता इस आन्दोलन को अपना आन्दोलन मान ले। अब अहिंसक क्रांति कार्यकर्ताओं के बस की चीज नहीं रह गयी है।"' इस हालत में कार्यकर्ता का आन्दोलन से और जनता से क्या संबंध रह जाता है? कार्यकर्ता क्या करे? क्या वह अप्रत्यक्ष रूप से सरकार की शरण ले ले?"

जैसा श्री कृष्णकुमारजी ने खुद कहा है, आन्दोलन अब गहराई में गया है, इसलिए या तो कार्यकर्ता को खुद को उस गहराई में जाना होगा या फिर दूसरा काम करते हुए जो कुछ बन पड़े, वह सर्वोदय-विचार की सेवा करते हुए संतोष मानना होगा। कार्यकर्ता के लिए गहराई में जाने का अर्थ है आन्दोलन के मूल लक्ष्य को ठीक से समझना, उसके लिए अपनी बौद्धिक योग्यता बढ़ाना और जीवन को क्रांति के मूल्यों के अनुरूप ढालना। आन्दोलनों में उतार-चढ़ाव आते ही रहते हैं। जिनके मन में अपने ध्येय के प्रति निष्ठा है, वे इस प्रकार के उतार-चढ़ाव से निराश नहीं होते, बल्कि परिस्थिति के अनुकूल अपने कार्यक्रम में बदल करते हैं।

—सिद्धराज ढड्ढा

मलयपुर का शराब-बंदी अभियान

'भूदान-यज्ञ' के पिछले अंक में मलयपुर (मुंगेर, बिहार) में पं० रमावल्लभ चतुर्वेदी द्वारा वहाँ शराबबंदी के लिए किये जा रहे 'पिकेटिंग' के विस्तृत समाचार छपे हैं। अकेला, किन्तु निष्ठावान आदमी आजकल के निराशामय वातावरण में किस तरह काम करे, इसका एक उदाहरण चतुर्वेदीजी ने पेश किया है। ता० ३० जनवरी से उन्होंने मलयपुर की कलाली पर अकेले ही पिकेटिंग शुरू किया है। धीरे-धीरे उसने लोगों का ध्यान आकर्षित किया है। बिहार सर्वोदय मण्डल ने भी इस सिलसिले में एक समिति अब गठित की है।

श्री चतुर्वेदीजी ने बिहार के मुख्य मंत्री महोदय को यह अनुरोध करते हुए कई पत्र लिखे कि वे मलयपुर गाँव से शराब की दुकान उठा दें। चतुर्वेदीजी को शिकायत है कि उनके पत्र का उत्तर तो दूर, पहुँच भी नहीं मिली। बिहार के मुख्य मंत्री श्री विनोदाबाबू पुराने गांधी भक्त हैं, पर व्यक्ति सरकार के बड़े तंत्र में किस प्रकार असहाय हो जाता है, यह हम सब जानते हैं। मानते हैं कि "विनोदाबाबू" की सहानुभूति जरूर चतुर्वेदीजी के साथ होगी, लेकिन प्रश्न यह है कि "मुख्य मंत्री" क्या करे? जब तक मुख्य मंत्री और सरकार शराब की "नापाक आमदनी" छोड़ने का तय न करें, तब तक विनोदाबाबू चतुर्वेदीजी को क्यों जवाब दें!

ता० १७ अप्रैल से चतुर्वेदीजी ने एक नया 'पत्र-सत्याग्रह" शुरू किया है। वे मुख्यमंत्री को एक पोस्टकार्ड नित्य लिखते हैं, जिसमें शराब-बंदी के बारे में गांधीजी के कुछ वाक्य उद्धृत करते हैं और अन्त में मलयपुर से शराब की दुकान उठा देने की प्रार्थना करते हैं। चतुर्वेदीजी अपने प्रयत्न में डटे रहे तो मलयपुर से शायद कलाली उठ जायगी, पर सवाल उससे कहीं अधिक व्यापक और महत्त्व का है। मलयपुर की सफलता से उस पर भी निश्चय ही असर पड़ेगा। हम मलयपुर के अभियान की सफलता की कामना करते हैं।

—सिद्धराज ढड्ढा

ये फैशन परेड !

क्या हमारी संस्कृति का नाश बहनें ही करेंगी ?

अशोभनीय विज्ञापनों के विरोध में सन्त विनोबा के संकेत पर जो देशव्यापी आन्दोलन चलाया गया है, उसका उद्देश्य भारतीय संस्कृति और गृहस्थ धर्म पर आक्रमण करने वाली प्रत्येक अशोभनीय, अश्लील एवं अनैतिक प्रवृत्ति के विरोध में नागरिक शक्ति को सजग करना है। सिनेमा के अशोभनीय पोस्टर तो प्रतीक मात्र हैं। आजकल शहरों की सड़कों पर जो चलते फिरते पोस्टर दिखाई पड़ते हैं, उनको भी इस आन्दोलन ने सोचने को बाध्य किया है और करना चाहिये।

परन्तु सरकार के संरक्षण में उद्योगपतियों की ओर से व्यापार एवं प्रचार के नाम पर 'फैशन परेड' द्वारा भारतीय नारी को निर्लज्ज वेश-भूषा का पाठ पढ़ाने का जो नया तरीका निकाला गया है वह भी हमारे लिये एक चुनौती है। इन प्रदर्शनियों में लाखों कत्तिनों और बुनकरों की रोजी-रोटी छीनने वाली मिलों के कपड़ों का प्रचार करने के लिये नवयुवतियों का उपयोग किया जाता है। पाश्चात्य सभ्यता के मद में मदहोश भारतीय महिलाएँ बिना सोचे फैशन के नित्य नये ढंग अपनाती जा रही हैं। काश! भारतीय नारी को पूज्य बापू के इन शब्दों में व्यक्त उनके हृदय की पीड़ा का किंचित मात्र स्पर्श हो पाता और वह अपने सात्त्विक तेज को प्रकट करके इस प्रकार के निर्लज्ज प्रदर्शनों के विरोध में सत्याग्रही-शक्ति का प्रयोग शुरू कर देती! एक प्रसंग में बापू ने कहा था—"कपड़े शरीर ढँकने के लिये, सरदी-गरमी से शरीर की रक्षा करने के लिये हैं, न कि फैशन दिखाने के लिये। आज तो हर बात में फैशन ही फैशन है। लड़कियाँ बिना बाहों के पोलके (ब्लाउज) पहनती हैं, बारीक साड़ियाँ पहनती हैं और पोलके भी उतने ही बारीक और चुस्त होते हैं। मैंने ऐसी बहुत-सी निकम्मी बातें देखी हैं और यह सोच कर मन में दुःख होता है कि क्या हमारी संस्कृति का नाश बहनें ही करेंगी!"

—विनय अवस्थी

नया मोड़ : लक्ष्य, दिशा और योजना : १

धीरेन्द्र मजूमदार

[पिछली ६ अप्रैल को सारे देश में 'ग्राम-स्वराज्य दिवस' मनाया गया। 'ग्राम-स्वराज्य' के विचार ने एक बार फिर ग्रामवासियों और कार्यकर्ताओं में नवउत्साह का संचार किया है। श्री धीरेन्द्र भाई इसे एक 'शुभ घड़ी' मानते हैं। उनका कहना है कि देश के समस्त रचनात्मक केंद्रों को ग्राम-स्वराज्य की घोषणा को अमल में लाने के लिए जुट जाना चाहिये। साथ ही उन्होंने आगाह भी किया है कि इस अवसर पर हमें अपने लक्ष्य और दिशा का स्पष्ट भान होना चाहिए ...'क्योंकि कभी-कभी कार्यक्रम के परिमाण तथा शीघ्र सफलता की उत्कंठा के कारण मूल लक्ष्य के दृष्टि से ओझल हो जाने का खतरा रहता है...।' श्री धीरेन्द्र भाई ने इस विषय का सूक्ष्म और गहरा चिन्तन करके 'भूदान-यज्ञ' के लिये एक लेखमाला लिखी है, जो हम क्रमशः प्रकाशित कर रहे हैं। —संपादक]

खादी-जगत् में "नया मोड" आज एक मन्त्र-सा बन गया है। मन्त्र का स्पष्टीकरण होते होते हम ग्राम-स्वराज्य के घोषणा-दिवस तक पहुँच गये हैं। आज कार्यकर्ताओं में उत्साह और उमंग है। खादी के इतिहास में यह एक अत्यन्त शुभ घड़ी है। हम ग्राम-स्वराज्य कायम करना चाहते हैं, गाँव का नव-निर्माण करना चाहते हैं और उसे स्वयंपूर्ण बनाना चाहते हैं। एक शब्द में, गांधी का स्वप्न पूरा करने की दिशा में खादी आज निश्चित तथा सक्रिय कदम उठा रही है। उत्साह के इस अवसर पर हमें खादी के मूल लक्ष्य पर निरन्तर नज़र रखनी चाहिये, क्योंकि कभी-कभी कार्यक्रम का परिमाण तथा शीघ्र सफलता की उत्कंठा के कारण मूल लक्ष्य के दृष्टि से ओझल हो जाने का खतरा रहता है।

१९४४ में बापू जेल से बाहर आये। सन् १९४२ के आन्दोलन में सरकार ने खादी को नेस्तनाबूद कर दिया था। यह बात उन्हें खली। वे खादी को स्वराज्य का वाहन बनाना चाहते थे। उनकी दृष्टि में स्वराज्य का मतलब प्रत्यक्ष तथा स्वतंत्र लोक-शक्ति की स्थापना थी। वे मानते थे कि सैनिक-शक्ति पर आधारित राज्य, जैसी कि राज्य-सत्ता होती है, सच्चा स्वराज्य नहीं है, स्वदेशी राज्य भले ही हो। इसीलिए वे कहते थे कि इंग्लैंड, अमरीका, जर्मनी आदि देशों में स्वराज्य नहीं है। अतएव सबसे पहले हमें स्वराज्य के प्रश्न पर ही सफाई से सोच लेना चाहिये।

खादी के नव-संस्करण की बात के सिलसिले में उन्होंने साफ कहा था कि खादी को अपने पैर पर अर्थात् स्वतंत्र लोक शक्ति के आधार पर खड़ा रहना है, जिससे कभी वैसा अवसर आये तो राज्य-शक्ति उसका कुछ बिगाड़ न सके। जब तक खादी राज्य-निरपेक्ष, स्वतंत्र-लोकशक्ति पर खड़ी नहीं होती है, तब तक वह गांधीजी द्वारा परिकल्पित स्वराज्य की अधिष्ठानी शक्ति नहीं बन सकती है। इसीलिए उन्होंने कहा था कि चरखा-संघ की कामना-पूर्ति अपने को सात लाख गाँवों में विभक्त करने में है। उनके अनुसार उसके अमल में जो व्यूह-रचना की बात थी, उसकी बुनियादी शक्ति ७ लाख लोकसेवकों की इकाइयों में पूर्ण होती थी। बिना ऐसा किये निरपेक्ष शक्ति का अधिष्ठान देश में नहीं हो सकता था। धीरे-धीरे वे इस कार्यक्रम का स्पष्टीकरण करते गये। काँग्रेस के भावी स्वरूप की कल्पना बताते हुए, लोकतन्त्र के लिए भविष्य में संघर्ष कहाँ होगा, उसका संकेत भी उन्होंने किया।

> **उन्होंने स्पष्ट कहा कि सच्ची लोक-शाही की स्थापना के लिए सैनिक-शक्ति और नागरिक-शक्ति के बीच संघर्ष अनिवार्य है। लोक-शक्ति को इस संघर्ष की चुनौती अगर स्वीकार करनी है, तो यह आवश्यक है कि उसमें सैनिक-निरपेक्ष स्वतंत्र शक्ति का संगठन हो।**

इसकी पूर्ति के लिये वह उस समय काँग्रेस को सबसे योग्य वाहन मानते थे और उनका यह मानना स्वाभाविक भी था। काँग्रेस ने वर्षों के त्याग और तपस्या से *जिस लोक-शक्ति का निर्माण किया था,* उसने देश के विदेशी राज्य को समाप्त कर दिया था। अतः गांधीजी के लिये काँग्रेस को ही स्वराज्य प्राप्ति के अगले कदम का वाहन बनाने की कल्पना करना स्वाभाविक था। आजादी के आन्दोलन के दौरान गांधीजी मुल्क के सामने यह विचार हमेशा रखा करते थे कि विदेशी-राज्य का निराकरण स्वराज्य-प्राप्ति का पहला कदम है। अतः विदेशी राज्य के निराकरण के साथ-साथ स्वराज्य का असली कदम उठाने की व्यूह-रचना में लगना एक सफल सेनानी के लिये लाजमी था। अतः उन्होंने काँग्रेस को सत्ता ग्रहण न करके लोकसेवक संघ के रूप में जन-जन में फैल जाने की सलाह दी। स्वराज्य की स्थापना के लिये चरखा संघ के नव-संस्करण से जिस व्यूह-रचना का श्रीगणेश वे करना चाहते थे, उसकी पूर्ति काँग्रेस के राजनैतिक संस्था के स्वरूप को विसर्जित करके उसे लोकसेवक संघ का रूप देकर करना चाहते थे। यह बात उन्होंने जेल से बाहर निकलते ही कही थी।

गांधीजी ने आखिरी दिनों में इसी प्रकार की व्यूह-रचना की। कहा नहीं जा सकता कि वे होते तो मुल्क को किस दिशा में मार्ग-दर्शन देते। दुर्भाग्य से केवल *समस्याओं का तथा उनके समाधान का* संकेत मात्र देकर वे चले गये। इस दिशा में सुनिश्चित दिशा निर्देश उनसे हमें नहीं *मिल पाया। हम सब दिशाहारा हो गये* और चालू लीक पर ही चलने लगे।

तीन साल बाद विनोबाजी ने तेलंगाना की समस्या को निमित्त बना कर देश में भूदान आन्दोलन की शुरुआत की। शुरू शुरू में देश के लोगों ने उसे भूमि-समस्या का अहिंसात्मक हल निकालने का प्रयास मात्र समझा। कुछ लोगों ने उसे भारतीय दान परम्परा को पुनः प्रतिष्ठित करने का कार्यक्रम माना। कुछ लोगों ने उसमें मृतप्राय रचनात्मक कार्यों का पुनर्जीवन देखा। इस प्रकार की विविध भावनाओं के बीच विनोबा का कदम आगे बढ़ता गया। देश के लोग निराशा के बीच रोशनी की एक झलक देख कर *उत्सुकता से उधर* झुके। वह कदम बढ़ते-बढ़ते सन् १९५२ में जब सेवापुरी-सम्मेलन पहुँचा तो मुल्क ने देखा कि यह भूमि-समस्या का तात्कालिक हल निकालने का साधारण अभियान मात्र नहीं है, बल्कि मानवीय समस्या के हल के लिए एक क्रान्तिकारी स्पन्दन तथा सर्वोदय-समाज की स्थापना के लिए राष्ट्रीय अभियान है।

अगले साल चांडील-सम्मेलन में विनोबाजी ने भूदान यज्ञ के मूल लक्ष्य की घोषणा की। उन्होंने कहा कि

> **स्वराज्य-प्राप्ति के लिए स्वतंत्र लोक-शक्ति का अधिष्ठान ही भूदान का लक्ष्य है। यह स्वतंत्र लोक-शक्ति दण्ड-शक्ति से भिन्न है और हिंसा-शक्ति की विरोधी है। इस घोषणा को हम सर्वोदय का घोषणा-पत्र मानते हैं।**

अखिल भारत सर्व सेवा संघ ने उस भाषण में राजनैतिक शास्त्र का एक नया अध्याय देखा। वर्तमान राजनैतिक पद्धतियों के गत्यवरोध को देख कर जो लोग विकल्प की खोज में थे, उन्हें इस वक्तव्य में एक नई दिशा दीख पड़ी, *जिससे वे लोग भी* भूदान-आन्दोलन के प्रति आकर्षित हुए। विनोबाजी का यह वक्तव्य, गांधीजी के *चरखा संघ के नव-संस्करण तथा काँग्रेस के* नव-जन्म की कल्पना का एक तरह से स्पष्टीकरण था।

प्रश्न यह है कि विनोबाजी केवल दण्ड-शक्ति से भिन्न जन-शक्ति का अधिष्ठान हो, इतना मात्र कहते तो वह कोई नई राज-नीति होती क्या? मेरे विचार से ऐसा नहीं होता। उन्होंने स्पष्ट रूप से इसे "दण्ड शक्ति की विरोधी" *की संज्ञा भी दी। ऐसा* क्यों? इसे समझ लेना चाहिये। वैज्ञानिक प्रगति के कारण राजनैतिक तथा आर्थिक *अति-केन्द्रीकरण के फलस्वरूप संसार में* जिस प्रकार राजनैतिक अधिसत्ता की समस्या उत्पन्न हो गयी है तथा कृषि-मूलक घनी *आबादी वाले मुल्कों के जागरण से दुनिया* में जिस प्रकार आर्थिक समस्या उठ खड़ी हुई है, उसके समाधान के लिये दण्ड शक्ति को भी अपने से भिन्न लोक-शक्ति के आधार पर छोटी-छोटी इकाइयों के अभिक्रम तथा नेतृत्व के विकास *की आवश्यकता पैदा हो* गयी है। केवल राजनैतिक अधिसत्ता की समस्या के कारण ही नहीं, बल्कि दण्ड-शक्ति आधारित राजनैतिक *लोकतन्त्र* पर जब से जन-कल्याण की जिम्मेदारी डाली गयी है और राज्य की परिभाषा में कल्याणकारी राज्य संज्ञा भी बढ़ा दी गया है, तब से इस कल्याण की जिम्मेदारी, सफलता के साथ निभाने के लिये भी राज्य की ओर से ही इस भिन्न शक्ति के संगठन की आवश्यकता हो गयी है; क्योंकि स्पष्ट है कि राज्य के पास जो दो शक्तियाँ—"सैनिक शक्ति और अर्थ शक्ति"—हैं, केवल उनके सहारे कोई भी राज्य जन-कल्याण कार्य का सफल संयोजन *नहीं कर सकता है।* चाहे राज्य का स्वरूप फासिस्टवादी, कम्यूनिस्टवादी या फौजी एकतंत्रवादी अधिसत्ता हो, और चाहे पार्लिया-मेंटवादी लोकतंत्र हो, जनकल्याण कार्य की सफलता के *लिये इस भिन्न शक्ति की आव*श्यकता सबको है ही। अतएव जिनकी मान्यता दण्ड-शक्ति आधारित समाज की ही है, *उन्हें भी इस शक्ति का संगठन करना* होगा।

जहाँ तक अर्थनीति का सवाल है, उन देशों को भी जहाँ आर्थिक परिस्थिति कृषि-मूलक है और घनी आबादी के कारण बेकारी की समस्या है, कृषि मूलक ग्रामो-द्योग-प्रधान अर्थ नीति को ही अपनाना पड़ेगा। इस तरह हम जो कहते हैं कि हमें कृषि-मूलक ग्रामोद्योग-प्रधान अर्थ-नीति को अपनाना है, वह सर्वोदय के लिये ही कोई विशिष्ट या अलग कार्यक्रम नहीं है। सैनिक शक्ति द्वारा संचालित समाज को भी आज इस प्रकार की अर्थ-नीति की आवश्यकता है। यही कारण है कि देश के वे नेता जो दण्ड-संचालित राजनीति को मानते हैं और गांधी-विचार से प्रभावित हैं या जिन्हें वस्तुस्थिति का पूरा दर्शन है, वे *भी इस प्रकार की अर्थनीति का विचार देश* और सरकार के सामने रखते हैं। स्पष्ट है कि अगर इस प्रकार की अर्थनीति को चलाना है तो उसके सफल संचालन के लिये छोटी छोटी ग्राम इकाइयों को खड़ा करना ही होगा, क्योंकि विकेन्द्रित व्यवस्था केन्द्रीय

[शेष पृष्ठ ११ पर]

भारत-चीन सीमा-विवाद एवं विश्व-संघ

लक्ष्मीनारायण भारतीय

चीन-भारत का सीमा-विवाद युद्ध के बिना कैसे हल किया जा सकता है, इस सम्बन्ध में सर्वोदय के विचार-क्षेत्रों में गम्भीरता से चर्चाएँ हो रही हैं। अभी सर्वोदय-सम्मेलन के अध्यक्षपद से श्री जयप्रकाशजी ने भी यह सुझाव दिया है कि "पंच निर्णय" के लिए यह एक परिपक्व समस्या मान कर, उस दिशा में आगे कदम बढ़ाने चाहिए।

कुछ दिन पहले श्री शंकरराव देव ने भी इसी विषय पर 'भूदान-यज्ञ' में एक लेख लिख कर चन्द सुझाव दिये कि यदि युद्ध के विकल्प के रूप में हमें अन्तर्राष्ट्रीय मामले सुलझाने हों, तो उसके लिए अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर ही प्रयत्न होने चाहिए एवं "यथा सम्भव समझौते से" और वह सम्भव न हो, तो "नैतिक शक्ति से अर्थात् सत्याग्रह-शक्ति के उपयोग से वे हल करने चाहिए" एवं यह सत्याग्रह-शक्ति किसी देश-विशेष की न होकर "सब देशों की जनता की होनी चाहिए।" इसके लिए उन्होंने "लोक-प्रतिनिधियों के विश्व-संघ" की स्थापना का भी सुझाव दिया है।

[illegible]

सावधान रहने की भी सलाह दी है। अर्थात् भारत के प्रति मित्रता रखने वाले देशों ने ऐसी रायें दी हैं। परन्तु ये रायें तटस्थ पक्ष की रायें नहीं मानी जा सकतीं। उधर 'यूनो' या हेग न्यायालय में जब तक कोई ऐसे मामले पेश न करे, वहाँ इस पर चर्चा नहीं हो सकती और चीन अभी ऐसी अंतर्राष्ट्रीय सभाओं से अलग भी पड़ा है।

इस पक्ष के दो पहलू हैं। एक यह कि किसका पक्ष सत्य है। दूसरा यह कि इस समस्या को हल कैसे किया जाय। पहले [illegible] के सम्बन्ध में स्थिति यहाँ तक तो पहुँच चुकी है कि दोनों ने अपने अपने 'डाक्यूमेंट्स' तैयार कर लिये हैं। अतः युद्ध-स्तर पर इस चर्चा का निबटारा न करना हो, तो यही विकल्प रह जाता है कि प्रथम आपसी चर्चा द्वारा, फिर तटस्थ [illegible] दोनों पक्षों को मान्य राष्ट्रों द्वारा यह मजबूत राय प्रकट होनी चाहिए कि किसका पक्ष सत्य है। यह पंच निर्णय से पूर्व की प्रक्रिया है। पंच निर्णय की बात पर अभी हम यहाँ चर्चा नहीं कर रहे हैं। अतः सर्व प्रथम इस बात की आवश्यकता है कि दोनों पक्षों को मान्य राष्ट्रों द्वारा इन रिपोर्टों का एवं अन्य बातों का अध्ययन हो एवं तटस्थ राय जाहिर हो। पर यह प्रश्न [illegible] सरकारों द्वारा, यूनो के बाहर, अभी हाथ में लिया जायगा एवं राय प्रकट की जायगी, इसमें संदेह है, क्योंकि साधारणतः चीन-भारत के मित्र देश ऐसी स्पष्ट राय देने में हिचकिचायेंगे, क्योंकि अंतर्राष्ट्रीय व्यवहार का यह एक अंग है कि मित्रराष्ट्रों के मामलों में कोई एक पक्षीय बात न कही जाय। इस तरह सरकारों द्वारा अभी यह बात उठायी नहीं गयी है।

अब सरकारों द्वारा यह प्रश्न साफ तौर से हाथ में नहीं लिया जाता है, तो फिर दूसरा उपाय यह रह जाता है कि विभिन्न देशों के शांतिवादी तटस्थ लोगों को इसके लिए आवाहन किया जाय एवं उन्हें इस प्रश्न के अध्ययन के लिए प्रार्थना की जाय। ऐसे अध्ययन एवं मत-प्रकाशन से प्रत्यक्ष लाभ अभी कुछ नहीं होगा, यह सही है, परन्तु जब युद्ध के बिना यह मामला सुलझाने का प्रयत्न दोनों ओर से होगा, तब इस मत-प्रकाशन का महत्त्व साबित होगा। हो सकता है, अध्ययन एवं मत-प्रकाशन में से भी मामला शांति से सुलझाने का मार्ग प्रशस्त होता चले।

श्री शंकररावजी ने लोक प्रतिनिधियों के विश्वसंघ की जो कल्पना पेश की है, उसका औचित्य एवं महत्त्व यहाँ प्रकट होता है, क्योंकि यू० नो० ऐसी एक संस्था होने पर भी वह सरकारों की प्रतिनिधि है, फलतः तटस्थता वहाँ कई बार दबना दी जाती है।

दूसरा पहलू यह है कि इस समस्या को हल कैसे किया जाय! अभी तो चीन ने एक पक्षीय कार्यवाही करके आक्रमण द्वारा कुछ मामला हल-सा कर लिया, ऐसा दीखता है। यह एक पक्षीय कार्यवाही अनावश्यक थी, क्योंकि भारत शांतिपूर्ण निबटारे के लिए प्रस्तुत हो जाता। पर अब एक कदम उठाया जा चुका है एवं आगे वैसा न उठाया जा सके, इसकी सावधानी भी दूसरे पक्ष के द्वारा बरती जा रही है। इसमें से दूसरे पहलू का उत्तर तो मिलता नहीं एवं समस्या वैसी ही रह जाती है।

समस्या हल करने के युद्ध के सिवा दो मार्ग हैं—आपसी चर्चा एवं अन्त में पंच निर्णय। स्पष्ट है कि ये दोनों ही पक्षों की सहमति से सम्भव हो सकता है। चर्चा फिलहाल तो स्थगित है, क्योंकि आगे कदम बढ़ ही नहीं पाया है। पंच निर्णय के लिए अवश्य ही काफी अवसर है, क्योंकि अभी चीन सरकार से इस सम्बन्ध में किसी की कोई बात नहीं हुई है। परन्तु यह प्रश्न उतना सहज नहीं है। अतः पंच निर्णय मान्य करने का आश्वासन दोनों पक्षों द्वारा जब तक प्राप्त नहीं होता है, तब तक इस सुझाव को अमल में लाना असम्भव है। भारत को अपनी नीति पहले तय करके जाहिर करनी होगी एवं चीन से 'अप्रोच' करना होगा। इसका भी प्रयत्न आम यूनो की मध्यस्थता या तो व्यक्तिगत रूप से तटस्थ राष्ट्रों द्वारा हो सकता है या श्री शंकररावजी द्वारा सुझाये हुए लोक-प्रतिनिधियों के संघ द्वारा। लोक प्रतिनिधियों के संघ की बात अभी चीन माने या न माने, यही एक मार्ग हो सकता है, जिसके पीछे पूर्व के किये हुए तटस्थ कार्यों का बल एवं आगे के प्रभावी संकल्पों का बल होगा। यह संघ अपनी मदद में व्यक्तिगत रूप से तटस्थ राष्ट्रों की भी सहायता ले सकता है और सम्भवतः यह लेनी भी होगी, क्योंकि बात चीन सरकार से करनी होगी, न कि चीन के लोगों से।

इन दोनों प्रक्रिया के अनन्तर आता है, नैतिक दबाव अर्थात् सत्याग्रह का प्रश्न। वह किस प्रकार होगा, आदि इसमें से उठने वाले प्रश्नों पर अभी ही चर्चा करने की आवश्यकता नहीं। परन्तु एक प्रश्न अवश्य उठता है कि जहाँ एक तरफ श्री शंकररावजी ने "नैतिक दबाव अर्थात् सत्याग्रह" कहा है, वहाँ दूसरी ओर "आध्यात्मिक शक्ति" से यह भिन्न मार्ग माना है। इसका अर्थ होता है, सत्याग्रह को केवल नैतिक दबाव तक ही सीमित मानना। हमारा खयाल है कि प्रकार में यह भिन्नता की जा सकती है, मूलतः ऐसा भेद या ऐसी सीमा-रेखा खींचना कठिन होगा, क्योंकि सत्याग्रह अर्थात् नैतिक दबाव की सिद्धि के लिए किसी स्तर पर तो उस शक्ति का भी, जो आध्यात्मिक एवं वैयक्तिक मानी गयी है, सयोजन करना होगा। दोनों सर्वथा भिन्न मार्ग नहीं हैं। पर आरम्भिक 'नैतिक दबाव' को जब कार्य रूप में परिणत करने का प्रश्न उपस्थित होगा, तब इस विचार की गहराई में जाने की जरूरत महसूस हुए बिना नहीं रहेगी। फिर भी मोटे तौर पर यह सही है कि युद्ध के विकल्प के तौर पर नैतिक दबाव-रूपी सत्याग्रह के मार्ग का शोध एवं अनुसरण अनिवार्य है एवं उस दिशा में सबसे ज्यादा कारगर कोई संगठन हो सकता है, तो यह लोक प्रतिनिधियों का संघ ही। पर लोक प्रतिनिधियों के संघ की वास्तविकता एवं शक्ति भी तभी सिद्ध हो सकती है, जब उसके पीछे ऐसे किसी 'सैंक्शन' का बल हो, क्योंकि सत्ता का तो बल उसके पास नहीं रहने वाला है। किसी भी देश की सरकार अपने देश के लोक प्रतिनिधियों से मतभेद भी जाहिर कर जाती है। जन मत का 'सैंक्शन' सरकार को भी मजबूर कर सकता है।

अतः 'केस' का पूर्ण अध्ययन एवं 'मत'-प्रकाशन, पंच निर्णय की 'भूमिका की तैयारी' एवं 'अभिक्रम' तथा नैतिक दबाव का 'उपक्रम' एवं 'संगठन', ये तीन ऐसे कार्य हैं, जो ऐसे 'संघ' के द्वारा ही किये जा सकते हैं, केवल भारत-चीन के सीमा-विवाद के हलतक ही नहीं, अन्य विवादों के लिए भी।

अब प्रश्न यह उपस्थित होता है कि ऐसे संघ की स्थापना किस प्रकार हो, प्रत्येक देश से ऐसे प्रतिनिधि किस प्रक्रिया द्वारा प्राप्त हों एवं इस संघ का सामान्य कार्यक्रम क्या तय किया जाय? और भी एक प्रश्न इस सम्बन्ध में उठता है कि नैतिक दबाव इस संघ की 'शक्ति' बनेगी, यह तो ठीक है, परन्तु ऐसा दबाव कोई शुरू में ही तो संगठित होने वाला नहीं है। अतः यह दबाव जब तक संगठित न हो, तब तक इसका बल क्या रहेगा? किस आधार पर यह बड़े-बड़े मामले सुलझाने के लिए अपने पास ले सकेगा? क्योंकि जब तक यह कोई "प्रभावकारी" मंडल न बने, तब तक केवल "चर्चा-मंडल" ही बन जाने का भय है, जैसे राष्ट्रसंघ-परिषद बन गयी, यद्यपि वह सरकारों द्वारा संगठित थी!

तीसरे, नैतिक दबाव का स्वरूप एवं प्रक्रिया क्या रहेगी? अर्थात् वह संगठित करने का मार्ग कौन-सा रहेगा?

ये चंद प्रश्न उपस्थित होते हैं, जिनके उत्तर श्री शंकररावजी के लेख में से नहीं मिल पा रहे हैं। यह कल्पना एवं योजना न केवल आवश्यक है, अपितु युद्ध का विकल्प ढूँढ़ने की दृष्टि से अनिवार्य भी है। परन्तु उसमें कैसे आगे बढ़ा जा सकता है, इसकी भी प्रक्रिया स्पष्ट होना जरूरी है।

कार्य-संयोजन में समग्र चिंतन आवश्यक

विनोबा

[२५ जनवरी '६१ को श्री राममूर्तिजी ने पदयात्रा में विनोबाजी के सामने निम्न तीन महत्त्वपूर्ण और बुनियादी प्रश्न रखे।

(१) यों तो हृदय-परिवर्तन हमेशा ही होता रहा है। लेकिन आपके माध्यम से हृदय-परिवर्तन की प्रक्रिया समाज के स्तर पर संगठित रूप से प्रकट हो रही है, इसके आपने तीन मुख्य तत्त्व माने हैं : विचार-प्रचार, निर्माण-कार्य का प्रभाव और परिस्थिति का दबाव। आप किस बिन्दु की कल्पना करते हैं, जहाँ पहुँच कर गाँव की समूह-शक्ति प्रकट होगी और वह सामूहिक निर्णय से ग्राम-परिवार की दिशा में कदम उठायेगी ?

(२) हमारे पूरे कार्यक्रम में कार्यकर्ता का प्रश्न बुनियादी प्रश्न है। उसकी जीविका, उसका शिक्षण, उसका परिवार आदि सभी प्रश्न हैं। जब तक ये समस्याएँ हल नहीं होती, तब तक न उसकी संख्या बढ़ेगी, न शक्ति। कृपया बताइये, क्या किया जाय ?

(३) अहिंसा की प्रक्रिया में हर कार्य की अंतिम निष्पत्ति सम्बन्धों के माधुर्य के रूप में ही प्रकट होनी चाहिये। आज ऐसा नहीं हो रहा है। कैसे होगा ? 'बीघे में कट्ठा,'—आपके इस नये नारे से क्या अन्तर पड़ेगा ?

भूदान-किसान को केन्द्र मान कर कैसी निर्माण-योजना बनायी जाय, जिससे उसके और दाता के बीच सामीप्य पैदा हो ?

विनोबाजी ने इन प्रश्नों पर जो विचार प्रकट किये हैं, वे प्रत्येक कार्यकर्ता के लिये मननीय हैं। इन विचारों में विनोबाजी ने अत्यन्त स्पष्टता से आन्दोलन के विभिन्न अंगों पर मार्गदर्शन किया है। १० मार्च '६१ के 'भूदान-यज्ञ' में 'कार्यकर्ताओं के साथ विनोबाजी की चर्चा' इस शीर्षक से इस विषय पर थोड़ा उल्लेख विनोबा-पदयात्री दल की डायरी में हुआ। विषय और चर्चा महत्त्वपूर्ण होने से हम पुनः यहाँ पूरे रूप में दे रहे हैं। —सम्पादक]

(१)

समाज-परिवर्तन की चार प्रक्रियाएँ

समाज-परिवर्तन की चार प्रक्रियाएं हैं : (१) हृदय-परिवर्तन, (२) परिस्थिति-परिवर्तन, (३) विचार-परिवर्तन और (४) सेवा-कार्य। हृदय-परिवर्तन ईश्वर करता है। परिस्थिति-परिवर्तन समाज करता है। विचार-परिवर्तन चिन्तक और विचारक करते हैं और सेवा सेवक करते हैं। हृदय-परिवर्तन करने की शक्ति ईश्वर से प्राप्त होती है। उसके लिये हृदय में भक्ति-भाव होना चाहिए और हृदय की आत्यन्तिक शुद्धता होनी चाहिये। ईश्वर का नाम हम लें या न लें, पर भक्ति के बिना हृदय-परिवर्तन की शक्ति नहीं आती। गौतम बुद्ध, नारद, नानक, चैतन्य महाप्रभु आदि हृदय-परिवर्तन करने की शक्ति के उदाहरण हैं।

विचारक परिस्थिति-परिवर्तन की भूमिका तैयार करता है। अनुरोधी विचार, प्रतिरोधी विचार, हर तरह के विचार का अध्ययन होना चाहिये। जो विचार सही मालूम हो, उस पर अमल करना चाहिये और उसे समाज के सामने रखना चाहिये। समाज उसमें से शक्ति प्राप्त करेगा और परिस्थिति के अनुसार अमल करने की कोशिश करेगा। विचार को समाज के सामने रखते समय तत्काल परिणाम की अपेक्षा नहीं रखी जा सकती। शुद्ध जीवन की भूमिका में प्रयुक्त विचार को रख देना ही विचारक का काम है। परिस्थिति-परिवर्तन का काम समाज का है। विचार के प्रकाश में परिस्थिति को पहचान कर परिवर्तन करने की शक्ति समाज में होती है। समाज में तरह-तरह की संस्थाएँ होती हैं, जिनसे समाज का जीवन चलता है। परिवर्तन के संदर्भ में यह देखने की जरूरत होती है कि किस संस्था की इस समय कितनी उपयोगिता है, किसमें गुण ही गुण हैं, किसमें दोष ही दोष हैं, किसमें गुण-दोष दोनों हैं। सरकार, वर्ण, आश्रम, विवाह आदि सब संस्थाएँ ही हैं। गुणवाली संस्थाओं को रखना चाहिये, दोषवाली संस्थाओं को तोड़ना चाहिए। लेकिन जिसमें दोष तो हैं, लेकिन गुण अधिक हैं, उनको दोष बर्दाश्त करके भी रखने की कोशिश करनी चाहिए। साथ ही दोष-निवारण की कोशिश करनी चाहिए।

करुणा, निरलस वृत्ति, सेवा की योग्यता

फिर सेवक है, जो सेवा-कार्य करता रहता है। उसको परिस्थिति-परिवर्तन की चिन्ता नहीं होती। जैसे अपनी ही भूल से बार-बार बीमार पड़ने वाले रोगी की चिकित्सा डाक्टर करता है, उसी तरह सेवक समाज की भी सेवा करता रहता है। वह यह नहीं सोचता कि इसमें किसकी कितनी भूल है। जो रोगी चिकित्सक के पास जाता है, उसे यह विश्वास रहता है कि भूल उसकी है, लेकिन उसे प्रेम मिलेगा, वही लोगों का विश्वास सेवक को प्राप्त होता रहना चाहिए।

समाज के परिवर्तन की योजना में ये चारों तत्त्व यदि अपनी जगह काम करते हैं तो सही दिशा में समाज का विकास होता रहता है—भले ही वह कभी धीमा और कभी तेज दिखाई पड़े। कोशिश तो यह होनी चाहिये कि हर कार्यकर्ता में करुणा, निरलस वृत्ति और सेवा की योग्यता, तीनों हों; लेकिन यदि ऐसा न हो तो यह देखना चाहिये कि कौन क्या काम कर सकता है। यह देख कर संयोजन करना चाहिये, ताकि एक-दूसरे का पूरक बने और सब मिल कर समग्र बनें।

(२)

कार्यकर्ताओं का प्रश्न

कोई भी कार्य हो, कार्यकर्ता उसका केन्द्र-बिन्दु होता है। लेकिन कार्य के सम्बन्ध में कार्यकर्ता को स्वयं अपनी योजना और संयोजन करने वाले को उसकी योजना समझनी चाहिए। किसी कार्य में किसी भी कार्यकर्ता को लगा देने से कार्य भी बिगड़ता है और कार्यकर्ता का भी ह्रास होता है। कार्यकर्ता ब्रह्मचर्य की स्थिति में है या गृहस्थधर्मी है, वानप्रस्थी है या संन्यासी है ! ब्रह्मचर्य की भी दो परिस्थितियाँ होती हैं—(१) शुरू में वह माता-पिता पर आश्रित होता है, लेकिन बाद के वर्षों में अपने अभ्यास के रूप में वह माता-पिता और समाज की सेवा में योग दे सकता है और ऐसी स्थिति में समाज को उसका भार वहन करना चाहिए। लेकिन इस पूरे ब्रह्मचर्य जीवन में उतनी ही सेवा की अपेक्षा रखी जा सकती है, जितनी अध्ययन के साथ-साथ चल सके।

गृहस्थ और समाज-सेवा

ब्रह्मचर्य आश्रम की तरह गृहस्थाश्रम की भी दो स्थितियाँ होती हैं।

एक गृहस्थाश्रमी ऐसा होता है, जो एक या दो संतति से संतोष मानता है, अपनी कामवासना को शान्त करने की कोशिश करता है, और समाज की कुछ सेवा करना चाहता है। दूसरा ऐसा है, जिसका गार्हस्थ्य जीवन अमर्यादित है, जिसकी संतानें अधिक हैं और जो बढ़ती ही जा रही हैं। पहली स्थिति के गृहस्थाश्रमी ऐसे हैं, जिनको समाज की सेवा सौंपी जा सकती है और उनके लिये श्रमनिष्ठ जीवन की योजना भी बनायी जा सकती है। लेकिन दूसरी श्रेणी के गृहस्थ के लिये यही उचित है कि वह सामान्य जीवन में रहे और उसमें रहते-रहते समय और सम्पत्ति आदि के रूप में जो दान दे सकता है दे, पर अधिक बोझ वाले गृहस्थों को पूरे समय का कार्यकर्ता नहीं बनाना चाहिये। मुख्य रूप से ऐसे लोग जब शिक्षण-क्षेत्र में काम करते हैं, तो वे शिक्षण को बहुत कम समय और शक्ति दे पाते हैं। और इस तरह भावना रहते हुए भी गृहस्थी के बोझ के कारण वे अपने काम के साथ न्याय नहीं कर पाते।

समाज के मुख्य आधार : वानप्रस्थ

अगली कोटि वानप्रस्थ आश्रमियों की है, जो परिवार से मुक्त, लेकिन समाज से संयुक्त हैं। ये घूम कर या एक जगह रह कर समाज की सेवा कर सकते हैं। ऐसे लोगों के सम्बन्ध में महत्त्व आयु का नहीं, वृत्ति और परिस्थिति का है। आयु कम भी हो, लेकिन वृत्ति पकी हो गयी है, तो वानप्रस्थ आश्रम में प्रवेश किया जा सकता है। ऐसे लोगों को वेतन भी देना पड़े तो समाज को जिम्मेवारी उठानी चाहिए। ये ही लोग समाज के मुख्य आधार होते हैं।

अन्तिम स्थान संन्यासियों का है। हृदय परिवर्तन के अधिकारी ये मुख्य आत्माएँ हैं। घूम-घूम कर समाज में सद्विचार और संस्कारिता का वातावरण बनाना इनका काम है। अगर ये एक जगह रहें तो लोग इनके पास आकर थोड़े-थोड़े दिन रह सकते हैं या स्वयं जा-जाकर लोगों को अपना लाभ दे सकते हैं।

काम की योजना बनाते समय इन सब बातों का ध्यान रखना चाहिए और किसी विचार को आग्रहपूर्वक हर परिस्थिति के व्यक्ति पर लागू करने की कोशिश नहीं करनी चाहिए। इस तरह की योजना हर समाज में रहती है—चाहे उसके लिये कोई शब्द हो या न हो।

काम भी कार्यकर्ता की शक्ति के अनुसार होना चाहिये। समाज अधिकांश औसत लोगों से बना होता है, जो प्रायः अच्छे ही होते हैं। असाधारण गुणवाले या, दोषवाले लोग कम होते हैं। उसी तरह कार्यकर्ता अधिकतर औसत होते हैं। असाधारण कम होते हैं। औसत कार्यकर्ता समाज के औसत से गिरे हुए तत्त्वों से व्यवहार (डील) करने की जरूरत पड़े तो सेवकों में जो औसत से ऊँचे हों उन्हीं को व्यवहार (डील) करना चाहिये।

औसत वाला औसत से ऊपर से भले ही व्यवहार (डील) कर ले, लेकिन अगर

कोल्हापुर और रत्नागिरी जिले के

ग्रामदानी गाँव प्रगति के पथ पर

• गोविन्द शिंदे

[महाराष्ट्र प्रदेश के कोल्हापुर जिले के आजरा और चंदगड तहसील तथा रत्नागिरी जिले के कुडाल और सावंतवाडी तहसील में अधिक ग्रामदानी गाँव हैं। ये चारों तहसीलें एकत्रित हैं। इनमें कुल मिला कर ३० ग्रामदानी गाँव हैं। यहाँ निर्माण-कार्य को विशेष संगठनात्मक रूप देने का महाराष्ट्र के कार्यकर्ताओं ने तय किया है। उसी दृष्टि से आज काम हो रहा है। यहाँ उनमें से कुछ गाँवों के प्रगति का लेखा दे रहे हैं। आशा है, अन्य प्रदेशों के ग्रामदानी गाँवों में चल रहे कामों की जानकारी प्रदेशीय सर्वोदय-मंडल भेजेंगे। —सं०]

बिजूर

कोल्हापुर जिले के चंदगड तहसील में बिजूर एक आदर्श गाँव बन गया है। बेलगाँव-सावंतवाडी रास्ते पर यह गाँव बेलगाँव से २० मील दूर है। कुल जमीन २००३ एकड़ है। २९० एकड़ फसल का क्षेत्र है। उसमें से ६० एकड़ जमीन नदी के बाढ़ में आती है। बाढ़ कम होते ही उसमें कुछ फसल बोई जाती है या घास के लिए वह वैसी ही रखी जाती है। १५० एकड़ चावल के फसल की जमीन है।

दो साल पहले विनोबाजी की उपस्थिति में इस गाँव का ग्रामदान हुआ। बिजूर की जनसंख्या ३०० है। ग्रामस्वराज्य सोसाइटी की स्थापना की। सामूहिक खेती करना शुरू किया। जापानी पद्धति से भी खेती की। उत्पादन बढ़ गया। उससे गाँव का उत्साह भी बढ़ा। गाँव के उत्तर और पश्चिम दिशा में घटप्रभा नदी बहती है। उसका पानी काम में नहीं आता था। लेकिन अब गाँव का अपना पानी खींचने का इंजन है और १६ एकड़ में गन्ने की फसल होती है।

शुरू में "श्री सहकारी बिजूर ग्राम-स्वराज्य मंडली" संस्था स्थापित हुई। सोसाइटी के सदस्य ५० तथा शेयर्स की पूँजी एक हजार रु० की है। गाँव की आर्थिक तथा सामाजिक हालत बहुत ही बिगड़ी थी। छह महीनों का अनाज उत्पन्न होता था। हर आदमी के पीछे औसत आमदनी ६६ रु० था। साक्षरता नहीं के बराबर थी। सिंचाई की भूमि भी नहीं के बराबर थी।

सन् १९६१ में पूरे वर्ष के लिए आवश्यक अनाज पैदा किया गया। आज प्रति मनुष्य का औसत आमदनी ७१ रु० है। ३ प्रतिशत भूमि पर सिंचाई की व्यवस्था है। ग्रामसभा के अंतर्गत ग्रामस्वराज्य सोसाइटी, जंगल कामगार सोसाइटी, तरुण किसान मंडल, भजन मंडली, ये संस्थाएँ काम कर रही हैं। अनाज के लिए भंडार खोला गया, जिसमें ८५ बंगाली मन अनाज संग्रह किया गया है। गाँव के लिए १० हार्स पावर का इंजन, क्रशर, गुड़ बनाने की सामग्री, लोहे का हल आदि सामान सामूहिक मालिकी का है।

'सर्वोदय-मंदिर' की इमारत और एक रास्ता गाँव के लोगों ने तैयार किया। काजू के ७००० पेड़, आम के ८० नींबू के २० तथा अन्य पौधे भी लगाये गये हैं।

अब गाँव में कोई भी बेकार नहीं है। पंचवार्षिक योजना बनायी गयी है। उसमें यह सब जमीन को पक्की करने का निर्णय है। धानकुटाई, शक्कर का उत्पादन-केंद्र भी शुरू होनेवाला है। ग्रामदान के पहले सिर्फ छह मास का ही काम चलता था अब पूरे साल भर का काम है।

गवसे

गवसे गाँव का सोलह परिवारों का ग्रामपरिवार बना है। सौ लोगों का यह एक परिवार हुआ है। २१० एकड़ जमीन है। उसमें से ४७ एकड़ जमीन एक भाई की थी, तो दो भाइयों की बिलकुल नहीं थी। रहना तो सबको है, ऐसा तय करके सब काम में लगे। सभी जमीन एकत्रित की। घर का बचा हुआ धान भी इकट्ठा किया और सभी को समान बाँट दिया। जमीन को सामूहिक रूप में जोतने का निर्णय लिया। जमीन पर ठीक से मेहनत करेंगे तो अधिक उत्पादन आयेगा, इसलिये संपूर्ण शक्ति खेती पर लगानी थी। सोलह घर के सोलह व्यक्ति जानवरों की रक्षा करते थे। वह काम अब दो व्यक्तियों पर सौंप दिया, ताकि अन्य लोग खेती में मदद कर सकें। घर के बच्चों की देखभाल के लिये स्त्रियों को घर में रहना पड़ता था, छोटे बच्चों की ओर देखने का काम भी एक स्त्री पर सौंप दिया। सबने अपनी शक्ति खेती पर लगायी। बच्चे भी काम करने लगे। बाजार में सभी लोगों को जाना पड़ता था, अब सप्ताह में दो व्यक्ति बाजार में जाने लगे। काफी श्रम मिलने से खेती में काम होने लगा। गरमी के दिनों में होनेवाली फसल भी निकाली। ५ एकड़ में गन्ना बोया। अब १० मास के लिए धान्योत्पादन होने लगा है। इस वर्ष साल भर की फसल मिलेगी।

गरमी के दिनों में एक माह सभी लोग खेती पर रहते हैं। भोजन सामूहिक रूप में होता है और खेती में काम किया जाता है। गाँव में शराबबंदी है, ग्रामस्वराज्य सोसाइटी है। उसकी मालकियत की सब जमीन हुई है।

उपर्युक्त दो गाँवों की तरह दाभील, सरंबोल और सातेवाडी में श्रम शुरू है।

• • •

रत्नागिरी जिले में जो ग्रामदान हुए हैं, वे ज्यादातर सावंतवाडी और कुडाल तहसील में हैं। १९५६-५७ में महाराष्ट्र में सामूहिक पदयात्रा हुई। एक एक जिले में से यह पदयात्रा जाती थी, उस वक्त कुछ ग्रामदान यहाँ मिले। १९५८ में विनोबाजी की पदयात्रा हुई, उस वक्त जिले के हरेक गाँव में क्रांति का विचार पहुँच सके, ऐसा कार्यक्रम आयोजित किया था। प्रत्यक्ष विनोबाजी के मुख से गाँववालों ने ग्रामदान का विचार सुना। इस पदयात्रा में और कुछ ग्रामदान मिले। इन गाँवों में एक-डेढ़ साल काम चला। गत अक्टूबर में सघन क्षेत्र में ग्रामदानी गाँवों के निवासियों की पदयात्रा हुई। उसमें और भी ५ ग्रामदान मिले। कुल १२ ग्रामदानी गाँवों में काम शुरू है।

अधिकतर गाँव कुडाल के पूर्व विभाग में और ओरोस के गाँव के इर्दगिर्द हैं। माणगाँव से १२ गाँव का एक क्षेत्र मिला है। सावंतवाडी तहसील के गाँव पहाड़ी क्षेत्र में हैं। सह्याद्रि पहाड़ के नजदीक के ही सब गाँव हैं।

इन गाँवों को ३८ हजार रु० का सरकारी कर्ज दिया गया है। 'जिला ग्रामदान नवनिर्माण समिति' यह रजिस्टर्ड संस्था ग्रामदानी गाँवों में काम करती है, जो ग्रामदानी गाँव के निवासी और कार्यकर्ताओं की बनी हुई है।

इन गाँवों में १५ कार्यकर्ता काम करते हैं और गाँवों में बसने वाले कार्यकर्ता भी काम के लिये समय देते हैं। ११ सहकारी ग्रामस्वराज्य सोसाइटियाँ स्थापित हुई हैं। खादी-ग्रामोद्योग का और गाँव के संपूर्ण विकास का काम करने के लिये स्थानिक

यह औसत से नीचे वाले से 'डील' करते रहेंगे तो वह नीचे वाला उसे अपनी ओर खींचेगा और आपस के सम्बंध भी बिगड़ेंगे। मयोजन में हम बुनियादी तर्क का सतत ध्यान रखना चाहिये।

(३)

माधुर्य कैसे बढ़े ?

सोचने की यह दिशा है कि हमारे कार्य की यह कसौटी होनी चाहिये कि उसमें परस्पर सम्बन्धों में माधुर्य पैदा हो। अगर मनुष्य के बीच माधुर्य नहीं बढ़ा तो कहीं न कहीं कोई भूल है, ऐसा मान कर चिंतन करना चाहिये और कारण को तलाश कर उसे दूर करने की कोशिश करनी चाहिये। भूदान में दाता और भूदान-किसान के सम्बंध में भी यही बात लागू होती है। अगर वास्तव में दान की प्रक्रिया से दान हुआ है, तो उसमें से माधुर्य की निष्पत्ति होनी ही चाहिये। भूदान-यज्ञ के प्रारम्भ में मैं भी सोचता था कि कोई दाता है, कोई आदाता।

पर अब मैं सोचता हूँ कि हमारे विचार में 'हैव नाट' कोई है ही नहीं, सब 'हैव' ही हैं और सबके पास कुछ-न-कुछ देने को है। श्रम हो, भूमि हो, दूसरी सम्पत्ति हो या बुद्धि हो, समाज को सबकी जरूरत है और सबके सयोग से ही समाज का रक्षण और पोषण होता है। हमारे काम में बहुत बड़ी कठिनाई इस कारण पैदा हो जाती है कि हमारा चिंतन परिभाषाओं में फँस कर रह जाता है। सर्वोदय विचार के लिये यह तत्त्व बुनियादी है कि हम सम्पूर्ण समाज उसकी विविधताओं, का चिंतन करें, विरोधों का नहीं। हम हरएक को मनुष्य मानते हैं। दाता, अदाता, मालिक, मजदूर आदि भाषाओं में नहीं सोचते। अगर हमारे विचार में से यह संकुचितता दूर हो जाय, तो हमारे काम या हमारी वाणी में से भी संकुचितता दूर होगी।

आज मैं बीघे में एक कट्ठे की माँग करता हूँ। माँग हमारी कम-से-कम हो, यानी सामान्य व्यक्ति का त्याग शक्ति के बाहर न हो। एक कट्ठे की माँग कम-से-कम है। गाँवों में जहाँ तक हो सके, हर व्यक्ति बीघे में एक कट्ठा दान दे और जोत की जमीन हो। इतना होता है तो गाँवों में माधुर्य का वातावरण पैदा होगा और सहकार की नई दिशाएँ प्रकट होंगी। माधुर्य की भूमिका में जो भी कार्यक्रम चलाया जायगा, उसकी निष्पत्ति अनुकूल होगी और गाँव की समूह शक्ति बढ़ेगी। भले ही शत प्रतिशत लोग दान न दे सकें, लेकिन संख्या इतनी हो कि देने की प्रवृत्ति प्रधान मालूम हो। हमें किसी भी दाता को नाराज नहीं करना है, बल्कि यह वातावरण बनाये रखना है कि उसकी और अधिक देने की प्रवृत्ति बनी रहे।

अक्सर हम काम अपूर्ण और एकांगी ढंग से करते हैं। मैं इसे पसंद नहीं करता। मैं पूरी हजामत की बात पसंद करता हूँ। थोड़ी यहाँ बना दी, थोड़ी वहाँ बना दी, ऐसा नहीं। एक क्षेत्र लें और उसमें समग्र दृष्टि से काम करें। घर-घर से सम्पर्क करें तो कोई कारण नहीं कि हमारा काम शक्तिशाली न हो और वहाँ के लोगों में परस्पर माधुर्य न प्रकट हो।

नेतृत्व निर्माण होगा और स्थानिक शक्ति से काम होंगे, इसलिये ५ हजार जनसंख्या के क्षेत्र के लिए एक, इस हिसाब से क्षेत्रीय समितियों की स्थापना की गयी है। ४ क्षेत्र-समितियाँ बनी हैं।

निवजे

ग्रामदानी गाँव में ग्रामदान होने के बाद 'ग्रामसभा' की स्थापना की जाती है, जमीन का वितरण किया जाता है। सहकारी ग्रामस्वराज्य सोसाइटी बनाने की कोशिश की जाती है। इसमें कई गाँवों ने विशेष प्रगति की है। फलस्वरूप निवजे गाँव में सोसाइटी बनी है। लोगों ने मिल कर कार्यकर्ता और गोदाम के लिये करीब ३ हजार रु० का मकान खड़ा कर दिया है। इस गाँव में १२ परिवार ११ एकड जमीन सामूहिक रीति से जोत रहे हैं। यहाँ की मुख्य फसल चावल है। गरमी में और बारिश में, ऐसी दो फसलें यहाँ निकाली जाती हैं। गाँव की जनसंख्या ५५७ है। कुल जमीन २५८६ एकड ३१ गुंठा है। फसल में २०७-२२ एकड है। इस गाँव का उत्पादन एकड में नौ गुना बढ़ा है। गत साल १२० मन धान अधिक हुआ था। पाठशाला के लिये गाँव में इमारत नहीं थी। गाँव के लोगों के श्रमदान से एक छोटी इमारत बनायी है। हरिजन के ५ परिवार हैं। एक साल पहले एक हरिजन का घर जल गया, तो गाँव के लोगों ने मिलकर उसे १ साल भर के लिये काफी धान दे दिया। लोगों की मुसीबतों का खयाल कर वहाँ एक कस्तूरबा स्मारक निधि का केन्द्र खोला है। इस केन्द्र द्वारा एक वहाँ आरोग्य केन्द्र और बालवाडी का काम चलता जाता है। इसके पूर्व दिशा की अधिकतर जमीन फसल के लायक नहीं है। इसमें एक सहकारी खेती फार्म बनाने की योजना बनायी गयी है। इस गाँव के मृत जानवरों का उचित उपयोग करने के लिये चर्मालय शुरू करने का निर्णय लिया गया है।

बिवतलेवाड़ी

इस गाँव में १९ परिवार हैं। जनसंख्या १८८ है। फसल में ६० एकड जमीन है। करीब १२ एकड जमीन बाँध वगैरह डाल कर गाँव के लोगों ने काम में लायी है। हर साल २०० मन चावल वे अधिक पैदा करने लगे हैं।

रांगणातुलसुली

यह सपूर्ण ग्रामदान है। जनसख्या ४००। जमीन १८७१ एकड, इसमें से ७७१ एकड भूमि में फसल होती है। यहाँ साधन की कमी है। निर्माण-समिति द्वारा बैल खरीदने के लिये कर्ज दिया गया। गाँव के लोगों ने इस साल सामूहिक खेती करने का तय किया है। गाँव की ग्रामस्वराज्य सोसाइटी स्थापित हुई है।

नानेली

मराठी के मशहूर साहित्यिक श्री वि० स० खांडेकर का यह गाँव है। इस गाँव की एक वाडी का ग्रामदान हुआ है। परिवार संख्या १६ है। १२३-२८ एकड जमीन है। गाँव में चार भूमिहीन थे, उन्हें जमीन दी गयी। १४३५ रु० सरकार की ओर से कर्ज दिया गया है। वह योग्य रीति से लौटाया जा रहा है। इस कर्ज से वाडी साहूकारी कर्ज से करीब-करीब मुक्त हुई है। गाँव का उत्पादन सवागुना बढ़ा है। एक अम्बर चरखा-केन्द्र भी चलता है। सोसाइटी की स्थापना हुई है।

वालावल

जिले के मशहूर गाँवों में से यह एक है। गाँव के २२ वाडियों में से १८ ने ग्रामदान किया है। विनोबाजी की पदयात्रा के समय यह ग्रामदान हुआ। इसमें ज्यादा सुधार नहीं हो सका, इसका कारण यह कि इस गाँव के ज्यादातर लोग बम्बई में हैं। जो लोग गाँव में हैं, उनका और बम्बई के लोगों का उतना सम्बन्ध नहीं रह सकता, जितना कि प्रगति के लिये रहना आवश्यक है। फिर भी ओडोसा, करमाळा, बाधकोंड, पटकर में काम हो रहा है। गाँव में दो अम्बर-केन्द्र चलते हैं। सामूहिक खेती और सहकारी दूकान चलाने की कोशिश की है। लेकिन यह उतनी सफल नहीं हुई। बाधकोंड वाडी पर एक ग्रामस्वराज्य सोसाइटी शुरू की है। ग्रामस्वराज्य का और खास करके खादी-ग्रामोद्योग का काम देखने के लिये एक क्षेत्रीय समिति आयोजित की गयी है। इस समिति ने गाँव के विकास की दो साल की एक योजना बनायी है।

गोठोस

इस गाँव के ३ वाडियों ने ग्रामदान किया है। लेकिन एक ही स्थान पर विशेष काम हो रहा है। जनसंख्या ६५० है। १५० परिवार के लोग एक प्लाट में सामूहिक पद्धति से काम कर रहे हैं। गाँव की पाठशाला की इमारत बाँधने के लिये लोगों ने श्रमदान किया। धान की सोसाइटी स्थापित की है। ग्रामस्वराज्य सोसाइटी भी है। इस साल एक अम्बर चरखा परिश्रमालय भी शुरू किया गया है। लोगों ने वस्त्रस्वावलंबन का संकल्प किया है।

ओवलिये

सावंतवाडी तहसील में बेलगाँव-सावंतवाडी मार्ग पर यह गाँव आंबोली घाट के नजदीक है। विनोबाजी की पदयात्रा के समय इस गाँव का ग्रामदान हुआ। कुल जमीन २३०० एकड है। इसमें से १६५ एकड जमीन चावल के फसल में है। गाँव में ८४ परिवार हैं, जो सभी ग्रामदान में शामिल हैं। जनसंख्या ४१६ है। सामूहिक भावना गाँव के लोगों में पहले से ही है। लेकिन यह भावना ग्रामदान के बाद अधिक विकसित हुई।

ग्रामदान के पहले १० परिवार भूमिहीन थे। उन्हें जमीन दी गयी। ग्रामसभा बन गयी। खेती-सुधार की योजना हुई। २५ एकड जमीन सामूहिक रीति से होने लगी। हर साल नई जमीन उपयोग में लाने की कोशिश की गयी। ४ हजार फीट रास्ता गाँववाले ने श्रमदान से तैयार किया। गरमी के दिनों की खेती के लिए २७०० फीट पानी खेती में लाने का मार्ग श्रमदान से तैयार किया। घर-घर में कंपोस्ट खाद के गड्ढे बनाये हैं।

गाँव में पारिवारिक भावना बढ़ती जा रही है। एक किसान घर बाँधते समय गिर पड़ा, तो उसका घर दूसरे लोगों ने पूरा कर दिया। एक ग्रामस्थ कैन्सर से बीमार था, तो अस्पताल में ले जाकर उसका इलाज किया गया। उसका पूरा खर्च गाँव ने ही किया।

ग्रामसभा के लिए एक मकान दुरुस्त कर लिया है। एक छोटा पुस्तकालय भी स्थापन किया है। अम्बर चरखा परिश्रमालय भी शुरू किया गया है। गाँव की ही एक बहन बालवाडी का काम करती हैं। सहकारी ग्राम-स्वराज्य सोसाइटी रजिस्टर्ड हो चुकी है। इस सोसाइटी द्वारा किसानों को कर्ज दिया गया और वह वसूल भी किया जा रहा है। गाँव के सब लोग इस सोसाइटी के सदस्य हैं।

गाँव के विकास की १५ साल की योजना बनायी गयी है। गाँव के ४० एकड जमीन में आम और काजू के पेड लगाये गये। १०० एकड जमीन 'बंडिंग' करके उपयोग में लाने का प्रबंध किया है। सातारा जिले में महाबलेश्वर के पास जो बंडिंग का काम हुआ है, वह ६ किसानों ने देख लिया है। राष्ट्र-सेवा दल का आठ दिन का एक श्रमदान-शिविर हुआ और इस शिविर में नई जमीन उपयोग में लाने का प्रयोग किया गया।

एक चर्मोद्योग-केन्द्र खोलने के लिए घर बाँधने का काम शुरू है। गाँव में पीने के पानी की सुविधा नहीं थी। विकास-योजना की मदद लेकर एक कुआँ भी बाँध लिया। गाँव में तीन टोलियों द्वारा सामूहिक खेती होती है।

गत साल माणगाँव विभाग में जो ५ ग्रामदान हुए, उनमें प्राथमिक सर्वे का काम शुरू है और ग्रामस्वराज्य सोसाइटी बनायी है। केरवडे यह ३०-४० मील के बीच का एक तीर्थयात्रा का गाँव ग्रामदान में शरीक हुआ है।

इन दोनों जिलों के ग्रामदानी गाँवों में स्थानिक लोगों का नेतृत्व निर्माण होने के लिए खादी-कमीशन की मदद लेकर ग्रामदानी ग्रामस्थ कार्यकर्ताओं का दो माह का एक वर्ग गोपुरी आश्रम में लिया गया। इस वर्ग का लाभ १७ ग्रामस्थ भाइयों ने लिया वे अब अपने-अपने गाँव में काम करने लगे हैं। ग्रामदानी ग्रामस्थों के ४ शिविर ओवलिये, निवजे और वालावल में भी हुए। इस साल अभी-अभी केरवडे गाँव में शिविर चलाया था। ग्रामदानी गाँव के ग्रामस्थों ने दो सामूहिक पदयात्रा की तो ७ नये ग्रामदान और मिले।

काशी से उंगूतुरू पदयात्रा

मैंने गत वर्ष भी सेवाग्राम-सम्मेलन में पदयात्रा द्वारा पहुँच कर पूज्य बापू की कुटिया पर अपनी श्रद्धांजलि अर्पित की थी। उस समय अनुभव आया था कि लोकसेवक हो या अन्य चाहे कोई भी मानव हो, अपने लक्ष्य की पूर्ति के पहले अपने बीच कठिन का भान न करे और कार्य करता रहे तो निश्चय ही लक्ष्य की पूर्ति होगी। उपरोक्त अनुभवों के आधार पर ही इस वर्ष भी १३ फरवरी १९६१ को काशी के सभी परिचित-अपरिचित गुरुजनों के आशीर्वाद एवं सद्भावनाओं के साथ अपने साथी श्रीरामजी के साथ अ० भा० सर्वोदय-सम्मेलन उंगूतुरू (आन्ध्र प्रदेश) की पदयात्रा प्रारम्भ की।

सर्वप्रथम बिहार प्रदेश की १५२ मील की यात्रा ८ दिन में समाप्त की। अनुभव आया कि भारत-भूमि त्यागप्रधान भूमि है। यह सीख हमें बिहार की भूमि में विशेष रूप से देखने को मिली। २३ फरवरी को मध्यप्रदेश में हम लोगों का प्रवेश हुआ। गम्हारडीह ग्रामदानी गाँव के लोगों का सहवास भी हमें मिला। यहाँ हमारे आदरणीय कार्यकर्ता श्री चन्द्रप्रकाशजी कुछ वर्षों से रह रहे हैं। सर्वोदय-समिति रायपुरी में एक रोज पूर्ण विश्राम के बाद यात्रा आरम्भ की और ९ मार्च को मध्यप्रदेश की २३२ मील की यात्रा समाप्त कर उडीसा प्रदेश में प्रवेश किया। इस प्रदेश के स्कूल, कालेजों के शिक्षकों का विशेष तथा प्यार एवं सहकार प्राप्त हुआ। कोरापुट जिले में तो मेरा कार्यक्रम उस जिले के निदेशक श्री विश्वनाथजी पट्टनायक ने ही बनाया था, जिसके अनुसार ही मुझे चलना पड़ा। इस पर लगा कि पक्षरहित कार्यकर्ता का यह प्रभाव है। कई ग्रामदानी गाँव भी देखने को मिले। सब गाँवों की स्थिति कुछ कम-वेश एक-सी देखने को मिली। जहाँ कहीं कार्यकर्ता और जनता का मेल हुआ, वहाँ एक नई ही शक्ल दिखाई देती है।

इन अनुभवों के साथ हमने उडीसा प्रदेश की ३१२ मील की यात्रा समाप्त कर आन्ध्र प्रदेश में प्रवेश किया। भाषा-भिन्नता के कारण थोड़ी परेशानी महसूस हुई। फिर भी वहाँ के लोगों का अन्य प्रदेशों की अपेक्षा विशेष प्रेम और सहकार प्राप्त हुआ। इस तरह आन्ध्र प्रदेश की कुल यात्रा २०४ मील की हुई। इस तरह हमारी यह ९२५ मील की यात्रा सकुशल समाप्त हुई।

लोकसेवक, वाराणसी —**सरजू भाई**

साहित्य-समीक्षा

महादेव भाई की डायरी

प्रथम खंड (१९१७ से १९१९), सं० नरहरि परीख।

अनुवादक : रामनारायण चौधरी, पृष्ठ-संख्या ५४६, मूल्य पाँच रुपया।

अखिल भारत सर्व सेवा संघ-प्रकाशन, काशी का एक नया महत्त्वपूर्ण प्रकाशन है, 'महादेव भाई की डायरी।' 'श्री महादेव भाई की डायरी' वस्तुतः उनके द्वारा लिखी गयी गांधीजी की डायरी है। १९१७ में श्री महादेव भाई गांधीजी के सम्पर्क में आये तब से वे नियमित डायरी लिखते रहे और लगातार २५ वर्ष तक यह सिलसिला चलता रहा और जब १९४२ में उनकी मृत्यु हुई, तब ही यह सिलसिला टूटा। गांधीजी और महादेव भाई का सम्बन्ध तो जगविख्यात है ही। अखिल भारत सर्व सेवा संघ-प्रकाशन के संचालक श्री राधाकृष्ण बजाज ने अपने प्रकाशकीय निवेदन में ठीक ही लिखा : "महादेव भाई और गांधीजी का सम्बन्ध दो अभिन्न हृदयों का सम्बन्ध है। महादेव भाई की इन डायरियों में आपको गांधीजी की राष्ट्रीय या अन्तर्राष्ट्रीय नेता की मुलाकात से लेकर अगर राह चलते बच्चों से विनोद किया है, तो वह भी इन डायरियों में मिलेगा। इतिहास में इस प्रकार के डायरी-लेखन की केवल एक ही मिसाल है, और वह है, अंग्रेज विद्वान बोसवेल की, जिन्होंने डा० जानसन के जीवन के बारे में लिखा है। लेकिन बोसवेल और महादेव भाई की डायरियों में उतना ही अन्तर है, जितना डा० जानसन और गांधीजी में।"

आलोच्य पुस्तक महादेव भाई की डायरी का प्रथम खण्ड है। इस खण्ड में १९१७ से १९१९ तक—इन तीन सालों की डायरी है। सर्व सेवा संघ प्रकाशन क्रमशः विभिन्न खंडों में डायरियाँ प्रकाशित करता रहेगा। इसके पहले नवजीवन ट्रस्ट, अहमदाबाद गुजराती में पाँच और हिन्दी में तीन खंड प्रकाशित कर चुका है। नवजीवन द्वारा प्रकाशित तीन खंड १९३२-३३ के हैं। सर्व सेवा संघ उन खंडों को भी अपने क्रम में प्रकाशित करेगा। अनुमानतः लगभग २० खंड प्रकाशित होंगे और एक खंड की पृष्ठ-संख्या ५०० होगी।

इस डायरी का सम्पादन गुजरात-प्रसिद्ध रचनात्मक कार्यकर्ता और महादेव भाई के मित्र स्व० नरहरि परीख ने किया है। डायरी का प्रथम खंड १३ नवम्बर १९१७ से प्रारम्भ होता है और ३१ दिसम्बर १९१९ को समाप्त होता है। महादेव भाई भी नवम्बर १९१७ में ही गांधीजी के पास आये थे।''''बीच-बीच में कुछ दिन छूटे भी हैं और उतने विस्तार में नहीं लिखी गयी, जितनी कि यरवदा जेल की डायरियाँ। एक तो जेल में फुरसत भी ज्यादा थी और दूसरे महादेव भाई के डायरी लिखने की शुरुआत थी। इस डायरी में प्रमुख रूप से तीन घटनाओं का जिक्र बार-बार आता है—(१) खेड़ा का सत्याग्रह, (२) अहमदाबाद के मिल-मजदूरों की हड़ताल और (३) युद्धभरती। इसके अलावा बहुसंख्यक पत्र हैं, जिनसे इस बात का अत्यन्त स्पष्ट दर्शन होता है कि देश में आकर काम शुरू करते समय गांधीजी के सामने कैसे कैसे प्रश्न आये थे और किस ढंग उन्होंने उसका हल निकाला।

खेड़ा का सत्याग्रह और अहमदाबाद का सत्याग्रह बापू और देश के आजादी के आंदोलन की प्रमुख घटनाएँ हैं। इसके पहले बापू चम्पारण में किसानों को संगठित होकर अन्याय के प्रतिकार करने की अहिंसात्मक तालीम दे चुके हैं। इस प्रकार हम देखते हैं कि हिन्दुस्तान में गांधीजी ने पहली बार किसानों और मजदूरों में जागृति का शंखनाद फूँका।''''अहमदाबाद के मिल-मजदूरों की लड़ाई ने ट्रेड यूनियन आन्दोलन के इतिहास में एक नया मोड़ उपस्थित किया। इस लड़ाई के अवसर पर अहमदाबाद कलेक्टर ने कहा—"मिल-मालिकों और मजदूरों के बीच इतने स्नेह से हुई लड़ाई, मैं अपने जीवन में पहली बार देख रहा हूँ।" हड़ताल के अन्तिम दिनों बापू ने जो चार दिन के उपवास किये हैं, वे बापू की दृष्टि से तब तक के लिए किये गये कार्यों में सबसे बड़ा कार्य था।

सैनिक भरती की एक अजीब पहेली को समझने की थोड़ी कुंजी इस डायरी में मैं मिलेगी। गांधीजी के समान अहिंसा का भक्त जो सामूहिक संगठित अहिंसा के द्वारा सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक समस्याओं पर अहिंसात्मक शस्त्र का प्रथम और मुख्य प्रणेता है—क्योंकर सैनिक-भरती में दिलचस्पी लेता है। इस डायरी में अनेक पत्रों और अन्य तरीकों से बापू ने सैनिक भरती के औचित्य को प्रतिपादित किया। उस समय बापू यह मानते थे कि हिन्दुस्तान के लोगों में साहस का अभाव है। वे बिना किसी प्रतिकार के अन्याय को सहन कर लेते हैं। वे आज ऊपर से शान्त और चुप दिखते हैं, इसलिए नहीं कि वे अहिंसा व्रत को पूर्णतः मान चुके हैं। उनके शब्दों में "हमारी जनता को जबरन निःशस्त्र कर दिया गया है। परन्तु उसके दिल से मारने की इच्छा भी जरा भी नहीं गयी है।" युद्ध में भाग लेने के अपने विचार की पुष्टि करते हुए वे कहते हैं : "जब मैं हर एक हिन्दुस्तानी से सेना में भरती होने के लिए कहता हूँ, तब साथ-साथ उसे यह भी कहता हूँ कि जो सेना में भरती होते हैं, वे खून की प्यास बुझाने को नहीं; बल्कि मौत का डर न रखना सीखने को भरती होते हैं।"

वस्तुतः उन दिनों यह आरोप लगाया जाता था कि कायर लोग और डरपोक लोग अहिंसा का आश्रय लेते हैं। गांधीजी इस आरोप को गलत मानते थे। उनकी राय में सच्चा बहादुर और निडर व्यक्ति ही अहिंसा-धर्म का पालन कर सकता है, किंतु स्वराज्य की लड़ाई के लिए उनको जिस जनता से काम लेना था, वह बहुत हद तक कायर और डरपोक बन चुकी थी।''' युद्ध भरती इस बात की प्रतिक्रिया मालूम होती है।

अपनी अध्ययनपूर्ण और विस्तृत प्रस्तावना में श्री नरहरि भाई ने इस विषय पर काफी चर्चा की है। बापू उस वक्त नये अनुभवों से गुजर रहे थे। कोई यह न माने कि बापू युद्ध के पोषक थे। बापू की यह विशेषता थी कि अपने विचारों को संशोधित करते जाते थे और उनकी सत्य की खोज जारी रहती। खैर, जो भी हो, हम साफ देखते हैं कि गांधी विचार, उस समय के बाद काफी विकसित हो गया है। आज हम मानते हैं कि किसी भी हालत में हमें न हिंसात्मक युद्ध में भाग लेना चाहिए और न उससे किसी प्रकार का समर्थन मिलना चाहिए, चाहे वह अच्छे उद्देश्यों से लेकर क्यों न हों।

इन तीन प्रमुख विषयों के अलावा कुटुम्बीजनों, आश्रमवासियों को लिखे गये पत्र, विनोबा का ऐतिहासिक पत्र, दूध न लेने का व्रत और बकरी के दूध लेने की छूट आदि बहुत-सी छोटी-मोटी बातें हैं।

हरएक व्यक्ति जो अहिंसा की शक्ति में विश्वास रखता है, और जो मानता है कि अहिंसा के द्वारा सब समस्याओं का स्थायी समाधान मिल सकता है, उनको हम सिफारिश करते हैं कि इस डायरी को अवश्य पढ़ें। अहिंसा के विकास का एक ऐतिहासिक वर्णन इन डायरियों में मिलेगा।

—मणीन्द्रकुमार

विहार-विभूति स्व० लक्ष्मीनारायण !

दीनानाथ 'प्रबोध'

सन् १९५८ की ८ मई की वह काली रात बिहार के इतिहास में भुलायी नहीं जा सकती! लक्ष्मी बाबू हम लोगों को छोड़ गये। आज से कुछ दिन पहले ही तो वे यहाँ सर्वोदय-आश्रम, रानीपतरा आये थे और प्रार्थना प्रवचन में उन्होंने यह कहा भी था कि "अब तो तुम भाई-बहनों को ही सारा काम सम्भालना चाहिए! हम लोग तो क्षण भर के मेहमान हैं।" क्या वे जानते थे कि हम लोगों से उनका यही अन्तिम मिलन था!

जिस समय मैं रानीपतरा आया था, ठीक उसके दूसरे सप्ताह बाद ही लक्ष्मी बाबू आश्रम पधारे थे। मैंने उनसे सहर्षा जिले के तन्त्रमुक्त कार्यकर्त्ता श्री टेकनारायणजी के मार्फत सिफारिश करवायी थी कि मेरा यहाँ मन नहीं लगता। लक्ष्मी बाबू ने मुस्कुराते हुए कहा था—"नहीं समझते टेकनारायणजी! इन्हीं लोगों पर तो अब सारा भार आने वाला है। सहर्षा मैं हमेशा कूदता रहा है। अब वैद्यनाथ बाबू के आश्रम में जिम्मेदारी तो सीखने दो।" कुछ दिन बाद दूसरी बार जब पुनः लक्ष्मी बाबू आश्रम आये और उनके स्नान करते समय जब मैं पहुँचा, तो उन्होंने हमसे पूछा—"क्यों दीनानाथ! अब तो मन लगता है न?" मैं दंग रह गया कि वे मुझ जैसे कितने कार्यकर्त्ताओं से प्रतिदिन मिलते होंगे, फिर भी वे मुझे नहीं भूले हैं। सच तो यह है कि लक्ष्मी बाबू जिसे एक बार सिर से पैर तक पैनी दृष्टि से निहार लेते, उसे वे कभी नहीं भूलते।

बिहार के खादी-ग्रामोद्योग, भूदान-ग्रामदान, महिला-उत्थान, हरिजन आदिवासी-सेवा, बालकल्याण, शिक्षण-प्रशिक्षण आदि का सारा काम पूज्य लक्ष्मी बाबू करते थे। यों तो सब काम की अपनी अलग-अलग लोगों की जिम्मेदारियाँ थीं, किन्तु सबको पग-पग पर उनका मार्गदर्शन मिलता ही रहता था। जीवन-यात्रा के जिस चरण में पहुँच कर लोगों के पाँव थक जाते हैं, शरीर शिथिल पड़ जाता है, साहस टूट जाता है और वह हार कर विश्राम के लिए आश्रय ढूँढ़ने लगता है, उस अवस्था में पहुँचने के बाद लक्ष्मी बाबू ने बापू के पदचिह्नों पर तथा विनोबा के मार्गदर्शन में चल रहे भूदान-ग्रामदान आन्दोलन के लिये अपने अस्तित्व को अपने में विसर्जित कर दिया। हम उनकी स्मृति में उनके बताये राह पर चल कर उस मंजिल पर पहुँचने का व्रत लें, जिसकी राह पर चलते-चलते उन्होंने अपनी मंजिल पर पहुँचने के धुन से मुँह न मोड़ा।

मुजफ्फरपुर सर्वोदयग्राम में स्व० लक्ष्मी बाबू का पुण्य स्मरण

मुजफ्फरपुर, सर्वोदयग्रामवासियों द्वारा ९ मई को स्व० लक्ष्मी बाबू की तृतीय पुण्यतिथि मनायी गयी। प्रातःकाल ५ से ९ तक सामूहिक सफाई का कार्यक्रम रहा। शाम को सामूहिक सूत्रयज्ञ हुआ। सभा में स्व० लक्ष्मी बाबू के अभिन्नतम साथी श्री ध्वजाप्रसाद साहु ने उनके जीवन पर प्रकाश डालते हुए कहा कि लक्ष्मी बाबू का जीवन त्यागमय और तपस्यामूलक था। उनका जीवन-दर्शन 'करते करते मरो नहीं, वरन् मरते मरते करो' का था। उस अमर आत्मा की श्रद्धांजलि में सर्वोदयग्राम के सभी कार्यकर्त्ताओं ने अपने हाथ कते सूत की एक एक गुंडी समर्पित की।

यूरोप-अमेरिका के शांति-समाचार

युद्ध-विरोधियों की पदयात्रा

अमेरिकन युद्ध-विरोधियों का एक दल सैनफ्रांसिस्को से पैदल चल कर १००० मील की यात्रा करके मास्को पहुँचा। वहाँ से यह फिनिक्स, अरीजोना पहुँचा है। इस प्रकार युद्ध-विरोधी शान्ति-प्रयत्नों का यह आन्तरमहादेशीय प्रयत्न पहले ही ढंग का है। तारीफ यह है कि इस पद यात्री-टोली के सभी सदस्य अहिंसा के प्रति मन, वचन और कर्म में बंधे हुए हैं। वे खुद कष्ट उठाते हुए भी अपने नियमों का उल्लंघन नहीं कर रहे हैं। इस टोली ने यह योजना बनायी है कि वे अपनी वापसी यात्रा पूरी करने तक ६,५०० मील का पैदल सफर, अगस्त, १९६१ ई० तक पूरा कर लें। यह १ दिसम्बर १९६० को सैनफ्रांसिस्को से पैदल चला था।

इस पद यात्रा का उद्देश्य दुनिया को निरशस्त्रीकरण और अहिंसा का सन्देश देना है। यह विनोबाजी की तरह इन विचारों का प्रसार ग्रामक्षेत्रों में करते हुए आगे बढ़ता है। कम्युनिस्ट देशों में भी इनका प्रचार उसी प्रकार चल रहा है, जिस तरह गैर-कम्युनिस्ट देशों में। यह टोली जिस देश में जाती है, वहाँ की जनता से अनुरोध करती है कि वह अपनी सरकार पर पहले निःशस्त्र होने के लिए जोर दे और इसके लिए अन्तर्राष्ट्रीय समझौते का इन्तजार न करे।

इस पैदल टोली को आशा से अधिक सफलता मिल रही है। बहुत-से लोग तो रास्ते में ही इस अच्छे उद्देश्य की पूर्ति के लिए इस टोली में शामिल होकर आगे बढ़ रहे हैं। इस यात्री-दल की रफ्तार औसत रूप में २५ मील प्रतिदिन की है और यह शिकागो पहुँचने तक लगभग २००० मील का सफर और पूरा कर लेगा। पैदल-यात्री-दल की समिति ने यह फैसला किया है कि वह दस-दस यात्रियों की टोली हर उप-मार्ग पर भेज कर अपने उद्देश्य के प्रचार में अधिक सफलता प्राप्त करेगी। खासकर न्यूयार्क और शिकागो के बीच इस यात्रा की व्यवस्था अधिक व्यापक रूप में की जायगी, जिससे जन-समूह इन टोलियों के सम्पर्क में अधिकाधिक रूप में आ सके।

यूरोप की यात्रा में इस यात्री-दल के साथ अन्य शान्ति-दलों के सदस्य खास-खास स्थानों पर आ मिलेंगे। वे युद्ध-विरोधी प्रदर्शनों एवं अन्य ऐसी क्रियाशीलताओं में भाग लेंगे। यदि उन्हें किसी देश विशेष में प्रवेश करने की आज्ञा नहीं मिली तो वह वहाँ सत्याग्रह करके प्रवेश करेंगे। इस प्रकार गांधीजी के दक्षिण अफ्रीका और भारत में किये गये सविनय अवज्ञा आन्दोलन को अमेरिका और यूरोप में दुहराया जायगा।

युद्ध-कार्यालय को चुनौती

इंग्लैंड में २००० लोगों और ६०० मोटरगाड़ियों ने इम्बर के विल्टशायर गाँव में जाकर युद्ध-कार्यालय को चुनौती दी है। मोटरगाड़ियों की संख्या इतनी बढ़ गयी कि जिस जगह युद्ध-कार्यालय को चुनौती देने के लिए सभा हुई, वहाँ बहुत-से लोग समय पर पहुँच भी नहीं पाये, क्योंकि मोटरों का यह जुलूस लगभग ढाई मील लम्बा था। इस भीड़ के नेता आगस्टिन अण्डरवुड ने बताया कि सैनिक अधिकारियों ने सड़क-बन्द घोषित करके जितना ही इस जन-समूह को रोकने का प्रयत्न किया, लोग उतनी ही उमंग से आगे बढ़ते गये और जिसे जहाँ जगह मिली वह वहीं गाड़ी पार्क करके सभास्थल की ओर बढ़ा। श्री अण्डरवुड ने यह भी बताया कि युद्ध विरोधी इस प्रदर्शन ने सरकार के युद्ध-विभाग को अपने इस जमाव के उद्देश्य की सूचना भी नहीं दी। केवल इतना ही बताया कि हम युद्ध-विरोधी वहाँ—इम्बर गाँव जा रहे हैं। दो हजार लोगों ने अपने वाहनों से उतर कर इस गाँव का चप्पा-चप्पा छान मारा और फिर सभास्थल में पहुँचे। श्री अण्डरवुड ने सभा में घोषित किया कि युद्ध-विभाग ने हमें यहाँ इस गाँव में न आने के लिए कहा था, किन्तु हम तो जनता को साथ लेकर यहाँ पहुँच ही गये और युद्ध-कार्यालय को चुनौती दे रहे हैं कि वह इस गाँव से अणु-अस्त्र निर्माण सम्बन्धी गतिविधि बन्द करे। अब हम कानूनी ढंग से और नैतिक दबाव डाल कर इस गाँव को मुक्त करा कर रहेंगे। यहाँ जो जमीन युद्ध-विभाग ने अपना ली है, हम उसमें हल चला कर फसल उगायेंगे।

पोलारिस—आण्विक पनडुब्बी का विरोध

"पोलारिस" नामक जिस भीषण संहारकारी आण्विक पनडुब्बी के निर्माण से आज सारा संसार संत्रस्त है, उसके निर्माण के विरुद्ध लन्दन में बर्ट्रेण्ड रसल और माईकेल स्काट ने सविनय अवज्ञा-आन्दोलन गत १८ फरवरी से चालू कर दिया है। यह आन्दोलन इस प्रकार की महाघातक पनडुब्बी का निर्माण हो रहा है, वहाँ प्रवेश करके 'बैठा-सत्याग्रह' किया जाय। १०० विशिष्ट विचारकों की एक समिति ने इस आन्दोलन के संचालन का कार्यक्रम बनाया है, जो आण्विक शस्त्रास्त्रों के निर्माण का अहिंसात्मक विरोध संगठित कर रही है और १२०० सत्याग्रही इसमें नाम लिखा चुके हैं। इस आन्दोलन के प्रदर्शन में सर हर्बर्ट रीड जैसे प्रमुख लेखक, कवि और कलाकार ने भाग लिया है। उधर अमेरिका में इस प्रकार के शांतिप्रिय आन्दोलनकारियों पर जो मुकदमा शिलाअधिकारियों ने चला रखा था, उसे संयुक्त राष्ट्र के संघीय न्यायालय के जज एण्डर्सन ने खारिज कर दिया है।

फ्रांस के बाबा "शान्तिदास"

१९३६ में सिसली के एक लेखक भारत आकर गांधीजी से मिले थे और उनसे बहुत प्रभावित होकर फ्रांस लौट गये थे। वहाँ उन्होंने लैंग्वाडेल-बास्टो में स्त्री-पुरुषों का एक ऐसा समुदाय कायम किया है, जो यूरोप में अपने ढंग का अद्वितीय गिना जाता है। इन्होंने अपनी इस संस्था का नाम "शान्ति-सेना" रखा है। अब यह समुदाय अपने आरम्भिक परीक्षणों के बाद कुछ आन्तरिक विकास कर सका है और इसके संचालक यहाँ "शान्तिदास" के नाम से महात्मा गांधी के योग्यतम शिष्य गिने जाते हैं। उन्होंने हाल ही में अपने एक लेख में यह विचार प्रकट किया है कि "मैं मानव-समुदाय के प्रति अपने रुख को एकरूप बनाना चाहता हूँ—न केवल विश्वास, प्रार्थना और पूजा में ही, बल्कि मानवमात्र की ओर शांति की सेवा में भी। मैंने संसार को प्रयत्न देख कर और इतिहास का अध्ययन करके यह पाया है कि राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक या क्रियात्मक क्षेत्रों में कोई भी संसार का नेता ईसा मसीह के इतना निकट नहीं पहुँच सका जितना कि महात्मा गांधी पहुँचे थे। गांधीजी धार्मिक नेता नहीं, जीवन के नेता थे।····उनका अहिंसा-उपदेश मानव-जाति के लिए ईसाई धर्म के उस महान् दान के ही समान है, जिसमें दान को न्याय के साथ संयुक्त कर दिया गया है।"

इस प्रकार हम देखते हैं कि "लैंग्वाडेल-बास्टो" का रोमन कैथोलिक अपने को ईसाई कहने में गर्व का अनुभव नहीं करता है, पर वह गैर-ईसाई को भी अपने अन्दर आने को आमंत्रित करता है।

इस समुदाय का ढाँचा इस प्रकार का है, जैसे इसके सदस्य एक पिता की सन्तान हों जिसमें अकेले व्यक्ति के लिए भी स्थान है और जोड़े के तथा कुटुम्ब के लिए भी। ये सब एक ही गुरु के शिष्य होते हैं, जो उनके शरीर और आत्मा के लिए आवश्यक साधन-सामग्री की व्यवस्था करता है। जमीन स्वयं जोत कर खेती करना, दस्तकारी (जिसमें मुख्य कताई और बुनाई है) और औषधोपचार एवं शिक्षण यहाँ के मुख्य काम हैं। वैयक्तिक सन्तुलन और भौतिक स्वतंत्रता के लिए हाथ से काम करना जरूरी होता है। नैतिक दृष्टि से भी यह इसलिए आवश्यक है कि इस समुदाय-यंत्र के इस्तेमाल से बरी और अहिंसक बना रहता है। धार्मिक जीवन के लिए अनुकूल अभ्यास के अतिरिक्त यहाँ सांस्कृतिक जीवन भी है—जैसे संगीत। उच्च ध्येय के लिए साधन-शुद्धि पर यहाँ जोर डाला जाता है और युद्ध के प्रति विरोधी भाव उत्पन्न किया जाता है। —इलस्ट्रेटेड प्रोटेस्टेंट मैगजीन

['गांधी मार्ग' से]

स्त्रियों के लिये शांतिसेना विद्यालय

दूसरा सत्र कस्तूरबाग्राम में

कस्तूरबा शांतिसेना विद्यालय का दूसरा सत्र १५ जून से कस्तूरबाग्राम, इन्दौर में आरंभ होगा। सत्र पाँच माह तक चलेगा। पहला सत्र जो साधना केन्द्र, राजघाट, काशी में चला, सर्वोदय-सम्मेलन के अवसर पर संपूर्ण हुआ था। विद्यालय का सचालन अन्नपूर्णा महाराणा, अन्नपूर्णा दास तथा निर्मला देशपांडे करेंगी।

हर प्रांतीय सर्वोदय-मंडल विद्यालय के लिए दो या तीन बहनों को भेज सकता है। प्रशिक्षण-काल में कस्तूरबा ट्रस्ट सब बहनों को छात्रवृत्ति देगा। प्रांतीय सर्वोदय-मंडल बहनों के आवेदन-पत्र काशी और इंदौर कार्यालय (कस्तूरबाग्राम) को तुरंत भेजने की कृपा करें।

अधिक जानकारी, शांति-सेना कार्यालय, सर्व सेवा संघ, राजघाट वाराणसी से प्राप्त हो सकती है।

मासिक चिट्ठियाँ

बिहार की चिट्ठी

गत ६ अप्रैल से १३ अप्रैल तक प्रांत भर में 'ग्रामस्वराज्य सप्ताह' मनाने का आयोजन अखिल भारत सर्व सेवा संघ के निर्देशानुसार किया गया। प्रांत के कोने-कोने में ग्रामस्वराज्य के नारे गूंजे और ग्रामस्वराज्य का संकल्प दुहराया गया। विभिन्न जिलों में इस कार्यक्रम को सफल बनाने के लिए सर्वश्री ध्वजाप्रसाद साहु, सदस्य, खादी-कमीशन; रामदेव ठाकुर, अध्यक्ष, बिहार खादी-ग्रामोद्योग संघ, वैद्यनाथ प्रसाद चौधरी, मंत्री, बिहार भूदान यज्ञ कमिटी, श्याम सुन्दर प्रसाद, संयोजक, बिहार सर्वोदय मंडल आदि नेताओं का मार्गदर्शन प्राप्त हुआ।

पटना नगर में इस अवसर पर एक विशेष आयोजन ७ अप्रैल को बिहार राज्य खादी ग्रामोद्योग बोर्ड के तत्वावधान में हुआ, जिसका उद्घाटन श्री शंकरराव देव ने किया और अध्यक्षता श्री महेश प्रसाद सिंह, अध्यक्ष, खादी-बोर्ड ने की। इस आयोजन में बिहार के अनेक सर्वोदय-नेताओं के अलावा बिहार के मुख्य मंत्री पं० विनोदानन्द झा तथा विधान सभा एवं विधान परिषद के अनेक विधायकगण शामिल हुए। इस मौके पर श्री शंकररावजी का एक अत्यन्त उद्बोधक एवं प्रेरणापूर्ण व्याख्यान हुआ। आपने अपने भाषण में ग्रामस्वराज्य के साथ-साथ 'नया मोड़' के उद्देश्यों एवं कार्यक्रमों पर प्रकाश डाला। इस अवसर पर स्थानीय पत्रकारों का भी एक सम्मेलन हुआ, जिसमें श्री शंकररावजी ने ग्रामस्वराज्य की मूलभूत कल्पना का विशद विवेचन किया और पत्रकारों की अनेक शंकाओं का निरसन किया। प्रसंगवश आपने गांधीजी के 'एवर वाइडनिंग कान्सेंट्रिक ओसेनिक सर्कल' (समुद्रीय तरंगों के वर्तुल की तरह जो एक केंद्र से बराबर विस्तृत होता जाता है।) के आदर्श की व्याख्या की और आज की परिस्थिति में उसकी सार्थकता बतायी।

पटना विश्वविद्यालय में सर्वोदय स्वाध्याय मंडल की ओर से आयोजित छात्रों की सभा में भी श्री शंकररावजी का एक प्रभावकारी व्याख्यान हुआ। व्याख्यान का विषय था—'सर्वोदय और लोकतंत्र।' इतिहास विभाग के प्रो० विमलप्रसाद ने सभा की अध्यक्षता की।

श्री शंकरराव देव के इन भाषणों एवं व्याख्यानों का अच्छा असर इस नगर के बुद्धिवादियों पर हुआ है। लोग शायद पहली बार यह महसूस कर रहे हैं कि ग्रामस्वराज्य, लोकस्वराज्य आदि की बातें काल्पनिक एवं पिछड़ेपन की बातें नहीं, बल्कि कुछ ऐसे विचार हैं, जो वैज्ञानिक हैं और जिन्हें मूर्त रूप दिया जा सकता है। इन भाषणों से छात्रों में ग्रामस्वराज्य एवं लोकस्वराज्य के संबंध में जिज्ञासा पैदा हुई और यह सोचा गया कि श्री शंकररावजी से इन विषयों पर अनेक भाषण कराये जायँ।

* * *

अप्रैल माह का दूसरा पखवारा मुख्यतः अखिल भारत सर्वोदय-सम्मेलन में जाने-आने की तैयारी और जाने आने में ही बीता। बिहार से हर वर्ष सैकड़ों कार्यकर्ता सम्मेलन में जाते हैं। इस वर्ष भी लगभग एक हजार व्यक्ति सम्मेलन में गये। सम्मेलन के अवसर पर इकट्ठे होकर बिहार के कार्यकर्ताओं ने संत विनोबा के 'बीघे में कट्ठा' वाले नये मंत्र को सामूहिक रूप से दुहराया और उसके आधार पर एक प्रांतव्यापी आंदोलन खड़ा करने का संकल्प जाहिर किया। सम्मेलन से लौट कर वे उस संकल्प की पूर्ति में जुट गये हैं और अपनी सारी शक्ति उसमें लगाने का प्रयास कर रहे हैं।

* * *

बिहार प्रादेशिक अखंड पदयात्रा-टोली ने (जो गत १५ अगस्त १९५८ से ही लगातार चल रही है) पिछले दो महीनों में २२३ मील की यात्रा सहर्षा जिले में की। इस अवधि में उसे १७१ दानपत्रों के द्वारा करीब १५०० कट्ठा भूमि भूदान में प्राप्त हुई और १६८ रु० की थैली भी मिली। करीब २७५ रु० का सर्वोदय-साहित्य और ५०० रु० की खादी की बिक्री हुई। टोली के लोगों का संपर्क १६५ गाँवों से हुआ।

इन दो महीनों में टोली को अनुभव हुआ है कि जनता विनोबाजी के 'बीघा-कट्ठा' वाले मंत्र का स्वागत करने के लिए तैयार है और अगर संगठित प्रयास किया जाय, तो बिहार का ३२ लाख एकड़ भूमि इकट्ठा करने का संकल्प पूरा हो सकता है।

आरम्भ से अब तक इस टोली ने लगभग ७००० मील की यात्रा इस प्रान्त के विभिन्न जिलों में की है।

* * *

पटना सिटी में अशोभनीय विज्ञापनों एवं गन्दे गानों आदि के विरुद्ध जनमत तैयार करने की दृष्टि से स्थानीय सर्वोदय-मित्र मंडल और 'गन्दे चित्र हटाओ समिति' की ओर से गत १७ अप्रैल से एक जोरदार अभियान चलाया गया। इस सिलसिले में नगर के विभिन्न मुहल्लों में जनसभाएँ आयोजित की गयीं, जिनमें प्रतिष्ठित वक्ताओं के द्वारा अशोभनीय विज्ञापनों एवं गन्दे गानों एवं साहित्य के विरुद्ध विनोबाजी के आन्दोलन की सार्थकता बतायी गयी।

इस अभियान के सिलसिले में ही गत १७ अप्रैल को पटना सिटी बहुद्देशीय विद्यालय में, २० अप्रैल को दीवान-बहादुर राधाकृष्ण जालान उच्च माध्यमिक विद्यालय में तथा २४ अप्रैल को मारवाड़ी उच्च माध्यमिक विद्यालय में विद्यार्थियों एवं शिक्षकों की विराट सभाएँ विद्यालयों के प्राचार्य अथवा प्रधान अध्यापक की अध्यक्षता में हुईं। इन सभाओं में कुल मिला कर लगभग ३००० छात्र शामिल हुए और उन्होंने अश्लील चित्रों के बहिष्कार की प्रतिज्ञा सामूहिक रूप से ली। एक प्रस्ताव द्वारा शिक्षकों से अनुरोध किया कि वे अपने विद्यार्थियों में सर्वोदय विचार के प्रति आस्था पैदा करने का प्रयास करें।

—सच्चिदानंद

कानून के साथ-साथ जनशिक्षण आवश्यक

श्री बनवारीलाल चौधरी सिटाया (होशंगाबाद) से एक पत्र में लिखते हैं :

"दस वर्ष के ग्रामीण जीवन के कारण मैं धीरे धीरे ग्राम स्थिति से परिचित हो गया हूँ। इस क्षेत्र में शराब-बन्दी लागू होने के पहले की स्थिति से भी मैं वाकिफ हूँ। जब शराब-बन्दी कानून इस इलाके पर लागू नहीं हुआ था, तब शराब निश्चित स्थानों पर मिलती थी। यहाँ ताड़ी का ही अधिक प्रचार था। उस समय गाँवों में बहुत कम लोग शराब पीते थे और अवैध रूप से शराब नहीं बनती थी। इसके मुख्य दो कारण थे : (१) अवैध रूप से शराब बनाना लाभकारी नहीं था। (२) शराब के ठेकेदार आबकारी महकमों से अधिक अवैध भट्टियों को पकड़ने की फिराक में रहते थे।

"आज स्थिति बिल्कुल बदल गयी है। हमारे इलाके के शहरों को, जहाँ क्रमशः शराब पीने की प्रवृत्ति बढ़ती जा रही है, अवैध रूप से शराब आसपास के गाँवों से ही पहुँचायी जाती है। इस क्षेत्र में महुआ बहुतायत से पैदा होता है। कहीं भी यह मिल सकता है और आज इसका सबसे लाभकारी उपयोग शराब बनाना ही है। परिणाम यह हुआ कि गाँव-गाँव में अवैध शराब बनाने के अड्डे बन गये और दूध, काढ़ा इत्यादि में छिपा कर खुले आम शहरों में शराब बेची जाने लगी। लोगों को मालूम है कि शराब कहाँ मिल सकती है। पुलिस और आबकारी महकमे इन अड्डों को अच्छी तरह जानते हैं। इन लोगों की ऊपरी आमदनी के ये अड्डे बन गये हैं। जब तब पकड़ धकड़ होती है, एक तो यह बताने के लिये कि ये महकमे जीवित हैं और दूसरे, 'कमीशन' न देने वाले लोगों को दंड देने के लिये।

"शहर की इस स्थिति से मैं उदासीन रह सकता हूँ, परन्तु इस विष बेल की जड़ें ग्राम भूमि में बहुत फैल रही हैं। गाँव के वे लोग जो शहर को शराब पहुँचाते हैं, और शराब बनाते हैं और इससे ग्राम-युवक मजा अनुभव करने के लिये क्रमशः शराब के शिकार बन जाते हैं। आज स्थिति ऐसी है कि इस क्षेत्र में जहाँ दस वर्ष पहिले गाँव में शराब नहीं के बराबर थी, अब कोई भी ग्राम उससे अछूता नहीं रहा है।

"कुछ अफसर और राजनीतिज्ञ लोगों की पालिसी के कारण शराबबन्दी कानून एक भारी राष्ट्रीय मजाक मात्र बन गया है। वर्तमान स्थिति में इसका अमल नहीं हो रहा है। और न निकट भविष्य में ऐसी सम्भावनाएँ ही हैं। गाँवों में शराब का साम्राज्य नष्ट करने का मुझे एकमात्र उपाय शराबबन्दी कानून को रद्द करना ही दिखता है। मैं जानता हूँ कि सर्व सेवा संघ की नीति पूर्ण शराबबन्दी की है। कुछ वर्ष पहिले मैं भी न केवल इसका समर्थक था, वरन् इस नीति में पूर्ण विश्वास भी रखता था। अनुभवों ने इसे खोखला बना दिया है।"

शराबबन्दी-कानून लागू होने के बाद शराबखोरी बढ़ी है और शराब का व्यवसाय बढ़ा है। इसका कारण स्पष्ट है। केवल कानून से तो यही नतीजा होने वाला था। कानून के साथ-साथ जन शिक्षण और प्रचार का काम बराबर चलना चाहिए। वह नहीं हो पाता, इसीलिए ऐसे परिणाम आते हैं। कानून के बाद जो शराब का व्यवसाय बढ़ता है, वह चन्द लोगों के स्वार्थ के कारण। इस परिस्थिति का इलाज शराबबन्दी कानून को रद्द करने का नहीं है, बल्कि यह है कि जन शिक्षण और प्रचार का काम हाथ में लिया जाय। किसी अवान्तर कारण से एक अच्छी चीज का कुछ बुरा नतीजा निकलता हो तो हमारा काम उस कारण को दूर करने का होना चाहिए, न कि उस अच्छी चीज को छोड़ देने का।

—सिद्धराज ढड्ढा

नया मोड़ : स्वरूप, विचार और योजना

[शेष पृष्ठ ४ से आगे]

संचालन से चल नहीं सकती है। केन्द्रीकरण और विकेन्द्रीकरण का अपना-अपना स्वभाव व स्वधर्म होता है और उसके अनुसार ही उन्हें चलाना होगा, चाहे राजनैतिक विचार कुछ भी हों। इस प्रकार अगर चीन की, पाकिस्तान की या हिन्दुस्तान की परिस्थिति कृषिप्रधान है और इन मुल्कों में घनी आबादी की समस्या है, तो इन मुल्कों के राजनैतिक नेताओं का अर्थ नैतिक विचार आज चाहे जो हो, परिस्थिति की अनिवार्यता उन्हें कृषि मूलक ग्रामोद्योग को इस नीति को अपनाना पड़ेगा, उन्हें उसके सफल संचालन के लिये छोटी छोटी ग्राम इकाइयों के अभिक्रम व नेतृत्व का संगठन करना ही पड़ेगा।

कार्यकर्ताओं के बौद्धिक विकास का प्रश्न

[आन्दोलन में काम करने वाले कार्यकर्ताओं का बौद्धिक स्तर ऊँचा उठे, यह एक महत्त्व का सवाल है। सर्व सेवा संघ ने भी पिछले 'उंगुलुर अधिवेशन' में कार्यकर्ताओं के प्रशिक्षण के सम्बन्ध में प्रस्ताव पास किया है। इसी संदर्भ में श्री श्यामबाबू ने श्री कृष्णराज भाई को लिखे एक पत्र में विचार प्रकट किये हैं। पत्र का सम्बन्धित अंश 'आपस की बात' से उद्धृत कर रहे हैं। —सं०]

आंदोलन के कार्यकर्ताओं के बौद्धिक विकास की व्यवस्था का प्रश्न उतना ही महत्त्व का है, जितना कि आंदोलन का कार्यक्रम। यदि कार्यकर्ताओं का बौद्धिक स्तर नहीं उठता है, तो आंदोलन का भविष्य अंधकारमय होगा। अतः अब समय आ गया है, जब कि इसकी सुनिश्चित योजना होनी चाहिये।

यूरोप के अनेक राजपुरुषों के संबंध में यह सुनते हैं कि अमुक व्यक्ति पहले बिलकुल मजदूर थे, और बाद में उनका इतना विकास हुआ कि वे प्रसिद्ध राजपुरुष बन गये। क्या हमारे यहाँ भी ऐसा नहीं हो सकता? हाँ, यहाँ राजपुरुष के बदले समाज-सेवक बनना है। और दरअसल तो लोकनीति में जो लोकसेवक हैं, उन्हींको वास्तविक राजपुरुष समझना चाहिए, सत्ता में रहने वाले को नहीं। यह मनसूबा तो बहुत बड़ा है, किंतु इस दिशा में गाड़ी चलनी ही चाहिए।

गत १० वर्षों में जो कार्यकर्ता आये हैं, उनको मोटे तौर पर दो श्रेणियों में बाँटा जा सकता है। एक तो वे हैं, जिनकी योग्यता सामान्यतः स्नातक के बराबर या उससे अधिक की है। ऐसे लोग नियोजित स्वाध्याय, गोष्ठी, विचार-विमर्श आदि के जरिये अपनी योग्यता स्वयं बढ़ा सकते हैं। मुझको जितना परिचय है, उससे मेरा खयाल है कि ऐसे कार्यकर्ताओं की संख्या लगभग ५० की होगी। इसमें वे कार्यकर्ता भी हैं, जो किसी संस्था से संबंधित हैं, और वे भी हैं, जो प्रचलित भाषा में तंत्रमुक्त कहलाते हैं। दूसरी श्रेणी में वे कार्यकर्ता हैं, जिनकी योग्यता प्रवेशिका से नीचे की है। ऐसे *कार्यकर्ताओं की योग्यता को बढ़ाने के* लिये नियोजित ढंग से अध्ययन-वर्ग का कार्यक्रम चलाना होगा। इनकी संख्या काफी बड़ी है। मैं सोचता हूँ कि ऐसे लोगों के लिये किसी एक स्थान में निर्धारित कार्यक्रम के अनुसार एक-एक मास के वर्ग चलाये जायँ। १० से १५ कार्यकर्ताओं का एक जत्था एक बार आये। एक जत्था वर्ष में तीन बार आये। अर्थात् एक मास रह कर अपने कार्य-क्षेत्र में जाय और फिर तीन मास के बाद एक मास के लिये आये। यह क्रम जारी रहे।"

पटना
११-३-'६१ —श्यामसुन्दर प्रसाद

श्री जयप्रकाशजी बिहार में

अ० भा० सर्वोदय-सम्मेलन, उँगुलुर के अवसर पर भारत के विभिन्न प्रांतों के प्रमुख कार्यकर्ता श्री जयप्रकाश नारायण के साथ बैठे और बिहार में 'बीघे में कट्ठा दान दो इकट्ठा' अभियान को सफल बनाने पर विचार हुआ। तय हुआ कि संपूर्ण देश से कुछ कार्यकर्तागण तीन-तीन महीने के लिए बिहार आयें और अभियान सफल करने में शक्ति लगायें। उसी क्रम में श्री शंकररावजी ने १ से ८ मई तक गया, पटना, दरभंगा, भागलपुर और संथाल परगना में दौरा किया।

श्री जयप्रकाशजी का कार्यक्रम इस प्रकार है: मई ता० २२ मुँगेर, २३ आरा, २४ डाल्टेनगंज, २५ राँची, २६ जमशेदपुर, २७ से ३१ मई कोडरमा स्टेशन के पास झुमरी तलैया में बिहार सर्वोदय-सम्मेलन होगा। २७ मई को बिहार सर्वोदय-मंडल की बैठक, २८-२९ मई को बिहार सर्वोदय-सम्मेलन, ३०-३१ मई को बिहार खादी-ग्रामोद्योग संघ का कार्यकर्ता-सम्मेलन होगा।

श्री जयप्रकाशजी जून-जुलाई माह तक बिहार में दौरा करेंगे।

अशोभनीय पोस्टर अभियान

दतिया (म० प्र०) में श्री मथुराप्रसाद गोस्वामी की अध्यक्षता में अशोभनीय पोस्टर के खिलाफ सभा हुई। सभा में नौ व्यक्तियों की एक समिति बनायी गयी, जिसके संयोजक श्री हरगोविंद विद्यार्थी हैं। यह समिति अशोभनीय पोस्टरों को हटाने का प्रयत्न करेगी।

पटना में पोस्टर-आंदोलन

सर्वोदय-मित्र मण्डल, पटना की ओर से ५ अप्रैल को श्रीमती शांतिदेवी के सभापतित्व में कन्या पाठशाला में अशोभनीय चित्र, कैलेंडर, पोस्टर एवं गाये जाने वाले भद्दे गानों के विरोध में एक आम सभा हुई। पाटलीपुत्र सर्वोदय युवक सम्मेलन के संयोजक श्री भुवनेश्वर मिश्र, 'भुवन' और सर्वोदय-मित्र-मंडल, पटना के संयोजक डा० अयोध्या प्रसाद ने इस आंदोलन को सक्रिय बनाने के लिए आवाहन किया। साथ ही घर घर सर्वोदय-पात्र रखने के लिए अपील की। हजारों छात्राएँ, अभिभावकों ने सर्वोदय-पात्र रखने का संकल्प किया।

दिल्ली में पोस्टर-आन्दोलन

दिल्ली के श्री सी० ए० मेनन के ८ मई'६१ के पत्र में लिखते हैं: "दिल्ली में अशोभनीय पोस्टर-आन्दोलन शुरू हो गया है। ता० ७ मई को डा० सुशीला नायर की अध्यक्षता में नारी रक्षा-समिति की एक सभा हुई। आगरा से पाँच भाई भी इस आन्दोलन के लिए दिल्ली पहुँच गये हैं। इन भाइयों का पूरा सहयोग इस काम में मिल रहा है। यह आन्दोलन एक जन-आन्दोलन का रूप ले रहा है। सर्वोदयी कार्यकर्ताओं के अतिरिक्त अन्य कार्यकर्ता भी इस कार्य में दिलचस्पी ले रहे हैं।"

महिला शांति-शिविर

ता० ६ मई को चमोली जिले के गोपेश्वर में महिला शांति-शिविर आयोजित किया गया। शिविर का उद्घाटन कु० कमला नौटियाल ने किया। १० मई को शिविर समाप्त हुआ। आसपास के गाँवों की ५० बहनों ने इस शिविर में भाग लिया। इनमें से कुछ बहनों ने शांति-सहायक के निष्ठापत्र भी भरे। शिविर में स्त्री-शक्ति, शांति-सेना, सर्वोदय-पात्र आदि विषयों पर चर्चा हुई। इसके अतिरिक्त प्रतिदिन दो घंटे खेत में श्रम कार्य भी किया।

हजारीबाग जिले में भूवितरण

हजारीबाग जिले के देवरी थाने के विभिन्न ५२ ग्रामों में भूदान-यज्ञ की कुल १६६० एकड़ भूमि ८३० आदाताओं में वितरित की गयी। इन ८३० भूदान-किसानों में प्रमाण-पत्र वितरित करने का समारोह २ मई '६१ को भूवितरण-टोली हजारीबाग के व्यवस्थापक श्री अवधेशचन्द्र पाण्डेय की अध्यक्षता में हुआ। इनमें देवरी थाने के करीब ७५ ग्रामों के लोग उपस्थित थे। प्रमाण-पत्र वितरण के इस समारोह में प्रखंड विकास अधिकारी देवरी, पशु-चिकित्सक, जिला वन सम्पर्क अधिकारी, ग्रामपंचायतों के मुखिया आदि गण्यमान व्यक्ति भी उपस्थित थे। इसी अवसर पर योजना सप्ताह दिवस मनाने का आयोजन भी प्रखंड विकास कार्यालय की ओर से हुआ। रात्रि में जन-सम्पर्क विभाग की ओर से चलचित्र दिखाया गया। भूमि प्राप्त करने वाले संथालियों ने बड़े उत्साह के साथ संथाली नृत्य का प्रदर्शन भी किया।

गांधीग्राम में पुलिस की ज्यादतियाँ

मालूम हुआ कि राजस्थान के टोंक जिले में भूदान में प्राप्त भूमि पर बसाये गये गांधीग्राम बस्ती के हरिजन निवासियों पर जाब्ताई तफतीश के सिलसिले में बूंदी सर्कल के पुलिस द्वारा तरह-तरह के अत्याचार किये गये हैं और यहाँ के ग्रामसेवा केन्द्र के कार्यकर्ताओं के साथ अभद्र व्यवहार किया गया। संयोग की बात है कि राजस्थान के राजस्वमंत्री श्री दामोदरलाल व्यास किसी काम के सिलसिले में टोंक पहुँचे थे। उन्हें टोंक जिला खादी-ग्रामोद्योग के कार्यकर्ताओं ने पुलिस की ज्यादतियों का विवरण दिया। उन्होंने तु[रंत] एस० पी० को शीघ्र जाँच और उचित कार्यवाही के लिए आदेश दिया। इससे स्थिति में सुधार हुआ है। किन्तु क्षेत्र की जनता पुलिस की इन ज्यादतियों के कारण अत्यंत भयभीत है।

विनोबा-पदयात्रा

ता० ११ मई को विनोबाजी ने असम में दरंग जिले की पदयात्रा समाप्त करके ता० १२ को उत्तर लखीमपुर जिले में प्रवेश किया। ता० २३ को वे उत्तर लखीमपुर पहुँच रहे हैं। ता० २३ तक का पदयात्रा कार्यक्रम इस प्रकार है:—

मई १९	खरपथार
मई २०	लालुक
मई २१	नावोईचा
मई २२	पानीगाँव
मई २३	उत्तर लखीमपुर

विनोबाजी का पता

मार्फत—ग्राम-निर्माण कार्यालय
नार्थ लखीमपुर (असम)

इस अंक में

श्रीकृष्णदत्त भट्ट, अ० भा० सर्व सेवा संघ द्वारा भार्गव भूषण प्रेस, वाराणसी में मुद्रित और प्रकाशित। पता : राजघाट, वाराणसी-१, फोन नं० ४३९१
वार्षिक मूल्य ६) पिछले अंक की छपी प्रतियाँ ११,१०० : इस अंक की छपी प्रतियाँ १०,३५० एक अंक : १३ नये पैसे

संपादक : सिद्धराज ढड्ढा

वाराणसी : शुक्रवार | २६ मई '६१ | वर्ष ७ : अंक ३४

सर्वोदय-आन्दोलन के लिये आर्थिक मदद

सर्व सेवा संघ के अध्यक्ष की अपील

१५ जून से ३१ जुलाई १९६१ के विशेष कार्यक्रम में सब योग दें

गांधीजी ने देश के सामने स्वराज्य की जो कल्पना रखी थी, उसमें मुख्य विचार यह था कि लोग स्वयं अपने पैरों पर खड़े हों तथा हिंसक सेना या केन्द्रित राज-सत्ता का सहारा लिये बगैर परस्पर प्रेम तथा सहयोग के जरिये सब कामकाज चलायें। लोक-स्वराज्य की अपनी इस कल्पना को पूरा करने के लिए ही उन्होंने स्वतन्त्रता-प्राप्ति के बाद कांग्रेस को लोकसेवक संघ में परिणत हो जाने की सलाह दी थी।

अखिल भारत सर्व सेवा संघ आज एक से अधिक माने में गांधीजी की इस कल्पना की ओर अग्रसर हो रहा है। सर्व सेवा संघ ने संत विनोबा द्वारा चलाये गये भूदानमूलक ग्रामोद्योगप्रधान अहिंसक क्रान्ति के आन्दोलन को अपना लिया है। वह हिंसक शक्ति की विरोधी और दण्डशक्ति से निरपेक्ष ऐसी लोकशक्ति पैदा करने की दिशा में कदम बढ़ा रहा है। गांधीजी के द्वारा आरम्भ की गयी प्रायः सभी रचनात्मक संस्थाएँ सर्व सेवा संघ में मिल गयी हैं।

सर्व सेवा संघ का मूल आधार वे लोकसेवक हैं, जो देश के कोने-कोने में स्वतन्त्र लोकशक्ति-निर्माण के विधायक क्रांतिकारी काम में लगे हुए हैं। प्राथमिक सर्वोदय-मंडल, जिला सर्वोदय-मंडल तथा अखिल भारत सर्व सेवा संघ का निर्माण इन्हीं लोकसेवकों के द्वारा होता है। संघ की प्रवृत्तियों में भूदान-ग्रामदान-प्राप्ति और उसकी व्यवस्था, शान्ति-सेना का संगठन, नई तालीम, खादी-ग्रामोद्योग, गो-सेवा आदि को लोक स्वराज्य की दिशा में मोड़ना तथा लोक-स्वराज्य के लिए व्यापक लोकशिक्षण का कार्यक्रम मुख्य है।

इन सारी प्रवृत्तियों के संचालन के लिए न सरकार से किसी प्रकार की आर्थिक सहायता ली जाती है, न किसी केन्द्रित निधि से। भूदान-आन्दोलन के प्रारम्भ में गांधी स्मारक निधि से सहायता ली गयी थी, वह भी जनाधार के संकल्प के बाद बन्द कर दी गयी।

इस सारे काम के लिए आज देश भर में हर साल करीब तीस लाख रुपयों का खर्चा होता है। इस खर्च में सारा जीवन बिताने वाले हजारों कार्यकर्ताओं के योग-क्षेम का खर्च, पत्र-पत्रिकादि प्रकाशन का खर्च तथा सारे आंदोलन के संचालन के लिए होने वाला दफ्तर-खर्च शामिल है।

देश की विशालता और काम की व्यापकता को देखते हुए यह खर्च आवश्यक है। कुछ बड़े लोगों के सहयोग से या किसी केंद्रित निधि के सहारे भी यह खर्च निकालने का यत्न हो सकता है।

लेकिन सर्व सेवा संघ का यह अनुभव है कि इस प्रकार के आधार पर प्रवृत्तियाँ चलने से स्वतंत्र लोक-शक्ति का निर्माण नहीं होता। इसलिए सर्व सेवा संघ चाहता है कि लोक-स्वराज्य के अपने इस कार्य में उसे व्यापक लोक-सम्मति और जनाधार मिले। लोक-सम्मति की दृष्टि से सर्वोदय-पात्र, सूतांजलि आदि तो संघ ने आरंभ कर ही रखे हैं। आगे संघ ने यह भी तय किया है कि हमारी आवश्यकता की अधिकतम पूर्ति सर्वसाधारण के दान द्वारा हो।

संघ का यह विचार उसकी आधारभूत नीति और उसके लक्ष्य के अनुकूल ही है। देश के गाँव-गाँव और नगर-नगर में लाखों ऐसे हैं, जो सर्वोदय-आंदोलन में अपना योगदान करना चाहते हैं। ऐसे लोगों के लिये प्रत्यक्ष योगदान का यह एक अच्छा अवसर है।

अगले जून माह की १५ तारीख से जुलाई की ३१ तारीख तक देश भर में सर्व सेवा संघ के लिए आर्थिक सहायता मांगने का कार्य उठाया जायगा। देश के सभी लोगों से हम अपील करते हैं कि वे पूरे दिल से इस कार्य के लिए यथा-शक्ति सहायता दें और इस प्रकार सर्वोदय समाज की कल्पना को साकार करने में अपना हाथ बटायें।

काशी — नवकृष्ण चौधरी
५ मई १९६१ — अध्यक्ष
अखिल भारत सर्व सेवा संघ

गाँवों और शहरों का

मिलाजुला मजदूर-आंदोलन हो

[आजकल विनोबाजी की पदयात्रा असम के उस भाग में हो रही है, जहाँ पर चाय के बागान हैं। चाय के बागानों में काम करने वाले मजदूर अधिकतर असम के बाहर के प्रदेशों के होते हैं। ता० ९ मई को दरबगवाड़ी पड़ाव पर प्रार्थना-प्रवचन में विनोबाजी ने मजदूरों को विशेष लक्ष्य कर जो कहा, उसका सार यहाँ दे रहे हैं। इस दिन उनका भाषण सुनने के लिए मजदूरों को विशेष रूप से छुट्टी दी गयी थी। —स०]

हमारी राय में मजदूरों को जाग्रत रहना चाहिए। जागृति होगी तो भला होगा। जागृति के लिए आपस-आपस में प्यार करना चाहिए और अपने को काम के लिए मालिक के समान जिम्मेदार मानना चाहिए एवं अपना बर्ताव शुद्ध रखना चाहिए। कोई नशा करते हों, तो छोड़ना चाहिए। ज्ञान प्राप्ति की कोशिश करनी चाहिए। दुनिया में कहाँ क्या हो रहा है, इसकी जानकारी हासिल करनी चाहिए। एक-दूसरे की मदद करना चाहिए। ऐसे जो मजदूर होंगे, वे सर्वप्रिय होंगे। समाज को भी प्रिय होंगे और मालिक को भी। ऐसे मजदूरों की माँगों को मालिक ठुकरा नहीं सकते। उनको मजदूरों की उचित माँगों को पूरा करना ही होगा।

मजदूरों की जिम्मेदारी समाज पर भी है। इसलिए मजदूरों को अपनी आमदनी में थोड़ा-सा हिस्सा समाज के लिए देना चाहिए। महीने में नहीं, तो साल में एक दिन की तनख्वाह समाज को अर्पित करनी चाहिए। सर्वोदय के काम के लिए एक दिन मिलेगा तो भी बहुत बड़ा काम होगा और साथ में सर्वोदय के द्वारा समाज की सहानुभूति और शक्ति उनको मिलेगी।

अभी कुछ दिन पहले 'इंटक' के लोग हमारे पास आये थे, तो उनसे हमने कहा कि यह भूदान का काम मजदूरों का ही काम है। मजदूरों को जमीन मिलती है, तो वे खेती करेंगे और अच्छी मजदूरी मिलने पर ही गाँव से बाहर चाय-बागान या अन्य कारखानों में काम करने जायेंगे। इस तरह देहातों का यह मजदूर-आंदोलन—भूदान—शहरों के मजदूर-आंदोलन को मदद देगा।

इसलिए हमने एक बार कहा था कि दुनिया में मजदूरों के लिए 'मे डे'—मई दिवस—मनाया जाता है, वह हमारे मजदूरों का दिन नहीं है, हमारे मजदूरों का दिन भूदान-आंदोलन का जन्मदिन—१८ अप्रैल है। इसको 'अप्रैल डे' भी कह सकते हैं।

इसीलिए गाँवों और शहरों के मजदूरों का मिलाजुला आंदोलन होना चाहिए। इससे सबकी ताकत बढ़ेगी। एक की ताकत बढ़ेगी, तो दूसरे की घटेगी, ऐसा नहीं; बल्कि एक की ताकत बढ़ने से सबकी ताकत बढ़ेगी, यही सर्वोदय का ढंग है।

—विनोबा

तमिलनाड़ में सत्याग्रह

पिछले कुछ अर्से से तमिलनाड़ (मद्रास) प्रदेश के सर्वोदय-कार्यकर्ता यह महसूस करते रहे हैं कि कम-से-कम उस प्रदेश के भूदान-आरोहण में ऐसी स्थिति है कि जमीन की समस्या हल करने के लिए, यानी जमीन पर से व्यक्तिगत मालकियत खतम हो इसकी सिद्धि के लिए, केवल विचार-प्रचार से आगे बढ़कर कोई और कदम उठाना होगा। तमिलनाड़ सर्वोदय-मण्डल के मंत्री श्री जगन्नाथन् और उनके साथियों का चिन्तन इस दिशा में चल रहा था। बार-बार समझाने के बावजूद भी जो भू-स्वामी ग्रामदान में शामिल होने को तैयार न हों—और ऐसे अधिकांश में वे ही लोग हैं, जो गाँवों की बहुत-सी जमीन के "मालिक" हैं, लेकिन गाँव से बाहर शहर में रहते हैं और मजदूरों के जरिए खेती कराते हैं—ऐसे लोगों की जमीनों पर गाँवों के भूमिहीन और ग्रामदान में शरीक होनेवाले दूसरे भू-स्वामी कब्जा करके जोतना शुरू करें।

इस प्रकार की सीधी कार्रवाई जैसा महत्त्वपूर्ण कदम पूज्य विनोबाजी से और आपस में अच्छी तरह चर्चा करके ही उठाया जाय, यह स्वाभाविक था, अतः पिछले अक्तूबर में बेंगलौर में सर्व सेवा संघ का अधिवेशन हुआ, उस समय प्रबंध-समिति में श्री जगन्नाथन् आदि की उपस्थिति में इस विषय पर काफी गहराई से चर्चा हुई। सत्याग्रह का स्वरूप सौम्य से सौम्यतर होना चाहिए, उसमें वर्ग-संघर्ष या हिंसा की भावना को स्थान नहीं होना चाहिए, इन सब बातों को ध्यान में रखते हुए प्रबंध-समिति ने तमिलनाड़ के साथियों को असहयोग का मार्ग सुझाया। असहयोग का कदम उठाने से पहले जो आवश्यक बातें होनी चाहिए, उनका भी उल्लेख प्रबंध-समिति ने अपने प्रस्ताव में किया था और चूँकि इस आंदोलन के 'प्रवर्त्तक और प्रेरक श्री विनोबाजी हैं,' अतः असहयोग जैसा कदम उठाने के पहले उनकी सम्मति प्राप्त कर लेना आवश्यक है, यह भी प्रबंध-समिति ने अपने प्रस्ताव में स्पष्ट किया था।

तमिलनाड के साथियों ने जमीन पर दखल करने के बजाय असहयोग के इस सुझाव को सहर्ष स्वीकार किया। यह कहने की आवश्यकता नहीं है कि हिंसा और वर्ग-संघर्ष की भावना से वे भी उतने ही दूर हैं, जितना और कोई। तमिलनाड सर्वोदय-मण्डल ने दिसम्बर १९६० की अपनी बैठक में प्रबंध-समिति के प्रस्ताव के अनुसार आगे कार्रवाई करने का तय किया और उसके अनुसार अब तमिलनाड प्रदेश के कार्यकर्ता व्यापक प्रचार में लगे हुए हैं।

तमिलनाड के कुछ साथियों ने यह शंका उठायी है कि सत्याग्रह के अगले कदम के पक्ष में जिस तरह और जिन दलीलों के साथ प्रचार किया जा रहा है, वह आन्दोलन की मूलभूत निष्ठा के प्रतिकूल है। प्रबंध-समिति ने किन परिस्थितियों में असहयोग के कदम को स्वीकृति दी है, उसकी सबको स्पष्ट जानकारी हो, इस दृष्टि से वह प्रस्ताव पुनः नीचे दिया जा रहा है।

"तमिलनाड के बटलगुड्ड क्षेत्र में की गयी सघन सामूहिक पदयात्रा के अनुभव के आधार पर भूमिसम्बन्धी इस समस्या के हल के लिए श्री जगन्नाथन् ने सत्याग्रह का कदम उठाये जाने का जो विचार जाहिर किया, उस पर संघ की प्रबन्ध-समिति ने विस्तार से विचार किया है। प्रबन्ध समिति श्री विनोबाजी के इस सम्बन्ध में जाहिर किये गये इस विचार से पूर्णतः सहमत है कि सत्याग्रह का स्वरूप सौम्य से सौम्यतर, सौम्यतम होना चाहिए और वह किसी भी स्थिति में मत्सरमूलक न होकर प्रेममूलक होना चाहिए। श्री जगन्नाथन् भी इस विचार को पूर्णतः स्वीकार करते हैं। उनका एक सुझाव यह है कि भूदानी भूमि पर काश्त करने वाले किसानों की बेदखली को रोकने के लिए सत्याग्रह किया जाय। दूसरा सुझाव यह है कि ग्रामदानी क्षेत्र में जहाँ अधिकांश छोटे भूमिधारियों ने अपनी भूमि भूदान में दे दी है, वहाँ यदि बड़े जमींदार काफी समझाने और दीर्घ काल के प्रयत्न के बाद भी उसमें शामिल नहीं होते, तो उस सम्बन्ध में सत्याग्रह की कार्रवाई की जाय। जहाँ तक बेदखली के संबंध में सत्याग्रह की कार्रवाई की जाने की बात है, संघ मानता है कि राज्य से उचित कार्रवाई करायी जाने की सब कोशिशों के बाद भी बेदखली न रुकती हो, तो सत्याग्रह का समुचित कदम उठाया जाय। उन जमींदारों द्वारा जो स्वयं काश्त नहीं करते हैं और ग्रामदान में शामिल नहीं होते हैं; उनकी भूमि को ग्रामदान में शामिल नहीं होते हैं, उनकी भूमि को ग्रामदान में शामिल किये जाने के प्रत्यक्ष प्रतिकार का भी श्री जगन्नाथन् ने जो विचार किया है, उसका स्वरूप नीचे लिखे अनुसार हो सकता है :

(१) गाँवों में छोटे छोटे जमीन के टुकड़े रखनेवाले किसान पहले अपने व्यक्तिगत भूमि-स्वामित्व का विसर्जन करें, अपना ग्राम-परिवार बनायें और अपनी ताकत से बढ़ने का साहस करें।

(२) वे लोग अपने ग्रामदानी गाँवों के जमींदारों से सम्पर्क करें, उनसे मिलें, उन्हें समझायें और भूमि का व्यक्तिगत स्वामित्व छोड़ने के लिए तथा वे गाँव में रहते हों, तो ग्राम-परिवार में शामिल होने के लिए उनसे निवेदन करें। उन्हें आश्वासन दिया जाय कि भूमि का स्वामित्व छोड़ने के बाद भी उनके वर्तमान जीवनमान को, जब तक वे स्वयं उसे कम न करें, यथावत् चालू रखने में मदद देने का ग्राम-परिवार यथाशक्ति अपना जिम्मा मानेगा।

(३) इस प्रयत्न से नतीजा न निकलता हो, तो गाँववाले जमींदारों की जमीन पर काश्त न करने का अपना संकल्प जाहिर करें और बाहर से उन जमीनों पर खेती करने को लोग आते हों, तो उन्हें भी समझा कर उन्हें न आने के लिए प्रेमपूर्वक प्रेरित करें।

(४) इस प्रकार जमींदारों की जमीन पर काश्त न करने के संकल्प से गाँव-परिवार की आर्थिक स्थिति पर जो असर पड़ता हो, उसे सँभालने का परिवार के रूप में गाँव के सब लोग अपना जिम्मा मानें और गाँव-परिवार की सम्मिलित उपज बढ़ाने या अन्य उद्योग-धन्धे करके घर परिवार की आर्थिक पूर्ति का [illegible] बनायें।

(५) इसी प्रकार जिन बाहरवालों को जमींदारों की जमीन पर काश्त करने के लिए न आने को प्रेरित किया जाय, उनके परिवार के भरण-पोषण की अपेक्षा उन बाहरवालों के गाँव के निवासियों से सहयोग लेकर ग्रामदानी ग्राम-परिवार के लोग करें।

(६) हर सूरत में असहयोग का यह कार्यक्रम मत्सरमूलक न हो, वर्ग-संघर्ष पैदा न करे तथा इसमें हिंसा न फूट पड़े, इसका बराबर ध्यान रखा जाय।

जमींदारों की जमीन पर दखल करके काश्त करने की अपेक्षा असहयोग का यह तरीका अहिंसा के अधिक निकट है और इसमें कर्तृत्व के लिए काफी बड़ा क्षेत्र खुल जाता है।

सर्व सेवा संघ यह स्पष्ट करना चाहता है कि भूदान, ग्रामदान के क्रांतिकारी आरोहण-कार्यक्रम के प्रवर्तक और प्रेरक श्री विनोबाजी हैं, अतः उपर्युक्त बेदखली रोकने या जमींदारों के हृदय-परिवर्तन के लिए उठाये जानेवाले असहयोग आदि के कदम के लिए विनोबाजी की सम्मति प्राप्त कर लेना आवश्यक माना जाना चाहिए। श्री जगन्नाथन् ने संघ के उपर्युक्त सुझाव को स्वीकार कर अपने कार्यक्रम को उसके अनुसार बदलने का जाहिर किया।"

—सिद्धराज ढड्ढा

विदेशों में अहिंसा और शांति के प्रयोग

आणविक शस्त्रों के खिलाफ लंदन में सत्याग्रह

अक्तूबर १९६० में लंदन में आणविक शस्त्रों के खिलाफ सत्याग्रह करने के लिए १०० लोगों की एक कमेटी बनायी गयी। कमेटी का निर्माण श्री अर्ल रसेल और रेवरेंड माइकेल स्काट की प्रेरणा से हुआ।

पर १८ फरवरी, १९६१ को कमेटी ने पहला सत्याग्रह किया। ४ हजार लोगों ने श्री रसेल और स्काट के नेतृत्व में सुरक्षा मन्त्रालय के सामने आणविक पनडुब्बी का विरोध किया। उसके बाद २९ अप्रैल को फिर एक बार प्रदर्शन हुआ। इस प्रदर्शन में पुलिस ने करीब ८०० लोगों को गिरफ्तार किया। फिर भी प्रदर्शन चलता रहा और सब लोग पूर्ण अहिंसक रहे। अब कमेटी इस सम्बन्ध में और कुछ कार्रवाई करने वाली है।
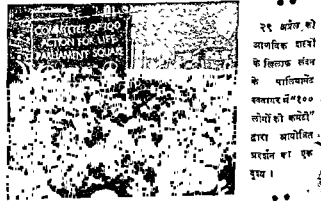
२९ अप्रैल को आणविक शस्त्रों के खिलाफ लंदन के पार्लियामेंट स्क्वायर में "१०० लोगों की कमेटी" द्वारा आयोजित प्रदर्शन का एक दृश्य।

लोकनागरी लिपि*

आनंद और धर्म

हींदुस्तान की अपनी यह खूबी है की अपने हर आनंद को वे धार्मीक रूप देते हैं। सब लोग घर के अंदर रहते हैं। दीन भर अुनको घर में ही बैठना पड़ता है। खुली हवा में बाहर जाना अुनके लीअे जरूरी है। तो गांव के बाहर, अेक मील दूर अेक पहाड़ देख लेते हैं। अुस पर अेक छोटा-सा मंदीर बना देते हैं। और अुस मंदीर के देवता के रोजदर्शन करना चाहीअे, यह वीधी बना देते हैं। मनुष्य घर से बाहर शाम को अेक बार खुली हवा में जाकर देवता का दर्शन करके आता है। यूरोप में लोग शाम को घूमने जाते हैं। अुसको कहते हैं—'ओवीनींग वाक्'। यहां के लोगों से पूछो तो कहेंगे भगवान के दर्शन के लीअे गये थे। अुससे हवा खाने का मौका मीलेगा, रमणीय दृश्य दीखेगा, थोड़ी देर के लीअे संसार भूल जाने का मौका मीलेगा और अुसके साथ अीश्वर जोड़ दीया तो अधीक सुंदर! प्रातःकाल में जल्दी अुठ कर स्नान करके सूर्य को अर्घ्य देना चाहीअे। सूर्योदय के पहले अुठ कर स्नान करना पड़ेगा, तो अुसमें नीयमीतता आयेगी, स्वच्छता आयेगी। ये सब गुण अुसमें आयेंगे और अुसके साथ-साथ भगवान का दर्शन करेंगे। अीस तरह से यहां पर आवश्यकताओं को धार्मीक रूप देते हैं।

सोनपुर, १३-४-'६१ —वीनोबा

*लिपि-संकेत : ि = ी : ु = ्, ख = ख, संयुक्ताक्षर हलंत चिह्न से।

अर्थ-संग्रह का अभियान

भूदान-आन्दोलन के प्रारम्भिक दिनों में सारे काम के संयोजन का स्वरूप केंद्रीय ढंग का था। सर्व सेवा संघ ने भिन्न-भिन्न प्रांतों के लिए भूदान-समिति गठित की थी, जो अपने क्षेत्र में आन्दोलन के काम के लिए जिम्मेदार थी। सैकड़ों-हजारों कार्यकर्ता अपने निर्वाह के लिए अल्पतम खर्च लेकर जगह-जगह काम करते थे। इस सारे खर्च की आर्थिक जिम्मेदारी गांधी स्मारक निधि की सहायता से सर्व सेवा संघ उठाता था।

हमारा आन्दोलन लोगों की अपनी शक्ति और उनके खुद के अभिक्रम को जागृत करने का है। इसे ध्यान में रख कर विनोबाजी ने सन् १९५६ के नवम्बर में केन्द्रीय तन्त्र और केन्द्रीय निधि के आलम्बन से आन्दोलन को मुक्त करने की सलाह दी और सर्व सेवा संघ ने पलनी (दक्षिण) के अपने अधिवेशन में इसे मान्य किया।

"तन्त्र-मुक्ति" और "निधि-मुक्ति" के इस फैसले के बाद से सारे काम के संचालन और उसके खर्च की जिम्मेदारी जगह-जगह स्थानीय लोगों पर आ गयी। आज देश भर में सर्वोदय आन्दोलन का संयोजन प्राथमिक, जिला और प्रदेश सर्वोदय-मण्डल कर रहे हैं। सर्व सेवा संघ इन सब लोकसेवकों के लिए मिल कर विचार विनिमय करने और एक-दूसरे के अनुभवों से प्रेरणा पाने का स्थान रह गया है। उसका स्वरूप एक सलाहकार संगठन जैसा है। जनता की शक्ति को जाग्रत करना जिसका उद्देश्य है, ऐसे सर्व जनहित की आकांक्षा रखने वाला आन्दोलन किन्हीं विशिष्ट व्यक्तियों, वर्गों या केन्द्रित निधि आदि पर निर्भर रहे, यह उचित भी नहीं है।

तन्त्र, कार्य-संचालन और आर्थिक संयोजन के विकेन्द्रीकरण का यह कदम सही दिशा में था, इससे आज भी सब सहमत हैं। पर यह स्पष्ट है कि विकेन्द्रीकरण का अर्थ संयोजन या व्यवस्था के विघटन का नहीं। काम की जिम्मेदारी सबकी स्वतन्त्र होते हुए भी जिला, प्रांत या अखिल भारत, सब स्तरों पर काम का संयोजन सब लोग मिलजुल कर करें, यह आवश्यक है। इससे कार्यकर्ताओं को अधिक बल और उत्साह मिलेगा और कार्यक्रम के लिए अनुकूलताएँ पैदा होंगी।

पिछले दिनों हमारे संगठन की इकाइयाँ आन्दोलन के काम के लिए लगने वाले अर्थ की चिन्ता अपने अपने दायरे में अलग-अलग करती रही हैं। नतीजा यह हुआ है कि हर स्तर पर कार्यकर्ताओं को आर्थिक कठिनाई महसूस हुई है। कहीं कहीं काम के घटने का अनुभव भी आया है। आज देश भर में जो सारा सर्वोदय आन्दोलन का काम चल रहा है, उसमें सर्व सेवा संघ सहित कुल मिला कर करीब २०-२५ लाख रुपया हर साल खर्च होता होगा, ऐसा अन्दाज है। इस कुल खर्च का काफी हिस्सा सर्वोदय पात्र, सूतांजलि, सम्पत्तिदान आदि के जरिए लोगों से प्राप्त होता है, फिर भी जिला, प्रांतीय या केन्द्रीय हर स्तर पर आर्थिक कठिनाई महसूस होती रहती है। काम के महत्त्व, उसकी व्यापकता और देश के विस्तार आदि बातों को देखते हुए साल भर में २०-२५ लाख रुपये की धनराशि नगण्य ही मानी जायगी, फिर भी देश की गरीबी, संगठन के अभाव आदि कारणों से इतनी रकम भी प्राप्त करने में कठिनाई होती है।

इस बार सर्वोदय-आन्दोलन के अवसर पर देश के विभिन्न हिस्सों से आये हुए कार्यकर्ताओं ने यह तय किया कि सर्वोदय कार्य के लिए अर्थ-संग्रह का देश भर में एकसाथ मिल कर एक विशेष प्रयत्न किया जाय। इस काम के लिए १५ जून से ३१ जुलाई १९६१ तक की अवधि तय की गयी है, जब कि हर छोटे-बड़े क्षेत्र, गाँव और शहर में सर्वोदय-कार्यकर्ता व्यापक जन-सम्पर्क करें और सर्वोदय-कार्य के लिए छोटे-बड़े सभी लोगों से आर्थिक सहायता प्राप्त करने की कोशिश करें। सर्व सेवा संघ की ओर से देश के लोगों के नाम एक अपील जारी की जा रही है और इस अर्थ-संग्रह अभियान के लिए संगठित तैयारी हो रही है। यह सही है कि आजादी के बाद लोकहित के सारे काम धीरे धीरे सरकार के हाथ और नियन्त्रण में चले जाने से और सरकार द्वारा लोगों से अधिकाधिक टैक्स वसूल करके, उन कामों के लिए पैसा खर्च किये जाने से जनसाधारण की मनोवृत्ति में बहुत फरक पड़ गया है। यह अपने आप में एक चिन्ताजनक परिस्थिति है। लोग हर छोटे-बड़े काम के लिए सरकार का मुँह ताकते रहें, यह परिस्थिति न लोकतन्त्र के लिए सही है, न लोगों की शक्ति के विकास के लिए अनुकूल है। सर्वोदय के कार्यकर्ता इसी विचार को लेकर जनता के पास पहुँचते रहे हैं और उन्हें अपने अभिक्रम और बलबूते पर अपने काम और उनकी व्यवस्था उठा लेने की प्रेरणा देते रहे हैं। इस काम के लिए भी स्वयं लोगों से आर्थिक सहायता मिले, यह हमारे काम की कसौटी है। वातावरण प्रतिकूल होते हुए भी हम सब लोगों को मिल कर इस कसौटी पर अपने काम को कसना है। आज भी जगह-जगह छोटे-बड़े स्तर पर कार्यकर्ताओं को अपने-अपने काम के लिए आर्थिक चिन्ता करनी ही पड़ती है, पर अगर हम सब लोग मिल कर संगठित और सामूहिक प्रयत्न करेंगे तो हमारा काम आसान होगा। आशा है, अगले दो माह का समय हम सब मिल कर इस काम की पूर्व तैयारी और फिर वास्तविक अमल में लगायेंगे।

संकुचित मनोवृत्ति

एक कंजूस था। उसने अपने कमरे की खिड़कियाँ और दरवाजे सब इसलिए बन्द कर लिये कि उसके कमरे की हवा बाहर न चली जाय, सुरक्षित रहे। नतीजा यह हुआ कि बाहर की साफ हवा और प्रकाश से वह वंचित हो गया। नेपाल सरकार ने अभी हाल ही में अपने यहाँ के विश्वविद्यालय में चला आ रहा हिन्दी का माध्यम छोड़ने का जो तय किया, उसका नतीजा कुछ इसी तरह बाहर की हवा और प्रकाश रोकने का होगा। यह ठीक है कि शिक्षा का माध्यम स्थानीय भाषा बने, लेकिन हिन्दी का उपयोग विश्वविद्यालय से हटाने के पीछे केवल राजनैतिक कारण और संकुचित मनोवृत्ति ही नजर आती है। नेपाल का राज्य आज भले ही अलग हो, लेकिन हिन्दुस्तान नेपाल का स्वाभाविक निकास (आउटलेट) और विकास-क्षेत्र है। हिन्दी का पीढ़ियों से वहाँ पर स्वाभाविक स्थान रहा है। अदूरदर्शी राजनीतिज्ञ इस प्रकार अपने दरवाजे हिन्दी के लिए बन्द करके अपने राष्ट्र के विकास के मार्ग में अन्ततोगत्वा बाधा ही पहुँचाने वाले हैं। राजनीति किस तरह से संकुचित स्वार्थों को बढ़ावा देती है और जहाँ भेद नहीं होता, वहाँ भी भेद पैदा करती है, उसका नेपाल की यह घटना एक ताजा उदाहरण है।

—सिद्धराज ढड्ढा

नया मोड़ : लक्ष्य, दिशा और योजना : २

धीरेन्द्र मजूमदार

हम देखते हैं कि आज की जागतिक, राजनीतिक व आर्थिक परिस्थिति में दण्ड-निरपेक्ष लोकनीतिक समाजवाद को मानने वाले एवं दण्ड-शक्ति आधारित राजनीतिक समाज को मानने वाले, दोनों ने विकेन्द्रित अर्थनीति के कार्यक्रम को समान रूप से मान लिया है।

अतः यह आवश्यक है कि सर्वोदय का लक्ष्य रखने वाले रचनात्मक कार्यकर्ता नये मोड़ के अमल में अपने लक्ष्य के प्रश्न पर दृष्टि साफ कर लें। वे पहले स्पष्ट रूप से सोच लें कि उनका लक्ष्य क्या है? लक्ष्य दोनों में से कोई भी एक हो सकता है।

(१) सैनिक-शक्ति पर आधारित राजनीतिक लोकतन्त्र की सफलता तथा कृषिमूलक घनी आबादी प्रधान आर्थिक परिस्थिति के मुकाबले के लिये विकेन्द्रित अर्थ-नीति को अपनाना या–

(२) दण्डनिरपेक्ष, लोकनीतिक समाज की स्थापना के लिये 'ओसेनिक सर्किल' के केन्द्र के रूप में स्वतन्त्र ग्राम-इकाइयों का संगठन करना।

उपरोक्त दोनों लक्ष्यों के मानने वालों के लिये यद्यपि कार्यक्रम समान होगा, तथापि उसकी दिशा, शैली और योजना *भिन्न होगी।*

उपरोक्त दोनों लक्ष्यों में से पहले लक्ष्य को तो आज दुनिया के करीब-करीब *सभी गम्भीर विचारवान राजनीतिक नेता* अपना रहे हैं। गांधीजी के विचार से प्रभावित भारतीय गणतन्त्रवादी नेता ही *नहीं, अपितु दुनिया के काफी विचारशील* समाजवादी चिन्तक भी (यहाँ तक कि लोकतन्त्र को सैनिक शक्ति द्वारा कुचलने वाले *मिश्र से लेकर नेपाल तक* फौजी अधिनेता भी) वर्तमान परिस्थिति के संदर्भ में इसी दिशा में कमोबेश कुछ-न-*कुछ सोचने के लिये बाध्य हो रहे हैं।* इसी दबाव के कारण भिन्न-भिन्न देशों में भिन्न-भिन्न तरीकों से अमल के कदम भी उठाये *जा रहे हैं। भारत में तो राज्य की ओर* से इस दिशा में काफी अग्रगामी कदम उठाये जा रहे हैं। छोटी इकाइयों में *जनता के अभिक्रम तथा नेतृत्व का संग*-ठन करने के लिये पंचायत राज्य कानून बनाने, सामुदायिक विकास के काम को *स्थानीय समिति के हाथ सौंपने* जैसे आज अनेक कार्यक्रमों द्वारा भी वे नये मोड की तरफ जा रहे हैं। जैसे-जैसे वे इस दिशा में सोचते जा रहे हैं, वैसे-वैसे वे यह महसूस कर रहे हैं कि शायद भारतीय परिस्थिति का मुकाबला करने के लिये कृषि-मूलक ग्रामोद्योगप्रधान अर्थनीति को राष्ट्रीय योजना में प्रमुख स्थान देना होगा।

इससे स्पष्ट है कि आज नये मोड का नारा हर क्षेत्र में है, और होना ही चाहिये; क्योंकि जमाना एक युग-संधि पर खड़ा है।

> **नया मोड़ जमाने की मांग है और जमाना इसके लिये तत्पर भी है, लेकिन सवाल यह है कि कौन किस दिशा में मुड़े? यहाँ लक्ष्य की सफाई की** *आत्यन्तिक आवश्य-***कता है, नहीं तो जल्दी ही कुछ कर डालने के मोह में अगर हम दूसरी दिशा में मुड़ गये, तो घूम कर लौटने में काफी कठिनाई हो सकती** *है। यह भी हो सकता है कि लौटने* **के रास्ते पर प्रतिक्रांति की मजबूत दीवार का सामना करना पड़े। अपनी गलतियों के कारण इस दीवार को बनाने और मजबूत करने में हम स्वयं मददगार हो सकते हैं।**

गांधीजी की प्रेरणा और विचार से प्रभावित ऐसे रचनात्मक कार्यकर्ता, जो शोषणहीन, शासन निरपेक्ष समाज रचना की बात को सोचते हैं, निस्संदेह अपना लक्ष्य ऊपर बताये हुए दूसरे प्रकार का रखेंगे। यही कारण है कि गत ६ अप्रैल के ग्रामराज्य घोषणा-पत्र को परिपत्रित करने के साथ अखिल भारत सर्व सेवा संघ के मन्त्री श्री पूर्णचन्द्र जैन ने घोषणा के विचार तथा भूमिका को समझाते हुए कहा है :

"हमें जिस शोषणहीन और शासन-निरपेक्ष समाज की रचना करनी है, उसे इन छोटी इकाइयों को जागरूक करके और सही स्वरूप देकर ही पूरा कर सकते हैं। यही वह बुनियादी विचार है, जिस पर ग्राम-स्वराज्य की घोषणा आधारित है। इसे हरएक कार्यकर्ता स्पष्ट समझे और गाँव वालों को उनकी भाषा में समझाये।"

सर्व सेवा संघ के मन्त्री के लिए इतनी सफाई करनी आवश्यक थी; क्योंकि शोषण-हीन और शासन-निरपेक्ष समाज की रचना के लिये जिस तरह छोटी-छोटी इकाइयों को जाग्रत करना आवश्यक है, उसी तरह दण्ड-सापेक्ष तथा दण्ड-आधारित लोकतांत्रिक समाज को भी सफल बनाने के लिये छोटी-छोटी इकाइयों को जाग्रत करना आवश्यक है। प्रश्न यह है कि दोनों भिन्न दृष्टि और भिन्न लक्ष्यों की पूर्ति के लिये कार्यक्रम की दिशा भी भिन्न होगी क्या? और होगी तो किस प्रकार *की होगी?*

इस प्रकार विनोबाजी ने चाण्डिल-सम्मेलन के अवसर पर दण्ड-शक्ति से *भिन्न जिस स्वतन्त्र जनशक्ति की बात* की थी, उसके अधिष्ठान के लिये ऊपर *बताये हुए दो भिन्न तत्त्व हो* सकते हैं और इसलिये स्वभावतः उसके **दो स्वरूप होंगे। दण्ड-शक्ति से भिन्न** ***जन-शक्ति स्वतंत्र होते हुए भी*** **दण्ड-शक्ति के ही पूरक के रूप में संगठित हो सकती है, जिसकी आवश्यकता केन्द्रीय** ***राज्य-पद्धति को भी आज होगी।*** **ऐसी भिन्न शक्ति का संगठन राज्य-शक्ति-सापेक्ष हो सकता है और राज्य द्वारा इसके** ***संगठन का अभिक्रम*** **भी हो सकता है। जनशक्ति का दूसरा स्वरूप दण्ड-शक्ति के विकल्प में संगठित करने** ***का है।*** **जो** ***लोकशासन-निरपेक्ष समाज-*****रचना की बात कर रहे हैं, उन्हें इस संकल्पिक शक्ति के संगठन में ही लगना** ***होगा। विकल्प में जिस शक्ति का संगठन*** **करना होगा, उसका अस्तित्व और संगठन निस्संदेह दण्ड-शक्ति-निरपेक्ष ही हो** ***सकेगा। विनोबाजी ने जो कहा था कि*** **वह शक्ति हिंसा-शक्ति की विरोधी होनी चाहिए, उस कथन में ही यह निरपेक्षता** ***वर्तमान थी।*** ***क्योंकि साफ है कि जब*** **तक निरपेक्ष शक्ति का अधिष्ठान नहीं होगा, तब तक उससे हिंसा का विरोध** ***नहीं किया जा सकता है।*** **दूसरा कारण यह है कि राज्य-सापेक्ष शक्ति, राज्य द्वारा अनुष्ठित हिंसा को नापसन्द भले ही करे, उसके औचित्य का विरोध भले ही करे, लेकिन अन्याय के प्रतिकार में ही सही, जब राज्य द्वारा हिंसात्मक कार्यवाही अनुष्ठित होने लगेगी तब उसका सक्रिय विरोध नहीं कर सकेगी। अगर सहकार नहीं कर सकेगी, तो कम-से-कम मौन रह कर अप्रत्यक्ष रूप से उसे नैतिक बल तो दे ही डालेगी।**

रचनात्मक संस्था और कार्यकर्ता जो नये मोड की बात अत्यन्त गंभीरता के साथ सोच रहे हैं, उन्हें क्रान्ति के उपरोक्त तथ्य को अच्छी तरह से समझ कर मोड की दिशा को निरपेक्ष शक्ति के उद्बोधन की ओर ही ले जाने का प्रयास करना होगा, इस विचार के साथ कार्यकर्ता के मन में स्वभावतः यह सवाल उठेगा कि जन शक्ति की सफलता के लिये राज्य की ओर से राजनीतिक तथा आर्थिक विकेन्द्री-करण का जो संयोजन हो रहा है, दण्ड-*निरपेक्ष समाज के लक्ष्य रखने वाले रच*-नात्मक कार्यकर्ता क्या उससे कोई सरोकार नहीं रखेंगे? अवश्य रखेंगे और सोलह आने सरोकार रखेंगे। यही कारण है कि फलस्वरूप में नेताओं के

सम्मेलन के अवसर पर हमने सरकारी कार्यक्रमों के साथ 'निकटतम' सहकार की बात की है। लेकिन क्रान्ति की व्यूह-रचना में इस सहकार का स्थान कहाँ है, इस प्रश्न पर हमारी धारणा स्पष्ट होनी चाहिये। नहीं तो हम दिशाहारा होकर दण्डशक्ति के कठिन चक्रव्यूह के अन्दर घिर जायेंगे।

क्रान्ति की व्यूह-रचना के लिये परि-स्थिति के सभी *पहलुओं का उसके लिये* इस्तेमाल करना आवश्यक होता है। अहिंसक क्रान्ति के लिये तो यह और भी *जरूरी हो जाता है, क्योंकि उसकी प्रक्रिया* ही सद्भावना के आधार पर निहित है। जब गांधीजी के नेतृत्व में आजादी का *संग्राम चल रहा था, तब भी अपनी क्रान्ति* की शक्ति बढ़ाने के लिये कांग्रेस ने अंग्रेजी राज्य के अन्तर्गत विधान सभा में प्रवेश *की तथा मंत्रीमंडल की जिम्मेदारी लेने की* नीति अपनायी थी। कभी-कभी कांग्रेस के लिये यह कार्यक्रम बहुत महत्त्वपूर्ण हो जाता *था और लगता था कि यह एकमात्र नहीं* तो कम-से-कम मुख्य कार्यक्रम है। लेकिन कांग्रेस के नेता इस बात पर हमेशा जाग्रत रहे *कि यह काम तात्कालिक दृष्टि से व्यापक* और महत्त्वपूर्ण भले ही हो, लेकिन बुनियादी नहीं है। वे कांग्रेस के स्वतन्त्र संगठन *तथा रचनात्मक कार्य की बुनियाद* को मजबूत करने के अपने मौलिक काम पर ही मुख्य ध्यान देते थे, चोटी के नेता *विधान सभा तथा मंत्रीमंडल की* गति-विधि पर पूरा ध्यान देते हुए भी, कांग्रेस-संगठन तथा रचनात्मक काम को *अपना असली काम* मानते थे। उस समय हम अंग्रेजों से भारत छुड़वाना चाहते थे। फिर भी अंग्रेजी शासन के अन्दर स्वराज्य-प्राप्ति के लिये जो प्रगतिशील तथा अनुकूल तत्त्व था, उससे हम पूर्ण सहकार करते थे। शासननिरपेक्ष समाज के लिये राज-नीति के स्थान पर लोकनीति के अधिष्ठान की जो क्रान्ति है, वह किसे भी भारत छोड़ने का नारा नहीं लगाती है। अतएव आज की पद्धति के अन्दर परिवर्तित पद्धति की दिशा में जिस हद तक मुड़ने का तत्व दिखाई दे, क्रान्ति के लक्ष्य-पूर्ति के लिए न केवल उस काम से सहकार ही आवश्यक है, बल्कि आज की परिस्थिति में नई क्रान्ति की अनिवार्यता बता कर उन क्षेत्रों को प्रभावित करने की भी आवश्यकता है। और हमारे नेता वह कर भी रहे हैं। श्री जयप्रकाश बाबू द्वारा दण्ड-आधारित राजनीति को मानने वालों के सामने लोक-*राज्य के लिये विधान में आमूल परिवर्तन* का सुझाव रखना और उसका व्यापक प्रचार करना, आन्दोलन के नेताओं का *खादी-ग्रामोद्योग कमीशन*, स्टेट बोर्ड आदि की सदस्यता स्वीकार करना आदि कार्यक्रम

स्त्रियों के संबंध में विनोबाजी के विचार

प्रभा सहस्रबुद्धे

स्त्री-जीवन के इतिहास का सिंहावलोकन करने पर मालूम होता है कि वेदकालीन स्त्री काफी स्वतन्त्र थी। पश्चात् मध्ययुग में उसकी अवनत दशा हुई थी और १९ वीं सदी से वह पुनः स्वतंत्र होने जा रही है। स्त्री की दुर्दशा के काल में मानव समाज का उन्नत इतिहास देखने को नहीं मिलता और इसलिए हमें जिस नवसमाज का निर्माण करना है, उसमें स्त्री को स्वतन्त्र होना अनिवार्य है।

वर्तमान भारतीय स्त्री की तुलना में पश्चिम की स्त्री अधिक स्वतन्त्र एवं निर्भय है, ऐसा कहा जाता है; परन्तु क्या पश्चिम की स्त्री का आदर्श हम हमारे सामने रखना चाहेंगे? स्वतंत्र कहलाने वाली पश्चिमी स्त्री भारतीयों का समाधान करने के लिये समर्थ नहीं है। विनोबाजी के विशाल तत्त्वज्ञान में ही उनका स्त्री के सम्बन्ध में दृष्टिकोण निहित है। आध्यात्मिक विकास यही उस विशाल तत्त्वज्ञान का सार है।

पश्चिम की स्त्रियों ने जो प्रगति की है, उसकी अच्छाइयाँ तो हमें लेनी ही हैं। समन्वय भारतीय तत्त्वज्ञान की आत्मा कही जा सकती है और वही है विनोबाजी का जीवन-विचार! समन्वय ही उनके जीवन का सूत्र है। सत्यनिष्ठ, निराग्रही, नम्र एवं आचारसंपन्न व्यक्ति ही समन्वय धर्म की उपासना कर सकता है। और उनके जीवन में यही मिलता है। समन्वय में अधिक पवित्रता, सामर्थ्य एवं औदार्य रहता है।

विनोबाजी की धारणा है कि स्त्री और पुरुष यह भेद बाह्य है, मूलभूत नहीं। स्त्रियों के सामाजिक, कौटुम्बिक एवं राजकीय अधिकार वे ही हैं, जो पुरुषों के हैं। बाह्य भेदों के कारण कार्यक्षेत्रों में कुछ अन्तर हो सकता है, परन्तु इस आधार पर इतना भेदभाव नहीं होना चाहिये, जितना आज है।

वे कहते हैं कि जब तक शंकराचार्य जैसी प्रखर वैराग्यसंपन्न महान् स्त्री भारत में नहीं होगी, जो पुराने शास्त्रों की गलतियाँ बतायेगी और नवीन शास्त्र बनायेगी, तब तक स्त्री का उद्धार नहीं होगा। यह कार्य अत्यन्त तेजस्वी, ज्ञाननिष्ठ, वैराग्यशील एवं महान् त्यागी स्त्री के लिए ही संभव हो सकता है। वे कहते हैं कि ऐसा होने पर ही स्त्री को ब्रह्मचर्यपालन का वास्तविक अधिकार प्राप्त होगा।

इसका अभिप्राय यह नहीं है कि स्त्री को तथा पुरुष को अविवाहित रहना है। परन्तु विवाह के सम्बन्ध में दोनों के आदर्श एवं भूमिकाएँ समान होना आवश्यक है। ब्रह्मचर्य का मूल्य एवं महत्त्व दोनों के लिए समान हो, यही इसका आशय है। ऐसा न होने पर दोनों के नैतिक आदर्शों में वैषम्य निर्माण होगा। माता को ब्रह्मचारिणी से श्रेष्ठ मानना होगा और मातृत्व के बिना स्त्री जीवन की सार्थकता नहीं, यह सामाजिक संकेत अबाधित मानना ठीक नहीं है। मातृत्व को श्रेष्ठ, महत्त्वपूर्ण एवं विशेष मानते हुए भी केवल वैवाहिक जीवन में ही स्त्री जीवन का संपूर्ण मांगल्य एवं सार्थकता निहित है, यह धारणा जब तक नहीं बदलेगी, तब तक स्त्री सच्चे अर्थ में स्वतन्त्र नहीं हो सकेगी। इसका अर्थ यह नहीं कि इससे बहुत सी स्त्रियाँ संन्यासिनी बन जायेंगी। परन्तु अधिकार का न होना एक अपात्रता है। गृहासक्ति एवं संसार का बन्धन स्त्री पुरुष दोनों के लिए समान है, उसी प्रकार आध्यात्मिक अधिकार भी समान होना चाहिये।

स्मृतिकार मनु का कथन है—

"पिता रक्षति कौमारे,
भर्ता रक्षति यौवने,
पुत्रो रक्षति वार्धक्ये,
न स्त्री स्वातन्त्र्यमर्हति।"

यह उस काल की स्त्री की परिस्थिति का द्योतक है। वेदकाल में ऐसा नहीं था। वेदकाल में स्त्रियाँ भी ब्रह्मवादिनी होती थीं। आज ऐसी स्त्रियाँ स्वप्नवत् हो गयी हैं। किसी स्त्री का प्रभाव समाज पर पड़ता हो, ऐसा आज नहीं दिखता। वे स्वतन्त्र रूप से जीती ही नहीं हैं।

गृहसंगोपन का कार्य स्त्रियों के पास रहने वाला है, यह तो निसर्ग ही बोल चुका है। विनोबाजी कहते हैं कि स्त्रियाँ गृहकार्यकुशल हों, इसमें मेरा कोई विरोध नहीं, वे वैसी न होंगी तो देश को कोई लाभ न होगा। परन्तु गृहकार्यकुशलता में ही उनके जीवन की परिसमाप्ति हो, यह ठीक नहीं।

विनोबाजी की धारणा है कि जब तक हिंसा का युग था, शरीर-बल के कारण पुरुष का अधिकार चला। नवीन युग में अहिंसा का महत्त्व रहेगा, अतः समाज को स्त्री बदलेगी और बनायेगी। युग की इस माँग को आज स्त्री को अपनी शक्ति पह-चानना है और यह बागडोर सम्भालने के लिये तैयार रहना है। स्त्री में, माता में प्रेम की अपरिमित शक्ति है। उसका त्याग अतुलनीय है। बड़े-बड़े इंजिन उसी भाप के सहारे चलते हैं, जो हमारे घर घर रहती है। परन्तु जब तक वह सीमित रहती है, भाप शक्ति नहीं बन पाती। इसी प्रकार स्त्री का जो प्रेम एवं त्याग अपने बच्चों के और घर के लिए है, वही उसे समाज को देना है, तभी उससे ऐसी शक्ति बनेगी, जिससे सामाजिक क्रान्ति होगी।

विनोबाजी माता को श्रेष्ठ गुरु मानते हैं। स्त्री-शिक्षा के बारे में उनका कहना है कि स्त्री और पुरुष दोनों की आत्मा सत्त्वशील होती है। अतः उनकी शिक्षा का अधिकांश भाग समान होना चाहिए। उनका मत है कि स्त्री और पुरुष दोनों को समान और एकसाथ शिक्षा मिलनी चाहिए। विनोबाजी कहते हैं कि कृत्रिम उपायों से उनको अलग रखने से उनका विकास नहीं होगा। दोनों की शिक्षा में समान अंश अधिक होगा। कार्यों की प्राधान्यता में केवल अन्तर पड़ेगा। स्त्री-शिक्षा का जहाँ तक सवाल है, उसमें उसे अध्यात्म-ज्ञान पहले दिया जाय, ऐसा वे मानते हैं। स्त्री शिक्षा के सम्बन्ध में सत्यनिष्ठा, धर्म-परायणता एवं तपस्या की जरूरत है, ताकि वे हिम्मतवान बनें।

वे मानते हैं कि स्त्रिया के हाथ में समाज का अंकुश आने वाला है। अतः उसके लिए उनको तैयार रहना है। इस विज्ञान के युग में जब पुरुषों की बुद्धि स्तम्भित हो गयी है, स्त्रियाँ अपनी संयम शक्ति और मातृशक्ति के साथ सामने आती हैं तो वे करुणा का साम्राज्य स्थापित कर सकती हैं।

विनोबाजी की अपेक्षा है कि स्त्री पुरुषों के सम्बन्ध के तरफ देखने की हमारी दृष्टि में आमूलाग्र परिवर्तन की आवश्यकता है। स्त्री की दुर्दशा का बहुत सारा जिम्मा पुरुष पर है, फिर भी वह पूर्णतया उसके ऊपर नहीं डाला जा सकता। अतः स्त्री की स्वतन्त्रता के लिए पुरुष की दृष्टि में परिवर्तन जितना अपेक्षित एवं आवश्यक है, उतना ही स्त्री द्वारा प्रयत्न भी आवश्यक है।

हम देखते हैं कि राजकीय क्रांति जिस तीव्रता से होती है, सामाजिक क्रान्ति में अपेक्षाकृत अधिक समय लगता है। कारण स्पष्ट है। राजकीय क्रान्ति में मुख्यतः सत्ता को बदलना होता है, सामाजिक क्रान्ति में मानव को बदलना है। उसमें समय लगना स्वाभाविक है। उसके लिए परिश्रम भी अधिक करना पड़ता है, परन्तु चिरस्थायी वही होती है। भारतीय संविधान में स्त्री को समानाधिकार मिल ही गये हैं। यह आवश्यक और उचित भी है। परन्तु केवल संविधान में अधिकारों के मिल जाने से पूर्णता नहीं हो सकती, वास्तव में मूल्यों का परिवर्तन केवल किताबों में नहीं, प्रत्यक्ष जीवन में होना चाहिए। मूल्यों के परिवर्तन में समय लगेगा। स्त्री का प्रयत्न एवं पुरुष का सहयोग, दोनों के होने पर ही समाज की दृष्टि में परिवर्तन हो सकता है, और दृष्टि में परिवर्तन होने पर ही स्थिति में होगा।

विनोबाजी अपेक्षा करते हैं कि स्त्री केवल सुरक्षित नहीं, स्वरक्षित बने। स्त्री रक्षणाकांक्षिणी बन गयी, इसलिये तो वह आक्रमणसुलभ बनी। वह जिस मात्रा में स्वरक्षित एवं तेजस्वी बनेगी, उसी मात्रा में स्वतन्त्र हो सकेगी। स्त्री को निर्भय, आत्मनिष्ठ बनना है। उसमें आत्म-शक्ति की कोई कमी नहीं, परन्तु जीवन को उसके अनुकूल बनाना होगा। उसको प्रखर ज्ञान-साधना करनी है, क्योंकि ज्ञान की छोटी सी पूँजी पर वे तेजस्वी नहीं बन सकतीं। नवीन जगत् में कार्य करने के लिए स्त्री को आत्म शक्ति और स्वतन्त्र व्यक्तित्व प्राप्त करना है।

[१७२, स्नेहलतागंज, इंदौर, म. प्र.]

इस दिशा में प्रयास के सूचक हैं।

लेकिन यह सब करते हुए भी हमें इस बात पर निरन्तर जागृत रहना है कि हम इन कार्यक्रमों के द्वारा राजनैतिक तथा अर्थनैतिक विकेन्द्रीकरण करने मात्र से केवल पूरक शक्ति का ही संगठन करें या समाज को दण्ड-आधारित मनोभावना तथा परिस्थिति से मुक्त करने के लिए दण्ड-शक्ति के विकल्प में निरपेक्ष जनशक्ति के उद्बोधन व संगठन के बुनियादी कार्य की ओर मुख्य ध्यान दें।

इसी उद्देश्य की पूर्ति के लिये कार्यकर्ताओं को नये मोड़ की दिशा के प्रश्न पर स्पष्ट होना चाहिये। हमारे मन में प्रायः यह भ्रम रहता है कि विकेन्द्रीकरण और स्वावलम्बन एक ही चीज है। अगर गहराई से सोचें तो मालूम होगा कि दोनों अलग अलग वस्तुएँ हैं। पहले कहा गया है कि कल्याणकारी राज्यवाद की सफलता के लिए सैनिक शक्ति आधारित राज्यों को भी आवश्यक है कि वे विकेन्द्रीकरण की नीति अपनायें। लेकिन विकेन्द्रीकरण ही स्वावलम्बन नहीं है।

स्वावलम्बन और विकेन्द्रीकरण में बुनियादी फर्क है। विकेन्द्रीकरण की प्रक्रिया में अभिक्रम व नेतृत्व केन्द्र का होता है। स्वावलम्बन के लिए अभिक्रम व नेतृत्व नीचे की बुनियादी इकाई का होना आवश्यक है। विकेन्द्रीकरण केन्द्र का अंश होता है। स्वावलम्बन इकाई के अन्दर स्वयं स्फुट अंकुर होता है। विकेन्द्रित इकाई में केन्द्रीकरण का स्वभाव व स्वधर्म समाविष्ट रह जाता है। स्वावलम्बन में स्वभाव व स्वधर्म का स्वतन्त्र विकास होता है।

यही कारण है कि पिछली जनवरी में विनोबाजी ने श्रम भारती, खादीग्राम (बिहार) की विकेन्द्रित संस्था मुंगेर जिला खादी-ग्रामोद्योग संघ के उद्घाटन भाषण में कार्यकर्ताओं को चेतावनी देते हुए कहा था कि वे इस बात को याद रखें कि "पत्थर का टुकड़ा होने से ही वह मकराना नहीं बन जायगा।" विनोबाजी के इस छोटे से सूत्र में उपरोक्त विचार का काफी स्पष्ट संकेत था।

आश्रमों में चारित्र्य निर्माण हो

विनोबा

[अब तक के प्रचलित आश्रमों से भिन्न इन्दौर को सर्वोदयनगर बनाने हेतु इन्दौर में 'विसर्जन आश्रम' विनोबाजी ने बनाया। इन्दौर से गौहाटी जाते वक्त वे बीच में जितने आश्रम आये, उनमें वे गये। यहाँ पर विनोबाजी के प्रवचन से 'आश्रम-यात्रा' का विवरण और फिर आश्रमों से उनको क्या अपेक्षा है, यह दिया जा रहा है। — सं०]

इन्दौर से गौहाटी : आश्रमों की यात्रा

इन्दौर से यहाँ तक हमारी यात्रा चली। उसमें हम एक आश्रम से दूसरे आश्रम में गये। इन्दौर में हमने 'विसर्जन-आश्रम' की स्थापना की। बड़ा विचित्र नाम लगा सबको। किसीको यह सूझेगा नहीं—अपनी सब आसक्तियों का विसर्जन करना। हमने वहाँ कहा कि आश्रम वाले शहर में काम करेंगे और शहर वाले आश्रम में रहेंगे। इस तरह शहर और आश्रम के बीच अखंड लेन-देन चलेगा। यों कह कर हम वहाँ से निकले। उसके बाद बैतुल में एक सुन्दर आश्रम है, वहाँ गये। वहाँ नई तालीम की शाला है, उसे मध्य में रख कर कार्यकर्ताओं ने भूदान का काम किया।

उसके बाद हम काशी आये। वहाँ अभी शांति-सेना विद्यालय चल रहा है। साधना-केन्द्र भी वहाँ। वहाँ साधक साधना करते हैं। भूदान-पत्रिकाएँ वहाँ से निकलती हैं। शहर के साथ सम्बन्ध रख कर काशी-नगरी सर्वोदय-नगरी बने, यह प्रयोग वहाँ चलेगा।

उसके बाद बोधगया में समन्वयाश्रम में गये। हिन्दुस्तान के तत्त्वज्ञान में एक है वेदान्त की धारा, जो संतों ने चलायी, और दूसरी है सेवा की, करुणा की। एक के प्रतिनिधि—उपनिषद्, वेद, गीता हैं और दूसरी के प्रतिनिधि गौतम बुद्ध हैं। वेदांत और अहिंसा का समन्वय भारत के लिए बहुत जरूरी है। उस दृष्टि से वह आश्रम बनाया है। उस आश्रम के जरिये सारे एशिया से सम्बन्ध रख सकते हैं। वहाँ एशिया से बौद्ध आते हैं और श्राद्ध के लिए हिन्दू भी वहाँ जाते हैं। वहाँ खेती है, गाँव में भी काम करते हैं और साधक साधना करते हैं।

उसके बाद जयप्रकाशजी के आश्रम सोखोदेवरा में गये थे। वहाँ अलग-अलग बहुत से मकान बनाये हैं। सौ-डेढ़ सौ लोग रहते हैं, ग्रामोद्योग के लिए वहाँ योजना बनायी है। शोषणमुक्त और शासनमुक्त समाज बनाने की कोशिश होगी।

उसके बाद हम खादीग्राम में गये। खादीग्राम धीरेन्द्रभाई का स्थान था। अब वहाँ राममूर्तिजी काम करते हैं। ग्राम-स्वराज्य के लिए नई तालीम का खास प्रयोग वहाँ हो रहा है। घलिया (पूर्णिया) में धीरेन्द्रभाई का लोकाधार और श्रमाधार का जीवन देखा। उनका कुल जीवन गाँव वालों पर निर्भर है। उसी जिले में रानीपतरा आश्रम है। वहाँ वैद्यनाथ बाबू का काम चलता है। बहुत सारे काम हैं, भूदान-आंदोलन का प्रांतीय दफ्तर वहीं है। उसके बाद हम बंगाल में आये। वहाँ एक ही आश्रम है जलपाईगुड़ी में। एक वृद्ध पुरुष वहाँ रहते हैं। उसके बाद हम यहाँ शरणिया आश्रम, गौहाटी आये हैं। इस तरह इन्दौर से लेकर यहाँ तक एक के बाद एक आश्रम में हमारा निवास हुआ है। इससे काफी देखने और कहने को मिला।

* * *

आश्रमों में चारित्र्य निर्माण हो, नये जमाने के लायक कार्यकर्ता तैयार हों। इसके लिये तीन शक्तियाँ होनी चाहिये। सेवा दो प्रकार की होती है—एक सेवा यह है, जो जिस हालत में बुराइयाँ प्रकट होती हैं, उसे जड़मूल से उखाड़ती है। हम दूसरी प्रकार की सेवा कर रहे हैं, जिससे समाज में आमूलाग्र फर्क होगा। जमाने के लायक समाज-परिवर्तन होगा। मनुष्य को जितना काम करना पड़ता है, वह शरीर के जरिये करना पड़ता है। यह शरीर सेवा के लिये साधन है। हमारी जबान से ऐसा कोई शब्द न निकले, जिससे किसी के दिल को चोट पहुँचे। जो चीज कहना उचित है, वही कहें और जो चीज लेना है वही लें। हमारी आँखें ऐसी कोई चीज न देखें, जो देखना अनुचित है। इस प्रकार से इन्द्रियों पर काबू रखना होगा।

इन्द्रिय-निग्रह याने इन्द्रियों पर काबू रखने की शक्ति। कछुए का दृष्टांत गीता में दिया है। जहाँ खतरा होता है, वहाँ वह अपनी इन्द्रियाँ अन्दर खींच लेता है और जहाँ खतरा नहीं होता है, वहाँ खोल देता है। इस तरह इन्द्रियों पर हमें नियंत्रण रखना चाहिये। घोड़े को काबू में रखेंगे तो वह बड़ी ताकत रखता है। शरीर पर हम कब्जा रखें। बार-बार बीमार पड़ते हैं तो अज्ञान है, निग्रह की कमी है, ऐसा मानना होगा। शरीर का उत्तम उपयोग हो सके, इस दृष्टि से शरीर पर कब्जा रखें तो नाहक कोई विचार हमारे चित्त में नहीं आवेगा। तरह-तरह के खाने-पीने में, भोग-विलास में, अखबार पढ़ने में चित्त की शक्ति विखरित होती है। फिर खास काम का मौका आता है, तो उसका उपयोग नहीं होता है।

मैं दस साल से घूम रहा हूँ। पचासों काम करता हूँ, लेकिन भूदान का जो मुख्य लक्ष्य है, वह नजरअंदाज नहीं होता है। वह काम होता ही है। शांति-सेना की स्थापना हो, घर-घर के साथ सम्बन्ध हो। इसलिए थोड़ी-सी शक्ति चित्त में है, वह काम देती है।

इसलिये चाहे शक्ति कम हो, पर उसका ठीक उपयोग हम करें तो बहुत काम हो सकता है। और हमारी इच्छा के अनुसार ही उसका ठीक उपयोग होना चाहिये। नींद नहीं आयी, सोने गये, तो तरह-तरह के विचार दिमाग में आने लगे। इस तरह 'आओ-जाओ घर तुम्हारा', ऐसा क्यों होना चाहिये? हमारे मन पर काबू होना चाहिये। हमारे इन्द्रिय, मन के हम स्वामी रहें। नहीं तो होता यह है कि कभी मन इधर खींचता है, कभी उधर खींचता है। भागवत में यह वर्णन विनोद से आया है। मिसाल दी है : एक पति है। उसकी चार पत्नियाँ होती हैं। वे उसे चारों ओर खींचती हैं। वैसी 'देह-पति' की हालत होती है। लोग शरीर के, मकान के, खेत के मालिक बन बैठते हैं। पर मन के मालिक होने ही को आत्म विजय कहते हैं। तभी जमाने के लायक परिवर्तन करने की शक्ति आयेगी। नहीं तो जमाने का रंग आप पर चढ़ेगा, आपका जमाने पर नहीं।

दूसरी शक्ति है—संस्था का संचालन करने की। सेवकों का समाज बनाना चाहिये। "संघं शरणं गच्छामि।" समूह बनाने की शक्ति होनी चाहिये। हम सब समूह में रहते हैं, हमारा सबका दिल एक है— शरीर पचास हैं, लेकिन दिल एक है। सब मिल कर वि-संवाद न बने। सब प्रकार के लोग परिवार में होते हैं। लेकिन हमारे प्रेम में कमी नहीं होती है। ऐसी संस्थाओं में अत्युत्तम साधना हो, वातावरण आनन्दमय हो। जब मैं संस्था कहता हूँ, तब मेरा मतलब अनुष्ठान से नहीं, सत-समाज से है। सत समाज बनना चाहिये। अक्सर सज्जनों का बहुत जल्दी मतभेद होता है, डाकुओं का आपस-आपस में बनता है। उनमें भाईचारा होता है। जड़ पदार्थ साथ रहते हैं। जड़ हैं, इसलिए उनका चलता है। जड़ों के समूह अ-बुद्धि के कारण चलते हैं और उसमें वे एक हो जाते हैं। लेकिन मनुष्यों में जरा-सा विचार में फर्क आया तो वहाँ मतभेद हो जाते हैं। मतभेदों में समझौता करने की शक्ति होनी चाहिये।

तीसरी शक्ति है—समाज को 'फेस' (सामना) करने की। पचास या सौ मनुष्यों का समाज होता है। उसकी एक शक्ति होती है। अन्दर-अन्दर जो झगड़ा चलता है, उसमें शक्ति क्षीण होती है। समूह एकरस हो तो समाज को 'फेस' कर सकते हैं। अपने को क्षुब्ध किये बिना सबकी संमति से समूह को आगे ले जाना चाहिये। ऐसी त्रिविध शक्ति से सम्पन्न जो कार्यकर्ता होगा, वह 'हायेस्ट कामन फैक्टर', समाज को जोड़ने वाला सर्वोत्तम तत्त्व बन सकता है।

ऐसी त्रिविध शक्ति विकसित होनी चाहिये। तभी समाज को बदलने लायक हम बनेंगे। नहीं तो बुनियादी क्रांति के काम में असमर्थ साबित होंगे। यह शक्ति विकसित हो, ऐसी कोशिश हो।

(गौहाटी, ११-४-६१)

शान्ति-सेना का प्रयाण गीत !

शान्ति सैन्य देख आज शान्ति-गान गा रहा।
'सत्य-प्रेम-करुणा' मंत्र दिग्दिगंत छा रहा।
सत्य की विजय।

झूठ, अर्ध-सत्य, मिथ्या की ही हार है।
पक्ष नहीं, अभय सही इनको कहाँ वैर?
सबको अपना रूप माना उनको कौन गैर?
सत्य की विजय।

प्रेम से ही आज क्रोध भी परास्त है।
जाति, सम्प्रदाय, धर्म, रंग-भेद मिट गये।
प्रांत, भाषा, राष्ट्र के भी बंध सर्व कट गये।
सत्य की विजय।

निराधार मानवी का आज पर्व है।

—नारायण देसाई

भारतीय भाषाओं पर संकट : १

रामाधार

पिछले चन्द मासों के अन्दर भाषाओं का प्रश्न अत्यधिक पेचीदा बना दिया गया है। विधान बनाते समय यह समस्या सहज ही हल हो गयी थी, परन्तु आज जब विधान में दिये हुए निश्चय को कार्यान्वित करने का समय आया है, तो इस बात को लेकर सारे देश में भयंकर द्वन्द्व पैदा हो गया है, जिसके फलस्वरूप देश के कुछ शिक्षित वर्ग अंग्रेजों से भी अधिक अंग्रेजी-भक्त बन गये प्रतीत होते हैं! चारों ओर पुकार मची हुई है कि हिन्दी-साम्राज्यवाद सारे देश को हिन्दी भाषियों की गुलामी में जकड़ना चाहता है, जिसको हम किसी भी अवस्था में सहन नहीं कर सकते। इस वातावरण में इस समस्या पर शान्तिपूर्वक विचार कर सकना भी असम्भव हो गया है। भाषाओं का प्रश्न भाषावाद का रूप पकड़ता जा रहा है और इस सवाल को लेकर दंगों तक की नौबत आ गयी है!

परन्तु यह समस्या क्या वैसी ही है, जैसी ऊपर-ऊपर से दिखती है? अथवा जैसी समाचार-पत्रों द्वारा बतायी जाती है? अनेक बार किन्हीं समस्याओं का स्थूल रूप कुछ होता है और उनकी जड़ कहीं और होती है। क्या ऐसी ही स्थिति इस समस्या के बारे में नहीं है? जब हम सारी परिस्थिति का अवलोकन गहराई से करते हैं तो हमें लगता है कि इस समस्या का सम्बन्ध भाषा की उपयोगिता-अनुपयोगिता से नहीं, बल्कि किन्हीं विशिष्ट वर्गों के निहित स्वार्थों से है।

थोड़ी देर के लिए केन्द्रीय राजभाषा का सवाल हम छोड़ देते हैं। विभिन्न राज्यों की क्षेत्रीय भाषाओं को लागू करने के प्रश्न पर विचार करते हैं। वहाँ क्या परिस्थिति है? वहाँ तो हिन्दी के साथ कोई झगड़ा नहीं है। लेकिन वहाँ अंग्रेजी की जगह क्षेत्रीय भाषाओं को सम्पूर्णतः क्यों नहीं लागू किया गया? दरअसल वहाँ तो ११ साल की अवधि रखनी भी उचित नहीं थी। बहुत पहले से ही सारे राज्यों में प्रादेशिक भाषाओं में काम होने लगना चाहिए था, जो नहीं हुआ। अब गुजरात ने हिम्मत करके पेश किया है और यह बधाई का पात्र है। सम्भव है, गुजरात की देखादेखी महाराष्ट्र भी पेश कर लें। लेकिन नौकरशाही का वश जहाँ तक चलेगा, वहाँ तक ऐसा होने में अधिक-से-अधिक देरी होगी। सुना गया है कि गुजरात में भी विश्वविद्यालयों में शिक्षा का माध्यम १० वर्ष तक अंग्रेजी ही रहेगी।

हमें सबसे अधिक आश्चर्य होता है बंगाल को देख कर। बंगला और हिन्दी भाषी बहनें हैं और दोनों का रूप-रंग इतना अधिक मिलता है कि इन्हें सगी बहनें कहना उचित होगा। लेकिन बंगाली भाई हिन्दी के उतने ही विरोधी हैं, जितने दक्षिण के भाई। सम्भवतः बंगालियों का विरोध उनसे अधिक उग्र है। लेकिन बंगाली बंगला भाषा के विरोधी तो नहीं हैं? तो फिर पश्चिमी बंगाल की क्षेत्रीय राजभाषा सम्पूर्णतः बंगाली क्यों नहीं हुई? बंगला भाषा तो भारत की अत्यधिक समृद्ध भाषा है। वह आज से दस वर्ष पहले भी उस क्षेत्र की राजभाषा होने में समर्थ थी। परन्तु अंग्रेजी का प्रभुत्व बंगाल के राजकार्य में भी पूर्ववत् चला आ रहा है। यह क्यों?

तामिलनाड में तामिल को सम्पूर्णतः राजभाषा बनाने में भी वही स्थिति है, जो बंगाल में देखने में आती है। अभी हाल ही में वहाँ यह प्रस्ताव किया गया है कि मद्रास को द्विभाषा भाषी राज्य घोषित किया जाय, यानी तामिल और अंग्रेजी, दोनों ही वहाँ की राजभाषाएँ हों। वहाँ के कई शिक्षित 'मिनिस्टर' तामिल की अपेक्षा अंग्रेजी अधिक अच्छी बोलते हैं। अतः यह माँग की गयी कि वे हमेशा अंग्रेजी ही बोलें। इतना ही नहीं, कुछ लोग तो इस प्रसंग में इतने गद्गद हो गये कि उनकी अंग्रेजी के लिए काव्यमय भाषा का प्रयोग किया गया। हमारी मूर्खताएँ काव्य के व्यक्तित्व से परिपूर्ण होती जा रही हैं!

इसके अलावा हिन्दी भाषा भाषी प्रान्तों पर भी नजर डालिये। इन प्रान्तों में हिन्दी को राष्ट्रभाषा बनाने के लिये सबसे अधिक शोर है, लेकिन उनके अपने राज्य का कारबार अंग्रेजी में ही किया जाता है! उत्तर प्रदेश इसमें सबसे बड़ा गुनाहगार है। यह हिन्दी का गढ़ है। काशी भी उसकी सम्पत्ति है। लेकिन राजकार्य में वहाँ भी अंग्रेजी भक्ति यथावत् चली आ रही है। राज्य के नेताओं की ओर से समय-समय पर अच्छे-अच्छे इरादों का इजहार अवश्य होता रहता है, परन्तु असल में परिस्थिति कुछ और ही है। हमें तो बल्कि यह अनुभव हुआ है कि ५-६ साल पहले जितना काम हिन्दी में होने लगा था, उससे आगे न बढ़ कर अब और भी कम हो गया है। एक मन्त्री महोदय के यहाँ जाने का सौभाग्य कभी-कभी हमें भी मिलता है। वे स्वयं हिन्दी प्रेमी हैं, परन्तु उनके यहाँ जो कागज हमें देखने को मिलते हैं, वे अधिकांश अंग्रेजी में ही होते हैं!

बिहार वाले हिन्दी लागू करने की कोशिश में हैं, परन्तु जानकार मित्रों से यही पता लगता है कि वहाँ की स्थिति भी उत्तर प्रदेश जैसी ही है। तो जब हिन्दी भाषा भाषी राज्यों का यह हाल है तो हम दूसरों को क्या कह सकते हैं? वैसे अहिन्दी भाषा-भाषी राज्य वाले स्वयं भी अपनी क्षेत्रीय भाषाओं के प्रति उदासीन हैं। अतः हम सभी एक ही तरह की मनोवृत्ति के शिकार हैं। असल में हम सभी अंग्रेजी भक्त साबित हो रहे हैं।

ये सारे लक्षण क्या जाहिर करते हैं? हिन्दी का विरोध दरअसल अहिन्दी भाषा भाषी लोग नहीं कर रहे हैं, जैसा कि ऊपर-ऊपर से देखने से लगता है। हिन्दी भाषा-भाषी लोग हिन्दी का विरोध करें, यह प्रश्न ही असंगत है।

वास्तव में भारतवर्ष के सर्वभाषा-एक जन हिन्दी के विरुद्ध नहीं हैं। सच तो यह है कि इस विरोध की जड़ें नौकरशाही की मनोवृत्ति और उसके निहित स्वार्थों में हैं। फिर चाहे इस विशिष्ट वर्ग का सदस्य बंगाली हो, चाहे तामिलभाषी, तेलुगु हो अथवा उत्तर प्रदेशी, महाराष्ट्री हो या पंजाबी। इस नौकरशाही के सदस्य ही इस देश के असली शासक हैं, उन्हीं के हाथ में सारी व्यवस्था के सूत्र हैं। और उन्हें अंग्रेजी में काम करने में न केवल सुविधा है, बल्कि उनके बाल-बच्चों का भविष्य भी अंग्रेजी की प्रधानता से सुरक्षित रहता है। कम-से-कम वे ऐसा ही समझते हैं। हिन्दी अपनाने से बड़ी सरकारी नौकरियों के लिए भी क्षेत्र व्यापक बन जायगा।

अंग्रेजी रहने से यह पूर्ति बहुत सीमित रहेगी, अतः उनके लिए विशेष अनुकूल है। इन निहित स्वार्थों की मनोवृत्ति नौकरशाही के सभी सदस्यों में समान रूप से मौजूद है, फिर चाहे वे किसी भी प्रदेश के हों। यहाँ अहिन्दी भाषा-भाषी अथवा हिन्दी भाषा भाषी क्षेत्र के अन्तर का कोई प्रभाव नहीं है। हिन्दी क्षेत्र के सरकारी अफसरों के बच्चे विशेष रूप से वहीं भेजे जाते हैं, जहाँ अंग्रेजी का प्रभुत्व सर्वोपरि है। यहाँ तक कि उनकी देखा देखी मंत्रियों आदि के बच्चे भी ऐसे ही स्कूलों में भेजे जाते हैं, जिससे हम नौकरशाही के व्यापक प्रभाव का अनुमान लगा सकते हैं।

जिस समय हमारा विधान बना था, उस समय नौकरशाही अपनी शक्ति से अनभिज्ञ थी। दरअसल उस समय देश के नेता उन्हें जिस साँचे में ढालना चाहते, उसमें ढलने के लिए वे तैयार थे। अनेक लोग खद्दर पहन कर आने लगे थे। खद्दर क्या, यदि उस समय उनसे लँगोटी लगा कर दफ्तर आने के लिए कहा जाता तो उसके लिए भी वे प्रस्तुत रहते। परन्तु धीरे धीरे उनकी शक्ति बढ़ी और वे नेताओं पर छा गये। अतः अब उनकी अपनी सुविधा और अपने स्वार्थ प्रमुख हैं। अंग्रेजी उनके लिए सुविधाजनक है, वह उन्हें विशिष्ट बनाती है। हिन्दी असुविधाजनक है और अविशिष्ट बनाती है! अतः केन्द्रपूर्वक उन्होंने यह स्थिति पैदा करना ही है कि विधान में परिवर्तन करने तक की बातें की जाने लगी हैं। वैसे वे स्वयं सामने नहीं आते। उन्हें सामने आने की आवश्यकता भी नहीं है। देश में यथेष्ट असन्तोष है, जिसका उपयोग कोई भी किसी काम के लिए कर सकता है। वह भाषा के प्रश्न पर भी काम आ रहा है।

मेरे एक मित्र ऊँचे सरकारी ओहदे में हैं। पंजाबी हैं। उर्दू बहुत अच्छी जानते हैं। परन्तु भाषी में काम करते-करते उसी में उन्हें विशेष सुविधा अनुभव होती है। पंजाबी हिन्दू होने के कारण हिन्दी का खुला विरोध कैसे करें? अपने को भी तो कुछ समझाना पड़ता होगा। अतः अपना विरोध वह हिन्दी वालों की शिकायत के द्वारा प्रकट करते हैं। उन्हें उर्दूप्रधान हिन्दी पसन्द है, संस्कृतप्रधान नहीं। उनका कहना है, हिन्दी में विधान के निर्देशानुसार १४ भाषाओं से शब्द लिये जाने चाहिए, केवल संस्कृत से नहीं। संस्कृत पर अधिक जोर देकर हिन्दी वाले भारत के विधान के प्रति 'विश्वासघात' कर रहे हैं, ऐसा भी उन्होंने कहा—संभव है, उनकी बात में कुछ सचाई हो, परन्तु वह अगर अपनी ओर देखने का कष्ट करें, तो उन्हें मालूम होगा कि उनके मुँह से यह दोषारोपण शोभा नहीं देता। वे स्वयं हिन्दी उतनी ही जानते हैं (अगर उसे जानना कहा जाय तो) जितनी ११ साल पहले जानते थे। यानी विधान में हिन्दी को स्थान देने के बावजूद सरकारी नौकर होते हुए भी उन्होंने हिन्दी का आवश्यक अभ्यास नहीं किया और मेरा अभिप्राय उस हिन्दी से है, जिसकी वह दुहाई देते हैं। यही मनोवृत्ति दूसरों की भी है। हिन्दी वालों ने कठिन संस्कृतमय हिन्दी पर जोर देकर भूल नहीं की, यह हमारा कहना नहीं है। हिन्दी के किसी विशिष्ट स्वरूप पर जोर देना हिन्दी को संकीर्ण करना है और उसके विकास में बाधा देना है। परन्तु उनकी यह भूल हिंदी के विरोध का कारण नहीं बनायी जा सकती। विधान में हिन्दी को राष्ट्रभाषा का स्थान मिलने के बाद वह हिन्दी भाषा भाषी लोगों की बपौती नहीं

सत्याग्रह : एक चिंतन

दादा धर्माधिकारी

सत्याग्रह यह समास है। इस समास का कौनसा पद महत्त्व का है, यह व्याकरण का विषय नहीं है। हम 'सत्य' पद को महत्त्व देते हैं या 'आग्रह' पद को, इस पर सत्याग्रह की सामाजिक जीवन की भूमिका अवलंबित है। 'आग्रह' को महत्त्व दें, तो 'सत्य' गौण हो जाता है और सत्याग्रह का हेतु, आशय और परिणाम बिलकुल बदल जाता है। 'सत्य' को महत्त्व देने पर 'आग्रह' का कोई मूल्य नहीं रहता। आग्रह छूटता जाता है और सत्य का आविष्करण मनुष्य की वृत्ति में और जीवन में उत्तरोत्तर अधिक मात्रा में होता जाता है।

इसका अर्थ यह है कि सत्याग्रह पर किसी भी विभूति का या व्यक्ति का सिक्का (मुहर) नहीं लग सकता। सत्याग्रह शब्द का प्रयोग सर्वप्रथम गांधीजी ने किया। गांधीजी को उसका प्रथम द्रष्टा, वक्ता होने का सम्मान मिला। लेकिन सत्याग्रह पर गांधीजी का अधिकार नहीं या विनोबाजी का उत्तराधिकार नहीं है। सत्याग्रह का मतलब 'गांधी-आग्रह' अथवा 'विनोबा आग्रह' नहीं है। इसलिए 'गांधीजी का सत्याग्रह' और 'विनोबाजी का सत्याग्रह' इस तरह का भेद करके निरर्थक वाद उपस्थित करने वालों से इतनी ही प्रार्थना है कि इस तरह के 'गांधी' और 'विनोबा' आपको ही मुबारक हों! उनको आप अपने ही देवालय में बाखुशी प्रतिष्ठापित कीजिये! पर 'सत्य' को तो औरों के लिये मुक्त रहने दीजिये।

जो नागरिक किसी के मुरव्वत से लोभ में फँस कर, या डराने-धमकाने से घबड़ा कर मतदान कर सकते हैं, उनको सत्याग्रह करने का हक है, ऐसा मानने का मतलब है, सत्याग्रह में से 'सत्य' को हमेशा के लिए छुट्टी देना!

आजकल के सत्याग्रह का प्रयोग

'सत्याग्रह' प्रेममूलक व सत्यनिष्ठ होने के कारण वह मनुष्यों के बीच स्नेह और सख्य निर्माण करने का साधन है; वैर निर्माण करने का हथियार नहीं है। इसलिए सत्याग्रह का डर या धाक साधारणतया किसी को भी न महसूस हो! थोड़ी धाक अथवा आदरयुक्त दबदबा तो महसूस होगा। लेकिन आज हम क्या देख रहे हैं! "अगर आप हमारी बात नहीं मानेंगे, तो हम सत्याग्रह करेंगे!" —इस तरह धमकी दी जाती है! इसके पीछे इच्छा यह रहती है कि प्रतिपक्षी घबड़ा जाय, वह शरण आ जाय अथवा दब जाय। अर्थात् सत्याग्रह दूसरे का पराभव करने का, उसको हमारा कहना मान्य करने के लिए मजबूर करने का अमोघ शस्त्र है; सत्य पटा देने का और सद्भाव बढ़ाने का पवित्र साधन नहीं है, इस तरह का विचार इसके पीछे है। इसका परिणाम यह हुआ कि हर समय होने वाले विभिन्न सत्याग्रह के कारण समाज में शान्तिपरायणता और सद्भावना का विकास होने के बदले अशान्ति, असहिष्णुता और अव्यवस्था बढ़ रही है। इसमें बेचारे गांधी और विनोबा कहाँ हैं! बात यह है कि अपने शस्त्रों की धार तेज करने के लिए हम बड़ी चतुरता के साथ उनके नाम का उपयोग करते हैं!

मतलब यह कि हरएक प्रसंग पर होने वाले सत्याग्रह के कारण प्रतिपक्षी के मन में सद्भाव या न्याय-निष्ठा निर्माण न हो, तब भी सारे वातावरण में शान्तिप्रियता, निर्वैरता और सज्जनता बढ़नी चाहिए। तभी उस प्रकार के आचरण को सत्याग्रह कहा जा सकेगा। अन्यथा वह हिंसात्मक प्रतिकार का निःशस्त्र तरीका सिद्ध होगा!

इन दिनों होने वाले हमारे अधिकतर सत्याग्रह इसी प्रकार के होते हैं!

लोकतंत्र का अर्थ

प्रातिनिधिक लोकतंत्र के आधार से जो सरकार बनती है, वह लोक सम्मति से ही बनी होती है, ऐसा संकेत है। अन्यथा लोकतांत्रिक व्यवहार ही असंभव होंगे। अल्पमत से चुने गये प्रतिनिधि अगर लोकमन के सच्चे प्रतिनिधि होंगे, तो बहुमत से चुने जाने वालों को नकली प्रतिनिधि और ढोंगी प्रतिनिधि मानना उचित नहीं होगा। यह प्रामाणिक खेल नहीं है। अन्य प्रांतों में बहुमत से चुने गये प्रतिनिधि अगर सच्चे हैं, तो केरल में बहुमत में रहने वाले 'साम्यवादी' भी सच्चे प्रतिनिधि ही हैं! हमारे द्वारा सोच-समझ कर विवेकपूर्वक चुने गये प्रतिनिधि भी गलत व्यवहार करने लगें, तो उनके खिलाफ सत्याग्रह करने का मौका लोगों पर आ सकता है। लेकिन बार बार अगर वैसा मौका आता है, तो मतदान के बारे में ही कुछ गंभीर और बहुत बड़ी गलती हुई, ऐसा मानना पड़ेगा।

मतदाताओं के पाप और गुनाह

मुरव्वत, लोभ अथवा डर से मतदान करना गलत है। लोकतंत्र की दृष्टि से यह गलती या असावधानी नहीं है। यह तो गुनाह या पाप है! यह लोकशाही और नागरिक स्तर की अयोग्यता का द्योतक है।

लोकतंत्र में सत्याग्रह को आवश्यक और महत्त्वपूर्ण स्थान है। लेकिन जिनको मतदान का पवित्र हक याने नागरिकों का स्वत्व भी लोभ या भय के कारण छोड़ने में कोई दिक्कत नहीं होती है, ऐसे लोगों की दृष्टि से सत्याग्रह का मतलब है—अशक्तों का 'कमजोर गुस्सा' प्रकट करने का साधन, अनन्यगतिकों का एकमात्र शस्त्र! उनके सत्याग्रह से न वीर-वृत्ति का विकास होता है और न शस्त्र का भय भी कम होता है।

एक व्यक्ति के हाथ में सत्ता और शक्ति हो और वह अगर दूसरों पर अपनी बात लादता है, तो हम ऐसे व्यवहार को तानाशाही या जुल्म कहते हैं। उसी न्याय से जिनको संख्या, सत्ता अथवा बाहुबल, इसमें से कुछ भी प्राप्त हो, उन बहुसंख्यकों द्वारा अल्पमत वालों पर अपनी बात लादना भी जुल्म ही है। यह बहुमतवाद भी तानाशाही का ही पर्याय है। इसलिए

जहाँ बहुसंख्यक अथवा बहुमत वाले अल्पसंख्यकों के प्रामाणिक और विवेकजन्य बातों की लापरवाही से अवहेलना करते हों, वहाँ अल्पसंख्यकों को अंतिम समय पर सत्याग्रह का आश्रय लेना पड़ता है। लेकिन वहाँ भी अल्पसंख्यक समुदाय या व्यक्ति अपनी बात की अपेक्षा सत्य की, अपने सामुदायिक स्वार्थ की अपेक्षा लोकहित की और स्वमत की अपेक्षा न्याय की इज्जत अधिक करता हो, तभी वह सत्याग्रह समाज-कल्याणकारी और लोकनीति के विकास के लिए पोषक सिद्ध होगा।

सशस्त्र प्रतिकार में भी शस्त्र का तेज होना आवश्यक है। लेकिन वृत्ति में स्वार्थपरायणता, लोलुपता, वैरभाव बिलकुल नहीं होना चाहिए। ऐसा होगा, तभी वह धर्म-युद्ध माना जायेगा; तभी उसके द्वारा वीर-वृत्ति का विकास होगा। सत्याग्रह के शस्त्र की धार को तेज करने के लिए निर्वैर सद्भाव का और सत्यनिष्ठा का पानी देना होगा। अर्थात् सत्याग्रह जितना प्रेममूलक और सत्यवचनी होगा, उतना ही वह महान् होगा। विनोबाजी ने [illegible] ग्रह का वर्णन 'सौम्य, सौम्यतर, सौम्यतम' इन विशेषणों से किया है।

भिन्न परिस्थिति के संदर्भ में

गांधीजी के समय भिन्न परिस्थिति थी। विदेशियों की सत्ता को उखाड़ फेंकना था। उसके बाद समाज-रचना का कार्य शुरू होने वाला था। हम लोग निढाल और हतवीर्य बन गये थे। प्रतिकार का कोई मार्ग नहीं सूझ रहा था। मन ने तड़फड़ाहट और बदला लेने की बुद्धि दी। गांधीजी के सत्याग्रह में अपनी हिंस्र मनोवृत्ति और बदला लेने की बुद्धि के लिए जितनी अनुकूलता मिली, उतना हमने लाभ उठाया, बाकी सब गांधीजी के पुण्यमय देह के साथ ही भस्मसात् हुआ। लेकिन इतने पर भी उस समय हमारे किये गये सत्याग्रह से इर्दगिर्द के सारे वातावरण में प्रामाणिकता और सौजन्य युक्त तेज निर्माण हुआ। गांधीजी पर या गांधीजी के प्रमुख अनुयायियों पर हिंसापरायणता का आरोप कोई गंभीरता से नहीं लगा पाते। सत्याग्रह के प्रचंड समूह में भी किसी भी अंग्रेज को अपनी जान का खतरा नहीं मालूम होता था।

प्रतिपक्षी के मन में अपनी प्रामाणिकता का प्रत्यय निर्माण करना ही सत्याग्रह का खास लक्षण है।

आज हमें साम्प्रदायिक, भाषिक और प्रांतिक सौहार्द और सौजन्य की प्राणप्रतिष्ठा करनी है। नागरिकों में सत्यनिष्ठा के साथ ही परस्पर विश्वास और आत्मप्रत्यय निर्माण करना है, भावरूप राष्ट्रीय ऐक्य का पोषण और संवर्धन करना है। ऐसे संदर्भ में सत्याग्रह का प्रयोग बहुत सतर्कता से और अनाग्रह बुद्धि से तथा लोकनिष्ठ भूमिका से करना आवश्यक है। भाषिक, साम्प्रदायिक और जाति विषयक स्वार्थ के लिए या हित संबंधों के लिए सत्याग्रह के मार्ग को अपनाने के पहले अगर सत्याग्रह की मर्यादाओं के बारे में नहीं सोचेंगे तो अनर्थ होगा। [illegible]

[मूल मराठी 'साधना' से]

रही। यह सारे भारत की चीज है। उसे सारा भारतवर्ष जो रूप देना चाहेगा, वही रूप उसका होगा। हिन्दी क्षेत्र के लोगों को जो कहना है, कहते रहें। उसे मानने के लिए कोई बाध्य नहीं है। परन्तु इस बात को हिन्दी के विरोध का आधार बनाना केवल बहानेबाजी है। संस्कृतमयी हिन्दी से अंग्रेजी बेहतर है, यह कितना असंगत तर्क है! दरअसल इन लोगों को यह बहाना न मिलता तो कोई और ढूंढ लेते। उन्हें तो अंग्रेजी चाहिए और क्यों चाहिए, यह हम पहले कह ही चुके हैं।

एक व्यक्ति के संकल्प और सामर्थ्य की कहानी

[अकेला आदमी अपने को अक्सर असहाय पाता है। परिस्थितियाँ उसे अपना कदम पीछे हटाने के लिए मजबूर कर देती हैं, किन्तु जब वह दृढ़ संकल्प, आत्मविश्वास और लगन से अभिप्रेरित हो जाता है, तब बाधाएँ और विपरीत परिस्थितियाँ भी अनुकूल बन जाती हैं। ५ मई के अंक में हमने एक सामूहिक पुरुषार्थ से बनायी गयी ३० मील लंबी चौतरफा जनसाध्य गाड़ी-सड़क का जिक्र किया था। अब एक ऐसे व्यक्ति के पुरुषार्थ की कहानी दे रहे हैं, जिसने अकेले ही साढ़े तीन मील लम्बी सड़क बनायी है। —सं०]

यदि आप जोधपुर से उदयपुर की ओर जायँ, तो नयागाँव से फूटने वाली एक सड़क आपको मिलेगी। इस सड़क की अपनी एक कहानी है। वास्तव में वह सड़क की कहानी नहीं, एक व्यक्ति जवानमल के दृढ़ निश्चय, साहस, आत्मविश्वास और लगन की कहानी है। आज भी ४१ वर्ष का जवानमल आपको दोपहरी से लेकर रात के अँधेरे और सुनसान तक लालटेन लिये इस सड़क की मरम्मत करता दिखाई देगा।

साढ़े तीन मील लम्बी यह सड़क राजस्थान के जोधपुर डिवीजन के पाली जिले की दूसरी पंचायत-समिति में पड़ने वाले मगरनगर से लेकर नयागाँव तक सात गाँवों को जोड़ती है।

अब सुनिये, यह सड़क कैसे बनी।

जवानमल कोलर गाँव के एक ब्राह्मण परिवार में जन्मा, लेकिन उसके भाग्य में सुख नहीं था। उसके पिता की साँप के काटने से मृत्यु हो गयी और उसे अपनी बाल्यावस्था में ही खेती-बाड़ी छोड़ कर हैदराबाद जाकर घरेलू नौकर का काम करना पड़ा। तीस साल तक एक व्यापारी की सेवा करके उसने कुछ पैसा जमा किया। लेकिन इसी बीच उसे अपनी पत्नी का सदा के लिए बिछोह सहना पड़ा और इसके कुछ दिन बाद उसकी इकलौती पुत्री भी उसे छोड़ गयी। दुर्भाग्य के थपेड़े खाता जीवन से निराश जवानमल अकेला गाँव लौटा। जीवन में उसके लिए अब कोई रस नहीं रहा था। वह जीवन में कुछ रस और सम्बल उत्पन्न करना चाहता था। अपने ग्रामवासियों की सेवा से बढ़कर उसे और किस बात में सुख मिल सकता था।

संकल्प

जब वह गाँव लौटा, तो मूसलधार वर्षा हो रही थी और आसपास का सारा क्षेत्र पानी में डूबा हुआ था। गाँव पहुँचने का रास्ता दिखाई नहीं देता था। बस, जवानमल ने निश्चय कर लिया कि गाँव के लिए सड़क बननी चाहिए और मैं ही बनाऊँगा।

उसने अपने भाइयों को अपना विचार बताया तो वे हँसे, "आज तक गाँव में सड़क नहीं रही! भला यह एक या दो-चार आदमियों के करने का काम है!" गाँव वालों ने भी उसे पागल समझा। लेकिन ज्यों-ज्यों सड़क बनाने के विचार का विरोध बढ़ा, त्यों-त्यों जवानमल का संकल्प भी बढ़ता गया। चारों तरफ लोग उसकी खिल्ली उड़ाते, पर एक आदमी ने उसकी बात पर ध्यान दिया और उसकी हिम्मत बढ़ायी। वह था उस सामुदायिक विकास-खण्ड का खण्ड-विकास अधिकारी। हिसाब लगा कर देखा गया, तो सड़क बनाने के लिए कम-से-कम दस हजार रुपयों की जरूरत थी। जवानमल भला इस कठिनाई से कब हिम्मत हारने वाला था! उसने अपनी स्व० पत्नी के आभूषण आदि बेच कर दो हजार रुपया जुटाया। तीस साल की चाकरी में वह सात हजार रुपया जमा कर पाया था। वह भी उसने इसी काम के लिए अर्पित कर दिया। फिर भी एक हजार रुपया की कमी रह गयी और इसके लिए उसने अपनी जमीन रेहन रख दी। इस प्रकार अपना सर्वस्व अर्पित कर जवानमल ने दस हजार रुपया जुटाया।

एकला चलो रे

और काम शुरू हो गया। जवानमल अकेला कुदाल और टोकरी लेकर जुट गया और कुछ मजदूर उसके साथ थे। लेकिन अभी उसकी बहुत परीक्षा होनी बाकी थी। सड़क कई खेतों में से निकलती थी। जवानमल ने जब खेतों को खोदना शुरू किया, तो खेतवालों ने उसे निर्दयता से पीटा। जवानमल ने पुलिस से फरियाद की, लेकिन पुलिस या कानून दूसरे खेतों में गैरकानूनी तौर से घुसने वाले की कैसे रक्षा कर सकता था? जवानमल की निराशा की आप कल्पना कर सकते हैं। पर उसका उत्साह भंग नहीं हुआ।

रिश्तेदार दुश्मन

दूसरे तो क्या, जवानमल के रिश्तेदार भी उसके दुश्मन हो गये। सड़क बनाने में उसके एक सम्बन्धी के खेत की नाली कट गयी, बस क्या था, गाँव वालों ने सिखाया और सिखाने में आकर सम्बन्धी ने जवानमल को खूब पीटा! जवानमल अकिंचन था, करता भी क्या! सारे गाँव वालों ने उसका हुक्का-पानी बन्द कर रखा था। कोढ़ में खाज की तरह एक और मुसीबत जवानमल के सिर पर टूटी। वर्षा में उसकी बनायी हुई सड़क का एक हिस्सा ढह गया और बड़ी कठिनाई से उसने जो थोड़े भी मजदूर इकट्ठे किये थे, उनमें से भी बहुत-से भाग गये।

अदम्य साहस और हिम्मत

जवानमल ने फिर भी हार नहीं मानी। वह खुद टोकरियाँ भर-भर कर मिट्टी डालता और सड़क की मरम्मत करता। मनुष्य और विधाता उसकी पूरी परीक्षा ले चुके थे और वह उसमें खरा उतरा था। उसके भाग्य ने पलटा खाया।

गाँव में नई पंचायत-समिति चुनी गयी और इसमें कुछ समझदार व्यक्ति आये। उन्होंने जवानमल की लगन को समझा और उसकी कठिनाइयों से सहानुभूति प्रकट करते हुए उसकी सहायता करने का निश्चय किया। नई पंचायत-समिति ने सड़क के लिए सहायता स्वीकृत की और उसका सम्मान करते हुए इस सड़क का नाम 'जवानमल सड़क' रख दिया। धीरे-धीरे अन्य गाँव वालों का रवैया भी बदला। उसके तीनों भाई भी अब उसके साथ हो गये और तीनों ने मिलकर ३ हजार रुपया इकट्ठा करके जवानमल को दिया।

सच्चा श्रम निष्फल नहीं जाता

सड़क बन गयी। जवानमल को इससे बढ़ कर और क्या पुरस्कार चाहिए?

सामुदायिक विकास तथा सहकार मंत्री, श्री सुरेन्द्रकुमार दे ने जवानमल को लिखा है, "आपने असाधारण काम किया है। आपकी पंचायत-समिति के लोग ही नहीं, हर देशवासी आपकी इस सफलता पर गर्व कर सकता है। आपने जो कुछ किया है, उससे आपकी समिति के अन्य लोगों को भी प्रेरणा मिलेगी और इससे ग्राम स्तर के विचारों में भी क्रान्तिकारी परिवर्तन होगा।"

आप पूछेंगे, क्या जवानमल अब सन्तुष्ट है? नहीं, उसकी अभी एक और अभिलाषा है—यह सड़क पक्की हो जाय।

आसाम की कुल कृषि-भूमि का बीसवाँ हिस्सा भूदान में प्राप्त किया जाय

भूदान-आन्दोलन को सफल करना पवित्र कर्तव्य

आसाम प्रदेश कांग्रेस कमेटी की ता० ३० अप्रैल और १ मई, १९६१ को कांग्रेस भवन, गोहाटी में हुई सभा द्वारा स्वीकृत प्रस्ताव

"आसाम प्रदेश कांग्रेस कमेटी की यह सभा भूदान आन्दोलन के जनक और विश्व-शान्ति के अग्रदूत आचार्य विनोबा भावे का उनकी आसाम-पदयात्रा के अवसर पर हार्दिक स्वागत करती है। विनोबाजी की पदयात्रा से सर्वोदय के आदर्श के प्रति अभूतपूर्व उत्साह जागृत हुआ है। प्रदेश कांग्रेस कमेटी को विश्वास और आशा है कि आज की अनुकूल परिस्थिति में विनोबा के भूदान के सन्देश को और भी अधिक गति देना और सफल करना सम्भव होगा।

प्रदेश कांग्रेस आसाम की जनता से अपील करती है कि वे विनोबाजी की माँग के अनुसार भूदान दें, जिससे यह कार्यक्रम सफल हो सके। प्रदेश कांग्रेस सब जिला कांग्रेस-कमेटियों और कांग्रेस-कार्यकर्ताओं से प्रार्थना करती है कि वे विनोबाजी द्वारा निर्धारित मात्रा में—अर्थात् आसाम में खेती के अन्तर्गत जो तमाम जमीन है, उसका कम-से-कम बीसवाँ हिस्सा भूदान में प्राप्त करने के लिए आवश्यक कदम उठायें। कमेटी को आशा है कि आसाम के कांग्रेस-जन भूदान-आन्दोलन को सफल करना अपना पवित्र कर्तव्य समझेंगे और अतः कमेटी उनसे विशेष तौर से प्रार्थना करती है कि वे पूरी तत्परता और गम्भीरता के साथ इस काम को उठा लें।"

जीप बनाम बैलगाड़ी

लालमणि शर्मा

[सामुदायिक विकास-मंत्रालय से प्रकाशित होने वाले मासिक "कुरुक्षेत्र" के अप्रैल के अंक में उपरोक्त शीर्षक का लेख प्रकाशित हुआ है। लेखक का यह विचार तो सही है कि "जनता का बन कर" ही जनता से सम्पर्क भलीभांति हो सकता है। 'बी० डी० ओ०' के पास जीप रहे या न रहे, इसकी व्यावहारिकता पर सोचा जाय, पर इसमें संदेह नहीं कि सामुदायिक विकास के काम में लगे हुए छोटे-बड़े कार्यकर्ता जहाँ तक हो सके वहाँ तक ग्राम जनता को उपलब्ध साधनों का ही उपयोग करेंगे तो वे ज्यादा कारगर साबित होंगे।—सं०]

प्रत्येक विकास खण्ड को विकास-कार्यों के लिए सरकार की ओर से एक जीप दी जाती है। जीप देकर सरकार यही आशा करती है कि विकास कार्यों में तेजी से प्रगति होगी। परन्तु अनुभव के आधार पर कहना पड़ता है कि जीप से विकास-कार्यों को *प्रगति की ओर कदापि अग्रसर नहीं किया जा सकता है। व्यवहारिक रूप में* विकास-खण्डों को जीप देने से निम्नलिखित समस्याएँ उठ खड़ी होती हैं।

जन-सम्पर्क में बाधा

जीप जन-सम्पर्क में बाधा पहुँचाती है। जनता से सम्पर्क तभी किया जा सकता है, जब सम्पर्ककर्ता जनता का ही हो जाय। किसी भी प्रकार की विभिन्नता होने पर जनता का नहीं बना जा सकता है। जीप पर, पुष्पक विमान पर या हाथी पर सवार होकर जन-सम्पर्क करने पर जनता और कार्यकर्ताओं में अन्तर पैदा होना स्वाभाविक ही है। उनको सम्पर्क के अभाव में जन-सहयोग नहीं मिल पाता है।

बी० डी० ओ० और विस्तार अधिकारी

अधिकांश खण्डों में बी० डी० ओ० और विस्तार अधिकारियों में द्वन्द्व युद्ध चलता रहता है। इसका मुख्य कारण जीप है। प्रत्येक विस्तार अधिकारी जीप चाहता है और यह सम्भव भी नहीं होता कि प्रत्येक को जीप से भ्रमण कराया जाये। *होता यही है कि जिस को जीप दी जाती है* वह तो खुश हो या न हो, परन्तु बाकी सब मुँह फुला लेते हैं और हमारी आराम-दायक जीप खण्डवालों को ही खण्डित कर देती है। सहकारिता का सिद्धान्त "एक सबके लिए और सब एक के लिए" खण्ड कर्मचारियों द्वारा ही खण्डित हो जाता है।

जिला अधिकारी और जीप

अधिकांश जिला अधिकारियों के पास जीप नहीं होती और सभी को खण्ड का दौरा करना पड़ता है। भिन्न-भिन्न विभागों के कम-से-कम १०-अफसर तो प्रति मास खण्ड का दौरा करते ही हैं और किसी-किसी दिन *तो दो या उससे अधिक अफ*-सर भी आ टपकते हैं। प्रत्येक यही चाहता है कि मुझे जीप मिल जाय। ऐसी हालत *में जिसे जीप नहीं मिल पाती वह खण्ड* से असहयोग करने लगता है। यही बात विकास-खण्ड के अन्य कर्मचारियों पर भी लागू होती है। यही नहीं जीप की मुख्य सीट पर बैठने के प्रश्न को भी ले कर मनमुटाव होते रहते हैं।

जनता और जीप

चूँकि सामुदायिक विकास-कार्यक्रम जनता का कार्यक्रम है, इसलिए अब कभी उत्साहशील, प्रतिभाशाली एवं लगनशील काश्तकार या विकास-कार्यकर्ता को किसी विशेष अवसर पर मोटर सरीखी तीव्र-गामी वाहन की आवश्यकता पड़ती है, तो वह सबसे पहले बी० डी० ओ० साहब का ही द्वार खटखटाता है। व्यस्त होने के कारण उसे जीप नहीं उपलब्ध हो पाती है और फलतः वह विकास-कार्यों से असह-योग शुरू कर देता है।

जब बी० डी० ओ० दौरे पर निकलते हैं तो जीप पर बैठ कर कार्यालय से सीधे वांछित स्थान पर ही ब्रेक लगाते हैं। पचास मील की रफ्तार के आगे रास्ते में पड़ने वाले गाँव के लोग जीप की धूल के ही दर्शन कर पाते हैं और ये *गाँव खण्ड* अधिकारी के सम्पर्क से वन्चित रह जाते हैं।

जीप के द्वारा जब बी० डी० ओ० दौरा करते हैं तो यह स्वभाविक ही है *कि अशिक्षित और पिछड़े लोग उनसे* मिलने में हिचकिचायेंगे। ऐसी हालत में बी० डी० ओ० से केवल वही लोग मिलते हैं, जो चालाक और चतुर होते हैं। ऐसे ही चन्द लोगों द्वारा वह वहाँ की परि-स्थितियों का पता लगाते हैं, जिससे वास्त-विक परिस्थिति क्या है, यह नहीं बताया जा सकता है। इस प्रकार से देश का बहुसंख्यक वर्ग विकास-कार्यक्रमों से अन-भिज्ञ होने के कारण देश की भी उन्नति नहीं कर सकता है।

जीप घर-घर खेत-खेत, और अधिकांश स्थानों पर पहुँच ही नहीं पाती है। जहाँ पहुँचती भी है, बड़ी परेशानी से या आफसरों की जबर्दस्ती से। और अधिकांशतः अधिकारी वर्ग के लोग इतने जागरूक *नहीं होते कि उन्हें जीप के बनने या* बिगड़ने का ध्यान रहे। नतीजा यह होता है कि जीप हमेशा वर्कशाप में ही जाती रहती है। *अक्सर यह देखा जाता है कि* नई जीप चार-पाँच साल में ही खराब हो जाती है; उससे राष्ट्रीय सम्पत्ति का नाश होता है।

और भी कई तरीकों से जीप का दुरुपयोग होता है। जितनी शिकायतें बी० डी० ओ० के कार्य न करने की आती हैं, उससे दूनी-चौगुनी शिकायतें *जीप का दुरुपयोग करने की आती हैं।*

बैलगाड़ी के लाभ

ऐसी हालत में मेरे विचार से विकास खण्डों में जीप का प्रचलन कतई हटा देना चाहिए और उनकी जगह एक अच्छे किस्म की बैलगाड़ी बी० डी० ओ० को उपलब्ध करानी चाहिए। बैलगाड़ी से *निम्न फायदे होंगे—*

१. बी० डी० ओ० या कोई भी विस्तार-अधिकारी जब बैल-गाड़ी से क्षेत्र का दौरा करेंगे तो यह आवश्य कागजात आदि, विस्तार, खाद-बीज रख लेंगे और रास्ते में प्रत्येक गाँव के प्रत्येक आदमी से मिल सकेंगे।
२. चूंकि अधिकांश ग्रामीण पैदल या बैलगाड़ी पर ही यात्रा करते हैं, अतः यह बी० डी० ओ० को बैलगाड़ी पर किसान ही की पोशाक में देख अपने आप आकर्षित होंगे और बी० डी० ओ० को उन्हें खोजने की आवश्यकता न रहेगी।
३. स्टाफ तथा अधिकारियों का आपसी झगड़ा खत्म होगा *और सहयोग की भावना पैदा* होगी।
४. *राष्ट्रीय सम्पत्ति का बचाव* होगा।

आर्वी तहसील की सामूहिक पदयात्रा

भूदान-प्राप्ति के काम को गति देने के लिए वर्धा जिले के आर्वी तहसील को चुना गया। इस समय की परिस्थिति पहले की परिस्थिति की अपेक्षा एकदम भिन्न थी। पहले ही अधिक परिमाण में (५८०० एकड़) भूदान प्राप्त हुआ था। प्राप्त भूमि में से *काफी भूमि वितरित हो चुकी थी।* कार्यकर्ताओं के वर्धा जिले के बाहर चले जाने के कारण तीन साल तक उस क्षेत्र में कोई गया ही नहीं था। इसीलिए यह भी गलत-फहमी फैल गयी थी कि भूदान-आदोलन हमेशा के लिए ठप हो गया। इसके कारण कुछ दाताओं के मन में फिर से लोभ की भावना जागी और उसके उन्होंने कहीं-कहीं आदाताओं को भूमि का कब्जा नहीं दिया, तो कहीं उन्हें भगा दिया गया। कुछ आदा-ताओं ने भूदान में दी हुई जमीन बेच कर पाँच सौ, हजार रुपये प्राप्त कर लिये थे, तो कुछ ने अदालत में कहा था कि दिया हुआ दान नामंजूर है।

इस सबके कारण उत्साही दाता भी *निरुत्साही बन गये थे* और कई आदाता तो कहीं से कुछ भी साधन प्राप्त न होने से घबड़ा गये थे। १९५७ के आदोलन का जोश कम होने से जनता भी सुस्त बनी थी और इस सबमें इन दिनों होने वाली शादी-ब्याह के धूमधाम ने भी कार्य में काफी *शिथिलता पैदा की थी। अन्य जिलों में* श्री जयप्रकाशजी आने वाले थे, इसलिए हमेशा की तरह बाहर के कार्यकर्ता भी यहाँ की पदयात्रा में नहीं आ सकते थे। ऐसी बिलकुल प्रतिकूल परिस्थिति में इस समय *सामूहिक पदयात्रा का* कार्यक्रम आयोजित किया गया। पदयात्रा-समाप्ति के लिए श्री जयप्रकाशजी के आगमन होने के आयो-*जन से इस पदयात्रा में कुछ जान आयी।*

इस अवस्था में ६ टोलियाँ पदयात्रा करने निकली। ६० गाँवों में उन्होंने काम किया। पहले तो दाता-आदाताओं की उदासीनता और शंकाओं से ही कार्यकर्ताओं का मुकाबला हुआ। हर जगह बार-बार पटा देना कि आदोलन बद नहीं हुआ था, बल्कि कार्यकर्ता अन्यत्र कामों में फँसे हुए थे। *पूर्वतैयारी में तो गलतफहमी को दूर* करने का ही काम करना पड़ा। सर्वत्र यही पूछा जाता था कि अब कौन भूदान देगा। गाँव-गाँव सभाएँ होने *लगी। सभा में* काफी मात्रा में लोग इकट्ठे होते थे। वातावरण में जान आने लगी। हारे हुए किले पर पुनः विजय प्राप्त होती रही। मत-लब यह कि दाताओं के द्वारा कब्जा प्राप्त न होने वाली जमीन, आदाताओं को हटाने *वाली जमीन, नामंजूर दान की और बेची* हुई जमीन फिर से प्राप्त होने लगी। साथ-साथ नया भूदान भी मिला। पहले भूदान देने वाले दाताओं ने भी कहीं-कहीं पुनः भूमि दी।

इस थोड़े से प्रयत्न में ९० दाताओं से ३३५ एकड़ *भूदान-प्राप्ति हुई* और उसी समय १४५ एकड़ भूमि का ५८ परिवारों में वितरण भी हुआ। इस बार दाता अपनी इच्छा से आदाता का नाम सुझाने की सुविधा भी इस समय दी गयी थी, कई दाताओं ने उससे लाभ उठाया। तलेगाँव और आर्वी में जो शिबिर हुए, उसकी समाप्ति के समय गाँववालों ने *भोजन की व्यवस्था घर-घर में की थी।*

पदयात्रा की समाप्ति आर्वी शहर में श्री जयप्रकाशजी की उपस्थिति में हुई। २२७६ रु० *की थैली श्री जयप्रकाशजी* को जिले की ओर से भेंट दी गयी।

१९६९ में आने वाली 'बापू जन्म-*शताब्दी' के अवसर पर वर्धा जिले को* 'सर्वोदय-जिला' बनाने का विचार जिला सर्वोदय मण्डल की ओर से प्रकट किया *गया। श्री जयप्रकाशजी ने इस विचार* की पुष्टि करते वक्त डेढ़ घंटे का आशी-र्वाद रूप में भाषण किया।

आर्वी तहसील में प्राप्त नये भूदान का आँकड़ा पुराने काम की तुलना में कम ही दिखाई देता है। लेकिन ६० गाँवों से प्राप्त दान की दृष्टि से देखा जाय, तो यह *ठोस काम हुआ, ऐसा ही मानना पड़ेगा।*

पंचायत परिषद् के महत्वपूर्ण प्रस्ताव

पिछले दिनों जयपुर में अ० भा० पंचायत परिषद् का तृतीय अधिवेशन श्री जयप्रकाश नारायण की अध्यक्षता में संपन्न हुआ। परिषद् में पंचायती राज की सफलता के लिए कई प्रस्ताव पास किये हैं, उनमें से कुछ महत्वपूर्ण प्रस्ताव हम यहाँ दे रहे हैं।

[१]

"पंचायतों को दलबन्दी से बचाने के लिए यह आवश्यक है कि पंचायत राज व्यवस्था के अन्तर्गत होने वाले चुनावों को कोई भी राजनैतिक पार्टी दलीय आधार पर न लड़े। अधिवेशन इसके लिए प्रत्येक राजनैतिक पार्टी से अनुरोध करता है कि वे इस सम्बन्ध में निर्णय लें और उसे कार्य रूप में परिणत करें।

"साथ ही पंचायत राज व्यवस्था के अन्तर्गत आने वाली पंचायतों, पंचायत-समितियों और जिला परिषदों के सदस्यों से यह अधिवेशन अपेक्षा करता है कि वे पंचायत राज व्यवस्था को दलगत राजनीति से दूर रखने की दिशा में अग्रसर हों।"

[२]

"पंचायतों के पास प्रशासन एवं विकास सम्बन्धी महत्वपूर्ण उत्तरदायित्व है। पंचायतें इस उत्तरदायित्व को सफलतापूर्वक वहन कर सकें, इसके लिए यह आवश्यक है कि पंचायतों के चुनाव सर्वसम्मति से हों। अतः यह अधिवेशन पंचायतों, ग्रामीण जनता एवं रचनात्मक संस्थाओं से अपील करता है कि वे मिल-जुल कर सर्वसम्मत चुनाव कराने का प्रयास करें।

"साथ ही केन्द्रीय तथा राज्य-सरकारों से भी अनुरोध है कि वे ऐसे कदम उठायें, जिससे पंचायत राज-व्यवस्था के सर्वसम्मत चुनावों को प्रोत्साहन मिल सके।"

[३]

"पंचायती राज के स्वस्थ विकास के लिए यह आवश्यक है कि उनके विचार-धारा एवं कार्यों पर कोई बाह्य प्रभाव न पड़े और वे स्वतन्त्र रूप से अपना कार्य सम्पादित कर सकें। अतः यह सम्मेलन राज्य सरकारों से सिफारिश करता है कि पंचायत-समितियों और जिला परिषदों में विधायकों तथा संसद-सदस्यों को केवल सम्बद्ध सदस्य ही रखा जाये और उन्हें कोई पद ग्रहण करने तथा मतदान करने का अधिकार न हो।"

[४]

"पंचायतों को स्थानीय प्रशासनिक एवं आर्थिक दृष्टि से सुदृढ़ एवं स्वावलम्बी बनाने के लिए यह आवश्यक है कि सारा प्रशासन एवं भू-राजस्व पंचायतों को सौंप दिया जाय। यह अधिवेशन गुजरात सरकार द्वारा गठित जनतान्त्रिक विकेन्द्रीकरण समिति द्वारा की गई सिफारिशों का स्वागत करता है और उसके इस प्रस्ताव को अत्यन्त महत्वपूर्ण समझता है, जिसमें सारा प्रशासन भू-राजस्व पंचायतों को सौंपने की सिफारिश की गयी है। साथ ही राज्य सरकारों से भी आग्रह करता है कि वे गुजरात के इस प्रस्ताव के अनुसार भू-राजस्व पंचायतों को दिये जाने का निर्णय लें।

"यह अधिवेशन पंचायतों का भी ध्यान इस ओर आकर्षित करता है कि वे स्वयं भी अपने आर्थिक आय के साधन बढ़ाने की दिशा में सक्रिय कदम उठायें।

"इस अधिवेशन की यह भी मान्यता है कि भू-राजस्व सम्बन्धी सेवाएँ भी विभिन्न स्तरों पर गठित पंचायतों के सुपुर्द कर दी जायें।"

[५]

"अखिल भारत पंचायत परिषद् का यह अधिवेशन सही पंचायती राज के लिये गाँव-गाँव में सहकारी, और एकरस समाज का निर्माण पहली बुनियादी जरूरत मानता है। यह एकरसता गाँववालों के अपने अभिक्रम के जगने और कुछ बातों को मिलजुल कर किये गये अपने संकल्प द्वारा निपटाने से सहज ही बढ़ सकती है। अखिल भारत सर्व सेवा संघ ने ग्राम-स्वराज्य-घोषणा का जो कार्यक्रम इस निमित्त हाल ही में देश को दिया, उसका यह परिषद् समर्थन करती है और देश के लाखों गाँवों में फैले हुए भाई-बहिनों से खास तौर से अपील करती है कि इस संकल्प व उसके कार्यक्रम को व्यापक और कामयाब करके पंचायती राज की जड़ों को मजबूत करने में अपनी शक्ति भर योग दें।

"आधारभूत रूप में संकल्प का स्वरूप यह होना चाहिए कि हर गाँव में सब निवासी निम्नलिखित बातों का अपना जिम्मा मान कर उसके लिए संकल्प करें:—

(१) उनके गाँव में कोई बेकार नहीं रहेगा।

(२) यदि कोई बेकार होगा तो उसकी उदरपूर्ति की व्यवस्था गाँव वाले उसे रोजगार न देने तक करेंगे।

(३) गाँव के झगड़े गाँव में ही निपटाने का प्रयत्न करेंगे।

परिषद् आशा करती है कि पंचायती राज में दिलचस्पी लेनेवाला हर देशवासी इस कार्य में अपना योग देगा।"

महाराष्ट्र सर्वोदय-मण्डल की बैठक

अर्थ-संग्रह अभियान का कार्यक्रम : बिहार के लिये कार्यकर्ता

सर्वोदय-सम्मेलन के तुरन्त बाद अप्रैल के अन्तिम सप्ताह से मई के प्रथम सप्ताह तक करीब दस दिन श्री जयप्रकाशजी ने महाराष्ट्र प्रदेश का दौरा किया। दौरे में दो ग्रामदान और १० ग्रामसंकल्प हुए। ३५७ एकड़ भूमि भी भूदान में प्राप्त हुई। सर्वोदय-कार्य के लिए इस दौरे में करीब ६० हजार रुपये की थैली भी श्री जयप्रकाशजी को भेंट की गयी।

श्री जयप्रकाशजी का दौरा समाप्त होते ही महाराष्ट्र सर्वोदय-मण्डल की एक बैठक सेवाग्राम में हुई, जिसमें प्रदेश के भावी कामकाज के बारे में चर्चा हुई। श्री जयप्रकाशजी के दौरे में जो आर्थिक सहायता प्राप्त हुई, उसमें से छठा हिस्सा सर्व सेवा संघ को, छठा हिस्सा प्रांतीय सर्वोदय-मण्डल को और छठा हिस्सा अमरावती क्षेत्र के काम के लिए देने का तय हुआ। शेष आधी रकम जगह-जगह के स्थानीय कार्य के लिए खर्च की जायगी।

सर्व सेवा संघ ने देश भर में सर्वोदय-कार्य के लिए आर्थिक सहायता प्राप्त करने का जो अभियान चलाना तय किया है, उसका समर्थन करते हुए महाराष्ट्र सर्वोदय मण्डल ने यह निश्चय किया है कि इस अभियान के दौरान में हर जिले से ५ हजार रुपया संगृहीत किया जाय। बम्बई शहर में विशेष शक्ति लगा कर अर्थ-संग्रह करने का निश्चय किया गया। इस काम के लिए कार्यकर्ता १ जुलाई से १५ जुलाई तक विशेष तौर से बम्बई में शक्ति लगायेंगे।

महाराष्ट्र सर्वोदय-मण्डल ने प्रदेश के शान्ति-सेना कार्य के लिए श्री अप्पासाहब पटवर्धन को प्रमुख नियुक्त किया है। १५ अगस्त से पाँच दिन का एक शान्ति-सैनिकों का शिविर करने का निश्चय किया गया है। अमरावती क्षेत्र के काम की जिम्मेदारी श्री दामोदरदासजी मूँदड़ा ने स्वीकार की है। लोकनीति के विचार का व्यापक प्रचार करने की योजना भी महाराष्ट्र सर्वोदय-मण्डल ने सोची है।

प्रदेश से निकलने वाले मराठी "साम्ययोग" साप्ताहिक का सम्पादन श्री गोपालराव काळे ने स्वीकार किया है। बिहार में कोसी में कट्ठे का जो विशेष अभियान चल रहा है, उसमें मदद करने के लिए महाराष्ट्र से दस कार्यकर्ता बिहार जायेंगे। पाँच व्यक्तियों का दल इसी माह में रवाना हो जायगा और शेष पाँच फिर तीन माह बाद जायेंगे।

काशी में सर्वोदय-पात्र अभियान

जनवरी '६१ से अप्रैल '६१ तक

महीना	वस्तु	तौल	कीमत
			रु.–न. पै.
जनवरी	आटा	११ सेर ८ छटाँक	६–२५
,,	चावल	११ सेर ६ छटाँक	११–९८
फरवरी	आटा	८ सेर १ छटाँक	४–०३
,,	चावल	१६ सेर १ ,,	१८–०३
मार्च	आटा	१० सेर १२ छटाँक	५–३७
,,	चावल	१३ सेर ७ ,,	१६–१७
अप्रैल	आटा	२२ सेर ८ ,,	११–२८
,,	चावल	१ मन, १ सेर, १२ छटाँक	२०–८८

कुल आटा–१ मन, १३ सेर १३ छटाँक

कुल चावल–२ मन, ४ सेर १० छटाँक

बीस रु० मन की दर से कुल कीमत रु० ९४–४१ नये पैसे

सर्वोदय पात्रों में प्राप्त नकद रकम रु० १–३३ नये पैसे

इस तरह जनवरी से अप्रैल तक चार महीनों में कुल रु० ९५–८२ नये पैसे

इसका छठा भाग रु० १५–९३ नये पैसे अ० भा० सर्व सेवा संघ को देकर शेष सर्वोदयनगर अभियान एवं शांति सैनिकों के योग क्षेम में व्यय हुआ।

कुल २४८ सर्वोदय-पात्र नियमित चल रहे हैं।

—अलखनारायण, मंत्री
जिला सर्वोदय मण्डल, काशी

सर्व सेवा संघ-प्रकाशन, राजघाट, काशी

स्थायी ग्राहक योजना

अखिल भारत सर्व सेवा संघ पिछले कई वर्षों से सर्वोदय-साहित्य सुलभ मूल्य में प्रकाशित कर रहा है। जनता ने संघ द्वारा प्रकाशित साहित्य का हार्दिक स्वागत भी किया है।

हमारे पास बराबर माँग आती रही है कि सर्वोदय-साहित्य में दिलचस्पी रखने वाले मित्रों को संघ के नवीन प्रकाशनों की सूचना समय-समय पर मिलनी चाहिये। जानकारी के अभाव में अक्सर वे नवीन साहित्य के अध्ययन से वंचित रह जाते हैं। अतएव संघ ने एक "स्थायी ग्राहक योजना" १ मई १९६१ से चालू की है। संघ द्वारा प्रकाशित साहित्य का मूल्य कम होने के कारण फुटकर पुस्तकें मंगाने वाले को डाक-खर्च प्रायः मूल्य के अनुपात में अधिक पड़ता है। इसलिये पाठकों की माँग का खयाल करके योजना शुरू की जा रही है।

इस योजना के नियम इस प्रकार हैं:

(१) स्थायी सदस्यता का प्रवेश-शुल्क १ रु० होगा।

(२) स्थायी सदस्यों को 'भूदान-यज्ञ' हिन्दी, 'भूदान' अंग्रेजी, 'भूदान तहरीक' उर्दू या 'नई तालीम' (हिन्दी मासिक) में से किसी भी पत्रिका के ग्राहक बनने पर एक पत्रिका के चन्दे में १ रु० की छूट प्रथम वर्ष में दी जायगी।

(३) उपरोक्त चारों पत्रिकाओं में से किसी भी एक पत्रिका के मौजूदा ग्राहकों को प्रवेश शुल्क देने की आवश्यकता नहीं रहेगी। केवल ग्राहक-नम्बर और पेशगी रकम भेजने पर वे स्थायी ग्राहक मान लिये जायेंगे।

(४) स्थायी ग्राहकों को ४ रु० पेशगी जमा कराना होगा। साल में निर्धारित मूल्य से कम मूल्य की पुस्तकें लेने पर दिया हुआ कमीशन या वी. पी. लौट कर आने से उसका खर्च आदि की रकम इस धन में से जमा कर ली जायगी। किसी प्रकार का बकाया न होने पर पेशगी की रकम सदस्यता-समाप्ति पर वापस कर दी जायगी।

(५) हमारी अपेक्षा है कि संघ द्वारा प्रकाशित हर नई किताब स्थायी ग्राहकों के पास पहुँचे। फिर भी ग्राहकों को अपनी रुचि के अनुसार चयन करके साल में कम-से-कम १५ रु० की किताबें सर्व सेवा संघ-प्रकाशन, काशी से लेना आवश्यक होगा।

(६) नव प्रकाशित साहित्य की सूचना 'भूदान-यज्ञ' में महीने के प्रथम सप्ताह में निकलती रहेगी। इसके अलावा स्थायी ग्राहकों को पत्र द्वारा भी नये प्रकाशनों की सूचना यथा सम्भव हर दूसरे महीने दी जाती रहेगी।

(७) सर्व सेवा संघ-प्रकाशन काशी से पुस्तकें लेने पर स्थायी ग्राहकों को २५ प्रतिशत कमीशन दिया जायेगा। पुस्तकें भेजने का व्यय, पैकिंग आदि खर्च ग्राहकों के जिम्मे होगा।

(८) जो स्थायी ग्राहक एकसाथ १५ रु० जमा करा देंगे, उन्हें बिना वी. पी. या बिना रजिस्ट्री के किताबें भेजी जा सकेंगी। इसमें डाक-व्यय कम हो जायेगा। वी. पी. या रजिस्ट्री से ही साहित्य मँगवाना हो तो एक स्थान पर अधिक ग्राहक होने से और एकसाथ मंगाने से डाक-व्यय में कुछ बचत होगी। अधिक साहित्य मंगाना, हो तो रेलवे से भी मंगाया जा सकता है। मार्ग-व्यय की सबसे अधिक बचत इसमें है।

(९) हर माह की २५ तारीख को साहित्य यहाँ से भेजा जायेगा। ग्राहकों को किताबों का चयन करके उसकी सूचना हमें १५ ता. तक भेज देनी होगी।

(१०) इन नियमों में अनुभव से फेर-बदल की आवश्यकता महसूस हो तो वह किया जा सकेगा। इसकी सूचना भूदान-पत्रिकाओं द्वारा दी जायेगी। आशा है, पाठक स्वयं इस योजना का लाभ उठायेंगे और मित्रगण को भी इस के लिये प्रेरित करेंगे।

—राधाकृष्ण बजाज
संचालक
अ. भा. सर्व सेवा संघ-प्रकाशन

बिहार का पाँचवाँ सर्वोदय सम्मेलन

आगामी २८ और २९ मई '६१ को बिहार का पाँचवाँ प्रादेशिक सर्वोदय-सम्मेलन हजारीबाग जिले के अंतर्गत झुमरीतिलैया में होने जा रहा है। सम्मेलन में सर्वश्री जयप्रकाश नारायण, धीरेन्द्र मजूमदार, ध्वजाप्रसाद साहु, रामदेव ठाकुर, वैद्यनाथ प्रसाद चौधरी आदि नेताओं के अलावा लगभग २००० लोकसेवक शामिल होने वाले हैं। बिहार विधान सभा एवं बिहार विधान परिषद् के लगभग ४०० विधायकों, बिहार के सभी संसद् सदस्यों, मंत्रियों, उपमंत्रियों तथा लगभग २० रचनात्मक संस्थाओं के प्रतिनिधियों को सम्मेलन में भाग लेने के लिए आमंत्रित किया गया है।

ता० ३०-३१ मई को पाँचवें प्रादेशिक सर्वोदय-सम्मेलन के स्थान पर ही बिहार खादी-ग्रामोद्योग संघ तथा अन्य जिला खादी-ग्रामोद्योग समितियों के कार्यकर्ताओं का वार्षिक संमेलन भी होगा।

नोट: झुमरी तिलैया इस्टर्न रेल्वे के ग्रेन्ड कार्ड लाइन पर गया से करीब ५० मील पूरब कोडरमा स्टेशन के निकट है।

निःशुल्क प्राकृतिक चिकित्सा और शिक्षण-शिविर

३० मई, '६१ से ५ जुलाई, '६१ तक

ग्रीष्मावकाश में विशेषतः विद्यार्थियों और शिक्षकों के लिए स्थानीय प्राकृतिक चिकित्सा-केन्द्र, ग्राम करवत (दुल्हीपुर) वाराणसी में आयोजित प्राकृतिक चिकित्सा या निसर्गोपचार का अभूतपूर्व प्रयोग एवं प्रशिक्षण-शिविर, सुप्रसिद्ध डाक्टर कपिलदेव पाण्डेय की देखरेख में चलेगा।

पेट की मालिश, नाभि-परीक्षा, स्थूल एवं सूक्ष्म यौगिक व्यायामों तथा अन्य क्रियाओं द्वारा नाभि-चक्र को ठीक करने की विधि सहित प्राकृतिक चिकित्सा, भोजन-सुधार, कुंजल, शंख-प्रक्षालन, नौलि, नेति और योगासनों के अतिरिक्त सरल व्यायाम, श्वास-क्रिया तथा खाली हाथ की कसरतों द्वारा पेट के सभी रोग और दमा, पेचिश, टी० बी०, गठिया, मधुमेह, रक्तचाप, हिस्टीरिया, प्रदर आदि अनेक दुस्साध्य बीमारियों का इलाज किया जायगा और इन विषयों की शिक्षा भी दी जायेगी। उपचार तथा उपाय बतलाने का और प्रशिक्षण का कोई शुल्क नहीं रहेगा। इस निःशुल्क योजना में प्रवेश केवल ३० मई से १० जून '६१ तक ही होगा तक ही होगा। मिलने का समय प्रातः ५ से ९ और सायं ४ से ६ बजे तक। प्रार्थना एवं प्रवचन रोज रात में ८ बजे से।

पता:—प्राकृतिक चिकित्सा-केन्द्र, ग्राम करवत, दुल्हीपुर (वाराणसी)। यह स्थान प्राइमरी स्कूल के सामने, राजघाट, वाराणसी और मोगलसराय के बीच में, जी० टी० रोड पर, जहाँ सरकारी रोडवेज की बसें "प्रार्थना से" रुकती हैं।

संघ के अध्यक्ष का दौरा

सर्व सेवा संघ के अध्यक्ष, श्री नवकृष्ण चौधरी सर्वोदय-सम्मेलन से लौटते हुए पूना में सर्व सेवा संघ तथा गोखले इन्स्टीट्यूट द्वारा सम्मिलित रूप से संयोजित आर्थिक नियोजन परिसंवाद में तथा भिण्ड, मुरैना, आगरा होते हुए ता० ३० अप्रैल को सर्व सेवा संघ के प्रधान केन्द्र पहुँचे। काशी में पाँच दिन ठहरने के बाद कलकत्ता होते हुए श्री नवबाबू कटक गये। कलकत्ता में ता० ६ मई को प्रेस-कान्फ्रेंस में उन्होंने सम्मेलन और सर्व सेवा संघ की चर्चाओं व निर्णयों के बारे में प्रकाश डाला। ता० ७ मई को सबेरे कटक पहुँचे। वहाँ से अंगुल होकर वापस ता० १० को सुबह कटक आये। ता० १२ की शाम को कटक में आम सभा हुई, जिसमें सभी पार्टियों के लोग उपस्थित थे। सभा में श्री नवबाबू ने करीब सवा घंटे तक विश्व की मौजूदा परिस्थिति, आज के जनतन्त्र को जनाभिमुख कैसे बनाया जाय, इस संबंध में सर्व सेवा संघ की नीति आदि विषयों पर भाषण के बाद करीब एक घण्टा तक प्रश्नोत्तर हुए।

इस अंक में

श्रीकृष्णदत्त भट्ट, अ० भा० सर्व सेवा संघ द्वारा भार्गव भूषण प्रेस, वाराणसी में मुद्रित और प्रकाशित। पता: राजघाट, वाराणसी-१, फोन नं० ४३९१
पिछले अंक की छपी प्रतियाँ १०,३९० : इस अंक की छपी प्रतियाँ १०,००० एक अंक : १३ नये पैसे

संपादक : सिद्धराज ढड्ढा

वाराणसी : शुक्रवार | २ जून '६१ | वर्ष ७ : अंक ३५

रवीन्द्रनाथ के पुण्य स्मरण के अवसर पर

तटस्थ और दूरदृष्टि के संदेशवाहक

विनोबा

ऐसे महापुरुषों के विषय में बोलना मुश्किल है, जो हमारे जमाने में या हमारे समाज में हो गये। दूर के जमाने में या दूर के समाज में जो होते हैं, उनके बारे में कुछ तटस्थ दर्शन होता है, इसलिए कुछ सोच सकते हैं, बोल सकते हैं। लेकिन जो हमारे समाज और समय में हो गये, उनके बारे में बोल नहीं सकते। तटस्थ दर्शन नहीं हो सकता है, क्योंकि उनका हम पर बहुत उपकार होता है। जैसे बच्चा अपनी माँ के बारे में नहीं बोल सकता, वह उसके लिए सर्वश्रेष्ठ व्यक्ति होता है या जैसे गुरु के बारे में शिष्य नहीं बोल सकता, क्योंकि उसके लिए गुरु सर्वस्व होता है। इतना बड़ा उपकार उनका होता है कि उसमें और गुण छिप जाते हैं, और जो दोष होते हैं, वे भी छिप जाते हैं। ऐसा ही रवीन्द्रनाथ के विषय में है।

यह मानना होगा कि भारत में ईसा के उन्नीसवें शतक में ऐसे महान् आविर्भूत हुए कि उस बराबरी के महान् एक ही शतक में और एक ही देश में अक्सर देखने को नहीं मिलते। अंग्रेजों ने भारत पर कब्जा कर लिया, इसमें भगवान का बहुत बड़ा उद्देश्य होना चाहिए, ऐसा न्यायमूर्ति रानडे ने लिखा है। उसका अर्थ हम बचपन में नहीं समझते थे, क्योंकि हमारे चित्त में अंग्रेजों के प्रति बहुत द्वेष था। उन्होंने देश को दबाया, कब्जा किया, इतना ही नहीं, बल्कि हमें अपमानित किया, यह भावना मेरी थी। यह मैं अपनी ही हालत कह रहा हूँ, इसलिए रानडे के उस वाक्य का अर्थ हम नहीं समझे थे, बल्कि वह वचन हमें अच्छा नहीं लगता था। लेकिन जब दूर-जाकर सोचते हैं, अब हम बीसवीं शताब्दि के उत्तरार्द्ध में हैं तो उन्नीसवीं शताब्दि कुछ दूर हो गयी है, तो ध्यान में आता है कि अंग्रेजों के साथ हमारा जो सम्बन्ध आया, उसके कारण भारतीयता में जो दोष थे, उनका भान हुआ और जो सामर्थ्य और शक्ति थी, वह अनेक महापुरुषों के रूप में एकदम उछल कर प्रकट हुई।

उसी एक शतक में इतने सब महान् कैसे आविर्भूत हुए होंगे। आश्चर्य है। ईश्वर की कृपा का निदर्शन इसमें मिलता है। भारत पर उसकी कृपा हमेशा रही है। विषम काल में भी बहुत दूर देखने वाले पुरुष हो गये। उनका उतना लाभ हमें नहीं मिला, याने मैं कहना यह चाहता हूँ कि उनकी महानता से भी ज्यादा लाभ इसका हुआ कि हमने उनके कारण अभिमान का अनुभव किया।

विवेकानन्द ने अमेरिका में एक व्याख्यान दिया, जिसमें वेदांत का निरूपण था। जो उपनिषदों ने कहा है और जो शंकराचार्य ने कहा है, वही उस व्याख्यान में था; लेकिन नई भाषा में रखा था। उस व्याख्यान को तो हमने बहुत बाद में पढ़ा, लेकिन उस व्याख्यान का लाभ हमें यही हुआ कि हमारी इज्जत बढ़ी। मामूली समय में वही व्याख्यान हुआ होता तो उस व्याख्यान की योग्यता उसमें जो विचार थे, उनके अनुसार होती। लेकिन उससे भारत की बहुत इज्जत बढ़ी, यह विशेष बात थी। उसमें जो बोध था, वह हमने बाद में सीखा, लेकिन उस व्याख्यान ने दुनिया को यह दिखा दिया कि भारत में भी मानव रहते हैं, जो विचार कर सकते हैं और दुनिया को कुछ दे सकते हैं। दुनिया को इसका भान हुआ। हम अपमानित थे, यही हमारा सबसे बड़ा दुःख था।

मुझे यह कबूल करना चाहिए कि रवीन्द्रनाथ के लेख और ग्रंथ मैंने बहुत नहीं पढ़े। गीतांजलि और दो-चार इधर-उधर की चीजें पढ़ना इसमें उनका अध्ययन हमने किया है, ऐसा नहीं होता। लेकिन रवीन्द्रनाथ की गीतांजली से हमें उतना लाभ नहीं हुआ, जितना कि उसके कारण भारत गौरवान्वित हुआ, इसका लाभ हुआ। लोकमान्य को जिस लेख के लिए सजा हुई, वह आज हम पढ़ेंगे तो ऐसा महसूस नहीं होता कि वह चिरस्थायी लेख है। एक तात्कालिक घटना पर लिखा हुआ लेख है। लेकिन जब उनको उसके लिए ६ साल की सजा हुई, तब उन्होंने कोर्ट में आखिर में बयान दिया—चार-पाँच ही वाक्य हैं, उसमें यह बताया, "यह तो हाईकोर्ट है, लेकिन एक हायर कोर्ट भी है। दुनिया में इससे भी ऊँची सत्ता है। उस सत्ता की दृष्टि में मैं निर्दोष हूँ।" अंग्रेजों के राज में हम बिल्कुल दबे हुए थे, सब रोते हुए थे, तो उनके उस शब्द ने इतनी चेतना दी कि वह वेद-वचन के समान सबने कंठस्थ किया। "देअर आर हायर पावर्स दैट रूल दी डेस्टीनी ऑफ दी थिंग्स"—बम्बई के हाईकोर्ट में अभी वह वाक्य लिखा गया है।

गांधीजी आये और उनसे हमें क्या नहीं मिला! लेकिन सबसे बड़ी बात यह थी कि दबे हुए थे तो हमने अन्तरात्मा में महसूस किया कि बड़ी-से-बड़ी सत्ता भी उतनी ताकतवर नहीं, जितनी आत्म-सत्ता है और उसका हम प्रतिकार कर सकते हैं।

यहाँ मैंने दो-चार नाम लिये, जिन्होंने भारत की इज्जत बढ़ायी। इसलिए ऐसे पुरुषों के विषय में हम परीक्षण नहीं कर सकते। उनके गुणों का भी ठीक भान नहीं हो सकता, अतिरंजित भान होता है और दोषों का भी ठीक भान नहीं होता, वे अतिअल्प मालूम होते हैं; इसलिए बोलने में हम असमर्थ हैं। लेकिन आज जब हम दूर से देखते हैं, तब पता चलता है कि हम दबे हुए थे, अंग्रेजों के बारे में हमारे मन में द्वेष भरा था और उस वक्त एक पुरुष उठता है और कहता है—हम मानव एक हैं, सब विश्व एक है। स्वदेशाभिमान की बात होती थी तो कहते कि दूसरी भी महत्त्व की चीजें हैं। उसमें भयस्थान, खतरे दिखाये और अपने विचार की इतनी ऊँचाई महसूस करायी कि विश्व के साथ भारत को जोड़े, यह ध्यान में रखें कि विश्व एक है। ये विचार बिल्कुल सामान्य कि

करे वह पुरुष बोल सका, इसीमें उनकी महत्ता है। कवि क्रांतदर्शी होते हैं, दूर देखने वाले होते हैं। अभी मैं सुन रहा था, रवीन्द्र के विचार मालती देवी पढ़ रही थीं। उसमें एक शब्द आया है—महा-मानव—याने वह मानव, जो सारे विश्व को अपने में समा ले। मुझे ऋग्वेद का वचन याद आया, जिसमें "विश्वमानुष" शब्द का उपयोग किया है। इतने पुराने जमाने से सारे विश्व के मानवों को अपने में समाने वाला विचार एक ऋषि बोलता था तो कितनी दूर, अतिदूर वह देखते थे, इसका भान हमें होता है। अथर्ववेद का पृथ्वी सूक्त है। आज हम इतने छोटे बन गये हैं कि अपने प्रांत को ही माता मानते हैं। पृथ्वी सूक्त में भारतमाता का नाम नहीं लिया है, पृथ्वी का नाम लिया है और उसका गीत गाया है। उसमें एक विलक्षण शब्द आया है—

"नाना धर्माणि पृथिवीं विवाचसं।"

अनेक धर्म आज हैं, वैसे उस वक्त तो नहीं थे। लेकिन उस सूक्त में आया है कि 'यह हमारी पृथ्वी, जहाँ अनेक धर्म हैं और अनेक भाषाएँ हैं', याने यह केवल कल्पना से, प्रतिभा से लिखा। आगे जो होने वाला है, उसका अन्दाजा लगा कर ऐसा एक स्तोत्र लिखा कि जो जब काम आयेगा, तब ये छोटे-छोटे 'पेट्रिऑटिज्म्' सब खतम होंगे। आज हम जय जगत् मंत्र बोलते हैं। ऐसा समाज जब होगा, तब हम 'भारत भाग्यविधाता' नहीं गायेंगे, पृथ्वी सूक्त गायेंगे।

यह उस कवि की अतिदूरदृष्टि थी। ऐसी ही व्यापकता और दूरदृष्टि गुरुदेव में प्रकट हुई। ऐसे पुरुष हमारे जमाने और देश में हुए यह हमारा भाग्य है।

(गौमरी, असम, ८ मई '६१)

साप्ताहिक घटना-चक्र -- एक दृष्टिपात

रोहतक का काला कानून

कुछ महीनों पहले जब पंजाब-सरकार ने अपने यहाँ की विधान-सभा में उस *कानून का मसविदा पेश किया था*, जिसके अनुसार वे 'लोककल्याण के कामों के लिए' जनता से मजबूरन काम करा सकें, तब 'भूदान-यज्ञ' ने उसका सख्त विरोध किया था। काम अच्छा-से-अच्छा और *लोककल्याण का ही क्यों न हो*, उसके लिये भी मजबूरन किसी से काम कराना सिद्धान्ततः गलत और अनैतिक है।

अभी पिछले सप्ताह पंजाब के रोहतक कस्बे में वहाँ के जिलाधीश ने उस कानून *के अन्तर्गत हुकुम निकाला कि सोलह वर्ष से लगाकर साठ वर्ष की उम्र तक के सब* सशक्त लोगों को पाँच दिन तक शहर के पास वाले बाँध पर मिट्टी डालने का काम करना है, जिसके टूटने से पिछले साल रोहतक में भारी बाढ़ आयी थी। नजदीक के जिस मुहल्ले के लोगों के लिए यह हुकुम निकाला गया था, उसमें करीब पंद्रह सौ ऐसे व्यक्ति हैं। पर पहले दिन सिर्फ ४१ आदमी काम के लिये आये, और दूसरे दिन ६२। अखबारों में प्रकाशित समाचार के अनुसार जिले के अधिकारी कानून की पाबंदी कराने पर तुले हुए हैं। इस कानून के उल्लंघन पर रुपया सौ तक जुर्माने की व्यवस्था है।

इस कानून को न मानने में रोहतक के लोगों का चाहे आलस्य हो, चाहे बेदरकारी की भावना हो, चाहे—जैसा कि अखबारों में कहा गया—वहाँ के आगामी म्युनिसिपल चुनावों के सिलसिले में राजनैतिक पार्टियों का आपसी संघर्ष काम कर रहा हो, इसमें कोई संदेह नहीं है कि पंजाब सरकार का यह कानून नैतिकता, जनतंत्र या सभ्यता किसी भी कसौटी पर वाजिब नहीं कहा जा सकता। आजादी की लड़ाई में हिस्सा लेने वाले सैकड़ों-हजारों आदमी अभी जिंदा हैं। उन सबको याद होगा कि किस तरह अंग्रेजी राज के जमाने में खास करके रजवाड़ों और रियासतों में 'बेगार' के खिलाफ हम लोग लड़े हैं और मुसीबतें सही हैं। 'लोक-कल्याण' के नाम पर और लोगों के 'प्रतिनिधियों' द्वारा बाकायदा स्वीकृत कानून की दुहाई पर ही सही, इस प्रकार लोगों से बेगार लेना सर्वथा अनुचित और अनैतिक है। क्या पंजाब-सरकार रोहतक के तजरबे से सबक लेगी?

जिन कामों के लिये लोगों की अच्छी भावना को जाग्रत किया जा सकता है, उन कामों के लिए भी लोगों को प्रेरणा देने के बजाय आज देश के नेता कानून, दंड या इनाम इकराम का ही सहारा लेते हैं, यह सोचने लायक बात है। इसके दो ही परिणाम हो सकते हैं—या तानाशाही आयेगी, या समाज विच्छृङ्खल होगा। इस तरह कानून के बल पर लोगों से काम करा लेना आसान नहीं है, यह रोहतक के अनुभव से समझ में आ जाना चाहिये। अगर इस तरह कानून का मनवाना है तो उसके पीछे विशाल दमनचक्र चाहिए। अगर कानून का पालन लोगों से नहीं कराया जा सका तो एक ओर तो कानून की साख खतम होगी और दूसरी ओर त्याग और समर्पण की भावनाओं के बल पर काम करा सकने का रास्ता भी बन्द हो जायगा।

हमें इस बात की गहराई में जाना चाहिए कि उनके अपने हित में होते हुए भी रोहतक के लोगों ने वह काम करने से क्यों इन्कार किया? अखबार में छपी खबर के अनुसार कई लोगों ने कहा बतलाया कि 'यह सरकार का काम है, हम क्यों अपना सर दुखायें!' यह दूसरी बात है कि जब सरकार ठेकेदारों से यह काम करवायेगी तो उसका खर्च लोगों की मेहनत में से ही, अर्थात् उन पर लगाये जाने वाले टैक्स से ही आने वाला है। पर सरकारपरस्ती और परावलम्बन की यह भावना दिनों दिन बढ़ती जा रही है, *इसकी जिम्मेवारी भी उन्हीं लोगों पर है, जो* 'कल्याणकारी' राज्य का सपना देखते हैं और हर काम कानून के बल पर करा लेना चाहते हैं।

* * *

राजा-महाराजाओं के महल

आजादी के तुरंत बाद जितनी कुशलता और फुर्ती के साथ तात्कालिक रियासतों और रजवाड़ों का प्रश्न स्व० सरदार पटेल ने हल किया वह सदा इतिहास की एक दिलचस्प और महत्त्वपूर्ण घटना रहेगी। अभी १४ वर्ष भी पूरे नहीं हुए, हिन्दुस्तान छोटी-बड़ी ५०० से ऊपर रियासतों में बँटा हुआ था। एक छोटे-से गाँव के भी आधे टुकड़े जितने छोटे "राज्य" से लेकर हैदराबाद और काश्मीर जैसे बड़े-बड़े अलग राज्य इस देश में थे। भारत की ऐतिहासिक, सांस्कृतिक और मानसिक एकता की पृष्ठभूमि में यह राजनैतिक टुकड़े कितने अस्वाभाविक थे, वह इसी पर से सिद्ध होता है कि हालाँकि उनको समाप्त हुए तेरह-चौदह वर्ष भी नहीं हुए, लेकिन अधिकांश लोगों को आज उनके उस अस्तित्व की याद भी नहीं है।

इस काम को संपन्न करने में और बातों के साथ-साथ तत्कालीन राजाओं को मुँहमाँगी पेंशन और "निजी-संपत्ति" के नाम पर लाखों-करोड़ों की जायदादें उस समय दे दी गयी थीं। एक ताजा समाचार के अनुसार अभी *राष्ट्रपतिजी ने सुझाव* दिया है कि जो पिछले राजा-महाराजा अपने महल या जायदाद बेचना चाहें उन्हें उचित मुआवजा देकर वे इमारतें आदि उनसे ले ली जायें। ये इमारतें फिर सरकारी दफ्तरों, अस्पतालों, स्कूलों आदि के काम में ली जा सकती हैं।

सच पूछा जाये तो यह बड़े-बड़े महल, *बाग-बगीचे आदि राजाओं की "निजी* संपत्ति" किसी माने में नहीं थे। वस्तुस्थिति को कानून माना जाय तब तो सारी रियासतें, और रियासतों में बसने वाले लोग भी, राजा-महाराजाओं की "निजी संपत्ति" ही थे। "निजी संपत्ति" के रूप में एक या अधिक-से-अधिक दो-चार महल या इमारतें राजाओं के लिए छोड़ देना उचित ही था। लेकिन खास करके कुछ बड़ी रियासतों में जिस तरह बीसों-पचासों महल, बाग-बगीचे, जमीन और तरह-तरह की इमारतें रियासतों से हटते वक्त राजाओं ने अपने नाम लिखा लीं, यह *एक तरह से उस सारे प्रश्न को शांति के साथ समेटने की कीमत ही थी। कोई भी* नहीं समझता था कि ये सब उनकी 'निजी संपत्ति' हैं।

आज इन "राजा-महाराजाओं" को यह महसूस होता जा रहा है कि ये इमारतें और बड़े-बड़े महल उनके लिए घाटे का सौदा साबित हो रहे हैं। उस समय तो वे *समझते थे कि जो कुछ हाथ लगे वह ले* लेना और अधिक-से-अधिक की माँग करना यही बुद्धिमानी का काम है। भविष्य की आशंका उनके दिल में थी। पर अब ये बड़े-बड़े महल उनके लिए भार साबित हो रहे हैं! सामान्य तौर पर उन महलों का कोई खरीदार भी नहीं मिलता और उपयोग भी बीसों इमारतों का एक परिवार कहाँ तक करे? और तो और, उनकी सफाई, सार-सम्हाल, मरम्मत और रखवाली भी अब असंभव होती जा रही है। व्यक्तिगत जानकारी के आधार पर हम कह सकते हैं कि इस प्रकार के बीसों महल, बाग-बगीचे और इमारतें अपने मौज-शौक, शिकार आदि के लिए ऐसी-ऐसी जगहों पर इन राजाओं ने बनाये थे, जहाँ आज आस-पास गीदड़ और लोमड़ियों के सिवा कोई बस्ती भी नहीं है।

रियासत का खजाना किसी भी माने में राजा की 'निजी संपत्ति' नहीं होता, चाहे अंकुश न होने के कारण कोई राजा उसका स्वच्छंद उपयोग भले ही करे। राज्य के खजाने से बनी हुई इन जायदादों को "निजी संपत्ति" के तौर पर जब राजा-महाराजाओं के पास छोड़ दिया गया, वह परिस्थिति की मजबूरी थी। अब इन महलों और इमारतों को राजाओं से खरीदना राष्ट्रीय संपत्ति का अपव्यय ही होगा। अगर खरीदने का तय किया गया तो आज जिस प्रकार भ्रष्टाचार व्यापक रूप से फैला हुआ है, उसे *ध्यान में रखते हुए कीमत भी कई* मौकों पर मामूली से ज्यादा देनी पड़ेगी, इसमें संदेह नहीं। व्यक्तिगत मुनाफाखोरी और संग्रह आज समाज का इतना प्रतिष्ठित मूल्य बन गया है कि राजा लोगों की इस "निजी संपत्ति" को खरीदने की बात तुरन्त उठती है, लेकिन कोई उन्हें इस बात के लिए प्रेरणा देने की हिम्मत नहीं करता *कि राजे-महाराजे इन पुरानी इमारतों को* जनोपयोगी कामों के लिए राष्ट्र को समर्पण कर दें, जो चीजें उन्होंने अपनी "कमाई" से नहीं बनायी, आज जो उनके उपयोग में नहीं आ रही हैं और जिनको साफ सुथरा और सुरक्षित रखना भी उनके लिए संभव नहीं है—ऐसी चीजों को जनहित के लिए समर्पित करने से राजा महाराजाओं के लिए एक पंथ दो काज होंगे—पुरानी गलती का प्रायश्चित्त होगा और आगे के लिए राष्ट्र की कृतज्ञता उनको हासिल होगी।

* * *

अमेरिका में फिर सत्याग्रह

छः बरस पहले अमेरिका के दक्षिणी राज्य अलबामा की राजधानी मंटगुमरी में वहाँ के प्रसिद्ध बस-बहिष्कार सत्याग्रह ने सारी दुनिया का ध्यान आकर्षित किया था। अमेरिका के दक्षिणी राज्यों में 'नीग्रो' लोगों के प्रति रंग-भेद का बड़ा प्राधान्य है। अमेरिका एक जनतंत्रीय राष्ट्र है और जब से महामना एब्राहम लिंकन ने गुलामी की प्रथा को खतम करके नीग्रो लोगों को आजाद किया और उन्हें अमेरिकन नागरिक के नाते बराबरी का अधिकार दिया, तब से अमेरिका का उदार जनमत और बहुत हद तक वहाँ की केंद्रीय सरकार, रंगभेद के खिलाफ रही है, पर दक्षिणी राज्यों में अभी भी नीग्रो लोगों के प्रति भेद का बर्ताव वहाँ के सारे नागरिक जीवन में ज्यों का त्यों कायम है। काले और गोरों की बस्तियाँ अलग अलग हैं, गोरे लोगों की *बस्तियों में काले लोग रह नहीं सकते।* सिनेमा, होटल, रेस्टोरां, सार्वजनिक बाग-बगीचे आदि जगहों में गोरों और कालों के लिए अलग-अलग स्थान हैं, रेलों और *बसों में भी वे साथ नहीं बैठ सकते। बसों* में रंग भेद के खिलाफ सन् १९५५ में करीब-करीब एक वर्ष तक मंटगुमरी के नीग्रो लोगों ने अपने नेता पादरी मार्टिन ल्यूथर किंग के जो—अजमेर सर्वोदय-सम्मेलन के दिनों में हिन्दुस्तान आये थे—नेतृत्व में बसों का बहिष्कार किया। साल भर तक सैकड़ों-हजारों नीग्रो पुरुष और बच्चे मीलों अपने काम पर पैदल आते और जाते थे। एक भी नीग्रो ने बस का इस्तेमाल नहीं किया। आखिरकार सत्य की विजय हुई और बसों में रंगभेद गैर-कानूनी करार दिया गया, हालाँकि वास्तविक परिस्थिति कानून के बाद भी पूरी नहीं बदली।

पिछले सप्ताह उसी प्रसिद्ध मन्टगुमरी शहर में रंगभेद के प्रश्न को लेकर फिर गोरे लोगों की ओर से बड़े पैमाने पर हिंसक कार्रवाई हुई। १९५५ में एक वर्ष तक जो सत्याग्रह चला, उसमें नीग्रो

[शेष पृष्ठ १२ पर]

भारतीय विकास की समस्याओं पर कुछ विचार

—ई० एफ० शूमाखर

[सर्व सेवा संघ के तत्वावधान में गांधी विद्या स्थान की स्थापना काशी में हुई है। गांधीजी के दृष्टिकोण के अनुसार इस संस्था में अर्थशास्त्र, राजनीति, दर्शन-शास्त्र एवं समाजशास्त्र पर शोध-कार्य करने का विचार है। परन्तु विद्या-स्थान केवल शोध-कार्य ही नहीं करेगा; बल्कि विभिन्न क्षेत्रों में जो प्रयोग एवं विकास-कार्य चल रहे हैं, उनके साथ उसका जागरूक सम्बन्ध भी रहेगा।

अभी हाल में विद्या-स्थान के शोध-कार्यक्रम पर पूना में एक परिसंवाद हुआ था। इस सिलसिले में श्री शूमाखर से अनुरोध किया गया था कि वह अपने विचार से हमें लाभान्वित करें। यहां दिया हुआ लेख उनके विचारों को स्पष्ट करता है। कहने की आवश्यकता नहीं है कि उनका दृष्टिकोण सर्वोदय के दृष्टिकोण से बहुत मिलता-जुलता है। प्रस्तुत लेख में एशियाई देशों की और खास तौर से भारत की विकास-सम्बन्धी समस्याओं को हल करने की एक नई दिशा दीख पड़ती है।

श्री शूमाखर स्वयं एक अच्छे अर्थशास्त्री हैं और आर्थिक विकास को वह पिटी-पिटाई परिपाटी के संदर्भ में नहीं देखते हैं। आजकल वह इंग्लैण्ड के राष्ट्रीय कोयला बोर्ड के अर्थ-सलाहकार हैं। कुछ समय तक बर्मा सरकार के भी अर्थ-सलाहकार रह चुके हैं। बर्मा के अपने जीवन-काल में उन्होंने "एक बौद्ध राष्ट्र में अर्थशास्त्र" शीर्षक लेख लिखा था। इस लेख को बाद में श्री जयप्रकाश नारायण ने अपनी पुस्तिका "भारतीय राजनीति की नवरचना" के अन्त में परिशिष्ट रूप में दिया है।

गांधी विद्या-स्थान के अध्यक्ष श्री शंकरराव देव ने श्री शूमाखर के विचार प्रसारित करते हुए विभिन्न रचनात्मक एवं शैक्षणिक संस्थाओं से निवेदन किया है कि वे शोधकार्य में रुचि रखने वाले योग्य कार्यकर्ताओं का सहयोग प्रदान करें, जिससे विद्या-स्थान का काम भी आगे बढ़ेगा और उनके नतीजों से संस्थाएँ भी लाभान्वित होंगी। —सं०]

सही आंकड़ों के प्रमाण के फेर में न पड़ कर, हम यह कल्पना करें कि भारत दो भागों में बँटा हुआ है। "औद्योगिक रूप से अत्यन्त विकसित कुछ क्षेत्र" (मेट्रोपोलिटन एरिया), जिनमें समूची आबादी के पन्द्रह प्रतिशत लोग रहते हैं और वह बड़ी "ग्रामीण अर्थ-व्यवस्था" या "अविकसित अर्थ-व्यवस्था", जिसमें ५ लाख से अधिक गांव, हजारों विभिन्न आकार के नगर तथा आबादी के पच्चीस प्रतिशत लोग सम्मिलित हैं। मेरा सुझाव है कि इन दोनों भागों के एक-दूसरे पर पड़ने वाले प्रभाव एवं प्रतिक्रियाओं का गम्भीर अध्ययन होना चाहिए।

ऐसा अहसास होता है कि एक भाग दूसरे पर घातक असर डाल रहा है। औद्योगिक रूप से अत्यन्त विकसित क्षेत्रों के उन्नत उद्योग "ग्रामीण अर्थ-व्यवस्था" के गैर-कृषि उत्पादनों को खतम कर रहे हैं। फलतः जमीन को छोड़ कर "औद्योगिक क्षेत्रों" में भागने के कारण असाध्य समस्याएँ उत्पन्न हो रही हैं, जिनका हल किसी भी प्रकार के औद्योगीकरण द्वारा नहीं हो पा रहा है।

इसलिए राष्ट्रीय आर्थिक नियोजन का मुख्य लक्ष्य यह होना चाहिए कि उसके द्वारा हो रही इस तरह की पारस्परिक विनाश की प्रक्रिया रोकी जाय। इसका मतलब यह है कि ग्रामीण अर्थ-व्यवस्था में गैर-कृषि उत्पादनों पर, जो उद्योग-प्रधान क्षेत्रों की अनिवार्य होड़ के कारण खतम हो रहे हैं, रोक लगायी जाय और ग्रामीण अर्थ-व्यवस्था में उनका विकास किया जाय

केवल कृषि के विकास का उद्देश्य पर्याप्त नहीं है। मेरी ऐसी मान्यता है कि ग्रामीण अर्थ-व्यवस्था की बढ़ती हुई गरीबी, जिसमें आबादी का पचासी प्रतिशत निवास करता है, मुख्यतः गैर-कृषि उत्पादनों के क्रमिक विनाश के कारण हैं तथा इसके कारण ही लोगों का सांस्कृतिक पतन हुआ है, जिसके फलस्वरूप कृषि का ही ह्रास हुआ है। एकमात्र कृषि मानव जीवन का अधिष्ठान नहीं हो सकती। मानव जीवन उसी समय पल्लवित होगा जब उसका सम्पर्क अनेक प्रकार के औद्योगिक कौशलों से हो तथा वह समीपवर्ती समृद्ध नगरों से आये हुए सांस्कृतिक प्रभावों से अनुप्राणित होता रहे।

आधुनिक उद्योग औद्योगिक रूप से विकसित क्षेत्रों में केन्द्रित होते जा रहे हैं। एक की सफलता से दूसरे को प्रेरणा मिलती है। जहाँ पर पहले से ही अधिक-से अधिक उद्योग हैं, वहाँ पर नये उद्योगों को खोलना आसान जान पड़ता है। यह प्रवृत्ति सारे संसार में दिखाई पड़ती है। इंग्लैण्ड में उन सारे उद्योगों को छोड़ कर जो स्थान विशेष से सम्बद्ध हैं, या जिनके स्थान विशेष पर ही रहने में सुविधा है, सभी उद्योग लन्दन में स्थापित हैं। इसका परिणाम यह हुआ है कि औद्योगिक बस्तियों का बड़ा भारी जमघट लन्दन के आसपास फैल गया है, जिससे उसका विस्तार सौ मील के घेरे में हो गया है। अमरीका में तीन बृहत् केन्द्र बढ़ते हुए दिखाई पड़ते हैं, जिनको एक नया नाम "मेगलोपोलिस" दिया गया है। एक पूर्वी समुद्री तट पर जो वाशिंगटन से बोस्टन तक फैला हुआ है, दूसरा शिकागो के आसपास और तीसरा लॉसएंजेल्स में केन्द्रित है। मेक्सिको में आयोजकों (प्लानर्स) को अब बोध हुआ है कि अधिकांश "विकास" अपने आप मेक्सिको नगर के भीतर या उसके चारों ओर हो रहे हैं; जब कि गैर-कृषि उत्पादन मरते जा रहे हैं। इस तरह के विकास धनी मुल्कों पर बोझस्वरूप हैं! परन्तु गरीब देशों के असंख्य लोगों के लिए तो वे निहायत तकलीफदेह हैं।

यह बात स्पष्ट रूप से समझ लेनी चाहिये कि किन्हीं विशेष परिस्थितियों में ही किसी बड़े समाज के लोग कृषि पर निर्भर रह कर अच्छी तरह जीवनयापन कर सकते हैं।

[१] जब कि कृषि की पैदावार प्रति व्यक्ति बहुत अधिक हो, जो प्रायः सम्भव है, जब तक कि आदमी और जमीन का अनुपात बहुत ऊँचा न हो।

[२] दूसरे कृषि की उपज की खपत के लिए नगरों में बहुत बड़ा बाजार हो, जिससे किसान अपने अतिरिक्त अन्न के बदले नगरोत्पन्न वस्तुएँ और सेवाएँ अपनी अन्य आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु खरीद सकें। इसका तात्पर्य यह है कि गाँव की जनसंख्या नगरों के मुकाबले में कम हो। जैसा कि इंग्लैण्ड, अमरीका या जर्मनी में है; अन्यथा अन्न का ज्यादा निर्यात-व्यापार हो। और चूंकि उपर्युक्त परिस्थितियाँ विरले ही उपलब्ध होती हैं, इसलिए

यह एक सामान्य नियम है कि ग्रामीण समुदाय उसी समय समृद्ध हो सकते हैं, जब कि वे गैर-कृषि उत्पादन करें, ताकि बचे हुए अन्न को शहरों में बदलने के बजाय, उनकी उपभोग्य सामग्रियों की जरूरतें वहीं पूरी हो सकें।

अगर उपर्युक्त सुझावों को भारत पर लागू किया जाय तो यह स्पष्ट हो जाता है कि जब तक औद्योगिक रूप से विकसित क्षेत्रों के बाहर, गैर-कृषि उत्पादनों को सारे ग्रामीण अर्थ-व्यवस्था में बढ़ावा नहीं दिया जाता, तब तक आबादी के ८५ प्रतिशत लोगों के लिए एक साधारण जीवन-स्तर की भी उम्मीद नहीं की जा सकती। इसका कारण यह है कि [१] भारतीय कृषि की उपज प्रति व्यक्ति ज्यादा नहीं है और न अधिक होने की सम्भावना ही है; क्योंकि जमीन और व्यक्ति का अनुपात अनुकूल नहीं है। [२] गाँवों और शहरों की आबादी में, ऐसा समानुपात है कि यदि किसान अधिक-से अधिक अतिरिक्त अन्न शहरों की वस्तुओं तथा सेवाओं से बदलने के लिए बचा सके तो भी नगरों के बाजार इतने बड़े नहीं होंगे कि सभी किसानों को उसमें खपत मिल सकेगी।

यद्यपि औद्योगिक रूप से विकसित क्षेत्रों में तेजी से औद्योगिक विकास के कारण यह प्रतीत होता है कि "राष्ट्रीय आय" में वृद्धि हो रही है तथापि वह भारत के ८५ प्रतिशत लोगों के लिए बड़ी खतरनाक चीज है, क्योंकि इस तरह के विकास के कारण ग्रामीण अर्थव्यवस्था के

किया है। यह बुनियादी शर्तें तो शांति-सैनिकों के लिए भी लाजमी है कि वह जाति-धर्म, सम्प्रदाय, पक्ष इत्यादि किसी भी प्रकार के संकुचित भेदभाव से ऊपर हों। देश में सर्वत्र शांति रहे, कहीं हिंसा, जोर जबरदस्ती या आपसी संघर्ष न हो, यह ध्यान रखना और इसके लिये कोशिश करना हर नागरिक का कर्तव्य है और इसलिए हर व्यक्ति को, अपने-अपने सीमित दायरे में ही सही, शांति बनाये रखने का जिम्मा उठाना चाहिए। मुसलमान लोग अधिकांश स्थानों में अल्पसंख्या में हैं। वे अपनी निज की सुरक्षा जैसे संकुचित विचार से देखें, तब भी शांतिसेना के काम में पूरे दिल और पूरी तत्परता के साथ हिस्सा लेना उनके लिए आवश्यक है। *यह खेद की बात है कि* जिस प्रकार देश के सामान्य जीवन से मुसलमान आज एक तरह से अलग से हैं, उसी तरह शांति-सेना आदि आन्दोलनों के साथ भी उनका संबंध नगण्य है।

हम आशा करते हैं कि दिल्ली में होने वाला मुस्लिम-सम्मेलन ऊपर बतायी गयी चंद बुनियादी बातों पर गहराई से विचार करेगा और सम्मेलन में भाग लेने वाले नेता दूरदर्शिता से काम लेकर इन बुनियादी बातों की ओर मुस्लिम जनता का ध्यान आकर्षित करेंगे।

ौर कृषि उत्पादन प्रायः अनिवार्य रूप से समाप्त हो जाते हैं। यह खतरा और भी बढ़ गया है, क्योंकि औद्योगिक रूप से विकसित क्षेत्र सारे भारत से आधुनिक यातायात के साधनों द्वारा जुड़े हुए हैं जिसके फलस्वरूप दूरस्थ ग्रामीण समुदायों तथा लघु नगरों को जो "स्वाभाविक संरक्षण" प्राप्त था, वह आज बहुत कम हो गया है।

जिन समस्याओं की यहाँ पर चर्चा की गयी है, उन पर तृतीय पंचवर्षीय योजना में ध्यान नहीं दिया गया है। "सन्तुलित प्रादेशिक विकास" के लिए जबानी सहानुभूति दिखाई गयी है और "अलग-अलग आकार की ३०० नई औद्योगिक बस्तियों को जहाँ तक सम्भव हो सके छोटे और मझले नगरों में बसाने का प्रस्ताव किया गया है।" परन्तु योजना की सामान्य प्रवृत्ति केवल औद्योगिक रूप से अधिक विकसित क्षेत्रों को और बढ़ावा देना है। फलतः ग्रामीण अर्थ-व्यवस्था का और अधिक ह्रास होगा। सम्पूर्ण योजना की कल्पना उद्योगों को ध्यान में रख कर की गई है और स्थानीयकरण को न्यूनाधिक रूप में (तथाकथित) "प्राकृतिक शक्तियों" के विचार पर छोड़ दिया गया है।

भारत को जिस चीज की जरूरत है वह एक ऐसी योजना की, जिसकी कल्पना, उद्योगों के चुनाव को लगभग स्थानीय उपक्रम और आवश्यकताओं पर छोड़ते हुए, मुख्य रूप से स्थानीयकरण को मद्देनजर रख कर की गयी हो।

इसके पहले कि हम इस तरह की योजना के स्थूल रूप पर विचार करें, हमको योजना की इकाई का विस्तार निर्धारित करना पड़ेगा। "भारत" को जिस चीज की जरूरत है, उसको ध्यान में रखते हुए, तृतीय पंचवर्षीय योजना सारे भारत को इकाई के रूप में मान लेती है (यह उसी तरह का कहना हुआ कि योजना में स्थानीयकरण को अपने आप छोड़ दिया गया है)। दूसरा विकल्प यह है कि "गाँव" को योजना की इकाई मानी जाय और भारत की कल्पना गाँवों के एक वृहत् संघ के रूप में की जाय। (ऐसा लगता है कि वे लोग जो ग्राम-विकास पर जोर देते हैं, वस्तुतः अलग-अलग ग्राम को लेकर नहीं सोचते बल्कि "विकास-खण्ड" को इकाई मान कर चलते हैं, जिसकी आबादी पचास हजार के लगभग है।) मेरे मत से इसमें एक भी धारणा तथ्य पर आधारित नहीं है। सम्पूर्ण "भारत" बहुत बड़ा है और "गाँव" (चाहे उनकी सीमा निर्धारित ही क्यों न हो) बहुत छोटे हैं। मेरा विचार है कि आकार की कसौटी सांस्कृतिक होनी चाहिए न कि आर्थिक, क्योंकि आर्थिक विकास का अन्तिम लक्ष्य सांस्कृतिक ही है, (व्यापक अर्थ में) न कि सिर्फ आर्थिक। विकास के उद्देश्य की दृष्टि से मेरा सुझाव है कि जिस क्षेत्र को इकाई माना जाय वह काफी बड़ा होना चाहिये, ताकि वह एक उच्च शिक्षण केन्द्र चला सके। मानव जीवन के विकास की दृष्टि से देखा जाय तो गाँव बहुत छोटा पड़ेगा। जरूरत यह है कि वह (गाँव) कस्बे के आकार से जुड़ा हो और उससे अनुप्राणित होता रहे। परन्तु कस्बे का आकार भी पर्याप्त नहीं होगा और इसलिए उसे जिला केन्द्र से संयुक्त एवं अनुप्राणित होते रहने की आवश्यकता है। गाँव एक प्राथमिक पाठशाला चला सकता है, कस्बे में एक माध्यमिक (या व्यापक) पाठशाला चल सकती है परन्तु जिला केन्द्र में उच्चतर शिक्षण की व्यवस्था की जा सकती है, जिसके बगैर नीचे के स्तरों पर बहुत काल तक एक सप्राण बौद्धिक जीवन टिक नहीं सकता।

कहना न होगा कि कृषकों की गरीबी और ग्रामीण दैन्य की समस्या मूलतः सांस्कृतिक समस्या है। वे लोग जो केवल कृषि के औजारों खादों आदि की बात करते हैं वे बहुत महत्त्वपूर्ण बात को भूल जाते हैं कि अगर भारतीय कृषि अपने सबसे अच्छे तरीकों के सहारे बहुत अच्छी होती—पश्चिम से आये हुए तकनीकों पर ध्यान ही मत दीजिये—तो आज की अपेक्षा अधिक उत्पादक होती। परन्तु ऐसा क्यों नहीं है? यह समस्या सांस्कृतिक ह्रास और बौद्धिक भूल के कारण है। पूंजी की कमी केवल इसी समस्या की देन है।

उपर्युक्त विचारों के सन्दर्भ में मेरा ऐसा सुझाव है कि नियोजन की उचित इकाई एक "जिला" हो सकती है, जिसकी आबादी दस या बीस लाख के लगभग हो और जिसमें करीब हजार गाँव हों, बहुत से कस्बे हों तथा एक जिला केन्द्र या राजधानी हो। इसका मतलब यह कि आदर्श रूप में भारत २०० से लेकर ३०० जिलों का कुल मिलाकर एक महासंघ होगा। आर्थिक विकास का आधार प्रत्येक जिला होगा, जिसका तात्कालिक उद्देश्य जहाँ तक हो सके वहाँ तक मुख्य उपभोग्य सामग्रियों में स्वावलम्बन होगा: जैसे खाद्यान्न, वस्त्र, मकान, औजार और शिक्षा (लगभग प्राविधिक विद्यालयों तक)। तात्पर्य यह कि हर जिले के अधिकारी उस जिले की विकास-योजना को बनायेंगे तथा उसको कार्यान्वित करेंगे। उनकी योजना के आधार होंगे, स्थानीय साधन और स्थानीय तरीके तथा स्थानीय आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु वे योजना बनायेंगे।

तब केन्द्रीय और राज्य सरकारों का क्या काम होगा? मेरा विचार है कि उनका काम कुछ प्रारम्भिक प्रोत्साहन और तकनीकी सहायता देना होगा। केन्द्रीय सरकार को केन्द्रीय कोष से अधिकतम सहायता "कम से कम शर्तों पर" देनी होगी। यदि केन्द्र ऋण देता है तो उसका ब्याज और उसकी किश्तें पुनः केन्द्र को नहीं जानी चाहिए, बल्कि जिला केन्द्र में "प्रतिरूप पूंजी" के रूप में इकट्ठी होनी चाहिए और भविष्य के प्रयोग के लिए आसानी धन के रूप में लोगों को उपलब्ध होनी चाहिए।

फलतः जिले के विकास को बढ़ावा देने के लिए केन्द्रीय सरकार को औद्योगिक रूप से अधिक से अधिक विकसित क्षेत्रों में नये उद्योगों को बढ़ने से रोकना चाहिए। इसको करने का आसान तरीका यह है कि उक्त क्षेत्रों में उत्पादन कर बढ़ा दिये जायँ और वहाँ से जिलों को जाने वाले माल पर ज्यादा यातायात कर लगा दिये जायँ जिससे जिला केन्द्रों में तैयार माल से इनकी प्रतियोगिता न हो सके। इन करों से प्राप्त आय का उपयोग प्रमुख रूप से जिलों के विकास के लिए किया जाय।

अगर नियोजन जिले का आधार मान कर किया जाता है और उसका मुख्य लक्ष्य स्थानीय साधनों और तरीकों से जिले की मौलिक आवश्यकताओं की पूर्ति करना है तो विशाल कारखानों को जिनमें पश्चिमी ढंग की मशीनों का इस्तेमाल किया जाता है स्थापित करने की आवश्यकता नहीं रह जायेगी। इसलिए भारत का आयात घटा कर निर्यात के अन्तर्गत ही उसे लिया जा सकता है। साधारणतया जिला-स्तर पर होने वाले विकास-कार्यों के कारण भारत को विदेशी मुद्रा की कमी का सामना नहीं करना पड़ेगा, जैसा कि आज भारत को इकाई मान कर करना पड़ रहा है। इन जिला-योजनाओं को कार्यान्वित करने के लिए भारत को बाहर से ऋण लेने की भी आवश्यकता नहीं पड़ेगी (फिर भी पहले से ही जो योजनाएँ [प्रोजेक्ट] चल रही हैं, उनको पूरा करने के लिए बाहरी मदद की आवश्यकता पड़ेगी)।

मेरी ऐसी अपनी व्यक्तिगत मान्यता है कि जो देश अपनी विकास-योजनाओं के लिए बाहरी मदद पर निर्भर करता है, वह अपनी जनता के आत्म-सम्मान और आत्म-विश्वास को इतनी महान् क्षति पहुँचाता है कि संकीर्ण आर्थिक दृष्टि से भी देखने पर होने वाली हानि, लाभ की अपेक्षा महत्तर होती है।

इसलिए मुझे यह आवश्यक जान पड़ता है कि विकास योजनाओं में बिना किसी तरह की मदद के अपने आप आगे बढ़ने की क्षमता होनी चाहिए। (केवल व्यापार द्वारा मदद को छोड़ कर)। और यदि कोई मदद मिलती है तो उसका उपयोग आरम्भ की गई योजना की पूर्ति में होना चाहिए।

ऊपर जो कुछ भी कहा गया है, वह एक बुनियादी धारणा की रूप-रेखा मात्र है। यह कोई योजना नहीं है। इसको योजना का रूप देने के लिए ब्योरे में जाना होगा।

श्रमप्रधान जीवन और ग्राम-सेवा की इच्छा रखनेवाले कार्यकर्ताओं से

मैं सन् १९५२ में ग्रामसेवा की दृष्टि से "निटाया" गाँव में आया था। यह स्थान इटारसी जंक्शन [मध्य प्रदेश] के पास इटारसी-होशंगाबाद पक्की सड़क के करीब दो मील दूर है। निटाया में सर्वोदय-केंद्र आरम्भ करने के लिए ग्रामवासियों ने १-२५ एकड़ जमीन दी थी। इस जमीन की खेती की आमद से फिर और जमीन भी खरीदी गयी और इस प्रकार कुल मिला कर केंद्र के पास इस समय ५.१० एकड़ जमीन है। केन्द्र पर सिंचाई के लिए एक कुआँ, ३ हा० पा० का बिजली का सिंचाई-यंत्र, १५० फीट लम्बे दो इंची पाइप और तीन छोटे मकान हैं—एक बालवाड़ी के लिए, एक कार्यालय के लिए और एक निवास के लिए। खेती के आवश्यक औजार भी केन्द्र पर हैं।

केन्द्र को लगभग चार सौ रुपया प्रतिवर्ष गांधी स्मारक निधि से प्रयोग, वाचनालय और कृषि-सुधार के लिए मिलता है। केन्द्र की निजी रोकड़ में भी इस समय करीब सात सौ रुपया है।

मुझे यहाँ काम करते हुए दस वर्ष होने आये। मेरा मत है कि एक व्यक्ति के एक स्थान पर अधिक समय रहने से काम और व्यक्ति दोनों का विकास रुक जाता है, अतः मैंने इस वर्ष यहाँ से जाने का निर्णय किया है। कोई नौजवान भाई जो श्रमप्रधान जीवन के साथ-साथ ग्राम-सेवा के कार्य में रुचि रखते हों, वे यहाँ आकर केन्द्र सम्हाल सकते हैं। कार्यकर्ता सपत्नीक हों तो और भी अच्छा है। कस्तूरबा निधि की ओर से एक ग्राम-सहायिका हैं, जिनकी मदद से कार्यकर्ता की पत्नी बालवाड़ी का काम चला सकती हैं। कस्तूरबा ट्रस्ट से इस काम के लिए कार्यकर्ता-पत्नी को पारिश्रमिक भी मिल सकता है। इस प्रकार खेती और बालवाड़ी के माध्यम से ग्राम-सेवा-कार्य यहाँ किया जा सकता है।

केंद्र के पास, जो जमीन है, उसमें से ३.५० एकड़ करीब एक स्थानीय हरिजन को भूदान में देने का तय किया है। ग्रामसेवा के काम के साथ-साथ खेती करनेवाले कार्यकर्ता के लिए १.६० एकड़ रकबा काफी होगा। इतने से लगभग २५ मन अनाज, आवश्यक साग-सब्जी आदि मिल सकते हैं।

पो०—रैसलपुर, —**बनवारीलाल चौधरी**
जिला—होशंगाबाद [म० प्र०]

नया मोड़ : लक्ष्य, दिशा और योजना : ३

धीरेन्द्र मजूमदार

सन् १९४४ में गांधीजी जब चरखा-संघ का नव-संस्करण करना चाहते थे, तो उन्होंने स्वावलंबन की दिशा को अपनाने का संकेत किया था। उन्होंने कहा था कि चरखा-संघ के कार्यकर्ता देहातों में जाकर बैठें, ग्रामीण जन से एकरस हों। गाँव के अन्दर ही अपने पुरुषार्थ तथा जनता के प्रेम के सहारे अपना गुजारा करें और समग्र ग्राम-सेवा द्वारा ग्राम-शक्ति की इकाई कायम करें। संधिकाल में चरखा-संघ उनके गुजारे के लिए कुछ दिन तक भले ही आर्थिक सहायता करे। जो लोग उन दिनों की चर्चाओं में शामिल थे, उन्हें मालूम है कि कल्पना यही थी कि क्रमशः यह इकाई विकसित होकर खादी-ग्रामोद्योग, नई तालीम आदि कार्यक्रमों को अपने ऊपर उठा लें और चरखा-संघ जैसी संस्थाएं शून्य हो जायें। उनके संयोजन में भी विकेन्द्रीकरण की कल्पना भी थी, लेकिन जब वह जिला इकाई तक की थी। इतना जरूरी भी है, क्योंकि ग्राम-स्तर की इकाइयों का उद्बोधन तथा संगठन जिला-स्तर के कार्यकर्ता ही कर सकते हैं। प्रान्तीय तथा अखिल भारतीय केन्द्र से वह काम नहीं हो सकता, क्योंकि उनका सम्पर्क देहातों से नहीं रहता है।

गांधीजी के निधन के बाद १९४८ में अखिल भारत चरखा-संघ ने जब विनोबाजी की प्रेरणा से नव-संस्करण के अमल का संकल्प किया तो उन्होंने भी करीब-करीब इसी दिशा की बात सोची। दो साल तक वे प्रान्तों के विकेन्द्रीकरण के प्रक्रिया में लगे रहे। फिर १९५० से प्रान्त में जिले-स्तर तक विकेन्द्रीकरण कर जब ग्राम इकाई बनाने पर ध्यान दिया गया तो दोनों रास्तों को अपनाने का निश्चय किया। गांधीजी के चले जाने के बाद रचनात्मक जगत् में जो निराशा छायी हुई थी, उसको देखते हुए दिशा में यह फर्क करना व्यावहारिक लगा, क्योंकि गांधीजी के व्यक्तित्व के प्रभाव से ही नवजवान स्वावलम्बन का संकल्प लेकर गाँव में जाकर बैठ सकते थे, लेकिन उनके चले जाने पर परिस्थिति ऐसी नहीं थी। अतएव चरखा-संघ ने ग्रामोदय-पद्धति से विकेन्द्रीकरण की दिशा तथा कताई-मण्डल पद्धति से स्वावलम्बन की दिशा, दोनों को अपनाने का निश्चय किया और उस समय की परिस्थिति के अनुसार काम आगे बढ़ा। आज जब फिर से नये मोड़ की बात सोची जा रही है, तो आज की परिस्थिति में जो फर्क आ गया है, उसको ध्यान में रख कर ही नया संयोजन करने की जरूरत है। सन् १९५० में विकेन्द्रीकरण पद्धति से सही ढंग पर ग्राम-इकाई अपनाने की परिस्थिति आज से अधिक अनुकूल थी और स्वावलम्बन-पद्धति से ग्राम-इकाइयों को खड़ा करने के काम के लिए सन् १९५० से आज की परिस्थिति अधिक अनुकूल है। सन् १९५० में कल्याणकारी राज्यवाद की आँच तथा विकेन्द्रित सत्तावाद की होड़ का लोक-मानस में उतना प्रवेश नहीं हो पाया था। उस समय आजादी के लिए पुरानी सेवा की परम्परा देहातों में कुछ बाकी थी। विकेन्द्रीकरण के काम को विचार से अपनाने के लिए लोग देहातों में मिलते थे। अतः सही नेतृत्व का उस समय इतना अभाव नहीं था, जितना आज है। आज देहात में जो कुछ भी कर्मठ लोग बचे हुए हैं, वे पचायती राज्य के होड़ के कारण तथा विकास-योजना की इमदाद के कारण पुरानी भावनाओं को खो चुके हैं। गाँव में स्वार्थ, ईर्ष्या और होड़बाजी भरपूर हो गयी है।

इस समय जैसे ही हम विकेन्द्रीकरण की बात कह कर अपने काम को सौंपने जाते हैं, इसी प्रकार के लोग सामने आते हैं, क्योंकि इस सौंपने की प्रक्रिया में त्याग की प्रेरणा से आर्थिक शक्ति *की प्राप्ति की* प्रेरणा अधिक मिलती है। १९५० के मुकाबले में विकेन्द्रीकरण के लिये यह परिस्थिति प्रतिकूल है। दूसरी तरफ विनोबाजी द्वारा प्रवर्तित भूदान-आंदोलन के फलस्वरूप आज गाँव में स्वतंत्र त्याग की नई प्रेरणा उद्बोधित हुई है। *ग्रामदान के फलस्वरूप* ग्राम-स्वराज्य का नया विचार तथा नया संकल्प विकसित हुआ है। स्वावलम्बन पद्धति के विकास के लिए १९५० के मुकाबले में यह परिस्थिति अधिक अनुकूल है। अतएव अगर हम फिर से बापू के नव-संस्करण का संकल्प करते हैं, तो आज की परिस्थिति में तात्विक और व्यावहारिक, दोनों दृष्टियों से सही कदम यही होगा कि हम विकेन्द्रीकरण की दिशा को छोड़ कर स्वावलम्बन की दिशा को अपनायें।

अब प्रश्न यह है कि अपने लक्ष्य की पूर्ति में स्वावलम्बन की दिशा का संयोजन किस तरह हो, जिससे निरपेक्ष स्वतंत्र इकाइयों का विकास हो सकें।

पहली बात यह है कि हमारे प्रचार की दिशा विकेन्द्रीकरण न होकर स्वावलम्बन की होनी चाहिये। हम यह न कहें कि संस्थाओं को विकेन्द्रित करके ग्राम-इकाइयों के हाथ में सौंपना है। हमें यह कहना चाहिये कि ग्राम इकाइयों को विकसित करके उनके सहारे ग्राम-स्वराज्य की सारी प्रवृत्तियों का संगठन तथा विकास करना है। इसके संयोजन के लिए शुरुआत बहुत अच्छी तरह हुई है। देश भर में ग्राम-स्वराज्य की घोषणा का अभियान सही दिशा में एक महत्त्वपूर्ण कदम हुआ है। इससे जो जागृति पैदा हुई है, उसी छोर से हमें *आगे बढ़ना चाहिये। अब देश के* जो रचनात्मक केन्द्र हैं, उनको ग्राम-स्वराज्य की घोषणा के अमल के लिए व्यापक रूप से *ग्राम-स्वराज्य-समितियों का संगठन* करना चाहिये। ऐसे संगठन के लिये लक्ष्यांक निर्धारित नहीं करना चाहिये। हम इतनी इकाइयों का संगठन करेंगे, ऐसा लक्ष्य-निर्धारण स्वावलम्बन-पद्धति का स्वधर्म नहीं है। यह प्रक्रिया विकेन्द्रीकरण की है। विकेन्द्रीकरण की योजना में लक्ष्यांक निर्धारित करना आवश्यक हो जाता है, क्योंकि उसका अभिक्रम व कर्तृत्व केन्द्र की तरफ से होता है। स्वावलम्बन पद्धति में इकाइयों की संख्या का निर्धारण नहीं हो सकता, क्योंकि उसमें इकाइयाँ निर्धारित नहीं हो सकती हैं। उसे खोज निकालने की जरूरत पड़ती है। इसलिये उसका कोई टार्जेट नहीं बन सकता। मान लें कि हम चाहते हैं कि अमुक क्षेत्र में २-३ सौ इकाइयाँ हो जायें तो हमें उस क्षेत्र के केन्द्रों द्वारा ग्राम-स्वराज्य समितियों को "ड्राइव," देना चाहिये। यह "ड्राइव" सम्मेलन का आयोजन कर तथा पदयात्रा आदि दूसरे तरीकों से देना चाहिये। ग्राम-स्वराज्य समिति की घोषणा के अमल में विभिन्न कार्यक्रम सुझाना चाहिये तथा कार्यकर्ताओं को उनका मार्गदर्शन करना चाहिये। *ग्रामस्वराज्य द्वारा जो कार्यक्रम* सुझाया जाय, वह ग्रामस्वराज्य की तीन मौलिक जिम्मेदारियों—रक्षण, पोषण तथा *शिक्षण*—के आधार पर हो। उदाहरणस्वरूप कुछ मदें निम्नलिखित हो सकती हैं :

(१) **रक्षण :** गाँव के खेत चरा *लिये जाने, उनके चोरी से कट जाने* आदि समस्याओं के लिये ग्रामरक्षा दल का संगठन। यह संगठन धीरे-धीरे गाँव की शान्ति-रक्षा के लिये, शान्ति-सैनिक का काम कर सकेगा।

(२) **पोषण :** *सफाई तथा खाद बनाने का कार्यक्रम खेती-सुधार के* **लिये नियोजन की कोशिश तथा वस्त्र-स्वावलम्बन और ग्रामोद्योग का संकल्प।**

(३) **शिक्षण : रात्रि-पाठशाला, बालवाड़ी आदि का कार्यक्रम। ग्राम-सभा, महिला समिति, बाल सभा आदि का संगठन।**

अब सवाल यह है कि उपरोक्त कार्यक्रमों के लिये प्रारम्भिक साधनों की प्राप्ति किस आधार पर हो? यह सैनिक शक्ति के आधार से हो या निरपेक्ष जन शक्ति के आधार से हो? दुनिया में शक्ति के स्रोत दो हैं : भय का या भक्ति का। सैनिक शक्ति का आधार भय का है और भक्ति का चश्मा त्याग और प्रेम से निकलता है। अतः अगर सैनिकनिरपेक्ष शक्ति का अधिष्ठान करना है तो हमें त्याग और प्रेम के स्रोत में से ही ग्राम-स्वराज्य के संगठन का साधन प्राप्त करना होगा। इसके तरीके मुख्यतः दो होंगे : एक शिक्षण-प्रक्रिया होगी और दूसरी सामाजिक प्रक्रिया। शिक्षण-प्रक्रिया में सर्वोदय-पात्रों का संगठन और सामाजिक प्रक्रिया में धर्मगोला या ग्रामगोला का संगठन करना होगा। सर्वोदय-पात्र योजना के बारे में कार्यकर्ताओं की धारणा अब तक स्पष्ट हो चुकी है। धर्मगोला या ग्राम-गोला के लिये गाँव में ग्राम लक्ष्मी के निर्माण के प्रचार करने की जरूरत है। इस निर्माण के लिये सम्पत्ति-दान के रूप में लोग एक मन अनाज में से एक सेर का दान करें। दाता किसान और मजदूर, दोनों हों। किसान अपनी भूमि से प्राप्त अनाज का हिस्सा देंगे और मजदूर मजदूरी से प्राप्त अनाज का हिस्सा। *नकद मजदूरी वालों को एक रुपये में छे* एक पुराना पैसा देना चाहिये। इस प्रकार सर्वोदय-पात्र व धर्मगोले से ग्राम-निर्माण की बुनियादी *कोष का संग्रह होना चाहिये* सामाजिक प्रक्रिया में ऐसा भी कोई कार्यक्रम उठाना चाहिये, जिससे ग्रामवासियों में सामाजिक पुरुषार्थ का विकास हो। ग्राम के निर्माण में श्रमदान का संगठन इसके लिए सरल व उद्बोधक कार्यक्रम है। कार्यकर्ताओं को ग्राम-स्वराज्य के वातावरण-निर्माण के लिये त्याग व परस्पर प्रेम की साधना में उपरोक्त कार्यक्रमों के साथ एक गहराई का कार्यक्रम भी उठाना चाहिये और वह भूदान का कार्यक्रम है। वह एक बीघा में एक कट्ठा जमीन मांगने का है।

इस प्रकार के *व्यापक अभियान के* फलस्वरूप जितनी इकाइयों में कुछ ठोस नतीजा निकलेगा, प्रारम्भ में उन्हीं इकाइयों को आगे के सर्वांगीण विकास के संयोजित कार्यक्रम चलाने के लिए चुनना चाहिये और उनकी संख्या बढ़ाने के लिए बाकी इकाइयों में कोशिश चलती रहनी चाहिये। हो सकता है कि इस प्रक्रिया में शुरू में जितनी इकाइयों का हम संगठन करना चाहते हैं उससे कम इकाई निकलें। लेकिन उसके लिये कार्यकर्ताओं को घबड़ाने की जरूरत नहीं है।

हरएक चीज का एक स्वधर्म होता है। *निर्माण-कार्य का यह स्वधर्म है कि* उसकी बुनियाद को जितना समय लगा कर

मजबूत बनाया जायगा, इमारत का निर्माण उतना ही स्थायी होगा और शायद जल्दी ही पूरा होगा। अगर भौतिक तथा बाह्य निर्माण के लिए भी ऐसा आवश्यक है तो स्वराज्य निर्माण के स्तर पर राष्ट्र-निर्माण के लिए, जिसके मूल में मनुष्य निर्माण ही है, बुनियादी कार्यक्रम को विस्तार और मजबूत बनाने की आवश्यकता है, इसका सहज में अनुमान किया जा सकता है।

प्रायः यह दलील पेश की जाती है कि इस काम में बहुत समय लगेगा और तब तक बाधक शक्तियाँ मजबूती के साथ इस तरह घर कर लेंगी कि आगे का काम असम्भव हो जायगा। ऐसा सोचना वस्तुस्थिति से अनभिज्ञता ही होगी।

हमने कहा है कि वर्तमान परिस्थिति के कारण दुनिया में या तो कहीं राजनैतिक और कहीं आर्थिक विकेन्द्रीकरण की बात सोचते हैं। भारत की परिस्थिति ने देश के नेताओं को धीरे-धीरे इस दिशा में सोचने के लिए विवश कर रही है। राष्ट्र के वे नेता जो आज से दस साल पहले यह घोषणा करते थे कि विकेन्द्रित स्वावलम्बी अर्थनीति इस विज्ञान-युग में अब नहीं चल सकती है, वे भी धीरे-धीरे यह महसूस करने लगे हैं कि भारतीय परिस्थिति में शायद इसकी आवश्यकता रहेगी। दुनिया की राजनीति में अधिनायकवाद के इस संगठन के कारण लोकतन्त्र के सामने जो चुनौती खड़ी हो गयी है तथा भारत के मूल उद्योग कृषि में साथ-साथ घनी आबादी होने के कारण बेकारी की जो दिन-ब-दिन विकट परिस्थिति बनती चली जा रही है, उसे देखते हुए वे अब सोचने लगे हैं कि इस विज्ञान-युग में शायद गांधीजी सबसे बड़े वैज्ञानिक थे। अतएव हम जो सोचते हैं कि बुनियाद मजबूत करके आगे बढ़ने के प्रयास में, जो समय हम लगा देंगे, उसमें केन्द्रवादी तत्त्वों का अति-संगठन हो जायेगा और हम उनके नीचे दब जायेंगे, यह हमारा भ्रम है। जिस समय केन्द्रवाद के पुजारी के मन में अपने ही विचार पर शंका पैदा हो गयी है, उस समय इस प्रकार के डर को वस्तुस्थिति की सही पहचान नहीं कहा जायगा। कुछ लोग कहते हैं, केन्द्रवाद के पुजारी जो यह कहते हैं कि कृषिमूलक ग्रामोद्योगप्रधान अर्थनीति परिस्थिति की आवश्यकता है, उस परिस्थिति को वे अत्यन्त अल्प समय के लिए सामयिक मानते हैं। हो सकता है कि वे ऐसा मानते हों, लेकिन हमें समझ लेना चाहिए कि इसमें कोई सन्देह नहीं कि जिस तरह दस साल के अन्दर इनके विचार में इतना फेर-बदल हुआ है, उसी तरह जैसे जैसे परिस्थिति का दर्शन स्पष्टतर होता जायगा, वे इस विचार को अधिक समझते जायेंगे और जैसे जैसे वे परिस्थिति का अध्ययन और गहराई से करते जायेंगे, वैसे वैसे उनमें केन्द्रीकरण का मोह भी शिथिल होता जायगा।

थोड़ी देर के लिए अगर मान लें कि ऐसे डर के पीछे कुछ वास्तविकता भी है, तो मजबूत बुनियाद बना लेना और अधिक जरूरी है। वैकल्पिक लोकशक्ति के सन्दर्भ में मजबूत बुनियाद किये बगैर जल्दबाजी में कुछ व्यापक काम खड़ा कर देने पर गाँव-गाँव में काम अवश्य खड़ा होगा और व्यापक रूप से होगा, लेकिन शक्ति नहीं बनेगी। शक्ति के बुनियाद के बिना जो काम खड़ा होगा, वह किसी भी विरोधी परिस्थिति में अपने को कायम नहीं रख सकेगा। स्वतन्त्र शक्ति के बिना राज्यशक्ति के सहारे हम चाहे जितना व्यापक काम खड़ा कर दें, वह टिक नहीं सकता है; क्योंकि उपरोक्त डर के पीछे हमारी यह मान्यता है कि देश के नेता केन्द्रीकरण के विचार इतनी दृढ़ता के साथ मानते हैं कि हमारे काम में अगर समय लगेगा तो उसी दरमियान में वे केन्द्रवाद का अति संगठन कर डालेंगे। तो फिर हमारा कार्य अगर उन्हीं नेताओं द्वारा संचालित राज्यशक्ति के सहारे व सहयोग से खड़ा हुआ है, तो उनकी मान्यता में जिस दिन उसकी सामयिक आवश्यकता समाप्त होगी, उसी क्षण में हमारी सारी इमारत ढह जायगी। स्वतन्त्र बुनियादी शक्ति के अभाव में इन प्रवृत्तियों के पास परिस्थिति के मुकाबले के लिए अलग से कोई ताकत नहीं रहेगी। अतः अगर बाधक तत्त्व द्वारा हमारी प्रवृत्तियों के दब जाने का डर है, तो यह डर ही हमें प्रेरित करे कि थोड़ी समय भी लगा कर नींव को हम मजबूत बनायें, ताकि हमारा काम अपनी आन्तरिक ताकत से उसका मुकाबला कर सके। फिर जो यह सोचा जा रहा है कि बहुत ज्यादा समय लग जायगा, इसका हिसाब क्या है? हमने कहा कि स्वावलम्बन की दिशा में कदम उठाने के लिए १९६० की वनिस्बत आज की परिस्थिति अनुकूल है। भूदान आन्दोलन के विचारों के व्यापक प्रचार के कारण ग्राम-स्वराज्य की आवाज देश के देहातों में पहुँच चुकी है। केन्द्र-सत्ता के संकट का अनुभव भी जनता को काफी हो रहा है। ऐसी हालत में गाँव की आर्थिक शक्ति की बुनियाद डालने की पूर्वतैयारी के काम के लिए तीन-चार साल से अधिक समय लगना नहीं चाहिए और उतना समय लगाना ही चाहिए। गांधीजी के युग नाम-स्मरण की आवश्यकता को समझने के लिए हमें १४ साल लग गये, तो उसने सक्रिय अमल की पूर्वतैयारी में अगर ४-५ साल भी लग जाय तो अधिक समय लगा, ऐसा कहा जायगा क्या?

'दाम-बल' का स्थान

वियोगी हरि

महात्मा सूरदास ने चार प्रकार के बल गिनाये हैं—'अपबल, तपबल और बाहुबल, चौथो बल है दाम।' और जिसके पास इनमें से एक भी बल न हो, जो इलाज ही चुका हो, हार मान बैठा हो, उसका बल केवल हरि का नाम है—'हारे को हरिनाम।'

'अपबल' याने आत्मबल, फिर 'तपबल' अर्थात् तपस्या का बल। और तीसरा बल माना है बाहुबल, अर्थात् शरीरश्रम का बल। बाहुबल का अर्थ महात्मा सूरदास ने, दूसरों की तरह, 'भुजदण्ड ठोंक कर सामने वाले के साथ लड़ना' यह कभी मन में नहीं सोचा होगा। अपने हाथों से परिश्रम करके शुद्ध आजीविका चलाना, बाहुबल से यही सूरदास का अभिप्राय रहा होगा।

इन बलों के बाद चौथा बल माना गया है, 'दामबल' अर्थात् रुपये पैसे का बल। सबके अन्त में इसे स्थान दिया गया है। फिर भी यह अन्तिम बल इतना ज्यादा चतुर है कि पहले के तीनों बलों को धक्का देकर सदा सबसे आगे आने की ताक और घात में रहता है। इसी बल को सर्वोच्च और सर्व प्रभावकारी मान लिया गया। क्या घर, क्या समाज, क्या धर्म-स्थान सर्वत्र इसी बल का आश्रय हम ले बैठे हैं, या कहने का नाम दूसरे बलों के भी अंगुलियों पर गिना दो हैं।

कहा जाता है, और प्रयत्न किया भी किया जाता है कि बिना दाम-बल के काम कहीं कोई पूरे होते हैं। राज्य को समृद्ध बनाने की योजनाएँ ही नहीं, युद्ध की भीषण तैयारियाँ ही नहीं, बल्कि बड़े-बड़े यज्ञों के आयोजन, धर्मानुष्ठान और लोक-कल्याणकारी कार्य भी अर्थ बल की अपेक्षा रखते हैं। बिना इसके विशाल मंदिर में दिन में कई-कई बार हजारों का छप्पन भोग भगवान् के आगे कैसे रखा जा सकता है? स्वर्ण और बहुमूल्य रत्नों से ही तो देवता की दर्शन-शोभा का मनोहारी वर्णन किया जाता है। मठों, मंदिरों और लोक-संस्थाओं की महिमा भी तभी मानी जाती है, जब उनके अधिकार में चल और अचल सम्पत्ति होती है, भले ही वह सम्पदा उनके गले की नागपाश बन गयी हो।

माना जाता है कि अमुक धर्मों और पंथों का विकास और फैलाव तभी दूर-दूर तक हो सका, जब कि उनको राज्य के खजाने का और बड़ी-बड़ी थैलियों का आश्रय मिला। पर उस वैभव और चकाचौंध वाले विकास का अन्त कैसे हुआ, इस पर शायद ही ध्यान दिया गया। आत्मबल और तपबल से जिस ज्योति को जलाया गया था, उसके ऊपर जब सोने की खोल चढ़ा दी गयी, तब भी क्या वह ज्योति वैसी ही जलती रही होगी।

बाहुबल से, शरीरश्रम से आजीविका अर्जित न कर, स्वपुरुषार्थ से काम न लेकर बिना प्रयास के ही अर्थ संचय पर आधार रख कर क्या कोई व्यक्ति, या कोई समाज या कोई संस्था अपने तेजस और उद्देश्य की रक्षा कभी कर सकी है?

आत्मबल और तपबल के साथ किसी हद तक दाम-बल का स्थान हो सकता है, पर उसका रूप तब कुछ दूसरा ही होगा और उसकी आवश्यकता मात्र उतनी होगी, जितनी शरीरयात्रा के लिए हितकारी मित भोजन की होती है। पुरातन काल में हमारे देश में बड़े-बड़े गुरुकुल चला करते थे घर घर से खाते हुए भिक्षा से चला करते थे। पर यह तो कल की ही बात है कि गांधी हाथ फैला कर एक एक पैसा, एक-एक पाई खादी और हरिजनों के लिए संग्रह करता था। अपने आखिरी 'दिन' में वह फिर कर भी यही छोड़ गया कि रचनात्मक कार्य चलाने के लिए गरीब से गरीब की झोंपड़ी से पैसा-पाई माँगा करो। इस प्रकार दामबल भी, हाथ में स्वच्छ न होते हुए भी आत्मबल और तपबल के सहारे से निर्मल बन जाता है।

विनोबा ने इस प्रकार के प्रयास को 'सर्वोदय-पात्र' नाम दिया है। मुट्ठी भर धान्य के अंदर जगत् के कल्याण का दर्शन उसे हो रहा है। वह बार-बार चेता रहा है कि दाम-बल को हम रचनात्मक कार्यों के सिर पर चढ़ कर न बैठने दें। खादी पर तीन आने की 'रिबेट' सरकार से न लेने का सुझाव जो विनोबा ने दिया, उसका यही अभिप्राय है कि हम रचनात्मक कार्यकर्ता कहीं आत्मबल और तपबल की महिमा को न भूल जायें, और संत रैदास के भजन में कहीं 'नाम' की जगह 'दाम' रख देने का भारी संशोधन न कर बैठें। रैदास ने गाया था—"अब कैसे छूटे नाम रट लागी।" डर है कि कहीं हम इस भजन को इस प्रकार संशोधित रूप में न गाने लग जायें कि,

"अब कैसे छूटे 'दाम रट' लागी।"

बिहार सर्वोदय-पदयात्रा टोली

मुंगेर जिले में बिहार प्रान्तीय अखण्ड सर्वोदय पदयात्रा टोली द्वारा श्री ब्रजमोहन शर्मा के मार्गदर्शन में ७६ मील की पदयात्रा हुई। कुल १२ पड़ावों के द्वारा ६० ग्रामों से सम्पर्क हुआ तथा पाँच हजार लोगों के बीच 'दान दो इकट्ठा, बाँधो में कट्ठा' मंत्र का उद्घोष हुआ। कई ग्रामों के लोगों ने सामूहिक दान देने का संकल्प किया। इस अवधि में भूदान यज्ञ के २५ ग्राहक बने। श्री रामनारायण बाबू जिला संयोजक सतत साथ रहे। टोली में ११ भाई निरंतर घूम रहे हैं। टोली बलराम विद्यापीठ है। बराबर कुछ विद्यार्थी टोली में प्रत्यक्ष शिक्षण के लिये आते रहते हैं।

क्या 'आत्म-समर्पण' एक नाटक-मात्र था ?

काशिनाथ त्रिवेदी

"चम्बल घाटी में डाकुओं का आत्म-समर्पण इस वर्ष की एक ऐतिहासिक और अपूर्व घटना है। डाकुओं की समस्या को सुशासन और सुप्रबन्ध की सामान्य समस्या मानना घोर अज्ञान और अविवेक है। उसका समाधान नैतिक साधनों से ही हो सकता है। जिन्हें हम समाज-द्रोही और दुष्ट मानते हैं, उन पर भी सद्भावना और सज्जनता का कैसा प्रभाव पड़ सकता है, इसका यह एक उज्ज्वल उदाहरण है। अपराध और पाप के प्रतिकार की एक उदार और अहिंसात्मक पद्धति का संकेत हमें चम्बल के उदाहरण में मिलता है।"

[तेरहवें सर्वोदय सम्मेलन के निवेदन से]

८ मई, '६१ की 'नई दुनिया' में प्रेस-ट्रस्ट आफ इण्डिया द्वारा प्रसारित एक संवाद पढ़ने को मिला। ७ मई को रायपुर में मध्य प्रदेश के कार्यवाहक आई० जी० पी० श्री इन्द्रजीत सिंह जौहर ने एक पत्रकार-परिषद् में भिण्ड-क्षेत्र की डाकू-समस्या पर अपने विचार प्रकट करते हुए यह कहा बताया जाता है कि "राज्य के डाकू-पीड़ित क्षेत्रों की हाल ही की घटनाएँ यह प्रकट नहीं करतीं कि गत वर्ष आचार्य विनोबा भावे की इस क्षेत्र की यात्रा का डाकुओं पर कोई प्रभाव पड़ा है।" पत्रकारों से श्री जौहर ने यह भी कहा बताया जाता है कि "अब इस बात की पुष्टि हो चुकी है कि डाकू मानसिंह के लड़के तहसीलदार सिंह के प्राण बचाने के लिए डाकुओं ने आचार्य भावे के सामने आत्म-समर्पण किया था! वास्तव में मानसिंह की पत्नी ने अपने पति के गिरोह के डाकुओं से आत्म-समर्पण के लिए कहा था, ताकि उसके पुत्र के प्राण बचाये जा सकें।

मध्य प्रदेश के कार्यवाहक आई० जी० पी० श्री इन्द्रजीतसिंह जौहर ने ७ मई को पत्रकारों के सामने जो कुछ कहा है, अगर वह सच है, तो उससे एक बार फिर यह सिद्ध हुआ है कि मध्य प्रदेश का शासन और उसके जिम्मेदार अधिकारी मानव-जीवन के शाश्वत और स्वस्थ मूल्यों के प्रति कितनी हीन भावना रखते हैं और किस तरह असत्य को सत्य और सत्य को असत्य का चोला पहनाने में अपनी प्रवीणता प्रकट कर रहे हैं! मानव समाज में शासकीय मूल्यों से भिन्न कोई मानवीय मूल्य भी अपना अस्तित्व रखते हैं और वे शासकीय मूल्यों से कहीं अधिक महान् होते हैं, इसका थोड़ा भी भान हमारे राज्य के पुलिस-अधिकारियों को और शासन की रीति-नीति का निर्धारण करने वाले हमारे मंत्रिमण्डल को होता, तो मानवी मूल्यों का घोर अपमान करने वाले ऐसे बयान उनकी तरफ से कभी निकल ही न पाते। किन्तु आज हमारा दुर्भाग्य यह है कि कहने को हम अपने देश में लोकतन्त्रात्मक शासन चला रहे हैं, पर असल में वह शासन न लोकतन्त्रात्मक है और न उसके पीछे जीवन का कोई स्वस्थ मन ही है। वस्तुतः नौकरशाही शासन व्यवस्था पर हावी है।

हमारे कार्यवाहक आई० जी० पी० भले यह कहें और मानें कि चम्बल-घाटी क्षेत्र में विनोबा की पदयात्रा का उस क्षेत्र के डाकू-समाज पर कोई स्थायी प्रभाव नहीं पड़ा और भले वे यह भी कहने का दुस्साहस करें कि उस क्षेत्र में जिन बीस डाकुओं ने विनोबाजी के सम्मुख अपने हथियारों सहित आत्म-समर्पण किया था, वह महज एक नाटक था, जिसका सूत्र-संचालन डाकू मानसिंह की पत्नी ने अपने पुत्र तहसीलदार सिंह को बचाने के लिए किया था और भले ही यह सम्भव हो कि कानूनी छानबीन के बीच इस नाटक के पक्ष में ऐसे कोई प्रमाण भी इकट्ठे हुए हों और उनको ध्यान में रख कर ही हमारे कार्यकारी आई० जी० पी० ने अपना यह मन्तव्य दिया हो, फिर भी हमें यह कहते हुए संकोच नहीं होता कि आत्म-समर्पण का वह नाटक भी अपने आप में इस देश की मानवता के लिए एक पावन प्रसंग था और लोक-हृदय में से उस प्रसंग की पावनता को मिटाना अब किसी के बस की बात नहीं रही है। कोई भी विचारशील व्यक्ति इस बात से इन्कार नहीं कर सकता। जिन अधिकारियों को आज आत्म-समर्पण का वह प्रसंग महज एक 'नाटक' मालूम होता है, उनके इस दुनिया से विदा हो जाने के बाद बहुत सम्भव है कि सौ दो सौ वर्षों के पश्चात् उन्हीं के वंशज इस प्रसंग की पावनता, मानवता, अपूर्वता और लोककल्याणकारिता से प्रभावित होकर इसके गुण गाते हुए कभी न अघायें। महान् घटनाओं का ठीक मूल्यांकन क्षुद्र बुद्धि से और अदूरदृष्टि से न कभी हुआ है और न हो सकता है।

शासन हर छोटे बड़े प्रसंग पर गांधीजी के नाम राम और उनके जीवन-सिद्धान्तों की दुहाई देता रहता है, किन्तु जब उसे गांधीजी के रास्ते पर चलने को कहा जाता है, तो वह निर्लज्ज भाव से बगलें झाँकने लगता है और नाना प्रकार की बहानेबाजियाँ करके यह सिद्ध करता है कि गांधीजी के प्रति और उनके जीवन-मूल्यों के प्रति उसकी निष्ठा कितनी उथली और छिछली है! यदि हमारे प्रान्त के मन्त्रिमंडल में गांधीजी के जीवन-मूल्यों को परखने की थोड़ी भी बुद्धि शक्ति और भावना होती, और उन जीवन-मूल्यों के प्रति सदा जागरूक रह कर शासन में और समाज में उन्हें प्रतिष्ठित करने की उसकी उत्कट आकांक्षा होती, तो क्या डाकू-क्षेत्र में और क्या शासन के तथा लोकजीवन के अन्य क्षेत्रों में आज जिस तरह की अराजकता और अनास्था आज पाई जाती है, वह कदापि न पाई जाती। गांधीजी ने देश के लिए जिस स्वतंत्रता का सपना देखा था, उस स्वतन्त्रता के स्थान पर आज देश के शासन में और लोकजीवन में व्यक्तियों, दलों और सत्ताधीशों की स्वच्छन्दता का ही बोलबाला दिखाई पड़ता है। लोकतन्त्र के और बहुमत के नाम पर आज शासन के और लोकजीवन के विभिन्न क्षेत्रों में जैसा निर्लज्ज और निरंकुश दुर्व्यवहार हो रहा है, उसके कारण देश की मानवता का सारा भविष्य ही अन्धकारमय होता जा रहा है। ऐसी विषम परिस्थिति में शासन और समाज के सामने जीवन के उदात्त मूल्यों की पुण्य-पावन ज्योति धरने वाले विनोबा जैसे महान् ज्योतिर्धर के अपूर्व तप का समादर करने और उससे सही प्रेरणा ग्रहण करने के बदले जब हमारा शासक-वर्ग उनकी नीयत पर ही हमला करने को उतारू हो जाता है, तो बरबस अन्तर से एक लंबी आह निकलती है, मन गहरी व्यथा से भर जाता है और मनुष्य की क्षुद्रता के इस दर्शन से खिन्न हो उठता है। अपने स्वार्थ, अपने पद-अधिकार, अपनी प्रतिष्ठा और अपनी सत्ता के मद में चूर होकर मनुष्य आज तक न जाने कितने कितने अनर्थों की सृष्टि करता चला आया है। क्या विज्ञान की अद्भुत सिद्धियों से समृद्ध आज के इस अणुयुग में भी मनुष्य को अपनी इस क्षुद्रता और पामरता से ऊपर उठ कर सोचने और जीने की कोई प्रेरणा कभी मिलेगी ही नहीं?

मध्य प्रदेश की और भारतवर्ष की जनता का यह भारी दुर्भाग्य ही है कि अपनी स्वतंत्रता के काल में उसकी मानवता को सुशोभित और प्रदीप्त करने वाले संत पुरुषों की निर्व्याज, निष्कपट और सहज सेवा का सही मूल्यांकन करने में समाज और शासन के कर्णधार लोग इस बुरी तरह गड़बड़ाते हैं और सारी दुनिया के सामने अपने को हीन और हास्यास्पद बनाते हैं।

जैसा कि तेरहवें सर्वोदय सम्मेलन के निवेदन में कहा गया है, "डाकुओं की समस्या को सुशासन और सुप्रबन्ध की सामान्य समस्या मानना अज्ञान और अविवेक है", यदि इस समस्या का इस तरह हल करना सम्भव होता, तो पिछले सौ-दो सौ वर्षों के विभिन्न शासनों द्वारा किये गये डाकू उन्मूलन सम्बन्धी प्रयत्नों और प्रयोगों से यह समस्या कभी की हल हो चुकी होती। किन्तु हम सब अच्छी तरह जानते हैं कि करोड़ों का खर्च करने और सैकड़ों, हजारों की बलि देने तथा मानव-संहार के उग्र से उग्र अस्त्र शस्त्रों और साधनों का लगातार उपयोग करते रहने पर भी आज तक इस समस्या का कोई समाधान प्रस्तुत नहीं हो सका है। उलटे हालत और हकीकत यह है कि जैसे जैसे मर्ज का इलाज करते गये, वैसे वैसे वह घटने के और मिटने के बदले बढ़ता गया और नाना रूपों में नाना प्रकार से प्रकट होता गया। कुछ डाकुओं या डाकुओं के कुछ छोटे या बड़े गिरोहों को जान से मार कर, पकड़ कर जेल में डाल कर या फाँसी पर लटका कर अगर कोई यह समझता है कि उसके हाथ में डाकू-समस्या के हल का कोई स्वर्ण सूत्र आ गया है, तो हमारे खयाल में उसके जैसा जड़ मूढ़ और आत्मप्रवंचनकारी दूसरा कोई हो ही नहीं सकता। जिस तरह खून से सने हाथों को खून से धोना सम्भव नहीं है, उसी तरह डाकुओं की अवैध हत्याओं को पुलिस और फौज की वैध कही जाने वाली हत्याओं द्वारा समाप्त नहीं किया जा सकता। अगर हमारा यह कथन सही है, और हम मानते हैं कि यह सवा सोलह आने सही है, तो हमें यह कहने में जरा भी संकोच नहीं होता कि मध्य प्रदेश के मंत्रि-मण्डल ने, उसके पुलिस-विभाग ने और मध्य प्रदेश के जागरूक नागरिकों ने विनोबा के सम्मुख हुए डाकुओं के आत्म समर्पण की नैतिक और और आध्यात्मिक महत्ता की उपेक्षा, अवगणना और टीका करके न केवल अपनी कृतघ्नता का परिचय दिया है, बल्कि एक बहुत बड़ा मानव-द्रोह और समाज-द्रोह भी किया है और एक महान सत्कार्य की गति को कुण्ठित करके अपने ही पैरों पर कुल्हाड़ी मारी है। हम चाहते हैं कि इस प्रश्न पर प्रान्त में एक बार जम कर खुली चर्चा हो जाय और अधिकारियों द्वारा समय-असमय जो बुद्धि-भ्रम फैलाने का प्रयत्न होता है, उसके मूल को ही काट दिया जाय। कोई भी स्वाभिमानी और स्वतन्त्रचेता नागरिक उदात्त भाव से किये गये सत्कार्यों की ऐसी हीनतापूर्ण अवगणना और टीका को सहन नहीं कर सकता। हम चाहते हैं कि प्रान्त और देश के सभ्रांत और सद्बुद्ध नागरिक मानवता को चुनौती देने वाले इस प्रकरण के प्रति जागरूक हों और इसके निराकरण में अपनी सारी शुभ शक्तियाँ खर्च करें।

विनोबा-यात्री दल से

कुसुम देशपांडे

मेरे लिए दुआ माँगो—भक्ति कृति में परिणत होगी तो शक्ति बनेगी—हिन्दी सीखने पर जोर—भूमि-समस्या जब तक हल नहीं होगी विनोबा घूमते रहेंगे—संस्कृत नौकरी प्राप्त करने के लिए मत पढ़ो—विनोबा और वर्षा—असम कांग्रेस का प्रस्ताव—विज्ञान के जमाने में मन पर काबू पाना जरूरी—नेपोलियन के समान पराक्रम करो।

सूरज की इस प्रदेश पर विशेष कृपा है। सबसे पहले उसका पदार्पण इस प्रदेश में होता है। सुबह ४ बजे ही उजाला हो जाता है। कभी आठ-दस मील चलना पड़े तो उसका ताप ५ बजे से सहन करना पड़ता है। इसलिए इधर कुछ दिनों से यात्रा का आरम्भ ठीक तीन बजे होता है और बिस्तर छोड़ना पड़ता है! दो बजे कुछ दिन पहले एक अमेरिकन बहन यात्रा में आयी थीं। वह कह रही थीं कि "अमेरिका में—खास करके शहरों में—लोग रात में दो बजे सोने जाते हैं!"

एक दिन रात की बात है। प्रार्थना हो गयी थी और विनोबाजी 'मच्छरदानी' में चले गये थे। चाँदनी के खुले आकाश में आँगन में साथी सोने की तैयारी कर ही रहे थे। सहसा एक आदमी विनोबाजी की खटिया के पास दिखा। मच्छरदानी के अंदर झाँकने की कोशिश कोई कर रहा था। एक साथी ने उसे अपने पास बुलाया। बोलने की आवाज से शांति भंग न हो, इसलिये उसे थोड़ी दूरी पर ले गये। चाँदनी में एक सुंदर दाढ़ी चेहरे पर एक शान दाग और बुढ़ापे के चिह्न दीख रहे थे।

"भाई! आप क्या चाहते हैं?"

"बाबाजी का दर्शन! उसी तलाश में आया हूँ।"

"अभी तो बाबाजी सो गये हैं। आप कल तीन बजे आइये।"

"मच्छरदानी आप हटाइये न! मैं देख लूँ। कल नहीं आ सकता हूँ।"

"इतनी चाह है तो इतना भी नहीं कर सकते हैं!"

"तो देखो, मैं यहाँ से तीन-चार मील उत्तर में रहता हूँ। मेरा एक पैगाम बाबा को सुना दो। मेरा सलाम कह दो और कहो कि वे मेरे लिये अल्ला ताला से दुआ माँगें!"

"दुआ माँगे...आप हैं कौन?"

भयभीत आँखों ने इधर-उधर चुपके से देखा और फिर निहायत धीमी आवाज में कहा, "मैं खूनी हूँ..."

"क्या खूनी!"

"जी, मुझ पर इल्जाम है, मेरे दुश्मनों का। सचमुच मैं खूनी होता, तो अल्ला ही मुझे सजा देता.. कल कोर्ट में हाजिर होना है। अभी रात की ट्रेन से जा रहा हूँ। कह दो मेरे लिये दुआ माँगें—" और वृद्ध मुसलमान बड़ा जल्दी जल्दी कदम बढ़ाते हुए दूर-दूर चला गया।

• • •

जब से असम में प्रवेश हुआ है, एक भी सभा ऐसी नहीं होती है, जिसके आरम्भ में यहाँ के महाभक्त शंकर देव या माधव देव का भजन गाया नहीं जाता। उनके भजनों को 'बरगीत' कहते हैं।

विनोबाजी कहते हैं, "यहाँ के लोगों के हृदय में भक्तिभाव बहुत है। लेकिन कभी-कभी ऐसे 'बरगीत' सुनने की भी आदत हो जाती है, तो प्रभाव कम हो जाता है और जीवन के साथ उसका संबंध टूट जाता है। कभी-कभी स्कूल के बड़े हाल में गांधीजी का चित्र (फोटो) रखते हैं और वहीं आमने-सामने बैठ कर झगड़ते हैं! जैसे ही मंत्र बोलते हैं तो जैसे तोता बोलता है, वैसे ही बोलते हैं। इसलिये आपका भक्तिभाव आपकी कृति में परिणत होना चाहिये, तब इस भक्ति की शक्ति प्रगट होगी।"

• • •

सिलघाट से ब्रह्मपुत्र के विशाल पात्र में २२ मील की पार करके तेजपुर में प्रवेश हुआ और तब से उत्तर असम (अपर असम) की यात्रा शुरू हुई है। तेजपुर में भारत सरकार के वित्तमंत्री श्री मोरारजी देसाई, असम के गवर्नर जनरल श्री नागेश तथा असम-सरकार के मजदूर मंत्री श्री त्रिपाठीजी विनोबाजी से मिले। तेजपुर की सभा बहुत बड़ी थी। विनोबाजी ने अपने एक घंटे के व्याख्यान में हिन्दी सीखने पर ही जोर दिया। कभी-कभी कार्यकर्ताओं को वे कहते हैं कि "स्वराज्य हासिल होकर १३ साल बीत चुके हैं। अभी तक आप हिंदी नहीं सीखे हैं, यह अनुराग का परिणाम है। १३ साल के बाद भी यहाँ भाषण का अनुवाद करना पड़ता है, यह बात अच्छी नहीं है।"

• • •

इस क्षेत्र में जनता का उत्साह, भक्ति, दिन भर हजारों का आना, पड़ाव को घेरे रहना, यह सब बिहार की याद दिलाता है। लेकिन विनोबाजी कहते हैं कि "बिहार के जैसे कार्यकर्ता यहाँ निर्माण होंगे, तब यहाँ जोरदार काम होगा।" इस तरह बार-बार विनोबाजी बिहार के गीत गाते हैं।

एक दिन शाम की सभा में कहा: "जब तक भूमि-समस्या हल नहीं होगी और जब तक बाबा के शरीर में प्राण है, तब तक बाबा घूमता रहेगा। आप कोशिश करेंगे तो आपको यश मिलेगा, नहीं तो अपयश मिलेगा। लेकिन दोनों हालत में बाबा को यश ही मिलेगा। 'हतो वा प्राप्स्यसि स्वर्गं, जित्वा वा भोक्ष्यसे महीम्।'—ऐसा यह धर्मयुद्ध है। इसमें जो जीतेगा, वह पायेगा और जो मरेगा, वह ज्यादा पायेगा। इसलिए बाबा को चिन्ता नहीं है। यह असमवालों का काम है। बाबा जगाने आया है। लेकिन ऐसे हजार बाबा से भी काम नहीं होगा, अगर आप नहीं जागते हैं। जो प्रेरणा बाबा को मिली है, वह आपको होगी, तब काम होगा।"

असम में विविध धर्म, भाषा और जाति के लोग हैं। यहाँ करीब ४० भाषाएं चलती हैं। बीच में कुछ नेपाली भाई विनोबाजी से मिले। उनकी माँग यह थी कि नेपाली भाषाओं के स्वतन्त्र स्कूल चलें। पूछने पर पता चला कि उनमें से ज्यादातर सौ साल से यहाँ बसे हैं। विनोबाजी ने कहा, "ऐसी बात है तो आप तो यहीं के हो गये। आपको यहाँ की भाषा सीखनी चाहिये। ऊपर के दर्जे में नेपाली भाषा हो, लेकिन प्राथमरी स्कूल के लिये आग्रह मत रखिये। हाँ, यह बात ठीक है कि अभी जो नये आ रहे हैं, उनके लिये स्वतन्त्र स्कूल हों। मकसद बात यह है कि हमें व्यापक बुद्धि रखनी चाहिये।" •

गोमरी गाँव में संस्कृत-पाठशाला है। सरकार की मदद उसे मिलती है। पर वह पर्याप्त नहीं है, ऐसा संचालकों का कहना था। विनोबाजी ने कहा, "कहीं अच्छी नौकरी मिले, इसलिये संस्कृत सीखेंगे, तो कोई लाभ नहीं होगा। संस्कृत का उपयोग जीवन चलाने में नहीं होगा। ज्ञान प्राप्ति के लिये उसका उपयोग होना चाहिये। आध्यात्मिक ज्ञान संस्कृत में भरा है। उसके लिये उसका अध्ययन हो। उससे असमी सीखने में भी लाभ होगा। हमारे ऋषियों को कृषि के लिये बहुत आदर था, बल्कि वे अपने महापुरुषों को बैलों के नाम देते थे—गौतम बुद्ध, महामुनि ऋषभ। इसी तरह गाय के लिये भी आदर था। जो संस्कृत सीखना चाहते हैं, उनको गाय की और खेती की सेवा करनी चाहिये। अगर मैं संस्कृत पाठशाला खोलूँगा तो उसके साथ तीन उद्योग रखूँगा: खेती, गाय की सेवा तथा सूतकताई और बुनाई।" • •

इधर सात-आठ दिनों से बारिश रोज हो रही है। असम में प्रवेश करने के पहले जब इस प्रदेश के कार्यक्रम के बारे में चर्चा चली, तब यह चिंता प्रमुख कार्यकर्ताओं के जरिये प्रगट की गयी थी कि असम में बारिश का जोर ज्यादा रहेगा, तो यात्रा में तकलीफ बहुत होगी। इस पर विनोबाजी हँसते थे और कहते थे, "मान लीजिये, यहाँ ७०० इंच वर्षा होती होगी, तो उसमें से ७० इंच रात में ही होगी और १० इंच दिन में, तो कुछ ज्यादा तकलीफ नहीं होगी।"

अब तो नॉर्थ लखीमपुर जिले की यात्रा शुरू है। यह जिला बारिश के लिये मशहूर है। वर्षा का मौसम शुरू भी हुआ है। विनोबाजी ने एक पत्र में लिखा है:

"यद्यपि हम बारिश में घूम रहे हैं, हमें कोई तकलीफ नहीं होती, क्योंकि बारिश "सर्वजन हिताय और सर्वजन सुखाय" होती है और हमारी यात्रा भी "सर्वजन हिताय और सर्वजन सुखाय" हो रही है। दोनों का उद्देश्य एक है। इसलिये बारिश हमारे काम में रुकावट नहीं डालेगी।"

इस जिले में ग्रामदानी गाँवों का क्षेत्र है। असम के सारे कार्यकर्ता इस जिले में ग्रामदान पर जोर लगाने की कोशिश कर रहे हैं। विनोबाजी का प्रवेश हुआ है, तब से रोज तीन या चार ग्रामदान की प्राप्ति होती ही है। इसके पूर्व यहाँ ७३ ग्रामदान हो चुके हैं, जिनमें से आठ-दस गाँवों में निर्माण कार्य हो रहा है। विनोबाजी के स्वागत में लोग उद्घोष करते हैं, "प्यारा मंत्र जय जगत्"—"हमारा तंत्र ग्रामदान"। एक दिन विनोबाजी ने कहा,—"करुणा की प्रेरणा लेकर हम घूम रहे हैं। हमारा मंत्र है "सत्य" और तंत्र है "करुणा"। करुणा के तंत्र से ही हम सत्य की प्राप्ति करेंगे।"

• • •

असम प्रादेशिक कांग्रेस कमिटी ने सर्वसम्मति से प्रस्ताव पास किया है, जिसमें सब कांग्रेसवालों को आदेश दिया है कि वे सब भूदान-यज्ञ के काम में जोर लगायें और जनता से अपील की है कि जो जमीन के मालिक हैं, वे बीघे में कट्ठे के हिसाब से भूमिदान दें। जगह-जगह कांग्रेस के कार्यकर्ता मिलते हैं। उनके सामने विनोबाजी इन शब्दों में कहते हैं: "प्रस्ताव किया, बहुत अच्छा काम किया। लेकिन प्रस्ताव करें और अमल न करें तो संस्था की शक्ति क्षीण होती है। कांग्रेस देश की सबसे बड़ी संस्था है। यह मानने की जरूरत नहीं है कि भूदान का काम हम जैसे सर्वोदय कार्यकर्ता करेंगे। यह काम खास किसी जमात का नहीं है, देश का है। कांग्रेस जैसी देशव्यापी संस्था यह काम उठा लें तो यह काम होगा। इसका अमल नहीं होता है तो इसमें मेरी, कांग्रेस की और सर्वोदयवालों की, तीनों की इज्जत खतरे में है।"

आठ दस दिनों से विनोबाजी पदयात्रा में जो कार्यकर्ता हैं, उन सबको उपनिषदों में से एक एक श्लोक सिखाते हैं। कभी कभी प्रकट चिंतन भी करते हैं। एक दिन उन्होंने कहा कि इन दिनों विज्ञान का

रहा है और मनुष्य के सामने विकल्प पेश कर रहा है कि या तो गुलाम बनो या मन पर काबू पाओ। जैसे ठंड में ठिठुरने वाला आदमी बिल्कुल आलसी हो, तो भी घर छोड़ कर बाहर निकलता है, क्योंकि बाहर धूप है। नहीं तो वह अंदर ही रहता। आलसी मनुष्य भूख लगने पर उठेगा, सामान जुटायेगा—भूख ने उसे लाचार किया। भगवान ने उस पर बलात्कार किया। याने भगवान ने भूख का रूप लिया और काम करवाया। तो इस जमाने में मन पर काबू पाये बिना चारा नहीं। कभी-कभी लोग हमसे कहते हैं कि यह हमने यहाँ आश्रम बनाया, यहाँ जंगल था तो मंगल किया, जमीन उबड़-खाबड़ थी, उसे अच्छी बनायी, प्रिंटिंग प्रेस बनाया, कागज बनाया! अब योरप, अमरीका में ऐसे पराक्रम तो उन्होंने कितने ही किये हैं—हजार-हजार मील लंबे जंगल तोड़े हैं, हजारों ऊँचे-ऊँचे मकान बनवाये हैं—इसलिये हम भी ऐसा बनायेंगे तो पीछे पड़ेंगे। हम यह बतायें कि भारत में हमने ऐसा मन बनाया है कि उस पर किसी का हमला हो नहीं सकता। इस तरह मन बनाने के लिये हमें ईश्वर या साइन्स धकेलेगा। हम अहंकारी भी हैं और जड़ भी हैं, इसलिये हमें जो धकेलेगा उसे तकलीफ होगी और धकेलने में देरी होगी, लेकिन वह हमें धकेलेगा जरूर।

नॉर्थ लखीमपुर में असम के प्रमुख कार्यकर्ता इकट्ठे हुए हैं। इधर बारिश का भी जोर चला है। एक दिन कार्यकर्ताओं से विनोबाजी ने कहा: "असम के ४ जिले खतम करके हमने इस पाँचवें जिले में प्रवेश किया है। चार जिले में आपको अभ्यास हो गया। अब पाँचवें जिले में आपकी परीक्षा होगी। दो महीने में काफी अनुकूल वातावरण पैदा हुआ है। पर खास काम नहीं बना है। चूल्हा गरम होने में जरा समय लगता है। एक बार सुलगा तो सब दूर परिणाम होता है। बिहार में, ओरीसा में, महाराष्ट्र में, तमिलनाड में यही हुआ। एक जिले में जोर चला तो सारे प्रांत पर असर होता गया। लेकिन उस जिले में जोर लगाने के शुरू में थोड़ा समय जाता है। वैसे इस जिले में आप कोशिश कीजिये और देखिये। हमारा 'वाटरलू' करो या 'पलासी', हम तैयार हैं। बारिश का डर मत रखो। नेपोलियन ने आस्ट्रिया पर हमला करने के लिये आल्प्स पर्वत को लांघने का तय किया। उसके पहले किसी ने वह रास्ता नहीं लिया था। उसके हजारों सैनिक मरे। पर एक बार उसने आल्प्स पर्वत को लांघा और आस्ट्रिया एकदम उसके हाथ में आया। वैसे बारिश में हम यहाँ फतह हासिल करते हैं, तो सारे प्रांत में फतह होगी।"

दस-बारह दिन हो गये सूरज का दर्शन नहीं हो रहा है। दिन में और रात में या तो बारिश होती है या तो आकाश काले मेघ से व्याप्त रहता है। मेघों की सहस्र धारा में नहाते हुए रोज यात्रा हो रही है। ऊपर से वर्षा का स्नान और नीचे कीचड़। कीचड़ में चलते समय हर कदम पर सावधानी रखनी पड़ती है, ताकि कहीं पैर न फिसले। एक दिन तो इतना कीचड़ और ऐसी फिसलने वाली पगडंडी थी कि चलते-चलते कई साथियों ने धरती को प्रेमालिंगन दिया, या प्रणाम किया। विनोबाजी कहते हैं, "इन दिनों हमारी यात्रा बहुत आनन्द में हो रही है। ऊपर से वर्षा की धारा और जमीन पर ग्रामदान की धारा बह रही है।" "कीचड़ में चलने से पाँव को मालिश होती है", ऐसा उनका कहना है! भक्त को हर चीज में प्रभु का दर्शन होता है।

इसलिए बारिश की सहस्र धारा में भी उसको ईश्वर का स्पर्श महसूस होता है। एक दिन संध्या-समय जब जोरदार बारिश हो रही थी और जोरदार हवा चल रही थी, लालटेन के प्रकाश में साथी विनोबाजी के खटिया के पास बैठे थे। बाहर हवा के साथ पेड़ जोरों से झूम रहे थे और अंदर वेद-मंत्र का पाठ हो रहा था। तालबद्ध, स्वरबद्ध—जोर जोर से तानें बजती थीं—

वसन्त इन्नु रंत्यो
ग्रीष्म इन्नु रंत्यो।
वर्षाण्यनु शरदो हेमंतः
शिशिर इन्नु रंत्यः।

"वसंत रमणीय है, ग्रीष्म रमणीय है, वर्षा, शरद, हेमन्त, शिशिर, सब रमणीय है।"

बाहर मूसलधार वर्षा, अंदर भक्ति की धारा की वर्षा, कृपामय जलबिन्दुओं का स्वागत सामगायन से हो रहा था।

भारतीय संस्कृति का स्वरूप

नानाभाई भट्ट

[देश के सुप्रसिद्ध शिक्षाशास्त्री और गुजरात के वयोवृद्ध लोकसेवक श्री नानाभाई भट्ट से 'भूदान यज्ञ' के पाठक परिचित हैं ही। पिछले साल उनके जीवन के ८० वर्ष पूर्ण होने पर उनका सार्वजनिक अभिनंदन भी किया गया था। हाल में 'पयारोनी पड्यो पड्यां' नाम से एक पुस्तक प्रकाशित हुई, जो प्रश्नोत्तर के रूप में है। अधिकांश प्रश्न गुजरात के प्रसिद्ध विचारक श्री स्वामी आनन्द ने पूछे हैं और श्री नानाभाई ने अपनी बीमारी के दिनों में बिस्तर पर पड़े-पड़े इन प्रश्नों के उत्तर लिखवाये हैं। हिन्दी में यह पुस्तक अखिल भारत सर्व सेवा संघ-प्रकाशन जल्दी ही प्रकाशित करने वाला है। यहाँ उस पुस्तक से एक अंश दिया जा रहा है। —सं०]

प्रश्न : हम समझते यह हैं कि भारतीय संस्कृति ग्रामप्रधान संस्कृति है और नगर तो भारतीय शरीर पर उठे हुए कुछ गिने-चुने फोड़ों के समान हैं। इस विचार को थोड़े विस्तार से समझाइये।

उत्तर : हमारी संस्कृति ग्रामप्रधान संस्कृति है, ऐसा कहने के बदले यह कहना अधिक सही मालूम होता है कि हमारी संस्कृति आश्रम-प्रधान संस्कृति है। भारत की संस्कृति का उद्गम हमारे ऋषि-मुनियों के आश्रमों में हुआ और उसी के मुख्य-मुख्य अंगों को हमारे देश के परिव्राजकों, आचार्यों, उनके अनुयायियों, साधु-संतों और उसी संस्कृति के रंग में रंगे हुए छोटे-बड़े अनेक स्त्री-पुरुषों ने ठेठ गाँवों के जीवन तक फैलाया।

इस संस्कृति के एक-दो लक्षण विशेष रूप से गिनाये जा सकते हैं। उनमें पहला यह है कि इस संस्कृति का रुख भोग की ओर नहीं, बल्कि संयम की ओर था। यही कारण है कि चार पुरुषार्थों में से दो ऐहिक पुरुषार्थों का—'अर्थ' और 'काम' का—सेवन सदा धर्म के अधीन रह कर करने की एक परम्परा हमारे देश में खड़ी हुई; और आज के इस जमाने में भी, जब कि हमारी संस्कृति खोखली-सी हो गयी है, हमारी आम जनता भोग की ओर घृणा की दृष्टि से देखती है और संयम अथवा त्याग के लिए अधिक आदर-भाव रखती है। संयम के रूप में सूचित संस्कृति का यह अंश आज भी अपनी अतिशयता में हमें अपने गाँवों में तो दिखाई पड़ता है, किन्तु अनेक कारणों से हमारे शहरों में आज इसका दर्शन दुर्लभ ही हो गया है।

संस्कृति का ऐसा ही दूसरा अंश हमारी इस भावना में है कि हम सब एक भगवान् की ही संतान हैं और आखिर भगवान् की सेवा असल में तो भगवान् के बालकों की ही सेवा मानी जानी चाहिए।

सच है कि आज जात-पाँत और छूत-अछूत के असह्य बोझ के नीचे यह भावना बुरी तरह दब गयी है; फिर भी गाँववालों के आपस के व्यवहार में इस प्रकार की मानवता हमें अपने गाँवों में आज भी किसी हद तक देखने को मिलती है।

गाँव की हद में से गुजरने वाले किसी भी अतिथि को गाँव के लोग कभी भूखा नहीं जाने देंगे। गाँवों में आज भी हम यह देखते हैं कि पिता के मरने पर जो बालक निराधार हो जाते हैं, उन्हें उनकी माँ के साथ गाँव के निकट सम्बन्धी सम्हालते ही हैं, पर यदि गाँव में उनके ऐसे कोई सगे सम्बन्धी न भी हुए, तो गाँव के दूसरे लोग उन्हें रोजी-रोटी से लगा कर उनका पालन-पोषण करते हैं और इसे वे अपना धर्म समझते हैं।

आज भी गाँव के लोग चबूतरों पर पक्षियों को दाना चुगाते हैं और इस तरह अनजाने ही वे पक्षियों की दुनिया के साथ अपने तादात्म्य का विकास करते हैं, उसे बनाये रहते हैं और इसी रीति से वे पक्षियों के प्रति अपनी आत्मीयता को बढ़ाते चलते हैं। आज भी गाँवों में बड़े-बूढ़ों की सार-सम्हाल का काम बेटों और बहुओं द्वारा सम्मानपूर्वक किया जाता है। आज के इस जमाने में भी गाँव के नाई, तेली, कुम्हार, चमार अपने हुनर धंधों का लाभ गाँव को देते हैं और गाँव की जनता भी अपनी फसल का एक अंश अन्न आदि के रूप में उन्हें देती है।

इस प्रकार परस्परावलम्बन पर टिकी हुई अर्थ-व्यवस्था, पारस्परिक मानवता पर टिकी हुई समाज-व्यवस्था और आपस की एकता पर खड़े हुए मन्दिर, ठाकुरद्वारे आदि सब हमारी संस्कृति के गड़े हुए अंग जैसे हैं, फिर भी उनमें प्राणों की थोड़ी धड़कन मौजूद है। संस्कृति के इन अंगों को जगाना, इनमें खरी-खोटी जो खराबियाँ पैदा हो गयी हैं, उन्हें दूर करके संस्कृति के स्वच्छ रूप को सामने लाना और काल के प्रवाह के अनुरूप नये युग के जो आवश्यक लक्षण हों, उन्हें पुरानी संस्कृति के साथ बुनकर उनमें से भारत की नई संस्कृति को खड़ा करना, आज के ग्राम-सेवक का काम है।

इस कर्तव्य की पूर्ति के लिए प्रत्येक ग्रामसेवक को भारत की प्राचीन संस्कृति का चयन निष्ठापूर्वक करना चाहिए और उसके मूल में विद्यमान संस्कृति की आत्मा को अखण्ड रख कर नये युग के—विशेषकर विज्ञान के संस्कारों को उनके साथ गूँथ लेना चाहिए।

यदि हमें यह सब करना है, तो हम अपने गाँवों को जैसे वे आज हैं, वैसे ही नहीं रहने दे सकेंगे। आज के गाँवों में नये प्राणों का संचार करने के लिए हमें अज्ञान, गरीबी, अनारोग्य और असंस्कारिता आदि को वैज्ञानिक दृष्टि के सहारे प्रबल पुरुषार्थ द्वारा हटाना ही होगा।

नवयुग के ग्रामसेवक का यही कर्तव्य है।

अर्थ-संग्रह का यह अभियान !

१५ जून से शुरू किये जाने वाले सर्व सेवा संघ के प्रस्तावित डेढ़ सप्ताही अर्थ-संग्रह-अभियान की कुछ बातें ध्यान देने योग्य हैं।

इन विशेषताओं के ध्यान में न रहने से कुछ भ्रम होने की गुंजाइश है। उससे कोशिश में कमी रह जाने, जरूरी लगन उसमें न हो पाने और उसको काफी वेग न मिलने का भी खतरा है।

पहली बात तो यह है कि यह अभियान सीमित अवधि का है। सिर्फ डेढ़ महीने का यह कार्यक्रम है। इसलिए ऊहापोह या दुविधा छोड़ पूरी शक्ति और तत्परता से हर साथी को इस काम में लगना चाहिए। इस अवधि का अधिक-से-अधिक समय और हर साथी, कार्यकर्ता व सर्वोदय प्रेमी का पूरा दिल दिमाग शरीर इसी निमित्त और इसी काम में समर्पित होना चाहिए।

दूसरी बात ज्यादा-से-ज्यादा लोगों के पास इस काम से पहुँचने की वृत्ति इस अवधि में खास तौर से होनी चाहिए। इसमें सर्वसाधारण हैं, तो विशिष्ट जन भी शामिल हैं। किसी को छोड़ना नहीं है।

तीसरी बात, सम्पर्क करना, अपने काम व लक्ष्य की जानकारी देना तथा प्रसगवश विचार की गहरी बातचीत में भी उतरना, लेकिन मुख्य काम आर्थिक सहायता प्राप्त करना होना चाहिए। इस अवधि में सर्वोपरि अर्थ संग्रह है। प्रसगवश लोकसंग्रह और लोक-शिक्षण जितना हो सके, किया जाय।

चौथी बात जो जितना, इस अवधि की इस निमित्त होने वाली पहली और आखिरी मुलाकात में दे, उसे धन्यवाद के साथ रसीद देकर ले आना, यह अभीष्ट होना चाहिए। यही काफी माना जाना चाहिए। अधिक दे सकने की क्षमतावाले भी थोड़ा ही दें तो वह प्रेमपूर्वक ग्रहण करना चाहिए। दस रुपये की जिससे आशा व अपेक्षा हो, वह दस नये पैसे दे तो वह भी प्रेम व कृतज्ञता से लेना चाहिए।

पाँचवीं बात, इसमें मुक्त चन्दा हो सकता है। नियमित और निश्चित कुछ चंदा हो सकता है, उदाहरणतः रु० १११) वार्षिक का, पचवार्षिक या कम अधिक अवधि का चंदा। सपत्तिदान हो सकता है। किसी प्रवृत्ति, किसी क्षेत्र या किसी व्यक्ति विशेष के लिये अंकित दान हो सकता है, उदाहरणतः भूमि वितरण के काम के लिये अमुक रकम या अमुक ग्रामदानी भूदानी क्षेत्र के लिए अमुक सहायता या अमुक कार्यकर्ता के प्रशिक्षण या निर्वाह के लिए अमुक राशि। यह चंदा रुपया-पैसा या अन्न, दोनों में से कुछ भी हो सकता है, सूत गुण्डियाँ भी हो सकता है। इस प्रकार इस अभियान में जो कुछ जिस प्रकार से और जिस भी रूप में दिया जाय, वह लेना चाहिए।

एक दो भ्रम या शंका की बात का भी यहाँ उल्लेख कर दिया जाय।

प्रश्न उठ सकता है कि निधि मुक्ति के निर्णय के बाद यह तरीका ठीक है क्या? उस फैसले के अनुसार हम आंदोलन के खर्चे की पूर्ति अभी पूर्णतः नहीं कर सक रहे हैं। यह कमी और दिलाई हमें मंजूर करनी चाहिए।

सवाल यह है कि कुछ प्रभावशाली व्यक्ति कुछ विशेष व्यक्तियों के पास जाकर कुछ विशेष अर्थसंग्रह करें, क्या उससे काम चलाया जाय? क्या माना जाय कि निधि-मुक्ति के निर्णय के अनुसार पूरी तजवीज नहीं बैठी, इसलिए वही करना ठीक है? बीच की अवधि में इस प्रकार विशिष्ट अर्थसंयोजना से क्या निधि-मुक्ति के विचार को कार्यान्वित करने के हम अधिक नजदीक पहुँचेंगे?

असली बात यह है कि विशिष्ट अर्थ-संग्रह की एवज डेढ़ महीने के अभियान में व्यापक सम्पर्क पूरी ताकत लगा कर करेंगे, जन जन के पास झोली लेकर पहुँचेंगे, तो निधि-मुक्ति के अच्छे और आधारभूत निर्णय को अमल में लाने की अधिक अनुकूलताएं पैदा होंगी, परिस्थितियाँ बनेंगी और कार्यकर्ताओं में भी हिम्मत बँधेगी, उनकी झिझक दूर होगी।

फिर यह ध्यान में रखा जाय कि जन-जन में विशिष्ट जन भी शामिल है तथा सब साथियों की टोली में बड़े प्रभावशाली कार्यकर्ता भी बाहर नहीं हैं, उधर उनके द्वारा भी इस अवधि में सघन शक्ति लगायी जाय। पर वहाँ भी 'तुरत दान महापुण्य' की बात ही सामने रहे।

इसी प्रकार इस अभियान में सपत्ति दान, सर्वोदय-पात्र, सूतदान आदि वर्जित नहीं हैं। पहली माँग तो सपत्तिदान की भी भले ही हो। पर मात्र वही न हो और न वहीं अटका जाय। धीरे धीरे मुक्त व विशिष्ट चंदे से निवृत्त होना है। सपत्तिदान, सर्वोदय-पात्र आदि का आधार ही लेना है, यह लोगों को स्पष्ट कहा जाय। हमारे लिए तो साफ हो ही, लोग भी जानें कि उन्हें सपत्तिदान देना है, सर्वोदय-पात्र रखने हैं। पर अभी जो कुछ काम अटकने की ओर केन्द्रित निधि छोड़ी तो कुछ विशिष्ट व सीमित अर्थ संग्रह के दायरे में उलझ जाने की जो स्थिति बनी है, उससे मुक्त हुआ जाय।

उम्मीद है, इस अभियान की यह अहमियत सबको साफ होगी और इस सीमित अवधि का हर सर्वोदय प्रेमी द्वारा निर्द्वंद्व मन तथा पूरी ताकत से उपयोग किया जायगा।

काशी,
२८-५-'६१

—पूर्णचन्द्र जैन
मंत्री,
अ० भा० सर्व सेवा संघ

मासिक चिट्ठियाँ

बिहार की चिट्ठी

गत १ मई '६१ से बिहार में 'बीघे में कट्ठा' के आधार पर एक नया भूदान-अभियान शुरू हुआ है। लगभग आठ वर्ष पूर्व जब विनोबाजी भूदान यज्ञ का संदेश लेकर यहाँ आये थे, तो बिहार ने ३२ लाख एकड़ भूमि प्राप्त करने का संकल्प किया था। विनोबाजी की उपस्थिति में ही लगभग २० लाख एकड़ की प्राप्ति यहाँ हो चुकी थी। इसके बाद भूमि प्राप्ति के बजाय, प्राप्त भूमि के वितरण में ही सारी शक्ति लगायी गयी। फलस्वरूप ३२ लाख एकड़ का संकल्प अधूरा रह गया। इस बार २१ दिसंबर '६० को जब विनोबाजी अपनी असम-यात्रा के पथ पर यहाँ पधारे, तो उन्होंने बिहार वालों को इस अधूरे संकल्प की याद दिलायी, और उसकी पूर्ति के लिए एक नया मंत्र भी बताया। उन्होंने कहा कि अगर बिहार का प्रत्येक छोटा बड़ा भूमिवान अपनी जमीन का बीसवाँ भाग (प्रति बीघे में एक कट्ठा) दे दे, तो लगभग १२ लाख एकड़ भूमि इकट्ठी हो सकती है, और बिहार का मूल संकल्प भी पूरा हो सकता है। बिहार में प्रवेश करते ही विनोबा ने इस नये मंत्र का उद्घोष किया और उसकी जय शुरू कर दी। अब सारा बिहार इस नये उद्घोष से गूँजने लगा है।

विनोबा के जाने के बाद बिहार सर्वोदय-मंडल ने राज्य के विभिन्न राजनीतिक पक्षों एवं रचनात्मक संस्थाओं के लोगों से सम्पर्क स्थापित किया और मार्च के दूसरे सप्ताह में एक सर्वपक्षीय सभा का आयोजन किया, जिसमें बिहार विधान सभा और विधान परिषद् के सैकड़ों विधायक और प्रमुख पक्षों एवं संस्थाओं के प्रतिनिधि शामिल हुए। इस सभा ने सर्वसम्मति से एक सर्वपक्षीय 'बिहार राज्य भूदान प्राप्ति समिति' का गठन किया और निश्चय किया कि यह समिति इस प्रदेश में भूदान-प्राप्ति के लिए आवश्यक कदम उठावे।

बिहार में नया भूदान-अभियान

मार्च के अंत में इस समिति की बैठक हुई, जिसमें यह निर्णय किया गया कि १ मई '६१ से 'बीघे में कट्ठा' के आधार पर एक प्रांत व्यापी अभियान चलाया जाय। समिति के सदस्यों के हस्ताक्षर से बिहार के भूमिवानों के नाम, बीघे में कट्ठा देने के लिए, एक अपील भी प्रसारित की गयी।

समिति के निर्णयानुसार १ मई '६१ को गया जिले से भूदान-अभियान का शुभारंभ हुआ। श्री शंकरराव देव ने इस अभियान का उद्घाटन किया और लगातार १० मई तक बिहार के विभिन्न जिलों की यात्रा की। गया, पटना, छपरा, मुजफ्फरपुर, मोतीहारी, दरभंगा, सहर्षा, पूर्णियाँ, भागलपुर जैसे जिले के प्रधान नगरों तथा संथाल परगना जिले के वासुकीनाथ नगर में उनकी सभाएँ भूदान अभियान के सिलसिले में हुईं। यह सोचा गया था कि जिले के इन प्रधान नगरों में विभिन्न पक्षों और संस्थाओं के प्रमुख कार्यकर्ताओं से संपर्क हो सकेगा, और इस कार्यक्रम में सबकी सामूहिक शक्ति लगायी जा सकेगी। इसी उद्देश्य से प्रत्येक नगर में, जहाँ श्री शंकररावजी गये, एक सर्वपक्षीय कार्यकर्ता-सभा का आयोजन हुआ। इन सभाओं में आम तौर पर कांग्रेस और प्रजा समाजवादी पक्ष के कार्यकर्ता ही शामिल हुए। कहीं कहीं स्वतंत्र पार्टी और साम्यवादी दल के कार्यकर्ताओं का भी सहयोग प्राप्त हुआ। बिहार सरकार के सिंचाई मंत्री श्री दीप-नारायण सिंह तथा कल्याण मंत्री श्री भोला पासवान शास्त्री का सहयोग क्रमशः मुजफ्फरपुर और पूर्णियाँ जिले के कार्यक्रम में प्राप्त हुआ। मुजफ्फरपुर में भूदान-अभियान के सिलसिले में जो सार्वजनिक सभा हुई, उसकी अध्यक्षता श्री दीप बाबू ने ही की।

रचनात्मक संस्थाओं की ओर से सर्वश्री वैद्यनाथ प्रसाद चौधरी, रामदेव ठाकुर, ध्वजा प्रसाद साहु और श्याम-सुन्दर प्रसाद के अलावा जिले जिले के सैकड़ों सर्वोदय, भूदान एवं खादी-कार्यकर्ताओं ने इस अभियान को सफल बनाने की भरसक कोशिश की। हर जिले की कार्यकर्ता सभा में करीब २०० रचनात्मक और राजनीतिक कार्यकर्ताओं ने भाग लिया। प्रांत के विभिन्न क्षेत्रों में होने वाले उप-चुनावों की तैयारी में फँसे रहने के कारण कुछ जिलों में राजनीतिक कार्यकर्ताओं की संख्या अपेक्षाकृत बहुत कम रही। रचनात्मक संस्थाओं में, सर्वोदय के प्रत्यक्ष कार्य में लगी हुई संस्थाओं के अलावा भारत सेवक समाज और पंचायत परिषद् के लोगों का सक्रिय सहयोग प्राप्त हुआ।

कार्यकर्ता सभा के अलावा हर जगह एक सार्वजनिक सभा भी हुई। उपस्थिति की दृष्टि से मुजफ्फरपुर, दरभंगा, पूर्णियाँ, भागलपुर, पटना आदि नगरों की सभाएँ अच्छी हुईं।

श्री शंकररावजी के दो व्याख्यान हर जगह हुए। एक व्याख्यान कार्यकर्ताओं की सभा में हुआ और दूसरा सार्वजनिक सभा में। कार्यकर्ताओं के बीच दिये गये व्याख्यान अपेक्षाकृत अधिक गंभीर और विचारोत्तेजक थे। सार्वजनिक सभाओं में दिये गये भाषणों का स्तर भी काफी ऊँचा रहा। अपने भाषणों में उन्होंने भूदान-आंदोलन के क्रांतिकारी एवं व्यावहारिक

पहलुओं का विश्लेषण करते हुए 'लोक-स्वराज्य' के बुनियादी सिद्धांतों की व्याख्या की। लोगों ने हर जगह बड़े धैर्य से उनकी बातें सुनीं और उनके विचारों को समझने की कोशिश की।

हर जिले में जो कार्यकर्ता सभाएँ हुईं, वे कई दृष्टि से महत्त्वपूर्ण थीं। कार्यकर्ताओं ने अपनी शक्ति के मुताबिक बीघे में कट्ठा के आधार पर अभियान चलाने की योजनाएँ बनायीं। जिन क्षेत्रों में शक्तिवान् कार्यकर्ता उपलब्ध थे, अभी उन्हें ही इस अभियान के लिए चुना गया। प्रत्येक जिले में (जहाँ शंकररावजी गये) एक सर्वपक्षीय जिला भूदान-प्राप्ति समिति भी गठित की गयी, जिसके तत्त्वावधान में आगे का कार्यक्रम चलाने का निश्चय हुआ। समिति के सभी सदस्यों के लिए बीघे में कट्ठा के हिसाब से अपनी जमीन का हिस्सा देना लाजिमी माना गया। कार्यकर्ताओं ने अपनी जमीन का आवश्यक हिस्सा देने की घोषणा भी की।

जिन जिलों में श्री शंकररावजी की यात्रा हुई है, वहाँ के सार्वजनिक वातावरण में एक हलचल शुरू हुई है। लोगों की यह धारणा कि भूदान समाप्त हो गया, बदलने लगी है, और यह विश्वास जगने लगा है कि दानयज्ञ की ज्वाला एक बार फिर जोरों से धधकने वाली है।

'नई तालीम' का 'रवीन्द्र शतवार्षिकी विशेषांक'

"नई तालीम" मासिक पत्र का यह अंक रवीन्द्रनाथ की शतवार्षिकी के अवसर पर प्रकाशित किया गया है। इस अंक में रविबाबू के शिक्षा-विषयक विचारों को व्यवस्थित ढंग से सँजोया गया। बहुमुखी प्रतिभा-सम्पन्न रविबाबू एक अच्छे शिक्षा-शास्त्री भी थे। 'विश्वभारती' शांतिनिकेतन, जिसकी कल्पना विश्व की समस्त संस्कृतियों के संगम-स्थान के रूप में की गयी है, उनकी शिक्षा-विषयक विचारों की प्रयोगस्थली है। यह ठीक ही हुआ कि इस अवसर पर नई तालीम जगत् ने उनके शिक्षा विषयक विचारों पर विशेषांक निकाल कर श्रद्धांजलि अर्पित की। इसमें रविबाबू के खुद के लिखे हुए लेख भी हैं और उनके विचारों पर अन्य उनके निकट सहयोगियों के भी कुछ लेख हैं। साथ में गुरुदेव सम्बन्धी संस्मरण भी हैं। रविबाबू की कुछ उच्च कोटि की कविताएँ भी हिन्दी में दी गयी हैं। अन्त में गुरुदेव के शिक्षा विषयक साहित्य की जानकारी एक लंबे परिशिष्ट के रूप में दी गयी, जिससे हर व्यक्ति उनके शिक्षा सबंधी विचारों पर गहराई से अध्ययन करना चाहे तो कर सकते हैं। अंक जानकारी की दृष्टि से उत्तम और संग्रहणीय है। इसमें कुछ चित्र भी दिये गये हैं।

अ० भा० सर्व सेवा संघ-प्रकाशन

अप्रैल १९६०

(१) महादेव भाई की डायरी : महादेव देसाई		५)००
(२) लोकराज्य	: शंकरराव देव	०)२५
(३) लोक स्वराज्य	: जयप्रकाश नारायण	०)५०
(४) Swaraj for the People : Jai Prakash Narayan.		१)००
(५) Thoughts on Assam Disturbances		१)००
(६) Decentralized Economic Order.		०)५०
(७) Report of the Study Team to Yugoslavia.		१)००

मई १९६० : नये प्रकाशन

(१) सर्वोदय-सम्मेलन का संदेश	०)२५
(२) Vinoba—Man & Message by Suresh Ram.	१)००

संशोधित एवं परिवर्धित संस्करण

(१) आत्मज्ञान और विज्ञान : विनोबा		१)
(२) सफाई	: वल्लभस्वामी	१)

जून १९६० में प्रकाशित होने वाली पुस्तकें

(१) विकेन्द्रित अर्थतन्त्र
(२) कोरापुट रिपोर्ट (हिन्दी)
(३) शांति-सेना (अंग्रेजी) : विनोबा
(४) बाल भास्कर (बच्चों के लिए सचित्र)
(५) पशुलोक में पाँच वर्ष : पारनेरकर
(६) दृष्टि के साथ पर्याप्त चारा : परमेश्वरी प्रसाद गुप्त
(७) हमारा कर्तव्य (सर्वोदय-सम्मेलन का अध्यक्षीय भाषण)
—जयप्रकाश नारायण
(८) गीता प्रवचन (बंगला : नागरी लिपि)
(९) मधुमेह (प्राकृतिक चिकित्सा)
(१०) Science & self knowledge : Vinoba.
(Revised & Enlarged edition)

—अखिल भारत सर्व सेवा संघ-प्रकाशन, राजघाट, काशी

श्री नवकृष्ण चौधरी काशी में

सर्व सेवा संघ के अध्यक्ष श्री नवकृष्ण चौधरी ता० १२ जून को काशी पहुँचेंगे और ता० १६ की दोपहर तक काशी में रहेंगे। उससे पहले ता० १ जून को वे विनोबाजी से मिलने के लिए असम जा रहे हैं।

सम्पादन-मंडल की बैठक

सर्व सेवा संघ द्वारा नियुक्त सर्वोदय-साहित्य-सम्पादन-मण्डल की पहली बैठक ता०१५-१६ जून को काशी में होगी। संघ के अध्यक्ष श्री नवकृष्ण चौधरी भी बैठक में उपस्थित रहेंगे।

इस अंक में

गोरखपुर में सर्वोदय-शिविर

गोरखपुर शहर में जिले के भूदान, सर्वोदय एवं खादी-ग्रामोद्योग के कार्यकर्ताओं का एक पंचदिवसीय शिविर, १८ से २३ जून तक होना निश्चित हुआ है।

शिविर की तैयारी हो रही है। आशा है, गोरखपुर के पड़ोसी जिलों के भी प्रमुख सर्वोदयी कार्यकर्ता भाग लेंगे।

शिविर का आचार्यत्व प्रो० राममूर्तिजी तथा समावर्तन श्री दादा धर्माधिकारी करेंगे। श्री कपिल भाई, श्री करण भाई आदि प्रमुख लोग शिविर में भाग लेंगे।

शिविरार्थी विशेष जानकारी के लिए गांधी स्मारक निधि, तुर्कमानपुर, गोरखपुर से सम्पर्क स्थापित करें

आचार्य राममूर्तिजी १८ से २३ तक एवं दादा धर्माधिकारीजी २१ से २३ तक रहेंगे।

साप्ताहिक घटना-चक्र

[पृष्ठ २ का शेष]

लोगों की ओर से सम्पूर्ण अहिंसा का पालन किया गया—न केवल स्थूल दृष्टि से, बल्कि वचन और मन से भी। इसका सारा श्रेय पादरी किंग और उनके साथियों को है। इस बार भी गोरे लोगों के आक्रमण और हिंसक हमले के बावजूद नीग्रो ने सब कुछ धीरज और शांति के साथ सहा है, उत्तेजित गोरे स्त्री और पुरुषों ने रंगभेद का विरोध करने वाले नीग्रो तथा उनका साथ देने वाले गोरे लोगों को भी मारा, पीटा, घायलों को गोरे टैक्सीवालों ने अस्पताल ले जाने से इन्कार किया, शहर की गोरी पुलिस ने नीग्रो लोगों के संरक्षण में जानबूझ कर किनाराकशी की। यह सब कुछ हुआ, पर नीग्रो लोग शांत और अहिंसक रहे।

छः बरस बाद मंटगुमरी में फिर से एक नये और भव्य सत्याग्रह की शुरुआत हो रही है। अमेरिका की केंद्रीय सरकार और दक्षिणी राज्यों की राज्य-सरकारों के बीच भी इस प्रश्न को लेकर एक विवाद खड़ा हो गया है, जिसके परिणाम दूरगामी हो सकते हैं। रंगभेद का विरोध करने वालों की रक्षा करने के लिए केनेडी की केंद्रीय सरकार ने अलबामा में अपनी पुलिस भेजी, लेकिन अलबामा राज्य के गवर्नर ने केंद्रीय सरकार को चेतावनी दी कि वे यहाँ के अमन-चैन के मामले में दखल न दें और केन्द्रीय पुलिस को काम नहीं करने दिया गया। दूसरे कुछ राज्यों ने अलबामा के गवर्नर का समर्थन किया है। उधर पादरी मार्टिन ल्यूथर किंग और नीग्रो जनता रंगभेद जैसे अन्याय का मुकाबला करने के लिए कटिबद्ध हैं। अगले कुछ दिनों में अलबामा से आने वाले समाचारों की बाट दुनिया उत्सुकता से देखेगी।

—सिद्धराज

२६-५-६१

श्रीकृष्णदत्त भट्ट, अ० भा० सर्व सेवा संघ द्वारा भार्गव भूषण प्रेस, वाराणसी में मुद्रित और प्रकाशित। पता : राजघाट, वाराणसी-१, फोन नं० ४३९१
पिछले अंक की छपी प्रतियाँ १०,००० : इस अंक की छपी प्रतियाँ १०,००० एक अंक : १३ नये पैसे
वार्षिक

संपादक : सिद्धराज ढड्ढा

वाराणसी : शुक्रवार | ९ जून '६१ | वर्ष ७ : अंक ३६

जैसे अंधकार का मुकाबला प्रकाश से होता है वैसे

संग्रह का मुकाबला दान से ही हो सकता है

–विनोबा

[आजकल विनोबाजी की यात्रा असम के नार्थ लखीमपुर जिले में चल रही है। इस जिले की विशेषता को ध्यान में रखते हुए विनोबाजी ने कहा कि इस युग में कोई स्थान दुनिया में अलग नहीं रह सकता है, इसलिये हमारी दृष्टि व्यापक होनी चाहिये। यहाँ पर उनके एक भाषण के मुख्य अंश दिये जा रहे हैं। —सम्पादक]

यह जिला हिन्दुस्तान का पूरब का जिला है। इसलिए यहाँ बिलकुल शांति है। दूसरे जगहों के झगडे यहाँ जल्दी नहीं पहुँचते हैं। ब्रह्मपुत्र नदी ने बहुत-से झगडों को नीचे दक्षिण की तरफ रोक लिया है और हिमालय ने बहुत-से झगडों को उत्तर की तरफ रोक रखा है। लेकिन इस युग में ऐसे सीमा-प्रदेश खतरे के स्थान होते हैं। इधर पहले से ही शांति थी। इस प्रदेश में बहुत नदियाँ पानी लाती थीं और लोगों के हृदय को शीतल बनाती थीं। वे आज भी बहती हैं और लोक-हृदय को शीतल बनाने का काम करती हैं। लेकिन अभी दुनिया में सब जगह झगडे चल रहे हैं, समाधान नहीं है। कहीं आर्थिक दुख है, कहीं राजनैतिक झगडे हैं, कहीं सामाजिक जुल्म है, कहीं भाषा के झगडे हैं, कहीं जाति-विद्वेष है। ऐसे सब कारणों से दुनिया में असंतोष दिखता है। धीरे-धीरे यह प्रदेश भी एक कोने में नहीं दिखेगा। यहाँ रेलवे आने वाली है। हवाई जहाज आते ही हैं और नये-नये रास्ते बनेंगे। इस तरह दुनिया से संबंध रहेगा। इसलिए यह नहीं मानना चाहिए कि हम कोने में हैं, दूर हैं, तो बचेंगे। कौन बचेंगे? जो अपना वातावरण पैदा करेंगे। बाहर की हवा यहाँ नहीं आयेगी और यहाँ की हवा बाहर नहीं जायेगी, यह अब नहीं होगा। यहाँ तिब्बत की हवा आयेगी, बर्मा की आयेगी, ब्रह्मपुत्र के दक्षिण की हवा यहाँ आयेगी। आप उसे रोक नहीं सकेंगे। इसलिए हमें अपनी जोरदार हवा बनानी होगी, ताकि यहाँ की हवा बाहर जाय। लोग कहते हैं कि अब दरवाजा खुला है। दुनिया की हवा भारत में आयगी। हमने कहा, हाँ भाई, दरवाजा खुला है। यहाँ की हवा बाहर जायगी। एक तरफी हवा नहीं बहेगी। लेकिन हम हवा बनायेंगे, तभी ऐसा होगा न? हम ऐसा पराक्रम का काम करें, ताकि दुनिया पर असर पडे।

पराक्रम के काम याने क्या? क्या हिंसा की शक्ति बढ़ायेंगे? नहीं। हिंसा की शक्ति हम न बना सकेंगे, न बनाना हम चाहते हैं। रूस और अमेरिका में बहुत बड़े-बड़े बम, हजारों को खत्म करने वाले शक्तिशाली बम बन रहे हैं। यह शक्ति रूस और अमेरिका में है। दूसरे देशों में भी कम-बेसी है। हम उन देशों से आगे नहीं बढ़ेंगे। उससे लाभ नहीं होगा। आप आग लगायें तो मैं भी आग लगाऊँ, ऐसा करेंगे, तो दोनों जल मरेंगे। आप अगर आग लगायेंगे तो मैं पानी लाऊँगा। मैंने आग लगायी, तो आप पानी लायें। दो आगों से मामला ठंडा नहीं बनेगा। ठंडा तो तब बनेगा, जब आप पानी लायेंगे।

अंधकार का मुकाबला प्रकाश से करना होगा। द्वेष का प्रेम से करना होगा। लोग कंजूस बनते हैं, बहुत बड़ा संग्रह करते हैं, उसका मुकाबला हम दान से करते हैं। संग्रह का मुकाबला चोरी से नहीं होगा। वह संग्रह करता है, तो मैं चोरी करूँगा, यह संग्रह की प्रतिक्रिया है। इसलिए संग्रह का प्रतिकार दान के द्वारा ही होगा। चोरी से प्रतिकार करेंगे तो क्या होगा? यह तो नहीं हो सकता है कि हम नाप-तौल के चोरी करेंगे। ताला तोड़ा, दीवाल तोड़ी और दस लाख रुपये हैं तो सौ लेंगे, ज्यादा लेना ठीक नहीं। सौ लेंगे या हजार लेंगे और बाकी नौ लाख निन्यानबे हजार वहीं रखेंगे, ऐसा तो चोर नहीं करेगा। वह सब लेगा, अपने किसी संग्रह में रखेगा। इस तरह चोरी चलती रहेगी। इससे तो मसला हल नहीं होगा। इसलिए यह मसला दान से ही हल होगा।

हमने सोचा कि भारत में हम दान की धारा जोरों से चलायेंगे। ब्रह्मपुत्र की धारा जितनी जोरदार, उतनी ही दानधारा जोरदार रहेगी। यह प्रेम और करुणा से ही होगा। लोग इन दिनों कहते हैं कि चीन का डर है। मैं कहता हूँ कि भाई चीन का कोई डर नहीं है।

हमारे हृदय में जो कंजूसी है, उसका डर है। अक्सर बहनें डरपोक होती हैं। गहने पहनती हैं तो डर खरीदती हैं। पचास रुपया देकर गहना नहीं, डर खरीदती हैं।

लेकिन ये ही गहने गरीबों के काम में, दुखियों के काम में देती हैं तो डर नहीं रहेगा। रावण सीता पर आक्रमण करने की हिम्मत नहीं कर सका। सीता ने उसके और अपने बीच घास का तिनका रखा और कहा कि तू मेरे लिए इस घास के तिनके के समान है, इतनी तेरी योग्यता है। मैं तुझसे नहीं डरती। अकेली सीता इतनी निर्भय थी। यह सीता की निर्भयता बहनों में क्यों नहीं आ सकती?

बड़ा धनी व्यापारी है। गरमी के दिनों में बाहर सोने की इच्छा होती है, लेकिन नहीं सो सकता, क्योंकि अंदर माया रखी है। इसलिए वहीं पंखा चलाता रहेगा। 'बहुत गरमी है,' कहेगा, पर खुली सुन्दर हवा का उपयोग नहीं कर सकेगा; क्योंकि घर में धन पड़ा है। जहाँ धन है, वहाँ डर है।

धन का उपयोग दान में किया तो किसी का डर नहीं रहेगा। यह हमारा दोस्त है, प्रेमी है, भाई है, साथी है, रिश्तेदार है—ये सब हमारे हैं। सब हमारे लिए मर मिटने के लिए राजी हैं; क्योंकि मौके पर हमने इनको मदद दी है। इस खेत में हमने बो रखा है, उस खेत में हमने बो रखा है, तो हम भूखे क्यों मरेंगे? इतने सारे खेतों में हमने बोया है, यह भी उगेगा, वह भी उगेगा। हमने दान दे रखा है। दान दिया याने बोया, फेंका नहीं। बोने से क्या होता है? हमने एक बीज बोया तो भगवान सौ बीज देता है। हमने दो हाथों से दिया तो हजारों हाथों से हमें मिलेगा। लोग क्या कहते हैं कि हे भगवान हम एक बीज बोते हैं तो तू हमें सौ बीज देता है। हम एक भी बीज नहीं बोयेंगे तो तू हमें निन्यानबे बीज दे। यह जीवात्मा भगवान से बात करता है। मैंने एक कम किया, तो तुम भी एक ही कम करो। तो भगवान कहता है कि मैं गुणाकार भी सीखा हूँ। एक के बदले मैं सौ देता हूँ। १×१०० = १०० और ०×१०० = ०। हम भगवान को ठगना चाहते हैं। हम कहते हैं कि तुम उदार हो, तुम दाता हो। भगवान कहता है, तुम जैसा बोओगे, वैसा ही पाओगे। बबूल बोया, तो बबूल पाओ। आम की गुठली बोओ, तो आम पाओ। अगर मैं कहूँगा कि भगवान मेरे पास आम का बीज नहीं था, इसलिए मैंने बबूल बोया, लेकिन तुम मुझे कृपा कर के आम दो। तो भगवान कहेगा, मैं तुझे कृपा कर के बबूल ही दूँगा, आम नहीं मिल सकता। तुम द्वेष करो तो तुम्हें सौ गुना द्वेष मिलेगा और प्रेम करो तो सौ गुना प्रेम मिलेगा। यह है भगवान का और समाज का न्याय। समाज को जो देंगे, वही पायेंगे। जितना देंगे, उससे सौ गुना पायेंगे।

(आजाद, नार्थ लखीमपुर, [illegible])

साप्ताहिक घटना-चक्र : एक दृष्टिपात

यह सैनिक-शिक्षा !

भारत सरकार ने तय किया है कि भिन्न-भिन्न प्रांतों में हिन्दुस्तान की सेना के लिए अच्छे अफसर तैयार करने की दृष्टि से सैनिक-स्कूल खोले जायँ, जिनमें छोटी उम्र से ही बालकों को प्रवेश दिया जाय और अच्छे सिपाही और अफसर बनाने की तालीम उन्हें दी जाय। योजना के अनुसार इन स्कूलों में ९ साल की उम्र के बच्चों का प्रवेश किया जायगा और ८ वर्ष तक वे इन शालाओं में शिक्षा पायेंगे। उसके बाद ऊँची सैनिक तालीम के लिए वे सैनिक कालेजों में जा सकेंगे।

जब तक देश में सेना की आवश्यकता है, तब तक उसे अच्छे सैनिक और अच्छे अफसर चाहिए, यह स्वाभाविक है। लेकिन इन "सैनिक-स्कूलों" की जो योजना सरकार ने बनायी है, उनमें दो-एक बातें ऐसी हैं, जो गम्भीरता से विचार करने योग्य हैं।

सैनिक-काम के लिए विशेष प्रकार की योग्यता और तालीम की आवश्यकता हो सकती है, यह ठीक है। सैनिक-काम के अलावा भी जीवन के दूसरे क्षेत्रों में ऐसे विविध काम हैं, जिनके लिए विशेष तालीम और योग्यता की आवश्यकता है। डाक्टर, वकील, इंजीनियर सभी को अपने-अपने काम की दृष्टि से विशेष प्रकार की शिक्षा की जरूरत होती है और राष्ट्र में उसका इंतजाम भी होता है। पर सेना में जाने वालों के लिए इस तरह बचपन से ही जो अलग शिक्षण का इंतजाम सोचा गया है, वह उचित नहीं मालूम होता। पुराने जमाने में भी रक्षण का काम एक विशेष जाति के सुपुर्द था। क्षत्रियों का यह कर्तव्य माना जाता था कि वे समाज के रक्षण की जिम्मेदारी वहन करें, इसके लिए शस्त्रों के उपयोग में दक्षता हासिल करने के लिए उन्हें तालीम भी लेनी पड़ती थी, लेकिन तब भी उन्हें इस प्रकार समाज से अलग रख कर तालीम देने की योजना नहीं थी। कृष्ण और सुदामा, अर्जुन और अश्वत्थामा एक ही गुरु से शिक्षा पाते थे। उनमें सदाचार, समाज हित, न्यायप्रियता, वफादारी, सत्य के प्रति आस्था इत्यादि गुणों का समान रूप से विकास करने का लक्ष्य रहता था। यह सही है कि उन दिनों आज की तरह जनतंत्र का ढोल नहीं पीटा जाता था, पर जनतंत्रीय कहे जाने वाले युग में एक सिपाही में इन सामान्य सद्गुणों के बजाय हुकुम की तालीम, क्रूरता, नृशंसता आदि गुणों (!) का विकास ज्यादा आवश्यक माना जाता, ताकि वे "अलिप्त" रह कर अपना फर्ज बजा सकें। पुराने जमाने का सैनिक रक्षण का काम एक नागरिक जिम्मेदारी के तौर पर निभाता था, आज का सैनिक खरीदे हुए नौकर के रूप में काम करता है। इसके लिए सामान्य नागरिकों से भिन्न उसके शिक्षण की आवश्यकता महसूस की जाती है। हिन्दुस्तान को कुछ नये सिरे से सोचने का अवसर मिला है, लेकिन दुर्भाग्य से वह भी पुरानी घिसी-पिटी रूढ़ियों और परम्पराओं से अपने को मुक्त नहीं कर पा रहा है।

दूसरी बात इन सैनिक-स्कूलों के खर्चे की है। योजना में बताया गया है कि हर बालक के ऊपर वर्ष में १६०० से लगा कर २००० रुपये तक खर्च होगा। इसके अलावा करीब तीन सौ रुपया पोशाक आदि का अलग खर्च होगा। इस तरह हर बालक के पीछे करीब-करीब दो सौ रु. हर माह खर्च आवेगा। जैसा गुजरात के मूक सेवक तथा शिक्षा-शास्त्री श्री जुगतरामभाई दवे के इसी अंक में अन्यत्र प्रकाशित लेख में कहा गया है, "हमारे इन नौजवानों को वीर सैनिक बनने की तालीम देने की अपेक्षा शायद राजा-महाराजाओं के विलासी राजकुमारों जैसी तालीम देने की कल्पना है।"

प्रकाश का युग या अंधकार का

आज के युग को अक्सर ज्ञान और प्रकाश का युग कहा जाता है। पुराने जमाने को लोग अंधकार का युग कहते थे। पुराने जमाने में जो कुछ भी होता रहा हो, उस बहस में हम नहीं पड़ेंगे, लेकिन आज के इस प्रकाश के युग में भी जिस प्रकार की घटनाएँ दुनिया में हो रही हैं, वे सचमुच भयावह हैं। अफ्रीका के अंगोला प्रदेश में पुर्तगाल की साम्राज्यशाही की ओर से जो दमनचक्र चल रहा है, वह कल्पनातीत है। अभी कुछ ही दिनों पहले जिस तरह तिब्बत से हजारों लोगों के कत्लेआम के समाचार आते थे, उसी प्रकार अंगोला में भी वहाँ की जाति की जाति को नेस्त-नाबूद करने के प्रयत्न किये जा रहे हैं, ऐसा मालूम होता है। सही संख्या तो कोई नहीं बता सकता, लेकिन इसमें कोई संदेह नहीं है कि बीसों-पचासों हजार आदमी अंगोला में मौत के घाट उतारे गये हैं सिर्फ इसलिए कि उन्होंने पुर्तगाल के दमन के खिलाफ आवाज उठायी!

उधर दक्षिणी कोरिया में पिछले दिनों जो उलटफेर हुआ और सेना ने शासन अपने हाथ में लिया, उन्होंने भी अखबारी रिपोर्टों के अनुसार उपद्रवकारियों और गुण्डों को सजा देकर बीसों हजार आदमियों को गिरफ्तार किया है। आज की ये सभ्य कहलाने वाली सरकारें और राष्ट्र किस प्रकार के काले और अन्धकारमय कारनामे इतिहास के पन्नों में जोड़ते चले जा रहे हैं, यह गम्भीरता से सोचने का विषय है।

एक चुनौती

भारत सरकार इस बारे में कानून बनाने का सक्रिय रूप से विचार कर रही है कि विधान में सन् १९६५ तक राज के कारबार में अंग्रेजी की जगह राष्ट्र की भाषा को स्थान देने की जो बात है, उसमें परिवर्तन किया जाय। विधान बनाते समय, आजादी की पहली उमंग में हम लोगों ने बहुत ऊँचे-ऊँचे सपने देखे थे और बड़े-बड़े संकल्प किये थे। विधान में हमने जाहिर किया कि हम इस देश से शराबखोरी नेस्तनाबूद करेंगे, इस देश में बेकार कोई नहीं रहेगा, इस देश में अंग्रेजों के जमाने की विदेशी भाषा की जगह हिन्दी और अन्य प्रांतीय भाषाओं में सारा कारोबार और शिक्षण चलेगा, दस वर्ष के अन्दर-अन्दर इस देश में हर एक बालक-बालिका के लिए निःशुल्क प्राथमिक शिक्षण का प्रबन्ध होगा इत्यादि। आज एक-एक करके हमारे वे सपने टूट रहे हैं और उन बातों को हम छोड़ते जा रहे हैं। कोशिशों के बावजूद भी आदमी किसी काम को पूरा न कर सके, यह समझा जा सकता है, उसमें दोष भी नहीं है, लेकिन क्या हम कह सकते हैं कि पिछले १५ वर्षों में हमने इन सब बातों के लिए ईमानदारी के साथ कोशिश की! आजादी के प्रारम्भिक दिनों में जो उमंग और जोश लोगों के दिल में था, उसके कारण निहित स्वार्थ वाले लोग दबे हुए थे। ज्यों-ज्यों समय बीत रहा है, हर क्षेत्र में निहित स्वार्थवाले अपना सिर ऊँचा कर रहे हैं और राष्ट्र के शुभ संकल्पों के मार्ग में सची-झूठी बाधाएँ खड़ी कर रहे हैं। शराबबंदी और अंग्रेजी भाषा को हटाने का प्रश्न इसके ज्वलन्त उदाहरण हैं। अखबार, विज्ञापन आदि प्रचार के साधन भी निहित अधिकांश स्वार्थ वाले लोगों के हाथ में होने से इन चीजों के खिलाफ वातावरण भी बनाया जा रहा है। राष्ट्र के नेताओं में इन बातों के बारे में एकमत नहीं है। राष्ट्र को एक निश्चित दिशा की ओर ले जाने वाली कोई शक्ति नहीं रही है, ऐसा लगता है। राष्ट्र की बागडोर जिनके हाथ में है, वे अपने क्षुद्र स्वार्थों की होड़ में फँसे हुए हैं। राष्ट्र के हितचिंतकों के लिए यह सारी बातें एक चिन्ता के रूप में खड़ी हैं।

एक प्रेरणादायी बलिदान !

घटना इस सप्ताह की नहीं, कुछ पुरानी है, जो डाक द्वारा देर से प्राप्त हुई है, पर वह जाहिर करती है कि दुनिया की गतिविधि से अनभिज्ञ, हमारी शांति की बातों से भी जिसे कोई सरोकार नहीं, ऐसी एक अबोध, अनपढ़ बालिका के हृदय में भी बुराई के खिलाफ कैसी तीव्र भावना प्रकट हो सकती है! वैसे आत्महत्या समर्थन-योग्य बात नहीं है, लेकिन जिस मानसिक स्तर में वह बालिका थी, उसमें उसकी वृत्ति आत्महत्या नहीं, बल्कि अहिंसक प्रतिकार और बलिदान का उत्तम नमूना कहा जायगा। हमारे साथी कार्यकर्ता ने घटना का जो वर्णन भेजा है, वह इस प्रकार है :

"मार्च महीने में प्रायः अनाज के भाव तेजी पर होते हैं। किसान के पास पैसे का अभाव होता है, उधार मिलता नहीं। इन भुखमरी के दिनों में "बुभुक्षितः किं न करोति पापं" के अनुसार कुछ व्यक्ति खड़े खेत से फसल चोरी से काट लेते हैं। इसी भाँति पड़ोसी गाँव के दो पिता-पुत्र हमारे गाँव के एक अछूत भाई का खेत काट कर ले गये। लड़के की षोडश-वर्षीया पत्नी को यह ज्ञात हो गया। उसने ऐसे चोरी के अन्न का भोजन बनाने से इन्कार किया। उसको मारा-पीटा, धमकाया गया होगा। विवश होकर उसने भोजन तो तैयार किया। पर खुद उस अन्न से बना भोजन ग्रहण करना उपयुक्त नहीं समझा। पति और ससुर को भोजन करा देने के बाद घर में एकान्त मिलने पर स्नान करके नवीन वस्त्राभूषण से सुसज्जित होकर घर के भीतर जाकर गले में फाँसी लगा कर अपने पार्थिव शरीर को समाप्त कर दिया!" —सिद्धराज ढड्ढा

"आहार और पोषण"

लेखक—झवेरभाई पटेल, प्रकाशक—अखिल भारत सर्व सेवा संघ-प्रकाशन, काशी; मूल्य : ५० नये पैसे।

आहार-विज्ञान पर सरल और सुबोध ढंग से कथोपकथन में लिखी गयी यह पुस्तक प्रत्येक व्यक्ति के पढ़ने लायक है। इससे थोड़े में आहार संबंधी अच्छा ज्ञान प्राप्त हो जाता है। पुस्तक में एक प्रकार की साहित्यिक रोचकता, सर्वव्यापी सरलता और वैज्ञानिक विचारणा है। खान-पान संबंधी सर्वोदय का दृष्टिकोण इसमें बहुत अच्छे ढंग से समझा दिया गया है। नीचे स्वास्थ्य संबंधी प्रश्नों के दे देने से पुस्तक की उपयोगिता और बढ़ गयी है। पढ़ो और विचार कर धारण करो का यह एक सरस सूत्र है। संग्रहीत उपयोगी पुस्तकों में इसका होना आवश्यक है।

—'सम्मेलन पत्रिका', प्रयाग

पंचायती राज बनाम ग्राम-स्वराज्य

आर्थिक विकेन्द्रीकरण का प्रश्न

पूर्णचन्द्र जैन

पंचायती राज की स्थापना के कदम राजस्थान और आंध्र प्रदेश में उठाये गये हैं। अन्य प्रदेशों में भी पंचायती राज कायम हो, ऐसा केन्द्रीय व राज्य-सरकारों का लक्ष्य है। सामान्यतः यह धारणा है कि अगले आम चुनावों के पूर्व सारे देश में पंचायती राज का ढाँचा खड़ा कर दिया जायगा। यह शुभ है कि इस बारे में कोई खास मतभेद किसी ओर से भी नहीं है।

यह भी आकांक्षा देश के कई एक अच्छे माने-जाने लोगों की है कि "पंचायती राज" में गांधी-विनोबा की कल्पना का "ग्राम-स्वराज्य" साकार हो। इन लोगों में पक्ष और सत्ता की राजनीति को समय से पिछड़ी हुई मान कर उसे छोड़ देने वाले व्यक्ति हैं तो वैसे भी लोग हैं, जो उस राजनीति में आज भी पूरा विश्वास करते और उसके सूत्र-संचालकों में अपना स्थान रखते हैं।

इस प्रसंग में दो-तीन बुनियादी सवाल विचारणीय हैं। देश की आजादी के बाद पंचायती राज का विचार जिन लोगों ने देश के सामने रखा और उसका स्वरूप स्थिर करते हुए उसका ढाँचा खड़ा करने की दिशा में जिन लोगों ने कदम उठाया, उनकी इस सम्बन्ध की भावना, आकांक्षा व कल्पना क्या थी और क्या है? गांधीजी हिन्दुस्तान के गाँवों का जो चित्र आजादी के बाद देखना चाहते थे, वही क्या इन लोगों की कल्पना में भी था? उस ढाँचे के लिए जो कानून आज बना है, उससे ही वह चित्र बनता जायगा या अभी यह उस दिशा का एक कदम मात्र है, उस पूरे चित्र के लिए इस ढाँचे व कानून में बुनियादी तक कुछ शोधन, संशोधन हो सकते हैं?

यह न मानने का कोई कारण नहीं है कि पंचायती राज के विचार के प्रवर्तकों की मंशा भी देश में गांधी का भी ग्राम-स्वराज्य कायम करने की ही है। अर्थात् सत्ता जिनके हाथ में है, वे भी वस्तुतः सत्ता का विकेन्द्रीकरण चाहते हैं, इसमें शंका करने की जरूरत नहीं होनी चाहिए।

लेकिन पंचायती राज का जो कानून है, उसकी रचना और उसका व्यवहार इस आशय के कितना अनुकूल अभी तक हुआ है, होता दिखायी देता है या हो रहा है, यह अभी से ध्यान नहीं दिया जायगा तो इच्छा और आशा के विपरीत परिणाम सामने आने का भय है। हमारा मानना है कि इसमें अभी से सावधानी बरतने की जरूरत है। *सरकार में गये हुए लोग यह करें।* लेकिन अधिक आवश्यकता लोक-मानस को सत्ताभिमुख या सत्ता पर निर्भर रहने की वृत्ति से मुक्त करने की है।

पंचायती राज के विचार का अमल किस प्रकार से हो कि सत्ता का सही अर्थ में विकेन्द्रीकरण हो सके, लोगों का अपना अभिक्रम जागे, वे महसूस करें कि उन्हें ही कुछ करना है और उन पर जिम्मेदारी आयी है, इस बारे में सर्व सेवा संघ व उसके कार्यकर्ताओं ने समय-समय पर अभिप्राय प्रकट किया है। खादी-ग्रामोद्योगों के, देश की मूलभूत अर्थनीति के रूप में, विकास की आवश्यकता और ग्राम-स्वावलम्बन के बारे में भी पूरा विचार, तथा नया मोड़ वगैरह का सर्वांगीण कार्यक्रम, संघ द्वारा समय-समय पर सामने लाया गया है।

आज माँग उठने लगी है कि पंचायती राज के ढाँचे के अन्तर्गत जो पंचायतें, पंचायत-समितियाँ और जिला-परिषदें बनी हैं, उन्हें ही खादी-ग्रामोद्योग आदि का कार्य भी सिपुर्द किया जाय। हाल ही में अखिल भारतीय पंचायती परिषद का अधिवेशन जयपुर में पंचायती राज-योजना के एक प्रबल समर्थक और उसकी मौजूदा कमियों का स्पष्ट संकेत करने वाले सर्वोदयी विचारक श्री जयप्रकाश नारायण की अध्यक्षता में हुआ था। उस समय राजस्थान के मुख्य मंत्री श्री मोहनलाल सुखाडिया ने उपर्युक्त विचार अपने भाषण में जाहिर किया और सर्व सेवा संघ का ध्यान उस ओर आकर्षित किया था।

दरअसल इसमें दो राय हो ही नहीं सकती कि यदि ग्राम-व्यवस्था को सर्वांग सक्षम बनाना है और इसे सच्चे लोक-स्वराज्य का ठोस आधार मान कर वैसी संयोजना करनी है तो ग्रामवासियों को सत्ता व साधनों के उपयोग का पूरा, खुला अवसर मिलना चाहिए। सर्व सेवा संघ का खादी-ग्रामोद्योग आदि विषयक जो नया मोड़ का, स्वावलम्बी इकाइयों के निर्माण का, कार्यक्रम है उसमें यह निहित ही है कि आर्थिक व सामाजिक विकास का जिम्मा गाँववालों के खुद के हाथ में हो। संघ तो यह भी मानता है कि आर्थिक विकास की इस प्रकार की विकेन्द्रित योजना नहीं बनेगी और नहीं अमल में आयेगी तो एक के बाद दूसरी पंचवर्षीय योजनाओं से देश का ठोस समग्र विकास नहीं हो सकेगा। उसके विपरीत देश में सामाजिक न्याय व समानता की स्थापना की एवज विषमता व बेरोजगारी बढ़ने तथा निहित स्वार्थों के शक्तिशाली होने व वर्ग विशेष के एकांगी विकास की परिस्थितियाँ ज्यादा-ज्यादा मजबूत होती जायेंगी।

इस दृष्टि से यदि सत्ता का ग्राम-स्तर पर विकेन्द्रीकरण अभिप्रेत है और आंचलिक विकास वहाँ के लोगों द्वारा ही अपेक्षित है तो, खादी-ग्रामोद्योग आदि कार्य की संयोजना भी पंचायती राज के तंत्र के जिम्मे ही होनी चाहिए। मुख्यतः सवाल यही है कि सत्ता का सही सच्चा विकेन्द्रीकरण हो रहा है या नहीं और लोकतांत्रिक विकेन्द्रीकरण के फलस्वरूप स्वतंत्र लोक-शक्ति का निर्माण हो रहा है या नहीं! अभी यह साफ खतरा दीख रहा है और कहीं-कहीं उसका प्रत्यक्ष रूप सामने आया है कि सत्ता के विकेन्द्रीकरण की एवज केन्द्रीय सत्ता को, और सत्तारूढ़ पक्ष को मजबूत व निरंकुश बनाने में इस पंचायत राज की इकाइयों का दुरुपयोग हो रहा है।

जो राजनैतिक विचारधारावाले पंचायत आदि संस्थाओं को इस उपयोग (*या दुरुपयोग!*) को ठीक समझते हैं और केन्द्रीय शासन को लोकतांत्रिक विकेन्द्रीकरण या पंचायती राज की स्थापना के लिए जरूरी मानते हैं, उनसे कुछ कहना नहीं है। वे एक तरह से दूसरी वैसी ही राजनैतिक विचारधारा के अनुगामी हैं, जिसमें लोकशाही की स्थापना के लिए एक बार सर्वहारा वर्ग के अधिनायकत्व की स्थापना को अनिवार्यतः आवश्यक माना गया है।

स्पष्ट ही जब तक पंचायती राज की स्थापना या लोकतांत्रिक विकेन्द्रीकरण के साथ पक्ष को मजबूत करने और पक्ष के केन्द्रिय, प्रादेशिक आदि सरकारों की जकड़ को कम न करने की प्रकट या प्रछन्न दृष्टि काम करती है, तब तक सत्ता का वास्तविक विकेन्द्रीकरण और ग्राम-स्वराज्य की स्थापना आकाश-कुसुम ही रह सकती है।

इसके परीक्षण का समय भी दूर नहीं रहा है। आगामी चुनावों में स्पष्ट हो जायेगा कि उम्मीदवारों के चयन, उनके निर्वाचन, चुनाव के बाद उनके रवैये व कार्यकलाप के नियंत्रण आदि का गाँव-गाँव के लोगों अर्थात् मतदाताओं को कितना मौका दिया जाता है! कितनी उन्हें उसके लिए छूट मिलती है! सर्व सेवा संघ ने मतदाता-मंडल आदि का विचार सामने रख कर इसके लिए प्रत्यक्ष कार्यक्रम दिया है। पंचायतों, पंचायत-समितियों आदि के सदस्यों व कार्यकर्ताओं का यदि पक्षों द्वारा किसी भी रूप में उपयोग किया गया तो पंचायती राज की यह इकाइयाँ सत्ता-लोलुप राजनैतिक खिलवाड़ का मैदान बन जायेंगी। साफ है कि तब इनके द्वारा क्षेत्र के सामाजिक या आर्थिक किसी भी प्रकार के विकास के लिए लोक-सम्मति पाना, या सबका सहयोग हासिल करना असंभव होगा। विकास-कार्यक्रमों में जनता का आज जो पूरा उत्साह या सक्रिय योग नहीं है, वही स्थिति अधिक व्यापक हो जायेगी।

आज खादी-ग्रामोद्योग की संस्थाएँ राजनैतिक पक्षबंदी से बहुत कुछ बची हुई हैं। उनका भी पक्षबल बढ़ाने में मदद मिले, ऐसी कोशिश कभी-कभी कहीं-कहीं होती रही है। फिर भी सामान्यतः इस दल-दल से वे बच पायी हैं। लेकिन ग्राम-स्वराज्य स्थापना के प्रयोग में पंचायती राज की मौजूदा इकाइयाँ पक्षातीत रहने की कसौटी पर खरी नहीं उतरती या उस प्रकार दुरुपयोग कर लिये जाने का खतरा जब तक रहता है, तब तक उन्हें खादी-ग्रामोद्योग आदि का कार्य व उनकी योजनाएँ सिपुर्द कर देना सत्ता के विकेन्द्रीकरण की भाँति आर्थिक विकेन्द्रीकरण को भी जानबूझ कर खतरे में डाल देना होगा।

उसके अलावा आज कांग्रेस में सत्ता के विकेन्द्रीकरण के बारे में और सही अर्थ के पंचायती राज की स्थापना के विषय में जितनी एकमतता है, उतनी भी शायद खादी-ग्रामोद्योग कार्यक्रम व विकेन्द्रित अर्थ-व्यवस्था के बारे में नहीं है। कई लोग देश की आजादी के बाद खादी और ग्रामोद्योगों की बात को अनावश्यक, पिछड़ी हुई और प्रगति-बाधक मानते हैं। कुछ लोग बेरोजगारी-निवारण की दृष्टि से इसका थोड़ा उपयोग जानते हैं। वे भी गांधी विनोबा की भाँति इसे सच्ची लोकशाही और जनता के अभिक्रम स्वाभिमान व आत्मविश्वास की रक्षा के लिये आर्थिक विकेन्द्रीकरण या ग्राम-स्वावलम्बन के विचार को आधारभूत रूप में नहीं अंगीकार करते। जब यह भारी दृष्टि-भेद कांग्रेस जैसी सत्ता-अभिमुख संस्था में हो, तब आंचलिक या क्षेत्रीय विकास के नाम पर खादी-ग्रामोद्योग आदि के कार्य को परीक्षण-काल में से गुजरने वाली पंचायती राज की संस्थाओं को सिपुर्द करने में जल्दबाजी न करना ही बुद्धिमानी होगी।

पंचायती राज की विभिन्न इकाइयों के अपने गठन, उस गठन की पक्षातीत व सर्व-सम्मति की पद्धति, गठन के बाद उनकी कार्यशैली और आत्मविश्वासपूर्वक काम करने की उनकी क्षमता, बाहर के दबाव व प्रलोभन में न पड़ने की उनकी शक्ति, संकुचित भी न हो जाने की उनकी सावधानी वगैरह को एक समय तक देख कर ही धीरे-धीरे उन्हें आर्थिक विकेन्द्रीकरण का निमित्त व आधार बनाना चाहिये।

नये मोड़ के सम्बन्ध में कुछ स्पष्टीकरण

—शंकरराव देव

[श्री शंकरराव देव ने बिहार खादी-ग्रामोद्योग संघ के कार्यकर्ताओं की सभा में बोलते हुए खादी-ग्रामोद्योगों के नये मोड़ की भूमिका तथा खादी-संस्थाओं के उत्तरदायित्व पर प्रकाश डाला। उनके भाषण के मुख्य अंश और उस समय हुए कुछ प्रश्नोत्तर यहाँ दिये जा रहे हैं।—सं०]

आज का यह नया मोड़ कोई नई चीज नहीं है। गांधीजी ने सन् १९४४-४५ में जिसे नव-संस्करण कहा था, वही आज 'नये मोड़' के नाम से हमारे सामने आया है। सत्य सनातन होता है, पर सत्य नित्य-नूतन भी होता है। वास्तव में जो नित्य-नूतन नहीं है, वह सनातन हो नहीं सकता। जैसे सत्य सनातन है, वैसे ही विचार भी सनातन है और नित्य-नूतन भी। सामाजिक परिस्थिति के अनुकूल उसकी अनुभूति और अभिव्यक्ति नवीन होती जाती है। अतः नये मोड़ के विचार से हमें घबराने की जरूरत नहीं है। काम को एकांगी रहने न देकर, समग्र दृष्टि से आगे ले जायँ और उसकी बुनियाद को न भुला कर जिस उद्देश्य से रचनात्मक काम आरम्भ हुए, उसी उद्देश्य की पूर्ति की दिशा में उन्हें विकसित करें, यह जरूरी है।

गांधीजी चरखा-संघ को एक आदर्श संस्था मानते थे। चरखा संघ को अंग्रेजी में 'स्पिनर्स असोसियेशन' कहा जाता था। वहाँ न कोई मालिक था, न कोई मजदूर। उसमें वस्त्र का उत्पादन होता था, पर संस्था थी स्वयं कत्तिनों और बुनकरों की। सबसे बड़ी बात यह थी कि जिसके कारण गांधीजी उसे आदर्श संस्था कहते थे, वहाँ जो भी काम होता था, उसके पीछे स्वार्थ की या मुनाफे की प्रेरणा नहीं थी, बल्कि सेवा की प्रेरणा थी।

अक्सर कहा जाता है कि मनुष्य स्वार्थी है और स्वार्थ जहाँ न हो, वहाँ वह किसी काम में लगेगा नहीं। पर चरखा-संघ का दावा था कि एक सुसंगठित संस्था स्वार्थ के लिए न चल कर सेवा के लिए चल सकती है।

आज की ये सारी खादी-संस्थाएँ उसी चरखा-संघ की वारिस हैं। पर आज इन संस्थाओं के कामगारों और कार्यकर्ताओं में एक ही असंतोष है, अपनी मजदूरी और वेतन की कमी। मानो, आज ये जो कुछ कर रहे हैं वह सेवा के लिए नहीं, बल्कि अपनी अर्थ प्राप्ति के लिए कर रहे हैं। यह स्थिति बदलनी चाहिए। संस्थाओं में आज वही सेवा-भावना पुनः प्रस्थापित करनी चाहिए। संस्थाओं के सामने नये मोड़ के संदर्भ में यह एक प्रयोग का विषय है।

दूसरा, आज खादी का जितना भी काम हो रहा है, वह वास्तव में दया पर आधारित है। गांधीजी के समय लगभग एक करोड़ की खादी तैयार होती थी और आज १२-१३ करोड़ तक हम पहुँचे हैं। (उस समय के और इस समय के रुपये के मूल्य में कमी हुई है उसे छोड़ दें, तो भी) यह सारा काम अपने मूल्य पर नहीं, दया पर खड़ा है। उत्पादकों से कहना पड़ता कि इससे ज्यादा मजदूरी हम आपको नहीं दे सकते हैं, ज्यादा दें तो खरीददार नहीं खरीदेंगे, इसलिए हम पर दया करो, इसी थोड़ी मजदूरी पर ही काम करो। खरीददारों से कहना पड़ता है कि उन बेचारे गरीब देहातियों को चार पैसे देने के लिए यह महँगी खादी पर दया करो, थोड़ा-बहुत तो खरीदो। उधर सरकार से भी कहना पड़ता है कि कृपया 'रिबेट' और 'सबसिडी' दो, वरना खादी-उद्योग खतम हो जायगा। इस तरह प्रत्येक की दया पर हमारी खादी कब तक टिकी रह सकेगी?

खादी-कार्यकर्ताओं की स्थिति ऐसी हुई है कि वे सरकार के सामने अपना हक जता नहीं पा रहे हैं, जनता को उसके हक का भान नहीं करा पा रहे हैं। और इन कार्यकर्ताओं के पीछे न जनता का, न कामगारों का समर्थन ही प्राप्त है। यह समर्थन कैसे प्राप्त हो? जनता को यह महसूस कैसे हो कि खादी-काम उनका अपना काम है? जनता यह कैसे समझे कि खादी-काम में उसकी भलाई है? सरकार को यह कैसे मालूम हो कि खादी-कार्यकर्ताओं के पीछे एक नैतिक बल है, एक लोकमत है? खादी-संस्थाओं के सामने यह एक प्रश्न है। इन दो प्रश्नों का उत्तर हम खोजें और उस पर अमल करें, तो नया मोड़ इसके अतिरिक्त और कुछ नहीं है।

प्रश्न : कार्यकर्ताओं को सेवा भावना से काम करना चाहिए, यह सही है। लेकिन उसके सामने अपनी आर्थिक अड़चनें जब भयानक रूप में खड़ी रहती हैं, तो यह स्वाभाविक माना जायगा कि वह जो काम कर रहा है उसका हेतु उसकी खुद की आवश्यकता की पूर्ति ही हो। बिहार खादी-ग्रामोद्योग संघ में सम-वेतन का यह जो नियम चल रहा है, इससे तो वह कठिनाई और बढ़ जाती है।

उत्तर : समवेतन का अर्थ यह नहीं कि रुपयों में गिन कर सबको समान रूप से वेतन दिया जाय। यहाँ समवेतन का एक प्रयोग चल रहा है, यह अच्छी बात है। पर यह हमें ध्यान में रखना चाहिए कि यह अभी आरंभ है। समवेतन के सिद्धान्त का यह कोई अंतिम स्वरूप नहीं है। समाज का संगठन ऐसा होना चाहिए कि चाहे वह ग्रामसमाज हो या संस्थाओं के अन्तर्गत कार्यकर्ताओं और कामगारों का समाज हो, प्रत्येक व्यक्ति अपनी शक्ति के अनुसार समाजोपयोगी कार्य करे और अपनी आवश्यकता के अनुरूप प्रतिफल पावे। यह आदर्श समाज की स्थिति है। वहाँ तक पहुँचने के लिए एक एक कदम आजमा कर हमें चलना है।

यहाँ किसी भी कार्यकर्ता का अधिकतम वेतन सौ रुपये मासिक माना गया है, इस स्थिति में ही हमें अपनी दिक्कतों और अड़चनों का हल सोचना है तो उत्तम तरीका यह हो सकता है कि कार्यकर्ता अपने-अपने खर्च और आमदनी का हिसाब करे और जो कार्यकर्ता जितना भी बचा सकता हो बचा कर दूसरे उन कार्यकर्ताओं को दे, जिन्हें आवश्यकता से कम मिल रहा है। इससे कार्यकर्ताओं में परस्पर आत्मीयता बढ़ेगी और सबको एक-दूसरे के सुख-दुःख में सहभागी होने का सुख मिलेगा।

दूसरा उपाय यही हो सकता है कि कार्यकर्ता के परिवार में जो दूसरे लोग रहते हैं, उनको भी ऐसा कुछ उत्पादक काम देने की व्यवस्था संस्था की ओर से हो, ताकि कार्यकर्ता के घर की आमदनी कुछ बढ़ सके।

इनके अलावा एक और व्यवस्था होनी चाहिए और वह यह कि कार्यकर्ता परिवार के स्वास्थ्य और शिक्षण का प्रबंध संस्था की ओर से हो। संस्था के पास एक कामन फण्ड (सार्वजनिक निधि) हो, जिसे सभी कार्यकर्ता मिल कर संग्रहीत करें और जिसमें संस्था का भी हिस्सा हो। उसका उपयोग परिवार के सभी बच्चों के शिक्षण और सबके स्वास्थ्य के प्रबंध में किया जाय। इसकी सारी व्यवस्था ऐसी हो, जिससे कार्यकर्ताओं में परस्पर-स्नेह और सहकार भावना बढ़े।

कार्यकर्ताओं की संख्या बढ़ जाने के कारण और प्रत्येक के साथ अधिकारीवर्ग का और परस्पर का निकट संपर्क न आने के कारण यह स्नेह और सहयोग-भावना का विकास नहीं हो पा रहा है। फिर भी इन कार्यकर्ताओं के छोटे-छोटे समूहों में परस्पर सहानुभूतिपूर्ण सम्पर्क का मौका मिल सकता है। पर प्रमुख बात है, उनको इस प्रकार की प्रेरणा और शिक्षा देनी चाहिए।

प्रश्न : कार्यकर्ताओं के हाथ से कुछ दोष हो जाता है तो उस वक्त हम उसे उस व्यक्ति का दोष मान कर उसे सजा देने लगते हैं। वास्तव में उस कार्यकर्ता के दोष के पीछे संस्था का ही कुछ-न-कुछ दोष हो सकता है। पर उसको संस्था का न मान कर व्यक्ति का मानते हैं। यों उस व्यक्ति को सजा देने में हमें बुरा लगता है, पर इसके बावजूद हमें उनको सजा देनी पड़ती है। इस परिस्थिति के लिए क्या करें?

उत्तर : यह बहुत अच्छा विषय है। इसमें भारत के आज तक के दर्शन का प्रतिबिंब है। हमने कर्म-फल सिद्धान्त को बहुत महत्त्व दिया। जिसने जो कर्म किया, उसे उसका फल भोगने का अधिकार है, यही नहीं, बल्कि उसे ही वह भोगना चाहिए, यह कर्म-फल सिद्धान्त आज भी हमारे सारे व्यवहार में काम कर रहा है। जो कोई अपने कर्म का फल भोग रहा है, उसे यदि दूसरा कुछ राहत पहुँचाने का प्रयत्न करे तो कभी-कभी अपराध और पाप तक माना जाता है। यही कारण है कि हमारे समाज में आर्थिक शोषण, सामाजिक विषमता और धार्मिक कट्टरता आदि दोष बढ़े। आज जरूरी यह है कि समाज की इस भावना को एक ओर का धक्का लगाया जाय।

आज हमारे सारे सामाजिक सिद्धान्त या तो निरे भौतिक स्तर के हैं या एकदम आध्यात्मिक स्तर के। इन दोनों का समन्वय कहीं नहीं है। इसीलिए आदर्श और व्यवहार में, विचार और आचार में बहुत अंतर है। दोनों के बीच बहुत बड़ी गहरी खाई है। इसे पाटने के लिए यह आवश्यक है कि सामाजिक व्यवहारों में नैतिक मूल्यों को लागू करें। नैतिक मूल्यों में प्रमुख है करुणा। करुणा से प्रेरित होकर पर हित-बुद्धि से, स्वेच्छा से हम अपना सारा व्यवहार करें और समाज का स्वभाव ऐसा बन जाय तो ही वह खाई पट सकेगी। भौतिक सिद्धान्तों पर नैतिक सिद्धान्त जब अपना प्रभाव डालने लगेंगे, तभी सामाजिक व्यवहारों में आध्यात्मिक सिद्धान्त रूढ़ होंगे।

गांधीजी और ईसा मसीह का उदाहरण हमारे सामने है। उन्होंने समाज का दोष अपना दोष माना और समाज के दोषों का प्रायश्चित्त खुद ने किया। ईसाइयों ने उसे गलत अर्थ लगा कर उस सिद्धान्त को बिगाड़ा। ईसाइयों ने माना कि अकेला ईसा ही सारे संसार के दोषों का प्रायश्चित्त कर रहा है और आगे भी करता रहेगा! पर सही तो यह है कि समाज के हरएक व्यक्ति के पाप का भागी समाज का प्रत्येक व्यक्ति है और उसका प्रायश्चित्त भी प्रत्येक व्यक्ति को करना चाहिए। यह भावना जब रूढ़ होगी, तभी इस प्रश्न का समाधान होगा।

●

नया मोड़ : लक्ष्य, दिशा और योजना : ४

धीरेन्द्र मजूमदार

[यह धीरेन्द्र भाई की लेखमाला की अंतिम किस्त है। अभी तक आपने नये मोड़ का स्वागत करते हुए उसके लक्ष्य और दिशा पर प्रकाश डालते हुए कहा है कि स्वतंत्र लोकशक्ति का विकास करना है, जो न केवल दंड-शक्ति से भिन्न हो, अपितु वह हिंसा-शक्ति की विरोधी भी होनी चाहिये। हमारी दिशा स्वावलम्बन की हो, न कि विकेन्द्रीकरण की, क्योंकि स्वावलम्बन में स्वभाव और स्वधर्म का स्वतंत्र विकास होता है। इस लेख में आपने कार्य-सिद्धि के लिये योजना प्रस्तुत की है। ग्राम-स्वराज्य समितियाँ कैसे संगठित हों, उनके कार्य की रूपरेखा क्या हो, कार्यकर्ताओं को कैसे प्रशिक्षित किया जाय आदि महत्त्वपूर्ण मुद्दों पर प्रकाश डाला गया है। —सं०]

हमने स्वावलम्बन की दिशा की आवश्यकता शासननिरपेक्ष समाज की रचना की लक्ष्य-पूर्ति के लिये अनिवार्य है, ऐसा कहा है। लेकिन अगर गहराई से विचार किया जाय तो मालूम होगा कि दण्ड-शक्ति पर आधारित राजनैतिक लोकतंत्र की सफलता के लिये भी इसी दिशा को अपनाना अधिक श्रेयस्कर होगा। भारत की परिस्थिति विशेष रूप से भिन्न है। इस देश में अभी भी सामन्तवादी मनोभावना भरपूर है। गाँव की वर्ग-विषमता तथा वर्णभेद की स्थिति से सामन्तवादी मनोवृत्ति जब जुड़ जाती है तो लोकतंत्र के लिये प्रतिकूल परिस्थिति हो जाती है। उसके ऊपर जमीन की मिल्कियत अत्यन्त अल्पसंख्यक लोगों के हाथ में होने से थोड़े से लोगों के पास शोषण और निर्दलन की अपार शक्ति पहले से ही मौजूद है। इस परिस्थिति के रहते हुए बिना किसी पूर्वतैयारी के उन्हें ऊपर से ही राजनैतिक और आर्थिक सत्ता सौंप देते हैं तो यह सत्ता भी उसी शक्ति के कब्जे में जाकर उन्हें और पराक्रमी बना देती है। फलस्वरूप इस प्रक्रिया से लोकतंत्र का रास्ता साफ न करके हम अपने हाथों से अधिसत्तावाद की मजबूत एजेन्सी खड़ी कर देते हैं।

इस तथ्य की पुष्टि देश के राजनैतिक विकेन्द्रीकरण के अनुभव से भी हो रही है। पिछले दिनों में उत्तर प्रदेशीय विधान-सभा में वहाँ के गृहमन्त्री ने कहा है कि राज्य के अपराध में व्यापक वृद्धि का एक मुख्य कारण पंचायत राज के चुनाव हैं और नई देहली के २३ अप्रैल के खबर से मालूम होता है कि सामुदायिक विकास तथा सहकारिता मंत्री श्री एस० के० डे ने सेवा-संस्थाओं के सम्मेलन में भाषण करते हुए कहा कि जिन राज्यों में पंचायत राज लागू हैं, वहाँ का अनुभव यह बताता है कि सत्ता के व्यापक विकेन्द्रीकरण के बजाय पंचायतों के प्रधानों के हाथों में सत्ता केन्द्रित होती जा रही है। अतएव बिना किसी राजनैतिक तथा सामाजिक क्रान्ति के विचार रखते हुए भी केवल लोकतन्त्र के अधिष्ठान के लिए ही ऊपर से विकेन्द्रीकरण की प्रक्रिया शुरू करने से पहले जनता के आन्तरिक स्वतंत्र शक्ति के संगठन का आन्दोलन आवश्यक है। अतः लक्ष्य चाहे जो हो, इष्ट यही है कि हम कुछ धैर्य के साथ शुरू में स्वावलम्बी पद्धति से जनता में स्वयंस्फूर्त आत्मशक्ति अंकुरित करके ही विकेन्द्रीकरण के कार्यक्रम का श्रीगणेश करें।

अतएव हर दृष्टि से यह आवश्यक है कि उपरोक्त योजना के अनुसार एक बार देश में ग्राम-स्वराज्य समितियों के संगठन का 'ड्राइव' देकर योग्य इकाइयों को चुन लिया जाय। फिर उसमें सुनिश्चित और क्रमबद्ध कार्यक्रमों का संयोजन हो। रचनात्मक संस्थाएँ तथा कार्यकर्ता जिस उत्साह के साथ अम्बर-योजना को बढ़ाने में लगे थे और आज ग्राम-स्वराज्य घोषणा के काम में लगे हैं, उसी उत्साह से अगर ग्राम-स्वराज्य समितियों के प्राथमिक कार्यक्रम के संगठन में लग जायें तो इसमें सन्देह नहीं कि एक-दो साल के अन्दर ही उतने ही योग्य इकाई निकल जायेगी, जितने का लक्ष्यांक हम मुकर्रर करते हैं।

इकाइयों को चुनने के बाद ग्राम-स्वराज्य की प्राथमिक जिम्मेदारी के कार्यक्रमों के संगठन की कुछ प्रगति हो जाने पर संस्थाओं के व्यापारिक काम की जिम्मेदारी धीरे-धीरे उन पर सौंपी जा सकती है। तब तक उनकी परिस्थिति भी इन जिम्मेदारियों के उठाने के लिये ज्यादा अनुकूल होगी। कुछ सेवाभावी कार्यकर्ता निकलते रहेंगे। उसमें कुछ संगठन की आदत भी पड़ जायगी तथा धर्मगोला आदि के जरिये गाँव की अपनी शक्ति से बनी कुछ पूँजी भी इकट्ठी हो जायेगी। इस प्रक्रिया से दो-चार साल के अन्दर ही ग्राम-स्वराज्य समितियाँ मजबूती के साथ हमारे सारे काम की जिम्मेदारी उठा लेंगी।

अब प्रश्न यह है कि रचनात्मक संस्था तथा कार्यकर्ता को कल्याणकारी राज्य की ओर से विकास-योजनाओं के साथ जो निकटतम सहकार करने का विचार है, उसका स्वरूप क्या हो? पहले समझना यह चाहिये कि इस सहकार्य में रचनात्मक संस्थाओं की हैसियत सहकारी (कोआपरेटिव) संस्थाओं की होनी चाहिये, न कि आदाता (सबसीडाइज्ड) संस्थाओं की। सिद्धान्त यह होना चाहिए कि हम अपने स्वधर्म के अनुसार अपने ही पुरुषार्थ तथा स्वतंत्र और निरपेक्ष जनशक्ति के आधार पर काम करें। सरकार अपने स्वधर्म के अनुसार दण्डशक्ति के आधार पर काम करे और समान कार्यक्रमों के मदों में दोनों में आपस का सहकार हो।

हमारी संयोजना ऐसी होनी चाहिए कि विकास-योजनाएँ सामान्य रूप से सब देहातों की जैसी मदद करती हैं, उसी रूप में और अनुपात में हमारी चुनी हुई इकाइयों में भी मदद मिले और उसके सदुपयोग का मार्गदर्शन करें। आज ऐसी मदद के उपयोग तीन प्रकार से हो सकते हैं :

(१) भ्रष्टाचारी उपयोग। (२) उचित उपयोग और (३) लाभदायक उपयोग।

भ्रष्टाचारी उपयोग का ब्योरा देने की जरूरत नहीं है। आम तौर से लोग उचित उपयोग का मतलब यह समझते हैं कि जिस काम के लिये जितना साधन मिलता है, उसे पूरा का पूरा उसी काम में लगा देना। और कुछ जगहों में ऐसा होता ही है। लेकिन कार्यकर्ताओं को तीसरे प्रकार की उपयोगिता का मार्गदर्शन करना चाहिये। अर्थात् जितना साधन सरकार की ओर से उपलब्ध है, उस साधन पर गाँव का सामूहिक त्याग और पुरुषार्थ जोड़ कर विकास-योजना द्वारा परिकल्पित काम के परिमाण से ज्यादा परिमाण में काम कर लेना तथा गाँव के लोगों को हिसाब-किताब के काम में पूर्ण प्रामाणिकता बरतने में अपनी नैतिक प्रेरणा तथा उचित मार्गदर्शन करना। इसके लिये सावधानी यह रखनी होगी कि सरकारी इमदाद प्राप्ति का अभिक्रम तथा नेतृत्व ग्रामस्वराज्य समिति खुद करे। वे उसके लिये कार्यकर्ता से अपेक्षा न रखें।

उपरोक्त आयोजन के बीच में खादी व ग्रामोद्योग के लेन-देन के व्यवहार में जिला या बड़े क्षेत्र की संस्थाएँ उसी तरह से कारीगरों से सीधा सम्बन्ध रखें। जिस तरह से आज रख रही हैं। साथ-साथ अपने काम के साथ ग्राम-स्वराज्य समिति के सेवक को शामिल कर उन्हें आगे के लिये ट्रेनिंग भी देती रहें।

अब प्रश्न यह है कि ग्राम-स्वराज्य समितियों के 'ड्राइव' के संयोजन की रूप-रेखा क्या हो?

स्पष्ट है कि यह काम केवल सरकारगत कार्यकर्ताओं के भरोसे ही नहीं चलेगा। हर क्षेत्र में जितने भी सार्वजनिक भावना तथा इस विचार के प्रति सहानुभूति रखने वाले मित्र हों उनका सम्मेलन बुलाना चाहिये, जिसमें सभी पक्ष और निष्पक्ष सेवक शामिल हो सकें।

सम्मेलन में अपने लक्ष्य को ठीक से बता कर उन्हीं में चुन कर एक ग्राम-स्वराज्य संयोजन समिति का संगठन करने की जरूरत है। कोशिश यह करनी चाहिये कि मित्रों में से कुछ लोग ऐसे मिलें, जो निष्पक्ष सेवा की भावना रखते हैं और जिम्मेदारी के साथ संयोजन के काम में समय देने को तैयार हैं। ऐसे ही व्यक्ति इन समितियों के संयोजक हों। संस्था के कार्यकर्ता उनकी सहायता में हमेशा मौजूद रहें। इस समिति द्वारा क्षेत्र के गाँव-गाँव में विचार प्रचार करना होगा। संस्था की तरफ से उन्हें आवश्यक साहित्य तथा दूसरी सामग्री की व्यवस्था करनी होगी। समिति के काम के सामान्य खर्च के लिये क्षेत्र में जनआधारित तरीके से साधन-प्राप्ति का संगठन करना चाहिये, जिसके लिये हमने ऊपर बताया है कि सर्वोदय-पात्र, धर्मगोला, अनुदान आदि मदों का संगठन करना चाहिये।

इसी समिति के मातहत कार्यकर्ताओं के विचार शिक्षण की व्यवस्था संस्थाओं की ओर से होनी चाहिये। उसमें कुछ निम्न-लिखित प्रकार हो सकते हैं :

[१] समय-समय पर अपने कार्यकर्ता तथा स्थानीय मित्रों की विचार-गोष्ठी का आयोजन।

[२] साहित्य-प्रचार के लिये पर्चे तथा पोस्टरों का वितरण।

[३] कभी-कभी विचार-गोष्ठियों में नौजवानों को निबन्ध लिख कर पढ़ने का आह्वान करना चाहिये, जिसके लिये संस्थाओं की ओर से पारितोषिक की घोषणा भी की जा सकती है।

[४] क्षेत्र के कार्यकर्ता तथा सहायक मित्र गाँव-गाँव में सम्मेलन तथा जन-सभा का आयोजन कर विभिन्न विषयों पर भाषण देने का अभ्यास करें। इस प्रकार की सभाएँ, सभी ग्रामीण बनों महिलाओं, पढ़े लिखे युवकों तथा बच्चों की अलग-अलग होनी चाहिये।

[५] सर्व सेवा संघ तथा दूसरी संस्थाओं की ओर से उपरोक्त कार्यक्रम के लिये विभिन्न पहलुओं पर अनेक तरीके की भाषण लिख कर कार्यकर्ताओं को देना चाहिये, ताकि शुरू शुरू में वे उसमें से सामग्री ले सकें और धीरे धीरे अनुभव, चिन्तन तथा अध्ययन के आधार पर अपना विचार प्रकट करने की शक्ति हासिल कर सकें।

[६] इसके लिये केवल अर्थ-नैतिक प्रश्न ही नहीं लेना चाहिए, राजनैतिक प्रश्नों को भी लेना चाहिए; बल्कि राजनैतिक प्रश्नों को प्रचार की बुनियाद मानना चाहिये। यह स्पष्ट है कि जब हम शासन-निरपेक्ष समाज की बात करते हैं, तो उस समाज का ढाँचा क्या होगा, उसका स्पष्टीकरण जनता के सामने होना चाहिए। इस दिशा में अपने पास कुछ सामग्री है और कुछ सामग्री तैयार करनी पड़ेगी। खासकर हाल में श्री जयप्रकाश बाबू ने "जनता के स्वराज्य" पर जो विचार व्यक्त किया है, उसे विभिन्न भाषाओं में तथा विभिन्न स्तर के लोगों के समझने लायक तरीके से- पुस्तकों में संकलित करने की जरूरत है। ऐसी पुस्तिकाएँ गांधीजी तथा विनोबाजी के विचारों में से भी तैयार की जा सकती हैं। आज के सर्वोदय के दूसरे विचारकों से भी लिखवाने की व्यवस्था करनी चाहिए।

उपरोक्त कार्यक्रम के उपरान्त संस्थाओं के कार्यकर्ताओं के लिये कुछ ठोस प्रशिक्षण की व्यवस्था भी करनी होगी।

वह कुछ निम्नलिखित प्रकार का हो सकता है :–

[१] स्वाध्याय योजना : हर ६ माह के लिये कुछ पत्रिकाओं और पुस्तकों की सूची कार्यकर्ताओं के स्वाध्याय के लिये बनानी चाहिये। ६ माह के अन्त में उन्हीं पत्रिकाओं और पुस्तकों में से प्रश्नपत्र बनाने चाहिये। कार्यकर्ता उसका उत्तर अपने-अपने स्थान पर से लिख कर भेजें। उत्तर लिखने में वे आपसी चर्चा तथा पुस्तकों से मदद ले सकते हैं। उत्तर भेजने का समय १५ दिन या उससे अधिक भी हो सकता है। ऐसी परीक्षा का नतीजा प्रकाशित करना चाहिये और आवश्यकता पड़े तो प्रमाण-पत्र भी देना चाहिये।

[२] उपरोक्त लिखित परीक्षा के अलावा जिला या क्षेत्रीय स्तर पर गोष्ठियों से विचार करने की शक्ति की भी परीक्षा ली जा सकती है, ताकि उसका नतीजा भी लिखित परीक्षा के नतीजे के साथ शामिल किया जा सके।

[३] ऐसे चुने हुए कार्यकर्ता जो नये मोड़ के काम में नेतृत्व लेने लायक हों, उन्हें ३ या ६ माह तक का प्रशिक्षण किसी विशेष विद्यालय का आयोजन करके देना चाहिये। ऐसा प्रशिक्षण विद्यालय 'रुटीन' के रूप में न होकर विद्यालय के मार्गदर्शन में 'माडल' इकाइयों के काम की जिम्मेदारी देकर क्षेत्र में होना चाहिए। बीच-बीच में ३ या ४ बार १५-१५ दिन के लिये उन्हें विद्यालय में बुला कर विभिन्न पहलुओं का गहराई से शिक्षण दिया जाय।

[४] उपरोक्त किस्म के विद्यालय के प्रशिक्षण में विभिन्न क्षेत्रों में काफी समय देने वाले क्षेत्रीय नौजवानों को भी चुन कर शामिल करना चाहिए। ऐसे लोगों को शामिल तब करना चाहिए, जब विद्यालय का काम कम से-कम साल भर चल गया हो और ये नौजवान कम से-कम एक साल से अपने क्षेत्र में नियमित रूप से इकाई के संगठन में लगे हुए हों।

इस प्रकार से व्यापक रूप से कार्यकर्ताओं का प्रशिक्षण चलते रहने से ही ये नये मोड़ के सही लक्ष्य और दिशा में सफल प्रयत्न कर सकेंगे।

जब हम कहते हैं कि इकाइयों को आत्म-शक्ति से ही साधन इकट्ठा करना होगा, तो इसका मतलब यह नहीं है कि ग्राम-स्वराज्य समितियों को कभी भी संस्थागत या सरकारी साधनों की सहायता न दी जाय। उसका मतलब इतना ही है कि जब तक वे त्याग और सामूहिक पुरुषार्थ के आधार पर साधनों की ठोस बुनियाद न डाल लें तथा कुछ बुनियादी कार्यक्रम को सफलता के साथ न चला लें, तब तक के लिये ऐसी सहायता स्थगित रखी जाय। सहायता भी आत्मशक्ति के विकास के अनुपात में क्रमशः बढ़ाने की परिपाटी रखी जाय।

प्रायः लोग प्रश्न करते हैं कि ऐसे कामों के लिये कार्यकर्ता कहाँ से आयेंगे? जिस समय बापूजी ने १९४४ में नव संस्करण की बात कही थी उस समय बापूजी तथा अन्य साथियों ने भी यही सवाल किया था। बापूजी ने जवाब में यही कहा था कि कार्यकर्ता वही होंगे, जो अब तक थे। उनका कहना ठीक ही था। कार्य ही कार्य को सिखाता है। देश में फैले हुए करीब ४० हजार कार्यकर्ता हैं। उनमें से जिनकी विचार-दृष्टि तथा रुचि सार्वजनिक काम के लिये जनसम्पर्क की हो, उन्हें चुन कर उनको नये मोड़ का काम सौंपना चाहिये और उपरोक्त तरीके से उनके प्रशिक्षण की व्यवस्था करनी चाहिये। उनमें से कुछ सफल होंगे, कुछ नहीं होंगे। कुछ नये कार्यकर्ता भी इस विचार और दृष्टि से शामिल होते रहेंगे। आखिर आज जो कार्यकर्ता हैं वे प्रारम्भ में खादी तथा ग्रामोद्योग के काम में माहिर नहीं थे और न हिसाब-किताब के अभ्यासी थे। फिर भी हमने पिछले ४–५ साल के अन्दर अम्बर चरखे की प्रगति तथा उत्पादन व बिक्री के काम में उल्लेखनीय विकास किया है। यह सब कार्यकर्ता नये आये और उन्होंने काम सीखा। ये ही कार्यकर्ता नये काम को भी सीखेंगे और इनमें से बहुत ऐसे निकलेंगे जो नये मोड़ के संदर्भ में नई-नई खोज भी करेंगे।

उपरोक्त योजना दिशा-सूचक मात्र है। हर संस्था व क्षेत्र के लोगों को अपनी-अपनी परिस्थिति तथा शक्ति के अनुसार विस्तृत योजना बना लेनी होगी।

[समाप्त]

सैनिक-शालाओं की योजना

जुगतराम दवे

इस अणुयुग में पुराने तरीके की सैनिक-शिक्षा या उसकी तालीम बीते हुए युग की और हास्यास्पद चीज हो गयी है तथा गांधी के भारत में इस प्रकार की तालीम कितनी अयोग्य है, इन विचारों को एक तरफ रखें तो भी सरकार की ओर से चालू होने वाले सैनिक-विद्यालय का जो थोड़ा-बहुत वर्णन अखबारों में आया है, उसको पढ़ कर आश्चर्य होता है कि भारत के बहादुर सेनापतियों की सैनिक तालीम के विषय की कल्पना सचमुच क्षत्रियत्व से कितनी विपरीत है।

पहली बात तो यह है कि इन शालाओं में हरएक विद्यार्थी का वार्षिक खर्च १६०० से २००० रुपये तक का होगा। इसके अलावा ३०० रुपया पोशाक आदि का अतिरिक्त खर्च प्रत्येक छात्र को देना होगा। खर्च के इन आँकड़ों को देखते हुए हमारे नौजवानों को वीर सैनिक बनने की तालीम मिलने की अपेक्षा शायद राजा-महाराजाओं के विलासी राजकुमारों जैसी तालीम देने की कल्पना है, ऐसा लगता है। आज हमारे देश में क्षत्रियत्व समाप्त हो गया है, फिर क्षत्रियत्व के बारे में हमारी परम्परा में जो कल्पना है, वह आज भी सर्वमान्य है। और कुछ नहीं तो क्षत्रिय को मेहनती, तेजस्वी, संयमी, सब कामों में दक्ष और जीवन से भरपूर होना चाहिए और इस प्रकार के गुणों का उसमें विकास हो, ऐसी तालीम की योजना उसके लिए होनी चाहिए। हमारे देश के सैनिकों को राजकुमारों की तरह दो सौ ढाई सौ मासिक खर्चवाले जीवन में पाला पोसा जायगा तो जिस प्रकार पुराने राजा लोग अपनी नाटकीय पोशाक और अलंकार-आभूषणों में सज-धज कर सारी इज्जत खो बैठे थे, उसी प्रकार इन नये सैनिक और सेनापतियों के हाल हो जायेंगे। आज भी भारतीय सेना में सोना, हीरा और मोती की अंगूठियाँ, हार और कुण्डल आदि से बनने ठनने की वृत्ति और दिन में पचास बार कंघी से बाल सँवारते रहने तथा इसी तरह की दूसरी आदतें घुस गयी हैं। नागरिक प्रशासन से संबंधित अधिकारियों में भी यह हीनताभरी आदत दिनों दिन बढ़ती जा रही है। हम नम्रतापूर्वक चेतावनी का स्वर सुनाना चाहते हैं कि हिन्दुस्तान के सैनिक का आदर्श लाड़ प्यार में पले हुए राजकुमार का नहीं हो सकता, परन्तु अनेक हुनर और कलाओं के जानकार, मेहनती और संयमी जीवन जीने वाले और जनता की सेवा के लिए सदा तत्पर, ऐसे विनयी और विवेकी युवक वीर का हो सकता है।

इन सैनिक-शालाओं की कल्पना में दूसरी खटकने वाली बात यह है कि बालकों को बचपन से ही सामान्य प्रजा से और देश के सामान्य जीवन से अलग करके सैनिक जीवन के लिए उन्हें तैयार करने का विचार उसमें निहित मालूम होता है। अंग्रेजों के सैनिक-शास्त्र में इस प्रकार का विचार जरूर था। वे अपने सिपाहियों को सामान्य प्रजा से अलग, मदमस्त और उद्धत तथा एक अलग ही जाति के बनाने में विश्वास करते थे–खास करके हिन्दुस्तान में जो उनके सैनिक रहते थे, उनके बारे में उनकी यही कल्पना थी। मेरी धारणा है कि इस प्रकार के सैनिक-शास्त्र को योरोप के राष्ट्रों ने भी अब गयाबीता मान कर छोड़ दिया है। सैनिकों को बचपन से ही अलग प्रकार के विलासी जीवन में रखना उचित नहीं है। बचपन में तो सेना में जाने वाले या न जाने वाले सभी बालकों का रहन-सहन एक प्रकार का ही हो सकता है। देश की सामान्य शालाओं में से ही योग्य उम्र के वीर बालकों को चुन करके उन्हें विशिष्ट सैनिक शिक्षण देना चाहिए।

इन सैनिक शालाओं की योजना में तीसरा दोष यह है कि उनका शिक्षण अंग्रेजी माध्यम के जरिये होगा, ऐसा जाहिर किया गया है। हम लोग जब मित्र मण्डली में एक-दूसरे से गरमागरम बहस करते हैं, तो परस्पर अंग्रेजी शब्दों और वाक्यों की बौछार करते हैं। यह पुरानी आदत है। क्या हमारे बुद्धिमान सेनापति भी अंग्रेजी भाषा को वीर-रस की भाषा समझते हैं?

भारत के सेनापति से मेरी सविनय प्रार्थना है कि सैनिक विद्यालय की योजना अमल में लाने से पहले उन्हें चाहिए कि वे विवेकी, विनयी, ज्ञानी और चारित्र्य-सम्पन्न ऐसे शिक्षण-शास्त्रियों की सलाह लें। इस देश के विद्वानों पर उनका भरोसा न हो तो योरोप के विद्वानों की सलाह लें।

एक अदना शिक्षक और सेवक की हैसियत से मुझे यह कहना पड़ता है कि सैनिक-शालाओं की यह योजना प्रत्येक दृष्टि से मानस-शास्त्र और शिक्षण-शास्त्र के उत्तम सिद्धांतों के विरुद्ध है।

योजना का हेतु अगर देश में वीरों के सर्जन करने का हो तो उस योजना में से इससे बिल्कुल उल्टा ही परिणाम निकलने वाला है।

स्वराज्य आश्रम, वेडछी (जिला सूरत)

भारतीय भाषाओं पर संकट : २

रामाधार

वैसे हमारा यह आग्रह नहीं है कि अब भी केवल नौकरशाही के सदस्य ही हिन्दी-विरोधी और अंग्रेजी-भक्त हैं। अब तो हिन्दी के विरोधियों की परिधि और भी विस्तृत हो गयी है। अनेक राजनीतिक भी ईमानदारी से इसके विरोधी बन गये हैं। इनमें सबसे उद्भट हमारे श्रद्धास्पद बुजुर्ग राजाजी हैं। एक समय था, जब राजाजी हिन्दी के सबसे धुरन्धर समर्थक थे। उन्होंने कहा था कि यदि शासन करने वाले लोगों को जनता के जीवित सम्पर्क से अलग हट कर स्वयं निर्जीव नहीं हो जाना है, तो उन्हें हिन्दी को अखिल भारतीय स्तर पर अपनाना होगा, क्योंकि सर्वसाधारण के लिये सभी भारतीय भाषाओं में से वही एकमात्र सर्वसुलभ भाषा हो सकती है। आज देश का दुर्भाग्य है कि उनके जैसा तपस्वी देशभक्त अंग्रेजी का इतना बड़ा समर्थक बन गया है।

परन्तु जैसा हमने पहले ही बयान किया है, इस व्यापक विरोध का प्रारम्भ नौकरशाही की स्वार्थ-भावना एवं उनके निहित स्वार्थों में है। उन्होंने कौशल से स्वयं पीछे रह कर राजनीतिज्ञों को आगे कर दिया है। अहिन्दी भाषा-भाषी जनसाधारण हिन्दी-विरोधी नहीं है, इसका एक बहुत बड़ा प्रमाण हिन्दी फिल्में भी हैं। ये फिल्में कला और सुरुचि की दृष्टि से बिल्कुल निकम्मी होते हुए भी जितनी लोकप्रिय हिन्दी क्षेत्रों में हैं, प्रायः उतनी ही लोकप्रिय वे अहिन्दी क्षेत्रों में भी हैं। इससे यह भी साबित होता है कि वे हिन्दी भाषा आसानी से समझ भी लेते हैं। इस दृष्टि से यह केवल १४-१५ करोड़ इन्सानों की भाषा ही नहीं है, बल्कि बाकी २० करोड़ लोगों के लिए भी यह व्यवहारतः सुगम है। वे लोग पढ़-लिख नहीं पाते, यह कोई महत्त्वपूर्ण दलील नहीं है, क्योंकि भारतवर्ष में पढ़े लिखों की संख्या ही कितनी है? सारी भाषाओं को मिला कर देखने से भी कुल पढ़े-लिखे १२ प्रतिशत से अधिक नहीं हैं। अंग्रेजी जानने वाले तो १ प्रतिशत ही हैं। यह सारा काण्ड (झगड़ा) इन चन्द मुट्ठी भर लोगों का पैदा किया हुआ है!

यही दुखद परिस्थिति शिक्षा के माध्यम को लेकर भी है। एक तो यह शिक्षा एकदम निकम्मी है और हमारे बच्चों को हैवान बना रही है, दूसरे इसका माध्यम अंग्रेजी भाषा होने के कारण विद्यार्थियों के लिए वह अत्यधिक भार-रूप है। हाँ, नौकरशाही के बाल-बच्चों के लिए जरूर वह भार-रूप नहीं है। इनके घर का समस्त वातावरण अंग्रेजीमय होता है, रहन-सहन वैसा ही, घर की व्यवस्था अंग्रेजीयत से पूर्ण और भाषा तो उनकी अंग्रेजी ही है।

माता-पिता बच्चों से अंग्रेजी में बोलते हैं और उन्हें अंग्रेजी ही बोलने के लिए प्रोत्साहित करते हैं। इसलिए उन बच्चों को स्कूल में भी यथेष्ट सहूलियत होती है। पर इनकी संख्या तो प्रायः नगण्य होती है। परिणामतः इन थोड़े-से लोगों के बच्चों की सुविधा के लिए अधिकांश लोगों के बच्चों को बड़ी कठिनाई का सामना करना पड़ता है। यह स्थिति सभी राज्यों में मिलेगी। यहाँ भी हिन्दी भाषा भाषी और अहिन्दी भाषा-भाषी राज्यों में कोई अन्तर नहीं है। सच तो यह है कि नौकरशाही ने अपनी एक विशिष्ट संस्कृति ही प्रचलित कर दी है, जिसका मेरुदण्ड अंग्रेजी भाषा है। यह संस्कृति नई नहीं है। अंग्रेजों के समय से ही चली आयी है। परन्तु पहले लगा था कि यह अंग्रेजों के जाने के साथ-साथ लोप हो रही है। लेकिन नौकरशाही के हाथ मजबूत होते ही वह फिर हरी-भरी हो गयी और अब तो हमारे देश में उसके द्वारा हर क्षेत्र में फैशन का निर्माण होता है। आज हमारा सारा शिक्षित वर्ग इस अस्वाभाविक एवं मानव-मूल्यों से सर्वथा हीन संस्कृति का शिकार है। यही वजह है कि अंग्रेजी बोलने वाले का इस देश में सर्वत्र अधिक सम्मान होता है। केवल देशी भाषाएँ जानने वालों में हीन भाव पाया जाता है। यह सारी प्रक्रिया मिल कर हमारे देश की शिक्षण-पद्धति में परिवर्तन नहीं होने देती और न ही उसका माध्यम बदलने देती है। इस तरह पेंच के अन्दर पेंच फँसे हुए हैं, जो सीधी-सादी बातों को पेचीदा बनाते जा रहे हैं। राष्ट्रभाषा का प्रश्न भी इस विकृत स्वार्थपरता का शिकार बन गया है और इसने भाषावाद के भयंकर कलह को जन्म दिया है।

विश्वविद्यालयों पर नजर डालते हैं तो वहाँ एक और समस्या भी देखने को मिलती है। हिन्दी भाषा-भाषी क्षेत्रों में जो कालेज और विद्यालय चल रहे हैं, उनमें अनेक अध्यापक अहिन्दी भाषा-भाषी क्षेत्रों के हैं। उनका अध्यापन-कार्य अंग्रेजी में होता है और इसी में उनको सुविधा है। हिन्दी क्षेत्रों के निवासी अध्यापक भी अनेक विषय अंग्रेजी में ही पढ़ाते हैं और उन्हें भी इसमें सुविधा है। उनमें से बहुत थोड़े लोग होंगे, जो हिन्दी में भी पढ़ा सकें। परिणाम यह है कि अध्यापक-वर्ग का हित तो शिक्षा का माध्यम अंग्रेजी को बनाये रखने में है और विद्यार्थियों का हित हिन्दी को माध्यम बनाने में है। इस प्रकार जिन क्षेत्रों में हितों के विरोध की समस्या का प्रश्न ही नहीं उठना चाहिये, वहाँ भी ऐसा हो रहा है! यानी अध्यापक-वर्ग और विद्यार्थी-वर्ग के अलग-अलग संघ बनें और फिर इन संघों में संघर्ष हो! विनोबा ने एक बार व्यंग में कहा था, अब तो बेटा-संघ और बाप-संघ भी बनने चाहिए, ताकि दोनों अपने-अपने हितों की रक्षा कर सकें। अध्यापक और विद्यार्थी का सम्बन्ध पिता और पुत्र का सम्बन्ध ही है, बल्कि उससे भी घनिष्ठ है। परन्तु हमारी व्यवस्था की अन्धेरगर्दी ने वहाँ संघर्ष की स्थिति पैदा कर दी है। विनोबा का व्यंग यहाँ सही उतर रहा है।

एक और कठिनाई हिन्दी के मार्ग में *मौलाना आजाद का शिक्षा-मंत्रित्व काल* भी रहा है। हमें खेद के साथ कहना पड़ता है कि उन्होंने न सिर्फ विधान के निर्देशानुसार हिन्दी को आवश्यक प्रोत्साहन नहीं दिया, बल्कि उसके विकास में अप्रत्यक्ष रूप में अनेक बाधाएँ खड़ी कीं। हम यह मानते हैं कि यदि हमने अपनी राष्ट्रभाषा को हिन्दी की बजाय हिन्दुस्तानी नाम दिया होता, तो अधिक उपयुक्त होता। सम्भव है कि उस हालत में मौलाना साहब उसके प्रति अधिक हमदर्दी रख सकते। लेकिन सच पूछा जाय तो ईमानदारी का तकाजा यही था कि देवनागरी लिपि में हिन्दी राष्ट्रभाषा के रूप में विधान में स्वीकार हो जाने के बाद भारत के शिक्षा-मंत्री को उसे सरकारी कारबार में इस्तेमाल करने के सम्बन्ध में शुरू से ही आवश्यक कदम उठाना चाहिए था। परन्तु उन्होंने ऐसा नहीं किया। पं० जवाहरलाल नेहरू पर मौलाना साहब का बहुत प्रभाव था। अतः मौलाना साहब की नीति आदि के बारे में उनसे कोई कुछ नहीं कह सकता था। इसके अलावा पंडित नेहरू स्वयं भी तो अंग्रेजी भक्त हैं। उन्हें भी हर तरह से अंग्रेजी में ही सुविधा होती है। हिन्दी तो उन्हें उतनी ही आती है, जितनी जनता में लोकप्रियता कायम रखने के लिए आवश्यक है! इसके अलावा नौकरशाही की अंग्रेजियत तो हिन्दी के विरोध में जाने ही वाली थी। अतः ये सारे संयोग अथवा दुर्योग ऐसे मिल गये कि अंग्रेजी का प्रभुत्व न सिर्फ कायम रहा, बल्कि बढ़ता गया। भारतवर्ष के दुर्भाग्य के लिए पता नहीं अदृष्ट ने कितने एजेण्ट खड़े कर रखे थे! परिणामतः हम इस भयानक स्थिति के सामने आ खड़े हुए हैं।

अतः अब प्रश्न है कि किया क्या जाय? केन्द्रीय राजभाषा का सवाल इस समय इतना विवादग्रस्त बना दिया गया है कि उसके बारे में हिन्दी के ऊपर जोर देना और भी बुरी स्थिति पैदा कर देगा। उस पर शान्ति से विचार करने के लिए उपयुक्त वातावरण नहीं है। अतः उस क्षेत्र में हिन्दी के साथ अंग्रेजी को अभी जुटी ही रहने देना होगा। उपयुक्त समय आने पर अंग्रेजी को शनैः-शनैः छुट्टी देने का प्रयत्न किया जायगा, यही आशा प्रकट की जा सकती है। परन्तु राज्यों के स्तर पर क्षेत्रीय भाषाओं को राजभाषा बनाने में तनिक भी ढील बर्दाश्त नहीं करनी चाहिए। हमारे राजनेता आज लम्बी-लम्बी बातें कहने और भाषण देने के बजाय इतना काम ही करवा दें, तो देश की बड़ी सेवा हो जायगी। इस सम्बन्ध में क्षेत्रीय भाषाओं की असमर्थता की दुहाई देना नौकरशाही के हाथों में खेलना होगा। जो लोग अंग्रेजी के अलावा किसी और भाषा में सोच ही नहीं पाते, वे ही ऐसी बेहूदी दलीलें देते हैं। पिछले १२ वर्षों की दीर्घावधि में भी ये लोग अंग्रेजी के अलावा अन्य कोई भाषा उतनी ही जानते हैं, जितनी स्वतंत्रता प्राप्त होने के समय जानते थे। उन्होंने कभी यह प्रयत्न नहीं किया कि कुछ काल बाद उन्हें अंग्रेजी को छोड़ कर क्षेत्रीय भाषाओं में कार्य करना है। अतः अन्य भाषाओं की सामर्थ्य के बारे में शंकाशील होने की मनोवृत्ति कोरी बहानेबाजी है, जो अब नहीं चलने देनी चाहिये। यह भी ध्यान में रखने की बात है कि क्षेत्रीय भाषा को राजभाषा के रूप में स्वीकार कर लेने के बाद ऐसा न हो कि यह निश्चय अमल में न लाया जाय, जैसा कि अक्सर देखने में आता है। नौकरशाही का यह भी एक हथकंडा है कि किया हुआ निश्चय कागज में ही रहे, अमल में न आने पाये। इस ओर से भी सावधान रहना परमावश्यक है। कहीं ऐसा न हो कि जो परिस्थिति हिन्दी के लिए पैदा कर दी गयी है, वही क्षेत्रीय भाषाओं के लिए भी पैदा कर दी जाय[?] प्रयत्न ऐसा ही चल रहा है। समय रहते चेतने का स्वभाव हमारे नेताओं का नहीं है। अतः सर्वोदयवालों को भी इस ओर अपनी अधिक-से-अधिक शक्ति लगानी चाहिए।

शिक्षा के माध्यम के परिवर्तन के बारे में भी विलम्ब नहीं होना चाहिए। प्रत्येक राज्य में वहाँ की क्षेत्रीय भाषा को शिक्षा का माध्यम बना देना चाहिए। इस सम्बन्ध में अनेक महानुभाव, मौसम और गैरमौसम में, बड़ी-बड़ी बातें करते रहते हैं। कभी उच्च शिक्षा का सवाल उठाते हैं, कभी वैज्ञानिक और तकनीकी शिक्षा की बातें कहते हैं। वैसे ईमानदारी के साथ हमारी भाषाओं को अंग्रेजी के साथ मिला कर देखा जायगा तो वे उतनी सामर्थ्यहीन नहीं निकलेंगी, जितनी बताई जाती हैं। हिन्दी में ही प्रायः ६ लाख शब्द हैं, जब कि अंग्रेजी में ढाई लाख से कुछ अधिक हैं। बंगला में हिन्दी से अधिक शब्द निकलेंगे। फिर भी अंग्रेजी-भक्त उल्टी-सीधी बातें कर रहे हैं। किन्तु यह विडम्बना देश अब तक

बहुत सुन चुका है। अब इस बारे में अधिक विलम्ब नहीं होने देना चाहिए, वरना देश की बर्बादी जो हो रही है, वह शतमुखी हो उठेगी।

हम अंग्रेजी भाषा के बारे में भी दो शब्द कहना चाहते हैं। हमने अभी तक जो कुछ लिखा है, उसे अंग्रेजी के विरोध के रूप में नहीं लेना चाहिये। अंग्रेजी से हमें भी बहुत प्रेम है। उसने हमारे लिए विश्व-साहित्य-भण्डार का भव्य द्वार खोल दिया था और आज भी वहाँ हमारी पहुँच उसी भाषा के माध्यम से है। यह इस भाषा का हमारे ऊपर असीम उपकार है। यह हमारे लिए सरस्वती-स्वरूपा है। भाषा की दृष्टि से उसकी सामर्थ्य व्यापक है। उसकी सौन्दर्यश्री की सम्मोहन-शक्ति भी असाधारण है। हमें उसका कभी अपमान नहीं होने देना चाहिए। लेकिन वह हमारे सर्वसाधारण जनों के लिए कभी सुलभ नहीं हो सकती। इस प्रयत्न की आवश्यकता भी नहीं है। इसमें अंग्रेजी का गौरव भी नहीं है। उसका कल्याण-कारी रूप हमारे लिए यही है कि विश्व साहित्य भण्डार के रत्न क्षेत्रीय भाषाओं में उपलब्ध करने के लिए वह हमारा मुख्य साधन बनी रहे। (समाप्त)

मद्यपान-निषेध पर बापू के विचार

अखिलेश कुमार

गांधीजी के पहले अपने देश के समाज-सुधारकों ने शराबबन्दी या मद्यपान निषेध के लिए प्रयास किया। गांधीजी ने भी, समाज-दार्शनिक होने के नाते, मद्यपान को एक सामाजिक बुराई माना। खास तौर से भारत जैसे गर्म देश के लिए उनका विचार मद्यपान को मान्यता नहीं देता। अन्य देशों की अपेक्षा भारत में इसे अधिकतर व्यसन और आदत के रूप में अख्तियार किया गया है। अन्य पाश्चात्य देशों के विषय में गांधीजी का स्पष्ट मत है कि—

"सब आदमियों और सब जगह की आबहवाओं के लिए मैं इस तरह का एक नियम निर्धारित नहीं कर सकता कि शराब पीना पाप है। मैं यह भलीभाँति समझता हूँ कि अत्यन्त शीत प्रधान देशों में इसकी जरूरत है। इसलिए जो युरोपियन अपने हरेक भोजन के साथ परिमित मात्रा में शराब पीना बुराई नहीं समझता, बल्कि जरूरी समझता है, उस पर शराबबन्दी न लादने का मैं जरूर ध्यान रखूँगा। यह ख्याल रखने की बात है कि हिन्दुस्तान में जिस तरह आम तौर पर शराब पीने को व्यसन माना जाता है, ऐसे युरोपियन समाज में नहीं माना जाता है। इसलिए भलमनसाहत के ख्याल से भी (जो कि अहिंसा का ही एक रूप है) मैं यह बात उनके ऊपर ही छोड़ूँगा कि जिस देश को उन्होंने ग्रहण किया है, वहाँ के आचार का वे ख्याल रखें।" (१)

ऐसा प्रतीत होता है कि गांधी-युग में सर्वप्रथम १९२१ के लगभग मद्यपान-निषेध आन्दोलन प्रारम्भ किया गया था। उस समय असहयोग की व्यापक लहर थी। असहयोग का आरम्भ आत्मशुद्धि की कल्पना पर आधृत था। आन्दोलन भी तब तक सफलता पर रहा या चलता रहा, जब तक इसमें अशुद्धि न आ गई। पहली बार आवाहन किया गांधीजी ने :

"इन अभागे मनुष्यों को जो इस व्यसन के गुलाम बन गये हैं, अपने आपसे बचाने की जरूरत है। उनमें से कुछ तो ऐसी मदद चाहते भी हैं। आप इस झूठे तर्क के धोखे में न आइये कि भारत को जबरन निर्व्यसनी नहीं बनाना चाहिये और जो शराब पीना चाहते हैं, उन्हें सुविधाएँ अवश्य मिलनी चाहिए। राज्य अपनी प्रजा के दुर्व्यसनों के लिए इन्तजाम नहीं करता। हम वेश्यालयों का नियमन नहीं करते और उनके लिए परवाने नहीं देते। हम चोरों को अपनी चोरी की कुटेव जारी रखने के लिए सहूलियतें मुहैया नहीं करते। मैं शराबखोरी को चोरी और शायद व्यभिचार करने से भी अधिक निन्दनीय मानता हूँ। क्या वह अक्सर इन दोनों की जननी नहीं होती? मेरा अनुरोध है कि आप शराब की आमदनी का अस्तित्व मिटा देने और शराबखानों को उठा देने के काम में देश का साथ दें।" (२)

शराब के नशे में चूर शराबी असामाजिक तत्त्व बन जाता है। उसका पिशाच जाग उठता है और ऐसी हालत में वह कुछ भी कर सकता है। इस स्थिति की ओर इंगित करते हुए गांधीजी ने लिखा है :

"शराब और नशीले द्रव्य जिनको उन्हें व्यसन है और जो उनका रोजगार करते हैं, दोनों को गिराते हैं। शराबी पत्नी, माता और बहिन का भेद भूल जाता है और ऐसे गुनाह कर डालता है, जिन पर वह अपनी शान्त अवस्था में लज्जा अनुभव करेगा। जिसका मजदूरों से कुछ भी सम्बन्ध आया है, वह जानता है कि वे शराब के पैशाचिक प्रभाव के अधीन होते हैं, तब उनकी क्या दशा होती है। दूसरे वर्गों के व्यक्तियों पर भी उसका प्रभाव ऐसा ही होता है। मैंने एक जहाज के कप्तान को नशे की हालत में बेसुध होते देखा है। जहाज की जिम्मेदारी उसकी इस हालत के कारण प्रधान अधिकारी को सौंप देनी पड़ी थी। बैरिस्टरों को शराब पीने के बाद नालियों में लुढ़कते देखा गया है।" (३)

मद्यपान का तात्पर्य सिर्फ शराब पीने से नहीं है। इसके अन्तर्गत सभी प्रकार के नशीले पेय आ जाते हैं, जिन सबका निषेध आवश्यक है। इनके निषेध में दण्ड की सहायता लेने को भी गांधीजी अनिच्छापूर्वक तैयार मालूम पड़ते हैं, जब वे कहते हैं :

"मैं मानता हूँ कि भूख से पीड़ित स्त्री-पुरुष जो छोटी मोटी चोरियाँ करते हैं और जिनके कारण उन पर मुकदमें चलाये जाते हैं और सजाएँ दी जाती हैं, उनके बनिस्बत भारत में मद्यपान ज्यादा बड़ा अपराध है। प्रेम की शक्ति की पूरी उपलब्धि न होने के कारण मैं दण्ड-विधान की प्रथा को, उसके संयत रूप में अनिच्छापूर्वक और लाचारी से स्वीकार करता हूँ। और जब तक मैं उसे स्वीकार करता हूँ, तब तक मैं इस बात की हिमायत करना अपना कर्तव्य मानता हूँ कि जो लोग इस विनाशक पेय का निर्माण करते हैं, और जो बार-बार चेतावनी देने पर भी उसका व्यसन छोड़ते नहीं हैं, उन्हें बिना लम्बी-चौड़ी कार्यवाही किये तड़ा-तड़ सजाएँ दी जायँ। मैं अपने बच्चों को आग में या गहरे पानी में जाने से जबरन रोकने में संकोच नहीं करता। शराबरूपी लाल पानी में जा पड़ना धधकती भट्टी या बाढ़ में जा पड़ने से भी ज्यादा खतरनाक है। भट्टी या बाढ तो केवल शरीर का ही नाश करती है, शराब शरीर और आत्मा दोनों का नाश कर डालती है।" (४)

शराबबन्दी का सवाल बढ़ती हुई एक सामाजिक बुराई को रोकने का सवाल है। इसके लिए समय अनुकूल हो तो आन्दोलन खड़ा कर देना ठीक होगा। ऐसे आन्दोलन में हिंसक कार्यों को स्थान नहीं, निर्माण-कार्य या रचनात्मक कार्य को ही स्थान मिलना चाहिए। मद्यपान निषेध भी एक रचनात्मक कार्य है। इसके लिए तीन प्रकार से आन्दोलन किया जा सकता है—

"(क) शराब पीने वालों के घर जाकर समझाने से (ख) शराबखानों के मालिकों को अपनी दुकानें बन्द करने को समझा बुझाकर; और (ग) शराब के दुकानों के आस पास धरना देकर। ये तीनों कार्य साथ-साथ भी किये जा सकते हैं। पहले दो में तो किसी प्रकार का खतरा ही नहीं है। तीसरे में बलात्कार का भय जरूर है। जाहिर है कि इस तरह पिकेटिंग का काम हर आदमी नहीं कर सकता, और न हरेक जगह ही यह काम हो सकता है। इसलिए यह आन्दोलन बहुत ही मर्यादित होगा। परन्तु मर्यादित होते हुए भी यह काम निश्चित अच्छा है और इसका नतीजा भी अच्छा हो सकता है। अतएव कोई व्यक्ति आत्म विश्वासपूर्वक इस आन्दोलन का संचालन करेंगे, तो उससे मुझे हर्ष ही होगा।" (५)

इस प्रकार आन्दोलन को आगे बढ़ा कर पूज्य बापू की आत्मा को हर्षोल्लसित किया जा सकता है। जाहिर है कि जनमत शराबबन्दी के पक्ष में होगा। कुछ विचारक कार्यकर्ताओं को आन्दोलन मर्यादित एवं अनुशासित बनाने के लिए आगे आना होगा। आन्दोलन को तीनों प्रकार या तो क्रमानुसार या साथ-साथ शुरू करना चाहिए। यदि शराब पीने वालों को समझाबुझा कर ही समस्या का हल निकाला जा सके तो अति उत्तम; अन्यथा अन्य दो प्रकारों को भी कार्यान्वित करना होगा। धरना देना तभी उचित माना जायेगा, जब कि अन्य दो प्रकारों में कुछ-न-कुछ सफलता मिली हो, प्रबल जनमत साथ हो और धरना सत्याधृत तथा अनुशासित हो। गांधीजी स्पष्ट चाहते थे कि जहाँ अशान्ति का कुछ भी भय न हो और काफी स्वयं-सेवक या शान्ति-सैनिक मिल सकते हों, वहाँ मद्यपान निषेध का आन्दोलन शुरू किया जा सकता है। आज की परिस्थिति कुछ ऐसी ही है।

(१) 'हरिजन-सेवक' : १४-८-'३७।

(२) 'यंग इण्डिया' : ८-९-'२१।

(३) यंग इण्डिया : ४-२-'२६।

(४) यंग इण्डिया : ८-८-'२९।

(५) हिन्दी नवजीवन : २४-'३०।

बहादुर नगर में शराब की समस्या

बुलन्दशहर जिले में मौजा बहादुरनगर एक गाँव है। यहाँ शराब की दुकान नये सिरे से खुली है। गाँव और आसपास के लोग इसका विरोध कर रहे हैं। शराब की दुकान खोलने के लिए गाँव भर में किसी भी व्यक्ति ने ठेकेदार को जगह किराये से नहीं दी, हालाँकि ठेकेदार छोटी-छोटी कोठरियों का किराया तीस रुपया माहवार तक देने को तैयार था!

आसपास के दो तीन गाँवों के ८-१० व्यक्तियों ने मिल कर शराब की दुकान के विरोध में विचार-विनिमय किया। फिर गाँव के नागरिकों की एक सभा हुई, जिसमें सर्वसम्मति से शराब की दुकान का विरोध करने का तय हुआ। गाँववालों के विरोध की सूचना सम्बन्धित अधिकारियों को भेज दी गयी है। इस समय शराब की दुकान गाँव के बाहर एक छोटी झोपड़ी में चल रही है।

अभी सीधी कार्रवाई के लिए कोई निर्णय नहीं लिया गया है, लेकिन अगर सारे प्रयत्न असफल होते हैं, तो अन्त में 'पिकेटिंग' के उपाय से काम लेने के सिवा ग्रामीणों के पास कोई चारा नहीं रहेगा।

मेरठ —नरेन्द्र

सर्वोदय-पात्र का विनियोग : *विनोबा द्वारा स्पष्टीकरण*

[राजस्थान से निकलने वाले 'ग्रामराज' साप्ताहिक के ता० ७ मई के अंक में जैसलमेर जिले के सर्वोदय-पात्र काम के बारे में एक तहसील की जानकारी छपी थी। एक व्यक्ति के प्रयत्न से किस तरह जिले के कई गाँवों में सर्वोदय-पात्र का काम हुआ, उसका व्यवस्थित दर्शन उस खबर से होता था। सर्वोदय-पात्र द्वारा संगृहीत अन्न या पैसे का किन कामों में उपयोग किया गया, इसका उल्लेख भी उसमें था। उस खबर पर से विनोबा ने 'ग्रामराज' के संपादक को पत्र लिख कर कार्यकर्ताओं का ध्यान इस ओर खींचा है कि सर्वोदय-पात्र का क्या उद्देश्य और मतलब है तथा उसका विनियोग किन कामों में होना चाहिए।

'ग्रामराज' में प्रकाशित जैसलमेर के सर्वोदय-पात्र के काम का ब्यौरा तथा विनोबा का पत्र हम नीचे दे रहे हैं।—सं०]

जैसलमेर जिले में सर्वोदय-पात्र कार्य

"संत हरवंशसिंह पिछले एक वर्ष से भादरिया गाँव में सेवा कार्य कर रहे हैं, और बहुत दूर-दूर गाँवों में भ्रमण करके सर्वोदय पात्र की व्याख्या लोगों को समझा रहे हैं। भादरियारायजी (देवी) के मन्दिर का जीर्णोद्धार भी वे करवा रहे हैं और दस हजार रुपये के करीब का चंदा उन्होंने एकत्रित करके खर्च किया है। सर्वोदय-पात्रों का लेखा-जोखा तथा अब तक जिस प्रकार उसका विनियोग किया गया, उसकी तफसील निम्न प्रकार है :—

गाँव	तहसील	कुल परिवार	सर्वोदय-पात्र	विनियोग	विशेष
भादरिया	(पोकरण)	६८	६८	बच्चों को शिक्षण-साधन दिलवाये गये।	कुल अनाज १२॥ मन होगा।
फेरू	(जैसलमेर)	७०	७०	खर्च नहीं किया।	अनाज की बिक्री के रु. १४७) जमा हैं।
ल्योंहारकी	(पोकरण)	८०	३२	पुस्तकालय के सिवा मंदिर में पक्षियों को भी डाला जाता है।	(१) कुल अनाज मन ६॥ हुआ है। (२) आज कुल ७० पात्र हैं।
छायण	,,	१५०	७०	खर्च नहीं किया।	कुल अनाज मन ८ करीब एकत्रित हुआ है।
लाटी	,,	१००	७३	खर्च नहीं किया।	कुछ अनाज करीब मन ११ हुआ, जिसके रु. १८३॥) हैं।
छोलिया	,,	१००	७०	पक्षियों को डाला जाता है।	कुल अनाज मन ६॥ हुआ है।
नवातल्ला	,,	८०	५०	अभी तक सम्हाला नहीं गया।	
पोकरण	,,	१०००	४८	अभी तक सम्हाला नहीं गया।	
सोढाकंवर	(जैसलमेर)	१००	२५	हाल ही में स्थापित किये गये हैं।	
दुधू	,,	७०	२०	हाल ही में स्थापित किये गये हैं।	
खेतोलाई	(पोकरण)	१००	२०	हाल ही में स्थापित किये गये हैं।	

यह पिछले छः महीने का प्रयास है और केवल संत हरवंशसिंह के द्वारा है।

गाँधी-बाल-मंदिर जैसलमेर के १२५ विद्यार्थी नित्य ही विद्यालय में रखे गये पात्र में धान डालते हैं, जिसका विनियोग करना बाकी है।

पंचायत समिति जैसलमेर अपने प्रत्येक स्कूल में सर्वोदय-पात्र रखवाने के लिए प्रयत्नशील है।

—भगवानदास माहेश्वरी"

विनियोग के सम्बन्ध में विनोबाजी की सूचना

'ग्रामराज' के ७ मई के अंक में जैसलमेर-पोकरण तहसीलों में जो सर्वोदय-पात्र का काम चल रहा है, उसके बारे में सुंदर जानकारी दी है। अकेले संत हरवंशसिंहजी ने इतना सुव्यवस्थित काम किया, देख कर खुशी हुई।

इसमें सर्वोदय-पात्र के *विनियोग के बारे में* कुछ सोचने का रह जाता है। बच्चों की तालीम, पुस्तकालय, पक्षियों का जीवन-निर्वाह यह सभी बातें कम-बेसी अच्छी ही हैं। लेकिन सर्वोदय-पात्र का उद्देश्य उससे नहीं सधता। सर्वोदय-पात्र की योजना शांति-सेना की योजना के अन्तर्गत है। शांति के और शांति-सेना के विचार को वह लोक-सम्मति है। उसका उपयोग शांति-सैनिकों का शिक्षण, योगक्षेम और इन्तजाम में करना चाहिए। अभी जयप्रकाशजी ने उसके लिए शांति-पात्र ही नाम सुझाया है, और *वह नाम मैं भी पसंद करता हूँ*। क्योंकि उसमें उसके विनियोग के बारे में स्वयं स्पष्टता हो जाती है। आशा करता हूँ सर्वोदय-सेवक, जो सर्वोदय-पात्र का आयोजन करते हैं, इस बात का ख्याल रखेंगे।

शरणिया आश्रम, गौहाटी (आसाम)
१७ मई, १९६१

—विनोबा का जय जगत्

डाकू-समस्या एवं श्री जौहर का वक्तव्य

[पिछले दिनों मध्य प्रदेश के कार्यवाहक इन्स्पेक्टर जनरल श्री जौहर ने जो वक्तव्य दिया था, उस पर पिछले अंक में श्री काशिनाथजी त्रिवेदी ने 'क्या आत्मसमर्पण नाटक मात्र था?' लेख में अपनी वेदना प्रकट की। यहाँ पर कानपुर से निकलने वाले साप्ताहिक 'सहयोगी' ने जो अपने विचार प्रकट किये हैं, वे दे रहे हैं। —सं०]

मध्य प्रदेश के पुलिस-विभाग के इन्स्पेक्टर जनरल श्री रुस्तम की गद्दी उनके स्थानापन्न श्री जौहर ठीक तरह से चला रहे हैं, ऐसा उनके ताजे वक्तव्य से पता चलता है। श्री जौहर तो श्री रुस्तमजी से भी आगे जाकर बताते हैं कि श्री तहसीलदार की मुक्ति के लिए ही डाकुओं ने आत्म-समर्पण किया था! ऐसी और न जाने क्या-क्या बातें उन्होंने कही हैं!

पर डाकुओं ने आत्मसमर्पण विनोबाजी के सामने क्यों किया, इसका हेतु (मोटीव) देखने का काम अभी तक तो निकला नहीं है, सबके अपने-अपने तर्क ही हैं, परन्तु एक तथ्य स्पष्ट है कि 'चाहे मौत की सजा भी क्यों न मिले, आत्म-समर्पण करना है, यह परिणाम तो उस आत्मसमर्पण का स्पष्ट ही था। इस परिणाम से ही हेतु जाना जा सकता है। अभी मुकदमे चल रहे हैं एवं वहाँ शांति-सैनिकों द्वारा जो काम चल रहे हैं, उनका मुआयना करने पर सहज पता भी चलता है कि जो भी हुआ है, उसका कितना अच्छा असर वातावरण पर पड़ा है। कई लोगों ने हथियारों के लाइसेंस 'रिन्यू' नहीं कराये, कइयों ने डाकू-परिवारों की सम्पत्ति वापस कर दी, कइयों ने जेलवासी डाकुओं के घरवालों की मदद की, ये सारे शुभ परिणाम नहीं आ सकते थे, यदि आत्म-समर्पण में 'छल' होता! सर्वोदय वालों से एवं *पुलिसवालों से ज्यादा समझ* जनता में होती है। वह सहज बुद्धि से खरा-खोटा पहिचान लेती है। वहाँ की जनता ने मन ही मन समझ लिया है कि जो काम पुलिस ने नहीं किया, वह उस आत्म-समर्पण ने किया है।

रहा सवाल समस्या हल नहीं हुई, इस बात का, एवं साथ ही पुलिस के मार्ग में बाधाएँ आने का।

'समस्या हल करके ही वहाँ से हटूँगा', ऐसा दावा कभी विनोबा ने नहीं किया था। अतः समस्या हल कैसे हो, जब तक कि उस मार्ग का अनुसरण दूसरे न करें। कुछ सर्वोदयी सेवक उस अनुसरण में लगे तो हैं, मगर पुलिस ही उनकी बाधक हो रही है! गवाही में पूरी बात ही पलट दी जाती है या और तकलीफें दी जाती हैं!

एक बात हमारी समझ में नहीं आती कि पुलिस के सामने बाधा कहाँ से आयी? न तो विनोबा ने, न सर्वोदयवालों ने कभी भी सरकार से यह कहा है कि वे अपना अभियान बन्द कर दें! उनका अभियान चालू भी है। तब बाधा कहाँ से आयी?

मुख्य बात यह है कि पुलिस-ऐक्शन के सिवा और भी कोई जरिया डाकू-समस्या के हल के लिये इस्तेमाल किया जा सकता है या नहीं?

श्री जौहर ने एक बात अनजाने बड़े मार्के की कह दी है! उन्होंने कहा है कि विनोबाजी यदि और वहाँ रुकते, तो फिर *यह समस्या हल करना सुलभ होता!*

श्री जौहर ने अपने ही पूर्व स्टेटमेंट को 'कान्ट्राडिक्ट' किया है! उन्होंने यह स्वीकार किया है कि विनोबाजी के द्वारा *कुछ हो सकता था (यदि वे वहाँ रहते)*, याने विनोबाजी के द्वारा कुछ भी नहीं हुआ, यह आरोप उन्होंने ही खण्डित कर दिया! क्योंकि विनोबाजी वहाँ रहे, कुछ किया, फल भी कुछ निकला! तभी तो आगे की आशा भी जौहर ने प्रकट की! अब रही और वहाँ रहने की बात, सो सोचिये कि क्या विनोबाजी जिन्दगी भर वहाँ रहते? और खुदा न *ख्वास्ता वे न रहे*, तो! अतः व्यक्ति नहीं, उसकी पद्धति देखी जाती है! विनोबाजी ने जो मार्ग बताया, उसकी समाजशास्त्रीय एवं न्याय-शास्त्रीय दृष्टि से जाँच होनी चाहिए एवं यदि वह मार्ग तर्कशुद्ध हो, तो उस पर अमल होना चाहिए। अमल करने का काम समाजसेवकों का है यह ठीक है, पर सरकार एवं पुलिस को इसमें पूरी मदद एवं अनुमोदन तो देना ही चाहिए।

उत्तर प्रदेश ने स्वयं अभिक्रम से कुछ प्रयोग भी किये हैं एवं 'खुले' जेल खड़े किये हैं। उसी तरह समाजशास्त्र के ज्ञाताओं ने बताया है कि दण्ड एवं अपराध की समस्या का हल पुराण-पन्थी तरीकों से अब करने का विचार हमें छोड़ देना चाहिए। क्या मध्य प्रदेश में ऐसा नहीं हो सकता?

श्री जौहर एवं उनके सहविचारकों से हमारी विनति है कि वे इस समस्या की जड़ में जाकर उसका तटस्थ रूप से अध्ययन करें एवं प्रचलित तरीकों से ही अपराध-समस्या हल करने का आग्रह न रख कर दूसरे भी मार्ग खोजें।

महाराष्ट्र में ग्रामदानी गाँवों के

ग्रामीणों का शिविर और सामूहिक पदयात्रा

रत्नागिरी-कोल्हापुर जिले की चार तहसीलों की ग्रामदानी गाँवों के ८० व्यक्तियों ने माणगाँव क्षेत्र के केरवडे गाँव में ता० २२–२३ मार्च को हुए शिविर में भाग लिया। केरवडे गाँव का ग्रामदान पिछले वर्ष हुआ था। शिविर के लिए १२ ग्रामदानी गाँवों से ६०० रु० की सहायता आवश्यक चीजों और श्रम के रूप में मिली। पहले दिन श्री गोविंदराव शिंदे मार्गदर्शन के लिए शिविर में आये थे। उस दिन शिविरार्थियों ने अपने गाँव की जानकारी और अपने कार्य का परिचय दिया। दूसरे दिन गाँव की विभिन्न समस्याओं पर चर्चा हुई। ता० २३ को दोपहर को माणगाँव क्षेत्र के ग्रामीणों का सम्मेलन हुआ। शिविर के साथ ही खादी-ग्रामोद्योग और अम्बर चरखे की छोटी सी प्रदर्शिनी भी हुई।

ता० २४ से २८ अप्रैल तक शिविरार्थियों की चार टोलियों ने केन्द्र के चारों ओर के गाँवों में पदयात्राएँ कीं। ऐसी पदयात्राओं द्वारा ग्रामीणों को प्रत्यक्ष शिक्षण तो मिलता ही है, बल्कि दूसरे गाँववालों को ग्रामदान और ग्राम संकल्प का विचार भी समझाया जाता है। पदयात्रा में कुडाल, सावंतवाडी के विद्यार्थी भी शरीक हुए थे।

दो नये ग्रामदान प्राप्त

पदयात्रा में सावंतवाडी तहसील के धारपी, जनसंख्या ५०० और कुडासी, जनसंख्या ३००; इन दो गाँवों ने ग्रामसंकल्प जाहिर किया।

ता० २९ अप्रैल को श्री जयप्रकाशजी की उपस्थिति में ग्रामदानी गाँव विन्दूर में पदयात्रा की समाप्ति हुई। श्री जयप्रकाशजी ने उस क्षेत्र के ग्रामदानी गाँवों की प्रगति के लिए समाधान प्रकट करते हुए यहाँ के सभी, सौ गाँवों को ग्रामदानी गाँव बनाने के लिए आवाहन किया। उन्होंने कहा : "समाजवाद का, सर्वोदय का विचार प्रत्यक्ष रूप में हम लोगों ने ग्रामदानी गाँवों में प्रकट किया है। जो लोग अपने को सुसंस्कृत कहलवाते हैं, वे आदर्श समाज-रचना कहाँ करा सके? देहात के लोग सहकार्य से ही अपना सर्वांगीण विकास कर सकते हैं; न कि स्पर्धा से। और यह बात वे जल्दी समझ सकते हैं, इसीलिए ग्रामदान का विचार उन्हें जँचता है। सब पक्ष अगर यह कार्यक्रम अपना लें, तो देश में महान् क्रांति हो सकती है।"

सिवनी जिला सर्वोदय-कार्यालय की ओर से श्री सत्यनारायण शर्मा ने १९६०–६१ का आय–व्यय विवरण पेश किया।

रु. न.पै.	आय
५९=८८	पिछले वर्ष की बाकी रकम
४७८=२२	म.प्र. सर्वोदय मंडल से विनोबाजी को दी गयी भेंट का जिले का हिस्सा।
१०१७=००	विनोबाजी को जिले के ६६ व्यक्तियों द्वारा भेंट
१२२=००	साधनदान, सम्पत्तिदान
४५=६५	सर्वोदय-पात्र से
११७=००	सूतांजलि से
१००=००	हरिजन सेवक संघ को जनपद सभा, सिवनी से छात्रवृत्ति से मिला
कुल १९३९–७५	

रु. न.पै.	व्यय
१०१७=००	विनोबाजी को जिले की ओर से सादर भेंट
३३२=७५	विनोबाजी की यात्रा में व्यवस्था तथा अन्य खर्च
११०=१८	अतिथि, कार्यकर्ता भोजन
१६५=०६	प्रवास
४२=००	स्टेशनरी
२२=००	पोस्टेज
३५=०५	कार्यालय-व्यवस्था
१९=५०	सूतांजलि का छठवाँ हिस्सा प्रान्त को
१९=५०	सूतांजलि का छठवाँ हिस्सा सर्व सेवा संघ को
७=६०	सर्वोदय-पात्र का छठवाँ हिस्सा प्रान्त को
७=६०	सर्वोदय-पात्र का छठवाँ हिस्सा सर्व सेवा संघ को
३०=००	प्रचार-कार्य
१३१=१२	कार्यालय में नगद जमा
कुल १९३९–७५	

जिला सर्वोदय–कार्यालय का कार्य-विवरण : एक नजर में

३०१	एकड़ भूदान प्राप्त	३२३	एकड़ भूदान वितरण
१५००	गुंडियाँ सूतांजलि प्राप्त	२	प्राथमिक सर्वोदय-मंडल
३००	सर्वोदय-पात्र	२	ग्राम-स्वावलंबन कार्य
१०	महिला-शिविर	४१	जनसभाएँ
७	लोक-सेवक	१५	सर्वोदय-मित्र
८	सर्वोदय-शिविर गाँवों में	२००० रु० का	साहित्य-प्रचार
५	हरिजनों के लिए कुओं के निर्माण में मदद	२२	हरिजन–सभाएँ

रंग-भेद के खिलाफ लड़ने वाले अमरीकी सत्याग्रहियों का सर्व सेवा संघ द्वारा समर्थन

राष्ट्रपति केनेडी के रुख की सराहना

सर्व सेवा संघ के अध्यक्ष श्री नवकृष्ण चौधरी ने अमेरिकन नीग्रो नेता पादरी मार्टिन ल्यूथर किंग को एक तार भेजा है, जिसमें रंग-भेद के सामाजिक अन्याय के खिलाफ उन्होंने अमरीका में, खासकर वहाँ के दक्षिणी राज्यों में, जो आन्दोलन चला रखा है, उसकी सफलता की कामना की है। श्री नवबाबू ने मार्टिन ल्यूथर किंग को आश्वासन दिया है कि अन्याय के प्रतिकार की इस लड़ाई में हिन्दुस्तान के सर्वोदय-कार्यकर्ताओं की सहानुभूति उनके साथ है।

संघ के अध्यक्ष ने भारत में स्थित अमरीकी राजदूत को भी एक तार भेजा है, जिसमें यह आशा प्रगट की है कि अमरीका के दक्षिणी राज्यों के अधिकारियों और जनता को सद्बुद्धि हासिल हो, जिससे वहाँ नीग्रो नागरिकों के साथ जो भेदभाव बरता जा रहा है, वह जल्दी ही समाप्त हो। अमेरिकन राष्ट्रपति केनेडी और उनकी केंद्रीय सरकार ने इस मामले में रंग भेद के खिलाफ सत्याग्रह करने वालों के प्रति सहानुभूति और उनका विरोध करने वालों के खिलाफ कड़ाई का रुख अख्तियार किया है, उसका सर्व सेवा संघ की ओर से अभिनन्दन किया है।

अक्राणी-अक्कलकुवा ग्रामदानी सघन क्षेत्र की प्रगति

सातपुडा सर्वोदय-मंडल, धडगाँव (महाराष्ट्र) के मार्च माह के कार्य-विवरण के अनुसार ५ मार्च को धडगाँव में श्री देवरभाई आये और उन्होंने सर्वोदय-मंडल के कार्य के बारे में जानकारी प्राप्त की। निमगव्हाण में कार्यकर्ताओं की सहायता से किसान खेतों के बाँध सामूहिक श्रम से तैयार करते हैं। इस गाँव में एक जगह बाँध द्वारा वर्षा के पानी को रोक कर तालाब बनाने का कार्य श्रम-दान द्वारा हो रहा है। कार्यकर्ताओं ने अपने-अपने क्षेत्र के ३२ गाँवों का दौरा करके ग्रामसभाओं द्वारा लोगों को अनाज के भंडार और सर्वोदय-पात्र का महत्त्व समझाया।

नीचे दिये गाँवों में इस तरह कार्य हुआ है :

गाँव	सर्वोदय-पात्र	अनाज-भंडार	
निमगव्हाण	१५	२९	मन
भरड	१०	४०·१०	मन
धडफल्या	२१	२	मन
बीरवस	४८	६	मन

मोलगी क्षेत्र के १३ गाँवों में २४० सर्वोदय-पात्र हैं, २४ गाँवों में १२५ मन अनाज है। बमाना क्षेत्र में ९८ सर्वोदय-पात्र और ५ गाँवों के भंडारों में १०८ मन अनाज है। बाँध की लंबाई ५६४३ फीट, और ९ कुएँ हैं।

कुल १५ मन १० सेर तेल तेलघानी में पेरा गया। मधुमक्खी-पालन की ५ पेटियाँ हैं। अमलीबारी क्षेत्र में १८ मन अनाज और सामुदायिक खेती का २३ मन ३० सेर; इस तरह कुल ४१ मन ३० सेर अनाज अनाज-भंडार में जमा है। हटवाई क्षेत्र के भंडार में कुल ७ मन १० सेर अनाज है।

निमगव्हाण, वरखेडी, पानबारी, इन तीन ग्रामस्वराज्य सोसाइटियों की प्राथमिक सभाएँ हुईं। हरएक कार्यकर्ता के पास 'हीलेन' की प्रथमोपचार की दवाएँ रहती हैं। दो स्थानों पर ग्राम निवासियों के होमियोपैथी इलाज की भी व्यवस्था की गयी है।

श्री जयप्रकाशजी का कार्यक्रम

ता. ४ से १० जून सोखोदेवरा, ११ से १३ जून सारण जिला, १४–१५; १९ जून मुजफ्फरपुर जिला, १६-१७-१८ जून चम्पारण जिला, २०-२१ २२ दरभंगा जिला, २३ २४ मुंगेर जिला। २५-२६-२७ सहरसा जिला, २८-२९-३० जून १ जुलाई पूर्णियाँ जिला। २ ३-४ जुलाई भागलपुर जिला, ५-६-७-८ संथाल परगना जिला, ९ १० जुलाई मुंगेर जिला।

श्री अण्णासाहब सहस्रबुद्धे का कार्यक्रम

ता. ४-५-६ जून अक्राणी महाल क्षेत्र, धडगाँव। ता ८ से १० जून खादी-ग्रामोद्योग कमीशन, बम्बई। ता. ११ जून खादी-भंडार, सीताबर्डी, नागपुर। ता. १२-१३ सर्व सेवा संघ, सेवाग्राम। ता. १४ १५ भोपाल। ता. १६ से १९ तक खादी-समिति, हैदराबाद। ता. २० से २५ जून तक सेवाग्राम।

समाचार सार

● ३०–३१ मई और १ जून को रुहेलखंड, आगरा और मेरठ कमिश्नरियों के विभिन्न जिलों के कार्यकर्ताओं की एक गोष्ठी ध्यान सुमेढ़ा, कुचेसर रोड से ७ मील पर होगी। इसमें सर्वोदय-विचार क्रांति जन-आंदोलन कैसे बने, इसके विभिन्न पहलुओं पर चर्चा होगी।

● पंजाब राज्य खादी व ग्रामोद्योग-मंडल की ओर से आयोजित ग्रामीण तेल-उद्योग के कार्यकर्ताओं की बैठक में पंजाब के वित्त-मंत्री और मंडल के अध्यक्ष डा० श्री गोपीचंद भार्गव ने ग्रामीण तेल-उद्योग की महत्ता पर प्रकाश डालते हुए कहा अच्छे बीजों का संग्रह कर जनता को स्वास्थ्यप्रद तेल मुहैया करने की कोशिश कार्यकर्ताओं को करनी चाहिए। साथ ही आपने १९६०-६१ के उत्पादन में ८२ प्रतिशत की वृद्धि पर समाधान व्यक्त किया।

● पंजाब खादी-ग्रामोद्योग की विभिन्न संस्था और पंजाब राज्य खादी-ग्रामोद्योग मंडल के कार्यकर्ताओं के बीच चंडीगढ़ में भाषण करते हुए उ० प्र० के भूतपूर्व मंत्री श्री विचित्रनारायण शर्मा ने विस्तार से नया मोड़ के बारे में चर्चा की।

● हिसार जिला सर्वोदय-मंडल की ओर से दाता-संघ की एक सभा हुई, जिसमें जिले के लोकसेवक और आदाताओं ने भाग लिया। तय हुआ कि सर्वोदय के समस्त प्रचार-कार्य के लिए एक 'सर्वोदय-भवन' तैयार किया जाय।

● बिहार खादी-ग्रामोद्योग संघ मधुबनी में स्व० श्री लक्ष्मीबाबू का स्मृति-दिवस श्री शितिकंठ झा की अध्यक्षता में मनाया गया। सूत्रयज्ञ और प्रार्थना के साथ सभा में कार्यकर्ताओं ने लक्ष्मीबाबू को श्रद्धांजलि अर्पित की।

● विनोबाजी की जम्मू कश्मीर यात्रा के अवसर पर कर्णवाटा, जिला कठुआ में जिस आश्रम की बुनियाद रखी गयी थी, वह आश्रम बन कर पूरा हो गया। पिछली गांधी-जयंती के अवसर पर यहाँ के निवासियों ने तय किया है कि आपस के झगड़ों का निपटारा गाँव में ही करेंगे, कचहरी में नहीं जायेंगे। साथ ही ३३ परिवारों ने संकल्प किया कि वे सहकारी खेती करेंगे।

श्री नवकृष्ण चौधरी का कार्यक्रम

९ जून से १० जून तक विनोबाजी के साथ असम में पदयात्रा में रहेंगे। ११ जून को गौहाटी से निकल कर १३ जून को रात को काशी पहुँचेंगे। १४ और १५ जून को काशी में रहेंगे और १५ जून को साहित्य संपादन समिति की बैठक में भाग लेंगे। १७ और १८ जून को हरदा में मध्य प्रदेश के सर्वोदय-सम्मेलन में भाग लेकर २० जून को अनुगुल पहुँचेंगे।

महाराष्ट्र प्रदेश के संक्षिप्त समाचार

रत्नागिरी जिले के माणगाँव क्षेत्र के २१ गाँवों में सरकारी भूमि एक साल की शर्त पर किसानों को जोतने के लिए दी जाती थी। इस भूमि पर कर्ज नहीं मिल सकता। वैसे ही अन्य सुधार भी उसमें नहीं कर सकते। इसी कारण यह क्षेत्र पिछड़ा हुआ है। किसानों की इन समस्याओं की चर्चा करने के लिए किसानों के बृहत् सम्मेलन का आयोजन हुआ। सम्मेलन के अध्यक्ष श्री गोविंदराव शिंदे थे। सम्मेलन में स्वीकृत प्रस्ताव में कहा गया है कि सरकार इस क्षेत्र की पड़ती जमीन ग्रामसभा, सोसाइटी या ग्राम-पंचायत को गाँव की मालिकी की मान कर देकर इस क्षेत्र के किसानों ने ग्रामदान के विचार को अपना कर सहकार से जीने का जो संकल्प किया है, उसमें सहायता करे।

सरकार के सहकार से यह समस्या हल करने और जनमत संगठित करने के लिए २१ गाँवों के १५ मुखिया व्यक्तियों की एक समिति नियुक्त की गयी। समिति के मंत्री श्री विजय नारकर चुने गये हैं।

सातारा जिले के मोरे गाँव के बम्बई शहर में रहने वाले लोगों की एक सभा १ अप्रैल को बम्बई में हुई। उन्हें ग्राम-स्वराज्य का विचार समझाया गया। सभा में तय हुआ कि सामूहिक फंड से मोरे ग्राम-स्वराज्य सोसाइटी के शेयर की पूँजी के लिए ५०० रु. दिये जायँ। बम्बई के कुछ लोग गाँव के काम की ओर ध्यान दें और कोरा केन्द्र बोरीवली की विभिन्न प्रगति-कार्य और प्रयोगों को समझ लें।

मोरे और गुरेघर इन गाँवों से १५० एकड़ भूमि का 'बंडिंग' का काम पूरा किया गया। मोघरगाँव में ग्राम-स्वराज्य भंडार और अनाज-संग्रह के लिए नया मकान बनाया जायेगा।

डांग घिरवाडे ग्राम-परिवार के कार्य की जाँच की गयी।

कुडासी, काकडेवडे, डांग घिरवाडे, सावलीमाल, वासी इन गाँवों की ग्राम-इकाई बनाने का तय किया गया।

कुलाबा जिले में शिरवली और सागोदे, दो गाँवों में पूरी सादरला हो और अंबर चरखा चले, ऐसी योजना की गयी है। शेडाशी और सागोदे बु० गाँव की ग्राम-स्वराज्य सोसाइटियाँ रजिस्टर्ड कर ली गयी।

यहाँ एक नई समस्या उपस्थित हुई है कि कोयना बाँध-योजना के कारण जो गाँव पानी में गये हैं, वहाँ के निर्वासित कुलाबा क्षेत्र में आये हैं। आदिवासी जिन जमींदारों की भूमि जोतते थे, उन भूमि-मालिकों ने अच्छी कीमत प्राप्त होने के कारण वह भूमि निर्वासितों को बेच दी, इसलिए अब ६०० आदिवासी भूमिहीन हो गये हैं। इस समस्या का हल कैसे करें, इसके बारे में स्थानीय कार्यकर्ता सोच रहे हैं।

ठाणे जिले के क्षेत्र में महालक्ष्मी स्थान पर हर साल के अनुसार १ से १० अप्रैल तक आदिवासियों का धार्मिक मेला हुआ। उसमें खादी-ग्रामोद्योग का स्टाल और प्रदर्शिनी का आयोजन करने से काफी प्रचार हुआ। १२ अंबर चरखे शुरू हुए। उन पर १४ आदिवासी काम करते हैं।

जगह-जगह चलने वाले अंबर परिश्रमालय अप्रैल माह में समाप्त हुए। घर-घर चरखे दिये गये। कुडा (रत्नागिरी) में निर्माण-समिति का खादी उत्पत्ति-केन्द्र चल रहा है। केन्द्र में १२५ वर्गगज खादी तैयार हुई।

निवजे ग्रामदानी गाँव में गरमी के धान की फसल एक प्लाट में सामूहिक पद्धति से की गयी। ४५ मन धान हुआ। कर्ज वापस करने में उसका उपयोग करेंगे। निवजे में ३ गाँवों के लिए ग्राम-भंडार शुरू करने का तय हुआ। यहाँ जाइन्ट फार्मिंग सोसाइटी के लिए पड़ती जमीन सरकार से मिली है।

कोल्हापुर जिले के सातेवाडी ग्रामदानी गाँव में पाठशाला की इमारत और कुआँ बाँधने का काम चल रहा है। कुआँ बाँधने के लिए संपत्तिदान से ६०० रु० मिले।

सर्वोदय-पात्र

सर्वोदय-मित्र मंडल, आर्यनगर, कानपुर द्वारा संकलित २१५ सर्वोदय-पात्रों से अप्रैल माह में ८२ रु. ९४ न. पै. मिले। पिछली जमा १५ न. पै. थी। खर्च इस तरह हुआ : शान्ति-सैनिक कार्यकर्ता को सहायता दी ५० रु.। सर्व सेवा संघ को पठाया दिया १३ रु० ७९ न. पै.। एक बीमार बहन की दवा में १२ रु. ६७ न.पै.; एक बहन की मदद में ४ रु. ५० न.पै.। एक बहन की शादी में 'गीता-प्रवचन' मूल्य १ रु० २५ न. पै. भेंट रूप में खर्च हुआ। अभी शेष ८८ न. पै. जमा है। नागरिकों से सहयोग रूप में २२ रु. मिले, जो शान्ति-सैनिक को सहायतार्थ दिये।

अंग्रेजी 'सर्वोदय' का संयुक्तांक

सर्वोदय प्रचुरालयम्, तंजौर (द. भा.) से प्रकाशित होने वाला 'सर्वोदय' अंग्रेजी मासिक पत्र प्रेस के बदलने के कारण मई का अंक नहीं निकल सकेगा। जून के दूसरे सप्ताह में मई-जून का संयुक्त अंक प्रकाशित होगा।

गुजरात सर्वोदय-पदयात्रा

भूदान का संदेश गाँव-गाँव पहुँचाने की दृष्टि से गुजरात में पिछले १७ महीनों से एक पदयात्रा सतत चल रही है। श्री हरीश व्यास जो एक उत्साही और अध्ययनशील कार्यकर्ता हैं, वे तथा उनके साथ-साथ तीन-चार और नौजवान पदयात्रा करते हैं। ता० ३ मई को इस पदयात्रीदल ने सौराष्ट्र के जिले में प्रवेश किया। ता० १८ मई तक का उनका कार्यक्रम राजकोट जिले में था। ता० १९ मई से ९ जून तक पदयात्रा अमरेली जिले में चलेगी, उसके बाद १० जून से १४ जुलाई तक भावनगर जिले में।

विनोबा का कार्यक्रम

असम के नार्थ लखीमपुर जिले में विनोबाजी का कार्यक्रम २२ मई से २ जून तक इस तरह रहा : ता. २२ मई नार्थ लखीमपुर शहर, २३ कमलाबरीया कैम्प, २४ घिडिमारी, २५ लेखार गाँव, २६ पानी गाँव, २७ आजाद, २८ बहादुर चुक, २९ उज्जलपुर, ३० नार्थ, लखीमपुर टाउन, ३१ लखी कैम्प। १ जून को दोलतपुर और २ जून बोरा अंचल में पदयात्रा का कार्यक्रम रहा।

इस अंक में

श्रीकृष्णदत्त भट्ट, अ० भा० सर्व सेवा संघ द्वारा भार्गव भूषण प्रेस, वाराणसी में मुद्रित और प्रकाशित। पता : राजघाट, वाराणसी–१, फोन नं० ४३९१
वार्षिक मूल्य ६) पिछले अंक की छपी प्रतियाँ १०,००० : इस अंक की छपी प्रतियाँ ९,७०० एक अंक : १३ नये पैसे

संपादक : सिद्धराज ढड्ढा

वाराणसी : शुक्रवार | १६ जून '६१ | वर्ष ७ : अंक ३७

आश्रम संयम और श्रमप्रधान रहेंगे तो सेवा कर सकेंगे

विनोबा

अपने यहाँ जो आश्रम चलते हैं, उनके विषय में कल मैं बात करता था। गृहस्थाश्रम नाम का आश्रम इस देश के विचारकों ने चलाया। उसके अलावा अलग आश्रम की जब हम स्थापना करते हैं और उसमें भी वही गृहस्थाश्रम उसी अवस्था में हो तो आरम्भ में जिस बात की अपेक्षा उस आश्रम से की गयी होगी, वह पूरी नहीं हो पायेगी। गांधीजी ने हिन्दुस्तान में जो आश्रम चलाया, उसकी भूमिका ब्रह्मचर्य की रही। गृहस्थाश्रमी लोग भी उसमें दाखिल थे, लेकिन वे वानप्रस्थ-वृत्ति से दाखिल थे और जो नये आते थे, थोड़े समय के लिये, वे उतने दिन वहाँ ब्रह्मचर्य-वृत्ति से रहते थे। बाहर भले ही गृहस्थाश्रम चलाते हों, लेकिन जब आश्रम में आकर रहते थे, तब ब्रह्मचर्य से रहते थे।

आश्रमों की यह विशेषता यदि ध्यान में नहीं आयी और गृहस्थाश्रम के आधार पर आपके आश्रम बनते हैं तो उन आश्रमों में आध्यात्मिक दृष्टि नहीं रहेगी। लोग उन आश्रमों का पालन-पोषण कर, यह अपेक्षा नहीं होनी चाहिये। फिर कारखाने जैसे चलते हैं, वैसे कारखाने के रूप में ऐसे आश्रम चल सकते हैं। वहाँ शिक्षण भी मिल सकता है। मान लीजिये, आश्रम में ग्रामोद्योग का केन्द्र खोला तो उत्पादन बढ़ता है और उसके द्वारा आश्रम का योगक्षेम चलता है। कोई ग्रामोद्योग सीखने के लिए आया तो सीख सकता है। लेकिन जिसको लोक-परिवर्तन का काम कहते हैं, वह इन उद्योग-केन्द्रों से नहीं बनेगा। वहाँ उद्योग चलेगा, उद्योग की तालीम होगी। लेकिन लोक-परिवर्तन के लिए इतना काफी नहीं है। उसके लिये लोक-जीवन पर असर पड़े, जीवन में परिवर्तन की शक्ति निर्माण हो ऐसी अपेक्षा होती है। ऐसी स्थिति में गृहस्थाश्रम से काम नहीं बनेगा। गृहस्थाश्रम की कल्पना रही, तो उन कार्यकर्ताओं के बाल-बच्चे होंगे, उनका पालन-पोषण, उनकी शिक्षा इनकी जिम्मेवारी उन पर होगी और उसके साथ-साथ वे उद्योग भी करते रहेंगे। उसी में ज्यादा शक्ति जायेगी। उद्योग से बची हुई शक्ति परिवार के पोषण में जायेगी। ऐसे केन्द्र आश्रम के नाम से चलते हैं, लेकिन आश्रम का काम करने में वे असमर्थ हैं।

गांधीजी ने तीस-बत्तीस साल की उम्र में ब्रह्मचर्य-व्रत का आरम्भ किया और उसकी आखिर प्रतिज्ञा १९०७ में ली। जब उनकी आयु ३८ साल की थी, तब से मरने तक, ४० वर्ष उन्होंने ब्रह्मचर्य का पालन किया। अनेक गृहस्थाश्रमी लोग पत्नियों के साथ वानप्रस्थ-वृत्ति की धारणा लेकर उनके आश्रम में रहते थे। आध्यात्मिक बैठक उनके जीवन में थी, इसलिए वे आश्रम नैतिक उत्थान का और सामाजिक मूल्य-परिवर्तन का काम कुछ हद तक कर सके। चूँकि उनके इस काम के साथ दूसरा राजनैतिक काम भी जुड़ा हुआ था। उस समय इस काम की जरूरत भी थी। इसलिए जीवन-परिवर्तन का काम पूर्णतया नहीं कर पाये। कुछ हद तक कर पाये, कारण मूल आधार ब्रह्मचर्य पर था। इन दिनों इसका लगभग विस्मरण है। संतति बढ़ती है, तो उसके पोषण की जिम्मेदारी आती है। संतति के पोषण के लिए आश्रय चाहिए। इसलिए सरकार के आश्रय में जाते हैं। नौकरी करते हैं। खादी ग्रामोद्योग का काम करते हैं। उनकी मदद पर चलते हैं। वे भी समाज के लिए उपयोगी काम करते हैं, लेकिन वहाँ धर्म-स्थापना तक आमूलाग्र परिवर्तन की बात है, वहाँ समाज के सामान्य जीवन-स्तर पर रहने वाले लोग समाज को ऊपर कैसे उठा सकेंगे? जिस स्तर पर लोग हैं, उसी स्तर से सेवा करेंगे तो वह सेवा भी विभाजित होगी, क्योंकि परिवार की सेवा का जिम्मा भी उन पर रहेगा। फिर भी कुछ सेवा हो सकती है। लेकिन जहाँ समाज को बदलना चाहते हैं, उस हालत में ऐसे कोटि के लोग, जो उद्योग वे आवश्यक मानते हैं वह करें, लेकिन इसके अलावा जीवन-मूल्यों को किस तरह से समाज में प्रचलित करना चाहते हैं, उसकी बुनियादी पकड़ उन्हें होनी चाहिए।

इस भूमिका के अभाव में जो आश्रम चलते हैं, उनमें हम नहीं देखते हैं कि वहाँ पर जीवन बनता हो। ज्यादा-से-ज्यादा उद्योगादि की तालीम दी जाती है। आश्रम में आने वाले की पात्रता का खयाल किये बगैर लेते हैं और भार महसूस करते हैं। तालीम जो देंगे आयेगी, पहले उद्योग का विचार करते हैं। अठारह साल की उम्र वाला लड़का आया तो वह इसकी बने, ऐसी शक्ति आश्रमों में होनी चाहिए। उसको जिस दिन सिखाया उसने उस दिन उतना कमा लिया, ऐसी शक्ति उसमें आनी चाहिए। यह कमाई अकुशल श्रम (अनस्किल्ड लेबर) से आनी चाहिए। कुशल (स्किल्ड) हो जायगा, तब ज्यादा काम करेगा, लेकिन अकुशल है तो भी काम का तंत्र है, ऐसी शक्ति होनी चाहिए। जो आश्रम में आया, उसकी उपजीविका के लिए कोई योजना नहीं करनी पड़े। ऐसी व्यवस्था के लिए संचालक काफी कुशल और निपुण (एफिशिएन्ट) चाहिए। निपुणता के अभाव में भी आश्रम तालीम का काम करने के लिए असमर्थ हैं। जैसे सरकारी नौकरी के लिए आते हैं, वैसे ही यहाँ भी रोजगार की दृष्टि से लोग आते हैं। ७०-७५ लड़कों को तालीम दे करके बाहर भेज दें, तो वे काम में लग जायेंगे, यह हो सकता है। लेकिन स्वतंत्र रीति से आयें और स्वतंत्र रीति से उद्योग करें, ऐसा इन आश्रमों में नहीं बनता, विज्ञान के अभाव में।

> ब्रह्मचर्य के विचार के अभाव में समाज क्रांति की भावना पैदा नहीं होती।

विज्ञान के अभाव में निपुणता (एफिशिएन्सी) नहीं बनती। इस हालत में आश्रम एक विभाग (डिपार्टमेंट) का काम करते हैं।

ऐसे आश्रम सरकार की जरूरत है, इसलिए चलते हैं। मान लीजिये, खादी के अलावा और उद्योग सरकार चाहती है, तो उसके लिए सरकार स्वतंत्र रीति से काम करती है। सरकार डिपार्टमेंट के जरिये सिखाती है, नौकर बनाती है और उनको योग्य काम दे सकती है। उसी प्रकार वह काम भी उठा सकती है। खादी-कमिशन बना, उसका मतलब यही है कि उसका जिम्मा सरकार उठाना नहीं चाहती थी; इसलिए यह काम आपको दे दिया। मिट्टी का कारखाना खोलना हो या और दूसरे उद्योग चलाने हों तो सरकार हमारी राय नहीं पूछती। लेकिन खादी के बारे में पूछ लेती है कि अगर आप चला सकते हैं तो चलाइये, हम मदद देंगे। और बातों में हमको नहीं पूछती। जो उद्योग अपने ढंग से चलाना चाहती है, परदेश से तज्ञ (एक्सपर्ट) मँगवा कर वे उद्योग खड़े कर देती है। लेकिन खादी वगैरा काम आता है तो आकर कहती है कि हमने आपको इस मामले में 'एक्सपर्ट' मान लिया है और आपको काम करना हो तो करिये।

मनुष्य को यह सोचना चाहिए कि अपने जीवन के बारे में क्या करना है? मुझे संयमी रह कर सर्वसामान्य गृहस्थ की अवस्था में रहना है, वानप्रस्थ-वृत्ति लेकर रहना है, साधक-अवस्था में रहना है या परिव्राजक सन्यासी की अवस्था में रहना है? सर्वसामान्य गृहस्थाश्रम की अवस्था में रहना हो तो पाँच आदमी के एक परिवार को, आज की हालत में एक महीने में तीन सौ रुपयों से कम खर्चा नहीं लगेगा। पाँच मनुष्यों के एक परिवार का तीन सौ रुपये महीना क्या सर्वोदय-पात्र से या संपत्ति-दान से मिलेगा? यह तो भिक्षा का प्रकार है। इतनी तनख्वाह के लिए सर्वोदय-पात्र में या संपत्ति-दान में गुंजाइश नहीं है, तो फिर तदनुसार

म उठाना चाहिए। आज की हालत में सौ रुपया भी कितने लोगों को मिलेगा! इसलिए योजना ऐसी होनी चाहिए कि नवयुवक विद्याभ्यास समाप्त करके गृहस्थाश्रमी बनने से पहिले चार-पाँच साल देश को दें। यह 'पोस्ट ग्रेजुएट सर्विस' होगी। अनुभव भी आयेगा और देश की सेवा भी होगी। उनमें ऐसी सेवा-वृत्ति हो तो यह हो सकता है। या तो वानप्रस्थ वृत्ति के लोग हैं, तो उनसे सेवा हो सकती है। या तो संयमी गृहस्थ आंशिक सेवा (पार्ट टाइम सर्विस) दे सकते हैं। संयमी नहीं होंगे तो समय दे नहीं सकते। बहुत हुआ तो सर्वोदय पात्र घर में रख सकते हैं, संपत्ति-दान दे सकते हैं; और ज्यादा नहीं। संयमी गृहस्थ आंशिक समय-दान (पार्ट-टाइम) की सेवा दे सकता है। सामान्य गृहस्थ की पूरे समय की सेवा लेना चाहते हो, तो कुछ तनख्वाह देनी पड़ेगी और वह तीन सौ रुपयों से कम नहीं होगी!

कोई गृहस्थाश्रमी लोग सेवा करना चाहते हैं। वे सेवा करते हैं तो उनके लड़के की माँ अपने पुत्र से कहा करती है कि बेटा, जीवन में कुछ भी बन, लेकिन अपने पिता के समान बेवकूफ मत बन! उनके पिताजी इधर गृहस्थाश्रम चलाते हैं और उधर आश्रम में काम करते हैं। वे तो उधर समाज सेवा का काम करते हैं, पर इधर माता पर बच्चों की जिम्मेदारी होती है। उस कार्यकर्ता की है तो वह आसक्ति ही, लेकिन उसमें विरक्ति का भी कुछ प्रमाण है। माँ तकलीफ भोगती रहेगी तो बच्चों को यही कहा करेगी कि अपने पिता की तरह नहीं बनना! आश्रमों में भी देखा गया है कि जिनके बच्चे बचपन में आश्रम में आये वे टिके नहीं। जो कालेज रास्कार को भी छोड़ कर आये, वे टिके। ऐसा ही होना चाहिए कि माता-पिता जिनको भेजेंगे, उनको लेंगे नहीं, माता-पिता त्याग करके जो आयेंगे, उनको लेंगे। हमारे आश्रम में ऐसे ता चुनाव करके ही लेते हैं। जहाँ-जहाँ चुनाव नहीं किये और लड़के को भरती किया वहा लड़का दिवाली के दिन, आश्रम में दिवाली है नहीं, घर में वह चलती होगी, ऐसा याद करता था। माता-पिता का जीवन और प्रचार-कार्य नई तालीम का हो और फिर बच्चों को नई तालीम मिले, ऐसा होना चाहिए। इसलिए आश्रम में त्योहार का दिन हो तो छुट्टी देते हैं, तो उस दिन आश्रम निरानंद रहता है! बल्कि ऐसा होना चाहिए, ऐसा लगना चाहिए कि आश्रम में जो आनन्द है, वह और दुनिया में नहीं है। यह कैसे बनेगा, जब लड़कों को माता पिता ने भेजा होगा आश्रम में! इसमें माता-पिता को भी संयमशील होना चाहिए। हमने यह भी देखा है कि एक आदमी ने बीड़ी की फैक्टरी खोली, और उस मालिक को चिंता हुई कि बीड़ी से उसके बच्चे कैसे बचेंगे? पुत्र, पुत्री शब्द का अर्थ ही है—जो माता पिता को पावन करते हैं। पुत्र हुआ तो माता पिता को जिम्मेदारी महसूस हुई कि बच्चों के हित के लिए हमको धर्म-मार्ग पर चलना चाहिए। ऐसी प्रेरणा बच्चों की तरफ से मिल सकती है, इसलिए 'पुत्र' शब्द का अर्थ पावन करने वाला ऐसा होता है।

(अल्कोया, असम, १९-३-'६१)

साप्ताहिक घटना-चक्र : एक दृष्टिपात

शुभ-चिह्न!

दुनिया के दो ऐसे व्यक्ति जिनके हाथ में आज ज्यादा-से-ज्यादा भौतिक शक्ति केन्द्रित है, पिछले सप्ताह वियना में मिले। संचार और सम्पर्क के साधनों में जो कल्पनातीत प्रगति हुई है उसके, और अत्यधिक केंद्रित जीवन-व्यवस्था के कारण आज दुनिया बहुत छोटी और परस्पर संबंधित हो गयी है। अतः रूस और अमेरिका की हर चाल का असर कम-ज्यादा दुनिया के तमाम लोगों पर पड़ता है या पड़ सकता है। इसलिए स्वाभाविक ही केनेडी और ख्रुश्चेव के मिलन की घटना दुनिया भर के लोगों के लिए एक उत्सुकता की चीज बन गयी थी।

ऐसे लोगों का मिलना केवल शिष्टाचार या आमोद-प्रमोद के लिए तो होता नहीं, दुनिया के लोगों की परेशानी का कारण बनी हुई समस्याओं की चर्चा के लिये होता है। इसलिए ऐसे लोग बिना पक्की पूर्व-तैयारी के आपस में कम ही मिलते हैं। फिर भी "क-ख" के इस मिलन के पहले, जिस तरह कूटनीतिक क्षेत्रों में बिना किसी ठोस पूर्व तैयारी के या किसी खास कार्यक्रम के इस प्रकार दोनों का मिलना आशंका की दृष्टि से देखा जा रहा था, वह सही साबित नहीं हुआ। उस आशंका से सिर्फ इसी बात की पुष्टि हुई कि आज की राजनीति का सारा ढाँचा व्यर्थ की शंका पर खड़ा है। केनेडी-ख्रुश्चेव मिलन ने इस बात को साबित कर दिया है कि परस्पर निजी सम्पर्क से इतना डरना गलत है। पिछले साल पेरिस में होने वाले शिखर-सम्मेलन की महीनों पहले से बड़ी-बड़ी तैयारियाँ की गयी थीं। उसका खूब ढोल पीटा गया था। लेकिन आखिरी घड़ी एक क्षण में वह सारा बुलबुला फूट गया! सब तैयारियाँ बेकार गयीं। इसके विपरीत बिना किसी खास तैयारी के मौजूदा केनेडी-ख्रुश्चेव मिलन का तत्काल चाहे कोई विशेष परिणाम न नजर आता हो, पर इसमें कोई संदेह नहीं कि इस तरह का व्यक्तिगत सम्पर्क तनाव को कम करने के लिए उपयोगी होता है। यही क्या कम बात है कि लगातार तीन दिनों में बारह घण्टे दोनों दिग्गज आपस में मिले और कोई दुर्घटना नहीं हुई। केनेडी के खुद के शब्दों में "न तो परस्पर कोई अनादरसूचक बात हुई, न मिजाज बिगड़े, न कोई धमकियाँ दी गयीं।"

केनेडी के अमेरिका के राष्ट्रपति बनने के कारण दुनिया की राजनीति में है "नया खून" दाखिल हुआ है, इसमें संदेह नहीं। पुराने लोगों के पास जहाँ अनुभव की जमा-पूंजी होती है, वहाँ कई प्रकार के पूर्वग्रहों का बोझ भी उनके सिर पर होता है, जिससे अक्सर वे कोई नया रास्ता नहीं निकाल सकते। केनेडी के पास अनुभव की पूंजी उतनी न हो जितनी 'बूढ़ों' के पास होती है, लेकिन दुनिया की राजनीति और कूटनीति की बंद चहारदीवारी में उसके कारण नई हवा के झोंके जरूर आ रहे हैं। ऐसा अन्दाज लगाया जाता है कि जिस तरह केनेडी ने फ्रांस के दिगाल, रूस के ख्रुश्चेव और इंग्लैण्ड के मैकमिलन के साथ व्यक्तिगत सम्पर्क किया है, उसी तरह वे दुनिया के दूसरे विशिष्ट लोगों से, जैसे पंडित नेहरू, मार्शल तीतो और नासिर आदि से भी निकट भविष्य में मिलेंगे और इस तरह दुनिया के खास-खास लोगों से और उनके विचारों से प्रत्यक्ष परिचय कर लेने के बाद ही आज की दुनिया की जो मूलभूत समस्याएँ शान्ति, गरीबी के निवारण आदि की हैं, उन पर वे अपनी राय कायम करेंगे। यह दुनिया की राजनीति के लिए शुभ चिह्न है।

एक ज्वलन्त संकेत

एक ओर जब कि शांति, सुरक्षा और बचाव के नाम पर मानव जाति के सर्वनाश की तैयारियाँ चल रही हैं, हर मुल्क में सौभाग्य से चन्द ऐसे लोग भी हैं, जो इस खतरे से खुद सचेत हैं और आम लोगों को सचेत करते रहते हैं। अभी ४ जून को लन्दन शहर के बीचों बीच ट्रैफलगर स्क्वायर में करीब ४ हजार स्त्री-पुरुषों ने एक शान्ति-कूच (रैली) में भाग लिया। आणविक शस्त्रों के खिलाफ अपना विरोध जाहिर करने के लिए छः महीने पहले ता० १ दिसम्बर, १९६० को १३ अमेरिकन स्त्री-पुरुष अमेरिका के ठेठ पश्चिमी नगर सैनफ्रान्सिस्को से पूरब की ओर न्यूयार्क और लन्दन होते हुए रूस की राजधानी मास्को के लिए पैदल रवाना हुए थे। सैनफ्रान्सिस्को से न्यूयार्क तक का करीब ३ हजार मील लम्बा रास्ता छः महीने में तय करके न्यूयार्क से हवाई जहाज द्वारा उन्होंने अतलांतिक महासागर पार किया और १ जून को लन्दन में उतरे। ता० ४ जून को इंग्लैण्ड के शांतिवादियों की ओर से ट्रैफलगार स्क्वायर में इन अमेरिकन पदयात्रियों का अभिनन्दन करने के लिए शांति-सभा आयोजित की गयी थी। ता० ५ जून को पदयात्रियों का यह दल लन्दन से पेरिस होते हुए मास्को के लिए रवाना हो गया। लन्दन से इस पदयात्रा में कुछ अंग्रेज भाई-बहन भी शामिल हुए। भूदान-आन्दोलन के प्रमुख व्यक्तियों में से एक, सुश्री निर्मला ठकार, जो आजकल अपने कान के इलाज के लिए इंग्लैण्ड गयी हुई हैं, वे भी वहाँ के शान्तिवादियों के निमंत्रण पर ता० ५ को इस पदयात्रा में शरीक हुईं। "शान्ति-सैनिकों" का यह दल फ्रांस, जर्मनी, पोलैण्ड होता हुआ अगले अक्तूबर में मास्को पहुँचेगा, ऐसी आशा है। रूस में प्रवेश के लिए इन लोगों ने अभी तक कोई बाकायदा इजाजत नहीं ली है, लेकिन ऐसी आशा है कि इन्हें रूस में प्रवेश मिलने में दिक्कत नहीं होगी। अमेरिका से इंग्लैण्ड के लिए रवाना होने के पहले इन शांति-सैनिकों को प्रेसीडेण्ट केनेडी ने मुलाकात दी थी। रूस के प्रधानमंत्री श्री ख्रुश्चेव ने अमेरिका के एक प्रसिद्ध शांतिवादी, श्री ए० जे० मस्ती को इस संबंध में चर्चा करने के लिए मास्को बुलाया है।

४ जून को ट्रैफलगर स्क्वायर में शान्ति-रैली को सम्बोधित करते हुए पादरी जौन कॉलिन्स ने कहा: "सारी दुनिया का चिन्तन किस तरफ जा रहा है, इसका यह अन्तर्राष्ट्रीय पदयात्रा एक ज्वलन्त संकेत है। समय आया है जब कि दुनिया की सरकारें इस बात को समझें कि आम लोग क्या चाहते हैं और यह समझ कर उनकी इच्छा का अनुसरण करें।"

उदारता की आवश्यकता

दिल्ली में होने वाले मुस्लिम-सम्मेलन के संबंध में पिछले सप्ताह "भूदान-यज्ञ" में कुछ चर्चा की गयी थी। ऐसा मालूम होता है कि या तो किसी अज्ञात कारण से या किसी पूर्व-निश्चित योजना के अनुसार पिछले दो-तीन सप्ताहों में देश के भिन्न-भिन्न भागों में कई जगह भिन्न-भिन्न नामों से मुसल्मानों के सभा-सम्मेलन हुए हैं। अभी ५ जून को लखनऊ में उत्तर प्रदेश के मुस्लिम "शिक्षण शास्त्री और धर्म-गुरुओं" का एक दो दिवसीय सम्मेलन हुआ था। अखबारों में छपी खबरों के अनुसार करीब ५०० प्रतिनिधि इस सम्मेलन में शामिल हुए थे। सम्मेलन में सरकार से इस बात की माँग की गयी कि स्कूलों के अभ्यास-क्रम और पाठ्य पुस्तकों में जो एक धर्म-विशेष के प्रति झुकाव मालूम होता है, वह दूर किया जाय। सम्मेलन में यह भी निश्चय हुआ कि उत्तर-प्रदेश के "हर गाँव और कस्बे में" 'इस्लामी-शिक्षण' की दृष्टि से प्राथमिक शालाएँ खोली जायँ। सम्मेलन के अध्यक्ष ने मुसलमानों को इस बात के लिए भी आवाहन किया कि वे "नये भारत का निर्माण करने में अपनी उन

[शेष पृष्ठ ११ पर]

सत्यं जगत् स्फूर्ति- जीवनं सत्यशोधनम्

भूदान-यज्ञ

टिप्पणियाँ

लोकनागरी लिपि*

शिष्ट धर्म का मार्ग गृहस्थाश्रम

ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ और संन्यास: ये चार आश्रम हैं। आश्रम एक वृत्ति है। अपने यहां धर्मशास्त्रों में ऐसा उल्लेख है। मनुष्य को किसी-न-किसी एक आश्रम के प्रति पक्की निष्ठा होनी चाहिए। अक्सर होता यह है कि परिस्थितिवश मनुष्य एक आश्रम में से निकल जाता है, पर दूसरे आश्रम में पहुंचता नहीं। इस बीच के संक्रमणकाल में कई वर्ष बीत जाते हैं। ठीक ऐसा नहीं होना चाहिए। मनुष्य का कुल जीवन योजनापूर्वक चलना चाहिए। भिन्न-भिन्न अवस्थाओं में जाने समय लाचार होकर न जाय, परंतु विचारपूर्वक जाय। अगर यह बात ध्यान में आ जाय, तो इस विज्ञान-युग में चार आश्रमों की कल्पना बहुत ही कल्याणकारक सिद्ध होगी।

गृहस्थाश्रम के सुव्यवस्थित होने से अन्य सभी आश्रमों का पालन हो जाता है। मैं स्थूल अर्थ में नहीं कह रहा हूं। सूक्ष्म अर्थ में उसका पालन होना चाहिए। गृहस्थ धर्म एक पूर्ण धर्म है। अन्य तीनों धर्म एकत्र किये जा सकते हैं। तीनों आश्रम विशिष्ट धर्म हैं और यह गृहस्थाश्रम है—शिष्ट धर्म। शिष्टाचार !!

इंदौर, २६-२-'५८ —विनोबा

* लिपि-संकेत : ि = ी ; ी = ी, ख = ख, संयुक्ताक्षर हलंत चिह्न से।

अर्थ-संग्रह अभियान चंदा नहीं है, जनाधार का ही एक प्रयोग है

पिछले सर्वोदय-सम्मेलन के अवसर पर विभिन्न प्रान्तों से आये हुए कार्यकर्ताओं ने मिल कर यह तय किया था कि देश भर में जो सर्वोदय-कार्य चल रहा है, उसके लिए अर्थ-संग्रह का एक अभियान चलाया जाय। एक निश्चित अवधि तय करके उस बीच देश में एकसाथ काम में शक्ति लगायी जाय, सर्वोदय-कार्य के लिए कार्यकर्ता घर-घर पहुँचें और सर्वोदय-कार्य के लिए लोगों से सहायता प्राप्त करें। सर्व सेवा संघ के अध्यक्ष श्री नवकृष्ण चौधरी ने सहायता के लिए आम अपील निकाली है और १५ जून से लगा कर ३१ जुलाई तक का समय इस काम के लिये तय किया गया है। अर्थ संग्रह के इस अभियान के सिलसिले में ता० २ जून १९६१ के "भूदान-यज्ञ" में सर्व सेवा संघ के मंत्री श्री पूर्णचंद्रजी ने संक्षेप में कई आवश्यक बातों का खुलासा किया है, जिसकी ओर हम पाठकों का ध्यान आकर्षित करते हैं।

कुछ मित्र ऐसा समझे हैं कि यह एक तरह से पुराने तरीके का चन्दा ही है और इसलिए जनाधार के हमारे निर्णय से मेल नहीं खाता। पर बात ऐसी नहीं है। चन्दे के लिए सामान्य तौर पर आम अपील निकालने की जरूरत नहीं होती। कुछ खास-खास लोगों के पास हम पहुँचते हैं और उन्हीं से अनुनय-विनय करके जितना ज्यादा-से-ज्यादा हो सकता है, प्राप्त करने की कोशिश करते हैं। सर्व सेवा संघ ने अर्थ-संग्रह के अभियान का जो तय किया है, वह इससे भिन्न है। संघ के अध्यक्ष ने सहायता के लिए आम अपील निकाली है, जो देश के भिन्न-भिन्न अखबारों और पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित हुई है तथा अलग से छाप कर भी सर्वत्र बाँटी जा रही है।

इसके अलावा सिर्फ कुछ थोड़े-से सम्पन्न लोगों के पास पहुँच कर अधिक-से-अधिक रकम उनसे प्राप्त करने के बजाय इस बार हमें यथासम्भव घर-घर, सब लोगों के पास पहुँचना है। 'सब' में वे बड़े भी शामिल हैं। हम सबके पास पहुँचें, देश में जो सर्वोदय-काम चल रहा है, उसकी जानकारी आवश्यकता के अनुसार लोगों को करायें और उस काम में सहायता करने के लिए उनसे कहें। जो जितना दे उतना खुशी के साथ और कृतज्ञता के साथ स्वीकार करें।

साफ जाहिर है कि अगर हम ऊपर बतायी हुई भावना से काम करें, और अभियान के लिए निश्चित की गयी अवधि में यथासम्भव अधिक-से-अधिक लोगों के पास पहुँचें तो यह पुराने तरीके के चन्दे का स्वरूप नहीं होगा। सबके पास जाना और जो जितना दे, उतना लेना यह शुद्ध जनाधार है। यह सही है कि विषमता को दूर करने के हमारे लक्ष्य की दृष्टि से मालकियत विसर्जन का जो तत्त्व सम्पत्ति-दान में है, वह इसमें नहीं है। उस

[शेष पृष्ठ ४ पर]

स्त्री-पुरुष का सहजीवन और सहशिक्षण

ता० २६ मई १९६१ के "भूदान-यज्ञ" में सुश्री प्रभा सहस्रबुद्धे का एक लेख "स्त्रियों के संबंध में विनोबा के विचार" शीर्षक से प्रकाशित हुआ था। उस लेख में स्त्री-शिक्षा का जिक्र करते हुए लेखिका ने बतलाया था कि विनोबाजी के अनुसार "स्त्री और पुरुष दोनों की आत्मा संस्कारवान होती है, अतः उनकी शिक्षा का अधिकांश भाग समान होना चाहिए," और उन्हें "एकसाथ शिक्षा मिलनी चाहिए।"

"भूदान-यज्ञ" के एक पाठक महोदय ने दादा धर्माधिकारी के "सर्वोदय-दर्शन"* में आयी हुई इस विषय की चर्चा का हवाला देते हुए लिखा है कि विनोबा के सह-शिक्षण के विचार और दादा के विचारों में अन्तर है। पाठक महोदय की अपनी राय है कि स्त्री-पुरुष का अलग-अलग शिक्षण न्याय-संगत और श्रेयस्कर है। पाठक महोदय ने प्रार्थना की थी कि सुश्री प्रभा सहस्रबुद्धे के लेख से "उनके विचारों में कुछ वैषम्य हो गया है", अतः सह-शिक्षण के संबंध में कुछ स्पष्टीकरण किया जाय। श्री दादा ने इस संबंध में जो लिख कर भेजा है, वह हम ज्यों का त्यों दे रहे हैं :—

"स्त्री और पुरुष दोनों के लिए सबसे अधिक सुरक्षित क्षेत्र कुटुम्ब है। कुटुम्ब में दोनों परस्पराभिरक्षित और परस्पराभिभावित होते हैं, अर्थात् स्त्री की तरफ से पुरुष को और पुरुष की तरफ से स्त्री को सतर्क तथा आशंकित नहीं रहना पड़ता। इसका कारण यह है कि कुटुम्ब में स्त्रीत्व और पुरुषत्व के नैसर्गिक भेदों की अपेक्षा कौटुम्बिक संबंधों के नातेदारियों के संस्कार अधिक बलवान् होते हैं। यही कुटुम्ब-संस्था की विशेषता और उसकी अन्यतम महिमा का आधार है। आज की शिक्षा-संस्थाएँ कौटुम्बिक संस्थाएँ नहीं हैं। इसलिए वहाँ छात्र-छात्राएँ एक-दूसरे का अभिभावन और अभिरक्षण नहीं करते। दोनों की नैसर्गिक वासनाओं के संयम का वातावरण नहीं होता। वहाँ सहजीवन के विकास का शिक्षण नहीं होता। अतएव ये संस्थाएँ वधू-वर-मृगया के क्षेत्र बन जाते हैं। परन्तु 'गुरुकुल' तो कुटुम्ब से भी अधिक पवित्र तथा व्यापक संस्था होनी चाहिए। कौटुम्बिक नातेदारियाँ अगर स्त्री और पुरुष के सहजीवन को एक बड़ी मर्यादा में निरापद और पवित्र बना सकती हैं, तो 'गुरुकुल' एक कौटुम्बिक विद्यापीठ के रूप में रक्त-निरपेक्ष तथा विवाहनिरपेक्ष सहजीवन के संस्कारों का बीजारोपण करने में अधिक सफल होने चाहिए।

गाँवों में इस भावना को ग्रामव्यापी बनाने के लिए कौटुम्बिक रिश्तेदारियों की उपासना कुटुम्ब-बाह्य संबंधों में की जाती है। वहाँ अधिकांश व्यक्ति एक-दूसरे के चाचा, मामा, मौसा, ताऊ, ताई, मौसी, जीजी, बेटी, आदि होते हैं। यह भावना बहुत बड़ी हद तक स्त्री-पुरुष दोनों को सुरक्षित रखती है। संयम प्रधान शिक्षण स्त्री और पुरुष दोनों को 'स्वरक्षित' बनाता है। कौटुम्बिकता ज्यों-ज्यों समाजव्यापी बनती है, त्यों-त्यों दोनों 'सुरक्षित' हो जाते हैं। दोनों में से कोई भी रक्षणकर्ता का रक्षित नहीं है। दोनों स्वरक्षित और परस्पराभिरक्षित हैं। जन्मसिद्ध कुटुम्ब, कौटुम्बिक विद्यापीठ, ग्राम-कुटुम्ब, कौटुम्बिक समाज यही विकास का सोपान है। सहजीवन के लिए सहशिक्षण अनिवार्य और वांछनीय

* अखिल भारत सर्व सेवा संघ द्वारा प्रकाशित श्री दादा धर्माधिकारी द्वारा की गयी "सर्वोदय दर्शन" की सरल एवं साधिकार व्याख्या, पृष्ठ ३९६। मूल्य : तीन रुपया। मराठी और गुजराती में भी प्राप्य है।

है। आवश्यकता है शिक्षण के क्षेत्र को कौटुंबिक भावनाओं और नातेदारियों से संपन्न एवं पुनीत करने की। पृथक्-पृथक् शिक्षण और जीवन का परिणाम परस्पर-आशंका और भय में होता है। स्त्री और पुरुष एक-दूसरे से परहेज करते हैं। इस परहेज को ही वे ब्रह्मचर्य मानते हैं। एक-दूसरे से डरने और बचने रहने के इस संस्कार को श्रेयस्कर या पवित्र मानना दोनों के लिए अशुभ है। स्त्री और पुरुष दोनों के अपने-अपने विशिष्ट गुणों का और शक्तियों का विकास पृथक् शिक्षण से होगा। परन्तु दोनों की सामान्य मानवता का विकास, सहजीवन और सहशिक्षण से ही होता है। सहजीवन में मर्यादा है, संयम है, एक-दूसरे के संयम में सहयोग है; इसीलिए वहाँ सन्देह, सतर्कता और भय के लिए अवसर नहीं है। सहजीवन के क्षेत्र में मर्यादा या प्रतिष्ठा का संरक्षण शस्त्र से नहीं हो सकता, कौटुम्बिक सम्बन्धों से ही होता है। यही संस्कारिता या कुलीनता कहलाती है।

कौटुम्बिकता में प्राकृतिक सम्बन्ध गौण होते हैं, संस्कारजन्य संबंध मुख्य होते हैं। पिता-पुत्र, भाई-भाई भिन्न-भिन्न पुरुष व्यक्ति हैं। परन्तु कौटुम्बिक संस्कारों के कारण उनमें प्राकृतिक विकार और स्पर्धा, मत्सर आदि दूषण माने जाते हैं, भूषण नहीं। उसी प्रकार स्त्री और पुरुष के नैसर्गिक भेद और वासनाएँ मातृत्व-पुत्रत्व, भगिनीत्व-बन्धुत्व की कोमल भावनाओं में परिणत हो जाती हैं। यदि गुरुकुल और विद्यापीठ कौटुम्बिक भावनाओं और संबंधों को समाजव्यापी बनाने में अग्रसर न हुए तो विश्वविद्यालय विश्वकुटुम्ब के पवित्र प्रयोगतीर्थ तथा संस्कारतीर्थ नहीं होंगे। वहाँ न विद्या होगी, न संस्कृति, न कुलीनता और न शालीनता।"

विनोबा के साथ दो दिन

जून के आरम्भ में दो-तीन दिनों के लिए आसाम में विनोबा के पास हो आया। उत्तर में हिमालय और दक्षिण में ब्रह्मपुत्र, बीच में नदियों की बाढ़ों से बना हुआ सरसब्ज प्रदेश। उस दिन शाम को उत्तर लखीमपुर कस्बे में विनोबा के पास पहुँचा, तब पता चला कि ढेबर भाई उनसे मिलने के लिए आये हुए थे। विनोबा के सह यात्रियों ने खबर दी कि उन सब लोगों को भी देहातों में जाने का हुक्म मिल चुका है: "तीन महीने से आप लोग आसाम में घूम रहे हैं, लेकिन 'असमिया' भाषा नहीं जानते, यह कैसे चलेगा? आप भी अब देहातों में निकल जाइये और देहातियों से असमिया में बोलने की कोशिश कीजिये।" मैं जब पहुँचा तब यात्री दल में चहल-पहल थी। कल से वे अपनी असमिया आजमाने वाले थे!

"नारायण, मच्छरदानी लाये हो भाई?"—हर आदमी की व्यक्तिगत सम्हाल रखने वाली अमलप्रभा बहन ने कहा। *कामरूप स्त्रियों के राज्य का प्रदेश समझा* जाता है। रचनात्मक क्षेत्र में तो अब भी आसाम में स्त्रियों का राज्य ही है। अमलप्रभा का स्नेहमय व्यक्तित्व रचनात्मक कार्य के किस पहलू पर नजर नहीं आता! और अमलप्रभा के साथ उसकी फौज भी है। शकुन्तला चौधरी कभी विनोबाजी के *साथ रह कर पदयात्रा की आन्तरिक* व्यवस्था सम्हालती हैं, तो कभी शरणिया आश्रम में जाकर ग्रामसेविका विद्यालय तथा कस्तूरबा स्मारक निधि का दफ्तर सम्हालती हैं। हेमप्रभा भाराली की दौड़-धूप किस कोने में नहीं दिखती? विनोबा ने अभी उसे बंगाली परिवारों के पुनर्वास के काम की जिम्मेवारी दी है। इन सबके पीछे इन लोगों के काम की एक-एक तफसील को पूरा करने वाली निष्ठावान बहनों की भक्ति-सेना खड़ी है।

विनोबा आजकल दो बजे उठते हैं और तीन बजे चल पड़ते हैं। प्रार्थना रास्ते में ही होती है। मैं जितने दिन था, उतने दिन यात्रा के समय वर्षा होती रही। लेकिन वर्षा के कारण यात्रा के समय में तब्दीली नहीं हुई।

ढेबर भाई और विनोबा की बातें पदयात्रा में भी चलती रहीं। जान पड़ता *था कि ढेबर भाई किसी खास विषय को* लेकर विनोबा से मिलने नहीं आये थे। परन्तु बहुत दिनों से भेंट नहीं हुई थी और अपने इस देश में इतने दिनों में तो *कितनी ही नई समस्याएँ खड़ी हो चुकी* थीं; इन समस्याओं के विषय में विनोबा के क्या विचार हैं तथा भविष्य के सम्बन्ध में उनका नया चिंतन क्या चला है, यह जानने के लिए अक्सर ढेबर भाई इस प्रकार आ जाते हैं। उनकी सारी बातों की जानकारी देना मेरे लिए ठीक नहीं होगा। लेकिन इतना तो जरूर कह सकता हूँ कि आसाम की समस्या के संबंध में विनोबा के विचार अब तक काफी साफ बन चुके हैं और उन्होंने उसकी चर्चा भी की। आसाम की राज्यभाषा असमिया रहे, जिला स्तर तक बंगाली या अंग्रेजी की पूरी सुविधा हो, आज महकमा में बंगला भाषा से बदल कर असमिया भाषा करने की जो गुंजाइश रखी गयी है, वह हटा ली जाय और बंगला में उच्च शिक्षण की भी पूरी सुविधा हो, यह सुझाव विनोबा पहले ही बंगाली और आसामी नेताओं के सामने रख चुके थे। उनके उस सुझाव के बारे में तब उत्साह नहीं दिखाया गया। फिर कछार जिले में हिंसा हुई और आज अब भी, चलिहाजी के जिस निवेदन से विधान बाबू सन्तोष व्यक्त कर रहे हैं, उस निवेदन में भी उपरोक्त सुझावों को मान्यता देने के अलावा और क्या है? इस बीच बंगाल के अखबारों ने *विनोबा के खिलाफ* जो आन्दोलन-सा चलाया, वह कितना छिछला और अदूरदर्शी था, इसका प्रमाण है।

लखीमपुर जिले का जो भाग ब्रह्मपुत्र के उत्तर में है, उसे उत्तर लखीमपुर कहते हैं। साढ़े तीन लाख आबादी के उस प्रदेश को विनोबा ने अभी अपना प्रयोग-क्षेत्र बनाया है। पहले भी भूदान आंदोलन में आसाम में इस प्रदेश में सबसे अधिक सफलता मिली थी, आज भी वहाँ काफी सफलता मिलने की गुंजाइश दीख रही है। वहाँ के कार्य को देख कर दो चीजों से मैं प्रभावित हुआ: एक तो कार्यकर्ताओं का आत्मविश्वास और दूसरी, ग्रामजनों की श्रद्धा। अक्सर विनोबा जिस जिले में होते हैं, उस जिले के कार्यकर्ता यात्रा का कुछ बोझ अनुभव करते हैं। लेकिन इन कार्यकर्ताओं को यहाँ भूदान-यज्ञ की सफलता की आशा है। इसीलिए छोटे-बड़े कार्यकर्ता भूमि-प्राप्ति के काम के लिए जुट गये हैं। विनोबा के साथ इन दिनों गांधी स्मारक निधि के श्री चिकन बाक्ती ही थे। खगेश्वर भूइयाँ, सोमेश्वरजी, *माणिक शाहकिया आदि सब पुरुष कार्य*कर्ता तो आन्दोलन के प्रचार के लिए गाँव में फैल गये थे। भारत के ग्रामजनों में श्रद्धा तो हर जगह दीख पड़ती है, लेकिन आसाम के ग्रामों में जो श्रद्धा मुझे दीखी, उसमें श्रद्धा के साथ-साथ विचार *को समझने की इच्छा भी थी। इस प्रकार कार्यकर्ताओं का आत्म-विश्वास* और ग्रामजनों की श्रद्धा का मेल होगा तो आसाम में कुछ अच्छे परिणाम दीख सकते हैं। भूदान और ग्रामदान का पुनरारंभ तो वहाँ हो ही चुका है।

विनोबा ने मुझसे कहा, "जगत् को यह बता दो कि मेरी पदयात्रा का आखरी जिला है। मैंने देश का हर हिस्सा घूम कर देख लिया है और हर जगह की शक्यताओं को जान लिया है। इसलिए अब तो वहीं जा सकता हूँ, जहाँ के कार्यकर्ता क्रान्ति के लिए प्रतिज्ञाबद्ध हों। नहीं तो मैं अपना यहाँ बैठा हूँ।"

मैंने उनसे पूछा, "लेकिन क्रांति के काम के लिए भी आप जायेंगे तो बगल वाले प्रान्तों तक ही न?"

उन्होंने कहा, "ऐसा क्यों? हम विज्ञान के जमाने में जीते हैं, अगर चाहें तो हवाई जहाज से उड़ कर कहीं भी जा सकते हैं और फिर वहाँ पहुँचने पर हमारी पदयात्रा फिर शुरू हो सकती है। लेकिन हमें कोई बुलाये तो सही। वैसे तो हमारी तैयारी यहाँ से हिमालय की ओर जाकर स्वर्गारोहण करने तक की है। नहीं तो हम हिन्दुस्तान के कोने में आ गये हैं। यहाँ से आगे कहाँ जायेंगे? या परदेश या परलोक!"

आन्दोलन के बारे में विनोबा काफी उत्साहित जान पड़े। आजकल उन्होंने अपना ध्यान फिर से भूमि के प्रश्न पर केन्द्रित किया है, यह हमें तो विशेषतः अच्छा लगा।

—नारायण देसाई

[पृष्ठ ३, कालम २ का शेष]

माने में सम्पत्ति-दान निश्चय ही एक कदम आगे की चीज है। इस अभियान के सिलसिले में भी सम्भव हो तो हम लोगों से सम्पत्ति दान के रूप में सहायता लेने की कोशिश करें। पर सम्पत्ति दान के विचार को मान्य करके उसके अनुसार दे सकने की किसी की तैयारी न हो तो सहायता के रूप में जो जितना दे, उतना हम लें। अर्थ-संग्रह के मौजूदा अभियान में मालकियत-विसर्जन का और ट्रस्टीशिप का विचार नहीं है, यह सही है, लेकिन जनाधार की कसौटी पर तो वह सही उतरता है। इसमें शंका नहीं होनी चाहिये। यह अभियान पुराने तरीके का चंदा नहीं है, वैसा वह हो जाय यह मन्शा भी नहीं है और न उसे वैसा होने देना चाहिये।

पंढरपुर की ऐतिहासिक घटना

तीन वर्ष पहले सन् १९५८ के सर्वोदय-सम्मेलन के अवसर पर ज्येष्ठ शुक्ला एकादशी को पंढरपुर में एक महत्त्वपूर्ण घटना हुई थी। उस दिन श्री विनोबा ने कुछ गैर-हिन्दू साथियों के साथ पंढरपुर के प्रसिद्ध "विट्ठल मंदिर" में प्रवेश किया और मन्दिर के व्यवस्थापकों की ओर से यह घोषणा की गयी कि 'पंढरपुर का मन्दिर मानव-मात्र के लिए *अब खुला है।* स्वतन्त्र भारत के इतिहास में इस घटना को महत्त्व का स्थान मिलेगा। यह घटना केवल एक योगायोग नहीं था, बल्कि नये समाज और नये मानव के निर्माण की दिशा में समझ-बूझ कर *उठाया गया एक कदम था,* ऐसा कहा जा सकता है।

तीन वर्ष पहले की उस घटना का स्मरण सतत जाग्रत रखने की दृष्टि से महाराष्ट्र सर्वोदय-मण्डल ने इस ज्येष्ठ शुक्ला एकादशी (ता० २४ जून, १९६१) को पंढरपुर में एक मेले का आयोजन किया है। महाराष्ट्र के अनन्य सेवक श्री अप्पासाहब पटवर्धन इस समय सोलापुर जिले में पदयात्रा कर रहे हैं। उनके उस जिले की पदयात्रा की समाप्ति उसी दिन, अर्थात् ता० २४ जून को पंढरपुर में होगी। महाराष्ट्र सर्वोदय-मण्डल के अध्यक्ष *श्री रा० कृ० पाटिल ने प्रान्त के अन्य सर्वो*दय-कार्यकर्ताओं को भी उस दिन पंढरपुर में एकत्र होने का निमंत्रण दिया है, जिससे वे मिल कर यह विचार कर सकें कि तीन वर्ष पहले जो सर्वधर्म समभाव की ज्योति वहाँ प्रकट हुई, वह किस प्रकार और अधिक तेजस्वी हो।

—सिद्धराज ढड्ढा

सैनिक अथवा सेवक और नागरिक ?

काशिनाथ त्रिवेदी

गुरुदेव, गांधी और विनोबा की प्रखर जीवन-साधना से जिस देश की भूमि का कण-कण सुशोभित और प्रकाशित हुआ है, जिस देश ने राम-कृष्ण और बुद्ध-महावीर के समय से लेकर आज की घड़ी तक जीवन में तप, त्याग, संयम, सेवा और सत्य, प्रेम तथा करुणा जैसे सद्गुणों की उपासना को ऊँचा स्थान दिया है, उसी देश में जीवन के नैतिक और आध्यात्मिक मूल्यों की प्रतिष्ठा को क्षीण करने और मानवता का ह्रास करने वाले भौतिक गुणों को बढ़ावा देने का काम जोर-शोर से आगे बढ़ाया जा रहा है, इसे हम अपने लोकजीवन की एक भारी विडम्बना ही मानते हैं। जब सारा संसार पुकार-पुकार कर कह रहा है कि अणुअस्त्रों के इस युग में अब न तो शस्त्रास्त्रों का कोई उपयोग रह गया है और न सैनिक जीवन का ही कोई महत्त्व शेष है, तब हम अपने यहाँ अपनी नई पीढ़ी को अनुशासन और लोकसेवा के पाठ सिखाने के नाम पर जगह-जगह सैनिक विद्यालयों और महाविद्यालयों की रचना करने में लगे हैं और इस बात की कोशिश कर रहे हैं कि हमारे विद्यालयों, महाविद्यालयों और विश्वविद्यालयों में पढ़ने वाले न केवल सभी छात्रों को, बल्कि छात्राओं को भी अनिवार्य रूप से सैनिक-शिक्षा दी जाय। हमारी विपरीत बुद्धि का इससे अधिक दुखद प्रयोग और क्या हो सकता है ?

माना कि दुनिया के लोकजीवन में एक समय ऐसा था, जब सैनिक-शिक्षा मानव-समाज की सुरक्षा के लिए आवश्यक मानी जाती थी। उस जमाने में एक हद तक वह उपयोगी भी सिद्ध हुई थी, किन्तु आज जब कि दुनिया के लोकजीवन का सारा संदर्भ ही बदल गया है, और बड़ी तेजी से क्षण-क्षण में बदलता जा रहा है, तब सौ-पचास साल पुरानी दुनिया की रीति-नीति को पकड़ कर हम अपने यहाँ अपनी नई पीढ़ी को सैनिकवाद के वातावरण में तैयार करें, इसमें हमें कोई तुक नजर नहीं आती। हमारे सामने आज असल सवाल यह है कि हम अपने लोकराज्य की रक्षा के लिए लोकजीवन में किन गुणों और किन मूल्यों को प्रतिष्ठित करना चाहते हैं? क्या सैनिकता से अथवा सैनिक-गुणों से हम अपने देश के करोड़ों नागरिकों को उनके अपने प्रति दिन के व्यवहार में निर्भय, निश्शंक, सुरक्षित और आत्म-निर्भर बना सकेंगे? क्या जीवन में स्वाधीनता की उत्कट उपासना के लिए आज की दुनिया में शस्त्रास्त्रों पर टिकी हुई सैनिकता का कोई उपयोग है? हमारे नम्र विचार में आज की दुनिया के लिए अब सैनिकता का कोई उपयोग नहीं रह गया है। सैनिकता के साथ जो मानस और वातावरण जुड़ा रहता है, वह देश में और दुनिया में नागरिकता के विकास के लिए बहुत ही घातक है। इसलिए आज के अपने लोकतंत्र में हमारी शक्ति और हमारे साधनों का अधिक-से-अधिक उपयोग नागरिकता के विकास में और उसकी व्यापक सिद्धि में होना चाहिए।

आज के समाज और संसार का मूलभूत आधार नागरिक का अपना जीवन माना जाना चाहिए। नागरिकता को भुला कर या भुला कर सैनिकता के संवर्द्धन में अपने धन, जन और साधन का उपयोग करने से हम अपनी शक्ति का विकास नहीं कर सकेंगे। हमारे विचार में आत्मानुशासन ही मानवता की बड़ी-से-बड़ी सिद्धि है। ऊपर से या बाहर से लदा हुआ या लादा हुआ अनुशासन मानवता के सच्चे विकास का पोषक न कभी हुआ है और न कभी हो सकेगा। यदि हमने अपने देश में शासन और समाज दोनों की मूक अथवा प्रकट सहमति के सहारे सैनिकता को बढ़ाने और फैलाने का कार्यक्रम उठा लिया, जैसा कि हम उठाने जा रहे हैं, तो हमें यह कहते हुए जरा भी संकोच नहीं होता कि अपने इस कार्य से हम देश के नागरिक जीवन को भारी धक्का पहुँचायेंगे और सत्य, प्रेम, करुणा तथा न्याय और नीति पर आधारित जिस समता-पोषक समाजवादी लोकजीवन की रचना का सपना आज हम देख रहे हैं, वह कभी सिद्ध हो ही न सकेगा।

जब सारी दुनिया के विचारक आज एक स्वर से यह कह रहे हैं कि शस्त्रास्त्रों की हिंसा के और सैनिकता के दिन लद चुके हैं और जब दुनिया के छोटे-बड़े सभी राष्ट्र राष्ट्रसंघ की छाया में बैठ कर बड़ी गम्भीरता से अन्तर्राष्ट्रीय पैमाने पर निःशस्त्रीकरण की बातें सोच रहे हैं, उसकी दिशा में अपना दिल-दिमाग तैयार करने की कोशिश में लगे हैं, तब हम अपने देश में नये सिरे से लोकजीवन को सैनिकता की दिशा में मोड़ने की बातें सोचें और योजनाएँ बनायें, इससे बढ़कर दैव-दुर्विपाक और क्या हो सकता है? हमारा निश्चित मत और विश्वास है कि आज के लोकतंत्री भारत को सैनिकों की उतनी आवश्यकता नहीं है, जितनी आवश्यकता लोकसेवा-निपुण और लोकसेवा परायण नागरिकों की है। यही कारण था कि राष्ट्रपिता गांधीजी ने अपने अंतिम क्षणों में देश के नागरिकों को लोकसेवक की तरह जीने और कार्य करने का मंत्र दिया था। यह दूसरी बात है कि स्वराज्य के इन बारह-चौदह वर्षों में हमने अपने राष्ट्रपिता की उस दूरदेशी से भरी सलाह पर ध्यान नहीं दिया और हम अपनी मरजी से एक ऐसे रास्ते चल पड़े, जो आज हमें अपने मूल लक्ष्य की सिद्धि में सहायता नहीं पहुँचा रहा है। लोकराज्य का मतलब ही है कि उस राज्य का हर नागरिक अपनी, अपने समाज की, अपने देश की और अपने समय की मानवता की रक्षा के लिए स्वयं सब प्रकार से तैयार होगा। जीवन के हर क्षेत्र में वह अपने भरोसे आगे बढ़ेगा और उसकी इस यात्रा में उसे सबका साथ और सहयोग सहज भाव से मिलता रहेगा। स्वावलम्बन और परस्परावलम्बन के सहारे उसके जीवन की गाड़ी बराबर आगे बढ़ती रहेगी। यदि चिन्तन की यह दिशा सही और यथार्थ है, तो हमें आज के अपने लोकजीवन के संदर्भ में यह सोचना ही चाहिए कि हम अपने देश की पुरानी और नई पीढ़ी को किस दिशा में मोड़ें? उसे सैनिकता की शिक्षा दें या सेवकाई और नागरिकता की दीक्षा देकर आगे बढ़ायें? हो सकता है कि दुनिया की आज की हालत में अभी आने वाले १०, २०, २५ वर्षों तक अन्दर-बाहर की सुरक्षा के लिए सैनिकों की कुछ आवश्यकता और उपयोगिता बनी रहे, किन्तु उस हालत में भी उसका क्षेत्र सीमित और संकुचित ही रहेगा। इसलिए हमें यह समझने में कठिनाई हो रही है कि आज की दुनिया की हालत को काफी अच्छी तरह जानने-समझने वाली हमारी केन्द्रीय सरकार और प्रांतीय सरकारें अब क्या इतनी उत्कटता से देश की नई पीढ़ी को सैनिकता की दिशा में ले जाना चाहती हैं? यदि समाजवाद के अपने आदर्श को सिद्ध करके हमें देश में सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक समता की स्थापना करनी है, तो उसके लिए हमें आज सैनिकों की उतनी जरूरत नहीं है, जितनी देश के नवनिर्माण में रुचि रखने वाले कुशल सेवकों और लोकसेवापरायण नागरिकों की है। आज इस देश में सेवाधर्म और नागरिक धर्म को जगाने, बढ़ाने और फैलाने की जितनी आवश्यकता है, उतनी शायद पहले कभी नहीं थी। पंचवर्षीय योजनाओं के अन्तर्गत कराये जाने वाले अनेकानेक नवनिर्माण कार्यों में आज हमारे शासन को आम लोगों का भरपूर और प्रसन्नतापूर्ण सहयोग नहीं मिल रहा है, उसके मूल में सेवावृत्ति और नागरिकता का अभाव ही मुख्य है। सैनिक-शिक्षा के प्रचार से लोकजीवन में इन गुणों का विकास हो नहीं सकता और न यही सम्भव है कि आज के इस जमाने में हम अपने देश के सभी नागरिकों को सैनिक-जीवन की दीक्षा दें। असल में आज इसकी कोई जरूरत नहीं।

गांधीजी के जीवन-काल में हमारे राष्ट्रपुरुषों ने उनके चरणों में बैठ कर जिन मानवीय गुणों और मूल्यों की उपासना की थी, उन्हें भुलाना या उनकी उपेक्षा करना हमारे लिए बहुत घातक हो सकता है। जो देश गांधीजी के विचार पर दृढ़ रह कर अंतर्राष्ट्रीय क्षेत्र में शान्ति, सहयोग, सहअस्तित्व, अहिंसा और निःशस्त्रीकरण की बात जोर-शोर से करता है, वह अपने लोकजीवन में सैनिकता को प्रतिष्ठित करने की ओर उसे बढ़ाने-चलाने की बात सोच कर न अपने साथ न्याय करता है और न अपने समय की दुनिया के साथ। यदि हम चाहते हैं कि देश के अन्दर और देश के बाहर सब कहीं हमारे कार्य और व्यवहार पारस्परिक शान्ति और सहयोग पर आधारित हों, तो निश्चय ही हमें अपने लोकजीवन में सेवा धर्म को और नागरिकता को उसके शुद्ध-बुद्ध रूप में प्रतिष्ठित करने का प्रयत्न प्राणपण से करना चाहिए।

हमारी सरकारें सोच रही हैं कि नई पीढ़ी में अनुशासन, सेवा, सहजीवन और सहयोग के संस्कारों को दृढ़ करने के लिए महाविद्यालयों में प्रवेश चाहनेवाले विद्यार्थियों को एक साल तक ग्रामसेवा में लगाया जाय। जहाँ तक विद्यार्थियों को ग्रामसेवा अथवा लोकसेवा की दीक्षा देने का प्रश्न है, यह विचार अपनी जगह बहुत ठीक है, किन्तु इसको अमल में लाने के लिए जो कार्यक्रम सोचा गया है, उसकी उपयोगिता के बारे में हमें पूरा सन्देह है। यदि शासन ने और समाज ने गांधीजी के विचार को मान कर सारे देश में पूर्व-बुनियादी से लेकर उत्तम बुनियादी तक की सारी शिक्षा का समुचित प्रबन्ध किया होता, तो उसके परिणामस्वरूप बच्चों को पहले दिन से ही लोकसेवा की और श्रमाधारित जीवन की दीक्षा मिलती और फलतः नई पीढ़ी के सभी लोगों में प्राथमिक

से लेकर विश्वविद्यालय तक विविध प्रकार की लोकसेवा के संस्कारों का सिंचन होता रहता और इस प्रकार समाज तथा शासन को लोकसेवा की रुचि और वृत्ति रखने वाले अनुभवी तथा ज्ञानी लोक-सेवकों का एक दल देश के कोने-कोने में तैयार मिलता और उसकी शक्ति तथा सहयोग से नवनिर्माण के सारे काम देखते-देखते लोकहित में सिद्ध हो जाते। हमारे नम्र विचार में आज भी हम अपनी पिछली भूल को सुधार कर आगे बढ़ने का फैसला करें, तो उससे देश को अपरिमित लाभ ही होगा। इसमें जितनी देर होगी, उतना ही देश का सही विकास रुकेगा और देश की सम्पत्ति तथा शक्ति का दुरुपयोग होता रहेगा।

एक तरफ हम अपने देश में लोकतंत्र की और समाजवाद की बातें करते हैं और दूसरी तरफ अपनी नानाविध योजनाओं द्वारा देश में सामाजिक और आर्थिक विषमता को बढ़ाने वाले वर्गों और दलों की सृष्टि करते जाते हैं। शासन का समर्थन, पोषण और सहारा पाकर ये नये दल लोकजीवन में अपनी नई प्रतिष्ठा खड़ी करते हैं। फिर इनके अपने निहित स्वार्थ जोर पकड़ते हैं और ये समाज और शासन को अपने निर्धारित लक्ष्य की दिशा में आगे बढ़ने से रोकते हैं। इनके निमित्त से देश में मानवता के शोषण और उत्पीड़न के नये-नये क्षेत्र खड़े होते हैं और उनके कारण समाज तथा शासन के सामने नई-नई समस्याओं के पहाड़-से खड़े हो जाते हैं। परिणाम यह होता है कि देश अपने लक्ष्य से दूर भटक जाता है और उसकी शक्ति तथा साधनों का विनियोग समाज के विकास में बाधक शक्तियों के संवर्द्धन में होने लगता है।

गांधी-विचार और गांधी जीवन-दर्शन के प्रति वफादार रह कर काम करने वाले शासन से आज कोई यह अपेक्षा नहीं रखेगा कि वह कुछ सौ या कुछ हजार सैनिकों को तैयार करने के लिए ऐसी सैनिक-शालाएँ खोले और चलाये, जिनमें देश के भावी सैनिकों को पुराने जमाने के राजकुमारों की-सी शान से रखा जाये और इस तरह समाज में उनका एक अलग वर्ग खड़ा किया जाये। नई सैनिक-शालाओं के लिए जो योजना हाल ही बनी है, उनमें भरती होने वाले विद्यार्थियों पर प्रति विद्यार्थी दो से ढाई हजार रुपया सालाना खर्च करने की व्यवस्था की गयी है। इस व्यवस्था के चलते इन विद्यालयों से जो सैनिक निकलेंगे, वे देश के कोटि-कोटि लोगों के साथ समरस होकर जीने वाले तो किसी प्रकार हो ही न सकेंगे। उनकी तो अपनी एक अलग जात बनेगी और सिवा अफसरी करने के त्याग और पुरुषार्थ का कोई बड़ा काम वे क्वचित् ही कर पायेंगे। इस तरह समाज में दूसरों की मेहनत और कमाई पर जीने वाले लोगों का एक ऐसा दल खड़ा होगा, जो लोक-जीवन में मानवता के स्वस्थ मूल्यों का पोषण ही न होने देगा। देश के और दुनिया के सैनिक-जीवन के साथ जो नाना प्रकार के अनाचार और दुराचार सदियों से जुड़े चले आये हैं, उनसे बच कर जीने वाला कोई नया सैनिक समाज इस रीति से हम देश में खड़ा कर पायेंगे, इसकी भी कोई सम्भावना आज तो मालूम नहीं होती। इसलिए हमें यह बहुत आवश्यक प्रतीत होता है कि देश के जीवन-मरण से सम्बन्ध रखने वाले इस गहन प्रश्न पर तटस्थ भाव से विचार किया जाना चाहिए और ऐसी कोई योजना बननी चाहिए, जिससे हम अपने देश में जाग्रत सेवकों और समर्थ नागरिकों से भरा-पूरा एक स्वस्थ समाज खड़ा कर सकें।

नगरों में सर्वोदय-कार्य ओझल न हो

पूर्णचन्द्र जैन

नगरों के कार्यक्रम के बारे में विनोबाजी समय-समय पर विचार देते रहे हैं। भूदान पत्र-पत्रिकाओं में इसकी चर्चा जब तब होती रही है। इन्दौर में काफी दिन रह कर विनोबाजी ने नगर-कार्यक्रम के अनेक अंग ही सामने रख दिये थे। फिर भी नगरों में कोई खास कार्यक्रम आज चलता नहीं दिखता है। जहाँ है, वहाँ भी कुछ वेग उसमें आया हो, ऐसा प्रतीत नहीं होता।

हिंदुस्तान के समाज का बहुत बड़ा अंश गाँव-देहात में रहता है। इसलिये वहीं अधिक समय, शक्ति क्रांतिकारी सेवकों की लगे यह स्वाभाविक और आवश्यक है। लेकिन जन समाज अधिक गाँव में होने पर भी यह बहुजन-समाज नगरों से और उनमें बैठे या उनसे संबंधित लोगों से ही प्रभावित है। यह विपरीत स्थिति जब भी ठीक हो, गाँवों के सर्वनाश को रोकने के लिये भी उस पर सतत प्रहार कर रही नगरों की गलत गतिविधि और स्थिति के सुधार के लिये उनमें बैठ कर काम किये जाने की बहुत जरूरत है।

फिर सैकड़ों भाई-बहिन सर्वोदय-विचार में श्रद्धा रखने वाले और उस निमित्त काफी समय शक्ति लगाने वाले ऐसे भी हैं, जो गाँवों में बहुत कम जाते-आते हैं। नगर ही उनके कार्य-क्षेत्र हैं। वहीं के जीवन में उनका स्थान है। इन साथियों को गाँवों के समाज-परिवर्तन के काम में योग-दान की दृष्टि से भी अपने नगर-क्षेत्र में ठोस व सातत्यपूर्ण काम चलाते रहना चाहिये। इस तरह नगरों में स्वयं नगरों के लिये, व्यापक देश-व्यापी समाज के लिये और वहाँ रहने वाले कार्यकर्ताओं की सजीवता व सक्रियता के लिये गांधी-विनोबा के सपने को साकार करने वाले काम के सतत किये जाने की जरूरत है।

कुछ मित्रों को ऐसा लगा कि हाल ही में हुए तेरहवें सर्वोदय-सम्मेलन के समय संघ ने कार्यक्रम विषयक जो प्रस्ताव स्वीकार किये, उनमें नगरों से संबंधित कुछ नहीं था। सीधे नगरों से संबंधित नहीं, पर देश की नब्ज की परख पर आधारित सब प्रस्ताव जरूर थे। नब्ज ठीक देखी गयी, निदान कुछ ठीक हुआ और उपचार ठीक बताया गया तो नगर उससे वंचित रहें या उन्हें भुला दिया गया, यह नहीं मानना चाहिये।

नगरों में सबसे पहला काम तो वहाँ के उखड़े-उखड़े, सतत अशांत और व्यग्र जीवन को विपरीत-से विपरीत और उत्तेजित-से-उत्तेजित परिस्थिति में धैर्यशील तथा स्थिर बनाये जाने का है। नगर शिक्षा और संस्कारिता के केन्द्र माने जाते हैं। लेकिन छोटी-छोटी बातों को लेकर जो कलह और दंगों के रूप में वहाँ विस्फोट होते हैं उनसे नागरिकता, नगरों की शिक्षा व सुसंस्कारिता पर चन्द क्षणों में धूल पड़ जाती है। इसलिये पहला काम वहाँ शांति-सेना का है। अशांति की परिस्थितियों के निवारण का सतत प्रयत्न, विस्फोटक तत्वों पर सतत निगरानी और उन्हें बदलने की जी-जान से कोशिश तथा अशांति फूट ही पड़े तो जान देकर भी उसे तत्क्षण और जहाँ-की-तहाँ रोक देने की तड़प तथा तैयारी, नगरों की आज की, कल की और स्थिति को देखते लम्बे समय की भी आवश्यकता है।

परिस्थिति की इस संभाल और इसके निमित्त जरूरी तौर पर किये जाने वाले संपर्क के कार्य का सर्वोदय-पात्र सर्वोत्तम साधन सिद्ध हो सकता है। इस ओर कार्यकर्ताओं का, खास तौर से नगरों के घने क्षेत्र में रहने वाले सर्वोदय-प्रेमियों का ध्यान न दिया जाना ठीक नहीं है। सर्वोदय-पात्र अच्छे संस्कार डालने, अहिंसा का विश्वास जगाने और सतत संपर्क का सीधा-सादा, किन्तु प्रभावशाली सर्वांग कार्यक्रम है। वह संगठित और सुनियोजित ढंग से उठाया तथा बढ़ाया जाना चाहिये।

तीसरा कार्य शिक्षण या विचार-प्रचार का है। शहरवासियों का दिमाग जितना दुरुस्त होगा और गलत मूल्यों की जकड़ से जितनी जल्दी वे छूटेंगे, उतनी जल्दी समाज पर व्यापक असर होगा और शहर के कुछ खरबूजे गाँवों के खरबूजों के ढेरों का रंग बदल सकेंगे। नगर बुद्धि व ज्ञान का घर हो सकता है और माना भी जाता है। लेकिन आज तो वह गलत शिक्षा-पद्धति व गलत सामाजिक मूल्यों के कारण कुबुद्धि और विकृत ज्ञान का छुतहा रोग फैलाने वाला पिण्ड बना हुआ है। इसे बदलने के लिये सर्वोदय-पत्र-पत्रिका व साहित्य के व्यापक प्रचार तथा शिविर, गोष्ठी वगैरह के जरिये विचार-विमर्श का कार्य गुमराह गुरु-वर्ग व विद्यार्थी-वर्ग तथा विभिन्न नागरिकों / संस्थाओं आदि में चलना चाहिये। इसके द्वारा सहज ही लोकनीति की चर्चा फैलायी जा सकती है। चुनाव आदि की आचार-मर्यादा का ढाँचा बन सकता है और कार्यान्वित किया जा सकता है, नगरों तथा नगरवासियों के ग्रामीकरण अर्थात् उन्हें आदर्श गाँव के निश्छल, सहयोगी, श्रमनिष्ठ और संतोषी जीवन का प्रेमी बनाने का प्रयोग चल सकता है। हजारों-लाखों की आबादी में से कुछ लोग भी इस प्रयोग से निकल सकें तो फिर चाहे वे शहर में रहें, या गाँवों में जाकर धूनी रमायें, समाज पर कुछ स्थायी छाप व प्रभाव अवश्य पड़ेगा।

सीधी कारवाई व सेवा की दृष्टि से एक-दो कार्य स्थानिक परिस्थिति, तैयारी और शक्ति के अनुसार लिये जाने चाहिए। अधिक कार्यक्रम लेने से पर्याप्त शक्ति की कमी के कारण, कोई भी कार्य यशस्वी नहीं हो पायेगा, यह मान कर अशोभनीय पोस्टर-निवारण, शराबबंदी, स्वच्छता आदि में से एक या दो को लिया जाना चाहिए। संपत्तिदान का कार्यक्रम अमुक एक भूमिका व वातावरण बनने के बाद ही नगर के एक सीमित अंचल या क्षेत्र में लेना ठीक होगा।

इस प्रकार इस बार सम्मेलन के समय भूदान, शांति-सेना और लोकनीति का जो त्रिविध कार्यक्रम संघ ने सामने रखा या दोहराया, उसमें से ही नगरों के कार्यक्रम का स्रोत भी सहज स्पष्ट उपलब्ध है। नगरों की अमुक परिस्थिति और पेचीदगियाँ हैं, अतः वहाँ भूदान-संपत्तिदान के प्रत्यक्ष कार्य की एवज लोकनीति व शांति सेना कार्य व सामाजिक, सार्वजनिक, या शहरी गंदगी के निवारण के कार्यक्रम के जरिये बढ़ते रहना सर्वोत्तम होगा। शांति-सेना आदि कार्य ऐसे भी हैं, जिनमें रचनात्मक, गैर-रचनात्मक, सरकारी, गैर-सरकारी, पक्ष, अपक्ष वगैरह सभी प्रकार के लोगों का समर्थन व सहयोग आज अवश्य मिलेगा। आवश्यकता यही है कि नगरों के साथी साहस, धैर्य और आत्म-विश्वास के साथ दही के जामन की तरह नगरों में लग जायँ और निराशा या गाँवों में ही क्रांति हो सकती है, इस गलतफहमी के कारण नगरों के काम को दिल-दिमाग से ओझल न होने दें।

अन्न-पूर्णा खेती

—बनवारीलाल चौधरी

व्यावसायिक अर्थ-शास्त्रियों का आक्षेप है कि भूदान-आन्दोलन के फलस्वरूप भूमि अनुत्पादक और अलाभकारी टुकड़ों में बँट जायेगी, जो कि राष्ट्र के लिए अहितकर है। रूस और अमेरिका के फार्मों का ढाँचा देखने वाले विशेषज्ञ भारत भर में सुलभ सरीखे बड़े कृषि-क्षेत्र देखना चाहेंगे। उनका धारणाओं के ५०० एकड़ के क्षेत्रों से निराश होना स्वाभाविक ही है। इन्हें छोटे क्षेत्रों की उनकी यह टीका तथ्यों पर आधारित नहीं जान पड़ती है। औसत के हिसाब से ही उन लोगों ने ऐसा मान लिया जान पड़ता है। वस्तुस्थिति का ज्ञान प्रयोगों द्वारा ही प्राप्त किया जा सकता है। गत आठ-नौ वर्षों से निटाया (जिला होशंगाबाद) में इस तथ्य को जानने के प्रयोग ग्राम-सेवा समिति, बरौदा-निटाया के तत्वावधान में 'मित्र-मण्डल' और मध्य प्रदेश गांधी स्मारक निधि की सहायता से किये जा रहे हैं।

कृषि नीति : भारतीय कृषि की सही नीति सन्तुलित खेती है। दृष्टि अधिक खाद्य-तत्व-उत्पादन की होनी चाहिये, न कि अधिक रुपया कमाने की। उदाहरणार्थ, कोटगिरि में बहुत मारवाड़ी सादकार अपनी भूमि पर चाय लगा कर ज्यादा रुपया प्राप्त कर सकते हैं, पर वे कायम कर रहे हैं अनाज को, जो कि राष्ट्र के लिये आवश्यक है।

किसान की सन्तुलित भोजन की माँग पूरी करना उसकी खेती का मूल ध्येय होना चाहिए। इसके अनुसार हमने सन् १९५३ में पाँच एकड़ कृषि-क्षेत्र की योजना बनाई थी। इसमें रखने की बाबत के लिए एक जोड़ी बैल आवश्यक थे, इसलिए कृषि के सब अन्य अंग से चलने वाले रखे गये थे। तदनुसार सिंचाई के लिए रहट का उपयोग किया जाता था।

नया मोड़ : सन् '५९ में अखिल भारत सर्व सेवा संघ के सौजन्य से मुझे जापान की कृषि का अध्ययन करने का अवसर प्राप्त हुआ। इससे एक नई प्रेरणा और दृष्टि प्राप्त हुई। पाँच एकड़ रकबा भी बहुत अधिक जँचा। इतने बड़े रकबे की सघन खेती के लिए काफी संख्या में मजदूर चाहिए। पाँच-सात मजदूर प्रति दिन चाहिए। सेवाग्राम में हो रहे वर्तमान प्रयोगों का भी करीब-करीब यही अनुभव है।

इससे बचने के लिए और परिवार की शक्ति के आधार पर खेती करने के लिए एक-डेढ़ एकड़ रकबा पर्याप्त लगा। इस अनुसार लगभग १.२५ एकड़ क्षेत्र की एक अन्न-पूर्णा कृषि-योजना बनायी। सिंचाई के लिये रहट के बजाय बिजली का पम्प लगाया। इससे बैलों की आवश्यकता नहीं रही। उनके स्थान पर परिवार की दूध की माँग पूरी करने के लिये दो गायें रखी। इस रकबा में उगे नींदन और घास एवं उत्पादित भूसा इनके लिये पर्याप्त हुआ।

क्षेत्र की रूपरेखा : क्षेत्र की पृष्ठभूमि की रूपरेखा एक उद्यान के सदृश बनायी गयी। देखने से ही प्रथम प्रभाव ऐसा पड़े कि मानो किसी पार्क में प्रवेश कर रहे हैं। पुष्प वृक्ष, द्रुम-लता और मौसमी फूल एवं फल-वृक्ष इस प्रकार से लगाये गये कि वे अनाज की फसल के प्लाट की किनारी का काम करें।

पूरा क्षेत्र ११ खण्डों में विभक्त किया गया। सब खण्डों तक जल जाने के लिये सिंचाई-नाली और पगडण्डी बनायी। क्षेत्र में 'लैण्ड-स्केप प्लानिंग' के सिद्धान्तों को ध्यान में रख जहाँ-तहाँ फूल एवं फल के वृक्ष लगाये नाली के निथार के पानी का उपयोग नाली के दोनों ओर केले के वृक्षों की कतार लगा कर किया गया।

फल-वृक्षों की कतारों के बीच में अन्न की फसल सहाते हैं।

लगभग ०.२५ एकड़ रकबा दो फसली रखा गया है। आँगन-बाड़ी में एक के बाद एक ३-४ फसल लेते हैं।

ईंधन की माँग क्षेत्र के बीच में लगे एक बहुत पुराने पीपल से एवं क्षेत्र की हद पर लगे बबूलों से पूरी होती है। हद पर तार खींचने के लिये खम्भे लगाये थे। उसी समय वर्षा ऋतु में बबूल के पौधे भी लगा दिये गये थे। अब खम्भे सड़ गये हैं और तार बबूल के वृक्षों की पींड़ में ठोक दिये गये हैं। इस तरह स्थायी खम्भे बन गये हैं और तार भी इनमें पक्के हो गये हैं। ये ही वृक्ष ईंधन की लकड़ी देते हैं और कुछ वर्षों में कृषि के लिए उपयोगी लकड़ी देंगे।

विभिन्न फसलों का रकबा	वर्गफीट
(१) गेहूँ	२१,२८५
(२) मंगरा में रखा रकबा	३,००५
(३) किनारी की पट्टी	८६२
(४) धान (प्रस्तावित रकबा)	४,८४०
(५) मिर्ची	१,०००
(६) सिंचाई की नाली पर केला; आम और अनार	३,६७०
(७) रास्ता, कुआँ, स्नानघर	९५८
(८) निवासगृह, बाड़बाड़ी, गाय और ढोर, समाजघर	
कार्यक्षेत्र	१०,८८०
कुल	५४,४४०
(९) दूसरी फसल का रकबा	१०,३६१
(१०) आँगन बाड़ी निवास— घर के रकबा का एक भाग	५००

खाद का प्रबंध : स्थानीय रूप से मुख्यतः गोबर और कम्पोस्ट खाद प्राप्त किया। कम्पोस्ट बनाना जितना व्यवस्थित होना चाहिए, कर नहीं पाये। इसके बहुत अच्छे अनुभव सर्वोदय-केन्द्र, करजगाँव (बैतूल) में मिले हैं। इस वर्ष से वही नीति यहाँ भी अपनाने की योजना है। पूरे क्षेत्र में हरी खाद दी गयी। सन और तिल की हरी खाद का परीक्षात्मक अध्ययन किया गया। तिल की हरी खाद बहुत सस्ती, लगभग दो रुपया प्रति एकड़ पड़ती है।

कृत्रिम खाद का उपयोग एक प्लाट में किया गया। सामान्य नीति इसका उपयोग नहीं करने की है। मटर, मौसम्मी इत्यादि को थोड़ी सी खाद दी गयी।

कार्य के घण्टे : हम चार लोग यहाँ स्थायी रूप से रहते हैं। हमारे एक वानप्रस्थ साथी हैं, वर्ष में लगभग दो माह यहाँ बिताते हैं। मेरी पत्नी और बच्ची फसल काटने में सहायता करती हैं, आँगनबाड़ी सम्हालती हैं। बालवाड़ी सहायिका भी कृषि-कार्य में समय देती है। एक ग्राम-युवक हमारे साथ है, जिसकी खेती की जिम्मेदारी है, पर उसे बाहरी कार्य में आधा समय देना पड़ता है। हम सबके खेती-कार्य के घण्टे लगभग २००० होंगे।

जुताई, बोनी और दावन के लिए बैल किराये से लिये, जिसका खर्च लगभग ७५ रु० हुआ।

उत्पादन	कीमत रु०
(१) गेहूँ १५ मन	२२१
(२) साग-भाजी १२ मन	९०
(३) प्याज १५ मन	७१
(४) मिर्ची ८ सेर सूखी	२१
(५) पपीता ४ मन	२८
(६) मौसम्मी ७ दर्जन	२१
(७) मटर २॥ मन	२०
(८) धान (मोटी) २ मन	२०
(९) केला ६० दर्जन	१०
(१०) अमरूद १०० सेर	२५
(११) गोभी के ८०० पौधे	८
कुल	५४३ रुपये

बिजली और अन्य खर्च २०० रु० हुआ।

लगभग ५०० घण्टे फल के पौधों को दिये, जिनसे अभी उत्पादन शुरू नहीं हुआ है, तीन वर्ष बाद होगा। इस अनुसार १५०० घण्टे कार्य से ३४३ रु० की आमद हुई, अर्थात् लगभग २२ नये पैसे प्रति घण्टा।

फलदार वृक्षों का उत्पादन आरम्भ होने पर यह आमद दुगुनी हो जायेगी। सन् '६४ से इसकी सम्भावना है।

सेवाग्राम में निटाया की अपेक्षा ड्योढ़ी और दुगुनी फसल प्राप्त हुई। जमीन के बन जाने, कृत्रिम खाद सिंचाई एवं सुचारु व्यवस्था से यह सम्भव है।

इन प्रयोगों से यह स्पष्ट है कि खेती की इस रीति को पालन करने से प्रत्येक भारतीय ग्रामीण को खेती करने का अवसर प्राप्त हो सकेगा। "खेत गाँव का और खेती किसान की" नीति में अमल में लाना सम्भव होगा। खेती एक आनन्ददायिनी 'दासी' बन जायेगी। शौकिया रूप आने से उत्पादन में भी बहुत वृद्धि होगी।

खादी-ग्रामोद्योग प्रशिक्षण के लिए पाठ्य-पुस्तकें

खादी-कमीशन की ओर से सूचित किया गया है कि खादी ग्रामोद्योग विद्यालयों में चलने वाले विभिन्न अभ्यास क्रमों के लिए उन्हें नीचे लिखे विषयों पर पाठ्य पुस्तकों की आवश्यकता है :—

(१) भारतीय ग्राम्य व्यवस्था (सामाजिक और आर्थिक)।
(२) सामुदायिक विकास और विस्तार खण्ड योजना का मौजूदा स्वरूप और पृष्ठभूमि आदि।
(३) कृषि उद्योग मिश्रित (एग्रो इन्डस्ट्रियल) व्यवस्था।
(४) खेती और ग्रामीण उद्योग धन्धों से उत्पादित वस्तुओं का विक्रय।
(५) खेती और उद्योगों के क्षेत्र में सहकारी संगठन।
(६) गांधीजी द्वारा प्रतिपादित रचनात्मक कार्यक्रम, उसके सैद्धान्तिक, सामाजिक और आर्थिक पहलू।
(७) खादी आन्दोलन।
(८) खादी-ग्रामोद्योग कमीशन के अन्तर्गत आनेवाले ग्रामोद्योग।

इन विषयों पर जिन्होंने पुस्तकें लिखी या प्रकाशित की हों, वे प्रत्येक प्रकाशन की दो प्रतियाँ संचालक, प्रशिक्षण विभाग, खादी-ग्रामोद्योग कमीशन, पोस्ट बाक्स ४८२, बम्बई-१ के पते पर भेजें, ऐसा चाहा गया है। इन विषयों पर नये सिरे से लिखनेवाले लेखक भी उक्त पते पर पत्र व्यवहार करें।

बिहार की चिट्ठी

श्री शंकररावजी और जयप्रकाशजी के महत्त्वपूर्ण दौरे
बिहार का पाँचवाँ सर्वोदय सम्मेलन
खादी-कार्यकर्ताओं का सम्मेलन

मई महीना बिहार में सर्वोदय-आंदोलन की दृष्टि से बड़ा ही हलचलपूर्ण रहा। १ मई से १० मई तक 'बीघे में कट्ठा' के आधार पर शुरू किये गये भूदान-अभियान के सिलसिले में श्री शंकरराव देव की यात्रा बिहार के दस जिलों में हुई। इसी सिलसिले में २२ मई से २६ मई तक श्री जयप्रकाश नारायण की यात्रा मुंगेर, शाहाबाद, पलामू, रांची और सिंहभूमि जिले में हुई। २२ मई को मुंगेर नगर से उनकी यात्रा शुरू हुई। मुंगेर के बाद आरा, डाल्टनगंज, रांची और जमशेदपुर जैसे नगरों में वे गये, और सभी जगह उनकी विराट जनसभाएँ हुईं। केवल जमशेदपुर में स्थानीय मजदूर-यूनियनों के आपसी झगड़ों से उत्पन्न तनाव की स्थिति के कारण सार्वजनिक सभा नहीं हो पायी। सार्वजनिक सभाओं में हजारों की संख्या में नागरिक—खासकर पढ़े-लिखे, बुद्धिवादी नागरिक श्री जयप्रकाशजी के विचारों को सुनने के लिए इकट्ठे हुए। जयप्रकाशजी के व्यक्तित्व और सर्वोदय-विचार के प्रति जनता का नया आकर्षण इन सभाओं की मार्फत प्रकट हुआ।

इन सार्वजनिक सभाओं के अतिरिक्त हर नगर में कार्यकर्ता सभाएँ भी हुईं, जिनमें राजनैतिक पक्षों के कार्यकर्ता बड़ी संख्याओं में आये। कांग्रेस, प्रजा-समाजवादी, स्वतंत्र और झारखण्ड पार्टी के कार्यकर्ताओं ने इन सभाओं में ज्यादा दिलचस्पी ली और भूदान-प्राप्ति के कार्यक्रम में सहयोग देने का वचन दिया। पंचायत परिषद के कार्यकर्ताओं ने भी काफी उत्साह दिखाया।

इन कार्यकर्ता-सभाओं में भूदान-प्राप्ति के कार्यक्रम को सफल बनाने के लिए योजनाएँ बनायी गयीं और उन्हें कार्यान्वित करने के लिए जिला स्तर पर भूदान प्राप्ति समितियों का गठन किया गया। इस अवसर पर अनेक प्रमुख कार्यकर्ताओं ने तथा कुछ बड़े भूमिवानों ने भी अपनी भूमि का बीसवाँ हिस्सा समर्पित करने का संकल्प घोषित किया। भूदान-कार्य को सफल बनाने के निमित्त डाल्टनगंज में लगभग ६०० रु० की थैली भी जयप्रकाशजी को भेंट की गयी।

प्रत्येक सार्वजनिक सभा में जयप्रकाशजी लगभग ढाई-तीन घंटे तक बोले और जनता एकाग्र होकर उनकी बातों को सुनती रही। लोक-शिक्षण का इससे बेहतर और कारगर ढंग और क्या हो सकता है!

जयप्रकाशजी की इस यात्रा में बिहार भूदान-यज्ञ समिति के मंत्री श्री वैद्यनाथ प्रसाद चौधरी आरम्भ से अंत तक रहे। इनके अलावा श्री रामलसिंह त्यागी, मंत्री, बिहार प्रादेशिक पंचायत परिषद; श्री भोला पासवान शास्त्री, कल्याण-मंत्री, बिहार; कांग्रेस-नेता श्री कृष्ण वल्लभ सहाय तथा प्रजा समाजवादी नेता श्री रामानन्द तिवारी का भी सहयोग यात्रा में प्राप्त हुआ।

* * *

२८ और २९ मई को बिहार का पाँचवाँ प्रादेशिक सर्वोदय सम्मेलन हजारीबाग जिले के अन्तर्गत झुमरी तिलैया में सम्पन्न हुआ। बिहार के प्रमुख रचनात्मक विचारक और खादी ग्रामोद्योग कमीशन के सदस्य श्री ध्वजा प्रसाद साहु ने सम्मेलन की अध्यक्षता की। लगभग १००० लोक-सेवक सम्मेलन में शरीक हुए। बिहार सरकार के सिंचाई-मंत्री श्री दीपनारायण सिंह भी सम्मेलन के अन्तिम दिन पधारे और अपने विचारों से प्रतिनिधियों को लाभान्वित किया।

सम्मेलन २८ मई को प्रातःकाल शुरू हुआ। सर्वप्रथम बिहार सर्वोदय-मंडल के संयोजक श्री श्यामसुन्दर प्रसाद ने प्रतिनिधियों के समक्ष अपना लिखित प्रतिवेदन उपस्थित किया। यह प्रतिवेदन केवल बिहार में सर्वोदय प्रवृत्तियों का वार्षिक प्रतिवेदन नहीं, बल्कि पिछले दस वर्षों के सर्वोदय आंदोलन की प्रगति का सिंहावलोकन था, जिसकी निष्पत्तियों का लेखा-जोखा आँकड़ों में, क्रांति के गतिमान कदमों में किया गया था। अध्यक्ष की अनुमति से प्रतिवेदन के संबंध में अनेक प्रतिनिधियों ने अपने विचार प्रकट किये। उनकी शिकायत थी कि इस प्रतिवेदन में आंदोलन की सफलताओं का तो उल्लेख है, लेकिन उसकी विफलताओं की चर्चा नहीं है। यानी, पात्र में पानी कितना भर आया है, इसकी तो चर्चा है; लेकिन पात्र का कितना भाग रिक्त है, इसकी ओर संकेत नहीं है। प्रतिनिधियों की यह शिकायत बहुत-कुछ जायज थी। प्रतिवेदन के पीछे दृष्टिकोण यह था कि सर्वोदय-क्रांति एक 'नये मोड़' पर पहुँच गयी है, जहाँ से वह आगे का मार्ग ढूँढ रही है। मंजिल की दूरी के बजाय, नये रास्ते की खोज पर ज्यादा जोर उसमें दिया गया था। इसके बावजूद प्रतिवेदन को सबने पसंद किया और मान्य किया।

सम्मेलन में मुख्यतः पाँच विषयों पर चर्चाएँ हुईं। वे विषय थे :

(१) बीघा-कट्ठा के आधार पर नये भूदान की प्राप्ति और पुरानी प्राप्तियों का वितरण।

(२) ग्राम-स्वराज्य।

(३) लोकनीति।

(४) संगठन।

(५) अशोभनीयता-निवारण।

ग्राम-स्वराज्य के अंतर्गत ग्रामदान, ग्राम-संकल्प, ग्राम-निर्माण, नये मोड़, नई तालीम आदि विषयों पर भी चर्चाएँ हुईं। इसी प्रकार लोकनीति की भूमिका में भारत सरकार की पंचायती राज योजना तथा आगामी चुनाव के संबंध में सर्व सेवा संघ द्वारा स्वीकृत प्रस्ताव पर विचार हुआ और संगठन के संदर्भ में सर्वोदय-मंडल एवं शांति-सेना के संगठन पर सोचा गया। अशोभनीयता-निवारण के सिलसिले में अशोभनीय चित्रों, विज्ञापनों, गीतों एवं साहित्य के निवारण के प्रश्न पर भी चर्चाएँ हुईं। प्रत्येक विषय पर चर्चा करने के लिए एक चर्चा-मंडल गठित किया गया था और प्रत्येक चर्चा-मंडल के अलग-अलग संयोजक थे। इन सभी चर्चा-मंडलों की अलग-अलग बैठकें हुईं और संबंधित विषयों पर गंभीर चर्चाएँ हुईं। अंत में चर्चाओं के निष्कर्ष प्रतिनिधियों के समक्ष उपस्थित किये गये और वे सर्वसम्मति से स्वीकृत हुए।

अंतिम अधिवेशन में बिहार सर्वोदय-मंडल के संयोजक ने सम्मेलन का एक 'निवेदन' पेश किया, जो सर्वसम्मति से मान्य किया गया।

सम्मेलन के अवसर पर दो सार्वजनिक सभाएँ हुईं। पहले दिन की सभा में श्री जयप्रकाश नारायण का एक अत्यन्त सारगर्भित एवं ओजस्वी भाषण हुआ। दूसरे दिन की सभा में सम्मेलन के अध्यक्ष का भाषण हुआ। बिहार के सिंचाई-मंत्री श्री दीपनारायण सिंह तथा श्री कृष्णराज मेहता के भाषण भी इस अवसर पर हुए।

* * *

तारीख ३०-३१ मई को झुमरी-तिलैया में ही बिहार के खादी-कार्यकर्ताओं का वार्षिक सम्मेलन बिहार खादी-ग्रामोद्योग संघ के सभापति श्री रामदेव ठाकुर

बिहार सर्वोदय-सम्मेलन का निवेदन

स्वराज्य के बाद देश निर्माण की अवस्था से गुजर रहा है। हम सर्वोदय के आधार पर एक नये समाज के निर्माण के प्रयत्न में लगे हैं। इस नये समाज में व्यक्ति की स्वतन्त्रता प्रतिष्ठित होगी और *सामाजिक न्याय प्रतिष्ठित होगा।* इस प्रकार के समाज के निर्माण में कुछ बातें बहुत बड़ी रुकावट बन रही हैं। उदाहरण के लिए आर्थिक विषमता, दलगत राजनीति की पद्धति तथा भाषा, धर्म और प्रदेश सम्बन्धी संकुचित और ओछे भाव जैसी रुकावट के नमूने हैं। गत दस वर्षों से *भूदान-आन्दोलन इस आर्थिक विषमता को* प्रेम और करुणा के रास्ते से खत्म करने का प्रयत्न कर रहा है। और भूदान का अर्थ है भूदान, ग्रामदान, सम्पत्तिदान, अर्थात् सम्पत्ति की मिल्कियत का स्वेच्छापूर्वक विसर्जन। लोकनीति का विचार दलगत राजनीति के निराकरण का एक विधायक साधन है। शान्तिसेना का कार्यक्रम हर प्रकार के संकुचित भावों और उनसे उत्पन्न हुए कार्यों के कारगर प्रतिरोध का एक व्यवहारिक उपाय है। परन्तु हमें कबूल करना चाहिये कि इन तीनों दिशाओं में अब तक जो प्रयास हुआ है, और जितनी सफलता मिली है, उससे समस्या से जूझने की हमारी शक्ति भले ही बढ़ी हो, लेकिन समस्या आज भी समस्या के रूप में मौजूद है। अतः उन तीनों दिशाओं में हमारी कोशिश भी भरपूर जारी रहनी चाहिये।

इस सम्मेलन में जिस सन्दर्भ में हम लोग एकत्र हैं, उसमें तीन घटनाएँ बरबस ध्यान में आती हैं। पहली, भूदान-आन्दोलन के प्रायः दस वर्ष के बाद सन्त विनोबाजी की बिहार-यात्रा और बीघा में कट्ठा दान के लिये उनका आवाहन। दूसरी, आगामी आम चुनाव और सरकार की पंचायती राज योजना। तीसरी, भाषा, धर्म और प्रदेश के नाम पर घटनेवाली कई दर्दनाक घटनाएँ। इस परिस्थिति का सामना अन्य विचार के लोग किस प्रकार से करेंगे यह उनके सोचने का प्रश्न है। लेकिन हमारे लिये तो उसका एक ही सुपरिचित मार्ग है—भूदान, लोकनीति और शान्तिसेना का मार्ग। अतः अगले वर्ष हम लोगों को नीचे लिखे कार्यक्रम को सारी शक्ति लगा कर पूरा करने का प्रयत्न करना चाहिये।

(१) बीघा-कट्ठा आधार पर भूदान-प्राप्ति एवं वितरण और पुराने दान की जमीन का वितरण। (२) शान्तिसेना का संगठन और शान्तिदान का प्रसार। (३) लोकनीति के विचार का प्रसार।

मतदाता अपना उम्मीदवार खड़ा करें, न कि खुद खड़े उम्मीदवार को मत दें

भूदान-यज्ञ आन्दोलन ने अपना पहला दशक पूरा कर हाल ही में हुए अखिल भारत सर्वोदय-सम्मेलन उंगुटूर, आन्ध्र में जमीन मांगने और बाँटने से आगे बढ़कर यह भी महसूस किया कि अब वह समय आ गया है, जब कि राज्य-व्यवस्था में परिवर्तन करने की दृष्टि से चुनाव में खड़े होने वाले उम्मीदवारों के बारे में गहराई से विचार करना चाहिए और लोकतंत्र वास्तव में लोकनिष्ठ बने, इसका प्रयत्न करना चाहिए।

उंगुटूर में स्वीकृत चुनाव विषयक प्रस्ताव का स्पष्ट अभिप्राय चुनाव में खड़े होने से या किसी प्रकार सत्ता प्राप्त करने से नहीं है। सर्वोदय विचार के लिए व्रत संकल्प लोकसेवकों की तो स्पष्ट मान्यता है कि सर्वोदय-समाज की रचना राजनीतिक सत्ता यानी शासन के माध्यम से नहीं, वरन् इस देश में रहने वाले ४४ करोड़ लोगों के अपने अभिक्रम, संगठित रूप से अपने पाँव पर खड़ी होने वाली उनकी ताक़त से होगी। आखिर यह ताक़त किसी एक व्यक्ति के जादू से तो जगेगी नहीं। यह तो समाज में जो जादुई शक्ति छिपी है, उसके जगने से होगी। जब तक शासन-मुक्त समाज का सपना साकार नहीं होता, तब तक भारतीय लोकतन्त्र को सही दिशा में ले जाने की दृष्टि से चुनाव में खड़े होने वाले उम्मीदवारों की पद्धति में परिवर्तन करने की आवश्यकता आज सर्वोदय-विचारक अनुभव कर रहे हैं।

अभी चुनाव में राजनीतिक दल अपने-अपने उम्मीदवार खड़े करते हैं। फिर इन्हीं उम्मीदवारों को मत देने भर का काम मतदाताओं का रह जाता है। अब जरूरत है कि मतदाता ही स्वयं उम्मीदवार खड़ा करें। राजनीतिक दलों द्वारा खड़े किये गये लोग उन्हीं राजनीतिक दलों की उन्नति की चिंता में रहते हैं। चुन जाने के बाद मतदाताओं का दुःख-दर्द पूछने कोई नहीं आता। आज मतदान के पहले या बाद में लोकतंत्र के संचालन में मतदाताओं का कोई हिस्सा नहीं रहता, इसलिए लोकतन्त्र लंगड़ा हो गया है। उसे साबित बनाने के लिये यह आवश्यक है कि उम्मीदवारों का चयन मतदाता स्वयं करें।

मतदाता उम्मीदवार कैसे चुनें ?

मतदान-केन्द्रों के छोटे-छोटे क्षेत्रों में मतदाताओं के मंडल बना कर यह काम हो सकता है। विधान सभा के लिए लगभग ७१ हजार से १ लाख और लोकसभा के लिए ५ लाख से ७ लाख की जनसंख्या का क्षेत्र उम्मीदवार का मतदान-क्षेत्र होता है। उसमें सब मतदाताओं को किसी एक जगह तो आना नहीं होता, बल्कि उनके कई मतदान-केन्द्र होते हैं, जहाँ वे आसानी से आकर अपना मत डालते हैं। तो जैसे वे मतदान केन्द्र तक आते हैं, उसी तरह मतदान के पूर्व वे अपने केन्द्र के सभी मतदाताओं का एक मतदाता-मण्डल मानकर यह भी तय कर लें कि कौन उम्मीदवार खड़ा होना चाहिए। फिर अच्छों के बीच सबसे अच्छा छाँटने का सवाल रहता है, न कि पार्टियों द्वारा खड़े किये गये उम्मीदवारों में यह देखना है कि कौन कम बुरा है या कौन पार्टी कम बुरी है!

एक उम्मीदवार के पूरे मतदान-क्षेत्र में इस तरह के कई मतदाता-मंडलों के उम्मीदवार आपस में मिल कर 'चुनाव' के बजाय 'मनाव' का सहारा लें, अर्थात् उम्मीदवार स्वयं खड़ा नहीं हो, अपितु जिस व्यक्ति को चुनना चाहते हैं, उससे प्रार्थना करें। इस तरह अच्छे लोगों के बीच, निस्पृह लोगों के बीच, निस्वार्थ लोगों के बीच यह भी हो सकता है कि चुनाव की नौबत ही न आय, या फिर एकाध, किन्हीं दो-तीन के बीच ही हो। अभी जैसी लम्बी सूची नहीं रहेगी कि जिसे देखो वही कह रहा है, मैं सबसे योग्य हूँ, मुझे वोट दो। उम्मीदवार घर घर हाथ जोड़े पहुँच रहा है, आपका वोट मुझे मिलना चाहिए, क्योंकि और सब मूर्ख लोग खड़े हैं! चुनाव-सभाओं में एक उम्मीदवार द्वारा दूसरे उम्मीदवार की बुराइयों का इतिहास उसके बाप दादों से लेकर लड़कों तक बताया जाता है और दूसरा उतनी ही जोर शोर से उसका इतिहास बताता है! यह सब दृश्य बड़ा असह्य होता है।

मतदाता-मंडलों द्वारा उम्मीदवार निर्धारित होने के बाद नामांकन या नियोजन पत्र उस उम्मीदवार के लिए मंडल की ओर से दाखिल होगा। मंडल ही उसका प्रचार-प्रसार सम्बन्धी खर्च वहन करेगा। उम्मीदवार सही अर्थों में जनता का प्रतिनिधि होगा और चुने जाने के बाद भी वह जनता का ध्यान रखेगा। —गुरुशरण

की अध्यक्षता में हुआ। इस सम्मेलन का मुख्य विचारणीय विषय नया मोड़ और विकेन्द्रीकरण था। इस विषय पर गहरी चर्चाएँ हुईं। श्री जयप्रकाश नारायण का एक अत्यन्त विचारोत्तेजक व्याख्यान इस अवसर पर हुआ। उनके व्याख्यान से खादी-कार्यकर्ताओं के मस्तिष्क के लिए एक नई खुराक और चिन्तन के लिए एक नई दिशा मिली।

चर्चाओं की दृष्टि से ये दोनों सम्मेलन बड़े सफल रहे।

इन सम्मेलनों के आयोजन का मुख्य श्रेय हजारीबाग जिला सर्वोदय-मंडल के नौजवान संयोजक श्री श्यामप्रकाश तथा उनके मुट्ठीभर साथियों को है, जिनके अथक प्रयासों और साहस के बल पर ही हजारीबाग जिले में यह आयोजन सम्भव हो सका। झुमरी तिलैया की जनता ने सहर्ष इन सम्मेलनों का खर्च वहन किया, जिनके आयोजन में स्थानीय कांग्रेस, प्रजा-समाजवादी और स्वतंत्र पार्टी के कार्यकर्ताओं का हार्दिक सहयोग प्राप्त हुआ।

—सच्चिदानन्द

बुराई के प्रतिकार के लिये एकाकी पुरुषार्थ

भावनगर में शक्कर की चोर-बाजारी के विरोध में श्री आत्माराम भाई का एकाकी सत्याग्रह आज पिछले डेढ़ वर्ष से लगातार अविरत रूप से चलता आ रहा है। चोरबाजारी में जिन व्यक्तियों का हाथ माना जाता है, उनके घर, दुकान और दफ्तरों के सामने सवेरे से शाम तक भगवत्-स्मरणपूर्वक सतत आत्माराम भाई फिरते रहते हैं और शाम को विदा लेते समय थाली बजा कर हरएक को याद दिलाते हैं कि "प्रभु हमको हमारी भूल स्वीकार करने की शक्ति दे।" पिछले १७ महीने से सत्याग्रह का यह स्वरूप चलता आ रहा है। आज से वह सत्याग्रह एक नये अध्याय में प्रवेश कर रहा है। अब आत्माराम भाई ने सत्याग्रह के अंतिम साधन, उपवास का अवलम्बन करने का तय किया है और यह जाहिर किया है कि जो मित्र इस चोर-बाजारी के काम में लिप्त हैं, वे जब तक इस काम से प्राप्त की हुई अतिरिक्त रकम वापस समाज को नहीं दे देते, तब तक उपवास चालू रहेगा। इस प्रकार उन्होंने आमरणांत उपवास का आरम्भ ता० २१ मई से किया है।

आज समाज में चोर-बाजारी, घूसखोरी, रिश्वत इत्यादि बुराइयाँ व्यापक रूप से चल रही हैं। सारा समाज उनसे पीड़ित है और इसका दुःख भी सर्वत्र व्यक्त होता है। सारा मानव-समुदाय ही इस परिस्थिति के लिए प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से जिम्मेदार है, परन्तु इसका प्रतिकार किस तरह से करना और इस बुराई में से किस तरह मुक्त होना, यह सामान्य मनुष्य की सूझ-बूझ के बाहर की बात है। देश-हित का विचार करने वाले विचारक विचार तो अनेक प्रकार से करते हैं, परन्तु उसका प्रत्यक्ष कार्यक्रम अपने विधायक स्वरूप में, पूज्य विनोबाजी जैसे थोड़े से लोगों को छोड़ कर कहीं भी होता हुआ नजर नहीं आता।

कई लोग कहते हैं, सुकरात और ईसा से लगा कर गांधीजी तक बलिदान की परंपरा चलती आयी है, पर साधु संत और महापुरुषों के ऐसे अनेक प्रयास होने पर भी समाज तो उसी परिस्थिति में है; तो फिर ऐसे एक और छोटे बलिदान से क्या होने वाला है? दूसरी दलील यह भी सुनने में आती है कि हजारों वर्षों से चली आ रही सामाजिक रूढ़ियों तथा परम्पराओं का आमूल परिवर्तन होने में सैकड़ों वर्ष लगेंगे, यह परिवर्तन एकाएक हो जाय, यह शक्य नहीं है। इसके अलावा कितने ही लोग यह मानते हैं कि हम समाज के धर्म और नीति के चौकीदार नहीं हो सकते, यह सब तो ईश्वरेच्छा के अनुसार ही समाज में चलता रहता है। कइयों का मत ऐसा भी है कि समाज-परिवर्तन के लिए तो जोर-जबरदस्ती और सत्तापूर्वक करा सके, ऐसा कोई तानाशाह चाहिए।

ऐसे विविध मत आज समाज में प्रचलित हैं। परिणामस्वरूप समाज की बुराइयों को निर्मूल करने के लिए कोई प्रतिकारात्मक शक्ति खड़ी नहीं होती है और उधर बुराइयों की जड़ और भी गहरी घुसती जाती है। एक तरफ रचनात्मक कार्यक्रमों में गतिशीलता का अभाव और दूसरी तरफ प्रतिकारात्मक प्रयत्नों का अभाव! परिणामस्वरूप समाज जहाँ है, वहीं का वहीं पड़ा है। ऐसी परिस्थिति में आरम्भ किया हुआ श्री आत्माराम भाई का एकाकी पुरुषार्थ हम सबका ध्यान खींचता है।

सामाजिक बुराइयों के निवारण के लिए अनेक मार्ग हो सकते हैं, और उन मार्गों के विषय में मतभेद भी हो सकता है। लेकिन ये बुराइयाँ मिटनी चाहिए, यह बात तो सर्वसम्मत है। ऐसे एक सामाजिक अनिष्ट को दूर करने के लिए श्री आत्माराम भाई ने पुरुषार्थ आरम्भ किया है। इसमें उनके चित्त की तड़पन, उनकी तपस्या और जीवन आहुति देकर भी समाज परिवर्तन के लिए उत्कटता, ये सब प्रकट होती हैं। वे हम सबकी ओर से गम्भीर विचार और समस्या के निराकरण के लिए सक्रिय पुरुषार्थ की मांग कर रही हैं।

हम आशा करते हैं कि इस प्रश्न के प्रति हर कोई जागृत होकर अपनी शक्ति, सहानुभूति इसमें लगायेंगे।

भावनगर (सौराष्ट्र) —गुजराती 'भूमिपुत्र' से

क्षण-क्षण और पैसे-पैसे के लिए जवाबदेह

पूर्णचन्द्र जैन

यों तो हर उम्र-प्राप्त व्यक्ति को, जो समाज के बीच रहता है, अपने आपको अपने हर क्षण और अपने पैसे-पैसे के हिसाब के लिए जिम्मेवार तथा जवाबदेह मानना चाहिए। सामान्य पेट्ट-प्राणी से भिन्न जो मनुष्य-समुदाय बन गया है, उसका अंग होने मात्र में ही यह जिम्मेवारी उस पर आ जाती है। लेकिन जिसने अपने आपको स्वेच्छापूर्वक समाज को समर्पित कर दिया है, वह तो इस जिम्मेवारी से बिलकुल बच ही नहीं सकता। सार्वजनिक कार्यकर्ता जो अपने आपको मानता है, उससे उसके जीवन के हर क्षण का और उसकी कमाई के हर पैसे का कोई ब्योरा पूछे, या न पूछे, उसकी तैयारी वह सब देने की हर समय होनी चाहिए।

आज सार्वजनिक कार्यकर्ता या सेवक की श्रेणी में बहुत लोग आते हैं। सरकारी अधिकारी व कर्मचारी भी लोकसेवक ही कहलाते हैं, लेकिन उनसे यहाँ अभिप्राय नहीं है। सार्वजनिक संस्था आदि से संबंधित लोगों से यहाँ अभिप्राय है। इनमें भी सर्वोदय या गांधी-विचारधारा के कार्यकर्ताओं पर नजर इस चिन्तन के अन्तर्गत अधिक है।

अक्सर इस प्रकार हिसाब-किताब रखने, डायरी लिखने, उस हिसाब व अपने रोजमर्रा के काम-काज को जाहिर करने वगैरह की बात आती है तो सवाल उठाया जाता है कि इस प्रकार क्या व्यक्ति पर शंका नहीं की जाती है? जिसने अपने निज के या परिवार भर के निर्वाह मात्र के लायक लेने की मर्यादा में अपने आपको बाँध लिया है और पूरा जीवन जिसने समाज को दे दिया है, उससे वक्त का और पैसे का क्या हिसाब पूछना? उसे क्या हिसाब रखना है!

असल में जिच उस समय आ जाती या जिद उस समय आ अड़ती है, जब कि ऐसा भान होता है कि कोई जवाब तलब करने वाली व्यक्ति या संस्था है और कार्यकर्ता या सेवक को वह जवाब देना है, उसकी तैयारी करनी है या उसके लिए तैयार रहना है, यह हुक्म की पाबंदी, या अधिकार के आरोप, की ही शायद प्रतिक्रिया होती है कि सेवक के स्वाभिमान को ठेस लगाती है, वह जवाबदेह होने में बेइज्जती समझता है!

इसे इस पहलू से समझना और अमल में लाया जाना जवाब देने वाले और जवाब की माँग या अपेक्षा करने वाले, फिर चाहे वह संगठन हो या व्यक्ति, दोनों के लिये ही गलत है। संगठन या व्यक्ति को अपने हर सेवक या साथी पर विश्वास करना चाहिए और हर साथी व सेवक को अपना रोजनामचा, अपना हिसाब-किताब किसी के भी निरीक्षण और रिमार्क के लिए खुला रखना चाहिए। सार्वजनिक कार्यकर्ता, खास तौर से सर्वोदय-क्षेत्र के सेवक की जीवन-पोथी तो ऐसी होनी चाहिए कि उसे हर कोई, किसी भी क्षण देख सके और उस पर कुछ भी टिप्पणी कर सके।

साफ है कि कार्यकर्ता की ऐसी तैयारी होगी, उसका जीवन इस प्रकार का जाहिर दिखने लगेगा तो वह ही उसके हर पैसे और हर क्षण की प्रामाणिकता बन जायेगी, वैसा जीवन न बना हो और वैसी आदत न हो पाये, तब तक दुनिया जवाब माँगेगी, उस पर खीझने से शंका-कुशंका ही बढ़ेगी। सार्वजनिक जीवन में इसी पर से विग्रह और ताकत का क्षय आरंभ होता है।

कार्यकर्ता के पास संस्था के कामकाज का कुछ जिम्मा हो तो हिसाब किताब वगैरह के सम्बन्ध में सतत जवाबदेह और सावधान रहने की अधिक जरूरत हो जाती है। संस्था के साथी कार्यकर्ता, जिम्मेवार व्यक्ति से नियमित हिसाब, रिपोर्ट वगैरह की माँग कर सकते हैं, संस्था में उसके लिए नियम हो सकते हैं तथा समाज भी उसकी माँग कर सकता है।

जैसे सार्वजनिक कार्यकर्ताओं में भी सर्वोदय प्रेमी सेवकों के लिए उसी प्रकार विभिन्न संस्थाओं व संगठनों में भी सर्वोदय विचारधारा से संस्थाओं के लिए ऐसे विषय में अधिक सतर्क और क्रियाशील रहने की जरूरत है।

ये संस्थाएँ खादी आदि के कार्यक्रम से संबंधित हों अथवा भूदान ग्रामदान आदि से संबंधित, इन सभी को हिसाब किताब के अप-टू-डेट रखने, उसका नियमित निरीक्षण कराने, उस सबको सार्वजनिक तौर पर प्रकाशित कराने वगैरह का एक बुनियादी कर्तव्य मानना चाहिए। संस्था में यह सब ठीक रहे इसका, गहराई से देखा जाय तो, अर्थ यही है और तरीका भी यही हो सकता है कि उस संस्था का हर कार्यकर्ता अपने लिए भी ऐसी जिम्मेवारी को समझे तथा जवाबदेह होने में कोई हीनता न अनुभव करे।

कभी-कभी लोकसेवकों, जिला सर्वोदय-मंडलों वगैरह के हिसाब, उनकी रिपोर्ट व उनके कार्य विवरण की अनियमिता आदि के बारे में कुछ सुनने में आ जाता है। कुछ प्रदेश, जिला आदि संगठन अपना हिसाब व कार्य-विवरण प्रतिवर्ष प्रकाशित करते हैं। यह अच्छा है। हर प्राथमिक जिला या प्रदेश-संगठन को यह करना चाहिए। लोकसेवक, शांति-सैनिक वगैरह व्यक्तिशः भी यह जाहिर करें तो बहुत अच्छा है, लेकिन व्यक्तिशः ऐसा वे जाहिर करें, या न करें, संगठन, संस्था का जिम्मा उनके पास हो तो उसका प्रकाशन तो जरूर करना चाहिये।

इसमें भी साफ है कि निरी औपचारिकता की वृत्ति से कार्य नहीं होगा, बल्कि उससे अशुद्धि व बुराई बढ़ेगी। हर पैसे और हर क्षण के उपयोग का ब्योरा देना एक आदत में दाखिल होगा तब ही वह कर्तव्य व अधिकार की पकड़-धकड़ में फँसने की एवज स्वाभाविक कार्यक्रम व व्यक्ति या संस्था के आचार-व्यवहार का अंग या आधार बन पायेगा।

भूदान पत्र-पत्रिकाएँ सर्व सेवा संघ के प्रधान केन्द्र से और प्रदेशों में भी जगह-जगह निकलती हैं। प्राथमिक, जिला आदि सर्वोदय-मंडलों और खास तौर से संबंधित कार्यकर्ताओं को चाहिए कि इनमें व अपने क्षेत्र के पत्र में इस प्रकार, हो सके तो अपने भी, लेकिन संस्था के कामकाज व हिसाब की रिपोर्ट तो जरूर ही समय-समय पर जाहिर करें, इस प्रकार हर पैसे व हर क्षण के लिए जवाबदेह बनने से कार्यकर्ता और संस्था दोनों की ही शक्ति बढ़ेगी।

सर्वोदय-पात्र का एक व्यवस्थित प्रयोग

सर्वोदय-पात्र के कार्यक्रम के पीछे जीवन में संस्कारों के स्थायी निर्माण की जो दीर्घ-दृष्टि है, वह धीरे-धीरे लोगों का ध्यान आकृष्ट कर रही है, और कई जगह लोगों ने अपने-अपने मुहल्लों या क्षेत्र में सर्वोदय-पात्र का व्यवस्थित कार्यक्रम उठा लिया है। सर्वोदय-पात्र से होने वाले संग्रह के उपयोग के बारे में जरूर विशेष ध्यान दिये जाने की आवश्यकता है, जिसके बारे में पिछले अंक में प्रकाशित एक पत्र में विनोबा ने संकेत किया है।

आर्यनगर, कानपुर में सर्वोदय-पात्र का व्यवस्थित कार्यक्रम पिछले कई महीनों से चल रहा है, *जिसकी जानकारी 'भूदान-यज्ञ' में दी गयी* है। आर्यनगर के मित्रों ने एक सर्वोदय-मित्र-मण्डल की स्थापना की है और हर महीने सर्वोदय-पात्र के आय-व्यय का विवरण वे पात्र रखने वाले सब परिवारों को भेजते हैं। नीचे उनकी ओर से हाल में ही प्राप्त ताजा मासिक-विवरण दिया जा रहा है :

सर्वोदय-पात्र-परिवारों की सेवा में—

सर्वोदय-पात्र का आय-व्यय विवरण

अप्रैल १९६१

जमा	रु०—न. पै.	खर्च खाता	रु०—न. पै.
पिछला बाकी	००—१५	१. शान्ति-सैनिक कार्यकर्ता को सहायता	५०—००
अप्रैल '६१ का संकलन	८२—९४	२. अ०भा० सर्व सेवा संघ को षष्ठांश (सर्वोदय आन्दोलन संचालन हेतु)	१३—७९
(२१९ पात्रों का)		३. क्षेत्रीय कार्यों में— एक बीमार बहन को दवाई रु० १२-६७, एक बहन को मदद रु० ४-५०, एक बहन की शादी में 'गीता प्रवचन' भेंट रु० १-२५	१८—४२
		४. साधन-सामग्री	—
		५. शेष जमा	००—८८
कुल जमा	८३—०९	कुल खर्च	८३—००
नागरिकों से सहयोग	२२—००	शान्ति-सैनिक को सहायता	२२—०९

आवश्यक नोट—

१—हिसाब का पूरा विवरण केन्द्र-कार्यालय में देख सकते हैं और इस सम्बन्ध में अपने सुझाव भी दे सकते हैं।

२—कृपया अपने घर का सर्वोदय-पात्र अन्न या पैसों सहित अपने बालकों द्वारा आगामी रविवार ता० ४ जून को प्रातः ८ बजे गांधी-विचार केन्द्र भेजने का प्रयत्न करें। इस अवसर पर एक 'बाल-गोष्ठी' का भी आयोजन किया गया है।

सर्वोदय मित्र-मण्डल, गांधी-विचार-केन्द्र, आर्यनगर, कानपुर

पाठक देखेंगे कि हर महीने सर्वोदय-पात्रों से होने वाले संग्रह का ब्योरेवार हिसाब इस पर्चे के जरिये सब परिवारों को पहुँचाया जाता है। पर्चे में लोगों को यह भी जानकारी दे दी गयी है कि वे हिसाब का पूरा विवरण केन्द्र के कार्यालय में देख सकते हैं। लोगों से सुझाव भी माँगे गये हैं। पिछले महीने की जानकारी लोगों तक पहुँचाने के अलावा इस पर्चे का यह भी उपयोग है कि चालू महीने के संग्रह को केन्द्र पर पहुँचा देने का स्मरण भी इसके जरिये दिलाया गया है। सर्वोदय-पात्र में अनाज बालक के द्वारा डलवाया जाय, ऐसा सुझाव विनोबा ने दिया है, उसी के साथ-साथ अपने घर के सर्वोदय पात्र में संग्रहीत अन्न या पैसे बालक ही ले जाकर मुहल्ले में किसी केन्द्रीय स्थान पर जमा करें, यह भी उनके संस्कारों को दृढ़ करने में उपयोगी साबित होगा। पर्चे से जाहिर होता है कि संग्रह के दिन 'बाल-गोष्ठी' का आयोजन भी केन्द्र पर किया गया है।

सर्वोदय पात्र, उसके संग्रह और उसके विनियोग का यह सारा व्यवस्थित कार्यक्रम अनुकरणीय है। अगर इसी प्रकार 'जीवित' व्यवस्था सर्वोदय-पात्र की होती रही तो सर्वोदय-पात्र से जो अपेक्षा हमने रखी है, वह पूरी हो सकती है, अन्यथा यह भी खतरा है कि सर्वोदय पात्र जल्दी ही 'दान-दक्षिणा' की एक रूढ़ि में परिणत हो जायगा। आशा है, अन्य क्षेत्रों में काम करने वाले कार्यकर्ता भी कानपुर के इस प्रयोग से लाभ उठायेंगे और उनके अपने क्षेत्र में इस प्रकार की कोई विशेष व्यवस्था प्रचलित हो तो उसकी जानकारी 'भूदान-यज्ञ' के जरिये दूसरे लोगों तक भी पहुँचायेंगे। —संपादक

साप्ताहिक घटना-चक्र...

[पृष्ठ २ का शेष]

तमाम शक्तियों को लगा दें, जो ईश्वर ने उन्हें दी हैं।" उन्होंने कहा कि "मुसलमानों को चाहिए कि वे हिन्दुस्तान की इज्जत दुनिया में बढ़े, इसकी कोशिश करें और भिन्न धर्म तथा भिन्न प्रकार के रहन-सहन को कायम रखते हुए अल्प संख्यक लोग किस तरह हिन्दुस्तान में बराबरी के साथ रह सकते हैं और अपना विकास कर सकते हैं, यह दिखला कर हिन्दुस्तान के एक सम्प्रदाय निरपेक्ष राष्ट्र होने का दावा साबित करें।"

जहाँ तक 'इस्लामी शिक्षा' के लिए अलग स्कूल या मकतबों का सवाल है, आज यह माँग इसलिए खड़ी होती है कि मुसलमानों का धार्मिक साहित्य सारा का सारा उर्दू फारसी लिपि में है। मुसलमानों का यह चाहना स्वाभाविक है कि उनके बच्चों को उनके मजहब की परम्परा का ज्ञान हो, पर साथ ही उनके लिए यह बात भी सोचने लायक है कि आज तक उन्होंने अपनी धार्मिक परम्परा और साहित्य को जो उर्दू-फारसी लिपि और अरबी-भाषा तक सीमित रखा है और दूसरी भाषाओं में उसके प्रकाशन के खिलाफ रहे हैं, यह उचित है क्या? आज दुनिया इतनी निकट आ रही है कि लोगों को एक-दूसरे के मजहब, संस्कृति और परम्परा की जानकारी होना सहअस्तित्व के लिए भी आवश्यक हो गया है—उदार दृष्टि, सब धर्मों के प्रति सहिष्णुता और मानव विकास के लिए तो वह आवश्यक है ही। उसी प्रकार रहन-सहन के बारे में भी संकुचितता की दृष्टि आज की सारी परिस्थिति से मेल नहीं खाती। रहन-सहन के तरीकों में भी आदान प्रदान और परस्पर उदारता अत्यन्त आवश्यक है।

नैतिक मूल्यों की अवहेलना

आज की राजनीति किस तरह खुले-आम अवसरवादिता को आसरा देती है और उसको बढ़ावा देती है, इसका एक ज्वलन्त उदाहरण केरल की हाल की घटना से मिलता है। केरल के पिछले चुनावों में साम्यवादियों के खिलाफ कांग्रेस, प्रजा-समाजवादी पार्टी और मुस्लिम लीग ने मिल कर एक मोर्चा बनाया था। चुनाव में इस मोर्चे की जीत होने के बाद जब पदों के बँटवारे का सवाल आया तो यह तय हुआ कि मुस्लिम लीग के प्रतिनिधि को विधान-सभा का अध्यक्ष बनाया जाय। अभी कुछ दिन पहले मुस्लिम लीग के ये प्रतिनिधि जो केरल विधान-सभा के अध्यक्ष थे, उनकी मृत्यु हो जाने से फिर यह सवाल खड़ा हुआ कि विधान-सभा का अध्यक्ष कौन हो। इस बार मुस्लिम लीग के प्रतिनिधि को अध्यक्ष-पद देने में कांग्रेस को हिचक थी, क्योंकि इस बीच देश में फिर से बढ़ती हुई साम्प्रदायिक मनोवृत्ति के खिलाफ कांग्रेस ने ही सबसे बुलन्द आवाज उठायी थी और इसलिए मुस्लिम लीग को बढ़ावा देने में उसे लोकमत खोने का खतरा था। पर उधर यह भी डर था कि अगर केरल की मुस्लिम लीग को सन्तुष्ट नहीं रखा गया तो साम्यवादियों के खिलाफ जो संयुक्त मोर्चा है, वह टूट जायगा और संयुक्त मोर्चे की सरकार के भंग होने का खतरा भी खड़ा हो जायगा। फलस्वरूप यह तरकीब निकाली गयी कि मुस्लिम लीग जिसको खड़ा करना चाहे, वह अगर खड़ा होने के पहले मुस्लिम लीग से इस्तीफा दे दे तो कांग्रेस उसका समर्थन करेगी। इसके अनुसार वहाँ की मुस्लिम लीग के एक प्रमुख सदस्य श्री मोहम्मद कोया ने अभी दो दिन पहले मुस्लिम लीग से इस्तीफा दिया और ये पंक्तियाँ प्रकाशित होने से पहले शायद वे केरल की विधान-सभा के अध्यक्ष चुन लिये गये होंगे।

राजनीति का मतलब ही अवसर-वादिता है, लेकिन इस तरह झूठा प्राणायाम करने के बजाय कांग्रेस अगर सीधे मुस्लिम लीग के प्रतिनिधि को स्वीकार कर लेती तो कम से कम ईमानदारी के तत्त्व की तो रक्षा होती। जो व्यक्ति कल तक मुस्लिम लीग का एक प्रमुख सदस्य था और इसलिए त्याज्य था, तो आज सिर्फ सदस्यता से इस्तीफा दे देने के कारण वह कैसे ग्राह्य हो गया यह सामान्य समझ से परे की बात है। या तो उसके मुस्लिम लीग के सदस्य होने के कोई खास माने नहीं थे और अगर थे तो सिर्फ इस्तीफा देकर अलग हो जाने के कोई माने नहीं हैं। बचपन में हमने एक कहानी पढ़ी थी कि एक मंत्री अपने राजा को धोखा देकर दुश्मन से जा मिला। उसकी मदद से दुश्मन ने लड़ाई तो जीत ली, लेकिन जब इनाम बाँटने का मौका आया तो उसे फाँसी पर लटका दिया। मंत्री समझा था कि उसे इनाम मिलेगा, लेकिन प्रतिपक्षी राजा ने कहा कि जब तुम एक मालिक को धोखा दे सकते हो तो दूसरे को नहीं दोगे, इसका क्या भरोसा! श्री मोहम्मद कोया मुस्लिम लीग को धोखा देकर तो वहाँ से नहीं हटे हैं, पर मुस्लिम लीग, कांग्रेस तथा प्रजा-समाजवादी पार्टी सबने मिल कर जरूर एक तरह से दिन दहाड़े लोगों की आँख में धूल झोंकने की कोशिश की है। इसके सिवा इस सारे काण्ड का और क्या नतीजा निकाला जाय? इस तरह खुलेआम अवसरवादिता को पनपा कर हमारे देश के नेता सार्वजनिक जीवन में जिन मूल्यों को प्रोत्साहन दे रहे हैं, क्या वे राष्ट्रीय संकट के समय मुल्क के लिए खतरा साबित नहीं हो सकते? नैतिक मूल्य और संस्कार कानून से न बनते हैं, न बनवाये जा सकते हैं। उनकी परम्परा सैकड़ों-हजारों वर्षों के कारण आचरण से दृढ़ होती है। नैतिक मूल्य तभी कायम रह सकते हैं, जब हर पीढ़ी उत्तरोत्तर उन संस्कारों को दृढ़ करती जाय। आज राज नीति के नाम पर सार्वजनिक जीवन में जिस तरह खुलेआम नैतिक मूल्यों की अवहेलना की जाती है और उनको जान-बूझ कर योजनापूर्वक तोड़ा जाता है, वह एक तरह से आने वाली पीढ़ियों के ही नहीं, बल्कि मौजूदा समाज के प्रति भी, द्रोह और दण्डनीय अपराध माना जाना चाहिये।

—सिद्धराज ढड्ढा

चम्बल घाटी की डायरी

बीसवाँ अन्तिम आत्म-समर्पणकारी सबेरा दूसरे अडोरकर अभियोग में भी ५ मई, '६१ को जिला सेशन-जज श्री मंजूर अली की अदालत से निर्दोष मुक्त हुआ। उस पर अब अन्य कोई मुकदमा न होने से वह ५ मई की शाम को भिण्ड जिला सबजेल से छोड़ दिया गया। अब वह रामऔतार और श्रीकृष्ण की तरह मुक्त रूप से नेक जीवन बिता रहा है। मध्य प्रदेश शासन ने उस पर पहले सिकहटा हत्याकाण्ड अभियोग से निर्दोष छूटने की अपील ग्वालियर हाईकोर्ट में की है, जिसकी पैरवी श्री जे० एम० आनन्द करेंगे। अभी सुनवाई शुरू नहीं हुई है।

आत्म-समर्पणकारी बागियों में लच्छी और प्रभू को छोड़ कर अन्य सब पर मध्य प्रदेश शासन द्वारा मुकदमे चल कर अब उत्तर प्रदेश शासन द्वारा आगरा में मुकदमे चल रहे हैं। अब एक मुकदमा इटावा में आया है, जिसमें मोहरमन और दुर्जनसिंह अभियुक्त हैं।

आत्म-समर्पणकारी बागी रामदयाल और बदनसिंह के परिवारवालों को उनके विरोधी अपने गाँव खोहरी में बसने नहीं देना चाहते थे। उनकी जमीन आदि भी गाँव में न रहे, ऐसा उनका कहना था। इसके बजाय परस्पर प्रीति उत्पन्न करने का प्रयत्न चल रहा है और कोशिश इस बात की है कि उनके परिवारवाले स्वयं अपने श्रम से खेती करें और दो एक शांति-सैनिक वहाँ उनको धीरज दिलाने और उनकी मदद में रहें। इस पर गाँव वाले कुछ तैयार हो रहे हैं। यहाँ शह क्षेत्र के शांति-सैनिक प्रयत्नशील हैं।

अन्य आत्म-समर्पणकारी बागियों के परिवारों से भी सतत सम्पर्क जारी है। जिनकी जमीनों के कागजात आदि दुरुस्त कराने हैं वह तथा किन्हीं को कुछ आर्थिक सहायता आदि की आवश्यकता हो उसकी जानकारी ली जा रही है। इसके लिये श्री लल्लूसिंह, श्री गुप्तेश्वर भाई और श्री चरणसिंह क्षेत्र में जा रहे हैं।

मुरैना जिले के सबलगढ़ नगर में ता० १५ मई, '६१ को एक अध्यापक के असद् व्यवहार का मकान-मालिक द्वारा विरोध करने पर मन मुटाव हुआ, जो उस समय एक मध्यस्थ के बीच बचाव से रुक गया, पर बाद में अध्यापक के पुलिस में रिपोर्ट करने तथा नगर के विद्यार्थियों को भड़का कर मकान-मालिक की दुकान पर हमला करा देने से पूरे नगर का वातावरण विक्षुब्ध हो गया। ऐसे समय समिति के सदस्य श्री लक्ष्मीचन्द्र वैद्य ने वहाँ के प्रधानाध्यापक के सहयोग-सहकार से अध्यापक और विद्यार्थियों को शान्त कर तथा नगरवासियों की सहानुभूति प्राप्त कर १९ मई को वातावरण शान्त किया।

समिति के उपकार्यालय बाह से २२ मई को पदयात्रा शुरू हुई। सर्वश्री भवानी भाई, अम्बा प्रसाद, दयाशंकर चतुर्वेदी, भगवत भाई ग्राम मदरौली से पैदल चल कर समिति के प्रधान कार्यालय भिण्ड पहुँचेंगे। मार्ग में श्री लल्लूसिंह, गुप्तेश्वर भाई और चरणसिंह भी सम्मिलित होंगे। —गुरुशरण

इन्दौर में पुनः अशोभनीय पोस्टर पोते तथा फाड़े गये

इन्दौर में २ जून को प्रातःकाल कृष्णपुरा निज कोतवाली के पास नदी की ओर लगे बसंत पिक्चर्स लिमिटेड द्वारा प्रदर्शित "रेशमी रूमाल" फिल्म के एक अशोभनीय और गंदे पोस्टर को निश्चित अवधि के भीतर उसके मालिक द्वारा न हटाये जाने पर मंडल को "सीधी कार्यवाही" द्वारा उसे हटाना पड़ा।

इन्दौर नगर सर्वोदय वानप्रस्थ-मंडल की शुभाशुभ पोस्टर-निर्णायक उपसमिति ने पिछले दिनों उक्त पोस्टर को अशोभनीय जाहिर किया था। तत्पश्चात् उसके मालिक से लिखित पत्र द्वारा संबंधित अशोभनीय पोस्टर को गृहस्थ धर्म की प्रतिष्ठा तथा मर्यादा को ध्यान में रखते हुए सार्वजनिक स्थान पर उसके प्रदर्शन से शीघ्र ही हटा लेने की माँग की थी। परन्तु खेद है कि पोस्टर-मालिक ने उस पर कोई ध्यान नहीं दिया और इस प्रकार इन्दौर में सिने-पोस्टर प्रदर्शन में जो बीच में शालीनता आयी थी, उसका भंग किया। इसलिए ४८ घण्टे की पूर्वसूचना देकर मंडल द्वारा सार्वजनिक स्थानों पर प्रदर्शित अशोभनीय पोस्टरों को पोतने और फाड़ने की "सीधी कार्यवाही" करनी पड़ी। इसकी सूचना संबंधित सरकारी अधिकारियों को पहले ही भेज दी गयी थी।

मंडल ने इस बात पर भी आश्चर्य और खेद प्रकट किया है कि संबंधित अशोभनीय पोस्टर नगर-निगम की स्वीकृति के बाद लगाया गया था।

"सीधी कार्यवाही" द्वारा पोस्टर-उन्मूलन के अवसर पर नागरिकों के अतिरिक्त नगर में सर्वोदय-कार्य के प्रमुख श्री दादाभाई नाइक, श्री देवेन्द्रकुमार गुप्त, श्री पुजारी रायजी, श्री तात्यासाहब सिरसे तथा अन्य सर्वोदय कार्यकर्ता और संसद-सदस्य श्री कन्हैयालालजी खादीवाला भी उपस्थित थे। कार्यवाही के अंत में नगर में अशोभनीय पोस्टर-मुहिम के प्रमुख श्री देवेन्द्रकुमार गुप्त ने अशोभनीय पोस्टर अभियान में निहित उद्देश्यों पर प्रकाश डाला।

श्री मोहन परीख जापान में

खादी-ग्रामोद्योग प्रयोग-समिति, अहमदाबाद के कृषि औजार सुधार विभाग के संयोजक श्री मोहन परीख जून के पहले सप्ताह में कृषि-औजारों के अध्ययन के लिए जापान गये हैं। जापान में वे तीन महीने रहेंगे। जापान के प्रवास में सर्वोदय-विचारों के आदान प्रदान की दृष्टि से मोहनभाई ने जापान में कुछ समय पूर्व स्थापित सर्वोदय-मण्डल से भी सम्पर्क किया है।

गोरखपुर का सर्वोदय-शिविर स्थगित

गोरखपुर में १८ से २३ जून तक होने वाला सर्वोदय शिविर विशेष आकस्मिक घटनावश अनिश्चित काल तक के लिए स्थगित कर दिया गया है।

बिहार में कार्यकर्ता-प्रशिक्षण-शिविर

बिहार में 'बीघे में कट्ठा' के कार्यक्रम को बल देने और इस सम्बन्ध में कार्यकर्ताओं के प्रशिक्षण के लिए बिहार के हर जिले में तीन-तीन दिन के शिविर चलाने का पिछले प्रांतीय सर्वोदय-सम्मेलन के अवसर पर तय किया गया है। यह जिला-शिविर ता० १८ जुलाई से शुरू होंगे। योजना ऐसी बनायी गयी है कि हर शिविर में पहले दिन श्री शंकरराव देव, दूसरे दिन श्री धीरेंद्रभाई और तीसरे दिन श्री दादा धर्माधिकारी का शिविरार्थियों को मार्ग-दर्शन मिले। प्रशिक्षण के विषय भूदान, ग्रामदान, ग्राम-स्वराज्य, लोकनीति, चुनाव, पंचायत राज आदि रहेंगे। हर शिविर में जिले के लोकसेवक, अन्य रचनात्मक कार्यकर्ता, पंचायतों के प्रमुख, राजनैतिक पक्षों के कार्यकर्ता तथा अन्य सार्वजनिक कार्यकर्ता, कुल मिला कर २०० तक शिविरार्थी रहेंगे। जिला-शिविरों की यह शृंखला ता० १८ जुलाई से शुरू होकर ता० ९ अगस्त को समाप्त होगी।

इन्दौर में अ० भा० भंगी-मुक्ति परिसंवाद

म० प्र० हरिजन सेवक संघ के तत्वावधान में इन्दौर में १९ जून से आयोजित किये जा रहे अ० भा० भंगी-मुक्ति परिसंवाद एवं कार्यकर्ता-शिविर का उद्घाटन राज्य के मुख्य मंत्री डा० श्री कैलासनाथ काटजू करेंगे। शिविर एवं परिसंवाद एक सप्ताह तक गोविन्दराम सेकसरिया टेक्नालाजिकल इन्स्टीट्यूट के छात्रावास में चलेगा, जिसमें मेहतरों की आवास समस्या, सिर पर मैला ढोने की प्रथा समाप्त करने तथा मेहतर महिलाओं को जाग्रत एवं शिक्षित करने की समस्याओं पर विशेष रूप से विचार होगा। कार्यकर्ता-प्रशिक्षण में बिहार, महाराष्ट्र, पंजाब, गुजरात तथा दिल्ली आदि स्थानों के करीब ५० कार्यकर्ता भंगी-मुक्ति आन्दोलन को अधिक प्रभावशाली बनाने के उपयोगी सुझावों पर विचार करेंगे। परिसंवाद में भाग लेने हेतु महाराष्ट्र के सुप्रसिद्ध सर्वोदय-सेवक श्री अप्पासाहब पटवर्धन, श्री वियोगी हरि, सफाई-शास्त्री श्री कृष्णदास शाह, आदिवासी कमिश्नर श्री श्रीकांत भाई, प्रो० एन० आर० मलकानी एवं बम्बई नगर-निगम के स्वास्थ्य-अधिकारी तथा केन्द्रीय और प्रांतीय अधिकारियों के आने की संभावना है। इन्दौर में परिसंवाद का आयोजन यहाँ पहले किये गये काम को दृष्टि में रखते हुए किया जा रहा है। विभिन्न प्रांतों से आने वाले कार्यकर्ता उज्जैन नगरपालिका तथा इन्दौर नगर-निगम के सफाई-कार्य, मेहतरों की कार्य-दिशाओं तथा जीवन-दशाओं का भी अवलोकन करेंगे।

इस अंक में

समाचार-सार

● धनबाद जिले
जिले के सब सिनेमा-मालिकों के नाम पत्र में निवेदन किया है कि वे अपने सिनेमाघरों में अशोभनीय पोस्टर लगायें।

● विसर्जन आश्रम, इन्दौर में स्मारक निधि के स्थानीय … के तत्वावधान में ग्रीष्मकालीन … अध्ययन शिविर १९ से २२ मई … तक लगाया गया।

● गांधी स्मारक निधि प्रदेश म० की ओर से छिन्दवाड़ा जिला … १५ से १९ मई तक एक शिविर चला। शिविर में विशेष तौर से जिले के भूदान कार्यकर्ता, ग्रामसेवक, पंचायतों के सरपंच एवं विद्यार्थियों ने भाग लिया। शिविर में उगुतुरू-अधिवेशन में स्वीकृत प्रस्ताव पर चर्चा हुई। श्रमदान में एक हाईस्कूल की नींव भी खोदी गयी है।

महाकोशल क्षेत्र में प्राप्त, वितरित भूमि

मध्यप्रदेश भूदान-यज्ञ मंडल महाकोशल शाखा द्वारा प्रकाशित एक जानकारी के अनुसार अप्रैल '६१ अंत तक महाकोशल क्षेत्र की २० तहसीलों में भूदान में प्राप्त ६३,६२३-२१ एकड़ भूमि, १९,३५८ भूमिहीन परिवारों में वितरित की जा चुकी है।

क्षेत्र में अब तक १,१०,३०६-१२ एकड़ भूदान ४४,८३५ दाताओं द्वारा प्राप्त हुआ है। इसमें से वितरित भूमि के अलावा १०,८८९-१० एकड़ भूमि किसी-न-किसी कारणवश भूदान के अयोग्य साबित हुई। १,२३६-६१ एकड़ भूमि वितरण के अयोग्य होने से वितरित नहीं की जा सकी। बारिश के पूर्व अधिकाधिक भूमि वितरण के प्रयत्न किये जा रहे हैं, ताकि भूमिहीन-परिवारों को आजीविका का साधन उपलब्ध हो सके।

बिहार सर्वोदय-मंडल के नये संयोजक

बिहार सर्वोदय-मंडल की एक बैठक श्री जयप्रकाश नारायण की अध्यक्षता में हुई, जिसमें श्री श्याम बाबू ने इच्छा प्रकट की कि उन्हें संयोजक-पद से मुक्त किया जाय। उनकी इस इच्छा पर सर्वसम्मति से मुंगेर जिले के कर्मठ कार्यकर्ता श्री रामनारायण सिंह बिहार सर्वोदय मंडल के संयोजक चुने गये। श्री श्याम बाबू मंडल के संयोजक के पद पर विगत छह वर्षों से काम कर रहे थे। इन्हें १९५४ में स्वयं विनोबाजी ने सर्वोदय-मंडल का संयोजक नियुक्त किया था।

विनोबाजी का पता

मार्फत : ग्राम-निर्माण कार्यालय
नार्थ लखीमपुर (असम)

श्रीकृष्णदत्त भट्ट, अ० भा० सर्व सेवा संघ द्वारा भार्गव भूषण प्रेस, वाराणसी में मुद्रित और प्रकाशित। पता : राजघाट, वाराणसी-१, फोन नं० ४३९१
वार्षिक मूल्य ६) पिछले अंक की छपी प्रतियाँ ९,७७० : इस अंक की छपी प्रतियाँ ९,७२० एक अंक : १३ नये पैसे

संपादक : सिद्धराज ढड्ढा

वाराणसी : शुक्रवार | २३ जून '६१ | वर्ष ७ : अंक ३८

इन्सान के साथ इन्सान का व्यवहार इन्सान के नाते हो

भंगी-मुक्ति के बिना हिन्दुस्तान में सच्ची आजादी असंभव

विनोबा

[पिछले दिनों विनोबाजी जब बोधगया गये, तब वहाँ बिहार हरिजन सेवक संघ की ओर से एक शिविर चल रहा था। शिविर में विनोबाजी से मार्गदर्शन की अपेक्षा करते हुए निवेदन में कहा गया था कि हम इस कोशिश में असफल रहे कि हरिजन सेवक संघ सर्व सेवा संघ में विलीन हो। विनोबाजी ने उस अवसर पर कहा कि सेवा समग्र ही हो सकती है, टुकड़ों में बंट कर सेवा नहीं हो सकती है। साथ ही आपने यह प्रकट किया कि भंगी-काम में सुधार करने से समस्या हल नहीं होगी। जब तक भंगी-मुक्ति नहीं होगी, तब तक हिन्दुस्तान सही अर्थ में आजाद नहीं कहा जा सकेगा। —स०]

विश्व-उद्धार के काम संघों के जरिये नहीं होंगे, बल्कि संघ उसमें खलल पहुँचा सकते हैं, उसको बढ़ावा नहीं देंगे। इसीलिए हम किसी संघ में दाखिल नहीं हुए। इसके मानी यह नहीं है कि संघ बिल्कुल बेकार हैं और वे कुछ काम नहीं करते। लेकिन लोक-क्रान्ति के काम संघ से नहीं बनेंगे। न बुद्ध से बनेंगे। लोक-क्रान्ति का काम ईसा से बनेगा, ईसाई चर्च से नहीं। क्रान्ति का काम शंकर से बनेगा, शंकर मठ से नहीं। गांधीजी क्रान्ति का काम कर सकते हैं, लेकिन गांधीजी के आश्रमवाले नहीं कर सकते हैं। यह हमारा विश्वास रहा, इसलिए पहले से आज तक हमारा यही दावा रहा कि इन्सान के साथ इन्सान का व्यवहार इन्सान के नाते होना चाहिये। संघों की दखल उसमें नहीं होनी चाहिए। एक वक्त हमने कहा था कि हरिजन सेवक संघ से एकांगी सेवा होती है। अलग-अलग संघ होते हैं, तो कोई आदिवासी की सेवा करेगा, कोई भूमिहीनों की सेवा करेगा। इस तरह टुकड़े-टुकड़े कर हम सोचते हैं। जो आदिवासी की सेवा करेगा, वह हरिजनों के बारे में नहीं सोचेगा। जो हरिजनों की सेवा करेगा, वह आदिवासी के बारे में नहीं सोचेगा।

बीच में हमें कुछ आदिवासी लोग मिले थे। उनका अपना एक अलग संघ था, क्योंकि उनकी जाति कोई अलग थी। उनके संघ का नाम था सहरिया सेवा संघ, याने आदिवासियों की एक जाति का नाम सहरिया था। तो मैंने उनसे कहा कि आप अगर गाँव में जायेंगे तो मान लीजिये कि उस गाँव में तीन-चार ही सहरिया जाति के घर होंगे, तो क्या आप सिर्फ तीन-चार घरों की चिंता करेंगे? गाँव में हैजा होता है तो वह भी भेद नहीं करता है। लेकिन इस संघ के लोग सिर्फ सहरिया लोगों की चिंता करेंगे। कहने का मतलब यह है कि हैजा इनसे ज्यादा निष्पक्ष और व्यापक बन गया!

इस तरह टुकड़ों में सेवा नहीं होती है। समग्र सेवा होनी चाहिये और उस दृष्टि से हमें जनता की सेवा करनी है। हम एक हिस्से के नाम से सेवा करेंगे तो समग्र चिंतन नहीं होगा। हमारी शक्ति क्षीण होगी। उस तरह अछूतों का ध्यान नहीं रहता है, इस सिलसिले में बोलते हुए हमने कहा था कि हरिजन सेवक संघ सर्व सेवा संघ में विलीन हो जाय तो अच्छा हो। यह कहने की प्रेरणा हमें क्यों हुई? इसलिये कि इन संघों के जन्मदाता, महात्मा गांधी ने अपने रचनात्मक में यह लिख रखा कि ग्रामोद्योग संघ, चरखा-संघ, नई तालीम, इन सब संघों का एक मिलापी संघ बनना चाहिये। और इसमें हरिजन सेवक संघ का भी नाम लिखा गया था। हमें कुछ कहना नहीं है। उनका वसीयतनामा है, वही हमने दुहराया। सार यह है कि हमें सोचने का तरीका बदलना चाहिये। जब हम समग्र गाँव का सोचते हैं, तब उसमें हरिजन, परिजन, गिरिजन, भूमिहीन, ब्राह्मण आदि सब आते हैं। जिन जिन अंगों को मदद की जरूरत है, वह हम पहुँचा दें।

और एक बात यह कही गयी कि हम भंगी-मुक्ति की तरफ ज्यादा ध्यान नहीं दे सके। इसके लिए दलील यह दी गयी कि जहाँ कलकत्ता भी कुछ नहीं कर सकता वहाँ गया, पटना की क्या बिसात? बात ऐसी है, जिसे जहाँ विचार सूझता है, वहाँ वह करे। यह जरूरी नहीं है कि कलकत्ता का असर मुझ पर हो। मुझे यहाँ सूझता है तो मैं यहाँ काम करता हूँ, और मेरा असर कलकत्ता पर पड़ सकता है। इसलिये इस दलील में कोई सार नहीं है। अगर काम टालना हो तो इस प्रकार की दलील कर सकते हैं। लेकिन इस काम के बारे में निराशा रखने का कोई कारण है, ऐसा मैं नहीं मानता हूँ।

भंगी की मुक्ति ही होनी चाहिये। उसके सुधार करने का अर्थ नहीं है। उससे समाधान होने वाला नहीं है। समाधान तब होगा, जब भंगी आजाद होंगे। आजादी की जो चाह है, उसके बदले में आप पचास चीजें उनको दीजिये, तो भी उनका समाधान होने वाला नहीं है। अगर भंगियों की मुक्ति नहीं होती है तो हिंदुस्तान तब तक आजाद नहीं कहा जायगा।

पिछले दिनों महाराष्ट्र के सेवक अप्पासाहब पटवर्धन इंदौर में दो-तीन महीना रहे थे। उन्होंने भंगी-मुक्ति का काम वहाँ शुरू किया। वहाँ के पाखाने बहुत ही रद्दी थे। हम वहाँ गये थे। बहुत हिम्मत का काम मैंने वहाँ किया। पाखाने की हालत इतनी खराब थी कि हाथ लगा कर मैला उठाना पड़ता है। इंदौर जैसे शहर में यह हालत हो तो उसका क्या माने है? इसलिये हमने उस काम पर वहाँ जोर दिया और कहा कि इंदौर को आप सर्वोदयनगर बनाने जा रहे हैं तो भंगी-मुक्ति इंदौर में होनी चाहिये। हम वहाँ काम करते थे। तो वहाँ की हालत देख कर हमने कहा कि नगर-निगम के अध्यक्ष को यह काम करके देखना चाहिये, ताकि उनके ध्यान में आयेगा कि इसमें सुधार कैसे करना चाहिये।

दिल्ली में एक दफा एक सभा में जगजीवनराम ने कहा कि भंगी-काम मनुष्य के करने लायक नहीं है, फिर भी कुछ लोग वह करते हैं। हम देखते हैं कि दूसरे तीसरे कामों में स्पर्धा होती है। बड़े-बड़े ब्राह्मण भी चमड़े का काम करते हैं, लेकिन इतनी बेकारी होने पर भी भंगी-काम के लिये स्पर्धा नहीं है। इसके माने यह है कि वह काम मनुष्य के करने के लायक नहीं है। सार इसका यह है कि हमें यह हिम्मत करनी होगी और भंगी-मुक्ति के लिये कोशिश करनी होगी। हमें निश्चय करना होगा कि भंगी-मुक्ति हमें करनी ही है। तभी हिंदुस्तान मुक्त है, नहीं तो नहीं है। (बोधगया, ७-१-६१)

ब्रह्म सत्यं जगत् स्फूर्तिः जीवनं सत्यशोधनम्

भूदान-यज्ञ

लोकनागरी लिपि*

सामूहीक अहींसा का नीर्माण

हींदुस्तान की आध्यात्मीक संस्कृती पर ज्यों ही पश्चीम के वीज्ञान का रंग चढ़ा, त्यों ही उसमें एक नया वीचार नीर्माण हुआ, जीसे हम 'सामूहीक अहींसा' कहते हैं। यह हींदुस्तान के आध्यात्मीक वीचार और पश्चीम के वीज्ञान के संयोग से हुआ है। यहां आत्मा के दर्शन होते हैं, वहां हमारे जीवन में न्यूनाधीक प्रमाण में अहींसा आ ही जाती है। फीर भी वह सामूहीक नहीं हो पाती थी, क्योंकी वीज्ञान के कारण आज मानव-समाज एक दूसरे से जीतना संबद्ध हो गया है, उतना उस जमाने में नहीं हुआ। पहले अहींसा के जो भी प्रयोग होते, व्यक्ती के पीछे ही होते। कींतु आज जो सम्पर्क होता है वह केवल व्यक्तीयों के बीच ही नहीं रहता, बल्की सामाजीक हो जाता है। एक राष्ट्र का दूसरे के साथ तथा एक समाज का दूसरे समाज के साथ सम्पर्क और संघर्ष हुआ करता है। सारांश, पश्चीम के वीज्ञान और हींदुस्तान के अध्यात्म के संयोग से सामूहीक अहींसा का आवीर्भाव हुआ और हमने अहींसा से स्वराज्य प्राप्त कीया। अब पूरब की बारी आयी की वह पश्चीम को सामूहीक अहींसा का वीचार पहुंचाये।

मुंगेर, २०-१०-'५२ —वीनोबा

*लिपि-संकेत : ि = ी : ी = ी ख = ख, संयुक्ताक्षर हलंत चिह्न से।

राष्ट्रीय एकता का सवाल

नवकृष्ण चौधरी

[गत ११, १२, १३ और १४ जून को होशंगाबाद जिले के कमनाडा गाँव में मध्य प्रदेश का चौथ सर्वोदय-सम्मेलन सम्पन्न हुआ। अखिल भारत सर्व सेवा संघ के अध्यक्ष श्री नवकृष्ण चौधरी ने सम्मेलन में अपने अध्यक्षीय भाषण में कहा कि राष्ट्र की वर्तमान संकटजनक स्थिति का मुकाबला जागृत लोकशक्ति ही कर सकती है। उनके भाषण के मुख्य अंश नीचे दिये जा रहे हैं, —सं०]

आज देश की स्थिति बड़ी संकटजनक है। राष्ट्र की एकता छिन्न-भिन्न हो रही है। स्वराज्य आया, देश में लोकतन्त्र बना है, किन्तु लोकशक्ति जागृत नहीं हुई। सम्प्रदाय, जाति, भाषा और धर्म के झगड़े बढ़ रहे हैं। आजादी के पहले ये तत्त्व अपने सीमित दायरे में थे। इनमें होड़ या प्रतिस्पर्द्धा इतनी तीव्र और व्यापक नहीं थी, किन्तु आज ये भेदभाव बढ़ाने वाले तत्त्व व्यापक रूप से प्रकट हो रहे हैं, उनकी परिधि, उनका दायरा बढ़ता जा रहा है।

एक जमाने में जातियाँ आपस में होड़ और प्रतियोगिता कम करने का काम करती थीं। सब जातियों के काम-धंधे बँटे हुए थे। इससे आपस की होड़ कम हो जाया करती थी। यह योजना अच्छी ही थी; ऐसा हमारा कहना नहीं है, किन्तु होड़ कम होती थी, इतनी ही बात मुख्य थी। आज स्थिति बिलकुल विपरीत बन गयी है। आज जाति बड़े दायरे में, पूरे प्रदेश के स्तर पर अपना संगठन करने लगी है। अभी इसने अखिल भारतीय स्तर ग्रहण नहीं किया है, किन्तु उसके आसार स्पष्ट दिखते हैं। स्वराज्य के बाद ऐसी हालत क्यों बनी है? यह एक गंभीर चिंतन का विषय है। स्वराज्य के बाद राष्ट्र की एकता मजबूत होनी चाहिए और भेद के जितने तत्त्व थे, उनको विलीन होना चाहिए था। यह सब इसलिए हो रहा है कि लोकनीति का विकास नहीं हो सका है। जनता में जागृति नहीं आ सकी है। वर्तमान राजनीतिक चुनाव-तन्त्र ने जातिवाद और साम्प्रदायिकता को न केवल प्रश्रय दिया, किन्तु उसकी गति तेज कर दी। देश में चुनाव जाति और सम्प्रदाय के आधार पर लड़े जाने लगे हैं।

नशाबन्दी का ही सवाल लीजिये। हमने संविधान में घोषणा की कि हम सारे देश में नशाबंदी करेंगे। कुछ कानून भी बनाये, किन्तु क्या हुआ? कहीं अमल नहीं हो पा रहा है। आजादी के बाद ऐसा लगता है कि हम सो गये और जब तब नींद खुलती है तो इधर उधर दो-चार प्रस्ताव कर लेते हैं और फिर सो जाते हैं! इससे क्या जनता की हालत सुधरने वाली है?

आज भी आजादी के तेरह चौदह सालों के बाद, दो पंचवर्षीय योजनाओं के पूरे होने के बाद भी, देश की बेहद गरीबी ज्यों कि त्यों कायम है। लोगों का जीवन 'बिलो एक्जीस्टन्स लेवल' है। किसी तरह जीवन गुजर-बसर करते हैं। लोग कितनी असहाय और दयनीय अवस्था में रहते हैं, इसका वर्णन नहीं किया जा सकता है। गरीबी के कारण लोग अपने छोटे-छोटे बच्चों से शराब बिकवाते हैं! राष्ट्र के होनहार बालकों के जीवन और मन पर क्या असर पड़ेगा और नया राष्ट्र कैसे बनेगा? यह सब क्या हम बैठ कर सोचते हैं? हम सरकार को, उसके प्रतिनिधियों को गाली देते हैं और पाँच साल के बाद उन्हीं में से किसी को वोट दे देते हैं! आखिर यह क्या हो रहा है! यह देश किसका है? सारा देश टूट गया! जबलपुर में जो हुआ, आसाम में जो चल रहा है, पंजाब और तामिलनाड में जो कुछ हो रहा है, इससे राष्ट्र की ताकत टूट रही है!

एक तरफ राष्ट्र की एकता खतरे में है, दूसरी ओर गरीबों की हालत बद से बदतर होती जा रही है। अभी 'भूमिहीन मजदूरों' की हालत को बताने वाली दूसरी रिपोर्ट प्रकाशित हुई है। पाँच साल पहले पहली रिपोर्ट प्रकाशित हुई थी। दोनों रिपोर्टों को देखने से मालूम होता है कि भूमिहीनों की हालत सुधरने के बजाय, ज्यादा खराब हुई है। 'कम्यूनिटी प्रोजेक्ट' की योजना से क्यों गरीबों को लाभ नहीं पहुँचता है, इसके लिये एक समिति बनायी गयी है। सुनते हैं, देश की औसत आमदनी ४० प्रतिशत बढ़ी है, किन्तु वह कहाँ गयी, इस बात को जानने के लिये कमेटी बनी है। हमको सलाह देने के लिये विदेशों से विशेषज्ञ आते हैं और सलाह देते हैं। किन्तु हमको क्या करना चाहिए, इसकी स्पष्टता नहीं हो पा रही है।

स्पष्टता का अभाव क्यों है? जिनको हम अपने प्रतिनिधि चुनते हैं, वे कायर बन जाते हैं। चुनाव जीतने के लिये वे जनता के सामने हिम्मत और स्पष्टता से बात नहीं कर सकते हैं, अगर स्पष्ट और सत्य बात कहेंगे, तो चुनाव हारने का खतरा रहेगा!

प्रतिनिधि अपना तात्कालिक स्वार्थ देखते है। प्रेय के सामने श्रेय को भूल जाते हैं।

आज संकीर्ण स्वार्थ से क्या भला हो सकता है, यह प्रेय है। दूरदृष्टि से देख कर, आगे क्या भला होनेवाला है, करना श्रेय है? आज लोग तात्कालिक लाभ प्रेय के बारे श्रेय पर कम जोर देते हैं। नोआखाली की प्रतिक्रिया बिहार में हुई, वहाँ पर निरपराध मुसलमानों पर अत्याचार किया गया तो हालत देख कर जवाहरलालजी ने कहा, अगर लोग यह बंद नहीं करेंगे तो बम डालना पड़ेगा। किन्तु गांधी ने कहा, अगर लोग पागलपन नहीं छोड़ेंगे तो मैं आमरण अनशन करके देह त्याग दूँगा। यह हिम्मत गांधी में कैसी आयी? इसलिये कि उन्हें चुनाव में वोट नहीं प्राप्त करना है। चुनाव में खड़े होनेवाले की इतनी हिम्मत नहीं हो सकती है कि वे लोगों की गलती बता सकें। इसलिये चुने जानेवाले प्रतिनिधि अक्सर कायर बन जाते हैं।

जहाँ प्रतिनिधि कायर बन जाते हैं, जनता के सामने हिम्मत से बात नहीं कर सकते हैं, वहाँ हमारा काम है। हमें जनता के सामने सही स्थिति रखना है।

सर्वोदय आंदोलन में दो प्रकार के लोग हैं। कुछ लोग ऐसे हैं, जो संत हैं, साधक हैं, दूसरे ऐसे लोग हैं, जो सामान्य नागरिक हैं, संसारी हैं। संतों के प्रति देश में आदर है, श्रद्धा है, किन्तु लोग उनके विचारों को अमल में नहीं लाते हैं और यह कह कर टालते हैं कि ये लोग अपवाद स्वरूप हैं। अगर हमारे जैसे सामान्य संसारी लोग आते हैं और कुछ काम करते हैं तो सामान्य आम लोगों को लगता है कि इस आंदोलन में हमारे लिये जगह है।

आज देश भर में सर्वोदय में विश्वास करनेवाले लोकसेवक यथाशक्ति कष्ट सहन कर काम कर रहे हैं, किन्तु कोई शक्ति और ताकत नहीं बनती है। इसलिये आवश्यक है कि क्षेत्र में रहने वाले पाँच-दस-पन्द्रह कार्यकर्ता अपना भाईचारा स्थापित करें, सर्वोदय परिवार बनायें। कार्यकर्ता मिलजुल कर नहीं रहते हैं तो जनता पर असर नहीं पड़ता है। आज का जमाना सामूहिक साधना और सामूहिक पुरुषार्थ करने का जमाना है। प्राथमिक सर्वोदय-मंडल ऐसे लोकसेवकों के सक्रिय भाईचारे के प्रयोग-केन्द्र होने चाहिए।

भूदान नैतिक मूल्यों की स्थापना का आंदोलन है

शंकरराव देव

[बिहार में बीघे में कट्ठा प्राप्त करने का जो आंदोलन शुरू हुआ है, उस सिलसिले में प्रत्येक जिले के सारे कार्यकर्ता मिला कर एक जिला-समिति बनाते हैं और उसके द्वारा भूदान (बीघे में कट्ठा) प्राप्त करने का काम चलाया जाता है। इन समितियों में न केवल सर्वोदय-कार्यकर्ता हैं, बल्कि विभिन्न राजनैतिक पक्षों के कार्यकर्ता और अन्य समाज-सेवक भी शामिल हैं-जैसे कांग्रेस, समाजवादी, साम्यवादी, भारत सेवक समाज, हरिजन सेवक संघ आदि। इनमें से सब लोगों ने खुशी से अपना सहयोग देना कबूल किया, पर एक-दो जगह कुछ लोगों ने अपने समय की कमी की बात की। उनको शंका थी कि भूदान के इस आन्दोलन के लिये वे कितना क्या समय दे सकेंगे। इस संदर्भ में श्री शंकररावजी ने अभी हाल के अपने बिहार के दौरे में जो कहा, वह यहाँ दिया जा रहा है।—सं०]

स्वराज्य-प्राप्ति के बाद एक दशक समाप्त होकर दूसरा आरम्भ हुआ है। दस वर्ष का एक काल-खण्ड (साइकल) खतम हुआ। २७ साल के आंदोलन के बाद आजादी का लक्ष्य सिद्ध हुआ। अब दूसरा लक्ष्य हमारे सामने आया। कार्यकर्ता कुछ थके हैं, ऐसा लगता है। थकावट स्वाभाविक है। पर थकने का यह मतलब नहीं कि हमारा काम कहीं गलत दिशा में हुआ। हमें निराश नहीं होना है। थकावट के बाद आराम और आराम के बाद फिर जोश। अब हमने आराम लिया है। समय पर जोश और गति अपने आप आयेगी ही।

लेकिन क्रांति का काम फुरसत से नहीं होता है। फुरसत से करने में खतरा है। आराम अलग चीज है, फुरसत अलग। हम अपने काम से फुरसत पाकर इस काम में लगेंगे, ऐसा जो सोचते हैं, वे यह भी देखेंगे कि उन्हें अपने काम से कभी फुरसत मिल ही नहीं सकती। सभी अपने-अपने किसी-न-किसी काम में लगे हैं। स्वराज्य मिला, तो देश के निर्माण का काम शुरू हुआ। सब अपने-अपने ढंग से देश को बनाने में लगे हैं। सबकी अपनी-अपनी योजना है, अपनी-अपनी दिशा है।

आज सत्तारूढ़ लोग और समाज-सेवक सब यह महसूस करते हैं कि देश के निर्माण के काम में सामान्य जनता की लगन, जोश और सहयोग जितना मिलना चाहिये, उतना नहीं मिल पा रहा है। पर यह क्यों?

इसका कारण यह है कि जनता को ऐसा नहीं लग रहा है कि यह जो कुछ काम हो रहा है, वह उनके भले के लिये हो रहा है। वे समझते हैं कि ये जितने सेवक हैं, वे सब अपने ही किसी-न-किसी स्वार्थ के कारण यह काम करते हैं। कार्यकर्ताओं का अपना-अपना गुट बना हुआ है। वे आपस में लड़ते-झगड़ते रहते हैं। उनमें कहीं कोई एकसूत्रता या एक राय नहीं हो पाती है। इससे जनता को ऐसा लगता है कि इस सारे काम में इन कार्यकर्ताओं का अपना लाभ है, हमारा कुछ नहीं।

कार्यकर्ताओं की स्थिति पहले से अब अच्छी ही है। स्वराज्य के आंदोलन के समय कार्यकर्ता जिस तरह पेट बांध कर जनता की सेवा करते थे, वैसा दृश्य आज नहीं दिखाई देता है। कार्यकर्ताओं का जीवन-स्तर उस समय से आज जरूर ही अच्छा है, भले ही कार्यकर्ता को इससे संतोष न हो और वे यह समझते हों कि हम त्याग ही कर रहे हैं। किन्तु आम जनता से अधिक ऊँचा जीवन-स्तर होने से जनता यह नहीं समझ पा रही है कि ये लोग हमारे भले के लिये काम करते हैं।

सारे कामों में यह जो दोष घुस गया है, उसे दूर करने, सेवा-कार्य को शुद्ध और निर्मल बनाने की कुछ शक्ति इस भूदान-आंदोलन में है, क्योंकि इस आंदोलन के नेता, विनोबा के बारे में जनता के मानस में श्रद्धा है। वे आज नैतिक शक्ति का प्रयोग कर रहे हैं। इस आंदोलन की यही विशेषता है। फिर भी हम यह कहना चाहते हैं कि न केवल इस आंदोलन के लिये, बल्कि देश के समूचे व्यवहार के लिये ही, इस शक्ति का, इस पूंजी का, जितना उपयोग होना चाहिये था, उतना नहीं हो रहा है। नैतिक शक्ति का उपयोग किस क्षेत्र में नहीं है? हरएक क्षेत्र में है और होना चाहिये। गांधीजी के नेतृत्व की शक्ति उनकी नैतिकता की शक्ति थी। आम जनता उन्हें संत मानती थी। भारतीय जनता के मन में संत के निःस्वार्थी होने में विश्वास है। आजादी की लड़ाई में उस शक्ति का पूरा उपयोग हो सका था।

देश का यह सौभाग्य है कि आजादी के तुरत बाद नैतिक नेतृत्व हमें मिला। पर उसका उपयोग देश के निर्माण में जितनी व्यापकता के साथ होना चाहिये था, वह आज भी नहीं हो रहा है। विवेकानन्द ने कहा था कि भारत वह देश है, जो ईश्वर के पीछे पागल है (गॉड-इन्टाक्सिकेटेड)। यहाँ की जनता में धर्मश्रद्धा व्यापक अर्थ में रक्तगत हो गयी है। तभी तो दंभ की भी यहाँ प्रतिष्ठा है। पर धर्म की प्रतिष्ठा यहाँ बहुत गहरी पैठी हुई है। यहाँ आज तक उन लोगों का नेतृत्व चला है, जिनकी श्रद्धा धर्मश्रद्धा रही है। राजनैतिक आंदोलन भी इसी धर्मश्रद्धा पर ही चले हैं।

आज इस दिशा में जीवन-पद्धति का कुछ विकास होने लगा है और वह इसी सर्वोदय विचार के आधार पर हो रहा है। लेकिन आज विभिन्न कामों में लगे हुए लोगों में यह चीज नहीं पायी जाती है। सभी कार्यकर्ता इस चीज का जिस प्रकार से वाहन बन सकते थे, नहीं बन पाये। जीवन के सभी क्षेत्रों पर नैतिकता छा नहीं सकी।

आज एक ही समस्या है और वह है नैतिकता का अभाव।

नैतिकता क्या है? यही कि स्वेच्छा से सद्बुद्धि-सुबुद्धि से काम करना। आज इसका अभाव है। कार्यकर्ताओं में परस्पर नहीं है, पूरी अनुकूलता नहीं है कि यह सर्वव्यापी हो। इसका अभाव तो सबको खटकता है, पर इसकी स्थापना का प्रयत्न बहुत कम चल रहा है। इस काम को हम कितना समय दें, इसमें अपना कितना योग दें, इसका उत्तर तभी हमारे दिल में आयेगा, जब हम इस समस्या को समझें। यह सभी मानते हैं कि यह नैतिक शक्ति इस भूदान-आंदोलन में है। न केवल हमारे देश के विचारवान, परन्तु विदेशी विचारशील लोग भी यह मानते हैं। उनको लगता है कि सर्वोदय एक नई जीवन-पद्धति है। सबको यहाँ से भले ही मदद क्यों न हो, पर प्रकाश दिखता है। समय पर यह प्रकाश सारे जग को एक दिन उज्ज्वल कर सकता है।

कहाँ कितनी भूमि मिली आदि हिसाब नगण्य नहीं है, फिर भी इस आंदोलन की दृष्टि से वह गौण ही है। इसके पीछे की नैतिकता उसका महान तत्त्व है।

समाज के सुख और शांति की स्थापना के लिये हमने लाठी को आजमाया। लाठी से वैर ही बढ़ा, द्वेष ही पनपा। वह निकम्मी साबित हो गयी। आज के जमाने में वह एक जंगली साधन माना जाता है। फिर हमने कानून को आजमाया। यह भी अपर्याप्त साबित हुआ, क्योंकि कानून से जमीन का बँटवारा भले हो जाय, पर परस्पर-स्नेह निर्माण नहीं होता। कानून अनावश्यक है, सो बात नहीं, पर वह काफी नहीं है, अपर्याप्त है। कानून बनते हैं, और उनका उल्लंघन भी बहुत होता है। छिपे-छिपे उसका अनादर होता है। कानून बने भी बहुत ज्यादा हैं, पर समाज में स्नेह-संचार नहीं हो पाया है। स्नेह के बिना सुख शांति कहाँ? भूदान-आंदोलन के कारण, भूदान के नियमानुसार भूवितरण की प्रक्रिया के कारण स्नेह पैदा होता है। गांधीजी ने कहा था कि घर का जो धर्म है, वही समाज का धर्म बने और सामाजिक जीवन में वही स्नेह और सहयोग पैदा करने का, समूचे जीवन में नैतिक आधार लाने का प्रयत्न इस आंदोलन से हो रहा है। अभी राजनैतिक पक्ष चुनाव के मैदान में आमने-सामने खड़े होते हैं, किन्तु भूदान के काम में एक-दूसरे से कंधे-से-कंधा मिला कर काम करने को तैयार हैं।

अक्सर बुद्धि शक्ति के टुकड़े किये जाते हैं, द्वैत-भावना को विकसित किया जाता है, अध्यास का आधार लिया जाता है और इसी से सारे झगड़े चलते हैं। हरएक अपने को सज्जन कहता है, दूसरे को दुर्जन! पर यह 'सु' और 'कु' का भेद ही मिट जाना चाहिये। सर्वोदय में न 'सु' है, न 'कु'। यहाँ केवल प्रश्न है। सुबुद्धि या दुर्बुद्धि नाम की कोई चीज नहीं है। यहाँ सब मिल कर काम कर सकते हैं। ऐसे काम के लिये कितना समय दिया जाय? प्रश्न यह है कि प्राथमिकता किसको दें? नैतिकता को या और किसी को? अब समय आया है कि नैतिकता और नैतिक मूल्यों को ही प्राथमिकता देनी होगी।

अब दानपत्र नहीं माँगेंगे, प्राप्ति-पत्र लेंगे। प्राप्ति और वितरण को भी स्वावलम्बी बनाना चाहिये। आज वह परावलंबी है, इसीलिये सारा काम रुका हुआ है। अब दाता ही आदाता को जमीन दे देगा। वे आपस में स्नेह से निपट लेंगे। हम दाता और आदाता जैसे दो भेद करें, फिर उन्हें एक करें, ऐसी प्रक्रिया को बंद करना होगा। समय ऐसा आयेगा कि यह प्राप्ति-पत्र का भी सिलसिला खतम हो जायगा। जब विभाजन की बाढ़ आयेगी, तब कोई भी प्रक्रिया बीच में नहीं रहेगी। सब अनावश्यक होगा। "यावानर्थ उदपाने सर्वतः संप्लुतोदके।"—चारों ओर पानी ही पानी हो तो फिर कुओं और तालाबों का क्या काम! बेकारी, बीमारी आदि सभी समस्याओं का इलाज गाँव वाले स्वयं करने लगें ऐसी स्थिति आनी चाहिये।

एक बात और है। आप अपने को नैतिक मान कर चलें और इतने से सन्तोष कर लें तो काम नहीं चलेगा। जिनके नाम पर आप काम कर रहे हैं, उनको भी लगना चाहिए कि आप नैतिक हैं और उनका काम कर रहे हैं। राजनैतिक और आर्थिक कामों को भी शक्ति तभी मिलेगी जब उसके साथ नैतिक शक्ति की प्रेरणा रहेगी।

अतः पूरी समझ के साथ आप सब मिल कर काम में लगें तो १२ लाख का संकल्प सिद्ध करना, कोई कठिन नहीं है, बल्कि समाज में नैतिक वातावरण तैयार करने में आपका योगदान महान वा मूल्य होगा।

● ●

नीलगिरि में एक "नई तालीम परिवार"

मार्जरी साइक्स

कोटगिरि (नीलगिरि पर्वतमाला) में पहला नई तालीम परिवार शिविर आज के अखिल भारतीय सर्वोदय सम्मेलन के तुरन्त बाद शुरू हुआ। ता० २३ अप्रैल से २० मई तक चार सप्ताह चला। इसी प्रकार का दूसरा शिविर २० मई से प्रारम्भ हुआ और १० जून को समाप्त हुआ। दूसरा शिविर थोड़ी कम अवधि का करना पड़ा, क्योंकि अधिकांश सदस्यों को १२ और १५ जून के बीच अपने-अपने स्कूलों में वापस पहुँचना था।

हर शिविर के लिए आठ प्रशिक्षार्थी चुने गये थे। लेकिन हमारी वास्तविक संख्या सात ही रही, क्योंकि दोनों ही दलों में एक एक व्यक्ति कुछ कारणवश आ नहीं पाये। इस छोटी संख्या के कारण जो परस्पर निकटता का वातावरण रहा, वह हम सभी के लिए बहुत कीमती साबित हुआ। हर प्रशिक्षार्थी को यह महसूस हुआ कि जितना हमने व्यवस्थित वर्गों और चर्चाओं से सीखा, शायद उतना ही हमने एक-दूसरे के निकट सम्पर्क से भी सीखा।

पहले दल में छह पुरुष और छह स्त्रियाँ थीं और दूसरे में मुझ समेत चार पुरुष और चार स्त्रियाँ। पहले शिविर में बंगला, हिन्दी, मलयाली और तमिल भाषा भाषी लोग थे, दूसरे में मुख्यतः हिन्दी और तमिल भाषी। हमारे आपस के व्यवहार के लिए मुख्य तौर पर हम हिन्दी और अंग्रेजी भाषाओं का इस्तेमाल करते थे। शिविर-जीवन की दैनन्दिनी बारी-बारी से हर सदस्य लिखता था और हिन्दी, तमिल या अंग्रेजी तीनों में से किसी भाषा में लिखी जाती थी, यह तीनों ही हमारे काम के लिए "अधिकृत" भाषाएँ थीं।

कुछ मित्रों को ऐसी आशंका थी कि ठेठ दक्षिण में होने के कारण यह केन्द्र दक्षिण के लिए ही रह जायगा। पर मुझे यह कहते हुए खुशी होती है कि यह आशंका सही नहीं साबित हुई। अनुभव उल्टा यह आया कि जैसी मेरी खुद की आशा थी, इस केंद्र का दृष्टिकोण अखिल भारतीय रहा। भौगोलिक दृष्टि से दक्षिण में ऐसे अखिल भारतीय केन्द्र की अपनी एक विशेष उपयोगिता है।

करीब एक सप्ताह के प्रयोग के बाद हमें यह नीचे लिखा दैनिक कार्यक्रम सब दृष्टियों से अनुकूल लगा :

सवेरे पाँच से साढ़े सात बजे—आवश्यक और प्रार्थना के बाद डेढ़ से पौने दो घण्टे का शरीर श्रम। परिवार के दो सदस्य इस दरम्यान सफाई, नाश्ते की तैयारी और दोपहर के भोजन की प्रारम्भिक तैयारी, बाकी के सदस्य खेत में भिन्न भिन्न काम करते हैं। इसके बाद हम सब साथ नाश्ता करते हैं।

सवा आठ से सवा ग्यारह—शुरू में एक घण्टा हम सारे लोग मिल कर साथ कोई-न-कोई उत्पादक-श्रम का काम करते हैं। किसी भी स्कूल में शिक्षक और बच्चे सब मिल कर किस प्रकार उत्पादक काम में लग सकते हैं, उसके लिए यह घण्टा एक पदार्थ-पाठ होता है। ग्यारह बजे से सवा बारह बजे तक हमारा वर्ग चलता है। इन दोनों के बीच के समय में परिवार के दो सदस्य स्नान आदि करके खाना बनाते हैं और बाकी के लोग कुछ थोड़े और शरीर-श्रम के बाद स्नान आदि करके तैयार हो जाते हैं। सवा बारह बजे हमारा भोजन होता है।

एक से पौने सात बजे शाम—इस समय की योजना हमने बहुत लचीली रखी है और वह हर दिन बदलती रहती है, मौसम के अनुसार भी। लेकिन इस बीच डेढ़ से दो घण्टे का एक वर्ग और हो जाता है। इसके अलावा कताई, वाचन, घर का अन्य कामकाज, बाजार करना, शाम के भोजन की तैयारी इत्यादि भी इस बीच मिलजुल कर कर लेते हैं। हमारे यहाँ से बाजार और डाकघर आदि करीब डेढ़ मील है, इसलिए इन कामों में थोड़ा ज्यादा समय लगता है।

पौने सात से पौने दस बजे—शाम की प्रार्थना, भोजन, व्यक्तिगत वाचन और उसके बाद शयन होता है।

ऊपर के कार्यक्रम के अनुसार मोटे तौर पर हममें से हरएक करीब पाँच घण्टे किसी न किसी प्रकार का शरीर श्रम करता है। करीब तीन घण्टे बाकायदा अध्ययन और चर्चा में हम लोग लगाते हैं और दो घण्टे व्यक्तिगत रूप से अध्ययन करने में। हमने जानबूझ कर काफी समय खुला छोड़ा है, ताकि व्यक्ति अपनी मर्जी के अनुसार उसका उपयोग कर सकें। हमारे पास तीनों भाषाओं की किताबों का एक छोटा सा पुस्तकालय है और कुछ संदर्भ-ग्रन्थ भी हैं। विशेष रुचि के काम हैं—वनस्पति-शास्त्र, छोटे-छोटे और सरल घरेलू यन्त्र और आसपास के गाँवों से सम्पर्क।

वर्ग में जो प्रशिक्षण चलता है, वह प्रत्येक दल की विशेष आवश्यकता के अनुसार होता है। प्रशिक्षण में कुछ तो आपसी सम्बन्धों के विकास के अनुभव और कुछ वर्तमान महत्त्वपूर्ण घटनाओं से सम्बन्धित अध्ययन रहता है—उदाहरण के लिए 'रवीन्द्र शताब्दी' इत्यादि। कभी-कभी ऐसी तात्कालिक घटनाओं का अध्ययन भी हमारी दिलचस्पी का विषय होता है—जैसे मौसमी तूफान, जिसने एक बार दो दिन तक हमारी सारी दिनचर्या को अस्त-व्यस्त कर दिया। मुख्य उद्देश्य यह रहा है कि प्रशिक्षार्थियों को नई तालीम के सिद्धान्त और उसके आचार सम्बन्धी बुनियादी तत्त्वों के बारे में सफाई करने का मौका मिले और स्कूली काम के लिए प्रत्यक्ष प्रक्रिया और तरीकों के अधिक से-अधिक जितने पाठ वे ग्रहण कर सकें, वह करें।

सप्ताह में करीब करीब एक बार हम सामान्य दिनचर्या से थोड़ी छूट लेते हैं, जब कि हमारा सारा परिवार बाहर भ्रमण के लिए निकल पड़ता है। यह भ्रमण भी हमारे शैक्षणिक काम के ही अंग के तौर पर संयोजित किये जाते हैं। इनका उपयोग आस-पास के क्षेत्र के, जो बहुत-से प्रशिक्षार्थियों के लिए हिन्दुस्तान का एक नया हिस्सा है, सामाजिक, आर्थिक और कृषि-संबंधी परिस्थितियों के अध्ययन का होता है। इन कार्यक्रमों से हमको यह भी सीखने को मिला कि बिना पैसा खर्च किये किस तरह से मनोरंजन के कार्यक्रम बनाये जा सकते हैं। हर सत्र के एक ऐसे भ्रमण में जरूर हमको बस का कुछ किराया खर्च करना पड़ा था।

इन शिविरों के दौरान में हमारे यहाँ कुछ 'क्वेकर' मित्र और दूसरे शांति कार्यकर्ता आ गये हैं। आर्यनायकम्‌जी नीलगिरि प्रदेश में थोड़े समय के लिए आये थे, वे भी यहाँ थोड़ा समय रह गये। 'फेलोशिप आफ रिकासीलियेशन' जो एक ईसाई शांतिवादी संस्था है, उसकी भारतीय शाखा के उपाध्यक्ष नागपुर के पादरी सादिक भी हमारे सम्माननीय मेहमानों में रहे। कोटगिरि पंचायत बोर्ड के अध्यक्ष श्री के० नन्जा गौडर और कुमारी मेरी बार ने भी हमारे शिविर में आकर कुछ वर्ग लिये।

भोजन, ईंधन, रोशनी और आकस्मिक पारिवारिक टूटफूट आदि सब चीजों को लेकर हमारा यहाँ का खर्च प्रति व्यक्ति प्रति दिन ८४ नये पैसे हुआ, अर्थात् पूरा २५ रुपया मासिक। मुझे ऐसा लगता है कि स्वास्थ्य को हानि पहुँचाये बिना इस खर्चे में अभी थोड़ी और कमी की जा सकती है। मैं यह आशा करती हूँ कि आगे आने वाले शिविरों में जो कार्यकर्ता और शांति-सैनिक आयेंगे, वे इस दिशा में कुछ प्रयोग करेंगे। ●

'अमेठी अहम्' : शांति-कुटीर

'अमेठी अहम्' यह नीलगिरि की पहाड़ियों में बसे हुए मेरे छोटे से घर का तमिल नाम है। यह जगह इसलिए बनायी गयी है कि यहाँ अहिंसा की प्रक्रियाओं के प्रशिक्षण और उसके अध्ययन की व्यवस्था हो सके। यहाँ जो आयेंगे, वे सब सह चिंतन और सह-अध्ययन करने वाले होंगे। आशा यह है कि हरएक कुछ पायेगा और कुछ देगा। हम सब साथ मिल कर जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में—आजीविका प्राप्त करने में, गृह-व्यवस्था में, स्कूल चलाने में, गाँव का आयोजन करने में या राष्ट्रीय बातों पर अपना असर डालने में—अहिंसा का इस्तेमाल करने की अपनी ताकत बढ़ायेंगे।

शांति-सैनिक या सर्वोदय विचार से सहानुभूति रखने वाले दूसरे व्यक्ति, जो शांति के लिए काम करने के इच्छुक हैं, उन्हें ता० २६ जुलाई से २० अक्तूबर १९६१ के बीच यहाँ आकर रहने का निमंत्रण है।

एक बार में आठ से ज्यादा व्यक्तियों के रहने की यहाँ गुंजाइश नहीं है, इसलिए जो भी शरीक होना चाहें, वे जल्दी से-जल्दी सूचना करें कि वे कब आना चाहते हैं और कितने दिन रहना चाहते हैं।

शामिल होने वाले व्यक्तियों की अपनी-अपनी आवश्यकता के अनुसार उनका व्यक्तिगत कार्यक्रम बनाने की भरसक चेष्टा की जायगी, पर सामान्य तौर पर चार सप्ताह की अवधि प्रारम्भिक प्रशिक्षण के लिए उपयुक्त है। अगर कोई विशेष सामाजिक योजना लेकर उस पर काम करना हो तो दो-तीन महीने की अवधि वांछनीय होगी।

यहाँ के रोजमर्रा के जीवन में दो मुख्य उद्देश्य होंगे :—

(१) हर व्यक्ति को अहिंसा की गहरी और आध्यात्मिक समझ प्राप्त करने में और व्यवस्थित अहिंसक जीवन जीने के लिए ज्यादा सक्षम बनाने में मदद करना।

(२) एक सेवा-सैनिक या शांति सैनिक के नाते जो जिम्मेदारी आये, उसको निभाने के लिए शारीरिक, बौद्धिक और सामाजिक दृष्टि से व्यक्तियों को तैयार करना काशी शांति सेना विद्यालय के पाठ्यक्रम में इस बारे में जो ब्योरे के सुझाव दिये गये हैं, उनका यहाँ आवश्यकतानुसार उपयोग करने की कोशिश की जायगी।

सहयोगी जीवन और उत्पादक शरीर-श्रम यह अहिंसक प्रशिक्षण के महत्त्वपूर्ण अंग हैं। अतः इस परिवार का जीवन परस्पर साझेदारी के आदर्श पर आधारित होगा, जो कि सर्वोदय के लिए आवश्यक है। हर व्यक्ति इस परिवार के खर्च में योग देगा, यह आर्थिक साझेदारी हुई, पर इसके अलावा हम यहाँ के सारे जीवन और काम की योजना भी परस्पर आध्यात्मिक, मानसिक और सामाजिक सहयोग से करेंगे।

जो यहाँ प्रशिक्षण के लिए आने में दिलचस्पी रखते हों, वे मुझे 'अमेठी-अहम्' इल्क्ले एस्टेट (Ilkley Estate) पो० कोटगिरि, जिला—नीलगिरि (दक्षिण भारत) इस पते पर लिखें।

—मार्जरी साइक्स

अब लगे हुए हैं। मदुरा जिले के तीन ताल्लुकों (मेलूर, मदुरा, वनलगुडु) के लोग जमीन से अपने को निकाले जाने की समस्या को लेकर भूदान-सेवकों और भूदान-दफ्तरों में आते हैं। भूदान-सेवकों ने गरीब किसानों का विश्वास प्राप्त किया है। यहाँ के किसान उनको अपने आप्त मित्र ही मानते हैं। मैंने देखा कि हर रोज कई दरिद्र किसान भूदान-दफ्तर में मार्गदर्शन और मदद पाने को आते हैं। सेवक इनके निकाले जाने के दावों को कचहरी के बाहर ही हल करने का प्रयत्न करते हैं। वे जमींदारों से मिल कर उनसे इन गरीब किसानों के दावों के बारे में बातचीत करते हैं। ग्रामदानी ग्रामीण सम्मिलित प्रयत्न से जमीन से हटाये गये किसानों की मदद किस प्रकार करते हैं, यह देखते ही बनता है। ऐसी एक घटना के बारे में मैं खूब जानता हूँ। किसान जिस जमीन से निकाला गया था, वहाँ पर ग्रामदानी ग्राम की पाँच सौ जनता जमा हुई। उन्होंने एक आम सभा चलायी। जमींदार भी वहाँ आये और शांति से दावे का निबटारा किया गया।

इन गाँवों में बड़ी जागृति दिखायी देती है। एक बहुत बड़ी जनशक्ति जाग गयी है। एक साल के पहले आसपास के ग्रामदानी ग्रामों से आयी हुई २० हजार जनता मदुरा शहर की गलियों से भूदान के नारे लगाती हुई गयी और वहाँ उसने एक बड़ी सार्वजनिक सभा की। यह समाचार जब 'भूदान' साप्ताहिक पत्रिका में पढ़ा, तब मैं उस पर विश्वास नहीं कर सका। परन्तु अब मैंने देखा कि यह बिल्कुल सच है।

तमिलनाड अपने सुन्दर बड़े-बड़े मंदिरों पर गर्व करता है। पर ये तो पिछले दिनों का गौरव ही है। सर्वोदय-सेवकों के ग्रामदानी ग्रामों द्वारा नई गरिमा का निर्माण हो सकता है। जब मैं मैसूर लौटूंगा तब तमिलनाड के देखे हुए कलापूर्ण सुंदर मंदिरों को शायद भूल जाऊं, पर दक्षिण के इन सच्चे क्रांतिकारी सेवकों की निस्वार्थ सेवा की स्मृतियाँ मेरे मन में सदा-सर्वदा रहेंगी। मैं इन शांति-यात्रियों की वन्दना करता हूँ।

श्री शूमाखर के विचारों पर एक राय

भारत में आयोजन की प्राथमिक इकाई गाँव ही हो सकती है

[२ जून के 'भूदान यज्ञ' में श्री ई० एफ० शूमाखर के भारतीय विकास की कुछ समस्याओं पर विचार प्रकाशित किये थे। श्री शूमाखरजी के विचारों को प्रसारित करते हुए गांधी विद्या-स्थान के अध्यक्ष श्री शंकरराव देव ने विभिन्न रचनात्मक संस्थाओं के इस विचार के बारे में रुचि रखने वाले योग्य कार्यकर्ताओं का सहयोग मांगा था। यहाँ पर श्री शूमाखर के विचारों पर हम श्री बद्रीप्रसाद स्वामी की एक राय प्रकाशित कर रहे हैं। हमें उम्मीद है कि अन्य कार्यकर्ता भी इस विषय में विचार प्रकट करेंगे। —सं०]

भारतीय विकास की समस्याओं पर श्री शूमाखर के कुछ विचार सर्वोदय-दृष्टिकोण से सोचनेवालों के लिये ही नहीं, बल्कि अन्य अर्थ-शास्त्रियों के लिये भी उपयोगी साबित होंगे। उन्होंने अपने विचार व्यक्त करते हुए जो यह कहा है कि औद्योगिक रूप से अत्यंत विकसित क्षेत्रों द्वारा ग्राम-अर्थ व्यवस्था पर जो निरंतर हमला हो रहा है, उसीसे सारी समस्याएँ खड़ी हुई हैं, यह काफी हद तक सही है। उनका यह मानना भी सही है कि उद्योग-प्रधान क्षेत्रों की अनिवार्य होड के कारण ही ग्रामीण अर्थ-व्यवस्था में गैरकृषि-उत्पादन समाप्तप्राय हो गया है और उसी से सांस्कृतिक पतन भी हुआ है। भारत की कम भूमि और अधिक आबादी को ध्यान में रखते हुए उनका यह मानना और भी ठीक लगता है कि सिर्फ कृषि पर निर्भर रह कर भारतीय ग्रामीण जनता अपना विकास नहीं कर सकती, कृषि के साथ गैरकृषि-उत्पादन-व्यवस्था की अत्यन्त आवश्यकता है।

अपने लेख में उन्होंने यह भी संकेत किया है कि औद्योगिक विकास के कारण जो राष्ट्रीय आय में वृद्धि हो रही है, वह वस्तुतः ८५ प्रतिशत गाँवों में रहने वाली जनता के लिए बहुत ही खतरनाक है। भारत की तृतीय पंचवर्षीय योजना में इस ओर ध्यान नहीं दिया गया है, इसका संकेत करते हुए कुछ सुझाव भी उन्होंने प्रस्तुत किये हैं।

ऐसा लगता है श्री शूमाखर के ये सारे विचार पश्चिमीय देशों में जो आधुनिक उद्योगों ने सीमित क्षेत्रों में विशाल रूप धारण किया है, उसको ध्यान में रख कर ही प्रगट हुए हैं। भारतवर्ष में कुछ शहरों में जरूर अनेक उद्योग केन्द्रित हुए हैं। परन्तु पश्चिमी देशों की तरह 'मैगलोपोलिस' नहीं बन पाये हैं और न ऐसा यहाँ सोचा ही जा रहा है। जहाँ तक भारतीय योजना के लिये सुझावों का प्रश्न है, श्री शूमाखर के सुझाव वास्तविक जानकारी के अभाव में अनुकूल नहीं हैं।

अगर व्यक्ति से समष्टि की ओर बढ़ना चाहते हैं तो और व्यक्ति और समाज के लिये स्वतन्त्रता, बन्धुता और समता साकार हो, ऐसी आकांक्षा रखते हैं तो फिर हमारी योजना का मूलभूत आधार व्यक्ति और उसका परिवार होगा और उसके बाद उसका गाँव।

वह योजना सर्वश्रेष्ठ होगी, जिसमें व्यक्ति-स्वावलम्बन को सबसे अधिक महत्त्व दिया जायगा, क्योंकि हर परिवार और व्यक्ति अगर वस्तुतः अधिक-से अधिक स्वतन्त्रता, समता स्वयं और समाज के लिये चाहता है तो परिवार को अधिक-से-अधिक यथासंभव अपना आयोजन अपनी शक्ति द्वारा ही करना होगा। इसी प्रकार गाँव को भी अपना आयोजन ग्राम-परिवार के सहयोग से आयोजित करना होगा। इसलिये यह कह सकना कि कुल भारत योजना के लिये बड़ा है और गाँव छोटा है, यह ठीक नहीं लगता। कुछ ऐसे मुद्दे हैं, जिनकी योजना गांव-स्तर पर बनना-बनाना उचित होगा, और कुछ क्षेत्र, जिला, प्रान्त और अखिल भारतीय स्तर पर और उन सब योजनाओं में कुल भारत के बालिग नागरिकों का सक्रिय सहयोग और चिन्तन हो। सांस्कृतिक विकास के लिये भी यही उचित लगता है। संस्कृति का निर्माण, सीधे संबंध और संपर्क से ही हो सकता है। और वह बड़ी इकाइयों के द्वारा संभव नहीं हो सकता।

इसलिये भारतीय परिस्थितियों को देखते हुए आर्थिक, सामाजिक और राजनैतिक दृष्टिकोण से प्राथमिक इकाई का छोटा क्षेत्र गाँव ही हो सकता है, जिससे परिवार का हर सदस्य एक-दूसरे से सीधा संपर्क कर सकता हो और एक-दूसरे को सुन व समझ सकता हो। श्री शूमाखर ने जिले को प्राथमिक इकाई मानने का जो सुझाव दिया है, वह कुछ ठीक नहीं लगता। हाँ, कुछ समस्याएँ ऐसी हो सकती हैं, जिनको जिला-स्तर पर ही हल करना होगा। वैसे अधिकतर कामों की योजना खंड-स्तर पर बनायी जाना ज्यादा उपयुक्त लगता है, जैसा कि आज के पंचायत राज में प्रारंभ किया गया है।

जहाँ तक प्रशासनिक इकाई का प्रश्न है, मेरे खयाल से अब समय आ रहा है, जब कि प्रान्तों की आवश्यकता नहीं रहेगी और प्रान्तों के स्थान पर भारत के इस महान संघ में २०० से ३०० जिले प्रशासनिक इकाइयों का स्थान लेंगे।

इस सारे विचार के साथ मुझे एक बात और लगती है कि इस विकेन्द्रित शासन-व्यवस्था और अर्थ-व्यवस्था, जिसकी ओर हमने कदम उठाया है, उसकी सफलता के लिये हमें आज के केन्द्रित न्याय-व्यवस्था, रक्षा-व्यवस्था, कर-व्यवस्था तथा बड़े-बड़े औजार और यन्त्रों के मौजूदा स्वरूप पर भी शीघ्र सोचना होगा और विकेन्द्रित अहिंसक समाज-रचना के संदर्भ में उनमें आवश्यक परिवर्तन करना होगा, इस ओर अभी बहुत कम ध्यान गया है। जब तक समग्र रूप से विकेन्द्रित समाज रचना के लिये नहीं सोचेंगे और कदम नहीं उठायेंगे, तब तक विकेन्द्रित समाज-रचना के लिये उठाये गये कदम समाधान करने के बजाय कई और नई समस्याएँ खड़ी करेंगे। इसलिये हम सबको समय रहते वस्तुतः श्री शूमाखर जैसे अन्य विचारकों के विचारों पर गहराई से विचार करना चाहिए।

—बद्रीप्रसाद स्वामी

विश्व-शांति के लिए मन से मुक्त होना पड़ेगा

विश्व शांति सेना की स्थापना के प्रश्न पर विचार करने के लिए अगले दिसम्बर महीने में बेरूत (लेबनान) में जो अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन होने जा रहा है, उसके आमंत्रक को अपना नाम देने की स्वीकृति भेजते हुए विनोबाजी ने लोकबन्धु डोनाल्ड ग्रूम को लिखा है :

"विश्व-शांति-सेना का विचार एक नया विचार है और उसके लिए जरूरी है कि हम आज के हमारे मन से मुक्त हों। जितना हम यह कर सकेंगे, उतनी ही सफलता हमको मिलेगी। सारे विश्व में आज विचारवान लोग गम्भीर चिंतन कर रहे हैं। विचार के साथ क्रिया भी होना जरूरी है। पर उसकी गति, जैसा मैंने कहा था, सौम्य-सौम्यतर-सौम्यतम होगी।

"हमारी यात्रा असम में अच्छी तरह चल रही है। लोक-हृदय में प्रवेश मिल रहा है। ध्यान में आता है कि यह सब ईश्वर करा रहा है। ईश्वर क्या कराना चाहता है उसका चित्र, मेरा विश्वास है, निकट भविष्य में ही हम सबको देखने को मिलेगा।"

—विनोबा के जय जगत्

• • साहित्य-समीक्षा • •

विनोबा की ज्ञान-गंगा में

लेखिका : डॉ० कुसुमवती दरबार, प्रकाशक : रजन प्रकाशन, ७ दालस्टाय मार्ग, नई दिल्ली। पृष्ठ-संख्या २१७, मूल्य ढाई रुपये।

यह पुस्तक लेखिका की डायरी है, जो ८ फरवरी १९५३ में प्रारम्भ होकर ११ मार्च १९५३ को समाप्त होती है। इस अवधि में लेखिका को विनोबाजी के साथ रहने का सुयोग प्राप्त हुआ। वैसे देखा जाय तो यह पुस्तक बहुत पहले प्रकाशित हो जानी चाहिए थी, जो अब आठ साल बाद प्रकाशित हुई। फिर भी इस पुस्तक का अपना मूल्य बना रहेगा, क्योंकि इस डायरी में विनोबाजी के उन दिनों का वर्णन है, जब वे बीमार थे और चांडिल में आराम कर रहे थे। इस डायरी के पन्नों पर विनोबा के विभिन्न विषयों पर प्रकट किये गये विचार, विनोबाजी की प्रकृति और उनका स्वभाव, जीवन के प्रति उनका दृष्टिकोण एवं छोटी मोटी अनेक तत्कालीन घटनाएँ हैं। पुस्तक में इसके साथ विनोबा का संक्षिप्त जीवन चरित्र और परिशिष्ट में चांडिल सर्वोदय-सम्मेलन के अवसर पर दिये गये कुछ भाषण भी हैं। इस पुस्तक के प्रकाशन से विनोबाजी के संस्मरण साहित्य में एक खोई हुई कड़ी फिर जुड़ जाती है।

—मणीन्द्रकुमार

•

आचार्य विनोबा (बंगला)

लेखक : विधुभूषण दासगुप्त, प्रकाशक : सर्वोदय प्रकाशन समिति (पश्चिम बंगाल), सी. ५२ कालेज स्ट्रीट मार्केट, कलकत्ता १२। मूल्य २ रुपये।

विनोबाजी की प्रेरणादायक जीवन-कथा ने अनेक साहित्यकारों को इस युग के इस महान पुरुष का जीवन-चरित्र लिखने को अनुप्रेरित किया है। बंगला में श्री विधुभूषण की यह पुस्तक इसी परम्परा का सर्वाधुनिक नमूना है। लेखक बंगला साहित्य जगत् से सुपरिचित हैं तथा बंगाल में राष्ट्रभाषा के प्रचार के लिए उन्होंने काफी प्रयत्न किया है। उनके द्वारा लिखी गयी राष्ट्रभाषा की पुस्तकों का बंगाल में एक विशिष्ट स्थान है। विधुभूषणजी ने केवल अब तक की प्रकाशित पुस्तकों की सहायता से ही विनोबाजी का यह जीवनचरित्र नहीं लिखा है। अपितु उन्होंने विनोबाजी के दो भाई, बालकोबाजी तथा शिवाजी भावे से मिल कर उनके बारे में ऐसी कई घटनाओं को लिपिबद्ध किया है, जो अब तक सर्वसाधारण को मालूम नहीं थी। इसके अलावा उन्होंने काफी परिश्रम करके श्री दामोदरदास मूंदड़ा, श्री सुंदर दिवाण, श्री बाबाजी मोघे, श्री गोपालराव काले, श्री दत्तोबा दस्ताने इत्यादि विनोबाजी के घनिष्ठ साथियों और अनुयायियों से मिल कर एवं सेवाग्राम, नालवाड़ी तथा पवनार इत्यादि, जिन स्थानों के साथ विनोबाजी का घनिष्ठ सम्बन्ध रहा है, उन स्थानों का भ्रमण करके अधिक से अधिक प्रामाणिक तथ्य संग्रह किये हैं। इस प्रकार से मौजूदा पुस्तक में विनोबाजी के सम्बन्ध में अद्यतन जानकारी दी गयी है। इस पुस्तक को विनोबाजी के जीवन-चरित्रों में एक और दृष्टि से अद्यतन कहा जा सकता है। समालोच्य पुस्तक में उनका चम्बल घाटी का शान्ति-कार्य तथा असम पदयात्रा का भी वर्णन है। श्री शिवाजी भावे ने सारी पाण्डुलिपि पढ़ कर प्रामाणिकता की दृष्टि से उसमें कुछ सुधार करवाये हैं और संक्षिप्त, किन्तु आकर्षक भूमिका लिखी है। लेखक की भाषा तथा शैली अत्यन्त रोचक है। आशा है, इस उच्च कोटि की पुस्तक का दूसरी भाषाओं में भी अनुवाद होगा, ताकि भारत वर्ष की सभी भाषाओं के पाठकों के लिए इस युग के एक महान क्रांतिकारी का यह उत्कृष्ट जीवन-चरित्र उपलब्ध हो सके।

—शैलेशकुमार

•

हमारा राष्ट्रीय शिक्षण

लेखक— चारुचन्द्र भंडारी
प्रकाशक—अ० भा० सर्व सेवा संघ प्रकाशन, राजघाट, काशी।
पृष्ठ-संख्या २२०, मूल्य तीन रुपये।

वर्तमान शिक्षा प्रणाली के विरुद्ध देश के सभी नेतागण बहुत पहले से अपने विचार प्रकट करते आये हैं। कवीन्द्र रवीन्द्र ने तो उसके खोखलेपन को बहुत पहले प्रकट कर दिया था। राष्ट्रपिता गांधीजी ने भी उसकी व्यर्थता को सिद्ध किया था और उनका स्पष्ट कथन था कि यह शिक्षा-पद्धति राष्ट्र के लिये कभी हितकर नहीं है। आज से लगभग २४ वर्ष पहले वर्धा में उन्होंने देश के शिक्षा-शास्त्रियों की एक सभा बुलायी थी और तीन दिन के विचार विनिमय के बाद जिस शिक्षा प्रणाली को स्वीकृति दी थी, वह उस समय 'वर्धा शिक्षा-पद्धति' के नाम से प्रसिद्ध हुई थी।

उसके प्रचार प्रसार के लिये हिन्दुस्तानी तालीमी संघ की स्थापना भी गयी थी। आर्यनायकम् दम्पति ने इस क्षेत्र में जो कार्य किया वह कभी भुलाया नहीं जा सकता।

प्रस्तुत पुस्तक में लेखक ने अपने विचार बड़े विस्तार से उपस्थित किये हैं। राष्ट्रीय शिक्षा की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि से लेकर नई (बुनियादी) तालीम तक के विभिन्न विकासों को ब्योरेवार यहाँ प्रस्तुत किया गया है। राष्ट्रीय शिक्षा और नई तालीम के विभिन्न पहलुओं पर प्रकाश डाला गया है।

शिक्षा और विशेषतः राष्ट्रीय शिक्षा के सम्बन्ध में जिज्ञासा रखने वाले व्यक्तियों के लिये यह एक माननीय पुस्तक सिद्ध होगी।

•

मानवता की नवरचना

लेखक : पितिरिम ए सोरोकिन, अनुवादक—श्रीकृष्णदत्त भट्ट, प्रकाशक-उपर्युक्त पृष्ठ संख्या ३०४, मूल्य रु. २-५० न. पै.।

यद्यपि यह संसार अनेक भू भागों में बँटा हुआ है, प्रत्येक देश का मानव समाज अपनी भाषा, अपनी रहन-सहन, अपने धर्म, अपनी सामाजिक प्रथाओं के कारण भिन्न सा प्रतीत होता है, किन्तु यदि जरा-सी गहराई में जाया जाय, तो यह स्पष्ट हो जाता है कि सभी देश और सभी काल में मानव, मानव-स्वभाव और मानव की समस्याएँ एक सी ही हैं। मानव-मानव में कोई भेद नहीं है। इसलिये जो व्यक्ति जरा ऊँचा उठ कर सोचता है, उसके सामने केवल एक देश या एक समाज की समस्याएँ ही उपस्थित नहीं होतीं और न वह उनके समाधान की बात सोचता है। वह तो सम्पूर्ण मानव-समाज को एक इकाई मान कर चलता है और उसकी समस्याओं का स्थायी हल उपस्थित करना चाहता है। यही कारण है कि जो महान व्यक्ति हुए हैं या आज विद्यमान हैं वे समाज के प्रश्नों को बड़े व्यापक रूप में लेते हैं।

मानव समाज की गूढ़ समस्याओं को हल करने के लिये समय-समय पर विद्वानों ने उन समस्याओं को उलट-पुलट कर देखने का प्रयत्न किया है और किसी निर्णय पर पहुँचने का प्रयत्न किया है।

इन्हीं विचारकों में से एक है इस पुस्तक के लेखक डा० सोरोकिन। रूस के इस समाज शास्त्री ने जीवन का कौन कष्ट है, जो उठाया नहीं। क्रान्ति की गोद में वह पला, जेलों में उसका जीवन बीता, फाँसी लटकते-लटकते बचा, कम्युनिस्ट सरकार का कोपभाजन बन कर आज निर्वासित हुआ अमेरिका में जीवन बिता रहा है। उसका निश्चित मत है कि युद्ध और क्रान्तियाँ, राजनीति और कूटनीति विश्व को शान्ति प्रदान न कर सकेंगी। इस संसार को अगर शान्ति के दर्शन होंगे तो सत्य, प्रेम और करुणा के पुरातन मार्ग से ही।

डा० सोरोकिन के ये विचार भारतीय परम्परा के बहुत निकट आ जाते हैं। यही तो भगवान बुद्ध ने कहा था, आज के युग में महात्मा गान्धी ने कहा है। सर्व सेवा संघ के प्रयत्न से मूल पुस्तक का हिन्दी अनुवाद सुलभ हो रहा है। इस पुस्तक द्वारा यह सहज ही समझा जा सकेगा कि उन महान व्यक्तियों के, जो जाति, देश-काल से ऊपर उठ गये हैं—एक-से ही विचार हैं। इस प्रकार की पुस्तकों का जितना प्रचार होगा जनता की श्रद्धा सत्य, प्रेम और करुणा के प्रति बढ़ेगी।

इस सुन्दर पुस्तक का प्रकाशन बहुत ही सामयिक है। अनुवादक और प्रकाशक दोनों ही बधाई के पात्र हैं।

•

साहित्य का धर्म

लेखक—अनेक प्रकाशक : उपर्युक्त
पृष्ठ-संख्या ८०, मूल्य ५० नये पैसे।

श्री विनोबाजी अपनी पदयात्रा के सिलसिले में जिस जिस प्रदेश में पहुँचे, वहाँ के साहित्यकारों से मिलते रहे, उनसे चर्चा करते रहे। इन प्रसंगों का विवरण समाचार-पत्रों में निकलता रहा है। सर्व सेवा संघ ने इन साहित्यकार गोष्ठियों के प्रवचनों का संग्रह 'साहित्यिकों से' नामक पुस्तक में प्रकाशित किया है।

नवम्बर १९५९ में अमृतसर में एक अखिल भारतीय साहित्यकार परिषद बुलायी गई। विनोबाजी की उपस्थिति में यह साहित्यिक समारोह हुआ और इस अवसर पर विभिन्न प्रदेशों से आये हुए प्रसिद्ध साहित्यकारों ने अपने-अपने विचार सामने रखे।

प्रस्तुत पुस्तक में ऐसे लब्धप्रतिष्ठ १२ साहित्यकारों के विचारों को संग्रहीत किया गया है। आचार्य विनोबा ने 'साहित्य का धर्म' विषय पर अपने मननीय विचार रखे। इस पुस्तक का प्रथम लेख 'साहित्य का धर्म' ही है, और इसी का आधार लेकर पुस्तक का नाम 'साहित्य का धर्म' रखा गया है।

साहित्यकार का दायित्व बहुत ऊँचा होता है। साहित्यकारों की लेखनी में असीम शक्ति छिपी रहती है। समर्थ साहित्यकार युग को प्रभावित करते आये हैं इसलिये यह परम आवश्यक है कि साहित्य का धर्म क्या है, साहित्यकार का कर्तव्य क्या है, यह अच्छी तरह समझ लिया जाय।

प्रस्तुत पुस्तक में मनन करने योग्य लेख संग्रहीत हुए हैं। साहित्य और उसके उद्देश्य को समझने में यह पुस्तक बहुत दूर तक सहायक हो सकती है। गागर में सागर भर कर सर्व सेवा संघ ने एक सुन्दर उपयोगी पुस्तक का प्रकाशन किया है।

—रामेश्वर दयाल दुबे

['राष्ट्रभारती' वर्धा से]

•

मध्यप्रदेश का चौथा सर्वोदय-सम्मेलन

मध्य प्रदेश का चौथा प्रदेशीय सर्वोदय-सम्मेलन होशंगाबाद जिले की हरदा तहसील के कमताडा गाँव में अखिल भारत सर्व सेवा संघ के अध्यक्ष श्री नवकृष्ण चौधरी और महाराष्ट्र के प्रसिद्ध लोकसेवक श्री ठाकुरदास बंग की अध्यक्षता में ता० ११, १२, १३ और १४ जून को सम्पन्न हुआ। वैसे पूरे सम्मेलन की अध्यक्षता श्री नवबाबू ही करने वाले थे, किन्तु उन्हें विनोबाजी से मिलने के लिये अकस्मात असम जाना पड़ा और १३ जून के पहले कमताडा पहुँचना नामुमकिन था। मध्य प्रदेश के साथियों ने श्री ठाकुरदास बंग से प्रार्थना की कि तब तक के लिये वे सम्मेलन की अध्यक्षता करें।

कमताडा गाँव की आबादी करीब डेढ़ हजार की है। सम्मेलन के निमित्त सारी तैयारियाँ और व्यवस्था गाँव की ओर से श्री नारायण नाईक ने की। गाँववालों ने अपने श्रम से एक सुन्दर पंडाल बनाया और स्टेशन से ६ फर्लांग तक का रास्ता दुरुस्त किया। सारा गाँव साफ-सुथरा था, दीवारों पर रामायण की चौपाइयाँ एवं संतों के वचन लिखे थे।

११ जून की दोपहर को सबका स्वागत करते हुए होशंगाबाद जिले के लोकसेवक श्री हरिदास मंगुल ने बताया कि जिले में करीब ८ हजार एकड़ जमीन मिली है और दो ढाई हजार एकड़ जमीन प्राप्त हुई। सन् '५२ से '५७ तक जिले में काम चलता रहा। उसके बाद जो विराम आया, वह पिछले विनोबा की पदयात्रा से एक बार टूटा, किन्तु फिर भी विराम ज्यों का त्यों कायम है।

मध्यप्रदेश सर्वोदय-मंडल के मंत्री श्री दीपचन्द जैन ने कार्य-विवरण प्रस्तुत करते हुए बताया कि प्रदेश में भूदान की स्थिति इस तरह है :

प्राप्त जमीन एकड़ों में	३,९७,७१२
दाताओं की संख्या	५७,५९३
जिन ग्रामों से भूदान मिला	८,२७२
वितरित भूमि एकड़ों में	१,१२,९०८
आदाता-परिवार संख्या	३१,३६३
वितरण-अयोग्य भूमि	१,६०,०६७
वितरण के लिए शेष	१,२६,६९१
ग्रामदानी गाँव	१४०

सम्मेलन की अध्यक्षता करते हुए श्री ठाकुरदास बंग ने देश की परिस्थितियों का जिक्र करते हुए कहा कि आज की परिस्थितियाँ राष्ट्रीय एकता को चुनौती दे रही है। सम्प्रदायवाद अपने नये रूप में देश के सामने प्रश्न बन कर आया है। इधर योजनाओं के बावजूद गरीबों और बेकारों की हालत बिगड़ती गयी। ४० प्रतिशत आय बढ़ी, किन्तु ठीक से बँटी नहीं है। देश में नैतिकता का स्तर भी गिरता जा रहा है।

में नहीं सोचेंगे, तब तक इने-गिने लोग कुछ नहीं कर सकेंगे।"

अन्त में श्री बंग ने कार्यकर्ताओं से कहा कि यह भ्रम है कि अब भूदान में जमीन नहीं मिलेगी। पिछले साल बैतूल जिले में और इस साल वर्धा जिले में भूदान-प्राप्ति का सामूहिक अभियान हुआ। उसमें आशा से ज्यादा सफलता मिली है। अब समय आ गया है कि केवल कार्यकर्ताओं की पदयात्रा न हो, अपितु लोक-पदयात्रा हो, जिसमें दाता-आदाता और अन्य ग्रामीण लोग भी भाग लें। हमें गाँवों में गाँवों के स्तर पर काम करने वाले कार्यकर्ताओं को भी प्राप्त करना होगा। उनके लिये हम लोकसेवक की सब शर्तें न लागू करें। इस तरह अगर हम आयोजन करेंगे, तो लोकशक्ति जाग्रत होगी और हमारा काम सरल होगा।

सम्मेलन में मध्यप्रदेश के करीब ६० कार्यकर्ताओं ने भाग लिया और चार दिन तक खुले हृदय से गाँव के मुक्त वातावरण में आंदोलन के विभिन्न विषयों पर गहराई से विचार किया। कार्यकर्ताओं ने ७ टोलियों में बँट कर निम्न विषयों पर विचार किया :

(१) भूदान, वितरण और नई जमीन की प्राप्ति।

(२) ग्रामदानी गाँवों में निर्माण-कार्य।

(३) रचनात्मक संस्थाओं का समन्वय।

(४) शांति-सेना का प्रादेशिक संगठन—चम्बल घाटी की समस्या।

(५) अर्थसंग्रह अभियान।

(६) प्रादेशिक संगठन।

(७) इन्दौर का सर्वोदयनगर-अभियान।

१२ ता० की दोपहर को फिर कार्यकर्ता संयुक्त रूप से मिले और जिन मुद्दों पर चर्चा हुई, उन पर सामूहिक रूप से विचार किया गया। गाँव और आसपास के लोग भारी संख्या में आये थे, इसलिये श्री बनवारीलालजी चौधरी ने किसानों को खेती के संबन्ध में अपने अनुभव के अनु- भाषण अन्यत्र इसी अंक में दिया जा रहा है।)

उन्होंने वेदना प्रकट करते हुए कहा कि 'आखिर यह देश किसका है, वह कहाँ जा रहा है! अन्त में आपने लोकसेवकों के भाईचारे पर जोर दिया और कहा कि अब जमाना सामूहिक त्याग और पुरुषार्थ की अपेक्षा रखता है। १०-१५ लोक सेवक क्षेत्र में काम करते हुए भाईचारा कायम करें। अगर मिलजुल कर काम करते हैं, तो उसका असर समाज पर पड़ेगा। प्राथमिक सर्वोदय-मंडल भाईचारे का प्रयोग-केन्द्र हो सकता है।

१४ ता० को प्रातः सब टोलियों के निष्कर्ष सुनाये गये। सब कार्यकर्ता महसूस करते हैं कि कार्यकर्ताओं की शक्ति की मर्यादा को देखते हुए किसी विशेष काम में पूरी ताकत लगानी चाहिये। 'एक साधे सब सधे, सब साधे सब जाय।'

मध्य प्रदेश सर्वोदय-मंडल के अध्यक्ष श्री रामानंद दुबे प्रस्तावित निवेदन पर विचार करते हुए कहा कि हरेक आंदोलन में उतार-चढ़ाव आते हैं, हमें निराश नहीं होना है। आपने कार्यकर्ताओं से निवेदन किया कि अर्थ-संग्रह अभियान में पूरी शक्ति लगानी चाहिये। अन्त में श्री नवबाबू ने कहा कि हिन्दुस्तान के सामने दो मुख्य प्रश्न हैं—विकट वैषम्य का निराकरण और आन्तरिक शांति की स्थापना। इन प्रश्नों का हमें जनता की शक्ति जगा कर जवाब देना होगा। निरुपाधिक मानव बन कर जनता में जायेंगे, तो जनता बात सुनेगी।

श्री प्रज्ञानन्द, जो पिछले १० महीनों से मध्यप्रदेश में अकेले घूम-घूम कर साहित्य का प्रचार करते हैं, चार-पाँच दिन यहाँ रहे। वे सुबह शाम बच्चों को इकट्ठा करके सर्वोदय और भूदान के गीत सिखाते रहे। श्री प्रज्ञानन्दजी के कारण गाँव के बच्चों में भारी उत्साह उत्पन्न हुआ।

सम्मेलन में सर्व सेवा संघ की लोक नीति के प्रस्ताव व चम्बल घाटी की समस्या के बारे में परिसंवाद सर्वोदय मंडल आयोजित करें, यह निश्चय हुआ।

उडीसा प्रादेशिक सर्वोदय-सम्मेलन

उडीसा प्रादेशिक सर्वोदय-सम्मेलन १५-१६ मई को श्री वैद्यनाथप्रसाद चौधरी की अध्यक्षता में केउझर में सम्पन्न हुआ। सम्मेलन में करीब दो सौ से अधिक लोक सेवकों ने भाग लिया।

सम्मेलन ने सर्व सेवा संघ के चुनाव तथा पंचायती राज के संबंध में किये गये प्रस्तावों का स्वागत किया। पंचायतों के लिये सम्मेलन में और अधिक अधिकारों की माँग की गयी और मत प्रकट किया कि पंचायतों को राजनीति से अलग रखा जाय और चुनाव सर्वसम्मति से हो।

सम्मेलन ने भारत में भूमि समस्या को हल करने और भूमिहीनों की दशा सुधारने की वैधानिक तरीकों की असफलता की ओर ध्यान आकर्षित करते हुए कहा कि अगर भूदान आन्दोलन असफल होता है तो हिंसा के अलावा कोई मार्ग नहीं रह जायेगा। इस बात पर हर्ष प्रकट किया गया कि भूदान-प्राप्ति पर पुनः जोर दिया जा रहा है। जिला सर्वोदय-मंडलों को चाहिए कि भूदान प्राप्ति के लक्ष्यांक-पूर्ति में जोर लगावें और इस दृष्टि से जिले में विशेष क्षेत्र पर जोर दें।

सर्व सेवा संघ द्वारा १५ जून से ३१ जुलाई तक चलने वाले अर्थ-संग्रह अभियान में पूरी शक्ति लगायी जाय। कार्यकर्ताओं के प्रशिक्षण के लिये एक कार्यक्रम बनाया गया।

सर्वोदय-सम्मेलन के साथ उडीसा में आदिवासियों के बीच काम करने वाली संस्था नवजीवन मंडल का वार्षिक सम्मेलन श्री दादाभाई नाईक की अध्यक्षता में संपन्न हुआ। इस सम्मेलन में रचनात्मक कार्य में नया मोड़ लाने के लिये विचार किया और तय किया कि यथाशीघ्र नये मोड़ के कार्यक्रम पर अमल करना शुरू करें। इस सम्मेलन में सबसे ज्यादा जोर शराब-बन्दी पर दिया गया और कार्यकर्ताओं से अपेक्षा की गयी कि शराब-बंदी के अनुकूल वातावरण निर्माण किया जाय और शराब-बंदी के सिलसिले में जहाँ सीधी कार्रवाई की जाय, वहां मण्डल के कार्यकर्ता अपनी पूरी मदद दें।

उत्तर प्रदेश सरकार का एक खतरनाक प्रयोग

पिछले दिनों एक से अधिक बार इस तरह की खबरें प्रकाशित हुई हैं कि उत्तर प्रदेश की सरकार ने सुरक्षा की दृष्टि से गाँव-गाँव में लोगों को बारूदी हथियार बाँटना शुरू किया है। अभी हाल के एक ताजा समाचार के अनुसार प्रदेश-सरकार ने पुलिस सुपरिन्टेण्डन्टों को यह आदेश दिया है कि वे "उन गाँवों की सूचियाँ बनायें, जहाँ अभी किसी के पास बारूदी हथियार (फायर आर्म्स्) का लाइसेंस नहीं है और ऐसी जगहों की 'ग्राम-सुरक्षा समितियों' के 'जिम्मेदार सदस्यों' के लिये उदारता के साथ लाइसेंस दिये जाने की सिफारिश करें, जिससे हर गाँव में सुरक्षा-समितियों के सदस्यों में से कम-से-कम दो-तीन के पास बन्दूकें हो जायें।"

आज की व्यवस्था में 'सरकार' का मतलब पार्टी के शासन का होता है। विभिन्न पार्टियों में सत्ता के लिये होड़ लगी रहती है, और इसलिये शासक पार्टी के अलावा जो अन्य पार्टियाँ होती हैं, वे ऐसी योजनाओं को हमेशा शंका की नजर से देखती हैं। उन्हें डर रहता है कि इनका ज्यादातर फायदा शासक पार्टी के समर्थक लोगों को मिलेगा और इनका उपयोग उनके 'हाथ मजबूत' करने में किया जायगा। हम इस तरह किसी की नीयत पर अविश्वास करके इस प्रश्न का विचार नहीं कर रहे हैं। हम यह मान कर चल रहे हैं कि सरकार ने मुल्क में बढ़ती जा रही हिंसक कार्रवाइयों से लोगों की सुरक्षा के लिये ही यह योजना सोची है कि लोगों के पास हथियार रहेंगे तो वे मौका पड़ने पर तत्काल अपना बचाव कर सकेंगे। पर हम आज की परिस्थिति की थोड़ी-सी भी गहराई में जायँ तो देखेंगे कि सुरक्षा की यह योजना बहुत खतरनाक है।

इसमें कोई शक नहीं है कि आज मुल्क में हिंसा और अपराध की मनोवृत्ति बढ़ी है। जरा जरा-सी बात पर हत्या और खून-खराबी एक साधारण चीज हो गयी है। पर यह परिस्थिति इस कारण से पैदा नहीं हुई है कि जिन्हें हम साधारण तौर पर चोर-डाकू कहते हैं उनकी संख्या में या उनकी कार्रवाइयों में अचानक कोई वृद्धि हुई हो। अधिकांश में ऐसी घटनाएँ आज उन्हीं लोगों द्वारा आपस में एक-दूसरे के खिलाफ होती रहती हैं, जिन्हें हम 'शरीफ' या जिम्मेदार समझते हैं। एक तरफ तो सत्ता की होड़ और चुनावों की दलबंदी के कारण लोगों का परस्पर मनोमालिन्य और कटुता गाँव-गाँव तक पहुँच गयी है। दूसरी तरफ व्यापक भ्रष्टाचार के कारण न सिर्फ अनैतिक, असामाजिक और हिंसक कार्रवाइयों के जरिये धन कमा लेना और सत्ता-सुविधा पा लेना आसान हो गया है, बल्कि उन अपराधों के लिये कानून की गिरफ्त से और सजा से बच निकलना भी। नतीजा यह हुआ है कि पिछले दस बारह बरसों में आम तौर पर प्रजा का नैतिक स्तर गिरा है। उनमें लोभ, लालच, स्वार्थ आदि असामाजिक दुर्गुणों की वृद्धि हुई है और फलस्वरूप समाज में अनीति और अपराध बढ़े हैं।

ऐसी परिस्थिति में गाँव-गाँव में बाँटी जाने वाली बन्दूकों और हथियारों का उपयोग बचाव के लिये होगा या प्रजा में हिंसक कार्रवाइयों को और ज्यादा बढ़ावा देने में, यह समझने में ज्यादा मुश्किल नहीं होनी चाहिए। सरकार यानी शासन की संस्था का जन्म ही अमन चैन और सुरक्षा कायम करने और रखने के लिये हुआ है। यह उसका बुनियादी काम है। पर आज खाने कपड़े से लगा कर जन्म मरण तक के दुनिया के और कामों में दखल देना तो सरकार अपना फर्ज मानती है, लेकिन जो उसका अपना मूलभूत कर्तव्य समाज में सुरक्षा कायम रखने का है, उसी काम को वह लोगों पर छोड़ना चाहती है। मनुष्य की सभ्यता में विकास का यह क्रम रहा है कि नागरिकों के आपसी झगड़ों का निपटारा जो पहले नागरिक स्वयं बलप्रयोग से कर लेते थे वह काम अदालत और सरकार को सौंपा गया। झगड़े निपटाने या सुरक्षा आदि के लिये बलप्रयोग करना ही है तो वह वाकत प्राइवेट नागरिक के हाथ में न रह कर समाज के हाथ में रहे, यह हिंसा से अहिंसा की ओर—असभ्यता और 'जंगल के कानून' से सभ्यता की ओर एक स्वाभाविक कदम था। आज दुनिया के विचारकों और दूरदर्शी लोगों का मानस इससे भी आगे जा रहा है। अब यह सोचा जा रहा है कि संगठित हिंसा की ताकत यानी फौज, पुलिस आदि देश-देश की अलग सरकारों के हाथ में भी न रहे, बल्कि 'संयुक्त राष्ट्र' जैसी तमाम दुनिया की किसी संगठित संस्था के पास रहे। और यह राय किन्हीं 'स्वप्नदर्शी' कहे जाने वाले शान्तिवादियों की नहीं है, बल्कि जिनने वर्षों तक ब्रिटिश साम्राज्य की बागडोर सम्हाली ऐसे राजनीतिज्ञ की है। अभी १० जून को लंदन की एक सभा में इंग्लैंड के भूतपूर्व प्रधान मंत्री लॉर्ड एटली ने कहा कि "दुनिया के तमाम मुल्कों को आगे चल कर हथियार रखने और युद्ध छेड़ने का अधिकार छोड़ना पड़ेगा। इंग्लैंड में नागरिकों ने हथियार रखने का अपना अधिकार छोड़ दिया है। उसी तरह दुनिया के हर देश को भी हथियार रखने और लड़ाई करने का अधिकार छोड़ना पड़ेगा (और दुनिया के सदर्भ में देशों को) वही रास्ता अपनाना पड़ेगा, जो देश के संदर्भ में हम सब नागरिकों ने अपनाया है यानी अपने झगड़ों का फैसला कानून के सुपुर्द करना।" इस प्रकार दुनिया का सारा विकास तब व्यक्तिगत बलप्रयोग को छोड़ कर सामूहिक रक्षण, और बलप्रयोग अनिवार्य ही हो तो वह कानून के अन्तर्गत हो, इस ओर रहा है। इसी में अन्ततोगत्वा सामाजिक सुरक्षा है।

अतः उत्तर प्रदेश सरकार की गाँव-गाँव में नागरिकों को हथियार बाँटने की योजना इस दृष्टि से तो पीछे ले जाने वाला एक कदम है ही, पर मुल्क की मौजूदा परिस्थिति में, जब कि 'जिम्मेदार' और 'भले' कहलाने वाले नागरिक भी जरा-जरा-सी बात में हिंसक कार्रवाइयों का सहारा लेते हैं, जब कि आये दिन राजनैतिक दल-बंदी, चुनाव के झगड़ों आदि को लेकर हत्याएँ होने लगी हैं, जब कि शिक्षण-संस्थाओं के जैसे पवित्र वातावरण में भी गुंडागर्दी प्रवेश कर गयी है, जब कि सार्वजनिक जीवन में एक-दूसरे के प्रतिद्वन्द्वी अपना 'रास्ता साफ करने के लिए' योजनापूर्वक गुंडों का उपयोग करते हैं, निश्चय ही एक बड़ा खतरनाक और मुल्क को अराजकता की ओर ढकेलने वाला कदम है। क्या हम आशा करें कि उत्तर प्रदेश की सरकार अपनी योजना पर फिर से गंभीरतापूर्वक विचार करेगी ?

—सिद्धराज ढड्ढा

ठीक से चलेंगे। इस कार्य के लिये श्री शकुन्तला चौधरी के मार्गदर्शन में एक सर्वोदय-पात्र समिति कार्य करेगी।

इस साल के सर्वोदय कार्य के लिये छह लाख रुपये की निधि संग्रहीत करने का तय हुआ। एक कार्यवाहक समिति उसके विनियोग के बारे में विनोबाजी से चर्चा करके आवश्यक कार्य करेगी।

सर्व सेवा संघ के १५ जून से ३१ जुलाई तक चलने वाले अर्थ-संग्रह अभियान के अनुसार असम प्रदेश से अर्थ-संग्रह करने के लिये एक समिति बनायी गयी। हरएक लोकसेवक, शान्ति-सैनिक, प्राथमिक और महकमा सर्वोदय मंडल के कार्यकर्ता घर घर पहुँच कर सर्वोदय विचार समझा कर लोगों से दान प्राप्त करेंगे।

असम सर्वोदय मंडल के सभानेत्री पद से कार्याधिक्य के कारण श्री अमलप्रभा दास मुक्त हुईं और सर्वसम्मति से श्री रत्नेश्वर भूयाँ नये सभापति चुने गये। १५ सदस्यों की नई कार्यकारिणी बनी। श्री रवीकान्त सन्दिकै और श्री शरत् काकती सहमंत्री चुने गये।

विंध्य क्षेत्रीय सर्वोदय-सम्मेलन

मध्य प्रदेश के विंध्य क्षेत्रीय सर्वोदय सम्मेलन का २० व २१ मई को दिल्ला ग्राम, टीकमगढ़ जिले में हुआ। इसकी अध्यक्षता प्रांतीय सर्वोदय-मंडल के अध्यक्ष श्री रामानन्द दुबे ने की।

सम्मेलन में उपस्थित छतरपुर, दतिया, रीवा, टीकमगढ़ एवं पन्ना जिलों के लोक-सेवकों ने रीवाँ संभाग को क्षेत्रीय कार्यक्षेत्र मान कर जिलों के सर्व सेवा संघ के प्रतिनिधि, जिला सर्वोदय मंडल के संयोजक, मध्य प्रदेश सर्वोदय-मंडल के क्षेत्र के सदस्य तथा क्षेत्रीय रचनात्मक संस्थाओं—विन्ध्य प्रदेश आदिम जाति सेवक संघ, विन्ध्य प्रदेश भूदान यज्ञ बोर्ड, ग्राम सेवा समिति रायपुर, मध्य भारत खादी-संघ, लश्कर (ग्वालियर), गांधी स्मारक निधि तथा हरिजन सेवक संघ—के प्रतिनिधियों का "विन्ध्य क्षेत्रीय सर्वोदय मंडल" निर्माण कर श्री दामोदर प्रसाद पुरोहित को सर्व-सम्मति से संयोजक नियुक्त किया। क्षेत्रीय मंडल का कार्यालय फिलहाल गांधी स्मारक भवन छतरपुर (म. प्र.) रहेगा।

सम्मेलन के कुछ महत्त्वपूर्ण प्रस्ताव नीचे दिये जा रहे हैं :

(१) क्षेत्र में प्राप्त सम्पूर्ण भूमि का वितरण आगामी सर्वोदय-सम्मेलन तक पूरा किया जाय।

(२) भूदान की गति धीमी और शिथिल पड़ गयी है, अतः संकल्प करके भूप्राप्ति करना है। मालकियत विसर्जन के विचार प्रचार में जोर लगाना चाहिए।

(३) पुराने भूदान-पत्रों के प्रमाणीकरण के लिए भूदान-बोर्ड के मंत्री, संभाग के कमिश्नर, कलेक्टर एवं तहसीलदारों को भूदान एक्ट के महत्त्व को समझाने का प्रयास करें, ताकि कानूनगो और पटवारी तस्दीक का काम जल्दी और उत्साह से कर सकें।

(४) भूदान कृषकों को तकावी मिल सके, इस विषय में राजस्व मंत्री को प्रादेशिक मंडल द्वारा उनके दिये हुए आश्वासनों का स्मरण कराया जाय।

(५) लोक शिक्षण के लिए सर्वोदय-सम्मेलन के अवसर पर सर्व सेवा संघ की आगामी चुनाव के बारे में घोषित नीति की जानकारी कार्यकर्ताओं में तथा आम जनता में करायी जाय।

(६) जिलों में पदयात्राएँ आयोजित हों, जिससे जिले के कार्यकर्ता एकाकीपन अनुभव न करें।

शराबबंदी के लिये मलयपुर में 'उपवास-यज्ञ'

बिहार सरकार से संपूर्ण मद्यनिषेध के लिये अवधि मुकर्रर करने की प्रार्थना

मलयपुर (मुंगेर) में पिछले चार महीनों से वहाँ की शराब की दुकान पर श्री रमावल्लभ चतुर्वेदी करीब-करीब एकाकी पिकेटिंग कर रहे हैं। बीच-बीच में मित्र आकर इस काम में हाथ बटाते रहे हैं। कुछ दिन पहले सथाल परगना के निष्ठावान सेवक श्री मोतीलाल केजरीवाल और बिहार सरकार के भूतपूर्व मन्त्री श्री जगलाल चौधरी भी आये थे। उन्होंने शराबबन्दी पर जोर देते हुए पिकेटिंग के काम को और भी सघन करने की सलाह दी और स्वयं भी पिकेटिंग में शरीक हुए।

पिछले सप्ताह बिहार के राजस्व-मंत्री श्री जानकी रमण मिश्र से जमुई में चतुर्वेदीजी ने इस विषय में बातचीत की और यह स्पष्ट किया कि जब भारतीय संविधान, भारत सरकार, कांग्रेस संस्था और प्रादेशिक सरकार, सब सम्पूर्ण मद्य निषेध के लिये वचन-बद्ध हैं, तो बिहार राज्य में भी शराबबंदी हो जानी चाहिए। पर तुरन्त यह काम पूरा करने में सरकार को कोई दिक्कत हो तो कम-से-कम वह इतना करे कि इस काम के लिये एक अवधि तय कर दे कि अमुक तिथि तक राज्य भर में पूरी शराबबन्दी हो जायगी। इस काम को पूरा करने के लिये जितना समय वह लेना उचित और आवश्यक माने-दो, चार, पाँच बरस-वह ले ले और उस अवधि में काम पूरा हो जाय, इसकी अपनी योजना और कार्यक्रम बना ले। पूरी शराबबन्दी के अपने इरादे के सबूत के तौर पर मलयपुर की कलाली (शराब की दुकान) तुरत बन्द कर दे।

यह सोचा जा रहा है कि मलयपुर में ५-५ दिन की बारी से ५१ दिन का एक 'उपवास-यज्ञ' चलाया जाय। इस उपवास-शृङ्खला का उद्देश्य सिर्फ इस प्रश्न के महत्व की ओर ध्यान आकृष्ट करने का है, प्राण संकट में डाल कर दूसरों को परेशान करने का नहीं है। अतः उपवास चिकित्सकों की देखरेख में होंगे और किसी भी समय उनकी सलाह अनुकूल उपवास तोड़ने की हुई तो वैसा किया जायगा।

श्री नवबाबू काशी में

श्री नवकृष्ण चौधरी मध्य प्रदेश सर्वोदय-सम्मेलन में भाग लेकर १५ से १७ जून तक चार दिन काशी में रहे। १५ और १६ को संपादन-समिति की बैठक में भाग लिया और १८ को सुबह करीब ४ घन्टे काशी में विभिन्न स्थानों में रहने वाले सर्व सेवा संघ के प्रधान केन्द्र, प्रकाशन के कार्यकर्ताओं के परिवारों में गये। १८ की शाम को कटक के लिये विदा हो गये

सम्पादन-मंडल की बैठक

अखिल भारत सर्व सेवा संघ की प्रबन्ध समिति द्वारा नियुक्त सम्पादन-मंडल की बैठक काशी में १५-१६ जून को श्री दादा धर्माधिकारी की अध्यक्षता में हुई। बैठक में सर्व सेवा संघ के अध्यक्ष श्री नवकृष्ण चौधरी भी उपस्थित थे। बैठक में निश्चय किया गया कि देश में सर्वोदय-विचार के प्रसार की दृष्टि से विविध वर्गों के लिये उपयोगी साहित्य-निर्माण के लिए हर प्रांत में साहित्यिकों के सहयोग से बैठकें बुलायी जाय और आगे हर प्रदेश में सलाहकार-समितियाँ बनायी जायँ। संपादन-मंडल में पाँच सदस्यों को और शामिल करने का भी तय किया।

ग्राम-निर्माण मण्डल, सोखोदेवरा

की अभी हाल की बैठक में श्री श्याम सुन्दर प्रसाद मण्डल के अध्यक्ष और डा० रविशंकर शर्मा (कपनिया कुष्ठ-आश्रम) मंत्री निर्वाचित हुए।

विनोबाजी का पता :
मार्फत : ग्राम-निर्माण कार्यालय
पो० नार्थ लखीमपुर (आसाम)

शान्ति-सैनिकों एवं सहायकों की प्रदेशवार संख्या

अखिल भारत सर्व सेवा संघ के तत्वावधान में चल रहे 'अखिल भारत शांति-सेना मंडल' काशी के कार्यालय से २५ मई '६१ तक रजिस्टर में दर्ज शांति-सैनिक व शांति-सहायकों की संख्या इस प्रकार है।

क्रम	प्रदेश	शान्ति-सैनिक	स्थानिक शान्ति सैनिक	कुल	शान्ति-सहायक
१	आसाम	४१	२	४३	—
२	आन्ध्र	१२१	५	१२६	—
३	उत्कल	१२६	१	१२७	—
४	उत्तर प्रदेश	३५५	९	३६४	२४
५	केरल	८	—	८	—
६	तामिलनाड	३१	—	३१	१
७	दिल्ली	२६	—	२६	४०
८	पंजाब	१९	—	१९	—
९	बिहार	७४७	५	७५२	७३
१०	महाराष्ट्र	१७७	७	१८४	१०
११	गुजरात	१५१	२	१५३	—
१२	बंगाल	६०	१	६१	५
१३	मध्य प्रदेश	३३	४	३०	१
१४	मैसूर	७३	—	७३	२
१५	राजस्थान	२०९	—	२०९	—
१६	हिमाचल प्रदेश	२	३	५	१
१७	जम्मू-कश्मीर	३	—	३	—
१८	नेपाल	१	—	१	—
	कुल	२१८३	३९	२२२२	१५७

विनोबा-पदयात्रा-समाचार

विनोबाजी ने ता० १२ मई को आसाम के उत्तर लखीमपुर जिले में प्रवेश किया था। इस जिले में भूदान, ग्रामदान-विचार का अच्छा स्वागत हो रहा है। अब तक ३१ ग्रामदान विनोबाजी के आने के बाद हो चुके हैं। अब बाबा जिस अंचल में पदयात्रा कर रहे हैं, उसमें ४२ गाँव हैं। ऐसी संभावना है कि यहाँ काफी संख्या में ग्रामदान हों।

इधर विनोबाजी ने अपने पदयात्री दल का फिर संकोच किया है। कुसुम महादेवीबाई, जयदेवभाई और बालभाई आदि तीन-चार व्यक्तियों को छोड़ कर यात्री दल के अन्य सब भाई-बहनों को उन्होंने उत्तर लखीमपुर जिले में जगह-जगह फैला कर लोगों में काम करने के लिए भेज दिया है।

विनोबा के प्रवचन

पहले जिस तरह विनोबाजी के रोज के प्रवचनों के रिपोर्टिंग की व्यवस्था थी, वह तो एक वर्ष से भी अधिक हुआ, श्री विनोबाजी की इच्छा से बन्द हो ही गयी थी। बीच बीच में श्री कुसुम देशपाण्डे सप्ताह में एक-दो महत्व के प्रवचन भेजती रहती थीं, जो "भूदान-यज्ञ" के जरिये हम कार्यकर्ताओं तथा पाठकों तक पहुँचाते थे। अब पदयात्री-दल के और अधिक संक्षिप्त कर दिये जाने के कारण यह व्यवस्था भी नहीं रही है। फिर भी हम आने-जाने वाले साथियों से प्राप्त विनोबा के प्रवचन आदि प्राप्त करने की और भूदान-पत्रिकाओं के जरिये पाठकों तक विनोबा के विचार पहुँचाते रहने की कोशिश करेंगे।

—सम्पादक

उत्तर प्रदेशीय भंगी-मुक्ति शिविर

श्री अप्पासाहब पटवर्धन तथा श्री कृष्णदास शाह के मार्गदर्शन में २१ जून से १० जुलाई तक सेवापुरी (उत्तर प्रदेश) में भंगी-मुक्ति शिविर का आयोजन हो रहा है। इसमें उत्तर प्रदेश गांधी निधि के लगभग ५० ग्रामसेवक तथा १० अन्य निष्ठावान कार्यकर्ता गांधी आश्रम तथा काशी नगर महापालिका की ओर से शामिल होंगे। इसके अलावा स्वास्थ्य विभाग के विशेष अधिकारियों को भी सम्मिलित करने की योजना है।

इस अंक में

श्रीकृष्णदत्त भट्ट, अ० भा० सर्व सेवा संघ द्वारा भार्गव भूषण प्रेस, वाराणसी में मुद्रित और प्रकाशित। पता : राजघाट, वाराणसी-१, फोन नं० ४३९१
वार्षिक मूल्य ६) पिछले अंक की छपी प्रतियाँ ९,७१० : इस अंक की छपी प्रतियाँ ९,४०० एक अंक : १२ नये पैसे

संपादक : सिद्धराज ढड्ढा

वाराणसी : शुक्रवार ३० जून '६१ वर्ष ७ : अंक ३९

विविधता समृद्धि का प्रतीक है

विनोबा

जब से असम में मेरा प्रवेश हुआ है, बहुत सारा चिंतन असम के बारे में चलता है। नक्शा देखता हूँ, भाषा सीखता हूँ, साहित्य का अध्ययन कर रहा हूँ, लोगों से बातें करता हूँ और मन में सोचता रहता हूँ। इस असम प्रदेश की सृष्टि में बहुविधता है। यहाँ एक बहुत बड़ी नदी बहती है। दूसरी असंख्य नदियाँ दोनों ओर से उसमें शामिल होती हैं। दक्षिण में भी पहाड़ है, उत्तर में भी पहाड़ है। सृष्टि में जितनी विविधता हो सकती है, उतनी है और उतनी ही विविधता मानव-समाज में है।

डेढ़ साल पहले हम कश्मीर में यात्रा कर रहे थे। वहाँ बहुत बार पहाड़ चढ़ने का मौका मिला था और बहुत घने जंगल से जाना हुआ। एक 'फारेस्टर' हमें मिले। वे हमें वन दिखा समझा रहे थे। उन्होंने कहा, जिस जंगल में अनेकविध पेड़ होते हैं, वह जंगल बहुत पनपता है। एक ही प्रकार के वृक्षवाला जंगल हो तो वह पनपता नहीं, समृद्ध नहीं होता। और यह चीज हमने वहाँ देखी। जिस जंगल में तरह तरह के वृक्ष थे, वह जंगल बहुत घना था, विशाल था और जिसमें एक ही प्रकार के वृक्ष थे, वह बहुत घना नहीं था। उसमें वृक्षों का वर्धन अच्छा नहीं हुआ था। विविध वृक्ष जहाँ होते हैं, वहाँ अच्छा वर्धन होता है। तो जब हमने यह सुना, फौरन हमने वहाँ कहा कि

हमारा भारतवर्ष भी ऐसा ही विविध वृक्षों का बना है। असंख्य धर्म, जाति और पंथ यहाँ हैं, इसीलिए भारत फला-फूला है और आगे भी फलेगा, फूलेगा। उसका स्मरण भी हमें असम में होता है। जिस प्रकार की विविधता भारत में है, उसी तरह की विविधता असम में भी है।

आप जानते हैं, यहाँ अनेक भाषा के लोग हैं। असमी और बंगाली ज्यादा तादाद में हैं ही, बाहर के भी अनेक भाषावाले लोग हैं। इनके अलावा हिन्दुस्तान भर के अनेक प्रकार के लोग व्यापार और मजदूरी के लिए आते हैं। हिन्दू, मुसलमान और ईसाई भी यहाँ बहुत हैं। इस तरह विविध धर्म, भाषा और जाति भी यहाँ हैं। हमें लगा कि असम बहुत ही भव्य प्रदेश बनेगा और उसका बहुत वर्धन होगा।

लेकिन अनेक वृक्ष जहाँ होते हैं, वहाँ जंगल में तो स्वाभाविकता होती है। वह स्वाभाविकता समाज में होनी चाहिए।

लोगों में परस्पर प्रेम होना चाहिए। जो विविधता देश में है, उतनी विविधता इस प्रदेश में है। उतनी ही सब जाति, धर्म और भाषा यहाँ हैं, लेकिन इन सबका लाभ लेने की अकल होनी चाहिए। अगर वह अकल न हो, तो उस विविधता से कम्पन भी हो सकता है।

हमने एक दफा नहीं, बहुत दफा कहा है कि

प्रेम विद्युत शक्ति है। घर में बिजली आ चुकी है, लेकिन बटन दबाना नहीं जानते हैं। प्रेम है बिजली और विश्वास है बटन, जिससे प्रेम की शक्ति प्रकट होती है। प्रेम तो सर्वत्र दुनिया में भरा होता है, लेकिन दुनिया में विश्वास की कमी होती है। जहाँ विश्वास की कमी होती है, वहाँ प्रेम की शक्ति होते हुए भी काम में नहीं आती।

इसलिए असम में यह काम करना होगा कि परस्पर विश्वास हो। उस विश्वास शक्ति से प्रेम का नल खुलेगा। अन्योन्य विश्वास पैदा करने के लिए हमने सादा-सा उपाय बताया है। हमने कहा है कि ग्राम का पूरा परिवार बनाओ। यह असम के लिए तो बहुत ही सरल है, क्योंकि पाँच प्रतिशत लोग शहरों में रहते हैं और पचानवे प्रतिशत गाँव में रहते हैं और मुश्किल से एक करोड़ लोग हैं, उनके चौबीस हजार गाँव हैं। इसलिए बहुत ज्यादा लोग छोटे-छोटे गाँवों में रहते हैं। छोटे-छोटे गाँव का एक परिवार बनाना सरल काम है। उसके लिए इतना ही करना होगा कि भूमिहीनों को अपने परिवार में दाखिल करना होगा। उनको अपनी भूमि का थोड़ा हिस्सा देना होगा।

इस साल से हम यह समझा रहे हैं। बंगाल में देखा, वहाँ लोग दान देने के लिए तैयार हैं। छः साल पहले वह हवा हमने बंगाल में नहीं देखी थी। इस वक्त बहुत उत्सुकता हमने लोगों में देखी। भूदान का विचार सुनने की उत्सुकता है और उस उत्सुकता से बंगाल के कार्यकर्ताओं को बड़ा उत्साह मालूम हुआ। वहाँ तो जमीन का 'सीलिंग' बन गया है। पच्चीस एकड़ से ज्यादा जमीन लोग नहीं रख सकते हैं। उसके ऊपर वाली सब जमीन सरकार ले रही है। जलपाईगुड़ी में देखा, हजारों एकड़ जमीन सरकार के पास गयी है, फिर भी लोगों ने काफी दान दे दिया 'सीलिंग' के बावजूद। यह जो अनुभव बंगाल में आया, वही असम में आ रहा है। लोग प्रेम से सुनते हैं, उसका हमारे दिल पर परिणाम होता है।

हमने यहाँ के कार्यकर्ताओं से कहा है कि जो जमीन मिलेगी, वह फौरन बाँट देनी चाहिए। दूसरी बात यह है कि हम अच्छी जमीन का हिस्सा लेते हैं और वितरण की जिम्मेवारी दाताओं पर डालते हैं, ताकि जल्द-से-जल्द वितरण हो। इसलिए पहले जो जमीन मिली है, वह तो बाकी पड़ी है। हमने कहा है कि हमारी यात्रा में उसका भी वितरण होना चाहिए। हम आशा करते हैं कि गाँव में परिवार मिल-जुल कर काम करेंगे और गाँव की शक्ति बढ़ायेंगे। हिंदुस्तान के लोग खूब समझते हैं कि हम दुनिया में ज्यादा दिन नहीं रहना है। चंद दिनों के लिए दुनिया में रहना है, इसलिए हवा, पानी और सूरज की रोशनी जैसे सबको मिलती है, वैसे जमीन भी सबको मिलनी चाहिए। असमवाले भी यह बात समझेंगे, इसमें शंका नहीं है। हम दुनिया छोड़ कर जायेंगे तो जमीन, पैसा या मकान साथ नहीं जायेगा, बल्कि यह देह भी छोड़ कर जाना पड़ेगा। ये बातें दुनिया भर के सब लोग जानते हैं, लेकिन हिन्दुस्तान के लोगों के दिल में यह बात पैठी है कि यह दुनिया क्षणिक है। इसलिए जितना प्रेम हासिल कर सकते हैं उतना करो, क्योंकि यह प्रेम ही लेकर जाना है। यही काम हम करते रहेंगे। हम देख रहे हैं कि यह काम यहाँ होगा। असम में काम की पूर्णाहुति होगी। इसके आगे भारत का कोई प्रदेश बाकी नहीं रहा है। इसलिए कार्य भी यहाँ समाप्त होना चाहिए। कार्यकर्ताओं को मैं कहता हूँ कि कमर कसो, भूदान प्रेम से माँगो।

[गोआलपाड़ा : ७ मार्च '६१]

यह हरिकीर्तन वाला देश है

मीर जुमला ने दिल्ली से हुक्म दिया था कि असम पर हमला करो। जिस सरदार को यह हुक्म मिला, उसने मीर जुमला को यह जवाब दिया कि "अरे, यह तो हरिकीर्तन वाला प्रदेश है। उस पर हमला करके क्या उसे जीतोगे? तिसपर भी तुम्हारी इच्छा हो, तो तुम हमला करो।"

चौदह बार दिल्ली से असम पर हमला हुआ, लेकिन लोगों ने हार नहीं खायी। आखिर आज भारत ने प्रेम से असम को जीता है और भारत और असम एक हो गये हैं। दिल्ली में लोगों का राज्य है, किसी राजा-महाराजा का नहीं। भारत का असम एक हिस्सा है। यह हरिकीर्तनवाला प्रदेश है। उसे प्रेम से ही जीत सकते हैं। हरिकीर्तन में संतों ने यही समझा दिया है कि दुनिया में थोड़े दिन रहना है, इसलिये जितनी जमीन दे सकते हैं, दीजिये। वाक बाबू ने अपनी रिपोर्ट में लिखा है कि असम में चोरी नहीं होती थी, ताले नहीं लगते थे, लेकिन अब देखना होगा कि कितने ताले यहाँ लगते हैं। यहाँ चोरी क्यों नहीं होती थी? इसलिए कि यह हरिकीर्तन का प्रदेश है और दुनिया में चंद दिन रहना है, यह यहाँ के लोग जानते हैं।

महाराष्ट्र के राजनीतिक पक्षों द्वारा सर्वसम्मत आचार-संहिता

[अखिल भारत सर्व सेवा संघ ने एक प्रस्ताव द्वारा सितम्बर १९५९ में अपने पठानकोट-अधिवेशन में देश के सब राजनीतिक पक्षों से निवेदन किया था कि न केवल चुनावों के सम्बन्ध में, अपितु अपने राजनीतिक उद्देश्यों के लिये एक संयुक्त 'आचार-संहिता' मिल कर बनायें। इस सम्बन्ध में सर्व सेवा संघ ने कुछ ठोस सुझाव भी दिये थे।

आगामी आम चुनाव सन्निकट हैं, इसलिये इस विषय पर विचार करना अत्यंत आवश्यक है। खुशी की बात है कि पूना की गोखले अर्थशास्त्र संस्था और समाज प्रबोधन संस्था के तत्वावधान में पूना जिले के भाटघर में ता० २३-२४ मई '६१ को राजनीतिक पक्षों के लिये आचार-संहिता पर प्रसिद्ध अर्थशास्त्री श्री धनंजयराव गाडगिल की अध्यक्षता में एक परिसंवाद हुआ। प्रमुख राजनीतिक पक्ष और स्थानीय पक्षों को आमन्त्रित किया गया। प्रसन्नता का विषय है कि महाराष्ट्र के मुख्य मन्त्री सहित सभी प्रमुख राजनीतिक पक्षों के नेताओं ने न केवल परिसंवाद में भाग लिया, अपितु वे एक संयुक्त आचार-संहिता के लिये सहमत हो गये, जिसे वे महाराष्ट्र के राजनीतिक जीवन में लागू करना चाहते हैं।

यहाँ हम परिसंवाद में स्वीकृत सर्वसम्मत निवेदन दे रहे हैं और अन्य प्रदेशों के राजनीतिक पक्षों से भी अपेक्षा करते हैं कि वे महाराष्ट्र के इस प्रयास का अनुकरण कर, अपने-अपने प्रदेशों के लिये सर्वसम्मत आचार-संहिता बनायेंगे और उसको अमल में लाने का प्रयास करेंगे। हम इसे लोकनीति की दिशा में बढ़ता हुआ एक सही कदम मानते हैं। —सम्पादक]

ता० २३-२४ मई, इन दो दिनों में परिसंवाद में नीचे दिये विषयों पर कुल ग्यारह घंटे चर्चा हुई।

(१) क्या राजनीतिक पक्षों के लिए आचार-संहिता होनी चाहिये? उसका स्वरूप, मर्यादा वगैरा क्या हो?

(२) स्थानीय स्वराज्य-संस्थाओं के बारे में पक्षों का व्यवहार।

(३) चुनाव के बारे में पक्षों का व्यवहार।

सर्वसम्मत निवेदन

यहाँ उपस्थित हम सबको भारत के संविधान में निर्देशित ध्येय और मार्गदर्शक तत्व मान्य हैं। इन ध्येय और तत्व का प्रत्यक्ष व्यावहारिक स्वरूप क्या हो, इसके बारे में राजनीतिक पक्षों में एकराय नहीं है। लेकिन इन ध्येय और तत्वों पर अमल करने के लिए जो सामाजिक परिवर्तन करना है, वह लोकशाही और शांति के मार्ग से ही कराना चाहिए, यह बात सबको मंजूर है। इसलिए हमें महसूस होता है कि लोकशाही राज्यपद्धति को दृढ़ करने के लिए और सार्वजनिक जीवन का प्रवाह विशुद्ध करने के लिए राजनीतिक पक्षों को एक आचार-संहिता मान्य करनी चाहिए, और उस दृष्टि से हम नीचे दिये मुद्दे मान्य कर रहे हैं।

(१) राजनीतिक प्रचार के प्रवाह में दूसरे पक्षों की टीका टिप्पणी करनी हो तो उनके नीति-नियम और कार्यक्रम पर प्रमुखता से विचार करना चाहिए। उसी तरह दूसरे पक्षों के नेताओं या कार्यकर्ताओं की टीका-टिप्पणी करते समय कार्यकर्ताओं के सार्वजनिक जीवन से संबंध न रखने वाले व्यक्तिगत मामले में असत्य या मिथ्या प्रचार नहीं करना चाहिए।

(२) ऐसी कोई बात न की जाय, जिससे जाति-जाति में या धर्म धर्म में द्वेष पैदा हो या उनमें कटुता बढ़े।

(३) राजनीतिक पक्षों को चाहिए कि अन्य पक्षों की सभायें, जुलूस आदि कार्यक्रमों में बाधा पैदा न करें या दंगा करके उनको अस्त-व्यस्त न करें।

(४) सत्ताधारी पक्षों को चाहिए कि कानून या सुव्यवस्था को बनाये रखने के लिए कार्रवाई करते समय नागरिकों के हक अबाधित रखने में सतर्कता रखें और अन्य पक्षों के कार्यकर्ता अथवा अन्य पक्षों की कार्रवाइयाँ कुंठित हों, ऐसे उपाय अमल में न लाये जायें।

(५) किसी भी स्तर की राजनीतिक सत्ता का उपयोग अपने पक्ष वालों के स्वार्थ या अन्य पक्षों को हानि पहुँचाने के लिए न करें।

(६) सहकारी संस्थाओं में सत्ताधारी या प्रभावशाली पक्षों को चाहिये कि उन संस्थाओं में निहित अपनी सत्ता का उपयोग अपने पक्ष वालों के स्वार्थ के लिए न करें और अन्य पक्षों के सदस्यों के बारे में पक्षपात न करें।

(७) इस राज्य के सत्तारूढ़ पक्ष को चाहिये कि स्वपक्ष वालों के हाथ में होने वाली स्थानीय स्वराज्य-संस्थाओं को और अन्य पक्षों के हाथ में होने वाली वैसी ही संस्थाओं को सब विषयों में—जैसे अनुदान देना, योजनाओं को मंजूरी देना, या बरखास्त करना आदि—समान व्यवहार करें। उसी तरह राज्य-सरकार से उचित सहकार करने की जिम्मेवारी सभी स्थानीय स्वराज्य-संस्थाओं पर है।

(८) स्थानीय स्वराज्य-संस्थाओं का कारोबार चलाने वाली कार्यकारिणी और अन्य समितियों में सब पक्षों को उनके प्रतिनिधियों की संख्या के अनुपात में स्थान देना चाहिए।

(९) स्थानीय स्वराज्य-संस्थाओं की प्राथमिक जिम्मेवारी अपने क्षेत्र का कारोबार कार्यक्षमता से चलाने की है, इसका खयाल रख कर किसी भी समस्या पर चर्चा करने का उनका अधिकार होने पर भी उसके बारे में विवेक रखना चाहिए, विशेषतः तुरंत करने के काम समय पर शीघ्र हों, इसके बारे में सतर्कता रखें।

(१०) किसी व्यक्ति को एक पक्ष द्वारा 'टिकट' के लिए इन्कार करने पर उस व्यक्ति को दूसरा पक्ष, उसी चुनाव में अपना 'टिकट' न दे।

(११) सन् १९६२ के चुनाव के बाद एक पक्ष के 'टिकट' पर चुने गये व्यक्ति को बिना अपनी जगह का त्यागपत्र दिये, दूसरे पक्ष को चाहिए कि उसे अपने पक्ष में प्रवेश न दे।

* * * *

इस परिसंवाद में पर्गीकृत जातियों के सुरक्षित जगहों के बारे में भी चर्चा हुई और भारत सरकार के संबंधित विभाग और चुनाव-मंडल के पास नीचे दिया हुआ निवेदन भेजने का तय हुआ:

"महाराष्ट्र की वर्गीकृत जातियों में से अनेक लोगों ने १९५१ की जनगणना के बाद बौद्ध धर्म का स्वीकार किया। इसलिए उस जनगणना के समय दर्ज वर्गीकृत जातियों के आँकड़े सुरक्षित जगहों का निश्चय करने के लिए उपयुक्त नहीं हैं। अतः इस संबंध में उचित जाँच करके सुरक्षित जगहों की संख्या कम की जाय।"

इस परिसंवाद में राजनीतिक आंदोलनों में हिंसा और गोलीबार करने के साधनों के उपयोग तथा नागरिक-स्वातंत्र्य आदि विषयों पर भी काफी चर्चा हुई। लेकिन इसके बारे में सर्वसंमति का निर्णय करने के लिए इस विषय पर एक स्वतंत्र परिसंवाद में विस्तृत विचार हो, ऐसा तय हुआ। गोखले अर्थशास्त्र संस्था और समाज प्रबोधन संस्था, इन संस्थाओं ने इस विषय पर और एक परिसंवाद आगामी नवम्बर माह में पूना में आयोजित करने का तय किया और उसके लिए सबको निमंत्रण दिया जो सबने स्वीकार किया है।

परिसंवाद में उपस्थित व्यक्तियों के नाम

(१) श्री ध. रा. गाडगिल (२) श्री शंकरराव देव (३) श्री यशवंतराव चव्हाण (कांग्रेस) (४) श्री स्वामी रामानंद तीर्थ (कांग्रेस) (५) श्री लक्ष्मणशास्त्री जोशी (कांग्रेस) (६) श्री शंकरराव मोरे (कांग्रेस) (७) श्री एस. एम. जोशी (प्र. स. पक्ष) (८) प्रो. राम जोशी (प्र. स. पक्ष) (९) श्री दत्ता ताम्हणे (प्र. स. पक्ष) (१०) श्री एस. ए. डांगे (कम्युनिस्ट) (११) श्री [illegible] सरदेसाई (कम्युनिस्ट) (१२) श्री ए. बी. बर्धन (कम्युनिस्ट) (१३) श्री बी. सी. कांबळे (रिपब्लिकन) (१४) श्री शंकरराव खरात (रिपब्लिकन) (१५) श्री उद्धवराव पाटील (कामगार) (१६) श्री मधु लिमये (समाजवादी पक्ष) (१७) प्रो. अ. भि. शहा (बंबई) (१८) प्रो. रा. कि. [illegible] (नागपुर) (१९) प्रो. गं. बा. सरदार (पूना) (२०) प्रो. दे. अ. दाभोलकर (सांगली) (२१) डा. म. अ. [illegible] (नागपुर) (२२) डा. ना. र. देशपांडे (नागपुर) (२३) प्रो. व. म. सिरसीकर (पूना) (२४) प्रो. अ. के. भागवत (कोल्हापुर) (२५) श्री दि. के. बेडेकर (पूना) (२६) डा. के. एम. [illegible] (पूना) (२७) श्री पन्नालाल सुराणा (अ. प्र. मंडल पूना)

नीचे दिये व्यक्तियों ने परिसंवाद का निमंत्रण स्वीकार किया था, लेकिन कुछ अनिवार्य कारणों से समय पर नहीं आ सके।

(१) श्री ना. ग. गोरे (प्र. स. पक्ष) (२) श्री उत्तमराव पाटील (३) श्री दादासाहेब गायकवाड (रिपब्लिकन) (४) श्री ए. डी. पवार (रिपब्लिकन) (५) श्री राजाभाऊ खोब्रागडे (रिपब्लिकन) (६) श्री [illegible] (कांग्रेस) (७) श्री वि. घ. देशपांडे (हिंदू महासभा) (८) श्री ग. त्र्यं. माडखोलकर (नागपुर) (९) श्री अनंतराव भालेराव (औरंगाबाद) (१०) राजाराम बापू पाटील (कांग्रेस)।

[illegible] के श्री [illegible] देशमुख ने निमंत्रण स्वीकार नहीं किया।

(मूल मराठी से)

यह युग राजा, सिपाही, संत और साहूकार का नहीं, साधारण मनुष्य का है

—दादा धर्माधिकारी

सब लोग आज एक बड़ी विचित्र परिस्थिति में पड़े हुए हैं। किसी को संतोष नहीं है। आज ऐसा मालूम हो रहा है कि चारों तरफ से आदमी पर मुसीबतें ही मुसीबतें आ रही हैं। क्या इसका कोई उपाय है? सोचा यह था कि अंग्रेजों के चले जाने के बाद कैफियत बदल जायेगी, लेकिन हमारे सोचने में गलती थी कि हर बुराई राज्य में होती है, अतः यह आशा हो गयी थी कि हर अच्छी बात राज्य करेगा, क्योंकि पहले जो कुछ करते थे अंग्रेज करते थे, मुगल करते थे। परन्तु सब कुछ अपने आप ठीक कैसे होगा? मनुष्य को अपने आप कुछ नहीं मिलता। मनुष्य को ये दो हाथ इसीलिए दिये हैं कि बिना कुछ किये उसे कुछ न मिले।

मनुष्य को दो चीजें ईश्वर ने दी हैं, एक अक्ल और दूसरी हाथ। अक्ल दी, दुनिया को समझने के लिए। हाथ दिये दुनिया को बदलने के लिए।

अब तक दुनिया को राजा, सन्त या योद्धा बदलता था, अब वे दिन लद गये। अब राजा नहीं रहे। अब जमाना राजा का नहीं रहा, यह जमाना सिपाही का भी नहीं है। पहले कोई बहादुर सिपाही आता था और राज्य कायम कर लेता था। आज कोई सिपाही तलवार के बल पर अपना राज्य कायम नहीं कर सकता। कोई सन्त भी अब और क्या चमत्कार करेगा? पहले किसी को आसमान पर उड़ते देख आश्चर्य होता था। अब बन्दर, कुत्ते जो चाहें आसमान में उड़ते हैं। गांधी और विनोबा में और दूसरे सन्तों में फर्क यह है कि वे कहते हैं, हमारे चमत्कार से नहीं, तुम्हारे पुरुषार्थ से दुनिया बदलेगी।

दुनिया को साधारण इन्सान बदलेगा वह आज का अवतार है। आज के युग में भगवान साधारण मनुष्य बन कर आये हैं।

पुराने जमाने में राम का आयुध धनुष था। कृष्ण का आयुध सुदर्शन चक्र था। परशुराम की कुल्हाड़ी थी। ये सब दुनिया को मारने के हथियार थे, जिलाने के औजार नहीं थे। साधारण मनुष्य के क्या औजार होंगे? इस देश की तीन पार्टियों ने इसका जवाब दिया है। इनके झंडों में कौनसे निशान हैं? कांग्रेस के झंडे में चरखा है, तख्त और ताज बना हुआ नहीं है। समाजवादी और प्रजा-समाजवादी दलों के झंडों पर हल और पहिया बना हुआ है। कम्यूनिस्टों के झंडे पर क्या बना हुआ है? उनके झंडे पर तो कहीं डंडा नहीं बना हुआ है। आप किसी कम्यूनिस्ट से पूछेंगे, क्या तुम डंडे की इज्जत बढ़ाना चाहते हो? वह जवाब देगा, 'जो डंडे की इज्जत बढ़ाना चाहता है, वह कम्यूनिज्म नहीं, फासिज्म है।' दुनिया में ऐसा कोई कम्यूनिस्ट नहीं हो सकता, जो तलवार और डंडे की इज्जत बढ़ाना चाहता है। उसने अपने झंडे पर हँसिया और हथौड़ा रखा है। अगर तलवार की बात होती तो यहाँ हिन्दुस्तान में कम-से-कम हनुमान की गदा तो रख ही लेता! ये सब काम करने के औजार हैं, लड़ाई के हथियार नहीं हैं।

हम काम करने के औजारों की इज्जत बढ़ाना चाहते हैं, लड़ाई के हथियारों की इज्जत को खतम करना चाहते हैं, यह क्रान्ति है। अब इज्जत सिपाही की नहीं होगी, जिसके हाथ में हँसिया-हथौड़ा, चरखा-करघा और हल-पहिया है, जो मेहनत करता है, उसकी इज्जत होगी। मुफ्तखोर की नहीं, काम करके खानेमें इन्सानियत है।

हम बद्रीनारायण गये थे, तो देखा कि कुछ लोगों को 'कंडी' पर मजदूर ले जा रहे थे। एक जगह पर कुछ मजदूर तमाखू पीते हुए आपस में बातें कर रहे थे: "तुम्हारी 'लाश' कितनी भारी है?" हम समझ गये कि इनका मतलब पीठ पर ढोये जाने वाले यात्रियों से है! इस तरह चाहे कोई पालकी पर बैठा हो, चाहे अर्थी पर हो, कोई फर्क नहीं है। दोनों को चार ही आदमी ढोते हैं! हम ऐसी दुनिया चाहते हैं, जिसमें न पालकियाँ होंगी और अर्थियाँ भी कम होंगी। इस दुनिया को हम बनायेंगे। सर्वोदय का मतलब है राजा, सिपाही, सन्त और साहूकार किसी की हुकूमत नहीं होगी, हुकूमत उसकी होगी, जो मेहनत करते हैं।

आज की दुनिया में जो मेहनत करता है, वह भूख पाता है, उसको सूखी रोटी के भी लाले पड़ते हैं। जिसके पास मालपुए और रबड़ी है, उसको भूख लगाने के लिए भी चूर्ण खाना पड़ता है। कुछ लोग कहते हैं, यह सब भगवान की माया है। पर क्या ऐसा भी भगवान हो सकता है? हमारी भगवान में श्रद्धा है, वह ऐसी गलत दुनिया क्यों बनायेगा? आज की दुनिया भगवान की नहीं, शैतान की करतूत है। जिसको चीज की जरूरत है, उसको नहीं मिलती। जो खरीदता है, उसे मिलती है। यह गलत इंतजाम है। यह पूंजीवाद का इंतजाम है। इसको बदलना है। तो क्या होगा? जिसको जरूरत है उसको चीज मिलेगी, जो खरीदता है उसे नहीं मिलेगी। भूखे को अन्न और जिसके हाथ हैं उसे काम मिलना चाहिए और काम करने वाले को इज्जत मिलनी चाहिए। आज बँटवारा चीजों का होता है, बँटवारे की बुनियाद खरीद है। खरीद नहीं होनी चाहिए, जरूरत होनी चाहिए।

अब सवाल उठता है कि यदि चीज खरीदने वाले को नहीं मिलती, तो क्या छीनने वाले को मिलेगी? छीनने वाले को भी नहीं मिलेगी। अगर छीनने वाले को मिल जाती है, तो हम जहाँ के तहाँ रह जाते हैं। आज चीज पैसे वाले को मिलती है, तो कल डंडे वाले को मिलेगी। पैसा गया, डंडा आया! साधारण मनुष्य कहीं का नहीं रहा। हम कम्यूनिज्म आदि कुछ नहीं जानते, पर जो आज पैसे वाले का मुहताज है, कल डंडे वाले का मुहताज हो जायेगा! इसलिए हिंसा की शान्ति, क्रान्ति नहीं है, जो डंडे की इज्जत बढ़ाना चाहता है, वह क्रान्तिकारी नहीं है। लठैत क्रान्ति नहीं कर सकता है।

हम ऐसी दुनिया चाहते हैं, जिस दुनिया में कोई इन्सान अपने को बेचेगा नहीं, दूसरे को खरीदने का मौका किसी मनुष्य को नहीं होगा। आज मनुष्य बिकता है, जिसके पास जो चीज है, उसे वह बाजार में बेचनी पड़ती है! अक्ल, मेहनत, शिक्षा, तीनों बाजार में बिकती हैं। भगवान का प्रसाद बिकता है, चरणामृत बिकता है, और अन्त में भगवान भी बिकता है! आज गाने वाले का गाना बिकता है, नाचने वाले का नाच बिकता है, रूपवान का रूप बिकता है, प्रोफेसर साहब की फिलासफी बिकती है, डाक्टर की डाक्टरी बिकती है, पुरोहित की पूजा बिकती है और पंडित की भागवत-कथा बिकती है! जहाँ सारी चीजें बाजार में बिकती हैं, क्या उसे कोई कुलीन कहेगा? मनुष्य जिस दिन बाजार में बैठ जाता है, सारी दुनिया मीना बाजार बन जाती है। इसलिए इस इन्तजाम को बदलना जरूरी है। कौन बदलेगा? आप। लेकिन आप तो खुद बिकते हैं!

राजा माँ की कोख से पैदा होता है। लेकिन आज तो राजा रहे नहीं, प्रतिनिधियों का शासन है। प्रतिनिधि जनता की कोख से पैदा होता है। लोकतंत्र में राम कौशल्या का पुत्र नहीं, जनता का पुत्र होता है।

एक दिन मैं मोटर में अपने एक एम॰ एल॰ ए॰ मित्र के साथ जा रहा था। लोग उसे खूब गालियाँ दे रहे थे, तो मैंने पूछा—"आखिर यह एम॰ एल॰ ए॰ आया कहाँ से?" उनका उत्तर था—"हमने वोट दिये थे, लेकिन हमारा वोट खरीदा गया था!"

जिसका वोट खरीद लिया जा सकता है, उसका भगवान खरीदा जा सकता है। अपनी इज्जत बेचने वाली स्त्री जितनी मक्कार है, उतना ही मक्कार वोट बेचने वाला नागरिक है। इसके लिए घर-घर जाकर समझाइये। जो वोट माँगने जाता है, वह समझाने का हकदार नहीं है। यह हम भी नहीं करेंगे। हमें तो आपकी मेहरबानी चाहिए, आपकी मोहब्बत चाहिए, वोट नहीं चाहिए। हम समझाना चाहते हैं कि जो नागरिक वोट की कीमत नहीं जानता, उस पर नमदा कसा जाता है और चालबाज लोग उसकी पीठ पर सवारी करेंगे। हम दौलतमन्द के गुलाम नहीं होंगे, हुकूमत के गुलाम भी नहीं होंगे।

जब मैं पार्लियामेंट का सदस्य चुना गया तो दिल्ली जाने की इतनी जल्दी थी कि माँ से मिलने भी नहीं जा सका। माँ मिलने स्टेशन पर आयी और पूछने लगी, "यह तू क्या हो गया, जो घर भी नहीं आ सका!"

मैंने कहा, "पार्लियामेंट का सदस्य चुना गया हूँ, कल बैठक में जाना है!"

माँ ने कहा, "तो क्या वोट माँग कर बना? हम किसी के दरवाजे पर एक पैसा माँगने नहीं गये, तू हुकूमत की भीख माँगने गया? और कहना पड़ा होगा, मैं अच्छा आदमी हूँ और जो मेरे मुकाबले में है वह बुरा आदमी है, मैं देवता हूँ और वह शैतान है!"

जो हरएक से जाकर कहे कि मुझे मालिक बनाओ, उससे बड़ा बेवकूफ कौन है? चुनाव में मतदाता के वोट का नीलाम होता है। हम बोली में नहीं बैठेंगे। अब उम्मीदवार कोई नहीं होंगे, प्रतिनिधि होंगे। रामराज्य में राम, लक्ष्मण, भरत, शत्रुघ्न; इनमें से कोई उम्मीदवार नहीं थे। अगर होते तो वह राम-राज्य नहीं हराम-राज्य होता। ये बातें सारे लोगों को समझाने की जरूरत है।

अब जो दुनिया बदलेगी, राय से बदलेगी; लेकिन उनके वोट से नहीं। जिनके वोट बिकते हैं, जो डंडे वाले से डरते हैं वे डंडे के गुलाम रहेंगे, जो पैसे से बिकते हैं वे पैसेवालों के गुलाम रहेंगे। वे किसान-मजदूर का राज्य नहीं ला सकते।

हमारे देश में सबसे बड़ी बीमारी भूख है। भूख का जवाब अन्न है, कारखाना नहीं है। यदि हमने इस्पात के कारखाने खोल दिये, तो क्या लड्डू की जगह लोहे के गोले खायेंगे? अब हर आदमी सस्ता चाहता है। अगर अन्न सस्ता हो, तो किसान का क्या हो? शिक्षक, डाक्टर, वकील, मजदूर हरएक चाहता है कि हमें ज्यादा वेतन मिले, लेकिन अन्न सस्ता मिले। फिर यह किसान

मतदाता-शिक्षण के संदर्भ में

लोकस्वराज्य और लोकनीति पर श्री नवबाबू के विचार

लवणम्

अभी-अभी जून के पहले सप्ताह में उड़ीसा में मध्यकालीन चुनाव हुए हैं। चुनाव के पहले चुनाव लड़ने वाले विविध राजनीतिक पक्षों और उम्मीदवारों ने अपना प्रचार बहुत जोर-शोर से किया। चुनाव में प्रत्यक्ष भाग नहीं लेने वाले सर्वोदयी कार्यकर्ताओं की ओर से उस समय अपने विचारों का प्रचार हुआ। जब लोगों ने सुना कि सर्वोदयवालों की चुनाव-सभा होगी तो उनको बहुत आश्चर्य हुआ। लेकिन जब उन्होंने सभा में भाग लिया और भाषण सुने तो उनको अच्छा लगा।

अप्रैल महीने में सर्वोदयपुरम् ग्राम में जो सर्वोदय-सम्मेलन हुआ, उसमें अगले साल के लिये तीन मुख्य कार्यक्रम लोगों के सामने रखे गये। उनमें लोक-स्वराज्य और लोकनीति का प्रचार भी मुख्य अंग है। १९६२ में देश में आम चुनाव होनेवाले हैं। अभी तक जो दो आम चुनाव हुए हैं, उनके आधार पर यह महसूस हो रहा है कि जब तक लोक-शिक्षण का कार्य बड़े पैमाने पर न किया जाय, तब तक बालिग मताधिकार मात्र से जनतन्त्र टिकने वाला नहीं है। खासकर आर्थिक दृष्टि से पिछड़े हुए देशों में मताधिकार का कितना दुरुपयोग होता है और किस तरह से आर्थिक, सामाजिक और राजनीतिक दबावों में आकर लोगों को अपने विचारों के खिलाफ भी अपना मत देना पड़ रहा है, यह हम देख ही रहे हैं। ऐसी स्थिति में चुनाव के समय लोक-शिक्षण का कार्य उठाना किसी भी जनहित-आंदोलन के लिए सहज ही है।

सर्वोदयपुरम् का सम्मेलन होते ही उड़ीसा में चुनाव आ गये, तो समय कम बचने पर भी उड़ीसा के सर्वोदय-कार्यकर्ताओं ने तय किया कि चुनाव के समय अपनी शक्ति के अनुसार थोड़ा ही सही लोक-शिक्षण का कार्य शुरू करें। सर्व सेवा संघ के अध्यक्ष और उड़ीसा के भूतपूर्व मुख्य मन्त्री श्री नवकृष्ण चौधरी ने चुनाव पर सर्वोदय विचार का प्रचार करने का भार उठाया।

मई महीने में उड़ीसा में कटक, केउंझर, पुरी, ढेंकानल और चौद्वार में श्री नवबाबू की आम सभाएँ हुईं। उनमें आपने बहुत विस्तार से जनतंत्र के बारे में, नागरिकों के कर्तव्यों के बारे में, भारत के भविष्य के बारे में और जनप्रतिनिधियों के कर्तव्यों के बारे में समझाया।

श्री नवबाबू ने अपने भाषण में कहा: "आज हमारे देश में जिस ढंग से चुनाव का प्रचार हो रहा है, उससे कोई स्वस्थ वातावरण बन नहीं रहा है। इतना ही नहीं, दिन-ब-दिन जनता का जनतंत्र से विश्वास उठता जा रहा है। इसलिए जनता को यह सोचना चाहिए कि किस तरह इस स्थिति को ठीक किया जाय। आज अलग-अलग राजनैतिक पक्ष और उम्मीदवार जो चुनाव के प्रचार में लगे हैं, उनके प्रचार और भाषणों में दो मुख्य चीजें मिलती हैं: एक, आत्मस्तुति और दूसरी, परनिंदा। जब कोई व्यक्ति अपनी स्तुति करता है, तो लोग उसको ज्यादा महत्त्व नहीं देते हैं, उसे सुन कर टाल देते हैं। उसका ज्यादा प्रभाव नहीं पड़ता है। इसलिए आत्मस्तुति से कोई ज्यादा खतरा नहीं है।

पर जो परनिंदा चलती है, उसी से हमारे देश का सम्पूर्ण सामाजिक जीवन खतरे में पड़ रहा है। जब हरएक पक्ष दूसरे सब पक्षों की निंदा करता है, प्रत्येक उम्मीदवार अपने अलावा दूसरे सब साथी उम्मीदवारों की निंदा करता है, तब केवल निंदा ही लोगों के सामने आती है।

इस परस्पर-निंदा का जनता पर ज्यादा प्रभाव पड़ रहा है। लोग समझ रहे हैं कि एक तरह से सब निंदित हैं। तो आज सामाजिक क्षेत्र में, जिसमें सार्वजनिक कार्यकर्ता काम करते हैं, वे सब परस्पर निंदा के कारण जनता की आँखों में एक निंदित वर्ग-से बन गये हैं। इससे जनता की किसी पर आस्था नहीं जम रही है। यह बहुत बड़ा खतरा है, क्योंकि सार्वजनिक कार्यकर्ताओं में जब जनता का विश्वास नहीं रहता है, तो वह यह समझती है कि इन सब चीजों को ठीक करने के लिए एक तानाशाह की, अधिनायकवाद की जरूरत है। इसीलिए आज जगह-जगह पर अदना-सा आदमी को लेकर पढ़े-लिखे लोगों तक, सब कहते हैं कि हमारे देश में भी अयूबखाँ जैसा, नासिर जैसा कोई आदमी चाहिए, तभी देश की समस्याएँ ठीक हो सकती हैं। इस तरह की जो भावना फैल रही है, वह न देश के लिए अच्छी है, न जनतंत्र के लिए अच्छी है और न सार्वजनिक कार्यकर्ताओं के लिए ही सही, अच्छी है; क्योंकि जब एक बार अधिनायकशाही आ जाती है, तब सारा सार्वजनिक कार्य स्थगित हो जाता है और फिर सार्वजनिक कार्यकर्ताओं का भविष्य ही अन्धकारमय हो जाता है! इसलिए राजनैतिक पक्षों को और सार्वजनिक कार्यकर्ताओं को अपने हित में भी परनिंदा छोड़नी है। इस दृष्टि से जब देखते हैं, तो विनोबाजी जो बात करते हैं या सर्वोदय की दृष्टि से जो बात हम आपके सामने पेश करते हैं, वह अति-इन्द्रिय या अति मानवीय नहीं है। यह हमारे दैनिक जीवन की बात है। विनोबाजी कहते हैं, मानव को मानव की तरह जीने दो। आज का हमारा जीवन मानव-जीवन-सा नहीं है। इसलिए उसको मानवीय बनाने की हमारी कोशिश है।"

भ्रष्टाचार के बारे में विश्लेषण करते हुए श्री नवबाबू ने कहा:

"हमारे देश में जो भ्रष्टाचार (करप्शन) फैला है, उसको मिटाने के लिए भी जब हम सोचते हैं, तो चुनाव के खर्च में कमी करने की बात आती है। जब मैं मुख्य मंत्री था और कांग्रेस की कार्यकारिणी समिति का सदस्य था, तब भ्रष्टाचार के कारणों की जाँच करके भ्रष्टाचार मिटाने के लिए कुछ उपाय सुझाने की दृष्टि से कांग्रेस की तरफ से एक कमेटी बैठायी गयी। उस कमेटी के सामने अपने विचार रखते हुए मैंने दो बातें कहीं। चुनाव के खर्च के लिए पार्टी जो निधि इकट्ठी करती है, उसमें जायज तरीका अपनाया जाय। दूसरी बात, चुनाव का खर्च कम कर दिया जाय। आजकल पार्टियाँ जो निधि वसूल करती हैं, उसमें अक्सर राष्ट्र का हित भुलाया जाता है।

अपने अनुभव की एक बात आपके सामने रखूँगा। विधान-सभा में भी इसके बारे में काफी चर्चाएँ हुईं, इसलिए वह जाहिर करने में कोई आपत्ति नहीं। जब मैं मुख्य मंत्री था, तब बीड़ी बनाने के पत्तों के ठेके देने के बारे में मैंने कुछ परिवर्तन किया। उस पर खुद कांग्रेस वाले ही नाराज हो गये! जो ठेका करीब साठ लाख रुपये का होता था, उसको दस पन्द्रह लाख रुपये में सरकार की तरफ से दिया जाता था और फिर वे ठेकेदार पार्टी को कुछ फंड दे देते थे! जब मेरे सामने यह चीज आयी, तो फिर मैंने कहा, इन पत्तों के ठेकों का नीलाम किया जायँ, ताकि अधिक-से-अधिक रकम सरकार को मिले। तो पहले जहाँ दस पन्द्रह लाख रुपया सरकार को मिलते थे, वहाँ नीलाम के कारण सरकार को साठ लाख रुपये मिलने लगे। लेकिन इस पद्धति का अपने ही लोगों ने विरोध किया और मुझसे कहा कि जब से नीलाम की पद्धति आयी, बीड़ी के पत्तों के ठेकेदार पार्टी को फंड नहीं देते!

इस तरह से जब कमी देखा जाय, तो पार्टी के लिए फंड इकट्ठा करने के लिए हम राष्ट्रीय हित को भूल जाते हैं! यह बात केवल कांग्रेस की ही नहीं, सब पक्ष ऐसे ही हैं। जिनको कुछ 'परमिट' वगैरह नहीं मिलते हैं, वे विरोधी पक्षों को पैसा देते हैं और सरकारी पक्ष की पोल धारासभाओं में खोल देने के लिये उनसे कहते हैं। इस तरह सब पक्ष अपनी निधि वसूल करने में नाजायज तरीका अपनाते हैं, जो खुद अपने आप में भ्रष्टाचार का तरीका है। खुद भ्रष्टाचार करते हुए राष्ट्र के भ्रष्टाचार को कैसे बचा सकते हैं!

चुनाव के जो इतने खर्च बढ़ गये हैं, इससे चुनाव में भाग लेने वाला व्यक्ति चुन कर आने के लिए हजारों रुपये खर्च करता है, तब चुने जाने के बाद अपने पद से लाभ उठा कर खर्च किया हुआ पैसा प्राप्त करने का प्रयत्न भी करता है!

इसलिए देश में से यदि भ्रष्टाचार को दूर करना है, तो सब पार्टियों को अर्थ-संग्रह की दृष्टि से आत्मपरीक्षण करना चाहिए और जायज तरीके अपनाने चाहिए। चुनाव का खर्च कम कर देना चाहिए।

हमारे देश में भ्रष्टाचार का और एक दूसरा कारण है। चपरासी से लेकर मंत्री तक उनके अनेक मित्र और रिश्तेदार यह अपेक्षा रखते हैं कि वे उनके लिए कुछ करें। तब अपने मित्र और रिश्तेदारों को खुश करने के लिये सद्भाव से ही जो काम किये जाते हैं, वे भ्रष्टाचार हो जाते हैं। इसलिए यदि जनतंत्र को हमें अपने देश में ठीक चलाना हो तो हमें अपने मूल्यों में परिवर्तन करना पड़ेगा। जनता को यह सोचना है कि कोई व्यक्ति किसी पद पर रहता है, तो उससे नाजायज फायदा नहीं उठाना चाहिए। अगर उससे फायदा उठाने की कोशिश करते हैं, तो वह भ्रष्टाचार को बढ़ावा देना ही होता है। इसलिए चुनाव में भी अपना वोट बेचना जनतंत्र को खतम कर देना है, यह अच्छी तरह से समझ लेना चाहिए। एक-दो दिन के लाभ के लिए जहाँ वोट बेच देते हैं, वहाँ वोटों से खरीदे हुए प्रतिनिधि का सरकार अपने लाभ के लिए अगर उपयोग करते हैं, तो उसमें हम किस तरह गलती निकालें। इसलिए भ्रष्टाचार को मिटाने के लिए सब

स्तरों पर कोशिश होनी चाहिए और चुनाव के समय इन पर काफी विचार करना चाहिए।"

हमारे देश में व्याप्त संकीर्णता के बारे में श्री नवबाबू ने कहा :

"आज देश में भाषावाद, प्रदेशवाद, जातिवाद आदि की जो संकीर्णताएँ काम कर रही हैं, उनसे हमारे देश के बड़े-से बड़े व्यक्ति भी ऊपर नहीं उठ पा रहे हैं। न चाहते हुए भी उनको कई विषयों में जुट रह जाना पड़ता है। आज जो हमारी जो चुनाव-पद्धति है, उसके कारण बड़े-से बड़े व्यक्ति को भी एक छोटे से दायरे के चुनाव-क्षेत्र से चुन कर आना पड़ता है। तो वहाँ की जनता अपने क्षेत्र तक सीमित सोचती है। उनके सामने देश और विदेश के बड़े-बड़े प्रश्न नहीं रहते। अपने क्षेत्र में, अपनी जाति में और अपने स्वार्थ की जो समस्याएँ होती हैं, उन्हीं को जो उठा लेगा वही उस क्षेत्र का नेता बन जाता है।

इसलिए चुनाव में चुने जाने के लिए कितना भी बड़ा आदमी क्यों न हो, उस क्षेत्र के जो हित, स्वार्थ होते हैं, भले ही वे दूसरों के अहित में क्यों न हों, उनको उठा लेना पड़ता है।

इस तरह से सरकार में जाकर हमारे अच्छे-से अच्छे व्यक्ति उस छोटे दायरे के स्वार्थ और संकीर्णता के शिकार बन जाते हैं। जनता के नेता बन कर संकीर्णता के विरोध में खड़े होने से डरते हैं। इस कारण हमारे जनप्रतिनिधि संकीर्णता से ऊपर उठ नहीं पाते हैं। दूसरी ओर निडर होकर जनता के हित के विचार उनके सामने रख नहीं सकते हैं। इस तरह वे कायर बन जाते हैं और राष्ट्रीयता को बढ़ावा देने में असमर्थ हो जाते हैं।

इन चीजों को जब तक हम नहीं सोचेंगे और इन पर विचार नहीं करेंगे, तब तक केवल जन प्रतिनिधियों की निंदा करने से कोई फायदा नहीं होनेवाला है। आज हमारे देश में इतनी संकीर्णता बढ़ गयी है कि लोग आपस में मिलते भी नहीं। आज ख्रुश्चेव और केनेडी एक दूसरे से बिल्कुल विरोधी विचार रखते हुए भी आपस में मिलते हैं और अपनी समस्याओं को हल करने के लिए सोचते हैं। उनको मालूम हो गया है कि एक-दूसरे की निंदा करने से, एक-दूसरे का विरोध करने से अब कोई लाभ नहीं, सहजीवन अनिवार्य है और उसके लिए कोई रास्ता निकालना पड़ेगा।

उसी तरह से हमारे देश में भाषा के जो झगड़े होते हैं, प्रदेशों के जो झगड़े होते हैं, पार्टियों के जो झगड़े हैं, उनका हल ढूँढ़ने के लिए आपस में मिलना और सोचना चाहिए। यह जब तक हम नहीं समझेंगे, हम जनतन्त्र को बचा नहीं सकते। सामूहिक कल्याण में अपना कल्याण है, यह हमको अच्छी तरह समझना चाहिए।

आज जनतन्त्र के नाम पर जो चलता है, उसमें वोट देने के सिवाय जनता का और कोई हिस्सा नहीं। पार्टियाँ अपने उम्मीदवार खड़ा करती हैं, उन्हीं में से किसी एक को वोट देना पड़ता है। यह सच्चा जनतंत्र नहीं है।

सच्चा जनतंत्र वह है, जिसमें जनता खुद अपने प्रतिनिधि चुने। जनता और प्रतिनिधि के बीच में कोई रुकावट न हो, इसलिए हम सर्वोदय वाले मतदाता संघों की बात आपके सामने रखते हैं और उसमें से प्रतिनिधि चुनने की बात करते हैं। जगह जगह पर मतदाता समितियों के रूप में संगठित हो जायँ, तो फिर वे खुद अपने प्रतिनिधि भेजें, तो जनतंत्र सच्चा जनतन्त्र बन सकता है और प्रतिनिधि जनता का ठीक प्रतिनिधित्व कर सकते हैं।

लोग कह सकते हैं कि इतने बड़े-बड़े काम हम नहीं कर सकते हैं, तो फिर शुरुआत छोटे-छोटे कामों से ही हो सकती है। आज अलग-अलग उम्मीदवार और अलग-अलग पार्टी अपनी-अपनी प्रचार-सभाएँ अलग-अलग करती हैं। इससे लोगों पर रोज आफत आती है और बहुत पैसा खर्च हो रहा है। इतना ही नहीं, एक से बढ़कर दूसरा अपनी शान दिखाने के लिए प्रचार करने की कोशिश कर रहा है। इन सबसे अगर चुनाव को मुक्त रखना चाहें तो हमें यह करना चाहिए कि

हरएक गाँव में एक ही दफा सभा की जाय और उसी समय सभी उम्मीदवार अपनी-अपनी बात एक ही मंच पर से कहें, तो लोगों को सबकी बात एक ही साथ सुनने का मौका मिलता है और उससे कौन कौन क्या कहते हैं, इसको तुलनात्मक दृष्टि से समझने का भी मौका मिलता है।

अगर इस तरह हो, तो यह सच्चे लोक शिक्षण का काम होगा। दूसरी बात, उससे चुनाव का खर्च भी बहुत बच जाता है, लोगों की परेशानी भी कम होती है। सब उम्मीदवार एक ही जगह बोलने से परस्पर निंदा कम हो जायेगी और स्नेह का वातावरण बढ़ेगा। अगर चुनाव में हम इतना भी नहीं कर सकते हैं, तो राष्ट्रीय चारित्र्य का सुधार ही नहीं कर सकते।

छोटे छोटे बच्चों को चुनाव के प्रचार में लगा कर आजकल बच्चों के दिमाग में बचपन से ही फूट और द्वेष की भावनाएँ पैदा करते हैं। इसलिए सब पार्टियाँ यह तय करें कि छोटे-छोटे बच्चों को चुनाव के प्रचार में नहीं लगायेंगे। ये जो मर्यादाएँ हैं, इनका अगर हम पालन नहीं करेंगे, तो हम एक राष्ट्र ही नहीं बन सकते और जनतन्त्र को कायम नहीं रख सकते।"

इस तरह श्री नवबाबू ने उड़ीसा में चुनाव के समय लाभ उठा कर लोक-शिक्षण का कार्य किया। भूतपूर्व मुख्य मंत्री ही नहीं, कांग्रेस पक्ष के बड़े नेता रहने के कारण उन्होंने जो बातें जनता के सामने रखी हैं, उनमें उनका व्यक्तित्व प्रकट होता है। कोई भी उनके सुझावों का विरोध नहीं कर सकते। वैसे तो आज आदतन पार्टियों में बंध जाने के कारण ज्यादा लोग इस ओर ध्यान देते हुए भी इन बातों को स्वीकार नहीं कर सके हैं। लेकिन ज्यों-ज्यों इस तरह लोक शिक्षण का कार्य बढ़ेगा, त्यों त्यों संदेह नहीं कि अगले साल आने वाले देशव्यापी आम चुनावों में इस शिक्षण का प्रभाव पड़ेगा। उड़ीसा में चुनाव के समय लोक शिक्षण के कार्य का श्री नवबाबू ने जो शुभारम्भ किया, वह आगे के हमारे अभियान का मार्गदर्शक साबित होगा।

देश की पन्द्रह लाख कत्तिनों के संगठन से ही हम खादी को जिन्दा रख सकते हैं

अ० वा० सहस्रबुद्धे

(यदि हम देश की पन्द्रह लाख कत्तिनों को संगठित कर खादी-कार्यक्रम को आगे बढ़ाने में भागीदार बनाने में सफल हो सकें तो दुनिया की कोई ऐसी शक्ति नहीं है, जो खादी के विकास को रोक सके।) आज मजदूर-वर्ग को जो सुविधाएँ मिली हैं, उसका मूल कारण यही है कि वे संगठित हैं और अपने अधिकारों के प्रति जागृत हो गये हैं। इसी प्रकार यदि देश की पन्द्रह लाख कत्तिनों को भी उनकी शक्ति का भान कराया जाये और वे संगठित रूप से अपने अधिकारों को प्राप्त करने के लिये आवाज उठायें तो उनके अधिकारों से उन्हें वंचित नहीं किया जा सकता है।

आज तक खादी के कार्य में स्थिरता नहीं आयी है। उसका मुख्य कारण यह है कि अब तक हम देश की पन्द्रह लाख कत्तिनों को संगठित नहीं कर पाये। इसीलिये बड़ी-बड़ी संस्थाओं का यह कर्तव्य है कि वे खादी-कार्य में कत्तिनों को भागीदार बनायें और उनका सुदृढ़ संगठन बनायें और उनमें यह जागृति पैदा करें कि खादी-कार्य उनके बल पर चल रहा है। इससे एक और लाभ यह होगा कि मुट्ठी भर कार्यकर्ताओं के कन्धों पर जो बोझ है वह हल्का होगा और उसके साथ पन्द्रह लाख कत्तिनें भी कार्य करेंगी।

खादी के काम को सरकार के बल पर हमें जिस हद तक चलाना था, उस हद तक हम पहुँच चुके हैं। खादी-कार्यकर्ता व कत्तिनें यदि एक संगठन बना कर काम करेंगे तो एक राज्य-स्तर की संस्था बना कर भी यह कार्य किया जा सकता है।

खादी के उत्पादन के साथ-साथ उसकी बिक्री व 'क्वालिटी' बढ़ाने की ओर भी विशेष ध्यान दिया जाना चाहिए। यदि खादी की बुनाई व क्वालिटी में सुधार हुआ तो राज्य-सरकारों व अन्य संस्थाओं में ४० प्रतिशत तक खादी की खपत हो सकती है। 'क्वालिटी' में सुधार करने के साथ-साथ खादी सस्ती मिले, इस ओर भी प्रयास किये जाने चाहिये। इसके लिये हमें एक प्रशिक्षणार्थी के नाते हैण्डलूम की कार्यप्रणाली का अध्ययन करना चाहिये और जिस प्रकार उन्होंने गत पाँच वर्षों में डिजाइन, क्वालिटी, पोत आदि में सुधार किया है, उनसे उनकी आमदनी दो दुगुनी हुई है, साथ ही हैण्डलूम की वस्तुएँ जनता में काफी लोकप्रिय हुई हैं। यदि हम हैण्डलूम की बराबर भी डिजाइन, क्वालिटी में प्रगति कर सकें, तो भी हम यह समझेंगे कि काफी सुधार किया है।

तामिलनाड में विकेन्द्रित आधार पर काफी सफल प्रयोग हुए हैं। वहाँ पर गत वर्षों से ३६ संस्थाएँ बन गयी और लगभग एक करोड़ रुपये की खादी का उत्पादन होने लगा। वहाँ की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि घर घर में लोग खादी पहनते हैं। इस प्रकार लगभग ५०-६० लाख रुपये की खादी की खपत वहीं हो जाती है। इसके अतिरिक्त वहाँ २००-२५० कार्यकर्ता भी तैयार हुए।

जब तक गाँव शहरों में समन्वय नहीं होगा, तब तक हम देश में नई क्रांति लाने में सफल नहीं हो सकते। इसलिए हमें यह सतत प्रयास करना चाहिए कि खेति हर मजदूर को जो मजदूरी मिलती है, उतनी मजदूरी तो खादी-ग्रामोद्योगों में मिलनी ही चाहिए। हमारे देश में आज तक क्रांतिकारी प्रयोग चल रहा है, जिसके द्वारा हम समूचे देश में पंचायत राज्य स्थापित करने जा रहे हैं। इसे सफल बनाने के लिए खादी-ग्रामोद्योग के कार्यकर्ताओं पर पूरी जवाबदारी है। उन्हें गाँव गाँव में पंचायत राज्य के असली अर्थ समझना चाहिए, क्योंकि पंचायत राज्य खादी ग्रामोद्योगों के बल पर ही सफल होने वाला है। इस आन्दोलन को सफल बनाने में हमें अनेक कठिनाइयों का सामना करना पड़ेगा। परन्तु इन कठिनाइयों के बावजूद भी हमें आगे बढ़ना है। इस चुनौती को स्वीकार करना है।*

---

* इन्दौर में हुए म. प्र. और राजस्थान खादी-संस्थाओं के सम्मेलन में किये गये भाषण से।

'आये थे हरिभजन को…'

—वियोगी हरि

पूरी कड़ी या पंक्ति है—"आये थे हरिभजन को, ओटन लगे कपास।" कपास का ओटना वैसे कोई निरर्थक काम नहीं है। वस्त्र-उद्योग में कपास ओटने की क्रिया काफी महत्त्व का स्थान रखती है। पर हरि-भजन के मुकाबले उसे निरर्थक माना गया। 'ओटन लगे कपास' के स्थान पर यदि 'खेलन लागे ताश' कर दिया जाये, तो कहीं अधिक सार्थक होगा, यद्यपि ताश के खेल में मगन या मस्त हो जाने वाले खिलाड़ी इस संशोधन पर नाराज हो सकते हैं !

असल मतलब कवि की इस उक्ति का इतना ही है कि अपने ध्येय को छोड़ कर किसी ऐसे काम में पड़ जाना, जिसका ध्येय के सामने भी मूल्य न हो, बिलकुल निरर्थक है, और हानिकारक भी, यद्यपि बुद्धि को घुमा-फिराकर चतुराई से यह साबित करने का प्रयत्न किया जा सकता है कि जिस काम को निरर्थक माना या कहा जाता है, वह भी ध्येय की पूर्ति में सहायक होता है। ऐसे तथाकथित सहायक-रूप काम को आगे चल कर ध्येय का जबरदस्त साधन मान लिया जाता है, और कभी-कभी तो वह साध्य से भी अधिक मूल्यवान कहा जाता है !

अनेक धर्म-मजहबों और पन्थों का इतिहास हमारे सामने मौजूद हैं। एक महापुरुष दुनिया में आकर सत्य की खोज करता है। अपने समय की परिस्थितियों के उपयुक्त वह कुछ नियम भी बना देता है। भक्ति-भावना से कुछ लोग उसके उपदेशों की ओर खिंच जाते हैं, और उसके अनुयायी हो जाते हैं। उसकी शिक्षाओं को फैलाने के लिए वे अपना एक संघ बना लेते हैं। संघ के चौखटे में उस महापुरुष की शिक्षाओं को बाँधने और कसने का वे उद्योग करते हैं। उसके द्वारा की गयी सत्य की खोज का रंग तब धीरे-धीरे पलटने लगता है। उसके नाम पर सत्य को अजर-अमर बनाये रखने के लिए फिर सुविधा की दृष्टि से नये-नये नियम और उपनियम रचे जाते हैं। उसके सुझाये त्याग और अपरिग्रह की रक्षा करने के लिए सम्पदा संग्रह की जाती है, चल और अचल सम्पत्ति बढ़ने लगती है। तब उसकी भी रक्षा के लिए ऐसे कुछ काम करने पड़ते हैं, जो उस महापुरुष द्वारा की गयी सत्य की खोज से बिलकुल उलटे होते हैं।

मुक्त विचार का संगठन किया गया, उसे मनचाहा आकार दिया गया, और उसे स्थापित किया गया स्वर्ण सिंहासन पर। उसकी रखवाली के लिए चौकीदार, सशस्त्र पहरेदार नियुक्त किये गये। उधर हुआ यह कि विचार का देवता गायब हो गया और बाकी रह गया वह स्वर्ण-सिंहासन और उसके पहरेदार ! जिस किसी ने आँखें खुली रखीं, वह बोल उठा—'मठ के जितने ही समीप जाओगे, ईश्वर उतना ही दूर रहेगा।' पर जिनको जान-मान कर आँखें बन्द रखने में ही आनन्द आता हो, वे क्यों अन्तर के प्रकाश पर ध्यान देने लगे ! उन्होंने अपना कपास का ओटना या ताश का खेलना हरि के भजन से पृथक् नहीं माना, उसके साथ उन्होंने पूरा मेल जो बिठा लिया है।

यों कपास ओटना—अगर उसकी सचाई और गहराई में उतरा जाये, तो, कोई 'अव्यापारेषु व्यापार' नहीं है। कबीर जीवन भर ताना-बाना भरता रहा, और दादूदयाल ने धुनिया का काम किया। कपास भी ओटा होगा। रैदास जूते गाँठते रहा। नामदेव ने हजारों कपड़े सीये। धर्मदास ने व्यापार किया और सधना का धंधा कसाई का था। और गांधी ने आखिरी साँस तक चरखा चलाया। कौन कहेगा कि इन सबने हरि का भजन नहीं किया था ? ओटने, धुनने, कातने और बुनने वाले इन बड़े-बड़े हरि-भक्तों ने हर घड़ी और हर पल हरि का भजन किया, हरि का ध्यान लगाया। उनके जीवन की हरेक क्रिया हरिमय बन गयी थी। हरेक साधन साध्य में समा गया था। यात्रा का हरेक कदम आखिरी मंजिल बन गया था। कौन यह कहने या मानने की गलती करेगा कि उनका कपास का ओटना असंगत और निरर्थक रहा ?

कबीर ने कपड़े बुने। हाट-बाजार में जाकर थान बेचे भी। पर वह बुनना और बेचना निराले ही ढंग का रहा। जुलाहे का धंधा परिग्रह की रस्सी में बाँध नहीं सका। उलटे उस जुलाहे के ताने-बाने ने माया को ही बन्धन में डाल दिया, और साफ छूट गया। गांधी ने ऐसा-वैसा नहीं काता, बल्कि एक-एक तार में देश की नग्न आत्मा उसने देखी, और उसी धागे पर से वह भूतल पर राम का राज्य उतार लाने का ध्यान प्रतिक्षण लगाता रहा। दूर से देखने वालों को लगा कि संस्थाएँ और मंडलियाँ इन अनेक धंधेवालों को फँसा कर रखेंगी। पर वे कहाँ फँसने वाले थे, जो हर घड़ी चाहे जब संस्थाओं और आश्रमों को काँच के टुकड़ों की तरह तोड़ फेंकने के लिए तैयार रहते थे !

संत धर्मदास बनिया था। व्यापार करता था। पर उसका व्यापार असल में सत्य-नाम का था। वह गाता है :

"हम सत्य नाम के व्यापारी।

हमने लादा नाम धनी का,

पूरन खेप हमारो।"

पनिहारिन एक-दो नहीं, तीन-तीन चार-चार गागरें, एक-पर-एक, पानी से भरी सिर पर रखे हुए आ रही है। सहेलियों से बात करती है, सिर हिलाती है, नीची और ऊँची जमीन पर पैर रखती है, पर क्या मजाल कि एक भी बूँद पानी गागरों से छलके, क्योंकि ध्यान उसका पानी-भरी गागरों पर ही लगा हुआ है। बाहर की क्रियाएँ उसका एकाग्र ध्यान हटा नहीं सकतीं। सामने केवल उसका ध्येय है; वही उसका हरिभजन है।

कबीर और कबीर-जैसों ने 'ताश का खेल' न सही, पर चौसर या ऐसे ही कोई दूसरे खेल तो खेले ही होंगे, पर असल खेल तो उनका वह था, जिसे सिर की बाजी लगा कर खेला था। गांधी ने भी, सुकरात और ईसा की तरह ही, खेल खेला। तीन गोलियों पर सिर की बाजी लगा दी। ये सारे खेल हरिभजन और हरिध्यान के ही विविध रूप थे। मतलब यह कि दृष्टि यदि ध्येय पर केन्द्रित हो, तो फिर कोई ताना मारने वाला नहीं कि 'आये थे हरिभजन को ओटन लगे कपास।' जब ऐसा नहीं होता और उलटा ही रास्ता, लक्ष्य का नाम लेकर, पकड़ लिया जाता है, तब चेतावनी की यह ऊँची सदा, अगर अन्दर के कान खुले हों तो, बार-बार आती है कि 'उसी रत्न को खोजो, जिसके लिए घर से निकले हो, क्यों बेकार कंकड़-पत्थर बटोरने में लग गये ?'

क्या ऊपर की यह मिसाल हम रचनात्मक कार्यकर्ताओं को वैसी ही चेतावनी नहीं दे रही है ! हम देखें, जरा गहराई से देखें कि जिसे काम का फैलाव और बढ़ाव मान लिया गया है, वह अन्दर से कहीं बच्चों के गुब्बारे की तरह तो नहीं है और उसे आत्मप्रदर्शन की फूँकों से जो फुला दिया गया, वह हवा उसके अन्दर कब तक ठहरने वाली है ?

डर लगता है, इतिहास के उन पन्नों को देख कर, जिनमें लिखा है कि जिसने जड़ को छोड़ दिया उसका बढ़ाव और फैलाव बहुत टिक नहीं सका। अन्दर का रस सूख गया, तब फिर रहा ही क्या ? बढ़ना और फैलना बुरा नहीं, अगर मूल के साथ एक-रसता कायम रहे, हर डाल और हर पत्ती में जब कि वह अन्दर का रस छलका-छलकता दिखाई दे।

कताई और बुनाई अगर यंत्रवत् चल रही है, आर्थिक मदद की बैसाखियों पर अगर वह खड़ी है और उसके अन्दर से जीवन-दर्शन का वह रस सूखता जा रहा है, जो अहिंसा-शक्ति का स्रोत माना जाता था, तब उसकी प्रवृत्ति की गिनती संकोच के साथ ही रचनात्मक कार्यों में की जा सकती है। यही न्याय बुनियादी शिक्षा या नई तालीम और हरिजनों और दूसरे पिछड़े वर्गों की सेवा-प्रवृत्तियों पर लागू होता है। रचनात्मक प्रवृत्तियों के महान् वृक्ष की एक-एक डाल और एक-एक पत्ती में उस सत्य और अहिंसा का दर्शन होना ही चाहिए, जिसकी खातिर गांधी ने अपने जीवन का उत्सर्ग कर डाला और विनोबा अपनी हड्डियों को तिल-तिल गला रहा है।

देखना होगा और जल्दी ही देख कर चेत जाना होगा कि जिसे हम प्रगति कहते हैं और जिसे फैलाव मानते हैं, वह कहीं सही रास्ता छुड़ा कर भटका देने वाली चीज तो नहीं है। अगर ऐसा है, तो अमृत के घट को जिस सुनहरे ढक्कन ने ढाँक रखा है, उसे उठा कर फेंक देना होगा, ताकि उस अमृत का दर्शन और पान किया जा सके।

राजनीति का जूता उतार कर सर्वोदय-मंदिर में आओ

स्वराज्य प्राप्ति के बाद गांधीजी के साथी अलग-अलग राजनैतिक पक्षों में बँट गये। कांग्रेस उनमें से एक राजनैतिक पक्ष है। सर्वोदय सर्वपक्ष-मुक्त समाज है। हम सभी पक्षवालों को कहते हैं कि हमारे काम में आइये। एक बात हम उन लोगों को कहते हैं कि तुम जब मंदिर में आते हो, तब जूते बाहर निकाल के आते हो। वहाँ नाम-संकीर्तन करते हो। और जब वापस मंदिर के बाहर आते हो, तब जूता पहन लेते हो। राजनीति यह जूता है। तुम लोग जब सर्वोदय के मंदिर में आओ, तब यह जूता बाहर रख दो। सर्वोदय के मंदिर में भूदान का नाम-संकीर्तन करो।

यह आज के जमाने का नाम-संकीर्तन है। यह नाम-संकीर्तन करते वक्त अपना जूता पाँव में मत रखो।' यह सर्वोदय का काम एक मंदिर का काम है। यहाँ हम सब जूते वालों को बुलायेंगे, लेकिन उन्हें अपने-अपने जूते बाहर रखने होंगे। जहाँ भूदान के काम के लिए जायेंगे वहाँ कांग्रेसवाले कांग्रेस की बात नहीं करेंगे, पी. एस. पी. वाले पी. एस. पी. की बात नहीं करेंगे। वे अपनी-अपनी पार्टी की बात करेंगे तो मूर्ख साबित होंगे। लोग उनकी बात सुनेंगे नहीं, दान देंगे नहीं। इसलिए अगर वे अक्ल वाले होंगे तो जब सर्वोदय का काम करने के लिए जायेंगे, तब अपनी पार्टी का नाम नहीं लेंगे। (सिमलटोगुरी, ११-६-'६१)

—विनोबा

जन-आंदोलन की दिशा में 'राम' परिवार : एक प्रयोग

[रुहेलखंड, आगरा और मेरठ जिलों के कार्यकर्ताओं ने अपने जिलों के नाम के पहले अक्षरों से एक सर्वोदय परिवार बनाया—'राम'। यहाँ के कार्यकर्ता मिल कर गंभीरता से सोचते हैं कि हमारा आन्दोलन किस प्रकार जनान्दोलन बने और जनता की स्वतंत्र अभिक्रम शक्ति जागृत हो। इस प्रकार अगर पास-पड़ोस के जिलों के कार्यकर्ता मिल कर एक भाईचारा बनायें और आन्दोलन का संचालन करें, तो आन्दोलन को नई दिशा और कार्यकर्ताओं को नया सम्बल मिलेगा, ऐसा लगता है। —सं०]

'राम' (रुहेलखण्ड, आगरा, मेरठ) सर्वोदय-परिवार की दूसरी बैठक ३०-३१ मई और १ जून १९६१ को प्राथमिक सर्वोदय मंडल भौंरबहादुर नगर, पो० स्याना, जिला बुलन्दशहर के घुमैरा ग्राम में हुई। इस प्राथमिक सर्वोदय मंडल में पाँच ग्राम सरघली, दौलती, तिगरा, घुमैरा और भौंरबहादुर नगर शामिल हैं।

बैठक में तीनों कमिश्नरियों के नौ जिलों से पचपन व्यक्ति आये। इनमें २५ साथी ऐसे थे, जो अपने अपने क्षेत्र में पूरा समय देकर अपना कार्य जनाधारित ढंग से चला रहे हैं। बाकी साथी ऐसे थे, जो अपना कुछ और धंधा करके अपनी रोजी चलाते हैं और अधिक समय सर्वोदय विचार क्रांति के प्रचार प्रसार में लगाते हैं।

बैठक में आये साथियों के खाने-पीने की व्यवस्था घुमैरा ग्राम के ग्रामवासियों ने बड़े उत्साह से की। गाँव के सभी घरों का सहयोग किसी न किसी रूप में इन लोगों ने प्राप्त किया। किसी से अनाज, किसी से गुड़, किसी से लकड़ी, किसी से रुपया, गरज कि हरएक घर ने बैठक में आने वाले मेहमानों के स्वागत में हिस्सा बँटाया।

३१ मई को प्रातःकाल ४ बजे से घुमैरा, भौंरबहादुर नगर और सरघली ग्रामों में प्रभात फेरी निकाली गयी। नाश्ता सब साथियों का भौंरबहादुर नगर ग्राम में हुआ। ८ बजे तक प्रभात फेरी करके सब लोग घुमैरा ग्राम में वापस लौट आये। इसी प्रकार १ जून को प्रातः ४ बजे से दौलती और तिगरा ग्रामों में प्रभात फेरी हुई। इस प्रकार बैठक में आने वाले सभी साथियों को प्राथमिक सर्वोदय मंडल भौंरबहादुर नगर के पाँचों ग्रामों में भ्रमण कराया गया। बैठक के दिनों में रोज शाम को बैठक में आये साथी जन सम्पर्क के लिए घुमैरा या भौंरबहादुर नगर जाते थे।

'राम' सर्वोदय-परिवार की पहली बैठक कलक्टी नरौरा में हुई थी। उसी समय विचारों के स्पष्टीकरण पर ही ज्यादा जोर था। विचारों की काफी सफाई भी उस समय हुई थी।

इस दूसरी बैठक में यही विचार करना था कि समाज में पैदा होने वाली ऐसी समस्याओं और ऐसे अवसरों को हाथ में लेना चाहिए, जिनसे सर्वोदय-विचार क्रांति-जनान्दोलन का रूप ले सके। तीन दिनों तक सब साथियों के बीच काफी चर्चाएँ हुईं। १ जून को प्रातः आठ बजे से ही श्री धीरेन्द्र मजूमदार भी बैठक में शामिल हुए। उनकी दिन भर चर्चा चली। अपनी चर्चा के दौरान में उन्होंने बताया कि ग्राम-स्वराज्य के लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए जनशक्ति को सैनिक शक्ति से टक्कर लेनी पड़ेगी। अतः आज हमारा मुख्य काम जन शक्ति को क्रियाशील करना ही है। यों जनशक्ति को क्रियाशील करने की बात हमारी राष्ट्रीय सरकार तथा अन्य सरकारें भी कहती हैं। परन्तु वे अपनी योजनाओं को कार्य रूप में परिणत करने के लिए उसे पूरक शक्ति के रूप में इस्तेमाल करना चाहती है, जब कि सर्वोदय विचार क्रान्ति के मार्फत हम जनशक्ति को ही संचालन शक्ति और प्रेरक शक्ति के रूप में खड़ी करना चाहते हैं। ऐसा करने के लिए हमको मुख्य रूप से दो काम करने होंगे।

(१) समाज निर्माण के सभी कामों का आधार लोक अभिक्रम, लोक-शक्ति और लोक-सहकार होना चाहिए।

(२) सामाजिक समस्याओं के हल करने की प्रक्रिया में से लोकशक्ति के संगठन और उसके विकास की सम्भावनाएँ पैदा होनी चाहिए।

अपनी चर्चाओं के दौरान में श्री धीरेन्द्र भाई ने इस बात पर भी बहुत जोर दिया कि

> आज कार्यकर्ताओं में परस्पर पारिवारिकता का अभाव है। अतः अगर सर्वोदय विचार क्रांति को सफल करना है तो परस्पर सद्भावना, प्रेम और सहकार का अधिक से अधिक अभ्यास करना होगा।

जनान्दोलन के लिए कार्यक्रम और प्रयोग-क्षेत्र के बारे में चर्चा करते समय जिक्र आया कि भौंरबहादुर नगर गाँव में १ अप्रैल से एक दारू की दूकान का नया ठेका सरकार ने शुरू किया है। गाँव वालों ने ठेकेदार को गाँव में किसी भी किराये पर दूकान खोलने के लिए स्थान नहीं दिया है। इससे यह प्रकट होता है कि गाँव वालों का सहकार उस दूकान के साथ नहीं है।

मध्य प्रदेश सर्वोदय-सम्मेलन का निवेदन

[गत ११, १२, १३ और १४ जून को मध्य प्रदेश का चौथा सर्वोदय-सम्मेलन सम्पन्न हुआ। सम्मेलन के अंत में जो निवेदन प्रस्तुत किया गया, उसे हम यहाँ दे रहे हैं। —सं०]

मध्य प्रदेश का यह सौभाग्य रहा कि पिछले साल उसे अहिंसक लोक क्रांति के द्रष्टा सन्त विनोबा का मार्गदर्शन मिला। मई, '६० के तीसरे हफ्ते में ही भिण्ड-मुरैना क्षेत्र के २० डाकुओं ने विनोबा के सामने आत्म-समर्पण किया। जिन्हें समाजद्रोही और दुष्ट माना जाता है, उन पर भी सद्भावना और सज्जनता का कितना प्रभाव पड़ सकता है, आज के जमाने में भी इसकी एक बेजोड़ मिसाल खड़ी हुई है और अपराध के निराकरण की एक उदात्त पद्धति का संकेत मिला। इसी हेतु विनोबाजी ने चंबल घाटी शान्ति-समिति कायम की। तत्पश्चात् शहरों की शोषक पकड़ में जकड़े ग्रामों को मुक्त करने और नागरिक अपनी ही संकुचित स्वार्थवृत्ति में व्यस्त होने से शहरों में व्याप्त असंतोष के वातावरण को बदलने की आवश्यकता महसूस कर विनोबाजी ने इन्दौर में सर्वोदय नगर की भूमिका समझाने के लिये एक मास रह कर सतत लोक-सम्पर्क एवं लोक-शिक्षण द्वारा जन अभिक्रम की दिशा दर्शायी और उसकी साधना के लिये विसर्जन आश्रम की स्थापना की। नागरिकों की सहकारिता के लिए नगर-सफाई पर जोर दिया और उनका शील एवं सत्व-रक्षा के विचार से गन्दे विज्ञापनों तथा चित्रों के विरोध में अपना पुण्य प्रकोप प्रकट कर उन्होंने सिनेमा के अशोभनीय पोस्टरों को सत्याग्रह द्वारा हटाने का आदेश दिया। हम विनोबाजी की साधना और उनके जीवन-कार्य के प्रति अपनी आंतरिक श्रद्धा प्रकट करते हैं।

देश की वर्तमान क्षुब्ध दशा देखते आत्मरक्षा और विश्व शान्ति की भावना दृढ़ करने के लिए निःस्वार्थ भाव से सतत सेवा करने वाली और अशान्ति के समय प्राणों की बाजी लगाने वाली शान्ति-सेना नितान्त आवश्यकता है। यह कार्य मौजूदा मुट्ठी भर लोकसेवकों या शान्ति-सैनिकों के बूते की बात नहीं है। जब तक आम लोगों की शक्ति और भक्ति इसमें नहीं लगेगी, देश में सर्वोदय समाज की बुनियाद कायम न होगी। आज देश में सम्प्रदायवाद, जातिवाद, भाषावाद, प्रान्तवाद, पक्षवाद और आर्थिक विषमता का जो भूत प्रकट होता दीखता है और जिसने जबलपुर में प्रकट होकर हमें कलंकित किया है, उसके कारण हमारे सामने एक चुनौती खड़ी है। उधर चम्बल घाटी की समस्या का सही समाधान दूर ही है। हमें अपनी विशिष्ट जीवन धारा और कार्यधारा के सहारे उसका जवाब देना है। लोकजीवन में एकता, समता, बन्धुता की भावना जगाने और सहकारिता तथा पारिवारिकता उत्पन्न करने के लिए सत्ता और सम्पत्ति का बँटवारा करना और उत्पादन के साधन उत्पादकों के हाथों में पहुँचाना जरूरी हो गया है। इस दृष्टि से भूदान में प्राप्त जमीन को सामूहिक पुरुषार्थ द्वारा इसी वर्ष बाँट देना है और सारे भूमिहीनों को भूमिवान बनाने के लिए नया भूदान प्राप्त करना है। इसकी हवा बनाने के लिए लोक-यात्राओं का तथा दाता-आदाता सम्मेलनों का आयोजन कर दानपत्रों के स्थान पर प्राप्ति पर जोर देना है।

अपने सारे काम को जनाधारित और श्रमाधारित बनाने की दृष्टि से सर्वोदय-पात्र, सूत्रांजलि, सूत्रदान, श्रमदान, सम्पत्ति-दान, बुद्धिदान और अनुदान के लिए भी हमें व्यापक प्रबन्ध करना होगा। इसी हेतु इन्दौर में चल रहे सर्वोदय-अभियान को प्रभावशाली और सफल बनाने के लिए हमें प्रान्त की और देश की उत्तम शक्ति का विनियोग वहाँ करना होगा। साथ ही सर्व सेवा संघ के अर्थ-संग्रह अभियान के लिए निश्चित अवधि में अपना निर्धारित हिस्सा देना होगा।

यद्यपि पंचायती राज्य की मौजूदा योजना में राजनैतिक के साथ आर्थिक और सामाजिक विकेन्द्रीकरण के कुछ बुनियादी परिवर्तन—जैसे ग्रामसभा, सर्वसम्मति, पक्ष-मुक्त चुनाव का अन्तर्भाव—आवश्यक हैं फिर भी शासन द्वारा चलाये गये इस कार्यक्रम को ग्राम-स्वराज्य की दृष्टि से सफल बनाने की ओर ध्यान देना है और सारे देश में लोकनीति की स्थापना के लिए मुख्य रूप से इस वर्ष अगले आम चुनावों से पहले मतदाता-सम्पर्क और लोक शिक्षण द्वारा जनता को जागृत, कर्मठ बनाना है।

खादी-ग्रामोद्योग और निर्माण कार्य की प्रवृत्तियों में नये मोड़ के संदर्भ में ग्राम-संकल्प, ग्राम इकाई, ग्रामदान और ग्राम स्वराज्य के लिये लोकमानस तैयार करने पर हमें गंभीरता से सोच कर कदम उठाने होंगे। हमारे आन्दोलन की तात्कालिक तथा दूरव्यापी सफलता के लिये यह आवश्यक है कि इन कार्यकर्ताओं के तथा आम लोगों के प्रशिक्षण का काम योजनाबद्ध उठाने और नई-पुरानी दोनों पीढ़ियों को सर्वोदय-विचार की दीक्षा देने के लिए नई तालीम का स्वतन्त्र और शुद्ध प्रयोग कहीं एकाग्र होकर करें।

हमें विश्वास है कि मानवता के उत्थान के इस काम में मध्यप्रदेश की जनता जुट जायेगी और इसमें लगे अपने नम्र सेवकों को आवश्यक धन, साधन की कमी का अनुभव कभी न होने देगी।

पंचायती राज और पक्षमुक्त…

[पृष्ठ-संख्या ₹ का शेष]

ही दर्शन देना होगा; वरना सत्य भी आज आदरणीय नहीं रहेगा। केवल रोटी से काम नहीं चलता यह सही है, लेकिन यह भी उतना ही सही है कि बिना रोटी के भी नहीं चल सकता। लोग रोटी के लिये आजादी को भी छोड़ने को तैयार हो जायेंगे। कम्यूनिज्म हमारे दरवाजे पर आ खड़ा है। भारत के लोकराज्य के सामने यह बड़ा खतरा है।

सारे संसार में सत्ता, सम्पत्ति आदि सब कुछ मुट्ठी भर लोगों के हाथ में केन्द्रित है। जनता का मानस केन्द्राभिमुख बन गया है। फ्रांस में डिगाल की वाहवाही की जाती है, क्योंकि महान संकट से फ्रांस को बचाने का श्रेय एकमात्र डिगाल को है। डिगाल न होता तो फ्रांस खतम हो गया होता। भारत में भी तो आज एक बड़ा प्रश्न लोगों के सामने खड़ा है कि नेहरू के बाद कौन? बड़ी ताज्जुब की बात है। चालीस करोड़ की जहाँ की आबादी है, वहाँ एक नेहरू के बाद कौन, यह बड़ी समस्या बनी हुई है। यानी सारा जीवन आज दिल्ली पर निर्भर है। इससे बचने की समस्या लोकतंत्र की समस्या है।

आज देशव्यापी समस्याएँ और भी कई हैं। यद्यपि वे देशव्यापी हैं, फिर भी उनका हल सोचने का यह तरीका ठीक नहीं है कि देशव्यापी नियम बनाया जाय और केन्द्र से उसका संचालन हो। पर प्रत्येक समस्या को क्षेत्रीय समस्या मान कर उसी स्तर पर उसका हल खोजने की योजना स्थानीय लोग ही करें, यही अधिक कारगर तरीका होगा, क्योंकि लोगों में उसे हल करने की शक्ति मौजूद है। इसका भान उन्हें हो जाय तो काम बन जाय। किसी भी समस्या का हल खोजते समय व्यक्ति अपने को तभी असमर्थ पाता है, जब उसका कार्य-क्षेत्र व्यापक होता है। मुश्किल यह है कि व्यवहार चलता है सीमित क्षेत्र में और सिद्धांत व समस्याएं व्यापक हैं। इसीलिये सिद्धांत और व्यवहार में इतनी बड़ी खाई है। इसे पाटने के लिये ही ग्रामराज्य की आवश्यकता है।

भारत का यह सौभाग्य है कि छोटे समुदायों के निर्माण के लिये यहाँ अनुकूल परिस्थिति है, क्योंकि शहरों से भिन्न, ग्रामों का अस्तित्व यहाँ पर है।

आज की औद्योगिक सभ्यता विश्व-सभ्यता बनने की क्षमता रखती है। लेकिन वह संहारी है। विश्व के सारे व्यवहार में अहिंसा की स्थापना के लिये ग्रामीण संस्कृति स्थापित करना जरूरी है।

यही कारण है कि सर्व सेवा संघ ने भारत सरकार की पंचायत राज योजना का स्वागत किया है। गाँव-गाँव में पंचायत स्थापित हों, गाँव की तथा क्षेत्र की सारी व्यवस्था, रक्षण, पोषण, शिक्षण आदि की व्यवस्था पंचायत और पंचायत-समितियाँ शुरू करें तभी सही माने में लोक-राज्य की स्थापना हुई, ऐसा माना जा सकेगा।

एक बात की ओर विशेष ध्यान दिलाना हम जरूरी समझते हैं। पंचायत का उपयोग किसी सूरत में सत्ता के लिए न हो, इसकी सावधानी रखनी होगी। पंचायत राज्य की योजना सत्ता के विभाजन के लिये नहीं, स्नेह और सहयोगपूर्ण व्यवस्था के लिये है। जिस प्रकार केन्द्रों में मंत्रियों और विधान सभा आदि के सदस्यों की आज की स्थिति है, वही स्थिति पंचों और सरपंचों में आ जाय, वहाँ भी विभिन्न राजनैतिक गुटबन्दियाँ बनें और आपस में द्वेष और असूया ही बढ़ने का कारण बने तो इस ग्राम-पंचायत का कोई अर्थ नहीं होगा। ग्राम-पंचायत से नैतिकता का स्वाभाविक रूप विकसित होना चाहिये। यानी अपने पड़ोसी के साथ आत्मीयता बढ़े, ऐसी सारी व्यवस्था होनी चाहिये। पंचायत राज से यही अपेक्षा है और इसी अपेक्षा के साथ सर्व सेवा संघ उसका स्वागत करता है।

की सूचना पर तत्काल ही अमल किया गया। सूचना मिलने के एक सप्ताह के अन्दर ही सर्वोदय आश्रम, रानीपतरा (पूर्णियाँ) से ७ अगस्त को पाँच शांति-सैनिकों का दल श्री रामेश्वर ठाकुर के नायकत्व में आसाम के लिये रवाना हुआ। तत्पश्चात् बिहार से क्रमशः और तीन टोलियाँ आसाम जा चुकी हैं। इन टोलियों में कुल चौदह शांति-सैनिकों ने भाग लिया।

अक्तूबर माह में बिहार सर्वोदय-मंडल के संयोजक श्री श्याम सुन्दर प्रसाद भी श्रीमती आशादेवी के निमंत्रण पर गौहाटी गये। तीन-चार दिनों तक आवश्यक विचार विमर्श कर वहाँ से लौटने पर आपने शांति सेना समिति को आसाम की स्थिति से अवगत कराया और बताया कि अनुभवी एवं कार्य कुशल शांति-सैनिकों को ही वहाँ [illegible]जा सकता है।

आसाम में शांति-सैनिकों को सौमनस्य का वातावरण-निर्माण एवं राहत सम्बन्धी विविध कार्य करना पड़ता है, जैसे दंगा में हुई क्षति का सर्वेक्षण, सरकारी सहायता, राशन, अनुदान, लोन दिलवाना, भागे हुए व्यक्तियों की फसल की कटनी करवाना, मकान निर्माण करने में सहायता देना, जनसम्पर्क द्वारा पीड़ितों की सहायता के लिये सामग्री इकट्ठा करना, वातावरण में से विद्वेष एवं कटुता की भावना दूर करने के लिये व्यापक जनसम्पर्क करना एवं शान्ति-कथाओं का आयोजन कर लोगों को शान्ति का विचार समझाना। बिहार के शान्ति-सैनिकों ने नौगाँव, नोर्थ लखीमपुर, गौहाटी तथा दरंग जिले में क्षतिग्रस्त भागों में कुशलतापूर्वक उपरोक्त कार्य किया है। आसाम में शान्ति-कार्य की संचालिका श्रीमती आशादेवी ने बिहार के शान्ति-सैनिकों के कार्य की सराहना की है।

(अपूर्ण)

शांति-सेना विद्यालय का प्रथम सत्र संपन्न

शांति सेना विद्यालय (पुरुषों का) काशी का प्रथम सत्र २४ जून को श्री दादा धर्माधिकारी के दीक्षांत भाषण से समाप्त हुआ। भारत में शांति-सैनिकों के प्रशिक्षण का यह प्रथम विद्यालय है। इसके पहले बहनों का शांति विद्यालय का एक सत्र काशी में पूरा हो चुका है। अब दूसरा सत्र कस्तूरबाग्राम (इन्दौर) में चल रहा है।

बापू की पुण्यतिथि, ३० जनवरी को श्री जयप्रकाश नारायण ने इस विद्यालय का शुभारम्भ किया। इस विद्यालय में हिन्दुस्तान के विभिन्न प्रदेशों के १८ शांति-सैनिकों ने प्रशिक्षण लिया। १५ प्रशिक्षार्थी पूरे समय रहे, ३ प्रशिक्षार्थी पूरे समय स्वास्थ्यादि विशेष कारणों से नहीं रह सके।

शांति-विद्यालय की समावर्तन विधि २४ जून को ३ बजे सामूहिक सूत्रयज्ञ और भजनों से प्रारम्भ हुई। विद्यालय के आचार्य श्री नारायण देसाई सहित सब शांति-सैनिक प्रशिक्षार्थी 'पीला रूमाल' सर पर बांधे हुए थे। सूत्रयज्ञ के बाद विभिन्न प्रदेशों के चार शांति प्रशिक्षार्थियों ने अपने विचार प्रकट करते हुए बताया कि इस अवधि में हमें यहाँ एक विशेष दृष्टि मिली। हमें उम्मीद है कि प्रत्यक्ष क्षेत्र में इस प्रशिक्षण से काफी मदद मिलेगी।

श्री नारायण देसाई ने पहले सत्र का विवरण पेश करते हुए बताया कि पाँच महीने में एक ही चीज का अनुभव आया, वह है 'प्रेम' का अनुभव।

श्री नारायणभाई ने यह बताया कि इस अवधि में किसी भी प्रकार बाह्य अनुशासन नहीं रखा गया।

अंत में अपने दीक्षान्त प्रवचन में श्री दादा धर्माधिकारी ने शांति-सैनिकों से कहा कि आप जिन लोगों के बीच जायेंगे, उनको अपने से श्रेष्ठ मान कर आदर देंगे तभी आप अपने 'मिशन' में सफल हो सकेंगे। शांति-सैनिकों की अंतिम सम्मति (सैंक्शन) जनता का अभिमत है और जनता का अभिमत आपके प्रेम और स्नेह की शक्ति पर निर्भर है।

सब प्रशिक्षार्थियों को दादा की प्रसिद्ध पुस्तक 'सर्वोदय दर्शन' दादा के हाथों भेंट दी गयी। सब प्रशिक्षार्थियों ने आचार्य नारायण देसाई को हिन्दी विश्वकोश का प्रथम भाग भेंट दिया।

अन्त में सामूहिक भजन से कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। समारोह के बीच-बीच में 'शांति गीत' शांति-सैनिक गाते रहे।

शांति सेना विद्यालय का दूसरा सत्र १५ अगस्त से प्रारम्भ होगा।

प्राप्ति-स्वीकार

निम्न पुस्तकें सस्ता साहित्य मंडल, नई दिल्ली से समालोचनार्थ प्राप्त हुई हैं।

(१) सर्वोदय-संदेश : विनोबा : पृष्ठ १८८, मूल्य १ रु. ५० न.पै.।
(२) बरगद की छाया : देवराज दिनेश : पृष्ठ १७२, मूल्य २ रु. ५० न.पै.।
(३) भारतीय स्वाधीनता का इतिहास : इन्द्र विद्यावाचस्पति : पृष्ठ ४१७, मूल्य ५ रुपये।
(४) मैं इनका ऋणी हूँ : इन्द्र विद्यावाचस्पति : पृष्ठ १५४, मूल्य २ रुपये।
(५) सुभाषित-सप्तशति : मंगलदेव शास्त्री : पृष्ठ १८६, मूल्य २ रु. ५० न.पै.।
(६) रूस में छियालीस दिन : यशपाल जैन : पृष्ठ १८३, मूल्य १ रु. ५० न.पै.।
(७) शारदीया : जगदीशचन्द्र माथुर : पृष्ठ १२०, मूल्य १ रु. ५० न.पै.।
(८) इतिहास के महापुरुष : जवाहरलाल नेहरू : पृष्ठ २३१, मूल्य १ रु. ५० न.पै.।
(९) भारत विभाजन की कहानी : ए० के० जान्सन : पृष्ठ २२४, मूल्य १ रु. ५० न.पै.।
(१०) बंगला साहित्य दर्शन : मन्मथनाथ गुप्त : पृष्ठ ३१२, मूल्य ४ रु.।
(११) कुछ पुरानी चिट्ठियाँ : जवाहरलाल नेहरू : पृष्ठ ७००, मूल्य १० रु.।
(१२) कहिये समय विचारि : लक्ष्मीनिवास बिड़ला : पृष्ठ ६६, मूल्य १ रु.।
(१३) स्वप्न पूजा : विष्णु प्रभाकर : पृष्ठ १७४, मूल्य १ रु. ५० न.पै.।
(१४) बापू की कारावास की कहानी : सुशीला नैयर : पृष्ठ ४०२, मूल्य २ रु. ५० न.पै.।
(१५) पुण्यपाथ : शंकरराव जोशी : पृष्ठ १९२, मूल्य १ रु. ५० न.पै.।
(१६) राजाजी की लघुकथाएं : राजगोपालाचार्य : पृष्ठ ७६, मूल्य डेढ़ ₹.।
(१७) मनुष्य का वचपन : देवीप्रसाद चट्टोपाध्याय : पृष्ठ ७४, मूल्य १ रु.।
(१८) जानवरों का जगत् : सुरेश सिंह : पृष्ठ ७६, मूल्य २ रु.।
(१९) प्रकाश-कोन (सचित्र) : कमला रतनम् : पृष्ठ २८, मूल्य १ रु.।
(२०) प्राकृतिक जीवन की ओर : एडोल्फ जस्ट : मूल्य डेढ़ रुपया।

अ. भा. सर्व सेवा संघ प्रकाशन, राजघाट, काशी की तीन पुस्तकें।

सहजीवन और सहअध्ययन, डॉ० कृष्णराज मेहता, पृष्ठ १३०, मूल्य ८१ न.पै.।

विनोबा एण्ड हिज मेसेज (अंग्रेजी) ले० सुरेशराम, पृष्ठ ८६, मूल्य १ रुपया।

शान्ति-सेना (अंग्रेजी) ले० विनोबा, अनुवादिका-मार्जरी साइकस, पृष्ठ १८३, मूल्य डेढ़ रुपया।

महाराष्ट्र-समाचार

महाराष्ट्र राज्य के मुख्य मंत्री श्री यशवंतराव चव्हाण ने ९ मई को श्री विनोबाजी के जन्म-गाँव, गागोदे को भेंट दी। विनोबाजी के विचार के अनुसार ग्रामवासी प्रगति करें, ऐसी इच्छा उन्होंने प्रकट की।

सांगली जिले के हिवरे गाँव में १ से ७ मई तक 'ज्ञान-प्रचार सप्ताह' मनाया गया। सर्वोदय, पंचायत राज्य, सुधरी हुई खेती, खाद आदि विषयों पर विभिन्न वक्ताओं के भाषण हुए।

कोरा केन्द्र में तय किया हुआ एक साल का कार्यक्रम गाँव वाले अमल में लायेंगे। गाँव में कुल २० अंबर चरखे चल रहे हैं। नये ५ चरखे चालू किये। खाद के २० शोप गड्ढे और ५ कंपोस्ट गड्ढे पाटे गये। पिछड़ी मांग जाति के लोगों की सोसाइटी बनायी जा रही है। गाँव में हाईस्कूल खुल रहा है। ग्रामसंकल्प के फार्म भरे जा रहे।

कोल्हापुर जिले के ग्रामदानी गाँव, भिलुर में श्री जयप्रकाश बाबू आये थे, उस समय देवगाँव के एक प्रमुख कांग्रेस कार्यकर्ता श्री रवींद्र मेणसे ने पक्ष से मुक्त होकर भिलुर में काम करने का तय किया। वे रात को प्रौढ़ लोगों को पढ़ाते हैं। खेती के विकास-कार्य में मदद कर रहे हैं।

धनगर मोळा गाँव में १० अंबर चरखे और ५ किसान चरखे चलाने का तय किया गया।

रत्नागिरी जिले के नेरूर गाँव में 'हीप मेथड कम्पोस्ट' खाद के ५ ढेर तैयार किये हैं। एक बालमंडल की स्थापना की और छोटे लड़कों के लिये बालवाड़ी शुरू की गयी। कुछ लोग जापानी खेती के प्रयोग कर रहे हैं।

बालवल क्षेत्र के गाँवों का 'सर्वे' किया जायेगा। कुडाल गाँव के उत्पत्ति-केंद्र में ४० वर्गगज खादी बनी।

निवजे ग्राम में निवजे, तुळसुली और गोटोस, इन तीन गाँवों के लिए ग्रामभंडार शुरू किया जा रहा है। घावनले गाँव के एक ग्रामीण को चर्मोद्योग सीखने के लिए देवरुख भेजा।

रागणा तुळसुली गाँव में सामुदायिक खेती के लिए साढ़े चार मन बीज दिया गया। गोटोस में १३ परिवार सामुदायिक खेती के लिए ८ एकड़ भूमि तैयार कर रहे हैं।

रत्नागिरी जिला सर्वोदय मंडल की वार्षिक सभा २३ से २७ मई तक कुडाल में हुई। आगामी एक साल की कार्य-योजना तैयार की गयी। सभा के दिनों में २४ मई को उस क्षेत्र में तूफान के कारण बहुत हानि हुई। कार्यकर्ताओं ने घरों पर पड़े हुए पेड़ आदि हटाने में मदद की। १ जून से १५ जुलाई तक जिले में निधि इकट्ठा कर रहे हैं। इन्हीं दिनों जिला खादी-संघ और ग्रामदान नवनिर्माण-समिति की बैठक हुई। अंबर शिक्षकों के लिए चार माह का एक वर्ग बालवल गाँव में चलेगा।

माणगाँव क्षेत्र में १ साल से काम करने वाले एक प्रमुख कार्यकर्ता श्री राम गडेकर बिहार में 'बीघे में कट्ठा' आंदोलन में कार्य करने के लिए गये।

अहमदनगर जिले में श्री शं. भा. दिघोळकर ने सात गाँवों में १०० सर्वोदय-पात्र रखे। उनको स्थायी बनाने की कोशिश जारी है। ग्राम-पंचायत, महिला-मंडल, युवकों के सर्वोदय मित्र-मंडल गाँव-गाँव श्री धीरेन्द्र भाई के 'नये मोड़' के कार्यक्रम के अनुसार शुरू हों, ऐसा प्रयत्न श्री दिघोळकर कर रहे हैं।

विनोबा-पदयात्रा में प्राप्त दान

आसाम में ता० ५ मार्च से २० मई तक गोवालपाड़ा, कामरूप, नगाँव, दरंग और नार्थ लखीमपुर जिले में ७३ पड़ावों पर करीब ५५२ मील की विनोबाजी की पदयात्रा हुई।

इस अवधि में कुल २९०० दाताओं से लगभग ५०,२९६ कट्ठा भूमिदान १६५ दाताओं से ५१४ रु० संपत्तिदान, ४५ दाताओं से ८,८३८ रु० अर्पित दान मिला। ११,०८० सर्वोदय-पात्रों की स्थापना की गयी। ७१ लोकसेवक और १० शांति-सैनिक बने। असमिया भाषा का १२,१५६ रु० का और अन्य भारतीय भाषाओं का १४,४९२ रु० का सर्वोदय-साहित्य बिका। भूदान-पत्रिकाओं के ८९ ग्राहक बने।

दरंग जिले में ४ और नार्थ लखीमपुर जिले में १३, कुल १७ ग्रामदान पदयात्रा के दरमियान मिले।

भंगी-मुक्ति परिसंवाद एवं शिविर संपन्न

उन्नत साधनों एवं सफाई की विकसित पद्धतियों के संबंध में निर्णय

१५ से २१ जून तक इन्दौर में अखिल भारत हरिजन सेवक संघ द्वारा आयोजित ७ दिवसीय अखिल भारतीय भंगी-मुक्ति परिसंवाद एवं प्रशिक्षण-शिविर संपन्न हुआ। इस शिविर में देश के विभिन्न प्रान्तों—गुजरात, पंजाब, राजस्थान, उत्तर प्रदेश, बिहार और मध्यप्रदेश—के लगभग पचास कार्यकर्ताओं ने भाग लिया था। शिविर का उद्घाटन भारत सरकार की भंगी-कष्ट-मुक्ति समिति के अध्यक्ष प्रो. श्री एन० आर० मलकानी सदस्य राजसभा ने किया।

इस सात दिवसीय शिविर में मेहतरों की कार्यदशाओं और जीवन-दशाओं में सुधार करने, भंगी-कार्य को जाति के आधार पर करने की प्रथा समाप्त करने एवं सिर पर मैला ढोने की प्रथा को समाप्त करने के संबंध में विचार-विमर्श किया गया।

शिविर में श्री एल० एम० श्रीकान्त, कमिश्नर, आदिम व अनुसूचित जाति भारत सरकार; श्री वियोगी हरि, उपाध्यक्ष, अ०भा० हरिजन सेवक संघ; डा० कैलाशनाथ काटजू, मुख्यमंत्री, म० प्र० शासन; श्री भगवन्तराव मंडलोई, उद्योग-मंत्री, मध्य प्रदेश तथा श्री कृष्णदास शाह सफाई-विशेषज्ञ एवं अन्य मान्य अतिथियों ने भाग लिया।

शिविरार्थीगण इन्दौर नगर-निगम एवं उज्जैन नगरपालिका द्वारा अपनाये गये सफाई के उन्नत साधनों एवं विकसित पद्धतियों का निरीक्षण करने गये।

परिसंवाद में विचार विमर्श कर निम्न बातें तय की गयीं।

(१) मैला ले जाने के लिए हाथगाड़ियों का उपयोग किया जाय, ताकि भारत भर में से सिर पर मैला ढोने की प्रथा का उन्मूलन हो सके।

(२) हरिजनों एवं सफाई-कार्य के प्रति समाज के दृष्टिकोण में परिवर्तन करना एवं उसी प्रकार हरिजनों की विचार-स्थिति में परिवर्तन करना।

(३) ऐसी सफाई-पद्धति का आविष्कार किया जाना चाहिए, जिससे यदि नागरिकों को मैला सड़क तक लाना पड़े तो बगैर हिचक ला सकें, जहाँ से मेहतर उन्हें ट्रालियों में गंतव्य स्थान पर पहुँचा देवें।

उरुली में लोकनीति-शिविर

महाराष्ट्र सर्वोदय-मंडल की ओर से ता० १३ जुलाई १९६१ से उरुलीकांचन, जिला पूना के निसर्गोपचार आश्रम में एक शिविर होनेवाला है। शिविर में आचार्य दादा धर्माधिकारी के 'लोकनीति' इस विषय पर प्रवचन होंगे। महाराष्ट्र के प्रमुख भूदान तथा सर्वोदय कार्यकर्ता इस शिविर में उपस्थित रहेंगे। शिविर में रोजाना श्रमदान का कार्यक्रम रहेगा।

खादी-ग्रामोद्योग विद्यालय, माचला नया सत्र प्रारम्भ

खादी-ग्रामोद्योग विद्यालय, माचला का 'खादी-कार्यकर्ता' अभ्यासक्रम का आगामी नौवाँ सत्र १५ जुलाई १९६१ को आरम्भ होगा। नौजवान मैट्रिक या उसके समकक्ष शिक्षा के, १८ साल और ऊपर की उम्र वाले भाई-बहन अपना आवेदन-पत्र ३० जून '६१ तक निम्न पते पर भेजें। म. प्र. की रचनात्मक संस्थाएँ अपनी ओर से प्रशिक्षणार्थियों को भेजें। आवेदन-पत्र २५ नये पैसे में निम्न पते पर प्राप्त हो सकता है।

विद्यालय में आने वाले इच्छुक भाई सामूहिक जीवन, सादगी, कठिन श्रमपूर्ण स्वावलम्बी, स्वाध्याय, उपासनामय नियमबद्ध जीवन, ग्रामीण वातावरण में बिताने की तैयारी रखें।

चुने हुए प्रशिक्षणार्थियों को ४५ रुपये मासिक छात्रवृत्ति दी जायगी। शिक्षण-काल डेढ़ वर्ष का होगा। विशेष जानकारी के लिए पत्र व्यवहार करें।

खादी-ग्रामोद्योग विद्यालय, माचला
पोस्ट—माचला, इन्दौर (म. प्र.)

विनोबाजी का पता :
मार्फत : ग्राम निर्माण कार्यालय
पो० नार्थ लखीमपुर (आसाम)

इस अंक में

श्रीकृष्णदत्त भट्ट, अ० भा० सर्व सेवा संघ द्वारा भार्गव भूषण प्रेस, वाराणसी में मुद्रित और प्रकाशित। पता : राजघाट, वाराणसी-१, फोन नं० ४३९१
पिछले अंक की छपी प्रतियाँ ९,५०० : इस अंक की छपी प्रतियाँ ९,८२६ एक अंक : १२ नये पैसे
वार्षिक मूल्य ६)

संपादक : सिद्धराज ढड्ढा

वाराणसी : शुक्रवार | ७ जुलाई '६१ | वर्ष ७ : अंक ४०

क्रांति आराम से नहीं, कठिन तपस्या से होगी

विनोबा

हमारी यात्रा के क्रम में हम जहाँ जाते हैं, वहाँ सेवा के लिए जाते हैं, तो उस प्रदेश की भाषा सीखना हमारा धर्म होता है। मैं जिस दिन वेल्लूर जेल में पहुँचा, उसी दिन तमिल का अध्ययन शुरू किया, जिससे वहाँ वालों को आश्चर्य भी हुआ और आनन्द भी, क्योंकि दक्षिण जाने वाले अंग्रेजी से काम चला लेते हैं। मैंने यह भी देखा कि एक मनुष्य तमिलनाड में हिन्दी सिखाने के लिए मद्रास में दो साल रहा और हिन्दी सिखा कर, तमिल सीखे बिना वापिस लौटा। यह चमत्कार याने आलस्य की हद हो गयी! हमारे साथियों को, शौक के लिए नहीं, बल्कि धर्म के लिए, इस प्रदेश की भाषा—असमिया, सीखनी चाहिए, क्योंकि हम सेवा के लिए यहाँ आते हैं। यहाँ के कार्यकर्ता हमारे साथ रह कर हिन्दी सीखें, यह भी आवश्यक है। मैं चाहता हूँ कि यहाँ के कार्यकर्ता अच्छी हिन्दी सीखें और खासकर यहाँ की बहनें अच्छी हिन्दी सीख कर सारे भारत में जाकर काम करें। यहाँ की बहनें जिस तरह हिम्मत से काम करती हैं, उस तरह काम करने वाली बहुत थोड़ी बहनें दूसरे प्रान्तों में दिखाई देती हैं। इसलिए ये बहनें दूसरे प्रान्तों में जायेंगी तो इनका असर ज्यादा होगा।

यात्रा के आरम्भ में हमारी जैसी हालत थी, करीब-करीब वैसी ही आज है। दस साल पहले सारे देश में भूदान की एक ही मीटिंग होती थी और आज भी चार-पाँच ही होती होंगी, बाकी लोग तरह तरह के कामों में लगे हैं और हमें भी उन कामों की महिमा बताते हैं। हम भी मानते हैं कि ये सारे काम आवश्यक हैं, लेकिन हम तो मानते हैं कि किसान का काम सबसे आवश्यक है—वह नम्बर एक का काम है और बाकी सारे काम नम्बर दो के हैं।

दूसरे लोग जिन कामों की बात करते हैं, वे सब अच्छे काम हैं, लेकिन अच्छा काम एक बात है और जमाने का काम, मूल्य-परिवर्तन का काम दूसरी बात है।

मैं चाहता हूँ कि मेरे साथ जो लोग हैं, वे भी अलग अलग गाँवों में जायँ और काम करें। जिन्होंने हमारे सैकड़ों व्याख्यान सुने हैं, वे गाँव गाँव जायँ और विचार समझायें। मैं अपनी टोली को विभाजित करके इसी जिले में भेजना चाहता हूँ। आज यहाँ पर वातावरण भी ऐसा है कि बाबा के साथी दूर-दूर के गाँवों में जायँ तो अच्छा असर होगा। बापू ने नोआखाली में प्रयोग किया था। अपने साथ दो-एक व्यक्ति को रख कर, बाकी सबको उन्होंने काम के लिए भेज दिया था। इसी तरह हमारे साथी भी जायँ। इसके लिए उन्हें असमिया भी सीख लेनी चाहिए।

इन दिनों मेरे मन में बहुत कुछ चल रहा है। हमें समझना चाहिए कि आराम से क्रांति नहीं होती है। उसके लिए कष्ट करने चाहिए। आज देश में ऐसा वातावरण नहीं है कि हम पैसा इकट्ठा करके काम चलायें। जयप्रकाशजी जैसे बड़े व्यक्ति का दौरा हुआ तो महाराष्ट्र में पैसा इकट्ठा हुआ, लेकिन दूसरे कार्यकर्ता वह काम नहीं कर सकते। हमारे लिए यह दुःख की बात है कि सारे देश में जनता के आधार पर जीविका चलाने वाले बहुत ही कम कार्यकर्ता हैं। हम चाहते हैं कि असम में चार सौ सेवक खड़े किये जायँ, जो गाँव गाँव की सेवा करके गाँववालों के आधार पर रहेंगे। यहाँ की सरकार ने एक युक्ति चलायी है। सरकार शिक्षकों को पैंतालीस रुपये से साठ रुपये तक वेतन देती है और उन्हें खेती करने की इजाजत देती है। शिक्षकों को अपने गाँवों से दूर भेजा भी नहीं जाता है। यह एक सस्ती योजना है। रामदास स्वामी इसे देव बलात्कार कहते हैं। हमें भूख लगती है तो काम करना ही पड़ता है; याने परमेश्वर बलात्कार करता है। वैसे ही यहाँ के शिक्षकों को खेती करनी ही पड़ती है। यह 'सरकार बलात्कार' हुआ। आज वातावरण ऐसा नहीं है कि हम अपने कार्यकर्ताओं को पचहत्तर रुपया देकर, यद्यपि वह कम ही है, काम चलायें। इसलिए कार्यकर्ताओं को गाँव-गाँव से खाना हासिल करना होगा। कताई करके कपड़े की भी योजना करनी होगी। बाकी ऊपर के खर्च के लिए दस-पाँच रुपये दिये जा सकते हैं। यह कठिन तपस्या है। लेकिन इसके आगे हमारा काम, आसान तपस्या का काम नहीं है, कठिन तपस्या का है। यह काम और कठिन इसलिए होगा कि हमारे कार्यकर्ता अगर दूसरे कामों में जाना चाहें तो वहाँ पर उन्हें अच्छा वेतन मिल सकता है। इस तरह एक बाजू अच्छा इंतजाम है और दूसरी ओर इंतजाम का अभाव, पूरा खाना भी नहीं मिलेगा। गाँव-गाँव जाकर खाना हासिल करना होगा। ऐसी हालत में यह देख कर कि हमारे साथी दूसरे काम में लग गये हैं और हम ऐसे ही रह गये हैं, हमारे मन में मत्सर भी पैदा हो सकता है और काम अधिक कठिन हो जाता है। मत्सर बहुत ही खराब चीज है। हमारे मन में इस बात का संतोष होना चाहिए कि हम तपस्या कर रहे हैं, यह अच्छा है। और दूसरे साथी दूसरे काम में लगे हैं, वे बाल-बच्चे वाले हैं, इसलिए उनका ठीक इंतजाम हुआ है, यह भी अच्छा है। हमारा नसीब हमारे लिए संतोषकारक है और दूसरे साथी दूसरे काम में लगे हैं तो हमें संतोष ही है। अगर हमारे मन में असंतोष हो तो हम कहीं के नहीं रहेंगे। सर्वोदय तो होगा ही नहीं, पर मन का संतोष भी नहीं रहेगा।

असम के संत माधव देव ने लिखा है :

शुनियो सज्जन शास्त्र-सार, सकल-
संपत्ति जाना तार
हरिभक्ति रसे संतोष मन जाहार।
घर्मेर निर्मित पाने जूरि चरण ढाकिल-
जिटो जेने
जेने सबे भूमि चर्मावृति भैल तार।

हे सज्जनो, शास्त्रों का सार सुनो। दुनिया की सब संपत्ति उसकी हो गयी, जिसके मन में संतोष है। उसे हरि-भक्ति रस चखने को मिल रहा है, इसलिए दुनिया भर की संपत्ति प्राप्त करने—जो सधने वाला है नहीं—के बजाय संतोष हासिल किया जाय तो सारी संपत्ति हासिल हो गयी। इसके लिए उदाहरण उन्होंने दिया है कि जिसने अपने चरणों को चमड़े के जूतों से ढाँक लिया, उसके लिए सारी भूमि चमड़े से ढक गयी। कोई अगर ऐसी योजना बनाये कि सारी जमीन चमड़े से ढँक जाय, ताकि अपने पैरों को तकलीफ न हो, तो वह योजना बनने वाली नहीं है। इसके बजाय अपने पैरों में जूते पहनें तो सारी जमीन ढक जायगी।

यह युक्ति सर्वोदयवालों को सध जाय तो सर्वोदय का काम होगा। उसके बजाय अगर यदि हम यह सोचें कि दुनिया भर का रुपया इकट्ठा करने से काम होगा तो इस जमाने में वह संभव नहीं है—खासकर, जब कि आपकी सरकार है, तब लोग आपको टैक्स नहीं देंगे। सरकार आपकी नहीं होती तो आप रुपया इकट्ठा कर सकते थे, लेकिन आज लोग कहेंगे कि सरकार से क्यों नहीं मांगते हो? हम तो सरकार को टैक्स देते हैं और सारे काम सरकार के पैसे से ही चलते हैं। आज लोगों में यह प्रवृत्ति नहीं है कि वे खुद-ब-खुद दान दें। परन्तु हमें दान प्रवृत्ति बढ़ानी है। हम किसी के घर गये तो वह हमें खुशी से खिलायेगा। हमारे भोजन के लिए रुपये खर्च भी करेगा, लेकिन वह हमें दो रुपया नहीं दे सकता है। इसीलिए हमें अनाज संग्रह, सूतांजलि, सर्वोदय-पात्र आदि काम करने होंगे। इस हालत में हमारी समस्या कठिन होने वाली है।

मैं चाहता हूँ कि असम के कार्यकर्ता इस नार्थ लखीमपुर जिले में प्रांत भर के अच्छे कार्यकर्ता जुटायें; इसके लिए इस जिले से और सारे असम से मदद हासिल करें और वह मिल सकती है। इतना हम करें तो शायद हमारा मार्ग खुल जायगा।

[पड़ाव : आजाद, नार्थ लखीमपुर,
ता० २५-६-६१]

देश के लिए एक सर्वमान्य आचार-संहिता हो

राष्ट्रपति डा. राजेन्द्रप्रसाद का संकेत

देश में आज सर्वत्र अशांति और तनाव का वातावरण छाया हुआ है। कहीं तनाव धर्म-सम्प्रदाय, क्षेत्र अथवा भाषा को लेकर है, और कहीं आर्थिक-सामाजिक मसलों को लेकर है। समस्या दिन प्रतिदिन गंभीर होती जा रही है। राष्ट्रीय एकता छिन्न-भिन्न होती जा रही है। देश को आजाद हुए १३-१४ वर्ष बीत गये, किन्तु देश में एक ओर जहाँ गरीबी और बेकारी अपने विषम रूप मे कायम है, वहाँ देश में सम्प्रदायवाद नये सिरे से खड़ा हो रहा है। देश के राजनीतिक पक्षों से अपेक्षा थी कि वे राष्ट्रीय एकता के सवाल को महत्त्व देंगे, किन्तु पिछला अनुभव यह बताता है कि राजनीतिक दल सत्ता प्राप्ति तथा अन्य क्षुद्र स्वार्थों के सामने देश की एकता के सवाल को नजर-अंदाज करने लगे हैं। मरते हुए जातिवाद और साम्प्रदायिकता को राजनीतिक दलों और चुनावों ने पुनर्जीवन दिया है।

पिछले कई वर्षों से विनोबा और सर्व सेवा संघ ने देश का ध्यान इस खतरे की ओर दिलाया और इस संकट-निवारण के लिये पक्षमुक्त लोकनीति पर जोर दिया, जिससे देश में सही अर्थों में सच्चा लोकतन्त्र स्थापित हो सके। इसके प्रारंभिक कदम के लिए सर्व सेवा संघ ने सितम्बर १९५९ में पठानकोट-अधिवेशन में देश के सब राजनीतिक दलों का सर्वमान्य आचार-संहिता बनाने के लिये आह्वान किया। इस संबंध में सर्व सेवा संघ ने कुछ ठोस सुझाव भी दिये थे। राजनीतिक क्षेत्रों में इस *विचार का स्वागत तो हुआ, किन्तु राजनीतिक पक्षों की उदासीनता से यह विचार* अमली रूप धारण नहीं कर सका। इस अवधि में देश में अशांति और तनाव की स्थिति बढ़ती ही गयी है। पिछले दिनों महाराष्ट्र के राजनीतिक पक्षों के प्रतिनिधि और कुछ निष्पक्ष सार्वजनिक कार्यकर्ताओं ने महाराष्ट्र के राजनीतिक जीवन के लिये *सर्वसम्मत आचार-संहिता मान्य कर देश के सामने एक अच्छा उदाहरण रखा।*

अभी-अभी पिछली २ जुलाई को भारत के राष्ट्रपति डा० राजेन्द्र प्रसाद ने कलकत्ता में देश के लिये सर्वमान्य आचार संहिता पर जोर दिया है। पश्चिमी बंगाल के मुख्य मंत्री डा० विधानचन्द्र राय के अस्सीवें जन्म-समारोह के अवसर पर राष्ट्रपति ने अपने भाषण के दौरान कहा है—

"नेताओं को ही नहीं, समग्र राष्ट्र को विचार कर सदा के लिये एक आचार-संहिता बना लेनी चाहिए, जिसके अनुसार सभी प्रशासक, *राजनीतिक दल और सामान्य जनता अपने मतभेदों के निवारण के लिये* आचरण करें।

हमारा देश पिछले तेरह-चौदह वर्षों से स्वतंत्र है। फिर भी हम इस बात का दावा नहीं कर सकते हैं कि हम विरोधी पक्षों के बीच एकता और सामंजस्य प्रस्थापित करने में सफल हो पाये हैं, जिससे समुचित राष्ट्रीय भावना का विकास हो सके। राष्ट्रीय भावना के समुचित रूप में विकसित होने से सभी प्रकार की संकीर्ण वृत्तियों का—चाहे वे भाषाजन्य हों, क्षेत्रजन्य हों, धर्म अथवा सम्प्रदायजन्य हों या अर्थजन्य हों—लोप हो जाता है। अतः इस समस्या को गंभीरता से विचार कर हल करना है, जिससे देश की एकता ही नहीं, स्वतंत्रता की रक्षा के प्रति भी आश्वस्त हुआ जा सकें। मेरे कहने का यह मतलब नहीं है कि इस संबंध में कोई स्पष्ट निर्धारित नीति नहीं है। किन्तु जब कठिनाइयाँ बराबर बढ़ती जा रही हैं और उपद्रव हो ही रहे हैं, तो स्थिति का पुनराकलन करना आवश्यक प्रतीत हो रहा है। या तो हमें नई आचार-*संहिता का विकास करना होगा, या चले आ रहे तरीकों या नीतियों को समयानुसार* सुधार कर अपनाना होगा।

हमारा अपना खयाल है कि भारत जैसे बहुभाषा और बहुजातीय देश में समस्याओं के शांतिपूर्ण समाधान का ढंग यही है कि सच्ची राष्ट्रीयता और पार-*स्परिक सहिष्णुता की भावना का विकास किया जाय। यदि लोग अधिकारों की* अपेक्षा कर्तव्यों पर अधिक ध्यान दें, तो बहुत-सी समस्याएँ अपने आप हल हो जायें।"

हमें विश्वास है कि राष्ट्रप्रमुख के इस संकेत पर देश के सब राजनीतिक दल, प्रशासक और अन्य सार्वजनिक संस्थाएँ ध्यान देंगी और तुरन्त, जब कि आम चुनाव सन्निकट है, उससे पहले *सम्पूर्ण देश के लिए सर्वसम्मत, सर्वमान्य आचार-संहिता बना* ली जाय, जिससे राष्ट्र में आये दिन समस्याओं और मतभेदों के निवारण के लिए अशांति और तनाव की स्थिति न बन सके।

कौआकोल थाने में जंगल-कर्मचारियों द्वारा अत्याचार

जनता द्वारा नियुक्त जांच-समिति का प्रतिवेदन

आज से कुछ दिन पहले सर्वोदय आश्रम, सोखोदेवरा की ओर से कौआकोल थाने का सामाजिक, आर्थिक सर्वेक्षण किया गया था। उस सर्वेक्षण के कारण स्थानीय जंगल विभाग के अधिकारी एवं कर्मचारियों की कुछ गलत कार्रवाइयों का पता चला था। बाद में स्थानीय लोगों द्वारा भी इस बात की पुष्टि होती गयी। स्थानीय कुछ राजनीतिक व सामाजिक कार्यकर्ताओं ने भी ग्राम-निर्माण मंडल, सोखोदेवरा का ध्यान जंगल विभाग के कर्मचारियों द्वारा थाने की जनता पर रोज-रोज बढ़ते हुए जुल्म की ओर आकर्षित किया। इस स्थिति में ग्राम-निर्माण मंडल के मंत्री ने सम्बन्धित गाँवों के प्रतिनिधियों की एक सभा आश्रम में बुलायी। सभा में गाँव के प्रतिनिधियों की उपस्थिति बहुत ज्यादा थी। लगभग एक हजार लोगों ने सभा में भाग लिया। कुछ लोगों ने अपने पर ढाये गये जुल्मों का वर्णन किया। यह देख कर कि सैकड़ों व्यक्ति आपबीती जुल्म को बताने के लिए आतुर है, सभा को यह निर्णय लेने के लिए बाध्य होना पड़ा कि सभा द्वारा चुने हुए प्रतिनिधियों की जाँच-समिति, जानकारी एवं प्रमाण-संग्रह के लिए बनायी जाय। फलस्वरूप नौ व्यक्तियों की समिति का गठन हुआ।

जाँच-समिति ने २ जून से अपना काम शुरू किया। समिति का पहला प्रतिवेदन ६ जून को प्रकाशित किया गया। इस प्रतिवेदन में सरकार का ध्यान जंगल विभाग के कर्मचारियों द्वारा की जाने वाली ज्यादतियों की ओर खींचा गया। पहले प्रतिवेदन में १३ मुद्दे पेश किये गये थे। फिर भी समिति को कुछ सबूत और मिलते गये, इसलिये ता० १७ जून को दूसरा प्रतिवेदन प्रकाशित किया गया। इसमें मुद्दों की संख्या १३ से बढ़कर २१ हो गयी। इन मुद्दों में से कुछ मुख्य बातें हम यहाँ प्रकाशित कर रहे हैं।

—जंगल के आसपास के गाँवों के लोगों को खेती, घर बनाने के लिए तथा जलावन के लिए लकड़ियाँ मिलने की कोई सुविधा नहीं है।

—हकदार कूप की सुविधा जिन गाँवों को प्राप्त है, उन्हें समय पर कूप नहीं दिये जाते हैं। अब तक थाने के पूर्वी क्षेत्र में सिर्फ एक कूप दिया गया। कूप से सम्बंधित ग्रामीणों के कथनानुसार कूप जिम्मा करने के पूर्व उसमें से अधिकांश आवश्यक लकड़ियाँ जंगल के कर्मचारियों द्वारा कटवा दी जाती है।

—कुछ कर्मचारी अपने मुनाफे के लिए जंगल कटवा लेते हैं और उसका झूठा आरोप ग्रामीण जनता पर लगा देते हैं।

—जहाँ शहरवाले ठीकेदारों को कूप का ठीका दिया जाता है, वे ठीकेदार स्थानीय जनता को लकड़ी नहीं देते हैं अथवा निर्धारित सरकारी मूल्य से चार-पाँच गुना अधिक दाम माँगते हैं।

—जाँच-समिति के सामने प्रमाण उपस्थित किये गये हैं, जिनमें जंगल के कर्मचारी लोगों से माहवारी, सालाना अनधिकृत टैक्स, गल्ला एवं पैसे के रूप में वसूल करते हैं, और नहीं देने पर अमानवीय जुल्म—जैसे कमरे में बन्द कर देना, बाँध कर डंडे-जूतों से पीटना—का शिकार होना पड़ता है।

—जाँच-समिति को यह भी मालूम हुआ है कि इन जनविरोधी अमानवीय कार्रवाइयों में जंगल-अधिकारियों के साथ राजनीतिक कार्यकर्ताओं का भी हाथ रहता है।

यहाँ तो कुछ बातों का ही जिक्र मात्र किया गया है। लेकिन इससे साफ मालूम होता है कि किस प्रकार जंगल में बसने वाले भोले-भाले जंगलवासियों के साथ जंगल विभाग के कर्मचारी जुल्म और ज्यादतियाँ करते हैं।

ग्रामनिर्माण मंडल, सोखोदेवरा ने जाँच-समिति बिठा कर एक अच्छा काम किया है। जाँच-समिति ने न केवल बुराइयों की ओर ध्यान आकर्षित किया है, बल्कि कुछ सुझाव भी दिये हैं। सुझाव इस प्रकार हैं।

(१) इस सम्बन्ध में शीघ्र ही सरकार की ओर से एक निष्पक्ष न्यायायिक जाँच की व्यवस्था की जाय।

(२) स्थानीय कर्मचारियों एवं अधिकारियों को अविलम्ब स्थानान्तरित कर दिया जाय।

(३) जंगल सम्बन्धी सरकार की निर्धारित नीति के अनुसार स्थानीय जनता की सुविधा के लिए उचित व्यवस्था की जाय।

(४) वर्तमान स्थानीय जंगल अधिकारियों एवं कर्मचारियों द्वारा जनता पर चलाये गये तथा चलाये जाने वाले मुकदमों को बिना शर्त उठा लिया जाय।

(५) *छोटा नागपुर डिवीजन के* सन्थाल क्षेत्रों में किये गये सफल प्रयोगों के आधार पर जंगल की व्यवस्था स्थानीय जनता के हाथों में सौंप दी जाय। साथ-साथ जाँच-समिति सरकार को विश्वास दिलाती है कि वर्तमान परिस्थिति में जनता और जंगल का कल्याण इसी में निहित है।

हमें उम्मीद है कि बिहार की सरकार इन सुझावों पर गौर करेगी और तत्काल सरकारी कर्मचारियों द्वारा जो जुल्म और अन्याय हो रहा है, उसे बंद कर दिया जायेगा।

—संपादक

ब्रह्म सत्यं जगत् स्फूर्ति, जीवनं सत्यशोधनम्

भूदान-यज्ञ

लोकनागरी लिपि*

भौतीक सत्ता गांव में, नैतीक सत्ता केंद्र में

हम गांव-गांव में स्वराज्य लाना चाहते हैं। हम चाहते हैं की सारी सत्ता गांव के हाथ में रहे। प्रांतीय सरकार का काम गांव पर हुकूमत चलाना नहीं होगा, बल्की यह होगा की अेक गांव का दूसरे गांव से संबंध प्रस्थापीत बना रहे। असी तरह दील्ली की सरकार का यह काम नहीं होगा की प्रांत पर हुकूमत चलाये, बल्की यह होगा की प्रांतों के बीच संबंध बना रहे। जीतनी ऊंची सरकार होगी, उतना ही उसके पास व्यापक काम, जोड़ने का काम रहेगा; पर सत्ता कम होगी। सत्ता तो गांवों में रहेगी। सारी भौतीक सत्ता गांवों में और केंद्रों में नीतीमान, चारीत्र्यशील लोग आयेंगे, जीनकी सत्ता चलेगी। लेकीन आज तो यह माना जाता है की भौतीक सत्ता न्यूयार्क या दील्ली में रहे। लेकीन मैं तो चाहता हूं की भौतीक सत्ता गांवों में ही रहनी चाहीये। गांधीजी और बुद्ध की सत्ता चली; क्योंकी वे सत्ता चलाने के लायक थे। नैतीक सत्ता कीसी के देने से नहीं दी जाती। वह तो अपने आप प्राप्त होती है। असलीये जो नैतीकता-प्राप्त होते हैं, वे अपने आप ऊंची सरकार में जाने के लायक बनेंगे। उनकी सत्ता स्वयमेव चलेगी, लोग प्रेम से मानेंगे। परंतु असल सत्ता तो गांवों में ही रहेगी।

—वीनोबा

* लिपि-संकेत : ि = ी ; े = े ; ख = ख, संयुक्ताक्षर हलंत चिह्न से।

लोकनीति : एक विवेचन

दादा धर्माधिकारी

लोकनीति असल में उस नीति का नाम है, जो नागरिकों के परस्पर-संबंधों का नियमन करती है। इसमें एक शर्त यह है कि इसके लिए किसी बाह्य सत्ता की आवश्यकता न हो। 'सत्ता' शब्द का प्रयोग दो अर्थों में किया जाता है। एक 'पावर' के और दूसरा 'अथारिटी' के। इन दोनों अर्थों में 'सत्ता' शब्द का प्रयोग करते हैं। 'अथारिटी' का मतलब है प्रमाणभूत व्यक्ति या संस्था। कोई ऐसी व्यक्ति या संस्था तटस्थ भी हो और शक्तिशाली और प्रभावशाली भी हो, जो हमारा नियंत्रण करती है, ऐसे बाह्य नियंत्रण या बाह्य नियमन की जहाँ आवश्यकता नहीं होती, वहाँ लोकनीति होती है। जिस अंश में इस बाह्य नियंत्रण और नियमन की आवश्यकता रहेगी, उस अंश में राजनीति या राज्यनीति का प्रादुर्भाव होगा और उस अंश में लोकनीति क्षीण होगी।

आरम्भ में ही इस मर्यादा को समझ लेना आवश्यक है। यह शर्त है लोकनीति की कि उसमें संगठित सत्ता 'आर्गनाइज्ड अथारिटी' कम-से-कम होनी चाहिए। राज्य की आवश्यकता असल में शुरू में जो हुई, वह इस नियमन और नियंत्रण के लिए हुई। लोगों की संगठित नियंत्रण-शक्ति को ही राज्य मान लिया गया। लोगों ने अपनी शक्ति को संगठित किया और किसलिए? नियंत्रण के लिए। इसे लोगों ने राज्य नाम दिया। उसके बाद लोक-कल्याण का संयोजन करना, सुख-सुविधाओं का प्रबंध और व्यवस्था करना और इसके लिए शान्ति तथा सुप्रबंध का संरक्षण करना, ये भी सारी जिम्मेदारियाँ राज्य पर आ गयीं। इस तरह धीरे-धीरे राज्य समाजव्यापी बनने की तरफ कदम बढ़ाने लगा। लोक-कल्याण का आयोजन और लोगों की सुख-सुविधाओं का प्रबंध अगर राज्य को करना पड़ेगा तो राज्य-संस्था लोक-जीवन में अधिकाधिक प्रवेश करती चली जायगी। यह कल्याणकारी राज्यवाद 'वेल्फेअरिज्म' कहलाता है। इसमें एक दोष आ जाता है और वह दोष यह है कि सारा जीवन संस्थात्मक हो जाता है, संस्था-प्रधान संगठन हो जाता है।

पहले पक्ष में क्या होता है? जहाँ नियंत्रण करना है, सुख सुविधाओं की व्यवस्था और शांति की स्थापना करना है वहाँ पर जो दोष आता है, वह दोष यह आता है कि राज्य का प्रवेश लोक जीवन में नियंत्रण के लिए होता है। यानी मनुष्यों के नियंत्रण के लिए, नागरिकों के नियंत्रण के लिए, यह दोष पहले पक्ष में आता है।

दूसरे पक्ष में यह दोष आता है कि राज्य का नियंत्रण भले ही कम होता चला जाय, लेकिन जीवन का संयोजन संस्थात्मक बनता चला जाता है। आप अगर राज्य का नियंत्रण कम करते चले जायँ, तो राज्य का प्रवेश लोक जीवन में कम होता चला जायगा, लेकिन लोक-जीवन संस्था प्रधान बनेगा।

पहले पक्ष में संविधानात्मक बनता है, चाहे दंडप्रधान भले ही न बने और दूसरे पक्ष में संस्थात्मक बनता चला जाता है। अंग्रेजी में पहले पक्ष का नाम है 'कान्स्टिट्यूशनलिज्म' और दूसरे पक्ष का नाम है 'इंस्टिट्यूशनलिज्म।'

व्यक्ति और समाज

लोकनीति में लोक मुख्य है। अंतिम सत्ता, अंतिम अधिष्ठान लोक है और 'लोक' शब्द का अर्थ है मनुष्य-समूह। समूह का महत्त्व है, लेकिन सारे समुदाय और सारे समूह लोक-जीवन को समृद्ध करने के लिए हैं, व्यक्ति के व्यक्तित्व के विकास के लिए हैं।

इसलिए लोकनीति में हम यह नहीं मानते कि लोक एक इकाई है, एक घटक है या एक अंग है, एक अवयव है। 'आर्गनिक थिअरी आफ सोसाइटी' में समाज शरीर है, मनुष्य उसका अवयव है। हमारे यहाँ चातुर्वर्ण्य व्यवस्था थी या आर्थिक आयोजन में जो श्रम विभाजन होता था, इन सबमें मनुष्य एक अवयव बन जाता है। मनुष्य संपूर्ण व्यक्ति नहीं रहता। हमारा कहना यह है कि

व्यक्ति भी विभूति है और समाज भी विभूति है और दोनों अपने आप में संपूर्ण हैं। पूर्णमदः पूर्णमिदम्। व्यक्ति 'फ्रैक्शन' नहीं है, एक टुकड़ा नहीं है, अंश नहीं है। व्यक्ति भी समग्र है, समूचा है और समाज भी समूचा है, समग्र है।

समाजवाद का दोष

समाजवाद में जो प्रमुख दोष था वह समुदायवाद का था। उन्होंने समुदाय को इकाई मान ली। फिर आप उस समुदाय को नाम चाहे जो दीजिये—कम्युनिटी, कुटुंब, किबुत्स, आश्रम, मजदूरों का यूनियन, किसानों का यूनियन या और कोई समाज या समिति हो—समुदाय को समाज की इकाई या घटक माना गया। व्यक्ति को एक अंश माना गया।

यह लोकनीति से किसी प्रकार सुसंगत नहीं है। व्यक्ति और समाज में कोई विरोध नहीं है। व्यक्ति का विकास सह-जीवन में ही होता है, समाज में ही होता है। व्यक्ति के व्यक्तित्व का विकास दूसरे के साथ जीने और रहने में होता है। इसलिए इन दोनों में विरोध नहीं है। विरोध कब आता है? जब समाजहित और व्यक्ति के हित में भेद की कल्पना आ जाती है। इसलिए समूहवाद और समुदायवाद में वर्ग मुख्य है।

हम मनुष्यों की जगह संस्था और संगठन को नहीं लेना चाहते हैं। __संस्था और संगठन में सदस्यता होती है, मानवता नहीं होती।__ मानवता हो नहीं सकती, यह तो कोई नहीं कहेगा, कहना भी नहीं चाहिए। लेकिन संस्था और संगठन में सदस्यता मुख्य होती है और सदस्यता 'एनानिमस' है। सदस्यता में व्यक्ति की विशेषता नहीं होती। कुमारप्पा ने अपनी अर्थशास्त्र की पुस्तकों में इसकी तरफ ध्यान दिलाया है। यह कौन है? यह पोस्टमैन है। यह कौन है? यह प्यून, चपरासी है। यह कौन है? यह बैरा है। स्टेशन पर हम ए कुली, ए कुली पुकारते हैं। अब उनका कोई नाम नहीं है। कुली को कोई नहीं पुकारता—ए वामन भाई, ए वीरेन्द्र भाई! सदस्यता में से 'फंक्शनलिज्म' आता है। मनुष्य का जो व्यवसाय हो, वह मुख्य हो जाता है और उसका व्यक्तित्व गौण हो जाता है।

जहाँ समाज में मनुष्य की मानवता की अपेक्षा, अवांतर लक्षणों का महत्त्व बढ़ता है, वहाँ लोकनीति का ह्रास होता है। लोकनीति में हर व्यक्ति का निरपेक्ष महत्त्व है और निरपेक्ष से मतलब बुद्धि-निरपेक्ष, श्रम निरपेक्ष, गुण-निरपेक्ष, जन्म निरपेक्ष; मनुष्य का महत्त्व केवल मनुष्य के नाते है। इसे लोकतंत्रवादियों ने कहा—एवरी मैन एन एंड इन हिमसेल्फ।—हर मनुष्य अपने आप में एक साध्य है। वह समाजहित का भी साधन नहीं है। वह अपने में साध्य है। हर मनुष्य, अगर साध्य है,

तो सब मिल कर भी साध्य है। यह समाजशास्त्र में आध्यात्मिकता के किनारे ले जाने वाला विचार है।

आध्यात्मिकता की आवश्यकता नहीं है, लेकिन आध्यात्मिकता तक पहुँचा देने वाला यह विचार है। मनुष्य का केवल मनुष्य के नाते निरपेक्ष महत्त्व हो। हर मनुष्य अपने में सम्पूर्ण है। इसीलिए हर मनुष्य के एक एक मत है। लोकतंत्र में समुदाय के मतों को नहीं गिना जाता, वोट 'कलेक्टिवली' नहीं गिने जाते हैं। और जहाँ गिने जाते हैं, वहाँ उतने अंश में लोकतंत्र शिथिल हो जाता है। पार्लमेंट में पार्टी है, पक्ष है; लेकिन मतदान पक्ष कभी नहीं करता। और मतदान अगर पक्ष करे तो वह अवैधानिक होगा। जवाहरलालजी का मंत्रि-मंडल है। जवाहरलालजी का कांग्रेस पक्ष है। कांग्रेस पक्ष सत्तारूढ़ है। लेकिन पार्लमेंट में उठ कर जवाहरलालजी अगर यह कहें कि मेरी कैबिनेट और पार्टी का यह मत है, तो 'स्पीकर' कहेगा कि यह भवन कोई पक्ष नहीं पहचानता। पक्षों के लिए जगह है, चुनाव में उम्मीदवार खड़े करते हैं; लेकिन संविधान और पार्लमेंट में मतदान का जहाँ तक संबंध है, पक्ष मतदान नहीं कर सकता। सामुदायिक मतदान लोकतांत्रिक नहीं है। इसका मतलब यह हुआ कि एक के लिए दूसरा मनुष्य मत नहीं दे सकता। हरेक का अपना मत है। कुटुम्ब में बेटा बाप की आज्ञा मानता है। बेटी माँ-बाप की आज्ञा मानती है। भाई-बहन एक-दूसरे की आज्ञा मानते हैं, लेकिन नागरिक के नाते मतदान सब व्यक्ति के नाते करते हैं। नागरिक की हैसियत से जो मतदान होता है, वह हरेक अलग-अलग एक व्यक्ति के नाते करता है।

नागरिकता और कौटुंबिकता

नागरिकता और कौटुंबिकता में विरोध नहीं है। नागरिकता में कौटुंबिकता का विकास होना चाहिए। नागरिकता याने सदस्यता, कौटुंबिकता से सम्पन्न और समृद्ध होनी चाहिए। अब कौटुंबिकता में कौनसे गुण हैं? नागरिकता में कौनसा गुण है, यह तो बतलाया—नागरिकता याने लोकतांत्रिक नागरिकता। इसका प्रमुख लक्षण यह है कि हर व्यक्ति का निरपेक्ष महत्त्व है, व्यक्ति के नाते। जैसे अध्यात्म में हर व्यक्ति मोक्ष का अधिकारी है, हर व्यक्ति परमात्मस्वरूप है, उसी तरह से लोकतंत्र में लोक की सगुण मूर्ति नागरिक है। हर व्यक्ति अपने में लोक की, समाज की सगुण मूर्ति है। निर्गुण मूर्ति या विराट पुरुष समाज हो सकता है, लेकिन विराट पुरुष के अंग व्यक्ति नहीं है। विराट पुरुष का वर्णन 'पुरुष-सूक्त' में आता है। ब्राह्मण इसका मुँह है, बाहु इसके क्षत्रिय हैं, जाँघें इसकी वैश्य हैं और पैर इसके शूद्र हैं। इन सबका महत्त्व है। लेकिन कोई हाथ में जूते तो नहीं पहिनेगा? और पैर में टोपी तो नहीं लगायेगा? इसलिए जो लोग समाज को विराट पुरुष मानते हैं और व्यक्ति को उसका अवयव मानते हैं, उन लोगों के लिए व्यक्ति गौण हो जाता है। श्रम विभाजन आवश्यक है, लेकिन श्रम-विभाजन का अर्थ यह होता है कि मनुष्य का व्यवसाय मनुष्य से अधिक महत्त्व का हो जाता है, तो उसमें व्यक्तित्व का विकास नहीं होता। व्यक्ति का निरपेक्ष मूल्य नहीं होता। यह नागरिकता का प्रमुख लक्षण है—लोकतांत्रिक नागरिकता का।

कौटुंबिकता का प्राथमिक प्रमुख लक्षण क्या है? कुटुंब में समर्पण है, अपनी अहंता का उत्सर्ग है। आज का कुटुंब दूषित है। क्योंकि आज के कुटुंब में समर्पण और उत्सर्ग की भावना की अपेक्षा रक्त-संबंध और विवाह-संबंध का ही महत्त्व अधिक है। रक्त-संबंध और विवाह-संबंध आज के कुटुंब का आधार है। इसलिए उसमें स्वेच्छा के लिए कोई स्थान नहीं रह गया है। कुटुंब मनुष्य का अपना स्वय-निर्मित नहीं है, स्वेच्छा-निर्मित नहीं है। दूसरी संस्थाएँ मनुष्य की स्वय-निर्मित हैं, स्वेच्छा-निर्मित हैं तो दूसरी संस्थाओं में सदस्यता आ गयी है।

कुटुंब में सदस्यता नहीं है, परन्तु आधार उसका ऐसा है कि वह मनुष्य के अपने हाथ में नहीं है। तो कौटुंबिकता में जो उत्सर्ग की भावना है, जो पारस्परिकता है, उस पारस्परिकता का विस्तार हम नागरिकता के क्षेत्र में करना चाहते हैं और नागरिकता में व्यक्तियों का जो निरपेक्ष महत्त्व है, उसका प्रवेश कुटुंब में कराना चाहते हैं; क्योंकि उत्सर्ग में स्वेच्छा है। उत्सर्ग में अगर स्वेच्छा और बलिदान न हो, तो उसमें फिर दमन आ जाता है और दमन का ही अंतिम अर्थ है हत्या। एक तरह से व्यक्ति का वध होता है, यह संस्था में भी होता है, कुटुंब में भी होता है, अगर उत्सर्ग बलिदान और स्वेच्छा प्रेरित न हो। उत्सर्ग की यह जो प्रेरणा है, यह नागरिकता का मुख्य लक्षण है। उत्सर्ग और समर्पण कौटुंबिकता का मुख्य लक्षण है।

अब इन दोनों का समुच्चय होना चाहिए। इन दोनों का संयोग होगा, इन दोनों का समन्वय नहीं होगा। लोकतंत्र में नागरिक के व्यक्तित्व के ये दो 'डाइमेन्शन्स', आयाम होने चाहिए।*

---

*शांति-विद्यालय, काशी में दिये गये ता० २३ जून ६१ के प्रवचन से। शेष अगले अंक में।

शेष अगले अंक में।

आत्म-निरीक्षण की आवश्यकता

एक साथी कार्यकर्ता वेदना भरे शब्दों में लिखते हैं:

"हम लोग अक्सर कहा करते हैं कि कांग्रेसवालों ने अपना रास्ता छोड़ दिया है और गांधी के विपरीत चल रहे हैं। इसके अलावा, हम लोग चुनाव में खड़े नहीं होते, इसके लिए थोड़ा गर्व भी अनुभव करते हैं! लेकिन मुझे तो आजकल बराबर यही लगता है कि हम भी दूसरों से बहुत ऊँचे धरातल पर नहीं हैं। यदि उनमें से अधिकांश गांधी को धोखा दे रहे हैं, तो हममें से भी अधिकांश गांधी और विनोबा दोनों को धोखा दे रहे हैं।

हम बात तो क्रांति की ही करते हैं, लेकिन हमारे काम विपरीत दिशा में जा रहे हैं।

खादी-ग्रामोद्योगों के काम बड़ी तेजी के साथ हाथ में लिये जा रहे हैं। राज्य से मदद पाकर तहसील-तहसील में भवन खड़े हो रहे हैं; संस्थापकों के लिए जीपें आ रही हैं, सुन्दर-सुन्दर भवनों का निर्माण हो रहा है।

अधिक-से-अधिक आरामप्रद मकान हों, इसकी भी रात दिन हमें चिन्ता रहती है। हम व्यवस्थापकों के लिए जीप उसी प्रकार हाजिर रहती है, जैसे राजा महाराजाओं के लिए पहले घोड़े हर समय तैयार खड़े रहते थे। दूसरी ओर कत्तिनों और बुनकरों की स्थिति में कोई खास अंतर नहीं आया है। वे उसी प्रकार नंगे और भूखे हैं, जैसे मिल के मजदूर होते हैं।

विनोबा दस वर्ष से अकेला उसी प्रकार घूम रहा है, जैसे सूर्य घूमता है और हम लोग लगे हुए हैं अपनी-अपनी संस्थाएँ खड़ी करने में। बेचारा विनोबा गांधी की ही तरह समझ रहा है कि ये लोग क्रांति के वाहक होंगे। हम लोग क्रांति की बात करते हैं और आत्म-संतोष के लिए कभी-कभी उन कामों में मदद भी दे दिया करते हैं, लेकिन हममें से अधिकांश सुविधाओं के मोह में इस कदर फँस गये हैं कि क्रांति की बात हवा में ही है।

आत्म-संतोष के लिए बार-बार सेमीनार, सभा-सम्मेलन आदि करते रहते हैं, जिससे लगता है कि सर्वोदय का काम हो रहा है, लेकिन गाड़ी तो जहाँ थी वहीं पर रुकी हुई है।"

हो सकता है कि ऊपर की तसवीर में रंग कुछ गहरा भरा गया हो। यह भी हो सकता है कि काम की आवश्यकता को देखते हुए मकान, जीप आदि बिलकुल गैर-जरूरी न हों। बचाव तो हर चीज का हो सकता है, पर जो लोक-क्रांति की बात करते हैं, और खास करके विचार-परिवर्तन के जरिए अहिंसक क्रांति की, उन्हें सतत जागरूक और सावधान रहने की आवश्यकता है। हम बराबर आत्म निरीक्षण करते रहें कि कहीं पैरों के नीचे घास तो नहीं उग रही है!

—संपादक

पंचायती राज बनाम ग्राम-स्वराज्य

दिनांक ९ जून, १९६१ के "भूदान यज्ञ" में श्री पूर्णचन्द्र जैन का लेख "पंचायती राज बनाम ग्राम-स्वराज्य" पढ़ा। अन्य प्रदेशों के विषय में तो मैं अधिक कुछ नहीं जानता, किन्तु उत्तर प्रदेश के गाँवों में पंचायतों की निर्माण एवं संचालन विधि इतनी अधिक दोषपूर्ण है कि उनसे न तो गाँवों का कोई वास्तविक हित हो रहा है और न हम गांधी-विनोबा की कल्पना के ग्राम-स्वराज्य की ओर ही बढ़े हैं। प्रत्येक पंचायत-क्षेत्र में स्पष्ट दलबन्दी है। कम-से-कम दो-दो दल बन गये हैं और उनमें से एक सत्तारूढ़ पक्ष का समर्थक अवश्य है। पंचायत के चुनावों को लेकर नित्य कहीं-न-कहीं हत्या या फौजदारी होती ही रहती है, गाँवों की शांति नष्ट हो गयी है, मुकदमेबाजी बढ़ रही है और प्रत्येक राजनैतिक चेतना वाले ग्रामीण का जीवन प्रति क्षण खतरे में रहता है।

—रामकुमार मिश्र

कोनपुर,

पंचायतों के चुनाव और उनकी कार्य-पद्धति आदि के बारे में कई ओर से इस प्रकार की बातें सुनने को मिलती हैं। देश के राजनैतिक नेताओं को इस विषय पर गम्भीरता से सोचना चाहिये, क्योंकि अगर परिस्थिति इसी प्रकार बिगड़ती रही तो पंचायती राज, यानी "स्वराज", पर से लोगों की श्रद्धा उठ जायगी और उनका मानस तानाशाही का स्वागत करने के लिए अनुकूल बनेगा। जहाँ तक सर्वोदय-कार्यकर्ताओं का संबंध है, उन्हें ग्राम-स्वराज्य की दृष्टि से लोक शिक्षण का कार्यक्रम वैसे भी चालू रखना ही है। पंचायती राज के संदर्भ में इस प्रकार के लोक शिक्षा का महत्त्व और भी बढ़ जाता है।

—सं०

भारत में क्या देखा, क्या समझा ?

मिल्ड्रेड फारनी

[सुश्री मिल्ड्रेड फारनी पिछले वर्ष गांधीग्राम में हुए अन्तर्राष्ट्रीय युद्धनिरोधक संघ के सम्मेलन में भाग लेने के लिए कनाडा की ओर से प्रतिनिधि के रूप में भारत आयी थीं। वे 'फेलोशिप आफ रिकन्सीलिएसन,' कनाडा की मंत्राणी भी हैं। गांधीजी जब गोलमेज परिषद के लिये लंदन गये थे और किंग्स्ले हाल में गरीब बस्ती में सेवा करने वाली संस्था में ठहरे थे, तब वे वहीं सेवा-कार्य के लिए आयी हुई थीं। वहाँ उनको चार माह तक बापू के सहवास का लाभ मिला था, जिसका उनके जीवन पर अमिट प्रभाव पड़ा। सन् '३८-'३९ में भी भारत आकर वे गांधीजी से मिली थीं। १९५० में भारत में हुए विश्व-शान्ति परिषद में भाग लेने के लिए वे दूसरी बार यहाँ आयी थीं। अब कि बार जब युद्धनिरोधक संघ सम्मेलन के निमित्त उनका यहाँ आगमन हुआ तो देश में जगह-जगह घूम कर सर्वोदय-प्रवृत्तियों का नजदीक से अध्ययन किया। प्रस्तुत लेख में श्रीमती फारनी ने अपने मीठे संस्मरण बटोरने की कोशिश की है। —सं०]

दस साल बाद, जब मैं फिर भारत आयी तो मुझे लगा यहाँ बड़े-बड़े परिवर्तन हो गये होंगे, काफी तरक्की भी हुई होगी। परन्तु पहले तो मुझे निराशा ही हुई। देखा कि लोग पहले की भाँति ही दरिद्र हैं। भिखमंगे उसी प्रकार काफी संख्या में घूम रहे हैं और चारों तरफ बेकारी के चिह्न दिखाई देते हैं। परंतु मुझे सबसे अधिक निराशा तो उन अधपढ़े नौजवानों की बातों से हुई, जिनसे रेलों और मोटरों में मेरी बातचीत होती। वे कहते—"हमारे नेताओं ने हमारे देश को बड़ा धोखा दिया है। शासन में भयंकर भ्रष्टाचार फैला हुआ है।" ये प्रायः सरकारी कर्मचारी ही होते थे। कोई करों की वसूली करने वाला होता तो कोई लगान की वसूली करने वाला होता। छोटी-छोटी तनख्वाह पाने वाले लोग, शायद स्वयं वे भी उस भ्रष्टाचार में हाथ बँटाते थे।

अपनी निराशा दूर करने की इच्छा से मैं उन बूढ़े ऋषि काकासाहब कालेलकर के पास गयी और उनसे पूछा कि भारत में यह क्या हो रहा है? उन्होंने कहा, "यहाँ पर भ्रष्टाचार है, यह सही बात है। परन्तु संसार में कौन सरकार इस बुराई से बची है? सरकार अथवा यों कहिए कि हर बाहरी सत्ता का स्वरूप ही स्वयं ऐसा होता है, जहाँ भ्रष्टाचार पैदा हो जाता है। उन्होंने मुझे पश्चिमी सरकारों की याद दिलायी और कहा, "हम तो शासन-कार्य में अभी नये हैं, पर हमारे नेता महान हैं, उनके मार्गदर्शन में अनुभव से हम सीख रहे हैं।"

मुझसे नहीं रहा गया और मैंने कहा—"पर नेहरू तो अब बूढ़े हो चले। उनके बाद इस देश को कौन सम्भालेगा? इतनी गहरी श्रद्धा जो भारत की अपनी चीज है, और ऐसा अनुभव-ज्ञान वाला दूसरा आदमी है कहाँ?"

तब काकासाहब बोले, जिस देश ने फिरोजशाह मेहता, गोखले, तिलक और गांधी की भाँति जवाहरलाल को भी जन्म दिया; वही देश जवाहरलाल के बाद भी उसकी बागडोर सम्भालने वाला कोई पुरुष जरूर खड़ा कर देगा।"

उनकी इस श्रद्धा ने मेरी निराशा को भगा दिया। मुझे भी भारत की महान नियति में श्रद्धा हो गयी। अपने रंगीन काले चश्मे को मैंने फेंक दिया और भूतकाल की पुरानी परम्पराओं में से निकल कर नया आकार और रूप ग्रहण कर रहे नवीन भारत के दर्शन के लिए मैं निकल पड़ी।

सबसे पहले मैं गांधीग्राम गई। गाँवों में चल रहे रचनात्मक कामों का प्रशिक्षण जहाँ दिया जा रहा है, ऐसा यह एक मुख्य केन्द्र है। देश के पिछड़े हुए भागों की जनता की सेवा के लिए जिन्होंने अपना सम्पूर्ण जीवन अर्पण कर दिया है, ऐसे अनेक युवकों से मैं यहाँ मिली और उनसे चर्चाएँ कीं। यहाँ शहीदों की निरी बलिदान की भावना नहीं थी। विशुद्ध व्यावहारिक बुद्धि के साथ अपने देश के भाइयों की शिक्षा, आरोग्य, स्वच्छता और समाज-सुधार आदि में हम किस प्रकार मदद कर सकते हैं, इसकी शिक्षा वे पा रहे थे। यह काम कितना महान है और उन्हें किस प्रकार दूर देहात में जाकर अकेले हाथों काम करना होगा, इसका उन्हें पूरा भान था। निस्वार्थ सेवा का स्वाद उन्हें लग चुका था।

यहाँ से मैं कस्तूरबाग्राम (इंदौर) गयी। छुट्टियों में अवकाश शिविर चल रहे थे। यह बहनों की संस्था है। सुन्दर, साफ-सुथरी इमारतें हैं। रमणीय भूभाग है और कार्यक्रम भी व्यवस्थित है। शिक्षकों और शिक्षिकाओं में उत्साह था। देख कर लगा कि यहाँ भी एक महत्त्वपूर्ण काम हो रहा है। परन्तु इस काम का स्वरूप मुझे गांधी-ग्राम के काम की अपेक्षा कुछ दूसरे प्रकार का, कुछ टूटा-फूटा, अलग टुकड़े-सा लगा। ग्रामीण स्त्रियों की सेवा के लिए यहाँ केवल स्त्रियों को ही तैयार किया जा रहा था। मुझसे नहीं रहा गया और मैंने पूछा, "गाँवों में तो आदमी, औरतें और बच्चे सभी होते हैं, तब यहाँ केवल औरतों को ही प्रशिक्षण क्यों दिया जा रहा है? क्या यह अधिक अच्छा नहीं होगा कि यह शिक्षण पुरुष भी लें और स्त्रियाँ, पुरुष दोनों मिल कर गाँवों की सेवा करें? निःसन्देह इसमें स्त्रियों की सेवा का रूप कुछ अस्पष्ट हो जायगा। परन्तु इन पृथक् शिक्षण से स्त्रियों की समानता में बाधा आती है!"

एक बुजुर्ग सदस्य से मैंने पूछा, "केन्द्र में आपको किस बात की कमी सबसे अधिक खटकती है?" उन्होंने कहा, "समर्पण की भावना से काम करने वालों की।" मेरा ख्याल है कि अगर गाँवों की समग्र सेवा का काम हाथ में लिया जाय तो शायद इनकी इतनी कमी नहीं रहेगी।

मैंने प्रशिक्षार्थियों से पूछा, "आप यहाँ किस हेतु से आयी हैं?" इस पर उनके जवाब अलग अलग थे। किसी ने कहा, "परिवार को मदद पहुँचाने का इरादा लेकर आयी हूँ।" किसी ने कहा, "देश की इससे सेवा होगी।" किसी ने कहा, "इसमें ज्ञान मिलेगा, वगैरा।"

मेरा सबसे अधिक कीमती अनुभव तो श्री विनोबाजी की भेंट और भूदान आन्दोलन का रहा। उन दिनों वे कूचबिहार में पदयात्रा कर रहे थे। सुबह का वक्त। अँधेरे अँधेरे में चलना होता था। रास्ता ऊबड़-खाबड़, नीचा ऊँचा और धूल भरा। मैंने देखा कि यह आन्दोलन कोई मामूली चीज नहीं। कभी-कभी जरूर विनोबा और उनके साथियों का बड़ा शानदार स्वागत होता है। फूलमालाओं के ढेर लग जाते हैं। बड़ी-बड़ी भीड़ इकट्ठी हो जाती है और लोगों के उत्साह भी खूब होते हैं। परन्तु यह तो कभी-कभार की बात है। इनकी रोजमर्रा की यात्रा तो एक विशुद्ध तपस्या है। प्रतिदिन सवेरे चार बजे उठ कर अपना सामान, कपड़े बगल में दबा कर एक अपरिचित नये गाँव में जाना और लोगों को नये विचार समझा कर भूदान के लिए राजी करना, हँसी-खेल नहीं है। उनकी यह श्रद्धा और तपस्या देख कर मेरे दिल में बड़ा आदर पैदा हो गया।

इन्दौर के विसर्जन आश्रम और वहाँ के भूदान-कार्यकर्ताओं को देख कर मेरा यह आदर और भी बढ़ गया। "दया और करुणा के राज्य" की स्थापना के लिए विनोबा द्वारा चुना गया यह पहला नगर है। पर यहाँ विनोबा का प्रेरक व्यक्तित्व नहीं। शहरों का वातावरण यों ही हृदयहीन और आलोचनाशील-सा होता है। किसी भी कार्य का जल्दी असर नहीं होता। इसमें इन्दौर अपवाद कैसे होगा? परन्तु श्रद्धाशील कार्यकर्ताओं के एक छोटे-से दल ने परिस्थितिगत इस चुनौती को और उन पर डाले गये इस भार को अपना जीवन-कार्य समझ कर हिम्मत के साथ उठा लिया है और अपना रास्ता टटोल रहे हैं। अब तक करीब २००० परिवारों में वे सर्वोदय-पात्र की स्थापना कर चुके हैं। साहित्य प्रचार करते हैं, सभाओं द्वारा लोगों को सर्वोदय-विचार भी समझाते हैं और साथ-साथ अध्ययन और प्रार्थना भी करते हैं, जैसा कि दूसरे केन्द्रों में हो रहा है।

अब मैं इस देश से विदा होने की तैयारी कर रही हूँ और मुझे उन सब मित्रों और संस्थाओं की याद आ रही है, जिनसे मैं इस यात्रा में मिल पायी। इनमें से कुछ व्यक्ति और संस्थाएँ सरकारी और कुछ संस्थाएँ गैरसरकारी भी हैं। मुझे इस मौके पर विदेशी सेवकों द्वारा संचालित "सोसायटी आफ फ्रेण्ड्स" और "सर्विस सिविल इन्टरनेशनल" के मित्रों की भी याद आ रही है, जिनमें श्री डिक कैथान मुख्य हैं। उनका सारा जीवन देहात की सेवा में ही बीता है। इस तपस्या ने उनको ग्रामीणों की भौतिक तथा आध्यात्मिक जरूरतों की एक दृष्टि प्रदान कर दी है। वे ग्रामीणों के बीच रह कर उनकी इस प्रकार सेवा कर रहे हैं, जिससे ग्रामीणों का आत्मविश्वास और स्वाभिमान बढ़कर उनकी शक्तियों का भी विकास हो। अपनी जीवन पद्धति और रहन-सहन का तरीका भिन्न होने पर भी श्री कैथान इन ग्रामीणों के बीच बिलकुल सादा जीवन बिता रहे हैं, सफाई की शिक्षा उन्हें दे रहे हैं, खेती में उनकी मदद करते हैं और ग्रामोद्योगों का प्रशिक्षण देकर उन्हें हर तरह से योग्य बनाने का प्रयत्न कर रहे हैं। ईसा ने कहा है न कि अपने ही समान अपने पड़ोसियों से प्रेम करो। श्री कैथान मानों इस उपदेश का अपने जीवन में प्रत्यक्ष अभ्यास कर रहे हैं।

यों देखा जाय तो ऐसी रचनात्मक सेवा करने वाले लोग निःसंदेह बहुत थोड़े हैं। परन्तु जरा इतिहास का अवलोकन कीजिये। अनेक बार इन मुट्ठी भर सेवकों ने इतिहास के सम्पूर्ण प्रवाह को बदल दिया है। इसलिए ऐसे सेवकों को देख कर दिल आशा से भर जाता है। गांधीजी के संदेश को सुन कर जो अनेक नौजवान भारत में इन सेवा और राष्ट्र निर्माण की प्रवृत्तियों में लगे हुए हैं, उनसे मिल कर मुझे बड़ी खुशी हुई और यह वृत्ति संसार के केवल एक भाग-पूर्व में ही है, ऐसी बात नहीं है। इस मौके पर मुझे हमारे देश,

"पञ्ञा तस्स न वड्ढति"

वियोगी हरि

पूरी पंक्ति है—"मंसानि तस्स वड्ढन्ति, पञ्ञा तस्स न वड्ढति।" यह भगवान् बुद्ध का कथन है, और 'धम्मपद' में से लिया गया है। अर्थ है, मांस तो उसके बढ़ रहे हैं, पर उसकी प्रज्ञा नहीं बढ़ रही है।

शरीर रक्त और मांस से बना है। ये या तो घटते हैं, या बढ़ते हैं। मांस को प्रयत्नपूर्वक भी बढ़ाया जाता है। वजन बढ़ाने के लिए भाँति-भाँति के उपाय किये जाते हैं। तराजू पर शरीर को समय समय पर तौला जाता है। तौलते पहले जमाने में भी थे, पर केवल 'तुलादान' के समय। शरीर की तौल के बराबर अनाज से लेकर चाँदी-सोना तक दान में दिया जाता था। एक तुलादान जवाहरात का भी कुछ साल पहले सुनने में आया था। तराजू जब बतलाती है कि दो-ढाई सेर या आधा सेर वजन भी शरीर का बढ़ गया है, तब बड़ी खुशी होती है। मांस बढ़ाने के लिए दवाइयों का सेवन होता है, स्थान-परिवर्तन किया जाता है और विदेश-यात्राएँ भी!

इधर अब वजन घटाने की तरफ भी ध्यान गया है। मांस और चर्बी का बहुत अधिक बढ़ जाना जब अनेक रोगों का कारण समझा गया, तब वृद्धि में काट छाँट की जाने लगी। इसके भी कई उपाय निकले। मगर यह तब हुआ, जब मांस-वृद्धि ने खतरे की घंटी बजा दी। कान खड़े हुए। घबड़ाहट भी हुई, तब सुझाया गया कि अंग-अंग का जो मांस थल-थल होने लगा है, उसे घटाने और कमने का इलाज होना ही चाहिए। आहार की मात्रा कम की गयी। मधुर सचिक्कण रसों का परित्याग करना पड़ा, और आठवें या चौथे दिन तराजू पर चढ़ कर आँकना पड़ा कि वजन कितने पौण्ड कम हुआ है। काफी तकलीफ उठानी पड़ी, पर चारा दूसरा नहीं था। खतरे की घंटी जो बज चुकी थी! समय पर चेत कर यह न किया होता, तो बढ़े हुए मांस के बड़े-बड़े लोंदे खुद तो गिरते ही, सारे ढाँचे को भी गिरा देते। 'गीता-प्रवचन' में विनोबाजी ने कहा है कि "मनुष्य तो इतना ही देखता है कि शरीर का वजन किस तरह बढ़ेगा। वह इसीकी चिन्ता करता दीखता है कि जमीन पर की मिट्टी उठ कर उसके शरीर पर कैसे चिपक जाये, मिट्टी के लोंदे उसके शरीर पर कैसे थुप जायें। आखिर इसका मतलब क्या कि शरीर पर इतनी अधिक मिट्टी चढ़ा ली जाये, इतना ज्यादा वजन बढ़ा लिया जाये कि शरीर उसका बोझ ही न सह सके!"

बुद्ध भगवान् ने किसी के थल-थल करते हुए ऐसे ही अनावश्यक मांस को देख कर यह गाथा कही होगी। आश्चर्य भी हुआ होगा कि उसकी प्रज्ञा क्यों नहीं बढ़ रही है। शरीर का फैलाव होता जा रहा है, पर विचार कुछ भी प्रगति नहीं कर रहा है। यह वैसी बात है कि प्रज्ञा के कुंठित हो जाने पर भी, विचार में जड़ता आ जाने पर भी, मनुष्य अपने शरीर के बढ़ाव और फैलाव पर खुशियाँ मना रहा है! वह स्वस्थ कहाँ है? कौन उसे 'स्व' में स्थित कहेगा? वह तो पूर्णतया 'परस्थ' है, 'पर' में स्थित है—उसमें, जो उसका 'अपना' नहीं, बल्कि उलटे उसका घातक है। ऐसे अप्राकृतिक बढ़ाव के धोखे में कौन आकर फँसेगा? किसका मन फूलेगा, तन के ऐसे फैलाव पर!

जीवन का ऊँचा आनन्द तो तभी है, सच्ची स्वस्थता तभी है, जब प्रज्ञा की वृद्धि हो, विचारों का प्रतिक्षण विकास हो। तब, जब कि हर क्षण चिन्तन होता रहे कि स्वस्थता की ओर जीवन प्रगति कर रहा है, न, जिसके लिए शरीररूपी यंत्र परमेश्वर ने दिया है। यह यंत्र चलते-चलते घिसते-घिसते ही अपनी निर्दिष्ट उपयोगिता सिद्ध करेगा। अपने स्वाभाविक वजन पर लोहे के भारी-भारी बेकार टुकड़ों को यदि उसने लाद लिया, तो वह अपनी उपयोगिता को उसी दिन खत्म कर देगा। फिर ऐसी बेकार वृद्धि को वह अपनी खुद की सम्पदा माने ही क्यों?

इसे उन राष्ट्रों पर भी घटाया जा सकता है, जिन्होंने भौतिक सम्पदा को तो बेहिसाब बढ़ा लिया है, पर विचार जिनका कुंठित हो गया है। अतः सही दिशा में वह एक भी पग आगे नहीं बढ़ रहा है।

कल्पना करें ऐसे राष्ट्रों की, जहाँ तथाकथित भौतिक समृद्धि ने मनुष्य को नई-नई आवश्यकता और उनकी सतत पूर्ति की स्वर्ण-जंजीरों से सिर से पैर तक ऐसा जकड़ दिया है कि वह साँस तक नहीं ले पा रहा है, तरह-तरह के यंत्र जहाँ उसके शरीर-यंत्र को बेकार बनाते जा रहे हैं। दिल उसका वहाँ पत्थर बनता जा रहा है, और दिमाग में आविष्कार तो खचकर लगा रहे हैं, पर संतोष और शान्ति का स्थान जैसे बिलकुल खोखला हो गया है।

वहाँ के मानव ने मोटे मोटे हाथ और पैर दूर-दूर तक फैला रखे हैं, पर मन उसका इतना छोटा हो गया है कि विश्वास और उदारता के लिए उसमें तनिक भी ठौर नहीं रहा। ऐसे राष्ट्रों के बचपने का कुछ ठिकाना भी है, जो असीम भौतिक समृद्धि के बल पर सीना तान कर दावा करते हैं कि दुनिया में दरिद्र को सम्पन्न और असभ्य को सुसभ्य बनाने की उनमें भरपूर शक्ति है। ऐसे राष्ट्र अपनी आत्म शक्ति को स्वयं ही खोकर सर्व-संहारक अस्त्र शस्त्रों का निर्माण और संचय करते जा रहे हैं। इस प्रकार उनके अंग-अंग का मांस बढ़ता ही जाता है। पर क्या उनकी प्रज्ञा भी बढ़ रही है? क्या उनके सम्यक् विचार भी कुछ प्रगति कर रहे हैं? क्या ऐसे राष्ट्र असली अर्थ में 'स्वस्थ' कहे जा सकते हैं?

ये राष्ट्र निःशस्त्रीकरण के उद्देश्य से आज कूटनीतिपूर्ण सम्मेलन कर रहे हैं। शान्ति का भवन खड़ा करना चाहते हैं, अविश्वास और संशय की बुनियाद पर। खतरे की घंटी बज उठी है, इसीलिए बढ़ा हुआ कुछ मांस कम कर देना चाहते हैं। जो उपनिवेश उनके शरीर पर जोंकों की तरह थुप रहे थे, उनको, मोहासक्ति के रहते हुए भी, उतार-उतार कर कष्टपूर्वक फेंक रहे हैं। ऐसा उन्होंने स्वेच्छा से नहीं किया। वजन का घटाना अनिवार्य हो गया था। यदि पहले ही संयम की भावना रही होती, तो उनका जीवन आज स्वाभाविक और स्वस्थ होता। रोग पैदा होने पर बढ़े हुए वजन को घटा कर दुरुस्त हो जाना एक बात है, और आरोग्य की अवस्था में दूसरों का हित-साधन करते हुए तप द्वारा शरीर को कृश बना देना बिलकुल दूसरी बात है। उस कृशता में, उस परम स्वस्थता में तेजस् तथा बल बढ़ता है, और कान्ति में कोई अन्तर नहीं पड़ता। अनावश्यक भौतिक वृद्धि के अभाव में दुर्बल दिखता हुआ कोई भी राष्ट्र-दल, विवेक और आत्मबल से युक्त-पूर्ण समृद्ध और स्वस्थ कहा जा सकता है। वह दूसरों से उधार ले-लेकर या माँग-माँग कर वजन को नहीं बढ़ाना चाहेगा। बेकार मांस को न बढ़ा कर वह अपनी प्रज्ञा को ही बढ़ायेगा।

विविध धर्मों और विधायक कार्यों पर भी ऊपर की गाथा को हम घटा सकते हैं। किसी भी धर्म के आदिकाल को देखें, तो उसका रूप विशुद्ध और तेजस्वी देखने में आता है। यद्यपि उसका तब वह छोटा-सा रूप होता है, तथापि उस रूप में सारी तपःसाधना और विशुद्धि घनीभूत होकर रहती है। लेकिन जब वह अर्थ और सत्ता का आश्रय पाकर दुनिया में फैलता है, तब शरीर-सम्पत्ति की व्यापक वृद्धि होते हुए भी, उसकी विशुद्धि और तेजस् क्षीण होने लगते हैं। आदिकाल में जहाँ राज-मुकुट और रत्न-कोष धर्म के सामने झुकते हैं, वहाँ उसके तथाकथित बढ़ाव और फैलाव के दिनों में ऐसी भी एक घड़ी आ जाती है, जब उलटे धर्म को राजमुकुट और रत्न-मंजूषा के आगे दैन्यपूर्वक झुकना पड़ता है। धर्म का अर्थ तब बदल जाता है और मठ संस्था को राजसत्ता की अधीनता अख्तियार करनी पड़ती है, क्योंकि तब धर्म का मांस अनावश्यक रूप में बढ़ जाता है और उसमें निहित प्रज्ञा अत्यन्त क्षीण हो जाती है।

विधायक कार्यों की भी, फैलाव की तृष्णा में, ऐसी ही दुर्गति होती है। लोकाधार की उपेक्षा करके जब विधायक कार्य राज सत्ता और राज्य-कोष का आश्रय पा जाते हैं, तब भले ही ऊपर से उनकी शरीर-सम्पत्ति बढ़ी हुई देखने में आये, पर उनकी प्रेरक-शक्ति प्रज्ञा कुंठित हो जाती है, विचार पंगु और जड़ हो जाता है। न चाहते हुए भी वे घातक चक्रव्यूह में फँस जाते हैं। फलतः स्वास्थ्य उनका नष्ट हो जाता है।

दयालु प्रकृति तब खतरे की घंटी बजाती है। उसे सुन कर अंतिम समय भी वे चेत जा सकते हैं। बढ़ा हुआ बेकार मांस फेंक कर प्रज्ञा को बढ़ाने का, वैचारिक विकास करने का पुरुषार्थ वे विधायक कार्य उस घड़ी भी दिखा सकते हैं।

कनाडा में इसी प्रकार की सेवा-प्रवृत्तियों में लगे युवकों की भी याद आ रही है। डा० डी० के० पारिख की एक किताब है "आशा और उमंग के साथ सेवा में लग जाओ" (टु ग्वो विथ होप) इसे पढ़ कर कई युवकों ने निश्चय किया है कि वे अपने जीवन के कुछ प्रारम्भिक वर्ष किसी दूसरे जरूरतमंद देश की सेवा में बितायेंगे और अपने ज्ञान, कौशल और अनुभव का लाभ उसे देंगे। और यह काम वे ठेठ गाँवों में जाकर ही करेंगे। तदनुसार निश्चय भी हो गया है कि अगले सितम्बर में दस युवक भारत में और दस श्रीलंका पहुँच जायेंगे। और भी तैयार हो रहे हैं। उनके खर्च का प्रबंध होते ही वे भी रवाना हो जायेंगे।

अब मैं आपसे विदा ले रही हूँ। भारत के सामने जो महान समस्याएँ हैं, उनका कुछ-कुछ दर्शन मैं स्वयं कर चुकी हूँ। इसकी बढ़ती हुई आबादी, जातिगत तथा सांप्रदायिक भेदभाव, पुरानी नौकरशाही, निरक्षरता इत्यादि समस्याएं प्रकट ही हैं। परंतु इसके साथ ही मैंने यह भी देखा है कि शासन में और बाहर, प्रकाश और प्रसिद्धि से दूर अनेक श्रद्धावान स्त्री-पुरुष नवीन भारत के निर्माण में जी-जान से जुटे हैं। भगवान को धन्यवाद है कि धीरे-धीरे, किन्तु बड़े त्याग-श्रद्धा के साथ इस भूमि में करुणा का राज्य स्थापित करने का प्रयास हो रहा है।

(सर्वोदय प्रेस सर्विस, इंदौर)

बिहार में शांति-सेना

• विद्यासागर

[पिछले अंक में बिहार में शांति-सेना के कार्यक्रम पर प्रकाश डाला गया था। इस अंक में जिलों में शांति-सेना के विचार और संगठन के संबंध में जानकारी दी जा रही है। —सं०]

प्रादेशिक शांति-सेना की बोधगया की बैठक में ही तय हुआ था कि समिति के संयोजक जिला-केन्द्रों में जाकर सभी शान्ति-सैनिकों से प्रत्यक्ष संपर्क करें। परन्तु संयोजक की सिक्किम यात्रा के कारण यह कार्यक्रम जुलाई तक स्थगित रहा। अगस्त सितम्बर माह में इस पर अमल का प्रयास किया गया। परिणामतः दरभंगा जिले के कपसिया मठार में एवं जिला सर्वोदय मंडल कार्यालय, लहेरियासराय में क्रमशः मधुबनी एवं सदर और समस्तीपुर सबडिवीजन के शान्ति-सैनिकों की गोष्ठी १८-१९ सितम्बर को हुई। इसी अवसर पर दरभंगा जिले के शान्ति-सेना संचालक का भी चुनाव हो गया। सर्वोदय आश्रम, रानीपतरा के कार्यकर्ताओं की भी १५ सितम्बर को गोष्ठी की गयी। परन्तु अन्य जिलों में अपेक्षित सहयोग के अभाव में यह कार्यक्रम यशस्वी नहीं हो सका।

अतः अक्तूबर माह में तिलकपुर (भागलपुर) में हुई शान्ति-सेना समिति की बैठक में हर जिले के विभिन्न रचनात्मक संस्थाओं तथा सर्वोदय-मंडलों के कार्यकर्ताओं की सम्मिलित शान्ति सेना गोष्ठी के आयोजन की व्यवस्थित योजना बनायी गयी। फलस्वरूप नवम्बर-दिसम्बर माह में शाहाबाद, छपरा, हजारीबाग, मुंगेर, पटना, पूर्णियाँ, सहर्षा, मुजफ्फरपुर, भागलपुर और संथाल परगना जिले में गोष्ठियों का सफल आयोजन हुआ। सभी जगह इन गोष्ठियों में भूदान, खादी एवं गांधी निधि के कार्यकर्ता मुख्य रूप से सम्मिलित हुए। उपस्थिति २५ से १०० तक रही। इन गोष्ठियों में जिला शान्ति सेना संचालक का चुनाव एवं प्रति दस हजार की जनसंख्या पर एक शान्ति-सैनिक बनाने का कार्यक्रम विशेष रूप से प्रस्तुत किया गया था। इस सिलसिले में दरभंगा जिले के शान्ति-सैनिकों का रहिका भण्डार में १९ से २१ दिसम्बर तक तीन दिनों का शान्ति-सेना शिविर भी सफलतापूर्वक सपन्न हुआ। इसमें भूदान और खादी के कुल ६१ कार्यकर्ताओं ने भाग लिया। शिविर में प्रातःकाल एक घंटा कवायद और दो घंटे शरीर श्रम का कार्यक्रम भी चलाया गया, जिसमें बहुत उत्साहपूर्वक शिविरार्थियों ने भाग लिया। इसके अतिरिक्त पूसा-हाँसा, सघन क्षेत्र के हाँसा ग्राम में आयोजित क्षेत्र के उच्च व माध्यमिक विद्यालयों के प्रधानाध्यापकों, शिक्षा-शास्त्रियों, ग्रामीण समितियों के मंत्रियों तथा ग्राम-पंचायतों के मुखिया एवं सरपंचों के सम्मिलित शिविर के उद्घाटन समारोह में शान्ति-सेना के विचार एवं कार्यक्रम पर चर्चा हुई। फलतः पूरे सघन क्षेत्र में प्रत्येक दस हजार की संख्या पर एक शान्ति-सैनिक खड़ा करने और अनेक शान्ति-सहायक बनाने का निश्चय किया गया।

विनोबाजी की बिहार-यात्रा के क्रम में विभिन्न पड़ावों पर शान्ति-सेना सम्बन्धी विविध कार्यक्रम आयोजित किये गये। ९ जनवरी को जिला सर्वोदय मंडल कार्यालय, बुनियादगंज, गया में बाबा की उपस्थिति में शान्ति-सेना समिति की एक बैठक की गयी। बाबा ने शान्ति-सेना के संगठन तथा कार्यक्रम पर प्रकाश डाला। १० जनवरी को सिंगठिया पड़ाव पर पटना जिले के शान्ति-सैनिकों एवं विभिन्न जिलों के शान्ति-सेना संचालकों से बाबा का परिचय कराया गया। शांति-सैनिक कैसे हों, इस पर बाबा ने प्रकाश डाला। १७ जनवरी को मोतीदिवरा आश्रम से कपसिया कुष्ठ-सेवा-केन्द्र तक शान्ति-सैनिकों का 'मार्च' हुआ। १८ जनवरी को मुंगेर जिले के प्रथम पड़ाव, अलीगंज पर मुंगेर जिले के शान्ति-सैनिकों की गोष्ठी में बाबा ने शान्ति सेना की बुनियादी शक्ति पर विस्तारपूर्वक प्रकाश डाला।

पूर्णियाँ के शान्ति-सैनिकों का कोसी नदी के तट पर २९-३० जनवरी को श्री वैद्यनाथ प्रसाद चौधरी एवं श्री विद्यासागर के मार्गदर्शन में शिविर हुआ। इस शिविर में भी कवायद का कार्यक्रम रखा गया। पुनः बाबा के पूर्णियाँ जिले में प्रवेश करने पर ३१ जनवरी से २ फरवरी तक ३ दिनों का पूर्णियाँ जिले के शान्ति-सैनिकों का जंगम शिविर बाबा के मार्गदर्शन में चला। इन तीन दिनों के अपने विभिन्न प्रवचनों में बाबा ने शान्ति सेना के विविध पहलुओं पर विस्तारपूर्वक प्रकाश डाला।

पुनः बिहार के अन्तिम दो पड़ावों, कजिया और किशनगंज पर बिहार प्रान्त के शान्ति सैनिकों का जंगम शिविर बाबा के मार्गदर्शन में चला। इस अवसर पर आपने अपने प्रवचनों में शान्ति-सेना के संगठन एवं कार्यक्रम के स्वरूप पर विशेष रूप से प्रकाश डाला। अलावा इसके कजिया से किशनगंज के बीच ५ मील तक बिहार के विभिन्न जिलों से आये डेढ़ सौ शान्ति-सैनिकों का बाबा के मार्गदर्शन में शानदार 'मार्च' हुआ।

बाबा की इस यात्रा के सिलसिले में जगह जगह नये शान्ति-सैनिक बनाने का अभियान चला। परिणामस्वरूप उनकी यात्रा की अवधि में ही लगभग ६०० नये शान्ति-सैनिक बने। इस प्रकार अब तक कुल ९०० शान्ति-सैनिक बिहार में बनाये जा सके हैं।

बाबा के बिहार से विदा होने के पश्चात् विभिन्न जिलों में छिटपुट ढंग से होनेवाली अशान्तियों में शान्ति-सैनिकों ने शान्ति-स्थापन का प्रयास किया है। गत १७ फरवरी को राजेन्द्र कालेज, छपरा में छात्र-यूनियन के संगठन को लेकर छात्रों के दो विरोधी दलों के, जिसमें कुछ प्रोफेसर भी सम्मिलित थे, बीच जम कर संघर्ष हो गया। इसमें एक प्रोफेसर तथा कई छात्र बुरी तरह घायल हो गये। फलतः वातावरण बहुत ही तनाव पूर्ण बन गया। ऐसी परिस्थिति में छपरा के शान्ति-सैनिक श्री दिनेशजी ने अपने साथी श्री भरत प्रसाद के साथ शान्ति निर्माण का जोरदार प्रयास किया। आपने छात्रों के दोनों दलों और प्रोफेसरों से संपर्क स्थापित कर सौमनस्य स्थापित करने की चेष्टा की एवं शान्ति की अपील छपवा कर वितरित की।

[गतांक से समाप्त]

शांति-स्थापना की दिशा में

[बिहार राज्य शांति सेना समिति के संयोजक श्री विद्यासागर सिंह ने पटना शहर के दक्षिणी ग्रामीण अंचल के गाँवों में हुए उपद्रवों के सम्बन्ध में निम्नलिखित वक्तव्य प्रकाशनार्थ भेजा है। —सं०]

पटना शहर के दक्षिण ग्रामीण अंचल के दो प्रमुख जातियों के बीच माधोपुर ग्राम में गत २४ मई को संघर्ष हो गया, जिसमें कई घर जल गये तथा कई व्यक्ति घायल हो गये। फलस्वरूप जल्ला-बारा-गौर्या के सम्पूर्ण क्षेत्र में वातावरण विषाक्त एवं तनाव पूर्ण बन गया। नाना प्रकार की निराधार अफवाहें वातावरण में आतंक फैलाने लगीं।

ऐसी परिस्थिति में उक्त क्षेत्र में परस्पर सौहार्द एवं शान्ति की स्थापना के लिये दस शान्ति-सैनिकों का दल लेकर मैं गत १ जून को पहुँचा। सर्वप्रथम हमने क्षतिग्रस्त क्षेत्र का निरीक्षण किया और सारी परिस्थिति को समझ कर वहाँ के ग्रामीणों को शान्त रहने एवं हमारे शांति प्रयासों में सहयोग देने का अनुरोध किया।

शांति रक्षा के हेतु माधोपुर ग्राम में मौजूद सशस्त्र पुलिस की टुकड़ी के प्रभारी मजिस्ट्रेट से मिल कर हमने अपने शांति-प्रयास के सम्बन्ध में चर्चा की। साथ ही पड़ोसी फतुहा थाना के विधायक श्री शिव महादेव प्रसाद से भी इस सम्बन्ध में बातें हुईं और उनके परामर्श से हमने उस क्षेत्र में अपनी यात्रा का कार्यक्रम बनाया। तदनुसार माधोपुर के चतुर्दिक पड़ोसी गाँवों में घूम घूम कर व्यक्तिगत तौर पर तथा सार्वजनिक सभा द्वारा हमने लोगों से भ्रामक अफवाहों के चक्कर में न पड़ कर शान्त रहने, परस्पर सौमनस्य निर्माण करने एवं क्षतिग्रस्त परिवारों की सहायता करने की अपील की। सर्वत्र लोगों ने सहयोग का आश्वासन दिया।

इसी क्रम में गत ३ जून की संध्या में हमारा शान्ति-दल मर्ची गाँव में पहुँचा। अचानक वहाँ के लोगों ने हमें विरोधी पक्ष का भेदिया समझा और आतंकित हो गये। उन्हें समझाने के हमारे सारे प्रयत्न विफल रहे। रात्रि में विरोधियों के आक्रमण की आशंका से ग्रामीणों ने हमें बलपूर्वक एक कमरे में बंद कर दिया। सैकड़ों हथियार-बंद लोग संभावित आक्रमण से गाँव की रक्षा के लिए एकत्रित होकर शोरगुल करने लगे। इसकी सूचना पाकर सशस्त्र पुलिस का एक दल रात्रि में ही वहाँ आ पहुँचा। पुलिस ने कई ग्रामीणों को गिरफ्तार किया। रात्रि में गिरफ्तार ग्रामीणों के साथ हम लोग भी पुलिस की निगरानी में रहे, जिससे कई असुविधाओं का सामना करना पड़ा।

सुबह हम लोग पुलिस के मातहत पटना सिटी चौक थाना में लाये गये। वहाँ हम लोगों को नाम-पता लेकर छोड़ दिया गया तथा ग्रामीणों को कैदखाने में डाल दिया गया।

पुनः हमने फतुहा थाने के विधायक श्री शिवमहादेव प्रसाद तथा गुलजारबाग के श्री महनाथ लाल एवं श्री भगवान सिंह को साथ लेकर महमदपुर, गौरहरचक, महुली, मर्ची, माधोपुर और फतेपुर गाँवों की यात्रा की। मर्ची में जो गलतफहमी के कारण ग्रामीणों ने शान्ति-सैनिकों के साथ अप्रिय व्यवहार किया था, उसके लिए मर्ची तथा अन्य गाँवों के लोगों ने भी बहुत दुःख एवं शर्मिन्दगी जाहिर की। मर्ची गाँव के लोगों ने इस बार बहुत प्रेमपूर्वक शान्ति-सैनिकों का स्वागत-सत्कार किया। इस बार सर्वत्र हमारा स्वागत हुआ एवं हमारे शांति प्रयासों की लोगों ने सराहना की। लोगों की शंकाओं का प्रेमपूर्वक समाधान किया गया और ग्रामीणों ने शांति बनाये रखने तथा सौमनस्य कायम करने में योग देने का आश्वासन दिया है।

सर्वश्री शिवमहादेव प्रसाद, महनाथ लाल और भगवान सिंह गाँवों में शांति समितियाँ स्थापित करने में प्रयत्नशील हैं, जिससे राहगीरों को मार्ग में किसी प्रकार की आशंका और भय नहीं हो। अब पारस्परिक गलतफहमी और तनाव का अंधकार तेजी से मिटता जा रहा है और वातावरण शांत होता जा रहा है। शीघ्र ही सामान्य स्थिति कायम हो जाने की आशा है। शान्ति-सैनिक अपने शान्ति प्रयास में जागरूक एवं तत्पर हैं।

शांति-विद्यालय का पहला सत्र

नारायण देसाई

[२४ जून को शांति-सेना विद्यालय का प्रथम सत्र समाप्त हुआ। सत्र के समावर्तन के अवसर पर विद्यालय के आचार्य श्री नारायण देसाई ने जो विवरण प्रस्तुत किया, उसे हम यहाँ दे रहे हैं। —सं०]

३० जनवरी '६१ से २४ जून '६१ तक चले शांति-सेना विद्यालय के इस प्रथम सत्र में हिंदुस्तान के भिन्न-भिन्न प्रांत से कुल १८ भाई आये थे। प्रदेशवार संख्या इस तरह है : उ० प्र० ५, महाराष्ट्र २, पंजाब २, उड़ीसा २, गुजरात २, राजस्थान १, बिहार १, असम १ और काश्मीर १। इनमें से १५ भाई सत्र के पूरे समय तक रहे। ३ भाई बीमारी या अन्य कारण से सत्र के बीच से वापस गये। इनके अलावा काशी में काम करने वाले एक कार्यकर्ता पूरे समय वर्गों में हाजिर रहे। इस सत्र में निर्धारित पाठ्यक्रम अच्छी तरह से पूरा हो सका। कुछ तफसील के विषय छूट गये, तो कुछ पाठ्यक्रम के बाहर के भी हो सके।

शिक्षण के मुख्य अंग थे—सैद्धांतिक, सामूहिक जीवन से उत्पन्न होने वाले विषयों का अध्ययन तथा प्रत्यक्ष कार्य के कारण मिलने वाला शिक्षण। सैद्धांतिक विषय निम्नलिखित हुए :–

११ प्रमुख उपनिषदों में से ११३ मंत्रों का अध्ययन।

ईशोपनिषद् : संपूर्ण
ब्रह्मसूत्र : थोड़ा परिचय
स्थितप्रज्ञ दर्शन : सम्पूर्ण
मंगल प्रभात : सम्पूर्ण
गीता-प्रवचन : सम्पूर्ण

'आश्रम भजनावली' से दस भजन तथा शांति संबंधी दस गीत।

वेदान्त, बौद्ध, जैन दर्शनों का परिचय।

ईसाई, इस्लाम तथा यहूदी धर्मों की सामान्य जानकारी।

हमारे सन्त-साहित्य तथा संस्कृति का परिचय।

निम्नलिखित समस्याओं का गहराई से अध्ययन हुआ :

(१) भारत की भाषा-समस्या
(२) जातिवाद और संप्रदायवाद
(३) हमारी आर्थिक समस्या
(४) हमारी राजनीतिक समस्या
(५) *औद्योगिक क्षेत्र में संघर्ष*

इनके अलावा निम्न सिद्धांतों का अध्ययन हुआ :

अर्थशास्त्र के मुख्य सिद्धांत।

राजनीति के मुख्य सिद्धांत।

मनोविज्ञान के मुख्य सिद्धांत।

अहिंसा शास्त्र : गांधी के पूर्व, गांधी के युग में तथा गांधी के बाद अहिंसा।

सत्याग्रह का शास्त्र और इतिहास : दक्षिण अफ्रिका, चम्पारन, अहमदाबाद मिल-मजदूर, खेड़ा, बोरसद, असहयोग-आंदोलन, बारडोली, वायकोम, नमक सत्याग्रह, राष्ट्रीय सविनय कानून-भंग आंदोलन, अस्पृश्यता-निवारण के लिए सत्याग्रह, व्यक्तिगत सत्याग्रह, बयालीस का आंदोलन, नोआखाली और कलकत्ता, दिल्ली के उपवास।

राष्ट्रीय आन्दोलन का इतिहास।

जगत् में आज तक हुए अहिंसा के विविध प्रकार के प्रयोग। विदेशों में शांति-आंदोलन। शांति सेना के विभिन्न पहलुओं पर विचार। निम्नलिखित महापुरुषों की जीवनी—

रवीन्द्रनाथ ठाकुर
हजरत मुहम्मद पैगम्बर
गणेश शंकर विद्यार्थी
राजा राममोहन राय
ईश्वरचन्द्र विद्यासागर
कार्ल मार्क्स — गांधीजी
भगवान् बुद्ध — महावीर स्वामी
मूसा — ईसा मसीह
रामकृष्ण परमहंस — विवेकानन्द
सिस्टर निवेदिता — एनी बेसेंट
कस्तूरबा — विनोबा

तकनीकी विकास और समाज-जीवन पर *उसका असर। सहजीवन की समस्याएँ।* तीसरी पंचवार्षिक योजना।

शांति और सृजनात्मक प्रवृत्ति।

सर्वोदय के विभिन्न कार्यक्रमों पर चर्चा।

सामूहिक जीवन के साथ निम्नलिखित विषयों पर बराबर चिंतन चलता रहा :

(१) एक ही सत्य का दर्शन विभिन्न व्यक्तियों के विभिन्न रूपों में होता है।
(२) सर्वानुमति की पद्धति के गुण तथा उसकी मर्यादाएँ।
(३) सामूहिक निर्णय
(४) नेतृत्व
(५) *कार्य-विभाजन*

इसके अलावा सामूहिक जीवन में निम्नलिखित कार्य हुए :–

(१) रसोई बनाने में सहायता
(२) विभिन्न प्रकार की सफाई
(३) कृषि-कार्य में सहायता
(४) बीमारी में परस्पर सहायता
(५) पड़ोस के गाँव में आग बुझाने के लिए जाना
(६) तैरना
(७) साइकिल चलाना
(८) सभा-आयोजन
(९) भीड़ में व्यवस्था

(शांति-सैनिक का मुख्य शस्त्र यह है कि दूसरे के लिए अपने से अधिक ही प्रेम हो, कम तो होना ही नहीं चाहिए। —विनोबा)

नगर-कार्य की बाजू इस सत्र में उतनी सरल नहीं हो सकी, जितनी कि उम्मीद थी। उसके दो प्रमुख कारण थे–*एक तो शिक्षक तथा अधिकांश विद्यार्थी* इस नगर से अपरिचित थे। दूसरा कारण *यह कि विद्यालय में एक ही शिक्षक होने के कारण हर विषय में समय देना शक्य* नहीं होता था। फिर भी नगर-कार्य में निम्नलिखित काम थोड़ी-बहुत सफलता से हो सके :

(१) नगर का भौगोलिक परिचय।
(२) काशी *विद्यापीठ के प्राध्यापकों से* परिचय। विशेषतः उसके समाज-सेवा विभाग से परिचय।
(३) नगर की निम्न समस्याओं का सामान्य परिचय :
(अ) *नगर की सफाई*
(आ) शराब का प्रश्न
(इ) साधुओं की हालत
(ई) *रिक्शावालों की हालत*
(उ) बुनकरों की हालत

विद्यालय के निकटवर्ती क्षेत्र राजघाट का परिचय कुछ विशेष हो सका। होली के दिनों में जब कुछ स्थानों में तंग परिस्थिति थी, तब विद्यालय के सहयोग के कारण होली का उत्सव आनन्दमय हो गया। राजघाट की डोम बस्ती से विशेष परिचय *तथा वहाँ सेवा-केन्द्र की स्थापना।*

सत्र के दरमियान सर्वोदयपुरम्, चेथेट की लम्बी यात्रा तथा सेवापुरी की छोटी यात्रा हुई।

विद्यालय के वर्गों में निम्नलिखित ३० वक्ताओं के प्रवचन हुए :

सर्वश्री दादा धर्माधिकारी, आशा देवी, अच्युत पटवर्धन, पद्मनारायण आचार्य, गोरावाला, मनमोहन चौधरी, वियोगी हरि, देवी प्रसाद गुप्त, नागेश्वर प्रसाद, धीरेन्द्र मजूमदार, जीन गैवर्टग्, बोरसोदी, पूर्णचन्द्र जैन, वल्लभस्वामी, विद्यासागर, शंकरराव देव, प्यारेलाल, फड़के शास्त्री, जगन्नाथ प्रसाद उपाध्याय, हारलैंड, अहद फातमी, नारायण चौधरी, नवकृष्ण चौधरी, राजाराम शास्त्री, डा० घोष, कृष्णराज मेहता, एडवर्ड्स, निर्मला देशपाण्डे, विमला ठकार, तिमप्पा नायक,

विद्यालय के विद्यार्थियों ने निम्नलिखित विषयों पर *अभ्यास करके निबन्ध* लिखे :

(१) जबलपुर-काण्ड
(२) हमारी शिक्षा का प्रश्न
(३) नागा-प्रश्न
(४) *पंजाबी सूबा*
(५) संस्कृति के अंचल में हिंदू-मुस्लिम-ऐक्य
(६) मध्यम वर्ग
(७) गोआ
(८) *पारडी की भूमि-समस्या*
(९) सर्वेश्वर और सरतुआ
(१०) बेलगाँव
(११) कांगो
(१२) फारमोसा
(१३) हम सुखी कैसे रहें?
(१४) डाकू-समस्या
(१५) बनारस के बुनकरों की समस्या

विद्यालय के सफलताओं के साथ उसकी असफलताओं का भी यहाँ वर्णन कर देना उचित है। *अनुमानित पाठ्यक्रम* में से निम्नलिखित पूरा नहीं कर पाये :

(१) इस्लाम धर्म के बारे में अधिक तफसील से जानकारी
(२) विद्यार्थी-आंदोलन का इतिहास
(३) मजदूर-आंदोलन का इतिहास
(४) वेश्या प्रश्न
(५) कुछ प्रमुख लोगों की जीवनी
(६) रोगों की प्राथमिक चिकित्सा तथा शरीर-विज्ञान
(७) सफाई शास्त्र

विद्यालय में संचालक की ओर से कोई नियम न रखने का जो आग्रह रखा गया था, उसका परिणाम कैसा आया, यह पहले सत्र के अनुभव पर से कहना सम्भव नहीं। सामूहिक निर्णय अपनी जिम्मेवारी को समझना और कार्य-संयोजन के गुणों का विकास उतना नहीं हो सका, जितना कि अपेक्षित था।

इन असफलताओं के लिए पूर्ण जिम्मेवारी मेरी ही है, यह स्वीकार करना होगा। इस बार विद्यालय में दक्षिण हिन्दुस्तान, बंगाल तथा मध्य प्रदेश से कोई शांति-सैनिक न आ सका। इसे भी हमारे आंदोलन की एक कमी ही मानना होगा। *आशा है कि अगला सत्र, जो १५ अगस्त से शुरू हो रहा है, उसमें यह त्रुटि* दूर हो जायेगी।

मासिक चिट्ठियाँ

पंजाब की चिट्ठी

पंजाब सर्वोदय-कार्यकर्त्ताओं का एक द्विदिवसीय शिविर १७ जून को लुधियाना में आरम्भ हुआ। पहले दिन के सम्मेलन की अध्यक्षता डा० गोपीचन्द भार्गव, वित्त-मन्त्री, पंजाब ने की। पंजाब भर से लगभग एक सौ प्रमुख सर्वोदय-कार्यकर्ताओं ने इसमें भाग लिया।

दो दिन के इस शिविर में निम्न विषयों पर चर्चाएँ हुई :

(१) अशोभनीय पोस्टर्स और शराब-बन्दी। (२) सर्वोदय पात्र। (३) लोकशिक्षण (४) भूमि-वितरण तथा भूमि प्राप्ति। (५) शान्ति-सेना। (६) अर्थ-संग्रह अभियान। इन चर्चाओं का सार नीचे दिया जा रहा है।

अशोभनीय पोस्टरों का हटाना और शराब-बन्दी

पंजाब के सर्वोदय-कार्यकर्त्ताओं का यह शिविर सर्वसम्मति से प्रस्ताव मंजूर करता है कि अशोभनीय पोस्टरों के हटाने और शराबबन्दी के आन्दोलन पर पंजाब भर में जोर दिया जाय और हिसार जिले में इस आन्दोलन पर विशेष बल दिया जाय।

सर्वोदय-पात्र

पंजाब के सर्वोदय-कार्यकर्त्ताओं का यह शिविर निश्चय करता है कि सर्वोदय-पात्र के सम्बन्ध में सबको पुनः अपनी शक्ति लगानी चाहिये। इस काम में विनोबाजी के पंजाब से जाने के बाद जो शिथिलता आयी है, उसे दूर करना चाहिये और दो लाख सर्वोदय पात्रों का जो संकल्प किया गया था, उसे पूरा किया जाय।

लोक-शिक्षण

पंजाब के सर्वोदय-कार्यकर्त्ता का यह शिविर यह निश्चय करता है कि :

(१) चुनाव के अवसर पर मतदाता स्वयं उम्मीदवार खड़े करें, इस कार्यक्रम का व्यापक प्रचार किया जाय।

(२) पंचायत राज्य के कार्यक्रम में सक्रिय भाग लेने के लिये लोक शिक्षण का कार्य जोर शोर से आरम्भ किया जाय। लोकशिक्षण का मूल विचार ग्रामदान में निहित है। इसलिये ग्रामदान आन्दोलन पर विशेष बल दिया जाय। श्री जयप्रकाश नारायण, श्री दादा धर्माधिकारी और श्री शंकरराव देव जैसे नेताओं के सार्वजनिक भाषण करवाने जायें।

(३) खादी के 'नये मोड़' के द्वारा आर्थिक विकेन्द्रीकरण के कार्य को सफल बनाया जाय।

(४) राजनीतिक पार्टियों के प्रमुख लोगों तथा अन्य विशेष लोगों से सम्पर्क जोड़ कर उन्हें लोकनीति का विचार समझाया जाय और इस प्रकार अधिक-से-अधिक लोगों का सहयोग इस कार्य के लिये प्राप्त किया जाय।

(५) नगरपालिका, पंचायत आदि स्थानीय संस्थाओं के चुनावों में राजनीतिक पार्टियाँ दखल न दें।

भूमि-वितरण तथा भूमि-प्राप्ति

भूमि-वितरण के लिये पंजाब सर्वोदय-कार्यकर्त्ताओं का यह शिविर यह प्रस्ताव पास करता है कि जब भूदान-बोर्ड के निर्णय के अनुसार विभागीय व्यवस्थापक तथा उनके सहायक इस काम को आगे बढ़ाने के लिये प्रयत्नशील हों और दूसरे लोगों से सहयोग लेकर इस काम को तीन मास में पूरा करें। नई भूमि प्राप्ति का प्रयत्न भी साथ साथ जारी रखें।

शान्ति-सेना

पंजाब सर्वोदय कार्यकर्त्ताओं का यह शिविर यह आवश्यकता अनुभव करता है कि पंजाब भर में शान्ति सेना और शान्ति-पात्र का विचार व्यापक रूप से फैलाया जाय और आवाहन करता है कि प्रदेश भर में शांति-सैनिकों की संख्या बढ़ायी जाय। उनके योग्य प्रशिक्षण की व्यवस्था की जाय, ताकि साधारण तथा संकटकालीन अवस्था में सत्य और अहिंसा के आधार पर भी जनता रक्षण कर सकें।

अर्थ-संग्रह अभियान

इस महत्त्वपूर्ण विषय पर की गयी चर्चा में अनेक सज्जनों ने भाग लिया। इस चर्चा में यह विचार भी रखा गया कि हमें सम्पत्ति दान और सर्वोदय-पात्र के द्वारा ही आर्थिक समस्याओं को हल करना चाहिए। यह विचार भी प्रगट किया गया कि हम अपरिग्रह के सिद्धान्त को मानने वालों के लिये अर्थ संग्रह कहाँ तक उचित होगा? इस पर संयोजक ने कहा कि व्यक्तिगत स्वार्थों के लिये संग्रह पाप है, मगर समाज-सेवा के लिये समाज में संग्रह धर्म है। यह माँग भी आयी कि समय कम है, अतः सर्व सेवा संघ को "अर्थ-संग्रह अभियान" की अवधि बढ़ाने के लिये लिखा जाय। अन्त में श्री सत्यम् भाई ने जो विचार रखे, उन्हीं को संयोजक ने इस चर्चा का सार बताते हुए कार्यकर्ताओं को आवाहन किया कि वह पूरी शक्ति के साथ इस कार्य में जुट जायें।

अर्थ-संग्रह अभियान संबंधी चर्चा का सार यहाँ दे रहे हैं। अर्थ संग्रह अभियान के लिये सर्व सेवा संघ के अध्यक्ष ने अपील की है और वह अपील सर्वोदय-कार्यकर्त्ताओं के लिये अनुशासन के विचार से एक हुक्म का दर्जा रखती है। उस हुक्म की तामील की ही जानी चाहिए। यदि कार्यकर्त्ताओं के मन में कुछ शंका हो अथवा ऐसा धर्म-संकट आ जाये कि अन्तर आत्मा यह काम करने को न माने तो सर्वोदय विचार-पद्धति के अनुसार दो तरीके निकाले जा सकते हैं। पहला यह कि पहले काम किया जाय तथा बाद में एतराज पेश किया जाय। दूसरा यह कि उस अवस्था में जब अन्तर आत्मा ही न माने, तो लोक सेवक के कार्य-भार से मुक्त हो जाना चाहिये। संयोजक महोदय द्वारा यह भी तय रहा कि निर्धारित अवधि के अन्दर ही यह काम पूरा किया जाय और अन्त में यदि कुछ कसर रह जाय तो उसे पूरा करने के लिये सर्व सेवा संघ से अवधि बढ़ाने के लिये प्रार्थना की जा सकती है। संयोजक महोदय ने यह भी कहा कि जो इस "अर्थ-संग्रह अभियान" में निष्ठा न रखते हों वे सम्पत्ति-दान और सर्वोदय पात्र के काम में डेढ़ मास के लिये जुट जायें।

पंजाब सर्वोदय मण्डल इस काम के लिये सरल भाषा में आवश्यक साहित्य भी प्रकाशित करेगा। यह तय रहा कि एकत्रित धन का विनियोग सर्व सेवा संघ के निश्चयानुसार रहेगा यानी छठा भाग सर्व सेवा संघ, छठा भाग पंजाब सर्वोदय-मण्डल तथा दो तिहाई भाग स्थानीय कार्य के लिए रहेगा।

पंजाब सर्वोदय मंडल, —ओमप्रकाश त्रिखा,
पटीकल्याणा संयोजक

चम्बल घाटी की डायरी

ग्वालियर में लच्छी और प्रभु पर ए० डी० एम० कोर्ट, ग्वालियर में लगभग नौ मास से मुकदमा चल रहा है। गत ६ जून को बचाव-पक्ष की ओर से बम्बई से आये श्री सीताराम जगन्नाथ दुबे और श्री लल्लूददा की गवाहियाँ हो गयी हैं।

कउपुरा, पन्सोरा, दुल्लसन, मौसलपुरा मुकदमों में भिण्ड की अदालत से हुए फैसलों के आजीवन कारावास व अन्य सजाओं के खिलाफ अपीलें ग्वालियर हाईकोर्ट में दाखिल हैं, पर अभी सुनवाई की तारीख निश्चित नहीं हुई है।

आगरा में उदयपुर डकैती, फतेहपुर हत्याकाण्ड एवं रैका पुलिस मुठभेड़ के तीन मुकदमे अदालत जे० ओ० परगना बाह, आगरा में चल रहे हैं। इनमें उदयपुर डकैती सेशन कमिट हो गयी है।

इटावा में बेला हत्याकाण्ड थाना बकेवरा का अभियोग जे० ओ० औरैया की अदालत में चल रहा है। इसमें दुर्जन, मोहरमन और पातीराम अभियुक्त हैं। इटावा में श्री बी० एन० शर्मा और श्री धर्मप्रकाश चतुर्वेदी का निःशुल्क पैरवी का सहयोग प्राप्त हो गया है।

अध्यक्ष की अपील

उत्तर प्रदेश सर्वोदय-मण्डल के विघटन के बाद चम्बल घाटी शांति-समिति के अध्यक्ष की ओर से सभी जिलों को निवेदन किया गया कि वे अपने-अपने जिले से कम-से-कम एक एक कार्यकर्त्ता दें, जो स्थायी रूप से कम से कम एक वर्ष का समय चम्बल घाटी क्षेत्र में दे सकें। अथवा एक कार्यकर्त्ता के योगक्षेम की जिम्मेदारी उठायें, जिससे क्षेत्रीय कार्यकर्त्ता तैयार किये जा सकें।

अभी तक कई जिलों से इस सम्बन्ध में उत्तर आ चुके हैं। कुछ ने कार्यकर्त्ता का निर्वाह-खर्च पूछा है, कुछ ने कार्यकर्त्ता भेजने का आश्वासन दिया है। मथुरा जिले से भाई रैतसिंह आ भी गये थे, जो फिलहाल अर्थ-संग्रह अभियान को सफल बनाने की दृष्टि से अपने मथुरा जिले में चले गये हैं और अगस्त के आरम्भ में आ जायेंगे।

समिति-बैठक

समिति की ग्यारहवीं बैठक १४ मई, '६१ को घटिया मामू भानजा आगरा में हुई थी। उस समय समिति और उसके कार्यक्रम पर नये सिरे से विचार आगामी बैठक में करने का सोचा गया। कार्य पद्धति के बारे में तय हुआ कि नम्रतापूर्वक हम अपना काम करते रहें। जेल में सत्संग का लाभ आत्मसमर्पणकारियों को मिले, इसके लिए जेल के अधिकारियों से सम्पर्क स्थापित किया जाय। मध्य प्रदेश पुलिस के कार्यवाहक इन्सपेक्टर जनरल श्री इन्द्रजीत सिंह जौहर के रायपुर में दिये गये प्रेस-वक्तव्य के बारे चर्चा हुई। क्षेत्र में काम कर रहे उत्तर प्रदेश के शांति-सैनिकों के निर्वाह-व्यय की व्यवस्था के बारे में जिलों को लिखना तय हुआ।

समिति की बारहवीं बैठक ७ जून, '६१ को समिति के प्रधान कार्यालय भिण्ड में हुई। १ जनवरी, '६१ से ३१ मार्च, '६१ तक के हिसाब की जानकारी दी गयी और जाँच के बाद उसकी पुष्टि हुई। श्री हेमदेव शर्मा ने कहा कि पूरा समय कार्यालय में न देने के कारण मैं स्वयं मंत्री पद पर रहना नहीं चाहता। अध्यक्ष श्री कृष्णस्वरूपजी ने कहा कि समिति में किसी अध्यक्ष की आवश्यकता नहीं है। केवल मीटिंग के समय अस्थायी अध्यक्ष हो जाये और मीटिंग आदि बुलाने के लिये एक संयोजक बना लिया जाय। समिति में काफी विचार के बाद धन्यवाद सहित अध्यक्ष तथा मंत्री के त्यागपत्र स्वीकार किये गये और निश्चय हुआ कि आइन्दा समिति का एक संयोजक रहे। श्री लल्लूददा का नाम संयोजक के लिए प्रस्तावित हुआ, जो सर्वसम्मति से स्वीकार किया गया।

—गुरुशरण

चम्बलघाटी शांति समिति
भिण्ड (म० प्र०)

हुए। सम्मेलन की ओर से एक निवेदन भी रखा गया, जिसमें शान्तिपूर्ण उपायों से भूमि-समस्या के निराकरण की आवश्यकता पर जोर दिया गया।

इस सम्मेलन के कुछ व्याख्यानों से एक भय का-सा वातावरण भी पैदा हो गया था। ऐसा लगता था, मानो तुरन्त सत्याग्रह शुरू होने वाला है। मगर इस तरह की कोई चीज नहीं थी। श्री जगन्नाथनजी ने जाहिर किया कि उनकी पदयात्रा वदलगुड की दिशा में चलेगी और पापानाडु में निकट भविष्य में एक शिविर का आयोजन किया जायेगा।

तमिलनाड में जान है। वहाँ के अपने साथियों-मित्रों में कमी कार्यक्षमता है। उत्साह और जोश भी भरपूर है। अगर उनका ठीक से मार्गदर्शन किया गया और वे नम्रतापूर्वक आगे बढ़ सकें, तो निश्चय ही वहाँ अहिंसक क्रांति होगी और ग्राम स्वराज्य का स्वप्न साकार होगा।

शांति-विद्यालय का दूसरा सत्र

शान्ति-विद्यालय का दूसरा सत्र १५ अगस्त से काशी में शुरू होगा। यह सत्र ४ मास के लिये होगा। विद्यालय में आम तौर पर उन शान्ति-सैनिकों को लिया जायेगा, जिनके नाम प्रान्तीय सर्वोदय-मण्डल से हमारे पास आयेंगे। किन्तु कोई अपने खर्च से स्वतंत्र तौर पर आना चाहता हो तो उसे सीधे लिया जा सकता है। विद्यालय में दाखिल होने के लिये शांति-सैनिक का प्रतिज्ञा पत्र भरना जरूरी नहीं है। हम उम्मीद रखते हैं कि प्रशिक्षण के बाद विद्यार्थी शांति-सैनिक बन जायेगा। विद्यालय में आने-जाने का सफर खर्च तथा काशीनिवास का भोजन तथा अन्य खर्च प्रान्तीय सर्वोदय-मण्डल देगा। स्वतंत्र विद्यार्थियों को यह खर्च स्वयं करना होगा। मासिक खर्च प्रायः ५० रुपये होगा। जो भाई सर्वोदय-मण्डल के जरिये आना चाहें वे अभी से उनके साथ पत्रव्यवहार करें। विद्यालय में दाखिल होने की आखिरी तारीख विद्यालय आरम्भ होने से ५ दिन बाद की मानी जायगी। उसके बाद विद्यालय में किसी को दाखिल नहीं किया जा सकेगा। विद्यालय में दाखिल होनेवाले विद्यार्थी को शरीर-परिश्रम की तैयारी रखनी होगी। बीमारी या अन्य किसी विशेष कठिनाई को छोड़ कर इन चार महीनों में बीच में घर जाने की छुट्टी नहीं होगी। विद्यालय के सारे नियम विद्यार्थी स्वयं बनायेंगे, किन्तु बनाये हुए नियमों का पालन हो, इसका आग्रह रखा जायेगा। विद्यार्थियों के लिये आवेदन-पत्र भेजने की आखिरी तारीख ११ जुलाई रहेगी।

शान्ति विद्यालय, राजघाट, काशी —नारायण देसाई

बिहार में 'बीघे में कट्ठा'

"बीघे में कट्ठा" अभियान में तीव्रता लाने एवं आगे के कार्यक्रम पर विचार-विमर्श करने के लिए श्री जयप्रकाश नारायण ने १६ जून से १० जुलाई तक अपनी बिहार की यात्रा स्थगित कर दी। श्री जयप्रकाशजी की सलाह से २० जून को बिहार सर्वोदय मंडल के कार्यालय में जिला सर्वोदय-मंडल एवं जिला भूमि-प्राप्ति समिति के अध्यक्ष, मंत्री, संयोजक एवं विशेष आमंत्रितों की बैठक हुई।

बैठक में श्री जयप्रकाश नारायण, श्रीमती प्रभावती देवी, श्री वैद्यनाथ प्रसाद चौधरी, श्री रामदेव सिंह त्यागी के अतिरिक्त लगभग ३८ व्यक्ति उपस्थित थे। बैठक ने 'बीघे में कट्ठा' कार्यक्रम में तीव्रता लाने एवं ३ दिसम्बर तक १० लाख भूमि प्राप्त करने के लिए सर्वप्रथम छह महीने का कार्यक्रम निश्चय किया।

निर्णयानुसार मुजफ्फरपुर, दरभंगा, पूर्णियाँ, सहरसा, संथाल परगना, मुंगेर और गया, इन सात जिलों में सघन रूप से कार्यकर्ताओं की तीन प्रकार की टोलियाँ भूमि-प्राप्ति का काम करेंगी। पहली टोली 'पूर्व-तैयारी टोली' कहलायेगी, जो मुख्य टोली के पहुँचने के पहले भूमिवानों से सम्पर्क स्थापित करेगी। प्रचार-साहित्य, पर्चे द्वारा एवं व्यक्तिगत बातचीत तथा दीवारों पर सर्वोदय के नारे आदि लिख कर वातावरण बनाने का प्रयास करेगी। दूसरी 'मुख्य टोली' कहलायेगी, जो आम सभा के अतिरिक्त क्रमशः गाँव के सभी भूमिवानों से मिल कर भूमि-प्राप्ति एवं वितरण-दानपत्र भरवाने का काम करेगी। तीसरी 'अंतिम टोली' होगी, जो मुख्य टोली के बाद भी भूमिवानों से मिलने एवं वातावरण को कायम रखने का प्रयास करेगी। अभियान का कार्य ग्राम पंचायत के आधार पर शुरू होगा और पूरे अंचल क्षेत्र तक रहेगा। एक अंचल में सघन कार्य होने के बाद ही दूसरे अंचल में प्रवेश किया जायगा। बिहार सर्वोदय मंडल के राज्य स्तर के नेताओं ने भी अभियान में पूरा समय देने का निश्चय किया है और कार्यक्षेत्र वाले जिलों में काम करने की जिम्मेवारी ली है। अतिरिक्त जिलों के कार्यकर्ता भी इन्हीं सात जिलों में भूमि-प्राप्ति का काम करेंगे। छह महीना कार्य करने के बाद अगले कार्यक्रम पर विचार विमर्श किया जायगा।

श्री वैद्यनाथ प्रसाद चौधरी द्वारा भू-स्वामित्व का त्याग

श्री वैद्यनाथ प्रसाद चौधरी ने अपनी सारी जमीन भूदान यज्ञ कमिटी को दान में दे दी है। स्मरण हो कि चौधरी जी ने इसके पहले भी विनोबाजी के आह्वान पर करीब १०० एकड़ जमीन भूदान में दी थी। इनके पास ४९ एकड़ के करीब जमीन बच गयी थी। उसे इस बार दान में दे दी। इनके गाँव बरेटा, थाना कोढ़ा (पूर्णियाँ) में कोई भूमिहीन नहीं रह गया है।

चौधरीजी चाहते थे कि इनके गाँव के सभी किसान जमीन पर से स्वामित्व का त्याग कर ग्रामदान की घोषणा करें और गाँव के सभी लोग नये सिरे से गाँव के निर्माण-कार्य में जुट पड़ें, पर गाँव के सभी लोग अभी इस काम के लिये तैयार नहीं हो सके हैं। गाँववालों को स्वामित्व विसर्जन की प्रेरणा मिले, इसलिये चौधरीजी ने अपनी जमीन के स्वामित्व के विसर्जन की घोषणा करते हुए सारी जमीन भूदान-समिति को सौंप दी है। चौधरीजी ने अपने दानपत्र में कहा है कि गाँव के लोग जब ग्रामदान के लिये तैयार हो जायँ तो भूदान समिति उनकी सारी जमीन ग्राम-समाज को सौंप दें। जब तक ग्रामदान नहीं होता है, तब तक इस जमीन की सारी आमदनी उस गाँव के कल्याण-कार्य में लगायी जाय।

चौधरीजी ने अपनी सारी जमीन के दान की घोषणा करते हुए कहा है कि जमीन से व्यक्तिगत मालकियत के विसर्जन और गाँव की सारी जमीन के ग्रामीकरण से ही समाज का कल्याण होगा, इसलिए वे अपनी सारी जमीन के स्वामित्व का त्याग कर रहे हैं।

श्री 'कमल' की पदयात्रा

अ० भा० सर्वोदय पदयात्रा करने वाले उ० प्र० के श्री रामकुमार 'कमल' ने मई माह में मैसूर प्रांत के कर्नाटक क्षेत्र में २ मई से १६ मई तक पदयात्रा की। आप पदयात्रा के दौरान में ४ मई को विश्वनीडम्, बंगलौर भी गये थे। स्वास्थ्य ठीक न होने पर भी आपकी पदयात्रा जारी रही। १७ मई को आंध्र प्रदेश में प्रवेश हुआ। अनंतपुर और कडप्पा जिले में ९ जून तक पदयात्रा हुई। आगे ग्रामदानी ग्रामों में पदयात्रा हो रही है। पदयात्रा के दरमियान संपत्तिदान, सर्वोदय और सर्वोदय-पात्र का विचार समझाते हैं। पदयात्रा में विभिन्न प्रकार के अनुभव आते हैं। कर्नाटक के दोडबालापुर, आंध्र के अनंतपुर जिले में कोडूर, गोरंटला, कदरी तथा कडप्पा जिले में वेंपुला और वेमपल्ली पड़ाव पर लोगों ने सर्वोदय विचार को अपना कर सर्वोदय मंडल और सर्वोदय पात्र चालू कर सर्वोदय-कार्य को आगे बढ़ाने का संकल्प किया है।

श्री अप्पासाहब की पदयात्रा

भूदान, ग्रामदान, मद्य-मुक्ति, शोषण-मुक्ति आदि सर्वोदय विचार के प्रचार के लिए श्री अप्पासाहब पटवर्धन ने महाराष्ट्र के सोलापुर जिले की पदयात्रा १८ मई से शुरू की थी। ३७ दिनों में जिले की ८ तहसीलों में २६४ मील की पदयात्रा उन्होंने की। इस पदयात्रा में ४३ कार्यकर्ताओं ने भाग लिया। तीन साल के पहले ज्येष्ठ शुक्ल एकादशी के दिन विनोबाजी ने पंढरपुर के 'विठ्ठल' मंदिर में गैर हिन्दुओं के साथ प्रवेश किया था। यह घटना नवमानव के निर्माण में विशेष महत्त्व की है, अतः उस दिन का स्मरण मनन हो, इसलिए इस वर्ष २४ जून (एकादशी) को पंढरपुर में कुछ आयोजन करने की दृष्टि से श्री अप्पासाहब ने सोलापुर जिले में पदयात्रा करके उसकी समाप्ति पंढरपुर में एकादशी के दिन की। इस सर्वोदय यात्रा को लक्ष्य करके विनोबाजी ने नीचे दिया संदेश भेजा था :

"ज्येष्ठ शुक्ल एकादशी के दिन पंढरपुर के मंदिर में सब धर्मानुयायियों को प्रवेश मिला, यह घटना सामान्य नहीं है। यह तो विश्व के मंगल भविष्य का संकेत करने वाली घटना है। पंढरपुर का देव अति दूर के भविष्य को भी जानने-समझने वाला है। मनुष्य शस्त्रों को अपने हाथ न रख कर सरकार के हाथ सौंपें, सरकार उनको छोड़ कर ईश्वर के हाथ दे दें, यह विकास की दूसरी सीढ़ी है। ईश्वर उन शस्त्रों का विसर्जन कर सर्वत्र करुणा का राज फैलाये, यह उसके आगे की और आखरी सीढ़ी है। उस आखरी सीढ़ी पर ही ईश्वर है। उस मंगल दिन पर इस मंगल भविष्य का चिंतन-मनन करने के लिए सामूहिक यात्रा हो, यह एक दिव्य-भव्य कल्पना है।"

श्री अप्पासाहब ने हमेशा के नियमानुसार अपने साथियों के साथ पंढरपुर शहर की सफाई की। बाद में सबने चंद्रभागा नदी में स्नान किया और जुलूस के रूप में सर्वोदय के नारे लगाते हुए सर्वधर्मियों के साथ प्रभु विठ्ठल-रुक्मिणी के दर्शन करने के लिए मंदिर में गये। श्री गनी साहब, श्री सिल्वरीवाला, श्रीमती गुलनव, श्री माणिकचन्द दोशी आदि मुस्लिम, पारसी, जैन धर्मीय परिवार के साथ उन्होंने मंदिर में ईश्वर के दर्शन किये।

दोपहर को ३ से ४ बजे तक चातुर्मास मंडप में सूत-कताई और ४ से ५ तक विद्यार्थियों से चर्चा हुई। रात को शहर में मंदिर प्रवेश के निमित्त जाहिर सभा हुई।

गांधी स्मारक निधि की ओर से पंढरपुर में श्री अप्पासाहब पटवर्धन के मार्गदर्शन में तीन दिन का मद्य-मुक्ति शिविर भी हुआ।

दिल्ली में अशोभनीय पोस्टर एवं अश्लील साहित्य के खिलाफ आन्दोलन

पिछले दो महीनों से दिल्ली में अशोभनीय पोस्टरों के खिलाफ आंदोलन जोर पकड रहा है। सर्वप्रथम आगरा के पाँच कार्यकर्ता दिल्ली आये थे। इन कार्यकर्ताओं ने स्थानीय कार्यकर्ताओं के सहयोग से ४ मई से ८ मई तक दिल्ली के विभिन्न मुहल्लों में अशोभनीय पोस्टरों के संबंध में 'सर्वे' किया। साथ ही घर-घर जाकर लोगों से इस संबंध में चर्चाएँ कीं और दिल्ली में अशोभनीय पोस्टरों के खिलाफ आंदोलन छेडने के लिए सम्मति प्राप्त की।

लोगों की सम्मति प्राप्त करने के बाद दरियागंज को सघन क्षेत्र बना कर घर घर और दूकान-दूकान से अशोभनीय चित्र एवं कैलेंडर निकाले गये तथा उसी क्रम के दौरान में वहाँ के सिनेमा-घरों के मालिकों से भी संपर्क किया गया। कुछ सिनेमा-मालिकों ने ऐसा करने से इन्कार किया, तो उनको ४८ घण्टे की पूर्वसूचना देकर उसकी प्रतिलिपियाँ स्थानीय अधिकारियों को दे दी गयी। सिनेमा-मालिक ने मोहलत के १२ घंटे पूर्व ही अशोभनीय पोस्टर हटा लिये। इसका परिणाम यह हुआ कि अन्य सिनेमावालों ने अपने पचास प्रतिशत अशोभनीय पोस्टरों को स्वयं ही हटा दिया। इसी प्रकार प्रयास चलता रहा। एक सिनेमा-घर पर अशोभनीय पोस्टर लगा था। काफी संपर्क करने के बावजूद वहाँ से पोस्टर नहीं हटाया गया, तो १३ मई की शाम को कार्यकर्ताओं की टोली सत्याग्रह के लिए जुलूस के रूप में वहाँ गयी। फलस्वरूप सिनेमा-घर के मैनेजर ने चार दिन की मोहलत मांगी और उसने समय के पहले पोस्टर हटा लिया।

ता० ७ मई को दिल्ली की पब्लिक लाइब्रेरी में नारी रक्षा-समिति की ओर से एक सभा आयोजित हुई, जिसमें पाँच सदस्यों का एक निर्णायक मंडल नियुक्त किया गया।

इस अभियान के सिलसिले में पहाड़-गंज, सदर, करोल बाग, कनाट प्लेस, चाँदनी चौक आदि क्षेत्रों में जनसम्पर्क किया गया। लगभग सौ चौराहों पर प्रचार-सभाएँ की गयीं और घरों-दूकानों से अशोभनीय कैलेण्डर निकाले गये। पहाड़-गंज में सर्वोदय-पात्र भी रखे गये। दरिया-गंज में मुहल्ले के निवासी श्री प्रभात विद्यार्थी ने काफी उत्साह दिखाया एवं कार्यक्रमों में सहयोग दिया।

इस अवधि में दो-तीन बार सिनेमा के अशोभनीय पोस्टर हटाये गये।

सर्वोदय कार्यकर्ताओं ने दिल्ली नगर के छोटे छोटे क्षेत्र बना कर संगठन द्वारा इस आंदोलन को आगे बढ़ाने का तय किया है। सहयोगी मित्रों की समितियाँ बनाने का का कार्य भी चल रहा है। खास तौर से सिनेमा-घरों से अशोभनीय पोस्टर निकालने के बजाय जो नागरिक अपनी दूकान या घर पर सिनेमावालों को अशोभनीय पोस्टर लगाने देते हैं, उनको समझाया जाता है कि वातावरण में अशोभनीयता बढ़ाने के कार्य में भद्दे अशोभनीय पोस्टर लगा कर सहयोग न दें। इस क्रम का अच्छा प्रभाव पड रहा है। कई दूकानों और होटलों से अशोभनीय पोस्टर हटा लिये गये हैं। इसका यह परिणाम हो रहा है कि दिल्ली में अब पहले जितने अशोभनीय पोस्टर अधिक नहीं बनाये और लगाये जा रहे हैं।

सिनेमा पोस्टरों के साथ-साथ अश्लील साहित्य की बिक्री की समस्या की ओर भी ध्यान दिया जा रहा है। एक 'सर्वे' में पता चला है कि चाँदनी चौक, फव्वारा, रेल्वे रोड, फतेहपुर आदि क्षेत्रों में लगभग १३० विक्रेता ऐसे हैं, जो अश्लील साहित्य बेचते हैं। इन विक्रेताओं को समझाया गया। परिणामतः काफी विक्रेताओं ने अश्लील साहित्य बेचना बंद कर दिया और बेचनेवालों की संख्या कम हो गयी है। 'सर्वे' के दौरान में यह भी मालूम हुआ कि लगभग २० विक्रेता जगह बदल-बदल कर साहित्य बेचते हैं। यह भी पता चला कि कितने प्रकाशक अश्लील साहित्य प्रकाशित करते हैं। इस प्रकार के अधिकतर प्रकाशक दिल्ली और मथुरा के होते हैं। स्थानीय प्रकाशकों से जब कार्यकर्ताओं ने संपर्क किया तो उन प्रकाशकों ने विश्वास दिलाया कि भविष्य में ऐसा साहित्य प्रकाशित नहीं करेंगे और ऐसा साहित्य बाहर भेजना अभी से बंद कर देते हैं। कुछ प्रकाशक ऐसे हैं, जिनका न कहीं भंडार है, न कहीं दूकान है। दिल्ली में लकड़ी की गुमटी बना कर छोटी छोटी गलियों में थोड़ा सा स्टाक रख कर वहाँ से वितरित करते हैं। कार्यकर्ताओं ने कैलेण्डरों के निर्माताओं से भी संपर्क किया। उनमें से अधिकतर निर्माताओं ने विश्वास दिलाया कि आइंदा अशोभनीय कैलेण्डर नहीं बनायेंगे।

इस अभियान के साथ-साथ दिल्ली नगर के पार्कों में सफाई रहे, इसका प्रयास कार्यकर्ता प्रति रविवार को वहाँ आने वाली जनता को समझा कर लोक-शिक्षण द्वारा करते हैं। कार्यकर्ता समझाते हैं कि लोग पार्कों में इसलिए आते हैं कि उनको खुली हवा और साफ-सुथरा स्थान मिले। इसलिए पार्कों में आने वालों को चाहिए कि खाने-पीने की चीजों से होने वाली गंदगी को इधर-उधर न डाल कर निश्चित स्थान पर रखे हुए सफाई-पात्रों में डालें।

फिलहाल दिल्ली में सात कार्यकर्ता काम कर रहे हैं। इनमें सर्वश्री दरबारसिंह चाहर, थानसिंह वर्मा, दयाकिशन बंसल, राधेलालभाई और वीरेन्द्रसिंह, ये पाँच भाई आगरा के हैं। दिल्ली के श्री सी ए० मेनन और श्री मदन 'विरक्त' हैं। पूरे समय काम करने वाले इन सात भाइयों के अलावा आंशिक समय देने वाले काफी सहयोगी मित्र हैं। साथ ही उत्तर प्रदेश और पंजाब से कुछ और कार्यकर्ता दिल्ली पहुँचने वाले हैं।

—सी० ए० मेनन, दिल्ली

सर्व सेवा संघ के नये प्रकाशन

जून मास में नई प्रकाशित पुस्तकें

(१) पशुलोक में पाँच वर्ष, मूल्य १—००
(२) सर्वोदय और शासनमुक्त समाज, मूल्य १—००
(३) शान्ति-सेना (अंग्रेजी), मूल्य १—५०
(४) अध्यक्षीय अभिभाषण —जयप्रकाश नारायण, मूल्य ०—२५

जुलाई मे प्रकाशित होनेवाली पुस्तकें

(१) कतकथैयाँ झुनूमनइयाँ
(२) स्वामी श्री नारायण गुरु (जीवनी)
(३) विकेंद्रित अर्थतंत्र
(४) सामूहिक प्रार्थना
(५) विश्वशांति के प्रयोग
(६) संघ अधिवेशन की रिपोर्ट
(७) नगर अभियान
(८) मधुमेह (प्राकृतिक चिकित्सा)
(९) कोरापुट में ग्राम-विकास का प्रयोग
(१०) कृषि के साथ पर्याप्त चारा
(११) गीता-प्रवचन (बंगला : नागरी लिपि)
(१२) साइन्स एण्ड सेल्फनॉलेज : विनोबा (नया परिवर्द्धित संस्करण)

गुजरात का प्रान्तीय सर्वोदय-सम्मेलन और शिविर

गुजरात प्रान्तीय सर्वोदय-मण्डल ने ता० ९ जुलाई से १२ जुलाई तक ४ दिन का एक प्रान्तीय विचार शिविर बड़ौदा में आयोजित किया है। आचार्य दादा धर्माधिकारी इस शिविर में उपस्थित रह कर सर्वोदय-विचार के विभिन्न पहलुओं पर शिविरार्थियों का मार्गदर्शन करेंगे।

शिविर के अंत में ता० १३ जुलाई को श्री दादा धर्माधिकारी की अध्यक्षता में गुजरात प्रान्त का सर्वोदय-सम्मेलन सम्पन्न होगा।

केरल में सर्वोदय-विचार शिविर

केरल गांधी-स्मारक निधि की ओर से क्विलोन जिले में पेझीयाल में मई माह में दो सप्ताह का सर्वोदय-विचार-शिविर आयोजित किया गया, जिसमें केरल के शिक्षक, समाजसेवी संस्थाओं के प्रतिनिधि और कालेज के विद्यार्थियों ने भाग लिया। शिविर के नियमित कार्यक्रमों के अलावा आस-पास के देहातों में सर्वधर्म समभाव, स्वच्छ भारत अभियान और पंचायतों में निर्दलीय चुनाव पर जोर दिया गया। ट्रेंच पद्धति के करीब चार सौ संडास देहातियों के घरों में बना दिये।

इस अंक में

श्रीकृष्णदत्त भट्ट, अ० भा० सर्व सेवा संघ द्वारा भार्गव भूषण प्रेस, वाराणसी में मुद्रित और प्रकाशित। पता : राजघाट, वाराणसी-१, फोन नं० ४३९१
वार्षिक मूल्य ६) पिछले अंक की छपी प्रतियाँ ९,८२६ : इस अंक की छपी प्रतियाँ ९,५५० एक अंक : १३ नये पैसे

संपादक : सिद्धराज ढड्ढा

वाराणसी : शुक्रवार ‚१४ जुलाई '६१ वर्ष ७ : अंक ४१

'बहुमत' और 'अल्पमत' का सवाल कृत्रिम है

सब मिलकर काम करेंगे तो देश आगे बढ़ेगा

विनोबा

आजकल देश में बहुसख्यक, अल्पसख्यक, ऐसे दो पक्षों का निर्माण हुआ है। यह एक नया जातिभेद है। हिन्दुस्तान में तो इसके साथ-साथ पुराने जाति भेद भी ते हैं। एक पार्टी ने एक जाति का मनुष्य खड़ा किया, तो दूसरी पार्टीवाले भी उम्मीदवार चुनते समय, जाति का ही विचार र्दे। वोट इकट्ठा करने के लिए यह सब किया जाता है। विचार समझना, उस पर अमल हो, इसलिए धीरज रखना—यह बात अंल नहीं रही। पहले जिस तरह तलवार से निर्णय लादा जाता था, वैसे ही आजकल तलवार के बदले बहुमत से वह लादा जाता तलवार के बारे में कहा जाता है कि उसमें अकल नहीं होती, इसीलिए हमने उसे छोड़ दिया। लेकिन बहुमत में भी अकी होती। सिरों की गिनती करके निर्णय लेना गलत ही है।

इसका नतीजा यह है कि अस पैदा होता है, कशमकश चलती है। सभी एक दूसरे को गिराने की कोशिश कर इसी पर सारी रचना बनती है। आज यह सभी देशों में चल रहा है, क्योंकि सर्वत्र की गिनती करके सब कुछ चलाने की बात चलती है। सिरों के अन्दर क्या भरा यह नहीं देखा जाता। मेहरबानी इतनी ही है कि पागल को मतदान नहीं दिया। मगर इसका इलाज क्या है—यह हम न ढूँढ़ें और पक्ष भेद, सरकारी पक्ष, भी पक्ष, उन दोनों में अखंड विरोध—यह सारा पश्चिम का ढाँचा हिन्दुस्तान में तो यहाँ कोई भी काम नहीं चलेगा। एक पक्ष दूसरे पक्ष के काम को बिगाड़ जायगा।

'बहुमत' और 'अल्पमत' सवाल कृत्रिम है। आज जो लोकतन्त्रा है, उसी ने यह सवाल पैदा कि अगर इससे मुक्त होना चाहते हों, त्ता का विकेन्द्रीकरण कर गाँवों में ंचले पर-मेश्वर' के न्याय से काम होगा। इस पर यह सवाल उठाया है कि "यह गाँव तक के लिए है, पर गाँव की तरफ से को प्रान्त के लिए चुने जायेंगे, वे तो से निर्णय करेंगे!" बीच के सम् लिए यह चलेगा। परन्तु वे इस चुने जायेंगे कि उन्हें आदत ही ऐसी के विधान सभाओं के मुख्य निर्णय से किये जाँय। जीवन की मुख्य जैसे खाना कपड़ा तालीम—की गाँव में ही रहेगी। फिर जो दूसरी तें हैं, उनमें बहुमत से निर्णय हु की के हित की हानि नहीं होगी कोई भी ऐसी बात नहीं होगी कि मत वालों के दिलों में रंज पैदा हो जहाँ अन्न, तालीम आदि मुख्य मतभेद होता है, और अल्पमत की, तो अल्प-मत वालों को दु ख फिर आचार प्रतिशत सत्ता केन्द्र के हाथ में गौण विषय है यानि निर्णय हो, तो कोई हर्ज नहीं भी ऐसे नियम हो सकते हैं कि कुछ विषयों के लिए ७० या ८० फीसदी मत अवश्य होने चाहिए। आखिर समाज को यह आदत डालनी चाहिए कि एकमत से निर्णय हो।

केन्द्र का निर्णय तो एक मत से ही होगा। आज भी यही होता है। मन्त्रिमंडल में बड़े-बड़े मसलों पर एकमत से ही फैसला किया जाता है। मत भेद हो तो फैसला नहीं होता, सिर्फ चर्चा चलती है। इसलिए केन्द्र के बारे में तो कोई चिंता ही नहीं है।

इस तरह गाँवों और केन्द्र के बारे में तो चिंता ही नहीं है और प्रान्त में भी जो लोग चुन कर आवेंगे, उन्हें एकमत से निर्णय करने की आदत होगी। इसमें सार्वजनिक हित का बुनियादी विचार यह है कि आज देश में भिन्न भिन्न पार्टियाँ हैं। इस हालत में कोई भी देश प्रगति करना चाहता हो, तो ऐसा कोई एक कार्यक्रम निकलना चाहिए, जिसमें सब पक्षों की एक राय हो। विचार में मतभेद हो, परन्तु आचार में सब की राय एक हो। ऐसा एक कार्यक्रम सबको मंजूर हो, तो निश्चय ही प्रगति होगी। लेकिन अगर कार्यक्रम में ही मत भेद रहा, तो हिन्दुस्तान की प्रगति नहीं हो सकती, क्योंकि इस देश के लोग प्रवृत्तिशील नहीं है। इस देश में बहुत आलस्य भरा है।

हर एक को विचार प्रचार करने का पूरा हक होना चाहिए। मथन से नवनीत निकलता है। किन्तु आजकल तो कार्यक्रम का ही मथन चलता है और उससे जनता निष्क्रिय और हताश होती है। हमें जैसे-जैसे राज्य का अधिक अनुभव होगा, वैसे-ही-वैसे यह मालूम होगा कि जनता में बुद्धि भेद पैदा नहीं करना चाहिए। कोई एक छोटा-सा ही कार्यक्रम उठाना चाहिए, जिसमें सब एकमत हों। हम एक एक कार्यक्रम एक-एक अमली काम उठाते जाँय और उसे पूरा करते जाँय, तो देश का भला होगा, नहीं तो भिन्न भिन्न मतों के साथ भिन्न भिन्न कार्यक्रम भी होंगे। फिर कार्यक्रमों में टक्कर हुई, तो देश आगे नहीं बढ़ सकेगा।

× × ×

लोकनीति ही क्यों

'राजनीति का शुद्धिकरण' यह जो शब्द है, उसका अर्थ है राजनीति की जगह पर लोक-नीति की स्थापना होनी चाहिए। भले इसमें चाहे जितना समय लगे परन्तु राजनीति विज्ञान के युग में न टिक सकती है, न रह सकती है। पाकिस्तान, फ्रान्स, रूस, अमेरिका, जापान, जर्मनी आदि में क्या राजनीति चलती है? राजनीति क्या है? एक प्रकार से शस्त्रों का खेल ही चलता है। जिस राष्ट्र के पास तीव्र शस्त्रास्त्र होंगे, राष्ट्र राजनीति चलायेंगे। इसलिए वह शस्त्रनीति ही है। विज्ञान युग में भयानक शस्त्रास्त्र पैदा होते हैं। इसलिए ये सारे राष्ट्र किस तरह निःशस्त्र हो और, शस्त्र कम कैसे हो, ऐसा नहीं हो सके, तो कुछ बड़े शस्त्रों का उपयोग न करें, इसका विचार करना और इसके लिए जीवन अर्पण करना—इस विचार के आधार पर समाज बनाना, इसका नाम लोकनीति की स्थापना है।

वर्तमान चुनाव-पद्धति के दोष

हम लोगों ने पश्चिम से चुनाव का एक तरीका अपनाया है। हम देखते हैं कि इस देश में जाति भेद जितना फैला है, उतना पहले नहीं था। भूमिहार-ब्राह्मण और राजपूत भेद बिहार में जाकर देखिये। कम्मा और रेड्डी भेद आन्ध्र में देखिये। ब्राह्मण और ब्राह्मणेतरवाद मद्रास में देखिये। इस तरह हर प्रान्त में अनेक प्रकार के भेद बढ़ गये। सोचने की बात है कि जिस जाति भेद पर राजा राम मोहन राय से लेकर महात्मा गांधी तक सबने प्रहार किया और जो टूट भी रहा था, वह आज इतना क्यों बढ़ रहा है? कारण यही है कि यहाँ चुनाव ने जाति-भेद को बढ़ावा दिया। जब चुनाव से इतना भयानक परिणाम होता है, तो उसके तरीके को बदलने की सख्त जरूरत है।

चुनाव से जाति-भेद की वृद्धि पहला दुष्परिणाम है। दूसरा यह है कि आज जो तरीका चलता है, उसमें जिसके पास ज्यादा पैसा है, वही इसमें भाग ले सकता है। जिसके हाथ में संपत्ति है, वही चुनाव में खड़ा होता है। इस हालत में गरीब और मूक जनता की आवाज कैसे उठेगी?

चुनाव होते हैं, परन्तु जो लोग खड़े होते हैं, उनके चेहरे भी हम नहीं जानते। लाखों मतदाताओं की ओर से जिन्हें चुनना है, उनके गुण तो गुण, उनका चेहरा भी हम नहीं जानते। इस तरह चुनाव से खर्च बढ़ रहा है, जाति-भेद बढ़ रहा है और अच्छे मनुष्य ही चुनकर आयेंगे, इसका भी कोई भरोसा नहीं।

सरकार का तंत्र व्यापक भ्रष्टाचार को रोकने में असमर्थ

नेहरूजी तंत्र मुक्त हों ताकि वे देश को भ्रष्टाचार से मुक्त कर सकें

सिद्धराज ढड्ढा

'ग्रामराज' के ता० २१ जून के अंक में श्री गोकुलभाई भट्ट ने भ्रष्टाचार कैसे रोकें, इस प्रश्न की चर्चा उठाई है। भ्रष्टाचार से मतलब केवल घूसखोरी या चोर बाजारी से नहीं है, न अब वह इन तक सीमित ही रहा है। शिक्षा, न्याय, राजनीति, व्यापार अर्थात् जीवन के हर क्षेत्र में, भ्रष्ट (अनैतिक) आचार पिछले कुछ बरसों में बहुत तेजी के साथ बढ़ा है। सारे राष्ट्रीय जीवन में-जिसमें सार्वजनिक संस्थाएं भी शामिल हैं—एक प्रकार की नैतिक शिथिलता आगई है और व्यवहार में अब तक पुराने मूल्यों तथा मर्यादाओं को कायम रखना, अच्छे-अच्छे लोगों के लिए मुश्किल हो रहा है। इस परिस्थिति से सब लोग त्रस्त हो गये हैं क्योंकि कोई भी अपने आपको सुरक्षित महसूस नहीं करता। भ्रष्टाचार का जाल इतना फैल गया है कि उसका उपाय भी किसी को आसानी से सूझ नहीं रहा।

यह स्थिति निस्सन्देह चिन्ताजनक है, पर सबसे बड़ी चिन्ता की बात तो यह है कि राष्ट्र के आज जो सर्वमान्य नेता पण्डित जवाहरलाल हैं, वे परिस्थिति की गम्भीरता को महसूस करते नजर नहीं आते। आज देश में वही एक व्यक्ति हैं, जो चाहें तो इस नाव की दिशा पलट सकते हैं पर चूँकि वे खुद व्यवस्था के तन्त्र से सम्बन्धित हैं बल्कि उसके लिए जिम्मेदार भी हैं इसलिए परिस्थिति को स्वीकार करके उसका इलाज करने के बजाय अक्सर उन्हें इसका बचाव ही करना पड़ता है। विधि की यह विडम्बना ही है जिस व्यक्ति की खुद की ईमानदारी और सचाई के बारे किसी को सन्देह नहीं है, उसे आज भ्रष्टाचार की ढाल बनना पड़ता है। सत्य के सहारे ही असत्य पनप सकता है, पुण्य के सहारे ही पाप खड़ा रह सकता है इस बात का ज्वलन्त प्रमाण आज पण्डितजी अपने आचरण से पेश कर रहे हैं।

गंभीरता से सोचने व खुली चर्चा करने का समय

गोकुल भाई ने सवाल उठाया है कि इस परिस्थिति का मुकाबला कैसे किया जाय? जन-जीवन में व्याप्त और उसे खोखला कर डालने वाले इस भ्रष्टाचार को रोका कैसे जाय? हर एक दिल में आज यह सवाल उठता है, पर रास्ता किसी को सूझ नहीं पड़ रहा है। लेकिन अब इस बारे में अत्यन्त गंभीरता से सोचने और खुली चर्चा करने का समय आया है। इस मामले में और अधिक देर मुल्क के लिये घातक साबित हो सकती है।

(१) राष्ट्र के मौजूदा चहुँमुखी नैतिक पतन को रोकने के लिए पहली बात जो जरूरी मालूम होती है, वह यह कि पंडित नेहरू को सरकार की जिम्मेदारी से मुक्त होकर बाहर आना चाहिए, जिससे उनकी शक्तिशाली आवाज और प्रभाव का उपयोग भ्रष्टाचार का बचाव करने के बजाय, उसके खिलाफ जिहाद बोलने में हो सके। इस बारे में नेहरूजी के विचारों को जानते हुए भी कि वे इसे पसन्द नहीं करते और यह मानते हैं कि सरकार में रहकर उसके जरिये ही वे राष्ट्र की नौका को इच्छित दिशा में ले जा सकते हैं, हम सार्वजनिक रूप से इस सुझाव को फिर उनके तथा लोगों के सामने रखना आवश्यक समझते हैं। हमारा निश्चित मानना है कि—

> सरकार का तंत्र अब व्यापक भ्रष्टाचार को रोकने में असमर्थ है, बल्कि वही आज उसको प्रोत्साहन देनेवाला, सबसे बड़ा जरिया बना हुआ है। नेहरूजी बाहर आकर ही भ्रष्टाचार का, और इसके लिए आवश्यक हो तो सरकारी तंत्र का, मुकाबला कर सकते हैं।

जनशक्ति संगठित करना आवश्यक

(२) जनता की सोई हुई चेतना को जगाकर जनशक्ति को संगठित करके अनैतिक आचरण के खिलाफ जन-आंदोलन खड़ा करना दूसरा आवश्यक कदम है। नेहरू जी बाहर आते हैं तो उनकी शक्ति का लाभ भी इस काम में मिलेगा वरना राष्ट्र के अन्य हितैषियों को अपना धर्म समझकर यह काम उठाना चाहिये। अगर देश-व्यापी पैमाने पर यह काम उठाने का संयोग न बैठे तो किसी एक या अधिक क्षेत्रों में कार्यकर्ताओं की शक्ति को संगठित करके इस काम में लगाना चाहिए।

कुछ बातें चुनकर पूरी शक्ति लगे

(३) मुख्य सवाल यह है कि जनता की शक्ति को जाग्रत और संगठित कैसे किया जाय? इसके लिए जनता के रोजमर्रा के जीवन को छूनेवाली एक या दो-तीन बातें चुनी जाय और उनमें संबंधित अनैतिक आचरण के खिलाफ सारी शक्ति केन्द्रित की जाय। उदाहरण के लिए, जंगल के कानून और उनके प्रशासन को लेकर होनेवाले भ्रष्टाचार और अन्याय का मुकाबला (इस विषय का असर छोटे से छोटे गाँव तक और वहाँ के छोटे-बड़े हर व्यक्ति तक पहुँचता है); गांव-गांव के उपयोग की चीजें जैसे सीमेंट, लोहा आदि के वितरण का प्रश्न, तथा शराब बंदी का सवाल। पाठकों से अनुरोध है कि उन्हें ऐसे ही दूसरे भी कुछ विषय सूझें तो वे अवश्य सूचित करें।

निषेधात्मक काम के साथ प्रेम व सहयोग की भावना बढ़ाना भी जरूरी

(४) यह ध्यान में रखना चाहिए उपरोक्त विषयों को लेकर जनता की शक्ति प्रकट हो, उसका उपयोग अन्याय प्रतिकार के निषेधात्मक कार्यक्रम के साथ-साथ जनता में परस्पर सहयोग, प्रेम भाईचारे की भावना को विकसित कर ग्राम परिवार के लक्ष्य की ओर बढ़ने के विधायक काम में करना अत्यन्त आवश्यक है, अन्ततोगत्वा जनता के आपसी प्रेम और उसकी एकता के आधार पर ही शक्ति स्थायी रूप से टिक सकती है। इसके लिए खुद अपने व्यवहार में से [illegible]ता को दूर करने, तथा एक दूसरे के कर्तव्य-पालन के और ग्रामजीवन को [illegible] उठाने के छोटे छोटे कार्यक्रम में लोगों को लगाना चाहिए।

[illegible] उपाय ग्रामस्वराज्य

इस प्रकार के प्रतिकारात्मक और [illegible]त्मक दोनों प्रकार के कार्यक्रम से जो शक्ति विकसित हो उसका उपयोग [illegible]गत्वा ग्राम-स्वराज्य की सिद्धि अर्थात् [illegible]ता की अपनी स्वावलम्बी और स्वतं[illegible] खड़ी हो सके, इसके लिए करना यह निरन्तर ध्यान में रखना चाहि[illegible]समाज में से अनैतिकता को [illegible] तथा लोगों की रोजमर्रा की मुसीबतें दूर करने का एकमात्र उपाय ग्रामस्व[illegible]है।

जो कुछ सुझाया गया है, इसके अलावा [illegible]इससे भिन्न और कोई बात पाठकों [illegible] आयें तो वे सुझावें ऐसी प्रार्थना [illegible] बात आज जीवन के विविध क्षेत्रों में अनैतिक और भ्रष्ट आचरण का मुका[illegible]ने की है। अब इस बारे में उदासीन[illegible]ना समाज के लिए घातक साबित हो[illegible] है। आज की सबसे बड़ी आवश्यक[illegible] है ऐसे ठोस कार्यक्रम को अपनाने [illegible] इससे अनैतिकता की बाढ़ को रोका [illegible] और राष्ट्रीय जीवन की शुद्धता की रक्षा कर सके।

([illegible]राज से)

भंगी-मुक्ति और सामाजिक समता

मानव-मानव के बीच के कृत्रिम भेद-निवारण और समता की स्थापना के लिये आज मानव-प्रतिष्ठा की आवश्यकता है। आज एक तरफ आत्महीनता, तो दूसरी ओर अहंकार है। ये दोनों वृत्तियाँ समाज के लिये खतरनाक हैं। इसे दूर किये बिना मानव-विकास असंभव है। मानव मात्र में आत्मप्रत्यय के साथ-साथ नम्रता का भी होना अनिवार्य है। समाज में कोई ऊँचा नहीं है, कोई नीचा नहीं है। भारतीय वर्णव्यवस्था में समाज के लिए उपयोगी पेशे मुकर्रर किये गये, और उन पेशों में से जातियाँ बनी। किंतु आज 'वर्ण अव्यवस्था' दिखाई देती है। इसका मुख्य कारण यह है कि कई समाज-उपयोगी कार्य जो कि अत्यंत आवश्यक हैं, फिर भी नीचे माने गये हैं। और कई कार्य, जिनकी ज्यादा जरूरत भी नहीं है, वे ऊँचे माने गये हैं, और इसमें से सामाजिक विषमताएँ निर्माण हुईं, ऊंच-नीच के भेद बने। गंदगी साफ करने का महत्त्व का कार्य हीन माना गया है। यह कार्य करनेवालों को हीन और घृणित माना गया है। आज गंदगी की सफाई का काम जो कर रहे हैं, वे अपनी स्वखुशी से कर रहे हैं, ऐसा मानना ठीक नहीं है। यह तो उनकी लाचारी है। सच में तो यह काम भगवान की पूजा से भी अधिक पवित्र है, किंतु वह स्वाभिमानपूर्वक होना चाहिये। यदि कोई जबरदस्ती से दूसरे के पास यह काम करवाना चाहे, तो उसका इन्कार भी करना चाहिये। इस सामाजिक विषमता को दूर करने के लिये विचारवान लोगों को ऐसे नीच काम स्वेच्छापूर्वक पवित्र मान कर करने चाहिये।

—अप्पा पटवर्धन

ब्रह्म सत्यं जगत् स्फूर्तिः जीवनं सत्यशोधनम्

भूदानयज्ञ

लोकनागरी लिपि

सत्य-संघटना

सर्वोदय-वीचार की यही खूबी है की ईसमें स्वतंत्र और वीभीन्न वीचारों को पूरा-पूरा अवसर है। वह वीशीष्ट व्यवस्था या वीशीष्ट बाह्य आकार का आग्रह नहीं रखता। वह कोई चौखट नहीं मानता, ढांचा बनाना नहीं चाहता। वह संघटन को ही शक्ती मान नहीं बैठता, पर सत्य की ही शक्ती पहचानता है। वह ईस भ्रम में नहीं पड़ता की अशक्ती संघटीत होने से शक्ती बन जाती है। आलसी लोगों ने शक्तीशाली बनने का यह सरल तरीका खोज नीकाला है। यदी रोगी का संग्रह करने से ही स्वास्थ्य बनता, तो न वैद्यों की जरूरत पड़ती, न औषधों की और न पौष्टीक अन्न की ही। पर हीसाब में यह सब छप जाता है। दस लाख की फौज खड़ी करते ही राष्ट्र बलवान बन जाता है। कहा जाता है की सीपाही जीत गये, तो राष्ट्र भी जीत गया। पर यह नहीं कहा जा सकता की सीपाही को भोजन मीलते ही राष्ट्र को भी भोजन मील गया। कहते हैं 'संघे शक्तीः कलौ युगे'—यानी कलीयुग में संघ में ही शक्ती का नीवास है। पर यह नहीं पहचानते की अब कलीयुग रहा ही नहीं है। अब तो कृत-योग=कृती-योग, सत्कृती-योग आ गया है। कलीयुग तो कबका खतम हो गया। जब में आग भड़की तो फीर कलीयुग कहां रहा? ईसलीए हम कभी भी ईस भ्रम में न पड़ें की हम लड़ाई या चुनाव जीत कर सर्वोदय लायेंगे।

—वीनोबा

जैसा लोकस्वभाव वैसा इलाज

काका कालेलकर

[आज देश में भाषा को लेकर जो झगड़े हो रहे हैं, वह भारत के इतिहास में पहली बार हो रहे हैं। ता० १ जुलाई ६१ के 'मंगल प्रभात' में श्री काकासाहब कालेलकर ने इस विषय पर 'जैसा लोक-स्वभाव वैसा इलाज' लेख में विवेचन किया है। श्री काकासाहब का मानना है कि जिस ढंग से राज्यों की पुनर्रचना की है, वह हमारे देश के लोकस्वभाव के अनुकूल नहीं है। यहाँ हम उस लेख के मुख्य अंश दे रहे हैं। —सं०]

राष्ट्र उसे कहते हैं, जिसके सब व्यक्ति एक-दूसरे के साथ काफी आत्मीयता महसूस करते हों। छोटे-मोटे मतभेद, विचारभेद, आदर्शभेद और अभिरुचिभेद दुनिया में रहेंगे ही। देश की एकता और लोगों की परस्पर आत्मीयता के सामने ये सारे भेदों के तत्त्व गौण होने चाहिए। आत्मीयता तब पनप सकती है, जब हम अधिक-से-अधिक पाने की इच्छा न रख कर, अपने लोगों को अधिक-से-अधिक देने की इच्छा रखें। पाने से खजाना समृद्ध होता है। देने से हृदय समृद्ध होता है, जीवन समृद्ध होता है, सामाजिकता मजबूत होती है और उच्च संतोष प्राप्त होता है।

लेकिन हमारे देश में जातिभेद ने विराट समाज के छोटे-छोटे टुकड़े बना कर उन्हें संगठित किया है। हमारी राष्ट्रनिष्ठा की अपेक्षा हमारी जातिनिष्ठा, प्रान्तनिष्ठा और अब वर्गनिष्ठा जोरों से बढ़ रही है।

देश के प्रान्त अंग्रेजों ने अपने ढंग से बनाये थे। उनकी पुनर्रचना करना जरूरी था ही। यह काम अगर तुरन्त किया होता तो शायद ज्यादा मुश्किलें नहीं उठतीं। उन दिनों स्वराज्य के लिये लड़ने का उदार वायुमंडल था और पाकिस्तान हुआ उसका दुःख भी था। दोनों के वायुमंडल में पुनर्रचना आसानी से हो जाती। लेकिन हमारे राज्यकर्ता पाकिस्तानी झगड़े के कारण घबराये हुए थे। उन्होंने जहाँ तक हो सके, जरूरी बात टाली। भाषावार प्रान्त-रचना खतरनाक है ऐसा मान लिया और मान-मान कर बात को सचमुच खतरनाक बनाया। अन्त में होने वाला था वही हुआ। फर्क इतना ही कि जहाँ प्रान्त थे, वहाँ राज्य बन गये। शब्दों का यह फर्क अच्छा नहीं हुआ। 'प्रान्त' शब्द के साथ देश की एकता नजर के सामने स्पष्ट रहती थी। 'राज्य' कहने से ये सारे प्रान्त स्वतन्त्र एकम्-से बनने लगे। अमेरिका और रूस में 'स्टेट्स' हैं, इसलिये हमने भी स्टेट्स बनाये और 'स्टेट्स' का अनुवाद किया 'राज्य'! अंग्रेजी भाषा में सोचने वाले और परदेशी विचार के प्रभाव तले जीने वाले हमारे नेता जनमानस को बराबर समझ नहीं सकते, इसका यह दुर्दैवी उदाहरण है। लोक-भाषा और लोकमानस का रहस्य समझने वाले लोगों ने 'राज्य' शब्द कभी भी चलाया नहीं होता। देशी राजाओं का राज्य तोड़ा और प्रादेशिक नेताओं के अनेक राज्य स्थापित किये। 'राज्य' शब्दों के कारण यह खराबी हुई, भाषा के कारण नहीं।

खैर! असम और बंगाल, दोनों प्रान्त जब अंग्रेजों के राज्य और दोनों जगह अंग्रेजी का ही राज्य था, तब भी असमिया और बंगाली लोगों के बीच कुछ-न-कुछ मनमुटाव रहता ही था। बंगाल के लोगों के मन में असमिया लोगों के बारे में आदर नहीं था और असमिया लोग मानते थे कि बंगाली लोग हम पर जुल्म कर रहे हैं, हमारे भोलेपन से लाभ उठा रहे हैं। यह मनमुटाव ज्यादातर सरकारी नौकरी में था। लोगों में जागृति कम थी, इसलिए मनमुटाव भी जोर नहीं पकड़ सकता था। लेकिन उस दोष की हस्ती किसी से

शिक्षा के माध्यम का सवाल

आजकल राजनैतिक पार्टियों के लोग हर छोटे-बड़े सवाल को ऐसा विकृत रूप दे देते हैं और लोगों में इस तरह की भावनाएँ उभाड देते हैं कि किसी भी सवाल पर शान्तचित्त होकर उसके वास्तविक गुण दोष के आधार पर विचार करना मुश्किल हो जाता है। भाषा के सवाल के बारे में भी यही हुआ है। अपनी-अपनी स्वार्थ सिद्धि के लिए राजनैतिक पार्टियों ने इस सवाल के आसपास इतना उन्माद पैदा कर दिया है कि इसके जो वास्तव में प्रामाणिक और विचारणीय पहलू हैं, उन पर किसी का ध्यान नहीं जाता, और जाता भी है तो कम लोग उन पर अपनी निष्पक्ष राय देने की हिम्मत करते हैं क्योंकि वैसी राय अक्सर राजनैतिक पार्टियों द्वारा खड़े किये गये मुद्दों और भावनाओं के खिलाफ होती है और इसलिए लोग उसे सुनना पसन्द नहीं करते। इस भाषायी उन्माद के कारण "राष्ट्रभाषा" के बारे में स्थिति बड़ी विचित्र हो गयी है। इस विषय पर कोई कुछ भी कहने की हिम्मत नहीं करता।

अंग्रेजी का हमेशा के लिए कायम रहना शक्य नहीं है और राष्ट्रीय दृष्टि से उचित भी नहीं है, इसलिए उच्चशिक्षा के माध्यम में परिवर्तन की जब बात आती है तो राजनीतिक लोगों द्वारा खड़े किये गये भाषायी उन्माद से प्रभावित होकर अक्सर लोग प्रांतीय भाषा को विश्वविद्यालयों में माध्यम बनाने की बात करते हैं।

अभी हाल ही में बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय के उप-कुलपति श्री एन. भगवती ने इस विषय पर जो कुछ कहा है वह ध्यान देने योग्य है। श्री भगवती, जो पहले भारत के सर्वोच्च न्यायालय—सुप्रीम कोर्ट—के एक न्यायाधीश रह चुके हैं, स्वयं गुजराती भाषा भाषी हैं। पिछले दिनों अहमदाबाद में गुजरात विश्वविद्यालय के छात्रों के सामने बोलते हुए उन्होंने बहुत दृढ़ता के साथ इस बात का प्रतिपादन किया है कि आम जनता और विद्यार्थियों के हित में विश्वविद्यालयों में शिक्षण का माध्यम प्रांतीय भाषा न होकर राष्ट्रभाषा अर्थात् "देवनागरी लिपिवाली हिन्दी भाषा" ही होना चाहिए। इसके पक्ष में वजनदार दलीलें देते हुए उन्होंने इस बात पर खेद प्रकट किया है कि ऐसे सार्वजनिक हित से सम्बन्धित प्रश्न का फैसला भी राजनैतिक दृष्टि से किया जाता है। श्री भगवती जैसे जिम्मेदार और संजीदा व्यक्ति को भी विद्यार्थियों को सम्बोधित करके, जो यह सलाह देनी पड़ी कि उन्हें (अर्थात् आज के विद्यार्थियों को) अगर कभी विश्वविद्यालयों की 'सिनेट' (संचालक मण्डल) के सदस्य होने का मौका मिले तो वे "कांग्रेस कमेटी, मंत्री-मण्डल या केन्द्रीय सरकार" इनमें से किसी के कहने की परवाह न करके समाज के लिए जो वास्तव में लाभदायक हो वही करें। यह इस बात का संकेत है कि विश्वविद्यालयों के अधिकारी भी आज अधिकतर राजनैतिक लोगों से प्रभावित होकर ही काम करते हैं।

देश के संविधान ने राष्ट्रभाषा के बारे में जो व्यवस्था मंजूर की है उसकी ओर ध्यान दिलाते हुए श्री भगवती ने इस बात का जोरदार शब्दों में प्रतिवाद किया है कि "तथाकथित भाषाशास्त्री" और राजनैतिक नेता "भाषा का उन्माद पैदा करके" राष्ट्रभाषा में शिक्षण पाने का जनसाधारण का जो वैधानिक हक है उसे छीन रहे हैं। शिक्षण के माध्यम में परिवर्तन का काम "बहुत धीरज और शान्ति से करने का काम है" और समाज के दीर्घ कालीन हित को ध्यान में रखकर ही उसका फैसला होना चाहिए।

श्री भगवती निर्भीक और स्पष्ट उक्ति के लिए अभिनन्दन के पात्र हैं।

—सिद्धराज

लोकनीति संबंधी लोक-शिक्षण का कार्यक्रम

पूर्णचंद्र जैन

तेरहवें सर्वोदय-सम्मेलन और उस समय हुई संघ-अधिवेशन की चर्चाओं के फलस्वरूप सर्वोदय-समाज निर्माण संबंधी जो कार्यक्रम देश के सामने रखा गया, उसमें सही लोकनीति के प्रति देश की जनता को आगाह करना, उस लोकनीति का देशवासियों को उत्तरोत्तर अधिक ज्ञान कराना और उसके लिए हर क्षेत्र, विचार तथा वर्ग के लोगों को सजग व सक्रिय करना एक मुख्य कार्य है।

सामाजिक और आर्थिक क्षेत्र के मौजूदा मूल्यों में बुनियादी या जड़-मूल के परिवर्तनों के लिए जिस प्रकार भूदान-ग्रामदान आंदोलन व श्रमाधार-जनाधार के प्रयोग आदि को सतत चलाते रहने की आवश्यकता है, उसी प्रकार उस गहरे परिवर्तन के लिए ही जन-जीवन को आज जो व्यापक घटनाएँ, क्रिया प्रक्रियाएँ, योजनाएँ संस्पर्श ही नहीं करती, बल्कि उस सामान्य जीवन-धारा में उथल-पुथल तक पैदा कर देती हैं। उनके बारे में सतत कुछ करना, उन्हें बल पूर्वक मोड़ देने के लिए प्रयत्नशील रहना भी बहुत जरूरी है।

एक स्पष्ट लक्ष्य और उस संबंधी बुनियादी तब्दीली का कार्यक्रम एक चीज है; साथ ही अकस्मात् कुछ दुर्घटना या विशेष घटना होती है, तो उसे त्वरा व तत्परता के साथ तत्काल सम्हालने का कार्यक्रम भी वैसी ही महत्त्व की दूसरी चीज है। और, एक प्रवाह जो चारों तरफ चल रहा है, उसी दर्रे के नक्शे बनाने की जो कोशिशें हो रही हैं, उन्हें प्रभावित करना और बरबस उन्हें नई दिशा की ओर उन्मुख व गतिशील करना भी उपर्युक्त दो से किसी प्रकार कम महत्त्व, आवश्यकता या उपयोग का कार्यक्रम नहीं है। बल्कि इन सबका एकसाथ मिला-जुला संयोजन ही असली और टिकाऊ परिवर्तन लाने का कार्यक्रम हो सकता है, यह कहना भी गलत या अधिक नहीं होगा। भूदान-ग्रामदान, शांति-सेना और लोकनीति सम्बन्धी कार्यक्रम की त्रिधारा को इसी रूप में समझना और कार्यान्वित करना होगा।

आज पश्चिम के प्रभाव के बढ़ने से समझिये; अथवा हमारे देश के पिछड़ जाने, अथवा कम गतिशील रहने, या अविकसित रह जाने, या जड़ता बढ़ जाने से कहिये, एक प्रवाह-पतीत की स्थिति में से हमारा देश गुजर रहा है। गांधी जैसी हस्ती के चौथाई शताब्दि के व्यापक और सीधे नेतृत्व के बावजूद हमारे देश के सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक नव-निर्माण या पुनरुज्जीवन में हमारी अपनी देन या छाप नहीं बन पा रही है। गांधी की जो देन मिली, उसकी जो छाप पड़ी और जिसका स्पर्श व लोहा दुनिया आज अनुभव कर रही है, वह भी मानों, हम कायम नहीं रख पा रहे हैं, उसे अधिक गहरी और स्थायी बनाने की बात तो दूर है। कभी-कभी वह आगे बढ़ती मालूम देती है। भूदान ग्रामदान के विचार ने उसे जरूर आगे बढ़ाया है। लेकिन पिछला रंग धुंधला होता जाय, उड़ता जाय और विचार की उड़ान के साथ प्रत्यक्ष जीवन व नक्शा पिछड़ता जाय या जड़ बनता जाय, यह खोखलापन सब से ज्यादा चिंतनीय है।

इस दृष्टि से देखें तो सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक सब तरफ का जीवन कुछ पूर्व-पश्चिम का मिश्रित, पूर्व का कम और पश्चिम का अधिक, धुंधला स्वरूप ग्रहण करता मालूम देता है। समता, बंधुता और स्वतंत्रता का सबसे अधिक विकृत रूप आज के लोकतंत्र के अंधानुसरण से बन सकता है। यही गति रही तो एक दिन हमारी आनेवाली पीढ़ी को यह कहना होगा कि "न खुदा ही मिला न विसाले सनम"—"दीन और दुनिया—दोनों से गये।"

आज देश को तीन कार्य सर्वाधिक छूने वाले हैं, जिन्हें कोई भी विचारधारा वाला दर-गुजर नहीं कर सकता। दर गुजर करने से उनका स्वप्न भी खंडित होगा या अधूरा तो अवश्य ही रह जायगा। सर्वोदय का आदर्श भी, उड़ान चाहे जितनी भरी जाय, उसे दर-गुजर करके टिक नहीं सकेगा। इस समय देश के जन-जीवन को प्रभावित करनेवाले वे तीन काम या कार्यक्रम, जो दकियानूसी प्रवाह-स्वरूप ही कहे जा सकते हैं, वे हैं—पंचायती राज का कार्यक्रम, तृतीय पंचवर्षीय योजना और आगामी आम चुनाव।

एक आदर्श के कार्यक्रम में हमारी मूलभूत शक्ति लगाने के साथ देश को छूने वाले इन कामों के बारे में उपेक्षा या उदासीनता न बरत कर इनके संस्पर्श के कुप्रभाव से और इनके बहाव से बचाने का कार्यक्रम भी हमें अपनाना होगा। उसी दृष्टि से आगामी चुनाव व पंचायती राज्य के सम्बन्ध में संघ का दृष्टिकोण स्पष्ट किया गया और जनता से क्या अपेक्षा है, यह कहा गया। पंचवर्षीय योजना के सम्बन्ध में भी संघ विचार-विमर्श करता रहा और अपना अभिप्राय जाहिर करता रहा है। देश के आर्थिक पुनरुज्जीवन का मूल आधार क्या होना चाहिए, खादी-ग्रामोद्योग का उस अर्थ रचना में कितना महत्त्व का स्थान हो, हमारी पंचवर्षीय योजनाओं को किस दिशा में मोड़ना चाहिए, इन सबके बारे में संघ बराबर जोर देता रहा है।

आज की संसदीय लोकशाही की विकृतियाँ पश्चिम में साफ जाहिर हो चुकी हैं। और यह स्पष्ट ही है कि इससे सच्चे लोकतंत्र की स्थापना नहीं हो सकती। फिर भी तथ्य यह है कि उस लोकशाही को इस देश में अपनाया गया है। उसी के आधार पर हर पाँचवें साल चुनाव होते हैं। संविधान में बुनियादी तौर पर कुछ परिवर्तन नहीं होता और चुनावों की नई कोई पद्धति नहीं अपनायी जाती, तब तक भी चुनावों के मौजूदा घातक दोषों से देश की जनता को यथाशक्य बचाने का प्रयत्न किया जाना जरूरी है। संघ का आम चुनाव-सम्बन्धी प्रस्ताव देश को इस दृष्टि से आगाह करता है और उसी के अनुसार आगामी आम चुनावों के समय व्यापक तरीके से उसे कार्यान्वित किये जाने की आवश्यकता है।

देश में लोकतंत्र का सही पुख्ता और सच्चा ढाँचा वह होगा, जिसमें व्यवस्था या शासन-तंत्र एक सजीव, संश्लिष्ट, ग्राम इकाई से आरंभ होगा और जिला, प्रदेश आदि स्तरों को लेते हुए पूरे राष्ट्र तक को शामिल करेगा। धीरे-धीरे वह ग्राम-इकाई ही एक दुनिया की इकाई का महत्त्वपूर्ण अंग बन जायगी। ग्राम-इकाई ही एक दुनिया की इकाई का महत्त्वपूर्ण अंग बन जायगी। ग्राम-इकाई, राष्ट्र-इकाई और विश्व-इकाई का यह स्वरूप बनना अभी दूर की बात है। लेकिन हिन्दुस्तान की ग्राम-पंचायतों को राष्ट्र की ऐसी महत्त्व-पूर्ण इकाइयों के रूप में स्थापित करना हो, जैसा कि सच्चे पंचायती राज की कल्पना में निहित होना चाहिए, तथा उसी व्यापक दृष्टिकोण से इसका संगठन होना चाहिए, तो आज और अभी इसकी कार्य-पद्धति बननी चाहिए तथा उस प्रकार की परंपराएँ स्थापित की जानी चाहिए।

संसद, धारा-सभा, पंचायत, इन सबमें पहली मुख्य बात इनके निर्वाचन या संगठन की पद्धति की है। आम चुनावों के संदर्भ में लोकनीति संबंधी लोक-शिक्षण-कार्यक्रम आज इन संसद व धारा-सभा के निर्वाचनों को मजहब जाति पक्ष आदि के भेदों से अधिक से-अधिक जितना मुक्त किया जा सकता है, वह करने का होना चाहिए। उम्मीदवार कैसा खड़ा हो या खड़ा किया जाय, उसके काम-काज, जीवन, अनुभव वगैरह के बारे में क्या माप-दंड हो, एक मत-दाता अपने मताधिकार का किस प्रकार प्रयोग करे, मत का पवित्र अधिकार भय, प्रलोभन या धर्म, जाति, वर्ग आदि के संकुचित स्वार्थ से कैसे बचे, जहाँ मत के पवित्र अधिकार पर चोट होती हो, वहाँ उसके उपयोग ही न किये जाने के अधिकार को कैसे सामने लाया जायँ, मत-दाता स्वयं कैसे सक्रिय हो और अपने क्षेत्र के हित और अपने प्रतिनिधि के चुनाव वगैरह के बारे में किस तरह स्वयं आगे बढ़कर सोचें व काम करें, इन सबके

[शेष पृष्ठ ११ पर]

छिपी हुई नहीं थी। सवाल भाषा का नहीं था। दो भिन्न समाज ओतप्रोत नहीं हो सकते थे, यही मुख्य कारण था। चन्द परिवारों में बंगाल और असमिया ओत-प्रोत हो गये थे। लेकिन उच्च नीच भाव दूर नहीं हुआ था। शिक्षा का फर्क तो था ही।

समाजभेद ने भाषा के संघर्ष का रूप लिया। और पागलपन जब कोई एक रूप लेता है तो उसी रूप में सब जगह पर फैलता है।

भारत के हजारों बरस के बाद इतिहास में भाषा के कारण कोई झगड़ा पैदा नहीं हुआ था।

बुद्ध भगवान जैसे धर्म-सुधारक और लोकसेवक अपना सारा काम लोगों की भाषा में ही करते थे। धर्मकारों ने और आचार्यों ने जब संस्कृत का टेका लिया तब संतों ने अपना सारा काम लोक-भाषा में चला कर संस्कृत का इलाज उपेक्षा से ही किया।

•विजयनगर साम्राज्य कोई छोटा राज्य नहीं था। उसमें कभी भाषा का झगड़ा पैदा नहीं हुआ।

भारतीय प्रजा का स्वभाव देखते, अगर भारत के चौदह-पन्द्रह नहीं, किन्तु चालीस पैंतालिस विभाग किये जाते और समय-समय पर पाँच पाँच, दस दस विभागों के अनुकूल 'झोन' बनाये जाते तो यह सारा झगड़ा खड़ा ही नहीं होता। हमें समझना चाहिये कि प्रजा को स्वायत्तता चाहिये। बड़े एकम् बनाने की महत्त्वाकांक्षा प्रजा में नहीं है। छोटे-छोटे एकम् बड़े कार्य के लिए राजी खुशी से परस्पर सहयोग कर सकते हैं। असम प्रान्त में, बंगाल में और बिहार में, महाराष्ट्र में और पंजाब में आज जो नाहक मनोमालिन्य बढ़ रहा है, उसका इलाज आप-ही-आप हो जाता।

छोटे-छोटे एकम् अगर तैयार किये और उनको जरूरत जितनी स्वायत्तता दी जाती और उनसे कहा जाता कि अब आप खुशी से बड़े एकम् तैयार कर सकते हैं, तो कोई झगड़ा ही पैदा नहीं होता।

हम तो स्पष्ट मानते हैं कि भारतीय जनमानस की खूबियाँ न समझने के कारण ही आज के राज्यकर्ताओं ने बहुत से झगड़े मोल लिये हैं और देश को कमजोर किया है।

—

हम कहाँ और किसके पीछे चलें ?

शंकरराव देव

जून की पहली तारीख से पंद्रह तारीख तक मैं दक्षिण भारत के चारों राज्यों में नया मोड़, ग्राम इकाई और कृषि उद्योगप्रधान नये समाज की घोषणा व रचना का समाज के भिन्न भिन्न स्तरों के लोगों में प्रचार करने के लिए घूम रहा था। उन दिनों उड़ीसा के मध्यकालीन चुनाव हो रहे थे। उसका आरंभ से अंत तक क्या होता है और क्या परिणाम आता है, यह जानने की सहज ही जिज्ञासा मेरे मन में थी। इसलिये रोज अखबार जरूर पढ़ता था।

चुनाव समाप्त हुए, परिणाम घोषित हुआ। सामान्यतया लोग और अखबार कांग्रेस की इस ज्वलंत विजय (रिसाउंडिंग विक्टरी) की दुंदुभी बजा रहे थे। एक तरह से यह स्वाभाविक ही था। आजादी के बाद यह पहला ही चुनाव था, जिसमें उड़ीसा में एक राजनैतिक दल को निर्णयात्मक बहुमत मिला और उड़ीसा की जनता के लिए एक स्थायी सरकार मिलना संभव हो सका। इस दृष्टि से देखें तो उड़ीसा की जनता के लिये तथा कांग्रेस के लिये, जिसे यह निर्णयात्मक बहुमत मिला, यह खुशी का विषय ही है।

मैं भी इस विषय के बारे में सोचता रहा। मेरे मन में इस पर कुछ चिंतन भी चलता रहा। जब 'दि हिन्दु' दैनिक का १४ जून का अंक मेरे हाथ आया, तो सहज ही उसमें खास दो-तीन जगहों पर मेरी नजर गयी। उससे मुझे बड़ा धक्का लगा और मैं एक प्रकार से बेचैन हो गया। उसमें उड़ीसा के चुनाव का विश्लेषण छपा था।

उड़ीसा में कुल ८५ लाख ५२ हजार से कुछ अधिक मतदाता हैं। उनमें से ३१ लाख २२ हजार के करीब मतदाताओं ने मतदान में भाग लिया। यानी केवल लगभग ३६½ प्रतिशत मतदाताओं ने मत देने के अपने प्रजातांत्रिक हक का उपयोग किया। यह जो ३१ लाख २२ हजार लोगों ने मत दिया, उनमें से लगभग १२ लाख ६० हजार लोगों ने कांग्रेस को अपना मत दिया। यानी जो कुल मतदाताओं में से ३६½ प्रतिशत ने मतदान किया, उनमें से लगभग ४० प्रतिशत ने कांग्रेस को अपना मत दिया, यानी करीब करीब ⅖ से कुछ ही अधिक और कुल मतदाताओं की दृष्टि से सोचें तो कुल ⅐ लोगों ने ही कांग्रेस को मत दिया। यह है कांग्रेस की ज्वलंत विजय (रिसाउंडिंग विक्टरी)! यह सत्यदर्शन है। अब जो बाकी ६३½ प्रतिशत मत कांग्रेस के विरुद्ध पड़े हैं, वे भी चार हिस्सों में बँट गये हैं। गणतंत्र परिषद् को ६ लाख ४८ हजार, प्रजा-सोशलिस्ट पार्टी को ३ लाख ३४ हजार, कम्यूनिस्ट पार्टी को २ लाख ३३ हजार और स्वतंत्र उम्मीदवारों को ५ लाख ४५ हजार मत मिले हैं। (यहाँ केवल लाखों और हजारों के ही आंकड़े दिये हैं, सौ का आँकड़ा छोड़ दिया है।) इनके अतिरिक्त लगभग दो लाख मत अवैध साबित हुए।

इस देश में आज की हालत में प्रजातंत्रीय चुनावों में 'प्रजापुरुष' किस तरह छिन्न विच्छिन्न हो जाता है, इसका यह एक भयानक और हृदयद्रावक नमूना है! ऐसी परिस्थिति में उड़ीसा का 'प्रजापुरुष' या 'प्रजापति' चुनावों के कारण छिन्न विच्छिन्न हो गया है। ऋषि-मुनियों के 'संगच्छध्वं संवदध्वं सं वो मनांसि जानताम्', जैसे आशीर्वाद से कैसे प्रभावित हो सकेगा और एकसूत्रता और समन्वय के साथ अपने विकास का काम कैसे कर सकेगा? इस पर विचार और मंथन मेरे मन में शुरू हुआ।

इतने में 'दि हिंदु' पत्र के उसी अंक में जो संपादकीय लेख है, उसे पढ़ने पर मेरा मंथन और भी तीव्र हुआ। उस दिन के संपादकीय लेख में, कुछ दिन पहले दिल्ली में आयोजित मुस्लिम सम्मेलन के संबंध में लिखा था। उसका शीर्षक था– 'मुसलमान और राष्ट्र' (मुस्लिम्स एण्ड नेशन) उस लेख में संपादक महोदय ने लिखा है:

"वस्तुतः यह जाति, समुदाय और क्षेत्र से परे राष्ट्रीय समस्या है और यह समस्या राष्ट्रीय स्तर पर सम्पूर्ण राष्ट्र के लोगों–चाहे वे किसी जाति या वंश के क्यों न हों–की रचनात्मक शक्ति को जागृत करने से ही हल हो सकती है। दिल्ली सम्मेलन का यह सुझाव सही दिशा का एक संकेत है, जिसमें सब समुदाय के नेताओं से यह अपील की गयी है कि वे मिल कर गैरसरकारी स्तर पर राष्ट्र के समन्वय और एकता के लिये प्रयत्न करें।"

जब मैंने यह पढ़ा तो मुझे रचनात्मक कार्यक्रम के बारे में गांधीजी की एक प्रख्यात उक्ति का स्मरण हुआ। गांधीजी ने कहा था कि 'सारे राष्ट्र की शक्ति को जागृत करके कार्यान्वित करने का गुण रचनात्मक कार्यक्रम में ही है। इन रचनात्मक कार्यक्रमों की पूर्ति ही सच्चा स्वराज्य है।' 'दि हिंदु' पत्र का उपर्युक्त उद्धरण पढ़ने पर मेरे मन में यह प्रश्न उठा कि इस देश में रचनात्मक कार्यक्रम के जरिये राष्ट्रनिर्माण के काम में सारा देश एकात्मकता की भावना से लग सके इसके लिये आज की चुनाव-पद्धति या आज की पाश्चात्य लोकशाही पद्धति कैसे अनुकूल हो? मन ने ही जवाब दिया कि

> पाश्चात्य लोकशाही में कुछ ऐसे गुण भी हैं, जिनका हमें समादर करना चाहिए, जिन्हें अपनाना भी चाहिए लेकिन आज की उस पद्धति का यदि हम ज्यों-का त्यों अनुकरण करेंगे, तो वह हमारे देश के लिये निःसंशय एक खतरे की चीज ही होगी।

आज की पाश्चात्य लोकशाही पद्धति में एक बड़ी खराबी है, जिसके कारण लोकशाही के जो सही मूल्य हैं और जिनके कारण से अन्य सारी राज्य-पद्धतियों से लोकशाही श्रेष्ठ मानी जाती है, उन 'व्यक्ति-स्वातंत्र्य' आदि मूल्यों को ही बड़ा खतरा पैदा हुआ है–

> वह है मुट्ठी भर पूंजीपतियों और सत्ताधारियों के हाथ में सत्ता, संपत्ति और शिक्षण का केन्द्रीकरण और उसी के परिणामस्वरूप विचार स्वातंत्र्य जैसे, लोकशाही के श्रेष्ठतम मूल्य का हनन।

इस विषय पर आज हर कहीं गंभीर चिंतन चल रहा है और इस दृष्टि से सर्वोदय दर्शन इस देश के और दुनिया के विचारकों को एक नई दिशा दिखा रहा है।

जब मैं इस तरह सोच रहा था तो 'दि हिंदु' के उसी अंक की एक तीसरी खबर पर मेरी नजर पड़ी। उसका शीर्षक था, 'इंग्लैण्ड में एक अखबार की समाप्ति पर लंदन में चिंता'–क्लोजर ऑफ यू॰के॰ न्यूजपेपर, कन्सर्न इन लंदन। उसका सारांश यह था कि इंग्लैण्ड में एक के बाद एक पुराने पत्र, जिनकी ग्राहक-संख्या लाखों की तादाद में गिनी जा सकती है, बंद हो रहे हैं, क्योंकि ऐसे अखबार भी अपने आय-व्यय का संतुलन नहीं बनाये रख सकते हैं। मिसाल के तौर पर, "सण्डे डिस्पैच" नामक अखबार वहाँ चल रहा है, जो पिछले पूरे वर्ष डेढ़ लाख से ज्यादा साप्ताहिक नुकसान उठा रहा था। इस स्थिति में उस अखबार को यदि अपने पैरों पर खड़ा करना है तो अनुमान है कि अगले ३-४ सालों में उसे करीब-करीब डेढ़ करोड़ रुपये लगाने होंगे। इसलिये अब उस अखबार का चलना असंभव सा हो गया है। अन्य क्षेत्रों की तरह ही समाचार-पत्रीय क्षेत्र में भी 'मत्स्यन्याय' जारी है। बड़ी मछली छोटी मछली को खा जाती है या छोटी मछली बड़ी मछली के पेट में चला जाना पसंद करती है। जैसे इसी 'सण्डे-डिस्पैच' को लें। उसके ग्राहक आज लगभग १५ लाख हैं, पर उसने 'सण्डे एक्सप्रेस' में विलीन होना पसंद किया है, जिसके ग्राहक लगभग ३५ लाख हैं। यह 'सण्डे एक्सप्रेस' लार्ड बीवर ब्रुक का है। इंग्लैण्ड में बीवर ब्रुक के समान ३-४ धनवान हैं, जो इंग्लैण्ड के सारे समाचारपत्र जगत् के एकमात्र सम्राट हैं। ये लोग अपनी संपत्ति का कितना हिस्सा इन अखबारों के लिए लगाते हैं, इसका अन्दाज लगाना भी हम गरीब भारतीयों के लिये कठिन है! जैसे, 'डेली मिरर' और उसके साथ के पत्रों की पूंजी डेढ़ सौ करोड़ रुपयों की है! इस पर से हम अंदाज लगा सकते हैं कि ये अखबारों में कितनी बड़ी संपत्ति लगाते हैं। हम लोगों के लिए तो वह खगोलीय आँकड़ों (एस्ट्रोनामिकल फिगर) जैसा ही है।

इसमें कोई ताज्जुब नहीं, यदि इंग्लैंड की लोकशाही और वहाँ की 'विचार व आचार-स्वतंत्रता' के हिमायती लोग इस परिस्थिति में उन मूल्यों के खतरे को देख कर चिंतित हुए हों। हमारे इस गरीब देश में भी समाचार-पत्रीय जगत् में शृंखलाबद्ध समाचार-पत्र, उन पर पूंजीपतियों की मालकियत और मत्स्य न्याय, ये तीनों बातें ज्यों की त्यों लागू होना शुरू हो गयी है। यह न होता तो ही आश्चर्य होता! क्योंकि हम भी इन मामलों में पाश्चात्य देशों का ही अनुकरण कर रहे हैं!

कोई एक चीज आप अधूरी नहीं ले सकते। लेनी है तो वह पूरी ही लेनी पड़ती है, यही निसर्ग का नियम है। आज का प्रजातंत्रीय नागरिक विचार और आचार में अपने को स्वतंत्र मानता है और अपनी-अपनी स्वतंत्रता में मस्त रहता है। लेकिन यह वैसी ही बात है कि कोई अपने पैसे बरबाद करके नशे की मस्ती खरीदता है और अंत में संपत्ति की और स्वास्थ्य की हानि ही मोल लेता है।

लेकिन सही स्थिति यह है कि अपने समूचे समाज के विचारों और आचारों को रूप देने वाले ये अखबार, रेडियो और सिनेमा ही है। नागरिक समझता है कि ये मेरे हैं, पर असल में ये कीमत चुका कर खरीदे हुए हैं। यही कारण है कि आज का गणतंत्रीय नागरिक असली और मौलिक स्वतंत्रता को खो बैठा है और आज की गणतंत्रीय नकली स्वतंत्रता से समाज में संघर्ष पैदा हो गया है। स्वयं नागरिक इसका साक्षी होते हुए भी, अज्ञानवश उसे समझ नहीं पाता और इसीलिए उसका निराकरण नहीं कर पाता।

यही पश्चिमी लोकशाही पद्धति का अनुकरण, हमारे लिये 'अंधेनैव नीयमाना यथान्धाः' (जैसे अंधे को अंधा ले जा रहा है।) वाली नीति सिद्ध हो रहा है। फिर भी हम उसी का अनुकरण कर रहे हैं, उसीसे अपना विकास और कल्याण मान रहे हैं और इसको लेकर अपना गौरव अनुभव करते हैं!

लोकनीति : एक विवेचन

पिछले दिनों शांति विद्यालय में श्री दादा धर्माधिकारी ने अपने एक भाषण में लोकनीति का सांगोपांग विश्लेषण किया था। गत अंक में उसका एक अंश हम दे चुके हैं। शेष अंश हम यहाँ दे रहे हैं। –सं०

• दादा धर्माधिकारी

लोकतंत्र में तीन चीजें आती हैं, जिसे हम परस्पर शुभ व्यवहार, सदाचार कहते हैं : (१) उत्तरदायित्व, (२) कर्तव्य और (३) मर्यादा। उत्तरदायित्व का अर्थ है, मैं अपने भले-बुरे कामों के लिए जिम्मेदार हूँ। मैं अपने भले-बुरे कामों के लिए किसके प्रति जिम्मेदार हूँ ? धर्म कहता है, ईश्वर के प्रति। समाजवादी और साम्यवादी कहता है, समाज के प्रति और राज्य के प्रति। संस्थावादी कहता है, संस्था के प्रति। कुटुम्बवादी कहता है कुटुंब के प्रति। लेकिन लोकतन्त्र कहता है, एक दूसरे के प्रति।

कुटुम्ब में जो पारस्परिकता है, उस पारस्परिकता का अनुवाद जब हम नागरिकता की परिभाषा में करते हैं, तब उसका अर्थ होता है, परस्पर उत्तरदायित्व। उत्तरदायित्व है, लेकिन परस्पर है (रेसिप्रोकल रिस्पान्सिबिलिटि)। हम और आप एक-दूसरे की तरफ से जिम्मेदार हैं, एक-दूसरे के प्रति उत्तरदायी हैं और सब मिल कर सबके प्रति उत्तरदायी हैं। तो इसमें से सदाचार अपने आप निष्पन्न होता है। जहाँ व्यक्ति एक-दूसरे की तरफ से जिम्मेदार नहीं हैं, किसी अव्यक्त वस्तु के प्रति जिम्मेदार है–वह अव्यक्त वस्तु चाहे संस्था हो, चाहे संगठन हो, चाहे समाज हो–तो वहाँ 'एक्स्ट्रा ह्यूमन फैक्टर' आ जाता है। एक मानव-बाह्य सत्ता आ जाती है। ऐसी अनंत सत्ताएँ लोगों ने मानी। साम्यवादियों ने इतिहास को इस प्रकार की सत्ता माना, उसको लगभग ईश्वर का स्थान दे दिया। हम किसी बाह्य सत्ता को नहीं मानते। मनुष्य को हमने मानवता का, सामाजिकता का सगुण रूप मान लिया है।

अब इस नियमन का अर्थ शासन नहीं है, 'एड्मिनिस्ट्रेशन' नहीं है, 'गवर्नमेंट' नहीं है। इस नियमन का अर्थ है 'रेग्युलेशन।' मैं अपने आचरण को मोड़ता हूँ, परिवर्तन करता हूँ, इसे उत्तरदायित्व कहते हैं। लेकिन किस दिशा में मोड़ता हूँ ? दूसरे के सुख और हित की दिशा में। क्यों ? क्योंकि हम दोनों को मिल कर एक-दूसरे के व्यक्तित्व का विकास करना है। इसलिए दोनों का सहयोग होगा। और दोनों का सहयोग होगा, इसलिए मुझे अपने आचरण में कुछ परिवर्तन करना होगा और उसको अपने आचरण में कुछ परिवर्तन करना होगा। यह आचरण में जो पारस्परिक अनुकूलता आती है, इसमें से कर्तव्य निष्पन्न होता है, जिसे आप अधिकार कहते हैं।

अधिकार का मतलब है, जो कुछ मैं पा सकता हूँ। मुझे जो कुछ पाने की पात्रता कानून ने दी है, सामाजिक नियमों ने दी है, उसे अधिकार कहते हैं।

अधिकार मनुष्यों को बाँटता है, अधिकार मनुष्यों को अलग-अलग कर देता है। कर्तव्य मनुष्यों को मिलाता है; क्योंकि उसमें एक-दूसरे के अनुकूल अपने जीवन बनाने का प्रयास है। मैं अपना जीवन आपके अनुकूल बनाना चाहता हूँ और आप अपना जीवन मेरे अनुकूल बनाना चाहते हैं, दोनों एक दूसरे के व्यक्तित्व के विकास में सहयोगी होना चाहते हैं। इसमें से कर्तव्य निष्पन्न होता है। अधिकार में संघर्ष है, कर्तव्य में सहयोग है। कर्तव्य भी जब अधिकार बन जाता है, तो संघर्ष पैदा होता है।

उस वक्त कर्तव्य भी मनुष्य का अधिकार बन जाता है। यह काम करना मेरा अधिकार है, यह काम करना आपका अधिकार है। तो जहाँ कर्तव्य अधिकार में बदल जाता है, वहाँ कर्तव्य के लक्षण भी बदलते हैं। संग्राम पैदा होता है। इसे 'कान्फ्लिक्ट आफ ड्यूटीज' कहते हैं।

तीसरी चीज है, मर्यादा। इसके लिए मुझे अपनी स्वतंत्रता का संकोच करना पड़ता है, मुझे अपनी स्वतंत्रता सीमित करनी पड़ती है। तो स्वेच्छा से मनुष्य अपनी स्वतंत्रता को जब सीमित करता है, तब उसे मर्यादा कहते हैं।

मर्यादा सभ्यता, संस्कृति का प्रथम लक्षण है, जो मेरी स्वाभाविक स्वतन्त्रता है। जो मेरी स्वच्छंदता है वह केवल आपकी स्वतन्त्रता से मर्यादित नहीं है। मेरे मन में जो आदर और स्नेहभाव आपके प्रति है, उससे वह मर्यादित है।

मेरे मन में आपके लिए इज्जत है, मुहब्बत है तो यह जो स्नेह और आदर है, यह मेरी उच्छृङ्खलता को अपने आपमर्यादित कर देता है। मुझे पता भी नहीं होता कि मैं अपनी आजादी पर रोक लगाता हूँ। उल्टे मुझे यह अनुभव होता है कि मैं अपनी स्वतंत्रता का विकास कर रहा हूँ; क्योंकि उसमें से मुझे आनंद की अनुभूति होती है।

स्वतंत्रता का जितना उत्सर्ग मनुष्य करता है, उतनी उसकी स्वतन्त्रता बढ़ती है, क्योंकि यह उत्सर्ग स्वेच्छा से है, उसमें स्वतन्त्रता भी है।

राज्य की आज्ञा के लिए, कानून के पालने के लिए या आपकी स्वतंत्रता के संरक्षण के लिए मैं अपनी स्वतंत्रता का बलिदान नहीं कर रहा हूँ। आपके चरणों में मैं अपनी स्वतन्त्रता इसलिए चढ़ा रहा हूँ कि वैसा ही करने में मुझे आनन्द होता है। यह सामाजिकता, समाजवाद, राज्यवाद और व्यक्तिवाद की समस्या को हल करने का असली उपाय है।

इसका परिणाम क्या हो ? दो मनुष्यों के व्यवहार में राज्य का हस्तक्षेप कम-से-कम हो।

दो मनुष्यों के व्यवहार में राज्य का प्रवेश जहाँ अधिकतम होता है, वहाँ राज्य-नीति का विकास होता है। मनुष्यों के परस्पर-व्यवहार में जहाँ राज्य का प्रवेश न्यूनतम होता है, वहाँ लोक-नीति का विकास होता है।

इसके लिए राज्य का प्रवेश और हस्तक्षेप न्यूनतम होना चाहिए। अभी जो पूना में परिसंवाद हुआ, उसमें मुख्य प्रश्न यह था कि आप संयोजन में राज्य का हस्तक्षेप कितना चाहते हैं ? समस्याओं के समाधान में राज्य का हस्तक्षेप कितना हो ? जब हमने यह कहा कि विकेंद्रित राज्य-सत्ता का हस्तक्षेप हमारे लिए निषिद्ध नहीं है, तो उन अर्थशास्त्रियों को यह सुन कर पुत्र-जन्म के जैसा आनन्द हुआ कि अन्त में कहीं-न-कहीं ये लोग राज्य-सत्ता का हस्तक्षेप स्वीकार करते ही हैं। इसका अर्थ यह है कि संस्थाएँ विकेंद्रित होंगी और विकेन्द्रित अर्थ-व्यवस्था में जो व्यवस्था होगी, वह अंत में समूह-केंद्रित होगी। इसकी इकाई, इसका घटक कोई-न-कोई समूह होगा। अभी हम यहाँ तक पहुँचे।

लोकनीति में अगर हम यह कहते हैं कि इसमें हर मनुष्य की राय अलग-अलग होगी, तो उसमें संयोजन क्या किया ? कोई भी जब अपना मत व्यक्त करने लगे तो उसमें लालच, मुरव्वत और डर, ये तीनों नहीं होने चाहिए। ये तीनों लोकतंत्र को कलुषित करते हैं, भ्रष्ट करते हैं। उसके हमारे संबंध बहुत घनिष्ठ हैं। यह उम्मीदवार हो गया। यह हमारे पीछे पड़ गया है। अब इससे हम यह कहें कि तुझे वोट नहीं देंगे, तो बीमार हो जायगा, नाराज हो जायगा। इसमें डर नहीं है, मुरव्वत है। इस प्रकार हमको संकट में डाल दिया जाता है। इससे बचने के लिये गुप्त मतदान की युक्ति निकली। ऐसा मतदान हो, जिसमें पता ही न चले कि आपने किसको मत दिया है। यह एक बचाव का मार्ग था। जब हरेक को स्वतन्त्र मतदान का अधिकार है, तो फिर एक-दूसरे के सामने अभिव्यक्त करने की आदत होनी चाहिए। अन्यथा नागरिकों में चारित्र्य का विकास नहीं होगा।

लोकतंत्र में लोक-शिक्षण क्या है ? लोक-शिक्षण का मतलब है कि एक-दूसरों के प्रामाणिक मत-भेदों के लिए इज्जत, आदर होना चाहिए। अगर ऐसा नहीं होता है तो बुद्धि-स्वातन्त्र्य और विचार-स्वातंत्र्य, ये कोई अर्थ नहीं रखते। इसलिए मत दान प्रकट हो। मतदान प्रकट तब होगा, जब उम्मीदवारी नहीं होगी। उम्मीदवार 'कैंडिडेट' है, और कैंडिडेट किसका ? सत्ता का। अब एक मनुष्य सत्ताकांक्षी है, इसीलिए हमारे मन में लिहाज या डर पैदा होता है। जिसके खिलाफ राय देनी है, वह कल मार देगा, यह डर है। या जिसके खिलाफ आज हमको वोट देना है, उसके हम कर्जदार हैं, यह लोभ है। या फिर जिसके खिलाफ हमको अपनी राय देनी है, वह हमारा स्नेही है। ये सारे अवांतर कारण वहाँ नहीं होने चाहिए।

इसके लिए आवश्यकता इस बात की है कि प्रतिनिधित्व तो हो, लेकिन उम्मीदवारी न हो। इसके लिए प्रथा बदलनी होगी। प्रथा यह बदलनी होगी कि काम जिसको सौंपना है, लोग उसको चुनेंगे और अपनी मर्जी से काम सौंपना चाहेंगे। लोग व्यक्तिगत व्यवहार में यह करते हैं। सामुदायिक व्यवहार में भी यह सीखना होगा।

तब व्यवस्था उलटी हो जायगी। उसको काम स्वीकार करने में संकोच होगा, क्योंकि वह अपने को जिम्मेदार मानेगा। अपने आप मतयाचना बंद हो जायगी। मत-याचना में से खुशामद आती है। जो मत याचना करता है, वह लोभ और भय का प्रयोग करता है। और जहाँ लोभ और भय काम न दे, वहाँ अपने प्रभाव से काम करता है, अपने गुण, चारित्र्य का उपयोग करता है। इन सारी बुराइयों को दूर करने के लिए उपाय यह है कि उम्मीदवारी न हो, मत-याचना न हो। मत-याचना में लोक-शिक्षण का लोप हो जाता है मतों

का पोषक मत का निर्माण नहीं करता है। केवल मत जुटाता है, मतों को बटोरता है। तो एक सुदृढ़ और समर्थ लोकमत का निर्माण आप मतों की याचना से नहीं कर सकते। इसलिए उम्मीदवारी नहीं होनी चाहिए। इसका मतलब यह नहीं है कि हमने किसीका अधिकार छीन लिया है। कोई यह कहता है कि मैं यह काम और लोगों की अपेक्षा अच्छा कर सकता हूँ, तो यह कहने की परिस्थिति को हम बदल देना चाहते हैं। परिस्थिति में बहुत बड़ा परिवर्तन हो जाता है।

> जो जितना सत्ता के विषय में अधिक निःस्पृह और निरपेक्ष होगा, वह उतना अधिक सुपात्र समझा जायगा। द्रव्य के विषय में जो निःस्पृह होता है, उसको आप 'ट्रस्टी' बनाते हैं। उसी प्रकार सत्ता का 'ट्रस्टी' वह हो सकता है, जिसके अपने मन में सत्ता की आकांक्षा नहीं होती।

इसमें भूमिका बदल जाती है। इसके लिए एक परिस्थिति का निर्माण कर देते हैं। हमने यह नहीं किया कि उसका अधिकार छीन लिया। लेकिन उसकी उम्मीदवारी की पूरी की पूरी परिस्थिति और उसकी भूमिका बदल दी। ऐसी परिस्थिति में निर्वाचन होगा, लेकिन मतों का संग्रह या याचना नहीं होगी। प्रतिनिधित्व होगा, लेकिन उम्मीदवारी नहीं होगी।

अब एक तीसरी चीज रह गयी है। आज क्या होता है? उम्मीदवार अपनी मर्जी से खड़ा होता है, उसे कभी कोई पार्टी खड़ी कर देती है। उसको कभी कोई धार्मिक या जातीय संस्था खड़ी कर देती है। याने उम्मीदवार जो खड़े होंगे, उनके खड़े होने में नागरिकों का कोई हाथ नहीं है। उसके चुनने में नागरिकों का हाथ नहीं है। लेकिन एक दफा वह चुना जाय, इसके बाद प्रतिनिधि के नियंत्रण में भी नागरिकों का कोई हाथ नहीं। उनके हाथ में कोई सत्ता नहीं है।

> व्यक्तिगत नागरिकता एक अलग चीज है और प्रातिनिधिकता एक अलग चीज है। प्रतिनिधि खुद मुख्तार नहीं है, प्रतिनिधि दूसरे का मुख्तार है। नागरिक खुद मुख्तार है। इसलिए लोकतंत्र में जितनी प्रातिनिधिकता कम होगी उतना प्रत्यक्ष लोकतंत्र शुद्ध होगा।

लेकिन प्रत्यक्ष लोकतंत्र संपूर्ण अंश में आज व्यवहार्य नहीं है, इसलिए प्रातिनिधिक लोकतंत्र अनिवार्य है।

इसके लिए यह होना चाहिए कि प्रातिनिधिक लोकतंत्र में नागरिकों का प्रत्यक्ष पुरुषार्थ और सक्रिय भाग हो। तो यह पुरुषार्थ और भाग तीन स्थानों में हो सकता है। एक, प्रतिनिधि की उम्मीदवारी, दूसरे, प्रतिनिधि का निर्वाचन और तीसरे, प्रतिनिधि का नियंत्रण।

प्रतिनिधि अगर अपने क्षेत्र का होता है, तो उम्मीदवार भी अपने क्षेत्र का होना चाहिए। आज तो उम्मीदवार पार्टी का होता है, लेकिन प्रतिनिधि क्षेत्र का होता है। काशी की तरफ से किसी भी पक्ष से उम्मीदवार चुना जाय, लेकिन वह प्रतिनिधि काशी का होगा, वह उस पक्ष का नहीं होता। तो प्रतिनिधि तो क्षेत्र का हो, और उत्तरदायी पार्टी के प्रति हो, यह एक अटपटी-सी, बेतुकी व्यवस्था है। मैं प्रतिनिधि किसका हूँ? काशी का। और जिम्मेवार? कांग्रेस या पी० एस० पी० का। तो जिसका प्रतिनिधि हूँ, उसकी तरफ से मैं जिम्मेवार नहीं रह जाता। इसलिए उम्मीदवार भी क्षेत्र का होना चाहिए। इसलिए नागरिक अपनी समितियाँ कायम करें और परिचित उम्मीदवार सर्वसम्मति से खड़े करें। अगर सर्व-सम्मति नहीं हो सके, तो अधिक-से-अधिक बहुमत से। जैसा नियम बनायेंगे, उस तरह से चलेगा। आज बहुमत का नियम बन गया है, इसलिए बहुमत से राज्य चलता है। अगर यह नियम बना होता कि ८० फीसदी होना चाहिए, तो वैसा ही राज्य चलता।

लोकतंत्र में अल्पमत का महत्त्व अधिकतम होता है। यह लोकतंत्र की एक दूसरी कसौटी है। जब हम यह कहते हैं कि मनुष्य का निरपेक्ष मूल्य होगा तो जो अल्प-संख्या में होंगे, उनकी प्रतिष्ठा और उनका महत्त्व अधिक होना चाहिए। तो जिस लोकतंत्र में अल्प-मत और अल्प-संख्या की प्रतिष्ठा अधिक-से-अधिक होती है, वह शुद्ध लोकतंत्र है, वास्तविक लोकतंत्र है।

जब आप सर्व-सम्मति की तरफ कदम बढ़ायेंगे, तब लोकतंत्र का महत्त्व बढ़ता चला जायगा। शुरू-शुरू में लोगों ने अल्पसंख्यकों को 'विटो' का अधिकार दे दिया। इस तरह की कुछ भावना पैदा हो गयी। कुछ दिक्कतें भी पैदा होंगी। लेकिन जैसे-जैसे लोक-स्वातंत्र्य और लोकनीति का विकास होगा, वैसे वैसे अनुभव यह होगा कि विशुद्ध लोक-तंत्र इसमें से प्रगति करता है। यह शुरू शुरू में होगा, इसलिए होगा कि अल्प-संख्यकों का अनुभव आज तक दूसरा हुआ है। उनकी बात ही नहीं मानी गयी। इसलिए अल्प संख्यकों में जब पहले कुछ चेतना आयेगी तो उनकी चेतना उग्रता में व्यक्त होगी। लेकिन बाद में जब वे देखेंगे कि समाज का काम ही नहीं चल सकता तो वे सौम्य होते चले जायेंगे और अंत में उनका उपशमन होगा।

अब नियंत्रण के लिए नागरिकों की जाग्रत समितियाँ, जिन्हें 'विजिलेंस कमिटीज' कहते हैं, कायम होनी चाहिए। आप यह खूब याद रखिये कि प्रतिनिधियों को वापस बुलाने का अधिकार देने से समस्या हल नहीं होगी। स्विट्ज़रलैण्ड वगैरह देशों में 'राइट आफ रिकाल' था। इसका थोड़ा-सा महत्त्व इसलिए है कि आम जनता में जाकर सारे नागरिकों का समर्थन मिलाना चाहे, वह उसके बिना नहीं होता। लेकिन यहाँ क्या होगा? 'रिकाल' एक बहाना हो जायगा, इलेक्शन बारहों महीने चलेंगे—जैसे आज 'इलेक्शन पिटीशन' है। जो हार गया, वह 'इलेक्शन पिटीशन' करता है। मुकदमा कब तक लड़ता है? साढ़े चार साल तक! फिर अगर जीत गया तो वह आदमी उठ कर छः महीने तक वहाँ जाकर बैठता है। इसमें क्या होगा? जो हार गया, वह आज ही से आन्दोलन शुरू कर देगा, तो फिर एक नया हथियार चुनावबाजी में आ जायगा! इसलिए अप्रत्यक्ष चुनाव में खर्च कुछ कम जरूर हो जायगा, लेकिन नागरिकों की जिम्मेवारी भी कम हो जायगी।

> इसलिए लोकनीति में हमेशा प्रत्यक्ष निर्वाचन प्रशस्त है। प्रत्यक्ष चुनाव में नागरिकों का अपना नियंत्रण होगा। उसके लिए 'विजि-लंस कमिटीज' हों और उसमें तटस्थ नागरिक होंगे, जिनका प्रभाव इतना होगा कि सारे वातावरण को वे बदल देंगे।

इसमें से सत्ता का नीलाम नहीं होगा। आज सत्ता का नीलाम होता है। यह संतोष रखने की जरूरत नहीं है कि उसमें पैसा कम खर्च होता है। हम लोगों का अपना अनुभव है। आजादी के आंदो-लन के समय हमारे फटियल कांग्रेस कार्य-कर्ता लखपतियों के खिलाफ खड़े हो जाते थे। लखपति पचास लाख खर्च करते थे और इनके पास तो कुछ भी नहीं होता था। फिर भी जीत जाते थे। लेकिन आज यह कहते हैं कि जो इतना खर्च नहीं करेगा, वह जीतेगा नहीं! उन्होंने इतिहास की तरफ से आँखें बंद कर दी और मनुष्य-स्वभाव पर विश्वास नहीं है।

एक मित्र के लिए एक चुनाव में मैं घूमता था। उस तहसील के हर गाँव में कम-से कम एक तो मनुष्य उसे जानता ही था। वे कहते थे कि आप जिसके लिए आये हैं, हम उनको जानते हैं। आपको भाषण करने की कोई आवश्यकता नहीं है, हम सब उनको जानते हैं। दूसरा जो उसके खिलाफ था, वह इतना बदनाम था कि उसको भी सब लोग जानते थे। लोग कहते थे कि आप हमारे गाँव में आये तो खुशी से भोजन कर चले जाइये, आपको भाषण करने का कष्ट करने की जरूरत नहीं है। तो जब छोटे क्षेत्र में उम्मीदवार सुपरिचित होगा, तो निर्वाचन का खर्च कम हो जायगा।

खादी : एक शिक्षण-कार्य है

ध्वजाप्रसाद साहू

राजस्थान व मध्यप्रदेश राज्यों की खादी-संस्थाओं के सम्मेलन में १५ जून को श्री ध्वजाप्रसाद साहू ने अपने अध्यक्षीय भाषण में कहा है :

खादी का सारा कार्य 'एज्यूकेशन', शिक्षण का है। जितना कार्य हम शिक्षण का करेंगे, उतना ही नये मोड़ की दिशा में हम बढ़ेंगे। हम मानते हैं कि खादी का कार्य शिक्षकों का है। यदि शिक्षक हमारे इस काम को करते हैं तो हमारा काम आसान हो जायेगा। यदि स्वावलम्बन का कार्य शिक्षण संस्थाएँ करती हैं तो हमारा एक बहुत बड़ा प्रश्न हल हो जाता है और बेकारी की समस्या भी हल हो जाती है। हमें खादी और स्वावलम्बन के जरिये ग्राम-भावना पैदा करनी चाहिए। हमारा कार्य है कि गाँव वालों के सामने कुछ-न-कुछ कार्यक्रम रखते रहें। जब स्वावलम्बन का काम हो जाय तो महिला मंडल का कार्यक्रम रखें, खेल-कूद का कार्यक्रम रखें, पढ़ाई लिखाई की कोई योजना रखें। इस प्रकार हमें चाहिए कि हम गाँव में सोचने की आदत डालें, उन्हें बिना सोचे बैठने न दें। यही हमारे नये मोड़ का कार्यक्रम होगा। यदि वे सोचेंगे नहीं तो नये मोड़ का कार्यक्रम कौन करेगा? हमारा कार्य यही है कि हम उनके दिमाग को बैठने न दें। हमारे लिए यह 'रुटिन' का कार्य हो गया है। उसमें बुद्धि का कार्य नहीं रहा है। लेकिन अगर गाँव स्वावलम्बन की दिशा में बढ़ें, गाँवों में शिक्षण हो, इस दिशा में प्रयत्न करें तो अनुभव होगा और हमारी बुद्धि का विकास भी होगा। आज तो हमारी बुद्धि भी कुंठित हो गयी है। हम पढ़ते लिखते भी नहीं हैं।

* * *

आज का युग विचार का युग है। हम प्लानिंग करने की बात करते हैं, किन्तु यह बिना विचार के कैसे होगा? जो हमारे पास विचार नहीं है यानी हमारी बुद्धि कुंठित हो गयी है। हमें आज अध्ययन करने की भी बहुत आवश्यकता हो गयी है। 'रुटिन' के हिसाब से 'रुटिन' का कार्य करना पड़ता है, किन्तु इसके आगे हमें बढ़ना है। अगर हम संस्था वाले कुछ सोचने का कार्य करेंगे और अध्ययन करेंगे तो हमारे सामने की परेशानियाँ दूर होंगी।

चांद से भी दूर

सहज है इन्सान को अब याह पाना—
चाँद, सागर, अगम की दूरी मिटाना,
दूर मुझको आज भी लगता मगर है—
आदमी को आदमी का खोज पाना।

मैसेन्चुसेट्स,
अमेरिका

—वेद प्रकाश 'बटुक'

क्या आवश्यकताओं को बढ़ाते रहना संस्कृति का लक्षण है ?

नानाभाई भट्ट

['भूदान-यज्ञ' के पाठक स्वामी आनंद और श्री नानाभाई भट्ट के प्रश्नोत्तर से परिचित हैं ही। यहाँ पर हम स्वामी आनंद के "क्या आप यह मानते हैं कि जीवन की आवश्यकताओं को बढ़ाने से सभ्यता अथवा संस्कृति आगे बढ़ती है ?" इस प्रश्न का श्री नानाभाई द्वारा दिया हुआ उत्तर दे रहे हैं। —सं०]

मेरे विचार में यह व्याख्या बिलकुल भ्रामक है कि जीवन की आवश्यकताएँ बढ़ाने से सभ्यता अथवा संस्कृति आगे बढ़ती है। जीवन की आवश्यकताओं का अर्थ क्या है ? मानवीय जीवन को चरितार्थ करने के लिए तो उसकी शारीरिक आवश्यकताओं, मानसिक आवश्यकताओं, सांस्कृतिक आवश्यकताओं, सामाजिक आवश्यकताओं और इसी तरह आध्यात्मिक आवश्यकताओं का भी एकसाथ यानी समग्र दृष्टि से विचार करना चाहिए।

आप जीवन की जिन आवश्यकताओं के बारे में पूछ रहे हैं, उनमें तो मनुष्य की शारीरिक आवश्यकताओं का विचार ही मुख्य मालूम होता है। लेकिन मनुष्य केवल पशु-सहज आवश्यकताओं से ही अपने जीवन को सफल नहीं कर सकता। आज हम जीवन की आवश्यकताओं को बढ़ाने का जो विचार करने लगे हैं, उसके मूल में पश्चिम के आगे बढ़े हुए देशों के साथ हमारे सम्बन्ध का बन्धन मुख्य है। इसमें कोई सन्देह नहीं कि पश्चिमी देशों की जनता को जो पौष्टिक आहार मिलता है, जैसे मोटे और महीन वस्त्रों का उपयोग वे करते हैं, जिस तरह के औषधोपचार का लाभ उन्हें प्राप्त होता है और उनके बालकों को शिक्षा-सम्बन्धी जो अनुकूलताएँ सुलभ हैं, उन सबकी तुलना में, उन-उन बातों की दृष्टि से, हमें जैसी अनुकूलताएँ सुलभ हैं, वे हमें अत्यन्त कम मालूम होती हैं।

हमें यह भी कबूल करना चाहिए कि हमारे गरीब लोगों में आज जिस तरह की बेकारी मौजूद है, उन्हें साल में छह महीने जिस तरह आधे पेट और अधनंगी हालत में रहना पड़ता है, जिस तरह रात सोने के लिए उन्हें साफ-सुथरी और सुहावनी जगह तक नहीं मिलती, कठिन-से-कठिन बीमारी के समय भी जैसे उन्हें कहीं से किसी का सहारा नहीं मिलता और जीवन को उन्नत बनाने के लिए उन्हें जिस तरह का जीवन-शिक्षण मिलना चाहिए, वह भी मिल नहीं पाता, यह सब बेमिसाल है और इसमें कोई सन्देह नहीं कि हर कोई यह चाहेगा कि गरीबों के ये अभाव दूर हों और जल्दी से-जल्दी दूर हों। लेकिन अगर इस सारी परिस्थिति से ऊपर उठना हो, तो हम लोगों को एकसाथ मिल कर महान पुरुषार्थ के लिए तैयार होना होगा।

अगर हम लोग यह मानते हों कि यह सब कल का कल ही हो जाना चाहिए और सो भी हम जैसे आज हैं, वैसे ही बने रह कर हो जाना चाहिए, तो मुझे कहना होगा कि यह बिलकुल असम्भव है। अगर हम खुद यह मानते हैं और लोगों को भी यह समझाते हैं कि हमारा गरीब देश आज का आज ही गरीबी से उबर जाय, और देश के प्रत्येक स्त्री पुरुष और बालक को कल से ही पोषक आहार आदि मिलने लग जाय, तो हमें समझना चाहिए कि ऐसा करके हम बड़ी भूल कर रहे हैं। यदि आज की अपनी स्थिति से ऊपर उठने का कोई भी एक रामबाण उपाय हो, तो वह यही है कि हम सब पूरा-पूरा पुरुषार्थ करें। आज जो राष्ट्र हमें इन मामलों में आगे बढ़ते दीखते हैं, उनके पूर्वजों ने पहले ऐसे ही पुरुषार्थ किये थे और उनके उन पुरुषार्थों का फल उनके वंशजों को आज मिल रहा है। मैं यह कबूल करता हूँ कि पिछले कुछ सौ वर्षों में हमारी जनता को पुरुषार्थ के अवसर ही कम मिले हैं। और जनता समझ भी न सके, इस तरह से उसके हाथों से पुरुषार्थ के साधन छीन लिये गये हैं। यही कारण है कि हमारी जनता का एक बड़ा अंश मानव से भी हीन परिस्थितियों में पड़ घुट कर समाना हुआ है। इस जनता के लिए मानवता के अनुरूप जीवन-स्तर की व्यवस्था करना सरकार का और हमारे जैसे समझदार लोगों का धर्म है। इसके साथ ही यह जरूरी है कि हमारी जनता भी हमारा और सरकार का दिया हुआ ही लेने की दीनता से मुक्त हो और अपनी ही मेहनत से, अपने प्रचण्ड पुरुषार्थ से, आवश्यक सिद्धियाँ प्राप्त करें। इन सिद्धियों को प्राप्त कराने में हमें उसकी सहायता करनी ही चाहिए। यह तो हमारा धर्म है। ऐसा करके हम उस पर कोई उपकार नहीं करते।

लेकिन जो लोग आज जीवन-स्तर को ऊँचा उठाने की बातें करते हैं, वे हमारे देश के इन दलित-पीड़ित लोगों के जीवन-स्तर को ऊँचा उठाने के बदले अपने जीवन-स्तर को उन्नत बनाने की बात ही करते मालूम होते हैं। ऐसे लोग इस बात को बिलकुल ही भूल जाते हैं कि भारत जैसे गरीब देश की अधभूखी जनता के बीच रह कर इंग्लैंड अथवा अमेरिका की जनता के जीवन-स्तर जैसा अपना जीवन-स्तर बनाने की बात सोच कर वे न केवल देशद्रोह करते हैं, बल्कि मानवता का द्रोह भी कर रहे हैं। जिस देश में हम जन्मे हैं, जिन कुटुम्बियों और ग्रामवासियों के बीच हम जीते हैं और जिस दुबली-पतली माँ का दूध पीकर हम बड़े हुए हैं, उसी देश के और उसी माँ के दूसरे बालक हमारे आसपास गरीबी में अपने जीवन की घड़ियाँ गुजारें और हम उनके बीच समृद्ध देशों के जीवन-स्तर के साथ जीने की बात सोचें, और सो भी बिलकुल निर्लज्ज होकर, इससे बढ़ कर अमानुषी जीवन और कौनसा हो सकता है !

यह तो जीवन-स्तर को ऊँचा उठाने की बात करनेवाले एक पक्ष की चर्चा हुई। यदि हम अपने जीवन को उसके पूरे अर्थ में उन्नत और सार्थक करना चाहते हैं, तो हमें उसे उसके सब पहलुओं से समझना चाहिए। मतलब यह कि हमारा आर्थिक जीवन, सामाजिक जीवन, आध्यात्मिक जीवन, यानी हमारे जीवन के ये सारे पहलू आपस में एक-दूसरे से अपना तालमेल बैठा कर चल सकें, इस प्रकार का हमारा जीवन-स्तर बनाना चाहिए। जब हम इस तरह सोचते हैं, तो आज धन कमाने का जैसा पागलपन हम पर सवार हुआ है, उसे देख कर हँसी भी आती है और तरस भी आता है। मनुष्य की कमाई उसके जीवन का सर्वोत्तम माप नहीं बन सकती। धन कमाना जीवन का एक अंग है, दूसरे अंगों की तुलना में अधिक समय चाहने वाला अंग है। किन्तु इसी कारण हम उसे मानव-जीवन का प्रधान अंग तो कदापि नहीं कह सकते।

हमारे देश में अब तक आम लोगों की आर्थिक समृद्धि औरों की तुलना में बहुत अधिक नहीं रही, लेकिन हमारे गाँवों और शहरों का समग्र जीवन आपस में कुछ इस तरह गठित हो गया था कि हमारे लोक-जीवन में अमीरी और गरीबी के बीच बहुत बड़ा फर्क पैदा नहीं हो सका था। सच है कि समाज में कुछ वर्गों को जन्म से ही अधिक श्रेष्ठता मिलने लगी थी; लेकिन इसके कारण अलग-अलग वर्गों के जीवन में बहुत बड़ा अन्तर उत्पन्न नहीं हुआ था। हमारे ब्राह्मणों, हमारे व्यापारियों, हमारे राज्य-कर्ताओं और हमारे मजदूरों आदि के बीच कोई भेदभाव न रहा हो, सो बात नहीं। लेकिन इन सब लोगों के जीवन में भेदभाव के रहते हुए भी एक प्रकार की सुमेलदिता थी, ऐसा प्रतीत होता है। आज हमारे जीवन के सब क्षेत्रों में जो भेदभाव दिखाई पड़ता है, वह जन्म के कारण उत्पन्न भेदभाव को भी भुलानेवाला है। गरीब और अमीर, शिक्षित और अशिक्षित, देहाती और शहरी, सरकारी नौकर और आम जनता, इन सबके बीच आज जो भारी भेदभाव दिखाई पड़ता है, वह किसी भी तरह दूर होना चाहिए और हमारे समूचे लोक-समाज को आज की अपनी कम समृद्धि-वाली स्थिति में भी जो थोड़ी बहुत सम्पत्ति है, उसे उचित रीति से बाँट कर वैसा जीवन चाहिए। जब यह होगा तभी हमारे गरीब, अनपढ़ और दलित भाई-बहन हमारा विश्वास कर सकेंगे और तभी हम एक समूचे राष्ट्र के रूप में जीवन की अनेक दिशाओं में महान पुरुषार्थ कर सकेंगे। जीवन-स्तर को उठाने का सच्चा अर्थ यही है कि आज जिनका जीवन-स्तर दूसरों की तुलना में बहुत ही गिरा हुआ है, उनके जीवन-स्तर को ऊँचा उठाया जाय और साथ ही जिनका जीवन-स्तर से अधिक ऊँचा हो, उन्हें चाहिए कि वे अपनी रहन-सहन को अपने दूसरे भाई-बन्धुओं की रहन-सहन के साथ मिलता-जुलता बनाते रहें।

लेकिन आपका प्रश्न यहीं समाप्त नहीं होता। आप तो यह पूछ रहे हैं कि क्या जीवन की आवश्यकताओं को बढ़ाते जाने से सभ्यता अथवा संस्कृति भी आगे बढ़ता है ? इस बारे में मेरा विचार यह है कि जीवन की स्थूल आवश्यकताएँ अमुक हद से भी कम पूरी होती हों, तो जिस तरह वह सभ्यता के विरुद्ध है, उसी तरह यदि उनकी पूर्ति जरूरत से ज्यादा होती हो, तो उसमें सभ्यता अथवा संस्कृति का नाश है। उदाहरण के लिए, मनुष्य को जितना आहार आवश्यक है, उससे कम आहार उसे मिले, तो जैसे यह हीनयोग स्वास्थ्य के लिए हानिकारक है, वैसे ही, आवश्यकता से अधिक आहार का अतियोग भी मनुष्य के लिए हानिप्रद ही है। जिस तरह आहार के मामले में, मनुष्य के प्राकृतिक आवेगों के मामले में और सारे मानव-जीवन के मामले में हीनयोग अथवा अतियोग दोनों हानिकारक होते हैं, उसी तरह जीवन की आवश्यकताओं को बढ़ा कर इन्द्रियों आदि को स्वैराचार के लिए मुक्त छोड़ देना भी मनुष्य के लिए और सारे मानव-समाज के लिए बहुत हानिकारक है। यही कारण है कि आज पश्चिम के लोग जिस तरह का जीवन बिता रहे हैं, आगे चल कर उस तरह का जीवन बिताना उनके लिए भारी हो जायेगा। यह बात पश्चिम के ही कुछ विचारक आज स्पष्ट रूप से मानने लगे हैं। इसलिए यह कहना मूलतः गलत है कि जीवन की आवश्यकताओं को बढ़ाने से सभ्यता या संस्कृति बढ़ती है।

मेरे मन में यह विचार इस तरह के दूसरे विचारों की भाँति काफी देर में पैदा हुआ। जब अपने बचपन के बारे में याद करता हूँ तो मुझे स्पष्ट ही यह लगता है

कहानी

मनुष्यता के प्रहरी

सिद्धेश्वर प्रसाद चौधरी 'मंजु'

गफूर भाई ऊपर से जितने काले थे, भीतर से उतने ही साफ और पाक। कानों की बगल तक आपके बालों की कतार, जो बराबर किसी चतुर नाई के हाथों सवारी रहती। ऊपर का गंजा सिर, जिधर से देखिये उधर से ही स्लेट की तरह दिखायी पड़ती। आँखों पर चश्मा और उस चश्मे के भीतर बरौनियों के साये में थिरती हुई काली काली पुतलियाँ, पलकों में समायी गफूर भाई के ऊँचे दरिया-दिली का एक अन्दाजा दे रही थीं। हर क्षण हँसता-मुसकराता चेहरा लिये गफूर भाई हर व्यक्ति का आदर करते हुए दिखायी पड़ते। ढीला-ढाला कुरता पाजामा, पर जब कभी उजली-सी खादी की टोपी पहनते तो खासा कार्टून बन जाते। गफूर भाई हिन्दुओं के बीच बातचीत के सिलसिले में शुद्ध हिन्दी, जिसमें रामायण की चौपाइयों और संस्कृत के चलते फिरते श्लोकों का पुट भी रहता, हमेशा इस्तेमाल करते और मुसल्मानों के बीच में जब बोलने लगते तो कलामे शरीयत के चन्द लफ्जों में किसी मौल्वी-मुल्ला से कम नहीं लगते। ऐसे मौकों पर हिन्दू और मुसल्मान, दोनों फिरकों की ओर से गफूर भाई की खोज होती, जो जलसे को जमा सकें। देहातों में जनता को अपने भाषणों से आकर्षित कर सकें ऐसे वक्ता यदा-कदा ही मिलते हैं। यही कारण था कि वक्त बेवक्त एक आध गाँव से लोग आकर आपके दरवाजे विराजमान हो जाते।

गफूर भाई एक आश्रम की कुटिया में सिर्फ बच्चों को पढ़ाया करते। यही आपका मुख्य धन्धा था और यह धन्धा अबाध रूप से, वर्षों से आपके साथ चला आ रहा था। बच्चे आपकी जान थे और आप बच्चों की। बिना किसी भेद भाव के बच्चों को पढ़ाने में गफूर भाई अपने आपको भूल जाते। ढीठ बने बच्चे आपके कन्धों से लिपटे रहते। खेल ही खेल में बहुत-सी बातें सीख जाते। आपके पढ़ाये आज भी कई बच्चे नौजवान होकर नयी जिन्दगी के साथ दुनिया के कई चौराहों पर चल रहे हैं और आपको देखते ही श्रद्धा से सिर झुका लेते हैं। ऐसा था गफूर भाई का गहरा प्रभावपूर्ण व्यक्तित्व।

गफूर भाई के सम्बन्ध में ऐसा भी जनरव था कि सन् बयालीस में उनके गाँव, नया नगर में पूरे थाने के दारोगा से लेकर कानस्टेबल तक को पकड़ कर जेल में बन्द कर दिया था और थाने के ऊपर तिरंगा गाड़ कर महीनों वहाँ का शासन भार सम्भाले रहे। क्या मजाल कि कहीं से कोई शिकायत का समाचार आये। अचानक एक रात को सैकड़ों टार्च के प्रकाश में नया नगर गोरे हाकिमों से घेर लिया गया, बन्दूकों के हवाई-फायरों से गाँव का वातावरण भयत्रस्त हो गया। लोग दौड़े हुए गफूर भाई के पास आये और कहने लगे—भैया, तुम यहाँ से निकल भागो। हम लोग भुगत लेंगे जो भुगतना होगा। तुम बच जाओगे तो मुल्क का बड़ा फायदा होगा। आखिर लोगों के बहुत इसरार करने पर गफूर भाई घर छोड़ने को राजी हो गये। पत्नी की ओर आर्द्र नयनों से देखते हुए बोले—लियाकत की अम्मा, दिल छोटा न करो। मैं अपनी यादगार, लियाकत को छोड़े जाता हूँ। इसे अच्छी तालीम दिला कर इन्सान बनाना। अगर जिन्दा रहा तो फिर आजाद होकर ही तुमसे मिलूँगा, गुलामी का तमगा लेकर नहीं। अच्छा, अलविदा! यह कहते हुए गफूर भाई खादी जमात के लोगों में घिर कर जो गुम हुए सो आज तक गुम ही रहे! रघुनाथपुर के लोग कभी हँसी में कहते—गफूर भाई, आप सचमुच बड़े संगदिल हैं। लियाकत की माँ को दिये वचन कब पूरा करेंगे? बेचारी कब से इन्तजारी में पलकें बिछाये किस बेकरारी से बाट जोह रही होगी। लियाकत अब सयाना होकर कालेज में पढ़ता होगा। बस, जब देखो तब लड़कों की फौज लिये कवायद करते रहते हैं। आपका भी कैसा हिया है!

यह सुन कर गफूर भाई की आँखें सजल हो आतीं। भर्राये गले से बोल उठते—अरे भले, तुम्हारा गाँव मुझे छोड़े तब न कहीं जाऊँ। दिन-रात तो तुम्हीं लोगों से घिरा रहता हूँ। इस मोह-जाल को झिटक दूँ, तब न बीबी-बच्चा की फिक्र करूँ। कहते कहते गफूरभाई भावावेश में बड़े जोर का ठहाका मार उठते और गाँव के लोग उनके इस कथन से सकुचा जाते।

* * *

समय बदलते देर नहीं लगती और समय के साथ आदमी भी बदल जाता है। यहाँ तक कि चाँद सूरज भी बदले बदले से दिखायी पड़ने लगते हैं। वह रघुनाथपुर, जो नेपाल की तराई में बसा सुरम्य गाँव, जहाँ के ग्रामीणों में कोई अशान्ति नहीं, कोई विरोध नहीं। अचानक पड़ोसी गाँवों में उठ रहे साम्प्रदायिक दंगों के समाचार से यहाँ भी सनसनी पैदा होने लगी और उसकी प्रचण्ड लपट रघुनाथपुर जैसे सीधे-सादे गाँव में उठने लगी। दोनों ओर से लाठियों में तेल मालिश होने लगी तलवार-भाले पर जिनमें वर्षों से पड़े रहने के कारण जंग लग गये थे, नयी सरगर्मी के साथ पजाये जाने लगे।

एक दिन एक नौजवान दौड़ता हुआ आकर गफूर भाई के पास खड़ा हो गया और करुण स्वर में बोला—आप इस गाँव को छोड़ कर मेरे यहाँ चलिये। यहाँ के हिन्दू आपको मार डालना चाहते हैं।

गफूर भाई ने बिना किसी घबराहट के उत्तर दिया—तो क्या हर्ज है, शहीद हो जाऊँगा। आखिर वैसे भी तो एक दिन मरना ही होगा। अगर मेरे मरने से आग ठंडी हो जाय तो खुदा को हजार शुक्र।

आधी रात का वक्त, चारों ओर सन्नाटा। अंधेरी रात में दो शक्लें एक-दूसरे का हाथ पकड़े एक कुटिया में प्रवेश कर गयीं। अचानक गफूर भाई की आँखें खुलीं और अपने सामने दो व्यक्तियों को हाथों में चमकता छुरा लिये देख कर बड़े कोमल स्वर में बोल उठे—अरे भाइयो, सोच न करो। जल्द-से जल्द अपना काम खत्म करो। यह खुला सीना तुम्हारे सामने है। इसे अपने प्यासे छुरे से चुभो कर इसकी प्यास बुझा दो। यहाँ तो कब से 'सर से बाँधे कफन कातिल को ढूँढ़ता हूँ'। अब और देर न करो, नजदीक आ जाओ मेरे प्यारे!

इन प्रेम भरे शब्दों से मर्माहत होकर हत्यारे तत्काल छुरा फेंक कर गफूर भाई के पाँव पर गिर पड़े और आँसुओं से चरण पखारने लगे। गफूर भाई उनकी पीठ सहलाते हुए जोर लगा कर ऊपर उठाने की कोशिश करने लगे।

कि मेरे ग्रेज्युएट होने तक हमारे परिवार में हम सबको प्रतिदिन रात को ब्यालू के समय एक छटाँक दूध मिला करता था। मुझे अच्छी तरह याद है कि मेरे पिताजी ने एक बार हम सबसे जोर देकर कहा था कि मेरी शाम की कथा के बाद पोथी पर पैसे दो पैसे जो भी चढ़ेंगे, उन्हीं पैसों की साग-सब्जी हमें हर रोज खानी है। और लम्बे समय तक हम मुस्तैदी के साथ इस नियम पर डटे रहे। हमें डटे रहना पड़ा! फिर भी अपने जीवन में मैंने कभी, किसी प्रकार की हीनता का अनुभव नहीं किया। एक बार मेरे विद्यालय के एक शिक्षक ने मेरा शिक्षा शुल्क माफ कराने की बात आग्रहपूर्वक कही और माफी-पत्रक पर मेरे पिताजी के हस्ताक्षर लेने के लिए मुझे एक पत्रक भी दिया। किन्तु पिताजी ने उस पत्रक पर हस्ताक्षर करने से साफ इन्कार कर दिया। उन्हों ने कहा: 'अगर हमें खाने को रोटी मिलती है, तो पढ़ने के लिए फीस भी क्यों न मिले?' मुझे ऐसा लगता है, मानो अपने पिताजी की इस वृत्ति को मैंने अपने जीवन के साथ जोड़ लिया है। और 'ऋणं कृत्वा घृतं पिबेत्' का जो विचार आज समाज में रूढ़ होता जा रहा है, उसमें मैंने कभी श्रद्धा नहीं रखी। परन्तु जब मैं वयस्क हुआ, तो मुझे यह प्रतीति हुई कि जीवन को योग्य रीति से पुष्ट करने वाले आहार से भी कम आहार करना और ऐसा करके भी अपने को और अपने भाई-बहनों को इस प्रकार के हीन आहार से मुक्त करने लिए प्रचण्ड पुरुषार्थ करना ही मेरे लिए और मेरे देश के अधिकांश मनुष्यों के लिए कर्तव्य रूप है।

आज भी दिन-प्रतिदिन मेरा यह विश्वास अधिक स्पष्ट होता जाता है कि हमारी वर्तमान समाज-व्यवस्था अमीर को अधिक अमीर बनाती है, और गरीब को अधिक गरीब बना रही है। इस व्यवस्था को मिटाये बिना जीवन-स्तर को ऊँचा उठाने की हवाई बातें करना, पुराने जमाने के किसी कंजूस राजा की तरह भूखे आदमी से खाना खाने को कहने जैसा है।

हिमालय का आकर्षण क्यों ?

हमें बड़ा आनन्द होता है कि हम हिमालय की सन्निधि में जा रहे हैं। हमने हिमालय के नाम से ही घर छोड़ा था। उसको बहुत साल हो गये। पैंतालीस साल हुए। जब हम बिल्कुल जवान थे, तब हमने कालेज भी छोड़ा, घर भी छोड़ा और हिमालय के लिए निकल पड़े। बीच में थोड़े दिन हम काशी में ठहरे थे। वहाँ से हमको हिमालय में जाना था। दैववशात् हम गांधीजी के पास पहुँच गये और तब से आखिर तक उन्हीं के पास रहे। उसके बाद हम सेवा के लिए निकल पड़े। उसके पहिले भी हम सेवा ही करते थे, लेकिन एक जगह बैठ कर।

हमको कोई पत्थर, पेड़, बरफ देखने की इच्छा नहीं थी। हमको हिमालय के लिए आदर इसलिए है कि वहाँ ऋषि-मुनियों ने तपस्या की। हमको हिमालय में जाने की इच्छा भी ध्यानादि के लिए है। लेकिन हम गांधीजी के पास गये। वहाँ ध्यान का पूरा लाभ हमको मिल गया। जब हम सेवा कार्य करते हैं, तब हमको ध्यान का मौका मिलता है। जो सेवा हम करते हैं, वह परमेश्वर की सेवा है, ऐसा मान कर अगर हम सेवा करेंगे तो वह ध्यान योग हो जायेगा। जिसकी हम सेवा करते हैं, वह एक मनुष्य की सेवा है, ऐसा माना तो उतनी ही सेवा होगी। पर उसकी सेवा द्वारा परमात्मा के साथ हमारा सम्पर्क हो रहा है, ऐसी भावना हुई तो वह ध्यान होगा। यह अनुभव हमको खूब आया है।

अब हम यहाँ पर आते हैं, तो यह भी ईश्वर की उपासना ही है। वह हमारा ध्यान है, जिसमें हमने गरीबों को भूदान दिलाने का काम उठा लिया है। परमात्मा तो प्रसन्न ही थे। जो दुःखी हैं, उनको सुख होता है। ये भूदान, ग्रामदान दुःखितों का दुःख मिटाने के लिए है। इससे ग्राम प्रेम से एक परिवार बनेगा, और स्वराज्य भी इससे मजबूत बनेगा। इसलिए हम सबसे प्रार्थना करते हैं कि सब काम में लगें। —विनोबा

(सिमलीगुरी, १३-५-६१)

की काली-काली छाया जब पहाड़, पर्वत, खेत, नदी-नाले लांघ कर क्षितिज की तरफ वेग से आती थी, तब मानों कहती थी, "आवागमन के साधन नार्थ लखीमपुर में बहुत कम हैं,' इसकी शिकायत मत करो, विचार इलेक्शन-रोड नहीं चाहते, रेल, हवाई-अड्डा उसे नहीं चाहिए। चाहिए उसे लगन।"

बादलों से विद्या सीखनेवाले बाबा उनकी आज्ञा मान कर चल रहे हैं, विचार फैला रहे हैं। इधर सर्वत्र पानी ही पानी है। हाथ डेढ़ हाथ खोदा नहीं कि बन गया कुआँ। झरने तो असंख्य हैं। जोंक इधर बहुत ज्यादा हैं। नदी नालों पर स्नान करना बड़ा कठिन हो जाता है। जहाँ कहीं पानी स्थिर रहा कि वहाँ पहुँच ही जाती हैं जोंक! जोंक खून चूस लेगी, पर पता नहीं लगने देगी। उस दिन सुबह बारिश थी, कीचड़ हो गया था, इस कारण बाबा जूते पहन न सके। रास्ते में जोंक की बात चल पड़ी थी—और मजा यह कि एक झरना पार करके जब बाबा आगे बढ़े तो उनके पैरों पर दो जोंक!

मनोविजय

रोजाना दस बजे विष्णु-सहस्रनाम के बाद बाबा कार्यकर्ताओं का वर्ग लेते रहे हैं। उसमें बौद्धिक खुराक देने की तरफ उनका झुकाव कम दीखा। भस्मासुर का रूप धारण कर सकने की ताकत रखनेवाली बुद्धि को शुद्ध आसन देने की फिकर बाबा को ज्यादा दीखी। भगवद् भक्ति का शुद्ध आसन वे कार्यकर्ताओं के दिमाग में रोज बुनते थे। एक दिन कार्यकर्ताओं के वर्ग में उन्होंने कहा :

"मनोविजय प्राप्त करने के लिए अनेक प्रयत्न होते रहते हैं। मन की परवाह न करके उसे दबाने की कोशिश चलती रहती है या उससे परे जाने की बात की जाती है। मन की जो अच्छाइयाँ हैं उनका पूर्ण विकास हमें करना चाहिए।"

अच्छाइयाँ ग्रहण करें

बाबा ने उस समय इसका ज्यादा विवरण नहीं दिया। सत्वगुण प्राप्त करने के लिए रजोगुण, तमोगुण हटा दिये। *अब सत्वगुण आ चिपका। उससे अलग* होने के लिए सत्वगुण का उत्कर्ष अपने में हो जाना चाहिए। सहज हो जाने पर यह स्वभाव हो गया। और स्वभाव अहंकार को पुष्ट नहीं करता।

बाबा दूसरे दिन रास्ते में कह रहे थे, "किसी चीज को त्यागना होता है तो उसमें जो अच्छाइयाँ हैं, उन्हें पूर्णतः ग्रहण करना पड़ता है। मनोजय के लिए यह जरूरी है। इस कार्य को करते समय यदि हम धनदरसी भी हुए तो उसमें गौरव है। मुझे आश्चर्य नहीं लगता। भौतिक दया की अपेक्षा यह प्रयास बहुत ऊँची है।"

(न० प्रे० स०, इंदौर)

विश्वविद्यालयों में शिक्षा का माध्यम हिन्दी हो

एन० भगवती

(हिन्दू विश्वविद्यालय काशी के उप कुलपति और भारत के सर्वोच्च न्यायालय के भूतपूर्व न्यायाधीश श्री एन० भगवती ने गुजरात युनिवर्सिटी के विद्यार्थियों के समक्ष जो भाषण दिया है, उसके मुख्य अंश यहां दिये जा रहे हैं। , —संपादक)

देश के संविधान ने हरएक नागरिक के लिए एक ही नागरिकता और एक ही राष्ट्रभाषा—देवनागरी लिपिवाली हिंदी भाषा—की व्यवस्था की है। प्रांतीयवाद का झगड़ा इस बात के 'बीच' में क्यो उपस्थित होता है, यह समझ में नही आता? युनिवर्सिटी की कक्षाओ में शिक्षण का माध्यम प्रादेशिक भाषा न होकर राष्ट्रीय भाषा होना चाहिए। यही सबके लिए हितावह है। अंग्रेजी हमेशा के लिए कायम रहेगी, ऐसा तो शायद कोई नही कहेगा। हमेशा के लिए अंग्रेजी कायम रखना शक्य भी नही है और यह राष्ट्रीय हित में भी नही है। इसलिए माध्यम राष्ट्र-भाषा को ही बनाना चाहिए। विधान ने देश के हरएक नागरिक को समानता और समान हक दिये हैं, जिनमें राष्ट्रभाषा का हक भी एक है। हमारे इन तथाकथित भाषा-शास्त्रियो को भाषा का उन्माद पैदा करके, यह हक छीन लेने का कोई अधिकार नही है।

कहा जाता है कि हर प्रांत की अपनी-अपनी अलग संस्कृति है। यह दलील सही नहीं है। समग्र भारत की एक ही संस्कृति है और आचार-विचार की भी साम्यता है, मात्र उसकी अभिव्यक्ति ही अलग-अलग तरीके से होती है।

विश्वविद्यालयों में शिक्षण के माध्यम का प्रश्न केवल राजनैतिक प्रश्न नहीं है, या कि केवल विश्वविद्यालय के अधिकारियों का नहीं है, जिन्हें अधिकतर प्रादेशिक कांग्रेसों के अध्यक्ष या केन्द्र के मुख्य व्यक्ति प्रभावित करते हैं। इस प्रश्न का संबंध सारी प्रजा से है। अतः शिक्षण के माध्यम में परिवर्तन का प्रश्न गलत दलीलों या भावनाओं द्वारा हल करने के बजाय इस प्रश्न के साथ जिनका ज्यादा संबंध है, ऐसे विचारशील नागरिक और विद्यार्थियों का उसमें हिस्सा होना चाहिए।

माध्यम में परिवर्तन का काम बहुत धीरज और शांति से करने का काम है। इस काम में ४० वर्ष का समय चाहिए। विद्यार्थियों के और समाज के हित में उतने समय की धीरज रहनी चाहिए। यह अवधि राष्ट्र के इतिहास में बहुत लम्बी नहीं मानी जायेगी।

अगर प्रादेशिक भाषा को शिक्षण के माध्यम के रूप में अपनाया जायेगा, तो आन्तर्प्रान्तीय व्यवहार या संबंध जैसी कोई चीज नहीं रह जायेगी। प्रादेशिक भाषा में शिक्षण प्राप्त करने वाले विद्यार्थी को दूसरे प्रान्तों में नौकरी मिलना तो मुश्किल होगा ही, लेकिन उसके अपने प्रान्त में भी वह औद्योगिक या व्यापारिक क्षेत्र में आसानी से काम पा सकेगा, इसमें भी शंका है। कारण व्यापार तो आखिर व्यापार है और राजनीति, राजनीति ही है। विद्यार्थी जब शिक्षण पूरा कर लेने के बाद व्यापार की व्यावहारिक धरती पर पाँव रखेगा तब उसे मालूम होगा कि ऐसा कोई व्यापारी नहीं है, जो यह मानकर कि गुजराती या अमुक प्रांतीय भाषा में दुनिया के साथ व्यवहार चल सकता है, प्रान्तीय माध्यम वाले विद्यार्थी को अपनायेगा।

विश्वविद्यालयों में जो प्रादेशिक भाषा अपनायी गयी तो यह परिस्थिति उपस्थित होगी कि अखिल भारतीय स्तर की नौकरियों में उस माध्यम द्वारा शिक्षित विद्यार्थियों को जगह नहीं मिलेगी। अध्यापकों का आन्तर-प्रान्तीय व्यवहार या आदान-प्रदान भी अटक जायगा, अन्य प्रदेशों के बुद्धिमान मनुष्यों का लाभ लेने से शिक्षण क्षेत्र वंचित हो जायेगा तथा उच्च अधिकारी भी अपने राज्य के सिवा दूसरे राज्यों में काम नहीं कर सकेंगे। राजनीतिक लोग जो ये सारे प्रश्न खड़े करते हैं, ऐसे समय में हम किसी की मदद नहीं कर सकेंगे।

राज्य-पुनर्रचना आयोग की रिपोर्ट के बाद देश में भाषावाद के नाम पर जो कुछ हुआ है, वह तो अनहुआ नहीं होगा! लेकिन भाषावाद का जहर देश में और अधिक न फैले, ऐसे कदम हमें अभी से उठाने चाहिए। मैं विद्यार्थियों से कहना चाहता हूँ कि उन्हें भविष्य में युनिवर्सिटी सिनेट में एक सदस्य की हैसियत से बैठने का मौका मिले तो कांग्रेस कमेटी, मन्त्रि-मण्डल या केन्द्रीय सरकार इनमें से कोई कुछ भी कहे, परन्तु उन्हें सामान्य जनता या विद्यार्थियों का हित सोच-समझ कर ही समाज के लिए जो बात विशेष लाभदायक हो उसे उसी के पक्ष में अपना मत निर्भयता के साथ व्यक्त करना चाहिए। ●

असम में विनोबा के साथ

रामभाऊ म्हसकर

"देखो, अब तक समाज ने तुम लोगों के लिए काफी खर्च किया है। शिक्षण दिया, संवर्धन किया, संस्कार दिये, इसके आगे समाज से और लेते ही लेते रहना ठीक नहीं है। अब तय करना चाहिए कि १८-२० साल तक समाज को केवल अपनी सेवा देंगे। लेने की बात नहीं सोचेंगे।" बाबा ने बातों के सिलसिले में कहा। चलते हुए रास्ते में बातचीत हो रही थी।

मैंने अनुमति दर्शाने के लिए सिर हिलाया। सर्वोदय का विचार साहित्य द्वारा जनता तक पहुँचाने का हम मित्रों ने जो तय किया था, उसमें किसी तरह की ढिलाई न आ जाये, इस दृष्टि से बाबा मुझे निमित्त बना कर हमें स्वधर्म का भान करा रहे थे। बाद में आज की परिस्थिति ध्यान में लेते हुए उन्होंने कहा :

"भूदान-आन्दोलन अब मंद पड़ा है। पहले शुरू में हमारी एकमात्र पदयात्रा चलती थी। अब कुल देश में ४-६ यात्राएँ चलती होंगी। सर्वोदय आन्दोलन में जो बाढ़ का पानी था, वह अब नहीं रहा। आर्थिक, सामाजिक या भूमि की समस्या हल करने का साधन समझ कर जो इसमें शरीक हुए थे, वे अब नहीं रहे। केवल आध्यात्मिक भूमिकावाले ही आगे टिके रहेंगे। शुद्ध निर्मल जल का छोटा-सा प्रवाह अब इस गर्मी में 'बहते रहना चाहिए। लोगों को शुद्ध विचार देते रहना चाहिए।"

बाबा के सामने व्यावहारिक पहलू से कई बातें हम रखते रहते हैं, तब वे हमें उन बातों के पीछे छिपा हुआ हमारा वैचारिक दोष अगर हुआ तो, कभी-कभी दिखा देते हैं और किस भूमिका पर रह कर वास्तविकता की तरफ देखते रहना चाहिए, सुझाते रहते हैं। यह करुणा है। कभी दयालुता से किसी का समाज-अहितकारी हठ या अल्प अहितकारी हठ वे पूरा करते हैं, सामने वाले की अल्प क्षमता देख कर। इसमें न्यूनता जरूर है, पर पूर्णता का दर्शन हमेशा सामने रखने वाली अपूर्णता न्यूनता नहीं कही जाती, वह व्यावहारिक होती है।

असम में मेरा तेरह दिन रहना हुआ। मई के अन्तिम दिनों में मैं वहाँ था। करीब-करीब रोजाना वहाँ बारिश होती रहती थी। एकदो दिन तो प्रातःकाल पदयात्रा के समय मूसलाधार वर्षा हो रही थी। दिन में धूप निकली रहती थी, सफेद बादल देखने को मिलते थे। जमीन पर फैली हुई बादलों

लोकनीति : लोकशिक्षण

[पृष्ठ ४ का शेष]

बारे में लोक शिक्षण होना चाहिए। ऐसा शिक्षण कि जिसमें से लोक-जागृति हो सके और लोक-पक्ष, अल्प-मत और बहु-मत में या दूसरे प्रकार के भेदों में खंडित होने की ऐवज मजबूत बन सके और सच्ची लोकशाही की स्थापना की परिस्थितियाँ पैदा कर सकें।

मौजूदा संसदीय लोकशाही के चुनावों के अवसरों पर लोक शिक्षण करने की आवश्यकता बतलाने का अभिप्राय कभी यह नहीं है और न मानना चाहिए कि इस संसदीय प्रणाली को ठीक माना जाता है या तो उसका समर्थन किया जाता है। उसमें शामिल होने या भाग लेने की तो बिल्कुल बात ही नहीं है।

सर्व सेवा संघ के आम चुनाव संबंधी प्रस्ताव में इस बात को बहुत स्पष्ट किया गया है और मत-दाता मंडल बनाने का कार्यक्रम बिल्कुल ही निर्णायक रूप से ऐसी जगहों के लिए, एक तरह अपवाद रूप से ही माना गया है, जिन जगहों में सघन कार्य हुआ हो और जनता अमुक प्रकार से अपने मताधिकार के उपयोग और अपने प्रतिनिधि की छाँट वगैरह के लिए तैयार हो तथा जिम्मेदारी अनुभव करती हो। क्योंकि मत-दाता मंडलों के गठन में खतरा ही यह खतरा हो सकता है कि पक्षातीत भूमिका बनाते-बनाते स्वयं वे एक पक्ष की स्थिति अपनी बना लें। बाकी तो मतदाताओं से और चुनावों में भाग लेने वाले विभिन्न पक्षों से यही अपेक्षा है कि अमुक प्रकार की कुछ मर्यादाओं का वे पालन करेंगे, जिनमें मत की अभिव्यक्ति स्वतन्त्रतापूर्वक हो सके, मतदान विचारपूर्वक, शुद्ध-क्रिया से तथा कम खर्चीला हो, सही अर्थों में लोकमत जाहिर हो सके।

लोकनीति संबंधी लोक शिक्षण के इस कार्यक्रम के सिलसिले में उदाहरण-स्वरूप, विचार विमर्श और व्यवहार के लिए छोटी-छोटी पुस्तिकाएँ जाहिर की जाने की योजना है। अखिल भारतीय स्तर पर सार्वजनिक क्षेत्र में स्थान व प्रभाव रखने वाले कार्यकर्ता भी शामिल हैं, बातचीत करने का कार्यक्रम भी हो सकता है। लेकिन इस बीच भी विभिन्न प्रदेशों और निर्वाचन क्षेत्रों (कान्स्टीट्युएन्सीज) के तौर पर भी मुख्य-मुख्य व्यक्तियों के मिलने वगैरह का कार्यक्रम चलना चाहिए। सर्वोदय विचार में निष्ठा रखने वाले जो मौजूदा लोकशाही को सही लोकनीति की ओर मोड़ने में दिलचस्पी रखते हैं, उन्हें इस प्रकार की बातचीत की सभाएँ आयोजित करनी चाहिए और उनमें उस क्षेत्र विशेष के लिए किन मर्यादाओं का कितना, कैसा पालन हो सकता है, उसका विचार करना और उसे अमल में लाने का कोई ढाँचा तैयार करना चाहिए।

जैसा कि ऊपर कहा गया है, लोकनीति संबंधी लोक-शिक्षण के इस कार्यक्रम को सर्वोदय समाज-रचना के एक अंग के रूप में ही लिया जाना चाहिए। यही सघ के प्रस्तावों से अपेक्षित भी है। एक ओर भूदान ग्रामदान का बुनियादी मूल्य-परिवर्तन का कार्यक्रम, दूसरी ओर तात्कालिक परिस्थिति को सम्हालने की दृष्टि से शांति-सेना का कार्यक्रम और इनके साथ ही रोजमर्रा के और नये बन रहे जीवन को छूनेवाले चुनाव आदि को नई और सही दिशा देने या ठीक रूप से प्रभावित करने का कार्यक्रम है। इस त्रिविध कार्यक्रम में से किसी की भी उपेक्षा होगी तो हमारी सम्पूर्ण कल्पना व हमारा स्वरूप अप्रभावित नहीं रह सकेगा। देश व जनता की जो मनोदशा, प्रकृति और परिस्थिति है, वहीं से उसको नई कल्पना और नये स्वरूप की ओर बढ़ाना ही स्थायी और सही तरीके का निर्माण हो सकता है। देश में फैले हुए हमारे साथी कार्यकर्ताओं को सघ के पिछले महत्त्व के प्रस्तावों के संबंध में, इस दृष्टि से सोचना और अपने अपने क्षेत्र का कार्यक्रम बनाना चाहिए। भूदान संबंधी तथा अन्य पत्र-पत्रिकाओं में भी यह विचार और कार्यक्रम दिये जायेंगे तो परस्पर लाभ होगा और देशव्यापी हमारे कामों का स्वरूप स्पष्ट होता जायगा।

मासिक चिट्ठियाँ : बिहार की चिट्ठी

२५ दिसम्बर को दुर्गावती में बिहार प्रवेश के प्रथम दिन श्री विनोबाजी ने बिहार-वासियों से 'बीघे में कट्ठा' भूदान की माँग की। विनोबाजी की प्रथम बिहार यात्रा के समय बिहार के सभी राजनीतिक दल, रचनात्मक संस्था एवं सर्वोदय से सहानुभूति रखने वाले व्यक्तियों ने ३२ लाख एकड़ जमीन भूदान में इकट्ठा करने का संकल्प किया था, जिसमें से २१ लाख एकड़ के दान-पत्र तो प्राप्त हुए, लेकिन ११ लाख एकड़ बाकी रह गया था। विनोबाजी ने पुराने संकल्प को पूरा करने लिए बिहार-वासियों से 'बीघे में कट्ठा' के जमीन की माँग की और असम जाते समय ४७ दिनों में बिहार के विभिन्न पड़ावों पर बीघा-कट्ठा के महत्त्व पर विशेष रूप से प्रकाश डाला, तथा राष्ट्रपति के जन्म-दिवस, ३ दिसम्बर तक ११ लाख एकड़ जमीन इकट्ठा करने का निवेदन बिहारवासियों से किया।

बिहार सर्वोदय-मंडल के तत्त्वावधान में बिहार की सभी रचनात्मक संस्थाओं एवं राजनीतिक दल के पदाधिकारियों तथा बिहार विधान-सभा एवं विधान-परिषद् के सदस्यों की बैठक १३ मार्च को बिहार के मुख्य मंत्री श्री विनोदानन्द झा के सभापतित्व में हुई, जिसमें श्री जयप्रकाश नारायण के अतिरिक्त लगभग डेढ़ सौ मुख्य व्यक्ति उपस्थित थे। बैठक ने सर्वसम्मति से एक समिति का गठन किया, जिसके संयोजक श्री श्याम सुन्दर प्रसादजी बनाये गये।

बिहार सर्वोदय मंडल की ओर से २ मई से १० मई तक गया, पटना, सारण, मुजफ्फरपुर, चंपारण, दरभंगा, सहरसा, पूर्णियाँ, भागलपुर एवं संथाल परगना जिले की यात्रा श्री [illegible] ने और २२ से २६ मई तक श्री जयप्रकाश नारायण ने मुंगेर, शाहाबाद, पलामू, राँची एवं सिंहभूम की यात्रा की और सभी स्थानों में आम सभा के अतिरिक्त सभी रचनात्मक एवं राजनीतिक कार्यकर्ताओं की बैठक में बीघे में कट्ठा के महत्त्व पर प्रकाश डाला। उपरोक्त जिलों में जिला भू-प्राप्ति समिति का गठन भी हुआ, जिसमें रचनात्मक संस्थाओं के कार्यकर्ता के अतिरिक्त राजनीतिक दलों के सदस्य भी शामिल हुए। जिला भू-प्राप्ति समिति ने 'बीघे में कट्ठा' कार्यक्रम को पूरा करने की जिम्मेदारी ली।

बिहार राज्य पंचायत परिषद के प्रधान मंत्री श्री लालसिंह त्यागी ने भी इस कार्यक्रम को सफल बनाने के लिए कई जिलों का दौरा किया एवं जिला पंचायत परिषद तथा ग्राम पंचायत के पदाधिकारियों से इस कार्यक्रम को सफल बनाने के लिए जुट जाने का निवेदन किया। राज्य-स्तर के नेताओं ने भी दानपत्र इकट्ठा करने के लिए भिन्न-भिन्न जिलों का दौरा किया।

समय बीतता गया, लेकिन अनुपाततः दानपत्र कम इकट्ठे हुए। बाबा के भी कई पत्र कई व्यक्तियों के नाम से आये, जिसमें नये संकल्प को पूरा करने के लिए याद दिलाई गयी।

कार्यक्रम में ही बल लाने के लिए श्री जयप्रकाश नारायण ने भी ११ जून से १० जुलाई तक पूरे एक महीना बिहार के सारण, मुजफ्फरपुर, चंपारण, दरभंगा, सहरसा, मुंगेर, भागलपुर तथा संथाल परगना का दौरा करने का निश्चय किया। श्री जयप्रकाशजी की यात्रा के समय प्रतिदिन आम सभाएँ, एक कार्यकर्ता-सभा के अतिरिक्त जगह-जगह दानपत्र इकट्ठा करने का कार्यक्रम बनाया गया।

निर्णयानुसार श्री जयप्रकाश नारायण ने १० जून की रात में पटना से सारण के लिए घनघोर वृष्टि में ही प्रस्थान किया और ११ जून से १५ जून तक सारण जिले के सदर, गोपालगंज एवं सीवान सबडिविजन एवं मुजफ्फरपुर जिले के हाजीपुर एवं सदर सबडिविजन का दौरा किया। पाँच दिनों तक लगातार घनघोर वृष्टि होती रही, फिर भी सभाओं में उपस्थिति भी अच्छी रही एवं सर्वोदय-कार्य के लिए थैली भी मिली।

लेकिन जिस उद्देश्य से श्री जयप्रकाशजी के दौरे का कार्यक्रम बनाया गया था, वह पूरा नहीं हो रहा था। दानपत्र तो नाम मात्र के लिए ही मिल सके। कार्यकर्ताओं से बातचीत करने से पता चला कि लोग श्री जयप्रकाशजी की आम सभा को सफल बनाने एवं थैली के रुपये जुटाने में ही लगे रहते हैं। अतः जयप्रकाश बाबू ने सर्वोदय मंडल के संयोजक एवं अपने कुछ अन्य मित्रों से सलाह लेने के बाद १५ जून के बाद यानी १६ जून से अपनी यात्रा स्थगित कर दी और बिहार सर्वोदय-मंडल के संयोजक श्री रामनारायण सिंह से बिहार राज्य के प्रमुख व्यक्तियों की बैठक बुलाने का निवेदन किया। उनके निर्देशानुसार २० जून को जिला सर्वोदय मंडल एवं जिला भू-प्राप्ति समिति के अध्यक्ष, मंत्री, संयोजक एवं विशेष निमंत्रितों की बैठक बिहार सर्वोदय-मंडल के कार्यालय में हुई। बैठक में बिहार सर्वोदय-मंडल के संयोजक श्री रामनारायण सिंह ने 'बीघे में कट्ठा' आन्दोलन सम्बन्धी श्री जयप्रकाश बाबू के दौरे के समय का अपना अनुभव तथा व्यक्तिगत अनुभव बताते हुए कार्यक्रम में तीव्रता लाने के लिए एक लिखित योजना पेश की। श्री जयप्रकाश नारायण ने भी अपना अनुभव बताते हुए कहा कि दान-पत्र इकट्ठा करने का प्रयास ही अभी तक आशानुसार नहीं किया गया है।

बैठक में बीघे-कट्ठा कार्यक्रम को आगे बढ़ाने के लिए डेढ़ महीने तक मुजफ्फरपुर, दरभंगा, सहरसा, पूर्णियाँ, संथाल परगना एवं मुंगेर में सघन रूप से कार्य करने का निर्णय किया। कार्य-क्षेत्र के अतिरिक्त जिले के कार्यकर्ताओं एवं राज्य-स्तर के नेताओं ने भी उपरोक्त सात जिलों में काम करने का निश्चय किया। निश्चयानुसार बिहार सर्वोदय-मंडल की ओर से श्री वैद्यनाथप्रसाद चौधरी पूर्णियाँ तथा सहरसा, श्री श्याम सुन्दर प्रसाद गया तथा दरभंगा; श्री मोतीलाल केजरीवाल संथाल परगना तथा मुजफ्फरपुर, श्री रामनारायण सिंह मुंगेर, श्री विद्यासागरजी सहरसा; श्री त्रिपुरारि शरण संथाल परगना; श्री श्याम बहादुर सिंह पूर्णियाँ में काम करेंगे।

साथ-साथ सारण एवं चंपारण के कार्यकर्ता मुजफ्फरपुर, दरभंगा के पाँच कार्यकर्ता सहरसा, पटना के कार्यकर्ता संथाल परगना, पलामू और हजारीबाग के कार्यकर्ता गया, शाहाबाद के कार्यकर्ता मुंगेर तथा भागलपुर के कार्यकर्ता पूर्णियाँ में काम करेंगे। बैठक के निश्चयानुसार जिलों में काम शुरू हो गया। बिहार राज्य पंचायत परिषद् के प्रधान मंत्री एवं बिहार सरकार के संसदीय सदस्य श्री लालसिंह त्यागी का सक्रिय सहयोग इस आन्दोलन को प्राप्त है।

—रामनन्दन सिंह

फिरोजपुर में अशोभनीय पोस्टर-आंदोलन

पंजाब के फिरोजपुर नगर में अशोभनीय पोस्टर, चित्र, कैलेंडर, अश्लील गानों के खिलाफ मुहिम शुरू करने के लिए ३० मई को एक बैठक आयोजित की गयी, जिसमें विभिन्न राजनीतिक दल, धार्मिक संस्था एवं अन्य समाजसेवी संस्थाओं के प्रतिनिधियों ने भाग लिया।

बैठक में यह तय किया गया कि सिनेमा के प्रचार करने के लिए जो अश्लील गाने बजते हैं, उसकी रोकथाम की जाय। उसके अलावा नाटक या क्लब में जो नाच-गाने होते हैं, उसमें अश्लीलता पर प्रतिबंध लगाया जाय। साथ ही दस बजे के बाद नगर में लाउड स्पीकरों का उपयोग न किया जाय। दूसरे प्रस्ताव में शिक्षण-संस्थाओं के अधिकारियों से अपील की गयी कि शिक्षण-संस्थाओं के रंगमंच पर अशोभनीय नाटक और अश्लील गानों पर प्रतिबंध लगायें। एक और प्रस्ताव में आम जनता से अपील की गयी कि स्वयं अपने घरों और दूकानों पर अशोभनीय पोस्टर, चित्र न लगायें तथा विवाहादि समारोहों में अश्लील गानों के रिकार्ड न बजायें।

इस सम्बन्ध में कार्यकर्ताओं का एक दल जिलाधीश से मिला। जिलाधीश ने आश्वासन दिया कि सिनेमा-प्रचार में बजने वाले अश्लील गानों के लिए अनुमति दी नहीं दी जाती है। अगर शिकायत पायी गयी, तो कड़ी कार्रवाई की जायेगी। साथ ही यह भी आश्वासन दिया कि अगर जनता के आराम में खलल पड़ता है तो रात के दस बजे के बाद लाउडस्पीकरों का उपयोग बंद किया जा सकेगा।

ता० २ जून को स्थानीय एक सिनेमा-मालिक ने अपने यहाँ से अशोभनीय पोस्टर हटा लिया।

वैद्यनाथ धाम में मौन जुलूस

बिहार के प्रसिद्ध तीर्थस्थान वैद्यनाथ धाम, देवघर में ता० १० जून को बाबा वैद्यनाथजी के मंदिर से एक मौन जुलूस निकला, जो विभिन्न गलियों से और मुहल्लों से घूमता हुआ मंदिर आकर सभा में परिणत हो गया। जुलूस में अशोभनीय पोस्टर, चित्र को हटाने, गंदे गाने न बजाने आदि के नारे लिख कर प्रदर्शन किया गया। इसका अच्छा प्रभाव जनता पर पड़ा। सभा में पुरुषों की अपेक्षा महिलाओं की संख्या अधिक थी। सभा में भारत सरकार, बिहार राज्य सरकार, स्थानीय नगरपालिका, सिनेमा-मालिक, दूकानदार और आम नागरिकों से विभिन्न प्रस्तावों द्वारा अपील की गयी कि वातावरण को पवित्र बनाये रखने के लिए सब प्रकार की अशोभनीयता का अंत किया जाय।

चुनाव में साम्प्रदायिक व जातिगत प्रचार न हो ?

लखनऊ के राजनीतिक दलों का निश्चय

लखनऊ के विभिन्न राजनीतिक दलों के नेताओं ने गांधी स्मारक निधि की ओर से आयोजित सभा के एक मंच पर एकत्र होकर निर्णय किया कि आगामी आम चुनाव में कोई भी दल साम्प्रदायिक अथवा जातिगत प्रचार न करे। सभा की अध्यक्षता विधानसभा के अध्यक्ष श्री आत्माराम गोविन्द खेर कर रहे थे।

इस अंक में

शराबबंदी के लिए सत्याग्रह

हाँसी, जिला हिसार में अशोभनीय पोस्टर और शराब के खिलाफ सर्वोदय-मंडल, गांधी स्मारक निधि, पंजाब की ओर से मार्च १ बजे से लेकर ७ बजे तक एक विराट जुलूस निकला और रात को ८ बजे सार्वजनिक सभा हुई, जिसमें अशोभनीय पोस्टर और शराब के खिलाफ प्रस्ताव पास हुआ।

हाँसी, जिला हिसार में सर्वोदय-मंडल खादी आश्रम, गांधी स्मारक निधि के कार्यकर्ताओं की एक बैठक में सर्वोदय-आंदोलन के विभिन्न पहलुओं पर चर्चा हुई। तय हुआ कि पंचायती राज को मजबूत बनाने के लिए गाँव-गाँव में सभाएँ की जायें। साथ ही यह भी तय किया कि जिन गाँवों में शराब के ठेके हैं, उन ग्राम-पंचायतों से ठेका बंद करने के लिए प्रस्ताव पास कराये जायें और प्रादेशिक सरकार के पास भेजे जायें। अगर ठेके बंद नहीं किये जाते हैं, तो सत्याग्रह भी किया जाय।

अ० भा० नशाबंदी सम्मेलन

दिल्ली में २-३ सितम्बर को अखिल भारतीय नशाबन्दी सम्मेलन होगा। सम्मेलन का उद्घाटन भारत के वित्तमन्त्री मोरारजी देसाई करेंगे और अध्यक्षता मद्रास के गृहमंत्री श्री एम्. भक्तवत्सलम् करेंगे। सम्मेलन का आयोजन दिल्ली नशाबन्दी समिति द्वारा किया जा रहा है।

श्री पूर्णचंद्र जैन का दौरा

सर्व सेवा संघ के मंत्री श्री पूर्णचन्द्र जैन इसबार कुछ लम्बे प्रवास के बाद काशी लौटे। इस बीच कुछ तो उन्हें गृह कार्य रहा और कुछ समय सर्वोदय कार्य और प्रवृत्तियों में लगा। राजस्थान की दो तीन खादीग्रामोद्योग संस्थाओं के क्षेत्र में जाकर वहाँ के काम को उन्होंने देखा और उनके संचालक मंडल की सभाओं में भाग लिया। नई दिल्ली में संघ की नई तालीम सम्पर्क समिति, गोसेवा समिति की बैठकों में भाग लिया। चम्बल घाटी के शांति सेना कार्य, अशोभनीय पोस्टर्स आंदोलन के संबंध में तथा भूदान-ग्रामदान सघन क्षेत्रों में सामुदायिक विकास मंत्रालय और सर्व सेवा संघ के परस्पर सहयोग के कार्यक्रम के बारे में संबंधित व्यक्तियों से विचार विनिमय किया।

विनोबाजी का पता :
मार्फत : ग्राम-निर्माण कार्यालय
पो० नार्थ लखीमपुर (आसाम)

ग्रामदानी गाँवों की प्रगति

नागौर जिले में आज तक जिन गाँवों में भूदान में भूमि प्राप्त हुई थी, उसका वितरण तो काफी अर्से पूर्व हो चुका है, किन्तु अब तक जितने गाँवों ने ग्रामदान के लिये संकल्प किया था, उनमें से श्रीरघुनाथपुरा, रायसिन्हपुरा, श्रीकृष्णपुरा, तिलोकपुरा, सुखवासी, पीपलिया व चौकलिया की दानी ने ग्रामदान-अधिनियम के अंतर्गत ग्रामदान के लिये फार्म भर दिये हैं, जिनमें से श्रीकृष्णपुरा, तिलोकपुरा व श्रीरघुनाथपुरा गाँवों की ग्रामदान-घोषणा विधिवत् हो चुकी है तथा ग्राम सभाओं की स्थापना हेतु तत्संबंधी प्रस्ताव राज्य सरकार को भेज दिये गये हैं। शेष गाँवों में तहसील द्वारा सूचना पत्र भेज कर कार्यवाही की जा रही है।

ऊनी खादी-कार्यकर्ता शिविर

नागौर जिला खादी-ग्रामोद्योग संघ, नागौर की ओर से इस संस्था में काम करने वाले करीब २५ ऊनी खादी-कार्यकर्ताओं का ३० व ३१ मई, '६१ को संघ के अध्यक्ष श्री बद्रीप्रसाद स्वामी के कुलपतित्व में एक शिविर हुआ। शिविर में राजस्थान खादी ग्रामोद्योग बोर्ड के सदस्य श्री भैरूलालजी अग्रवाल ने मुख्य रूप से भाग लिया। उक्त शिविर में जिले के अकालग्रस्त गाँवों में कार्यरत कार्यकर्ताओं ने ऊनी खादी-कार्य की समस्याओं पर विचार करते हुए वर्षान्त के पूर्व तक चरखे व ऊन वितरित कर ऊन-कताई-बुनाई कार्य को सघन एवं व्यापक रूप से करने का तय किया।

—श्री प्रभाकर थापर (संयोजक-भंडारा जिला सर्वोदय-मण्डल) लिखते हैं कि श्रद्धेय श्री जयप्रकाशजी के स्वागतार्थ अर्थ-संग्रह का अभियान अभी-अभी महाराष्ट्र के कुछ जिलों में सम्पन्न हुआ। उसमें भंडारा जिला अग्रगण्य रहा। फिर भी लोकसम्पर्क को काफी अवकाश कुछ शहरों में है और कम-से-कम एक हजार लोगों के पास इस अखिल भारतीय अभियान में पहुँचा जाय, यह कार्यकर्ताओं ने तय किया है।

—फिरोजपुर जिले के श्री बनारसीदास गोयल और श्री हरिचन्द्र ने फाजिल्का तहसील के गाँवों की पदयात्रा की और सात भूमिहीन परिवारों में भूमि वितरित की।

शांति-विद्यालय का दूसरा सत्र

'भूदान-यज्ञ' के पिछले अंक में बताया गया था कि शांति विद्यालय का आगामी सत्र १ मास का होगा। बल्कि यह सत्र ४ मास तक चलेगा। सत्र का प्रारम्भ १५ अगस्त से होनेवाला है।

श्रीकृष्णदत्त भट्ट, अ० भा० सर्व सेवा संघ द्वारा भार्गव भूषण प्रेस, वाराणसी में मुद्रित और प्रकाशित। पता : राजघाट, वाराणसी-१, फोन नं० ४१९१
वार्षिक मूल्य ६) पिछले अंक की छपी प्रतियाँ ९,८२६ : इस अंक की छपी प्रतियाँ ९,५५० एक अंक : १३ नये पैसे

संपादक : सिद्धराज ढड्ढा

वाराणसी : शुक्रवार | २१ जुलाई '६१ | वर्ष ७ : अंक ४२

सत्याग्रह की मीमांसा

दादा धर्माधिकारी

[आजकल सत्याग्रह के बारे में एक सवाल अक्सर उठाया जाता है कि अब स्वराज्य आ गया है और अपनी सरकार है, तब उसके खिलाफ सत्याग्रह क्यों किया जाना चाहिए? देश में रोजाना कहीं-न-कहीं किसी रूप में सत्याग्रह चलता ही रहता है। सत्याग्रह का एक शास्त्र है, एक तरीका है, इसको समझ लेना अत्यन्त जरूरी है; अन्यथा उसके अभाव में सत्याग्रह दुराग्रह में बदल जाता है। अभी पिछले दिनों, २३ जून को श्री दादा धर्माधिकारी ने सत्याग्रह के शास्त्र का एक सांगोपांग विवेचन, काशी में चल रहे शांति-विद्यालय में किया था। इसका पूर्वार्ध हम यहाँ दे रहे हैं। हमें उम्मीद है कि दादा की इस सत्याग्रह-मीमांसा से सत्याग्रह के बारे में काफी सफाई होगी। –स०]

सत्याग्रह जीवन का एक नियम है या केवल प्रतिकार की एक पद्धति है, यह मूलभूत प्रश्न है। यह जीवन के विकास का साधन है अथवा प्रतिकार की पद्धति है। जीवन के विकास का अगर यह साधन है, तो वह व्यापक होगा और अगर वह केवल एक प्रतिकार की पद्धति है, अस्त्र है, तब उसका उपयोग भी परिमित होगा और वह एक नपी-तुली परिधि में ही काम कर सकेगा।

'सत्याग्रह' शब्द का प्रयोग गांधी ने किया। दुनिया को जो कुछ शब्द गांधी ने दिये, उनमें से सर्वोदय और सत्याग्रह, ये दो शब्द मुख्य हैं। अब तो दुनिया की सभी भाषाओं के कोषों में सत्याग्रह शब्द का समावेश हो गया है। वह गांधी की अपनी देन है। जिसने यह शब्द हमको दिया वह गांधी, सत्याग्रह को प्रेम का आविष्करण, प्रेम की अभिव्यक्ति मानता है। सत्याग्रह की अभिव्यक्ति के अनेक अवसर हैं, उनमें प्रतिकार भी एक अवसर है। किसी भी तत्त्व या शक्ति के आविष्कार के लिए, अभिव्यक्ति के लिए कुछ प्रसंग, अवसर चाहिए। प्रतिकार का अर्थ बुराई का प्रतिकार है, क्योंकि प्रतिकार बुराई का ही हो सकता है।

बुराई के प्रतिकार का मतलब है, बुरे आदमी के साथ सहयोग। अवसर प्रतिकार का अवश्य है। लेकिन प्रतिकार किसका? दुर्गुण का प्रतिकार, अपराध का प्रतिकार, अन्याय का प्रतिकार, पाप का प्रतिकार, प्रमाद का प्रतिकार, परन्तु मनुष्य का प्रतिकार नहीं।

इससे सारी भूमिका और वृत्ति भी बदल जाती है। इस अर्थ में प्रतिकार ही सहायता का साधन हो जाता है, सहयोग का साधन हो जाता है। प्रसंग प्रतिकार का है। देखने में विरोध है, परन्तु वस्तुतः सहयोग है, सहायता है। व्यक्ति की सहायता है, व्यक्ति के साथ। पाप, दुराचार, अन्याय, प्रमाद का प्रतिकार है। यह सत्याग्रह की दुहरी भूमिका है।

सत्याग्रह धर्म-युद्ध भी नहीं

इसको अगर हम संक्षेप में कर देते हैं, तो सत्याग्रह बहुत जल्दी निःशस्त्र प्रतिकार में बदल जाता है। निःशस्त्र प्रतिकार, सशस्त्र प्रतिकार का पर्याय नहीं है। इस अर्थ में सत्याग्रह युद्ध का पर्याय नहीं है। 'मारल इक्विवेलेंट आफ वार'—विलियम जेम्स, जो अमेरिका का एक बहुत बड़ा तत्त्वज्ञानी और शिक्षण-शास्त्री था, उसने कहा कि हमको युद्ध का एक नैतिक पर्याय चाहिए। सत्याग्रह, संघर्ष या केवल युद्ध का नैतिक पर्याय नहीं है। युद्ध और संघर्ष में जितना आवेश होगा और कभी-कभी प्रतिपक्षी के लिए जितना आवेश होगा, उतनी उसमें उत्कटता और तीव्रता आती है। धर्म-युद्ध में क्रोध और द्वेष नहीं होना चाहिए। इसलिए जिनके साथ धर्म-युद्ध होता है, वह व्यक्ति हमको प्रिय से-प्रिय हो भी सकता है। यह तो सज्जन धर्म-युद्ध की मर्यादा है। लेकिन धर्मयुद्ध में एक दोष है। दोष यह है कि हम शस्त्र लेकर युद्ध करते हैं। इसका मतलब यह है कि उसका अंग-भंग भी कर सकते हैं, उसका वध भी कर सकते हैं। अंग-भंग हिंसा का ही एक प्रकार है। सर्जन भी जब आपका एक अंग भंग करता है, आपरेशन में, तो उसका मतलब यही है कि अब वह विषाक्त हो गया, उस अंग को वह बचा नहीं सकता। लेकिन सर्जन के अंग-भंग को हम क्षम्य मानते हैं, क्योंकि उसकी नीयत काटने की नहीं है। आपके किसी अंग को अगर वह बचा सकता है, तो बचाने की कोशिश करेगा। सज्जन युद्ध में शत्रु जब तक आपके सम्मुख रहता है, तब तक उसको बचाने का प्रयत्न नहीं है। उसको परास्त करने का प्रयत्न है, उसको हतवीर्य करने का प्रयत्न है, उसको हर तरह से हतबुद्ध करने का प्रयत्न है। यह भी भयानक हिंसा है।

सत्याग्रह युद्ध का पर्याय नहीं

सत्याग्रह में क्या है? प्रतिपक्षी की शक्ति के विकास का प्रयत्न है, उसकी सद्बुद्धि को जागृत करने का प्रयत्न है। उसकी वीरता का आवाहन है, चुनौती नहीं। इसलिए सत्याग्रह में पराजित करने की भावना कभी आ ही नहीं सकती।

ध्यान में रखने की बात है कि सत्याग्रह में सहायता और सहयोग क्यों है? सत्याग्रह में सहायता और सहयोग इसलिए है कि वह प्रतिपक्षी की शक्ति को विकसित, उसकी बुद्धि और भावना को जागृत करता है। सत्याग्रह में प्रतिपक्षी के सारे सद्गुणों का आवाहन है और सशस्त्र धर्म-युद्ध में उसकी सारी शक्तियों का अन्त कर देना चाहते हैं। यह इन दोनों में अत्यन्त मूलगामी अन्तर है। इसलिए मैंने कहा कि यह सशस्त्र युद्ध या संघर्ष का पर्याय नहीं है।

सत्याग्रह प्रेम की अभिव्यक्ति है

शुरू शुरू में गांधी ये सारी बातें कह नहीं सकता था, क्योंकि गांधी के सारे सत्याग्रह प्रयोगजन्य आविष्कार हैं। जैसे-जैसे आविष्कार में प्रगति हुई, उसकी भाषा में भी विकास हुआ। परन्तु एक बुनियादी चीज शुरू से वह मानता रहा कि सत्याग्रह कौटुम्बिक न्याय है और कौटुम्बिक न्याय का आधार प्रेम है। इसका प्रयोग मैं अपने माता पिता, भाई-बहन, पुत्र पुत्री इनके साथ कर सकता हूँ। इट्स ए ला आफ लव—यह प्रेम का न्याय है। इसका मतलब यह हुआ कि सत्याग्रह प्रेम के जीवन-व्यापी तत्त्व की अभिव्यक्ति है। यह अभिव्यक्ति कब होती है? प्रतिकार के प्रसंग में होती है। लेकिन यह प्रतिकार व्यक्तिगामी नहीं, वह बुराई का प्रतिकार है। और यह बुराई का प्रतिकार है, इसलिए व्यक्ति के लिए सहानुभूति है, प्रेम है, सहयोग की आकांक्षा है, और इसीलिए हमारे सामने जो प्रतिपक्षी खड़ा है उसकी शक्तियों को हम बढ़ाना चाहते हैं, कम नहीं करना चाहते। उसकी प्रतिष्ठा और शान को भी बढ़ाना चाहते हैं। केवल परास्त नहीं करना चाहते हैं, इतना ही नहीं, उसको अपमानित भी नहीं करना चाहते और हो सके, तो हम उसे लज्जित भी नहीं करना चाहते। वह अगर लज्जित होता है, तो हमें दुःख होता है। अपमानित करने की नीयत जहाँ होती है, वहाँ सत्याग्रह नहीं होता, प्रतिकार होता है—निःशस्त्र प्रतिकार होता है—वहाँ शस्त्र तो नहीं होता, लेकिन हिंसा होती है। जो लज्जित होता है, उसका हृदय-परिवर्तन नहीं होता। वह कुढ़ता है, उसकी आत्मा भीतर-ही-भीतर कुढ़ती रहती है। इस प्रकार उसका व्यक्तित्व खाक हो जाता है। उसके व्यक्तित्व में कोई सत्त्व नहीं रह जाता।

सत्याग्रह को माननेवाले के व्यक्तित्व

साप्ताहिक घटना चक्र

सामुदायिक विकास-सम्मेलन से

भारत सरकार के सामुदायिक विकास-मन्त्रालय की ओर से इस सप्ताह हैदराबाद में सामुदायिक विकास संबंधी दसवाँ वार्षिक सम्मेलन हो रहा है। विभिन्न प्रांतों के विकास-अधिकारी और विकास-मन्त्रीगण इस सम्मेलन के लिए वहाँ एकत्र हो रहे हैं।

सम्मेलन में चर्चा का एक मुख्य विषय यह है कि ग्रामसभा को विधान के अन्तर्गत कानूनी स्वरूप दिया जाय। पंचायती राज की जो योजना देश में लागू की जा रही है, उसमें "पंचायत" को शासन की सबसे छोटी बुनियादी इकाई माना गया है। वास्तव में यह स्थान ग्रामसभा का होना चाहिए, न कि गाँव के लोगों द्वारा चुने हुए १०-१२ व्यक्तियों की पंचायत का। स्व-शासन या स्वराज्य की बुनियादी इकाई में हर स्त्री-पुरुष को सक्रिय रूप से हिस्सा लेने का मौका मिलना चाहिए। पंचायती राज की योजना की सफलता बहुत कुछ इस बात पर निर्भर है। चुने हुए लोगों की छोटी-सी समिति के रूप में जो पंचायतें हैं, उनके हाथ में मुख्य सत्ता रहने से गाँवों में अन्याय और अत्याचार का खतरा बराबर बना रहेगा। सर्व सेवा संघ और सर्वोदय-कार्यकर्ताओं की ओर से यह बात शुरू से ही केंद्रीय और प्रांतीय सरकारों के ध्यान में लायी गयी है और यह संतोष का विषय है कि केन्द्रीय विकास मन्त्री के अनुसार करीब-करीब १० प्रांतों में ग्रामसभा को कानून में शासन के एक अंग के रूप में स्वीकार कर लिया गया है। वास्तव में गाँव के आमद-खर्च के सालाना बजट पर बहस करने का और उसे स्वीकार करने का अधिकार पूरे गाँव की सभा का ही होना चाहिए। पंचायत का काम ग्रामसभा के निर्णयों के अनुसार काम को चलाने का है। ग्रामसभा को उसका उचित स्थान प्रदान करना, न सिर्फ पंचायती राज, बल्कि सामुदायिक विकास के सारे काम की सफलता के लिए भी आवश्यक है। हमें आशा है कि हैदराबाद का सामुदायिक विकास-सम्मेलन इस बारे में अनुकूल निर्णय लेगा।

पंचायती राज और सामुदायिक विकास-योजनाओं की सफलता के लिए ग्रामसभा को मान्यता दी जाने के अलावा दो और महत्त्व की बातें हैं, जो आवश्यक हैं। विनोबाजी ने और सर्व सेवा संघ ने बार-बार इन बातों पर जोर दिया है। पहली बात तो यह है कि कम-से कम गाँव के स्तर पर पंचायतों के जो चुनाव हों, उनमें राजनीतिक पार्टियों को दखल नहीं देना चाहिए, अर्थात् पंचायतों के चुनाव पक्ष के आधार पर नहीं लड़े जाने चाहिए। अभी भी कुछ पार्टियों ने जाहिरा तौर पर तो ऐसा ऐलान कर रखा है कि पंचायतों के चुनावों में पार्टी के तौर पर वे भाग नहीं लेंगी, लेकिन व्यवहार में इसका अमल हो नहीं रहा है। दूसरी बात, जो उतनी ही जरूरी है, वह यह कि ग्रामसभाओं और पंचायतों के निर्णय बहुमत-अल्पमत के आधार पर नहीं, बल्कि सर्वसम्मति से हों, ऐसी परम्परा और वातावरण बनाने में सबको मदद करना चाहिए। पंचायती राज का प्रयोग देश के भविष्य की दृष्टि से सचमुच एक महत्त्व का प्रयोग है। उसकी सफलता और असफलता दोनों के ही परिणाम मुल्क के लिए बहुत दूरगामी और बुनियादी होने वाले हैं। इसलिए देश के सब हित चिन्तकों का यह कर्तव्य है कि वे अपने या अपने पक्षों के सीमित स्वार्थों के बजाय इस प्रश्न की ओर राष्ट्रीय हित की दृष्टि से देखें और सब मिल कर ऐसी परम्पराएँ और ऐसी पद्धतियाँ स्वीकार करें, जिससे लोकतंत्र का यह व्यापक और महत्त्वपूर्ण प्रयोग सफल हो सके।

के सत्त्व को बढ़ाना चाहता है। इस अर्थ में सत्याग्रह समर्थों का शस्त्र है। सत्याग्रह उनका साधन है, जिनका हृदय प्रेम से परिपूर्ण हो।

अंतिम शक्ति प्राणसमर्पण

जहाँ निःशस्त्र व्यक्तियों को सशस्त्र व्यक्तियों से मुकाबला करना था, वहाँ व्यवहार में इसकी प्रथम अभिव्यक्ति हुई। इसलिए लोगों ने इसको प्रजाकीय अस्त्र माना। एक तरफ शस्त्रास्त्रों से सुसज्जित सरकार है, दूसरी तरफ जिनके पास शस्त्र नहीं हैं, ऐसी प्रजा है। तो इस प्रजा के पास अब सशस्त्र सरकार से मुकाबला करने का कौनसा साधन है? यह साधन सत्याग्रह है।

सत्याग्रह में अंतिम शक्ति प्राण-समर्पण की है, उत्सर्ग की है। सशस्त्र प्रतिकार में भी प्राण-समर्पण की तैयारी है। लेकिन प्राण-समर्पण की आकांक्षा नहीं है। शत्रु का वध अपने आपको बचा कर अगर मैं कर सकूँ, तो मेरी सफलता है। अगर शत्रु का वध न कर सकूँ, और उसका वध करने के प्रयास में मर जाऊँ, तो मैं वीर गति को प्राप्त होता हूँ, लेकिन सफल नहीं होता हूँ। सत्याग्रह में उल्टा है कि मुझे अपने प्राण दे देने पड़े तो भी हर्ज नहीं है; क्योंकि मेरा सारा प्रयास प्रतिपक्षी को जिलाने का है, उसके जीवन और व्यक्तित्व का विकास करने का है, तो उसके लिए अगर मेरे प्राणों का खाद भी बन जाय, तो मैं यह समझूँगा कि मैं धन्य हो गया।

[शेष अगले अंक में]

भारत सरकार फैसला करे

ता० १० जुलाई को "उत्तरी क्षेत्र की काउन्सिल" के अध्यक्ष-पद से बोलते हुए भारत सरकार के गृहमंत्री, श्री लालबहादुर शास्त्री ने अकाली नेता मास्टर तारासिंह को यह आश्वासन दिया है कि अगर वे पंजाबी सूबे के प्रश्न पर अगले आम चुनाव लड़ें तो भारत सरकार इस प्रश्न पर जनता की जो राय प्रगट होगी, उसकी कद्र करेगी। पंजाबी सूबे के प्रश्न को लेकर पिछले काफी अर्से से देश का वातावरण क्षुब्ध हो रहा है। सिख एक बहादुर कौम है और उस कौम में किसी व्यापक असन्तोष का होना स्वाभाविक ही लोगों के मनों में आशंका पैदा करता है। भाषावार प्रांतों की रचना के प्रश्न पर देश के एक से अधिक क्षेत्रों में समय-समय पर असन्तोष उठता रहा है और दुर्भाग्य से भारत-सरकार ने तत्संबंधी आन्दोलनों के बारे में अब तक बुद्धिमत्तापूर्ण नीति नहीं अपनायी है। पिछले कुछ वर्षों का इतिहास जाहिर करता है कि अगर भारत सरकार ने इन प्रश्नों पर निर्भयतापूर्वक सही नीति शुरू से ही अपनायी होती तो इन वर्षों में जो व्यर्थ का असन्तोष देश के कई हिस्सों में हुआ, वह न होता।

पंजाबी सूबे के प्रश्न का हल भी एक तरह से भारत सरकार ने अब तक समय पर ही छोड़ रखा है। शायद उनका ख्याल है कि समय अपने आप उस प्रश्न का हल कर देगा। पर श्री लालबहादुर के वक्तव्य से यह जान कर संतोष होता है कि आखिरकार भारत सरकार ने इस नीति को छोड़ा है और पंजाबी सूबे के प्रश्न का हल किस प्रकार किया जाय, उसके बारे में वह भी कुछ सोच रही है।

एक तरह से श्री शास्त्रीजी का यह सुझाव कि पंजाबी सूबे का प्रश्न चुनाव के मैदान में तय हो, लोकतंत्रीय पद्धति के अनुकूल और उचित मालूम होता है। पर थोड़ी गहराई से सोचने पर लगता है कि देश के मौजूदा वातावरण में ऐसे भावनात्मक प्रश्न को चुनाव के मैदान में ला देना शायद खतरे से खाली नहीं होगा। आपसी मन-मुटाव और द्वेष इससे उल्टा बढ़ सकता है। हालाँकि मास्टर तारासिंह ने और सन्त फतेहसिंह ने भी अभी अपने ताजा बयानों में इस बात का खण्डन किया है कि पंजाबी सूबे की माँग के पीछे कोई धार्मिक कारण है या कि सिख राज्य बनाने की कल्पना है, पर दुर्भाग्य से पंजाबी सूबे का प्रश्न हिन्दू-सिख प्रश्न बन गया है। पंजाब में सिखों और हिन्दुओं की संख्या भी करीब-करीब ऐसी समतोल है कि चुनाव में इस प्रश्न का निर्णय प्रश्न के गुण-दोष या लाभ-हानि के आधार पर न होकर धार्मिक आधार पर होने का खतरा है, जो संबंधित लोगों के लिए भी अहितकर हो सकता है। हमारी राय में इस प्रश्न को इस तरह चुनाव के मैदान में न फेंक कर भारत सरकार को मजबूती के साथ इधर या उधर—जैसी भी उसकी राय हो और जैसा वह मुल्क के लिए उचित समझती हो—स्वयं उसका फैसला करना चाहिए।

पहला काम पहले

वर्षा का मौसम शुरू होने के साथ साथ बाढ़ का मौसम भी शुरू हो गया। केरल, मैसूर, मद्रास और उड़ीसा में बाढ़ के कारण धन-जन-पशु आदि की बहुत बड़ी क्षति हुई है। सबसे ताजा समाचार पूना का है। नजदीक के एक बाँध के टूट जाने से पूना शहर को ही संकट उपस्थित हो गया था। सूरत शहर भी जलमग्न-सा हो गया। उत्तर भारत में तो अभी वर्षा की शुरुआत ही हुई है। वहाँ भी हर साल कहीं न-कहीं भीषण बाढ़ आती रहती है। हर साल वर्षा के मौसम में कहीं-न-कहीं इस प्रकार बाढ़ें आती हैं और क्षति होती रहती है। करोड़ों की सम्पत्ति और सैकड़ों जानें नष्ट होती हैं। हजारों-लाखों व्यक्ति बेघरबार और बेकार हो जाते हैं, फसलें नष्ट हो जाती हैं। फिर देश-विदेश से सहायता का दौर शुरू होता है। दो-तीन महीने में बारिश का मौसम समाप्त हो जाता है, और जीवन का चक्र फिर अपनी सामान्य गति से चलने लगता है। कभी कभी जिम्मेदार लोग भी कहते हुए सुने गये हैं कि हिन्दुस्तान जैसे बड़े देश में यह सब होता रहना स्वाभाविक है!

पर यह निश्चित रूप से कहा जा सकता है कि पिछले सालों में देश में जो बाढ़ का प्रकोप बढ़ा है, वह स्वाभाविक या सामान्य नहीं है। अपने व्यक्तिगत अनुभव से कह सकते हैं कि जिन क्षेत्रों में कभी बाढ़ का नाम सुनने में नहीं आता था, उनमें भी बाढ़ें शुरू हुई हैं।

> वास्तव में पिछले दस-पन्द्रह वर्षों में जो बाढ़ का प्रकोप बढ़ा है, उसके मुख्य कारणों में अनियंत्रित तरीके से जंगलों का काटा जाना और रेल, सड़क, बाँध इत्यादि के निर्माण के सिलसिले में नदी-नालों के स्वाभाविक प्रवाह में खलल आ जाना, ये कारण मुख्य हैं।

इन बातों की ओर सरकार द्वारा नियुक्त की गयी बाढ़-नियंत्रण समिति ने भी दो साल पहले की अपनी रिपोर्ट में ध्यान आकर्षित किया था। पर इन सबके और हर साल आने वाली इस विपत्ति के बावजूद इस परिस्थिति का मुकाबला करने का संगठित प्रयत्न कोई हुआ हो, ऐसा नजर में नहीं आता। यों तो हर साल बाढ़ के बाद कुछ-न-कुछ छोटे-मोटे उपाय किये जाते हैं, पर हमारा मतलब उन

[शेष पृष्ठ ११ पर]

ब्रह्म सत्यं जगत् स्फूर्तिः जीवनं सत्यशोधनम्

भूदानयज्ञ

टिप्पणियाँ

लोकनागरी लिपि

नीष्काम सेवा की मीसालें

भगवान सूर्यनारायण का प्रकाश सुबह से लेकर शाम तक अखंड चलता रहता है। अुनसे लोगों की कीतनी सेवा होती है, परंतु वे नहीं समझते की मैं कोअी सेवा कर रहा हूं। अैसी सेवा को नीष्काम सेवा कहते हैं। अीस प्रकार की नीष्काम सेवा करने के लीअे यह मनुष्य-देह है।

महात्मा गांधी ने चालीस साल तक स्वराज्य के लीअे सतत काम कीया। अुनके चौबीसों घंटे स्वराज्य के चींतन में जाते थे। जब स्वराज्य हुआ, तो देहली में और हर बड़े शहर में रोशनी हुअी। पर अुस समय वे नोआखाली में पैदल घूम रहे थे, दुःखीयों के आंसू पोंछने के काम में लगे हुअे थे। स्वराज्य आने पर अुन्होंने कोअी भी पद अपने हाथ में नहीं लीया। अीसी तरह भगवान कृष्ण ने कंस का वध कीया और सारा राज्य अुनके हाथ में आ गया। फीर भी कृष्ण खुद राजा नहीं बने। लोकमान्य तीलक स्वराज्य के लीअे सतत प्रयत्न करते रहे। लेकीन जब अुनसे पूछा गया की स्वराज्य-प्राप्ती के बाद आप कौनसा पद लेंगे, तो अुन्होंने कहा, 'स्वराज्य-प्राप्ती के बाद पद लेना मेरा काम नहीं। मैं या तो वेदों का अध्ययन करूंगा या गणीत का अध्यापक बनूंगा।' अीसीका नाम है नीष्काम सेवा। अैसी थोड़ी भी नीष्काम सेवा जीस कीसी मनुष्य के हाथों से होती है, अुसे अत्यंत समाधान और तृप्ती का अनुभव होता है।

—वीनोबा

सामाजिक संकट-निवारण के लिये सामाजिक शक्ति कैसे प्रकट हो ?

इसी अंक में अन्यत्र राष्ट्रीय एकता (समरसता)–नेशनल इन्टीग्रेशन–के विषय पर श्री तिमप्पाजी का एक लेख प्रकाशित हुआ है। राष्ट्रीय समरसता की सिद्धि के लिए श्री तिमप्पाजी ने कुछ सुझाव दिये हैं। साथ ही अन्त में यह भी कहा है कि देश की परिस्थिति इस हद तक पहुँच गयी है कि सामान्य उपायों से उसका निराकरण होना कठिन है, उसके लिए किसी 'शुद्धात्मा का बलिदान' आवश्यक है। श्री तिमप्पाजी पुराने और अनुभवी जन सेवक हैं। अभी-अभी काफी अर्से तक वे आसाम में शांति-स्थापना और सेवा-कार्य करके लौटे हैं। कर्नाटक-महाराष्ट्र के बीच जो सीमा-विवाद खड़ा है, उस सारी परिस्थिति से भी उनका निकट का सम्पर्क है। उनके जैसे जिम्मेदार कार्यकर्ता को भी ऐसा लगता है कि परिस्थिति सामान्य इलाज के दायरे से बाहर चली गयी है, यह गम्भीरता से सोचने की बात है। आज देश के बहुत-से लोगों को ऐसा महसूस होता है। पिछले अंक में (पृष्ठ २) भ्रष्टाचार के विषय में लिखते हुए इसी बात की ओर हमने संकेत किया था।

इसमें कोई संदेह नहीं कि देश की सारी परिस्थिति इस ओर सोचने के लिए मजबूर कर रही है कि सामाजिक और नैतिक मूल्यों के ह्रास से होने वाले खतरे से अगर देश को बचाना हो तो उसके लिए कोई 'गहरा नैतिक झटका' आवश्यक है। इसके लिये 'शुद्धात्मा' को 'बलिदान' की प्रेरणा हो, यह तो सर्वथा उसकी व्यक्तिगत चीज होगी। इसके बारे में कोई भी व्यक्ति किसी दूसरे को सलाह या प्रेरणा नहीं दे सकता। किसी को खुद को ऐसी प्रेरणा हो तब भी, जैसा श्री तिमप्पाजी ने कहा है, उस व्यक्ति की पात्रता का सवाल आयेगा। वह व्यक्ति जितना शुद्ध और पात्र होगा, उतना ही उस बलिदान का असर होगा।

पर व्यक्ति कितना भी बड़ा क्यों न हो और उसके बलिदान से तत्काल संकट का शमन भले हो जाय, लेकिन सामाजिक शक्ति उससे प्रकट नहीं होती। गांधीजी के बलिदान का ताजा उदाहरण हमारे सामने है। देश के विभाजन को लेकर जो विकट परिस्थिति देश में पैदा हुई, उसका एक बार शमन उनके बलिदान से हो गया। पर अभी हाल की घटनाओं ने यह साबित कर दिया है कि लोगों की मनोवृत्ति पर उसका स्थायी असर नहीं पड़ा। किसी भी संकट का सामना करने के लिए हम किसी बड़े व्यक्ति या 'शुद्धात्मा के बलिदान' की बाट देखते रहें तो एक तरह से समाज उससे पंगु ही बनेगा। ऐसे प्रश्नों का स्थायी निराकरण सामाजिक शक्ति को प्रकट करने में ही है। हम सबको मिल कर यह सोचना चाहिए कि यह सामाजिक शक्ति कैसे प्रकट हो।

—सिद्धराज

बिहार सरकार का आश्चर्यजनक कदम !

पटना से निकलने वाले दैनिक 'आर्यावर्त' (हिन्दी) के ता० २५ जून के अंक में बिहार सरकार की आबकारी सम्बन्धी नीति के बारे में जो समाचार प्रकाशित हुआ है, वह अगर सही है तो आश्चर्यजनक है। उस खबर में यह कहा गया है कि बिहार सरकार इस बात पर विचार कर रही है कि शराब की दुकानों के ठेके गैर-हरिजनों के हाथ से लेकर सबके सब केवल हरिजनों के लिए सुरक्षित रखे जायँ।

बिहार सरकार अगर सचमुच शराब के ठेके केवल हरिजनों के लिए सुरक्षित रखने के प्रश्न पर गम्भीरता से विचार कर रही है, तो उसका कारण क्या है, यह हमारी समझ में नहीं आया। प्रत्यक्ष कारण तो यही हो सकता है कि वह हरिजनों को यह दिखाना चाहती है कि उसे, यानी सरकार को हरिजनों का विशेष खयाल है और वह उनके लिए आमदनी का एक अच्छा जरिया सुरक्षित कर देना चाहती है। शराब का ठेका गैर-हरिजनों के हाथ में रहे या हरिजनों के, उसका मुनाफा दोनों में से किसके पास जाय, इस बारे में हमें कोई दिलचस्पी नहीं है। हम तो चाहते हैं कि शराब का व्यवसाय ही बन्द हो। किसी की शराब पीने की आदत छूटती ही नहीं हो तो समाज की ओर से उसको मुफ्त शराब पिलायी जाय—जैसे अस्पतालों में सामान्य दवाएँ मुफ्त देने का इन्तजाम होता है—पर शराब को मुनाफे का साधन हरगिज न बनाया जाय। किसी भी व्यसन को मुनाफे का साधन बनाना अन्ततोगत्वा उस व्यसन को बढ़ावा देना है, क्योंकि जिसे मुनाफा मिलता होगा, वह अपने मुनाफे के लिए उस व्यसन को फैलाना चाहेगा। आज शराब-बन्दी के मार्ग में जो सबसे बड़ी रुकावट है, वह यही कि आज की सरकारों को चूँकि शराब के व्यवसाय से करोड़ों-अरबों रुपयों की आमदनी होती है, इसलिए वे सहज ही उसे छोड़ने के लिए तैयार नहीं हैं।

हरिजनों के प्रति अगर बिहार सरकार को हमदर्दी दिखलानी है तो उसके दूसरे अनेक रास्ते हो सकते हैं। शराब की नापाक आमदनी उनके लिए सुरक्षित रख कर एक तरह से बिहार सरकार हरिजनों के नाम को कलंकित ही कर रही है! किसी भी एक विशेष वर्ग को शराब का व्यवसाय सौंप दिया जाता है, तो नशा-बन्दी के खिलाफ एक सारे के सारे वर्ग का निहित स्वार्थ खड़ा हो जाता है और इस तरह नशाबन्दी के मार्ग में एक और रुकावट पैदा हो जाती है। शराब से अगर सबसे ज्यादा नुकसान किसी का हो रहा है तो वह हरिजनों का। गांधीजी उनकी अन्त्योदय की नीति के अनुसार पहले हरिजनों को ही शराबखोरी से दूर हटाना चाहते थे। अगर 'आर्यावर्त' में जो खबर छपी है, वह सच है तो बिहार सरकार ठीक गांधीजी की इच्छा के विपरीत काम कर रही है। हम आशा करते हैं, और प्रार्थना भी करते हैं, कि उपरोक्त खबर सही नहीं है और बिहार सरकार ऐसी कोई बात नहीं सोच रही है।

—सिद्धराज

दक्षिण अमेरिका में सर्वोदय-पात्र

सूर्यनाम (सूरीनाम) दक्षिण अमेरिका से एक भाई लिखते हैं :

"यहाँ पर गत दिसम्बर महीने में सर्वोदय-कार्यकर्ताओं का एक सम्मेलन हुआ। प्रातःकाल ८ कीलोमीटर की एक पदयात्रा हुई। सम्मेलन में सर्वोदय पर चर्चा हुई। अपने-अपने क्षेत्र में चल रहे विचारों का आदान-प्रदान हुआ। सर्वोदय-पात्रों की स्थापना का कार्य भी प्रारम्भ हुआ है। इसी महीने एक अन्य देहाती क्षेत्र में दूसरा सम्मेलन होने जा रहा है। यहाँ के देहात में अधिकतर भारत से आये हुए लोगों की सन्तानें हैं। किसान साल के एक बड़े भाग में बेकार रहते हैं। उनके पास कोई घरेलू उद्योग नहीं है। बेकारी के कारण लोग शराब आदि व्यसनों में पड़ जाते हैं।"

विनोबा के विचार

विद्यार्थियों के लिए पाँच कार्यक्रम

[पिछले दिनों असम के नौगाँव व तेजपुर जिले में कुछ विद्यार्थी विभिन्न समूहों में विनोबाजी की पदयात्रा में रहे। वे यह जानने को उत्सुक थे कि हम लोग भूदान-आंदोलन में कैसे योग दे सकते हैं। विनोबाजी ने उनके लिए एक पंचसूत्री कार्यक्रम बनाया। प्रो० सुश्री सर्मीरण दास ने विनोबाजी की सलाह को उनकी चर्चाओं से संकलित किया, जो मूल असमिया में प्रकाशित हो चुकी है। कार्यक्रम यद्यपि आसाम के विद्यार्थियों के लिए ही है, किन्तु हिन्दुस्तान के सब छात्र इससे भली भाँति लाभ उठा सकते हैं। —सं०]

(१) कम-से-कम एक घंटा प्रतिदिन शरीर-परिश्रम करना चाहिए और इस एक घंटे में शरीर-परिश्रम से जो आमदनी प्राप्त हो, उसे सर्वोदय के कार्यक्रम के विकास के लिए समर्पित कर सकते हैं। उदाहरणतः अगर एक विद्यार्थी एक घंटा रोज कातता है, तो वह कम-से-कम महीने में एक रुपया कमा सकता है। सर्वोदय के कार्यक्रम के लिए इस रकम को समर्पित करने से दो फायदे हो सकते हैं। परिश्रम की महत्ता वह सीखेगा और साथ ही समाज को प्रत्यक्ष कुछ-न-कुछ देने की उसे आदत हो जायेगी।

(२) विद्यार्थी को चाहिए कि छुट्टियों के वक्त आसपास के देहातों में जायें और वहाँ पर सफाई अथवा ऐसी ही अन्य सामाजिक सेवाएं करें।

(३) विद्यार्थी संकल्प करें कि अपने से भिन्न धर्म, भाषा, जाति अथवा पंथ के किसी दूसरे व्यक्ति को अपना मित्र बनायें। एक हिन्दू विद्यार्थी का मुस्लिम दोस्त होना चाहिए और इसी प्रकार एक असमिया विद्यार्थी का एक बंगाली विद्यार्थी मित्र होना चाहिए। इस प्रकार अपने से विभिन्न समुदायों के साथ मित्रता करने से सब प्रकार के भेद-भावों का खत्म होने का रास्ता प्रशस्त हो जायेगा।

(४) विद्यार्थियों को चाहिए कि वे अच्छी हिन्दी सीखें। ऐसा करने से वे हिन्दुस्तान के जिस किसी कोने में जायेंगे, वहाँ अपने विचार अच्छी तरह अभिव्यक्त कर सकेंगे। अन्य प्रान्तों के साथ संबंध बनाने का यह एक सशक्त माध्यम है।

(५) विद्यार्थियों को चाहिए कि सुबह-शाम आधा घंटा कसरत करें। "जल्दी सोना और जल्दी जागना" जीवन का सूत्र बने। घंटों रात भर पढ़ने से कहीं ज्यादा बेहतर है, ब्राह्म मुहूर्त में कुछ घंटे पढ़ना।

सत्याग्रह का स्वरूप

मनुष्य का मन व्यक्तिगत होता है और बुद्धि सामाजिक, क्योंकि वह समाज में विकसित होती है और मनुष्य को सहज मिलती है। इसलिए मानव व्यक्तिगत मन का आग्रह छोड़ कर सामूहिक बुद्धि का आश्रय लेगा, तभी इस विज्ञान-युग में मन के साथ मन की टक्कर नहीं होगी। जिस मार्ग या पद्धति से मनों की टक्कर होती है, वह विज्ञान-युग में उचित नहीं। इस युग में जो भी संघर्ष होगा, वह बड़ा भयानक रूप लेगा, क्योंकि आज ऐसे शस्त्रास्त्र पैदा हुए हैं, जिन्हें मानव पकड़ नहीं सकता, बल्कि वही उनकी पकड़ में आ जाता है। हिंसा में पहले जो रक्षण शक्ति थी, वह अब इन शस्त्रों के पैदा होने के बाद नहीं रही है और अब वह नग्न रूप में प्रकट हुई है। इस हालत में सत्याग्रह का पुराना स्वरूप नहीं चल सकता।

अब सत्याग्रह करुणामूलक होना चाहिए। सामने वाले के बारे में हमारे मन में द्वेष न होना ही काफी नहीं। अब तो यह भी जरूरी है कि उसके लिए हमारे मन में प्रेम और करुणा हो। हमारी वृत्ति से करुणा फैलनी चाहिए। इस युग में सत्याग्रह का स्वरूप इस प्रकार का होना चाहिए कि 'सत्याग्रह' शब्द सुनने मात्र से सबको खुशी महसूस हो। *सत्याग्रह की यही कसौटी होगी।* जैसे किसी का वात्सल्य सुनते ही सबको खुशी होती है, वैसे ही किसी जगह सत्याग्रह शुरू होने की बात सुनते ही सबको आनंद, तुष्टि और शान्ति महसूस होनी चाहिए। उसके बदले दूसरे को यह लगे कि "पता नहीं इस सत्याग्रह में क्या है, इसे टल जाय तो अच्छा" तो वह सत्याग्रह नहीं है। सारांश, सत्याग्रह का स्वरूप ऐसा हो कि आरम्भ होते ही तत्क्षण *वह स्वागतार्ह, स्वीकारार्ह, आदरणीय* प्रतीत हो।

शक्ति का स्रोत हृदय में

स्वराज्य प्राप्त हुए कितने साल होगये, फिर भी लोग कहते हैं कि सरकार ने यह नहीं किया, वह नहीं किया। मैं उनसे पूछता हूँ कि आप स्वतंत्र हैं या गुलाम? अगर स्वतंत्र हैं, तो क्या आप यह चाहते हैं कि आपके गाँव की तालीम का इतजाम सरकार करे, आपके गाँव की सफाई सरकार करे? आपके गाँव के सारे काम सरकार करें? आखिर सरकार क्या चीज है?

जो काम परमेश्वर नहीं कर सकता, क्या वह सरकार कर सकेगी? परमेश्वर बारिश देता है, पर सिर्फ बारिश से फसल नहीं उगती, घास उग सकती है। जब किसान परिश्रम करता है, धरती पर अपना पसीना गलाता है, तभी फसल उगती है। इस तरह जब परमेश्वर ही फसल नहीं उगा सकता, तो क्या सरकार उगा सकती है?

सरकार की ताकत से हम ताकतवर बनेंगे, यह मानना ही गलत है। वास्तव में हमारी ताकत से ही सरकार ताकतवर बनेगी। शक्ति का मूल स्रोत दिल्ली या पटने में नहीं, वह तो हमारे और आपके हृदय के अंदर है। वहीं से चाहे जिस काम में शक्ति लगायी जा सकती है। लोग मुझसे पूछते हैं कि क्या आप यह मसला हल कर सकेंगे? मैं कहता हूँ कि अगर आपने चाहा, तो आप भी यह मसला हल कर सकते हैं। अगर आप चाहें कि अपने घर की लड़की के योग्य वर ढूँढ कर उसके घर पहुँचायें, तो आपको कौन रोक सकता है? इसी तरह आपको जिस समय यह लगेगा कि धन और धरती दूसरे के पास पहुँचाने में ही हमारा कल्याण और मंगल है, तो पहुँचाने में आपके हाथ कौन रोकने वाला है? यह सब समझने की बात है।

सत्ता का विभाजन हो

स्वराज्य के बाद इस देश में 'वेलफेयर स्टेट' का आरम्भ किया गया। इस 'वेलफेयर स्टेट' का अर्थ है, अधिक-से-अधिक सत्ता कुछ लोगों के हाथ में रहेगी और वे लोगों का सारा जीवन नियन्त्रित करेंगे। पूरे देश के पाँच लाख देहातों की योजना दिल्ली में बनेगी। जीवन के जितने अंग-प्रत्यंग हैं, सभी विषयों में दिल्ली में बात तय होगी। समाज में क्या-क्या सुधार हों, शादियाँ किस ढंग से हों, भारत में छूत-अछूत भेद कैसे मिटाया जाय, देश में कौनसी चिकित्सा पद्धति लागू की जाय, हिंदुस्तान में किस भाषा का प्रचलन हो, सिनेमा किस ढंग से चले आदि जीवन के सभी विषयों में दिल्ली में योजना तय होगी। अगर हम इतनी अधिक सत्ता केन्द्र को सौंपते हैं, तो सारा जन-समुदाय पराधीन हो जाता है, अनाथ बन जाता है। इसलिए दिल्ली की सत्ता ही कम होनी चाहिए।

हरएक को जितनी अक्ल की जरूरत है, उतनी अक्ल परमेश्वर ने बाँट दी और अब वह क्षीर-सागर में शयन करता है। अगर उसने सारी अक्ल का भण्डार अपने पास रखा होता, तो वह पसीना-पसीना हो जाता। परन्तु उसने मनुष्य और प्राणियों को बुद्धि दे दी। इससे वह इतना तटस्थ रहता है कि कुछ लोग कहते हैं कि वह है ही नहीं। सर्वोत्तम सत्ता का यही लक्षण है कि उसका सार्वत्रिक विभाजन होता है। सर्वोत्तम सत्ता वही होती है, जिसके बारे में हमें शंका हो कि कोई सत्ता चलती है या नहीं। हमें भी यह शंका होनी चाहिए कि दिल्ली में कोई राज्य चल रहा है या नहीं। अपने गाँव का कारोबार तो हम ही देखते हैं। केन्द्रीय सत्ता इस तरह परमेश्वरीय सत्ता का अनुसरण करने वाली होनी चाहिए। उसके बदले में सारी-की-सारी सत्ता हम केन्द्र के हाथ में सौंप देते हैं। अतः सभी चाहते हैं कि केन्द्र पर हमारा प्रभाव पड़े।

साहित्य-परिचय

विनोबा का सान्निध्य

पृष्ठ-संख्या १७०, मूल्य दो रुपया, प्रकाशक—कस्तूरबा गांधी राष्ट्रीय स्मारक ट्रस्ट, कस्तूरबाग्राम, इन्दौर (म० प्र०)।

पिछले साल विनोबाजी ने अपनी सतत चलने वाली यात्रा को भंग कर इन्दौर में एक महीना सर्वोदयनगर बनाने हेतु बिताया था। उनके इन्दौर जाने का एक प्रमुख आकर्षण यह भी था कि इन्दौर के नजदीक माता कस्तूरबा के नाम से बसाया हुआ एक केन्द्र है, जहाँ से सारे भारत में कस्तूरबा का काम चलाया जाता है। इन्दौर-प्रवास के बाद २५ अगस्त से ३१ अगस्त तक विनोबा कस्तूरबाग्राम में रहे। इस अवसर पर देश के विभिन्न कस्तूरबा-केन्द्रों में काम करने वाली कुछ प्रमुख बहनें भी कस्तूरबा-ग्राम आयी थीं। विनोबा ने विविध प्रसंगों को लेकर यहाँ पर २१ प्रवचन दिये थे। विशेष तौर से गीता में वर्णित सात स्त्री-शक्तियों—कीर्ति, श्री, वाणी, स्मृति, मेधा, धृति, क्षमा—पर प्रतिदिन प्रवचन किये। यह खुशी की बात है कि कस्तूरबा ट्रस्ट के कार्यकर्ताओं ने विनोबा के सान्निध्य का जो लाभ उठाया था, वह 'विनोबा का सान्निध्य' पुस्तिका में प्रकाशित कर अन्य लोगों को भी अप्रत्यक्ष रूप से सुलभ कर दिया। पुस्तक सचित्र है। इसमें प्रवचनों के अलावा संस्मरण, विचारमंथन और आगे के लिये नये संकल्प भी दिये गये हैं।

देश की हर जाग्रत महिला के लिए यह पुस्तक उपयोगी है। विशेषतः महिला-सामाजिक कार्यकर्त्रियों को यह पुस्तक अवश्य पढ़नी चाहिए। वैसे आम तौर से सर्वसाधारण पाठकों एवं अन्य कार्यकर्ताओं के लिए भी पुस्तक उपयोगी है।

—मणीन्द्र कुमार

राष्ट्रीय एकता और भाषाओं की समस्या

पं० सुन्दरलाल

[आज देश में भाषाओं की समस्या का प्रश्न चुनौती के रूप में खड़ा है। भाषा का यह प्रश्न सचमुच गलत खयालों और सिद्धान्तों से पैदा हुआ है। पंडित सुन्दरलालजी ने भाषा की समस्या पर गहराई से विचार किया है। भाषा साधन है, न कि साध्य। न कोई भाषा पवित्र है और न कोई अपवित्र है। भाषा का कोई रूप स्थायी नहीं है, वह नित्य परिवर्तनशील है। भाषाओं के आदान-प्रदान से मानवीय संस्कृति का स्तर ऊँचा उठता है और भाषाओं के झगड़ों से मानवता की बुनियाद हिलने लगती है। इस संदर्भ में अगर हम भाषा के प्रश्न को लेंगे, तो हमारा विश्वास है कि देश आगे बढ़ेगा, अन्यथा देश में व्याप्त भाषा का यह उन्माद राष्ट्रीय एकता को चुनौती दे ही रहा है, देश इससे छिन्न-विच्छिन्न हो जायगा। सुन्दरलालजी का यह लेख दिल्ली से प्रकाशित 'भारत सेवक' के 'राष्ट्रीय एकता विशेषांक,' जुलाई १९६१ से साभार उद्धृत किया जा रहा है। —संपादक]

मनुष्य और समाज के जीवन में कोई-कोई समय ऐसे गम्भीर आ जाते हैं कि किसी भी आदमी के लिये दावे से यह कह सकना कि परिस्थिति का असली हल क्या है, बहुत ही मुश्किल हो जाता है। हमें आपको सबसे राय लेने का हक है, किन्तु सबकी सुन लेने के बाद अन्त में हर आदमी को अपने कर्तव्य का फैसला या तो अपनी अन्तरात्मा की आवाज के अनुसार खुद करना चाहिए और या अपने सर्व-स्वीकृत नेता की आज्ञा के अनुसार।

हमें भाषा या जबान के सवाल पर पहले उसूली निगाह से कुछ विचार कर लेना चाहिए। पहली बात हमें यह समझ लेनी चाहिए कि भाषा कोई साध्य नहीं है, वह केवल एक साधन है। कोई भाषा इन्सानी जिन्दगी का लक्ष्य नहीं होती। वह किसी लक्ष्य तक पहुँचने का केवल एक जरिया होती है। लक्ष्य यह है कि हम अपने विचार या भाव एक-दूसरे तक पहुँचा सकें। जहाँ जिस परिस्थिति में जो भाषा इस काम के लिए अधिक सुविधाजनक हो, वही उस समय सबसे उपयुक्त और अच्छी है। भाषा कोई देवी नहीं है, जिसे हम बुत बना कर पूजें। वह हमारे कपड़ों, हमारे हाथ की लकड़ी, हमारे घरों और हमारे आये दिन की बरतने की चीजों की तरह केवल एक हथियार है, जो जिस समय काम दे जाये।

विभिन्न भाषाओं की स्थिति

दूसरी बात यह है कि दुनिया की कोई भाषा कम से कम जनता की बोली की हैसियत से, अजर या अमर नहीं है। अन्य दूसरी चीजों की तरह भाषाएं भी पैदा होती हैं, बदलती हैं और मरती हैं, और दूसरी भाषाएं उनकी जगह लेती रहती हैं।

हमारे देश की 'सबसे पुरानी भाषा तमिल मानी जाती है। किन्तु तमिल' भी दो हजार वर्ष से अधिक पुरानी नहीं गिनी जाती। आज से हजार-दो हजार वर्ष बाद उस इलाके में क्या बोली बोली जायगी, यह कौन कह सकता है? बंगला भाषा हमारे देश की इस समय सबसे अधिक उन्नत भाषा है, किन्तु आजकल की बंगला सात-आठ सौ वर्ष से अधिक पुरानी भाषा नहीं है। जिस इलाके में आजकल खड़ी बोली बोली जाती है, उस इलाके की एक हजार वर्ष पहले की बोली पढ़ने और समझने के लिए आज विशेषज्ञों की जरूरत पड़ती है। जिस इलाके में आजकल पंजाबी बोली जाती है, उसके एक बहुत बड़े हिस्से में विद्वानों के अनुसार ऋग्वेद की अधिकांश ऋचाएँ लिखी गयी थीं। उस समय वहाँ की भाषा वह छन्दस् थी, जो ऋग्वेद की भाषा है और जिससे बाद में अफगानिस्तान के अन्दर कन्धार के रहने वाले विद्वान पाणिनी के जरिए आजकल की संस्कृत ने जन्म लिया। आज से हजार-दो हजार साल बाद पंजाब की भाषा का क्या रूप होगा, यह कोई दावे से नहीं कह सकता।

तीसरी बात यह है कि दुनिया की कोई भाषा ऐसी नहीं है, जिसने जी भर कर शब्द और मुहावरे अनेक दूसरी भाषाओं से न लिये हों। गुरुकुल कांगड़ी के स्नातक, मेरे परम मित्र डॉ० प्राणनाथ विद्यालंकार ने अपनी एक पुस्तक में दिखलाया है कि ऋग्वेद की भाषा के अन्दर सैकड़ों शब्द उस समय की मिस्री और सुमेरी भाषाओं के मिले हुए हैं। एक और संस्कृत विद्वान ने एक बार लिखा था कि संस्कृत ज्योतिष-ग्रन्थों में अनेक शब्द अरबी से लिये हुए मिलते हैं। जिसे हम आजकल खड़ी बोली हिन्दी कहते हैं, उससे अधिक गंगा-जमनी तो शायद ही दुनिया की कोई दूसरी भाषा हो। हमारा 'तवा' और 'रोटी' दोनों तुर्की हैं। 'हलवा' शब्द अरबी है। 'बर्फी', 'कलाकन्द', 'खुर्मा' और 'कलाकन्द' सब ईरानी हैं। आजकल के 'बटन', 'कोट', 'पतलून', 'पार्सल', 'पुलिस', 'टिकट', 'रेल', 'बिस्कुट' इत्यादि सब अंग्रेजी हैं। एक बड़े दरजे तक इस गंगा-जमनीपन में ही हर भाषा का सौन्दर्य निखरता है। इस गंगा-जमनीपन को मिटाने की कोशिश करना जैसे पुलिस को आरक्षक, रेल को वाष्पयान, और टिकट को प्रवेशपत्र कहना न केवल भाषा का सत्यानाश करना है, बल्कि जनता की कठिनाइयों को भी व्यर्थ में बढ़ा देना और पागलपन है। अंग्रेजी भाषा की इंग्लैण्ड की छपी आप किसी भी डिक्शनरी को उठा लीजिए, आपको उसमें लगभग हर पन्ने पर अनेक शब्द दुनिया की दूसरी भाषाओं और विशेषकर भारतीय भाषाओं के मिलेंगे।

दुनिया की भाषाएं इस तरह एक-दूसरे से शब्द और मुहावरे लेकर अपने को भी मालामाल करती रही हैं और साथ-साथ मानव-समाज के उस भावी लक्ष्य की ओर भी संकेत करती रहती हैं, जिस लक्ष्य पर पहुँच कर हम एक दिन सच्ची मानव-एकता और एक मिली-जुली संस्कृति या मानव-संस्कृति को साक्षात् करने का शुभ-स्वप्न देख रहे हैं।

दो और सवाल

इन तीन उसूलों के अलावा दो सवाल और हमारे सामने आते हैं। एक, किसी भाषा का दूसरी भाषाओं से अधिक पवित्र समझा जाना और दूसरा, अलग-अलग लोगों के लिए एक भाषा को अपनी भाषा, और दूसरी भाषाओं को गैर-भाषा समझना।

हम इस तथ्य से आँखें बन्द नहीं कर सकते कि दुनिया में इस समय अनेक धर्म मजहब हैं। हर धर्म वालों के अपने-अपने धार्मिक ग्रन्थ हैं। ये ग्रन्थ कुदरती तौर पर अलग-अलग भाषाओं में हैं। हिन्दुओं के अधिकतर ग्रन्थ संस्कृत भाषा में हैं। जैनियों के प्राकृत में, बौद्धों के पाली में, पारसियों के जेन्द यानी प्राचीन ईरानी में, यहूदियों और ईसाइयों के इबरानी में, मुसलमानों के अरबी में, सिखों के अधिकतर पंजाबी में, इत्यादि। किसी भी धर्म को कायम करने वाला जो महापुरुष जिस देश में पैदा हुआ, कुदरती तौर पर उसने उस देश की बोली में ही उस सनातन सत्य का उपदेश दिया, जो इन सब धर्मों और सब धर्म ग्रन्थों में भाषा की भिन्नता होते हुए भी एक ही-सी शान के साथ चमक रहा है। यह भी स्वाभाविक है कि हर धर्म वाले की निगाह में वह भाषा ही विशेष तथा पवित्र है, जिसमें उस धर्म के कायम करने वाले महापुरुष ने उस सनातन सत्य का उपदेश दिया। उस विशेष भाषा से प्रेम और लगाव होना भी स्वाभाविक है। किन्तु जब हमें हर धर्म वाले की इस भावना का आदर करना चाहिए, तो साथ ही इस बात को भी ध्यान में रखना चाहिए कि अधिक व्यापक अर्थों में दुनिया की कोई भाषा किसी दूसरी भाषा से अधिक पवित्र नहीं है। सब भाषाएँ धरती के अलग-अलग भागों और अलग-अलग समयों में एक ही से नियमों के अनुसार बनी हैं और उस परमात्मा की दृष्टि में जो हम सबका एक समान परवरदिगार, अल्लाह या ईश्वर है, सब एक बराबर हैं।

भाषा की इस पवित्रता के साथ कभी-कभी कुछ अजीब मूढ़ विश्वास भी चल पड़ते हैं। एक बार संस्कृत के एक प्रोफेसर मित्र ने, जो संस्कृत के बड़े भक्त भी हैं मेरे उर्दू प्रेम पर एतराज करते हुए मुझसे कहा कि उर्दू भाषा में अश्लीलता अधिक है। मैंने इस पर उन्हें याद दिलाया कि जब मैं कालिज में संस्कृत पढ़ा करता था तो 'कुमार सम्भव' पढ़ते हुए अनेक ऐसे प्रसंग आ जाते थे, जिनको पढ़ कर हमारे सामने अर्थ करना हमारे संस्कृत प्रोफेसर के लिये असम्भव हो जाता था और वह हमसे कह देते थे, नवजवानो आप इसे स्वयं पढ़ लें। संस्कृत के अन्य ग्रन्थों और पुराणों तक को रहने दीजिये, यदि हम सायन, मम्मट और महीधर के भाष्यों को ठीक मान लें, और लाखों सनातन धर्मी हिन्दू उन्हें ठीक मानते हैं, तो स्वयं संहिता के अन्दर भी अनेक प्रसंग ऐसे आ जाते हैं, जिन्हें शायद कोई पिता अपनी पुत्री के सामने अर्थ करके नहीं बता सकता।

अपनी किसी भी भाषा के लिए इस तरह का घमण्ड और किसी भी दूसरी भाषा के लिए इस तरह का तिरस्कार केवल हमारी अज्ञानता और हमारे पक्षपात के सूचक हैं। घर-घर मटियाले चूल्हे वाली कहावत जैसे हमारे घरों के बारे में सही है, वैसे ही भाषाओं के बारे में है और लगभग हर घर में आपको सुन्दर कमरे भी मिलेंगे।

दूसरी बात अपनी और पराई भाषा की है। यह भी एक कुदरती बात है कि हर आदमी को दूसरी सब भाषाओं के मुकाबले में अपनी मातृभाषा यानी वह बोली, जो उसने शुरू उमर से अपनी माँ से सीखी है, अधिक प्यारी लगती है। यह केवल एक भावुकता की ही बात नहीं है।

मुकामी भाषा का महत्त्व

दुनिया के सब विचारवान लोग इस बात को स्वीकार करते हैं कि किसी भी बच्चे की तालीम जितनी अच्छी और जल्दी उसकी मातृभाषा में हो सकती है, उतनी किसी दूसरी भाषा में नहीं हो सकती।

यह युग जनता का युग है, जिसे जनतंत्र का युग या जमहूरियत का जमाना कह सकते हैं। आज हर आदमी को इस बात का हक है– चाहे वह पढ़ा हो या अनपढ़ कि वह शासन के सब मामलों को समझे, उन पर अपनी राय कायम करे और अपनी राय का इजहार करे। हर आदमी को हक है कि वह देश की कचहरियों और न्यायालयों की कार्रवाइयों को समझ सके; यह तभी हो सकता है, जब हर प्रदेश के अन्दर जहाँ तक सम्भव हो सके तालीम का काम, शासन का काम और कचहरियों काम, सब वहाँ की मुकामी भाषा में हो।

इस उसूल को आज सारी दुनिया के देशों ने मान रखा है। आजाद भारत की सरकार और हमारा विधान भी इसे स्वीकार कर चुके हैं।

इसका यह मतलब नहीं कि किसी प्रदेश या सूबे के लोग अपनी मुकामी भाषा के अलावा कोई दूसरी भाषा न सीखें, या दूसरी भाषाओं के साहित्यिक खजानों और उन्हें सीखने के सामाजिक, वैज्ञानिक या राजनैतिक फायदों से अपने आपको दूर रखें।

केवल एक हिन्दी को ही राष्ट्रीय भाषा मानने का मुख्य कारण यह है कि देश की मुकम्मिल आबादी का सबसे बड़ा भाग हिंदी बोलता है और इसके बोलने और समझने वाले देश के हर हिस्से में बहुतायत से मिल जाते हैं। हिन्दी राष्ट्र-भाषा बन जाने से अन्य भाषाओं की श्री-वृद्धि न होगी, ऐसा समझना भूल और पागलपन है। अन्य प्रान्तों को एकता की कड़ी में बाँधने में यह हिंदी सीमेण्ट का काम करेगी यह निश्चित है।

मलयपुर का सत्याग्रह

मलयपुर (मुंगेर) से श्री रमावल्लभजी सूचित करते हैं : "२० जुलाई से नशाबंदी आन्दोलन की सफलता के लिये एक उपवास-यज्ञ ५१ दिनों के लिये होने वाला था। परन्तु मित्रों के आग्रह से उसकी तिथि आगे बढ़ाने के लिये सोचा जा रहा है। तिथि निश्चित होने पर 'भूदान-यज्ञ' की मार्फत आपको सूचना दी जायगी। यह किसी के विरोध में भूख-हड़ताल नहीं है। देश से नशा दूर हो और सबका ध्यान इस बुराई की तरफ खिंचे, इसके लिये यह एक तपयज्ञ है। इस यज्ञ के हरएक व्रती को केवल पाँच दिनों का उपवास प्रार्थनापूर्वक करना है। इस यज्ञ में शरीक होना चाहने वाले भाई हमसे संपर्क करने की कृपा करें।"

शराबबंदी के लिए

हम क्या चाहते हैं और क्या करना चाहिए ?

रमावल्लभ चतुर्वेदी

इस वर्ष की ३० वीं जनवरी से हम अपने गाँव की कलाली पर 'पिकेटिंग' कर रहे हैं। पिकेटिंग यानी धरना या विनोबा के शब्दों में निरोधन करना। कलाली से थोड़ा हट कर एक सुभीते की जगह पर खड़े होकर कलाली में शराब या गाजा पीने जाने वालों से हाथ जोड़ कर विनय करते हैं कि भगवान का नाम लेकर नशा पीना छोड़ दो। इससे धन, धर्म, इज्जत, बाल-बच्चे, देश, समाज सब चौपट होते हैं। इसलिए सबकी भलाई के लिये नशा पीना छोड़ो। बहुत से शर्मदार लोग हमारी विनय सुनते ही लौट जाते हैं। कुछ थोड़ी-सी बात कर लौटते हैं। पर कुछ ऐसे भी होते हैं, जो किसी की परवाह किये बिना पीते ही हैं। ऐसे लोगों को हम अनाग्रहपूर्वक सह लेते हैं।

बीच-बीच में हम शराब बेचने वाले कलाल से भी हाथ जोड़ कर निवेदन करते हैं कि यह हराम का पेशा है, इसे छोड़ दो। दुनिया को जहर पिलाना छोड़ दो। यह पेशा देश, समाज और मानव-द्रोही है। हमने कलाल-दरोगा से भी हाथ जोड़ कर निवेदन किया कि शराबखोरी बढ़ाना नैतिक और कानूनी दृष्टि से भी आपका काम नहीं है। आपका काम है इस वस्तु का नाजायज व्यापार रोकना।

सच्ची बात यह है कि हमारी विनय न तो पीने वाले या बेचने वाले सुनते हैं और न कलाली-अफसर ही। सब लिहाज से बहुत से हमारे सामने नहीं पीते, यह दूसरी बात है। वे लोग हमारी बात सुनेंगे ऐसी आशा भी हमें क्यों करनी चाहिए, क्योंकि

जो हमारी सरकार चला रहे हैं, जो समाज के नवनीत माने जाते हैं, जिनके बारे में मान लिया जाता है कि वे समाज के सर्वश्रेष्ठ प्रतिनिधि हैं, जो गांधीजी के साथ उठने-बैठने और उनके वारिस होने का दावा करते हैं, और आज भी उनके पावन नाम की दुहाई देते हैं, वे भी हमारी विनय नहीं सुनते हैं। सुनना तो दूर रहा पत्र का भी उत्तर नहीं देते।

जब तक कलाली कायम रहेगी, तब तक पीने वालों को वह लुभाती ही रहेगी। और तब तक नहीं चाह कर भी पीने वाले पीते ही रहेंगे। पीना उनसे छूट नहीं सकता। दूकान खोल कर पीने वालों को उपदेश देना कि मत पीओ, उस अंग्रेजी कहावत को चरितार्थ करना है, जिसका अर्थ है "घोड़े के आगे गाड़ी रखना।" इसलिए गांधीजी ने २५-९-३७ के 'हरिजन' में एकदम सही लिखा था कि

"जब तक राज्य शराबी को शराब पीने की इजाजत ही नहीं, बल्कि सुविधा भी देता रहेगा, तब तक सुधारकों को सफलता मिलना लगभग असंभव है।"

इसलिए अगर देश से शराबखोरी मिटानी हो तो हमें पहला काम कानून से नशाबंदी करनी ही होगी। यही गांधीजी की भी राय है।

बहुत-से लोग हमसे शिकायत करते हैं कि कलाली पर धरना देकर हम सरकार को नीचा दिखाना चाहते हैं। हम इस बात से पूरी तरह इन्कार करते हैं। गांधीजी का काम करने वाला किसी को नीचा दिखाने का काम कर ही नहीं सकता। गांधी-विचार का मानने वाला अपने शत्रु को भी (यदि कोई तथाकथित शत्रु हो) नीचा दिखाना नहीं चाहता। वह अपने उस प्रतिपक्षी का भी सम्मान चाहता है।

हमने बिहार के मुख्य मंत्री को एक पत्र में लिखा भी था कि नशाबंदी करने में मान (प्रेस्टिज) बाधक न हो, क्योंकि हम मानते हैं कि नशाबंदी करने से ही सरकार की प्रतिष्ठा बढ़ेगी। "कलाली की नापाक आमदनी" से खजाना भरने वाली सरकार का सिर दिन-दिन नीचे गिरता है। हम चाहते हैं कि सरकार का सिर ऊँचा हो, उसकी प्रतिष्ठा बढ़े। इसीलिये गलत में पड़ी हुई सरकार को मित्र के नाते जगा रहे हैं कि वह पूरी नशाबन्दी कर डाले।

स्वराज्य होने के दो वर्ष बाद तक भारत में अंग्रेजी राजा का राज था। हमारे मंत्री आदि वगैरह उसी राजा की शपथ लेकर राजकाज चलाते थे, पर १९५० की २६ वीं जनवरी से हम सर्वतंत्र स्वतंत्र हैं। अब हम किसी राजा के आधीन नहीं रहे। हमारा एक संविधान है। हम उसी के अधीन हैं। राष्ट्रपति, मंत्री और सभी विधायक उसी संविधान की वफादारी की शपथ लेते हैं। पहले कहा जाता था कि राजा की इच्छा ही कानून है। पर अब कानून ही हमारा राजराजेश्वर है।

हमारे संविधान के निर्देशात्मक सिद्धांत की ४७ वीं धारा में लिखा है कि "The State shall endeavour to bring about prohibition of the consumption except for medicinal purposes of intoxicating drinks and drugs which are injurious to health."—अर्थात् "स्वास्थ्य के लिये हानिप्रद नशीले पेय और बूटियों का दवा के अतिरिक्त अन्य उपयोग राज्य रोकेगा।"

हम चाहते हैं कि हमारे देश की सरकारें संविधान की इस पवित्र इच्छा का सम्मान करें और पूरी नशाबंदी अपने प्रदेश में कर डालें। हम यह भी मानते हैं कि जो सरकारें संविधान की इस धारा के अनुकूल नहीं कर रही हैं, वे संविधान का अपमान और अवज्ञा कर रही हैं। हम चाहते हैं कि सरकारें संविधान के अनुकूल चलें।

भारत की केंद्रीय और बिहार सरकार ने भी अपनी-अपनी एक नशाबन्दी कमेटी बना ली है। इन कमेटियों का निर्माण कर सरकारों ने नशाबन्दी को अपनी घोषित नीति तो ठहरा दिया है पर तुरन्त है, वह चल रही है अनीति की राह पर ही। हम चाहते हैं कि सरकारें अपनी घोषित नीति के अनुकूल चलें और पूरी नशाबन्दी के लिए सद्प्रयास करें। इसलिए हम चाहते हैं कि बिहार सरकार 'माउन्टबेटन पद्धति' से काम करे।

लार्ड माउन्टबेटन ने घोषित किया किया कि अंग्रेज १९४७ की १५ वीं अगस्त को भारत छोड़ देंगे। उसी तारीख को अंग्रेजी राज के रूप में उन्होंने भारत छोड़ भी दिया। घोषणा के दिन से पंद्रह अगस्त के बीच के लिए उन्होंने एक कार्यक्रम सत्ता-हस्तांतरण का काम पूरा करने के लिए बना लिया था। हम चाहते हैं, बिहार सरकार नशाबंदी के लिए एक पंद्रह अगस्त-सी तारीख घोषित कर दें और मध्यवर्ती काल के लिए कार्यक्रम भी बना लें कि इस-इस अवधि में इतनी-इतनी नशे की दूकानें टूटेंगी। नई दूकानें खुलने का तो सवाल भी नहीं होगा। हम सरकार को परेशान नहीं करना चाहते। उसके लिए असुविधा भी पैदा करना नहीं चाहते। इसलिए हम तुरत की तारीख तय करने पर जोर नहीं देते हैं। सरकार को जितनी चाहे उतनी और मुनासिब मुद्दत देने को हम तैयार हैं। हम इतना ही चाहते हैं कि पूरी नशाबंदी की अंतिम तारीख और अंतरिम काल के कार्यक्रम की घोषणा वह तुरत कर दे। और जो मल्य काम वह करने जा रही है, उसके निश्चय की सूचना के तौर पर मलेपुर की कलाली तुरत तोड़ दे।

हमें आशा है, सभी सुहृदय सज्जन और सरकार भी हमारी माँग का औचित्य स्वीकार करेगी।

पंजाब प्रान्त के खादी के कार्य पर एक दृष्टि

सतीशचन्द्र दुबे

[अ० भा० सर्व सेवा संघ की खादी-ग्रामोद्योग-ग्राम-स्वराज्य समिति के कार्यकर्ता श्री सतीशचन्द्र दुबे ने अभी हाल में पंजाब प्रदेश का दौरा किया है। वहाँ जो कुछ उन्होंने देखा-समझा है, उसके आधार पर अपने विचार यहाँ प्रकट किये हैं, जो न केवल पंजाब के लिए, अपितु अन्य प्रदेशों के लिए भी लाभदायक साबित हो सकते हैं। —सं०]

संगठित रूप से खादी का कार्य पंजाब प्रदेश में सन् १९२१ में कांग्रेस खादी-बोर्ड द्वारा आरम्भ हुआ और १९२५ में जब अखिल भारत चरखा-संघ की स्थापना हुई, तो आदमपुर में, जहाँ काम पहले ही से चालू था, संघ की प्रान्तीय शाखा खोली गयी और अखिल भारत चरखा-संघ की इस प्रान्तीय शाखा द्वारा ही प्रान्त में १९५१ तक खादी का कार्य संचालित होता रहा। इसी बीच में १९४७ में पंजाब का विभाजन हुआ और पाकिस्तान से आने वाले शरणार्थियों को काम देने के लिये सरकार ने खादी का काम अपने हाथ में लिया, जो काम अब 'पंजाब स्पिनिंग एंड वीविंग सेन्टर' के रूप में पंजाब स्टेट बोर्ड की देखरेख में चल रहा है।

सन् १९५१ में चरखा संघ के सर्व सेवा संघ में विलीन हो जाने पर एक नई संस्था को संगठित किया गया; जिसने पंजाब में खादी के काम को चलाने की जिम्मेदारी ली। इसका नाम 'पंजाब खादी ग्रामोद्योग संघ' रखा गया और इसका रजिस्ट्रेशन १९५९ में हुआ। इस संस्था द्वारा इन जिलों में काम हो रहा है : जलंधर, लुधियाना, होशियारपुर, गुरदासपुर, कांगड़ा, करनाल, अंबाला, हिसार और अमृतसर।

विभाजन के बाद पंजाब में सरकार के अतिरिक्त सन् १९४८ से कांग्रेस के द्वारा भी शरणार्थियों की सहायतार्थ खादी के काम को अपनाया गया। अन्त में सन् १९५५ में इस कार्य का रूप बदला और 'खादी आश्रम' की स्थापना हुई, जिसका प्रधान कार्यालय अब पानीपत में है। इस संस्था का काम अंबाला डिविजन और कुछ जलंधर डिविजन में चल रहा है तथा हिमाचल प्रदेश में भी काम चालू किया गया है। अंबर का अधिक कार्य अम्बाला क्षेत्र में है।

सन् १९४९ में राजपुरा शरणार्थी केन्द्र में भी खादी का काम कस्तूरबा सेवा-मंदिर द्वारा प्रारम्भ हुआ और १९५२-५३ में पंजाब सरकार से और १९५३-५४ में पेप्सू सरकार से संस्था ने रजिस्ट्रेशन प्राप्त कर लिया। पटियाला, संगरूर, भटिंडा, कपूरथला और महेन्द्रगढ़ जिलों में इस संस्था द्वारा काम चल रहा है। खादी-ग्रामोद्योग आयोग की ओर से अम्बाला में क्षेत्रीय कार्यालय भी स्थापित है, जो प्रदेश में खादी के कार्य में आर्थिक व तकनीकी सहायता आदि प्रदान करने का कार्य करता है। साथ-साथ स्टेट खादी-बोर्ड विशेष रूप में ग्रामोद्योगों की देखरेख करता है।

इस प्रकार प्रमुख रूप से खादी आश्रम पानीपत; खादी-ग्रामोद्योग संघ, आदमपुर शाखा, पंजाब कन्स्ट्रक्टिव वर्क्स बोर्ड, लुधियाना और कस्तूरबा सेवा-मंडल, राजपुरा पंजाब प्रदेश में खादी-ग्रामोद्योग के उत्पादन कार्य को चला रहे हैं।

पंजाब प्रान्त की यह विशेषता है कि आज भी यहाँ के गाँवों में अधिकांश रूप से पुराने समय के बड़े चरखे घर घर चलाये जा रहे हैं, जिनके द्वारा महिलाएँ देशी रुई तथा पुनगढ़ की कताई करती हैं। इस प्रकार खेस, दरी और मोटे कपड़े की अपनी आवश्यकता लगभग वे स्वयं कात कर पूरी कर लेती हैं। स्वयं कताई करने की इस परंपरा के कारण घरों में एक विशेष वातावरण बना हुआ है, जो पेटी चरखा और अंबर के प्रचार में सहायक सिद्ध हो रहा है। ऐसा प्रतीत हुआ कि यहाँ की शुष्क व गरमी आबहवा के कारण विशेषकर दक्षिणी-पूर्वी भाग में मोटी कताई ही अनुकूल पड़ती है। महीन कताई व बुनाई में धागा बहुत टूटता है, अतः कतिन व बुनकर उस ओर नहीं झुक रहे हैं। मोटी खादी की मांग भी यहाँ बहुत है। खेस व दरी सूती तथा दरियों का उत्पादन तो यहाँ की विशेषता है।

फिर भी अंबर का प्रचार बढ़ रहा है। विशेषकर अब, जब कि उसे मोटी कताई (१०-१२ नंबर) के उपयुक्त बना लेने की अनुमति खादी-कमीशन की ओर से मिल गयी है। इस बदले हुए चरखे के उपयोग से कतवारों की आमदनी तो निश्चित रूप से बढ़ी ही है। बुनकर भी इसके सूत को पसंद करने लगे हैं। अम्बाला क्षेत्र में अंबर सूत के लिये बुनकरों की भी महसूस हो रही थी। परन्तु अब बुनकरों को शिक्षण देकर तैयार किया जा रहा है। अब टेक अप मोशन के करघों पर काम करने का शिक्षण भी (अम्बाला में) दिया जा रहा है साथ-साथ हिन्दी कालेज (हरियाणा) में मोटी कताई का शिविर भी चालू है, जहाँ सुधरे हुए अम्बर पर मोटी कताई का अभ्यास कार्यकर्ताओं को कराया जाता है, जिससे वे अपने अपने क्षेत्रों में अंबर प्रचार अधिक से कर सकेंगे।

प्रत्येक संस्था अपने-अपने क्षेत्र में अधिक सूत-खरीद के केन्द्र खोल करके खादी के उत्पादन में वृद्धि कर रही है। खादी भी उसी क्षेत्र में अधिकतर बिक जाती है अथवा परिवर्तन पर स्वावलम्बन के रूप में खपत अधिकतर हो जाती है। केवल खेस, दरियाँ, दो सूती आदि विशेष उत्पादन के रूप में जो बनती हैं, बाहर भेजी जाती हैं।

खादी के चालू कार्य को ग्राम-स्तर की छोटी-छोटी संस्थाओं के सुपुर्द करने का प्रयास भी चालू है। पंजाब खादी-ग्रामोद्योग संघ ने अपने केन्द्रों को स्थानीय सहकारी संस्थाओं का रूप देना आरंभ कर दिया है तथा कस्तूरबा सेवा मन्दिर में भी इसी प्रकार अपने केन्द्रों को स्वतंत्र संस्था बना देने का प्रयत्न आरम्भ कर दिया है। खादी आश्रम ने अपने सारे कार्य को छः क्षेत्रों में बाँट देने की योजना बनायी है। प्रयोगात्मक रूप से जलंधर क्षेत्र पर प्रयोग किया जा रहा है।

मेरी विनम्र सम्मति में केवल व्यवस्था की उपरोक्त पद्धतियों को अपना लेने मात्र से हम नये मोड़ की पद्धति को अपना रहे हैं, यह मान लेना भूल होगी।

आज भी यदि उपरोक्त क्षेत्र, संस्था अथवा सोसाइटी केवल सूत-खरीदी, खादी-उत्पत्ति और उसकी बिक्री की ओर ध्यान देने को ही महत्ता देगी और पेशेवर बुनकर तथा कतवारों के अतिरिक्त आम ग्रामीणों को भी वस्त्र-स्वावलंबन की ओर मोड़ने का प्रयास यदि नहीं करेंगी तो खादी को हम ग्रामीणों की खादी बनाने में असमर्थ रहेंगे। खादी के नये मोड़ का भी तात्पर्य यही है कि खादी अपने व्यावसायिक रूप को छोड़ कर स्वावलंबन का आधार ग्रहण करे और ग्रामीण उसे जीवन के एक आवश्यक अंग के रूप में ग्रहण करें।

आज कतवार तथा बुनकर दोनों अधिकतर आर्थिक रूप से अपनी आय बढ़ाने के लिए ही खादी को अपना रहे हैं, स्वावलंबन के रूप में नहीं। गाँव के अन्य ग्रामीण यदि अंबर अथवा चरखे को अपनाते हैं, तो अपनी आय बढ़ाने के साधन के रूप में ही अपनाते हैं, तभी महीनों व वर्षों की कताई व बुनाई करने पर भी उनके घरों में मिल के कपड़ों का व्यवहार आज भी मौजूद दिखता है।

खादी के चालू काम को एकांगी रूप से हम नये मोड़ की दिशा में नहीं ले जा सकेंगे। हमें कृषि तथा अन्य सहायक ग्रामोद्योगों को भी साथ-साथ स्वावलम्बन के आधार पर संगठित करना होगा। इसी प्रकार हम ग्रामीणों की आर्थिक समस्या को हल करने में सहायक हो सकेंगे और ग्रामीण अर्थ-व्यवस्था में कृषि-गोपालन खादी तथा अन्य ग्रामोद्योगों को उचित स्थान देकर ही ग्राम और क्षेत्र-स्वावलम्बन के लक्ष्य की ओर बढ़ सकेंगे। स्वभावतः हम इस प्रकार ग्राम इकाई के संगठन के आधार पर ही नये मोड़ और ग्राम-स्वराज्य की कल्पना को हम साकार रूप दे सकेंगे।

प्रसन्नता की बात है कि पंजाब प्रान्त में भी ग्राम इकाइयाँ संगठित करने के कार्य को महत्ता दी जा रही है तथा प्रत्येक संस्था अपने-अपने क्षेत्र में इस ओर प्रयत्नशील है। कुछ कठिनाइयाँ स्वाभाविक रूप से इस कार्य में आ रही हैं, परन्तु यदि हम दृढ़ता से विचारपूर्वक स्वावलंबन तथा परस्परावलंबन और सहकार की पद्धति को हृदयंगम कर लेते हैं तो कोई कारण नहीं कि हम मिलजुल कर एक-दूसरे के सहयोग से उन कठिनाइयों का हल न निकाल सकें। अनुभवी तथा योग्य कार्यकर्ताओं की कमी अधिकतर महसूस की जाती है। परन्तु अनुभव आ रहा है कि उत्साही निष्ठावान युवक कार्यकर्ता, जो बुजुर्गों की देखरेख में काम कर रहे हैं, ग्राम-इकाइयों को संगठित करने में सफलतापूर्वक लगे हुए हैं तथा उनमें आत्म-विश्वास और उत्तरदायित्व की भावना बढ़ रही है। अतः हमें ऐसे युवक कार्यकर्ताओं का पूरा उपयोग करने में संकोच नहीं करना चाहिए।

एक प्रश्न की ओर हमें अवश्य गम्भीरता से विचार करने की आवश्यकता प्रतीत होती है। वह है, कत्तिनों तथा बुनकरों की मजदूरी की दरों को बढ़ाने की। जब तक गाँव की आर्थिक व्यवस्था पूरी तौर से हम पुनर्गठित नहीं कर लेते, तब तक इस वर्ग से जो हम काम लेते हैं, तो उसकी मजदूरी उन्हें पर्याप्त मिल जाती है या नहीं, यह भली भाँति सोचने की बात है। आज उनमें अपनी मजदूरी की दरों के प्रति सन्तोष नहीं है। हमें केवल उन्हें जीवित ही नहीं रखना है, वरन् उनके आज के निम्नतम जीवन-स्तर को ऊँचा उठाना भी है। इस प्रश्न को ग्राम-इकाई अथवा क्षेत्र-इकाई के आधार पर सोचा जा सकता है।

अंत में इतना कहना और आवश्यक प्रतीत होता है कि संस्थाओं के कार्यकर्ताओं के मानस में नये मोड़ और ग्राम इकाई के संबंध में स्पष्ट चित्र होने की आवश्यकता को अधिक महत्त्व देना चाहिए, तभी उनमें इस कार्य के प्रति निष्ठा उत्पन्न हो सकेगी

नियोजन और बढ़ती हुई गरीबी

सुरेश राम

थोड़े दिन हुए लंका के एक नवयुवक सामाजिक कार्यकर्ता से मुलाकात हुई। उन्होंने कहा—"हम काशी गये थे, लेकिन वहाँ लोगों का दु:ख व गरीबी देख कर हमसे दिन भर खाना नहीं खाया गया। फिर हम आपके इलाहाबाद आये। वहाँ भी वही के जैसा हाल है। यहाँ हमने खाना तो खाया, क्योंकि बिना खाये कितने दिन रह सकेंगे? मगर हमारी समझ में नहीं आता है कि आपके यहाँ नियोजन के बावजूद इतना दारिद्र्य क्यों चल रहा है!"

इतना कह कर उन्होंने अपनी आँखें मूँद लीं। और फिर बोले—"आपके भारत में प्रजातंत्र राज है, लोकशाही है। लेकिन अगर यह गरीबी बनी रहेगी, तो क्या यह लोकशाही टिकेगी?"

यह सुन कर हमने इतना ही कहा—"आप जो कह रहे हैं, यह बिल्कुल सच है और यह हमारे सामने एक बहुत बड़ा सवाल है। बड़े भारी खतरे की स्थिति है।"

कोई इमारत देखने में कितनी ही शानदार या खूबसूरत क्यों न हो, उसकी मजबूती उसकी नींव की गहराई और पायेदारी पर निर्भर करती है। अगर यह नींव कमजोर और कच्ची है तो कुछ ही अरसे के अन्दर देखते-देखते सारा किला ढह जायेगा। इसी तरह

किसी देश की उन्नति और विकास का अदाज वहाँ की राजधानी, बड़े-बड़े नगरों, बाजारों, क्लबों, होटलों और नाचघरों की चमक-दमक से नहीं हो सकता; बल्कि वहाँ के दूर देहात में रहने वाले मजदूरी-पेशा लोगों के रहन-सहन और रंग-ढंग से उसकी असलियत का पता चलेगा।

जिन मजदूरी करने वाले लाखों-करोड़ों भाई-बहनों की मेहनत से हमें और सारे देश को खाने को अनाज नसीब होता है और कपड़ा व घर मिलता है, वे ही हमारे देश के आधार हैं। इस स्वतंत्र भारत के भव्य भवन की नींव है। लेकिन बड़े आश्चर्य और दुःख की बात है कि अपने इन भाइयों की दशा संभलने के बजाय और बिगड़ती जा रही है। हाल ही में प्रकाशित खेतिहर मजदूरी की जाँच-समिति की रिपोर्ट को देख कर रोंगटे खड़े हो जाते हैं। यह रिपोर्ट बहुत ही महत्त्वपूर्ण और मार्मिक है।

भूमिहीनों की दुर्दशा

उसमें बताया गया है कि देश में कुल आठ करोड़ परिवार हैं, जिनमें डेढ़ करोड़ से कुछ कम तो शहरों में रहते हैं और साढ़े छः करोड़ से कुछ ऊपर देहातों में। इन साढ़े छः करोड़ में डेढ़ करोड़ परिवार ऐसे हैं, जिनके पास बालिश्त भर भी जमीन अपनी नहीं है। उनके मकान भी दूसरे की जमीन पर हैं। ये एकदम भूमिहीन और निराधार हैं। देश की कुल आबादी की दृष्टि से विचार करें तो रुपये में लगभग तीन आने इनकी तादाद है।

जाहिर है कि इन भूमिहीन भाई-बहनों के पसीने के बल पर हम सबको रोटी मिल रही है। मगर इनकी हालत क्या है? उस सरकारी रिपोर्ट का कहना है कि जहाँ १९५०-५१ में इनकी औसत सालाना आमदनी रु० १०४.०० थी, वहाँ १९५६-५७ में केवल रु. ९९.४० रह गयी यानी २७ नये पैसे रोज, पाँच आने से भी कम! देखने की बात यह है कि कुल देश की प्रति व्यक्ति औसत आमदनी रु० २९१.५० है, मगर इनकी है रु० ९९.४० यानी लगभग एक तिहाई मात्र!

जरा और गहरे उतरें तो पता चलता है कि हालत कहीं ज्यादा भयानक है। 'राष्ट्रीय नमूना सर्वे' ने कुछ दिन पहले एक जाँच की थी। परिणामस्वरूप उसने जो आँकड़े प्रकाशित किये हैं, वे अत्यन्त विस्मयजनक हैं। उनके अनुसार

देश के दो करोड़ लोगों की औसत आमदनी रु. ३८ है।

चार करोड़ लोगों की औसत आमदनी लगभग रु. ७८ है।

छः करोड़ लोगों की औसत आमदनी लगभग रु. १०१ है।

आठ करोड़ लोगों की औसत आमदनी लगभग रु. ११८ है।

दस करोड़ लोगों की औसत आमदनी लगभग रु. १२५ है।

और देश के बीस करोड़ लोगों की औसत आमदनी लगभग रु. १७५ है।

यह है सच्चा चित्र। भूमिहीन-भूमिवान शहर-देहात सारी आबादी को लेते हैं तो अपने बीस करोड़ भाई-बहन ऐसे हैं, जिनको आठ आने रोज भी नसीब नहीं होते। ऊपर से यह दिन दूनी रात चौगुनी महँगाई! फिर कहाँ की लोकशाही और कहाँ का समाजवाद!

बढ़ती हुई गरीबी

देश के नियोजन को दस बरस हो गये। इस दौरान में देश की कुल आमदनी बढ़ी है। तरह-तरह के कल-कारखाने लगे और फल फूल रहे हैं। लेकिन हमारे खेतिहर मजदूर भाइयों की हालत काबू के बाहर होती जा रही दिखती है। उस रिपोर्ट में १९५०-५१ में २७५ दिन काम मिल जाता था, उसके मुकाबले में १९५६-५७ में केवल २३७ दिन काम मिला! यानी बेकारी ९० दिन से बढ़कर १२८ दिन हो गयी!

दूसरी चीज यह हुई कि मर्द मजदूरों की मजदूरी का निशान अगर १९५०-५१ में १०० था, तो १९५६-५७ में ८८ रह गया। दो आना रुपया गिरावट आ गयी। इस तरह मजदूरी कम हो रही है। विस्तार में मजदूरी का ब्योरा यह है:—

औसत मजदूरी	१९५०-५१ में	१९५६-५७ में
मर्द मजदूर	१०९ न. पै.	९६ न. पै.
औरत मजदूरिन	६८ ,,	५९ ,,
लड़का मजदूर	७० ,,	५३ ,,

यह है नियोजन का कमाल!

कर्ज भी बढ़ रहा है!

जब चीजों के भाव बढ़ेंगे और काम करने वालों की मजदूरी गिरेगी तो उन पर कर्ज का बढ़ना स्वाभाविक ही है। यही चीज इस रिपोर्ट में भी बतायी गयी है। उसका कहना है कि १९५०-५१ में जहाँ ४४.५० प्रतिशत घर कर्जदार थे, वहाँ १९५६-५७ में ६३.९० प्रतिशत घर कर्जदार हो गये! और औसत कर्ज रुपये ४७ से बढ़ कर रु. ८८ हो गया!! और कुल कर्ज अस्सी करोड़ रुपये से बढ़कर लगभग डेढ़ सौ करोड़ रुपये हो गया!!!

जिस देश में साठ प्रतिशत से अधिक घर कर्ज से लदे हों, वह कभी सीधी कमर से खड़ा हो सकता है? हमारा देश आजाद जरूर है, लेकिन ये आँकड़े बोल रहे हैं कि *गुलाम घरों का आजाद देश है।*

सबसे ज्यादा दिल दहलाने वाली बात इस रिपोर्ट में यह है कि पन्द्रह साल से कम उमर में मजदूरी करने वाले लड़कों की तादाद जहाँ १९५०-५१ में ४.९ प्रतिशत थी, १९५६-५७ में ७.७ प्रतिशत हो गयी। डेढ़ गुनी ज्यादा। ऐसी हालत में यह कैसे किसी स्कूल में जा सकेंगे, कैसे कोई तालीम लेंगे? इनके विकास की बात करना हमारी गरीबी का मजाक उड़ाना *नहीं तो क्या है?*

क्या जवाब नहीं है हमारे नियोजनकर्ताओं के पास इस स्थिति का? लंका के उस मित्र का सवाल रह-रह कर हमें याद आता है कि क्या इस जबरदस्त गरीबी के आगे कोई लोकशाही अधिक समय तक टिक सकेगी? जिस इमारत की बुनियादें खोखली होती जा रही हों, उसके ऊपर की मंजिल को कितना ही क्यों न सजा लें, वह कितने दिन ठहर सकेगी?

सावधान!

तीसरी योजना का मसविदा तैयार हो चुका है। उसको अब आखिरी शक्ल दी जा रही है, लेकिन ऊपर बताई असलियतों को अगर नजरअन्दाज किया जाय तो ठीक नहीं होगा। जिनके हाथों में हुकूमत की बागडोर है, उन्हें जरा सावधान हो जाना चाहिए।

देश के मुट्ठी भर लोगों के हित में करोड़ों की जिन्दगी के साथ यह खिलवाड़ अब नहीं हो सकता। क्या यही समाजवाद है? यह तो विशिष्ट जनों द्वारा आम जनता के शोषण का बाकायदा आयोजन है। नहीं, नहीं, यह समाजवाद हरगिज नहीं है। यह तो 'विशिष्टवाद' चल रहा है। समाजवाद अगर चाहते हैं तो उसका नियोजन ऊपर से नहीं, नीचे से, एकदम नीचे से करना होगा।

दूसरों को, अपने ही भाई-बहनों को सता-सता कर हम कब तक सलामत रह सकेंगे? अभी ज्यादा देर नहीं हुई है। हम जग जायें तो अच्छा है और नियोजन की इस दिशा को जड़-मूल से ही बदल दें।

और वे खादी ग्रामोद्योग के कार्य को वांछित दिशा में मोड़ने व संगठित करने में सफल हो सकेंगे। जिला, क्षेत्रीय तथा प्रान्तीय स्तर पर विचार-गोष्ठियाँ, शिविर आदि की व्यवस्था इस संबंध में लगातार होती रहे, यह अति वांछनीय प्रतीत होता है।

पंजाब प्रान्त में साधनों, कच्चे माल तथा परिश्रमी व उद्यमी व्यक्तियों की कोई कमी महसूस नहीं होती है।

खादी-ग्रामोद्योग को नव-समाज-रचना के साधन के रूप में संगठित व व्यवस्थित किया जाय, ऐसी दृष्टि को अपनाये जाने की ओर अधिक आवश्यकता प्रतीत होती है। खादी के कार्य का मूल्यांकन आज उत्पादन और बिक्री के बढ़ते हुए आँकड़ों मात्र से सन्तोष करके नहीं करना होगा, वरन् हमें देखना होगा कि खादी कहाँ तक ग्रामीणों की खादी बन गयी है, कहाँ तक खादी सादगी, समता और सहयोग की प्रतीक बनी है और कहाँ तक वह हमारे जीवन में अहिंसा, प्रेम और न्याय की भावना को जागृत कर सकी है। इस दृष्टिकोण को सामने रख कर ही हम खादी का सही मूल्यांकन कर सकेंगे। ●

विदेशों में अहिंसा और शांति के प्रयोग

स्वतंत्रता-उपासक यात्रियों की कहानी

शैलेश कुमार बन्द्योपाध्याय

अमेरिका के दक्षिणी राज्यों में जातीय भेद-भावों के विरुद्ध एक स्पष्ट वातावरण तैयार हो चुका है। १९५५-५६ में श्री मार्टिन ल्यूथर किंग जूनियर के नेतृत्व में मन्टगुमरी (अलबामा) के नीग्रो निवासियों के अहिंसक प्रतिरोध ने दुनिया का ध्यान आकर्षित कर लिया। अन्ततोगत्वा नीग्रो जनता द्वारा बस विरोधी आन्दोलन सफल रहा। 'बस बायकाट' आन्दोलन की सफलता के बाद नीग्रो विद्यार्थियों द्वारा उन जनता जलपानगृहों और 'लंच काउंटर्स' के समक्ष बैठ कर सत्याग्रह किया गया, जो मात्र गोरों के लिए ही सुरक्षित थे। वे विद्यार्थी तब तक वहाँ से नहीं हटे, जब तक कि उन्हें भी गोरों के साथ उन जलपानगृहों में प्रवेश नहीं दिया गया। धीरे-धीरे, बहुत-से जलपानगृहों के अधिकारी इस नैतिक दबाव के समक्ष झुके। "फ्रीडम राइडर्स" (स्वतन्त्रता के उपासक यात्री) का यह आन्दोलन इस दिशा में बढ़ता हुआ कदम है।

मई की चौथी तारीख थी। "फ्रीडम राइडर्स" की अहिंसा से प्रभावित 'जाति भेद-भाव विरोधी' एक टुकड़ी ने वाशिंगटन से अपनी यात्रा प्रारम्भ की। यह टुकड़ी 'जातीय समानता की कांग्रेस' (कांग्रेस आफ रेशियल इक्वैलिटी) द्वारा संगठित थी। यह कांग्रेस एक जातीय विरोधी संगठन है। इसका प्रधान केन्द्र न्यूयार्क में है। यद्यपि "फ्रीडम राइडर्स" में अधिकतर नीग्रो ही थे, लेकिन इनमें कुछ गोरे भी थे, जो इस बात पर दृढ़ थे कि अमेरिका के संयुक्त राज्यों के संविधान में जो मौलिक मानवीय अधिकारों की स्वीकृति प्रदान की गयी है, उनसे ये नीग्रो साथी वंचित न रहें। वे चाहते थे कि संयुक्त राज्य अमेरिका के अन्य किसी भी नागरिक की भाँति जनता की बसों में चढ़ने का अधिकार नीग्रो लोगों को भी अवश्य मिले। यह एक ऐसा अधिकार है, जिसे राष्ट्रीय कानून की गारंटी मिली हुई है, लेकिन इसे अमल में लाने के बजाय तोड़ा ही अधिक गया।

"फ्रीडम राइडर्स" की पहुँच का लक्ष्य सीमान्त दक्षिण का एक नगर न्यूआरलीन्स था। वहाँ पहुँचने के लिए सड़क ऐसे क्षेत्र से होकर जाती है, जहाँ के गोरे लोगों में जाति भेद एवं घृणा जड़ जमाये हुए थी और वे इस मामले में किसी भी दशा में झुकना नहीं चाहते थे। सचमुच यह एक साहसपूर्ण यात्रा थी। डैनविले शहर में ७ मई को गोरे लोगों के लिए सुरक्षित एक जलपानगृह में सामूहिक भोजन करने में 'राइडर्स' ने सफलता प्राप्त की; यद्यपि शुरुआत में जलपानगृह के मालिक ने प्रतिरोध किया था। दूसरे दिन चारलोट में एक 'राइडर' को महज इस लिए बंदी बनाया गया कि उसने गोरे लोगों के लिए सुरक्षित बूट पालिश स्टैंड को छोड़ने से इन्कार किया। दो यात्रियों को गोरे लोगों ने इसलिए पीटा कि उन्होंने 'राक हिल' में गोरे लोगों के लिए सुरक्षित प्रतीक्षालय को छोड़ने से इन्कार किया। इसी प्रकार १० मई को विन्सबारो में दो यात्रियों को गोरों के लिए सुरक्षित प्रतीक्षालय में गिरफ्तार किया गया। किंतु वास्तविक परीक्षा तब प्रारंभ हुई, जब यात्रियों की यह टुकड़ी अलबामा में प्रविष्ट हुई। एनीस्टन में 'फ्रीडम राइडर्स' को ले जाने वाली एक बस को उत्तेजित भीड़ द्वारा १४ मई को आग लगा दी गयी। बरमिंघम में गोरे लोगों की एक उत्तेजक भीड़ ने 'राइडर्स' पर आक्रमण कर दिया, जिसके फलस्वरूप उनमें से कुछ 'राइडर्स' गंभीर रूप से घायल हुए। इस संबंध में सबसे खतरनाक बात अलबामा की राजधानी मटगुमरी में हुई।

२० मई को मटगुमरी में पहुँचते ही गोरे लोगों की एक क्रुद्ध भीड़ ने 'फ्रीडम राइडर्स' पर हमला कर दिया। वैसे ही कुछ गोरी महिलाओं ने हल्ला मचाते हुए कहा, "उन नीग्रो से निपट लो," वैसे ही गोरे लोगों ने भूखे भेड़ियों के समान करीब दो दर्जन 'फ्रीडम राइडर्स' पर आक्रमण किया। दो नीग्रो विद्यार्थी और प्रदर्शनकारियों में एक गोरे विद्यार्थी को गंभीर चोट पहुँची। रक्तरंजित नीग्रो हास्पिटल जाना चाहते थे, लेकिन उनको कोई टैक्सी नहीं मिली। बस-स्टैण्ड पर पुलिस की कोई व्यवस्था नहीं थी, यद्यपि 'फ्रीडम राइडर्स' के आगमन का प्रचार काफी दिन पहले ही हो चुका था। इस प्रकार जान-बूझ कर स्थानीय सरकार ने कानून और सुरक्षा की कोई व्यवस्था नहीं की। जातीय घृणा यहाँ तक पहुँच गयी कि एक अम्बुलेन्स पहुँचने पर भी गोरे सेवकों ने घायल नीग्रो को उठाने से इन्कार किया और बिना घायलों को लिये अम्बुलेन्स गाड़ी हास्पिटल चल दी। उस अंधकारपूर्ण घटना में कुछ गोरे लोगों की बहादुरी से प्रकाश की किरणें मिलती हैं, जिन्होंने 'फ्रीडम राइडर्स' को बचाने में अपने जान की बाजी लगा दी। इन लोगों में अमेरिकी राष्ट्रपति केनेडी के प्रतिनिधि जॉन सिजेनथेलर भी थे, जिन्हें एक लड़की की रक्षा करते समय घायल होना पड़ा। इस घटना के बाद जहाँ तहाँ जातीय दंगे होने लगे। यह समय अमेरिका की संघीय सरकार और राष्ट्रपति केनेडी के लिए एक परीक्षण का समय था, क्योंकि केवल अलबामा के गवर्नर और अन्य अधिकारी ही 'फ्रीडम राइडर्स' के विरोधी नहीं थे, बल्कि उस राज्य की संपूर्ण जनता उनके इस आंदोलन के खिलाफ थी। इतना ही नहीं, अन्य दक्षिणी राज्यों ने अलबामा के अधिकारियों के इस व्यवहार का प्रायः खुल कर समर्थन किया। मिसीसिपी के गवर्नर ने अपने पड़ोसी अलबामा राज्य के निवासियों को निम्न शब्दों में आश्वासन दिया: "हम उन साथी राज्यों की सहायता करने के लिए तैयार हैं, जो संघीय आक्रमण को स्वीकार नहीं करते।" लेकिन राष्ट्रपति केनेडी ने इस परिस्थिति का मुकाबला दूरदृष्टि और साहस से किया। मटगुमरी की स्थिति को देख कर ६३० केन्द्रीय पुलिस अधिकारियों (मार्शल्स) को अलबामा भेजा।

२० मई को दो घंटे के संघर्ष के बावजूद भी मामला शांत नहीं हो सका और वातावरण में तनाव बना रहा। 'मार्शल लॉ' जारी होने के बावजूद भी क्रुद्ध गोरों की एक भीड़ ने संघीय पुलिस-दस्तों के घेरे को तोड़ते हुए फर्स्ट बैप्टिस्ट चर्च के भीतर हो रही नीग्रो की 'रैली' पर आक्रमण किया। जातिभेदवादियों के आक्रमण से त्रस्त होते हुए भी नीग्रो लोग शांतिपूर्वक अपनी सभा करते रहे और बाहर से फेंके जाने वाले पत्थरों की मार और दी जाने वाली गंदी गालियों को धैर्यपूर्वक सहन करते रहे। इस सभा में श्री मार्टिन लूथर किंग संबोधित कर रहे थे। उनके भाषण के बीच बार-बार हर्षध्वनि प्रकट की जा रही थी। चर्च के अन्दर उपस्थित जनसमुदाय के सभी, पंद्रह सौ सदस्य पूरी रात भर चर्च में बंद रहे और दूसरे दिन ही घर जा सके। 'कोर' (कांग्रेस आफ रेशियल इक्वैलिटी) ने अपनी योजना अस्थायी रूप से स्थगित करने का निर्णय किया। जातिभेदवादियों के इस प्रकार का जंगली व्यवहार समानता और न्याय में विश्वास रखने वालों की शक्ति को हतोत्साहित नहीं कर सका। 'फ्रीडम राइडर्स' का एक नया दल, जिसमें २५ नीग्रो और २ गोरे थे, मंटगुमरी से आगे बची हुई अलबामा की कठिन यात्रा के लिए निकल पड़ा। अलबामा के अधिकारियों ने उन दो बसों को संरक्षण दिया, जिसमें 'फ्रीडम राइडर्स' यात्रा कर रहे थे। जब ये बसें मिसीसिपी राज्य में प्रविष्ट हुईं, तो मिसीसिपी की पुलिस ने उन्हें अपने संरक्षण में ले लिया। मिसीसिपी की पुलिस इतनी सावधान थी कि एक स्थान पर ४२ गाड़ियों, ३ मिलीटरी के विमानों और २ हैलिकॉप्टरों को २७ अहिंसक 'फ्रीडम राइडर्स' के संरक्षण के लिए प्रस्तुत किया।

२४ मई को वे जेक्सन पहुँचे। नीग्रो लोगों के लिए निषिद्ध जलपान-गृहों और प्रतीक्षालयों में प्रवेश करने के कारण उन्हें जेल में डाल दिया गया। २६ मई को स्थानीय म्युनिसिपल न्यायाधीश ने उन पर शांति-भंग का अभियोग लगाया और हर-एक को २०० डालर का जुर्माना और ६० दिनों की जेल दी गयी। एक लड़की को छोड़ कर सब लोग जेल में रहे। लड़की को जमानत पर छोड़ दिया गया, क्योंकि उसे कॉलेज में मेट्रिकुलेशन के लिए प्रविष्ट होना था।

लेकिन कुछ सत्यशोधकों के बंदी बनाने से मनुष्य की आत्मा को बंदी नहीं बनाया जा सकता। निर्दय अत्याचार, चाहे वह कितना भी गंभीर क्यों न हो, उन लोगों को कभी भी हतोत्साहित नहीं कर सका, जिन्होंने अपना जीवन किसी विशिष्ट लक्ष्य के लिए अर्पित कर दिया है। यह इतिहास का सबक है। अतः जेक्सन में गिरफ्तारी के बाद बहुत संख्या में 'फ्रीडम राइडर्स' मंटगुमरी और जेक्सन में आ गये। ये द्विजातीय 'राइडर्स' स्वतः अपनी प्रेरणा से आये। यद्यपि बहुत से 'राइडर्स' एल. विसीलियन और ब्यूक के विश्वविद्यालयों से (ये सभी गोरों की संस्थाएँ हैं।) दलों में आ रहे हैं। हालाँकि करीब ६० 'राइडर्स' गिरफ्तार कर लिये गये हैं, फिर भी मई के अंत में जेक्सन में 'राइडर्स' की संख्या निरंतर बढ़ती जा रही है।

नवीनतम रिपोर्ट यह बतलाती है कि अब राज्य-अधिकारियों ने भी ध्यान देना शुरू किया है। 'मार्शल लॉ' मटगुमरी में हटा लिया गया। अभी-अभी एक 'लंच-कार्नर' पर बिना किसी भेदभाव के दोनों जातियों के लोगों को सम्मिलित खाना खिलाया गया। संयुक्त राज्य अमेरिका के अटर्नी जनरल ने भेदभाव और अलगाव में विश्वास करने वालों को कड़ी हिदायतें दी हैं और सरकारी विभागों से कहा है कि वे अपने विभागों में जातिभेद की नीति दूर करें। इसके परिणामस्वरूप मटगुमरी में बस स्टैण्ड पर लगा हुआ भेदभाव संबंधी एक साइन-बोर्ड शांतिपूर्वक हटा लिया गया। अटलांटा में उन चार संगठनों की एक समिति बनायी गयी, जो शांतिपूर्ण प्रतिरोध में विश्वास करती है और इनका इरादा है कि अहिंसक प्रतिरोध का आंदोलन दक्षिण में और तेजी से बढ़ाया जाय। १२ जून को मटगुमरी में एक संघीय जज ने भेद-भाव संबंधी अस्थायी आदेश को जारी रखने से इन्कार किया है, जो अलबामा के बस-स्टेशनों पर जारी किया जाता था।

सभी देशों के स्वतन्त्रता प्रेमी उत्सुकता से मटगुमरी और जेक्सन की प्रगति का अवलोकन कर रहे हैं। (मूल अंग्रेजी से)

प्राप्ति-स्वीकार

आरोग्य का अमूल्य साधन [स्वमूत्र]: लेखक—रावजीभाई मणिभाई पटेल, प्र० भारत सेवक समाज, पानकोर नाका अहमदाबाद—१ पृष्ठसंख्या १०८, मूल्य रु. १-५० न० पै०

राष्ट्रीय समरसता का प्रश्न

शुद्धात्मा का बलिदान ही राष्ट्र को बचा सकता है

राष्ट्रीय समरसता के लिये क्या किया जा सकता है

तिमप्पा नायक

[कर्नाटक के निष्ठावान और पुराने मूक-सेवक श्री तिमप्पा नायक अखिल भारत शान्ति-सेना मण्डल की ओर से असम में शांति-स्थापना के लिए गये थे। कई महीनों तक वे असम के विभिन्न क्षेत्रों में सेवा करते रहे। पिछले महीने ही वे असम से वापस कर्नाटक गये हैं।

राष्ट्रीय समरसता (नेशनल इंटिग्रेशन) आज की एक जीवित समस्या है। हमने श्री तिमप्पाजी से अनुरोध किया था कि वे असम क्षेत्र के अपने ताजा अनुभवों के आधार पर, जहां पिछले साल भाषा के प्रश्न को लेकर दुर्भाग्यपूर्ण घटनाएं हुईं और आज भी तनाव की परिस्थिति मौजूद है, इस विषय पर अपने जो सुझाव हों, वे 'भूदान-यज्ञ' के लिए लिखें। श्री तिमप्पाजी के सुझावों की ओर हम पाठकों का ध्यान आकर्षित करते हैं और आशा करते हैं कि वे भी इस महत्वपूर्ण प्रश्न पर अपने विचार हमें भेजने की कृपा करेंगे। —सं०]

जीवन के हरएक क्षेत्र में, विविधता में एकता का अनुभव करना यही मानव का सर्वोच्च आदर्श है। परमात्मदर्शन का यही अर्थ है। गीता में सात्विक ज्ञानी का लक्षण यही कहा है। अतः 'इंटिग्रेशन' (समरसता) का काम जीवन का एक ध्येय है। यह साधन नहीं है, साध्य है। इस दृष्टि से अगर हम 'इंटिग्रेशन' के लिये कोशिश करें, तो पंथ-पंथ के बीच के झगड़े और अशांति तथा उसी प्रकार प्रांत-प्रांत के बीच के झगड़े, अपने आप शमन हो जायेंगे। ऐसी शांति सच्ची समरसता की बाई-प्रॉडक्ट—उपपत्ति—होगी।

ऐसी समरसता की सिद्धि के लिये नीचे लिखे हुए कार्यक्रम मददगार हो सकते हैं :

(१) विविध धर्मों में गौण बातों में ऊपरी भेद दीखते हैं, तो भी मूलभूत बातों में सब धर्मों में एकता है, यह बात स्पष्ट हो, इस दृष्टि से सुलभ भाषा में पुस्तकें व पुस्तिकाएँ प्रकाशित होनी चाहिए। वैसे ही हरएक धर्म में जो सत्पुरुष (Saints) और आत्मवादी (Mystics) हो गये हैं, उनके भी चरित्र सुलभ भाषा में प्रकाशित होने चाहिये। हरएक धर्म की जो एक विशिष्ट देन—कॉन्ट्रिब्युशन—है, उसका भी स्पष्टीकरण होना चाहिये।

(२) 'पार्लियामेंट ऑफ रिलीजन्स'—सर्व-धर्म सभा की जैसी संस्था भारत में भी होनी चाहिये।

(३) हरएक को, विशेषतः कार्यकर्ताओं को चाहिये कि जीवन में अन्य धर्मी एक-दो व्यक्तियों को अपना साथ जीवन का मित्र बनाने की कोशिश करें। हिन्दू को चाहिए कि एक मुसलमान या ईसाई भाई से खास मित्रता रखे, और इसी प्रकार वे भी करें।

(४) शहरों में तथा देहातों में सर्व-धर्मीय प्रार्थना की एक निश्चित जगह होनी चाहिये, जहां सब धर्मों के लोग साल में एक बार एकत्रित होकर प्रार्थना कर सकें और वहां गुरु नानक, मुहम्मद पैगंबर, ईसा मसीह, भगवान् बुद्ध जैसों की जयंती के दिनों में सब धर्मों के भाई मिल कर प्रार्थना, भजन इत्यादि कर सकें। सब देहातों में शायद यह व्यवस्था न हो सके, लेकिन जहां हो सके, वहां शहरों में और कस्बों में इसका प्रबन्ध करना ठीक होगा।

(५) आंतरभारतीय एकता (इंटीग्रेशन) की दृष्टि से हरएक प्रांत की संस्कृति के बारे में पुस्तकें प्रकाशित होनी चाहिये, जिससे यह बात स्पष्ट हो सके कि हरएक प्रांत में एक ही भारतीय संस्कृति का विविध विकास और स्वरूप हम देख सकते हैं, और जिससे यह महसूस हो कि हरएक प्रांत या भाषा की संस्कृति ने भारतीय संस्कृति को अपनी एक विशिष्ट देन—कॉन्ट्रिब्यूशन—से समृद्ध किया है। वैसे ही हरएक प्रांत में जो महापुरुष हो गये हों, संत, आत्मवादी, संतकवि, कलाकार, वैज्ञानिक ऐसे लोगों के चरित्र भी प्रकाशित होने चाहिये। इससे प्रांत प्रांत में भाषा-भाषाओं में परस्पर आत्मीयता बढ़ेगी। इस पुस्तकमाला का नाम उद्देश्य को स्पष्ट करने की दृष्टि से भारतीय संस्कृति विकास-माला, ऐसा कुछ हो तो ठीक रहेगा।

(६) जैसी Pierre Ceresole की 'सर्विस सिविल इंटरनेशनल' के जैसी ऐच्छिक संस्था है, वैसी ही हमारी एक 'इंटर प्रोविंशियल वॉलंटरी सर्विस'—आन्तर-प्रांतीय सेवा की संस्था हो, जो किसी प्रांत में बाढ़, भूचाल ऐसे प्रसंग हों तब वहाँ जाकर अपनी सेवा दे सके और साथ-साथ आन्तरप्रांतीय सद्भाव की दृष्टि से प्रचार-काम कर सके। आज हमारे सद्भावना मंडल अन्य देशों को भेजे जाते हैं। मुझे लगता है कि हमारे प्रांतों के बीच भी ऐसे 'सद्भावना मंडल' एक प्रांत से दूसरे प्रांत में जायें, राजकीय दृष्टि से नहीं, लेकिन एक सांस्कृतिक दृष्टि से और आध्यात्मिक भूमिका से वहां लोगों के दिल को छुएं और मानुष स्पर्श करने की कोशिश करें।

आज प्रांत-प्रांत में भ्रातृभाव नष्ट हो गया है। इसीसे हरेक प्रांत में भाषाई अल्पसंख्यकों को लगता है कि उनको परदेशी जैसा देखा जाता है और वैसा बर्ताव उनके साथ किया जाता है। खासकर राजकीय मामलों में वस्तुस्थिति बहुत कुछ ऐसी ही है। संविधान में अल्प-संख्यकों को जो हक दिये गये हैं वे भी व्यवहार में बहुत कंजूसी से दिये जाते हैं, या खंडित किये जाते हैं। यदि भ्रातृभाव हो तो भाई को ज्यादा देने में ही आनंद होता।

सीमा-प्रश्न के बारे में भी यही तत्व लागू होता है। यदि भ्रातृभाव हो तो एक प्रांत दूसरे प्रांत को ज्यादा हिस्सा खुशी से देता और प्रांत के अंदर भी भाषिक अल्प-संख्यकों को उदारता से सहूलियतें वगैरह दी जातीं।

(७) शिक्षा-क्रम में भी ऐसा पाठ्यक्रम समाविष्ट होना चाहिये, जिससे प्रांत प्रांत में भ्रातृभाव बढ़े, जैसा कि कर्नाटक के युनिवर्सिटियों में महाराष्ट्रीय संस्कृति का अध्ययन हो, भाषा का अध्ययन हो। वैसे ही महाराष्ट्र युनिवर्सिटी में भी कन्नड़ संस्कृति का अध्ययन हो। बालकों को पड़ोसी प्रांत के संतों का, महापुरुषों का चरित्र सुनाया जाय।

ऊपर का कार्यक्रम तो दीर्घ प्रश्न है। लेकिन आज राष्ट्र की स्थिति बहुत गंभीर है। विग्रह की शक्तियाँ जोर से काम कर रही हैं। आसाम, पंजाब जैसे सीमा प्रदेशों की हालत तो राष्ट्र की सुरक्षा की दृष्टि से भी चिंताजनक मालूम होती है। ऐसी गंभीर परिस्थितियों में शुद्ध आत्मा का बलिदान ही राष्ट्र को बचा सकता है, ऐसी मेरी राय बन रही है। ऐसे बलिदान के लिये अधिकार होना चाहिये, यह बात स्पष्ट है। लेकिन वस्तुनिष्ठ दृष्टि से मुझे जो लगता है, वह लिखा है।

आज की हालत में एक जोरदार नैतिक झटके के बिना राष्ट्र नहीं बच सकेगा। सिर्फ विचार-प्रचार से कुछ नहीं होगा। विचार बुद्धि को अपील कर सकता है। लेकिन हृदय जागृत हुए बिना—मोह से, स्वार्थ से जागृत हुए बिना—सिर्फ बुद्धि काम नहीं कर सकेगी। आज के प्रसंग में शुद्धात्मा के बलिदान के सिवाय राष्ट्र जागृत नहीं होगा। लेकिन ऐसे बलिदान से काम समाप्त नहीं होगा। उसके बाद ऊपर का जो दीर्घकालीन कार्यक्रम लिखा है, वह 'कालो भय' की बुद्धि से अवश्य हाथ में लेना होगा।

भूदान और खादी-ग्रामोद्योग संबंधी फिल्में

खादी-ग्रामोद्योग आयोग द्वारा सर्वोदय के विभिन्न पहलुओं पर कुछ फिल्में बनायी गयी हैं। नीचे कुछ फिल्मों के नाम और जानकारी दे रहे हैं, जिनका शिविर, सम्मेलन, मेले आदि अवसरों पर उपयोग किया जा सकता है। जिन्हें फिल्मों की जरूरत हो, वे "फिल्म विभाग, खादी-ग्रामोद्योग कमीशन, मिस्त्री भवन, पो. बा. ४८२, बम्बई १" से सम्पर्क करें।

भूदान से संबंधित

(१) संत और किसान
(२) पंढरपुर-सम्मेलन
(३) कालड़ी-सम्मेलन
(४) विनोबाजी की बिहार-यात्रा

ग्रामोद्योग से संबंधित

(५) धनीर की कागजी
(६) मीठा सोना
(७) कल के लिए संशोधन
(८) हाथ-कागज (?) [illegible]
(९) अखाद्य तेल और साबुन
(१०) नेचर्स नेक्टर (मधुमक्खी-पालन)

खादी से संबंधित

(११) मागचक्र
(१२) अम्बर चरखा

सम्मेलन से संबंधित

(१३) दिल्ली प्रदर्शनी
(१४) अमृतसर-प्रदर्शनी
(१५) इन्दौर प्रदर्शनी
(१६) गौहाटी प्रदर्शनी
(१७) हैदराबाद आम्बर सम्मेलन
(१८) पूसा-सम्मेलन

नीचे दिये हुए फिल्म-स्ट्रिप और चित्र-पट भी हैं।

(१) अखाद्य तेल और साबुन-उद्योग
(२) कुम्हार उद्योग
(३) हाथ कागज उद्योग
(४) गुड़ और खांडसारी उद्योग
(५) अम्बर चरखा

साम्प्रदायिक तत्त्वों से सावधान रहने की आवश्यकता

उत्तर प्रदेश शांति-सेना समिति की बैठक

उत्तर प्रदेश शान्ति-सेना समिति की एक बैठक में, जो ८ और ९ जुलाई को लखनऊ में हुई, देश की और विशेषकर इस प्रदेश की वर्तमान स्थिति पर विस्तार से विचार किया गया। समिति ने हाल की राजनीतिक घटनाओं और साम्प्रदायिक हलचलों पर अपनी चिन्ता प्रकट की। उसने इस सम्बन्ध में एक प्रस्ताव भी पास किया है, जिसमें राजनीतिक पक्षों से सावधान रहने की अपील की है, और कहा है कि वे साम्प्रदायिक तथा जातीय हितों का समर्थन न करें, वरना स्थिति उनके काबू के बाहर जा सकती है, और उसके भयानक परिणाम आने का भी डर है। वह प्रस्ताव इस प्रकार है :

"उत्तर प्रदेश शान्ति सेना समिति की यह बैठक देश की और विशेषकर इस प्रांत की हाल की राजनीतिक घटनाओं और साम्प्रदायिक प्रवृत्तियों पर अपनी चिन्ता प्रकट करती है। आज सामाजिक और राजनीतिक स्थिति लगातार बिगड़ती जा रही है, और संकीर्ण भावनाओं तथा साम्प्रदायिक कटुता के उभरने की वजह से वह बहुत परेशानी का कारण भी बन गयी है। फिर आगामी चुनाव ने उसे और भी जटिल बना दिया है, क्योंकि उम्मीदवार यही चाहते हैं कि विभिन्न स्वार्थों के द्वारा अपना हित कैसे साधें।

हमें यह मानना चाहिए कि अभी तक भारत के विभिन्न अंगों के सम्बन्ध पूर्णतया स्नेह और सौहार्द के नहीं हो पाये हैं। राष्ट्रीय मनोवृत्ति के मुस्लिम सज्जनों ने हाल में दिल्ली में राष्ट्रीय एकता के उद्देश्य से एक परिषद की। मगर जो मनोभाव वहाँ व्यक्त किये गये उनसे मुस्लिम साम्प्रदायिकता को बल मिला। और फिर इसने हिन्दू साम्प्रदायिकता को पुनः उभार दिया और सब कहीं भावनाएँ उत्तेजित हो गयीं। स्पष्ट है कि हमारे बीच ऐसे तंग, साम्प्रदायिक तथा जातिगत स्वार्थ मौजूद हैं, हिन्दुओं में और मुसलमानों में भी, जो इस तरह के मौकों का अपने मतलब के लिए दुरुपयोग करते हैं। इन सब दुःखद घटनाओं, प्रसंगों से एक ऐसी स्थिति पैदा होने का डर है, जिसके बहुत घातक परिणाम हो सकते हैं।

इस संदर्भ में शांति-सेना समिति महसूस करती है कि हमें बहुत जागरूकता की जरूरत है। धर्मनिरपेक्ष राज्य और प्रजातान्त्रिक पद्धति में विश्वास करने वाले सब राजनीतिक पक्षों से समिति का अनुरोध है कि वे सावधान रहें और प्रकट या परोक्ष रूप से साम्प्रदायिक अथवा जातिगत संकीर्णताओं को बढ़ावा न दें, नहीं तो यह ही स्थिति पर हावी होकर उसे उनके काबू के बाहर कर देंगी, और इससे हमारे प्रजातान्त्रिक आदर्शों व मूल्यों को सदा के लिए चोट पहुँच सकती है। समिति की जनता से विनय है कि साम्प्रदायिक या निहित स्वार्थों के वश होकर अपना संतुलन न खो बैठे और विवेक से काम करे, ताकि मानवीय मूल्य सुरक्षित रहें। अंत में सर्वोदय-कार्यकर्ताओं और शान्ति-सैनिकों से समिति का आग्रह है कि इस सम्बन्ध में पूरी तरह चौकन्ने रहें, लगन और निष्ठा से इस तरह काम करें कि पक्षों और समुदायों के बीच सद्भावना और सुमेल पैदा कर सकें, और किसी भी संकट या परीक्षा के लिए अपने को तैयार रखें।

शांति-सेना समिति ने प्रस्ताव में यह भी महसूस किया कि शांति-सेना और सर्वोदय का लक्ष्य तीसरी शक्ति पैदा करने का है। यह शक्ति दंड शक्ति और राजशक्ति, दोनों से भिन्न होनी चाहिए। इस तीसरी शक्ति के द्वारा ही लोग अपनी समस्याओं को खुद ही शांतिमय और अहिंसक ढंग से हल कर सकेंगे। समिति को यह देख कर दुःख हुआ कि रचनात्मक कार्यकर्ताओं में एक प्रवृत्ति ऐसी आ रही है कि वे सरकारी संरक्षण अथवा साधनों का आधार खोजते हैं और अपने को सरकार प्रेरित कार्यक्रमों में फँसा लेते हैं। ये कार्यक्रम कुछ हद तक रचनात्मक तो होते हैं, लेकिन जनता में भ्रम पैदा होता है और आवश्यक तीसरी शक्ति को बल भी नहीं मिलता है। इसलिए शान्ति-सेना पर विशेष जिम्मेदारी आ जाती है कि वह ऐसी प्रवृत्तियों के प्रति सावधान रहे और विनोबाजी के बताये मार्ग पर आगे चलती रहे।"

आगे के काम के सम्बन्ध में शांति सेना समिति ने निर्णय किया कि प्रान्त के शांति-सैनिकों की एक रैली आगामी ११ सितम्बर सन् १९६१ को 'विनोबा जयंती' के अवसर पर लखनऊ में की जाय। इसका आयोजन उत्तर प्रदेश शांति-सेना संचालक श्री बलदेव वाजपेयी करेंगे। प्रांत में विभिन्न स्थानों पर शांति सेना शिविर करने का भी तय किया गया।

आंध्र प्रदेश में श्री शंकरराव देव का दौरा

हाल ही में 'नया मोड़' की समग्र योजना का नवीन संदेश सुनाते हुए श्री शंकरराव देव ने दक्षिण भारत में यात्रा की है। केरल, तमिलनाड और कर्नाटक प्रांत में आपने दौरा पूरा किया और १२ जून को आंध्र प्रांत में आये।

आंध्र प्रांत में कडप्पा जिला, जो ग्रामदानी गाँवों का केन्द्र माना जाता है, जहाँ ४४७ ग्रामदान मिले हैं और जहाँ का बद्वेल ताल्लुका ग्राम स्वराज्य के एक प्रयोग क्षेत्र के रूप में लिया गया है, वहाँ पर जिले के प्रमुख रचनात्मक कार्यकर्ता तथा जिला नवनिर्माण-समिति के मंत्री श्री वी. वीरब्रह्मजी ने खादी, भूदान तथा ग्रामदान कार्यकर्ताओं के एक 'सेमिनार' का आयोजन किया था। लगभग दो सौ कार्यकर्ताओं ने इस 'सेमिनार' में भाग लिया।

इन विभिन्न कार्यकर्ताओं को नया मोड़ का संदेश देते हुए श्री शंकरराव देव ने कहा, "अब की बार कार्यकर्ता केवल चरखा लेकर अथवा भूदान माँगते हुए गाँव में जाने वाले नहीं हैं। अब तो हमको पूरी ग्राम योजना की कल्पना लेकर ही गाँव में जाना होगा। गाँववालों से पहले पूछना होगा कि आप गाँव के सब लोग मिल कर अपनी ग्राम-योजना के बारे में सोचने को तैयार हैं, तो संभावित सभी तरह की सहायताओं के लिए आपके सामने हम तैयार खड़े हैं। इसके अलावा वैयक्तिक आमदनी के बारे में आप सोचने लगें तो आपको हमारा 'रामराम' है।

श्री शंकरराव देव ने यहाँ के ग्रामदानी गाँवों का निरीक्षण किया। आंध्र प्रदेश सर्वोदय मंडल के संयोजक श्री प्रभाकरजी, खादी-कमीशन के जोनल डाइरेक्टर श्री राघवनजी, आंध्र प्रदेश नवनिर्माण-समिति के मंत्री श्री आर० के० राम आदि की यात्रा में आपके साथ रहे।

१४ जून को बद्वेल पंचायत समिति के तत्त्वावधान में सभी पंचायत प्रतिनिधियों की एक सभा का आयोजन किया गया। श्री शंकरराव देव ने सर्वोदय-संदेश सुनाते हुए कहा, "आजकल पंचवर्षीय योजना में जितना खर्च किया जाता है, सब संपत्ति प्रजा के हाथ में ही चला जाता है। अगर पंचायत राज्य को सफल बनाना है, तो गाँव के छोटे-बड़े, गरीब-अमीर, सभी लोगों को मिल कर ग्राम की सामूहिक योजना बना लेना होगा। इस तरह से सरकार की सहायता गाँव के सभी क्षेत्रों को पहुँचाने की जिम्मेवारी पंचायत प्रतिनिधियों को उठानी होगी।"

श्री बी. रामा रेड्डी एम. एल. ए., पी. रामि रेड्डी एम. पी., पी. चैन्ना रेड्डी, समिति के अध्यक्ष, तहसीलदार, अन्य ब्लाक-अधिकारी आदि इस सभा में उपस्थित थे।

१५ जून को पश्चिम गोदावरी जिले के गणपवरम् में ऐसी ही एक सभा का आयोजन किया गया। गत सर्वोदय-सम्मेलन को सफल करने का सौभाग्य इन्हीं लोगों को मिला था। भूतपूर्व समिति के अध्यक्ष श्री मूर्तिराजु ने इस सभा का आयोजन किया। उस प्रदेश के खादी, भूदान तथा सर्वोदय-कार्यकर्ता इस सभा में सम्मिलित हुए थे।

ता० १६ को हैदराबाद के अफजलगंज के प्रांगण में आंध्र प्रदेश सर्वोदय मंडल के तत्त्वावधान में एक आम सभा का आयोजन किया गया। श्री शंकरराव देव ने अपने प्रवचन में कहा—

"केन्द्रीकृत आर्थिक और राजनैतिक व्यवस्था में लोगों की अपनी शक्ति सुप्त, दबी पड़ी हुई है। सर्वोदय के नैतिकता के सन्देश के जरिये लोक शक्ति को जगाते हुए आजकल भारत में और दुनिया में आर्थिक और राजनैतिक विकेन्द्रीकृत व्यवस्था की स्थापना करने की अत्यंत आवश्यकता महसूस हो रही है।"

यहाँ के नागार्जुन सागर का निरीक्षण करके श्री शंकरराव देव १७ जून को वाराणसी के लिए लौटे।

जिला नवनिर्माण-समिति, —जे० मुनिस्वामी
आनंदाश्रम (कडप्पा)

(पृष्ठ २ का शेष)

उपायों से नहीं है। हमारा मतलब बाढ़ के कारणों को दूर करने से है। देश के योजनाबद्ध विकास का एक मुख्य अंग यह होना चाहिए कि इस प्रकार कुछ खास कारणों से होनेवाली नियमित क्षति के जो बड़े बड़े छिद्र हों, वे भी बंद किये जायँ।

एक ओर देश में सम्पत्ति को बढ़ाने का प्रयत्न चलता रहे, लेकिन दूसरे तरीकों से उसकी जो क्षति होती रहती है, उसे रोकने का उपाय न किया जाय तो विकास के सारे प्रयत्न निरर्थक सिद्ध होने वाले हैं। बल्कि सामान्य बुद्धि तो यह कहती है कि छिद्र रोकने का काम पहले होना चाहिए।

मौसम का खिलवाड़

राजस्थान का एक समाचार है कि अभी जुलाई महीने के शुरू में, जो राजस्थान के लिए भर-गर्मी के दिन हैं, ठंडी हवाओं का ऐसा दौर आया कि सैकड़ों गायें और हजारों बकरे-बकरी आदि पशु सर्दी के कारण मर गये। आदमी की तरह प्रकृति भी कभी-कभी अपना संतुलन खो बैठती है।

—सिद्धराज

रायपुर का पोस्टर-विरोधी अभियान

[गत २ जुलाई को रायपुर में अशोभनीय पोस्टरों के खिलाफ जो सत्याग्रह किया गया, उसमें सिनेमा-व्यवसायियों ने सक्रिय विरोध किया। परिणामस्वरूप वातावरण में तनाव आ गया और दैनिक समाचार-पत्रों में कुछ गलत एवं अतिरंजित खबरें प्रकाशित हुई हैं। यहाँ हम सर्वोदय-मंडल, रायपुर के संयोजक द्वारा प्राप्त अधिकृत विवरण का सार दे रहे हैं, ताकि सही हकीकत मालूम हो सके। —सं०]

अभी पिछले दिनों ३० जून '६१ को रायपुर में जनता द्वारा पूर्व निर्मित अशोभनीयता निर्णायक समिति ने शहर में चल रहे एक फिल्म के पोस्टर को अशोभनीय करार दिया। निर्णायक समिति के इस फैसले का पूर्ण समर्थन नगर के अनेक महिला-मंडलों ने किया। सर्वप्रथम म० प्र० सर्वोदय मंडल के अध्यक्ष श्री रामानंद दुबे और स्थानीय सर्वोदय-मंडल के संयोजक श्री हरप्रसाद अग्रवाल ने सिनेमा-व्यवसायियों से और विशेष तौर से उस सिनेमा के मालिक से संपर्क किया तथा उनको समझाया कि वे उक्त पोस्टर को हटा दें। किन्तु उन्होंने ऐसा करने से इन्कार किया।

परिणामस्वरूप सर्वोदय-मंडल ने २४ घंटे की अवधि में अगर पोस्टर नहीं हटता है, तो सत्याग्रह किया जायेगा, ऐसी सूचना दी। इस सूचना की प्रतियाँ जिला-अधिकारी, पुलिस विभाग आदि को दी गयी। वस्तुतः सिनेमा के मालिक पोस्टर हटाने को तैयार थे, किन्तु इस फिल्म के वितरक ने इस बात को मानने से इन्कार किया। २ जुलाई को नौ बजे सुबह से दो बजे दोपहर तक सत्याग्रह करने सम्बन्धी घोषणा लाउडस्पीकर द्वारा नगर में की गयी। चार बजे म० प्र० सर्वोदय-मंडल के अध्यक्ष श्री रामानंद दुबे के मार्गदर्शन में सत्याग्रही जत्था निकला, जिसमें सर्वश्री हरप्रसाद अग्रवाल, केयूर भूषण, जिला कांग्रेस सेवादल के संयोजक श्री मंगल प्रसाद श्रीवास्तव, दल के २५ स्वयंसेवक और स्वयंसेविकाएँ, नगर महिला-मंडल की संयोजिका श्रीमती सरस्वती दुबे, ब्राह्मणपारा महिला-मंडल की उपमंत्राणी श्रीमती सूर्य कुमारी मिश्रा, श्रीमती कुन्ती बाई, भूतपूर्व एम० पी० श्री भगवती चरण शुक्ल, नगर के तरुण वकील जितेन्द्रनाथ पाठक, युवक व्यवसायी श्री रामाराजा तिवारी जैसे प्रतिष्ठित लोग शामिल थे।

सत्याग्रह प्रारम्भ होने के पूर्व विभिन्न संस्थाओं की ओर से श्री रामानंद दुबे को तिलक लगा कर मालाएँ अर्पित की गयी। इसके बाद पुलिस-कोतवाली के पास लगे हुए उक्त अशोभनीय पोस्टर को श्री दुबेजी ने फाड़ कर सत्याग्रह का आरम्भ किया। फिर जुलूस आगे बढ़ा। मालवीय रोड पर सिनेमा-पोस्टरों का प्रमुख केन्द्र गिल्पि मार्केट है। वहाँ पर झाड़ पर लगे अशोभनीय घोषित पोस्टर पर कालिख पोता गया। जुलूस आगे बढ़ता गया। साथ में जनता की संख्या भी बढ़ती गयी। शारदा चौक में शेरे पंजाब होटल पर जुलूस रुका। यहाँ पर भी दुबेजी ने इस होटल के मालिक को सार्वजनिक रूप से धन्यवाद दिया, क्योंकि उन्होंने स्वयं घोषित अशोभनीय पोस्टर एक दिन पूर्व ही हटा लिया था। यहाँ पर सिनेमा-व्यवसाय के एक प्रतिनिधि ने, जब दुबेजी बोल रहे थे, तब उनको धक्का दिया और धमकी दी कि आओ आगे प्रभात टाकीज के पास देख लेंगे। जुलूस और आगे बढ़ा। 'भारत तेलघाणी उद्योग' के संचालक को अपने यहाँ से अशोभनीय पोस्टर हटाने के फलस्वरूप धन्यवाद दिया गया।

अब सत्याग्रही जत्था अपने निर्दिष्ट स्थान, प्रभात टाकीज पर पहुँचा। सत्याग्रही जत्था जब प्रभात टाकीज पर पहुँचा, तब प्रजा-समाजवादी दल के श्री कमलनारायण शर्मा तथा अन्य प्रतिष्ठित नागरिक सर्वश्री रामशरणजी वैद्य, दादूभाई, हल्दूप्रसाद शुक्ल आदि भी शामिल हुए थे। सर्वप्रथम टाकीज के प्रोप्रायटर को समझाया गया कि यह पोस्टर हटा लिया जाय। किन्तु उन्होंने बजाय अशोभनीय पोस्टर हटाने के घोषित अशोभनीय पोस्टर का बड़ा पोस्टर सब पोस्टरों के ऊपर लगाया।

यहाँ पर कुछ संगठित फिल्म-व्यवसायियों ने असामाजिक तत्त्वों को इकट्ठा कर हुल्लड़बाजी की और पोस्टर पर पोतने के लिए लायी गयी रंग की बाल्टी छीन कर फेंक दी। इस पर लोग उत्तेजित हो गये। श्री दुबेजी जोर-जोर से सबको शान्त रहने की अपील कर रहे थे। रंग के अभाव में पोस्टरों पर कीचड़ पोता गया, ताकि वह दिखने योग्य न रह सके। जैसे ही यह कार्रवाई हुई, कुछ असामाजिक तत्त्वों ने, जिनमें सिनेमा-मालिक द्वारा प्रस्तुत गुंडे लोग भी थे, श्री दुबेजी को धक्के देना शुरू किया। इन धक्के देने वालों के मुँह से शराब की बू आ रही थी। बढ़ईपारा मोहल्ले के एक मिस्त्री, जिन्होंने दुबेजी को बचाने का प्रयत्न किया, उसको सिनेमा-व्यवसायियों ने शराबी कह कर पुलिस-द्वारा गिरफ्तार करवाया, जिसे बाद में डाक्टर-सर्टिफिकेट द्वारा निर्दोष छोड़ा गया। इसके बाद सत्याग्रहियों का यह विजयी जत्था अशोभनीयता-विरोधी नारे लगाते हुए वापस लौटा।

काशी में सफाई-मजदूरों की हड़ताल

गत २ जुलाई से काशी में सफाई-मजदूर मित्रों ने छुट्टियाँ बढ़ाने और महँगाई प्राप्त करने के लिए हड़ताल की है। काशी में लगभग ढाई हजार मजदूर हैं। हड़ताल दो हफ्ते से चल रही है। इस समय काशी और आसपास के क्षेत्र में हैजे का प्रकोप भी है। इस कारण हड़ताल से स्थिति बड़ी संकटपूर्ण होने की संभावना थी, किन्तु नागरिकों ने सब प्रकार का संकोच छोड़ कर अपने-अपने मोहल्लों में सफाई करना प्रारंभ कर दिया।

संयोग की बात है कि इन्हीं दिनों २४ जून से ३० जून तक सेवापुरी में भंगी-मुक्ति शिविर चला था और उसके तुरत बाद १ से ६ जुलाई तक साधना केंद्र, काशी में यह शिविर और चला। शिविर के दिनों में हड़ताल हुई, अतः शिविरार्थी और उनके साथ 'स्वच्छ काशी अभियान' के कार्यकर्ता, हरिजन सेवक संघ, गांधी आश्रम, गांधी स्मारक निधि, सर्व सेवा संघ आदि संस्थाओं के कार्यकर्ताओं ने शहर की सफाई में नागरिकों को सहयोग दिया। शिविरार्थियों ने विशेष तौर से सार्वजनिक शौचालयों की सफाई पर ध्यान दिया। राजघाट, मच्छोदरी, मध्यमेश्वर, दारानगर आदि स्थानों के १०० मर्दाना और १०० जनाना-पाखानों की सफाई शास्त्रीय ढंग से की गयी।

श्री अप्पासाहब पटवर्धन ने एक मंत्र बनाया :

"अपनी-अपनी करो सफाई
ब्राह्मण-भंगी भाई-भाई।"
"मानव-मानव एक समान
सफाई औ' पूजा एक समान।"
"मिल कर रहना, करना प्यार
बाँट कर खाना, धर्म हमार।"
"सफाई औ' पूजा एक समान
हम सब हैं प्रभु-संतान।"

दो वर्ष के लिए काशी में भंगी-मुक्ति का काम करने के लिए इन पाँच भाइयों ने नाम दिये हैं : (१) श्री बालकृष्ण शास्त्री, (२) श्री सत्यमूर्ति शुक्ल, (३) श्री कामेश्वरप्रसाद सिंह, (४) श्री बंशबहादुर सिंह और (५) श्री रामचन्द्र शुक्ल। इनके अलावा साधना केन्द्र, काशी के श्री कृष्णराज मेहता ने श्री अप्पासाहब पटवर्धन को वचन दिया कि

"अब तक तो काशी में सफाई के लिए समय नहीं निकाल सका था, पर आपके शुभागमन से प्रेरणा पाकर काशी में भंगी-मुक्ति के लिए प्रत्यह नित्य कुछ समय दिया करूँगा।"

हड़ताल जारी है। नगर-महापालिका ने हड़तालियों को बरखास्त और उनके निवास-स्थान खाली कराने का काम शुरू किया। शहर में धारा १४४ लगा दी गयी है। ता० १५ को सफाई-मजदूरों ने १४४ धारा का भंग सभा करके जुलूस निकाला। परिणामस्वरूप ६५० सफाई-मजदूर गिरफ्तार हुए। इनमें छोटे बच्चों सहित स्त्रियाँ भी हैं। गिरफ्तार मजदूरों की संख्या लगभग एक हजार तक बढ़ गयी है। स्थिति ने नया मोड़ लिया। अब लोग यह चाहते हैं कि हड़ताल शांतिपूर्ण ढंग से खत्म हो जाय।

—अलखनारायण,
मंत्री, जिला सर्वोदय-मंडल, वाराणसी

बड़ोदा में सर्वोदय-शिविर

गुजरात सर्वोदय-मंडल के तत्त्वावधान में दिनांक ९ से १२ जुलाई तक गुजरात प्रदेश के सर्वोदय-कार्यकर्ताओं का एक सर्वोदय-विचार शिविर सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर श्री दादा धर्माधिकारी का मार्गदर्शन उल्लेखनीय है। १३ जुलाई को श्री धर्माधिकारी की अध्यक्षता में प्रादेशिक गुजरात सर्वोदय-सम्मेलन भी हुआ।

इस अंक में

श्रीकृष्णदत्त भट्ट, अ० भा० सर्व सेवा संघ द्वारा भार्गव भूषण प्रेस, वाराणसी में मुद्रित और प्रकाशित। पता : राजघाट, वाराणसी-१, फोन नं० ४३९१
वार्षिक मूल्य ६) पिछले अंक की छपी प्रतियाँ ९,५५० : इस अंक की छपी प्रतियाँ ९,४५० एक अंक : १३ नये पैसे

संपादक : सिद्धराज ढड्ढा

वाराणसी : शुक्रवार | २८ जुलाई '६१ | वर्ष ७ : अंक ४३

(जब तक ग्रामदान नहीं होंगे, गाँव आजाद नहीं होंगे गुलाम गाँवों का देश आजाद कैसे ?)

विनोबा

जब से हमने 'नार्थ लखीमपुर' में प्रवेश किया तब से, डेढ महीने से हमने यहाँ ग्रामदान के लिए कोशिश की। लेकिन यहाँ अभी तक काम पूरा नही हुआ है। हमारी यह यात्रा दस साल से चली है और इन दस सालो में मैं पूरा हिन्दुस्तान घूम चुका हूँ।

लेकिन अब मैं यहाँ इतना अधिक समय क्यो दे रहा हूँ ? एक ही अंचल में बार-बार गोल-गोल क्यों घूम रहा हूँ ? क्योंकि मैं चाहता हूँ कि पूरा 'नार्थ लखीमपुर' सबडिवीजन ग्रामदान हो जाय।

यह पूरा सबडिवीजन अगर ग्रामदान हुआ, तो असम प्रदेश पर उसका प्रभाव पड़ेगा और असम प्रदेश का सारे भारत पर प्रभाव पड़ेगा। नार्थ लखीमपुर ग्रामदान हो सकता है। लेकिन क्या ग्रामदान कहने से ग्रामदान होगा ? कहने से ग्रामदान नही होगा, करने से होगा।

भारत में अंग्रेज बहुत शक्तिशाली थे। लेकिन गांधीजी ने 'क्विट इंडिया' –भारत छोड़ो–कहा। देश के बच्चे-बच्चे के मुख से वह मंत्र बाहर निकला। बच्चों के मुख से भगवान् बोलते हैं। और इस प्रकार 'हमारा मंत्र जय जगत्' और 'हमारा तंत्र ग्रामदान', ऐसा गाँव का बच्चा-बच्चा आज बोल रहा है। यह भी होकर ही रहेगा। आज का जमाना इसके अनुकूल है। यदि आप लोग इसमें काम नहीं करेंगे, तो आपने जमाने के अनुकूल काम नहीं किया ऐसा होगा। ग्रामदान सबका कल्याण करने वाला कार्य है। यह प्रेम से करने का काम है। पहले स्वराज्य की प्राप्ति के लिये आप लोगों ने त्याग किया था।

> लेकिन आज गाँव में स्वराज्य का फल लोगों को नहीं मिल रहा है, क्योंकि स्वराज्य के पश्चात् स्वराज्य का काम हम लोग ठीक ढंग से नहीं कर सके। गाँव के टुकड़े-टुकड़े करके रहने से हमारा कल्याण नहीं होगा। गाँव में मिलजुल कर रहने से हमारा कल्याण होगा। ग्रामदान में तो लोग सभी सुखी होंगे, जब गाँव का हर मनुष्य दूसरे के सुख के लिए सोचेगा, श्रम करेगा।

आज तो यह हालत है कि लोग अपने पड़ोसी के लिए भी सोचते नहीं, एक-दूसरे को मदद करते नहीं। आज लोग ऐसी इच्छा करते हैं कि हमारा सब कुछ सरकार करे। हमारे बच्चों की तालीम का इंतजाम सरकार करे। हमारे गाँव के आरोग्य का इन्तजाम सरकार करे। हममें से कोई बीमार हुआ तो उसके दवादारू का इन्तजाम सरकार करे। गाँव के विकास का जिम्मा सरकार का।

मानों आप सब हैं बैल, और सरकार है किसान !

जैसे किसान के बैल होते हैं, वैसे आप सरकार के बैल हैं। जैसे किसान के बैल एक-दूसरे की मदद नहीं करते, वैसे आप भी एक-दूसरे की मदद नहीं करते। अगर किसान ने बैलों को सुखी रखा तो वे सुखी रहेंगे और दुःखी रखा तो दुःखी रहेंगे। ठीक वैसी ही आज आपकी हालत है।

नार्थ लखीमपुर के पन्द्रह मौजों में से प्रति मौजे में आठ-दस के करीब ग्रामदान हुए हैं। नार्थलखीमपुर में कुल आठ सौ गाँव हैं। यहाँ के कुछ लोग कहते हैं, जितने लोगों ने ग्रामदान दिया उनका अगर अच्छा चला, उनका अगर कल्याण हुआ तो उनको देख कर फिर हम ग्रामदान करेंगे। यह कहना एक तरह से ठीक भी है; लेकिन दूसरी तरह से यह ठीक नहीं है। ठीक इसलिए है कि दूसरों ने ठीक किया हुआ रास्ता देख कर हम उसी प्रकार आगे बढ़ना चाहते हैं। लेकिन ठीक इसलिये नहीं है कि आगे तो सबको ही बढ़ना चाहिये। दूसरे आगे बढ़ेंगे, तो फिर हम आगे बढ़ेंगे, ऐसा कहने में स्वतंत्र बुद्धि नही है। जहाँ ग्रामदान नहीं होता है, वहाँ गाँव को सुखी बनाने की जिम्मेदारी लोग अपनी नहीं मानते। लोग मानते हैं कि यह तो सरकार का काम है।

पुराने जमाने में राजा होता था, उसकी जगह ये लोग आज सरकार को सोचते हैं। राजा अच्छा हुआ तो प्रजा सुखी होती थी। राजा बुरा हुआ तो प्रजा दुःखी होती थी। कहते हैं न, "जैसा राजा वैसी प्रजा।" वैसे किसान, वैसे उसके बैल। बैल को अपनी शक्ति नहीं, अपनी इच्छा नहीं, किसान पर ही वह निर्भर रहता है। किसान अच्छा खिलायेगा तो वह सुखी रहेगा, नहीं खिलायेगा तो दुःखी रहेगा। क्या बैल से कभी पूछते हैं कि इस खेत में चना बोयेंगे या गेहूँ बोयेंगे ! बैल को कभी नहीं पूछेंगे। उसको खिलायेंगे, पिलायेंगे और अच्छा रखेंगे। बैल सुखी होंगे भी, लेकिन रहेंगे किसान के ही आधीन। उसी प्रकार ये लोग सरकार के आधीन रहना चाहते हैं। सरकार के आधीन रह कर सुखी होना चाहते हैं। अपनी व्यवस्था खुद करके मनुष्य बनना नहीं चाहते। इनके गाँव की योजना कौन बनायेगा ? दिल्ली की सरकार। इनके लिए सोचने का काम करेगी वह सरकार। इनको अपने लिए सोचने की जरूरत महसूस नहीं होती, इनको अपने लिए योजना बनाने की जरूरत महसूस नहीं होती। इनकी अपनी कोई योजना नहीं। बैलों को कहाँ होता है बनाना उनकी अपने लिए योजना ? यह तो आज वैसे ही हालत हुई जो स्वराज्य के पहले थी। पहले आप अहमं (असम के राजवंश) के राजा के बैल थे। फिर ब्रह्मदेश के राजा के बैल थे। फिर अंग्रेजों ने ब्रह्मदेश के राजा से असम प्रदेश ले लिया, तब अंग्रेजों के बैल बन गये ! और अब दिल्ली की सरकार के बैल होना चाहते हैं। पहले भी दुश्मनों का मुकाबला आपने किया नहीं। क्यों करेंगे आप उनका मुकाबला ! बैल कभी करते हैं मुकाबला ? पहले राजा करता था मुकाबला, अब सरकार करेगी। आपका बैलपन कायम है !

> आज भी सिर पर चीन का संकट है। उसका मुकाबला करने में आज भी आप लोगों की हालत ऐसी ही रही, बैलों-सी ही तो आपका क्या उपयोग होगा ? बैल क्या करेगा ? आज इस किसान के पास चुपचाप है, कल उस किसान के पास चुपचाप ! कोई भी मालिक हो वह जैसा रखेगा वैसा रहेगा।

मैं चाहता हूँ कि आप लोग बैल न रहें, आदमी बनें।

ग्रामदान की बात जो मैं कहता हूँ, वह इसलिए कि आप बैल न रहें, इन्सान बनें।

अपने गाँव की व्यवस्था खुद करना सीखें। गाँव में ग्राम-स्वराज्य लायें। लेकिन आज गाँव में लोग एक-दूसरे के लिए सोचते भी नहीं। जिनको खाने को मिलता है वे उतना खाने में मस्त रहते हैं। और किसी की चिंता नहीं करते, क्योंकि

वे अपने को बैल मानते हैं। ग्रामदान करोगे तो आप मनुष्य बनोगे।

अपने सुख का ही सोचना मानवता नहीं। जंगल में शेर होते हैं, और अन्य जानवर होते हैं। वे सब अकेले रहते हैं। अपने-अपने शिकार करते हैं। शेर अपने लिए शिकार करता है। भेड़िया अपने लिए शिकार करता है। सिंह अपने लिए शिकार करता है। आज भेड़िये को शिकार मिला, शेर को नहीं मिला, भेड़िये को इसका कुछ सुख दुःख नहीं। लेकिन यह मानवता नहीं हो सकती।

मानवता तो वह है, जहाँ हम लोग एक-दूसरे के सुख-दुःख के लिए सोचते हैं। अच्छे काम के लिए इकट्ठे हो जाते हैं।

महापुरुष शंकरदेव लोगों के इकट्ठे रहने की इस खूबी को जानते थे। उन्होंने देखा, लोग अपनी अपनी झोपड़ियों में मस्त हैं, कोई एक दूसरे की परवाह नहीं करता, तो उन्होंने नाम के आधार पर सबको एक जगह लाया। "रामनाम बोल तरे अधम कछारी"—यह लोगों को समझाया और नाम घर में सबको एक जगह लाया। आज उनका काम हमको आगे चलाना है। आज नाम-घर काफी नहीं है। जन-संख्या बढ़ी है, सब लोगों के सुख-दुःख की फिकर करने की जरूरत सब पर आ पड़ी है। शंकरदेव नाम-घर के साथ काम-घर भी बनाते तो अच्छा होता। जो शंकरदेव ने नहीं बनाया, वह आज हमको बनाना है और उसमें बैठ कर गाँव की योजना बनानी है। जिस प्रकार हम अपना भला कर सकते हैं, हमें करना चाहिए। ग्रामदान करने से यह संभव होगा।

हमारे सर्वोदय के कुछ 'मूरख कार्यकर्ता' कहते हैं कि आप ग्रामदान करो, आपको सरकार की मदद मिलेगी। इस तरह का वे प्रचार करते हैं। फिर अगर सरकार की मदद नहीं मिलती, तो लोग निराश हो जाते हैं। ग्रामदान खतम हो जाता है। कोई दूसरे लोगों को डराते हैं, कहते हैं कि ग्रामदान दो, नहीं तो तुम्हारा नाश हो जायेगा। ये लोग लोगों से भय से काम लेकर ग्रामदान करना चाहते हैं। कोई ऐसा भय दिखाये, तो तुमको उनकी बात बिल्कुल सुनना नहीं चाहिए। ग्रामदान तो सबके हित की बात है, प्रेम की बात है। प्रेम से हम हमारे गाँव की योजना बनायेंगे। उसमें आर्थिक लाभ नहीं भी होगा, यह भी हो सकता है। लेकिन फिर भी ग्रामदान होना चाहिए; क्योंकि उसमें आपकी स्वतंत्र इच्छा-शक्ति का उपयोग होता है, योजना-शक्ति का उपयोग होता है, *बुद्धि शक्ति का उपयोग होता है और* प्रेम-शक्ति का उपयोग होता है। उसके कारण आप बैल के बजाय मनुष्य हो जाते हैं।

मैं तो आपको कहता हूँ कि आपको ग्रामदान के बाद सरकार की मदद भी नहीं मिलेगी। शायद आपको आर्थिक लाभ भी नहीं होगा। फिर भी आपको ग्रामदान करना है, क्योंकि मानवता की कीमत इन सब चीजों से ज्यादा है।

आज हिन्दुस्तान में छह करोड़ खेती के मालिक हैं। सबका अलग-अलग नाम सरकार के दफ्तर में रखा जाता है। ग्रामदान होगा तो केवल पाँच लाख नाम सरकार के दफ्तर में रहेंगे। व्यवस्था का सारा बोझ हलका होगा। सरकारी नौकरों की इतनी बड़ी भारी संख्या आज इस देश में है, वह कम होगी। आपके पैसे से ही तो यह सारा खर्चा होता है, वह बचेगा। आज असम में आपके नजदीक सेना खड़ी है। आप यदि अच्छे ग्रामदान *करेंगे तो वह सेना* मजबूत होगी और मजबूती से काम करेगी। आपके ग्रामदान यदि ठीक ढंग से चलें तो उस सेना की जरूरत भी नहीं रहेगी। हर हालत में ग्रामदान हमारी मदद करता है। लेकिन सबसे महत्त्व की बात तो यह है कि वह आपको बैल के बजाय मनुष्य बनाता है।

(रंगली, नार्थ लखीमपुर, २७-६-६१)

साप्ताहिक घटना-चक्र

राजेन्द्रबाबू की बीमारी

राष्ट्रपति की अचानक गम्भीर बीमारी से सारे राष्ट्र में चिन्ता व्याप्त हो जाना स्वाभाविक है। सर्वोदय-परिवार के लिए तो राजेन्द्र बाबू का स्थान घर के एक बुजुर्ग का-सा रहा है। राष्ट्रपति के पद की गुरुतर जिम्मेदारी निभाते हुए भी वे हर साल यथासंभव सर्वोदय-सम्मेलनों में शरीक होते रहे हैं। अभी पिछले सर्वोदय-सम्मेलन में ही उन्होंने यह इरादा जाहिर किया था कि इस बार राष्ट्रपति-पद से मुक्त होने पर वे अपना समय सर्वोदय-कार्य में लगायेंगे। सदाकत आश्रम, पटना के अपने पुराने स्थान में रहने की तैयारी भी उन्होंने कर ली है। राष्ट्र के अन्य लोगों के साथ-साथ हम भी राजेन्द्र बाबू की दीर्घायु के लिये प्रार्थना करते हैं। आशा है, वे मौजूदा संकट को सकुशल पार करके जल्दी स्वास्थ्य-लाभ करेंगे और देश को उनकी सेवाएँ तथा मार्गदर्शन बराबर मिलता रहेगा।

संविधान का अपमान न करें!

अभी उस दिन रायपुर में प्रेस-प्रतिनिधियों से बातचीत करते हुए मध्य प्रदेश के वित्तमंत्री, श्री मिश्रीलाल गंगवाल ने कहा कि उस प्रान्त में शराबबंदी का क्षेत्र बढ़ाना फिलहाल प्रांतीय सरकार के लिए सम्भव नहीं है, क्योंकि शराब-बन्दी से सरकार को काफी आर्थिक घाटा होगा, जिसको बर्दाश्त करने की उसकी तैयारी नहीं है। गंगवालजी ने साथ ही इतना और कहा कि अगर शराबबंदी से होने वाली आर्थिक क्षति को पूरा करने का कोई तरीका निकल आता है या भारत-सरकार शराब बंदी को एक राष्ट्रीय नीति के रूप में स्वीकार कर लेती है तो *'हम भी जरूर मध्य प्रदेश के सब हिस्सों में शराब बंदी लागू कर सकेंगे।'*

जब कभी भी शराब-बंदी का सवाल आता है तो हमेशा आर्थिक दलील सामने लाकर खड़ी कर दी जाती है। यह समझ में नहीं आता कि जब और पचासों कामों के लिए—जिनमें से बहुत-से ऐसे होते हैं जो जरूरी नहीं होते या थोड़े दिनों के लिए स्थगित किये जा सकते हैं—हम करोड़ों रुपया खर्च करते रहते हैं, जब अरबों रुपया दूसरे मुल्कों से कर्ज लेकर भी अपनी बहुत-सी योजनाएँ चलाते हैं, जिनमें से कइयों की उपयोगिता के बारे में शंका की जा सकती है और कई कुछ समय बाद बेकार भी साबित होती हैं; जब कि आये दिन प्रशासन का खर्चा अनाप-शनाप बढ़ता जा रहा है—तब केवल शराब-बंदी के लिए ही अर्थाभाव की दलील क्यों दी जाती है? सामान्य-से-सामान्य आदमी भी जानता है कि बहुत-से काम ऐसे होते हैं, जो किसी भी कीमत पर करने के होते हैं। यह भी हममें से हरेक जानता है कि आमदनी के लिए चाहे जैसे अनैतिक तरीके काम में लाना सभ्यता की निशानी नहीं मानी जायगी। शराब जैसे मानसिक, बौद्धिक और शारीरिक-आध्यात्मिकता को [illegible] ही देते हैं—सब दृष्टियों से राष्ट्र को नुकसान पहुँचाने वाले धन्धे से आमदनी करते रहना, और वह भी ऐसी परिस्थिति में, जब कि करोड़ों रुपया दूसरी बीसों प्रकार की फिजूलखर्चों में बर्बाद होता हो, शोभा नहीं देता। शायद हम यह भूल जाते हैं कि देश के विधान में जिन आदर्शों की और जिन नीति की घोषणा की गयी है, उनमें शराब-बंदी भी एक है। हमारे संविधान के अनुच्छेद ४७ में यह स्पष्ट तौर से कहा गया है कि दवाओं के अलावा मादक पेयों और औषधियों के उपयोग पर राज्य को पाबन्दी लगाने का प्रयत्न करना चाहिये। क्या संविधान बनाते समय राष्ट्र के नेताओं ने नशा-बंदी के आर्थिक पहलू की ओर ध्यान नहीं दिया होगा? आर्थिक घाटे की सम्भावना के बावजूद भी जब राष्ट्र के नेताओं ने संविधान में नशा-बंदी को राज्य की नीति का एक अंग घोषित किया है, तब आये दिन इस तरह से शराब-बंदी के विरुद्ध आर्थिक घाटे की दलील देना क्या संविधान का और संविधान बनाने वाले लोगों की बुद्धिमानी का अपमान नहीं है?

भारत-सरकार द्वारा नशा-बंदी को राष्ट्रीय नीति के रूप में घोषित करने की दलील भी इस संदर्भ में हास्यास्पद ही मालूम होती है। क्या संविधान की उपरोक्त घोषणा राष्ट्रीय नीति का संकेत नहीं करती है? देश का संविधान कोई साधारण पत्र या विज्ञप्ति नहीं है! वह देश का सर्वोच्च कानून है। हमारे खयाल से सरकार की कोई घोषणा विधान में की गयी घोषणा से ज्यादा महत्त्व नहीं रखती। सरकार बदलती रहती है और सरकारी नीति भी, जब कि विधान एक बुनियादी चीज है। जब तक विधान में शराब-बंदी का स्पष्ट संकेत मौजूद है, तब तक और किसी सरकारी घोषणा के लिए रुकने की आवश्यकता नहीं है। हमारी नम्र राय में हर प्रान्तीय सरकार का और केंद्रीय सरकार का यह कर्तव्य है कि संविधान में जिस नीति की घोषणा की गयी है, उसे कार्यान्वित करने के लिए जल्दी-से-जल्दी कारगर कदम उठाये।

पर अगर सरकार की नीति का ही सवाल है, तब भी एक से अधिक बार खुद सरकार की ओर से शराब-बंदी का समर्थन किया गया है। अभी चन्द महीनों पहले ही, २८ मार्च, १९६१ को लोकसभा में भारत-सरकार के *गृह-विभाग* के राज्य-मंत्री, श्री बी० एन० दातार ने यह जाहिर किया था कि "भारत-सरकार राज्य सरकारों को यह सलाह देना चाहेगी कि वे जल्दी से जल्दी पूरी शराब-बंदी करें।" इतना ही नहीं, इस बात पर जोर देने के लिए कि भारत-सरकार इस नीति के पालन में ढिलाई होती हुई नहीं देखना चाहती। श्री दातार ने साथ ही यह भी कहा कि "जल्दी-से-जल्दी" का मतलब यह न लिया जाय कि इसमें समय की कोई मर्यादा

[शेष पृष्ठ ११ पर]

राष्ट्रपति के स्वास्थ्य के लिए प्रार्थना करें
राष्ट्र को विनोबा और उपराष्ट्रपति की अपील

२४ जुलाई की शाम को प्रार्थना-प्रवचन के अंत में विनोबाजी ने राष्ट्रपति डा० राजेन्द्र प्रसाद के अच्छे स्वास्थ्य और उनके तत्काल स्वस्थ होने के लिए जनता को ईश्वर से प्रार्थना करने के लिए अपील की। उन्होंने कहा, "आज हम लोग राष्ट्रपति के स्वस्थ होने के लिए ईश्वर से विनती करेंगे। प्रार्थना में बहुत बड़ी शक्ति है। मुझे विश्वास है कि राष्ट्रपति के स्वास्थ्य के लिए संपूर्ण राष्ट्र प्रार्थना करेगा। हम उनके दीर्घ जीवन की कामना करते हैं, ताकि हमारा देश उनके बुद्धिमत्तापूर्ण मार्गदर्शन का लाभ उठा सके।"

संयोग की बात है कि उसी दिन, अर्थात् २४ जुलाई को उपराष्ट्रपति डा० राधाकृष्णन् ने संपूर्ण राष्ट्र से राष्ट्रपति की स्वास्थ्य-कामना के लिए २६ जुलाई को राष्ट्रीय प्रार्थना-दिवस मनाया जाय, ऐसी अपील की।

ॐ सत्यं जगत् स्फूर्तिः जीवनं सत्यशोधनम्

भूदानयज्ञ

लोकनागरी लिपि*

जनशक्ती से स्वराज्य

अब अंग्रेजों के हाथ से हमारे हाथ में सत्ता आयी और हम राज्यकरता बने हैं। शास्त्रों में लीखा है की 'राज्यान्ते नरकप्राप्ती।'— राज्य-समाप्ती पर नरक-प्राप्ती होती है। यानी राज करने वाला राजा मरने पर नरक में जाता है। लोग पूछेंगे की क्या फीर स्वराज्य नहीं चलाना चाहीये? हम कहते हैं की स्वराज्य जरूर चलायें, पर राज्य नहीं। दील्ली से जो चलता है, उसे राज्य कहते हैं, चाहे वह अपने लोगों का ही हो। गांव-गांव में हर मनुष्य अपने पर जो चलाता है, वह 'स्वराज्य' है। मुझे चाहे भूखा रहना पड़े, लेकीन मैं चोरी नहीं करूंगा, ईसीका नाम है 'स्वराज्य'। मुझ पर दूसरे कीसी की हुकूमत चलती हो, तो क्या वह स्वराज्य है? 'स्वराज्य' का अर्थ है, अपना खुद का अपने पर राज्य। ईस तरह जब सब लोगों में अपने पर काबू रखने की शक्ती पैदा होगी, और उन्हें अपने कर्तव्य का भान होगा, तब स्वराज्य आयेगा। तब तक 'राज्य' ही चलेगा। हमें काम स्वराज्य का करना है। उसके लीये जन-शक्ती पैदा करनी है, लोगों के हृदय में आत्मशक्ती का भान पैदा करना है। अपने गांव का कारोबार हम ही चला सकते हैं, कोई भी बाहर की सत्ता हमें रोक नहीं सकती, ऐसी ताकत पैदा होनी चाहीये।

—वीनोबा

* लिपि-संकेत : ि = ी ; ी = ी ; ख = ख, संयुक्ताक्षर हलंत चिह्न से।

राजनैतिक पार्टियों से

टिप्पणियाँ :

आम चुनाव नजदीक हैं। इस समय राजनैतिक पार्टियाँ चुनाव के सदर्भ में अपनी-अपनी नीति को जाहिर करने वाले घोषणा-पत्र तैयार करने में लगी हैं। ऐसे समय हम उनका और मतदाताओं का ध्यान एक महत्वपूर्ण बात की ओर आकर्षित करना चाहते हैं, जिसका आज से चार वर्ष पहले देश की मुख्य-मुख्य राजनैतिक पार्टियों ने समर्थन किया था। सितम्बर, १९५७ में सर्व सेवा सघ के निमत्रण पर येलवाल (मैसूर राज्य) में विनोबाजी की उपस्थिति में एक ग्रामदान-परिषद हुई थी, जिसमें हमारे राष्ट्रपति और प्रधान मत्री के अलावा तीन प्रमुख राजनैतिक पार्टियों के अर्थात् काग्रेस, प्रजा-समाजवादी पक्ष और कम्यूनिस्ट पक्ष के प्रतिनिधि और नेता भी मौजूद थे। दो दिन के विचार विनिमय के बाद इस परिषद में एकत्र देश के नेताओं ने एक सर्वसम्मत बयान जारी किया था, जिसमें ग्राम-दान-आन्दोलन का स्वागत करते हुए उन्होंने यह जाहिर किया था कि

"इस आदोलन से गाँवों में सहकारी जीवन का विकास होगा और परिणामस्वरूप ग्राम-निवासियों की आर्थिक उन्नति और सर्वांगीण प्रगति होगी।' आगे चल कर उन्होंने यह विश्वास भी प्रगट किया था कि ग्राम-दान-आन्दोलन से "भारत में भूमि-समस्या के हल के लिए जिस मानसिक आबोहवा की जरूरत है", वह भी पैदा होगी। येलवाल-परिषद में उपस्थित नेताओं ने देश के सब लोगों से इस आन्दोलन का समर्थन करने की अपील की थी और यह भी आश्वासन दिया था कि अपनी-अपनी पार्टियों की ओर से वे इस काम को आगे बढ़ाने का भरसक प्रयत्न करेंगे।

उस बात को आज चार वर्ष होने आये हैं। पर खेद है कि राजनैतिक पार्टियों ने अपनी ओर से ग्रामदान-आन्दोलन को आगे बढ़ाने का कोई खास प्रयत्न इस बीच नहीं किया। इसके लिए हमें कोई शिकायत नहीं है, क्योंकि जैसा श्री जयप्रकाशजी ने पिछले सर्वोदय-सम्मेलन के अपने अध्यक्षीय भाषण में कहा था, उसका कारण शायद यह था कि "राजनैतिक दल और उनके नेताओं का हृदय परिवर्तन की शक्ति में पक्का विश्वास नहीं है ...। उनका विश्वास तो दरअसल कानून में है।"

इस देश के जिन तीन प्रमुख राजनैतिक दलों का ऊपर जिक्र किया गया है, और जो येलवाल-परिषद में शामिल थे, वे सब यह चाहते हैं कि भारत में 'समाजवाद' की स्थापना हो। श्री जयप्रकाशजी ने सर्वोदय-सम्मेलन के व्यासपीठ से इन सब दलों के सामने यह सवाल प्रस्तुत किया था कि आखिर भारत जैसे "कृषिप्रधान देश के लिए समाजवाद का अर्थ है क्या?" और जैसा उन्होंने बतलाया हिन्दुस्तान जैसे खेती प्रधान देश में समाजवाद का केवल एक ही अर्थ है, और वह है—भूमि का सामुदायिक स्वामित्व और व्यवस्था। ग्रामदान ने सामुदायिक स्वामित्व और व्यवस्था का एक कारगर हल पेश किया है। ग्रामदान का कार्यक्रम तो स्वेच्छिक रहा है और आगे भी वैसा ही रहना चाहिए, फिर भी जिन लोगों का कानून की शक्ति में ही विश्वास है, पर जिन्होंने ग्रामदान के ध्येय से अपनी सहमति जाहिर की है, उनका स्पष्ट कर्तव्य है कि आगामी चुनाव के समय जब वे जनता के सामने मत प्राप्त करने के लिए जायँ, तो अपने घोषणा-पत्रों में इस बात को स्पष्ट जाहिर करें कि भूमि की व्यक्तिगत मालकियत खतम होकर वह ग्राम-सभा के नाम हस्तान्तरित होनी चाहिये। निश्चय ही लोकतंत्रीय सिद्धान्त के अनुसार इसके लिये कानून बनाने से पहले जनमत को तैयार कर लेना आवश्यक है और यह काम राजनैतिक पार्टियों के तथा अन्य सब लोग मिल कर कर सकते हैं।

हमें आशा है कि देश की प्रमुख राजनैतिक पार्टियाँ, जिन्होंने ग्रामदान के ध्येय और कार्यक्रम को स्वीकार किया था और उसका हार्दिक समर्थन किया था, वे भूमि-समस्या जैसे बुनियादी और महत्व के राष्ट्रीय प्रश्न पर अपनी स्पष्ट राय जाहिर करेंगी।

—सिद्धराज

खादी-ग्रामोद्योगों के अस्तित्व का प्रश्न

दिल्ली से प्रकाशित आर्थिक विषयों पर विवेचन करने वाली हिन्दी की प्रमुख पत्रिका 'सम्पदा' ने आयोजन की एक महत्वपूर्ण बात की ओर ध्यान दिलाया है कि किस प्रकार तीसरी पचवर्षीय योजना के अंतिम प्रारूप में खादी-ग्रामोद्योगों के साथ जाने-अनजाने में न केवल उपेक्षा बरती जा रही है, अपितु उससे उनके अस्तित्व को ही खतरा है। 'सम्पदा' के सम्पादक ने इस सबध में खादी-ग्रामोद्योग आयोग के कार्यकर्ताओं को सजग रहने की चेतावनी दी है। 'सम्पदा' की टिप्पणी इस प्रकार है :

"तीसरी योजना के अन्तर्गत राज्यों का उद्योग विकासक्रम अब अन्तिम रूप से तैयार हो गया है। इसमें बारह नये औद्योगिक और तीन नये खनिज-कार्यक्रम सम्मिलित हैं। पश्चिमी बगाल व कश्मीर में एक एक सूती मिल, मद्रास में स्टील प्लाट और रीलिंग मिल, आसाम में गैस वितरण, काश्मीर के कलाकोट में कोयले की खान, राजस्थान में लिग्नाइट की खान तथा मैसूर में लोहे और मैंगनीज की खान का विकास सम्मिलित हैं। प्रशासकीय क्षेत्रों में कुल १५२६ करोड़ रुपये के औद्योगिक विकास का आयोजन है, जिसमें ७६ करोड़ रुपया उपर्युक्त राजकीय औद्योगिक विकास-कार्यों में लगेगा। बहुत से चलतू विद्यमान उद्योगों का विकास भी किया जायेगा। इन पर भी करोड़ों रुपये का व्यय होगा।

प्रश्न यह है कि इन बड़े उद्योगों में सूती मिलों को रखने की क्या आवश्यकता थी? कश्मीर और बंगाल में खद्दर को अधिक प्रोत्साहन देने की आवश्यकता थी। क्या हमारी योजना में ग्रामोद्योगों के विकास का कोई विशेष महत्त्व नहीं है?

एक दूसरे समाचार के अनुसार भारत सरकार ने सूती मिलों को यह सलाह दी है कि वे मोटा कपड़ा बनाने की ओर अधिक ध्यान दें। मोटा कपड़ा बनाने में मिलों को कोई विशेष खर्च नहीं करना पड़ेगा। केवल रूई की अधिक आवश्यकता है, जो आज अधिक सुलभ होगी। पिछले कुछ समय से मिलें महीन कपड़ा बनाने की ओर अधिक ध्यान दे रही हैं। जनवरी १९५७ में कुल कपड़े का २१.५ प्रतिशत मोटा कपड़ा मिलों में बनाया गया। नवम्बर १९६० में यह प्रतिशत गिर कर १५.५४ प्रतिशत रह गया और दूसरी तरफ मीडियम कपड़े का प्रतिशत ६६.२९ से बढ़कर ७४.६६ हो गया। इसका अर्थ यह है कि मोटे कपड़े की ओर मिलों का ध्यान कुछ कम-कम होने लगा है। अब सरकार उन्हें फिर मोटा कपड़ा बनाने की ओर प्रेरित कर रही है।

खादी-ग्रामोद्योग बोर्ड के अधिकारियों को इस प्रश्न पर गम्भीरता से विचार करना चाहिये। क्या खद्दर और हाथकर्घे का कपड़ा मिलों के मोटे कपड़े का स्थान नहीं ले सकता? यदि खद्दर को टिकना है तो उसे मिलों की प्रतिस्पर्धा से बचाना होगा, न कि मिलों को और भी मोटा कपड़ा तैयार करने के लिये प्रेरित करना।"

हमें उम्मीद है कि सर्व सेवा संघ की 'खादी ग्राम-स्वराज्य समिति', जिसकी बैठक २१ जुलाई को पूसा रोड में हो रही है, विचार करेगी और इस सम्बन्ध में खादी-ग्रामोद्योग और अन्य खादी-ग्रामोद्योग की संस्थाओं के मार्फत इस सम्बन्ध में सरकार को अपनी 'दुहरी' नीति छोड़ कर स्पष्ट नीति अख्तियार करने को कहेगी। हमारी मान्यता है कि खादी-ग्रामोद्योगों के क्षेत्र में मिलों का यह आक्रमण देश में बढ़ती हुई बेकारी को और बढ़ायेगा।

—सतीन्द्रकुमार

सत्याग्रह की मीमांसा : २ :

—दादा धर्माधिकारी

[पिछले अंक में दादा ने सवाल उठाया कि सत्याग्रह जीवन का नियम है अथवा प्रतिकार की पद्धति है, और जवाब दिया कि सत्याग्रह जीवन के विकास का साधन है और प्रतिकार है, तो केवल बुराई का प्रतिकार है, न कि बुराई करने वाले के साथ। यह सत्याग्रह की मूल भूमिका है। इसी बात को समझाते हुए आपने बताया कि सत्याग्रह न धर्म-युद्ध है और न युद्ध का पर्याय ही है। सत्याग्रह तो कौटुंबिक न्याय है और इस न्याय का आधार प्रेम की अभिव्यक्ति है। इसलिए सत्याग्रह की अंतिम शक्ति प्राणसमर्पण की है, उत्सर्ग की है।

इस अंक में सत्याग्रह का आगे विवेचन करते हुए बतलाया कि सशस्त्र प्रतिकार उग्र, उग्रतर, उग्रतम होता चला जाता है, जब कि सत्याग्रह सौम्य, सौम्यतर, सौम्यतम होता जाता है। इसलिए सत्याग्रह की धमकी नहीं हो सकती, सत्याग्रह में समझाने अपेक्षा समझने पर ज्यादा जोर दिया जाना चाहिए और सत्याग्रह समाज-व्यवस्था को नष्ट-भ्रष्ट नहीं करता है, बल्कि उन नियमों की स्थापना करता चला आता है, जो समाज के अंतिम आधार हों। अन्त में आपने इस सवाल पर विश्लेषण किया कि क्या बहुमत, अल्पमत के खिलाफ सत्याग्रह कर सकता है और सामुदायिक सत्याग्रह और व्यक्तिगत सत्याग्रह में क्या अंतर है? —सं०]

सशस्त्र प्रतिकार और अहिंसात्मक सत्याग्रह की भूमिका में एक मुख्य अंतर यह भी है कि हिंसा के कार्यक्षम होने के लिए यह उसकी शर्त है कि हिंसा का अमल तुरन्त होना चाहिए और यह क्षिप्रकारी होनी चाहिए। एक ही वार से सब काम होना चाहिए। दूसरे वार की आवश्यकता नहीं होनी चाहिए।

सत्याग्रह में इस प्रकार की कालमर्यादा नहीं हो सकती है। सत्याग्रह में जो काल मर्यादा होती है, उसका उद्देश्य इतना ही होता है कि एक बार मैं मैं आपके हृदय-परिवर्तन का प्रयास करता हूँ, अगर सफल नहीं हुआ तो उसी प्रकार के दूसरे उपाय का प्रयोग दूसरी बार करूँगा।

काल-मर्यादा का सवाल

इन दो तरह की काल-मर्यादाओं में बहुत अंतर है। एक काल-मर्यादा आपका अंत करने की है और दूसरी काल-मर्यादा आपके जीवन का विकास करने की है। प्रेम जितना उत्कट होगा, सत्याग्रह उतना प्रभावशाली होगा। सशस्त्र प्रतिकार में प्रेम की उत्कटता की आवश्यकता नहीं है। चित्त का कोई भी आवेग जितना उग्र होगा, उतनी प्रतिकार में तीव्रता होगी। प्रेम उग्र भाव नहीं है, वह कोमल भाव है। प्रेम हमेशा कोमलता के साथ चलता है। जिसके लिए हमारे मन में प्रेम हो, उसके प्रति हम कभी उग्र नहीं हो सकते।

सत्याग्रह का स्पर्श

इसलिए सशस्त्र प्रतिकार के विषय में हम यह कहते हैं कि वह उग्र, उग्रतर, उग्रतम होता चला जाता है और सत्याग्रह सौम्य, सौम्यतर और सौम्यतम होता चला जाता है।

सत्याग्रह प्रतिकार को मधुर बना लेना चाहता है। तो शस्त्र और सत्याग्रह के स्पर्श, इन दोनों में कितना अंतर है! सत्याग्रह का स्पर्श जहाँ तक हो सके शीतल और मधुर होना चाहिए।

इसलिए सत्याग्रह की धमकी नहीं हो सकती।

सत्याग्रह में शारीरिकता कम है

सशस्त्र प्रतिकार में शारीरिक कुशलता और शस्त्र निपुणता का महत्त्व अधिक होता है। सत्याग्रह में मनोवृत्ति की प्रबलता और बुद्धि की स्थिरता का महत्त्व अधिक होता है। इसलिए सत्याग्रह में जो शक्ति है वह चित्त की और बुद्धि की शक्ति है। दोनों में शक्ति का अधिष्ठान ही अलग-अलग हो जाता है। इसलिए सत्याग्रह में शारीरिकता कम है। यहाँ पर शारीरिकता शब्द मैं पारिभाषिक अर्थ में रख रहा हूँ। शारीरिकता में आकार, संख्या भी आ जाती है। सत्याग्रह में आकार और संख्या का महत्त्व कम हो जाता है। लोकतंत्र की दृष्टि से संख्या का महत्त्व है। जिनकी संख्या अल्प है, उसके लिए प्रतिकार का अमोघ साधन सत्याग्रह बन जाता है। लेकिन कब? जब उनके पास हृदय और बुद्धि का बल हो, जिनका दिल संगीन हो और दिमाग शान्त हो, ऐसे अल्प-संख्य लोगों के लिए सत्याग्रह-स्वार्थ रक्षा का नहीं, स्वत्वरक्षा का साधन है।

अल्प-संख्य जहाँ तक हो सके, बहुमत को समझाने की कोशिश करते हैं— डर से नहीं, दबाव से नहीं, लेकिन सह-जीवन की प्रेरणा से और इसके लिए वे इस बात की लगातार कोशिश करेंगे कि बहुमत की बात समझें, बहुमत के साथ चलें।

लेकिन जहाँ उनका आत्म-प्रत्यय यह होगा कि बहुमत गलती कर रहा है, प्रमाद कर रहा है, तब एक मनुष्य का भी यह पवित्र कर्तव्य हो जाता है कि वह बहुमत का प्रतिकार करे, क्योंकि फिर उसके पास सिवा सत्याग्रह के दूसरा कोई साधन नहीं रह जाता है।

सत्याग्रही समझने पर जोर देता है

इस सत्याग्रह में बहुमत को समझने की कोशिश है। आप दूसरे पक्ष की बात समझने की अंत तक कोशिश करते हैं— प्रतिकार करते हुए भी प्रतिपक्षी के पक्ष को समझने की कोशिश लगातार हो रही है। और जिस क्षण से वह समझ लेता है कि सामने वाले का पक्ष सत्य है और मेरा पक्ष गलत है, उस क्षण वह अपनी इज्जत की, अपनी प्रतिष्ठा की कोई चिंता नहीं करेगा, उल्टे उसे आनन्द होगा कि अब तक सामने वाले की बात समझने की कोशिश की, लेकिन समझ में नहीं आती थी, लेकिन अब आज रोशनी मिल गयी। यह सत्याग्रह नहीं है कि एक बार कदम उठा लेने पर वह हमारी प्रतिष्ठा का प्रश्न बन जाये। सत्याग्रह में अंत तक समझने की हमारी जिम्मेदारी है—चाहे वह समझाये या न समझाये, क्योंकि हम सत्याग्रह को अपने सत्य की खोज का एक हिस्सा मानते हैं। सत्याग्रह हमारे सत्य के अन्वेषण का एक प्रयोग है। इसलिए प्रतिपक्षी की यह जिम्मेदारी नहीं है कि हमें समझाये, बल्कि हम ही उसे समझें। यह सत्याग्रह की दूसरी मर्यादा है।

सत्याग्रह और समाज-व्यवस्था

सत्याग्रह की तीसरी मर्यादा भी इतनी ही मूलभूत है और वह यह है कि सत्याग्रह समाज-व्यवस्था को नष्ट भ्रष्ट नहीं करता। आज अगर समाज-व्यवस्था अत्याचारी हो, अन्यायमूलक हो, शोषणमूलक हो, दंड-मूलक हो, तो आज की समाज-व्यवस्था का वह अन्त करेगा। लेकिन किसलिए? वास्तविक समाज-व्यवस्था की मर्यादाओं की स्थापना के लिए। इसलिए सत्याग्रह में सामाजिक मर्यादा का भंग कहीं नहीं होता। संसद ने भी सामाजिक मर्यादा के खिलाफ एकमत से भी कोई कानून बनाया है, तो वह कानून वैधानिक भले ही हो, लेकिन सामाजिक दृष्टि से शुद्ध नहीं होगा। हम उस कानून को पवित्र नहीं मानेंगे।

सामुदायिक हिंसा समाज-बाह्य हिंसा है, संगठित हिंसा है, लेकिन इतने से वह अहिंसा नहीं बन जाती है। इसी प्रकार सत्याग्रह भी कानून-भंग करता है, सविनय अवज्ञा करता है, तो पहले ऐसे कानूनों का भंग करता है जो कानून अनैतिक हैं। नैतिक कानूनों का वह भंग नहीं करता और सारी की-सारी समाज-व्यवस्था का उसे अंत करना होता है, तब भी वह उन नियमों की स्थापना करता चला जाता है, जो नियम समाज के अंतिम आधार हों।

बन्धुत्व के विकास के लिए प्रतिकार हो

प्रतिकार की पद्धति में और प्रतिकार की प्रक्रिया में भी उन नियमों का आधार होना चाहिए, जिन नियमों की हम समाज में स्थापना करना चाहते हैं। ये कौनसे नियम हैं? प्रेम का नियम है, जिसे हम सत्य और अहिंसा का नियम कहते हैं, बन्धुत्व का नियम कहते हैं। हमारा प्रतिकार ऐसा हो, जिससे बन्धुत्व की हानि समाज में नहीं हो। हमारे प्रतिकार में प्रतिकार की पद्धति और प्रक्रिया ऐसी हो, जिससे बन्धुत्व का विकास हो। यह उसकी एक मूलगामी मर्यादा है।

अल्पमत के खिलाफ सत्याग्रह

क्या बहुमत और बहु-संख्यकों का अल्प-मत और अल्प-संख्यकों के खिलाफ सत्याग्रह हो सकता है?

प्रातिनिधिक राज्य हमने अपनी तरफ से ईमानदारी से कायम किया। कायम करने के बाद या तो प्रतिनिधियों में और हममें यानी जनता में प्रामाणिक मतभेद हो। अगर दोनों में प्रामाणिक मतभेद हो, तो प्रतिनिधि को त्यागपत्र दे देना चाहिए। लेकिन इसके बदले में प्रामाणिक मतभेद हो जाने के बाद भी प्रतिनिधि अगर कहते हैं कि हम तो आपकी बात नहीं मानेंगे, अपने ही मत के अनुसार चलेंगे तो ऐसे वक्त सत्याग्रह का मौका आ सकता है। लेकिन अगर लोकमत प्रामाणिक होगा और लोकमत प्रभावशाली होगा तो ऐसी स्थिति में सत्याग्रह की नौबत ही नहीं आयेगी; क्योंकि सरकार काम ही नहीं कर सकेगी। असहयोग की भी नौबत नहीं आयेगी।

सत्याग्रह और मतदान

आज सत्याग्रह क्यों होता है? इसलिए होता है कि मतदान अप्रामाणिक है। जहाँ मतदान अप्रामाणिक है, वहाँ सत्याग्रह प्रामाणिक नहीं हो सकता। आज लोगों का वोट खरीदा जाता है और लोग भय के कारण वोट देते हैं, तो सत्याग्रह भी खरीद लिया जा सकता है। सत्याग्रह सफल तभी हो सकता है, जब धन उसको खरीद नहीं सकता और शस्त्र उसको दबा नहीं सकता। ऐसे सत्याग्रह के अधिकारी वे लोग हैं, जो मतदान भी लोभ और भय के कारण नहीं करते। सत्याग्रह लोकनीति का अंश है। मुरव्वत, डर और लालच की वजह से जहाँ मतदान किया जाता है, वहाँ सत्याग्रह सफल नहीं हो सकता। वह सत्याग्रह मतदान की तरह ही बोगस है। जैसा मतदान अप्रामाणिक है, अवास्तविक है, उसी प्रकार सत्याग्रह भी अप्रामाणिक है, अवास्तविक है। प्रातिनिधिक लोकतंत्र में सत्याग्रह की यह एक मर्यादा है।

एक व्यक्ति भी जगत् का परिवर्तन कर सकता है

एक मर्यादा सत्याग्रह की और है। सत्याग्रह भी सामुदायिक होता है। दो तरह का सत्याग्रह होता है: व्यक्तिगत और सामुदायिक। व्यक्तिगत सत्याग्रह में एक

व्यक्ति अपने मनोबल के भरोसे खड़ा है। मनोबल का द्रव्य क्या है? प्रेम। मनोबल किसी विकार से अगर होगा तो वह कम होगा; क्योंकि विकार क्षणिक होता है और मर्यादित होता है। मनोबल प्रेम का होगा, तो वह अथाह होगा, अनंत होगा, असीम होगा, क्योंकि प्रेम की कोई सीमा नहीं होती। मनोबल का द्रव्य, उसका उपादान अगर प्रेम है, तो एक मनुष्य का सत्याग्रह भी सफल हो सकता है, प्रभावशाली हो सकता है। गांधी ने तो यहाँ तक कहा था कि एक सत्याग्रही भी सारे जगत् का हृदय-परिवर्तन कर सकता है। तो लोगों ने उसे एक अर्थ में माया का अवतार समझा; क्योंकि ऐसा सत्याग्रही कोई है नहीं। लेकिन एक मनुष्य इतना मनोबल, विश्वव्यापी प्रेम लेकर अगर खड़ा हो जाय, तो दूसरों का सारा वैर, उनका द्वेष नमक की डली की तरह घुल जायगा।

सत्याग्रह स्वतंत्र मार्ग

सामुदायिक सत्याग्रह में हर व्यक्ति के मनोबल का महत्त्व है। प्रमुख व्यक्तियों के मनोबल का अधिक महत्त्व है। परन्तु प्रवृत्ति और प्रयत्न सबका समान होना चाहिए, अपनी-अपनी भूमिका से। हरएक का मनोबल उतना नहीं होगा, लेकिन हरएक की प्रेरणा, मूल प्रवृत्ति और प्रयत्न एक ही दिशा में होंगे। इसका मतलब यह है कि अभिप्राय में समानता होगी, जैसे सामुदायिक प्रार्थना में होती है। सेना और सामुदायिक प्रार्थना में अन्तर है। सेना में हरएक की समान प्रेरणा की आवश्यकता नहीं होती, सेना में समान उत्कटता की आवश्यकता नहीं है। लेकिन प्रार्थना में प्रेम और प्रेरणा समान होनी चाहिए। जैसे सामुदायिक प्रार्थना में मनुष्य के सान्निध्य से मनुष्य को शक्ति मिलती है, उसी प्रकार की शक्ति सामुदायिक सत्याग्रह से मिलती है। सामुदायिक सत्याग्रह की तुलना सामुदायिक उपासना से हो सकती है, सैनिकता से नहीं। सैनिकता एक अलग चीज है और सत्याग्रही शक्ति एक दूसरी चीज है। इसलिए जैसा शुरू में मैंने कहा है कि यह सैनिकता का एक अहिंसक पर्याय नहीं है, विकल्प भी हो ही नहीं सकता। सत्याग्रह अपने आप में एक निरपेक्ष, स्वतन्त्र मार्ग है। [समाप्त]

बिहार का 'बीघे में कट्ठा' अभियान

मौजूदा तरीके की आखिरी लड़ाई

दाबूराव चंदावार

[बिहार के अभियान में सारे देश की ताकत लगनी चाहिये यह सही है। साथ ही लेखक ने कुछ ऐसे मुद्दों की ओर ध्यान आकर्षित किया है, जो उनकी निगाह में आन्दोलन की मौजूदा परिस्थिति के कारण हैं। सर्व सेवा संघ की प्रबंध समिति ने सम्मेलन के समय अपनी बैठक में एक उपसमिति आन्दोलन के पिछले दस वर्षों के काम का मूल्यांकन करने के लिए नियुक्त की थी। इस संदर्भ में यह लेख विचारोत्तेजक होगा ऐसी आशा है। —सं०]

महाराष्ट्र सर्वोदय-मंडल की ओर से बिहार के 'बीघे में कट्ठा, दान दो इकट्ठा' अभियान में शामिल होने के लिए मैं बिहार आया। इस अभियान में प्राप्त किये अनुभव से भूदान या सर्वोदय-आन्दोलन के बारे में कुछ सवाल खड़े होते हैं। उनमें से कुछ सवाल मैं यहाँ पेश कर रहा हूँ।

बिहार प्रदेश में १९५४ में भूदान कार्य का जो दर्शन हुआ, उससे भूदान-आन्दोलन यश के समीप आने लगा, ऐसा विश्वास बहुतों को हुआ था। उसके बाद उड़ीसा के ग्रामदान के कार्य ने इस यश को दृढ बनाने में सहायता दी। लेकिन पूर्ण यश ग्रामदानी गाँवों में आगे का निर्माण-कार्य (केवल आर्थिक नहीं, सामाजिक और नैतिक भी।—सं०) होगा और उससे जो परिणाम निकलेंगे, वही माना गया। उड़ीसा के निर्माण कार्य के परिणामों से कुछ निराशा फैली। निराशा के बादल ने इस समय सारे भूदान या सर्वोदय-आंदोलन को घेर रखा है। कार्यकर्ताओं का आत्मविश्वास गिरा है। गिरे हुए आत्म विश्वास को उठाने में विनोबा की चल रही तपश्चर्या मौजूद होने पर भी सामान्य कार्यकर्ता आत्मविश्वास के साथ उठ खड़ा हुआ, ऐसा अनुभव नहीं आया है। मेरे ख्याल से आत्मविश्वास लाने की दृष्टि से ही 'बीघे में कट्ठा' का अभियान विनोबाजी ने उपयुक्त माना है। इस अभियान से, अभियान के योग्य परिणामों से फिर से भूदान-कार्य आंदोलन के रूप में खड़ा हो सकेगा, तभी भूदान या सर्वोदय के कार्य का आज का अस्तित्व बना रहेगा।

लेकिन बिहार के अभियान की आज की पद्धति में वैसा कोई अनुभव हमें नहीं हो रहा है, इसका दुःख होता है। बिहार में चल रहे अभियान के सम्बन्ध में सोचने का हमारा दृष्टिकोण अखिल भारतीय होना चाहिए। विनोबाजी का बिहार पर बहुत बड़ा प्रभाव है। हर देहात में विनोबाजी को पहचानने वाले लोग हैं। वे उनके विचारों से परिचित भी हैं। ऐसा अनुभव जहाँ तक मेरा सम्बन्ध और प्रदेशों से आया, और प्रदेशों का नहीं है। ऐसा होने पर भी लोगों में निराशा क्यों आयी, इस सम्बन्ध में सोचना आवश्यक है।

(१) बिहार में कुल २१ लाख एकड़ से भी ज्यादा भूमि आन्दोलन के कारण प्राप्त हुई। दो लाख सत्तावन्ने हजार लोगों ने कुल साढ़े छै सौ हजार गाँवों में दान-पत्र दिये। इनमें से चौदह हजार दो-सौ गाँवों में करीब एक लाख अड़तीस हजार भूमिहीनों को दो लाख पैंसठ हजार छः सौ छियालीस एकड़ भूमि अब तक बाँटी गयी है। करीब आठ नौ लाख एकड़ जमीन जो बँटने लायक नहीं है, ग्राम-मालिकी की रही है, ऐसा मानना चाहिए। फिर भी भूमि-प्राप्ति की तुलना में वितरित भूमि कम दिखाई देती है। भूमि के वितरण में हुए इस विलंब का असर लोगों पर है। लोग पूछते हैं कि प्राप्त भूमि वितरित क्यों नहीं हुई? इसका जवाब भूदान-कमेटी के पास जो हो, वह स्पष्ट लोगों के सामने आना चाहिए।

(२) प्राप्त भूमि में चौदह लाख एकड़ भूमि महाराजाओं की है। उसमें आठ लाख एकड़ भूमि केवल एक दाता, महाराजा हजारीबाग की दी हुई है। आधे से कुछ कम भूमि छोटे जमींदार और छोटे भूमि मालिकों से प्राप्त हुई है। मध्यम वर्गीय जनता इस आंदोलन से दूर रही, ऐसा स्पष्ट है। मध्यम वर्ग का आंदोलन में शामिल न होना आज की रुकावट का एक कारण मानना चाहिए। आज इन्हीं लोगों का प्रत्यक्ष विरोध हो रहा है।

(३) विनोबाजी ने पहले छठा हिस्सा माँगा था। लेकिन अभी 'बीघे में कट्ठा' याने बीसवाँ हिस्सा माँगना शुरू किया गया। इस कदम का वास्तविक मतलब लोगों के सामने न रखने से आंदोलन नीचे आया है, ऐसा लोगों का खयाल हुआ है।

(४) भूमि दान के कार्यक्रम में लोगों ने समझ बूझ कर हिस्सा नहीं लिया था, ऐसा बिहार के कार्यकर्तागण बोलते रहते हैं। कुछ प्रभावी लोगों के दबाव से लोगों ने दान दिया। यदि ऐसा नहीं होता तो बेदखली नहीं बढ़ती। बिहार में बेदखली की बहुत बड़ी समस्या है।

(५) बिहार में भूदान-आंदोलन नेताओं का चलाया हुआ आंदोलन साबित हुआ। सामान्य कार्यकर्ताओं की कोई ताकत बढ़ी नहीं, उनकी योग्यता बढ़ी नहीं। लेकिन आज उन्हीं कार्यकर्ताओं से अभियान चलाया जा रहा है। इन कार्यकर्ताओं की ताकत बढ़े, ऐसी कोई योजना नहीं है। सामान्य कार्यकर्ताओं का व्यक्तित्व बनाने में जितना ध्यान देना अनिवार्य था, उतना ध्यान नहीं दिया गया। लोगों में इन कार्यकर्ताओं का कोई प्रभाव नहीं है। इसलिए जन आंदोलन बनाने में आज मुश्किल पैदा हुई है। मंत्रियों या राजनैतिक नेताओं में से किसी की सहायता इस समय नहीं है। लोगों को हमारे पिछले बर्ताव से गलतफहमी हुई थी कि शासन के सहयोग से आंदोलन चल रहा है। लेकिन आज वह सहयोग लोगों को नहीं दीखता।

(६) कार्यकर्ताओं की कमी न होने पर, अनुकूल स्थिति होने पर कार्य का संयोजन करने की, समय का व्यवस्थित ढंग से उपभोग करने का तरीका हमारे आंदोलन में नहीं रहा, ऐसा बिहार के अनुभव से लगता है।

उपर्युक्त सारी बातें ध्यान में लेते हुए भूदान-आंदोलन को सामर्थ्यशाली बनाने का यदि सोचना है तो बिहार में चल रहे अभियान से सफलता किस तरह प्राप्त की जा सकती है, इस बारे में देश के आंदोलन में रहे हुए सब विचारक और कार्यकर्ताओं को गंभीरता से सोचना होगा। बिहार में चले अभियान को इस तरीके की आखिरी लड़ाई मान कर देश की पूर्ण ताकत लगानी होगी। मौजूदा तरीके से भूमि-समस्या हल न हो सकी तो उसके हल का नया अहिंसक रास्ता ढूँढ़ना होगा। वह नया रास्ता क्या होगा, यह भी सोचने की जिम्मेदारी हमारे ऊपर आती है।

स्थानीय नस्ल का महत्त्व

श्री दत्तात्रय मजुमदार सुरडे पुराने गोसेवक हैं। वर्षों तक वे गोपुरी, वर्धा में रह कर गो-सेवा का काम करते रहे। आजकल बेंगलोर के पास 'पंचवटी गो-सेवा आश्रम', गोटगिरी में नस्ल-सुधार के कार्य में लगे हुए हैं। गो-सेवा के काम के बारे में उन्होंने अपने एक पत्र में सामयिक चेतावनी दी है। श्री सुरडेजी लिखते हैं :

"गो-सेवा के काम में कभी-कभी हम एक भूल कर बैठते हैं, जिसकी ओर ध्यान [illegible]

[illegible] जमे-जमाये जीवन के साथ यह एक खतरा है। पाँच गायें पालने वाले किसान को रोज २-३ सेर दूध, छाछ के लिए मिल जाय तो उसका निभ सकेगा। उसको खाद और बैलों से ज्यादा गरज है। और बैल भी स्थानीय नस्ल के ही हों, तो खेती में ज्यादा उपयोगी होते हैं। हाँ, यह दुग्ध का व्यवसाय नहीं चल सकेगा, यह अलग बात है।"

जिनको २ अगस्त को पहली पुण्यतिथि है

शांति-सैनिक मे० ज० यदुनाथ सिंह

मणीन्द्र कुमार

[पिछले साल 'भूदान-यज्ञ' के सहसम्पादक श्री मणीन्द्रकुमार विनोबाजी के साथ इन्दौर-यात्रा में थे। उस वक्त मेजर जनरल श्री यदुनाथ सिंह का देहावसान हुआ। उनकी प्रथम पुण्यतिथि, २ अगस्त के निमित्त यह संस्मरण हम यहाँ श्रद्धापूर्वक दे रहे हैं। —स०]

पिछले साल अगस्त की दूसरी तारीख को जब बाहर से आकर देखा तो विनोबाजी के कमरे में एकदम सन्नाटा छाया हुआ था। लोग ऐसे बैठे हुए थे, मानों मौन प्रार्थना कर रहे हों! हमें आश्चर्य हुआ, क्योंकि वह प्रार्थना का समय नहीं था। इतने में एक भाई ने कहा कि आपने सुना है कि नहीं, यदुनाथ सिंहजी का देहान्त हो गया! सुन कर मैं स्तब्ध रह गया!

× × ×

चम्बल घाटी में प्रेम और शान्ति के अभियान के बाद विनोबा उन दिनों इन्दौर में थे। चम्बल घाटी के आत्मसमर्पण की घटना हिन्दुस्तान का ही नहीं, दुनिया का ध्यान आकर्षित कर चुकी थी।

हिंसा ने अहिंसा के चरणों में आत्म-समर्पण किया, और वह भी स्वेच्छा से।

जनवरी '६० के शुरू में विनोबा कश्मीर में पदयात्रा कर रहे थे और वहाँ से उनको इन्दौर जाना था। भिण्ड क्षेत्र के और देश के हितचिंतकों ने विनोबा से प्रार्थना की कि वे चम्बल घाटी के रास्ते से इन्दौर जावें। "हो सकता है, आपके आने से कुछ राहत लोगों को मिले।" कश्मीर की पदयात्रा की व्यवस्था उन दिनों मेजर जनरल यदुनाथ सिंह कर रहे थे। वे कश्मीर और जम्मू पब्लिक सर्विस कमीशन के चेअरमन थे। उसके पहले उनको राष्ट्रपति के प्रथम सैनिक-सचिव होने का गौरव मिल चुका था और इससे पहले जब कश्मीर में पाकिस्तान के कबाइलियों

विनोबा से चर्चा करते हुए श्री यदुनाथ सिंह

ने हमला किया, उस वक्त आप भारत सरकार की सेना के प्रमुख अधिकारियों में से एक थे, जिन्होंने भारत-रक्षा के लिए अपनी जान की बाजी लगा दी थी।

बड़े ही धार्मिक प्रवृत्ति के, श्रद्धावान व्यक्ति थे—चाहे जंग हों, चाहे अमन हों, चाहे राष्ट्रपति की सेवा में हों या संत के चरणों में हों, वे भगवान की पूजा किये बिना रह नहीं सकते थे। उनके इस स्वभाव के कारण लोग उन्हें 'भगत जनरल' कहते थे।

और यदुनाथ सिंह मूलतः रहने वाले भी थे उस इलाके के, जहाँ डाकुओं का आतंक छाया हुआ था। विनोबाजी ने इस संयोग का लाभ उठा कर यदुनाथ सिंहजी को पूर्वतैयारी के लिए भिण्ड क्षेत्र में भेजा।

यदुनाथ सिंह चम्बल के बेहड़ों में निहत्थे निकल पड़े—जहाँ कोई अकेले जाने की हिम्मत नहीं करता था, और उन लोगों के बीच गये, जो पल भर के लिए भी बन्दूक कन्धे पर से नहीं उतारते थे। उन्होंने उन लोगों का विश्वास प्राप्त किया। आत्मसमर्पण करने वाले बागियों ने कहा,

"आज तक तरह-तरह के लोग आये, और जो भी लोग आये, वे सब हमें भूने मारने वाले ही थे। प्रेम से ही हमसे बात करने वाले थे। प्रेम की बात तो कभी किसी ने हमसे की ही नहीं। जनरल साहब पहले आदमी थे, जिन्होंने हमें प्रेम से समझाया कि तुम लोग गलत रास्ते पर चले गये हो। अब छोड़ो इसे और अपने किये पर पश्चाताप करो। उनकी बात हमें जँच गयी और हमने तय कर लिया कि हम यह गलत रास्ता छोड़ देंगे। उसके पहले तो हमने कभी सोचा भी नहीं था कि जिन्दगी में हमारी बन्दूक कभी हमारे कंधे से नीचे उतरेगी।"

यही कारण था कि डाकू स्वयं शुद्ध भाव से विनोबा के सामने समर्पित हुए। यही बात श्री यदुनाथ सिंह ने १९ मई को सबेरे चार बजे प्रेस कान्फरेन्स में इन शब्दों में प्रकट की: "दिस इज मानसिंह-रूपा गैंग. दे हैव सरन्डर्ड देयर हार्ट्स, नॉट ओन्ली देअर आर्म्स"—"यह मानसिंह-रूपा का गैंग है। इन्होंने न केवल हथियार, बल्कि अपने हृदय भी समर्पित कर दिये हैं।" यह है डाकुओं के आत्मसमर्पण के पीछे यदुनाथ सिंहजी की तपस्या!

विनोबा ने २२ मई को भिण्ड में ग्राम-रक्षा समितियों के सम्मेलन में कहा, "शस्त्रों से शस्त्रों की समस्या हल नहीं हो सकती। पुलिस की बन्दूक ने कुछ डाकू खतम कर दिये हैं तो कुछ नये पैदा भी कर दिये हैं। ग्राम-रक्षा दल हिंसा के बल से कभी भी यह मसला हल नहीं कर सकता। इससे ग्रामरक्षक ही भक्षक बन जायेंगे। इसकी एक ही दवा है कि गाँव को एक बनाओ और ग्राम रक्षा के बजाय शांति-सेना बनाओ। हमारे जनरल यदुनाथ सिंह तो पहले सैनिक थे। उन्हें बहादुरी के लिए 'महावीर-चक्र' भी मिल चुका है। अब वे हमारे शांति-सैनिक बन गये हैं। बिना शस्त्र लिये वे डाकुओं से मिलने जाते हैं और प्रेम की बात समझाते हैं। ग्रामरक्षा-दलवालों को भी उनकी तरह शांति-सैनिक बन कर गाँव-गाँव में शांति की स्थापना करनी चाहिए। जहाँ शस्त्र रहता है, वहाँ शांति नहीं रहती। यह प्रेम की ही शक्ति है कि बागियों ने अपने शस्त्रों का समर्पण किया।"

और राष्ट्रपति ने राष्ट्र के प्रथम प्रतिनिधि होने के नाते २६ मई ६० को तार भेज कर उनका सम्मान निम्न शब्दों में किया:

"आप उत्तम मानव बनाने के काम में अग्रसर हो रहे हैं। मैं आपके उद्देश्यों की पूर्ण सफलता की कामना करता हूँ। आपके प्रति सद्भावना और सम्मान प्रकट करता हूँ।"

× × ×

हम लोग इन्दौर में ऐसे पराक्रमी पुरुष की बाट जोह रहे थे। वे विनोबा से मिलने के लिए अगस्त के प्रथम सप्ताह में इन्दौर आने वाले थे, किन्तु विधि को कुछ और ही मंजूर था। वे तो नहीं आये, किन्तु श्रीनगर से २ अगस्त को ट्रंक काल आया कि वे सदा के लिए चले गये!

(शेष पृष्ठ १२ पर)

सभाओं में दिया था। इसका उल्लेख मेरे द्वारा रचित पुस्तक "चम्बल के बेहड़ों में" है।

मैंने इसका ब्योरा नहीं रखा है कि अभियुक्तों से कौन-कौन व्यक्ति मिले, क्योंकि अभियुक्त खुले रहते थे। कोई भी व्यक्ति आकर उनसे बात कर लेता था।

यात्रा में पुलिस-अधिकारियों में रोजाना कौन कौन अधिकारी हमारे साथ रहते थे, उन सबके नाम मैं नहीं जानता। मैंने श्री विश्वनाथ सिंह को देखा है व वे पुलिस-अधिकारी हैं। डी० आई० जी० श्री होली व श्री क्वीन्स भी थे। और लोगों के नाम मैं नहीं जानता।

पुलिस अधिकारी कुछ तो वर्दी में रहते थे व कुछ खुफिया पुलिस की वर्दी में थे।

अभियुक्तगण पुलिस की गाड़ी पर श्री यदुनाथ सिंह के साथ भिण्ड जेल को गये थे। १८ मई १९६० को कनेरा, १९ मई को कदोरा, २० मई को पुरपुरा २१ को उदोतपुरा व २२ मई को वे भिण्ड पहुँचे थे। २२ ता० की शाम को अभियुक्त भिण्ड जेल गये थे। ये पाँचों स्थान भिण्ड जिले में हैं। भिण्ड लश्कर से ४८-५० मील है।

जो चित्र मैंने पुस्तक में दिये हैं, उन्हें मैंने स्वयं नहीं उतारा है। उस समय के कई पत्रों में चित्र प्रकाशित हुए हैं व उनका उल्लेख वे पत्र मेरे पास न होने से मैं अभी नहीं कर सकता।

प्रभुआ ने भी श्री विनोबा के समक्ष अपराध स्वीकार किया है। लच्छी के साथ प्रभुआ आया था, किन्तु वह उसका "साथी" था, यह मुझे ज्ञात नहीं है। तमाम में वह साथ रहा, उससे मेरा यह निष्कर्ष नहीं है कि प्रभुआ लच्छी का "साथी" था।

मेरी जो बातचीत अभियुक्त १, से २ हुई, वह अपराध के सम्बन्ध में नहीं थी। जो बातें हुईं, वे साधारण थीं कि गाँव में रहता था, पुलिस ने किसी मामले में फँसा दिया तो भागना पड़ा। लच्छी ने कहा था कि गाँव पर मेरी जमीन है।

अभियुक्त ने यह नहीं कहा कि मैं गाँव में रहता हूँ व फिर चला जाता हूँ। जिन बागियों ने आत्म-समर्पण किया था, उनमें से कुछ ने शस्त्र भी समर्पित किये थे। उनका ब्योरा पुलिस ने रखा है। मेरी पुस्तक का शीर्षक "चम्बल के बेहड़ों में"* है, किन्तु इसका तात्पर्य यह नहीं है कि जिन बागियों ने आत्म-समर्पण किया वे बेहड़ों में रहते थे।

अभियुक्तों ने चिल्ला कर ऐसा नहीं कहा कि हम लच्छी व प्रभुआ हैं।

* चम्बल के बेहड़ों में: बागियों का आत्म समर्पण: लेखक—श्री श्रीकृष्णदत्त भट्ट, प्रकाशक—अखिल भारत सर्व सेवा संघ प्रकाशन, राजघाट, काशी। पृष्ठ ४१८, मूल्य अजिल्द २॥), सजिल्द ३)

"पहले आप" या "पहले हम" ?

—रघुकुल तिलक

[आज देश में पदों के लिए जो आपाधापी चल रही है, उससे जनता के मन में भ्रम पैदा हो गया है कि कल जो हमारे लिए सेवा और त्याग का बाना पहने थे, वे आज सत्ता और कुर्सी के लिए आपस में लड़ रहे हैं। श्री रघुकुल तिलक एक पुराने और पद-निवृत्त सरकारी अधिकारी हैं। उन्होंने आज की इस परिस्थिति का सुन्दर विवरण अपनी विशिष्ट शैली में किया है। उनका उद्देश्य किसी के दिल को दुखाना नहीं है, किन्तु सही स्थिति का वर्णन करना है, जिससे समय रहते मंत्री, समाज-सेवक और अन्य सार्वजनिक संस्थाओं में काम करने वाले नेता सम्हल जायँ और "पहले आप" की नीति को अपनायें। इससे उनके प्रति आम जनता में आदर और विश्वास पैदा होगा और साथ ही सार्वजनिक जीवन का स्तर भी ऊँचा उठेगा। —सं०]

लखनऊ का तकल्लुफ मशहूर है। हर बात में "पहले आप !" दो मित्र यदि रेल-यात्रा पर जाते हों तो डिब्बे में पहले कौन बैठे, यही निश्चय नहीं हो पाता। दोनों झुक-झुक कर बड़े अदब से कहेंगे, "पहले आप !" यहाँ तक की गाड़ी छूट जायगी और ये दोनों स्टेशन पर ही खड़े रह जायेंगे ! इस प्रकार का व्यवहार कभी-कभी हास्यजनक हो जाता है, किन्तु इसके पीछे जो परम्परागत शील छिपा है, वह ध्यान देने योग्य है।

साधारण व्यवहार में हम देखते हैं कि यदि दो या अधिक व्यक्ति एकसाथ हैं और कोई खाने की भी वस्तु सामने आये या किसी स्थान में प्रवेश करना हो अथवा किसी अन्य प्रकार की सुविधा ग्रहण करने का प्रश्न उठे, तो सब कहेंगे, "पहले आप !" ऐसे मौकों पर गतिरोध इसलिए नहीं होता कि जो व्यक्ति उम्र या रुतबे में बड़ा होता है, वह पहल करने को तैयार हो जाता है और इसमें किसी प्रकार का अनौचित्य नहीं माना जाता। पाश्चात्य देशों में भी ऐसे मौकों पर "आफ्टर यू"–"आपके बाद"–कहा जाता है।

ऐसे व्यवहार से क्या प्रकट होता है ? यही कि हम अपने सामाजिक आचरण में इस महान तथ्य को स्वीकार करते हैं कि

हमें अपने से पहले दूसरों का ख्याल करना चाहिए; अधिकार से पहले कर्तव्य की ओर ध्यान देना उचित तथा शोभनीय है।

किन्तु मानव जीवन के अनेक मूलभूत तथ्यों के समान यह तथ्य भी बाह्य आचरण तथा छोटी-छोटी नगण्य बातों तक सीमित रह गया है। जहाँ हमारे स्वार्थ को ठेस लगती है अथवा वास्तव में कुछ त्याग करने का अवसर आ जाता है, वहाँ हम "पहले आप" न कह कर निस्संकोच "पहले हम" कहने लगते हैं और ऐसा कह कर और उसके अनुसार आचरण करने में न कोई अनौचित्य देखते हैं, न किसी प्रकार की लज्जा का अनुभव करते हैं।

राजनैतिक क्षेत्र को ही लें। जब पार्टी 'टिकट' या किसी ऊँचे पद को लेने का प्रश्न उठता है, तो क्या हम क्षण भर के लिए भी सोचते हैं, कि दूसरों को पहले मौका देना चाहिये ! ऐसा तो शायद ही होता हो कि जिस स्थान की मुझे मिलने की संभावना है, उसके लिए मुझसे अधिक योग्य तथा उपयुक्त व्यक्ति मेरे सामने न हो, तो भी मैं "पहले यह" या "पहले आप" कहने की बात नहीं सोचता, केवल "पहले मैं" ही सोचता हूँ। ऐसे मौकों पर हम यह भी नहीं सोचते कि "कभी हम, कभी आप"। केवल यही सोचते हैं कि "पहले हम और हमेशा हम !" यही कारण है कि कांग्रेस-अध्यक्ष श्री संजीव रेड्डी अपने दस वर्ष वाले सुझाव के विषय में यह कहने के लिए बाध्य हुए कि इसे कोई गंभीरता से सोचता ही नहीं !

कहा जायगा कि राजनीति में "पहले आप" के आदर्श पर कैसे अमल हो सकता है ? यहाँ तो योग्य और अनुभवी लोगों की जरूरत है। क्या हम शिष्ट व्यवहार और तकल्लुफ के नाम पर अपना स्थान निकम्मे आदमियों के लिए छोड़ दें ! पहली बात तो यह कि जब किसी पद के लिए प्रतिद्वन्द्विता होती है, तो प्रायः समकक्ष व्यक्तियों के बीच ही होती है और इन्हीं के बीच एक-दूसरे के लिए स्थान छोड़ने का प्रश्न उठ सकता है। ऐसे व्यक्तियों के बीच योग्यता, अनुभव आदि का अन्तर तो होगा ही, किन्तु इतना अधिक अन्तर शायद ही कभी होता हो कि एक को निकम्मा कहा जा सके और दूसरे को सर्वोत्कृष्ट।

दूसरे, कौन किस पद के लिए कहाँ तक उपयुक्त है, इसका निर्णय दूसरों पर छोड़ना ही सच्ची लोकनीति है। यदि आप ही किसी पदविशेष के लिए सर्वथा उपयुक्त हैं तो आपकी इच्छा न रहते हुए भी शायद आप ही चुन लिये जायँ और इस प्रकार देश की हानि न हो।

किन्तु दूसरों के लिए स्थान छोड़ने को तैयार रहना क्या वर्तमान परिस्थिति में यह बहुत ऊँचा आदर्श नहीं है, जिस पर साधारणतः अमल नहीं हो सकता ! यदि गान्धीजी हमारे बीच न हुए होते तो ऐसा सोचना शायद ठीक होता। क्या हमने नहीं देखा कि गान्धीजी ने कभी किसी पद के लिये इच्छा नहीं की और सदैव दूसरों को आगे बढ़ाया ! इसीका फल है कि गान्धीजी के जीवित रहते कांग्रेस में पद प्रतिद्वन्द्विता सदा मर्यादित रही और वे अपने पीछे ऐसे अनेक कर्मठ नेता छोड़ गये, जिन्होंने आजादी के बाद देश का शासन संभाल लिया। हममें से हरएक गांधी नहीं हो सकता, किन्तु आज तो उनके पदचिह्नों पर चलने का प्रयत्न भी छूटता जा रहा है।

व्यावहारिक दृष्टि से भी "पहले आप" की नीति घाटे की नीति नहीं है।

टिकटों और पदों के प्रति अनासक्त भाव रखने से सार्वजनिक जीवन का स्तर ऊँचा उठेगा। साथ ही जो लोग इस नीति को अपनायेंगे, उनके प्रति जनसाधारण के मन में प्रेम, आदर और विश्वास का भाव जगेगा। अनुभव बतलायेगा कि इसका मूल्य तथा महत्त्व किसी भी पद के महत्त्व से कम नहीं है।

यदि हम पदों के पीछे दौड़ना बन्द कर दें तो पद स्वयं हमारे पीछे दौड़ने लगेंगे। त्याग संसार भर में आदर की वस्तु है, किन्तु इस देश में विशेष रूप से योगी को भोगी से बड़ा माना गया है और संन्यासी को सदैव राजा से ऊँचा आसन मिला है।

आज मन्त्रियों के प्रति जनता के मन में प्रेम और आदर का भाव नहीं है। इसके दो मुख्य कारण हैं। एक तो हमारे मन्त्री एक बार कुर्सी पर बैठ कर अपनी इच्छा से उसे छोड़ना नहीं चाहते।

अकारण ही समझ लेते हैं कि हमसे अधिक योग्य व्यक्ति इस कुर्सी के लिए दूसरा नहीं है। जैसा कि विनोबाजी ने सुझाया है, सरकारी कर्मचारियों के समान हमारे मंत्री भी यदि अपने लिये 'रिटायरमेंट' (पद-निवृत्ति) का कोई नियम बना लें तो इससे सभी का लाभ होगा। साथ ही जहाँ कुछ लोग आज बराबर मन्त्री बने हैं और कुछ बराबर संस्था में काम करते हैं, वहाँ इन दोनों के बीच एक प्रकार का 'रोटेशन'–अदलाबदली का चक्र–स्थापित हो सकता है। एक ही व्यक्ति कुछ समय मन्त्री रहे और कुछ समय दूसरों के लिये स्थान छोड़ कर संस्था का काम करे। यही बात विधान-सभाओं और संसद् के सदस्यों पर लागू हो सकती है। इससे जो लोग सरकार से बाहर हैं, उनके मन में हीनता तथा ईर्ष्या का भाव पैदा नहीं होगा और मन्त्रियों के लिये यह कहना मुश्किल हो जायेगा कि वे अपनी कुर्सियों से चिपक गये !

एक दूसरी भूल हमारे मन्त्री यह करते हैं कि बिना संकोच और जरूरत से अधिक ऐसी सुविधाओं का उपभोग करते हैं, जो जनसाधारण को प्राप्त नहीं हैं।

कुछ सुविधाएँ उनके काम के लिये जरूरी हो सकती हैं, जैसे टेलीफोन और मोटर। किन्तु यह कहाँ जरूरी है कि हमारे मन्त्री बड़े-बड़े महलों में रहें, जिनके सामान और सजावट पर लाखों रुपया खर्च किया गया है। बापू का स्वप्न था कि वाइसराय के भवन, जिसमें आजकल राष्ट्रपति रहते हैं, को संग्रहालय या किसान-घर बना दिया जाय और राष्ट्रपति एक "कुटिया" में रहें। यदि इस भावना से काम हुआ होता तो हमारे मन्त्री आज भी आदर और प्रेम के पात्र बने रहते। मैंने एक बार अपने एक मन्त्री मित्र से, जो बाद में एक प्रदेश के मुख्य मन्त्री हुए, कहा कि

यदि गान्धीजी अपने काम लंगोटी पहन कर और झोपड़ी में रह कर चला सकते हैं, तो आप लोगों को इस सब आडंबर की क्यों जरूरत पड़ती है ? वे बोले कि गान्धीजी के ढंग से आजादी की लड़ाई चल सकती थी, किन्तु शासन का काम नहीं चल सकता !

इसी भ्रान्त मनोवृत्ति के कारण आज जनता और मन्त्रियों के बीच एक बड़ा व्यवधान उपस्थित हो गया है।

पश्चिम से हमें 'क्यू' की प्रथा मिली है। यदि हम रेल और सिनेमा में टिकट खरीदने के लिये ही नहीं, बल्कि जीवन के सभी क्षेत्रों में अपने-अपने स्थान के लिये 'क्यू' में खड़ा होना सीख लें, अर्थात् धीरज से प्रतीक्षा करें और प्रसन्नता से अपना प्राप्तव्य ग्रहण करें और 'क्यू' तोड़ कर आगे बढ़ने की कोशिश न करें, तो हमारे सामाजिक तथा राजनैतिक जीवन में निश्चय ही शील, सद्भाव और सहयोग का संचार बढ़ेगा।

समीक्षा

'गांधी' : लेखक–विल्फ्रेड वेलॉक

प्रकाशक : अखिल भारत सर्व सेवा संघ-प्रकाशन, राजघाट, काशी; मूल्य ६ आना।

प्रस्तुत पुस्तिका विल्फ्रेड वेलॉक की अंग्रेजी पुस्तिका 'गांधी ऐज ए सोशल रिवोल्यूशनरी' का हिन्दी अनुवाद है। श्रीमती चन्द्रकला मित्तल ने गांधी विचार-धारा को भलीभाँति हृदयंगम करके अनुवाद किया है। अतः पुस्तक की मौलिकता कहीं खंडित नहीं हुई है। पुस्तक में गांधीजी के महान् अहिंसक क्रान्तिकारी दृष्टिकोण को बड़ी योग्यता और सरलता से संसार के सामने रखा गया है। सर्वोदय-क्रान्ति के प्रत्येक प्रेमी के लिए पुस्तक पठनीय है। बुनियादी तालीम और रचनात्मक कार्यक्रम के द्वारा गांधीजी दुनिया में जिस नवीन अहिंसक समाज की रचना करना चाहते थे उसकी बहुत ही साफ झाँकी इस पुस्तिका में दी गयी है।

पाठकों की ओर से

बाढ़ के खतरे का इलाज

छोटे तालाब, छोटे बाँध, खेतों की मेंड़

[पिछले अंक में हमने बाढ़ के खतरों के बारे में लिखा था। हमारे एक साथी पाठक ने भी बाढ़ के खतरों की ओर ध्यान दिलाया, हालांकि इन भाई ने हमारी टिप्पणी नहीं पढ़ी होगी; फिर भी विचारों की समानता है। —स०]

प्रतिवर्ष ही बाढ़ें आती हैं और करोड़ों की सम्पदा नष्ट होती है। कई लोग मरते हैं। हवाई जहाज से उड़ानें होती हैं, रेडियो भाषण होते हैं, सहायता-फंड खुलते हैं। परोपकारी संस्थाएँ अनाज एवं भोजन बाँट कर अपनी दानशीलता जताती हैं। किन्तु ये सब अस्थायी हैं। आश्वासन, योजनाएँ बनाना आदि तो रोजमर्रा के काम हैं। सूरत में बाढ़ आयी, करोड़ों की योजना बनी। यह करेंगे, वह करेंगे बाढ़ गयी, योजना फाइलों में बन्द! उड़ीसा में बाढ़ आयी नागरिकों को चेतावनी दे दी गयी—कोड़े मारे जायेंगे! आखिर ये सब क्यों?

स्वतन्त्रता के बाद कई बाँध बने, योजनाएँ बनीं। किन्तु बाढ़ एवं अन्य दैवी प्रकोपों के खतरों से मुक्ति नहीं मिली। "ढाक के तीन पात ही रहे।" हमारा तात्पर्य यह नहीं कि शासन ने कुछ भी प्रयत्न नहीं किया। किया अवश्य, किन्तु उचित तालमेल के अभाव में उससे लाभ के बदले हानि अधिक हुई।

काश! ऐसे दुर्दिन न आयें, जब कि अक्षमता एवं ईमानदारी के अभाव में घटिया किस्म के साज-सामान से बने आधुनिक तीर्थ भाखरा नंगल, चम्बल, हीराकुड, दामोदर घाटी, तुंगभद्रा आदि अपनी सीमा रेखा तोड़ कर निकल पड़े और रौद्र रूप धारण कर प्रलयकारी सिद्ध हो जाय! युगपुरुष नेहरू का स्वप्न चूर-चूर हो जायेगा, हमारी सभी अर्थ-व्यवस्था चौपट हो जायेगी।

बाढ़ का खतरा हमारे देश में ही नहीं, पड़ोसी चीन और जापान तथा अन्य देशों में भी था। किन्तु उन्होंने योजनाबद्ध काम किया, प्रत्येक को श्रम की अंजलि देनी पड़ी। आज वे बाढ़ के खतरों से लगभग सुरक्षित हो गये। हमारे योजना-निर्माता श्रम का मूल्यांकन तो करते ही नहीं। छोटी-छोटी योजनाएँ उनको सुहाती नहीं, उसे वे अपव्यय और हानिप्रद मानते हैं। एक सुप्रसिद्ध अर्थशास्त्री के शब्दों में:

> "यदि शासन ने बड़ी योजनाओं पर जितना व्यय हो रहा है, उसका चौथा भाग भी छोटी योजनाओं पर व्यय किया होता, तो अपने साधनों से ही इतना विकास हुआ होता कि अन्न के मामले में स्वावलम्बन आ जाता और बाढ़ों के खतरों से मुक्ति मिल जाती और न सूखा ही पड़ता।"

जो जल वर्षा से आता है, वह यदि गाँवों में धीरे धीरे ताल-तलैया में एकत्र हो जाता, तो क्योंकर नदियों की प्रलयकारी बाढ़ें आती और भूक्षरण होता? हमारे पूर्वजों ने दो कारणों से ताल-तलैया बाँधने का उपक्रम किया था। एक तो सिंचाई और दूसरे, बाढ़ के खतरों से और भूमि के कटाव से मुक्ति। दुःख है कि आज हर गाँव के तालाबों की पालें टूट-फूट गयी हैं, उनमें खेती होने लगी है। एक तरफ नये तालाब निर्माण में लाखों का व्यय होने पर भी बूंद पानी नहीं! दूसरी ओर निहित स्वार्थों के स्वामित्व में तालाबों की भूमि का सरे आम उपयोग! अजीब स्थिति है। प्रत्येक गाँव में तालाब की पाल और उस पर लगे आम, जामुन आदि के वृक्ष आज भी साक्षी दे रहे हैं कि यहाँ ताल था। किन्तु आज वे दुःखद कहानी कहने के अलावा क्या कर सकते हैं?

शासन का यह कर्तव्य है कि देश भर में पाँच लाख तालाब बनाने का विशाल संकल्प लेकर बाढ़ों के खतरों का मुकाबला करने की योजना बनाये और बड़ी बड़ी योजनाओं का मोह छोड़े, अन्यथा एक दिन ऐसा आयेगा, जब चारों ओर पानी ही पानी होगा और हम असहाय स्थिति में खड़े रहेंगे।

दूसरा प्रश्न बार-बार उठता है कि बाढ़ से घिरे क्षेत्र के निवासी ऊँचे में जाकर रहें। मध्यप्रदेश के कई गाँवों में बाढ़ें आयीं, किन्तु दो साल के बाद भी आज ऊँचे पर मकान बनाने के लिए भूमि एवं अन्य सहायता जनता को नहीं मिल पायी। इसका स्पष्ट अर्थ यही है कि हमारे नेता और शासक तात्कालिक व्यवस्था में विश्वास रखते हैं, स्थायी उपायों में नहीं। एक व्यंग चित्रकार ने अभी एक कार्टून बनाया। उसमें बाढ़ के दौरों का ही भत्ता नहीं मिला, ऐसा व्यंग था। वास्तव में यह स्थिति बड़ी लज्जास्पद है।

देश के सामने आज कई खतरे हैं; बीमारियों का, जाति-पाँति का, प्रान्तीयता का, भाषावाद का, किन्तु इन सबसे बड़ा खतरा है श्रम से जी चुराने का और स्वामित्व का मोह न त्यागने का। काश! आज युगपुरुष विनोबा की बात मान कर हम स्वामित्व-विसर्जन की प्रक्रिया को तेज कर देते और प्राणपण से देश के निर्माण में जुटे होते, तो फिर कोई खतरे हमारे लिये भयंकारक नहीं होते। देश आज भावनात्मक एकीकरण का उपयोग कर हर दृष्टि से सशक्त और स्वावलम्बी होता।

हमें विश्वास है कि अब दीनदयालों के कानों में असहाय जनता की पुकारों की भनक पड़ेगी और

> बड़ी-बड़ी महत्वाकांक्षी योजनाओं के स्थान पर छोटी-छोटी तुरन्त फलदायी योजनाओं का श्रीगणेश सबके सहयोग से उठाने का उपक्रम किया जायेगा।

इन्दौर, —जगन्नाथ सेठिया

चम्बल घाटी की डायरी

लोकमन, कन्हई, तेजसिंह, मोहरमन और डरू, हाईकोर्ट से बरी—६ जुलाई, '६१ को मध्यप्रदेश हाईकोर्ट की ग्वालियर बेंच के न्यायाधीश श्री पी० आर० शर्मा ने भिण्ड के जिला सेशन जज श्री मजरअली की अदालत से ३१ जनवरी, '६१ को कछपुरा डकैती काण्ड में सात-सात वर्ष के कारावास सजा को अपील में रद्द कर दिया।

विद्वान न्यायाधीश ने अपने निर्णय में सरकारी गवाहों को अविश्वस्त और भ्रामक ठहराते हुए उक्त तथाकथित अभियुक्तों को बरी कर दिया। बचाव पक्ष की ओर से श्री जे० एम० आनन्द एडवोकेट, ग्वालियर ने पैरवी की।

फतेपुरा-हत्याकाण्ड भी सेशन कमिट हुआ: इस समय आगरा में बागी विद्याराम, रामदयाल, बदनसिंह और भूपतसिंह पर तीन मुकदमे चल रहे थे, जिसमें एक उदयपुर डकैती पहले ही सेशन कमिट हो गयी थी। अब शेष दोनों फतेपुरा-हत्याकाण्ड और रेंका पुलिस-मुठभेड़, ७ जुलाई '६१ को फतेपुरा-हत्याकाण्ड सेशन कमिट हो गया और रेंका पुलिस-मुठभेड़ में तारीख २७ जुलाई, '६१ पड़ी है।

६ जुलाई, '६१ को फतेपुरा हत्याकाड में पुलिस की ओर से पेश किये गये गवाहों में एक गवाह श्रीराम गोपाल ने आत्मसमर्पणकारी विद्याराम की शिनाख्त के सम्बन्ध में कहा कि मैंने तो थाना इन्चार्ज जैनपुर के संकेत पर उक्त अभियुक्त को पहचाना था। उन्हीं के बताने पर मैंने जेल में इसके ऊपर हाथ रखा था। उसने यह भी स्पष्ट कहा कि शिनाख्त न करने पर पुलिस ने मारने की धमकी दी थी।

लोहरी में आश्रम-स्थापना

चम्बल घाटी शांति समिति उपकार्यालय बाह, जिला आगरा के समीपवर्ती ग्राम लोहरी में केन्द्र बनना आरम्भ हो गया है। अभी छप्पर डाल कर एक बंगलानुमा झोंपड़ी बन गयी है। कुछ कार्यकर्ता वहाँ रहने लगे हैं। यह गाँव आत्मसमर्पणकारी बागी रामदयाल और बदनसिंह का है।

श्री काशीनाथ त्रिवेदी का आगमन

म० प्र० सर्वोदय सम्मेलन, कमताड़ा के बाद श्री काशीनाथ त्रिवेदी ने ग्राम अरू (डबरा), मुरार और सबलगढ़ में तीन-तीन दिन के लोकराज्य शिविरों में पंचायती-राज, लोकनीति, ग्राम स्वराज्य, शांति-सेना आदि विषयों पर सरल भाषा में महत्वपूर्ण विचार प्रकट किये।

आत्म-समर्पणकारी भगवान सिंह के भाई की शादी सम्पन्न

आत्मसमर्पणकारी बागी भगवानसिंह के छोटे भाई श्री ऋषिकेश की शादी में विघ्न-बाधा की आशंका थी, पर २१ जून '६१ को वह राजस्थान के भरतपुर जिले के राजाखेड़ा थाने के अन्तर्गत ग्राम समौना में सानन्द सम्पन्न हो गयी। बरातियों में मुरैना के सार्वजनिक कार्यकर्ता श्री छोटेसिंह और चम्बल घाटी शांति-समिति के कार्यकर्ता श्री भवानी भाई उपस्थित रहे। बारात पहुँचने के पहले वहाँ की स्थिति अनुकूल रहे, इस दृष्टि से धौलपुर खादी भंडार के श्री मुल्तानसिंह व चम्बल घाटी शांति-समिति के श्री चरणसिंह गये और उन्होंने आवश्यक व्यवस्था की।

कुख्यात मेवाराम मारा गया

मानसिंह और रूपा के बाद शेष तथाकथित दस्युदल में लोकमन ने अपने साथियों सहित आत्मसमर्पण कर दिया तो अकेले मेवाराम ने इन्कार कर दिया था और वह बेहड़ों में मारा मारा फिरने के बाद आगरे में रुपया ठगने के लिए एक अपहृत नागरिक श्री होतमसिंह के द्वारा उसी की राइफल से मारा गया। बुराई का आखिरी परिणाम ऐसा ही होता है।

मुरैना जिले के नगर श्योपुर में नगरपालिका के चुनाव पक्षातीत होने के लिए २९ मई '६१ को वहाँ राजनैतिक दलों के प्रमुख व्यक्तियों की एक बैठक आयोजित की गयी। बैठक में सर्व सेवा संघ के चुनाव-प्रस्ताव के संदर्भ में सबने इस बात को स्वीकार किया कि नगरपालिका के चुनावों में खड़े होने वाले उम्मीदवार पक्षातीत हों और इस दिशा में भरसक प्रयत्न करने का तय किया। इस क्षेत्र के कार्यकर्ता श्री लक्ष्मीचन्द वैश्य उनसे सतत सम्पर्क रखेंगे।

शांति-स्थापन की दिशा में

—ग्राम कैलारस में दो दलों में आपसी राग-द्वेष के कारण वहाँ का वातावरण विक्षुब्ध बनता जा रहा था। वहाँ के प्रमुख व्यक्तियों को इकट्ठा कर जिले के अन्य विचारशील लोगों के सहयोग से दोनों दलों को भविष्य में शान्तिपूर्वक रहने की प्रतिज्ञा करायी गयी।

—ग्राम पीपरी, पुरे और डोंडरी में

गुजरात सर्वोदय-सम्मेलन का निवेदन

[१४ जुलाई को बड़ौदा में गुजरात सर्वोदय-सम्मेलन का दसवां अधिवेशन श्री दादा धर्माधिकारी की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ। उसमें कई महत्त्वपूर्ण प्रश्नों पर विचार हुआ है। सम्मेलन का निवेदन यहाँ दे रहे हैं। —सं०]

दशम गुजरात सर्वोदय सम्मेलन इतिहास की एक ऐसी घडी में हो रहा है, जब कि प्रत्येक विचारवान नागरिक के लिए गहरे चिंतन की आवश्यकता है। आधुनिक विज्ञान के कारण पृथ्वी आज छोटी हो गयी है; विश्व की छोटी-बड़ी सभी समस्याएँ समस्त जगत् की समस्याएँ बन रही हैं और एक मनुष्य के कृत्य का असर अन्यान्य सभी मानवों के जीवन पर पड़ रहा है। ऐसे समय हमें अपनी सभी प्रवृत्तियों के बारे में सावधानी से विचार करना चाहिए, जिससे हमारा प्रत्येक कदम मानवता के विकास का पोषक बना रहे।

विश्व आज अनिश्चितता की कगार पर खड़ा है। जगत् के कुछ श्रेष्ठ महापुरुष विश्व शांति सेना स्थापित करने के लिये प्रयत्नशील हैं, पर दूसरी ओर संसार के कोने-कोने में हिंसा की चिनगारियाँ भी उड़ती दिखाई दे रही हैं। ऐसे समय में हमें अपनी परिस्थिति का समग्र आकलन करके विश्व-शांति की दिशा में, चाहे थोड़ा ही सही, निश्चित आचरण करना चाहिए।

संसार की इस परिस्थिति का असर हमारे देश और गुजरात पर भी पड़ता है। जब कि देश में एक तरफ भूदान-ग्रामदान और अन्य रचनात्मक कार्यक्रमों द्वारा अहिंसात्मक साधनों से आर्थिक समता लाने का प्रयत्न चालू है; जब कि विकेंद्रित राज्यसत्ता द्वारा सामान्य मानव के उत्कर्ष के लिए सामान्य मानव के पुरुषार्थ से लोक-स्वराज्य लाने का प्रयत्न हो रहा है, तब दूसरी ओर जातिवाद, सम्प्रदायवाद, भाषावाद, राज्यवाद तथा अन्यान्य संकीर्ण विचारों के कारण राष्ट्र की एकता को ही मानो धक्का पहुँच रहा है। इन अनिष्टों का प्रभाव गुजरात पर भी पड़े बिना रहेगा नहीं;

इसलिए ऐसा समय आ गया है, जब कि राष्ट्र की शक्ति को छिन्न-भिन्न करने वाली सब प्रकार की संकुचितताओं के सामने देश का सम्पूर्ण पुरुषार्थ योजनापूर्वक लगाना आवश्यक हो गया है।

राष्ट्रीय एकता का अर्थ यह कदापि नहीं है कि आज की परिस्थिति को जैसे-तैसे बनाये रखा जाय। आज की परिस्थिति में तो भेद-भाव की जड़ों के उन्मूलन के संकल्प में ही राष्ट्रीय एकता का संकल्प निहित है। हमें छिन्न-भिन्न करने वाला कोई सबसे जहरीला तत्त्व हो तो वह हमारी आर्थिक असमानता है।

जब तक देश में आज जैसी अमीरी-गरीबी का भेद मौजूद है, तब तक राष्ट्र-निर्माण का कोई भी कार्यक्रम ऐसा नहीं बनाया जा सकेगा, जिससे देश की अधिकांश गरीब जनता को पुरुषार्थ की प्रेरणा प्राप्त हो सके।

आज के वातावरण में हमारी यह आर्थिक असमानता बढ़ते जाने के आसार नजर आते हैं। उसको समाप्त करके, हमें समत्व की नींव डालनी चाहिए। जब तक स्वामित्व के मूल्यों में परिवर्तन न होगा, आर्थिक समता की बातें ऐसी ही हैं, जैसे रेत के ऊपर चिकनी मिट्टी का लेप करना। भूदान एवं ग्रामदान-यज्ञ से भूमि के स्वामित्व-विसर्जन-सम्बन्धी नये मूल्यों की स्थापना हुई और इससे आर्थिक क्रांति के आरम्भ की सच्ची दिशा ज्ञात हुई है। भूमि के स्वामित्व-विसर्जन के साथ-साथ राष्ट्र के छोटे छोटे व्यक्तियों को भी रोजगार, आत्मविश्वास और उत्साह मिले ऐसे उद्योगों का विकास आर्थिक समता की दिशा में दूसरा कदम है। आज खादी-ग्रामोद्योगों द्वारा ग्राम-स्वराज्य और उद्योगदान के नाम पर समस्त बड़े उद्योगों में मजदूर, खरीददार तथा व्यवस्थापकों की सम्मिलित मिल्कियत का विचार प्रकट हुआ है; उस दिशा में भी आगे बढ़ना बहुत जरूरी है।

गुजरात राज्य पंचायती राज की दिशा में गतिशील है और यह सम्मेलन इसका स्वागत करते हुए यह आशा रखता है कि इससे राष्ट्रीय एकता को पोषण प्राप्त होगा।

विषमता पर आधारित पंचायती राज गरीबों के शोषण का साधन बन सकता है, अतः इसके लिए जागरूक रहना होगा। पंचायती स्तर पर भी राजनीतिक पार्टियों की प्रतिस्पर्धा पहुँच गयी तो हमारे गाँवों की दरिद्र देह के आपसी खींचतान में समाप्त होने का खतरा भी हमारे सामने है। हमें चाहिए कि पंचायतों के चुनावों में बहुमत के नाम पर हम गाँव-गाँव में पार्टीबंदी न होने दें, बल्कि उसके बदले सर्व-सम्मत चुनावों की परम्परा को पुनर्जीवित कर भारत भूमि की शान के अनुरूप नवीन लोकशाही के निर्माण में सहयोग दें।

राष्ट्रीय एकता की दृष्टि से आगामी आम चुनाव बहुत महत्त्वपूर्ण हैं। उस समय हमें अपनी संकुचितताओं का प्रदर्शन न करके इसी बात का ध्यान रखना होगा कि देश की विविधताओं के मध्य भी देश की एकता सुरक्षित रहे तथा हमारी संस्कारिता एवम् हमारा शांति-प्रेम ही प्रकट हो।

सर्वोदय-सम्मेलन का यह निश्चित मत है कि आम चुनावों के समय पालन करने के लिए कुछ आचार-मर्यादाएँ अवश्य तय की जानी चाहिए। चुनाव में भाग लेने वालों और उसमें सहायक सब पार्टियों और व्यक्तियों को भी हार-जीत की अपेक्षा राष्ट्र के गौरव को प्रधानता देनी चाहिए तथा उसके लिए दृढ़तापूर्वक आचार-मर्यादाओं का पालन करना चाहिए। यदि कहीं किसी पार्टी के द्वारा मर्यादा का भंग हो तो वह पार्टी स्वयं उसका विरोध करे।

चुनाव के समय मतदाताओं को अनियमितताओं का विवश साक्षी न बन कर उनका सार्वजनिक रूप से विरोध करना चाहिए। सर्वोदयपुरम् (आन्ध्र प्रदेश) में सम्पन्न अखिल भारत सर्वोदय-सम्मेलन द्वारा प्रदत्त मार्ग-दर्शन के अनुसार गुजरात में जहाँ कहीं योग्य वातावरण दिखाई पड़े वहाँ 'मतदाता परिषदों' की स्थापना हो, इसे प्रोत्साहन देना चाहिए। चुनाव समाप्त होने के बाद स्थान-स्थान पर 'जागरूक समितियाँ' (विजिलन्स कमिटी) कार्य कर सकें, ऐसा प्रयत्न भी किया जाना चाहिए।

इतिहास के ऐसे मोड़ में गांधीजी के गुजरात को सम्यक् आचार द्वारा राष्ट्रीय एकता और विश्वशान्ति के लिए उदात्त उदाहरण उपस्थित करना चाहिए। ग्राम-स्वराज्य के हमारे आदर्श में इस प्रकार के उदाहरण को पूरा कर दिखाने की पूरी संभावना है। इसके लिए आवश्यक है *जनता तथा लोकसेवकों के विधायक पुरुषार्थ की।* सम्मेलन का विश्वास है कि गुजरात इस प्रकार के शांतिमय तथा विधायक पुरुषार्थ के कार्य में पीछे नहीं रहेगा।

गाँव-वासियों के आपसी झगड़े, असन्तोष और मान-सम्मान को लेकर परस्पर बात न करने तक की स्थिति देख कर श्री गुप्तेश्वर भाई ने उनको समझाया कि परस्पर-प्रेम से ही मिल-बैठ कर समस्या का समाधान सम्भव है। यह बात कई उदाहरणों और उनके साथ उनके घर पर समझाने से अच्छा असर हुआ और वह लोग अब आपस में बोलने लगे हैं।

—चम्बल घाटी शांति समिति, बाह के तत्त्वावधान में बाह में चलने वाली जूनियर हाईस्कूलों की परीक्षा के लिए क्षेत्र से आये अध्यापकों की एक विचार-गोष्ठी का आयोजन समिति-कार्यालय पर श्री श्रीनाथ पाठक की अध्यक्षता में हुआ। लगभग ४० अध्यापकों ने परस्पर विचार-विनिमय कर क्षेत्र में शांति-स्थापना का संकल्प किया। ऐसा एक प्रस्ताव भी पास हुआ।

—गुरुशरण

असम सर्वोदय-मंडल

असम सर्वोदय-मंडल की कार्यकारिणी समिति की एक बैठक श्री विनोबाजी की उपस्थिति में ३ और ४ जुलाई को कमलाबारी और गड़मुड़ में हुई। विनोबाजी ने कुछ विशेष विषयों पर सलाह देकर मार्गदर्शन किया। बैठक में चर्चा के अंत में निम्न प्रकार निर्णय किये गये।

असम में अभी तक कुल २२० से अधिक ग्रामदान हुए हैं। उन गाँवों *में निर्माण-कार्य करने के लिए एक ग्राम-*निर्माण समिति बनायी गयी। इस समिति में असम विधान-सभा के मुख्य मंत्री, पंचायत और सामूहिक उन्नयन परिकल्पना मंत्री, असम खादी-बोर्ड, सेवा-समिति, कस्तूरबा निधि, गांधी स्मारक निधि, भारत सेवक समाज आदि के प्रतिनिधि सदस्य बने हैं। तय हुआ कि नार्थ लखीमपुर क्षेत्र का निर्माण कार्य श्री रमेश्वर भूयाँ और प्रचार-कार्य श्री सोमेश्वर बाख्ती करेंगे।

कार्य-व्यस्तता के कारण अर्थ-संग्रह अभियान का काम अभी पूरा नहीं कर पाये, इसलिए दिसम्बर '६१ तक यह काम *किया जायेगा। इसके लिए योजना बनायी* गयी है। बड़े-बड़े शहरों में अर्थ-संग्रह का आयोजन किया जा रहा है।

सर्व सेवा संघ के चुनाव संबंधी प्रस्ताव और पंचायती राज के बारे में चर्चा हुई। मतदाताओं में लोक-शिक्षण की दृष्टि से उसका प्रचार किया जायेगा। नार्थ लखीमपुर क्षेत्र में इसका प्रयोग करने की जिम्मेवारी श्री सोमेश्वर बाख्ती को सौंपी गयी। चको क्षेत्र के सर्वोदय-मंडल ने भी अपने क्षेत्र में प्रयोग करने की जिम्मेवारी उठा ली है। पंचायती राज की योजना का भी प्रचार करने का तय हुआ।

'नया मोड' के बारे में भी चर्चा हुई। तय हुआ कि बरदल्नी, कमलाबरिया, रोरा, जापजुप, घलपुर, पमपुर, बकती, गेरुवा और चको के ग्रामदानी क्षेत्र में 'नया मोड' के प्रयोग किये जायँ। नार्थ लखीमपुर, जहाँ १५० से अधिक ग्रामदान हुए हैं, वहाँ खादी-कमीशन की ओर से एक विद्यालय चलने का तय हुआ है।

कछार की अशान्ति के बारे में श्री विनोबाजी की सलाह के अनुसार वर्तमान परिस्थिति का अध्ययन करने के लिए शान्ति-सैनिक श्री तरुणचन्द्र बरुआ और बिहार के श्री सीताचरण शर्मा को वहाँ *भेजने का तय हुआ। गौरेश्वर क्षेत्र का* अध्ययन करने का काम सर्वोदय मंडल के सहमंत्री श्री रविकान्त सन्दिकै को सौंपा।

इसके अलावा बैठक में मंडल की नियमावली, संशोधन, बजेट, सर्वोदय-पात्र संगठन, साहित्य-प्रचार और भूमि-वितरण के बारे में चर्चा हुई। इस बैठक में मंडल के सदस्यों के अलावा कुछ लोक-सेवक भी उपस्थित थे।

—रविकान्त सन्दिकै, सहमंत्री
असम सर्वोदय-मंडल, गुआहाटी

पचमढ़ी में अ० भा० नई तालीम कार्य-कर्ता सम्मेलन का आयोजन

९, १० और ११ सितम्बर '६१ को म० प्र० के पचमढ़ी नामक स्थान पर देश भर के नई तालीम-कार्यकर्ताओं का एक सम्मेलन होगा, जिसमें खास तौर पर निम्नांकित विषयों पर विचार विमर्श किया जायगा।

(१) विभिन्न राज्यों में नई तालीम-शिक्षण का विकास तथा प्रगति और तृतीय पंचवर्षीय योजना में सूचित उसका कार्यक्रम।

(२) अध्यापन-प्रशिक्षण का कार्यक्रम तथा योजना।

(३) उत्तर-बुनियादी शिक्षण की समस्या।

(४) हिन्दुस्तानी तालीमी संघ के दिल्ली प्रस्ताव के बाद विगत तीन वर्षों में प्राप्त अनुभवों के प्रकाश में समग्र नई तालीम के कार्यक्रम पर विचार।

सम्मेलन की कार्यवाही सुचारु रूप से चलाने हेतु भाग लेने वाले प्रतिनिधियों की संख्या ५०० तक सीमित मानी गयी है। सम्मेलन के लिए जो संस्थाएँ अपना प्रतिनिधि भेजना चाहती हैं, उन्हें श्री सम्मेलन मंत्री, अ० भा० नई तालीम कार्यकर्ता सम्मेलन, सर्व सेवा संघ, सेवाग्राम (वर्धा) के पते पर ५ रु० भेज कर आवश्यक प्रतिनिधि-प्रमाणपत्र प्राप्त कर लेना चाहिए।

उक्त सम्मेलन में भाग लेने वाले प्रतिनिधियों के लिए एक तरफा रेल-किराये की रियायत प्राप्त करने की कोशिश चल रही है। पचमढ़ी समुद्र सतह से ४५०० फीट ऊँचाई पर है तथा हावड़ा बंबई वाया इलाहाबाद रेल्वे मार्ग पर पिपरिया स्टेशन से ३२ मील है।

सम्मेलन के अवसर पर स्वागत समिति विभिन्न बुनियादी शैक्षणिक संस्थाओं के कार्यों की एक प्रदर्शनी भी आयोजित करने की सोच रही है। इसमें जो भी संबंधित शिक्षण संस्थाएँ भाग लेना चाहें, उनका स्वागत है।

ग्वालियर में अपराध-निवारण विषय पर परिसंवाद

१८ से २५ अगस्त '६१ तक ग्वालियर में श्री दादा धर्माधिकारी के मार्गदर्शन में एक सप्त दिवसीय शिविर तथा परिसंवाद का आयोजन किया जा रहा है, जिसमें प्रान्त के प्रमुख शांति-सैनिक भाग ले रहे हैं। परिसंवाद में चम्बल घाटी समस्याओं, अपराध, उसके कारण और उनके निराकरण पर प्रमुख रूप से चर्चा होगी।

लखनऊ में 'विनोबा-जयन्ती' पर शांति-सेना 'रैली' का आयोजन

आगामी ११ सितम्बर '६१ को "विनोबा जयन्ती" पर उ० प्र० की राजधानी, लखनऊ में प्रदेश के शांति-सैनिकों की एक 'रैली' करने का आयोजन किया गया है। यह निर्णय लखनऊ में हाल ही सम्पन्न हुई उ० प्र० शांति-सेना समिति की एक बैठक में लिया गया।

(पृष्ठ २ का शेष)

नहीं है।

हमें विश्वास है कि श्री गगवालजी व्यक्तिशः शराबबंदी के पक्ष में होंगे। उनसे और उनके जैसे कई अन्य सज्जनों से जो आज जिम्मेदारी के पदों पर हैं, हमारी यह अपेक्षा है कि वे परिस्थितियों से ऊपर उठ कर राष्ट्रपिता के स्पष्ट आदेश, संविधान में दाखिल की गयी राष्ट्र की जनता की स्पष्ट इच्छा और समय-समय पर देश के मान्य नेताओं और भारत-सरकार द्वारा घोषित नीति के अनुसार शराबबन्दी जैसे सर्वजनहित के काम को पूरा करने के लिए मजबूती के साथ कदम उठायेंगे।

—सिद्धराज

सतपुड़ा सर्वोदय-मंडल के निर्णय

दिनांक ५, ६ और ७ जून को धड़गाँव (खानदेश) में सम्पन्न हुई सतपुड़ा सर्वोदय मंडल की बैठक में वहाँ के ग्रामदानी गाँवों में चल रहे निर्माण कार्य का सिंहावलोकन करते हुए महत्त्वपूर्ण निर्णय लिये गये। सतपुड़ा सर्वोदय-मंडल की कार्य समिति का पुनर्गठन किया गया तथा नवीन मंत्री के रूप में श्री दामोदरदासजी मूंदड़ा को मनोनीत किया। श्री गोविन्दराव शिंदे तथा श्री शेंडुर्णीकर वकील सहायक मंत्री का काम करेंगे।

अक्राणी महाल में प्राप्त करीब ३०० ग्रामदानी गाँवों में विधिवत् निर्माण-कार्य करने तथा ग्राम-स्वराज्य की दिशा में जन जागरण की दृष्टि से क्षेत्र को विभाजित कर प्रमुख व्यक्तियों को जिम्मेदारी सौंपी गयी।

बैठक में निर्माण-कार्यों में आने वाली कठिनाइयों और अड़चनों पर भी चर्चा की गयी। इस अवसर पर कार्यकर्ताओं को श्री अण्णासाहब सहस्रबुद्धे तथा भाईसाहब धोत्रे का मार्ग-दर्शन मिला।

दिनांक १० जून से ३० जून '६१ तक श्री शेंडुर्णीकरजी ने धड़गाँव के आस-पास के गाँवों में पदयात्रा की तथा ग्रामीणों को सुधरे औजारों और पद्धति द्वारा खेती में अन्न उत्पादन के बारे में जानकारी दी।

अब तक क्षेत्र की २१ ग्राम-स्वराज्य समितियाँ पंजीकृत करायी जा चुकी हैं। धड़गाँव में सतपुड़ा सर्वोदय-मंडल की ओर से एक दुग्ध-केन्द्र तथा बालवाड़ी का शुभारम्भ किया गया है।

महेश्वर के निकट ग्राम बबलाई में ग्राम-सेवा-केन्द्र की स्थापना

निमाड़ जिले की महेश्वर तहसील के ग्राम बबलाई में गांधी स्मारक निधि म० प्र० शाखा की ओर से ९ जुलाई '६१ को एक ग्राम सेवा केन्द्र की स्थापना की गयी है। निधि संचालक श्री कृ० वा० दातेजी ने दीप प्रज्वलित कर केन्द्र का उद्घाटन किया। इस अवसर पर प्रांत के प्रमुख सर्वोदय-सेवक श्री दादाभाई नाइक तथा श्री वि० स० खोड़े भी उपस्थित थे। प्रमुख ग्रामसेवक श्री यशवन्तकुमार "सिन्धु" के नेतृत्व में कार्यकर्ताओं की एक टोली ग्रामसेवा की प्रवृत्तियों में जुट गयी है।

जिला सर्वोदय-मंडल, रोहतक का कार्य-विवरण

जून माह में संयोजक श्री जयनारायण द्वारा विचार प्रचार, प्राप्त भूमि की पड़ताल, वितरण तथा सम्पर्क का कार्य हुआ। ६ गाँवों में पंचायतों में पंचायती राज्य तथा लोक-तांत्रिक शिक्षण सम्बन्धी विचार विनिमय हुआ। १६ ग्रामों में २८ दाताओं की भूमि की पड़ताल तथा ३ गाँवों में २२॥ बीघा भूमि का वितरण हुआ। पिछले वर्ष का हिसाब तथा सम्पत्तिदान आदि अन्य आय का ब्योरा प्रकाशित करा कर सम्पत्ति-दाता, सम्बन्धित लोग और आम जनता में प्रसारित किया गया। प्राप्त भूमि के तमाम दानपत्रों की एक एक प्रति पंजाब भूदान-बोर्ड को भेजी गयी। सम्पत्तिदान में ६० रु० ७५ न पै. तथा सर्वोदय पात्र से २० रु० ६१ न पै मिले। १७ रु० की साहित्य बिक्री हुई। इसके साथ ही जिले के प्रतिनिधि श्री फूलियाभक्त ने आकर तहसील के ग्रामों में विचार प्रचार, व्यक्तिगत सम्पर्क, साहित्य-बिक्री पदयात्रा के द्वारा करने के साथ-साथ एक चार पंजाब सर्वोदय-मंडल के दो दिवसीय शिविर में भाग लिया।

सिने-पोस्टरों में शालीनता

इन्दौर में प्रारम्भ किये गये अशोभनीय पोस्टर-उन्मूलन मुहिम के पश्चात् इन्दौर नगर में अब सार्वजनिक चौराहों तथा स्थानों पर लगाने वाले सिने-पोस्टरों में एक हद तक शालीनता बरती जाने लगी है, ऐसा नागरिकों का आम ख्याल है। पिछले दिनों महात्मा गांधी रोड स्थित कोतवाली के पास बसन्त पिक्चर्स द्वारा प्रदर्शित "रेशमी रूमाल" फिल्म के जिस अशोभनीय पोस्टर को निश्चित अवधि के भीतर न हटाने पर "सीधी कार्यवाही" द्वारा हटाना पड़ा था, अब उसके आपत्तिजनक हिस्से को स्वयं प्रदर्शक द्वारा फोल्ड कर (मोड़ कर) प्रदर्शित किया गया है। प्रदर्शक की यह प्रवृत्ति प्रदर्शकों के लिए अनुकरणीय है।

इन्दौर में विशुद्ध ग्रामोद्योग-भंडार शुरू होगा

इन्दौर के विसर्जन आश्रम द्वारा प्राप्त एक जानकारी के अनुसार इन्दौर में नागरिकों को विशुद्ध ग्रामोद्योग तथा बगैर मिलावट की वस्तुएँ प्रामाणिकतापूर्वक मिल सकें, इस दृष्टि से म० प्र० खादी-ग्रामोद्योग बोर्ड की मदद से १ अगस्त '६१ से जवाहर मार्ग पर एक भंडार प्रारम्भ करने का शुभ निश्चय किया गया है। प्रारंभिक तैयारियाँ प्रायः पूरी हो चुकी हैं। आशा है, नागरिकों को शीघ्र ही प्रामाणिकतापूर्वक खाने-पीने की वस्तुएं, सर्वोदय साहित्य, खादी तथा अन्य वस्तुएँ उचित मूल्यों पर भंडार से उपलब्ध हो सकेंगी।

भरतपुर जिला खादी-ग्रामोदय समिति का निर्माण

देश की प्रसिद्ध खादी संस्था राजस्थान खादी संघ द्वारा विकेन्द्रीकरण की योजना के अनुसार भरतपुर जिला खादी-ग्रामोदय समिति का निर्माण किया गया है। भरतपुर में चल रहे खादी और ग्रामोद्योग के काम के अलावा नये मोड़ के अनुसार ग्राम इकाई कार्यक्रम को भी समिति अपने हाथ में ले रही है।

भरतपुर की इस समिति के अन्तर्गत वर्तमान में ६ उत्पादन-केन्द्र, २५ सहायक उत्पादन-केन्द्र, ११ बिक्री भण्डार, ४ बिक्री एजेन्सी हैं। इन ४६ केन्द्रों पर ८० कार्यकर्ता काम कर रहे हैं। भरतपुर जिले में सालाना बिक्री खादी-उत्पादन पाँच लाख रुपये और चार लाख रुपये की है। वर्तमान काम लगभग १०० गाँवों के करीब दस हजार कामगारों, कतवारी, बुनकर, पिंजारे आदि में फैला हुआ है।

भरतपुर जिला खादी-ग्रामोदय समिति ने आगामी वर्ष के लिए ९ लाख रुपये का खादी-उत्पादन और ७ लाख की बिक्री का लक्ष्य निश्चित किया है, जिसके परिणामस्वरूप यहाँ के करीब १८ हजार लोगों को रोजगार मिल सकेगा।

समाचार-सार

—दरभंगा जिले के सर्वोदय-कार्यकर्ताओं की बैठक २९ जून को मधुबनी में हुई और उन्होंने समस्तीपुर सबडिवीजन को 'बीघे में कट्ठा' अभियान के लिए सघन क्षेत्र मान कर काम करने का निश्चय किया है।

—सर्वोदय मित्र मंडल भूलीनगर, धनबाद के कार्यों से प्रभावित होकर केंदुआडीह, थाना लोयाबाद कोइलीबाद में भी सर्वोदय मित्र-मंडल स्थापित किया।

—नागपुर जिला सर्वोदय-मंडल की सूचना के अनुसार मई माह में कुल ४१२ सर्वोदय-पात्र चल रहे हैं। इस बीच ३ सर्वोदय-पात्र बंद हुए और १० नये रखे गये। १ जून से ११ जून तक नागपुर शहर के दस वार्डों में सर्वोदय-पात्र के प्रचारार्थ ४० व्यक्तियों ने प्रचार-यात्रा की।

करनाल जिला सर्वोदय मंडल की ओर से ३ जुलाई '६१ को अशोभनीयता के विरोध में विभिन्न संस्थाओं के कार्यकर्ता और लगभग एक हजार भाई-बहनों के पानीपत शहर में निकाले गये विशाल जुलूस का एक दृश्य।

पूना की बाढ़ में सहायता

महाराष्ट्र के पूना शहर में समीप के बाँध टूटने से जो अप्रत्याशित बाढ़ आयी, उससे शहर का काफी जन धन-निवास का नुकसान हुआ। अन्य लोगों की तरह महाराष्ट्र के सौ सर्वोदय-कार्यकर्ता भी बाढ़-पीड़ितों के सहायतार्थ पूना गये हैं।

मे० ज० यदुनाथ सिंह

(पृष्ठ ७ का शेष)

हमें यदुनाथ सिंहजी के दर्शन नहीं हुए। उनके भौतिक दर्शनों की तमन्ना दिल में ही रह गयी।

विनोबा ने २ अगस्त को इस घटना का जिक्र नहीं किया। वे गंभीर विचार में डूबे हुए-से लगते थे, किन्तु ३ अगस्त को प्रातः ६ बजे उन्होंने इन्दौर के सर्वोदय मित्रों की एक सभा में कहा :

"मेरा कुल का कुल काम मेरे साथी ही करते हैं। कल मैंने खबर सुनी कि मेजर जनरल यदुनाथ सिंह चले गये। भिण्ड-मुरेना का सारा-का-सारा काम उनके आधार पर था। उन्होंने बहुत बड़ा पराक्रम किया। कल्पना से एक योजना बनायी और हिम्मत के साथ काम किया। मृत्यु का शोक करने की जरूरत नहीं होती है। मैं मानता हूँ कि जितना शरीर से उन्होंने काम किया, उससे ज्यादा आत्मा कार्य करेगी। अक्सर मुझे मृत्यु से सदमा नहीं पहुँचता है, किन्तु कल सदमा पहुँचा। कल हमको लगा कि हमारी ताकत कम हुई है। वे न होते तो भिण्ड-मुरेना का यह काम हरगिज नहीं हो सकता था।"

बिहार में 'बीघे में कट्ठा' आंदोलन

विनोबाजी के आवाहन "बीघे में कट्ठा भूमिदान दो" के लिये महाराष्ट्र के दो कार्यकर्ताओं, श्री नानासेठ शिंदे और भारतीय स्वामी ने बिहार के संथाल परगना क्षेत्र में अपनी दो मास की पदयात्रा में ग्रामदान में साबलपुर गाँव तथा ३५०० कट्ठा भूमि प्राप्त की। वहाँ ९० गाँवों में पर्यटन करके वे काशी पहुँचे हैं।

'राष्ट्रपति भवन' में सर्वोदय-पात्र

सर्व सेवा संघ के प्रधान कार्यालय में 'राष्ट्रपति भवन' के सर्वोदय-पात्र का दान २० रु प्राप्त हुआ है। यह मई और जून माह का है। सर्वोदय-सिद्धान्तों में निष्ठा के प्रतीक स्वरूप राष्ट्रपति डा० राजेन्द्र प्रसाद ने अपने यहाँ "सर्वोदय-पात्र" रखा है। प्राप्त सूचनाओं के अनुसार सभी राज्यों में सर्वोदय-पात्र अधिकाधिक संख्या में रखे जा रहे हैं।

कानपुर में सर्वोदय-पात्र

आर्यनगर, कानपुर के ११० सर्वोदय-पात्रों का सकलन मई माह में ७५ रु० ८३ नये पैसे हुआ। पिछली बाकी ८८ नये पैसे थी। कुल रु० ७६-७१ नये पैसे जमा हुए। उसका यथायोग्य विनियोग किया गया।

नागरिकों से ३० रु० सहयोग रूप में मिले, जिसका शांति-सैनिक की सहायता रूप में उपयोग किया गया।

इन्दौर की मजदूर बस्ती में सर्वोदय-पात्र

इन्दौर के मजदूर बस्ती के क्षेत्र में जून माह में १७५८ घरों से व्यक्तिगत संपर्क स्थापित किया गया। १६६ नये सर्वोदय-पात्र स्थापित किये गये। २०५ पात्रों से ६८ रु० ८० न० पै० नकद एवं अनाज के रूप में संग्रह हुआ। भूदान-पत्रों की ८६ प्रतियाँ प्रति सप्ताह बेची जाती रहीं।

इस अंक में

बिहार का सीलिंग

बिहार विधान-सभा के ७ अगस्त होने वाले सत्र में भूमि की 'सीलिंग' पर विचार होगा। योजना-आयोग ने श्रेणी की भूमि के लिये पाँच के परिवार के वास्ते ३० एकड़ 'सीलिंग' निर्धारित करने का ... है। वैसे बिहार के १९५९ में पारित सीलिंग' बिल के अनुसार ३० एकड़ सीलिंग प्रति व्यक्ति के लिये रखा गया था।

नशाबंदी-सम्मेलन

अखिल भारतीय नशाबंदी सम्मेलन दिल्ली में आयोजित किया जा रहा है। २ सितम्बर '६१ को इस सम्मेलन का उद्घाटन वित्तमंत्री श्री मोरारजी देसाई करेंगे और सम्मेलन के अध्यक्ष मद्रास राज्य के गृहमंत्री श्री एम० भक्तवत्सलम् होंगे। यह सम्मेलन दिल्ली नशाबंदी समिति द्वारा बुलाया गया है। इस अवसर पर नशाबंदी के संबंध में एक संग्रहणीय पुस्तक "नशाबंदी संदेश" के भी प्रकाशित किये जाने की योजना है।

नशाबंदी-सम्मेलन में इस आंदोलन को व्यापक रूप प्रदान करने के लिये अखिल भारतीय संगठन की स्थापना के अतिरिक्त कई विचारणीय विषय हैं, जैसे मदिरा क्लबों को बंद कराना, नशों के विरुद्ध सुदृढ़ जनमत तैयार करने की दृष्टि से भारत व्यापी योजना बनाना और समस्त राज्यों में नशाबंदी लागू करने के लिये सरकारों से अनुरोध करना।

आरा जिले में सर्वोदय-पात्र

शाहाबाद (आरा) जिले की दुर्गावती कीर्तन-यात्रा के दुर्गावती शाखा सूचित करते हैं कि मेदनीपुर में १४६, बाँगाटी में ४५, बेनसागर में ५४, डमडीहा में ३७ और मनोहरपुर में ४५, इस तरह कुल ३२७ सर्वोदय-पात्र चल रहे हैं। १९ फरवरी, '६१ से २० जून, '६१ तक इन पात्रों के अनाज-बिक्री से २१७ रु० ७३ नये पैसे संकलित हुए। डमडीहा और मनोहरपुर के पात्रों का अन्न अभी नहीं बिका है। इसका छठा हिस्सा ३६ रु० २५ न० पै० सर्व सेवा संघ को भेजा। दो मासों के लिए 'भूदान-यज्ञ' पत्रिका मँगाने के लिए १२ रुपया चंदा भेजा गया। सर्वोदय-पात्र बनाने के लिए ९ रुपये ५० नये पैसे खर्च हुआ। शेष १५९ रुपये ९८ नये पैसे का यहाँ जमा है, उसका यथायोग्य सदुपयोग किया जायेगा।

हमारे आगामी विशेषांक

आगामी १ सितम्बर का 'भूदान-यज्ञ' का अंक 'शराब-बंदी विशेषांक' होगा। विनोबा के जन्मदिन के निमित्त ८ सितम्बर को निकलने वाला अंक 'भूमि-क्रान्ति विशेषांक' होगा।

श्रीकृष्णदत्त भट्ट, अ० भा० सर्व सेवा संघ द्वारा भार्गव भूषण प्रेस, वाराणसी में मुद्रित और प्रकाशित। पता : राजघाट, वाराणसी-१, फोन नं० ४३९१
वार्षिक मूल्य ६)। पिछले अंक की छपी प्रतियाँ ९,४५० : इस अंक की छपी प्रतियाँ ९,४०० एक अंक : १३ नये पैसे

संपादक : सिद्धराज ढड्ढा

वाराणसी : शुक्रवार | ४ अगस्त '६१ | वर्ष ७ : अंक ४४

सर्वोदय की भूमिका

विनोबा

[अब तक हमारे जीवन में दो प्रकार की भूमिकाएँ रही हैं। पहली तो यह कि मेरे आसक्ति का केन्द्र परिवार है और जो कुछ मैं करता हूँ, वह परिवार के उत्कर्ष के लिए ही करता हूँ। शेष दुनिया के भले के लिए कोई खास सरोकार नहीं रखता हूँ। दूसरी भूमिका में घर-बार सब छोड़ कर ईश्वर की आराधना में समय लगाता हूँ। ये दोनों भूमिकाएँ आत्यंतिक हैं। विनोबाजी ने ३ जुलाई, '६१ को असम के कमलाबारी पड़ाव पर एक प्रवचन में यह कहा कि विज्ञान ने अब एक और बीच की भूमिका ला दी है, और वह यह है कि 'मेरा' छोड़ो, 'हमारा' पकड़ो और 'तेरा' याद रखो। सं०]

हम यह समझते हैं कि भूदान से विश्वशांति की कुंजी हमारे हाथ में आयेगी। विश्व में आज जितनी अशांति है, इसके पहले कभी नहीं थी। अब तो दुनिया छोटी हो गयी है और विश्व के एक कोने में क्या हो रहा है, यह सबको मालूम होता है। यह अच्छी चीज है कि सब मानवों को सबमें दिलचस्पी पैदा हुई है। एक-दूसरे के काम में एक दूसरों को रस पैदा हुआ है। यह विज्ञान का उपकार है। लेकिन जब विज्ञान नहीं था, तभी धार्मिकों ने यही कहा था 'वसुधैव कुटुंबकम्'। उन दिनों यह एक महापुरुषों की भावना की बात थी। प्रत्यक्ष जीवन में अपना छोटा जीवन होता था। 'यह मेरा घर', 'यह मेरा खेत', 'ये मेरे बाल-बच्चे', 'यह मैं' 'इतना मेरा!'—आसक्ति का क्षेत्र इसके अन्दर, यह मेरी ममता। कुटुंब के अन्दर ममत्व, आसक्ति, प्रेम और बाकी सारे समाज के लिए परायापन, यह लोक-जीवन था।

दूसरी बाजू सब छोड़ कर किसी आश्रम में भगवान के ध्यान के लिए जायेंगे। इधर छोड़ा घर, छोटा परिवार; उधर ईश्वर के ध्यान के लिए सब कुछ त्याग। इन दोनों के बीच कोई भूमिका नहीं थी। या तो ऊँची-से ऊँची भूमिका, गौरीशंकर का शिखर, या नीचे-से-नीची भूमिका, अपना घर। इन दोनों के बीच कोई भूमिका समाज को नहीं थी। इसका क्या परिणाम हुआ? परिणाम यही हुआ कि नामघोषा और कीर्तनघोषा का घोष चलता है। गीता, भागवत, रामायण, वेद और उपनिषद् भी चलते हैं। क्या नहीं चलता है?

इतना सब है, लेकिन लोग कहाँ हैं?

लोग अपने घर में कैद हो गये हैं। अपने लड़के को देख कर प्रेम की धारा बहती है। पड़ोसी के लड़के को देख कर कुछ भी नहीं होता। सर्वस्व-त्याग करने के लिए महापुरुष हैं; और बाकी सारा समाज घर में लिप्त है।

एक बाजू घर, दूसरी बाजू परमेश्वर। इन दोनों के बीच कोई बन्द नहीं। वह बन्द विज्ञान अब पैदा कर रहा है। वह कह रहा है, तुम 'मैं', 'मेरा' छोड़ो। 'हमारा' बोलो, 'मेरा' मत बोलो। 'हमारा' बोलोगे तो सुखी होंगे। विज्ञान देख रहा है कि अच्छे-अच्छे औजारों का उपयोग करना चाहिए। उससे आप उत्पादन बढ़ा सकेंगे।

कुल दुनिया का आनन्द बढ़ा सकेंगे। सारे विश्व को एक कर सकेंगे।

बना! अब तुम 'मेरा' छोड़ोगे और 'हमारा' पकड़ोगे, तब। अगर ऐसा नहीं करोगे, तो यह आणविक शक्ति है, उससे खतम हो जाओगे।

विज्ञान कह रहा है, 'मेरा' छोड़ो और 'हमारा' ले लो। पहले यह काम संत लोग भी कर रहे थे। वे कहते थे, 'मेरा' छोड़ो। लेकिन क्या पकड़ो? 'तेरा' पकड़ो।

इन दोनों के बीच कोई चीज नहीं है। या ईश्वर का नाम या तो घर, कुटुंब, लीला। दोनों के बीच की भूमिका नहीं। लोगों के लिए 'मेरा' छोड़ना आसान हो गया। 'मेरा' छोड़ कर 'तेरा' पकड़ना, यह मुश्किल काम कोई संत पुरुष ही कर सकते हैं। 'मेरा' छोड़ दिया और ईश्वर के लिए सब परित्याग करके निकल पड़े, यह आसान बात नहीं है; यद्यपि इस युग में भी ऐसे पुरुष निकले हैं। लेकिन सब लोग ऐसे नहीं निकल सकते। लोग पूछते हैं; मेरा छोड़ेंगे तो हमारे लिए क्या! विज्ञान जवाब देता है, 'मेरा' छोड़ कर 'हमारा' पकड़ो। लोगों के ध्यान में बात आयी। अब लोग 'मेरा' छोड़ कर 'हमारा' पकड़ रहे हैं। 'हमारे' पकड़ने के बाद रहा 'तेरा' पकड़ना। तो लोग वहाँ तक भी जायेंगे। 'मेरा' छूट गया, उसके बाद 'हमारा' आया, और उसके बाद 'तेरा' आयेगा। भूदान, ग्रामदान की हमारी यही भूमिका है। 'मेरा' छोड़ने की, 'हमारा' पकड़ने की और 'तेरा' याद करने की यह सर्वोदय की भूमिका है।

---

११ सितम्बर (विनोबा-जयन्ती) से २ अक्तूबर (गांधी-जयन्ती) तक

भूदान पत्र-पत्रिकाओं के ग्राहक और सर्वोदय-साहित्य-प्रचार का विशेष आयोजन करें

अहिंसक क्रान्ति के आन्दोलन में मुख्य चीज व्यक्ति और समाज के विचार-परिवर्तन की है। अहिंसक क्रान्ति की नींव डालने के लिये जरूरी है कि हमारे विचार घर-घर पहुँच जायें। विचारों का वाहक हमारा साहित्य है। इसलिये हमें अपने साहित्य-प्रचार के लिये बार-बार विशेष-प्रयत्न करने चाहिये।

विनोबा-जयन्ती और गांधी-जयन्ती आ रही हैं। इस बार अन्य कार्यक्रमों के साथ ११ सितम्बर (विनोबा-जयन्ती) से २ अक्तूबर (गांधी-जयन्ती) तक के २१ दिनों में हम देश भर में भूदान-पत्र-पत्रिकाओं के अधिक-से-अधिक ग्राहक बनायें और पुस्तक-बिक्री के जरिए साहित्य-प्रचार का विशेष और व्यवस्थित आयोजन करें।

सर्वोदय का विचार कोई बना बनाया बद्ध विचार नहीं है। वह नित्य विकासशील है। रोजमर्रा की परिस्थिति के साथ उसके अमल का नया विचार करना जरूरी है। सर्वोदय-विचार का नित्य विकासशील स्वरूप प्रकट होता है हमारी पत्र-पत्रिकाओं में।

सर्व सेवा संघ के केंद्रीय कार्यालय से हिन्दी साप्ताहिक 'भूदान यज्ञ' अंग्रेजी साप्ताहिक 'भूदान' और उर्दू पाक्षिक 'भूदान-तहरीक' प्रकाशित होते हैं। इसके अलावा करीब-करीब हर प्रान्त में वहाँ की भाषा में भूदान-पत्र निकलते हैं। हमारा साहित्य भी हर भाषा में है।

आन्दोलन की सिद्धि के लिए साहित्य और खासकर पत्र-पत्रिकाओं का अधिक-से-अधिक और व्यापक प्रचार होना अत्यन्त आवश्यक है। आशा है, जगह-जगह के सर्वोदय-मंडल, लोक-सेवक, खादी, शिक्षा आदि से सम्बन्धित रचनात्मक संस्थाएँ सब अपने-अपने क्षेत्र में विनोबा-जयन्ती से गांधी-जयन्ती तक की अवधि के लिए इस काम की व्यवस्थित योजना बना कर इसे अमल में लायेंगे।

काशी, २६-७-'६१

—नवकृष्ण चौधरी
अध्यक्ष, अ० भा० सर्व सेवा संघ

तरुण पीढ़ी को प्राणवान और स्वस्थ बनाने में नेतृत्व करें

फिल्म-उद्योगपतियों को विनोबा की सलाह

[पिछले कुछ महीनों से फिल्म-सेंसर बोर्ड भारतीय तथा विदेशी फिल्मों को ठोक तौर से सेन्सर करने में काफी तत्परता दिखा रहा है। इस बात से फिल्म-उद्योगपतियों में एक तरह की हलचल मची है और उन्होंने फिल्म-सेन्सर बोर्ड तथा केंद्रीय सूचना-मंत्रालय के खिलाफ एक आन्दोलन-सा उठा रखा है।

अभी हाल ही में श्री विनोबाजी का ध्यान इस ओर आकर्षित हुआ। उन्होंने योजना-कमीशन के सदस्य, श्री श्रीमन्नारायणजी को इस संबंध में एक पत्र लिख कर अपनी राय जाहिर की है। विनोबाजी के इस महत्वपूर्ण पत्र को हम नीचे उद्धृत कर रहे हैं। —सं०]

"आप जानते हैं, इधर दो महीने से हमारी यात्रा बिलकुल देहात में चल रही है, जहाँ ग्रामदान की अच्छी हवा निर्माण हुई है और उस काम में मैं मशगूल हूँ। इस हालत में सिनेमा वगैरह के बारे में जानने या और बोलने का मौका इधर मुझे नहीं मिला। पर पुराने अखबार कुछ मिलते हैं, उससे पता चला, जिसका आपके पत्र में जिक्र आया कि सरकार के निर्देश पर फिल्मों का पहले से कुछ अच्छा सेन्सरिंग हो रहा है, जिसके खिलाफ फिल्म-उद्योगपतियों ने एक जिहाद-सा उठाया है।

मुझे इस खबर से दुख हुआ। मैंने कई दफा कहा है कि फिल्म-उद्योग के खिलाफ मैं नहीं हूँ, बल्कि अगर उसका ठीक नियंत्रण और आयोजन किया जाय तो मनोरंजन का और शिक्षण का वह अच्छा जरिया हो सकता है। जैसा रस्किन ने लिखा है,

(हर उद्योग के सामने लोकहित का एक ध्येय होना चाहिये। उसके अन्तर्गत उचित मुनाफे का स्थान हो सकता है। लेकिन लोकहित की तरफ ध्यान दिये बिना और लोकहानि प्रत्यक्ष हो रही हो उसकी परवाह किये बिना, केवल मुनाफे की दृष्टि से ऐसा धंधा उद्योगपति करते जायँ, यह साइंस के इस जमाने में असह्य है।)

इतना ही नहीं, अगर ऐसा ही रवैया रहा तो लोकमानस पर इतना व्यापक असर डालने वाला यह धंधा प्राइवेट सेक्टर में रहने देना ही खतरनाक माना जायगा। आप यह जानते हैं कि मैं प्राइवेट सेक्टर के खिलाफ नहीं हूँ, बल्कि प्राइवेट सेक्टर को सौ फी सदी अवकाश होगा, साथ-साथ पब्लिक-सेक्टर को भी सौ फीसदी अवकाश होगा, और दोनों मिल कर भी सौ फी सदी होगा, ऐसा हमारा सर्वोदय का गणित है। १००×१०० = १०० यह गणित किसी युनिवर्सिटी ने मान्य नहीं किया है, जो हमने मान्य किया है।

ऐसी हालत में सिनेमा इंडस्ट्री को प्राइवेट सेक्टर में रखना चाहिए या नहीं रखना चाहिए यहाँ तक सोचने की नौबत आये, यह शोचनीय बात होगी।

शोभनीय क्या, अशोभनीय क्या, इस विषय में कोई दकियानूस विचार मैं नहीं रखता, बल्कि वैज्ञानिक ढंग से सोचना चाहिए, यही मेरा आग्रह रहता है। यह मेरे सब साथी जानते हैं, बल्कि गंदे पोस्टरों के खिलाफ मुझे सत्याग्रह करना पड़ा, यह मेरे लिए एक कष्टदायक बात थी। पर लाचार होकर मुझे वह करना पड़ा।

पोस्टर्स तो आंतरिक रोग का एक बाहरी चिह्न मात्र था। पोस्टर्स के नियंत्रण के साथ खराब सिनेमा, गन्दे गाने आदि का भी सेन्सरिंग करना ही था।

इस तरफ सरकार ध्यान दे रही है, इसकी मुझे खुशी है। मेरी सिनेमा-उद्योगपतियों से प्रार्थना है कि वे भी इसमें सहयोग की वृत्ति रखें और देश की तरुण पीढ़ी को प्राणवान और स्वस्थ बनाने में नेतृत्व करें।"

असम-यात्रा
१९-७-६१

विनोबा का
जय जगत्

एक नया गृह-उद्योग पेन्सिल-उद्योग

अभी तक देश में छोटे गृह-उद्योग और ग्रामोद्योग के रिसर्च-शोध-पर बहुत कम ध्यान दिया गया है। खुशी की बात है कि देहरादून की वन्य अनुसन्धान-शाला ने केवल १०० रुपयों की पूंजी से शुरू होने वाले पेन्सिल-उद्योग पर शोध किया है। २९ जुलाई को 'प्रेस ट्रस्ट' ने जो समाचार दिया है, वह इस प्रकार है :

"नई दिल्ली, २९ जुलाई। देहरादून की वन्य अनुसन्धान शाला ने गृहोद्योग के अन्तर्गत हाथ से पेंसिलें बनाने के लिए कुछ सस्ते औजार तैयार किये हैं।

इन औजारों में एक सादा रन्दा है और तीन औजार लकड़ी को गोल करने के लिए, उसको पेंसिल की शकल में ढालने के लिए और सुघड़ करने के लिए हैं। इनके अतिरिक्त एक बेलन [साँचा] और एक कारीगर की बेंच है। इन सबकी कीमत एक सौ रुपये हैं।

बताया गया है कि पेंसिल बनाने की सारी क्रिया एक ही आदमी कर ले सकता है। उत्पादन का खर्च ग्रुस [१४४] पीछे ७॥ से ९ रु० तक पड़ेगा।

जो लोग इसे सीखना चाहें उन्हें अनुसन्धान शाला मुफ्त प्रशिक्षण प्रदान करता है, या जो देखना चाहें दिखाया भी जाता है।

भारत में इस समय प्रति वर्ष दस लाख ग्रुस पेंसिलों की जरूरत पड़ती है। शिक्षा के विस्तार के साथ माँग और भी बढ़ सकती है।

यद्यपि बड़ी-बड़ी फैक्टरियाँ पेंसिलें बनाने के काम में लगी हुई हैं, तथापि गृह-उद्योग के अन्तर्गत इसके विकास की काफी गुंजाइश है।"

हमें उम्मीद है कि अनुसन्धान-शाला द्वारा मुफ्त प्रशिक्षण की सुविधा का देश के नौजवान भाई-बहनें लाभ उठायेंगे और साथ ही सरकार से अपेक्षा करते हैं कि वह इस गृह-उद्योग को पर्याप्त संरक्षण प्रदान करें।

—मणीन्द्रकुमार

फिल्म-व्यवसायियों सामाजिक जिम्मेदारी

अभी हाल ही में बम्बई में फिल्म व्यवसायियों की एक सभा में बोलते हुए केन्द्रीय सूचना-मंत्री डा० केसकर ने अपने श्रोताओं को समाज के प्रति उनकी जिम्मेदारी की याद दिलायी। उन्होंने फिल्म-व्यवसायियों को कहा कि वे जिस समाज के अंग हैं और जिस समाज के आधार पर उनका सारा व्यवसाय चलता है, उसकी आकांक्षाओं और उसके नैतिक आदर्शों को बनाये रखने के प्रति उनकी जो जिम्मेदारी है, उसे उनको नहीं भूलना चाहिए।

रेडियो और टेलीविजन इत्यादि की तरह, बल्कि उनसे भी बढ़कर, सिनेमा की फिल्में भी जन-समुदाय की मानसिक वृत्तियों पर असर डालने वाला एक जबरदस्त साधन है। उन पुराने दिनों की याद करके जब "नौजवानों के मानस को सशक्त करने के लिए" फिल्में नहीं थीं, कोई कितना भी सिर धुने, पर सिनेमा को अब जन-जीवन में से हटाया नहीं जा सकता। उसे हटाने की आवश्यकता भी नहीं है, बल्कि आवश्यकता इस बात की है कि हम जिन आदर्शों को सामाजिक जीवन में उतारना चाहते हैं, उनकी पूर्ति के लिए उसका उपयोग हो। इसके लिए यह आवश्यक है कि फिल्मों के निर्माता अपनी सामाजिक जिम्मेदारी को पहचानें और उसके अनुरूप अपना काम चलायें।

जैसा कि विनोबा ने पिछले साल इन्दौर में फिल्म-व्यवसायियों को संबोधित करते हुए उन्हें याद दिलाया था, वे स्वयं भी गृहस्थ हैं। उनके भी बाल-बच्चे हैं, नौजवान लड़के-लड़कियाँ हैं, जिनके बारे में वे जरूर यह चाहते होंगे कि वे अच्छे नागरिक बनें। उनके भी घर में माँ-बहनें और पत्नियाँ हैं, जिनके साथ अगर वे कभी आमोद-प्रमोद के लिए खुद सिनेमा देखने जायँ तो गंदी फिल्में देखना पसन्द नहीं करेंगे। पर आज मुश्किल यह है कि हमारे जीवन में एक तरह का द्वैत निर्माण हो गया है। जहाँ हमारा व्यक्तिगत संबंध आता है, वहाँ हम यह चाहते हैं कि समाज में अच्छाई हो, दूसरे लोग हमारे साथ अच्छाई का व्यवहार करें और लोगों में नैतिकता तथा सामाजिक जिम्मेदारी कायम रहे। हम अपने व्यक्तिगत और पारिवारिक जीवन में कुछ हद तक इन गुणों का अनुसरण भी करते हैं, लेकिन जहाँ व्यवसाय का, 'कमाने का' सवाल आता है, वहाँ हम इन सब बातों की उपेक्षा करते हैं। आटे में मिलावट करने वाला यह कभी नहीं चाहेगा कि उसे घी मिलावट का मिले, और घी में मिलावट करने वाला यह नहीं चाहेगा कि अपने बीमार लड़के के लिए

[शेष पृष्ठ १२ पर]

साप्ताहिक घटना-चक्र

ब्रह्म सत्यं जगत् स्फूर्तिः जीवनं सत्यशोधनम्

भूदान-यज्ञ

लोकनागरी लिपि*

शान्ती-सेना और कृषत्रीयत्व की रकृषा

आज दुनीया में कृषत्रीयत्व की अत्यावश्यकता है। इसीलीओ मैंने शान्ती सेना की योजना चलायी है। शान्ती-सैनीक होने का यह अर्थ नहीं की आग देने पर उतारू हो जाय। मौका आने पर वह भी करना पड़ता है, लेकीन और समय में हमेशा जनता की सेवा ही करनी है। यदी लोग जान जायें की यह हमारा सेवक है, तो उपद्रव के समय आज भी काम कर जाती है। सेवक वहाँ जाकर खड़ा हो जाये, तो लोगों को तत्काल ध्यान में आ जायगा की 'अरे! हम यह क्या बेवकूफी कर रहे हैं!' इस तरह उपकार करने वाले सेवक के शब्दों और आँखों से ही असर सेमझ सकते हैं। फीर यदी वह सारी अकल ही खो बैठें, तो उस सेवक को मार भी सकते हैं। लेकीन, उस समय उसे यही कह कर की भाई, मुझे मार लो, पर दूसरों को न मारो; शान्त होकर, नीर्भय होकर, खड़ा हो जाना चाहीये। यदी इस तरह के सेवक तैयार हो जायें, तो आज मुझे उनकी सख्त जरूरत है। इस तरह मैंने देश में कृषत्रीयत्व बनाये रखने का यह एक धंधा ही शुरू कर दीया है। इसमें मैं नये कृषत्रीयों की भरती कर रहा हूँ। फीर पुराना कृषत्रीय-वर्ग भी तैयार है, तो काम में क्यों न आये?

—वीनोबा

*लिपि-संकेत : ि = ी ; ु = ू ; ख = ख, संयुक्ताक्षर हलंत चिह्न से।

नशाबंदी-सम्मेलन

दिल्ली में पहली बार अखिल भारतीय स्तर पर एक नशा-बन्दी सम्मेलन आगामी ता० २ और ३ सितम्बर १९६१ को हो रहा है। इस सम्मेलन का आयोजन दिल्ली नशा बन्दी समिति कर रही है।

सारे भारत में जल्दी-से जल्दी पूरी नशा बन्दी हो, इस माग के समर्थन में उपयुक्त जनमत का प्रदर्शन करना इस सम्मेलन का उद्देश्य है। सम्मेलन के आयोजन के लिए दिल्ली के नागरिकों की एक स्वागत-समिति बनायी गयी है। जिसके अध्यक्ष दिल्ली के पुराने राष्ट्र सेवी और प्रतिष्ठित नागरिक डा० युद्धवीर सिंह हैं।

हिन्दुस्तान जैसे देश में शराब-बन्दी क्यों नहीं हो रही है, यह समझने में अक्सर मुश्किल होती है। इस देश का जनमत पहले से नशा-बन्दी के अनुकूल है। इसके अलावा गांधीजी ने तीस वर्ष के यहाँ के अपने सार्वजनिक जीवन में इस चीज को अपने कार्यक्रम में प्रमुख स्थान दिया था। अंग्रेजी सल्तनत के साथ जब जब बातचीत हुई, तब तब शराब-बन्दी को उन्होंने अपनी एक मुख्य माग के रूप में सामने रखा था। गांधीजी ही नहीं, राष्ट्र के दूसरे नेता भी, इस मामले में करीब करीब एकराय थे। तभी तो आजादी के तुरन्त बाद जब देश का संविधान बना, तब उसमें नशा-बन्दी को राष्ट्रीय नीति के अंग के रूप में घोषित किया गया।

यह सब होते हुए यह सचमुच दुःख और आश्चर्य का विषय है कि पिछले दस-पन्द्रह वर्षों में शराबखोरी बन्द होने के बजाय उल्टे उसका प्रचार बढ़ा है। अभी हाल ही में अंग्रेजी साप्ताहिक "भूदान" में देहरादून के एक पुराने अनुभवी सज्जन का पत्र प्रकाशित हुआ है, जिसमें उन्होंने बहुत वेदना के साथ इस बात का जिक्र किया है कि शराबबन्दी तो दूर, उल्टे, शराब का प्रचार करने वाले और लोगों को उसके प्रति आकर्षित करने वाले बड़े बड़े विज्ञापन अब सार्वजनिक जगहों पर लगने शुरू हुए हैं। ऐसे देश में, जो शराबबन्दी को अपनी एक नीति के रूप में स्वीकार कर चुका है, कम-से-कम ऐसी बातें तो अवश्य ही रोकी जा सकती हैं और रोकी जानी चाहिए। पर अफसोस है कि भारत में घोषित नीति के बावजूद प्रांतीय और केंद्रीय सरकारों की ओर से इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए सम्पूर्ण कोई कदम नहीं उठाया जा रहा है। दूसरी ओर देश के चन्द अखबारों ने, जो स्थापित हितों के समर्थक हैं, जनमत को शराब-बन्दी के खिलाफ उभारने को अपना एक मुख्य लक्ष्य बना लिया है। आजादी के तुरन्त बाद विभिन्न क्षेत्रों में काम कर रहे समाज विरोधी तत्त्व कुछ चौकन्ना हुए थे, पर अब धीरे धीरे उन्होंने भी परिस्थिति को पहचान लिया है और वे फिर सिर उठा रहे हैं।

ऐसे समय शराब-बन्दी के पक्ष में जनमत को संगठित करने के उपरोक्त कदम का हम हार्दिक स्वागत करते हैं। शराब-बन्दी केवल कानून से नहीं हो सकती। जनमत के समर्थन के बिना कोई कानून सफल नहीं हो सकता। पिछले १५ वर्षों में शराब-बन्दी का कदम अगर पीछे हटा है—और वह निश्चित रूप से बहुत पीछे हटा है—तो उसके लिए केवल सरकार ही नहीं, देश का गैर-सरकारी नेतृत्व भी जिम्मेदार है। हम आशा करते हैं कि सितम्बर के शुरू में जो अखिल भारत नशा-बन्दी सम्मेलन होने जा रहा है, उसको व्यापक समर्थन मिलेगा।

देश के विभिन्न भागों से लगभग ५०० प्रतिनिधि इस सम्मेलन में भाग लेने के लिए आयेंगे, ऐसी आशा है। कई समाजसुधार संस्थाएँ इस सम्मेलन को सफल बनाने के लिए अपना सहयोग दे रही हैं। भारत सरकार के वित्तमंत्री श्री मोरारजी देसाई सम्मेलन का उद्घाटन करेंगे और मद्रास राज्य के गृहमंत्री, श्री एम० भक्तवत्सलम् इसके सभापति होंगे। सम्मेलन के अवसर पर 'नशा-बन्दी संदेश' नामक एक ग्रन्थ भी प्रकाशित किया जा रहा है।

नया गुजराती साप्ताहिक

श्री मगन भाई देसाई के नाम से पाठक परिचित हैं। गांधीजी द्वारा संचालित "हरिजन" साप्ताहिक पत्रों के तथा बाद में "शिक्षण अने साहित्य" और "नवजीवन" गुजराती मासिकों के सम्पादक और गांधीजी की दृष्टि से अनुप्राणित एक स्वतंत्र वक्ता और लेखक के रूप में श्री मगन भाई देसाई प्रख्यात हैं। 'हरिजन' साप्ताहिकों के बन्द होने के बाद भी मगन भाई देसाई 'नवजीवन' और 'शिक्षण-साहित्य' में लगातार लिखा करते थे। 'नवजीवन' मासिक अभी कुछ दिन पहले ही बन्द हुआ है।

यह खुशी की बात है कि श्री मगन भाई देसाई के सम्पादन में अब ता० १५ अगस्त से 'सत्याग्रह' नाम का गुजराती साप्ताहिक प्रकाशित हो रहा है। यह साप्ताहिक श्री मगन भाई लोक-सेवा की एक प्रवृत्ति के तौर पर ही निकाल रहे हैं। इसमें व्यक्तिगत प्राप्ति की दृष्टि नहीं है। यथासंभव पत्र को एक स्थायी ट्रस्ट के रूप में कर देने का भी श्री मगन भाई का इरादा है। श्री मगन भाई की निर्भीक लेखनी से जो परिचित हैं वे अवश्य ही नये साप्ताहिक का स्वागत करेंगे।

—सिद्धराज

कार्यकर्ताओं की ओर से

(१)
उत्तराखण्ड की सीमा में शांति-पात्र

नवनिर्मित चमोली जिले के सीमावर्ती गाँव नीति, गमसाली, बाम्पा और मैनापुर के छात्रों ने अपने-अपने गाँवों में शांति-पात्र रखने का निश्चय किया है। चालीस घरों में शांति-पात्र रखे जा रहे हैं। चारों गाँवों की जिम्मेवारी चार लड़कों ने ली है। सभी गाँवों के शांति-पात्रों की देख-रेख तथा खर्च करने के लिये एक अध्यापक ने अपना आंशिक समय देना स्वीकार किया है।

गाँवों में रात को आध घण्टे तक गीता-रामायण के पठन का क्रम भी जारी किया जा रहा है, जिससे अन्य लोगों तक भी ज्ञान पहुँचाया जा सके।

इस सीमान्त के गाँवों में सर्वोदय के प्रति निष्ठा बढ़ रही है। शांति-सेना के बारे में उत्सुकता है। गाँव से आते वक्त समय शांति का गीत सुनाई देता था। इस प्रकार भारत की सीमा पर सर्वोदय का शंखनाद बजने लग गया है।

(२)
सज्जनता जाग उठी !

कोआपरेटिव लेबर कन्ट्रैक्ट सोसाइटी, मल्ला नागपुर-गोपेश्वर ने सार्वजनिक निर्माण विभाग में पेंशन बन्ने पर काम लिया था। ६ माह तक बिल का भुगतान नहीं हुआ था। सोसाइटी के कार्यकर्ता ने सोचा कि शायद इसमें भी 'कमीशन' की आकांक्षा है! जल्दी करने की दृष्टि से 'कमीशन' तो नहीं, किन्तु कुछ रुपये दक्षिणा-स्वरूप दे दिये। इस प्रकार देने वाले ने अपना विश्वास का सौदा किया, लेने वाले ने अपना रस्म-रिवाज बताया!

किन्तु "हर मेघ में तू, हर देश में तू"—जब तीन माह बाद रस्मी भाई को पता चला कि यह काम तो 'सोसाइटी' का है। उन्हें सोसाइटी में अपना प्रतिबिम्ब दिखाई दिया, तुरन्त ही धनराशि वापस लौटा दी।

उस समय उनके चेहरे पर सौम्यता, करुणा और सज्जनता झलक रही थी, मानव का सच्चा दर्शन हो रहा था। नम्रता के शब्दों में धीरे से उन्होंने कहा कि अपने अवसर ही इन कोआपरेटिव लेबर कॉन्ट्रैक्ट सोसाइटी की हर प्रकार की सेवा करेंगे।

—चण्डीप्रसाद भट्ट

श्री शंकररावजी के साथ विहार में

श्री धीरेन्द्र भाई का क्रान्तिकारी प्रयोग

तिo नo आत्रेय

[पिछली २३ जुलाई '६१ को शंकररावजी धीरेन्द्र भाई के सर्वजनाधार के प्रयोग-स्थल, बलिया गाँव गये थे। साथ में खादी-ग्रामोद्योग ग्राम-स्वराज्य समिति के श्री ति. न. आत्रेय भी थे। उन्होंने धीरेन्द्र भाई के क्रांतिकारी प्रयोग का वर्णन अपने एक पत्र में किया है। यहाँ हम उस पत्र के मुख्य अंश दे रहे हैं। -सं०]

काल ता० २३ जुलाई को दिन भर हम बलिया में रहे। आजकल पूज्य धीरेन्द्र भाई के साथ केवल एक साथी, श्री विजय भाई हैं, जो गोरखपुर-निवासी हैं। उनकी पत्नी भी यहीं हैं। दूसरे एक साथी श्री नरेन्द्र भाई इस समय अपने इलाज के लिये इलाहाबाद में हैं। अतः इन चार ही लोगों का छोटा-सा धीरेन्द्र भाई का परिवार है। छोटे मुन्ने के साथ धीरेन्द्र भाई हँसते-खेलते रहते हैं। आज तक धीरेन्द्र भाई को मैंने दूसरे ही रूप में देखा था। आज गोद में बच्चे को लिये, उसे दलिया-भाजी खिलाते हुए, उनके साथ तुतली बोली बोलते हुए और उसे उठाये चलते फिरते देखा तो वाल्मीकि महर्षि का स्मरण हो आया। बुढ़ापे में लव और कुश को कंधे पर बैठा कर वाल्मीकि फिरा करते थे। धीरेन्द्र भाई प्रखर क्रांतिकारी तो हैं ही, पर यहाँ अब मैंने देखा कि धीरेन्द्र भाई एक वत्सल पिता या नाना भी हैं।

मैंने वाल्मीकि के साथ तुलना की तो इसका आशय यह हरगिज नहीं कि धीरेन्द्र भाई भी वाल्मीकि की तरह ही कोई रमणीय आश्रम बना कर बैठे हों।

धीरेन्द्र भाई का निवास बीच-गाँव में एक छोटी-सी झोपड़ी है। झोपड़ी यानी बिलकुल 'झोपड़ी'। बाँस की दीवार, मिट्टी का आंगन, फूस का छप्पर और वे ही टूटे-फूटे, फटे-पुराने सामान। यह सेवक तो बिलकुल अपने स्वामी जैसा ही रह रहा है।

धीरेन्द्र भाई का यह निवास और यह जीवन देख कर श्री शंकररावजी को गांधीजी और सेवाग्राम का आश्रम याद आया: "गांधीजी खुद चाहते थे कि वे गाँव में जाकर गाँववालों की ही तरह रहें। लेकिन संदर्भ और संस्कार के कारण वे अपनी मन की बात पर पूरा-पूरा अमल नहीं कर सके। लेकिन धीरेन्द्र भाई ने अब गांधीजी का यह अधूरा कदम उठाया है। ये न केवल गाँव के बीच बसे हैं, परन्तु पूर्णतया ग्रामीण बन गये हैं। ग्रामीणों के साथ एकरूप होने का तीव्रता के साथ प्रयत्न कर रहे हैं।"

बलिया में धीरेन्द्र भाई का जो काम चल रहा है, उसे सूत्र-रूप में उन्हीं के शब्दों में यों कहा जा सकता है कि

"सार्वजनिक सेवा जनाधारित हो, कार्यकर्ता श्रमाधारित हो और समग्र नई तालीम के जरिये ग्राम-विकास हो।"

कार्यकर्ताओं का जीवन पूर्णतया श्रमाधारित रहे, यह धीरेन्द्र भाई का निश्चय है। जब वे इस गाँव में आये, तब इसी शर्त पर आये थे कि कम-से-कम ३०-३५ एकड़ जमीन पर सामूहिक खेती होनी चाहिये। सो आज लगभग ६० एकड़ जमीन पर सामूहिक खेती होती है। अब तक कार्यकर्ता भी इसमें काम करते थे और गाँव के निश्चय के अनुसार फसल का जो हिस्सा इनको मिलता था, वह लेते थे। पर कार्यकर्ता की जीविका में जो कमी पड़ती थी, उसकी पूर्ति गाँववाले स्वयं अपनी ओर से तथा आस-पास के क्षेत्र से चंदा इकट्ठा करके करते थे। अब कार्यकर्ताओं के लिये ही अलग से ४० एकड़ भूमि दान में मिलने वाली है। घोषणा हो चुकी है। अब की खड़ी फसल लेकर जमीन-मालिक जमीन इनके सुपुर्द करने वाले हैं।

धीरेन्द्र भाई ने योजना बनायी है कि शुरू में इस चालीस एकड़ जमीन में पाँच कार्यकर्ता-परिवार निर्भर रहें। ये इस जमीन को उपजाऊ बनाते-बनाते उत्पादन बढ़ायें। ज्यों-ज्यों प्रति एकड़ उत्पादन बढ़ता जाता है, त्यों-त्यों वे अपनी जमीन कम करते जायें और यहाँ तक कि प्रत्येक कार्यकर्ता के पास पाँच एकड़ से ज्यादा जमीन न रहे। इस प्रकार इन चालीस एकड़ जमीन पर आठ कार्यकर्ता-परिवार अपना गुजारा चलायें।

यह जो ४० एकड़ जमीन है, इसे अलग से रख कर कार्यकर्ता अपनी बुद्धि तथा श्रम लगा कर अपनी आमदनी बढ़ा लें, ऐसा करने के बजाय धीरेन्द्र भाई की योजना है कि यह जमीन भी उस सामूहिक खेती की जमीन के साथ ही सम्मिलित रहेगी। इसका अर्थ यह कि चालीस एकड़ का उत्पादन बढ़ाना, अपने आप में एक स्वतंत्र प्रयत्न न रह कर समूची सामूहिक खेती की भूमि का उत्पादन बढ़ाने का प्रयत्न होगा। सारी जमीन का उपजाऊपन बढ़ेगा, तभी इस ४० एकड़ का भी बढ़ेगा। अर्थात् इन कार्यकर्ताओं की अपनी जमीन ४० एकड़ है, परन्तु इनको चिंता करनी पड़ेगी सारी जमीन की।

यह सारा तो एक आरंभ ही मात्र है। अपेक्षा यह है कि इस सामूहिक खेती में अच्छी फसल पाने के साथ-साथ सामूहिक वृत्ति से काम करने का प्रयोग ज्यों-ज्यों सफल और लाभदायी होता जायगा, त्यों-त्यों गाँव की सारी ही जमीन इसमें शामिल हो जाय और ग्राम-दान की जो भावना है, वह इस प्रकार स्वयं विकसित और निष्पन्न हो। यह इसलिए सम्भव है कि भूमि पर यह सारा प्रयोग करने वाले और भूमि, दोनों गाँव से कोई भिन्न नहीं हैं, गाँव की ही भूमि पर गाँव-वाले स्वयं यह प्रयोग करते हैं। इसका जो भी अच्छा परिणाम आता है, उसे स्वयं गाँव वाले ही उपभोग करते हैं।

इस श्रमाधारित जीवन प्रयोग की एक और खूबी यह है कि कार्यकर्ताओं की अपनी जमीन यद्यपि ४० एकड़ ही है, फिर भी चूंकि यह सामूहिक खेती के साथ ही जुड़ी है, इसलिये सामूहिक खेती की फसल के वितरण का जो नियम है, वही कार्यकर्ताओं की जमीन पर भी लागू होगा। आज वह नियम यह है कि सामूहिक खेती के लिये जिन्होंने अपनी भूमि दी है, उनको उस जमीन की फसल का ३० प्रतिशत हिस्सा मिलेगा, श्रमिकों को ६० प्रतिशत मिलेगा और बाकी १० प्रतिशत भूमि-सुधार के लिये सुरक्षित रहेगा। कहना न होगा कि जिसने भूमि भी दी और श्रम भी किया है, उसे ९० प्रतिशत हिस्सा मिलेगा। कार्यकर्ता भी इसी नियम के अनुसार अपना हिस्सा पायेंगे।

इस सारे प्रयोग और कार्यक्रम को धीरेन्द्र भाई मूलतः आर्थिक या उत्पादन से ही सम्बन्धित समस्या नहीं मानते हैं। उनका कहना है कि यह विशुद्ध शैक्षणिक कार्यक्रम है। वे स्पष्ट कहते हैं कि यह सारा काम करते-करते ही लोगों को समूह-जीवन का शिक्षण दिया जायगा और यह सारा काम उस समूह-शिक्षण का माध्यम माना जायगा। चूँकि कार्यकर्ता की आजीविका इस प्रयोग की सफलता पर निर्भर है, इसलिये कार्यकर्ता को इस प्रयोग में आमूल दिलचस्पी लेनी होगी और गाँव का सहयोग प्राप्त करने की उसकी हर क्षण तैयारी व कोशिश रहेगी।

धीरेन्द्र भाई का पक्का विचार है कि समाज का शिक्षण, आर्थिक विकास और समाज सुधार आदि कार्यक्रम और सेवाकार्य तभी सफल होगा, जब इनके साथ कार्यकर्ता का जीवन संबद्ध होगा। इससे न केवल सफलता मिलेगी, बल्कि उसमें तेज आयगा।

इसे स्पष्ट करते हुए धीरेन्द्र भाई विनोद में कहते हैं कि पुराने जमाने में लोग जहाँ भिक्षा लेते थे, वहाँ वे शाप भी दे सकते थे; पर आज हम भिक्षा तो लेते हैं, लेकिन शाप देने की शक्ति खो चुके हैं। आज संदर्भ बदला है। यह [illegible] यदि आज भी हम भिक्षा पर ही रहेंगे तो हमें दीनता और निस्तेजता प्राप्त होने के सिवा और कुछ पल्ले नहीं पड़ने वाला है। इसीलिये कार्यकर्ता श्रमाधारित हो तो ही आज का काम आगे बढ़ेगा, क्रांति हो सकेगी, अन्यथा नहीं।

श्रम निर्भर होते हुए भी सार्वजनिक सेवा-कार्य के लिये कार्यकर्ता रोज [illegible] घंटा निकालें, ऐसी योजना है। जिसकी जैसी प्रतिभा होगी, उसके अनुसार यह घंटा कम-ज्यादा हो सकता है। पर प्रत्येक के लिये दोनों काम अनिवार्य होंगे। इसमें बीमार-सेवा आदि कुछ निश्चित सेवा-कार्य होंगे। पर शिक्षण, सफाई, हिसाब आदि नियमित सेवा-कार्यों में टोलियों में बँट कर कार्यकर्ता क्रमशः लगेंगे।

बलिया गाँव के शिक्षण के संबंध में धीरेन्द्र भाई की योजना समग्र नई तालीम के लिये एक उत्तम नमूना है। इन्होंने गाँव की शिक्षण प्रवृत्ति को 'ग्राम-भारती' नाम दिया है। लेकिन 'ग्राम-भारती' कोई अलग एक प्रवृत्ति नहीं है।

धीरेन्द्र भाई सारे गाँव को 'ग्राम-भारती' कहते हैं। जो शिक्षण देना है, वह सारे ही गाँव को देना है। गाँव ही विद्यालय है।

पर इतने बड़े समूह को एकदम कोई शिक्षण देना सम्भव नहीं है। इसलिये इनकी योजना है कि सारे शिक्षण को केवल [illegible] के प्रत्यक्ष संसर्गयुक्त करने के लिये गाँव के लोगों को अलग-अलग छोटी टोलियों में बाँटा जायँ और प्रत्येक टोली के साथ अपना एक कार्यकर्ता रखा जाय। जहाँ जैसा काम पड़े, वहाँ ये टोलियाँ अलग-अलग काम करती रहेंगी और उन कामों के माध्यम से ही उनको शिक्षण भी मिलता जाय, ऐसी दृष्टि रख कर कार्यकर्ता चलेंगे। जो भी कुछ उत्पादन होता है, उसका 'पूलिंग' किया जा सकता है।

अब आरम्भ में १०-१० साल के [illegible] उम्र के बच्चों को इन्होंने हाथ में लिया है। इनके लिये अलग से दो बीघा जमीन मिली है। ये बच्चे रोज चार घंटा वहाँ सामूहिक रूप से काम करते हैं। निश्चित पैदावार का काम करते हैं। आज हल्दी और मकई बड़ी अच्छी हालत में है। कीड़े पड़ गये, इसलिये जो नुकसान हुआ सो हुआ, पर मेहनत का फल प्रत्यक्ष दिखता है। काम करते-करते ही कुछ गणित सिखाना, भाषा सिखाना, रामायण आदि कण्ठस्थ कराना चलता है। यह काम आज विजय भाई ही देख रहे हैं। इस वर्ग में १३-१४ लड़के हैं। यहाँ काम करने के बाद अपने-अपने घरों में जाकर घर का जो भी काम हो, वह वे करते हैं। घर के काम में भी हर्ज नहीं होता है, आश्रमीय शिक्षा भी मिलती है और सुबह-शाम प्रार्थना, चर्चा का कार्यक्रम भी रहता है।

यह आरम्भ है। इसी तरह आगे गाँव के बड़ों को लेंगे। उनका शिक्षण भी इसी तरह चलेगा। उन लड़कों

सर्वोदय का धीमी गति से बढ़नेवाला ज्वार

जी० रामचन्द्रन्

सर्वोदय के बारे में कम-से-कम एक बात स्पष्ट है कि वह गांधीजी के सिद्धान्तों और कार्यक्रमों का प्रतिनिधित्व करने वाले शब्द के रूप में अधिकाधिक प्रयोग में आने लगा है। सर्वोदय अच्छा हो, बुरा हो, या दोनों ही न हो, लेकिन इस शब्द से जिन आचारों और विचारों का संकेत मिलता है, वह अन्य किसी दूसरे की अपेक्षा गांधी के ज्यादा निकट है। इस बात के कारण सर्वोदय का एक विशेष महत्त्व है और वह एक बड़ी चुनौती के रूप में हमारे सामने उपस्थित होता है। गांधीजी की हर बात के पीछे क्रांतिकारी तत्त्व था, फिर भी उनके विचारों और उनके कामों को उपहास, उपेक्षा, आलोचना, विरोध, स्वीकृति, फिर निषेध और फिर स्वीकृति इत्यादि अवस्थाओं में से गुजरना पड़ा है। उनका इतना ऊँचा व्यक्तित्व होते हुए भी वे इन सब अनिवार्य अवस्थाओं में से गुजरने की परेशानी से बच नहीं सके। सर्वोदय को भी विकास के इस लम्बे रास्ते से गुजरना होगा। ऐसा लगता है कि सर्वोदय उपेक्षा और उपहास की अवस्थाओं को तो अब पार कर चुका है। अब उसकी आलोचना का काल है, जो एक अच्छी चीज है। यह विचार अब धीरे-धीरे लोगों के मनों में घर कर रहा है। सर्वोदय को लोकप्रिय बनाने का श्रेय अन्य लोगों की अपेक्षा विनोबा और जयप्रकाश को सबसे अधिक है।

भूदान-ग्रामदान आन्दोलन ने गांधीजी के रचनात्मक कार्यक्रम में एक नया अध्याय जोड़ा और सर्वोदय को जनता की नजरों के सामने ला दिया। आर्थिक क्रांति के क्षेत्र में अहिंसा किस तरह काम कर सकती है, उसका एक आश्चर्यजनक सबक दुनिया को मिला। लेकिन विनोबा को कोई भी एक राजनीतिज्ञ के रूप में नहीं देखता, हालांकि कहा जा सकता है कि वे बहुत बुनियादी और गहरी राजनीति में—लोकशक्ति की राजनीति में—खेल रहे हैं। इसके विपरीत जयप्रकाश सर्वोदय की राजनीति के बौद्धिक प्रवक्ता हैं। ज्यों-ज्यों वे सत्ता की राजनीति से दूर हटे हैं, त्यों-त्यों वे सर्वोदय की राजनीति में ज्यादा गहरे गये हैं। वे हमेशा से एक राजनीतिज्ञ रहे हैं और आज पहले से भी ज्यादा वे राजनीतिज्ञ हैं। यह उनकी प्रशंसा ही है, क्योंकि आज का युग राजनीति का ही युग है और एक प्रतिभाशाली तथा प्रख्यात राजनैतिक प्रवक्ता के बिना सर्वोदय आगे नहीं बढ़ सकेगा। नेहरूजी के प्रारम्भिक दिनों की तरह जयप्रकाश के व्यक्तित्व के पीछे भी एक तरह की गूढ़ता रही है और वह भी सब तरह की व्यक्तिगत और तुच्छ विवादों और षड़यन्त्रों से ऊपर रही है। और हिंदुस्तान के अन्य किसी नेता की अपेक्षा जिस तरह नेहरूजी ने समाजवाद को बिना किसी प्रकार की गढ़ी-गढ़ायी मान्यताओं से लोगों के सामने रखा, उसी तरह जयप्रकाश सर्वोदय को एक निराग्रही और खुले सिद्धांत के रूप में प्रतिपादन कर रहे हैं।

कुछ दिन पहले आन्ध्र में जो तेरहवाँ अखिल भारतीय सर्वोदय-सम्मेलन हुआ था, उसके अध्यक्षीय भाषण में जयप्रकाशजी ने सर्वोदय का उसके विविध पहलुओं में व्यवस्थित और पूरा चित्र हमारे सामने पेश किया है, जैसा उन्होंने इसके पहले नहीं किया था। इस सम्बन्ध में उनके विचार एक निश्चित और छपे हुए रूप में हमारे सामने होने का लाभ हमें मिला है। यह अच्छी बात है कि हिन्दुस्तान के और दुनिया के मौजूदा सन्दर्भ में सर्वोदय का इस तरह से सुस्पष्ट चित्र हमारे सामने हो, क्योंकि इतने लोगों ने इतनी तरह से सर्वोदय को हमारे सामने पेश किया है—जैसा कि समाजवाद के बारे में हुआ है—कि लोगों का उलझन में पड़ जाना स्वाभाविक है। अब हमारे सामने एक ऐसी चीज है, जिसके आधार पर आलोचकों और प्रशंसकों, दोनों को ही एक निश्चित आधार मिलता है।

सर्वोदय की घोषणा करनेवाली जयप्रकाश की आवाज बिल्कुल अरण्य रोदन तो नहीं है, लेकिन उसके बहुत नजदीक है। हमारे देश के अखबारों और पत्र-पत्रिकाओं ने उनके इस अध्यक्षीय भाषण के बहुत कम और कहीं-कहीं से थोड़े अंश प्रकाशित किये हैं, सम्पादकीय आलोचनाएँ तो उस पर करीब-करीब नहीं हुई हैं। इस पर से हमें हमारे देश में चल रही एक अजीब परिस्थिति का भास होता है। बड़े-बड़े शहरों से, और उनमें बसने वाले बड़े-बड़े लोगों से दूर, रोजमर्रा के जीवन और घटनाओं के प्रवाह के नीचे, उस दुनिया में जहाँ हमारा बहु-संख्यक देहाती समाज जीता है, एक काफी बड़ी मात्रा में हिंदुस्तान के भिन्न भिन्न भाषाओं में सर्वोदय-साहित्य प्रचारित हो रहा है और फैल रहा है। हिन्दुस्तान के विभिन्न हिस्सों में अगणित लोगों के पास किताबों, पुस्तिकाओं, पत्र-पत्रिकाओं और पर्चों के जरिए धीरे-धीरे लोगों में सतत सर्वोदय का सन्देश पहुँच रहा है। प्रान्त-प्रान्त के गाँवों में सैकड़ों मीटिंगें होती हैं, जिनकी कि बड़े-बड़े अखबारों में और शहरों में जरा सी भी जानकारी नहीं आती। हजारों निष्ठावान सेवक चुपचाप काम कर रहे हैं और गांधी और विनोबा का नाम और उनका सन्देश एक बार फिर लोगों के पास पहुँचा रहे हैं। अतः यह सम्भव है कि जयप्रकाश के अध्यक्षीय भाषण की तो शहरों में कोई चर्चा न हो, लेकिन गाँव-गाँव और छोटे कस्बों में हम समझते हैं, उससे कहीं ज्यादा लोगों के पास वह पहुँचा है।

सर्वोदय सम्मेलन में जयप्रकाश नारायण ने जो निबंध पेश किया है, उसमें कई बुनियादी बातें सामने आती हैं। उसमें से कुछ की चर्चा यहाँ करना प्रासंगिक होगा।

पहली बात तो यह स्पष्ट नजर आती है कि सर्वोदय अब राजनीति से घबड़ा कर या घृणा करके भाग नहीं रहा है, हालाँकि वह सत्ता की राजनीति में दखल नहीं दे रहा है, पर वह नीचे समाज-जीवन की उस गहराई तक पहुँच रहा है, "जहाँ अत्यंत गरीब, दीन और दुखी" रहते हैं। जिस हद तक वह इसमें सफल होगा, उस हद तक वह जनता का समर्थन प्राप्त कर सकेगा। यह ठेठ बुनियादी राजनीति है।

सर्वोदय का जोर राज्य-शक्ति पर नहीं, बल्कि लोक-शक्ति पर है, शासन या शासनिक कार्रवाइयों पर नहीं, लेकिन लोगों पर और लोगों के कर्तृत्व पर है। राज्य-शक्ति तो लोक-शक्ति का ही प्रतिबिम्ब है और जो लोक-शक्ति की उपेक्षा करके राज्य-शक्ति के पीछे दौड़ रहे हैं, वे छाया को ही पकड़ने की कोशिश कर रहे हैं। जनतंत्र में राजनीति की यही असलियत है।

सर्वोदय को चाहिए कि वह भारतीय परिस्थिति के अनुरूप लोक शक्ति का विकास करने का सतत प्रयत्न करे। इसमें कई महत्त्व की बातें फलित होती हैं। सर्वोदय को जहाँ तहाँ काम करने वाले थोड़े से व्यक्तियों या समुदायों तक सीमित नहीं रहना चाहिए। उसकी परिणति जन-आन्दोलन में होनी चाहिए, अर्थात् लोगों के लिए और लोगों के आन्दोलन में। इसका मतलब सिर्फ यह नहीं है कि विभिन्न केन्द्रों में, जहाँ काम चल रहा है, उनको सबको परस्पर जोड़ दिया जायँ, बल्कि इसका मतलब यह है कि आम जनता को जो सवाल छूते हैं, वे हाथ में लिये जायँ, ताकि लोक-स्वातंत्र्य के लिये देश भर में एकसाथ एक सर्वसामान्य कार्यक्रम में सबको लगाया जा सके और इसके जरिये एकता का अनुभव कर सकें।

लोक शक्ति पैदा करने के लिये लोक-शिक्षण तत्काल की एक महत्त्वपूर्ण आवश्यकता है। व्यवस्थित ढंग से सोचा हुआ और राष्ट्र-व्यापी पैमाने पर किया जाने वाला लोक शिक्षण का व्यापक आन्दोलन जनता को जागृत कर सकता है। आज यह नहीं हो रहा है और वह जल्दी-से-जल्दी होना चाहिए।

लोक शिक्षण के देश-व्यापी काम के मानवीय-वाहन शांति-सैनिक हो सकते हैं, अतः शांति-सेना को व्यापक रूप में और पूरी तौर से संगठित करना चाहिए, ताकि वह लोकशक्ति को एकत्रित करने का साधन बन सके। शांति सेना के बिना सच्ची लोकशक्ति प्रकट नहीं हो सकती और अतः उसके बिना सर्वोदय भी नहीं हो सकता।

पंचायती राज का काम, चाहे वह किसी के भी तत्वावधान में शुरू हुआ हो और चल रहा हो, हरएक को उठा लेना चाहिए। सबको चाहिये कि इस चीज को हम राष्ट्रीय जीवन की एक असलियत के रूप में बदल दें। पंचायती राज एक ऐसा साधन मिला है, जिसके जरिये लोग विधायक क्रांति के प्रारंभिक बड़े कदम उठा सकते हैं।

राष्ट्रीय जीवन का आयोजन सर्वोदय-विचार के विपरीत चीज नहीं है, बल्कि उसका एक हिस्सा है। यह कहना गलत है कि सर्वोदय और राष्ट्रीय नियोजन परस्पर विरोधी हैं।

आज सरकार के तत्वावधान में जो नियोजन चल रहा है, उसमें काफी असन्तुलन है, उसकी दिशा भी कुछ हद तक गलत है और परिणामस्वरूप वह नियोजन वास्तविकता से कुछ दूर है।

सर्वोदय के अनुसार योजना नीचे से होनी चाहिये और बड़े और छोटे, दोनों पैमानों के उद्योग बिना एक दूसरे को नुकसान पहुँचाये विकसित होने चाहिये। हिन्दुस्तान की परिस्थिति में छोटे उद्योग केवल बड़े उद्योगों के पूरक के रूप में केवल स्थायी तौर से नहीं, बल्कि राष्ट्रीय उत्पादन की

साथी और मित्रों को रणांगण में आने का निमंत्रण

गोविंद रेड्डी

[श्री गोविंद रेड्डी हम सर्वोदय-कार्यकर्ताओं में सही माने में एक सच्चे और सुलझे हुए किसान हैं। वस्तुतः ये वर्षों से सुने डिलोदिमाग से खेती के संबंध में 'रिसर्च'—अनुसंधान—कर रहे हैं। सर्वोदय के ढंग से रिसर्च कैसी की जानी चाहिए, उसके ये एक आदर्श हैं। यहाँ पर उन्होंने हमको सर्वोदय की दृष्टि से खेती में उपज बढ़ाने के लिए रणांगण में आने का न केवल निमंत्रण दिया है, अपितु वे स्वयं भी सलाह-मशविरे के लिए प्रस्तुत हैं। आशा है, रचनात्मक संस्थाएँ एवं ग्रामसेवा-केन्द्र उनके अनुभवों का पूरा-पूरा लाभ उठायेंगे। —सं०]

देश में दो पंचवार्षिक योजनाएँ खतम हुईं तो भी हम अन्न के बारे में आत्मनिर्भर नहीं हो सके। फिलहाल देश की पैदावार ७ करोड़ टन है। सन् ६० से ६४ तक अमेरिका से १ करोड़ ६० लाख मिट्रिक टन गेहूँ, १० लाख टन चावल लेना तय हुआ है। वैसे ही कनाडा, आस्ट्रेलिया, बर्मा से भी लेना है। तीसरी योजना-काल में कृषि पर ६२५ करोड़ रुपये खर्च करने वाले १० करोड़ टन अन्न उत्पादन करने का लक्ष्य रखा है। जिस रफ्तार में दूसरे उद्योगों का विकास हो रहा है, वैसा कृषि-उद्योग का विकास नहीं हो रहा है। उदाहरणार्थ विभाजन के समय पंजाब में ६०० कारखाने थे, अब ३७०० कारखाने हैं। १२-१३ साल में ६ गुना बढ़े। उसी पंजाब में नहर का जाल बिछा हुआ है। गेहूँ के लिए प्रसिद्ध माना जाता है तो भी गेहूँ फी एकड़ ८११ पौंड होता है। कृषि विकास के लिये सिंचाई का प्रचुर प्रबंध करना, देश में हर २०० मील की दूरी पर रसायन खाद का एक कारखाना खोलना, हर जिले में कृषि महाविद्यालय स्थापन करना आदि सोच रहे हैं।

कृषि के विकास के लिये सबसे अधिक श्रम की जरूरत है। श्रम के बिना सब सहूलियतों का निर्माण करना व्यर्थ है। आज स्कूल-कालेज में जितने शिक्षित वर्ग निकलते हैं, वे लोग ३ काम चुनते हैं : नौकरी, व्यापार और उद्योग। अशिक्षित वर्ग के ऊपर कृषि कार्य निर्भर है। वे भी लाचारी से दिन काटते हैं। श्रमनिष्ठ शिक्षित वर्ग के कृषि-कार्य करता देश की सेवा समझे बिना अन्न-उत्पादन बढ़ाना असंभव है। कई दिनों से मैं सोच रहा था कि छोटी छोटी खेती सैद्धान्तिक रूप से किस प्रकार समाज में व्यापक और आकर्षक बनायी जाय। इस विषय के लिये साथी और मित्रों को रणांगण, लड़ाई के मैदान में आने का निमंत्रण दे रहा हूँ। कोई भी काम हो, श्रमनिष्ठा और तत्परता के बिना नहीं पूरा कर सकते। ये दोनों हमेशा सेना में पाये जाते हैं। इसलिये जिस काम के लिए आमंत्रण दे रहा हूँ उसे जान-बूझ कर रणांगण, लड़ाई के मैदान की उपमा दी।

देश में १५ कृषि-केंद्र स्थापन करने के लिए साथी और मित्रों को आमंत्रण है। बैल से खेती करने की इच्छा रखने वाले को २२। एकड़, हाथ से खेती करने की इच्छा रखने वाले को २५ डिसिमल (१०८९० चौरस फुट)। खेती के विकास के लिए जो कुछ पूंजी चाहिये, स्वयं व्यवस्था करनी चाहिये। केंद्र देहात में हों तो और अच्छा। इन केंद्रों का कार्यकाल १५ साल का रहेगा। १५ साल तो बहुत कम है, कम समय के लिए पूरा नहीं कर सकते। जमीन का पेट भरा रखना और उर्वरा शक्ति निरन्तर स्थिर रखना, यह बात ५-६ साल में सध नहीं पाती। पैदावार बढ़ाना, पोषण और उर्वरा शक्ति पर अवलम्बित है। कभी कभी प्रकृति के प्रकोप भी आते रहते हैं। इसलिये निश्चित आँकड़े तक पहुँचने के लिए लंबा समय होने से ही सफल होंगे।

केवल बुद्धि लगा कर खेती करने भर की आवश्यकता है। फिर देखिये कि वह क्या कर दिखाती है। कृषि प्रणाली ऐसी अपनानी है कि पैदावार नित्य निरन्तर बढ़ती रहे। १५ साल में फी एकड़ १०० मन अनाज प्राप्त कर सकें। नहीं तो समाज में एक और दरिद्र भी बन रहा है।

इंग्लैंड में ! हजार साल पहले गेहूँ की पैदावार फी एकड़ ७०० पौंड थी। अब कृषि-प्रणाली अपनाने-अपनाते पैदावार ७००० पौंड तक पहुँचायी। वैसे की दर से १५ साल में २।। एकड़ में ५००० रुपये, २५ डिसिमल में ७५० रुपये की पैदावार निकलनी चाहिये। १५ साल में कृषि पर लगाने का समय हर साल ८०० घंटे से १६०० घंटे तक लगाना चाहिये। अनुभव से ऐसी प्रणाली सिद्ध करनी होगी, जिसे देहाती जनता सरलता से अपना सके, शिक्षित जनता बुद्धि से परख कर अपना सके, तभी उत्तम प्रणाली गहरी और व्यापक हो सकती है। आज एक समाज छोटी खेती का विरोध करता है। उनको भी कई साल के आँकड़ों से पटा सकते हैं।

ऐसे १५ कृषि केंद्रों को सलाह-मशविरा देने को मैं तैयार हूँ। स्वयं कृषि-कार्य करने की इच्छा रखने वाले साथी और मित्र अपना पूरा पता, खेती की जानकारी के साथ भेजें। नीचे के १२ मुद्दों की जानकारी भी देनी होगी। १५ केंद्र हों, तभी इस काम को आरंभ किया जायेगा। पत्र-व्यवहार हिंदी के साफ अक्षरों में हो। जवाबी पत्र भेजना जरूरी है। ३० अक्टूबर '६१ तक पत्र-व्यवहार की अवधि रखी है।

(१) गाँव की आबादी और रकबा।
(२) जमीन की किस्म।
(३) बरसात कितनी होती है ?
(४) गरमी-ठंडी का तापमान।
(५) पानी की सुविधा और साधन।
(६) आम फसलें कौनसी हैं ?
(७) हर फसल की पैदावार फी एकड़ कितनी है ?
(८) काम करने वाले कितने लोग हैं ?
(९) खाद का प्रबंध कैसा है ?
(१०) क्या पशु हैं ? हैं तो कितने ?
(११) केंद्र का स्थान जिला, तहसील या बड़े गाँव से कितनी दूर है ?
(१२) शहर और पहाड़ से कहाँ कितनी दूर है ?

पता : गोविन्द रेड्डी, गदेरा,
पो० सुनगी, वाया-गुणुपुर
जिला कोरापुट, उड़ीसा।

दीर्घकालीन योजना के एक निश्चित और महत्त्वपूर्ण अंग के तौर पर हैं।

गांधीजी ने कहा था कि अगर सर्वोदय-कार्यकर्ता मतदाता को सही राह पर रखेंगे तो देश की फिक्र मतदाता कर लेंगे। इस बात की तरह हमें गम्भीरता से ध्यान देना चाहिए। आज मतदाताओं के सामने अनेक तरह के प्रलोभन और बुराइयाँ खड़ी हो गयी हैं। लोकसभा में और प्रान्तीय विधान-सभाओं में उनका प्रतिनिधित्व करने वाले उम्मीदवारों की छाँट में उनका कोई हाथ नहीं है। उनके जिम्मे तो इतना ही है कि वे राजनैतिक पार्टियों और ऊपर से थोपे गये कुछ उम्मीदवारों में से किसी एक को या दूसरे को अपना मत दे दें। चुने जाने के बाद तो मतदाताओं का अपने प्रतिनिधियों पर कोई नियंत्रण नहीं रहता, न उनसे सम्पर्क ही रहता है। अतः जयप्रकाशजी ने यह सुझाव रखा है कि उम्मीदवारों की छाँट के लिये तथा चुने हुए प्रतिनिधियों से बराबर सम्पर्क रखने के लिये मतदाता-मण्डल बनाने चाहिए। यह एक बड़े महत्त्व का और काफी सम्भावनाओं वाला कार्यक्रम है।

अन्त में सर्वोदय सारे जगत् के लिये है और सारे मानव-समुदाय के लिये। सर्वोदय संकुचित राष्ट्रीयवाद नहीं है। इसकी राष्ट्रीयता व्यापक सेवा-व्यापक अन्तर्राष्ट्रीयता के साथ मेल खाती है, क्योंकि सर्वोदय का उद्देश्य सारों के भाग्य की होड़, एक पर दूसरे का प्रभुत्व और हिंसा को खत्म करने का है। सर्वोदय के झण्डे पर 'जय हिन्द' नहीं, 'जय जगत्' लिखा हुआ है।

जयप्रकाशजी ने जिन अनेक विचारों का प्रतिपादन किया है, उनमें से एक भी ऐसा नहीं है, जिसे हम इस देश के एक छोर से दूसरे छोर तक, हिंदुस्तान में, जो आज भी गांधी को याद करता है और जिसमें आज विनोबा मौजूद हैं। और फिर भी केवल विचारों का प्रतिपादन करना काफी नहीं है। किसी न किसी को उनके अनुरूप एक पर्याप्त कार्यक्रम पेश करना चाहिए, जिससे वे विचार मूर्त रूप ग्रहण कर सकें। लेकिन इस मुद्दे पर सर्वोदय-सम्मेलन में दिया हुआ जयप्रकाश नारायण का भाषण अनिश्चित और कमजोर है। उदाहरण के लिये, जयप्रकाशजी चाहते हैं कि सर्वोदय के आदर्शों की सिद्धि के लिये एक जन-आन्दोलन हो। उन्होंने खुद ने साफ तौर पर यह स्वीकार किया है कि भूदान आन्दोलन की जो विशाल लहर आयी थी, वह थोड़ी-बहुत विलीन हो गयी है और उस लहर को वापस उठाना सम्भव नहीं है। अगर जयप्रकाशजी द्वारा प्रतिपादित सिद्धांत सही हैं—वह ऐसा नजर तो आता है—तो सर्व सेवा संघ को चाहिए कि वह लोगों से ही यह पता लगाये कि ऐसे कौनसे महत्त्वपूर्ण मुद्दे हैं, जिन पर वे सब एक हो सकते हैं और जिनके लिये वे एक अहिंसक जन-आन्दोलन में शामिल हो सकते हैं। जन आन्दोलन के लिये हर स्तर पर उसके उपयुक्त नेतृत्व की आवश्यकता होती है। क्या वह नेतृत्व उपलब्ध है ? अगर यह कहा जाय कि जन-आन्दोलन ज्यों-ज्यों आगे बढ़ेगा, त्यों-त्यों वह नेतृत्व अपने आप प्रकट होगा तो क्या विनोबा और जयप्रकाश को यह विश्वास है कि वैसा नेतृत्व मिल जायगा ? गांधी को यह विश्वास था और उन्होंने गांधी को बनाया तथा सारे हिंदुस्तान ने अपने आपको उनके दुर्बल, लेकिन शक्तिशाली हाथों में सौंप दिया। अगर जयप्रकाश हिंदुस्तान के सामने केवल सिद्धान्त रख कर चुप हो जाते, चाहे वह सिद्धान्त कितना भी अच्छा क्यों न हो, और उसके लिए कोई कार्यक्रम देश के सामने नहीं रखते तो वे बहुत कुछ नहीं कर पाते।

क्वेकर्स : शांति-उपासकों का समुदाय : १

● नारायण देसाई

['भूदान-यज्ञ' के पाठक 'क्वेकर्स' समुदाय से परिचित हैं ही। सत्य और अहिंसा के द्वारा समाज में शान्ति की स्थापना में विश्वास करने वाला यह समुदाय सर्वोदय-विचार के काफी निकट है। यहाँ पर हम श्री नारायण देसाई द्वारा लिखे गये क्वेकर्स समुदाय के ऐतिहासिक विवेचन का पूर्वार्ध दे रहे हैं। —सम्पादक]

संसार के शान्ति-उपासकों के बीच 'क्वेकरों' का स्थान अग्रगण्य है। आज जब विज्ञान ने विश्व को अभूतपूर्व ढंग से छोटा बना दिया है और सारी मानव जाति को निगल जाने वाले नित नये शस्त्रास्त्र बना रहा है, तब सारे शान्तिप्रेमियों का कर्तव्य है कि वे आज एक-दूसरे को जितना जानते हैं, उससे अधिक जानें। इतना ही नहीं, उन्हें सह-विचार करना होगा, एकसाथ मिल कर विश्वशान्ति के लिए नये-नये मार्ग खोजने होंगे। गत तीन शताब्दियों से जिस संप्रदाय ने अहिंसात्मक जीवन के प्रयोग किये हैं, प्रस्तुत लेख में उसके बारे में थोड़ी-सी उपयोगी जानकारी देने का प्रयत्न किया गया है।

ईसाई लोगों के एक संप्रदाय को (जिसे 'संप्रदाय' कहना भी कदाचित् अन्याय होगा) उसकी हँसी उड़ाने वालों ने 'क्वेकर्स' (याने काँपने वाले) यह नाम दिया। ईश्वर के इल्हाम के लिए मौन प्रार्थना करने वाले इस संप्रदाय के कितने ही प्रारंभिक सज्जन ईश्वरीय इल्हाम से इतने अभिभूत होते थे कि उनका अंग-अंग काँप उठता था। हमारे यहाँ भी चैतन्य महाप्रभु आदि को इस तरह की अनुभूति हो चुकी है। जब किसी नये सत्य का दर्शन होता है, तो हमारा अंग-अंग पुलकित हो उठता है और शरीर थोड़ा सा काँपने लगता है। यह अनुभव साधारण लोगों को भी हुआ होगा। इन लोगों को भी इसी तरह कंपायमान स्थिति में देख लोगों ने कह दिया 'ये तो क्वेकर्स (काँपने-वाले) हैं।'

विनोबाजी ने इस नाम पर जो विचार व्यक्त किये हैं, वे पठनीय हैं। वे कहते हैं :

('क्वेकर' याने 'विप्र'। विप्र में 'विप्' धातु है, जिसका अर्थ होता है, ज्ञानी, प्रकाश देने वाला। इसका दूसरा अर्थ 'कंप' है और 'भक्तिमान्' यह भी एक अर्थ है। ये तीनों अर्थ 'विप्र' शब्द में समाये हुए हैं। तीनों अर्थों में क्वेकर्स 'विप्र' हैं।)

ईश्वर की खोज, उसका अनुभव और उसके प्रकाश से धर्म उत्पन्न होता है। इस अनुभूति को स्थायी रूप देकर तदनुसार मानव समाज को आगे ले जाने के लिए मानव जो संस्था का रूप देता है, धर्म-संस्था उसी में से बनती है। इतिहास में कई बार देखा गया है कि जीवन की अनुभूति चिरस्थायी बनाने के लिए जिस संस्था का गठन किया जाता है, वही संस्था आगे चल कर उस अनुभूति का दम घुटाने वाली और उसकी प्रगति में रोड़ा बन जाती है। ऐसे अवसर पर धर्म के नवसंस्कार की आवश्यकता उठ खड़ी हो जाती है। 'क्वेकर'-विचारधारा ईसाई धर्म के नवसंस्करण की प्रक्रिया की फलश्रुति है। रूढ़िग्रस्त ईसाई-विचारों में आयी हुई जड़ता का परिमार्जन प्रथम मार्टिन ल्यूथर के नेतृत्व में प्रोटेस्टंट' विचारधारा ने किया। 'ईश्वर का इल्हाम चर्च की मार्फत ही प्राप्त होता है', इस विचारधारा की जगह 'बाइबिल जो कहे, वही सही है', इस विचारधारा ने ले ली। क्वेकर-विचारधारा ने प्रोटेस्टंट विचारधारा का भी नवसंस्करण कर दिया। उसने किसी भी संस्था का अन्तिम अधिकार नहीं माना। इतना ही नहीं, किसी धर्मग्रन्थ का भी अन्तिम अधिकार नहीं माना। 'दी क्राइस्ट विदीन'—जो ईसा अन्तर में निवास करता है, उसी के शब्द-प्रकाश को ही उसने अन्तिम प्रमाण माना।

क्वेकर-संप्रदाय १७ वीं सदी के मध्य काल में इंग्लैण्ड के उत्तरी भाग में स्थापित हुआ। कितने ही लोग गाँव-गाँव घूम कर मन्दिरों एवं गिरजाघरों में जा स्वयं को ईसा का जो सन्देश सच मालूम पड़ता, उसे सुनाने लगे। ईश्वर और मानव के बीच तीसरी किसी सत्ता की हस्ती को उन्होंने बहादुरी के साथ चुनौती दी। मूक प्रार्थना में उन्हें जो अनुभूति हुई, उसे उन्होंने सरल और सचोट भाषा में लोगों के सामने रखा। इस तरह के धर्मोपदेशकों में जार्ज फॉक्स प्रमुख रहे। उनकी वाणी में सत्य की अनुभूति थी, बुलन्दपन था और थी तपस्या के कारण उत्पन्न आत्मिक कठोरता। ये जहाँ पहुँचे, इन्होंने अपने प्रशंसकों को जुटाया या शत्रुता को मिटा दिया। इन्हीं के कारण क्वेकर जो कहता है, करता है, यह परंपरा चली, जो तीन शताब्दियों के बाद आज भी उतनी ही सच ठहरती है।

प्रारंभिक क्वेकरों में 'विलियम पेन' का नाम सर्वाधिक प्रसिद्ध है। बाद में इनके परिवार के नाम पर अमेरिका के एक राज्य को 'पेन्सिल्वेनिया' नाम प्राप्त हुआ। विलियम पेन का व्यक्तित्व अत्यन्त प्रतिभाशाली था। इनकी "नो क्रॉस नो क्राउन" नामक पुस्तक क्वेकर विचारधारा की सर्वश्रेष्ठ पुस्तकों में से एक है। इसीके कारण क्वेकर-विचारधारा अमेरिका पहुँची और फिर गत ३०० वर्षों से दोनों देशों में इसका साथ-साथ विकास होता रहा है। यूरोप के अन्य देशों, वेस्टइंडीज आदि में भी क्वेकर्स काफी तादाद में फैले हुए हैं। १८ वीं सदी के अन्त के पहले तक पुरानी दुनिया की अपेक्षा नई दुनिया में क्वेकरों की हस्ती काफी बढ़ गयी है।

प्रारंभ की एक सदी क्वेकरों के लिए बड़ी मुसीबत में बीती। अपने विचारों से चिपके रहने के कारण जेल जाना उनके लिए स्वाभाविक बात हो गयी। फिर उन दिनों के जेल भी आज की तरह सरल और सुविधाजनक नहीं थे। जार्ज फॉक्स द्वारा अपनी पत्रिका में दिया हुआ एक जेल का वर्णन बीभत्स रस का मूर्तिमान चित्र खड़ा करने में पर्याप्त है।

"जेलर को हमें अपने घोड़ों और खुद अपने लिए प्रति सप्ताह ७-७ शिलिंग देने पड़ते थे। हमने घोड़ों को बाहर छोड़ कर ७ शिलिंग बचाये। इस पर जेलर ने हम पर बहुत जुल्म किया। हमें 'डूम्सडेल' में भेज दिया। यह जगह अत्यन्त गंदी और दुर्गन्धपूर्ण थी। पहले वहाँ फाँसी की सजा देने के बाद खूनियों को रखा जाता था। यह जगह इतनी दुर्गन्धपूर्ण थी कि उसके बारे में कहा जाता था कि इस जगह में पहुँचा आदमी कदाचित् ही जिंदा वापस लौट सकता है। वहाँ रखे हुए कैदियों का पाखाना वर्षों बाद भी वहीं पड़ा रहता। दुर्गन्धित पानी और पेशाब से भरी गड्ढियों जैसी इस जगह में कितने ही स्थानों पर घुटने तक पैर घुस जाते। जेलर हमें उसे साफ करने नहीं देता और न सोने के लिए बिस्तर या सूखी घास का ही उपयोग करने देता था। रात को शहर के कितने ही मित्र हम लोगों के लिए मोमबत्ती और घास ले आते। दुर्गन्ध दूर करने के लिए हम लोग थोड़ी घास सुलगाते। चोर हमारे सिर पर रहते थे। और जेलर का कमरा उसके पास था। हमने घास जलायी तो उसका धूआँ जेलर के कमरे तक पहुँचा। फलस्वरूप वह इतना बिगड़ उठा कि उसने कैदियों के पाखाने के डिब्बे हम पर उलट दिये। हम लोग उससे इतने लिप गये कि एक-दूसरे को या अपने शरीर को भी छू नहीं सकते थे। इस कारण दुर्गन्धि बढ़ गयी। उससे और धूएँ के कारण हम लोगों का दम घुटने लगा। अभी तक हमारे पैरों तले ही गंदगी थी, लेकिन अब तो हमारे सिर पर और सारे शरीर पर भी यह चिपक गयी। इसके अलावा वह 'साला, कुत्ता, कुत्ता' जैसी कभी न सुनी हुई गालियों की बौछार भी बरसाता था। हम लोग वहाँ बैठ तो सकते ही न थे, इसलिए सारी रात खड़े-खड़े ही रह गये।"

जेल के वर्णन का यह कुछ लंबा उद्धरण इसीलिए दिया गया कि हम समझ लें कि जेल-यातना केवल स्वतन्त्रता-युद्ध के सत्याग्रहियों ने ही नहीं भुगती; बल्कि अपने सत्य को निर्भयता के साथ प्रकट करने के एकमात्र अपराध के कारण हजारों क्वेकरों ने भी ऐसी भीषण जेलयातना भुगती। हजारों ने बेड़ियाँ पहनीं, सैकड़ों पर बेंतों की नृशंस मार पड़ी। बहुतों ने जेलें में लंबी-लंबी बीमारियाँ काटीं। कितने ही जेल की यातनाओं के कारण मृत्यु की शरण में चले गये।

प्रारंभिक शताब्दी की इस तपस्या ने क्वेकरों का उज्ज्वल चारित्र्य गढ़ा। यह चारित्र्य ही आज उन्हें विश्वयुद्ध का शान्तिपूर्वक सामना करने की शक्ति प्रदान कर रहा है। इसी तपस्या ने उस समय की जनता के हृदय में क्वेकरों के लिए अद्वितीय स्थान दिलवाया।

जार्ज फॉक्स एक सुन्दर प्रसंग का वर्णन करते हुए कहते हैं, "मैं जब लान्सेस्टन के जेल में था, तो एक मित्र (क्वेकर 'फ्रेण्ड्स' या मित्र कहे जाते हैं और उनके संगठन का नाम 'सोसाइटी आफ फ्रेण्ड्स' या मित्र समाज है।) हम्फ्री मॉर्टन ऑलिवर-क्रॉमवेल के पास पहुँचे और मेरी जगह अपने को जेल में रख कर मुझे छुड़वाने की उन्होंने अपनी तैयारी बतायी। क्रॉमवेल पर इसका इतना असर हुआ कि उसने अपने दरबारियों को बुला कर कहा, 'यदि मैं ऐसी स्थिति में पड़ जाता तो आपमें से कौन ऐसा करने को प्रस्तुत होता?' अवश्य ही उसने उक्त मित्र की बात नहीं मानी और कहा कि गैरकानूनी होने से यह संभव नहीं। फिर भी इस घटना के पीछे जो सत्य था, उसकी उस पर गहरी छाप पड़ी।"

जेल जाने की क्वेकरों की वृत्ति गांधीजी के यरवदा मन्दिर की याद दिलाती है। विलियम ड्यूसबरी ने अपनी वृत्ति का जो निम्नलिखित वर्णन किया है, उसमें से 'दुश्मन' शब्द हटा दिया जाय, तो सारी भाषा ऐसी लगती है, मानो गांधीजी ही बोल रहे हों :

"मानो, मैं महल में प्रवेश कर रहा हूँ, इस तरह जेल में जाता था। मैं अपने दुश्मनों से कहता कि आप मुझे यहाँ जितने दिन रखना चाहते हों, रखें। जेल में मैं भगवान् की प्रशंसा के गीत गाता। मुझे पहनायी गयी बेड़ियों और जंजीरों को मैं रत्नमाला की तरह मानता। चिरंतन ईश्वर के नाम पर मैं सदैव निर्भय रहता; कारण ईश्वर द्वारा निर्धारित समय से अधिक वे कभी भी मुझे वहाँ नहीं रख सकते थे।"

उसके बाद क्वेकर-आन्दोलन लगभग एक शताब्दी तक ठंडा पड़ा। किन्तु इस शान्तिकाल का उपयोग उक्त संगठन और विचार को सुदृढ़ करने में हुआ। क्वेकरों के संगठन के विषय में विस्तृत विचार आगे किया जायगा। इस शताब्दी के दरमियान ये विचार इतने दृढ़ बने कि

उसका असर न केवल क्वेकरों तक ही सीमित रहा, बल्कि आसपास के समाज पर भी पड़ा। इसका सबसे बड़ा परिणाम हुआ अमेरिका पर। हब्शी लोगों को गुलाम बनाने की प्रथा के विरोध में वहाँ जो आन्दोलन छिड़ा, उसमें क्वेकर मित्रों की खेती करने की पद्धति, उनके द्वारा चालित गुलामी विरोधी लड़ाई और उनके प्रकाशित साहित्य का मामूली हाथ न था। सजा की जंगली पद्धति के सुधार के विषय व्यापारिक नीति नियमों के बारे में भी क्वेकर लोग भली-भाँति जूझे। उत्साह भरी पहली शताब्दी के बाद की शान्तिपूर्ण शताब्दी में सुधार के ये सारे कार्यक्रम चलते रहे। अन्तिम दो विश्वयुद्धों के समय सारी दुनिया के क्वेकरों ने युद्ध का विरोध किया। युद्ध के विवेकयुक्त विरोधी (कान्शिएन्शियस आब्जेक्टर्स) के तौर पर इंग्लैण्ड, अमेरिका और यूरोप के अनेक देशों में उन्होंने युद्ध का विरोध किया। हजारों क्वेकरों ने सेना में भरती होने से इन्कार कर दिया और जेल-यात्रा या अन्य यातनाएँ भोगीं।

क्वेकरों के इतिहास की इतनी जानकारी प्राप्त कर लेने के बाद अब हम उनके विचार और संगठन को कुछ तफसील से देखें :

(क्वेकर ईश्वर और अपने बीच कोई अधिकारी संस्था, धर्मगुरु या पादरी को नहीं मानते। वे मानते हैं कि हरएक में ईश्वरीय अंश है। यदि उसके समक्ष सच्चे दिल से माँग की जाय, तो हर स्थिति में वह वास्तविक हल सुझा सकता है, ऐसा उनकी मान्यता है।)

इसी मूलभूत विचार से हिंसा का विरोध, सत्यनिष्ठा, आचार शुद्धि, करुणा, सेवा आदि गुणों की उत्पत्ति हुई है। क्वेकर मानते हैं कि हमारी हर कृति पर ईश्वर की दृष्टि हुआ करती है, बल्कि हमारे हर काम में ईश्वर का अस्तित्व होना चाहिए।

रविवार की पूजा और सोमवार का काम, दोनों में ईश्वर है। इसलिए सोमवार का काम भी रविवार की पूजा जितना ही भक्तिमय और शुद्ध बनना चाहिए।

इस मान्यता के कारण जब इंग्लैण्ड आदि देशों में जिन दिनों व्यापार में विशेष प्रामाणिकता नहीं थी, उन दिनों भी क्वेकर अपनी प्रामाणिकता के लिए प्रसिद्ध हुए। प्रामाणिक व्यवहार से इन्हें लौकिक लाभ भी हुआ। इनकी प्रामाणिकता मशहूर हो गयी। लोग इन्हीं के पास पैसा रखने लगे। फलस्वरूप आज इंग्लैण्ड के बहुत से बैंकों की व्यवस्था क्वेकरों के हाथ में है।

नित्य के 'दैनिक जीवन' के विषय में क्वेकरों के वार्षिक सम्मेलन की सलाह देखिये :

"प्रिय मित्रो! आपके अंतर में प्रेम और सत्य की जो प्रेरणा हो, उसे सतर्कतापूर्वक सँजोये रखें। यह ईश्वर की आभा का संकेत है। आपके अन्दर इसका स्पन्दन हुआ करता है, इसका विरोध न कीजिये। आपके दैनिक कार्य में और आपकी सामाजिक एवं अन्यान्य प्रवृत्तियों में इस जगत् में स्थापित होने वाले ईश्वरीय राज्य का खयाल रखिये। अपने लिए नहीं, बल्कि दूसरों के लिए जियें। देश और नगर के प्रति अपने नागरिक कर्तव्य का ध्यान रखिये। सामाजिक दुःखों के कारणों की जाँच कीजिये। एक ऐसे समाज के लिए प्रयत्न कीजिये, जो परस्पर की सेवा पर खड़ा हो और सभी भौतिक सिद्धियों से परे मानव जीवन समृद्ध करने की ओर अग्रसर हो रहा हो। नशीले पेय से होने वाले दुष्परिणामों को देख कर सोचिये कि क्या खुद आपको उससे न बचना चाहिए, दूसरे को देने की वृत्ति न छोड़नी चाहिए और उत्पादन या बिक्री से अपनी हिस्सेदारी न छोड़नी चाहिए? हर तरह के जुए और सट्टे से बचें और उन्हें प्रोत्साहन न दें। 'युद्ध ईसा के उपदेश के विरुद्ध है', इस मतलब की अपनी घोषणा के प्रति वफादार रहें। करुणा के राज्य को सीमित न रखें। ईश्वर की सारी सृष्टि के प्रति सच्चा ध्यान रखें।"

अथवा 'सच्ची समाज-रचना' के विषय में १९१८ के वार्षिक सम्मेलन का निवेदन पढ़िये :

"ईसा द्वारा वर्णित ईश्वर का पितृत्व हमें एक ऐसे भाईचारे की ओर ले जाता है, जो जाति, वर्ण या वर्ग का कोई भेद नहीं मानता। इस भाईचारे से एक ऐसी समाज-व्यवस्था पैदा होनी चाहिए, जो सभी ऐहिक ध्येयों से परे की हो, जिससे ईश्वर और मानव के साथ सच्चा संबंध स्थापित करने वाली अस्मिता प्रकट हो। बाह्य आधिपत्य की पद्धति और जोर-जबर्दस्ती से हमारा इन्कार सिर्फ अन्तर्राष्ट्रीय मामलों में ही लागू नहीं होगा, बल्कि औद्योगिक नियन्त्रण के संपूर्ण प्रश्नों को भी वह लागू होता है। संघर्ष से नहीं, बल्कि सहकार और सदिच्छा से ही सबका हित साधा जा सकता है। जमीन और पूँजी जैसी ऐहिक वस्तुओं की मालकियत की व्यवस्था इस तरह होनी चाहिए, जिससे मानव का हित सुरक्षित रह सके।

इन्हीं सिद्धान्तों के परिणामस्वरूप जिस इंग्लैण्ड में स्त्रियों की सामाजिक या राजनैतिक अवस्था अच्छी न थी, तब क्वेकरों ने उनको पुरुषों के साथ समान स्थान माना।

क्या हम सचमुच खेती की उपज भी बढ़ाना चाहते हैं?

सिद्धराज

दो सप्ताह पहले हैदराबाद में प्रांतीय विकास-अधिकारियों के सम्मेलन में बोलते हुए सम्मेलन के अध्यक्ष, श्री वी॰ टी॰ कृष्णम्माचारी ने इस बात पर विशेष जोर दिया था कि खेती की उपज में वृद्धि पंचवर्षीय योजनाओं और सामुदायिक विकास आन्दोलन की सफलता के लिए बुनियादी शर्त है। खेती की उपज बढ़ाने के लिए उन्होंने कई उपायों का उल्लेख किया, जिनमें छोटी-बड़ी सिंचाई की योजनाएं, कई कुओं का लगाना, जमीन के कटाव का रोकना, अच्छे बीजों का उत्पादन और वितरण आदि उन्होंने मुख्य तौर पर गिनाये। खेती की उपज बढ़ाने के लिए इस तरह की बहुत-सी योजनाएँ पिछले वर्षों में काम में लायी गयी हैं। "अधिक अन्न उपजाओ" जैसे आन्दोलन भी सरकार की ओर से चलाये गये, पर इन सबके बावजूद खेती के क्षेत्र में कोई विशेष प्रगति देश में हुई हो, ऐसा नजर नहीं आता। हमारे खाद्य मंत्री ने, जो एक दो वर्ष पहले ही "देश पर मंडरा रहे भयंकर अन्न संकट" से चिन्तित थे, पिछले दिनों जरूर देश विदेश में बहुत गर्व के साथ इस बात की घोषणा की है कि हिन्दुस्तान अब अन्न के मामले में स्वावलम्बी ही नहीं हो गया, बल्कि विदेशों को भी खिला सकता है। पर ऐसी घोषणाओं और विज्ञप्तियों पर कितना भरोसा करना, यह पहले दस-बारह वर्षों के इतिहास को अगर कोई उठा कर देखे तो स्पष्ट हो जायगा। ये घोषणाएँ तो—"जैसी बहे बयार, पीठ तब तैसी दीजे"—के नमूने हैं, बल्कि यों कहना चाहिए कि जब सरकार या "सरकार के मित्रों" को जैसी हवा बनानी होती है और जैसी तेजी या मन्दी लानी होती है, वैसे ही बयान दिये जाते हैं।

पर वास्तविक तथ्य क्या है, यह सरकारी आँकड़ों से ही हम देखें। अभी हाल ही में उत्तर-प्रदेश की सरकार के माल-विभाग द्वारा १९४८ से १९५८ तक के १० वर्षों की एक खेती संबंधी रिपोर्ट प्रकाशित हुई है। इस रिपोर्ट में दिये गये आँकड़ों से पता चलता है कि इन दस वर्षों में, जब कि एक ओर खेती के अन्तर्गत भूमि का रकबा बढ़ा है, तब दूसरी ओर खेती की सब प्रमुख फसलों का, खास तौर से दालों और अनाजों का प्रति एकड़ उत्पादन और जमीन की उत्पादन-शक्ति दोनों घटे हैं। खेती का रकबा जो १९४८-४९ में ३ करोड़ ६९ लाख एकड़ था, वह १९५७-५८ में ५ करोड़ २ लाख एकड़ हो गया। अर्थात् खेती के रकबे में करीब ३५ प्रतिशत बढ़ोतरी हुई। दूसरी ओर चावल का उत्पादन प्रति एकड़ ३१ प्रतिशत घटा और गेहूँ का १२ प्रतिशत। अक्सर यह कहा जाता है कि आज जमीन बहुत छोटे छोटे टुकड़ों में गरीब किसानों के पास बँटी हुई है, और इन गरीब लोगों के पास पर्याप्त साधन नहीं हैं, इसलिए खेती की उपज बढ़ नहीं पाती। जमीन ऐसे लोगों के हाथ में होनी चाहिए, जो उसमें पैसा लगा सकें, जिससे उसकी उपज बढ़ सके। यह दलील बड़ी-बड़ी कम्पनियों और सेठ साहूकारों द्वारा सैकड़ों-हजारों एकड़ के जो फार्म चलाये जा रहे हैं, उनके समर्थन में दी जाती है। उत्तर प्रदेश में गन्ने की खेती बहुत-सी इन बड़ी बड़ी कम्पनियों के हाथ में है। उनके अलावा जिन किसानों के पास गन्ने की खेती है, वे भी अपेक्षाकृत खुशहाल हैं, क्योंकि अधिकतर गन्ना कारखानों में कानून द्वारा निर्धारित दामों पर ले लिया जाता है। लेकिन उपरोक्त रिपोर्ट के अनुसार गन्ने की खेती में भी पिछले दस बरस में प्रति एकड़ २९.५ प्रतिशत की कमी हुई है।

इस बात से तो सभी सहमत हैं कि अगर देश की गरीबी दूर करना है तो खेती की चीजों के ही नहीं, बल्कि हर चीज के उत्पादन में काफी वृद्धि होनी चाहिए। खेती की उपज को बढ़ाने के लिए सिंचाई, अच्छे औजार, ये सब बातें आवश्यक हैं और होनी चाहिए। पर इन सबसे जरूरी जो जो चीज है और जिसके बिना ये सब बेकार हैं, उसको हम भुलाये हुए हैं। यही कारण है कि इन सब बातों की बड़ी बड़ी योजनाओं के बावजूद, जैसा कि उत्तर प्रदेश की रिपोर्ट से जाहिर है, खेती की उपज और जमीन की उत्पादन शक्ति में उत्तरोत्तर चिन्ताजनक गिरावट आ रही है। बारात सारी सजी हुई हो, लेकिन जैसे दूल्हे के बिना उसका कोई उपयोग नहीं है, उसी प्रकार हमारी इन सब योजनाओं का हाल हो रहा है। खेती की उपज की इस बारात का 'दूल्हा' किसान है। जब तक उसके मन में उत्साह नहीं भरता, प्रेरणा नहीं पैदा होती, तब तक ये सब चीजें बेकार हैं। और किसान के मन में उत्साह नहीं है, हमारी समझ में इसके दो मुख्य कारण हैं। पहला तो यह है कि जो वास्तव में जमीन जोतते हैं, उनमें से अधिकांश लोग या तो मजदूर हैं या किरायेदार हैं, खुद स्वतन्त्र मालिक नहीं हैं। दूसरी बात यह है कि मालिक हों या किरायेदार, किसान को यह भरोसा नहीं है कि फसल के अन्त में उसकी मेहनत का पूरा मुआवजा उसको मिलेगा। आज वह बाजार के हाथ बिका हुआ है। सारी व्यवस्था ऐसी है कि किसान चाहे जितनी मेहनत करे, उसको केवल सूखी रोटी ही मयस्सर होती है। किसान की सूखी रोटी और उसके कुल उत्पादन के बीच का सारा अंश विभिन्न रूपों में व्यापारी, साहूकार, सरकार और शहरों में बसने वाले और उत्तरोत्तर बढ़ते जाने वाले अनुत्पादक वर्ग के पेट में चला जाता है। अगर हम सचमुच खेती की उपज बढ़ाने के लिए चिन्तित हों तो हमें किसान की इन दोनों समस्याओं पर गम्भीरता से विचार करना होगा, अन्यथा सिंचाई, अच्छे बीज, अच्छी खाद इत्यादि सब चीजें गटर में डाली गयी चाय की तरह बेकार साबित होंगी, जैसी कि वे आज तक अधिकांश में हुई हैं।

असम में विनोबा के साथ

विष्णु पंडित

हिमालय का देश—असम !

वह असम, जहां प्रकृति हजार-हजार हाथों से अपना सौन्दर्य लुटाती है !

वह असम, जहां मानव का भोला मन अकृत्रिम जीवन जीता है और मानवता की स्वरूप-रचना का प्रतीक बन कर हममें आज के भयानक बुद्धिवादी, किन्तु दंभी मानव से विचिकित्सा पैदा कर देता है। वह असम, जहां लोगों के भोलेपन को तथा निश्छल जीवन को कुछ समझदार लोगों ने शोषण का साधन बना लिया है। असम, जहां की भूमि कहीं भी 'सम' नहीं है, यानी समान नहीं है, आज विनोबा की यात्रा-भूमि बनी हुई है। मैं चल रहा हूं, गाडी दौड़ी चली जा रही है और इससे पहले कि सदेह विनोबा के पास पहुंचूं, मेरा मन-मस्तिष्क विनोबा के साथ यात्रा भी करने लगा है।

असम एक दुरूह प्रदेश है, जहाँ पहुँचना आसान नहीं है। अनेक कठिनाइयों और रास्ते की दिक्कतों से लड़ कर ही असम पहुँचा जा सकता है। उसका प्रारंभ ३० जून को अमीनगाँव से हुआ। अमीनगाँव ब्रह्मपुत्र के किनारे का आखिरी स्टेशन है। यहाँ से ब्रह्मपुत्र को पार करके गौहाटी जाया जाता है। मैं स्टेशन पर उतरा कि उस पार जाने वाला स्टीमर जा चुका था। अब या तो मैं दूसरी खेप के लिए कई घंटे इन्तजार करूँ या ब्रह्मपुत्र की वेगवती धाराओं से लड़ता हुआ किसी छोटी नाव के जरिये ही पार पहुँचने का खतरा मोल लूँ ! फिर सवाल यह भी तो था कि इस तेज धारा में कौन उस पार जाने को तैयार होगा ! मैं इसी पशोपेश में चिन्तित परेशान खड़ा था; पूछताछ कर रहा था कि कुछ गंगापुत्र (मल्लाह) चलने के लिए तैयार हो गये।

ब्रह्मपुत्र का बहाव अपनी पूरी जवानी पर था। भारत की यह विशालतम नदी अपनी अपार जल-राशि के बीच मुझे हिलोरे दे रही थी। इस तरह की संकट भरी यात्रा करने का मुझे सौभाग्य मिलेगा, ऐसी कल्पना भी नहीं थी। भय, साहस, नवीनता और उत्सुकता ने मेरे सारे मानस को हिला डाला। पतली-सी, लंबी-सी यह छोटी-सी नाव तेज बहाव में बार-बार अपना संतुलन खो बैठती थी, किन्तु मल्लाहों के साहस ने आशा का दीप जलाये रखा। और मैं उस पार पहुँच गया।

अब मैं पाण्डु की धरती पर था। यह असम की धरती, जहाँ अनेक तरह के चेहरे अनेक तरह के पहनावे, अनेक तरह की भाषाएँ यानी सब कुछ विविध, सब कुछ अ-सम। मैं पाण्डु से बस द्वारा गौहाटी आया और गौहाटी से, २५० मील की बस-यात्रा करके विनोबाजी के पास पहुँचा। रास्ता अपनी प्राकृतिक छटा से मन मोह रहा था। दोनों ओर हरे-भरे चाय के बगीचे धरती का शृङ्गार कर रहे थे। ऊँचे-ऊँचे सुपारी के पेड आसमान को छूने का प्रयत्न कर रहे थे। ऊँची-नीची पहाड़ियाँ जीवन की ऊँची-नीची स्थितियों को अभिव्यक्त कर रही थीं।

हम 'माजूली टापू' पर थे। हम यानी मैं और चुनीभाई। वे गौहाटी से साथ हो लिये थे और मेरी असम-यात्रा की आखिर तक अगुआ रहे। यह स्थान ब्रह्मपुत्र के दो बहावों के बीच सुपारी केले और अनन्नास का जंगल है।

विनोबाजी इस क्षेत्र में बिना किसी पहले से निर्धारित कार्यक्रम के मुक्त विचरण कर रहे हैं। कभी दो मील, कभी तीन मील, इस तरह छोटे-छोटे पड़ाव होते हैं। लोगों को बड़ी सरल भाषा में छोटे-छोटे उदाहरण देकर विनोबाजी ग्रामदान तथा सहयोगी जीवन की कल्पना समझाते हैं। यदि इन दिनों कोई विनोबाजी द्वारा दिये जाने वाले छोटे और सरल दृष्टान्तों का संकलन करे तो बहुत ही सुन्दर बाल-साहित्य एवं प्रौढ़-साहित्य का निर्माण हो सकता है। विनोबा के मुँह से एक ऋषि की भाँति ज्ञान की मधुर धारा बहती रहती है। और यहाँ के भोले-भाले लोग मुँह बाये उसका आस्वाद लेते रहते हैं। 'माजूली टापू' में उदासीन पंथ का प्रभाव है। यहाँ काफी संख्या में उदासीन हैं। उनको तथा यहाँ की जनता को संबोधित करते हुए विनोबाजी ने कहा कि—

१. आज समाज में दो हिस्से हो गये हैं। एक 'मेरा' कहने वाले संसारियों का और दूसरा 'तेरा' कहने वाले ईश्वर-मार्गियों का।

एक सिरे पर बैठे हुए लोग दिन-रात मेरा-मेरा करते रहते हैं और दूसरे सिरे पर बैठे हुए लोग हमेशा तेरा-तेरा करते रहते हैं। जो मेरा-मेरा करते हैं, वे निहायत स्वार्थ में फँस जाते हैं और तेरा-तेरा करने वाले ईश्वरमार्गी सर्वथा उदासीन बन जाते हैं। आज मेरा और तेरा में सामंजस्य बैठाने की जरूरत है। इसलिए न 'मेरा' कहो, न 'तेरा' कहो, 'हमारा' कहो और यह ग्रामदान के जरिये होगा।

यह कामरूप देश है। गौहाटी के कामाख्या मंदिर से लेकर आम जनता के हृदयों तक इस कामरूप देश की कल्पना मातृत्व की श्रद्धा के रूप में प्रकट होती है। बहुत से लोगों को कामरूप देश के बारे में बहुत प्रकार के भ्रम हैं। सच्चाई यह है कि यहाँ के लोगों में स्त्री जाति के प्रति अश्रद्धा या हीनता की भावना नहीं है, बल्कि समाज में नारी का स्थान बहुत ही प्रतिष्ठित है। नारी की सर्वत्र प्रधानता है। किन्तु खास तौर से यह बात ध्यान में रखने की है कि यहाँ के लोगों का चरित्र बहुत ऊंचा है। यहाँ के पुरुषों में नारी के प्रति श्रद्धा की भावना है। इसीलिए नारी के प्रति देखने का उनका नजरिया बहुत ही ऊँचा है। सारी व्यवस्था में नारी का प्रमुख हाथ है। विनोबा-यात्रा एवं यात्री-दल की व्यवस्था भी यहाँ की बहनें ही संभालती हैं। सुश्री अमलप्रभा बहन के नेतृत्व में यहाँ की बहनों ने बहुत ही व्यवस्थित और आदर्श ढंग से सारे प्रबन्ध का उत्तरदायित्व अपने ऊपर लिया है। यात्री दल के साथ की साहित्य-बिक्री भी ये ही बहनें करती हैं।

मैं बाबा के साथ तीन दिन रहा। सबेरे चार बजे ही यहाँ प्रकाश फैल जाता है। पूर्वी किनारे पर होने के कारण इस क्षेत्र में सूर्य के दर्शन जल्दी होते हैं। इसलिए चार बजे एकदम सबेरा हो जाता है। यात्रा में बहुत ही कम साथी हैं। बरसात खूब होती है। इसलिए विनोबा प्रकृति का पूरा आनंद लेते हुए चलते हैं। बाहर समाचार भेजने की ओर से विनोबाजी पूर्णतः उदासीन हैं। अपने व्याख्यान भी बाहर भेजना उन्होंने बंद करवा दिया है। स्त्री-शक्ति को देख कर और भोले भाले लोगों के बीच अपने को पाकर विनोबा अत्यंत प्रसन्न और मस्त दीख पड़ते हैं। जब विनोबा को पहाड़, पानी, आकाश और हरियाली मन भर कर मिल जाय, तब वे सारे संसार को भूल कर प्रकृति में और उस माध्यम से अपने आत्म-साक्षात्कार में लीन हो जाते हैं। उसी का दर्शन इन दिनों होता है। यहाँ के लोग भी पूर्णतः प्रकृति पर निर्भर हैं। घास-फूस और लकड़ी के कलापूर्ण मकानों को देख कर लगता है कि यहाँ के लोगों पर प्रकृति की कितनी कृपा है। जिन्हें शहरों से कोई वास्ता नहीं, ऐसे यहाँ के पहाड़ी लोग भूमि पर धान बिखेर देते हैं और जो कुछ पैदा होता है, उसे प्रकृति का वरदान समझ कर संतुष्ट मन से प्राप्त कर लेते हैं। स्थानीय उपकरणों से मकान, भोजन और कपड़ा प्राप्त कर लेने वाले ये सीधे-सादे लोग आज यंत्र-युग के अनेक अभिशापों से बचे हुए हैं। यहाँ के लोग मजदूरी करना हीन काम समझते हैं। इसलिए पूरे प्रदेश में यू० पी० और बिहार की तरफ के ही मजदूर छाये हुए हैं। सरकारी नौकरियों में अधिकांशतः बंगाली हैं और उद्योग, व्यापार पर अधिकांश में गुजराती और मारवाड़ी अधिकार किये हुए हैं।

यहाँ के लोग बाहर से आने वालों का बहुत आदर करते हैं। उन्हें प्रेम और आतिथ्य देते हैं। किन्तु बाहर वाले, क्योंकि कमाने के लिए आते हैं, उनके इस सरल आतिथ्य और प्रेम का अनुपयुक्त व्यापारिक लाभ उठाते हैं। इसीलिए अब धीरे-धीरे असमी लोग बाहर के लोगों से नफरत भी करने लगे हैं। और ऐसा समझने लगे हैं कि ये बाहर वाले हमें लूटने के लिए आते हैं।

यहां की भाषा-समस्या से आम लोगों को कोई मतलब नहीं है। राजनैतिक दलों के लोगों ने इस समस्या को अपने राजनैतिक स्वार्थ-साधन बनाने की कोशिश की है।

इस प्रकार मैं असम में लगभग दस दिन रह कर यहाँ के जीवन का दर्शन कर सका। यह एक ऐसा देश है, जहाँ बार बार आने को जी चाहता है। इसीलिए विनोबाजी ने भी अपनी यात्रा के दिनों पर कोई प्रतिबंध नहीं लगाया है। और असम से आगे कब तथा किधर जाना है, इसके लिए भी कोई विचार प्रकट नहीं किया है।

विनोबाजी कहते हैं कि अब तक तो असम एक किनारे पर था, किन्तु बर्मा, चीन, तिब्बत, नेपाल आदि की सीमाओं के कारण यह दुनिया का केन्द्र बन गया है।

इसलिए अब बहुत शीघ्र ही इस प्रदेश का विकास होने वाला है। इसलिए यहाँ के लोगों को जाग्रत होना चाहिए, परिस्थितियों को समझना चाहिए और छोटे-मोटे स्वार्थों से ऊपर उठ कर पूरे संसार की दृष्टि से आगे कदम बढ़ाना चाहिए।

नया मोड़ और कार्यकर्ता

प्रश्न : नये मोड़ का काम करने की शक्ति और योग्यतावाले कार्यकर्ता कहाँ हैं ? दिखता तो यही है कि हममें वह शक्ति नहीं है।

उत्तर : यह सारा केवल मानने का प्रश्न है। कार्यकर्ता हमारे पास जो हैं, उनमें शक्ति है या नहीं, इसका निर्णय तो स्वयं काम करने के बाद ही पता चलेगा। जिम्मेदारी लें, काम आरंभ करें तो अनुभव भी आयेगा और ये ही कार्यकर्ता सक्षम भी साबित होंगे। उत्साह के साथ और लगन के साथ काम में जुटने की जरूरत है।

—शंकरराव देव

आगामी आम चुनाव में कम-से-कम इतना करें…

गुजरात सर्वोदय-सम्मेलन में स्वीकृत आचार-संहिता

इस आकांक्षा का उत्पन्न होना कि आगामी आम चुनाव के समय देश में कुछ सर्वसामान्य आचार-मर्यादाओं की रक्षा हो, एक शुभ लक्षण है। यह हर्ष का विषय है कि कुछ राजनीतिक पार्टियों ने भी इस संबंध में उत्सुकता बतायी है। राष्ट्र की एकता और संस्कार की दृष्टि से यह आवश्यक है कि चुनाव के समय सब संबंधित व्यक्ति अमुक आचार-मर्यादाओं का पालन करें।

ऐसी आचार मर्यादाएँ चुनाव में सम्मिलित होने वाले व्यक्ति और राजनीतिक पक्ष एक जगह एकत्रित होकर निश्चित करें तो अत्युत्तम होगा। गुजरात के सर्वोदय-मण्डल ने बड़ोदा में १४ जुलाई को गुजरात प्रदेश सर्वोदय-सम्मेलन में इस दिशा में सहायक होने की दृष्टि से कुछ आचार मर्यादाएँ प्रस्तुत की हैं, जो नीचे दी जाती हैं।

जनता के लिये आचार-मर्यादा

(१) जिन चुनाव-सभाओं में व्यक्तिगत निंदा अथवा हलकी भाषा का उपयोग होगा, उनमें हम भाग नहीं लेंगे, ऐसी स्पष्ट घोषणा की जाय।

(२) अपना मत देने के संबंध में किसी भी उम्मीदवार या पार्टी को वचन देकर बंधना नहीं चाहिए।

(३) चुनाव के समय घर-घर जाकर वोटों की भीख मांगने की प्रथा को प्रोत्साहन नहीं देना चाहिए।

(४) किसी भी उम्मीदवार या पार्टी के भोजनालय अथवा वाहन का उपयोग न करने की खुलेआम घोषणा की जानी चाहिए।

(५) चुनाव-प्रचार के किसी भी काम में १८ वर्ष से कम उम्र वाले किशोरों का उपयोग न हो, इसका ध्यान रहे। इस संबंध में विद्यार्थियों की संस्थाओं को स्वयं भी जागरूक होना चाहिए।

(६) अपने मकानों की दीवालों का उपयोग चुनाव-प्रचार के लिए न करने दिया जाय।

(७) चुनाव-प्रचार में जातिवाद या सम्प्रदायवाद का आधार लिया जाता हो, तो उसका निषेध और वोट देते समय जाति, सम्प्रदाय या पार्टी का विचार न करके उम्मीदवार में राष्ट्रीय एकता के गुण कितने अंशों में हैं, इसी का ध्यान रखा जाना चाहिए।

(८) किसी भी उम्मीदवार या पार्टी की ओर से धन अथवा अन्यान्य सुविधाएँ स्वीकार कर अपना वोट नहीं बेचना चाहिए।

(९) चुनाव के पहले अथवा बाद में, उम्मीदवारों से व्यक्तिगत, संस्थागत अथवा अपने ग्राम के लिए लाभ की आकांक्षा वोट के बदले नहीं रखनी चाहिए। वोट के एवज में किसी प्रकार के बदले की अपेक्षा रखना उचित नहीं।

उम्मीदवारों और राजनीतिक पार्टियों के लिए आचार-मर्यादा

(१) चुनाव-प्रचार में व्यक्तिगत निंदा नहीं होनी चाहिए।

(२) अपने कार्यक्रम की रूपरेखा जनता के समक्ष रखी जाय। विरोधी पार्टी या उसके कार्यकर्ताओं के संबंध में असत्य अथवा उल्टा प्रचार नहीं किया जाना चाहिए।

(३) समाज में परस्पर वैर-विरोध की वृद्धि हो, ऐसा प्रचार न करें।

(४) अन्य पार्टियों की सभा, जुलूस इत्यादि में बाधा डालने या उन्हें भंग करने का प्रयत्न न किया जाय।

(५) चुनाव प्रचार में हलकी भाषा का प्रयोग नहीं करना चाहिए।

(६) ऐसा प्रचार नहीं किया जाना चाहिए, जिससे समाज में जातिवाद, भाषावाद, सम्प्रदायवाद या प्रान्तवाद को प्रोत्साहन प्राप्त हो।

(७) हरएक पार्टी द्वारा अपने उम्मीदवार खड़े करने में राष्ट्रनिष्ठा और सिद्धान्तनिष्ठा को ही प्रधानता दी जानी चाहिए।

(८) चुनाव-प्रचार के लिए किसी भी व्यक्ति, संस्था या ग्राम को धन अथवा दूसरी सुविधाओं का लालच नहीं देना चाहिए।

(९) चुनाव-प्रचार के समय किसी भी व्यक्ति अथवा संस्था को सीधे या आड़े, धमकी नहीं देनी चाहिए।

(१०) चुनाव में एक व्यक्ति को किसी पार्टी ने उम्मीदवारी का टिकट न दिया हो तो अन्य पार्टियों द्वारा भी उसे चुनाव का टिकट नहीं दिया जाना चाहिए।

(११) चुनाव के बाद एक पार्टी के टिकट पर चुना गया व्यक्ति जब तक अपना त्याग-पत्र न दे दे, तब तक अन्य पार्टीवालों को उसे अपनी पार्टी में प्रवेश नहीं देना चाहिए।

(१२) चुनाव के समय पालन योग्य कोई आचार-मर्यादा भंग हो जाय तो उक्त पार्टी को स्वयं ही प्रकट कर देना चाहिए तथा उसकी पुनरावृत्ति न हो, ऐसा ध्यान रखें।

(१३) देश के दरिद्रनारायण को ध्यान में रख कर चुनाव के समय कम-से-कम खर्च किया जाना चाहिए।

(१४) प्रत्येक मतदान-क्षेत्र में किसी भी पार्टी की ओर से प्रचार के लिये अमुक संख्या से अधिक वाहनों का उपयोग न हो, इस बारे में समझौता परस्पर में किया जाना चाहिए।

(१५) मतदान के लिए किन्हीं मतदाताओं को गाड़ी-मोटर आदि वाहन नहीं लाना, ले जाना चाहिए।

(१६) प्रयत्न यह किया जाय कि प्रत्येक मतदान-क्षेत्र में सभी उम्मीदवारों की एक संयुक्त सभा हो।

(१७) घर-घर जाकर व्यक्तिगत वोटों की याचना न की जाय।

(१८) अपने पक्ष के लिये चुनाव-फण्ड इकट्ठा करने में अनुपयुक्त साधनों का प्रयोग न किया जाय।

(१९) चुनाव-प्रचार-कार्य में १८ वर्ष से नीचे के किशोरों का उपयोग नहीं किया जाना चाहिए।

समाचार-पत्रों के लिए आचार-मर्यादा

हमारे समाचार-पत्रों से, फिर चाहे वे किसी भी पार्टी के क्यों न हों, चुनाव के समय कतिपय आचार-मर्यादा के पालन की अपेक्षा है।

(१) इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि अपने पत्र में छपने वाले समाचारों अथवा अग्रलेखों से हिंसा को किसी प्रकार की भी उत्तेजना न मिले।

(२) संकीर्णता या साम्प्रदायिकता के प्रसार को रोकना चाहिए।

(३) समाज में अन्दर ही अन्दर वैर-विरोध खड़े न हों, इस दिशा में जागरूक रहने की आवश्यकता है।

(४) सामान्य प्रजा के मन पर संस्कारों की दृष्टि से कोई खराब असर न हो, इसका ध्यान रखा जाना चाहिए।

(५) अधूरे, अर्ध-सत्य या विकृत समाचारों का प्रकाशन नहीं करना चाहिए।

राजनीति से अलग होने का संकल्प

आगरा के श्री रामसिंह चौहान एम. एल. ए. ने संकल्प किया कि वे दलगत राजनीति में अब भाग नहीं लेंगे और आगामी आम चुनावों में न केवल चुनाव में नहीं खड़ेंगे, अपितु मतदाता-मंडल बनाने में अपनी पूरी शक्ति लगायेंगे। उन्होंने यह सत्कार्य शुरू भी कर दिया है।

आगरा के सर्वोदयी कार्यकर्ता श्री चिम्मनलाल जैन लिखते हैं: "श्री रामसिंह चौहान हमारे यहाँ के श्रेष्ठ जननिष्ठ नेता हैं… काम अच्छा बनेगा, ऐसी आशा है।"

साहित्य-समीक्षा

सस्ता साहित्य मंडल, नई दिल्ली के प्रकाशन

खंडित पूजा : विष्णु प्रभाकर : पृष्ठ २७४ : मूल्य डेढ़ रुपया।

हिन्दी के सुप्रसिद्ध लेखक और कथाकार श्री विष्णु प्रभाकर की २२ कहानियों का यह संग्रह है। बदलते हुए समाज के नैतिक, सामाजिक मूल्यों की कशमकश, जो हमारे जीवन का यथार्थ है, का सुन्दर सजीव चित्रण इन कहानियों में है। मानवीय मूल्यों की स्थापना पर आधारित ये कहानियाँ जीवन के किसी विशेष पहलू का सुन्दर, मनोवैज्ञानिक चित्रण ही नहीं करतीं, अपितु मनोवैज्ञानिक गुत्थियों को सुलझाने का प्रयास भी करती हैं। कहानियाँ पठनीय हैं।

बरगद की छाया में : देवराज दिनेश, पृष्ठ १७२ : मूल्य : २.५०।

७ एकांकी नाटकों का यह संग्रह ग्राम्य पृष्ठभूमि पर प्रेम, त्याग, परस्पर सहयोग, श्रम, कर्तव्य-पालन, निष्ठा आदि गुणों एवं प्रवृत्तियों के प्रकाश में सच्ची इन्सानियत का दर्शन कराता है। नाटकों की विशेषता इनकी सरल कथावस्तु है। ये कहीं भी बिना विशेष खर्च और साज-सज्जा के खेले जा सकते हैं।

रूस में छियालिस दिन : यशपाल जैन : पृष्ठ १८३ : मूल्य डेढ़ रुपया।

अभी तक यात्रा-साहित्य पर कई पुस्तकें पढ़ी हैं, किन्तु 'रूस में छियालिस दिन' पढ़ कर दिल प्रसन्न हो गया है। इसमें न केवल प्रवास-वर्णन है, अपितु वहाँ के सांस्कृतिक, सामाजिक और आर्थिक जीवन पर काफी गहराई से प्रकाश डाला गया है। इसमें लेखक की पैनी दृष्टि और मेहनत स्पष्ट परिलक्षित होती है। 'यास्नाया पोलिनाया' की तीर्थयात्रा और 'मास्को में टाल्स्टाय का घर' पढ़ कर ऐसा लगता है, मानो महान् लेखक के साथ सजीव सम्पर्क हो रहा है। ऐसी शानदार पुस्तक के लिये लेखक, प्रकाशक दोनों को बधाई है।

कहिये समय विचारि : लक्ष्मीनिवास बिड़ला : पृष्ठ ६६ : मूल्य एक रुपया।

छोटे-छोटे नौ निबन्धों का यह संग्रह जीवन को अच्छी तरह जीने के लिये मसाला देता है। लेखक निष्कर्षों से और खास तौर से उनके पूंजीवाद के समर्थन से सहमत न होते हुए भी लेख पठनीय है।

—महेन्द्रकुमार

साप्ताहिक घटना-चक्र

[पृष्ठ २ का शेष].

जब वह बाजार से दवा लावे तो वह मिलावट वाली मिले। वनस्पती घी के कारखाने का मालिक भी खुद तो 'शुद्ध' घी ही खाना पसन्द करेगा। फिल्म बनाने वाला फिल्म बनाते वक्त अपनी जिम्मेदारी महसूस नहीं करेगा, लेकिन अगर उसके नौजवान लड़के-लड़कियाँ उसके साथ उच्छृंखल व्यवहार करें तो यह उसे पसन्द नहीं करेगा और आज की शिक्षा-प्रणाली और स्कूल-कालेजों को कोसेगा। रेलवे के दफ्तर में बैठ कर जो घूस लेता है, उसके साथ अगर कभी पुलिस की ज्यादती होगी तो वह पुलिस में व्याप्त भ्रष्टाचार के खिलाफ भाषण ही दे डालेगा! मतलब यह कि जहाँ निज का संबंध आता है, वहाँ हर आदमी यह चाहता है कि दूसरा आदमी उसके साथ ईमानदारी से पेश आवे और उसे धोखा न दे, पर दूसरों को धोखा न देने की और अपना काम ईमानदारी से करने की जिम्मेदारी उस पर भी है, इसका उसे भान तक नहीं होता। हमें यह समझना चाहिए कि सामाजिक जीवन एक ऐसी चादर है, जिसके ताने-बाने एक-दूसरे से मिले हुए हैं और एक का असर दूसरे पर होता है। हम खुद अगर अपने व्यवहार में हमारी सामाजिक जिम्मेदारी को नहीं पहचानते हैं तो यह निश्चित है कि अन्ततोगत्वा वह उलट कर हमारे ही जीवन को नुकसान पहुँचायेगी।

फिल्म बनानेवाले अक्सर अपनी जिम्मेदारी को सिनेमा देखनेवालों पर डाल देते हैं। वे यह दलील देते हैं कि अगर वे अपनी फिल्मों में कुछ 'चलती हुई' चीजें न दें तो लोग वैसी फिल्म देखने ही नहीं आयेंगे और वह फिल्म चलेगी नहीं। पर यह दलील कितनी लचर है, यह फिल्म-निर्माता खुद भी जानते हैं। सच तो यह है कि फिल्म-निर्माता ज्यादा-से-ज्यादा मुनाफा कमाने के लिए उत्तरोत्तर ऐसी फिल्में बनाते हैं, जो लोगों के विकारों को उत्तेजित करें। फिल्म-निर्माताओं के लोभ और इस होड़ के कारण ही हिन्दुस्तानी फिल्मों का स्तर पिछले वर्षों में उत्तरोत्तर गिरा है। इसकी जिम्मेदारी फिल्म देखने वालों पर डालना सिर्फ अपनी जिम्मेदारी से बचने की दलील है।

हम यह जानते हैं कि फिल्म-निर्माताओं में भी—जैसे कि हर वर्ग में—अच्छे लोग मौजूद हैं। यह भी सही है कि कई बातों में इच्छा न होते हुए भी आसपास की परिस्थितियाँ लोगों को अमुक प्रकार का काम करने के लिए मजबूर कर देती हैं। पर कोई भी समझदार आदमी इस दलील की आड़ लेकर अपनी जिम्मेदारी से मुक्त नहीं हो सकता। समाज के ही एक अंग होने के नाते फिल्म निर्माताओं से यह अपेक्षा रखना अनुचित नहीं होगा कि वे खुद अपनी ओर से पहल करें और फिल्मों के स्तर को ऊँचा करने के लिए आवश्यक कदम उठायें।

वे खुद भी ऐसा न करें और सरकार की ओर से अगर 'सेन्सरशिप' को और कड़ाई से अमल में लाने के नियम बनाये जायें तो उनका विरोध करें, ये दोनों बातें एकसाथ उचित नहीं होंगी। आज आम तौर से लोगों की यह शिकायत है कि सेन्सरबोर्ड अपने काम में काफी ढिलाई बरतते हैं और उन्हें फिल्मों पर जितना नियंत्रण करना चाहिए, उतना वे नहीं करते। इसलिए सरकार अगर सेन्सरशिप के कानून और नियमों को और ज्यादा कसती है तो एक तरह से वह जनता की माँग का ही आदर कर रही है। किसी भी व्यवसाय या व्यापार के अमल में बिल्कुल खुली छूट किसी को नहीं दी सकती। सामाजिक हित की दृष्टि से हर व्यवसाय को नियंत्रित करने का समाज को अधिकार है। होना यह चाहिए कि व्यवसायी लोग खुद अपनी जिम्मेदारी को महसूस करें और ऐसा काम न करें, जो समाज-हित के विरोध में जाता हो। पिछले दिनों 'पोस्टर-आन्दोलन' के सिलसिले में जहाँ कई फिल्म-व्यवसायियों और निर्माताओं ने उस प्रवृत्ति को ठीक रूप में लिया है और उसमें सहयोग दिया है वहाँ, कुछ लोगों और अखबारों ने उसका मखौल उड़ाने की कोशिश की है। फिल्म-व्यवसायवालों को चाहिए कि बजाय उन लोगों का विरोध या मखौल करने के वे उन लोगों का स्वागत करें, जो उनके मित्र के नाते उन्हें अपनी जिम्मेदारी की याद दिलाने की कोशिश करते हैं।

—सिद्धराज

असम में २२० ग्रामदान

अब तक असम में ग्रामदानों की संख्या २२० से ऊपर हो चुकी है। ऐसे गाँवों में निर्माण-कार्य के लिए असम सर्वोदय मण्डल, गौहाटी की दो विशेष बैठकें विनोबाजी के सान्निध्य में पिछले दिनों कमलाबारी और गुम्गुड़ में हुईं। उनमें सक्रिय निर्माण-कार्य के लिए ग्राम-समितियों के बनाने का निश्चय किया गया। कछार के अशान्त क्षेत्र में वर्तमान परिस्थिति का अध्ययन करने के लिए दो शान्ति सैनिक श्री तरुणचन्द्र बरूआ और श्री सीताचरण शर्मा शिहार भेजे गये हैं। असम सर्वोदय-मंडल के सहमंत्री श्री रविकान्त सन्दिकै गोरेश्वर अंचल में अशान्ति के कारणों का अध्ययन करेंगे।

विनोबा-पदयात्रा समाचार

आचार्य विनोबा २० जुलाई से ढकुआखाना सबडिविजन में पदयात्रा कर रहे हैं। असम के चार जिलों के उपरान्त गत १२ मई को विनोबाजी ने उत्तर लखीमपुर क्षेत्र में प्रवेश किया और अब तक वे उस क्षेत्र के १५ में से १० सबडिविजनों की पदयात्रा कर चुके हैं। लखीमपुर से २० मील दूर फुल्बारी में उन्हें ११ गाँव ग्रामदान में मिले। अब तक वहाँ विनोबाजी के ३१ पड़ाव लगे हैं तथा उन्हें ४० से अधिक गाँव ग्रामदान में प्राप्त हो चुके हैं। वर्षा के कारण उस क्षेत्र में पदयात्रा अत्यन्त दुरूह है और कभी-कभी तो विनोबाजी को घुटनों से ऊपर पानी में चलना पड़ता है।

खोरा के हाईस्कूल में विनोबाजी ने बच्चों की कक्षा भी ली और उन्हें गीता का पाठ पढ़ाया। खोरा को उन्होंने सघन क्षेत्र-योजना के लिए पसंद किया। लखीमपुर के लिए उन्होंने ... में यही कहा कि "यह प्रदेश ऐसा है, जो भली-भाँति विकसित किया जा सकता है, क्योंकि यहाँ तथाकथित आधुनिक सभ्यता का प्रवेश नहीं हुआ है। उत्तर लखीमपुर ग्राम-स्वराज्य की दृष्टि से अधिक ... तथा असम के समाज-सेवियों को यहाँ की जनता के भाग्य को उन्नत बनाने में जुट जाना चाहिए और तब यहाँ गुणग्राही आदर्शों की प्रतिष्ठा हो सकती है।"

प्रबन्ध समिति की बैठक

अखिल भारत सर्व सेवा संघ की प्रबन्ध-समिति बैठक दिनांक १३ और १४ अगस्त १९६१ को संघ के प्रधान कार्यालय, राजघाट, काशी में होगी। अन्य विषयों के साथ उसमें संघ के संविधान संशोधन, वर्षा-योजना और सेवाग्राम के बुनियादी तालीम विद्यालय की प्रगति तथा लोक-शिक्षण के लिए लोक-नीति आदि पर विचार होगा।

भूदान और ग्रामदान के क्षेत्रों में ... के निर्माण के लिए भारत से बाहर के एक दाता से कुछ धन-राशि विशेष रूप से सर्व-सेवा-संघ को प्राप्त हुई है।

रामदुलारे बरी

कुख्यात बागी रूपा के भाई रामदुलारे को आगरा के अतिरिक्त सेशन्स जज श्री आफताब अहमद ने अभियोगों से मुक्त कर दिया है। विद्वान न्यायाधीश ने रामदुलारे के पास आचार्य विनोबा, स्वर्गीय मेजर जनरल यदुनाथ सिंह और उत्तर प्रदेश के भू० पू० मुख्यमन्त्री श्री सम्पूर्णानन्द के पत्रों के आधार पर यह बतलाया कि वह रूपा गिरोह के बागी रामनाथ के विनोबाजी को आत्मसमर्पण कर देने के लिए प्रयत्नशील था। २७ जनवरी को रामदुलारे की हथियार रखने के कारण गिरफ्तारी हुई थी तथा नीचली अदालत ने १८ महीने के परिश्रम-कारावास का दण्ड दिया था।

समाचार-सार

—अलीगढ़ में १८ जुलाई को जिले सर्वोदय-मंडल की बैठक हुई, जिसमें तय किया गया कि श्री गंगाधरजी शास्त्री अर्थ-समाहक बनें और साथ ही यह भी तय किया गया कि शांति-सेना का संगठन दृढ़ बनाया जाय।

—सेवापुरी में १६ जुलाई को ग्राम-सहायक प्रशिक्षण-शिविर का शुभारंभ श्री शंकरराव देव ने किया। यह शिविर उ० प्र० खादी और ग्रामोद्योग-बोर्ड द्वारा आयोजित हुआ। बोर्ड का विचार है कि चालू वित्तीय वर्ष में राज्य में १५७ गाँव-इकाइयाँ चालू की जायँ।

इस अंक में

श्रीकृष्णदत्त भट्ट, अ० भा० सर्व सेवा संघ द्वारा भार्गव भूषण प्रेस, वाराणसी में मुद्रित और प्रकाशित। पता : राजघाट, वाराणसी-१, फोन नं० ४३९१
वार्षिक मूल्य ६)   पिछले अंक की छपी प्रतियाँ ९,४००: इस अंक की छपी प्रतियाँ ९,२७०   एक अंक : १३ नये पैसे

संपादक : सिद्धराज ढड्ढा

वाराणसी : शुक्रवार | ११ अगस्त '६१ | वर्ष ७ : अंक ४५

स्वतंत्रता के चौदह साल : लोकतंत्र का वनवास पूरा हुआ है

सच्चे पंचायतीराज से लोकतंत्र प्रतिष्ठित होगा

शंकरराव देव

अगस्त का महीना भारत के इतिहास में खास स्थान रखता है। १५ अगस्त को भारत स्वतंत्र हुआ था। इस १५ ता० को १४ वर्ष पूरे होंगे। आजादी का उत्सव राष्ट्रीय पैमाने पर धूमधाम से मनाया जायगा।

भारतीय जीवन की सांस्कृतिक परम्परा वनवास की परम्परा रही है। श्री रामचन्द्रजी को १४ वर्ष वनवास करना पड़ा था। उसके बाद वह गद्दी पर बैठे। पाण्डवों ने भी १२ वर्ष वनवास और फिर एक वर्ष अज्ञातवास किया था, उसके बाद ही उनको गद्दी मिली थी। भारत के अध्यात्म की, संस्कृति की प्रेरणा वन की प्रेरणा रही है। रवीन्द्रनाथ ठाकुर के शब्दों में हमारी संस्कृति तपोवन संस्कृति है। हमारी संस्कृति शहरी संस्कृति नहीं है। संस्कृति के हमारे प्रेरक शहरों में नहीं, वनों में रहते थे। राज्य के शासक और दण्डधारी लोग वनों में रहने वाले उन ऋषि-मुनियों से सलाह लेते थे। राजा कानून बनाने वाले नहीं थे, कानून पर अमल करने वाले थे। कानून का मतलब था धर्म।

अब जमाना बदल गया है। सारा-का-सारा व्यवहार राज्याधीन हो गया है। गद्दी पर जो बैठेगा, वही समाज का प्रत्येक काम, प्रत्येक कानून और प्रत्येक प्रथा निर्माण करेगा। यह सारा कारोबार जनता के हित के लिये जनता के ही नाम पर वह करता है।

हम समझते हैं कि भारत की लोकशाही के ये १४ साल उसके वनवास का काल था। अब वह खतम होने जा रहा है। हमारे ख्याल से इस १५ अगस्त को जो उत्सव मनाया जायगा, वह वनवास की इस समाप्ति के उपलक्ष्य में मनाया जाना चाहिए।

भारत में लोकशाही का एक महान् प्रयोग हो रहा है। न केवल हम, बल्कि पश्चिम के नेता भी मानते हैं कि भारत में लोकशाही का यह प्रयोग सफल नहीं होता है तो दुनिया में लोकशाही का भविष्य अन्धकारमय है। पहला विश्वयुद्ध हुआ। तब यही दावा किया गया था कि संसार को लोकशाही के लिये सुरक्षित करने के लिये ही यह युद्ध है। हम सब इस पर विश्वास करते थे। गांधीजी तक ने हमसे कहा—लड़ाई में भर्ती होइये, क्योंकि इससे लोकशाही पर आई मुसीबत हटने वाली है। युद्ध समाप्त हुआ। 'लीग आफ नेशन्स' बना। लोकशाही का एक नया सिद्धान्त, स्वयं निर्णय का सिद्धांत निकला। हर कहीं लोकशाही का समर्थन होने लगा। पूर्वी यूरोप के कई राष्ट्रों में यह सिद्धांत लागू भी हुआ। सबको लगने लगा कि अब लोकशाही वास्तव में संसार में कायम हो गयी। लेकिन देखते-देखते कुछ ही दिनों में इटली और जर्मनी फैसिस्ट और नाजी बन गये। लोकशाही को ग्रहण लग गया। उसमें से दूसरा विश्वयुद्ध हुआ। इस युद्ध से यह आशा की जाने लगी कि फैसिज्म और नाजिज्म खतम होने वाले हैं। लेकिन इस युद्ध के अंत में रूस साम्यवादी बना। प्रथम विश्वयुद्ध के बाद पूर्वी यूरोप के जो-जो देश लोकतन्त्रीय बने थे, वे सारे के सारे साम्यवादी बन गये। इधर चीन, उत्तर कोरिया, उत्तरी वियतनाम भी साम्यवादी बने।

लोकशाही का सबसे बड़ा अड्डा अमेरिका माना जाता है। पर उसके बिलकुल निकट का क्यूबा अभी-अभी साम्यवादी बना है। सुना जाता है कि सारे दक्षिण अमेरिका में साम्यवाद

शरदारंभ में शारदा की उपासना

दस वर्षों की भूदान-यात्रा में हमने सब जगह यह अनुभव किया कि सर्वोदय-साहित्य के लिये जनता में भूख पैदा हुई है। अनेक वादों और विवादों ने मिल करके भारतीय जनता के चित्त को समाधान देने में अपनी असमर्थता साबित की है। बावजूद इसके कि सर्वोदय के सेवक अपने जीवन में सर्वोदय-विचार को प्रकाशित करने में लगभग असमर्थ साबित हुए हैं, सर्वोदय-विचारों का आकर्षण उत्तरोत्तर बढ़ ही रहा है। जो युगधर्म होता है, उसकी यही पहचान है। लोगों की यह भूख कृत्रिम नहीं है। जैसे दिन भर इधर-उधर उड़ कर थका पक्षी शान्ति के लिये अपने घोसले में पहुँच जाता है, [illegible]

उसको पा सकता है। इस दृष्टि से सर्व सेवा संघ सोच रहा है कि हर साल शरदारंभ में दो-तीन हफ्ते खास शारदा की सेवा के लिये दिये जायें। उधर तमिलनाड वाले इस काम में अग्रसर हो चुके हैं। उसका अनुभव भी अच्छा आया है। आशा करता हूँ कि सर्व सेवा संघ की इस सूझ का, क्षुधित जन उत्साहपूर्वक स्वागत करेंगे।

साहित्य में पुस्तकों के अलावा पत्रिकाओं का भी अपना स्थान है। पत्रिकाएँ नियमित रूप से गाँव-गाँव में पहुँचें तो लोकमानस में सतत स्फूर्ति का संचार होता रहेगा। इसलिये पत्रिकाओं के प्रचार की तरफ भी खास ध्यान होना चाहिये।

४-८-६१
पड़ाव : घेमाजी
जिला : नार्थ लखीमपुर
(असम)

के लिये परिस्थिति पकी हुई है। इस तरह हम देखते हैं कि चारों तरफ लोकशाही के गले में फंदा कसता जा रहा है।

भारत को आज विदेशों से करोड़ों रुपयों की मदद मिल रही है; वह क्यों? सबको आत्मरक्षा की चिंता लगी है। भारत से सबको आशा है। भारत के आसपास भी देखिये। बर्मा, इंडोनेशिया, पाकिस्तान, कहीं लोकशाही नहीं है। पाकिस्तान में तो सैनिक सत्ता ही स्थापित हो गयी है, बर्मा और इंडोनेशिया में भी डेमोक्रेसी नहीं है। वह 'गाईडेड डेमोक्रेसी' है।

भारतीय लोकराज्य का जो संविधान बना है, हम सब जानते हैं, वह पश्चिम की लोकशाही की ही कलम है। संसार के जिन-जिन राष्ट्रों में लोकशाही थी, वहाँ-वहाँ के विधान से जो भी चीज अच्छी दिखी, उसको इकट्ठा करके, जिस तरह रंग-बिरंगी चिथड़ों से गुदड़ी सी जाती है, उस तरह हमारा संविधान बनाया गया है। पश्चिम में ही यदि लोकशाही को ग्रहण लगा है और एक के बाद एक राष्ट्र साम्यवादी बनता जा रहा है और जहाँ से हमने लोकशाही ली, वहीं वह अस्त हो रही है तो यहाँ भारत आकर वह अस्त नहीं होगी, इसका क्या भरोसा? उसे यहाँ अस्त होने न देने के लिए हमने कौनसी सावधानी बरती है?

इंग्लैंड में आज बर्ट्रेण्ड रसेल जैसे व्यक्ति भी सरकार के विरुद्ध मोर्चा कायम करते जा रहे हैं। जनता की सुनने वाला वहाँ भी कोई नहीं है। जनता आज असहाय, लाचार हो गयी है। कहाँ जनता को सार्वभौम शक्ति-संपन्न कहा और कहाँ वह आज अपनी आवाज तक सुना नहीं पा रही है! उसका सार्वभौमत्व केवल नाम मात्र का रह गया है। वह तो असल में गुम हो गया है।

पर देखना यह है कि वह गया कहाँ? पश्चिम के इस प्रजातंत्र के दो मुख्य सिद्धांत हैं—व्यक्ति स्वातंत्र्य और जनता का सार्वभौमत्व। प्रजातंत्र के ये दो फुफ्फुस हैं। लेकिन पश्चिम में लोकशाही का पिछले २-३ सदियों से जिस तरह का विकास हुआ है, उसी का परिणाम यह आया है कि ये दोनों फुफ्फुस करीब-करीब सड़ गये हैं।

लोकशाही की यह प्रक्रिया आज चल रही है कि जनता अपने प्रतिनिधियों के पास अपना सार्वभौमत्व सौंप देती है। अपना काम और सत्ता (फंक्स और पावर) प्रतिनिधियों को 'डेलिगेट' कर दिया है, सौंप दिया है। देश के सारे कारोबार में जनता की पूछ कहीं नहीं है। इसी कारण लोकशाही का पतन हो रहा है!

अतः लोकशाही को पुनर्जीवित करना है तो व्यक्ति-स्वातंत्र्य और सार्वभौमत्व का पुनर्जीवन करना होगा। राजनैतिक और आर्थिक सत्ता को प्रतिनिधियों के हाथ से अपने हाथ में लेना होगा।

सर्व सेवा संघ का लोकनीति, लोकशिक्षण का कार्यक्रम • पूर्णचन्द्र जैन

सर्व सेवा संघ अहिंसक समाज की रचना के लिये राजनीति के स्थान पर लोकनीति की स्थापना को अपने कार्यक्रम का एक मुख्य अंग मानता है, इसीलिये संघ के सर्वोदयपुरम्-अधिवेशन में आगामी चुनाव और पंचायती राज योजना के संदर्भ में संघ ने नीति स्पष्ट की और कार्यक्रम निर्धारित किया।

लोगों का अभिक्रम जागृत हो और लोकशक्ति में भेदभाव भरने की एवज वे संगठित और सक्रिय हो सकें, इस दृष्टि से संघ के कार्यक्रम सम्बन्धी निम्न कुछ सुझाव हैं :—

आज हमारे देश में सरकारों का ध्यान इस बात की ओर गया हो, ऐसा नहीं दिखता है। आज जो देश के निर्माण के काम हो रहे हैं, वे यहाँ की जनता के लिये एक प्रकार से नये लगते हैं। लेकिन जिन विचारों के आधार पर यह निर्माण की इमारत खड़ी की जा रही है, वे विचार पुराने और जीर्ण हैं। इसलिये इस कमजोर बुनियाद पर खड़ी की जा रही यह इमारत कब ढह जायँ कोई ठिकाना नहीं। देश के राजनैतिक पक्ष जनता से साम्यवाद, समाजवाद आदि के नाम से उसका मत (वोट) मांगते हैं। लेकिन ये सारे वाद पुराने साबित हो गये हैं। इन वादों से देश में लोकशाही टिकने वाली नहीं है

पर खुशी की बात है कि अब पंचायत राज्य इस देश में कायम हो रहा है; कुछ राज्यों में हो भी चुका है। लोकशाही के सही विकास के लिये कुछ आशा का स्थान अब बना है। सही माने में पंचायत राज्य को इस देश में कायम करने के प्रयास होंगे तो उसमें चूंकि केंद्रीकरण को मिटा कर, व्यक्ति-स्वातंत्र्य और सार्वभौमत्व की स्थापना करने की बात बीज रूप में उसमें विद्यमान है। मगर एक बात है। वह यह कि इन पंचायतों को सत्ता धीरे-धीरे सौंपी जा रही है।

अक्सर लोग कहते हैं कि गाँव में चूंकि दुर्जन अधिक हैं, अतः सत्ता सारी की सारी सौंपने में खतरा है! लेकिन हमारी समझ में नहीं आता कि गाँव में यदि दुर्जन हैं, तो राज्यों और केन्द्र में सज्जन कहाँ से आयेंगे? पेड़ की जड़ यदि सड़ी हुई है तो फल उसका कैसे मीठा होगा? राज्यों और केंद्रों में गाँव के ही तो प्रतिनिधि हैं न?

आज प्रश्न यह है कि भारत में लोकशाही की बाती जलेगी, बुझेगी? पाश्चात्य देशों में लोकशाही के विभिन्न प्रयोगों और क्रमिक विकास के लिये काफी समय मिला। पर हमारे पास समय नहीं है। हमें बड़ी तीव्रता के साथ यथाशीघ्र सही लोकशाही का नया और क्रांतिकारी कदम उठाना होगा। इस दिशा में पंचायत राज का कदम हमें बहुत महत्त्व का लगता है।

पंचायत राज्य का अभिप्राय यह है कि लोग सार्वभौम बनें, अपनी जरूरतों के बारे में खुद सोचने के लिये वे स्वतंत्र रहें और उनकी पूर्ति की व्यवस्था करने के लिये आवश्यक सत्ता और संपत्ति उनको मिलें यही सही पंचायत राज्य है।

इसके बारे में जनता को भी समझाना होगा और उन्हें इसके लिए तैयार करना होगा। किन्तु यह तो एक नया विचार है। लोगों का, खासकर देश के सुशिक्षित लोगों का ध्यान इस तरफ जैसे जाना चाहिये था, वैसे नहीं जाता है।

एक तरफ पंचायत राज कायम करने की बात कही जाती है और दूसरी तरफ चुनाव आदि का तरीका वही पुराना सोचा जाता है। इसका अंतर विरोध न राजनैतिक पक्षों को दिखता है, न शिक्षित वर्ग को।

इस चुनाव-पद्धति में से कभी भी न जनता का सार्वभौमत्व और व्यक्ति-स्वातन्त्र्य पुनः स्थापित होने वाला है, न सच्ची लोकशाही कायम होने वाली है। इसीलिये सर्व सेवा संघ का सुझाव है कि मतदाताओं के छोटे-छोटे संघ बनने चाहिये और उनको अपना प्रतिनिधि स्वयं चुनना चाहिये। जनता को किसी भी राजनैतिक पार्टी के पिछलग्गू नहीं बनना चाहिये। इन राजनैतिक पक्षों के ही कारण सही लोकशाही पनप नहीं पाती है। अतः उन पक्षों पर नियंत्रण रखना जरूरी है।

अर्थात् ये प्रतिनिधि क्या काम करें और क्या न करें, इस बारे में जनता को यानी मतदाता-संघों को निर्णय करना चाहिये। जनता जब यह नीति अख्तियार करेगी, तभी उसका स्वातंत्र्य और सार्वभौमत्व उसको वापस मिल सकेगा और तभी लोकशाही केवल जनता के लिये न रह कर जनता का और जनता द्वारा चलाया जाने वाला राज्य बनेगी।

(१) राजनैतिक पार्टियाँ एकमत होकर ऐसी आचार-मर्यादा स्वीकार करें, जिससे आज के चुनावों में होने वाली बहुत-सी बुराइयाँ कम हो सकें। इसके लिये निम्न या ऐसा ही अन्य कार्यक्रम उठाया जाना चाहिये।

(क) पार्टियाँ अपने उम्मीदवारों के लिये एक स्थान पर अलग-अलग सभाएँ न आयोजित करके एक ही मंच से अपने-अपने घोषणा-पत्र, कार्यक्रम, उम्मीदवार वगैरह की बात मतदाताओं के सामने रखें।

(ख) चुनाव संबंधी प्रचार में व्यक्तिगत आरोप-प्रत्यारोप न हों, भाषण, लेख, विज्ञप्ति-पत्र, समाचार-पत्रों में टीका टिप्पणी सभी में किसी प्रकार की व्यक्तिगत छींटाकशी न होने देने का प्रयत्न किया जाय।

(ग) विद्यार्थियों तथा नागरिकों का चुनाव संबंधी किसी कार्य में उपयोग न हो।

(घ) रिश्वत, भय, प्रलोभन आदि के अशुद्ध व्यवहार बिल्कुल काम में न लिये जायें।

(ड) खर्च कम किया जाय।

(२) पंचायती राज की योजना के अन्तर्गत जो पंचायत-समितियाँ तथा जिला-परिषदें गठित हो रही हैं, उनके तथा नगरपालिका व अन्य स्वायत्त संस्थाओं के चुनावों में पक्षाधारित चुनाव न हों, अर्थात् राजनैतिक पार्टियाँ अपने उम्मीदवार खड़े करके चुनाव न लड़ें। यथासंभव संघर्ष भी टाला जाय और चुनाव सर्वसम्मति या आमसहमति से करने की कोशिश की जाय।

(३) चुनावों में उपर्युक्त प्रकार से लोकनीति का तत्त्व दाखिल करने के व्यापक प्रयत्न के साथ-साथ कुछ ऐसे क्षेत्रों में, जहाँ पिछले वर्षों में भूदान, ग्रामदान व सर्वोदय के अन्य सघन कार्य के कारण वातावरण तथा लोगों की मनोवृत्ति अनुकूल हो, वहाँ अगले आम चुनावों के समय मतदाता-मंडल बनाने और इस प्रकार, उम्मीदवारों का चयन मतदाता स्वयं करें और चुनाव संघर्ष यथासंभव टले, ऐसी कोशिश की जाय।

उपर्युक्त कार्यक्रम को लेकर लोकनीति संबंधी लोकशिक्षण के कार्य की व्यापक संयोजना की जाने की आवश्यकता है।

आगामी चुनाव बहुत करके फरवरी में सम्पन्न होंगे, इसलिये अब आवश्यक जल्दी से जल्दी सभी प्रदेशों में इस सम्बन्ध में चर्चा हो जानी चाहिये।

कार्य की व्यवस्थित संयोजना के लिये निम्न सुझाव हैं :—

(१) हर प्रदेश में एक व्यक्ति को अथवा दो-तीन व्यक्तियों की समिति उस प्रदेश में विभिन्न पक्षों के और सार्वजनिक क्षेत्र के प्रमुख-प्रमुख व्यक्तियों से संपर्क करके आचार-मर्यादा संबंधी एक सर्व-पक्षीय विचारसभा, सेमिनार या गोष्ठी आयोजित करे और उसमें आचार-मर्यादा का मसविदा तय किया जाय। यह कार्य डेढ़ महीने की अवधि में हो जाय।

(२) उपर्युक्त बातचीत के दौरान में या उसके बाद अखिल भारतीय स्तर पर भी विभिन्न पक्षों के और सार्वजनिक क्षेत्र के

[शेष पृष्ठ १६ पर]

बापू के सपने का गाँव और समाज

• मनुबहन गांधी

[सुश्री मनुबहन गांधी की लिखी गुजराती डायरी का एक महत्त्वपूर्ण अंश "बिहार पछी दिल्ही" के नाम से अभी प्रकाशित हुआ है। मनुबहन ने इस डायरी में उन दिनों बापू की दिनचर्या का और उसके चिन्तन-मन्थन का जो प्रामाणिक विवरण दिया है, उससे हमारे स्वराज्य के उषःकाल की विकट परिस्थिति का बड़ा ही मार्मिक, उद्बोधक और हृदयस्पर्शी चित्र खड़ा होता है। स्वराज्य-प्राप्त भारत के गाँव और समाज के विषय में उन दिनों बापू किस तरह सोचते थे, क्या-क्या उनके सपने और मनोरथ थे, इसका ठीक अन्दाज हमें इस डायरी के पन्ने-पन्ने में मिलता है। इस डायरी में २७ मई, ४७ की बापू की दिनचर्या का वर्णन करते हुए मनुबहन ने उस दिन दोपहर को बापू से मिलने आये आये हुए भाई-बहनों के साथ की उनकी चर्चा का जो विवरण दिया है, नीचे उसका श्री काशिनाथ त्रिवेदी द्वारा किया गया अनुवाद हम अपने पाठकों के लिए दे रहे हैं। इस चर्चा में बापू ने जिस उत्कटता से अपनी भावनाएँ व्यक्त की हैं, वह हम सबको अभी हम स्वतन्त्रता की चौदहवीं वर्षगाँठ मनाने जा रहे हैं, ऐसी घड़ी में जीवन की सही दिशा की ओर प्रेरित और उन्मुख कर सकें, तो निश्चय ही उससे देश की, मानवता की बड़ी सेवा होगी। —सं०]

दोपहर को ..... भाई बहन आये। उनके सामने अपना दिल उँडेलते हुए बापूजी ने कहा :—

"देश के टुकड़े हों, इसकी कल्पना ही कँपाने वाली है। आज हमें एक होकर इस ओर ध्यान देना चाहिए कि टुकड़े न हों और फिर भी अंग्रेजों को जाना है, तो सब सोचें कि वे किस तरह शान्तिपूर्ण रीति से करार करके जायँ। शायद टुकड़ों का होना भी पुसा सकता है, लेकिन ये टुकड़े अंग्रेजों के हाथों हों, यही मुझे बुरी तरह खटकता है। हम भाई-भाइयों के झगड़ों में बाहरवालों की दस्तंदाजी क्यों होनी चाहिए ? क्या हममें इतनी भी ताकत नहीं है कि हम अपने झगड़े खुद निपटा लें ? इसीलिए मुझे लगता है कि हमारी अहिंसा सबलों की अहिंसा नहीं थी, बल्कि उसमें कुछ भूल थी। लेकिन ईश्वर ने वह भूल मुझे आज सुझाई है। अगर हम भाई-भाई के अपने झगड़ों में अंग्रेजों को बिचवई बनायेंगे, तो हम अपने इतिहास को, जो इतना उज्ज्वल रहा है, कलंकित करेंगे ! इस कारण मैंने प्रार्थना में भी यह प्रकट किया कि अगर हम साथ न रह सकें, तो राजी-खुशी से जरूर अलग हो जायेंगे, लेकिन इसमें किसी की भी दस्तन्दाजी हमें पुसा नहीं सकेगी। यही हकीकत मैं आज वाइसराय के सामने भी रखने वाला हूँ। ये वाइसराय बहुत बाहोश हैं। ये किसी के साथ बिगाड़ नहीं करेंगे, पर करेंगे अपने मन की। अतएव इसमें हम सबकी परीक्षा है। आप यह न भूलें कि हममें जितनी हिम्मत है और जितनी कुशलता है, उस सबका अन्दाज अकेले लार्ड माउण्टबेटन इस समय ले रहे हैं। 'अनजान दोस्त से जाना दुश्मन अच्छा', इस कहावत के अनुसार लिनलिथगो या लार्ड वावेल हमारे लिये खतरनाक नहीं थे, क्योंकि हम उनकी नीति से भलीभाँति परिचित थे।

मुझे यह अच्छा लगता है कि आप सब समाज में एक-सा जीवन स्तर खड़ा करने की कोशिश कर रहे हैं। मैं भी यही करना चाहता हूँ। लेकिन आज सबसे पहला काम यह है कि हम सब एक हो जायँ और देश की भलाई के ख्याल से जो इष्ट है, उसे ध्यान में रख कर जनता को रचनात्मक काम में लगा दें, क्योंकि हमारी जनता १५० सालों से गुलाम रही है, लेकिन अब हमें उसे दूसरे ढंग से तैयार करना है। और मैं इस बात से पूरी तरह सहमत नहीं हूँ कि केवल सत्ता हाथ में आने से ही जनता तैयार होगी, अथवा यह कि सत्ता के आने से बहुत कुछ हो सकेगा। अलबत्ता, सत्ता के हाथ में आने से ही अमुक अंकुश अवश्य दूर होंगे। पर हमें तो जनता के बीच बैठ कर ठोस काम करना है।

आप मुझे अपना एक सलाहकार मानते हैं और स्वेच्छा से मेरे पास आते हैं, तो मैं तो आपको एक ही सलाह दूँगा कि

अगर आप समाजवाद लाना चाहते हैं, तो उसका एक ही रास्ता है और वह यह है कि आप गरीब जनता के बीच गाँवों में जाकर बैठिए और गाँव का जीवन बिताइए। गाँव वालों के जीवन के साथ अपने जीवन को घुला-मिला दीजिए, उनके साथ ८ घण्टे मेहनत कीजिए, अपने निजी जीवन में भी गाँवों में पैदा होने वाली चीजों का ही उपयोग कीजिए, गाँवों की निरक्षरता मिटाइए, अस्पृश्यता का नाश कीजिए और स्त्रियों को आगे बढ़ाइए।

मैं तो आपसे यहाँ तक कहूँगा कि आप गाँवों के साथ ऐसा सजीव सम्बन्ध खड़ा कीजिये कि आपमें से कोई अविवाहित हो और विवाह करना चाहता हो, तो वह गाँव की कन्या से ही विवाह करे और कोई स्त्री हो, तो वह अपने लिये गाँव का ही वर पसन्द करे। अगर कोई आपसे सलाह पूछे, तो आप उसे यही सलाह दीजिये। यदि इस प्रकार आप अपने जीवन को आदर्श बनायेंगे और जिस तरह चित्रपट पर चित्र दीखते हैं, उसी तरह जनता आपका पारदर्शक जीवन प्रतिक्षण देखेगी, तो उसका प्रभाव सारे देश पर पड़ेगा और देश संस्कारी बनेगा।

सत्ता कांग्रेस के हाथ में आयेगी, पर कांग्रेस किसी एक वाद की या पक्ष की नहीं है। उसका सिद्धान्त समाज में समभाव पैदा करना है ही। अवश्य ही उसमें कुछ शिथिलता आयी है। उसे कबूल करते हुए भी मैं आपको यह विश्वास दिला सकता हूँ कि अगर आपके कार्यकर्त्ता गाँवों के उद्धार के लिये कार्यक्रम बनायेंगे और उस योजना को सिर्फ कागज पर न रख कर अमल में लायेंगे, तो कांग्रेस के सत्तारूढ़ होने पर भी उसके सत्ताधीश आपको अपने सच्चे और ठोस काम में अवश्य ही मदद करेंगे। यही नहीं, बल्कि जवाहरलाल तो आपको धन्यवाद देते हुए थकेंगे ही नहीं।

लेकिन मुझे यह कहते हुए दुःख होता है कि आज आप यह सब न करके लोगों को उभाड़ते हैं, हड़तालें करवाते हैं। दूसरी तरफ साम्प्रदायिकता के झगड़े चल रहे हैं। आप सब विचारक हैं, विद्वान हैं। आप यह क्यों नहीं सोच पाते कि ऐसा करने से नुकसान किसका होता है ? अंग्रेजों के खिलाफ यह लड़ाई ठीक थी, क्योंकि हमें उन्हें निकालना था। लेकिन आज आपको किसे निकालना है ?

आप अपने ही देशवासियों के विरुद्ध लड़ाई छेड़ कर क्या फ़ायदा उठायेंगे ? आपको तो अपना दिल उदार बना कर देश के उत्थान में हाथ बँटाना चाहिए। अगर सत्ताधीशों का कोई कसूर हो, तो आप अपने काम से उसका विरोध कीजिये। बातों से, भाषणों से या उत्तेजना फैला कर नहीं। आप गाँवों में और झोपड़ियों में रहने वाली जनता को अपने हाथ में लीजिए। अपने ज्ञान, कौशल्य, सूझ-बूझ, रचनात्मक कार्य और देशभक्ति का लाभ उसे दीजिए। जनता को अपने जीवन से इस प्रकार की सच्ची शिक्षा दीजिये। आपके सारे कार्य जनता के हित में होने चाहिए। नहीं तो जनता के उलटने पर, बगावत करने पर आज की इस गुलामी से भी कहीं बुरी हालत खड़ी हो जायेगी। इससे पहले कि जनता विनाश का रास्ता अपनाये, हमें उसे रचनात्मक कार्यों की जीवन-भर शिक्षा देनी चाहिए।

मैं सिर्फ आपको ही यह बात नहीं कह रहा हूँ। आप सब भाई-बहन आये हैं, इसलिए मैंने अपना दिल आपके सामने खोल कर रख दिया है। लेकिन यही बात कांग्रेसवालों पर भी लागू होती है। इसलिए क्या लोकसेवक और क्या राजसेवक, सभी इस समय आपस के वैर भुला कर, वाद-कुवाद छोड़ कर चरखा, खादी और ग्रामोद्योगों की कला सीखने सिखाने को तैयार हो जायें। एक तरफ से अंग्रेज जायँ और दूसरी तरफ से जनता को इस शिक्षा के द्वारा नवजीवन मिले, तो मुझे विश्वास है कि पाँच सालों में यह देश एशिया में सबसे आगे होगा।"

यों बापूजी बोलते चले जा रहे थे। कोई दस भाई-बहन बैठे थे। लेकिन वातावरण में इतनी शान्ति और गम्भीरता छाई हुई थी कि सुई के गिरने पर उसकी आवाज भी सुनाई पड़ जाय। अपनी बात खतम करने के बाद बापूजी ने पूछा, "कहिए, अब किसी को कोई सवाल पूछना है ?"

किसी ने कोई खास सवाल नहीं पूछा। पूछने-जैसा था भी क्या ? बापूजी ने इतनी सही और ठोस बातें कही हैं कि उनके विरोध में शायद ही कोई दलील दी जा सके।

आखिर एक भाई ने एक सवाल पूछा "हमारे देश में मशीनों द्वारा उद्योगों का जो विकास हो रहा है, आप उसका विरोध क्यों करते हैं ?"

बापूजी : "मशीनों की मदद से इंजिन, मोटर, हवाई जहाज और दूसरी ऐसी कई चीजें बनायी जा सकती हैं। लेकिन अगर मशीनों से आटा पीसा जाय, मशीनों से कपड़ा बनाया जाय, मशीनों से जमीन जोती जाये, तो मैं इस सबका कड़ा विरोध ही करूँगा। मशीन के आटे के कारण आज हममें कोई सत्व नहीं रहा, क्योंकि उसके सारे 'विटामिन' नष्ट हो जाते हैं। हमारे काठियावाड़ में तो पुराने समय में नल भी नहीं थे। बहनें नदी से पानी भर कर लाती थीं। उनके सिर पर ताँबे-पीतल के बरतन होते थे, बरतनों के नीचे मोतियों से गूँथी गयी सुन्दर 'चोमल' होती थी। सूर्योदय का समय रहता था, इसलिए सूर्य की स्वर्णकिरणें बहनों के शरीर पर पड़ती थीं, और उस तरह उन्हें 'सनबाथ' यानी सूर्य-स्नान का लाभ मिल जाता था। तन्दुरुस्ती का लाभ तो मिलता ही था। बहनें बड़े सबेरे उठ कर भजन गाती हुई चक्की पीसा करती थीं। भजनों में ईश्वर-भक्ति के भजन भी होते थे। वीर्य-शौर्य से भरे निर्दोष गीतों द्वारा संगीत की कला का विकास होता था और कसरत भी होती थी। फिर पूरा परिवार खेत पर काम करने जाता था। इसलिए उन दिनों लोग बीमारी का अथवा आजकल पेट की बीमारियाँ जो बढ़ती जा रही हैं, उनका तो शायद नाम भी नहीं जानते थे। ऐसे विशाल देश में और विशाल परिवार में, जहाँ अनेक काम और

और काम को आगे बढ़ना चाहिए ।"

सभा में उसी दिन बाबा बीच-बीच में कुछ वाक्य असमिया में बोलते थे। आखिर में बताया कि—"काम भाल हब लागिब। कियनो आहबाचरू डेगर मानुह। येइ डेका मानुह सिखके काम भालदरे करिब लागे। (काम अच्छा होना चाहिये, क्योंकि सेक्रेटरी जवान है। जवानों को अच्छी तरह से काम करना चाहिये।)" इसके बाद बाबा वापस आने के लिये प्रस्तुत ही हुए थे, तो और दो गाँवों के लोग वहाँ आये और वहाँ की भी ग्राम सभाएँ बाबा की साक्षी में हुईं। बाबा विनोद में बोलने लगे—"दो शादियाँ, एक ब्राह्मण।"

एक दिन बाबा ने 'सोरा' हाईस्कूल के छात्रों का संस्कृत वर्ग लिया। उस समय बाबा ऐसे लग रहे थे कि मानों एक प्राचीन ऋषि संस्कृत विद्या-मन्दिर में संस्कृत सीखा रहे हैं—

> गेयं गीतानामसहस्रं ध्येयं
>
> श्रीपतिरूपमजस्रम् ।
>
> नेयं सज्जनसंगे चित्तं देयं
>
> दीनजनाय च वित्तम् ॥

इस श्लोक को बोर्ड पर लिख कर छात्रों से दोहराते थे। अर्थ और व्याकरण संस्कृत में ही समझाते थे। पूरा क्लास बाबा के पीछे-पीछे गीता का श्लोक बोलता था। क्लास लेते वक्त बाबा तालियाँ बजा कर छात्रों के बीच घूमते थे। अन्त में सर्वोदय के साथ उसका सम्बन्ध बता कर क्लास खतम किया।

इन दिनों बाहर से कई लोग बाबा से मिलने आये। श्री देसभाई ३० मई को बाबा से मिलने दुर्गापुर की ए. आई. सी. सी. के बाद सीधे आये। एक दिन साथ रहे। ३१ मई को सुबह ६ मील पदयात्रा में साथ थे। बाद में श्री नारायण देसाई काशी से शान्ति सेना विद्यालय के बारे में बातचीत करने आये थे। २-३ दिन साथ रह कर वापस गये। 'सोरा' अंचल में जब पदयात्रा चल रही थी, तब श्री नव बाबू आये। सर्व-सेवा संघ के अध्यक्ष बनने के बाद श्री नव बाबू पहली बार ही आये थे। श्री दुग्गायलजी भी ४१ दिन साथ रह कर कच्छ लौटे। ९ तारीख को श्रीमन्नारायण बाबा से मिलने आये थे। दो दिन रह कर वापस दिल्ली लौटे। आजकल यहाँ खूब बारिश हो रही है। बाबा के ४६ दिन से अधिक का कार्यक्रम नहीं बनता। बाबा एकदम छोटे-छोटे गाँवों में चल रहे हैं। कभी बारिश के कारण रास्तों के टूट जाने या खराब हो जाने से कहीं रुक जाना पड़ता है या मार्ग भी बदलना पड़ता है। फिर भी यात्रा उत्साह से चल रही है। बाहर से मिलने वाले भी आते रहते हैं।

स्थानिक कार्यकर्ताओं के बारे में बाबा बार बार कहते हैं कि स्थानिक कार्यकर्ता यदि अपने गाँव का काम संभालें तो काम आगे बढ़ेगा। 'सोरा' अंचल में कुछ अच्छे-अच्छे कार्यकर्ता निकले हैं और स्थानिक कार्यकर्ताओं ने ग्रामदान के काम को पूरा करने की जिम्मेवारी उठायी है। 'सोरा' अंचल के स्थानिक कार्यकर्ताओं में से हाई-स्कूल के प्रधान शिक्षक बड़े उत्साही हैं। बाबा उनके उत्साह की तारीफ करते हैं कि—"यह ग्रामदान का सरदार है। ऐसे उत्साही मनुष्य गाँव गाँव में निकलें तो काम बहुत जल्दी होगा।" स्कूल के प्रधान शिक्षक का नाम है 'प्रेम बरा'। बाबा कहते थे कि—"इनका नाम ही 'प्रेम' है। वे जहाँ कहीं मिलते हैं, सभा में या रास्ते में तो कहते हैं कि—"ये ग्रामदान के सरदार हैं।" और उनसे कहते हैं, "तुमको इसके लिये समय देना पड़ेगा। जोर लगाओ, काम हो जायेगा।"

आखिरी दिन सुबह घूम कर वापस आते वक्त स्कूल के पास पहुँचने पर बाबा कहने लगे—"इस स्थान से मेरा प्रेम हो गया। खुली जगह है और गाँव का मध्य भी है। यहाँ गाँव का केन्द्र बन सकता है और बनेगा भी।"

यात्रा आने के बाद इन दिनों में कुल ४० गाँव ग्रामदान में मिले। १० मौजों में २५ पड़ाव रहे।

'सोरा' से चारों दिन तीन बजे ही बाबा निकल पड़े। छात्रावास के विद्यार्थी और शिक्षक सब कहने लगे कि आज हमारा यह स्थान खाली-खाली लगेगा। लेकिन चलता मुसाफिर ही पायेगा मंजिल और मुकाम। उपनिषद् के मन्त्रों के साथ साथ हम सब आगे बढ़े।

पूना की दुखदायी घटना

पूना के सर्वोदय-कार्यकर्ता श्री श्रीराम चिंचोलीकर अपने पत्र में लिखते हैं :

"पूना में बाढ़ के कारण बहुत दुखदायक घटना हुई है। हमारा भी घर बह गया। कुछ सामान लोणावला जाना बाकी था, वह पूरा बह गया। महाराष्ट्र सेवा संघ, सत्यनिकेतन, 'साधना', रावसाहब पटवर्धनजी का निजी सुलभ राष्ट्रीय मुद्रणालय, राष्ट्रभाषा प्रचार सभा, इन सब हमारी संस्थाओं का भारी नुकसान हुआ है और हरएक का नुकसान करीब लाख दो लाख रुपये का है। महाराष्ट्र सर्वोदय-मण्डल का एक विचार-शिविर उरुली कांचन में होने वाला था। वह पूना में हम अभी लगे हैं और रोज छह घंटे लोगों की मदद करने का काम, ज्यादातर सफाई का काम श्री अप्पासाहब पटवर्धन और श्री भाऊ-साहब रानडे इन दोनों के नेतृत्व में करीब-करीब पचास सर्वोदय कार्यकर्ता और शान्ति-सैनिक कर रहे हैं। सौ० मालती और मैं तो उस दिन से ही यहीं हैं।"

भारत के कृषि-मंत्री को निमंत्रण

[कृषि मंत्री ने एक वक्तव्य हाल में दिया था कि अब भारत अनाज निर्यात करने की स्थिति में है। उन्होंने यह भी बताया कि भारत हर साल अमेरिका से ४० लाख टन अनाज खरीदने के लिए बाध्य है। बाध्यता से छुटकारा पाने की एक युक्ति निकाली। कनाडा, आस्ट्रेलिया, बर्मा आदि देश से चीन बड़े पैमाने पर अनाज खरीद रहे हैं। ये देश अमेरिका से अनाज खरीद कर चीन भेजें, ताकि भारत अपनी बाध्यता से छुटकारा पा सके। यहाँ पर हम खेती और देहात के बारे में दिन-रात सोचने वाले कृषि विशेषज्ञ श्री रेड्डी ने वस्तुस्थिति देखने के लिये भारत के कृषि मंत्री को जो निमंत्रण दिया, वह यहाँ दे रहे हैं। —सं०]

खेती की उपज की गणना किस प्रकार की जा रही है, आँकड़े किस प्रकार फाइलों में इकट्ठे होकर मंत्री महोदय के पास पहुँच रहे हैं, उन आँकड़ों के बल से योजना बनाना, आयात निर्यात के बारे में सोचना आदि विचार चलते हैं। ओरिसा के कोरापुट जिले में जनवरी '५६ से मैं रहता हूँ। पर खेती की उपज की गणना करने वाला अधिकारी कभी आया हो ऐसा देखा नहीं। मैं बराबर फसल के समय देहात में ही रहता हूँ। देश भर में उपज की गणना करने वाला पटवारी है। अन्य प्रांत में भी सन् '४५ से बराबर निरीक्षण करता आया हूँ, बहुत से पटवारी घर में बैठे-बैठे आँकड़े भरते हैं।

मैं आदिवासी क्षेत्र में रहता हूँ। भारत में करीबन ३ करोड़ लोग आदिवासी हैं। यहाँ तो रोज देख रहा हूँ, अन्य प्रांतों में भी देखा, ३ करोड़ जनता ने किस प्रकार अपनी जान को भूमि पर टिका रखी है। यह हर भारत के लिए लज्जा की बात है। १५-२० तोला चावल या आटा पका कर उसमें २-३ सेर पानी मिला कर दिन भर एक व्यक्ति गुजारा करता है। कइयों के लिए १५-२० तोला चावल या आटा कभी-कभी मिलना भी असंभव है, वैसी स्थिति में जंगली कन्द-मूलों पर जीवन चलता है। गुड़ तो साल भर १-२ सेर प्राप्त हो भी जाता है। पर शक्कर के दर्शन भी नहीं होते। स्वतंत्र देश में इतने बड़े समुदाय को सामाजिक सब सहूलियतों से वंचित रख कर अनाज, शक्कर, कपड़ा आदि के लिए विदेश में बाजार ढूँढ़ना क्या न्यायोचित है? जून, जुलाई, अगस्त, सितम्बर में यहाँ का हाल देखने लायक रहता है। कृषि-मंत्री को मैं [illegible] देता हूँ कि यहाँ [illegible] नहीं है।

कृषि-मंत्री महोदयजी ने और एक वक्तव्य दिया कि भारत में भी जापान जैसा गर्भपात वैध होना चाहिए। देश में गर्भपात की छूट देकर, बढ़ती हुई आबादी रोक कर, तब अनाज और शक्कर निर्यात करके उस पैसे के सहारे देश की उन्नति करने की बात वे सोचते होंगे!

—गोविन्द रेड्डी
ग्राम-भारड़ा, पो० गुनपुर
जिला-कोरापुट, ओरिसा

कूप-निर्माण के दान का विनियोग

अ० भा० सर्व सेवा-संघ के मन्त्री श्री पूर्णचन्द्र जैन ने सघन भूदानी ग्रामदानी क्षेत्र में कूप-निर्माण के लिए प्राप्त दान के विनियोग के लिए एक परिपत्र निकाला है। उसमें निम्न बातों की तरफ ध्यान देने का संकेत किया है।

(१) कुएँ भूदान ग्रामदान के किसी सघन क्षेत्र में, अर्थात् जहाँ कई गाँवों का समूह हो, वहाँ पर बनाये जायँ। यह सघन क्षेत्र देश भर में एक-दो या अधिक हो सकते हैं।

(२) कुएँ ऐसी जमीन में खुदवाये जायँ, जहाँ आबपाशी के अन्य स्रोत या साधनों का अभाव हो।

(३) जमीन बहुत अधिक पथरीली या चट्टानवाली न हो, क्योंकि उसमें पत्थर तोड़ने वगैरह में बहुत अधिक खर्च हो सकता है।

(४) पानी की सतह भी बहुत अधिक नीची न हो, क्योंकि बहुत गहरे कुएँ बनने में भी खर्चा ज्यादा हो सकता है।

(५) कुएँ ऐसी जगह बनें, जहाँ से यथासम्भव अधिक-से-अधिक लोगों को लाभ मिल सके।

और काम को आगे बढ़ना चाहिए ।"

सभा में उसी दिन बाबा बीच-बीच में कुछ वाक्य असमिया में बोलते थे। आखिर में बताया कि—"काम भाल हब लागिब । कियना आइव्वाचेक डेका मानुह । ऐइ डेका मानुह दिलाके काम भालदरे करिब लागे । (काम अच्छा होना चाहिये, क्योंकि सेक्रेटरी जवान है। जवानों को अच्छी तरह से काम करना चाहिये ।)"

इसके बाद बाबा वापस आने के लिये प्रस्तुत हो चुके थे, तो और दो गाँवों के लोग वहाँ आये और वहाँ की भी ग्राम सभाएँ बाबा की साक्षी में हुई। बाबा विनोद में बोलने लगे—"दो शादियाँ, एक ब्राह्मण ।"

एक दिन बाबा ने 'सोरा' हाईस्कूल के छात्रों का संस्कृत वर्ग लिया । उस समय बाबा ऐसे लग रहे थे कि मानों एक प्राचीन ऋषि संस्कृत विद्या-मन्दिर में संस्कृत सीखा रहे हैं—

> नेत्रं सौजन्यसमस्त ध्येयं
> श्रीपतिरूपमजस्रम् ।
> नेयं सज्जनसंगे चित्त देयं
> दीन जनाय च वित्तम् ॥

इस श्लोक को बोर्ड पर लिख कर छात्रों से दोहराते थे । अर्थ और व्याकरण संस्कृत में ही समझाते थे । पूरा क्लास शब्द के दीर्घ-हस्व 'गेय गीता' का श्लोक बोलता था । क्लास लेते वक्त बाबा तालियाँ बजा कर छात्रों के बीच घूमते थे । अन्त में सर्वोदय के साथ उसका सम्बन्ध बता कर क्लास खतम किया ।

इन दिनों शहर से कई लोग बाबा से मिलने आये । श्री केलप्पाजी २० मई को बाबा से मिलने दुर्गापुर की ए. आई. सी. सी. के बाद सीधे आये । एक दिन साथ रहे । ३१ मई की सुबह ६ मील पदयात्रा में साथ थे । बाद में श्री नारायण देसाई काशी से शान्ति सेना विद्यालय के बारे में बातचीत करने आये थे । २-३ दिन साथ रह कर वापस गये । 'सोरा' अंचल में जब पदयात्रा चल रही थी, तब श्री नब बाबू आये । सर्व-सेवा-संघ के अध्यक्ष बनने के बाद श्री नब बाबू पहली बार ही आये थे । श्री दुगायलजी भी ४-५ दिन साथ रह कर कच्छ लौटे । ९ तारीख को श्रीमन्नारायण बाबा से मिलने आये थे । दो दिन रह कर वापस दिल्ली लौटे । आजकल यहाँ खूब बारिश हो रही है । बाबा के ४-६ दिन से अधिक का कार्यक्रम नहीं बनता । यात्रा एकदम छोटे छोटे गाँवों में चल रही है । कभी बारिश के कारण रास्तों के टूट जाने या खराब हो जाने से कहीं रुक जाना पड़ता है या मार्ग भी बदलना पड़ता है । फिर भी यात्रा उत्साह से चल रही है । बाहर से मिलने वाले भी आते रहते हैं ।

स्थानिक कार्यकर्ताओं के बारे में बाबा बार-बार कहते हैं कि स्थानिक कार्यकर्ता यदि अपने गाँव का काम संभालें तो काम आगे बढ़ेगा । 'सोरा' अंचल में कुछ अच्छे-अच्छे कार्यकर्ता निकले हैं और स्थानिक कार्यकर्ताओं ने ग्रामदान के काम को पूरा करने की जिम्मेवारी उठायी है । 'सोरा' अंचल के स्थानिक कार्यकर्ताओं में से हाईस्कूल के प्रधान शिक्षक बड़े उत्साही हैं । बाबा उनके उत्साह को देख कर कहते हैं कि—"यह ग्रामदान का सरदार है । ऐसे उत्साही मनुष्य गाँव-गाँव में निकलें तो काम बहुत जल्दी होगा ।" स्कूल के प्रधान शिक्षक का नाम है 'प्रेम बस' । बाबा कहते थे कि—"इनका नाम ही 'प्रेम' है । वे जहाँ कहीं मिलते हैं, सभा में या रास्ते में तो कहते हैं कि—"ये ग्रामदान के सरदार हैं ।" और उनसे कहते हैं, "तुमको इसके लिये समय देना पड़ेगा । जोर लगाओ, काम हो जायेगा ।"

आखिरी दिन सुबह घूम कर वापस आते वक्त स्कूल के पास पहुँचने पर बाबा कहने लगे—"इस स्थान से मेरा प्रेम हो गया । खुली जगह है और गाँव का मध्य भी है । यहाँ गाँव का केन्द्र बन सकता है और बनेगा भी ।"

बाबा आने के बाद इन दिनों में कुल ४० गाँव ग्रामदान में मिले । १० मौजों में ३५ पड़ाव रहे ।

'सोरा' से सातवें दिन तीन बजे ही बाबा निकल पड़े । छात्रावास के विद्यार्थी और शिक्षक सब कहने लगे कि आज हमारा यह स्थान खाली-खाली लगेगा । लेकिन चलता मुसाफिर ही पायेगा मंजिल और मुकाम । उपनिषद् के मन्त्रों के साथ-साथ हम सब आगे बढ़े ।

भारत के कृषि-मंत्री को निमंत्रण

[कृषि मंत्री ने एक वक्तव्य हाल में दिया था कि अब भारत अनाज निर्यात करने की स्थिति में है । उन्होंने यह भी बताया कि भारत हर साल अमेरिका से ४० लाख टन अनाज खरीदने के लिए बाध्य है । बाध्यता से छुटकारा पाने की एक युक्ति निकाली । कनाडा, आस्ट्रेलिया, बर्मा आदि देश से चीन बड़े पैमाने पर अनाज खरीद रहे हैं । ये देश अमेरिका से अनाज खरीद कर चीन भेजें, ताकि भारत अपनी बाध्यता से छुटकारा पा सके । यहाँ पर हम खेती और देहात के बारे में दिन-रात सोचने वाले कृषि विशेषज्ञ श्री रेड्डी ने वस्तुस्थिति देखने के लिये भारत के कृषि मंत्री को जो निमंत्रण दिया, वह यहाँ दे रहे हैं । —सं०]

खेती की उपज की गणना किस प्रकार की जा रही है, आँकड़े किस प्रकार फाइलों में इकट्ठे होकर मंत्री महोदय के पास पहुँच रहे हैं, उन आँकड़ों के बल से योजना बनाना, आयात निर्यात के बारे में सोचना आदि विचार चलते हैं । ओरिसा के कोरापुट जिले में जनवरी '५६ से मैं रहता हूँ । पर खेती की उपज की गणना करने वाला <u>अधिकारी कभी आया हो ऐसा देखा नहीं</u> । मैं बराबर फसल के समय देहात में ही रहता हूँ । देश भर में उपज की गणना करने वाला पटवारी है । अन्य प्रान्तों में भी सन् '४५ से बराबर निरीक्षण करता आया हूँ, बहुत से पटवारी घर में बैठे-बैठे आँकड़े भरते हैं ।

मैं आदिवासी क्षेत्र में रहता हूँ । भारत में करीबन ३ करोड़ लोग आदिवासी हैं । यहाँ तो रोज देख रहा हूँ, अन्य प्रान्तों में भी देखा, ३ करोड़ जनता ने किस प्रकार अपनी जान को भूमि पर टिका रखी है । यह हमारे भारत के लिए लज्जा की बात है । १५-२० तोला चावल या आटा पका कर उसमें २-३ सेर पानी मिला कर दिन भर एक व्यक्ति गुजारा करता है । कइयों के लिए १५-२० तोला चावल या आटा कभी-कभी मिलना भी असम्भव है, वैसी स्थिति में जंगली कन्द-मूलों पर जीवन चलता है । गुड़ तो साल भर १-२ सेर प्राप्त हो भी जाता है । पर शक्कर के दर्शन भी नहीं होते । स्वतंत्र देश में इतने बड़े समुदाय को सामाजिक सब सहूलियतों से वंचित रख कर अनाज, शक्कर, कपड़ा आदि के लिए विदेश में बाजार ढूँढ़ना क्या न्यायोचित है ? जून, जुलाई, अगस्त, सितम्बर में यहाँ [illegible]

नहीं है ।

कृषि-मंत्री महोदयजी ने और एक वक्तव्य दिया कि भारत में भी जापान जैसा गर्भपात वैध होना चाहिए । देश में गर्भपात की छूट देकर, बढ़ती हुई आबादी रोक कर, तब अनाज और शक्कर निर्यात करके उस पैसे के सहारे देश की उन्नति करने का रास्ता वे सोचते होंगे !

—गोविन्द रेड्डी
ग्राम-गारडा, पो० गुणुपुर
जिला-कोरापुट, ओरिसा

पूना की दुखदायी घटना

पूना के सर्वोदय-कार्यकर्ता श्री श्रीराम चिपळूणकर अपने पत्र में लिखते हैं :

"पूना में बाढ़ के कारण बहुत दुखदायक घटना हुई है । हमारा भी घर बह गया । कुछ सामान लोणावला भेजा बाकी था, वह पूरा बह गया । महाराष्ट्र सेवा संघ, कस्तूरबा, 'साधना', रावसाहब पटवर्धनजी का निजी सुलभ राष्ट्रीय मुद्रणालय, राष्ट्रभाषा प्रचार सभा, इन सब हमारी संस्थाओं का काफी नुकसान हुआ है और हरएक का नुकसान करीब लाख दो लाख रुपये का है । महाराष्ट्र सर्वोदय-मंडल का एक विचार शिविर उरुली कांचन में होने वाला था । वह पूना में हम अभी लगे हैं और रोज छह घंटे लोगों की मदद करने का काम, ज्यादातर सफाई का काम भी अप्पासाहब पटवर्धन और श्री भाऊसाहब रानडे इन दोनों के नेतृत्व में करीब-करीब पचास सर्वोदय कार्यकर्ता और शान्ति-सैनिक कर रहे हैं । सौ० मालती और मैं तो उस दिन से ही यहाँ हूँ ।"

कूप-निर्माण के दान का विनियोग

अ० भा० सर्व सेवा संघ के मंत्री श्री पूर्णचन्द्र जैन ने सघन भूदानी-ग्रामदानी क्षेत्र में कूप निर्माण के लिए प्राप्त दान के विनियोग के लिए एक परिपत्र निकाला है । उसमें निम्न बातों की तरफ ध्यान देने का संकेत किया है ।

(१) कुएँ भूदान ग्रामदान के किसी सघन क्षेत्र में, अर्थात् जहाँ कई गाँवों का समूह हो, वहाँ पर बनवाये जायें । यह सघन क्षेत्र देश भर में एक दो या अधिक हो सकते हैं ।

(२) कुएँ ऐसी जमीन में खुदवाये जायें, जहाँ आबपाशी के अन्य स्रोत या साधनों का अभाव हो ।

(३) जमीन बहुत अधिक पथरीली या चट्टानवाली न हो, क्योंकि उसमें पत्थर तोड़ने वगैरह में बहुत अधिक खर्च हो सकता है ।

(४) पानी की सतह भी बहुत अधिक नीची न हो, क्योंकि बहुत गहरे कुएँ बनाने में भी खर्च ज्यादा हो सकता है ।

(५) कुएँ ऐसी जगह बनें, जहाँ से यथासम्भव अधिक-से-अधिक लोगों को लाभ मिल सके ।

किसकी ज़िम्मेदारी ?

तिo नo आत्रेय

[गत २२ जुलाई को बिहार की यात्रा के सिलसिले में श्री शंकररावजी और आत्रेयजी को रेल और बस-यात्रा में संबंधित अधिकारियों ने जो गैरजिम्मेदारी बताई, वह नई बात नहीं है। आज सर्वत्र ऐसा ही हो रहा है। इसके लिये कौन जिम्मेदार है, इस पर श्री शंकररावजी के विचार पढ़िये। —सं०]

पहले से श्री ध्वजाबाबू से यह तय था कि हम साहिबगंज और मनिहारी घाट के रास्ते से जायेंगे और इसी हिसाब से भागलपुर, साहिबगंज और रानीपतरा को पत्र लिखे थे। लेकिन काशी में जो टिकट बना, वह बरौनी के रास्ते का बन गया। मुगलसराय में टी. टी. ई. ने बात की कि दूरी का जो फरक होगा, उसका चार्ज हमसे ले ले। वहाँ उसने कहा कि आगे कहीं करवा लेना!

फिर हमने पटने में पूछा, तो टी टी. ई. ने कहा कि 'एन्क्वायरी' से पूछ कर आप ही बताइये कि दूरी में कितना अंतर है; क्योंकि हमारे पास इतनी तफ़सील से जानकारी नहीं है। 'एन्क्वायरी' में जाकर पूछा तो दस मिनट खड़ा रखने के बाद (चूंकि वह फोन पर किसी अपने मित्र से किसी शादी के संबंध में बातें कर रहा था।) हमसे कहा, मैं अभी व्यस्त हूँ; मैं नहीं कह सकता! गाड़ी का समय हो गया, अतः हम वहाँ से निकल पड़े। रास्ते में गाड़ी में ही एक टी. टी. ई. आया, तो उससे कहा।

उसने जवाब दिया कि अगले स्टेशन के बाद नये टी. टी. ई. आयेंगे; उनसे करवा लेना! नया स्टेशन आया, कोई टी. टी. ई. नहीं मिला। मोकामा तक कोई नहीं मिला। मोकामा में भी नहीं मिला। जो मिला वह गाड़ी के साथ जाने वाला टी. टी. ई. नहीं था, इसलिए उसने स्वयं टिकट बनाना इन्कार कर दिया। फिर क्यूल में भी नहीं हुआ। इसी तरह रात के डेढ़ बजे हम साहिबगंज पहुँचे। वहाँ सौभाग्य से टी. टी. ई. मिला और वह भी गाड़ी के साथ चलने वाला ही मिला। उससे बात की तो बड़ी नम्रता के साथ उसने कहा कि "आप तो सुबह ६-४५ की गाड़ी में मनिहारी जायेंगे, और तब तक यहीं रुकेंगे। मैं तो गाड़ी के साथ जा रहा हूँ, सो यहीं के बाबू से बनवा लेना।"

तुरंत मैं वहाँ के बाबू के पास गया। वह कुछ निंदा शायद। लेकिन ढंग से ही बोला। कहा—"आप सुबह की गाड़ी से जायेंगे; तो सुबह बना दूँगा।" हम रात भर सोये रहे। सुबह गाड़ी में सामान रख कर उसके पास गये। संयोग से बाबू वही था, जो रात को बोला था। उसने ३-४ मिनट टिकट हाथ में लेकर इधर-उधर देखते रहने के बाद कहा कि "इसी टिकट से जाइये। 'माइलेज' में कोई खास अंतर नहीं है। रात को ही आपसे मिल कर जाने के बाद मैंने देखा था। फिर पर यह काम तो या तो शुरू के स्टेशन में होगा या अंतिम स्टेशन पर। आप बेफिक्र हो कर जाइये। रास्ते में यदि कोई पूछता है तो कहिये यही बता दे।" कुल मिला कर अंत तक भी किसी ने यह नहीं देखा, न किया। जब हम आखिरी स्टेशन कटिहार में उतरे तो वहाँ कोई टिकट देखने वाला आया नहीं, एक गाड़ी से दूसरी गाड़ी में बदल कर हम रानीपतरा चले आये।

श्री शंकररावजी को यह बात बहुत ही बुरी लगी कि प्रत्येक आदमी अपना कर्तव्य दूसरे पर टालता जाता है। कहीं पर शुरू आकर वे देखना और स्वयं यह सारा काम कर जाना और कहीं हम उसके पीछे पड़े रहें, तब भी यह टरकाता जाता!

सेवा की बात तो छोड़ दें, कर्तव्य को निभाने की भी उसमें वृत्ति नहीं है। सार्वजनिक कर्मचारियों की सेवा का यह स्वरूप ऊपर से निरापद दिखता है, पर देश की भलाई और सामाजिक नैतिकता की दृष्टि से महा भयंकर है, इसमें संशय नहीं।

दूसरी बात, रानीपतरा से भवानीपुर तक की बस-यात्रा की है। रानीपतरा से भवानीपुर मुश्किल से ३५-४० मील दूर है। जीप से सीधे आयें तो लगभग डेढ़ घंटे का रास्ता है। इस जिले में खास-कर इस रास्ते में राजकीय बसें नहीं चलती हैं। सारी प्राइवेट बसें ही हैं। कटिहार से इधर आने वाली यह अंतिम बस थी, जिसमें हम लोग चढ़े। इस बस का पूर्णियाँ में पड़ाव २५ मिनट का बताते थे। पर वह वहाँ लगभग ४० मिनट तक रुकी रही। यात्रियों में ही कोई मजाक में कहता था (जैसे ट्रेन के बारे में कहा जाता है) कि आज बस २० मिनट 'लेट' है। आपस में इस लेट होने के कारणों की भी चर्चा वे करते रहे और हँसी उड़ाते रहे। ४० मिनट के बाद बस जब रवाना हुई, तब मजे की बात यह थी कि बस के अन्दर बैठे हुए जितने लोग थे, उनसे लगभग दुगुने लोग खड़े थे। रात हो गयी थी, अँधेरा छा गया था। हवा में उमस थी। यों भी दम घुटता था। तिस पर यह भीड़! कहना न होगा कि सीटों पर जो बैठे थे, वे भी अधिकतर सीटों पर २ की जगह ३ बैठे थे। ४० सीटों की बस थी। पर अब लगभग ७०-७५ से किसी कदर कम लोग नहीं थे। कुछ लोग तो ऊपर टाप पर भी बैठे हुए थे।

जब इस भीड़ को लाद कर बस चल पड़ी, तब 'कण्डक्टर' का पैसा उगाहने का धंधा शुरू हुआ। गाड़ी यात्रियों से ठसाठस भरी थी। गाड़ी के अन्दर वह इधर-उधर चल-फिर तो नहीं सकता था। फिर भी आस-पास खड़े हुए से अपना लेन-देन शुरू करता। फिर जहाँ कहीं यात्री बीच में अपने मुकाम पर उतरते, वहीं उनसे पैसा लेता। अक्सर ऐसे लोगों के साथ पैसे के मामले में 'कण्डक्टर' की खींचातानी शुरू हो जाती, क्योंकि यात्री तो अपने मुकाम पर आ चुके होते।—इसलिए गाड़ी को रोक कर मसला हल करना पड़ता। कण्डक्टर गाड़ी रोक देता। गाड़ी रुकी कि अन्दर के यात्रियों का दम घुटने लगता। अक्सर 'कण्डक्टर' की मदद के लिये ड्राइवर साहब भी अपनी सीट छोड़ कर बार-बार दौड़ते रहते। इधर यात्री चिल्लाते, धमकाते, रोते, पीटते, गाली भी देते थे। लेकिन बस तो 'कण्डक्टर' के आदेश पर ही खुलती थी। इस तरह गाड़ी अड़ियल टट्टू की भी रफ्तार में आगे बढ़ती। मुश्किल से डेढ़ घंटे का सफर है, लेकिन पूरे चार घंटे लगे। और ४ घंटे के इस पूरे प्रवास में बस कहीं भी १०-१५ मिनट भी लगातार एक रफ्तार से नहीं चली होगी। कभी कण्डक्टर आदेश देता 'गाड़ी रोको' तो कभी यात्री चिल्ला पड़ते 'गाड़ी रोको!' दोनों की अपनी-अपनी समस्याएँ। बीच में एक गाँव में हटवाड़ा था। बस वहाँ पहुँची तो क्या कहूँ, अन्दर और ऊपर आदमियों का भरना तो वैसे ही जारी था, साथ-साथ वहाँ कपड़े की गाँठों और साग-भाजी की डालियों का लदना और शुरू हुआ। टाप पर छोटा टीला-सा बन गया। हम वास्तव में घबराये। बस पर दया आती थी कि बेचारी इतना बोझ कैसे ढोयेगी। हर क्षण शंका बनी रहती थी कि या तो टायर 'बर्स्ट' होगा या मोड़ पर बस उलटेगी और हमें बीच रास्ते में आसमान के तारे गिनते गिनते पेड़ तले सारी रात काटनी पड़ेगी। लेकिन किस्मत तेज थी। आखिर हम मुकाम पर पहुँचे। हमें सही सलामत उतार कर बेचारी बस हमारे आशीर्वाद लेकर अँधेरे शून्य में आगे बढ़ गयी।

यद्यपि बस आदि का सारा प्रबंध मनुष्य के लिये है, पर

आज सारे तंत्र में, ऐसा लगता है,
वहाँ मनुष्य का स्थान ही नहीं है।

पैसा ही सब कुछ है। साधन, मनुष्य के सुख के लिये न रह कर पैसा कमाने के साधन बन गये हैं। पैसा मिल जाय तो बस, किसी और बात की परवाह नहीं। सम्भव जनता भी इस (कु) प्रबंध की आदी हो गयी है। हर समय वह लड़ेगी, झगड़ेगी, गाली देगी, शिकायत करेगी, मार-पीट भी करेगी, वैसे ही रोयेगी-पीटेगी, लेकिन व्यवस्था में तय होकर कुछ सुविधाजनक परिवर्तन या 'एडजेस्टमेंट' कर लेने की न तो जनता की दृष्टि है, न जनता इसे अपना कर्तव्य समझती है।

समय की बरबादी की चिंता तो किसी को नहीं है। छोटी-सी बात को लेकर बस आध-आध घंटे तक भी बीच रास्ते में खड़ी रह जाय, तो भी हर्ज नहीं। न बस-चालकों को चिंता है, न जनता को।

श्री शंकररावजी को यह सारा देख कर काफी दुःख हुआ। हमारे सार्वजनिक कार्यकर्ताओं के लिए कार्यक्षेत्र कितना व्यापक है, इस संबंध में बोलते हुए दादा ने कहा कि "असल में यह सारा लोकशिक्षण का काम है। हमारे सारे पुराने तरीके और साधन छूट गये, लेकिन नये तरीकों और साधनों को सही ढंग से अपनाने की हमारी तैयारी नहीं है। हमने अभी वह सीखा ही नहीं है। लोगों को बस भी चाहिए, रेलगाड़ी भी चाहिए, हवाई जहाज भी चाहिए और हवाई जहाज बस की तरह सर्वसुलभ भी होना चाहिए। यह सारी इच्छा है जरूर, लेकिन इनका सही उपयोग करने का तमीज और धीरज ही लोगों में नहीं आया।"

दादा ने विनोद में कहा कि "अनाधार का यह भी एक नमूना है। सरकारी व्यवस्था में जो भी दोष है वे हैं, पर वहाँ कानूनी व्यवस्था है (रूल ऑफ ला), उस कानूनी व्यवस्था में मानवता गौण हो जाती है, फिर भी अराजकता से तो बचा जा सकता है। हमारा लक्ष्य तो है सारा प्रबंध प्रेमपूर्वक चले। लेकिन जब तक उसे सीखेंगे नहीं, उससे पहले कानून को भी छोड़ देंगे तो अराजकता के सिवा दूसरा कोई चारा नहीं।"

(क्रमशः)

धर्म की अफ़ीम शराब से बेहतर है!

जिनका कुदरत के साथ ताल्लुक है, जो थोड़े में तसल्ली कर लेते हैं और भूखे-मरे होने पर भी भगवान का नाम लेते हैं, वे पिछड़े हुए लोग नहीं हैं। अपने देश के बड़े शायर रवीन्द्रनाथ टागुर ने कहा है कि यूरोप का मजदूर दिन भर काम करके थक जाता है, तो थकान मिटाने के लिए रात को शराब पीता है और हिन्दुस्तान का मजदूर दिन भर की थकान मिटाने के लिए रात को भगवान का भजन करता है। इसमें शराब पीने वाले की तमद्दुन—संस्कृति—ऊँची मानी जायगी या भजन करने वालों की! हमने कई दफा लोगों को मस्त होकर गाते हुए सुना है। वे गाते समय दुनिया का दुःख दर्द बिल्कुल भूल जाते हैं।

कम्युनिस्टों ने कहा कि धर्म अफ़ीम है। ठीक है, इसे अफ़ीम कहो; लेकिन यह न भूलो कि अफ़ीम और शराब पीकर थकान मिटाने वाले की तमद्दुन से अफ़ीम का भजन करने वाले की तमद्दुन बेहतरीन है।

—विनोबा

हम आत्मपरीक्षण करें !

पु० म० सालरवाड़े

हमारे देश में कोई भूमिहीन न रहे, इसके लिए हिसाब करके पाँच करोड़ जमीन प्राप्त करने का हमने संकल्प किया था। इसमें से अब तक हम तैंतालीस एकड़ जमीन प्राप्त कर सके हैं। इसमें से आठ लाख एकड़ हम वितरित कर चुके हैं और बारह लाख एकड़ वितरण के अयोग्य ही है। साढ़े सैंतालीस सौ ग्रामदान मिले हैं, पर उनमें भी हम सर्वोदय का चित्र साकार नहीं कर पाये हैं। कुल देश की आंतरिक शान्ति के लिए अस्सी-नव्वे हजार शान्ति-सैनिकों की जरूरत है। फिलहाल इक्कीस सौ हैं। सब कार्यक्रमों में मिलाकर पाँच-एक हजार के लगभग कार्यकर्ता लगे हुए हैं।

उपर्युक्त कार्यक्रम सत्य, प्रेम, करुणा आदि मानवीय मूल्यों के आधार पर हमें सम्पन्न करना है। मौजूदा समाज में जो हिंसा है, जो शोषण की वृत्ति है, जो स्वार्थ है, जो अमानवीयता है; उसका निराकरण कर, हृदय परिवर्तन की प्रक्रिया से एक नया अहिंसक समाज स्थापन करना हम चाहते हैं। इस काम में जनता की सम्मति है, इसके प्रतीक के रूप में सर्वोदय-पात्र, सम्पत्ति दान, साधन दान आदि दान प्राप्त करने का काम भी हम करते हैं।

आंदोलन में उतार-चढ़ाव

इन सब कार्यक्रमों को हमने शुरू किया। जनता ने उनका स्वागत किया, क्योंकि भूदान मिला, संपत्ति दान मिला, ग्रामदान मिले, कुछ न कुछ परिमाण में सब कार्यक्रम हुए। लेकिन आज सब कार्यक्रम करीब-करीब रुक गये हैं। हृदय-परिवर्तन का काम भी कितना हुआ, इसकी ठीक-ठीक कल्पना हम नहीं कर सकते हैं; क्योंकि आज समाज में भ्रष्टाचार, शोषण, अनैतिकता, स्वार्थ आदि वैसे ही मौजूद हैं। सत्य, प्रेम, करुणा की झलक सामाजिक जीवन में नहीं दिखायी देती, बन्धुभाव नहीं है। यह सब देख कर आंदोलन मंद हो गया, ऐसा कार्यकर्ता महसूस करते हैं। आन्दोलन में चढ़ाव नहीं है, उतार है, ऐसा वे महसूस करते हैं। बावजूद इतनी सारी दौड़धूप के हमें सफलता नहीं मिल रही है, यह देख कर कार्यकर्ता निराश होते हैं, हतोत्साह होते हैं। ऐसे वक्त कार्यकर्ताओं को धीरज देना ही चाहिए। "हमें असफलता मिली है, ऐसा हमें नहीं मानना चाहिए। पिछले दस-बारह वर्षों में जो कार्य हुआ है, वह बहुत हुआ है और हम धीरे-धीरे अपने ध्येय की ओर बढ़ रहे हैं। हर आंदोलन में उतार-चढ़ाव तो आते हैं" इत्यादि बातें हम कहते हैं। इस तरह से कार्यकर्ताओं की क्रांतिकारिता और उनके उत्साह को कायम रखना अत्यावश्यक है। यह अगर नहीं करते हैं, तो कार्यकर्ता निष्क्रिय बन जायँ, यह असम्भव नहीं है। क्रांति में अदना-से-अदना कार्यकर्ता जो भी काम करता है, उसकी सराहना करना, योग्य मार्गदर्शन करके प्रोत्साहित करना यह महत्त्वपूर्ण है, इसको हम नजरअंदाज नहीं कर सकते।

लेकिन इतना मान कर ही अगर हम सतोष की साँस लेते हैं, तो हम मृगजल के पीछे दौड़ रहे हैं, यह मानना होगा। इसलिए अब समूची सर्वोदयी जमात को आत्म-परीक्षण करना होगा, एकाग्रता से विचार-चिंतन करके विचार-कृति-प्रवण होना होगा।

अन्य आंदोलन और भूदान-यज्ञ आंदोलन

अब तक के आंदोलन और भूदान-आंदोलन, इनमें मूलभूत फर्क है। हमारा आंदोलन मानवता को जाग्रत करने का, कुल मानव-जाति को सुख और शांति प्रदान करने वाला आंदोलन है। सत्य प्रेम-करुणा ये मानवीय मूल्य इस आंदोलन के आधार स्तम्भ हैं और ये मूल्य मानव-मात्र के लिए शाश्वत हैं। इस आंदोलन की पहले के अन्य आंदोलनों के साथ—जिनमें इन मूल्यों का आधार नहीं था और जिनमें हिंसा, कपट आदि व्यवहृत होते रहे हैं—तुलना करने से इस आंदोलन के प्रति और उन मानवीय मूल्यों के प्रति न्याय नहीं होगा। दूसरे आंदोलनों में कभी कभी तो चंद व्यक्तियों का स्वार्थ रहता था, सत्ता की भावना रहती थी, मानव-मात्र पर अपना प्रभुत्व कायम करने की अमानवीय वासना भी रहती थी। फलस्वरूप इनके मूल्य भी अमानवीय और अशाश्वत होते थे। अतः इनमें उतार-चढ़ाव आना स्वाभाविक था। समग्र दृष्टि से हम इनका अध्ययन जरूर करें, करना चाहिए, लेकिन उनकी इस आंदोलन के साथ तुलना न करें। हमारे इस आंदोलन के मूल्य ही ऐसे हैं, जिनके होते आंदोलन में उतार-चढ़ाव के लिए या अन्य कमजोरियों के लिए स्थान नहीं होना चाहिए। इस आंदोलन में भी अगर हम उतार-चढ़ाव की गुंजाइश रखेंगे, तो इस आन्दोलन के भी वही हाल होंगे, जो अन्य आंदोलनों के हुए हैं।

उतार-चढ़ाव क्यों ?

हमारे आंदोलन के बुनियादी मूल्य इतने शक्तिशाली होते हुए भी आखिर इस आन्दोलन में हम उतार-चढ़ाव का अनुभव क्यों करते हैं ? यह सवाल अपने आपसे हम पूछते हैं, तो जवाब हमें यह मिलता है कि

सत्य, प्रेम और करुणा को हमने अपने जीवन में उतारा नहीं है। क्यों ? क्योंकि सत्य, प्रेम, करुणा में अभी तक हमारी पूर्णरूपेण निष्ठा नहीं जम पायी है। हमारी निष्ठा में यह जो कमी है, इसे अनिवार्यतः हम सबको दूर करनी चाहिए।

पूज्य विनोबाजी सत्य, प्रेम और करुणा का सन्देश हमें दिया। हमने उसे सुना और समझा। इस सन्देश को सारे देश में फैलाना है, यह भी तय हुआ। तदनुसार यह सन्देश हमने देश में फैला दिया। यह सब तो हुआ, लेकिन ··· लेकिन सवाल यह आता है कि क्या वह सन्देश देश के व्यावहारिक जीवन में उतरा है ? इसका जवाब "नहीं", ऐसा ही देना पड़ता है। और हमारी असफलता है। इसकी वजह यह है कि हमने यह है कि हमने वह सन्देश सुना लेकिन क्या हमने अपने खुद के जीवन में उसे उतारा है ? क्या हम सत्य बोलने का आग्रह रखते हैं ! हमारे मुख से निकले हुए शब्दों को क्या हम अमल में लाते हैं ? भूमि वितरण जैसे कार्यों में भी क्या पक्षपात नहीं करते ? लोगों को झूठी लालच देकर हम ग्रामदान आदि कार्य नहीं करवाते हैं ? क्या हम सच्चे दिल से सम्बन्धित लोगों से प्रेम का व्यवहार करते हैं ? इनमें से अधिकतर प्रश्नों के जवाब अधिकतर कार्यकर्ता अपने हृदय पर हाथ रख कर नकारात्मक ही देंगे और इस स्थिति से निकलने के लिए हम कहेंगे कि "ज्यादा से ज्यादा, जितना हो सकता है, अमल में लाने की कोशिश करते हैं।" यह जवाब का अर्थ विचार निष्ठा की कमी का द्योतक है।

विचार-कृति-प्रवणता ही सफलता का मार्ग है

इसलिए इस अहिंसक क्रांति की सफलता के लिए सत्य, प्रेम, करुणा को हरएक कार्यकर्ता को आत्मसात् करना चाहिए, इन मूल्यों के साथ हमें तद्रूप हो जाना चाहिए इतना, कि हमारे दैनंदिन व्यवहार में भी स्वाभाविक रूप से सत्य, प्रेम, करुणा की आसपासवालों को, जनसाधारण को याने समाज को मिलनी चाहिए। इस स्थिति में जब जनता से हमारा संपर्क होगा तो स्वाभाविक ही जनता पर उसका असर होगा। हमारे जो सिद्धान्त हैं, वे जब हम अमल में लाते ही हैं तो जनता में निश्चित ही जागृति आ जायेगी और समाज-परिवर्तन संभव होगा।

इन्दौर सर्वोदय-नगर अभियान

इंदौर नगर को सर्वोदयनगर बनाने हेतु इन्दौर के सर्वोदयी और प्रमुख नागरिकों की चर्चा गत २-३ जुलाई को विसर्जन आश्रम, इंदौर में हुई। चर्चाओं का सार यहाँ दे रहे हैं।

(१) इन्दौर नगर के एक विशेष भाग को सघन क्षेत्र के रूप में चुन कर वहाँ विशेष काम किया जाय।

(२) सर्वोदय-पात्र की स्थापना पर जोर देने के साथ साथ सेवा कार्यों में—जैसे मरीजों की मदद, गरीब परिवारों में लघु-उद्योग खोलना, मुहल्लों में बच्चों के लिए संस्कार-केन्द्र और बालवाड़ी आदि सेवा प्रवृत्तियाँ खोली जायँ।

(३) विसर्जन आश्रम में पूरे नगर के सर्वोदय-कार्य का केंद्रीय कार्यालय रहे। वहाँ पूरी जानकारी एकत्रित हो और हर हफ्ते कार्यकर्ता मिल कर अनुभवों का आदान प्रदान करें। आश्रम नगर की सेवा-संस्थाओं से सम्बन्ध बढ़ाये। आश्रम नगरवालों का है, ऐसा अनुभव सबको हो, ऐसी कोशिश की जानी चाहिये।

(४) आंशिक समय देने वाले सर्वोदयप्रेमी कार्यकर्ता और सहायक मित्रों के विचार विनिमय के लिए समय समय पर सम्मेलन आदि आयोजन विसर्जन आश्रम में किये जायँ।

(५) सर्वोदयनगर अभियान के लिए अर्थ-व्यवस्था के संबंध में यह तय किया गया कि सर्वोदय-पात्र, सूताञ्जलि, संपत्तिदान के अलावा आवश्यकतानुसार धन-संग्रह के लिए अधिकाधिक लोगों के पास जाकर धन एकत्र करने का प्रयत्न किया जाय।

उपर्युक्त पाँच सर्वमान्य सुझावों के अतिरिक्त निम्न कार्यक्रम भी सुझाये गये।

(क) शराबबंदी की दिशा में प्रचार करना, तनाव, साम्प्रदायिकता, मन-मुटाव मिटाने का प्रयत्न करना। अशांति-निवारण के लिए शांति पथक बनाये जायँ। सामान्य नागरिक-कर्तव्यों का प्रशिक्षण भी नागरिकों को दिया जाय।

(ख) विभिन्न धर्मस्थलों में प्रार्थना में शरीक होना, अपनी ओर से विभिन्न क्षेत्रों में सामूहिक प्रार्थनाएँ करना आदि का साप्ताहिक आयोजन सर्वधर्म समभाव की भावना से किया जाय।

(ग) नवयुवकों के शिविर आयोजित करके बाद में सर्वोदय-कार्य में उनकी रुचि के अनुसार कार्यक्रम रखें।

(घ) अशोभनीयता निवारण कार्य को सक्रिय बनाने का ध्यान रखा जाय।

(च) समाज की प्रमुख समस्याओं का हल निकालने के लिए परिसंवाद आयोजित किये जायँ।

(छ) सप्ताह में एक दिन सभी लोग एकसाथ मिल कर एक स्थान पर सामूहिक सफाई, साहित्य प्रचार, प्रभात फेरी आदि काम करें, जिससे सबको समूह-शक्ति का भान और आत्मविश्वास हो।

पूना की बाढ़पीड़ित रचनात्मक संस्थाओं को खादी-कार्यकर्ताओं की सहायता

पूसा रोड में २० जुलाई को पंजाब, उ० प्र० और बिहार खादी एवं रचनात्मक कार्यकर्ताओं के सम्मेलन के अवसर पर निम्न संस्थाओं ने पूना में बाँध टूटने से जो भयंकर विपत्ति आयी और अनपेक्षित जान-माल की जो हानि हुई, उसमें सहयोगी रचनात्मक संस्थाओं को मदद दी।

संस्था का नाम	रुपये
(१) बिहार खादी ग्रामोद्योग संघ, मुजफ्फरपुर	५०००
(२) 'श्रमभारती' परिवार	१०१
(३) मुंगेर जिला रचनात्मक समिति	२५१
(४) खादी केन्द्रित रचनात्मक, नरसिंहपुर	५०१
(५) तिलक मैदान, खादी केन्द्रित रचनात्मक, मुजफ्फरपुर	१०१
(६) लक्ष्मीपुर सर्वोदय संघ क्षेत्र, दरभंगा	१०१
(७) सर्वोदय आश्रम, रानीपतरा	५०१
(८) सर्वोदय आश्रम, सादाबाद (मथुरा)	१०१
(९) स्वराज्य आश्रम, कानपुर	१००१
(१०) ग्राम-निर्माण मण्डल, गया	५०१
(११) सघन क्षेत्र, रतवारा	१०१
(१२) जिला सघन क्षेत्र परिषद, फैजाबाद	५०१
(१३) जिला सघन क्षेत्र परिषद, वाराणसी	१००१
(१४) ग्रामोद्योग ट्रस्ट, पुखरायाँ	२५१
(१५) खादी-ग्रामोद्योग समिति, नरेला,	१००१
(१६) गणेश सेवा आश्रम, नरवल (कानपुर)	२५१
(१७) ग्रामोदय आश्रम, नगला (मेरठ)	१०१
(१८) ग्राम स्वावलम्बी विद्यालय, रणीवाँ, नरेन्द्रदेवनगर (फैजाबाद)	२५१
(१९) नवनिर्माण संघ, उदयपुर (राजस्थान)	२५१
(२०) औद्योगिक सहयोगी समिति, सिलौथ (मुजफ्फरपुर)	१०१
कुल	११,९६९

सम्मेलन में देश की अन्य रचनात्मक संस्थाओं से अपील की गयी कि वे इस आपत्ति में दिल खोल कर मन्त्री, महाराष्ट्र सेवा संघ, ७२७ सदाशिव पेठ, पूना २ को मदद भेजें।

नशा-बंदी के लिए जगह-जगह उपवास

श्री रमावल्लभ चतुर्वेदीजी के मद्यनिषेध-आंदोलन के समर्थन में पूर्णियाँ जिले के १६ कार्यकर्ताओं ने २० जुलाई को दिन भर का उपवास रखा और इसी दिन शाम की प्रार्थना-सभा में श्री वैद्यनाथ प्रसाद चौधरी ने शराबबंदी-आंदोलन के औचित्य पर प्रकाश डाला।

जिला सर्वोदय-मंडल, मुंगेर के एक पत्र के अनुसार जिला भूदान यज्ञ कार्यालय, सर्वोदय मंडल, अन्य रचनात्मक संस्थाओं के कार्यकर्ता और कुछ विद्यार्थियों ने २० जुलाई को उपवास किया और बिहार के मुख्य मंत्री को एक निवेदन किया कि वे विचार के मान्यता के तौर मल्लेपुर की कलाली को शीघ्र बंद कर दें।

२० जुलाई को देवघर में बाबा वैद्यनाथजी के मंदिर में एक प्रार्थना-सभा आयोजित हुई। सभा में नगर के कुछ प्रमुख लोग और पंडे उपस्थित थे। इस अवसर पर श्री मोती बाबू ने शराब-बंदी पर सारगर्भित भाषण दिया। अन्त में निम्न पदों को सभा में दोहराया गया—"हे भगवान, हे शंकर बाबा, पियक्कड़ों को सद्बुद्धि दें। हे भगवान, भारत सरकार नशा की नापाक आमदनी छोड़े।"

सब लोग सभा में बिना खाये गये थे। मोती बाबू ने बिना खाये सभा में आने का उद्देश्य बतलाया। उस दिन भूदान कार्यालय और खादी-भंडार के कार्यकर्ताओं ने दिन भर का उपवास किया। इसी प्रकार ग्रामदानी गाँव डेलीशायर में उपवास और सभा हुई।

जिला सर्वोदय-मंडल, धनबाद के अध्यक्ष श्री शीतलप्रसाद तायल ने बिहार के मुख्य मंत्री को एक पत्र में लिखा है कि जिले के ११ लोकसेवकों ने श्री चतुर्वेदीजी के शराब-बंदी आंदोलन के समर्थन के लिये उपवास किया और उनसे निवेदन किया कि सारे राज्य में एक दो वर्षों में नशाबंदी लागू करने की घोषणा करें।

मुजफ्फरपुर जिला सर्वोदय-मंडल के २९ कार्यकर्ताओं ने २० जुलाई को उपवास किया और बिहार सरकार को सद्बुद्धि मिले, ऐसी भगवान से प्रार्थना की।

श्री सच्चिदानंद प्रसाद 'सेवक' ने २० जुलाई को पदयात्रा में उपवास किया और श्री चतुर्वेदीजी को सूचना भेजी कि "पाँच दिन के उपवास-यज्ञ" में भाग लूँगा।

गांधी-जयन्ती के अवसर पर खादी-बिक्री की विशेष व्यवस्था

खादी-ग्रामस्वराज्य समिति ने अपनी बैठक में पूसा रोड में निम्न प्रस्ताव सर्व-सम्मति से पास किया है :

"प्रति वर्ष हम 'गांधी-जयन्ती' को 'चरखा-जयन्ती' के रूप मानते आ रहे हैं। इसे मानने का हमारा ढंग अधिक-से-अधिक खादी बिक्री का रहा है और उसका स्वरूप खादी-हुण्डी बेचने का रहा है। हुण्डी-बिक्री में भी हम अब एक सीमा पर आ पहुँचे हैं। एक समय था, जब हम कंधे पर खादी रख कर घर-घर बिक्री करते थे। उससे हमारा सम्पर्क अधिक-से-अधिक लोगों के साथ हो पाता था। इस वर्ष जब हम खादी-काम को नया मोड दे रहे हैं, तो 'चरखा-जयन्ती' मनाने का काम भी नये ढंग से करना चाहिए। वैसे तो 'गांधी-जयंती' मनाने का समारोह सारे देश में, स्कूल, कालेज, ब्लाक, ग्राम-पंचायत आदि सभी जगह होता है। इस वर्ष भी उसी का माध्यम लेकर खादी-बिक्री के व्यापक प्रचार की योजना हम बनायें। ग्राम-पंचायत, स्कूल, कालेज, ब्लाक, जिला परिषद तथा आम जनता इन सबके बीच खादी-बिक्री के व्यापक प्रचार की योजना के रूप में 'गांधी-जयन्ती' मनाने का कार्यक्रम आयोजित किया जाय। हम अभी से उसकी तैयारी शुरू कर दें और ग्राम-पंचायत से लेकर जिला-परिषद तक इसका संगठन खड़ा करने का प्रयत्न अभी से करें प्रचार और प्रसार ऐसा हो कि प्रत्येक व्यक्ति कुछ-न-कुछ खादी खरीदें, प्रत्येक विद्यार्थी अपने कपड़ों का एक सेट खादी ले ले। गाँव-गाँव में सूत्र-यज्ञ हो और घर-घर में विचार-प्रचार हो। 'गांधी-जयंती' के समारोह में जो भी आयें, खादी वस्त्र पहन कर ही आयें। इन शर्तों का व्यापक प्रचार लोगों में अभी से करें। इस प्रचार से न केवल खादी की बिक्री बढ़ेगी, बल्कि अधिक-से-अधिक लोगों के साथ हमारा सम्पर्क बढ़ेगा।"

अर्थ-संग्रह अभियान की प्रगति

दिनांक ६ जून १९६१ से १७ जुलाई १९६१ तक विभिन्न प्रान्तों व जिलों के १०२ संग्राहकों के पास १०-१० रसीदों वाली ३४७९ तथा २५-२५ रसीदों वाली १८३१, इस प्रकार कुल ५,३१० कच्ची रसीद-बहियाँ तथा २५-२५ रसीदों वाली ४९६ पक्की रसीद-बहियाँ भेजी जा चुकी थीं। फिर भी कुछ स्थानों से और रसीद-बहियों की माँग आयी है। इससे स्पष्ट है कि अभियान उत्साहवर्धक ढंग से आगे बढ़ रहा है। अनेक संग्राहकों तथा जिला सर्वोदय-मण्डलों के पत्र आये हैं कि इस अभियान की अवधि बढ़ायी जाय।

अब तक १० संग्राहकों ने २७४० रु० २८ न० पै० की अधकटी रसीदें अथवा दाताओं की सूची आदि भेज कर लिखा है कि उनका प्रयास जारी है तथा अन्य किश्तें भी वह शीघ्र ही भेजेंगे। उन्हें बहुत अच्छे परिणाम की आशा है।

अनेक दाताओं की रकमें सीधे प्रधान कार्यालय में भी आकर जमा हुई हैं। दिनांक २७-७-६१ तक लगभग २००० रुपये अर्थ संग्रह-अभियान के आय खाते में जमा हो चुके हैं।

अखिल भारत सर्व सेवा संघ, प्रधान केन्द्र, राजघाट, काशी में न्यूनतम १११ रुपये वार्षिक सहायता देने वाले दाताओं से दिनांक २७-७-६१ तक प्राप्त "पंचवर्षीय सहायता" का विवरण यहाँ दे रहे हैं :—

प्रान्त	दाता-संख्या	प्राप्त रुपये
बंगाल (कलकत्ता)	६७	८,७४५
दिल्ली	२	२२२
पंजाब	१	१११
बिहार	१	१११
बम्बई	२	२२२
कुल	७२	९,१११

इनके अतिरिक्त भी पंचवर्षीय सहायता पत्र एवं रकमें शुद्ध खादी भण्डार, कलकत्ता में एकत्रित हुई तथा हो रही हैं।

—श्यामाचरण शास्त्री,
कार्यालय मंत्री
अ० भा० सर्व सेवा संघ, काशी

समाचार-सार

—भरतपुर के खादी-समिति के अर्थ-संग्रह संबंधी एक बैठक में श्री गोकुल भाई भट्ट ने कहा कि आज का शासन-लोकतंत्र नहीं है, पार्टी-तंत्र है।

—कल्याणपुर में ९ जुलाई को लोक-शिक्षण सर्वोदय-विचार सहजीवन शिविर में कानपुर के श्री विनय अवस्थी और 'प्रताप' के सहसम्पादक श्री रामनारायण आदि महानुभावों ने मार्गदर्शन किया। शिविर में २५ व्यक्तियों ने भाग लिया।

—जिला सर्वोदय मंडल, देहरादून ने सरकार की मद्यनिषेध-नीति पर विचार किया और एक पत्रक प्रकाशित किया, जिसमें शराबबंदी पर विचार है।

संपादक : सिद्धराज ढड्ढा

वाराणसी : शुक्रवार | १८ अगस्त '६१ | वर्ष ७ : अंक ४६

विज्ञान-युग में अध्यात्म : १

• दादा धर्माधिकारी

जहाँ राजनीति होती है वहाँ लोकसत्ता बहुत कम होती है, इसी तरह जहाँ धर्म होता है वहाँ अध्यात्म की मात्रा अत्यल्प होती है। विनोबा आज इस निर्णय पर पहुँचे हैं कि राजनीति और धर्म के दिन अब समाप्त हो गये हैं। यह एक बहुत महत्त्व की बात है। यह युग धर्म का नहीं, क्योंकि धर्म का सम्बन्ध पुनर्जन्म और परलोक के साथ है, जब कि अध्यात्म का सम्बन्ध पुनर्जन्म या परलोक के साथ नहीं। धर्मों में विवाद होते हैं, धर्म सम्प्रदाय में परिणत होते हैं, धर्म-धर्म के बीच कलह होता है। अध्यात्म में इसके लिए स्थान नहीं।

विज्ञान ने आज दुनिया को एकाएक छोटी बना दिया है। विज्ञान चाहे सारी दुनिया को एक कर दे, पर धर्म दुनिया को विभक्त ही रखे ऐसी परिस्थिति जहाँ तक रहेगी, वहाँ तक विज्ञान सफल नहीं हो सकता। विज्ञान की सफलता के लिए आज किसी ऐसी शक्ति की आवश्यकता है कि जो मनुष्य के साथ मनुष्य का आन्तरिक सम्बन्ध स्थापित कर, परस्पर एक-दूसरे का हृदय मिला दे।

मनुष्य की प्रतिष्ठा

मनुष्य की प्रतिष्ठा की आज सर्वत्र चर्चा है। लोकसत्ता किसलिए? मनुष्य की प्रतिष्ठा के लिए। साम्यवाद किसलिए? मनुष्य की प्रतिष्ठा के लिये। समाजवाद किसलिए? मनुष्य की प्रतिष्ठा के लिए। परन्तु इन सबने मनुष्य की प्रतिष्ठा को एक 'केमिकल सब्स्टन्स'-रासायनिक द्रव्य-माना है। यह एक महान् भ्रम है। जड़ पदार्थ को सुरक्षित रखने के लिए उसे किसी संरक्षक द्रव्य में रखते हैं। सबसे बड़ा संरक्षक द्रव्य आल्कोहोल है। आल्कोहोल में रखने से उस वस्तु को दीर्घ काल तक सुरक्षित रख सकते हैं।

मनुष्य की प्रतिष्ठा को भी ऐसे विभिन्न प्रकार के 'आल्कोहोल' में रखने की चेष्टा की गयी है। सत्ता, सम्पत्ति, सामाजिक सम्मान, राष्ट्रीयता, साम्प्रदायिक अहंता इत्यादि उन्मादक द्रव्यों द्वारा मनुष्य की प्रतिष्ठा को सुरक्षित रखने की कोशिश आज तक होती रही है, पर उसमें सफलता नहीं मिली।

विज्ञान में आशय समझने की शक्ति का अभाव

आज अब हम उसका संरक्षण किस प्रकार करेंगे? विज्ञान ने तो जवाब दे दिया है: 'मैं आपको दुनिया दिखा सकता हूँ, उसके आवरण को दूर कर सकता हूँ, सारी सृष्टि को आपके समक्ष उपस्थित कर सकता हूँ, परन्तु उसे समझा नहीं सकता।' सृष्टि के आशय को स्पष्ट करने की शक्ति विज्ञान में नहीं। इस सम्बन्ध में विज्ञान बिल्कुल तटस्थ है-जितने अग्नि, वायु, आकाश तटस्थ हैं, उतना ही विज्ञान तटस्थ है।

इसीलिये आज तक ऐसा माना गया है कि विज्ञान सृष्टि का आविष्कार करता है और राजनीति अनुकूल परिवर्तन करने की कोशिश करती है। इस प्रकार इन तीनों में मानवीय विभूति के तीन टुकड़े हो गये हैं। वैज्ञानिक, दार्शनिक और क्रान्तिकारी में सामंजस्य की, अनुबंध की आवश्यकता है। इस सामंजस्य का आधार क्या है?

आप और मेरा अध्यात्म

प्रसिद्ध अस्तित्ववादी कामू कहता है कि मैं दूसरा कुछ नहीं जानता। मैं मात्र इतना ही जानता हूँ कि वस्तु है, जीवन है। अस्तित्व ही जीवन का सार है, अस्तित्व ही जीवन का आशय है, जीवन में कोई उदात्त हेतु या आदर्श नहीं। फिर भी मुझे इतना विश्वास है कि दुनिया में कोई-न-कोई ऐसी चीज है, जिसमें कुछ आशय है, तथ्य है, अर्थ है और वह वस्तु मनुष्य है, क्योंकि जीवन के आशय की खोज केवल मनुष्य ही करता है। मनुष्य का ऐसा आग्रह है कि जीवन में, सृष्टि में आशय होना चाहिए। इस आशय की शोध किये बिना मनुष्य को संतोष नहीं होता।

जीवन के इस उपादान (कन्टेन्ट) की, सार की खोज को मैं अध्यात्म कहता हूँ। बाकी उस अध्यात्म को तो जिसे उसकी अनुभूति हो, वही बता सकता है। मैं उसकी बात करूँ तो इसके समान होगा कि मंडन मिश्र के दरवाजे पर वेद के प्रामाण्य के विषय में तोता मैना वाद-विवाद कर रहे थे। मैं तो आपके सामने ऐसे ही अध्यात्म की बात करूँगा, जिसका प्रत्यक्ष दर्शन और प्रतीति आप मुझ जैसे साधारण मनुष्य को भी हो सकती है। मनुष्य का जीवन किस द्रव्य का बना है, इसकी यह शोध है।

मूलभूत द्रव्य प्रेम

हमने मान लिया है कि केवल अस्तित्व ही सत्य है। अस्तित्व ही वस्तु-स्थिति है। परन्तु यह किस वस्तु का बना है? इसकी खोज से एक बात निष्पन्न होती है कि मनुष्य का जीवन सम्बन्धों का बना है और सम्बन्धों का आधार, आशय और मूलभूत द्रव्य प्रेम है।

जहाँ प्रेम या स्नेह है, वहाँ जीवन का विकास होता है। जहाँ प्रेम या स्नेह कलुषित होता है, दूषित होता है वहाँ जीवन का ह्रास होता है।

हम आज इस निर्णय पर पहुँचे हैं। क्या हम प्रेम का विकास विज्ञान कर सकता है? विज्ञान इसके विकास के लिये अनुकूल या प्रतिकूल परिस्थिति निर्माण कर सकता है, परन्तु विज्ञान द्वारा उपस्थित परिस्थिति का लाभ उठाने की शक्ति मनुष्य में होनी चाहिए। यह शक्ति मनुष्य में कब आती है? जब मनुष्य में प्रेम अधिक हो और विकार कम हो तब। प्रेम की बात है, प्रेम का सबसे बड़ा लक्षण है कि विकार वासना जितनी ही अधिक होगी, प्रेम उतना ही क्षीण होगा। यह बात राधा-कृष्ण से लेकर लैला मजनूँ तक सर्वत्र सत्य है। विकार वासना जितनी ही कम, प्रेम उतना ही अधिक विकसित, अधिक परिशुद्ध।

इसलिए विज्ञान की सहायता से हम ऐसी परिस्थिति निर्माण करना चाहते हैं कि जिसमें विकार या वासना के लिए अवसर कम हो और प्रेम के स्वाभाविक प्रवाह में कोई विघ्न न हो।

प्रेम के स्वाभाविक प्रवाह के लिए किसी अवसर की आवश्यकता नहीं होती। केवल इतना ही पर्याप्त है कि विकार का अवसर कम हो। प्रेम का यह स्वभाव ही है कि वह व्यापक होता है। इसमें जितनी अव्यापकता आती है, यह जितना सीमित या परिमित बनता है, वह किसी बाह्य निमित्त से ही। बाहर के इन कारणों को मार्ग से दूर करते ही प्रेम का स्वाभाविक प्रवाह अस्खलित रूप से बहने लगेगा। इन बाह्य कारणों को किसी ने दैत्य कहा, किसी ने शैतान कहा, किसी ने उसे आसुरी सम्पत्ति का नाम दिया। मनुष्य का स्वभाव है कि वह परिमित शैतान को पसन्द करता है।

ब्रह्म सत्यं जगत् स्फूर्तिः जीवनं सत्यशोधनम्

भूदानयज्ञ

लोकनागरी लिपि*

सर्वोदय विश्व-मंगल का ध्येय

हम लोगों ने शब्द बहुत व्यापक लिया है। 'सर्वमानव-हित' कहना भी हमें अच्छा नहीं लगता। 'सर्वभूतहित' यही भाषा हमारे हृदय को जंचती है, हृदयंगम होती है। लेकिन मानव का कार्य मानव से ही शुरू होगा। इसलिए सर्वमानवहित सिद्ध करने का प्रत्यक्ष कार्य हम कर सकते हैं। उसी में से भगवान की कृपा से सर्वभूतहित सिद्ध होगा। यह एक ऐसा ध्येय है, जिससे हरएक नवयुवक को उत्साह मालूम होना चाहिए। हिन्दुस्तान में स्वराज्य नहीं था, दूसरों का राज्य था। अब वह दबाव उठ गया है। इससे एक निषेधक कार्य हुआ है, लेकिन अब कुछ विधायक ध्येय हमारे सामने होना चाहिए। अपने ऊपर का एक दबाव हटाना है, इस निषेधक, कॉमन, समान ध्येय के कारण जिस प्रकार सब लोग मिल-जुल कर काम कर रहे थे, उसी प्रकार अब हमें एक विधायक और विश्वमंगल का ध्येय सिद्ध करना है, 'सर्वोदय' साध लेना है, यह बात नवयुवकों के सामने रहनी चाहिए, और वही ध्येय आंखों के सामने रख कर उन्हें अपनी सारी शक्ति, हमारा सारा मनन, सारा चिंतन, सारा आचरण और सारा साहित्य इसी ध्येय की सिद्धि के लिए खर्च करना चाहिए। —विनोबा

* लिपि-संकेत : ि = ी ; े = ै ख = ख संयुक्ताक्षर हलंत चिह्न से।

• टिप्पणी •

'काला कानून' रद्द हो

पिछले साल जब पंजाब सरकार ने अपने प्रांत की विधान-सभा में उस कानून का मसविदा पेश किया था, जिसके अनुसार वे 'बेगार' को कानूनी स्वरूप दे रहे थे, तब हमने 'भूदान-यज्ञ' में उसका विरोध किया था। यह कानून इस वर्ष फरवरी में लागू हुआ और उसके बाद जब पिछली मई में पंजाब के रोहतक जिले में उसका उपयोग करके लोगों से जबरदस्ती बेगार लेने की कोशिश की गयी तब भी हमने अपने विचार दोहराये थे ('भूदान-यज्ञ', २१ जून ६१, पृष्ठ-२)।

पंजाब सरकार के इस कानून की प्रति अब हमारे सामने है। इस कानून के अनुसार "१६ वर्ष से कम और ६० वर्ष से ऊपर की उम्र के लोगों को और स्त्रियों को छोड़ कर हर व्यक्ति से प्रति तीन महीने में ५ दिन के हिसाब से 'सार्वजनिक काम के लिए' बेगार ली जा सकती है।" 'सार्वजनिक काम' से मतलब 'पानी के निकास (ड्रेनेज) और दलदल रोकने संबंधी किसी भी काम से है', ऐसा कानून में स्पष्ट किया गया है। इस प्रकार के सार्वजनिक काम की आवश्यकता और परिस्थिति निर्माण हुई है, इसका फैसला करने का अधिकार जिला मजिस्ट्रेट को दिया गया है और काम की तफसील तय करने का और काम लेने का अधिकार क्षेत्र के विकास अधिकारी को। बूढ़ों, बच्चों और स्त्रियों के जो अपवाद ऊपर गिनाये गये हैं, उनके अलावा और एक अपवाद 'शारीरिक या मानसिक रोग से पीड़ित' लोगों के लिए है, पर यह आश्चर्य की बात है कि उक्त रोग ऐसा है या नहीं, जिसके कारण रोग से पीड़ित व्यक्ति काम करने में असमर्थ है, इसका फैसला करने का अधिकार किसी डाक्टर को नहीं, बल्कि विकास-अधिकारी को सौंपा गया है।

इस कानून के अन्तर्गत लोगों से जो बेगार ली जायगी, उसके लिए उन्हें कोई मुआवजा नहीं मिलेगा, ऐसा कानून में स्पष्ट किया गया है। बेगार दिन में ८ घण्टे ली जा सकेगी और अगर कोई व्यक्ति यह बेगार देने से इन्कार करता है या उसे टालता है तो उस पर एक सौ रुपये तक जुरमाना किया जा सकेगा। विकास अधिकारी को यह सत्ता दी गयी है कि 'जिस किसी आदमी के बारे में उसे यह शक हो कि उसने इस कानून की अवहेलना की है', उससे पाँच रुपया हर्जाना लेकर वह उसे छोड़ सकता है।

सदियों से शोषित और गुलाम देश को अगर ऊँचा उठाना है तो इसमें दो रायें नहीं हो सकतीं कि देश के हर नागरिक को देश के लिए शारीरिक या बौद्धिक किसी भी प्रकार की सेवाएँ यथाशक्ति देनी चाहिए। राष्ट्र का काम नागरिक का खुद का ही काम है। यह भी सही है कि हमारे देश में इस प्रकार सार्वजनिक कामों को अपना समझ कर उनमें अपना योगदान देने की वृत्ति कम है, बल्कि लोग इस प्रकार के काम को टालना ज्यादा पसन्द करते हैं। यह सब कुछ होते हुए भी, पंजाब सरकार ने जिस तरह कानून के जरिए लोगों से मजबूरन काम लेने का तय किया है, हमारी दृष्टि में उसका किसी भी तरह बचाव नहीं किया जा सकता। देश के काम के लिए लोगों में प्रेरणा भरना, उन्हें उसके लिए प्रोत्साहित करना बिलकुल दूसरी चीज है और उनसे जबरदस्ती बेगार लेना दूसरी! अच्छे-से अच्छे काम के लिए भी व्यक्ति को दण्ड के भय से मजबूर करना व्यक्तिगत स्वातंत्र्य के बुनियादी अधिकार के सर्वथा विपरीत है और हमारी नम्र राय में उसका बचाव किसी भी दलील से नहीं किया जा सकता आम लोगों में सार्वजनिक काम में योगदान करने की भावना क्यों नहीं है, इसके बारे में भी कानून बनाने वालों को थोड़ी गहराई से सोचना चाहिए। जिस देश में अमीर-गरीब का इतना भेद हो, जहाँ अमीरों और शक्तिवानों द्वारा गरीबों का शोषण किये जाने पर कोई रुकावट न हो, जहाँ बावजूद देश की असीम गरीबी और दरिद्रता के गरीबों की आँखों के सामने ऊपर के तबके के लोग बेशर्मी से विलासी जीवन बिताते हों, ऐसे मुल्क में हम आम जनता से यह आशा कैसे कर सकते हैं कि वह देश को अपना देश समझे और उसके लिए काम करने की उनमें प्रेरणा हो! चूँकि कानून बनाने की शक्ति ऊपर के तबके के लोगों के हाथ में है, इसलिए इन कारणों को दूर करने के बजाय कानून की शक्ति का उपयोग करके वे लोगों से जबरदस्ती 'देश-हित' का काम करवाना चाहें, यह हमारी दृष्टि से अत्यन्त अदूरदर्शितापूर्ण कदम है और नेतृत्व का दिवालियापन जाहिर करता है।

पंजाब सर्वोदय-मण्डल ने अभी कुछ अरसे पहले इस कानून का अध्ययन करके इसके बारे में अपनी राय जाहिर करने के लिए एक उप-समिति नियुक्त की थी। इस उपसमिति ने सर्व-सम्मति से यह जाहिर किया है कि पंजाब का उक्त कानून

> सर्वोदय-सिद्धांतों और जन-सत्तीय पद्धति के विरुद्ध तथा हानिकारक है और इससे देश की जनता में शरीर-श्रम के कामों के प्रति आदर और रुचि पैदा करने तथा सेवा की भावना भरने के स्थान पर विद्रोह की वृत्ति और असहयोग की प्रेरणा पैदा होगी। ... जनता पर भरोसा रख कर उसे उसकी शक्ति का भान कराने से और उसके अभिक्रम को जगा कर ही सार्वजनिक कार्य सफलता से हो सकते हैं।"

हम पंजाब सर्वोदय-मण्डल की उप-समिति की इस राय से सर्वथा सहमत हैं और आशा करते हैं कि पंजाब सरकार इस "काले कानून" को अविलम्ब रद्द करेगी।

—सिद्धराज

विनोबा-पदयात्रा वृत्त

असम में स्त्री-शक्ति

असम की स्त्री शक्ति पर विनोबाजी की बहुत श्रद्धा है। यहाँ की बहनें हैं भी शक्तिशाली और समर्थ। सर्वोदय आन्दोलन का और बाबा की यहाँ की यात्रा का नेतृत्व बहनों ने ही सम्भाला है। इन बहनों से बहुत उम्मीद की जा सकती है। बाबा ने तो कहा कि 'नेशनल इन्टीग्रेशन' (राष्ट्रीय समरसता) का काम ये बहनें ही कर सकती हैं। इसके लिए इस प्रदेश की बहनें अन्यत्र जायँ और अन्य प्रदेश की बहनें यहाँ आकर काम करें, इसकी बहुत आवश्यकता है। हिंदुस्तान में कुछ संस्थाएँ ऐसी भी हैं, जो यह काम कर रही थीं। साबरमती का आश्रम, रवीन्द्रनाथ का शान्ति-निकेतन, श्री अरविंद का आश्रम और श्रद्धानन्द का आश्रम, ये संस्थाएँ यह काम कर रही थीं। अब तो ऐसी संस्थाएँ दिखाई नहीं देतीं। इन्दौर में यह काम हो सकता है। असली जिम्मेदारी बहनों पर ही है और अब सिर्फ 'नेशनल इंटीग्रेशन' (राष्ट्रीय समरसता) ही नहीं, तो 'इंटरनेशनल इंटीग्रेशन' (अन्तर्राष्ट्रीय समरसता) करनी है।

कुरान का संकलन पूर्ण

विनोबाजी का 'कुरान शरीफ' के चुनाव का काम, जो एक साल से चल रहा है, और खास जिसके लिए वे अब्दुल्लाभाई साथ में आये हैं, करीब-करीब पूरा हो गया है। अभी अनुवाद का काम शेष है।

× × ×

कुछ दिन पूर्व विनोबाजी के कमर में दर्द था। कहीं मोच आयी थी। डॉक्टर ने उनको किसी एक जगह आराम लेने की सलाह दी। जवाब में बाबा ने कहा—"दर्द चलने से नहीं, बैठने से होता है।" यात्रा जारी रही। जयदेवभाई मालिश करते थे। ३-४ दिन में आराम हुआ।

× × ×

बाबा का फिलहाल 'नामघोषा' का गहराई से अध्ययन चल रहा है। बीच-बीच में 'कीर्तन घोषा', 'भक्ति रत्नाकर' और 'दशम' भी देखते हैं। असम में ये चार ग्रंथ वैष्णव-सम्प्रदाय के चार स्तम्भ माने जाते हैं।

—कालिंदी सरवटे

भारतीय बुद्धिजीवियों का उत्तरदायित्व

उ० न० ढेबर

मेरा यह लेख पाठकों को शायद व्यक्तिगत तथा सामाजिक नैतिकता पर एक निबंध ही लगेगा। मैं यह भी जानता हूँ कि इसे पढ़ कर वे मुझे पुराणपंथी अथवा धर्मान्ध भी समझ लें, फिर भी अश्लील पोस्टरों के विरोध में विनोबाजी ने जो आन्दोलन शुरू किया है, उसकी जिस प्रकार समाचार-पत्रों में खिल्ली उड़ाई जा रही है, और उसका मजाक किया जा रहा है, उस पर मैं अपने हृदय की वेदना और दुःख प्रकट किये बगैर नहीं रह सकता।

हमें यह बात ध्यान में रखनी चाहिए कि विनोबाजी न तो निरे भावुक व्यक्ति ही हैं और न दुराग्रही ही। उनकी प्रत्येक बात में विज्ञान तथा मानसशास्त्र का तत्त्व रहता है। वे न तो किसी के साथ पक्षपात करते हैं और न उनमें किसी भी प्रकार की संकीर्णता है। सम्भवतः वे ही एक ऐसे भारतीय हैं, जो विश्व की परिस्थितियों के अनुकूल आज जय जगत् की भावना को नियान्वित करते हैं। वे किसी भी भांति पुरातनवादी नहीं हैं।

भारतीय स्वातन्त्र्य की लड़ाई में वे सदैव प्रथम पंक्ति में रहे हैं। हम अधिकांश व्यक्तियों की अपेक्षा वे अधिक विद्वान तथा जानकार हैं। अतएव भारतीय बुद्धिजीवियों का यह कर्त्तव्य है कि विनोबाजी जो कुछ कहते हैं, उसको समझने का वे प्रयास करें। शायद हम पूर्णतया उनके साथ सहमत न हो सकें, परन्तु उनका हमारे हित के लिए सम्पूर्ण समर्पण ही हमसे अपेक्षा करता है कि हम उनके विचारों को सम्मानपूर्वक सुनें!

इस प्रश्न पर कई दृष्टिकोणों से विचार किया जा सकता है।

सावधानी के संकेत चिह्न

यह सत्य है कि मानव-परिवार अविभाज्य है। यह भी सत्य है कि इनके सभी सदस्यों को या तो साथ तैरना होगा या फिर एकसाथ डूब जाना पड़ेगा। विश्व के सभी राष्ट्रों की निकटता बढ़ने तथा दिन-प्रतिदिन की मानवीय प्रगति के कारण आज यह और भी अधिक सत्य बन गया है, परन्तु हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि इस मानव-परिवार की अपनी कई जड़ें हैं। ये जड़ें इस परिवार के हर भाग के इतिहास *और संस्कृति में मिल सकती हैं। यह कोई* दैविक घटना नहीं है। जहाँ कहीं भी जीवन है, वहाँ अनुभव विद्यमान होगा ही। जिस प्रकार हम लोग अपने पीछे आनेवाली संतति को खतरों की चट्टानों से बचाने के लिए कई सावधान करनेवाले बड़े-बड़े प्रकाश स्तम्भ छोड़ जाना चाहते हैं, उसी प्रकार हमारे पूर्वज भी हमारे हित का ध्यान रख कर हमें आगाह करने के लिए कुछ संकेत-चिह्न छोड़ गये हैं। उन्होंने अपने जीवन के अनुभवों से कुछ सीखा था। वे चाहते थे कि हम लोग फिर से वे ही गलतियाँ नहीं करें, जिन्हें वे कर चुके थे और कोई ऐसा गलत कदम न उठायें, जो हमें बरबाद कर दें।

> **विनोबाजी तो केवल हमारी पैतृक सम्पत्ति-रूपी विचारों को ही निकाल कर हमारे सामने पेश कर रहे हैं। ये विचार भारतीय संस्कृति और इतिहास की थाती हैं।**

मानव परिवार इन जड़ों से ही पौष्टिक आहार पाता रहा है, शांति, सौन्दर्य, कीर्ति कानून, समाज-व्यवस्था, विज्ञान, तकनीकी तथा और जो भी मूल्य मानव समाज के लिए हम निर्धारित करते हैं, वे इन्हीं के कारण प्राप्त हो रहे हैं। इस बात से इन्कार नहीं किया जा सकता है कि इसमें कुछ हानिकारक तत्त्व भी हो सकते हैं। उन तत्त्वों ने ही हमसे संघर्ष शोषण, दुराग्रह स्वार्थ तथा अन्य कई ऐसे ही अनिष्ट विकार उत्पन्न किये हैं। परन्तु हम हमारी इस प्राचीन परम्परा को केवल इसलिए ही नष्ट नहीं कर सकते कि इसका कुछ अंश दोषयुक्त है। उतने से विकृत अंश को हम सरलतापूर्वक हटा सकते हैं।

नवीन मूल्यों के प्रति अन्धभक्ति

भारतीय बुद्धिजीवियों का एक भाग आज या तो पाश्चात्य लोकतान्त्रिक सभ्यता की ओर आकृष्ट होकर अथवा पूर्व के साम्यवादी विचारों से प्रभावित होकर जीवन के तथाकथित नवीन मूल्यों के प्रति स्वयं को समर्पित कर चुका है। जीवन का वह तरीका भी ठीक हो सकता है। परन्तु कोई कारण नहीं कि हम भारतीय हमारा अपना तरीका ही नहीं अपनायें, जो हमारी अपनी संस्कृति पर आधारित है, जिसकी जड़ें अधिक पुष्ट, उपादेय, सजीव और समर्थ हैं।

> **जो आदमी कहता है कि आज की सभ्यता के बदले में अपनी चीज को ही छोड़ देना चाहिए, वास्तव में आधुनिक अर्थशास्त्र को जानता ही नहीं है।**

प्रकृति की सारी योजना सपूर्ण होती है। उसमें कोई चीज बेकार नहीं होती। इसलिए चेतनावान बुद्धिशील मानव को हर चीज का गहरा अध्ययन करना चाहिए, परन्तु यदि बुद्धिहीन समानता को ही अच्छा समझा जाता है, तो हम समानता को कभी नहीं प्राप्त कर सकते। यह प्रकृति की योजना के विरुद्ध है। प्रकृति में जहाँ समता होती है, वहाँ पर भी विविधता का भी अन्त नहीं है।

हमें भूलना नहीं चाहिए कि यह जो जीवन का नया तरीका बताया जा रहा है, इसे अभी अपनी योग्यता सिद्ध करना शेष है। निःसन्देह इसकी कुछ बातें ऊपर जरूर अच्छी हैं, परन्तु दूसरी कई बातें ऊपर से जितनी अच्छी प्रतीत होती हैं, वास्तव में वे वैसी नहीं हैं। तो वह अपूर्ण ही है, उसमें कई भूलें हैं। कई अच्छी बातें लापता हैं। उनके स्थान पर कुछ बुरी हैं। और कई बहुत दुखदायी मूर्खताएँ उसमें हैं, जो कि प्रायः हर नये काम में होती हैं। *अभी तो वह नई चीज है; फिर भी* उसमें कुछ ऐसी बातें हैं, जो उसके लिए आत्मघातक हैं। आधुनिकता और परिपक्वता पर्यायवाची शब्द नहीं हैं। असहनशीलता, दम्भ, नृशंसता आदि जो कुछ हम देख रहे हैं, वह हमारी प्रगति की अपेक्षा अपूर्णता का ही लक्षण है। जिन लोगों ने आधुनिक जीवन के नये तरीके को अपनाया है, उनमें भी अनेक विचारशील उसके बारे में चिंतित हैं और वे अपने बचाव के तरीकों की खोज में लगे हुए हैं।

इसके अनेक गुणधर्मों में से जो एक बात इन लोगों को अधिक चिन्तित कर रही है, वह यह है कि जीवन के इस तरीके ने जो असीम फुरसत और अपरिमित तृष्णा उत्पन्न कर दी है, उसका क्या होगा? *जीवन के इन नवीन मूल्यों में से क्या* छोड़ा जाना चाहिए और क्या स्वीकार करना चाहिए, यह तो तभी कहा जा सकता है, जब कि यह पूर्णत्व प्राप्त कर ले। जो हिन्दुस्तानी जिन्दगी के इस तरीके को अंगीकार करने को अधीर हो रहे हैं, उन्हें अभी अपने आपको जरा रोकना चाहिए। तब तक जो बातें वास्तव में उपयोगी तथा सीखने योग्य हैं और भारतवर्ष के लिए आवश्यक हैं—जैसे (१) श्रम (२) विज्ञान और (३) यन्त्र विज्ञान-को ठीक रूप से ग्रहण कर सकेंगे। मैं और अधिक स्पष्ट करूँ। भारतीय संस्कृति और जीवन के किसी अंश को नष्ट करने की भूल यदि हम करेंगे तो उससे हमारी हानि ही होगी। भारतीय समाज कभी अपनी बुनियाद को नष्ट करना पसन्द नहीं करेगा। भारतीय बुद्धिजीवी भी वही गलती करेंगे, जो दूसरों ने की है। हर देश की जनता की अपनी एक भावना होती है और विशेषता से बड़ा प्रेम होता है। उन कौमों ने इन दोनों चीजों के महत्त्व को पूरी तरह नहीं समझा था।

पाशविक प्रवृत्तियों से ऊपर उठने की आवश्यकता

वस्तुतः मनुष्य भी एक सभ्य पशु है। उसमें पशुओं की सभी प्रवृत्तियाँ भूख, *काम, भय और स्वत्व समान रूप से* विद्यमान हैं। भारतवर्ष ही नहीं, वरन् अन्य सभी देशों के मनुष्य इस बात को भली भाँति समझते हैं कि जीवन के इस निम्नतम स्तर पर रह कर विकास नहीं कर सकते। यदि मनुष्य अपना आत्मिक विकास करना चाहता है, तो उसे इन पशु सामान्य प्रवृत्तियों के ऊपर उठना होगा, नहीं तो फिर वह निरा पशु बना रहेगा। हमारे पूर्वजों ने अथक परिश्रम करके इन निम्न प्रवृत्तियों से ऊपर उठने का एक रास्ता खोज निकाला। उन्होंने इसे अधर्म अथवा पाप कहा और परधर्म और स्वधर्म से अलग रखा। अधर्म तो सभी के लिए अधर्म था। असत्य, हिंसा, व्यभिचार, चोरी, मद्यपान सभी व्यक्तियों द्वारा प्रत्येक *परिस्थिति में बुरे ही समझे गये।* ये बातें किसी पाठ्य-पुस्तक के रूप में प्रकाशित नहीं की गयी। जिन्होंने भारतीय इतिहास का अध्ययन किया है, वे जानते हैं कि ये वे पाँच रत्न हैं, जिन्हें भारतीय समाज के निर्माताओं ने कई शताब्दियों के संघर्ष में भी बचाये रखा।

सिनेमा, समाचार-पत्र और रेडियो ये प्रचार-प्रसार के बड़े शक्तिशाली माध्यम हैं, इससे कोई इन्कार नहीं करेगा। परन्तु क्या यह हमारा कर्तव्य नहीं है कि इनके द्वारा दी गयी शिक्षा लोगों के मस्तिष्क पर कैसा प्रभाव डालती है, इसका भी विचार किया जाय? जिस प्रकार हम भारतीय कन्याओं को शिक्षा देंगे, वैसे ही भारत का भविष्य भी बनेगा। यह बात बिल्कुल सरल और प्रकट है। विनोबाजी को भविष्य की चिन्ता है। तब क्या इस भविष्य को यदि कोई चीज भारत को खतरे में डालती है, तो इसकी चिंता उनको नहीं होगी? क्या भारत का भविष्य निर्धारित करने की जिम्मेदारी 'बाक्स आफिस के' एजेन्टों और विज्ञापन-दाताओं के हाथों में सौंप दी जानी चाहिए?

आज भारतवर्ष के सामने दो रास्ते हैं। एक तो यह कि भारत अपनी

खेती का सही और वैज्ञानिक तरीका : एक तुलनात्मक अध्ययन

['भूदान-यज्ञ' के ता० ४ अगस्त ६१' के अंक में हमने "साथियों और मित्रों को रणांगण में आने का निमंत्रण", शीर्षक से श्री रेड्डी का लेख प्रकाशित किया था, उसमें उन्होंने छोटी और बड़े पैमाने की खेती पर चर्चा की थी, यहाँ हम उन्हीं की कलम से तुलनात्मक आँकड़े प्रस्तुत कर रहे हैं। —सं०]

बड़े पैमाने की भूमि-प्रधान खेती का तरीका

अमेरिका में फी एकड़ २४४ से ४८० बुशल* तक गेहूँ पैदा होता है। ५०० आदमी आठ महीने का काम करके ५०,००० मनुष्यों के लिये साल भर का अन्न उत्पन्न कर लेते हैं। ऐसी भी उन्नति की है कि एक आदमी के ३०० दिन के श्रम से इतना गेहूँ पैदा होता है कि उसका आटा शिकागो शहर के २५० आदमियों को साल भर खाने के लिये काफी हो सकता है।

यह फल शारीरिक श्रम की बहुत बचत करके प्राप्त किया गया। उन बड़े-बड़े मैदानों में जोतना, फसल काटना, सब कुछ फौजी ढंग से होता है। व्यर्थ का इधर-उधर दौड़ना नहीं होता, समय नष्ट नहीं किया जाता। सारा काम कवायद की तरह बंधे बंधाये तरीके पर होता है।

जो जमीन का उपयोग करता है, पर उसे सुधारने की कोशिश नहीं करता। जमीन जितना उपजा सकती है, उतनी पैदावार उससे ले लेने के बाद वह वैसी ही छोड़ दी जाती है। फिर नई जमीन की तलाश होती है और कुछ दिन में वह भी उसी तरह 'ठाउ' बना दी जाती है, जिसमें कोई चीज बाद में नहीं पैदा हो सकती है।

श्रम-प्रधान खेती का तरीका

श्रम प्रधान छोटी खेती मनुष्य जाति के लिये क्या कर सकती है, इसके कुछ उदाहरण नीचे दिये जाते हैं।

उत्तर फ्रांस के किसान श्रम प्रधान खेती के द्वारा नियमित रूप से फी एकड़ ११४८ से १९२० बुशल तक गेहूँ पैदा कर लेते हैं।

२७ एकड़ (३६०'×३०९') जमीन खेती करने में ८ आदमी लगते हैं। कभी-कभी १२ से १५ घंटे तक काम करते हैं। २७ एकड़ जमीन का लगान १०० पौंड, खाद खरीदने में १०० पौंड, मशीनों पर ६०० पौंड, साज-समान पर ६०० पौंड।

पैदावार	
१० टन गाजर	२७ एकड़ में १२३ टन शाक और फल मूली उत्पन्न करते हैं, अर्थात् फी एकड़ ४४ टन से कुछ अधिक।
१० टन प्याज-मूली	
५००० टोकरी टमाटर	
५००० दर्जन अच्छे फल	१२३ टन पैदा करने के लिये
१५४.सलाद पैदा करते हैं	३००० दिन लगते हैं।

* बुशल = २९ सेर टन = २८ सेर

आनेवाली संतति को स्वस्थ और सदाचारी बनाये रखने के लिए वर्तमान पीढ़ी में जो हानिकर चीजें हैं, उन्हें त्याग दें अथवा अपने आपको कुछ लोगों की सनक के हवाले कर दें, जो भले ही अपने आपको कितने ही बुद्धिमान मानते हों, परन्तु जो अपने आपको, देश को और आने वाली पीढ़ियों को निश्चित रूप से कुएँ में डालेंगे। विनोबाजी चाहते हैं कि हम स्वयं निर्णय करें कि हम क्या करें? एक ऐसी समाज-व्यवस्था को पसन्द करें कि हम क्या करें कि जिसकी जड़ें गहरी और मजबूत हैं

या दूसरी समाज-व्यवस्था को अपनायें कि जिसकी कोई बुनियाद ही नहीं है। हमें चुनाव करना है दूसरों के द्वारा लगाये गये जीवन के मूल्यों का आँखें मूँद कर अनुसरण करें या विवेक पूर्वक भले-बुरे की छानबीन करके सही जीवन-पद्धति को अपनायें। हमें चुनाव करना है। आज साधारण (नार्मल एक्सीस्टन्स) कही जाने वाली पशु सामान्य प्रवृत्तियों को ग्रहण करें या उन प्रवृत्तियों को अपनायें, जो हमें उस स्थिति से ऊपर उठाती हैं तथा जीवन को विकास की ओर ले जाती है और अन्त में हमें चुनाव करना है अनुपयुक्त वर्तमान को, या ऐसे वर्तमान को जो कि पर्याप्त रूप से गतिमान है और जो भविष्य के लिए ठोस और दृढ़ नींव डाल रहा है। (अंग्रेजी से)

'निमगव्हाण' ग्रामदानी गाँव प्रगति के पथ पर

—ठाकुरदास बंग

निमगव्हाण, नर्मदा के किनारे का अक्राणी महाल का एक छोटा-सा गाँव है। यह सड़क से १५ मील दूर है। दुर्गम रास्ते से ही यहाँ कोई जा सकता है। तीन साल पूर्व विनोबाजी के अक्राणी में आगमन के समय इस गाँव ने ग्रामदान किया था। ग्रामदान का अर्थ शायद समझा थोड़ा था और श्रद्धा अधिक थी। वहाँ के निवासियों ने किसी व्यक्ति को धनशोर बारिश में उनके हित के लिए पैदल चलते सुना ही नहीं था। और अब तो प्रत्यक्ष विनोबाजी के दर्शन हुए!

ग्रामदान घोषणा के तीन माह बाद जब मैं वहाँ गया और लोगों से कहा कि यहाँ ग्रामस्वराज्य के लिए केन्द्र कायम करेंगे, तो वे ग्रामदान की बात भूल से गये थे। उन्हें संशय हुआ कि कार्यकर्ता यहाँ रहेगा तो हमारी जमीन छीन लेगा, क्योंकि उनका पिछला अनुभव था कि जंगल का अधिकारी उनसे बेगार लेता था और सताता था, पड़ोस के गाँव का शिक्षक वेतन लेता था, लेकिन गाँव में हाजिर शायद ही कभी रहा हो। सेवकों का यही नमूना इनके सामने था। इसलिए विनोबाजी के सेवक आकर हमें यानी क्या करेंगे? इसलिए उन्होंने हमारी बात सुनी अनसुनी कर दी।

जब कुछ दिनों बाद एक कार्यकर्ता आकर वहाँ डट ही गया और सेवा करने लगा, तो इनकी उदासीनता एवं विरोध का परिवर्तन उत्सुकता में हुआ। इस बीच वहाँ के प्रमुख का लड़का बीमार पड़ा और एक माह तक उसे दवाई के लिए अक्राणी के प्रमुख केन्द्र, धड़गाँव में हमारे निवास में ही ठहरना पड़ा। वहाँ नजदीक सहवास से उनके संशय समाप्त हुए और स्नेह पैदा हुआ।

इस बीच कुछ कारणवश वहाँ के कार्यकर्ता को अन्य केन्द्र पर जाना पड़ा और श्री दगड़ू सोनवणे नाम के दूसरे कार्यकर्ता को वहाँ भेजा गया। पहले तो उनकी बातों पर लोगों ने ख्याल ही नहीं दिया। और बातें भी हमारे इस कार्यकर्ता को बहुत करना नहीं आती थी। मराठी चौथी कक्षा तक पढ़ा हुआ यह किसान युवक आखिर व्याख्यान कैसे देता? और आदिवासियों की बोली में न सारे भावों को व्यक्त करने वाले शब्द ही थे! इसलिए इस किसान युवक ने सीधे उनकी खेती में काम करना प्रारम्भ किया। रोज आठ घंटा किसानों का काम करता था और खुद के लिए गाँव वालों से कुछ नहीं माँगता था। गरमी के दिनों में झरने का पानी देखकर थोड़े से बैंगन पैदा किये थे। वे भी उसने सारे गाँव को बाँट दिये। लोग यह सब देखते ही रह गये।

श्री दगड़ू धार्मिक प्रवृत्ति के हैं। यहाँ आने के पूर्व हर साल पंढरपुर जाते थे। तुकाराम महाराज के 'अभंग' कंठस्थ थे। निमगव्हाण आने पर सबेरे ५ बजे उठ कर नर्मदाजी में स्नान करना, अभंगों को गाना और ८ घंटा खेती में काम, यह थी हर रोज की उनकी दिनचर्या।

धीरे धीरे गाँव के लोगों का विश्वास जमा। खेती में सुधार करने की प्रवृत्ति निर्माण हुई। आलस्य हटने लगा। इसी बीच सेवाग्राम का सर्वोदय सम्मेलन आया। वहाँ के प्रमुख श्री सादु दिला कारभारी सेवाग्राम आये। सेवाग्राम से उन्हें प्रेरणा मिली और बापू की कुटी के पास शराब न पीने की प्रतिज्ञा की।

अपने गाँव में आकर वे शराब छोड़ने का, अज्ञान हटाने का और आलस्य छोड़ने का प्रचार करने लगे। १९५९ में २ एकड़ खेती को डीबलिंग से बोया। इससे श्रम में भी बचत हुई और दो एकड़ में दो ढाई गुना फसल बढ़ी। इससे विश्वास बढ़ा और गत वर्ष सारी खेती, जिसमें पहले बीज फेंक देते थे, उसमें अब १९६० में डीबलिंग से बुआई हुई। खेत में से पत्थर हटा कर बांध बांधे गये। हर रोज प्रार्थना होने लगी और चरखा गूँजने लगा। एक भाई ने तो जंगल से बाँस काट कर एक बाँस चरखे को देख कर बाँस चरखा भी बनाया। श्री कारभारी ने शराबबंदी का गाँव में प्रचार किया। फलस्वरूप पुरुषों द्वारा बहनों की मारपीट बंद हुई। झगड़े समाप्तप्राय हुए। सामुदायिक खेती के १९ मन अनाज का अनाज भण्डार बनाया। २५ गुंडियाँ सूताञ्जलि में दी गयीं। पशुओं को अधिक चारा मिलने लगा।

गाँव में खेत का रकबा १२० एकड़ है। इसमें १९५८ में २२४ मन अनाज हुआ। गाँव की भूख को मिटाने के लिए ५७० मन अनाज की जरूरत थी। साहूकार का कर्ज, भूखमरी और शराब; यह त्रिविध योजना अनादि काल से उस गाँव में चल रही थी। इस साल फसल तिगुना से अधिक, यानी ६९५ मन हुई। गाँव की भूख तो इससे मिटी ही, कुछ अनाज-संग्रह भी हुआ।

अब गाँव ने सारी पड़ती जमीन जोतने का और सबने लिखना पढ़ना सीखने का संकल्प लिया है। श्री सादु दिला कारभारी ने अपने गाँव में से २-३ और साथी चुन लिये हैं। इर्दगिर्द ९ गाँवों का उन्होंने क्षेत्र माना है और इन गाँवों में शराबबंदी, कृषि-सुधार और चरखों के प्रचार की योजना बनायी है।

एक सीधे-सादे मूक सेवक ने अपनी भक्ति एवं परिश्रम से वह कर दिखाया, जो असंख्य व्याख्यानों से नहीं हो पाता। निमगव्हाण में जो जनशक्ति जागृत हुई है, वह सारे अक्राणी क्षेत्र के कुतूहल एवं अनुकरण का विषय बन गया है।

विचार-संकलन

विनोबा

अन्तर्राष्ट्रीय क्षेत्र में सत्याग्रह का रूप

पूछा जाता है कि अन्तर्राष्ट्रीय क्षेत्र में सत्याग्रह किस प्रकार किया जाय ? इस सम्बंध में मेरा यही मत है कि सत्याग्रह एक आध्यात्मिक शक्ति है। वह न भौतिक शक्ति है, न मानसिक। विज्ञान एक ऐसी शक्ति है, जो मानस-शास्त्र को गौण बना देती है। इसलिए अब मन से, सबके ऊपर उठ कर अतिमानस की ओर जाकर ही सत्याग्रह की खोज करनी होगी। अगर आप अन्तर्राष्ट्रीय समस्याएँ सत्याग्रह के तरीके से याने जनमत और सरकारी शक्ति से अलग रह कर हल करना चाहते हैं, तो आपको *अति-मानस स्तर पर जाना होगा।* भूदान यात्रा के सिलसिले में मेरा विभिन्न देशों के लोगों से जो संपर्क आया, उससे मेरा यह विश्वास दृढ़ हो गया कि मानस मूलतः एक है। वह विकास के समान स्तर पर ही है। इसलिए हमारे पास ऐसी शक्ति होनी चाहिए, जो एक व्यक्ति की आत्मा में प्रकट हो और सारे विश्व पर असर डाले। व्यक्ति जब अपने जीवन के क्षेत्र में मन की सीमा पार कर अतिमानस भूमिका पर जा सकेगा, तभी सारे विश्व पर असर डालने वाली शक्ति पैदा होगी।

ध्यान स्वयमेव आध्यात्मिक नहीं

एक भाई ने कहा कि हम आध्यात्मिक मार्ग में आगे बढ़ना चाहते हैं, इसलिए ध्यान कर रहे हैं। हमने कहा कि ध्यान का अध्यात्म के साथ कोई खास ताल्लुक है, ऐसा हम नहीं मानते। कर्म एक शक्ति है, जो अच्छे-बुरे स्वार्थ, परार्थ और परमार्थ के काम में आ सकती है। जैसे कर्म स्वयमेव कोई आध्यात्मिक शक्ति नहीं, वैसे ध्यान भी स्वयमेव कोई आध्यात्मिक शक्ति नहीं है। कर्म करने के लिए मनुष्य को दस-पाँच चीजों की तरफ खूब ध्यान देना पड़ता है। वह भी एक तरह का विविध ध्यानयोग है। चरखा कातना हो, तो पहिये की तरफ ध्यान देना पड़ता है, तो उधर पूनी खींचने की तरफ। इस दोहरी प्रक्रिया के *साथ-साथ सूत लपेटने की तरफ भी ध्यान देना पड़ता है।* तभी सूत कतता है। बहनों को रसोई करते समय कई बातों की तरफ ध्यान देना है। इधर चावल पक रहा है, तो उसे देखना, उधर *आटा गूँधना, रोटी बेलना,* सेंकना, तरकारी काटना, लकड़ी ठीक से जल रही है या नहीं, यह देखना आदि-आदि सभी एकसाथ करना होता है। इस तरह सब काम करने वाली बहन का रसोई के काम में ध्यान नहीं है, ऐसा नहीं कहा जा सकता। उसमें विविध ध्यानयोग है।

वाणी की चोरी सबसे भयानक

बचपन में हमने एक कविता पढ़ी थी, जिसमें कहा था कि आत्मस्तुति, परनिंदा और मिथ्या भाषण—ये तीन बातें नहीं करनी चाहिए।

कहा जाता है कि डिमोक्रेसी में विरोधी पार्टी रहती भी है, तो उसका सरकार पर दबाव रहता है और हुकूमत करने वाली पार्टी गलत काम करने से बचती है। परन्तु समझने की बात यह है कि जिनके हाथ में हुकूमत रहती है, वे तो सत्ता चाहने वाले होते ही हैं और जो 'अपोजिशन' करने वाले होते हैं, वे सत्ता अपने हाथों में लेना चाहते हैं। याने सभी का नाम सत्ता के इर्द-गिर्द चलता है। इससे लोगों की सेवा नहीं बनती, सिर्फ झगड़े होते हैं। कुल मिला कर सब पार्टियों की शक्ति चुनाव में लगती है, इसलिए शुद्ध सेवा नहीं होती और न किसी भी विषय पर निष्पक्ष राय ही प्रकट होती है।

आज तो जो भी राय प्रकट करेगा, वह अपने पक्ष के हित के लिए करेगा। मान लीजिये, कल अकाल पड़ा, लोग चिल्लाने लगे, तो 'अपोजिशन' करने वाली पार्टी उसका नाजायज फायदा उठाने की कोशिश करेगी। जब विरोधी पार्टी का यह रुख होगा, तो हुकूमत करने वाली पार्टी उससे ठीक उल्टी दिशा ग्रहण करेगी। एक पार्टीवाला नेता दूसरी पार्टीवाले को गाली देगा और दूसरी पार्टीवाला पहली पार्टीवाले को। दोनों की बातें जनता सुनेगी, तो वह उन दोनों की निंदा करेगी। फिर किसी के भी शब्दों पर लोगों को भरोसा नहीं रह जायगा। जहाँ शब्दों पर से विश्वास उठा, वहाँ व्यवहार शुद्धि नहीं रह सकती। मनु महाराज ने कहा है : "वाच्यर्था नियताः सर्वे वाङ्मूला वाङ्विनिःसृताः।"—जिसने वाणी की चोरी की, उसने सब कुछ चोरी कर ली। यह जरूरी है कि एक-दूसरे के शब्दों पर विश्वास किया जाय।

जहाँ लोगों का भरोसा उठा, वहाँ देश की परिस्थिति अच्छी नहीं रह सकती। बड़े-बड़े नेता जोड़ने का काम नहीं करते, तोड़ने का काम करते हैं। तब देश की ताकत कैसे बढ़ सकती है ?

डेमोक्रेसी का ढोंग

एक भाई मुझसे कह रहे थे कि कलानी चीज पंडित नेहरू की समझ में आ जाय, तो काम बन जाय और उनकी समझ में नहीं आये, तो काम नहीं बनेगा। जहाँ ऐसी 'पर्सनल डेमोक्रेसी' होती है, वहाँ *उसका रूपांतर देखते-देखते फौजी शासन में हो जाता* है। क्या कभी आपने मिट्टी का रूपांतर दही में होते हुए देखा है ? दूध का रूपांतर दही में हो *सकता है; क्योंकि वे एक-दूसरे के नजदीक हैं। मिट्टी का रूपांतर दूध में नहीं* हो सकता है, तो डेमोक्रेसी का रूपांतर फौजी सत्ता में कैसे हो सकता है ? इसलिए सही बात यह है कि आज असल में *डेमोक्रेसी है ही नहीं। इस समय डेमोक्रेसी हो या वेलफेयरिज्म हो* या सोशलिज्म, सबका आधार है फौज। वहाँ सबका रक्षण करने वाला एक ही देवता (फौज) है, वहाँ सारे एक ही हैं। वे चाहे आपस-आपस में लड़ें, लेकिन उनमें कोई भेद नहीं है। उनमें ज्यादा भेद समझने की जरूरत भी नहीं है। उनमें से कोई भी आज किस पर 'कंट्रोल'–नियन्त्रण–करना चाहे, तब भी वह नहीं हो सकता; क्योंकि उन सबका *दारोमदार फौज है और सारी सत्ता चंद लोगों के हाथ में है।*

कभी सत्ता इनके हाथ में रहेगी, कभी उनके। यह जो डेमोक्रेसी का एक प्रकार *ढोंग चल रहा है,* उससे मुक्ति हासिल करनी होगी और लोगों की शक्ति बनानी होगी तभी शांति होगी।

सोने का क्या मूल्य है ?

एक गाँव में गाँववाले एक भाई का हाथ पकड़ कर मैं मुश्किल रास्ते से जा रहा था। उसके हाथ में सोने की अँगूठी थी, जो मुझे चुभ रही थी। मैंने उससे कहा कि तुम्हारी अँगूठी मुझे तकलीफ देती है, तो उसने अँगूठी निकाल कर जेब में डाल ली। दूसरे भाई ने उससे कहा कि क्या तुम बात का इशारा नहीं समझे ? आखिर वह समझ गया और उसने अँगूठी मुझे देना चाहा। मैंने कहा, सोना मनुष्य को भ्रम में डालने वाली चीज है। इससे क्या पैदा होता है ? ये सोने के पत्थर की मेंड में रखे जायँ और उन पर पानी गिरते गिरते उनका थोड़ा-सा हिस्सा मिट्टी में मिल जाय, तो क्या उस मिट्टी में से फसल आ सकती है ? उसने कहा कि मैंने ऐसी बातें सिर्फ सन्तों को जबान से सुनी थीं। फिर मैंने पूछा, क्या यह बात जँचती है ? उसने कहा, हाँ। तो क्या मैं यह अँगूठी फेंक दूँ, तो उसने स्वीकृति दे दी। मैंने अँगूठी जंगल में फेंक दी और देखा कि उसे दुःख होने के बजाय उसमें एक किस्म की मस्ती थी। उसने भूदान यज्ञ में बहुत काम किया।

अहिंसा का अर्थ

अहिंसा का क्या अर्थ है ? 'आत्मवत् सर्वभूतेषु'—सब भूतों पर उतना ही प्यार *करो, जितना अपने पर करते हो। घर के समान पड़ोसी को समझो और घर के समान* ही ग्राम को समझो। यदि कोई यह कहे कि यह उपाय बहुत कठिन है, तो उससे मैं कहूँगा कि तुम्हारा कहना इस जमाने के लायक नहीं है। विज्ञान का जमाना है। विज्ञान के जमाने में दूर के देशों के लोग भी नजदीक आते हैं और आये हैं। देशों के बीच के अन्तर टूट रहे हैं। आज ऐसे साधन हाथ में आ गये हैं कि २४ घंटे में दुनिया के इस सिरे से उस सिरे तक जा सकते हैं। यह पृथ्वी २४ हजार मील के घेरे वाली है। ऐसे साधन, हवाई जहाज हाथ में आ गये हैं कि २४ घंटे में कुल पृथ्वी की प्रदक्षिणा की जा सकती है। ऐसे विज्ञान के जमाने में 'सारे गाँव को एक परिवार मानना कठिन है', यह कहने वाले से यही कहा जायगा कि तुम इस जमाने के लायक नहीं। तुम इस युग में टिक न सकोगे। यह बात पारमार्थिक नहीं है। सीधी-सी बात है। सारे गाँव को इकाई समझो, परिवार मानो और तदनुकूल आयोजन करो। अगर हम इतना भी न कर सके, तो इस जमाने में हम जीने लायक नहीं हैं।

विश्वनागरिकता का विचार आवश्यक

हमने अंग्रेजी में एक भी लेख नहीं लिखा; फिर भी जर्मनी, फ्रांस, अमेरिका, इंग्लैण्ड आदि में हमारे आंदोलन की बातें फैल गयीं। कारण स्पष्ट है, दुनिया को उसकी प्यास है। कहीं भी हम कुआँ खोदें, तो प्यासे लोग समझते हैं कि इसकी जरूरत है। इसलिए आपके सामने सवाल यही है कि अपने गाँव में कौनसा ऐसा काम करें, जिससे दुनिया के नागरिक के नाते आप दुनिया को कुछ दे सकें ? आप भोजन करते हैं, खाना खाते हैं, सिनेमा देखते हैं और अन्य स्वार्थ भी साधते हैं; लेकिन ये सारी प्रवृत्तियाँ दुनिया के लिए मार्गदर्शन का काम नहीं कर सकतीं। विश्वनागरिकता का विचार ही विज्ञान-युग का वास्तविक विचार है।

क्वेकर्स : शांति-उपासकों का समुदाय : २

नारायण देसाई

[४ अगस्त के अंक में इस लेख का पूर्वार्द्ध दिया था। यहाँ उसका उत्तरार्द्ध प्रस्तुत है। क्वेकरों का संगठन और उनकी सभाएं किसी भी अहिंसक संगठन के लिये उपयोगी हो सकती हैं। —सं०]

विज्ञान, कलाओं और व्यापार में क्वेकर खूब चमके। अपनी व्यक्तिगत कारगुजारी के साथ उन्होंने क्वेकरों के भाईचारे की ख्याति भी बढ़ायी है, किन्तु आज यदि क्वेकर दुनिया में अधिक-से-अधिक किसी रूप में परिचित हैं, तो वे अपने युद्ध-विरोध के लिए। यह युद्धविरोध ठेठ जार्ज फाक्स के जमाने से चला आ रहा है।

जब वह डर्बी के जेल में था, तो उसने उस समय की एक घटना लिखी है, उसे देखें; "जेल की मेरी मियाद पूरी होने आ रही थी। इसी अर्से में बहुत से नये सैनिकों की भर्ती हुई। कमिश्नर मुझसे उनका 'कैप्टन' बनने के लिए कह रहा था। सिपाही तो कहते कि 'हमें तो इनके बिना दूसरा चल ही नहीं सकता।' इसलिए जेलर को हुकम हुआ कि मुझे कमिश्नर और सैनिकों के समक्ष बाजार में हाजिर किया जाय। वहाँ उन्होंने मुझे, जिसे वे इतना बड़ा अवसर कहते थे, उसे स्वीकार करने के लिए आग्रह किया। उन्होंने मुझसे पूछा कि 'क्या आप चार्ल्स स्टुअर्ट के विरुद्ध राष्ट्रमण्डल के पक्ष से हथियार न उठायेंगे?' मैंने उनसे कहा, 'सभी तरह के युद्ध क्यों पैदा होते हैं, यह मैं जानता हूँ। जेम्स के सिद्धान्त के अनुसार वासना में से मैं तो एक ऐसी हस्ती और शक्ति की छाया में जीता हूँ कि जिसने युद्ध के सभी कारण ही छीन लिये हैं।' लेकिन उन्होंने अपनी बात मानने के लिए मुझे विनती की। ये लोग तो यही मानते थे कि ऐसा करके वे मेरा सम्मान कर रहे हैं। मैंने उनसे कहा कि 'मैं शान्ति के एक ऐसे धार्मिक करार से आया हूँ, जो युद्ध और कलह से पहले का है।' उन्होंने कहा कि वे लोग मेरे साथ प्रेम और दया से, साथ ही मेरे गुणों की परख से इतनी सिफारिश कर रहे हैं। ऐसे ऐसे बहुत से खुशामद भरे वचन भी कहे। लेकिन मैंने उनसे कहा कि 'यदि यह आपका प्रेम हो, तो मैं उसे अपने पैरों तले कुचल डालता हूँ।' फिर क्या था! उनका पारा चढ़ गया और वे बोले : जेलर! इसे यहाँ से हटाइये और धोखेबाजों और खूनियों की कोठरी में डाल दीजिये।"

आज के युग में यह युद्ध विरोध आधुनिक भाग ग्रहण करता है। सेना में 'अनिवार्य भरती' के प्रस्ताव के बारे में सन् १९४५ की इंग्लैण्ड की वार्षिक सभा कहती है : "बहुत बार अनिवार्य सैनिक-नौकरी नागरिकों के धर्म के रूप में मानी जाती है। लेकिन यह सच्ची समाज सेवा नहीं है। एक तो, यह बलपूर्वक शांतिरक्षा के प्रयास का एक अंग है और दूसरे, यह मानव द्वारा स्वीकृत उच्चतम नैतिक आदर्शों से विपरीत भी तालीम देता है।

"अनिवार्य भरती को शांति-रक्षा के लिए उपयोगी गिना जाता है, कारण माना जाता है कि बड़े राष्ट्र इस विशाल सेना द्वारा शान्ति भंग होने से रोकना चाहते हैं, उसमें इससे मदद मिलेगी। किन्तु इस तरह तो पड़ोसियों को संभाव्य शत्रु के रूप में मानना पड़ेगा और उनकी ओर सन्देह की दृष्टि से देखना होगा। फिर ऐसी संशय-दृष्टि सहज ही उनकी ओर भी मुड़ सकती है, जिन्हें आज हम मित्र राष्ट्र मानते हैं। वास्तव में शांति तो तभी हो सकती है, जब पड़ोसी मित्र बनें, सदाशय समझायें और परस्पर के आदर में बदल जाय और सभी राष्ट्र भी मान्य करें कि वे एक-दूसरे के सदस्य हैं। उस शान्तिसाधक विलियम पेन का यह सूत्र आज भी उतना ही सच है कि 'बल दमन कर सकता है, पर जीतता तो प्रेम ही है।'

"मानव को एक-दूसरे को मारने की तालीम देना व्यक्तित्व के पावित्र्य का भंग है, कारण उसमें हर मनुष्य में स्थित ईश्वर के साथ अपराध होता है। उसमें अंधानुरक्ता और अंध आज्ञा-पालन आवश्यक होता है, जो अपने साथी मानव की उत्तरदायित्वपूर्ण सेवा से इनकार है। व्यक्तिगत जीवन में जो असामाजिक या अपराधित रूप में प्रसिद्ध, वैसा बहुत कुछ इसमें जरूरी हो जाता है।

"जब उदीयमान नवयुवकों पर यह लादा जाता है, तब तो अन्याय की मात्रा अधिक से-अधिक बन जाती है। मुल्क की जिन्दगी में इरादे के साथ मारने की निंदा की जाती है, लेकिन युद्ध में तो उसकी प्रशंसा होती है। ईसा अपने दुश्मन से प्यार करने के लिए कहते हैं, जब कि सरकार उसकी हत्या करने के लिए बताती है। भावुक कोमल मस्तिष्क पर इसका असर यह होता है कि वह उधेड़बुन में पड़ जाता है, विच्छिन्न हो जाता है। वास्तव में जिसकी सैनिक भरती होती है, उसके पास से युद्ध के पहले ही युद्ध के लिए उसे सम्मति ले ली जाती है। पहले तालीम दी जाती है और फिर उसे मिलिटरी अनामत दल के तरीके से रखना पड़ता है। जब हुकम हो, उस समय वह लड़ने के लिए बँधा होता है।

"अनिवार्य भरती स्वयं स्थायी होती जाती है, कारण एक के बाद एक आगे आने वाली पीढ़ी सैनिकशाही को स्वाभाविक और अनिवार्य रूप में स्वीकार कर लेती है। फिर हम अपने दुश्मन से भी प्रेम करें, ईसा के इस वचन का अनुसरण करने का अवसर ही कहाँ रह सकता है!"

× × ×

अब हम क्वेकरों के संगठन के विषय में विचार करें, जो शायद उनकी सबसे अनोखी विशेषता है। क्वेकरों के संगठन में इंग्लैंडवासी की स्वाभाविक व्यवस्थाशक्ति, अनुशासन तथा ईसाई धर्म की सेवा और भक्ति का सुन्दर समन्वय हुआ है। उसमें तांत्रिक जड़ता नहीं, पर ढिलाई भी नहीं है। उसमें कठोरता और जी हुजूरी नहीं। फिर भी अव्यवस्था या अराजकता भी नहीं। इसमें सर्वानुमति है, पर उसके अभाव में काम सर्वथा रुकता भी नहीं।

क्वेकर यथावसर अपनी बैठकें बुला कर उसकी मार्फत अपना काम चलाते हैं। उनकी हर तरह की सभा को 'मीटिंग' कहा जाता है। ये मीटिंगें उनके कार्य के प्रकारानुसार 'उपासना-सभा' (मीटिंग आफ वर्शिप) या 'काम की सभा' (मीटिंग आफ बिजनेस) कही जाती है। ये मीटिंगें उनके मिलने के कालानुसार अथवा इसमें भाग लेने वाले लोग जिस क्षेत्र के हों, तदनुसार इन सभाओं को मासिक सभा, त्रैमासिक सभा, वार्षिक सभा, नगर सभा, जिला सभा या राष्ट्रीय सभा भी कहा जाता है।

इन मीटिंगों में क्वेकर किसी तरह के भेदभाव के बगैर जुड़ते हैं। दुनिया की किसी भी क्वेकर सोसाइटी का सदस्य किसी भी मीटिंग में भाग ले सकता है। साधारणतः सभा का आरंभ मौन प्रार्थना से हुआ करता है। मौन का अन्त तब होता है, जब कि कोई भी सदस्य अपने भावों को सादी और मित भाषा में व्यक्त करता है। उसके द्वारा प्रस्थापित विचारों पर अन्य सदस्य भी बोल सकते हैं। किसी प्रश्न का हल न सूझता हो तो पुनः मौन का आश्रय लिया जाता है। मौन का अर्थ है, मौनभरी प्रार्थना। क्वेकर यह नहीं मानते कि सभी प्रश्नों के हल हमारे पास है। इसीलिए वे अपने प्रश्नों के हल के लिए ईश्वर की प्रेरणा की अपेक्षा रखते हैं। विभिन्न लोगों द्वारा व्यक्त किये गये अभिप्रायों में से सर्वसम्मति की खोज तदनुसार निवेदन तैयार करने का काम किसी एक को (साधारणतः किसी बुजुर्ग को) सौंपा जाता है। यदि यह निवेदन उचित न मालूम पड़ा तो सभा उसे बदल भी सकती है। ये सिफारिशें प्रश्न या निवेदन के रूप में प्रसारित की जाती हैं, लेकिन यह अपेक्षा की जाती है कि सभी क्वेकर इन पर अमल करें। इन सभी कार्यों का विवरण नोट कर रखा जाता है। फिर गत अधिवेशन में जिन-जिन बातों पर अमल करने का प्रस्ताव किया होता है। उसे नये अधिवेशन के आरंभ में सुना दिया जाता है। नई सभा तक इन विषयों में कुछ अमल न हो पाया हो, तो उसे उसके बाद की सभा में पुनः यह सुनाया जाता है। इस तरह निर्णीत प्रस्ताव उपेक्षित या आधे अमल में आकर ही पड़े न रह जायँ, इसकी विशेष सावधानी बरती जाती है। इन सारी पद्धतियों के पीछे अब तो सैकड़ों वर्षों की परम्परा है। इसके पीछे जो मूल विचार है, उसे हम अमेरिका के एक प्रसिद्ध क्वेकर हार्वर्ड ब्रिटेन के शब्दों में देखें :

"(काम और उपासना की सभाओं में) ईश्वर का प्रकाश और मार्गदर्शन की व्यक्तिगत अनुभूति समूह की अनुभूति बन जाती है, जिसमें सभी के बीच दैवी हस्ती उनको जोड़ने वाली और एक सूत्र में बाँधने वाली शक्ति के रूप में काम करती है। जिस तरह व्यक्ति में ईश्वर का अस्तित्व उसके विभिन्न तत्त्वों को एक ऊपरी स्तर पर जोड़ने का काम करता है, उसी तरह समूह में भी ईश्वर का अस्तित्व उसके विभिन्न सदस्यों के विभिन्न कार्यों को एक पूर्ण रूप देकर एक निश्चित दिशा की ओर ले जाते हैं। मीटिंग में मनुष्य ईश्वर की ओर ऊँचे उठने और प्रार्थना करनेवाले साथियों की प्रति विशाल होने के लिए प्रयत्न करता है। फलस्वरूप एक दूसरे का ईश्वर मानव-संबंध और मानव मानव संबंध बनता है और वह उसे पुष्ट करता है। उपासना-सभा में ईश्वर की ओर गति पर विशेष जोर रहता है और काम की सभा में मनुष्य की ओर की गति पर जोर दिया जाता है। सिद्धि पाने के लिए दोनों को एक-दूसरे की कुछ-न-कुछ पूर्ति की आवश्यकता होती ही है।

उपासना-सभा में कोई पूर्वनिश्चित कार्यक्रम नहीं होता। उपासक मौनपूर्वक प्रतीक्षा करते हैं—दिव्य जीवन-प्रवाह हमारे अन्तर में प्रवेश करे, एतदर्थ वे स्वयं को अधिक-से अधिक खुला करने का प्रयत्न करते हैं और यह शांत एवं सूक्ष्म स्वर सुनाई पड़े, इसके लिए वे अपने अन्तर को संवेदनशील बनाये रखने की कोशिश करते हैं। वे केवल ईश्वर के विषय में ही नहीं, बल्कि सहमानव के विषय में भी सजगता का अनुभव करते हैं। अहंकार का कवच ढीला पड़ जाता है और जीवन प्रवाह अन्दर, बाहर ईश्वर और मानव की ओर बहने लगता है। एकाकी अलगाव एक ऐसे महान् जीवन में मिल जाता है, जो व्यक्तिगत है और व्यक्तिगत से परे भी है। जब किसी उपासक को यह मालूम पड़ता है कि उसके हृदय में कोई ऐसा सन्देश है, जो केवल उसी के लिये ही नहीं है, तभी वह मौन त्यागता है। अगर वह पूर्ण संवेदनशील हो तो मीटिंग को किस बात से लाभ हो सकता है, यह जान लेगा। यह सन्देश दलील, भाषण या चर्चा के रूप में प्रकट नहीं होता। इन सबसे अधिक गहराई से यह सन्देश मिलता है, वह मौन से उद्भूत स्पंदित और समझदारी वाला निवेदन होता है। किसी खुली चर्चा-सभा के योग्य सन्देश ऐसी

एक आत्म-विश्लेषण : एक संस्मरण

ऐसा क्यों हुआ ?

मोतीलाल केजरीवाल

बिहार राज्य के एक जिले के अन्तर्गत भवदेवपुर नामक एक ग्राम है। उसमें पाँच सौ परिवार बसते हैं। इसमें एक धनी परिवार के पास लगभग सात सौ बीघा जमीन है। पन्द्रह-बीस परिवारों के पास एक बीघा से लेकर छब्बीस बीघा तक जमीन है। लगभग पौने पाँच सौ परिवार भूमिहीन हैं; जिनमें से अधिकांश नजदीक के एक शहर में दैनिक मजदूरी करने जाते हैं। आधे से कम खेतिहर मजदूर हैं। भवदेवपुर के सात सौ बीघे के जोतदार उस भाई की शानदार इमारत रात में बिजली से चमचम करती हुई अपने आसपास खड़ी हुई रोनी सूरत बनाये हुए झोपड़ियों की मानो मखौल करती है। इस अट्टालिका के मालिक स्थानीय पंचायत के मुखिया हैं। इनके दूसरे सहोदर स्थानीय कांग्रेस के पदाधिकारी आगामी चुनाव के लिए कांग्रेस की टिकट पाने के उम्मीदवार हैं।

इस क्षेत्र में विनोबाजी के आदेशानुसार बीघा में कट्ठा आन्दोलन को सफल करने के लिए कार्यकर्ताओं ने सघन क्षेत्र बनाया। पहली जुलाई का वह दिन था। खादी-भंडार के कार्यकर्ताओं ने भी भूदान-कार्यकर्ताओं की एक टोली को चन्दन-टीका लगा कर के प्रेम से विदा किया। सबसे पहले यह टोली भवदेवपुर पहुँची। अभी आठ बजे थे कि यह टोली नारे लगाती हुई उक्त ग्राम पहुँची, और पहुँच गयी उन्हीं बड़े जोतदार के दरवाजे पर, क्योंकि पंचायत के मुखिया का यह घर था। पानी का प्यासा तो कुएं के पास ही जाता है, तो फिर जमीन की प्यासी भूमिहीनों के प्रतिनिधियों की यह टोली जमीन वाले के पास क्यों नहीं जाती? पानी पी लेने की सो कौन कहे, टोली को बैठ कर विश्राम करने की इजाजत भी मुखियाजी ने और कांग्रेस टिकट पाने वाले उम्मीदार उसके सहोदर ने नहीं दी। टोली का फिर क्या हुआ, यह यहाँ लिखने की आवश्यकता नहीं!

संत-महात्माओं का कथन है कि अपनी सफलता या असफलता का कारण अपने में खोजो। सर्वोदय-आरोहण तो आत्म-शुद्धि की क्रिया है। यह सोचने की बात है कि मुखियाजी एवं उनके सहोदर ने ऐसा व्यवहार क्यों किया? मैं भी उस गाँव में उस टोली की मदद के लिए उस समय पहुँचा, जब टोली के भाई एक मंदिर की कच्ची झोपड़ी में बैठ कर आराम कर रहे थे। दोपहर की धूप तेज थी और शरीर थक कर उन्होंने सत्तू-पानी भी कर लिया था। टोली की सामूहिक आत्म-शुद्धि की दृष्टि से जब मैं विचारने लगा, तो उन लोगों के द्वारा प्रदर्शित की गयी उपेक्षा, अन्यमनस्कता, उदासीनता या अभद्र व्यवहार के प्रति मुझे क्षोभ नहीं हुआ। मैंने देखा कि हमारी उस टोली में सर्वोदय की उस भावना को पालन करने के लिए प्रयत्नशील व्यक्ति का अभाव है, जिसका प्रचार गांधी करते थे और विनोबा करते हैं। किसी के पास चरखा या तकली नहीं थी कि सूत काता जाय। 'भूदान यज्ञ' पत्रिका या भूदान-साहित्य नहीं था कि जिसको पढ़ा जाय और दो-चार ऐसे भी थे, जिन्होंने स्वयं भूदान नहीं किया था।

मेरा ख्याल है कि वह परमात्मा, जो सबके हृदय में समान रूप से स्थित है, हमारी पवित्र भावना या श्रद्धा को जाँचते रहता है। 'श्रद्धामयोऽयम् पुरुषः यच्छ्रद्धः स एव सः'—अर्थात् यह पुरुष श्रद्धामय है, जैसी जिसकी श्रद्धा होती है, वह वैसा ही होता है। हो सकता है कि यदि सभी लोगों ने भूमि-दान किया होता, सब सर्वोदय की उच्च भावना से ओतप्रोत होते, और सभी सूत कातने वाले होते तो वह परमात्मा मुखियाजी एवं उनके सहोदर के हृदय में बैठ कर उन दोनों से प्रेरणा करता कि खबरदार, ये आगन्तुक श्रद्धालु और निष्ठालु हैं! देखो, इन आगन्तुकों की श्रद्धा से अगवानी करो। अश्रद्धा या अभद्रता का जो प्रदर्शन हुआ, उसका पचास प्रतिशत कारण हमारा निष्ठालु न होना और पचास प्रतिशत मान, धन और जमीन का मोह है।"

मीटिंग के लिए अनुपयुक्त है, कारण इसका मुख्य उद्देश्य ईश्वर के निकट बैठना (उप = ईश्वर के निकट + आसना = बैठना) है। उच्चतम हस्ती की साक्षी में उच्चरित शब्द गांभीर्य को ऊँचे उठाने वाले होने चाहिए।

काम की सभा में 'सोसाइटी आफ फ्रेण्ड्स (मित्र-समाज)' अपने काम के बारे में और आस-पास की दुनिया के बारे में निर्णय करते हैं। इस सभा में एकमात्र पदाधिकारी एक क्लर्क होता है, जिसका काम उन निर्णयों को नोट कर लेना होता है। मत-गणना नहीं होती। सभा उपस्थित में कार्यक्रम के विषय में, दिव्य हस्ती के समक्ष समर्पणवृत्ति से चर्चा की जाती है। बहुमत तत्वतः लघुमत पर दबाव नहीं डालता। यदि एकमत न हुआ, तो कोई निर्णय नहीं किया जाता—यद्यपि अल्प महत्व के प्रश्नों के बारे में, जिनके बारे में निर्णय करने के लिए प्रतीक्षा करने की कोई खास आवश्यकता नहीं होती, उसके बारे में सम्पूर्ण सर्वानुमति होने तक प्रतीक्षा करने की जरूरत नहीं मानी जाती। कुल मिला कर अन्तिम परिणाम कोई बंधन के रूप में नहीं आता है। कई बार तो सर्वथा नया और अकल्पित ही परिणाम होता है, जो विभिन्न मतों के समन्वय से आता है। मानव द्वारा किसी बेहतर और सुसंवादी शक्ति की शरण जाकर मतैक्य प्राप्त करने की इस रीति को यान्त्रिक नहीं, सचेतन कहा जा सकता है—चूंकि ये दोनों शब्द हैं तो आलंकारिक ही। बहुत बार यह धीरे-धीरे विकसित होती है, कारण यान्त्रिक रचना की अपेक्षा जीवन-विकास धीरे-धीरे (धीमा) ही हुआ करता है। सत्य और ऐक्य की खोज कई बार लम्बी और कठिन होती है। इसमें प्रेम और सहिष्णुता आवश्यक होती है। किन्तु सिद्धि पाने के बाद समझ में आता है कि धैर्य सार्थक हुआ। गहराई में उतरने वाले के लिये एकता सदैव सम्भव है, कारण हमारे अस्तित्व की गहराई में तो बेल की शाखाओं की तरह हम सभी एक ही हैं। अथवा दूसरी ही उपमा देनी हो तो, सत्य एक ही है और उसके प्रकाश की ओर हम जैसे-जैसे आगे बढ़ते हैं, वैसे ही वैसे एक-दूसरे के अधिक निकट आते हैं।

सत्य शोधन की यह नम्र वृत्ति ही अहिंसक संगठनों की नींव डाल सकती है। इसके बिना हमारे संगठनों में—फिर वह राजनैतिक हो, सामाजिक हो या रचनात्मक हो—रजोगुण का छींटा आ जाता है। यदि संगठन को अहिंसक बनाना है, तो उसमें सत्य की खोज, निरहंकारिता और ईश्वरशरणता का सात्विक ओज चढ़ाना पड़ेगा—यह क्वेकरों से सीखने का सबसे बड़ा पाठ है। (समाप्त)

मृत्यु : महामित्र

कालिदास ने एक सुन्दर विलाप लिखा है, अज-विलाप। एक भाई ने मुझसे कहा कि "कितना सुन्दर विलाप है यह! तो मैंने पूछा, इसमें कौनसा सौन्दर्य है, जरा बताइये तो!" तो उन्होंने कहा कि वह इतना सुन्दर है कि उन को आँखों से एकदम आँसू बहने लगते हैं।" मैंने कहा : "मान लीजिए, कोई लड़का मर गया और उसकी माँ जो विलाप करती है, तो क्या उसमें कालिदास के विलाप से कम शक्ति होती है? उसे देख कर क्या हमारी आँसू नहीं आते? फिर कालिदास की विशेषता क्या रही?

कालिदास की विशेषता तो वह थी, जो उस माँ को नहीं सूझती। वह बेचारी तो पुत्र-वियोग के दुःख में तन्मय हो जाती है। पर कालिदास को सूझता है : 'मरणं प्रकृतिः शरीरिणां विकृतिर्जीवितमुच्यते बुधैः।' अर्थात् मरण को जीवन की विकृति मानने से दुःख होता है। यों दुःख तो जीवन में होता ही है, फिर भी उसका आरोप मरण पर किया जाता है। उदाहरणार्थ, एक मनुष्य दुःख से पीड़ित है और वह उससे मुक्त होने की कोशिश कर रहा है। लेकिन उस दुःख को मिटाने की सामर्थ्य न डॉक्टर में है, न पत्नी में, न उसके भाई में और न उसके पुत्र में है। उस दुःख से जो मुक्ति दिलाने वाला है, वह तो उसका महामित्र मृत्यु है। किन्तु मृत्यु पर दुःखदायी होने का व्यर्थ ही आरोप किया जाता है कि ऐसा लगता है, मानो चोर को छोड़ कर साहूकार को ही फाँसी पर चढ़ा दिया गया!

मरण कोई आपत्ति नहीं है। वह तो दुःख से मुक्त कराने वाली वस्तु है। मृत्यु के समय जो दुःख है, वह जीवन के दोषों के परिणामस्वरूप दुःख है। इसलिए जीवन को उसके दुःखों से छुड़ाने की सामर्थ्य मृत्यु को छोड़ और किसी में नहीं है। संत्रस्त जीव को मृत्यु ऐसी स्थितप्रज्ञ स्थिति में पहुँचा देता है कि बाद में उसे न सुख होता है और न दुःख। आश्चर्य है कि ऐसे महामित्र को भी शत्रु समझा जाता है। जब मृत्यु आती है, तो हम स्थितप्रज्ञ बन जाते हैं या नहीं, इसका हम प्रयोग कर देखते हैं। एक प्रयोग तो यह है कि उस मृत मनुष्य को नहलाते हैं और फिर देखते हैं कि वह देह सन्तुष्ट होती है या नहीं। खुश होती है या नहीं। लेकिन देह को कोई सन्तोष नहीं होता दीखता, इसलिए हम समझ जाते हैं कि वह स्थितप्रज्ञ हो गया। इस तरह वह अपने सुख से सुखी नहीं होता, यह तो हमने देख लिया। लेकिन वह अपने दुःख से दुःखी होता है या नहीं, यह देखने के लिए हम दूसरा प्रयोग करते हैं। हम उसका अग्नि-संस्कार करते हैं और देखते हैं कि अग्नि के स्पर्श से वह दुःखी तो नहीं होता? इससे उसके सिर पर शिकन तक नहीं देखी जाती। तब सिद्ध होता है कि वह परिपूर्ण स्थितप्रज्ञ हो गया। पक्का निश्चय हो जाता है कि बिना पुण्य के ही इसे मृत्यु ने 'दुःखेषु अनुद्विग्नमना सुखेषु विगतस्पृहः' की स्थिति में पहुँचा दिया। ऐसी परम स्थिति प्राप्त करने वाले महामित्र को भी हम शत्रु कहें, तो क्या यह उचित है?

—विनोबा

पानीपत में अशोभनीयता-निवारण आंदोलन

२-३ जुलाई '६१ को करनाल जिले के पानीपत नगर में करनाल जिला सर्वोदय-मंडल की ओर से अन्य संस्थाओं के सहयोग से अशोभनीय पोस्टरों के प्रदर्शन, अश्लील गीतों के गायन, मदिरापान आदि के विरुद्ध विशाल आंदोलन किया गया। पहले शहर के प्रमुख लोगों से मिल कर विचार समझाया गया। २ जुलाई की शाम को प्रमुख व्यक्तियों की सभा में ७ सदस्यों की एक समिति बनायी गयी, जिसका संयोजक पानीपत के समाजसेवी श्री सुमेरचन्द गुप्ता को बनाया गया। २ जुलाई की रात को खादी-ग्रामोद्योग विद्यालय, समालखा की ओर से 'शांति-सेना' एकांकी नाटक तथा अश्लीलता निवारण संबंधी ड्रामा खेला गया।

३ जुलाई को एक विशाल जुलूस शाम को साढ़े चार बजे पंजाब खादी आश्रम करनाल से पं० ओमप्रकाशजी त्रिखा, संयोजक, पंजाब सर्वोदय मंडल के मार्गदर्शन में, निकला जिसमें विभिन्न संस्थाओं के सभी कार्यकर्ताओं ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। शहर के लगभग एक हजार नागरिक भाई-बहनों ने भी इस जुलूस में भाग लिया। इसमें अशोभनीयता विरोधी नारे लगाये गये। यह जुलूस पानीपत शहर के सभी मुख्य बाजारों से होता हुआ करीब चार मील का चक्कर तय करके शाम के सात बजे किला ग्राउंड पर विसर्जित हुआ। जुलूस की विशेष बात यह रही कि किसी सार्वजनिक स्थान या दुकान पर कोई अश्लील फोटो या पोस्टर दिखायी देता था, तो आंदोलनकर्ताओं की मांग पर नगर-निवासी स्वयं उनको हटा देते थे।

रात को किला ग्राउंड पर श्री सुमेरचन्दजी गुप्ता की अध्यक्षता में एक आम सभा हुई। उसमें निम्न लिखित प्रस्ताव पढ़ा गया, जिस पर आम जनता ने तीन बार 'जय जगत्' कह कर स्वीकृति प्रकट की।

प्रस्ताव

पानीपत-निवासियों की यह सार्वजनिक सभा अखिल भारत सर्व सेवा संघ की ओर से उठाये गये इस नैतिक उत्थान के आन्दोलन से पूरी तरह सहमत है। आज देश के कोने-कोने में फैल रहे भ्रष्टाचार व नैतिक पतन का मूल कारण अशोभनीय पोस्टर, गन्दे गीत, अश्लील साहित्य व नशेबाजी है। समय की मांग है कि हम समाज में फैलती हुई ऐसी हर बुराई का विरोध करें।

इसके लिये हम निश्चय करते हैं कि—

१. ऐसी फिल्मों को, जो बच्चों के चरित्र निर्माण में बाधक हों, हम प्रोत्साहन नहीं देंगे।

२. ऐसे गानों, गीतों का, जो गन्दे विचारों का प्रदर्शन करते हों, खुली सभाओं व विवाह शादी आदि में गाना बजाना बन्द कर देंगे।

३. अशोभनीय चित्रों का सड़कों, बाजारों तथा घरों में लगाना बन्द कर देंगे और इसके स्थान पर विचारप्रधान चित्रों को जगह देंगे।

४. हमारे देश के नैतिक पतन का मुख्य कारण नशेबाजी है। समाज सुधार के लिये इसे भी समाज से हम विदा करेंगे। शराब, तम्बाकू, अफीम आदि नशीली वस्तुओं का प्रयोग व्यक्तिगत रूप से तथा समूहों में यानी विवाह-शादी, जल्से, पार्टी आदि में कतई नहीं करेंगे।

५. कहानियों, उपन्यासों तथा अन्य बहुत-सी पुस्तकों में जो चरित्र को गिराने वाली बातें पढ़ने को मिलती हैं, उनसे हम अपने बच्चों को बचायेंगे और ऐसे साहित्य के व्यापार में लगे हुए भाइयों को इस विचार से प्रभावित करके उनका सहयोग प्राप्त करेंगे।

सभा में श्री लक्ष्मीदत्त दीक्षित, प्रिंसिपल आर्य कालेज ने अपने भाषण में कहा : "आज का वातावरण इतना दूषित हो गया है कि कोई भी भद्र पुरुष अपनी माँ या बहन को लेकर बाजार में से नहीं गुजर सकता, गाड़ी में सफर नहीं कर सकता तथा सार्वजनिक स्थानों पर स्वच्छन्दता से नहीं घूम फिर सकता। दीवारों पर गन्दे चित्र लगाये जाते हैं और आधी रात तक गन्दे गीत बजाये जाते हैं। ऐसी मनोदशा बन गयी है कि जिस बात को मैं अपने बच्चों के लिए बुरा समझता हूँ, उन्हें पड़ोसी बच्चों के लिये बुरा नहीं समझता। विनोबाजी का यह वचन बिल्कुल सत्य है कि यदि ये गन्दे पोस्टर बने रहेंगे और हमारे विवाह आदि में लाउडस्पीकर आदि पर गन्दे रिकार्ड बजते रहेंगे तो यह आजादी अधिक दिन नहीं टिक सकेगी। कुछ समय पहले हमारी संस्कृति का विदेशों में प्रतिनिधित्व करने को स्वामी रामतीर्थ व, स्वामी विवेकानन्द जैसे महान पुरुष जाते थे, लेकिन आज ये काम सिनेमा के कलाकार करते हैं! हमें इन बातों से अपने को बचाना है। हमें विनोबाजी के चलाये गये इस आन्दोलन को सफल बनाना चाहिये और अपने घरों, बाजारों, मुहल्लों से गन्दे पोस्टर व गन्दे गीत बन्द कर देने चाहिये।"

नगर की भिन्न भिन्न पार्टियों के कुछ जिम्मेदार व्यक्तियों ने इस प्रस्ताव का समर्थन किया और आगे के लिये सहयोग देने का वचन दिया। इस प्रकार सभा जय जगत् के नारों से समाप्त हुई।

—निरंजन सिंह, जिला निवेदक
करनाल जिला सर्वोदय मंडल, समालखा

छत्तीसगढ़ संभागीय कार्यकर्ता संगोष्ठी

३० जुलाई को सायंकाल ३ बजे बाल-समाज वाचनालय, रायपुर में श्री राजेन्द्रप्रसादजी शुक्ल, प्रतिनिधि अ० भा० सर्व सेवा संघ, बिलासपुर की अध्यक्षता में छत्तीसगढ़ के विभिन्न जिलों से आये हुए लोकसेवक एवं सर्वोदय-मित्रों की बैठक हुई, जिसमें सर्वश्री रामानन्दजी दुबे, अध्यक्ष म० प्र० सर्वोदय मंडल, पंचरामजी, संभागीय संयोजक दुर्ग, हीरालालजी शास्त्री, दुर्ग, उमेदसिंहजी, दुर्ग, रामधीनजी सुन्दरलालजी अग्रवाल, हरप्रसाद अग्रवाल, केयूरभूषण, मुन्नीबाई, कुन्तीबाई, हीरालाल रगीसार, रायपुर, श्री भगवतीप्रसाद प्रेम, बालगढ़ के अतिरिक्त अन्य सर्वोदयी मित्र उपस्थित थे। श्री रामानन्दजी दुबे ने सर्वप्रथम संगोष्ठी की आवश्यकता एवं पोस्टर-आन्दोलन की महत्ता पर प्रकाश डाला। तत्पश्चात् काफी विचार विमर्श के बाद निम्नलिखित निर्णय लिये गये।

(१) संभागीय बैठक अन्य जिलों में हर माह एक बार क्रमशः कार्यकर्ता-सम्पर्क व शिक्षण की दृष्टि से की जाय।

(२) भूमि वितरण कार्य को प्रधानता देते हुए आगामी सर्वोदय-सम्मेलन तक संभाग की शेष अतिरिक्त भूमि का वितरण कर देने का निश्चय किया गया।

(३) रायपुर नगर में अशोभनीय पोस्टर उन्मूलन-कार्य को संभागीय स्तर पर किया जाये।

(४) रायपुर, दुर्ग और बिलासपुर जिलों के संगमस्थल को क्षेत्रीय सघन कार्य के लिए चुना गया। मतदाता मंडल और पंचायत राज के विचारों का लोक-शिक्षण कार्य सामूहिक रीति से किया जाय।

हरप्रसाद अग्रवाल
संयोजक
छत्तीसगढ़ सम्भागीय सर्वोदय संगोष्ठी, रायपुर

रायपुर में अशोभनीयता-विरोधी दिवस

३० जुलाई की शाम को रायपुर में अशोभनीयता-विरोधी जुलूस ४ बजे ब्राह्मणपारा बाल समाज पुस्तकालय से छत्तीसगढ़ विभाग से आये सर्वोदयी मित्रों के साथ गन्दे पोस्टर-विरोधी नारों की तख्ती लिये रवाना हुआ। नगर के मुख्य मार्गों से घूमता हुआ पुरानी पुलिस लाईन स्थित हनुमान मंदिर के पास पहुँचा और आम सभा के रूप में परिणत हो गया।

बिलासपुर जिले के सुप्रसिद्ध सर्वोदयी विचारक एवं कवि श्री राजेन्द्रप्रसादजी शुक्ल ने सभा की अध्यक्षता की। सर्वप्रथम श्री रामानन्द दुबे, अध्यक्ष म० प्र० सर्वोदय मंडल ने अशोभनीयता विरोधी दिवस की आवश्यकता पर प्रकाश डालते हुए जनसहयोग की अपील की।

तत्पश्चात् श्री राजेन्द्र शुक्ल ने अपने विवेचनापूर्ण भाषण में अशोभनीय पोस्टर आन्दोलन के विभिन्न पहलुओं पर प्रकाश डालते हुए लोगों को, खासकर सद्गृहस्थों को आवाहन किया कि वे आज के समाज में व्याप्त गिरते हुए नैतिक स्तर पर गम्भीरता से विचार करें और भावी पीढ़ी के नैतिक स्तर को ऊँचा उठाने का हर सम्भव प्रयास करें। देश के चरित्र को दूषित एवं कलंकित करने वाले इन फिल्मी व्यवसायियों के द्वारा प्रदर्शित नारी जाति का अपमान करने वाले अश्लील, गंदे, कामुक पोस्टरों को रोकें और बहिष्कार करें।

उसके पश्चात् नगर निवासियों के कर्तव्य का भान कराते हुए श्रीमती सरस्वती दुबे ने अनेक प्रकार की अशोभनीयताओं की ओर जनता का ध्यान आकर्षित करते हुए वेश्या उन्मूलन की ओर जाग्रत होने का समाज को आह्वान किया।

श्री कमल नारायण शर्मा, मंत्री जिला 'प्रसोपा' ने सर्वोदय-मंडल द्वारा शहर में चलाये गये पोस्टर-आन्दोलन को नैतिक आंदोलन बताया। लोगों से हार्दिक समर्थन व सहयोग की अपील करते हुए श्री शर्माजी ने गत दो जुलाई को प्रभात टाकीज में हुए सीधी कार्यवाही के समय किये गये कथित गुमराह नवजवानों द्वारा गुंडागर्दी की तीव्र भर्त्सना की और उन्हें सावधान किया कि लोकहित के कार्य में सहयोग देकर अपने नाम को उज्ज्वल करें।

मजदूरों के नेता एवं जिला कम्युनिस्ट पार्टी के सदस्य श्री एन. के. पाठक ने अपने पार्टी के दृष्टिकोण को रखते हुए पोस्टर-आंदोलन का समर्थन किया और सर्वोदय-मंडल को बधाई देते हुए कहा कि ऐसे आंदोलन से जनता की नैतिक शक्ति बढ़ती है। अंत में सर्वश्री मंगल प्रसाद श्रीवास, रामराजा तिवारी एवं श्री हीरालालजी शास्त्री, दुर्ग ने अपने ओजस्वी सारगर्भित भाषणों में आंदोलन का समर्थन करते हुए नगर की जनता से सहयोग की अपील की।

कार्यकर्ताओं — [illegible]

शान्ति-स्थापना के प्रयत्न से हिंसात्मक दुर्घटना टली

२४ जुलाई '६१ को ग्राम महोई (जिला फर्रुखाबाद) में दो दल लाठी, भाले तथा बन्दूकों के साथ उपस्थित थे। एक दल ०.२२ डि० खेत पर जबरदस्ती कब्जा करने की तैयारी में था और दूसरा उसे कब्जा न करने देने के लिए।

मैं साइकिल द्वारा अपने घर आ रहा था। रास्ते में इस प्रकार के जमाव को देख कर एक भाई से पूछ बैठा कि यह जमाव कैसा है? गाँव के एक ठाकुर छोटे सिंह ने मेरी साइकिल रोक कर कहा कि मेरा गाँव बरबाद होने जा रहा है, इसे बचाइये।

राजाराम नामक एक काश्तकार ने पं० लल्लूलाल से ३२५ रु० लिये थे। उसका उनके पास रुक्का भी था। लेखपाल द्वारा, जो उनका भतीजा था, राजाराम के खेत पर खाना कैफियत में अपना नाम दर्ज करा लिया था। अब उस खेत पर जबरदस्ती कब्जा करने के लिए पास के कई गाँवों के ब्राह्मणों को मय हथियारों के बुला लिया गया। उधर गाँव के ठाकुर लोग तथा राजाराम के जातीय लोग कब्जा न करने देने के लिए तैयार थे।

दोनों व्यक्तियों को एक जगह बुला कर झगड़ा तय कराने के लिए बातचीत शुरू की थी कि एक व्यक्ति ने राजाराम पर लाठी चला दी। अच्छाई यह हुई कि लाठी छप्पर में लग जाने से नीचे बैठे हुए राजाराम को नहीं लगी। भगदड़ शुरू हो गयी। दोनों ओर से आमने-सामने मोर्चा-बन्दी हो गयी। मैं फौरन भाग कर बीच में पहुँचा और दोनों दलों को शांत करने की चेष्टा करने लगा। वहाँ के एक शिक्षक तथा एक और भाई हमारे साथ बीच में आ गये और बड़ी कठिनाई से दोनों दलों को पीछे हटाया।

उसी समय पं० लल्लूलाल भी घर से भाला लेकर आये। वे जोश में थे। मैं उनके सामने आकर उन्हें समझाने की कोशिश कर रहा था। मैंने कहा,

> पंडितजी भाला मेरे सीने में मार कर ही आगे बढ़ सकेंगे। अब मैं आपको आगे जाने नहीं दूंगा।

उन्होंने कहा, तो मेरा फैसला आप ही कर दीजिए। मैंने उनसे कहा, फैसला गर्मी से नहीं होता, शान्त होकर पाँच आदमी बैठें और जो वे फैसला करें, दोनों व्यक्तियों को मानना चाहिए। वे मान गये। भीड़ हटा दी गयी। पंडितजी चाहते थे कि रुपये राजाराम चाहे और ले लें, किन्तु खेत दे दें। एक ठाकुर साहब, जो दूसरे गाँव के थे, उन्होंने कहा, आपने रुपया ब्याज के लिए दिया है, न कि किसी की रोजी के साधन छीनने के लिए? अपना रुपया मय ब्याज के लीजिए और झगड़ा खतम कीजिए। मय ब्याज के ४१५ रु० मेरे पास जमा किया गया और उधर से रुपयों का रुक्का। २० जुलाई '६१ को 'सी. ओ.' (चकबन्दी अधिकारी) के यहाँ समझौता दाखिल हुआ और रुपया पंडितजी को दे दिया गया। दोनों व्यक्ति सानन्द चले गये।—यमुनाप्रसाद, अध्यक्ष

जिला सर्वोदय-मंडल, फर्रुखाबाद

सहज भंगी-मुक्ति की दिशा में

२ जुलाई '६१से काशी में सफाई-मजदूर मित्रों की अपनी माँगों को लेकर हड़ताल चल रही है।

धारा १४४ लगा दी गयी थी। हड़तालियों द्वारा धारा-भंग के अभियोग में गिरफ्तारियाँ हुईं। लगभग डेढ़ हजार मजदूर शांतिमय तरीके से गिरफ्तार कर लिये गये। माफी माँग कर छूटने भी लगे, किन्तु काम पर आने की प्रायः हड़तालियों की माँगें तत्काल पूरी न करने के कारण, लगभग कुल २॥ हजार सफाई-मजदूरों में से आधे काम पर आने लगे। नई भरती भी शुरू है, जिसमें सवर्णों के लिए विशेष सुविधा व वेतन आदि का क्रम घोषित है। बाहर से भी मजदूर लाकर काम चालू रखने का प्रयत्न जारी है।

बीच-बीच में सार्वजनिक संस्थाएँ, जिला सर्वोदय मंडल, गांधी स्मारक निधि, गांधी आश्रम, सर्व सेवा संघ, हरिजन सेवक संघ आदि का सक्रिय मार्ग-दर्शन भी चलता ही रहता है।

सभी राजनैतिक पार्टियों के लोगों को लेकर एक 'सर्वदलीय हड़ताल निवारक समिति' भी बनायी गयी। पर देखा गया कि हड़ताल निवारक समिति के जो सदस्य हैं, वही दो एक कल हड़तालियों के गिरफ्तारी के समय उस जुलूस से भागते हुए नजर आये!

इस पर महापालिका ने इन पर अविश्वास भी करना शुरू कर दिया। इधर उत्तर प्रदेशीय सफाई-मजदूर-यूनियन के मंत्री, प्रधान श्री शंकरराव एम० एल० सी० ने इस हड़ताल को असामयिक घोषित करते हुए विचार व्यक्त किया कि जन-साधारण की सेवा व सुविधा की दृष्टि से हड़ताल नहीं करनी चाहिए थी।

परिणामतः पुलिस की मदद से भी अगर इनके "क्वार्टर" खाली करा लिये जायँ तो भी कोई हर्ज आज महापालिका ने न मानने का अनौपचारिक फैसला कर रखा है।

राजनैतिक पार्टियाँ इसका नेतृत्व करने के होड़ में ही चक्कर काट रही हैं।

नगर-प्रमुख श्री कुंजबिहारी गुप्त का कहना है कि इनकी माँगें यथासंभव सभी जायज हैं, पर माँग करने की पद्धति ठीक नहीं है। इसके बावजूद भी महापालिका राजकीय व्यवस्था परंपरा के अनुसार ही तो चलेगी। प्रदेशीय सरकार के पास से मजूरी मंगा रहे हैं, जिससे इनकी माँगें पुनः पूरी की जा सकेंगी। सबसे बड़ी बात यह है कि ऐसी भयावह परिस्थिति में भी जन-मत वैसे ही सक्रिय मौन है, जैसे रेलवे-हड़ताल के समय। जो कल सेठ-साहूकार, पांडे-पंडित विरोध करते थे झाड़ू छूने में, आज वे ही 'मेनहोल' भी साफ करते दीखते हैं। और मानने लगे हैं कि जैसे दफ्तर, मंदिर, दूकान आदि का काम है, वैसे ही यह भी अपना ही काम है। अब तो हर बीस-पचीस दूकान के बादवाली दूकान पर अतिरिक्त सामानों के अलावा झाड़ू, चूना, भी बिक रही है।

हड़ताली भी तने हुए हैं, महापालिका भी तनी हुई है। भंगी-कालोनी में जनसंपर्क करते समय मुझे बराबर इन उपाई-गेस्ट से आज यह आवाज सुनाई पड़ती है कि

> अब हम लोग भले व्यक्तिगत सहायता के नाम पर लोगों से कुछ लेकर लोगों की सफाई किया करेंगे, खेती के अलावा मोरड़ी भी लगा लेंगे, पर अब हम लोग महापालिका के नौकर बन कर सफाई नहीं करेंगे।

मन ही मन मैंने कहा—अच्छा होता, भगवान् यह आवाज आज इन मित्रों से सुन ले, फिर कल देखा जायगा!

—अलखनारायण, संयोजक

स्वच्छ काशी अभियान-समिति, काशी

खादी-कमीशन ध्यान दें

[श्री नरेन्द्रभाई एक निष्ठावान कार्यकर्ता हैं। उनको यह देख कर वेदना हुई कि किस प्रकार खादी को चुनाव-प्रचार का साधन बनाया जा रहा है। हम उम्मीद करते हैं कि यह सब आयोग के मुख्याधिकारियों के सलाह की बिना हुआ होगा। हम श्री नरेन्द्रभाई से पूरी तरह सहमत हैं कि खादी इस प्रकार की दलगत राजनीति से दूर होनी चाहिए। आशा है, आयोग इस बात की पूरी खोज-बीन करेगा और इस संबंध में उचित कार्रवाई करेगा। —सं०]

जुलाई के प्रथम सप्ताह में अपने भाई से मिलने मैं दिल्ली गया था। भाई के छोटे लड़के ने खादी-कमीशन द्वारा संचालित 'खादी भवन' से खरीदी बुशशर्ट पहनी थी। तो बुशशर्ट को देख कर एकदम चौंक गया, क्योंकि उस पर जो छपा था वह आश्चर्य में ही डालने वाला था। मैं गौर से उस बच्चे की बुशशर्ट को देख रहा था, बच्चा समझ गया कि मैं क्या देख रहा हूँ। उसने तुरन्त कहा, 'चाचाजी, आप इतना भी नहीं पढ़ सकते! जानते हैं, इस पर क्या लिखा है!' इतना कह कर वह बच्चा अपनी बुशर्ट पर लिखे छापे को जोर से पढ़ कर बताने लगा,

> "वोट हमारा कहाँ पड़ेगा,
> बैल जोड़ी के बक्से में।"

खादी-कमीशन का इस तरह की छींट छाप कर एक पार्टी का प्रचार करना कहाँ तक ठीक है? खादी-कमीशन एक तरह से सरकारी संस्था ही है, सरकारी संस्था न भी हो तो भी खादी पहनने वाले तो सभी लोग हैं, और खादी इस प्रकार की दलगत गंदगी से दूर होनी ही चाहिए। आशा है सम्बन्धित व्यक्ति इस पर ध्यान देंगे।

बलिया, —नरेन्द्र भाई

मूल्य-निर्धारण का प्रश्न

भारत के खाद्य-मंत्री श्री एस० के० पाटिल ने पिछले दिनों एक भाषण देते हुए कहा था कि अनाज की कमी की समस्या को तो हल करना इतना कठिन नहीं, जितना कठिन अनाज की अधिकता की समस्या को हल करना है। उन्होंने यह भी कहा कि आज हमारी समस्या अधिकता की समस्या होने जा रही है। कहने का आशय यह था कि यदि अनाज आवश्यकता से अधिक पैदा हुआ तो अनाज के मूल्य कम हो जायेंगे और इससे देश की अर्थ व्यवस्था में संकट उत्पन्न हो जायेगा। पहले भी अनेक बार सरकार यह घोषणा कर चुकी है कि अनाज के मूल्य एक नियत मात्रा से कम नहीं होने दिये जायेंगे। समय-समय पर अनेक राजनीतिक दल इस बात का तकाजा करते हैं कि अनाज के उत्पादन की प्रेरणा मिले। उनका कहना यह भी है कि सरकार ने गन्ने के निम्नतम मूल्य निर्धारित करके एक उदाहरण उपस्थित किया है। तब वह अनाज का मूल्य क्यों न निर्धारित करे!

वस्तुतः अनाज या अन्य कृषि पदार्थों के मूल्य निर्धारित करने में बड़ी भारी बाधा यह है कि किसान को छः महीने के बाद उसकी फसल मिलती है। इन छः महीने में उसे अपने परिवार का पालन-पोषण करना पड़ता है। यदि वह छः महीने का सारा व्यय अपनी फसल पर डाले तो अनाज इतना महँगा हो जाय कि महँगाई का भयंकर संकट उत्पन्न हो जायगा। दूसरी ओर उसे भी भूखा नहीं मरने दिया जा सकता। इसका उपाय केवल एक है कि जिन महीनों में वह बेकार बैठता है, उसे ग्रामोद्योगों और घरेलू धन्धों के रूप में कोई काम मिलना चाहिये। तभी वह अनाज के मूल्य कुछ कम रख कर भी अपना जीवन निर्वाह कर सकेगा। —'संपदा' से

रूस की बीस साला योजना !

लक्ष्मीनारायण भारतीय

रूस की कम्युनिस्ट पार्टी ने आगामी अक्तूबर की कम्यूनिस्ट कांग्रेस के सामने पेश करने के लिए एक बीस वर्षीय कार्यक्रम प्रकाशित किया है, जो संसार के कम्यूनिस्टों के लिये "बाइबिल" के समान माना जायेगा, ऐसी आशा की जाती है। अपने देश की जनता के लिए, इन बीस सालों के समाप्त होते होते, रूसी सरकार ने कुछ क्रांतिकारी सुविधाएँ उपलब्ध करा देने का आश्वासन दिया है। "टैक्सेस चले जायेंगे, फुटकर कीमतें उतर जायेंगी, शिक्षा, औषधोपचार, बाल-संगोपन आदि की निःशुल्क व्यवस्था कर दी जायेगी, मकान किराया एवं वाहन भी निःशुल्क मिलेंगे, स्कूली बच्चे अपनी जरूरतें निःशुल्क पूरी कर सकेंगे, स्कूली बच्चों की आवास, भोजन व्यवस्था आदि भी सरकार ही करेगी। फैक्टरियों एवं फार्मों के कार्यकर्ताओं को 'फ्री फूड' सप्लाई किया जायेगा। काम के घंटे कम कर दिये जायेंगे। सवेतन छुट्टियाँ बढ़ा दी जायेंगी। भोजन मुफ्त मिलेगा। औद्योगिक उत्पादन २० सालों में ५०० प्रतिशत बढ़ जायेगा। राष्ट्रीय आय ४०० प्रतिशत एवं प्रति व्यक्ति २५० प्रतिशत आय हो जायेगी।" इस प्रकार हर तरह से मुफ्त सुविधाएँ कर देने का कार्यक्रम इन बीस सालों में पूरा किया जायेगा एवं २० साल होते होते रूसी जनता (मौजूदा पीढ़ी ही !) कम्यूनिज्म के सारे लाभ प्राप्त कर लेगी। अब तक समाजवाद ने रूस में "पूर्णतः" सफलता प्राप्त कर ली। अब, आगामी २० सालों में "कम्यूनिस्ट समाज" का निर्माण रूस में हो जायेगा! या उसकी नींव पड़ जायेगी।

इसके साथ साथ सह अस्तित्व पर विश्वास, अमरीका एवं पूंजीवादी तथा साम्राज्यवादी प्रणाली की निन्दा, युद्धविरोध आदि अनेक विषयों पर भी चर्चा की गयी है। रूसी जनता का जीवन-स्तर उच्च बना कर उसे सर्वांगीण सुखी बनाने का यह कार्यक्रम रूस की कम्यूनिस्ट पार्टी ने पेश किया है, जो पार्टी की 'सरकार' द्वारा पूरा किया जायेगा, जीवन की तमाम आवश्यकताएँ "निःशुल्क" पूरी कर देने का यह पार्टी एवं सरकार का दृढ़ आश्वासन है!

इस आश्वासन को हम केवल सब्जबाग तो नहीं मान सकते, क्योंकि यह रूसी साम्यवाद का एक नियोजित कार्यक्रम है, और उसके पीछे साम्यवादी दल का प्रयत्न है।

इस समय यह कार्यक्रम राजनीतिज्ञता के साथ सामने आया है। एक तरफ रूसी जनता को एवं कम्यूनिस्ट जगत् को 'स्वप्न के मूर्तिमंत' होने का 'आश्वासन', दूसरी तरफ अविकसित एशियाई एवं अफ्रिकन देशों के लिये 'आकर्षण' तथा तीसरी ओर पूंजीवादी एवं साम्राज्यवादी राष्ट्रों के लिये 'चुनौती'; इस प्रकार एक पत्थर से तीन पखेरू का शिकार करने का प्रयत्न किया गया है! पूंजीवादी देशों में अपनी प्रणाली के द्वारा यह विश्वास दिलाना अब लाजिमी हो गया है कि वे भी इस चुनौती का जवाब दे सकते हैं। अविकसित राष्ट्रों की गरीब एवं पीड़ित जनता इसकी ओर खिंच जाने वाली है एवं रूसी जनता को यदि पूरा नहीं, तो कुछ न कुछ आश्वासन तो मिलने ही वाला है। अपने ही ढंग से क्यों न हो, कम्यूनिस्ट पार्टी और उसकी सरकार इसकी पूर्ति का प्रयत्न भी बराबर करेगी, इसमें भी सन्देह नहीं; क्योंकि "तीन पखेरू का शिकार" उसे करना ही है, केवल वैसा शब्दजाल नहीं खड़ा करना है।

लेकिन यह योजना अंतर्विरोधों से भरी है, यह भी सरसरी निगाह से देखने पर सहज ध्यान में आ सकता है! अधिकतर आवश्यकताएँ निःशुल्क पूरी कर देने का आश्वासन बहुत बड़ा है, इसमें सन्देह नहीं, परन्तु इस आश्वासन को पूर्ण करने के लिए कितने श्रम तथा साधन जुटाने पड़ेंगे, इसका हम खयाल करेंगे, तो स्पष्ट दिखाई देगा कि किसी-न-किसी एक वर्ग को अधिक श्रम करना ही पड़ेगा! आखिर ये सब चीजें न तो आसमान से गिरने वाली हैं, न ही भूमि के अन्दर से प्रकट होने वाली हैं। उत्पादन-वृद्धि, उचित बँटवारा, रोजगार के अवसरों की कमी आदि के जरिये ही यह सब होने वाला है एवं उत्पादन-वृद्धि में कितनी ही यंत्र-सहायता ली गयी, तो भी मनुष्यों को श्रम करना ही होगा। कहीं भी यह नहीं कहा गया है कि 'मनुष्य श्रमरहित हो जायेगा।' श्रम के घंटे कम किये जायेंगे, इतना ही आश्वासन है! 'श्रम' जब करने होंगे, तो वे कितने कम एवं कितने ज्यादा, इसकी कोई सही रिपोर्ट बाहरी दुनिया के पास उपलब्ध नहीं हो सकेगी। न ही पार्टी ने यह आश्वासन दिया है कि बिना श्रम किये, पलंग पर बैठे बैठे ही जनता को ये सारी रियायतें मिल जायेंगी। अतः जाहिर है कि श्रम सबको करना पड़ेगा, किसी-न-किसी को अधिक भी श्रम करना पड़ेगा और इन सबका परिणाम होगा, अधिक सुविधाएँ एवं निःशुल्क वस्तुओं की प्राप्ति! निःशुल्क प्राप्ति भी एक भ्रम है, क्योंकि यह प्राप्ति वस्तुओं में होगी, कीमत में भले ही न हो, जब कि अन्य प्रणालियों में भरपूर मजदूरी देकर ये चीजें खरीदने की क्षमता उत्पन्न करने का प्रबन्ध है। यहाँ वेतन (आवश्यकता एवं काम के अनुसार) मिलेगा, साथ में ये सुविधाएँ निःशुल्क। इस तरह दोनों के द्वारा पूर्ति होगी। इसमें नवीनता इतनी ही है कि 'लोक कल्याण राज्य' जितनी सुविधाएँ करा देने का आश्वासन देते हैं, उनसे कुछ ज्यादा ये सुविधाएँ हैं। हाँ, एक निश्चित अवधि में ये पूरी करा देने का आश्वासन जरूर दिया गया है। परन्तु उसके लिए कीमत कितनी चुकानी पड़ेगी? यह सब कुछ पार्टी की 'सरकार' द्वारा किया जायेगा, याने सरकार ही सर्वेसर्वा हो जायेगी। प्रत्येक आवश्यकता सरकार पूरी करेगी और नियंत्रण भी वही करेगी। सरकार पर सब निर्भर रखने का अर्थ है, सरकार को अधिकाधिक तानाशाही बनाना, जो कम्यूनिस्ट शासन का अविभाज्य अंग बन गया है, भले ही वह तानाशाही पार्टी के द्वारा स्थापित हो! कम्यूनिज्म का अंतिम साध्य 'स्टेट् विल विदर अवे' तो यहाँ गायब ही हो जाता है!! स्टेट् रहेगी, सर्वेसर्वा रहेगी, सर्वत्र रहेगी, जीवन के प्रत्येक अंग का नियंत्रण करेगी, उसके लिये जोर जबरदस्ती भी करेगी और व्यक्ति जीवन का ह्रास तेजी से होने लगेगा!

इस प्रकार 'निःशुल्क' प्राप्ति के लिए इतनी कीमत चुकानी पड़ेगी एवं 'अभिक्रम' समाप्त करने का आयोजन भी! साथ ही कम्यूनिस्ट विचारधारा के प्रभुत्व के लिये 'ब्रेन-वाशिंग' का कार्यक्रम भी जारी रहेगा! यों 'पशु मानव' बनाने की सारी सामग्री उपस्थित रहेगी। खाने-पीने को पूरा दिया जायेगा, आराम भी दिया जायेगा, निःशुल्क व्यवस्थाएं कर दी जायेंगी, सिर्फ आप मेहनत करें और अपनी बुद्धि, अभिक्रम, विचार स्वातंत्र्य आदि का बलिदान करें!

कितनी गहरी कीमत रहेगी? मूक पशु भी कुछ हद तक ठीक है, क्योंकि उसके सामने विचार, बुद्धि आदि का प्रश्न ही नहीं रहता! अतः 'मानव पशु' या 'पशु-मानव' बनने के सिवा कोई चारा ही नहीं रहेगा। क्या यही उस 'कम्यूनिस्ट सोसायटी' की स्थापना है, जिसका लक्ष्य "स्टेट् विल विदर अवे" है! स्टेट् के सर्वशक्तिमान रहते हुए 'कम्यूनिज्म' की स्थापना किस प्रकार होगी, यह भगवान् ही जाने! मुफ्त-सुविधाएँ उपलब्ध करा देने का एवं अधिकाधिक आराम 'निःशुल्क' करा देने का आर्थिक सामाजिक कार्यक्रम तो पूरा होगा, परन्तु राजनीतिक एवं नैतिक कार्यक्रम दफना दिया जायेगा! यह 'क्रांतिकारी' कार्यक्रम है, इसमें सन्देह नहीं! क्योंकि एक लक्ष्य की प्राप्ति होगी तो दूसरे लक्ष्य की बलि! कुल मिला कर सौदा बराबर! बल्कि बहुत महँगा सौदा रहेगा, क्योंकि हम मानव हैं, पशु नहीं! मानव शरीर, मानव-बुद्धि, मानव-मन के रहते हुए हम पशुवत् हो जायेंगे, सर्वथा पराधीन!

अतः यह कार्यक्रम बहुत महत्वपूर्ण है, वह पूरा भी होगा एवं इसे 'आश्वासन-आकर्षण-चुनौती' के रूप में दुनिया के सामने प्रस्तुत किया जाये, यह सब सही होते हुए भी, और 'सोशलिज्म' तथा 'कम्युनिस्ट सोसायटी' की स्थापना हो जाने पर भी 'स्टेट्' कायम ही रहेगी—'विदर अवे', अर्थात् लुप्त नहीं होगी, वही ब्रह्मा विष्णु महेश भी बनेगी एवं पार्टी की तानाशाही या 'लौह दंड' भी बराबर बना रहेगा। उधर 'रिलाइबल डिफेंस एवं सिक्युरिटी' के लिए फौजी शक्ति में सर्वश्रेष्ठ बनने की होड़ भी जारी रहेगी! परिणामतः "लौह आवरण" भी कायम रहेगा।

फिर भी यह जगत् को 'आश्वासन आकर्षण-चुनौती' तो है ही, क्योंकि कम्यूनिस्ट जगत् इसकी पूर्ति के लिए ही प्रयत्नशील है, गरीब देश भी पीड़ित हैं एवं पूंजीवादी, साम्राज्यवादी देश अपनी व्यवस्था से चिपके हुए हैं ही। सबसे बड़ी बात यह है कि करोड़ों लोग भूखे-नंगे हैं, पराधीन हैं और स्वार्थी तत्त्व उनका 'शोषण' करने में संलग्न हैं। उसके मुकाबले 'आर्थिक शोषण' से विमुक्त कराने वाली एवं प्रत्यक्ष में फलदान करने वाली यह 'बाइबिल' अत्यंत महत्वपूर्ण बन जायेगी, इसमें सन्देह नहीं, क्योंकि भूखी-नंगी शोषित जनता राजनीतिक गुलामी या मानसिक आत्मिक गुलामी की बात पहले नहीं सोचती! उसे 'पशु मानव' बन जाने की कोई चिंता नहीं, क्योंकि आज वह पशु से भी बदतर हालत में है! ऐसी स्थिति में उसे यह 'बाइबिल' मुक्ति-सन्देश देती हुई महसूस हो, तो कोई आश्चर्य नहीं! अतः इस 'बाइबिल' के प्रभाव से मुक्त करने के लिए दूसरी 'बाइबिल' ही बनानी पड़ेगी, इस 'बाइबिल' की निंदा से काम चलने वाला नहीं है। दूसरी बाइबिल बनाने के लिए सर्वप्रथम शोषण हटाना होगा और बढ़ते हुए शासन को भी रोकना होगा। वस्तुतः लोक-कल्याण राज्य या समाजवादी राज्य भी आज केंद्रीकरण एवं फौजी सत्ता पर निर्भरता की ओर ही बढ़ रहे हैं, भले ही 'डेमोक्रेटिक' स्तर पर यह सारा चल रहा हो! अतः कम्यूनिस्ट बाइबिल के मुकाबले खड़े होने के लिए एवं नई बाइबिल बनाने के लिए केन्द्रीकरण एवं फौजी शक्ति पर निर्भरता से एवं शासन से छुटकारा पाना होगा, अन्यथा दोनों में बहुत अधिक फर्क नहीं रह जायगा। छुटकारा पाने के लिए आज की प्रणाली भी छोड़नी होगी। यह प्रणाली 'राजनीति'-युक्त है, जिसके उदर से ये सब बातें पैदा होती हैं। इसका उपाय 'लोकनीति' युक्त प्रणाली की स्थापना में ही निहित है, जो शासन के केन्द्रीकरण का उपाय बता कर फौजी शक्ति की निर्भरता को हटाती है एवं साथ ही शोषण से मुक्ति का मार्ग भी प्रशस्त करती है। इसी के आधार से 'आश्वासन-आकर्षण चुनौती' युक्त कार्यक्रम का पर्याय प्रस्तुत किया जा सकता है एवं जगत् को 'पशु' या 'पशुमानव' बनाने से बचाया जा सकता है! ● ●

सर्वोदय-साहित्य के पाठकों के लिए स्थायी ग्राहक योजना

अखिल भारत सर्व सेवा संघ के पास बराबर माँग आती रही है कि सर्वोदय-साहित्य में दिलचस्पी रखने वाले मित्रों को संघ के नवीन प्रकाशनों की सूचना समय समय पर मिलनी चाहिए। जानकारी के अभाव में अक्सर वे नवीन साहित्य के अध्ययन से वंचित रह जाते हैं। अतएव संघ ने नीचे लिखे अनुसार एक **"स्थायी ग्राहक योजना"** चालू की है।

[१] स्थायी सदस्यता या प्रवेश-शुल्क १ रु० होगा।

[२] स्थायी सदस्यों को 'भूदान-यज्ञ' हिन्दी, 'भूदान' अंग्रेजी, 'भूदान-तहरीक' उर्दू या 'नई तालीम' (हिन्दी मासिक) में से किसी पत्रिका के ग्राहक बनने पर एक पत्रिका के चन्दे में १ रु० की छूट प्रथम वर्ष में दी जायगी।

[३] उपर्युक्त चारों पत्र-पत्रिकाओं में से किसी भी एक पत्र के मौजूदा ग्राहकों को प्रवेश-शुल्क देने की आवश्यकता नहीं रहेगी, केवल ग्राहक-नम्बर और पेशगी रकम भेजने पर स्थायी ग्राहक मान लिये जायेंगे।

[४] स्थायी ग्राहकों को चार रु० पेशगी जमा करना होगा। साल में निर्धारित मूल्य से कम मूल्य की पुस्तकें लेने पर दिया हुआ कमीशन, या वी० पी० लौट कर आने से उसके खर्च आदि की रकम, इस धन में से जमा कर ली जायगी। किसी प्रकार का बकाया न होने पर पेशगी की रकम सदस्यता समाप्ति पर वापस कर दी जायगी।

[५] हमारी अपेक्षा है कि संघ द्वारा प्रकाशित हर नयी किताब स्थायी ग्राहकों के पास पहुँचे। फिर भी ग्राहकों को अपनी रुचि के अनुसार चयन करके साल में कम-से-कम १५ रु० की किताबें सर्व सेवा संघ-प्रकाशन, काशी से लेना आवश्यक होगा।

[६] स्थायी ग्राहकों को नये प्रकाशनों की सूचना यथासंभव हर दूसरे महीने दी जाती रहेगी।

[७] सर्व सेवा संघ प्रकाशन काशी से पुस्तकें लेने पर स्थायी ग्राहकों को २५ प्रतिशत कमीशन दिया जायेगा। पुस्तकें भेजने का व्यय, पैकिंग आदि खर्च ग्राहकों के जिम्मे होगा।

[८] संघ द्वारा प्रकाशित साहित्य का मूल्य कम होने के कारण फुटकर पुस्तकें मँगाने वालों को डाक खर्च प्रायः मूल्य के अनुपात में अधिक पड़ता है, यह ध्यान में रखना चाहिए। जो स्थायी ग्राहक एक-साथ १५ रु० जमा करा देंगे, उन्हें बिना वी० पी० या बिना रजिस्ट्री के किताबें भेजी जा सकेंगी। इसमें डाक-व्यय कम हो जायेगा। वी० पी० या रजिस्ट्री से ही साहित्य मँगवाना हो तो एक स्थान पर अधिक ग्राहक होने से और एकसाथ मँगाने से डाक व्यय में कुछ बचत होगी। अधिक साहित्य मँगाना हो तो रेल से भी मंगाया जा सकता है। मार्ग-व्यय की सबसे अधिक बचत इसमें है।

[९] हर माह की २५ तारीख को साहित्य यहाँ से भेजा जायेगा। ग्राहकों को किताबों का चयन करके उसकी सूचना हमें १५ तारीख तक भेज देनी होगी।

[१०] इन नियमों में अनुभव से फेर-बदल की आवश्यकता महसूस हो तो वह किया जा सकेगा। इसकी सूचना भूदान पत्र पत्रिकाओं द्वारा दी जायेगी। आशा है, पाठक स्वयं इस योजना का लाभ उठायेंगे और मित्रों को भी इसके लिए प्रेरित करेंगे।

—संचालक
अ० भा० सर्वसेवासंघ-प्रकाशन

विनोबा पदयात्रा

आचार्य दादा धर्माधिकारी, श्री सिद्धराज, श्री पूर्णचन्द्रजी और श्री कृष्णराज मेहता विनोबा से मिलने असम गये थे। ता० १ अगस्त से ४ अगस्त तक विनोबा के साथ रहे। एक ताल्लुके जितने पूरे क्षेत्र के ग्रामदान की संभावना है। अतः फिलहाल पूरा अगस्त महीना पद-यात्रा कार्य लखीमपुर जिले में ही चलेगी।

श्री विनोबाजी का स्वास्थ्य अच्छा है। साथ में श्री महादेवी ताई, जयदेव भाई, बालभाई और कालिंदी बहन हैं। असम सर्वोदय मंडल के कार्यकर्ता भाई-बहन, श्री अमलप्रभा दास, श्री खगेश्वर भूइयाँ भी साथ हैं।

रचनात्मक संस्थाओं से

पिछले महीने पूना शहर पर अचानक जो विपत्ति आयी, वह असाधारण थी। शहर से कुछ मील ऊपर पानी का बाँध टूट जाने से शहर में जो बाढ़ आयी, उसका असर करीब-करीब एक लाख लोगों पर हुआ। सौभाग्य से जानें तो कम गयीं, लेकिन पूना शहर के लोगों का और वहाँ की संस्थाओं का आर्थिक नुकसान बहुत ज्यादा हुआ। पूना में महाराष्ट्र सेवा संघ, साधना प्रेस, संगम प्रेस, सुलभ मुद्रणालय आदि कई सार्वजनिक संस्थाएँ, जो 'शनिवार पेठ' में थीं, वह हिस्सा बाढ़ में आने से उनका काफी नुकसान हुआ। पूना की इन रचनात्मक संस्थाओं का नुकसान कुल मिला कर करीब १५ लाख रुपये का हुआ होगा, ऐसा अनुमान है।

पूना शहर के लोगों की इस विपत्ति ने देश भर में सहानुभूति की प्रतिक्रिया पैदा की है और देश भर से ही लोगों ने दिल खोल कर अपनी यत्किंचित सहायता पूना को पहुँचाने की कोशिश की है। राष्ट्र की एकता का भव्य दर्शन और उसकी उपयोगिता ऐसे मौकों पर प्रत्यक्ष नजर आती है। यह खुशी की बात है कि देश की रचनात्मक संस्थाओं ने भी पूना की संस्थाओं के नुकसान में हिस्सा बँटाना अपना एक विशिष्ट कर्तव्य महसूस किया है। अभी हाल में पूसा रोड (बिहार) में सर्व सेवा संघ की खादी-ग्रामोद्योग समिति की बैठक हुई थी, वहाँ पर एकत्रित पंजाब, राजस्थान, दिल्ली, बिहार, उत्तर प्रदेश आदि की खादी-संस्थाओं के कार्यकर्ताओं ने महाराष्ट्र सेवा संघ और पूना की अन्य रचनात्मक संस्थाओं की मदद के लिये करीब १२ हजार रुपया सहायता के रूप में भेजने का जाहिर किया है। इसी प्रकार नागपुर के 'खादी भवन' ने भी महाराष्ट्र सेवा संघ को एक हजार रुपये की रकम भेजी है। रकम के परिमाण का उतना महत्त्व नहीं है, जितना इस बात का कि रचनात्मक संस्थाओं ने यह महसूस किया कि देश के किसी भी भाग में कोई विपत्ति आ पड़े तो उसमें मदद करना, खास तौर से सार्वजनिक संस्थाओं के नुकसान में हाथ बँटाना, उनका कर्तव्य है। हम आशा करते हैं कि उपरोक्त संस्थाओं की तरह देश की अन्य रचनात्मक संस्थाएँ भी अपनी मदद महाराष्ट्र सेवा संघ को भेजेंगी।

—सिद्धराज

साधना केंद्र, काशी में सर्वसेवा संघ की बैठकें

आजकल सर्व-सेवा-संघ के प्रधान केन्द्र, साधना केन्द्र में सर्व-सेवा-संघ की विभिन्न उपसमितियों की बैठकें चल रही हैं। अभी तक प्रकाशन-समिति, गांधी विद्या-संस्थान, शांति-सेना मंडल एवं खादी ग्राम-स्वराज्य समिति की दो उपसमितियों की बैठकें हो चुकी हैं। आपके हाथ में अंक पहुँचने तक प्रबंध समिति की बैठक भी सम्पन्न हो चुकी होगी। इन सब समितियों एवं प्रबंध समिति के निर्णय हम अगले अंक में दे सकेंगे। बीच में प्रेस की छुट्टियाँ आने के कारण यह अंक समय के पूर्व निकाला जा रहा है। —सं०

क्षमा-याचना

ता० २८ जुलाई के 'भूदान-यज्ञ' में पृष्ठ ८ पर श्री रघुकुल तिलक का लेख प्रकाशित हुआ है। लेख के प्रारंभ में श्री रघुकुलजी का परिचय "पद निवृत्त सरकारी अधिकारी" के तौर पर दिया गया है। वास्तव में श्री रघुकुल तिलक एक पुराने सार्वजनिक कार्यकर्ता रहे हैं। आजादी की लड़ाई के समय वे ५ बार जेल भी भुगत चुके थे और वर्षों तक उत्तर प्रदेश विधान सभा के सदस्य रहे। काशी-विद्यापीठ में वे अध्यापन-कार्य भी कर चुके हैं। इस प्रकार उनका अधिकांश जीवन सार्वजनिक सेवा और राष्ट्रीय कार्यों में ही बीता। सरकारी पद पर तो वे पिछले कुछ वर्षों में ही रहे थे। उनका अधूरा परिचय दिया गया, इसके लिए हम क्षमाप्रार्थी हैं।

भूल-सुधार

प्रेस की गलती से इसी अंक में पृष्ठ-संख्या ३ पर "विनोबा पदयात्रा-वृत्त" के बजाय 'वृत्ति' छपा है। वैसे अधिकांश अंकों में दुरुस्ती हो गयी है, फिर भी कुछ अंकों में यह गलती रह गयी है। जिनके हाथ में ऐसा अंक पड़े, वे कृपया भूल सुधार लें। —सं०

इस अंक में

श्रीकृष्णदत्त भट्ट, अ० भा० सर्व सेवा संघ द्वारा भार्गव भूषण प्रेस, वाराणसी में मुद्रित और प्रकाशित। पता: राजघाट, वाराणसी-१, फोन नं० ४३९१
वार्षिक मूल्य ६) पिछले अंक की छपी प्रतियाँ ९,२३० : इस अंक की छपी प्रतियाँ ९,२३० एक अंक : १३ नये पैसे

विज्ञान-युग में अध्यात्म : २

—दादा धर्माधिकारी

गंगा जल के विषय में एक वैज्ञानिक कहेगा कि यह तो पानी है, दो वायु के संयोजन से यह बनता है, इससे स्नान करोगे तो स्वच्छ बनोगे। इसे पीयेंगे तो आपकी प्यास शांति होगी; जब कि कवि का इसकी ओर देखने का भिन्न दृष्टिबिंदु होता है। इसे हम संस्कार कहते हैं। संस्कार क्या करता है? वह सृष्टि के साथ हमारा संबंध स्थापित करता है।

यह कहना सरल है कि घर-घर में ईश्वर व्याप्त है। परन्तु इसकी प्रतीति कब होती है? जब इस सृष्टि की वस्तु-मात्र जीवन की विभूति बन जाती है, तब ऐसी प्रतीति शक्य होती है। यह कुछ जड़ पदार्थ की पूजा नहीं है। मनुष्य को भी जब हम परमेश्वर का सगुण स्वरूप कहते हैं, तब उसे कोई देवता नहीं बनाते। परन्तु समग्र सृष्टि जीवन की विभूति है, यह प्रतीति यदि इस विज्ञान-युग में नहीं हो तो विज्ञान द्वारा जैसे-जैसे अधिकाधिक शक्ति हाथ में आयेगी, वैसे-वैसे जीवन का ह्रास होता जायगा। आकांक्षा अदम्य होने के कारण चाहे वह कभी समाप्त न हो, पर मनुष्य की प्रेरणा-शक्ति और विकास की सामर्थ्य शक्ति कम होती जायगी।

आज इस बात की बहुत जरूरत है कि मनुष्य वस्तुमात्र को जीवन की विभूति समझे। ऐसा होगा तभी वस्तु के दुरुपयोग को उसका अपमान करने के समान समझेगा और ऐसा अपमान वह नहीं करेगा। *गांधी मुँह धोने के लिए पानी का* छोटा-सा प्याला काम में लाते। पानी का उपयोग करने में भी इतनी कंजूसी? कोई पूछता तो मामूली जवाब दे देते कि व्यर्थ दुरुपयोग मत करो, जिससे कमी का अनुभव नहीं करना पड़े। परंतु इसके पीछे महान् सांस्कृतिक दृष्टिकोण है कि वस्तु के दुरुपयोग में वस्तु का अपमान है और वस्तु के अपमान में मनुष्य की असभ्यता है।

इसलिए वस्तुमात्र जीवन की विभूति है। इसके दुरुपयोग या अतिरिक्त उपयोग में इसकी अप्रतिष्ठा है। इस प्रकार वस्तुमात्र जब जीवन की विभूति बन जाती है, तब वह केवल आर्थिक संयोजन नहीं रहती, पर जीवन का संयोजन बन जाती है। विज्ञान-युग में इस बात की बहुत जरूरत है।

विज्ञान हमें इतना ही समझायेगा कि धरती में कोयला, तैल, पेट्रोल परिमित मात्रा में है और प्राकृतिक संपत्ति का अविचारी उपयोग करने से धरती का सत्व धुल जायगा। परंतु इतने मात्र से मनुष्य की मानवीय प्रेरणा का विकास नहीं होता।

विज्ञान जब हमें ऐसा समझायेगा कि जो वस्तु हमें सुख-दुःख देती है, उसमें और हममें मूलभूत साधर्म्य है, तब वह वस्तु, वस्तु नहीं रह कर जीवन की विभूति बन जायगी। यह मेरी दृष्टि में विज्ञान-युग का अध्यात्म है।

परिश्रम ज्ञान से आलोकित होना चाहिए

दूसरा एक महत्त्वपूर्ण कार्य है। फोरियर ने कहा है कि 'लेबर मस्ट बी लिट बाई नॉलेज'—श्रम ज्ञान से आलोकित होना चाहिए। केवल परिश्रम से ज्ञान प्राप्त नहीं होता। कुशलता प्राप्त होती है, अनुभव मिलता है। अनुभव ज्ञान नहीं। जिसे अनुभव होता, उसे ज्ञान भी होता है, यह बहुत कम होता है। अनुभव, कुशलता यह अलग वस्तु है और यह कर्म से पैदा होती है; जब कि ज्ञान कर्मजन्य नहीं है। तभी फोरियर ने कहा कि

> ज्ञान का आलोक श्रम में आना चाहिए। तब एक मनुष्य का परिश्रम दूसरे मनुष्य का विषय नहीं बनता। आज एक का श्रम दूसरे के हाथ का साधन बनता है। उससे शोषण हो सकता है। जब श्रम में ज्ञान मिलेगा तब उसमें ऐसी शक्ति आयेगी कि वह विषय नहीं होगा। श्रम भी मानवीय जीवन का एक तत्त्व होगा।

कहते हैं कि मनुष्य को कालातीत होना चाहिए। *यह कालातीतता क्या है?* इसे मैं पूरी तरह नहीं समझता, पर इतना समझता हूँ कि जब तक मैं समय का उपयोग जीवन के विकास के लिए करता हूँ, तब तक वह मेरे जीवन का उपांग, साधन और उपादान बन कर रहता है, पर जब मैं उसका दुरुपयोग करता हूँ, तब वह काल बन कर जीवन का भक्षण करता है।

इसी प्रकार परिश्रम यदि ज्ञान से आलोकित नहीं हो, तो वह श्रम एक की उपजीविका का साधन बनता है और दूसरे के उपभोग की चीज बन जाता है। जो परिश्रम मेरे और अन्य के जीवन का विकास करता है, वह स्वयं उपासना है। किसकी? मैं ऐसा नहीं कहूँगा कि भगवान की। *भगवान के प्रति किसी को आपत्ति* हो सकती है, इसलिए उसे छोड़ देते हैं। नाम के साथ हमें कोई मतलब नहीं। हम श्रम को जीवन का तत्त्व मानें, जीवन की विभूति मानें। श्रम को यदि इस प्रकार विभूति मानें तो आज की एक बहुत बड़ी समस्या का निराकरण हो सकता है।

श्रम की मानवीय प्रेरणा

विज्ञान, समाजवाद, साम्यवाद सबके सामने आज समस्या यह है कि श्रम की प्रेरणा कहाँ से आयेगी? जयप्रकाशजी समाजवाद के अध्ययन के अन्त में इस निर्णय पर पहुँचे कि भौतिकता या धर्म से यह प्रेरणा नहीं मिल सकती। धर्म हमें स्वर्ग का लोभ या नरक का भय दिखा सकता है। कुहमत हमें सजा का डर बता सकती है। परंतु उतने मात्र से श्रम की मानवीय प्रेरणा नहीं आती। तो यह कहाँ से आयेगी? इस प्रश्न का उत्तर विज्ञान के पास नहीं। इसका उत्तर इस चीज में है

> कि जिस परिश्रम से और जिस क्रिया से मनुष्य का जीवन सम्पन्न बनता है वह आध्यात्मिक प्रक्रिया है,

जीवन की विभूति है। श्रम जब जीवन की विभूति बन जाता है, तब नाम के लिए किसी बाहर की प्रेरणा की आवश्यकता नहीं। श्रम मनुष्य का स्वभाव बन जाता है। प्रश्न यह है कि किस संस्कार से उस स्वभाव का विकास होता है? श्रम *मनुष्य के जीवन-विकास के लिए आव-*आवश्यक है।

विज्ञान मौन

बचपन में हमें पढ़ाते थे कि 'स्वच्छता पवित्रता है।' दूसरा यह सीखाते कि 'स्वस्थ शरीर में स्वस्थ चित्त रहता है।'

गांधी की अपेक्षा राममूर्ति का शरीर अधिक स्वस्थ था और विनोबा का शरीर तो पहले से रोगजर्जर है। तो क्या राममूर्ति का चित्त गांधी-विनोबा की अपेक्षा अधिक स्वस्थ होगा? स्वच्छता भी आज दुनिया में जितनी है उतनी पहले कभी नहीं थी। कहते हैं कि अमेरिका में मक्खी, मच्छर और चूहे नहीं हैं और खटमल का तो नामोनिशान ही नहीं, टाइफाइड का रोग बहुत कम है और पेचिश को तो नेस्तनाबूद कर दिया गया है। इतनी स्वच्छता होने पर भी पवित्रता क्यों नहीं? हमारे यहाँ अस्वच्छता है, इसलिए पवित्रता अधिक है, ऐसा कोई नहीं समझे। हम तो दोनों में अतिचार हैं।

विज्ञान ने हमें आत्यंतिक स्वच्छता सुलभ कर दी है, रोगों पर अच्छी विजय प्राप्त की है और विपुल मात्रा में सुख-सुविधा प्रदान की है। परंतु स्वच्छता से पवित्रता नहीं आयी, स्वास्थ्य से चित्त की उन्नति नहीं हुई और सुख-सुविधा से प्यार नहीं मिला। ऐसा क्यों? इसका उत्तर विज्ञान के पास नहीं, इस बारे में वह मौन है। इसका उत्तर जिस संस्कार से मिलता है, वह है मानवमात्र की एकता की प्रतीति।

जीवन के प्रति आदर

अपने युग की महान् विभूति अल्बर्ट श्वीट्ज़र ने जीवन के प्रति आदर मन्त्र दिया। यह आदर समस्त सृष्टि का आदर है, जिसमें पहला आदर मानव-जीवन के प्रति है। मनुष्य की प्रतिष्ठा जीवन की प्रतिष्ठा से आती है। प्रत्येक मनुष्य के जीवन का समान मूल्य है। यह समानता हमने कानून में स्थापित की। गांधी-तिलक या व्यास-वाल्मीकि का खून करने वाले को भी फाँसी की सजा और किसी बदमाश का खून करने वाले को भी फाँसी की सजा! प्रत्येक मनुष्य को हमने एक-एक मत दिया है। इसमें केवल मनुष्यता का ही विचार किया जाता है। ऐसे निरपेक्ष मूल्य का आधार क्या होता है? मानवीय जीवन की एकता की प्रतीति इसका आधार है।

मैं दूसरे के सुख से सुखी और दूसरे के दुःख से दुःखी होता हूँ। दूसरे के साथ *मेरे जीवन का तादात्म्य सधता है,* उसके साथ मेरा जीवन एकरूप होता है, तब ऐसी एकता की प्रतीति होती है। मैं दूसरों को अपना ही नहीं, लेकिन अपने स्वरूप जैसे ही मानने लगता हूँ। वेदांत की परिभाषा में इसे अद्वैतवाद का निराकरण कहते हैं।

जीवन की ऐसी एकता की प्रतीति विज्ञान नहीं करा सकता। विज्ञान तो आपका जीवन परमाणु-'एटम'-का बना हुआ है या शक्ति-एनर्जी-की देन का, कह सकता है। विज्ञान परिस्थिति में परिवर्तन कर सकता है; परंतु यह भावरूप मूल्यों की स्थापना नहीं कर सकता।

जीवन की एकता की प्रतीति कोई सिद्धांत नहीं, कोई उपपत्ति नहीं; यह तो अनुभूति है। किसी व्यक्ति का दुःख देख कर मैं दुःखी होता हूँ, फिर चाहे वह व्यक्ति चाहे जितना अपरिचित हो। यह एक अनुभूति है, सिद्धांत नहीं।

इस प्रतीति से ही यह सिद्धांत निष्पन्न होता है कि एक मनुष्य का दूसरे मनुष्य के जीवन में सहायक होना चाहिए। मनुष्य मनुष्य के बीच एक-दूसरे के जीवन के विकास के लिए सहयोग होना चाहिए। सहकारिता एक आर्थिक और सामाजिक विज्ञान का सिद्धांत है, परंतु इसके पीछे मनुष्य के स्वभाव के मूलभूत तत्त्व का अंश है।

अंतिम बात मनुष्य की स्वतंत्रता की जिम्मेदारी की कल्पना। आज मनुष्य अपनी जिम्मेदारी दूसरों पर डालने की कोशिश करता है। पहले उसने अपनी जिम्मेदारी

[शेष पृष्ठ ११ पर]

ब्रह्म सत्यं जगत् स्फूर्तिः जीवनं सत्यशोधनम्

भूदानयज्ञ

लोकनागरी लिपि•

नीष्काम सेवकों की जमात

हीन्दुस्तान में नीष्काम सेवकों की अेक जमात बने, जो ब्रह्म-वीद्या के आधार पर नीष्काम भाव से भगवत् सेवा का काम करें, अैसी अीच्छा मेरे मन में पैदा हुअी है। वैसे मैं लोगों में नीष्काम सेवा का ही वीचार समझाता रहा हूं। अीनदीनों हमारी यात्रा के साथ साथ 'गीता प्रवचन' का भी प्रचार चलता है। गीता को हम यात्रा के साथ अीसलीअे जोड़ते हैं की अुसमें नीष्काम सेवा की बात कही गयी है। अुसमें सात्वीक कर्ता के लक्षण ये बताये गये हैं :

'मुक्तसंगोऽनहंवादी
धृत्युत्साहसमन्वीतः।
सीद्ध्यसीद्ध्योर्नीर्वीकारः
कर्ता सात्वीक अुच्यते॥"

अैसे सात्वीक कर्ताओं की जमात हम बनाना चाहते हैं। अीस जमाने में हम हैं अुस जमाने में—जहां सेवक ही कम मीलते हैं और अुनमें नीष्काम सेवक तो और भी दुर्लभ हैं—नीष्काम सेवकों की जमात बनाने की हीम्मत जो करता है, वह अनहोनी बात करता है; अैसा कहा जायेगा। लेकीन अुससे कम बात अीश्वर मुझसे नहीं बुलवाता। अुसके लीअे मैं लाचार हूं। जो बोलता हूं, वह मैं नहीं बोलता, बुलवाने वाला बुलवाता है। —वीनोबा

• लिपि-संकेत : ि = ी ; ी = ी ख = ख, संयुक्ताक्षर हलंत चिह्न से।

तमिलनाड के लिए १५ कार्यक्रम

बेदखलियां गैरकानूनी हैं : टेनन्ट्स जमीन पर डटे रहें

तमिलनाड के 'बतलागुडू' क्षेत्र में विशेष परिस्थिति में उत्पन्न समस्याओं पर मार्गदर्शन प्राप्त करने के लिए श्री जगन्नाथन्‌जी अभी पिछले दिनों विनोबा से मिलने असम गये थे। विनोबाजी ने उन्हें १५ सूत्रीय कार्यक्रम सुझाये हैं, जो विशेष तौर से तमिलनाड और आम तौर से अन्य प्रदेशों के लिये उपयोगी है।

(१) मालिकों की तरफ से जहां गैरकानूनी बेदखलियां होती हैं, वहां 'टेनन्ट्स' का अधिकार है कि वे उस जमीन पर डटे रहें। यह सलाह बहुत पहले मैं दे चुका हूं, क्योंकि यह कानूनी अधिकार है। इसलिए इसको 'सत्याग्रह' नाम देने की भी जरूरत नहीं।

(२) बरसों से कौन 'टेनन्ट' (काश्तकार) चला आ रहा है, इसका फैसला ग्रामीण लोग कर सकते हैं और वे जानते ही हैं। कोर्ट में जाना गरीबों के लिए शक्य भी नहीं होता और क्योंकि कोर्टों में कागजों का आधार होता है और कई दफा कागजी सबूत 'टेनन्ट' पेश नहीं कर सकते, इसलिए कोर्टों में जाना बेकार सा है।

(३) ग्रामदानी गाँवों में 'एबसेंटी लैंडलार्ड' अनुपस्थित भूस्वामी की जमीनें हों तो वे जमीनें ग्रामदानी गाँव के लोगों को काश्त के लिए मिलनी चाहिए। उसके उत्पन्न का जितना हिस्सा कानून के अनुसार मालिकों को मिलना चाहिए, उतना देने की जिम्मेवारी ग्रामदानी गाँवों की रहेगी। कोई गाँव ग्रामदानी हुआ, उसमें बाहर के मजदूर लाकर 'एबसेंटी लैण्ड-लार्डस्' अपनी खेती करवायें, यह योग्य नहीं। इस विषय में सरकारी तौर पर सोचा जाना चाहिए।

(४) ग्रामदानी गाँवों में जो मालिक ग्रामदान में शामिल होना नहीं चाहते, उनके साथ 'नान-कोआपरेशन'–असहयोग करना भूदान के बुनियादी विचार के अनुकूल नहीं। ऐसे मालिकों को प्रेम से जीतने की ही कोशिश हमारी होनी चाहिए।

(५) ग्रामदानी लोगों को खेती के साथ ग्रामोद्योगों का अवश्य विकास करना चाहिए। उसके बिना आज की हालत में केवल खेती पर छोटे किसान टिक नहीं सकते।

(६) शांति-सैनिकों का काम विशेष अवसर पर शांति स्थापना का होता है। पर उनका नित्य कार्य लोक-सम्पर्क और भूदान प्राप्ति का ही समझना चाहिए।

(७) भूदान का काम जारी रहना चाहिए। ग्रामदान के नाम से भूदान रुक जाय, यह ठीक नहीं। जमीन मिलते ही उसका वितरण हो जाना चाहिए। वितरण होने पर ही वह कार्य पूरा हुआ ऐसा माना जाय।

(८) पुरानी जमीनें बाँटने में सबका सहयोग हासिल करना चाहिए। हमारे जो नियम हैं, उन नियमों के अनुसार वह काम हो, इतना ही देखना है। बाँटने का काम चन्द भूदान कार्यकर्ताओं तक सीमित रखने की जरूरत नहीं।

(९) तमिलनाड में खादी का इतना व्यापक कार्य चल रहा है, उस हिसाब से सूताञ्जलि बहुत कम मिलती है। यह ठीक नहीं। कम से कम जनसंख्या के हिसाब से एक प्रतिशत गुण्डियाँ तो आनी ही चाहिए, जैसा पंजाब वालों ने किया है। तमिलनाड में भी होना चाहिए।

(१०) सर्वोदय पात्र का काम तेनाली में व्यवस्थित ढंग से चल रहा है। उसके आधार से वहाँ पर भूदान-पत्रिका के तीन-एक हजार ग्राहक भी बनाये गये हैं। यह सब प्रत्यक्ष उदाहरण देख कर हमको मार्ग सूझना चाहिए। तेनाली में आठ दस दिन जाकर कोई रहे और वहाँ का पूरा अध्ययन करके तदनुसार तमिलनाड में मदुराई जैसे शहर में, और भी दूसरी जगह जहाँ अनुकूलता हो, करना चाहिए।

(११) साहित्य प्रकाशन का काम तो तमिलनाड में ठीक चल रहा है। साहित्य-प्रचार के लिए एकाध सप्ताह खास देते हैं, यह भी अच्छा है। फिर भी आज वहां जो साहित्य-प्रचार हो रहा है, उससे मेरा समाधान नहीं है। साहित्य प्रचार की स्थायी योजना होनी चाहिए।

(१२) अशोभनीय पोस्टर्स, गाने, सिनेमा आदि के विषय में जन जागृति का काम शहरों में होना चाहिए, जैसा उत्तर प्रदेश, मध्यप्रदेश आदि में हो रहा है। इस काम में स्त्री-शक्ति का विशेष उपयोग हो सकता है।

(१३) कस्तूरबा ट्रस्ट ने शांति-सैनिक के काम को भी अपने काम में स्थान दिया, यह एक बड़ी बात हुई है। उसका पूरा लाभ उठाना चाहिए।

(१४) अखिल भारत सम्मेलनों में अक्सर तमिलनाड के हमारे कार्यकर्ता कम ही आते हैं और आते हैं तो भी उनका योगदान कम रहता है। उसका कारण हिन्दी भाषा अच्छी न आना। इसलिए जरूरी है कि हमारे कार्यकर्ता रोज आधा घण्टा उपासना समझ करके हिन्दी के अध्ययन के लिए दें।

(१५) तत्त्व दृष्टि रखते हुए हमने सत्याग्रह को सम्मति नहीं दी, जिसका विचार तमिलनाड के कार्यकर्ता कर रहे थे। ऐसी हालत में श्री कामराज नाडार की जिम्मेवारी बढ़ती है, क्योंकि वे ग्रामदान के अनुकूल हैं। इसलिए उनके मार्ग में आने वाली रुकावटें कैसे दूर हों, यह सोचने का भार उन पर आता है। मुझे आशा है, उस पर वे सोचेंगे।

पड़ाव : बरदोलोनी
ता० १४ ७ ६१

—विनोबा के, प्रणाम

समता : करुणा या मत्सर से !

दान प्रेरणा चलेगी तो संग्रह का निराकरण होगा। दान कौन देगा? छोटे लोग कहते हैं कि बड़े लोग नहीं देंगे तो हम नहीं देंगे। मैं हमेशा कहता हूँ कि जो छोटे लोग हैं, उनको यह सोचना चाहिए कि क्या हमसे भी कोई छोटा है? हमें क्या करना चाहिए? क्या सौ रुपये वालों की मदद करनी चाहिए? सौ रुपयेवाला कहता है, मुझे भी ज्यादा पैसा चाहिए। हजार रुपयेवाला कहता है, मुझे इतने रुपये बस नहीं है। इस तरह से ये लोग भी दुःखी हैं! तो जिनके पास ज्यादा है, उनसे खींचना चाहते हैं। लाख रुपयेवाला करोड़ वालों से खींचता है। पाँच सौ रुपयेवाला हजार रुपयेवालों का मत्सर करता है, हजार रुपयेवाला लाख रुपयेवाले का मत्सर करता है और लाख रुपयेवाला करोड़ रुपयेवाले का मत्सर करता है! इस तरह छोटे से लेकर बड़े तक मत्सर चलता है। हम क्या कहते हैं कि भाई, जिसके पास पचास रुपये हैं, वह दस रुपयेवाले को दे, दस रुपयेवाला यह कहे कि ऐसा भी कोई है, जिसके पास सिर्फ पाँच ही रुपये हैं! तो वह पाँच रुपयेवाला को भी मदद देगा। पाँच रुपयेवाला यह देखेगा कि उसका पड़ोसी ऐसा भी है, जिसके पास सिर्फ एक रुपया है तो उसे वह मदद देगा। एक रुपयेवाला कहेगा कि इस गाँव में ऐसा भी कोई है, जिसे खाने को भी कुछ नहीं है, तो उसे मदद देनी होगी। इस तरह से जो जहाँ है, उससे नीचे वाले को मदद दे। पानी क्या करता है? नीचान की तरफ दौड़ता है। यही उसका स्वभाव है। हिमालयवाला पानी ऊँचा है, वह भी नीचे आता है। 'नेफा' वाला पानी ऊँचा है, वह भी नीचे आता है। मैं यहाँ बैठा हूँ, यह जगह थोड़ी ऊँची है, यहाँ का पानी भी नीचे जायगा। आप जहाँ बैठे, वहाँ बारिश हुई तो वहाँ का पानी भी नीचान की तरफ दौड़ेगा।

इस तरह से करुणा से हम लोगों के पास मदद करने के लिए दौड़ेंगे। मत्सर से ऊपरवालों को नीचे खींचने का प्रयत्न नहीं करेंगे। इसलिए समता लाने का एक प्रकार है ऊपर वालों को छीनना, लूटना; और दूसरा प्रकार है प्रेम से दान देने का: करुणा का।

—विनोबा

भारतीय राष्ट्रीय एकता का विघटन कैसे रुके।

संकट-निवारण के लिए सामाजिक शक्ति प्रकट हो

ब्रह्मदेव वाजपेयी

भारत में राष्ट्रीय एकता का विघटन बड़ी तेजी से हो रहा है। ऐसा लगता है कि यदि शीघ्र इसका कोई प्रतिकार न हुआ तो सारा देश छिन्न-भिन्न, टुकड़े-टुकड़े और समाप्त हो जायेगा। इसके लिए हमें सबसे पहले यह जानना चाहिए कि वे विघटनकारी तत्त्व कौनसे हैं? हमारे देश में गरीबी और अमीरी में भयानक अन्तर है! करोड़ों की संख्या में लोग भूखे, नंगे और बेकार हैं—इन्हीं की आँखों के सामने चन्द मुट्ठी भर लोग आराम, ऐयाशी और विलासिता का जीवन स्पष्ट प्रदर्शनपूर्वक बिता रहे हैं। देश में पूँजीवादी अर्थ-रचना का साम्राज्य है, जिसकी वजह से एक-दूसरे के खिलाफ भयानक, गर्दनकाट स्पर्धा चल रही है। विदेशों से आया हुआ कर्ज का रुपया सरकारी पंचवर्षीय योजनाओं के रूप में फैल कर इस आर्थिक स्पर्धा को और भी कटु और तीव्रतर बना रहा है। राष्ट्र की राजनैतिक व्यवस्था भी अर्थ-व्यवस्था से कम नहीं, अपितु उससे कहीं अधिक भयंकर हो गयी है।

पक्षनिष्ठ राजनीति और सत्ता के लिए होड़—इन दोनों तत्त्वों ने ईर्ष्या, द्वेष, कटुता, लड़ाई-झगड़े, गाँव-गाँव और घर-घर तक पहुँचा दिये हैं। इसके बाद तीसरा तत्त्व है, देश की बढ़ती हुई जनसंख्या। हमारे देश में गरीबी है, बेकारी है, अज्ञान और पिछड़ापन है, जातियाँ हैं, बहुत से धर्म हैं, उनमें ऊँच-नीच का भाव है। अन्तर्राष्ट्रीय परिस्थिति भी हमारे देश के विघटन में बहुत मदद कर रही है। पाकिस्तान से हमारा खिंचाव, भारत-चीन सीमा-विवाद तथा अन्य प्रकार के राजनैतिक और कूटनीतिक दबाव भारत की आन्तरिक फूट के कारण हो रहे हैं।

ये सारे कारण राष्ट्रीय रंगमंच पर क्रिया और प्रतिक्रिया करते हुए देश को भयानक विघटन की ओर बढ़ाये लिये जा रहे हैं। इसमें राष्ट्र की नैया तो डूबेगी ही, सारी दुनिया को अपने साथ डुबाने का सन्दर्भ खड़ा कर देगी; क्योंकि किसी गाँव के एक घर में आग लगी तो सारे गाँव में आग फैलने का संकट उपस्थित हो सकता है। वैसे ही इस विज्ञान के युग में जब कि सारी दुनिया पड़ोसी हो गयी है, तब एक राष्ट्र में आग लगेगी तो सारी दुनिया में फैलेगी।

हमारे देश में वास्तविक सुख, शान्ति और एकता तभी हो सकती है, जब यहाँ न कोई भूखा हो, न कोई नंगा और बेकार। मानव विकास के लिए सारे आवश्यक साधन समस्त जरूरतमंदों को बिना किसी भेदभाव के, बिना किसी मध्यवर्ती एजेन्सी के, उसी प्रकार सहज रूप से मिल सकें जैसे प्यासे को पानी। मानव-विकास से हमारा तात्पर्य उसके समग्र और सर्वतोमुखी विकास—व्यक्तिगत, सामाजिक, शारीरिक, मानसिक और आध्यात्मिक—से है। इस लक्ष्य की पूर्ति के लिए ही सारे सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक और आध्यात्मिक इंतजाम होने चाहिए। जितने ही हम इस लक्ष्य के निकट होंगे, उतना ही अधिक मानव-समाज सुखी, शान्त, समृद्ध और सम्पन्न होगा। इसके बिना देश का विघटन रुक नहीं सकता, समाज में वास्तविक शान्ति हो नहीं सकती।

इसके लिए जरूरत है, आज की सम्पूर्ण सामाजिक व्यवस्था में आमूलाग्र परिवर्तन की, समग्र क्रान्ति की। यह क्रान्ति, यह परिवर्तन अहिंसक तरीके से होगा, तभी वह सबके हित में हो सकता है। इस क्रान्ति का सिपाही समाज का साधारण नागरिक होगा और उसका अस्त्र होगा सत्याग्रह।

अहिंसा में और सत्याग्रह में निहित अजेय शक्ति का दर्शन उसके प्रयोग से होगा। इसके दर्शन से जन-जागरण होगा, सम्पूर्ण मानव समाज आकृष्ट होगा। इससे समाज शक्ति निर्माण होगी, समाज-शक्ति के निर्माण से क्रांति होगी। अहिंसा में क्रांति और शांति अलग-अलग नहीं हैं—रुपये के दो पहलू हैं। क्रांति होगी तो शांति साथ आयेगी।

विनोबा के नेतृत्व में हम लोग दस साल से इसी समाज-शक्ति के जागरण के लिए लगे हैं। भूदान के द्वारा हमने सबसे पहले आर्थिक प्रश्न को लेकर सोती हुई जन शक्ति को जगाने का प्रयास किया। उसमें हमें सफलता भी मिली—जितनी हमने शक्ति लगाई, उससे कहीं अधिक सफलता मिली। हमें नई-नई सड़कें दिखाई दीं। बाबा ने समय और परिस्थिति का अन्दाज करते हुए कई कार्यक्रम दिये। अपने में वे सब पूर्ण हैं। इनके सम्यक् प्रयोग से समाज-स्रोत फूट सकता है। किन्तु दुर्भाग्य से हमारी कमजोरियों की वजह से उनमें हम पूरी शक्ति से नहीं जुट सके। अब परिस्थितियों के थपेड़े में पड़ कर देश का नित्य सन्दर्भ बदल रहा है।

राष्ट्र के आज के सन्दर्भ में केवल शान्ति-सेना कार्य ही जन-मानस को जागृत कर सकता है, साधारण नागरिक को उसकी अजेय शक्ति का भान करा सकता है, उसको समग्र क्रान्ति के लिये आकृष्ट कर सकता है, देश को विघटन से बचा सकता है।

× × ×

आज देश में विभिन्न कारणों की वजह से मानव समाज में जहाँ-तहाँ घर्षण हो रहा है, वे घर्षण विस्फोट का रूप लेते हैं। आसाम में मारपीट, आगजनी तथा अन्य हमले का होते हैं। एक तरफ से संघर्ष और दूसरी तरफ से सरकार लाठी-चार्ज और गोली-वर्षा करती है और उन विस्फोटों को दबा दिया जाता है। थोड़े समय के लिए यह विस्फोट दब तो जाता है—मार-काट और झगड़े दब जाते हैं, किन्तु इसके बाद आग फिर भीतर-भीतर सुलगने लगती है। यह दशा और भी भयानक है, क्योंकि कटुता तथा द्वेष और अधिक फैलता है।

आसाम में ऐसे विस्फोट हो रहे हैं, पंजाब विस्फोट की ओर तेजी से बढ़ रहा है। क्या हम इन विस्फोटों को रोक सकते हैं! क्या हम घर्षणकारी तत्त्वों के बीच पड़ कर उनका घर्षण करना रोक सकते हैं? क्या घर्षण रोक कर उन्हें शान्त रह कर अपने मसले पर विचार करने को मजबूर कर सकते हैं? अगर हम ये दो काम कर सकते हैं तो कुंजी हमारे हाथ रहेगी। हम संघर्ष करने वालों से कहेंगे—यदि तुम लोग लड़ोगे तो हम तुम्हारे बीच आयेंगे, तुम्हें रोकेंगे, तुम्हें अपने जीते जी लड़ने न देंगे। इस प्रयास में यदि हमें मरना भी पड़ा तो स्नेहपूर्वक, हँसते हुए, सर्वजनहिताय शरीर भी छोड़ देंगे, लेकिन हम अपने प्राणों के रहते किसी को आपस में लड़ने न देंगे। लेकिन लड़ाई रोकने का हमारा मतलब कदापि यह नहीं कि उस प्रश्न के हल होने में हम किसी प्रकार बाधक हों। हम केवल शांति कायम रखना चाहते हैं, और आपको शांतिपूर्वक उस मसले को हल करने में आवश्यक शान्त वातावरण बनाये रख कर मदद करना चाहते हैं। इसलिए दोनों पक्ष शान्त रह कर आमने-सामने बैठ कर मसले को हल करें। इस प्रयास से मसले शान्त वातावरण में हल होना चाहिए, किन्तु हमें सदैव तैयार रहना चाहिए। विस्फोट के कारणों के निराकरण में हम मदद करें, फिर भी यदि विस्फोट हो ही जाय, तो संघर्ष के बीच पड़ कर अपने जीवन की बाजी लगा कर शमन करने की कोशिश करें। तात्पर्य यह है कि संघर्षकारी तत्त्वों को विस्फोट करने देना असम्भव कर दें।

इस समय शांति-सैनिक की निष्ठा से जीवन उत्सर्ग कर सकने की तैयारी वाले भारत में थोड़े से ही लोग हैं। इसलिए हम सबको किसी एक अखिल भारतीय महत्त्व के प्रश्न को लेकर जुट जाना चाहिए। पंजाब या आसाम को हम अपनी प्रयोग-भूमि बना सकते हैं। इस प्रयोग में हमारे कुछ साथी काम आयेंगे, किन्तु इनके बलिदान से जन-स्रोत की कुंजी हमारे हाथ आयेगी। राष्ट्र का साधारण नागरिक पहले शांति-सैनिक बनेगा, फिर अहिंसक क्रांति का सिपाही होगा; फिर सारा समाज क्रांतिकारी परिवर्तन की आवाज उठायेगा। अब जमाना बदलने वाला है, वह बदलना भी चाहता है, अवश्य बदलेगा, इसके लिए परिस्थिति परिपक्व है। जरूरत है क्रांति की नन्हीं-सी एक चिनगारी की। वह प्राप्त होगी शांति सैनिकों के बलिदान से। इसी से राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय, दोनों ही एकताएँ कायम होंगी, और चिरकाल तक सुरक्षित रहेंगी। यह चुनौती आज केवल थोड़े से शान्ति-सैनिकों के सामने ही नहीं है, भारत के प्रत्येक शांतिप्रिय, अहिंसाप्रिय नागरिक भाई-बहन और बच्चे के सामने है।

महान् कार्यों में छोटे कार्यकर्ताओं का योग

ईसा मसीह के बारह शिष्य थे। वे कोई ज्ञानी पुरुष नहीं थे, लेकिन श्रद्धावान थे और उसी के बल पर ईसा मसीह की वाणी को लेकर उन्होंने काम किया और सारे जगत् में उनकी वाणी पहुँचायी। इतिहास बताता है कि संसार में जितने महान् कार्य हुए हैं, वे सब छोटे-छोटे कार्यकर्ताओं के हाथों से ही हुए हैं। सब छोटे-छोटे कार्यकर्ता काम कर रहे हैं। वे आगे भी करते रहेंगे। अखबारों में उनकी खबर नहीं छपी जायेगी, फिर भी वे निरंतर पुरुषार्थ करते ही रहेंगे। ऐसा काम करने के लिये प्रेम की आवश्यकता है।

—विनोबा

[विनोबा पदयात्रा डायरी से]

सर्व सेवा संघ की

अगले वर्ष की प्रशिक्षण-योजना

—नारायण देसाई

[अप्रैल में सर्व सेवा संघ के अनुपुर-अधिवेशन में जो 'कार्यकर्ता प्रशिक्षण' का प्रस्ताव स्वीकृत हुआ था, उसके अनुसार कार्यकर्ता-प्रशिक्षण के लिए शांति-सेना मंडल की ओर से श्री नारायण देसाई ने जो योजना प्रस्तुत की, वह यहाँ दी जा रही है। —सं०]

गत सर्वोदय-सम्मेलन में कार्यकर्ताओं के सामने यह विचार आया कि सर्वोदय-आंदोलन में लगे नये-पुराने हर कार्यकर्ता के लिए किसी-न-किसी प्रकार का प्रशिक्षण लेना आवश्यक है। उस दृष्टि से अगले साल के प्रशिक्षण के कार्यक्रम की योजना नीचे दी जाती है।

फिलहाल प्रशिक्षण के मुख्य अंग ये माने जायँ : (१) शांति-विद्यालय, (२) गहरा अध्ययन-गोष्ठी, (३) 'नया मोड़' शिविर, (४) प्रवेश-शिविर (५) शिविर-संचालक वर्ग।

शांति विद्यालय

सर्व सेवा संघ के मार्गदर्शन में आज तीन प्रकार के विद्यालय चल रहे हैं। काशी का शांति विद्यालय, इंदौर का शांति सैनिका विद्यालय तथा कोटगिरि का विद्यालय, जिसका संचालन श्री मार्जरी साइक्स करती हैं।

इन विद्यालयों के स्थान, काल-मर्यादा तथा पाठ्यक्रम सामान्य तौर पर वही रहें, जो आजकल हैं। विद्यालयों के संचालक परिस्थिति और अनुभव के आधार पर अपने कार्यक्रमों में आवश्यक परिवर्तन करते रहें। इन विद्यालयों में शिक्षण के मुख्य अंग ये हों :

(अ) शांति के लिए आवश्यक वृत्तियों का विकास।

(आ) शांति-कार्य के लिए आवश्यक सेवा-कार्यों का परिचय।

(इ) सामान्य तौर पर जगत् की तथा विशेष तौर पर भारत की प्रमुख समस्याओं का गहराई से अध्ययन।

गहरा-अध्ययन गोष्ठी

यह पाया गया है कि हमारे प्रमुख जिम्मेदार कार्यकर्ता किसी-न-किसी काम में व्यस्त होने के कारण ४-५ महीनों की लम्बी अवधि के प्रशिक्षण-विद्यालय में उपस्थित नहीं रह सकते। लेकिन साथ ही यह भी आवश्यक है कि हमारे सभी प्रमुख कार्यकर्ता भी आज जहाँ हैं, वहाँ से अधिक गहराई में जायँ। इन कार्यकर्ताओं के लिए 'गहरा-अध्ययन' गोष्ठी का आयोजन किया जाय। यह कोशिश की जाय कि अगले कुछ वर्षों में हमारे सभी प्रमुख कार्यकर्ता इस प्रकार की अध्ययन-गोष्ठियों का लाभ उठायें। अध्ययन-गोष्ठी की कालावधि एक मास की रहे। उसके स्थान बारी-बारी से बदलते रहें। ये स्थान ऐसे हों जहाँ (अ) प्रमुख कार्यकर्ताओं को सह-जीवन का मौका मिले। (आ) जहाँ गहरे अध्ययन के लिए आवश्यक पुस्तकालय तथा सदर्भ-ग्रन्थ उपलब्ध हों।

इस साल इस प्रकार की एक अध्ययन-गोष्ठी आयोजित की जाय। अगले सालों में भी यह क्रम जारी रखा जाय।

इस अध्ययन-गोष्ठी के लिए ४-५ मुख्य विषय पहले ही चुन लिये जायँ। प्रत्येक शिक्षार्थी इन विषयों में से कोई एक 'मुख्य' ले तथा उस विषय में अपने अध्ययन के लिए विशेष उपविषय चुन ले। हर रोज इन टोलियों के सह-विचार तथा सारी गोष्ठी के सहविचार के लिए भी समय रखा जाय, अधिक समय शिक्षार्थियों के अपने स्वाध्याय में जाय। गोष्ठी में एक घंटे का श्रम-कार्य तथा एक घंटे का परिवार सेवा-कार्य आवश्यक माना जाय। स्वाध्याय में किसी प्रश्न का प्रत्यक्ष अध्ययन तथा किसी प्रश्न के वैचारिक पहलू का संशोधन, दोनों का समावेश हो। एक माह के अन्त में प्रत्येक शिक्षार्थी अपने अध्ययन के विषय पर एक निबंध तैयार करें। यदि आवश्यकता हो तो एक मास के अध्ययन में आरम्भ किये हुए विषय की विशेष छानबीन कर भविष्य में वह कोई महानिबन्ध भी तैयार कर सकता है।

'नया मोड़' शिविर

हमारे कार्यकर्ताओं में एक बहुत बड़ा हिस्सा खादी ग्रामोद्योग में लगे हुए कार्यकर्ताओं का है। सर्वोदय आंदोलन के 'नये मोड़' की दृष्टि से इन कार्यकर्ताओं के जीवन में नवसंस्करण लाने की आवश्यकता है। नये मोड़ की दृष्टि से, देश के पाँच विभिन्न हिस्सों में, इस प्रकार के पाँच नये मोड़ शिविर चलाये जायँ, जिनमें अड़ोस-पड़ोस तीन-चार प्रदेशों के कार्यकर्ता हिस्सा लें। नया मोड़ शिविर की कालावधि १५ दिनों की हो। इस शिविर के प्रशिक्षण के प्रमुख अंग ये माने जायँ:—

(१) सर्वोदय की नवीन दृष्टि

(२) हमारे काम के प्रत्यक्ष प्रश्न

(३) जीवन के मूल आधार

शिविर में रोज कम-से-कम दो घंटों का प्रत्यक्ष सेवा-कार्य तथा प्रचार-कार्य किया जाय।

इन शिविरों में लोक संपर्क के कुछ प्रमुख टेकनीक का अध्ययन भी किया जाय।

प्रवेश-शिविर

हमारे कार्यकर्ताओं में से बहुत बड़े समुदाय को स्पर्श करने के लिए प्रवेश-शिविरों की अत्यन्त आवश्यकता है। इन शिविरों में पूरे समय के कार्यकर्ताओं के अलावा वे लोग भी शामिल किये जायँ, जो आंशिक समय देते हों या इस काम में रुचि रखते हों।

शिविर की कालावधि एक सप्ताह की रहे।

अगले साल प्रवेश-शिविरों के लिए नीचे लिखे विषय विशेष लिये जायँ :

(१) लोकनीति

(२) शांति-सेना

(३) भूमि-समस्या के विभिन्न पहलू

इन शिविरों में सभी व्याख्यान सर्व-सामान्य प्रकार (जनरल नेचर) के न हों। एक-दो सामान्य प्रवचनों के अलावा बाकी वर्ग, विषय के विविध पहलुओं पर प्रकाश डालने वाले हों।

शिविर के कार्यक्रम में ३ घंटे का प्रत्यक्ष काम रखा जाय, जिसमें श्रम और प्रचार-कार्य, दोनों का समावेश हो।

इस प्रकार के शिविर हर प्रदेश में ५ या उससे अधिक हों। इन शिविरों के लिए नीचे दिये स्थानों में से कोई भी चुना जा सकता है।

(१) जहाँ नगर की या ग्राम की कोई खास समस्या हो।

(२) जहाँ रचनात्मक काम चल रहा हो।

(३) जहाँ शिविर संचालन में जनता का सीधा सहयोग हो।

शिविर-संचालक वर्ग

साल के इस कार्यक्रम को पूरा करने के लिए यह अत्यन्त आवश्यक है कि हमारे पास विद्यालय, गोष्ठी, वर्ग या शिविर चलाने में समर्थ कार्यकर्ता हों। इस प्रकार के कार्यकर्ताओं को तैयार करने के लिए हमारे साल के आरम्भ में ही एक शिविर संचालक-वर्ग चलाया जाय। इस शिविर में हमारी विविध प्रकार की प्रशिक्षण-योजनाओं के लिए आवश्यक टेकनीक का अध्ययन किया जाय। वर्ग का संचालन अपने में ही एक टेकनीक का नमूना बन जायगा। इस वर्ग का उत्तरार्ध गहरा-अध्ययन-गोष्ठी के साथ जोड़ा जाय। याने इस वर्ग में जो टेकनीक का अध्ययन किया हो, उसका प्रत्यक्ष अनुभव लेने के बाद गहरा-अध्ययन गोष्ठी के समय संचालक टोली अपने अनुभव का लेनदेन करें तथा उसके आधार पर अगले कार्यक्रम में परिवर्तन-परिवर्धन कर लें।

प्रशिक्षण की योजना का खर्च इस प्रकार उठाया जाय :—

शान्ति विद्यालय : छात्रों का प्रवास-खर्च तथा भोजन-खर्च प्रादेशिक सर्वोदय मण्डल करे। शिक्षण खर्च अखिल भारत सर्व सेवा संघ करे।

शान्ति विद्यालय के बजट में कुछ छात्रों के लिए छात्रवृत्ति का प्रबन्ध भी किया जाय, जिनका उपयोग उनके लिए किया जाय, जिनका खर्च करने में प्रदेश सर्वोदय मण्डल असमर्थ हों।

गहरा-अध्ययन गोष्ठी : छात्रों का प्रवास-खर्च प्रादेशिक सर्वोदय-मण्डल करें। भोजन-खर्च तथा शिक्षण-खर्च अखिल भारत सर्व सेवा संघ करे।

नया मोड़ शिविर : इसका खर्च खादी कमीशन की प्रशिक्षण योजना से लिया जाय।

प्रवेश शिविर : इसका अधिकांश खर्च स्थानिक जनता को उठाना चाहिए। यदि आवश्यकता हो तो जिला या प्रादेशिक सर्वोदय मण्डल इसके लिए विशेष चन्दा कर सकता है।

शिविर-संचालक वर्ग : प्रवास-खर्च प्रादेशिक सर्वोदय-मण्डल और शिक्षण खर्च, अखिल भारत सर्व सेवा संघ करे।

शांति-विद्यालय के नये सत्र का उद्घाटन

पन्द्रह अगस्त को श्री अण्णासाहब सहस्रबुद्धे ने साधना केन्द्र, काशी में शांति-सेना के दूसरे सत्र का उद्घाटन किया। श्री अण्णासाहब ने अपने पिछले सैनिक जीवन के अनुभव से लेकर गांधीजी के विभिन्न सत्याग्रहों में अहिंसक सिपाही की तरह कैसे भाग लिया, यह बताया और कहा कि अब भी शांति-सैनिक की योग्यता मुझमें आयी है या नहीं, यह कहना मुश्किल है। शांति-सैनिक के नाते मृत्यु का सामना करने की तैयारी होनी चाहिए।

आपने परमेश्वर से प्रार्थना करते हुए कहा कि शांति-सैनिकों को अहिंसा की साधना के लिए रास्ता बताये। अभी तक न यमनियम, न लश्कर, न हमारे आश्रमों के आचार विचार इसमें सहायक हो सके हैं। अंत में आपने शांति-सैनिकों को सलाह दी कि वे साधक की तरह जीवन बितायें और सहजीवन में इतने जागरूक रहें कि अपने दोषों का संसर्ग सहयोगियों को न हो।

इसके पूर्व शांति विद्यालय के आचार्य श्री नारायण देसाई ने पिछले सत्र का अनुभव बताते हुए कहा कि इस सत्र में नगर के कार्य पर विशेष ध्यान दिया जायेगा। साथ ही सफाई और मरीजों की सेवा एवं चिकित्सा पर भी विशेष जोर दिया जायेगा।

यह कोशिश की जायेगी कि शांति सैनिक चार महीने में अपने पड़ोसी प्रदेश की एक भाषा सीखेंगे।

हड़ताल के समय जनता का कर्तव्य :

काशी की हड़ताल : एक प्रकट चिंतन

शंकरराव देव

कुछ दिन पहले काशी में भंगी भाइयों की हड़ताल हुई थी। शुरू में ही 'भंगी' शब्द के सम्बन्ध में एक बात स्पष्ट कर दूं, ताकि जनता भंगी, दोनों इस शब्द के बारे में कोई गलतफहमी न कर लें। यहाँ 'भंगी' शब्द का प्रयोग मैंने जातिवाचक के रूप में नहीं किया है। भंगी-काम करने वालों से ही मेरा मतलब है। अक्सर कुछ रूढ़ शब्द अच्छे नहीं लगते हैं। फिर भी समझने और समझाने में सुविधा हो, इसलिए मजबूरन उन शब्दों का प्रयोग करना पड़ता है। मेरी दृष्टि से 'भंगी' शब्द भी भारतीय समाज में ऐसा ही शब्द है।

भंगियों की यह हड़ताल कैसे शुरू हुई, क्यों शुरू हुई और उसकी समाप्ति कैसे हुई आदि गुण-दोषों की चर्चा करना इस लेख का विषय नहीं है। संयोग की बात थी कि उन्हीं हड़ताल के दिनों में साधना-केन्द्र में श्री अप्पासाहब पटवर्धन एक भंगी-मुक्ति-शिविर चला रहे थे। उस शिविर में ३०-३५ भाई शरीक हुए थे। श्री अप्पासाहब के लिए यह एक धर्म विषय है। इसलिए यह स्वाभाविक था कि उन्होंने इस हड़ताल को न्यायपूर्वक निपटाने का प्रयत्न किया और सर्व सेवा संघ को उस तरफ ध्यान देने के लिए प्रेरित किया। साथ ही काशी की जनता को अपना कर्तव्य निभाने की प्रेरणा दी। फलस्वरूप प्रसन्नता की बात है कि काशी के विभिन्न स्तर के नागरिकों ने काफी तादाद में अपने-अपने क्षेत्र में स्वयं सफाई का काम किया और इस प्रकार लोकशक्ति का स्वयं थोड़ा-सा अनुभव किया।

फिर भी सामान्यतया चूंकि जनता में लोक-जीवन के विभिन्न अंगों के विचार का अभाव है, लोक नीति का अज्ञान है, लोकशक्ति का भान नहीं है और स्वाभाविक आलस्य दूर नहीं होता है, इसलिए ऐसे हड़ताल के मौकों पर जनता किस प्रकार लाचार हो जाती है और उसके फलस्वरूप उसकी जो दयनीय दशा हो जाती है, उसका कुछ प्रकट चिंतन इस लेख में करने का प्रयत्न है।

जब कभी स्थानीय स्वराज्य संस्थाओं और उनके कर्मचारियों के बीच, सरकारों (प्रांतीय और केंद्रीय) और उनके कर्मचारियों के बीच, या मिलमालिकों और उनके मजदूरों के बीच किसी कारण तनाव पैदा होता है और उसका पर्यवसान ऐसी हड़तालों में होता है, तब आम तौर पर जनता यह समझती है कि इससे हमारा कोई सम्बन्ध नहीं है, बल्कि यह तो मालिक और मजदूर के बीच का झगड़ा है।

इसलिए साधारण लोग अक्सर यही करते हैं कि यदि उन हड़तालों का प्रभाव तुरन्त उन पर पड़ने वाला न हो तो उसके प्रति उदासीन रह जाते हैं या यदि तुरन्त प्रभाव पड़ने वाला हो तो, अज्ञान, आलस्य और लाचारी के कारण कष्ट सहते हैं और आम तौर पर शिकायत और निंदा करते रहते हैं।

श्रमिक या सेवक जो हड़ताल, विरोध या विरोध के रूप में (प्रोटेस्टिंग) करते हैं, उनकी बात अलग है। उसको छोड़ दें। लेकिन अपनी सामाजिक या आर्थिक स्थिति सुधारने के लिए ये लोग जो हड़ताल करते हैं, वे अक्सर मांगों की प्राप्ति के लिए करते हैं। उन हड़तालों का स्वरूप अक्सर वेतन-वृद्धि, बोनस की अदायगी, छुट्टी बढ़ाने, काम के घंटे कम करने या काम के औजारों और परिस्थितियों में सुधार करने का होता है। इन मांगों की पूर्ति करने का परिणाम अंततोगत्वा जनता पर आर्थिक भार बढ़ाने में ही होता है और ऐसी हड़तालों को रोकने या समाप्त करवाने के लिए खास एक दलील यही दी जाती है कि हड़तालियों की मांगों की पूर्ति से जनता पर कर भार पड़ेगा। यह भी प्रकट चिंतन का विषय है, काशी के भंगियों की हड़ताल इससे उत्पन्न परिस्थिति के संबंध में वाराणसी महानगरपालिका के महापौर (मेयर) का जो वक्तव्य प्रकाशित हुआ था, उसके अन्त में यही दलील दी गयी थी। अपने वक्तव्य में महापौर कहते थे—"महापालिका की आर्थिक स्थिति भी ऐसी नहीं है और न वाराणसी की जनता की स्थिति ही ऐसी है कि उस पर अधिक कर-भार लागू कर महापालिका की आर्थिक स्थिति ठीक की जा सके, ताकि सफाई-कर्मचारियों को नई सुविधाएँ प्रदान की जा सकें।" ऐसे वक्तव्यों के कारण जो वरिष्ठ अधिकारी लोग हैं, उनकी प्रतिष्ठा और लोकप्रियता बढ़ती ही है। लेकिन ऐसे वरिष्ठ अधिकारियों का यह कर्तव्य है कि ऐसे मौकों पर जनता को सही परिस्थिति का ज्ञान देकर उसे प्रशिक्षित करें, क्योंकि सेवा धर्म महान है और उसकी पहचान ऐसे मौकों पर ही होती है।

महापौर के उक्त वक्तव्य का सामान्य अर्थ तो यह नहीं हो सकता है कि महापालिका के सफाई-कर्मचारियों को नई सुविधाएँ प्रदान करने की आवश्यकता नहीं है। ऐसा अर्थ लगाया जाय तो, मैं समझता हूँ, महापौर भी उसे उसी तरह मानेंगे। उस वक्तव्य का सरल अर्थ यह है कि सफाई-कर्मचारियों को नई सुविधाएँ देना आवश्यक तो है, पर उनको देने से जनता पर आर्थिक भार बढ़ेगा और वाराणसी की जनता यह भार, आज की परिस्थिति में, वहन नहीं कर सकेगी। यानी नई सुविधाएँ प्राप्त करना सफाई-कर्मचारियों का हक है और उनकी आवश्यकता भी है, तो भी वाराणसी की जनता की गरीबी के कारण उन कर्मचारियों को उस हक और आवश्यकता से वंचित रहना पड़ता है।

अब प्रश्न यह है कि आवश्यकता और हक के बावजूद उससे वंचित रहने की उन कर्मचारियों से अपेक्षा रखना या वंचित रहने को उन्हें मजबूर करना कहाँ का न्याय है?

आज का लोकराज्य बहुत पंगु हो गया है। इसका एक कारण यह है कि जनता अधिकाधिक पराधीन होती गयी है और जो बहुत से काम खुद कर सकती है, और करना भी चाहिए, पर नहीं करती है, उसको करने के लिए उसने एक बड़ा सेवक-वर्ग खड़ा कर दिया है। यहाँ तक नौबत आयी है कि लोकराज्य का अर्थ ही सेवकों का राज्य हो गया है। पश्चिम-दरअसल सर्व बड़ा है; सेवक ही स्वामी से अधिक प्रभावशाली बनने लगा है और वह इसे न्याय मानता है। पश्चिम में जहाँ-जहाँ ऐसा संकीर्ण लोकराज्य चल रहा है वे देश तो धनवान हैं। (वे कैसे बने हैं, यह दूसरा विषय है) लेकिन भारत जैसे गरीब देश के लिए ऐसा लोक... सुहाने वाला नहीं है।

इस आर्थिक विषय के दूसरे भी... से पहलू हैं। पर वह इस चिंतन का ... नहीं है। लोकजीवन और इसका आर्थिक पहलू एक महत्त्वपूर्ण पहलू है, वह इस समस्या का असली और ... पहलू नहीं है। उस ओर देखने की दृष्टि वस्तुतः दूसरी ही है।

आज की लोकशाही में सरकार, ... स्वराज्य-संस्थाएँ और औद्योगिक ... आदि आर्थिक संगठनों की जो ... बनी हैं, वे सारी व्यवस्थाएँ—तुलसीदास ने रामचरितमानस की रचना के बारे में कहा—'स्वान्तः सुखाय तुलसी रघुनाथ...' या भगवान बुद्ध की वाणी में '(बहु)जन सुखाय, (बहु)जन हिताय'—जनता के हित और सुख के लिए ही जनता ने ... खड़ी की हैं। इसी दृष्टि से इन सब ... की तरफ जनता को देखना चाहिए। ... आज की लोकशाही को यह जो स... और अजस्र प्राप्त हुआ है, उसका ... बड़ा कारण यह है कि जनता ने अपने ... का काम दूसरों के हाथ में सौंप दिया ... इसीलिए सत्ता भी उन्हीं को दे दी। (डेलिगेशन आफ फंक्शन्स एण्ड डेलिगेशन ऑफ पावर)। लोकराज्य की भाषा ... आज ऐसी रूढ़ हो गयी कि ... सरकार और सरकार के कर्मचारी, महापालिका और नगरपालिका के सेवक, कारखानों के मालिक और उनके मजदूर आदि हैं, पर कहीं भी स्वामी (जनता) का स्थान नहीं है। सही स्थिति तो यह है कि क्या सरकार और क्या कर्मचारी तथा क्या कारखाने और क्या उनके मजदूर, सबके सब जनता के ही सेवक हैं ... उन सेवकों को वेतन या मजदूरी देने वाली तो वास्तव में स्वयं जनता है। ... यानी मंत्रिमण्डल, लोकसभा, विधान सभा तथा नगरपालिका आदि के सारे ... जनता का ही काम करने के लिए जनता के द्वारा नियुक्त किये गये व्यवस्थापक हैं। कारखानों के मालिक भी अपना कारखाना ... को सौंपते हैं और चलाते हैं, उनका ... अभिप्राय जनता ही है, जनता की ... पूरी करना ही उनका उद्देश्य है ...

जिस मालिक की हैसियत सेवक को पूरा-पूरा और वाजिब मेहनताना देने की नहीं है, उसका कर्तव्य और धर्म है कि वह सेवक के जरिये काम लेने का मोह छोड़ दे, बल्कि स्वयं काम करना सीख ले और कर ले; क्योंकि यह अन्याय है कि अपनी सेवा के लिये वह नौकर तो रखे, पर उसको कम वेतन पर या बुरी दशा में रख कर काम करने को मजबूर करे।

आगामी गांधी-जयन्ती पर कुछ विचार

ध्वजाप्रसाद साहू

गांधीजी का लक्ष्य सर्वोदय था और सर्वोदय का प्रारंभ अन्त्योदय से होता है। समाज के सबसे अधिक पिछड़े हुए और अत्यधिक दलित वर्गों को ऊपर उठाना ही गांधीजी के सारे जीवन तथा उनके सम्पूर्ण कार्य का मूल उद्देश्य रहा है। असल में वे सर्व-दलित और सबसे पिछड़े हुए लोगों के उद्धारक और हिमायती थे।

गांधीजी ने इस सिद्धान्त को आर्थिक क्षेत्र में भी लागू किया और उसके फलस्वरूप खादी तथा ग्रामोद्योगों को पुनर्जीवित करने का कार्यक्रम, उन्होंने देश के सामने रखा। देहात के लाखों-करोड़ों लोगों को, जिनकी अब तक अवहेलना होती रही थी, जीविका का साधन मिला और इस प्रकार सम्मानपूर्वक जीविकोपार्जन करते हुए उन्हें इज्जतदार नागरिक बनने का मार्ग मिला। फिर स्वतंत्र भारत की सरकार बनी। उसने, यद्यपि कुछ देर से ही सही, गांधीजी के दृष्टिकोण की दूरदर्शिता समझी और वह खादी-ग्रामोद्योग आन्दोलन के सहायतार्थ आगे आयी—पर किसी हद तक ही, कुछ सीमाओं के साथ।

> **सरकार खादी और ग्रामोद्योगों को कुछ हद तक सहायता देने के लिये तैयार है। लेकिन वह केन्द्रित और विकेन्द्रित उत्पादन के अलग-अलग क्षेत्र निर्धारित करके खादी और ग्रामोद्योग की रक्षा करने के लिए तैयार नहीं होगी।**

यदि क्रयशक्ति का विस्तार करने के लिए विकेन्द्रित यानी श्रम-प्रधान उत्पादन-कार्य अनिवार्य हैं, तो फिर यह मानना ही होगा कि इस प्रकार से उत्पादित सामान श्रम कम करके और मशीनों का उपयोग कर तैयार किये गये सामान की तुलना में महँगा होगा ही। इसलिए इस तर्क का सहज निष्कर्ष यह है कि हमें मनुष्य-शक्ति से मशीनों की शक्ति के साथ स्पर्धा करने की अपेक्षा नहीं रखनी चाहिए। इस बुनियादी सचाई को हमारे नीति-निर्धारकों की ओर से मान्यता प्राप्त होना अब भी बाकी है।

खादी और ग्रामोद्योगों की बिक्री का विस्तार उनकी उत्पादन करने की जितनी क्षमता है, उसके अनुपात में नहीं हुआ है।

> **इस प्रकार खादी के क्षेत्र में विशेष रूप से मंदी है। और, इस प्रक्रिया का सबसे बुरा असर किन पर पड़ रहा है? स्वाभाविकतः सूतकारों और बुनकरों पर, जो कि सबसे दलित और पिछड़े हुए वर्गों से हैं। हमारी समाजार्थिक नीति-निपुणता में यह विरोधाभास पाया जाता है कि यहाँ खतरे की तलवार सदैव ही उन लोगों के सिर पर लटकती रहती है, जो सबसे निचले वर्ग के हैं।**

नया मोड़ यानी खादी-आन्दोलन को नई दिशा में मोड़ने का विचार संगठनात्मक स्तर पर इस बुराई को सदा के लिये दूर करने का उपाय है। यह एक दूरदर्शी उपचार है। इसके साथ ही हमारे सामने जो चुनौती है, उसका सामना करने के लिये हम सामाजिक उपायों से काम ले सकते हैं और इस काम के लिये जन-सहयोग तैयार करने व उसका उपयोग करने के निमित्त आगामी 'गांधी-जयंती' का पर्व एक स्वर्ण अवसर है। हम इसका लाभ उठा सकते हैं। हमारी राष्ट्रीय अर्थ-व्यवस्था में खादी का कितना महत्त्वपूर्ण स्थान है, लोगों को यह समझाने के लिये हमें अभी से पत्र-पत्रिकाओं में लेख आदि प्रकाशित करने चाहिए, सार्वजनिक सभाओं का आयोजन करना चाहिए, और फिल्म व रेडियो आदि दृश्य, श्रव्य साधनों के जरिये इस बात का प्रचार करना चाहिए। इस तथ्य पर बहुत अधिक जोर दिया जाना चाहिये कि खादी ही लाखों-करोड़ों देशवासियों के जीवन का एकमात्र सहारा है और तब लोगों से राष्ट्र के प्रति पावन कर्तव्य के रूप में खादी खरीदने का निवेदन किया जाना चाहिए।

खादी-संस्थाओं और कार्यकर्ताओं को इस अभियान में बहुत महत्त्वपूर्ण भूमिका अदा करनी है। स्पष्टतः ही इस देशव्यापी आन्दोलन का संगठन करने का उत्तरदायित्व उनके कन्धों पर ही होगा। उन्हें इस काम को पुण्य कर्तव्य व सेवा की भावना से अपने हाथ में लेना होगा। उन्हें खादी के स्थानीय शुभचिन्तकों के दलों का संगठन करना होगा, जो गांधी-जयंती समारोह के दिनों में अधिकाधिक लोगों तक अधिकाधिक खादी खरीदने का संदेश पहुँचायें। हमारी संस्थाओं को इस बात का भी ध्यान रखना है कि खादी-भंडारों में सभी किस्मों की खादी, और खास करके तैयार कपड़े काफी मात्रा में रहें, ताकि वे सभी प्रकार के ग्राहकों की इच्छापूर्ति कर सकें।

> **हमारी संस्थाएं अपना काम केवल उन्हीं क्षेत्रों तक सीमित नहीं रख सकती, जिनमें वे आज काम कर रही हैं। उन्हें नये-नये क्षेत्र खोज निकालने होंगे।**

इसके लिये हर उत्पादन अथवा बिक्री-केन्द्र से चुने हुए अग्रगामी कार्यकर्ताओं की टोलियाँ निकलेंगी, जो मार्गदर्शी दल के रूप में लोगों से स्थानीय गांधी जयन्ती समारोह-समितियाँ गठित करने के लिये संपर्क स्थापित करेंगी। ये टोलियाँ अपने दौरे में सार्वजनिक सभाएँ करके उनमें गांधी-जयंती कार्यक्रम का प्रचार करने के साथ ही साथ खादी का संदेश भी लोगों तक पहुँचा सकती हैं। गांधी-जयंती के एक या दो सप्ताह पहले वे फिर उन गाँवों में जायें, जहाँ उन्होंने उपर्युक्त समितियाँ बनायी हैं। इस बार वे अपने साथ खादी वस्त्र और सर्वोदय-साहित्य ले जायें। यह सामान बैलगाड़ियों पर ले जाया जा सकता है और जहाँ इस प्रकार के साधन उपलब्ध न हों, वहाँ खादी सिर पर रख कर भी गाँवों तक पहुँचायी जा सकती है। गांधी-जयंती के दरमियान हमें अधिक से-अधिक संख्या में गाँव-गाँव और शहर-शहर तक पहुँचने के, हर संभव उपाय करने होंगे, और यहाँ तक कि हमें घर-घर जाकर भी खादी-बिक्री करनी होगी। हम अपने इस काम में स्वतंत्रता-संग्राम के दिनों का क्रांतिकारी आवेग, उत्साह जोश लाकर ही लोगों को यह विश्वास दिला सकते हैं कि हममें सबसे पिछड़े हुए और दलितों के साथ घुल मिल जाने की सच्ची भावना है।

देश का विद्यार्थी समुदाय सदैव ही राष्ट्रीय आवाहन के समय आगे आया है और कोई कारण नहीं कि इस बार भी वह आगे न बढ़े। जरूरत इस बात की है कि उनसे प्रेम और विवेकपूर्ण ढंग से सम्पर्क साधा जाय। राष्ट्रपिता की याद में और स्वाभिमान के नाते कम-से-कम एक जोड़ा कपड़ा खादी का खरीदने के लिए विद्यार्थी-समुदाय से अपील की जा सकती है। विद्यार्थियों से यह राष्ट्रीय अपील करने के काम में राष्ट्रीय नेताओं, विभिन्न राज्यों के मुख्य मंत्रियों व शिक्षा-मंत्रियों के साथ ही साथ विद्यार्थी-समाज की ओर से, सर्व-दलित पीड़ित लोगों को ऊपर उठाने के इस कार्य में निश्चय ही सहानुभूतिपूर्ण प्रत्युत्तर मिलेगा।

इस कार्य में पंचायतों का भी बहुत बड़ा योगदान है। पंचायतों के पंचों का ग्रामों तथा ग्रामीणों के साथ सबसे अधिक निकट सम्पर्क रहता है। इसलिए उनके लिए इस बात को समझना मुश्किल नहीं होगा कि साधन-स्रोतविहीन ग्रामीणों को ऊपर उठाने में खादी का कितना बड़ा स्थान है। उन्हें बड़ी आसानी के साथ खादी पहनने का संकल्प लेने के लिए तैयार किया जा सकता है, और खादी पहनना शुरू करने के लिए वे एक जोड़ा वस्त्र आगामी गांधी-जयंती पर ही खरीद सकते हैं। पंचायत के खादीधारी पंचों को अपने-अपने क्षेत्रों में, फिर तो खादी के प्रचारक बन जाना चाहिए।

यह बड़ी खुशी की बात है कि कुछ समय से राष्ट्रीय विस्तार सेवा खंड खादी-आन्दोलन के निकट आते जा रहे हैं। आगामी गांधी-जयंती का उपयोग इस बंधन को और भी मजबूत बनाने के लिए किया जा सकता है। खण्ड और सामुदायिक परियोजना के कार्यकर्ताओं को केवल खुद खादी खरीदने के लिए ही तैयार नहीं करना चाहिए, बल्कि ग्रामीण क्षेत्रों में इस अभियान का संगठन करने के लिए उनकी सहायता लेना भी अनिवार्य होगा।

गांधीजी के जन्म-दिवस, २ अक्तूबर को सार्वजनिक सभाएँ करने, जुलूस, प्रभात फेरी आदि निकालने जैसे कामों के संगठन में वे आगे आकर प्रमुख भाग ले सकते हैं। ऐसी सभाओं और जुलूसों में जनता तक खादी का संदेश पहुँचाना चाहिए और उन्हें समझाना चाहिए कि गांधीजी के संदेशों में सबसे बड़ा कल्याणकारी है-खादी का संदेश। राष्ट्रीय विस्तार सेवा-खण्डों और सामुदायिक विकास-खण्डों के अधिकारियों से समय पर सम्पर्क स्थापित किया जाना चाहिए, ताकि वे अपने अधिकारियों व कार्यवाहकों को जरूरत के मुताबिक आवश्यक कार्यवाही करने के लिए निर्देश दे सकें।

देश के प्रायः सभी राजनीतिक दल गांधीजी के प्रति श्रद्धा-भाव रखते और प्रकट करते हैं। इन पार्टियों के नेताओं ने समय-समय पर जनता से कहा है कि खादी का क्या स्थान है, इसे मानने में वे किसी से भी पीछे नहीं हैं। क्या उनसे यह आशा नहीं रखी जा सकती कि आगामी गांधी जयंती समारोह मनाने में वे अपने संगठन को पूरी तरह सक्रिय बनायेंगे! वे जनता के विश्वास-पात्र हैं और इसलिए जब वे खादी के पक्ष में बोलेंगे व उसे प्रश्रय देंगे तो उससे लोगों के हृदयों में खादी के प्रति विश्वास बैठ सकता है।

अभी दो महीने का समय हमारे सामने है। अभी से खादी-कार्यकर्ताओं को देश के कोने-कोने में गांधी-जयंती समारोह समितियाँ बनाने का काम शुरू कर देना चाहिए। पंचायतों, सामुदायिक विकास खण्डों व शिक्षा-संस्थाओं तक पहुँचने के अधिक-से-अधिक प्रयत्न किये जाने चाहिए।

यदि ठीक तरह से समन्वित और सघन कार्य प्रणाली अपनायी गयी, तो इसमें कोई सन्देह नहीं कि आगामी चरखा-जयंती के दरमियान न केवल खादी के जमा स्टाक की बिक्री हो सकेगी, बल्कि इसकी बिक्री के नये द्वार भी सामने आयेंगे और इस प्रकार उन लाखों-करोड़ों मूक ग्रामीणों को भी सहायता मिलेगी, जिन पर हमारे समाज की यह भव्य इमारत खड़ी है।

गुजरात का सर्वोदय-सम्मेलन और विचार-शिविर

"दादा की अध्यक्षता में गुजरात का सर्वोदय-सम्मेलन हो रहा है, यह खुशी की बात है। ढाई साल पहले गुजरात की यात्रा में जनता का जो दिव्य-भव्य दर्शन मुझे हुआ, उसका विस्मरण मुझे कभी नहीं हो सकता। गांधीजी ने जो विचार-बीज बोया है, वह लोकहृदय में कितना गहरा गया है, वह मैंने उस समय अपनी आँखों से देख लिया। सर्वोदय सिद्ध होने वाला ही है। रुक्मिणी के माफिक हमारी भावना होनी चाहिये। "जहां असूत् व्रत-नृशान्, शत-जन्मभि स्यात्"—विज्ञान के जमाने में एक जन्म में भी शत-जन्म हो जाते हैं।"

गुजरात सर्वोदय-सम्मेलन के अवसर पर विनोबाजी ने उपर्युक्त सन्देश भेज कर गुजरात की जनता के प्रति अपनी श्रद्धा एवं विश्वास प्रकट किया है, साथ-साथ हम कार्यकर्ताओं की भावना को और श्रद्धा को भी बल दिया है। तथा इस कार्य में लगन से लगे हुए कार्यकर्ताओं को विचार की गतिशीलता का दर्शन कराया है।

१३ जुलाई '६१ का वह दिन था, जब बड़ौदा में श्री दादा धर्माधिकारी की अध्यक्षता में गुजरात का दसवाँ सर्वोदय-सम्मेलन सफल हो रहा था। प्रदेश के करीब २०० कार्यकर्ता और शहर के भी करीब ५०० प्रतिष्ठित नागरिक दादा की वाणी सुनने के लिये एकत्र हुए थे।

दादा ने मंगल प्रवचन में हम लोगों की भूमिका और भावना का स्पष्ट दर्शन कराया। हमारी आकांक्षाएँ, अपेक्षाएँ और मर्यादाओं के प्रति ध्यान खींचा। कार्यकर्ताओं की उलझन को सुलझाते हुए कहा कि हमारी शक्ति सीमित है, लेकिन जो कुछ शक्ति है, उसको अपने कार्यक्रमों में कार्यान्वित करने से ही वह शक्ति बढ़ सकती है। विनोबा का प्रयोग लोकसत्ता की नींव मजबूत बनाने का है। जैसे गांधी की निरंतर खोज चलती थी, वैसे ही आज विनोबा की खोज चल रही है। लोकशक्ति के निर्माण के लिये योग्य साधन की खोज कर रहे हैं। हम उठते हैं, गिरते हैं, खड़े होते हैं, ठोकरें खाते हैं, निराश होते हैं, फिर भी उसी मार्ग पर चलने का हमने दृढ़ निश्चय किया है।

इस तरह बाबा के दूर पूर्व से भेजे हुए दिव्य भव्य दर्शनयुक्त सन्देश और दादा की मंगल छाया में सम्मेलन का आरंभ हुआ।

सम्मेलन के आरम्भ में बंगाली भजन हुआ। भजन के पवित्र वातावरण में श्री मीरा बहन ने पूजनीय व्यक्तियों, गुरुजनों और गुजरात के अग्रगण्य व्यक्तियों के सन्देशों का वाचन किया। सन्देश वाचन के बाद गुजरात सर्वोदय मंडल के प्रमुख श्री द्वारकादास जोषी ने सबका स्वागत किया। अपने वक्तव्य में उन्होंने कहते हुए विज्ञान के चरण से उपस्थित जागतिक परिस्थिति में सर्वोदय के बिना कोई चारा नहीं है, इस बात पर अपनी श्रद्धा प्रकट की और गुजरात के कार्य की गतिविधि का परिचय दिया।

गुजरात में कुल मिला कर ८५,०७९ एकड़ भूमि प्राप्त हुई है। ४८,८७६ एकड़ भूमि का वितरण हुआ है। १४४ ग्रामदान हुए हैं और ५९ ग्राम-परिवार के संकल्प हुए हैं। १३७ शांति-सैनिक, ७५ शांति-सहायक बने हैं। आज गुजरात में कुल ४०६ लोकसेवक हैं। २५ प्राथमिक सर्वोदय-मंडल बने। यज्ञ-प्रकाशन से ५४ किताबें प्रकाशित हुई हैं और अब तक १,५०,७७३ रुपये की साहित्य-बिक्री हुई है।

स्वागत प्रवचन के बाद दादा का मंगल प्रवचन हुआ।

आगामी चुनाव की नौबत बज रही है, गुजरात में पंचायत राज्य का मुहूर्त हो रहा है। सम्मेलन ऐसी परिस्थिति में हो रहा था, इसलिए उसके संदर्भ में ही सम्मेलन की सब चर्चाएँ चलीं। जुगतरामभाई दवे, बबलभाई महेता ने कार्यकर्ताओं को मार्गदर्शन दिया। श्री सनत् महेता ने कहा कि आंदोलन की तीव्रता बढ़नी चाहिये और साथ ही कार्यकर्ताओं को तीव्रता से काम में लग जाने का अनुरोध किया।

दोपहर की बैठक में आरम्भ में भजन के बाद गुजरात सर्वोदय मंडल का निवेदन श्री अरुणाभाई ने पढ़ा और उस पर विवेचन भी किया। नारायणभाई ने उस पर और प्रकाश डाला। बाद में श्री हरिवल्लभभाई ने आज की जागतिक परिस्थिति में शांति सेना की आवश्यकता और भारत में शांतिसेना का क्या काम हुआ है, उसका जिक्र किया। श्री लालजीभाई ने पंचायत राज्य के बारे में अपने विचार पेश किये। श्री हरिवल्लभभाई ने चुनाव की आचार मर्यादाएँ रखीं और उस पर अपने विचार व्यक्त किये। श्री वजुभाई शाह ने भी चुनाव के वक्त पक्षों को, जनता को और अखबारों को क्या मर्यादाएँ रखनी चाहिये, उसका अपनी स्पष्ट वाणी में विवेचन किया।

गुजरात के प्रमुख कार्यकर्ता सर्वश्री मामासाहब, परीक्षितभाई, नेरताणी काका, दिलखुशभाई आदि सम्मेलन में उपस्थित रहे। चर्चाओं को संक्षेप में नीचे दे रहे हैं।

(१) राष्ट्र की शक्ति को छिन्न भिन्न करने वाली सब प्रकार की संकुचितताओं के सामने समग्र पुरुषार्थ खड़ा करने का प्रयास करना चाहिये।

(२) राष्ट्रीय एकता के लिये आर्थिक समानता आवश्यक है। इतना ही नहीं, उसके बिना चारा नहीं है, ऐसा विश्वास व्यक्त हुआ।

(३) आर्थिक समानता की दृष्टि से स्वामित्व विसर्जन के साथ साथ साधारण नागरिक के लिये भी रोजगारी, आत्मविश्वास और जागृति दे ऐसे उद्योग, खादी-ग्रामोद्योग की दिशा में ग्रामस्वराज्य का नया मोड़, और उद्योगदान के रूप में सम्मिलित मिल्कियत के विचारों के प्रति आगे बढ़ने की जरूरत है। इस विचार के प्रति सबका ध्यान खींचा गया।

(४) पंचायत राज्य का स्वागत हुआ। लेकिन राष्ट्रीय एकता को पोषक हो, इस दृष्टि से यह कदम बढ़ाया जाय ऐसा प्रतिपादन किया गया।

(५) आगामी आम चुनाव में हमारी संस्कृति, सभ्यता, शांति और प्रेम प्रगट हो, ऐसा वातावरण बनाने में सब प्रयत्न करें। लोकशिक्षण के इस अवसर को हाथ से जाने नहीं देने का अनुरोध किया गया।

(६) चुनाव के उपलक्ष्य में उम्मीदवार, पक्ष जनता और अखबारों को क्या करना चाहिये, इसकी तफसील में "आचार मर्यादा" घोषित की गयी।

* * *

अहमदाबाद और बड़ौदा की अखंड व्याख्यान माला में श्री दादा धर्माधिकारी ने अपने विचार रखे थे। अभी-अभी तो वे कहते भी हैं कि मेरे पास कुछ कहने का नहीं है, चाहता हूँ कि बच्चे खेलते रहें और मैं वह खेल देख कर आनन्द पाऊँ। फिर भी गुजरात के कार्यकर्ताओं ने उनको उगुदुरू-सम्मेलन में ही गुजरात में शिविर के लिये आमंत्रण दिया, और दादा ने स्नेहवश उसका स्वीकार किया।

ता० ९ से १२ जुलाई तक शिविर का आयोजन बड़ौदा में हुआ। प्रतिदिन दो व्याख्यान हुए। शिविरार्थियों के अलावा शहर के करीब ५००-७०० नागरिक भी उपस्थित रहे।

निम्नलिखित विषयों पर श्री दादा ने अपनी विशिष्ट शैली में प्रवचन किये। (१) सर्वोदय के सन्दर्भ में जागतिक परिस्थिति, (२) लोकशाही और चुनाव, (३) मानवीय दृष्टि से अर्थ संयोजन, (४) ग्रामस्वराज्य और विश्वनागरिकत्व, (५) विज्ञान-युग में अध्यात्म, (६) समाज परिवर्तन और अहिंसक संगठन, (७) राष्ट्रीय एकता।

व्याख्यान-माला के अलावा प्रतिदिन सुबह १०-१५ से लेकर ११-४५ बजे तक और दोपहर को ३ से ५ बजे तक कार्यकर्ताओं का मिलन रहा, जिसमें "मैं और आंदोलन", "संगठन" और "भावी कार्यक्रम," इन विषयों पर गहरी चर्चाएँ हुईं। कार्यकर्ताओं ने "मैं और आंदोलन" पर बोलते वक्त अपनी अटूट श्रद्धा प्रकट की। 'फिर भी हम लोग कुछ ज्यादा नहीं कर पा रहे हैं, जो कुछ करते हैं, इससे उत्साह बढ़ता नहीं है, तो भी हिंमत और विश्वास के बल पर आगे चलना चाहिये,' इस बात पर सब वक्ताओं ने जोर दिया।

संगठन की चर्चा गुजरात की परिस्थिति को ध्यान में रख कर चली। गुजरात का प्रदेशीय संगठन होने की वजह से सारा काम केन्द्रीकरण की दिशा में चला जायेगा, ऐसी चेतावनी के स्वर भी निकले और किसी ने संगठन को विसर्जित करने का भी मत व्यक्त किया। प्रदेशीय संगठन को विसर्जित किये बिना जिला संगठन चेतनयुक्त बने और आर्थिक कार्यक्रम विषयक जिम्मेवारी सम्हाले, ऐसा सोचा गया। छोटे-बड़े सब कार्यकर्ता आर्थिक जिम्मेदारी में सहभागी बनें और सहज स्वाभाविक ढंग से कार्यकर्तागण का 'युनिट' बने, इस दृष्टि से आयोजन करने का सोचा गया।

भावी कार्यक्रम के बारे में काफी चर्चाएँ हुईं। अनेक विचार सामने आये। रिश्वतखोरी, अमलदारशाही से लेकर शांति-सेना, सर्वोदय-पात्र, पदयात्राएँ, भूमि-वितरण आदि सब पहलू पर विचार हुआ।

कार्यक्रम के बारे में निम्न बातें सोची गयीं :

(१) बड़ौदा नगर-कार्य सामूहिक शक्ति से चलाना।

(२) गुजरात सर्वोदय-पदयात्रा, जो डेढ़ साल से सतत चल रही है, उसको पूर्ण सहयोग देना।

(३) भूमि वितरण के लिये एक और यात्रा ११ सितंबर से शुरू करना और आगामी सम्मेलन तक भूमि-वितरण का काम पूर्ण करना।

(४) सर्वोदय-पात्र, संपत्ति-दान, सूतांजलि, सूतदान और मित्र सहायता के अलावा अर्थ अभियान का कार्यक्रम १५ अगस्त तक चलाना।

(५) 'भूमिपुत्र' पत्र के ग्राहक बनाने और साहित्य बिक्री के लिये विशेष प्रयास करना।

अन्त में श्री जुगतरामभाई और श्री दादा के प्रवचन के बाद कार्यकर्ताओं का मिलन समाप्त हुआ। इस मिलन में श्रद्धा का संबल मिला, विचार की सफाई हुई। इस तरह शिविर, सम्मेलन विचार निष्ठा का बल प्राप्त कराने में सफल हुए।

—अमृत मोदी, का. मं.
गुजरात सर्वोदय-मंडल, बड़ौदा

बिहार की चिट्ठी

श्री जयप्रकाश नारायण के मार्ग-दर्शन में बिहार सर्वोदय-मंडल के जिला-अध्यक्ष, मंत्री एवं संयोजक तथा जिला भू-प्राप्ति समिति के संयोजक और विशेष आमंत्रितों की २० जून की बैठक के निर्णयानुसार 'बीघा में कट्ठा' अभियान सघन रूप से बिहार राज्य के मुजफ्फरपुर, दरभंगा, सहरसा, पूर्णियाँ, मुंगेर, संथाल परगना एवं गया जिले में शुरू किया गया।

सर्वप्रथम तो कार्यकर्ताओं ने अभियान को सफल बनाने के लिए बड़ी मुस्तैदी से काम शुरू किया और मुजफ्फरपुर जिले के डुमरा, बथनाहा एवं रीगा, तीन प्रखंडों में तीन; दरभंगा जिले के समस्तीपुर सबडिविजन के समस्तीपुर, उजियारपुर, किशनपुर, एवं कल्याणपुर, चार प्रखंडों में चार; सहरसा जिले के आलमनगर, मुरलीगंज, किशनगंज और नैना, चार थाने में चार; पूर्णियाँ जिले के बरहारा, धनमनरी, रूपौली, मनार्नपुर, धमदाहा, पाँच प्रखंडों में पाँच; संथाल परगना के जामताड़ा, सारवाँ, पथरगामा, रामगढ़ एवं गोड्डा प्रखंडों में पाँच; मुंगेर जिले के परबत्ता, सूर्यगढ़ा, लखीसराय एवं मरौल, चार प्रखंडों में चार एवं गया जिले के परैया, फकीरागाँव थाना में दो; इस तरह कुल २७ टोलियाँ बीघे में कट्ठा जमीन की माँग करने निकल पड़ीं।

प्रांतीय स्तर के नेताओं ने भी अपना अधिक-से अधिक समय इस अभियान को सफल बनाने में दिया। पटना जिले के सोलह कार्यकर्ता संथाल परगना में, चंपारण जिले के तीन एवं सारण जिले के चार कार्यकर्ता मुजफ्फरपुर में, दरभंगा के पाँच कार्यकर्ता सहरसा में, भागलपुर के कार्यकर्ता पूर्णियाँ में, शाहाबाद के दो कार्यकर्ता मुंगेर में एवं हजारीबाग के पाँच कार्यकर्ता गया जिले में डेढ़ महीने के लिए बीघा-कट्ठा अभियान को सफल बनाने में जुट गये।

ग्राम-पंचायत के मुखिया, सरपंच एवं अन्य पदाधिकारियों ने अभियान को सफल बनाने में काफी सहयोग दिया।

राजनीतिक दल के नेताओं ने तो विनोबाजी को असम जाते समय बिहार की यात्रा पर पुराने संकल्प के नये संस्करण 'बीघे में कट्ठा' द्वारा ११ लाख एकड़ जमीन इकट्ठा करने में सक्रिय सहयोग देने का आश्वासन दिया था; लेकिन आम चुनाव के नजदीक होने एवं अन्य कारणों से आश्वासन पूरा करने में असमर्थ रहे।

कहीं-कहीं कुछ राजनीतिक कार्यकर्ताओं एवं अन्य समाज सेवकों ने अधिक समय देकर बीघे-कट्ठा की माँग भूमिवानों से करने में सहायता की है।

पूर्णियाँ जिले की लगभग सभी रचनात्मक संस्थाओं ने अपने कार्यकर्ताओं में से बीघे-कट्ठा याने बीस में एक कार्यकर्ता पूरा समय देकर भूदान माँगने के लिए दे दिया। खादी-ग्रामोद्योग संघ, मुंगेर ने भी साप्ताहिक छुट्टी रविवार के अतिरिक्त सप्ताह में एक दिन और अपना कारोबार बन्द कर 'बीघे में कट्ठा' अभियान में भेजने का निश्चय किया। इस प्रकार अभियान तो बड़ा ही उत्साह एवं लगन से शुरू हुआ। लेकिन खेती के मौसम, हैजा आदि महामारी एवं कार्यकर्ताओं की एकाग्रता की कमी तथा कार्यकर्ता के बीमार पड़ जाने के कारण २७ टोलियों की जगह केवल २१ टोलियाँ काम कर रही हैं। अंचल टोलियाँ ही गाँवों में सतत काम कर सकीं। इन टोलियों में लगभग २०० कार्यकर्ता बराबर ही रहे।

अभियान की सफलता के लिए पंजाब से १, महाराष्ट्र से २, गुजरात से २, राजस्थान से ३ एवं उत्तरप्रदेश से १९ कार्यकर्ता बिहार में आये एवं भिन्न-भिन्न टोलियों में शामिल हो गये। सारण जिले के तालपुर एवं भागलपुर जिले के क्षेत्रों भी स्थानीय कार्यकर्ताओं ने भूदान-कार्य शुरू किया है। एक तरफ तो हैजा जैसी महामारी गाँव-गाँव में अपना अड्डा जमाये बैठी थी, दूसरी तरफ अभियान में लगे कार्यकर्ता बाबा को दिये आश्वासन को पूरा करने में बिना जान की परवाह किये बीघे-कट्ठा की माँग में लगे थे। कई कार्यकर्ता भी हैजा से ग्रसित हो गये, लेकिन भगवान की कृपा से उपचार के बाद बच गये।

श्री जयप्रकाश नारायण ने भी ११ और १२ जुलाई को दरभंगा जिले के पूसा रोड एवं ४ अगस्त से ६ अगस्त तक मुंगेर जिले के परबत्ता, सूर्यगढ़ा एवं जमुई थाना का दौरा किया। उपरोक्त अवसर पर पूसा रोड की जनता ने ४१०१ रुपये की थैली एवं ६८४ दानपत्र द्वारा ३९२२ कट्ठा जमीन तथा आधारपुर क्षेत्र की जनता ने १००१ रुपये की थैली एवं १०१६ कट्ठा ६ धूर जमीन और सर्वोदय युवक संघ, आधारपुर की ओर से ११ रुपये की थैली दी। इस प्रकार पूसा क्षेत्र से ४९३८ कट्ठा जमीन एवं ५११३ रुपये की थैली सर्वोदय-कार्य के लिए दी गयी।

मुंगेर जिले के परबत्ता अंचल के १४ गाँवों से ५६ दानपत्र द्वारा १०७३ कट्ठा १५ धूर एवं सूर्यगढ़ा थाना से ३७ दानपत्र द्वारा १२०६ कट्ठा जमीन जयप्रकाशजी को दी गयी।

४ अगस्त को परबत्ता जाते समय साहबपुर कमाल रेलवे स्टेशन पर स्थानीय उच्च विद्यालय के छात्रों ने सर्वोदय कार्य के लिए चौंतीस रुपये पैंतीस नये पैसे की रकम श्री जयप्रकाश नारायण को दी तथा स्टेशन पर ही हजारों की संख्या में उपस्थित होकर "जयप्रकाश का जीवन-दान, सफल करेगा ग्रामदान", "बीघे में कट्ठा, दान दो इकट्ठा" आदि नारों से स्वागत किया।

निर्णीत पद्धति के अनुसार कार्यकर्ताओं की पूर्वतैयारी टोली भूमिवानों से मिल कर 'बीघे में कट्ठा' अभियान के उद्देश्य एवं कार्यक्रम बताने का काम करती है तथा मुख्य टोली के आने की सूचना देती है। मुख्य टोली दानपत्र भराने के कार्य के साथ-साथ आम सभा एवं व्यक्तिगत बातचीत द्वारा सर्वोदय सिद्धान्त पर प्रकाश डालने का प्रयास करती है। आश्वासन देने वाले एवं मुख्य टोली से किसी कारणवश नहीं मिलने वाले भूमिवानों से मिलने का प्रयास अंतिम टोली करती है। इस प्रकार कार्य-क्षेत्र वाले स्थानों में भूदान एवं बीघे में कट्ठा का नारा तथा विचार घर-घर गूँजने लगा।

अभियान शुरू होने के पहले हम लोगों ने जितनी जमीन मिलने की आशा की थी, उतनी जमीन तो प्राप्त नहीं हो सकी; लेकिन प्राप्त जमीन से ऐसा लगता है कि भूदान का अलख फिर से जगाने पर जमीन मिल सकती है। भूदान-आन्दोलन के प्रारंभ में जो वातावरण था, वैसा वातावरण तो बिल्कुल ही नहीं है, लेकिन यदि प्रयास किया जाय तो ११ लाख के लक्ष्यांक के निकट आ सकते हैं। १५ जून को मुजफ्फरपुर की आम सभा के बाद १६ जून से १० जुलाई तक अपने दौरे का कार्यक्रम श्री जयप्रकाश नारायण ने स्थगित किया तो कुछ कार्यकर्ताओं ने इसे पसन्द नहीं किया; क्योंकि बहुत स्थानों में उनकी यात्रा का प्रचार कर दिया गया था। लेकिन कुछ दिनों के काम के अनुभव के बाद अब वे भी ऐसा अनुभव करते हैं कि यदि श्री जयप्रकाश नारायणजी अपने दौरे को नहीं स्थगित करते और बीघे-कट्ठे अभियान को सघन रूप से चलाने का निर्णय नहीं होता तो जो थोड़ी-बहुत सफलता इस ओर मिली है, वह भी नहीं मिलती। अभियान की सफलता एवं अन्य सूचनाओं को आकाशवाणी पटना ने प्रसारित कर एवं पटना के दैनिक और साप्ताहिक समाचार पत्रों ने प्रकाशित कर बड़ा ही सहयोग प्रदान किया है।

नशाबन्दी-आन्दोलन

बिहार सर्वोदय मंडल की नशाबन्दी उपसमिति ने बिहार में नशाबन्दी के विचार से कलाली एवं शराब की दूकान उठाने का आन्दोलन शुरू किया है और सर्वप्रथम मुंगेर जिले के जमुई थाने के मलयपुर ग्राम की कलाली को हटाने का आन्दोलन प्रचार, उपवास एवं पिकेटिंग द्वारा शुरू कर दिया है। ६ अगस्त को श्री जयप्रकाश नारायण ने मलयपुर की कलाली पर पिकेटिंग किया और नशाबन्दी के महत्त्व एवं नशा से होने वाली हानि पर प्रकाश डाला।

श्री विनोबाजी एवं श्री जयप्रकाश नारायण के निर्देशानुसार 'बीघे में कट्ठा' अभियान को सफल बनाने के लिए अखिल-भारतीय पोस्टर-विरोधी कार्यक्रम एवं शान्ति सेना शिविर का कार्यक्रम स्थगित कर दिया गया था। अतः इस ओर विशेष प्रगति नहीं हुई।

सर्वोदय-पात्र

पटना नगर-निगम के क्षेत्रों में लगभग ७०० शान्ति-पात्र रखे गये हैं, जिनमें से लगभग ३०० पात्र चालू हैं। इन पात्रों से पिछले महीने में ३ मन १८ सेर चावल, ८ सेर आटा, ३१ नये पैसे एवं ३ सेर अन्य अनाज मिला है।

भू-वितरण कार्य

बीघे में कट्ठा अभियान में जो जमीन मिलती है, उसे दाता ही अपनी इच्छानुसार स्वयं खेती करने वाले भूमिहीनों को दे देते हैं। पहले से मिली जमीन का बँटवारा करने के लिए मुंगेर जिले में ११ कार्यकर्ता केवल भू-वितरण कार्य में लगे हैं।

—रामनन्दन सिंह

गोटन ग्राम में सर्वोदय-विचार केंद्र

नागोर जिले के गोटन में सर्वोदय-विचार केन्द्र की स्थापना की गयी। ता० १२ जुलाई को श्री बद्रीप्रसाद स्वामी की अध्यक्षता में किसान मजदूर-सम्मेलन सम्पन्न हुआ। सम्मेलन में निम्न माँगें एकमत से रखी गयीं।

(१) पड़ोस की बिलाड़ा तहसील की जमीन और इस तहसील (मेड़ता) की जमीन समान होते हुए भी राजस्व कर में बड़ा अन्तर है, उसे शीघ्र समाप्त किया जाय।

(२) स्थानीय पंचायत द्वारा खादी व ग्रामोद्योगी वस्तुओं पर जो कर लगाया जा रहा है या लगाया गया है, उसे शीघ्र हटाया जाय।

(३) भूमि की कुल व्यवस्था और उसके अधिकार ग्राम पंचायत व ग्राम सभाओं को सौंप दिये जायँ।

(४) गोटन गाँव की आबादी तथा शिक्षा की ओर बढ़ रही रुचि को देखते हुए यहाँ की माध्यमिक शाला को हायर सेकंडरी में परिवर्तित किया जाय।

गढ़वाल सर्वोदय-मण्डल की बैठक

१६ जुलाई '६१ को स्थान चमोली में गढ़वाल सर्वोदय मण्डल की बैठक उत्तराखंड शान्ति सेना के संगठक श्री सुन्दरलाल बहुगुणा की उपस्थिति में हुई। बैठक में संगठन सम्बन्धी कई निश्चय हुए।

(१) गढ़वाल सर्वोदय-मंडल के अध्यक्ष श्री भूमिभिक्षु व मंत्री चण्डीप्रसाद भट्ट चुने गये।

(२) अखिल भारत सर्व सेवा संघ के आदेशानुसार "अर्थसंग्रह अभियान" द्रुत गति से सामूहिक रूप में चलाने का निश्चय किया गया।

(३) भूमिभिक्षुजी द्वारा चलाये गये शराबबन्दी आन्दोलन को विनोबाजी से उत्तर आने तक सर्वोदय के अन्य प्रमुख कार्यक्रमों की भाँति शराबबन्दी के पक्ष में लोकमत जाग्रत करने का प्रयत्न करने का निश्चय हुआ।

(४) चमोली गढ़वाल में ग्राम-इकाई में सघन कार्य की जिम्मेदारी श्री आलमसिंह सिंह को दी गयी।

(५) चर्खियों में 'बील बियारिंग' का काम प्राथमिक रूप से जोशीमठ, कर्णप्रयाग नागपुर व दल्लूखाता कोटद्वार में लगाये जायें।

(६) जोशीमठ में कार्य कर रही श्रमिक सहकारी समिति श्री रामसिंहजी के सहयोग में कार्य करते हुए समिति के लिए चमोली-गोपेश्वर मोटर मार्ग पर कार्य लेने के लिए सार्वजनिक निर्माण विभाग से अनुरोध किया जाय।

(७) पौड़ी गढ़वाल में श्री मानसिंह रावत और चमोली गढ़वाल में श्री आलमसिंह सिंह भूदान संयोजक नियुक्त हैं। गढ़वाल में कार्य सुचारू रूप से चलाने के लिए प्रदेशीय भूदान यज्ञ समिति से एक कार्यकर्ता की नियुक्ति करने की प्रार्थना की गयी।

—चण्डीप्रसाद भट्ट, मंत्री
सर्वोदय-मण्डल, चमोली, गढ़वाल

भंगी-मुक्ति शिविर के सुपरिणाम

पूर्वनिश्चय के अनुसार २१ जून '६१ से ३० जून '६१ तक उत्तर प्रदेश गांधी स्मारक निधि के तत्वावधान में सेवापुरी क्षेत्र में आश्रम से बाहर तीन गाँवों का प्रयोग-क्षेत्र मान कर श्री कृष्णदास शाह ने प्रदेश से आये हुए ४५ ग्राम-सेवकों, उत्तर प्रदेशीय खादी विद्यालय के पाँच प्रशिक्षार्थी, एक शिक्षक तथा खादी नगर अभियान के दो कार्यकर्ताओं के अलावा लखनऊ के सफाई व स्वास्थ्य विभाग के मुख्याधिकारी को लेकर एक भंगी-मुक्ति सफाई शिविर का आयोजन किया था।

शिविर के दौरान में निम्न निर्माण कार्य हुए। सोख-नालियाँ ८, सोख बाल्टी १३, स्नान-घर १५, सार्वजनिक स्नान घर ४, बर्तन मलने के स्थान १५, कम्पोस्ट गड्ढे ५, निर्धूम चूल्हा १, पेशाब घर १९, बाल शौच घर ६, 'गोपुरी' शौच घर २, नालियाँ १२। लगभग १७५ रुपये का सीमेंट तथा २५ रुपये का बालू का भार श्री गांधी स्मारक-निधि ने उठाया। शेष ईंटें आदि गाँववालों ने दीं। आधा श्रम शिविरार्थियों का तथा आधा श्रम गाँववालों का था।

मथुरा जिले में सर्वोदय-आंदोलन

सर्वोदय आश्रम, सादाबाद (जि० मथुरा) के क्षेत्र सादाबाद, सहपऊ, सरौट, पदलपुर आदि ग्रामों में सर्वोदय-पात्र योजना चल रही है तथा संस्था के कार्यकर्ता सम्पत्तिदान देते हैं। माह जनवरी, '६१ से जून '६१ तक का प्राप्ति विवरण निम्न प्रकार है।

माह १९६१	सर्वोदय-पात्र से गल्ला रु. न.पै.	सम्पत्तिदान से प्राप्त रुपये
जनवरी	२०-९१	५८
फरवरी	३२ ८२	५६
मार्च	२४-१५	५२
अप्रैल	२१ ०२	४८
मई	३३-८६	४८
जून	३४-६९	४६
कुल	१६७ ५३	३०८

उपरोक्त संगृहीत धनमें से छठा भाग, ७९ रु ५७ न. पै. सर्व सेवा संघ को भेजा जा चुका है, और शेष अपने जिले के सर्वोदय-कार्य एवं कार्यकर्ता निर्वाह में खर्च होता है।

माह जून-जुलाई में 'भूदान-यज्ञ' के २० वार्षिक ग्राहक बने हैं। 'भूदान-यज्ञ' के ६० अंक फुटकर बेचे जाते हैं।

जून-जुलाई में ३ परिवारों में ५-९७ बीघा भूमि वितरित की गयी है। अर्थ संग्रह का कार्य जिले भर में चल रहा है।

संथाल परगना में भूदान-ग्रामदान की स्थिति

संथाल परगना जिले में २,०६२ ग्रामों में १८,३२९ दानपत्रों के द्वारा १,९४,२३२ एकड़ भूमि दान में मिली है। उनमें से ८७९ ग्रामों में ४,८३६ किसानों के बीच ९,३६१ एकड़ भूमि वितरित की गयी है।

इस जिले में ७८ ग्रामदान मिले हैं, उनमें से ३१ ग्रामों में भूमि का वितरण किया गया है। सब ग्रामों में निर्माण-कार्य चालू है।

४८३६ भूदान किसानों में से, १०५३ भूदान किसानों को २,२४,००० रुपया पुनर्वास समिति से दिया गया।

भूदान-आन्दोलन-सम्बन्धी पत्र-पत्रिकाएँ

११ सितम्बर से २ अक्तूबर तक पत्र पत्रिकाओं के ग्राहक बनाने सर्वोदय साहित्य प्रचार का अभियान का क्रम चलने वाला है। उस संदर्भ में हम देश भर में भूदान से संबंधित पत्र पत्रिकाओं की जानकारी यहाँ दे रहे हैं।

क्रम	भाषा	नाम तथा पता	शुल्क
१.	हिंदी	भूदान-यज्ञ (साप्ताहिक) राजघाट, वाराणसी	६)
२.	,,	ग्रामराज (साप्ताहिक) किशोर निवास, जयपुर	४)
३	,,	नयी तालीम (मासिक) सर्व-सेवा-संघ, सेवाग्राम	४)
४	,,	भूमिक्रांति (साप्ताहिक) ११२ स्नेहलतागंज, इन्दौर	८)
५	उर्दू	भूदान-तहरीक (पाक्षिक) राजघाट, वाराणसी	३)
६	,,	सर्वोदय विचार-पत्रिका (पाक्षिक) जालंधर (पूर्व पंजाब)	३)
७	अंग्रेजी	भूदान (साप्ताहिक) राजघाट, वाराणसी	६)
८.	,,	सर्वोदय (मासिक) श्रीनिवासपुरम्, तंजोर (मद्रास)	४॥)
९	गुजराती	भूमिपुत्र (दशवारिक) रावपुरा, बड़ौदा	३)
१०.	मराठी	साम्ययोग (साप्ताहिक) गोपुरी, वर्धा	४)
११	सिंधी	धरती माता (पाक्षिक) ब्लॉक १३, आदीपुर (कच्छ)	३)
१२	पंजाबी	भूदान (पाक्षिक) जालंधर (पूर्व पंजाब)	३।)
१३	बंगला	भूदान-यज्ञ (साप्ताहिक) सी-५२, कॉलेज स्ट्रीट मार्केट, कलकत्ता-१२	६)
१४.	तेलुगु	साम्ययोगमु (साप्ताहिक) ऑफ अस्पताल, तेनाली जि० गुंटूर	६)
१५.	तमिल	सर्वोदयम् (मासिक) २४, श्रीनिवासपुरम्, तंजोर	३)
१६.	,,	ग्रामराज्यम् (साप्ताहिक) खादी वस्त्रालय, रतन बाजार, मद्रास ३	६)
१७.	मलयालम	भूदान शब्दम् (साप्ताहिक) कोझीकोड १	४॥)
१८.	कन्नड़	भूदान (पाक्षिक) चामराज पेठ, बंगलोर	४)
१९.	उड़िया	ग्रामसेवक (दशवारिक) लालबाग, कटक	४)
२०.	असमी	भूदान-यज्ञ (पाक्षिक) पान बाजार, गुवाहाटी	३)

विज्ञान-युग में अध्यात्म ······ पृष्ठ २ का शेष

ईश्वर पर डाली। जो कुछ करता-कराता है, वह ईश्वर करता-कराता है। इसलिए मेरे कृत्य की कोई सजा हो तो वह ईश्वर को होनी चाहिए। दुर्योधन ने कहा कि यथा नियुक्तोऽस्मि तथा करोमि—भीतर बैठा-बैठा वह जैसा कराता है वैसा करता हूँ, तो फिर सजा मुझे किसलिए?

वैज्ञानिक समाजवाद ने कहा कि ऐतिहासिक नियति सब करती-कराती है। इसलिए भगवान की जगह इतिहास आ गया और मैं इतिहास (आब्जेक्ट) का विषय हो गया। तो फिर सजा होने की हो तो इतिहास को हो, मुझे किसलिए?

तीसरा मत ऐसा है कि राज्य यदि सुव्यवस्थित हो तो कोई बुराई नहीं हो सकती। अर्थात् इसमें जिम्मेदारी राज्य पर डाली गयी। इस प्रकार मैं यदि भगवान, नियति या राज्य के अधीन रहूँ तो सभी पाप-पुण्य उनके होते हैं। उस वृद्ध ब्राह्मण ने कहा कि मेरा लड़का मर गया तो उसके लिए हे राम, तू अपराधी है।

यह मनुष्य की गैरजिम्मेदारी है, ऐसा गैरजिम्मेदार मनुष्य स्वतंत्र रहने योग्य नहीं। मनुष्य को अपने कर्मों की जिम्मेदारी स्वयं स्वीकार कर लेना चाहिए। इसे भगवान या किसी दूसरे पर नहीं डाल सकते। यह जिम्मेदारी किसके प्रति? अध्यात्म उत्तर देगा कि तुम अपने भले-बुरे कर्मों के लिए जिसके साथ रहते हो उनके प्रति जिम्मेदार हो। जिन व्यक्तियों के साथ, जिस समाज के साथ तुम रहते हो, उनके प्रति तुम्हारी जिम्मेदारी है। यह जिम्मेदारी हटायी नहीं जा सकती।

मनुष्य की यह मूलभूत स्वतंत्रता है। इस मूलभूत स्वतंत्रता का आधार मनुष्य की एकता और उसके बंधुत्व के सिवाय दूसरा कुछ नहीं हो सकता। यह मनुष्य की एकता का विज्ञान है। यही अध्यात्म कहलाता है। इतना अध्यात्म हम समझ सकते हैं। कम-से-कम इतना हमारे काम का है। जो इससे ऊपर का है, हमसे परे है। कदाचित उसके लिए हमारी पात्रता नहीं। (बगोदरा शिविर, ता० ११-७-'६१ का भाषण, संक्षेप से समाप्त। गुजराती से अनुवादक: ५० महेन्द्रकुमार जैन)

इन्दौर में बाढ़-पीड़ितों के सहायतार्थ

देश में यत्र-तत्र आयी प्रलयकारी बाढ़ों से पीड़ितों की सहायतार्थ माह जुलाई '६१ में इन्दौर में स्थापित सर्वोदय-पात्रों से एकत्रित धनराशि का छठा भाग 'प्रधान मंत्री सहायता-कोष' में ११६ रुपया ६ नये पैसे भेजे गये।

सर्वोदय-पात्रों की स्थापना सर्वोदय-आन्दोलन के लिए सर्वसम्मति के प्रतीक के रूप में की गयी है।

तमिलनाड में बेदखली के खिलाफ सत्याग्रह प्रारम्भ

११० कार्यकर्ता गिरफ्तार : सत्याग्रह जारी

बेदखली के विरोध में १६ अगस्त को प्रातः मदुराई से २५ मील दूर, मेलूर तालुका के मुधीरलंदीपट्टी गाँव में भूदान-कार्यकर्ताओं द्वारा एक किसान के बेदखली के विरोध में सत्याग्रह किया गया। खबर मिली है कि ५५-५५ कार्यकर्ताओं की दो टोलियों को गिरफ्तार भी कर लिया गया है।

२० अगस्त को 'प्रेस ट्रस्ट' ने जो समाचार दिया, वह हम दैनिक 'आज' से यहाँ दे रहे हैं :—

"मदुराई, २० अगस्त : कल यहाँ से प्रायः २५ मील दूर जिले के मेलूर तालुका स्थित मुधीरलन्दीपट्टी गाँव में एक अकृषक भूस्वामी के खेतों में भूदान-कार्यकर्ता घुस गये और उन्होंने खेतों में खाद, पानी डालना एवं बोयी फसल की कटनी आरम्भ कर दी। अकृषक भूस्वामी ने काश्तकार को खेत से बेदखल कर दिया था, जिसके विरोध में उक्त कार्य 'सत्याग्रह' के रूप में किया था।

भूदान-कार्यकर्ता आसपास के ७ गाँवों से आये थे। पुलिस ने इन सबको गिरफ्तार कर लिया। कार्यकर्तागण नारा लगा रहे थे—'खेत उसका जो जोते-बोये', 'ग्रामदान हमारा लक्ष्य है' आदि।

तमिलनाड भूदान आन्दोलन के संयोजक श्री एस० जगन्नाथन ने कहा—हमारी 'प्रत्यक्ष कार्रवाई' को आचार्य विनोबा भावे का आशीर्वाद प्राप्त है।

राज्य में मदुराई जिले का ही स्थान सर्वोपरि है, जहाँ २ सौ से अधिक गाँव 'ग्रामदान' में अर्पित हुए हैं। इनमें ८० से अधिक मेलुर तालुके के हैं। मुधीरलन्दीपट्टी गाँव में, जहाँ सत्याग्रह आरंभ हुआ है, कुल २ सौ एकड़ क्षेत्र के भीतर १।। सौ एकड़ खेत अकृषक भूस्वामियों के हैं। शेष ५० एकड़ खेत भूदान में अर्पित हैं।

श्री जगन्नाथन् का कहना है—चूँकि मुधीरलन्दीपट्टी के ग्रामीणों ने अपने ५० एकड़ सम्पूर्ण खेत दान कर दिये, अतः यह गाँव 'ग्रामदानी' हो गया है। इसमें बाधा अकृषक भूस्वामियों ने खड़ी की है, जो किसानों को बेदखल कर खेत पर कब्जा कर रहे हैं। ऐसी बेदखलियों रोकने के लिए ही यह 'सत्याग्रह' छेड़ा गया है। ऐसे अनेक सत्याग्रह कर सकते हैं। खेत में खाद डालना, केले के वृक्षों में पानी पहुँचाना, फसल की कटनी आदि इस बात की द्योतक है कि किसानों ने अपनी काश्त पर पुनः कब्जा कर लिया है।"

देवनागरी देश की सामान्य लिपि हो

मुख्य मंत्रियों की राय

— मुख्य मंत्रियों का सम्मेलन, जो पिछले १२ अगस्त को समाप्त हुआ, उसमें एक महत्त्वपूर्ण विचार पर सहमति प्रकट की गयी कि समस्त भारतीय भाषाओं के लिए एक सामान्य लिपि अपनायी जाय। *वर्तमान स्थिति में केवल देवनागरी लिपि* ऐसी है, जो राष्ट्रलिपि बन सकती है। मुख्य मंत्रियों का विचार रहा कि *सामान्य लिपि न केवल वांछनीय है,* वरन् वह विभिन्न भारतीय भाषाओं के बीच एक सबल सम्पर्क-सूत्र बन जायेगी और *इस प्रकार ऐक्य-साधन में भी* बहुत सहायक होगी।

शान्ति-सेना मण्डल के निर्णय

गत ११-१२ अगस्त को अखिल भारत शांति-सेना मंडल की बैठक राजघाट, काशी में श्री नवकृष्ण चौधरी की अध्यक्षता में हुई। मण्डल के मुख्य निर्णय यहाँ दे रहे हैं :

(१) भारत की राष्ट्रीय एकता के लिए अनुकूल वातावरण बनाने की दृष्टि से भारतवासियों के लिए एक शांति की प्रतिज्ञा तैयार की जाय और इस प्रतिज्ञा में करोड़ों भारतीय नागरिक यह कहेंगे कि

"नागरिकों, जन-समूहों, संस्थाओं तथा संगठनों के बीच के झगड़े शांतिमय तरीके से मिटाये जाने चाहिए ; यह सभ्य समाज की न्यूनतम आवश्यकता है। मैं अपने पड़ोसी-समाज में या भारत के किसी भी हिस्से में किसी भी प्रकार की शारीरिक हिंसा का उपयोग नहीं करूँगा।"

शांति की प्रतिज्ञा को अंतिम स्वरूप तो राष्ट्र के भिन्न भिन्न नेताओं की सम्मति प्राप्त होने के बाद दिया जायगा।

(२) सामान्य लोक-सेवकों के तथा शांति-सैनिकों के दैनिक कार्यक्रम में नीचे लिखी विशेषताएँ रहें :

(अ) वे अपने इर्द-गिर्द की प्रजा से सम्पर्क रखें तथा उनके प्रश्नों को समझें।

(ब) अपने पड़ोस के शांति-प्रेमियों से विशेष सम्पर्क रखें।

(क) अपने इर्द-गिर्द के लोगों में से *अनिष्ट तत्वों की उन्हें* जानकारी रहे।

(३) शांति-सेना-मंडल का प्रधान कार्यालय राजघाट, काशी में रहेगा तथा उसकी एक शाखा कस्तूरबाग्राम, इन्दौर में रहेगी। —नारायण देसाई

अ० भा० सर्व सेवा संघ प्रबंध समिति के निर्णय

गत १३-१४ अगस्त को अ० भा० सर्व सेवा संघ की प्रबन्ध समिति की बैठक साधना केन्द्र, काशी में हुई। प्रबन्ध समिति में इस बार जिन विषयों के सम्बन्ध में निर्णय हुए उनमें से मुख्य-मुख्य नीचे दिये हैं।

(१) आचार-संहिता

(अ) अ. भा. राजनीतिक पक्षों के द्वारा एक सर्वसम्मत आचार-संहिता मान्य की जाय, इस दृष्टि से फिलहाल प्रदेशों के स्तर पर ही कोशिश की जाय।

(आ) आचार-संहिता का सर्वमान्य मसविदा सर्व सेवा संघ की ओर से प्रस्तुत किया जाय।

(इ) सर्व सेवा संघ के अध्यक्ष सब राजनीतिक पक्षों के केंद्रीय पदाधिकारियों से इस संबंध में सम्पर्क करेंगे।

(ई) हर प्रदेश में लोकनीति के शिक्षण के लिए शिविरों का आयोजन किया जाय।

(उ) मतदाता-मंडल के गठन के संबंध में एक पुस्तिका सर्व सेवा संघ की ओर से यथाशीघ्र प्रकाशित की जाय और इस संबंध में स्थानीय लोगों का अभिक्रम रहे।

(२) पंचायती राज

(अ) पंचायती राज के कानून हर प्रान्त में बन रहे हैं। उन कानूनों के बनने में कुछ संशोधन पेश करने हों तो प्रदेश के कार्यकर्ता उस सम्बन्ध में श्री रा० कृ० पाटील से सम्पर्क करें।

(आ) पंचायती राज के सम्बन्ध में जो समस्याएँ और प्रश्न खड़े होते जायेंगे उनके सम्बन्ध में श्री रा. कृ. पाटील के पास प्रदेशीय मंडल अपने निवेदन भेजते रहें।

(इ) जहाँ-जहाँ पंचायती राज का अमल हो रहा है, वहाँ उसका अध्ययन करके उसकी समीक्षा की जाय।

(३) बीघे में कट्ठे का आन्दोलन

२ दिसम्बर १९६१ तक बिहार में अधिक-से-अधिक जोर लगा कर बीघे में कट्ठा आन्दोलन को सफल बनाने के लिए प्रदेशों से जल्द-से-जल्द कार्यकर्ताओं को वहाँ भेजा जाय। अब तक टोलियों में अंचलवार घूमने का जो कार्यक्रम चला, उससे उत्साह बढ़ रहा है और भूदान की संभावनाएँ बढ़ी हैं। अब तक करीब ४० हजार कट्ठा भूमि दान में मिली है और करीब सारी तुरन्त बँट भी गयी है।

प्रमुख कार्यकर्ता पंद्रह-पंद्रह दिन का बिहार का अपना कार्यक्रम भी जल्द ही बनाने जा रहे हैं।

(४) अर्थ-संग्रह : प्रदेशों की माग के अनुसार अर्थसंग्रह की मियाद दिसम्बर १९६१ तक बढ़ाने का तय किया गया।

(५) सितंबर १९६१ में इंग्लैंड में डिसआर्मामेंट कान्फरन्स (निःशस्त्रीकरण-सम्मेलन) होने जा रहा है, जिसमें पूर्व और पश्चिम के देशों के प्रतिनिधि हिस्सा ले रहे हैं। इस सम्मेलन के समर्थकों में विनोबाजी का भी नाम है। इस सम्मेलन में श्री जयप्रकाशजी सर्व सेवा संघ की ओर से हिस्सा लेंगे।

—दत्तोबा दास्ताने

इस अंक में

श्रीकृष्णदत्त भट्ट, अ० भा० सर्व सेवा संघ द्वारा भार्गव भूषण प्रेस, वाराणसी में मुद्रित और प्रकाशित। पता : राजघाट, वाराणसी-१, फोन नं० ४३९१
मूल्य ६) पिछले अंक की छपी प्रतियाँ ९,२३० : इस अंक की छपी प्रतियाँ ९,१५० एक अंक : १३ नये पैसे

जब तक राज्य शराबी को शराब पीने की इजाजत ही नहीं, बल्कि सुविधा भी देता रहेगा, तब तक सुधारकों को सफलता मिलना लगभग असम्भव है। —महात्मा गांधी
'हरिजन' २५-९-३७

संपादक : सिद्धराज ढड्ढा
वाराणसी : शुक्रवार | १ सितम्बर '६१ | वर्ष ७ : अंक ४८

देश में सम्पूर्ण नशाबंदी हो

सरकार शराब की नापाक आमदनी का मोह छोड़े

महात्मा गांधी

[भारत को आजादी मिलने के बाद, बापू ने राष्ट्रीय समस्याओं पर समय-समय पर अपने विचार 'हरिजन' पत्रों के माध्यम से रखे। नशा-बंदी पर बापू ने काफी जोर दिया। असहयोग-आन्दोलन के वक्त शराब की दुकानों पर पिकेटिंग भी किया गया था। बापू ने आजादी प्राप्त होने के तीन सप्ताह बाद, ८ सितम्बर १९४७ को जो सलाह देश व सरकार को दी, वह आज भी अपेक्षा-पूर्ति की प्रतीक्षा में है। —संपादक]

जब लोग भुखमरी और नंगेपन के किनारे खड़े हों, तब शराब-अफीम वगैरह के बारे में सोचा भी नहीं जा सकता। शराब और अफीम पीने वाले लोग पैसा तो बरबाद करते ही हैं, साथ ही अपने आप पर काबू भी खो देते हैं। नशे के असर में आदमी न करने लायक काम भी कर बैठते हैं। इसलिए हर तरह से विचारते हुए नशीली चीजों का खाना और पीना बंद होना ही चाहिए।

हम सिर्फ कानून पास करके ही इस बुराई को खतम नहीं कर सकते। नशा करने वाले चाहे जहाँ से नशीली चीजें लाकर खायें-पीयेंगे। इनके बनाने वाले और बेचने वाले काला बाजार बंद करने के लिए एकदम तैयार नहीं होंगे।

इसलिए नीचे की तमाम बातें एक साथ की जानी चाहिए :

(१) जरूरी कायदा बनाया जाय,

(२) लोगों को नशे की बुराई समझायी जाय,

(३) शराब की दुकानों पर ही सरकार को पीने की निर्दोष चीजों की दुकानें कायम करनी चाहिए। और वहाँ किताबों, अखबारों और खेल के रूपों में मन-बहलाव के निर्दोष साधन रखने चाहिए।

(४) शराब, अफीम वगैरह बेचने से जो आमदनी हो, वह सब लोगों को नशीली चीजें न बरतने की बात समझाने में खर्च की जानी चाहिए।

(५) नशीली चीजों की बिक्री से होने वाली आमदनी को राष्ट्र के बच्चों की शिक्षा में या जनता को फायदा पहुँचाने वाले दूसरे कामों में खर्च करना बड़ा पाप है।

सरकार को ऐसी आमदनी राष्ट्र-निर्माण के कामों में खर्च करने का लालच छोड़ना ही चाहिए। अनुभव यह बताता है कि नशीली चीजों का खान-पान छोड़ने वाले को जो फायदा होता है, उसे सारी प्रजा का फायदा समझना चाहिए। अगर हम इस बुराई को जड़ से खतम कर दें तो हमें राष्ट्र की आमदनी बढ़ाने के दूसरे बहुत से रास्ते और साधन आसानी से मिल जायेंगे।

(दिल्ली जाते हुए, रेल में, ८-९-४७)

नशाबंदी पर जल्द-से-जल्द अमल हो

[दिल्ली में २-३ सितम्बर को अखिल भारत नशाबंदी-सम्मेलन हो रहा है। सम्मेलन के लिये विनोबाजी ने जो संदेश दिया, वह यहाँ दिया जा रहा है। —सं०]

नशाबन्दी के बारे में सोचने के लिए अखिल भारतीय सम्मेलन बुलाया जा रहा है, यह खुशी की बात है।

स्वराज्य के १४ साल बीत गये। अब तो इसका जल्द-से-जल्द अमल होना चाहिए। ईश्वर-भक्ति का नशा छोड़ कर और कोई भी नशा भारतीय जनता जानती नहीं। मैं इस सम्मेलन की सफलता चाहता हूँ। —विनोबा

काशी : शराब और सरकार !

विनोबा

गत १५ दिसम्बर, '६० को विनोबाजी ने, दूसरी बार आठ साल बाद अपनी पदयात्रा के सिलसिले में काशी में पदार्पण किया। उस वक्त काशी की पहली आम सभा में शराबबंदी के संबंध में जो विचार प्रकट किये थे, वह यहाँ दे रहे हैं।

जो बात आठ साल पहले ही हमने बतायी थी, वह यह है कि काशी में शराबबन्दी होनी चाहिए। मालूम नहीं क्या माया है कि अभी तक वह काम नहीं हुआ है। अब मुझे कह रहे हैं कि यहाँ दो-तीन जिलों में शराबबंदी की है, लेकिन वहाँ हम यशस्वी नहीं हो रहे हैं, इसलिए अब हम सोच रहे हैं कि क्या पूरे प्रान्त में करने से यशस्वी होंगे? अक्ल तो पहले से खोयी है, अब पैसे खोने की बात! मैंने कहा, अरे भैया, काशी में हम स्नान करके घाट पर चढ़ते हैं, तो विलायती शराब की दूकान हमें दिखती है! मंत्रियों से बात करता हूँ, तो सहानुभूति दिखाते हैं और कहते हैं, "हाँ देखेंगे, सोचेंगे।" मंत्री का ऐसा ही शब्द होता है। "करेंगे" ऐसा शब्द नहीं निकलता है। 'अंडर कंसिडरेशन, अंडर एक्टिव कंसिडरेशन,' ऐसा ही शब्द उनका होगा। ऐसा शब्द तब तक होगा, जब तक आप और हम मिल कर नहीं जागेंगे।

इसलिए यहाँ के सब संन्यासी, सर्वोदय-सेवक, नागरिक सब मिल कर यह प्रचार करें कि सर्वोदयनगर बनाने के लिए पहला काम यह होना चाहिए। सरकार को विश्वास होगा कि लोग चाहते हैं और फिर सरकार हिम्मत करेगी। वास्तव में शराब-बन्दी तो सारे भारत में ही होनी चाहिए। उसके लिए सरकार ने एक कमेटी मुकर्रर की है। वह कहती है कि हिन्दुस्तान में लोग पहले आठ लाख गैलन शराब पीते थे, अब पौने आठ लाख गैलन पीते हैं यानी पाव लाख गैलन कम हुई है! धीरे-धीरे और कम

एक व्यक्ति के संकल्प और पुरुषार्थ की कहानी

मलयपुर का शराब-बंदी आंदोलन

गुरुदेव रवीन्द्रनाथ ने कहा है कि जब तेरी पुकार पर कोई साथी साथ नहीं दे, तो 'एकला चल।' श्री रमावल्लभ चतुर्वेदी इसके एक ताजे उदाहरण हैं। श्री रमावल्लभजी का शराब-बंदी पर जो एकाकी अभियान चला, वह अब धीरे-धीरे सबका समर्थन प्राप्त कर रहा है और बिहार के कई प्रतिष्ठित लोगों ने मलयपुर (जिला मुंगेर, बिहार) जाकर शराबबन्दी के लिए 'पिकेटिंग' किया है।

इस अभियान की कल्पना रमावल्लभजी को इस बात से हुई कि बापू की निधन-तिथि, ३० जनवरी कैसे मनायी जाय? मलयपुर, जो कि रमावल्लभजी का गाँव है, वहाँ शराब से काफी तबाही मची हुई है। मलयपुर की कलाली जहाँ है, वह गुसहर नामक मुसलमानों का मुहल्ला है। इस कलाली से उनका नैतिक पतन बहुत हुआ है। वे अपने घरों में वेश्यावृत्ति भी कराने लगे हैं। बगल में ही स्कूल का बोर्डिंग हाउस भी है!

श्री रमावल्लभजी जैसे जागरूक व्यक्ति की आत्मा इस दृश्य को बरदाश्त नहीं कर सकी। ३० जनवरी से अब तक लगातार 'पिकेटिंग' चल रहा है, करीब-करीब एकाकी। बीच-बीच में मित्र आकर इस काम में हाथ बँटाते रहते हैं। ३० जनवरी से रमावल्लभजी ने एक माँग-पत्र पर गाँव के लोगों से हस्ताक्षर संग्रह करना शुरू कर दिया। इस माँग पत्र में यह माँग थी कि मलयपुर की कलाली यहाँ से हटा दी जाय। हस्ताक्षर करने वालों में गाँव के मुखिया, सरपंच, पंच और पंचायत के सदस्य भी शामिल हैं। गाँव के एम. एल. ए. ने भी, जो बाद में संसदीय सचिव भी हो गये हैं, माँग-पत्र पर हस्ताक्षर किये।

ता० ४ अप्रैल से श्री रमावल्लभजी ने एक नया 'पत्र-सत्याग्रह' शुरू किया है। वे रोज एक पोस्टकार्ड बिहार के मुख्य मंत्री को लिखते हैं, जिनमें शराबबन्दी के बारे में गांधीजी के कुछ वाक्य उद्धृत करते हैं और अंत में मलयपुर से शराब की दुकान उठवा देने की प्रार्थना करते हैं।

सत्याग्रह के पीछे श्री रमावल्लभ का मुख्य मुद्दा यह है कि भारत के संविधान की ४७ वीं धारा में जो लिखा है, "स्वास्थ्य के लिए हानिप्रद, नशीले पेय और चूर्णों का दवा के अतिरिक्त उपयोग राज्य रोकेगा।"—उस पर सरकारें अमल करें। उनका कहना है कि जब कि भारतीय संविधान, भारत सरकार, सत्ताधारी राजनीतिक दल—कांग्रेस और प्रादेशिक सरकारें, सब संपूर्ण मद्य-निषेध के लिए वचनबद्ध हैं, तो बिहार में शराबबंदी क्यों नहीं हो? उनका कथन है कि सरकार यह काम पूरा करने में तुरत कोई दिक्कत महसूस करती हो तो कम-से-कम वह इतना तो करे कि इस काम के लिए तय कर दे कि अमुक दिन तक राज्य भर में पूरी शराबबंदी हो जायेगी। इस काम को पूरा करने में जितना समय लेना वह उचित और आवश्यक माने—२, ४, ५ वर्ष—वह ले-ले और उस अवधि में काम पूरा हो जाय, इसकी अपनी योजना और कार्यक्रम घोषित करे। पूरी शराबबंदी के इरादे के सबूत पर मलयपुर की कलाली तुरत बंद कर दे।

बिहार के प्रमुख लोकसेवक श्री मोतीलालजी केजरीवाल ने अपना सक्रिय समर्थन अभियान के प्रारंभिक दिनों में ही दिया। उसी प्रकार बिहार के भूतपूर्व मंत्री श्री जगलाल चौधरी ने भी इस विचार का समर्थन किया और 'पिकेटिंग' के लिए मलयपुर आये। बिहार सर्वोदय मंडल ने भी बाद में अपनी बैठक में मलयपुर के अभियान को सक्रिय समर्थन करने का निर्णय किया।

श्री रमावल्लभजी ने पहले यह सोचा था कि २० जुलाई से ५-५ दिन की बारी से ५१ दिन का "उपवास-यज्ञ" चलाया जाय। किन्तु मित्रों के आग्रह से यह तिथि आगे बढ़ा दी। फिर भी २० जुलाई को प्रतीक के तौर पर समस्त बिहार में शराबबंदी-दिवस मनाया गया। बिहार के कोने-कोने में कार्यकर्ताओं ने उस दिन उपवास रखा। कहीं-कहीं प्रार्थना-सभाएँ भी की गयीं और सब जगह से बिहार के मुख्य मंत्री को मलयपुर की शराब कलाली बंद करने के लिए पत्र लिखे गये।

६ अगस्त को श्री जयप्रकाश नारायण दिन भर मलयपुर रहे। शाम को ४ से ५ बजे तक कलाली पर उन्होंने 'पिकेटिंग' किया। कलाली पर अधिक भीड़ होने से पास के मैदान में उनके भाषण का इन्तजाम तत्काल किया गया। करीब पौन घंटे के अपने भाषण में श्री जयप्रकाशजी ने कहा :

> "आज देश में विकास की धूम सरकार की तरफ से है। नदी-नहरों का तो विकास हो रहा है; लेकिन जिनके लिए इन चीजों का विकास हो रहा है, उन आदमियों को पशु बनाया जा रहा है। हम यहाँ श्री रमावल्लभ चतुर्वेदीजी के अभियान का समर्थन करने आये हैं।"

गाँव के मुखिया को सम्बोधित कर उन्होंने कहा कि आप अपनी पंचायत से प्रस्ताव पास करके सरकार को लिखें कि हमें नशे की दुकान नहीं चाहिए। सरकार को यह सुनना ही होगा।

९ अगस्त को बिहार में जगह-जगह 'पिकेटिंग' हुआ। पिकेटिंग का अच्छा प्रभाव पड़ा। एक जगह एक बूढ़े पियक्कड़ ने भी अपने साथियों को पकड़-पकड़ कर कलाली पर जाने से रोका। उसका कहना था : "पंच लोगों का कहना मानना चाहिए।"

श्री रमावल्लभजी का 'पत्र-सत्याग्रह' भी चल रहा है। १० अगस्त के पत्र में उन्होंने लिखा है कि साठी-'सेंचुरी'-पूरी हो गयी है। अर्थात् मुख्य मंत्री को सौ पत्र लिखे गये हैं, किन्तु अनुत्तरदायी (उत्तर न देने वाले) मुख्य मंत्री ने अभी तक कोई जवाब नहीं दिया।

सत्याग्रह चल रहा है। चतुर्वेदीजी की निष्ठा, लगन और तपस्या निश्चय ही न केवल मलयपुर में, बल्कि समस्त बिहार और भारत में सम्पूर्ण शराबबन्दी करायेगी, ऐसी उम्मीद है; क्योंकि शुद्ध और निष्काम भाव से की गयी तपस्या कभी वृथा नहीं जाती।

हम इस एकाकी पुरुषार्थ करने वाले पुरुष का हृदय से अभिनन्दन करते हैं और चाहते हैं कि वे शीघ्र ही अपने सदुद्देश्य को प्राप्त करें।

—मणीन्द्रकुमार

काँग्रेस और शराबबंदी

न केवल राजनीतिक अर्थ में, बल्कि नैतिक अर्थ में भी मद्यनिषेध के लिए काँग्रेस वचनबद्ध है। यदि हम यह शिकायत करें कि सरकार की तरफ से प्रयत्नों में ढिलाई है तो हम इस शिकायत से नहीं बच सकते कि खुद हमारे प्रयत्न भी शिथिल पड़ गये हैं। शराब पीने की लत नौजवानों को लगती जा रही है और यहाँ तक कि स्त्रियों के बीच भी यह आदत फैल रही है। यदि हमें इस बुराई को नष्ट करना है, तो इसके विरुद्ध प्रबल जनमत तैयार करना है।

—उ० न० ढेबर

होगी। लेकिन देखिये, महात्मा गौतम बुद्ध ने इसी सारनाथ में कहा था, 'पुण्य कार्य में सुस्ताते हैं, तो पाप जोर करता है। मंद गति से पुण्य करते हैं, तो तीव्र गति से पाप होता है।' यहाँ गंगा नदी है, यहाँ संस्कृत विश्वविद्यालय है एवं विद्या के अन्य प्रख्यात केन्द्र भी हैं। ऐसे सुन्दर स्थान जहाँ हैं, वहाँ शराब क्यों चलनी चाहिए?

सरकार : महापातकी

शास्त्रों में पंचमहापातक बताये हैं :

(१) जिसने जिंदगी भर मेहनत कर सुवर्ण इकट्ठा किया, उसकी जो चोरी करेगा, वह पापी है।

(२) जो शराब पीने वाला है, वह भी पापी है।

(३) व्यभिचार और गुरुजनों के साथ व्यभिचार करने वाला महापापी है।

(४) ब्रह्म-हत्या करने वाला, महाज्ञानी की हत्या करने वाला भी महापापी है।

ये चार महापातक बताये हैं और पाँचवाँ यह बताया है कि

(५) इन चारों के साथ जो व्यवहार करेगा, वह पाँचवाँ महापातकी है।

अब मैं कहता हूँ, इनके आधार पर राज चलाने वाला कौन है? शराब की आमदनी पर राज करने वाला कौन कहा जायगा? मेरे प्यारे भाइयो, ये सब शब्द मैं नहीं बोल रहा हूँ, शास्त्र बोल रहा है।

शराबबंदी के लिए पिकेटिंग

गत वर्ष सारण जिले के ग्राम-पंचायत, ताजपुर ने सर्वसम्मति से प्रस्ताव पास कर सरकार से शराब, ताड़ी एवं गाँजे की दुकान पंचायत-क्षेत्र से उठा लेने का निवेदन किया था। परन्तु अभी तक शराब की दुकान चल ही रही है। इसलिए १ अगस्त '६१ से शराब की दुकान पर 'पिकेटिंग' जारी है।

अहं सत्यं जगत् स्फूर्ति: जीवनं सत्यशोधनम्

भूदानयज्ञ

लोकनागरी लिपि*

मालकीयत मीटाने से व्यक्ती का महत्व बढ़ेगा

मालकीयत मीटेगी, तो व्यक्ती का महत्व कम होगा, अैसा आक्षेप के बारे में वीचार करना चाहीओ। अगर जबरदस्ती से मालकीयत मीटायी जाय, तो व्यक्ती का महत्व जरूर कम होगा। कोओी अच्छी बात भी अगर जबरदस्ती से करायी जाती है, तो अुसका बुरा असर होता है। कींतु जब मनुष्य वीचार को सोचसमझ कर प्रेम से मालकीयत छोड़ता है, तो अुसे अुन्नत ही होना चाहीओ। कल कुछ ओीसाओी मुझसे मीलने आये थे। अुनकी छाती पर क्रूस लटका हुआ था। हमने अुनसे कहा की आपने अैसा काम कीया है, जीससे व्यक्ती का महत्व बढ़ सकता है। अगर व्यक्ती का महत्व बढ़ाना है, तो हर व्यक्ती को क्रूस अुठाने की तैयारी करनी चाहीओ, न की अपनी छाती पर मालकीयत चीपकाने की। अगर छाती के साथ पैसे की गठरी बांधेंगे, तो व्यक्ती का महत्व नहीं बढ़ेगा। आज दुनीया में यही हुआ है। पैसा और दूसरी अनेक वस्तुओं का महत्व बढ़ा है, पर मानव का महत्व गीर गया है। मानव अगर प्रेम से मालकीयत छोड़ देता है और क्रूस अुठाने के लीओ तैयार हो जाता है, तो व्यक्ती का महत्व बहुत-बहुत बढ़ जाता है।

—वीनोबा

* लिपि-संकेत : ि = ी ; ी = ी ख = ख, संयुक्ताक्षर हलंत चिह्न से।

शराबबन्दी क्यों नहीं हो रही ?

—सिद्धराज

हिन्दुस्तान में शराब-बंदी क्यों नहीं हो रही ? इस देश का जनमत पहले से उसके अनुकूल है। इसके अलावा गांधीजी ने तीस वर्ष के यहाँ के अपने सार्वजनिक जीवन में नशा-बंदी को अपने कार्यक्रम में प्रमुख स्थान दिया। अंग्रेजी सल्तनत के साथ जब-जब बातचीत हुई, तब-तब शराब-बंदी को उन्होंने अपनी एक मुख्य माँग के रूप में उनके सामने रखा। गांधीजी ही नहीं, राष्ट्र के दूसरे नेता भी इस मामले में करीब-करीब एक राय ही थे। तभी तो आजादी के तुरन्त बाद जब इस देश का संविधान बना तब संविधान में भी नशा-बंदी को राष्ट्रीय नीति के अंग के रूप में घोषित किया गया।

यह सब होते हुए भी यह सचमुच दुःख और आश्चर्य का विषय है कि पिछले १०-१५ वर्षों में शराबखोरी बंद होने के बजाय उल्टे उसका प्रचार बढ़ा है।

जिन थोड़े से प्रांतों में शराब-बंदी का पूरा या अधूरा अमल शुरू हुआ, वहाँ इसी को अपना लक्ष्य बना कर देश के अखबार जनमत को शराब-बन्दी के खिलाफ उभाड़ने में लगे हुए हैं। यह सही है कि शराब-बंदी केवल कानून से नहीं हो सकती। जनमत के समर्थन के बिना कोई कानून सफल नहीं हो सकता। पर अफसोस इस बात का है कि संविधान में घोषित नीति के बावजूद प्रांतीय और केंद्रीय सरकारों की ओर से भी गम्भीरतापूर्वक इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए कोई कदम नहीं उठाये गये हैं, बल्कि एक तरह से उनकी ओर से जो काम हो रहे हैं, उनसे ऐसा लगता है जैसे शराब-बंदी के बारे में राष्ट्र ने कभी कुछ सोचा ही न हो या कोई फैसला न किया हो।

अभी हाल ही में अंग्रेजी साप्ताहिक "भूदान" में प्रकाशित होने के लिए देहरादून के एक पुराने अनुभवी सज्जन का पत्र मेरे पास आया था। उन्होंने बहुत वेदना के साथ इस बात का जिक्र किया था कि

> जहाँ एक ओर गांधीजी ने आज से ४० वर्ष पहले अंग्रेजी सल्तनत के सामने शराब-बंदी की जोरदार माँग रखी थी, उसी देश में शराब का प्रचार करने वाले और लोगों को उसके प्रति आकर्षित करने वाले बड़े-बड़े विज्ञापन अब सार्वजनिक जगहों पर लगने शुरू हुए हैं। ऐसे देश में, जो शराब-बंदी को अपनी एक नीति के रूप में स्वीकार कर चुका है, कम-से-कम ऐसी बातें तो अवश्य ही रोकी जानी चाहिए थीं।

जब कभी शराब-बंदी का सवाल आता है तो आर्थिक दलील सामने लाकर खड़ी कर दी जाती है। यह समझ में नहीं आता कि जब और पचासों कामों के लिए—जिनमें से बहुत थोड़े ऐसे होते हैं, जो जरूरी हों या जो थोड़े दिनों के लिए स्थगित न किये जा सकते हों—हम करोड़ों रुपया खर्च करते रहते हैं, जब अरबों रुपया दूसरे मुल्कों से कर्ज लेकर भी अपनी बहुत सी योजनाएँ हम चलाते हैं, जिनमें से कइयों की उपयोगिता के बारे में बहुतों को शंका है, जबकि आये दिन और बातों में प्रशासन का खर्च अनाप शनाप बढ़ता जा रहा है—तब केवल शराब-बंदी के लिए अर्थाभाव की दलील क्यों दी जाती है ?

हर शख्स जानता है कि बहुत-से काम ऐसे होते हैं, जो किसी भी कीमत पर करने ही होते हैं। क्या संविधान बनाते समय राष्ट्र के नेताओं ने नशा-बंदी के आर्थिक पहलू की ओर ध्यान नहीं दिया होगा ? देश का संविधान कोई साधारण पर्चा या विज्ञप्ति नहीं है। वह देश का सर्वोच्च कानून है। जब तक संविधान में शराबबंदी का स्पष्ट संकेत मौजूद है, तब तक हर प्रांतीय सरकार का और केंद्रीय सरकार का भी यह कर्तव्य है कि उसे कार्यान्वित करने की दिशा में कदम बढ़ाये, न कि उसकी अवहेलना करे।

संविधान में ही नहीं, वैसे भी भारत-सरकार की ओर से शराब-बंदी के बारे में समय-समय पर अनुकूल घोषणाएँ की गयी हैं। अभी चन्द महीने पहले ही २८ मार्च, '६१ को लोकसभा में भारत सरकार के गृह-विभाग के राज्य मंत्री श्री बी० एन० दातार ने यह जाहिर किया था कि "भारत-सरकार राज्य सरकारों को यह सलाह देना चाहेगी कि वे जल्दी-से जल्दी पूरी शराब-बंदी करें।"

इन सारी बातों के बावजूद सरकारी और गैर सरकारी दोनों दृष्टियों से शराब बंदी का कदम पिछले १५ वर्षों में निश्चित रूप से पीछे हटा हुआ मालूम होता है। सरकार ही नहीं, देश का गैर-सरकारी नेतृत्व भी इसके लिए दोषी है। इस बात की अत्यंत आवश्यकता है कि शराब-बंदी के लिए अनुकूल वातावरण बनाने और जनमत तैयार करने का व्यवस्थित और शक्तिपूर्ण प्रयत्न हो। सरकार के सामने भी तीन कर्तव्य स्पष्ट हैं :

(१) सार्वजनिक रूप में शराब के प्रचार और शराबखोरी को तुरन्त बंद करें। ऐसे सब प्रकार के कामों पर रोक लगायें, जो शराब के प्रचार को बढ़ाते हों।

(२) कानूनन पूरी शराब-बन्दी के लिए योजनापूर्वक कदम उठाये और

(३) जनमत तैयार करने और देश में शराब-बंदी के अनुकूल वातावरण निर्माण करने में जो भी गैर-सरकारी प्रयत्न हों, उनको पूरा समर्थन और मदद पहुँचाये।

जनमत तैयार करने के मामले में अक्सर यह कह दिया जाता है कि यह काम सरकार का नहीं है। ऐसा कहना गलत है। सरकार ने आज एक सामाजिक उद्देश्य अपने सामने रखा है। शराब-बंदी भी उसका एक अंग है। अपने उद्देश्य की पूर्ति के लिए हर प्रकार से अनुकूल वातावरण बनाना और जनमत तैयार करना सरकार का भी कर्तव्य है। जब परिवार नियोजन जैसे काम के लिए सरकार जनमत बनाने के काम में पूरी मदद कर रही है तब शराब-बंदी के लिए वैसा न करे, इसका कोई कारण नहीं।

—

'विनोबा-जयन्ती' तक शराब का ठेका बंद न हो, तो 'गांधी-जयन्ती' से सत्याग्रह शुरू

सर्वोदय-मंडल, हिसार का निर्णय

जिला सर्वोदय-मंडल, हिसार (पंजाब) ने १२ अगस्त को लोकसेवकों की एक विशेष बैठक में प्रस्ताव पास किया, जिसमें भट्टूकलां, तहसील फतेहाबाद के ठेका-शराब के संबंध में निम्नलिखित प्रस्ताव पास किया :

"यदि ११ सितम्बर तक सरकार शराब का ठेका बन्द नहीं करती है, तो २ अक्टूबर १९६१ को जिला सर्वोदय-मंडल, हिसार की ओर से सत्याग्रह किया जाय और ११ सितम्बर से हिसार जिले में इस संबंध में प्रचार किया जाय।"

ज्ञात रहे कि विनोबाजी ने १४ जुलाई '६१ के पत्र में जिला सर्वोदय-मंडल को सत्याग्रह करने का अधिकार दिया है।

—

शान्ति-सैनिक की कर्मभूमि

सुन्दरलाल बहुगुणा

[जिन्दगी के रोजमर्रा के काम के अलावा कभी-कभी ऐसे मौके भी आते हैं, जिनमें जान तक की जोखिम उठानी पड़ती है। शांति-सैनिक तो नित्य और नैमित्तिक, दोनों वक्त के लिए अखंड सेवा का व्रती है। उत्तराखण्ड के शान्ति-सैनिक श्री चंडी प्रसाद भट्ट ने, जो शान्ति-सेना विद्यालय, काशी के प्रथम सत्र में प्रशिक्षित भी हो चुके हैं, अपनी कर्मभूमि में जो साहसभरा काम किया है, उसने आसपास के वातावरण में आशा का संचार तो हुआ ही है; किन्तु उनकी कहानी देश भर के समस्त लोकसेवक, लोकसेवक और शान्ति-सैनिकों के लिए भी प्रेरणा का केन्द्र बनेगी। यहाँ पर हम उत्तराखंड के प्रमुख सेवक श्री सुन्दरलाल बहुगुणा द्वारा प्रस्तुत घटना दे रहे हैं। —सं०]

२१ जुलाई की दोपहर ! मेघाच्छन्न आकाश के नीचे श्रीनगर-रुद्रप्रयाग मोटर-सड़क के ११वें मील पर दोनों ओर से आने-जाने वाली गाड़ियाँ खड़ी थीं। कुछ मुसाफिर अपनी सीटों पर निस्पन्द भाव से बैठे थे। उन्हें इस रुकावट का कारण जानने की चिन्ता न थी। कुछ मुसाफिर उठ कर बाहर टहलने लगे थे। इन्हीं में था एक नवयुवक, जो कुछ ही महीने पहले गढ़वाल मोटर यूनियन से अपनी नौकरी, घर में विधवा माँ और बच्चों की ममता को छोड़ कर विनोबा के सामने यह प्रतिज्ञा करके आया था कि "मैं अपने कार्य-क्षेत्र की शान्ति-रक्षा की जिम्मेवारी उठाऊँगा तथा शान्ति-स्थापना के कार्य में अपने प्राण समर्पण करने को भी तैयार रहूँगा।"

यही नवयुवक—चण्डीप्रसाद भट्ट—गाड़ियों के रुकने का कारण जानने के लिए आगे बढ़ा। निकट ही कई उदास और हतप्रभ चेहरे दिखाई पड़े, जो पौन घण्टे पूर्व उसी स्थान से नीचे लुढ़की मोटर से हताहत और घायल यात्रियों की ओर ताक रहे थे। दुर्घटना के स्थान पर सार्वजनिक निर्माण विभाग के मजदूर सड़क को चौड़ी और समतल करने में व्यस्त थे। नीचे देखा, मोटर से गिरे हुए घायल यात्री कराह रहे थे, चूर हुई मोटर के टुकड़े इधर-उधर बिखरे पड़े थे। नीचे चट्टान सीधी थी। घायलों तक पहुँचने का कोई रास्ता नहीं था।

कुरता, पाजामा और जूते उतार कर वह शांति-सैनिक नीचे उतरा। कुछ ही कदम दूर एक झाड़ी की आड़ में, एक युवती घायल साथियों को बचाने के लिए अनुनय-विनय कर रही थी। ३ गाड़ी-चालक उसे वहाँ तक ले आये थे।

"चलो ! दूसरों को बचाने की कोशिश करें।"—चण्डी प्रसाद ने कहा।

"परन्तु अब तक पुलिस नहीं आयी, हम लोग क्या कर सकते हैं ?" कभी-कभी इन्सानियत से अधिक माल की रक्षा करने वाली पुलिस के भय से लोग घबड़ा जाते हैं !

"कोई पुलिस हमें मरते हुए लोगों को बचाने से नहीं रोक सकती।"—यह कह कर चारों व्यक्ति कराहते हुए घायलों की ओर लपक गये।

कुछ हमेशा के लिए मृत्यु की गोद में सो गये थे। निराश और घायल उनके ऊपर पड़े हुए मौत की घड़ियाँ गिन रहे थे ! शान्ति-सैनिक ने पत्थर रख कर थोड़ी-सी समतल जगह बनाई और तीन घायलों को सुरक्षित जगह पर पहुँचाया। मोटर के पुर्जों के बीच फँसे हुए एक बूढ़े बाबा को बाहर निकाला और सुरक्षित जगह पर लिटाया। परन्तु नुकीले पत्थरों से साथियों के हाथ-पाँव कट गये थे और वे आगे सहायता-कार्य कर नहीं सकते थे।

अब क्या होगा ? चारों ओर लाशें और घायल, ऊपर की ओर भीड़; पर कोई इन्सानियत की रक्षा के लिए तैयार नहीं। दौड़ते हुए शान्ति-सैनिक भीड़ के पास गया; सड़क बनाने वाले मजदूरों के पास गया; पर कौन नीचे चल कर जान जोखिम में डालता !

यह सोच कर कि कराहते हुए लोगों को पानी तो पिलाऊँगा; वह पुनः चट्टान से नीचे उतरा। वहाँ पुलिस के एक हेड कान्सटेबल, एक ठेकेदार और एक अन्य भाई घायलों और मृतकों की सूची बना रहे थे। पर घायल 'पानी' 'पानी' चिल्ला रहे थे ! लोटे में पानी भर कर उन्हें पिलाया। जीवन की आशा छोड़-बैठे एक घायल ने पानी पीकर लोटा जोर से नदी की ओर फेंक दिया। दूसरा जीने की आशा में, पास ही टूटी टोकरी से खीरा-ककड़ी की फाँकें निकाल कर चाट रहा था।

घायलों को मुर्दों से अलग कर समतल जगह पर लिटाया गया। गाड़ी का अभागा चालक, उमादत्त भी इन्हीं में था, जो बुरी तरह छटपटा रहा था। आगे बढ़ने के लिए लाशों को लाँघ कर जाना पड़ता था। बूढ़ा बाबा भय और जाड़े से काँप रहा था। वह एकदम शांति-सैनिक की पीठ पर कूद पड़ा। दूसरे साथियों ने पीछे से सहारा देकर दोनों को बचाया और बूढ़े बाबा को समतल स्थान पर पहुँचाया। चार घायल वहाँ पहले से ही मौजूद थे। इसी बीच तमाशबीनों की भीड़ भी उमड़ी। लोग आकर जिन्दगी और मौत का खेल तो देखते, पर उसमें कूद पड़ने का साहस कैसे कर बटोर पाते ! शांति-सैनिक ने बूढ़े बाबा को अपनी ऊनी चादर लाकर ओढ़ायी।

घायलों को अब सड़क पर पहुँचाना था। दो ड्राइवर भाइयों ने सबसे पहले मिली घायल बहन को उठाया। ठेकेदार और दूसरे भाई ने एक और घायल को, चण्डीप्रसादजी और पुलिस के हेड कान्सटेबल ने तीसरे घायल को उठाया। इस प्रकार घायलों का पहला दल सड़क पर पहुँच गया, फिर भी सहायता के लिए कोई नीचे उतरने को तैयार नहीं था। सन्ध्या का आगमन हो चुका था। सौभाग्य से पीपलकोटी से नीचे आने वाली गाड़ियाँ पहुँच गयीं। उनमें आ गया एक हिम्मत वाला युवक ड्राइवर भवानी सिंह।

"बाबूजी ! मैं आपके साथ चलता हूँ।"—यह कहते हुए भवानी सिंह ने कपड़े उतारे और अपने दो अन्य साथियों को साथ लेकर शांति-सैनिक के साथ नीचे उतर पड़ा। दो-तीन व्यक्ति और भी थे, पर मुर्दों को छूने के लिए कोई तैयार नहीं। रास्ते में तख्ते के सहारे लिटाया गया एक घायल पड़ा था। भवानी सिंह ने उसे तख्ते से बाँधा, आगे से स्वयं तख्ता उठाया और पीछे से तीन साथियों ने सहयोग दिया। वे नदी के किनारे उतरे और बड़ी फुर्ती से घायल को २०० फुट ऊपर सड़क पर लाये। बीच में सहायता के लिए और अन्य लोग आये, पुराने बदलते गये, पर शांति-सैनिक अन्त तक कार्यरत रहा। रात के साढ़े दस बजते-बजते चार अन्य घायलों को ऊपर पहुँचाया। सब खून से लथ-पथ और थकावट से चूर-चूर थे। फिर भी उनके मन में एक वेदना थी—"हम अपने सामने तड़पते हुए सात घायलों को न बचा सके।" और उनकी अंतिम आह सहायता-कार्य में जुटी हुई इस टोली और पास ही अविरल गति से बहने वाली अलकनन्दा के अलावा कोई न सुन सका !

यह ऋषिकेश बदरीनाथ सड़क—जिसे अब मौत की सड़क कहने लगे हैं—की चौथी भयंकर मोटर दुर्घटना थी, जिसमें २४ व्यक्ति मरे, ८ घायल बचाये गये और एक का अब तक पता नहीं चला।

× × ×

दूसरा प्रसंग, २८ जुलाई की डरावनी रात का है। तीन-चार दिन से रिमझिम, रिमझिम वर्षा हो रही थी। एकाएक मकान हिलने लगे और भारी गर्जन-तर्जन होने लगा। केदारघाटी के ११ परिवारों के डडवा गाँव के २९ प्राणी दुर्घटना की आशंका से घर छोड़ कर भागने के लिए एक जगह जमा हो गये। सबने एक दूसरे को देखा। एक माँ अपनी बच्ची को अंदर छोड़ आई थी। उसे लेने के लिए अंदर गई ही थी कि बड़े-बड़े पत्थरों ने मकानों को चूर-चूर कर दिया। ऊपर से मिट्टी और कंकड़ की बौछार ने धरती के साथ-साथ इस गाँव के मनुष्य और पशुओं को भी दबा दिया। इस दुर्घटना की कहानी सुनाने के लिए जीवित बची मात्र एक १० वर्षीय बालिका ! गाँव के ११ व्यक्ति, जिनमें ४ विद्यार्थी हैं, दुर्घटना के दिन बाहर थे।

२९ जुलाई की सुबह जब सब लोग सोकर उठे तो डडवा गाँव का कहीं पता नहीं था। रिश्तेदार रोने बिलखने लगे। मन्दाकिनी के इस पार शांति-सैनिकों की टोली सर्वोदय-यात्रा पर आयी थी। उस पार जाने का कोई रास्ता नहीं था। पुल बह चुके थे, रास्ते टूट गये थे। सर्वोदय टोली में दो शांति-सैनिक थे—गढ़वाल से सर्व सेवा संघ के प्रतिनिधि श्री आलमसिंह सिंह और श्री चंडीप्रसाद भट्ट। भूखे प्यासे, थके-माँदे, कई मील का चक्कर काट कर, शाम को ४ ३० बजे वे उस स्थान पर पहुँचे, जहाँ कभी गाँव था। मलबे के नीचे दबी हुई लाशों को उन्होंने देखा। किसी का सिर दबा हुआ था, तो किसी की टाँगें।

उस स्थान पर मृत आत्माओं की शांति के लिए प्रार्थना की गयी और पड़ोसी गाँववालों द्वारा बचायी गयी १० वर्षीय बालिका से सारी दुर्घटना की करुण कहानी सुनी गयी। पड़ोसी गाँववालों ने इसे लिख कर एक पत्थर से बाँधा और मन्दाकिनी के उस पार बाहर की दुनिया को सूचना पहुँचाने के लिए भेज दिया।

अब तो बाहर बचे हुए लोगों की सहायता के लिए ही कुछ किया जा सकता था। लौटते हुए पर इस गाँव का एक विद्यार्थी और विद्यापीठ का एक रसोइया मिला। उत्तराखण्ड विद्यापीठ के प्रधानाचार्य से मिल कर वहाँ पढ़ने वाले इस गाँव के ४ निराश्रित विद्यार्थियों के लिए सर्वोदय-मण्डल की ओर से प्रतीक स्वरूप २० रु० सहायता दी गयी।

इससे आस-पास के लोगों में भी कर्तव्य-भावना जाग्रत हुई और इन विद्यार्थियों की सहायता के लिए शिक्षक और साथी विद्यार्थी उठ खड़े हुए। डडवा के बचे हुए लोगों के प्रति सारी केदारघाटी में सहानुभूति पैदा हो गयी है और उन्होंने शान्ति-सैनिकों को पीड़ितों के पुनर्वास के लिए भूमि दान देने का वचन दिया है।

—

शांति-सैनिक का पहला कदम : आत्म-निर्माण

मार्जरी साइक्स

शांति-सेना का कार्य अत्यन्त व्यापक है। हमें शान्ति का मनोविज्ञान, उसका शास्त्र, शान्ति का मूल, इतिहास आदि बेशक जानना चाहिए। हमें उसका ज्ञान है भी बहुत कम। पर जैसा कि सब कहते हैं

ज्ञान की अपेक्षा भी एक और बुनियादी चीज है, जिसके बिना शांति-सैनिक का काम चल ही नहीं सकता। वह है प्रेम और व्यापक सहानुभूति।

व्यक्ति के हृदय में निहित इन दोनों शक्तियों का शान्ति-सैनिक में अधिकाधिक विकास होना चाहिये।

सेन्ट पाल ने लिखा है—"यद्यपि मेरे पास सारा ज्ञान और प्रज्ञा हो, फिर भी मेरे पास यदि प्रेम नहीं है तो मेरे पास कुछ नहीं है। चाहे मैं किसी की कितनी भी सेवा करूँ, शरीर भी अर्पण करूँ, लेकिन उस सेवा से मुझमें प्रेम नहीं पैदा हुआ तो वह सेवा निरर्थक ही है।"

आज के प्रशिक्षण की सबसे बड़ी समस्या यह है कि हम किस प्रकार से प्रेम की शक्ति को बढ़ायें, करुणा को विकसित करें, सहानुभूति को व्यापक और गहरी बना सकें? मेरे पास इसका कोई सरल और आसान जवाब है नहीं, इसका वैसा जवाब दिया भी नहीं जा सकता। फिर भी मैं एक बुनियादी चीज आपके सामने रखूँगी। मेरा आप सबको एक सुझाव है, बहनों को, शांति-सैनिकों को और दूसरों को भी, जो शांति-सैनिक नहीं हैं उनको भी कि हम सब, हममें से हरेक अपनी कमजोरियों पर ध्यान देकर अपने आप अन्तःकरण में तय करें कि मेरी अमुक कमजोरी है, इतनी अनुशासनहीनता मुझमें है और उस पर मनन चिंतन करके उस कमी को दूर करने की कोशिश करूँगा। इस तरह का स्वयं-प्रशिक्षण हम अपने आपको दें।

उदाहरण के लिए हममें से कुछ लोग विशेष भोजन के बहुत शौकीन होते हैं, उसके बिना चलता ही नहीं है। और इस प्रकार अस्वाद व्रत का पालन नहीं करते हैं, तो ऐसे लोगों को अस्वाद व्रत के पालन करने का यत्न करना चाहिए।

मेरे पिता ने प्रथम लड़ाई में भाग लिया था। वहाँ किसी तरह उन्होंने सिगरेट पीने की आदत अपना ली। जब वे घर वापस आये, तो भी उनकी वह आदत बदस्तूर कायम रही। उनसे कइयों ने कहा कि सिगरेट पीने की आदत एक बार हो जाने पर छूट नहीं सकती। इस पर मेरे पिताजी कहते, यह बात गलत है। मैं अपने आपका मालिक हूँ, न कि तमाखू मेरी मालिक है। इसी बात पर उन्होंने एक साल तक सिगरेट पीना छोड़ दिया और पूरे वर्ष उन्होंने तमाखू को हाथ भी नहीं लगाया। अवश्य ही एक वर्ष बाद उन्होंने पीना फिर से शुरू किया, फिर भी निश्चय किये वर्ष में वे अटल रहे। उनकी अपने पर पूरी मालकियत थी। खास बात यह है कि हमें अपनी आदतों का मालिक, स्वामी बनना चाहिए।

मुझे मालूम है कि मुझमें क्या-क्या कमियाँ हैं? मैं गुस्सा प्रायः हो जाती हूँ, पर उसे अपने वश में करने में मुझे सफलता भी कई बार मिल जाती है। यह बात हम सबको भली प्रकार समझ लेनी चाहिए कि जब तक हम अपने आपको अनुशासित करने का प्रयत्न नहीं करेंगे, तब तक हम शान्ति-सैनिक के नाते काम भी नहीं कर सकेंगे।

यह बाहरी या ऊपरी वस्तु नहीं है। अंदर से इसका सम्बन्ध है। कमजोरियों को हटाने में बाहरी अनुशासन काम नहीं कर सकता। उसके लिए तो हरेक व्यक्ति को स्वयं ही प्रयत्न करना होगा। पहली बात जो मुझे कहनी है, वह यह है कि हमें आत्मानुशासन (सेल्फ-डिसीप्लीन) का विकास करना है, तभी हम दूसरों की मदद भी कर सकेंगे। शांति-स्थापना का कार्य आत्म-नियंत्रण का कार्य है। कुछ लोग कहते हैं और यह बात मुझे कुछ हद तक सत्य भी प्रतीत होती है कि इंग्लैंड के लोग शान्ति-कार्य में अग्रणी हो सकते हैं, क्योंकि वे काफी अनुशासित व आत्मनियंत्रित हैं। जब तक हम अपने आपके मालिक नहीं बनेंगे, हम समाज में प्रभावशील नहीं हो सकेंगे; न ही करुणा और शांति का काम कर सकेंगे। इस तैयारी के बाद हमारा प्रथम कार्य होगा।

कि हम आदमी को आदमी समझें। मानव के नाते उसकी जितनी प्रतिष्ठा है, उतनी उसे प्रदान करें। रंग, जाति आदि की दीवारों को हम नजरअंदाज करें। महाकवि गुरुदेव रवीन्द्रनाथ टाकुर से हम यह बात भली-भाँति सीख सकते हैं। अत्यन्त अद्भुतता से यह भाव उन्होंने अपने साहित्य में प्रकट किया है।

अपनी खिड़की में बैठ कर वे एक लड़की को देखते हैं—वह मजदूरिन है और मकान बनाने के काम में व्यस्त है। वे उसे देखते हैं और उस पर एक अनतिम, अद्भुत कविता लिखते हैं: वह मजदूरिन भी माँ है, बेटी है और उसकी जो महान शक्ति अपने घर को सुखद बनाने में लगनी चाहिए थी, वह हाय! दो आना रोज कमाने में खर्च हो जाती है! इस प्रकार के दृष्टान्तों द्वारा उन्होंने मानव मात्र की एकता का भान कराया है।

मुझे अपने पिता की फिर याद आती है। प्रथम लड़ाई के समय उन्होंने एक वाक्य बोला था, वह अब भी याद है। उस वाक्य ने मुझे संकुचित राष्ट्रीयता से बचाया था। वे अक्सर कहते थे कि जर्मन भी तो हमारे जैसे ही हैं। उनके सुख दुःख भी हमारे समान ही हैं और हमारी तरह उनको भी तो मुसीबतें उठानी पड़ रही हैं।

मैं एक और उदाहरण दूँगी। यह हम सबके अनुभव की चीज है। स्टेशन पर जब रेल आती है, तो स्टेशन पर रुकते ही सब लोग एकसाथ उसमें घुसने की कोशिश करते हैं। डिब्बे में कुछ लोग पैर पसारे सोते रहते हैं, जब कि स्त्रियाँ और बच्चे उनके ही सामने खड़े रहते हैं! और मैंने तो अच्छे लोगों को, यहाँ तक कि सर्वोदयी कार्यकर्ताओं को भी अत्यन्त स्वार्थी व्यवहार करते देखा है! मुझे तो लगता है कि शांति-सैनिक का काम रेल की मुसाफिरी से शुरू होगा।

अभी मुझे भोपाल का एक किस्सा याद आ रहा है। मैं एक बच्चे को, जो कि बीमार था, डाक्टर को दिखाने ले जा रही थी। सुबह ४ बजे का समय था और संयोग से डिब्बे में रोशनी भी नहीं थी। डिब्बे में झगड़ा मचा था, मैंने ... को उठाने के लिए। मैं और ... बालक चुपचाप एक कोने में बैठ गये। रेल चलने लगी। रोशनी हुई, तो वे ही लड़ने वाले मुझे देख कर उठ कर कहने लगे: ओहो! बहनजी आप हैं, आइये आइये, बैठिये। तो भोपाल में मेरा शान्ति का तरीका कामयाब हो गया। कई बार वह नाकामयाब भी होता है।

सवाल यह है कि बाजार में, बस में, चौराहे पर और रास्ते में क्या हम दूसरे की उत्सुकता व आवश्यकता को भी समझ सकते हैं? क्या दूसरों के प्रति सहानुभूति हममें आ सकती है? मेरा एक अनोखा अनुभव यह भी है कि हमें परिश्रम का काम करना होगा। जब तक हम कड़ा परिश्रम नहीं करेंगे, तब तक हमें उसका अनुभव नहीं होगा और न ही हम व्यापक श्रमिक समुदाय के प्रति सहानुभूति महसूस कर सकेंगे। कड़ा परिश्रम एक अपरिहार्य वस्तु है। मैंने अपने लिए तो इसे आध्यात्मिक व्यायाम मान लिया है।

एक बात और है। जब हम बाहर जाते हैं तो दूसरे जितने भी आदमी हमें मिलें, उनके बारे में हम यह विचारें कि इनका भी उतना ही महत्त्व है, जितना कि हमारा अपना। हम ही इस दुनिया के केन्द्र-बिन्दु नहीं हैं, वह भी है। इस तरह हम जिस किसी के भी संपर्क में आयें, उसकी महत्ता के बारे में विचार करें।*

---

*कस्तूरबाग्राम, इन्दौर में १ जुलाई १९६१ को शान्ति सेना-विद्यालय के दूसरे सत्र के उद्घाटन के समय दिया गया भाषण 'कस्तूरबा-दर्शन' से संक्षिप्त।

एक लघुकथा :

सुधार का तरीका

मुगल-काल में स्वामी सहजानंद अपनी जन्मभूमि, उत्तर प्रदेश से गुजरात में जाकर बस गये। वहाँ उनकी बड़ी मान प्रतिष्ठा हुई। उनके पास एक बहुत अच्छी ऊँचे कद की घोड़ी थी। एक दिन उस पर चढ़े दूसरे गाँव जा रहे थे कि उस क्षेत्र कुख्यात डाकू जीवन की नजर उनकी घोड़ी पर पड़ी। जहाँ जाकर स्वामीजी ठहरे, वह भी वहीं रात को ठहर गया और मौका पाकर वह तीन बार घुड़साल की ओर गया, पर देखा कि स्वामीजी कुछ लिख रहे हैं, स्वामीजी खरहरा कर रहे हैं और सवेरे पाया कि स्वामीजी लीद उठा रहे हैं।

उस डाकू को बड़ा आश्चर्य हुआ कि यह रात को सोते नहीं, फिर दिन में काम कैसे करते हैं? वह दूसरे दिन मन्दिर में स्वामीजी का प्रवचन सुनने गया तो वहाँ उनके पैरों पर गिर पड़ा और कहा 'महाराज, कंठी बाँध दो।' स्वामीजी डाकू जीवन को देखते ही रह गये। उसने पूछा, आप सोते कब हैं? तो स्वामीजी ने उत्तर दिया कि मैं तो पूरी रात सोता रहा, जिसे तुमने देखा, वह वही है, जो तुम्हारी, मेरी सबकी रक्षा करता है।

दूसरे दिन से वह स्वामीजी के साथ छाया की तरह रहने लगा। वे उसे अपनी बगल से बैठाते। इस पर कुछ कुलीन ब्राह्मण ठाकुरों ने आपत्ति की कि महाराज, हम तो बीस-बीस वर्ष से शिष्य हैं? तो स्वामीजी ने कहा, भाई, तुम तो भले हो ही, पर यह व्यक्ति रास्ता भूल गया था, घर से बाहर चला गया था। बहुत समय बाद वापिस घर आया है, इसलिये इसकी देखभाल और इसके प्रति सहानुभूति की अधिक आवश्यकता है।

—काशिनाथ त्रिवेदी

नशाबन्दी : क्यों और कैसे ?

अविनाशचन्द्र

[हिन्दुस्तान के संविधान ने पूर्ण नशाबंदी की बात मानी है। हिन्दुस्तान के आजाद होने से १३-१४ सालों के बाद भी हम पाते हैं कि देश में संपूर्ण नशाबंदी नहीं हो सकी है और जहाँ नशाबंदी का कानून लागू किया गया है, वहाँ सावधानी नहीं बरती गयी है। लोगों ने यत्र-तत्र दवाइयों के नाम पर खुले आम शराब बेचना शुरू किया है। प्रस्तुत लेख में लेखक ने इस विषय पर विस्तार से प्रकाश डाला है। हमें उम्मीद है, २-३ सितम्बर को दिल्ली में होने वाले नशाबंदी-सम्मेलन में इस बात पर भी गहराई से विचार किया जायेगा। —सं०]

अखबारों में छपा है कि सारे देश में पूर्ण मद्यनिषेध की योजना लागू करने के हेतु दिल्ली में शीर्षस्थ नेताओं में चर्चाएँ भी चल रही हैं। एक मीटिंग भी हुई, जिसमें केन्द्रीय मंत्रिपरिषद के तीन वरिष्ठ सदस्य सर्वश्री मोरारजी देसाई, लालबहादुर शास्त्री, गुलजारीलाल नन्दा, योजना आयोग के सदस्य श्री श्रीमन्नारायण तथा अखिल भारतीय मद्य निषेध समिति के अध्यक्ष श्री बी० एन० दातार ने भाग लिया और सारे देश में पूर्ण मद्यनिषेध की योजना बनाने पर विचार किया। उन्होंने राज्य-सरकारों में मद्यनिषेध न होने के कारणों तथा मद्यनिषेध होने से उनके सामने जो नई समस्याएँ आयेंगी, उन पर भी विचार किया।

हमारे देश में अब अपनी सरकार है और सभी सत्ताधारी नेता गांधी के अनुयायी हैं, ऐसा वे मानते हैं। यह भी सत्य है कि गांधीजी के समय में इन लोगों ने शराब की दूकानें बन्द कराने के लिए धरने दिये थे और गांधीजी के कार्यक्रमों में चरखा, हरिजन-उत्थान के साथ ही साथ नशाबन्दी का भी अपना महत्त्व है। आज भी विनोबाजी का विचार है कि किसी भी नगर में जिसे वे सर्वोदयनगरी के रूप में देखना चाहते हैं, नशाबन्दी जरूरी है। इसीलिए १० दिसबर, '६० को मिर्जापुर में जब उत्तर प्रदेश के मुख्य मंत्री महोदय बाबा से मिले तो बाबा ने मुख्य मंत्री महोदय के सामने चार मांगें रखीं। उन चार मांगों में से एक मांग यह भी थी कि कम से कम वाराणसी में पूर्ण नशाबन्दी कानून लागू हो, क्योंकि काशी को बाबा ने सर्वोदयनगरी बनाने के हेतु चुना है।

बार-बार गांधीजी और विनोबाजी ने नशाबन्दी पर जोर दिया और विभिन्न अवसरों पर विभिन्न प्रकार से इस बात की मांग करते रहे कि नशाबन्दी होनी ही चाहिए। पर सरकार इस क्षेत्र में कुछ भी कर नहीं पा रही है। सरकारी क्षेत्रों का तर्क यह है कि अगर नशाबन्दी हो गयी तो राजस्व घट जायेगा और अन्य दूसरे उपायों से कर का भार बढ़ाना पड़ेगा, जो साधारण जनता पर ही पड़ेगा।

सरकारी कर-नीति पर टिप्पणी करने की यहाँ पर आवश्यकता नहीं है। पर यदि यह माना जाता है कि मादक पदार्थों का सेवन समाज और व्यक्ति के लिए सामाजिक, शारीरिक, नैतिक तथा आर्थिक दृष्टियों से हानिकारक है तो राजस्व बढ़े, इसलिए किसी समाज-विरोधी, अनैतिक एवं उपभोक्ता के लिए भी हानिप्रद बात को बढ़ावा देना कहाँ की नीति है? और यदि यही नीति है तो सब बहुत से अनैतिक, समाजविरोधी अनुचित कार्य राज्यों में होते हैं, जैसे चोरी, डकैती, जुआ, वेश्यागमन आदि, इन पर भी टैक्स लगा कर राजस्व क्यों नहीं बढ़ाया जाता? वे भी राजस्व के साधन हो सकते हैं।

कारण स्पष्ट है कि इससे समाज से सामाजिक तत्त्वों के विलीन होने की पूर्ण सम्भावना है। खुले आम सार्वजनिक स्थानों पर मादक पदार्थों का सेवन और उसके बाद नशे में बदहवास होकर सड़कों पर घूमते हुए आदमी से किसी भी सभ्य स्त्री या पुरुष के लिए जो सड़क पर चल रहा है, खतरा है। घर में तो है ही। तो फिर उपरोक्त अन्य कार्यों के समान ही मादक पदार्थों के सेवन को समझ कर उसका तुरन्त निषेध करने पर विचार करना ही समुचित है।

कुछ राज्यों में आंशिक और कहीं पूर्ण मद्यनिषेध का नियम लागू भी हुआ है। नेताओं को सारे देश की समस्या को सुलझाते समय जहाँ मद्यनिषेध नियम लागू हुआ है, वहाँ के अनुभवों से भी लाभ उठाना चाहिए।

उदाहरणार्थ, उत्तर प्रदेश को ही लीजिए। यहाँ की बात कही जाती है। कुछ नगरों में शराब-बन्दी कानून लागू भी हुआ है। नतीजा यह है कि वहाँ आज भी खुले आम पहले से अधिक शराब बिकती है, सेवन होती है, सिर्फ नाम बदले हैं और राजस्व का घाटा हुआ है। एक कानपुर नगर को ही लीजिए। राज्य के विभिन्न शहरों में, खास तौर से लखनऊ, कानपुर में अंग्रेजी दवाएँ बनाने की अनेक निर्माणशालाएँ हैं। इन निर्माणशालाओं में 'स्प्रिट आफ वाइन' से 'टिन्चर' बनते हैं और जो औषधियाँ इस 'स्प्रिट' से बनती हैं, उनकी देखरेख के लिए तथा कितनी मात्रा में औषधियाँ बनीं, इसकी जाँच के लिए सरकार की ओर से एक एक्साइज (आबकारी) इन्स्पेक्टर रहता है।

इन्हीं टिन्चरों में एक टिन्चर, 'टिन्चर जिंजावरो मिस्ट' के नाम से फारमेसियों में बिकता एवं औषधि निर्माताओं के द्वारा बनाया जाता है। उसमें ८० प्रतिशत 'स्प्रिट आफ वाइन' तथा २० प्रतिशत पानी एवं अन्य दवाएँ पड़ती हैं। काफी मात्रा अदरक की भी होती है। इसे उसी प्रकार और उसी ध्येय की प्राप्ति के लिए सेवन किया जाता है, जिस प्रकार और जिस ध्येय की प्राप्ति के लिए साधारण शराब सेवन की जाती है। बाजारों में बिकने वाली शराबों में कम मात्रा में 'स्प्रिट आफ वाइन' होती है, जब कि इस टिन्चर में ८० प्रतिशत। तो कम सेवन से अधिक आनन्द पीनेवालों को मिलता है। यह टिन्चर खुले आम उन सभी नगरों में बिकता है, जहाँ मद्यनिषेध कानून लागू है। मजे की बात यह है कि इस सत्य को सभी जानते हैं, पर इसकी रोक के लिए कोई उपाय निकालने के लिए तैयार नहीं, क्योंकि ये निर्माता एक अदने से चपरासी, चौराहे पर खड़े होनेवाले सिपाही से लेकर बड़े-बड़े अधिकारियों को यथा योग्य पैसा देकर खरीद लेते हैं। शायद ही कोई बड़ा औषधि निर्माता होगा, जिसकी पहुँच मंत्रियों तक नहीं होगी और उत्तर प्रदेश की खूबी है कि ऐसे काम या व्यापार करनेवाले सरकार में भी हैं और उन्हें सरकारी सामाजिक, राजनैतिक क्षेत्रों में भी कांग्रेस का सहयोग प्राप्त होता है, न केवल व्यक्तिगत, वरन पार्टी की तरफ से भी!

यह 'टिन्चर जिंजावेरी' शास्त्र में किसी विशेष दवा या सहायक दवा के रूप में अधिक मात्रा में नहीं उपभोग होती है। यदि दूसरे टिन्चरों और सिरपों का १०-१५ पौंड उपभोग होता है, तब बहुत मुश्किल से 'टिन्चर जिंजावेरी' का उपभोग एक पौंड हो पाता है। पर कानून यह नहीं देखता कि इतने अधिक अनुपात में केवल इस टिन्चर के बनने का प्रयोजन क्या है? फिर किसी निर्माता का हिसाब देखा जाय तो पता लगेगा कि जिस स्थान पर नशाबन्दी-कानून लागू नहीं हुआ है, वहाँ तो इस टिन्चर की खपत उसी अनुपात में है, जैसा कि मैंने ऊपर लिखा (लिखाए, सम्पादक, पी. एम. टे.)। किन्तु कानपुर, ऐसे नगर में हजारों पौंड रोज की खपत है। उन निर्माताओं के एजेन्ट ऐसे स्थानों पर रहते हैं और अड्डे चलाते हैं या फारमेसियों में बड़ी-बड़ी मात्रा में 'सप्लाई' करते हैं, जहाँ से कोई भी औषधि रूपी शराब खरीद सकता है। एजेन्टों को अच्छा कमीशन मिलता है। केवल एक औषधि-निर्माणशाला लखनऊ से कानपुर एक पौंड की २ हजार बोतलें भेजती है और प्रत्येक बोतल का मूल्य फारमेसी वाले को ४ रुपया देना पड़ता है। सरकार को आबकारी कर, एजेन्टों को कमीशन, स्प्रिट तथा औषधियों की लागत और नीचे से ऊपर तक तमाम खर्चे मजदूरी-व्यवस्था, पैकिंग आदि का भाग निकाल देने के बाद बोतल सहित एक पौंड टिन्चर की लागत दो रु० के लगभग आती होगी। तो इस प्रकार केवल एक निर्माता को केवल लखनऊ से कानपुर भेजने पर चार हजार रुपये प्रति सप्ताह का लाभ होता है। ऐसे कितने ही कारखाने हैं और कितने ही नाम से ये शराबें बिकती हैं। पहले ये कारखाने अन्तरराज्य व्यापार करते थे। पर अब साढ़े सात प्रतिशत का अन्तरराज्य कर लग जाने से दूसरे राज्यों में व्यापार करना मुश्किल हो गया है। शायद इन निर्माताओं में से बहुतों के पास 'फ्री' या 'अनलिमिटेड परमिट' हैं, जिसके अर्थ यह होते हैं कि यह 'डिस्टेलरी' (जहाँ 'स्प्रिट आफ वाइन' शराब की स्प्रिट बनती है) से जितनी चाहे स्प्रिट ले ले, कोई रोक नहीं। असल में सारे भ्रष्टाचार की जड़ यही है। इस प्रकार से जो औषधि रूपी शराब खुले आम बिकती है, इससे सरकार के राजस्व की तो हानि होती ही है, पूँजीवाद की जड़ें भी मजबूत होती हैं और एक साधारण पूँजी का आदमी भी इस अनैतिक व्यापार से लाखों का आदमी बन जाता है!

सो किसी एक क्षेत्र में मद्यनिषेध करने से विशेष लाभ नहीं होता है, क्योंकि समाज-विरोधी शक्तियाँ उस एक क्षेत्र को अपना कार्यक्षेत्र बना कर लाभान्वित होती हैं। प्रश्न इसी बात का है कि सारे देश में पूर्ण मद्यनिषेध-कानून लागू किया जाय और इस कानून के अन्तर्गत केवल देशी शराब ही नहीं, वरन विलायती शराब भी तथा सभी प्रकार के मादक पदार्थों का निषेध होना चाहिए।

औषधि निर्माताओं को 'स्प्रिट आफ वाइन' की सीमित 'परमिट' ही दी जानी चाहिए, जितनी उनके लिए अन्य औषधियों के निर्माण के अनुपात से आवश्यक, अनिवार्य हो। 'टिन्चर जिंजावेरी' या ऐसे ही अन्य टिन्चर उतनी ही मात्रा में निर्माण करने की अनुमति दे दी जाय, जितना उस निर्माण-शाला में निर्माण अन्य औषधियों की अनुपात से अनिवार्य हो। 'डिस्टेलरी' में भी 'स्प्रिट आफ वाइन' के उत्पादन पर एक निश्चित सीमा निर्धारित कर देनी चाहिए, जो कम से-कम और अनिवार्य ही हो। इन निर्माण शालाओं तथा डिस्टेलरियों में आबकारी विभाग के कार्यकर्ताओं पर विशेष ध्यान देने की आवश्यकता है।

अगर ये सारे उपाय प्रयोग में लाये गये और भी ऐसे ही या इससे अच्छे उपाय इस क्षेत्र में प्रयोग में लाये जा सकते हैं, तो मेरा विश्वास है कि अधिक से अधिक औषधि निर्माण-

शालाएँ बन्द हो जायेंगी, क्योंकि ऐसी शालाओं की कमी नहीं है, जिनका मुख्य व्यापार धोखे की शराब बनाना ही है। 'औषधि निर्माण' का नाम तो बहाने के लिए है।

मगर सरकार ऐसे कदम उठायेंगी, इसमें हमें शक है, क्योंकि ऐसे निर्माताओं का सरकार में काफी दबदबा है। अभी मेरठ में एक भूतपूर्व उपमंत्री से बातें हुईं। मैंने कहा कि अपनी ओर से सरकारी सेवा में सहयोग दिखाने में वे सहयोग दें। उनका उत्तर था कि समाज-सेवियों को सरकार का मुँह नहीं ताकना चाहिए, समाज का परिवर्तन विचारों से कर दो और फिर सभी दूकानें खुली रहेंगी तो भी क्या होगा, लोग शराब नहीं लेंगे। उन्होंने यह भी कहा कि मद्यनिषेध-कानून लागू भी किया जाय, सख्ती भी की जाय, तो पीने वाले पीते रहेंगे, आप उन्हें रोक नहीं सकते हैं—जब तक कि विचारों को नहीं रोक सकते। इससे शराबबन्दी नहीं होगी, अलबत्ता सरकारी राजस्व का घाटा अवश्य होगा।

भूतपूर्व उपमंत्री महोदय ने यह भी कहा कि यदि सारे देश में मद्यनिषेध हो गया, तो विदेशों से लुके-छिपे न जाने कितनी तादाद में शराब देश में आ जायेगी और उसका पैसा गलत जगह चला जायेगा।

उनका कहना ठीक है और जब यह सब होता रहेगा, तब हमारा सरकारी पहरा सोता रहेगा और यदि इस बात की संभावना है, तो क्या हम यह विश्वास न करें कि देश के यही वफादार प्रहरी एक दिन विदेशियों को आमंत्रित कर बैठेंगे और हम सब फिर गुलाम हो जायेंगे! अपने प्रहरियों पर यदि इतना विश्वास नहीं है कि वे देश के प्रति वफादार हैं तो उनसे सजग रहने की बात है तथा उनका समुचित प्रबन्ध भी होना चाहिए।

गांधीजी ने शराब की दूकानें बन्द करवाने के लिए दूकानों के सामने धरने दिलवाये थे। वह विदेशी सरकार थी, अब अपनी ही सरकार के सामने भी हम वही करें, जो कभी अंग्रेजों के विरुद्ध किया गया था, तो क्या यह उचित होगा? ऐसी स्थिति आये, यह अच्छी बात नहीं है।

पर हमें सामाजिक कार्यकर्ताओं को भी कुछ करना चाहिए, हम इस बात से इन्कार नहीं कर सकते हैं। साधना केन्द्र, काशी में दिसम्बर, '६० में जब विनोबाजी आये थे, तो १६ से १९ तारीख तक विनोबाजी के ही सान्निध्य में सर्वोदयनगर-अभियान के कार्यक्रम पर विचार करने के लिए बैठकें होती रहीं। उत्तर प्रदेश और मध्य प्रदेश के कार्यकर्ताओं के अतिरिक्त बिहार के भी कुछ कार्यकर्ताओं ने भी उन बैठकों में भाग लिया। बैठकों के बाद तीन सदस्यों की एक समिति बनी थी, जिसका एक सदस्य मैं भी था। उस समिति ने नगरों के लिए अन्य कार्यों के अतिरिक्त मद्यनिषेध के लिए भी कार्यक्रम बनाया। वह कार्यक्रम इस प्रकार है:—

(१) नगर की सारी सामाजिक, सांस्कृतिक, शैक्षणिक तथा अन्य संस्थाओं की भी एक समिति बने, जो आंदोलन का आगे का कार्य चलाये। उस वृहद् समिति में संस्थाओं का प्रतिनिधित्व उन संस्थाओं के प्रतिनिधि करें। इसके अतिरिक्त जो भी नागरिक स्वेच्छा से इस कार्य में सक्रिय सहयोग दें, वे इस समिति को सूचित करके सदस्य बन सकते हैं। यह सदस्यता एक वर्ष के लिए रहेगी। दूसरे वर्ष पुनः सूचित करना पड़ेगा।

(२) उठाये जाने वाले कदम की पूर्वसूचना शराब, ताड़ी के दूकान-मालिकों तथा सम्बन्धित अधिकारियों को देना।

(३) इन दूकानदारों से अनुरोध करना कि वे अपनी दूकानें वहाँ न चलायें।

(४) उन दूकानों के सामने सभाएँ करना तथा उनको बंद कराने के लिए प्रस्ताव पास करना।

(५) उन मोहल्लों में नगर और मोहल्लों के संभ्रान्त लोगों के द्वारा शराब-ताड़ी पीने वालों से अनुरोध कराना कि वे शराब ताड़ी आदि न पीयें, इसकी अपील निकालना, दूकानों को बंद कराने के पक्ष में हस्ताक्षर कराना और उसकी प्रतियाँ तत्संबन्धी अधिकारियों और राज्य के माननीय नेताओं के पास भेजना।

(६) इन सब प्रयत्नों के बाद समय, स्थान तथा व्यक्तियों की नामावली निश्चित करके शराब बिक्री के समय पीने वालों को मनाने की कोशिश करना।

(७) न मानने पर उनके रास्तों पर लेट जाना। इस प्रकार विभिन्न टोलियों में बँट कर दूकान के सामने लेट जाना।

(८) साथ ही शराब की दूकान चलाने वाले ठेकेदारों को दूकानें बंद करने के लिए समझाना।

नशाबंदी ऐसा काम नहीं है, जो एक दिन में हो जाय। सदियों से लोगों के संस्कार पड़े हैं। इन्हें मिटाना है, नये संस्कार डालना है। जो पुराने हो चुके, बीसों साल से मादक पदार्थों के सेवन के आदि बन गये हैं, उन्हें एकदम से ठीक कर देना एक आसान काम नहीं है। किसी सीमा तक असंभव भी कहा जाय तो अनुपयुक्त नहीं है। फिर भी पूर्ण असम्भव नहीं है। तो भी जो हुआ सो हुआ, आने वाली पीढ़ी इनसे बचे, यही बड़ा काम होगा। वह बुनियाद होगी, भविष्य के संस्कारों की ओर। यह असम्भव नहीं है कि एक बुराई यदि एक बार समाज से जड़मूल से समाप्त हो जाय तो फिर दुबारा समाज में आये ही। पर उस कार्य में सभी के सहयोग की आवश्यकता है। जनता अपना काम करें, सामाजिक कार्यकर्ता अपना कार्य करें और सरकार को भी अपना काम करना चाहिए।

[सर्वनाशी मदिरा के लड़खड़ाते कदम : पृष्ठ ४ का शेष]

बड़ों में रो रहे हैं। बताइये मैं क्या करूँ?"

ये हैं हमारे भारत की देवियाँ! पति के खाने पर न खाती हैं, न उन्हें नींद ही आती है! पुरुष झगड़ा करते हैं, शराब पीते हैं; लेकिन उनकी स्त्रियाँ चुपचाप बरदाश्त कर लेती हैं। पहाड़ों पर मैंने देखा है कि पुरुष दिन भर कठिन परिश्रम करते हैं, कुलीगीरी करते हैं; परन्तु अपनी गाढ़ी कमाई शाम को मदिरालय में लाकर स्वाहा कर देते हैं। कुछ ही अंश पत्नी तथा बच्चों को मिल पाता है; लेकिन फिर भी वह सहन करती हैं। आखिर इस तरह से कब तक चलता रहेगा! उनको चाहिये कि वे अपने पति से कहें कि इन आदतों को छोड़ दें। और अगर उनका कहना पुरुष न मानें तो कहना चाहिए कि जब तक ऐसी आदत आप नहीं छोड़ेंगे, तब तक हम भोजन नहीं करेंगी!

इस सम्बन्ध में जो लोग अमेरिका का उदाहरण देते हैं, वह सर्वथा अनुचित है। अमेरिका में शराबबन्दी का प्रयोग असफल हुआ, इसलिए यह जरूरी नहीं कि वह यहाँ भी असफल होगा। वहाँ की और यहाँ की परिस्थिति में जमीन-आसमान का अन्तर है। वहाँ की परम्परा, लोक प्रवृत्ति और सामाजिक लोक प्रतिष्ठा यहाँ से भिन्न है। कुछ शान्तिवादियों के सत्याग्रह पर अमेरिका में मद्यपान का विरोध हुआ, किन्तु सर्वथा निषिद्ध करने की प्रवृत्ति ही वहाँ के वातावरण में किसी को नहीं होती। इसके विपरीत भारत में शराब कभी भी प्रतिष्ठित नहीं मानी गयी है!

मिरजापुर जिले में शारो और म्योरपुर; ये दो स्थान तो बदनाम हैं ही, किन्तु रेहण्ड बाँध के पास दुद्धी और पिपरी में शराब की कम खपत नहीं है! हम म्योरपुर से लौट रहे थे। बाजार के अन्दर एक मदिरालय के पास सैंकड़ों की भीड़ देख कर हमने साथी से पूछा। दो मिनट तक वहीं खड़े रह कर हमने वीभत्सता का दर्शन किया।

अभी मुश्किल से एक फर्लांग ही आगे गये थे कि इमली के पेड़ के नीचे बड़ा हो-हल्ला हो रहा था। खुले आम शराब बन रही थी और आठ-दस मील से खरीदने वाले आये थे। कुछ पी रहे थे, कुछ पैसा बोतलें झोले में डाले लम्बे-लम्बे डग बढ़ाते घर की ओर चले जा रहे थे। एक पुरुष शराब पीकर औंधे मुंह बेहोश पड़ा था। टट्टी हो जाने से मक्खियाँ भिन भिना रही थीं, किन्तु उसकी पत्नी उसे हर तरह से सँभालने की कोशिश कर रही थी। कुछ लड़के उसे भूखी नजरों से तक रहे थे।

हमारी सरकार ने शराबबन्दी की नीति अपनायी, लेकिन चोरी से कितनी शराब बनती है, उसकी खपत कितने राजकीय कर्मचारियों के सहयोग से होती है, इसका अनुमान किसी भी नगर में जाकर लगाया जा सकता है। हम उत्तर प्रदेश की ही बात क्यों न ले लें! देशी शराब की सबसे ज्यादा खपत वाराणसी में और विदेशी शराब की लखनऊ में है। प्रदेश के जिन १३ जिलों में शराबबन्दी का नियम लागू हुआ है, वहाँ भी यदि नियमोल्लंघित अपराधों को गिना जाय तो पदस्थ लोग ही अधिक मिलेंगे! क्या सरकार इस ओर से सचमुच आँख नहीं मूंद रही है!

वहाँ इस विषय पर विचार करना चाहिए कि पुराने पियक्कड़ कानून की आँख बचा कर क्यों पीते हैं? शायद उनके लिए समस्या यह है कि फुरसत के समय क्या करें! खालीपन से उकता कर अपनी रिक्तता को भूलने और समय को धोखा देने का ही उनका प्रयास होता होगा। जो दिन भर थक कर चूर हो जाते हैं, घर आने पर बच्चों की खिलखिलाहट, पत्नी की झुंझलाहट के शिकार होते हैं, उन्हें जीवन भारस्वरूप लगता है। वे घर की परेशानी दुनिया पर मिटाना चाहते हैं। तब क्या उनका जीवन दूसरों के लिए समस्या नहीं बन जाता है? आज अपने को समाज-सुधारक कहलाने वालों के लिए यह एक चुनौती है!

स्त्रियाँ और शराब-बंदी

पच्चीस साल पहले की बात है, चर्चा चल रही थी कि शराब की दूकान पर पिकेटिंग करने का क्या इंतजाम किया जाय। किसी ने कुछ सुझाया, तो किसी ने कुछ। गांधीजी ने सुझाया कि यह काम स्त्रियों का होना चाहिए। लोग सुनते रह गये कि गांधीजी क्या बोल गये! जहाँ बिलकुल अनीतिमान् लोग जाते हैं और सब प्रकार का बुरा बर्ताव चलता है, ऐसे लोगों के बीच स्त्रियाँ क्या करेंगी? लेकिन गांधीजी ने कहा कि वहाँ पर स्त्रियाँ ही काम करेंगी। जो सबसे गिरे हुए लोग हैं, उनके खिलाफ हमारे पास जो ऊँची-से-ऊँची नैतिक शक्ति है, वही भेजी जानी चाहिए। उसके अनुसार स्त्रियाँ वहाँ गयीं और उन्होंने जो काम किया, वह सारे भारत ने देखा।

(पंढरपुर, ३१-५-५८) —विनोबा

राष्ट्रीय समरसता का सवाल

तिमप्पा नायक

[२१ जुलाई के 'भूदान-यज्ञ' में 'राष्ट्रीय समरसता' पर श्री तिमप्पा नायक के विचार प्रकाशित हुए थे। उसी अंक में इसी विषय पर संपादकीय टिप्पणी भी निकली थी। हमें खुशी है कि श्री तिमप्पा नायक ने इस विषय पर फिर से एक पत्र में कुछ विचार प्रकट किये हैं, जो हम यहाँ दे रहे हैं। –संपादक]

(१) शांति-सैनिक का जीवन आध्यात्मिक वृत्ति से प्रेरित एक अखण्ड सेवामय यज्ञ है, ऐसी सेवा करते-करते ही देहपात होने में ही उसके जीवन का साफल्य है और आवश्यक हो, ऐसा मौका आ जाय, तब अपना बलिदान देना उस यज्ञ की पूर्णाहुति है। अर्थात् आवश्यक मौके पर अंतर्नाद (इनर वाइस) की प्रेरणा से अंतिम बलिदान शांति-सैनिक के जीवन की अविभाज्य क्रिया है।

(२) जो सम्बन्ध रचनात्मक कार्यक्रम में और सविनय अवज्ञा (सिविल डिसओबिडियन्स) में है, ऐसा गांधीजी कहते हैं, उसी तरह का संबंध, राष्ट्रीय समरसता के बारे में जो रचनात्मक कार्यक्रम है, उसमें और अन्तिम बलिदान में है। रचनात्मक कार्यक्रम ही अहिंसा का प्रधान अंग है। यदि रचनात्मक कार्यक्रम ठीक तरह से अमल में लाया जाता, तो उससे ही स्वराज्य फलित होता, लेकिन आकस्मिक स्थिति में सविनय अवज्ञा का अवलम्बन भी करना पड़ता है। वैसे ही आज मेरी नम्र राय में एक 'इमरजेन्ट' (आकस्मिक) प्रसंग है और बलिदान की आवश्यकता है। हाँ, इसके लिए हरएक को अपना अंतःकरण टटोलना होगा, उसके लिए आवश्यक आत्मशुद्धि करनी होगी, अर्थात् इस दिशा में सोचना होगा और अपनी तैयारी करनी होगी। शांति-सैनिक की शिक्षा में यह दृष्टि होना अत्यन्त जरूरी है।

(३) आज भारत के लोग उनके देहांत के बावजूद मृत्यु से जितने डरते हैं, भागते हैं, उतनी डरपोक प्रजा शायद ही और अन्य किसी राष्ट्र में होगी!

मृत्यु के बारे में चिन्तन, उसके असली स्वरूप के बारे में चर्चा और मृत्यु से भी निर्भयता का ध्यान शांति-सैनिक के शिक्षण का एक अंग होना चाहिए।

जब ऐसे संस्कार हममें—शांति-सैनिकों में—और उनके माध्यम से जनमानस में दृढ़मूल हों, तब ही हम अहिंसा से राष्ट्र की रक्षा करने में, मानवता को बचाने में समर्थ होंगे। मृत्यु के डर को जीतना यही स्वराज्य है।

(४) गांधीजी ने अपनी एक भी कृति ऐसी नहीं की, जिससे राष्ट्र पंगु बने—जब 'मेकडानाल्ड अवार्ड' (हरिजन प्रश्न) के संबंध में आमरण अनशन रूपी अग्निप्रवेश किया, तब उन्होंने कहा कि किसी को भी अन्धभक्ति से अनशन नहीं करना चाहिए। लेकिन हिन्दू धर्म पर का यह काला कलंक धो डालने के लिए सबको अथक काम में लगना चाहिए।

प्रस्तुत महात्माजी की प्रक्रिया ही ऐसी थी, जिससे राष्ट्र में आत्मविश्वास, आत्म-निर्भरता, संघशक्ति बढ़े। इससे सारे राष्ट्र में एक विद्युत-सा संचार हुआ।

महात्माजी के अंतिम बलिदान का परिणाम आजमाने में हम आज असमर्थ हैं। इस संबंध में भी उन्होंने नोआखाली में एक कार्यक्रम आरंभ किया था। अपने थोड़े ही साथियों को लेकर विधायक काम के केन्द्र खोले थे, उनके हरएक प्रार्थना-प्रवचन में उन्होंने राष्ट्रीय समरसता के बारे में अनेक दृष्टि से दिग्दर्शन किया। लेकिन उनमें जो 'विजन' (दर्शन) था, वह हममें किसीमें नहीं था। इसलिए उनके बलिदान के पश्चात् इस बारे में—सिर्फ अस्थायी भौतिक काम पुनर्संगठन का था, वह हमने किया। लेकिन नैतिक पुनर्संगठन की तरफ हमने ध्यान नहीं दिया। इसके लिए मैं किसी पर दोष नहीं लगाता, सिर्फ एक वस्तुनिष्ठ दृष्टि से और 'सेल्फ क्रिटिसिज्म' (आत्मविश्लेषण) की दृष्टि से जो लगता है, वह बता रहा हूँ। महात्माजी की महानता ही ऐसी थी कि हम हमारी संकुचित दृष्टि की वजह से उनके दर्शन का और उसके महत्त्व का आकलन नहीं कर सके। आज हम कुछ इस प्रश्न पर जाग्रत हुए हैं।

महात्माजी ने कहा था कि यद्यपि हिन्दुस्तान और पाकिस्तान राजकीय दृष्टि से अलग अलग राष्ट्र बन गये, तो भी भारत सिर्फ भौगोलिक दृष्टि से ही नहीं, लेकिन सांस्कृतिक दृष्टि से, हृदय से, हार्ट से (एट हार्ट) भी एक है। इस सत्य को हमको हमारे बर्ताव से कृतार्थ करना चाहिए।

आज यद्यपि भारत में करीब चार करोड़ मुसलमान भाई हैं, तो भी हमने हिन्दुस्तानी (राष्ट्रभाषा) के बारे में उर्दू लिपि का आग्रह छोड़ दिया। उर्दू और हिन्दी के समन्वय की हमारी दृष्टि भी ओझल हो गयी।

(५) महात्माजी के अन्तिम बलिदान पर हम चिन्तन करें। उनकी शांतिसेना की कल्पना पर हम गाढ़ चिन्तन करें और उसके प्रकाश में—देर से भी क्यों नहीं—आज भी हम कार्यप्रवृत्त हों, तब राष्ट्र पंगु नहीं बनेगा। प्रत्युत नव-चेतना उसमें प्रस्फुरित होगी।

आखिर एक बात फिर कह कर यह लम्बा पत्र समाप्त करता हूँ। अन्तिम बलिदान यह कुछ 'डिस्कनेक्टेड' या 'आइसोलेटेड'—असंबद्ध या एकाकी क्रिया—नहीं है; शान्ति सेना के कार्यक्रम का एक नैसर्गिक विकास है। समुचित मौके पर बलिदान से शांति-सेना का काम सफल होगा।

आध्यात्मिक दृष्टि, अखण्ड सेवारूपी यज्ञ, सतत आत्मशुद्धि में प्रमाद-रहित जागृति, अंतर्नाद सुनने की पात्रता, समुचित मौके पर अंतिम बलिदान—यही शांति-सैनिक जीवन का नक्शा है।

ऐसे बलिदान से, जैसा कि थोड़े से ही दही से सब दूध दही में परिवर्तित हो जाता है वैसा ही राष्ट्र का होगा, न कि राष्ट्र पंगु बनेगा। ऊपर की पंक्तियों में अनेक विचारदोष होने की सम्भावना जरूर है। मेरी नम्र प्रार्थना है कि जो त्रुटियाँ उनमें हैं, उनकी तरफ मेरा ध्यान आकर्षित किया जाय; इससे मुझे मेरे चिन्तन में प्रोत्साहन मिलेगा।

महाराष्ट्र सर्वोदय-मंडल और नवनिर्माण-समिति के निर्णय

महाराष्ट्र सर्वोदय-मण्डल की प्रबंध समिति, जिला-संयोजकों और निर्माण समिति की बैठक पूना में २५ जुलाई '६१ को मंडल के अध्यक्ष श्री आर० के० पाटिल की अध्यक्षता में हुई। चर्चा में जो निर्णय लिये गये, उसका सार यहाँ दिया जा रहा है।

भूमि-प्राप्ति के लिए आगामी तीन महीनों में पदयात्राएँ की जायेंगी। सितम्बर में बीड जिले में और अक्तूबर में नागपुर जिले में पदयात्राएँ होंगी।

नवम्बर, दिसम्बर '६१ और जनवरी '६२ में अपने-अपने जिले में लोकनीति का प्रचार किया जायेगा।

अक्राणी-अक्कलकुवा ग्रामदानी क्षेत्र के काम के बारे में नियुक्त समिति द्वारा दिये गये मार्गदर्शन की जानकारी दी गयी। उस पर चर्चा करके तय किया गया कि सातपुड़ा सर्वोदय-मंडल की ओर से श्री दामोदरदास मूँदड़ा वहाँ के काम के बारे में एक योजना बनायेंगे।

बिहार के 'बीघे में कट्ठा' आन्दोलन को सफल बनाने के लिए महाराष्ट्र से चार कार्यकर्ता गये हैं। और छह कार्यकर्ता बिहार में भेजे जायेंगे।

रत्नागिरी जिले में गत जून माह में तूफान और बाढ़ के कारण बहुत नुकसान हुआ। अतः वहाँ के सर्वोदय-मंडल को उचित आर्थिक सहायता अवश्य देंगे।

महाराष्ट्र में लागू होनेवाले 'सीलिंग', के बारे में चर्चा हुई। कोई जमींदार भूमिदान करता है, तो वह भूमि इस कानून में शामिल न की जाय, ऐसी एक सूचना प्रस्तुत की गयी। और भी संबंधित समस्याओं के बारे में श्री आर० के० पाटिल सरकार से पत्रव्यवहार करेंगे। प्राप्त भूमि का वितरण विनोबाजी द्वारा निर्देशित भूमि-वितरण के नियमों के अनुसार होगा।

खादी-कमीशन के ग्राम इकाई के ढंग के अनुसार ग्रामदानी गाँवों की ग्राम-इकाइयों की योजनाएँ राज्य ग्रामोद्योग-मंडल के पास भेजी गयी हैं। इसके बारे में श्री आर० के० पाटिल और श्री अण्णा-साहब संबंधित व्यक्तियों से चर्चा करेंगे।

महाराष्ट्र सर्वोदय-मंडल की आर्थिक स्थिति का खयाल करके तय किया गया कि अब शिविर और सम्मेलन के लिए कार्यकर्ताओं का होने वाला खर्च अपने-अपने जिले से किया जाय। शिविर में किसको भेजा जाय, यह भी जिला ही तय करेगा।

शांति-सेना विद्यालय, काशी में महाराष्ट्र से चार कार्यकर्ता भेजे जायँ। इनका सारा खर्च जहाँ का कार्यकर्ता होगा, उस जिले द्वारा होगा।

११ सितम्बर से २ अक्तूबर तक सर्वोदय पक्ष मनाया जायेगा। इसमें सब कार्यकर्ता खादी बिक्री और सर्वोदय-साहित्य प्रचार करेंगे। सब रच-नात्मक संस्थाओं द्वारा भी यह कार्य किया जाय।

महाराष्ट्र प्रदेश के सम्मेलन का आयो-जन १९६२ के मई माह के प्रथम सप्ताह में करने का तय हुआ।

* * *

सर्वोदय मित्र-मंडल

रात की बैठक में श्री अप्पासाहब पटवर्धन ने सर्वोदय मित्र मंडल की अपनी नई योजना के बारे में विचार पेश किये।

(१) प्राथमिक सर्वोदय मित्र-मण्डल : शोषण-मुक्ति की योजना, भूमिप्राप्ति, शराब-बन्दी आदि विचार के सहायक के रूप में जहाँ १८ साल से अधिक उम्र वाले स्त्री-पुरुष सर्वोदय-पात्र रखेंगे, ऐसे क्षेत्र में १८ से ३५ व्यक्तियों का प्राथमिक सर्वोदय मित्र-मंडल बनाया जाय। यह मंडल अपने में से सर्वानुमति से एक निमंत्रक चुन ले।

(२) क्षेत्रीय सर्वोदय मित्र मण्डल : सर्वोदय पात्र रखने वाले ऐसे ३०० से ६०० परिवारों या १५ से २० प्राथमिक सर्वोदय मित्र-मंडलों का एक क्षेत्रीय सर्वोदय मित्र-मंडल बनना चाहिए। प्राथमिक मंडल के निमंत्रक इस क्षेत्रीय सर्वोदय मित्र-मंडल के सदस्य होंगे।

(३) कार्यदर्शी समिति : क्षेत्रीय सर्वोदय-मंडल अपने में से एक संयोजक

श्री शीतल ठाकुर "गुरूजी" की याद में !

अभी-अभी सर्वोदय आश्रम, रानीपतरा, ग्राम निर्माण विभाग के व्यवस्थापक से बातें ही कर रहे थे कि डाकिये ने एक चिट्ठी दी। चिट्ठी की पहली ही पंक्ति में लिखा था : "भाई शीतलजी हम लोगों को १५ अगस्त की रात में छोड़ चले गये।" सब सकते रह गये!

विगत ९ अगस्त को जब श्री वैद्यनाथ बाबू हमारे गाँव आये थे; तो उनके स्वागत आदि की पूरी व्यवस्था श्री शीतल-ठाकुर 'गुरूजी' ने ही की थी। ११ बजे रात में वे वैद्यनाथ बाबू के आने के लिये उस मूसलाधार वर्षा में भी गाँव में चक्कर काटते रहे। सुबह में वैद्यनाथ बाबू को गाँव से विदा करते समय वे अपने गाँव की दुख-दर्द भरी कथा सुनाने में इतने मग्न थे कि वैद्यनाथ बाबू को अन्त में यह आश्वासन देना पड़ा कि खादी-ग्रामोद्योग कमीशन की ओर से 'ग्राम-इकाई' योजना वहाँ चालू करने की व्यवस्था की जायगी।

११ अगस्त को अचानक वे बीमार पड़े और दो दिनों तक उनके मुँह से आवाज तक नहीं निकली। मृत्यु के समय आपकी अवस्था ५० वर्ष की थी।

१९२९ से ही गुरूजी कांग्रेस में सिपाही-कर्मठ रूप में काम करते रहे और कई बार जेल भी गये। १९५२ से उनका पूरा समय "भूदान-मूलक ग्रामोद्योगप्रधान अहिंसक समाजरचना" के कामों में लगा। सहरसा जिले के गाँव-गाँव में घूमने के साथ ही गया और पूर्णियाँ जिले के कई भागों में भी गुरूजी ने विनोबा के सन्देश को फैलाया। विगत वर्ष वे ग्राम निर्माण के काम का अनुभव लेने के लिए रानीपतरा में ४ महीने रहे और गाँव जाकर उन्होंने उस दिशा में काम करने की योजना बनायी, जिसका अन्तिम प्रसाद उन्हें वैद्यनाथ बाबू द्वारा ग्राम-इकाई चलाने की स्वीकृति के रूप में मिला। गाँव के भूदान किसानों, ग्राम-पंचायतों, हरिजनों, दलितों, स्कूल के शिक्षकों एवं छात्रों, रचनात्मक कार्यकर्ताओं को उनका हर तरह हर काम के लिये मिलता था। "सेवाश्रम चननपट्टा" के वे व्यवस्थापक होते हुए भी पूरे सहरसा जिले में भूदान-काम के लिये समय देते रहे।

गुरूजी चले गये, किन्तु उनकी दिवंगत आत्मा को शान्ति देने की प्रार्थना के साथ ही हमें उनकी ध्येय-निष्ठा, कर्तव्य-निष्ठ, जीवनदानी, शान्ति-सैनिक के रूप में उन्होंने जो किया उससे उत्प्रेरणा लेनी चाहिये।

—दीनानाथ "प्रबोध"

और कार्यदर्शी, ऐसे तीन व्यक्तियों की एक कार्यदर्शी समिति सर्वसम्मति से नियुक्त करेगी।

(४) मण्डलों का कार्य : ये मण्डल अपने-अपने क्षेत्र में सर्वोदय का प्रचार करेंगे। कार्यदर्शी समिति जिला सर्वोदय-मंडल की प्रचारक की नियुक्ति, उसका जीवन-वेतन और कार्यपद्धति आदि के सम्बन्ध में सलाह देंगे।

(५) जिला-संयोजक अपने जिले में इस तरह के सर्वोदय मित्र मण्डल बना कर उसकी जानकारी महाराष्ट्र सर्वोदय-मंडल को भेजें।

श्री अप्पासाहब पटवर्धन द्वारा सुझायी गयी उपर्युक्त सर्वोदय-मित्र-मंडल की योजना स्वीकृत की गयी।

श्री अण्णासाहब ने विचारमूलक सर्वोदय-पात्र और अल्प दान के रूप में "पैसा फंड" इकट्ठा करने की योजना रखी, जो स्वीकृत की गयी।

* * *

ग्रामदान-नवनिर्माण समिति

महाराष्ट्र ग्रामदान नवनिर्माण समिति 'रजिस्टर्ड' होने के बाद उसकी पहली सभा २१ जुलाई '६१ को पूना में श्री आर० के० पाटिल की अध्यक्षता में हुई।

सन् '६० के निर्माण-समिति के 'आडिट' किये गये हिसाब का आय-व्यय पत्रक और आर्थिक स्थिति का पत्रक मंजूर किया गया।

श्री आर० के० पाटिल ने कहा, "ग्रामदानी गाँवों में किसी भी प्रकार की व्यक्तिगत योजना न हो। सामूहिक संकल्प, सहकार और सामूहिक भावना की वृद्धि करने वाली योजनाओं को अमल में लाना चाहिए।"

रत्नागिरी जिले की और अक्कलकोट महाल क्षेत्र के कार्य की, जो रिपोर्ट प्रकाशित की गयी, उसकी जानकारी सबको दी गयी। महाराष्ट्र के निर्माण कार्य की पूरी रिपोर्ट दूसरी सभा में तैयार की जायेगी।

तय हुआ कि पांढरकवडा ग्राम-परिवार को अगर रजिस्ट्रार की अनुमति हो और परिवार की स्थिति उचित हो तो दो हजार रु० तक का कर्ज संयोजक दे सकेंगे।

महाराष्ट्र में ५८ ग्रामस्वराज्य सोसाइटियाँ रजिस्टर्ड हो चुकी हैं। इनका एक 'फेडरेशन' बनाने की योजना बनेगी।

दागदिरवाडे क्षेत्र की योजना के लिए धुलिया जिले की बचत कर्ज की रकम में से २७०० रु० कर्ज दिया जायेगा।

निर्माण-कार्य में खादी-ग्रामोद्योग कमीशन की ओर से १८ और गांधी स्मारक निधि की सहायता से ७ कार्यकर्ता काम कर रहे हैं।

श्री एकनाथ भगत और श्री सहदेव कामतेकर को निर्माण-समिति के सदस्य बना लिया गया।

कार्यकर्ताओं — क्लोज़-अप

ट्रेन-डकैती !

कौन जिम्मेदार ?

मैंने गत ९ अगस्त को सैदराजा से टिकट नं० ५२१४ द्वारा थर्ड क्लास में यात्रा की। उस दिन मेरे जीवन में इस तरह की डकैती को देखने का प्रथम अवसर था। सबसे पहले डकैतियों ने नीलाम की बोली बोलना प्रारंभ किया। बोली बोलने के डर लोगों से पैसा देखने लगे। जब समझ लिया, देख लिया कि इनके पास पैसे हैं, तो नीलाम का सामान तो अपने पास रखे थे ही, पैसा देखने की गरज से लोगों के इनाम बाँटे गये। वे इनाम और उनके पैसे, दोनों मार-मार कर फिर वापस लेने लगे। बहुत सोच-विचार कर डकैतों से मैंने पूछा कि भाई, जो ली बोली गयी वह सामान भी आपने रख लिया और उनके पैसे भी छीन रहे हैं, यह अच्छी बात नहीं। मेरी बात को अनसुनी कर मारपीट जारी ही रही थी कि इतने में मार खाने वाले भाइयों में से एक ने अपने लोटे से मारने वालों में से एक को लोटा मारा, तब डकैतों में से एक ने मेरी तरफ देखा और समझा कि इसी व्यक्ति के बोलने से इन सबमें हिम्मत आयी। यह समझना था कि मेरी आँख के ऊपर भी वहीं टार्च-बैटरी द्वारा मारा गया। आँख बची, पर खून की धारा बह चली। पुनः मैंने डकैतों को रोकने का प्रयत्न किया। इस बार मेरे सिर और नाक पर काफी चोट आयी। इतने में ट्रेन मोगलसराय स्टेशन पहुँची और डाकू भाग निकले।

स्टेशन पर मेरे घाव को देख भीड़ उमड़ पड़ी। एक टी० टी० भाई ने मुझे जी० आर० पी० के थानेदार के पास पहुँचाया। थानेदार अपने मुंशी को रपट लिखने को कह कर चला गया। रपट लिखने की जो समस्या थी, वह ११ अगस्त के "आज" दैनिक में छप चुकी है। रेलवे-अस्पताल में मेरा घाव नोट हुआ और वहीं भी छोड़ दी गयी। रात को मैं श्री पारसनाथ सिंह के घर पर रहा। सुबह घाव की पीड़ा में से बनारस पहुँचा। आँख के विशेषज्ञ डा० एस० नायडू मुझे अपने भाई की तरह मानते हैं। उन्होंने नाक के घाव पर टाँका लगाया और बाकी घावों पर दवा लगायी।

विनोबाजी आज १० साल से परोपकार धर्म की सीख दे रहे हैं, पर हम स्वार्थी होकर अपने शरीर को ही सब कुछ मान बैठे हैं। गाँव की डकैती गाँव के लोगों को नित्य का होती है और रेल की डकैती में नीलाम के बहाने पैसे का अन्दाजा लगाने पर वह आता है! इन दोनों तरह की डकैतियों में पुलिस का हाथ रहता है। सम्भवतः मोगलसराय रेल-डकैती की जिम्मेदारी है जी० आर० पी० मोगलसराय की है, ऐसा मुझे विश्वस्त सूत्र से मालूम हुआ। आशा और विश्वास है कि हमारी प्रदेशीय सरकार ऐसी दुर्घटनाओं के रोकने के प्रयास में अपना सक्रिय कदम उठायेगी।

जिला सर्वोदय मंडल, वाराणसी, १३-८-६१ —सरजू भाई, लोकसेवक

विनोबा-साहित्य

११ सितम्बर से २ अक्तूबर तक सर्वोदय-साहित्य और पत्र-पत्रिकाओं के ग्राहक बनाने का अभियान-क्रम चलने वाला है। उस सिलसिले में विनोबाजी की हिन्दी पुस्तकों की सूची हम यहाँ दे रहे हैं। यह साहित्य सर्व सेवा संघ प्रकाशन, राजघाट, काशी ने समय-समय पर प्रकाशित किया है।

पुस्तक-नाम	रु. न.पै.	पुस्तक-नाम	रु. न.पै.
गीता-प्रवचन १.२५, सजिल्द	१ ५०	गुरुबोध (केवल सस्ता)	१ ५०
गीता-प्रवचन (संस्कृत में)	३ ००	साहित्यिकों से (नया संस्करण)	१ ००
शिक्षण विचार	२ ५०	साहित्य का धर्म	०.५०
आत्मज्ञान और विज्ञान	१ ००	त्रिवेणी	०.५०
सर्वोदय-विचार स्वराज्य-शास्त्र	१ ००	साम्यसूत्र	०.३०
लोकनीति	२ ००	शुचिता से आत्मदर्शन	०.४०
ग्रामदान	१ ००	जय जगत्	०.५०
मोहब्बत का पैगाम	२ ५०	सर्वोदय-पात्र	०.२५
स्त्री शक्ति	१ ००	सर्वोदय के आधार	०.२५
भूदान-गंगा (छह खंड) प्रत्येक	१.५०	एक बनो और नेक बनो	०.२५
ज्ञानदेव-चिन्तनिका	१ ००	गाँव के लिए आरोग्य-योजना	०.१२
शान्ति-सेना	०.७५		
कार्यकर्ता क्या करें ?	०.७५	राम-नाम : एक चिन्तन	०.३१
कार्यकर्ता पाथेय	०.८०	अशोभनीय पोस्टर्स	०.६०

सर्व सेवा संघ की समितियों के निर्णय

पिछले अंक में सर्व सेवा संघ की प्रबन्ध समिति के कुछ निर्णय दिये थे। शेष इस अंक में दे रहे हैं। प्रकाशन-समिति और गांधी विद्या-स्थान की बैठकों की जानकारी भी अलग से दे रहे हैं।

(१) आगामी सर्वोदय-सम्मेलन मार्च अप्रैल में नहीं, बल्कि अक्टूबर १९६२ के आसपास रखा जाय, ताकि लोगों को सम्मेलन में पहुँचने में सुविधा हो।

आगामी सम्मेलन में विनोबाजी की उपस्थिति अवश्य रहे, इस सम्बन्ध में कोशिश की जा रही है।

(२) नई तालीम व्यापक कैसे होगी और उसके लिये क्या कार्यक्रम हो, इसकी चर्चा करने के लिये पूना रोड में नई तालीम-कार्यकर्ता और सर्व सेवा संघ के प्रतिनिधि की एक संयुक्त कॉन्फरेन्स यथाशीघ्र बुलाई जाय।

(३) अशोभनीय पोस्टरों के खिलाफ अभियान चलाने के लिये जो समिति नियुक्त की गयी थी, उसके संयोजक श्री दामोदरदास मूंदड़ा को महाराष्ट्र के अग्रणी महाल के कार्य का जिम्मा उठाना पड़ा, इसलिये उनके स्थान पर श्री गोकुलभाई भट्ट को उस समिति का संयोजक बनाया गया।

प्रकाशन-समिति

प्रकाशन-समिति की बैठक ७ अगस्त को हुई। उसमें १९६१-६२ के बजट और अन्य व्यवस्था सम्बन्धी विषयों के अलावा निम्न निर्णय हुए :

(१) सर्वोदय प्रचुरालयम्, तंजौर (मद्रास स्टेट) प्रकाशन की श्री एन० रामस्वामी के संयोजकत्व में ९ व्यक्तियों की नई सलाहकार समिति बनायी गयी।

(२) श्री श्रीकृष्णदत्त भट्ट को प्रकाशन-समिति का सहमंत्री और श्री जमनालाल जैन को सम्पादन-मंडल का सहसंयोजक बनाया गया।

(३) ब्रिटिश पूर्वी अफ्रीका में श्री सदाशिवराव गोडसे को सर्वोदय-साहित्य के प्रचारार्थ भेजने का तय हुआ।

(४) कानपुर में सर्वोदय-साहित्य भण्डार प्रयोग के रूप खोलने का तय हुआ।

साधना केन्द्र

साधना केन्द्र, काशी के बारे में ८-९ अगस्त की सभा में निम्न निर्णय हुए :

साधना केन्द्र में सर्व सेवा संघ का दफ्तर, शांति-सेना विद्यालय और गांधी-विद्या-स्थान (गांधियन इन्स्टिट्यूट आफ स्टडीज) आ गया है। इन सबके कार्यकर्ताओं के लिए सर्वसामान्य नियम या मर्यादाएँ क्या मानी जाय, इस सम्बन्ध में चर्चा हुई।

साधना केन्द्र की कल्पना के बारे में भी स्पष्टीकरण हुआ।

गांधी विचार के अर्थात् सर्वोदय-विचार के भिन्न भिन्न पहलुओं के अध्ययन, संशोधन और आचरण की दृष्टि रख कर काम करने वालों को एक समान उद्दिष्ट की पूर्ति में अपना योग देने वाला परिवार समझा जाय और ऐसे परिवार के लोगों की रहन-सहन आदि की भिन्नताओं के साथ एक सामूहिक जीवन का प्रयोग करने का नम्र प्रयत्न इस केन्द्र में होगा। सामूहिक जीवन जीना यही साधना केंद्र की साधना होगी।

जीवन की कितनी बातों को सामूहिक साधना में जोड़ा जाय, इस सबंध में प्रयोग करने का हर सदस्य को स्वातन्त्र्य रहेगा और अपनी-अपनी शक्ति और मर्यादा के अनुसार वह आगे बढ़ता जायगा।

गांधी-विद्या-स्थान

गांधी विद्या-स्थान की १० अगस्त को हुई सभा में निम्न निर्णय किये गये :

सर्व सेवा संघ की ओर से गांधी-विद्या-स्थान के लिये एक समिति नियुक्त की गयी है। उस समिति ने गांधी विद्या-स्थान के लिए मेमोरंडम् आफ असोसिएशन का एक मसविदा बनाया है। उसको अंतिम रूप दिया जा रहा है। ७ व्यक्तियों के मैनेजिंग बोर्ड के मातहत इस संस्था की दैनंदिन व्यवस्था रहेगी। यह संस्था स्वतंत्र रूप से रजिस्टर होगी और स्वायत्त रहेगी।

—दत्तोबा दास्ताने

खादी-ग्रामोद्योगों पर चर्चा

सर्व सेवा संघ, प्रधान केन्द्र, राजघाट, काशी में दिनांक १५-१६ अगस्त को खादी-ग्रामोद्योग-आयोग, बम्बई की ओर से रूरल इंडस्ट्रियलाइजेशन कमीशन व सघन विकास-योजना तथा खादी-ग्रामोद्योग ग्राम स्वराज्य समिति के कार्यकर्ताओं एवं कत्तिन-बुनकर और कामगारों के प्रशिक्षण सम्बन्धी बैठकें हुईं।

सर्व सेवा संघ के कार्यकर्ताओं के अतिरिक्त श्री दादा धर्माधिकारी एवं श्री धीरेन्द्र भाई तथा कमीशन की ओर से सर्वश्री अण्णासाहब सहस्रबुद्धे, झवेरभाई पटेल, के० वैद्यनाथन्, ध्वजाबाबू तथा कमीशन के चीफ एक्जीक्यूटिव आफिसर सुब्रह्मनियमजी भी उपस्थित थे।

खादी समिति की उप-समिति ने आज के खादी-उत्पादन के बदले हुए दृष्टिकोण के सन्दर्भ में कार्यकर्ताओं के उपयुक्त प्रशिक्षण की आवश्यकता के बारे में विचार करके खादी-ग्रामोद्योग ग्राम-स्वराज्य समिति की ओर से ऐसे प्रशिक्षण की व्यवस्था किये जाने के सम्बन्ध में विचार किया, जिसके अनुसार कार्यकर्ताओं को खादी के पीछे जो सामाजिक ध्येय और मूल्य निहित हैं, उनका भी स्पष्ट ज्ञान हो सके और वे उनकी महत्ता समझ सकें। साथ-साथ इसी सन्दर्भ में कत्तिन, बुनकर आदि कामगारों के भी समुचित प्रशिक्षण की योजना बनाये जाने पर विचार किया गया, जिससे खादी के कार्य को वांछित दिशा में मोड़ा जा सके।

--सतीशचन्द्र दुबे

बिहार में 'बीघे में कट्ठा अभियान'

९३९ कट्ठा का दान

मुजफ्फरपुर जिले में बीघा कट्ठा अभियान के सिलसिले में १९ जुलाई से जिले के सीतामढ़ी, रीगा, डुमरा, बथनाहा अंचल के सभी पंचायतों के १२० गाँवों में दो टोलियों द्वारा पदयात्रा की गयी। १५ अगस्त तक ८३ दानपत्रों द्वारा ९३९ कट्ठा भूमि प्राप्त हुई। इस अभियान में श्री मोतीलालजी केजरीवाल का मार्गदर्शन बीच-बीच में मिलता रहा।

१६ दाताओं द्वारा सर्वस्वदान

जिला दरभंगा सर्वोदय मंडल के तीन कार्यकर्ताओं की टोली नम्बर एक, जुलाई माह से बीघा-कट्ठा अभियान के लिये प्रचार-यात्रा कर रही है। बड़गाँव पंचायत में ५० रुपये की साहित्य बिक्री की तथा चार दाताओं से पाँच कट्ठा भूदान मिला। ग्राम पचहारा (कुढ़नी) के १६ दाताओं ने २३ बीघे ४ कट्ठा ११ धूर जमीन का सर्वस्वदान दिया और आश्वासन दिया कि ग्रामदान के लिये कोशिश करेंगे।

३७३ कट्ठा का दान

मुजफ्फरपुर जिले के पारू सैदपुर थानान्तर्गत हजपुरवा नामक ग्राम में १७ अगस्त को जिला सर्वोदय-मंडल के अध्यक्ष, श्री रामेश्वर प्रसाद साही की अध्यक्षता में भूदान की सभा हुई। उसमें खादी-ग्रामोद्योग कमीशन के सदस्य श्री ध्वजा प्रसाद साहू का बीघा-कट्ठा अभियान के बारे में भाषण हुआ। परिणामस्वरूप ३७३ कट्ठा, १३ धूर जमीन के २९ दानपत्र प्राप्त हुए।

१६५ कट्ठा जमीन प्राप्त

गया जिले के परैया थाने के १२ पंचायतों के ११५ गाँवों में १९ जून से ८ जुलाई तक भूप्राप्ति टोली ने दानपत्र मांगने का काम किया। आम सभा एवं व्यक्तिगत बातचीत द्वारा भूदान एवं ग्रामदान के उद्देश्य पर प्रकाश डालते हुए कार्यकर्ताओं ने भूमिवानों से जमीन की माँग की। चार दानपत्र द्वारा १६५ कट्ठा जमीन भूदान में प्राप्त हुई।

होशंगाबाद जिला सर्वोदय-मंडल के निर्णय

जिले में आन्दोलन को गति देने के लिये श्री हरिदास मजुल की अध्यक्षता में मण्डल की एक आवश्यक बैठक हुई, जिसमें नीचे लिखे निर्णय लिये गये :—

(१) अर्थ-संग्रह अभियान चलाया जाय। सर्वोदय में रुचि रखने वाले कार्यकर्ताओं ने १० अगस्त तक अभियान चलाने का तय किया।

(२) नगरों में लोकनीति के प्रचार हेतु इलाहाबाद से श्री सुरेशराम भाई को बुलाने का निश्चय किया गया।

(३) जिले की सिवनी मालवा तहसील के पंचों का सम्मेलन विनोबा-जयन्ती पर बुलाने का तय हुआ, ताकि पंचायतराज की सही कल्पना उन्हें दी जाये।

झांसी जिले में भूमि-प्राप्ति

झाँसी जिले में सन् '५१ से '६१ तक कुल ७४०६ एकड़ भूमि प्राप्त हुई। इसमें से ३७०९ एकड़ ७८ डिसिमल भूमि का वितरण हुआ है। सरकार द्वारा १७२९ एकड़ ३६ डिसिमल भूमि खारिज हुई। अब लगभग १९०४ एकड़ भूमि वितरित करना बाकी है।

पिछले चार माह, अप्रैल से जुलाई तक जिले में कुल ६२ एकड़ ७७ डिसिमल भूमि भूदान में प्राप्त हुई। इन्हीं महीनों में २१८ एकड़ ८४ डिसिमल भूमि वितरित की गयी।

मई माह में समथर में श्री सुरेशराम भाई के मार्गदर्शन में एक शिविर हुआ। उस अवसर ३० सर्वोदय पात्र रखे गये, जो बदस्तूर चल रहे हैं। समथर क्षेत्र में पदयात्रा हुई और १७२ रु० का साहित्य बिका। दो नये शांति-सैनिक बने।

धनबाद जिला सर्वोदय-मंडल

धनबाद जिला सर्वोदय मंडल से प्राप्त रिपोर्ट के अनुसार भूदान-किसान पुनर्वास समिति ने गोविंदपुर, तोपचांची, बाघमारा अंचल में करीब ५८४ किसानों में ३०९४ रुपये बैल, कृषि-औजार, ऋण और अनुदान के रूप में वितरित किये।

धनबाद जिले में ११ जून से ११ जुलाई तक बिहार प्रदेशीय अखण्ड पदयात्रा-टोली प्रचार करती रही। इस अवधि में १०० कट्ठा जमीन मिली। 'भूदान-यज्ञ' पत्र के २१ ग्राहक बनाये गये। यहाँ पर २०० सर्वोदय-पात्र चलते हैं, जिसका यथायोग्य विनियोग किया जा रहा है।

बामनडाडिका में एक आश्रम चल रहा है। उसमें दो कार्यकर्ता हैं। आश्रम के द्वारा ग्रामसभा बनाने का प्रयत्न चल रहा है।

तमिलनाड में बेदखली के खिलाफ किया गया प्रथम सत्याग्रह सफल

दोनों पक्षों में समझौता

तमिलनाड के बटलागुडू सर्वोदय-मण्डल के मंत्री श्री नटराजन् ने सूचित किया है कि बेदखली के विरोध में १९ अगस्त को प्रातः मदुराई से २५ मील दूर मेलूर तालुका के मुथीरुलंदीपट्टी नामक ग्रामदानी गाँव में एक किसान की बेदखली के विरोध में जो सत्याग्रह शुरू किया गया था, वह सफल हो गया है। दोनों पक्षों में समझौता हो गया है। विस्तृत समाचारों की प्रतीक्षा है।

१९ अगस्त को ५२ व्यक्ति गिरफ्तार हुए, जिनमें ५ महिलाएँ भी थीं। अगले दिन २० अगस्त को ६१ व्यक्ति पकड़े गये, जिनमें २ वृद्ध महिलाएँ भी सम्मिलित हैं। २३ अगस्त तक १८५ व्यक्ति गिरफ्तार हुए हैं। तमिलनाड सर्वोदय मण्डल कार्यालय के श्री वी. बालकृष्णन् तथा बटलागुंडू के सुप्रसिद्ध भूदानकर्मी श्री ए० कनक सभापति भी सत्याग्रहियों में से थे। श्री जगन्नाथन् तथा अन्य प्रमुख कार्यकर्ता आन्दोलन का संचालन कर रहे थे। २१ अगस्त को सत्याग्रहियों पर लाठी चार्ज किया गया।

अभी-अभी तार द्वारा सूचना मिली कि ६ दिनों के बाद सत्याग्रह सफल हो गया है।

विनोबा पदयात्रा-वृत्त

विनोबाजी की ८ अगस्त से १४ अगस्त तक की पदयात्रा इस तरह जारी रही। इस बीच कुल १६ ग्रामदान मिले।

तारीख	पडाव	ग्रामदान-प्राप्ति
८	चाचीमुख	—
९	जोरकटा	४
१०	धेनुखना	१
११	धाहीगाँव	—
१२	घुघुआ	४
१३	बरदोलनी	—
१४	नेकुरी	७

महाराष्ट्र के सर्वोदय-कार्यकर्ता श्री वसंत राव नारगोल्कर और उनकी पत्नी कुसुमताई विनोबाजी से मिलने के लिए आये थे। आप चौदह साल से महाराष्ट्र में ग्राम-निर्माण समिति के सदस्य हैं। चार दिन यात्रा में रह कर वापस बम्बई गये।

समन्वय आश्रम, बोधगया के संचालक श्री द्वारकोजी सुन्दराणी एक सप्ताह के लिए यात्रा में थे। १५ अगस्त को वापस बोधगया गये। 'ब्रह्मपुत्र' से

डिब्रुगढ़ में साहित्य-अभियान

ता० २ से ८ अगस्त तक असम के डिब्रुगढ़ शहर में सर्वोदय-मण्डल की ओर से साहित्य-सप्ताह मनाया गया। सप्ताह मनाने का उद्देश्य सर्वोदय-साहित्य और सर्वोदय-विचारों का प्रसार था। साथ साथ इसका उपयोग विनोबाजी की यहाँ की यात्रा की पूर्वतैयारी के लिए भी हुआ।

शहर में पुस्तकों के दो 'स्टाल' लगाये थे। इसके अलावा साहित्य-प्रचारकों ने घर-घर में जाकर लोगों को साहित्य और विचारों से परिचित किया। कुल साहित्य-बिक्री १७०० रु. की हुई।

इस काम में सर्वोदय-कार्यकर्ताओं के अलावा स्थानीय कालेज के ४२ भाई-बहनों ने सहयोग दिया। लोगों की ओर से भी बहुत उत्साहपूर्वक स्वागत हुआ।

—राजस्थान तालपुर संघ ने ८ अगस्त को ग्रामोद्योग प्रशिक्षण-केन्द्र, सांगानेर में ताड़ के १२७ वृक्ष लगाये।

रामदयाल और बदनसिंह मुक्त

बागी भाई श्री रामदयाल और बदन सिंह, जिन्होंने विनोबाजी को आत्म-समर्पण किया था, फतेहपुर हत्याकांड केस में अदालत से मुक्त किये गये।

भूदान-यज्ञ और बेदखली मिटाना एक ही काम है

हिन्दुस्तान में बेदखलियाँ बढ़ रही हैं। इसमें भूदान का कोई कसूर नहीं है। किन्तु लोगों के मन में डर पैदा हुआ है कि कोई कानून बनेगा, न मालूम क्या कानून बनेगा और कब बनेगा? और उसके परिणामस्वरूप बेदखलियाँ शुरू हुई हैं। भूदान-यज्ञ के लिए इसमें जिम्मेवारी आती है, क्योंकि भूदान से हम उन पर असर नहीं डाल सके। इसलिए हमने भूदान में यह कार्यक्रम मान लिया है कि जिस किसी ने दूसरे को बेदखल किया हो और परिणामस्वरूप वह भूमिहीन बन गया हो, तो हम भूमि वालों के पास पहुँचेंगे और उनसे प्रार्थना करेंगे कि आप भूदान में जमीन दीजिये, ताकि हम वह जमीन उसीको दे देंगे, जो बेदखली के कारण बे-जमीन हुआ है। इससे आपसे जो एक गलत काम हुआ, वह दुरुस्त हो जायेगा और उसके अलावा पावनता भी पैदा होगी, दान भी बनेगा। इस तरह हम लोगों को समझाते फिरते हैं, फिर भी कई जगह इसका परिणाम नहीं हुआ। तब मुझे भूमिहीनों से कहना पड़ा कि 'तुम अपनी जमीन पर डटे रहो। अगर तुम्हारा मानना सही है कि तुम उस जमीन पर दस-दस साल से काम करते हो, तो सत्य पर डटे रहो—चाहे मालिक जो भी करे।' इससे भूमिहीनों को तकलीफ हो सकती है। भूदान-यज्ञ और बेदखलियाँ मिटाना, दोनों मिला कर एक ही काम है। उसी बुनियाद पर हमें आगे काम करना है।

(ब्रह्मपुत्र, उड़ीसा, ९-५-'५५) —विनोबा

मद्यनिषेध लागू करने वाले राज्यों का घाटा पूरा किया जायगा

नयी दिल्ली २७ अगस्त : योजना-आयोग के सदस्य श्री श्रीमन्नारायण ने कल यहाँ बताया कि भारत सरकार और योजना आयोग ने राज्य-सरकारों को सूचित कर दिया है कि तृतीय पंचवर्षीय योजना में मद्यनिषेध लागू करने की स्थिति में उन्हें जो घाटा होगा, उसे पूरा किया जायगा।

प्रस्तावित अखिल भारतीय मद्यनिषेध सम्मेलन के सिलसिले में आयोजित मद्य-निषेध प्रदर्शनी का कल यहाँ शुभारम्भ करते हुए आपने कहा कि योजना आयोग ने सम्बद्ध राज्य सरकारों के पास इस आशय का पत्र भेज दिया है।

बैतूल जिले में पदयात्रा

बैतूल जिले की भैंसदेही तहसील में ९ से १५ अगस्त तक भूदान पदयात्रा हुई। पदयात्रा में ४३ एकड़ भूदान मिला। ५७ एकड़ का भूमि-वितरण किया गया। पदयात्रियों में श्री आनंदराव लोखंडे एम० एल० ए०, श्री गं० उ० पाटणकर, श्री आनेकर शास्त्री, श्री नर्मदाप्रसाद यादव, डा० श्रीधरराव मिश्र एवं जयप्रकाश सर्वोदय विद्यालय, करजगाँव के चार छात्रों ने भाग लिया। कुछ भूमिधारियों ने शराब न पीने की प्रतिज्ञा की।

रघुनाथपुर का श्रमदान

गांधी स्मारक निधि (बिहार शाखा) के ग्राम-सेवा केन्द्र, रघुनाथपुर, जि० धनबाद के कार्यकर्ताओं ने श्रमदान से केन्द्र के सामने २०१ फीट लम्बी, १० फीट चौड़ी तथा ३ फीट ऊँची सड़क का निर्माण किया।

इसी केन्द्र के प्रयत्न से ४ परिवारों द्वारा ४४ कट्ठे भूमि मिली। तीन सर्वोदय-पात्र चल रहे हैं।

इस अंक में

श्रीकृष्णदत्त भट्ट, अ० भा० सर्व सेवा संघ द्वारा भार्गव भूषण प्रेस, वाराणसी में मुद्रित और प्रकाशित। पता : राजघाट, वाराणसी-१, फोन नं० ४३९१
वार्षिक मूल्य ६) पिछले अंक की छपी प्रतियाँ ९१५० : इस अंक की छपी प्रतियाँ ९२०० एक अंक : १३ नये पैसे

संपादक : सिद्धराज ढड्ढा

वाराणसी : शुक्रवार | ८ सितम्बर '६१ | वर्ष ७ : अंक ४९

विनोबा का वाङ्मय : १

नारायण देसाई

[जिस तरह गांधीजी की तात्कालिक ख्याति आजादी की लड़ाई के सेनापति के रूप में हुई, उसी तरह विनोबा भूदान-आन्दोलन के प्रवर्तक के रूप में प्रसिद्ध हुए। पर विनोबा के सम्पर्क में जो आये हैं, वे जानते हैं कि उनकी प्रतिभा कैसी बहुमुखी है। अनेक भाषाओं के विद्वान; वेद-उपनिषद ही नहीं, लेकिन कुरान, बाइबिल आदि धर्म-ग्रंथों के गहरे अभ्यासी, करुणा से ओतप्रोत सन्त और भक्त, एक मौलिक क्रान्त-दर्शी विचारक—ये विनोबा के व्यक्तित्व के विविध पहलू हैं। एक विचारक के नाते उन्होंने बहुत लिखा है। आज तो उनके विचार अधिकतर उनके प्रवचनों में ही प्रकट होते हैं, पर एक समय था, जब वे मुख्यतः उनकी लेखनी से प्रकट होते थे। जीवन के प्रारम्भ में भावनाओं का झरना काव्य के रूप में भी प्रस्फुटित हुआ, पर वह गंगा के प्रवाह में मिल कर विराट में विलीन हो गया।

हमारे सौभाग्य से विनोबा का बहुत-सा वाङ्मय प्रकाशित और उपलब्ध है। श्री नारायण देसाई ने उसका गहरा अध्ययन किया है। विनोबा के जन्म-दिन के अवसर पर "विनोबा-वाङ्मय" की यह झांकी पाठकों के समक्ष रखते हुए हमें खुशी होती है। सर्व सेवा संघ ने विनोबा-जयन्ती से गांधी-जयन्ती तक के तीन सप्ताह की अवधि में साहित्य-प्रचार के विशेष अभियान का कार्यक्रम भी लिया है। 'शरदारम्भ में शारदा की इस उपासना' का विनोबा ने भी समर्थन किया है। इस संयोग के कारण यह लेखमाला और भी अधिक सामयिक है। यह लेखमाला मूल गुजराती में कुछ समय पहले प्रकाशित हुई थी। हिंदी पाठकों के लिए यह नयी है।—सम्पादक]

१९५२ में मैं "साम्ययोगी विनोबा" पुस्तक की तैयारी कर रहा था। विनोबा कितनी भाषाएँ जानते हैं, कितने धर्मों का अभ्यास, उन-उन धर्मों के मूल ग्रन्थों के मार्फत उन्होंने किया है, उन्होंने किस-किस प्रकार के शारीरिक परिश्रम के काम किये हैं—इसकी एक सूची बना रहा था। इन सूचियों में कोई भूल न रह जाय, इस दृष्टि से मैंने वे सूचियाँ जाँच के लिए विनोबा को ही दे दी। शरीर-परिश्रम के कामों की सूची खासी लम्बी थी। किसान, बुनकर, रंगरेज, धोबी, बढ़ई, लुहार, पत्थर तोड़ने वाले इत्यादि अनेक प्रकार के श्रम-जीवियों के साथ विनोबा अपने जीवन का तार मिला चुके थे।

यह सूची देख कर विनोबा ने कहा : "इस सूची में एक मजदूरी का उल्लेख नहीं आता।" भाषा-ज्ञान की सूची में मैंने ऐसी भाषाएँ भी शामिल की थीं, जिनका विनोबा को थोड़ा परिचय था, लेकिन पूरा ज्ञान नहीं था, इसलिए उस सूची को संक्षिप्त करने का उन्होंने प्रयत्न किया था। लेकिन वही शरस शरीर-परिश्रम की सूची को बढ़ाने के लिए कह रहा है, इससे मुझे आश्चर्य हुआ। मैंने पूछा : कौन-सा काम बाकी रह गया? विनोबा ने गम्भीरता से कहा : "मैंने लिखने की मजदूरी की है, वह तुमने सूची में कैसे नहीं लिखी?" मुझे लगा कि विनोबा विनोद कर रहे हैं। पर विनोद करते समय उनके चेहरे पर जिस प्रकार की रेखाएँ प्रकट होती हैं, वह इस समय नहीं थी।

विनोबा शतायु हों

मैंने पूछा : "लिखना भी क्या मजदूरी कही जा सकती है?" "जिससे हाथ में आटन पड़ जाय, वह काम शरीर-परिश्रम का गिना जायगा या नहीं?"—विनोबा ने पूछा। "जी हाँ, वह तो जरूर गिना जायगा!" "तो देखो, मेरी ये अंगुलियाँ! इनमें आटन पड़ गयी हैं और उंगुलियों के अग्र भाग थोड़े सख्त हो गये हैं। आज से ३६ वर्ष पहले मैंने जो लिखा, उसके कारण ही ऐसा हुआ है। बोलो, इसको मजदूरी कहोगे या नहीं?"

"आज से ३६ वर्ष पहले!" विनोबा के जीवन-चरित्रकार की हैसियत से मुझे इस बात में ज्यादा दिलचस्पी थी। "उस समय आपको ऐसा क्या लिखने का था?"

"उस समय मैं कविता लिखता था। कविता लिख लिख करके ही मेरे आटन पड़े हैं!"—विनोबा हँस कर बोले।

इतने काव्य! और दुनिया उनसे परिचित नहीं है। ये कविताएँ मिल जायँ तब तो एक बहुत बड़ा काम हो जाय। मैंने पूछा : "ये कविताएँ आज कहाँ होंगी?"

"ये काव्य मैंने काशी में गंगा के किनारे लिखे थे। इनमें से जिनके बारे में मुझे समाधान नहीं था, वे तो मैंने अग्नि के समर्पण किये और जिनके बारे समाधान था, वे गंगाजी के।"

मैं चकित होकर सुनता रहा। ये काव्य प्रसिद्धि के लिए नहीं लिखे गए थे, प्रशस्ति के लिए भी नहीं लिखे गये थे। पाठ के लिए भी नहीं लिखे गये थे।

गीता का अनुवाद करने के लिए माता रुक्मिणीबाई ने कहा था, उसके अभ्यास के तौर पर एक ओर तो गीता को जीवन में उतारने का प्रयास शुरू किया और दूसरी ओर व्याकरण, काव्य, शास्त्र इत्यादि का अभ्यास। ये काव्य तो "स्वान्तः सुखाय" लिखे गये थे। स्वाध्याय के लिए लिखे गये थे। विनोबा के लिए साहित्य मनोरंजन या शौक का विषय नहीं है, जीवन-साधना का एक साधन है। इसीलिए तो जैसा गीता में कहा है :

अनुद्वेगकरं वाक्यं सत्यं
प्रियहितं च यत् ।
स्वाध्यायाभ्यसनं चैव वाङ्मयं
तप उच्यते ॥
[गीता : १७-१५]

विनोबा की संपूर्ण साहित्य-साधना एक वाङ्मय-तप ही बनी है।

अपना पुत्र श्रीमद्भगवद्गीता का मराठी अनुवाद करे, ऐसी माता की इच्छा उनकी मृत्यु के बाद पूरी हुई। इस अनुवाद को विनोबा ने नाम दिया "गीताई", और उसकी प्रस्तावना एक अनुष्टुप में की :

"गीताई माऊली माझी
मी तिचा बाळ नेणता,

पढ़ता रहता घंटे
'उपल्लन फडेवरी।''

विनोबा मानते हैं कि ईश्वर ने उनके पास से दूसरी सेवा नहीं कराई होती और "गीताई" ही लिखाई होती तो भी वे अपने को कृतकृत्य मानते। मराठी और संस्कृत भाषा के विशेषज्ञ "गीताई" के साहित्यिक गुणों पर मुग्ध हैं। उत्तर भारत की अधिकांश भाषाओं में गीता के समश्लोकी अनुवाद हुए हैं। पर "गीताई" में जो ओज है, सरलता और शुद्धता का जो मेल है, वैसा दूसरे किसी भाषान्तर में नहीं देखा। मराठी भाषियों में उसकी लोकप्रियता भी असाधारण है। अब तक "गीताई" की चार लाख से ऊपर प्रतियाँ खप चुकी हैं।

नोआखाली में पदयात्रा करते समय गांधीजी के पास से किसी अमेरिकन पत्रकार ने संदेश माँगा। ७९ वर्ष की उम्र में विद्यार्थी के रूप में गांधीजी उस समय बंगाली भाषा सीखते थे। उन्होंने बंगाली में लिखकर संदेश दिया :

'आमार जीवन इ आमार वाणी।'

विनोबा को भी यह वाक्य अक्षरशः लागू पड़ता है। उनका जीवन ही उनकी वाणी है, और उनकी वाणी से उनका जीवन ही टपकता है।

इस वाङ्मयी तापस की आरम्भ की तपस्या कठोर थी। दिन के हर क्षण का निश्चित हिसाब, पसीने से सराबोर हो जाय, इतना परिश्रम, दुर्गम ज्ञानियों को भी मात करे, ऐसी अभ्यास की गहराई; ये उनकी आरम्भिक तपस्या के लक्षण थे। उनके आरम्भ-काल के साहित्य में भी यह तेजस्विता थी और साथ-साथ थोड़ी कठोरता की झलक मिलती है। महाराष्ट्र के प्रसिद्ध कवि बा० भ० बोरकर के शब्दों में कहूँ तो

उनकी भाषा में मिठास थी, लेकिन
यह मिठास मिश्री जैसी सख्त थी।
जीवन के प्रौढ़-काल में यह मिठास
अंगूर की तरह रसाल बन गयी।

२२ वर्ष की उम्र में लिखी हुई "उपनिषदों का अभ्यास" पुस्तक की शैली अगर हम देखें तो इस बात का खयाल हमको आयेगा। उसमें प्रवाह है, तेज है, लेकिन लम्बे लम्बे वाक्यों से शैली जटिल बन गयी है। नमूने के तौर पर एक ही वाक्य लीजिए।

"सूर्य-बिम्ब को चूमने के लिए आकाश में ऊँचे उड़नेवाले वर्ड्स्वर्थ कवि के चण्डूल पक्षी के पाँव को घोंसले की तरफ खींच कर जो प्रेमल करुणा व स्वर्ग को पृथ्वी के साथ मिला देती है, क्रौंच पक्षी के वध से जिसका हृदय आर्द्र हुआ है, ऐसे करुण कवि के पवित्र शोक से श्लोक बदल कर जो प्रेमल करुणा भूतकाल को भविष्य काल के साथ जोड़ देती है, साड़ी के रूप में द्रौपदी की लाज रखकर जो प्रेमल करुणा जड़ को चेतन के साथ बाँधती है; जो सार्वभौम अहिंसा मनुष्य का पशु-सृष्टि के साथ संयोग करने के लिए ब्रह्मध्यान से योग-निद्रा में सोये हुए भर्तृहरि के शरीर पर वृद्ध हिरण द्वारा सींग घुमाती है; 'तुका म्हणे जें भेटे। तें तें वाटे मी ऐसें'—यानी मैं जो-जो मिलता है, वह-वह मेरे जैसा ही दिखता है, ऐसी वृत्ति से विचरनेवाले तुकाराम के कंधे पर पक्षियों को खिलाती है; असीसी के सन्त फ्रान्सिस की निर्वैर गोद में साँपों को सुलाती है; जो विश्व रूप आकर्षण शक्ति विश्व को एकत्र करने के लिए सब वस्तुओं को वजनदार बनाकर आकाश के अनन्त प्रांगण में चन्द्रमा को पृथ्वी के चारों ओर पृथ्वी को सूर्य के चारों ओर और सूर्य को ध्रुव के चारों ओर और ध्रुव को भी कदाचित किसी और के किसी के चारों ओर घुमाती है; चन्द्र-दर्शन से समुद्र के ज्वार की लहरें उठाता है, लोहे को चुम्बक के साथ मिलाता है। जो अमर आशा मृत्यु को जीवन के साथ जोड़ने के लिए तपस्वी पुरुषों के शरीर को चन्दन की तरह घिसती है, सती को पति के साथ चिता पर चढ़ने के लिए प्रेरित करती है। राष्ट्र-वीर को रणांगण से भागने नहीं देती, जो आध्यात्मिक ज्ञान वत्सलता प्रसन्नित ऋषि के मुँह से 'नैतान् विहाय कृपणान् विमुमुक्ष एकः'—इन पदयात्रा जीवों को छोड़ कर अकेले मोक्ष की इच्छा नहीं रखता—ऐसे परार्थ निष्ठा के स्नेह मधुर उद्गार निकलवा कर उपनिषद आदि दिव्य सारस्वत के रूप में हमारे उद्धार के लिए अवतार लेती हैं।—वही है वैदिकों के त्रिकाल स्मरण की पात्र बनी हुई, हृदया सुशती, सर्वदेवतामयी, विविध नाम-रूप की वेश-भूषा से सजा, शान्तिरूपिणी, और इसीलिए हिमवान की (अर्थात् शीतल निश्चय की) कन्या मानी जाने वाली देवी उमा अथवा अदिति।"

महाराष्ट्र के एक प्रखर पण्डित ने "उपनिषदों का अभ्यास" पढ़ने के बाद विनोबाजी को इस आशय का एक पत्र लिखा कि गत तीस वर्ष में उपनिषद् के संबंध में प्रकाशित हुए लगभग सभी ग्रन्थ मैंने पढ़े हैं, लेकिन इसकी जितनी गहराई मैंने कहीं भी नहीं देखी।

"उपनिषदों का अभ्यास", "महाराष्ट्र धर्म" नाम के पत्र में हर पखवाड़े प्रकट हुआ है। इस पत्र का सम्पादन विनोबाजी करते थे और लगभग अकेले ही पहले साप्ताहिक और पीछे मासिक रूप में वे "महाराष्ट्र धर्म" चलाते थे। मुख्य रूप में इस काल के उनके लेखों और उसके बाद के थोड़े से और लेखों का संग्रह "मधुकर" नाम से पुस्तक रूप में प्रकट हुआ है। आज "भूदान-यज्ञ" में परिपक्व फल के रूप में जो विचार प्रकट हुए हैं, उनमें से बहुतों की जड़ बारीकी से देखने वाले किसी भी पाठक को इस पुस्तक में मिल जायगी। दान और त्याग की मीमांसा, खादी के अर्थशास्त्र आदि का विश्लेषण विनोबा ने तब भी विशद रूप में किया है। सर्वोदय-विचार के कुछ अंश में शुष्क कहे जा सकने वाले विषयों का निरूपण जितनी सरलता से इस पुस्तक में किया है, वैसा पहले शायद दूसरे किसी ने नहीं किया होगा। काकासाहब, महादेवभाई, नरहरिभाई इत्यादि स्वतंत्र साहित्य-रसिक लोग गांधी सम्प्रदाय में थे।

परन्तु ललितेतर वाङ्मय को इतना ललित बनाने की परम्परा विनोबा ने ही डाली, ऐसा कहा जा सकता है। "मधुकर" के हर पृष्ठ पर छोटे-छोटे प्रसंग, मार्मिक कटाक्ष और उच्च हास्यरस तथा कोई भी कवि जिसमें गौरव मान सके, ऐसी उपमाएँ देखने को मिलती हैं। किशोरों का सर्वोदय-विचार में, बल्कि किसी भी प्रकार के शिष्ट साहित्य में प्रवेश कराना हो तो प्रवेश-पुस्तक के तौर पर काम दे सके, ऐसी पुस्तक "मधुकर" है।

'दादा'* के कुछ संस्मरण

• बालकोबा

[विनोबाजी के जीवन के बारे में जो साहित्य मिलता है, वह अधिकतर गांधीजी के आश्रम में आने के बाद का ही है, उनके बचपन और आश्रम में आने के पहले के जीवन के बारे में जानकारी बहुत कम है। हमें खुशी है कि इस बार हम विनोबाजी के छोटे भाई श्री बालकोबाजी द्वारा लिखित दो संस्मरण दे रहे हैं, जो उन्होंने हमारी प्रार्थना पर विशेष रूप से भिजवाये हैं —संपादक]

बचपन में अपनी अवस्था के अठारहवें वर्ष में विनोबा आजकल की तरह चन्द्रमा के समान शीतल नहीं वरन् सूर्य के समान बहुत प्रखर थे। घर पर उनका प्रायः सब से मौन था। बड़ों के साथ बोलते मैंने कभी नहीं देखा। केवल माता से वे बोलते थे। उनके चित्त में माता के प्रति बहुत आकर्षण था। बचपन से मौन उनका स्वभाव है। माता उन्हें 'विन्या' कह-कर बुलाती और हम उन्हें 'दादा' कहते थे। माता के चित्त में भी उनके विषय बहुत आदर था।

विनोबाजी रात्रि को घर प्रायः देरी से आते। बड़े लोग भी रात को देरी से आते। इसलिए उनके आग्रह के कारण माँ उनकी थाली तैयार रखती थी। परंतु विनोबाजी के देरी से आने के कारण माँ उनकी राह देखती हुई बैठी रहने लगी; क्योंकि दोनों की थाली तैयार रखना अशक्य था। हम सब लोग जल्दी भोजन कर लेते थे। माता के मुँह से उद्गार निकलते-"विन्या अभी तक आया नहीं।"

विनोबाजी के आते ही माता बड़े आदर से उनकी थाली लगाकर उनके सामने रखती। उनके देरी से आने के कारण राह देखते हुए बैठे रहना माता के लिए कुछ तकलीफ देह था। पर माता ने इसके लिए उन्हें कभी कुछ कहा हो, ऐसा मुझे स्मरण नहीं। मैंने माता से केवल इतना ही कहा कि तुझे यदि तकलीफ होती है तो दादा को जल्दी खाना खाने आने के लिए क्यों नहीं कहती? परन्तु माता के चित्त में उनके विषय में जो प्रगाढ़ आदर भाव था, उसके कारण माता द्वारा दादा को जल्दी भोजन करने आने के लिए कभी कुछ कहा हो, ऐसा मुझे स्मरण नहीं।

× × ×

इंटर की परीक्षा के लिए बम्बई जाने के लिए दादा निकले पर बम्बई न जाकर रास्ते में सूरत से गाड़ी बदल कर काशी गये। पत्र लिखकर घर समाचार नहीं देने के कारण माता को उनकी चिंता होने लगी। पर घर के सब बड़े लोग शांत थे। उनके मन विचलित नहीं हुए। माता को वे इस प्रकार समझाने लगे—'हम, यदि ऐसा मानने लग जायें कि हमारा वह लड़का नहीं था तो हमें दुःख का अनुभव नहीं होगा।' बाद में उनके काशी जाने के समाचार मिले और कुछ महीनों बाद अहमदाबाद के कोचरब आश्रम में प्रविष्ट होने की खबर भी मिली। दादा के घर छोड़ने के बाद मेरे मन में गड़बड़ी शुरू हुई कि अब मेरा क्या कर्तव्य है? दादा के घर छोड़ने के बाद हमें घर क्यों रहना चाहिए? इत्यादि विचार आने लगे। अंत में मैंने घर छोड़कर आश्रम में जाने का निश्चय किया। एक मित्र से बड़ौदा से अहमदाबाद तक गाड़ी किराये के लिए एक रुपया लिया एक दिन घर पर किसी से कहे बिना सायंकाल के समय घर से दौड़ता-दौड़ता स्टेशन गया। अहमदाबाद स्टेशन पर रात्रि को बारह बजे पहुँचा। मेरी अवस्था उस समय १७ वर्ष की थी। रात को एक चबूतरे पर सोया और प्रातःकाल छह बजे कोचरब आश्रम की राह पूछता-पूछता चलने लगा। आश्रम में पहुँचते ही सर्व प्रथम इमाम साहब से भेंट हुई। उन्हें ही गांधीजी समझ कर साष्टांग नमस्कार किया। विनोबाजी के बारे पूछताछ करने पर पता चला

---

* श्री बालकोबाजी बचपन में विनोबा को दादा कहते थे,

ब्रह्म सत्यं जगत् स्फूर्तिः जीवनं सत्यशोधनम्

भूदानयज्ञ

लोकनागरी लिपि*

शांती की मूर्ती स्त्री

यह सच है की शांती की मूर्ती गढ़ी नहीं जा सकती। लेकीन मान लें की असे गढ़ना ही हो, तो वह स्त्री की मूर्ती ही हो सकती है। काम, क्रोध, मद, मत्सर आदी वीकार जैसे पुरुषों में होते हैं, वैसे स्त्रीयों में भी हो सकते हैं। अीन बातों में कोअी अेक-दूसरे से नीचा-ऊंचा हो, अैसी बात नहीं। ममता, प्रेम आदी गुण स्त्रीयों में भी है और पुरुषों में भी। फीर भी शांती की मूर्ती स्त्री ही हो सकती है, क्योंकी वह मातृ-स्थान है। वह सारे समाज की तारीणी शक्ती है। जो तारीणी शक्ती होगी, वही शांती की मूर्ती हो सकती है। आज सारी दुनीया की स्थीती बड़ी ही भयानक है। अीससे बचने का अुपाय मुझे अेक ही दीख रहा है और वह है स्त्री शक्ती आगे आये और समाज को बचाये। आजकल पुरुष अपनी सामाजीक और जागतीक वीकलता में समानता के नाम पर स्त्रीयों को हीस्सा बांटते हैं। और दीनों कहा जाता है की स्त्रीयों को समानाधीकार चाहीये तदनुसार अुनकी पलटनें भी बनायी जाती हैं। अीस तरह स्त्रीयां पुरुषों की बराबरी करें, यह सर्वथा अयोग्य है। अीतना ही नहीं, पुरुषों को गलत काम से पीछे खींचना ही स्त्रीयों का काम है। अीसलीये अपने नैतीक बल का अुपयोग कर समाज में शांती स्थापीत करने की हीम्मत स्त्रीयों को करनी चाहीये।

—वीनोबा

*लिपि-संकेत : ि = ी ; े = ै ; ठ = छ, संयुक्ताक्षर हलंत चिह्न से।

संपादक की ओर से

सार्वजनिक जीवन के लिये शुभ लक्षण

पिछले दिनों कई प्रांतों में राजनैतिक पार्टियों के प्रतिनिधियों ने साथ कर चुनाव-प्रचार के सिलसिले में जो मर्यादाएँ मान्य करने का तय किया है, यह देश के सार्वजनिक जीवन के भविष्य के लिए एक शुभ लक्षण है। हिन्दुस्तान की आजादी और यहाँ जनतंत्र की स्थापना दुनिया के इतिहास की एक महत्वपूर्ण घटना है। सही जनतंत्र तो तभी होगा, जब प्रतिनिधियों के जरिए नहीं, बल्कि जनता स्वयं अपना कामकाज सीधे अपने हाथ में लेगी। आज तो संसदीय या प्रातिनिधिक जनतंत्र हमने स्वीकार कर रखा है। इस प्रणाली में भिन्न-भिन्न राजनैतिक दलों का अस्तित्व और नीचे से ऊपर तक भिन्न-भिन्न स्तरों पर प्रतिनिधियों का चुनाव, ये बातें मुख्य हैं। चुनावों में लोगों का मत हासिल करके सत्ता प्राप्त की जा सकती है और इसलिए पार्टियों के बीच मत प्राप्त करने की परस्पर होड़ लगी रहती है। यों तो हर समय ही लोकमत को अपनी ओर आकर्षित करने का कार्यक्रम पार्टियों का चलता रहता है, पर चुनावों के समय यह होड़ बहुत तीव्र हो जाती है। ऐसे समय राजनीति में काम करने वालों पर एक तरह का जनून सवार हो जाता है। चुनावों में जीतना, यह एकमात्र उद्देश्य बन जाता है—साधन कौन-से इस्तेमाल करने कौन से न करने, यह प्रश्न प्रायः ओझल हो जाता है।

पिछले १०-१५ वर्षों में इस प्रक्रिया का जो अनुभव हुआ है, वह बहुत अच्छा नहीं है। इंग्लैंड आदि देशों की तरह प्रातिनिधिक जनतंत्र या चुनाव हमारे देश की भूमि में से पैदा नहीं हुए। ये बातें अपने सार्वजनिक जीवन में हमने ऊपर से दाखिल की हैं। अतः लम्बे काल के प्रयोग से स्थिर हुई स्वस्थ परम्परा के अभाव में इन चीजों ने हमारे सार्वजनिक जीवन को काफी दूषित किया है। चुनाव के समय जो हथकण्डे काम में लिये जाते हैं, उनसे संजीदा और सज्जन लोग ही नहीं, बल्कि आम जनता भी ऊबने-सी लगी है, यहाँ तक कि स्वयं जनतंत्र के प्रति भी लोगों की आस्था डगमगाने लगी है। इस प्रकार जनतंत्र के लिये एक खतरा पैदा हो गया है।

सर्व सेवा संघ ने आज से दो वर्ष पहले इस खतरे की ओर देश का ध्यान आकर्षित किया था और राजनैतिक पार्टियों से निवेदन किया था कि वे सब मिलकर अपने व्यवहार के लिए ऐसी कुछ मर्यादाएँ तय कर लें, जिससे सार्वजनिक जीवन नीचा न गिरे, गुण्डागीरी में परिवर्तित न हो जाय।

आगामी चुनाव के सिलसिले में सर्व सेवा संघ ने पिछले सर्वोदय सम्मेलन के अवसर पर फिर देश का और राजनैतिक पार्टियों का ध्यान इस ओर आकर्षित किया और यह सुझाया कि कम-से-कम चुनावों के अवसर के लिये जब कि सत्ता-प्राप्ति की होड़ के कारण साधनों की मर्यादा और भी ढीली हो जाती है, राजनैतिक पार्टियाँ मिलकर कुछ मर्यादाएँ तय कर लें। लगभग तीन महीने हुए महाराष्ट्र ने इस काम में पहल की। वहाँ की प्रसिद्ध विद्वद्-संस्था "गोखले इन्स्टीट्यूट ऑफ इकोनोमिक्स एण्ड पालिटिक्स" तथा "समाज प्रबोधन संस्था" के सम्मिलित निमंत्रण पर सभी राजनैतिक पार्टियों के प्रमुख नेता दो दिन तक एक परिसंवाद में मिले और चर्चाओं के बाद उन्होंने सर्वसम्मति से एक आचार-संहिता तय की ("भूदानयज्ञ" १० जून, १९६१, पृष्ठ २)। इसके बाद गुजरात सर्वोदय मण्डल ने उस प्रान्त में इस विषय की चर्चा आयोजित की और चुनावों के सन्दर्भ में कुछ मर्यादाएँ तथा नियम जनता व राजनैतिक पार्टियों के सामने पेश किये। उत्तर प्रदेश में भी सर्वोदय-कार्यकर्ताओं तथा वहाँ की विधान सभा के अध्यक्ष के प्रयत्नों से एक परिसंवाद हुआ जिसमें विभिन्न पक्षों के प्रमुख लोग सम्मिलित हुए और उन्होंने कुछ मर्यादाएँ सर्वसम्मति से तय कीं। इसी प्रकार राजस्थान में भी वहाँ की प्रांतीय सर्वोदय संस्था, राजस्थान समग्र सेवा संघ के प्रयत्न से सब राजनैतिक पक्षों के प्रतिनिधियों ने मिलकर आचार मर्यादा का मसविदा तैयार किया है, जिस पर इस महीने के अन्त में फिर विचार होकर निर्णय होगा। प्रांतीय स्तर के अलावा जिला तथा स्थानीय स्तरों पर भी जगह-जगह इस सिलसिले में प्रयत्न शुरू हुए हैं। यह खुशी की बात है कि इन सभी जगहों में कांग्रेस, प्रजा-समाजवादी पार्टी, कम्यूनिस्ट, जनसंघ आदि अखिलभारतीय पार्टियों के नेता तथा मुख्य-मुख्य स्थानीय पार्टियाँ, सभी चर्चाओं में शामिल हुई हैं और जो निर्णय हुए हैं वे सबकी स्वीकृति से हुए हैं।

भिन्न-भिन्न प्रांतों में अब तक इस विषय पर जो चर्चाएँ हुई हैं, उनमें कुछ खास-खास बातें सभी जगह स्वीकृत हुई हैं, या सुझायी गयी हैं। चुनाव प्रचार के सिलसिले में असत्य या मिथ्या प्रचार न हो, दूसरे पक्ष के नेताओं या कार्यकर्ताओं की व्यक्तिगत टीका टिप्पणी न की जाय; प्रचार इस प्रकार से न हो कि जाति जाति या धर्म धर्म के बीच द्वेष या कटुता बढ़े; एक पक्ष दूसरे पक्ष की सभाओं, जुलूस आदि में बाधा न डालें या उनमें गड़बड़ी पैदा न करें; राजनैतिक सत्ता का उपयोग अपने पक्ष वालों के स्वार्थ या अन्य पक्षों को हानि पहुँचाने में न किया जाय—इत्यादि बातें करीब करीब सभी जगह स्वीकृत हुई हैं। एक और महत्व की बात, जो करीब करीब सभी जगह मान्य हुई है; वह यह है कि किसी व्यक्ति को अगर एक पक्ष द्वारा चुनाव के लिए उम्मीदवारी का टिकिट देने से इनकार कर दिया जाय तो उस व्यक्ति को उसी चुनाव के लिए दूसरे राजनैतिक पक्ष अपना 'टिकिट' न दें। इसी प्रकार चुनाव के बाद कोई व्यक्ति अपने पक्ष को छोड़कर दूसरे पक्ष में शामिल होना चाहे तो, जिस स्थान के लिए वह चुना गया है, उससे त्याग-पत्र दिए बिना दूसरे पक्ष उसे अपने में प्रवेश न दें। राजनैतिक क्षेत्र में बढ़ती जा रही अवसरवादिता की प्रवृत्ति पर, जिसके कारण सार्वजनिक जीवन का स्तर आज काफी गिर रहा है और हास्यास्पद भी हो रहा है, इस मर्यादा से निश्चय ही रोक लगेगी।

सर्व सेवा संघ ने अपने प्रस्ताव में चुनावों से सम्बंधित कुछ और ऐसे महत्व के मुद्दे सुझाए थे, जिन पर राजनैतिक पक्षों को गम्भीरता से विचार करना चाहिए। उदाहरण के लिये, चुनाव के प्रचार में विद्यार्थियों तथा छोटे बच्चों का उपयोग न हो, चुनावों में उत्तरोत्तर बढ़ते जा रहे खर्च पर नियंत्रण हो इत्यादि। चुनाव प्रचार में मुख्य उद्देश्य जनता के शिक्षण का होना चाहिए, न कि जनता की नजरों में एक-दूसरे पक्ष को और उनके कार्यकर्ताओं को गिराने का। इस उद्देश्य से सर्व सेवा संघ ने यह भी सुझाया था कि चुनावों के समय गांव-गांव में या मुहल्लों में एक सम्मिलित सभा आयोजित की जाय और उस एक ही सभा में एक ही मंच से सब पक्ष अपनी-अपनी बात जनता के सामने रख दें। ऐसी सभाएँ पक्षों की ओर से न होकर स्वयं जनता की ओर से या स्थानीय सार्वजनिक संस्थाओं की ओर से आयोजित की जा सकती हैं। इस प्रकार की सम्मिलित सभाओं से चुनाव का खर्च कम होगा और प्रचार का स्तर उन्नत रहेगा।

विभिन्न प्रान्तों में चुनाव संबंधी आचार-मर्यादा के प्रश्न पर जो चर्चाएँ अब तक आयोजित हुई हैं, उनमें एक महत्त्व का प्रश्न यह उठाया गया है कि इस प्रकार की आचार-संहिता मान्य करने के बाद भी अगर कोई पक्ष या व्यक्ति उसका उल्लंघन करता है, तो उसका प्रतिकार क्या हो। कुछ जगह चर्चाओं में यह सुझाया गया है कि एक कोई निष्पक्ष समिति हो जो इस बात का ध्यान रखे कि सब

पक्ष स्वीकृत मर्यादाओं का पालन करते हैं या नहीं। यह जाहिर है कि इस प्रकार की स्वीकृत मर्यादाओं का पालन स्वेच्छा से ही हो सकता है। एकबार जब आपस में चर्चा करके सब राजनीतिक पक्ष किन्हीं बातों पर सर्व-सम्मत हो जाते हैं तब फिर उन बातों का पालन स्वेच्छा से करना मुश्किल नहीं होना चाहिए। यह सही है कि चुनाव के दौरान में, और जीतने की धुन में, ऐसे कई प्रसंग आते हैं जब इन मर्यादाओं के उल्लंघन का प्रलोभन स्वाभाविक ही उनके सामने खड़ा हो जाता है, पर 'बाहरी' कोई भी समिति या व्यक्ति ऐसे समय ऊपर के नियंत्रण से इन मर्यादाओं का पालन नहीं करा सकता। अन्ततोगत्वा जाग्रत जनमत ही सार्वजनिक जीवन की मर्यादाओं के पालन का आधार हो सकता है। अतः आचार-मर्यादा स्वीकार करने के साथ-साथ सब राजनैतिक पक्षों का और सार्वजनिक क्षेत्र में काम करने वाले अन्य सब लोगों का जिनमें सर्वोदय कार्यकर्ता शामिल हैं यह कर्तव्य है कि वे इन स्वीकृत मर्यादाओं और नियमों का अधिक से अधिक व्यापक प्रचार करें और जनमत को उसके पक्ष में जाग्रत करें ताकि देश में ऐसा वातावरण निर्माण हो, जिससे उन मर्यादाओं का उल्लंघन करने और सार्वजनिक जीवन के स्तर को नीचे गिराने की कोई हिम्मत न कर सके।

पंचायतीराज

चार बरस पहले, सितम्बर १९५७ में येलवाल की सर्वदलीय परिषद में एकत्र हुए लोगों ने एकमत से यह सुझाया था कि सामुदायिक विकास-आन्दोलन और ग्रामदान-आन्दोलन में सहयोग होना चाहिए। इस सिफारिश के आधार पर भारत-सरकार और सर्व सेवा संघ के प्रतिनिधियों में चर्चा होकर इस सहयोग के उद्देश्य और कार्यक्रम के बारे में कुछ बातें तय हुई थीं। ता० २३ अगस्त को दिल्ली में फिर से सर्व सेवा संघ के प्रतिनिधियों और विकास मंत्रालय के प्रतिनिधियों की एक बैठक हुई। सर्व सेवा संघ की ओर से इस बैठक में जयप्रकाश नारायण, शंकरराव देव, अण्णासाहब सहस्रबुद्धे, गोकुलभाई भट्ट आदि उपस्थित थे।

येलवाल की सिफारिश के अनुसार विकास-आन्दोलन और ग्रामदान-आंदोलन का परस्पर सहयोग ग्रामदानी क्षेत्रों तक सीमित था। पर इस बीच पंचायतीराज का जो नया प्रयोग शुरू किया गया है, उसके सन्दर्भ में इस सहयोग का क्षेत्र करीब-करीब समूचे ग्रामीण भारत तक फैल जाता है, इस बात की ओर संकेत करते हुए श्री डे ने सर्व सेवा संघ से पंचायतीराज के प्रयोग को सफल बनाने में योग देने की अपील की। विकास योजना के उद्देश्य और सहयोग के कार्यक्रम के बारे में पहले दोनों ओर से जो तत्त्व स्वीकार किये गये थे, उनकी फिर से पुष्टि करते हुए, सभा में यह सर्वसम्मत राय रही कि पंचायतीराज के सन्दर्भ में लोक-शिक्षण का कार्यक्रम सर्व सेवा संघ के अपने उद्देश्य की दृष्टि से भी महत्त्वपूर्ण है। सर्व सेवा संघ के प्रतिनिधियों ने इस बात की ओर ध्यान आकर्षित किया कि

> **न सिर्फ पंचायतीराज की अपनी सार्थकता के लिए, बल्कि लोगों में उसके लिये उत्साह पैदा करने के लिए भी यह जरूरी है कि सामाजिक न्याय, खास करके आजीविका के लिए पर्याप्त काम मिलने का व्यक्ति का जो मौलिक हक है, ऐसी बुनियादी बातों की पूर्ति होना आवश्यक है।**

कुछ प्रान्तों में जमीन के लगान की आमदनी पंचायतों को सुपुर्द करने का तय किया जा चुका है। सभा में इस बात पर जोर दिया गया कि लगान की आमदनी पूरी की पूरी पंचायतों को सौंप देने की कार्रवाई सब प्रान्तों में यथाशीघ्र हो जानी चाहिए। सभा ने इस सिफारिश को भी दुहराया कि कम सम्पन्न क्षेत्रों को मदद पहुँचाने के लिए हर प्रान्त में लगान का थोड़ा हिस्सा एक 'सन्तुलन फण्ड' में जमा किया जाय।

सर्व सेवा संघ की ओर से यह भी सुझाया गया कि विकास-विभाग के प्रयोग-क्षेत्रों के अलावा ग्रामदानी क्षेत्रों में, सहकारी कृषि-समितियों को आर्थिक मदद पहुँचाने के लिए केन्द्रीय सरकार की ओर से एक विशेष निधि स्थापित की जानी चाहिए।

कुछ राज्यों में पंचायतीराज का अब तक का जो अनुभव आया है, उससे यह जाहिर होता है कि पंचायतीराज की सफलता के लिए आम लोगों का, पंचायतों आदि में उनके प्रतिनिधियों का और सरकारी कर्मचारियों का पंचायतीराज के उद्देश्य और हर वर्ग के अपने-अपने कर्तव्य तथा अधिकार आदि के बारे में शिक्षण का कार्यक्रम बहुत आवश्यक है। लोक-शिक्षण के इस कार्यक्रम के महत्त्व पर जोर देते हुए विकास-मंत्री, श्री डे ने सर्व सेवा संघ से इस काम में अपनी शक्ति लगाने और सहयोग देने का निवेदन किया। जिस प्रकार आज के देहात बड़े-बड़े शहरों की शोषित बस्तियाँ बन गये हैं, उसी प्रकार पंचायतीराज के कार्यक्रम ने गाँवों के अन्दर ही जो शोषित बस्तियाँ या वर्ग हैं, उनकी ओर ध्यान आकर्षित करने में मदद की है। दूसरे शब्दों में, पंचायतीराज ने अन्त्योदय के कार्यक्रम के महत्त्व को स्पष्ट कर दिया है। श्री डे ने यह भी स्वीकार किया कि सहयोगी समाज की स्थापना के बिना और उद्योगों के विकेन्द्रीकरण के बिना पंचायतीराज निरर्थक है, तथा सहकारी खेती और ग्रामोद्योगों के विकास के आधार पर कृषि-ग्रामोद्योगप्रधान रचना के प्रयोग के लिए ग्रामदानी क्षेत्र अधिक उपयुक्त हैं।

सर्व सेवा संघ का और सर्वोदय-कार्यकर्ताओं का मुख्य उद्देश्य यह है कि लोगों की अपनी शक्ति जागृत हो और उनकी इस जागृत शक्ति के बल पर वे अपना सारा काम-काज स्वयं उठा लें, अर्थात् लोक-स्वराज्य की स्थापना हो। यह विकास भी नीचे से हो, तभी सच्चा लोक-स्वराज्य होगा। पंचायतीराज की शुरुआत चाहे सरकार ने की हो, पर इस प्रकार नीचे से लोक-स्वराज्य की स्थापना होने की यह प्रारम्भिक सीढ़ी है। पंचायतीराज लोकराज में परिणत हो, इस काम में सर्वोदय-कार्यकर्ताओं को पूरी शक्ति लगानी चाहिए। व्यापक लोक-शिक्षण ही इस परिणति की कुंजी है।

तीसरी पंचवर्षीय योजना

अभी कुछ दिन पहले तीसरी पंचवर्षीय योजना सरकार की ओर से लोकसभा में पेश की गयी और स्वीकृत हुई। उस समूची योजना के दूरगामी परिणामों के बारे में विस्तार से लिखने की अवश्यकता है, पर अभी केवल उसके एक पहलू की ओर हम ध्यान आकर्षित करना चाहते हैं। इस योजना में खेती के विकास और उसका उत्पादन बढ़ाने पर काफी जोर दिया गया है और इस सिलसिले में सिंचाई जमीन का कटाव रोकने, जंगल लगाने तथा पर्याप्त मात्रा में खाद आदि के उत्पादन का जिक्र किया गया है।

किसी भी काम के लिए सारी आवश्यक सामग्री और साज सामान जुटा दिया जाय, पर अगर काम करनेवाले को उसे करने की प्रेरणा न हो तो वह सारा आयोजन व्यर्थ हो सकता है। आज हमारी अधिकांश योजनाओं का यही हाल है। पैसे की तो कमी नहीं है, पर केवल पैसा काम करनेवाले व्यक्ति को प्रेरणा नहीं दे सकता।

खेती के विकास में आज जो बड़ी रुकावटें हैं, उनमें से एक फसल की कीमतों के बारे में है। हर कारखानेदार अपने माल का पड़ता लगाकर उसकी बिक्री-कीमत ठहराता है जिसमें उसके अपने लिए एक निश्चित मुनाफा शामिल रहता है। खेती की उपज की बिक्री-कीमत आज उत्पादक अर्थात् किसान के हाथ में नहीं है। कुछ लोग कहते हैं और समझते हैं कि सरकार खेती की उपज की न्यूनतम कीमत तय कर दे तो सब कुछ ठीक हो जायगा। हमारी राय में यह काफी नहीं है। जब तक अपनी उपज को बेचने, न बेचने के नियंत्रण की शक्ति किसान को उपलब्ध नहीं होती है तब तक कोई बाहरी नियम उसकी मदद नहीं कर सकता। इसका मतलब यह है कि अगर हम खेती की तरक्की चाहते हैं तो हमें समूचे ग्राम-जीवन की पुनर्रचना पर ध्यान देना होगा। अगर हम खेती को हमारी सारी योजनाओं की बुनियाद मानते हैं, जैसा कि लोकसभा की बहस में सब ओर से कहा गया, तो खेती के विकास में जो भी आजकी सामाजिक या आर्थिक व्यवस्था बाधक हो, उसे हटाने की क्या हमारी तैयारी है? क्या गाँवों के पुनर्जीवन को जो ग्रामोद्योगों के पुनर्जीवन बिना संभव नहीं है, हम हमारी योजनाओं की बुनियाद मानने को तैयार हैं? सिंचाई, खाद, अच्छे बीज तथा खेती-सुधार की अन्य योजनायें ये सब आवश्यक हैं, पर इस एक बुनियाद के बिना ये सब बेकार हैं।

बर्मा सरकार का प्रतिगामी कदम

बर्मा की सरकार ने एक कानून पास करके बौद्ध धर्म को अपने देश के राज्य-धर्म का स्थान दिया है। बर्मा के प्रधान मंत्री, श्री ऊ नू एक अच्छे विचारों के प्रगतिशील व्यक्ति हैं। पर उनकी इस ताजी कृति के बारे में बहुत सहानुभूति पूर्वक सोचने पर भी हम अपना समाधान नहीं कर सके हैं। यह सही है कि बर्मा की अधिकांश जनता बौद्ध धर्मावलम्बी है। फिर भी, चाहे थोड़ी संख्या में ही क्यों न हो वहाँ ईसाई, मुसलमान आदि भी हैं। राज्य का प्रत्येक नागरिक के जीवन से गहरा सम्बन्ध आता है। उसका किसी सम्प्रदाय-विशेष से बंध जाना, बावजूद पूरी सद्-इच्छा के, उस संबंध में बाधा पहुँचा सकता है। धर्म स्वयं जब संस्था या संगठन का रूप धारण करता है तब भी वह अपने असली रूप से गिर जाता है ऐसी आज तक के दुनिया के सब धर्मों के इतिहास का संकेत है। पर इससे आगे बढ़कर जब धर्म राज्य-संस्था के साथ जुड़ जाता है तब तो धर्म और भी विकृत हो जाता है। धर्म जैसी गहन वस्तु का संस्था के रूप में या राज्य-संस्था के साथ बंधकर विकास रुकना अवश्यम्भावी है। और विकास रुका तो ह्रास शुरू होना प्रकृति का नियम है। अतः स्वयं बौद्ध धर्म के हित की दृष्टि से भी बर्मा सरकार का यह कदम हमें अनुचित लगता है। इन सब दृष्टियों से सोचते हुए बर्मा सरकार का कदम हमें प्रतिगामी मालूम होता है।

पावस रूप में विनोबा

प्रेम पयोधि से स्नेह लिये यह, बाबा बलाहक होकर आयो।
हिंसा, मद, लोभ के आतप से, जनता जन-मानस मुक्त करायो।
भूदान का घोष गंभीर हुआ, प्रत्येक प्रदेश में यों छहरायो।
सब पे सुख शीतलता बरसावत, भावे घनश्याम को रूप बनायो॥

—अम्बिका प्रसाद

बिहार-यात्रा-"बीघे में कट्ठा"

[१]

"पुनश्च हरि ॐ। भूदान प्राप्ति में हम लग जायें और अपनी पूरी शक्ति आजमायें।"

बाबा विनोबा का यह सन्देश सर्वोदय-सम्मेलन को मिला। "बीघे में कट्ठा" आन्दोलन बिहार में आरम्भ होनेवाला था और उसमें सहयोग देने के लिए प्रान्तों को अपील की गयी थी। गुजरात से दो कार्यकर्ता दो महीने के लिए जून १५ से आयेंगे, ऐसा जाहिर हुआ था। उसके अनुसार [श्री हर्षकान्त वोरा (जि० सूरत) और श्री रतिभाई शाह (जि० साबरकांठा)] हम दो कार्यकर्ता इस आन्दोलन में शरीक होने के लिए बिहार की ओर रवाना हो गये।

बिहार में २० जून से ८ जुलाई तक आंदोलन में प्रचार कार्य किया। हमने गया जिले के परैया-गुरुआ और शेरघाटी थाने में यात्रा की। तीन थानों में से परैया थाने में करीब-करीब हर देहात में टोली के रूप में जाने का मौका मिला। गुरुआ और शेरघाटी में पड़ाव था और उसी केन्द्र से इर्दगिर्द के गाँवों में अनुकूलता के अनुसार कार्यक्रम बनता रहता था।

इस यात्रा के दरम्यान अनुकूलता के अनुसार कभी छोटी-छोटी टोली में जाना, कभी सामूहिक रूप में जाना, कभी पहले से कार्यक्रम बना कर जाना, तो कभी गाँव के लोग तय करते उस दिन जाना होता था। यात्रा में बीघे में कट्ठा अभियान के बारे में ही बात करते थे। फिर भी ग्रामस्वराज्य का चित्र भी उनके सामने हम रखते और इसीलिए यह कार्यक्रम उसका प्रथम सोपान है, ऐसा बताते थे।

लोगों द्वारा हमारी यात्रा और विचार का जगह जगह ठीक तरह से स्वागत होता था और दान भी मिलता था। 'बीघे में कट्ठा' का कानून आनेवाला है, उसका असर भी कुछ था, पर इतना नहीं था कि लोग दान देने लगे। पचायती राज का भी इस दिशा में सहयोग काफी असर करता था। इस तरह यह त्रिविध परिबल—एक नई हवा बनाने में सहायक बने थे।

इस कार्यक्रम में शामिल होने के कारण जो कुछ अनुभव हुआ, इससे हमारी श्रद्धा बढ़ी है। ३ दिसम्बर तक बिहार में इसी तरह हम प्रचार-कार्य करते रहते तो अच्छा होता ऐसा भी लगता है। पर गुजरात में भूमि-वितरण-कार्य की जिम्मेदारी ली है, इसलिए वापस लौटे। अतः थोड़े दिनों के अनुभव से सुझाव देना उचित नहीं है, फिर भी नम्रतापूर्वक कुछ सुझाव दे रहे हैं।

(१) अगर कि कार्यक्रम सातत्य-पूर्वक चलाया जाय तो यह आंदोलन सफल हो सकता है, क्योंकि बिहार की हड्डी में दान का संस्कार है, ऐसा दर्शन हमें हुआ है।

(२) तीव्रतापूर्वक जोर लगाने की दृष्टि से अवधि ३ दिसम्बर निश्चित की गयी है, यह अच्छा ही है। फिर भी १२ लाख एकड़ भूमि मिलेगी या नहीं यह तो वातावरण पर निर्भर है। मान लीजिये कि मिल गई, तो भी जब तक स्वामित्व-विसर्जन सम्पूर्ण रूप से न हो जाय, तब तक यह कार्यक्रम छोड़ना नहीं चाहिए। इससे 'फ्रस्ट्रेशन' भी आ जाता है। इसलिए यह कार्यक्रम ३ दिसम्बर के बाद भी चलते ही रहना चाहिए।

(३) कार्यकर्ताओं की संख्या हरएक जिले में ठीक परिमाण में है, ऐसा लगता है। संयोजन ठीक तरह हो और प्रत्येक कार्यकर्ता का पूरा उपयोग हो, ऐसा प्रबंध बनेगा तो भी वातावरण जमता ही रहेगा।

(४) दूसरे प्रान्त से केवल एक दो कार्यकर्ता आयेंगे, तो बहुत अधिक असर होने वाला नहीं है। बाहर से आये हैं, इस लिए ५-१० प्रतिशत प्रभाव तो रहता ही है, फिर भी कम माना जायेगा। इससे दूसरे प्रान्त से आनेवाले कार्यकर्ताओं की श्रद्धा और शक्ति बढ़ती है, यह बात अलग है। आंदोलन का स्वरूप बनाना हो तो दूसरे प्रान्त से ५-६ सौ कार्यकर्ता आयें और बहुत व्यवस्थित पूरी योजना बने, तो हो सकता है कि कार्यक्रम पूरी तरह सफल हो। भाषा की भी दिक्कत दूसरे प्रान्त के कार्यकर्ताओं को आयेगी और दक्षिण भारत के लोगों को तो दिक्कत जरूर आयेगी ही। उत्तर के हिन्दी भाषी कार्यकर्ताओं के लिए भी स्थानीय देहाती भाषा के कारण व्यवहार करना मुश्किल होता है। स्थानिक समस्याओं को हल करने का कभी-कभी मौका आता है, तब तो स्थानिक कार्यकर्ता के बिना काम नहीं चलता।

(५) इस प्रचार-यात्रा और कार्यक्रम के साथ गत वर्षों से भूदान में प्राप्त जमीन का वितरण-कार्य भी जोड़ देना चाहिए। यह कार्य अत्यन्त अनिवार्य और आवश्यक है। इससे कार्यक्रम को बल मिलेगा। नई मिली जमीन का वितरण तो होता है, पर उस पर कब्जा भी मिल जाय, यह दो तीन महीने के बाद देख लेना चाहिए।

(६) कार्यकर्ताओं का प्रशिक्षण जरूरी है। यह शिविर के रूप में या संभव हो तो २ मास का वर्ग रख कर भी किया जा सकता है। सर्वोदय की समग्र दृष्टि और सब पहलुओं की जानकारी होना कार्यकर्ताओं के लिए आवश्यक है।

(७) दाता-आदाताओं के छोटे संमेलन एक दिन के शिविर होने चाहिए। संगठन को तहसील-थानावार स्वरूप भी देना चाहिए और कभी-कभी बड़े जमींदारों के घर पर ये सब इन सबको जमीन माँगने के लिए जाने का कार्यक्रम बनाना चाहिए।

(८) बड़े जमीनवाले और महन्त आज भी मौजूद हैं। हर एक जिले में इन सब भूमिवानों-महन्तों का शिविर या संमेलन करना चाहिए और देश के प्रसिद्ध, आदरणीय नेताओं, सेवकों के साथ विचार-चर्चा करनी चाहिए। निर्माण के काम में देश का यह नया कदम-विसर्जन (बीघा-कट्ठा नहीं) क्या हो सकता है, उसकी योजना, चर्चा करनी चाहिये। विसर्जन का आदर्श है, फिर भी नीचे दिया कार्यक्रम बीघे में कट्ठा के अलावा जोड़ा जा सकता है :

(१) खेती के मजदूरों को जमीन दी जाती है, वह ... के नाम पर कर देने का अभियान चाहिए।

(२) खेती के मजदूरों की झोपड़ी की जमीन जो सुरक्षित नहीं है, निश्चित नहीं है, वह भी उनके नाम कर देने की माँग करनी चाहिये।

इस सबसे भूमिदान का वातावरण बनेगा, नया भूदान भी मिलेगा, वितरण भी होगा। फिर भी भूमिक्रान्ति का पूर्ण दर्शन नहीं हो सकता; यह तो सोपान ही है।

फिर से नम्र प्रार्थना है कि यह सब हमने एक सहकारी, सहभागी, सहमित्र के नाते लिखा है।

इस आंदोलन के कारण भूदान के नये अभियान में सहयोग देने का हमें अवसर मिला और बिहार के कार्यकर्ता, देहाती जीवन का जो मधुर अनुभव मिला वह हमारे लिये अनुभव की बड़ी पूँजी बन गयी है। प्रभु सबको शक्ति दे और भक्ति बढ़ावे और सातत्य का गुण हम सबमें रहे।

स्वराज्यआश्रम, वेडछी, —**हर्षकान्त वोरा**

जि० सूरत (गुजरात) —**रतिभाई शाह**

---

[२]

उत्साहवर्द्धक प्रसंग

"आज सुबह से यहाँ का वातावरण कुछ और ही दर्शन करा रहा है, टोली के प्रवेश के साथ ही साथ बच्चे, बूढ़े, नौजवान बाहर निकल पड़े, नारों की तो धूम ही मची है और ऐसा लगता है कि इस बडहरा टोले ने तो रंगत ही बदल दी। और जगहों में घर-घर जाकर बीघे में कट्ठा बार बार मांगना पड़ता था। 'हाँ, विचार कर रहे हैं, घर में मालिक (बड़े भाई या पिता या लड़का) नहीं हैं। आयेंगे तब सोच के लिखवायेंगे, ऐसे ढीले, सुस्त जवाब भी मिलते थे। लेकिन यहाँ पर स्वयंस्फूर्ति दिखती है। हमारे उत्साह को अनेक गुना बढ़ा दिया इस गाँव ने तो।"

मैं मेरे बडहरा कोठी वाले श्री सहदेव प्रसाद के साथ मेरे आखिरी पड़ाव पर गया, तब राजस्थान के मेरे साथ भाई महेश व्यास जिसको अखण्ड पदयात्रा-टोली के नायक, श्री श्याम बाबू अपना चार्ज सम्हला कर गये हैं, वे बहुत ही प्रसन्न दिखे और सहज भाव से ऊपर के उद्गार निकालने लगे; क्योंकि बडहरा कोठी, वासुदेवपुर वगैरह स्थानों का हमारा अनुभव कुछ निराला था।

इस जगह जब रात को सभा आरम्भ हुई, चित्रपट के साथ-साथ भाषण हुए और दान के एलान होने लगे, तब मूक रहने वालों को लगा कि वे कुछ खो रहे हैं, इसीलिये वे भी दान की घोषणा करने लगे। वैसे आगे आने लगे। रसोई में व्यस्त एक माता ने अपने लड़के के साथ कहलाया कि अपने भी कट्ठा लिखवा दो बेटा। आओ, हम दान देने में पीछे न रह जायँ।

इस तरह की भावना लेकर यह बच्चा आया, तब मैंने महेश जी को कहा, "जो आयें उनका एलान तुरन्त कराते रहो, इसी तरह लहरें उठती हैं, वातावरण उत्साह-वर्धक, प्रगतिशील तथा आनन्द-दायी बनता है।"

बीघे के कट्ठे के निमित्त पूर्णियाँ जिला, जिसमें घूमने वाली तीन टोलियों का अनुभव १०-११ दिनों में मुझे हुआ। जिस पवित्र भूमि में विनोबाजी दो बार बिहार कर चुके हैं और जहाँ पर बिहार जुट पड़ेगा, क्योंकि जैसे-जैसे ३ दिसम्बर, ११ लाख एकड़ भूमि अर्पण का शुभ दिन नजदीक आता जाता है, वैसे-वैसे स्थानीय कार्यकर्ताओं में जोश बढ़ने वाला है ही। लेवी का कानून बनने जा रहा है यह भी "देवी" में मदद कर रहा है। कानून के पचड़ों में पड़ने के बजाय तो विनोबा को बीघे में कट्ठे के हिसाब से दे देना ही अच्छा है, ऐसी मनोभावना बन रही है और बिहार वालों ने वितरण का तरीका भी "चट रोटी पट दाल" का कर रखा है। दाता अपने दान की भूमि अपनी पसंदगी से किसी बेजमीन काश्तकार को देता है। दानपत्र के पीछे वह आदाता का नाम अंकित कर देता है।

श्री किशोर लाल भाई

जिनकी पुण्य-तिथि हमें कर्मयोग का संदेश सुनाती है

९ सितम्बर ५२, मंगलवार की संध्या के ६-४५ पर श्री किशोरलालभाई अपना पंचभौतिक शरीर त्याग कर घट-घट वासी बने, और खूबी यह कि घंटा भर पूर्व ५ बजे शाम तक वे कर्मरत रहे। प्रभु की यह कैसी माया है कि मनुष्य जो चाहता है वह नही होता। यद्यपि किशोरलालभाई नही चाहते थे कि काम करते-करते ही उनका प्राण निकले, बल्कि उनकी इच्छा थी कि अब काम से निवृत्त होकर शेष जीवन चिंतन एवं मनन में बितायें; तथापि प्रभु की इच्छा ऐसी नही थी कि वे निवृत्त-जीवन का उपभोग करें। कह सकते हैं कि अंतिम क्षण तक उन्होंने प्रभु या बापू का काम किया। जीये भी उसी लिए, मरे भी उसी लिए।

बापू के तप तथा पुण्य के फलस्वरूप यह देश आजाद हुआ। इस अहिंसक जंग में तो वे पूरे जूझे ही थे, साथ ही आर्थिक एवं सामाजिक क्षेत्र में देशव्यापी शुद्ध अहिंसात्मक क्रांति क्या हो, इसका उत्कट चिंतन बापू के जाने के बाद से बराबर उनके मन में चलता रहा। उनका मुझे नजदीक से अध्ययन करने का सौभाग्य मिला था। और जब विनोबा को भूदान-यज्ञ आरंभ हुआ, तो उन्होंने इस अहिंसक क्रांति का उत्कट समर्थन प्रदान किया। समर्थन ही नहीं वास्तविक सहयोग भी उन्होंने अंत तक विनोबाजी को प्रदान किया। समर्थन ऐसा, कि विनोबा को छोड़कर शायद ही इनके समान लगातार तथा पूरी हार्दिकता के साथ किसी दूसरे विचारक और चिंतक ने उस समय इस क्रांति का समर्थन किया हो। विनोबा और भूदान पर उनका पूरा विश्वास ही नहीं अपितु भरोसा भी था। तभी तो उन्होंने कहा था : "आर्थिक एवं सामाजिक क्षेत्र में देशव्यापी शुद्ध अहिंसात्मक क्रांति को सफल बनाने का एकमात्र यही मार्ग है। इस क्रांतिकारी कार्यक्रम के अंदर देश की तमाम समस्याओं का अहिंसक हल और देश की तमाम धर्म्य आकांक्षाओं की सिद्धि निहित है।"

रोम्या रोला ने सत्य-शोध की उपमा से तुलना करते हुए कहा है कि सत्य-शोधकों की स्थिति प्याज खाने वालों की होती है—जिस प्रकार कि प्याज खाते हुए आँखों में आँसू आ जाते हैं और कान कनकनाने लगते हैं, उसी तरह किशोरलालभाई ने किसीसे कोई मुरव्वत नहीं की, बल्कि सत्य-शोधक को भाँति निरंतर निष्ठुर बने रहे। और विनय को कभी नहीं छोड़ा। लेकिन कटु सत्य से पूर्ण विनम्रता द्वारा अच्छे-अच्छे और बड़े-बड़ों का दिमाग ठिकाने लाते रहे। इसीलिए तो वे सबके मित्र भी बने रहे।

व्यापक एवं गहन चिंतन उनकी अपनी कमाई थी। और गुरुजनों से प्राप्त पूँजी पर उन्होंने कोई मायाजाल अथवा व्यापार भी नहीं फैलाया, बल्कि जिनमें जो कुछ भी उन्हें मिला उसे उन्होंने भली भाँति पचाया और उन गुरुजनों के ऋण को पूरी तरह स्वीकार करके उसे अपनी वस्तु के रूप में, और भलाई-बुराई की पूरी जिम्मेदारी खुद उठाकर उसे समाज के सामने एक नवीन क्रांतिकारी विचार एवं उसूल के रूप में पेश किया। और निरभिमान काम करते हुए निरंतर वे अपने अंदर यह भावना बनाये रखे कि जान या अनजान में भी किसी के साथ उनसे अन्याय न हो सके। बापू की हत्या के बाद 'हरिजन' पत्रों के बंद हो जाने पर उन्होंने इसी कसौटी से 'भगवान भरोसे' उनके संपादन का काम अपने सबल कंधों पर उठाया था।

रोग और व्याधि तो युवाकाल से ही उनके मित्र बने थे। इसलिए शंका उठी कि ये इस कठिन जिम्मेदारी को पूरी तत्परता के साथ कदाचित ही सँभाल सकें। किंतु अल्पकाल में ही अपनी कार्यक्षमता से उन्होंने संसार को चकित कर दिया, जो युवा की कार्य शक्ति को भी छका देनेवाला साबित हुआ। प्रतिदिन और निरंतर शारीरिक कष्ट इतना रहता था कि देखने वाले तक घबड़ा जाते थे। साँस लेने के लिए हर घड़ी फेफड़ों के साथ संग्राम करना पड़ता और उसके साथ जूझते-जूझते शरीर उकड़ूँ हो जाता। सिमट कर बैठ जाते और रोग का आक्रमण हलका होते ही फिर ऐसे उठ बैठते और हाथ में इस तरह लेखनी ले लेते जैसे क्षण भर पूर्व उन्हें कुछ हुआ ही न हो, उन पर कुछ बीता ही न हो।

> सत्य तथा न्याय का जिनके जीवन में आग्रह होता है, वे शरीर से भले ही दुर्बल हों, व्याधि पीड़ित हों, और उनका शरीर रात-दिन असहनीय वेदना एवं यातनाएं सहन करता रहता हो, फिर भी उनकी आत्मा इतनी सबल होती है कि अन्याय तथा असत्य का प्रतिकार करने में शारीरिक-व्याधि या कमजोरी कभी भी उनको बाधक नहीं होती। प्रतिकूल शारीरिक स्थिति, पंगुता या परावलंबन उनकी आत्मा के संकल्प को कभी भी बदल नहीं सकता।

तभी तो विनोबाजी ने एक दिन कहा था : "किशोरलाल भाई के ग्रंथ जिसने पढ़े हैं, पत्र-व्यवहार देखा है, चर्चाएँ जिसने सुनी हैं, वह तो उन्हें जानते ही हैं, लेकिन उससे भी अधिक वह आदमी उन्हें जानता है, जिसने परोपकार के लिए उनको अपना शरीर घिसते देखा है। उनके हृदय के परिशुद्ध गुण इतने आकर्षक थे कि जिस प्रकार मुँह में डालते ही मिश्री के टुकड़े के विषय में ज्ञान और प्रेम दोनों एक साथ ही उत्पन्न होते हैं; उसी प्रकार किशोरलाल भाई को जानने के साथ ही उन पर श्रद्धा और प्रेम दोनों हमारे अंदर पैदा हुए बिना नहीं रहते। किशोरलाल भाई का एक प्रिय भजन 'संत परम हितकारी' था। भजन उन्होंने आश्रम [illegible] लिए खास रूप से सुझाया था। उस [illegible] आखिरी पद 'त्रिगुणातीत फिरत [illegible] त्यागी' किशोरलाल भाई के जीवन [illegible] बराबर लागू होता था।"

किशोरलाल भाई की मृत्यु के [illegible] महीने पूर्व उनकी भाभी की मृत्यु हुई [illegible] तब वे उनके पास गये और उनकी [illegible] मृत्यु को अत्यंत निकटता से उन्होंने देखा था। उनकी भाभी मृत्यु के समय अतिशय वेदना तथा कष्ट सहते हुए भी ठेठ अंत्य क्षण तक वह बराबर जाग्रत रहीं, [illegible] अद्भुत बात ने उन्हें गहरे चिंतन में डाल दिया था, जिसके विषय में गंभीरता से छानबीन करते हुए विनोबा ने उन्हें लिखा था :

"श्री किशोरलाल भाई !"

मृत्यु निमित्त चिंतन पर पत्र पढ़ा। अंत में आपने निष्कर्ष निकाला है [illegible] जाग्रत रहते हुए वेदना को शांति से सहन करने की शक्ति चाहिए। लेकिन इतना होने पर भी वह ब्राह्मी दशा नहीं, यह भी आपने [illegible] माना है। यह संभव तो है ही। [illegible] लगता है कि ब्राह्मी दशा को सहन शक्ति से भिन्न पहचानना ही पड़ेगा। दोनों का भेद समाधि और प्रज्ञा के जैसा कह सकते हैं। लेकिन मुझे [illegible] प्रज्ञा भी ब्राह्मी दशा से भिन्न लगती है।

'रज्ज्वा भुजङ्गमिव'—यह उपमा इतनी परिचित हो गई है कि अति परिचय के कारण वह कोई असर नहीं कर रही है। लेकिन उस परिचय से अगर हम मुक्त हो सकें, तो वह इतनी गहराई में ले जाती है कि उतनी गहराई में और कोई विचार सरणी नहीं पहुँचाती, ऐसा मुझे लगता है।

गीता में 'धीर' शब्द दोहरे अर्थ में आया है। (अ० २ श्लोक १३, १५) एक 'धृति' पर से (श्लोक १५) और दूसरा 'धी' पर से (श्लोक १३) दोनों के योग के बिना अपने राम का काम नहीं बनेगा, ऐसा विनोबा ने समझ लिया है।

"विनोबा के प्रणाम।"

किशोरलाल भाई का अंतकाल एकाएक इस प्रकार आया और प्राण इतनी सरलता से निकले कि प्रायः अंतिम क्षण तक उन्हें जागृति रही और 'राम' शब्द भी वे आसानी से उच्चारण कर सके। आज उनकी पुण्यतिथि के अवसर पर हम उन्हें सादर श्रद्धांजलि अर्पित करते हैं।

—गोपालकृष्ण मल्लिक

वसंत रूप में बाबा विनोबा

सत्य प्रेम, करुणा की त्रिविध समीर साथ,
पंच दान,* पंच बाण साथ, लिये आयो है।
हिंसा-हेमन्त में कुण्ठित पुष्प-वल्लिन को,
प्रेम के प्रकाश में सुरभित कर जायो है।
जै जगत का नारा, कोकिल की सुरीली तान,
संग शाँति-सैनिक विविध विधि लायो है।
भारत के भाग्य से भारत की धरा आज,
वसुधा के शृंगार हेतु बाबा वसंत बनि आयो है।

—अम्बिका प्रसाद

---

* पंचदान—भूदान, सम्पत्तिदान, श्रमदान, सूतांजलि, सर्वोदय पात्र

बिहार में पूरे देश के कार्यकर्ताओं की संयुक्त शक्ति लगे

अधखुला दरवाजा खुलने ही वाला है

• ठाकुरदास बंग

इन दिनों बिहार से आशादायी खबरों का आना प्रारम्भ हुआ है। महाराष्ट्र से चार कार्यकर्त्ता बिहार में 'बीघा-कट्ठा अभियान' में कार्य करने के लिए गये थे। उनको सैकड़ों कट्ठा भूमि-दान मिला। बिहार के जिलों में सामूहिक पदयात्राएँ चल रही हैं। इन जिलों में २०० कार्यकर्ता १८ टोलियों में प्रचार कर रहे हैं। प्रारम्भ में तीन-चार दिन इन टोलियों को भूदान नहीं मिला। कई सालों से यह कार्यक्रम बंद रहने के कारण कुछ समय के लिए ऐसा होना स्वाभाविक है। पर कुछ दिनों के बाद थोड़ा-थोड़ा दान मिलने लगा। 'बीघे में कट्ठा' याने बीसवाँ हिस्सा मिलने लगा।

विनोबाजी को छह महीना पहले १४ हजार कट्ठा भूदान मिला था। इन टोलियों को २५ हजार कट्ठा भूमि मिली। पूसा रोड के सघन क्षेत्र में ५ हजार कट्ठा दान मिला। कुल लगभग ४५ हजार कट्ठा याने २ हजार एकड़ भूदान मिला। इस भूदान का वितरण उसी समय किया गया।

इसका मतलब यह है कि धीरे-धीरे अब वातावरण बन रहा है। विनोबाजी जब चार महीने बिहार में थे, उस समय भूदान के लिए अनुकूल वातावरण बना था। काम का सातत्य कायम रखने के बारे में वहाँ के नेताओं ने विनोबाजी को आश्वासन दिया था। विनोबाजी बाद में बंगाल में गये और हमेशा की तरह वातावरण ठंडा हो गया। नेता अपने कर्तव्य को भूल गये। श्री शंकरराव देव ने अप्रैल में बिहार में दौरा किया और उन्होंने अनेक जिलों में भूदान प्राप्ति-समितियाँ बनायीं। मई-जून माह में श्री जयप्रकाशजी के दौरे का आयोजन किया गया। कुछ दिन घूमने के बाद उन्हें महसूस हुआ कि इन समितियों ने कोई तैयारी नहीं की थी। इसलिए श्री जयप्रकाशजी को अपना दौरा स्थगित करना पड़ा। लेकिन वहाँ के मुट्ठीभर कार्यकर्ताओं ने निश्चय किया कि अब 'एकला चलो रे' गाते-गाते खुद को ही एकाकी रूप में घूमना चाहिए। उसमें से सघन पदयात्राएँ शुरू हुईं और ऊपर बताये अनुसार भूदान प्राप्ति का प्रारम्भ हुआ।

बीच में और एक घटना होने लगी। बिहार राज्य सरकार ने भूमि के स्वामित्व के बारे में एक 'सीलिंग बिल' विधान-सभा के सामने रखने का निश्चय किया। इस बिल का स्वरूप अन्य प्रांतों की तरह ही था। इससे अधिक जमीन मिलने की विशेष आशा नहीं थी। वास्तव में अगर बहुत ज्यादा मात्रा में भूमिहीनों में जमीन का वितरण करना है तो सबके पास से जमीन लेनी चाहिए, इस कल्पना का पुनरुच्चार इस मौके पर भूदान-कार्यकर्ताओं ने किया। 'पुनरुच्चार' इसलिए कहना चाहिए, क्योंकि वैसे देखा जाय तो इस कल्पना का जप तो हमेशा चलता रहता है। लेकिन कानून बनने के संदर्भ में जब १९५५ में इसी तरह का बिल बिहार की विधान-सभा में पेश किया गया, तब श्री जयप्रकाश नारायण के नेतृत्व में प्रदेश-भूदान-समिति ने 'लेवी' की कल्पना प्रस्तुत की थी। उस समय यह कल्पना सरकार को मंजूर नहीं थी। अब पुनः यह कल्पना पेश की गयी तो, बिहार-सरकार ने हरएक से जमीन लेने की हिम्मत की, यह घटना अभिनंदनीय है। फिर इसको भारत सरकार और नियोजन मंडल के मान्यता देने पर 'सीलिंग' और 'लेवी' की योजनावाला यह बिल प्रवर समिति की ओर से आया और इस बिल का दूसरा पठन अब पटना की विधान-सभा में चल रहा है।

इस बिल के अनुसार एक एकड़ से कम जमीन रखने वाले से कानूनन जमीन नहीं ली जा सकेगी। १ से ५ एकड़ वाले से जमीन का बीसवाँ हिस्सा, ५ से १० एकड़ भूमिधारियों से दसवाँ हिस्सा, १० से २० एकड़ वाले से छठा हिस्सा 'लेवी' के रूप में कानून से जमीन ली जायेगी। २० एकड़ पर 'सीलिंग' लगेगा। 'सीलिंग' की तरह ही 'लेवी' में जो जमीन, ली जायेगी उसका मुआवजा मालिक को मिलेगा।

इस तरह १९५३ से ५५ तक जो भूदान आंदोलन बिहार में उच्च शिखर पर पहुँचा था, उसके परिणामस्वरूप जन सेवकों ने लेवी की जो कल्पना सरकार को सुझायी थी, उसको अब कानून का रूप मिल रहा है।

अन्य प्रांतों में यह समस्या निर्माण होती है कि 'सीलिंग' के कानून के बाद भूदान में जमीन मिलेगी या नहीं? वर्धा जिले के आर्वी तालुके में तीन महीने में ३५० एकड़ जमीन मिली, यह इस समस्या का उत्तर है। बिहार में भी यह अनुभव हो रहा है।

लेवी का मुआवजा देने वाला कानून अब अभी ही बनने वाला है, तब भी लोग भूदान में जमीन दे रहे हैं और मुआवजा के रूप में मिलने वाली रकम का मोह छोड़ रहे हैं। क्या यह मनुष्य-स्वभाव के विपरीत घटना है? बिहार में अन्य प्रांतों के जैसे ही गृहस्थ लोग रहते हैं। तब फिर वे लोग मोह का त्याग क्यों कर रहे हैं?

वहाँ भी कानून से मिलने वाला मुआवजा जमीन की कीमत के जितना नहीं होता है। बिहार में जिस जमीन की कीमत ५००० रुपये फी एकड़ है, ऐसी जमीन का मुआवजा १०० रुपये फी एकड़ देने की व्यवस्था कानून में सरकार ने की है। और फिर दस एकड़ वालों को चौथाई या आधे एकड़ पर मुआवजा भी कैसे कितना मिलने वाला है? और वह प्राप्त करने में भी कितने चक्कर काटने पड़ते हैं।

इस संदर्भ में बिहार के सबसे बड़े एक जमींदार को मिले हुए मुआवजे की कहानी उल्लेखनीय है। इस जमींदार ने विनोबा जी को कम जमीन भूदान में देने की बात की, तो विनोबा जी ने उस भूदान को स्वीकार नहीं किया। बीच के काल में सरकार ने कानून के जरिये जमीन ले ली। और फिर कानूनन जमीन का मुआवजा प्राप्त करते-करते कोर्ट कचहरी के इतने चक्कर काटने पड़े कि वह स्वाभिमानी जमींदार बहुत तंग आ गया।

'ऐसे मुआवजे की जरूरत नहीं, इस मुआवजे की बला से पिंड छूट जाय तो अच्छा,' ऐसी प्रतिक्रिया उस जमींदार पर हुई। और अब यही जमींदार भाई भूदान में जमीन देने और मुआवजे का मोह छोड़ने का जनता में प्रचार कर रहे हैं।

इसके अलावा 'लेवी' या 'सीलिंग' में सरकार कौन सी जमीन लेगी, इसके बारे में भी कानून से तय होने पर भी प्रत्यक्ष में कई झगड़े पैदा होती हैं। वह जमीन किसको दी जायेगी, यह भी समस्या होती है। भूदान की जमीन के बारे में (विनोबा जी ने इसके लिये 'लेवी' का प्रतिरूप शब्द 'देवी' बताया है। याने 'लेना' और 'देना') दाता ही तय करता है कि कौन सी जमीन किस भूमिहीन को दी जाय। इस कारण गाँव में प्रेम के रिश्ते बढ़ते हैं और सरकारी अधिकारियों की बला टलती है। श्रद्धावान् जनता समझती है कि भूदान में जमीन देने से पुण्य प्राप्त होता है। सरकार की तिजोरी भी खाली नहीं होती क्योंकि मुआवजे की रकम बचती है। इस तरह सर्वतोभद्र भूदान को मान्यता देने के लिए सरकार ने इस कानून में यह सुविधा रखी है कि २५ दिसम्बर ६० के बाद जो भूदान में जमीन देगा, कानून के अनुसार उससे उतनी कम जमीन ली जायेगी। इसी कारण से लोग 'लेवी' की अपेक्षा 'देवी' अधिक पसन्द कर रहे हैं; ऐसा टोलियों में घूमने वाले पदयात्रियों का अनुभव है।

कट्ठे-दो-कट्ठे जमीन का वितरण कैसे होगा? आज भी कई किसानों के पास इतनी ही जमीन है। उनकी समस्या जिस तरीके से छूटेगी, उसी तरीके से इन नये अल्प भूमिधारियों की भी समस्या हल हो जायेगी। उसके लिए 'कन्सॉलिडेशन ऑफ होल्डिंग्ज ऐक्ट' है ही। इसके अलावा उत्तर बिहार में धान की और पटसन की खेती होने से कट्ठे-दो कट्ठे की खेती भी की जा सकती है।

लेकिन दक्षिण बिहार में कट्ठा दो कट्ठा जमीन की समस्या खड़ी होगी। पाँच-सात एकड़ वाले से पाँच-सात कट्ठे जमीन मिलेगी; कट्ठा-दो कट्ठा नहीं और इतनी जमीन में खेती हो सकती है। इन सबके लिए 'कोआपरेटिव खेती' यह एक उपाय तो है ही। इसलिए इस समस्या को हल करना जितना मुश्किल-सा लगता है उतना मुश्किल नहीं है।

बिहार में आज कार्यकर्ता काफी हैं। उनको सक्रिय करने की आवश्यकता है। हनुमंत को स्वशक्ति का भान करा देने के लिए जाम्बवंत की आवश्यकता है। ३ दिसम्बर को राष्ट्रपति राजेन्द्र प्रसादजी की जयंती है। तब तक बिहार के हर एक किसान से दान मिले और उसके लिए हर एक गाँव से सम्पर्क स्थापित किया जाय, ऐसी विनोबाजी की इच्छा है। इसलिए इस बार सबको मिलकर बिहार में आंदोलन निर्माण करने में मदद करनी चाहिए। बिहार में लाखों लोगों ने दान किया, तो पुन एक बार जनशक्ति का विराट प्रदर्शन होगा; लाखों एकड़ जमीन मिलेगी। जो नहीं देंगे, वे भी, कानून पीछे से आ रहा है, इसलिए नहीं छूटेंगे। इस तरह का अगर एक प्रांत में होगा, तो अन्य प्रांतों में भी वैसा होने में मदद होगी। इस तरीके से लोकशाही स्थूल सत्याग्रह का आधार लिये बिना और हुकुमशाही के बिना जनशक्ति व कानून के संयोग से और क्रिया प्रतिक्रिया से एक बहुत बड़ी समस्या का कैसे हल निकलता है, इसका दर्शन होगा। इसलिए इस समय सबको बिहार की मदद में दौड़े जाना चाहिए। कोई वजनदार पत्थर रास्ते से हटाना हो तो सबको एकसाथ जोर लगाना चाहिए। कई साल से भूदान का दरवाजा बंद सा था। वह अब अधखुला हो रहा है। सबके सहयोग से वह पूरी तरह खुल सकता है।

(मूल मराठी 'साम्ययोग' से)

साहित्य मानव-समाज का दर्पण है

सर्व सेवासंघ के अल्पमोली और बहुगुणी साहित्य की कतिपय विशेषताएँ

- सर्व सेवा संघ प्रकाशन, काशी ने ऐसा उत्कृष्ट साहित्य आपके समक्ष उपस्थित किया है, जो आपके नैतिक, सामाजिक, राजनैतिक और आर्थिक जीवन में संतुलन पैदा करता है।
- उसने साहित्य-प्रकाशन के क्षेत्र को एक नया मोड़ देकर उत्कृष्ट साहित्य सस्ते से सस्ते दामों में उपलब्ध करने की परम्परा को जन्म दिया है।
- सर्व सेवा संघ प्रकाशन की प्रत्येक पुस्तक आपको एक साथी की भाँति सही विचार देती है और जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में आपको सहारा देती है।
- हम नहीं चाहते कि आपको ऐसा साहित्य दिया जाय, जो गुरु अथवा डिक्टेटर बनकर आपको उस मार्ग पर चलने के लिए बाध्य करे, बल्कि हम इतना ही चाहते हैं कि साहित्य आपको केवल विचार करने का दृष्टिकोण दे दे। फिर आप स्वयं अपने मार्ग का निर्णय करें।
- साहित्य वह नहीं है जो आपका मनोरंजन करके आपके समय को पूरा करने का बहाना बने, बल्कि साहित्य वह है जो आपके कर्तव्यों का तथा समाज के प्रति आपके उत्तरदायित्वों का आपको भान कराये !
- सर्व सेवा संघ-प्रकाशन इसी उद्देश्य से आपके आस-पास कुछ चुना हुआ साहित्य बिखेर देना चाहता है ! उसमें उपयोगी चीज आप स्वयं चुन लें।

जीवन, समाज और विश्व की उन पेचीदी बातों पर डा. सोरोकिन का एक वास्तविक दर्शन, जो हमें अंध परंपराओं, रूढ़ियों और जड़ मान्यताओं से ऊपर उठ कर सोचने के लिए बाध्य कर देने वाली यह पुस्तक अमृत बिन्दु की भाँति हमें नया जीवन प्रदान करती है। पृष्ठ ३२०, मूल्य २-५०

•

मानव के साथ अनेक धर्म जुड़े हुए हैं। समस्याएँ भी जुड़ी हुई हैं। उन समस्याओं के प्रतिरोध का मार्ग भी तो एक नहीं। पश्चिम के मान्य विचारक ग्रेग्ग ने उन समस्याओं के प्रतिरोध का अहिंसात्मक मार्ग बताते हैं। ठीक उसी तरह जैसे गांधी ने बताया। पृष्ठ ८४, मूल्य ०-५० न. पै.

•

साहित्य का धर्म जीवन को मांजना है और मानव को जीने की कला सिखाना है, यह निष्कर्ष अमृतसर में विनोबा तथा देश के दूसरे मूर्धन्य साहित्यकारों ने मिल कर निकाला है। यदि इस धर्म का पालन साहित्य ने न किया तो वह अपना महत्त्व खो बैठेगा। पृष्ठ ८८, मूल्य ०-५०

•

वह कैसी शिक्षा है, जो हमें दासताओं के होते हुए भी दास बना दे और कर्म-क्षेत्र से विमुख कर दे? नई चेतना को राष्ट्रीय-शिक्षण की तुला में तौलने वाली एक प्रेरणादायी पुस्तक, जो राष्ट्र निर्माण के यज्ञ में अपना महत्त्वपूर्ण योग देने के लिए प्रकट हुई है। पृष्ठ ३३६, मूल्य २-५०

•

यह शरीर प्रकृति की ही देन है। प्रकृति की इस उपलब्धि पर प्राकृतिक प्रयोग ही सफल हो सकता है। हम अप्राकृतिक तत्त्वों के मोह में क्यों फँसें ! पर मुश्किल तो यह है कि हमें प्राकृतिक जीवन का ज्ञान ही नहीं है। इस अभाव की पूर्ति के लिए यह पुस्तक उपयोगी सिद्ध होगी। पृष्ठ २२४, मूल्य १-५०

•

पेरी बर्गेस ने यह उपन्यास उन सभी उपन्यासों से भिन्न लिखा है, जिन्हें पढ़ कर केवल मनोरंजन किया जाता है। यह एक ऐसा उपन्यास है, जिसे पढ़ कर हमारा हृदय करुणा से भर उठेगा और हम सेवा के लिए प्रवृत्त हो जायेंगे। पृष्ठ ३२०, मूल्य २)

•

बंबई और अहमदाबाद के वस्त्रों के लिए मुँहताज भारतीय जनता तभी पूरी स्वतन्त्र होगी, जब वह अपने ही खेत-आँगन में कपास पैदा करके बड़ी-बड़ी मिलों के आधिपत्य को अस्वीकार कर देगी। पृष्ठ २८०, मूल्य २-५०

•

जिन्होंने तारीफों की दुनिया से दूर रह कर जनता जनार्दन की सेवा में अपना सारा जीवन खपा दिया, उन डाकुओं और अपराधियों के उद्धारक रविशंकर महाराज के जीवन का सरस चित्रण पुस्तक में देखिये। पृष्ठ ३७६, मूल्य ३)

•

देश की और गांधी का लक्ष्य था—ग्राम स्वराज ! पर ग्राम-स्वराज क्या है ? इस प्रश्न का उत्तर यह पुस्तक देगी। पृष्ठ ११६, मूल्य ५६

•

स्वराज्य वही जो सबको स्वातंत्र्य की अनुभूतियों से भर दे ! वरना स्वराज्य भी राजनीति का खेल बन जाता है। सर्वोदय की ज्ञान-दृष्टि, राजनीति का सत् प्रयोग और स्वराज्य का मुक्त आनंद कैसे मिले ? यह समझने के लिए इस पुस्तक का संग उपयोगी बनेगा। पृष्ठ २००, मूल्य १)

•

नारी वह शक्ति है, जो सारी सृष्टि को प्रेरणा प्रदान करती है। विनोबा स्त्री की शक्ति को पहचान चुके हैं। हमने स्त्री को उसका उचित स्थान न देकर एक ऐसी भूल की है, जिसका अब हमें प्रायश्चित करना है। पृष्ठ १६४, मूल्य १)

•

ज्ञानदेव की पूजा, उनमें पाण्डित्य था या नहीं; यह पूछ कर नहीं की जाती। उनकी वाणी में चिन्तन की अनुभूति और आत्मा की अभिव्यक्ति कितनी थी, यह देख कर की जाती है। विनोबा और ज्ञानदेव ! दोनों सन्त ! ज्ञानदेव का चिंतन और विनोबा के शब्दों से उसकी अभिव्यक्ति ! एक मनोहारी मिश्रण! पृष्ठ १७६, मूल्य १)

साहित्य-प्रचार अभियान के लिये कुछ सुझाव

पूर्णचन्द्र जैन

[११ सितम्बर से २ अक्तूबर तक जो सर्वोदय-साहित्य एवं पत्र-पत्रिकाओं के प्रचार का अभियान प्रारम्भ होने वाला है, उसके लिए सर्व सेवा संघ के मंत्री श्री पूर्णचन्द्र जैन ने कुछ उपयोगी सुझाव दिये हैं, उन्हें हम यहाँ दे रहे हैं। –सं०]

(१) लोकसेवक व शांति-सैनिक

(क) नगरों में घर-घर साहित्य बिक्री व भूदान पत्र-पत्रिकाओं के ग्राहक बनाने का प्रयत्न करें। एक समय जैसे खादी की गाँठ कंधों पर लेकर खादी का प्रचार घर-घर सम्पर्क द्वारा विशेष अवसरों पर किया जाता था, उस प्रकार यह कार्यक्रम हो।

(ख) गाँवों में पंचायत, तहसील व जिला हेड क्वार्टरों पर यही साहित्य-बिक्री व भूदान-पत्र-पत्रिकाओं के ग्राहक बनाने का काम किया जाय।

(२) इस अवधि में पुस्तकालयों में अधिक से अधिक सर्वोदय-साहित्य मुहैया करने व बेचने तथा वाचनालयों में भूदान-पत्रों के ग्राहक बनाने का विशेष प्रयत्न हो।

(३) खादी आदि रचनात्मक संस्थाएँ

(क) स्वयं अपने केन्द्रों में साहित्य व भूदान पत्र-पत्रिकाएँ लें, खरीदें।

(ख) अपने कार्यकर्ताओं को उसके लिये प्रेरित, प्रोत्साहित करें।

(ग) अपने बिक्री केन्द्रों पर साहित्य व भूदान पत्रिकाओं के ग्राहक बनाने की रसीद-बुक वगैरह रखें तथा जनता को इसके लिये विशेष रूप से कहें, इस विषयक विज्ञापन वगैरह करें।

(घ) अपने कुछ चुने हुए कार्यकर्ताओं को इस अभियान में समय शक्ति लगाने के लिये पर्याप्त अवकाश और साहित्य-स्टाक वगैरह की सुविधा दें।

(४) जिला, तहसील आदि सर्वोदय संगठनों को, स्वतंत्र रूप से या खादी आदि संस्थाओं के सहयोग से कार्यकर्ता, विद्यार्थी व जन-साधारण में से सब प्रकार के प्रामाणिक व्यक्तियों को अमुक मात्रा में चुना हुआ सर्वोदय-साहित्य बिक्री के लिये उपलब्ध करने की योजना करनी चाहिये।

(५) सर्वोदय-साहित्य के स्थायी ग्राहक बनाने का विशेष प्रयत्न किया जाय।

(६) रेलवे स्टेशनों पर वहाँ के अधिकृत पुस्तक-विक्रेताओं, जैसे 'व्हीलर एण्ड कम्पनी' के सहयोग से अथवा स्वतंत्र रूप में हाकरों आदि के जरिये इस अभियान की अवधि में साहित्य बिक्री का विशेष प्रयत्न किया जाय।

(७) बड़े-छोटे पुस्तक विक्रेताओं से बातचीत करके और आवश्यकतानुसार व्यापारिक कमीशन वगैरह की सुविधाएँ तय करके उनके द्वारा सर्वोदय साहित्य की विशेष बिक्री करायी जाय।

(८) रुपये पाँच, दस, पचीस, पचास या ऐसे ही कुछ निश्चित मूल्य के पुस्तकों के सेट्स बनाये जायँ, जिनमें सर्वोदय-विचार व कार्यक्रम से संबंधित मुख्य-मुख्य विषयों में से एक एक से संबंधित एक-एक या दो-दो पुस्तकें शामिल की जायँ। साथ ही इन सेट्स में प्रमुख लेखकों और विचारकों की व अन्य रूप में प्रामाण्य तथा प्रसिद्ध रचनाएँ ही शामिल करना ज्यादा ठीक होगा।

(९) विज्ञापन और प्रचार का एक तरीका यह भी हो कि दैनिक पत्रों के साप्ताहिक संस्करणों या अन्य स्थानीय प्रमुख पत्र-पत्रिकाओं में सर्वोदय विचार से संबंधित एक या दूसरी प्रसिद्ध व लोकप्रिय पुस्तक की प्रशस्ति या प्रशंसात्मक समीक्षा, कार्यकर्ता लेखकों द्वारा दी जाय।

(१०) साहित्य व पत्र-पत्रिकाओं संबंधी विज्ञापन आदान-प्रदान के रूप में भी दिये जा सकते हैं।

(११) राजकीय शिक्षा विभाग व राजकीय स्कूल, कालेज, पुस्तकालय वगैरह में सर्वोदय साहित्य देने का विशेष प्रयत्न हो। इसी प्रकार विकास खण्ड, समाज कल्याण बोर्ड के केन्द्र, भारत सेवक समाज के केन्द्र व अन्य सरकारी अर्ध सरकारी संस्थाओं व समितियों में साहित्य व भूदान-पत्र-पत्रिका पहुँचाने का प्रयत्न हो।

(१२) बड़े शहरों में सर्वोदय-साहित्य की छोटी-छोटी प्रदर्शनियाँ मुहल्लों व छोटी बस्तियों में भी की जा सकती हैं, अथवा 'डिसप्ले' के साथ ठेला घुमाया जा सकता है और सार्वजनिक स्थान, बाजार वगैरह में नगर-पालिका या संबंधित अधिकारियों की अनुमति से खुली बिक्री का आयोजन किया जा सकता है।

(१३) सिनेमाओं में विज्ञापन तो न दिये जायँ, लेकिन पुस्तक विशेष या व्यक्ति-विशेष के कुछ उद्धरण या (सद्वाक्य) के स्लाइड्स किसी खेल के आरंभ या बीच में जनता को दिखाये जा सकते हैं। स्लाइडों में जिस पुस्तक का उद्धरण हो, उसका नाम और उसकी कीमत तथा सिनेमा-मालिक को एतराज न हो तो उसकी प्राप्ति का स्थान भी जाहिर कर दिया जाय।

(१४) इस वर्ष तो नहीं, लेकिन आगामी वर्षों में काफी समय पहले रेल्वे-अधिकारियों से बात कर ली जाय तो मुसाफिर गाड़ियों में इस अभियान की अवधि के बीच अधिकृत हाकरों द्वारा साहित्य-बिक्री की इजाजत लेने और इस प्रकार साहित्य-प्रचार का प्रयत्न किया जाना चाहिये।

अन्य भी कुछ कार्यक्रम हो सकते हैं, जो साहित्य-प्रचार में मदद दें। स्थानिक परिस्थिति के अनुसार वह बनना चाहिये। मुख्य बात व्यवस्थित संयोजना और जगह जगह कुछ कार्यकर्ताओं द्वारा इस काम में पूरा समय व शक्ति लगाये जाने की है। साथ ही दूसरी बात जगह जगह साहित्य का स्टाक उपलब्ध हो सके की है, जिसमें सर्व सेवा संघ आदि साहित्य के प्रकाशकों को रकम उगाहने में कठिनाई न हो, जगह-जगह हिसाब ठीक रहे और कार्यकर्ता व अन्य व्यक्ति जो इस काम में उत्साह से लगना चाहें, उन्हें साहित्य के स्टाक के लिये पूंजी वगैरह की कठिनाई न हो।

जयपुर,
२१ अगस्त, १९६१

नई तालीम में अटक कहाँ?

• गुरुशरण

[आगामी ९, १०, ११, सितम्बर को पचमढ़ी मध्यप्रदेश में अखिल भारत नई तालीम कार्यकर्ता सम्मेलन हो रहा है, उस अवसर के निमित्त लेखक ने प्रकट चिंतन किया है, आशा है उस पर सब विचार करेंगे—सं०]

यह कहना असंगत न होगा कि शिक्षा की वर्तमान स्थिति, कार्य और जन-मानस को देखते हुए यह एक विचार की घड़ी ही है। आज महाभारत-काल जैसा ही दृश्य है, एक ओर नई तालीम के इने गिने कार्यकर्ता और दूसरी ओर अठारह अक्षौहिणी सेना से भी कहीं अधिक देश में प्रचलित कालेज-शिक्षा के शिक्षित बेकार; अंग्रेजी शिक्षा पर जीवन-निर्वाह करने के कारण द्रोणाचार्य और भीष्म-पितामह जैसे पूज्य पिता-पितामह उसी शिक्षण का समर्थन करते हुए। साधारण नागरिकों के दिल-दिमाग अजीब दुविधा में हैं कि बापू की बुनियादी शिक्षा या कालेज की नौकरी वाली तालीम? इस सम्मेलन से अभीष्ट और अपेक्षित है कि जीवन के लिए जीवन के द्वारा कही जाने वाली शिक्षा का स्वरूप स्पष्ट हो।

आज जय-जगत् के संदर्भ में पूर्व और पश्चिम की संस्कृति के बीच ऐसी समन्वयकारी शिक्षा की आवश्यकता है, जिसमें दोनों के गुणों का समन्वय हो। जनता में जिसका आकर्षण हो, जो वर्तमान जीवन-मूल्यों की प्रचलित परम्पराओं और मान्यताओं से उन्नत विचार वाली भले हो, पर उसे प्राप्त करने के बाद जीवन में प्रवेश करने पर जिन्दगी जीने के लिये कोई विरोधाभास न हो।

इस सम्मेलन में विचाराधीन विषय ये हैं :—

(१) विभिन्न राज्यों में नई तालीम शिक्षण का विकास तथा उसकी प्रगति। तृतीय पंचवर्षीय योजना में सूचित कार्यक्रम।

(२) अध्यापन प्रशिक्षण का कार्यक्रम।

(३) उत्तर-बुनियादी शिक्षण की समस्या।

(४) हिन्दुस्तानी तालीमी संघ के दिल्ली प्रस्ताव के बाद विगत तीन वर्षों में प्राप्त अनुभवों के प्रकाश में समग्र नई तालीम के कार्यक्रम पर विचार।

हिन्दुस्तानी तालीमी संघ के अखिल भारत सर्व सेवा संघ में विलीन होने के बाद नई तालीम के कार्यकर्ताओं का यह पहला ही संग साथ मिल बैठा है। २५ वर्ष पहले गांधीजी ने अपने सभी रचनात्मक कार्यक्रमों के बीच की कड़ी नई तालीम को कह कर, इसे लोकतंत्रीय सामाजिक उद्देश्य के लिये शैक्षणिक अभिव्यक्ति के रूप में पहचान कर देश के सामने कहा था—

"अगर मेरा बस चले, तो मैं कालेज की शिक्षा को जड़ मूल से बदल दूं और उसे देश की आवश्यकताओं के साथ जोड़ दूं।"

विनोबाजी चाहते हैं कि यह नित्य नई तालीम हो जाय। जैसे प्रतिदिन सूरज निकलता है, सबेरा होता है, प्रकृति बदलती है, समाज जगता है, नई चेतना आती है, उसी तरह नई तालीम देश के समस्त रचनात्मक कार्यक्रमों से अनुप्राणित होकर नित्य नई तालीम का रंग चढ़े।

यह सब होगा कैसे? कौन गांधीजी का सपना साकार कर शिक्षा को देश की आवश्यकताओं से जोड़ेगा? कौन विनोबा जी की भावना को मूर्त बनायेगा? इसका एक ही उत्तर है हम और आप। तत्त्वज्ञानी गारफील्ड ने कहा था "संसार की कोई भी चीज तभी बदलती है, जब कोई बदलनेवाला हो।"

वैसे आज नई तालीम की आवश्यकता में सब एक मत हैं। वैचारिक धरातल पर सब सहमत हैं। बस जहाँ-तहाँ अटक है व्यवहार की। उसे दूर करना है, रास्ते के रोड़े साफ करना है। पारस्परिक सह-चिंतन से अपनी मान्यताओं को नया बल मिलेगा, नई स्फूर्ति मिलेगी।

सद्भावनापूर्वक सत्याग्रह समाप्त

तमिलनाड के मदुराई जिले के मेलूर तालुका में, जहाँ सबसे अधिक ग्रामदान राज्य भर में हुए हैं, वहाँ के मुथीरलंदीपट्टी गाँव में बेदखली के खिलाफ जो सत्याग्रह प्रारम्भ किया गया था, वह २५ अगस्त को दोनों पक्षों में समझौता होने से बन्द कर दिया गया।

समझौते के अनुसार भूतपूर्व भूमि-स्वामी ने यह मान्य किया, कि विवादास्पद जमीन, 'मुथीरलंदीपट्टी ग्रामदान सहकारी समिति' को लीज (किराया) पर दी जाय और तदनुसार उसी दिन शाम को समझौता अमल में लाया गया। यह भी तय रहा कि सत्याग्रहियों के खिलाफ जितने भी मुकदमें दायर किये गये, वे वापस ले लिये जायेंगे और उनको तत्काल छोड़ दिया जायेगा। जमीन के मालिक ने यह भी मान्य किया कि कोर्ट ने गाँव के तीन व्यक्तियों पर फसल खराब करने के कारण जिस रकम की 'डिग्री' दी थी, वह भी नहीं लेगा।

समझौते के वक्त सर्वश्री मलैवेंडी, अध्यक्ष पंचायत बोर्ड मेलूर; वेंकटाचलम् अय्यर, एडवोकेट; कमच्ची नायडू, आर. वरदन, मदुराई जिले के भूदान-संयोजक; मुथुरलंदीपट्टी के प्रमुख नागरिक पल्मी कुप्पान और अन्य प्रतिष्ठित लोग भी उपस्थित थे। समझौते की प्रतीक के तौर पर दोनों पक्षों ने एक-दूसरे को पान के बीड़े दिये और एक-दूसरे के प्रति मंगल सद्भावनाएँ प्रकट कीं।

स्व० सरदार वेदरत्नम् !

सरदार वेदरत्नम् तमिलनाड के रचनात्मक कार्यकर्ताओं के एक प्रेरणादायी नेता थे। अपनी सादगी और सत्यवादिता से उन्होंने सब लोगों से प्रेम और आदर पाया। यद्यपि उनका हृदय राजनीतिक गतिविधियों में था, किन्तु आत्मा गांधीजी के रचनात्मक कामों में ही थी। नई तालीम उनको बहुत प्रिय थी। इन्होंने अपना जीवन स्त्रियों के लिए 'कन्यागुरुकुलम्' बनाने में समर्पित किया, जो वस्तुतः नई तालीम की एक प्रमुख संस्था बन गयी है। उनकी मृत्यु से देश को और विशेष तौर से रचनात्मक कार्यकर्ताओं को क्षति पहुँची है। नमक-सत्याग्रह के वक्त उन्होंने जो ऐतिहासिक भूमिका अदा की है, उसको सारा देश जानता है और इसी सत्याग्रह में लोगों ने उनको 'सरदार' का प्यारा खिताब दिया। हम सब भगवान से प्रार्थना करते हैं कि वह उनकी आत्मा को शांति दे।

—एस० जगन्नाथन्

श्री आशादेवी तथा आर्यनायकम् जी का पंजाब में दौरा

अखिल भारत शान्ति-सेना-मंडल की संयोजिका, श्रीमती आशादेवी तथा श्री आर्यनायकम्जी इस समय शान्ति-सेना के काम से पंजाब में घूम रहे हैं। सर्व सेवा संघ की प्रबंध-समिति की बैठक के तुरन्त बाद, १५ अगस्त को काशी से सीधे पंजाब गये थे। अमृतसर, जालंधर, पानीपत आदि शहरों में घूमकर वे एक बार दिल्ली आये थे, अब दुबारा फिर पंजाब के दौरे पर निकले हैं।

विनोबा-पदयात्रा वृत्त

अगस्त ता०	पड़ाव	मील	ग्रामदान
१५	मरीचड	११½	१२
१६	चिचिरगाँव	५.	३
१७	,, ,, ,,	—	६
१८	देउरीघाट	८	१
१९	पिपलपुरी	९	२
२०	,, ,, ,,	—	२
२१	शिशिमुख	७½	४

कुल ३०

२२ अगस्त को प्रातः पाँच बजे विनोबाजी नार्थ लखीमपुर सबडिविजन का आखरी पड़ाव, शिशिमुख छोड़ कर नाव से डिब्रूगढ़ के लिए रवाना हुए।

लखीमपुर जिला के डिप्टी कमिश्नर, असिस्टेन्ट कमिश्नर और सब डिवीजनल आफिसर तीन दिन यात्रा में रहे। ग्रामदान के बाद क्या व्यवस्था होनी चाहिए, इस विषय पर चर्चाएँ हुयीं।

—आंध्र प्रदेश में नागरकर्नुल में एक प्राकृतिक चिकित्सालय ७ अगस्त को शुरू हुआ।

[दादा के संस्मरण : पृष्ठ दो का शेष]

कि वे ऊपर की मंजिल पर रहते हैं। ऊपर जाकर उन्हें नमस्कार किया। वे बोले—'क्यों सोच समझकर आये या बिना सोचे-समझे?' मैंने उत्तर दिया—'बिना सोचे, समझे,' वे बोले—'आकर चले जाना क्या अच्छा है?' दादा उस समय बीमारी से उठे थे। उस कारण बहुत अशक्त हो गये थे। उस समय वे घुटने तक का एक पंचा पहनते थे। दादा मुझे आश्रम का कार्यक्रम समझा रहे थे। ऊपर की मंजिल पर ही हमारी बातचीत हो रही थी। उधर से बाहर जाते हुए गांधीजी पर निगाह पड़ी। अंगुली से संकेत कर 'यही गांधीजी हैं' इस प्रकार दादा ने उनकी पहचान करा दी। उसी समय मेरे हृदय में आया कि सुबह मैंने जिन्हें नमस्कार किया वे गांधीजी नहीं थे। उस समय गांधीजी की पोशाक थी, अन्दर बंडी ऊपर अंगरखा और सिर पर काठियावाड़ी पगड़ी। उस समय वे लंबी धोती पहनते थे। यह पोशाक सिर्फ वे बाहर जाते समय पहनते थे। आश्रम में घुटने तक का पंचा और शरीर बिलकुल खुला। सुबह साढ़े चार बजे मैं उनके साथ चक्की पीसने के लिए बैठता, यह मेरा भाग्य था। उनका एक हाथ पन्द्रह बीस मिनट तक सतत चलता रहता। उस समय दोपहर को वे एक समय भोजन करते थे। दो लड़कियों की सहायता से आश्रम के दोपहर का सब भोजन वे अकेले बनाते थे। कोचरब आश्रम में मेरा नाम कृष्णराव रखा गया। उस नाम से बापूजी मुझे बुलाते। उस समय कोचरब आश्रम में खाने के संबंध में बहुत कठोर नियम थे। बीमारों को छोड़कर घी-दूध किसी को नहीं मिलता। नमक भी बहुत थोड़ा मिलता। नाश्ते में दो तीन छोटी छोटी बाटियाँ मिलतीं, एक तोले की एक बाटी। वे दो-तीन बाटी मेरे लिए केवल दो-तीन ग्रास होतीं। उस समय मेरा शरीर बहुत मजबूत था। इसलिए यह थोड़ा सा नाश्ता मेरे लिए एक प्रकार से उपवास ही था। दोपहर को कनी खेश (नमक के बिना रवे का भात) मैं मुँह में डाल तक नहीं सकता था। मुँह में डालते ही कै सरीखा होने लगता था। दोपहर में धुन काम करता था। उस समय आश्रम में मिल का सूत बुना जाता था। उस समय आश्रम में मगनलाल गांधी, मामा फड़के और छोटेलालजी थे। सुबह चार का घंटा बजता तो, वह आवाज बहुत कर्कश लगती। एक हथौड़े से थाली बजाते। कोई कितनी ही गाढ़ निद्रा में होता, फिर भी उसके लिए उठे बिना चारा नहीं था। दादा उस समय अभी रुग्णावस्था से उठे थे, इसलिए अधिक काम नहीं करते थे। सुबह नाश्ते में उन्हें केले मिलते थे। रात को उनके पास ही मैं सोता था। मेरे लिए आश्रम में न रहकर घर जाना ही क्यों श्रेयस्कर है, यह रोज रात्रि को पड़े-पड़े घंटे डेढ़ घंटे वे मुझे समझाते रहते। मैं उन्हें कहता—'मुझे आश्रम में रहने दीजिये।' परन्तु उनका निर्णय हो चुका था। इसलिए वे मुझे समझाने का प्रयत्न करते रहे। मेरे आने के बाद तुरन्त उन्होंने घर पत्र लिखकर यह सूचित किया कि बड़ौदा तक जाने के लिए गाड़ी भाड़ा भेज दीजिये। घर से उसी समय पाँच रु० का मनीऑर्डर भेज दिया गया।

बीघा-कट्ठा के लिये शिविर

पूर्णियाँ जिला के कोढ़ा थाना के सर्वोदय एवं पंचायत-कार्यकर्ताओं का एक दिवसीय शिविर २७ अगस्त को उच्च विद्यालय, कोढ़ा के भवन में आयोजित किया गया, जिसमें श्री वैद्यनाथ प्रसाद चौधरी एवं बिहार सरकार के औद्योगिक उपमंत्री श्री कमलदेव नारायण भी शामिल थे। श्री चौधरी ने बैठक में उपस्थित १०० शिविरार्थियों को सम्बोधित करते हुए कहा कि 'बीघा कट्ठा अभियान' की सफलता में ही सामाजिक समानता की सफलता निहित है। कोढ़ा एवं फलका अंचल में बीघा-कट्ठा भू प्राप्ति के लिए क्रमशः महावीर झा एवं अनिरुद्ध सिंह के नेतृत्व में दो टोलियों का गठन किया गया, जिसमें लगभग २४ कार्यकर्ता शामिल होंगे।

१८४४ कट्ठा जमीन प्राप्त

पूर्णियाँ जिला के ठाकुरगंज थाना में १७ अगस्त से २० अगस्त तक श्री वैद्यनाथ प्रसाद चौधरी ने जिला कांग्रेस कमिटी पूर्णियाँ के मंत्री, श्री गिरजानन्द सिंह एवं ठाकुरगंज मंडल कांग्रेस कमिटी के अध्यक्ष श्री कार्तिक प्रसाद सिंह के साथ 'बीघा-कट्ठा अभियान' में दौरा किया। ठाकुरगंज एवं आसपास के पंचायत के मुखिया एवं अन्य पदाधिकारियों ने 'बीघा-कट्ठा अभियान' को सफल बनाने में सक्रिय सहयोग दिया। श्री चौधरी एवं पंचायत के पदाधिकारियों के सहयोग से ६७ दानपत्रों द्वारा १८४४ कट्ठा जमीन भूदान में मिली है।

इस अंक में

श्रीकृष्णदत्त भट्ट, अ० भा० सर्व सेवा संघ द्वारा भार्गव भूषण प्रेस, वाराणसी में मुद्रित और प्रकाशित। पता : राजघाट, वाराणसी–१, फोन नं० ४३९१
पिछले अंक की छपी प्रतियाँ ९१५० : इस अंक की छपी प्रतियाँ ९२००
एक अंक : १३ नये पैसे
वार्षिक मूल्य ७)

संपादक : सिद्धराज ढड्ढा

वाराणसी : शुक्रवार | १५ सितम्बर '६१ | वर्ष ७ : अंक ५०

विनोबा का वाङ्मय : २

नारायण देसाई

"महाराष्ट्र धर्म" मासिक का सम्पादन मानो विनोबा की वाङ्मय-उपासना का आधार था। कितनी ही बार तो पूरे के पूरे अंक अकेले विनोबा के हाथ से लिखे हुए निकलते थे। धर्म, अर्थ-रचना और राजनीति के विषयों पर विनोबा के विचारों को साहित्यिक स्वरूप "महाराष्ट्र धर्म" से मिला।

"महाराष्ट्र धर्म" में एक-दूसरी परम्परा भी शुरू हुई थी। तुकाराम के अभंगों में से एक-एक चुना हुआ अभंग उसमें दिया जाता था। लगभग चार हजार जितने अभंगों का अध्ययन करके उनमें से चार सौ के करीब विनोबा ने चुने थे। उनमें से फिर एक सौ को चुन कर उन्हें "महाराष्ट्र धर्म" में प्रकाशित करने का उनका विचार पूरा तो पार नहीं पड़ा, लेकिन उनमें से ३५ अभंग उनकी चिन्तनिका (टिप्पणी) के साथ प्रकाशित हुए, जो "संताचा प्रसाद" के नाम से पुस्तकाकार भी प्रकट हुए हैं।

विनोबा के वाङ्मय में उनके द्वारा प्रकाशित इस प्रकार के संग्रहों का एक विशिष्ट स्थान है। ठेठ बचपन से जिसका अध्ययन विशाल रहा हो, वह व्यक्ति अगर योजनापूर्वक अपने अध्ययन के सार के रूप में दोहन प्रकाशित करता है, तो वह अपने आप में उसकी एक सेवा मानी जायगी; पर विनोबा के इन संग्रहों में मात्र संकलन नहीं है, उसके अलावा उनमें दो बातें विशेष हैं। उन्होंने जो पढ़ा वह केवल नोट बुक में या दिमाग में दर्ज हुआ हो, ऐसी बात नहीं है; उसको जीवन में उतारने का प्रयत्न हुआ है, और जीवन साधना में जो अभंग, श्लोक या पद उपयोगी सिद्ध हुए हैं, उन्हीं का संग्रह करने में आया है। अर्थात् ये संग्रह जैसे एक ओर तटस्थ (आब्जेक्टिव) हुए हैं, वैसे दूसरी ओर वे आत्मस्थ (सब्जेक्टिव) भी हुए हैं। इन संग्रहों को प्रकाशित करने में भी यह उद्देश्य उतना ही स्पष्ट है। यह लेखमाला लिखने के लिए जब मैंने इन संग्रहों को एकसाथ देखा तो मुझे मालूम हुआ कि उनमें से अधिकांश की प्रस्तावना में एक वाक्य समान है : "सेवक की चित्त शुद्धि में ये सहायक हों।" 'संताचा प्रसाद' (तुकाराम) 'एकनाथाची भजनें', 'ज्ञानदेवाची भजनें', 'नामदेवाची भजनें', 'गुरुबोध' (शंकराचार्य) तथा 'धम्मपद'—ये तमाम पुस्तकें इस प्रकार के आनन्दी संग्रह हैं। बल्ड व्हिटमैन के शब्दों में कहें तो—Who touches these, touches a man

'जो इन्हें स्पर्श करता है, वह एक मनुष्य को स्पर्श करता है।'

इन पुस्तकों की दूसरी विशेषता इनकी प्रस्तावना या उनकी चिंतनिका अर्थात् टिप्पणियों में है। प्रस्तावनाओं में केवल साधक विनोबा के ही दर्शन नहीं होते, बल्कि उनमें विनोबा का पाण्डित्य भी अपनी सोलहों कलाओं से खिल उठता है। एक एक पद, एक एक चरण और एक एक शब्द पर इतना गहरा अध्ययन हुआ है कि सच्चे विद्यार्थी होने की इच्छा रखने वाले किसीके लिये भी वह अनुकरणीय है।

विनोबा के बालमित्र श्री ए० बी० घोत्रे ने एक बार उनके अध्ययन के विषय में कहा था : विनोबा जब अध्ययन करने बैठते हैं तब किसी मजदूर से कम मेहनत नहीं करते। मजदूर जिस तरह कुदाली की एक-एक चोट से जमीन के ढेले उखाड़ता जाता है और उसके पेट में घुसता जाता है, उसी तरह विनोबा शब्द का रहस्य खोलते जाते हैं और उसकी गहराई में प्रवेश करते जाते हैं।

परन्तु ज्ञान और कर्म के साथ भक्ति न हो तो विनोबा का साम्ययोग पूरा नहीं होता। ये संग्रह तैयार करते समय विनोबा की जो भावावस्था होती थी, उसका चित्र "ज्ञानदेव चिंतनिका" के हिन्दी अनुवाद के 'मनोगत' में श्री दामोदरदास मूंदड़ा ने इस तरह खींचा है :

"दस बरस पहले (१९४६) में जब विनोबाजी सर्वजनहिताय ज्ञानदेव के भजनों का यह चिन्तन मराठी में लिखाते थे, उसी समय उसका हिंदी भाषान्तर मेरे हृदय में प्रतिध्वनित होता था। रोज दोपहर को दो से चार बजे तक लिखने का क्रम था। किसी दिन दो भजन पूरे होते, किसी दिन तीन, तो कभी एक भी पूरा नहीं होता। कारण, लिखाते लिखाते विनोबा भावसमाधि में ऐसे लीन हो जाते थे कि उनको इस दुनिया का कोई भान ही नहीं रहता था। काफी समय तक सतत अश्रुधारा बहती रहती। क्या यह ज्ञानोबा और विनोबा के मिलन का प्रेमानन्द था? पर ऐसे द्वैत को भी वहाँ अवकाश कहाँ था? 'अद्वैत में न होता है तू, न होता है मैं, न आवाहन होता है, न विसर्जन। वहाँ तो विशुद्ध स्वरूपानन्द ही होता है।'—ऐसा ही यहाँ भी था।"

विद्वत्ता की दृष्टि से इन संग्रहों में विनोबा ने हमको जो दिया है, वह हम समझ सकें, उस ख्याल से "एकनाथाची भजनें" की उनकी प्रस्तावना के दस प्रकरणों में से एक का थोड़ा अंश यहाँ दिया जा रहा है :

"नाथ के व्यक्तिगत अनुभवों की खोज निकालने की अपेक्षा फिर मैं उनके अभंगों की गाथा की तरफ मुड़ा।" यह 'गाथा' साहित्य काफी पुराना है। गाथा शब्द ऋग्वेद में भी अनेक बार आया है, पर गाथा ऋग्वेद से प्राचीन है, ऐसा स्वयं ऋग्वेद ही कहता है। पवमानस्तोत्र का स्तवन 'पुरानी गाथा' पर से करने में आया है, ऐसा एक जगह ऋग्वेद में उल्लेख है। (ऋग्वेद—९ : ९९ : ४) गाथा अर्थात् भक्तिरसक गीत, इस अर्थ में कई बार गाथा का प्रयोग होता है। कई जगह गाथा अर्थात् अनुभवकथन-रूप ... अर्थ में भी उसका प्रयोग हुआ है। इस दूसरे अर्थ में अनेक गाथाएँ भारत-भागवत में आती हैं। अनुभवपरक गाथा पर्याय रूप से उपदेशपरक भी होती है। तुकाराम की गाथा में हमें भक्ति रूप, अनुभव रूप और उपदेश-रूप, इन तीनों प्रकारों के सर्वोत्तम नमूने देखने को मिलते हैं।

पर "गाथा" शब्द और गाथा के ये दो-तीन प्रकार अपने पारसी धर्मग्रन्थ 'जन्द अवेस्ता' में भी देखने को मिलते हैं। अवेस्ता के अत्यंत स्फूर्तिदायक भाव अर्थात् जरथुस्त्र की गाथा। जरथुस्त्र की गाथा पारसी समाज तीन हजार वर्षों से गाता आया है।

प्रबंध ग्रन्थ और गाथा, ये विचार शैली और भाषा शैली के दो सिरे हैं। पूर्वापर-संबंध, एकसूत्रता, विकास क्रम निर्देशन, यह प्रबंध साहित्य की आत्मा है। असंबद्ध, अलगाव, बिखरा हुआ रूप, सहज स्फूर्ति, विशृङ्खलता अथवा यों कहो कि उच्छृङ्खलता, यह गाथा का स्वरूप है। भारतीय साहित्य में प्रबंध-साहित्य और गाथा, दोनों काफी मात्रा में हैं। सन्तों की वाणी में गाथा साहित्य की बहार है। सिखों का 'ग्रन्थ साहब', कबीर आदि की वाणी, तमिल 'आलवारों' के भजन इत्यादि उस नाम से न हों तो भी गाथा-साहित्य ही है।'

विनोबा ने किसी को गुरु माना नहीं, न किसी के गुरु बने, परन्तु उन्होंने भारतीय संस्कृति से, विश्व के तमाम धर्मों से, जगत् के इतिहास से और विश्व विज्ञान से बहुत-बहुत लिया है। जो लिया है, उसे पचाया है और अपना बनाया है। विनोबा ने जीवन में जो कुछ ग्रहण किया उसमें से उनके व्यक्तित्व के साथ जो एकरस हुआ है, वह उनके मौलिक ग्रन्थों में हमें देखने को मिलता है। इसके अलावा उन्होंने अमृत-दोहन का काम भी किया है और यह अमृत-दोहन हमें महाराष्ट्र के पाँच मुख्य सन्तों की वाणी के सम्पादन में, शंकराचार्य सार ग्रहण रूप 'गुरुबोध' में और बौद्ध धर्म सार 'धम्मपद' में मिलता है।

इसी प्रकार वेदों का निष्कर्ष दे सके, ऐसी सामग्री भी उनके पास तैयार है। उसके एकाध संग्रह की आशा हम उनके पास से रख सकते हैं। कश्मीर की पदयात्रा की तैयारी के तौर पर उन्होंने कुरानशरीफ का एक बार फिर अध्ययन किया था। कभी उन्हें फुरसत मिले और—अखण्ड पदयात्रा में से भी फुरसत निकालने की कला उनको आती है—तो कुरानशरीफ का इस प्रकार का रसास्वादन भी हमें मिल सकता है।

गांधीजी के अलावा, जिनका ऋण विनोबा के सिर पर है, उनके संबंध में विनोबा के बहुत-से वाङ्मय का उल्लेख मैंने किया है। विनोबा के इतर सब साहित्य पर गांधीजी का प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष असर है। उसका उल्लेख करने से पहले चले आ रहे प्रसंग में एक-दूसरी छोटी-सी पुस्तक का उल्लेख करना उचित होगा।

यह है 'अभंग-व्रतें'। साबरमती आश्रम में आने के बाद वेदोपनिषद् के अध्ययन के लिए विनोबा एक वर्ष के लिए आश्रम से गये थे। वहाँ उन्होंने सतत प्रवृत्तिशील साधक का जीवन बिताया। पूरा होने आया, तब विनोबा ने अपने काम की रिपोर्ट देते हुए एक पत्र गांधीजी को लिखा था, जो अब कई जगह प्रकाशित हो चुका है। इस पत्र में यह उल्लेख नहीं था कि उन्होंने क्या क्या काम किया, पर एक वर्ष वे आश्रम से बाहर रहे उस दरमियान में आश्रमवासी के नाते एकादश व्रतों का उन्होंने कितने अंशों में पालन किया, उसी का हिसाब था। विनोबा ने इनको (एकादश व्रत को) आश्रम-जीवन की चाबी माना है। एकादश व्रतों के विषय में लिखी हुई गांधीजी की 'मंगलप्रभात' पुस्तक को विनोबा उनकी आत्मकथा से कम महत्त्व का नहीं मानते हैं। वे हमेशा कहते हैं कि कार्यकर्ताओं के शिविर हों तो उनमें 'मंगल प्रभात' का नित्य पठन होना चाहिए। 'अभंग व्रतें' यह 'मंगल प्रभात' का मराठी अनुवाद है। अनुवाद की इस पुस्तक को इतना महत्त्व इस समालोचना में देने का एक खास कारण है। यह अनुवाद पद्य में, मराठी अभंग में है, और वह भी केवल भाषान्तर नहीं, भावानुवाद है। 'अभंग व्रतें' की प्रस्तावना विनोबा ने कुछ अनुष्टुप श्लोकों में लिखी है। ये श्लोक विनोबा की भक्ति को बहुत अच्छी तरह व्यक्त करते हैं। उदाहरण के तौर पर उसका पहला श्लोक :

प्रेरणा परमात्म्याची महात्म्याचो प्रसन्नता,
वाणी संतकृपेची कि विन्याची कृतिशून्यता।

"इस कृति में परमात्मा की प्रेरणा, महात्मा का प्रसाद, संत-कृपा की वाणी ये सब इकट्ठे हुए हैं; विनोबा की तो इसमें केवल शून्यता ही है।" पर आगे जाकर वे कहते हैं कि यह शून्य है, इसीलिए 'फाविला गणितापरी।' गणित में जिस तरह से शून्य, अंकों की कीमत दस गुनी कर देता है, उसी तरह विनोबा इसमें सफल हुए हैं। 'गांधीजी की गुजराती' के बारे में विनोबा का एक चरण देखिए :

गुजरी साजरी भाषा, मोहनाची तमोहना।

मोहन की तमोहन भाषा और तमोहन मोहन की भाषा, ऐसा दुहरा अर्थ इसका होता है, और गुजरी तथा साजरी (अलंकृत) शब्दों का मेल भी तमोहन और मोहन से कम अच्छा नहीं जमा है।

मराठी भाषा का अल्प परिचय रखने वाले भी 'अभंग व्रतें' समझ सकते हैं, ऐसी सरल उसकी भाषा है।

विचारों का संकलन

विनोबा

उत्पादक श्रम : अध्यात्म का निकटतम पड़ोसी

सबके साथ हमारा प्रेम का सम्बन्ध जुड़े, इसमें अहंता न रहे, आत्मा का किसी तरह का संकोच न हो, हमारे पास छिपाने की कोई चीज न रहे, हम और सारी सृष्टि एक-रूप बन जायँ, इसलिए शरीर को भी तालीम देने की जरूरत है। नेति, धौति, बस्ती आदि पंचकर्म किये, इतने से अध्यात्म नहीं होता। ये चीजें शरीर की स्वच्छता के लिए सहायक होती हैं,

लेकिन अध्यात्मविद्या के लिए सबसे ज्यादा अनुकूल और सबसे ज्यादा नजदीक अगर कोई चीज है, तो वह है उत्पादक शरीर-परिश्रम, ऐसा मैं अपने अनुभव से जाहिर करना चाहता हूँ।

मनुष्य को भूख लगती है। यह भूख परमेश्वर की प्रेरणा है, जो हमें अध्यात्म में किस दिशा की ओर जाना चाहिए, यह बताती है।

(कटरा, जम्मू कश्मीर, ७–९–५८)

निःस्वप्न निद्रा सर्वश्रेष्ठ समाधि

यहाँ यह माना गया है कि कोई ध्यान करता है तो आध्यात्मिक साधना करता है। परंतु वैसे देखा जाय, तो गाढ़ निद्रा से बढ़कर कोई ध्यान नहीं हो सकता। हम अपना अनुभव बता रहे हैं कि गाढ़ निःस्वप्न, निर्दोष निद्रा से जितना उत्तम विकास होता है, उतना निर्विकल्प समाधि छोड़ कर दूसरे किसी मामूली काम में नहीं होता। *निःस्वप्न, निर्दोष निद्रा* एक आध्यात्मिक वस्तु हो सकती है और वैसे यह एक भौतिक वस्तु भी हो सकती है। जानवर निद्रा लेता है, तो वह आध्यात्मिक वस्तु नहीं है। लेकिन निष्काम कर्मयोगी दिन भर काम करके सो जाता है, तो निःस्वप्न, निर्दोष निद्रा में वे सारे अनुभव आ सकते हैं, जो निर्विकल्प समाधि छोड़ कर दूसरे किसी काम में नहीं आते।

(कटरा, ७–९–५८)

सेवा, सफाई : भगवान की पूजा

हम इस बात को अभी तक समझे नहीं है कि परमेश्वर की सबसे बढ़कर और आसान की पूजा, इबादत, भक्ति हम कर सकते हैं, वह है—दुःखी, रोगी, गरीबों की सेवा, गिरे हुए को मदद देना। हिन्दुस्तान में कुछ रोगियों की सेवा अक्सर ईसाई करते हैं। ईसाई लोग दूर-दूर के देशों में जाकर सेवा करते हैं, यह उनके लिए इज्जत की चीज है। लेकिन हमारे देश के लोग अभी तक उस काम में नहीं पड़े हैं। बीमारों की सेवा में जिन्दगी खर्च करना भगवान की पूजा है, क्या यों समझ कर हम उस काम को करते हैं? बहुत थोड़े लोग इस काम में लगे हैं।

हमने मेहतरों का एक ऐसा वर्ग पैदा किया है, जो सफाई करता है। हम अपना काम इतना ही समझते हैं कि घर में कचरा पड़ा हो, तो रास्ते पर फेंक दें! फिर उसे उठाना मेहतर का काम है। इन मेहतरों को हमने अछूत भी मान रखा है। दरअसल हमें समझना चाहिए कि सफाई करना याने परमेश्वर की पूजा है, सेवा है। हमें समझना चाहिए कि किसी जगह को गंदा बनाना अधर्म है, भगवान् के प्रति द्रोह है। ठीक इसके विपरित गंदगी उठाना, सफाई करना, भगवान् की पूजा है। याने गरीबों की सेवा करना ही दरअसल में भगवान् की इबादत है।

(जम्मू, ११–९–५८)

साइन्स ने 'मैं' और 'मेरा' को तोड़ दिया

आज साइन्स की इतनी तरक्की हुई है कि एक मनुष्य की आँख बिगड़ गयी हो, तो उसकी जगह अभी-अभी मरे हुए मनुष्य की अच्छी आँख बिठायी जाती है। फिर क्या वह मनुष्य 'मेरी आँख' कह सकेगा? किसी को कुछ रोग हुआ और उसकी टाँग सड़ गयी, तो उसकी टाँग काट कर तत्काल मरे हुए मनुष्य की टाँग लगायी जाती है और वह चलने लगता है, तो क्या फिर वह 'मेरी टाँग' कहेगा? साइन्स का यह करिश्मा है कि जैसे मोटर का पहिया दूसरी मोटर में लगा सकते है, वैसे ही एक शख्स के पुर्जे दूसरे के जिस्म में लगा सकते हैं। बीच में बारह साल तक मैं नकली दाँत पहनता था। फिर मैंने वे दाँत फेंक दिये; यों समझ कर कि बुढ़ापा आया है, तो यही नाटक अच्छा है। जब मैं वे नकली दाँत पहनता था, तो देखने वाले को वे बड़े खूबसूरत मालूम होते थे। कभी-कभी लोग दाँतों की तारीफ भी करते थे। मुझे कभी भी उन दाँतों का कभी अभिमान नहीं हुआ, क्योंकि मैं जानता था कि ये दाँत डाक्टर ने बनाये हैं, मैं तो सिर्फ पहनता हूँ। इसलिए दाँतों की तारीफ होती है, तो उन्हें बनाने वाले डाक्टर की होती है, मेरी नहीं। अब साइन्स और तरक्की करेगा, तो फिर 'मेरा-मेरा' नहीं चलेगा। (नगरोटा, जम्मू, ९-९-५८)

ज्ञान और कर्म का समन्वय आवश्यक

मैं खुद अध्यापक हूँ और अध्यापक छात्र हूँ। मेरा एक बार जिनके साथ अध्ययन और अध्यापन के जरिये संबंध हुआ है, वह अब तक टूटा नहीं। ऐसा ही शिक्षक और छात्रों का संबन्ध होना चाहिये। काम और ज्ञान का समन्वय ही बुनियादी शिक्षा है। जिसका केवल सिर ही काम करता है, वह 'राहु' है। 'राहु' केवल सिर है। जिसका केवल धड़ काम कर सकता है, वह है केतु। ऐसी एकांगी शिक्षा से व्यक्ति का विकास होता नहीं। व्यक्ति का विकास नहीं होगा तो राष्ट्र का विकास भी रुक जायेगा। इसलिये ज्ञान और कर्म समन्वय होना चाहिये। भारत के लिये यह ज्यादा जरूरी है, क्योंकि हिन्दुस्तान के लोग काम करने वालों को नीच भावना से देखते हैं। अंग्रेज आने के बाद अंग्रेजी शिक्षा लेकर तो शारीरिक श्रम को और भी हेय गिना जाने लगा है। एक तरफ शारीरिक परिश्रम कर नहीं सकते और दूसरी तरफ जीवन का मानदंड ऊँचा किया। इसलिये उन लोगों को ज्यादा वेतन की आवश्यकता होती है। अगर ऐसी नौकरी की संख्या बढ़े तो हिन्दुस्तान के लिए यह बहुत खतरनाक बात है।

हम भक्ति के मानी समझे नहीं

इस बात को नहीं समझते कि अपने गाँव-गाँव के गरीबों को ही मदद देना भगवान् की पूजा है। अक्सर होता यह है

कि हमने अपनी आँखों के सामने कहीं बहुत ज्यादा दुःख देखा, तो आँखों की लाचारी की वजह से विवश होकर दया के मारे हम कुछ दे देते हैं। इस समय कई

हम यह समझते हैं कि सामने किसी गरीब को देखा है, याने हमें परमात्मा का दर्शन हुआ है! हमारे सामने भूखा, प्यासा भगवान् खड़ा है। उसकी भूख और प्यास मिटाना; यही है भगवान् की पूजा! वैसे हम कभी कभी दया के काम कर लेते हैं, लेकिन नित्य पूजा की तरह क्या हम महसूस करते हैं। हमें गाँव-गाँव घूमना है और घर-घर जाकर ढूँढ़ना है कि कौन दुःखी है, गरीब है, पीड़ित है, बीमार है और किसे मदद की जरूरत है! जरूरतमंद को मदद पहुँचाने की कोशिश करेंगे, तभी हमारे हाथ से भगवान् की पूजा होगी! अब मूर्तिपूजा के दिन लद गये हैं। अब भी हम अपनी भावनाओं को सिर्फ मूर्ति तक सीमित रखते हैं, निठुर बनते हैं, व्यवहार में दूसरों को ठगते हैं, घूस ज्यादा लेते हैं। *हम यह भी नहीं समझते कि यह भगवान* का द्रोह है। आज हर चीज में मिलावट होती है। खाने की चीज में और दवा में भी मिलावट होती है। इस तरह एक तरफ तो हम ऐसी *मिलावट* करके चीजें बेचते हैं और दूसरी तरफ पूजा धर्म का काम कर लेते हैं, तो दिल को तसल्ली हो जाती है।

(जम्मू, ११-९-५८)

सत्यं जगत् स्फूर्तिः जीवनं सत्यशोधनम्

भूदान-यज्ञ

लोकनागरी लिपि•

वृत्ती व्यापक हो

मानव की शक्ती मर्यादीत है, क्योंकी अुसका शरीर मर्यादीत शक्तीवाला है। अिसलीअे अुससे सेवा भी मर्यादीत ही होगी; परंतु वृत्ती मर्यादीत नहीं रखनी चाहीअे। कोअी मेरे कार्यक्षेत्र के बाहर हो तो हर्ज नहीं, परंतु सहानुभूती के वीचार के क्षेत्र से बाहर हो जाये तो मैं अपनी शक्ती खोता हूं, मेरी शक्ती मर्यादीत हो जाती है। अिसलीअे चाहे सेवा का क्षेत्र मर्यादीत हो, पर भावना और सहानुभूती का क्षेत्र अमर्याद रहे। मनुष्य को मनुष्य के नाते ही देखो;

हींदू-धर्म की मान्यता है की सबमें अेक ही आत्मा है। यह अेक अैसा वीशाल धर्म है, जीसमें कीसी भी तरह का संकुचीत भाव नहीं रह सकता। यदी हम यह बात ध्यान में नहीं रखते हैं, तो धर्म की बुनीयाद ही खोते हैं।

'अेकं सद्वीप्राः
बहुधा वदंती।'

'सत्य अेक ही है। अुसे बुद्धीमान लोग कअी नामों से पुकारते हैं।' अिसमें 'वीप्राः बहुधा वदंती' कहा गया है, 'मूर्खाः बहुधा वदंती' नहीं कहा गया। हींदू-धर्म कहता है की सत्य अेक है, परंतु अुपासना के लीअे वह अलग-अलग हो सकता है। अैसी व्यापक वृत्ती रखेंगे, तो हींदुओं की सेवा कर सकेंगे। —वीनोबा

• लिपि-संकेत : ि = ी ; ी = ी ख = ख, संयुक्ताक्षर हलंत चिह्न से।

संपादक की ओर से

नशाबंदी को असफल न होने दें

ता० २-३ सितम्बर को दिल्ली में अखिल भारतीय नशाबंदी कार्यकर्ता-सम्मेलन हुआ, जिसमें देश के विभिन्न हिस्सों से एक हजार से ऊपर प्रतिनिधि शामिल हुए। इस सम्मेलन ने यह माँग की है कि तीसरी पंचवर्षीय योजना की समाप्ति के पहले ही, जितनी जल्दी हो सके उतनी जल्दी "सारे देश में समान आधार पर पूर्ण नशाबंदी" लागू होनी चाहिए।

सम्मेलन की इस माँग का देश भर में चारों ओर से उत्साहपूर्वक समर्थन होगा, ऐसी हमें आशा है। जिनके स्वार्थ नशाखोरी के साथ जुड़े हुए हैं, ऐसे लोगों की आवाज जरूर इस निर्णय के खिलाफ उठेगी और चूँकि ऐसे लोगों में बहुत से साधन और सत्ता से सम्पन्न हैं, इसलिए वह आवाज जोरदार भी मालूम होगी, पर हमें इसमें कोई शक नहीं है कि देश के नब्बे फीसदी से भी ऊपर लोगों का, जिनकी आज कोई आवाज नहीं है, समर्थन इस माँग को प्राप्त है।

निहित-स्वार्थ वाले लोग शराबबंदी का विरोध करें, यह समझा जा सकता है, लेकिन ताज्जुब इस बात का है कि कुछ प्रांतीय सरकारें भी नशाबंदी का विरोध कर रही हैं, बल्कि इस राष्ट्रीय नीति की सफलता में बाधक बन रही हैं। ताज्जुब इसलिए है कि प्रांतीय सरकारों में अभी भी बहुत-से मंत्री ऐसे हैं, जिन्होंने गांधीजी के नीचे काम किया है और उनके विचार का नमक खाया है। ये लोग आये दिन गांधीजी के आदर्शों की दुहाई भी देते हैं। नशाबंदी-सम्मेलन के तुरन्त बाद ता० ४-५ सितम्बर को दिल्ली में भारत सरकार द्वारा नियुक्त केन्द्रीय नशाबंदी समिति की बैठक में गृहविभाग के राज्यमंत्री, बी० एन० दातार ने बतलाया कि कुछ दिन पहले भारत-सरकार ने प्रांतीय सरकारों को पूर्ण नशाबंदी करने की सलाह देते हुए अपनी ओर से यह आश्वासन दिया था कि शराब-बंदी के कारण प्रांतीय सरकारों की आमदनी में जो घाटा होगा, उसकी आधी पूर्ति भारत-सरकार अपनी ओर से करेगी। लेकिन उत्तर प्रदेश तथा मैसूर राज्य के मुख्य मंत्रियों ने भारत सरकार के पत्र का जो जवाब दिया, वह सचमुच आश्चर्य-जनक है। इन मुख्य मंत्रियों ने लिखा कि नशाबंदी करने से प्रांतीय सरकार को जो घाटा हो, उसका आधा नहीं, बल्कि पूरा भारत-सरकार बर्दाश्त करे। इतना ही नहीं, नशाबंदी कानून का पालन करवाने में प्रांतीय सरकार का जो खर्च हो, वह भी भारत सरकार दे। योजना-कमीशन के सदस्य श्री श्रीमन्नारायण ने इस प्रकार की "सौदेबाजी की मनोवृत्ति" की भर्त्सना करते हुए केंद्रीय नशाबंदी-समिति की बैठक में ठीक ही कहा था कि इन सरकारों के रवैये से तो ऐसा लगता है, जैसे नशाबंदी केंद्रीय सरकार का ही काम है, इनका नहीं। "मानो नशाबंदी केंद्र में बैठे हुए थोड़े से लोगों की सनक है और प्रान्तों की जनता की भलाई से उसका कोई सम्बन्ध नहीं है।" श्रीमन्नारायण ने इस बात पर भी दुःख प्रकट किया कि पूर्ण नशाबंदी वाले प्रान्तों के पड़ोस में जो दूसरे प्रान्त हैं, उनकी सरकारें पड़ोसी राज्यों के नशाबंदी के कार्यक्रम में मदद पहुँचाने के बजाय, उल्टे अपनी सीमाओं में से नाजायज शराब ले जाकर उन राज्यों में बेचने वाले लोगों को प्रोत्साहन देकर पैसे कमाती हैं।

ये सारे तथ्य जो केन्द्रीय सरकार के दो जिम्मेदार व्यक्तियों ने जाहिर किए हैं, सचमुच आँखें खोलनेवाले हैं। इन बातों से जनता समझ सकती है कि वह राजनैतिक नेताओं की बातों पर और उनके वचनों पर कितना भरोसा करे। शराब-बंदी जैसे काम को, जिसमें सिवा जनता की भलाई के कोई नुकसान है ही नहीं, इस तरह टालते रहना, बल्कि उसमें विघ्न डालना, यह साफ जाहिर करता है कि ये लोग बात तो हमेशा जनता का हित करने की करते हैं पर वास्तव में या तो वे खुद इस बारे में संजीदा 'सीरियस' नहीं हैं, या फिर वे निहित-स्वार्थवाले लोगों के समर्थक हैं। नशाबंदी जैसे शारीरिक, बौद्धिक, मानसिक और आध्यात्मिक—सब दृष्टियों से लोगों के सुधार के कार्यक्रम को केवल आर्थिक दृष्टि से नापना भी कहाँ तक उचित है, इसका जवाब ये लोग ही दे सकते हैं, हालाँकि श्रीमन्नारायण ने ठीक ही कहा है कि नशाबंदी का कार्यक्रम केवल "सामाजिक या नैतिक कार्यक्रम" ही नहीं है, बल्कि मूलतः वह "आर्थिक लाभ" का भी कार्यक्रम है। कई मूल्यांकन समितियों द्वारा किए गए अध्ययन से पता चलता है कि विकास के कार्यक्रम के जरिए लोगों को जो अतिरिक्त आमदनी होती है, उसका काफी बड़ा हिस्सा शराब के जरिए "गटर में" चला जाता है। शराबखोरी से आदमी का जो शारीरिक और मानसिक ह्रास होता है और उससे देश को जो हानि होती है, उसका भी अगर अन्दाज लगाया जाय तो वह शराब-बंदी से कम होनेवाली आमदनी से सचमुच कहीं ज्यादा साबित होगा।

केंद्रीय सरकार की नशाबंदी-समिति ने एक और महत्व की सिफारिश की है। उन्होंने कहा है कि सरकारों को चाहिए कि वे अपने अफसरों और कर्मचारियों को इस बात के लिए प्रेरित करें कि उनमें से जो शराब पीते हों, वे उसे छोड़ दें। यह सचमुच दुःख की बात है कि आजादी के बाद ऊँचे ओहदों पर काम करनेवाले हिन्दुस्तानी अफसरों में शराबखोरी पहले से कहीं ज्यादा बढ़ी है। ऊँचे ओहदों पर और ऊँची तनख्वाहों पर काम करनेवाले इन लोगों की करनी का असर आम लोगों पर भी पड़ता है, क्योंकि आम लोग अक्सर समाज में ऊँचे माने जानेवाले लोगों का अनुसरण करते हैं। जब देश के विधान ने सम्पूर्ण नशाबंदी को अपना लक्ष्य घोषित किया है, तब कम-से-कम सरकारी नौकरी में रहते हुए कोई व्यक्ति शराब पीकर गलत उदाहरण पेश न करे, यह अपेक्षा रखना अनुचित नहीं माना जायगा। संविधान और सरकारी नीति के प्रति ही नहीं, देश की जनता के प्रति भी वफादारी की यह मांग है कि सरकारी अफसरों को कम-से-कम सार्वजनिक रूप से शराबखोरी से बाज आना चाहिए। वे समझदार लोग हैं, सामाजिक नेतृत्व करने की स्थिति में हैं। हमें आशा है कि वे अपनी जिम्मेदारी को महसूस करके केन्द्रीय नशाबंदी-समिति के सुझाव को अमल में लाने में योग देंगे इतना ही नहीं, उसमें स्वेच्छापूर्वक पहल करेंगे।

नशाबंदी का कार्यक्रम सिर्फ कानून से या सरकारी प्रयत्नों से सफल होनेवाला नहीं है। उसके लिए समाजहितैषी लोगों की ओर से और खुद जनता की ओर से हर स्तर पर देश-व्यापी प्रचार और प्रयत्न होने की आवश्यकता है। जगह-जगह ऐसा प्रयत्न हो, तो उस उस स्थान पर सरकारी कर्मचारी, जो खुद भी इस देश के नागरिक हैं, स्वेच्छा से यह घोषणा करके कि वे स्वयं शराब नहीं पियेंगे, इन प्रयत्नों को काफी बल दे सकते हैं। जैसा कि दिल्ली में हुए सम्मेलन ने तय किया है, नशाबंदी के सर्वांगीण कार्यक्रम के लिए एक अखिल भारतीय नशाबंदी संगठन की आवश्यकता है, और हमें आशा है कि इस संगठन का निर्माण जल्दी-से-जल्दी होकर नशाबंदी का कार्यक्रम गैर सरकारी और सामाजिक स्तर पर तथा देश व्यापी पैमाने पर हाथ में लिया जायगा।

'भारतीय पुलिस'

उत्तर प्रदेश हाईकोर्ट के न्यायमूर्ति, श्री ए० एन० मुल्ला ने इसी सप्ताह एक मुकदमे के सिलसिले में पुलिस-विभाग की जो टीका की है, वह उन्हीं के शब्दों में हम नीचे दे रहे हैं। न्यायमूर्ति मुल्ला की टीका में कुछ लोगों को अतिशयोक्ति मालूम हो सकती है, पर कहनेवाले की मन स्थिति और प्रसंग आदि की बात का जो कुछ प्रभाव रहा हो, उसे एक ओर रखें, तब भी पुलिस के बारे में एक न्यायधीश के मन में अगर इस तरह की बात

हो तो निश्चय ही यह बहुत गम्भीरता से सोचने का प्रसंग है। इसमें तो कोई संदेह नहीं कि इस देश में कम ही लोग ऐसे होंगे, जो पुलिस को अपने रक्षक अतः मित्र के रूप में देखते हों। पुलिस के बारे में अधिकांश लोगों की प्रतिक्रिया डर और आतंक की ही होती है। इस सारी परिस्थिति पर न सिर्फ सरकार को, बल्कि खुद पुलिस विभाग के कर्मचारियों को भी गम्भीरता से सोचना चाहिए। आशा है, न्यायमूर्ति मुल्ला की टीका उन्हें इसके लिए प्रेरित करेगी।

न्यायाधीश महोदय ने अपने फैसले में कहा है :

"मैं अपनी पूरी जिम्मेदारी के साथ यह कह रहा हूँ कि सारे देश में कानून की अवहेलना करनेवाला एक भी ऐसा अन्य कोई गिरोह नहीं है, जिसके जुर्मों का रेकार्ड उस संगठित गिरोह का मुकाबला करता हो, जिसे "भारतीय पुलिस" के नाम से सम्बोधित किया जाता है।

मेरी आकांक्षा है कि शासन का कारोबार शुद्ध हो। लेकिन एक व्यक्ति के प्रयत्न से बहुत ज्यादा आशा नहीं की जा सकती। मैं जल्दी ही अपने कार्यभार से मुक्त होनेवाला हूँ।...अगर मेरे सामने काम का कुछ लम्बा मौका भी होता तो मैं ऐसे आदमियों को, जो कानून का इस तरह मजाक बनाते हैं, कड़ी से कड़ी सजा देता रहता। कानून की मर्यादा को कायम रखने और उसकी इज्जत बढ़ाने की अपेक्षा, ऐसे लोगों का मुख्य काम कानून को तोड़ने का ही मालूम होता है।"

छात्रवृत्ति

भारत-सरकार के शिक्षा-मंत्रालय ने छात्र-वृत्ति की एक राष्ट्रीय योजना स्वीकार की है, जिसके अनुसार हाईस्कूल या मैट्रिक के बाद पढ़ने वाले करीब ढाई हजार योग्य विद्यार्थियों को हरसाल छात्रवृत्ति दी जायगी। जिन बालक-बालिकाओं के माता-पिता या अभिभावकों की आमदनी पाँच सौ रुपये महीने से कम होगी, उन्हें पूरी छात्रवृत्ति मिलेगी और जिनकी आमदनी पाँच सौ तथा हजार रुपये मासिक के बीच होगी, उनके बच्चों को आधी।

दिखने में यह योजना अच्छी मालूम होती है, पर हमें डर है कि अमल में इसका परिणाम यह होगा कि आज देहात के गरीब तबके और शहराती "बाबू" वर्ग के बीच जो आर्थिक और सामाजिक खाई बढ़ती जा रही है, वह और भी अधिक गहरी हो जायगी। छात्रवृत्ति के उपरोक्त नियम का शाब्दिक अर्थ लें तो यह सही है कि 'पाँच सौ रुपये माहवार से कम' आमदनी वाली श्रेणी में 'सबसे गरीब' भी आ जाते हैं, लेकिन वस्तुस्थिति यह है कि देहातों में जो करोड़ों साधनहीन गरीब परिवार हैं, उनके बच्चे अव्वल तो पढ़ ही नहीं पाते, और पढ़ते भी हैं तो हाईस्कूल तक मुश्किल से ही पहुँचते हैं। हाईस्कूल और उसके बाद कालेजों में पढ़ने वाले छात्रों का अगर सर्वेक्षण किया जाय तो शायद नतीजा यह आएगा कि ८०-९० फीसदी या उससे भी ज्यादा छात्र शहराती परिवारों के निकलेंगे। हमारा उद्देश्य 'शहराती' या 'देहाती', इस तरह के वर्गों की भावना को बढ़ावा देने का नहीं है, सिर्फ यह दिखाने का है कि छात्रवृत्ति की जो योजना भारत-सरकार ने सोची है, उसका लाभ गरीब साधनहीन लोगों को कदाचित् ही मिलेगा। जो कुछ भेद सरकार ने पाँच सौ रुपये मासिक से कम और उससे ज्यादा आमदनी वाले परिवारों में किया है, वह शहर के ही कम सम्पन्न और ज्यादा सम्पन्न लोगों में बँट कर रह जायगा। यह कहा जा सकता है कि 'प्राथमिक शिक्षा सबको मुफ्त' मिलनी चाहिए, ऐसी नीति पहले से ही सरकार ने बना रखी है, पर हम जानते हैं कि आज भी देश में लाखों गाँव ऐसे हैं, जहाँ स्कूल नहीं हैं और करोड़ों बच्चे ऐसे हैं, जो नजदीक में स्कूल होते हुए भी उसका फायदा नहीं उठा सकते। राष्ट्र के पास साधनों की कमी है। ऐसी स्थिति में यह और भी जरूरी है कि जो सीमित साधन हमारे पास हैं, उसका उपयोग पहले जो सबसे गरीब हैं, उनको उठाने में होना चाहिए। अगले पाँच बरस में छात्रवृत्ति की इस योजना पर सरकार करीब चार करोड़ रुपया खर्च करने वाली है। एक तरह से यह रकम नगण्य है, पर यह तो एक नमूना है। इसी तरह अन्य कई क्षेत्रों में जो छोटी-बड़ी सैकड़ों योजनाएँ आज सरकार लागू कर रही है, उनका हिसाब लगाया जाय और उन पर खर्च होने वाले सब साधन पहले अन्त्योदय की दृष्टि से सबसे गरीब लोगों को उठाने में लगाये जायें तो आज की परिस्थिति में काफी फरक पड़ सकता है। वरना, हम कहें कुछ भी, योजना की किताब में चाहे हमने यह लिखा हो कि हमारा उद्देश्य गरीबी और अमीरी के बीच के अन्तर को कम करना है, चाहे सारे राष्ट्रीय प्रयत्न का ध्येय हमने समाजवाद स्वीकार किया हो—पर वास्तव में गरीबी और अमीरी के बीच की खाई दिनों दिन बढ़ती ही जायगी।

● सिद्धराज

विनोबा-पत्र व्यवहार

[१]

महाराष्ट्र के प्रसिद्ध समाज-सेवक और लोकसभा के सदस्य श्री राजभोज पिछले साल पंजाब में तीन दिन पदयात्रा में रहे थे। उन तीन दिनों की रिपोर्ट उन्होंने एक छोटी किताब के रूप में प्रकाशित की है।

उन दिनों का उन पर इतना प्रभाव पड़ा कि 'पदयात्रा' यही सेवा का सर्वोत्तम साधन है, ऐसा वे मानने लगे। उसके अनुसार उन्होंने महाराष्ट्र में २१ दिन की समता-पदयात्रा चलायी। इस यात्रा में भिन्न-भिन्न धर्म के, जाति के भाई-बहन थे। उस बारे में भी एक किताब उन्होंने मराठी में प्रकाशित की है।

इन किताबों की पहुँच देते हुए विनोबा ने लिखा,

"प्रभु-कृपा से आपके, हमारे और सबके प्रयत्नों से जल्दी ही यश मिलनेवाला है। सारे विश्व में करुणा का राज्य होनेवाला है। वह दिन नजदीक लाने के लिए हम सब कोशिश करें और एक ही भगवान का नाम लेकर हम सब भेदभाव भूल जायें।"

[२]

श्री बाबा पाठक महाराष्ट्र के एक श्रमनिष्ठ कार्यकर्ता हैं। विनोबा से मिलने के लिये वे असम जाना चाहते थे। इसलिये बीस दिन धुनाई और गद्दी भरने का काम करके, उन्होंने १४० रुपये कमाये। लेकिन बाबा ने उनको सम्मति नहीं दी। बाबा ने लिखा :

"आपके जैसे सेवापरायण और निरंतर परिश्रम करने वाले सेवक देश में कम ही हैं।...आपसे मिलने में मुझे आनंद का ही लाभ होने वाला है। पर इतनी दूर आने का खर्चा और आप जैसे श्रमिक को अपने श्रम का उतना हिस्सा खर्च करना पड़ता, इससे आप पर कितना बोझ आता, ऐसा सोचकर मैंने ना कहा।"

[३]

श्री चारुबाबू अभी कलकत्ता में अर्थ संग्रह-अभियान का काम कर रहे हैं। हाल में बंगाल प्रदेश में जो विरोधी प्रचार हुआ, उसके कारण बंगाली भाइयों से कम सहयोग मिल रहा है। इस काम के साथ ही चारुबाबू "भूदान यज्ञ की ओर देखो" अपनी इस किताब का संशोधन भी कर रहे हैं।

अगले महीने के मध्य में फिर से यात्रा करने का उनका विचार है। श्री चारुबाबू ने अपने पत्र में लिखा है कि सर्वोदय कार्य के लिए एक अच्छे सेवानिवृत्त आई० ए० एस० ऑफिसर मिले हैं। बदले में विनोबाजी ने लिखा :

"मेरा ख्याल है, वह दिन दूर नहीं, बंगाल में सर्वोदय का स्रोत फूट निकलेगा और अखंड बहता रहेगा। उस पुण्य प्रदेश में इस जमाने में जो विश्व-व्यापक चिंतन की धारा प्रकट हुई है, राममोहन से श्री अरविंद तक, वह व्यर्थ नहीं जायेगी।"

पाठकों से

आप सब जानते हैं कि भूदान पत्रिकाएँ एक विशेष उद्देश्य को लेकर प्रकाशित हो रही हैं। इनके पीछे कोई व्यक्तिगत, संस्थागत या व्यापारिक लाभ का मोह नहीं है; उनके अस्तित्व का एकमात्र औचित्य प्रचार का उद्देश्य है। हम यह आशा करते हैं कि "भूदान-यज्ञ" का हरएक पाठक भी उस उद्देश्य के प्रति सहानुभूति रखता है। अतः इसके प्रचार से उनको भी खुशी होगी।

भूदान-पत्रों में विज्ञापन लेने की नीति नहीं है। इसके अलावा, उनकी कीमत भी कम-से-कम रखी जाती है, जिससे वे सर्व-सुलभ हो सकें। अतः आर्थिक दृष्टि से भी इन पत्रिकाओं का अस्तित्व ग्राहक-संख्या पर ही निर्भर है "भूदान यज्ञ" की खपत इस समय करीब ९ हजार है। अभी हर वर्ष सर्व सेवा संघ को उसके लिए काफी खर्च करना पड़ रहा है।

सर्व सेवा संघ के अध्यक्ष श्री नवकृष्ण चौधरी ने अभी हाल ही में सितम्बर ११ से २ अक्टूबर तक की अवधि में भूदान पत्र-पत्रिकाओं के ग्राहक बनाने तथा सर्वोदय-साहित्य का प्रचार करने की खास-अपील की है। विनोबाजी ने "घर घर में शारदा की उपासना" के इस कार्यक्रम का समर्थन किया है।

"भूदान यज्ञ" के हर मौजूदा ग्राहक पाठक से हम यह प्रार्थना करते हैं कि वे ११ सितम्बर (विनोबा-जयन्ती) से २ अक्टूबर (गांधी जयन्ती) तक के इस समय में कम-से-कम एक नया ग्राहक इस पत्रिका का और बनावें। जिस उद्देश्य को लेकर 'भूदान यज्ञ' निकल रहा है, उसके महत्व को देखते हुए न तो यह काम बहुत बड़ी है, न इस अर्थ में एक नया ग्राहक और बना देना किसी के लिए भी मुश्किल है। हरेक ग्राहक और पाठक इतना-भर कर दे तो "भूदान-यज्ञ" को तथा जिस उद्देश्य को लेकर यह निकल रहा है, उस उद्देश्य को बहुत बड़ा बल मिलेगा। आशा है, पाठक इस प्रार्थना पर ध्यान देंगे।

नया ग्राहक बना कर रुपया आदि भेजते समय कृपया अपना ग्राहक नम्बर, जो आपको आने वाले पत्र के रैपर पर छप रहा है, लिख दें, जिससे हमें आदर-स्वीकार में सुविधा हो।

—संपादक

चम्बल के बागी-क्षेत्र में क्या अहिंसा विफल रही ?

डा० दरबारीलाल अस्थाना

पिछले साल मई-जून में आचार्य विनोबा भावे चम्बल के बेहड़ो में अपनी पदयात्रा कर रहे थे। इन्दौर के समीप प्रारम्भ होने वाली चम्बल नदी प्राय. पांच सौ मील की टेढ़ी-मेढ़ी यात्रा करती हुई, उत्तर प्रदेश के इटावा जिले में यमुना नदी मे मिलती है। चम्बल बड़ी ही उग्र नदी है। इसकी पैनी धारा ने पिछले चार सौ वर्षों में लगभग पन्द्रह करोड क्यूबिक फिट समतल जमीन भयकर रूप से काट दी है। फलत: यहा मीलो तक पहाडियो की घाटियां और कन्दराओ जैसे प्राकृतिक स्थल बन गये है। छुपने के अनेक सुरक्षित स्थान है। वर्षों से यह लुटेरो, डाकुओ और बागियो की पनाहगाह है।

मुगल बादशाहों से लेकर आज तक सभी सरकारों ने अपना पूरा जोर चम्बल के बेहड़ों को बागी-मुक्त करने में लगाया है। किन्तु अभी तक किसी को इस कार्य में पूर्ण सफलता नहीं मिली है। कारण प्रत्यक्ष है। यहाँ सबने दंड-शक्ति पर भरोसा रख कर इस विष के उन्मूलन की चेष्टा की है। सदा बेदर्दी के साथ काम किया गया है। हमदर्दी के साथ कभी नहीं। किसी अधिकारी ने आज तक उस क्षेत्र के निवासियों की सामाजिक, आर्थिक और मनोवैज्ञानिक दशा का हमदर्दी से अध्ययन करने की चेष्टा नहीं की। उन कारणों को दूर करने का तो प्रश्न ही नहीं उठता।

आज संसार के सभी अपराध-विशेषज्ञ इस बात को मानते है कि अपराध के मौलिक कारण, समाज और परिवारों की विशेष आर्थिक और मनोवैज्ञानिक परिस्थितियों में निहित है। वे सख्त सजाएँ देने के बजाय आज सुधार और शिक्षा में अधिक विश्वास रखते हैं। अब यह विचार केवल शास्त्रीय सिद्धान्त मात्र नहीं रह गये हैं, बल्कि दुनिया की सरकारें आज अनेक जेलों में इन पर अमल करने की कोशिश कर रही है। भारतीय सरकारें भी इसका अपवाद नहीं हैं। हमारी सरकारों के पास योग्य मनोवैज्ञानिक हैं, समाजशास्त्री हैं। सहयोग देने वाली सुसगठित गैरसरकारी समाज सेवी संस्थाएँ हैं। क्यों न हम सब मिल कर एक बार सहृदयता से इस समस्या के बुनियादी कारणों का अध्ययन करने की चेष्टा करें और उसका कुछ स्थायी हल ढूँढ निकालें?

क्या इस मानवीय और मनोवैज्ञानिक तरीके में बहुत अधिक पैसा खर्च होता है? दूसरी ओर दंड-शक्ति द्वारा क्या अधिक स्थायी परिणाम निकलते हैं? स्वयं सरकारी रिपोर्ट और आँकड़े सिद्ध करते हैं कि इन दोनों प्रश्नो का उत्तर है, नहीं।

उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश और राजस्थान की सरकारें, १९५३ ई० से मोर्चा बना कर काम करने लगीं। बहुत-से डाकू मारे गये, बहुत से पकड़े गये। किन्तु सिलसिला उनका अहिरावण के सिरों की तरह अब भी जारी है, जब कि पिछले सालों की सरकारी रिपोर्ट के अनुसार एक एक डाकू को मौत के घाट उतारने या जिन्दा पकड़ने में औसतन दस दस लाख रुपया व्यय हुआ है! दंड शक्ति की यह प्रक्रिया अब भी जारी है।

चम्बल के बेहड़ो की पदयात्रा में विनोबा के सामने २० सशस्त्र डाकुओं ने आत्म-समर्पण किया। ये कोई मामूली डाकू नहीं थे। इनमें से कइयों पर पन्द्रह-पन्द्रह, बीस-बीस हजार रुपया सरकारी इनाम घोषित था! क्या विनोबा ने उन्हें यह आश्वासन दिया था कि आत्म-समर्पण से वे जेल या फाँसी से बच जायेंगे? नहीं, बिलकुल इससे उल्टी ही बात विनोबा ने उनसे कही: "आत्म-समर्पण से उन्हें न्याय मिलेगा। वे यदि यहाँ सजा न लेंगे तो भगवान के पास उन्हें कड़ी सजा मिलेगी। हाँ, इतना जरूर है कि उनके साथ ज्यादती या सख्ती न होगी। मेरे पास पहुँचने में उन्हें कोई तकलीफ न होगी।" विनोबाजी ने आगे फिर कहा, "जिन्होंने कत्ल किये, कई डाके डाले, उन्हें मैं माफी का आश्वासन देता हूँ और वे आत्म-समर्पण करते हैं तो उनके आत्म समर्पण की कोई कीमत नहीं होगी। इनके आने की कीमत इसीसे है कि जो भी न्याय मिलेगा, प्रेम से मजूर करें और जो भी दंड मिलेगा हँसते हँसते सहन करेंगे।"

जब बागी लोग विनोबा के चरणों में अपनी-अपनी बन्दूकें रखते थे, उस वक्त वे क्या कहते थे, 'अब तक जो गलत काम किये हैं, उनका हमें दुःख है, आइन्दा अब हम कोई गलत काम न करेंगे।

हथकड़ी-बेड़ी पड़ने के बाद भी, भिण्ड जेल में कुछ डाकुओं पर मुकदमे चले। उस समय भी सबने खुशी खुशी अपने जुर्म का इकबाल कर लिया। हृदय-परिवर्तन के इन अद्भुत उदाहरणों से सारा संसार प्रभावित हुआ। जो आध्यात्मिक वृत्ति के व्यक्ति हैं, उनमें इसका रहस्य समझने में अधिक कठिनाई नहीं हुई होगी।

किन्तु अन्य लोग, जो अपने को वैज्ञानिक (साइन्टिफिक) वृत्ति वाला मानते हैं, उन्हें भी इससे अनुसंधान की प्रेरणा मिलनी चाहिये थी। एक नया रास्ता खोजने के लिये, जिसमें इन्सान की सोई हुई इन्सानियत को जगाने, उसको हैवान से समाज उपयोगी नागरिक बनाने की सम्भावनाएँ निहित हैं।

सभी इस प्रक्रिया को बराबर आसानी से समझ सकेंगे, ऐसी अपेक्षा करना तो भूल होगी। किन्तु हमारे उच्च अधिकारी, जो अपराध और सजा के बारे में नये विचारों और सिद्धान्तों से अनभिज्ञ हैं, और जो निजी संस्कारों की दृष्टि से भी आस्तिक हैं, वे—यदि दूसरे स्वर में बोलें तो मन में दुःख होता है।

कुछ दिन हुए, मध्य प्रदेश के इन्स्पेक्टर जनरल पुलिस ने कहा कि चम्बल के डाकू क्षेत्र में विनोबाजी की प्रेम-प्रक्रिया से कुछ लाभ नहीं हुआ। वहाँ के सभी बागी-गिरोहों ने आत्म समर्पण नहीं किया। बड़े-बड़े गिरोहों की जगह अब वहाँ छोटे-छोटे अनेक गिरोह बन गये है, लूट मार भी बढ़ गयी है। उनके स्थानापन्न इन्सपेक्टर जनरल पुलिस ने भी इसका समर्थन किया है। उत्तर प्रदेश के इन्सपेक्टर जनरल साहब ने भी लूट मार बढ़ने की शिकायत की। किंतु मध्यप्रदेश पुलिस चीफ ने सबसे तीखा प्रहार किया है कि आत्मसमर्पण करने वाले डाकुओं ने मानसिंह के पुत्र, तहसीलदार सिंह को फाँसी से बचाने के लिये, विनोबा के सामने आत्मसमर्पण किया था! विनोबा और उनके साथियों ने इसका खडन किया है। उनकी बात पर अविश्वास करने का हमारे पास कोई कारण नहीं है। यहाँ हम उनके उत्तर दोहराना नहीं चाहते?

यदि हम दलील के लिये यह मान लें कि तहसीलदार सिंह को फाँसी से बचाने के लिये ही उसके साथियों ने आत्मसमर्पण किया, तो भी आपको यह मानना पड़ेगा कि यह 'आत्मोत्सर्ग' है, दूसरे के लिये बलिदान हो जाना है। जिसके अन्दर में कुछ सत्य बाकी है, वही ऐसा त्याग कर सकता है। दोस्त बन कर और हँस हँस कर जो दगा देते हैं, उन्हें क्या डाकुओं से ऊँचा मानना चाहिए?

आधुनिक राजनीति और समाजशास्त्री इस बारे में प्रायः एकमत हैं कि मनुष्य की पशुता घटाने और बढ़ाने की जिम्मेदारी सबसे अधिक समाज और राज्य की है। शिक्षा, आर्थिक तथा सामाजिक संयोजन, इत्यादि से उन कारणों को दूर किया जा सकता है, जिनसे मनुष्य के जीवन में निराशा या अनुचित मानसिक दबाव आदि की प्रक्रिया होती है।

किन्तु सबसे बढ़कर औषधि इस रोग की है, प्रेममय, संवेदनायुक्त व्यवहार। यह रामबाण है।

व्यक्तिगत रूप में यह महौषधि कदाचित वाल्मीकि से भी पूर्व समस्त संसार में शक्य समझी जाती थी। समूहों के लिये इसका सफल प्रयोग सर्वप्रथम गांधी ने किया। शुरू-शुरू में विचारशील व्यक्ति भी इसे सम्भव नहीं मानते थे। आज उनकी संख्या कम है। किन्तु हमें उन्हें भी समझाना है और कायल करना है। गांधी के बाद विनोबा का यही प्रयास है। उनकी शान्ति-सेना का यही उद्देश्य है। इस सेना के कार्य को विनोबा ने प्रेमाक्रमण कहा है। विश्वशान्ति का आज यही एकमात्र रास्ता है। द्वेष और हिंसा, चाहे वह जातिवाद के कारण हो, भाषावाद या प्रान्तवाद अथवा विषमता के कारण; प्रेम और सहानुभूति द्वारा ही उसका निराकरण सम्भव है।

आप यह न समझ लें कि सरकार अथवा पुलिस में ऐसे निष्ठावान व्यक्ति नहीं हैं। यह बात थोड़े ही लोग जानते हैं कि चम्बल के बेहड़ों के डाकुओं का अन्त करने में काफी सफलता प्राप्त करने के बाद भी, मध्य प्रदेश के डिप्टी इन्सपेक्टर जनरल पुलिस, श्री कोहली ने ही सबसे पहले सरकार को सुझाव दिया था कि इस डाकू-क्षेत्र में अपना प्रेम आक्रमण करने के लिये आचार्य विनोबा भावे को आमंत्रित किया जाय। एक पुलिस-सम्मेलन में विनोबा का स्वागत करते हुए कोहली साहब ने कहा था,

> "आज से तीन साल पहले भिंड, मुरेना, दतिया, ग्वालियर आदि में डाकुओं का बड़ा आतंक फैला हुआ था। तय हुआ कि पूरी ताकत लगा कर डाकुओं को खत्म किया जाय। हम १६ में से १३ गिरोह खत्म करने में सफल हुए। अब लाखन, पानी और बहादुरा ये गिरोह बाकी हैं। समाज के शरीर पर उठे इस फोड़े का आपरेशन तो हमने कर डाला, पर इससे समस्या हल नहीं होती। समाज का यह दुःख कैसे मिटे, इस पर सुझाव माँगे गये, तो मैंने तीन साल पहले ही यह सुझाव दिया था कि इसके लिये आचार्य विनोबा भावे के दल को बुलाया जाय। **आत्म-बल से ही इस फोड़े की मरहम-पट्टी हो सकती है। ३ साल के बाद आज मेरा स्वप्न पूरा हुआ। इससे सबका कल्याण होगा।"**

विनोबा के शान्ति-सैनिक चम्बल के बेहड़ों में आज भी दिलों के घावों की मरहम-पट्टी करने में जुटे हैं। ईश्वर से उनके एक शुभचिन्तक की प्रार्थना है: सफलता पुलिस को मिले, निःस्वार्थ सेवा का सतोष विनोबा के शान्ति सैनिकों को।

युद्ध-विरोध पर्याप्त नहीं
समाज-परिवर्तन का अहिंसक आंदोलन चाहिये

शंकरराव देव

पिछले कुछ दिनों से इंग्लैण्ड में बर्ट्रेण्ड रसेल और माइकेल स्कॉट के नेतृत्व में अणु-अस्त्रों के उपयोग के खिलाफ़ आन्दोलन खड़ा हुआ है, जो दिन-ब-दिन जोर पकड़ता जा रहा है। उनकी मांग है कि सम्पूर्ण निःशस्त्रीकरण न होता हो, तब भी कम-से-कम अणु-अस्त्रों का उपयोग न करने की बात सब राष्ट्रों को मान लेनी चाहिए। अणु-अस्त्रों के त्याग के बारे में इसी ता० १४ से १८ तक लन्दन में एक छोटी-सी गैर-सरकारी स्तर की अन्तर्राष्ट्रीय परिषद भी आयोजित की गयी है, जिसमें भाग लेने के लिए श्री जयप्रकाशजी भी गये हैं।

अणु-अस्त्रों के खिलाफ जो यह आवाज उठी है, उसका कारण यह है कि इन अस्त्रों के उपयोग से मानव जाति के सर्वनाश की सम्भावना है। मानव के सामने अपने अस्तित्व (सरवाइवल) की ही समस्या खड़ी हो गयी है। अणु-अस्त्रों के पहले के अस्त्र-शस्त्रों से भी समाज का कुछ तो नाश जरूर होता था, परन्तु उन शस्त्रों के उपयोग का अनिवार्य परिणाम सर्वनाश नहीं था और इसीलिए उन शस्त्रों के उपयोग के बावजूद मानव जाति बची रही। पर अब वह बात नहीं है। अब युद्ध हुआ तो इन अस्त्रों के कारण सर्वनाश ही होगा। इस दृष्टि से अणु-अस्त्रों के निषेध की मांग दुनिया के हरएक मानव के लिए अत्यन्त महत्व रखती है।

यह मानते हुए भी यह कहना होगा कि उपरोक्त आन्दोलनों के पीछे की प्रेरणा एक प्रकार से उपयोगितावाद (*युटीलिटेरियनिज्म*) *से ही जन्मी* है। मनुष्य के स्वभाव की यह विशेषता है कि उपयोगितावाद चाहे जितने ऊँचे दर्जे का हो, फिर भी वह उसके लिए पर्याप्त नहीं होता है। *मनुष्य को महान् और मुश्किल* कामों को करने की प्रेरणा देने की शक्ति केवल उपयोगितावाद में नहीं है। उससे प्रेरित होकर मनुष्य महान् कार्य सम्पन्न कर भी ले तो भी वह आध्यात्मिक दृष्टि से असंतुष्ट ही रह जाता है; क्योंकि उपयोगितावाद कितना ही उदार हो, उसमें भय का कुछ-न-कुछ अंश जरूर रहता है।

अस्तित्व की चिन्ता से पैदा हुए इन आन्दोलनों के अलावा, पश्चिम के देशों में शान्ति और अहिंसा के अन्य आन्दोलन भी काफी वर्षों से चल रहे हैं। इन आन्दोलनों के पीछे की *प्रेरणा मूलतः उपयोगितावाद की नहीं है*, ऐसा कह सकते हैं। वह प्रेरणा एक प्रकार से धार्मिक है। इसका एक लम्बा इतिहास है। इस प्रेरणा का मूल ईसा मसीह के उपदेशों में है। सामान्यतया '*ईसाई समाज*' ने और खास करके 'चर्च' ने, तत्त्वतः और व्यवहारतः हिंसा और युद्ध को मान्यता भले दे दी हो; फिर भी पाश्चात्य ईसाई समाज में बहुत दीर्घकाल से ऐसे काफी लोग और सम्प्रदाय हुए हैं, जो युद्ध और मानव-हत्या को ईसा के उपदेशों के विरुद्ध मानते आये हैं। इसलिये उन्होंने युद्ध-संस्था का विरोध किया है। यूरोप के कई देशों में सेना में भर्ती होना हरएक नागरिक के *लिये कानूनन लाजिमी* है। इस कानून का उन लोगों ने हमेशा विरोध किया है; क्योंकि युद्ध उनकी धर्म-बुद्धि (कॉन्शायन्स) के खिलाफ है। इसीलिये ये लोग 'कान्शाएन्शियस आब्जेक्टर्स' के नाम से पहचाने जाते हैं। इनकी मुख्य मांग यह रही है कि जो लोग अपनी धर्म-बुद्धि के कारण युद्ध का विरोध करते हैं, उनको सेना में भर्ती होने के लिए कानून मजबूर न किया जाय। इस मांग को लेकर इन लोगों ने बहुत कष्ट सहे हैं। उनका यह सारा इतिहास बड़ा रोमांचकारी और प्रेरणादायी है।

पर जिस मानस और इतिहास में से यह मांग पैदा हुई है, उसका स्वरूप ही ऐसा है कि यदि इस मांग को सार्वभौम मान्यता मिलती है तो भी आज के मानव के सामने अणु-युद्ध के कारण जो सर्वनाश की समस्या खड़ी है, उससे मानव को मुक्ति *नहीं मिल सकती, न उससे* से अणुशस्त्रों का निःशस्त्रीकरण अथवा अन्य शस्त्रों का स्वेच्छापूर्वक त्याग संभव है। उपयोगितावाद या धर्म-बुद्धि के कारण युद्ध का विरोध करने वाले व्यक्तियों की संख्या चाहे जितनी बड़ी हो, पर जब तक सर्व-साधारण-मानव युद्ध-विरोधी और मानवीय नहीं बनता है, तब तक मानव समाज किसी *भी प्रकार से युद्ध के भय से मुक्त नहीं हो* सकेगा।

जब हम इन युद्धों के मूल कारणों की खोज करने लगेंगे और उन कारणों का निराकरण करने का प्रयत्न करेंगे, तब उन प्रयत्नों के परिणामस्वरूप मानव के मन में परस्पर हिंसा और युद्ध के प्रति आज जो श्रद्धा और भरोसा है वह दूर होगा और वह शांतिमय जीवन के लिये उत्सुक और तैयार होगा, क्योंकि हिंसा और तज्जन्य युद्ध की जड़ें आज के मानव के मन *में और मानवीय समाज की आज की* रचना में ही मौजूद हैं। इस जटिल समस्या की तरफ देखने की हमारी दृष्टि समग्र और वैज्ञानिक होगी तभी इसका सही हल निकल सकेगा।

गत दिसम्बर में गांधीग्राम (मद्रास राज्य) में 'वार रेजिस्टर्स इन्टरनेशनल' का जो अधिवेशन हुआ था और जिसमें *पश्चिम के बहुत से शांतिवादी एकत्र हुए* थे, उसके निवेदन में इस महत्त्वपूर्ण मुद्दे पर ध्यान दिया गया है, यह सही है। निवेदन में कहा है कि प्रेम और अहिंसा का असर केवल व्यक्तिगत जीवन पर ही नहीं होना चाहिए, बल्कि आर्थिक, राजनैतिक, सामाजिक रचना और सम्बन्धों पर भी होना चाहिए। यह तभी हो सकता है कि जब एक *विकेन्द्रित* आर्थिक और राजनैतिक

बेलग्रेड-सम्मेलन के मंच से :

(१)

"मैं इस सम्मेलन में अपने देश के प्रधानमंत्री की हैसियत के अलावा एक स्त्री और एक माता की हैसियत से भी आयी हूँ। ''मैं एक क्षण के लिए भी यह विश्वास नहीं कर सकती कि दुनिया में एक भी माता ऐसी होगी, जो आणविक प्रभाव के कारण अपने बच्चों के धीरे-धीरे घुट-घुट कर मरने की सम्भावना की कल्पना को भी सह सके। इन बड़े राष्ट्रों के राजनीतिज्ञों को, जिन्हें सत्ता पर बैठाने वाले आम लोग युद्ध नहीं चाहते, यह समझ लेने का कोई अधिकार नहीं है कि उन्हें किसी भी जीवन-पद्धति या किसी वाद-विशेष की रक्षा के लिए महान् विनाश की सम्भावनाओं से भरे हुए आणविक युद्ध शुरू करने का अधिकार प्राप्त है।"

—श्रीमती भण्डारनायक, प्रधान मंत्री, श्रीलंका

(२)

"...यह सम्मेलन मानवीय इतिहास के एक संकट-काल में मिल रहा है। और सारी समस्याएँ—चाहे वे साम्राज्यवाद की हों या आजादी की—वे सब इस संकट के कारण फीकी पड़ गयी हैं। क्योंकि, अगर युद्ध होता है तो सभी चीजें नष्ट हो जायेंगी। मानव जाति खतरे में है। हमें इसी सन्दर्भ में सोचना चाहिए और जो सबसे जरूरी चीज है, उसीको प्राथमिकता देनी चाहिए। वह जरूरी प्रश्न यह है कि दुनिया में युद्ध होगा या शान्ति! ऐसे समय में, जब कि दुनिया सर्वनाश की ओर जा रही है और सब बातें गौण हैं ''या तो निःशस्त्रीकरण ही होगा या विनाश। इसके अलावा और कोई विकल्प नहीं है।

मैं बहुत गम्भीरता के साथ यह महसूस करता हूँ कि शान्ति-स्थापना की यह समस्या दुनिया की हरएक सरकार और हर संस्था व व्यक्ति का ध्यान आकर्षित करती है।

मुझे इस बात का ताज्जुब है कि बड़े राष्ट्र कड़ा और गर्वपूर्ण रुख अख्तियार कर रहे हैं। वे शान्ति-स्थापना की चर्चा करने की पहल करने के लिए अपने को बहुत बड़ा और ऊँचा समझते हैं। मैं नम्रतापूर्वक कहना चाहता हूँ कि यह रुख सही नहीं है। इस समय उनका अपना स्वाभिमान खतरे में नहीं है, बल्कि मानव-जाति का भविष्य खतरे में है।"

—जवाहरलाल नेहरू, प्रधान मंत्री, भारत

(३)

"इस सम्मेलन का उद्देश्य बड़े राष्ट्रों को यह महसूस कराने का है कि दुनिया का भविष्य केवल उन्हींके हाथ में नहीं है। इसका उद्देश्य हिंसा और जोर-जबरदस्ती के हिमायतियों को यह मान कराने का भी है कि दुनिया के अधिकांश राष्ट्र समस्याओं के हल के लिए शस्त्रों का सहारा लेने को गलत मानते हैं। सारी दुनिया के भविष्य की जिम्मेदारी थोड़े-से राष्ट्रों के हाथ में नहीं रह सकती, चाहे वे कितने भी बड़े या शक्तिशाली क्यों न हों।"

—मार्शल तीतो, राष्ट्रपति, युगोस्लाविया

रचना पर नया समाज खड़ा होता है। जहाँ तक यह विचार-श्रद्धा है, वह ठीक है। लेकिन केवल इतने से आज मानव समाज के सामने जो विकट समस्या है, उसका हल निकलने की कम संभावना है। भिन्न भिन्न देशों की जो भिन्न भिन्न परिस्थितियाँ हैं, उनको ध्यान में लेकर इन देशों के लिए इन तत्वों के आधार पर एक सर्वांगीण सामाजिक और आर्थिक कार्यक्रम तैयार करने की और उसकी सिद्धि के लिए एक जन-आंदोलन चलाने की आवश्यकता है। जो आंदोलन जन-आंदोलन नहीं, जिस आंदोलन को जनता का आधार नहीं है, जनता की समस्याओं को जनता के स्तर पर ही हल करने की कोशिश जिस आंदोलन में नहीं है, वह आंदोलन एक साम्प्रदायिक आंदोलन बन जाता है। "साम्प्रदायिक" का अर्थ यह नहीं कि उसका लक्ष्य छोटा है, बल्कि उसका दायरा छोटा है। जहाँ तक हमारी जानकारी अन्तर्राष्ट्रीय परिषदों में है, इस विषय को जितना न्याय मिलना चाहिए वह अब तक नहीं मिला है।

सर्वोदय-आंदोलन में युद्ध विरोध एक प्रकार से निहित ही है। आज सर्वोदय-आंदोलन का जो स्वरूप है, उसका अपना इतिहास है। यद्यपि भारतीय विचार और आचार पर भगवान बुद्ध का प्रभाव काफी है, तथापि भारतीय समाज के इतिहास में धर्म-बुद्धि के कारण युद्ध विरोध जैसी कोई चीज शुरू से आज तक नहीं रही है। भारतीय समाज में युद्ध एक पवित्र और धर्म-सम्मत संस्था है। चार वर्ण और चार आश्रमों का जो भारतीय समाज हजारों वर्षों से बना हुआ है और चलता आया है, उसमें लड़ना क्षत्रिय-वर्ग का धर्म माना गया है। अन्य वर्णों से युद्ध में भाग लेने की अपेक्षा नहीं रखी जाती थी, क्योंकि युद्ध उनका काम या धर्म नहीं माना गया था। इसलिए जन-साधारण के लिए कानूनन सेना में भर्ती होने का सवाल ही नहीं आया। हाँ, अन्य वर्ण के लोग स्वेच्छा से लड़ना चाहें तो उनके लिए रास्ता खुला रहता था। इसलिए भारतीय इतिहास में व्यक्ति को धर्मबुद्धि के कारण या समाज-कल्याण के कारण युद्ध-विरोध करने का प्रसंग खड़ा ही नहीं हुआ। पश्चिम के समाज में व्यक्ति की धर्मबुद्धि के कारण युद्ध विरोध एक महत्व की चीज बनी है, इसके मुख्य दो कारण हैं : एक, उनकी धर्मांज्ञा और दूसरा, उनकी राष्ट्रीयता की धारणा और इसके कारण सेना में भर्ती होने की कानूनी सख्ती। भारतीय समाज के इतिहास में इन दोनों कारणों का पूर्णतया अभाव रहा है।

भारतीय इतिहास में एक बार सम्राट् अशोक ने जरूर युद्ध से विरक्ति जाहिर की थी और युद्ध का विरोध किया था, पर आधुनिक काल में पहले पहल युद्ध विरोध का सवाल गांधीजी ने ही उठाया, क्योंकि उन्होंने अहिंसा को अपना धर्म माना था। लेकिन उनका युद्ध-विरोध मुख्यतः उनके सामाजिक, आर्थिक और राजनैतिक संबंधों के स्वरूप और गुणों तथा सत्य और अहिंसा सम्बन्धी विचारों से था, न कि केवल अपनी धर्म-बुद्धि के कारण। प्रथम विश्व युद्ध के समय तो गांधीजी ने ब्रिटिश साम्राज्य के एक नागरिक के नाते स्वयं तो प्रत्यक्ष हिंसा का काम नहीं किया, फिर भी ब्रिटिश साम्राज्य की लड़ाई जीतने में सक्रिय सहयोग दिया था। उनका कहना था कि जब तक नागरिक अपनी सरकार से मिलने वाली सुविधा और लाभों का स्वेच्छा से उपभोग करता है तो उसको युद्ध में सरकार की मदद करनी चाहिए। यदि कोई व्यक्ति अपना धर्म अहिंसा मानता है और युद्ध का विरोध करना चाहता है, तो वह जरूर असहयोग कर सकता है, बशर्ते कि वह सरकार की सुविधाओं और लाभों का जहाँ तक हो सकता है, उपभोग स्वयं न करे।

गांधीजी यह कभी नहीं भूलते थे कि वे समाज के एक सदस्य हैं और इस नाते समाज के प्रति अपना कुछ कर्तव्य भी है। वे यह भी मानते थे कि समूचे समाज ने अहिंसा को अपना धर्म नहीं माना है। उसे अभी अहिंसा की तरफ ले जाना है। इसलिए अपनी अहिंसा एक संकुचित या साम्प्रदायिक चीज कभी न बने, इसका वे निरंतर ध्यान रखते थे। सारा समाज अपने सभी व्यवहारों में अहिंसा का उपयोग किस तरह करे इस ओर उनका चिंतन और प्रयास रहता था।

युद्ध के बारे में गांधीजी की भूमिका कभी भी केवल नकारात्मक नहीं थी। शस्त्र का उपयोग अहिंसा धर्म के खिलाफ है, ऐसी उनकी श्रद्धा जरूर थी, लेकिन केवल कुछ व्यक्तियों के शस्त्र धारण न करने से समाज में अहिंसा प्रतिष्ठित होगी और समाज के सारे व्यवहार प्रेम से चलने लगेंगे ऐसा वे नहीं मानते थे। इसलिये शांति-स्थापना के बारे में उनकी भूमिका विधायक थी। उनकी यह मान्यता थी कि समाज को प्रेम से सारा व्यवहार करने का प्रशिक्षण देना होगा और इसी प्रशिक्षण के द्वारा समाज के आर्थिक, सामाजिक संबंधों में ऐसा परिवर्तन लाना होगा, जिससे एक शांतिमय और अहिंसात्मक समाज की स्थापना हो। भारत को आजादी का आंदोलन उनके लिये इस शिक्षण का और सामाजिक परिवर्तन का ही अंग था। आज का सर्वोदय का कार्यक्रम, गांधीजी ने जो शुरू किया था उसी को आगे चला रहा है।

यह सारी भूमिका न समझ सकने के कारण गांधीजी के स्वातंत्र्य आंदोलन पर तथा सर्वोदय के कार्यक्रमों पर संकुचितता या राष्ट्रीयता का आरोप लगाया जाता है, लेकिन बात उल्टी है। ये दोनों आंदोलन भारत के अन्दर चले हैं। गांधीजी भारत की सारी जनता को साथ लेकर चलना चाहते थे, साम्प्रदायिक नहीं बनना चाहते थे।

कोई भी जो समाज को लेकर चलना चाहता है, तो पहले उसके अपने इर्दगिर्द के समाज को साथ में लेना अनिवार्य होता है। सर्वोदय कोई एक व्यक्ति या देश की चीज नहीं है, सारे विश्व की और सबकी है, यह बिल्कुल सत्य है। तथापि अहिंसात्मक समाज की स्थापना पड़ोसी या स्वदेशी धर्म के आधार पर हो सकती है। यही वैज्ञानिक दृष्टिकोण है। अतः सर्वोदय विश्व की चीज होते हुए भी उसकी प्रक्रिया, कार्यक्रम और स्वरूप जगह जगह भिन्न-भिन्न होना अनिवार्य ही नहीं, आवश्यक भी है। विज्ञान और तकनीक ने विश्व को नजदीक ला दिया है। इसके एक अनिवार्य परिणामस्वरूप सारे विश्व के विचार और व्यवहार में कुछ हद तक समानता का आना जरूरी है। लेकिन सर्वोदय की प्रक्रिया अहिंसात्मक होने के कारण भिन्न भिन्न स्थानिक प्रदेश के लोगों के स्वभाव और परिस्थिति के अनुरूप सर्वोदय का विकास होना चाहिये, तभी सही माने में अहिंसा की स्थापना होगी और सर्वोदय समाज एक सफल समाज बनेगा।

इसलिये हम समझते हैं कि विश्व में शांति कायम होनी है और सत्य व प्रेम के आधार पर एक नये समाज का निर्माण करना है तो इन प्रयासों का मूल आधार धर्म-बुद्धि या अन्य किसी कारण से व्यक्तिगत युद्ध विरोध इतना ही नहीं होना चाहिये। ऐतिहासिक दृष्टि से ऐसा होना अनिवार्य है, तो कम-से-कम उसे गौण स्थान मिलना चाहिये। मुख्य स्थान समाज के आर्थिक, सामाजिक और राजनैतिक संबंधों में हर देश की भिन्न-भिन्न परिस्थिति के अनुरूप, अहिंसा से परिवर्तन लाने के एक समग्र कार्यक्रम और उसके लिये जन-आंदोलन को मिलना चाहिये।

हमें उम्मीद है कि खासकर आगामी दिसम्बर में बेरुत में होने वाली विश्वशांति-सेना-परिषद में भाग लेने वाले लोग इस दृष्टि से अपना एक कार्यक्रम बनायेंगे और उसको अमल में लाने के लिये, जैसा हमने 'भूदान यज्ञ' के ३ मार्च '६१ के अंक में सुझाया था, उसके अनुसार एक "लोक-प्रतिनिधियों का विश्वसंघ" स्थापित करेंगे। गांधीग्राम की बाद के बेरुत-परिषद में एक विश्वशांति-सेना स्थापित करने का जो निर्णय हुआ था और जिसको अमल में लाने के लिये आगामी दिसम्बर की यह बेरुत परिषद आयोजित हो रही है, उस विश्वशांति सेना को इस "लोक प्रतिनिधियों के विश्व-संघ" का एक अंग बनना चाहिये, जो इस विश्व में सत्य और प्रेममय समाज के निर्माण के आंदोलन में और प्रत्यक्ष शांति स्थापना के काम में मददगार होगी। ये दोनों काम आज 'यूनो' (राष्ट्र-संघ) किसी हद तक कर रहा है, लेकिन जैसे हमने उपरोक्त लेख में लिखा था, 'यूनो' भिन्न भिन्न देशों की सरकारों के प्रतिनिधियों से बना होने के कारण उसके काम का आखिरी दारोमदार भी सैनिक शक्ति ही है। आज मानव के सामने जो सर्वनाश का खतरा है, उसमें से उसे हमेशा के लिये बचना है और आगे बढ़ना है तो विश्व-शांति और विश्व समाज की जरूरत है। ये चीजें सैनिक शक्ति के बल पर सिद्ध नहीं हो सकती हैं। इसके लिये जिस विश्व एकता की नितांत आवश्यकता है, वह जोर-जबरदस्ती से प्राप्त होने वाली नहीं है, बल्कि हृदय परिवर्तन से होने वाली है। यह काम 'मिलिटरी' का नहीं है, मिशनरीज का है।

ऐसा 'विश्व संघ' कैसे बने? यह बात कुछ कठिन लगती है और यह ठीक भी है। नैतिक या आध्यात्मिक क्षेत्र में प्रतिनिधित्व का आधार चुनाव नहीं है, सेवा है। अतः दुनिया में शांति और सेवा की शक्ति में मानने वाले कुछ लोग इकट्ठा होकर शुरू में अपना ऐसा एक संघ बनायेंगे और शांति-स्थापना का आंदोलन चलायेंगे तो इस संघ की जड़ें उनके देश के लोगों के हृदय में मजबूत होंगी, और इस विश्व संघ को धीरे धीरे लोगों की मान्यता भी मिलेगी। विश्व-संघ की स्थापना का यही सही तरीका लगता है।

शिक्षा में विश्वव्यापक दृष्टि

शिक्षा की दृष्टि विश्वव्यापक होनी चाहिए। पहली, दूसरी, तीसरी कक्षा में आजकल जिस क्रम के अनुसार इतिहास और भूगोल सिखाते हैं, उस तरह न सिखा कर सारे विश्व का इतिहास और भूगोल का मोटा ज्ञान प्रथम वर्गों में देना चाहिए। अब जैसे आगे बढ़ते जायेंगे, वैसे ज्ञान बारीकी से देना चाहिये। ऐसे न सिखा कर किसी एक स्थान के भूगोल और इतिहास पर ज्यादा ध्यान दिया जाय, तो बच्चों का मन संकीर्ण होगा। विज्ञान के युग में विश्व का दर्शन होना चाहिए और इसलिए शिक्षा में व्यापक बुद्धि की आवश्यकता है। —विनोबा

डाकू बनाम संग्रही

"वह धनी आदमी, जिसने शोषण या अन्य आपत्तिजनक तरीकों से अपना धन और सम्पत्ति संग्रह की है, वह उस जेबकट या चोर से कम नहीं है, जिसने दूसरे के घर में सेंध लगा कर चोरी की है। अन्तर केवल इतना है कि पहले ने दोहरी प्रतिष्ठा की टट्टी की आड़ में चोरी की है। और इस तरह वह कानून के चंगुल से बच गया है। सच्ची बात तो यह है कि अपनी उचित आवश्यकताओं से ज्यादा धन इकट्ठा करके रखना चोरी है। समाज के अन्दर अपराध और अपराधी दोनों का जन्म इसी संग्रह वृत्ति के कारण होता है।" —महात्मा गांधी

दक्षिण भारत में एक महीना

सुरेशराम

"माफ कीजिये, क्या आपका नाम...है और आप इलाहाबाद से आते हैं ?"

गत जून में बंगलूर सिटी-रेलवे-स्टेशन पर एक फुर्तीले नवयुवक ने मुझसे पूछा। पूर्व में पौ फट चुकी थी और ठण्डी हवा चल रही थी।

उसके मुँह से इतनी सुन्दर हिन्दी सुन कर मुझे आनन्द और आश्चर्य, दोनों हुए। नवयुवक ने मुझसे कहा कि आपको मेरे साथ गांधीनगर चलना है। वहाँ से स्नान आदि के बाद विश्वनीड़म् जाना होगा। मैं अपने मित्र के साथ हो लिया। थोड़ी दूर चल कर मैंने उनके कंधे पर हाथ रखते हुए पूछा कि "आपने इतनी अच्छी हिन्दी कहाँ से सीखी ?"

"हम दक्षिण में तो हिन्दी खूब सीख रहे हैं। हमारी राष्ट्रीय भाषा है।"

दक्षिण के अपने एक महीने के प्रवास में मैं तमिलनाड, कर्नाटक और केरल में रहा। वहाँ मैंने देखा कि यद्यपि एक विशिष्ट समुदाय हिन्दी का विरोध करता है, लेकिन नई पीढ़ी तेजी के साथ हिन्दी सीख रही है। और वह दिन दूर नहीं है, जब दक्षिण में हिन्दी के उत्तम ज्ञाता और शिक्षक होने लगेंगे और उत्तर भारत आकर हम लोगों को सिखायेंगे।

मेरा अधिकांश समय रचनात्मक संस्थाओं में और सर्वोदय मित्रों के सत्संग में बीता। फिर भी दक्षिण भारत के जन-जीवन में जो धाराएँ-उपधाराएँ जोर मार रही हैं, उनका भी कुछ अध्ययन कर सका। तमिलनाड का चौथा प्रादेशिक सर्वोदय-सम्मेलन तंजौर जिले के पापानाड ग्राम में हुआ। इसकी अध्यक्षता तमिलनाड भूदान बोर्ड के मंत्री, श्री जगन्नाथन्‌जी ने की।

बड़े दुःख की बात है कि देश में भूमि-सुधार की बात बहुत की जाती है, मगर भूमि के स्वामित्व के सम्बन्ध में घोर विषमता अभी तक मौजूद है। इसका भयानक रूप तंजौर जिले में देखने को मिलता है। सहकारी खेती के नाम पर, सम्पन्न जमींदारों ने अपना जाल दूर दूर तक फैला रखा है और भूमिहीन प्रजा का मनमाना ढंग से शोषण करते हैं। बेदखलियाँ भी खूब चल रही हैं। विशेषकर मदुरा जिले में, जहाँ काफी ग्रामदान हुए हैं, जमींदार गाँवों में रहते भी नहीं, लेकिन किसानों को बेदखल करते हैं। इस विषय पर तमिलनाड के हमारे मित्र काफी चिंतित हैं और सोच रहे हैं कि इस अन्याय के प्रतिकारस्वरूप क्या नैतिक कदम उठाये जायें। मगर हैरत की बात यह है कि प्रान्तीय सरकार अपनी जिम्मेदारी का ठीक से अनुभव नहीं कर रही है। इस तरह गरीबों के साथ ज्यादती होने पर, किस प्रकार समाजवादी ढाँचे का समाज बन सकेगा। समझ में नहीं आता।*

*श्री सुरेशरामजी के प्रवास के बाद तमिलनाड में बेदखली के खिलाफ एक सत्याग्रह किया गया, जो सफल हुआ है, इसकी जानकारी आपको 'भूदान-यज्ञ' के पिछले तीन अंकों में लगातार मिलती रही है।—सं०

इस सम्मेलन में उपस्थित होने वालों में श्री शंकररावजी देव भी थे। उनका बड़ा सारगर्भित और मार्मिक एक व्याख्यान हुआ। उन्होंने कहा कि अन्तर्राष्ट्रीय क्षेत्र में हमारी निरपेक्ष नीति और रचनात्मक उदासीनता के अच्छे परिणाम आ रहे थे। लेकिन अन्तर्गत क्षेत्र में दलगत राजनीति चलती थी और विधान-सभाओं या संसद में पार्टी का 'व्हिप' चलता है। स्पष्ट है कि विदेशों में हम एक तरह की नीति अपनाते हैं, स्वदेश के अन्दर दूसरी तरह की। इससे हमारे दुहरे चिन्तन का पता चलता है और भारत तथा नेहरूजी का व्यक्तित्व छिन्न होता है। इस वास्ते श्री देव ने आग्रहपूर्वक निवेदन किया कि सत्ता और दण्ड के यह प्रतीक 'व्हिप' हटने चाहिये, और खासकर पंचायती राज के अन्दर। अगर पंचायत के अन्दर भी दलगत राजनीति जारी रही और अपनी बात मनवाने के लिये लोगों ने लाठी या बंदूक का सहारा लिया तो इससे पंचायती राज ही नहीं, हमारा सारा लोकतंत्र खत्म हो जायेगा।

मद्रास राज्य अपने अच्छे शासन के लिये प्रसिद्ध है। थोड़े अर्से से वहाँ पर एक नई योजना चल रही है—स्कूल के बच्चों के लिये दोपहर का भोजन। सरकारी दायरों में इसकी बड़ी तारीफ की जा रही है। लेकिन यह योजना सफलतापूर्वक चल नहीं पा रही है और लोगों को शक है कि बच्चों के साथ न्याय होगा या नहीं। सरकार ने इसकी जाँच के लिये एक कमेटी भी बिठाई। उसकी सिफारिशों के अनुसार सरकार कुछ करेगी भी।

लेकिन दूरदृष्टि से देखें, तो सवाल उठता है कि क्या इस तरह विदेशों की भीख पर अपने बच्चों को पालना ठीक भी है? हाल ही में, मद्रास के शिक्षामंत्री अमरीका गये भी थे और वहाँ से आश्वासन लेकर आये हैं कि कई साल तक बच्चों के लिए खाने के पैकेट आते रहेंगे!! सारे देश की तरह, मद्रास राज्य में भी गरीबी है, बेरोजगारी है, बीमारी है, भुखमरी है, विषमता है। जब काम न मिलने के कारण या गाँव में बने माल के न बिकने के कारण, माँ-बाप आधे पेट रहते हों या तड़पते हों, ऐसी हालत में कुछ बच्चों को बाहर से माँगा भोजन दोपहर को देना एक मजाक नहीं तो क्या है! और फिर हम पूछना चाहेंगे कि जो बच्चे इस तरह की खुराक पर पलेंगे, वे बड़े होकर क्या कभी भी सर ऊँचा करके खड़े हो सकेंगे, या जिंदगी के चपेटों को बर्दाश्त कर पायेंगे, या किसी अन्याय के सामने टक्कर ले सकेंगे!

तमिलनाड़ से कर्नाटक

फिर कर्नाटक या मैसूर राज्य में रहना हुआ। बंगलूर शहर से पाँच मील की दूरी पर एक बड़ा रम्य स्थान है। लगभग तीन सौ एकड़ जमीन है। वहाँ पर १८ अप्रैल १९६० को विश्वनीड़म् नामक एक नई संस्था का शुभारम्भ हुआ। जैसा इसके नाम से विदित है, यह एक अंतर्राष्ट्रीय केन्द्र है। इसका संचालन और देखरेख श्री वल्लभस्वामीजी के सुपुर्द है। श्री वल्लभस्वामीजी थोड़े दिन पहले तक अखिल भारत सर्व सेवा संघ के अध्यक्ष थे और पिछले चालीस बरस से संत विनोबा के साथ हैं। वे सर्वोदय जगत् के अत्यन्त लोकप्रिय और निष्ठावान् कार्यकर्ता हैं।

उनका स्वप्न है कि विश्वनीड़म् में तीन चीजें हों—सर्वोदय के आधार पर अध्ययन, मनन और खोज, कार्यकर्ताओं का ऐसा परिवार वहाँ बसे, जो खेती और उद्योग से चलनेवाले सम्यक् जीवन का चित्र पेश कर सके।

यहीं विश्वनीड़म् में कर्नाटक प्रादेशिक सर्वोदय मंडल का प्रधान कार्यालय भी है। इसके मंत्री हैं श्री गुण्डाचार, जो बहुत ही सरल और मधुर स्वभाव के हैं। उनके परिश्रम के परिणामस्वरूप मैसूर राज्य में सर्वोदय का काम फैल रहा है और उत्साही कार्यकर्ता इसमें आ रहे हैं।

बंगलूर हमारे देश के मुख्य नगरों में से है। सर्वोदय-दृष्टि से भी यह बहुत महत्त्व का स्थान होता जा रहा है। कन्नड भाषा के सुप्रसिद्ध लेखक, श्रीकृष्ण शर्मा यहीं रहते हैं, जिन्होंने विनोबा के "गीता-प्रवचन" का कन्नड में अनुवाद कर, कन्नड भाषा-भाषियों को विनोबा का पहला परिचय दिया। वैसे, वह महात्मा गांधी के साप्ताहिक "हरिजन" के कन्नड संस्करण का सम्पादन करते थे। उनकी गांधीजी पर लिखी एक रचना "पर्ण-कुटी" बहुत प्रसिद्ध है और अपने ढंग की भारतीय साहित्य में अनोखी कृति है। श्री शर्माजी ने अपने मित्रों की सहायता से "गांधी भवन" नामक एक शानदार हाल बंगलूर में बनाया है, जहाँ सर्वोदय विचार की कई प्रवृत्तियाँ चलती हैं।

अपने देश में बंगलूर-स्थित "इण्डियन इन्स्टीट्यूट आफ साइन्स" बहुत प्रसिद्ध है। विज्ञान के अध्ययन और गवेषणा का यह उत्तम केन्द्र है। यहाँ डॉ० टी. एस. अनन्तरामन् नामक एक प्राध्यापक हैं, जो सर्वोदय के बड़े प्रेमी हैं। उन्होंने अपनी एक मित्र-मंडली खड़ी कर ली है और चुपचाप काम करते हैं। उनके इस कार्य में प्रेरक-शक्ति उनकी धर्मपत्नी, मार्गरेट शाऊकेल हैं। हमारी यह बहन जर्मनी की रहनेवाली हैं। चार साल हुए यह हिंदुस्तान आईं और विनोबाजी के साथ पदयात्रा में रहीं। भारत की आध्यात्मिक परम्परा से प्रभावित होकर इन्होंने भारत में ही सेवामय जीवन बिताने का निर्णय किया। विनोबा ने इन्हें हेमा बहन का प्यारा नाम दिया है। विनोबा के ही हाथों से नवम्बर १९५८ में इन दोनों की शादी हुई। हेमा बहन को सर्वोदय-पात्र के काम में विशेष रस आता है। बालकों की सेवा यह खूब मन लगा कर करती हैं। डॉ० अनन्तरामन् "सर्वोदयनगर" नामक एक छोटे से अंग्रेजी मासिक का भी सम्पादन करते हैं।

बंगलूर से "भूदान" नाम का एक कन्नड साप्ताहिक भी निकलता है। इसके सम्पादक श्रीनिवास राव हैं, जो मौनपूर्वक अपने काम में लगे रहते हैं।

मैसूर राज्य में जात-पात का सवाल बहुत बढ़ रहा है। हाल ही में, वहाँ की सरकार ने एक जाति विशेष को पिछड़ा हुआ करार देकर उसे विशेष सुविधाएँ देने का निर्णय किया है। यह लोग न तो हरिजन हैं, न पिछड़ी जाति के हैं। फिर भी, यह पक्षपात किया गया। इससे दूसरी जातिवालों में ईर्ष्या पैदा होना स्वाभाविक है। इस सबका दुःखदायी असर मैसूर की राजनीति पर पड़े बिना नहीं रह सकता।

केरल में

आम तौर से अखबारों में केरल का नाम अक्सर आता है। जून के महीने में श्री ए. के. गोपालन के अनशन के कारण बड़ी चर्चा रही। श्री गोपालन केरल के निवासी हैं और संसद में कम्युनिस्ट पार्टी के उपनेता हैं। केरल के कोझीकोड जिले में अमरावती नाम के इलाके में सरकार ने कुछ भूमिहीनों को बेदखल कर दिया, जिससे वे बहुत संकट में पड़ गये। इस अन्याय के विरुद्ध श्री ए. के. गोपालन ने उपवास शुरू कर दिया। केरल के प्रसिद्ध, वयोवृद्ध नेता और शांति सेना के सेनानी, श्री केलप्पनजी ने जब यह सुना तो गोपालनजी को एक तार भेजा। तार में उन्होंने कहा :

"कृपया उपवास छोड़ दीजिये। मैं विश्वास दिलाता हूँ कि बेदखल किये गये किसानों के पुनर्वास के लिए जो

पदयात्रा का एक पावन प्रसंग

सुन्दरलाल बहुगुणा

उत्तराखण्ड के उत्तरकाशी जिले का जखोल गाँव चारों ओर जंगलों से घिरी हुई एक ऊंची चोटी पर है। मुख्य सड़क से गाँव तक पहुँचने के लिए दो मील की सीधी चढ़ाई चढ़ कर जब इस क्षेत्र के प्रमुख समाजसेवी श्री घनश्याम सिंह के साथ २७ अगस्त को शाम को मैं गाँव में पहुँचा, तो बरसात की अंधेरी रात में केवल २-३ परिवारों से ही संपर्क हो सका।

गाँव में पनचक्की न होने के कारण इस गाँव के लोगों को आटा पीसने के लिए ४-५ मील दूर जाना पड़ता है। हम इस गाँव में हाथचक्कियों में लगाने के लिए बाल-बियरिंग लेकर आये थे, पर वह लग सके इस लायक मोटे पाट की चक्की ही गाँव में नहीं थी। सुबह भी २-३ घरों में गये, वस्त्र-स्वावलंबन आदि की चर्चा की, पर कौणी (बाजरे की तरह का एक पहाड़ी अनाज) की फसल पकने के कारण लोगों का मुख्य ध्यान फसल बटोरने की ओर था, क्योंकि भालू फसल को चौपट कर रहे थे।

हमारी बातें सुनने वाला कोई नहीं था। अपने झोले पीठ पर लाद कर हम दूसरे गाँव के लिए रवाना होने लगे। एक आँगन से गुजर रहे थे कि एक बुढ़िया माँ की कराह सुनाई दी। आँगन में अनाज कूटने वाली महिला से पूछा तो मालूम हुआ कि उसके पेट में दर्द है। कई दिनों से पाखाना नहीं उतरा। मैंने अपने होम्योपैथी के जेबी बक्स में टटोला, कोई औषधि नहीं थी। झोले में एनिमा अवश्य था, पर कौन दे? एक तरकीब सूझी। एनिमा देने की किया बुढ़िया के बेटे को समझाई और उन्होंने अपनी पत्नी को। इस बहिन ने बुढ़िया को एनिमा दिया और उसे तुरंत आराम हुआ। पड़ोस में एक दूसरी बीमार लड़की को भी उसने एनिमा दिया। अब तो गाँव की स्त्रियों के बीच वह 'डाक्टरनी' के नाम से प्रसिद्ध हो गयी।

इस बीच में गाँव के २-३ पुरुष, जो फसल काटने जा रहे थे, हमारे पास बैठ गये। एक सज्जन की दाढ़ी और मूछें बहुत बढ़ी हुई थीं। वे बार-बार अपनी दाढ़ी खुजला रहे थे। मैं भाँप गया कि वे अनिच्छा से उन पर चिपकी हुई दाढ़ी से मुक्ति पाना चाहते हैं। पूछने पर मालूम हुआ कि गाँव के 'बाजगी' को, जो कपड़ा सीने, ढोल बजाने और दाढ़ी बनाने के लिए पूरे गाँव का बहुधंधी कार्यकर्ता था, कई दिनों से फुरसत नहीं मिली। दूसरे किसी से दाढ़ी मुड़वाने का सवाल ही नहीं उठता, क्योंकि यह काम तो हरिजनों का है। मैंने अपने झोले से छोटी कैंची निकाली और उनकी दाढ़ी मूड़नी शुरू कर दी। दाढ़ी इतनी बढ़ी हुई थी कि पहली मुण्डाई में हाथ से पकड़ कर बाल काटे। तीसरी मुँडाई में वह साफ हो गये और मूछें भी छोटी हो गयी। यह काम पूरा होते ही मैंने उन्हें शीशा दिखाया और वे बहुत खुश हो गये।

उधर घनश्याम सिंहजी से लोग मेरा परिचय पूछने लगे। इधर के गाँवों में बाहर से आने वाला एक ही व्यक्ति होता है और वह होता है विकास विभाग का कोई कर्मचारी। इसलिए परिचय में लोग दो ही बातें जानने के लिए उत्सुक रहते हैं कि कितनी तनख्वाह पाने वाला है और क्या-क्या ऋण और अनुदान दिला सकता है। इन सवालों ने उन्हें विनोबा, भूदान, ग्रामदान, ग्राम स्वराज्य और सर्वोदय की कहानी सुनाने का अवसर दे दिया।

"तो क्या हम अपने गाँव का कष्ट स्वयं ही दूर कर सकते हैं!"—उनका प्रश्न था।

घनश्यामसिंहजी ने कहा, "हाँ, इसके लिए न किसी ऋण की आवश्यकता है और न अनुदान की। केवल एक-दूसरे की पीड़ा महसूस करने के लिए करुणा भरा दिल चाहिए। इस गाँव में भी कोई भूमिहीन है क्या?"

"हाँ! हाँ! मोरसिंह है। ८-९ व्यक्ति का परिवार है। और खेत हैं केवल चार। सरकार से जमीन मिलती नहीं। हमारे पास भी मुश्किल से गुजारे लायक है। बच्चे छोटे हैं और घर का अकेला है। पी० डब्ल्यू० डी० (सार्वजनिक निर्माण विभाग) में भी मजदूरी करने नहीं जा सकता।" अभी मूँडी हुई दाढ़ी पर हाथ फेरते हुए श्री इन्द्रसिंह ने कहा।

अब तक हमारी बैठक ने सभा का रूप ले लिया था। "लो! मोरसिंह भी आ गया। कहो भाई मोरसिंह, बोनेथा तोक में मेरे दो खेत लोगे। भूदान में दे रहा हूँ। खेती के बीच में हैं। किसी तरह से पशुओं के नुकसान का भय नहीं।"

श्री कुँवरसिंह ने कहा, "तीन नाली के तीन खेत खुडम्या तोक में मैं देता हूँ।" पीछे बैठे हुए जगपीसिंह से न रहा गया। उसके अपने पास भी गुजारे के लिए पूरी भूमि नहीं थी, बोल उठा, "गाँव के बीच में ही छह मुट्ठी का मेरा खेत भी ले लो।" यह सबसे उपजाऊ खेत था।

भूटियाणू तोक में गौरसिंहजी ने भी एक नाली (१/२० एकड़) भूमि दे दी। भूमिहीन मोरसिंह के पास साढ़े पाँच नाली भूमि हो गयी। इन्द्रसिंह ने कहा, "इतने से क्या होगा? मेरी ओर से दो नाली और लिखो।"

"अब इस जमीन का कब्जा तो पटवारीजी ही देंगे। हमारा तो जंगली गाँव है। जाने कब तक आयेंगे! तब तक क्या होगा?"—एक दाता ने पूछा।

यह सचमुच बड़ी समस्या थी। मैंने कहा, "दान आपने दिया है तो कब्जा पटवारीजी क्यों देंगे? आप ही देंगे। हाँ! लिखा पढ़ी वे कर लेंगे। उसकी आप चिन्ता न करें।"

"तो लो भाई मोरसिंह आज ही से इन खेतों को ले लो।" सब दाताओं ने कहा। इन्द्रसिंह ने कहा, "बोनेथा तोक के मेरे दो खेतों में गहथ (दाल) की फसल है। उसे भी तुम ही काट लेना।"

जखोल में दाढ़ी-मुँडाई से दूसरों के दिल में स्थान पाने का सबक लेकर हम आगे बढ़े। घने जंगल, ऊबड़-खाबड़ रास्ते और बरसाती नालों को पार करते हुए गुरसाली गाँव में पहुँचे तो वहाँ भी दो दाढ़ी मुँडाने वाले मिल गये। गुरसाली में हमें दो नाली भूमि भूदान में मिली, जिसका कब्जा वहीं के एक भूमिहीन को वहीं पर दे दिया गया।

टकनौर पट्टी की चार दिन की इस यात्रा में १० दाताओं से हमें २३ नाली-भूमि का भूदान मिला, जो ५ भूमिहीनों में बटी। पाने वालों में तीन हरिजन थे, जिनके नाम पहले से मौरूसी में एक मुट्ठी भूमि भी नहीं थी।

कुछ सम्भव है, वह करने को सरकार को राजी करूँगा। अगर मैं अपनी कोशिश में असफल रहा, तो फिर आपके साथ मैं भी उपवास करूँगा।"

इसके बाद केलप्पनजी अमरावती जाकर श्री गोपालनजी से मिले। वहाँ की स्थिति देखी, सम्बन्धित नेताओं और मिनिस्टरों से बातचीत की। सरकार से न्याय के लिए उन्होंने अनुरोध किया। केरल प्रदेश कांग्रेस के अध्यक्ष ने भी परिस्थिति की गम्भीरता को माना। अन्ततोगत्वा समझौता हुआ और बारहवें दिन श्री गोपालन ने उपवास तोड़ दिया, इसके बाद से श्री केलप्पनजी के मार्गदर्शन में कई शांति-सैनिक उस इलाके में सहायता का काम कर रहे हैं।

केरल का जिक्र आते ही वहाँ की मिनिस्ट्री के बारे में जिज्ञासा पैदा होती है। वहाँ कांग्रेस प्रजा-समाजवादी और मुसलिम लीग—तीनों मिलकर मिनिस्ट्री चला रहे हैं। थोड़े दिनों से उनमें कुछ मत-भेद के समाचार अखबारों में आये हैं। प्रजा-समाजवादी दल के दो सदस्यों ने भी अपनी पार्टी से इस्तीफा देकर मिनिस्ट्री के विरुद्ध अविश्वास का प्रस्ताव पेश किया—जो बुरी तरह खारिज हुआ। साथ ही प्रदेश कांग्रेस के नये चुनावों ने मिनिस्ट्री और कांग्रेस संगठन के बीच मनमुटाव को स्पष्ट कर दिया है। फिर, विरोध में कम्युनिस्ट बड़ी तादाद में हैं—जिनका पहले शासन चलता था।

सवाल उठता है कि यह गठबंधन कब तक चलेगा? क्या उड़ीसा की तरह कांग्रेस अकेले यहाँ की नैया खे ले जायेगी? कम्युनिस्टों का भविष्य कैसा है? इन सवालों का पक्का पक्का जवाब किसी के पास नहीं है।

लेकिन इनके पूछने वाले एक बुनियादी अंग को मानो भूल जाते हैं—जनता। दिन दिन उस पर बोझ बढ़ रहा है और उसकी परेशानियाँ भी बढ़ती जा रही हैं। चीजों के चढ़ते हुए दाम और नये-नये करों के कारण जनता दुःखी है। फिर, अपने देश भर में यह दोष है कि जो लोग सत्ता में हैं, वे राष्ट्र निर्माण के नाम पर भाग्य निर्माण ज्यादा करते हैं। इन सब कारणों से, दल-गत राजनीति के प्रति जनता का आकर्षण कम होता जा रहा है। कोई नहीं कह सकता कि कब उसका रोष भड़क जाये और नक्शा पलट जाये।

लेकिन केरल में क्या होगा, यह बहुत कुछ इस पर भी निर्भर है कि देश में क्या होता है। हमारा अपना ख्याल तो यह है कि हम एक ज्वालामुखी के ऊपर बैठे हैं और अगर हम सावधान नहीं रहते हैं और पारस्परिक विश्वास तथा शांति की शक्ति खड़ी नहीं करते हैं तो स्थिति बेकाबू हो सकती है।

दक्षिण का प्रवास सदा ही बहुत स्फूर्ति और आनन्द देता है। इन दिनों राष्ट्रीय एकता की बड़ी चर्चा है और कहा जाता है कि यह खतरे में है। इस नैराश्य को हम नहीं मानते। हमारा विचार है कि भारतीय एकता की जड़ें बहुत गहरी हैं और इसके पीछे काफी तपस्या व बलिदान है। इसलिए इसकी ज्यादा चिन्ता नहीं करनी है। कहीं ज्यादा महत्त्व है हमारी अपनी सच्चाई और शील का। अपनी निज की एकता हम सँभाल लें, राष्ट्रीय एकता को कोई खतरा नहीं है। और दक्षिण के प्रवास से मुझे लगा कि अपनी निज की एकता या शील रक्षा में हमें दक्षिण से काफी सीखना है।

गुजरात पदयात्रा—रविशंकर महाराज—विनोबा को आमंत्रण—विदेशों से चंबलघाटी को उपहार—सर्वोदय-बिक्री—समालखा खादी विद्यालय—आगरा गांधी स्वाध्याय संस्थान—विशाखापटनम् में गोष्ठी—लखनऊ संस्थान—बड़ा बाजार सर्वोदय-संघ—कानपुर में पोस्टर आंदोलन—'एवार्ड' की पंचायत समिति—गांधी संस्थान कानपुर असम में ग्रामदान एक्ट—सर्वोदय अकादमी—रत्नागिरि में सर्वोदय कार्य—गुजरात में अर्थसंग्रह—सामूहिक भावना—लखीमपुरखीरी में सर्वोदयपात्र—दलबंदी का त्याग—गुजरात में सर्वोदय-साहित्य पर्व—

● गुजरात में करीब बीस माह से श्री हरीश-भाई व्यास के मार्गदर्शन में अखंड पदयात्रा चल रही है। अभी अहमदाबाद शहर में दो महीने की नगर-यात्रा का कार्यक्रम रखा है, वैज्ञानिक क्रांति, ट्रस्टीशिप और उद्योगदान के बारे में विचार समझाया जाता है। हरीश भाई ने लिखा है कि इस कार्यक्रम का लोगों की ओर से अच्छा स्वागत हो रहा है।

● श्री रविशंकर महाराज इस साल चातुर्मास अहमदाबाद से १०० मील दूर, एक देहात में बिता रहे हैं। हर साल के मुताबिक इस साल भी उनका उपवास शुरू है। उपवास-काल में और ऐसी वृद्धावस्था में भी वे रोज ४-४ घंटे सूत-कताई करते हैं। उनकी सेवा कोई न करें, यह उनकी हमेशा इच्छा रहती है। इस समय मुश्किल से एक भाई मालिश वगैरह के लिये उनके साथ रहे हैं। दो-तीन महीने महाराज उसी गाँव में रहेंगे।

● वर्धा जिले में जगह-जगह की ग्राम-पंचायतों ने विनोबाजी को आमंत्रण देने का प्रस्ताव किया है और ग्रामपंचायतें उसकी पूर्व तैयारी में लगी हैं।

● *श्री दामोदरदास मूंदड़ा ने अनवणी* महाल की ओर से विनोबाजी को निमंत्रण दिया है। पत्र में कहा गया है कि वहाँ के कार्यकर्ता अपनी पूरी शक्ति और बुद्धि लगाकर संकल्प पूरा करेंगे।

● श्री आर्यनायकम्‌जी के यूरोप प्रवास में वहाँ की जनता से १०० भारतीय बालकों के लिये उपहार स्वरूप आर्थिक सहायता मिली थी, उसमें से प्रति मास चंबल घाटी के २० निर्धन बालकों को सहायता दी जा रही है।

● सर्वोदय-साहित्य-समिति राजस्थान ने गये साल ४३ हजार रुपयों की साहित्य-बिक्री की। १५ साहित्य प्रचारक घूम रहे हैं और अजमेर, कोटा, उदयपुर और जयपुर में स्थानिक आर्थिक सहायता से साहित्य-भंडार भी चल रहे हैं। अगले वर्ष में और नये साहित्य भंडार चलाने का सोचा है। साहित्य-प्रचारकों की संख्या भी बढ़ाई जायेगी।

● पंजाब के करनाल जिले के समालखा गाँव में खादी ग्रामोद्योग विद्यालय चलता है। विद्यार्थियों ने १५ माह के अध्ययन के बाद उद्योग निरीक्षण के लिये पंजाब के कुछ बड़े-बड़े गाँवों में भ्रमण किया। हर गाँवों में जुलूस निकालकर और नाटक आदि के माध्यम से सर्वोदय-कार्य का भी प्रचार विद्यार्थी करते थे। फिल्लौर, लुधियाना, अमृतसर, पठानकोट आदि शहरों में लोगों से काफी सहयोग मिला।

● उ० प्र० के राज्यपाल, डा० बी० रामकृष्णराव ने आगरा में गान्धी स्वाध्याय संस्थान का उद्‌घाटन करते हुए कहा कि आज के युग में गान्धीजी के दर्शन का अध्ययन और उनके सिद्धान्तों का अमल आवश्यक है। समारोह की अध्यक्षता डा० हरिशंकर शर्मा ने की। संस्थान के संचालक ने बतलाया कि गत दो वर्षों में ४० छात्रों ने गान्धी-दर्शन के वर्गों से लाभ उठाया और इस साल २२ छात्रों ने प्रवेश लिया है।

● विशाखपटनम् में, गांधी तत्त्व-प्रचार केन्द्र में ६ अगस्त को श्री हीरालाल जैन की अध्यक्षता में एक सभा सम्पन्न हुई। उसमें अश्लील सिनेमा-पोस्टरों के हटाने के बारे में श्री एन० नारायणराव, सर्वोदय-पात्र, पर श्री एम. वि. साम्बशिव मूर्ति, "डाकुओं के हृदय-परिवर्तन" पर, श्री प्राध्यापक वि. वि. एस. पातुड़ु "गान्धी विनोबा का परस्पर संबंध" पर, लोकसभा के भूतपूर्व सदस्य श्री वि. जे गुप्ता और गान्धी स्मारक निधि, आन्ध्र शाखा के संचालक श्री एस. रामानन्दजी बोले।

● लखनऊ में २० अगस्त को श्री शंकरराव देव ने गांधी स्वाध्याय संस्थान का उद्‌घाटन किया। इस अवसर पर गत सत्र की रिपोर्ट पेश करते हुए संयोजक, डा० श्री दरबारीलाल अस्थाना ने बतलाया कि गत वर्ष उन छात्रों ने संस्थान से लाभ उठाया, जिनमें अधिकांश एम० ए०, कानून और शोध के छात्र थे। सभा की अध्यक्षता विश्वविद्यालय के कुलपति, जस्टीस रणधीरसिंह ने की।

● कलकत्ता में २० अगस्त को बड़ा बाजार सर्वोदय संघ का उद्‌घाटन श्री चारुचन्द्र भंडारी ने पं० रामशंकर त्रिपाठी की अध्यक्षता में किया। इस अवसर पर श्री चारु बाबू ने कहा कि असम-कांड के वक्त में वहाँ गया था। वहाँ का हाल देख कर यह प्रश्न उठा कि भारत आजाद तो हुआ है, लेकिन एक नहीं हुआ है। गांधीजी के रास्ते चल कर ही भारत एक हो सकता है।

इस अवसर पर प्रमुख अतिथि श्री प्रिय-रंजन सेन ने कहा कि दुर्भाग्य की बात है कि प्रांतीय अहंकार के कारण हिंदी का विरोध किया जाता है। जब इस तरह की भावना नहीं थी, तब स्व० श्री केशव चन्द्र सेन ने हिंदी का जोरदार समर्थन किया था।

● कानपुर नगर में एक चलचित्र के अशोभनीय पोस्टर के सार्वजनिक प्रदर्शन समाप्त करने के हेतु २० अगस्त '६१ को प्रातः आठ बजे कार्यकर्ताओं की एक टोली ने एक अशोभनीय पोस्टर को गहरे नीले रंग से पोत दिया।

● आन्ध्र-प्रदेश में पिछले दो साल से पंचायतीराज का कार्यक्रम शुरू हुआ है। "ग्राम सेवा संगम" (एवार्ड) संस्था की ओर से पंचायतीराज के इस प्रयोग का अध्ययन करने के लिए एक समिति नियुक्त की गयी थी, जिसमें श्री आर० के० पाटिल और श्री राधाकृष्णन् थे। वे दोनों ता० २० से ३० तक तेलंगाना के पाँच जिलों में पंचायतीराज के अध्ययन के लिए घूमे। "एवार्ड" के लिए वे रिपोर्ट तैयार कर रहे हैं, जो दो-तीन सप्ताह में पूरी हो जायगी।

● गत २१ अगस्त को कानपुर में 'गांधी-स्वाध्याय-संस्थान' का शुभारम्भ करते हुए श्री शंकररावजी ने गत महायुद्धों की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि और विश्व की वर्तमान तनावपूर्ण स्थिति के संदर्भ में वर्लिन की समस्या का विश्लेषण किया और कहा कि आज तक सारी भौतिक उपलब्धियों की प्राप्ति भौतिक साधनों से करने का प्रयत्न ही इस स्थिति का मूल कारण है। महात्मा गांधी ने भौतिक उद्देश्यों की पूर्ति के लिए नैतिक एवं आध्यात्मिक साधनों का ही प्रयोग करने पर बल दिया है, वही इस समस्या का सही निदान है।

● ग्रामदानी गाँवों की आगे की व्यवस्था की दृष्टि से असम-सरकार एक ग्रामदान-कानून बना रही है। यह कानून १ अक्तूबर तक पास हो जायगा, ऐसी उम्मीद है। *ग्रामदान एक्ट के बन जाने से ग्रामदान के* काम को असम में अधिक अनुकूलता मिलेगी, ऐसी आशा है। इस कानून के अनुसार अगर गाँव की ५० फीसदी जमीन और ७५ फीसदी जमीन के मालिक शामिल हो जाते हैं तो वह ग्रामदान माना जायगा। १०० व्यक्तियों तक के छोटे ग्रामदानी गाँव में भी ग्राम-पंचायत बन सकेगी।

● डी० ए० वी० कालेज, कानपुर के प्राध्यापकों की एक सभा में सर्वोदय अकादमी की स्थापना का निश्चय किया गया। सर्वोदय अकादमी का नगर के सभी कालेजों में विस्तार रहेगा। अकादमी के सर्वोदय विचार पर भाषण-माला, अध्यापन, समस्यामूलक चिन्तन तथा सेवा के *कार्यों की योजना है।*

● रत्नागिरि जिला सर्वोदय-मण्डल ने ता० ११ सितम्बर से अर्थ-संग्रह, खादी-बिक्री और साहित्य-प्रचार के कार्यक्रम का विशेष *आयोजन किया है। जिला ग्रामदान* नव निर्माण समिति के इस वर्ष के अध्यक्ष श्री गोविंदराव शिंदे और मंत्री श्री मधु शिरोडकर चुने गये हैं। जिला-स्तर पर *चुनावों के संबंध में आचार-संहिता स्वीकृत* करने का प्रयत्न भी शुरू किया गया है। राजनैतिक पक्षों के नेताओं ने एकत्र आने का आश्वासन दिया है। यह सभा सितम्बर के मध्य में होगी।

● अर्थ-संग्रह अभियान के दौरान गुजरात में जिलवार ता० २३-८-'६१ तक नीचे लिखे अनुसार संग्रह हुआ है।

	रु०	नये
बड़ौदा	८८१७	९५
पंचमहाल	१३९४.	००
अहमदाबाद	८९६	१०
मेहसाणा	१३००	२५
सूरत	१६४	२५
सौराष्ट्र	१८६०.	००
खेड़ा	२०३३	००
भरूच	७५	००
कुल	१६५४०	५५

● बड़ौदा जिले के रंगपुर क्षेत्र के ५४ लोकसेवकों में से प्रत्येक ने रुपए दस के हिसाब से अपना हिस्सा देकर सामूहिक भावना व्यक्त की है। इसी प्रकार अहमदाबाद में कुछ मजदूरों ने एक दिन की मजदूरी इस काम के लिए देकर अपनी सहानुभूति प्रगट की है।

● कानपुर नगर सर्वोदय समिति के तत्त्वावधान में एक दिवसीय शिविर का आयोजन ६ अगस्त को हुआ।

● *सर्व सेवा संघ के मंत्री, श्री पूर्णचन्द्र* जैन १३ से २१ सितम्बर तक गुजरात की रचनात्मक संस्थाओं और ग्रामदानी क्षेत्रों के दौरे पर जा रहे हैं।

● श्री शिवदत्त मिश्र, हाथीपुर, लखीमपुर खीरी से लिखते हैं : लखीमपुर खीरी में सर्वोदय-पात्रों से गत जनवरी से जुलाई, सात महीनों में अनाज के दाम और नकद द्रव्य के रूप में कुल २०४ रु० २९ नये पैसे मिले। इस प्राप्त कुल रकम का पचांश अ० भा० सर्व सेवा संघ को भेजा गया। बाकी रकम का समयानुसार यथायोग्य विनियोग किया गया। ११ रु० ४१ नये पैसे जमा हैं।

● अलीगढ़ जिले की तहसील सिकन्दराराऊ के प्रसिद्ध काँग्रेसी कार्यकर्ता, श्री ग्रामराज सिंह 'सरोज' ने जिला सर्वोदय मंडल के अध्यक्ष को पत्र द्वारा सूचित किया है कि "मैं अब दलगत राजनीति में भाग नहीं लूँगा। अपना समय और विचार सर्वोदय-क्रान्ति के कार्य में ही लगाऊँगा।"

● गुजरात सर्वोदय-मण्डल की कार्यकारिणी की सभा ता० २० अगस्त को अहमदाबाद में हुई, जिसमें विनोबा-जयन्ती तक की अवधि को सर्वोदय-साहित्य पर्व मनाने पर विचार हुआ। प्रत्येक लोकसेवक इस अवधि में "भूमिपुत्र" (गुजराती) "भूदान-यज्ञ" आदि पत्रों के कम-से-कम १० ग्राहक बनायें, ऐसी अपेक्षा सर्वोदय-मण्डल ने रखी है।

नशाबन्दी-सम्मेलन के प्रस्ताव

ता० २-३ सितम्बर को दिल्ली में जो अखिल भारतीय नशाबन्दी कार्यकर्त्ता-सम्मेलन हुआ, उसमें नीचे लिखे तीन प्रस्ताव सर्वसम्मति से स्वीकृत हुए। सम्मेलन में देश भर से करीब १२०० प्रतिनिधि शामिल हुए थे। सम्मेलन का उद्घाटन श्री मोरारजी देसाई ने किया तथा अध्यक्षता मद्रास के श्री एम. भक्तवत्सलम् ने। स्वीकृत प्रस्ताव इस प्रकार हैं :

[१]

"अखिल भारतीय नशाबन्दी कार्यकर्त्ता-सम्मेलन की यह दृढ़ धारणा है कि भारत सरकार तथा समस्त राज्य सरकारों को यथाशीघ्र, किन्तु तीसरी पंचवर्षीय योजना की समाप्ति से पूर्व ही, सारे देश में समान आधार पर पूर्ण नशाबन्दी लागू कर देनी चाहिए। यह सम्मेलन योजना-कमीशन को उसकी इस सम्मति पर धन्यवाद देता है कि जनसाधारण के सामाजिक उत्थान के कार्यक्रमों में आर्थिक कारण बाधक नहीं होने चाहिए।"

[२]

"अखिल भारतीय नशाबन्दी कार्यकर्त्ता-सम्मेलन की सम्मति में नशाखोरी जैसी सामाजिक कुरीतियों के उन्मूलन के लिए सरकार द्वारा इस सम्बन्ध में बनाये गये कानूनों के साथ-साथ, लोगों के द्वारा भी निरन्तर एवं सामूहिक प्रयत्न होना अनिवार्य है। अतः यह सम्मेलन देश के समस्त गैरसरकारी एवं स्वयंसेवी संगठनों का आह्वान करता है कि इस सर्वहितकारी कार्य के लिए वे एक संयुक्त मोर्चा बनायें।

[३]

अखिल भारतीय नशाबन्दी कार्यकर्त्ता सम्मेलन की यह निश्चित धारणा है कि मद्यपान के अभ्यस्त लोगों को शराब छुड़ाने, समाज में सार्वजनिक मद्यपान के सम्बन्ध में विद्यमान झूठे सम्मान को हतोत्साहित करने के लिये, मनोरंजन के अन्य साधन एवं कार्यक्रम प्रदान तथा उपलब्ध करने तथा जनसाधारण में नशाबन्दी के उद्देश्यों का प्रचार करने के हेतु सतत, व्यापक एवं निश्चित रचनात्मक कार्यक्रम चलाने की आवश्यकता है। अतः यह सम्मेलन एक अखिल भारतीय नशाबन्दी संगठन के निर्माण का निश्चय करता है और सम्मेलन के सभापति महोदय को अधिकार देता है कि ५१ सदस्यों की एक समिति, जिसमें प्रत्येक राज्यों तथा केन्द्र-शासित प्रदेश का कम-से-कम एक-एक सदस्य हो, मनोनीत करें। यह समिति इस संगठन का विधान तथा विस्तृत कार्यक्रम तैयार करेगी।

तमिलनाड़ में सर्वोदय-साहित्य-प्रचार

तमिलनाड़ सर्वोदय प्रकाशन की ओर से इस साल करीब ६०,००० रुपये के साहित्य की बिक्री हुई। इस साल ४ नई तमिल किताबें प्रकाशित हुईं और १९ किताबों का पुनर्मुद्रण हुआ। अंग्रेजी में २ नई किताबें प्रकाशित की गयीं और ३ पुनर्मुद्रित हुईं।

इसके अलावा तमिल 'सर्वोदय' मासिक का करीब ५,००० रुपये और अंग्रेजी 'सर्वोदय' का भी करीब उतना ही चंदा 'ग्राहकों' से प्राप्त हुआ।

लेकिन विनोबाजी का इससे समाधान नहीं हुआ है। उन्होंने लिखा है कि—"सर्वोदय-काम की इतनी विविध शाखाएँ हैं कि वे सब इस काम में अपना हाथ बटायें तो तमिलनाड, जो कि एक संस्कारवान प्रदेश है, भारत को इस विषय में राह दिखा सकता है। तमिलनाड के सर्वश्रेष्ठ ग्रन्थ का आरंभ ही 'अहर-मुदल एल्लेल्लाम्' से हुआ, वहाँ मैं तमिलनाड से जो आशा रखता हूँ, क्या गलत मानी जायेगी?"

पूर्व खानदेश जिले में सर्वोदय-पात्र कार्य

महाराष्ट्र के पूर्व खानदेश जिला सर्व सेवा समिति ने सर्वोदय-पात्र का काम २ अक्तूबर '६० से शुरू किया था। जून माह में ३४ गाँवों में ९२४ सर्वोदय-पात्र थे। उसमें से १४ गाँवों में ४९९ पात्रों द्वारा ११५ रु० ७६ न० पै० संग्रहीत हुए। जुलाई माह में ३५ गाँवों में ९३२ सर्वोदय-पात्र चल रहे हैं। उसमें से २० गाँवों में ५५६ सर्वोदय-पात्रों से १५८ रु० ८ नये पैसे संग्रहीत है।

एरंडोल गाँव में गांधी विचार-प्रचार करने की दृष्टि से एक नि[:शुल्क] वाचनालय शुरू किया है। उसका १२५ परिवार ले रहे हैं। इस वाचनालय में हिंदी, मराठी, गुजराती और अं[ग्रेजी] भाषा की ५०९ किताबें हैं।

प्रकाशन-सूचना : दैनन्दिनी : १९६२

सन् १९६२ की 'दैनन्दिनी' (डायरी) २ अक्तूबर के आसपास छप कर तैयार हो जायेगी। इससे दैनन्दिनी को जनता तक पहुँचाने में तीन महीने का समय मिलता है। दैनन्दिनी की सामान्य जानकारी नीचे दे रहे हैं। आप अपना आर्डर मय अग्रिम रकम के शीघ्र भिजवाइये। दैनन्दिनी को आर्डरों के अनुसार एक निश्चित संख्या में छपाया जाता है। यह निहायत जरूरी है कि आपको कितनी प्रतियाँ चाहिए, इसकी सूचना हमें छपने से पहले ही भिजवा दें।

(१) दैनन्दिनी का आकार १/८ डिमाई रहेगा, यानी जो आकार १९६१ का था, वही रहेगा।

(२) कागज सफेद और अच्छा होगा।

(३) मूल्य दो रुपया रहेगा।

(४) ३० सितम्बर तक दैनन्दिनी की रकम पेशगी भिजवाने वालों को, वह १ रु० ७५ नये पैसे के हिसाब से दी जायेगी।

(५) दैनन्दिनी की ५० या अधिक प्रतियाँ एकसाथ मँगाने पर 'फ्री डिलीवरी' मिलेगी। उससे कम मँगाने पर पोस्टेज, पैकिंग तथा रेल-किराया खरीददार को देना होगा।

(६) दैनन्दिनियों की जितनी जरूरत हों, उतनी ही मँगायें। बच जाने पर वापिस नहीं ली जायेंगी।

(७) कुछ लोग दैनदिनी में कोरे पृष्ठ भी चाहते हैं। उनकी सुविधा के लिए १६ पृष्ठ कोरे (एक फार्म) अधिक जोड़ कर, थोड़ी प्रतियाँ तैयार की जा रही हैं। ऐसी दैनदिनी का मूल्य चार आने अधिक यानी २ रु० २५ नये पैसे होगा। मँगाते समय "अधिक कोरे पन्नों वाली" का उल्लेख कीजिये।

(८) इस वर्ष कुछ दैनदिनियाँ १/१६ डबल क्राउन साइज में भी निकाल रहे हैं। उसका मूल्य भी २ रु० रहेगा, किन्तु इस डायरी की पूरी जिल्द कपड़े की रहेगी।

निवेदन है कि अपना आर्डर मय अग्रिम रकम के लौटती डाक से भिजवाने की कृपा करेंगे।

—संचालक
अ० भा० सर्व सेवा संघ-प्रकाशन,
राजघाट, काशी

रेलवे-कर्मचारियों में सर्वोदय-विचार प्रचार और काम

मुंगेर जिले के जमालपुर रेलवे कारखाने में पिछले एक वर्ष से सर्वोदय-कार्य शुरू हो गया है। कारखाने में लगभग १४ हजार कर्मचारी हैं। गांधी स्मारक निधि, बिहार शाखा की ओर से एक मजदूर सेवा-केन्द्र की भी स्थापना हुई है, जो लगभग डेढ़ वर्ष से मजदूरों के बीच बाल-बाड़ी द्वारा बच्चों की शिक्षा, चरखा चलाना एवं शान्ति-पात्र की स्थापना का कार्यक्रम चला रहा है। वहाँ कर्मचारियों ने सर्वोदय मित्र मंडली का संगठन बनाया है और मित्र-मंडली के सदस्य सप्ताह में एक बार इकट्ठा होकर सर्वोदय-कार्यक्रम पर विचार विमर्श करते हैं। प्रतिदिन ३० मिनट तक लाउड स्पीकर से सर्वोदय-कार्यक्रम पर कर्मचारी एवं अन्य विशिष्ट व्यक्ति प्रकाश डालते हैं।

लाउड स्पीकर का यंत्र प्रत्येक विभाग में लगा हुआ है, जहाँ मजदूर बैठे-बैठे सर्वोदय-विचार की चर्चा काम करते हुए भी सुनते रहते हैं। कारखाने में नशा-बंदी शुरू हुआ है और इसका प्रत्यक्ष प्रभाव कम लाने की इच्छा एवं सफाई से ही आँकी जा सकती है। इन सब कार्यों में उच्च अधिकारियों का सहयोग उल्लेखनीय है।

इस अंक में

श्रीकृष्णदत्त भट्ट, अ० भा० सर्व सेवा संघ द्वारा भार्गव भूषण प्रेस, वाराणसी में मुद्रित और प्रकाशित। पता : राजघाट, वाराणसी-१, फोन नं० ४३९१
वार्षिक मूल्य ६)   पिछले अंक की छपी प्रतियाँ ९२००: इस अंक की छपी प्रतियाँ ९१५०   एक अंक : १३ नये पैसे

संपादक : सिद्धराज ढड्ढा

वाराणसी : शुक्रवार | २२ सितम्बर '६१ | वर्ष ७ : अंक ५१

ट्रेनिंग का मकसद

दादा धर्माधिकारी

[ग्राम-सेवा प्रशिक्षण विद्यालय पट्टीकलयाणा (पंजाब) में दीक्षान्त भाषण में दादा धर्माधिकारी ने ट्रेनिंग (प्रशिक्षण) पर जो विचार प्रकट किये थे, वे यहाँ दिये जा रहे हैं।—सम्पादक]

यदि समाज बदलना है तो उसकी बुनियाद अर्थात् मनुष्य मात्र का बदलना पड़ेगा, उसके दिल दिमाग को बदलना होगा। ट्रेनिंग में हम विचार देते हैं, कुछ विचारों पर आधारित साधन सामग्री भी जुटाते रहते हैं। पर हम को अपने दिल और दिमाग को भी बदलना पड़ेगा। इन्सान की तबियत और दिल को बदलने की बात भी वही कर सकेगा, जिसकी तबियत स्वयं बदली हुई होगी। यह कार्य जोर जबर्दस्ती से होने वाला नहीं। किसी को जोर जबर्दस्ती से डराने धमकाने से मनवाया जा सकता है, पर समझाया नहीं जा सकता। मानना और समझना दो भिन्न भिन्न चीजें हैं।

अगर हम यह कहें कि हमारी ट्रेनिंग का अर्थ यह है कि हमें लोगों की तबियत (वृत्ति) को बदलना है तो यह ठीक होगा। यह कार्य उसी के लिए सम्भव होगा जिसने पहले स्वयं अपनी तबियत बदली है। हमें गाँव वालों की तरह रहना होगा। उन्हें भली भाँति समझने के लिए उनके नजदीक जाना होगा, परन्तु उनकी तरह सोचना नहीं होगा, क्योंकि गाँव वाले फिरका परस्त हैं, जात पाँत के झगड़ों में फंसे हैं। यों शहर की तुलना में देखें तो कहेंगे कि गाँव का जीवन सादा है, शहर का पेचीदा। शहरों में रहन सहन शान शौकत का है। पर इसका अर्थ यह नहीं कि गाँव वाले यह शहरी ठाट-बाट चाहते ही नहीं। अवसर मिलने पर गाँव वाला भी सब वही करता है। इससे पता चलता है कि शहर वालों की व गाँव वालों की तबियत में कोई फर्क नहीं। फर्क केवल मौका मिलने का है। यों तबियत दोनों की एक जैसी है।

आज उनकी यह हालत, यह तबियत, हमें बदलनी है। यह काफी मुश्किल काम है। पर अपनी तबियत यदि बदली होगी तो दूसरे की बदलना आसान होगा। दूसरे की तबियत को बदलना जितना कठिन है, उतना ही दूसरे की तबियत को दबाना आसान है। उदाहरणार्थ एक व्यक्ति अपने बच्चे की गुस्सैल तबियत को बदलना चाहता है। जब भी बच्चा गुस्सा करता है वह स्वयं गुस्सा कर उसे दबा देता है। प्रत्यक्ष दर्शन यही होगा कि बच्चे ने गुस्सा छोड़ दिया। परन्तु वास्तव में वह गुस्सा छूटेगा नहीं, बल्कि तीव्र रूप से अन्दर ही अन्दर भड़कता रहेगा जो समय मिलने पर भयानक रूप में फूटेगा। अतः इन दो स्थितियों को बखूबी हमें समझना है। हमें दूसरे की तबियत को दबाना नहीं, बदलना है।

यदि हमें गाँव वालों को समझाना है तो उनकी अक्ल पर हमें भरोसा रखना होगा। जो समझ ही नहीं सकता उसे समझाएँगे क्या ?

व्यक्ति की अक्ल में भरोसा रखने का मतलब है कि हमें इन्सान की इन्सानियत में भरोसा रखना होगा।

यदि हमारी मान्यता यह है कि गाँव वाले तो मूर्ख हैं, तो फिर मूर्खों को समझाएँगे क्या ! वहाँ (गाँव में) तो बड़ों का कहना मान चुप ही रहना चाहिए। बड़ों का आदेश है कि "मूर्ख के सामने सर्वदा चुप रहो।"

हमारे अधिकतर लोग यही समझते हैं कि आम लोग कम अक्ल के होते हैं या उनमें अक्ल होती ही नहीं। कारण, आज उनके दिल दिमाग में जो कुछ बातें भरी हैं वह गलत हैं। ठीक है कि ये कुछ बातें गलत हैं, परन्तु इसका यह अर्थ नहीं कि जो गुरु नानक की वाणी अच्छी तरह समझते हैं, ईसा की सीख बखूबी समझते हैं और राम व मुहम्मद की बातें शिरोधार्य करते हैं उनके लिए हमारी बातें मुश्किल हैं। केवल हमें उन्हें समझाने की जरूरत है। यही हमारा पहला प्रयत्न होना चाहिए।

हमारा दूसरा प्रयत्न समाज में से झगड़े के मौकों को कम करना हो। झगड़े की बुनियादें, जिनसे वे पैदा होते हैं उन्हें मिटाना होगा। वे हैं मुख्यतः (१) गरीबी-अमीरी का अन्तर (२) जात पाँत की भावना (३) भिन्न-भिन्न भाषाएँ (४) सम्प्रदाय।

सम्प्रदाय वह है, जो भगवान को भी बाँटता है और इन्सान को भी। जहाँ धर्म मिलता है वहाँ सम्प्रदाय बाँटता है। सम्प्रदाय बताता है—मंदिर, मस्जिद, गुरुद्वारों में बैठा भगवान अलग-अलग है। धर्म न लिया जाता है, न दिया जाता है। सभी जगह भगवान है, फिर मंदिर क्या और मस्जिद क्या ? हमें यह मान लेना चाहिए कि हमारा कोई अपना सम्प्रदाय नहीं। यदि यह विचार बखूबी हमारे दिल दिमाग में बसा होगा तो इन्सान का इन्सान से मुहब्बत करना मुश्किल नहीं बल्कि सर्व सुलभ सा होगा। यह सब तभी सम्भव है जब सम्प्रदायों में विश्वास नहीं होगा। इस भावना की कसौटी झगड़े के समय होती है। सम्प्रदाय भावना न रहने पर इन्सान इन्सान से मुहब्बत कर सकता है। उसमें जो दिल जोड़ने की शक्ति रहती है, उसके पास प्रेम का भंडार होता है। प्रेम के बिना कहा है—

> कच्चा धागा प्रेम का,
> मत तानो टूट जाये।
> टूटे से जुड़े तो सही,
> बीच गाँठ पड़ जाये॥

जबर्दस्ती कानून से झगड़े मिटते नहीं, दबते हैं। परन्तु प्रेम झगड़े मिटा सकता है।

जात पात भी एक गहरी चीज है, इतनी गहरी कि कभी कभी हमें उसका भास भी नहीं होता, वह हमारे मन में रहती है। इसका नमूना विदेश में देखने को आया। जब भोजन करने बैठते तो सभी वर्णों के लोग होते। किसी गौर वर्ण के व्यक्ति के अगल बगल एक गौर वर्ण व दूसरा श्याम वर्ण होता, तो वह जानते हुए भी अपनी कुर्सी थोड़ी गौर वर्ण की तरफ खींच लेता। ऐसे विचारों में वह खुद जात पाँत का विरोधी होता। यह भावना उन लोगों में बहुत गहरी बैठी होती। एकादश व्रतों में हमारा एक व्रत है "स्पर्श भावना"। अर्थात् इन्सान का स्पर्श भी उतना ही पवित्र है जितना कि भगवान का।

आज कुछ ऐसी भावनाएँ सी बन गई हैं कि अपनी भाषा शुद्ध है और दूसरे की भाषा अशुद्ध। अकसर यह भावना दृष्टिगोचर होती है कि एक भाषा में यदि दूसरी भाषा के कुछ शब्द आए तो वह भाषा अशुद्ध हो गई, जैसे हिन्दी में उर्दू के कुछ शब्द मिले तो हिन्दी अशुद्ध हुई। और उर्दू में हिन्दी, पंजाबी के कुछ शब्द मिले तो उर्दू अशुद्ध हुई। होना यह चाहिए कि हम सब मिल कर रहें। हमारे मिलने से भाषाएँ भी नजदीक आयेंगी, मिलेंगी और कुछ मिलीजुली भाषा बनेगी।

जो लोग मिल कर रहते हैं या एक दूसरे से मिलते रहते हैं, उन्हें भाषा का आग्रह नहीं होता, उनकी कोशिश सभी भाषाएं सीखने की होती है। सौदागर को घूमना होता है, सब प्रकार के लोगों से मिलना होता है अतः उसे भाषा का कोई विशेष आग्रह नहीं होता। इसी प्रकार पंडों को भी दक्षिणा के लिए सभी से सम्पर्क रखना होता है अतः उन्हें भी भाषा की विशेष चिन्ता नहीं होती। हम न तो तिजारती सौदागर ही हैं और न ही पंडे पुजारियों की श्रेणी में आते हैं।

यदि हमें सबके साथ मिल कर रहना है तो हमें भी यह भाषा का आग्रह छोड़ना होगा तथा दूसरी दूसरी भाषाएं सीखनी होंगी। अन्यथा केवल मुक्कों-घूसों की भाषा का ही प्रचलन होगा।

संस्थाओं में मेम्बरी व खानदानों में रिश्तेदारी होती है। यदि हमें दुनिया का एक परिवार बनाना है तो रिश्तेदारियाँ बनानी व बढ़ानी होंगी। इसके लिए हमारी वृत्ति एक दूसरे को समझने की होनी चाहिए। इसे ही मैं तबियत बदलना कहता हूँ।

व्यक्ति की जमीन पर बिना उसकी इजाजत के दखल करते हैं या उससे असहयोग करते हैं तो हम उसे अपना मन टटोलने की प्रेरणा नहीं देते, बल्कि विचार का रास्ता उल्टा बन्द कर देते हैं। 'तब क्या इसका मतलब यह है कि सत्याग्रही कार्यकर्ता अन्याय को चुपचाप देखता रहे या सहन करता रहे?' पर ऐसा मतलब हरगिज नहीं है। सत्याग्रही को निरन्तर ऐसे उपाय की खोज में लगे रहना चाहिए, जिससे वह सामनेवाले के दिल को छू सके। यही सत्याग्रही की कसौटी होती है। अगर कोई उपाय न सूझने से वह अपने रास्ते को छोड़ कर आसान दिखने वाला तरीका अपनाने लगे तो वह अपने संकल्प से हटा, ऐसा माना जायगा।

इस सिलसिले में विनोबा ने एक उपाय यह बतलाया कि जो लोग ग्रामदान में शरीक नहीं हुए हैं, ऐसे मालिकों की जमीन पर जो मजदूर अब तक काम करते रहे हैं, वे आगे और भी लगन और प्रेम के साथ उस काम को जारी रखें। आज तक मालिक को मजदूरों के काम की देख-रेख के लिए निरीक्षक या कारकून रखने पड़ते होंगे, पर ग्रामसभा और मजदूर मिल-कर मालिकों को यह आश्वासन दें कि अब आगे उनको इस प्रकार के निरीक्षण की व्यवस्था करने की कोई आवश्यकता नहीं रहेगी, मजदूर पूरी ईमानदारी से काम करेंगे और फसल के अन्त में जमींदार को उसका हिस्सा, जितना आज तक वह लेता आया है, उतना वे खुशी-खुशी देंगे। बातों से भूदान या ग्रामदान का विचार समझाना सर्वोदय और प्रेम की बात समझाना, एक चीज है और अपनी कृति से उसको साबित करना दूसरी। क्या हमने इस प्रकार की कोई कृति आजमाई है? यह ठीक है कि सत्याग्रही कभी चुप न बैठे, पर वह धीरज भी न खोये यह जरूरी है और निरन्तर ऐसे उपायों की खोज में वह लगा रहे, जिससे वह सामने वाले के हृदय में प्रवेश पा सके। विनोबा ने एक तरीका बतलाया है, जिसका जिक्र ऊपर किया गया है। हमें इसमें कोई सन्देह नहीं है कि जगन्नाथन् और उनके साथियों जैसे निष्ठावान् कार्यकर्ता मूल विचार को समझते हुए अगर इस खोज में लगे रहेंगे तो वे निश्चय ही सत्याग्रह के और भी कई सौम्य और सौम्यतर तरीके ढूंढ निकालेंगे।

पीछे के रास्ते से

ता० १२ सितम्बर को श्रीनगर की एक सभा में भाषण देते हुए हिन्दुस्तान के प्रतिरक्षा-मंत्री, श्री कृष्ण मेनन ने यह जाहिर किया कि भारत-सरकार ने यह तय किया है कि "१६ वर्ष का हर लड़का और लड़की एन० सी० सी० ('राष्ट्रीय छात्र-सेना' दल का) सदस्य बने।" श्री मेनन ने यह भी कहा कि एन० सी० सी० की ये टुकड़ियाँ सेना के केवल "बच्चे संस्करण" नहीं हैं, बल्कि उनमें बन्दूकें आदि शस्त्र चलाने की तालीम बाकायदा दी जाती है। उन्होंने यह भी जाहिर किया कि बड़ी उम्र की लड़कियों के लिए भी बन्दूक चलाने की तालीम अब दाखिल की जा रही है।

जो नौजवान लड़के-लड़कियाँ सेना में लिए भरती होना चाहें, उनके लिए सैनिक तालीम की उचित व्यवस्था करना एक चीज है, लेकिन हर नौजवान लड़के-लड़की के लिए सैनिक तालीम इस तरह अनिवार्य करना बिल्कुल दूसरी। सामान्य शिक्षण के साथ फौजी तालीम को मिलाना एक बहुत बुनियादी प्रश्न खड़ा करता है कि हम हमारे सामाजिक जीवन को किस दिशा में ले जाना चाहते हैं—शान्ति या युद्ध? हम यह जानते हैं कि इस मुल्क में भी ऐसे लोग होंगे, जो इस बात में विश्वास रखते हों, या ऐसा चाहते हों, कि सारे मुल्क का वातावरण एक फौजी छावनी की तरह का हो और लोगों की वृत्तियाँ युद्ध की तरफ मोड़ी जायँ। लेकिन वे भी जानते हैं कि अगर यह प्रश्न सीधे रूप में मुल्क के सामने पेश किया जाय तो इस विचार का बहुत बड़ा विरोध आज भी मुल्क के बुद्धिमान लोगों द्वारा होगा, इसलिए फौजी वृत्ति को अनुशासन के नाम पर 'पीछे के रास्ते से' वे घुसाना चाहते हैं। स्कूल-कालेजों की तालीम के साथ फौजी तालीम देने के पक्ष में यह बात कही जाती है कि फौजी तालीम से छात्रों में अनुशासन की भावना आती है। यह न केवल शिक्षा का और शिक्षकों का उपहास है, बल्कि सामान्य बुद्धि का भी। अनुशासन एक "भीतरी" गुण है। उसका संबंध मन की वृत्ति से है, न कि किसी प्रकार की बाहरी कवायद या वर्दी से। *शिक्षा ही अनुशासन का सच्चा उपाय है।* अतः अनुशासन के लिए शिक्षण संस्थाओं में फौजी तालीम दाखिल करना शिक्षा और शिक्षण-संस्थाओं की हार कबूल करने जैसा है।

आज हमारे देश के प्रधान-मंत्री जहाँ भी जाते हैं, वहाँ सम्पूर्ण निःशस्त्रीकरण की बात करते हैं और कहते हैं कि अब इस विज्ञान-युग में युद्ध की बात सोचना भी मूर्खता है। पर दूसरी ओर इस देश में ही देश के नौजवानों के लिए फौजी तालीम अनिवार्य की जा रही है, यह आश्चर्य की बात है। ऐसी दुःखी बात करना न सिर्फ सरकार की प्रतिष्ठा को घटानेवाली है, बल्कि युग की आकांक्षा के भी प्रतिकूल है। हम आशा करते हैं कि इस तरह 'चोर-दरवाजे से' शैतान को घर में घुसाने की इस प्रक्रिया के खिलाफ न सिर्फ देश की शिक्षण-संस्थाओं, बल्कि सब लोगों की ओर से आवाज उठाई जायगी।

बच्चों का उपयोग बन्द हो

आसाम प्रदेश कांग्रेस कमेटी ने एक प्रस्ताव द्वारा विद्यार्थियों में बढ़ती हुई "अनुशासनहीनता" और हिंसक प्रवृत्ति के बारे में गम्भीर चिन्ता व्यक्त की है। प्रस्ताव में सही कहा गया है कि अगर यह परिस्थिति जारी रही और समय रहते इसका कोई इलाज नहीं किया गया तो "शिक्षा को ही नहीं, बल्कि समूचे प्रान्त के जीवन को हानि" पहुँचेगी।

हमें मालूम नहीं कि प्रदेश कांग्रेस कमेटी ने केवल चिन्ता व्यक्त करने के अलावा इस परिस्थिति के कारणों का विश्ले-षण भी किया या नहीं। विद्यार्थी समाज में आज जो वातावरण नजर आता है, उसके कई कारणों में से एक बड़ा कारण यह भी है कि राजनैतिक पार्टियाँ अपनी *स्वार्थ सिद्धि के लिए विद्यार्थियों का और* छोटे बच्चों तक का उपयोग करती हैं। चुनावों के दौरान में जिस प्रकार की पार्टी-गली, कूचे, मैं-मैं और अनेक विद्यार्थी और छोटे बच्चों के [illegible] जाता है, उसका असर उनके [illegible] जीवन पर न हो, यह सम्भव नहीं [illegible] मानव इतिहास में भेद और [illegible] समस्या हमेशा रही है। [illegible] इस भेद और संघर्ष के साधन [illegible] रहे हैं। किसी जमाने में लोगों [illegible] भावना का फायदा उठाकर [illegible] लड़ाया जाता था, आज सत्ता [illegible] नीति इस संघर्ष के साधन बन [illegible] हमारे देश में ही नहीं, दुनिया के देशों में भी, खास करके उन देशों में सत्ता अभी नयी-नयी हासिल हुई है राजनीति की स्वस्थ परम्पराएँ नहीं राजनीतिक पार्टियाँ सत्ता की [illegible] भी प्रकार के साधनों का [illegible] नहीं चूकतीं। साथ में दिया हुआ [illegible] के एक शहर का दृश्य एक प्रसंग [illegible] इस चित्र में पाठक देखेंगे कि [illegible] १० वर्ष के, कमसिन लड़के-लड़कि[illegible] शुरू से ही कैसी तालीम मिल रही है। लड़के-लड़कियाँ कटघरे में सुरक्ष[illegible] की एक जीप को घसकर भर्ती-अर्द[illegible] रहे हैं। बचपन से ही जिन्हें ऐसी [illegible] मिलती है, वे स्कूल-कालेजों में अगर [illegible] फसाद करें और अनुशासनहीनता [illegible] लायें तो उसमें आश्चर्य क्या और [illegible] किसका है? असम प्रदेश के कांग्रेस कमे[टी] ने जो चिन्ता व्यक्त की है, वह सही है पर पहले राजनीतिक पार्टियों को [illegible] बारे में गम्भीरता से सोचना होगा। [illegible] प्रान्तों में राजनीतिक दलों के नेता [illegible] मिलकर कुछ आचार-मर्यादाएँ तय [illegible] या तय करने जा रहे हैं। चुनाव के [illegible] में नाबालिग बच्चे-बच्चियों का उपयोग किसी हालत में न हो, कम-से-कम [illegible] मर्यादा तो हर पार्टी को स्वीकार कर[नी] ही चाहिए।

[illegible] को हार व जीत मान कर लौटते हुए, [illegible] के [illegible] का एक दृश्य

विचार-संकलन

विनोबा

मानव स्वभावतः दुष्ट नहीं

मानव को स्वभावतः दुष्ट मानने में निखिल मानव-जाति का अपमान तो है ही, निराशावाद भी इसमें कमाल का है। मानव मूलतः दुष्ट हो, तो शिक्षा की कोई आशा नहीं रह जाती। चूंकि तार्किक दृष्टि से किसी वस्तु से उसका स्वभाव सदा के लिए अलग कर देना असम्भव है, इसलिए यदि मानव-स्वभाव मूलतः दुष्ट हो, तो उसके सुधार के सारे प्रयत्न व्यर्थ सिद्ध होकर निराशावाद का और साथ ही पाशविक वृत्ति का साम्राज्य शुरू हो जायगा। कारण, शिक्षण की आशा समाप्त होने का अर्थ ही है, दण्ड-राज्य की स्थापना!

आज के शिक्षक का चित्र

आज के शिक्षक का अर्थ है: १. किसी तरह की भी जीवनोपयोगी क्रियाशीलता से शून्य, २. कोई काम की नई चीज सीखने में स्वभावतः असमर्थ और क्रियाशीलता से सदा के लिए उकताया हुआ, ३. केवल शिक्षण का घमंड रखने वाला, ४. पुस्तकों में गड़ा हुआ और ५. आलसी जीव।

केवल शिक्षा का मतलब है, जीवन से तोड़कर *सिखाया हुआ मुर्दा शिक्षण!* और शिक्षक का अर्थ है 'मृत जीवी' मनुष्य!

●

जिम्मेदारी न टालें

जिन्दगी की जिम्मेदारी कोई डरावनी चीज नहीं है। वह आनन्द से ओतप्रोत है, बशर्ते कि ईश्वर की रची जीवन की सरल योजना को ध्यान में रखते हुए अयुक्त वासनाओं को दबा कर रखा जाय। पर जैसे वह आनन्द से भरी वस्तु है, वैसे ही शिक्षा से भी भरपूर है। यह पक्की बात समझनी चाहिए कि जो जिन्दगी की जिम्मेदारी से वंचित हुआ, वह सारी शिक्षा गँवा बैठा! बहुतों की धारणा है कि बचपन से ही जिन्दगी की जिम्मेदारी का भान यदि बच्चों को रहे, तो जीवन कुम्हला जायगा। पर जिन्दगी की जिम्मेदारी का भान होने से अगर जीवन कुम्हलाता हो, तो कहना होगा कि जीवन कोई जीने योग्य वस्तु है ही नहीं।

छात्र और अध्यापक का संबंध

बचपन से अब तक मैं सदा विद्यार्थी रहा हूँ और अध्यापक भी। कह नहीं सकता कि मैं विद्यार्थी अधिक हूँ या अध्यापक? कारण, विद्यार्थी और अध्यापक दोनों एक दूसरे के अध्यापक हुआ करते हैं! बाप और बेटे के बीच ऐसा संबंध नहीं होता। बाप, बाप ही रहेगा और बेटा, बेटा ही। किन्तु मित्रों के बीच ऐसा सम्बन्ध हो सकता है। भाइयों के बीच भी ऐसा संबंध हो सकता है। दोनों में परस्पर मित्र-मित्र और भाई-भाई का सम्बन्ध हो सकता है। इसी तरह विद्यार्थी और शिक्षक के बीच भी परस्पर गुरु-शिष्य-संबंध हो सकता है। यह एक मूलभूत विचार है। शिक्षक और विद्यार्थी मिल कर एक समाज बनता है और दोनों एक दूसरे के मददगार बनते हैं। विद्यार्थी के बिना शिक्षक का नहीं चल सकता और न शिक्षक के बिना विद्यार्थी का ही। दोनों मिल कर ही एक समाज बनता है।

स्वावलम्बन के तीन अर्थ

स्वावलम्बन के तीन अर्थ हैं। अपने उदर निर्वाह के लिए दूसरों पर आधार रखना न पड़े, यह उसका पहला अर्थ है। उसका दूसरा अर्थ यह है कि करने की स्वतंत्र शक्ति प्राप्त हो। उसका तीसरा अर्थ यह है कि अपने-आप पर काबू रखने की आनी चाहिए, इन्द्रियों को वश करने की शक्ति आनी चाहिए। की पराधीनता गलत है। मन की नता गलत है। शरीर पेट के धीन बनता है। इसलिए मनुष्य को आजीविका सम्पादन करने का ज्ञान के द्वारा मिलना चाहिए। अगर की बुद्धि चिंतन और विचार स्वतंत्र नहीं है, तो मनुष्य पराधीन है। इसलिए उसे स्वतंत्र चिंतन हासिल होनी चाहिए। मन और इं की गुलामी मिटाने की शक्ति भी हासिल होनी चाहिए।

माता पिता अपने लड़कों के बारे में सोचते समय ये तीन विचार सामने रखेंगे, तो उन्हें बहुत सुख होगा। माता पिता को इसी बात से सुख मिलता है कि उनके बच्चे सुखी और समर्थ हों और लोगों में उनकी इज्जत हो। लड़कों को नौकरी मिल गई और उनकी शादी वगैरह का इन्तजाम हो गया, उनके लिए सारी व्यवस्था हो गई मानना ठीक नहीं है। (शिक्षण विचार)

●

और मिलिटरी अलग। हम देखते हैं कि कैम्प में जाने से बहनें डरती हैं। जो हिफाजत करने वाले हैं उन्हीं से डर। इसीलिए कि बहादुरी और शराफत अलग-अलग हैं। हम सिपाही की बहादुरी और भले आदमी की शराफत मिलाना चाहते हैं। तभी गाँव से जैसे मूर्खता खत्म होगी वैसे ही कायरता भी खत्म होगी। वे या तो सुस्त हैं या गाफिल हैं या नशे में चूर रहते हैं। उन्हें सावधान करना होगा!

हमें शराफत व मर्दानगी दोनों चाहिए। साथ ही हमें ग्राम से नागरिक व सेवक के अन्तर को भी मिटाना होगा। अन्यथा सेवक का पेशा सेवा करना और गाँव वालों का पेशा झगड़े करना मसले पैदा करना होगा। यह नहीं होना चाहिए। सेवक एक अलग वर्ग नहीं बने। वह *ग्रामीण जनता का सहायक हो।* हम सेवक सेवा के ठेकेदार नहीं बन कर आएं।

हम आज इन्सान की शान को कायम करना चाहते हैं। इसके लिए हमें सिपाही, साहूकार व हाकिम की शान को खत्म करना होगा। यह वही कर सकेगा जिसके पास बहादुरी होगी। धन का लालच नहीं होगा। शराफत से भरपूर होगा।

अन्ततः हमारा लक्ष्य झगड़े की बुनियादें गरीबी, अमीरी, आतंक, भाषाएं, सम्प्रदाय आदि मिटाना व साथ ही सेवकों का अलग वर्ग न बना सेवक को नागरिक व नागरिक को सेवक बनाना होगा।

●

दिल्ली का नशाबन्दी सम्मेलन

दो और तीन सितम्बर को दिल्ली में अखिल भारत नशाबन्दी सम्मेलन का पहला अधिवेशन सम्पन्न हुआ। बिहार सर्वोदय-मण्डल की तरफ से सम्मेलन में सम्मिलित होने का मौका मिला। इस सम्मेलन का आयोजन दिल्ली नशाबन्दी समिति ने किया था। प्रायः नौ सौ प्रतिनिधि आये थे। दक्षिण भारत से आने वालों की संख्या अधिक थी।

प्रांतीय सरकारों के आदमी इतने आये थे कि यह कहना कठिन है कि ज्यादा सरकारी प्रतिनिधि थे या गैरसरकारी। सम्मेलन-स्थान में कोई उत्साही भाई बीड़ी-सिगरेट विरोधी एक बड़ा-सा झंडा लिये बैठे थे, हालाँकि सम्मेलन में धूम्रपान करने वालों की संख्या कम नहीं थी।

पहले दिन की पहली बैठक अनौपचारिक रूप से हुई, क्योंकि भारत के वित्त-मंत्री मुरारजी भाई, जो सम्मेलन का उद्घाटन करनेवाले थे उस समय दिल्ली में मौजूद नहीं थे। मद्रास मंत्री श्री भक्तवत्सलम्जी ने अध्यक्षता की। अनौपचारिक तौर पर हर प्रांतों से आये एक एक, दो-दो लोगों ने अपने यहाँ की हालत का जिक्र किया और प्रांतों का कैसा रहा, कह नहीं सकते, पर बिहार की ओर से जिन लोगों को बुलवाया गया वे एक तरह से सरकारी नीति के समर्थक थे और जिनका नशाबंदी से प्रत्यक्ष कोई संबंध बिहार में न देखा गया और न सुना गया ऐसे थे। इन लोगों के भाषणों का यही प्रभाव समुदाय पर पड़ा कि बिहार सरकार मुस्तैदी से नशाबंदी कर रही है।

दूसरी बैठक में नशाबंदी सम्मेलन के स्वागताध्यक्ष डा० युद्धवीर सिंह ने सबका स्वागत किया। अध्यक्ष भक्तवत्सलम्जी ने भी नशाबंदी की जरूरत बताते हुए उसे व्यावहारिक भी बताया। श्री मुरारजी भाई देसाई ने हिन्दी में उद्घाटन भाषण किया। बहुत सुन्दर और उत्साहप्रद भाषण था। जो सरकारें घाटे के डर से नशाबंदी नहीं कर रही हैं, उनको उन्होंने बम्बई और मद्रास के अनुभव से उत्तर दिया। उन्होंने बताया कि बम्बई राज्य में मिल के मजदूर पहले नशाखोरी में सब कमाई उड़ा देते थे, नशाबंदी होने पर उनके पैसे बचे। इससे उनकी माली हालत सुधरी। फिर वे और उनके आश्रित लोग अच्छा खाने-पहनने लगे। उनकी क्रय-शक्ति बढ़ी। इस कारण नशे के कर से होने वाली ७ करोड़ की आय जहाँ घटी, वहाँ सेल्स टैक्स की आमदनी १८ करोड़ हो गई। गांधीजी भी तो यही कहते थे कि नशाबंदी से देशवासियों का लाभ होगा और आगे चल कर राष्ट्रीय आय भी बढ़ेगी। बम्बई, मद्रास राज्यों का यह उदाहरण आँख खोलने वाला होना चाहिए। पर जो देखना ही नहीं चाहते, उनको क्या कहा जाय!

दूसरे दिन की बैठक चार विचार-गोष्ठियों के रूप में हुई। उनमें अच्छी चर्चाएँ हुईं पर चारों गोष्ठियों के लिए जो विषय रखे गये थे उनमें इस मुद्दे पर विचार किसी गोष्ठी में नहीं हो सका कि अगर किसी प्रदेश की सरकार नशाबंदी नहीं करे तो वहाँ के लोग नशाबन्दी के लिए क्या उपाय करें। बिहार, केरल, आन्ध्र आदि कई प्रांतों के उत्साही लोगों ने इस बारे में बड़ी दौड़-धूप की।

आखिरी बैठक ३ ता० को २ बजे से ५ बजे तक हुई। इसमें चारों कमेटियों की रिपोर्ट पेश की गयी थी। स्वागत समिति द्वारा तैयार किये गये प्रस्ताव पेश और पास किये।

सम्मेलन बहुत अच्छा रहा। एक अखिल भारतीय हलचल इस आवश्यक पर उपेक्षित विषय की होने लगी। पर यह बात खटकने वाली है कि इस गैर सरकारी सम्मेलन में उन गैरसरकारी लोगों को, जो अपने यहाँ नशाबन्दी चाहते हैं, कोई मार्गदर्शन नहीं मिला। ऐसा लगता है कि *यह सवाल मजहल्ला के लिए छोड़* ही दिया गया। लेकिन यही सवाल असली सवाल है। अभी भारत के कुल तीन प्रांत, गुजरात, महाराष्ट्र और मद्रास में पूर्ण नशाबन्दी है। कुछ पार्शियल (आंशिक) हैं और अधिकांश सरकारें अपनी प्रजा के शराब में ही डुबाये रखना चाहती हैं। सवाल है 'पार्शियल' को 'टुगटोटल' कैसे बनाया जाय। मद्यपान को मर्यादित कैसे किया जाय? क्या हम सरकारों की मधुर इच्छा का ही आसरा देखें या अपना पुरुषार्थ भी कुछ करें। सम्मेलन इस बारे में मौन है। इस माने में असफल भी है।

—रमाशरण चतुर्वेदी

सत्यं जगत स्फूर्ति: जीवन सत्यशोधनम्

भूदानयज्ञ

लोकनागरी लिपि*

वाणी का अेक ही काम-दूसरों के गुण गाना

हमारी वाणी का अेक ही काम होना चाहिये—भगवद्‌गुण गाना। भगवान का गुणगान करने का मतलब है, दूसरों का गुणगान करना। जब हम आपस में अेक दूसरे के गुण गाते हैं, तो दोषों की याद भूल जाते हैं, और परस्पर में जीवन का प्रवाह हलका होगा। जीवन ताजा और आनंदी रहेगा। औसे अनुभव में नया-नया ग्रहण करने की शक्ति बनी रहेगी। मनुष्य चाहे, तो वह नित्य नूतन रह सकता है।

जवानी में योग की जरूरत होती है। अगर हमें त्याग का ही अनुभव करना है, तो हम उसमें संतुष्ट रह सकते हैं। चाहे त्याग हो, चाहे भोग हो, दोनों दशाओं में हमें समत्व योग साधना चाहिये। जीवन में समत्व होगा, तो जीवन की उदार कभी नहीं सूखेगी और शरीर सदा ताजा रहेगा। संन्यास कहने की चीज है, करने की नहीं। करने की चीज तो योग है।

मैं यह सुनना नहीं चाहता की हमारा कोई शौकीन बीमार पड़ा है। मन पर काम का बोझ मत रखो। हमें कोई जल्दी नहीं है। कर्म की मात्रा चाहे कम हो रहे, बीच-बीच में आराम रखो की अंत में अुसका परिणाम अधिक ही होगा। समाधान तो मन की चीज है। काम के साथ वाणी और सरस्वती की सेवा अुपासना भी चलती रहनी चाहिये।

—विनोबा

*लिपि-संकेत : ि = ी, ी = ी, ख = ख, संयुक्ताक्षर हलंत चिह्न से।

संपादक की ओर से

सत्याग्रही की कसौटी

[illegible]

शहरों में अपना दूसरा धन्धा भी करते हैं, पर गाँवों की सैकड़ा एकड़ जमीन के मालिक हैं। स्वाभाविकतः संख्या में ये लोग कम ही हैं, पर गाँवों की अधिकांश जमीन इन चन्द लोगों की मालिकी की है। मदुराई जिले में ऐसे कई ग्रामदान हैं, जहाँ गाँवों के करीब-करीब सब परिवारों ने ग्रामदान का विचार स्वीकार किया है और उसमें शामिल हुए हैं, लेकिन ये 'बाहरी' मालिक उससे अलग रहे हैं। नतीजा यह हुआ है कि गाव के करीब-करीब सब लोग ग्रामदान के लिए तैयार होते हुए भी गाँव की अधिकतर जमीन ग्रामदान के दायरे से बाहर रही है और इसलिए गाँव का कुल जमीन के आधार पर गाँव की कोई आर्थिक योजना बना सकना ग्रामदानी गाँवों के लिए सम्भव नहीं हो रहा है।

उदाहरण के लिए, मदुराई जिले के मेलूर तालुका में कदमगरी एक गाँव है। इस गाँव में खेती करनेलायक कुल जमीन ३४१ एकड़ है। लेकिन उसमें से ८७ एकड़ जमीन ही गाँवों में रहने वाले किसानों की है। बाकी करीब २६० एकड़ जमीन केवल पाँच शहरी 'मालिकों' की है। उनमें से भी एक इनामदार की जमीन २२५ एकड़ है। गाँव में ९३ परिवार हैं, जो सब ग्रामदान में शामिल हुए हैं। इनमें से ५१ परिवार ऐसे हैं, जो बेजमीन थे। जिन भाई की २२० एकड़ जमीन इस गाँव में है, उनके पास आसपास के और ६ गावों में कुल मिला कर करीब २५०० एकड़ जमीन है। इसी तरह सुब्बीलक्ष्मीपट्टी इस तालुका का दूसरा गाँव है। गाँव में कुल उपजाऊ जमीन २०१ एकड़ है, उसमें १५१ एकड़ ऐसे लोगों के हाथ में है, जो वहाँ नहीं रहते। इस गाँव के कुल ५२ परिवारों में से ५ परिवार ऐसे हैं, जो ग्रामदान में शामिल नहीं हुए हैं, शेष ४७ ग्रामदान में शामिल हैं। ग्रामदान में शामिल नहीं होने वाले ५ परिवारों के पास १० एकड़ जमीन है, बाकी ४७ ग्रामदानी परिवारों के बीच कुल ४० एकड़ जमीन है। गाँव खूब हराभरा है, जमीन उपजाऊ है, पर ग्रामवासियों का जीवन गरीबी में डूबा हुआ है, क्योंकि तीन चौथाई जमीन उनके हाथ में नहीं है। तमिलनाड के भूदान-कार्यकर्ताओं का कहना है कि उन्होंने 'बाहरी' जमीन मालिकों को समझाने की काफी कोशिश की है, पर उसका कोई असर नहीं पड़ा।

श्री जगन्नाथन् और उनके साथी, जो वर्षों से इस क्षेत्र में भूदान-आन्दोलन में काम कर रहे हैं, इस परेशानी में हैं कि आखिर इस परिस्थिति का मुकाबला किस तरह किया जाय और जो 'बाहरी' मालिक ग्रामदान में शामिल नहीं हुए हैं, उन्हें ग्रामदान में शामिल होने के लिए कैसे प्रेरित किया जाय। एक बार तमिलनाड के कार्यकर्ताओं ने यह सोचा था कि बाहरी मालिकों को पर्याप्त सूचना देने के बाद गाँव के लोग उनकी जमीनों को गाँव की जमीन मानकर जोतना शुरू कर दें और कानून के अनुसार उनका जो वाजिब हिस्सा होता हो, वह उन्हें दे दें। गत नवम्बर में सर्व सेवा संघ के बेंगलोर-अधिवेशन में जब इस विषय की चर्चा आयी तब एक सुझाव यह आया कि इस प्रकार जमीन पर दखल करने के बजाय गाँववालों द्वारा असहयोग का कदम, यानी आज गाँवों के जो लोग 'बाहरी' मालिकों की जमीन पर मजदूरी करते हैं, उनके द्वारा अपने आपको उस काम से हटा लेना, सत्याग्रह का ज्यादा सौम्य तरीका होगा; पर इस बारे में जो कोई कदम उठाना हो वह विनोबाजी की स्वीकृति से उठाया जाय, यह तय रहा था।

इस बीच श्री जगन्नाथन् खुद आसाम जाकर विनोबाजी से मिले और तमिलनाड की सारी स्थिति के बारे में उनसे चर्चा की। उस सारी चर्चा के बाद विनोबाजी ने तमिलनाड सर्वोदय मण्डल को अपने जो सुझाव भेजे वह 'भूदान यज्ञ' के ता० २५ अगस्त के अंक में प्रकाशित हो चुके हैं। इसी दौरान में ता० १९ अगस्त को, मदरासी के प्रश्न को लेकर सुब्बीलक्ष्मीपट्टी गाँव में सत्याग्रह भी हुआ। छः दिन तक सत्याग्रह चला। रोज उस गाँव के तथा आसपास के गाँवों के ५०-६० लोगों का समूह जमीन-मालिक की सम्बंधित जमीन पर जाता था और गाँव के बेदखल हुए लोगों के अधिकार के प्रतीक-स्वरूप धमल करता था। छः दिन में कुल ३२४ स्त्री-पुरुषों ने इस सत्याग्रह में भाग लिया, जिनमें से ११७ हिरासत में ले लिये गये। छः दिन के बाद सत्याग्रह सफल हुआ और जमीन-मालिक ने उस जमीन की रवैतदारी ग्रामसभा के नाम करना स्वीकार कर लिया। चूँकि यह ग्रामदानी गाँव था, इसलिए गाँव के लोग, जिनमें पुराने खेतदार शामिल हैं, यही चाहते थे।

पर सुब्बीलक्ष्मीपट्टी की यह घटना तो उस बड़े प्रश्न का एक अंश है, जिसका जिक्र ऊपर किया गया है। असली सवाल तो यह है कि जो बाहरी मालिक गाँवों की अधिकांश जमीन के मालिक हैं और जो ग्रामदान में शरीक नहीं हो रहे हैं, उन्हें अपनी जमीन ग्रामदान में शरीक करने के लिए कैसे प्रेरित किया जाय? श्री जगन्नाथन् इस सम्बन्ध में अपने पत्र में लिखते हैं, "अगर हम जमीन पर कब्जा करते हैं तो वह गैरकानूनी कार्रवाई होगी। अगर हम असहयोग करते हैं तो वह नैतिकता के विरुद्ध होगा, क्योंकि एक-एक इंच जमीन काश्त होनी चाहिए।* कानून और नैतिकता के इस चक्कर के बीच शोषित जन समुदाय के लिए आखिर चारा क्या है?"

तमिलनाड के कार्यकर्ताओं की परेशानी वाजिब है, पर विनोबाजी ने जब यह कहा था कि "जो मालिक ग्रामदान में शामिल होना नहीं चाहते, उनके साथ असहयोग करना भूदान के बुनियादी विचार के अनुकूल नहीं है" तो उनका मतलब यह नहीं था कि असहयोग इसलिए वाजिब नहीं है कि कोई जमीन बिना काश्त के नहीं पड़ी रहनी चाहिए। हमें आश्चर्य है कि श्री जगन्नाथन् जैसे समझदार कार्यकर्ता ने नैतिकता का इतना ऊपर अर्थ कैसे लगाया! असहयोग इसलिए वाजिब नहीं है कि वह भूदान ग्रामदान के मूल विचार के खिलाफ जाता है। वह मूल विचार यह है कि हम सामनेवाले के हृदय में रहे हुए प्रेम और करुणा के भाव को जगा कर ही उसे कर्म के लिए प्रेरित करना चाहते हैं। सत्याग्रह का मतलब केवल "शस्त्र नहीं उठाना, लेकिन और सब तरह से सामनेवाले को मजबूर करना," यह नहीं है। जैसा विनोबा ने कई बार कहा है, सत्याग्रह सही दिशा में है, इसकी कसौटी यह माननी चाहिए कि उस सत्याग्रह के कारण सामनेवाले को सोचने की प्रेरणा मिले, न कि उसके मन में भय, आतंक की भावना का संचार हो। इसी लिए गांधीजी ने भी स्वयं कष्ट-सहन और बलिदान को सत्याग्रही-शक्ति का हार्द माना था। अक्सर यह कहा जाता है कि हम सामनेवाले को बार-बार समझाते हैं, लेकिन अपनी कुटिलता के कारण या अपने स्वार्थ के कारण वह हमारी बात सुनने को या मानने को तैयार नहीं होता है। ऐसी स्थिति में उसके मन में प्रेम और करुणा जागृत करने के लिए हम कब तक इन्तजार करेंगे? गरीब और दुःखी व्यक्ति कब तक धीरज रख सकेगा?

पर सत्याग्रही की असली कसौटी—जैन कि हर आदर्श की—ऐसे कठिन प्रसंग पर ही होती है। विनोबा का कहना है कि अगर हम ग्रामदान में शरीक न होने वाले

[*बिना काश्त किए जमीन पड़ी रहना राष्ट्रहित के विरुद्ध होगा, इस दलील के आधार पर। सं०]

व्यक्ति की जमीन पर बिना उसकी इजाजत के दखल करते हैं या उससे असहयोग करते हैं तो हम उसे अपना मन टटोलने की प्रेरणा नहीं देते, बल्कि विचार का रास्ता उल्टा बन्द कर देते हैं। 'तब क्या इसका मतलब यह है कि सत्याग्रही कार्यकर्ता अन्याय को चुपचाप देखता रहे या सहन करता रहे?' पर ऐसा मतलब हरगिज नहीं है। सत्याग्रही को निरन्तर ऐसे उपाय की खोज में लगे रहना चाहिए, जिससे वह सामनेवाले के दिल को छू सके। यही सत्याग्रही की कसौटी होती है। अगर कोई उपाय न सूझने से वह अपने रास्ते को छोड़ कर आसान दिखने वाला तरीका अपनाने लगे तो वह अपने संकल्प से हटा, ऐसा माना जायगा।

इस सिलसिले में विनोबा ने एक उपाय यह बतलाया कि जो लोग ग्रामदान में शरीक नहीं हुए हैं, ऐसे मालिकों की जमीन पर जो मजदूर अब तक काम करते रहे हैं, वे आगे और भी लगन और प्रेम के साथ उस काम को जारी रखें। आज तक मालिक को मजदूरों के काम की देख-रेख के लिए निरीक्षक या कारकून रखने पड़ते होंगे, पर ग्रामसभा और मजदूर मिलकर मालिकों को यह आश्वासन दें कि अब आगे उनको इस प्रकार के निरीक्षण की व्यवस्था करने की कोई आवश्यकता नहीं रहेगी, मजदूर पूरी ईमानदारी से काम करेंगे और फसल के अन्त में जमींदार को उसका हिस्सा, जितना आज तक वह लेता आया है, उतना वे खुशी-खुशी देंगे। वार्ता से भूदान या ग्रामदान का विचार समझाना सर्वोदय और प्रेम की बात समझाना, एक चीज है और अपनी कृति से उसको साबित करना दूसरी। क्या हमने इस प्रकार की कोई कृति आजमाई है? यह ठीक है कि सत्याग्रही कभी चुप न बैठे, पर वह धीरज भी न खोये यह जरूरी है और निरन्तर ऐसे उपायों की खोज में वह लगा रहे, जिससे वह सामने वाले के हृदय में प्रवेश पा सके। विनोबा ने एक तरीका बतलाया है, जिसका जिक्र ऊपर किया गया है। हमें इसमें कोई संदेह नहीं है कि जगन्नाथन् और उनके साथियों जैसे निष्ठावान् कार्यकर्ता मूल विचार को समझते हुए अगर इस खोज में लगे रहेंगे तो वे निश्चय ही सत्याग्रह के और भी कई सौम्य और सौम्यतर तरीके ढूंढ निकालेंगे।

पीछे के रास्ते से

ता० १२ सितम्बर को श्रीनगर की एक सभा में भाषण देते हुए हिन्दुस्तान के रक्षामंत्री, श्री कृष्ण मेनन ने यह जाहिर किया कि भारत-सरकार ने यह तय किया है कि "१६ वर्ष का हर लड़का और लड़की एन० सी० सी० ('राष्ट्रीय छात्र-सैनिक-दल' का) सदस्य बने।" श्री मेनन ने यह भी कहा कि एन० सी० सी० की ये टुकड़ियाँ सेना के केवल "शो-केस" नहीं हैं, बल्कि उनमें बन्दूकें आदि शस्त्र चलाने की तालीम बाकायदा दी जाती है। उन्होंने यह भी जाहिर किया कि बड़ी उम्र की लड़कियों के लिए भी बन्दूक चलाने की तालीम अब दाखिल की जा रही है।

जो नौजवान लड़के-लड़कियाँ सेना में लिए भरती होना चाहें, उनके लिए सैनिक तालीम की उचित व्यवस्था करना एक चीज है, लेकिन हर नौजवान लड़के-लड़की के लिए सैनिक तालीम इस तरह अनिवार्य करना बिल्कुल दूसरी। सामान्य शिक्षण के साथ फौजी तालीम को मिलाना एक बहुत बुनियादी प्रश्न खड़ा करता है कि हम हमारे सामाजिक जीवन को किस दिशा में ले जाना चाहते हैं—शान्ति या युद्ध? हम यह जानते हैं कि इस मुल्क में भी ऐसे लोग होंगे, जो इस बात में विश्वास रखते हों, या ऐसा चाहते हों, कि सारे मुल्क का वातावरण एक फौजी छावनी की तरह का हो और लोगों की वृत्तियाँ युद्ध की तरफ मोड़ी जायँ। लेकिन वे भी जानते हैं कि अगर यह प्रश्न सीधे रूप में मुल्क के सामने पेश किया जाय तो इस विचार का बहुत बड़ा विरोध आज भी मुल्क के बुद्धिमान लोगों द्वारा होगा, इसलिए फौजी वृत्ति को अनुशासन के नाम पर 'पीछे के रास्ते से' वे घुसाना चाहते हैं। स्कूल-कालेजों की तालीम के साथ फौजी तालीम देने के पक्ष में यह बात कही जाती है कि फौजी तालीम से छात्रों में अनुशासन की भावना आती है। यह न केवल शिक्षा का और शिक्षकों का उपहास है, बल्कि सामान्य बुद्धि का भी। अनुशासन एक "भीतरी" गुण है। उसका संबंध मन की वृत्ति से है, न कि किसी प्रकार की बाहरी कवायद या वर्दी से। शिक्षा ही अनुशासन का सच्चा उपाय है। अतः अनुशासन के लिए शिक्षण संस्थाओं में फौजी तालीम दाखिल करना शिक्षा और शिक्षण-संस्थाओं की हार कबूल करने जैसा है।

आज हमारे देश के प्रधान-मंत्री जहाँ भी जाते हैं, वहाँ सम्पूर्ण निःशस्त्रीकरण की बात करते हैं और कहते हैं कि अब इस विज्ञान-युग में युद्ध की बात सोचना भी मूर्खता है। पर दूसरी ओर इस देश में ही देश के नौजवानों के लिए फौजी तालीम अनिवार्य की जा रही है, यह आश्चर्य की बात है। ऐसी दुरुखी बात करना न सिर्फ सरकार की प्रतिष्ठा को घटानेवाली है, बल्कि युग की आकांक्षा के भी प्रतिकूल है। हम आशा करते हैं कि इस तरह 'चोर-दरवाजे से' शैतान को घर में घुसाने की इस प्रक्रिया के खिलाफ न सिर्फ देश की शिक्षण-संस्थाओं, बल्कि सब लोगों की ओर से आवाज उठाई जायगी।

बच्चों का उपयोग बन्द हो

आसाम प्रदेश कांग्रेस कमेटी ने एक प्रस्ताव द्वारा विद्यार्थियों में बढ़ती हुई "अनुशासनहीनता" और हिंसक प्रवृत्ति के बारे में गम्भीर चिन्ता व्यक्त की है। प्रस्ताव में सही कहा गया है कि अगर यह परिस्थिति जारी रही और समय रहते इसका कोई इलाज नहीं किया गया तो "शिक्षा को ही नहीं, बल्कि समूचे प्रान्त के जीवन को हानि" पहुँचेगी।

हमें मालूम नहीं कि प्रदेश कांग्रेस कमेटी ने केवल चिन्ता व्यक्त करने के अलावा इस परिस्थिति के कारणों का विश्लेषण भी किया या नहीं। विद्यार्थी समाज में आज जो वातावरण नजर आता है, उसके कई कारणों में से एक बड़ा कारण यह भी है कि राजनैतिक पार्टियाँ अपनी स्वार्थ सिद्धि के लिए विद्यार्थियों का और छोटे बच्चों तक का उपयोग करती हैं। चुनावों के दौरान में जिस प्रकार की पार्टी-बाजी, तू-तू, मैं-मैं और अक्सर विद्यार्थी और छोटे बच्चों के [illegible] जाता है, उसका असर उनके [illegible] जीवन पर न हो, यह सम्भव नहीं। मानव इतिहास में भेद और [illegible] समस्या हमेशा रही है। मित्र मित्र [illegible] इस भेद और संघर्ष के साधन [illegible] रहे हैं। किसी जमाने में लोगों [illegible] भावना का फायदा उठाकर [illegible] उठाया जाता था, आज सत्ता और [illegible] नीति इस संघर्ष के साधन बन [illegible] हमारे देश में ही नहीं, दुनिया के [illegible] देशों में भी, खास करके उन देशों में [illegible] सत्ता अभी नयी-नयी हासिल हुई है [illegible] राजनीति की स्वस्थ परम्पराएँ नहीं [illegible] राजनैतिक पार्टियाँ सत्ता की होड़ में [illegible] भी प्रकार के साधनों का इस्तेमाल करने [illegible] नहीं चूकतीं। साथ में दिया हुआ [illegible] के एक शहर का दृश्य एक प्रसंग [illegible] इस चित्र में पाठक देखेंगे कि ८-९ [illegible] १० वर्ष के, कमसिन लड़के-लड़कियाँ [illegible] शुरू से ही कैसी तालीम मिल रही है। लड़के-लड़कियाँ कतार में संयुक्त [illegible] की एक जीप को चलाकर आगे-आगे [illegible] रहे हैं। बचपन से ही जिन्हें ऐसी [illegible] मिलती है, वे स्कूल-कालेजों में अगर [illegible] फसाद करें और अनुशासनहीनता [illegible] लावें तो उसमें आश्चर्य क्या और [illegible] किसका है? असम प्रदेश के कांग्रेस [illegible] ने जो चिन्ता व्यक्त की है, वह सही [illegible] पर पहले राजनीतिक पार्टियों को ही [illegible] बारे में गम्भीरता से सोचना होगा। [illegible] प्रान्तों में राजनीतिक दलों के नेताओं [illegible] मिलकर कुछ आचार-मर्यादाएँ तय की [illegible] या तय करने जा रहे हैं। चुनाव के [illegible] में नाबालिग बच्चे-बच्चियों का उपयोग किसी हालत में न हो, कम-से-कम इस मर्यादा को तो हर पार्टी को स्वीकार करनी ही चाहिए।

मदरास राष्ट्र की कार व जीत मना कर लौटते हुए, बर्दवान के बच्चों का एक दृश्य

विनोबा का वाङ्मय : ३

नारायण देसाई

बिलकुल बचपन में ही विनोबा ने गीता का अनुवाद करने का प्रयत्न किया था। किशोरावस्था में तिलक महाराज के "गीता-रहस्य" को, जो ठीक-ठीक मुश्किल माना जाता है, वे ८-९ बार पढ़ गये और फिर एक बार खुद लोकमान्य के पास जाकर उस विषय में उनसे शास्त्रार्थ भी कर आये। काशी में गंगातट-वास के दरमियान अन्न-क्षेत्र में खाने के लिए जाते तब वहाँ पहुँचने के बाद भी भोजन मिलने में सहज ही एक-डेढ़ घण्टा बीत जाता था। दूसरे विद्यार्थी तो यह समय गप्पों में गुजार देते, पर विनोबा इस समय का उपयोग पूरी गीता का मन ही मन पाठ करने में करते थे।

आज जिनकी पदयात्रा संसार प्रसिद्ध हो गयी है, वे जब १९२०-२१ में महाराष्ट्र में पदयात्रा करते थे, तब भी शाम को गीता पर प्रवचन करते थे। एक बार पाँव में छाले पड़ गये। वे थक गये। सारे दिन विनोबा का ध्यान उस तरफ रहता, परन्तु उन्हीं के शब्दों में "बस डेढ़ दो घण्टे यह दर्द मैं बिलकुल भूल जाता जब मैं गीताजी पर बोलता तो मैं अपने आपको ही भूल जाता था।" गांधीजी द्वारा दी गयी जेल की यात्रा ने उनको गीता के श्रवण, मनन, निदिध्यासन करने का मनोनुकूल अवसर दिया। जेल में ही "गीताई" लिखी गयी, जेल में ही "गीता-प्रवचन" दिये गये। सन् १९३० से ३२ तक के दो वर्ष तो विनोबा के लिए सम्पूर्ण रूप से गीतामय ही व्यतीत हुए। उसके बाद की जेल-यात्रा के दरमियान फिर से गीता पर बोलने का मौका आया। उसमें से हमें "स्थितप्रज्ञ-दर्शन" मिला और उनमें से ही एक-दूसरी पुस्तक तैयार हो इतनी सामग्री और है। लेकिन विद्वानों को हृदय में रख कर दिये हुये ये दूसरे "गीता प्रवचन" अभी अप्रकाशित हैं।

जगह बैठ कर मैंने यह देखा और अब यात्रा करते-करते घूम कर उसको देख रहा हूँ। विराट जनसमूह और उसके नेता, दोनों एक प्रवाह में खिंचे चले आ रहे हैं, यह देख कर ईश्वर की ही लीला का चिन्तन करना और दूसरा कुछ नहीं सोचना, ऐसा मुझे लगता है।"

विनोबा ने स्थितप्रज्ञ को गीता का आदर्श पुरुष विशेष माना है। इसके अलावा वे उसे आज के जमाने का आदर्श पुरुष-विशेष भी मानते हैं।

विज्ञान जब इतनी प्रगति कर चुका है, तब मनुष्य को मन की भूमिका से ऊपर उठने की जरूरत है। इसके अलावा, दुनिया अब इतनी छोटी हो गयी है और एक राज्य कर्ता, या उद्योगपति या सेना

फिर भूदान-पदयात्रा आयी तो उसमें भी गीता चिन्तन तो चालू ही रहा। उसमें से हमें "साम्य-सूत्र" और "गीताई-चिन्तनिका" मिली। इस प्रकार हजारों वर्षों से जिस ग्रन्थ ने अनेक सन्तों, पण्डितों, इतिहासकारों और साधकों को प्रेरणा दी है, उसने आधुनिक युग के इस सन्त-पण्डित-इतिहासविद्-साधक के जीवन को नित्य नूतन प्रेरणा से प्लावित किया है। कोई ढूँढ़ना चाहे तो विनोबा के दर्शन के सब बीज उन्हें इस गीता-भक्ति में से मिल जायेंगे।

धुलिया की जेल में करीब २०० सत्याग्रही श्रोताओं के समक्ष हर रविवार को एक प्रवचन विनोबा का होता था। महाराष्ट्र के महान् साहित्यिक, साने गुरुजी ने किस भक्ति से इन प्रवचनों के नोट लिये। उनके आधार पर जो पुस्तक तैयार हुई, उसे विनोबा एक से अधिक बार परिमार्जित कर चुके हैं। आज इस "गीता प्रवचन" का अनुवाद १५-१६ भाषाओं में हो चुका है और करीब १० लाख जितनी प्रतियाँ इसकी खप चुकी हैं। हजारों लोगों के जीवन पर उसके अध्ययन ने गहरा असर डाला है। बहुत सों के तो जीवन उसके पढ़ने से एकदम पलट ही गये हैं।

ऐसा सुनने में आया है कि श्री घनश्यामदास बिड़ला ने एक बार "गीता प्रवचन" के बारे में ऐसी टीका की थी कि "विनोबा ने गीता के निमित्त इसमें अपनी ही बात कही है।" बात सच है। एक व्यक्ति ने विनोबा से पूछा : "कर्म, अकर्म, विकर्म शब्दों के जो अर्थ आपने किये हैं, वैसे पहले भी किसी ने किये हैं क्या?" विनोबा ने कहा : "भाई, ४८ भाष्य पढ़ने के बाद उनसे अलग कुछ नया कहने का है, ऐसा मुझे लगा तभी तो मैंने ४९ वाँ भाष्य लिखा न! 'विकर्म' का जो अर्थ मैंने

किया है वैसा, अर्थ ज्ञानेश्वर ने किया है। दूसरे शब्दों का उसी प्रकार का अर्थ अपने जीवन में जीकर देखने से जो समझ में आया, वह मैंने रखा है।' विनोबा ने

> "गीता का और मेरा सम्बन्ध तर्क से परे है। मेरा शरीर भी माँ के दूध पर जितना पला है, उससे कहीं अधिक मेरा हृदय और बुद्धि, दोनों गीता के दूध से पोषित हुए हैं। जहाँ हार्दिक संबंध होता है, वहाँ तर्क की गुंजाइश नहीं रहती। तर्क को काट कर श्रद्धा और प्रयोग, इन दो पंखों से ही मैं गीता-गगन में यथाशक्ति उड़ान मारता रहता हूँ। मैं प्रायः गीता के ही वातावरण में रहता हूँ। गीता मेरा प्राण-तत्त्व है। जब मैं गीता के सम्बन्ध में किसी से बात करता हूँ, तब गीता सागर पर तैरता हूँ और जब अकेला रहता हूँ, तब उस अमृत-सागर में गहरी डुबकी लगा कर बैठ जाता हूँ।"
>
> —विनोबा

गीता को एक सन्तुलित जीवन, साम्ययोगी जीवन के ग्रन्थ के रूप में देखा है और उसके एक एक अध्याय में उन्होंने परिपूर्ण, सम, उन्नत जीवन का दर्शन पाया है।

"स्थितप्रज्ञ-दर्शन" "गीता-प्रवचन" के बाद का ग्रन्थ है। विनोबा इसके विषय में कहते हैं : "गीता-प्रवचन" परमार्थ का सकल जनोपयोगी, सरल, सुलभ विवेचन है। "स्थितप्रज्ञ-दर्शन" उससे आगे का ग्रन्थ है। इसमें वही विषय एक खास भूमिका पर से रखा गया है। वह गीता का सूक्ष्म अभ्यास करने वाले के लिए है। गीता के विषय में मुझे जो कुछ कहने का है, वह इन तीनों में मिल कर याने गीताई, गीता-प्रवचन, स्थितप्रज्ञ-दर्शन में संक्षेप में आ गया कहा गया है। ये पुस्तकें लिखीं तो सही और अपेक्षा यह रखी है कि यह सब पारमार्थिक जिज्ञासुओं को उपयोगी होंगी और किसी किसी का उनसे लाभ हुआ भी है, लेकिन इनका मुख्य उपयोग खुद मेरे अपने लिए है। संसार का नाटक मैं देखा करता हूँ। एक

पति या उसी प्रकार के मनुष्य की एक छोटी-सी भूल सारे समाज पर असर डाल सकती है, देखा है, तब उनके निर्णय स्थिर बुद्धि से हुए हों, यह अनिवार्य हो जाता है। विज्ञान ने जब इतनी प्रगति नहीं की थी, दुनिया जब इतनी छोटी नहीं बनी थी, और समाज एक-दूसरे पर असर कर सके, इस प्रकार आपस में गुंथा हुआ नहीं था, तब मनुष्य को अपनी वासनाओं के पीछे जाकर भूलें करना पोसा सकता था। आज वह अशक्य है।

इस प्रकार यह पुस्तक एक ओर गीता के गहरे अभ्यास की दृष्टि से और दूसरी ओर दुनिया के आज के प्रश्न का निराकरण खोजने के प्रयास के रूप में एक महत्त्व का ग्रन्थ है। वह आज के युग के साधक का ग्रन्थ है। उसके पीछे विनोबा के तीस वर्ष के निदिध्यास से स्थिर बना हुआ अर्थ है।

राष्ट्रीय आन्दोलन के समय अंग्रेज सरकार ने हम लोगों पर जो अनेक उपकार किये हैं, उनमें एक यह है कि हमारे बहुत से उत्तम चिन्तकों को उन्होंने जेलवास का मौका दिया। अगर जीवन के सर्वोत्तम समय के १४-१४ वर्ष पण्डित नेहरू ने जेल में न बिताये होते तो हमें पण्डित नेहरू के अमूल्य ग्रन्थ नहीं मिल सकते थे। विनोबा को भी जेलवास ने ऐसा अवसर पर्याप्त प्रमाण में दिया है। "गीता-प्रवचन" की तरह "स्थितप्रज्ञ दर्शन" भी जेल की उपज है। १९४४ के शीतकाल में मध्यप्रदेश के सिवनी जेल में किशोरलालभाई और काकासाहब जैसों के सहवास में तथा दादा धर्माधिकारी जैसों के श्रोतामण्डल में, दिये हुए प्रवचनों का यह परिणाम है। गीता के दूसरे अध्याय के अन्तिम अठारह श्लोकों पर इसमें १८ प्रवचन हैं। ये सब करीब २०० पृष्ठों में बाँटे हुए हैं। पर यह सब मिल कर साधक के लिए एक सम्पूर्ण ग्रन्थ बन जाता है।

विनोबा के भाइयों में शिवाजी सबसे छोटे हैं। विनोबा की तरह ही शब्दों के मूल में जाने वाले, शिवाजी जैसे ही गीता-भक्त वे हैं। ज्ञानेश्वरी पर रचा हुआ उनका कोश कदाचित इस विषय पर मराठी भाषा में अद्वितीय माना जायगा। "गीताई-शब्दार्थकोश" यह विनोबा शिवाजी के अतुल पुरुषार्थ का परिणाम है।

यह कोश अनेक तरह से अद्वितीय है। वह "गीताई" पर एक भाष्य ही है। इसमें हर शब्द का समग्र स्थलनिर्देश के साथ किया है और हर शब्द के उस-उस संदर्भ में होने वाले अर्थ भी दिये हैं। अर्थ का खुलासा कोश में जरूरी प्रमाणों के साथ किया गया है। पूरक विवेचन के तौर पर विशिष्ट शब्द-समूह अथवा वाक्यों के अर्थ का भी विवरण दिया है। इतने से काम पूरा हुआ न मान कर उसमें टिप्पणी भी जोड़ी गयी है, जिसमें श्लोकों की संगति, श्लोकों के विशिष्ट अर्थ, अधिकारनिर्देश अथवा अध्याय तात्पर्य सूचित किये हैं। यह कोश हिन्दू धर्म तथा दूसरे धर्मों से गीता का समन्वयकारी अर्थ करने वाला है। अतः उसके अर्थ में कई जगह इतर ग्रन्थों के पारिभाषिक शब्द इस्तेमाल किये गये हैं।

सम्पूर्ण गीता के विषय में संक्षेप में विचार देने वाला एक पत्र विनोबाजी ने गांधीजी को लिखा था। वह पत्र ही एक स्वतन्त्र पुस्तिका के तौर पर "गीताध्यान-सम्प्रति" के नाम से छपा है। मराठी गीता प्रवचन में वह शामिल किया गया है।

गीता के विषय में विनोबा की सबसे नई पुस्तक है "गीताई चिन्तनिका।" कश्मीर में जब ऊँची चढ़ाई और बाढ़ के कारण बहुत-सा सामान पीछे छोड़ना पड़ा तब उसमें "चिन्तनिका" की हस्तलिखित पाण्डुलिपि थी। बाद में उस सामान का पता लगने में कुछ विलम्ब हुआ तब विनोबा ने कहा था "दूसरा सारा सामान

दलगत राजनीति लोक-शक्ति के लिए घातक है

एम० एन० राय

[पढ़े लिखे लोगों में भी यह धारणा व्याप्त है कि दलों बिना राजनीति संभव नहीं और सत्ता की प्रेरणा बिना दलों का संगठित अस्तित्व असंभव है। स्व० मन्मथनाथ राय की गणना साम्यवादी संसार के प्रमुख विचारकों में रही। "पालिटिक्स, पावर और पार्टीज" शीर्षक पुस्तक में इन्होंने जिन शब्दों में इस धारणा की असत्यता सिद्ध की है, वह यहाँ दे रहे हैं। —सं०]

प्रचलित चुनाव-प्रणाली द्वारा सत्ता लोक से प्रतिनिधियों को स्थानान्तरित हो जाती है, और इस कारण से ऐसे शासन की स्थापना नहीं हो पाती, जो जनता का हो और जनता द्वारा सञ्चालित हो। सर्वोत्तम परिस्थिति में भी इस प्रणाली द्वारा जनहितकारी शासन की स्थापना हो सकती है, जो बहुत अच्छा होकर भी एक प्रकार से सुरूपी अधिनायकत्व हो सकता है, परन्तु लोकतंत्र नहीं। यह कहना आवश्यक नहीं कि किसी बड़े देश में, जहाँ करोड़ों लोग बसे हों और जिनकी शक्ति केन्द्रीय शासन में केन्द्रित हो, वहाँ जनता पर शासन जनता द्वारा ही सम्भव नहीं। अतएव हमें एक विकेन्द्रित शासन-प्रणाली की ही बात सोचनी है, जिससे प्रत्यक्ष जनतंत्र की व्यावहारिकता भी सिद्ध हो सके।

इसके लिए हमें किसी चुनाव की प्रतीक्षा नहीं करनी है। हम एक छोटा सा निर्वाचन-क्षेत्र चुन लें जिसमें बीस-पचीस वयस्क नये ढंग की शासन प्रणाली की आवश्यकता का अनुभव करते हों, क्योंकि वे प्रचलित प्रणाली से असन्तुष्ट हैं। वे एक प्रयोग के पक्ष में निर्णय करते हैं। लोक शासन के लिए पहला कदम है—लोक शिक्षण, तो वे लोक शिक्षण की व्यवस्था करते हैं। तब कुछ समय पश्चात् उस निर्वाचन-क्षेत्र में स्थानीय सभाओं की आयोजना सम्भव हो जाती है, जिनमें पूरे निर्वाचन-क्षेत्र की सभा में बैठने के लिए प्रतिनिधियों का चुनाव हो जाता है। और चुनाव के समय जब विभिन्न दलों के नेता आकर अपने अपने प्रार्थियों को खड़े करते हैं, तो स्थानीय सभा में बैठे वयस्क जन अथवा निर्वाचन-क्षेत्र की सभा में बैठे स्थानीय सभाओं के प्रतिनिधि दलों द्वारा मनोनीत प्रार्थियों को अपना मतदान नहीं देते, वे अपने में से ही एक को खड़े करने का निश्चय करते हैं और उस निर्वाचन-क्षेत्र के लोग उसे ही अपना वोट देते हैं। इस प्रकार निर्वाचित होकर जो व्यक्ति केन्द्रीय संसद में पहुँचता है, वह किसी दलगत संस्था की अधीनता नहीं स्वीकार करता।

वह तो स्थानीय लोकतंत्र की ही अधीनता मानेगा और मानता रहेगा, जिसका वह स्वयं भी एक अंग है। वह फिर उन्हीं मतदाताओं के प्रति उत्तरदायी होगा, जिन्होंने उसे संसद में भेजा था। वह किसी बाहरी संस्था के आदेश से या अनुशासन में काम नहीं करेगा, वह अपने निर्वाचन-क्षेत्र के नागरिकों को ही अपनी कार्यवाहियों की सूचना देगा, उनके सामने राष्ट्रीय महत्व की समस्याएँ भी रखेगा, उनसे ही समुचित आदेश लेगा और अपनी योग्यता तथा बुद्धि के भीतर उन आदेशों का पालन करेगा।

शासन और समाज

इस आधार पर एक सर्वांगीण सवैधानिक योजना की कल्पना सम्भव है। विशिष्ट वैधानिक अधिकार प्राप्त जन-समितियाँ राष्ट्र की आधारभूत इकाइयाँ हो जायेंगी। यहाँ आजकल बिखरे और असहाय जन भ्रमात्मक प्रभुत्व का ही अनुभव करते हैं, वहाँ व्यक्तियों की टोलियाँ नागरिकों की हैसियत से अपने-अपने स्थानों को राष्ट्र के विभिन्न अंग मानते हुए, उनकी समस्याओं पर विचार करेंगी, उनके हल निकालेंगी और उन्हें अपने दायित्व का ध्यान बना रहेगा। यदि इन संगठित स्थानीय जनतंत्रों का जाल बढ़ता जाय तो इनके माध्यम से मतदाता दैनिक प्रशासन प्रभावित कर सकेंगे और अंततः राष्ट्रीय शासन पर उनका स्थायी नियंत्रण हो जायगा। तब राष्ट्र को एक 'सर्वशक्तिमान दानव' बनने का अवसर नहीं मिल सकेगा, क्योंकि राष्ट्र-शक्ति तो विकेंद्रित होकर स्थानीय गणतंत्रों में बसने लगेगी। इसी प्रकार राष्ट्र का साम्य समाज से सम्पन्न हो सकेगा।

समाज के राजनैतिक संगठन का नाम है राष्ट्र। आदिकालीन क्षुद्र समूह बढ़ते गये, उनकी जीवनचर्या का वैचित्र्य बढ़ता गया और सार्वजनिक जीवन के विभिन्न पहलुओं के सामंजस्य की आवश्यकता प्रतीत हुई, तब राष्ट्र का निर्माण हुआ। इसीलिए जनतांत्रिक शासन का समाज से सामंजस्य आवश्यक है। आज राष्ट्र एक अदृश्य कल्पना ही रह गयी है। लिखित संविधानों में राष्ट्र को तीन शाखाओं में बाँट दिया जाता है—वैधानिक (विधान बनाने के लिए), शासनिक (प्रशासन के लिए) और निर्णायक (न्यायालयों के रूप में)। यदि यही सब राष्ट्र है, तो राष्ट्रों का अस्तित्व राजधानियों में ही होना चाहिए और कहीं नहीं। यदि हम यह मान लें कि समाज के राजनैतिक संगठन को राष्ट्र की संज्ञा दी जाय और यह तो मान्य है ही कि लोग ही एक-दूसरे से मिल कर समाज बनाते हैं, तो यह भी मान्य है कि आज के राष्ट्र का समाज-जीवन से पूर्ण सम्बन्ध विच्छेद हो गया है। व्यक्ति का राष्ट्र से अथवा यों कहिये कि समाज का राजनैतिक प्रशासन से कोई सबंध नहीं रह गया है। उसका अस्तित्व तो किसी सुदूर और केंद्रीय स्थान ही पर है, जो समाज के सदस्यों के प्रभाव के परे है, जहाँ से वह अपने निर्णय जनता पर लादता रहता है और इन निर्णयों में जनता का कोई दखल नहीं।

विकेन्द्रित जनतंत्र के नये समाज में राष्ट्र का समाज से साम्य होगा। प्रत्येक नागरिक को आवश्यक सूचना मिलेगी और राष्ट्रीय मामलों में उससे राय ली जायगी, अर्थात् उसका समाज के राजनैतिक प्रशासन में दखल रहेगा। प्रत्यक्ष है कि ऐसे समाज की वृद्धि के लिए नागरिकों का शिक्षित होना आवश्यक है और उनकी शिक्षा का स्तर निरंतर उन्नत होते रहना चाहिए, परंतु दायित्व और शक्ति के निर्वाह ही में उनका बहुत कुछ प्रशिक्षण होने लगेगा। अतएव यह प्रयोग कहीं न-कहीं से प्रारंभ होना है और हमें उस काल्पनिक घड़ी की प्रतीक्षा नहीं करनी है, जब किसी के चुनाव जीतने पर नवीन प्रणाली ऊपर से हमारे लिए चालू कर दी जायगी, स्थानीय स्तर पर प्रारंभ होकर उसे अमल से अपनी उपयोगिता सिद्ध करनी है। या अमल तथा उसके संचित प्रेरणाएँ, एक दूसरे से मिल कर प्रयोग के व्यापक प्रसार में सफल होंगी। तभी पहली बार हमें सच्चे लोकतंत्र का अनुभव प्राप्त होगा।

निरर्थक आपत्ति

इस योजना के विरुद्ध एक ही आपत्ति हो सकती है, कि यह बहुत देरतलब होगी। कितना समय लगेगा? मान लें कि पचास वर्ष लगेंगे, या कदाचित् सौ वर्ष भी लग जायँ—तो भी समय का प्रश्न यहाँ असंगत है। फिर विकल्प क्या है? संगति इसी प्रश्न की है। यदि कोई ऐसा सुझाव दे सके जो कम देरतलब हो, तो बीस वर्ष या कदाचित् दो ही वर्ष के भीतर जनतांत्रिक समाज का अस्तित्व संभव कर सके, तभी समय का प्रश्न विचारणीय होगा। परंतु यदि कोई विकल्प नहीं, तो इस योजना के विरुद्ध लंबे समय की आपत्ति निरर्थक है।

हमारे सामने अभी तक दो ही विकल्प आये हैं—अवनतिशील अथवा अवनत जनतंत्र या तानाशाही। जिस किसी की भी आस्था दोनों में से एक के प्रति है, उसे नये राजनैतिक प्रयोग की बात सोचने की जरूरत नहीं। परन्तु यदि मान लिया जाय कि वर्तमान स्थिति से हम सन्तुष्ट नहीं और दोनों विकल्पों में हमें कोई भी स्वीकार्य नहीं तो हमें नये मार्ग ढूँढने होंगे। जब तक कोई बेहतर प्रस्ताव सामने न आये, तब तक जिस विकल्प की रूप रेखा यहाँ प्रस्तुत की गयी है, उसका परीक्षण उसके आंतरिक गुणों, उसके आंतरिक तर्क के आधार पर ही होना चाहिए।

जिस पहले भ्रम को हमें अपने मस्तिष्क से निकाल बाहर करना है, वह यह है, कि सत्ता ही राजनीति का उद्देश्य है और जिसे भी राजनीति में भाग लेना है, उसका सर्वोपरि उद्देश्य होना चाहिए, सत्ता-प्राप्ति, क्योंकि यह मान लिया गया है कि सत्ता बिना राजनीति में कुछ सम्भव नहीं और यही राजनीति है।

आजकल की दलगत राजनीति इसी धारणा पर आधारित है, सत्ता पर किसी प्रकार भी अधिकार हो जाय—वैधानिक साधन से, नहीं तो हिंसात्मक प्रयोग द्वारा। जितने राजनैतिक दल हैं—क्रांतिकारी हों या नहीं—सभी इस बात में एकमत हैं कि शासन में उन्हें जो कुछ करना है उसके पहले उन्हें सत्ता-प्राप्ति के लिए लड़ना आवश्यक है। दल का संगठन सत्ता पर अधिकार करने के उद्देश्य से ही होता है। दल के नेता यह प्रचार करते हैं कि समाज के सही संगठन का नुस्खा वे ही जानते हैं, अतएव मतदाताओं को उनके दल को ही अपने वोट देने हैं, जिससे वे आवश्यक सत्ता प्राप्त कर अपनी समझ के अनुसार कल्याण का नुस्खा जनों पर लाद सकें। जो बेचारे उनके इलाज बिना कल्याण से वंचित रह जाते और स्वयं अपना कल्याण तो क्या ही कर पाते!

लोकतंत्र का निषेध

इसीलिए हम कहते हैं कि, दलगत राजनीति से वास्तव में लोकतंत्र का निषेध होता है। इसके अर्थ यह होते हैं कि लोग स्वयं अपना भला नहीं कर सकते। इस राजनीति के नेता किन्हीं अर्थों में लोक-सत्ता से जनता की रचनात्मक बुद्धि के अस्तित्व से, इन्कार करते हैं। जनतंत्र निरर्थक ढोंग है, यदि इसके यह अर्थ लगाये जाते हैं कि लोग अपना भला स्वयं नहीं कर सकते। यदि अपने भले के लिए लोगों को किसी दूसरे का मुँह ताकना है, तो लोकसत्ता के अस्तित्व से मानव की रचनात्मक शक्ति और आत्म-सम्मान से हम इन्कार करते हैं।

शक्तिहीन राजनीति

इस भ्रम के विरुद्ध कि दलों बिना राजनीति नहीं और सत्ता बिना दल कुछ कर नहीं सकते, दो तथ्य हम प्रस्तुत करते हैं—

(१) सत्ता ही राजनीति का प्राथमिक उद्देश्य नहीं। यदि यह एक साधन मात्र है तो अन्य साधन भी विचारशील हैं।

(२) दलगत राजनीति की गति सत्ता के केन्द्रीकरण की ओर रहती है और इसलिए जनतंत्र को नष्ट करने का विष उसके साथ चलता है। राजनैतिक लक्ष्य सत्ता पर अधिकार किये बिना भी प्राप्त किये जा सकते हैं। दलगत संगठन बिना भी राजनैतिक सेवा संभव है।

ऐसे राजनैतिक प्रयोग का उद्देश्य होगा प्रभुत्व प्राप्त जनता को अपने प्रभुत्व के कार्यान्वयन का अवसर देना, जनता को इस बात के लिए राजी करना कि किसी को मतदान देकर वह अपना प्रभुत्व उसे समर्पित न कर दे और उससे आशा करे कि वह उनके भले के लिए कुछ करेगा। इसके विपरीत लोग एकत्र होकर अपने को ही मतदान दें और अपने भले के काम स्वयं करें। जो काम सरकारी माने जाते रहे उन्हें, वे स्वयं करते हैं तो वे अपने आप सरकार हो जाते हैं और इस प्रकार वे जन द्वारा जन-राज्य का निर्माण करते हैं।

यदि वयस्क लोग यथेष्ट बड़ी संख्या में अभी से यह लक्ष्य अपना कर, राजनीति की इस प्रकार शुद्धि करके, कर्मक्षेत्र में उतर आयें, तो थोड़े ही वर्षों के भीतर प्रत्यक्ष परिणाम दिखने संभव होंगे। ऐसी कार्रवाई किसी भी निर्वाचन-क्षेत्र में प्रारंभ की जा सकती है या देश में कहीं भी निर्वाचन क्षेत्रों का कोई समूह ही इस प्रयोग का बीड़ा उठा सकता है। ऐसा प्रयोग चालू होने पर वे लोग, जो निःस्वार्थ जन-सेवी होने के दावे किया करते हैं और जो झूठे विनय की आड़ में सत्ता की भूख शांत करने के प्रयत्न में हैं, उनकी परीक्षा हो जायगी और वोट के लिए उनकी वाक्पटुता की पोल खुल जायगी; क्योंकि इस कार्यवाही से आंदोलनकारियों को संगठित होकर सत्ता पर अधिकार करने का अवसर नहीं मिल सकेगा। जो लोग इस प्रकार कार्य करेंगे, वे उन सब कामों को संपन्न कर पायेंगे जो सर्वोत्तम राजनीतिज्ञों ने सदैव किये हैं।

> वे जनता की सहायता देंगे, उसका शिक्षण करेंगे; परन्तु वे उससे वोट नहीं माँगेंगे।

यह एक बिल्कुल नवीन बात है और इसीसे एक नितान्त नया तथा अच्छा प्रकार का राजनैतिक वातावरण देश में बन [illegible]।

(मूल अंग्रेजी से, अनुवादक श्री कान्ति-कपूर)

ग्राम-पंचायतों की जबरदस्ती

अप्पासाहब पटवर्धन

हमारी सारी राज्य-सरकारें गाँव-गाँव में ग्राम-पंचायतें कायम कर रही हैं। ग्राम-पंचायतों को और उनके प्रतिनिधि-मंडल को बहुत से अधिकार भी बख्शे जा रहे हैं। इस "लोकतान्त्रिक विकेन्द्रीकरण" की सब तरफ से तारीफ भी हो रही है, उसको "ग्रामराज्य" कहा जाता है। जिस "उदारता" के साथ पंचायतों को और पंचायत-मंडलों को अधिकार दिये जा रहे हैं, उस उदारता की भी तारीफ हो रही है।

पर ग्रामपंचायतों की स्थापना के इस कार्यक्रम में बुनियादी दोष हैं। गाँववाले चाहें या न चाहें, ये पंचायतें जबरदस्ती से उन पर लादी गयी हैं। इससे वह ग्रामराज्य विडंबित हो जाता है। राज्य-सरकार अपनी जमीन-महसूल का कुछ हिस्सा ग्राम-पंचायतों को दे देती है, लेकिन उसके साथ शर्त लगायी जाती है कि ग्राम-पंचायत स्वयं भी कुछ नये कर लगा कर अपनी स्वतंत्र आय खड़ी करे, अर्थात् ग्रामीण लोगों के समझ के अनुसार ग्राम-पंचायत के मानी होते हैं 'नया कर'। फलतः लोगों को ग्राम-पंचायत बला-सी लगती है।

एक और कारण

ग्राम-पंचायतों की अप्रियता का और भी एक कारण होता है। गाँवों में शहरों से भी विषमता बढ़कर होती है। वर्ग-भेद होते ही हैं, लेकिन जाति-भेद बहुत तीव्र होते हैं। जो मजदूरपेशा और गरीब हैं, उनका मालदारों पर विश्वास नहीं होता। लेकिन ग्राम-पंचायतों की सत्ता ऐसे मालदार लोगों ही के हाथ में जाने वाली है, इस लिये भी गरीब वर्ग ग्राम पंचायत के प्रति उदासीन रहते हैं। गरीब लोग ही अक्सर कथित 'नीची जाति' के भी होते हैं। अपने गाँव ही के लोगों के हाथ में सत्ता आ जाय, इसका उनको डर ही लगता है।

जो पढ़े लिखे या मालदार होते हैं, उनको भी ग्राम-पंचायत एक झंझट-सी लगती है। ग्राम-पंचायत का कानून अंग्रेजी में और कानून की अटपटी भाषा में ही होता है। उसमें सौ तक धाराएँ और पाँच सौ तक उपधाराएँ होती हैं! फिर उन धाराओं के अनुसार कुछ अटपटे नियम भी होते हैं। गाँव वाला कितना भी बुद्धिमान् हो, उन धारा-उपधारा नियमों का आकलन करना, उसके लिये मुश्किल होता है। लिहाजा मालदार वर्ग को भी ग्राम-पंचायत पसंद नहीं आती, बावजूद इसके कि पंचायत की सत्ता उन्हीं के हाथ में आने वाली होती है।

लिहाजा शासन की तरफ से जब ऐलान होता है कि "ग्रामपंचायत के चुनाव के लिये आवेदन-पत्र फलानी तारीख तक आने चाहिये" वगैरह, तब गाँव में से अक्सर एक भी आदमी खड़ा नहीं होता।

फिर तहसीलदार महाशय खुद गाँव में जाते हैं और कुछ लोगों को समझा-बुझा, दबा कर उनकी नियुक्ति करके ग्राम-पंचायत की कार्यकारिणी बनाते हैं। और लोगों को तो यह नियुक्त सदस्य स्पर्धा से ही लगते हैं। गाँवों में गुटबंदी और आपसी मनमुटाव अक्सर हुआ ही करते हैं। फिर गाँव के अन्य नेताओं को इन नियुक्त सदस्यों के प्रति ईर्ष्या होने लगती है। फलतः दूसरी बार जब चुनाव का वक्त आता है, वे ईर्ष्यालु सदस्य चुनाव में खड़े होते हैं, वे सत्ता न छीन पावें, इसलिये पहले सदस्यों को भी खड़ा रहना पड़ता है। इस तरह पार्टीबाजी और छीना-झपटी जारी होती है। गाँव "जाग्रत" बनता है और ग्राम-पंचायत का कारोबार बदस्तूर चलने लगता है। क्रमशः अखिल भारतीय राजकीय पक्ष भी गाँव के अखाड़े में उतरते हैं। अब शासन को ग्राम-पंचायतें चलाने की फिक्र नहीं करनी पड़ती, खाली देखभाल करनी होती है। आग को सुलगाने के लिए एक बारगी तकलीफ उठाने के बाद उस आग की ज्वालाएँ अपने आप बढ़ती चलती हैं और उसकी रोशनी भी चारों ओर फैलती रहती है।

वस्तुतः ग्राम-पंचायतें जो चलती हैं, वह *ग्रामजनों के ऐक्य पर नहीं*, बल्कि प्रतियोगिता पर ही चलती हैं। यह ग्राम-संघटन नहीं, ग्राम विघटन ही है। यह ग्रामराज्य नहीं, केन्द्र-सत्ता की गाँव पर पकड़ है। उसमें केन्द्रीय सत्ता की सफलता या परिपूर्णता है, न कि ग्रामराज्य की।

गांधीजी ने सन् १९२०-२१ में किसी प्रसंगवश लिखा था: "लोकल सेल्फ-गवर्नमेंट इज वन आफ दी ग्रेटेस्ट फ्रॉड एवर प्लेन्ड आफ अपान दी पीपुल"

अर्थात्, स्थानीय स्वराज्य लोगों को धोखा देने की सबसे बड़ी तरकीब रही है। हमें पता नहीं चलता कि तब के स्थानीय स्वराज्य और आज के स्थानीय स्वराज्य में क्या गुणात्मक फर्क है! हालाँकि आज का विकेंद्रीकरण ज्यादा सुदूरगामी या परिपूर्ण है। प्रजा को कुछ ज्यादा अधिकार बख्शे गये हैं। यह ऊपर से बख्शा और *लादा हुआ स्वराज्य है, न कि लोगों के* खुद के अभिक्रम से उगा हुआ।

होना चाहिये ऐसा कि गाँव के लोग खुद ही इकट्ठा होकर और आपस में सलाह-मशविरा करके निश्चय करें कि हम ग्राम-पंचायत कायम करें और उसके द्वारा अपने फलाने-फलाने व्यवहार चलायें और उतने व्यवहारों का अधिकार, केन्द्र सत्ता उनके लिये छोड़ दें।

लेकिन इसके लिये गाँववालों में एक-दूसरे के प्रति विश्वास और अपनापन होना चाहिये, जो आज बिल्कुल नष्ट हो गया है। *जब तक* अविश्वासपूर्ण उदासीनता, घमंड, तिरस्कार, और द्वेष, आर्थिक विषमता, धनिकों द्वारा अकिंचनों का शोषण जारी है, तब तक गाँवों में एकता होने वाली नहीं है। बिना नेकी के एकी असंभव है, और बिना एकी के स्वेच्छा-मूलक ग्रामपंचायत भी असंभव है।

स्थानीय अभिक्रम या उत्साह जगाने का कोई त्वरित उपाय नहीं हो सकता। उसके लिये विद्यमान परिस्थिति में मूलगामी सुधार करना पड़ेगा। सामाजिक समता कानून से नहीं हो सकती, उसके लिये विचारवान् लोगों को पहल करनी होगी। आर्थिक समता कानून से हो सकती है, बशर्ते कि वह कानून लोकसंमत हो। आर्थिक समता के या न्याय के तन्त्र, सारे आर्थिक व्यवहारों को एकसाथ लागू करने से ही आर्थिक समता का कानून लोगों को मंजूर होगा। इसके लिये शोषण-बंदी की योजना—अर्थात् मेरे विचार के अनुसार (१) जमीन सबकी (२) व्याज-बंदी और (३) मुद्रा ह्रास—लोगों को समझाने से ये शर्तें उनको जँचेंगी भी और फिर जब कानून बनेगा, तब उसका स्वागत और पालन होगा और उससे समाज में संघर्ष के मूल नष्ट होंगे।

सामाजिक समता के लिये यह जरूरी है कि हर शख्स रोज कम-से-कम १५ मिनिट का समय अपने या आस-पड़ोस *या इर्द-गिर्द की सफाई में लगावे।* इससे आज सफाई के काम के लिये जो एक जाति ही अलग बन गयी है, भंगियों की, और जिसके कारण सामाजिक विषमता बढ़ी है, उसकी जड़ पर कुठाराघात होगा। यह सामाजिक समता का सबसे कारगर उपाय बनेगा।

ग्राम पंचायतों की सफलता इन दो आंदोलनों की सफलता पर निर्भर है।

सुख-दुख, दोनों आवश्यक

अति उत्साह के कारण भी निराशा आती है, इस लिये शक्ति के अनुसार काम करना चाहिये। अगर कहें कि सुख-दुख झेलने के बदले निद्रा ही अच्छी है, तो वह सोकर भी थक जायेगा। यह सुख-दुख से भरा जीवन ही चाहेगा। सुख के बाद दुख और दुख के बाद सुख आता है। इसी तरह निद्रा के बाद जगने की इच्छा होगी और निराशा के बाद उत्साह भी आयेगा।

—विनोबा

उत्तराखण्ड में सर्वोदय-कार्य की योजना

उत्तराखण्ड में सर्वोदय कार्य को विनोबाजी के वक्तव्य की दृष्टि से गति देने के हेतु श्री लक्ष्मी आश्रम कौसानी में इस क्षेत्र के कार्यकर्ताओं की एक विचार-गोष्ठी १२ १३ जून को हुई। श्री करण भाई तथा श्री ब्रह्मदेवजी वाजपेयी इसमें विशेषरूप से उपस्थित थे।

गोष्ठी में निश्चय हुआ कि सारे क्षेत्र के कार्य को सुनियोजित ढंग से चलाने के लिए निम्नलिखित सदस्यों का 'उत्तराखण्ड सर्वोदय-मंडल' बनाया जाय, जिसकी बैठक ३ माह में एक बार हो।

(१) अल्मोड़ा-श्री सरला बहिन, (२) पिथोरागढ़ श्री राधा बहन, श्री लक्ष्मीचन्द्रजी, (३) गढ़वाल-श्री मानसिंह रावत, (४) चमोली-श्री चण्डीप्रसाद भट्ट, श्री आलमसिंह सिंह, (५) टिहरी श्री कमला बहन, (६) उत्तरकाशी-श्री सुन्दरलाल।

निरंतर घूम कर विचार प्रचार करने के लिए निम्नलिखित कार्यकर्ता हैं :—

(१) श्री सुन्दरलाल (२) श्री सोहन लाल भूभिक्षु (३) श्री मानसिंह रावत
(४) श्री बलवंत सिंह भारतीय
(५) श्री लक्ष्मीचन्द्रजी

इस समय निम्नलिखित ग्रामसेवा और प्रचार-केन्द्र हैं।

ग्रामसेवा-केन्द्र : कार्यकर्ता

(१) पिथोरागढ़ —श्री लक्ष्मीचन्द्र
(२) बोगाड़ —कु० राधा बहन, कु० राधा रतोलिया
(३) चमोली —श्री हरिभाई, शम्भू प्रसाद, आलम सिंह, चिरंजीलाल
(४) बसनपुर —अल्मोड़ा—श्रीनयन सिंह वर्मा,
(५) हस्दूखाता-गढ़वाल—श्री शांति बहन, कु० लीलावती
(६) चमोली—श्री चन्डी प्रसाद भट्ट
(७) बासर टिहरी गढ़वाल— कु० कमला बहन, श्रीमती बसती देवी
(८) उत्तरकाशी—अभी कोई कार्यकर्ता नहीं।
(९) धौल्या अल्मोड़ा—श्री दयाबहन,

श्री करण भाई ने बताया कि पिथौरागढ़, चमोली व हस्दूखाता में जहाँ निधि के कार्यकर्ता हैं, वे मुख्यतः विचार प्रचार का कार्य करेंगे। आवश्यकता पड़ने पर एक-एक केन्द्र में तीन-तीन कार्यकर्ता तक रखे जा सकेंगे।

साहित्य प्रचार : साहित्य का स्टाक रखने के लिए इस समय निम्नलिखित केन्द्र हैं :—

(१) श्री लक्ष्मी आश्रम कौसानी— अल्मोड़ा व पिथौरागढ़—श्री सरला बहनजी की देखरेख में।
(२) सर्वोदय साहित्य भण्डार टिहरी-टिहरी व उत्तर काशी—श्री शंकर दत्त डोभाल की देखरेख में।
(३) कोटद्वार में गांधी आश्रम के द्वारा व्यवस्था होगी।
(४) गोपेश्वर के लिए बाद में निश्चय किया जायेगा।

टिहरी व गोपेश्वर भण्डारों के लिए एक एक हजार रुपये प्रति भण्डार पूंजी देने की व्यवस्था श्री करण भाई करवायेंगे।

साहित्य बिक्री का मासिक ब्यौरा श्री गांधी आश्रम को संबंधित साहित्य भण्डारों द्वारा भेजे जाने पर बिक्री का २५ प्रतिशत श्री गांधी आश्रम कमीशन देगा। साहित्य के कमीशन से संबंधित जिले के सर्वोदय-मंडल का खर्चा चलेगा। इस संबंध में श्री करण भाई श्री गांधी आश्रम के संचालकों से मिल कर व्यवस्था करेंगे।

कार्यकर्ता-प्रशिक्षण

पूर्वनिर्धारित योजना के अनुसार प्रत्येक क्षेत्र में एक-एक शान्ति-सहायक शिविर आयोजित किये जायेंगे। महिला कार्यकर्ताओं के शिविर की व्यवस्था श्री लक्ष्मी आश्रम कौसानी में तथा पुरुषों का शिविर सिल्यारा आश्रम में आयोजित किया जायेगा।

ग्रामसेवा-केन्द्रों की कार्य-योजना

ग्रामसेवा केन्द्रों की कार्य-योजना में विचार प्रचार के अलावा सायंकालीन प्रार्थना सभाओं में रामायण आदि धार्मिक ग्रंथों का पारायण भी हो।

कुटाई पिसाई

इन क्षेत्रों में महिलाओं के कार्य-व्यस्त जीवन में कुछ भार कम करने की दृष्टि से कुटाई और पिसाई के लिए धान व आटा-चक्कियों का प्रचार किया जाय और इस कार्य में खादी कमीशन की योजनाओं से लाभ उठाया जाय।

उत्तराखण्ड की विशिष्ट जलवायु के कारण यहाँ पर ऊन-उद्योग के विकास की काफी संभावनाएं हैं। स्वावलम्बन के लिए ऊन उद्योग प्रारंभ करने के हेतु प्रत्येक ग्राम सेवा-केन्द्र में लगभग एक मन ऊन का स्टाक रहे, जिसमें से १० सेर तक सिखाने में खर्च हो जायेगा। शेष ३० सेर केन्द्र में बिक्री के लिए रहे।

खादी-ग्राम-उद्योग की योजना

उत्तराखण्ड क्षेत्र में खादी ग्रामोद्योगों की योजना प्रारम्भ करने के सिलसिले में निम्नलिखित निश्चय हुए।

(१) इस समय आम लोगों को स्वावलम्बी कताई के लिए कच्ची ऊन नहीं मिल पाती। इसलिए कच्ची ऊन की व्यवस्था की जाय।

(२) सरंजाम के बारे में :—

(अ) बुनाई के सामान और कार्डिंग ऊन आसानी से मिल सकें, इसका प्रबंध हो।

(आ) तकलियों का 'स्टैंडर्डाइज़ेशन' का प्रयोग हो।

(इ) बुनाई के लिए सुविधा हो। बुनकरों को रियायत पर सरंजाम मिले।

(३) सूती खादी के उत्पादन का भी प्रयास हो।

(क) रेशम-उद्योग चलाने के लिए भाग, भीमल व जंगली बिच्छू घास का रेशा उपलब्ध है। रेशे की कताई व रंगाई के प्रशिक्षण का प्रबंध हो। प्रशिक्षण देने वाले स्थानीय कार्यकर्ताओं को ट्रेनिंग के लिए बुलाया जाय।

(ख) तेल निकालने के लिए हाथ से चलने वाले आसान कोल्हू का शोध व प्रचार हो।

(ग) हाथ से धान-कुटाई व आटा-पिसाई की सुविधाएँ बढ़ाई जाय।

(घ) मधुमक्खी-पालन के कार्य का विस्तार हो।

(ङ) रिंगाल उद्योग (टोकरी व चटाई बनाने के लिए) के लिए वन-विभाग से कच्चा माल मांगने की सुविधाएँ हों।

खादी ग्रामोद्योग के कार्यों को चलाने के लिए स्थानीय सलाहकार बोर्ड हो और प्रत्येक दो जिलों के क्षेत्र के लिए एक-एक अवैतनिक संगठनकर्ता नियुक्त किया जाय। उन्हें आवश्यकतानुसार मान देय दिया जाय।

गोपालन संबंधी प्रयोग :

पहाड़ी क्षेत्रों में गोपालन संबंधी सरकारी प्रयोग सांडों के न ठीक रखने के कारण असफल हो रहे हैं। इस संबंध में कृषि-गोसेवा समिति से प्रयोग करने की प्रार्थना की जाय। छोटी उम्र के अच्छी नस्ल के बछड़े बाहर से लाकर सांड बनाने के लिए यहाँ पाले जायें जो बड़े होने पर अपने को स्थानीय परिस्थितियों के अनुकूल बना सकें।

चीड़ के जंगलों की समस्या

किसानों के लिए चीड़ के जंगल पैदावार तथा चारागाहों की दृष्टि से हानिकारक हैं। यहाँ के कृषि, पशुपालन और बागवानों पर बुरा प्रभाव पड़ रहा है। इस सम्बन्ध में सरकार को सुझाया जाय कि चौड़े पत्तेवाले चारे, ईंधन और खाद के लिए उपयोगी पेड़ों को ही गाँवों के निकट पनपाया जाय। जहाँ दाड़ के जंगलों के बीच चीड़ फैल रहा है उसे रोका जाय।

खादी ग्रामोद्योग विद्यालय :

प्रस्तावित खादी-ग्रामोद्योग विद्यालय के संबंध में विस्तार से चर्चा हुई। ऐसी आम राय रही : किसी स्थानीय संस्था को इसे चलाने का दायित्व लेने पर विचार करना चाहिए, जिससे विद्यालय का काम अधिक स्वतंत्रतापूर्वक चल सके और उसमें शिक्षण पाने वाले विद्यार्थी भावी कार्य के लिए प्रेरणा ले सकें।

उन ग्राम-सेवा केन्द्रों का जहाँ पुरुष कार्यकर्ता हैं, मुख्य कार्यक्रम श्रमिक कार्य की सहकारी समितियों का संगठन व उनको सफल बनाना होना चाहिए।

'खादी भवन' नई दिल्ली द्वारा स्पष्टीकरण

[ता० १८ अगस्त के 'भूदान-यज्ञ' में नई दिल्ली के खादी-ग्रामोद्योग भवन के संबंध में श्री नरेन्द्रभाई का एक पत्र प्रकाशित हुआ था, जिसमें यह बतलाया गया था कि उक्त 'खादी भवन' से खरीदी हुई बुशशर्ट पर एक दल विशेष के चुनाव प्रचार संबंधी वाक्य छपा हुआ था। 'खादी-भवन' के संचालक, श्री रामनाथ टण्डन ने इस संबंध में जो पत्र हमें लिखा है, वह नीचे प्रकाशित कर रहे हैं। हमें यह जान कर खुशी है कि उक्त घटना अनजान में ही हुई थी, उसके पीछे कोई खास उद्देश्य नहीं था।

[illegible] नहीं है, [illegible] करता है [illegible] भी एक [illegible] और चुनाव प्रचार के लिए लोग किसी भी तरह के साधन इस्तेमाल करने से नहीं चूकते, यह हम सब जानते हैं। खादी-भण्डारों को और खादी-संस्थाओं को सतर्क रहने की आवश्यकता है कि अनजान में भी उनका उपयोग दूसरे लोग न कर सकें। सं०]

प्रिय बन्धु,

जिस घटना का जिक्र किया गया है, वह एक छोटी-सी अनजानी घटना है, किसी खास उद्देश्य से उसका कोई सम्बन्ध नहीं। खादी के प्रिन्ट करनेवाले बहुत प्रिन्टर हैं और वह सभी दूसरे खादी-भण्डारों का भी माल छापा करते हैं और अपने शौक से भी कुछ नए-नए डिजाइन बनाया करते हैं। ऐसा मालूम होता है कि पिलखुवा के एक प्रिन्टर ने अपने मन से एक ब्लाक बनाया और कुछ थान छाप कर किसी और भण्डार में दिया होगा, जिसमें कुछ थान उसने दिल्ली भवन को भी छाप कर दिया। दिल्ली भवन के सुपरवाइजरों का ध्यान इस ओर नहीं गया और वह मेरी आँखों से भी ओझल हो गया। वह डिजाइन काउन्टर पर चलने लायक नहीं था। ऐसा लगता है कि बहुत दिन पड़ा रहने के बाद कटिंग सेक्शन के पास बुशशर्ट बनने के लिए भेज दिया गया।

बात जो सत्य पर आधारित है, पर उसे जो रंग दिया गया है, वह अनावश्यक है। आप स्वयं खादी-संसार को भली-भाँति जानते हैं। खादी की नींव केवल

इस बात पर आधारित है कि वह सर्व-प्रिय हो, खादी किसी एक पार्टी की नहीं, सभी पार्टियों की है और भाग्य से खादी को सभी पार्टियों का स्नेह प्राप्त है।

मैं आपको विश्वास दिलाता हूं कि खादी-भवन और खादी-संस्थायें कोई भी अपने को किसी पार्टी के प्रचार का साधन नहीं बनाना चाहतीं। खादी सभी पार्टियों की है और सबकी रहेगी। मुझे दुख है कि खादी-भवन के द्वारा ऐसी घटना अनजाने में घट गई।

विनीत
रामनाथ दम्पन
'संचालक'

कार्यकर्ता की ओर से

गाँव की भूमि की व्यवस्था गाँव में हो

भूमि-आन्दोलन को पुनः देशव्यापी गतिशील बनाना चाहते हैं तो हमें ग्रामदान के पूर्व, पहले कदम के रूप में गाँव की भूमि की व्यवस्था ग्रामद्वारा हो, यह संकल्प कराना चाहिए। यह एक प्रकार से ग्रामदान के लिये आसान कदम होगा।

भूमि की मालकीयत को आज भी गाँव वाले बस्ती या भगवान की मान कर ही चलते हैं। सवाल है भूमि की व्यवस्था का, इसलिये गाँव-गाँव द्वारा संकल्प कराने का कर, यह माँग हो कि गाँव की कुल भूमि व्यवस्था गाँव सभा और गाँव पंचायत के हाथ में हो, यह विकेन्द्रित समाज-रचना की दिशा में सही कदम होगा। इससे देश भर में ग्रामीकरण की भावना जनशक्ति द्वारा और पकड़ेगी और सरकार भी तदनुसार कानूनी परिवर्तन के लिये अवश्य झुक सकेगी। इसमें कोई शक नहीं कि भूमिहीनों को इससे तुरन्त राहत न मिल सके, परन्तु ग्रामीकरण के बाद गाँव सभा गाँव के सभी लोगों के लिये समाधान-कारक योजना बना सकेगी और गाँव स्वेच्छा से गाँव की भूमि का बीघा और चकबन्दी भी कर सकेगी ऐसी हालत में यह कोई जरूरी नहीं कि गाँव अपनी कुल भूमि का पुनः वितरण ही करें, गाँव वाले अपने गाँव की योजना बनाते समय हो सकता है सामूहिक या सहकारी खेती का निर्णय लें और भूमिहीनों को उसमें शामिल कर लें इस प्रकार अगर हम ग्रामीकरण से ग्रामदान की ओर बढ़ेंगे तो सम्भव है कि जनशक्ति द्वारा भूदान और ग्रामदान आन्दोलन पुनः देशव्यापी गतिशील होकर भूमि समस्या को सदा के लिये हल कर सके और विकेन्द्रित सहयोगी समाज-रचना भी मजबूत नींव डाल सके।

यदुप्रसाद स्वामी

अक्काणी-अक्कलकुवा का ग्रामदान-कार्य

[महाराष्ट्र सर्वोदय-मंडल के अध्यक्ष श्री दा० ह० पाटिल और खादी-ग्रामोद्योग आयोग के अध्यक्ष श्री वैकुंठलाल मेहता ने अक्काणी-अक्कलकुवा के ग्रामदानी क्षेत्र में हुए काम का विवरण देते हुए आगे की योजना पेश की और बम्बई के नागरिकों से अपील की है कि वे इस क्षेत्र के नवनिर्माण में योग दें। अक्काणी-अक्कलकुवा एक साधनहीन आदिवासी इलाका है। इस क्षेत्र की उन्नति के लिए हाथ बढ़ाना वैसे बम्बई के नागरिकों के अलावा भी सबका कर्तव्य है। —सं०]

१९५८ में विनोबाजी की पदयात्रा के समय महाराष्ट्र के पश्चिम खानदेश जिले का पूरा अक्काणी महाल एवं अक्कलकुवा तहसील का तीन-चौथाई हिस्सा; ऐसे कुल २०० गाँवों का ग्रामदान हुआ था। भारत में एक साथ लगा हुआ इतना बड़ा ग्रामदानी प्रदेश यह पहला ही है। ग्रामदान के आगे का नवनिर्माण का काम करने के हेतु वहाँ के निवासियों की प्रार्थना पर विनोबाजी ने एक सर्वोदय-मंडल वहाँ कायम किया।

अक्काणी-अक्कलकुवा में बेहद गरीबी, भयंकर बेकारी और शराबखोरी है। जनता अज्ञान में सोयी है। राम, कृष्ण, गांधी, नेहरू या स्वराज्य का नाम तक बहुत-से लोगों को मालूम नहीं! खेती बहुत ही पिछड़ी हुई है। गैती, फावड़ा आदि औजारों का भी उन्हें पता तक नहीं। प्रति व्यक्ति की औसत आमदनी साठ रुपया है। भूख के मारे साल भर में दो माह वे तड़पते रहते हैं और उस समय कई गाँवों में जहरीला 'बाज' कंद भी उन्हें खाना पड़ता है। गरमी के दिनों में बहुत से गाँवों में पीने के पानी के अभाव के कारण वे तिलमिला उठते हैं। यही हालत पशुओं की है; यद्यपि वहाँ जगह बहुत है और गोपालन की बहुत संभावनाएँ हैं। वहाँ दो प्रतिशत लोग साक्षर हैं।

ऐसे प्रदेश के इन लोगों ने बाँट-बाँट कर खाने का और मिलजुल कर अपनी उन्नति करने का यानी ग्रामदान का संकल्प किया। आज इस काम में वहाँ २० कार्यकर्ता जुटे हुए हैं। पूर्ण अन्न-स्वावलम्बन एवं काफी मात्रा में वस्त्र-स्वावलंबन, दुगुना उत्पादन, पूर्ण रोजगार, शराबखोरी मिटाना और शिक्षा द्वारा अज्ञान हटाना, इन पाँच लक्ष्यों को लेकर वहाँ एक पंचवार्षिक योजना बनायी गयी है। भूमिहीनता मिटाना एवं गाँव के लिए थोड़ी सामुदायिक खेती निकालना, ये दो विशेष की शर्तें मानी गयीं और तदनुसार गत दो वर्षों में १२४ गाँवों में जमीन का वितरण हुआ।

गत वर्ष फलों के २७६१ पेड़ लगाये गये, २०० व्यक्तियों ने शराब छोड़ी, १८ समाज-शिक्षा वर्ग चले, ५०२ मन ज्वार कर्ज रूप में अन्न के अभाव के समय दी गयी, जिससे साहूकार का अवलम्बन कम हुआ। खेती के औजार बाँटे गये। गत वर्ष बंबई के नागरिकों से मिले हुए दान में से २९५ बैल और १६ गायें बाँटी गयीं। वैसे ही श्री टाटा से बैलों के लिए नकद रकम के अलावा जो २५०० बंडियाँ एवं २५०० साड़ियाँ दान में मिले, उनका बँटवारा चालू है।

२१ गाँवों में ग्रामस्वराज्य सहकारी समितियाँ कायम की गयी हैं। ५० गाँवों में आन्तर्राष्ट्रिक अन्न-भंडार चलते हैं। अमन्ना से सहकारी दुकान की नींव डाली गयी, १५० एकड़ खेती में बाँध बांधना, ३ कुएँ खोदना आदि काम हो रहे हैं। दस गाँवों में हर घर में कंपोस्ट खाद के गड्ढे हो गये हैं। खेती-सुधार के कार्यक्रम के कारण एवं प्राकृतिक अनुकूलता के कारण निगमाड्डाग में निराली फसल इस वर्ष हुई। ५ गाँवों के ५० किसानों की आमदनी सवा गुनी हुई। कताई, मधुमक्खी पालन व तेलघानी आदि ग्रामोद्योग शुरू हुए हैं। कुछ शादियों में शराब छोड़ी गयी। ५० झगड़ों का निपटारा गाँव में ही हुआ, १० गाँवों में ४०० सर्वोदय पात्रों की स्थापना हुई।

आगे की योजना

गत साल इस क्षेत्र में कुल ६१,५२४ रुपया खर्च हुआ, जो मुख्यतः कार्यकर्ताओं के वेतन, कृषि-सुधार, ग्रामोद्योग और चिकित्सा आदि में खर्च हुआ।

इस वर्ष इस कार्य को आगे बढ़ाना है। गाँववाले इन कामों के लिए मेहनत करने को तैयार हैं। अमाना-क्षेत्र के १२ गाँवों के लिए एक सघन योजना बनायी गयी है, जिसका इस वर्ष का खर्च २५,००० रु० है। अन्य गाँवों में काम का खर्च ५०,००० रु० है। यह कुल खर्च निम्न मदों में करना है।

		रुपये
(१) २५ गायें	२०० × २५	५,०००
(२) ४ सांड	४ × ५००	२,०००
(३) ५ कुएँ	५ × १५००	७,५००
(४) बान्धन, बंधारा (केवल सामान के लिए)		१०,०००
(५) इंजिन, रहँट, मोट एवं खेती-औजार		१०,०००
(६) सुधरे हुए बीज		२,०००
(७) दवाइयाँ		२५००
(८) ग्रंथालय		२,०००
(९) ग्रामोद्योग		१०,०००
(१०) बीस कार्यकर्ताओं के लिए मानधन (२० × १०० × १२)		२४,०००
		कुल ७५,००० रु०

पूना की बाढ़ में मदद

[पूना की बाढ़ में रचनात्मक सहयोगी संस्थाओं के लिए मदद देने के लिए जो निवेदन पूसा रोड के खादी-सम्मेलन ने किया था, उसके फलस्वरूप निम्न संस्थाओं ने निम्न रकम महाराष्ट्र सेवा संघ, ७२०, सदाशिव पेठ, पूना के पास २६ अगस्त तक भेजी है। हम उम्मीद करते हैं कि अन्य संस्थाएँ भी शीघ्र अपना यथाशक्ति हरिसर्ग प्रदान करेंगी। —सम्पादक।]

संस्था का नाम	रकम रुपये
खादी-ग्रामोद्योग एसोसियेशन, नागपुर	१००१.००
नागविदर्भ चरखा संघ, नागपुर	२५०.००
नागविदर्भ चरखा संघ, नागपुर (कार्यकर्ता हिस्सा)	१००.००
स्वराज्य आश्रम, कानपुर	१००१.००
श्री शीलकुमारी लहेरिया, लहेरिया	५.००
खादी-ग्रामोद्योग विद्यालय, मधुबनी	२०१.००
श्री नागेश्वर शास्त्री, लहेरिया	२.००
बिहार खादी-ग्रामोद्योग संघ, मधुबनी	२५.००
खादी-ग्रामोद्योग समिति, गया	५०१.००
सर्वोदय साधना क्षेत्र, रतलाम	१०१.००
महाराष्ट्र सेवा संघ (कार्यकर्ता हिस्सा)	६१.००
ग्राम-सेवाग्राम की तरफ से	४२.००
श्री द्वारकानाथ घोष द्वारा श्री शंकररावजी देव	५०.००
श्री अमृत गड़करी, नांदेड़	६.००
श्री नयनी मिस्त्री	२.००
	३५११.००

हमारा क्रांतिकारी साहित्य

यह साहित्य मानवता के नव जागरण का प्रतीक बनकर हमारे जीवन में प्रकाश भर देगा

- विनोबा-साहित्य
- सर्वोदय-साहित्य
- गांधी-साहित्य
- मानवीय-क्रांति का जीवित साहित्य

It is a thrilling account of the exciting experiment to evolve a stateless and classless society based on non violence It is an important, valuable, informative and facinating book by Suresh Ram Bhai Illustrated, Pages 291, Price Rs 3/ Bound Rs 3 50

●

बालमन की जटिलताओं को जाने बूझे बिना, माँ बाप अपने बालकों को समझने में गलती भी कर सकते हैं। महात्मा भगवानदीन की इस पुस्तक में बालकों की बातों का सरल विवेचन, पृष्ठ ६४ और मूल्य ०–३५।

बालक को सिखाने के लिये उसकी मूक भाषा और उसकी अपनी दुनिया को समझना जरूरी है। महात्मा भगवानदीन के निजी अनुभवों से पूर्ण इस पुस्तक का मूल्य ० ९० पृष्ठ ९६।

बिना हथियारों के शान्ति कायम रखने वाली, शान्ति सेना ही हो सकती है, खूनी फौज नहीं। विनोबाजी की कलम से शान्ति-सेना की पूरी योजना पढ़िये। तीन भाषाओं में उपलब्ध, पृष्ठ १२८ और मूल्य केवल ०–५०।

●

सारी सम्पत्ति समाज की है और सारी अर्जन गाँव की है, व्यक्ति का कुछ भी नहीं, इस अनूठे प्रयोग का हाल चारुचन्द्र भण्डारी की इस पुस्तक में पढ़िये। (पृ० १०६, मू० १)

●

८० प्रतिशत ग्रामीण जनता का सुख और कल्याण किसमें है? सर्वोदय के सबसे बड़े अर्थशास्त्री श्री जे सी. कुमारप्पा की इस पुस्तक में पढ़िये। पृष्ठ २०८, मूल्य केवल २ ५०

●
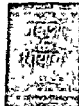
'तालीमी नजरिया' शिक्षा के क्षेत्र में क्रांति लानेवाली पुस्तक 'शिक्षण विचार' का उर्दू अनुवाद है। पृष्ठ २ ० मूल्य २ २५। पाँच भाषाओं में उपलब्ध है।

●

उड़ीसा में विनोबा के साथ बिताये उन मधुर क्षणों का चित्रण जो जीवन में माधुर्य भर देता है। पृष्ठ २५४, मूल्य १ ५०।

●

Acharya Kripalani, the great Sarvodaya thinker in this small book says that the concept of class struggle is basically against the 'good of all' P 24, Price Rs 1 25

●

नई क्रान्ति का नया हथियार 'भूदान यज्ञ', जो अहिंसक समाज रचना का आधार बनाया जा रहा है, उसी के बारे में चारुचन्द्र भण्डारी की यह पुस्तक पूरा ज्ञान कराती है। पाँच भाषाओं में उपलब्ध। मूल्य १ ५०।

'समग्र ग्राम सेवा की ओर', के नाम से प्रकाशित यह पुस्तक ग्राम सेवा के काम में लगे कार्यकर्ताओं के लिए मार्गदर्शन है। पृष्ठ ५००, मूल्य ३–५०

इस पुस्तक में कर्मठ सर्वोदयी, श्री अण्णा साहब सहस्रबुद्धे ने अपने जीवन को सर्वोदय के अनुरूप ढालने के प्रयोगों का सजीव और रोचक वर्णन किया है। मराठी में भी, पृष्ठ ११२, मूल्य ०–५०।

●

'सम्पत्ति दान यज्ञ' आन्दोलन के वैचारिक पक्ष का वर्णन पढ़िये। पृष्ठ १२० मूल्य ०–५० यह पुस्तक आठ भाषाओं में उपलब्ध है।

●

भूदान आन्दोलन, आन्दोलन नहीं, बल्कि एक आरोहण है। विचारप्रधान आन्दोलन की भूमिका को स्पष्ट करने वाली एक उपयोगी पुस्तक। मू. ०–५० न०पै०

●

धार्मिक विचारों में बुनियादी क्रान्ति पैदा करने वाले महात्मा बुद्ध के विचार धम्मपद के अनुवाद धर्मसार में पढ़िये। मूल्य पचीस नये पैसे।

●

सूचीपत्र मंगाइए

अखिल भारत सर्व सेवा संघ प्रकाशन

राजघाट, काशी

विनोबा जयंती : *शारदा की उपासना*

इस वर्ष का विशेष कार्यक्रम

समस्त देश भर में विनोबा जयंती मनाई गई। इस बार शारदा की उपासना का कार्यक्रम विशेष था। अन्य परम्परागत कार्यक्रम जैसे, प्रभात फेरी, सूत्रयज्ञ, सभा समारोह भी सर्वत्र 'आयोजित' किये गये। नीचे हम संक्षेप में विभिन्न स्थानों में आयोजित विशिष्ट समारोहों की जानकारी दे रहे हैं।

विनोबा जयन्ती

● प्रथम ग्रामदानी गाँव, मंगरौठ में 'विनोबा-जयन्ती' प्रभात में ग्रामफेरी से शुरू हुई। बाद में सामूहिक सफाई के कार्यक्रम में सब ग्रामवासियों ने भाग लिया। शाम को प्रार्थना-सभा हुई, जिसमें मंगरौठ की जिम्मेदारी पर चर्चाएँ हुईं। और सबने यह तय किया कि प्रथम ग्रामदानी गाँव ग्राम-निर्माण में भी प्रथम रहेगा।

● लखनऊ में विनोबा-जयंती से गांधी-जयंती तक चलने वाले तीन सप्ताह के सर्वोदय-साहित्य प्रचार-अभियान का उद्घाटन राज्यपाल श्री रामकृष्ण राव ने किया। श्री सम्पूर्णानन्दजी ने समारोह की अध्यक्षता की।

● इलाहाबाद मे प्रभात फेरी सूत्रयज्ञ और विभिन्न सभाओं द्वारा विनोबा-जयंती मनायी गयी।

● अम्बाला में विनोबा-जयती के अवसर पर अखंड सूत्रयज्ञ और गीता-पाठ का कार्यक्रम हुआ।

● गया में इस अवसर पर एक विशाल जुलूस निकाला गया। अन्त में सभा हुई। उसमें प्रस्ताव द्वारा यह माँग की गयी कि अशोभनीय पोस्टरों और मद्यपान पर रोक लगायी जानी चाहिए। २ अक्टूबर तक विभिन्न वार्डों में कार्यक्रम चलता रहेगा।

● उत्तर प्रदेश के कार्यकर्ता श्री बंगाली सिंह ने लिखा है कि बिहार मे मुंगेर जिले के सूर्यगढ़ा थाने में ग्राम किरणपुर में विनोबाजी के जन्मदिन के अवसर पर ६६ कट्ठा भूमि पाँच दाताओं ने दी।

● सहारनपुर में विनोबा जयन्ती के अवसर पर आर्य समाज मंदिर में विचार गोष्ठी आयोजित की गयी। यह तय किया कि ११ सितम्बर से २ अक्टूबर तक शहर के विभिन्न वार्डों में विचार गोष्ठी और साहित्य प्रचार का आयोजन किया जाय। जिले के अन्य कसबों में भी विनोबा जयंती विभिन्न कार्यक्रमों के साथ मनाई गई।

● कलकत्ता की संयुक्त परामर्शदात्री सभा (बाल, छात्र एवं युवक संस्थाओं का केन्द्रीय संगठन) विनोबा जयंती के अवसर पर एक समारोह मनाया गया। सभा में श्री ताराचन्द बेड़िया और समारोह के अध्यक्ष श्री राम गोपाल गंगल ने अपने विचार प्रकट किए।

● मेरठ में विनोबा-जयंती के अवसर पर प्रगतिशील साहित्यकार परिषद के तत्वावधान में कविसम्मेलन हुआ।

● अहमदाबाद में श्री परीक्षितलाल मजूमदार की अध्यक्षता में सभा हुई। इस अवसर पर गुजरात सर्वोदय पदयात्रा के नायक श्री हरीश व्यास ने अपने विचार प्रकट किये। इस अवसर पर उपनिषदों की कथा और विश्वरूप दर्शन नामक पुस्तकों का उद्घाटन किया गया। शहर में ११ सितम्बर से २ अक्टूबर तक विभिन्न कार्यक्रम आयोजित किए जायेंगे। १४ सितम्बर से अ० भा० सर्व सेवा संघ के मंत्री श्री पूर्णचन्द्र जैन गुजरात में दौरा कर रहे हैं।

● विनोबा जयंती के अवसर पर नागौर जिले के मकराना में विभिन्न कार्यक्रमों के साथ में सर्वोदय-साहित्य-प्रदर्शनी का विशेष आयोजन किया गया।

● पीलीभीत में विनोबा जयंती के अवसर पर एक विशेष विचार गोष्ठी आयोजित की गयी।

● मजदूर सेवा केन्द्र (झरिया) कुसुन्डा स्टेशन में विनोबा जयन्ती के अवसर पर सभा में यह तय किया गया कि प्रत्येक शनिवार को केन्द्र में सभा होगी और रविवार को श्रमदान, सफाई एवं सर्वोदय-पात्र आदि कार्य किए जायेंगे।

लंदन में पारमाणविक युद्ध-विरोधी सत्याग्रह प्रारम्भ

११ सौ व्यक्ति गिरफ्तार

लार्ड बर्ट्रेण्ड रसेल और माइकेल स्काट को सजा

पिछले कई महीनों से इंग्लैंड में अणुशस्त्रों के खिलाफ एक आन्दोलन चल रहा है। आज के लन्दन-निवासियों ने अपने जीवन-काल में कभी नहीं देखी, ऐसी चालीस-पचास हजार की उपस्थिति वाली विशाल आम सभा कुछ महीनों पहले यहीं लन्दन शहर के बीचोबीच आणविक अस्त्रों के विरोध में हुई थी। इसी सप्ताह, ता० १२ सितम्बर को इंग्लैण्ड के वयोवृद्ध और ख्यातनामा लेखक तथा साहित्यिक लार्ड बर्ट्रेण्ड रसेल को वहाँ की एक अदालत ने आणविक अस्त्रों के खिलाफ प्रचार करने से बाज आने की बात न मानने के लिए एक हफ्ते की सजा सुनायी। आणविक अस्त्रों के खिलाफ आन्दोलन करने वाली समिति के दूसरे नेता पादरी माइकेल स्काट आदि भी पकड़ लिए गए। माइकेल स्काट को एक महीने की सजा सुनायी गयी है।

१८ सितम्बर को श्री बर्ट्रेण्ड रसेल ने, कल रात जेल से अपने एक वक्तव्य में बताया कि पारमाणविक युद्ध के विरुद्ध अन्तर्राष्ट्रीय आन्दोलन प्रारम्भ [illegible] जायगा।

ताजी खबर है कि कल ११०० से भी अधिक व्यक्ति पारमाणविक युद्ध विरोधी प्रदर्शन में यहाँ गिरफ्तार किये गये। इन गिरफ्तार व्यक्तियों में दो नाटककार तथा सेंटपाल कैथेड्रल के एक अधिकारी भी हैं।

ट्राफलगर स्क्वायर में अणु अस्त्र विरोधी प्रदर्शन पर लगे प्रतिबन्ध की अवहेलना करने पर ये लोग गिरफ्तार किये गये।

साहित्य प्रचार के लिये विशेष सुविधाएँ

राजस्थान खादी संघ का निर्णय

इस बार विनोबा और गांधी जयन्ती पर्व के अवसर पर राजस्थान खादी संघ ने साहित्य प्रचार की प्रवृत्ति को विशेष गति देने का निश्चय किया है और इसी दृष्टि से निम्न रियायतें भी देने का निर्णय लिया है।

पत्र-पत्रिकाओं पर रियायत:

१. इस संदर्भ में संघ के किसी केन्द्र या शाखा पर विभिन्न सर्वोदय पत्र-पत्रिकाओं के ग्राहक बनने पर निम्न रियायत देने का निश्चय किया गया है:—

(अ) ग्रामराज्य साप्ताहिक के वार्षिक शुल्क ५) पर २) रियायत

(ब) अंग्रेजी तथा हिन्दी भूदान-यज्ञ साप्ताहिक के वार्षिक शुल्क ६) रियायत २)

(स) भूदान-तहरीक उर्दू वार्षिक शुल्क पर शुल्क १)

(द) खादी पत्रिका वार्षिक शुल्क पर रियायत १)

सर्वोदय-साहित्य पर रियायत:—

१. संघ के कार्यकर्ताओं को अपने अध्ययन के लिये १०) तक की कीमत का सर्वोदय साहित्य खरीदने पर ५०) प्रतिशत कमीशन दिया जायेगा।

२. बिक्री भंडारों से खादी खरीदने वाले ग्राहकों को एक साथ १००) से ज्यादा खादी खरीदने पर संघ के प्रकाशन का २) तक का एक सेट निःशुल्क भेंट किया जायेगा।

उपरोक्त सूचनायें परिपत्रित करते हुए संघ के मंत्री श्री ईश्वरचन्द्र गोयल ने अपने कार्यकर्ताओं से यह भी अपेक्षा की है कि अधिकाधिक शारदा की उपासना करें।

पाठकों से

पिछले अंक में पृष्ठ ४ पर प्रकाशित हमारी प्रार्थना आपने, अवश्य पढ़ी होगी। २ अक्टूबर के पहले-पहले सर्वोदय विचार के प्रति आपकी सहानुभूति के प्रतीक स्वरूप।

कम-से-कम एक ग्राहक

'भूदान-यज्ञ' का आप अवश्य बनायेंगे ऐसा हमें विश्वास है। आपके दैनिक संपर्क में आनेवाले या पास-पड़ोस वाले लोगों को या मित्रों को कहिये। कोई-न-कोई जरूर ग्राहक बनने को तैयार हो जायगा।

—व्यवस्थापक

इस अंक में

श्रीकृष्णदत्त भट्ट, अ० भा० सर्व सेवा संघ द्वारा भार्गव भूषण प्रेस, वाराणसी में मुद्रित और प्रकाशित। पता : राजघाट, वाराणसी-१, फोन नं० ४१९१
पिछले अंक की छपी प्रतियाँ ९२०० : इस अंक की छपी प्रतियाँ ९३५०
वार्षिक मूल्य ६) एक अंक : १३ नये पैसे

संपादक : सिद्धराज ढड्ढा

वाराणसी : शुक्रवार | २९ सितम्बर '६१ | वर्ष ७ : अंक ५२

> आसाम में ५ सितम्बर से १२ सितम्बर तक के हफ्ते में कुल २४ ग्रामदान हुए। २५०८ रुपये की साहित्य-बिक्री हुई।

बापू : 'वैष्णव जन' का आचरित जीवन

विनोबा

वैष्णव जन तो तेने कहिये, जे पीड़ पराई जाणे रे।
परदुःखे उपकार करे तोये, मन अभिमान न आणे रे।
सकल लोकमां सहुने वंदे, निंदा न करे केनी रे।
वाच काछ मन निश्चल राखे, धन-धन जननी तेनी रे।
समदृष्टि ने तृष्णा त्यागी, पर-स्त्री जेने मात रे।
जिह्वा थकी असत्य न बोले, परधन नव झाले हाथ रे।
मोह माया व्यापे नहि जेने, दृढ़ वैराग्य जेना तनमां रे।
रामनामसुं ताली लागी, सकल तीरथ तेना मनमां रे।
वणलोभी ने कपटरहित छे, काम क्रोध निवार्या रे।
भणे नरसैंयो तेनुं दरसन करता, कुल एकोतेर तार्या रे॥

यह भजन अब तो आसेतु हिमाचल, सब दूर गाया जाता है। यह नरसिंह मेहता का भजन है, लेकिन महात्मा गांधी ने उसका प्रकाश कुल भारत में अपने आचरण से फैलाया। उन्होंने इस भजन पर अपने जीवन से ही एक भाष्य लिख डाला और हमारे लिए एक विरासत की तौर पर यह भजन वे छोड़ गये हैं।

इसमें 'वैष्णव' की जो एक व्याख्या की है, वही व्याख्या एक शैव की है, वही एक क्रिश्चियन की है, वही एक मुस्लिम, एक बौद्ध की भी वही है। एक जैन की भी यही व्याख्या है कि जो 'जो पीड़ पराई जाणे रे।'—दूसरे की पीड़ा, दर्द जिसके हृदय में प्रकट होता है, प्रतिबिम्बित होता है, बल्कि और अधिक तीव्र बन जाता है, जिसको अपना दुःख तो बर्दाश्त होता है, सहन कर लेता है, लेकिन वैष्णव को दूसरे का दुःख सहन नहीं होता। इसलिए दूसरे के दुःख से प्रेरित होकर कुछ उपकार करता है।

मैंने बहुत दफा कहा है, आज भी कहता हूँ कि

यह 'उपकार' शब्द बहुत सुन्दर है। आज उसमें अहंकार की छटा आ गई है, लेकिन मूल में बहुत ही नम्र शब्द है। इसका अर्थ होता है, काया-वाचा-मन से दूसरे को मदद पहुँचाना, उसका संकट निवारण करना। अल्प-सा उपकार करेंगे यानी भर मिटेंगे, फिर भी गौण मदद होगी। मुख्य कार्य तो भगवान ही करेगा। हम थोड़ी सी सेवा करेंगे। उप यानी अल्प, कार्य यानी मदद।

थोड़ी सी मदद उसे देंगे और उसका भी चित्त पर अहंकार पड़ सकता है; इसलिए नरसिंह मेहता ने स्पष्ट बता दिया कि "परदुःखे उपकार करे तोये, मन अभिमान न आणे रे"—दूसरे के दुःख की वेदना मन में प्रतिबिम्बित होना, उस वास्ते मदद में दौड़ना, जो भी मदद की वह अल्प है ऐसा मानना, उसका भी अहंकार न मानना, ऐसा पूर्ण लक्षण बताया है। ठीक यही लक्षण, भक्त के लिए भगवान ने गीता में बताया है : "अद्वेष्टा सर्वभूतानाम् मैत्रः करुण एव च, निर्ममो निरहंकारः।" यह भक्त का लक्षण जो गीता में आया है, वही नरसिंह मेहता अपने पद में देता है और गांधीजी के जीवन में हमने वही चीज देखी है। बहुत ही पवित्र जीवन उनका है। उनका बार-बार स्मरण होता है तो आँखें गीली होती हैं। धन्य हैं हम जिनको उनके साथ काम करने का मौका मिला, उनकी सेवा करने का मौका मिला।

भगवान शंकराचार्य ने तीन परम भाग्य बताये हैं : "मनुष्यत्वम् मुमुक्षुत्वम् महापुरुष संश्रयः।" यानी मानव-जन्म मिले, यह बहुत ही बड़ा भाग्य है। अनेक जन्मों के परिश्रम के बाद यह मिला है, यह पहला भाग्य हुआ। दूसरा, मुमुक्षुत्वम् यानी मोक्ष की इच्छा हो, बंधन तोड़ने की इच्छा हो, छटपटाहट हो कि यह मोहपाश के बंधन कब टूटेगा, तो यह दूसरा भाग्य। तीसरा भाग्य है,

> महापुरुष का आश्रय मिले, उसकी छाया में रहने का, बातचीत का, सेवा का, साथ रहने का और दर्शन का मौका मिले। परम भाग्य है यह।

कुछ लोग कहते हैं कि बड़ों के पास रहने वाले छोटे बनते हैं, जैसे किसी बड़े पेड़ की छाया में दूसरा पौधा बढ़ता नहीं है, उसकी प्रगति कुंठित होती है। वह बढ़ता नहीं है, इसलिए दूर रहना चाहिए। दूर से लाभ होता है, नहीं तो वह पराधीन, परतन्त्र होते हैं। यह उन बड़े पुरुषों पर लागू होता है, जो बड़े होते हुए भी स्वार्थी होते हैं, जैसे बड़ा पेड़ सारा पोषण, जो हवा से और धूप से मिलता है, वह चूस लेता है। इसलिए उसकी छाया में जो पौधा है, वह बढ़ता नहीं है। तो बड़ा पेड़ स्वार्थी हो गया। बड़े पुरुष अलग हैं, महापुरुष अलग हैं। बड़ों की छाया में रहने से विचार कुंठित होते हैं। लेकिन महान पुरुष गाय के समान वत्सल होते हैं। गाय बछड़े को दूध देती है, खुद क्षीण होती है, लेकिन बछड़े को पुष्ट करती है।

जन्म-दिन के अवसर पर

मेरा अपना जीवन नहीं रह गया

विनोबा

भारत, भूमि को हम लोगों ने पुण्यभूमि माना है, अगरचे मैं नहीं मानता कि योरप और अमेरिका से या दूसरे देशों से कोई खास अधिक पुण्य आज हमारे पास होगा, सिवाय इसके कि महापुरुषों के स्मरण हमारे साथ रहे हैं। अगर हम एक-एक महापुरुष को याद करेंगे और उनकी एक-एक तिथि मानते रहेंगे तो शायद ही कोई दिवस बचेगा, जिस दिन किसी महापुरुष का जन्म या मृत्यु न हुई हो। चौदह-पन्द्रह भाषाएँ यहाँ हैं। सब मंगल भाषाएँ हैं। उन सबके मूल में संस्कृत है, थी। इतनी सब भाषाओं में जिन लोगों ने अपने विचार व्यक्त किये और लोगों की सेवा की, जिन्होंने आध्यात्मिक खोजें करने में अपना सर्वार्पण किया, ऐसों की अपार वृष्टि भारत पर हुई है। अकेले ऋग्वेद में कुछ ३०० पुरुषों के नाम आते हैं। उन सबके नाम हम जानते भी नहीं। जब ऋषियों का तर्पण करने हम बैठते हैं, तब 'वसिष्ठ तर्पयामि'–'विश्वामित्रं तर्पयामि' और आखिर में कहते हैं 'सर्वान् ऋषि तर्पयामि'–सब ऋषियों को हम तर्पण करते हैं।

यह हमारा भाग्य है कि भारत पर संतों की, सत्पुरुषों की, ज्ञानियों की और भक्तों की वर्षा हुई। यहाँ के सन्त पुरुष माधवदेव ने गाया है कि भारत भूमि में जन्म लेकर क्षुद्र विषयों की आशा जो जीव रखेगा वह बड़ा अभागी होगा। ऐसा ही अनेकों ने कहा है, यह बहुत बड़ी दौलत हमें मिली है। "सुजलाम् सुफलाम् मलयज शीतलाम्," ऐसी सुन्दर भूमि हमें मिली है। लेकिन इससे अधिक श्रीमान् और सम्पन्न देश भी दुनिया में हो सकते हैं। हम गंगा, यमुना और ब्रह्मपुत्र के गुण गाते हैं, लेकिन उनसे बढ़कर विशाल नदियाँ दुनिया में हैं। यहाँ की भूमि उपजाऊ है। लेकिन इससे भी अधिक उपजाऊ भूमि दुनिया में है। इसलिए भारत का मुख्य भाग्य "सुजलाम् सुफलाम्" यह नहीं है।

बल्कि वह "सुहासिनीम् सुमधुर भाषिणीम्" रही है—यह उसका भाग्य है। वह "सुहासिनीम् सुमधुर भाषिणीम्," रही—बावजूद इसके कि अनेक आक्रमण हुए, अनेक दुःख आये, अनेक कालखंड ऐसे गये कि जिसमें शासन और पीड़न रहा; फिर भी भारत-माता के चेहरे पर हास्य हो रहा और उसने मधुर वाणी का ही उच्चारण किया।

और जैसे हमारे महाकवि ने कहा—"जितने भी यहाँ आये, चाहे वे आर्य थे, चाहे अनार्य, उनका स्वागत ही किया—"एसो हे आर्य, एसो अनार्य।" उसका कारण इस भूमि में आध्यात्मिक खोजें हुईं। सब मानव एक हैं, इतना ही नहीं प्राणिमात्र एक हैं—चराचर सृष्टि एक है—इतनी व्यापक अनुभूति यहाँ के ऋषियों ने की। और हम लोगों के लिए बहुत बड़ी दौलत, विरासत छोड़ी। यही भारत की सबसे बड़ी दौलत है। "विश्वमानुषः"—हम विश्वमानव हैं—यह शब्द ऋग्वेद में आया। दस हजार साल हुए, उसी की धुन यहाँ के लोगों को रही। उसने गौतम बुद्ध जैसे करुणावान, दयावान महापुरुष निर्माण किये। उसने कपिल महामुनि जैसे तत्वज्ञानी निर्माण किये। अब नाम किस-किसके लिये जायें! उसने उपनिषद, गीतादि अप्रतिम सन्देश दिये। यह हमारी दौलत है।

इन दिनों एक बात हमने बार-बार कही है, हमारे नेताओं ने इस बात को उठा लिया है। वह यह कि इसके आगे छोटे धर्म नहीं चलेंगे, *उनका जमाना खत्म हुआ* है और छोटी-छोटी राजनीति 'आउट डेटेड' हो गयी है, आगे नहीं चलेगी। इसके आगे अध्यात्म और विज्ञान चलेगा।

अध्यात्म की भूमि (निश्चित तो नहीं कह सकते, क्योंकि हमें सारा इतिहास कहाँ मालूम है, लेकिन) मैं मानता हूँ कि भारत है, और विज्ञान पश्चिम में बढ़ रहा है। ये दोनों चीजें आगे के जमाने में चलने वाली हैं। अध्यात्म के मार्गदर्शन में विज्ञान चलेगा तो हम दुनिया में स्वर्ग ला सकेंगे। ऐसी मुझे आशा है। *मेरा अध्यात्म पर विश्वास है*—उतना ही विश्वास विज्ञान पर है। एक सृष्टि का ज्ञान है और अंदर वस्तु का, आत्मा का ज्ञान है, जो भारत की खास चीज है। विज्ञान भी भारत में एक जमाने में था। आज पश्चिम में [illegible] उदय हुआ है। वहाँ से हमें वि[illegible] सीखना होगा। और [illegible] पूर्व-पश्चिम भेद को भूल[illegible] होगा। यह समग्र विश्व [illegible] है और हम समग्र विश्व के [illegible] इससे कोई कम चीज अब दु[illegible] में नहीं चलेगी। यही वि[illegible] ध्यान में रख कर हम भूदान [illegible] हुए घूम रहे हैं।

पर जितना मैं अपने को देख [illegible] हूँ, उतना अनुभव आता है कि अ[illegible] खास मेरा अपना जीवन रह गया है, [illegible] नहीं दीखता। अन्न है, चल रहा है [illegible] पीना "वह चलेगा मरने तक! [illegible] चित्त में कोई व्यक्तिगत आस[illegible] वासना का अनुभव नहीं होता है। गलतियाँ होती हैं बोलने में, व्यवहार [illegible] करने में। वह मैं देखता हूँ, मुझे [illegible] होती है; लेकिन उसकी चिंता नहीं [illegible]

अभी आपने तुकाराम [illegible] सुना : "जहाँ जाता हूँ, तु[illegible] साथ हो।"—आप ठीक [illegible] इसे मेरा वाक्य मानिये [illegible] मैं किसी का हाथ पकड़ता हूँ [illegible] के लिये, तो मैं उसे भ[illegible] रूप ही समझता हूँ—ऐसा [illegible] अनुभव आता है। हाथ प[illegible] हूँ, तो किसी लड़के का हाथ [illegible] किसी लड़की का हाथ ऐसा [illegible] लगता; भगवद्-स्पर्श का [illegible] आता है। यह शब्द का विषय [illegible] है। इसकी व्याख्या नहीं हो [illegible] सकती है। यह अनुभव का विषय [illegible] जब तक प्रारब्ध है, मेरा जीवन च[illegible] लेकिन ऐसा भास होता है कि अ[illegible] मात्र प्रवृत्ति है कि भारत के जरिये विश्व[illegible] हरि की सेवा हो—और होगी। भ[illegible] रहा है और लेगा। "भारत के [illegible]" शब्द भी मैं ममत्व भाव से नहीं [illegible] उतनी ही हमारी शक्ति है, ज्यादा नहीं।

भारत के साथ हमारा अब [illegible] परिचय हुआ। यहाँ की कुछ भाषाओं [illegible] अध्ययन में आँखें क्षीण हो गयीं। [illegible] साहित्य में जैसी मछली पानी में रहती [illegible] वैसे हम रहे तो विश्व की सेवा क[illegible] दूसरी जगह रह कर करेंगे। मेरा [illegible] कि विज्ञान इतना बढ़ रहा है कि विश्व [illegible] सेवा के लिये विश्व में घूमना नहीं [illegible] बल्कि ऐसी अवस्था, अवश्य [illegible] में आती है कि जैसे टेलीवि[illegible] "[illegible] वेव" (ध्वनि-तरंग) का उपयोग करने की क्षमता निर्माण हुई है, वैसे ही हमें ऐसी आध्यात्मिक साधना करनी होगी कि [illegible] छोटे-से कोने में हम बैठे हैं, वहाँ से [illegible] विश्व को प्रभावित किया जा सकता है [illegible] उसके लिये पूर्ण हृदय-शुद्धि [illegible] आपको और हमें ऐसी हृदय-शुद्धि [illegible] यही हमारी भगवान से प्रार्थना है।

[ता० ११ सितंबर '६१, [illegible] इंफाल]

हमारी ६६ साल की उम्र में हम ईश्वर से यह नहीं कह सकते कि तूने हमें दुःख का दर्शन कराया। सर्वत्र सुख ही सुख हमने पाया। जितना प्रेम हमने पाया, उसका एक अंश मात्र भी हम नहीं चुका रहे हैं। प्राचीनों से, अर्वाचीनों से, दूरवालों से, नजदीक वालों से शरीर के खयाल से; इस तरह कश्मीर से कन्याकुमारी तक और यहाँ असम तक हमें जो मिला उसका वर्णन हम नहीं कर सकते हैं। हमें जो मिला है वह इतना अत्यधिक मिला है कि हम प्रेम दे रहे हैं, ऋण चुका रहे हैं ऐसा भास हमें नहीं होता है। माधवदेव ने गुरु के लिए जो लिखा है, वही हम जनता के लिए कहते हैं "वाहो अंजलीत परे"—नमस्कार करने के सिवाय दूसरा कोई उपाय नहीं हैं। सबको हम भक्तिभाव से प्रणाम करते हैं।

महान पुरुष की संगत में छोटे बड़े बनते हैं, छोटे सच्चे बनते हैं। भर्तृहरि ने कहा है :

"वे बड़े-बड़े पहाड़ हिमालय, मेरू क्या उनकी महिमा है कि उनके आश्रय में जो पेड़ रहे, वे वैसे ही रह गये! हम तो मलय पर्वत की महिमा गाते हैं, जहाँ सामान्य पेड़ भी चन्दन का पेड़ बनता है। तो यह महिमा मलय पर्वत की है। हिमालय मेरू महान से भी महान है, लेकिन दूसरे को महान नहीं बनाता है, लेकिन मलय की छाया में जो पेड़ रहते हैं, वे चंदन के बन जाते हैं।"

यही महापुरुष का लक्षण है कि उनके आश्रय में रहने वाले छोटे बड़े होते हैं, महान होते हैं, जो गांधीजी के जीवन में हुआ। उनके जीवन में अनेक छोटे-छोटे लोगों का उदय हुआ और वे बड़े हुए।

पाकिस्तान की बागडोर अपने हाथ में रखने की जरूरत कायदे आजम जिना को महसूस हुई। उसमें उनका स्वार्थ भी था ऐसा नहीं। वे जानते थे कि अगर वे अपने हाथ में बागडोर नहीं रखेंगे, दूसरे के हाथ में बागडोर जायेगी तो पाकिस्तान इतना सुरक्षित नहीं रहेगा। उनके आश्रय में आये हुए पेड़ चंदन नहीं हुए थे। उनकी विकास-शक्ति कुंठित हुई। लेकिन महात्मा गांधी को इसकी जरूरत महसूस नहीं हुई और जब देश स्वतंत्र हुआ वे नोआखाली में गये। उन्होंने छोटे-छोटे लोगों को बहुत बड़ा बना दिया। ऐसे महान का चित्र इस भजन में मिलता है।

[ता० १२-१२-६०, बरपेटा-सेवाकुटीर]

सत्यं जगत् स्फूर्तिः जीवनं सत्य-शोधनम्

भूदानयज्ञ

लोकनागरी लिपि*

हृदय संकुचित न हो, चाहे सेवा का क्षेत्र सीमित हो

जब हिन्दू और मुसलमान, दोनों दुःखी हों, ठंड से ठिठुर रहे हों और ऐसी हालत में अगर अकेले हिन्दुओं या अकेले मुसलमानों के लिए कम्बल देने हों, तो मैं उन्हें फेंक दूंगा। कुछ हिन्दू हिन्दुओं के लिए ही काम करते हैं, वहां अगर कोई इस तरह भेद करता है, तो ऐसी वृत्ति से की गयी सेवा मैं पसन्द नहीं करूंगा। ज्ञानदेव ने कहा है कि कोई डूबता हो, तो आप सम्प्रदाय-सम्प्रदायता मानने वाले होने पर भी आपको उस समय उसका खयाल नहीं करना चाहिए। उस समय तो डूबने वाले को फौरन बचाना चाहिए, नहीं तो आप महापातक करते हैं। जब मानवता के टुकड़े होते हों, तो यह बात हृदय को असह्य होनी चाहिए। अगर कोई वर्धा जिले के लोगों के लिए फंड इकट्ठा करता है तो ठीक है, किंतु दिल के टुकड़े नहीं होने चाहिए। मेरा हृदय उस चीज को कबूल नहीं करता। हिन्दू, मुसलमान, वैश्य या ऐसी ही किसी संस्था का मैं सदस्य बनूं, तो उससे एक ऐसा 'लेबल' चिपकता है, जिससे आत्मा की विशालता कम हो जाती है। उससे मैं कमाता तो कम हूं, पर खोता ज्यादा हूं ऐसा मुझे लगता है।

—विनोबा

* लिपि-संकेत : ि = ी ; ी = ी, ए = अे, संयुक्ताक्षर हलंत चिह्न से।

संपादक की ओर से

श्री हेमरशोल्ड की हत्या !

कटांगा में इस सप्ताह जो दारुण घटना घटी है उससे दुनिया के लाखों-करोड़ों लोगों को सदमा पहुँचा होगा। दुनिया के रंग-मंच से एक विशिष्ट पुरुष उठ गया, यह अपने आप में एक दुःखद बात है। श्री हेमरशोल्ड की नीति के बारे में कोई कुछ भी राय रखता हो और बड़े से बड़े व्यक्ति की नीति के बारे में भिन्न-भिन्न किस्म की रायें हो ही सकती हैं और होती हैं—कोई भी निष्पक्ष और तटस्थ दर्शक इस बात से असहमत नहीं होगा कि स्वर्गीय हेमरशोल्ड एक ऊँचे दरजे के कर्तव्यनिष्ठ और निर्भीक व्यक्ति थे। इसमें कोई शक नहीं है कि उनकी मृत्यु से मानव जाति की हानि हुई है और कम से कम कुछ अरसे के लिए उसकी प्रगति को धक्का लगा है।

पर जिस तरह, जिन परिस्थितियों में, उनकी मृत्यु हुई है, वह और भी विषाद पहुँचाने वाली है। अभी कुछ ही महीने हुए उसी प्रदेश में एक दूसरी बीभत्स राजनैतिक हत्या हुई थी। उस हत्या ने भी उस समय दुनिया भर के प्रगतिशील लोगों के मानस को एक जबरदस्त आघात पहुँचाया था। कांगो के प्रधान मंत्री लुमुम्बा की हत्या जिस तरह से की गई, उसका पूरा 'रहस्य' दुनिया को मालूम होना मुश्किल है, परन्तु इसमें कोई शक नहीं है कि लुमुम्बा की हत्या के पीछे अपने आपको कटांगा का 'राष्ट्रपति' कहलाने वाले शोम्बे का हाथ था। संयुक्त राष्ट्रसंघ के महासचिव, हेमरशोल्ड की मृत्यु का रहस्य भी अधिकृत तौर पर जब खुलेगा तब खुलेगा परन्तु जो दुनिया की गतिविधि का मामूली परिचय भी रखते हैं, उन्हें इस बात के सबूत की जरूरत नहीं है कि हेमरशोल्ड की हत्या स्वाभाविक दुर्घटना से नहीं हुई, वरन् उसके पीछे जरूर शोम्बे और उसके समर्थकों का षड्यन्त्र था।

व्यक्ति विशेष का वैयक्तिक और सार्वजनिक जीवन में अपना अपना स्थान होता है और इसलिए व्यक्तियों की मृत्यु अपने आप में भी कमोबेश असर डालने वाली होती ही है, पर लुमुम्बा और हेमरशोल्ड की ये ताजी हत्याएँ हमें इस नग्न सत्य की याद दिलाती हैं कि आज का मनुष्य चाहे अपने आप को अपने पूर्वजों और आदिम निवासियों से कितना भी ज्यादा सभ्य या सुसंस्कृत मानता हो, उसकी यह सभ्यता आखिरकार ऊपरी मुलम्मा ही है। लोभ, लालच, स्वार्थ, क्रोध व ईर्ष्या द्वेष के वश होकर आज भी इन्सान वही करता है, जो वह पहले किया करता था। शायद फर्क इतना ही हुआ है कि पहले वह जो चीज खुल्लम खुल्ला और सहज रूप में करता था, आज वही काम वह छिपे छिपे अप्रत्यक्ष रूप से करता है। कांगो के कटांगा प्रान्त में हीरे तथा दूसरे बहुमूल्य खनिजों की बड़ी-बड़ी खानें हैं, जो बेल्जियम और इंग्लैण्ड के चंद धनिकों के हाथ में हैं, अरबों रुपये की सम्पत्ति हर साल ये लोग इन खानों से बटोरते हैं, जब पिछले साल कांगो को आजादी देनी पड़ी तब इन खान-मालिकों ने शोम्बे को अपना हथियार बना कर उसके द्वारा कटांगा को कांगो से अलग राष्ट्र घोषित करवा दिया। तब से आज तक इनके हाथ बिका हुआ शोम्बे इन खान-मालिकों के पैसे से ही अपना सारा 'राज' चला रहा है। इसके सिपाहियों को तनख्वाह भी खान-कम्पनी से ही मिलती है, क्योंकि लुमुम्बा कटांगा को वापस कांगो में मिलाने की कोशिश कर रहा था और खान मालिकों तथा शोम्बे, दोनों का स्वार्थ उसे अलग रखने में था, इसलिए इन लोगों ने षड्यन्त्र करके उसकी हत्या कर डाली। इसी तरह जब संयुक्त राष्ट्रसंघ ने कटांगा का पृथकत्व खतम करने के लिए कदम उठाया तो इस कदम के सूत्रधार और राष्ट्रसंघ के महासचिव हेमरशोल्ड की भी इन लोगों ने हत्या कर दी, ताकि उनके रास्ते का काँटा दूर हो जाय।

हेमरशोल्ड और लुमुम्बा जैसे व्यक्तियों की हत्या का दुःख तो है ही, उससे भी ज्यादा दुःख इस बात का है कि इन हत्याओं के पीछे कुछ व्यक्तियों का जघन्य स्वार्थ काम कर रहा है, पर सबसे ज्यादा दुःख और आश्चर्य इस बात का है कि दुनिया की सभ्य कहलाने वाली सरकारों ने भी इन षड्यन्त्रों और हत्याओं को प्रत्यक्ष अप्रत्यक्ष रूप से शह दी है। व्यक्ति अपने स्वार्थ के लिए कुकृत्य करें यह एक बात है, पर सभ्यता के सिरमौर देशों की सरकारें इस तरह के कामों को प्रोत्साहन दें या उनकी ओर से आँखें मूंद लें—जिन दोनों बातों का परिणाम एक ही, याने ऐसी कार्रवाई करने वालों को प्रोत्साहन देने का होता है-यह बात तो सभ्यता में मनुष्य के बुनियादी विश्वास को ही खतम करने वाली है। लुमुम्बा पर साम्यवादियों का मित्र होने का शक होने के कारण अमेरिका, इंग्लैंड आदि देशों की सरकारों ने उसे शोम्बे के खिलाफ कोई मदद नहीं दी, इतना ही नहीं, बल्कि शुरू से ही लुमुम्बा को गिराने का और उसके खिलाफ दूसरे लोगों को खड़ा करने का उन्होंने प्रयत्न किया। और जब इन विरोधियों ने लुमुम्बा को शोम्बे के सुपुर्द कर दिया और उसकी जान को खतरा खड़ा हो गया, तब भी उसे बचाने के लिये इन्होंने या संयुक्त राष्ट्रसंघ तक ने कोई कदम नहीं उठाया। उनकी इस नीति से ही शोम्बे को लुमुम्बा की हत्या कर डालने की हिम्मत हुई। पर इस पर से भी इन 'सभ्य' सरकारों ने कोई सबक नहीं लिया और जब आखिरकार संयुक्त राष्ट्रसंघ की सेनाओं ने संघ के प्रस्ताव के अनुसार कटांगा की सेना को निरस्त्र करने के लिए कटांगा में प्रवेश किया, तब भी खासकर इंग्लैंड और फ्रान्स आदि देशों ने न सिर्फ शोम्बे को छिपे छिपे मदद की, बल्कि राष्ट्रसंघ की सेनाओं के मार्ग में बाधा भी पहुँचाई। कटांगा के पड़ोस में उत्तरी रोडेशिया इंग्लैंड का ही एक उपनिवेश है। उसके प्रधान मंत्री सर रॉय वैलेन्स्की ने तो खुल्लमखुल्ला यह कह कर कि उसे कानून आदि की परवाह नहीं है संयुक्त राष्ट्रसंघ का विरोध किया ही, पर इंग्लैंड की सरकार ने भी घाना के हवाई जहाजों को जो, संयुक्त राष्ट्रसेना की मदद के लिए कटांगा जाने वाले थे अपने उपनिवेश पर से उड़ने या तेल लेने के लिए उतरने की इजाजत देने में जान-बूझ कर देर करके संयुक्त राष्ट्रों की स्थिति को खतरे में डाला और इस प्रकार हेमरशोल्ड का खून करवाने में मददगार हुए—यह भी अब जाहिर हो चुका है। इतना ही नहीं, इंग्लैंड और फ्रांस जैसे राष्ट्रों की सरकारों ने ही हेमरशोल्ड पर अपने सैनिक अफसरों की सलाह के खिलाफ शोम्बे से युद्ध विराम की चर्चा करने के लिए इंडोला जाने का दबाव डाला।

दुनिया में इंग्लैंड कम-से-कम एक ऐसा देश है, जिसकी सभ्यता के और सौम्यता के लोग कायल हैं। इस देश में सात आठ सौ बरसों से जनतंत्र का अनुपम विकास हुआ है और उसकी अटूट परंपरा रही है। फलस्वरूप इंग्लैंड की प्रजा का हृदय अपेक्षाकृत ज्यादा न्यायप्रिय, सौम्य और उदार है। पर एक से अधिक बार यह जाहिर हो चुका है कि वहाँ की सरकार खासकर कंजरवेटिव (अनुदार) दल की सरकार पर, धनिकों और पूँजीपतियों का अत्यधिक प्रभाव है और वह उनके हितों की रक्षा के लिए कानून, न्याय और सामान्य शिष्टता को भी ताक पर रखने में नहीं चूकती। छः सात बरस पहले एक बार स्वेज नहर के मामले में भी उसने उस नहर कम्पनी के धनवान हिस्सेदारों के हित में सभ्य सरकारों की सारी परम्परा के खिलाफ मिस्र पर अकारण ही खुला हमला किया, जिसे दुनिया के जनमत के धिक्कार और रूस की धमकी के कारण आखिर उसे वापस लेना पड़ा। पुर्तगाल द्वारा अभी हाल ही में अंगोला में जो पाशविक और बर्बर अत्याचार हुए हैं और हो रहे हैं, उनमें भी इंग्लैंड की सरकार ने मदद पहुँचाई, और अब शोम्बे जैसे देशद्रोही और स्वार्थी व्यक्ति को मदद देकर उन्होंने सारी सभ्य दुनिया की घृणा मोल ली है। इतना ही नहीं, पर हेमरशोल्ड जैसे व्यक्ति की हत्या को भी जाने अनजाने शह दी है।

खासकर इंग्लैंड के इस तरह के रवैये से ग्लानि और दुःख होना स्वाभाविक है। अगर उस देश जैसी सभ्य और उदात्त प्रजा तथा उसकी सरकार भी इस तरह चंद धनवान और स्वार्थी लोगों के हाथों बिक जाय तो न्याय की रक्षा और सामान्य सुरक्षा का भी कोई भरोसा दुनिया में कायम नहीं रह जाता

है। क्या जिस तरह स्वेज-काँड के समय वहाँ की प्रजा ने न्यायबुद्धि का परिचय दिया और अपनी सरकार को इस्तीफा देने के लिए मजबूर किया वैसा ही प्रसंग फिर उसके लिए अब उपस्थित नहीं हुआ है ? हमारे खयाल से यह मौका उससे भी ज्यादा महत्त्वपूर्ण और साफ है।

रूस की सरकार और वहाँ के अधिनायक का असली स्वरूप भी इस मामले में साफ नजर आता है। रूस अपने को साम्राज्यवाद का विरोधी और मजदूरों का दोस्त बतलाता है। पर चूँकि कटंगा में संयुक्त राष्ट्रसंघ की कार्रवाई से रूस का स्वार्थ नहीं सधता है और चूँकि हैमरशोल्ड पर ख्रुश्चेव पहले से ही नाराज थे, क्योंकि उसने जिसे अपना कर्त्तव्य समझा उसे निभाने में रूस की भी परवाह नहीं की थी, इसलिए कटंगा में हो रहे इस सारे अन्याय और जबरदस्ती के खिलाफ वह भी चुप है।

कटंगा की घटना ने यह साफ जाहिर कर दिया है कि दुनिया की सरकारों से न्याय और मानवता की रक्षा की आशा मुश्किल से ही की जा सकती है। उनके भी अपने-अपने निहित स्वार्थ हैं या वे स्वयं ही निहित स्वार्थों के हाथों बिकी हुई हैं। अब समय आया है, जब कि संसार के प्रबुद्ध जनमत को अन्तर्राष्ट्रीय व्यवहार की बारीकियों को छोड़ कर अपनी आवाज स्पष्ट रूप से उठानी चाहिए। जैसा श्री शंकरराव देव ने दूसरे प्रसंग में सुझाया था, दुनिया के आम लोगों की सेवा के आधार पर लोकप्रतिनिधियों का एक विश्वसंघ इस काम के लिए जरूरी है।

बीते हुए जमाने के लोग

पिछले हफ्ते लन्दन में आणविक शस्त्रों के खिलाफ प्रदर्शन करने वालों ने जो सविनय कानून-भंग किया उसे, अपने आपको समझदार समझने वाले आज भले ही 'सनकी लोगों की सनक' कहें, पर सारी परिस्थिति को देखते हुए सम्भावना यह है कि कुछ वर्ष बाद यह घटना इतिहास के एक महत्त्वपूर्ण मोड़ के रूप में याद की जायगी। जो व्यक्ति अपने निजी हितों और स्वार्थों से ऊपर उठ कर कुछ दूर की देखते हैं, वे हमेशा तत्कालीन समाज के द्वारा 'सनकी' माने जाते हैं। ९० वर्ष बूढ़े दार्शनिक और प्रसिद्ध लेखक बरट्रेन्ड रसल, तथा खुद अंग्रेज पादरी होते हुए भी अफ्रीकन जातियों के हितों के प्रबल समर्थक माइकेल स्काट जैसे लोग अपनी दूरदर्शिता और मानव-प्रेम के कारण वह चीज स्पष्ट देख रहे हैं, जो अपने संकुचित हितों में डूबे 'समझदार' लोग नहीं देख पा रहे हैं। यही कारण था कि इंग्लैण्ड जैसे देश में जहाँ सैकड़ों वर्षों से कानून की प्रतिष्ठा नागरिक का स्वभाव बन गया है, करीब दो हजार व्यक्तियों ने ता० १७ सितम्बर को लन्दन शहर और स्काटलैंड के एक अमेरिकी नौसेना के अड्डे पर सरकार द्वारा लगायी गयी पाबन्दी का उल्लंघन करके आणविक शस्त्रों के खिलाफ अपना विरोध जाहिर किया। लन्दन शहर में करीब १५०० व्यक्ति गिरफ्तार किये गये और करीब ३५० स्काटलैण्ड में। हिन्दुस्तान में भी एक बार गांधी को और उनका अनुसरण करने वाले सत्याग्रहियों को 'सनकी' ही समझा जाता था। पर चूँकि समूचे राष्ट्र की आकांक्षा और जमाने की माँग गांधी के साथ थी, इसलिए दुनिया के 'समझदार' लोगों ने भी देखा कि आखिर गांधी ही सही साबित हुआ।

लार्ड बरट्रेन्ड रसल और उनके साथी आणविक अस्त्रों के खिलाफ जो आवाज उठा रहे हैं, वह भी उसी तरह आज के जमाने की माँग है और हमारा विश्वास है कि दुनिया का प्रबुद्ध जनमत ही 'समझदार' लोगों को यह समझा देगा कि वे बीते हुए जमाने में रह रहे हैं।

'अन्दरूनी मामला'

लन्दन के इस सविनय कानून-भंग की एक बड़ी दिलचस्प प्रतिक्रिया हुई है। लार्ड बरट्रेन्ड रसल की गिरफ्तारी पर बोलते हुए पण्डित जवाहरलाल नेहरू ने अपनी प्रेस-कान्फ्रेंस में लार्ड रसल के काम की प्रशंसा की और कहा कि उन्हें "लार्ड रसल से ईर्ष्या है" कि काश, वे खुद भी वैसा कर सकते। लन्दन के नगरनिगम के अध्यक्ष को नेहरूजी की भावपूर्ण प्रतिक्रिया बड़ी नागवार गुजरी और उसकी आलोचना करते हुए उन्होंने कहा कि एक राष्ट्र के प्रधानमंत्री को दूसरे राष्ट्र के 'अन्दरूनी मामलों' के बारे में इस प्रकार रायजनी नहीं करनी चाहिए। मालूम होता है कि लन्दन-निगम के अध्यक्ष महोदय अणु-अस्त्रों को घर का खिलौना समझते हैं, जिनसे अगर बच्चे खेलते रहें तो कोई हर्ज नहीं है, और जिनके बारे में दखल देने का 'बाहरी' लोगों को कोई अधिकार नहीं है। निगम के अध्यक्ष महोदय को यह मालूम ही होगा कि उनकी खुद की सरकार ने रूस द्वारा फिर से जारी किये गये अणु-परीक्षणों के खिलाफ विरोध जाहिर किया है। इन सज्जन को चाहिए कि वे अपनी सरकार को सलाह दें कि वह रूस के 'अन्दरूनी मामले' में दखल न करे। लन्दन निगम के अध्यक्ष महोदय की झुंझलाहट और जो कुछ भी जाहिर करती हो, उससे यह प्रकट हो जाता है कि वे किस बीते हुए युग के प्रतीक हैं।

खादी ग्राम-स्वराज्य के संदर्भ में......

सर्व सेवा संघ की खादी ग्राम-स्वराज्य समिति की बैठक ३१ जुलाई को पूसा में हुई थी, उसके कुछ प्रस्ताव हम पिछले अंकों में दे चुके हैं। यहाँ हम कुछ महत्त्वपूर्ण विषयों की चर्चाओं का सार दे रहे हैं और शेष अगले अंकों में देंगे।

कामन प्रोडक्शन प्रोग्राम और रिजर्वेशन आफ स्फियर्स

खादी-ग्रामोद्योगों के नियोजित उत्पादन के कार्यक्रम के संबंध में, जिसमें खादी तथा अन्य ग्रामोद्योगों को जैसे तेलघानी, धान-कुटाई तथा चर्मोद्योग सम्मिलित हैं, अन्य उद्योगों के साथ विकसित करने का मौका मिले तथा खादी-ग्रामोद्योगों के संबंध में सरकार कोई निश्चित नीति अपनावे और उसके लिये अपनी तरफ से मांग की जाय कि कुछ खास मुद्दे खादी-ग्रामोद्योगों के लिये सुरक्षित रखे जायँ, चर्चा हुई। विशेष रूप से अंबर सूत, खादी के विशेष प्रकार तथा धान-कुटाई का क्षेत्र इसमें शामिल हैं।

विस्तार से चर्चा होने के बाद सोचा गया कि धान-कुटाई उद्योग के संबंध में भारत सरकार ने कुछ नीति अपनायी है। प्रांतीय सरकारें भी उस ओर बढ़ें और प्रदेशों की परिस्थिति को देखते हुये प्रादेशिक स्तर पर इस पर जोर दिया जाय यह जरूरी है।

अम्बर का सूत और हैण्डलूम

फिर चर्चा हुई कि हैण्डलूम और खादी का परस्पर घनिष्ठ संबंध है। अंबर चरखे से जो सूत उत्पादन होगा उस सूत को अगर हैण्डलूम क्षेत्र में स्वीकार किया जाय तो कताई का कार्यक्रम पूरे वेग से देश में चलाया जा सकता है। अंबर से जो अतिरिक्त सूत उत्पादन हो उसके लिये ऐसी व्यवस्था हो कि सरकार वह सारा सूत हैण्डलूम के लिये ले ले। इससे आज जो हैण्डलूम को सूत देने के लिये जगह-जगह कताई मिलें खोलने का आयोजन हो रहा है वह रुकेगा और कताई योजना को लेकर गाँवों में बहुत हद तक बेरोजगारी को दूर किया जा सकेगा। अंबर कताई तथा हैण्डलूम का परस्पर घनिष्ठ संबंध होने से विकेंद्रित उद्योग की बड़ी शक्ति बनेगी।

कुछ लोगों का यह भी विचार रहा कि खादी किसी सिद्धांत और भावना पर आधारित है। इस प्रकार अगर हमने हैण्डलूम के साथ इसको जोड़ा तो जिस भावना के आधार पर हम खादी-कार्य चला रहे हैं वह भावना डिग जायगी और खादी-कार्य चलाना संभव नहीं होगा। इसलिये हमको अपने ही ढंग से खादी कार्य चलाना चाहिये।

सारी चर्चा के बाद में निश्चय हुआ कि कुछ विशेष क्षेत्रों में जहाँ पर अंबर कताई के आधार पर हैण्डलूम को सूत देने का आयोजन हो सकता है और इसकी संभावना है, वहाँ पर इसका प्रयोग किया जाय। वहाँ के अनुभव के आधार पर आगे की चीज निर्धारित हो सकेगी। खादी ग्रामोद्योग कमीशन की ओर से इस संबंध में विचार करने के लिये जो उप-समिति बनी है, उसकी सिफारिश आने पर आगे विचार किया जा सकेगा।

ग्राम-इकाइयों का संयोजन

ग्राम-इकाई के कार्यक्रम पर विस्तार से चर्चा हुई। ग्राम-इकाई की सफलता के लिये आवश्यक है कि प्रारंभ से ही इस संबंध में पूरी सावधानी बरती जाये, जिससे स्थानीय शक्ति को अधिक बल मिले और ग्राम-इकाई चलाने वाली संस्था भी अधिक से अधिक ग्राम-नियोजन के कार्य करने में सफल हो सके।

विचार-विनिमय के बाद निम्न मुद्दे निश्चित किये गये :—

१—जिन गाँवों में इकाई बन रही है, उन्हीं गाँवों को ग्राम-इकाई में काम करने वाले कार्यकर्ता चुनने की सुविधा हो, अथवा प्रारंभ में ग्राम-इकाई संगठित करने वाली संस्था उन कार्यकर्ताओं का चुनाव करे।

२—ग्राम इकाई किस गाँव में प्रारंभ की जाय इसका चुनाव हर प्रदेश में कमीशन के द्वारा जो चुनाव समितियाँ नियुक्त की गई हैं वे करेंगी। संभवतः ये ही समितियाँ आगे चल कर ग्राम-इकाइयों के सरलतापूर्वक चलने और उनकी प्रगति के निरीक्षण एवं मार्गदर्शन के कार्य करें तो अच्छा होगा।

३—ग्राम इकाई के लिये कार्यकर्ताओं के प्रशिक्षण की जिम्मेदारी खादी-ग्रामोद्योग ग्रामस्वराज्य समिति उठाये, इसके लिये एक उप-समिति बनायी जाय, जो इस संबंध में निश्चित योजना बनाये।

४—ग्राम-इकाई को चलाने के लिये संगठक और उपसंगठक की आवश्यकता होगी। यदि संभव हो तो ग्राम-इकाई प्रारंभ करने वाली संस्था के सहयोग से यह काम किया जाय। प्रारंभ में शायद इसमें कठिनाई हो, इसलिये अभी स्टेट बोर्ड की देख रेख में ये काम करें।

५—५००० की आबादी का आधार ग्राम-इकाई के लिये न रखा जाय, भिन्न-भिन्न प्रदेशों में जो ग्राम-पंचायतें बनी हैं उन्हें दृष्टि में रख कर पंचायत के क्षेत्र के स्तर पर ग्राम-इकाई संगठित करने का प्रयास हो।

पूजन हो या अनुसरण भी ?

वियोगी हरि

कहा जाता है कि हिन्दुस्तान का औसत आदमी अक्सर भावनाशील होता है। वह जिस किसीको बहुत श्रद्धाभक्ति से देखता है, उसे अलौकिक पुरुष मान लेता है, यद्यपि उसके श्रद्धेय ने स्वयं अपने जीवनकाल में कभी अलौकिकता का दावा नहीं किया था। उसने क्या-क्या शिक्षाएँ दी थीं, अलग-अलग अवसरों पर क्या-क्या कहा था और स्वयं कैसा आचरण किया था, उधर उस भावुक व्यक्ति का ध्यान शायद ही जाता है। वह तो उसकी अलौकिक ध्यान-मूर्ति की पूजा करने में ही सन्तोष मानता है। अपने महापुरुष को धरती पर से उठा कर वह कहीं ऐसी ऊँचाई पर बिठा देता है, जहाँ पर आसानी से पहुँचा नहीं जा सकता। वह उसका नाम जपता है, उसकी जय बोलता है और उसके जन्म-दिन एवं प्रयाण-दिन पर उत्सव मनाता है। पर उसके दिखाये रास्ते पर चलने को वह तैयार नहीं होता। पूछो तो कहता है—'महात्मा के रास्ते पर कोई महात्मा ही चल सकता है, मेरे-जैसा दुनिया का अल्पात्मा नहीं।' मानता है कि चूँकि वह अलौकिक पुरुष था, इसलिए सत्य सोचता था, सत्य बोलता था और सत्य ही किया करता था। उसका भक्त उसकी बराबरी कैसे कर सकता है ? करना चाहें भी, तब भी नहीं। जो पूजनीय है, वह व्यवहार में 'अनुसरणीय' नहीं हो सकता, ऐसा कुछ मत उस व्यक्ति ने बना लिया है।

मगर वह जिस महापुरुष को पूजनीय मानता है, उसके जीवन-वृत्तों में से ऐसे भी कुछ प्रसंगों को चुन-चुन कर प्रमाण के तौर पर कभी-कभी पेश कर देता है, जो उसकी अपनी कमजोरियों के साथ, उसकी राय में, किसी-न-किसी अंश में मेल खा सकते हैं। रामायण और महाभारत और दूसरे ग्रन्थों में से महापुरुषों के कतिपय प्रसंगों और वचनों के प्रमाण वह मौकों पर दिया करता है। महापुरुषों के वैसे उदाहरण दे-देकर अपने असत्य का और अपनी हिंसा-प्रतिहिंसा का औचित्य वह सिद्ध कर देता है। सिद्धान्त और व्यवहार में साम्य देखने या स्थापित करने का उसका स्वभाव शायद ही होता है।

पुराणों के महापुरुषों को फिलहाल हम एक तरफ रख देते हैं। उनके चरित्र और क्रियाओं पर अलौकिकता के आवरण इतने अधिक चढ़ा दिये गये हैं कि सही रूपों का दर्शन होना कठिन हो गया है, कठिन बना दिया गया है। विपरीत भी आचरण करते हुए वह भावनाशील व्यक्ति उन पुराण पुरुषों का भक्त और अनुयायी अपने आपको कहला सकता है।

उनके जीवन-चरित्रों और क्रियाओं के अर्थों को मनमाने ढंग से प्रस्तुत किया जाता है। मान लिया गया है कि वे महा-[illegible] 'लीला विहारी' थे। सो अलौकिक [illegible] रखने वाले उन अवतारों और मसीहों की बात को फिलहाल हम छोड़ देते हैं।

हमारी नजर के सामने से ही एक ऐसा आदमी अभी-अभी गुजरा है, जिसने अपनी सादा करनी व रहनी से महात्मा का दर्जा पा लिया था। वह कोई अवतार नहीं था, हालांकि उसे कभी-कभी वैसा भी मान लिया गया। उसने कोई अलौकिक लीला नहीं रची थी। आसमान से न उसने धरती पर कोई सन्देश उतारा था। अलौकिक पुरुष होने का उसने कभी दावा नहीं किया था। ऐसा ही वह एक आदमी था, जैसे हम और आप। कमजोरियाँ और अपूर्णताएँ उसमें भी थीं। मगर एक के बाद दूसरा प्रयोग सत्य के क्षेत्र में वह करता ही रहा। जीवन की प्रयोगशाला में उसने सहारा लिया था अहिंसा का, सारी दुनिया के वह निःस्वार्थ प्रेम का। वह खोज उसकी जीवन की आखिरी साँस तक जारी रही। सत्य को उसने देखा और उसे परखा। जो कुछ देखा, दूसरों को भी प्रेम से वही दिखाने का यत्न किया। सत्य को सचाई से ग्रहण किया। सत्य पर आग्रह रखा। असत्य के साथ हर घड़ी संघर्ष किया, समझौता कभी नहीं। अपने प्रयोगों और अनुभवों का आधार लेकर उसने बताया कि व्यक्ति और समाज को संसार में स्वतन्त्र और सुखी कैसे बनाया जा सकता है। सम्पदा और समृद्धि की उसने एक सीमा बाँध दी। मशीन के मुकाबिले मानव को स्वभावतः ऊँचा स्थान दिया। शारीरिक, सामाजिक और आध्यात्मिक स्वास्थ्य का उसने सही-सही दर्शन किया और दूसरों को भी कराया। जो शिक्षाएँ दीं उनको तर्क-वितर्कों के जाल में उलझाया नहीं, किसी वाद-विशेष में उनको बाँधा नहीं। बताने की जरूरत है क्या कि वह कौन था ?

उसने कोई नई बात नहीं कही। पहले जो कुछ युग-युग में, समय-समय पर, और स्थान स्थान पर मानव और समाज की भलाई के लिए कहा गया था, वही सब उसने दोहराया। मगर अपने निजी परीक्षणों और अनुभवों के पुख्ता आधार पर। भलाई यही कि अपने आपको ऊँचा न समझा जाये और दूसरों को नीचा न माना जाये। आपस का व्यवहार बर्ताव एक-दूसरे का सच्चा और प्रेम से भरा-पूरा हो। किसी के साथ अनीति न बरती जाय, न अनीति और अत्याचार के आगे झुका जाये। निर्भय रहा जाय, मगर विनम्र। रहनी सादा हो। विचार ऊँचे हों। दिल उदार हो। जिसने ये सारी अनमोल शिक्षाएँ दोहराईं, खोल-खोल कर बतलाईं, और खुद अपने आचरण में उतारीं वह था हमारे इसी युग का एक ऐसा मानव, जिसे दुनिया ने महात्मा कह कर पुकारा।

उसने अपनी ओर हजारों-लाखों को खींच लिया। कुछ तो समझ कर खिंचे; बहुतेरे बिना समझे ही। सकाम विचार बहुतों का रहा। थोड़ा सा निष्काम भी विचार हुआ। उसके जरिए जो कुछ मिलना था वह जब मिल गया, तब कसौटी की वह घड़ी आ पहुँची कि उसके प्रति जो श्रद्धाभक्ति दिखाई गई थी, वह किस हद तक खरी थी और कहाँ तक झूठी।

स्वाधीन होने के पूर्व जिन कई बातों को उस महात्मा के पीछे चलने वालों ने महज साधन माना था, उनका वह साध्य मानता था। यह चीज उनके गले उतरी नहीं। सत्ता ने दृष्टि को धुंधला भी कर दिया था। मतलब निकल चुका था। लग रहा था कि अब उस महात्मा की जरूरत उसके जीवित रूप में नहीं रही।

संयोग हुआ कि उसका शरीर छूट गया। अब वह एक पाषाण प्रतिमा बन गया, अनेक प्रतिमाओं में से एक, और उसकी पूजा जहाँ-तहाँ होने लगी। देश-विदेशों की बहुमूल्य मालाएँ चढ़ने लगीं। संस्थाओं, स्कूल-कालेजों, अस्पतालों, सड़कों और दूकानों तक के साथ उसका नाम जोड़ दिया गया। चौराहों पर मूर्तियाँ खड़ी की गईं। सुसज्जित भवनों और कल-कारखानों की दीवारों पर उसके चित्र लटकाये गये। जाहिरा तौर पर कोई कसर नहीं रखी गई, उसकी पूजा प्रतिष्ठा के प्रदर्शनों में। भावुक भक्त ने अपने महात्मा के लिए भी वही कुछ किया, जिसे करने का वह हमेशा से आदी रहा है।

फिर भी कुछ प्रश्न खड़े हैं, अपने उत्तर पाने के लिए। प्रश्न हैं :

महात्मा ने जो कुछ सिखाया था और जिन बातों को आचरण में उतारने के लिए बार बार कहा था, उसमें से कितना कुछ किया गया ?

उसका दिखाया रास्ता सचमुच में कितने कदम तय हुआ ?

दिशा कहीं उल्टी तो नहीं पकड़ ली गई ?

जवाब दे तो दिये गये, मगर प्रश्नों को सन्तोष नहीं हुआ। ऐसे प्रश्नों में अव्वल तो जवाब देने वालों की दिलचस्पी नहीं थी, दूसरे, वे अपनी भक्ति भावुकता को जाँच पड़ताल का विषय नहीं बनाना चाहते थे। उनका विश्वास तो असल में यह था :

महात्मा की शिक्षाओं को आचरण में उतारने के लिए महात्मा की कृपा का बल चाहिए। उसका क्षुद्र अनुयायी अपने खुद के बल पर कर ही क्या सकता है ! पुरुषार्थ तो सारा महात्मा का ही है, बाकी कोरा अभिमान है।

जिसने रास्ता दिखाया वही उस पर चलने का बल भी देगा। उसके भावुक अनुयायी के अपने खुद के जब पैर ही नहीं, तब कितने कदम वह चला यह प्रश्न ही नहीं उठता है।

इसी प्रकार क्या तो सीधी दिशा है और क्या उल्टी, इसका भी उसे ख्याल नहीं।

उसका प्रयोजन केवल भक्ति-भावना में आकण्ठ डूब जाने से है। वह क्यों ऐसे ऐसे प्रश्नों के उत्तर दे ?

मगर प्रश्नों के कुछ न-कुछ स्पष्ट उत्तर तो चाहिए ही थे। इसलिए, उत्तर दे दिये गये। इस प्रकार :

वह भावुक अनुयायी अपने-आपको दुर्बल मानता है, इसलिए असत्य के साथ झगड़ा मोल लेना नहीं चाहता। बल्कि उसके साथ रोजमर्रा समझौता करता हुआ सत्य तक पहुँचने और उसका दर्शन करने की उसकी विनम्र साधना चल रही है।

इसी प्रकार हिंसा को बगैर चोट पहुँचाये अहिंसा के चरणों तक पहुँचने की हिम्मत वह रखता है। हिंसा तो कभी की बरदाश्त हो चुकी है। कौन नहीं जानता कि हर साल महात्मा की समाधि के सामने हिंसा की सशस्त्र शक्ति श्रद्धापूर्वक सलामी देती है।

खादी को महात्मा बहुत प्यार करता था। कैसे हो सकता है कि उसका भावुक भक्त खादी को श्रद्धा की दृष्टि से न देखे। पर इस पवित्र वस्त्र को वह महात्मा के जन्म दिन और प्रयाण दिन पर ही धारण

विनोबा का वाङ्मय : ४

नारायण देसाई

बहुत-से लोग मानते हैं कि विनोबा भूदान-यज्ञ के कारण बड़े बने हैं। भूदान-यज्ञ के कारण उन्हें असाधारण प्रसिद्धि मिली है, यह बात सच है; परन्तु उसके कारण वे बड़े नहीं हुए हैं। भूदान उनकी आजीवन तपस्या का ही फल है। इस तपस्या के बिना उन्हें भूदान सूझा भी न होता।

विनोबा के व्यक्तित्व का विकास जिन मूल तत्त्वों के आधार से हुआ, उन मूल तत्त्वों के संबंध में विनोबा के लिखे हुए करीब १५ पुस्तकों का हमने अभी तक विचार किया है। अब हम ऐसी पुस्तकों का जिक्र करेंगे, जिनमें विनोबा के आज के व्यक्तित्व का रूप में प्रकट हुआ है। उनका आधुनिक व्यक्तित्व समझने के लिए हमें उनके विचारवृक्ष की अनेक भिन्न-भिन्न शाखा-प्रशाखाओं को देखना पड़ेगा। इस अंक में हम उन पुस्तकों का विचार करेंगे, जिनकी मार्फत विनोबा का राजनीतिक व्यक्तित्व अभिव्यक्त होता है।

पहला प्रश्न तो यही खड़ा होता है कि विनोबा का कोई राजनैतिक व्यक्तित्व भी है क्या? जिस व्यक्ति के बारे में अधिकांश आलोचक भी इस बात से सहमत हो जायेंगे कि यह मनुष्य कम-से-कम राजनीति में तो पड़ने वाला नहीं है, ऐसे मनुष्य का भला राजनीतिक व्यक्तित्व कैसा?

विनोबा अक्सर कहते हैं कि "खेल में भाग लेनेवाले की अपेक्षा उस खेल में 'पंच' का काम करने वाला व्यक्ति खेल को ज्यादा अच्छी तरह समझ सकता है।" राजनीति के विषय में विनोबा की भी यही बात है। गांधीजी जब कांग्रेस के कर्णधार थे, उस समय भी विनोबा कांग्रेस के चार आने के सदस्य भी नहीं थे। इस प्रकार विनोबा कभी प्रत्यक्ष राजनीति में नहीं पड़े, और इसीलिए राजनीति से अलग रह कर वे उसके विषय में तटस्थ चिन्तन कर सके हैं।

राजनीति के विषय में विनोबा के जो विचार प्रकट हुए हैं, वे हिन्दी, गुजराती और मराठी भाषाओं में भिन्न-भिन्न संग्रहों के रूप में भिन्न-भिन्न शीर्षक से प्रसिद्ध हुए हैं। राजनीति के विषय में विनोबा की मूल पुस्तिका कोई हो, तो वह 'स्वराज्य शास्त्र' है। भारत के अन्य बहुत से महत्त्वपूर्ण ग्रन्थों की तरह यह पुस्तिका भी जेल में लिखी गयी थी। 'राज्य' और 'स्वराज्य' का भेद वे उसकी छोटी-सी प्रस्तावना में समझाते हैं, जो राजनीति के विषय में विनोबा की मूल दृष्टि पर प्रकाश डालता है:

> "राज्य एक भिन्न चीज है और स्वराज्य भिन्न। राज्य हिंसा से प्राप्त किया जा सकता है, स्वराज्य अहिंसा के बिना प्राप्त करना अशक्य है। इसलिए विचारवान लोग राज्य की इच्छा नहीं करते, परन्तु 'चलो हम सब मिल कर स्वराज्य के लिए तन-तोड़ मेहनत करें', ऐसा कह कर रात-दिन उसके लिए तरसते हैं। 'न त्वहम् कामये राज्यम्' और 'यतेमहि स्वराज्ये'—ये उनके (विचारवान लोगों के) निषेधक और विधायक राजनैतिक नारे हैं।"

"स्वराज्य शास्त्र" की शैली गांधीजी के "हिन्द स्वराज्य" की तरह प्रश्नोत्तर शैली है। फर्क इतना ही है कि 'हिन्द स्वराज्य' में तो गांधीजी एक क्रांतिकारी की तरह किसी भी प्रश्न का सहारा लेकर अपने विचारों को किसी शास्त्र की परवाह किये बिना धड़ल्ले के साथ पेश करते हैं, जब कि विनोबा एक शास्त्री की तरह हर प्रश्न की शास्त्रीय छानबीन करके उसका पृथक्करण करते हैं। इस तरह की शैली अक्सर नये पढ़ने वाले को क्लिष्ट लगती है, परन्तु इसमें एक एक शब्द के पीछे गहरे विचार हैं। शास्त्रीयता की दीवार को हम लांघ जायें तो 'स्वराज्य शास्त्र' में हमें विनोबा के राजनीति विषयक बहुत-से विचारों के मूल दिखायी दिये जायेंगे। उदाहरण के लिए, 'अब दूसरे सब राष्ट्र हिंसावादी हों तो क्या कोई एक ही राष्ट्र अहिंसावादी रह सकता है?'—इस प्रश्न का जवाब अनेक भावी क्रांतिकारियों के लिए भद्दा सा पाथेय बन सके ऐसा है। 'स्वराज्य शास्त्र' पुस्तक की विशेषता यह है कि उसमें विश्व के राजनैतिक प्रश्नों की मूलगामी समालोचना अत्यन्त संक्षेप में, पर सांगोपांग रीति से हुई है। इसके अलावा, विश्व की भावी राज्य-व्यवस्था कैसी होनी चाहिए, इस विषय में मार्मिक और अभी तक अमल में न लायी गयी हों, फिर भी जो अव्यवहार्य नहीं गिनी जायेंगी, ऐसी निश्चित सूचनाएँ करने में आयी हैं। विनोबा कहते हैं: "किसी एक पद्धति का आग्रह न रखते हुए समय-समय पर आवश्यकतानुसार पद्धति में परिवर्तन करना यह सर्वोत्तम पद्धति माननी चाहिए। पद्धति कोई ऐसा निरपवाद तत्व नहीं है कि जिसके आधार पर हम अपना जीवन खड़ा कर सकें। सामान्य तौर पर एक पद्धति से पीड़ित मनुष्य दूसरी पद्धति खोजने की कोशिश करता है, परन्तु पद्धति के जिन विशेष गुणों या दोषों के कारण लाभ अथवा हानि होती है, उस तरफ उसका ध्यान नहीं जाता। सबका कारोबार सब मिल कर चलावें, यह सर्वमान्य पद्धति है, पर इसका स्थूल स्वरूप उस-उस समाज के विकास की अवस्था पर आधार रखेगा।" इतनी आगाही दे देने के बाद विनोबा ने निर्दोष सर्वायतन राज्य-पद्धति के बारे में जो चार सूचनाएँ की हैं, वे सर्वदेशीय हैं। वे कहते हैं कि सभी पद्धतियों में कम-से-कम नीचे की चार चीजें तो अवश्य होनी चाहिए:

"(१) समर्थ व्यक्तियों की सामर्थ्य जनसेवा के लिए अर्पित किया हुआ होना चाहिए।

(२) जनता सम्पूर्ण स्वावलम्बी और परस्पर सहयोगी होनी चाहिए।

(३) हमेशा के लिये सहयोग [और जरूरत] तरह प्रासंगिक असहयोग [यानी] प्रतिकार का अभिज्ञान अहिंसा से [होनी चाहिए]। होनी चाहिए।

(४) सब लोगों के प्रामाणिक परिश्रम की कीमत नैतिक तथा आर्थिक समान होनी चाहिए।"

'स्वराज्य शास्त्र' वास्तव में ऐसी पुस्तक है, जो राज्यशास्त्र या सर्वोदय विचारों का अध्ययन करने वाले सब लोगों के लिए अनिवार्य मानी जायगी।

इसीके साथ-साथ विनोबा के एक महत्त्वपूर्ण लेख की तरफ ध्यान खींचना चाहता हूँ। वह लेख है सर्वोदय और साम्यवाद की तुलना करते हुए श्री किशोरलाल मशरूवाला द्वारा लिखी गई पुस्तक की विनोबा द्वारा लिखी हुई भूमिका। यह लेख मूल मराठी में उसके अंग्रेजी, गुजराती या हिन्दी अनुवादों की अपेक्षा बहुत विशिष्ट है, कारण अनुवादों में मराठी भाषा का स्वाभाविक कटाक्ष बिल्कुल उस रूप में आ नहीं सका है।

इसी विषय पर भूदान-यात्रा के दरमियान विनोबा को अनेक बार बोलने का मौका आया है और नित्य चिन्तनशील विनोबा को अगर कभी नया कुछ कहने का न हो, तब भी उसे पेश करने की नई दलील तो उन्हें सूझती ही है। हिन्दी में इस विषय पर 'सर्वोदय और साम्यवाद' नाम की स्वतंत्र पुस्तिका प्रसिद्ध हुई है। गुजराती में इसमें के बहुत-से विचार 'क्रांतिनूं मार्ग', 'रचनात्मक राजनीति' और 'कांचीनी सन्निधिमां' नाम की पुस्तकों में सुन्दर रूप से आ गये हैं।

गांधी-विनोबा द्वारा बताया हुआ राज्यशास्त्र (विनोबा के अपने शब्दों में कहें तो 'स्वराज्य शास्त्र' या 'लोकनीति') यह कोई वाद या प्रतिवाद नहीं है, पर जीवन के और दूसरे अंगों की तरह राजनीति में भी अहिंसा का पावन प्रकाश डालने वाला एक जीवन-विचार ही है। इसकी स्पष्टता साम्यवादियों के साथ की विनोबा की चर्चाएँ देखने से हुए बिना नहीं रहती।

करता है। खादी नित्य धारण करने की वस्तु नहीं है। चरखा भी इन्हीं दो पर्वों पर उसका पुण्यस्मरण करता हुआ वह चलाता है। वह कोई सिलाई-मशीन तो है नहीं कि रोजमर्रा उससे काम लिया जाय।

महात्मा ने बुनियादी तालीम पर बहुत बल दिया था। उसके अन्दर क्रान्ति का दर्शन पाया था। बुनियादी तालीम पर महात्मा के भावुक अनुयायी की भी कम श्रद्धा नहीं है। मगर बालक उसके 'पब्लिक स्कूल' में पढ़ रहे हैं। चूँकि वह अहिंसा पर विश्वास रखता है, इसलिए स्वतन्त्रचेता संतान पर नई तालीम के विचारों को वह कैसे लादे, क्यों खाँ-म-खाँ हिंसा का भागी बने? पिछड़े वर्गों को वह, महात्मा के आदेश के अनुसार, अपने ही समान समझता है। पर इसके साथ ही, भक्ति-भावना से यह भी मानता है कि उसके और पिछड़े वर्गों के बीच में कुछ द्वैत तो रहना ही चाहिए। भेद नहीं रहेगा, तो सेवा फिर किसकी करेगा?

क्या इन स्पष्ट उत्तरों से भी प्रश्नों को संतोष नहीं होगा?

सिर पर मैला ढोने की प्रथा तत्काल बंद करें

स्वराष्ट्र मंत्री का राज्यों के नाम पत्र

केन्द्र सरकार ने राज्यों से फिर कहा है कि वे अपने यहाँ सिर पर मैला ढोने की प्रथा तत्काल बन्द कर दें। स्वराष्ट्र-मंत्री श्री लालबहादुर शास्त्री ने राज्य सरकारों के नाम एक पत्र भी लिखा है।

उक्त पत्र में कहा गया है कि नगरपालिकाओं द्वारा नियुक्त और खानगी, दोनों ही प्रकार के मेहतरों को मैला-गाड़ियाँ दी जायें। अनुरोध करने के बाद भी यह बुराई न मिटे तो नगरपालिकाएँ नियम बना कर गाड़ियों का उपयोग अनिवार्य कर दें।

सफाई-कामगारों की कार्य-दशाओं में सुधार के लिए अनुदान देने हेतु केन्द्र सरकार अधिक सुविधा देने जा रही है। मैला-गाड़ियाँ, गमबूट तथा अन्य साधन खरीदने के लिए १ लाख से कम आबादी की नगरपालिकाओं को ७५ प्रतिशत अनुदान दिया जायगा। १ लाख तक की नगरपालिकाओं को ५० प्रतिशत। केन्द्र सरकार पहले भी राज्य-सरकारों को लिख चुकी है कि वे सफाई के सुधरे और वैज्ञानिक औजार लागू करने के लिए नगरपालिकाओं को अधिकाधिक मदद दें।

शिक्षण-संस्थाओं में चुनाव सर्वसम्मत हो

• मणीन्द्रकुमार

देश में चुनावों की प्रथा ने जो विष बोया है, उसकी जड़ें कितनी गहरी गयी हैं, उसका सहज अन्दाज नहीं हो सकता है। इस चुनाव के तरीके ने छोटे-छोटे बच्चों और विद्यार्थियों तक को भी नहीं छोड़ा है। मत प्राप्ति के संघर्ष में राजनीतिक दल चुनावों में बच्चों और विद्यार्थियों का उपयोग करें यह कोई बहुत ठीक बात नहीं है, ऐसा राजनीतिक दल भी मानते हैं। किन्तु समस्या की जड़ और भी गहरे में है। स्कूल-कॉलेज और विश्वविद्यालयों में छात्र-परिषद एवं विभिन्न सांस्कृतिक परिषदों के जो चुनाव होते हैं, उनमें कभी-कभी तो आम चुनावों से भी बदतर हालत हो जाती है। अक्सर यह हर साल होता रहता है। शिक्षण संस्थाओं में चुनाव-पद्धति को दाखिल करने का एक उद्देश यह भी है कि विद्यार्थी समुदाय, जिनके हाथ में कुछ देश का बागडोर आनेवाली है अपनी व्यवस्था आप करना सीखे। अर्थात् लोकतंत्रीय मूल्यों को अपने शिक्षण काल में ग्रहण करे, किन्तु जो स्थिति आज स्कूल-कॉलेजों के चुनावों के दौरान होती है, उसमें विद्यार्थी-समाज लोकतंत्र के मूल्यों को प्रस्थापित करने के बजाय विस्थापित ही ज्यादा करता है।

जैसा कि अन्य चुनावों में होता है, शिक्षण-संस्थाओं के चुनावों में अच्छे विद्यार्थी इनसे दूर ही रहना पसन्द करते हैं। नतीजा यह होता है कि तिकड़मी और धूर्त अथवा जिनको माता पिता से खूब पैसा मिलता है, वे चुनावों में जीत जाते हैं। चुनाव के दौरान मत याचना के लिए विद्यार्थी-समूह के समूह को होटलों में ले जाया जाता है या सिनेमा दिखाने का प्रलोभन दिया जाता है। कितने ही उम्मीदवार एक पद के लिए खड़े होते हैं। नतीजा यह होता है कि इस काल में शिक्षण संस्थाओं का वातावरण बहुत अधिक तनावपूर्ण हो जाता है। कभी-कभी तो मारपीट और संघर्ष की नौबत आ जाती है और पुलिस को भी बुलाना पड़ता है। चुनाव के बाद हारने वाले उम्मीदवार सदा यह कोशिश करते रहते हैं कि जीतने वाले उम्मीदवार कोई कार्यक्रम रखें तो उसे असफल बनायें।

ये सब बातें शिक्षा के पावन क्षेत्र को दूषित करती हैं। विद्यार्थी और शिक्षकों के सम्बन्ध पर भी इसका असर पड़ता है और कभी-कभी तो विद्यार्थी और शिक्षकों में संघर्ष की स्थिति पैदा हो जाती है। गुरु शिष्य का रिश्ता टूट ही जाता है। छात्र-यूनियनों के कारण क्या आये दिन शिक्षण-संस्थाओं में पुलिस नहीं बुलाई जाती? क्या अमुक अवधि तक के लिए विद्यालय बन्द नहीं किये जाते हैं? शिक्षा-क्षेत्र में अभी अभी उपकुलपति के स्थान पर अवकाशप्राप्त जजों की नियुक्ति क्या इसलिए नहीं की जाती है कि वे शक्ति से अनुशासन लाद दें? यहाँ तो शिक्षा का महत्त्व ही घट जाता है और दंड की प्रतिष्ठा बढ़ जाती है।

वैसे आज देश की शिक्षा-पद्धति ही दूषित है, किन्तु हम यहाँ इतना ही निवेदन शिक्षा जगत्, सरकार और राज्यों के शिक्षामंत्रालय एवं देश के सुबुद्ध नागरिकों से करना चाहते हैं कि कम-से-कम शिक्षण के क्षेत्र को चुनावों की इस दूषित प्रणाली से मुक्त कर दें।

सुझाव

चूँकि कॉलेज अथवा स्कूल छोटा क्षेत्र है, यहाँ पर विभिन्न सर्मितियों के लिए चुनाव सर्वसम्मति से हो सकते हैं। इससे विद्यार्थियों में आपस में न केवल सद्भावना बढ़ेगी, अपितु आगे चल कर वे राष्ट्र के अच्छे जागरूक नागरिक बनने की तालीम भी पायेंगे। अगर सर्वसम्मति से चुनाव नहीं होता है तो उस शिक्षण संस्था के सब अध्यापक सर्वसम्मति से योग्य छात्रों को उस उस पद के लिए नियुक्त कर दें।

साहित्य-प्रचार-अभियान के सिलसिले में कुछ सुझाव

• नानू मजूमदार

[गुजरात के एक निष्ठावान कार्यकर्ता श्री नानू मजूमदार साहित्य प्रचार के काम में लगे हुए हैं। श्री नारायण देसाई को अभी हाल ही में लिखे एक पत्र में इन्होंने अपने काम की रिपोर्ट के साथ साहित्य-सर्जन और प्रचार के सम्बन्ध में अपने अनुभवों का सार तथा उसके आधार पर कुछ सुझाव भी दिये हैं, जो इस विषय के चिंतन में दूसरों को भी मददगार होंगे। —सं०]

कार्यकर्ताओं से

(१) प्रान्तीय सरकारी शिक्षा विभाग की ओर से हर जिले के ग्राम पुस्तकालयों को प्रति वर्ष कुछ नकद रकम की सहायता दी जाती है। यह रकम जिले के शिक्षण अधिकारी (एज्युकेशन इन्स्पेक्टर) के मार्फत दी जाती है। कुछ वर्ष पहले गुजरात में यह सहायता नकद के बदले पुस्तकों के रूप में ही दी जाती थी। इस वर्ष मैंने फिर से प्रयत्न किया है कि यह मदद पुस्तकों के रूप में दी जाय। मैं शिक्षा मंत्री महोदय से मिला हूँ और उनसे पत्र व्यवहार भी शुरू किया है। अगर यह सफल होता है तो हर जिले में हमारी पुस्तकों का 'सेट' पहुँच सकता है। मैं मानता हूँ कि हर प्रान्त में इसी प्रकार की कुछ व्यवस्था होगी। अतः अगर केंद्रीय शिक्षा-मंत्री की ओर से हर राज्य के शिक्षा-मंत्री को यह सुझाया जाय कि कम-से-कम एक वर्ष ग्राम पुस्तकालयों को दी जाने वाली मदद सर्वोदय-साहित्य के रूप में दी जाय तो सर्वोदय-साहित्य का प्रचार काफी हो सकता है।

(२) जिले जिले में स्कूलों के संगठन के स्कूल पुस्तकालयों के लिए हर वर्ष कुछ किताबें खरीदते ही हैं। हम लोगों ने पिछले दो वर्षों में करीब चालीस हजार रुपये की पुस्तकें इन पुस्तकालयों में पहुँचाई। इस काम के लिए प्रान्तवार एक व्यक्ति हर जगह घूम कर आवश्यक कार्रवाई करें तो अच्छा परिणाम आ सकता है।

(३) हरिजन सेवक संघ, गांधी स्मारक निधि आदि अखिल भारतीय संस्थाएँ भी अपने तत्वावधान में चलने वाले केन्द्रों और संस्थाओं के लिए पुस्तकों के सेट खरीद सकती हैं। गुजरात में पिछले वर्ष २८ केन्द्रों में हमने साहित्य पहुँचाया।

(४) ता० ११ सितम्बर से २ अक्तूबर तक के साहित्य पर्व के सिलसिले में ऐसे रचनात्मक कार्यकर्ताओं को, जैसे हरिजन सेवक संघ के, तथा खादी-ग्रामोद्योग संस्थाओं के कार्यकर्ता और लोकसेवक शान्ति-सैनिक आदि—यह अपील करनी चाहिए कि वे अधिक नहीं, तो अपने क्षेत्र में २५ पुस्तकालयों के व्यक्तियों से सम्पर्क साधें, और अधिक नहीं तो कम-से-कम दस रुपये का साहित्य, जिसमें प्रान्तीय भाषा के मुखपत्र का चन्दा भी शामिल हो, बेचें। हर जिले में जितने तालुके या तहसील हैं, उतने कार्यकर्ता होने चाहिए। अर्थात् एक कार्यकर्ता एक तालुका या तहसील के क्षेत्र में ही सघन रूप से सम्पर्क और साहित्य बिक्री का यह काम करे।

(५) हर बड़ी जगह कुछ पुस्तक-विक्रेता ऐसे होते हैं, जो केवल विचार-प्रधान-साहित्य ही बेचते हैं। ऐसे पुस्तक भण्डारों में अपना साहित्य बिक्री के लिए रखा जाय, इसकी खास कोशिश करनी चाहिए। ऐसी दुकानों पर अमुक वर्ग के लोग ही जाते हैं, जिन्हें विचार प्रधान साहित्य पसन्द होता है। वे अक्सर नियमित ग्राहक भी हो जाते हैं।

(६) ऐसे स्थानों पर, जहाँ किसी भी भावना को लेकर लोगों का आवागमन बराबर रहता है, जैसे साबरमती आश्रम में, वहाँ पर साहित्य की बिक्री का साधन होना चाहिए।

महाराष्ट्र में....

• गोविन्दराव शिंदे

इस साल महाराष्ट्र में विनोबा जयंती के अवसर पर अच्छे कार्यक्रम होंगे। सर्व-समितियों ने हाल के 'विनोबा जयंती' के कार्यक्रम में कुछ नवीनता लायी है। लगभग काफी मराठी अखबारों में विनोबा और भूदान आन्दोलन के बारे में लेख आयेंगे, ऐसी व्यवस्था की गयी है। विनोबा जयंती के अवसर पर दो छोटे ग्रामोद्योग-केंद्र पूना की बाढ़ के कारण विस्थापित हुए लोगों के लिये शुरू होने वाले हैं। एक अंबर चरखे का और दूसरा हाथ-कागज का। मजदूरी घंटे में दो आना रहेगी। दियासलाई तैयार करना और पापड़ बनाने का उद्योग भी जल्दी शुरू हो जायेगा।

हमारा रत्नागिरि जिला इस वक्त काफी संकट में फँसा हुआ है। शुरुआत में जबरदस्त तूफान ने हाहाकार मचाया और बाद में बाढ़ का संकट आया। इस बक्त संकट का जो जबरदस्त धक्का बैठा है, उसमें से मार्ग निकालना काफी मुश्किल है। यहाँ के बाढ़ग्रस्तों के लिये चंदा इकट्ठा करने का काम चल ही रहा था कि पूना में जल-प्रलय हुआ। इस परिस्थिति के कारण सबके सहकार का प्रवाह पूना की ओर खींचा गया। हमारे प्रयत्न भी चल रहे हैं। रत्नागिरि जिले में चालीस लोकसेवक हैं। उनमें से पूरा समय देने वाले छब्बीस हैं। उनमें से चार के घरों में तूफान से बड़ी क्षति पहुँची। फिर भी ये अन्य बाढ़ग्रस्तों की मदद करने के लिए घूम रहे थे।

अक्तूबर के पहले सप्ताह में नागपुर में एक सामूहिक पदयात्रा होने वाली है। पंचायत परिषद की स्थापना करने का प्रयत्न हो रहा है। जिलेवार सब राजनीतिक पक्षों के नेता आचार संहिता के लिये इकट्ठे होने वाले हैं। साहित्य बिक्री, ग्राहक बनाना, सूतदान आदि का कार्यक्रम बनाया गया है।

पू० अण्णासाहब की पदयात्रा बड़ी उत्साह से चल रही है। अहमदनगर जिला पूरा करके वे यवतमाल में आयेंगे।
[१० सितम्बर '६१ को लिखे एक पत्र से]

बिहार की चिट्ठी

श्री जयप्रकाश नारायणजी के निर्देशानुसार १ जुलाई से बिहार के मुजफ्फरपुर, दरभंगा, सहर्षा, पूर्णियाँ, संथाल परगना, मुंगेर एवं गया जिले में बीघा-कट्ठा अभियान जोरों से चलाया गया। फलस्वरूप मुजफ्फरपुर जिले में ६०० कट्ठा, दरभंगा में ४९३८ कट्ठा, गया में ४६५ कट्ठा, संथाल परगना में १२,७५५ कट्ठा, सहर्षा में २५०० कट्ठा, पूर्णियाँ में ८,७३७ कट्ठा एवं मुंगेर में २२७३ कट्ठा जमीन भूदान में मिली, जिसे दाता ने अपनी इच्छानुसार जोतने वाले भूमिहीनों में वितरित कर दी। ११ अगस्त, १९६१ को अम्बर विद्यालय, लक्खीसराय में बिहार सर्वोदय मंडल की कार्यसमिति की बैठक अन्य कार्यक्रमों के साथ-साथ मुख्यतः बीघा-कट्ठा अभियान पर विचार-विमर्श करने के लिए हुई। अभी तक किये गये कार्यों के सिंहावलोकन करने के बाद बैठक ने कार्यक्षेत्र वाले निर्णित सात जिलों के अलावा सारण एवं भागलपुर में भी बीघा-कट्ठा अभियान चलाने का निश्चय किया।

इस प्रकार कुल ९ जिलों में तत्परता से ३ दिसम्बर तक बीघा-कट्ठा अभियान "एक ही साधे सब सधे" सूत्र पर पूर्ण विश्वास रख कर करने का निश्चय किया गया। बैठक ने इन ९ जिलों के अतिरिक्त अन्य जिला के कार्यकर्ताओं को भी निर्णित कार्यक्षेत्र वाले जिलों में शामिल होने के लिए निर्देश दिया। साथ-साथ यह भी निवेदन किया कि यदि वे अपने जिले में बीघा-कट्ठा अभियान चलाना चाहें, तो चला सकते हैं। निवेदन के अनुसार मोतीहारी एवं पटना जिले के कार्यकर्ताओं ने भी अपने-अपने जिले में कार्यारंभ कर दिया है।

प्रसिद्ध सर्वोदयी नेता श्री शंकरराव देवजी ने भी पूर्णियाँ जिला के टूमरा बलिया आदि गाँवों का दौरा किया और आम सभा में उपस्थित लोगों को सर्वोदय-कार्यक्रम एवं बीघा-कट्ठा अभियान के महत्त्व पर प्रकाश डाला। सर्वश्री वैद्यनाथ प्रसाद चौधरी, श्री श्यामसुन्दर प्रसाद, रामनारायण सिंह, रामदेव ठाकुर, मोतीलाल केजरीवाल, त्रिपुरारि शरण, श्यामबहादुर सिंह, विद्यासागरजी, रघुनाथ शर्मा एवं अन्य नेताओं ने बीघा-कट्ठा अभियान की सफलता के लिए सक्रिय सहयोग प्रदान किया है। वातावरण के अनुभव से लगता है कि भूदान-आन्दोलन के प्रति एक बार फिर जनता में जागृति पैदा हुई है। पिछली बार जब विनोबाजी ने सवा दो वर्षों तक बिहार के गाँवों में पैदल चल कर अलख जगाया। उसके बावजूद लोग भूदान-आन्दोलन को भूल-सा रहे थे। कुछ दाताओं ने तो अपनी जमीन इसलिए भी दी थी कि अन्य लोगों को भी जमीन देनी ही पड़ेगी। ऐसे दाता जमीन देकर पछता रहे थे। जिन्होंने जमीन नहीं दी, उनको जमीन अब जाने वाली नहीं है ऐसा उनका विश्वास हो गया था। बीघा-कट्ठा अभियान ने ऐसे दाताओं के मन में भूदान-आन्दोलन के प्रति विश्वास पैदा किया है। साथ ही उसने भूमिहीनों के मन में भी आशा जगायी है। बीघा-कट्ठा अभियान को सफल बनाने के लिए बिहार सर्वोदय-मंडल द्वारा सचालित बिहार प्रांतीय पदयात्रा टोली पूरी शक्ति लगा रही है। धनबाद एवं संथाल परगना जिला के गाँवों की यात्रा कर टोली ने संतोषप्रद जमीन इकट्ठी की है। हाल ही में सर्व सेवा संघ ने भी बिहार से बाहर के कार्यकर्ताओं को इस अभियान की सफलता के निमित्त सहयोग प्रदान करने के लिए आह्वान किया है। सर्व सेवा संघ के आह्वान पर आये हुए महाराष्ट्र से तीन एवं उड़ीसा से एक कार्यकर्ता भागलपुर जिला में काम कर रहे हैं। अखिल भारतीय शान्ति-सेना मंडल का कार्यालय भी श्रीमती आशादेवी आर्यनायकम् के साथ सितम्बर के द्वितीय सप्ताह में पटना आ रहा है। आगामी ३ दिसम्बर तक बिहार में बीघा-कट्ठा अभियान में शान्ति सैनिकों का सहयोग प्राप्त होगा। अभियान में सहयोग प्रदान करने के लिए सारे देश के लगभग एक हजार लोकसेवकों एवं शान्ति-सैनिकों के आने की संभावना है। बीघा-कट्ठा अभियान के अतिरिक्त मुंगेर जिला में भू-वितरण का कार्य भी चल रहा है। वितरण टोली मुंगेर जिला के गोगरी, चौथम, परबत्ता, बख्तियारपुर, खगड़िया, बेगूसराय, बलरी, तेघड़ा एवं बछवाड़ा, नौ अंचलों में वितरण का कार्य कर चुकी है। इन अंचलों में ५०५ गाँव में २६९२ दाताओं द्वारा ३९८१ एकड़ २४½ डिसमिल जमीन भूदान में प्राप्त हुई थी, जिनमें टोली ने ४२६ गाँवों के २४०७ दाताओं की ३७१५ एकड़ ७६½ डिसमिल जमीन की जाँच की। वितरण-टोली के पहले इन अंचलों में ४०७ एकड़ ७१ डिसमिल जमीन ५२६ आदाताओं में बँट चुकी थी। अतः टोली ने बाकी जमीन में से २९२ एकड़ २४ डिसमिल जमीन ३२२ भूमिहीनों में वितरित की। इसके अतिरिक्त जाँच की हुई जमीन में से १०२ एकड़ ६७½ डिसमिल जमीन वितरण योग्य है, जो शीघ्र ही आदाताओं को मिलने वाली है। उपरोक्त अंचल का काम समाप्त कर वितरण टोली मुंगेर जिला के मुफस्सिल, बरियारपुर, शाखा एवं जमुई अंचल में काम कर रही है और अभी तक १८३ गाँवों के १९६२ भूमिवानों द्वारा २४६१ एकड़ ७८ डिसमिल दी गयी भूमि की जाँच की तथा प्राप्त जमीन में से ३२३ एकड़ ९३ डिसमिल जमीन २४५ जोतने वाले भूमिहीनों को दी है। इस प्रकार उपरोक्त १४ अंचलों में अभी तक ६८८ गाँवों के ४६५४ भूमिवानों द्वारा ६४४७ एकड़ २½ डिसमिल दी गयी जमीन में से ६१६ एकड़ १७ डिसमिल जमीन ५६७ आदाताओं को दी गयी है। वितरण टोली का कार्य सतत चल रहा है।

चुनाव के अवसर पर राजनैतिक दलों में आपस के संघर्ष के कारण जो देश में तनाव और दलबन्दी का वातावरण पैदा होता है, उसे दूर करने के लिए बिहार सर्वोदय मंडल के संयोजक श्री रामनारायण सिंह एवं सर्वोदयी नेता श्री वैद्यनाथ प्रसाद चौधरी ने बिहार के सभी राजनैतिक दलों के नेताओं से मिल कर सर्वमान्य आचार-संहिता पर अमल करने के लिए निवेदन किया। सर्वोदय मंडल के इस कार्यक्रम पर प्रायः सभी राजनीतिक दल के नेताओं ने खुशी जाहिर की और सर्वमान्य आचार-संहिता पर अमल करने का आश्वासन दिया। आगामी अक्तूबर महीने के प्रथम सप्ताह में सभी राजनीतिक दलों के विधायकों एवं पदाधिकारियों का सम्मेलन पटना में करने का निश्चय किया गया है।

बिहार सर्वोदय मंडल के नशाबन्दी उपसमिति के निर्देशानुसार इस वर्ष ९ अगस्त नशाबन्दी दिवस के रूप में पूरे बिहार में मनाया गया। पटना में भी उस दिन बिहार सरकार के भूतपूर्व आबकारी मंत्री श्री जगलाल चौधरी एम० एल० ए० एवं भूतपूर्व पंचायत उपमंत्री श्री हरिनारायण चौधरी एम० एल० ए० ने बिहार सर्वोदय मंडल के एक दर्जन कार्यकर्ताओं के साथ पटना के चिरैयाटाड मुहल्ला स्थित देशी शराब की दूकान पर पिकेटिंग की और लगभग छः सौ शराब पीने वाले भाइयों को समझा कर शराब पीने से रोका। समझाने-बुझाने से उस दिन लगभग चार सौ शराबी भाई तो लौट गये, लेकिन दो सौ भाइयों ने सर्वोदय कार्यकर्ताओं की बात अनसुनी कर दी।

बिहार में बीघे कट्ठे आंदोलन की प्रगति

बिहार में बीघे-कट्ठे अभियान के सिलसिले में अगस्त माह तक इन जिलों में इस प्रकार भूमि दान में प्राप्त हुई और तुरंत वितरित हुई।

जिला	कट्ठा	जिला	कट्ठा	जिला	कट्ठा
मुजफ्फरपुर,	६००	दरभंगा,	४९३८	संथाल परगना,	१२७५५
सहर्षा	२,५००	पूर्णिया	८,७३७	मुंगेर	२,२७३

खादी-कार्य

बिहार में खादी एवं ग्रामोद्योग-कार्य में प्रगति लाने एवं बिहार के सभी खादी-संस्थाओं को आपस में सम्पर्क स्थापित करने के लिए बिहार सर्वोदय मंडल की कार्य समिति ने ११ अगस्त की बैठक में एक समिति का गठन किया, जिसके संयोजक श्री श्यामसुन्दर प्रसाद बनाये गये। समिति की प्रथम बैठक २८ अगस्त को बिहार खादी ग्रामोद्योग संघ के मुख्य कार्यालय सर्वोदयग्राम, मुजफ्फरपुर में हुई। बैठक ने ११ सितम्बर विनोबाजी के जन्म-दिवस से २ अक्टूबर महात्मा गांधी के जन्म दिवस याने तीन सप्ताह तक बीघा-कट्ठा अभियान चलाने एवं अन्य सर्वोदय-कार्य करने के लिए विशेष आयोजन करने का निश्चय किया है। इस अवधि में खादी प्रचार, बीघा-कट्ठा अभियान, सर्वोदय-साहित्य की बिक्री आदि पर जोर देने का निश्चय किया गया।

पटना नगर में शान्तिपात्र का कार्य सुचारु रूप से चल रहा है। गत माह शान्ति-पात्रों से तीन मन बीस सेर चावल, चार सेर गेहूँ एवं पाँच सेर आटा आदि का संग्रह किया गया है। पटना सिटी एवं दानापुर में भी शान्ति-पात्र के काम में संतोषप्रद प्रगति हुई है।

सहर्षा जिला के कर्मठ कार्यकर्ता श्री शीतल ठाकुरजी बीघा-कट्ठा अभियान में कार्य करते-करते दिवंगत हुए। श्री ठाकुर के निधन से बिहार सर्वोदय मंडल खासकर जिला सर्वोदय मंडल सहर्षा की एक कर्मठ कार्यकर्ता की क्षति हुई है। स्व० श्री शीतल भाई की पुण्य-स्मृति में बिहार के सभी जिला सर्वोदय मंडल की ओर से उनके श्राद्ध-दिवस २८ अगस्त को आम सभा का आयोजन किया गया, जिसमें दिवंगत आत्मा की शान्ति के लिए प्रार्थना की गयी तथा शोकसंतप्त परिवार के प्रति हार्दिक संवेदना प्रकट की गयी। स्व० श्री शीतल भाई के परिवार में उनकी विधवा पत्नी ही रह गयी हैं।

जिला सर्वोदय मंडल सहर्षा के कार्यकर्ताओं ने उनकी विधवा पत्नी को आर्थिक सहायता भी प्रदान की है।

—रामनन्दन सिंह

विनोबा यात्री-दल से

भारी वर्षा में भी यात्रा जारी—शिवसागर ग्रामदान-सागर बने—असम में कौनसी मूर्ति बनेगी ?—क्रांति का स्वरूप—असम की भाषा-समस्या—अल्पसंख्यकों को उनकी भाषा में शिक्षा मिले—मातृभाषा, प्रादेशिक भाषा, राष्ट्रभाषा और एक विदेशी भाषा सीखनी चाहिए—पुराना भूल जाइये—सर्वोदय और साम्यवाद का फर्क—हम 'वादी' नहीं हैं, 'कारी' हैं—करनेवाले हैं।

कुसुम देशपांडे

नार्थ लखीमपुर जिले में तीन महीने भारी बारिश सहन करते हुए और कभी-कभी घुटने तक के कीचड़ वाले रास्ते में यात्रा हुई। ब्रह्मपुत्र के उत्तर किनारे बसे इस जिले में दो सौ गाँवों के लोगों ने विनोबाजी के संदेश के अनुसार खानगी मिल्कियत छोड़ दी। अब इधर ब्रह्मपुत्र के दक्षिण किनारे यात्रा हो रही है। विनोबाजी कहते हैं, "एक ही नदी के किनारे आप रहते हैं। उत्तर लखीमपुर वाले भी ब्रह्मपुत्र का पानी पीते हैं और आप भी वही पानी पीते हैं। वहाँ के लोग ग्रामदान देते हैं, तो आप क्यों नहीं देते हैं? इधर इस विभाग में कार्यकर्ता कोशिश कर रहे हैं और ग्रामदान का आरंभ यहाँ भी हुआ है। इन १५ दिनों में यहाँ २१ ग्रामदान हुए हैं।

डिब्रूगढ़ सर्वोदय-योजन की यात्रा खत्म करके अब शिवसागर के जिले में यात्रा हो रही है। इस जिले में श्री रानिक शाइकिया और उनकी पत्नी रेणुबहन, दोनों सर्वोदय का काम उत्साह से करते हैं। विनोबाजी कहते हैं, "असम घाटी (valley) का यह आखिरी जिला है। असम में प्रकृति सुंदर है, मनुष्य का हृदय भी सुंदर है। लेकिन एक कमी यहाँ है। यहाँ समुद्र नहीं है। तो आप लोगों ने जिले का ही नाम शिवसागर रखा है। हमने कहा था कि ग्रामदान नदी का आरम्भ गोआलपारे में हुआ है तो उसका समुद्र शिवसागर जिले में होना चाहिए। इस जिले को आप 'ग्रामदान सागर' जिला बना दीजिये। दूसरे जिलों में ग्रामदान नदियाँ होंगी, यहाँ तो सागर होना चाहिये।"

रोज सुबह ११ से १२ बजे तक कभी गाँव की स्वागत-समिति के लोग, कभी विद्यार्थी, या भिन्न भिन्न पक्ष के लोग विनोबाजी से मिलते हैं। एक भाई ने एक दिन पूछा, "आप यहाँ पाँच महीने से हैं, असम के बारे में आपकी क्या राय बनी है?"

विनोबाजी : "यहाँ सर्वोदय की भावना बन सकती है। अभी बनी नहीं है। बीच की अवस्था है। इधर भी जा सकते हैं और उधर भी जा सकते हैं। जैसा मार्गदर्शन होगा वैसा लोग करेंगे। अच्छी मिट्टी का पिंड है। मिट्टी में पानी डाला है, अच्छी तरह से मला गया है और गोल बनाया है। यह है असम। अब इस अच्छी मिट्टी की मूर्ति बन सकती है। अब कौनसी मूर्ति बनेगी? रावण की या हनुमान की यह देखना है।"

शिवसागर जिले के तथा डिब्रूगढ़ सर्वोदय-योजन के कार्यकर्ताओं की सभा हुई। उसमें क्रांति का स्वरूप समझाते हुए विनोबाजी ने कहा, "ज्वालामुखी जब एकदम फूट निकलता है, तब लोग उसे देखते हैं। लेकिन उसके लिये तैयारी तो धरती के पेट में कितने ही दिनों से, सालों से चल ही रही थी। लेकिन जब वह बाहर आयी, तब दुनिया ने उसे देखा। यह है क्रांति का स्वरूप। वह होने के बाद पता चलता है।..."

आगे चल कर उन्होंने कहा, "हमारा यह काम आज के युग के अनुकूल है। आज का युग हमारे साथ है और समाज-प्रवाह प्रतिकूल है। युग तो आ रहा है। समाज को उसकी पहचान नहीं है कि हमारे पाँव के नीचे से जमीन खिसक रही है। उस हालत में यह विचार लोगों के पास पहुँचाना होगा। और यह विचार लोगों के पास ले जाने वाले कार्यकर्ता लोकाधार हों तो उनका प्रभाव समाज पड़ेगा। हम लोगों से कहेंगे कि मिल्कियत छोड़ो और हम खुद उसे पकड़े रहेंगे तो प्रभाव नहीं पड़ेगा। इसलिए कार्यकर्ताओं की संख्या कम हो, इसकी परवाह नहीं। उनका 'कैलीबर' अच्छा होना चाहिये। उनकी श्रद्धा मजबूत होनी चाहिए। उनकी श्रद्धा पर समाज से प्रहार

आज की सामाजिक परिस्थिति में कार्यकर्ताओं में वैराग्य की भावना, वैराग्य की, क्रांति की भावना और विचार समझाने की शक्ति चाहिए। इन तीन गुणों के बिना कार्यकर्ता अब नहीं टिक सकेंगे।

(१) उनमें दृढ़ वैराग्य होना चाहिए। दुख, आपत्ति, कष्ट सहन करने के लिए वैराग्य चाहिये।

(२) हमें मदद करने को कोई नहीं आयेगा, तब भी हम काम करते रहेंगे, जूझते रहेंगे, ऐसी क्रांति की भावना होनी चाहिए।

(३) समाज को विचार समझाना है, उससे त्याग करवाना है, तो उसको भी भय महसूस न हो, वह डरे नहीं, अनुनय-विनय से समझाना होगा। धमकाना नहीं चाहिए। कुशलता से ही काम करना चाहिए।

पर हो सकता है, उनका उपहास भी हो सकता है।

गत साल असम में भाषा के सवाल को लेकर जो अन्य घटनाएँ बनी, उसके बारे में बार-बार सवाल किये जाते हैं। असम की भाषा समस्या के बारे में आपकी क्या राय है? कल हाईस्कूल के छात्र विनोबा से मिलने आये थे, उन्होंने कुछ प्रश्न पूछे थे, उनमें एक यह भी था। विनोबाजी ने उनसे कहा, "आपने बहुत महत्त्व का सवाल किया है। लेकिन पहले मैं जानना चाहूँगा कि आप इस प्रश्न के बारे में क्या सोचते हैं। पहले आप मुझे सुनाइये। फिर मैं आपको सलाह दूँगा। हम तो जाने वाले हैं और आप ही जानने वाले हैं, इसलिये आपके विचारों का महत्त्व है।"

यह सुना तब छात्र मण्डली में थोड़ी हलचल हुई। उन्होंने चंद मिनिटों में अपने एक प्रतिनिधि को खड़ा किया। वह लड़का निःसंकोच विनोबाजी के पास बैठा और बोलने लगा, "आज विश्व में सब लोग शांति चाहते हैं। लेकिन पिछले साल यहाँ अशांति हुई। असमीया बोलने वाले हम लोग चाहते हैं कि असम प्रदेश की राज्य भाषा असमीया हो। फिर भी उस प्रश्न को लेकर यहाँ जो दंगे हुए, उससे अशांति हुई। हम चाहते हैं कि इस समस्या का हल शांति के तरीके से हो और फिर से अशांति न हो। सबका समाधान हो।"

उसके ये शब्द सुन कर विनोबाजी प्रसन्न हो गये और उन्होंने कहा, "हम आपको धन्यवाद देते हैं। असमीया भाषा के विषय में आपने जो इच्छा प्रकट की, वैसा ही होगा। ऐसा ही तय हुआ है। लेकिन पिछले साल कुछ भ्रम पैदा हुआ था। लेकिन जिस प्रदेश में दूसरी भाषा वाले लोग रहते हैं, उनको शिक्षण की सब सहूलियतें होनी चाहिए। जैसे यहाँ फौज में और अन्य कई निमित्त से हिंदी, ओड़ीया, बंगाली लोग यहाँ आते हैं। उनको शिक्षा उनकी भाषा में नहीं देंगे तो वे जल्दी ग्रहण नहीं कर सकेंगे। फिर वे कमजोर रहेंगे। देश के बच्चे कमजोर रहें, यह अच्छा नहीं है। इसलिये उनको सहूलियत मिलनी चाहिए। यही सर्वसामान्य नीति सब राज्यों को लागू होनी चाहिए। कछार जिले में बंगाली लोग ज्यादा हैं। वहाँ जिले के स्तर पर बंगाली भाषा होगी, प्रदेश की भाषा असमीया ही होगी। उस जिले में असमी लोग हों तो उनको असमी भाषा में तालीम मिलनी चाहिए। यह बात सही है कि बाहर के लोगों को सेकंड लैंग्वेज के तौर पर असमी भाषा सीखनी चाहिए, तभी वे यहाँ के समाज के साथ घुलमिल सकेंगे।

मेरी आपको यह सलाह है कि आप अपनी मातृभाषा का उत्तम अध्ययन कीजिये। उसके साथ साथ अंग्रेजी, हिंदी, बंगाली और संस्कृत का भी अध्ययन कीजिये। अंग्रेजी के कारण दुनिया के साथ संबंध होगा। सबको अंग्रेजी ही सीखनी चाहिए ऐसा नहीं, कोई-कोई फ्रेंच, जर्मन भी सीखें। एक भाषा सीखनी होगी। उसमें से अच्छी चीजें आप अपनी भाषा में ला सकेंगे। हिंदी भी आप उत्तम सीखें, ताकि देश के साथ आप एकरूप होंगे। संस्कृत तो सब भाषाओं का मूल है। संस्कृत अच्छी आयेगी तो असमी भी अच्छी आयेगी। वैसे कोई भी भाषा किसी पर भी जबरदस्ती से लादी नहीं जाती है। मैं १४-१५ भाषाएँ सीखा। मेरा कोई नुकसान तो नहीं हुआ। अनेक भाषाओं का ज्ञान मुझे प्राप्त हुआ। आप बंगाली तो आसानी से सीख सकेंगे।

"दूसरी बात यह है कि पुराना जो कुछ हुआ है, उसे भूल जाइये। इतिहास में कई ऐसे काम हुए हैं। इसलिये भूलना ही बेहतर होगा। मैं तो भूल ही गया हूँ। उसका ज्यादा उच्चारण नहीं करता हूँ। पहले दो तीन महीने मैंने इस विषय पर कुछ कहा। लेकिन अब नहीं कहता हूँ। मैंने अब समझ लिया है कि ये लोग समझ गये हैं। मुझे किसी ने कहा था कि जो कांड पिछले साल हुआ था, वह दुबारा होगा। मैंने कहा, नहीं भाई! असम वाले दुबारा बदनामी मोल नहीं लेंगे। एक बार जो हुआ है उससे उनकी बहुत बदनामी हुई थी।

"अब 'दफ्तरदारी कमीशन' का काम शुरू है। मुझे लगता है कि जो फैसला होगा, वही एकदम जाहिर करना चाहिए। उसके बारे में अखबार में आये दिन 'आरग्युमेंटस्' जाहिर नहीं होने चाहिए। उस चीज को याद तो नहीं रखना है, भूल जाना है। रोज उसके बारे में क्यों छापें, जखम अच्छी होने लगी तो उसकी चमड़ी बार बार निकालनी नहीं चाहिये।"

एक दिन शिक्षकों ने पूछा, "साम्यवाद, गांधीवाद और आपका मतवाद, इनमें क्या फरक है?"

विनोबाजी : "हमारा कोई वाद नहीं है। सर्वोदय शब्द गांधीजी ने दिया था, वही लेकर हम घूम रहे हैं। हम वादी नहीं, 'कारी' हैं—करने वाले हैं। साम्यवाद

[शेष पृष्ठ १२ पर]

पिलानी में शिविर–भंडारा जिले के शांति-सैनिक पूना में–कानपुर में अशोभनीय पोस्टर हटे–रोहतक में पदयात्रा–श्री शांताबहन नारुलकर का राजस्थान में दौरा–खादी-विद्यालय की मदद–श्री हलधर भाई पंजाब में–पिपलनेर में विनोबा स्मृति-दिवस–हिसार में साहित्य-प्रचार–'विश्वनीडम्' में प्राकृतिक चिकित्सा-केन्द्र–किरावली में 'राम' परिवार की बैठक और भूमिहीनों का अनशन–हिसार जिले में अर्थ-संग्रह–देहरादून में गांधी तत्त्व प्रचार केन्द्र का उद्घाटन-श्रीनगर में राष्ट्रीय एकता गोष्ठी-पंजाब में भ्रष्टाचार के खिलाफ कार्रवाई–पुर्तगाली बस्तियों के खिलाफ आर्थिक नाकेबंदी-'लुक्का' के दल पर २५ मुकदमें–बर्टेण्ड रसेल को भारतीय समाजवादी दल का सुझाव-शिवदासपुरा में लोकभारती–महासचिव की अनुपस्थिति में राष्ट्रसंघ का अधिवेशन-श्री स्लिम राष्ट्रसंघ के नये अध्यक्ष-श्री डाग हैमरशोल्ड की राजकीय अन्त्येष्टि-दिल्ली में गांधी मेला–सर्व सेवा संघ और सामुदायिक मंत्रालय की बैठक।

पिछले महीने झुंझुनूं जिले के कार्यकर्ताओं का शिविर हुआ था। पिलानी की प्रसिद्ध शिक्षण-संस्था इस जिले में ही पड़ती है। इस जिला शिविर में पिलानी के सर्वोदय-प्रेमी प्रोफेसरों से हम सबका काफी घनिष्ठ संबंध आया। जिले में ११ सितम्बर से १५ अक्तूबर तक पदयात्रा का कार्यक्रम बना है। पिलानी में प्रोफेसर मित्रों की मदद से सर्वोदय स्वाध्याय मण्डल चलाने का निश्चय किया है। पदयात्रा की समाप्ति पर ता० १५ अक्तूबर को नवलगढ़ में फिर से शिविर का कार्यक्रम रखा है।●

महाराष्ट्र के भंडारा जिले के शांति-सैनिकों ने पूना शहर तथा देहाती बस्तियों पर जो बाढ़ का प्रकोप आया था, उसमें राहत पहुँचाने के लिए भाग लिया।

इन शांति-सैनिकों ने आगामी तीन महीनों के लिए इस तरह का कार्यक्रम बनाया : (१) हरएक शांति-सैनिक अपने क्षेत्र में शांति सहायक दल खड़ा करे। (२) सर्वोदय पात्र रखने वाले परिवारों के प्रतिनिधियों का सर्वोदय मित्र मंडल बनाया जाय। (३) 'भूदान' पत्रिकाओं के कम-से कम दस ग्राहक बनाये जायँ।●

कानपुर में अश्लील पोस्टर-उन्मूलन–अभियान के दूसरे दौर में कुछ पोस्टर कार्यकर्ताओं द्वारा १० सितम्बर को हटा दिये गये। इस कार्यक्रम का नेतृत्व उ० प्र० शांति-सेना के संचालक श्री ब्रह्मदेव वाजपेयी ने किया।●

जिला सर्वोदय-मंडल, रोहतक के संयोजक ने अगस्त माह में १९२ मील की पदयात्रा ८५ गाँवों में की। १४ पंचायत शिविरों में विचार प्रचार किया, ७१ रु० की साहित्य बिक्री की, ५१ रु० का संपत्ति-दान मिला।●

गांधी स्मारक निधि की राजस्थान शाखा द्वारा आयोजित अजमेर, हटुंडी, भीलवाड़ा, शाहपुरा, मुवाणा, गंगरार, चित्तौड़गढ़, उदयपुर, कांकरोली आदि स्थानों पर गोष्ठियों में बुनियादी शिक्षा के बारे में सुश्री शांताबहन नारुलकर ने अपने विचार प्रकट किये।●

खादी ग्रामोद्योग-विद्यालय, मधुबनी (बिहार) के शिक्षक और विद्यार्थियों ने पूना की बाढ़ में मदद के लिए २०१ रु० भेजे।●

उ० प्र० के अखंड पदयात्री श्री हलधर भाई पंजाब की सीमा पर पदयात्रा कर रहे थे। पंजाब की हालत देख कर उन्होंने पंजाब में जाना तय किया। सितम्बर के तीसरे हफ्ते तक पंजाब में रहने वाले थे।●

महाराष्ट्र के पिपलनेर गाँव में विनोबा-स्मृति दिन–इसी दिन विनोबाजी तीन साल पहले इस गाँव में आये थे, उनकी स्मृति के रूप में–मनाया गया। इस अवसर पर श्री गोविंदराव शिंदे, श्री दामोदरदास मूंदड़ा आदि प्रमुख कार्यकर्ता आये थे।●

सिरसा, हिसार, भिवानी में जुलाई माह में ४१७ रु० की साहित्य-बिक्री हुई।●

'विश्वनीडम्', बंगलोर में एक प्राकृतिक चिकित्सा-केन्द्र प्रारम्भ किया गया और साथ ही प्राकृतिक चिकित्सा का निःशुल्क सलाहकारी केन्द्र ४ क्रॉस रोड, गांधी नगर, बंगलोर ९ में अ० भा० सर्व सेवा संघ के कार्यालय में शुरू किया।●

आगरा की किरावली तहसील में पिछले दिनों 'राम' परिवार की एक बैठक हुई। ६५ कार्यकर्ताओं ने भाग लिया। मतदाता-मंडल, भूमिहीन बेरोजगार आंदोलन और ग्रामस्वराज्य पर चर्चाएँ हुईं।●

किरावली तहसील में प्रति माह तहसील के मुख्य द्वार पर स्थानीय भूमिहीन बेरोजगार २४ घंटे का अनशन करते हैं। उनकी माँग है कि दो-तीन हजार एकड़ बंजर भूमि पड़ी है, वह उन्हें मिले।●

जिला सर्वोदय भूदान मंडल, हिसार ने जून-जुलाई में २४६२ रु० का अर्थ-संग्रह किया।●

देहरादून से १९ मील दूर दाढ़ी ग्राम में गांधी तत्त्व-प्रचार केन्द्र का उद्घाटन देहरादून नगरपालिका के अध्यक्ष श्री रामस्वरूप द्वारा हुआ।●

ता० २० सितम्बर को श्रीनगर (कश्मीर) में "राष्ट्रीय एकता" के विषय पर एक गोष्ठी हुई, जिसका उद्घाटन कश्मीर के सदर-ए-रियासत श्री करणसिंह ने किया। उन्होंने कहा कि आज बार-बार जो राष्ट्रीय एकता की बात की जाती है, उससे यह भ्रम नहीं होना चाहिए कि भारत एक संगठित राज्य नहीं है। राष्ट्रीय एकता की भावना यहाँ पहले से मौजूद है। हमारा कर्तव्य है कि जो बातें इस एकता के विरुद्ध जाती हों उनकी रोक-थाम करें। श्री करण सिंह ने कहा कि राष्ट्रीय एकता के लिए भाषा एक महत्त्वपूर्ण माध्यम है। अतः राष्ट्र के विभिन्न हिस्सों के आपसी व्यवहार के लिए एक राष्ट्रीय भाषा का विकास आवश्यक है। पर यह काम सहज रीति से होना चाहिए।

गोष्ठी में श्रीमती इन्दिरा गांधी, श्री के० जी० सैय्यदेन, डा० वी० के० आर० वी० राव आदि उपस्थित थे।●

चालू साल के पहले तीन महीने, अर्थात् अप्रैल से जून १९६१ के अन्त तक पंजाब में ६९ सरकारी कर्मचारियों को, जिनमें ७ अफसर भी शामिल हैं, घूसखोरी के अपराध में सजा दी गयी। इनमें से २८ लोग नौकरी से बरखास्त किये गये, नौकरी से अलग किये गये और १२ की वेतन-वृद्धि रोकी गयी। इस अर्से में कुल १६४ शिकायतें भ्रष्टाचार-विरोधी विभाग के पास आयी थीं।●

स्वतंत्र मजदूर संघों के अन्तर्राष्ट्रीय संघ की एशियाई समिति, जिसकी सभा ता० २२ सितम्बर से सैगोन (वियतनाम) में हो रही है, इस सुझाव पर विचार करनेवाली है कि गोआ तथा पुर्तगाल के अन्य उपनिवेशों की आर्थिक नाकेबन्दी की जाय, अर्थात् गोआ तथा अन्य पुर्तगाली उपनिवेशों के बन्दरगाहों में जाने वाले जहाजों की कम्पनियों के अन्य जहाजों का माल भी मजदूर न ढोएँ। अफ्रिका और हिन्दुस्तान के बन्दरगाहों के कई मजदूर-यूनियनों का समर्थन इस प्रस्ताव को प्राप्त है।●

आगरा के जूडिशियल मैजिस्ट्रेट की अदालत में "लुक्का" तथा उनके साथी बागियों पर, जिन्होंने जून १९६० में विनोबाजी के समक्ष आत्म-समर्पण किया था, ता० ४ अक्तूबर से मुकदमों की पेशी शुरू होने वाली है। इस गिरोह के खिलाफ २५ मुकदमें दाखिल किये गये हैं। राजस्थान सरकार ने भी कुछ बागियों को, जिन्होंने उस प्रान्त की हद में वारदातें की बतायीं, उन्हें सौंप देने की प्रार्थना की है।●

भारतीय समाजवादी पार्टी की राष्ट्रीय समिति ने लार्ड बर्ट्रेन्ड रसल द्वारा इंग्लैण्ड में अणु अस्त्रों के खिलाफ शुरू किए गए अहिंसक आन्दोलन का समर्थन किया है। समिति ने अपने प्रस्ताव में कहा है, "आणविक और दूसरे अस्त्रों की सम्पूर्ण रोक विश्व के नागरिकों की सम्मिलित पार्लियामेण्ट के मातहत ही सम्भव है, अतः यह समिति बर्ट्रेन्ड रसल से प्रार्थना करती है कि वे अपने आन्दोलन का दायरा बढ़ा कर उसका ध्येय विश्व-पार्लियामेण्ट की स्थापना का बनावें।●

जयपुर शहर से १८ मील दूर शिवदासपुरा में राजस्थान खादी संघ के तत्त्वावधान में "लोकभारती" नाम की शिक्षण संस्था चलती है। "लोकभारती" में खादी-ग्रामोद्योग आयोग के विभिन्न अभ्यासक्रमों के द्वारा दिए जाने वाले प्रशिक्षण के अलावा बुनियादी शिक्षण कार्य भी चलता है।●

लोकभारती ने विनोबा-जयन्ती से गांधी-जयन्ती तक की अवधि के लिए साहित्य प्रचार का एक विशेष कार्यक्रम बनाया है। संस्था के छात्र रोज शिवदासपुरा स्टेशन पर ट्रेनों के समय यात्रियों में सर्वोदय-साहित्य का प्रचार और बिक्री करेंगे।●

ता० २० सितम्बर को न्यूयार्क में संयुक्त राष्ट्रसंघ का १६ वाँ अधिवेशन शुरू हुआ। संयुक्त राष्ट्रसंघ की स्थापना के बाद पिछले १६ वर्षों में यह पहला मौका था, जब राष्ट्रसंघ का अधिवेशन संघ के सचिव की अनुपस्थिति में आरम्भ हुआ। संघ के महासचिव श्री डाग हैमरशोल्ड दो दिन पहले ही रहस्यमय परिस्थिति में कांगो में मारे गए थे।●

इस वर्ष राष्ट्रसंघ के अध्यक्ष–जो हर साल सदस्य राष्ट्रों के प्रतिनिधियों में से बारी-बारी से चुने जाते हैं–अफ्रीकन महाद्वीप के उत्तरी सिरे और भूमध्यसागर के तट पर स्थित ट्यूनीशिया के प्रतिनिधि श्री मोंगी स्लिम चुने गए हैं। यह पहले "अफ्रीकन" हैं, जो राष्ट्रसंघ के अध्यक्ष बने हैं। ५२ वर्षीय श्री स्लिम फ्रेंच-शासन के खिलाफ ट्यूनीशिया में हुई क्रांति के नेताओं में से एक हैं।●

संयुक्त राष्ट्रसंघ के महासचिव श्री डाग हैमरशोल्ड का शव उनके स्वदेश स्वीडन ले जाया गया है। स्वीडन की सरकार ने श्री हैमरशोल्ड के परिवार की स्वीकृति से तय किया है कि उनकी राजकीय अन्त्येष्टि की जाय।●

गांधी-जयन्ती के उपलक्ष्य में दिल्ली नगरनिगम ने चार दिन के एक 'गांधी मेले' का आयोजन किया है। मेला ता० २९ सितम्बर को शाम को ६ बजे शुरू होगा, जिसका उद्घाटन प्रधान-मंत्री श्री जवाहरलाल नेहरू करेंगे। दो अक्तूबर को मेला समाप्त होगा। यह मेला, जो हर साल दिल्ली में मुख्य रेलवे स्टेशन के सामनेवाले बाग में लगता है, दिल्ली का एक राष्ट्रीय पर्व सा बन गया है। मेले के कार्यक्रम में गांधीजी के जीवन और उनकी शिक्षाओं पर निबंध प्रतियोगिता और भाषण-माला का भी आयोजन है।●

पिछले दिनों दिल्ली में सर्व सेवा संघ और सामुदायिक विकास-मंत्रालय की संयुक्त बैठक हुई। सर्व सेवा संघ की ओर से सर्वश्री जयप्रकाश नारायण, शंकरराव देव, अण्णासाहब और गोकुल भाई भट्ट ने भाग लिया। सामुदायिक विकास में किस तरह से ज्यादा से ज्यादा सहयोग हो सकता है, इस पर चर्चा हुई।

लालबाग में विनोबा जयन्ती पर विशिष्ट कार्यक्रम

सर्वधर्म-सम्मेलन, शान्तिसेना-शिविर, अशोभनीय पोस्टर उन्मूलन मुहीम

लालबाग (दरभंगा) दिनांक ११ सितम्बर को विनोबा जयन्ती के पुनीत अवसर पर कमलेश्वरी सर्वोदय संस्थान की ओर से सर्वधर्म-सम्मेलन का एक विशेष आयोजन किया गया, जिसमें विभिन्न धर्मों के विद्वानों ने भाग लिया।

उसी अवसर पर दिनांक ४ सितम्बर से ९ सितम्बर'६१ तक शान्ति-सैनिकों का एक शिविर चलाया गया। शिविरार्थियों की संख्या २६ थी, शिविर के समावर्तन समारोह में प्रदेश के प्रतिष्ठित रचनात्मक कार्यकर्ता आये और उनके भाषणों से शिविरार्थियों ने लाभ उठाया। आयोजन को सफल बनाने में नगर-निवासियों का सराहनीय सहयोग प्राप्त हुआ। नगरपालिका के हाईस्कूल के छात्र छात्राओं ने भी कार्यक्रम में सहयोग दिया।

इसके अतिरिक्त दिनांक १० सितम्बर को अश्लील पोस्टर अभियान में बहनों का एक मौन जुलूस भी निकला, जिसमें करीब ६० बहनों ने भाग लिया। ३ मील के लम्बे जुलूस का प्रभाव नागरिकों पर गहरा पड़ा, नगर के सार्वजनिक स्थानों पर लगे अश्लील सिनेमा पोस्टरों को हटाया गया। लोगों को इस कार्यक्रम से नवचेतना मिली।

सीकर (राजस्थान), दिघवा (सारन, बिहार), टीकमगढ़ (मध्य प्रदेश) तमकुही, देवरिया (उत्तर प्रदेश), लालगंज मुजफ्फरपुर (बिहार), भरतपुर (राजस्थान), में विनोबा-जयन्ती मनाई गयी। दिघवा में इस अवसर पर पचास कट्ठा जमीन, पचास रुपये की साहित्य-बिक्री और 'भूदान यज्ञ' के चार ग्राहक बने। तमकुही में ३४ लोगों ने रु० ५०७-३६ नं० पै० नकद सम्पत्तिदान दिया। लालगंज में 'गीता प्रवचन' का अखण्ड पाठ हुआ।

चौदहवें अखिल भारतीय नई तालीम सम्मेलन पंचमढ़ी में स्वीकृत प्रस्ताव

श्री डी० रामचन्दन की अध्यक्षता में चौदहवाँ अखिल भारतीय नई तालीम सम्मेलन पचमढ़ी (म० प्र०) में १० और ११ सितम्बर १९६१ को हुआ। इस सम्मेलन में सर्व-सम्मति से ३ प्रस्ताव पास हुए, साथ ही उत्तर बुनियादी शिक्षा को वर्तमान परिस्थिति तथा उसके विकास की योजना, शिक्षकों का प्रशिक्षण आदि विषयों पर विचार-गोष्ठियाँ हुईं।

प्रथम प्रस्ताव में नेशनल कौंसिल आफ बेसिक एजुकेशन बनाने का सरकार से अनुरोध किया गया और कहा गया कि "राष्ट्रपिता महात्मा गांधी की दूर-दृष्टि थी कि उन्होंने राष्ट्रीय शिक्षा के लिए बुनियादी तालीम का कार्यक्रम देश को दिया। अनेक उतार-चढ़ाव और अनुभव के बाद आज सारे देश में बुनियादी तालीम का तरीका सर्वमान्य हो गया है। सारे देश में इसका सही ढंग से विकास हो, चलते हुए काम का मूल्यांकन होता रहे। साथ-साथ सारे देश के काम को सही दिशा में मार्गदर्शन मिले, इसके लिए यह अत्यन्त आवश्यक है कि अखिल भारतीय स्तर पर चिंतन हो।

"यह सम्मेलन केन्द्रीय सरकार से अनुरोध करता है कि अखिल भारतीय स्तर पर एक नई तालीम परिषद (नेशनल कौंसिल आफ बेसिक एजूकेशन) का निर्माण करे। इस परिषद में सरकारी और गैरसरकारी दोनों प्रकार के सदस्य हों। सरकारी और गैरसरकारी दोनों की सम्मिलित शक्ति इस विषय में सहायक सिद्ध होगी।

"सर्व सेवा संघ से भी यह सम्मेलन अनुरोध करता है कि ऐसे परिषद का निर्माण करने में योगदान दें।

"जिस तरह अखिल भारतीय स्तर पर परिषद हो, उसी तरह हर प्रदेश में बुनियादी तालीम का सही विकास, मार्गदर्शन और मूल्यांकन के लिए प्रदेशीय स्तर पर सरकारी-गैरसरकारी सदस्यों के मिल कर प्रदेशीय बोर्ड भी बनाये जायें।"

दूसरे प्रस्ताव द्वारा एक अध्ययन-मण्डल बनाने की आवश्यकता महसूस की गई, जो सभी प्रदेशों में होने वाले कार्यों की परस्पर जानकारी और इस कार्य के विकास के लिए सम्मिलित चिन्तन कर सके, साथ ही प्रदेश की गैर-सरकारी संस्थाएं और कार्यकर्ताओं से सम्पर्क स्थापित कर सकें।

तीसरे प्रस्ताव द्वारा यह तय किया गया कि विनोबाजी के सान्निध्य में समय-समय पर शिक्षा-अधिकारियों के परिसंवाद और अध्ययन-गोष्ठियों का आयोजन हो।

गांधी जयन्ती के अवसर पर खादी पर अतिरिक्त छूट

खादी और ग्रामोद्योग कमीशन की एक प्रेस विज्ञप्ति के अनुसार गांधी जयंती के अवसर पर २ अक्टूबर, १९६१ से ४१ दिनों तक खादी खरीदनेवालों को छः नये पैसा प्रति रुपये की अतिरिक्त छूट (रिबेट) हर प्रकार की सूती खादी पर दी जायेगी। यह छूट, इस समय मिल रहे १९ नये पैसे प्रति रुपये की छूट के अतिरिक्त होगी। यह अतिरिक्त छूट देश के सभी प्रमाणित खादी-भण्डारों की बिक्री पर लागू होगी। यदि राज्य खादी और ग्रामोद्योग मण्डल चाहें तो वे अपने प्रदेशों की आवश्यकतानुसार छूट देने की अवधि में फेरफार कर सकते हैं और उसे दो अवधियों में बांट सकते हैं, जैसे पहले २ अक्तूबर से ३० दिन के लिए और बाद को अधिक-से-अधिक १५ दिन के लिए। राज्य मण्डल अपने राज्यों की खादी-संस्थाओं के परामर्श से इस छूट में वृद्धि भी कर सकते हैं।

विनोबा-पदयात्रा वृत्त

ता० ११ सितम्बर को बाबा का जन्म दिन यात्री-दल में मनाया गया।

बाबा के बारे में मैत्रेजी ने दो शब्द कहे कि बाबा के प्रथम परिचय में ही वे प्रभावित हो गये थे। बाबा ने एक बार उनको कहा था कि सामने के सब लोगों में ईश्वर का रूप है, तब से श्री मैत्रेजी सामने के हर आदमी में भगवान का ही रूप देखने आये हैं। आगे उन्होंने प्रार्थना की कि बाबा दीर्घायु हों और चिरन्तन हमारे हृदय में रहें।

बाबा के प्रवचन (देखें, इसी अंक में पृष्ठ २ पर) के बाद कार्यक्रम समाप्त हुआ। रात को गाँव के लोगों ने पड़ाव पर दीपक जलाये।

श्री वल्लभस्वामी, जो बाबा से मिलने पदयात्रा में गये थे, वहाँ बीमार हो गये थे, अब ठीक हैं। आश्रम के लिए वे शिलांग गये हैं। श्री महादेवी ताई भी उनके साथ हैं।

[पृष्ठ ९ का शेष]

एक बात है। उसमें अधिक लोगों का भला होगा, ठीक है। आज थोड़े का ही राज है, उसके बदले अधिक का होगा। लेकिन उससे हमें संतोष नहीं होगा। खाने के लिये आपकी थाली में पत्थर रखा था, तो परोसने वाले ने समझा इनको ईंट देनी चाहिये। पत्थर के बदले ईंट रखी, तो क्या होगा! वे दोनों समान ही हैं, उससे भूख तो नहीं मिटती। वैसी आज की साम्यवाद की हालत है। सर्वोदय सबके लिये मंगल करने की बात करता है। उसमें सबकी चिंता है। जैसे माँ बेटे में फर्क नहीं करती, उसका एक बेटा सुंदर हो, दूसरा कुरूप। वह समान प्यार करती है। वैसे ही सर्वोदय कहता है आपके पास बुद्धि हो, तो उसका उपयोग लूटने में मत करो, सबके प्रति करुणा रखो, जो सबसे दुःखी है, उसे पहले मदद दो। यह गांधीजी का विचार लेकर हम घूम रहे हैं। हम कोई नया विचार नहीं दे रहे हैं। हम दिशा दिखाने वाले हैं। उत्तरध्रुव के तरफ देखने से नहीं होगा, चलना पड़ेगा। गांधीजी तारा है, ध्रुव तारा, उस दिशा में हम रास्ता बना रहे हैं। हममें फर्क यह है कि वे ऊपर हैं प्रकाशरूप। वे लोगों से कहते हैं, इधर आओ रे! लेकिन नीचे जंगल है। लोग ऊपर देख रहे हैं, रोज देखते रहते हैं। तो हमें दया आयी तो हमने जंगल काट कर रास्ता बना दिया है।"

इस अंक में

श्रीकृष्णदत्त भट्ट, अ० भा० सर्व सेवा संघ द्वारा भार्गव भूषण प्रेस, वाराणसी में मुद्रित और प्रकाशित। पता : राजघाट, वाराणसी-१, फोन नं० ४३९१
पिछले अंक की छपी प्रतियाँ ९३५० : इस अंक की छपी प्रतियाँ ९४३०
वार्षिक मूल्य ६) एक अंक : १३ नये पैसे

संपादक : सिद्धराज ढड्ढा

वाराणसी : शुक्रवार | ६ अक्टूबर '६१ | वर्ष ८ : अंक १

शिक्षा और राष्ट्रीय एकता : १

शंकरराव देव

इस विचार-गोष्ठी का विषय है शिक्षा और राष्ट्रीय एकता। आज कहीं का भी और कैसा भी सवाल हो, उसका विचार विश्व के संदर्भ में ही करना पड़ता है और विश्व के संदर्भ में विचार करें तो ही सही जवाब मिलना संभव है। विज्ञान ने देश और काल को नष्ट करके भिन्न भिन्न देशों और मानवों को समीप लाया है, लेकिन वह मानव के मन को समीप नहीं ला सका है। और इसी में आज के संघर्ष और अशांति का मूल है। मानव के शरीर समीप आ गये हैं, लेकिन मन व्यापक नहीं होने हैं, तो जैसे आज हम देख रहे हैं, मानव के शरीर और मन दोनों को ही खतरा है। विज्ञान देश और मानव को समीप ला सका, इसका कारण विज्ञान में है उसी तरह मानव के मन को वह समीप नहीं ला सका, इसका भी कारण विज्ञान में ही है।

आज का विज्ञान अधिकांश 'फिजिकल' है, यानी वह भौतिक शास्त्र है। वह सृष्टि और मानव के अंदर जो जड़ तत्त्व है उसी का शास्त्र है। लेकिन मानव केवल जड़ नहीं है। उसमें एक मनस्तत्त्व भी है, जो चेतन से संस्पृष्ट है। यही कारण है कि केवल जड़तत्त्व को लेकर चलने वाला शास्त्र मानव के मन पर ज्यादा प्रभाव नहीं डाल पाता है। मनोविश्लेषण शास्त्र अभी तक एक भौतिक शास्त्र जैसा शास्त्र नहीं बन पाया है, बल्कि वह बन जाय तो भी मन के समग्र व्यापार का ज्ञान उसको हो जायगा, ऐसा नहीं लगता है, क्योंकि आज मनोविज्ञान भी जड़तत्त्व को लेकर चलने वाला भौतिक शास्त्र ही है। चूंकि मन चेतन से संस्पृष्ट है, इसलिए जब तक चेतन के शास्त्र (साइन्स आफ स्पिरिट) का हम उपयोग नहीं करेंगे तब तक मन को वह जैसा और जितना है वैसा और उतना समझ नहीं पायेंगे तथा मन को व्यापक बनाने का यह जो शिक्षण का काम है, वह भी हम नहीं कर पायेंगे।

भारतीय शिक्षण परम्परा प्राचीन है और ऋषि-मुनियों से प्रेरित और प्रसूत है। जिस चेतन शास्त्र की मन को व्यापक बनाने की शक्ति है उस चेतन के बारे में भारतीय ऋषि-मुनियों ने क्या कहा है, यह जानना आवश्यक है। तभी आज की शिक्षा प्रणाली मन को व्यापक करने का काम कर सकेगी। नारद सनत्कुमार ऋषि के पास गया, बड़ी नम्रतापूर्वक उसका शिष्य बना और उसने कहा, "भगवः शोचामि।"—भगवन्, मैं शोकमग्न हूँ। "तं मा भगवः शोकस्य पारं तारयतु"—हे देव, मुझे शोक से पार लगाइये। नारद मंत्रविद् था, फिर भी शोकमुक्त नहीं था। इसका कारण वह स्वयं गुरु से कहता है—"सो अहं भगवो मंत्रविदेवास्मि। नात्मवित्।"—हे भगवन्, मैं केवल मंत्रविद् हूँ, पर मैं आत्मा को नहीं जानता हूँ। नारद शोकमुक्ति और सुखप्राप्ति चाहता है। "सुखं भगवो विजिज्ञासे।"—हे भगवन्! मुझे सुख का मार्ग दिखाइये! यह नारद की गुरु से माँग है। इस पर सनत्कुमार ऋषि ने जवाब दिया—"यो वै भूमा तत्सुखम्, नाल्पे सुखमस्ति।"—जो भूमा है वह सुख है, अल्प में सुख नहीं है। भूमा यानी महान, व्यापक, निरतिशय। यानी जो व्यापक है, वह अद्वैत है। 'एकमेवाद्वितीयम्।' जो व्यापक है, जो अद्वैत है, वही अमृत है और जो अल्प है, जहाँ द्वैत है, वह मृत्यु है : "यो वै भूमा तदमृतम्, यदल्पं तन्मर्त्यम्।"

जो एक महान और व्यापक (युनिवर्सल) है, वह अनेक, लघु और विशिष्ट (पर्टिक्युलर) बनता है, तब उसका "बहुधा" स्वरूप हो जाता है। 'एकोऽहं बहुस्याम्'। लेकिन यह जो 'बहु' है वह एक का ही स्वरूप है—"एकं सद् विप्रा बहुधा वदन्ति।"

सारी सृष्टि में और मानव समाज में जो विभिन्नता और विविधता हम देखते हैं, उनका रहस्य यही है और यही मानव जीवन की बड़ी जटिल और गूढ़ समस्या है। गुह्यतमम्। यह गुह्यतम है, इसीलिये मानव मृत्यु और अमरत्व के बीच चक्कर काटता रहता है। वह नाना में एक को भूल जाता है तो मृत्यु को पाता है और नाना में एक को देखता है तो अमृतत्व को प्राप्त करता है। अविभक्तं विभक्तेषु। यूनिटी इन डायवर्सिटी—विविधता में एकता और 'डायवर्सिटी इन यूनिटी'—एकता में विविधता। जिन्होंने जीवन के इस रहस्य को पहचाना और जीवन में उसको उतारा, सुख और शांति उन्हीं को वरण करते हैं।

भारतीय ऋषि-मुनियों ने इस जीवन-रहस्य को ठीक-ठीक समझा था और धर्म (रिलीजन), अध्यात्म (स्पिरिच्युआलिटी), विचार या दर्शन (थाट), कला (आर्ट), संस्कृति (कल्चर) आदि, जिनको (थिंग्स आफ दि माइण्ड) बुद्धि की चीजें कहते हैं, उन मानवीय सामाजिक जीवन के कुछ क्षेत्रों में उसे उतारने का प्रयास भी किया था और काफी हद तक सफलता भी प्राप्त की थी। उनकी इस सफलता का कारण यह था कि बावजूद इसके कि 'यथा पिण्डे तथा ब्रह्माण्डे,' वे सृष्टि के जन्म और स्थिति से इस धर्म को जानते थे कि—"मुण्डे-मुण्डे मतिर्भिन्ना कुण्डे कुण्डे नवं पयः।" (प्रत्येक दिमाग का अपना-अपना विचार और प्रत्येक पोखरे का अपना-अपना पानी।) इसलिये व्यक्ति की स्वतंत्रता को मान्यता देते हुए भी उन्होंने व्यक्ति को कुल या जनपद का एक घटक ही माना था और भौगोलिक और मानवीय भिन्नता के आधार पर जीवन के भिन्न भिन्न क्षेत्रों में जो सहधर्मी थे उनके विकास के लिये उनको स्वतंत्रता या स्वायत्तता दी थी। यही कारण है कि भारतीय धार्मिक, आध्यात्मिक और सांस्कृतिक जीवन का प्रवाह हजारों वर्ष बहुत हद तक अबाध और शांत बहता रहा और यही कारण है कि भारतीय संस्कृति में भिन्न भिन्न धर्म, संस्कृति और सम्प्रदायों को आत्मसात् करने की और समझौता करके उनके साथ सहजीवन व्यतीत करने की एक विलक्षण शक्ति दिखाई देती है। कई प्रकार के संकटों और आघातों के बावजूद भारत ही एक देश है, जिसका आज भी अस्तित्व है, इसका भी यही कारण है। चीन एक ऐसा दूसरा देश था, लेकिन वह आज अपनी प्राचीनता की आत्मा खो बैठा है, ऐसा लगता है।

आज देश के सामने 'नेशनल या इमोशनल इण्टिग्रेशन' (राष्ट्रीय या भावात्मक समरसता) की एक बड़ी समस्या खड़ी हो गयी है, ऐसा कहा जाता है और माना भी जाता है। लेकिन जिन शब्दों का हम उपयोग करते हैं, उनका अर्थ स्पष्ट समझ कर करना चाहिये। नहीं तो "साँप साँप कह कर रस्सी को ही पीटते रह जाने" की संभावना है। कहा जाता है कि भारत के आज टुकड़े टुकड़े हो रहे हैं और भारतीय लोगों में भावात्मक एकता का अभाव दिख रहा है।

पर जब यह कहा जाता है कि भारत में कभी एकराष्ट्र की भावना नहीं थी, तब मन में प्रश्न उठता है कि जिन हमारे पूर्वजों ने 'दुर्लभं भारते जन्म, मानुषं तत्र दुर्लभं' कहा, उनके दिल में कौनसी भावना थी? भारत के प्रति उनके मन में प्रेम या भक्ति न होती तो क्या वे कह पाते कि भारत में जन्म दुर्लभ है?

आज भी कौन भारतीय होगा, जिसके मन में भारत के ऋषि-मुनि, भारत का अध्यात्म, वेद, ब्रह्म-सूत्र, उपनिषद्, गीता, भिन्न-भिन्न दर्शन, रामायण-महाभारत आदि पुराणेतिहास ग्रंथ, दर्शनकार, आचार्य, संत, कवि आदि के बारे में देश-काल, स्थान-निरपेक्ष प्रेम या भक्ति की भावना नहीं है! उनके नामस्मरण-मात्र से आज भी भारतीय मन प्रफुल्लित होता है और उन ऋषि-मुनियों, साधु-संतों, आचार्य-दर्शनकारों की कृति से उन्नत होता है, मस्तक झुक जाता है। प्राचीन काल में आज की तरह यातायात और आवागमन के साधन नहीं थे। फिर भी काशी के विश्वनाथ को रामेश्वर-सेतु के पवित्र जल से रोज स्नान कराया जाता था। हम बच्चे थे, तब तक यह सुनते भी आते हैं। हम जब सुनते थे, तो हमारा मन पवित्र भावना से भर जाता था और जो यह करते थे उनके प्रति नितांत आदर और भक्ति का अनुभव होता था। गंगा, नर्मदा, कावेरी आदि सात नदियों, सात पर्वतों, सात नगरियों आदि का स्मरण हरएक भारतीय नित्य करता था। आज भी महाराष्ट्र के देहाती

सत्यं जगत् स्फूर्तिः जीवनं सत्यशोधनम्

भूदान-यज्ञ

लोकनागरी लिपि*

अच्छे साहीत्य से बढ़कर कोअी मीठाअी नहीं

साहीत्य से मुझे हमेशा बहुत अुत्साह होता है। साहीत्य-देवता के लीअे मेरे मन में बड़ी श्रद्धा है। अेक पुरानी बात याद आ रही है। जब मैं कोंकण के देहात में था, तब पीताजी कुछ काम के लीये बड़ोदा रहते थे। दीवाली के दीनों में अकसर घर पर आया करते थे। अेक बार मां ने कहा, 'आज तेरे पीताजी आने वाले हैं, तेरे लीये मेवा-मीठाअी लायेंगे।' पीताजी आये। फौरन मैं अुनके पास पहुंचा और अुन्होंने अपना मेवा मेरे हाथ में थमा दीया। मेवे को हम कुछ गोल गोल लड्डू से समझते थे। लेकीन यह मेवे का पैकेट गोल न होकर चौपटा सा था। मुझे लगा की कोअी खास तरह की मीठाअी होगी। खोल कर देखा, तो दो कीताबें थीं। अुन्हें लेकर मां के पास पहुंचा और अुसके सामने रख दीया। मां बोली, 'तेरे पीताजी ने तुझे आज जो मीठाअी दी है, अुससे बढ़कर कोअी मीठाअी हो ही नहीं सकती।' वे कीताबें रामायण और भागवत की कहानीयों की थीं, यह मुझे याद है। आज तक वे कीताबें मैंने कअी बार पढ़ीं। मां का यह वाक्य मैं कभी नहीं भूला की 'अुससे बढ़कर कोअी मीठाअी हो ही नहीं सकती।' अीस वाक्य ने मुझे अीतना पकड़ रखा है की आज भी कोअी मीठाअी मुझे अुतनी मीठी मालूम नहीं होती, जीतनी कोअी अच्छे वीचार की पुस्तक।

पंढरपुर, ३०-५-'५७ —वीनोबा

* लिपि-संकेत : ि = ी ; ु = ू ; ए = ओ, संयुक्ताक्षर हलंत चिह्न से।

संपादकीय

नयी परम्पराओं की आवश्यकता

तमिलनाड में अभी कुछ दिन पहले ग्रामदानी गाँवों में जो सत्याग्रह हुआ, उसकी पृष्ठभूमि तथा तफसील ता० २२ सितम्बर के 'भूदान-यज्ञ' में दी गयी थी। सत्याग्रह के आदर्श और सामाजिक अन्याय के प्रतिकार का हमारा तरीका क्या हो, इस बारे में भी हमने उस अंक में कुछ चर्चा की थी। मुधीरलंडीपट्टी गाँव में छ: दिन तक वह सत्याग्रह चला था, जिसमें करीब ३२४ सत्याग्रहियों ने भाग लिया। उन छ: दिनों में पुलिस का जो रवैया रहा और उनकी ओर से जो बर्ताव हुआ, उस संबंध में इस अंक में हम कुछ कहना चाहते हैं।

अभी कुछ दिन पहले उत्तरप्रदेश हाईकोर्ट के जज श्री ए० एन० मुल्ला ने एक फैसले के दौरान में पुलिस विभाग और पुलिस-कर्मचारियों के रवैये के संबंध में जो कहा था, उसकी कुछ चर्चा १५ सितम्बर के 'भूदान यज्ञ' में हमने की थी। न्यायाधीश श्री मुल्ला ने "अपनी पूरी जिम्मेदारी के साथ" यह जाहिर किया था कि भारतीय पुलिस जैसा कानून की अवहेलना करने वाला दूसरा कोई संगठित गिरोह इस मुल्क में नहीं है। हम यह स्पष्ट कर देना चाहते हैं कि जिस तरह हम यह मानते हैं कि आजादी के पहले पुलिस का जो कर्तव्य और उसके तरीके थे, उसमें आजादी के बाद तब्दीली होना जरूरी है, उसी तरह हम यह भी मानते हैं कि पुलिस के बारे में आजादी के पहले के अनुभव से हमारे जो पूर्वग्रह रहे हों, उन्हें छोड़ कर हमें भी अर्थात् आम लोगों को भी, पुलिस को अपने मित्र और रक्षक के रूप में ही देखना चाहिए। इसलिए पुलिस के बारे में हम जो कुछ भी कह रहे हैं, वह एक मित्र की हैसियत से ही कह रहे हैं, और इस दृष्टि से ही कि पुलिस का व्यवहार बदले और आज आम लोगों के और पुलिस के बीच जिस तरह दुराव, परस्पर शंका और आतंक का रिश्ता है, उसके बजाय परस्पर आदर, सहयोग और विश्वास का रिश्ता हो।

दुर्भाग्य से आज भी, केवल पुलिस विभागवालों की ही नहीं, बल्कि पढ़े लिखे लोगों और समझदार लोगों में भी बहुत-से लोगों की यह मान्यता है कि पुलिस का काम सख्ती और आतंक पैदा किये बिना नहीं चल सकता। समाज में अब तक ऐसी मान्यता बनी हुई है कि न सिर्फ वह, जो अपराधी साबित हो चुका है, बल्कि वह भी जिस पर अपराध करने का शुबहा है, पतित और गिरा हुआ है और उसके साथ दुर्व्यवहार करना ही उचित है। इसके अलावा यह भी मान्यता है कि अगर किसी से "सच बात निकलवानी हो" तो वह डर, आतंक और डण्डे के जोर से ही निकलवायी जा सकती है। हमारे देश में ही नहीं, दुनिया के तमाम "सभ्य" मुल्कों में आज भी अपराध "कबूल करवाने" के लिए जो तरीके इस्तेमाल में लाये जाते हैं वे, जिनको हम बर्बर युग के तरीके कहते हैं, उनसे किसी भी हालत में कम नहीं हैं। आज यह सारा खेल आम लोगों की आँखों से ओझल, पुलिस की हिरासत के बंद कमरों में या थानों में होता है, इसलिए अधिकांश लोगों को उसकी जानकारी भी नहीं है। पर अगर जानकारी हो, तब भी ऊपर बतायी हुई मान्यताएँ समाज में कायम रहते हुए यह कम ही सम्भव मालूम होता है कि इन तरीकों में कोई परिवर्तन हो सके। इन सारी मान्यताओं के आधार पर पुलिस के जो तौर-तरीके बन गये हैं वे एक तरह से उस विभाग की परम्परा और उस विभाग के कर्मचारियों की आदत में शामिल हो गये हैं।

अपराध के संबंध में समाज की मान्यताओं में मूलभूत परिवर्तन तो जब होगा

आठवें वर्ष में प्रवेश करने के अवसर पर 'भूदान-यज्ञ' परिवार अपने बृहत्तर परिवार-पाठकों-के प्रति उनकी निरंतर कृपा के लिए हार्दिक कृतज्ञता प्रकट करता है।

तब होगा, लेकिन कम से कम दो बातें ऐसी हैं, जिनके बारे में हमारा दृष्टिकोण साफ होना चाहिए। आजादी के पहले के जमाने में पुलिस, लोगों को "काबू में रखने के लिए" शासन का एक हथियार थी। अमन चैन और सुरक्षा कायम रखने का मतलब भी उस वक्त इतना ही था कि मुल्क में कहीं ऐसी अव्यवस्था या गड़बड़ न हो, जिससे शासन को ही खतरा पैदा हो जाय। आजादी के बाद पुलिस का काम आन्तरिक सुरक्षा का, संकट के समय खास तौर से और आम तौर से हर मौके पर लोगों को मदद पहुँचाने का होता है। अपराध की रोकथाम और उनकी जाँच पड़ताल भी पुलिस का काम है, लेकिन अगर वे अपने पहले वाले मुख्य कर्तव्य के बारे में अधिक सजग हों तो आज जो पुलिस के बारे में लोगों के मन में आम धारणा है, वह नहीं रहेगी, और लोग पुलिस को अपने मित्र के रूप में देखने लगेंगे। आजादी के बाद सरकार और लोगों के बीच वह रिश्ता नहीं रहा है, जो आजादी के पहले था। आज आम लोगों की सत्ता सर्वोपरि है, या होनी चाहिए। सरकार लोगों की बनायी हुई है, उनकी मालिक नहीं। वैसे तो शासन के अन्य विभागों के कर्मचारियों के मानस में भी बहुत अन्तर नहीं आया है, लेकिन जहाँ तक पुलिस विभाग का सवाल है, आम अनुभव यह है कि आजादी के कारण इस बदले हुए संदर्भ की वजह से जनता के प्रति उनके रुख में कोई परिवर्तन नहीं हुआ है।

तमिलनाड के सत्याग्रह में पुलिस का जो रवैया रहा, उससे इस बात की पुष्टि होती है। तमिलनाड सर्वोदय-मण्डल के मंत्रियों ने जो रिपोर्ट सत्याग्रह की भेजी है, उसमें वे लिखते हैं :

> "पुलिस ने उसी पुराने तरीके से व्यवहार किया जैसा कि वे विदेशी हुकूमत के जमाने में करते थे। (सत्याग्रह के दौरान में) लोगों की तरफ से बराबर शान्ति रही। शुरू के दो दिनों में सत्याग्रह के लिए जितने भी लोग आये वे सब-के-सब गिरफ्तार कर लिये गये, लेकिन तीसरे और चौथे दिन पुलिस ने लोगों को डराने की दृष्टि से दमन के तरीके अख्तियार किये। उन्होंने महिलाओं के प्रति असभ्य शब्दों का उपयोग किया और पुरुषों को लाठियों से मारा। सत्याग्रहियों को दिन के ११ बजे से शाम ५ बजे तक धूप में बिठाये रखा गया और दिन भर उनको बिना खाना और पानी के भूखे-प्यासे रखा गया। शाम होने पर सत्याग्रहियों को पुलिस-चौकी पर ले जाया गया और सब सिवा मुखियाओं के और चन्द दूसरे लोगों के सबको छोड़ दिया गया। ... पुलिस ने यह सोचा था कि उनके दमन के कारण सत्याग्रह दब जायगा, लेकिन हुआ उल्टा। जो सत्याग्रही (दिन भर की परेशानी के बाद) शाम को छोड़ दिये जाते थे वे दूसरे दिन और ज्यादा लोगों को साथ लेकर फिर आते थे।"

सभ्य समाज का आज यह एक सर्वमान्य नियम बन गया है कि चाहे किसी भी अपराध के संदेह में कोई पकड़ा जाय तो भी जब तक उसका अपराध साबित न हो तब तक व्यक्ति निर्दोष माना जाता है। अपराध साबित होने के बाद भी कानून की दृष्टि से जो कुछ सजा अपराधी को दी गयी हो, उसके साथ व्यवहार वही होना चाहिए जो किसी दूसरे मनुष्य के साथ होता हो। पर सत्याग्रही तो सामान्य अर्थ में भी अपराधी की कोटि में नहीं आता। वह अपराधी की अपेक्षा किसी अधिक ऊँचे ध्येय को लेकर काम करता है, चाहे वह ध्येय दूसरों की नजरों में गलत हो। विदेशी हुकूमत के जमाने में सत्याग्रही को दुश्मन की निगाह से देखा जाता था, क्योंकि

उसका उद्देश्य ही हुकूमत को खतम करने का था। आजादी के बाद वह परिस्थिति नहीं रही है। ऐसी हालत में आज भी सत्याग्रहियों के साथ उसी प्रकार का व्यवहार करना, जो उस समय भी उचित तो नहीं माना जाता था, पर समझ में आ सकता था, गंदे और असभ्य शब्दों का व्यवहार करना, उन्हें खामखाह परेशान करना और अपमानित करना, यह किसी भी दृष्टि से उचित नहीं कहा जायगा। व्यक्ति कोई भी हो, उसका व्यक्तित्व एक पवित्र और आदर-योग्य वस्तु है। व्यक्ति का अपमान करना किसी भी सभ्य समाज में सह्य नहीं होना चाहिए, चाहे वह व्यक्ति सामान्य नागरिक हो, चाहे अपराधी हो।

भारतीय पुलिस इस वर्ष अपना शताब्दी-समारोह मनाने जा रही है। इस विभाग की स्थापना को १०० वर्ष पूरे होते हैं। क्या हम आशा करें कि अपने अस्तित्व की एक शताब्दी पूरी करके दूसरी में प्रवेश करने के साथ पुलिस विभाग अपनी पुरानी परम्पराओं को भी छोड़ कर नये युग में प्रवेश करेगा और एक आजाद मुल्क की पुलिस के योग्य लोगों में आदर और प्रेम का स्थान प्राप्त करेगा।

गोराजी का कदम

आन्ध्र के हमारे साथी श्री गोराजी से सर्वोदय-कार्यकर्ता अच्छी तरह परिचित हैं। वे उन निस्पृह व्यक्तियों में से हैं, जिनका अपना निजी कोई स्वार्थ नहीं है और जिन्होंने अपना जीवन जन-सेवा को अर्पण कर रखा है। यह सही है कि उनके बहुत-से विचारों और तरीकों से स्वयं विनोबा का और सर्व सेवा संघ का मतभेद रहा है, फिर भी उनकी सदाशयता, उनकी लगन, उनकी कार्य-शक्ति और निष्ठा के बारे में किसी को शक नहीं रही है। जहाँ तक अहिंसा की बुनियाद का सवाल है, उनके और दूसरों के विचारों में कोई मतभेद नहीं है, ऐसा हम मानते हैं। यही कारण है कि गोराजी अपनी कुछ भिन्न मान्यताओं के बावजूद सर्वोदय परिवार के ही एक साथी माने जाते हैं।

ता० ८ अक्तूबर से वे सेवाग्राम से दिल्ली की पदयात्रा पर अपने कुछ साथियों के साथ रवाना हो रहे हैं। जैसा उन्होंने खुद ने स्पष्ट किया है, इस कार्यक्रम से सर्व सेवा संघ का या सर्वोदय-आन्दोलन का संबंध नहीं है, फिर भी हम उनकी गतिविधि को उत्सुकता से देखते रहेंगे। करीब तीन महीने में वे ९०० मील की दूरी तय करके दिल्ली तक पहुँचेंगे। उनके इस "सत्याग्रह" के दो मुख्य उद्देश्य उन्होंने जाहिर किये हैं। एक तो यह कि लोकसभा में या विधान-सभाओं में दल के आधार पर बँट कर अलग-अलग बैठने की जो पद्धति अभी मान्य है वह बंद हो और विधान-सभाओं में सदस्यों को किसी भी विषय पर पार्टी की हिदायत से न बँध कर स्वतंत्र मत देने का अधिकार प्राप्त हो। दूसरा उद्देश्य जो उन्होंने जाहिर किया है वह यह है कि प्रांतीय या केंद्रीय मंत्रीगण और विधायक अपने मौजूदा घरों को—जो सामान्य लोगों के जिनके वे 'प्रतिनिधि' हैं औसत घरों से ज्यादा खर्चीले हैं—छोड़ कर सादे मकानों में रहें। इसके आगे गोराजी और उनके साथी तनख्वाहों और रहन-सहन से संबंधित दूसरी बातों का प्रश्न भी उठायेंगे। संक्षेप में गोराजी के दो उद्देश्य हैं—एक तो यह कि राजनीति पार्टियों के आधार पर न चले और दूसरा यह कि जनता के "प्रतिनिधि" जनता के समान स्तर पर ही रहें। इस सारे काम के लिए उन्होंने और उनके मित्रों ने 'सत्याग्रह समाज' के नाम से एक संगठन भी बनाया है।

जहाँ तक उद्देश्यों का सवाल है, सामान्य तौर पर ऊपर की दोनों बातों से, कम-से-कम सर्वोदय कार्यकर्ताओं का मतभेद नहीं होगा। पर उसके लिए जो तरीके गोराजी अख्तियार कर रहे हैं, वह हमारे खयाल से दरख्त को उखाड़ने के लिए उसके पत्ते और टहनियों को नोचने के जैसा है। अहिंसक क्रांति का तरीका हमेशा मूल में विधायक तरीका है, अर्थात् नीचे से जनता की शक्ति को जाग्रत और संगठित करना ताकि, आज नाम और शब्द से समाज की व्यवस्था जनतांत्रिक होते हुए भी उसमें जो विसंगति है, वह न रहे। ज्यों-ज्यों जनशक्ति जाग्रत और संगठित होती जाय, त्यों-त्यों ऊपर का विसंगत ढाँचा अपने आप गिरता और टूटता जाय। इसीलिए गांधीजी ने एक बार कहा था कि 'कन्स्ट्रक्टिव वर्क इज दी फुलफिलमेंट आफ स्वराज'—रचनात्मक कार्यक्रम की पूर्ति ही स्वराज्य है। स्वराज्य से गांधीजी का मतलब अहिंसक समाज-रचना से था, यह हम सब जानते हैं।

इसका मतलब यह नहीं है कि विधायक क्रांति के इस रास्ते में ऐसे मौके नहीं आयेंगे, जब कि तात्कालिक किसी अन्याय का प्रतिकार करना पड़े। पर इस प्रकार के प्रतिकार के मौके भी उस सारी विधायक क्रांति के कार्यक्रम के अंग-स्वरूप ही होंगे। इसमें कोई संदेह नहीं है कि अहिंसक क्रांति को विधायक रास्ते पर रखने की कोशिश में कहीं वे अप्रत्यक्ष रूप से मौजूदा व्यवस्था के रक्षक या स्थितिपालक न बन जायें। गांधीजी का रचनात्मक काम का चित्र भी वह नहीं था जो आज इस नाम की विभिन्न प्रवृत्तियों में हमें देखने को मिलता है। 'रचनात्मक काम' से उनका मतलब सामाजिक जीवन से संबंधित विभिन्न प्रवृत्तियों को इस प्रकार चलाने से था, जिससे समाज में पुराने मूल्य समाप्त होकर नये मूल्यों का निर्माण हो। यह सही है कि आज की हमारी अधिकांश प्रवृत्तियों में यह तत्व देखने को नहीं मिलता और शायद यही कारण है कि गोराजी जैसे साथियों का धीरज छूट जाता है।

—सिद्धराज

कार्यकर्ताओं [illegible] : बिहार सरकार : भूदान-किसान

हजारीबाग जिले में सभी जिलों से अधिक जमीन भूदान में मिली है और भूमिहीनों के बीच बाँटी भी गयी है। परन्तु जमीन मिलने पर भी भूदान-किसानों को अनेक कठिनाइयों का सामना करना पड़ रहा है। कुछ कठिनाइयाँ सरकारी कर्मचारियों के कार्यकलापों से और भी बढ़ जाती हैं। बिहार-सरकार भूदान-आन्दोलन को बढ़ावा देना तथा भूदान-किसानों को भी सहायता करना चाहती होगी, परन्तु उनके ही कर्मचारियों द्वारा भूदान-किसानों की कठिनाइयाँ किस तरह बढ़ती हैं, उसकी एक-दो मिसालें मैं यहाँ पर पेश करना चाहता हूँ।

(१) जिन भूदान-किसानों को भूदान-कमिटी की ओर से जमीन दी गयी है, उस जमीन को अक्सर बड़े-बड़े किसान नाजायज ढंग से जमींदार लोगों के पुराने कर्मचारियों से बन्दोबस्ती का कागज प्राप्त करके सरकारी कर्मचारियों से सरकारी रसीद भी कटवा लेते हैं। फलतः भूदान-किसानों और पुराने किसानों के बीच टक्कर होती है और भूदान-किसान बेदखल होते हैं।

(२) हजारीबाग जिले में अधिकांश जमीन बड़े-बड़े दानपत्रों के द्वारा मिली है और वह जमीन बँट भी गयी है। जमीन आबाद करने के लिए भूदान-किसानों को भूदान-कमिटी की ओर से (केन्द्रीय सरकार द्वारा भूदान-किसानों को साधन देने के लिए दिये गये कोष से) बैल, बीज, औजार तथा नकद रकम भी दी जा चुकी है। इतना होने पर भी अभी तक भूदान-किसानों के नाम से मालगुजारी नहीं बाँधी गयी है। सरकार से संबंधित रेवेन्यु अफसर लोग कहते हैं कि चूँकि वे दानपत्र पुष्ट नहीं हैं, इसलिए मालगुजारी नहीं बाँधी जा रही है। बड़े दानपत्रों के द्वारा जो जो जमीन मिली है, वह अधिकतर गैर-मजरूआ-खास जमीन मिली है और जमींदारी उन्मूलन के बाद उस जमीन पर सरकार का हक हो गया है। इसलिये जब इस तरह की जमीन बँट चुकी है, तो दानपत्रों की पुष्टि के अभाव में कानूनी मान्यता नहीं देना अनुचित है। यह आशा करना अनुचित नहीं होगा कि जो जमीन भूमिहीनों को दी गयी है उसे सरकार छीनना नहीं चाहेगी, तो क्यों नहीं सरकार विशेष छूट के द्वारा ऐसे भूदान-किसानों के नाम से मालगुजारी बाँध देती है? मालगुजारी नहीं बँधने के कारण वे किसान अपने को सुरक्षित नहीं समझते हैं। सरकार के ही कर्मचारी भूदान-किसानों से कहते हैं कि भूदान-कमिटी द्वारा दिये गये प्रमाण-पत्र के आधार पर मालगुजारी नहीं बाँधी गयी है, इसलिए कानूनी दृष्टि से इन प्रमाण-पत्रों का महत्त्व नहीं है। फलस्वरूप इनसे भी बेदखलियाँ होती हैं।

एक ओर सरकार 'लेवी' लगा कर भूमिहीनों को जमीन देना चाहती है और दूसरी ओर भूदान के द्वारा हजारों एकड़ जमीन उनके बीच बँट चुकी है, लेकिन उस पर भूदान-किसानों को कब्जा दिलाने का प्रयत्न सरकार नहीं करती।

आशा है, बिहार सरकार इस ओर ध्यान देगी और भूदान-किसानों को बेदखल होने से बचायेगी।

जिला सर्वोदय मंडल, हजारीबाग —श्यामप्रकाश, संयोजक

पाठकों की ओर से : ट्रेन-डकैती

'भूदान-यज्ञ' के गत १ सितम्बर के अंक में "ट्रेन डकैती" की बात पढ़ कर अच्छा लगा। इस कांड पर हर्ष तो नहीं हुआ, बल्कि इसके प्रकाशन पर हर्ष हुआ। रेल में नीलामी तरीके की लूट-खसोट कोई नई बात नहीं है, पर मर्ज लाइलाज है, जो दिन व दिन बढ़ता ही जा रहा है।

अभी थोड़े दिन की बात है कि हमारे गाँव का एक लड़का बनारस परचून का सामान खरीदने के लिए दो सौ रुपये के साथ गया। मढ़ौरा स्टेशन पर रात को गाड़ी में सवार हुआ। उस डिब्बे में तीन आदमी और थे, जिनके पास भी तीन-तीन सौ रुपये थे। वे भी सामान खरीदने जा रहे थे। ट्रेन में एक स्टेशन पर ६ आदमी चढ़े। जब गाड़ी सुनसान जगह से जा रही थी, उसी समय उन ६ लोगों ने दो आदमी को घूसों-मुक्कों से मार कर गिरा दिया। दूसरे दोनों को साहस नहीं हुआ कि कुछ बोलें, चूँकि उन लोगों ने छुरा भी निकाल लिया था। इस तरह उनके सभी रुपये लेकर जंजीर खींच कर वे उतर पड़े। अगले स्टेशन पर इन लोगों ने शिकायत की तो गार्ड ने जवाब दिया कि मामला चलाने पर तीन-चार सौ रुपया लग जायेगा और हैरानी होगी सो अलग। इससे अच्छा है कि घर लौट जाओ। मन मसोस कर अपनी लाचारी जाहिर कर वे लोग खाली हाथ वापस आ गये। यह सच नहीं है कि ऐसी ही घटनाएँ आये दिन घटती रहती हैं।

बनौली, जिला-सारन —रामज्ञान साह

क्या हम गांधी को भूल भी सकते हैं ?

• मणीन्द्रकुमार

करीब डेढ़ साल पहले पश्चिमी जर्मनी के एक भाई ने, जो छह महीने के लिए हिन्दुस्तान आये थे कहा, "मैं बड़ी आशा से हिन्दुस्तान आया था। मुझे अपने देश में यह लगता था, कि हिन्दुस्तान गांधी के रास्ते चलता होगा, किन्तु यहाँ आकर मुझे बड़ी निराशा हुई।" उन भाई का और यह भी कहना था कि युद्ध और भौतिकता से तबाह हम यूरोपीय राष्ट्रों के लिए गांधी का रास्ता ही एकमात्र तारक रास्ता लगता है। किन्तु हिन्दुस्तान में आने पर दूसरा ही दृश्य दिखाई देता है, कभी-कभी तो यह भी लगता है, कि गांधी नाम का व्यक्ति क्या केवल १२-१३ वर्ष पहले ही इस धरती पर रहता था! ऐसा ही करीब-करीब विदेशों से आये हुए गांधी और अहिंसा के विचारों से प्रभावित भाई-बहनों का मानना है।

यह तो विदेशियों का एक खयाल—इम्प्रेशन है, किन्तु हमारे देश के लोग भी अक्सर क्या यह कहते नहीं सुने जाते हैं कि हम गांधी को भूल रहे हैं? देश के प्रमुख सर्वोदयी विचारक श्री दादा धर्माधिकारी ने अपनी विशिष्ट व्यंग शैली में यही प्रश्न रखा। "करीब तेरह साल होने आये, गांधीजी का शरीरान्त हुए। गांधीजी के शरीर की भस्म इस देश के मुख्य-मुख्य जलाशयों में प्रवाहित की गयी थी। उस वक्त शायद हम लोगों ने सोचा होगा कि अब इस देश के लोग जो पानी पीयेंगे, उसमें गांधीजी की कुछ तासीर होगी। आपने जब बच्चों को या बड़ों को आपस में लड़ते देखा होगा, तो यह कहते सुना होगा कि हम भी अपनी माँ का दूध पीये हैं। इस देश का मनुष्य दुनिया के सामने खड़ा होकर आज क्या यह कह सकता है कि मैंने वह पानी पिया है, जिसमें गांधीजी की भस्मी प्रवाहित की गयी थी? अगर हम यह नहीं कह सकते हैं, तो हमारे लिए यह सोचने का विषय है।"

वस्तुतः जिसे गांधी विचार की थोड़ी सी भी जानकारी है, वह भी महसूस करता है कि भारत ने गांधी विचारों की उपेक्षा की है।

पद और सत्ता का संघर्ष, बढ़ता हुआ भ्रष्टाचार, प्रान्तीयता, भाषा और सम्प्रदाय के नाम पर बढ़ते हुए दंगे और फसाद—ये सब क्या संकेत करते हैं? क्या गांधी इन सबके लिए ही जिया और मरा? क्या यही गांधी के स्वप्नों का आजाद भारत है?

देश को आजाद हुए चौदह साल हो गये। इस बीच में दो पंचवर्षीय योजनाएँ पूरी हो गईं, किन्तु क्या वे सब गांधी की नीचे दी हुई चेतावनी को पूरी कर सकेंगी?

"जब तक मुट्ठी भर धनवालों और करोड़ों भूखे रहने वालों के बीच, बेइन्तहा अन्तर बना रहेगा, तब तक अहिंसा की बुनियाद पर चलने वाली राजव्यवस्था कायम नहीं हो सकती है। आजाद हिंदुस्तान में देश के बड़े-से-बड़े धनवानों के हाथ में हुकूमत का जितना हिस्सा रहेगा, उतना ही गरीबों के हाथ में रहेगा और तब नई दिल्ली के महलों और उनकी बगल में बसी हुई गरीब मजदूर-बस्तियों के टूटे-फूटे झोपड़ों के बीच जो दर्दनाक फर्क आज नजर आता है, वह एक दिन भी नहीं टिकेगा।" (पूना, ता. १२-११-'४५)

आयोजन से गरीब और अमीर का अन्तर कम होना तो दूर रहा, उलटे अन्तर ज्यादा बढ़ता जा रहा है। एक बार गांधीजी ने योजना के विषय पर विचार प्रकट करते हुए कहा था कि योजना के सम्बन्ध में एक रामबाण नुस्खा मेरा यह है कि योजना बनाने के पहले आँखें मूँद कर गरीब-से-गरीब आदमी के चेहरे को याद करो, जिसे तुमने कभी देखा हो और सोचो कि तुम्हारी योजना से उसको क्या फायदा पहुँचने वाला है और अगर फायदा उस गरीब का नहीं कर सकते हो, तो कम-से कम ऐसा तो करो कि उससे उसको कुछ नुकसान न पहुँचे।

आज योजना से सम्पन्न अधिक सम्पन्न बनते जा रहे हैं और विपन्न अधिक विपन्न बनते जा रहे हैं। कहाँ गांधीजी का नुस्खा और कहाँ आयोजन की दिशा? क्या इसमें कोई तालमेल दिखता है?

गांधीजी ने अपेक्षा की थी कि हमारे नेता जब सत्ता हाथ में लेंगे, तब सादगी से रहेंगे और जीविका भर के लिए पैसा लेंगे। किन्तु आज क्या दिखता है? गांधी ने कहा था, सरकार को शराब की नापाक आमदनी का उपयोग राष्ट्र निर्माण में नहीं करना चाहिए। किन्तु इनके साथी, जिन्होंने गांधीजी के वक्त खुद शराब की दुकानों पर धरना दिया था, वे स्वयं जब सरकार में आ गये तो शराबबंदी को अव्यवहार्य कार्यक्रम मानने लगे।

यह तो सरकार और कांग्रेस की नीतियों का जिक्र है, किन्तु रचनात्मक माने जाने वाले कार्यकर्ताओं की क्या हालत है? खादी में सरकारी सहायता से भी प्राण संचार नहीं हो रहा है! खादी-ग्रामोद्योग, नई तालीम, हरिजन-सेवा, महिला-जागृति (कस्तूरबा का काम), आदिवासी आदि रचनात्मक कार्यक्रम राज्याश्रित बनते जा रहे हैं और अपना स्वतंत्र अस्तित्व और मूल्य खोते जा रहे हैं। ये सब कार्यक्रम क्या एक प्रकार से सरकारी विभाग नहीं बन गये हैं? कहाँ ये कार्यक्रम और इनके आधार पर बनी संस्थाएँ जनता से पोषण पाती थीं और जनता को शिक्षण देती थीं! रचनात्मक कार्यकर्ताओं से यह हालत देख कर दादा ने व्यथित होकर एक बार कहा: "सरकार गांधी का नाम लेकर बिलकुल दूसरे रास्ते पर जा रही है, पर हम तो गांधीजी का नाम लेकर किसी भी रास्ते पर नहीं जा रहे हैं।"

राजनीतिक दल भी पाँच साल में एक बार ही सही जनता के पास जाते हैं, किंतु रचनात्मक संस्थाएँ तो अपने दायरे में ऐसी फँसी हैं मानो जनता से कोई सरोकार ही नहीं! आसपास में चाहे कुछ भी होता रहे—आग लगे, चोरी हो, अथवा दंगा-फँसाद हो, संस्थाएँ और आश्रम अपनी साधना में रत रहते हैं। इसलिए तो एक बार विनोबा ने रचनात्मक संस्थाओं को संकेत करते हुए कहा था: "हम ऐसे देवता बन गये कि लोकमत हमारे पक्ष में आवे या न आवे। देवता को 'पब्लिक ओपिनियन' की जरूरत नहीं है, हमारे हाथ एक तरह से सत्ता आ गयी। तनख्वाह मिलती है, काम चलता है। ऐसे ही खादी वाले—रचनात्मक कार्यकर्ता—अगर तप करते हैं और ऐसा समझेंगे तो मानना होगा कि वे चंद दिन के साथी हैं।"

इन सबके बावजूद मेरे मन में एक बुनियादी सवाल बार-बार उठ रहा है कि क्या हम गांधी को भूल भी सकते हैं? क्या हमारे लिए संभव है कि हम चाहें तो भी गांधी को भूल जायें। गांधी क्या था? गांधी कोई व्यक्ति नहीं था। वह तो अक्षुण्ण भारतीय संस्कृति के मंथन से निकला हुआ विचार-नवनीत है। बल्कि यों कहना चाहिए कि गांधी विश्व-संस्कृति का वह जाज्वल्यमान नक्षत्र-ध्रुवतारा है, जो आने वाली कई सदियों तक दुनिया को प्रकाशित करता रहेगा। गांधी बीसवीं सदी की एक अनिवार्य माँग की पूर्ति था। संसार में जहाँ एक ओर विज्ञान ने बेतहाशा प्रगति की, वहाँ दूसरी ओर मानवीय मूल्यों का ह्रास भी हुआ। जहाँ विज्ञान ने मानव को नजदीक ला दिया, वहाँ उसने उनके दिलों को जोड़ने के बजाय तोड़ दिया। गांधी-विचार की खूबी यही है कि वह विज्ञान को अध्यात्म की दिशा देता है। वह प्रगति चाहता है, किन्तु एक व्यक्ति की नहीं, एक कौम की नहीं, अपितु सबकी सर्वांगीण प्रगति चाहता है। चाहे आज हम गांधी को भूल जायें या उसके सिद्धान्तों की उपेक्षा करें, किन्तु जमाने की माँग के कारण हमको एक-न-एक दिन गांधी के रास्ते पर आना ही पड़ेगा। अगर भारत इसमें पिछड़ा, तो हो सकता है कि दुनिया का दूसरा कोई मुल्क गांधी के रास्ते पर चल कर नया प्रकाश दे।

अहिंसा के आधार पर खड़े स्वराज्य में...

अहिंसा के आधार पर खड़े स्वराज्य में कोई किसी का शत्रु नहीं होता, सभी सामान्य ध्येय के लिए अपने-अपने वाजिब हिस्से का काम करते हैं, सब पढ़-लिख सकते हैं और उनका ज्ञान दिन-दिन बढ़ता रहता है। रोग और बीमारी कम-से-कम होती है। कोई दरिद्र नहीं होता और मजदूरों को हमेशा काम मिल जाता है। ऐसे राज्य में जुए, शराबखोरी, दुराचार या वर्ग-द्वेष के लिए कोई स्थान नहीं होता।......

यह नहीं होना चाहिए कि मुट्ठी भर अमीर लोग तो रत्नजटित महलों में रहें और करोड़ों लोग वायु और प्रकाशहीन गंदे झोपड़ों में रहें!

—गांधीजी

होगी। परिचय के परिणाम से कोई एक गाँव ऐसा मिलेगा, जहाँ का 'इन्टेन्शन' यानी सामान्य सम्मति हमारे विचारों को ग्रहण करेगी और तुरन्त सर्वोदय-पात्र आदि के रूप में प्रकट होगी।

जब हमने गाँव चुन लिया तो हमारी परिव्राजक की स्थिति समाप्त और पुरोहित की स्थिति शुरू हुई। पुरोहित की हैसियत से हम गाँव की परिस्थिति के अनुबंध में विचार देंगे, काम की योजना बनायेंगे और परिवारों के साथ स्नेह-सम्बन्ध साधेंगे। किसान के खेत पर उसके साथ काम करके श्रम की बिरादरी स्थापित करना, खेती में सुधार सुझाना, बच्चों की एक दो घंटे की ग्रामशाला चलाना, रोगी-सेवा, या इस तरह की अन्य सेवाएँ हमें गाँव के हृदय के पास ले जायेंगी। इस स्थिति में हमारी जीविका सम्मिलित रूप से श्रम और प्रेम की कमाई से चलेगी।

जब गाँव का हृदय हमें स्वीकार कर ले, तो हमारी तीसरी यानी नागरिक की हैसियत शुरू होगी। इस स्थिति में गाँव हमें गाँव के औसत के अनुसार भूमि देगा, हम गाँववालों के सहकार में जोतेंगे-बोयेंगे। दूसरे अन्य नागरिकों की तरह हमारा जीवन भी श्रमाधारित हो जायगा। जितना समय हम शिक्षण में देंगे उसका श्रम की कमाई के अनुपात में हमें मुआवजा मिलेगा। सुव्यवस्थित ढंग से चलाने की जिम्मेदारी हम सभी लेंगे, जब गाँव की की ओर से हमें नागरिकत्व मिल जायगा; क्योंकि हमें नागरिकत्व प्रदान करने का अर्थ है कि गाँव नयी तालीम की शिक्षा-पद्धति और नयी तालीम के जीवन-मूल्यों के लिए तैयार है।

इस पद्धति में सामान्यतः हर दो सौ परिवारों के बीच पूर्व बुनियादी, बुनियादी, उत्तर बुनियादी के अभ्यासक्रम चलेंगे, जिनके लिए बीस-बाईस शिक्षकों की आवश्यकता होगी। उनमें से कुछ बाहर से आये हुए होंगे और कुछ गाँव के मूल उद्बुद्ध नागरिक शिक्षण का काम करेंगे। विद्यार्थी शुरू से ही ग्राम-परिवार की सदस्यता और ग्राम पुरुषार्थ का भागीदार होगा। वह देखेगा कि जिन्दगी को जीने की क्रिया में से ऊँचे-से-ऊँचे ज्ञान और वैज्ञानिक तकनीक की प्राप्ति हो रही है। उसके लिए उसे गाँव छोड़ कर कहीं दूसरी जगह जाने की जरूरत नहीं है। विकास-क्रम में घर के चूल्हे से लेकर गाँव के खेत तक जो कुछ भी है, सबमें सुधार आवश्यक होगा, ताकि अधिक-से अधिक कमाई हो और एक एक व्यक्ति में ज्ञान और चरित्र आवश्यक होगा, ताकि काम सार्थक और जीवन सुखी हो। इस तरह एक तालीम की परिधि में आर्थिक, सांस्कृतिक और नैतिक उत्थान की सब प्रक्रियाएँ एकत्राय आ जायेंगी। अगर हम और आगे सोचें तो हम देखेंगे कि गाँव नयी तालीम की इस योजना में राजनीतिक सुधार के लिए न प्रत्यक्ष संघर्ष की आवश्यकता रह जाती है, न दलगत चुनाव आदि की। आज हम जिसे नयी तालीम कह रहे हैं, वह गाँव के लिए जीवन की बदलती परिस्थिति में नित्य नयी तालीम होगी और समाज लोकनीति के आधार पर हर नयी समस्या का समाधान अपनी सहकार शक्ति से, सब प्रकार के बाहरी *नियंत्रण या अंकुश से मुक्त* रह कर, सहज ही ढूँढ़ लेगा। तब समाज शासननिरपेक्ष होगा और शांति परस्पर अभियोजन('म्युचुअल एडजस्टमेंट') की एक क्रिया मात्र होगी।

यह नयी तालीम का ऐतिहासिक मिशन है। इसकी सिद्धि उसका उत्तरदायित्व है। बापू ने जब भारत के सात लाख गाँवों के लिए सात लाख कार्यकर्ताओं की माँग की थी तो उनके मस्तिष्क में नयी तालीम का यही मिशन था। वह माँग आज भी ज्यों की त्यों है। उस माँग की पूर्ति पर भारत का ही नहीं, मानव का भविष्य निर्भर है। ●

विश्व-दर्शन

फीजी द्वीपसमूह की चिट्ठी

[हमारे विशेष संवाददाता द्वारा]

[देश विदेश का भेद विज्ञान की रफ्तार के कारण तेजी के साथ मिट रहा है। जैसा विनोबा कहते हैं, एक सिरे पर गाँव और दूसरे सिरे पर विश्व—यह नक्शा आगे के समाज का रहने वाला है। ऐसी परिस्थिति में विश्व के भिन्न-भिन्न हिस्सों की, और वहाँ क्या कुछ चल रहा है, इसकी जानकारी हरएक के लिए उपयोगी ही नहीं, कुछ माने में आवश्यक भी होती जा रही है।

दुनिया के कई देशों से पत्र-व्यवहार द्वारा सम्पर्क स्थापित करके हम वहाँ की गतिविधि 'भूदान-यज्ञ' के पाठकों के लिए समय-समय पर देने के प्रयत्न में हैं। इस अंक में फीजी द्वीपसमूह की एक झाँकी दी गयी है।

—सम्पादक]

फीजी भारत के दक्षिण-पूर्व सुदूर, प्रशान्त महासागर के मध्य में आस्ट्रेलिया के परे एक द्वीप-समूह का नाम है। छोटे बड़े कुल मिल कर ३०० द्वीप इस समूह में हैं, जिनका कुल रकबा ७ हजार वर्ग-मील है यानी हमारे देश के छोटे से प्रदेश 'हिमाचल' का भी करीब तीन-चौथाई।

वीतीलेवू इस समूह का मुख्य द्वीप है और समूह की राजधानी सूवा इसी द्वीप में है। १७ वीं शताब्दी में यूरोपियन व्यापारियों का इस द्वीप से सम्पर्क हुआ। धीरे धीरे इंग्लैंड के व्यापारियों ने वहाँ अपना आधिपत्य जमाया और १० अक्टूबर १८७४ में फीजी के आदिम निवासियों के सरदार से हुई एक सन्धि के आधार पर फीजी को ब्रिटिश साम्राज्य के अन्तर्गत ले लिया गया। इस समय फीजी इंग्लैंड के ही शासन में है।

इस उपनिवेश का मुख्य व्यापार खेती से पैदा होने वाली चीजों का है। इस समय खेती के अन्तर्गत करीब साढ़े तीन लाख एकड़ जमीन है और मुख्य फसलें गन्ना, नारियल, केला, अनन्नास आदि हैं, जो अधिकतर दूसरे देशों को भेजी जाती हैं। गन्ने से शक्कर बनाने के चार कारखाने फीजी में हैं। चारों एक ही कम्पनी—कोलोनियल सुगर रिफाइनिंग क० के हैं। वीतीलेवू के उत्तरी तट पर एक सोने की खान भी है।

इस उपनिवेश के विकास के लिए जब अंग्रेज व्यापारियों को मजदूरों की आवश्यकता हुई—इस द्वीपसमूह के मूल निवासी अपनी स्वतंत्रता खो चुकने के बाद भी शायद अंग्रेजों के नीचे मजदूरी करने को राजी नहीं हुए—तब जैसे अफ्रीका के भिन्न-भिन्न हिस्सों में हिन्दुस्तानियों को काम के लिये ले जाया गया, उसी तरह फीजी में भी १८७९ से काफी संख्या में हिन्दुस्तानियों का जाना शुरू हुआ। सन् १९५२ की आनुमानिक गणना के आधार पर फीजी द्वीपसमूह की कुल जनसंख्या ३,१२,००० है, उसमें से करीब डेढ़ लाख यानी आधे के करीब हिन्दुस्तानी हैं। मूल निवासियों की, यानी फीजियन लोगों की, संख्या उनसे कम करीब १,३६,००० है। करीब ३० हजार योरोपियन, चीनी इत्यादि अन्य सब मिल कर हैं। अब अधिकांश हिन्दुस्तानी मजदूर न रह कर खुद किसान बन गये हैं। गन्ने की खेती के अलावा चावल, मकई, कपास इत्यादि भी वे पैदा करते हैं। फीजी की आबोहवा हिन्दुस्तानियों को अनुकूल पड़ी है। निरीक्षकों का कहना है कि यहाँ के हिन्दुस्तानी हिन्दुस्तान में रहने वालों की अपेक्षा ज्यादा स्वस्थ और मजबूत हैं। यहाँ के अधिकांश हिन्दुस्तानी हिन्दू धर्म के मानने वाले हैं, करीब १० फीसदी मुसलमान हैं।

१९५३ में भूकम्प के धक्कों से समस्त वीतीलेवू हिल उठा था। गत ता० ५ जून को दिन के १० बजे करीब फिर सूवा शहर भूकम्प के धक्कों से काँप उठा। यद्यपि धरती ६ सेकेण्ड तक डोलती रही, पर हानि १९५३ की अपेक्षा कम हुई।

गत अप्रैल की ता० १८ को फीजियन एसोसिएशन की एक बड़ी सभा सूवा में हुई थी। इस सभा में लगभग ५०० काईबीती (फीजी के मूल निवासी) व्यक्ति उपस्थित थे। यहाँ की धारा-सभा के एक काईबीती सदस्य श्री रतु आमा वूनीवालू सभापति थे। फीजियन नेताओं ने *संविधान के परिवर्तन के सम्बन्ध में सरकारी प्रस्ताव का* घोर विरोध किया। अगले दिन यहाँ के धारा-सभा में उपनिवेशिक मंत्री ने संविधान परिवर्तन का प्रस्ताव पेश किया था, लेकिन काईबीती सदस्यों के विरोध के कारण प्रस्ताव वापस ले लिया गया। अंग्रेज तथा भारतीय सदस्यों ने प्रस्ताव का समर्थन किया था।

चीनी व्यवसाय की जाँच

गत वर्ष दिसम्बर में यहाँ के गवर्नर ने चीनी व्यवसाय की जाँच करने के लिए एक कमीशन की नियुक्ति की थी। इस कमीशन की रिपोर्ट ७ सितम्बर को फीजी में वितरित की गयी और इस समय सारे फीजी प्रदेश में यही चर्चा का विषय बना हुआ है। सार्वजनिक रूप से अभी तक रिपोर्ट के विषय में कुछ नहीं कहा गया है, लेकिन कुछ व्यक्तियों ने अपने-अपने विचार अवश्य प्रकट किये हैं। फीजी किसान संघ के महामंत्री, श्री अयोध्याप्रसाद ने रिपोर्ट को काफी अच्छी बतलाया है, जब कि किसान फेडरेशन कमेटी के प्रमुख श्री ए० डी० पटेल ने कहा कि रिपोर्ट तो कारखानेदार कम्पनी के पक्ष में है।

चीनी के मूल्य के सम्बन्ध में कमीशन ने सिफारिश की है कि चीनी बनाने के खर्च को काटने के बाद गन्ने का मूल दाम निर्धारित किया जाय। इसमें ८२½ फीसदी किसानों को और १७½ फीसदी कम्पनी को मिलना चाहिए। फीजी प्रदेश को चीनी के व्यवसाय से हर साल करीब ८२ लाख पौण्ड की आमदनी होती है। इस समय फीजी में करीब सवा लाख एकड़ जमीन में गन्ना उपजाया जाता है और साढ़े बारह हजार किसान इस धन्धे में लगे हुए हैं, जिनमें से ८९ प्रतिशत हिन्दुस्तानी हैं।

साम्यवाद का खतरा

लौटोका से प्रकाशित हिन्दी साप्ताहिक 'जय फीजी' ने ता० ७ सितम्बर के *अपने सम्पादकीय में यह चेतावनी दी है कि* प्रशान्त के द्वीपों में साम्यवाद का खतरा बढ़ रहा है। अगस्त के अन्त में 'वुलताले कम्युनिस्ट पार्टी' की स्थापना का ऐलान किया गया था। करीब एक हजार काईबीती स्त्री-पुरुष इसके सदस्य हो चुके हैं। इस पार्टी में अभी तक कोई भी भारतीय या अंग्रेज नहीं है। पार्टी के प्रमुख प्रवक्ता श्री अपिमेलेकी ने पार्टी की नीति बतलाते हुए कहा कि उन्हें इस पार्टी को स्थापित करने में बाइबिल से प्रेरणा मिली है। "बाइबिल के सामाजिक सिद्धान्त ही हमारा मार्ग-दर्शन करेंगे।"

—

विनोबा का वाङ्मय : ५

नारायण देसाई

"राजनीति के विषय पर लिखने या बोलने का विनोबा का अधिकार कितना है-?" इसके उत्तर का संकेत पिछले लेख में हमने किया था। दुनिया आज जिसको राजनीति के नाम से पहचानती है, उसमें विनोबा प्रत्यक्ष रूप से नहीं पड़े हैं, फिर भी उसके साक्षी वे रहे हैं। सच तो यह है कि सत्य के शोधक के मन में जीवन के अलग-अलग हिस्से होते ही नहीं हैं। ऐसे शोधक को सत्य का जो दर्शन मिलता है, वह जीवन के तमाम अंगों को स्पर्श कर सके, ऐसा होता है। गीता को हम क्या मानेंगे? वह तत्त्वज्ञान की पुस्तक तो है ही, पर भारत के अनेक राजनीतिज्ञों ने उसे अपनी पाठ्य-पुस्तक मानी है। इसके अलावा उसमें सर्वोत्तम मानस-शास्त्र है; और हमारे समाज-शास्त्र की भी वह बुनियाद है। इतिहास के पण्डित उसमें से इतिहास निकाल कर बतला देंगे; साहित्यकारों को ७०० श्लोक के संक्षिप्त कलेवर में इतना उत्तम साहित्य भाग्य से ही किसी और जगह मिलेगा। इस प्रकार गीता की सर्वतोमुखी प्रतिभा है। वह किस कारण से है? भगवान वेदव्यास के सत्य-दर्शन के कारण। उनके सत्य-दर्शन ने जीवन के विभिन्न अंगों को स्पर्श किया था। इसी प्रकार विनोबा के बारे में कहा जा सकता है।

'स्वराज्य-शास्त्र' के अलावा जिन गुजराती पुस्तकों में विनोबा के राजनैतिक विचारों का मुख्य रूप से समावेश हुआ है, उनमें "क्रांतिनूं भाथूं", "रचनात्मक राजनीति" और "कार्यनी सुन्निधिमां", इन तीन का उल्लेख गत अंक में किया गया है। इसके अलावा दो-तीन पुस्तकें गुजराती में और हैं, जो राजनीति के विषय पर प्रकाश डालती हैं।

राजनीति से बाहर रह कर विनोबा ने वर्षों तक ग्राम-सेवा, ध्यान-धारणा और शरीर श्रम के अनेकविध कार्य करते हुए भी अपने कान और आँखें हमेशा खुली रखी हैं। हिन्दुस्तान के छोटे-से गाँव में उन्हें समग्र देश का दर्शन हुआ है। एक-चौथाई शताब्दी से भी अधिक के लम्बे समय का यह निरीक्षण और चिन्तन "भूदान यज्ञ" के निमित्त आज प्रकट हो रहा है। इसके अलावा भूदान-यात्रा स्वयं इस दर्शन और चिन्तन में नई बढ़ोतरी कर रही है। देश के कोने-कोने में घूमने वाले विनोबा को सारी परिस्थिति को आँखों से देखने का अवसर तो मिलता ही है, पर उन्हें एक दूसरा लाभ भी हुआ है। विनोबा निष्पक्ष और सर्व-प्रेमी होने से सब पक्षों के लोग उनके सामने निःसंकोच भाव से अपना हृदय खोल सकते हैं। अतः लोक-हृदय में प्रवेश करके भारत के राजकारण को देखने का जो मौका पिछले दस-बारह वर्षों में विनोबा को मिला है, वैसा शायद ही किसी को मिला होगा।

राजनीति के विषय पर विनोबा ने जितने विचार प्रकट किये हैं, उन्हें अगर एक ही शब्द में व्यक्त करना हो तो वह शब्द है, "लोकनीति"। सर्वोदय के समग्र राजनैतिक विचार को प्रदर्शित करने वाला स्वयं विनोबा द्वारा घड़ा हुआ यह शब्द है। "क्रांतिनूं भाथूं" आदि पुस्तकों में यह लोकनीति का विचार ही चर्चा गया है।

लोकनीति के समग्र विचार को एकदम संक्षेप में—थोड़ा-बहुत अन्याय होने की जोखम उठा करके भी—अगर हमें समझ लेना हो तो वह नीचे के कुछ सूत्रात्मक वाक्यों में आ जाता है :

१—आज शिक्षक-दण्डित की विरोधी, दण्ड शक्ति से भिन्न, ऐसी एक तीसरी अहिंसक लोक-शक्ति की आवश्यकता है।

२—इस लोक-शक्ति का अधिक परिपूर्ण विकास होगा तब विचार शासन और कर्तृत्व-विभाजन सधेगा, जिसमें से अन्ततोगत्वा हमें सर्वोदय के ध्येय अर्थात् शोषणहीन और शासन-मुक्त समाज रचना की तरफ जाना है।

३—लोकनीति की स्थापना के लिए, परस्पर की शक्ति को घटाने वाली पक्ष-पद्धति के बदले सर्वानुमति या सर्व-सम्मति पर रची हुई विकेन्द्रित लोकशाही की रचना करनी पड़ेगी।

४—इसके लिए आज, जिसमें सब पक्ष या पार्टियाँ शामिल हो सकें, ऐसे विधायक कार्यक्रम की आवश्यकता है।

५—जिनमें सबकी सम्मति न हो सके, उन कामों में भी लोकशाही की दृष्टि से कुछ आचार-नियम आदि तय करने की जरूरत है।

६—लोकनीति की स्थापना के लिए सत्ता की राजनीति से दूर रहने की प्रतिज्ञा से बद्ध ऐसे सेवक-वर्ग की आवश्यकता है, जिसका काम परस्पर घर्षण करती हुई शक्तियों के बीच स्नेहन करने का, नया चिन्तन-मनन-संशोधन करने का, जरूरत हो वहाँ सत्ताधारी या सत्ताभिलाषी पक्ष की भूलों के प्रति जनता का ध्यान खींचने का और नित्य सेवा का रहेगा।

गांधीजी की मृत्यु के थोड़े समय बाद एक बार श्री जयप्रकाश नारायण विनोबा से मिलने के लिये पवनार-आश्रम में गये थे। उस समय विनोबा हाथ से रहट चलाने का प्रयोग करते थे। जयप्रकाशजी भी रहट चलाने के काम में शामिल हो गये। इस मुलाकात के बाद विनोबाजी ने "सर्वोदय मासिक" में एक लेख लिखा था, जिसमें उन्होंने कहा था : "हमारे बीच अनेक मतभेद थे, फिर भी रहट चलाने के काम में हम दोनों सहमत हुए और हमारे दोनों के रहट चलाने से पानी निकला और उससे हमारा खेत सींचा गया। यह घटना सिद्ध करती है कि भारत रूपी खेत सींचने के लिये रचनात्मक काम में विभिन्न मत रहने वाले लोग भी इकट्ठे हो सकते हैं।" आखिर में उन्होंने लिखा : 'रहट चलता था तब बीच-बीच में 'किचुड़-किचुड़' आवाज होती थी। इस आवाज को बन्द करने के लिए रहट में तेल देना पड़ता था।" और अन्त में उन्होंने भगवान से प्रार्थना की थी कि भारत के रहट में वे तेल का काम कर सकें, ऐसी शक्ति उन्हें दे।

इस घटना को आज १२ वर्ष हो गये हैं। "भूदान-यज्ञ" ने राष्ट्र-निर्माण का जो रहट घुमाया है, उसमें सद्भाग्य से अनेक भिन्न-भिन्न विचार रखने वाले लोगों का सहकार मिला है, और अनेक बार उनके बीच में घर्षण होते हुए विनोबा ने तेल का काम किया है। इस प्रकार लोकनीति का जो विचार उन्होंने अपने वाङ्मय में पेश किया है, वह जीवन में भी चरितार्थ किया है।

अब हम उपरोक्त पुस्तकों को थोड़ा नजदीक से देख जायें। डेढ़ वर्ष के थोड़े-से समय में जिनकी १५ हजार से ऊपर प्रतियाँ खप गयी ऐसी छोटी-सी पुस्तिका "क्रांतिनूं भाथूं" (गुजराती) में विनोबा के लोकनीति विषयक मौलिक विचारों का समावेश हो जाता है। चाण्डील सर्वोदय-सम्मेलन के समक्ष दिये हुए उनके असाधारण भाषणों के उपरान्त दूसरे भी कुछ महत्त्वपूर्ण भाषणों का उसमें समावेश है।

"रचनात्मक राजनीति" यह संपादक द्वारा लोकनीति को दिया गया दूसरा नाम है। इस पुस्तक में उड़ीसा की धारासभा के सदस्यों के समक्ष दिया हुआ एक प्रवचन है, जो प्रत्येक प्रदेश के धारासभाइयों के लिए संग्रह-योग्य है। अखिल भारत कांग्रेस कमेटी की बैठक में दिया गया प्रवचन वैचारिक और ऐतिहासिक दृष्टि से अपना विशेष स्थान रखता है। पुरी-सम्मेलन का उनका मुख्य प्रवचन सुकरात की याद दिलाता है। इस प्रकार यह संग्रह अनेक तरह से मूल्यवान बन गया है।

आज भारतीय राजनीति और समाज में गांधीजी का नाम कौन नहीं लेता? सभी राजनैतिक पक्ष अपने कार्यक्रम के मूल में गांधीजी का ही विचार है, ऐसा सिद्ध करने का प्रयत्न करते हैं। रचनात्मक कार्यकर्ता तो अपने को गांधी के वारिस मानते हैं। विनोबा गांधीजी का नाम क्वचित् ही लेते हैं। उनके नाम के उल्लेख मात्र से उन्हें गद्गद होते हुए अनेक बार हमने देखा है। गांधीजी के विचार आज के अनुकूल किस तरह से हों, इसके प्रयोग में ही उन्हें दिलचस्पी है। "गांधी जनने" इस पुस्तक में गांधी जन के नाम से अपनी पहचान कराने वाले अनेक प्रकार के वर्गों को उद्देश्य करके दिये गये प्रवचनों का संग्रह है।

१९५६ का सर्वोदय-सम्मेलन पुरम्, तमिलनाड में हुआ था। भगवान बुद्ध की २५०० वीं जयन्ती का वह प्रसंग था। विनोबा ने बुद्ध और गांधी के नाम पर स्पष्ट और तीव्र शब्दों में पहली [illegible] सरकार से निःशस्त्रीकरण की माँग की थी। इस विषय से सम्बन्धित प्रवचन तथा दूसरे भी कुछ महत्त्वपूर्ण प्रवचनों का संग्रह "कांचीनी सन्निधिमां" पुस्तक में हुआ है।

१९५८ का सितम्बर महीना! लोग विनोबा के गुजरात-आगमन की बाट देख रहे हैं। गुजरात के सब निवासियों को—अहमदाबाद के खादी-भण्डारों को जलाने वालों समेत—विनोबा ने गांधी-जन के नाम से सम्बोधित किया है और इस गांधी गुरु ने उन सबके सामने अपने सारे विचार का सार चार प्रवचनों में रख दिया है। इनका संग्रह "गांधीजीना गुजरातने" नाम की पुस्तिका में हुआ है। इस पुस्तक के दो प्रवचन विनोबा ने मूल गुजराती में ही दिये थे। विनोबा के मूल गुजराती प्रवचनों का यह पहला संग्रह है। उसके बाद "ग्राम-दान पटले अभयदान", "विश्व-मन्दिर" इत्यादि पुस्तकों में विनोबा के और भी गुजराती भाषण आये हैं।

'आचार्य' की व्याख्या

शिक्षकों को पहले 'आचार्य' कहा जाता था। आचार्य अर्थात् आचारवान्। स्वयं आदर्श जीवन का आचरण करते हुए राष्ट्र में उसका आचरण करा लेने वाला ही आचार्य है। ऐसे आचार्यों के पुरुषार्थ से ही राष्ट्रों का निर्माण हुआ है। आज हिन्दुस्तान की नई यह बेढ़ाली है। राष्ट्र निर्माण का काम आज हमारे सामने है। आचारवान् शिक्षकों के बिना वह सम्भव नहीं।

तभी तो राष्ट्रीय शिक्षण का प्रश्न सबसे महत्त्वपूर्ण है। उसकी व्यापकता और उसकी व्याप्ति हमें अच्छी तरह समझ लेनी चाहिए। राष्ट्र का सुशिक्षित वर्ग निष्प्राण और निष्क्रिय होता जा रहा है। इसका एकमात्र उपाय राष्ट्रीय शिक्षण की आग सुलगाना ही है। ['शिक्षण-विचार' से]

—विनोबा

बिहार में राजनैतिक दलों के लिए आचार-संहिता

बिहार सर्वोदय-मण्डल के निमंत्रण पर ता० २६-९-६१ को शाम को पटना के विधायिका क्लब (विधान सभा के गोष्ठी-मण्डल) के भवन में विभिन्न पार्टियों के प्रतिनिधियों की एक सभा चुनाव-प्रचार के सिलसिले में सर्वमान्य आचार-मर्यादा स्वीकार करने के प्रश्न पर विचार करने के लिए हुई। कांग्रेस, प्रजा-समाजवादी, स्वतंत्र, कम्युनिस्ट तथा समाजवादी आदि पार्टियों के लगभग ४० विधान सभाई व अन्य व्यक्ति उपस्थित थे। सभा बिहार विधान परिषद के अध्यक्ष श्री बृजराज कृष्ण के सभापतित्व में हुई। उपस्थितों में बिहार के भूतपूर्व मुख्यमंत्री श्री दीपनारायण सिंह, प्रजा-समाजवादी पार्टी के नेता श्री बसावन सिंह, श्री पाठक, श्री कर्पूरी ठाकुर, श्री महेश बाबू, स्वतंत्र पार्टी के श्री जानकीनन्द आदि थे। बिहार सर्वोदय-मण्डल की ओर से मण्डल के संयोजक श्री रामनारायण बाबू, श्री वैद्यनाथ प्रसाद चौधरी व श्री श्याम सुन्दर प्रसाद तथा सर्व सेवा संघ से श्री सिद्धराज ढड्ढा उपस्थित थे।

बिहार सर्वोदय-मण्डल की ओर से आचार-मर्यादा का नीचे लिखा मसविदा सभा में पेश किया गया :

"हम सबको भारत के संविधान में निर्देशित ध्येय तथा तत्त्व मान्य हैं। हो सकता है कि इस ध्येय के व्यावहारिक स्वरूप के बारे में सबकी एक राय न हो, लेकिन यह सब स्वीकार करते हैं कि अपने लक्ष्य की सिद्धि के लिए जो सामाजिक परिवर्तन करना है, वह लोकतांत्रिक तथा शान्ति के मार्ग से ही होना चाहिए। सारे राजनैतिक दल इस मार्ग पर अधिक दृढ़ता तथा गतिपूर्वक चल सकें और देश का सार्वजनिक जीवन उच्चतर और विशुद्ध होता जाये, इसके लिए आवश्यक है कि सभी राजनैतिक दल एक आचार संहिता (कोड ऑफ कंडक्ट) मान्य करें। इसके लिए हम निम्नलिखित मर्यादाएँ मान्य करते हैं और चाहते हैं कि इन पर अमल करने का पूरा प्रयत्न किया जाय :

राजनैतिक पार्टियों के लिए चुनाव के संदर्भ में आचार-मर्यादाएँ

(१) दूसरी पार्टियों की टीका-टिप्पणी उनके नीति नियम और कार्यक्रम पर ही करनी चाहिए। दूसरी पार्टियों के लोगों के सम्बन्ध में टीका-टिप्पणी करते समय उनके सार्वजनिक जीवन से संबंध न रखने वाले व्यक्तिगत मामले की टीका-टिप्पणी न की जाय।

(२) इस प्रकार का कोई प्रचार न किया जाय, जिससे जातिवाद, भाषावाद, सम्प्रदायवाद एवं प्रान्तवाद को प्रोत्साहन मिले।

(३) कोई राजनैतिक पार्टी अन्य पार्टियों की सभा या जुलूस आदि को भंग करने की या, उसमें बाधा डालने की कोशिश न करे।

(४) चुनाव प्रचार में १८ वर्ष से कम उम्रवाले किशोरों का उपयोग न किया जाय।

(५) चुनाव में जिस व्यक्ति को किसी पार्टी ने उम्मीदवारी का टिकट देने से इन्कार किया हो, उसे दूसरी कोई पार्टी भी उस चुनाव के लिए टिकट न दे।

(६) किसी एक पार्टी के टिकट पर चुना गया व्यक्ति जब तक उस पद से त्याग-पत्र न दे दे, तब तक दूसरी पार्टी उसे अपनी पार्टी में प्रवेश न दे।

(७) वोट प्राप्त करने के लिये किसी भी प्रकार के अवैध या अनैतिक तरीके काम में न लाये जायं, जैसे जाली वोट गिरवाना, वोटरों को शराब पिलाना, रिश्वत देना आदि।

(८) जहाँ सम्भव हो वहाँ, विभिन्न पार्टियाँ अलग अलग सभा करने के बदले एक मंच से चुनाव प्रचार करें।

(९) किसी एक राजनैतिक पार्टी के झण्डे या चुनाव चिह्न का अनादर न हो, इसका ध्यान रखा जाय।

(१०) कोई व्यक्ति या समूह अगर स्वीकृत मर्यादाओं में से किसी को भंग करे तो सम्बन्धित पार्टी को चाहिए कि वह स्वयं ही उसे प्रकट करे तथा उसकी पुनरावृत्ति न हो, इसका ध्यान रखे।"

इस मसविदे पर विभिन्न पार्टियों के प्रमुख लोगों ने अपनी राय जाहिर की। सभी पक्षों के लोगों ने आम तौर पर मसविदे का समर्थन किया। चर्चा के दौरान में नीचे लिखे कुछ सुझाव और संशोधन सुझाये गये :

(१) चुनाव प्रचार में किशोरों का उपयोग अवांछनीय होते हुए भी वह न करना आज की परिस्थिति में व्यावहारिक नहीं होगा। अतः यह मर्यादा रखना उचित नहीं होगा। अधिकांश लोगों की राय रही कि किसी-न-किसी रूप में इसकी शुरुआत हो तो अच्छा। उम्र का बंधन १८ से घटा कर १४ वर्ष या और कम किया जा सकता है।

(२) विभिन्न पार्टियाँ एक ही मंच से चुनाव प्रचार करें, यह आज की स्थिति में सम्भव नहीं होगा और न उचित ही होगा। इस पर ज्यादा विचार करने की आवश्यकता है। कुछ पार्टियों की ओर से यह कहा गया कि इस प्रकार का प्रयोग कुछ चुने हुए क्षेत्रों में हो सके तो अच्छा है। मसविदे में भी 'जहाँ सम्भव हो वहाँ' यही कहा गया है, अतः यह मुद्दा पार्टियों के लिए बन्धन-रूप नहीं है, बल्कि दिशा-दर्शक के रूप में है। प्रयोग की दृष्टि से इस विचार को सामने रखना उचित होगा।

(३) भाषावाद को प्रोत्साहन न मिले, इसमें भाषावाद से क्या तात्पर्य है, यह स्पष्ट नहीं है। देश के संविधान में हिन्दी को राष्ट्रभाषा स्वीकार किया गया है, पर हिन्दी के प्रचार को भी कुछ लोग भाषावाद मान सकते हैं। भाषावाद शब्द न रहे तो ज्यादा अच्छा है।

(४) वोट प्राप्त करने के लिए अवैध या अनैतिक तरीके काम में न लिये जायँ, यह तो आवश्यक है, पर उतनी ही आवश्यक यह बात है कि मतदाता अपने मत का निर्भयता और स्वतंत्रतापूर्वक उपयोग कर सके। अतः चुनावों के दौरान में किसी प्रकार के प्रशासनिक, आर्थिक, सामाजिक या शारीरिक दबाव काम में न लिये जायँ।

(५) राजनैतिक सत्ता का उपयोग अपनी पार्टी के हित में न किया जाय।

कुछ पक्षों की ओर से यह सुझाया गया कि चूंकि मर्यादा संबंधी मसविदा एक महत्त्व की चीज है, इसलिये अपनी-अपनी पार्टियों द्वारा बाकायदा उस पर विचार कर स्वीकृति देना आवश्यक है। अतः यह मसविदा चर्चा में आये हुए सुझावों के साथ विभिन्न पार्टियों को भेजा जाय और कुछ दिनों के बाद सब पार्टियों के प्रतिनिधियों की दूसरी मीटिंग बुला कर इसे अन्तिम रूप दिया जाय। यह निश्चय हुआ कि आचार-मर्यादा के मसविदे को अन्तिम रूप देने के लिये ता० ९ अक्टूबर को विभिन्न पार्टियों के प्रतिनिधियों की सभा हो।

स्वीकृत आचार-मर्यादा का पालन सब पार्टियाँ ठीक-से कर रही हैं या नहीं, इस बात की देखरेख करने का प्रश्न भी चर्चा में उठा। आम तौर पर यह स्वीकार किया गया कि फिलहाल एक आचार-संहिता को सर्वसम्मति से मान्य करना ही काफी होगा। एक बार मान्य कर लेने पर सभी पार्टियों के लोग उन मर्यादाओं का पालन करेंगे, ऐसी अपेक्षा रखना उचित है। स्वीकृत मर्यादाओं का व्यापक प्रचार किया जाय, जिससे जनमत भी उसके पक्ष में बने और पार्टियों को इन मर्यादाओं के पालन करने का बल मिले। लोक शिक्षण की दृष्टि से यह सुझाव आया कि जो भी मर्यादाएं सर्वसम्मति से स्वीकृत हों उन्हें पार्टियाँ अपने अपने घोषणा-पत्रों में और प्रचार-साहित्य में स्थान दें। पार्टियों के अलावा अन्य सार्वजनिक और सामाजिक संस्थाएँ भी आचार मर्यादा के व्यापक प्रचार और तत्सम्बन्धी लोकशिक्षण में योग दें।

बिहार सर्वोदय-पदयात्रा-टोली द्वारा 'बीघे-कट्ठे' का अभियान

१२ जुलाई से २५ अगस्त तक संथाल परगना जिले के जामताड़ा थाने में सघन रूप से बिहार प्रान्तीय अखण्ड सर्वोदय पदयात्रा टोली द्वारा क्रमशः श्री ब्रजमोहन शर्मा, श्री मोतीलाल एवं श्री विमल कुमार अधिकारी के नेतृत्व में ११० मील की पदयात्रा हुई। इस अवधि में १४ ग्राम-पंचायतों के १३५ ग्रामों में "दान दो इकट्ठा, बीघे में कट्ठा" मंत्र का प्रचार हुआ।

जामताड़ा थाने में अधिकांश आदिवासी हैं, पिछड़ा हुआ इलाका है, विधान सभा के सदस्य झारखण्ड पार्टी के हैं। अधिकांश ग्रामों में कुष्ठ-रोगियों की भरमार है, जो एक ही तालाब में स्नान करते हैं तथा उसी तालाब का पानी सारा गाँव पीता है। थाने के अधिकांश ग्रामों की पूरी जमीन डी० वी० सी० योजना में चली गयी है। बरसात का महीना, दिन भर लोग खेत में काम करते थे, संध्या समय शराब पीकर मस्त! प्रकृति ने परीक्षा ली और टोली के दो भाइयों को सुदूर देहात में जहाँ दवा का नाम नहीं, हैजे की बीमारी हुई। आदिवासियों के घर में निवास में कठिनाई थी। फिर भी इन सारी परिस्थितियों का मुकाबला करते हुए टोली के छह भाइयों ने धैर्यपूर्वक पदयात्रा के संकल्प को पूरा किया।

उपरोक्त वातावरण में दान मिलना असम्भव-सा प्रतीत होता था, परन्तु विनोबाजी की तपस्या का फल है कि पिउलीबाड़ी के एम० एल० ए० के विरोध एवं अधिकांश मुखियाओं के असहयोग के बावजूद भी पन्द्रह सौ कट्ठे का दान मिला, जिसमें अधिकांश का वितरण भी हो चुका है। कुछ मुखिया एवं प्रधान व्यक्तियों का सहयोग भी मिला। जिले में बीस ग्राम ऐसे हैं, जहाँ कार्यकर्ताओं की शक्ति लगे तो ग्रामदान मिल सकता है। जनता तैयार है। आवश्यकता है, कार्यकर्ताओं के सातत्य की। २५ सितम्बर तक टोली का कार्यक्रम संथाल परगना जिले में है।

महाराष्ट्र की चिट्ठी

नागपुर जिले की काटोल तहसील में २५ सितम्बर से ६ अक्तूबर तक सामूहिक पदयात्रा होने वाली थी। महाराष्ट्र भर के कई कार्यकर्ता इस पदयात्रा में शरीक होने वाले थे। लेकिन वर्धा नदी की बाढ़ के कारण इस तहसील के अनेक देहातों की बहुत ही हानि हुई, इसलिए पदयात्रा का कार्यक्रम स्थगित किया गया। कार्यकर्ता बाढ़-पीड़ितों की सहायता में लगे हैं।

श्री अप्पासाहब पटवर्धन की सर्वोदय-पदयात्रा यवतमाल जिले की पुसद तहसील में चल रही है। १-२ अक्तूबर को वे यवतमाल रहेंगे। इस दौरे में पुसद, यवतमाल आदि जगह पर सफाई-शिविर भी चलेंगे।

विनोबाजी के जन्म-स्थान गागोदे (तहसील पेण, जि० कुलाबा) गाँव में विनोबाजी की ६७ वीं जयंती मनायी गयी। १९५९ में यहाँ सर्वोदय-आश्रम की स्थापना की गयी थी। तब से हर साल विनोबा जयंती का आयोजन होता ही है, फिर भी गांधी स्मारक निधि ने इस साल यहाँ ग्राम सेवा-केन्द्र शुरू करने के कारण कार्य का व्याप बढ़ गया है। इर्दगिर्द के देहातों में सात सभाओं में विनोबाजी के दीर्घ आयुरारोग्य के लिए शुभ कामनाएँ प्रकट की गयीं।

कार्यकर्ताओं के निवास की दृष्टि से अभी विनोबाजी के जन्म-स्थान वाले मकान की मरम्मत गांधी स्मारक निधि की ओर से हो रही है। उसके पूरे होने पर बंबई के शिल्पज्ञ श्री रि० ग० सहस्रबुद्धे द्वारा बनायी और भेंट की गयी विनोबाजी की अर्ध-प्रतिमा वहाँ स्थापित की जायगी।

रत्नागिरि जिले में अक्तूबर माह में ग्रामदान नवनिर्माण कार्य के महाराष्ट्र प्रदेश के कार्यकर्ताओं की एक हफ्ते की सभा होगी। ऐसी सभाएँ हर तीन माह में होती हैं। निर्माण-कार्य की बाधाएँ और आगामी योजनाओं पर इसमें विचार-विमर्श होगा। उपस्थित कार्यकर्ता उस क्षेत्र के ग्रामदानी गाँवों में हो रहे कार्य का निरीक्षण करेंगे। महाराष्ट्र सर्वोदय-मंडल के अध्यक्ष श्री रा० कृ० पाटिल और खादी-कमीशन के नवनिर्माण विभाग के डाइरेक्टर इस सभा में भाग लेंगे। सभा के साथ ही एक सफाई-शिविर और भंगी-मुक्ति विषय पर परिसंवाद होगा।

महाराष्ट्र प्रदेश के ग्राम-पंचायतों के प्रतिनिधियों का सम्मेलन धुलिया में आयोजित करने का निर्णय धुलिया जिले के हाल ही में हुए ग्रामपंचायत प्रतिनिधियों की सभा में किया गया। इसके लिए एक स्वागत-समिति बनायी गयी है। इस सम्मेलन में ग्रामपंचायत के काम की बाधाओं के बारे में विचार होगा। नये होने वाले विकेंद्रीकरण के कानून के बारे में राय जाहिर की जायेगी। इस सम्मेलन में महाराष्ट्र राज्य पंचायत परिषद की भी स्थापना करने का सोचा जा रहा है।

खादी-कमीशन की नयी नीति के अनुसार महाराष्ट्र राज्य में पाँच हजार जन-संख्या के क्षेत्र चुन कर उन क्षेत्रों का विकास करने की दृष्टि से प्रयत्न किया जायेगा। इस साल ऐसे चालीस क्षेत्र चुने जायेंगे। उनमें से बीस क्षेत्र चुने गये हैं। इन्हीं में पाँच क्षेत्र ग्रामदानी गाँवों के हैं। कोल्हापुर, रत्नागिरि, धुलिया, कुलाबा और थाना, इन पाँच जिलों में एक-एक क्षेत्र चुना गया है।

रत्नागिरि जिला ग्रामदान नवनिर्माण समिति

रत्नागिरि ग्रामदान नवनिर्माण समिति की सालाना सभा कुडाल में ३१ अगस्त '६१ को हुई। सभी सदस्य उपस्थित थे। सभा के अध्यक्ष महाराष्ट्र सर्वोदय मंडल के मंत्री श्री एकनाथ भगत थे। समिति के मंत्री श्री मधुकर तिरोडकर ने गत वर्ष की रिपोर्ट सभा में पेश की। गत साल २०० गज खादी का उत्पादन हुआ। विभिन्न ग्रामदानी गाँवों में ३६ अंबर चरखे और २५ किसान चरखे चल रहे हैं। ३ बुनकर खादी बुनने का काम करते हैं। ग्रामदानी गाँवों में रहने वाले ग्रामीणों के दो शिविरों का और दो महीने के एक वर्ग का आयोजन किया गया था। १२ ग्रामदानी ग्रामवासी अपनी खेती और उद्योग करते हुए गाँवों का काम कर रहे हैं। दो ग्राम-भंडार शुरू किये गये। ओवलीये ग्रामदानी गाँव में सहकारी पद्धति से कोयला तैयार करने का उद्योग शुरू हुआ है। नये साल के लिए कार्यकारी मंडल बनाया गया। अध्यक्ष श्री गोविन्दराव शिंदे और मंत्री श्री मधुकर तिरोडकर चुने गये।

रत्नागिरि जिला सर्वोदय-मंडल की सभा ३१ अगस्त की शाम को कुडाल में हुई। गत तीन महीने की रिपोर्ट पेश की गयी। मुख्यतया जिले में हुए तूफान और बाढ़ से पीड़ित लोगों को सहायता पहुँचाने के लिए कार्यकर्ता पूना गये थे। आर्थिक सहायता का संग्रह करके भी भेजा गया। सभा में आगामी कार्य की योजना तैयार की गयी। अभी आर्थिक सहायता प्राप्त की जायगी। खादी-बिक्री और भूदान-पत्रों के ग्राहक बनाने का सघन कार्य अक्तूबर माह में एक सप्ताह तक किया जायेगा। जिले में सफाई शिविर और परिसंवाद का आयोजन खादी संघ के द्वारा हो रहा है, उसमें सहायता करने का तय हुआ। कुडाल में एक शिविर और परिसंवाद होगा। ग्रामदानी गाँवों के ग्रामीणों का दो महीने का एक शिविर गोपुरी आश्रम में होगा। खेती के विशेषज्ञ श्री गोविन्द रेड्डी ने खेती-प्रयोग में सहायता करने की योजना जाहिर की थी। उनकी योजना के अनुसार जिले का एक क्षेत्र उनको सुझाया जाय। कस्तूरबा ट्रस्ट को 'केरवडे' ग्रामदानी गाँव में केन्द्र शुरू करने के लिए प्रार्थना की जाय। इस गाँव में ग्रामसभा द्वारा एक ग्राम भंडार भी खुलेगा। तय हुआ कि हरएक कार्यकर्ता सतत सर्वोदय पात्र रखने वाले १० मित्र बनाये।

रत्नागिरि जिला खादी-संघ

रत्नागिरि जिला खादी-संघ की सालाना सभा गोपुरी आश्रम में २ सितम्बर को हुई। जिले भर के अधिकतर सदस्य इसमें उपस्थित थे। आज तक श्री अप्पासाहब पटवर्धन उपस्थित होकर मार्गदर्शन हर सभा में किया करते थे। लेकिन इस बार पदयात्रा के कारण वे नहीं आ सके।

इस बार चर्चा में मुख्य विषय संघ के भविष्य के बारे में था। सन् १९३९ से खादी-संघ अपनी शक्ति के अनुसार खादी-ग्रामोद्योग और समाज-परिवर्तन का कार्य कर रहा है। संघ के मुख्य अंग ये हैं: चरखों का प्रसार, खादी उत्पादन-बिक्री, साबुन बनाना, मृत जानवरों के चमड़ों का सदुपयोग करना, मांस और हड्डी की खाद बनाना, चरबी और सींगों का भी उपयोग कैसे किया जा सकता है, यह लोगों को समझाना। मृत जानवरों का चमड़ा उतारने के काम को हीन काम माना जाता है, इसलिए हरिजनों ने भी उसका त्याग किया। उसकी उपयोगिता, पवित्रता की कल्पना लोगों को देने के लिए जगह-जगह पर जिले भर में १२ चर्मालय केन्द्र शुरू किये गये हैं। सवर्ण हिंदू भी लगन से उनमें काम कर रहे हैं।

श्री अप्पासाहब पटवर्धन ने सफाई का एक शास्त्र बनाया है। उस निमित्त 'गोपुरी संडास' से लेकर गैस प्लाट के संडास तक कई प्रकार के संडास उन्होंने बनाये। इस प्रयोग के लिए गोपुरी आश्रम बना और वहाँ आज समानता का आदर्श चल रहा है। जिले भर में शिविरों का आयोजन करके सफाई और भंगी मुक्ति की आवश्यकता लोगों को समझाई जाती है। यह सारा काम समाज-परिवर्तन का काम है। प्रयोग चलते रहते हैं, इसलिए हर साल आर्थिक हानि होती है। इस हानि की पूर्ति के लिए खादी-बिक्री का कार्य व्यापक परिमाण पर करना चाहिए, अन्य उद्योग भी चलाने चाहिए, इस विषय पर विचार-विमर्श हुआ और सबने इस विचार को स्वीकृति दी।

महाराष्ट्र सर्वोदय मंडल के मंत्री श्री एकनाथ भगत ने रत्नागिरि जिले में एक सप्ताह का दौरा किया। आपने ओवलीये और विनूर इन ग्रामदानी गाँवों में जाकर निरीक्षण भी किया।

महाराष्ट्र सर्वोदय मंडल द्वारा पूना के बाढ़-पीड़ितों के लिए उद्योग-केन्द्र की स्थापना

पूना की बाढ़ में जिनका मकान, सामान आदि सब बह गया है, ऐसे लोगों को अब तक सरकार से, खानगी रूप में और कुछ व्यक्तियों से कई तरह की सहायता दी गयी है। लेकिन इन सबके पुनर्वसन की बहुत बड़ी समस्या है और वह दीर्घ काल की समस्या है। पहले का सारा बह गया और अब नई जिन्दगी खड़ी करनी है, तो जगह किराये से लेकर सबके भाव बढ़े हुए हैं। सतत मदद लेते रहना किसी को भी प्रतिष्ठापूर्ण नहीं महसूस होगा। सारे परिवार की आय में ही कुछ वृद्धि हो, ऐसी कुछ व्यवस्था होनी चाहिए।

सर्वोदय-कार्यकर्ता इसके लिए कुछ दिन से प्रयत्न कर रहे थे। आज पूना में जो उद्योग-धन्धे हैं, उनमें से हरएक परिवार के अन्य लोगों को काम मिलेगा, यह भी संभव नहीं। इतने सब लोगों को सँभाल लेने की, व्यक्तियों की शक्तिनुसार उनको काम देने की सामर्थ्य इस उद्योग में नहीं। पुराने उद्योग में से जानबूझ कर कुछ काम खोज कर या नये काम निकाल कर उनमें बाढ़-पीड़ित परिवारों को काम मिले, इस दृष्टि से सर्वोदय मंडल के कार्यकर्ता विचार कर रहे थे। उसके अनुसार पूना के महाराष्ट्र सेवा संघ, महाराष्ट्र ग्रामोद्योग मण्डल, सत्य-निकेतन आदि संस्थाओं के सहकार्य से ता० ११ सितम्बर को अंबर चरखों का परिश्रमालय और कागजों से स्टेशनरी सामान बनाने का एक केन्द्र शुरू किया है। अभी इन दो केन्द्रों में ४० बहनों को काम देने की योजना बनायी गयी है। उनको आठ घंटे के काम का कम-से कम एक रुपया पारिश्रमिक मिले, ऐसी कल्पना है।

इन सब काम का संयोजन करने के लिए एक उपसमिति नियुक्त की गयी है। उसमें श्री वैकुंठलाल मेहता, अध्यक्ष, अ० भा० खादी-ग्रामोद्योग आयोग; डा० श्री धनंजयराव गाडगिल; श्री रा० कृ० पाटील, अध्यक्ष महाराष्ट्र सर्वोदय मण्डल और श्री गो० रा० देशपांडे आदि ९ व्यक्ति हैं।

बिहार प्रान्तीय पदयात्रा-टोली

विनोबा का आशीर्वाद

धनबाद जिले में बिहार प्रान्तीय अखण्ड सर्वोदय-पदयात्रा टोली द्वारा क्रमशः श्री ब्रजमोहन शर्मा एवं श्री मोतीलाल केजरीवाल के नेतृत्व में १७१ मील की पदयात्रा हुई। इस अवधि में ३१ पड़ावों द्वारा ११५ ग्रामों से सम्पर्क और विचार प्रचार हुआ। कुल ५१ दान पत्रों के द्वारा लगभग एक हजार कट्ठा का दान मिला।

'भूदान-यज्ञ' के २५ ग्राहक बने तथा ७२ रु० की साहित्य एवं ७६० रु० की खादी-बिक्री हुई। इस अवसर पर विनोबाजी का निम्नलिखित आशीर्वाद प्राप्त हुआ :

"बाबा इधर हरे भरे प्रदेश में इन्द्र का आशीर्वाद प्राप्त कर रहा है, उधर आप झारखण्ड में सूर्य से सहयोग कर रहे हैं। ये दोनों ही हमारे मित्र हैं। वे भी सबको समान प्यार करते हैं और हम भी सबको समान प्यार करते हैं। सतत घूमना ही हम लोगों का धर्म है।

—विनोबा का जय जगत्"

गया में सर्वोदय-पात्र

गत महीने में सर्वोदय पात्र को पुनर्जीवित करने के लिए नगर के वार्ड में प्रमुख व्यक्तियों की गोष्ठियाँ आयोजित की गईं, ताकि सर्वोदय-पात्र के पीछे वैचारिक भूमिका क्या है। कई सप्ताह सर्वोदय विचार पर गोष्ठियाँ होती रहीं, जिससे अच्छा वातावरण बना। गोष्ठियाँ सर्वोदय स्वाध्याय मण्डलों में परिवर्तित भी कर दी गईं और उनको स्थायी रूप दे दिया गया। प्रत्येक सप्ताह इन मण्डलों में भिन्न भिन्न विषय की चर्चा के साथ वार्ड की समस्या पर भी विचार किया जाता है। इन मण्डलों के माध्यम से सर्वोदय-पात्र संग्रह का कार्य भी हुआ। नगर में भिन्न भिन्न स्थानों पर हैजे से पीड़ित व्यक्तियों का उपचार तथा सफाई व सुई दिलवाने का कार्य किया गया, जिससे सद्भाव बढ़ा। इन मण्डलों तथा कार्यकर्ताओं द्वारा लगभग ७ मन चावल तथा कुछ रकम एकत्रित की गई। वार्डों में ५६ भूदान पत्रिका की बिक्री प्रति सप्ताह की जाती है। इस सम्बन्ध में दोनों प्रस्तावों पर कई वक्ताओं ने प्रकाश डाला। गांधी जयंती तक प्रत्येक वार्ड में विशेष कार्यक्रम आयोजित किये जा रहे हैं।

उत्तराखंड में सर्वोदय-कार्य

धनसंग्रह अभियान : अ० भा० सर्व सेवा संघ के अर्थसंग्रह-अभियान में गढ़वाल-चमोली में २०० दाताओं से २७६ रु. और टिहरी उत्तरकाशी में २९९ दाताओं से ६२७ रु. १८. न. पै. सहायता सर्वोदय कार्य के लिए प्राप्त हुई।

साहित्य-प्रचार : १२२ रु २३ न. पै. का सर्वोदय-साहित्य बिका व 'भूदान यज्ञ' के ७ ग्राहक बने।

यात्राएँ व सभाएँ : टिहरी और उत्तरकाशी जिलों में ४५ मील तथा गढ़वाल और चमोली में १२८ मील पदयात्राएँ हुईं। २२ सभाओं में सर्वोदय-विचार का प्रचार हुआ। ●

अर्थ-संग्रह अभियान में छोटे-से गाँव का अनुकरणीय योग

जिला सर्वोदय कार्यालय, बाराबंकी, उ० प्र० के श्री विश्वेश्वर दयाल जी ने ग्राम-अमरादेवी, पो० निन्दूरे, जिला बाराबंकी में दिनांक २० जून से २९ जुलाई १९६१ तक की रिपोर्ट दी है कि "७२ दाताओं से १२३ रु० ७० न० पै० प्राप्त हुए तथा एक दाता से १५१ रुपये शीघ्र ही मिलने वाले हैं।" एक छोटे से गाँव का यह उत्साहवर्धक स्नेह हमारे अर्थ संग्रह अभियान के लिए उल्लेखनीय है। ●

शराबियों ने शराब छोड़ी

ताजपुर, जिला सारण में ९ अगस्त से शराब की दुकान पर पिकेटिंग जारी है, इसकी सूचना जिलाधीश एवं प्रखंड विकास-पदाधिकारी को दे दी गयी है। फलतः इसका काफी असर पड़ा है। शराबी लोग झुंड के झुंड आकर लौट जाते हैं। कई लोगों ने नहीं पीने की प्रतिज्ञा भी ली है। १२ अगस्त '६१ को प्रखंड विकास कमिटी, माँझी ने भी ५० गिरीश तिवारी के सभापतित्व में सर्वसम्मति से ताजपुर से शराब की दुकान उठाने का प्रस्ताव पास कर सरकार से निवेदन किया है। ●

बिहार में 'बीघा-कट्ठा' अभियान

रामगढ़ अंचल में बीघा-कट्ठा अभियान के अन्तर्गत गत ३१ अगस्त तक ६१ ग्रामों के ५३६ दाताओं द्वारा ९,४०० कट्ठे जमीन प्राप्त हुई। कुल भूमि में से ३,१२१ कट्ठा जमीन ७२ आदाताओं के बीच दाताओं द्वारा बाँटी गयी, जिनमें से लगभग १,४०० कट्ठे जमीन दाताओं ने अपने भूमिहीन कुटुम्बियों को दी। बाकी जमीन अन्य भूमिहीन परिवारों में वितरित की गयी।

सहर्षा जिले में 'बीघा कट्ठा' अभियान में २० अगस्त तक ३००० कट्ठा जमीन प्राप्त हुई। 'भूदान-यज्ञ' पत्रिका के २० ग्राहक बने और ३०० रु० की साहित्य-बिक्री हुई। ●

सत्यानन्द नगर पंचायत भवन में ११ सितम्बर, ६१ को एक शिविर का आयोजन किया गया, जिसका उद्देश्य है कि एक टोली उस नगर में प्रखण्ड की प्रत्येक पंचायतों में दो दो दिन का अपना कार्यक्रम बना कर सभी भूमिवानों से विचारपूर्वक बीघा में कट्ठा भूमि-प्राप्ति के लिए भ्रमण करे। ●

साहित्य-परिचय

प्रकाशक : सस्ता साहित्य मंडल, नई दिल्ली

इतिहास के महापुरुष—ले० जवाहरलाल नेहरू; स० श्री विष्णु प्रभाकर। पृष्ठ-संख्या २३१। मूल्य—डेढ़ रुपया।

पण्डितजी की प्रत्येक पुस्तक ही अत्यन्त सुरुचिपूर्ण, उत्साहवर्धक तथा नौजवानों को प्रभावित करने वाली है। प्रस्तुत पुस्तक पण्डितजी की "विश्व इतिहास की झलक" में वर्णित महापुरुषों के जीवन का संकलन है। इससे पाठक थोड़े समय में विश्व के प्रमुख महापुरुषों के बारे में जानकारी प्राप्त कर सकते हैं, जो कि आधुनिक संक्रमण-काल में युवकों के लिए मार्ग-दर्शन साबित होगी।

नये जीवन की ओर—ले० शिवचन्द्र दत्त विमला दत्ता। पृष्ठ-संख्या १००। मूल्य—एक रुपया।

प्रस्तुत पुस्तक में आजादी के बाद क्या क्या सुधार सरकारी व गैर सरकारी स्तर पर किये गये, बच्चों तथा स्त्रियों के लिए क्या-क्या सुविधाएँ उपलब्ध की गयी आदि बातों का वर्णन है। लेखक ने सच मुच ही यह पुस्तक लिख कर जनता का बहुत हित किया है, क्योंकि बहुत-सी ऐसी बातें हैं, जिन्हें हम लोग यानी सामान्य जनता नहीं जानती।

—सत्यनारायण तिवारी

शारदीया—ले० जगदीशचन्द्र माथुर, पृष्ठ-संख्या १२०, मूल्य १ रु. ५० न पै।

श्री माथुर हिन्दी के मान्य नाटककारों में गिने जाते हैं। नागपुर म्यूज़ियम में जो पत्र सोलिया वगैरह प्रदर्शित है, उससे प्रेरणा लेकर इतिहास और कल्पना पर आधारित यह नाटक भारतीय इतिहास के मराठा-काल पर एक नया प्रकाश डालता है। हिन्दू-मुस्लिम एकता और भाई-चारे की भावना, प्रेम की गम्भीरता और त्याग से भरा यह नाटक भारतीय रंगमंच की शान सिद्ध होगा, ऐसी आशा है।

सर्वोदय सन्देश—लेखक—विनोबा, पृष्ठ संख्या १८८, मूल्य १ रु. ५० न. पै.।

इस पुस्तक में सर्वोदय सम्मेलनों में दिये गये विनोबाजी के भाषणों का संग्रह है। इन भाषणों में विनोबाजी ने बुनियादी विचार दिये हैं और बताया है कि आज की सभी समस्याएँ किस प्रकार भूदान, ग्रामदान द्वारा हल हो सकती हैं। सत्ता निरपेक्ष वर्ग विहीन समाज की स्थापना के लिए आज की परिस्थिति में हमारा क्या धर्म और कर्तव्य है, इसका समुचित विचार इन प्रवचनों में है।

--मधुराम्ल

आरोग्य का अमूल्य साधन : "स्वमूत्र"

(गुजराती 'मानव-मूत्र' का हिन्दी अनुवाद)

लेखक : श्री रावजीभाई मणिभाई पटेल, प्रकाशक : भारत सेवक समाज, गुजरात लालभाई सेठ का बंगला, पानकोर नाका, अहमदाबाद-१। मूल्य रु० ३ ५० न० पै०। पृष्ठ संख्या ३४८।

श्री मोरारजी देसाई (वित्तमंत्री, भारत सरकार) के "वक्तव्य", श्री काका कालेलकरजी की "प्रस्तावना" और श्री देवरभाई लिखित "अभिप्राय" से सुसज्जित यह पुस्तक जितनी अच्छी है, उतनी ही विवादास्पद है। इसका विषय है, "मूत्र पान और मूत्र की मालिश द्वारा रोगमुक्त होना।"

"मूत्रोपचार का तात्त्विक विचार", "पुनरुद्धार के अनुभव" और "सर्वानुभव की कसौटी पर" शीर्षक इसके प्रथम तीन खंडों में विविध रोगों तथा रोगियों पर मूत्रोपचार के प्रभावों तथा परिणामों का वर्णन पढ़ कर इसकी वैज्ञानिकता, व्यावहारिकता और 'आवश्यकता' प्रतीत होने लगती है।

"चिकित्सकों की दृष्टि में" शीर्षक चतुर्थ खण्ड द्वारा इस पुस्तक और प्रयोग, दोनों ही पर प्रामाणिकता की छाप लगाने का प्रयास बन पड़ा है। जिन लोगों ने स्वमूत्र-सेवन से लाभ उठाया है, उनके नाम, पते, कथन, विवरण आदि भी निर्भीकतापूर्वक इस पुस्तक में प्रकाशित करके इसकी विश्वसनीयता बढ़ाने का प्रयत्न किया गया है।

लेखक ने "अपनी बात" में स्वयं ही इस मूत्रोपचार के सिद्ध होने में जहाँ ९ अनुकूलताएँ बताई हैं, वहीं ७ प्रतिकूलताएँ भी गिना दी हैं। परन्तु विषय के विवादास्पद या विवादग्रस्त होने के कारण इस खोज और प्रयोग में हुए अथक परिश्रम को भुला देना उचित न होगा। उल्टे आवश्यकता इस बात की है कि प्रस्तुत पुस्तक का अधिक-से-अधिक प्रसार हो, अधिकाधिक लोग इसे पढ़ें तथा इस पर अपने मत प्रकट करें, जिससे इसके पक्ष विपक्ष में प्रामाणिक और साधार सामग्री उपलब्ध हो सके।

—डा० इन्द्रप्रसाद गुप्त 'सेवक'

एक छोटी-सी चीज में सारे विश्व को अनुभव करने की कला मूर्ति-पूजा है।

—विनोबा

किरत में जमीन—महाराष्ट्र साहित्य संस्कृति मंडल—कांग्रेस की राष्ट्रीय एकता समिति के निर्णय—लखनऊ में शांति-सेना रेली और अशोभनीयता निवारण मुहिम।

विभाजन के फलस्वरूप पूर्वी पंजाब से जो जमीन-मालिक अपनी जमीनें छोड़ कर पाकिस्तान चले गये थे, उनकी जमीनें पश्चिम पंजाब से आये हुए जमीन-मालिकों को वहाँ पर छोड़ी हुई, उनकी जमीन के बदले में देने के बाद करीब डेढ़ लाख एकड़ जमीन बची थी। इसके बारे में पंजाब सरकार ने यह फैसला किया है कि उसे नीलाम करने या अन्य तरीके से बेचने के बजाय पाँच पाँच, दस-दस वर्ष की अवधि के लिए हरिजनों तथा अन्य बेदखल किये गये मुजारों को वह दे दी जाय। पाँच या दस साल की अवधि समाप्त होने के बाद ये लोग उस जमीन की कीमत किस्तों में चुका कर उसे खरीद कर सकेंगे। ●

वाई (महाराष्ट्र) में संशोधक और विद्वानों की एक छोटी-सी बस्ती बनाने का महाराष्ट्र राज्य साहित्य और संस्कृति-मण्डल ने सोचा है। मराठी के अद्यावत विश्वकोष तैयार करने का काम वहाँ चलेगा। इसके लिए महाराष्ट्र सरकार ने १५ लाख रुपये की मदद दी है। यह काम पाँच साल में पूरा होने की आशा है। विश्वकोष की प्रथम आवृत्ति निकलने के बाद भिन्न भिन्न ग्रन्थों के अनुवाद का काम शुरू होगा। ●

कांग्रेस की ओर से नियुक्त राष्ट्रीय एकता समिति ने देवनागरी को हिन्दुस्तान की सर्वसामान्य लिपि के रूप में "आम तौर" पर अपनी स्वीकृति दी है। समिति की मीटिंग ता० २७ सितम्बर को श्रीमती इन्दिरा गांधी की अध्यक्षता में दिल्ली में हुई।

समिति में राजनैतिक पार्टियों के लिए एक सर्व-सामान्य आचार-मर्यादा के प्रश्न पर भी चर्चा हुई। सदस्यों ने यह राय जाहिर की कि जब तक इस प्रकार की आचार-संहिता के पालन कराने के लिए कोई तंत्र नहीं होगा, तब तक संहिता असरकारी नहीं होगी।

यद्यपि यह समिति कांग्रेस पार्टी की ओर से नियुक्त की गयी है, पर इस बैठक में प्रजा-समाजवादी नेता श्री अशोक मेहता और श्री गंगाशरण सिंह तथा अन्य निमंत्रित सज्जन भी उपस्थित थे। ●

लखनऊ में २-३ अक्टूबर को प्रांतीय शांति-सैनिकों की एक रेली के आयोजन का कार्यक्रम था। कार्यालय-विज्ञप्ति में बताया गया है कि इस आयोजन की अध्यक्षता सर्व सेवा संघ के अध्यक्ष श्री नवकृष्ण चौधरी करेंगे।

लखनऊ गांधी स्मारक निधि तत्वावधान में गन्दे सिनेमा-पोस्टरों के संबंध में सिनेमा-मालिकों को पूर्वसूचना दी गयी है कि सिनेमा के अशोभनीय पोस्टर स्वयं हटा लें, अन्यथा शान्तिप्रिय ढंग से हटाने को जनता बाध्य होगी। ●

सत्याग्रह के पहले शराब का ठेका बन्द

हिसार जिला सर्वोदय मण्डल की ओर से यह प्रस्ताव पास करने पर कि ११ सितम्बर 'विनोबा-जयन्ती' तक अगर पंजाब सरकार तहसील फताहाबाद के भट्टू कलाँ ग्राम में शराब का ठेका नहीं बन्द करती है तो २ अक्टूबर 'गांधी-जयन्ती' से सत्याग्रह प्रारम्भ किया जायगा। खुशी की बात है कि पंजाब सरकार ने ठीक ग्यारह सितम्बर को उक्त ग्राम में शराब का ठेका बन्द करने का आदेश दे दिया।

भीलवाड़ा जिले में शराबबन्दी अभियान

भीलवाड़ा जिले में शराबबन्दी याग विनोबा-जयन्ती से शुरू हो गया। सब प्रकार के प्रचार-कार्य चालू है। २६ जनवरी १९६२ तक अगर सरकार पूर्ण शराबबन्दी नहीं करती है, सत्याग्रह किया जायगा।

विनोबा पदयात्रा-वृत्त

ता० २३ सितम्बर से २७ [illegible] के दिनों में सर्वश्री जयप्रकाश नारायण, शंकरराव देव, प्रभावती बहन, धीरेन्द्रभाई, अण्णासाहब सहस्रबुद्धे, गौरी बाबू, [illegible] स्वामी, राधाकृष्णजी तथा करणभाई असम पदयात्रा में विनोबा से मिले। श्री [illegible] और श्री झवेरभाई पटेल भी इस बीच में बाबा से मिलने आये थे। इन सब लोगों से अनेक महत्त्व के विषयों पर चर्चाएँ हुई।

भूदान-आंदोलन का दशक

राजस्थान में भूदान-आंदोलन : एक नजर में

राजस्थान-भूदान-यज्ञ बोर्ड की ओर से प्रकाशित एक विज्ञप्ति में बताया गया है कि अगस्त १९६१ तक राजस्थान में भूदान-ग्रामदान की स्थिति इस प्रकार है :

प्राप्त भूमि	—	४,३३,३२३ एकड	खारिज भूमि	—	८५,१६५ एकड
दाता	—	८,६४१	शेष भूमि	—	२,४८,३२० एकड
भूमि-वितरण	—	९७,८०६ एकड	ग्रामदान	—	२२२

विनोबा का चश्मा

कुछ रोज पहले विनोबा का चश्मा टूट गया। उन दिनों यात्रा लखीमपुर के छोटे-छोटे गांवों में हो रही थी, इसलिए करीब ८-१० रोज विनोबा ने बिना चश्मे के ही काम चलाया। सब काम और यात्रा यथावत चलती रही है। डिब्रुगढ़ पहुँचने पर आंखों की जांच करके विनोबा को नया चश्मा दिया गया।

असम में ग्रामदान और उसके बाद निर्माण

श्री खगेश्वर भुइयाँ, अध्यक्ष, असम सर्वोदय मण्डल द्वारा श्री मंत्री, सर्व सेवा संघ को लिखे गये पत्र का उद्धरण :

"पूज्य बाबा की प्रेरणादायक पदयात्रा से वातावरण बना और वहाँ का काम मजबूत आधार पर खड़ा करने के लिए हमने सतत कोशिश जारी रखी। हमारे १५-२० कार्यकर्ता उस क्षेत्र में बाकी ग्राम ग्रामदान में प्राप्त करने के लिए काम कर रहे हैं। उम्मीद करता हूँ कि २ अक्टूबर तक और कुछ ग्रामदान प्राप्त हो जायेंगे। पूज्य बाबा के सुझाव के अनुसार असम सर्वोदय मण्डल का कार्यालय नार्थ लखीमपुर सघन क्षेत्र में और मण्डल की निर्माण-समिति का कार्यालय ग्रामदानी क्षेत्र घाटधरिया अंचल में स्थापन किया जाय। मण्डल का कार्यालय वहाँ स्थापना करने का निर्णय लिया गया। हम अभी ग्रामदानी गाँवों का सर्वे, ग्रामदान-वितरण, ग्रामसभा व ग्राम-समिति निर्माण आदि का काम रहे हैं।"

इस अंक में

सर्व सेवा संघ के नये प्रकाशन

(१) दैनंदिनी १९६२

सन् १९६२ की दैनंदिनी २ अक्टूबर को प्रकाशित हो गयी है। मंगाने वाले सज्जन शीघ्रता करें। डिमाई साइज की साधारण दैनंदिनी का मूल्य २) है और १६ कोरे पृष्ठों वाली का २ रु० २५ न० पै० है। किस प्रकार की दैनंदिनी चाहिए, इसका उल्लेख स्पष्ट रूप से करना चाहिए।

(२) नगर अभियान : विनोबा

इंदौर नगर में बाबा पिछले वर्ष एक महीने तक रहे। वहाँ उनकी जो अमृत-वर्षा हुई, उसका संकलन प्रकाशित हो गया है। पृष्ठ-संख्या ३२८, मूल्य २ रु०।

(३) मधुमेह : डा० इन्द्रप्रसाद 'सेवक'

मधुमेह जैसे आरामतलबी के रोग पर प्राकृतिक उपचार के उपायों का विवरण। मूल्य ७५ न० पै०।

(४) विदेशों में शांति के प्रयोग : मार्जरी साइक्स

विदेशों में आज भयंकर हिंसा के वातावरण में अहिंसा और शांति के जो प्रयत्न चल रहे हैं, उनका वर्णन रोचक तथा सरल भाषा में। पृष्ठ-संख्या ८८, मूल्य ७५ न० पै०।

अ० भा० सर्व सेवा संघ-प्रकाशन
राजघाट, काशी

श्रीकृष्णदत्त भट्ट, अ० भा० सर्व सेवा संघ द्वारा भार्गव भूषण प्रेस, वाराणसी में मुद्रित और प्रकाशित। पता : राजघाट, वाराणसी-१, फोन नं० ४३९१
पिछले अंक की छपी प्रतियाँ ९४५० : इस अंक की छपी प्रतियाँ ९५००
वार्षिक मूल्य ६) एक अंक : १३ नये पैसे

संपादक : सिद्धराज ढड्ढा

वाराणसी : शुक्रवार | १३ अक्टूबर '६१ | वर्ष ८ : अंक २

२६ सितम्बर से २ अक्टूबर तक के सप्ताह में असम की विनोबा-पदयात्रा में :—
ग्रामदान-प्राप्ति : १६
साहित्य-बिक्री : ९४७ रु०
लोकसेवक : २२

हम मालिक नहीं, सेवक बनें !

विनोबा

शंकरदेव असम के प्रेरणा-स्रोत थे। जो भी चीज आप यहाँ लेंगे उसका मूल वहाँ तक पहुँचेगा ही। साहित्यिक साहित्य की चर्चा करेंगे तो शंकरदेव के साहित्य तक पहुँचेंगे, समाज-सेवक समाज-सेवा की बात करेंगे तो शंकरदेव की प्रेरणा से करेंगे। धार्मिक चर्चा में तो वे आयेंगे ही। लगभग हर चर्चा में वे आयेंगे। नाटक की चर्चा में भी उनका नाम आयेगा, क्योंकि उन्होंने नाटक भी लिखा था। वे ऐसे पुरुष थे कि उन्होंने जीवन की हर शाखा में कुछ-न-कुछ लिखा।

फिर भी एक बात याद रखनी चाहिये। महापुरुषों के जो गुण होते हैं, वे कभी कभी उनके मूल स्वरूप को ढाँकते हैं। शेक्सपियर की चर्चा चलेगी, तो उनके साहित्य के बारे में होगी। शंकरदेव के बारे में भी साहित्यिक उनको साहित्यिक समझ कर उनके साहित्य की चर्चा करेंगे। यह मैं उनका दुर्दैव मानता हूँ, हालाँकि मैं किसी साहित्यिक को ऐसी चर्चा से रोकूँगा नहीं। स्कूल में प्रतियोगिता चलेगी कि शंकरदेव की जन्मतिथि पर कौन सबसे अच्छा निबंध लिखता है। कहीं शंकरदेव का नाटक खेलेंगे। कवि सम्मेलन होगा तो उसमें भी शंकरदेव के साहित्य की चर्चा होगी। इसे मैं शंकरदेव का दुर्दैव ही मानता हूँ। हम अगर उनके साहित्य के बारे में ही सोचेंगे तो उनका लाभ हमें नहीं मिलेगा। इस दृष्टि से सबसे भाग्यवान नंबर एक में निकले तो वह हजरत पैगम्बर। उनकी चर्चा में उनको साहित्यिक समझ कर चर्चा नहीं होगी। वे साहित्यिक नहीं थे, क्योंकि वे न पढ़ना जानते थे, न लिखना। इसलिये वे बच गये। लेकिन उनका भी एक अन्य दुर्दैव था। वे राज्य-संस्थापक हो गये। इसलिये राजनीतिज्ञ चर्चा करेंगे तो उनकी भी चर्चा करेंगे। एक राजनीतिज्ञ के नाते और एक योद्धा के नाते उनकी चर्चा होती है।

जिनकी ऐसी चर्चा नहीं चलती है—न साहित्यिक के नाते, न राजनीतिज्ञ के नाते—ऐसे भाग्यवान भारत में हो गये गौतम बुद्ध। वे थे विद्वान, लेकिन उन्होंने लिखा नहीं। इसलिये साहित्यिक उनकी चर्चा नहीं करते। वे राज्य छोड़ कर चले गये, इसलिये उनकी राजनीति के बारे में चर्चा नहीं होगी। उनके जन्म दिन पर ऐसी कोई चर्चा नहीं चलेगी, शुद्ध धर्म-चर्चा ही चलेगी।

यह भाग्य शंकरदेव को हासिल नहीं है। इसलिये उनके बारे में विविध चर्चा चलेगी और लोग उसमें विविध रस लेंगे।

महापुरुषों की महानता का माप मैं उनके साहित्य से नहीं करूंगा। उन लोगों ने जो साहित्य लिखा है, वह उस वक्त की परिस्थिति के परिणाम से लिखा है। उसमें उनका सर्वस्व नहीं होता है। वह सर्वस्व उनके हृदय में होता है, उनके सद्गुणों में प्रकट होता है। महापुरुषों की दया, वात्सल्य, करुणा, सत्यनिष्ठा, ये गुण हमें लेने होते हैं।

पर उनके बदले में उनके साहित्य और काम की तरफ ही हमारा ध्यान जाता है, आपने आम देखा, उसके रंग और रूप की बखान की, रस निचोड़ कर कटोरी में रखा। कितना सुंदर रस है! ये सब किया, लेकिन खाया नहीं तो आपने क्या किया? जो अकल वाला होगा, वह रंग-रूप में नहीं पड़ेगा, चखना आरंभ कर देगा। ये साहित्यिक शंकरदेव को चख नहीं सकते। वे उनका रंग रूप, याने साहित्य ही देखते रहेंगे। समाज सेवक उनके काम के बारे में चर्चा करेंगे, लेकिन उनका रस उसमें नहीं है। उनकी परमेश्वर पर श्रद्धा थी, उसमें उनका रस है। उनका सर्वस्व परमेश्वर में उनकी जो श्रद्धा है, वह है।

आज के दिन हम जरा सोचें कि हम शंकरदेव जैसे ही मानव हैं। भगवान ने उन्हें जो चीज दी थी वही हमें दी। कोई कमी नहीं है। इसलिए उनमें जो निष्ठा थी, वह हममें हो सकती है। लोग समझते हैं कि शंकरदेव तो महापुरुष थे, हर मनुष्य थोड़े ही महापुरुष हो सकता है? मैंने इस पर हिम्मत से लिखा है। मैंने लिखा है कि हर मनुष्य स्थितप्रज्ञ हो सकता है, हाल कि हरएक मनुष्य राष्ट्रपति या गामा पहलवान नहीं हो सकता। कहते हैं कि शंकरदेव ने हाथी को नमाया था। हम या आप हाथी को नमा नहीं सकेंगे। लेकिन आप और हम चाहें तो उनके जैसे निष्कलंक बन सकते हैं। यह बहुत आसान है। सिर्फ हम जो करते हैं, वह न करने की बात है। हम क्रोध करते हैं, हाथ भी उठाते हैं, पत्थर भी फेंक देते हैं। इस तरह गुस्सा करने में बहुत शक्ति खर्च होती है। इस सबसे आप बचें, याने यह कुछ करना नहीं। आप और हम झूठ बोला करते हैं। इससे छिपाओ, उससे छिपाओ, इसके कान में यह बात न पहुँचे, उसके कान में वह बात न पहुँचे! पर किसीने कहा कि 'सत्य बोलो', तो कुछ करना ही नहीं पड़ेगा। याने सच्चे 'आदमी' बन जाइये। किसीसे गुस्सा मत करो, यह बात आलसी को भी जँचेगी, क्योंकि इसमें न करने की ही बात है।

यहाँ तो कुछ न करने की ही बात है। रावण ने काम-वासना रखी तो कितनी तकलीफ भोगनी पड़ी! चार साल का बच्चा काम-वासना नहीं रखता। जो चीज चार साल के बच्चे को भी सधी है, वह हमें नहीं सधेगी? अगर मन में द्वेष हो तो रात में अच्छी नींद नहीं आयेगी। द्वेष करते हैं तो उसका नुकसान कैसे करना, यह सारा सोचना पड़ेगा। इसलिए यहाँ नींद नहीं आयेगी। किसीका मत्सर, द्वेष मत करो तो आनंद ही आनंद रहेगा और रात में आठ बजे आराम से सो जाइये। यह तो बिल्कुल आलसी को भी सध सकता है। इससे मनुष्य शांति पायेगा।

इसलिए हम भगवान से ऐसी प्रार्थना करें कि हे भगवान, हम ऐसा पुरुषार्थ करेंगे कि अगले जनम सब करें, याने न करने लायक कुछ न करें। ऐसी प्रेरणा आज मिले तो शंकरदेव का जन्म दिन सार्थक है। नहीं तो उनका साहित्य कैसा है, उसमें वीर रस, शृङ्गार रस कैसा है, इस चर्चा से हमें कोई लाभ नहीं होगा।

असम में आने के बाद एक सभा में मैंने कहा था कि असम मेरे पिता की जायदाद है। यहाँ मैंने यह महसूस किया कि यह मेरा ही घर है। शंकरदेव मेरे बाप हैं और मैं उनका बेटा हूँ। हम सब ऐसे महापुरुषों की संतान हैं, यह हम पहचानें और उसके लायक हम बरतें तो उनका आशीर्वाद हमें हासिल होगा। भगवान और महापुरुष, दोनों मदद के लिये तैयार रहते हैं। लेकिन हम काम ही ऐसा करते हैं कि उनकी मदद लेते ही नहीं, याने ऐसा काम करते हैं कि जिसमें शंकरदेव की मदद की जरूरत ही नहीं है। अगर आप मदद लेंगे तो वे तैयार हैं। आपके आगे रहेंगे, पीछे रहेंगे, ऐसा प्रकाश देंगे कि हम गिरेंगे नहीं।

यही राजमार्ग हम आपके सामने रख रहे हैं कि अपने सुख से सुखी और अपने दुःख से दुःखी यह मनुष्य का नहीं, जानवर का लक्षण है। हिरन की चिन्ता घोड़े को नहीं होती है। यह पशु का लक्षण है कि अपने सुख से सुखी और अपने दुःख से दुःखी। यह भक्ति-मार्ग नहीं है। भक्ति-मार्ग यह है कि दूसरे के सुख से सुखी और दूसरे के दुःख से दुःखी, जिससे कि हम दूसरों की सेवा करें, दासों के दास बनें, नम्र बनें। लेकिन यहाँ मालिक बन बैठते हैं। हम सेवक हैं और ये सारे नर-नारी, बालक हमारे स्वामी हैं। महापुरुषों के स्मरण से यह शक्ति आ जाय तो जीवन का सौदा बन जाय, ऐसी शक्ति हममें पड़ी है।

लोग पूछते हैं कि हम क्या करें? हम खुद बहुत दुःखी हैं। पर समाज में ऐसे गरीब दुःखी पड़े हैं कि जो जन्तु के समान जी रहे हैं, उनकी उपेक्षा हो रही है। उनकी सेवा हमें करनी है। इससे बेहतर सेवा, इससे बेहतर रसमय भक्ति कौनसी होगी? भक्तों ने कहा, हमें मुक्ति नहीं चाहिये। आत्मा मुक्त है। हम देह धारण करने क्यों आते हैं? सेवा करने, रसमय भक्ति करने आते हैं।

—•—

ता० १९ सितम्बर को असम के संत शंकरदेव के जन्मदिन के अवसर पर पथार शारिंग (जिला शिवसागर) में दिये हुए प्रवचन का सार।

असम सरकार की गांधी-जयन्ती की भेंट

ता० १ अक्टूबर '६१ को असम विधान-सभा ने सर्वानुमति से 'ग्रामदान एक्ट' स्वीकृत किया।

ता० २९ जून '६१ को 'विधान सभा की ग्रामदान-बिल के लिए नियुक्त की हुई 'सिलेक्ट कमिटी' बिल के बारे में चर्चा करने के लिए और विनोबाजी के मार्गदर्शन के लिए उनके पास आयी थी। बिल पर बहुत गंभीर और विस्तृत चर्चा हुई।

विधान-सभा का कार्यक्रम खास इस दृष्टि से बनाया गया था कि यह बिल 'गांधी-जयन्ती' के सुअवसर पर स्वीकृत हो। अतः गांधी-जयंती के अवसर पर असम सरकार की अपने राज्यवासियों को यह भेंट है।

नार्थ लखीमपुर में हुए सैकड़ों ग्रामदान के वातावरण के लिए यह 'एक्ट' बहुत अनुकूल है। इस कानून की यह विशेषता है कि यदि बीस घरों के छोटे गाँव ने भी अपनी भूमि का स्वामित्व विसर्जित किया और जमीन के स्वामित्व के सब अधिकार गाँव के समाज को समर्पित किये, तो उन बीस घरों के समूह को ग्रामदान माना जायेगा और उनकी पंचायत के वही सब अधिकार मिलेंगे, जो ढाई हजार आबादी की पंचायत को मिलते हैं। इससे ग्रामदानी गाँवों में एक बहुत बड़ी शक्ति पैदा होगी।

असम का यह 'ग्रामदान-एक्ट' भारत में अपनी तरह का पहला ही कानून है। उससे सारे भारत को मार्ग-दर्शन मिलेगा, ऐसा आशा है।

वस्त्र-स्वावलम्बन की दिशा में . . .

ग्रामभारती आश्रम, टवलाई, (जि० धार, म० प्र०) के कुमार मन्दिर (बुनियादी शाला) में 'गांधी-जयन्ती' के निमित्त से ९३ दिन का सूत्रयज्ञ और ९३ घण्टों का अखण्ड सूत्र-यज्ञ चला। शिक्षकों, विद्यार्थियों और कार्यकर्ताओं ने इसमें भाग लिया। ९३ दिन में १ से ७ वीं कक्षा तक के कोई २५ बालकों ने कुल ८०० गुण्डियाँ सूत काता। इसी बीच कार्यकर्ताओं ने २५० गुण्डियाँ काता। अखण्ड सूत्र-यज्ञ में कुल १२१ गुण्डियाँ कती।

यों दो जुलाई से दो अक्टूबर तक हमारे छोटे-से परिवार ने लगभग १२०० गुण्डियाँ सूत काता। इससे आश्रम-परिवार का वस्त्र स्वावलम्बन बड़ी हद तक सिद्ध हुआ है। कुमार मन्दिर के छात्रावास में ८ से लेकर १४-१५ की उमर के कुल १९ छात्र हैं। शिक्षकों सहित ९ कार्यकर्ता हैं। यों बाहर के छात्रों सहित कुल ३२-३३ साथियों के सहयोग से इस वर्ष सूत्रयज्ञ में हम १२०० गुण्डियों तक पहुँचे हैं। पिछले छह साल से हमारा यह क्रम चल रहा है। इस साल हमारी अपेक्षा से काफी कम, पर हर साल से लगभग ड्योढ़ा काम गांधी-जयन्ती के निमित्त से हो पाया है। ता० ६-१० को तिथि से बापू का जन्म-दिन है। हमने मध्य प्रदेश क्षेत्र के बाढ़पीड़ितों की मदद के लिए उस दिन एक-एक गुण्डी सूत कातने का निश्चय किया है। लगभग ४० गुण्डी कत सकेंगी।

(एक पत्र से) —काशिनाथ त्रिवेदी

चुनावों के समय राजनीतिक पक्षों की आचारमर्यादा के लिये सर्व सेवा संघ के सुझाव

अखिल भारत सर्व सेवा संघ के मंत्री श्री पूर्णचन्द्र जैन ने संघ की ओर से आम चुनावों के समय राजनीतिक पक्षों की आचार-मर्यादा के लिये सात मुद्दे सुझाव के रूप में प्रदेशीय सर्वोदय-मंडलों को परिपत्रित किये हैं। वे विचार-विनिमय के लिये नीचे दिये जा रहे हैं।

(१) राजनैतिक प्रचार के प्रवाह में दूसरे पक्षों की टीका-टिप्पणी करनी हो, तो उनके नीति-नियम और कार्यक्रम पर प्रमुखतया विचार करना चाहिए। उसी तरह दूसरे पक्षों के नेताओं या कार्यकर्ताओं की टीका-टिप्पणी करते समय उनके सार्वजनिक जीवन से संबंध न रखने वाले व्यक्तिगत मामलों में असत्य या मिथ्या प्रचार नहीं करना चाहिए।

(२) ऐसी कोई बात न की जाय, जिससे जाति-जाति, धर्म-धर्म या वर्ग-वर्ग में द्वेष पैदा हो या उनमें कटुता बढ़े।

(३) राजनैतिक पक्षों को चाहिए कि अन्य पक्षों की सभा, जुलूस आदि कार्यक्रमों में बाधा पैदा न करें या दंगा करके उनको अस्त-व्यस्त न करें।

(४) किसी व्यक्ति को एक पक्ष द्वारा 'टिकट' के लिए इन्कार किये जाने पर उस व्यक्ति को दूसरे पक्ष उसी चुनाव में अपना 'टिकट' न दें।

(५) चुनाव के बाद एक पक्ष के 'टिकट' पर चुने गये व्यक्ति को बिना अपनी जगह का त्यागपत्र दिये हर दूसरे पक्ष को चाहिए कि उसे अपने पक्ष में प्रवेश न दे।

(६) चुनाव-प्रचार के किसी भी काम में १८ वर्ष से कम उम्रवाले किशोरों का उपयोग न हो, ध्यान रहे।

(७) चुनाव के समय पालन योग्य कोई आचार-मर्यादा भंग हो जाय तो उक्त पार्टी को स्वयं ही प्रकट कर देना चाहिए तथा उसकी पुनरावृत्ति न हो, ऐसा उसे ध्यान रखना चाहिए।

'गांधी-जयन्ती' से मलयपुर में शराब की दुकान बंद : बिहार सरकार का निर्णय

पिछले ८ महीने से मलयपुर (जिला-मुंगेर-बिहार) में शराब की दुकान पर जो शांतिपूर्ण पिकेटिंग वहाँ के निवासी और बिहार के पुराने रचनात्मक कार्यकर्ता श्री रमावल्लभजी चतुर्वेदी ने शुरू किया था, वह गांधी-जयन्ती के दिन सफलतापूर्वक सम्पूर्ण हुआ है। बिहार सरकार ने गांधीजी के जन्म-दिवस, दो अक्टूबर से मलयपुर की शराब की दुकान उठा ली है।

गांधीजी के निर्वाण-दिवस, गत ३० जनवरी से श्री रमावल्लभजी ने अपनी अन्तःप्रेरणा से इस दुकान पर एकाकी पिकेटिंग शुरू किया था। कुछ दिन बाद प्रांत के अन्य रचनात्मक कार्यकर्ताओं तथा बिहार सर्वोदय-मण्डल का समर्थन भी इस सत्याग्रह को प्राप्त हुआ और जनमत भी इसके पक्ष में बढ़ता गया। पिछली ६ अगस्त को श्री जयप्रकाश नारायणजी ने भी मलयपुर की शराब की दुकान पर पिकेटिंग की। बिहार सरकार ने जनमत की माग का आदर करके अब मलयपुर की शराब की दुकान बंद करने का सराहनीय कदम उठाया है।

अलीगढ़ के दंगे में शांति-सैनिकों द्वारा शांति-प्रयास

अलीगढ़ में विश्वविद्यालय के छात्र-यूनियन चुनाव को लेकर अक्टूबर को साम्प्रदायिक दंगा हुआ, जिसमें १० व्यक्ति मारे गये और कई घायल हुए हैं। वैसे ताजे समाचारों से मालूम हुआ है कि स्थिति काबू में है। नगर में दंगों के फलस्वरूप जो तनाव की स्थिति है, उसको दूर करने के लिए अखिल भारत शांतिसेना मंडल की संयोजिका श्रीमती आशादेवी आर्यनायकम् के आदेश पर सर्व सेवा संघ के काशी स्थित शान्ति विद्यालय से चार शांति सैनिक अलीगढ़ गये हैं। उ० प्र० शांति सेना मंडल से भी अपेक्षा है कि वह ज्यादा संख्या में शांति-सैनिक भेजें।

विनोबा-पदयात्रा वृत्त

—श्री देवरभाई ता० २५ सितम्बर को दिल्ली के लिए रवाना हुए। बाबा के साथ उनकी गोसेवा-संघ और राष्ट्रीय एकात्मीकरण के बारे में चर्चा हुई।

—बिहार सर्वोदय-मंडल के अध्यक्ष श्री गौरीबाबू, जो बाबा के साथ चर्चा करने के लिए आये थे, बाइदेव (अमलप्रभा दास) के साथ शिलांग गये। वे वहीं से आगे बिहार की ओर गये।

—सर्वश्री जयप्रकाशजी, प्रभावती बहन, शंकरराव देव, धीरेन्द्रभाई बाबा से मिल कर ता० २७ को वापस रवाना हुए।

—श्री राधाकृष्णजी बजाज १ अक्टूबर को यहाँ से वापस गये।

—उत्तराखंड की सर्वोदय-कार्यकर्त्री श्री राधाबहन अपनी सहकारी श्री गंगा बहन के साथ यहाँ आयी हैं। १०-१२ रोज यात्रा में रहने का उनका कार्यक्रम है।

बिहार में आचार-संहिता मान्य

ताजे समाचारों के अनुसार बिहार सर्वोदय-मंडल द्वारा प्रस्तुत आचार-संहिता राज्य की विभिन्न राजनीतिक पार्टियों द्वारा सर्वसम्मति से स्वीकृत कर ली गयी। राजनीतिक पार्टियों के प्रमुखों की बैठक ता० ९ अक्टूबर को बिहार के मुख्य मंत्री श्री विनोदानंद झा की अध्यक्षता में हुई। आचार-संहिता के लिए पूर्व-चर्चा के तौर पर पिछली बार २६ सितम्बर को हुई सभा में जो मुद्दे पेश किये गये थे, वे आम तौर से स्वीकार कर लिये गये।

अपने विचार प्रकट किये हैं। शिक्षा या भाषा से संबंधित कई तफसील की बातें ऐसी हैं, जिनके बारे में एकता-सम्मेलन के निवेदन में जो विचार प्रकट किये गये हैं, उनसे मतभेद हो सकता है। इन विषयों की तफसील में हम आगे कभी जाने की कोशिश करेंगे।

(४) सम्मेलन ने यह भी महसूस किया कि राष्ट्र में एकता की भावना बनाये रखने के लिए यह भी जरूरी है कि देश के हर क्षेत्र और हिस्से के विकास पर ध्यान दिया जाय और राष्ट्र का विकास क्षेत्रीय दृष्टि से संतुलित हो।

(५) सम्मेलन के निवेदन के आखिर में, संक्षेप में ही सही, पर इस विचार को भी स्थान मिला है कि देहाती क्षेत्र के आर्थिक विकास की ओर ज्यादा ध्यान दिया जाना चाहिए और राष्ट्र की आर्थिक प्रवृत्तियाँ और व्यवस्था अधिकाधिक विकेन्द्रित होनी चाहिए।

उपरोक्त निर्णयों को कार्यान्वित करने और राष्ट्रीय एकता के प्रश्न पर आगे भी आवश्यक कदम उठाने की दृष्टि से प्रधानमंत्री की अध्यक्षता में एक राष्ट्रीय परिषद का निर्माण भी किया गया है।

इसमें कोई सन्देह नहीं कि एकता-सम्मेलन ने अपने निवेदन में उपरोक्त जिन पाँच बातों की ओर संकेत किया है, वे राष्ट्रीय एकता को मजबूत करने की दृष्टि से महत्त्व के प्रश्न हैं। सम्मेलन के निवेदन में इन विषयों पर जो तफसील की बातें आयी हैं और जो रायें जाहिर की गयी हैं, उनके बारे में और अधिक सोचने की जरूरत है, ऐसा हम मानते हैं। उनमें से कुछ के बारे में मतभेद भी हो सकता है। पर मुख्य बात यह है कि सब प्रकार के पार्टीगत और अन्य भेदभाव भूल कर राष्ट्रीय जीवन के विविध क्षेत्रों में अग्रगण्य लोग इस प्रकार एक मंच पर मिले, उन्होंने राष्ट्रीय एकता के प्रश्न पर विचार-विनिमय किया और अन्त में सर्वसम्मत नतीजों पर पहुंचे। विनोबा बराबर कहते रहे हैं कि अगर राष्ट्र को सचमुच विकास और उन्नति के पथ पर ले जाना है तो भिन्न-भिन्न विचारों और वादों के कारण मतभेद कायम रखते हुए भी कई ऐसे रचनात्मक कार्यक्रम हो सकते हैं, जिनके बारे में सब लोग मिल-जुल कर एक होकर काम करें। ऐसा हो तो विचार भेद भी अपने वास्तविक और ऊँचे स्तर पर लोगों के सामने पेश होंगे तथा राष्ट्रीय जीवन का स्तर भी ऊँचा उठेगा। सन् १९५७ में येलवाल-परिषद के समय इस प्रकार के सर्वसम्मत कार्यक्रम और राष्ट्रीय एकता की ओर पहला कदम उठाया गया था। वह परिषद सर्व सेवा संघ और विनोबाजी द्वारा आमंत्रित की गयी थी और हालांकि सभी निमंत्रित उस आमंत्रण का आदर करके परिषद में उपस्थित हुए थे और एक सर्वसम्मत नतीजे पर पहुँचे थे, फिर भी वह एक नम्र और छोटा ही प्रयत्न था। सन् १९६१ का यह राष्ट्रीय एकता सम्मेलन इस दिशा में दूसरा और महत्त्वपूर्ण कदम है। सम्मेलन में जिस भावना से प्रेरित होकर सब चर्चाएँ हुईं और उसके द्वारा एक सर्वसम्मत निवेदन स्वीकृत हुआ, वही भावना और प्रेरणा कायम रहे—और हम आशा करते हैं कि वह अवश्य कायम रहेगी—तो इसमें कोई सन्देह नहीं है कि यह सम्मेलन हमारे राष्ट्र के इतिहास में एक महत्त्व का संकेत-चिह्न साबित होगा। इस सम्मेलन के निवेदन में उन बातों के बीज मौजूद हैं, जो राष्ट्रीय जीवन को एक नयी दिशा की ओर ले जा सकते हैं और दुनिया के दूसरे देश भी हिन्दुस्तान से जिसकी अपेक्षा रखते हैं।

—सिद्धराज

राष्ट्रीय एकता-सम्मेलन में आचार-मर्यादा का प्रश्न

सार्वजनिक व्यवहार की आचार-मर्यादा के सम्बन्ध में राष्ट्रीय एकता-सम्मेलन के निवेदन में कहा गया है :—

इस सम्मेलन की यह राय है कि राष्ट्रीय एकता को कायम रखने और बढ़ाने के लिए, यह जरूरी है कि राजनीतिक पार्टियों, समाचार-पत्रों, विद्यार्थियों और आम जनता के व्यवहार से सम्बन्धित आचार-मर्यादा तय की जाय। सम्मेलन की यह भी राय है कि आने वाले आम चुनावों को दृष्टि में रख कर चुनाव-प्रचार के सिलसिले में राजनीतिक पार्टियों के मार्ग-दर्शन के लिए एक विशेष आचार-संहिता भी तैयार की जाय। इन सब विषयों पर सम्बन्धित वर्गों से सलाह-मशविरा किये बिना व्यापक आचार-संहिता तैयार करना सम्भव नहीं है। सम्मेलन में उपस्थित लोगों में इस बारे में आम सहमति थी कि राजनीतिक पार्टियों के लिए नीचे लिखी मर्यादा तत्काल स्वीकार की जाय।

(१) किसी राजनीतिक दल को ऐसी कोई बात नहीं करनी चाहिए, जिससे भिन्न-भिन्न जातियों, धार्मिक सम्प्रदायों या भाषायी समूहों के बीच जो मौजूदा मतभेद हैं, वे बढ़ें या परस्पर घृणा की भावना पैदा हो या जिनके कारण तनाव पैदा हो।

(२) हर राजनीतिक दल को यह खयाल रखना चाहिये कि वह किसी मामले में (अगर) कोई आन्दोलन खड़ा करे, तो उससे हिंसा को उत्तेजन न मिले और न उस आन्दोलन के दौरान हिंसात्मक कार्रवाइयाँ की जायँ। सब प्रयत्नों के बावजूद अगर हिंसा फूट ही पड़े तो तुरन्त उसका खंडन किया जाय।

(३) राजनीतिक दलों को चाहिये कि समझौते और बीच-बचाव के तमाम संभव उपाय कर लेने के पहले, वे जाति, सम्प्रदाय, क्षेत्र या भाषायी मुद्दों से सम्बन्धित किन्हीं शिकायतों को दूर कराने के लिये कोई ऐसा आन्दोलन खड़ा न करें, जिससे शांति भंग होने का अंदेशा हो या जिसके कारण जनता के विभिन्न वर्गों के बीच कटुता या तनाव बढ़े।

(४) राजनीतिक पार्टियों को चाहिये कि वे दूसरी पार्टियों की सभाओं, जुलूस आदि कार्यक्रमों में बाधा पैदा करने अथवा भंग करने की कोशिश न करें।

(५) सरकार को चाहिये कि अमन-चैन और व्यवस्था कायम रखने के लिये कार्रवाई करते समय नागरिक अधिकारों पर अनावश्यक प्रतिबन्ध न लगाये, न ऐसे कोई कदम उठायें, जिनसे राजनीतिक पार्टियों की स्वाभाविक गतिविधि में बाधा पहुंचे।

(६) किसी भी स्तर पर राजनीतिक सत्ता का उपयोग अपने पक्ष के लोगों के व्यक्तिगत स्वार्थों को आगे बढ़ाने में या दूसरी पार्टियों के सदस्यों के हितों को हानि पहुँचाने के लिये नहीं किया जाना चाहिए।

सम्मेलन की राय में विभिन्न राजनीतिक पार्टियों के प्रतिनिधियों को राष्ट्रीय तथा प्रान्तीय स्तर पर आचार-संहिता विकसित करने तथा परस्पर विचार-विनिमय के लिये आवश्यक तंत्र खड़ा करने की कोशिश करते रहना चाहिये।

इस सम्मेलन द्वारा जो राष्ट्रीय एकता परिषद कायम की जा रही है, उसे चाहिये कि वह आम जनता के लिये, विद्यार्थियों के लिये, समाचार-पत्रों के लिये और आगामी आम चुनावों के समय पालन करने योग्य आचार-मर्यादाएँ तैयार करने का काम करें।

राष्ट्रीय एकता-सम्मेलन द्वारा शांति-प्रतिज्ञा का विचार मान्य

अ० भा० शांति-सेना मंडल की ओर से सर्व सेवा संघ की प्रबंध समिति की पिछली बैठक में यह सुझाव आया था कि देश में बढ़ती हुई हिंसक प्रवृत्ति को रोकने और देश में संघर्ष तथा तनाव का वातावरण कम करने की दृष्टि से भारत का प्रत्येक नागरिक शांति की प्रतिज्ञा ले, इसके लिए राष्ट्र-व्यापी प्रयत्न किया जाय। उसी बैठक में यह भी तय किया गया था कि यह सुझाव प्रस्तावित राष्ट्रीय एकता सम्मेलन के सामने रखा जाय। तदनुसार श्री जयप्रकाश नारायण ने सम्मेलन में यह सुझाव पेश किया था, जिसे सम्मेलन ने सर्वसम्मति से मान्यता दी :

'शांति-प्रतिज्ञा' (नेशनल पीस प्लेज) से सम्बन्धित राष्ट्रीय सम्मेलन के निवेदन का अंश इस प्रकार का है :

"यह सम्मेलन सर्व सेवा संघ के इस सुझाव का स्वागत करता है कि भारत का प्रत्येक नागरिक आपस के झगड़े हर हालत में शान्तिमय उपायों से निपटाने की सभ्य समाज की सर्वमान्य निष्ठा में अपना विश्वास जाहिर करे, इसके लिए एक राष्ट्रव्यापी प्रयत्न किया जाय। इसके लिए नीचे लिखे अनुसार एक शान्ति-प्रतिज्ञा की सिफारिश की जाती है—

"भारत का नागरिक होने के नाते मैं सभ्य समाज के इस सार्वभौम सिद्धान्त में अपनी निष्ठा जाहिर करता हूँ कि नागरिकों, या उनके समूहों, संस्थाओं व संगठनों के बीच उत्पन्न विवाद शान्तिमय उपायों से ही निपटाये जाने चाहिये; और राष्ट्र की एकता व एकात्मता के लिए बढ़ते हुए खतरे को ध्यान में रखते हुए यह प्रतिज्ञा करता हूँ कि मेरे आसपास या भारत के और किसी हिस्से में किसी झगड़े के सिलसिले में मैं स्वयं प्रत्यक्ष हिंसा का सहारा नहीं लूंगा।" ●

बन्धुत्व की भावना जितनी उत्कट होगी, सत्याग्रह उतना प्रभावशाली होगा। बंधुत्व की भावना उग्र नहीं हो सकती। जैसे चन्द्रमा का प्रकाश चाहे जितना तेज हो, उज्ज्वल हो; फिर भी शीतल ही होगा, वह कभी तापदायक हो ही नहीं सकता। उसी प्रकार सत्याग्रह की तीव्रता वस्तुतः सौम्य ही होगी। इसलिए विनोबा कहता है कि सत्याग्रह सौम्य होगा, सौम्यतर होगा, सौम्यतम होगा। —दादा धर्माधिकारी

गांधीजी के दृष्टिकोण से ग्राम-पुनर्रचना

अण्णासाहब सहस्रबुद्धे

गांधीजी के दृष्टिकोण से ग्राम-निर्माण-कार्य के बारे में विचार करना हो तो उनके जीवन के जो मूलभूत सिद्धांत हैं, उनका विचार करना आवश्यक है। उनके जीवन में अहिंसा का सर्वोच्च स्थान था। साधन-शुद्धि को भी वे उतना ही महत्त्व देते थे और प्रत्येक कार्य के बारे में वे अन्त्योदय की दृष्टि से विचार करते थे। आर्थिक समानता की ओर एक-एक कदम आगे बढ़े, इस दृष्टि से वे नित्य विचार करते थे और भारत का अर्थशास्त्र याने गाँव की उन्नति का अर्थशास्त्र, ऐसा उनका निश्चित विचार था। वर्ग-विग्रह के बजाय वर्ग-समन्वय की दृष्टि से वे विचार करते थे। इसका अर्थ यह है कि ग्राम-रचना में सबका समान हित किस प्रकार होगा, इस बारे में उनका मुख्य विचार विधायक कार्य की उनकी दृष्टि में अन्तर्भूत था।

पर विगत सौ-दो सौ वर्षों में गाँवों का शोषण होता गया। गाँवों में उद्योग-धंधे नहीं के बराबर रह गये। देश उद्योगप्रधान बनने के बजाय कृषिप्रधान ही रहा। कच्चा माल पैदा करना और वह शहरों में और परदेश भेजना, इतना ही गाँव के कृषि-उद्योग का स्वरूप रह गया। उद्योग-धंधे नष्ट हुए और उसके साथ साथ लोगों के हाथ की कला भी नष्ट हुई। गाँव की संगठन-शक्ति भी जाती रही। गाँव में शिक्षण की सहूलियत नहीं रह गयी, पुरुषार्थ करने का अवसर भी न रहा, जिसका परिणाम यह हुआ कि गाँव में जो योग्य तरुण-वर्ग था वह शहर की ओर द्रुत गति से जाने लगा। धीरे धीरे गाँव निर्जीव बनते गये। देश काफी समय तक परतंत्रता में रहा। उसका परिणाम भी यह मान लें, तो भी पाश्चात्य अर्थशास्त्र का, औद्योगीकरण का तथा विकसित यंत्र-शास्त्र का यह अपरिहार्य परिणाम है, ऐसा लोग मानने लगे और शहर का ऐश्वर्य ही भारत का ऐश्वर्य है, इस तरह का दृष्टिकोण देश में प्रचलित होने लगा।

ऐसी स्थिति में गांधीजी ने सन् १९२० में हिन्दुस्तान की राजनीति में प्रवेश किया, तथा हिन्दुस्तान का वैभव गाँव-गाँव को समृद्ध बनाने में है, यह बात उन्होंने मुख्यतः देश के शिक्षित-वर्ग के समक्ष रखी और ग्राम निर्माण का कार्यक्रम भी देश के सामने रखा।

गाँव के आर्थिक विकास के लिये चरखे को उन्होंने मध्य-बिन्दु बनाया। खादी के साथ-साथ ग्रामोद्योगों को भी विधायक कार्यक्रम में एक महत्त्व का स्थान दिया गया और स्वदेशी की परिभाषा में भी उन्होंने एक क्रान्तिकारी परिवर्तन किया। स्वदेशी की प्रचलित परिभाषा का अर्थ देश में उत्पादित माल ही स्वदेशी है, उसके बजाय खादी-ग्रामोद्योगों को स्वदेशी धर्म की सही बुनियाद मानते हुए एक नया दृष्टिकोण देश ने मान्य किया। विधायक कार्य की परिपूर्णता स्वराज्य है—'फुलफिलमेंट आफ कंस्ट्रक्टिव प्रोग्राम इज स्वराज्य', ऐसी स्वराज्य-प्राप्ति की विधायक व अहिंसक दृष्टि उन्होंने देश के सामने रखी।

उपरोक्त दृष्टि को मद्दे नजर रखें तो गाँव-गाँव में बिखरी पड़ी श्रम-शक्ति का—जो ग्रामीण पुनर्निर्माण की आधारशिला है—उत्पादक कामों में अधिकाधिक उपयोग हो, यह विचार मान्य करना होगा। अपने देश में मनुष्य-शक्ति और पशुशक्ति भी काफी मात्रा में है। इन दोनों शक्तियों का उपयोग ग्राम-निर्माण-कार्य में मुख्यतः कृषि-उद्योग के सुधार व विकास में किया गया तो उत्पादन बढ़ेगा। बेकार मनुष्यों को अधिक-से अधिक काम मिल सकेगा। लोगों को भरपूर काम मिला, तो हस्त-कला भी बढ़ेगी और उससे राष्ट्र की उत्पादन शक्ति भी बढ़ेगी।

> गाँव की सम्पूर्ण-शक्ति के उपयोग करने की योजना ही ग्राम-पुनर्रचना अथवा पुनर्निर्माण की आधारशिला है।

उपरोक्त विचार को अमल में लाने के लिये जो उत्पादक कार्य गाँव में सम्पन्न किये जा सकते हैं, उन्हें गाँव में ही किया जाय, ऐसा राष्ट्र को संकल्प करना होगा। कृषि उत्पादन के साथ-साथ कच्चे माल को पक्का माल में परिवर्तित करने के लिये आवश्यक छोटे मोटे उद्योग भी गाँव में प्रारम्भ करने होंगे। शहर में जो आज कारखानों की पद्धति चालू है, उसे धीरे-धीरे कम कर गाँवों को उन सारे उद्योगों को करने के लिये अवसर देना होगा।

इस विचार से लोगों को यह डर लगता है कि यदि सभी 'प्रोसेसिंग उद्योग' हाथ से होने लगेंगे, तो अपना देश सदैव के लिये अप्रगतिशील और पिछड़ा रहेगा और उन्नत देशों की बराबरी का स्थान कभी भी प्राप्त नहीं कर सकेगा। कुछ लोगों की मान्यता बन गयी है कि गांधीजी विद्युत-शक्ति के उपयोग के विरुद्ध थे, यंत्रों का भी विरोध वे करते थे। अर्थात्, खादी-ग्रामोद्योग का अर्थशास्त्र याने देश को निरंतर अप्रगतिशीलावस्था में रखने वाला अर्थशास्त्र है, ऐसा कुछ लोग मानते हैं। गांधीजी को गरीबों का शोषण मान्य नहीं था। विद्युत शक्ति अथवा यंत्र-शक्ति का उपयोग करना हो तो वह सहकारी पद्धति से सबके हित के लिये किया जाय, ऐसी उनकी दृष्टि थी। प्राथमिक आवश्यकताओं में गाँव स्वावलम्बी हो, उत्पादन आवश्यकता के अनुसार हो, यह गांधीजी की दृष्टि ध्यान में रख कर यदि ग्राम निर्माण में विद्युत-शक्ति या अन्य किसी शक्ति का उपयोग किया जाय तो उससे बेकारी नहीं बढ़ेगी। उस सम्बन्ध में गाँव-गाँव में लोगों को शिक्षण दिया जाय। सारे गाँव की समृद्धि की दृष्टि से गाँव का आर्थिक विकास यदि सहकारी संगठन द्वारा हम कर सकेंगे, तो वह एक सही दिशा होगी।

सब विकास-कार्यों में यदि सबसे गरीब को पहले मदद पहुँचाने का विचार मान्य कर लिया जाय तो ग्राम पुनर्निर्माण के काम में गाँव-गाँव में उद्योग धंधे शुरू करने होंगे। फिर गाँवों को शहरों पर अवलम्बित नहीं रहना पड़ेगा। गाँव की प्राथमिक आवश्यकताओं के लिये आज उपलब्ध ज्ञान विज्ञान का उपयोग ज्यादा-से-ज्यादा हमें ग्राम-निर्माण के काम में करना चाहिये और वह लोगों के हित की दृष्टि से सहकारी-संगठन के आधार पर करना चाहिये।

जो काम ग्रामीण लोग कर सकते हैं, वे काम गाँव में ही हों, लेकिन जो काम एक-एक गाँव नहीं कर सकता है, ऐसे उद्योग किसी मध्यवर्ती स्थान—तालुका-स्तर पर होना चाहिये। तालुका स्तर के स्थान ऐसे उद्योग धंधे व व्यापार के केन्द्र बनेंगे। ये स्थान गाँव के शोषण करने का काम नहीं करेंगे, गाँव के पूरक उद्योग चलाने में मदद करेंगे।

आज हमने यह मान लिया है कि रासायनिक खाद बनाने के कारखाने, सीमेंट के कारखाने, लोहे व फौलाद के कारखाने, कागज के कारखाने, उसके प्रमाण में यांत्रिक उपकरण (मशीन-टूल्स) आदि के कारखाने काफी पूँजी लगा कर बड़े प्रमाण में चलाये जायँ, तो ही सफल होंगे, परन्तु ग्राम-पुनर्निर्माण की दृष्टि से विचार किया जाय तो इन सारे उद्योगों का स्वरूप ऐसा होगा कि वे एक एक जिले की आवश्यकता पूरी कर सकें। ऐसी हालत में केन्द्रित अर्थ-व्यवस्था के बदले विकेन्द्रित अर्थ-व्यवस्था को हमें स्वीकार करना होगा। जिले को ही सर्वांगीण विकास का क्षेत्र मानते हुए कारखानों के विकेन्द्रीकरण के बारे में सोचना होगा और गाँव में ही कच्चे माल का पक्का माल बनें, ऐसा अवसर प्रदान करना होगा।

> इस प्रकार की योजना को ग्राम-स्वराज्य की योजना कह सकते हैं। इसमें आर्थिक विकेन्द्रीकरण के साथ-साथ सत्ता का भी विकेन्द्रीकरण होना आवश्यक है।

गाँव पोषण, रक्षण व शिक्षण, इन तीन बातों के लिये पूर्ण स्वावलम्बी बनें। पंचायत राज के कानून आज सभी प्रान्तों में बन रहे हैं। उनके द्वारा सत्ता का विकेन्द्रीकरण और आर्थिक विकेन्द्रीकरण जिस हद तक होगा, उसी प्रमाण में ग्रामनिर्माण कार्य के द्वारा ग्रामस्वराज्य का मार्ग प्रशस्त होगा। ●

● ११ जून, '६१ को आल इन्डिया रेडियो, नागपुर से प्रसारित मराठी भाषण से अनुवादित।

साहित्य-परिचय

प्रकाशक : सस्ता-साहित्य-मंडल, नई दिल्ली

प्राकृतिक जीवन की ओर : ले० एडोल्फ जस्ट, पृष्ठ-संख्या २५३, मूल्य १ रु ५० न.पै.।

'रिटर्न टू नेचर' का यह हिन्दी अनुवाद हिन्दी के प्रसिद्ध प्राकृतिक चिकित्सा-साहित्य लेखक श्री विट्ठलदास मोदी ने किया है। मानव प्रकृति के जितना पास जाता है उतना ही स्वाभाविक बनता है और जितना उससे दूर हटता है उतना ही अस्वाभाविक सिद्ध होता है। हम अपने जीवन को किस प्रकार अधिक स्वस्थ, सुन्दर, सुखद और समृद्ध बना सकते हैं, इन प्रश्नों के उत्तर इस पुस्तक में सरस काव्यमय भाषा में दिये गये हैं। आशा है कि इसे प्राकृतिक चिकित्साप्रेमी ही नहीं, सामान्य पाठक भी पढ़ेंगे तथा इससे लाभ उठायेंगे।

बंगला साहित्य-दर्शन : ले० मन्मथनाथ गुप्त, पृष्ठ-संख्या ३१२, मूल्य ४ रुपया।

जैसा कि इसके नाम से ज्ञात है, इसमें बंगला साहित्य की प्राचीन से लेकर आधुनिक प्रवृत्तियों का सम्यक् परिचय कराया गया है। उद्धरण बंगला और हिन्दी, दोनों भाषाओं के हैं। आज जब सारी भारतीय भाषाओं को विकसित होना और अपनी शक्ति से हिंदी को अधिक समर्थ और सशक्त बनाना है, यह प्रकाशन बहुत महत्त्वपूर्ण है। रवीन्द्र-जयन्ती के अवसर पर प्रकाशित यह पुस्तक बंगला साहित्य की पृष्ठभूमि में रवीन्द्र साहित्य का अध्ययन करने में विशेष मददगार साबित होगी, ऐसी आशा है।

—मधुराम्ल

शिक्षा और राष्ट्रीय एकता : २

शंकरराव देव

[संस्कृत विश्वविद्यालय, काशी में उपरोक्त विषय पर परिसंवाद में श्री शंकररावजी ने जो भाषण दिया था, उसका पूर्वार्द्ध पिछले अंक में दिया जा चुका है। यह उस भाषण का उत्तरार्द्ध है। पूर्वार्द्ध में यह बतलाया गया था कि आज जिस राष्ट्रीय एकता के अभाव की बात कही जाती है, उसमें मतलब सारे देश की 'एक सरकार' और उसके लिये निष्ठा' के अभाव से है, न कि भावात्मक एकता के अभाव से। भावात्मक एकता तो भारत में प्राचीनों के समय से चली आ रही है। इस उत्तरार्द्ध में बतलाया गया है कि आज जो विच्छिन्नता की-सी भावना इस देश में दीख रही है वह "असल में धर्म और संस्कृति का संघर्ष" नहीं है, बल्कि स्वायत्तता और केन्द्रित सत्ता का संघर्ष है। इस संघर्ष का इलाज भी इस लेख में बतलाया गया है। —सं०]

आजकल हिन्दीवालों का 'साम्राज्यवाद' जैसी एक बात सुनने में आती है। भारत के इतिहास में भी राजनीतिक और सामाजिक क्षेत्रों में साम्राज्यवाद रहा है, लेकिन धर्म, संस्कृति, भाषा आदि क्षेत्रों में इस साम्राज्यवाद से भारत हमेशा अछूता रहा है। राजनीतिक क्षेत्र का वह साम्राज्यवाद भी अनात्मक रहा है। संस्कृत भाषा का साम्राज्यवाद जैसी बात हमने कभी सुनी नहीं। आज भी संस्कृत को राष्ट्रभाषा बनाने की माँग इधर-उधर कहीं-कहीं सुनाई देती है, पर वह नहीं के बराबर है, न वह उचित ही है। तो भी आज इस देश में संस्कृत की मान्यता कायम है और संस्कृत के प्रचार की माँग होती है। यह इसलिये कि भारतीय धर्म, दर्शन, संस्कृति आदि का परिचय कर लेना हो तो संस्कृत का अध्ययन अत्यावश्यक है। यह संस्कृत की सपन्नता ही है, जो उसे यह मान्यता दिला रही है। आज भी भारतीय पण्डितों में व्यवहार का माध्यम संस्कृत ही है।

आज भारतीय लोक-व्यवहार के लिये ऐसी भाषा की आवश्यकता है और यह हिंदी हो सकती है, हिंदी ही होनी चाहिये। लेकिन जब यह माँग होती है कि हिंदी राष्ट्रीय राजकीय भाषा हो और वह होती है तो ही राष्ट्रीय एकता सधेगी, तब लोगों को इस मांग में साम्राज्यवाद की गंध आने लगती है; क्योंकि आज की सरकार लोकशाही सरकार है, यानी बहुमत से चलने वाली सरकार है, लेकिन वह केंद्रीय राज्य है। इसलिये अहिंदी लोगों के मन में—सच्चा या झूठा—यह भय पैदा होता है कि हिंदी को राष्ट्रभाषा बना कर उसके जरिये हिंदी भाषी लोग अपना राज्य कायम करना चाहते हैं।

पश्चिम का आज का राष्ट्रवाद आक्रमक सिद्ध हुआ है। राष्ट्रीय सरकार-नेशनल स्टेट-एक केंद्रित संगठन है और उसकी प्रवृत्ति सारी सत्ता अपने आप में केंद्रित करने की है। उसके फलस्वरूप उसके मातहत भिन्न भिन्न धर्मों, संस्कृतियों और सामाजिक विविध जीवन को पनपने के लिये मौका बहुत कम मिलता है। उसका झुकाव एकसूत्रता की एकता 'यूनिफार्मिटी' को ही 'यूनिटी' मानने की ओर होता है। उदार राष्ट्रवाद का इंग्लैण्ड एक नमूना है, तो भी इंग्लैण्ड, स्काटलैण्ड, वेल्स आदि भूभाग में आज भी वहाँ के लोगों की अस्मिता अपनी अभिव्यक्ति के लिये छटपटा रही है।

आज भारत में जो हम आपसी संघर्ष देख रहे हैं, उसका भी मूल कारण यही है कि प्रादेशिक अस्मिता, संस्कृति, भाषा, साहित्य और समाज-जीवन को भय लगा है कि भारत की यदि एक ही सरकार बनती है तो कहीं उनके अस्तित्व को धक्का न पहुँचे। इसलिये इस संघर्ष को केवल सत्ता का संघर्ष मानना सही नहीं होगा।

इस संबंध में यह भी सुना जाता है कि अंग्रेजों के समय हममें जो एकता और राष्ट्रीय भावना थी, वह भी आज नहीं रही। लेकिन यह कोई अभूतपूर्व घटना नहीं है। रोमन और ग्रीक साम्राज्य से मुगल साम्राज्य तक संसार भर के सभी साम्राज्यों का यही अनुभव आया है और यही अनुभव ब्रिटिश साम्राज्य के अस्त होने के बाद यहाँ भी अनुभव हो रहा है। इतिहास पुनरावृत्त हो रहा है। साम्राज्य की शक्ति के और नीति के कारण साम्राज्यांतर्गत भिन्न भिन्न प्रदेशों में जो एकता दिखती है वह ऊपर से लादी हुई होती है। वह एकता ऐच्छिक नहीं है, चिरंतन नहीं है। जैसे माला का धागा टूटते ही उसमें पिरोये हुए मणि बिखर जाते हैं, वैसे ही साम्राज्य के अस्त होते ही ये देश पहले जैसे थे वैसे ही अलग-अलग हो जाते हैं। आज जो अरब राष्ट्र राष्ट्रवाद से प्रेरित होकर आपस में झगड़ते हैं, वे ही एक जमाना था कि तुर्की साम्राज्य में एक जैसे थे। सौभाग्य से रोमन या तुर्की साम्राज्य का जो इतिहास है, उसकी पुनरावृत्ति भारत में, ब्रिटिश साम्राज्य के अस्त होने के बाद, हम नहीं देख रहे हैं, इसके मुख्य दो कारण हैं। एक यह कि प्राचीन काल से भारतीय ऋषि-मुनियों ने हम लोग के हृदय में भक्ति का बीजारोपण किया और उसका पोषण किया। दूसरा यह कि अर्वाचीन भारतीय जागरण की बुनियाद अध्यात्म और भारतीयता रही है।

इसलिये आज जिसे हम भारतीय विघटन की वृत्ति कहते हैं, उसका भी यदि तटस्थ विश्लेषण करेंगे तो उसका सही स्वरूप समझ में आयेगा। आखिर आज भारत के भिन्न भिन्न प्रदेशों के लोगों की माँग क्या है ? वे अपने प्रदेश की संपूर्ण स्वतंत्रता माँगते हैं या भारतीय संघराज्य के अंतर्गत स्वायत्तता माँगते हैं ? तमिलनाड के द्रविड कड़गम जैसे थोड़े लोगों को छोड़ कर और कोई स्वयं दिल्ली से अलग होना नहीं चाहता है। वह अपने-अपने प्रदेश में अपनी संस्कृति, भाषा, जीवन आदि की रक्षा के लिये स्वायत्तता चाहता है और ज्यादा-से-ज्यादा बुरा यही है कि वह दिल्ली की सत्ता में हिस्सेदार बनने की इच्छा और ईर्ष्या रखता है। द्रविड कड़गम वाले जो स्वतंत्र द्रविडस्तान की माँग करते हैं, उसका कारण भी यही है कि वे अपने को धर्म, संस्कृति आदि की दृष्टि से भारत से इतना भिन्न मानते हैं कि दिल्ली के केंद्रीय शासन से दूर जाने का उनको डर है। यह जो अलगपन बनाये रखने की आवश्यकता का अनुभव किया जाता है, इसका कारण यह है कि भारतीय ऋषि-मुनि धर्म और संस्कृति का एक चैतन्यवस्तु के आधार पर संगम करने के अपने प्रयोग में उस हद तक नहीं पहुँच पाये और जहाँ तक पहुँचे वहाँ भी अधूरे रह गये।

भारत में आज जो संघर्ष दिखता है, वह दरअसल धर्म और संस्कृति का संघर्ष नहीं है, बल्कि यह एक ओर 'इण्डिविजुआलिटी' और 'अटानमी' तथा दूसरी ओर 'आटोक्रसी' और 'कलेक्टिविटी' या 'टोटेलिटेरियनिज्म' का संघर्ष है—चाहे वह 'टोटेलिटेरियनिज्म' लोकशाही के ढंग का हो या साम्यवादी ढंग का—इस प्रकार संघर्ष कोई नया नहीं है, बहुत सनातन है, और यही भिन्न भिन्न साम्राज्यों के उदय और अस्त का कारण है। भारत में धर्म, संस्कृति और समाज-जीवन की जो विविधता है, उसको ध्यान में लेकर ही स्वतंत्र भारत का संविधान बनाने वालों ने भारत को एक संघराज्य घोषित किया। लेकिन नाम तो संघराज्य रखा, पर सारी सत्ता दिल्ली में केंद्रित कर दी और यह स्वायत्तता (अटानमी) का झगड़ा तभी शुरू हुआ जब से संविधान बना। तब यह प्रकट था, पर अब गुप्त रूप में है और कभी भाषा का तो, कभी संस्कृति का रूप लेकर सामने आता रहता है। असली प्रश्न तो स्वायत्तता में एकता (अटानमी इन यूनिटी) का ही है, स्वतंत्रता (इण्डिपेण्डन्स) का नहीं है। यदि यह विश्लेषण सही है तो आज के इस संघर्षों का इलाज भी दूसरे प्रकार का ही होगा और आज की परिस्थिति देखते हुए इसका सही इलाज यही है कि भारतीय संघराज्य के अंतर्गत सच्ची स्वायत्तता प्रदान की जाय। यह स्वायत्तता केवल केंद्र या प्रांतों तक ही सीमित रह जाय तो काम नहीं बनेगा, परंतु सामाजिक जीवन की जो छोटी-सी-छोटी इकाई होगी, वहाँ तक उसे ले जाना होगा। देश का सौभाग्य है कि इस दिशा में कदम उठने लगा है और पंचायती राज्य की स्थापना इसी दिशा का पहला कदम है। यहाँ भी सवाल यह है कि ये पंचायतें भी कहीं केंद्रीय सरकार के शासन के तथा विकास-योजना के साधन-मात्र बन कर न रह जायँ। जरूरत इस बात की है कि ये पंचायतें सही माने में लोगों के समग्र जीवन का विकास करने वाले राज्य या शक्ति-केंद्र बनें।

जो लोग विविधता को ही मानवीय जीवन की संपन्नता मानते हैं, उनके लिये राजनीतिक शासन के बारे में भी कुछ-न-कुछ इसी दिशा में सोचना अनिवार्य है। इस मामले में हमारे पूर्वज ऋषि-मुनि अनजान ही रहे हों और इस दिशा में कोई प्रयोग उन्होंने किया न हो ऐसी बात नहीं है। उन लोगों ने ग्राम पंचायत से लेकर सम्राट् तक एक ऐसा जुड़ा हुआ संगठन खड़ा किया था, जो जनता के विभिन्न धर्म, नीति, संस्कृति, साहित्य, कला, भाषा आदि सामाजिक जीवन की विविधता की रक्षा के लिये था, उनमें दखल देने के लिये नहीं। उनको नियंत्रित या नियमित करने, या सत्ता के बल पर किसी को दबा कर किसी को उभाड़ने का काम वे नहीं करते थे। परंतु उनका यह प्रयोग अल्प मात्रा में ही सफल हो पाया।

एकता के मूल आधार है, अध्यात्म (स्पिरिट) और संस्कृति (कल्चर); क्योंकि एकता मन से संबंधित वस्तु है। मन के मामले में सैनिक या प्रशासकीय सत्ता काम नहीं देती है। इसलिये एकता की स्थापना और उसकी दृढ़ता, सैनिकों या राजनीतिज्ञों का काम नहीं है। यह तो सत्पुरुष और शिक्षकों का काम है। इसलिये भारत की एकता को यदि हम बद्धमूल और उसे शाश्वत बनाना चाहते हैं तो यह काम सत्पुरुष और शिक्षकों का है, यह समझ कर उसकी रचना और संगठन करना चाहिये।

यदि इस बात को हम मानते हैं कि भारत की भावात्मक एकता का काम सत्पुरुष और शिक्षकों का है, यानी अध्यात्म और संस्कृति का है, तो हमारे ऋषि-मुनियों ने इस बारे में जो कुछ सोचा है और किया है, उनसे हमें बहुत कुछ सीखने को मिलेगा।

मुख्य चीज अध्यात्म, दर्शन, संस्कृति वगैरह जो मन की चीजें हैं, ये उन ऋषि-मुनियों के लिये एक चेतन की अभिव्यक्ति के विभिन्न प्रकार और उस 'एक चेतन' के साक्षात्कार के साधन थे। यह मान कर इनका विचार और विकास किया है। यही इस देश की उनकी सफलता का कारण था। साथ ही इसी तत्त्व के आधार पर उन्होंने जीवन के जड़ या भौतिक क्षेत्रों में भी प्रवेश किया, लेकिन उनको बहुत कम सफलता मिली।

आज हमें इसका चिंतन और खोज करना होगा कि राजनैतिक आदि शरीर-गत भौतिक चीजें भी व्यापक पैमाने पर उस एक चेतन की अभिव्यक्ति के प्रकार कैसे बनें और एक चेतन के साक्षात्कार के साधन कैसे बनें ? चूंकि ये भौतिक हैं, इसलिये उन्हें वह रूप देना अधिक कठिन है, क्योंकि अर्थ और काम का संबंध मानवीय जीवन में जो जड़ तत्त्व हैं, उनके साथ है।

हमारे पूर्वज इस बात को ठीक तरह से समझ गये थे और इसीलिये धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष, इन चारों को पुरुषार्थ कहा। इसका सही अर्थ यह है कि मनुष्य को अपने काम की तृप्ति और अर्थ की प्राप्ति धर्म से यानी नैतिक साधनों से करनी चाहिये। लेकिन यह बहुत मुश्किल काम है। ऐसा लगता है कि प्रारंभ से ही लोगों की धारणा बन गयी कि ये चारों अलग-अलग स्वतंत्र पुरुषार्थ हैं। इसी तरह गुण और कर्म के आधार पर ब्राह्मण, क्षत्रिय आदि चार वर्ण भी उन्होंने माने और उसका भी शुरू से नतीजा यह आया कि व्यष्टि और समष्टि, दोनों विच्छिन्न हुए। यही कारण है कि व्यक्तित्व और समाज को अविच्छिन्न करने का उनका प्रयत्न सफल नहीं हुआ।

सही माने में पुरुषार्थ एक ही है, मोक्ष। चूंकि मोक्षार्थी का भी अर्थ और काम के बिना निस्तार नहीं है, इसलिये यह आवश्यक हो जाता है कि मोक्षार्थी को अपने अर्थ की प्राप्ति और काम की तृप्ति धर्म से करनी चाहिये।

इस तरह से मोक्ष ही एक पुरुषार्थ बनता है और मोक्षार्थी के लिये काम और अर्थ की प्राप्ति धर्म से ही करनी आवश्यक होती है, तो समाज को भेद-जनित धर्म के आधार पर चार वर्णों में बांटना अनावश्यक हो जाता है। यह सधेगा तो ही व्यक्तित्व और समाज, दोनों अविच्छिन्न होंगे। अर्थात् अपने जीवन की पूर्णता के लिये हर एक को संपूर्ण नैतिकता यानी अहिंसा अपनानी होगी।

अध्यात्म (स्पिरिट) और भौतिक (मैटर) के बीच का सेतु नीति है। जीवन के राजनैतिक, आर्थिक और सामाजिक आदि क्षेत्रों में जो भिन्न भिन्न पुरुषार्थ या लक्ष्य हैं, उनकी प्राप्ति के लिये हमारा व्यवहार जो होगा उसका आधार नीति होगी और उसके लिये जो संस्थाएँ कायम करनी होंगी, उनके आधार तत्त्व होंगे राजनैतिक स्वायत्तता (पोलिटिकल अटानमी), आर्थिक विकेन्द्रीकरण (इकानोमिकल डीसेंट्रलाइजेशन) और सामाजिक समता (सोशल इक्वालिटी)।

जैसे पहले कहा है, भारत में भी राजनैतिक स्वायत्तता और आर्थिक विकेन्द्रीकरण के आधार पर समाज का संगठन खड़ा करने का प्रयत्न किया गया था, पर वह टिका नहीं। इसके दो कारण थे—एक, सामाजिक समता पूर्ण रूप से स्थापित थी और समाज की रक्षा का अन्तिम साधन सैनिक या राजनैतिक (प्रशासनीय) शक्ति ही था। केन्द्रीकरण और आक्रमणशीलता इन दोनों शक्तियों का गुण धर्म है। इसलिये इसके साथ राजनैतिक स्वायत्तता आदि तत्त्वों का विरोध आता है। इसीलिये रक्षा के लिये सैनिक और शासकीय शक्ति के बजाय किसी तीसरी शक्ति की खोज करनी होगी और उसी का सहारा लेना होगा। यह स्पष्ट है कि वह तीसरी शक्ति नैतिक शक्ति यानी अहिंसा ही हो सकती है। गांधीजी ने अपने जीवन-काल में इसका ही प्रयोग किया और अपने सारे प्रयोग के निचोड़ के रूप में देश और दुनिया को बुनियादी तालीम जैसी नयी शिक्षा प्रणाली भेंट की।

क्या भारत सबक नहीं लेगा ?

दस साल पहले की अपेक्षा आज अमेरिका के इतिहास में अपराधों की संख्या सबसे ज्यादा बढ़ गयी है। अन्तर्राष्ट्रीय पुलिस-मण्डल की बैठक में बताया गया कि हर ४ मिनट में १ खून या बलात्कार, हर ४५ सेकेण्ड में १ घर तोड़ने की या चोरी की घटना, हर ७ मिनट पर लूट और हर १ घण्टे में ३३ मोटरों की चोरी होती है !

इन सब अपराधों की कीमत हर साल २२ अरब डालर यानी अमेरिका की जनसंख्या के हर स्त्री-पुरुष, बालक के पीछे १२८ डालर चुकानी पड़ती है ! आश्चर्य की बात यह है कि इसमें बाल-अपराधियों की संख्या अधिक है।

इस बढ़ती हुई अपराध-वृत्ति का कारण बतलाते हुए वहाँ के 'फेडरल ब्यूरो आफ इन्वेस्टीगेशन' के डायरेक्टर ने कहा कि

> "हमारे यहाँ के नौजवानों के नैतिक अधःपतन के लिए टेलीविजन और सिनेमा जिम्मेदार है। समाज-धारणा के लिए धर्म की, पहले कभी जितनी जरूरत नहीं थी, उससे कई गुनी अधिक जरूरत आज है।"

अमेरिका के रेडियो टेलीविजन कार्यक्रमों के लिए राष्ट्रीय मण्डल की ओर से जो जाँच हुई, उसमें यह पाया गया कि—

> अकेले लासएंजील्स शहर में एक ही सप्ताह में रेडियो-टेलीविजन में जो कार्यक्रम हुए, उनमें १६१ खून, २ आत्म-हत्याएँ, १८२ हत्या के प्रयत्न, ८३ लूटमार, १५ अपहरण, जेल तोड़ कर भागने की २१ घटनाएँ, ११ बलात्कार इत्यादि भयानक विषयों के कथानक चित्रित किये गये थे।

इस बढ़ती हुई अपराध-वृत्ति का मुख्य कारण है टूटी हुई कुटुम्ब-व्यवस्था (ब्रोकन होम्स) और श्रद्धा का अभाव। विज्ञान की कमान जैसी ऊपर-ऊपर जा रही है वैसे ही धर्म और श्रद्धा की सत्ता नीचे जा रही है। धर्म के संस्कार हों, प्रेम की शिक्षा मिले ऐसा स्थान-परिवार-वह भी आज अमेरिका में रहा नहीं। हर दिन होने वाले तलाक के कारण यह कुटुम्ब-व्यवस्था दुर्बल बन गयी है। किसी एक तत्त्व पर, धर्म पर चित्त स्थिर हो, ऐसी सामाजिक परिस्थिति आज वहाँ है नहीं। ऐसी श्रद्धा और निष्ठा के अभाव से उनके जीवन के मूल्य ही बदल गये हैं, बल्कि जीवन में मूल्य रहे ही नहीं। कहा जाता है कि अमरीका का हर जवान लड़का अमरीका का प्रेसीडेण्ट होने के ख्वाब देखता है और हर जवान लड़की हालीवुड की अभिनेत्री बनने की इच्छा करती है! इस प्रकार का आदर्श—जो कि जीवन भर की महत्त्वाकांक्षी राजनीति और विनाशकारी भोगवृत्ति से भरा हुआ है—आज अमरीका के नवयुवकों के सामने है। सिनेमा घरों में और टेलीविजन पर प्रतिदिन प्रदर्शित होने वाले भयानक भोगपिपासु और भड़कीले चित्र इस मूल्य हीन और आदर्शविहीन जीवन को और भी विकृत बना रहे हैं।

अशोभनीय पोस्टरों के खिलाफ आंदोलन का रहस्य

दुनिया के और देशों के मुकाबले में हिन्दुस्तान में यह समस्या इतनी भयानक नहीं है। हिन्दुस्तान की गुनाहगारी का मुख्य कारण है गरीबी, निर्धनता। हमारी कुटुम्ब-व्यवस्था अभी स्थिर है। प्रेम और श्रद्धा को यहाँ स्थान है। भारतीय हृदय में धर्मनिष्ठा अभी कायम है। लेकिन इस देश में जो परिस्थिति हम आज देख रहे हैं, उस पर से ऐसा प्रतीत होता है कि जिस गलत राह पर अमरीकी जवान आज जा रहे हैं, भारतीय जवानों को उस राह पर जाने में अब अधिक देरी नहीं; क्योंकि हमारे सिनेमा-गृह, वासनाप्रेरित साहित्य और इश्तहार हमारे जवानों को उसी दुर्गति की तरफ ढकेल रहे हैं। इसे यदि रोकना हो तो हमें राष्ट्र के चारित्र्य संवर्द्धन की ओर ध्यान देना चाहिए। चारित्र्य और शील ही धर्म की नींव है और एक धर्म ही समाज को धारण कर सकता है।

विनोबाजी ने गंदे पोस्टरों के खिलाफ जो आवाज उठायी है, वह इस दिशा की आखिरी मोर्चेबंदी है। यदि इतना भी न किया गया तो आगे-आगे भयानक खाइयाँ मुँह पसारे खड़ी हैं ! हमारी आज की आवश्यकता है कि इन सारी चीजों पर रोक डालें। यह होने को कुछ समय लगेगा। लेकिन हम इतना तो जरूर और शीघ्र चाहते हैं, हमारे बच्चे—कल के भारत की पीढ़ी—इस अधःपतन से बचें। बच्चों के पालन-पोषण, शिक्षण और संरक्षण के कार्यक्रम में महत्त्व का स्थान है, कुवासनाओं से संरक्षण और सत्प्रवृत्तियों के शिक्षण का। विनोबाजी का "गंदे पोस्टर-आन्दोलन" इस ओर उठाया हुआ एक कदम है। सिनेमा के गंदे पोस्टर, जो कि हमारे बच्चों के नेत्र और दिमाग पर आक्रमण करते हैं, हटाना अति आवश्यक है। अन्य राष्ट्रों की दुःस्थिति से भारत यह सबक ले और सच्चारित्र्य के संवर्धन के काम में जुट जाय।

(विनोबा यात्री दल) —'ब्रह्मपुत्र' से

'ज्ञानदेव चिंतनिका'

एक लाजवाब किताब

दिल्ली के पत्रकार श्री धर्मपाल भाई ने "ज्ञानदेव चिंतनिका" पुस्तक का उर्दू अनुवाद करना चाहते हैं। उसके लिये उन्होंने विनोबाजी से अनुमति माँगी है, ताकि उर्दू पढ़ी लिखी जनता इस संदेश और उपदेश से लाभान्वित हो सके, जो इस लाजवाब किताब में अपने मखसूस (विशेष) और दिल में उतर जाने वाले ढंग से लिखी है।

विनोबाजी ने सर्व सेवा संघ-प्रकाशन विभाग को अनुमति देने के लिए सूचित किया है।

विशुद्ध राजनीतिक और आर्थिक उद्देश्यों के लिए अनशन अनुचित

—जयप्रकाश नारायण

श्री जयप्रकाश नारायण ने ४ अक्तूबर '६१ को पटना में मास्टर तारा सिंह के अनशन-समाप्ति के बाद एक वक्तव्य प्रसारित करते हुए कहा कि राजनीतिक और आर्थिक उद्देश्यों के लिए अनशन करना अनुचित है। उनके वक्तव्य का प्रकाशन जो 'प्रेस ट्रस्ट' ने किया है, वह हम नीचे दे रहे हैं :

"खुशी की बात है कि मास्टर तारा सिंह और योगिराज सूर्यदेव ने अपने अनशन समाप्त कर दिये। इसके लिए वे, गृहमन्त्री तथा मध्यस्थ लोग बधाई के पात्र हैं। एक प्रकार से यह प्रतीकात्मक था कि एक सिख और हिन्दू एकसाथ अनशन कर रहे थे; यद्यपि यह परस्पर-विरोधी उद्देश्यों के लिए था, किन्तु मेरे विचार से इसी विरोध और संयुक्त दुःख में मास्टरजी द्वारा उठायी गयी समस्या का समाधान भी है।

मैं सदा यह मानता आया हूँ कि यह समस्या सरकार के उतने हल करने की नहीं, जितनी की यह पंजाब के हिन्दू और सिख तथा उनके नेताओं के हल करने के बस की है। हिन्दू और सिख भाई-भाई हैं। यदि दोनों की उन्नति करनी है तो राज्य का जो भी राजनीतिक ढाँचा हो, उन्हें एकसाथ सद्भावना से रहना है।

मैं अब यह कहना चाहता हूँ कि इन अनशनों से यह प्रकट हो गया है कि सांसारिक उद्देश्यों के लिए इस आध्यात्मिक अस्त्र का सहारा लेना उचित नहीं।

यह कितनी भद्दी बात है कि मास्टरजी ने जब अनशन भंग करने का निश्चय किया और उसे तोड़ने जा रहे थे तो कुछ अकाली युवकों ने नारे लगा कर यह माँग की कि पंजाबी सूबा प्राप्त होने तक अनशन जारी रखा जाय। ऐसी माँग तो मास्टरजी को मृत्युदण्ड देने के समान है। इस प्रकार किसी दूसरे की जान लेने का किसी को अधिकार नहीं। अनशन बिल्कुल व्यक्तिगत मामला है और सामूहिक रूप से इसे किसी पर लादा नहीं जा सकता और जब इसे कोई समाप्त करना चाहे तो इसे जारी रखने के लिए जबरदस्ती नहीं की जा सकती। मैं समझता हूँ कि

अनशन या तो आत्मशुद्धि के लिए हो, या फिर किसी व्यक्ति या व्यक्तियों के दल को अनैतिक मार्ग से विरत करने के लिए होना चाहिये। आमरण अनशन तो नैतिक अथवा आध्यात्मिक, किसी भी दृष्टि से उचित नहीं।

जब तक मास्टरजी थे, ऐसी बात कह कर मैंने उन्हें में डालना उचित नहीं समझा, मैं चाहता हूँ कि देश के सामाजिक तथा धार्मिक नेता इस पर गम्भीरतापूर्वक विचार सामाजिक जीवन में अनशन क्या हो।

राष्ट्रीय एकता सम्मेलन में था कि आचरण-संहिता में यह जोड़ दिया जाय कि विशुद्ध नीतिक और आर्थिक अनशन करना अनुचित है।

किन्तु यह विचार मैंने २... दिया कि इसे लोग मास्टर तारा निन्दा के रूप में समझें। आशा है, एकता परिषद् इस पर अब विचार

विज्ञान-युग की मांग

भारत आज गांधी-जीवन-शिक्षा को भूलता जा रहा है। आज का भारत गांधी के अनुकूल नहीं, गांधी के प्रतिकूल हो रहा है। सरकारी तन्त्र का भारत, दिल्ली, कलकत्ता, मद्रास और बम्बई जैसे बड़े-बड़े नगरों का भारत; बड़े-बड़े कल-कारखानों और भारी-भरकम उद्योग-धन्धों का भारत; केन्द्रित व्यापार का भारत; बड़े-बड़े सेठ-साहूकारों, पूंजीपतियों और भूमिपतियों का भारत अपने आचरण से गांधी-जीवन-शिक्षा के विपरीत वातावरण को बढ़ावा दे रहा है! गांधीजी का ग्राम भारत, चरखे और ग्रामोद्योग का भारत, सत्याग्रह, सत्य और अहिंसा का भारत आज एक स्वप्न बनकर रह गया है!

भारत की प्रत्येक समस्या के हल का आधार हिंसा, सत्ता और दलीय राजनीति बन गया है। सत्याग्रह के नाम पर दुराग्रह चल पड़ा है। इधर हम सत्ता के विकेन्द्रीकरण, पंचायत राज, रामराज की बात करते हैं; परन्तु उधर सत्ता का केन्द्रीकरण पक्का होता जा रहा है, सत्ता का मोह बढ़ता चला जा रहा है। ग्रामोद्योग, गृहउद्योग और आर्थिक विकेन्द्रीकरण पर भाषण तो होते हैं, पर काम हो रहा है इसके विपरीत! ग्रामोद्योग, गृहउद्योग खत्म होते जा रहे हैं और उनके स्थान पर बड़े उद्योग, मिल-उद्योग आ रहे हैं! आर्थिक विकेन्द्रीकरण की बात पुराने और गये-बीते जमाने की बात हो गयी है। धर्म-भेद, जाति-भेद, वर्ग भेद, भाषा-भेद, प्रान्तीयता के भेद के कारण मानव से मानव कटता चला जा रहा है। सत्य का स्थान असत्य ने, प्रेम का स्थान वैर-विरोध ने, करुणा का स्थान निर्दयता और मत्सर ने ले लिया है। जहाँ इस प्रकार का दूषित वातावरण हो, वहाँ कुल दुनिया के भाईचारे की बात कौन सुनता है? विश्वशान्ति का विचार किसको अच्छा लगता है?

कुछ लोगों का कहना है कि गांधी-जीवन शिक्षा का विचार फलीभूत नहीं हो सकता। आदर्श के विचार से यह विचार अच्छा है, परन्तु जीवन के प्रत्यक्ष आचरण में नहीं लाया जा सकता। आज का वातावरण इसके लिये अनुकूल नहीं है।

हमारा कहना है कि आज का विज्ञान-युग गांधी-विचार के लिये अत्यन्त अनुकूल है। पिछले ५० वर्षों से विज्ञान की सीमाएँ बढ़ती चली जा रही हैं। अणु विज्ञान, ज्योतिष-विज्ञान, अंतरिक्ष-विज्ञान, भूमि-विज्ञान, जीव-जन्तु-विज्ञान ने जितनी उन्नति पिछले १०० वर्षों में की है, उतनी उन्नति मानव-इतिहास में पहले कभी नहीं हुई। समाजशास्त्र और मनोविज्ञान भी काफी आगे बढ़ा है। परन्तु इस विकास-युग में हमारा धर्म, हमारा तत्त्वज्ञान, हमारी नैतिकता, हमारा मानव-व्यवहार वहीं का वहीं खड़ा है।

गांधीजी ने आत्मज्ञान पर बल दिया था। गांधीजी के बाद विनोबा पिछले १० वर्षों से गांव-गांव, नगर-नगर पैदल घूम कर लोगों को विज्ञान युग की माग—धर्म और राजनीति को छोड़ने और आत्मज्ञान और विज्ञान को जोड़ देने की बात—समझा रहे हैं। यही भारत की खोज है। इसी में गांधी-जीवन-शिक्षा का कुल विचार समाया हुआ है। इसी में भारत और कुल विश्व का कल्याण है।

—ओमप्रकाश त्रिखा

विश्वशांति-सेना की स्थापना के लिए भारत में पूर्व-चर्चा सभा

'गत दिसम्बर '६० में मदुराई (दक्षिण भारत) में 'युद्धविरोधी अंतर्राष्ट्रीय' की जो परिषद हुई थी, उसमें विश्वशांति-सेना की स्थापना पर जोर दिया गया था। तदनुसार 'युद्धविरोधी अंतर्राष्ट्रीय' की कार्य-समिति ने २८ दिसंबर '६१ से १ जनवरी '६२ तक ब्रूमाना (बेरुत, लेबनान) में विश्वशांति-सेना की स्थापना के लिए अंतर्राष्ट्रीय परिषद आमंत्रित की है। परिषद के आमन्त्रकों में भारत से श्री विनोबा, श्री जयप्रकाश नारायण, श्री जी० रामचन्द्रन् और श्रीमती आशादेवी आर्यनायकम् हैं।

इस अंतर्राष्ट्रीय परिषद के भारतीय आमन्त्रक और सर्व सेवा संघ की ओर से बेरुत-सम्मेलन की पूर्वतैयारी के लिए भारतीय पूर्व-चर्चा सभा ता० ३१ अक्तूबर और १ नवम्बर को साधना केन्द्र, काशी में होगी। इसमें विश्वशांति-सेना के विभिन्न पहलुओं पर विचार-विनिमय होगा।

सर्व सेवा संघ के दफ्तर से

● कार्यकर्ता प्रशिक्षण का एक प्रस्ताव पिछले सर्वोदय-सम्मेलन में हुआ था, उसको असली रूप देने के लिए प्रबन्ध समिति ने एक उपसमिति नियुक्त की थी। उप-समिति ने प्रशिक्षण का एक व्यापक कार्यक्रम प्रस्तुत किया। तदनुसार २५ अक्तूबर से ३१ अक्तूबर तक साधना केन्द्र, काशी में 'संचालक शिविर' होगा। इसमें वे लोग भाग लेंगे, जो बाद में अन्य स्थानों में अध्ययन-शिविरों का संचालन करेंगे। शिविर में प्रत्येक प्रान्त से दो-दो कार्यकर्ता भाग लेंगे।

● शांति-सेना मण्डल की ओर से एक परिपत्र में श्री नारायण देसाई ने देश के समस्त शांति-सैनिकों से जानकारी मँगायी है कि 'विनोबा-जयंती' से 'गांधी-जयंती' तक के साहित्य-प्रचार अभियान में कहाँ कितना काम हुआ है।

● इस वर्ष उत्तर प्रदेश में प्रान्तीय सर्वोदय-मण्डल न बन सकने के कारण अ. भा. सर्व सेवा संघ के मंत्री ने एक परिपत्र प्रदेश के समस्त जिला सर्वोदय-मण्डलों से निवेदन किया है कि वे सब जानकारी सीधे सर्व सेवा संघ के प्रधान केंद्र काशी को भेजें। सर्व सेवा संघ जिलों में एक प्रकार से समन्वय का काम कर रहा है, इसलिए अर्थ-संग्रह अभियान सर्वोदय-पात्र, सूताञ्जलि आदि का जो प्रदेशीय 'कोटा' है, वह भी संघ के अपने 'कोटे' से अतिरिक्त भेजा जाय।

● सर्व सेवा संघ की आगामी प्रबंध समिति की बैठक २-३-४ नवम्बर '६१ को साधना केंद्र काशी में होगी।

धूलिया में औद्योगिक परिसंवाद

दामोदरदास मूंदड़ा

[पिछले दिनों धूलिया में औद्योगिक परिसंवाद हुआ था, जिसमें जिले की औद्योगिक संभावनाओं पर चर्चा हुई। उस परिसंवाद के आधार पर श्री दामोदरदास मूंदड़ा ने योजना की क्या दृष्टि हो, इस विषय पर प्रकाश डाला है। —सं०]

एक औद्योगिक परिसंवाद धूलिया में कुछ दिन पहले हुआ। उसका उद्घाटन करते हुए महाराष्ट्र के उद्योग-उपमंत्री श्री पाटिल ने कहा, "तीसरी पंचवर्षीय योजना ने हमारे सामने जो आशय प्रकट किया है, उसे समझ लेना जरूरी है। हमें नये समाज का निर्माण करना है। युवकों को उसके लिये आवश्यक दृष्टि प्रदान करना है। कृषकों को कारखानेदारी का दृष्टिकोण प्राप्त हो ऐसा प्रयत्न करना है, नई औद्योगिक बस्तियों के रूप में 'नवदुर्ग' निर्माण करने हैं, भारतीय संस्कृति को औद्योगिक उन्नति का बाना पहनाना है। हमें अपनेपन की, प्रेम की, स्नेह की योजना बनानी है। धूलिया का यह परिसंवाद तृतीय पंचवर्षीय योजना के सिलसिले में पहला परिसंवाद है। इसलिये स्वाभाविक तौर पर उस पर मार्गदर्शन की जिम्मेदारी आती है।"

परिसंवाद ऐसे काफी सफल रहा मानना चाहिये। सारे प्रतिनिधि ६ उपसमितियों में बँट गये थे। दो दिन तक उन्होंने अलग-अलग विषयों पर चर्चा की और अपनी रिपोर्टें भी पेश कीं। इन सब रिपोर्टों की विशेषता यह है कि सबने एक-स्वर से सहकारिता की बुनियाद पर ही भावी आर्थिक संयोजन करने की सिफारिशें की हैं। पहले कदम के तौर पर यह एक सही तरीका मानना चाहिये। धूलिया जिले में ऐसे भी सहकारिता का आंदोलन काफी यशस्वी तरीके से चलाया जा रहा है। कुल मिला कर यहाँ करीब १५० औद्योगिक सहकारी संस्थाएँ हैं, जिनमें १२,००० सदस्य हैं और करीब ४५,००० की पूंजी लग रही है।

धूलिया जिला महाराष्ट्र के और जिलों के जैसा कृषिप्रधान जिला है, जिनमें ७८ प्रतिशत कृषि पर निर्भर करने वाले लोग हैं। इनमें से २० प्रतिशत मजदूर कृषक हैं, जिनके पास अपनी कोई जमीन नहीं है।

जिले का करीब आधा इलाका आदिवासियों का है, जो जंगल-पहाड़ों में रहते हैं। इनमें साक्षर लोग १.५ प्रतिशत से अधिक नहीं हैं। इन्हें खेती का भी ठीक ज्ञान नहीं है। शोषित-पीड़ित वर्ग इस मानव समाज को मुश्किल से ६ महीने का खाने का सामान उपलब्ध रहता है।

परिसंवाद में जिन उद्योगों की सिफारिशें की गयी हैं, उनमें तीन सूत-कताई की मिलें हैं। तेल की मिलें तथा अन्य कारखाने भी खोलने की सिफारिश की गयी है।

परिसंवाद के अवसर पर जिले की जानकारी देने वाली एक पुस्तिका प्रकाशित की गयी है। इसमें भी जिले के आगामी औद्योगिक संयोजन में सूत मिल की सिफारिश है, जिसके लिये ५० लाख रु० की पूंजी की आवश्यकता बतायी गयी है, जिससे दैनिक उत्पादन १२००० पौंड सूत का होगा और २०० आदमी काम पा सकेंगे।

पहली दो पंचवर्षीय योजनाओं के संदर्भ में जब हम किसी जिले की योजना बनाते हैं, तो पिछले अनुभवों से लाभ उठाना चाहिये। योजना कमीशन ने भावी आर्थिक संयोजन के लिये इस कृषिप्रधान देश में 'कृषि-उद्योग समन्वित (एग्रो-इंडस्ट्रियल) समाज निर्माण करने की सिफारिश की है। समाजवादी समाज-रचना के संकल्प के संदर्भ में हमें इस कृषि-उद्योगप्रधान समाज का अर्थ समझ लेना चाहिये।

समाजवादी रचना तब तक नहीं कायम हो सकती, जब तक सम्पत्ति का बँटवारा समान रूप से होने की कोई प्रक्रिया हमारे आर्थिक संयोजन में ही दाखिल न हो जाय। बढ़ते हुए उत्पादन के साथ योग्य वितरण की भी व्यवस्था हुए बिना समाज में सच्चा सुख और शान्ति का अनुभव नहीं हो सकता, शोषण तो बन्द हो ही नहीं सकता। पिछली दो योजनाओं ने यह सत्य हमारे सामने स्पष्ट रूप से प्रकट कर दिया है।

इसलिये जब योजना कमीशन कृषि-उद्योगप्रधान समाज की सिफारिश करता है तो उसका अर्थ है कपास से कपड़ा, तिलहन से तेल, ईख से शक्कर आदि बनाने की प्रक्रियाएँ जहाँ तक संभव हो, उन्हीं स्थानों पर पूरी हों, जहाँ वह कच्चा माल पैदा होता है। कच्चे से पक्का माल बनाने के लिये आवश्यक पूँजी की दृष्टि से अगर विचार किया जाय तो केन्द्रित कारखानों में १ मजदूर पर, जहाँ २५ से ५० हजार रुपये तक पूंजी जुटानी पड़ती है, विकेंद्रित उद्योग में २०० से ५०० तक की पूँजी पर्याप्त होती है। दूसरे तरीके से समझाना हो, तो कारखाने में के १ रुपये के माल के उत्पादन के लिये ५ से १० रुपये तक की पूंजी लगानी पड़ती है, तो विकेन्द्रित उद्योगों में १ रु० के माल के लिये ५० नये पैसे की पूंजी पर्याप्त होती है।

अब इस सारे संदर्भ में सूत की या तेल की मिल शुरू करने के परिणामों को सोचिये। सूत की मिल के लिये जो ५० लाख रुपया लगाना होगा, उसमें ५० हजार अंबर चरखे चल सकते हैं, जिनसे दैनिक कम-से-कम २५,००० पौंड यानी दुगुना सूत उत्पादन होगा, और २०० आदमियों के बजाय ५० हजार आदमियों को लाभ मिलेगा।

यही हाल तेल-उत्पादन का है। एक लाख की पूँजी में 'बेबी मशीन' द्वारा ३० लोग रोजाना ३० मन तेल पैदा करेंगे। उतनी ही पूजी में तेलघानी द्वारा कम-से-कम १०० लोग १०० मन तेल का उत्पादन कर लेंगे।

अब राष्ट्रीय उत्पादन की दृष्टि से देखिये। ११,४०० करोड़ रुपये के राष्ट्रीय उत्पादन में कारखानों का हिस्सा ८.६ प्रतिशत प्रतिशत है, तो कुटीरोद्योगों का ८.८ प्रतिशत और यह भी तब तक कि पिछले १० वर्षों में कारखानों की उन्नति ८० प्रतिशत हुई है, जब कि ग्रामोद्योगों की उन्नति केवल १५ प्रतिशत ही।

श्री पाटिल साहब के कथनानुसार "नवदुर्ग" के रूप में नई औद्योगिक बस्तियाँ बसाने के हम विरुद्ध नहीं हैं। भारत के ३०० जिलों में ऐसे ३०० नहीं, ३००० नवदुर्ग निर्माण किये जा सकते हैं। लेकिन वहाँ चलने वाली औद्योगिक प्रवृत्तियाँ ऐसी नहीं होनी चाहिये, जिनके कारण भारत के पाँच लाख गाँव, जो हमारे पुराने दुर्ग ही हैं और जो अनेक आघातों को सह कर भी अभी तक टिके हुए हैं, नष्ट हो जायँ। इसके लिये कृषि-ग्राम-उद्योगप्रधान व्यूह-रचना की दृष्टि से जीवन की बुनियादी आवश्यकताएँ, अन्न-वस्त्र आदि गाँव में निर्माण होने वाले कच्चे माल से सहज ही पूरी हो सकती हैं और तद्द्वारा बेकारी, शोषण, संपत्ति का असम विभाजन आदि देश को परेशान करनेवाली समस्याओं का भी सहज ही हल हो सकता है।

फिर अब तो शासन भी विकेंद्रित होने जा रहा है और विकेंद्रित अर्थ-रचना के बिना विकेंद्रित शासन आभास मात्र ही होगा। इसलिये न सिर्फ विकेंद्रित अर्थ-रचना करनी होगी, गाँव में चलने वाले उद्योगों को संरक्षण भी देना होगा। उनकी बिक्री, उनके भाव, उनके लिये प्रशिक्षण और उनका क्षेत्र, सबकी गारंटी देनी होगी और ऐसा करने में हमें तनिक भी संकोच या लज्जा का आभास नहीं होना चाहिये। आज मिल की चीनी को बाहर से आने वाली चीनी के मुकाबले करीब २० रु० मन का संरक्षण दिया जाता है। क्यों नहीं खंडसारी को मिल की चीनी के मुकाबले में संरक्षण मिलना चाहिये? उलटे, आज मिल की चीनी के लिये खंडसारी पर टैक्स लगाया जाता है! मिल की चीनी नहीं बिकती है, तो सवाल पूछा नहीं जाता है! खादी नहीं बिकती है तो सवाल पूछा जाता है! भावी अर्थ-रचना में इस तरह की धांधलेबाजी व्यापक राष्ट्रीय हित की दृष्टि से नाकाबिले बर्दाश्त मानी जानी चाहिये।

अन्तर्राष्ट्रीय परिस्थिति जिस तरह से गंभीर-से-गंभीरतर और गंभीरतम बनती जा रही है, हमें आज नहीं तो कल, विवेक और स्वेच्छा से नहीं, तो मजबूरी से ही सही गांधी की बात माननी होगी। विश्वयुद्ध छिड़ जाय या हमारे पड़ोसी ही शरारत करना चाहें तो यह बड़े-बड़े बाँध और ये कल-कारखाने बात-की-बात में अदृश्य हो सकते हैं। लेकिन गाँवों की नोक से बहने वाला अन्न वस्त्र का सोता कभी नहीं सूख सकता।

नयी शहरी बस्तियों में इस्पात तथा सीमेंट के कारखानों के सिवाय, मोटरें, मोटर-साइकिलें, साइकिलें, सिलाई की मशीनें, घड़ियाँ, फाउंटनपेन, बेट्रीज, डी डी टी, लोहे का फर्नीचर, छोटी छोटी मशीनें, बिजली के सामान, सीमेंट के पाइप्स, टाइल्स, नट बोल्ट्स आदि अनेक चीजें बन सकती हैं। शहर वालों को गाँव के उद्योग चुराने की आवश्यकता नहीं।

गाँव में तेल और वस्त्रोद्योग के अलावा गुड़, शहद, साबुन, कागज, चमड़े का काम, जिसमें मृत पशु के शरीर से चमड़ा, खाद, तेल, सरस आदि बनाना भी शामिल है, तथा देहाती जड़ी-बूटियों से दवा बनाने, रेशायुक्त पौधों से रस्सी, चटाई, बोरा आदि बनाने, पके और कच्चे फलों को आचार-मुरब्बा आदि के रूप में सुरक्षित रखने के काम, ये सब उद्योग देहात में आसानी से चल सकते हैं, चलाना चाहिये और धूलिया जैसे आधे आदिवासीप्रधान जिले में तो जरूर चलना चाहिये। ऐसा होगा तभी उपमंत्री महोदय की इच्छानुसार न सिर्फ धूलिया जिले में, बल्कि सारे महाराष्ट्र राज्य में प्रेम और आत्मीयता

असम में विनोबा के साथ कुछ दिन : १

महेन्द्रकुमार शास्त्री

भारतवर्ष के तीन छोरों पर असम, काश्मीर और केरल अपनी प्राकृतिक छटा और रमणीयता के लिए प्रसिद्ध हैं। तीनों प्रांतों की समस्याएँ भिन्न हैं। इनमें असम की गिनती चिरकाल से लोककथाओं में एक अद्भुत प्रांत में रही है। कामरूप के बारे में तो अनेक कथाएँ प्रसिद्ध हैं। दसवीं शताब्दी में अपनी योग एवं ज्ञान-साधना से सारे भारत को आलोकित करने वाले महात्मा गोरखनाथ अपने गुरु मत्स्येन्द्रनाथ को जाग्रत करने के लिए इसी प्रांत में गये थे। ज्ञान-योग के साथ जन-जन में शुद्ध भक्ति का संचार करनेवाले शंकरदेव और माधवदेव इसी प्रांत में हुए।

यहाँ हिमालय जैसा पर्वत, ब्रह्मपुत्र के समान गंगा से भी बड़ी नदी, विशालकाय ऊँचे-ऊँचे देवदारु के वृक्ष, घने जंगल और अनेक प्रकार की वनस्पतियाँ हैं। आँखें उठा कर जिधर देखते हैं, उधर चारों ओर फैले हुए मीलों तक खेत, घोर अरण्य और अनेक प्रकार के पशुओं से परिपूर्ण इस प्रांत की छटा अद्भुत है। प्रकृति की रमणीयता की तरह यहाँ की जनता भी सरल, भद्र एवं शीलवान है। यहाँ के किसी भी शहर में समाज और राष्ट्र के लिए कलंक-रूप वेश्यावृत्ति नहीं है।

यहाँ की भूमि भी अत्यंत मुलायम है, जिससे किसान को विशेष परिश्रम नहीं करना पड़ता। बारिश होने पर वे एक बार चावल बो देते हैं। फलस्वरूप यहाँ के निवासी दूसरे प्रांतवालों की तुलना में कुछ कम काम करते हैं। पर यहाँ की स्त्री-जाति पुरुषों की अपेक्षा अधिक कर्तव्यपरायण है। सारे भारतवर्ष में केवल केरल और असम प्रांत में ही हमें मातृशक्ति का भान होता है। असम के अनेक जिम्मेदारी के काम स्त्रियों ने अपने हाथ में ले रखे हैं।

आश्चर्य है कि ऐसे रमणीय प्रांत की गिनती चिरकाल से जादुओं के देश की कोटि में की जाती रही। जब विनोबाजी सारे भारत की प्रदक्षिणा कर असम जाने लगे, तब लोगों ने उनसे कहा—

> वह तन्त्र-मन्त्र का देश है, वहाँ मत जाइये। पर बाबा भी अपने साथ सबसे बड़ा तन्त्र-मन्त्र लेकर वहाँ गये। उनका मन्त्र है 'जय-जगत्' और तन्त्र है ग्रामदान। आज तो सारे असम में बाबा का यह मन्त्र और तन्त्र छा गया है। जहाँ कहीं से बाबा निकलते हैं, वहाँ एकत्रित जनता एक-स्वर से कहती है, 'अमार मन्त्र, जय जगत्; अमार तन्त्र, ग्रामदान।'

मेरे लिए भी असम छात्रावस्था से एक जिज्ञासा का विषय रहा है। अन्य सब प्रांतों को किसी-न-किसी बहाने देख चुका था, पर असम का दर्शन बाकी था। सितंबर महीने की ७ ता० को श्री राधाकृष्णजी बजाज ने मुझे कहा कि बाबा के जन्म दिवस के दिन उन्हें संस्कृत "गीता प्रवचन" भेंट करना है, उसे लेकर आप जाइये। चिरकाल की कामना को इस प्रकार सफल होते देख मैं बहुत प्रसन्न हुआ; क्योंकि इसमें केवल असम-दर्शन की ही बात नहीं थी, पर बाबा की सत्संगति का सुवर्ण अवसर भी था। जिन बाबा के अक्षरदेह या साहित्य का पिछले बहुत वर्षों से मैं पारायण करता रहा और दूर रहते हुए भी जो सदैव मेरे लिए प्रेरणा स्रोत रहे, उनके निकट रहने का सद्भाग्य था। मैं ता० १० की संध्या को बाबा के पड़ाव पर, मोरान पहुँच गया। असम में बाबा प्रातःकाल दो बजे उठ जाते हैं और तीन बजे अपनी यात्रा शुरू कर देते हैं। जिस दिन मैं पहुँचा, उसके दूसरे दिन बाबा का जन्मदिन था। उस दिन उठने के समय आकाश मेघाच्छादित था, थोड़ी थोड़ी देर में बिजली चमक कर प्रकाश की रेखा खींच देती थी। ऊपर आकाश में मेघों के कारण नक्षत्रों के छिप जाने पर नीचे पृथ्वी पर जुगनुओं का समूह नक्षत्रों की तरह चमक रहा था। बरसाती हवा बह रही थी। ऐसे वातावरण में ठीक तीन बजे बाबा ने अपनी यात्रा प्रारम्भ कर दी। बाबा के साथ चलते-चलते यात्री-समूह ने प्रार्थना की। इसी बीच कुछ वर्षा होने लगी। ऊपर से जीवनदायिनी अमृत वर्षा और नीचे पृथ्वी माता के पावन स्पर्श के साथ बाबा के मुँह से निःसृत ज्ञानगंगा में अवगाहन! अपनी इस यात्रा में बाबा असम की कुछ बहनों को चलते-चलते गीता भी पढ़ाते हैं। उनमें तीन बहिनें मुख्य हैं।

भगवान कृष्ण ने कुरुक्षेत्र के मैदान में गीता का उपदेश दिया था। एक ओर ग्यारह अक्षौहिणी और दूसरी ओर सात अक्षौहिणी सेना खड़ी हुई थी। इस तनातनी के वातावरण में अक्षुब्ध चित्त से कृष्ण ने अर्जुन को गीता का उपदेश दिया। स्थितप्रज्ञ ही गीता के उपदेश का अधिकारी है। बाबा स्थितप्रज्ञ अवस्था अक्षुब्ध होकर छात्रों को गीता का पाठ पढ़ाते-पढ़ाते तन्मय हो जाते हैं। उनमें धैर्य अखूट है। जब तक छात्राएँ शुद्ध उच्चारण नहीं कर लेती, तब तक उनके मुँह से बराबर वाग्धारा निकलती रहती है। कभी-कभी तो समझाने के लिए चलते चलते रास्ते में नीचे बैठ कर तिनकों से रेखाएँ खींच कर विषय को स्पष्ट करते हैं और जब तक छात्राओं के मानस पर विषय का स्पष्ट चित्र नहीं खींच जाता, तब तक वे अपना यह क्रम बंद नहीं करते। बाबा के शब्दों में:

> यह उनकी 'उपनिषद्-चर्चा' है। लेक्चर, व्याख्यान आदि आधुनिक हैं, उपनिषद पुराना है। उपनिषद अर्थात् नजदीक बैठना, खुले दिल से चर्चा करना। ज्ञानी लोग एकत्रित होने पर जब खुले दिल से चर्चा करते हैं, तो उसे 'उपनिषद चर्चा' कहते हैं।

बाबा का 'वाकिंग' के साथ 'टाकिंग' चलता रहता है। इससे रुधिराभिसरण के साथ दिमाग ताजा रहता है। आकाश के संपर्क से जो विचार सूझते हैं, वे अन्य किसी संपर्क से नहीं। हमारी भाषा में एक अद्भुत शब्द है 'सुख'। 'सु' अर्थात् सुक्त 'ख' अर्थात् आकाश। जहाँ मुक्त आकाश है, वहाँ सुख। जहाँ आकाश नहीं, वहाँ दुःख। इसीलिए बाबा खुले आकाश के नीचे बरसात, ठंड और गर्मी में अपनी छात्र-छात्राओं को पढ़ाते हैं और सब ऋतुओं में उनकी यह यात्रा सूर्य की तरह नियमित रूप से चलती रहती है।

बाबा के जन्मदिवस के दिन जब वे पदयात्रा कर रहे थे, तब पहले तो इन्द्र ने सबका अभिषेक कर दिया था। बाद में "इलेक्शन के रास्ते" याने पक्की सड़क से चलना छोड़ कर उन्होंने कच्चे रास्ते से चलना शुरू किया, तब बाबा की लंका[illegible] की यात्रा का सुखद स्मरण होने लगा। रास्ते में घुटने-घुटने तक कीचड़ और पानी। कहीं-कहीं पर जल के नालों को पार करने के लिए उन पर केवल बड़े पेड़ काट कर डाल दिये थे। थोड़े-से चूके तो बस नाले के अन्दर! बाबा उन वृक्षों पर से भी बिना चूके निकल गये। ऐसे रास्ते से चलते समय उनके मुँह से कभी-कभी निकल पड़ता-'हरिभक्ति राजपथ।' कहने कि यह ग्रामदानी रास्ता है। सड़क, तार रोड आदि तो इलेक्शन के रास्ते हैं; जहाँ [illegible] भड़क और स्वागत खूब होता है, [illegible] कुछ नहीं! जिस रास्ते से [illegible] थे वह घोर अरण्य था, फिर भी इस देव-दूत की चर्चा सर्वत्र थी। जहाँ कहीं बाबा निकले; बालक, युवा, वृद्ध सब [illegible] करते हुए रास्ते में एक किनारे [illegible] भाव से खड़े दिखाई देते। बाबा अपने एक आशा के केन्द्र के रूप [illegible] दिखाई दे रहे थे। चलते-चलते जब बाबा अपने पड़ाव हँसपोखरा के निकट पहुँचे, तब कुछ दूर पहले से ही लोग ताल और मृदंग बजाते हुए आते दिखाई दिये। वे वाद्यवादन के साथ माधवदेव का एक भजन गा रहे थे :

"ए हरिपद भज रे मन, हरिपद भज रे
कि करिलु कि करिलु, भोविंद न करिले
अंत के पाछले को आसि रक्षा करिब हरि रे।"

इस भजन में कहा गया है कि जो भगवान की भक्ति करता है, उसीके सिर, कान, आँख, नाक, मुँह, हाथ और पाँव की सार्थकता है। भक्ति के बिना ऐसे ही जीवन व्यतीत करने वाले प्राणी की ज्ञानेन्द्रियाँ और कर्मेन्द्रियाँ उसके लिए भार-रूप हैं।

अपने इस जन्म दिवस के दिन बाबा प्रकृति के एकांत स्थल में सचमुच मानो सरोवर के तट पर स्थित थे। सामने पोखरे के रूप में छोटा सरोवर लहरा रहा था। चारों ओर सुरम्य हरियाली थी। इसी दिन बाबा को तीन ग्रामदान मिले। इसी दिन बाबा के जन्मदिवस के साथ शंकरदेव की पुण्यतिथि भी पड़ती थी। दोनों का मणि-कांचनवत् सुभग मेल था। पड़ाव पहुँचने पर कुछ समय के बाद स्थानीय जनता ने कीर्तन प्रारंभ किया। उस समय बाबा ने भावभीने स्वर से अपने जन्मदिवस के उपलक्ष्य में कुछ उद्गार प्रकट किये, जो 'भूदान-यज्ञ' के पिछले अंक में प्रकाशित हो चुके हैं।

श्री महेन्द्रकुमारजी शास्त्री सर्व सेवा संघ-प्रकाशन में संपादन-कार्य करते हैं। पिछले दिनों वे संस्कृत 'गीता प्रवचन' विनोबा को, उनके जन्म-दिन के अवसर पर पदयात्रा में भेंट करने गये थे। पदयात्रा का उनका संस्मरण यहाँ प्रस्तुत है। —सं०

की 'बुनियाद पर योजना बन सकती है, जिसके जरिये शोषणमुक्त समाजवादी समाज-रचना का निर्माण हो सकता है। तभी यह समझा जायेगा कि हमने तीसरी पंचवार्षिक योजना का आशय ठीक ठीक समझा है।

अंतिम, किन्तु अत्यंत महत्त्व की बात यह है कि योजना आप चाहे वैसी बनाइये, उसे कार्यान्वित करने वाला युवक समाज कहाँ है? आज विद्यालयों और कालेजों से निकलने वाले युवकों को सरकारी नौकरी के सिवाय जीवन में कोई उच्च आदर्श नहीं! धूलिया जिले में ४६ माध्यमिक शालाएँ एवं हाईस्कूल हैं, लेकिन जो पुस्तिका परिसंवाद के निमित्त निकली है, उसमें सिर्फ वहाँ के एकमात्र तकनिकी विद्यालय की विस्तृत जानकारी दी है; बाकी के सिर्फ अंक मात्र दिये हैं। पुरानी शिक्षा-पद्धति से चलने वाली संस्थाओं का निषेध और अधिक क्या हो सकता है! पहले हमें युवकों का मानस कृषि-उद्योगों के अनुकूल बनाना होगा। तब हमारी योजनाओं में हमें कामयाबी हासिल हो सकेगी। इसके लिये आज की शिक्षा में आमूल परिवर्तन करना होगा। बेसिक शिक्षा पद्धति को हम भले न स्वीकारें, लेकिन आज की शिक्षा-पद्धति देश के लिये तारक नहीं हो सकती। बिना शिक्षा-पद्धति में परिवर्तन लाये हमारी कोई आर्थिक योजना कामयाब नहीं होगी, इसे हमें भूलना नहीं चाहिए।

मंत्रियों के लिये भी आचार-संहिता बने—सत्ता की राजनीति की अनैतिकता के खिलाफ इंग्लैंड के कलाकारों का प्रतिवेदन—पाँच हजार के पीछे एक पुस्तकालय—बम्बई के प्रमुख नागरिकों द्वारा अणुशस्त्रों के प्रयोग के खिलाफ प्रदर्शन और प्रतिवेदन—गाजीपुर में सर्वोदय-प्रचार—बिहार राज्य नशाबंदी सम्मेलन—सीतापुर पंच सम्मेलन—इन्दौर के बाढ़ पीड़ित क्षेत्र में शांति सैनिकाएँ—धार जिले में मद्यनिषेध सप्ताह—कुंडेश्वर में 'विद्यालय चलो' अभियान और 'तालीमी काफिला'—खादी विद्यालय समालखा द्वारा साहित्य और खादी प्रचार—मथुरा में सर्वोदय-पात्र, लखनऊ में अशोभनीय पोस्टर के खिलाफ मुहिम—घर-घर जाकर मतयाचना बंद हो—आगरा की सर्वोदय-प्रवृत्तियाँ।

श्रीनगर की एक सभा में भाषण करते हुए, काश्मीर विधान-सभा के अध्यक्ष श्री हरवंशलाल आजाद ने कहा कि इस मुल्क के विधायक (विधान-सभा के सदस्य) जनता के प्रति अपने कर्तव्य का पालन नहीं कर रहे हैं। उन्होंने सुझाया कि विधायकों और मंत्रियों के लिये एक आचार-संहिता तय की जानी चाहिये, और अगर वे अपनी जिम्मेदारी को पूरा न कर सकें, तो उन्हें इस्तीफा देना चाहिये। ●

इंग्लैण्ड के ५९ कलाकारों, संगीतज्ञों और साहित्यकारों ने वहाँ के प्रधान मंत्री हेरोल्ड मैकमिलन को एक प्रतिवेदन पेश किया है, जिसमें उन्होंने "सत्ता की राजनीति की अनैतिकता" के खिलाफ विरोध जाहिर किया है। प्रतिवेदन में कहा गया है: "जीवन की स्वीकारात्मक दृष्टि ही सच्ची सभ्यता है। अगर हम आणविक शस्त्रों के ढेर लगाते जायँ, जो कि जीवन का निषेध है, तो सच्ची सभ्यता कभी नहीं पनप सकती।" कहा जाता है कि अणुबम युद्ध के जो प्रयोग हो रहे हैं, वे हमारे बेटे-पोतों की हड्डियों तक को दूषित कर देंगे। लेकिन आज की परिस्थिति ने हमारे दिमाग तो अभी से दूषित कर दिये हैं। ●

हाल में ही प्रकाशित हुए आँकड़ों के अनुसार देश भर में पुस्तकालयों की संख्या ३२,००० है। हिन्दुस्तान में कुल मिला कर ३२० जिले हैं, अतः हर जिले के पीछे १०० पुस्तकालयों का औसत आता है। तीसरी पंचवर्षीय योजना के अन्तर्गत यह लक्ष्य रखा गया है कि ५००० की आबादी वाले हर गाँव में एक पुस्तकालय हो। ●

'गांधी-जयन्ती' के दिन बम्बई में ५०० की पुरुषों के शान्ति-जुलूस ने फ्रेंच, अमेरिका और रूसी दूतावासों के सामने अणुशस्त्रों के प्रयोग के खिलाफ प्रदर्शन किया और इस संबंध में एक निवेदन प्रस्तुत किया, जिसमें इन देशों की सरकारों से यह अनुरोध किया गया था कि एशिया और अफ्रीका तथा सारे मानव जाति के नाम पर यह प्रयोग बन्द करना चाहिये। इस निवेदन पर बम्बई निगम के श्री वर्लीकर तथा अन्य कई प्रतिष्ठित व्यक्तियों के हस्ताक्षर हैं। राजनैतिक नेताओं के अलावा कई समाचार-पत्रों और मजदूर-संगठनों के नेताओं के भी जुलूस के लिये आह्वान किया था। महाराष्ट्र के राज्यपाल श्री श्रीप्रकाश ने आयोजन की सफलता के ... भेजी थी। ●

गाजीपुर जिला सर्वोदय-मंडल ने ११ सितम्बर से २ अक्टूबर तक 'भूदान-यज्ञ' हिन्दी के २५, और 'भूदान-तहरीक' के २ ग्राहक बनाये। इस अवधि में १४ गाँवों से संपर्क स्थापित किया गया। ●

बिहार सर्वोदय मंडल की नशाबंदी उपसमिति ने तय किया है कि नवम्बर के प्रथम सप्ताह में बिहार राज्य नशाबंदी-सम्मेलन आयोजित किया जाय। ●

सीतापुर जिला सर्वोदय मंडल द्वारा आयोजित पंच सम्मेलन में ३०० पंचों ने भाग लिया। सम्मेलन में ग्राम निर्माण तथा शांति-स्थापना की चर्चा की गयी और एक शांति-परिषद् बनायी गयी। ●

इन्दौर नगर में हुई मूसलधार बारिश के कारण नगर के सामान्य जीवन में अवरोध उत्पन्न हो गया। शहर की निचली बस्तियों में पानी भर गया तथा कई मकान गिर पड़े, जिससे कई गरीब परिवार बेआसरा हो गये। उनकी परिस्थिति का अध्ययन करने तथा सहायता-कार्य की दृष्टि से इन्दौर के कस्तूरबा शांति सेना विद्यालय की बहनों ने विद्यालय की संचालिका सुश्री निर्मला देशपांडे के नेतृत्व में लोक-सम्पर्क किया तथा दुःखी परिवारों के प्रति सहानुभूति प्रकट की। ●

धार जिले (मध्य प्रदेश) में 'गांधी-जयन्ती', २ अक्टूबर से ८ अक्टूबर तक मद्यनिषेध सप्ताह मनाने के लिए विविध कार्यक्रम तैयार कर लिये गये हैं। इन कार्यक्रमों में जुलूसों का आयोजन, चलचित्र प्रदर्शन, सभाओं का आयोजन, विद्यार्थियों की भाषण प्रतियोगिताएं, सांस्कृतिक कार्यक्रम तथा मदिरा-पात्रों के दहन का आयोजन सम्मिलित है। इस सप्ताह को समुचित ढंग से मनाने के लिए विभिन्न समितियाँ गठित की गयी हैं। इसके अतिरिक्त जिले के केन्द्र में एक स्थायी समिति ने भी कार्य करना आरंभ किया है, जो पूरे वर्ष मद्यनिषेध का प्रचार करेगी। ●

राजकीय बुनियादी शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय, कुंडेश्वर, टीकमगढ़ (म०प्र०) ने इस वर्ष 'गांधी-जयंती सप्ताह' को अनिवार्य शिक्षा की योजना के प्रचार और प्रसार के लिए 'विद्यालय चलो' अभियान प्रारंभ किया। इस अभियान के सिलसिले में ४ अक्टूबर को एक तालीमी काफिला निकलेगा। उसमें गांधी पर इस तरह का आयोजन होगा:

(१) सचल पुस्तकालय
(२) उद्योग प्रदर्शनी
(३) सर्वोदय-साहित्य
(४) योजना प्रदर्शनी
(५) खादी भण्डार
(६) प्रचार साहित्य

यह तालीमी काफिला ग्राम शिवपुर, मिनौरा, नीमखेरा, सुजानपुर, सुरजपुरा, करमारी, अस्तौन, जुडावन, पहाड़ी, सागौनी, जटौआ, पठा, माडूमर, पपौरा तथा कमडार होता हुआ सप्ताह के अंत में कुंडेश्वर वापिस पहुँचेगा। ●

खादी विद्यालय, समालखा (समालखा-पंजाब) में करनाल जिला सर्वोदय मंडल की ओर से 'विनोबा-जयंती' से 'गांधी जयंती' तक ८०० रु० का सर्वोदय साहित्य बेचा, पत्र-पत्रिकाओं के ४० ग्राहक बनाये एवं १००० रु० की खादी-हुण्डी भी बेची गयी।

समालखा पंचायत क्षेत्र के सहयोग से ४०० रु० के लगभग साहित्य बिक्री हुई और २५ ग्राहक बने। ●

मथुरा में विनोबा के ६७ वें जन्म-दिन के अवसर पर नगर में ६७ सर्वोदय-पात्रों की स्थापना की। मथुरा सर्वोदय-मंडल की ओर से प्रेस विज्ञप्ति में बताया गया कि जिले में ३० सितम्बर तक अर्थ संग्रह अभियान में १००० रु० संग्रहित हुए हैं। ●

लखनऊ में पिछले दिनों अश्लील पोस्टर हटाने के सिलसिले में निकले जुलूस में ५० महिलाएँ भी थीं। सब सिनेमा-गृहों के मालिक और मैनेजरों ने सौजन्यतापूर्वक अशोभनीयता निवारण कार्य में सहयोग देने का आश्वासन दिया। कुछ ने तो तत्काल ही अशोभनीय पोस्टर हटा भी दिये। किन्तु एक सिनेमा-गृह के मालिक-मैनेजर ने न केवल इन्कार किया, अपितु शांत जुलूस को गुंडों द्वारा मारपीट करवायी। मौके पर पुलिस भी हाजिर थी, लेकिन उसने कुछ नहीं किया। जुलूस में प्रो० असरानी, श्री ओम् प्रकाश गौड आदि प्रमुख कार्यकर्ता भी थे। ●

बंगलूर में ता० २९ सितम्बर को मैसूर के भूतपूर्व मुख्य मंत्री श्री के० हनुमंतैया की अध्यक्षता में "लोकसत्ता की कुछ समस्याएं" इस विषय पर विचार-गोष्ठी का आयोजन हुआ। इसमें

• गीता प्रवचन : विनोबा

जेल में, कार्यकर्ताओं के बीच, गीता के एक एक अध्याय के सार का जो चिंतन विनोबा ने किया, उसी का नाम 'गीता प्रवचन' है। इसमें गीता के तात्विक विचारों की बुनियाद पर ऐसा रूप चित्रित किया गया है कि जीवन के संकट और दुविधापूर्ण क्षणों में भी हर आदमी इसकी शरण लेकर अंधेरे से उजाले की ओर चल पड़ता है।

गीता पर इतनी सरल, सहज भाषा में यह एकमात्र अनूठी पुस्तक है और वह भी इतनी मौलिक, सुबोध, सीधी, पर कहानी की तरह रोचक ढंग से कि यह २० भाषाओं में और दस में नागरी लिपि में छप चुकी है तथा लगभग दस लाख प्रतियाँ बिक चुकी हैं। शब्दों का ऐसा सुन्दर सीधा ताना-बाना और वह भी गीता जैसे शास्त्रीय ग्रन्थ का केवल तपी, कर्मयोगी व ज्ञानी सन्त विनोबा से ही सम्भव था। महर्षि व्यास ने महाभारत को मथ कर गीता निकाली और विनोबा ने गीता को मथ-कर 'गीता-प्रवचन'। सफेद कागज पर सुन्दर छपाई : पृष्ठ ३१२ : मूल्य १-२५।

—अ० भा० सर्व सेवा संघ-प्रकाशन, राजघाट, काशी

श्री कोदंड राव, श्री एस० वेंकट राव आदि विद्वानों ने भाग लिया। श्री हनुमंतैया ने बताया कि एक ही प्लेटफार्म की चुनाव-सभाओं में हरएक पक्ष अपने घोषणा-पत्र और उम्मीदवार अपनी बातें जनता के सामने रखें। घर-घर जाकर मत जुटाने की पद्धति तत्काल बंद हो जानी चाहिए। ●

आगरा में १६ सितम्बर को गांधी स्मारक निधि के गांधी-तत्त्व प्रचार विभाग द्वारा आयोजित सभा में श्री श्रीमन्नारायणजी ने कहा कि गांधीजी का जो कुछ तत्त्व या दर्शन है, वह व्यवहार में है। गांधीजी ने सन् १९२० में जो विचार रखे थे, आज भी उनकी आवश्यकता है।

१९ सितम्बर से २१ सितम्बर तक गांधी अध्ययन-केन्द्र, आगरा में 'वर्तमान चुनाव पद्धति में दोष तथा उसके निराकरण' इस विषय पर परिचर्चा हुई।

ता० २२ को आगरा में एक गोष्ठी में प्रो० राजेश्वर प्रसाद सक्सेना, जो अभी अमरीका से वापस लौटे हैं, उन्होंने गांधी और विनोबा के प्रभाव के बारे में बताया कि वहाँ के लोग गांधी और विनोबा के विचार को निकट से जानना चाहते हैं।

२६ सितम्बर को श्रीमती आशादेवी आर्यनायकम् का एक भाषण हिन्दी महाविद्यालय, आगरा में तथा दूसरा अध्ययन-केन्द्र गोष्ठी में हुआ, जिसमें उन्होंने शांति-सेना पर विचार व्यक्त किये।

गांधी स्वाध्याय संस्थान की कक्षाओं के वर्ग हुए, जिनमें विशेष रूप से डा० हरिशंकर शर्मा, श्री बाबूलाल मित्तल, स्वामी कृष्ण स्वरूप, श्री महावीर सिंह भदौरिया के भाषण हुए।

सर्वोदय समाज की ओर से बर्ट्रेण्ड रसल की गिरफ्तारी तथा उनको सजा दिये जाने के विरोध में एक सभा हुई, जिसकी अध्यक्षता स्वामी कृष्णस्वरूप ने की।

कोसी कलाँ उपकेन्द्र में प्रो० हलधर शर्मा का भाषण हुआ। १२५ रु. का सर्वोदय-साहित्य बेचा गया।

श्री दादा धर्माधिकारी का कार्यक्रम

श्री दादा की उत्तराखंड की यात्रा २३ सितम्बर की सुबह को हरिद्वार से प्रारम्भ हुई। उसी दिन ८२ मील का मोटर-सफर श्रीनगर तक रहा। २४ ता० को श्रीनगर से रुद्रप्रयाग और वहाँ से सौढ़ी, ३४ मील मोटर और २ मील पदयात्रा करके चंद्रापुरी पहुँचे। २५ को गुप्तकाशी, नारायण कोटी और ता० २८ को केदारनाथ पहुँचे।

बद्रीकेदार यात्रा के बाद १० से १९ अक्टूबर तक साधना केन्द्र, काशी में रहेंगे। २१ से २४ अक्टूबर तक जबलपुर, २६ को इलाहाबाद और २८ से ३१ अक्टूबर तक काशी में रहेंगे।

विदेशों में शांति और अहिंसा के प्रयोग

रूस में अहिंसक प्रतिकार का प्रचार

विदेशी पदयात्री-दल मास्को में

अमेरिका के पश्चिमी तट पर सेन्फ्रांसिस्को से गत वर्ष १ दिसम्बर को शान्तिवादियों का जो पदयात्री दल रूस की राजधानी मास्को के लिए रवाना हुआ था, वह अब मास्को पहुँच गया है। अमेरिका के पश्चिमी तट से पैदल-चल कर करीब ३ हजार मील की पदयात्रा करके यह दल न्यूयार्क पहुँचा। वहाँ से समुद्र पार करके लन्दन और फिर वहाँ से जर्मनी, पोलैण्ड होता हुआ अब यह दल रूस की राजधानी मास्को पहुँचा है।

इस दल में इस समय ९ देशों के ३२ स्त्री-पुरुष शामिल हैं। इन पदयात्रियों का उद्देश्य हिंसा और युद्ध के खिलाफ, खास करके आणविक अस्त्रों के खिलाफ प्रचार करने और जनमत तैयार करने का है। रूस की सीमा में प्रवेश करने के बाद रास्ते में और मास्को शहर में अब तक इन पदयात्रियों ने करीब ५० हजार पर्चे बाँटे हैं, जिनमें कहा गया है कि वे "अहिंसक प्रतिकार के उन सिद्धांतों का प्रचार कर रहे हैं, जिनके द्वारा गांधी ने हिन्दुस्तान की आजादी प्राप्त की थी।"

पदयात्री दल के लोगों ने तथा इस पदयात्रा के संयोजक ने यह बतलाया है कि रूस में उन्हें सभाएँ करने की, पर्चे बाँटने आदि की सुविधाएँ बराबर दी गयी हैं। पदयात्रा के संयोजकों ने यह स्वीकार किया कि अधिकांश रूसी "युद्ध और शांति" के प्रश्न पर उनसे भिन्न विचार रखते हैं। एक पदयात्री ने बतलाया कि "हमारे सिद्धान्तों के प्रचार में एक मुख्य बाधा यह है कि रूसी लोग अपनी सरकार के शांतिवादी इरादों के इतने कायल हैं और उन पर इतना भरोसा रखते हैं कि वे इस बात की कल्पना ही नहीं कर सकते कि रूस में जो सैनिक तैयारियाँ चल रही हैं, उनसे विश्व-शांति को कोई खतरा है।"

फिर भी रूसी सरकार ने अभी हाल में आणविक अस्त्रों के प्रयोग फिर से किये हैं, उनसे रूसी लोग चिंतित हैं, क्योंकि आबहवा में उसके बुरे परिणाम होने की सम्भावना है।

रूस स्थित एक पत्रकार ... पारकर का कहना है कि

"सोवियत रूस के इतिहास में यह अभूतपूर्व घटना है कि विदेशियों के एक दल को इस तरह रूस में ही रूसी सरकार की वर्तमान नीति के खिलाफ प्रचार करने का मौका दिया गया है, हालांकि यह सही है कि इस प्रचार से सम्पूर्ण निःशस्त्रीकरण का जो लक्ष्य रूसियों ने घोषित किया है, उसको बल मिलता है।"

बिहार में सन् '३४ के भूकंप से भी अधिक बाढ़ द्वारा विनाश

बिहार में इस साल जो बाढ़ आयी है, वह बहुत अभूतपूर्व ही है। सन् '३४ में भूकंप से जो विनाश का कहर बिहार पर आया था, उससे भी ज्यादा बिहार की इस वर्ष की बाढ़ और वर्षा ने लाया है। ताजे समाचारों के अनुसार ८४४ व्यक्ति 'जल प्रलय' के शिकार हुए हैं। सबसे अधिक विनाश लीला का शिकार मुंगेर जिला बना है, जहाँ ७९३ व्यक्ति डूब मर गये हैं। हजारों एकड़ खेती की फसल नष्ट हो गयी।

इस विनाश का मुकाबला करने में बिहार सरकार के साधन अपर्याप्त होंगे। सन् '३४ के समान बिहार पूरे भारत की जनता की मदद का हकदार बन गया है।

विनोबा का स्वास्थ्य

विनोबा के स्वास्थ्य के बारे में अखबारों में कुछ चिन्ताजनक समाचार निकले थे। पदयात्रा से प्राप्त तफसील के समाचार नीचे लिखे अनुसार हैं। आगे के समाचार के अनुसार विनोबा अब स्वस्थ हैं।

ता० २ अक्टूबर को सुबह अचानक विनोबाजी का स्वास्थ्य बिगड़ गया। सुबह उठते ही उनको कै हुई और कमजोरी महसूस होने लगी। ठीक तीन बजे यात्रा शुरू हुई। दो मील जाने के बाद बाबा को आगे चलना मुश्किल हो गया। रास्ते में ही लेट कर थोड़ी देर आराम किया। आगे का रास्ता गाड़ी में काटना पड़ा। पड़ाव पर पहुँचने के बाद आराम लिया। डाक्टर ने जाँच कर बताया कि यह तकलीफ 'गैस्ट्रिक ट्रबल'—पेट में वायु विकार—से हुई है। अब आराम है।

भूल-सुधार

'भूदान यज्ञ' के २२ सितम्बर '६१ के अंक में श्री एम० एन० राय का लेख छपा है। वहाँ उनके परिचय में उनका पूरा नाम 'मन्मथनाथ राय' छपा है। उसकी जगह 'मानवेन्द्रनाथ राय' होना चाहिए।

इस अंक में

श्रीकृष्णदत्त भट्ट, अ० भा० सर्व सेवा संघ द्वारा भार्गव भूषण प्रेस, वाराणसी में मुद्रित और प्रकाशित। पता : राजघाट, वाराणसी-१, फोन नं० ४१
पिछले अंक की छपी प्रतियाँ ९५०० : इस अंक की छपी प्रतियाँ ९५०० एक अंक : १३ नये पैसे
वार्षिक मूल्य ६)

भूदान-यज्ञ मूलक ग्रामोद्योग प्रधान अहिंसक क्रान्ति का संदेश वाहक

संपादक : सिद्धराज ढड्ढा

वाराणसी : शुक्रवार | २० अक्टूबर '६१ | वर्ष ८ : अंक ३

राष्ट्रीय एकता के संदर्भ में

शांति-प्रतिज्ञा और शिक्षा का 'रिओरिएन्टेशन'

विनोबा

दिल्ली में हुई राष्ट्रीय ऐक्य परिषद ने जो सूचनाएँ दी हैं, उनमें एक महत्त्व की सूचना है, जिसकी ओर मैं आपका ध्यान आकर्षित करना चाहता हूँ। वह सूचना परिषद ने सर्व सेवा संघ के प्रस्ताव के अनुसार की है।

अहिंसा एक क्रान्तिकारी वस्तु है। यह विचार तो पुराना है, लेकिन सामूहिक तौर पर सामाजिक क्षेत्र में उसका प्रयोग करने की कोशिश उन दिनों नहीं हुई। गांधीजी ने उसका एक प्रयोग हिन्दुस्तान में राजनीतिक क्षेत्र में किया। अब वह चीज कुल दुनिया ने सामूहिक काम के लिए मान्य की है। इसका मतलब यह नहीं है कि दुनिया में हिंसा कम हुई है। फिर भी दुनिया ने अहिंसा को सामाजिक क्षेत्र में एक कारगर उपाय के रूप में मान्यता दी है। सामाजिक समस्याओं का परिहार अहिंसा के जरिये करना चाहिए, किया जा सकता है, उसके प्रयोग करने चाहिए, ऐसा विचार दुनिया ने मान्य किया है। अभी-अभी की बात है, आणविक शस्त्रों के खिलाफ इंग्लैण्ड में हजारों लोगों ने जुलूस निकाले और आणविक शस्त्रों के प्रयोग का विरोध किया। बर्ट्रेण्ड रसेल जैसे वृद्ध, ज्ञानी, विद्वान मनुष्य को भी पकड़कर सरकार ने सजा दी! यह एक विशेष घटना है।

दिल्ली की परिषद में हिन्दुस्तान के नेता इकट्ठे हुए थे। राष्ट्रीय एकता और शान्ति के लिए कुछ सुझाव परिषद ने दिये, उनमें एक सुझाव यह है कि हिन्दुस्तान के हर नागरिक को शान्ति की प्रतिज्ञा लेनी चाहिए। कोई भी सामाजिक और अन्य किसी भी मसले के हल के लिए हम हिंसा का आसरा नहीं लेंगे, ऐसी प्रतिज्ञा हर नागरिक ले।

यह बिलकुल सादी प्रतिज्ञा है। माँ ने बच्चे को पीटा, तो इस प्रतिज्ञा में बाधा नहीं। यह कोई महात्मा गांधी ने जो हमें अहिंसा सिखाई उसकी प्रतिज्ञा नहीं है, गौतम बुद्ध ने जो अहिंसा सिखाई उसकी भी यह प्रतिज्ञा नहीं है। यह तो बिलकुल सादी, सभ्यता की प्रतिज्ञा है। कोई भी मसला—गाँव का, शहर का, जातीय, धार्मिक, पाथिक, या आर्थिक—कोई भी मसला हो, उसके हल के लिए हम हिंसा का उपयोग नहीं करेंगे, ऐसी प्रतिज्ञा नागरिक करें। शान्तिवादी लोग प्रतिज्ञा करते हैं कि हम कभी लड़ाई में भाग नहीं लेंगे, इस प्रकार की यह प्रतिज्ञा नहीं है। यह तो सादी और सभ्यता की प्रतिज्ञा है। यह सभ्य समाज में मानी हुई बात है।

हिन्दुस्तान एक अहिंसा का विचार मानने वाला देश माना जाता है। १४ साल में हिन्दुस्तान में कितने दंगे हुए, कितने लोगों की हत्या हुई, कितनी दफा पत्थर चले, कितनी बार गोली चली, कितने घर जलाये गये! इंग्लैण्ड के साथ तुलना करो! वह सभ्य समाज का उदाहरण नहीं है, इंग्लैण्ड में आर्मी है, नेवी है, एयरफोर्स (जल, स्थल तथा हवाई सेना) है। वहाँ शस्त्र विद्या सिखाई जाती है। गांधी और बुद्ध की अहिंसा का व्रत उन्होंने नहीं लिया है, लेकिन सभ्यता का व्रत लिया है। तो समाज में जो समस्याएँ होंगी, उनके हल के लिए हिंसा का उपयोग नहीं करेंगे, यह प्रतिज्ञा हिन्दुस्तान के सब नागरिक लें, ऐसा प्रस्ताव सर्व सेवा संघ ने किया था। उसे मान्य करके राष्ट्रीय ऐक्य परिषद ने वह देश के सामने रखा है।

शिक्षा की ओर भी राष्ट्रीय ऐक्य परिषद ने ध्यान खींचा है और सुझाव रखा है कि "एजूकेशन" का "रिओरिएन्टेशन" होना चाहिए। अंग्रेजी में शब्दों की कमी तो है नहीं। लेकिन आशा है कि इस सुझाव के अनुसार शिक्षा की ओर ध्यान दिया जायेगा। आश्चर्य की बात है कि १४-१५ साल के बाद अब 'एजूकेशन' का 'रिओरिएन्टेशन' सूझ रहा है। इतने में तो दूसरे राष्ट्रों ने क्या-क्या कर डाला! इतनी सादी बात हम नहीं कर सके हैं।

> हरएक विद्यार्थी को हाथ का काम मिलना चाहिए। उसके हृदय को पोषण मिलना चाहिए। उसकी बुद्धि का विकास होना चाहिए। ये तीन ही बातें ध्यान में रखनी हैं, चौथी नहीं।

हमने क्या कहा? साक्षरता बढ़ाओ, ४०-५० साल के बूढ़े को "क, का, कि, की" सिखाओ। रात में पढ़ते हैं; क्या पढ़ कर मोक्ष पाने वाले हैं! पर यह इसीलिए है कि सरकार कह सके कि इतने-इतने लोग शिक्षित हो गये हैं! मुझे ऐसे लोग मालूम हैं, जो मैट्रिक तक पढ़े हैं और कुल का कुल भूल गये हैं। ए० बी० सी० डी० याने स्वर्ग की सीढ़ी है, इतना ही याद रहा है! बाकी सब भूल गये, क्योंकि, उस विद्या का कोई काम ही नहीं पड़ा।

> जो ज्ञान है वह कभी नहीं भूला जाता। ज्ञान या तो होगा या तो नहीं होगा।

आज तो काल्पनिक और शाब्दिक विद्या सिखाई जाती है। "हार्स" याने घोड़ा, यह शब्द है, विद्या नहीं। शब्द मनुष्य भूलता है, ज्ञान को मनुष्य नहीं भूलता है। गुड़ को 'गुड' कहते हैं यह भूल सकते हैं, लेकिन गुड़ खाया और वह मीठा लगा, इस ज्ञान को क्या हम कभी भूलेंगे? किसी ने आज गुड़ खाया, उसे वह मीठा लगा। बीच में चार महीने खाने को नहीं मिला, तो क्या भूल जायेंगे कि गुड़ कैसा होता है? यह ज्ञान का लक्षण है। ज्ञान मनुष्य नहीं भूलता, आत्मज्ञान को मूर्छा और निद्रा में भी नहीं भूलता, दूसरे ज्ञान को जागृति में भी भूल जाता है। इस तरह ज्ञान ज्ञान में फर्क होता है।

> जिस विद्या में नैतिक विकास नहीं होता, पुरुषार्थ नहीं सिखाया जाता, ऐसी विद्या में बच्चों का बेकार समय जाता है।

इस तरह राष्ट्रीय ऐक्य परिषद ने दो सुझाव रखे हैं, एक का संबंध सभ्यता से है, दूसरे का शिक्षा से।

कितनी मेहनत से हमने भारत को एक बनाया है! हजारों वर्षों से तपस्या इसके लिए हुई है। वाल्मीकि ने एक श्लोक में राम का वर्णन किया है, उसी एक श्लोक में सारे भारत का वर्णन आता है। राम एक राष्ट्रपुरुष थे, उनके गुण कैसे थे?

> "समुद्रइव गाम्भीर्ये,
> धैर्ये च हिमवानिव।"

गम्भीरता में वे जैसे हैं और स्थिरता में हिमालय जैसे—आधे श्लोक में पूरा भारत खड़ा कर दिया। समुद्र से हिमालय—आसेतु हिमाचल—तक हमने एक देश माना और बनाया, इसके ये दो बड़े गुण 'सिम्बालिकल'—सांकेतिक—हैं। समुद्र की गंभीरता व हिमालय की स्थिरता, दोनों मिल कर भारतीयता होती है। परमेश्वर हममें ये दो गुण स्थिर करे! इसीलिए हम घूम रहे हैं, गाँव-गाँव में समझा रहे हैं, "तुम एक बनो और नेक बनो।" दस साल पहले किसीने मुझसे संदेश माँगा था, तो मैंने यही दो शब्द कहे थे—'एक बनो और नेक बनो।'

शांति-प्रतिज्ञा

भारत का नागरिक होने के नाते मैं सभ्य समाज के इस सार्वभौम सिद्धान्त में अपनी निष्ठा जाहिर करता हूँ कि नागरिकों, या उनके समूहों, संस्थाओं व संगठनों के बीच उत्पन्न विवाद शान्तिमय उपायों से ही निपटाये जाने चाहिये; और राष्ट्र की एकता व एकात्मता के लिए बढ़ते हुए खतरे को ध्यान में रखते हुए यह प्रतिज्ञा करता हूँ कि मेरे आसपास या भारत के और किसी हिस्से में किसी झगड़े के सिलसिले में मैं स्वयं प्रत्यक्ष हिंसा का सहारा नहीं लूँगा।

जनतंत्र में सामंतशाही पद्धति नहीं चलेगी

उत्तर प्रदेश शान्ति-सेना रैली और सम्मेलन में श्री नवकृष्ण चौधरी

"आज प्रजातन्त्र का युग है। लेकिन रचनात्मक सेवक हों या राजनैतिक कार्यकर्ता हम सबके सब प्रजा पर अपनी बात लादना चाहते हैं और उसके मन में क्या चल रहा है, यह सुनने की हमारी तैयारी नहीं है। हम सबको काम करने की अपनी पद्धति में अब क्रान्तिकारी परिवर्तन करना होगा और सामन्तशाही पद्धति छोड़ कर सही अर्थ में जनतान्त्रिक तरीका अपनाना होगा।

बड़ी-बड़ी सभाओं और प्रवचन-माला का समय अब नहीं रहा है। हमको दूसरों की बात सुननी चाहिये और शान्ति के साथ सहचिन्तन करना चाहिये। केवल अपनी बात पर अड़े रहना सत्याग्रह नहीं है। हमको सत्य के बारे में दूसरे का जो मत है, वह भी समझना होगा। सत्याग्रही होने के साथ-साथ हमें सत्य-ग्राही भी बनना चाहिये। हमें मिल कर सोचना चाहिये और जो कुछ भी प्राप्त हो उसका सहभोग करना चाहिये। तभी हम नया समाज बनाने व बनने में मददगार हो सकेंगे।"

उपर्युक्त उद्गार गत मंगलवार की साय प्रादेशिक शांति-सेना सम्मेलन की परिसमाप्ति पर अपने अध्यक्षीय भाषण में अ० भा० सर्व सेवा संघ के अध्यक्ष श्री नवकृष्ण चौधरी ने प्रगट किये। यह सम्मेलन २ और ३ अक्टूबर '६१ को लखनऊ में कैसरबाग-बारादरी में सम्पन्न हुआ और उसमें प्रदेश के विभिन्न जिलों से आने वाले ८० शांति सैनिकों ने भाग लिया। इस सम्मेलन का संचालन उत्तर प्रदेश शांति-सेना के संचालक श्री ब्रह्मदेव वाजपेई ने किया और उसकी व्यवस्था का आयोजन श्री ओमप्रकाश गौड़ ने किया। श्री नवकृष्ण चौधरी सम्मेलन में दोनों दिन शामिल हुए।

'गांधी-जयन्ती' के पुण्य अवसर पर शांति-सैनिकों की एक रैली (कूच) भी लखनऊ नगर में हुई। लगभग तीन घंटे की नगर-फेरी के बाद शान्ति-सैनिकों का यह जुलूस सायं ६ बजे गोमती के किनारे शहीद स्मारक पर पहुँचा। उसको श्री नवबाबू ने संबोधित किया।

शान्ति-सेना सम्मेलन का प्रारम्भ आधे घंटे के सूत्र-यज्ञ से हुआ। फिर शान्ति-सैनिकों ने अपने-अपने जिलों में चल रहे काम की जानकारी दी। जिलों से प्राप्त जानकारी की रोशनी में सम्मेलन में चर्चा के मुख्य विषय इस प्रकार रहे : पोस्टर-आन्दोलन, शराबबन्दी, भूमि-समस्या, कार्यकर्ताओं का प्रशिक्षण और योगक्षेम, भूदान-आन्दोलन की गतिविधि, साम्प्रदायिकता और चुनाव, इन पर दो दिन तक विस्तार से चर्चा हुई। दूसरे दिन शाम को निवेदन के रूप में इनका सार सम्मेलन के आगे रखा गया।

भूमि-समस्या के संबंध में यह तय रहा कि भूदान की जमीन पर भूमिहीनों को कब्जा दिलाना चाहिये, और शांतिपूर्ण एवं अहिंसक ढंग से बेदखलियों को भी रोकना चाहिये। यदि जरूरत हो तो बेदखलियों के खिलाफ सत्याग्रह का कदम भी उठाना चाहिये। इंग्लैण्ड के सुप्रसिद्ध दार्शनिक और वैज्ञानिक श्री बर्टेंड रसेल को उनके अभूतपूर्व कदम और उनके नेतृत्व में चलने वाले निःशस्त्रीकरण के शानदार आन्दोलन पर बधाई दी गयी और उनके साथियों का अभिनन्दन किया गया। इस सिलसिले में सम्मेलन ने इस बात पर दुःख प्रकट किया कि भारत तथा उत्तर प्रदेश की सरकारें कालेज और विश्वविद्यालयों में सैनिक-शिक्षण पर जोर दे रहे हैं। इस नीति का विरोध करते हुए, सरकार से अनुरोध किया गया कि वह रचनात्मक और निर्माण की कार्य-प्रवृत्तियों में अपनी शक्ति और साधन लगाये, ताकि देश में अहिंसक शक्ति मजबूत हो और विश्व शांति का स्वप्न साकार हो सके।

हमारे सारे नेता इसलिए चिंतित हैं, चिंतित होने जैसी परिस्थिति भी है, वैसा ही काम हुआ है। थोड़े दिन पहले जबलपुर में एक घटना हुई, परिणामस्वरूप क्षोभ हुआ, उसका परिणाम पाकिस्तान पर हुआ। अब यह अलीगढ़ की घटना हुई है। इस तरह हम बरतेंगे तो भारत का भविष्य क्या होगा, कह नहीं सकते। लेकिन हमारे अंदर विश्वास है कि

> इस देश में पुण्य की और सत्य की विजय होगी। यहाँ की हवा के कण-कण में ऋषि और सन्तों की तपस्या है, यह सन्त सत्पुरुषों की भूमि है। यही श्रद्धा लेकर हम चलते जा रहे हैं।

[पड़ाव : जाजी, असम, ६ अक्टूबर '६१]

सातपुड़ा सर्वोदय-मंडल, धड़गाँव

महाराष्ट्र के प० खानदेश जिले के सातपुड़ा सर्वोदय-मंडल, धड़गाँव की मासिक बैठक १-२ सितंबर को हुई। बैठक में कार्यकर्ताओं के अलावा धूलिया के असिस्टंट रजिस्ट्रार, कोआपरेटिव सोसाइटी; अक्राणी महाल के प्रोजेक्ट आफसर, अध्यक्ष और ग्राम-स्वराज्य सोसाइटी के पंच भी उपस्थित थे। प्रारम्भिक भाषण में श्री दामोदरदास मूंदड़ा ने बताया कि अक्राणी के नवनिर्माण-कार्य में लिए आर्थिक सहायता देने के लिए बाहर की जनता तत्पर है, किन्तु हमें याचना के बजाय अपने पुरुषार्थ पर श्रम से स्वावलंबी बनने की आवश्यकता है और इसी दिशा में ग्राम-स्वराज्य सोसाइटी की स्थापना के रूप में हमने कदम बढ़ाया है।

कार्यकर्ताओं ने मासिक विवरण बैठक में पेश किये। केन्द्र के गाँवों की पशु-संख्या के विवरण-पत्रक पर विचार हुआ। लोगों की सेवा की दृष्टि से 'डीसेन' की औषध पेटियों का बहुत उपयोग होता है। ढाई-तीन सौ रोगियों पर दवा का अच्छा परिणाम हुआ।

अगस्त माह में अनाज की बहुत कमी रहती है, इसलिए अभी बाजार में ज्वार का भाव फी मन ४० रु० है। मंडल के ग्रा० स्व० सो० ने कर्ज रूप में १८४२ रु० का अनाज फी मन २२ रु० के हिसाब से नौ केन्द्रों के सोसाइटियों को दिया।

वड़फल्या गाँव में दो दलों में मार-पीट का झगड़ा हुआ और मामला पुलिस तक आ रहा था। लेकिन मंडल के कार्यकर्ताओं ने समझौता कराया। सबने एक-दूसरे से क्षमा-याचना की और प्रेम से मिले।

जमाना गाँव में १ अगस्त से मंडल की ओर से एक दुग्ध-केन्द्र शुरू किया है।

ता. २७ से २९ सितंबर तक धड़गाँव में हुई सभा में सितंबर माह के विवरण में बताया गया कि इस क्षेत्र में सतत वर्षा के कारण बाढ़ आयी और आवागमन में रुकावट हुई। गत वर्ष की अपेक्षा मकई की औसत फसल कुछ कम ही रही। धान, मुंगफली, बाजरा, आदि की फसलें अच्छी हैं। हातुई विकास-क्षेत्र की ओर से आबपाशी के लिए तीन कुएँ बनाये गये।

यहाँ विभिन्न केन्द्रों में विनोबा-जयंती मनायी गयी। जमाना और निमगव्हाण में बैलों का 'पोला' उत्सव मनाते समय छोटी-सी प्रदर्शनी भी आयोजित की गयी। इसमें ५० बैलजोड़ियाँ आयी थीं, जिनमें से १२ जोड़ियों के किसानों को गुणानुक्रम से खादी के कपड़े इनाम में बाँटे गये। यहाँ गणेशोत्सव में सहभोजन, कीर्तन का आयोजन कर आदिवासी बंधुओं में सामूहिक जीवन के प्रति रुचि बढ़ाई गयी। २६ आदिवासियों ने शराब छोड़ने की प्रतिज्ञा की। इस विभाग के १४ ग्राम-स्वराज सोसाइटियों की वार्षिक सभाओं के चुनाव हुए। सरकारी बंजर भूमि १६१ एकड़ का वितरण हुआ। अभी तक कुल २७०० एकड़ भूमि वितरित की गयी।

गांधी-जयंती के अवसर पर २८५ रु० का साहित्य बिका। "साम्ययोग" पत्रिका के ५५ ग्राहक बने। १२ लोकसेवकों के और ३ शांति-सैनिकों के फार्म भरे गये।

—व० कृ० कर्णिक, का०

बंबई में सर्वोदय गतिविधियाँ

बंबई सर्वोदय-मंडल ने अगस्त माह में कुल २,५७,४०३ रु ६९ न० पै० का अर्थ-संग्रह किया। इसके साथ ही १९ नागरिकों ने १०६६ रु. का वार्षिक संपत्ति-दान देना तय किया है।

इस माह में १७ हाईस्कूलों में सर्वोदय विचार-प्रचार के निमित्त हुई सभाओं में आचार्य भिसे, श्री रा कृ पाटिल और श्री दामोदरदास मूँदड़ा आदि प्रमुख कार्यकर्ताओं के भाषण हुए। करीब ... हजार रु० का सर्वोदय-साहित्य ... गया। गुजराती मासिक पत्रिका 'सर्वोदय साधना' की एक हजार प्रतियाँ बिकती हैं। इसके अलावा अन्य सर्वोदय-भूदान पत्र-पत्रिकाओं के कुल १५८ ग्राहक बने और ५५ अंक फुटकर बिकते हैं।

बंबई के कई क्षेत्रों में सर्वोदय-पात्र कार्य चल रहा है। मालाड, कुर्ला, घाटकोपर क्षेत्र में विशेष ध्यान दे रहे हैं। कुल ८... सर्वोदय-पात्रों से अगस्त माह में ४३०... ६६ नये पैसे संग्रहीत हुए।

कार्यकर्ता अपने-अपने क्षेत्रों में लोगों की कठिनाइयाँ एवं छोटे-मोटे झगड़ों को सुलझाने की कोशिश करते रहते हैं। पिछले दिनों श्री केदारनाथजी अस्वस्थ थे। उनकी सेवा में नित्य कोई-न-कोई कार्यकर्ता रहता ही था।

खादी-ग्रामोद्योग कमीशन एवं भारत सरकार द्वारा निर्मित विनोबा पदयात्रा की फिल्म का प्रदर्शन किया गया, जिसे लोगों ने बहुत पसंद किया। पूरे बंबई शहर में उसके प्रदर्शन की योजना बन रही है।

बंबई शहर में विचार प्रचार के ८ केन्द्र चल रहे हैं। इसके अलावा माह में ... शनिवार को कार्यकर्ता सामूहिक अध्ययन करते हैं। वैसे हर शनिवार को कार्यकर्ताओं की साप्ताहिक बैठक भी अलग से होती ही है।

॥ जगत् स्फूर्तिः जीवनं सत्यशोधनम्

भूदानयज्ञ

लोकनागरी लिपि •

आक्रमणकारी प्रेम

ईसा मसीह ने स्पष्ट कहा है, "तुम अपने शत्रु पर भी प्यार करो।" यही बात औरों ने भी कही है, परंतु इतनी स्पष्ट नहीं, जितनी ईसा मसीह ने। किंतु उस पर अमल नहीं किया जा रहा है। ये बड़े देश एक दूसरे से डरते हैं, क्योंकि वे एक-दूसरे को दोषी मानते हैं। इसलिए वे प्रेम का प्रयोग द्वेष के सामने नहीं कर पाते, बल्कि द्वेष के साथ प्रेम का प्रकट होना वे अव्यवहार्य मानते हैं। द्वेष के मुकाबले प्रेम करने की कला हमें सीखनी चाहिए, अगर हम प्रेम की शक्ति निर्माण करना चाहते हैं। हमें यह सिद्ध करना है।

यह तब तक नहीं होगा, जब तक हम प्रेमशक्ति से समाज के मसले हल नहीं करते। अभी तक विश्वास यही रहा है कि मसले जो भी हैं, वे हिंसा से या सरकार की शक्ति से हल होंगे। सरकार की शक्ति सेना की ही शक्ति होती है। कुल मिला कर हिंसा से ही मसले हल होंगे, ऐसा ही विश्वास है। माने मान लिया कि हिंसा से मसले हल होंगे, परंतु वस्तुतः हिंसा से मसले हल होते हैं, यह अनुभव तो नहीं आया।

कुन्नमंगलम् (कोशिकोड)

ता० १६-७-'५७ —विनोबा

• लिपि-संकेत : ि = ी : ु = ू ख = ख, संयुक्ताक्षर हलंत चिह्न से।

संपादकीय

सौम्य सत्याग्रह का नमूना

ता० २ अक्टूबर को बिहार-सरकार ने मलयपुर की 'कलाली' (शराब की दुकान) तोड़ दी। अपने आप में यह बहुत छोटी सी घटना है। बिहार में करीब ४० हजार गाँव हैं। उनमें से मलयपुर एक है। शराब की दुकानें भी प्रान्त में लाख नहीं तो हजारों तो हैं ही। उनमें से एक दुकान का बंद होना अपने आपमें बहुत बड़ी बात नहीं है। पर मलयपुर की कलाली का बंद होना इस बात का सबूत है कि अकेला व्यक्ति भी अगर निष्ठा और शान्ति से काम करे तो वह पहाड़ हिला सकता है। इस सम्बन्ध में हम जो लिखने जा रहे हैं वह जिस व्यक्ति के प्रयत्न से मलयपुर की कलाली बंद हुई है, उसकी प्रशंसा के लिए नहीं। हम जानते हैं कि उस सेवक की स्वयं की भी ऐसी कोई अपेक्षा नहीं है। पर मलयपुर की कलाली के बन्द होने का इतिहास हमारी दृष्टि से सौम्य सत्याग्रह का एक अच्छा नमूना है, और अतः अहिंसक शांति के काम में लगे हुए कार्यकर्ताओं के लिए वह प्रेरणादायी है।

श्री श्यामवल्लभ चतुर्वेदी बिहार के एक पुराने रचनात्मक कार्यकर्ता हैं। गत ३० जनवरी १९६१ को गांधीजी के पुण्य दिवस पर उन्होंने मलयपुर की कलाली पर स्वयं-प्रेरणा से पिकेटिंग शुरू की। यह निरोधन-पिकेटिंग—एक तरह से सांकेतिक ही था। निरोधन करने वाले ये भाई अकेले ही थे, पर उन्होंने निश्चय किया कि वे रोज शाम को, जिस समय शराब की दुकान पर पीने वाले अकसर आते हैं, घण्टे-दो घण्टे खड़े रहेंगे, आने वालों को शराबखोरी के दुष्परिणाम समझा कर शराब छोड़ने की उनसे प्रार्थना करेंगे। शराब की दुकान वाले को किसी प्रकार परेशानी में डालने या लज्जित करने का उनका इरादा नहीं था। एक ही बात उन्होंने अपने मन में तय की थी कि अस्वस्थता और गाँव में न रहने की स्थिति को छोड़ कर रोज अपना यह सौम्य कदम जारी रखेंगे।

सौम्य से सौम्यतर

यह एक अकेले व्यक्ति का निश्चय था। न गाँव में इस प्रकार के कोई दूसरे साथी थे, न किसी संगठन का पीठबल उस समय उन्हें प्राप्त था। पर चूंकि उस निश्चय के पीछे एक प्रेरणा थी, इसलिए बात वहीं तक सीमित नहीं रही। शराब की दुकान पर रोज जाना और आने वालों को समझाना यह तो एक नित्य का कार्यक्रम बन गया। पर असली उद्देश्य तो यह था कि गाँव में शराबखोरी ही खतम हो जाय। पीने आने वाले भी अकसर कहते थे कि "चौबेजी, हम जानते हैं कि शराब पीना बुरा है, लेकिन आदत से मजबूर हैं! अगर यह दुकान ही उठ जाय तो हमें बहुत मदद मिले।" एक दिन चतुर्वेदीजी को सूझा कि वे बिहार सरकार को इस बारे में लिखें। उन्होंने पत्र लिखे, पर कोई उत्तर न मिले। तब प्रतिदिन के निरोधन के साथ-साथ अपने सौम्य सत्याग्रह में चतुर्वेदीजी ने एक काम और जोड़ा कि वे हर दिन बिहार के मुख्य मंत्री की सेवा में एक पत्र भेजने लगे, जिसमें शराबबन्दी के सिलसिले में गांधीजी का कोई-न-कोई विचार लिखते थे और अंत में अपनी यह प्रार्थना कि बिहार में पूर्ण नशाबन्दी होनी चाहिए और मलयपुर की कलाली टूटनी चाहिए। यह क्रम भी पिछले चार महीने बराबर जारी रहा और करीब १२५ पत्र इस प्रकार से मुख्य मंत्री की सेवा में उन्होंने लिखे।

धीरे धीरे बात फैलती गयी, पहले जिला सर्वोदय-मण्डल ने और फिर बिहार सर्वोदय मण्डल ने मलयपुर के इस सत्याग्रह को अपनाया और बिहार में नशाबन्दी के काम को आगे बढ़ाने के लिये एक समिति भी बनायी। ता० ३० जुलाई १९६१ को बिहार में जगह जगह पर नशाबन्दी के लिए सार्वजनिक प्रार्थनाएं की गयीं तथा कहीं कहीं सभाएँ भी हुईं। कई कार्यकर्ताओं ने उस दिन शराबबन्दी की सफलता के लिए उपवास भी किये। ता० ९ अगस्त को बिहार सर्वोदय मण्डल की नशाबन्दी समिति के निर्णय के अनुसार बिहार में जगह जगह शराब की दुकानों पर पिकेटिंग किया गया। ता० ६ अगस्त को श्री जयप्रकाश नारायण ने मलयपुर आकर वहां की कलाली पर पिकेटिंग किया। इसी बीच अपने सत्याग्रह को और सौम्य रूप देने तथा साथ ही उसमें तीव्रता लाने की दृष्टि से चतुर्वेदीजी ने यह कार्यक्रम सोचा कि कुछ कार्यकर्ता मिल कर ५१ दिन का एक उपवास यज्ञ करें, जिसमें बारी-बारी से एक एक व्यक्ति पाँच-पाँच दिन का उपवास करे। इस उपवास-यज्ञ का उद्देश्य, जैसा कि चतुर्वेदीजी ने अपने एक पत्र में लिखा था, "अपने प्राण संकट में डाल कर लोगों को परेशान करने का" नहीं था। वे केवल "जनता, सरकार और भगवान का भी ध्यान अपने काम की ओर आकर्षित करके सबको अपना मददगार बनाना" चाहते थे। इसलिए उन्होंने यह भी तय किया कि उपवास प्राकृतिक चिकित्सकों की देखरेख में होंगे और जब कभी किसको वे अनशन छोड़ देने की सलाह देंगे तो वह तुरन्त छोड़ देगा।

इस प्रकार सत्याग्रह का सौम्य से सौम्यतर स्वरूप विकसित होता गया और कदम आगे बढ़ते गये। मलयपुर के लोगों पर, पीने वालों पर और खुद दुकानदार पर भी इस सारे सौम्य तरीके का असर होता गया। आखिरकार बिहार सरकार ने बढ़ते हुए जनमत का आदर करके ता० २ अक्टूबर १९६१ को गांधीजी के जन्मदिन के उपलक्ष में मलयपुर की कलाली तोड़ दी, जिसके लिए वह बधाई और धन्यवाद की पात्र है। इस तरह ८ महीने पहले एक अकेले व्यक्ति ने अपनी अन्तःप्रेरणा से जो काम शुरू किया था, वह सफल हुआ।

विजय किसकी ?

एक सच्चे सत्याग्रही के नाते कलाली बंद होने की खबर देते हुए श्री चतुर्वेदीजी ने लिखा :

> "कलाली तोड़ कर सरकार विजयी हुई। उसकी प्रतिष्ठा बढ़ी है। जब तक सरकार लोगों को शराब पिलाती है, तब तक वह रोज रोज प्रतिष्ठा गंवाती है। सत्याग्रह की मांग पूरी करके सरकार हारी नहीं, जीती ही है। सत्याग्रह का अर्थ ही परपक्ष को स्वपक्ष में लाकर विजयी बनाना है। इसलिए अपने मुख्य मंत्री को हमने अपनी कृतज्ञता भी भेजी और उनकी विजय पर बधाई भी दी।"

वास्तव में सत्याग्रह में किसी की हार या किसी की जीत का सवाल ही नहीं है। जैसा गांधीजी ने बार-बार कहा था, सत्याग्रह ऐसी लड़ाई है, जिसमें दोनों की विजय होती है। सही तो यह है कि विजय किसी पक्ष की नहीं, विजय केवल सत्य की होती है।

चिन्तन-सर्वस्व का रहस्य

मलयपुर के इस सत्याग्रह का जब वास्तव में कोई नैतिक और उदात्त उद्देश्य होता है तो उस सत्याग्रह का और उस सत्याग्रह की कृति का प्रभाव सीमित नहीं रहता, उसका प्रकाश दूसरे क्षेत्रों पर भी पड़ता है और सत्याग्रही के तो सारे ध्यान और शक्ति को वह अपने में बटोर लेता है। श्री चतुर्वेदीजी के शब्दों में :

> "शुरू में हमने समझा था कि हमारे अपने और काम के साथ यह भी एक काम रहेगा। पर जैसे-जैसे दिन बीते, हालत बदलती गयी। अब 'बाबाजी कम्बल को छोड़ना चाहे तो भी कम्बल उन्हें नहीं छोड़ता।' विनोबा ने 'चिन्तन-सर्वस्व' की बात कही है। पहले हम नहीं समझते थे कि यह क्या बला है? पर अब तो यह बला हमारे ही पीछे लग गयी। नशाबन्दी कैसे हो, यही चिन्ता दूसरी सब चिन्ताओं

को गौण बनाती जा रही है। यही नहीं, इसी चिन्ता की साधिका रूप अन्य चिन्ताएँ भी दिखायी पड़ रही हैं। सभी समस्याओं का अन्योन्याश्रय संबंध हमें अब सूझने लगा है। इन समस्याओं में कौन बड़ी और कौन छोटी यह कहना मुश्किल है। 'को बड़ छोट कहत अपराधू !'

मलयपुर की कलाली हरिजनों के मुहल्ले में है, इसलिए पिकेटिंग शुरू करते ही हरिजन-समस्या भी सीधी आँखों के सामने आ गयी।...अब ऐसा लगता है कि नशाबंदी और हरिजन-सेवा अलग अलग काम नहीं हैं। हरिजन-सेवा शुरू की ही थी कि चरखे ने अपना दावा पेश किया।.... फिर शराबखोरी से सबंधित गांधी विचार का प्रचार प्रारम्भ हुआ। एक दिन ऐसा लगा कि सर्वोदय-पात्र का विस्तार यहाँ होना ही चाहिए; क्योंकि वह जन-समर्थन का सुन्दर प्रतीक है। १५ अगस्त से यह काम प्रारम्भ भी कर दिया और अब तक १०० पात्र स्थापित हो चुके हैं।..पात्रों के अन्न-संग्रह से रुपया आना भी शुरू हुआ है।

शराबबन्दी में भ्रान्ति नहीं (?)

सर्वोदय-आन्दोलन में लगे हुए हम लोग अक्सर ऐसा समझते हैं कि भूदान-ग्रामदान के कार्यक्रम के अलावा अन्य कामों की तरफ ध्यान देना उचित नहीं है। यह सही है कि जो काम हाथ में लिया हो, उसको पूरी एकाग्रता और सातत्य से करना ही मनुष्य का कर्तव्य है। पर हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि भूदान-ग्रामदान आदि कार्यक्रम बहुत दूर तक एक 'साध्य' की ही तरह होते हुए भी आखिरकार वे 'साधन' ही हैं। हमारा मुख्य 'साध्य' तो प्रेम का साम्राज्य स्थापित करने का और अनीति तथा अन्याय के स्थान पर न्याय और नैतिकता की स्थापना करने का है। गांधीजी ने हमेशा यह समग्र दृष्टि हमारे सामने रखी थी। पर हम अक्सर कार्यक्रम अर्थात् साधन को ही साध्य मान कर एकांगी और आग्रही बन जाते हैं। जिस प्रकार जीवन बहुमुखी है, उसी प्रकार सेवा भी बहुमुखी ही होनी चाहिए–यह बिल्कुल भिन्न बात है कि जिस समय जो काम हाथ में हो, उसी में पूरा तन्मय और एकाग्र होना चाहिए। अक्सर लोग ऐसा भी समझते हैं कि अगर कोई कार्यकर्ता खादी का, शिक्षा का, हरिजनसेवा का या शराबबंदी का काम करता है तो वह 'क्रांति' के काम में नहीं लगा हुआ है। सही बात यह है कि अगर दृष्टि समग्र है और लक्ष्य स्पष्ट है तो सेवा का कोई भी एक काम हाथ में ले उसके सहारे अन्य सब कार्यक्रम पनपेंगे और पनपने चाहिए, जैसा कि मलयपुर के उदाहरण से स्पष्ट है। चतुर्वेदीजी मलयपुर के रहने वाले हैं, लेकिन गांधी-निधि के काम में ७-८ वर्ष तक अपने क्षेत्र से कुछ दूर रहे थे। अपने गाँव में वे पहले सर्वोदय-पात्र की या भूदान आदि की बात करते थे तो कोई सुनता नहीं था। 'हममें कुपात्रता तो नहीं थी, लेकिन क्षेत्र से दूर रहने के कारण अपात्रता जरूर आ गयी थी। शराबखोरी के पिकेटिंग ने हमारी सुपात्रता का विश्वास लोगों में पैदा कर दिया।' नतीजा यह हुआ कि शराब-बंदी के छोर से ये भाई हरिजन-सेवा, साहित्य-प्रचार, चरखे और सर्वोदय-पात्र तक पहुँच गये।

सद्भावना बढ़ती गयी

विनोबा अक्सर कहा करते हैं कि सच्चे सत्याग्रह की कसौटी इस बात में है कि सत्याग्रह के कारण लोगों को भय न लगे, बल्कि अभय महसूस हो। चूँकि मलयपुर के सत्याग्रह में न तो दुकानदार के खिलाफ, न पीने वालों के खिलाफ, न सरकार के खिलाफ कटुता थी, इसलिए सत्याग्रह के खिलाफ किसी के मन में प्रतिक्रिया नहीं हुई, बल्कि उत्तरोत्तर सद्भावना बढ़ती गयी। मलयपुर की कलाली हरिजनों के मुहल्ले में थी। इनके घर की औरतें भी अपनी मजदूरी का बहुत-सा भाग पी जाती थीं। पर ज्यों-ज्यों पिकेटिंग आगे बढ़ता गया, त्यों-त्यों इन हरिजन औरतों में भी आपस में चर्चा होने लगी–'दारू पीना बड़ा खराब है। पिकेटिंग आखिरकार हम लोगों की भलाई के लिए ही हो रहा है। भगवान करे यह कलाली जल्दी टूट जाय !' बगल के मुहल्ले के हरिजनों पर भी असर हुआ और एक दिन उस मुहल्ले के लोग एक लिखित अर्जी लेकर चतुर्वेदीजी के पास आये कि 'अब हम लोगों ने शराब पीना छोड़ दिया है। हर बुधवार के दिन हम हरि-कीर्तन करते हैं, कीर्तन में उन्होंने चतुर्वेदीजी को आमंत्रित भी किया और उन्हीं से आग्रह किया कि वे अपने 'श्री-मुख' से कथा सुनायें। इसी प्रकार इक्के-दुक्के पीने वालों के हृदय-परिवर्तन की घटनाएँ भी इस सत्याग्रह के दौरान में हुईं।

यह सही है कि मलयपुर की कलाली टूटने से नशाबंदी की समस्या हल नहीं हुई है। मलयपुर की शराब की दुकान बिहार की हजारों दुकानों में से एक है और बिहार प्रांत भी आखिरकार हिन्दुस्तान का एक छोटा-सा हिस्सा है।

पर नशाबंदी के खिलाफ निहित-स्वार्थ वालों का जो भी प्रचार हो, मलयपुर का सत्याग्रह इस बात का सबूत है कि नशाबंदी की मांग सर्वथा नैतिक और जन-हितकारी है तथा कार्यकर्ता अगर निष्ठापूर्वक काम में लगें तो उसे अवश्य जन-समर्थन मिलेगा। जगह-जगह ऐसा होने से देश भर में सम्पूर्ण नशाबंदी के वातावरण तैयार होने में ज्यादा मुश्किल नहीं होगी।

मलयपुर का सत्याग्रह, शराबबंदी के सिलसिले में ही नहीं, लेकिन दूसरे विषयों में भी सत्याग्रह के सौम्य, सौम्यतर स्वरूप के विकास में हमारा मार्ग-दर्शन कर सकता है।

१२-१०-६१ –सिद्धराज

सत्य की प्रतिध्वनि

पिछले अंक में हमने अमेरिका से पदयात्रा शुरू करके शांतिवादियों के एक दल के रूस की राजधानी मास्को पहुँचने और वहाँ निःशस्त्रीकरण तथा अहिंसक प्रतिकार का प्रचार करने का समाचार दिया था। शांतिवादियों का यह पदयात्री दल अमेरिका और योरोप के विभिन्न देशों में शांति का प्रचार करता हुआ १० महीने की पदयात्रा के बाद ता० ४ अक्टूबर को मास्को पहुँचा था। बाद के समाचारों के अनुसार, मास्को विश्व-विद्यालय में जब ये शांति-यात्री विद्यार्थियों की एक सभा में बोल रहे थे, तब भाषणों का रुख देख कर वहाँ के अध्यापकों और अधिकारियों में बौखलाहट हुई और उन्होंने बंद कर देना चाहा। इस पर स्वयं विद्यार्थियों ने ही विरोध प्रगट किया, टेबुलों पर मुक्के मारे और एक विद्यार्थी ने उठ कर कहा कि वक्ताओं की बातों को मानिये नहीं, लेकिन सुनिये तो सही। इस पर अधिकारीगण चुप रहे। सभा ९० मिनट तक होती रही और जब शांतियात्री सभा-स्थल से चलने लगे तो *इन विद्यार्थियों ने 'स्टेंडिंग ओवेशन'*–खड़े होकर तालियाँ बजा कर सम्मान दिया। सभा तो हुई, लेकिन आखिरकार तो जो अपेक्षित था वही हुआ। ता० ८ अक्टूबर की मास्को की खबर है कि पदयात्री दल के २० सदस्यों को मास्को से अपने-अपने घर *रवाना कर दिया गया है। ऐसा लगता है* कि रूस में अपनी बात साफ-साफ कहने, न कहने के प्रश्न पर पदयात्रियों में भी आखिर में कुछ मतभेद हुआ, पर अभी इस विषय के पूरे समाचार प्राप्त नहीं हो सके हैं।

विद्यार्थियों की सभा में हुई घटना जहाँ इस बात का सबूत है कि रूस में वहाँ के अधिकारियों के विचारों से भिन्न दूसरे विचारों के प्रचार का अवकाश नहीं है वहाँ वह साथ साथ इस बात का सबूत भी है कि मानव-हृदय में सत्य की प्रतिध्वनि को कोई बाहरी नियंत्रण रोक नहीं सकता। सत्य का प्रभाव आखिर अपना काम करता ही है।

शहरों में सर्वोदय-कार्य का एक प्रयोग

सर्वोदय-आन्दोलन के बारे में एक टीका यह की जाती है कि वह गाँवों तक ही सीमित है, शहरों के जीवन में उसका प्रवेश नहीं है। आन्दोलन के गाँवों में केन्द्रित होने के पीछे क्या कारण है और क्या दृष्टि है, इसकी चर्चा हम अभी नहीं करेंगे, लेकिन शहरों में भी कहीं-कहीं सर्वोदय-कार्यकर्ताओं की ओर से जो हो रहे हैं, उनमें से एक का जिक्र यहाँ करेंगे, ताकि दूसरे कार्यकर्ताओं को, भी जो शहरों में काम करना चाहते हों, कुछ दिशा मिले।

कानपुर में उत्तर-प्रदेश गांधी स्मारक निधि के तत्त्व-प्रचार विभाग की ओर से पिछले चार साल से एक गांधी विचार केंद्र चल रहा है। तत्त्व प्रचार विभाग का सामान्य कार्यक्रम स्वाध्याय-मण्डल, गोष्ठियों, सभा-सम्मेलनों, शिविरों, साहित्य-प्रचार आदि का रहता है, वह सब चलते हुए केंद्र के कार्यकर्ताओं ने तय किया कि शहर का एक छोटा-सा मुहल्ला लेकर वहाँ घर-घर से सम्पर्क स्थापित करके सर्वोदय की दृष्टि से कुछ गहरा काम किया जाय। इसके लिये कानपुर के आर्यनगर हिस्से में करीब ५ हजार की जनसंख्या अर्थात् करीब १ हजार से १२ सौ तक परिवार-वाला एक क्षेत्र उन्होंने चुना। पिछले साल ता० २ अगस्त से यह प्रयोग शुरू हुआ।

दो महीने के प्रारम्भिक सम्पर्क के बाद २ अक्टूबर, १९६० से इस क्षेत्र में *सर्वोदय-पात्रों की स्थापना शुरू हुई।* अक्टूबर से अगस्त अन्त तक के इन ११ महीनों में कुल २६५ सर्वोदय-पात्र स्थापित हुए, जिनमें २४० इस समय में व्यवस्थित रूप से चल रहे हैं। बन्द होने वाले पात्र अधिकतर उन परिवारों के हैं, जो शहर चले गये हैं। इस "प्रेम-क्षेत्र" के लगभग ४५० परिवारों से से कार्यकर्ताओं का स्नेह-सम्पर्क जुड़ा है और इन परिवारों का न्यूनाधिक सहयोग भी काम में मिलता है। क्षेत्र के २७० परिवारों के लगभग ३७५ व्यक्ति "गांधी विचार-केंद्र" के पुस्तकालय से *सर्वोदय तथा अन्य साहित्य लेकर पढ़ते* हैं। ४६ परिवारों में सर्वोदय-पत्रिकाएँ नियमित रूप से जाती हैं।

सर्वोदय-विचार के सम्पर्क और कार्यकर्ताओं की प्रेरणा से इस क्षेत्र के नागरिकों ने एक "सर्वोदय मित्र-मण्डल" तथा स्त्री-शक्ति के विकास के लिए एक "सर्वोदय महिला मण्डल" की स्थापना भी की है। १ फरवरी १९६१ से १ शांति-सैनिक कार्यकर्ता सर्वोदय-पात्र के आधार पर ही अपना निर्वाह चलाते हुए, पूरे समय इस क्षेत्र में काम कर रहे हैं। जुलाई अन्त तक के १० महीनों का जो हिसाब प्राप्त हुआ है, उससे जाहिर होता है कि इस अवधि में सर्वोदय-पात्रों के द्वारा करीब ६८० रुपये प्राप्त हुए और करीब १७५ रुपये अन्य प्रकार से क्षेत्र के नागरिकों से प्राप्त हुए हैं। सर्वोदय-पात्र के संग्रह का छठा हिस्सा नियमित रूप से सर्व सेवा संघ को भेजा गया, करीब ५५० रु० शांति-सैनिक कार्यकर्ता के निर्वाह में खर्च हुआ और करीब १२५ रुपया क्षेत्रीय सेवा कार्यों में। स्टेशनरी, सवारी आदि व्यवस्था-कार्यों में सिर्फ ४४ रुपया इस अवधि में खर्च हुआ। एक सर्वोदय-मित्र ने अपना एक कमरा भी पुस्तकालय,

सांप्रदायिक दंगों का मुकाबला संगठन-शक्ति से हो

सिद्धराज

अलीगढ़, चन्दौसी, मेरठ तथा उत्तर प्रदेश के दूसरे पश्चिमी जिलों में जो दंगे हुए उन्हें इस अर्थ में साम्प्रदायिक कहना या समझना भूल होगी कि वे हिन्दू-मुसलमानों के आपसी वैमनस्य के कारण हुए। अगर हम रोग का निदान ठीक नहीं कर पाये तो उसका इलाज भी नहीं हो पाता। इसलिये जनसाधारण को यह समझ लेना जरूरी है कि इस तरह के दंगों की जड़ दरअसल कहाँ है। धर्म, पन्थ, जाति, पार्टी, प्रान्त, भाषा आदि के भेद हमारे बीच में हैं और कुछ तो इस तरह के भेद हमेशा रहने ही वाले हैं। इन भेदों के कारण अपने पराये का भेद भी मनुष्य में सहज ही पैदा होता है और फलस्वरूप कभी-कभी आपसी संघर्ष आदि भी हो जाता है। सभ्य-समाज की कसौटी ही यह है कि इस तरह के झगड़े न होने पाय और मतभेद तथा आचार-विचार की भिन्नता होते हुए भी लोग साथ मिल कर रहें, पर फिर भी ऐसे झगड़े कभी स्वाभाविक रूप से हो जाते हैं तो बहुत चिन्ता की बात नहीं होती।

पर चिन्ता की बात तब है जब समाज में ही कुछ तत्त्व अपने स्वार्थों की पूर्ति के लिए जान बूझकर योजनापूर्वक आम लोगों की भावनाएँ उभाड़ने और उन्हें लड़ाने का काम करते हैं। पश्चिमी उत्तर-प्रदेश के ये दंगे भी लोगों की सहज साम्प्रदायिक भावना के परिणामस्वरूप हुए संघर्ष नहीं थे, पर इनके पीछे हिन्दू और मुसलमान, दोनों पक्षों के शरारती लोगों की और उनसे प्रभावित कुछ राजनैतिक तथा सामाजिक संगठनों की योजना थी, यह सब ओर से आने वाली खबरों से साबित होता है। जान-बूझ कर गलत और अतिरंजित खबरें फैलायी गयीं, इस काम के लिये विद्यार्थियों को इधर उधर भेजा गया और दंगे करवाये गये। आगे आने वाले आम चुनाव को ध्यान में रख कर लोगों की सहानुभूति अपने लिये प्राप्त करना और दूसरी पार्टियों को नीचा दिखाना यह उद्देश्य तो था ही। इतना ही नहीं, इन दंगों के दौरान में तो ऐसा भी हुआ बताया कि एक ही सम्प्रदायवालों ने केवल राजनैतिक या व्यक्तिगत द्वेष से प्रेरित होकर दंगों का फायदा उठा कर उसी सम्प्रदाय वाले अपने प्रतिपक्षी को मार डाला।

इन सब संगठित और नियोजित कार्रवाइयों को रोकने के लिये देश के समझदार तथा प्रभावशाली लोगों को तो कदम उठाने की आवश्यकता है ही, पर आवश्यकता इस बात की है कि आम लोगों में जन साधारण में जो समझदार और भले लोग हैं, जो उपरोक्त प्रकार के संगठनों से या स्वार्थों से सम्बन्धित नहीं हैं—और समाज में ऐसे लोगों की ही संख्या ज्यादा होती है—उन्हें सक्रिय होना चाहिये और इस प्रकार की असामाजिक प्रवृत्तियाँ न पनपने पायें, इसके लिये योजनापूर्वक प्रयत्न करना चाहिये। दंगा होने के बाद पीड़ितों को मदद पहुँचाना यह तो सभी करते हैं, बल्कि जो दंगों के लिये जिम्मेदार होते हैं वे लोग ही खास तौर से इन कामों में भी आगे रहते हैं, क्योंकि समाज में दुर्भाग्य से वे ही आज सक्रिय तत्त्व हैं! पर मुख्य बात यह है कि दंगे होने ही न पायें या हो भी जायँ तो फैलने न पावें, इसकी योजना की जाय। आखिरकार दंगे कराने वाले भी पहले से अपने सारे तंत्र और व्यवस्था की योजना किये हुए रहते ही हैं कि कहीं भी कोई निमित्त मिल जाय तो उसका फायदा उठा कर अपना मतलब साधा जाय! उसी तरह शांति चाहने वाले लोगों को भी हमेशा ऐसी घटनाओं के लिये तैयार रहना चाहिये। मोहल्लों मोहल्लों में गलत अफवाहों को रोकने, सही समाचारों की जानकारी देने, वहाँ जो असामाजिक या स्वार्थी तत्त्व हों उन पर नजर रखने, उनका पर्दाफाश करने, दंगे के समय लोगों को शान्त और काबू में रखने, अधिकारियों तथा अखबारों से सम्पर्क रखने आदि के लिये समझदार लोगों की स्थायी और संगठित योजना बनाये रखनी चाहिये। जिस तरह अलीगढ़ और आस-पास के क्षेत्र में हमारे शांति-सैनिक तथा अखिल भारत शान्ति सेना मंडल की संयोजिका स्वयं पहुँची हैं, उस तरह तो तुरन्त हमें अशान्ति की जगह पहुँचना ही चाहिये; पर इस नैमित्तिक कर्तव्य के साथ ही हम शांति-सैनिकों को जहाँ हम रहते हैं वहाँ आसपास, ऊपर बताये अनुसार सज्जनों को सक्रिय बनाने तथा शांति की स्थायी योजना कार्यान्वित करने की ओर तुरन्त ध्यान देना चाहिये और इस काम में पूरी शक्ति लगानी चाहिये। आगे आने वाले आम चुनावों को ध्यान में रखते हुए यह काम और भी जरूरी है, क्योंकि देश के सभी पक्षों के नेताओं ने चुनावों के संदर्भ में आचार-मर्यादा मानने का फैसला तो जरूर किया है, पर एक तो उसे कार्य रूप में आने में समय भी लगेगा और दूसरे, उनकी कोशिश के बावजूद भी चुनाव के दिनों में इस तरह अशान्ति भंग होने की कुछ-न-कुछ सम्भावना रहेगी ही।

वाचनालय आदि प्रवृत्ति के लिए निःशुल्क दिया है।

करीब एक वर्ष के लगभग आधे परिवारों से सम्पर्क स्थापित हुआ और उसके परिणामस्वरूप उपरोक्त काम हुए। यह जाहिर करता है कि निष्ठा और सातत्यपूर्वक काम अगर किया जाय तो हर जगह काम हो सकता है। सर्वोदय पात्र, साहित्य-प्रचार आदि तो प्रारम्भिक कदम हैं, असल में इन कार्यक्रमों के फलस्वरूप नागरिकों में पारिवारिक भावना तथा सामूहिक नैतिक शक्ति का विकास हो, यही मुख्य उद्देश्य है जिससे समय-समय पर उत्पन्न होनेवाली समस्याओं का समाधान नागरिक स्वयं अपनी उस शक्ति से कर सकें। नागरिक-शक्ति के विकास का यह प्रयोग शहरों में काम करने वाले अन्य कार्यकर्ताओं के लिए भी उपयोगी साबित होगा, ऐसी आशा है। अगर सर्वोदय-कार्यकर्ता, जो अपेक्षाकृत स्थायी रूप से कहीं रहते हैं, वे अपने-अपने क्षेत्र में इस प्रकार 'प्रेम-क्षेत्र' बनाने की कोशिश करें तो मूल्य-परिवर्तन की प्रक्रिया को जो हमारा असली ध्येय है, हम आगे बढ़ सकेंगे इसमें सन्देह नहीं है।

—सिद्धराज

जो चेतन हैं, वे सामने आयें

राममूर्ति

अगर 'नये मोड़' को अपनाना है तो खादी-कार्यकर्ता को दुकानदारी से मुक्त करना चाहिए, क्योंकि व्यापार का मुनाफा खाने का जो स्वधर्म है, वह कार्यकर्ता के चरित्र को प्रभावित किये बिना नहीं रह सकता। चरित्र केवल अपनी निष्ठा और इच्छा-शक्ति से ही नहीं बनता, यद्यपि इनके बिना भी नहीं बन सकता, बल्कि उसके लिए प्रतिदिन मिलने वाला काम और वातावरण भी ऐसा होना चाहिए, जिसमें चरित्र का विकास सम्भव हो। विरोध और द्वन्द्व की स्थिति में चरित्र विकास प्रायः नहीं होता। यह सभी महसूस करते हैं कि आज जो स्थिति है, उससे निकलने की जरूरत है। इस पर कोई मतभेद नहीं है, लेकिन कठिनाई यह है कि इस स्थिति में से पहले कौन निकले, कैसे निकले और निकल कर कहाँ जाय!

खादी के काम को पूरे सर्वोदय-आन्दोलन की वर्तमान भूमिका में देखने की जरूरत है। खादी के 'नये मोड़' के दो अभिप्राय हो सकते हैं—एक तो खादी को लोक यन्त्र की दिशा में ले जाया जा सकता है और दूसरे, खादी परिवार स्वावलम्बन और ग्राम-स्वावलम्बन के द्वारा ग्राम-स्वराज्य की शक्ति का माध्यम बनायी जा सकती है। दोनों में बहुत अंतर है—इतना अंतर है कि संभव है, बहुत जल्द एक-दूसरे से बिलकुल अलग दिखायी देने लग जाय। नये मोड़ की चर्चा में थोड़ा रुक रुक कर गांधी के क्रांति-दर्शन पर फिर विचार कर लेना चाहिए और समझ लेना चाहिए कि उसमें खादी का क्या स्थान है। जिस तरह नयी तालीम शिक्षक से विद्यार्थी को केवल ज्ञान 'ट्रान्सफर' करने की पद्धति नहीं है, बल्कि उसके पीछे अहिंसक क्रांति की 'डाइनामिक्स' है। उसी तरह खादी केवल तन ढँकने के लिए नहीं है, बल्कि उसके पीछे आर्थिक मोर्चे पर एक बुनियादी क्रांति-दर्शन है। मैं अब ऐसा मानने लगा हूँ कि नये मोड़ की सफाई के लिए लोक-यन्त्र और खादी का अंतर स्पष्ट हो जाना चाहिए।

ज्यों-ज्यों खादी कार्य में मेरे दिन बढ़ते जा रहे हैं, मैं यह मानता जा रहा हूँ कि 'नये मोड़' की जिम्मेदारी संस्थाओं की न मान कर संस्थाओं में काम करने वाले या उसके बाहर के चेतन व्यक्तियों की माननी चाहिये और उनमें से भी मुख्य रूप से उन लोगों की जिनको हम अपने बीच बुजुर्ग या अगुआ मानते हैं। आज जरूरत इस बात की है कि हमारे चेतनाशील मुख्य व्यक्ति चुने हुए साथियों को लेकर एक क्षेत्र में बैठ जाय और उस क्षेत्र में नये मोड़ के विचार के अनुसार खादी को नयी दिशा में ले जाने की कोशिश करें। अपने प्रभाव के कारण वे संस्था की शक्ति और साधन को अपने कार्यक्रम के लिये इस्तेमाल कर सकते हैं। उनके व्यक्तित्व का यह लाभ होगा कि संस्था नये विचार का बहुत उग्र विरोध नहीं कर पायेगी। अगर हमारी मुख्य खादी-संस्थाएं 'नये मोड़' की चेतना रखने वाले साथियों को एक मुख्य व्यक्ति के नेतृत्व में क्षेत्र विशेष में काम करने के लिए निकाल सके तो गाड़ी कुछ आगे बढ़ सकती है। नये मोड़ को सामान्य कार्यकर्ताओं के मत्थे मढ़ देने से काम हरगिज नहीं चलेगा। सर्वोदय आन्दोलन के अन्य कार्यक्रमों की तरह 'नया मोड़' भी चेतन व्यक्ति को केन्द्र मान कर चलेगा, इसलिए चेतन व्यक्तियों की तलाश होनी चाहिए और उनके लिए अनुकूलता पैदा करनी चाहिए।

['आपस की बात' से]

भाषायी सम्प्रदाय से राष्ट्रीय एकता के खंड-खंड होने का खतरा

सत्तावाद के चक्कर में राष्ट्रीय व्यक्तित्व का लोप

—दादा धर्माधिकारी

आज कुछ ऐसी बातें कहना चाहता हूँ, जो आपके और मेरे लिए अप्रिय हैं। कृपा कर यह न मानिये कि इससे मुझे कोई आनन्द होने वाला है। जिस तरह एक रोगग्रस्त मनुष्य के मुँह से व्यथा-भरी आह, कराह निकलती है, उसी तरह मेरे मुँह से ये बातें निकलेंगी।

आज हमारे देश में संकीर्ण राज्यवाद का बोलबाला है। उसके कारण इस देश के छिन्न-विच्छिन्न हो जाने का डर खड़ा हो गया है; क्योंकि राज्यवाद और सत्तावाद, मनुष्यों को आपस में मिलाने के बदले उन्हें एक-दूसरे से अलग करते हैं। सत्ता और सम्पत्ति का यह स्वभाव ही है कि वे मनुष्यों को जुदा करती हैं।

आज इस बात की आवश्यकता खड़ी हो गयी है कि सत्ता की होड़ में पड़े हुए राजनीतिक पक्ष आपस में मिल कर यह संकल्प करें कि हम सत्ता की प्रतिस्पर्धा में देश के टुकड़े नहीं होने देंगे। आज एक ऐसा व्यावर्तक और संकीर्ण राज्यवाद प्रकट हुआ है, जो इस देश को टुकड़े-टुकड़े करने को उद्यत है। गुजरात और महाराष्ट्र की रचना के बाद अब विदर्भ का विवाद खड़ा हुआ है। देश के बँटवारे के समय एक पंजाब के दो पंजाब हुए थे, और अब वहाँ अलग पंजाबी सूबे का आन्दोलन शुरू हुआ है।

कहीं आप यह न मान बैठें कि यह स्वभाषा के प्रति प्रेम का अथवा उसके सम्बन्ध के अभिमान का एक परिणाम है या कि इसके पीछे कोई सांस्कृतिक भूमिका है। यह तो निरा राज्यवाद है। इस राज्यवाद का प्रतिकार कौन कर सकेगा? वही साधारण नागरिक कर सकेगा, जो अभी राज्यवादी बना नहीं है।

देश के कुछ विचारवान लोगों ने मुझे यह समझाने की कोशिश की है कि यह एक देश ही नहीं, यह तो एक उपखण्ड है, यानी अनेक देशों का बना हुआ एक महादेश है। और एक भारत-खण्ड के बन जाने के बाद फिर इस बात का कोई महत्त्व नहीं रहता कि वह अखण्ड है या कि भग्नखण्ड है। भारतवर्ष एक उपखण्ड नहीं, बल्कि एक अखण्ड देश है, और वह इसी रूप में हमें विरासत में मिला है। इस देश के इतिहास में कभी भी ऐसा दिन नहीं उगा, जब यहाँ के किसी साधारण नागरिक ने भी भारतवर्ष की इस एकता के बारे में प्रश्न किया हो। जब लोगों में एकता की प्रतीति नहीं थी, राष्ट्रीयता का विचार भी नहीं जागा था, उस समय भी इस देश के पुरातन साहित्य और इतिहास में कभी इसकी एकता के विषय में प्रश्न नहीं उठा। जब देश में आधुनिक राष्ट्रीयता का एक भी लक्षण प्रकट नहीं हुआ था, उन दिनों भी प्राचीन भारत में भारतीय एकता एक सिद्ध वस्तु रही है और आज उसी एक भारतीय राष्ट्र के अनेक राष्ट्र करने के लिये हम तत्पर हुए हैं।

पहले इस देश में अलग-अलग प्रान्त थे। अब यह अलग-अलग राज्यों का एक देश है। इस बहुराज्यवाद के साथ ही देश में बहुराष्ट्रवाद आया है। पाकिस्तान के मुसलमानों को हमने बहुत दोष दिया है। उन्होंने देश के दो राज्य ही नहीं, बल्कि दो राष्ट्र बना दिये। उन्होंने तो दो राष्ट्र ही बनाये, जब कि हम तो आज बहुराज्यवाद और बहुराष्ट्रवाद के मद में चूर हैं। हमने पाकिस्तान का विरोध किया था, लेकिन उसमें शक्ति नहीं थी। जिनके मन में बहुराष्ट्रवाद है, उनमें द्विराष्ट्रवाद का विरोध करने का नैतिक बल पैदा नहीं होता। इसलिए देश का जो बँटवारा हुआ है उसका दोष हम सबके सिर है। आज की घड़ी देश के समस्त नागरिकों के लिए आत्म परीक्षा की घड़ी है। यह भाषायी अहंवाद है, उद्दण्ड भाषावाद है। इसमें से भाषायी राज्यों का जन्म हुआ है।

क्या अखिल भारतीय जीवन कहीं दीख रहा है?

अब हम जरा इस बात पर विचार करें कि भाषायी राज्यों का परिणाम क्या होगा? माना कि शिक्षा मातृभाषा में दी जाय। यह भी माना कि राजकाज उस भाषा में चले, जिसे जनता समझती है। लेकिन क्या एक जनता दूसरी जनता के के सम्पर्क में ही नहीं आयेगी? आज जब सारी दुनिया सिकुड़ कर छोटी हो रही है, यह जरूरी हो गया है कि एक देश के लोग दूसरे देश में जायँ। आज आए दिन विदेशों के हमारे सांस्कृतिक प्रतिनिधि-मंडल या शिष्ट-मंडल भेजे जाते हैं। और विदेशों से यहाँ आते हैं। ऐसे समय में इस देश में जो सम्पर्क पहले से ही प्रस्थापित थे, उन्हें मिटाने की बातें चल रही हैं।

इस देश में लौकिक रीति से अखिल भारतीय जीवन की स्थापना का श्रेय अंग्रेजों को है। गैरसरकारी, राजनिरपेक्ष, अखिल भारतीय जीवन यहाँ अंग्रेजों के जमाने में शुरू हुआ। पेशावर के खान अब्दुल गफ्फारखाँ दक्षिण में जा सकते थे और दक्षिण के राजाजी पेशावर पहुँच सकते थे। लोग इनको पंजाबी या मद्रासी नेता नहीं, अखिल भारतीय नेता मानते थे। आज मैं यह पूछना चाहता हूँ कि स्वतंत्रता मिलने के बाद देश में ऐसे कितने देश-भक्त निकले हैं, जो इस तरह के अखिल भारतीय जीवनवाले हैं? आज इस देश में कोई अखिल भारतीय जीवन रहा ही नहीं।

यही हाल रहा, तो आगे परिणाम यह होगा कि काशी का विद्यार्थी दक्षिण में नहीं मिलेगा और रामेश्वर का विद्यार्थी काशी में नहीं दीखेगा। इन परिस्थितियों पर गम्भीरता के साथ विचार करना चाहिए। आखिर अखिल भारतीयता का आधार क्या होगा? किस प्रतिज्ञा के सहारे हम अखिल भारतीय जीवन खड़ा करना चाहते हैं? शिक्षा की एक प्रतिज्ञा थी, पर उसे तो हमने दूर हटा दिया। खैर! इसमें भी कोई हर्ज नहीं। मान कि शिक्षा अपनी-अपनी भाषा में मिलनी चाहिए। लेकिन आज तो डर यह लग रहा गया है कि कहीं हमारे प्रदेश में दूसरी भाषावाले लोग बड़ी संख्या में आकर न जायें! असम में और बेलगाँव में आज यही डर छाया हुआ है। भाषायी अल्पमत वाले इस देश में शरणार्थी भी बन सकते हैं। एक भाषा बोलने वाले लोग दूसरी भाषावाले प्रान्त में निराश्रित बन जाते हैं। क्या इससे पहले आपने ऐसी बातें सुनी थीं? पहले साम्प्रदायिक निराश्रित हो गये और आज भाषायी निराश्रित खड़े हुए हैं। इसका परिणाम क्या होगा? आगे चल कर उन्हें एक-दूसरे के प्रान्त से भी भागना होगा।

इस समस्या को हम पुलिस या फौज के हवाले नहीं कर सकते। इस देश के जो 'बेस्ट ब्रेन्स' हैं यानी जो सर्वोत्तम विचारवान पुरुष हैं और जो उदारतम हृदयवाले देशभक्त हैं, उन सबके सामने यह एक समस्या खड़ी है। विनोबा के मुट्ठी भर शान्ति सैनिक भी यह काम नहीं कर सकते। हाँ, वे अपनी आहुति दे सकते हैं।

लेकिन यदि देश के समझदार, शिक्षित और प्रतिष्ठित नागरिक यह निश्चय कर लें कि भिन्न भाषा-भाषी एक-साथ रह ही नहीं सकते और वे रहना चाहें तो भी हम समाज-जीवन में उसके लिए कोई मौका नहीं रहने देंगे, तो विनोबा तो क्या, उनके पिता अथवा पितामह भी आ जायँ तो भी वे कुछ नहीं कर सकेंगे। इसका संकल्प तो साधारण नागरिक को ही करना होगा। वही इसे कर सकेगा।

मनुष्य की विशेषता उसकी भाषा नहीं, वाणी है। भाषा मनुष्य का संस्कार है, वर्ण

राष्ट्रीय एकता के लिए कुछ सुझाव

● इसीलिए मैं कहता हूँ कि अलग-अलग भाषावाले लोगों के बीच सम्पर्क बढ़ाइये और एक-दूसरे की जितनी भाषाएँ परस्पर सीख सकें, सीखिये। पुस्तकों की मदद से भाषा सीखेंगे, तो उसका बोझ लगेगा, लेकिन जैसे जैसे आपसी सम्पर्क बढ़ेगा, वैसे-वैसे एक-दूसरे की भाषा का ज्ञान भी सरलता के साथ बढ़ता जायेगा। बालकों को तो अलग-अलग भाषाएँ समझने में खुशी ही होती है। इसलिए मेरा पहला सुझाव यह है कि भिन्न-भिन्न भाषा-भाषियों के बीच सम्पर्क चाहिए।

● दूसरा सुझाव यह है कि हरएक प्रान्त की नौकरी में दूसरे प्रान्तों के अमुक प्रतिशत लोग होने ही चाहिए और पड़ोसी प्रान्त के तो जरूर होने चाहिए। हरएक कॉलेज में दूसरे प्रान्तों के कुछ अध्यापक होने चाहिए। हरएक विश्वविद्यालय में दूसरे प्रान्तों के विद्यार्थियों के लिए अमुक स्थान सुरक्षित रहने चाहिए।

● तीसरा सुझाव यह है कि समूचे देश में उच्च शिक्षा एक अखिल भारत भाषा में ही दी जानी चाहिए। कुछ लोग हिन्दी को अखिल भारतीय नहीं मानते; क्योंकि वह मेरे भाई की भाषा है! अखिल भारत की भाषा तो वही हो सकती है, जो किसी एक प्रदेश की भाषा न हो! यह एक दुःखद परिस्थिति है। मैं कहता हूँ कि अगर आप हिन्दी को न अपना सकें, तो अंग्रेजी को अपनाइये, उच्च शिक्षा की व्यवस्था एक अखिल भारतीय भाषा में ही कीजिये।

बड़ौदा के शिविर में ता० १२-७-६१ को दिये गये भाषण से। 'भूमिपुत्र' से साभार, अनुवादक : श्री काशिनाथ त्रिवेदी।

असम में विनोबा के साथ कुछ दिन : २

महेन्द्रकुमार शास्त्री

"विन्या विनाभूत झाला सार्थनाम । प-रि-पू-र्ण-का-म आत्मा-राम ।।"

पिछले महीने की १५ ता० को पदयात्रा के समय प्रातःकालीन प्रार्थना के बाद बाबा ने मुझे बुलाया। मैं जिस उद्देश्य से बाबा के पास गया, उसके संबंध में एक दिन पहले ही बातचीत हो चुकी थी। आज चर्चा के पहले वात्सल्य-भाव से उन्होंने पूछा, "आपका महेन्द्रकुमार नाम तो माता के लिए उच्चारण करने में कुछ कठिन और बड़ा है। क्या आपकी माता भी आपको उसी नाम से बुलाती है?" मैंने कहा, "नहीं, वह तो मुझे 'मोहन' कह कर बुलाती हैं।" बाबा ने कहा, "महेन्द्र से मोहन नाम कुछ सरल और अच्छा है। माँ के लिए तो मोहन ही महेन्द्र है और उसकी दृष्टि में मोहन से और कोई अच्छा नाम नहीं हो सकता।" फिर कहने लगे "मेरी माता भी मुझे 'विन्या' कह कर बुलाती थी। मुझे भी माँ का दिया वह नाम बहुत अच्छा लगता और मैंने स्वयं माँ के द्वारा प्रदत्त इस नाम पर एक प्रशस्ति भी लिखी है।" मैंने पूछा : 'वह क्या?' तो बाबा ने ऊपर का यह दोहा तीन-चार बार कह कर सुनाया।

"विन्या विनाभूत, झाला सार्थनाम । परिपूर्णकाम, आत्मा-राम ।।"

—"विन्या 'विना' अर्थात् शून्य हो गया। शून्य-रूप होने से उसका नाम सार्थक हुआ। अब वह (शून्य होने पर भी—या—शून्य होने के कारण। —सं०) परिपूर्णकाम है," उसकी सांसारिक कामनाएँ पूर्व जीवन में ही शांत हो जाने से वह निष्काम है। इस जीवन में वह कारुण्यभाव से लोकाभ्युदय की दृष्टि से जो कुछ काम करता है, उसमें उसकी निष्काम-वृत्ति है। इसलिए वह तीनों तापों से दग्ध प्राणियों को दुःख से मुक्त करने के लिए अनवरत परिश्रम करने पर भी अपनी आत्मा में रमण करता है।

इस छोटे से दोहे में सूत्र रूप से बाबा ने अपने जीवन का चित्र अंकित कर दिया है। आकाश की एक संज्ञा शून्य है। पर शून्य होने पर भी वह विभु और व्यापक है। देह रूप में दिखाई देने वाली आत्मा भी वेदांत और नैयायिकों की दृष्टि से व्यापक है। बाबा ने अपने आपको शून्य अर्थात् अति नम्र बना कर विश्व के प्रायः सब प्राणियों के हृदय में स्थान कर लिया है। ईशावास्योपनिषद् में कवि की एक संज्ञा 'परिभूः' है। 'कविर्मनीषी परिभूः।' जो सृष्टि के सौंदर्य और सुख-दुःख को तटस्थ भाव से आत्मसात् कर पुनः उसी रूप में प्रकट कर शब्दबद्ध करता है, वह 'परिभूः' कहलाता है।

> बाबा भी भारतीय दलित प्रजा के दुःख-दैन्य का आकलन कर पुनः करुणा वृत्ति प्रजा के सामने प्रकट करते हैं और उनके मानस से निकली जनता की यह आर्त पुकार सुनने वाले के हृदय में प्रवेश करती है। शून्य-रूप बन कर बाबा ने उपनिषद के विराट पुरुष का रूप धारण किया है।

इस दोहे के बाद बाबा को मैंने बचपन से अभी तक के अपने जीवन की कुछ घटनाएँ भी सुनाईं। प्रसंगवश अपनी स्व० पत्नी का भी जिक्र किया; क्योंकि वह वर्धा में पढ़ते समय सुरगाँव में बाबा के साथ एक वर्ष तक ग्राम-सफाई का काम कर चुकी थी। उसका उल्लेख आने पर बाबा कहने लगे—"तब तो उसके साथ मेरी अनेक बार बातचीत हुई है, क्योंकि सफाई के लिए आने वाली बहनें अपने काम से निपटने के बाद कुछ प्रश्न भी करती थीं।" फिर तो अपने उस स्वच्छता-यज्ञ के संस्मरण सुनाने लगे।

आजकल की भूदान-यात्रा की तरह मैंने अपना यह यज्ञ भी प्रारंभ किया था। उसके पीछे सकल्प-बल था। अपने कंधे पर फावड़ा रख कर मैं प्रतिदिन सफाई के लिए जाता था। उस समय के मेरे कार्य को देख परशुराम की तरह मेरा नाम भी 'फावड़ाराम' रखना चाहिए। अपने इस यज्ञ में मैंने कभी नागा नहीं किया। वर्षा, सर्दी, गर्मी, हर ऋतु में मेरा सफाई का यह कार्य चलता रहता। एक बार तो अति वृष्टि के कारण नदी में जोर से बाढ़ आयी, उस पार जाना कठिन था। इसलिए मैंने वहाँ खड़े एक आदमी से कहा—'मंदिर में भगवान के पास जाकर यह निवेदन कर देना कि गाँव का भंगी गाँव की सफाई करने के लिए आया था, पर नदी में बाढ़ आने के कारण वह आकर वापिस लौट गया।' उसने इस बात की ओर पहले ध्यान नहीं दिया। इसलिए पुनः दो-तीन बार कह कर उससे यह बात दुहरा ली और उसने सचमुच उस दिन मंदिर में जाकर भगवान से प्रार्थना की—'गाँव का भंगी गाँव की सफाई करने आया था, पर नदी में बाढ़ आने के कारण वह वापिस आकर लौट गया।'

बाबा के इस स्वच्छता-यज्ञ के समय आजकल की भूदान-यात्रा की तरह लोग उनसे कहते : 'आप दो-तीन दिन तक सफाई के लिए आकर अपना यह क्रम बंद कर देंगे। आपको सफाई करते देख लोग उत्साह से इस यज्ञ में सम्मिलित हो जाते हैं, पर आपके मुँह फेरते ही पुनः सर्वत्र पहले की तरह 'प्रातः मलदर्शनम्' की उक्ति चरितार्थ होने लगेगी।' इसके उत्तर में विनोबाजी कहते : "मेरा यह यज्ञ एक दो दिन के लिए नहीं, पूरे बीस साल चलने वाला है; क्योंकि मैंने यह मान रखा है कि बीच में इस यज्ञ को छोड़ देने से कदाचित लोग अपनी आदत के अनुसार पुनः अपनी इस गंदी आदत को अपना लें। बीस साल तक बराबर यह यज्ञ चलता रहेगा तो नई पीढ़ी में सफाई के संस्कार घर कर लेंगे। फिर वे मिटाने पर भी नहीं मिट सकेंगे।"

विनोबा जिस किसी काम को लेते हैं, उसे पूरा करके ही छोड़ते हैं। उसमें उनका सातत्य-योग रहता है, अखंडता रहती है। अपने जीवन में उन्होंने अध्ययन से लेकर मजदूरी तक के जो भी काम लिये, उनमें यह सातत्य योग दृष्टिगोचर होता है। प्राचीन आरण्यक, उपनिषद् तथा सूत्रकालीन साहित्य में वर्णन आता है कि अध्येता जब अंतेवासी के रूप में किसी भी शास्त्र का अध्ययन प्रारंभ करता, तो उसका वह अध्ययन बारह वर्ष तक बराबर चलता रहता। बारह वर्ष के पहले उस शास्त्र में पूर्णता नहीं आती थी। एक शास्त्र का अध्ययन समाप्त करने के बाद जब वह पुनः दूसरे शास्त्र का अध्ययन प्रारंभ करता, तो उसके लिए भी उसे बारह वर्ष का समय देना पड़ता। इस प्रकार सतत अभ्यास करने के बाद ही वह उस शास्त्र का पारगामी विद्वान् होता था। अपने इस जीवन में बाबा ने न मालूम कितनी साधनाएँ की, पर सबके मूल में योग-शास्त्र का सातत्य-योग और चित्त की अनुरूपता है। इसीलिए उनकी प्रत्येक बात पर जनता की दृष्टि रहती है। लोग समझते हैं—बाबा कभी व्यर्थ नहीं बोल सकता। वह जो कुछ बोलता है, उसके पीछे उसका चिंतन, साधना और सामर्थ्य रहता है।

इसी तरह बाबा की यह भूदान यात्रा भी पिछले साढ़े दस साल से अखंड चल रही है। इस यात्रा ने भारत के और विदेश के अनेक लोगों का ध्यान आकर्षित किया है। समय समय पर अनेक विदेशी लोग उनकी इस यात्रा में सम्मिलित हो प्रेरणा प्राप्त कर पुनः अपने देश लौटे हैं। टेनिसन का पौत्र का पुत्र भारत आया था। वह बाबा के साथ घूमा। उसने जाकर एक किताब लिखी और एक पदयात्रा भी निकाली। लोगों ने उसका स्वागत किया। बाबा की इस यात्रा से देख अमेरिका आदि के लोगों ने आणविक शस्त्रों के खिलाफ बहुत बड़ी पदयात्रा चलायी है। वे लोग अमेरिका से मास्को तक गये हैं। चलते-चलते प्रचार करते और शस्त्रास्त्रों के विरुद्ध आवाज उठाते रहे।

बाबा का यह सातत्य-योग लोगों को कुछ दुःखदायक प्रतीत होता है, पर बाबा की दृष्टि में यह उनके लिए आनंददायक है। अपनी यात्रा के दौरान में असम की पुरानी राजधानी गढ़गाँव में उन्होंने कहा,

> "जो वस्तु इच्छाविरुद्ध लादी जाती उसमें ताप होता है। साधना के लिए स्वयं उठाई जाने वाली वस्तु तप होता है। तप में आनंद होता है। लोकसेवा के लिए जो तप होता है उसमें क्लेश का लेश मात्र भी अनुभव नहीं होता। मेरा भी यह तप है। इसमें आनंद ही है।"

शून्य आकाश सुख-दुःख, हर्ष विषाद सबसे परे या निर्लिप्त होता है। इसी तरह शून्य बन कर 'विन्या' ने भी सब वृत्तियों पर विजय प्राप्त कर ली है। वह उनका तटस्थ रूप से दर्शन करता है। इसलिए आकाश-दर्शन की तरह 'विन्या' के दर्शन से भी आनंद होता है।

होड़, सहयोग और सहाययोग

जगत् में तीन प्रकार से काम चल रहा है—होड़ (कॉम्पीटिशन), सहयोग (कोआपरेशन) और सहाययोग (सॅक्रीफाइस)।

होड़ सर्वप्रिय हो गयी है। लोगों की ऐसी भावना बन गयी है कि होड़ के बिना काम नहीं चल सकता, विकास नहीं हो सकता। होड़ से द्वेष, ईर्ष्या आदि आदि पैदा होते हैं, फिर भी इसकी आवश्यकता समझी जा रही है। महापुरुषों ने होड़ के बुरे परिणाम देख कर सहयोग का रास्ता निकाला।

सहयोग विकास के लिए लाभदायक है, परन्तु उसका झुकाव होड़ की तरफ न होकर "सहाययोग" की तरफ होना चाहिए। सहयोग तो आजकल बहुत लोग अपनाते हैं, सरकार ने भी उसे अपनाया है, परन्तु उसकी जड़ अभी होड़ में है और झुकाव भी उसी तरफ है।

सहाययोग की भावना सबमें ईश्वर-दत्त मौजूद है। दुःखी मनुष्य को देख कर दूसरा व्यक्ति होड़ या सहयोग की बात एक तरफ छोड़ कर सहायता के लिए दौड़ पड़ता है। आवश्यकता है, जीवन के हर क्षेत्र में इस "सहाययोग" को प्रवेश देने की। इसीका नाम सर्वोदय है। "सहाययोग" से किसी की हानि नहीं होती, न सहायता करने वाले की, न पाने वाले की। सहायता करने वाला भावना की दृष्टि से पहले से ज्यादा समृद्ध और श्रेष्ठ होता है, पाने वाला तो सुखी होता ही है।

—दयाराम, अनु[illegible]

हिसार में सर्वोदय-पुस्तक प्रदर्शनी—पं० सातवलेकरजी को 'ब्रह्मर्षि' की उपाधि—सीकर में पदयात्रा—शाहजहाँपुर में पदयात्रा और सर्वोदय-सम्मेलन—रतलाम के स्कूलों में कताई-प्रतियोगिता—शराबबंदी के लिए एक गाँव की खुली चिट्ठी—तमकुही रोड में सर्वोदय का सघन कार्य—करनाल की एक बहन का अनुकरणीय प्रयास—काशी में साहित्य-प्रचार—बालाघाट में साहित्य-प्रचार—बिहार में पशुकल्याण सप्ताह—जोधपुर में नशाबंदी की सभा—बीगोद में ग्रामसभा की स्थापना—चौपड़ा रामनगर ग्राम-सेवा केन्द्र—बनलाई में शराबबंदी के संकल्प—उज्जैन के आदर्श अंबर सहकारी मंडल का खादी-कार्य—प्रो० गोराजी की सत्याग्रह-यात्रा प्रारम्भ—माता शांतिदेवी दिवंगत।

हिसार के सर्वोदय पुस्तक भंडार ने ११ सितंबर से १७ सितंबर तक 'सर्वोदय पुस्तक प्रदर्शनी' का आयोजन किया था। इसमें सर्वोदय-साहित्य के अलावा रस्किन, टॉल्स्टाय आदि महान विचारकों की पुस्तकें भी रखी गयी थीं। ●

पचरुखा (देवरिया) में देवरहवा बाबा द्वारा वेदों के वयोवृद्ध विद्वान पं० श्रीपाद दामोदर सातवलेकर को १९-२० अक्टूबर को 'ब्रह्मर्षि' की उपाधि देने का आयोजन होगा। ●

सीकर जिले में ११ सितंबर से २ अक्टूबर तक २६ मील की पदयात्रा हुई। पत्र-पत्रिकाओं के ११ ग्राहक बने। ●

शाहजहाँपुर के सर्वोदय-मंडल के तत्त्वावधान में २ से ११ अक्टूबर तक सर्वोदय-पदयात्रा का आयोजन हुआ। इसमें सर्वोदय विचार प्रचार के अतिरिक्त जिले में प्राप्त जमीन का वितरण भी किया जायेगा। ३-४-५ नवम्बर को शाहजहाँपुर जिला सर्वोदय-सम्मेलन होगा। ●

रतलाम जिले में 'गांधी-जयंती' के अवसर पर १६ प्राथमिक विद्यालयों में कताई प्रतियोगिताएँ हुईं। ●

सहजना ग्राम, जि० मुंगेर के ग्रामवासियों ने एक खुली चिट्ठी में बिहार सरकार एवं सब दलों और संस्थाओं से अपील की है कि "हम लोग हमारे गाँव में सन् '५२ से शराब की दुकान न खोलने पर जोर दे रहे थे और सफल भी हुए। किन्तु आबकारी विभाग वालों ने अगस्त '६१ से दुकान खोलने का पुनः प्रयास किया। ४ सितंबर को एक ओर बिहार राज्य के आबकारी मंत्री दिल्ली में नशाबंदी-सम्मेलन में भाषण दे रहे थे और उसी रोज इधर सहजना में शराब की दुकान का उद्घाटन भी हुआ। हमारे सब प्रयत्नों को ठुकराते हुए आबकारी अफसरों ने हरिजन के नाम पर मुंगेर के धनी व्यक्ति को शराब की दुकान खोलने के लिए मौका दिया।" ●

तमकुही रोड, देवरिया में निम्नलिखित प्रवृत्तियाँ चलती हैं: सर्वोदय-मंडल और सर्वोदय पुस्तकालय तथा वाचनालय। इन प्रवृत्तियों के माध्यम से इस गाँव में सर्वोदय-पात्र, सम्पत्तिदान, सूतांजलि आदि कार्यक्रमों पर जोर दिया जाता है। पिछले दस माह में करीब १०० पात्रों से ३४६ रु. ७७ नये पैसे प्राप्त हुए हैं। इस कस्बे में तीन साल से एक परम्परा यह कायम हो गयी है कि 'विनोबा-जयंती' के अवसर पर सम्पत्तिदान पर जोर दिया जाय। कुछ लोग नकद रकम भी देते हैं और कुछ लोग दुने मूल्य की खादी पहन कर सहायता करते हैं। सन् '६० में ७ गुण्डियाँ सूतांजलि में मिलीं। '६१ में यह संख्या ११ तक पहुँची। इस गाँव में 'भूदान-यज्ञ' पत्र के १२ ग्राहक बने हैं। पुस्तकालय में २०० के करीब पुस्तकें हैं।

पिछले तीन साल से प्रतिवर्ष वार्षिकोत्सव मनाया जाता है। १९६०-६१ के आय व्यय में १२६८ रु० ८९ न० पै० की आय है और ८३४ रु० ६४ न० पै० खर्च हुआ तथा ४३४ रु० २५ न० पै० शेष जमा है।

इस प्रकार ५०० घरों के इस छोटे-से गाँव में सघन रूप से सर्वोदय की प्रवृत्तियाँ चल रही हैं। ●

बिहार प्रांतीय सर्वोदय पदयात्रा-टोली भागलपुर जिले के पजवारा गाँव से ३० सितम्बर को आयी। इस अवसर पर 'भूदान-यज्ञ' पत्रिका के ६ ग्राहक बने और १८ दाताओं द्वारा १६१ कट्ठा जमीन दी गयी।

करनाल की एक बहन श्री लज्जावती दत्त ने एक रिपोर्ट में लिखा है कि १ सितम्बर से २ अक्टूबर तक का समय एअर फोर्स हेडक्वार्टर दिल्ली में बिताने का मौका मिला। यह बहन ८ साल पहले वहाँ ५ साल तक रही थीं। उस वक्त एक महिला चरखा संघ खोला था, जो अब काफी उन्नति पर है। बहनों ने सूत-कताई की कमाई पर १६० चरखे प्राप्त किये। ७५ रु० का साहित्य इस एक महीने की अवधि में बेचा और जो कमीशन मिला वह तीन स्कूलों में बाँट दिया गया। इससे और भी अच्छा प्रभाव पड़ा। एक सज्जन ने ३१ रु० पत्रिकाओं के लिए भेंट दिये हैं। इसके पूर्व भी यहाँ के लोगों ने सर्व सेवा संघ की अपील पर ३७५ रु० अर्थ-संग्रह अभियान में पंजाब सर्वोदय मंडल को दिये। ●

काशी के जिला सर्वोदय-मंडल से प्राप्त सूचना के अनुसार काशी में ११ सितम्बर से २ अक्टूबर तक की अवधि में ८४ रु० का साहित्य बिका और भूदान पत्र-पत्रिकाओं के २५ ग्राहक बने एवं काशी के विभिन्न स्कूल-कालेजों में सर्वोदय के प्रमुख कार्यकर्ताओं के भाषण हुए। ●

बालाघाट के सर्वोदय-मंडल ने विनोबा-गांधी जयंती की अवधि में २७० रु. का साहित्य बेचा और ९ ग्राहक बनाये। ●

बिहार राज्य पशु-क्लेश निवारण समिति ने ४ से १० अक्टूबर तक 'पशु कल्याण सप्ताह' मनाया। ●

जोधपुर में गांधी-जयन्ती के अवसर पर एक सभा नशाबन्दी-सभा के रूप में आयोजित की गयी। सभा ने शहर में नशाबन्दी-अभियान चलाने पर जोर दिया। ●

बीगोद ग्राम (जि० भिलवाड़ा) में गांधी-जयन्ती के अवसर पर ग्रामसभा की स्थापना की गयी। ग्रामसभा ने शराबबन्दी और अनिवार्य शिक्षा पर जोर दिया। किसी भी प्रकार का टैक्स जनता पर न लगाने का अनुरोध करते हुए प्रति फसल हरएक परिवार एक रुपया स्वेच्छा से दे, ऐसा सर्वसम्मति से प्रस्ताव पास हुआ। ●

बिहार के ग्राम सेवा केंद्र, चौपड़ा रामनगर द्वारा तीन माह में २०० कट्ठा जमीन की प्राप्ति हुई और ३ भूदान-किसानों को दखल दिलाया और पत्रिकाओं के ५ ग्राहक बनाये गये।

प० निमाड (मध्य प्रदेश) जिले के ग्राम बनलाई में २१० व्यक्तियों ने शराब न पीने के और १२ व्यक्तियों ने शराब न बनाने के संकल्प किये। ग्रामसेवा-केन्द्र की ओर से बाढ़पीड़ित सहायता के रूप में ७५३ रु० नकद और ३५॥ मन अनाज भेजा गया। ●

उज्जैन में आदर्श अम्बर सहकारी मंडल ने उज्जैन जिले के बाढ़पीड़ित क्षेत्र में साढ़ेतीन हजार रु० की खादी वितरित की है। 'गांधी-जयन्ती' के अवसर इस संस्था ने २ से ६ अक्टूबर तक २५ हजार रु० की खादी हुण्डी और ३२ हजार रु० की खादी बेची। मंडल का प्रयत्न है कि इस माह के अंत तक १ लाख रु० की खादी बेची जाय। ●

सेवाग्राम से ८ अक्टूबर को मूसलाधार वर्षा में प्रो० गोरानी और उनके १२ साथियों की सत्याग्रह यात्रा को सेवाग्राम-आश्रम के संचालक श्री चिमनलालजी एवं श्री आर्यनायकम्‌जी तथा श्री राधाकृष्णजी आदि ने सेवाग्राम-परिवार की ओर से बिदाई दी। पदयात्रा में महाराष्ट्र, आन्ध्र, मैसूर, म० प्र०, उ० प्र० एवं बिहार के १२ पदयात्री हैं। यह दल ता० १४-१५ को नागपुर होते हुए १४ नवम्बर को जबलपुर पहुँचेगा। ●

हिसार की एक निष्ठावान महिला कार्यकर्त्री माता शांतिदेवी का स्वर्गवास पिछले सितम्बर माह में हुआ। दिवंगत आत्मा की शांति के लिए प्रार्थना है। ●

गांधी-जयंती समाचार

नीचे दिये हुए स्थानों से 'गांधी-जयन्ती' मनाने के समाचार हमारे यहाँ प्राप्त हुए हैं:

सर्वोदय युवक सम्मेलन, आगरा; बड़ाबाजार सर्वोदय संघ, कलकत्ता, ग्राम चक माधोपुर, (जिला इलाहाबाद); ग्रामदानी गाँव मगरौठ, ग्रामसेवा-केन्द्र, बनलई (जि० पश्चिम निमाड); सर्वोदय स्वाध्याय-योजना एवं कताई-मंडल, टीकमगढ़; लोकभारती, शिवदासपुरा, बिहार खादी-ग्रामोद्योग-संघ, क्षेत्रीय कार्यालय, भागलपुर, गांधी स्मारक निधि छतरपुर (मध्य प्रदेश); नरसिंहपुर-मुजफ्फरपुर (बिहार); ग्रामस्वराज केन्द्र सुरखंड (जिला बालाघाट); गांधी अध्ययन केन्द्र, हिसार; ग्रामोदय-समिति, सादड़ी मारवाड़, भारत सेवक समाज, मुंगेर; बिहार खादी-ग्रामोद्योग संघ, पजवारा, भागलपुर; जिला सर्वोदय मंडल, देहरादून; गांधी आश्रम, शाहजहाँपुर; रुद्रप्रताप आश्रम, नरसिंहपुर (म० प्र०)।

नई तालीम अध्ययन-मंडल

अ. भा. नई तालीम-सम्मेलन, जो ९-१०-११ सितम्बर को पचमढ़ी में हुआ था, उसमें पारित हुए प्रस्ताव में नई तालीम अध्ययन मंडल की स्थापना पर जोर दिया गया था। तदनुसार १९६१-६२ के लिए एक अध्ययन-मंडल बनाया गया। नीचे दिये हुए सज्जन इसके सदस्य हैं:

(१) श्री जी० रामचन्द्रन् अध्यक्ष
(२) ,, द्वारिका प्रसाद सिंह (बिहार)
(३) ,, करण भाई (उत्तर प्रदेश)
(४) ,, काशिनाथ त्रिवेदी (मध्य प्रदेश)
(५) ,, जुगतराम दवे (गुजरात)
(६) ,, के. एस आचार्लु (आंध्र)
(७) ,, राधाकृष्ण मेनन (केरल)
(८) ,, क्षितीश राय (बंगाल)
(९) जनाब सईद अन्सारी (दिल्ली)
(१०) श्री एस० मोहनी (असम)
(११) श्री ओमप्रकाश त्रिखा (पंजाब)
(१२) ,, त्रिलोकचंद (राजस्थान)
(१३) ,, देवीप्रसाद (महाराष्ट्र)
(१४) ,, के० अरुणाचलम् (तामिलनाड)
(१५) ,, डी०एल० आनन्दराव (आन्ध्र)
(१६) ,, मार्जरी साइक्स (तमिलनाड)
(१७) ,, आचार्य राममूर्ति (बिहार)
(१८) ,, प्रभाकर (आंध्र)
(१९) ,, जे० के० शुक्ल (दिल्ली)
(२०) ,, डी० पी० नायर (दिल्ली)
(२१) ,, राधाकृष्ण संयोजक

अपने पीड़ित भाइयों की सहायतार्थ

बाढ़ग्रस्त क्षेत्रों की ओर दौड़ पड़ें

बिहार की सभी सर्वोदय एवं रचनात्मक संस्थाओं और कार्यकर्ताओं से श्री जयप्रकाश नारायण की अपील

मुंगेर तथा भागलपुर, गया और पटना जिले के कुछ हिस्सों में प्रकृति के प्रकोप से उत्पन्न विभीषिका के प्रतिदिन नये-नये समाचार सुनने के बाद ही उस संकट की विशालता, जिस पर सहसा विश्वास नहीं होता, मेरी समझ में आयी। दो दिन पूर्व मुझे इसकी कल्पना नहीं थी कि हमारे सामने एक ऐसी विपत्ति आयी हुई है, जिसकी गंभीरता संकटग्रस्त क्षेत्रों की ग्रामीण जनता के लिये सन् १९३४ के भयंकर भूकम्प से भी अनंत गुणी ज्यादा है।

बिहार की सरकार यथासंभव सब कुछ करने का प्रयास कर रही है। केन्द्रीय सरकार की भी पूर्ण सहायता हमें प्राप्त होगी। लेकिन यह एक ऐसी घटी है, जब लोग सरकार पर ही सब कुछ करने के लिए नहीं छोड़ सकते। अपने पीड़ित भाइयों के प्रति उनका भी कोई आवश्यक कर्तव्य है, जिसे टाला नहीं जा सकता।

मुझे यह कहते हुए प्रसन्नता होती है कि बिहार सर्वोदय मंडल ने कुछ समय के लिए अपने सारे कार्यक्रमों को स्थगित कर दिया है।

मंडल की ओर से तथा अपनी ओर से मैं सभी शांति-सैनिकों, लोक-सेवकों तथा सर्वोदय कार्यकर्ताओं से अपील करता हूँ कि वे अपने सारे वर्तमान कार्यक्रमों को स्थगित कर इस संकट की पुकार पर दौड़ जायँ। बिहार खादी-ग्रामोद्योग संघ, गांधी-स्मारक निधि, हरिजन सेवक संघ तथा अन्य सर्वोदयी संस्थाओं के कार्यकर्ताओं से भी मेरी अपील है कि वे अपनी-अपनी संस्थाओं से आवश्यक अनुमति प्राप्त कर पीड़ित क्षेत्रों की ओर दौड़ पड़ें।

आशा है, इस मौके पर सभी राजनीतिक पक्षों, समाज-सेवी संस्थाओं और विश्वविद्यालयों के प्रतिनिधियों तथा अन्य प्रमुख व्यक्तियों की एक गैरसरकारी कमिटी शीघ्र ही राज्यपाल की अध्यक्षता में गठित होगी, जो (क) बिहार की तथा भारत की जनता से सहायता के लिए अपील करेगी और (ख) सभी गैरसरकारी प्रयासों में, जिनमें सर्वोदय-संस्थाओं के प्रयास भी शामिल होंगे, अनुबंध स्थापित करेगी।

पटना,
११-१०-६१ —जयप्रकाश नारायण

संघ-समाचार :

सर्व सेवा संघ के अध्यक्ष श्री नवकृष्ण दक्षिण के दौरे पर गये हैं। ता० १७-१८ दो दिन मार्जरी बहन के यहाँ कोटगिरि में, ता० १९ को मैसूर में और ता० २० से २५ अक्टूबर तक दक्षिणपुर्व क्षेत्र में उनका कार्यक्रम था। यह दौरा समाप्त करके अक्टूबर अन्त तक प्रबंध-समिति की मीटिंग में भाग लेने के लिए वे काशी आयेंगे।

बिहार में 'बीघा-कट्ठा' अभियान

—पूर्णियाँ जिले के पूर्व कोढ़ा अंचल में बीघा-कट्ठा अभियान-टोली ने १२ पंचायत क्षेत्र के २७७ भूमिवानों से ४२०० कट्ठा जमीन के दानपत्र प्राप्त किये। इस अवधि में ६८ मील की पदयात्रा द्वारा ४७ रुपये की सर्वोदय-साहित्य की बिक्री की गयी तथा विभिन्न गाँवों में २६ आम सभाओं द्वारा सर्वोदय विचार समझाया गया।

इसी प्रकार कृत्यानगर पश्चिम अंचल में ६८ दानपत्रों द्वारा २३५ कट्ठा एवं कोढ़ा पश्चिम अंचल में १४०० कट्ठा जमीन भूदान में मिली।

—मुजफ्फरपुर जिले के सीतामढ़ी सब-डिविजन के शिवहर थाने में १ से १५ सितम्बर तक ८ दानपत्रों द्वारा १२६ कट्ठा १५ धूर का भूदान मिला।

बाढ़पीड़ित क्षेत्रों में सहायता के लिए

'बीघा-कट्ठा अभियान' १५ दिन के लिये स्थगित

बिहार सर्वोदय-मंडल की कार्यसमिति ने यह तय किया है कि मुंगेर एवं अन्य इलाकों में बाढ़ के कारण जो विनाश हुआ है, उसके लिए 'बीघे में कट्ठा' अभियान पंद्रह रोज के लिए स्थगित किया जाय और सब कार्यकर्ता एकदम बाढ़पीड़ित इलाकों में राहत एवं सहायता-कार्य में लग जायँ।

श्री जयप्रकाश नारायण बाढ़पीड़ित क्षेत्रों में ता० १६ अक्टूबर से घूमेंगे।

बिहार सर्वोदय मंडल, पटना
(तार से प्राप्त) —रामनारायण सिंह, संयोजक

बाढ़पीड़ितों की सेवार्थ एक माह के लिये प्रशिक्षण स्थगित

श्रमभारती खादीग्राम, जमुई के शिक्षक और प्रशिक्षार्थियों ने आचार्य श्री राममूर्ति के मार्गदर्शन में मुंगेर सदर सबडिविजन के बाढ़पीड़ित खड़गपुर क्षेत्र में आवश्यक सहायता एवं सेवा-कार्य के लिये १२ अक्टूबर को प्रस्थान किया। ज्ञातव्य है कि श्री जयप्रकाश नारायण की अपील को मद्दे नजर रखते हुए ही ऐसा निर्णय किया गया। विद्यार्थियों और कार्यकर्ताओं की संख्या २६ है।

अलीगढ़ में शान्ति-सैनिकों के आगमन से लोग आश्वस्त

अखिल भारत शान्ति-सेना मण्डल की संयोजिका श्रीमती आशादेवी के नेतृत्व में सर्व सेवा संघ के शान्ति-सेना विद्यालय के तथा उत्तर प्रदेश के कुछ शान्ति-सैनिक, जो दंगे की खबर पाकर तुरन्त अलीगढ़ पहुँचे थे, शहर में शान्ति कायम रखने के काम में पिछले कुछ दिनों से लगे हुए हैं। वहाँ से प्राप्त समाचारों के अनुसार—

"शान्ति-सेना के आ जाने से लोग प्रसन्न हैं। सिर पर पीला रूमाल तथा बाँह पर शान्ति-सेना की पट्टी लगाये हुए शान्ति-सैनिक जिधर से निकल जाते हैं उधर लोग "शान्ति-सेना आ गयी" कह कर आश्वासन की भावना प्रकट करते हैं। सवेरे ६ बजे से ८ बजे तक शान्ति-सैनिक शहर में प्रभात-फेरी निकालते हैं तथा ९ से १२ तक पीड़ित परिवारों से प्रत्यक्ष सम्पर्क करके उनकी कठिनाइयों, समस्याओं, आवश्यकताओं आदि का अध्ययन करते हैं, उन्हें सान्त्वना देते हैं और सर्वोदय-विचार व शान्ति-सैनिकों की कार्य-पद्धति आदि के विचार समझाते हैं, जिसका अच्छा प्रभाव पड़ रहा है। विभिन्न पक्षों के लोगों से सम्पर्क स्थापित कर लिया गया है और वे भी प्रभात-फेरी में भाग लेते हैं।

सायंकाल ४ बजे शान्ति-सैनिक तथा अन्य स्थानीय कार्यकर्ता एवं प्रमुख व्यक्ति आपस में मिल कर दिन भर किये हुए कार्य के बारे में तथा अन्य समस्याओं पर विमर्श करते हैं तथा आगे के दिन का कार्यक्रम निश्चित करते हैं।

इस प्रकार अभी काम चल रहा है स्थानीय कार्यकर्ताओं ने एक सहायता निधि भी एकत्रित करना प्रारम्भ कर दिया है, जिसके द्वारा क्षतिग्रस्तों में से ऐसे, जिनका सब कुछ नष्ट-भ्रष्ट हो गया है और जिन्हें कोई दूसरा सहारा देने वाला भी नहीं, उनकी तात्कालिक आवश्यकता की पूर्ति के लिए झोपड़ी बनवाने, कपड़ा-बर्तन तथा अन्य सामान देने का काम आरम्भ किया जा रहा है।

सबका अच्छा सहयोग मिल रहा है तथा ऐसा दिखता है कि शीघ्र ही शहर की सामान्य स्थिति हो जायगी।"

हिन्दी भाषा के महाकवि श्री सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' का ६५ वर्ष की अवस्था में ता० १५ अक्टूबर को सुबह १० बजे इलाहाबाद में देहावसान हो गया। 'निरालाजी' लगभग आधी शताब्दी तक हिन्दी के साहित्यिक आकाश में एक देदीप्यमान नक्षत्र की तरह चमकते रहे।

'भूदान-यज्ञ' परिवार उनके प्रति अपनी श्रद्धांजलि अर्पण करता है।

इस अंक में

श्रीकृष्णदत्त भट्ट, अ० भा० सर्व सेवा संघ द्वारा भार्गव भूषण प्रेस, वाराणसी में मुद्रित और प्रकाशित। पता : राजघाट, वाराणसी-१, फोन नं० ४१९१
पिछले अंक की छपी प्रतियाँ ९५०० : इस अंक की छपी प्रतियाँ ९५७० एक अंक : १३ नये पैसे
वार्षिक मूल्य ६)

संपादक : सिद्धराज ढड्ढा

वाराणसी : शुक्रवार | २७ अक्टूबर '६१ | वर्ष ८ : अंक ४

स्वराज्य और सर्वोदय

विनोबा

सन् १९३४ में बापू यहाँ ठहरे थे। जहाँ-जहाँ बापू गये हैं, लोग उनकी याद करते हैं; क्योंकि वे एक व्यक्ति नहीं रह गये थे, समूचे राष्ट्र की भावना के प्रतिनिधि बन गये थे। उनकी वाणी में और उनके चिंतन में लोक-वाणी और लोक-चिंतन प्रकट होता था। इतनी विशाल राष्ट्र-भावना उनके कारण पैदा हुई थी। हर मन में देश की आजादी का संकल्प था। वह ध्येय कभी-न-कभी प्राप्त करना था, क्योंकि पूरे देश ने इसका संकल्प किया था। संकल्प सिद्ध होना ही है, यह आत्मा का लक्षण है।

गांधीजी ने दूरदृष्टि से काम किया था। उन्हें लगा कि स्वराज्य पायेंगे तो लोग समझेंगे कि हमने सब पाया और वे भोगविलास में रहेंगे। इसलिये पुराना ध्येय खत्म होने के पहले ही नया ध्येय लोगों के सामने रखना चाहिये। पुराना शब्द कृतकार्य होने के पहले ही दूसरा शब्द देना चाहिये, यह सोच कर उन्होंने शब्द दे दिया—'सर्वोदय'।

'स्वराज्य के बाद सर्वोदय का काम करना चाहिये,' यों कहा और उन्होंने स्वराज्य के साथ-साथ सर्वोदय का काम शुरू किया था। सर्वोदय के मानी है 'सबका राज्य'। हमारा ही है, ऐसा नहीं, सबका है—तो हमारा भी है। हिंदुस्तान को स्वराज्य मिला, लेकिन हमारे गाँवों को स्वराज्य नहीं मिला। जब तक सर्वोदय नहीं होता, तब तक शोषण कायम रहता है, शासन की पकड़ बनी रहती है, लोकमानस मुक्त नहीं होता है। इसलिये गाँव-गाँव में स्वराज्य लाना चाहिये। यह अमल में लाना हो तो ग्रामस्वराज्य-आंदोलन गाँव-गाँव में करना चाहिये।

देश को स्वराज्य मिला, लेकिन वह पूरा नहीं, क्योंकि देश के टुकड़े हो गये। आज ही रास्ते में बात हो रही थी कि स्वराज्य के लिये त्याग और कष्ट सहन करना पड़ता है। लेकिन बंगाल से ज्यादा तकलीफ अन्य किसी प्रदेश को नहीं हुई। उसके बाद पंजाब को तकलीफ हुई। बंगाल प्रदेश के दो भाग हुए। इसी बंग देश के विभाजन के खिलाफ (बंग-भंग) एक जमाने में देश में बहुत जोरदार आंदोलन हुआ था। लेकिन स्वराज्य के बाद उसके दो विभाग हो ही गये। पहले जो विभाजन करने की बात थी, उसमें एक ही प्रांत के दो भाग करने की थी। लेकिन अब तो दो अलग-अलग राष्ट्र हो गये! यह दुःख भारत माता के हृदय में रहा। इसी तरह पंजाब के भी दो टुकड़े हो गये। इसीलिये मैंने कहा कि स्वराज्य पूर्ण अंश में नहीं मिला। स्वराज्य आंदोलन अंश में कुछ सफल हुआ, लेकिन पूरा नहीं। पूरा सफल होता तो आगे के काम के लिये हमें ज्यादा सुविधा मिलती।

अब हमें नये सिरे से ग्रामस्वराज्य पर जोर देना चाहिये—हिंदुस्तान में भी और पाकिस्तान में भी। देश के दो टुकड़े हो गये हैं, इसका मतलब यह नहीं है कि दिल के भी दो टुकड़े हो गये हैं। दिल तो एक ही होगा—भले राज्य-व्यवस्था अलग-अलग हो। राज्य-व्यवस्था को इतना महत्त्व क्या देना! हमने तो जाहिर किया है कि जैसे-जैसे विज्ञान बढ़ेगा, राजनीति का महत्त्व नहीं रहेगा। इसलिये राज्य-व्यवस्था अलग रही तो हर्ज नहीं है, दिलों को जोड़ना होगा। वह तब होगा जब पाकिस्तान और हिंदुस्तान में ग्राम-स्वराज्य होगा।

आज ग्राम स्वराज्य न है हिंदुस्तान में, न है पाकिस्तान में, न है ईरान में, न है अरबस्तान में—दुनिया के दूसरे देशों में भी नहीं है। ग्राम-स्वराज्य का, सर्वोदय का आंदोलन विश्व-व्यापक होना चाहिये। इसके पहले स्वराज्य का आंदोलन सिर्फ हिंदुस्तान में ही नहीं हुआ, हर देश में हुआ। हर देश स्वतंत्र होना चाहिये था। आज भी आजादी की लड़ाई दूसरे देशों में भी हो रही है, जैसे अफ्रीका में देश-स्वराज्य का आंदोलन अब भी चल रहा है। चंद दिनों में वह पूरा होगा। उसे पूरा होना ही है।

जहाँ ग्राम-स्वराज्य हुआ, वहाँ नगर-स्वराज्य होगा ही। जहाँ गुलाम आजाद हो गया, वहाँ मालिक भी स्वाधीन हो गया। मालिक कौन है? गुलाम का गुलाम! मालिक को प्यास लगी है—लेकिन जब गुलाम पानी का प्याला हाथ में देगा, तब कहीं मालिक पानी पियेगा! कहाँ नहाना है, यह भी मालिक को मालूम नहीं! इसलिये जहाँ मालिक को आजाद किया, वहाँ गुलाम को आजाद करना ही होगा। ग्राम-स्वराज्य और नगर-स्वराज्य, दोनों होने चाहिये।

कुल दुनिया में नगर-स्वराज्य और ग्राम-स्वराज्य होगा, तब सर्वोदय होगा। हिंसा की आवश्यकता खत्म होगी, हिंसा के साधन क्षीण होंगे। इसलिये हिन्दुस्तान और पाकिस्तान, जो एक टुकड़े हो गये हैं, उनको हृदय से जोड़ने का उपाय भी ग्राम-स्वराज्य ही है।

हमने सुना कि यह १८५ घरों का गाँव है और ग्रामदान दिया है। यहाँ के लोगों को यह ध्यान में रखना चाहिये कि उन्होंने सिर्फ इस गाँव को जोड़ने का काम नहीं किया है, बल्कि सारे भारत को, भारत और पाकिस्तान को, भारत और दूसरे देशों को जोड़ने का काम किया है—इतने बड़े काम में मदद दी है। कुल दुनिया को जोड़ने का यही एक रास्ता है।

हम यहाँ आये तब यहाँ दंगे चलते थे। तो लोगों को लगा कि हम दंगे मिटाने आये हैं। वह तो बहुत छोटा-सा काम है। हम तो दीपक लेकर आयेंगे—अंधेरा मिटाने के लिये, उसे झाड़ू से नहीं मारेंगे। एक कहानी है—अंधेरा बहुत छाया था। एक भाई उठ कर झाड़ू हाथ में लेकर जोर-जोर से पीटने लगे। उनके पड़ोसी जाग गये और पूछने लगे, 'भाई, तुम यह क्या करते हो!' बोले—अंधेरे को हटा रहा हूँ। पड़ोसी ने कहा, 'अरे, इस तरह करोगे तो सूर्योदय तक तुम्हें यही काम करना होगा! तुम दीपक ले आओ तो यह अंधेरा खत्म होगा।'

मतलब हम दंगे मिटाने के लिये यहाँ नहीं आये। हम तो ग्रामदान का विचार समझाने आये हैं। जिसमें सार नहीं है, उसका उच्चारण बार बार नहीं करना चाहिये। मरे हुए साँप को मारने से कोई लाभ नहीं है। सबके दिलों को जोड़ने का काम करना चाहिये।

एक डॉक्टर थे। हर बीमारी पर एक ही दवा बताते थे—कैस्टर ऑइल! हम सब बीमारी पर एक ही दवा बताते हैं—ग्रामदान की। यह ऐसी वस्तु है, जो सबको लागू होती है, सबको जोड़ने का काम करती है। हिंदुस्तान में जितने रोग हैं—उन पर पहला इलाज ग्रामदान है, दूसरी दवाएँ बाद में आयेंगी।

[पड़ाव : बारमती, असम, ११-१०-'६१]

'राज्य' एक बात है और 'स्वराज्य' दूसरी बात है। राज्य हिंसा से प्राप्त किया जा सकता है; किन्तु 'स्वराज्य' बिना अहिंसा के असंभव है। इसलिए जो विचारशील हैं, वे 'राज्य' को नहीं चाहते; बल्कि यह कह कर तड़पते रहते हैं कि "आओ, हम सब स्वराज्य के लिये जतन करें।" "नत्वहं कामये राज्यम्" यह उनका निषेधक और "यतेमहि स्वराज्ये"—यह विधायक राजनैतिक उद्घोष होता है।

'स्वराज्य' वैदिक परिभाषा का एक शब्द है। उसकी व्याख्या इस प्रकार की जाती है : स्वराज्य माने प्रत्येक व्यक्ति का राज्य, यानी ऐसा राज्य, जो प्रत्येक को 'अपना' लगे, अर्थात् सबका राज्य, दूसरे शब्दों में 'रामराज्य'।

('स्वराज्य-शास्त्र' की भूमिका से) —विनोबा

जय जगत् स्फूर्तिः जीवनं सत्यशोधनम्

भूदानयज्ञ

लोकनागरी लिपि *

राजनीती और स्त्रीयां

स्त्रीयों को राजनीती से अुदासीन नहीं रहना चाहीओ। अुन्हें तो राजनीती को तोड़ने की राजनीती हाथ में लेनी चाहीओ। हमें तो लोकनीती की स्थापना करनी है, ओसलीओ हमारे समाज में स्त्रीयों को भाग लेना चाहीओ। हमें पक्षमुक्त समाज बनाना है। फीर भले ही कोओी पुरुष कांग्रेस में जाय, कोओी पी० अेस० पी० में जाय, कोओी कम्युनीस्ट पक्ष में जाय, स्त्रीयों को अैसा नीश्चय करना चाहीओ की हम पक्षमुक्त रहेंगी, पक्ष में पड़ने की कोओी जरूरत हमें नहीं है। मत देने का जो अधीकार है, वह तो अच्छा ही है। वे अच्छे मनुष्य को चुनाव मत देकर अुसे सार्थक बना सकती है। यह तो गुप्त गायत्री-मंत्र जैसा है। ओसलीओ अपना मत कीसे देना है, यह कीसी से कहना नहीं है। स्त्रीयों को कीसी भी पक्ष में दाखील नहीं होना चाहीओ। अेक बाजू में तीस और दूसरी बाजू में सत्तर, अैसी कल्पना मातृत्व के खीलाफ है। मातृत्व शक्ती में अैसे टुकड़े नहीं आते हैं, क्योंकी माता तो सबका हीत देखती है। अेक जमाने में बहुमत पर लघुमत का राज्य था। अब लघुमत पर बहुमत का राज्य चलता है। यह तो केवल प्रत्याघात-रूप है। वास्तव में सबका हीत ही स्त्री को देखना चाहीओ। —वीनोबा

मंगलोर, ता० १६-१०-'५७

* लिपि-संकेत : ि = ी ; ी = ई ख=ख, संयुक्ताक्षर हलंत चिह्न से।

संपादकीय

आगामी चुनावों के बारे में

श्री अप्पासाहब पटवर्धन ने कुछ दिन पहले एक नोट भेजा था, जिसमें चुनावों के संबंध में सर्व सेवा संघ की नीति के बारे में कई सवाल उठाये थे। अप्पासाहब के वे सवाल इसी अंक में पृष्ठ ६ पर दिये गये हैं।

आम चुनाव सन्निकट हैं और जो सवाल अप्पासाहब ने उठाये हैं, वे उन जैसे समझ बूझवाले और अनुभवी कार्यकर्ता के मन में सचमुच उठते होंगे या नहीं, यह अलग है; लेकिन निश्चय ही ऐसे सवाल आम लोगों के और बहुत-से सर्वोदय-कार्यकर्ताओं के मन को भी सशंकित करते रहते होंगे। आगामी आम चुनावों के समय सर्वोदय-कार्यकर्ता निःशंक होकर और स्पष्ट भाव से काम कर सकें, तथा आम जनता भी चुनावों के संबंध में सर्व सेवा संघ और सर्वोदय विचार वालों के दृष्टिकोण को सही तौर से समझ सके, इसके लिए इन सारे प्रश्नों की चर्चा और सफाई होना जरूरी है।

आजादी के बाद हमारे मुल्क में दो आम चुनाव हो चुके हैं, तीसरा अब होने जा रहा है। इन तीनों आम चुनावों के संदर्भ में सर्व सेवा संघ ने उस-उस समय अपनी नीति अपने प्रस्तावों में स्पष्ट रूप से जाहिर की है। भूदान-आन्दोलन के असर से सर्वोदय विचार ज्यों ज्यों विकसित होता गया और लोकनीति में सर्वोदय-कार्यकर्ताओं की निष्ठा जैसे-जैसे गहरी होती गयी, उसका प्रतिबिम्ब सन् १९५१, सन् १९५६ और सन् १९६१ के सर्व सेवा संघ के चुनाव-संबंधी प्रस्तावों में स्पष्ट नजर आता है। सन् '५१ से लेकर सन् '६१ तक के दस वर्षों में शासन, राजनीति, पक्ष और चुनावों के मामले में सर्वोदय-विचार का जो विकास हुआ है, वह हम इन तीनों प्रस्तावों में देख सकते हैं।

"अप्पा" ने जो सवाल उठाये हैं, उनका समाधान श्री शंकररावजी ने अपने लेख में किया है। अप्पासाहब ने जो प्रश्न उठाये हैं, उनके अलावा दूसरी भी कुछ शंकाएँ या अस्पष्टता लोगों के मन में हो सकती हैं, अप्पासाहब के प्रश्नों का जो जवाब शंकररावजी ने दिया है, उसमें भी किसी को कुछ अधिक सफाई की आवश्यकता महसूस हो सकती है। हो सकता है किसी प्रश्न की चर्चा छूट भी गयी हो।

हम चाहते हैं कि इस विषय की पूरी सफाई हो और सर्व सेवा संघ की चुनाव के संबंध में क्या नीति है, इसके बारे में कार्यकर्ताओं के या आम जनता के मन में कोई दुविधा न रहे। इस दृष्टि से हम पाठकों को इस चर्चा में भाग लेने का निमंत्रण देते हैं।

सत्य और सादगी की मूर्ति जाजूजी!

ता० २३ अक्टूबर को पूज्य जाजूजी के निधन को ६ वर्ष पूरे हुए। वे गांधी-युग के रचनात्मक कार्यकर्ताओं की प्रथम पंक्ति के कार्यकर्ता थे। सत्यनिष्ठा के कारण उन्होंने सफल वकालत भी छोड़ी और सार्वजनिक कामों में अपना जीवन लगाना तय किया। गांधीजी से मिलने के पहले उनकी सेवा का क्षेत्र अपने माहेश्वरी समाज तक ही सीमित था। इन्होंने अपने समाज में बाल विवाह, वृद्ध-विवाह, दहेज, मृत्युभोज, पर्दाप्रथा आदि कुरीतियों के खिलाफ जोरदार आंदोलन शुरू किया, जो उन दिनों की परिस्थिति में एक साहस का और साथ ही आवश्यक काम था। इनकी इस सुधारवादी वृत्ति को देख कर श्री जमनालाल बजाज इनकी ओर आकृष्ट हुए और उन्होंने इनको कानूनी सलाहकार और बड़ा भाई माना था। सन् १९२१ में गांधीजी से जब उनका परिचय हुआ, तो उनका सेवा क्षेत्र राष्ट्रव्यापी हो गया। आपने प्रारम्भ से ही रचनात्मक कामों में दिलचस्पी लेना शुरू किया। ग्रामोद्योग संघ और चरखा संघ के निर्माण और विकास में उनका बड़ा हाथ था। सत्यनिष्ठा, नीतिमत्ता, उदारता, त्याग और सादगी उनके जीवन के मुख्य अंग थे, और इसी कारण बापू उनसे बहुत प्रभावित भी थे। वे हमेशा सत्ता की राजनीति से दूर रह कर सेवा की लोकनीति में ही आजीवन प्रवृत्त रहे। मध्य प्रदेश के मुख्य मंत्री और भारत सरकार के वित्त-मंत्री बनने के गांधीजी के आग्रह को भी उन्होंने नहीं माना। बाद में उनसे नेहरूजी ने उ० प्र० के गवर्नर बनने का अनुरोध किया, किन्तु रचनात्मक काम को ही सर्वस्व मानने वाले जाजूजी को यह भी मंजूर नहीं हुआ।

जाजूजी कई वर्षों तक चरखा-संघ से तीस रुपया जीवन-वेतन लेते रहे। वह भी इसलिए कि अवैतनिक कार्यकर्ताओं के मन में एक प्रकार का झूठा अहंकार और बड़प्पन की भावना आ जाती है। सत्य पर उनका बहुत जोर था। वह उसकी सूक्ष्मता में जाते थे—यहाँ तक कि हँसी-मजाक, बच्चों से व्यवहार, किसी को प्रमाण-पत्र देने आदि छोटी-छोटी बातों में भी सत्य का पूरा खयाल रखते थे। सादगी उनके जीवन का दूसरा बड़ा और प्रमुख गुण था। खुद के लिए गिने-चुने तीन जोड़ी कपड़े रखते थे। अपने अंतिम दिनों में उन्होंने व्यवहार शुद्धि और संपत्तिदान पर न केवल जोर दिया, बल्कि उसका शास्त्र भी बना दिया।

सन् १९५५ की २३ अक्टूबर को उनका देहान्त हुआ। जाजूजी ने अपने गुणों के कारण अपने जीवन-काल में रचनात्मक संस्थाओं और कार्यकर्ताओं का पथप्रदर्शन किया और मृत्यु के बाद भी उनका जीवन उसी प्रकार पथ-दर्शक बना हुआ है।

दुर्भाग्यपूर्ण प्रस्ताव

दक्षिण अफ्रीका की सरकार ने रंग-भेद की जो नीति अपना रखी है वह दुनिया के उन चन्द प्रश्नों में से है, जिनके बारे में करीब-करीब सारे सभ्य राष्ट्रों की और विचारकों की एक राय है। चाहे पूर्वी गुट हो, या पश्चिमी, योरोप-अमेरिका के देश हों या एशिया-अफ्रीका के, करीब-करीब सभी रंग और जाति भेद की नीति को गलत और सभ्य समाज में प्रचलित आज के मूल्यों के प्रतिकूल मानते हैं। पर अभी ता० ११ अक्टूबर को संयुक्त राष्ट्र-संघ की सभा में दक्षिण अफ्रीका के विदेश मंत्री द्वारा रंगभेद की नीति के समर्थन में दिये गये भाषण के लिये जो संयुक्त राष्ट्र-संघ ने बहुमत से स्वीकृत अपने एक प्रस्ताव द्वारा उनकी भर्त्सना की, वह हमारी दृष्टि से अनुचित हुआ।

संयुक्त राष्ट्रसंघ दुनिया में शान्ति कायम रखने के लिए स्थापित की हुई संस्था और मंच है। हम अमेरिका के प्रतिनिधि श्री अदलाई स्टीवेन्सन की इस राय से पूर्ण सहमत हैं कि संयुक्त राष्ट्रसंघ एक ऐसा मंच है, जहाँ पर हरएक को अपनी राय बिना किसी संकोच के और आजादी के साथ व्यक्त करने की छूट होनी चाहिए। अगर ऐसा नहीं होगा और संयुक्त राष्ट्रसंघ में भी ऐसा वातावरण बनेगा कि किसी को अपनी राय स्पष्ट रूप से जाहिर करने में संकोच का अनुभव हो या उस पर पाबंदी हो तो साफ जाहिर है

खादी किधर जाय ?

विचार की दृष्टि से खादी आज जितने संकट में है, उतने संकट में आज तक शायद नहीं थी! संकट इस बात का है कि वह जाय किधर ! जब जब समाज को युग के साथ जोड़ने का प्रश्न आता है तो इस तरह का वैचारिक संकट पैदा हो जाता है।

समाज को युग की माँग के साथ जोड़ने की क्रिया को क्रान्ति कहते हैं। युग-पुरुष का यह काम होता है कि वह इस जोड़ के लिए कोई माध्यम ढूँढ निकाले। गांधीजी ने अपने युग में खादी के माध्यम से समाज को स्वराज्य के साथ जोड़ा। यही कारण है कि गांधी की खादी में क्रान्ति की शक्ति प्रकट हुई। आज हम देख रहे हैं कि खादी में वह शक्ति प्रकट नहीं हो रही है। *कारण क्या है? कारण यह है कि* हम आज खादी को नये युग की माँग के साथ नहीं जोड़ पा रहे। नया युग सामूहिक स्वामित्व और सहकारी जीवन-पद्धति का है पूँजी और परिवार की संकुचित सीमा में जीने का युग अब रहा नहीं।

इतिहास की इसी धारा को विनोबा ने 'ग्राम-स्वराज्य' का नाम दिया है। इसलिए अगर हम खादी में फिर क्रान्ति की शक्ति भरना चाहते हैं, तो उसे युग की नयी माँग के साथ जोड़ना ही पड़ेगा। खादी के 'नये मोड़' की यही समस्या है।

ग्राम-स्वराज्य की जो कल्पना गांधीजी ने दी है और जिसकी साधना आज विनोबाजी देश के सामने प्रस्तुत कर रहे हैं, क्या वह वही है, जो हमारे मन में है! कहीं ऐसा न हो कि गांधी-विनोबा का ग्राम-स्वराज्य कुछ और हो और हमारा ग्राम-स्वराज्य कुछ और! मुझे लगता है कि दोनों ग्राम-स्वराज्यों के स्वरूप में बुनियादी अन्तर है, जिसके कारण खादी तय *नहीं कर पा रही है कि वह किधर मुड़े!* एक ओर सामुदायिक विकास, ग्राम पंचायत, ग्राम-इकाई के रास्ते ग्राम-स्वराज्य तक पहुँचने की बात है, और दूसरी ओर भूदान और ग्रामदान के रास्ते ग्राम-स्वराज्य तक पहुँचने की बात है। एक ओर सरकार की शक्ति और संरक्षण है, दूसरी ओर केवल जनता की शक्ति का भरोसा है। देखने में जनता के द्वारा चुनी हुई सरकार की शक्ति और स्वयं जनता की सहकार शक्ति में कोई अंतर भले ही न हो; लेकिन अन्तर है बहुत बड़ा और उस बड़े अन्तर के ही संदर्भ में हमें दिखायी देगा कि एक ग्राम-स्वराज्य दूसरे से कितना भिन्न है। *एक ग्राम-स्वराज्य में खादी* अन्य स्थानीय उद्योगों के साथ लोक वस्त्र का रूप धारण कर लेती है, दूसरे ग्राम-स्वराज्य में वह स्वावलंबन की शक्ति और नयी जीवन-पद्धति का मंत्र बन जाती है। बापू के क्रांति-दर्शन में खादी एक नयी 'डाइनेमिक्स' है, जिसके द्वारा शोषण और शासन-मुक्ति सिद्ध होती है। क्या लोक-वस्त्र में भी कोई 'डाइनेमिक्स' है! लोक-वस्त्र एक आर्थिक योजना है, इससे और कुछ अधिक नहीं।

दोनों ग्राम-स्वराज्यों में कौनसा युग की माँग है, इसे हम तय कर लें और तय करने के बाद खादी को उसी के साथ जोड़ें। *अगर हम यह तय करते हैं कि* सरकार शक्ति के तत्वावधान में सच्चे ग्राम स्वराज्य की सिद्धि हो सकती है, तो हमें लोक-वस्त्र का ही नारा बुलन्द करना चाहिए और मानना चाहिए कि खादी के नये मोड़ की शुरुआत उसी दिन हो गयी, जिस दिन उसे सरकार का संरक्षण प्राप्त हुआ। लेकिन अगर हम यह तय करते हैं कि हमें दूसरा ग्राम-स्वराज्य चाहिए तो सम्भवतः खादी को कुछ दिन विनोबा के साथ 'विल्डरनेस' में रहना पड़े।

खादी को इस "किधर" संकट से मुक्त करके हम संकट से मुक्त कर सकते हैं।

—राममूर्ति

धमभारती, खादीग्राम में २ अक्टूबर '६१ को दिये गये भाषण से।

कि संयुक्त राष्ट्रसंघ अपने बुनियादी लक्ष्य में ही असफल होगा, क्योंकि अगर किसी को खुल करके अपनी राय जाहिर करने का मौका नहीं मिलता है तो विवादग्रस्त विषयों को सुलझाने का केवल एक ही रास्ता रह जाता है और वह है हिंसक-युद्ध। यह सही है कि व्यक्ति अपना मत जाहिर करने में संयम से काम ले, कोई अपमानजनक या ओछी बात वह न कहे। वह ऐसा करे तो अध्यक्ष को उसे रोकने का अधिकार है। पर इस बात को छोड़ कर और किसी प्रकार का प्रतिबंध लगाना या अपना मत जाहिर करने पर किसी की भर्त्सना करना हमारी दृष्टि से न सिर्फ जनतंत्र के बुनियादी उसूल के खिलाफ है, बल्कि अन्तर्राष्ट्रीय क्षेत्र में तो वह अदूरदर्शितापूर्ण भी है।

इस दृष्टि से संयुक्त राष्ट्रसंघ की सभा में, मुख्य तौर पर अफ्रीका और एशिया के मुल्कों के बहुमत से स्वीकृत उस प्रस्ताव को हम दुर्भाग्यपूर्ण मानते हैं, जिसके द्वारा दक्षिण अफ्रीका के विदेश-मंत्री की उनके भाषण के लिए भर्त्सना की गयी है। हमें इस बात का खास तौर से दुःख है कि भारत के प्रतिनिधि ने इस प्रस्ताव का समर्थन किया। ऐसा करके उन्होंने भारत की उदारता और सहिष्णुता की परम्परा को धक्का लगाया है। हम आशा करते हैं कि भविष्य में एशिया और और अफ्रीका के राष्ट्र संयुक्त राष्ट्रसंघ में अपने संख्यक बहुमत का उपयोग ज्यादा समझदारी, राजनैतिक दूरदर्शिता और सहिष्णुता के साथ करेंगे।

—सिद्धराज

सूत मजबूत बनाने का प्रश्न

अभी पिछले दिनों पूसा में खादी-ग्रामोद्योग ग्रामस्वराज-समिति की बैठक विचारणीय मुद्दा यह भी था कि क्या अंबर चरखे का अतिरिक्त सूत को [illegible] जाय? वस्तुतः यह जो अतिरिक्त सूत का प्रश्न है, केवल अंबर के सूत का ही है नहीं लगता। जहाँ तक बिहार का मेरा अपना प्रत्यक्ष अनुभव है और [illegible] जानकारी अन्य प्रांतों की है, उससे पता चलेगा कि परंपरागत चरखे के [illegible] भी बढ़ा है। मुख्य सवाल न अंबर का है, न अतिरिक्त उत्पादन का है, बल्कि [illegible] की समस्या और बिक्री के प्रश्न का है।

बुनाई की समस्या इसलिए नहीं है कि हमारे सूत का अधिक उत्पादन है, बल्कि इसलिए है कि हमारा सूत कमजोर है। दूसरी बात, इस समस्या के साथ खादी की महँगाई का भी प्रश्न है। जिस प्रकार हमारा सूत होता है, उससे औसत बुनकरों को एक रुपया मजदूरी प्रतिदिन मिलना कठिन हो जाता है। अगर सूत मजबूत होता है, तो बुनकर के लिए बुनाई न केवल आसान, बल्कि बुनाई की गति में भी बहुत बड़ा अंतर भी आ जाता है। यही कारण है कि बुनकर या तो मिल का ही सूत बुनना पसंद करता है या खादी में मिल का सूत मिलाने की कोशिश करता है। यदि हमें स्वावलंबी और स्वाश्रयी बनना है तो खादी के सूत को मजबूत बनाना ही होगा।

हमारे सूत की कमजोरी के लिए अवैज्ञानिक धुनाई की प्रक्रिया ज्यादा दोषी है। हम लोग अक्सर मिल से रूई लाते हैं और मिलों में रूई के कोमल तंतु को काठ जैसे कठोर गाँठों में बाँध देते हैं! परिणाम यह होता है कि मिल में भी उस रूई को काम में लाने के पहले मिल को 'ओपनिंग' करना पड़ता है। जिस रूई के रेशे को मिल भी नहीं पचा सकता, उसे कत्तिन की कताई की कला की परीक्षा के लिए हम देते हैं। यह तो कत्तिन की कला है, जो कि ऐसे बिगड़े रेशेवाली रूई से औसत दर्जे का सूत निकाल लेती है। यदि हम सीमता से आगे बढ़ना चाहते हैं तो मशीन से अच्छा धुन कर, जिसे हम 'कोम्बर' भी कह सकते हैं, रेशे को एक-सा कर तथा कमजोर रेशे को निकाल कर पट्टी बना दें। यदि धुनी-बनाई पट्टी कत्तिन को मिल जाती है, तो कत्तिन आठ नम्बर तक की कताई आसानी से कर सकती है। इससे निम्न समाधान होंगे।

(१) देर तक कत्तिन को प्रशिक्षित करने का प्रश्न हल हो जायेगा।

(२) जहाँ दो आने प्रति गुंडी देने पर भी कत्तिन भूखी रहती है, वहाँ इस पद्धति से एक आना प्रति गुंडी मजदूरी देकर भी उसको कम-से-कम सवा रुपये रोज की जीविका दे सकते हैं।

(३) 'पावर' बुनाई का [illegible] तो हम अपनी इच्छा के मुताबिक [illegible] सकते हैं, जिससे आवश्यकतानुसार मिल सकता है। अर्थात् किसी [illegible] सादा, गाढ़ा अथवा कोटिंग आ[illegible] के वस्त्र इकट्ठे होने की कोई [illegible] नहीं रहेगी।

(४) चूँकि सूत मजबूत [illegible] लिए बुनकर उसको सहर्ष अपनायेंगे तब हम सूत कातने वाली मिल के [illegible] पर रोक लगाने का असली परामर्श [illegible] सकते हैं।

(५) कताई का दर कम होने [illegible] कारण खादी की कीमत बीस प्रतिशत [illegible] हो जायेगी।

(६) पुराने बाँटे गये 'अंबर' [illegible] भी, जो बेकार पड़े हैं, वे उपयोग में [illegible] सकेंगे।

इसलिए मुख्य समस्या यह है [illegible] जैसे कताई के लिए अंबर चरखा है [illegible] *धुनाई के लिए कम पैसा छोटा* [illegible] तैयार करना चाहिए, जिसका नाम 'कोम्बर' रखा जा सकता है।

जिला खादी-ग्रामोद्योग संघ,
मुंगेर (बिहार) —निर्मलचन्द्र

शासन, राजनीति, पक्ष और सर्व सेवा

मतदाता के सवाल

अप्पा पटवर्धन

जाहिर है कि चुनावों की प्रचलित पद्धति कई दृष्टियों से अनुचित और अनिष्ट है। उसमें उम्मीदवार याचक बनते हैं, जो बेहूदा मालूम होता है। इसके अलावा वह पैसे का खेल है। फिर चुनावों का फैसला बहुमत से होता है। इससे बहुमतवालों में उन्माद और अल्पमतवालों में ईर्ष्या-द्वेष पैदा होते हैं और सत्ता की होड़ चलती है। इस होड़ में से संघर्ष, छीना-झपटी और कई अनिष्ट बातें निकलती हैं।

इस पर इलाज के तौर पर सर्व सेवा संघ का लोकनीति का कार्यक्रम निकला है। लेकिन वह अधूरा-सा लगता है। उसमें जो मतदाता-मंडलों की और उनके द्वारा अप्रत्यक्ष और सर्वसम्मत चुनावों की, अर्थात् 'मनावों' की, बात है वह आज तो अक्सर असंभव है। वह चिंतन का विषय जरूर रहे, लेकिन आगामी आम चुनावों में अमल का विषय नहीं हो सकती।

इस हालत में मतदाता के सामने जो सवाल पैदा होता है, वह ज्यों का त्यों ही रह जाता है। मैं १९६२ के चुनावों में मत दूं या न दूं? दूं तो किसको दूं?

मत बिलकुल न देना उचित नहीं मालूम होता। हर मतदाता मानो न्यायाधीश ही है। न्यायाधीश अगर वादी-प्रतिवादियों के बीच फ़ैसला करने से इनकार करेगा तो वह अपने को नालायक साबित करेगा और अपने पद का द्रोह करेगा। उसी तरह किसी को मत ही न देना मतदाता के दायित्व का भंग होगा। आम तौर पर उसका यह कर्तव्य ही है कि वह खड़े रहे, उम्मीदवारों के बीच पसंदगी करे और मत दे।

और मेरी राय में मतदान भी वह आज की छिपी रीति से नहीं, खुली तरह करे। स्वराज्य में हर आदमी को अपना मत जाहिर करने का अधिकार है; बल्कि मत जाहिर करना उसका कर्तव्य भी होता है। छिपी रीति से मतदान करना भयाकुल्या है।

उम्मीदवार की पसंदगी करने वक्त उसका मत, कार्यक्रम और नेतृत्व ध्यान में लेना ही होगा। सज्जनता, लियाकत, क्षमता इत्यादि वैयक्तिक गुण ध्यान में लेना आवश्यक है ही, लेकिन उनसे भी बढ़कर महत्त्व उसके पक्ष को देना ही पड़ेगा। विचारधारा, कार्यक्रम और नेतृत्व को लेकर ही पक्ष बनते हैं। पक्ष-पद्धति में जो सत्ता की होड़ होती है, वह अनुचित है। फिर भी हमारा प्रतिनिधि हमारी विचारधारा से सहमत हो, यह बिलकुल जरूरी है। जातिनिष्ठ या हिंसा के हामी पक्षों को मत नहीं देना चाहिए; अर्थात् पक्षों में निषेधात्मक चुनाव तो हमें करना ही होगा। पक्षों में तुलना करना होगी।

"सर्वोदयवादियों के लिए सब पक्ष समान हैं," इसके मानी यह नहीं कि किसका राज्य होता है, उस बारे में हम उदासीन हैं। हम सब पक्षों के लोगों के प्रति समान प्रेम और आदर रखेंगे, सबकी सम्मति और सहयोग के लिए भरसक कोशिश करेंगे, बिना उनकी सम्मति के केवल बहुमत के आधार पर, उन पर दंडधारित सत्ता चलाना भी नहीं चाहेंगे। सत्ता की होड़ से अगर हम बिलकुल अलिप्त रहना चाहते हैं, तो हमें किसी को मत नहीं देना चाहिए इतना ही नहीं, औरों को भी मतदान से परावृत्त करना चाहिए—तर्क-दृष्टि से वह एकान्तिक सही, लेकिन निर्दोष भूमिका होगी। लेकिन अगर हम मत देना चाहें तो फिर हमारे निजी मत जैसे किसी-न-किसी पक्ष को दिये जायेंगे वैसे ही औरों के मत भी हमारे पसंदगी के पक्ष को दिलवाने की हमारी कोशिश होनी चाहिये! खुद मत देना, लेकिन प्रचार न करना, यह तो "इतो भ्रष्टस्ततो भ्रष्टः" जैसी स्थिति होगी।

सर्वोदयवादियों में आपस में भी किसी प्रचलित प्रश्न के विषय में भिन्न रायें हो सकती हैं। उदाहरण के लिए, विदर्भ का अलग राज्य बने या मराठी-भाषियों का एक ही राज्य रहे, इस मामले में सर्वोदयवादियों में भी दो रायें हो सकती हैं। अपनी-अपनी राय की सफलता के लिए वह हिंसक तो नहीं ही, बल्कि गैर-नागरी (अनकान्स्टीट्यूशनल) तरीके भी अख्त्यार नहीं करेंगे। फिर भी नागरिकता की मर्यादा में उनमें मतभेद रह सकते हैं। फिर विदर्भवादी सर्वोदयी मतदाता एक उम्मीदवार का प्रचार करेगा और महाराष्ट्रवादी सर्वोदयी मतदाता दूसरे उम्मीदवार का प्रचार करेगा। मतभेदों के बावजूद भी चुनाव कैसे सभ्यतापूर्वक खेले जा सकते हैं, उसका पदार्थपाठ आम लोगों के सामने प्रस्तुत करके वह बाद चुनाव-पद्धति का शुद्धीकरण भी कर सकेंगे।

ऐसे-ऐसे परस्पर-विरोधी विचार मन में उठते हैं और उनका हल नहीं हासिल होता।

और एक सवाल। जयप्रकाशजी ने लोकतांत्रिक विकेंद्रीकरण की योजना देश के सामने प्रस्तुत की है। वह प्रस्ताव के रूप में लोकसभा के सामने रखी जानी चाहिए। वह कौन रखेगा? लोकसभा उसको एक ही दिन में सम्मत करेगी सो बात नहीं। वह बार-बार भी रखनी पड़ेगी। लोकसभा का लोकमत धीरे-धीरे बनता जायगा। फिर जयप्रकाशजी की योजना का प्रचार करने ही के लिए कोई लोकसभा में जाना चाहे तो उसको—और कोई आपत्ति न हो तो—आशीर्वाद देना जयप्रकाशजी के लिए आवश्यक है या नहीं? अपनी योजना के प्रचार के लिए लोकसभा का भी उपयोग करना क्या अनुचित होगा?

चुनाव सत्ता प्राप्ति के ही लिए लड़े (या खेले) जाते हैं सो बात नहीं। कुछ लोग सत्ता से अलग रह कर मात्र मत-प्रचार करने के लिए भी विधि-मंडलों में जाना चाहेंगे। ऐसे सर्वोदय विचार-धारा के प्रचारकों को हम क्यों न हम मत दें।

मेरी अपनी भी शोषणमुक्ति की एक योजना है।

(१) जमीन सबकी बने।

(२) ब्याज-बट्टा बंद हो।

(३) इस साल के १०० रु. अगले साल ९५ रु. अपने आप बने।

लोकसभा की सम्मति के बिना यह योजना भी अमल में आ सकने वाली नहीं है। मैं नहीं चाहता कि सुदूर व्यापी लोक-शिक्षण के पहले लोकसभा उसको मंजूर करे, या उस पर दंड-बल से अमल करे। फिर भी लोकसभा-यह भी उसके प्रचार का एक महत्त्वपूर्ण स्थान है। उसका भी हम क्यों न उपयोग करें!

सर्व सेवा संघ विविध [illegible]
भी सर्वोदय की स्थापना के लि[ए]
कि सत्ता मिलने पर ये कार्यक्र[म]
जायेंगे। इसलिए [illegible]

संघ विश्वास करता है [illegible]
निस्पृह सेवा करते रह[े] [illegible]
और मतदाताओं को इस तरह
लोग ही चुने जायें।

रचनात्मक कार्यकर्ता खुद [illegible]
उठ सकता है, [illegible]
त्मक कार्यकर्ताओं को [illegible]

तब भी प्रचलित रचना में
जो छनी हैं और राष्ट्र [illegible]
है और यदि सरकार किसी ऐसे
और आर्थिक तंत्र में है, जो स[र्व]
नात्मक कार्यक्रम के रास्ते में रोड़[ा]
यद्यपि रचनात्मक कार्यकर्ताओं
ही उन्हें अपनी समग्र सेवा में [illegible]
ज्ञान-युक्त दिलचस्पी रखनी चा[हिए]
देनी चाहिए कि वे अपने मत की
जीवन की शुद्धि और जनता के [illegible]
उपयोग करना सीखें।

मतदाताओं से संघ की सलाह है
उनकी राय में सार्वजनिक जीवन [illegible]
वह उसी दल की ओर से ही खड़ा [illegible]
मति है। उन्हें यह भी याद रखना
साध्य की सफलता के लिए हिंसक [illegible]
की बात तो सोची भी नहीं जा सकती।

सर्व सेवा संघ का लक्ष्य अहिं[सा]
के मार्फत अहिंसक समाज कायम [illegible]
सम्मति है, यह तो मानी हुई बात है।
ओर कदम बढ़ाना आवश्यक है। [illegible]
या अप्रत्यक्ष किसी प्रकार का हिंसा [illegible]
पक्ष अपने हाथ में हुकूमत लेना [illegible]
देखता है। आज [illegible] पक्ष निष्ठ
और पक्षातीत भूमिका की वह [illegible]
जीत में कोई विशेष दिलचस्पी नहीं
प्रक्रिया हार और जीत से परे है। [illegible]
के भी हृदय-परिवर्तन की भावना [illegible]
किसी तरह का हिस्सा ले सकता है [illegible]
की सलाह देना उचित ही मानता है।

लेकिन आज की हालत में [illegible]
अधिकार का प्रयोग करना चाहिये। [illegible]
वाले, अथवा सम्प्रदायवादी उम्मीदवा[र]
भिन्न भिन्न राजनीतिक पक्षों के [illegible]
देने का कर्तव्य जितना पवित्र माना [illegible]
का कर्तव्य भी पवित्र है। इसलिए [illegible]
खड़ा करे तो हरएक लोकनिष्ठ [illegible]
होते हुए भी वह उस उम्मीदवार का

सर्व सेवा संघ की यह मान्यता
यानी शासन के जरिये नहीं, बल्कि [illegible]
शक्ति के आधार पर ही हो सकती है
है कि वह सत्ता प्राप्ति की राजनीति [illegible]
लेगा। भूदान-ग्रामदान आंदोलन के [illegible]
लोकनीति की प्रतिष्ठा के इस विचार
संलग्न कार्यकर्ताओं अर्थात् लोकसेवक
राजनीति और दलगत चुनावों से अलग [illegible]
या चुनाव में स्वयं खड़े हों या नहीं। [illegible]

भूदान-यज्ञ, शुक्रवार,

विनोबा यात्री-दल से

• कुसुम देशपांडे

(तपस्या के लिए ध्येय, भक्ति के लिए अहंकारशून्यता, सबके लिए विवेक–यह साधकों के लिये त्रिपुटी है।)

हमारे कार्यकर्ताओं म से कई ऐसे है, जो बीच-बीच में उपवास आदि करते हैं। इस विषय पर विनोबाजी से उनकी चर्चा भी होती रहती है। पिछले सप्ताह एक शाम को ऐसी उपासनाओं के बारे में चर्चा चली। उस दिन विनोबाजी ने कहा, "हमारे शास्त्र में कहा है कि तीन प्रकार के लोगों को आत्मलब्धि नहीं होती है—जो बलहीन हैं, जो बार-बार प्रमाद करते हैं और जो 'अलिंग तपस्या' याने बिना ध्येय के तपस्या करते हैं। तपश्चर्या के लिये ध्येय होना चाहिए।"

विनोबाजी ने एक किस्सा सुनाया : "आश्रम में मदालसा [श्रीमती मदालसा बहन अग्रवाल] मेरे पास सीखती थी। वह रोज तड़के आश्रम से जमनालाल बजाज के बंगले पर अकेली जाती थी। चार मील दूर, अंधेरे में अकेली लड़की जाती थी, यह उसकी बहादुरी तो थी ही। मैंने देखा कि वह लालटेन लेकर नहीं जाती है। मैंने उसे इसका कारण पूछा, तो उसने कहा कि 'भगवान तो है ही! वही आधार है!' मैंने कहा, 'देखो, कभी अचानक तुम्हें इस तरह कहीं सेवा के लिये जाना पड़े और लालटेन न लेकर जाओ, तो मैं समझ सकता हूँ। पर वास्तव में यह तो तुम्हारा रोज का कार्यक्रम ही है और यहाँ लालटेन भी है, नहीं है सो बात नहीं, तो भी तुम बिना लालटेन के जाती हो, याने भगवान की सत्व-परीक्षा ही है। वह कहेगा–'मैंने तुम्हें अकल तो दी थी, लालटेन भी है, तो क्यों नहीं ले जाती ?'—मतलब इस तरह जाना, यह 'अलिंग तप' हो गया। इसमें उद्देश्य नहीं है। अगर रोज का कार्यक्रम नहीं होता, लालटेन मुहैया नहीं होती, ऐसे में जाना होता तो वह तपस्या होती। उस हालत में भगवान के आधार की अपेक्षा ठीक थी।

उद्देश्य न रखते हुए किया हुआ तप याने 'अलिंग तप' है। हम बारिश में घूमते हैं, लेकिन किसलिये? भूदान के लिये यात्रा कर रहे हैं–याने उद्देश्य है। ऐसे ही नाहक हम बारिश में घूमें तो लोग हम पर हँसेंगे।

उपवास क्यों करना चाहिए? हाँ, शरीर से दोष हुआ हो, गलती हुई हो, इसलिए उपवास कर लिया तो समझ सकते हैं। कहीं यात्रा के लिये जाना है, रास्ते में शायद खाने को नहीं मिलेगा, कम खाकर रहने की आदत होनी चाहिये। इसलिए कम खाकर रहना, यह 'लिंग तप' होगा। सेवा करने में शारीरिक कष्ट होता है–वह भी 'लिंग तप' है।

उनको हमारा आशीर्वाद रहेगा। यह अपरिहार्य है। लेकिन हम उनके प्रचारक नहीं बनेंगे। कोई एक खास काम करना चाहता है तो उसे अच्छा कहना और उस काम में मदद पहुँचाना एक बात है और उस एक काम के लिये उसके सारे काम को परोक्ष या अपरोक्ष सम्मति देना और उसका हिमायती बनना दूसरी बात है।

कोई भी चीज लोकसभा से सम्मत करवाना है तो सुदूर-व्यापी लोक-शिक्षण की सर्वप्रथम आवश्यकता है। सर्व सेवा संघ की जो लोकनीति की योजना है, उसकी यही आधार शिला है। जीवन के विभिन्न सवालों के बारे में लोगों को हम प्रशिक्षित करें, उनका अभिक्रम जागृत करें, उन्हें अपना संगठन बना कर अपनी निजी शक्ति के आधार पर अपनी सभी समस्याओं को हल करने के काम में हम अपने को पूरी तरह लगा दें।

"सेवा करने में भी विवेक होना चाहिये", यह कहते हुए बाबा ने उदाहरण दिया : "महारोगी की सेवा हम करते हैं। उसका अर्थ यह तो नहीं है कि वह रोग हमें भी हो जाय! अतः वैसा ध्यान रख कर, उसके लिये सावधानी रखनी होगी। नहीं तो क्या होगा? वह एक रोगी है ही, हम दूसरे रोगी बन जायेंगे और फिर तीसरा मनुष्य सेवा के लिये लेना होगा।"

"बचपन में ब्रह्मचर्य के बारे में मेरे कुछ विचार थे। मेरी बहन की शादी थी। मैंने कहा, 'मैं शादी में जो रसोई बनेगी वह नहीं खाऊँगा।' मेरी माँ ने मुझे अलग रसोई बना कर खिलायी। खाने के लिये मैं बैठा, मेरे पास वह बैठी। मुझे परोसती थी, परोसते-परोसते बातें करती थी। उसने कहा, 'विन्या, शादी में जो मिष्ठान्न होता है वह न खाना, यह मैं समझ सकती हूँ, पर दाल-भात क्यों नहीं खाना चाहिये? वही भात और वही दाल जो वहाँ है वही यहाँ मैं अलग बना कर तुम्हें खिला रही हूँ। वहाँ के दाल-चावल खाने में क्या दोष है, यह मैं नहीं समझ सकती हूँ! मिष्ठान्न तुम नहीं खाओ, यह बात तो समझ में आती है।'

मैंने कहा, 'ठीक है। शाम से वहीं का अन्न खाऊंगा।' याने मेरी माँ ने पहले तो मुझे अलग रसोई बना दी। उसके लिए 'ना' नहीं कहा और फिर अपनी दलील रखी। इसमें कुशलता है। सार है, क्योंकि इसमें उद्देश्य (परपज) है।

सार यह है कि तपस्या के लिये ध्येय चाहिए। भक्ति के लिये अहंकारशून्यता चाहिए, सेवा के लिए विवेक। यह साधकों के लिये 'त्रिपुटी' है।"

*   *   *

पिछले सप्ताह श्री विमला बहन यात्रा में आईं। योरप यात्रा से वह हाल ही में लौटी हैं। तुरंत ही विनोबाजी से मिलने आयी हैं। उनके शब्दों में–"भारत लौटने पर विनोबाजी को प्रणाम करने आयी हूँ।" विमला बहन के जरिये पश्चिम की बहनों ने कुछ चीजें भेंट के तौर पर भेजी हैं। उसमें एक सोने का 'नाथ' है, जिसका उपयोग भूदान में मिली हुई जमीन में कुआँ बनवाने मे हो, यह वह चाहती हैं। इंग्लैंड, फ्रान्स, जर्मनी, स्वीटजरलैंड आदि देशों में उनका जाना हुआ था। कई सभाएँ हुईं और अनेक छोटे-बड़े व्यक्तियों से उनका मिलना हुआ। कहाँ क्या देखा, सुना इसकी जानकारी उन्होंने विनोबाजी को छः दिनों में दी और नागालैंड, चीन हिन्दुस्तान सम्पर्क, भूदान-ग्रामदान आंदोलन, जागतिक शान्ति सेना और डा० कृष्णमूर्ति का तत्त्वज्ञान आदि आध्यात्मिक विषयों पर भी चर्चा हुई। विनोबाजी ने उन्हें इंग्लैंड में सूर्योदय और सूर्यास्त कब होता है, रात में आवाज कब तक चलती रहती है, सूर्यास्त के कितने घंटे के बाद लोग सोते हैं, ऐसी छुटपुट बातें भी पूछी।

एक चर्चा में विनोबाजी ने कहा, "इन दिनों मेरे विचार में तीन चीजें बार बार आती हैं

(१) कहीं की भी जमीन, किसी की भी मिलकियत की नहीं है।

(२) 'फॉर्मल इंडिपेन्डन्स'–औपचारिक आजादी–का कोई अर्थ नहीं है।

(३) हिंसा का उपयोग कहीं भी, कभी भी न हो।

*   *   *

बीच में दो दिन उर्दू पाक्षिक "भूदान तहरिक" के संपादक श्री फातमीसाहब काशी से आये थे। कश्मीर के काम के बारे में चर्चा करते हुए विनोबाजी ने उनसे कहा, "हिंदुस्तान, पाकिस्तान और कश्मीर का एक 'फेडरेशन' (संघ) हो, जिसमें 'फारिन पालीसी (विदेश-नीति), 'कम्युनिकेशन' (आवागमन) और 'डिफेन्स (रक्षा)'—यह 'कामन' (सम्मिलित) हों। बाकी सब बातों में तीनों 'आटोनोमस' (स्वायत्त) हों। तब इस सवाल का कोई हल निकलेगा। हमारे इस विचार को नई दिशा ने पसंद किया है और अपने व्याख्यानों में उन्होंने इसका जिक्र किया है, ऐसा हमने सुना है। हमारे कार्यकर्ताओं को राजनैतिक द्रव के पचड़े में नहीं पड़ना चाहिये। हमारे दिमाग से राजनीति हटानी ही चाहिये। नहीं तो दिमाग उलझा ही उलझा रहेगा। इसलिये हम कहते हैं कि ऐसे मसले राजनीति से हल नहीं होने वाले हैं। यह राजनीति 'आउट आफ डेट'–बासी हो गयी है।"

बंगाल के श्री क्षितिश बाबू दो दिन रह कर लौटे। राह चलते हुए उनके साथ बात करते हुए बाबा ने कहा, "असम की स्थिति ग्रामदान के लिये जितनी अनुकूल है, उससे बंगाल की स्थिति ज्यादा अनुकूल है, क्योंकि वहाँ जमीन कम है। वहाँ की परिस्थिति तो अनुकूल है, अब वहाँ की मनःस्थिति अनुकूल करनी होगी। हमने कहा था कि बंगाल में शक्ति और भक्ति अलग पड़ गयी है। तो शक्ति हो गयी हिंसक और भक्ति निष्क्रिय। अब शक्ति को अहिंसक बना कर भक्ति को सक्रिय बनानी चाहिये, फिर दोनों को जोड़ना होगा।'

क्षितिज बाबू : "दोनों को जोड़ने का उपाय ?"

विनोबाजी : "आपकी नई तालीम!"

दूसरे दिन रास्ते में फिर से क्षितिज बाबू को बुला कर विनोबाजी कहने लगे—

"आपको यह सोचना चाहिये कि देश में आप शांति-सेना मजबूत खड़ी नहीं करते हैं तो आपके कुल के कुल रचनात्मक काम ऐसे ही गिर जायेंगे। उनका कोई असर समाज पर नहीं होगा। अलीगढ़ में अभी जो घटना बनी, ऐसी घटनाएँ बीच-बीच में बनती रहेंगी तो आपके काम का कोई परिणाम नहीं होगा। इसलिये ऐसा एक समूह हमें बनाना होगा, जो घूमता रहेगा, जनता को विचार समझाता रहेगा और समाज में अशान्ति को रोकेगा।"

*   *   *

विनोबाजी अब फिर से अपने साथियों को गाँवों में भेजने की बात सोच रहे हैं। असम के कार्यकर्ता अलग-अलग जगह पर अपने पॉकेट्स्—केन्द्र बना कर काम करने का सोच रहे हैं। वैसी योजना बनायी जा रही है। अगले सप्ताह में उस पर अमल होगा, ऐसी आशा है।

[देवराअमई गाँव, असम यात्रा, १२-१०-६१]

'सर्वोदयनगर'

'सर्वोदयनगर' (अंग्रेजी मासिक) के सम्पादक बंगलोर इण्डियन इन्स्टीट्यूट ऑफ सायन्स के सर्वोदय प्रेमी प्रो० डा० टी० एस० अनन्तरामन हैं। इसका वार्षिक मूल्य सवा रुपये मात्र है। यह पत्र खास तौर से नगरों में सर्वोदय-कार्य किस प्रकार हो, इस विषय पर विशेष सामग्री देता है।

पता : अ. भा. सर्व सेवा संघ, गांधीनगर, बंगलोर-९

बिहार की चिट्ठी

जिला सर्वोदय-मंडल के अध्यक्ष, मंत्री, संयोजक एवं अन्य प्रमुख कार्यकर्ताओं के निर्णयानुसार बिहार के मुजफ्फरपुर, दरभंगा, सहरसा, पूर्णियाँ, संथाल परगना, मुंगेर और गया जिले में बीघा-कट्ठा अभियान तो चल ही रहा था, ११ अगस्त को लक्खीसराय में 'बिहार सर्वोदय-मंडल की कार्यसमिति ने भागलपुर और सारण में भी अभियान चलाने का निर्णय किया। समिति ने उसी बैठक में अन्य जिलों के सर्वोदय-मंडल को भी अपनी शक्ति एवं इच्छानुसार अपने जिले में काम करने की अनुमति दे दी।

निर्णयानुसार सितम्बर महीने में मुजफ्फरपुर जिले के शिवहर, रुन्नीसैदपुर, मड़ुआ, कन्दाहा एवं गुरौल, इन पाँच अंचलों में पाँच; दरभंगा जिले के बेनीपुर, दहेड़ी, मनीगाछी और बिरौल अंचलों में चार; सहरसा जिले के सोनबरसा, किशनगंज और सौर, तीन अंचलों में तीन; पूर्णियाँ जिले के कृत्यानगर, अलरा एवं पूर्व सदर, तीन अंचलों में तीन; संथाल परगना जिले के रामगढ़, सरमा, जामताड़ा और पत्थरगामा, चार अंचलों में चार; मुंगेर जिले के गोगरी और बड़हिया, दो अंचलों में दो; सारण जिले के मांझी, गोरे, महराजगंज एवं मैरुटपुर, चार अंचलों में चार; चंपारण जिले के मोतीहारी सदर एवं लौरिया, दो अंचलों में दो; भागलपुर जिले के सबौर अंचल में एक; गया जिले के शेरघाटी अंचल में एक एवं धनबाद जिले में एक; कुल तीस टोलियाँ 'बीघा-कट्ठा अभियान' में लगी रहीं। पटना जिले में भी बख्तियारपुर, बाढ़, मोकामा, विक्रम, बिहार एवं एकंगरसराय अंचल में अभियान-टोली ने कुछ दिनों तक पदयात्रा की।

पटना जिले के कार्यकर्ताओं ने अपने जिले के अनुभव बताते हुए कहा कि पटना जिले में उन्हें जमीन मिलने की आशा नहीं है, चाहे कितना भी प्रयास किया जाय। इसलिए पटना जिले के कार्यकर्ताओं का एक दल भागलपुर एवं दूसरा दल मुंगेर जिले में काम करने के लिए भेजा गया। भागलपुर जिले में कार्य लेने की तैयारी नहीं थी, इसलिए दल को विवश होकर पटना लौट आना पड़ा और लौटने के बाद वे पूर्णियाँ जिले में काम करने के लिए गये हैं।

बिहार राज्य के बाहर के महाराष्ट्र से ६, उड़ीसा से २, दिल्ली से १, मैसूर से २, गुजरात से ९, बंगाल से ५ और उत्तर प्रदेश से २६; इस तरह कुल ५१ कार्यकर्ता अभियान में लगे हैं। इनमें से ६ कार्यकर्ता भागलपुर में, ३ मुंगेर में, १ गया में और १५ पूर्णियाँ में 'बीघा-कट्ठा' अभियान में लगे थे। उत्तर प्रदेश के २६ कार्यकर्ताओं को बाहर भेजने की व्यवस्था की जा रही थी कि अत्यधिक बाढ़ एवं वर्षा के कारण मुंगेर, भागलपुर, पटना और गया जिले में काफी नुकसान हुआ। मुंगेर के तीनों कार्यकर्ता लौट कर पटना चले आये, जिन्हें उत्तर प्रदेश के २३ कार्यकर्ताओं के साथ मुंगेर जिले में बाढ़पीड़ित क्षेत्र में सेवा करने के लिए भेजने की व्यवस्था की जा रही है। उत्तर प्रदेश के अन्य ३ कार्यकर्ता लौट गये, क्योंकि उनका स्वास्थ्य बाढ़पीड़ित क्षेत्र में काम करने के अनुकूल नहीं था। शाहाबाद जिले के ७ कार्यकर्ता चंपारण में एवं पटना जिले के ८ कार्यकर्ता पूर्णियाँ में काम कर रहे हैं। पटना जिले के कार्यकर्ताओं का दूसरा दल मुंगेर जिले के बड़हिया में काम करने गया था, वह लौट कर मोकामा क्षेत्र में काम कर रहा है। इस प्रकार लगभग २५० कार्यकर्ता बीघा-कट्ठा अभियान में लगे हैं।

२५ दिसम्बर को दुर्गावती में जब विनोबाजी ने प्रवेश किया था, उस दिन से अभी तक नीचे दिये अनुसार भूदान मिला है :

सारण जिले में ६०० कट्ठा, मुजफ्फरपुर जिले में १०५ दानपत्रों द्वारा १८४७ कट्ठा १२ धूर; दरभंगा जिले में ८०० कट्ठा, सहर्सा जिले में ३४८५, कट्ठा, पूर्णियाँ जिले में २५३४ दानपत्रों द्वारा २५५४३ कट्ठा, संथाल परगना जिले में २१९८ दानपत्रों द्वारा ३७,१४१ कट्ठा १४ धूर, मुंगेर जिले में ३,५०० कट्ठा, गया जिले में ८०० कट्ठा, पटना जिले में ९७ कट्ठा, भागलपुर जिले में २५० कट्ठा, धनबाद जिले में २१ दानपत्रों द्वारा ६०६ कट्ठा।

कुल ८१,५२४ कट्ठा ६ धूर जमीन के दानपत्र मिले हैं। सबसे अधिक संथाल परगना में २,१९८ दानपत्रों द्वारा ३७,१४१ कट्ठा १४ धूर भूमि मिली है, जिसमें केवल रामगढ़ थाने में १,७३१ दानपत्रों द्वारा ३२,०१३ कट्ठा ११ धूर जमीन मिली है। बाबा की पदयात्रा के समय लगभग १५,००० कट्ठा जमीन के दानपत्र मिले थे।

इस प्रकार विनोबाजी के बिहार-प्रवेश के समय से अभी तक ९६,००० कट्ठा जमीन भूदान में मिली है, जो हमारे लक्ष्यांक, ११ लाख की तुलना में बहुत ही कम है। इधर बिहार-सरकार ने भी हदबन्दी बिल के अन्तर्गत एक एकड़ से अधिक और पाँच एकड़ तक के भूमिवानों से बीसवाँ भाग, पाँच एकड़ से अधिक एवं बीस एकड़ से कम जमीन वाले भूमिवानों से दसवाँ भाग एवं बीस एकड़ और इससे अधिक जमीन वाले से छठा भाग 'लेवी' के रूप में लेने के लिए विधान-सभा एवं विधान-परिषद से स्वीकार करा लिया है, जो जल्द ही राष्ट्रपति के हस्ताक्षर के बाद कानून बनने वाला है। जमीन की अधिकतम सीमा एवं परिवार की जगह व्यक्ति को बैठाने से सरकार को नाममात्र के लिए ही जमीन मिलेगी। लेकिन बिल अन्तर्गत 'लेवी' स्वीकार कर सरकार ने हमारे मूल सिद्धान्त—संपत्ति पर प्रत्येक व्यक्ति का अधिकार है—को स्वीकार कर लिया है।

इस प्रस्तावित कानून से लाभ के दो अनुभव बताये जाते हैं। पटना जिले के कुछ कार्यकर्ता बताते हैं कि इस बिल के स्वीकार हो जाने से जमीन वाले भूदान-कार्यकर्ताओं पर नाराज हो गये हैं और भूदान में जमीन देना नहीं चाहते हैं, लेकिन कार्यकर्ताओं की बड़ी जमात का कहना है कि इस बिल से सरकार को जमीन न देकर भूदान में देने वालों की संख्या अत्यधिक है। -

नशाबन्दी-आंदोलन

बिहार-सरकार ने महात्मा गांधीजी के जन्म-दिवस, २ अक्टूबर से मुंगेर जिले के जमुई थाने के मल्लेपुर गाँव से देशी शराब की दुकान को उठा लिया है। वहाँ कई महीनों से सर्वोदय-कार्यकर्ता पिकेटिंग कर रहे थे। ६ जुलाई को श्री जयप्रकाश नारायण ने भी पिकेटिंग की।

राजनीतिक दल और आचार-संहिता

२६ सितम्बर, '६१ को ६ बजे शाम को पटना के विधायक क्लब में राजनीतिक दलों के प्रमुख व्यक्तियों की एक बैठक का आयोजन विधान-परिषद के अध्यक्ष के सभापतित्व में किया गया था, जिसमें कांग्रेस, प्रजा-समाजवादी, कम्युनिस्ट, सोशलिस्ट, स्वतंत्र एवं झारखंड पार्टी के लगभग ३० व्यक्तियों ने भाग लिया। बिहार सर्वोदय मंडल द्वारा प्रस्तावित आचार संहिता पर सर्वसम्मत निर्णय करने के लिए ९ अक्टूबर को बिहार-सरकार के मुख्य मंत्री के सभापतित्व में विधायक क्लब में एक बैठक हुई, जिसने ११ सूत्री आचार-संहिता स्वीकार की। स्वीकृत संहिता के प्रचार की दृष्टि से १० अक्टूबर को विधान सभा के सदस्य एवं अन्य रचनात्मक संस्थाओं के कार्यकर्ताओं की एक आम सभा का आयोजन श्री जयप्रकाश नारायण की अध्यक्षता में किया गया। श्री जयप्रकाशजी ने स्वीकृत आचार-संहिता पर प्रकाश डाला।

प्रचार-यात्राएँ एवं शिविर

२ अक्टूबर से श्री जयप्रकाश नारायण की यात्रा का कार्यक्रम बिहार के विभिन्न स्थानों में 'बीघा-कट्ठा' की सफलता के लिए बनाया गया था। अभियान के क्रम में सर्वोदय-कार्य के लिए अर्थ-संग्रह एवं सर्वोदय-साहित्य की बिक्री का भी कार्यक्रम बनाया गया था। लेकिन सहसा वर्षा एवं बाढ़ के कारण श्री जयप्रकाश नारायण ने अपनी यात्रा स्थगित कर बाढ़-पीड़ितों की सेवा करने का निश्चय बिहार सर्वोदय मंडल की कार्य-समिति को बताया। श्री जयप्रकाशजी के स्वागतार्थ कार्यकर्ताओं ने कठिन परिश्रम कर संतोषप्रद जमीन भी प्राप्त कर ली थी और सर्वोदय-कार्य के लिए काफी रकम की थैली भी देने वाले थे। लेकिन प्राकृतिक प्रकोप के कारण अप यात्रा स्थगित कर दी। २० अक्टूबर से ७ नवम्बर तक जिला-स्तर पर तीन दिन के शिविर का आयोजन किया गया था। लेकिन परिस्थिति पर शिविर स्थगित कर देना पड़ा।

प्राकृतिक प्रकोप एवं सेवा-कार्य

१ अक्टूबर से ४ अक्टूबर तक लगातार वर्षा होने के कारण बिहार के मुंगेर, भागलपुर, पटना और गया जिलों के लोगों की जान और माल की बड़ा नुकसान हुआ। मुंगेर जिले के सदर, लक्खीसराय, सूर्यगढ़ा आदि क्षेत्रों में एक हजार से अधिक व्यक्तियों की मृत्यु हुई तथा पचास हजार से अधिक जानवर मरे। हजारों घर पानी में बह गये तथा कई गाँवों का तो नामोनिशान नहीं रहा। बिहार सर्वोदय-मंडल के संयोजक श्री रामनारायण सिंह ने आँखों देखा हृदयद्रावक दृश्य का वर्णन मंडल की कार्यसमिति की बैठक में किया। इसके पहले मंडल को बाढ़ की अपार क्षति का भान नहीं था। बैठक ने बीघा-कट्ठा अभियान को स्थगित कर बाढ़पीड़ितों की सेवा करने का निश्चय किया और बिहार के सभी क्षेत्रों से सर्वोदय-कार्यकर्ताओं को सेवा-कार्य करने का निर्देश दिया। निर्देशानुसार उत्तर प्रदेश के २३ कार्यकर्ता एवं बिहार के अन्य जिलों से भी कार्यकर्ताओं की टोली मुंगेर के लिए रवाना हो गयी। बीघा-कट्ठा अभियान में लगे कार्यकर्ता बाढ़पीड़ितों की सहायता एवं सेवा में लग गये हैं। श्री जयप्रकाश नारायण ने भी १६ अक्टूबर से १० अक्टूबर तक बाढ़ग्रस्त क्षेत्रों में यात्रा करने का निश्चय किया है।

—रामनन्दन सिंह

दुर्ग जिले में गांधी-जयन्ती—बिहार की बाढ़ में श्रमभारती—'अमर भारती' देहरादून—काशी में सर्वोदय-पक्ष-पदयात्रा—अहमदाबाद में साहित्य-प्रचार—हिसार में सर्वोदय-प्रचार—इन्दौर में साहित्य-प्रचार—बिहार में बीघा-कट्ठा अभियान—मुंगेर खादी ग्रामोद्योग संघ का निवेदन।

दुर्ग जिले में 'गांधी-जयंती' के अवसर पर सब राजनीतिक दलों ने मिल-जुल कर आयोजन किया। श्रीमती सरस्वती दुबे ने महिला-मंडल में बहनें सर्वोदय-कार्य में कैसे योग दे सकती हैं, यह समझाया। अशोभनीय पोस्टरों के खिलाफ महिलाओं को आंदोलन करने की भी उन्होंने अपील की। सभा में श्री रामानंद दुबे, श्री राजेन्द्र शुक्ल, श्री उमेद सिंह आदि कार्यकर्ताओं के भाषण हुए।●

बिहार की बाढ़ में सबसे अधिक नुकसान मुंगेर जिले में हुआ है। श्रमभारती आश्रम, खादीग्राम भी मुंगेर जिले में है। वहाँ की चिट्ठी के अनुसार, आश्रम के प्रमुख केन्द्र खादीग्राम को विशेष नुकसान नहीं पहुँचा है। लेकिन रामचन्द्रपुर के एक उपकेन्द्र सिगारपुर में सूत-कपड़ा भीग गया है। घरों के गिरने से ५० चरखे टूट-फूट गये और कुछ लापता भी हुए हैं। उक्त केन्द्र में करीब २८ हजार रु. नुकसान हुआ।●

देहरादून में श्री हीरालाल शर्मा, जो एक शिक्षाशास्त्री हैं और कांग्रेस, भारत सरकार और दिल्ली राज्य में कई ऊँचे पदों पर काम कर चुके हैं, उन्होंने सन् १९५६ से 'अमर भारती' की स्थापना खादी-ग्रामोद्योग, ग्रामस्वराज्य के विकास के लिए की है। 'अमर भारती' का क्षेत्र देहरादून, टिहरी गढ़वाल और उत्तर काशी है। 'अमर भारती' के माध्यम से अंबर परिश्रमालय, अंबर महिला विद्यालय, महिला बालवाड़ी विद्यालय, खादी उत्पादन बिक्री-केन्द्र, चिकित्सालय, दुग्धशाला, मधुमक्खी-पालन केन्द्र आदि प्रवृत्तियाँ चलती हैं।

काशी के सर्वोदय-मंडल के विवरण के अनुसार : विनोबा-जयन्ती से गांधी-जयंती तक का कार्यक्रम इस तरह रहा : भूवितरण के लिए २२ गाँवों में १०० मील की पदयात्रा हुई। ९ गाँवों में भूवितरण-कार्य सफल रहा और २ एकड़ ३९ डिसमिल भूदान मिला। दो सौ रुपये की खादी-बिक्री हुई। इसके अतिरिक्त ५० रु० का सर्वोदय-साहित्य पदयात्रा के दौरान गाँवों में बेचा गया। काशी के अंचल में पदयात्रा का आयोजन श्री सरयू भाई ने गाँव के अपने कुछ साथियों के साथ किया, जिसमें विकास-खण्ड व तहसील के तत्सम्बंधित राजकीय कार्यकर्ताओं का स्नेह व सहयोग मिला।

ता० ७ से ११ अक्टूबर तक अहमदाबाद की प्रसिद्ध केलिको मिल में सर्वोदय-कार्यकर्ताओं ने मजदूरों के बीच साहित्य-प्रचार का काम किया। इस दौरान में करीब २२ सौ रुपये का साहित्य मजदूरों के बीच बिका और भूदान-पत्रिकाओं के ग्राहक बने। इस साहित्य-सप्ताह के अन्तर्गत जो सर्वोदय-साहित्य बिका, उस पर मिल की ओर से आधी कीमत की सहायता भी दी गयी। यह मिल ३ 'शिफ्ट' में चौबीसों घण्टा चलती है। रात की 'शिफ्ट' में आने वाले मजदूरों में भी साहित्य-प्रचार करने की दृष्टि से एक रात और दिन, पूरे २४ घण्टे तक सर्वोदय-कार्यकर्ताओं ने साहित्य-प्रचार किया। बिक्री की पूर्वतैयारी के लिए मजदूरों के प्रतिनिधियों की एक प्रचार-सभा शुरू में की गयी थी, जिसमें श्री बबलभाई मेहता ने सर्वोदय-विचार-प्रचार का महत्त्व समझाया।●

हिसार के जिला सर्वोदय-मंडल के सितम्बर माह के विवरण में बताया गया है कि ५१ बीघा ८ बिस्वा भूमि का वितरण किया गया। पत्रिकाओं के ११ ग्राहक बनाये गये। १२१८ रु० की साहित्य बिक्री की गयी। १७९ रु० का सम्पत्तिदान मिला और १३० सर्वोदय-पात्रों से ९४ रुपये संगृहीत हुए। श्रीमती आशादेवी आर्यनायकम् की यात्रा में १८ सभाएँ और गोष्ठियाँ आयोजित की गयीं। २८ प्रतिनिधि नशाबंदी-सम्मेलन में दिल्ली गये। इस वक्त जिले में ४० कार्यकर्ता काम कर रहे हैं।●

'विनोबा-जयन्ती' के सुअवसर पर तीन दिन तक शांति-सेना विद्यालय कस्तूरबाग्राम, इंदौर की अध्यापिकाओं एवं छात्राओं ने इंदौर नगर में स्थानीय सर्वोदयप्रेमी बहनों के सहयोग से एक हजार रुपये के सर्वोदय-साहित्य की नकद बिक्री की। उन्होंने तीनों दिन नगर में उन्हीं स्थानीय बहनों के यहाँ निवास किया तथा घर-घर पहुँचने का प्रयत्न किया। एस० सी० ओ० टी० की बहनों ने भी प्रचार-कार्य में हाथ बँटाया। 'गांधी जयन्ती' पर पुनः तीन दिन तक सभी बहनों ने नगर में साहित्य-प्रचार का कार्य किया।●

सहरसा जिले के सोर, वीनवरसा और किशनगंज अंचल में तीन टोलियाँ बीघा-कट्ठा-अभियान को कार्यान्वित करने के लिए गाँव-गाँव घूम रही हैं। सितम्बर महीने में टोली ने ६५ दानपत्रों द्वारा ९८५ कट्ठा जमीन भूदान में प्राप्त की है और २२६ रुपये की साहित्य-बिक्री की है अभियान में ग्राम पंचायत के मुखिया एवं सरपंच ने सक्रिय सहयोग प्रदान किया है।

——बिहार प्रांतीय पदयात्रा-टोली को संताल परगना में २०४ दानपत्रों द्वारा २८५० कट्ठे का दान मिला।●

मुंगेर की बाढ़ के कारण जो क्षति इस जिले को पहुँची है, उसका मुकाबला करने के लिए जिला खादी ग्रामोद्योग संघ, मुंगेर ने अपने सभी मित्रों एवं सहयोगियों की सेवा में निवेदन किया है कि इस कार्य में निम्न प्रकार से अपना योग-दान दें।

(१) हर कार्यकर्ता अपने महीने के वेतन में से एक दिन का वेतन दें।

(२) कत्तिन, बुनकर, धोबी और कारीगरों से चंदा मांगा जाय।

(३) सर्वसाधारण जनता से भी चंदा मांगा जाय।

मुंगेर की बाढ़ में श्री रामर्मूति भाई, श्री निर्मल भाई तथा अन्य ३०-३५ कार्यकर्ता राहत के काम में जुटे हैं।●

प्रादेशिक पदयात्रा

गुजरात सर्वोदय-पदयात्रा

करीब २२ माह से गुजरात में एक अखंड प्रान्तीय पदयात्रा सातत्यपूर्वक चल रही है। ७-८ साथी यात्रा में रहते हैं। १५ जिलों में घूम कर अभी खेड़ा जिले में आये हैं। इस पदयात्रा में ४९ श्रमयज्ञ, ७० विचार शिविर, ११५९ सभाएँ, २९४२ मील का प्रवास हुआ। १८,७८३ रु० का साहित्य-प्रचार हुआ। ८९६ "भूमिपुत्र", १६१ "क्षितिज", १६ "भूदान" व "भूदान-यज्ञ" के ग्राहक बनाये गये। समाजशास्त्र, अर्थशास्त्र, राज्यतन्त्र और फिलसुफी के ७१ अध्ययन-वर्ग अलग-अलग विषय पर लिये गये। ३११ गुंडी का सूत्रदान, ६२-३८ एकड़ भूमि-दान-प्राप्ति, २५८-१६ एकड़ जमीन का वितरण हुआ। १०४-२७ एकड़ दान रद्द किया। १० सम्पत्तिदान, २०० रु० नकद दान, १ कूपदान मिला। ४४९ गाँव और ७५ नगरों और कस्बों में होकर यह पदयात्रा आगे कूच कर रही है। पदयात्रा में सर्वश्री हरीश व्यास, सुमन्त व्यास, वसन्त देसाई, विनोद पटेल, विश्वनाथ पंड्या आदि साथ दे रहे हैं। लोगों की ओर से खूब प्रेम और सद्भाव मिल रहा है। शान्ति-सेना, ट्रस्टीशिप, उद्योगदान, ग्रामस्वराज्य, भूदान-ग्रामदान, नयी तालीम आदि विषयों पर वार्तालाप, व्याख्यान, गोष्ठियाँ आदि होती हैं। गांधी-विनोबा, रवींद्रनाथ-रसेल, अरविन्द-कृष्णमूर्ति के विचारों का अध्ययन पदयात्रियों का संबल है।

बिहार प्रान्तीय पदयात्रा-टोली

बिहार प्रांतीय पदयात्रा-टोली द्वारा संताल परगना जिले में श्री ब्रजमोहन शर्मा, श्री वैद्यनाथ प्रसाद चौधरी एवं श्री मोतीलाल केजरीवाल के नेतृत्व में ३२१ मील की यात्रा हुई। कुल ७५ पड़ावों द्वारा २७१ ग्रामों से सम्पर्क हुआ और सर्वोदय विचार का प्रचार हुआ। इस अवसर पर १०४ दानपत्रों द्वारा २८५० कट्ठे का भूमिदान मिला। 'भूदान-यज्ञ' के ७ ग्राहक बने एवं १७८ रु० की साहित्य बिक्री तथा २६१ रु० की खादी बिक्री हुई।

२६ सितम्बर को टोली का प्रवेश भागलपुर जिले में हुआ है, जहाँ एक महीने तक पदयात्रा होगी। बाद में टोली मुंगेर जिले में प्रवेश करेगी। टोली में ७ भाई निरंतर घूमेंगे।

विषय-सूची

श्रीकृष्णदत्त भट्ट, अ० भा० सर्व सेवा संघ द्वारा भार्गव भूषण प्रेस, वाराणसी में मुद्रित और प्रकाशित। पता : राजघाट, वाराणसी–१, फोन नं० ४३९१
वार्षिक मूल्य ६) पिछले अंक की छपी प्रतियाँ ९५०० : इस अंक की छपी प्रतियाँ ९३५० एक अंक : १३ नये पैसे

नाटक अंग्रेजी लादी है। वह तो उसे भूल ही जायेगा, न भूले तो आश्चर्य !

हम अच्छी अंग्रेजी सीखे हैं, क्योंकि जब हम हाईस्कूल में पढ़ते थे तो हमें अंग्रेजी में ही शिक्षण मिला। हमारे गुरुजी की और हमारी मातृभाषा एक ही थी, मराठी। लेकिन कक्षा में प्रवेश करते समय "मे आई कम इन सर" (क्या मैं अन्दर आ सकता हूँ।) इस तरह अंग्रेजी में पूछना पड़ता था, मराठी में नहीं पूछ सकते थे। हाईस्कूल में कदम रखने के बाद अंग्रेजी न बोलना पाप था—चाहे भूगोल सीखना हो या गणित। कोई शंका पूछनी हो, तो सवाल अंग्रेजी में बना कर पूछना पड़ता था। अंग्रेजी में नहीं बना सके तो शंका मन की मन में ही रही। इतना जहाँ अंग्रेजी का जोर था वहाँ खाना-पीना, सोना यहाँ तक कि स्वप्न भी अंग्रेजी ही में आते थे। 'साइन पोस्ट' अंग्रेजी में, 'माइल स्टोन' अंग्रेजी में। जैसे जहाँ-तहाँ परमात्मा होता है, वैसी अंग्रेजी थी। इतना अंग्रेजी का वातावरण उस वक्त था। अब हम आजाद भारत में हैं, तो अंग्रेजी का वातावरण वैसा ही बना रखना है तो 'क्विट इंडिया' (भारत छोड़ो) के बदले 'रिटर्न इंडिया' (भारत लौट आओ) कहना होगा। अब 'मिसअन्डरस्टैंडिंग' (गलतफहमी) न होने दीजिये। अंग्रेजी सीखें और मैं खूब चाहता हूँ कि उनके अच्छी तरह सीखें या तो बिलकुल न सीखें, या खूब अच्छी तरह सीखें। हरेक को अंग्रेजी का 'टोच' कोई काम का नहीं है। इसलिए मैं कहूँगा कि पहले सात-आठ साल में देसिक शिक्षा सारे भारत में चले तो उसमें अंग्रेजी न सिखायें।

अमेरिका के एक मानस शास्त्र ने कहा है कि बचपन में मनुष्य ज्यादा जल्दी सीखता है; चार-पाँच भाषाएँ सीख लेता है। मुझे भी अनुभव है। मैं अच्छी तरह जानता हूँ कि मेरी विशेषता यह है कि जिन विषयों का मुझे ज्ञान नहीं है, इसका भान मुझे रहता है ! याने मेरे अज्ञान का ज्ञान मुझे है। मैं हर विषय में नहीं बोलता हूँ, क्योंकि मैं अखबार का एडीटर नहीं हूँ, इसलिए हर विषय का ज्ञान नहीं रहता। लेकिन मैं जानता हूँ कि बचपन में मेरी स्मरण-शक्ति अच्छी थी। आज भी अच्छी ही है। मेरी माँ मेरी तारीफ करती थी कि तीन दिन में विन्या संस्कृत संध्या सीखा और पड़ोसियों को मेरी माँ बार-बार यह बताती थी कि 'हमारा विन्या तीन दिन में संस्कृत सध्या सीखा।' मैंने एक दिन उससे पूछा कि तू एक बात जानती है कि मैं तीन दिन में संस्कृत संध्या सीखा, लेकिन तुम यह नहीं जानती हो कि चार-दिन में मैं वह भूल भी गया ! यह दूसरी बात वह नहीं जानती थी। यह बच्चों की बात है कि वह तीन दिन में सीखता है और चार दिन में भूल सकता है !

— —

उस मानस शास्त्र से पूछना चाहिए कि आठ नौ साल में अंग्रेजी सीखी, लेकिन वह 'कीप अप'—कायम कैसे रखेगा ? मनुष्य को सतत आदत रहती है तो मनुष्य भूलता नहीं, आदत नहीं रही तो मनुष्य भूल जाता है। बचपन में बच्चे भाषा सीखते हैं, तो वह प्रत्यक्ष संवाद से सीखते हैं। माँ से बात करते हुए माँ की मुखाकृति देख कर वह 'क' कैसा बोलती है, 'च' कैसा बोलती है, एकाग्रचित्त से देख कर उसी पद्धति से बच्चे सीखते हैं।

अंग्रेजी भाषा इग्लैंड के बच्चे व्याकरणपूर्वक नहीं सीखते हैं। वे 'डायरेक्ट' पद्धति से सीखते हैं। लेकिन वह वातावरण यहाँ कैसे होगा, इसलिए यहाँ तो बच्चों को व्याकरण द्वारा सीखना होगा। इसके लिए पहले मातृभाषा के व्याकरण का अच्छा ज्ञान होना चाहिए। मैं असमिया व्याकरण तीन दिन में सीखा। उसका कुछ भाग मराठी व्याकरण के नजदीक है। वह जल्दी हजम हो जायगा। वह सिखाते समय मराठी व्याकरण मुझे याद आता था। ख्याल कीजिये, मैं अभी असमिया सीख रहा हूँ। उसी के साथ-साथ संस्कृत, हिन्दी सीखूँ और हर जगह कर्ता, कर्म, क्रियापद आयेगा और मैं न अपनी भाषा का व्याकरण जानूँ, न दूसरी भाषा का, तो मेरा ज्ञान कच्चा ही रहा, ऐसा कच्चा ज्ञानवान लड़का कोई भी भाषा अच्छी तरह कैसे लिखेगा ! इस वास्ते अच्छी अंग्रेजी सीखना चाहते हैं तो आठ साल के बाद सिखाइये।

बिहार के बाढ़ग्रस्त क्षेत्रों का अनुभव

सहायता-कार्य के लिए जनता में कोई उत्साह नहीं

सबकी आँखें सरकारी रिलीफ पर —जयप्रकाश नारायण

बिहार के बाढ़ग्रस्त क्षेत्रों का दौरा करके आने पर श्री जयप्रकाश नारायण ने एक वक्तव्य में कहा है:

"अतिवृष्टि, बाढ़ और तूफान ने जो दृश्य उपस्थित किया, उसके बारे में बहुत कुछ कहा और सुना गया है, किन्तु कोई व्यक्ति अपनी आँखों से उसे नहीं देखता उसे यह विश्वास नहीं होगा कि पानी और हवा विनाश के कैसे दृश्य उपस्थित करते हैं ! बहुत-से गाँव तो ऐसे प्रतीत होते हैं, जैसे उन पर बम गिराया गया हो। कई हरिजन-टोलियों का नामोनिशान नहीं है। संपत्ति और फसलों की बरबादी तो बीसों करोड़ की होगी।

पर बाढ़ग्रस्त क्षेत्रों का भ्रमण करते समय जो सबसे बड़ी खटकनेवाली बात मिली, वह यह थी कि सहायता-कार्यों के लिए लोगों में कोई उत्साह नहीं दीख पड़ा। यद्यपि स्कूल और कालेज दशहरे की छुट्टियों के लिए बन्द थे, किन्तु युवकों और छात्रों की टोलियों को गिरे हुए मकानों के मलबे साफ करते, विस्थापितों के लिए झोपड़ियाँ खड़ी करते, गन्दगी आदि साफ करते अथवा अन्य कोई महत्त्वपूर्ण काम करते हुए कहीं भी नहीं देखा। पैसी जातियों के लोग जो अपने हाथों से काम करने में कोई शर्म की बात नहीं समझते, वे अवश्य अपनी मदद आप करते हुए देखे गये। किन्तु तथाकथित प्रगतिशील समाज के लोगों को तो मानो लकवा मार गया था। ऐसे लोग कहीं कुछ करते हुए नहीं देखे गये। सामूहिक रूप से काम करते हुए तो कहीं भी लोग नहीं दीख पड़े।

साधारणतः हरएक स्थान पर लोगों की आँखें सरकारी रिलीफ पर लगी हुई हैं तथा वहीं से कोई उन्हें मदद करने के लिए आयेगा, ऐसा वे समझ बैठे हैं। कुछ सर्वोदय-कार्यकर्ता तथा अन्य सामाजिक कार्यकर्ता कहीं-कहीं सेवा-कार्य में संलग्न दीख पड़े, किन्तु राजनीतिक पार्टियों के कार्यकर्ता बाढ़ग्रस्त क्षेत्रों में साधारणतः नहीं पाये गये। वे या तो चुनाव के लिए टिकट के चक्कर में हैं अथवा सरकारी कार्यों की आलोचना कर रहे हैं। अपवादस्वरूप कहीं-कहीं कुछ राजनीतिक कार्यकर्ता सेवा-कार्य में लगे हैं, किन्तु उनकी संख्या नगण्य है।

स्थानीय समितियाँ कहीं-कहीं कुछ काम कर रही हैं, किन्तु इस मामले में पटना का कार्य बड़ा ही लज्जाजनक रहा है। जबकि दिल्ली, कलकत्ता और बम्बई जैसे स्थानों से हमारी सहायता में लोग पहुँचे, वहाँ पटना मानो नींद में है ! मैं नहीं समझता कि पटना के लोग चाहते तो एक लाख रुपया संग्रह कोई बड़ी बात होती। किन्तु इसके नागरिकों को ही दोष देना उचित है। पटना नगर निगम के सदस्य, ... साहब, जो प्रथम नागरिक कहलाते हैं, नगर के अन्य प्रमुख व्यक्तियों को आगे बढ़कर काम शुरू करना था। केवल कुछ बड़े-बड़े लोगों की समितियाँ संगठित कर देने से काम नहीं चलेगा। वास्तविक काम घर-घर जाकर धन, वस्त्र, कम्बल आदि संग्रह करना है।

संकटग्रस्त क्षेत्रों में युद्ध-स्तर पर सहायता-कार्य चलाने का जो आश्वासन सरकार की ओर से दिया गया था, वैसा कहीं नहीं हो रहा है। इसमें सबसे बड़ी कठिनाई सरकार के अपने नियम और काम करने के तरीके तथा प्रशासन का अत्यधिक केन्द्रीकरण है।"

भारत का अपना समाजवाद

दुनिया में आज सर्वत्र समाजवाद का बोलबाला है। लेकिन हमारे देश का अपना एक समाजवाद है, जो प्रचलित समाजवाद से अधिक व्यापक है। भारतीय समाजवाद ने गाय को भी अपने समाज का एक अंश माना है, और उसको पूरा रक्षण देने की जिम्मेवारी उठायी है।

जिम्मेवारी उठायी तो सही, लेकिन उसे वहन करने में जिन दो गुणों की आवश्यकता थी, उन दोनों में हम नाकाम साबित हुए हैं। वैज्ञानिक बुद्धि और व्यापक करुणा ये हैं वे दो गुण, जिनके बिना हमारा दावा या हमारी जिम्मेवारी हम पूरी नहीं कर सकते हैं।

विज्ञान और आत्मज्ञान के समन्वय की आवश्यकता इन दिनों मैं सतत लोगों के सामने रख रहा हूँ। हर क्षेत्र में इसकी आवश्यकता महसूस हो रही है, गो-सेवा के क्षेत्र में विशेष ही। इसमें आम जनता, व्यापारी वर्ग, सरकार और तपस्वी सशोधक चारों का पूरा सहयोग होना चाहिए।

सर्व सेवा संघ ने गो-सेवा के काम के लिये एक गो-सेवा समिति बनाई और वह अखिल भारतीय स्तर पर गो-सेवा के बारे में सोचती है, यह एक बहुत ही शुभ आरंभ है।

असम यात्रा से
१८-१०-६१

—विनोबा

सर्व सेवा संघ का कृषि-गोसेवा समिति द्वारा आयोजित गो-सेवा सम्मेलन के लिये दिया हुआ सन्देश।

उत्तराखण्ड में दादा धर्माधिकारी

सुन्दरलाल बहुगुणा

खाँसी, कमजोरी और बुरे मौसम के बावजूद भी दादा धर्माधिकारी ने उत्तराखण्ड की सर्वोदय-यात्रा का निमन्त्रण स्वीकार किया और २३ सितम्बर को वे हरिद्वार पहुँचे। वहाँ से २ सितम्बर को रुद्रप्रयाग से मन्दाकिनी के किनारे-किनारे हम केदारनाथ की ओर बढ़े। १२ मील तक मोटर और फिर उसके बाद पदयात्रा प्रारम्भ हुई। २५ सितम्बर को चन्द्रापुरी से चल कर दोपहर को गुप्त काशी और शाम को नारायण-कोटी पहुँचे।

नारायण कोटी में रात को दादा को बुखार आ गया। हमने १२॥ मील की थकाने वाली पहाड़ी यात्रा की थी, जिसमें दो मील की खड़ी चढ़ाई थी। फिर शाम को कुछ बूँदाबादी भी हुई और रात को मूसलधार वर्षा। सुबह उठे तो बड़े पशोपेश में थे। तय हुआ कि आज नारायण कोटी रुकें। पर थोड़ी देर में बादल छँट गये और सूर्य भगवान के दर्शन हो गये। हम भोजन बना रहे थे कि दादा उठ कर नीचे आये और कहने लगे, "मेरी तबियत का आसमान के साथ बड़ा सम्बन्ध है। चलो, जब तक वर्षा नहीं आती, आगे बढ़ें। वैसे पैदल चलने की हिम्मत है, किन्तु घोड़े की सवारी मिल जायेगी, तो आसानी होगी।" घोड़ा नहीं मिल सका। फिर भी हम आगे बढ़े। एक मील चलकर मूसलाधार वर्षा शुरू हुई। दो घंटे तक रास्ते में ही रुकना पड़ा, किंतु साथ ही इतने में घोड़े का प्रबंध हो गया और २६ ता० की शाम को हम फाटा पहुँच गये।

फाटा से केदारनाथ १७ मील है। आस पास छोटे-छोटे पहाड़ी गाँव सीढ़ियों जैसे खेतों से घिरे हुए हैं। नीचे मंदाकिनी की वेगवती धारा और उस पार पहाड़ की चोटी से ठेठ तलहटी तक मंदाकिनी को स्पर्श करने वाला घना जंगल। फाटा के जूनियर हाईस्कूल के कुछ लड़के रात को शिक्षकों के साथ वहीं रहते हैं। शाम को खा पीकर दादा के साथ बातचीत करने के लिए वे चट्टी पर आ गये और चारों ओर से दादा को घेर कर बैठ गये।

दादा ने मास्टर साहब से पूछा, "कहाँ कहाँ के लड़के हैं और इनके पिताजी क्या क्या करते हैं?"

मास्टरजी ने बताया कि ये आस-पास के हैं और इनमें से अधिकांश के पिता खेती बाड़ी करते हैं। कुछ मजदूरी करते हैं।

दादा ने लड़कों से पूछा, "तुम क्या बनना चाहते हो?"

एक लड़के ने कहा, "हम सर्वोदय-प्रचारक बनना चाहते हैं।" तो दूसरे ने कहा, "हम सबकी सेवा करना चाहते हैं।"

और पूछने पर कि कैसी सेवा? उत्तर मिला कि "नौकरी करके सेवा करना चाहते हैं, जिससे देश में नाम हो।"

दादा—"नौकरों का थोड़े ही नाम होता है! क्या तुम किसी नौकर का नाम बता सकते हो? गांधीजी का नाम है। वे नौकर नहीं थे। परन्तु जो मजदूरी करता है, खेती करता है, उसकी इज्जत नहीं है। जो बाबू है उसकी इज्जत है। इसलिए तुम चाहते हो कि तुम बाबू बनो। डाक्टर साहब की, कलक्टर साहब की, प्रोफेसर साहब की—सबकी इज्जत है। लेकिन तुम्हारे पिताजी की ऐसी इज्जत नहीं है। अब तुम यह बताओ कि तुम्हारे पिताजी मजदूरी न करें तो इनका काम चलेगा?"

लड़के—"नहीं चलेगा।"

दादा—"नहीं चलेगा न! अतः दुनिया ऐसी बननी चाहिए, जिसमें जो अन्न पैदा करता है, उसकी इज्जत हो। जो चीज बनाता है, उसकी इज्जत हो। आज क्या चमार की इज्जत है?"

लड़के—"नहीं।"

दादा—"जो जूते बनाता है उसकी इज्जत नहीं, जो खरीद कर पहनता है, उसकी इज्जत है। खरीद तो हर कोई सकता है।

"इसी तरह आज स्कूल से पास होकर कालेज में पढ़ने के लिए वह लड़का जायेगा, जिसके पास पैसा होगा। लेकिन जो योग्य है, पर गरीब है, वह नहीं जा सकता। दूध बीमार को नहीं मिलता, पैसे वाले को मिलता है। हम चाहते हैं। जिसको जरूरत हो उसको चीज मिले।

"दूसरी चीज, पुलिस के सिपाही की इज्जत है या दुकानदार की?"

लड़के—"*पुलिस के सिपाही की।*"

दादा—"दुकानदार के पास हजारों रुपया है, फिर भी वह सिपाही के सामने झुकता है, क्योंकि सिपाही के पास हुकूमत है। हम चाहते हैं कि जो मेहनत करता है, उसकी इज्जत हो।

"तुम्हारे गाँव में कोई पहलवान डंडा लेकर आवे तो लोग पहलवान साहब, पहलवान साहब, कहते हैं। डंडे वाले की इज्जत नहीं होनी चाहिए, लेकिन मेहनत करने वाले की हो।"

सारा देश हमारा है

दादा ने फिर विद्यार्थियों से पूछा, "तामिलनाड जानते हो कहाँ है?" कोई उत्तर नहीं मिला। "अच्छा, यह तो बताओ कि कलकत्ता कहाँ है? मद्रास कहाँ है? बम्बई कहाँ है?"

लड़कों ने कहा, "भारतवर्ष में।"

दादा—"तो तुम्हारा देश कितना बड़ा है! समझे न! केवल उत्तराखण्ड ही तुम्हारा नहीं है, न पूरा देश तुम्हारा है। उत्तराखण्ड में जितनी नदियाँ हैं, वे ही तुम्हारी नहीं हैं। कावेरी भी तुम्हारी है, सतलज भी तुम्हारी है। हर लड़का कहता है कि मैं पंजाबी हूँ, बंगाली हूँ, महाराष्ट्री हूँ। तुम्हें कहना चाहिए कि हम हिन्दुस्तानी हैं।

"तुम जानते हो कि देश में झगड़े हो रहे हैं। मास्टर तारा सिंह कहते हैं कि पंजाबी सूबा चाहिए। दक्षिण वाले कहते हैं कि अलग प्रदेश चाहिए। फिर भारतवर्ष किसका है? जो किसी का देश नहीं, उसे कौन बचायेगा?"

सब लड़के एक-दूसरे की ओर देखने लगे। दादा ने पूछा, "*क्या सिपाही बचा* देगा?" उनके पास कोई उत्तर नहीं था।

दादा ने कहा, "इसलिए हर लड़के-लड़की को सीखना चाहिए कि गढ़वाल गढ़वालियों का भी है, गुजरातियों का भी है। तो क्या मैं यहाँ रह सकता हूँ?"

लड़के—"अवश्य रह सकते हैं।"

दादा—"तो फिर मैं किस भाषा में बात करूँगा?"

लड़के—"हिन्दी में।"

दादा—"और अगर तुम गढ़वाली में और मैं मराठी में बात करूँ तो एक-दूसरे की भाषा समझ सकेंगे? नहीं। फिर इशारों से बात करेंगे। तो यह गूँगों का देश बनेगा। इसलिए तुम्हारे शिक्षण में भी ऐसी भाषा होनी चाहिए, जिसमें सारे देश के लोग एक-दूसरे से बात कर सकें।

"ऐसा देश तुम्हारा बने। इसे हम बनावेंगे कि तुम बनाओगे?"

लड़के—"हम बनावेंगे।"

दादा—"यह सर्वोदय का काम है। सर्वोदय का काम किसी एक का काम कर देना नहीं, सर्वोदय का काम सारे देश को बनाना है। सबका उदय। आज सबसे पिछड़े हुए वे हैं, जो मेहनत करते हैं। भंगी हैं, मजदूर हैं, किसान हैं, उनकी इज्जत नहीं है। उनकी इज्जत बढ़ाना तुम्हारा काम हो।"

एक शिविरार्थी का शिविर

२७ सितम्बर को प्रातः खुले आसमान ने हमें फाटा से आगे बढ़ने का न्योता दिया। २ मील तक रास्ता घने जंगल के बीच से गुजरता था। "पहाड़ों में जहाँ पर खेती से गुजारे के लायक पूरा अनाज नहीं होता, वहाँ स्वावलम्बन कैसे सधेगा? और फिर बाजार कैसे मिटेगा?"—यह सवाल मैंने दादा से पूछा। उनका उत्तर था कि "अभी तक अच्छी तरह से इसकी खोज नहीं हुई है कि यहाँ पर क्या उपज सबसे अच्छी हो सकती है। जहाँ तक बाजार का प्रश्न है, आवश्यकता की चीजें लोगों को मिलें, इसके लिए लोग सहकारिता के आधार पर कोई व्यवस्था करें। परन्तु उसमें मुनाफे का सवाल नहीं रहेगा। यह उसी प्रकार होगा। जैसे पीने के पानी का इन्तजाम किया जाता है।"

हम आगे बढ़ रहे थे कि वेग से बहती हुई एक पहाड़ी नदी का पुल आ गया। नदी से गूलें निकाल कर पनचक्कियाँ चलाने के लिए जलशक्ति का उपयोग किया गया था। दूसरे कार्यों के लिए भी इसका उपयोग किया जा सकता है, परन्तु दादा ने बताया कि उसी हद तक किया जाना चाहिए जहाँ तक मनुष्यों को बेकार न बनायें।

रामपुर तक पाँच मील का रास्ता हमने *आसानी से तय कर लिया। इसमें तीन* घंटे लगे। इस गाँव में कुछ दिन पहले श्री केदार सिंह स्थानिक शांति-सैनिक बने थे। हम उनके पास ही टिकने वाले थे। उनकी दूकान पर जाकर बैठ गये। एक हँसमुख तरुण बंडी और जाँघिया पहिने हुए दादा के सामने हाथ जोड़कर खड़ा हो गया। दादा ने पूछा, "क्या केदारसिंहजी के लड़के हो?

"नहीं, मैं ही केदारसिंह हूँ।" उत्तर मिला।

दादा ने उठ कर उनकी पीठ थपथपाई बाहर की दुनिया से दूर रहने वाले *इस तरुण को तो मानों खजाना ही मिल* गया। दादा से पूछने लगा, "आप कहाँ रहते हैं?"

दादा—'साधना केन्द्र, काशी में,"

केदारसिंह—'सर्वोदय में कब से हैं?"

दादा—"इस समय मेरी उम्र ६२ वर्ष की है। २० वर्ष से सर्वोदय का कार्य करता हूँ।

दादा ने केदारसिंह से पूछा, "तुम सर्वोदय के बारे में क्या जानते हो?"

केदारसिंह—"थोड़ा-बहुत जानता हूँ। आप कुछ बताइए।"

दादा—"तो अपनी कापी लेकर आओ। तुम्हें लिखा देता हूँ।"

मैं दादा के कई शिविरों में रहा हूँ। इनमें प्रायः खूब पढ़े-लिखे लोग श्रोता रहे हैं। कुछ दूर दूर से भी उनके प्रवचन सुनने के लिए आते रहे हैं, परन्तु केदार-नाथ के निकट के इस छोटे से गाँव में पढ़े-लिखे केवल एक कार्यकर्ता का शायद *यह उनका पहला शिविर होगा।* सुनने वाले दो तीन लोग और भी आ गये। दादा ने लेटे-लेटे केदार सिंह को सरल भाषा में संक्षेप में सर्वोदय का अर्थ लिखा दिया।

शंकराचार्य की समाधि पर

रामपुर में दोपहर का विश्राम कर हम मन्दाकिनी के किनारे-किनारे आगे बढ़े। यहाँ से केदारनाथ तक जाने और वापस

धर्म की सफलता का प्रश्न !

• साधक

पंथ, या सम्प्रदाय से निकल कर धर्म जब समाज में व्याप्त होगा, तभी उसका असली मकसद पूरा होगा

धर्म परम आनन्द की उपलब्धि के लिए जीवन और सत्य के बीच सन्तुलन उत्पन्न करता है। जीवन एक ओर तथा सत्य दूसरी ओर न रह जाय, इन दोनों में कोई असंगति न हो जाय, इसलिए धर्म का उद्देश्य इन दोनों के बीच सुसंवादिता निर्माण करना है।

विश्व इतिहास में जीवन और सत्य के बीच संतुलन पैदा करने वाले कुछ महापुरुष हुए हैं। उन्हें अपने जीवन में सत्य का साक्षात्कार भी हुआ है। उन महापुरुषों के जीवन में अहिंसा, सत्य, स्नेह, सहयोग आदि गुण प्रगट हुए। ये गुण ही धर्म के सामाजिक स्वरूप का प्रतिनिधित्व करते हैं। इन गुणों का प्रकाश ही धर्म की सफलता है। धर्म की सफलता का समस्त श्रेय महापुरुषों की उस उत्कट साधना को है, जिसके आलोक में उन्होंने जीवन और सत्य के बीच सन्तुलन कायम किया।

आज धर्म तथा धर्म के आधार पर चलने वाले अनेक सम्प्रदाय हैं। जन-मानस पर उनका व्यापक असर है। उस असर के मूल में भी इस प्रकार के साधना-परायण सन्तों की शाश्वत परम्परा ही है। उसी परम्परा के प्रवाह ने धर्म और अध्यात्म-चिन्तन को जीवित रखा है। आज भी जो कुछ सत्य का दर्शन होता है, वह इन महापुरुषों की ही देन है। फिर भी इतनी बात तो स्पष्ट ही है कि धर्म के मूल तत्त्व जन सामान्य तक नहीं पहुँच पाते हैं और सम्पूर्ण मानव-समाज में सत्य व अहिंसा की धारा नहीं बह रही है। इस कमी का कारण भी धर्म में ही निहित है, और यही धर्म की निष्फलता है।

धर्म के वास्तविक स्वरूप को आज आश्चर्यजनक रूप से भुला दिया गया है। धर्म से ज्यादा महत्त्व ईश्वर, सृष्टि, परलोक, स्वर्ग-नर्क, सत्य, मनुष्य आदि से संबंधित ग्रन्थों, दर्शनों या वचनों को महत्त्व देना ही इस भूल का कारण है।

इन ग्रन्थों, दर्शनों और वचनों को ही धर्म का मुख्य आधार मान लेने से

बल्कि धर्म के वास्तविक स्वरूप को प्रगट करने के लिए भी प्रयत्नशील होना है। जब प्रकाश फैलेगा, तब अन्धकार अपने आप तिरोहित हो जायगा। आज धर्म का प्रकाश नहीं दिख रहा है। उसका कारण इतना ही है कि जो शास्त्र, ग्रन्थ या वचन महापुरुषों को समझने के साधन थे अथवा धर्म की प्राप्ति के उपाय थे, वे ही मूलभूत धर्म का स्थान ले बैठे हैं। साधन के साध्य बन जाने से धर्म की सामाजिक अभिव्यक्ति के रूप में जिन गुणों का प्रचार होना चाहिए था, उसमें अवरोध आ गया है।

"युद्ध में सत्य का सर्वप्रथम बलिदान दिया जाता है", ठीक यही बात आज धर्म पर लागू हो रही है। सम्प्रदायों के अंधकार में धर्म और सत्य विलीन हो रहा है। जिस धार्मिक महापुरुष के नाम पर सम्प्रदाय स्थापित होता है, वह उसका कार्य पूरा नहीं कर सकता। सम्प्रदायों के संस्थापक प्रेरणादाताओं के आचार, विचार व वाणी में सत्य के साक्षात्कार की ध्वनि होती है, वहाँ सम्प्रदाय के लिए वह ध्वनि न केवल परोक्ष, बल्कि गौण भी होती है। इसीलिए कभी-कभी सम्प्रदाय की रक्षा के लिए सत्य की सर्वथा उपेक्षा हो जाती है।

आज सम्प्रदाय तेजोहीन दीख रहे हैं, उसके मूल में भी यही कारण है कि उनमें सत्य की नहीं, बल्कि अपनी ही रक्षा की चिंता अधिक है। सम्प्रदायवादियों को सत्य का कथन "यह हमारे गुरु ने कहा है" अथवा "यह शास्त्रों या आगमों में लिखा है", कह कर करना पड़ता है। सम्प्रदायों की दुर्बलता इसीमें छिपी है।

साधु, सन्त, यति, मुनि आदि धर्म के वास्तविक स्वरूप की सिद्धि के लिए विशिष्ट प्रकार की साधना में जीवन बिताते हैं। वे संस्था या आश्रम स्थान भी इसीलिए बनाते हैं कि सत्य की सिद्धि के लिए प्रयत्नशील व्यक्तियों में सहयोग हो तथा सामान्य जन को उस लक्ष्य की प्राप्ति के लिए अग्रसर होने में योग मिले। ये संस्थाएँ अगर जड़ और स्थिर स्वरूप को स्वीकार कर लेती हैं, तो उनका उद्देश्य ही समाप्त हो जाता है। फिर धर्म के वास्तविक स्वरूप को प्रगट करना या अन्तिम सत्य का साक्षात् करना गौण होकर संस्था को स्थायी बनाने का कार्यक्रम ही प्रधान हो जाता है। आज यही हो रहा है।

संस्था के सदस्यों की संख्या-वृद्धि करना ही आज धर्म का आदर्श मान लिया गया है। संख्या वृद्धि के साथ गुणों का लोप होना अनिवार्य है। गुण विकास का काम तभी हो सकता है, जब साधना की भावभूमि निरपेक्ष हो।

धर्म के वास्तविक स्वरूप को प्रगट करना बहुत आवश्यक है। यदि धर्म के वास्तविक स्वरूप की अभिव्यक्ति समाज में हो तो लोक ऐक्य अथवा विश्व ऐक्य की कल्पना सहज साकार हो सकती है। विश्व एकता की स्थापना के लिए सत्ता या शक्ति का सहारा निरर्थक सिद्ध हुआ है। क्योंकि स्वाभाविक एकता का विकास मनुष्य के हृदय से सम्बन्ध रखता है और हृदय का सम्बन्ध मनुष्य की आध्यात्मिक प्रेरणाओं के साथ है।

इसलिए फिर प्रश्न यही उठता है कि जो धर्म आज अपने ही भेदों में उलझा हुआ है तथा अपने ही अनुयायियों की एकता सिद्ध करने में असमर्थ सिद्ध हो रहा है, क्या वह धर्म कभी सार्वत्रिक चेतना को जागृत करके लोक ऐक्य का निर्माण कर सकेगा! लोक ऐक्य की स्थापना के लिए धर्म के नाम पर चलने वाले *समस्त सम्प्रदायों का पूर्णतः विघटन करना* होगा। सामाजिक गुणों की सह-अभिव्यक्ति के लिए सम्प्रदायों को विघटित किये बिना अब विकास नहीं हो सकता।

अहिंसा, सत्य आदि गुणों की अभिव्यक्ति समाज में होनी चाहिए। समाज के सारे कार्यक्रम सत्य के आधार पर चलने चाहिए। यह काम केवल प्रचार से नहीं होगा, यह आज तक का अनुभव है। इन गुणों को सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक आदि क्षेत्रों में प्रतिष्ठित करने के लिए हमें अब चिन्तन करना होगा और यह आचरण में समझना होगा कि "धर्मार्थकाम सममेव सेव्यं, यः एकसेवी स नरो जघन्यः।"

सत्य हमारा परम लक्ष्य है। धर्म-संस्थापकों व महान साधकों ने इसे अपने-अपने समय की आध्यात्मिक तथा वैज्ञानिक भूमिकाओं पर उपलब्ध किया है। धर्म स्थिर, जड़ या गुजरे हुए मूल्यों का विचार नहीं है। यह चिर-नूतन है। इसमें निरंतर परिवर्तित होने की क्षमता है। यह परिवर्तनशील रह कर ही सत्य तक पहुँचने में सहायक हो सकता है। विश्व-ऐक्य की कल्पना को साकार करने एवं जीवन तथा सत्य के बीच सुसंवादिता निर्माण करने जाकर धर्म साधना में हम इसीलिए अपनी समस्त शक्ति लगाते हैं, ताकि यह भौतिक धरातल आत्मीय भावों से सींचा जा सके।

विनोबा यात्री-दल से

कुसुम देशपांडे

कल शाम की बात है कि जिलाधिकारी के दफ्तर से एक खास सन्देशवाहक आया था। उसके हाथ में तार का मजमून था। शिलांग से असम-सरकार ने तार भिजवाया था—"विनोबाजी को इत्तला दीजियेगा कि आज असम की असेंब्ली में ग्रामदान का बिल सर्वानुमति से पास कर दिया है।" उस वक्त ग्रामदानी गाँव के भाई विनोबाजी की खटिया के इर्दगिर्द बैठे ही थे। उनको यह खुशखबरी सुनाते हुए विनोबाजी ने कहा :

"यह एक महत्त्व की घटना है। भारत में ग्रामदान का बिल पास करने का काम प्रथम असम प्रदेश ने ही किया है। उसमें महत्त्व की बात यह है कि यह बिल सर्वसम्मति से पास हुआ है। अब चुनाव के दिन नजदीक आ रहे हैं, आये ही हैं। ऐसे वक्त पर विरोधी पार्टियाँ अगर चाहतीं तो इस बिल का विरोध कर ही सकती थीं, लेकिन किसी ने भी विरोध नहीं किया, इसका अर्थ ही यह है कि सब पार्टियाँ इस काम को चाहती हैं, उनकी सहानुभूति है। लेकिन सरकार के बिल पास करने से क्या होगा? तुम लोगों को अब ग्रामदान करने चाहिए। असम में २५ हजार गाँव हैं। सबके सब ग्रामदान होंगे तो असम की सरकार का रंग बदल जायेगा, समाज में क्रांति होगी।"

शिवसागर जिले में तीन सप्ताह से यात्रा चल रही है। इतने दिनों की यात्रा में ... ग्रामदान हुए हैं। रोज दो या तीन ग्रामदान जाहिर होते हैं। आज के सनामुख गाँव में एक स्कूल में पड़ाव था। यह स्कूल गाँव के एक भाई चलाते हैं। वे भाई गाँववालों के साथ विनोबाजी से मिलने सुबह आये थे। उन्होंने अपने मन की बात प्रकट की। उन्होंने कहा कि वे उस स्कूल को विनोबा को अर्पण करना चाहते हैं। वे चाहते हैं कि स्कूल सर्वोदय आदर्श पर चले।

जब उन्होंने 'सर्वोदय आदर्श' की कल्पना की होगी, उस वक्त न मालूम उन्होंने क्या सोचा होगा! लेकिन इतना जरूर है कि ऐसी कल्पना तो उन्होंने नहीं की होगी कि विनोबाजी दुनिया से न्यारा ही रास्ता दिखायेंगे। विनोबाजी ने पहले स्कूल की जानकारी पूछ ली। उसमें पता चला कि स्कूल में २०० विद्यार्थी हैं और स्कूल के एक साल का खर्च ४ हजार रु० है। यद्यपि स्कूल खानगी है, सरकार की कुछ मदद तो उसे मिलती ही है। विनोबाजी ने फौरन ही हिसाब करके कहा, "चार हजार रु खर्च आता है, इसके मानी यह है कि हर माह १॥ रु खर्च एक छात्र के लिए आता है। अगर छात्र दो घण्टा परिश्रम स्कूल को दें और चार घण्टा पढ़ें तो अच्छा होगा। मान लीजिये, दो घण्टे में वे २ रु० कमाते हैं तो स्कूल की मदद होगी। कुछ कम पड़ा तो पालक देंगे। मतलब, सरकार की सहायता के बिना, लोक-सहायता से आप स्कूल चलायें। ...क की परीक्षा देंगे—और नामघोषा, गणित, भूगोल आदि सिखायेंगे। विद्यार्थी जो कुछ पैदा करेंगे, स्कूल को अर्पण करेंगे तो उनकी भावना उन्नत होगी। भगवान कृष्ण भी गुरु के घर ऐसा ही काम करते थे। लकड़ी चीरने का काम भी वे करते थे और साथ साथ विद्यार्जन का भी। ऐसा ही पुरुषार्थ बच्चों को करने दीजिये, तो वे तेजस्वी बनेंगे।"

शिक्षक : "जमीन नहीं है तो लड़के काम कहाँ करेंगे?"

विनोबाजी :—"चरखा चला सकते हैं। दो घण्टा काम करें। गति कम होगी तो सूत कम निकलेगा। २०० विद्यार्थी अम्बर चरखा चलायें और बाकी सादे चरखे हों। अंबर का ताना और दूसरे चरखे का बाना। हमने आठ-आठ घंटे चरखा चलाने का काम किया है। कभी छुट्टी नहीं ली। हमें अनुभव है कि चरखे के काम में बहुत आनन्द आता है। इस तरह काम करने के लिए अगर आप तैयार हैं और सरकार राजी हो तो हम इस पर सोच सकते हैं।"

* * *

२८ अक्तूबर को दो बजे रात की उठने की घंटी बजी, बिस्तर बाँधने की तैयारी शुरू हुई। इतने में सुना, विनोबा को उल्टी हो रही थी—एक दो तीन बार—बहुत जोर की आवाज! रोज सुबह हाथ मुँह धोकर बाबा 'नामघोषा' पढ़ते हैं या कभी अन्य कोई ग्रंथ को लेकर बैठते हैं। पर आज देखा, विनोबा शांति से लेटे थे। महादेवी ताई चिंतायुक्त होकर खटिया के पास बैठी थीं। उन्होंने बताया : "रात में बाबा को बुखार था, बहुत सरदी लगी और कै हुई।"

तो क्या होगा? बाबा नहीं चलेंगे? पर बाबा तैयार हुए! ताई ने बहुत कहा, "आज आप मत चलिए।" जूता पहनते पहनते बाबा ने तान छेड़ी—"दिल का घोड़ा, कस कर दौड़ा मार चला मैदान" "

दो-तीन दिन से वर्षा है, कीचड़ का रास्ता है। कदम कदम पर पाँव फिसलते हैं। हर कदम पर सावधानी से चलना पड़ता था। कहीं कहीं तो पानी भी था। २ बजे लालटेन के प्रकाश में दोनों हाथ पकड़ कर बाबा धीरे धीरे राह काट रहे थे।

दो ढाई मील इस तरह चलना हुआ। फिर बाबा ने कहा, "अब मैं थक गया हूँ।" बालभाई ने कंधे के झोले से कंबल निकाला, गीली जमीन पर बिछाया। सड़क ही थी वह। बाबा लेटे तो मच्छरों ने हमला करना शुरू किया। लालटेन को रखा। आसपास देखा, घने पेड़ों के बीच जंगल ही था। वहीं बाबा सो गये। ऊपर से घने वृक्षों से राह निकालती हुई सौम्य चाँदनी उस स्थान पर पहुँच रही थी।

हम लोगों के लिये यह दृश्य असह्य था! अमलप्रभा बहन, जयभाई, अच्युत भाई, बालभाई, गुणदा बहन—सबने सलाह की और पाँच मिनट के अंदर अंदर एक ओर अच्युत भाई पड़ाव पर ताई को खबर देने को मोटर लाने दौड़े, दूसरी ओर गुणदा बहन और गौतम मोटर को रास्ते पर रोकने के लिये दौड़े नहीं मालूम अंधेरे में वे दोनों कैसे चले होंगे! मोटर का इंतजाम किये बिना चारा नहीं था। अच्युत भाई तीर के समान पड़ाव पर पहुँचे। हम लोग जिस स्थान पर रुके थे, वहाँ से डेढ़ फर्लांग पर पक्की सड़क थी। पर चूँकि वह जोरहाट सब-डीवीजन में थी और यात्रा शिवसागर सबडीवीजन से हो रही थी, मोटरें उसी पक्की सड़क से जाने वाली थी।

इधर २०-२५ मिनिट बाबा को गाढ़ निद्रा लगी। फिर वे उठ कर बैठे। थोड़ा पानी, सोडाबाय कार्ब का मिश्रण करके पीया और चलने की तैयारी करने लगे। जय भाई ने कहा, अभी-अभी पानी पीया है पाँच दस मिनट और आराम कीजिये।"

सचमुच ही बाबा खूब थके हुए थे, नहीं तो वे किसी की मानते? इस तरह कुल आधा पौन घण्टा वहाँ बीता, फिर वे धीरे धीरे चलने लगे। सबके दिल में संदेह था—"बाबा मोटर में चढ़ने से इन्कार तो नहीं करेंगे?" उनको बगैर पूछे ही इन्तजाम तो हो गया था!

वह फर्लांग डेढ़ फर्लांग का कच्चा रास्ता मानो एक मील का है, ऐसा लगा! थके हुए शरीर को बाबा घसीट रहे थे। सामने एक और संकट था। घुटने के ऊपर तक पानी वाला नाला रास्ता रोके बहता था। हे भगवान! क्या बाबा को कंधे पर उठा कर ले चलें! मोटर का हॉर्न सुना। नाले के उस पार 'करुणा' (बाबा के सामान की गाड़ी का नाम) खड़ी थी और ताई भी! उस गाड़ी के कितने उपकार! उस वक्त तो उसका नाम सार्थक हुआ, ऐसा लग रहा था।

उस नाले में पानी और कीचड़, दोनों थे। बाबा उसमें उतरे, सबकी मदद से नाला पार किया। घुटने के ऊपर तक पूरे भीग गये थे। नाला पार करने के बाद देखा, उनके शरीर ने जुल्म सहन करने से साफ इन्कार किया था। बाबा के मुँह से कभी ऐसे शब्द नहीं सुने थे—"अब खड़ा नहीं रह सकता हूँ!" उनको चक्कर आने लगे, वे एकदम बैठ गये! हाथ पकड़े हुए थे। और फिर 'करुणा' में लिटा कर ताई, जयभाई, बालभाई उनको आगे ले गये। सबके मन पर बोझ था, वह हल्का हो गया। कभी नहीं देखा कि गाड़ी में चढ़ने के लिये इतने जल्दी बाबा तैयार होते हैं। उससे पता चला कि उनका शरीर सहन शक्ति की आखिरी सीमा तक पहुँचा था।

पड़ाव पर पहुँचने के बाद वे सो गये थे। बुखार १००·८° डिग्री था। नाड़ी १०० थी। एक डेढ़ घंटे के बाद स्थानीय डॉक्टर आये। उन्होंने पहले बताया कि गैसेस् की तकलीफ है। शिवसागर यहाँ से १०-१५ मील दूर है। वहाँ श्री प्रफुल्ल बरुआ एम० पी० को खबर पहुँची। वे विनोबा-यात्रा के स्वागत-समिति के अध्यक्ष हैं। करीब रोज वे यात्रा में आते-जाते हैं और कभी साथ भी रहते हैं। उन्होंने अपनी हजार बीघा जमीन दान में दी है। उन्होंने फौरन डॉक्टरों को बुलाया और उनके साथ ही वे पड़ाव पर पहुँचे। जोरहाट यहाँ से २० मील दूर है। शिवसागर सबडिवीजन का जिले का केन्द्र जोरहाट है। जोरहाट के सिविल सर्जन, शिवसागर सबडिवीजन के मेडीकल ऑफीसर और स्थानीय डाक्टर, सब पहुँचे।

श्री प्रफुल्ल बाबू ने कहा, "बाबा बीमार हो गये, जीप से पड़ाव पर पहुँचे", यही एक वाक्य मैंने चिट्ठी में पढ़ा। आगे कुछ पढ़ ही नहीं सका और इधर दौड़ा। डाक्टर से फोन पर बात की। जब उन्होंने पूछा कि लेकिन बाबा को हुआ क्या है? तब मुझे फिर से चिट्ठी को देखना पड़ा!'

तीनों डॉक्टरों ने बाबा को जाँच की और कहा 'लन्ज' में थोड़ी खराबी है। ब्लडप्रेशर १००/७०, नाड़ी १०० और टेंपरेचर भी १००·८° था।

बाबा ने विनोद में कहा, "सब समान है, इसमें भी योग है।" तीनों डॉक्टरों ने एक दूसरे से सलाह मशविरा करके दवा का भी सुझाव रखा।

बाबा ने कहा : "हमारे लिये तो एक ही दवा है—ग्रामदान की! वह दवा दो, हम अच्छे हो जायेंगे।"

इस पर सब हँस पड़े। लेकिन सबने यह महसूस किया कि काम के बारे में उनकी लीनता कितनी है! जब डॉक्टर

भिक्षा लेने लगे, तो बाबा ने कहा—"हम, कल तक राह देखेंगे, फिर दवा के बारे में सोचेंगे।"

डॉक्टरों ने कहा : "हमारे लिये सौभाग्य की बात है कि आपकी सेवा का मौका हमें मिला है। हम प्रार्थना करते हैं कि आपको शीघ्र आराम मिले।"

विनोबा : "हमारे लिये लज्जा की बात है! आप भगवान से यह प्रार्थना कीजिये कि आपकी दवा बाबा को लेनी न पड़े।"

* * *

दिन भर बाबा ने आराम किया। बुखार दिन भर था। आहार में सिर्फ गरम पानी और शहद लिया। शाम को चार बजे प्रार्थना-सभा में सिर्फ १५ मिनट भाषण हुआ। उसमें उन्होंने कहा कि—"हमारी यात्रा में ईश्वर ने हमें हमेशा बचा लिया है। अभी बारिश के दिनों में सुबह, दिन में, भोर में, रात में भी बारिश होती रही। लेकिन शाम की सभा के वक्त हमेशा आसमान खुला, साफ रहता था। अभी आज हमें जो तकलीफ हो रही है, इसमें ईश्वर का दोष नहीं है, हमारा ही दोष है। हमारी अपनी कुछ अव्यवस्था हो जाती है। इतनी लंबी यात्रा में हम व्यवस्था रखते हैं, फिर भी कुछ असावधानी हो जाती है, उसका यह परिणाम है।

आगे उन्होंने कहा कि "जब से असम आये हैं, माधवदेव के 'नामघोषा' ने हमारा ध्यान खींचा है। उसमें उन्होंने लिखा है कि भगवान ने मनुष्य को वाणी दी है, उसका उपयोग असत्य बोलने, निंदा करने में, झगड़ा करने में हम करें यह शोभादायक नहीं है। हमारी वाणी का उपयोग भगवान के गुणगान में होना चाहिये। भगवान दयालु है। हम उनके उस गुण का बार-बार स्मरण करें। 'भगवान कृपालु है, दयालु है, करुणावान है,' यों बोलते-बोलते उस दया का, करुणा का अंश हममें भी आयेगा। याने हरि हमारे हृदय में प्रवेश करते हैं और हमारे अंतर के दोषों का हरण करते हैं।

प्रवचन के बाद बाबा ने फिर से आराम किया। दिन भर बुखार और थकान थी। सुबह रास्ते में जैसे चक्कर आते थे, वैसे दिन में नहीं आये। दिन आराम में बीता। दिन भर में तीन बार गरम पानी ३५ तोले और ७ तोला शहद लिया था। रात में थोड़ा दूध और शहद लिया।

बाबा का बुखार नॉर्मल है। इसी स्थान पर पाँच दिन बाबा रहेंगे। इसमें आराम भी होगा। १० कार्यकर्ता दो मौजों में आठ टोलियाँ बना कर आज ही निकले हैं। बाबा के स्वास्थ्य के लिये 'ग्रामदान' की दवा लायेंगे, ऐसी उम्मीद से वे निकले हैं।

(पड़ाव : दिलाहुग्, ३-१०-'६१)

मासिक चिट्ठियां : पंजाब की चिट्ठी

मास्टर तारासिंह, स्वामी रामेश्वरानन्द और योगीराज सूर्यदेव के अनशन के कारण पंजाब के वातावरण में जो तनाव आ गया था, वह अनशन समाप्त हो जाने पर अब शांत हो गया है। मास्टर तारासिंह की मांग थी कि भाषा के आधार पर पंजाबी सूबे के सिद्धान्त को स्वीकार कर लिया जाय, परन्तु इस मांग के पीछे जनता का समर्थन नहीं था। पंजाबी सूबा के क्षेत्र में हिन्दू ४५ प्रतिशत और सिख ५५ प्रतिशत, आज के पूरे पंजाब में हिन्दू ६५ प्रतिशत और सिख ३५ प्रतिशत हैं। पंजाबी क्षेत्र के हिन्दू पंजाबी तथा मिली-जुली हिन्दी बोलते हैं। लिखने-पढ़ने की भाषा उर्दू और हिन्दी रही है। हिन्दी क्षेत्र के हिन्दू हिन्दी बोलते हैं और उनके लिखने-पढ़ने की भाषा हमेशा हिन्दी रही है। दोनों क्षेत्रों के सिख पंजाबी बोलते हैं और लिखने-पढ़ने का काम गुरमुखी में होता है, कुछ लोग उर्दू में लिखते-पढ़ते हैं। हिन्दू पंजाबी सूबे की मांग को साम्प्रदायिक मान कर इसका विरोध करते हैं। कुछ कांग्रेसी और नेशनलिस्ट सिख भी अकालियों की इस मांग का समर्थन नहीं करते।

सच तो यह है कि पंजाबी सूबे की मांग को पंजाब में लोकप्रिय बनाने की कोई कोशिश नहीं की गयी। अकाली नेता समय-समय पर सिख राज्य के साथ इस मांग को जोड़ते रहे। पंजाबी भाषा (गुरुमुखी) को सिखों की भाषा बताते रहे। पंजाबी सूबा आन्दोलन को सार्वजनिक रूप न देकर सिख गुरुद्वारों में केन्द्रित आन्दोलन बना दिया गया। सिखों के साथ सरकार अपने व्यवहार में भेद-भाव करती है, इस बात को भी आन्दोलन का एक अंग बना दिया गया। इस प्रकार के तथा कुछ अन्य कारणों से पंजाबी सूबा आन्दोलन को केवल भाषा का आधार न मिल सका और इस आन्दोलन को सार्वजनिक रूप न दिया जा सका।

केन्द्रीय तथा राज्य-सरकार ने इस कारण से पंजाबी सूबा की मांग को स्वीकार करने से इन्कार कर दिया। इस प्रश्न पर हिन्दू सिख एकता के अभाव में आन्दोलन की गति मन्द पड़ गयी। इसमें कोई सन्देह नहीं कि अकाली अपनी मांग पर कायम हैं, परन्तु आगे चल कर उनकी यह मांग पूरी हो, इसकी कोई आशा नहीं।

शान्ति-यात्रा

श्रीमती आशादेवी आर्यनायकम्, संघटिका, अखिल भारत शांति-सेना मण्डल तथा पंजाब के प्रमुख सर्वोदय-कार्यकर्ताओं की एक छोटी-सी टुकड़ी ने मास्टर तारासिंह, स्वामी रामेश्वरानन्द तथा योगीराज सूर्यदेव के अनशन से पंजाब में पैदा होने वाले वातावरण को शान्त बनाये रखने के विचार से अमृतसर, जालन्धर, पटियाला, हिसार तथा करनाल जिलों का दौरा किया। श्रीमती आशादेवी ने सब स्थानों पर राजनैतिक, सामाजिक तथा धार्मिक संस्थाओं के लोगों से मिल कर उन्हें विश्व शान्ति के संदर्भ में स्थान-स्थान पर शान्ति बनाये रखने का विचार दिया, शान्ति-सेना का महत्त्व बताया।

परिणामस्वरूप हर जगह लोगों ने शान्ति बनाये रखने तथा अपनी समस्याओं को अहिंसात्मक उपायों से हल करने का विश्वास दिलाया। सर्वोदय कार्यकर्ताओं की यह टुकड़ी मास्टर तारासिंह तथा अन्य प्रमुख नेताओं से भी मिली। सब जगहों पर मित्रों, विद्यार्थियों और शिक्षकों की छोटी-बड़ी सभाओं में भी शान्ति-सेना तथा सर्वोदय का सन्देश पहुँचाया गया। पंजाब की शान्ति-यात्रा अपने उद्देश्य में सफल रही। लगभग १०० शान्ति सैनिक तथा शान्ति-सहायक बनाये गये।

अशोभनीय पोस्टर आन्दोलन

पंजाब के जालन्धर, रोहतक, पानीपत, फिरोजपुर, हिसार, भिवानी, हाँसी, सिरसा आदि नगरों में यह आन्दोलन सर्वोदय-मण्डलों द्वारा चलाया गया। आम सभाएँ की गयीं। जुलूस निकाले गये। पंजाब की जनता तथा सभी राजनैतिक, सामाजिक और धार्मिक संस्थाओं ने हमारे विचार का समर्थन किया। सरकारी अधिकारियों तथा सिनेमा-कर्मचारियों का सहयोग भी मिला। एकाध जगह पर विरोध भी हुआ, परन्तु कुल मिला कर आन्दोलन सफल रहा। सर्वश्री दादा गणेशीलाल, डा० रामरत्ता धीर, निरंजन सिंह, उदयचन्द, परमानन्द, भवनेश शर्मा, बलवंत सिंह, बनारसीदास गोयल, जयनारायण, सुमेरचन्द गुप्ता आंदोलन के नायक रहे। खादी-विद्यालय, समालखा, गांधी-स्मारक-निधि, पट्टी कल्याणा तथा खादी आश्रम, पानीपत के कार्यकर्ताओं ने आन्दोलन को सफल बनाने में हमारी बड़ी मदद की।

संचालक-सम्मेलन

पट्टी कल्याणा में गांधी-स्मारक निधि के संचालकों, अध्यक्षों, तत्त्व-प्रचारकों, ग्रामसेवक प्रतिनिधियों तथा अन्य कार्यकारियों का ता० १५, १६, १७ सितम्बर को अखिल भारत सम्मेलन हुआ। सम्मेलन में अब तक के निधि के काम का लेखा-जोखा, सत्ता के विकेन्द्रीकरण, इंटिग्रेशन आदि विषय लिये गये। श्री दिवाकरजी सम्मेलन के अध्यक्ष रहे। पंजाब-सरकार ने सम्मेलन-खर्च के लिये १००० रु० का अनुदान तथा सरकारी खर्च पर लगभग एक सौ प्रतिनिधियों को नांगल-भाखड़ा बांध दिखाने की व्यवस्था की।

खादी-ग्रामोद्योग प्रदर्शनी

पंजाब खादी-ग्रामोद्योग संघ की ओर से चंडीगढ़ में एक विशाल खादी-ग्रामोद्योग प्रदर्शनी का आयोजन किया गया। प्रधानमंत्री पं० जवाहरलाल नेहरू ने प्रदर्शनी को देखा और पंजाब के लोगों से अपील की कि खादी-ग्रामोद्योग के पीछे जो बापू की कल्पना थी, उसे अच्छी तरह समझ कर अपने जीवन के आचरण में लायें।

पानीपत में सर्वोदय-कार्य

खादी आश्रम, अम्बाला से पानीपत आ जाने के कारण पानीपत में सर्वोदय विचार को बल मिला है। प्राथमिक सर्वोदय मण्डल कायम हो गया है। गांधी स्मारक निधि के तत्त्वावधान में गांधी-अध्ययन केन्द्र जारी कर दिया गया है। सर्वोदय विचार-प्रचार के हेतु वाचनालय तथा पुस्तकालय खोल दिया गया है। श्री सुमेरचन्द गुप्ता अपना सारा समय इस काम के लिये दे रहे हैं। श्री गंगादत्त तथा श्री लछसिंह शान्ति सैनिक भी यहाँ सेवा-कार्य कर रहे हैं।

ग्राम-इकाई विद्यालय

सर्व सेवा-संघ के तत्त्वावधान में चलने वाले ग्राम-इकाई विद्यालय को ता० १ नवम्बर, '६१ से पट्टी कल्याणा में जारी करने का निश्चय किया गया है। पंजाब की ग्राम-इकाइयों की जानकारी प्राप्त करने के विचार से विद्यालय के आचार्य श्री सिसोदिया तथा श्री सत्यप्रकाशजी यात्रा कर रहे हैं।

पंजाब में शराब-बन्दी

मदद कलाँ, जिला हिसार में शराब का ठेका बन्द करने की जनता की मांग को पंजाब सरकार ने मंजूर कर लिया है। विनोबा-जयन्ती के दिन खादी-आश्रम, पानीपत की विराट सभा में डा० गोपीचन्द भार्गव, वित्त-मंत्री ने यह सूचना लोगों को दी। वित्त मंत्री ने यह भी जाहिर किया कि आगामी पंचवर्षीय योजना में पूरे पंजाब में शराब-बन्दी कर दी जायेगी।

सर्वोदय आश्रम — ओमप्रकाश त्रिखा,
पट्टी कल्याणा (करनाल) संयोजक

गढ़वाल में गांधी जयंती—अनगुल में श्री नवबाबू का भाषण—महाकोशल में भूदान की स्थिति—करनाल जिला सर्वोदय-मंडल की बैठक—समाज-सेवा का काम राजनीति से परे हो, अहमदाबाद के नागरिकों की बैठक—तमकुही रोड में स्वाध्याय-मंडल का वार्षिकोत्सव—लखनऊ में शराबबंदी व अशोभनीय पोस्टर निवारण पर जोर—मथुरा में सर्वोदय-पात्र और अर्थ-संग्रह अभियान—सीकर में अर्थ-संग्रह—रानीपतरा खादी-विद्यालय बाढ़पीड़ितों की सेवा में—ब्रह्मानंद का नागपुर में साहित्य-प्रचार—टैंगावाली, फिरोजपुर की शराबबंदी की मांग—लोकसेवा ट्रस्ट, बंबई—उ० प्र० के कार्यकर्ता बिहार-बाढ़पीड़ितों की सेवा में—अहमदनगर और बीड़ जिले में सर्वोदय-कार्य—पूना-बंबई में गांधी जयंती।

गढ़वाल में गांधी-जयंती का कार्यक्रम शराबबन्दी के लिए मौन और उपवास के रूप में मनाया गया। इस अवसर पर मौन शुरू होने के पहले उत्तराखंड की यात्रा पर आये श्री दादा धर्माधिकारी ने कहा :

"मद्य और मांस की हमारे समाज में कभी प्रतिष्ठा नहीं रही है। लेकिन अंग्रेजों ने इसको अपनी आमदनी का जरिया बनाया और समाज में इसकी प्रतिष्ठा बढ़ी, इसलिए गांधीजी ने लोगों के चारित्र्य विकास के कार्यक्रम में शराबबन्दी को प्रमुख स्थान दिया। अब इसकी सफलता के लिए लोकमत जाग्रत करना आवश्यक है और हम भूमिपुत्री के प्रार्थनामय मौन और उपवास की सफलता चाहते हैं।"

इस आयोजन में जिले की सब रचनात्मक संस्थाओं की सहमति थी। उस दिन मांग की गयी कि मोटर दुर्घटनाओं की वृद्धि को देखते हुए तुरंत इस जिले में नशाबंदी हो।●

अनगुल में विनोबा-जयंती के अवसर पर भाषण करते हुए सर्व सेवा संघ के अध्यक्ष श्री नवकृष्ण चौधरी ने कहा :

"ज्ञान के अभाव में आज समाज में विज्ञान और धर्म का भी गलत ढंग से उपयोग किया जा रहा है। इसलिये विनोबा बार बार कह रहे हैं कि विज्ञान के साथ अध्यात्म जोड़ना होगा। अकेला न विज्ञान टिकने वाला है और न अध्यात्म। ये दोनों परस्पर विकास के साधन हैं। दोनों साथ साथ ही जीवन-संग्राम में सहायक हो सकते हैं। आज अकेला व्यक्ति भी जीवन संग्राम में आगे नहीं बढ़ सकेगा। इसलिये विनोबा सामूहिक प्रयत्न और सहयोग का आदर्श प्रस्तुत कर रहे हैं। लेकिन यह होगा कैसे? इसके लिये परस्पर-चर्चा होनी चाहिये। आज प्रवचन मात्र से काम चलने वाला नहीं है। परस्पर आदान प्रदान द्वारा ही सबका विकास हो सकता है। रूस और चीन के उदाहरण से स्पष्ट है कि समाज में मौलिक परिवर्तन जबरदस्ती नहीं होने वाला है। परस्पर आदान प्रदान द्वारा ही समाज में मौलिक परिवर्तन हो सकता है और हमें इसी पद्धति को विकसित करना है।"●

मध्य प्रदेश के महाकोशल क्षेत्र के १६ जिलों में माह अगस्त '६१ तक भूदान की स्थिति इस प्रकार है : प्राप्त भूदान १,१०,६२० एकड़, २३ बीघा, वितरित भूमि ६५,१५६ एकड़ ३९ बीघा, अवितरित भूमि ३३,९३७ एकड़, ९३ बीघा; वितरण के अयोग्य भूमि १२२६ एकड़, ६२ बीघा।●

करनाल जिला सर्वोदय मंडल की बैठक ४ अक्टूबर '६१ को हुई। बैठक में बताया गया कि ४ अक्टूबर तक जिले में ३४०० रु. का अर्थ संग्रह हुआ। सभा में यह तय हुआ कि खादी आश्रम के केन्द्रों में जो सर्वोदय पात्र चल रहे हैं, उनका हिसाब व रिपोर्ट सर्वोदय मंडल को मिले, इसकी व्यवस्था श्री सोमभाई करेंगे। शांति-सैनिकों तथा शांति-सहायकों का सम्मेलन बीच-बीच में होता रहे, ऐसी कोशिश करनी चाहिए। शराबबन्दी के लिए इस इलाके की ग्राम पंचायतों से प्रस्ताव पास कराना चाहिए।●

अहमदाबाद में ५ अक्टूबर को राजनीतिक पार्टियों से असम्बन्धित समाज-सुधारकों की बैठक हुई। उसमें तय किया गया कि समाज-सेवा का काम दलगत भावना से परे होकर करना चाहिए। साथ ही राजनीतिक पार्टियों से इस सभा ने राष्ट्रीय एकता-सम्मेलन और सर्व सेवा संघ द्वारा सुझाये गये आचार-संहिता को गुजरात में मान्य करने के लिए जोर दिया। नागरिकों से भी प्रार्थना की गयी कि शांति प्रतिज्ञा पर हस्ताक्षर करें और हिंसक साधनों से बचें।●

तमकुही रोड (देवरिया) के स्वाध्याय-मंडल का तृतीय वार्षिकोत्सव ता० १५ अक्टूबर को श्री नारायण देसाई की अध्यक्षता में मनाया गया। उद्घाटन श्री सुरेशराम भाई द्वारा हुआ। सुबह ९ से १२ गोष्ठी परिसंवाद हुआ, जिसका विषय था 'सर्वोदय पात्र से विश्वशांति कैसे हो सकती है?' वार्षिकोत्सव के अवसर पर ९३ रु० की साहित्य-बिक्री हुई और भूदान-पत्रों के १५ ग्राहक बने।●

लखनऊ में सर्वोदयनगर अभियान समिति की ओर से ११ सितम्बर से २ अक्टूबर तक विभिन्न कार्यक्रम आयोजित किये गये, जिनमें मुख्य जोर अशोभनीय पोस्टर-निवारण और शराबबन्दी पर रहा। इससे नगर में अच्छा वातावरण बना।●

मथुरा जिला सर्वोदय मंडल ने सर्वोदय पात्रों से सितम्बर माह में २६ रु० ५७ न० पै० संगृहीत किये, जिसका छठा हिस्सा सर्व सेवा संघ के लिए और छठा हिस्सा प्रांतीय सर्वोदय मंडल के लिए खादी-दफ्तर को भेजा गया।●

मथुरा जिला भूदान समिति ने सितम्बर अंत तक लगभग १००० रु० अर्थ-संग्रह अभियान संगृहीत किये हैं।●

सीकर (राजस्थान) की श्री ध्रुव राणी ने अर्थ संग्रह अभियान में ५१ रु० का दान दिया।●

रानीपतरा के खादी ग्रामोद्योग विद्यालय के विद्यार्थी और शिक्षक भागलपुर जिले में बाढ़पीड़ितों की सहायता के लिए घूम रहे हैं।●

पंजाब के श्री ब्रह्मानन्द भाई ने, जो आजकल महाराष्ट्र में पदयात्रा कर रहे हैं, ११ सितम्बर से २ अक्टूबर तक ५०० रु० का साहित्य नागपुर शहर में बेचा। जून से अक्टूबर तक के पाँच महीनों में ४००० रु० के साहित्य को आप प्रचारित कर चुके हैं।●

फिरोजपुर जिले के छह हजार आबादी वाले टैंगावाली गाँव ने पंजाब सरकार से माँग की है कि १ अप्रैल '६२ तक यहाँ का शराब का ठेका बंद कर दिया जाय।●

बम्बई में गत चार सालों से लोक-सेवा ट्रस्ट नाम की एक संस्था काम कर रही है। संस्था में खासतौर से शैक्षणिक और आरोग्य सम्बन्धी प्रवृत्तियाँ चलती हैं। शैक्षणिक क्षेत्र में विनोबा विद्यार्थी मंडल, वस्त्र प्रचारक शिक्षा केन्द्र, तहरे प्रचार-केन्द्र और उपकेन्द्र, पुस्तकालय एवं वाचनालय, आरोग्य क्षेत्र में मध्यम वर्ग के लिए कुटुम्ब-सदस्य आरोग्य-योजना, निःशुल्क टी० बी० दवाखाना, टी० बी० और आरोग्य सर्वे, 'क्ष' किरण और पैथालाजिकल लैबोरेटरी आदि प्रवृत्तियाँ चल रही हैं। इसका खर्च गांधी स्मारक निधि, भारत सरकार, दाता-गण और इन प्रवृत्तियों की आमदनी से चलता है।●

उ० प्र० प्रांतीय भूदान टोली के २४ कार्यकर्ता 'बीघा-कट्ठा अभियान' के लिए बिहार में गये थे। बिहार में बाढ़ आने के कारण सहायता-कार्य में लगे हैं।●

अहमदनगर शहर तथा नगर और बीड जिले के विभिन्न गाँवों में ११ सितम्बर से ६ अक्टूबर तक २६ दिन, भूमि व चरखा जयंती के बीच सघन कार्यक्रम का आयोजन हुआ। नगर और बीड जिले के सर्वोदय-मण्डल के कार्यकर्ताओं ने १६ गाँवों में प्रचार कार्य किया। मित्र मण्डलों की स्थापना की। बीड जिले के ५ गाँवों में ग्राम इकाई की दृष्टि से दो साल से कार्य चालू है। विचार प्रचार के लिए छपे हुए परिपत्रों का वितरण किया जाता है। भूदान पत्रों के पुराने-नये ग्राहकों से मिल कर चर्चा की गयी। सर्वोदय-पात्र रखने वाले परिवारों से सम्बन्ध स्थापित किया। ६ अक्टूबर को 'चरखा द्वादशी' के अवसर पर खादी प्रेमी और खादी कार्यकर्ताओं के लिए ५ दिन खादी-उत्पत्ति का सक्रिय प्रदर्शन किया गया। ग्राम-रचना कार्यालय, अहमदनगर में हरएक रविवार को अभ्यास मंडल और कताई मंडली में वस्त्र स्वावलम्बन की शिक्षा देते हैं।●

महाराष्ट्र सर्वोदय-मण्डल के तत्वावधान में पूना में गांधी जयंती के अवसर पर आंतर भारती सभागृह में "स्थानिक स्वराज्य संस्थाओं के निष्पक्ष चुनाव" इस विषय पर चर्चा-सभा हुई।

पूना की बाढ़पीड़ित पुनर्वसन समिति की ओर से चलने वाले अंबर परिश्रमालय में 'गांधी जयंती' को स्त्रियों की सभा हुई। महिला शिक्षार्थी के चरखा और गांधी-जीवन पर भाषण हुए।

बंबई, बान्द्रा के म० गांधी सेवा मंदिर की ओर से गांधी-जयंती से एक सप्ताह के कार्यक्रम का आयोजन हुआ। इसमें सामूहिक कताई, प्रार्थना, भजन-कीर्तन और व्याख्यान होते रहे।●

उ० प्र० के साम्प्रदायिक दंगों पर एक विहंगम दृष्टि

[पृष्ठ ४ का शेष]

हमारा व्यापक प्रयास राष्ट्र के असली मालिक—लोक-नागरिक—को जगाने का होना चाहिए। इस सम्प्रदायवाद के भयानक दुष्परिणामों को निर्भय होकर जनता के सामने रखना चाहिए, जिससे वह परिस्थिति की गम्भीरता को समझे, सोचे और उचित निर्णय करे। राष्ट्र के साधारण नागरिक का हृदय निर्मल है, स्वच्छ है, स्नेहशील है, केवल कुछ निहित स्वार्थों के लोग उसे क्षुब्ध कर देते हैं।

साम्प्रदायिकता का जड़मूल से निराकरण करने के लिए हमें राष्ट्र के आर्थिक और राजनैतिक इन्तजाम के स्वरूप को भी बदलना पड़ेगा, क्योंकि जब तक पैसे के लिए और सत्ता के लिए स्पर्धा और होड़ होती रहेगी, तब तक गरीबी निर्मूल नहीं हो सकती और साम्प्रदायिकता भी समाप्त नहीं हो सकती। इस परिवर्तन के लिए भी देश के साधारण नागरिक के बुद्धिपूर्वक सहयोग की आवश्यकता है।

विहार में सर्वोदय-कार्यकर्ताओं द्वारा

बाढ़पीड़ितों की सहायता और राहत-कार्य

बिहार-सर्वोदय मंडल के कार्यकर्ताओं द्वारा बाढ़ग्रस्त क्षेत्रों में सम्मिलित रूप से *किये जाने वाले अनेक सेवा-कार्यों के अतिरिक्त क्षतिग्रस्त गाँवों में बाढ़ से हुई क्षति* का ठीक-ठीक अनुमान लगाने की दृष्टि से सर्वेक्षण-कार्य भी किया जा रहा है। उन क्षेत्रों में बेरोजगार व्यक्तियों को काम देने के विचार से चरखों का भी वितरण किया जा रहा है।

बिहार सर्वोदय-मंडल के कार्यालय में प्राप्त सूचनाओं के अनुसार सिर्फ लखीसराय क्षेत्र के सर्वोदय कार्यकर्ताओं द्वारा मनुष्य एवं मवेशियों के २०० शवों का अब तक अन्तिम संस्कार किया जा चुका है। इस कार्य में उत्तर प्रदेश से आये सर्वोदय-कार्यकर्ताओं ने प्रशंसनीय कार्य *किया है। लखीसराय क्षेत्र के सर्वोदय*-कार्यकर्ताओं ने ३०० से अधिक व्यक्तियों की चिकित्सा भी की है। बाढ़ से विशेष रूप से ध्वस्त मसौढा तथा नदियामा गाँवों में क्षतिग्रस्त मकानों के मलबे साफ करने का कार्य भी सर्वोदय-कार्यकर्ताओं ने किया है। अन्य बाढ़ग्रस्त गाँवों की जनता के बीच भी उन्होंने आर्थिक सहायता प्रदान करने का कार्य किया है।

खड़गपुर क्षेत्र में गिरे हुए मकानों के मलबे साफ करने तथा विस्थापित ग्रामीणों के पुनर्वास के लिए झोपड़ियों के निर्माण में सर्वोदय-कार्यकर्ता जुट गये हैं। उन्होंने अब तक ५६ गाँवों में सर्वेक्षणकार्य समाप्त कर लिया है तथा क्षति सम्बन्धी आँकड़े *संकलित किये हैं। तारापुर क्षेत्र के लगभग* ४३ गाँवों का सर्वेक्षण हो चुका है। बाढ़-पीड़ितों के बीच प्रति व्यक्ति एक चरखा और एक पाव रूई बाँटी जा रही है। इस प्रकार अब तक १०० चरखे बाँटे जा चुके हैं। ये चरखे बिहार खादी-ग्रामोद्योग संघ द्वारा प्रदान किये गये हैं।

गुजरात की एक महिला सर्वोदय कार्यकर्त्री श्रीमती कमला बेन, जो बिहार में बीघा कट्ठा आंदोलन में काम करने के लिए आयी थीं, इन दिनों बाढ़ग्रस्त इलाकों में ग्रामीण महिलाओं के बीच सेवा-कार्य में संलग्न हैं। अन्य सेवाओं के साथ साथ वे विशेष रूप से प्रसूति सेवा भी कर रही हैं। वे नवजात शिशुओं एवं गर्भवती महिलाओं की सेवा कर रही हैं।

मुंगेर जिले में केन्द्रीय सेवा समिति द्वारा जिला-स्तर पर चलाये जा रहे सेवा-कार्यों के अतिरिक्त बड़हिया, लखीसराय, जमालपुर तथा बरबीघा क्षेत्रों के लिए विभिन्न संस्थाओं के सहयोग से स्थानीय सेवा-समितियाँ भी स्थापित की गयी हैं। *इन समितियों द्वारा अब तक बाढ़पीड़ितों* के लिए ५००० रुपये तथा ५० मन अनाज और कुछ कपड़े जमा किये गये हैं।

भागलपुर जिले में सुल्तानगंज तथा नारायणपुर में सर्वोदय कार्यकर्ताओं के दो सेवा-केंद्र चलाये जा रहे हैं। इन शिविरों की देखभाल एवं संचालन की जिम्मेदारी श्री त्रिपुरारी शरण तथा श्री श्यामबहादुर सिंह को सुपुर्द की गयी है। बाढ़ग्रस्त इलाकों का सर्वेक्षण तथा आवास गृहों का निर्माण करना इनके प्रमुख कार्य हैं। इस प्रकार गया, पटना तथा पूर्णियाँ जिलों के बाढ़ग्रस्त क्षेत्रों में सर्वोदय-कार्यकर्ताओं द्वारा सेवा-कार्य किये जा रहे हैं।

काशी में संचालक-शिविर

साधना-केन्द्र, काशी में सर्व सेवा संघ के कार्यकर्ता प्रशिक्षण-कार्यक्रम के अन्तर्गत २५ अक्टूबर से ३१ अक्टूबर तक संचालक-शिविर चला। इसमें विभिन्न प्रान्तों के प्रमुख कार्यकर्ताओं ने भाग लिया। ●

जबलपुर में सर्वोदय-सम्मेलन और म० प्र० शांति-सैनिकों की रैली

२६-२७ नवम्बर को जबलपुर में संभागीय सर्वोदय-कार्यकर्ता सम्मेलन तथा म. प्र शांति-सैनिकों की रैली का आयोजन किया जायेगा। अ. भा. राष्ट्रीय एकता सम्मेलन में अ. भा. सर्व सेवा संघ का प्रस्ताव, 'प्रतिज्ञा-पत्र' पर भारतव्यापी 'शांति-दिवस' आयोजन किया जाने का भी सोचा है। ●

सत्याग्रह पदयात्रा मध्यप्रदेश में

प्रो० गोरा की सत्याग्रह-पदयात्रा अब मध्यप्रदेश के सिवनी जिले में चल रही है। ८ अक्टूबर से २२ अक्टूबर तक पदयात्रा महाराष्ट्र के वर्धा और नागपुर जिले में चली। पदयात्रा से प्राप्त एक चिट्ठी के अनुसार श्री गोराजी के निर्दलीय विचारों का स्वागत राजनैतिक दलों ने भी किया और उनके कार्यक्रम में हर जगह सब राजनैतिक दलों ने भी यथासंभव मदद पहुँचाई। जनता में गोराजी के विचारों को सुनने से एक नवीन स्फूर्ति आती दिखती है। जगह-जगह उनकी पदयात्रा का स्वागत किया जा रहा है। लोग यथाशक्ति उनके यात्री-दल की सहायता पैसे और अन्य साधनों से करते हैं।

सेवाग्राम-दवाखाने में शिक्षण

गांधी स्मारक निधि द्वारा संचालित कस्तूरबा दवाखाना, सेवाग्राम में २ बहनों को आक्जीलरी नर्स और मिडवाइफ के शिक्षण हेतु प्रवेश दिया जायेगा। प्रवेश के बाद प्रथम माह अस्थायी तौर पर कार्य करना होगा। उसके पश्चात् स्थायी की जायेंगी। अस्थायी अवधि में अपने खर्च से छात्रावास में रहना होगा। स्थायी होने पर अस्थायी कार्य की अवधि भी कोर्स में मान कर माहवार तीस रुपये की छात्रवृत्ति दी जायेगी। दवाखाने में गांधी स्मारक निधि के सामान्य नियम लागू होंगे। योग्यता कम-से-कम आठवीं कक्षा उत्तीर्ण तथा उम्र १८ और २५ साल के बीच की होनी चाहिये। बहनों पर घर की अन्यान्य जिम्मेदारियाँ नहीं हों तथा स्वास्थ्य उत्तम हो। इच्छुक बहनें १५ नवम्बर तक पत्र-व्यवहार करें। पता : कस्तूरबा दवाखाना, सेवाग्राम [जिला वर्धा, महाराष्ट्र]

आगरा में शांति-स्थापना में सफलता

अलीगढ़ में साम्प्रदायिक दंगा होने के फलस्वरूप आगरा के सभी शांति-सैनिक और लोकसेवकों ने यह तय किया कि अलीगढ़ का दुष्प्रभाव आगरा पर न पड़े, इसकी पूरी कोशिश और जिम्मेदारी हमारी होनी चाहिए। तदनुसार आगरा के शांति सैनिक अलीगढ़ में न जाकर आगरा में ही शांति बनाये रखने के लिए योजनाबद्ध काम करने लगे।

४ अक्टूबर से १० अक्टूबर तक आगरा के लोकसेवक, शांति-सैनिक एवं अन्य सभी पक्षों के लोगों की सहायता से श्री बाबूलाल मित्तल के नेतृत्व में नगर में गश्त लगाते रहे। इन्होंने एक सर्वसम्मत वक्तव्य भी प्रसारित किया, जिसमें साम्प्रदायिक दंगों के अलावा चुनाव-पद्धति की निंदा की, जिसके कारण अलीगढ़ में दंगा हुआ। जनता को सावधान रहने और शांति बनाये रखने के लिए प्रयत्न किया गया।

५ अक्टूबर को रामलीला, ६ को विद्यार्थियों का जुलूस, ९ को 'रामवनवास' आदि कार्यक्रमों और प्रदर्शनों में पूरी पूरी शांति बनाये रखने की सफल कोशिश की।

राजस्थान गोसेवा संघ के निर्णय

राजस्थान गोसेवा संघ की एक विशिष्ट बैठक २७ अक्टूबर को जयपुर में हुई, जिसमें सदस्यों के अलावा केंद्रीय गोसंवर्धन परिषद के अध्यक्ष श्री ढेबर भाई, राजस्थान के मुख्यमंत्री श्री मोहनलाल सुखाड़िया, कृषि-मंत्री श्री नाथूरामजी मिरधा, वित्तमंत्री श्री हरिभाई उपाध्याय तथा योजना-आयोग के सदस्य श्री श्रीमन्नारायणजी उपस्थित थे।

राजस्थान-सरकार ने गोसंवर्धन परिषद का राज्यों के लिए सुझाया नया संविधान मान लिया और इसके आधार पर उपाध्यक्ष पद के लिए श्री राधाकृष्ण बजाज और नानआफीशियल सेक्रेटरी के लिए श्री केसरपुरी गोस्वामी का नाम प्रस्तावित किया। इस बैठक ने बीकानेर क्षेत्र में 'गोकुल'-योजना, घुमक्कड़ गोपालकों को बसाने की योजना और घी मक्खन बनाने की योजना को चालू करने का निर्णय लिया है।

राजस्थान में नशाबंदी-कार्यक्रम

गांधी स्मारक निधि, राजस्थान शाखा के बोर्ड ने राजस्थान में नशाबंदी कार्यक्रम को जोर से आगे चलाने का सोचा है और सभी प्रान्तीय स्तर की संस्थाओं के व राज्य के प्रतिनिधियों की एक सभा जयपुर में इस संबन्ध में विचारविनिमय और योजना बनाने के लिये ४ नवम्बर को बुलायी है।

इस अंक में

श्रीकृष्णदत्त भट्ट, अ० भा० सर्व सेवा संघ द्वारा भार्गव भूषण प्रेस, वाराणसी में मुद्रित और प्रकाशित। पता : राजघाट, वाराणसी–१, फोन नं० ४३९१
वार्षिक मूल्य ६) पिछले अंक की छपी प्रतियाँ ९२५० : इस अंक की छपी प्रतियाँ ९२५०, एक अंक : १३ नये पैसे

संपादक : सिद्धराज ढड्ढा

वाराणसी : शुक्रवार | १० नवम्बर '६१ | वर्ष ८ : अंक ६

विश्व-शांति का असली उपाय : ग्रामदान

विनोबा

एक प्रश्न यह है कि विश्व-शांति का क्या उपाय है ? यह प्रश्न अभी कुल विश्व के सामने है। इसके पहले सारे विश्व को कोई नहीं जानता था। पता ही नहीं था लोगों को कि कितने देश हैं, कितने समाज हैं, कितनी भाषाएँ हैं ? आज इन सबके बारे में बच्चा-बच्चा भी जानता है। विश्व-समस्या के बारे में दुनिया के अच्छे-अच्छे लोग सोचते हैं। बहुतों को लगता है कि अब विश्व में बहुत अशांति है। पर ऐसा नहीं है। अशांति तो पहले भी थी, लेकिन कहाँ अशांति हो गयी है, कहाँ कतल हुआ है, यह मालूम ही नहीं होता था। इसलिए विश्व में शांति है, ऐसा लोग समझते थे। आज दुनिया के किसी भी कोने 'खुट' आवाज होती है तो सबको मालूम हो जाता है। लेकिन डरने की जरूरत नहीं है।

इस पर ज्यादा सोचना इसलिए पड़ता है कि लोगों के हाथों में भयानक शस्त्र आये हैं। परमेश्वर के हाथ में संहार शक्ति है। वैसी संहार शक्ति मानव के हाथ में भी आयी है। एक बम डाले तो हजारों लोग जख्मी हो सकते हैं, लाखों मर सकते हैं, जानवर और खेतों का भी नुकसान होता है, इस सबका अनुभव एक बार दुनिया को आया है। यह संहार शक्ति मनुष्य के हाथ में आयी है, इसलिए अब सावधानी से बरतना चाहिए। पहले के जमाने में इतना खतरा नहीं था।

मान लीजिये कि जरासंध का दिमाग बिगड़ा तो भीम से उसकी कुश्ती हो जाती थी और बाकी लोग उसे देखते थे। भीम जीता तो उसके राष्ट्र की जीत हुई और पराजय के राष्ट्र की पराजय हुई। लोगों को नाटक देखने को मिलता था, और कुछ नहीं! एक ने गलत काम किया तो समूचे राष्ट्र को तकलीफ नहीं होती थी। आज बड़े-बड़े राष्ट्र के नेता हैं। रूस, अमेरिका, इंग्लैंड, फ्रान्स, चीन, भारत, पाकिस्तान, इनमें से किसी एक राष्ट्र के नेता का सिर फिरा और कहीं आणविक शस्त्रों का प्रयोग आरंभ हो जाय तो भी दुनिया को खतरा है। इसलिए सावधानी से चलना चाहिये।

बच्चे के हाथ में पेन्सिल आये तो कोई चिंता नहीं, लेकिन छुरी या पिस्तौल आये तो खतरा है। उसकी चिंता तो माँ-बाप को करनी चाहिये। केनेडी और ख्रुश्चेव ये छोटे बच्चे हैं और हम हैं उनके माँ बाप। हमें चिंता करनी चाहिये कि उनके हाथों में बहुत ज्यादा सत्ता न रखी जाय। दुनिया को आग लगाने की शक्ति चन्द लोगों के हाथ में है। अगर उनका दिमाग बिगड़ गया तो दुनिया को आग लग सकती है। अगर अच्छा दिमाग रहा तो दुनिया का अच्छा चलेगा। इतनी ताकत उनके हाथों में दी गयी है। वह हम वापस लेंगे और कहेंगे कि तुम बच्चे हो, जिन अस्त्रों की ईजाद हुई है वे भयानक हैं, इसलिए हम तुम्हारे हाथों में वे नहीं देंगे।

यह करने का इलाज यही है कि गाँव-गाँव के और नगर-नगर के लोग अपना कारोबार खुद देखें और अपने हाथों में कारोबार लें, सत्ता लें। आज हालत यह है कि सब जिम्मेवारी ऊपर वालों के हाथों में दी है। गाँव की और नगर की व्यवस्था, रक्षण, शिक्षण, सफाई, आरोग्य, खेती और उद्योग भी उन पर सौंपा है।

हम जरा सोचें। हममें से एक-एक का दिमाग उनसे बड़ा नहीं है। लेकिन हमारा सबका सम्मिलित जो दिमाग है, वह उनसे बहुत बड़ा है। असम में लगभग २५ गाँव हैं, हिंदुस्तान में ५ लाख होंगे और दुनिया में शायद ४० लाख होंगे। इतने सारे गाँवों की जिम्मेवारी दिल्ली, लन्दन, मास्को और टोकियो पर हम डालें तो उनका दिमाग काम नहीं करेगा।

फिर होता क्या है कि एक देश दूसरे देश के डर से शस्त्र बढ़ाता है। भारत की इतनी बड़ी सेना है। वह कहता है कि देखो, पाकिस्तान अपनी सेना बढ़ा रहा है तो हमें भी सेना बढ़ानी चाहिये। पाकिस्तान भी ऐसा ही सोचता है। चीन, रूस, इंग्लैंड अमेरिका, ये सब अपना अपना आयोजन नहीं करते। हिन्दुस्तान की सेना पर कितना खर्च करना चाहिए, यह नेहरू के हाथ की बात नहीं है। पाकिस्तान की सेना पर पाकिस्तान कितना खर्च करे, यह पाकिस्तान के हाथ में नहीं है। वैसे ही न्यूयार्क और मास्को की बात है। क्यों एक-दूसरे का देख कर वे योजना बनाते हैं। याने अभिक्रम दूसरे के हाथ में है। यह आज की स्थिति है। वह तब तक वैसी ही रहेगी, जब तक अपनी व्यवस्था हम खुद नहीं करेंगे। इसलिये हमारे हृदय में जरा भी संदेह नहीं है कि ग्रामदान ही विश्व-शांति का साधन है।

अभी बेरुत में विश्व शान्ति के लिए कान्फ्रेन्स हो रही है। उसमें हमें वे लोग बुलाते हैं। उस कान्फ्रेन्स को हमने सम्मति दी है। लेकिन हमने कहा कि भाई, असम में हम विश्व शांति का कार्य कर रहे हैं, इसलिये हम वहाँ नहीं आयेंगे। वे भी समझ गये हैं कि बाबा असम में जो काम कर रहा है, वह विश्व शान्ति का काम है। यह उन्होंने माना है।

उड़ीसा में ग्रामदान प्राप्त करते हुए हम घूम रहे थे। वहाँ कुछ कम्युनिस्ट भाई हमसे मिलने आये और उन्होंने हमसे एक माँग की। वह यह कि विश्व-शान्ति के लिये उन्होंने जो पत्रक निकाला था उस पर हम हस्ताक्षर करें। मैंने कहा, मैं क्यों हस्ताक्षर करूँ! मैं तो विश्व शान्ति का काम ही कर रहा हूँ। तो यह बात उन्होंने कबूल की।

ग्रामदान का काम विश्व शांति का ही काम है। वह दीखता है छोटा, इसलिये उसमें इतनी शक्ति भरी पड़ी है, इसका भान नहीं होता है। बड़े-बड़े अस्त्र शस्त्र बनते हैं, तो वे प्रयोगशाला में बनते हैं। पहले उसका पता नहीं चलता है।

हम कहना यह चाहते हैं कि ग्रामदान एक छोटा-सा प्रयोग है। लेकिन उसमें अणुबम से ज्यादा शक्ति है। इसमें करना यही है कि ऊपर की जिम्मेवारी कम करके ज्यादा-से-ज्यादा जिम्मेवारी हम उठायें।

लोग समझते हैं कि सरकार ही हमारी माँ-बाप है। मैंने एक सुझाव रखा है। स्कूल को छुट्टी होती है, वकील और डाक्टर भी कभी छुट्टी लेते हैं; वैसे सारी सरकार को एक साल के लिये छुट्टी अगर दें, तो क्या होगा ? क्या शादियाँ बन्द होंगी, जन्म-मृत्यु नहीं होगा, बाजार नहीं चलेगा ? क्या इधर का माल उधर नहीं आयेगा ? लोग बीमार हो गये, तो क्या उनकी सेवा नहीं की जायेगी ? क्या सब दूर खून-खराबी होगी ? क्या आप और हम सारे डाका डालने और खून करने के लिये निकलेंगे ? आज कानून का डर है इसलिये यह काम नहीं करते, ऐसा तो नहीं है। यह बिल्कुल भ्रम है। संतों ने और सत्पुरुषों ने हमें नीति सिखाई है। उस पर लोग चलते हैं। अगर एक साल के लिये दवाखाने बन्द हो जाते हैं, तो क्या ज्यादा लोग बीमार पड़ेंगे ? मरने वाले मरेंगे, जीने वाले जीयेंगे। मारने वाला और जिलाने वाला परमेश्वर है। यह सारा भ्रम है कि सरकार है, इसलिये हमारा जीवन चल रहा है।

इसलिये पहले यह करना चाहिये कि सारे गाँव को अपने पाँव पर खड़ा करने की शक्ति प्राप्त करनी चाहिये। ऊपर कम-से-कम ताकत हो और नीचे ज्यादा से-ज्यादा, तब तो विश्व-शांति होने के लिये देर नहीं लगेगी।

शिवसागर जिले में काकचनी गाँव का ग्रामदान हुआ है। ११ अक्तूबर '६१ को वहाँ विनोबाजी का पड़ाव था। प्रार्थना-सभा के समय पूछे गये 'विश्व-शांति का क्या उपाय है ?'—इस प्रश्न के उत्तर में विनोबाजी ने जो प्रवचन दिया, वह हम यहाँ दे रहे हैं।

स्त्रियाँ और विश्व-शान्ति

• शान्तिदेववाला

पिछले दिनों यह प्रसंग बार-बार सुनने में आया कि स्त्रियाँ विश्व-शान्ति की स्थापना में पुरुषों से अधिक सफल हो सकती है और साथ ही यह भी कि स्त्री का क्षेत्र केवल घर है और बाहर की समस्या में वे न उलझें तभी भलाई है!

किस कार्य को पुरुष अच्छा कर सकते हैं और किसे स्त्रियाँ, यह एक दिलचस्प वाद-विवाद का विषय रहा है और आज विश्व-शान्ति का प्रश्न भी जलते अंगारे-सा सामने खड़ा है! अनदेखे-अनसुने विज्ञान के चमत्कारी आविष्कारों के बाद भी हम खड़े कहाँ हैं? विनाश के कगार पर। दो-चार नेता अपना मानसिक संतुलन खो बैठें तो पीड़ा, पतन का दैत्य विश्व को निरीह शिशु सा दबोच ले!

पिछले तीस वर्षों में दो महायुद्ध हो ही चुके हैं और तीसरे की आहट सबको सुनाई पड़ रही है, या शीतयुद्ध और अविश्वास के ताने-बाने तो हमें सतत घेर कर ही खड़े हैं। अतः इतना तो निश्चित ही है कि पुरुष-समाज ने साधारणतया आदिकाल से विश्व का संचालन करने का भार उठाया है, पर वह मानवता को शान्ति और सुख के निश्चित लक्ष्य तक ले जाने में असमर्थ रहा है।

स्वाभाविक ही तब यह प्रश्न उठता है कि जब समाज का निर्माण पुरुष और स्त्री से हुआ है और एक भाग समाज को लक्ष्य तक पहुँचाने में असफल रहा है, तो क्या दूसरा हिस्सा, स्त्री-वर्ग विश्व की गति को महानाश से रोक कर शान्ति के गन्तव्य तक ले जा सकता है? क्या आज की नारी यह भूमिका अदा कर सकती है?

यदि स्त्रियों को विश्व संचालन का अधिकार दे दिया जाय तो वे गति की दिशा को मोड़ने में सफल हो जायेंगी, यह विचार हमें समाधान के बिल्कुल निकट नहीं ले जाता। केवल लंका-से छोटे देश को छोड़ कर तथा कुछ और गिने-चुने ऊँचे पदों को छोड़ कर विश्व के सभी देशों में राष्ट्रपति, प्रधानमंत्री, सेनानायक आदि के जैसे मुख्य पद पुरुषों के ही पास हैं और एकाएक तिलस्मी जादू की तरह सभी देशों के भाग्यनिर्णय के ये पद स्त्रियों पर आ जायेंगे यह केवल एक कल्पनामात्र है! तर्क के लिये थोड़ी देर के लिए मान भी लें कि पुरुष ये सब पद "लेडीज फर्स्ट" के सिद्धांत को मान कर एकदम स्त्रियों के लिये छोड़ देंगे तो भी

आज की जो राजनैतिक, सामाजिक, आर्थिक व्यवस्था है, उसमें बिना कोई क्रांतिकारी-मौलिक परिवर्तन किये, स्त्रियाँ केवल स्त्रियाँ होने के नाते विश्व-शान्ति के निर्माण में सहायक होंगी, यह सोचना भी ठीक नहीं है।

तो समस्या दो प्रश्नों पर आकर टिकती है—पहला, महिलाएँ भले ही ऊँचे-से-ऊँचे पदों पर पहुँचने योग्य हों तो भी आज एकाएक अमरबेल की तरह ऊपर ही ऊपर विश्व पर नहीं छा सकतीं। उन्हें अपना प्रभाव डालने के लिये नीचे से ही, अपनी मूल इकाई से ही क्रमशः ऊपर बढ़ना होगा और दूसरा, आज की राजनैतिक, आर्थिक-सामाजिक व्यवस्था, जो पुरुषोचित बुद्धि का व्यावहारिक प्रेक्टीकल रूप कही जा सकती है, उसमें आमूल परिवर्तन करके जो स्त्रियोचित गुण माने जाते हैं, जैसे प्रेम, विश्वास, करुणा आदि, उनकी प्रतिष्ठा करनी होगी।

वैसे देखा जाय तो नारी यह नई जिम्मेदारी उठा सके इसके लिए आज का युग अत्यन्त अनुकूल है। विज्ञान और यंत्रीकरण का सबसे बड़ा लाभ नारी को यह हुआ है कि उसने उसकी एक अक्षमता मिटा दी है। विज्ञान के युग में शरीरबल की प्रधानता ही नहीं रही। जब तक समाज में शरीरशक्ति रही, पौरुष का महत्त्व रहा और शरीरबल में कम होने के कारण समाज में स्त्री एक परिशिष्ट-सी ही रही। पर आज प्रश्न बुद्धिबल का है। अबल की परिभाषा में मौलिक परिवर्तन होने के ही कारण प्रायः सभी देशों ने उसे लिंग निरपेक्ष नागरिकता का अधिकार दे दिया है। कानूनी, सामाजिक व राजनैतिक बंधन उस पर से केवल स्त्री होने के नाते हट गये हैं!

पर समस्त अधिकारप्राप्त हो जाने पर स्त्रियों ने समाज में कोई प्रभावकारी विकास की दिशा दी हो, ऐसा नहीं लगता। आज भी स्त्री का जीवन पुरुष-निर्भर है। पुरुष के विकास के क्रम में ही वह देवी है या नरक का द्वार। उसका सामाजिक अस्तित्व व्यक्ति के रूप में नहीं। मानवीय संस्कृतियों के इतिहास को देखें तो ज्ञात होगा कि स्त्री ने तीन क्षेत्रों में सफलतापूर्वक प्रभाव डाला है—सतीत्व में, संन्यास या धर्म की निष्ठा में और वेश्या-वृत्ति में। ये तीनों क्षेत्र इस पर आश्रित हैं कि स्त्री शरीर-व्यापार को क्या और कितनी महत्त्व देती है। स्त्री के प्रति दृष्टिकोण शरीरपरायण और शरीरप्रधान ही रहा और यही उसके पिछड़ेपन का कारण है।

महिलाएँ एम० एल०ए०, एम० पी०, प्रधान मंत्री, कुछ भी बन जायें, स्त्रीत्व का खतरा मुख्य रहता है। विश्व को प्रभावित करना है तो सबसे पहले उसे अपने प्रति ही यह दृष्टिकोण बदलना है और समाज व पुरुष-वर्ग उसके प्रति अपने पुराने दृष्टिकोण को बदले, इसके लिये उसे स्वयं चरित्रबल और आत्मनिष्ठा का विकास करना पड़ेगा। स्त्री की अपेक्षा स्त्री व्यक्ति अधिक होगी, तभी समाज को प्रभावित कर सकेगी, मर्यादित कर सकेगी। अन्यथा ऊँचे-से-ऊँचे पद प्राप्त करके भी पुरुष को मर्यादित कर सकने का उसका दावा विशेष लाभकर नहीं होगा।

तीन, प्रखर चरित्रबल और व्यक्तिगत अस्तित्व मुख्य और मौलिक कदम होगा। साथ ही यदि वह विश्व को प्रभावित करने के स्वप्न देखती है तो उसे आजीविका-सम्पादन की जिम्मेवारी भी पूर्णतया लेनी पड़ेगी। आर्थिक स्वतंत्रता के बिना वे समाज का अलंकार बन सकती हैं, धनरूप सम्पत्ति बन सकती हैं, समाज की चालक शक्ति नहीं।

यह तो दो मुख्य आधारों की बात हुई, समाज में वह प्रभावकारी हो, इसके लिये उसे अपना दृष्टिकोण विस्तृत करना होगा, सार्वजनिक चिन्ता के प्रश्न, सामाजिक समस्याओं के निदान में अधिक सहयोग करना होगा। विश्व शान्ति की ओर बढ़े, इसके लिये आज के मानव के सुधार के साथ-साथ नये मानव मूल्यों पर आधारित राष्ट्र का भी निर्माण करना होगा। इसके लिये शिक्षण का क्षेत्र उसे अधिक से अधिक लेना पड़ेगा, बालक-बालिकाओं के शिक्षण से उनके मातृत्व की भी सहज स्नेह की तुष्टि होगी और नव मानव का भी निर्माण होगा।

शिक्षा के क्षेत्र के बाद साहित्य का क्षेत्र उसे अपनाना होगा। साहित्य के क्षेत्र में वाल्मीकि, शेक्सपीयर, मार्क्स का नाम सहज आता है, वैसा एकदम किसी महिला का नहीं। कौन नहीं जानता कि रूसो ने फ्रान्स की क्रांति को जन्म दिया और मार्क्स ने साम्यवादी क्रांति को। क्यों महिलाओं का साहित्य केवल सिलाई, कढ़ाई और पाक-विधियों तक ही रह जाता है? निर्भय महिला साहित्यकारों को भी आगे आना होगा, जो विरह, पीड़ा, अवसाद और प्रियतम की प्रतीक्षा के गीतों, कहानियों से ऊपर उठ कर नये ढंग के साहित्य का निर्माण करने में संलग्न हों।

और अन्त में केवल इतना ही कहना है कि स्त्रियों के ये सब परिवर्तन चुनौती और नकल के रूप में नहीं होने चाहिये। स्त्रियाँ पुरुषों के ही तरीके अपना लेंगी तो समाज, राष्ट्र में ताजगी नहीं आयेगी। अगर वे पार्टीबाजी, दल निर्माण, अविश्वास के तरीके ही अपनायेंगी; घर, समाज, राष्ट्र और विश्व में जो गहन अविश्वास की खाई है उसे विश्वास, आत्मगौरव, सहयोग, करुणा, दया से नहीं पाटेंगी तो फिर एक देश की स्त्री-सेना ही दूसरे देश की स्त्री-सेना से लड़ेगी—मुहरे भले बदल जायें, चाल नहीं बदलेगी।

यहाँ भी विज्ञान उसकी सहायता के लिये उद्यत है। आज विज्ञान और हिंसा साथ चलते हैं, तो विनाश की दरारें बढ़ती हैं और विज्ञान और अहिंसा चलती है तो समृद्धि, विकास की सरिताएँ बह उठती हैं। जरूरत केवल इतनी है कि आज की नारी अपनी जिम्मेदारी समझे, युग उससे कुछ अधिक चाहता है।

स्त्रियों का पुरुषीकरण खतरनाक

आज पुरुषों ने समाज का जो कारोबार चला रखा है, वह ठीक से नहीं चल रहा है। आजकल तो पुरुषों को अहिंसा सिखाने के बदले समानता के नाम पर स्त्रियों का पुरुषीकरण चल रहा है! पुरुषों ने संहार मचा रखा है, उसमें जब स्त्रियाँ भी योग देने लगेंगी, तब फिर विश्व को कौन बचायेगा? समुद्र अगर गंगा को स्थान नहीं देगा, तो वह किसके पास जायेगी? जगत् की रक्षण-शक्ति जिन स्त्रियों के पास है, वे ही जब कंधों पर बन्दूक धरने लगेंगी तब संसार को कौन बचायेगा? इसलिए स्त्रियों को चाहिए कि वे पुरुषों को मर्यादित बनाने का प्रयत्न करें। पुरुष टाइपिस्ट बनते हैं तो स्त्रियाँ भी टाइपिस्ट बनें, इसमें कोई सार नहीं है। स्त्रियों को अहिंसा-शक्ति प्रकट करके संसार को बचाने का पराक्रम करना चाहिए।

(हिरापुर, ८-७-'५८)

—विनोबा

प्रेरणा का स्रोत

कानपुर के आर्यनगर स्थित सर्वोदय मित्रों को संबोधित करते हुए श्री नारायण देसाई ने उद्बोधन किया—"प्रेरणा के दो ही स्रोत हैं: एक आत्मा और दूसरा परमात्मा। अतः आप प्रेरणा या तो अपने में या जनता-जनार्दन में ढूँढ़ें। व्यक्ति के 'जीवन-चरित्र' का नहीं, 'जीवन चारित्र्य' का विचार करना चाहिए। प्रेरणा जीवन सम्बन्धी बाह्य घटनाएँ नहीं देंगी, आन्तरिक गुण देंगे।

हमारी संख्या कम हो तो गुण बढ़ाना चाहिए। उसके लिए पहले स्वयं स्वाध्याय करें, फिर विचार प्रचार करें। सत्य और अहिंसा पर आधारित जो विचार देश या विदेश में हो, वह सारा सर्वोदय विचार है। सत्य और अहिंसा तो सार्वभौम सर्वकालीन धर्म है। प्रेरणा का क्षण या क्रांति का क्षण पता नहीं कब आ जाय! अतः प्रेरणा पाने के लिए नित्य अध्ययन करें। समाज के सभी तात्कालिक प्रश्नों का सर्वोदय दृष्टि से अध्ययन करें, किन्तु अपने हाथ में केवल कुछ ही प्रश्न लें। पूरे प्रश्न लेंगे तो उलझ जायेंगे और कोई नहीं लेंगे तो पिछड़ जायेंगे। सर्वोदय मित्र मण्डल के कार्य की यह विशेषता होनी चाहिए।"

सर्वं जगत् स्फूर्तिः जीवनं सत्यशोधनम्

भूदानयज्ञ

लोकनागरी लिपि

शिक्षकों का कर्तव्य

आजकल शिक्षक बच्चों के शिक्षक नहीं होते। वे गणित, भूगोल आदि विषयों के शिक्षक होते हैं, यानी अचेतन के शिक्षक होते हैं। सामने जो चेतन बच्चा है, उसकी ओर ध्यान नहीं जाता है। रोज 'रोलकाल'-हाजिरी लेते हैं। फलाना लड़का गैरहाजिर है, तो 'सीक' (बीमार) लिख दिया। उससे ज्यादा अपना कोई कर्तव्य है, ऐसा वे नहीं मानते हैं। अगर आपको मालूम हो गया कि बच्चा बीमार होने से गैरहाजिर है, तो आपको बच्चे के घर जाकर दरयाफ्त करनी चाहिए कि क्या बीमारी है, क्या इलाज चल रहा है, क्या खा रहा है, इलाज की कोई योजना है या नहीं? अगर नहीं है तो गांव के जरिये वह करनी चाहिए। हम समझते हैं कि यह शिक्षकों का कर्तव्य है कि बच्चों को समयानुसार उस-उस बीमारी का विषय सिखाना चाहिए। वह बीमारी कैसे होती है, यह चर्चा क्लास में होनी चाहिए। तब तो ऐसी मुकम्मल तालीम होगी कि लड़के की बीमारी भी ज्ञान का साधन होगी और आरोग्य की चर्चा शुरू होगी। अगर यह हुआ तो हम समझेंगे कि यह बेसिक एजुकेशन है। लेकिन आजकल शिक्षक बिलकुल अलिप्त होते हैं। अपने नियत विषय के सिवा दूसरी ओर वे ध्यान नहीं देते। —विनोबा

[जयसागर, २२-९-'६१]

लिपि-संकेत ि = ी; ी, = ी ख = छ, संयुक्ताक्षर हलंत चिह्न से।

'सर्वोदय' का अर्थ

• दादा धर्माधिकारी

'सर्वोदय' में दो शब्द हैं : सर्व और उदय। 'सर्व' का मतलब है सबका। 'उदय' से मतलब है—उन्नति, तरक्की, विकास। सबका उदय हो, सर्वोदय का यह मतलब हुआ। आज के समाज में कुछ आदमी ऊपर हैं, कुछ नीचे हैं, कुछ आगे हैं, कुछ पीछे हैं। यह फर्क गुणों के कारण नहीं है। मनुष्य-मनुष्य में गुण के कारण फर्क होता है। जिसमें अच्छे और अधिक गुण होते हैं, वह श्रेष्ठ माना जाता है। जिसमें कम गुण होते हैं या सामान्य गुण होते हैं वह श्रेष्ठ नहीं माना जाता है, सामान्य माना जाता है। हम उसे कनिष्ठ नहीं मानेंगे। परन्तु आज के समाज में हिसाब कुछ उल्टा है। आदमी पैसे के कारण, शरीर-बल के कारण और अपने जन्म के कारण बड़ा माना जाता है। सर्वोदय चाहता है कि मनुष्य अपने गुणों के कारण समाज में प्रतिष्ठित माना जाये। धन के कारण, सत्ता के कारण, सैनिकता के कारण या जाति के कारण नहीं।

गुण की कोई कीमत नहीं होती, गुण के बदले में कुछ नहीं मिल सकता; क्योंकि गुण की बराबरी संसार में दूसरी कोई चीज कर ही नहीं सकती। इसलिए गुण के बदले में धन, अधिकार, संपत्ति या हथियार कुछ भी नहीं मिल सकता, अर्थात् गुण की पूजा समाज में किसी वस्तु से नहीं हो सकती। गुणवान मनुष्य लोगों का प्रेम पाता है। यही उसका पारितोषिक है। गुणवान मनुष्य सत्ता और संपत्ति का इच्छुक कभी नहीं रहेगा। लोगों का प्रेम और विश्वास पाकर लोगों के प्रेम और विश्वास को ही अपना पारितोषिक मानेगा।

आज जिसके पास पैसा है, उसकी समाज में इज्जत है—पैसा किसी भी तरह क्यों न आया हो। जो मेहनत करता है, उसकी इज्जत नहीं है। इस हालत को बदलने के लिए क्या करना पड़ेगा? जो मेहनत करता है, उसकी समाज में इज्जत होनी चाहिए। आज क्या नहीं है? इसलिए नहीं है कि मेहनत करने वाला अपनी मेहनत बेचता है और वह अपनी मेहनत न बेचे तो उसकी गुजर नहीं हो सकती है। जो मेहनत खरीदता है, वह मालिक बनता है। जो अपनी मेहनत बेचता है उसे मजदूर कहते हैं; जो दूसरे की मेहनत खरीदता है, वह मालिक कहलाता है। यह बड़ा अटपटा रिश्ता है। यह रिश्तेदारी अच्छी नहीं है। क्यों? मेहनत बेचने वाला अपनी मेहनत ज्यादा दामों में बेचना चाहता है और मेहनत खरीदने वाला कम दामों में खरीदना चाहता है। इस रिश्तेदारी में से तनाव पैदा होता है। जो मजदूर होता है, काम कम करना चाहता है और दाम ज्यादा चाहता है। जो मालिक है दाम कम देना चाहता है और काम अधिक कराना चाहता है। हम समाज से इस रिश्तेदारी को मिटाना चाहते हैं। ऐसी हालत पैदा करना चाहते हैं कि किसी आदमी को अपनी मेहनत नहीं बेचनी पड़ेगी और कोई आदमी दूसरे की मेहनत नहीं खरीद सकेगा। मतलब समाज में एक मालिक और एक मजदूर, ऐसा फर्क नहीं रहेगा। जिस प्रकार आज कोई राजा नहीं है, कोई प्रजा नहीं है, सभी राजा हैं, सभी प्रजा हैं, उसी तरह समाज में जो मेहनत करता है वह मालिक होगा। जो मालिक होगा वह मेहनत करेगा।

शुरू कहाँ से होगा? जो मेहनत करता है उसको मालिक बनाने से। सबका उदय तब होगा, जब पिछड़ा हुआ दूसरों की बराबरी पर आयेगा, गिरा हुआ उठ कर खड़ा होगा, दबा हुआ सिर ऊपर उठायेगा। मतलब यह कि सर्वोदय का आरम्भ उससे होता है, जो समाज में सबसे पीछे है, सबसे नीचे है और खोया हुआ है। सर्वोदय का यह मतलब नहीं कि धनवान ज्यादा धनवान होगा, हुकूमत वाले को और हुकूमत मिलेगी और जो दूसरों के कंधों पर बैठा हुआ है, वह वहीं रहेगा। अगर गरीब की भलाई गरीबी को मिटाने में है तो अमीर की भलाई अमीरी को मिटाने में है। यही सर्वोदय है।

हमने कहा था कि जाति से आदमी बड़ा नहीं समझा जायेगा। जो उच्च कुल में पैदा हुआ है, उच्च जाति में पैदा हुआ है वह आज समाज में बड़ा समझा जाता है। यह गलत है, यह नहीं रहना चाहिए। केदारनाथ का पुजारी बड़ा समझा गया और वह सफाई करने वाला भंगी। वह नीच समझा गया। वे पुजारीजी क्या भंगी से सच्चे आदमी हैं? ज्यादा गुणवान हैं? ऐसा तो नहीं है। ऊँची जाति का झूठा आदमी, दगाबाज आदमी पवित्र माना जाता है। नीच जाति का सच्चा आदमी हो, गुणवान आदमी हो, अपवित्र माना जाता है। यह गलत चीज है। जो गुणवान है, वह पवित्र है। गांधी तो ब्राह्मण नहीं था। फिर भी सारे ब्राह्मणों में से वह पवित्र ज्यादा था।

अब सर्वोदय की तीसरी चीज : आज के समाज में सिपाही की शान है। उसका मतलब यह हुआ कि तलवार की शान है, हथियार की शान है। कुदाली और कुल्हाड़ी की शान नहीं है। हल, बक्खर की शान नहीं है। औजार की शान नहीं है। अब ये दो शब्द आये—हथियार और औजार। हथियार उसे कहते हैं, जो दूसरे की जान लेता है, चाहे किसी तीसरे को बचाने के लिए ही क्यों न लेता हो, लेकिन जान लेता है। और कोई काम तो नहीं है हथियार का। औजार उसे कहते हैं, जो चीजें बनाता है और सुधारता है। हँसिया, हथौड़ा, चरखा, करघा, तकली, हल, कुल्हाड़ी—ये सब औजार हैं। आज समाज में हथियार वाले की इज्जत है और औजार वाले की नहीं है। हम इसको उलट देना चाहते हैं। इज्जत औजार वाले की होनी चाहिए, हथियार वाले की नहीं। इस देश की राजनैतिक पार्टियाँ कहती तो यही हैं, लेकिन करती कुछ और हैं। कम्यूनिस्ट, प्रजासमाजवादी, समाजवादी और कांग्रेस—चारों के झंडों पर निशान तो औजारों के हैं।

कम्यूनिस्टों के झंडे पर कौनसा निशान है? हँसिया हथौड़ा। प्रजासमाजवादी झंडे पर हल और मशीन का पहिया। कांग्रेस के झंडे पर चरखा बना हुआ है। अब इनमें से कोई हथियार नहीं है, औजार हैं। पर करते क्या हैं? तलवार हाथ में लेते हैं। सर्वोदय का प्रण है कि औजार की इज्जत को बढ़ाने के लिए हम हथियार हाथ में नहीं लेंगे। क्यों? जो हथियार हाथ में लेता है वह उसकी इज्जत बढ़ाता है। हथियार से औजार को डराने से औजार की इज्जत नहीं बन सकती। इसलिए सर्वोदय में हथियार से परहेज है, औजार से मुहब्बत है; परिश्रम और उद्योग से प्रेम है, युद्ध और संघर्ष का विरोध है।

अब एक बात रह गयी—हुकूमत वाली। आज साधारण नागरिक यह समझता है कि उसकी भलाई करने वाला कोई दूसरा है। इसलिए वह जैसे परलोक के सुख के लिए भगवान के सामने हाथ पसारता है, उस तरह से इहलोक के सुख के लिए राज्य के सामने गिड़गिड़ाता है, कभी भुनभुनाता है, कभी शिकायत करता है। नतीजा यह है कि उसमें आत्मविश्वास नहीं होता है। वह समझता है मैं बेचारा हूँ, दीन-हीन हूँ। उसमें मनुष्यता नहीं रह जाती है। हम साधारण मनुष्य को यह विश्वास दिलाना चाहते हैं कि वह स्वयं अपने भाग्य का विधाता है। राज्य उसका है। वह प्रजा नहीं है, रिआया नहीं है। वही राजा है। इसका मतलब यह हुआ कि जितने नागरिक हैं, वे सभी राजा हैं। काम-काज के लिए कुछ आदमी मुकर्रर कर देते हैं। यह तो इंतजाम के लिए है। इतने से जो काम-काज करने वाले लोग हैं, वे राजा नहीं बन जाते। राम भरत चलाते थे, लेकिन राज्य राम का था। आज राम हर नागरिक में है। लोकतंत्र में राम हर नागरिक में होते हैं। इसलिए सर्वोदय किसी संस्था, जमात, गिरोह या पार्टी के राज्य में विश्वास नहीं करता। सर्वोदय का लोकराज्य है, सबका राज्य। •

समाज के निर्बल अंग मजबूत बने बिना देश का विकास असम्भव

भारत सरकार ने गत दिसम्बर में श्री जयप्रकाशजी की अध्यक्षता में आठ सदस्यीय अध्ययन-दल की नियुक्ति सामुदायिक विकास-कार्यक्रम और पंचायत-राज आदि संगठन किस प्रकार से समाज के निर्बल अंगों के विकास के लिये कार्य कर सकते हैं, इसके लिये सिफारिशें देने के लिये की थी। इस अध्ययन-दल का प्रतिवेदन अभी हाल में ही प्रकाशित किया गया है।

इस दल का अध्ययन-क्षेत्र ग्रामों को ही रखा गया था, इसका कारण यह था कि सामुदायिक विकास-कार्यक्रम पर यह आक्षेप लगाया जाता रहा है कि इसका लाभ ग्राम के उच्च और साधनवान लोगों को ही हुआ है और साधनहीन और निर्बल लोगों की सहायता करने में यह कार्यक्रम असमर्थ-सा ही रहा है।

इस अध्ययन दल ने योजना के निम्न पहलुओं के अध्ययन के साथ ही ग्राम के निर्बल अंगों की दशा का सूक्ष्म और विस्तृत अध्ययन किया है तथा बहुत महत्वपूर्ण सिफारिशें प्रस्तुत की हैं। इसकी मुख्य सिफारिशों में निर्बल अंग की परिभाषा, भूमि पर ग्राम-समुदाय का स्वामित्व तथा उसके लिये शिक्षण, सरकारी निर्माण कार्य द्वारा बेरोजगारों तथा निर्बलों को सहायता और रोजगार की ग्यारंटी, ग्राम का नवीन औद्योगीकरण, शिक्षा का नवीनीकरण तथा मुफ्त शिक्षा, सहकारी कृषि व श्रम-सहकार सामुदायिक विकास में प्राथमिकताएँ तथा पंचायत-राज में रोजगार का उत्तरदायित्व पंचायत पर हो, आदि सिफारिशें प्रमुख हैं।

अध्ययन दल ने इस बात पर जोर दिया कि समाज के कमजोर अंगों का उत्थान, कल्याण और निस्तार तभी सम्भव है, जब कि देश में एक सर्वांगीण अहिंसक सामाजिक क्रांति द्वारा भारतीय समाज से जातिप्रथा को जड़मूल से उखाड़ फेंका जाय। दल का यह भी निष्कर्ष है कि जाति-पाँति के कारण उत्पन्न समाज-व्यवस्था, सामंतशाही आर्थिक ढाँचा तथा आर्थिक स्रोत एवं जन-संख्या में असंतुलन के कारण ही हमारे ग्रामीण क्षेत्र पिछड़ गये हैं।

अध्ययन दल ने निर्बलता की कसौटी आर्थिक परिस्थिति को ठहराया है। इस कसौटी के अनुसार गाँवों के ८०% समाज को निर्बल अंग मानना पड़ेगा। जिस परिवार की आय एक हजार रुपये वार्षिक से कम हो उसे समाज का निर्बल अंग मान कर विशेष सहायता दी जाय। इसमें भी अध्ययन-दल ने प्राथमिकता निश्चित करने की सिफारिश की है। एक श्रेणी उन परिवारों की मानी जाय, जिनकी वार्षिक आय ५००रु. से कम हो। ऐसे परिवारों को सहायता देने में प्राथमिकता देनी चाहिये, क्योंकि देश में ५०% ऐसे परिवार हैं। अन्तिम श्रेणी उन परिवारों की मानी जाय, जिनकी वार्षिक आय २५० रु. वार्षिक से कम है इन परिवारों को तो 'निराश्रित' ही माना जाना चाहिये एवं उनके कल्याण और सुधार की ओर सबसे पहले ध्यान देना चाहिये। हरिजन एवं अनुसूचित जातियों को तो निर्बल अंग सामाजिक दृष्टि से माना ही गया है तथा इन सबके कल्याण के लिये प्राथमिकता देने में पंचायत राज अभिक्रम ले तथा उत्तरदायित्व वहन करे।

खेतों के छोटे-छोटे टुकड़ों में बँटे होने के कारण कृषि-उत्पादन की स्थिति बहुत खराब है तथा किसानों को इसी कारण ने अत्यन्त खराब हालत में डाल रखा है। इस सामाजिक आर्थिक रोग से मुक्ति तभी प्राप्त की जा सकती है, जब भूमि पर समस्त ग्राम समुदाय का स्वामित्व एवं व्यवस्था कायम हो। इसके लिये अध्ययन-दल ने सिफारिश की है कि सामुदायिक विकास-कार्यक्रम तथा उससे सम्बन्धित संस्थाएँ भूमि पर सामुदायिक स्वामित्व को प्रोत्साहन देने के लिये अपनी नीतियों पर परिवर्तन करें तथा एक व्यापक शिक्षण-कार्यक्रम संगठित करें। इसके साथ ही सामुदायिक विकास-मंत्रालय सामाजिक न्याय एवं आर्थिक औद्योगिक विकास की दृष्टि से वैज्ञानिक अध्ययन करने का प्रबंध करे और भूमि पर ग्राम का स्वामित्व कैसे हो सकता है तथा विधान आदि किस प्रकार से बनाया जा सकता है इसकी खोज करे।

अध्ययन दल ने निर्बल अंगों की सहायता के लिये सरकारी निर्माण कार्यों को अत्यन्त महत्त्वपूर्ण माना है। निर्बल अंगों को शीघ्रता से तथा व्यापक रूप से सहायता केवल इन्हीं कार्यक्रमों द्वारा पहुँचायी जा सकती है। इन निर्माण कार्यक्रमों को 'सहायता-कार्यक्रमों' जैसा चलाया जाय तथा श्रम-सहकार संस्थाओं को ठेके दिये जायें।

> इसलिये शासन को ऐसे सभी लोगों को जो शारीरिक श्रम कर सकते हैं तथा शारीरिक श्रम करना चाहते हैं, रोजगार की ग्यारंटी देनी चाहिये।

अध्ययन-दल ने अपने प्रतिवेदन में कहा है कि कृषि विकास से भी अधिक महत्त्व गाँवों में उद्योगों की स्थापना को देना चाहिये। इसके लिये गाँव के मौजूदा उद्योगों को ही विकसित न किया जाय वरन् नये-नये उद्योगों को जन्म दिया जाय। ये उद्योग सारे ग्रामीण क्षेत्र में फैलने चाहिये तथा उनका ग्रामीण क्षेत्रों के साथ निकट का संबंध होना चाहिये। इसके लिये भारत सरकार से एक विशेष संगठन (रूरल इंडस्ट्रिलायझेशन कमीशन) की स्थापना करने और उसे व्यापक अधिकार और साधन देने का अनुरोध दल ने किया है। ग्रामोद्योगों के विकास से रोजगार के अवसर बढ़ेंगे तथा असमानता में कमी होगी। एक अमेरिकी पत्र में प्रकाशित आँकड़ों ने भी इस तथ्य को सिद्ध किया है—'भारत में ऐसी ८००० फैक्ट्रियाँ हैं, जिनमें २० से अधिक लोग काम करते हैं तथा जिनमें शक्ति का उपयोग होता है। ये २९ प्रकार की हैं, किन्तु कुल रोजगार-प्राप्त जनसंख्या के १% हिस्से को ही रोजगार देती हैं, जबकि कुटीर उद्योगों से २ करोड़ लोगों को रोजगार प्राप्त है तथा ७०.५ लाख लोग केवल हाथ करघा उद्योग में ही लगे हैं।

निर्बल तबके के बालकों को उच्चतर माध्यमिक स्तर तक मुफ्त शिक्षण, मुफ्त भोजन और निश्चित छात्रावासों की व्यवस्था करना जरूरी है। योग्यता के आधार पर उच्च शिक्षा के लिये छात्रवृत्ति भी दी जाना चाहिये। प्राथमिक शिक्षण में बालकों को दोपहर का भोजन मुफ्त हो तथा बच्चों को स्लेट, पेन्सिल, पुस्तकें आदि भी मुफ्त दी जानी चाहिये।

अध्ययन-दल का अनुमान है कि ग्रामीणों का साहूकारों द्वारा शोषण प्रभावशाली तरीके से रोकने के लिये साख-सहकारिता, उत्पादन तथा विपणि सहकारी समितियों को संगठित किया जाय तथा इनका क्षेत्र विस्तृत किया जाय।

दल की सिफारिश है कि सहकारी कृषि के लिये कम-से-कम दस वर्षों के लिये भूमि को मिलाना चाहिये। कृषक मजदूरों को सहकारी समिति के हिस्से खरीदने के लिये ऋण दिया जाना चाहिये। साधारण सिद्धांत के तौर पर उत्पादन का ४% उन लोगों में बाँटना चाहिये, जिन्होंने अपनी भूमि सहकारी कृषि के लिये दी है, ४% उत्पादन श्रमिकों में विभाजित किया जाना चाहिये तथा शेष २०% रक्षित कोष में जमा करना चाहिए।

अध्ययन-दल के अनुसार सामुदायिक विकास-कार्यक्रम न केवल साधन ही है, वरन साध्य भी है। इस दृष्टि से तृतीय योजना में सहायता तथा ऋण का जो प्रावधान है, उनके द्वारा निर्बल अंगों को लाभ पहुँचाने का दृष्टिकोण अपनाना चाहिए। चकबंदी की प्रक्रिया के स्वरूप में ऐसा प्रयत्न किया जाना चाहिये कि निर्बल अंगों की भूमि के छोटे-छोटे टुकड़ों को मिला कर एक चक में बदल दिया जाय, जिससे उन्हें आर्थिक जोत हो सके तथा भूमि का पूरा-पूरा उपयोग किया जा सके।

अध्ययन-दल ने सिफारिश की है कि पंचायतराज संस्था का रुख निर्बल अंगों के कल्याण की ओर होना चाहिए। प्रस्तावित शासकीय ग्यारंटीशुदा योजनाओं में बेरोजगारों को रोजगार देने तथा अनुदानों के समुचित उपयोग का उत्तरदायित्व ग्राम पंचायत का होना चाहिए।

ऐसे सभी मंत्रालयों में, जो ग्राम-विकास कार्यक्रमों में संलग्न हैं, एकीकरण की बहुत आवश्यकता है। इसके लिए सामुदायिक विकास एवं सहकार मंत्रालय, खाद्य एवं कृषि मंत्रालय, वाणिज्य एवं उद्योग मंत्रालय, शिक्षा, गृह और कार्यक्रम मूल्यांकन संगठन एवं जनजाति एवं अनुसूचित जातियों के कमिश्नर के प्रतिनिधियों की एक समिति बनाने का सुझाव भी अध्ययन दल ने दिया है।

आशा है कि इन सिफारिशों पर केंद्र एवं राज्य-सरकारें गम्भीरतापूर्वक विचार करेंगी। जहाँ तक निर्बल अंगों की सहायता और उसकी तीव्र आवश्यकता का प्रश्न है कहीं भी दो मत नहीं हो सकते। फिर भी साधन और प्रक्रिया की अनेक कठिनाइयाँ हैं, जिन्हें व्यापक राष्ट्रीय चेतना द्वारा ही हल किया जा सकता है।

['भूमि-क्रांति' से]

साहित्य : एक महान् शक्ति

आने वाले युग में दो ही शक्तियाँ चलने वाली हैं—आत्मज्ञान और विज्ञान। आज तक सियासत और मजहब की शक्तियाँ चलतीं, पर आने वाले युग में ये दोनों शक्तियाँ समाप्त होने वाली हैं। आत्मज्ञान और विज्ञान, इन दोनों शक्तियों को जोड़ने वाली जो तीसरी शक्ति है वह साहित्य-शक्ति है। इसलिए साहित्य का भविष्य उज्ज्वल है, इतना ही नहीं बल्कि वह थर्मामीटर की तरह मानव-समाज को नापनेवाला साबित होगा।

—विनोबा

राज्यसत्ता बनाम लोकसत्ता

लक्ष्मीनारायण भारतीय

राज्यसत्ता पर अपनी पकड अत्यंत मजबूती के साथ रख कर भी 'राज्यसंस्था के विलयन' की बात कहते रहना अद्भुत साहस की बात है, इसमें संदेह नहीं, क्योंकि कहीं पर भी उस संस्था एवं सत्ता से मुक्त होने का सामान जुट नहीं पा रहा है, तथापि 'वाणी' द्वारा उसका उदघोष तो चालू ही है। अभी रूस की २२वीं कम्युनिस्ट-काँग्रेस में फिर इस लक्ष्य का—"क्लासिक मार्क्सिस्ट गोल" का—उच्चारण हुआ कि आखिर "स्टेट् विल विदर अवे" तक किस तरह पहुँचा जा सकता है। लेकिन पहुँचने की संभावना के पूर्व ही यह कितना 'दूर का कदम' है, इसी पर अधिक जोर दिया गया एवं कहा गया कि "यह बड़ी लंबी प्रक्रिया है। यह एक पूर्ण ऐतिहासिक घटना-क्रम है। रूस में 'कम्युनिस्ट सोसायटी' की पूर्ण स्थापना से ही यह हो जाने वाला नहीं है, अपितु आंतर्राष्ट्रीय जगत् में सोशलिस्ट की स्थापना की शर्त भी उसके पीछे लगी है एवं जब यह महसूस किया जा सकेगा कि राज्यसत्ता की अब जरूरत नहीं, तब उसका विसर्जन हो सकेगा।" श्री खुश्चेव ने यह लाख बात की एक बात कही है, इसमें संदेह नहीं, क्योंकि ध्येय-वाक्य का उदघोष करते हुए भी वह इस भ्रम में किसी को नहीं रखना चाहते कि यह ध्येय अब हाथ में आया या तब हाथ में आया। ध्येय सामने है, इतना भर वे कहना चाहते हैं।

जगत् में जो राजनीतिक फिलासफियाँ पैदा हुईं, उनमें सर्वोदय वाले एवं मार्क्स वाले इस लक्ष्य पर बहुत जोर देते रहते हैं कि स्टेट का विसर्जन करना है एवं वह होने वाला भी है। मार्क्स वाले इसके लिये सत्ता का आश्रय पूरी तौर से लेना चाहते हैं एवं सर्वोदय वाले अब लोकनीति के रूप में सत्ता-त्याग की भी बात सामने रख कर वहाँ तक पहुँचना चाहते हैं। मार्क्स के तो अनुयायियों को सत्ता मिलने ही गयी एवं मिलती ही जा रही है, भले ही वह 'पर्सनल कल्ट, 'पार्टी कल्ट,' 'चीनी कल्ट,' 'यूगोस्लाविया पद्धति' एवं 'अल्बानिया पद्धति' की भिन्न भिन्न मुद्रा में दुनिया के सामने आती रही हो। वैसे, कम्युनिस्ट तंत्र का आधार 'पार्टीकल्ट' ही मुख्य रूप से है, पर असाधारण नेता उसे 'पर्सनल कल्ट' में बदल लेते हैं।

खुश्चेव 'पार्टी कल्ट' के कट्टर पक्षपाती हैं, पर उनका भी 'पर्सनल कल्ट' कुछ न कुछ मात्रा में नहीं ही होगा, यह कहना कठिन है, क्योंकि क्या अल्बानिया में एवं क्या मालेनकोव ग्रुप की, निंदा एक को छोड़ कर सभी ने की और जिस एक ने, चीन ने नहीं की, वह इसलिए कि उसका भी अपना एक 'कल्ट' है। खैर, कोई भी 'कल्ट' हो, सत्ता की 'एकमेवता' वहाँ है एवं उसे कोई भी कम नहीं करना चाहता।

वैसे, व्यक्ति के हाथ में सत्ता का होना एवं पार्टी के हाथ में सत्ता का होना, इनमें पार्टी के हाथ में सत्ता का होना अधिक खतरनाक है, क्योंकि जो भी अच्छा बुरा काम होगा, 'सबकी ओर से होगा,' 'समूह के नाम' पर होगा और उस हालत में विद्रोह 'पार्टी' के विरोध में माना जायेगा, जो दबाने के लिए "समाज" का 'सैंक्शन' अपने आप गृहीत मान लिया जायेगा, तो पार्टी के हाथ में सत्ता का होना भी बेहतरीन तरीका तो नहीं माना जा सकता, तथापि ये सब बातें एक ही थैली के चट्टे-बट्टे के समान हैं। मुख्य बात यह है कि सत्ता में कहीं कमी की जाने की संभावना है या नहीं। सो यह तो जाहिर है कि उसकी संभावना सोची भी नहीं जा सकती, क्योंकि शुरुआत ही वहाँ से करनी पड़ती है, जैसे कि सर्वहारा की 'तानाशाही' आदि के द्वारा और वह फिर विभिन्न रूप लेकर बढ़ती ही जाती है।

सच बात तो यह है कि कम्युनिस्ट तंत्र द्वारा राज्यसत्ता के विलयन का स्वप्न सच होने की कल्पना ही व्यर्थ है, यह प्रकारांतर से खुश्चेव ने अनजाने ही कह दिया है!

उसी तरह पूँजीवादी तंत्र द्वारा भी यह संभव नहीं है और न ही उन्होंने वैसा दावा किया है। दोनों ही तंत्रों में सत्ता का विलक्षण केंद्रीकरण अनिवार्य है। सैनिक

> ## दो सर्वज्ञ !
>
> अखबार वाले इन दिनों कुछ का कुछ लिख डालते हैं। भगवान का स्थान उन्हें मिला है। सम्पादक हर प्रकार का और सब विषयों का ज्ञान रखता है और उन पर लिखता है! ऐसा विषय ही नहीं, जिस पर सम्पादक कुछ लिखता नहीं। सर्वज्ञ भगवान व सर्वज्ञ एडीटर–बीच में आप और हम सब "असर्वज्ञ", और ये दो सर्वज्ञ। लेकिन ईश्वर एक ही है और ये असंख्य हैं।
>
> [६-१०-६१, प्रार्थना प्रवचन] —विनोबा

शक्ति आज सर्वत्र सर्वेसर्वा बन गयी है, इसलिए सत्ता का केंद्रीकरण अनिवार्य है। सैन्यसत्ता एवं राज्यसत्ता ऐसे दो दानव जब इकट्ठे हो जाते हैं, तब राज्यसत्ता के विलयन की बात सोचना ही मूर्खता मानी जायेगी। सत्ता का स्वभाव है, केंद्रीकरण और राज्यसत्ता के विलयन के लिए तो सत्ता का विभाजन पहली शर्त है। सत्ता के विभाजन का अर्थ है, सबमें समान सत्ता का होना, अर्थात् सत्ता का कहीं एक ही जगह न रहना। लोकतंत्र सही अर्थों में सत्ता-विभाजन ही चाहता है। वहाँ लोक है, अर्थात् सब लोग हैं, जो सत्ताधीश हैं अर्थात् किसी एक व्यक्ति या पक्ष या समुदाय के पास सत्ता पड़ी नहीं रहेगी। सम्यक् लोकतंत्र में सत्ता के केंद्रीकरण को कोई स्थान नहीं हो सकता। लोकतंत्र प्रतिनिधियों में, सत्ता निहित कर सकता है, पर जब प्रतिनिधि भी सिकुड़ते सिकुड़ते पार्टी में, मूल में, नेता में लीन हो जाते हैं, तब प्रतिनिधियों में सत्ता बाँटने के भी कोई माने नहीं होते। इसका अर्थ है लोकतंत्र में संपूर्ण शक्ति लोगों के पास रहे। लोगों के पास शक्ति तभी रह सकती है, जब वह हिंसाश्रित न हो; क्योंकि हिंसाशक्ति कुछ की हो सकती है, सबकी नहीं। तब जनता की शक्ति अहिंसक शक्ति ही हो सकती है। परंतु अहिंसक शक्ति की उपासना सहज बात नहीं है एवं उसके लिए कुछ सीढ़ियाँ आवश्यक हैं। अतः नैतिक शक्ति की सीढ़ी से ही अहिंसक शक्ति तक पहुँचना संभव हो सकता है। इस प्रकार आज लोकतंत्र सैनिक शक्ति से नहीं, नैतिक शक्ति से ही जीवित रह सकता है।

राज्यसंस्था से मुक्ति की बात वैसे आज कोई सोच भी नहीं सकता, क्योंकि राज्यसंस्था की आधारभूमि 'संरक्षण' है, जिसका पर्याय अभी तक सामने आया नहीं है, परंतु आज राज्यसंस्था ने जो सर्वंकष रूप धारण कर लिया है, उससे चिंतकों को जरूर कुछ घबराहट होने लगी है, क्योंकि क्या 'वेल्फेअर' स्टेट और क्या 'सोशलिस्टिक' स्टेट, दोनों ही राज्यसत्ता को ऐसा व्यापक बनाते जा रहे हैं कि उनका लोकतांत्रिक रूप ही केवल उन्हें कम्युनिस्ट-स्टेट् से अलग करता है। ऐसी स्थिति में राज्यसंस्था से मुक्त यदि नहीं, तो काफी हद तक अलग रख सकने योग्य प्रणालियों की तरफ ध्यान जाना स्वाभाविक है। ऐसी प्रणालियों में दो ही प्रणालियाँ ऐसी हैं, जिनसे आशा की जा सकती है कि वे अपने लक्ष्य तक पहुँचने के प्रयत्न में जनता को राज्यसत्ता के जाल से कुछ मुक्त कर सकेंगी। पर इन दो में से कम्युनिस्ट प्रणाली ने सिद्ध किया ही था, अब जाहिर भी कर दिया है कि यह उनके बूते की बात नहीं है। अब दूसरी विचार प्रणाली, सर्वोदय को यह प्रकट करना है कि उसे इस काम में कितनी हद तक सफलता मिलती है। उसके मुकाबले राजसत्ताएँ, राजसत्ताओं के पीछे की सैन्यशक्तियाँ एवं जनता की राज्य सापेक्षता खड़ी हैं एवं इस चक्रव्यूह को भेद कर उसे वहाँ तक पहुँचना है। स्पष्ट है कि यह चक्रव्यूह भेदन सरल कार्य नहीं है। उसके पास सत्ता-साधन भी नहीं है। यह एक दृष्टि से ठीक भी है। अब जो कुछ उसके पास है, उसकी ही मदद से आगे बढ़ना है और वह है 'जनता की नैतिक शक्ति का आवाहन।' यह नैतिक शक्ति कम्युनिस्ट तंत्र में तो पनप ही नहीं सकती, यह अधिक स्पष्ट करके बताने की आवश्यकता नहीं। अन्य तंत्रों में वह पनपती-सी नजर आती है यह सही है, पर अंत में उसे उन तंत्रों की 'संरक्षण' शक्ति के अधीन हो जाना पड़ता है, जो या तो सत्तायुक्त या सैनिकशक्ति युक्त ही होती है। अतः वहाँ भी नैतिक शक्ति का संवर्धन संभव नहीं।

तब इस नैतिक शक्ति के संवर्धन की भी कोई प्रक्रिया है या नहीं! गांधी एक ऐसा द्रष्टा ऋषि इसी जमाने में हुआ है, जिसने बताया कि पूँजीवादी एवं साम्यवादी तंत्रों से भिन्न भी एक तंत्र है, जिसमें नैतिक शक्ति पनप सकती है। उसे उसने सर्वोदय का नाम दिया, जिसके अंतर्गत राज्यसत्ता एवं अर्थसत्ता का संपूर्ण विकेंद्रीकरण, अन्याय के साथ अहिंसक असहयोग एवं सत्याग्रह का अनुष्ठान मुख्य रूप से आते हैं। फिर इनके साधन-स्वरूप उन्होंने रचनात्मक कार्यक्रम को पेश किया, जो एक ओर आर्थिक विकेंद्रीकरण का नमूना प्रस्तुत करने के साथ-साथ उस नैतिक शक्ति की उपासना का भी मार्ग प्रशस्त कर देते हैं। इसी राह चल कर विनोबाजी ने कई आविष्कार उसमें जोड़ दिये, यथा सत्याग्रह का सूक्ष्मतम स्वरूप, लोकनीति आदि। और यही लोकनीति राज्यसत्ता के विलयन की दिशा में अग्रसर कर सकती है।

"हिंसाशक्ति के विरुद्ध और दंड-शक्ति से भिन्न" जिस अहिंसक शक्ति की उपासना उन्होंने बतायी, उसका मार्ग लोकनीति में ही है, क्योंकि लोकनीति सत्ताधिकार की जड़ें खोखली करती है, जो राज्यसत्ता का आधार है। लोकनीति नैतिक शक्ति का भी मार्ग प्रशस्त करती है, जो अंततः 'लोक-सत्ता' का आधार है। सम्भवतः यह विवेचन यहाँ अनावश्यक होगा कि लोकनीति का विस्तृत स्वरूप कैसा है।

भारत की भावनात्मक एकता : १

• दादा धर्माधिकारी

[दिनांक २९, ३० और ३१ अगस्त '६१ को इन्दौर के गांधी-अध्ययन केन्द्र तथा महाराष्ट्र साहित्य सभा के संयुक्त आयोजन में एक 'ज्ञान-सत्र' चला, जिसमें श्री दादा धर्माधिकारी ने प्रथम दिन 'भारत के विघटनकारी तत्त्व' इस विषय पर अपने विचार प्रकट किये। 'भारत की भावनात्मक एकता' शीर्षक से दादा के उस दिन के व्याख्यान का यहाँ पूर्वार्ध दिया जा रहा है। आशा है, दादा ने अपनी मनोरंजक शैली में देश की भावनात्मक एकता का प्रतिपादन करते हुए जिन विघटनकारी तत्त्वों की ओर इंगित किया है, उस दिशा में हम सब जागरूक रहेंगे। —सं०]

आज का हमारा विषय है भारत के विघटनकारी तत्त्व। एक बात प्रास्ताविक रूप से कह दूं। मेरे विचार इस विषय में साथियों से और ज्येष्ठ मित्रों से कुछ भिन्न रहे हैं। गांधी और विनोबा के साथ भी मेरे विचारों का इस विषय में बहुत ज्यादा मेल नहीं है। दूसरे विचारकों से भी बहुत कुछ मतभेद ही रहा है। कभी-कभी ऐसा होता है कि विचार की स्वतंत्रता के कारण मनुष्य को जहाँ कल्पना नहीं होती, वहाँ उसे सहायक और साथी मिलते हैं। इस विषय में जिनका समर्थन मैंने पाया, अप्रत्यक्ष रूप से उन्होंने यही कहा कि तेरे विचार हमारे विचार हैं। उनमें दो व्यक्ति प्रमुख हैं : एक आचार्य कृपलानी और दूसरे गोलवलकर गुरुजी।

मैंने बहुत आरम्भ से यह माना है कि भारतवर्ष की यह विशेषता रही है कि यह भूखंड यहाँ के निवासियों के लिये एक और पवित्र रहा है। सारा भारतवर्ष एक है, सारा भारतवर्ष पवित्र है, यह भावना देश में अति प्राचीन रही है। कितनी प्राचीन रही है, इसका मुझे पता नहीं, क्योंकि मेरी दृष्टि उस अर्थ में ऐतिहासिक कभी नहीं रही है। जिस अर्थ में साधारण लोग देखते और समझते हैं उस अर्थ में इतिहास में बहुत श्रद्धा भी मेरी नहीं है।

परन्तु जब से हम ऐतिहासिक काल मानते हैं तब से और उससे पहले भी इस देश में दो भावनाएँ यहाँ के निवासियों में रही हैं—सारा भारत एक है और सारा भारत पवित्र है। यह आधुनिक राष्ट्रीयता की भावना नहीं है, जिसे हम राष्ट्रीयता की भावना कहते हैं। वह भावना हमारे देश में प्राचीन काल से कभी नहीं थी। इसे हमें स्वीकार कर कर लेना चाहिये। यह भावना अंग्रेजी राज्यकाल से उदित होने लगी और तब से इसका कुछ विकास हुआ। लेकिन जिसे हम राष्ट्रीयता की, राष्ट्र-धर्म की भावना कहते हैं, वह भावना हमारे देश में नहीं थी। फिर भी एक भावना थी कि सारा भारतवर्ष एक है, सारा भारत पवित्र है।

"उत्तरन्तु यत् समुद्रात् हिमाद्रेश्चैव दक्षिणम् वर्षम् भारतम् नाम भारती यत्र सन्तति।" विष्णु-पुराण में यह श्लोक आता है। इससे पहले जो उल्लेख है, उनमें सारे भारतवर्ष का या सारे भारतखंड का उल्लेख इतना स्पष्ट नहीं है। ब्रह्मावर्त का है, ब्रह्मर्षि देश का है, मध्य देश का है, आर्यावर्त का वर्णन आता है। आर्यावर्त, दक्षिण पथ, का भी उल्लेख आता है। परन्तु जिसे हम लोगों की एकात्मकता कहते हैं, जिसे आजकल हम राष्ट्रीयता मानते हैं, वह हमारे देश में नहीं थी।

राष्ट्रीयता में विकास

आज की राष्ट्रीयता में भी विकास हुआ है। बीच में मध्ययुग के बाद योरोप में राष्ट्रीयता का जमाना आया। राष्ट्रीयता का राष्ट्रवादियों ने हमारे देश में निषेध किया। जिनका दर्शन व्यापक था उन लोगों में रवि ठाकुर ने, एक मर्यादा में श्री अरविन्द ने और बाद में गांधी और उनके साथियों ने भी निषेध किया। मैं समाजवादियों को छोड़ रहा हूँ, क्योंकि उनका अपना दर्शन उन्नीसवीं सदी या १९३० तक राष्ट्रीय दर्शन था ही नहीं। स्टालिन के जमाने में जब 'सोशलिज्म इन वन कंट्री'—एक देश में समाजवाद—का नारा बुलन्द हुआ, तब उसमें राष्ट्रीयता के कुछ भाव आने लगे। तब तक वह एक अन्तर्राष्ट्रीय दर्शन था। इसलिए समाजवाद को मैं अभी शामिल ही नहीं कर रहा हूँ। हमारे देश में यह जो प्राचीन भावना थी, इस प्राचीन भावना का आधार क्या था, यह बहुत स्पष्ट रूप से नहीं बतलाया जा सकता। जिन लोगों ने, समाज-वैज्ञानिकों ने, इतिहासकारों ने इस विषय में लिखा; वे किसी एक निश्चित लक्षण की तरह अंगुली निर्देश नहीं कर सके। वे हमको यह नहीं बतला सके कि यह वह लक्षण है, जिसके कारण उस वक्त का सारा भारतवर्ष एक था। फिर भी कुछ स्थूल लक्षण हम देख सकते हैं।

एकता के लक्षण

धर्म की भाषा एक थी। संस्कृत भाषा पुरोहितों की भाषा थी, पंडितों की भाषा थी। मैंने जितना अब तक पढ़ा है, मुझे इस बात का पता नहीं लगा है कि संस्कृत भी कभी लोक-भाषा थी। रामायण में, महाभारत में, भागवत में स्त्रियाँ संस्कृत बोलती हैं, लेकिन बाद के काल में नाटकों में स्त्रियाँ अक्सर संस्कृत नहीं बोलतीं। कालिदास की शकुन्तला, भवभूति की सीता आर्यपुत्र भी नहीं कहती या कह सकती है, अज्जउत्त कहती हैं। और जो नौकर-चाकर थे उनमें से बहुत कम ऐसे थे, जो संस्कृत भाषा बोलते हों। तो संस्कृत भाषा भारतव्यापी भाषा थी, लेकिन धर्म की भाषा, पंडितों की भाषा, पुरोहितों की भाषा थी। साहित्य भी पौराणिक, धार्मिक था। उसी भाषा का अनुवाद यहाँ की भिन्न-भिन्न भाषाओं में हुआ करता था। इसलिए कुछ अखिल भारतीय संकेत उसी जमाने से इस देश में स्थापित हो गये।

हिमालय सबका पर्वत हो गया। हिमालय भारतवर्ष में किसी एक प्रदेश का पर्वत नहीं था। गंगा किसी एक प्रदेश की नदी नहीं थी। हिमालय अगर देवतात्मा था, तो सारे भारत का था। गंगा अगर स्वर्गारोहण वैजयन्ती थी तो वह सारे भारतवर्ष की थी।

आज यह चीज हमको अटपटी लग सकती है, जब कि गोदावरी और कृष्णा नदी के जल के लिए झगड़ा हो रहा है! एक भाषा बोलने वाले कहते हैं कि यह पानी मेरा है, इसमें से मराठी भाषा निकलती है। दूसरी भाषा वाले कहते हैं कि यह पानी हमारा है, इसमें से तेलुगु अंगारे ही निकल सकते हैं। इस पानी की वैसी ही कुछ तासीर है। हमारा और आप सबका भाग्य है कि अब तक गंगा-जल और हिमालय के लिए झगड़ा नहीं हुआ है!

लेकिन लक्षण कुछ ऐसे मालूम होते हैं कि वे दिन बहुत दूर नहीं हैं, जब "हिमाचल" के लोग कहने लगेंगे कि "हिमालय" पर्वत हमारा है, इसको रहने दो, और तो तुमने सब ले ही लिया है; कम से कम "हिमालय" हमारे लिए रहने दो! एक कवि ने कहा था कि हिमालय तो सबके लिए तथा सबका है ही, कम-से-कम यह सह्याद्रि तो हमारे लिए रहने दो। 'गंगा' तो सबकी है ही, कम-से कम 'कृष्णा', 'गोदावरी' और 'भीमा' तो हमारे लिए रहने दो।

नागपुर में एक सज्जन मेरे पास आये और कहने लगे कि झाँसी की रानी का उत्सव है कल, आपको भाषण देने के लिए आना चाहिए। मैंने कहा अवश्य आऊँगा, उत्सव होने वाला है शहर में। उन्होंने कहा, वह तो अलग एक सार्वजनिक उत्सव होने वाला है। उसमें तो आप जाने वाले होंगे, लेकिन हमारे उत्सव में आइये। उन्होंने कहा, 'कन्हाड़े ब्राह्मण संघ' का यह उत्सव है। तो मैंने कहा कि यह झाँसी की रानी 'कन्हाड़े ब्राह्मण' कब से हो गयी! मैंने कुछ ऐसा सुना था कि वह अखिल भारत की वीरांगना हैं। क्या अब वह कन्हाड़े ब्राह्मणों के संघ में दाखिल हो गयी? अब तक तो मैंने यह नहीं समझा था।

लेकिन बाद में मुझे पता चला कि शिवाजी मराठा होने वाला है! गांधी गुजराती होने वाला है! रवि ठाकुर बंगाली होने वाला है! राजगोपालाचार्य तमिल हो जाने वाला है! और इस देश में अखिल भारतीय रहने वाला कोई नहीं है! इसलिए मैंने लोगों से निवेदन किया था कि शिवाजी की मूर्ति बम्बई में 'गेट वे आफ इण्डिया' पर स्थापित की गयी, इसका मुझे विशेष आनन्द नहीं है। वह बड़ोदा या अहमदाबाद में स्थापित की जाती तो मैं हर्षित होता। और महाराष्ट्र की किसी साहित्य-सभा में नरसी मेहता का चित्र अगर मैं देख सकता, तो शायद आशा होती कि भाषाओं का विकास होने वाला है। अभी तो नहीं हो रहा है, लेकिन आगे होने वाला है। इसकी मुझे पूरी आशा होती है।

मतलब यह कि यहाँ राष्ट्रीयता की भावना तो न थी, एकता की भावना थी। इस एकता की भावना का आधार क्या था? एक समान भाषा, एक समान धर्म और उस धर्म के कुछ संकेत—कुछ पर्वत, कुछ नदियाँ। जब यह ब्राह्मण अपने नित्य कर्म के लिए संकल्प पढ़ने बैठता था तो किन नदियों का आह्वान करता था? "गंगे च यमुने चैव गोदावरि सरस्वति। नर्मदे सिन्धु कावेरी जलेऽस्मिन् सन्निधिम् कुरु।"

हमको जो पहले-पहल यह श्लोक पढ़ाया गया, तो मैंने अपने चाचा से पूछा कि जिन्होंने हमें यह सिखाया वह आदमी भूगोल जानता था कि नहीं जानता था तो वह मुझसे कहने लगे कि यह भूगोल नहीं जानता था, तुझे यह कैसे पता चला तो मैंने कहा कि इतने नाम भी गिनाये तो कैसे गिनाये? गंगे च यमुने च। कहाँ गंगा, कहाँ जमुना, गोदावरी व सरस्वती फिर दौड़ा नर्मदे सिन्धु कावेरी—कोई सिलसिला है? वह भूगोल नहीं जानता था। वह भूगोल अगर जानता होता तो ऐसा श्लोक नहीं बना सकता था! तो उन्होंने मुझे उत्तर दिया कि उसका भारतवर्ष केवल भौगोलिक नहीं था। उसका भारत केवल मिट्टी के ढेलों का बना हुआ नहीं था, इसलिए उसने जैसे नाम याद आये ले लिये। चाहे जहाँ जो नदियाँ हों भारतवर्ष में हों, इतना उसके लिए आवश्यक था।

परंतु हमारा और आपका आज का भारतवर्ष नक्शे पर है, किसी के भी हृदय पर नहीं है। हमारा भारतवर्ष हम आजकल नक्शे में देखते हैं।

एक दफा मुझे केरल से पंजाब जाना पड़ा। वहाँ हमारे मित्र थे। उन्होंने

मेरा परिचय कराया, 'यह सारे भारतवर्ष में घूमता है और अभी केरल से, नीचे से आ रहा है।' मैं हैरान हुआ! मेरी समझ में नहीं आता था कि 'नीचे से' कहाँ से आ रहा हूँ! कोई पाताल से तो नहीं आ रहा हूँ! तो उसने कहा कि नहीं आप दक्षिण से आ रहे हैं। मैंने कहा, दक्षिण नीचे कहाँ है! तो उन्होंने कहा कि 'नक्शे' में है। दक्षिण नीचे है और उत्तर ऊपर है, यह नक्शा सब हमारे मन में समाया हुआ है। इसलिए भारतीयता हृदय तक नहीं पहुँची। वह भारतीयता हमारे खून में अभी तक नहीं है।

उन लोगों के खून में क्यों थी? हमारे ये सारे तीर्थक्षेत्र चार कोनों पर थे—बद्रीकेदार, द्वारिकापुरी, कामाख्या और इधर रामेश्वर। हमको गणित में सिखाया गया था कि सिरे की दो संख्याओं पर आवर्त दशमलव हो तो बीच की संख्याओं पर आ जाता है, अपने आप। उन्होंने इस अखाड़ा का चिह्न चार कोनों पर रख दिया। तो सारे देश में भावात्मक दबाव आ गया। अंकित हो गया न सारा राष्ट्र, राष्ट्रीय भावना से। मैं राष्ट्र और राष्ट्रीय भावना इन शब्दों का प्राचीन अर्थ में प्रयोग कर रहा हूँ, आज के अर्थ में नहीं। उस एकता की भावना के आधार आज नहीं हैं। वे रहना भी नहीं चाहिए, आज के लिए वे उपयुक्त नहीं हैं। परन्तु एक जमाने में ये आधार थे और इन आधारों ने सारे भारतवर्ष को एक सूत्र में पिरोया था। इसलिए जो यह कहते हैं कि राष्ट्रीयता से भारत का विकास करना है, उन लोगों से मेरा निवेदन है कि

> भारतीय राष्ट्र एक सिद्ध राष्ट्र है, जिसकी राष्ट्रीयता जिसकी एकता आर्थिक नहीं थी, राजनैतिक नहीं थी।

सारे भारतवर्ष, पर किसी एक चक्रवर्ती राजा का राज्य रहा हो, ऐसे युग बहुत थोड़े आये। कभी किसी ने अश्वमेध यज्ञ और राजसूय यज्ञ किया हो, ऐसे बहुत थोड़े राजा हुए। चक्रवर्ती राजा इस देश में थोड़े हुए और आज जितना भारतवर्ष विशाल है उनके कुछ हिस्से, ज्यादा हिस्से उत्तर के राज्य में थे, लेकिन सारा पूर्व और सारा दक्षिण जितना आज हम भारतवर्ष मानते हैं, उतना उनके राज्य में नहीं था। इसलिए यह कोई राजनैतिक एकता की भावना नहीं थी। चक्रवर्ती शब्द है—सार्वभौमवाचक। लेकिन सार्वभौमिकत्व की भावना भी देश की एकता की भावना के साथ मिली हुई नहीं थी।

आर्थिक समानता तो बहुत कम थी। अकाल हो जाय इस देश के किसी भाग या हिस्से में, तो दूसरे भाग और हिस्से को उसका स्पर्श नहीं होता था। एक हिस्से का अकाल उसी हिस्से का अकाल होता था। किसी एक हिस्से को बाहर से कोई आक्रमणकारी आकर जीत ले तो उतना ही हिस्सा जाता था। सारे भारतवर्ष पर उसका कोई परिणाम नहीं होता था। याने लोगों में कोई एकात्मकता की भावना नहीं थी। तीर्थक्षेत्रों की एकात्मकता की भावना लोगों में थी।

सारा का सारा भारतवर्ष तीर्थ-स्वरूप था तीर्थ का रूप था, लेकिन भारतवर्ष के लोगों के विषय में एक दूसरे के सुख-दुःख की कुछ संवेदना होती हो, यह बात नहीं थी। इसीलिए श्रीमद् शंकराचार्य का भारत का धार्मिक प्रवास उनकी यात्रा हुई। उन्होंने दिग्विजय किया। काशी, कांची, अवन्तिका, इन पुरियों में पंडितों में कुछ एकता की भावना का विकास हुआ। परन्तु काशी, कांची, अवन्तिका में रहने वाले लोगों के सुख-दुःख के साथ रहने वाले लोगों का कोई विशेष संबंध न रहा। इसलिए भारतवर्ष को तो मैं एक तरह से सिद्ध राष्ट्र मानता हूँ। मैंने इतिहास इसलिए बताया कि हम जब इसकी तुलना दूसरे राष्ट्रों के साथ करते हैं तो तुलना के लिए विशेष अवसर नहीं।

इस देश की एक विशेषता की ओर आप लोगों का ध्यान दिलाने के लिए मैंने इस विशेषता का उल्लेख किया है कि इस देश में एकात्मकता की भावना थी। उसका आधार उस वक्त समान धार्मिक संकेत, समान पुरोहित वर्ग, समान धार्मिक साहित्य और एक समान धार्मिक भाषा थी। इसीके अनुवाद सारे साहित्य में होते थे। इसलिए वह सारे संकेत सार्वत्रिक हो गये। आज भी हमारे देशों में जो गाँवों के नाम हैं उनमें पुर, नगर ऐसे प्रत्ययों को आप निकाल दें तो बहुत से नाम समान हैं। काशी का कहीं 'काची' हो जायेगा, विष्णु का कहीं 'विष्टु' हो जायेगा, कहीं 'विठु' हो जायेगा, कहीं 'विठ्ठल' हो जायेगा, "रुक्मिणी" का कहीं 'रुक्या' हो जायेगा। कहीं "लक्ष्मी" का 'लक्खी' हो जायेगा, 'लखी' हो जायेगा, कहीं 'लुक्की' हो जायेगा। लेकिन संकेत समान होंगे। 'गोदावरी' नदी के किनारे रहता है, वह भी उसे 'गंगा' ही कहता है, जो 'भीमा' के किनारे रहता है, नहाने जाता है, तो 'गंगा' ही कहता है। ये कुछ समान संकेत रहे। इसकी तरफ ध्यान दिलाने की आवश्यकता इसलिए है कि जिन्हें आप राष्ट्र कहते हैं, उनमें ऐसे समान संकेत कभी नहीं रहे। यह इस देश की एक विशेषता है।

पाठकों की ओर से

अणु-अस्त्र और अहिंसा

पिछले दिनों अपनी मासिक पत्रकार-परिषद् में प्रधानमंत्री पं० नेहरू ने अन्य बातों के साथ साथ यह भी कहा कि हम अणुबम बनाने में सक्षम हैं। वास्तव में हम सभी शांतिवादियों के लिए यह चिन्ता का विषय है। एक तरफ हम सम्पूर्ण निरस्त्रीकरण के लिये दुनिया के बड़े-बड़े राष्ट्रों से अपील कर शांति-स्थापना का प्रयत्न करें और दूसरी ओर सेना सामग्री का निरन्तर निर्माण करते जायें, यह विडम्बना की बात है।

पिछले दिनों 'एयर टू एयर मिसाइल'-तेज गति से चलने वाले विमान एवं ऐसी ही अन्य सामग्री बना कर उसका सफल प्रयोग भी हुआ। इसी प्रकार रूस, अमेरिका, ब्रिटेन, फ्रान्स से धड़ाधड़ जेट विमानों की एवं अन्य अस्त्र शस्त्रों की खरीदी बड़े जोरों से की जा रही है, जो कि हमारी शांति नीति से मेल नहीं खाती।

एक तरफ इंग्लैंड जैसे शक्तिसंपन्न देश में लार्ड बर्ट्रेंड रसेल जैसे विचारक को गांधीजी की राह पर चल कर अणु अस्त्रों के विरुद्ध प्रदर्शन कर सभा करने के अपराध में ७ दिन की सजा भुगतनी पड़ी। एक हजार तीन सौ चौदह लोगों को अभी हाल ही में लन्दन में हुए बड़े प्रदर्शन में गिरफ्तार होना पड़ा, और दूसरी ओर हमारे यहाँ अस्त्र-शस्त्रों के विरुद्ध एक आवाज भी न उठे, यह हास्यास्पद है।

यदि हम ऐसा नहीं करते तो हमें मानना होगा कि हमारी अहिंसा दिखावटी और विवशता की है। सशक्त होने पर हम भी तथाकथित सत्य, अहिंसा और शांति की नीति का परित्याग कर, शक्ति और दंभ का प्रदर्शन करते हुए हर मसले पर रूस और अमेरिका जैसी धमकियाँ देकर समस्याएँ हल करने का स्वप्न देखने लगेंगे। संभव यह भी हो सकता है कि हमारे देश में सैनिक अधिनायकत्व आ जाय, जिससे प्रजातंत्र का रहा-सहा अस्तित्व भी खतरे में पड़े और पंचायती राज ग्रामस्वराज्य आदि की कल्पनाताएँ भी समाप्त हो जायें! अतः व्यापक शस्त्रीकरण के विरुद्ध आवाज उठाना हम सबका कर्तव्य है।

यदि हमने यह नहीं किया तो जेल जाने के पूर्व जैसे लार्ड रसेल ने कैनेडी, ख्रुश्चेव, डिगाल, मेकमिलन को युद्ध की विभीषिका में डाल कर जनता का सर्वनाश करने वाला कहा था, वैसे ही शब्द भविष्य में हमारे परम प्रिय प्रधान मंत्री के लिए भी सुनने को मिल सकते हैं।

जो राज्य लोककल्याणकारी होने का दावा करे, उसका फौजी खर्च इस तरह हनुमान की पूँछ की तरह बढ़ता रहे, यह आर्थिक समानता, सुख समृद्धि के लिये बहुत बड़ा खतरा है। सर्व सेवा संघ इस संबंध में कुछ प्रयत्न करे तो अधिक अच्छा होगा।

इंदौर, —जगन्नाथ सेठिया

ट्रेनों में नीलामी रोकने का सफल प्रयोग

पिछले अंकों में हमने दो बार 'ट्रेन-डकैती' के बारे में पाठकों के पत्र दिये थे। अब ट्रेन-डकैती या नीलामी रोकने का एक सफल प्रयोग दे रहे हैं। —सं०

आजकल कुछ लोगों ने चलती ट्रेनों में नीलाम करने का पेशा अपना लिया है। ये लोग सीधी-सादी जनता को ललचा कर अल्प मूल्य की अनुपयोगी वस्तु देकर अधिक पैसे बलात् ऐंठ लेते हैं। बहुधा इनसे और यात्रियों से लेन देन में झगड़ा तक हो जाता है। इनसे पुलिस मिली रहती है, अतः कोई सुनवाई भी नहीं होती।

समाचार पत्रों में भी ऐसे समाचार प्रायः छपा करते हैं। जब रक्षक ही भक्षक हो गये, तब सरकार से क्या अपेक्षा की जा सकती है! प्रत्येक नागरिक इस समस्या से तंग आ गया है। मैं स्वयं कोई ऐसा हल ढूँढ़ रहा था, जिससे इसका समाधान हो सके। एक दिन अचानक इसका हल निकल आया।

एक बार मैं पटने से मोकामा जा रहा था। गाड़ी खुलते ही एक नीलाम करने वाला मेरे डिब्बे में आया। ज्यों ही उसने नीलाम की बात शुरू की, मैं बीच में ही बोल उठा, "यहाँ नीलाम नहीं होगा।"

"क्यों नहीं होगा?"—उसने पूछा।

"क्योंकि हम नहीं चाहते हैं। दूसरे, आपने नीलाम करने की अनुमति सरकार से ली है क्या?"

"हाँ, ली है।"

"दिखा सकते हैं?"

"तुम कौन हो देखने वाले?"

"मेरे पास टिकट है। मैं 'बोनाफाइड' पैसेंजर हूँ। आप बिना टिकट सफर कर रहे हैं। मैं नहीं तो और कौन देख सकता है?"—मैंने पूछा।

उसने खीझ कर कहा, "मैं नीलाम करूँगा, तुम पुलिस से कहना।"

"पुलिस जनता की सेवक है। यहाँ हम अपनी सेवा स्वयं करना चाहते हैं। हम पुलिस से क्यों कहें?"

इस पर कुछ लोगों ने कहा, "आप ठीक कह रहे हैं। यहाँ नीलाम नहीं होगा।" वह बहुत झुंझलाया।

गाड़ी चल रही थी। बीच में उसने फिर एक बार नीलाम करने का असफल प्रयास किया। अगले स्टेशन पर मुझे देखते हुए उतर गया। तब से मैंने इसे कई बार आजमाया है। हर बार सफल हुआ हूँ।

मलिया, —शैलेन्द्र कुमार

"जो घर जाले आपना…"

• वियोगी हरि

कबीरदास की एक साखी में "जो घर जाले आपना" यह आया है। पूरी साखी है :

"कबीरा खड़ा बजार में, लिये लुकाठी हाथ। जो घर जाले आपना, चले हमारे साथ॥"

कहते हैं, मैं बाजार में आकर खड़ा हूँ, चौड़े में, जन-समूह के बीच में। हाथ में मेरे चूल्हे की यह अधजली लकड़ी है। इस लकड़ी से जो भी अपना घर-बार जला कर खाक कर दे, वही मेरे साथ चल सकता है! कहाँ, किधर? जहाँ कि मेरे प्यारे गाईं का ठौर है, उसी जगह, उसी लक्ष्य-स्थान पर।

खतरनाक साखी है यह। अदालों को पकड़ने वाला कोई सचमुच के घर में आग लगा सकता है और ऊँची आवाज से पुकारने वाले कबीर पर गालियों की बौछार पड़ सकती है। समाधान दूर खड़े खड़े जलते हुए घर को देख-देख कर जहाँ खुश होंगे, वहाँ घर को फूँक देने वाले की नादानी पर घर-कुटुंब के लोग खिझेंगे कि किस पागल की पुकार पर स्वाहा-स्वाह कर दिया। जो अपने आपको सयाना मानते हैं, वे ऐसी 'घरफूँक पुकार' पर कहाँ ध्यान देने वाले!

मगर कबीर ने जो कहा वह बिल्कुल सही है, यह ध्यान देने की चीज है। शर्त यह है कि उसके अन्दर का सही आशय भर समझ लिया जाय।

> घर से मतलब है, यहाँ दुनिया की उन चीजों पर की आसक्ति से, यानी लगावट से, जो जीवन के लक्ष्य-स्थान तक पहुँचने नहीं देती, हमेशा झकझोरती रहती है दुविधा में और डिगा देती है सच्चे रास्ते पर से। जिस मीठी-मीठी लगावट के खिंचाव से चित्त हमेशा डांवाडोल रहता है, और दिशा नहीं सूझती कि अपने ही रचे कोहरे को चीर कर असल में किधर जाना है।

यही है वह घर, जिसे फूँक देने की सलाह कबीर ने दी है।

चौकबाजार में चारों तरफ से घेर लिया है भीड़ ने कबीर को, सुन कर कि यह आदमी एक ऐसी जगह जा रहा है, जहाँ सुख-ही-सुख है, शान्ति ही शान्ति है। बाजार में जमा भीड़ को भी उत्साह हुआ, चाह हुई उसके साथ-साथ वहाँ पर चलने की। पर मन उनका अन्दर-अन्दर उन चीजों की ओर भी, साथ ही-साथ, खींच रहा था, जिनकी मोहिनी, जतन करने पर भी, भुलाई नहीं जा सकती थी। मान-बड़प्पन की चाह, तरह-तरह के फलों की आशा हर किसी को अपनी ओर खींच रही थी और उधर अनजान जगह की कठिन मंजिलें तय करने से रोक रही थी। ऐसी दुविधा की डावाँडोल स्थिति में पड़े हुए थे सारे ही लोग। फैसला नहीं कर पा रहे थे वे ऐसी हालत में। जहाँ पर वे खड़े थे, वह जगह जानी पहचानी थी; देखने में सुन्दर और मनको लुभाने वाली थी। लेकिन जिस जगह का वर्णन सुन रखा था, जिसकी तसवीर कबीर ने खींची थी, वह और भी ज्यादा सुन्दर मालूम दे रही थी। वे चाहते थे कि जो चीज आँखों के सामने है उससे नाता न तोड़ा जाय, और जिस चीज के बारे में सुना है, उसे भी हासिल कर लिया जाय। अन्दर-अन्दर ऐसे अजीब हिंडोले पर वे सबरे सब झूल रहे थे।

कबीर साहब उनके मन की भाँप गये। ताड़ गये कि इस भीड़ को, जो उनके चारों ओर जमा हो गयी है किसी लोभ से, आखिरी फैसला कर लेना चाहिए। फैसला यही कि

> जीवन के सच्चे और ऊँचे लक्ष्य को अगर पाना है, तो मोह और लोभ में डालने वाली आसक्ति में आग लगा देनी चाहिए। उस घर को, जो असल में उनका अपना नहीं है, फूंक कर वे उस घर में जा बसें, जो सचमुच उनका अपना है, पर जिसे वे भूल बैठे हैं और जो घर उनको बार-बार प्रेम के संकेतों से बुला रहा है।

जो ऊपर की साखी में कहा गया है वह न केवल व्यक्ति पर, बल्कि पूरे समाज पर और इसी प्रकार राज्यों पर और लोक-संस्थाओं पर भी लागू होता है। इस साखी को यों ही मजाक में न उड़ा दिया जाय कि इसमें जो घर फूँकने की सलाह दी गई है वह निरी साधुकड़ी सलाह है। लेकिन ऐसी सलाह देने वाला यह साधु घर-गिरस्ती वाला था, अन्त तक जिसने अपना काम-धंधा नहीं छोड़ा था। पर एक तरकीब से उसने काम लिया। घर को और काम-धंधों को अपने राम के गहरे रंग में रंग डाला था उसने। निराली तरकीब से घर में आग लगा दी थी और आग की लपटों में से घर को बचा भी लिया था।

नई-नई योजना बनाने वाले आयोजक, तरह-तरह के कानूनों की बुनियाद पर राज्यों को खड़ा करने वाले शासक और विविध रचनात्मक संस्थाओं के द्वारा जन-सेवा का दावा करने वाले सार्वजनिक कार्यकर्ता इस अनमोल साखी से सीखना चाहें तो बहुत-कुछ सीख सकते हैं। ये सभी—आयोजक, शासक और सार्वजनिक कार्यकर्ता—दुविधा की चक्की के पाटों के बीच बुरी तरह पिस रहे हैं। जिन साधनों से वे काम ले रहे हैं, उनके सहारे उस लक्ष्य तक वे नहीं पहुँच पा रहे हैं, जहाँ पहुँचने की उन्होंने बार-बार घोषणा की है। लोक-शक्ति तक बगैर पहुँचे केवल देशी या विदेशी धनराशियों के द्वारा, सच्चे अर्थ में, किसी भी राष्ट्र को सुखी और समृद्ध नहीं बनाया जा सकता। सिर्फ कानूनों और सैन्य-शक्ति के आधार पर, जनता के साथ समरस हुए बिना, कोई भी शासन सफल नहीं हो सकता। इसी प्रकार अपने हाथ से की गई पुरानी और नई भूलों के लिए, हृदय से प्रायश्चित्त किये बगैर, सामाजिक शुद्धि के लक्ष्य तक पहुँचना संभव नहीं। करोड़ों रुपयों और राज्य से प्राप्त यथेष्ट सहयोग के होते हुए भी, समतामूलक रचनात्मक कार्य कभी साकार नहीं हो सकते।

विविध लोकहित आयोजनों, कानूनों और सैन्य-शक्तियों तथा रुपये पर आधार रखने वाले कार्यक्रमों के प्रति जिस आसक्ति ने इन सभी क्षेत्रों में अपना घर बना लिया है, उसको आग लगानी ही होगी, उसे फूँके बगैर निर्दिष्ट लक्ष्य को, मंजिले मकसूद को, लाख जतन करने पर भी, पहुँचा नहीं जा सकता।

जो सलाह आज से पाँच सौ साल पहले कबीर ने दी थी, वही सलाह कल गांधी ने दी और आज वही विनोबा दे रहा है। हम लोगों की भीड़ जरा कान खोल कर इस नेक सलाह को सुने, अच्छी लगे तो उसे अपना ले, उस पर चले और सलाह अगर ठीक न जँचे, तो यह अनुयायियों की भीड़ साफ-साफ कह दे कि वह तो उसी घर से चिपटी और लिपटी रहेगी, जिसे उसने अपना बना रखा है, उसमें आग लगा कर वह नादानी नहीं करेगी।

साहित्य-समीक्षा

भोजन और पाचन : लेखक-ज्योतिर्मयी ठाकुर, प्रकाशक : छात्र हितकारी पुस्तक-माला, दारागंज, प्रयाग। पृष्ठ-संख्या २०४। मूल्य : २ रुपया ५० नये पैसे।

लेखिका का आहार और स्वास्थ्य पर यह विवरणात्मक प्रयास सराहनीय है। भोजन की प्रतिक्रिया पर जो भी स्वानुभव से लिखा है, उसको समाविष्ट करने की कोशिश की है। पुस्तक के तेरह परिच्छेदों में भोजन की उपादेयता, पाचन क्रिया के विविध पहलू, कब्ज और उसके दूर करने के उपाय, खाद्य-पदार्थों के पौष्टिक तत्वों के अंश नष्ट न होने पायें आदि के व्यावहारिक ज्ञान पर बड़ी सूक्ष्म दृष्टि से विवेचन किया गया है। मांस-मछली और अण्डों की प्रशंसा में उदारता बरती गयी है। इससे मिलने वाले प्रोटीन, कार्बोहाइड्रेट, कैल्शियम और लोहा के लिये दुराग्रह नहीं होना चाहिये। लेखिका ने उक्त पुस्तक लिख कर दैनिक भूलों के प्रति सचेत किया है, खान-पान में खाद्योज (विटामिन) के महत्त्व को बताने वाली तालिका से साधारण पढ़े लिखे भी नैमित्तिक ज्ञान-वृद्धि कर सकेंगे। पुस्तक उपयोगी है। —कपिलदत्त अवस्थी

जीवन-दृष्टि : विनोबा, सम्पादक : ओमप्रकाश त्रिखा, पृष्ठ संख्या १६०, मूल्य १ रुपया २५ नये पैसे। प्रकाशक : ग्राम सेवा प्रकाशन, पट्टी कल्याणा, जिला करनाल, पंजाब।

विनोबाजी की पंजाब-यात्रा में श्री ओमप्रकाश त्रिखा उनके साथ थे। उन्होंने विनोबा के प्रवचनों और चर्चाओं का सार प्रस्तुत पुस्तक में दिया है। आम पाठकों और विशेषतः कार्यकर्ताओं के लिये पुस्तक काफी उपयोगी है। पुस्तक में ईश्वर और धर्म, प्रार्थना, आत्मज्ञान और विज्ञान, ग्रामधर्म, भूदान, ग्रामदान, श्रम शक्ति की उपासना, सहजीवन, साम्ययोग, नई तालीम, खादी-ग्रामोद्योग, शांति-सेना आदि विषयों पर विनोबा के क्रमबद्ध विचार हैं।

सर्व धर्म एकता : ओमप्रकाश त्रिखा, पृष्ठ-संख्या ६४, मूल्य ५० नये पैसे। प्रकाशक उपरोक्त।

सब धर्मों में बुनियादी एकता है। सभी धर्म जीवन के सनातन मूल्यों पर जोर देते हैं, किन्तु जब लोगों में अपने धर्म के प्रति विशेष आग्रह आ जाता है, तब साम्प्रदायिकता आ जाती है। भारत जैसे देश में जहाँ अनेक धर्म साथ-साथ विकसित हुए, कुछ धर्म बाहर से आकर भी यहाँ के बन गये, वैसी सूरत में सब धर्मों के बीच आपसी सद्भाव और सहनशीलता आवश्यक है। प्रस्तुत पुस्तक उसी महान प्रयास का एक कदम है। पुस्तक में संक्षेप में प्रमुख धर्मों की बुनियादी बातें दी गयी हैं। आशा है, इस पुस्तक का अच्छा स्वागत होगा।

"सम्पदा" माह सितम्बर, '६१ : 'तृतीय पंचवर्षीय योजना विशेषांक'

सम्पादक : श्री कृष्णचन्द्र विद्यालंकार, प्रका० अशोक प्रकाशन मन्दिर, शक्ति-नगर, दिल्ली। विशेषांक का मूल्य डेढ़ रु०।

"सम्पदा" मासिक पत्रिका ने अपनी परम्परा के अनुसार दस वर्षों में यह बारहवाँ विशेषांक तृतीय पंचवर्षीय योजना पर प्रकाशित किया है। योजना के बारे में तुलनात्मक दृष्टि से अधिकृत जानकारी पेश करने का इस अंक में प्रयत्न किया गया है। कुल मिला कर विशेषांक अच्छा बन पड़ा है। —मनुराम

असम में विनोबा के साथ कुछ दिन : ४

महेन्द्रकुमार शास्त्री

'पमादो मच्चुनो पदम्, अप्पमादो अमत पदम्'–धम्मपद। प्रमाद मृत्यु और अप्रमाद अमरता का चिह्न है। अपने जीवन के क्षण-क्षण का उपयोग कर प्राणी महान् बनता है, वह असाध्य कार्य को भी साध्य कर सकता है। बहुत ऊंचे पर्वत से छोटे-से प्रपात के रूप में निकली हुई नदी अपने दोनों तटों के बीच प्रतिक्षण, प्रतिपल, बह कर समुद्र में मिलती है, पृथ्वी सूर्य के चारों ओर निरन्तर परिक्रमा करती रहती है, छोटे-से परमाणु में सतत क्रिया होती रहती है। विश्व की प्रत्येक वस्तु स्पंदनशील है। इसी तरह जो व्यक्ति सहज भाव से अपने शरीर, वचन और मन से किसी-न-किसी सत्क्रिया में रत रहता है, वह संतों का सहज योग है। इस सहज योग की साधना में वह संसार से नहीं भागता, श्रम से जी नहीं चुराता और सेवा तो उसके जीवन का मुख्य अंग होती है।

प्रमाद स्वयं तमोगुण है। प्रमादी व्यक्ति आलस्य के कारण किसी अच्छे कार्य को जारी नहीं रख सकता। वह सदैव जीवितावस्था में मृतक जीवन बिताता रहता है, पर अप्रमाद जीवन के लिए कल्याणकारक है। अप्रमत्त व्यक्ति अपने छोटे-से जीवन में विश्व को सदैव प्रेरित करने वाले ऐसे कार्य करता है, जिससे उसका यशःशरीर और अक्षर देह सदैव विद्यमान रहता है, उसकी कभी मृत्यु नहीं होती। वह अपनी सत्कृतियों के रूप में मृत्युंजय होकर अमरता को प्राप्त करता है।

मेरा ही क्या, बाबा के साथ रहने वाले प्रत्येक व्यक्ति का यह अनुभव है कि प्रमाद तो उन्हें छू तक ही नहीं गया। वे सतत सत् चिंतन के द्वारा उन्होंने 'प्रज्ञा पारमिता' को प्राप्त किया है, वाणी का सदुपयोग कर प्रवचन और लेखन के रूप में सत्साहित्य की सृष्टि की है और कर्मरत रह कर वैज्ञानिक दृष्टि से कार्य कुशलता प्राप्त की है। इसीलिए उनकी बातचीत, विनोद, खान पान आदि सब क्रियाएँ लोगों के लिए दर्शनीय हैं।

मध्यप्रदेश के एक भाई बाबा के पास आये। वे अत्यन्त भावुक, परिश्रमी और सात्त्विक प्रकृति वाले थे। बाबा ने बातचीत करने के पहले उनका नाम लेकर कहा—नाम तो आपका शीतल प्रसाद है। ठीक है, पर आप अभी अविवाहित हैं या विवाहित?

उन्होंने कहा—विवाहित।

बाबा—तब तो आप शीतल प्रसाद नहीं रहे, शीतल प्रसाद मिट कर उष्ण प्रसाद हो गये! अच्छा ही है, पहले इंजिन अकेला था, उसके पीछे कोई 'ब्रेक' नहीं होने से पटरी पर सरपट दौड़ा चला जा रहा था। अब इंजिन के पीछे डिब्बा जुड़ गया है, वह उसे संचालित करता रहता है। इसलिए अब आप अकेले की राय नहीं चल सकती। सेवा-कार्य में सम्मिलित होना हो तो उसके लिए अपनी पत्नी की भी सहमति चाहिए।

इस उत्तर में बाबा की तीक्ष्ण प्रज्ञा, विनोद वृत्ति और उनकी प्रत्युत्पन्न मति का दर्शन होता है। कुछ दिन बाबा के निकट रहने के बाद उन्हीं भाई को बाबा ने फिर कहा—'आप मेरे पुत्र के बराबर हैं, फिलहाल मैं आपके विकास की दृष्टि से खादी ठीक समझता हूं। वहाँ जाकर काम कीजिये। वहाँ आफिस में काम करना होगा। आफिस में अधिक और कम वेतन पाने वाले अनेक लोग रहते हैं, अच्छे और बुरे लोग भी रहते हैं। उनके सम्पर्क में अच्छे बुरे अनेक अनुभव प्राप्त होंगे, पर सबसे अलिप्त रह कर आप अपना काम करते जाइये, कभी किसी की ईर्ष्या मत कीजिये। अध्ययन की ओर आपकी निरन्तर दृष्टि रहे, अच्छी-अच्छी पुस्तकें नियमित रूप से बराबर पढ़ते रहिये।'

मध्यप्रदेश के इस भाई के बहाने बाबा ने कार्यक्रम में काम करने वाले सब भाइयों को सावधान किया है। इसमें एक ओर बड़े आफिसर को अपना अहंकार छोड़ कर छोटे कार्यकर्ता को अपनाने की ओर संकेत है, तो दूसरी ओर छोटे कार्यकर्ता के लिए निरन्तर कुछ-न-कुछ नया सीखने का उपदेश है। जिससे थोड़े समय के बाद दोनों में ज्ञान और अनुभव की दूरी न रहे, धीरे धीरे दोनों एक-दूसरे के निकट आ जायें। इसमें भी अन्त्योदय से सर्वोदय की ओर प्रयाण है। छोटे-बड़े की विषमता मिटा कर साम्ययोग का प्रसार है।

असम के एक भाई ने प्रातःकालीन पदयात्रा के समय बाबा से पूछा—बाबा, असम की समाज-व्यवस्था की दृष्टि से नई तालीम की क्या बुनियाद है?

बाबा—जगह जगह दिखाई देने वाले ये 'नामघर' ही नयी तालीम की बुनियाद हैं। इनका सब जगह दर्शन होता है। नामघर को अब कामघर बनाओ और ज्ञान घर भी।

संतों ने काम धर में बैठ कर उच्च से उच्च साहित्य की सृष्टि की है। जुलाहे का काम करते हुए कबीर के मुह से 'झीनी झीनी बिनी चदरिया' का तत्त्वज्ञान प्रकट हुआ। मृतक पशुओं की चीर-फाड करने वाले संत रैदास ने 'प्रभुजी तुम चंदन हम पानी' जैसी भावप्रवण पंक्तियाँ उच्चारित कीं। और ये संत संसार में रहते हुए भी संन्यासियों में शिरोमणि गिने जाते हैं। असम के नामघर की तरह भारतवर्ष में हिन्दुओं के मन्दिर, मुसल्मानों की मसजिदें और ईसाइयों के चर्च कामघर और ज्ञानघर बन जायें। ज्ञानयोग के साथ सतत कर्मयोग चलता रहे तो बाबा की दृष्टि से नई तालीम के सारे हिन्दुस्तान में एक साथ दर्शन होने लगेंगे।

उन्हीं भाई ने आगे पूछा—बाबा, ग्राम विश्वविद्यालय कैसे होगा?

बाबा—नामघर ही ग्राम-विश्वविद्यालय हैं, जिसमें कोई डिग्री नहीं होगी।

असमी भाई—बाबा, शिक्षकों में भी प्राथमिक शिक्षक की तनख्वाह कम है और कालिज के अध्यापक को ज्यादा मिलती है! दोनों की इस दूरी का निराकरण कैसे होगा?

बाबा—अध्यापक को प्रतिदिन एक रुपया मिलना चाहिए। वह अपने घर में रहेगा, खेती करेगा और विद्यार्थी स्वयं उसके घर पढ़ने आयेंगे। वह उन्हें अधिक से अधिक दो घंटे पढ़ायेगा।

आजकल तो बाबा की सारी शक्ति ग्रामदान की ओर लगी हुई है। दिन-रात इसी का चिंतन चलता रहता है। कभी कभी लोग प्रश्न करते हैं कि बाबा, अष्ट ग्रहों के योग से पृथ्वी के प्राणियों का जल्दी विनाश होने वाला है। ऐसी हालत में ग्रामदान करने से क्या लाभ होगा? बाबा संस्कृत के प्राचीन दार्शनिक ऋषियों की तरह यह उत्तर देते हैं कि यदि जल्दी ही प्रलय होने वाला है तो ग्रामदान करके अधिक से अधिक पुण्य करना तुम्हारा धर्म है और प्रलय नहीं होने वाला है तो सर्वहित की दृष्टि से ग्रामदान करना तुम्हारा धर्म है। दोनों दृष्टियों से तुम्हारा लाभ ही होगा।

अपने अप्रमत्त जीवन से विनोबा ने मन, वाणी और कर्म का अद्भुत योग सिद्ध किया है। सबसे अधिक थकावट चिंतन में होती है, उससे कम वाणी में और वाणी से भी कम थकावट शरीर-श्रम में होती है। पर साम्ययोगी विनोबा ने इन तीनों में साम्य स्थापित किया है। शरीर-श्रम तो उनका प्रसिद्ध है। अपने इस कृश देह द्वारा उन्होंने यहाँ सतत जो कार्य किया वह अब सर्वविदित है। वाणी के बारे में संस्कृत में एक वचन है–'वाक्पातो वीर्यपाताद् गभीयान्'–वाणी का पतन वीर्य-पात से भी भयंकर होता है। सतत बोलने वाले की आयु तथा शक्ति क्षीण होती है; पर विनोबा प्रतिदिन पाँच छह घंटे अध्यापन, प्रवचन और प्रश्नोत्तर के बहाने बोलते ही रहते हैं, फिर भी उन्हें जरा-सी भी थकावट का अनुभव नहीं होता। प्रत्येक समय चेहरे पर वही उल्लास, ताजगी और जिज्ञासा वृत्ति दृष्टिगोचर होती है। चिंतन में उन्होंने जो अद्भुत क्षमता प्राप्त की है, वह उनके लेखों और प्रवचनों में पद-पद पर दिखाई देती है। उन्होंने पुराने सूत्रों की युग के अनुरूप नवीन व्याख्यायें की हैं।

यात्रा में चलते चलते गंभीर बातचीत के बीच कभी कभी बाबा अपनी बालचेष्टा द्वारा सबमें उल्लास का वातावरण पैदा कर देते हैं प्रातःकाल साढ़े तीन या चार बजे के आसपास मुर्गा कुकड़ूँ कूँ करके बांग दे रहा था। एक तरफ उसकी बांग की आवाज सुनाई देती थी। उसके बाद तुरन्त दूसरी ओर बाबा के मुँह से जोर से यह ध्वनि निकलती थी 'जागो रे जागो'! लगभग दस-पन्द्रह बार बाबा इस प्रकार बोले होंगे। इसके बाद तो मुर्गे की बांग ही हमें 'जागो रे जागो' के रूप में सुनाई दे रही थी।

अब तो वे असम में अपने सब अनुभवों द्वारा ग्रामदानी गाँवों में अद्भुत संगठन करके रचनात्मक काम करना चाहते हैं। असम से बाहर कहीं उनकी जाने की इच्छा नहीं। एक बार इसी सिलसिले में उन्होंने गौरी सागर के तट पर कहा—'असम के कार्य के बाद मेरा स्वर्गारोहण का विचार है, इस स्वर्गारोहण में मेरे साथ आने के लिए कौन तैयार है?' बाबा के इस प्रश्न पर सब चुप रहे, केवल अमलप्रभा बहन ने साहस के साथ कहा–'मैं तैयार हूँ।' इस पर बाबा ने कहा कि मुझे केवल एक का आधार मिला है। यह कभी मेरे कार्य को नहीं छोड़ने वाली है। सचमुच अमलप्रभा बहन ऐसी ही शक्तिशालिनी हैं। वह ब्रह्मचारिणी हैं और अपने त्याग और संयमशील जीवन द्वारा उसने असम में अनेक बहनें तैयार की हैं।

तथागत बुद्ध की तरह तीर्थंकर महावीर ने भी अप्रमत्त जीवन की ओर अधिक भार दिया है। सूत्रकृतांग सूत्र में वे गौतम को उपदेश देते हुए बार-बार कहते हैं—समय गोयम, मा पमाय' गौतम, एक क्षण के लिए भी प्रमाद मत करो। अप्रमत्त व्यक्ति के लिए दूसरे के प्रकाश की जरूरत नहीं होती। उसका जीवन स्वयं प्रकाशरूप होता है। बुद्ध के शब्दों में वह 'अप्प-दीपो भव'—'आत्मदीप बनो' का सच्चा उदाहरण होता है।

भूदान और ग्रामदानमूलक अपनी इस नवीन प्रवृत्ति द्वारा विनोबा आज 'आत्मदीप' बन कर जगत् को प्रकाशित कर रहे हैं।

प्रेम का विस्तार

मैं बहुत बड़ा आध्यात्मिक कदम उठाने के लिए नहीं कहता। इतना ही कहता हूँ कि प्रेम को आपने घर में बन्द रखा है, वह खोल दें, व्यापक बनायें, ताकि ग्राम-समाज बने। इतना तो बनना ही चाहिए। इसका मतलब यह नहीं कि गाँव में रसोड़ा एक हो। ऐसी फिजूल बातें नहीं करनी चाहिए। हम कोई कुटुम्ब-व्यवस्था खड़ी करना नहीं चाहते। जहाँ तक सामाजिक और आर्थिक व्यवस्था का सवाल है, वहाँ तक गाँव एकरस हो और प्रेम का स्थान माना जाय। घर में क्या होता है? पुरुष एक रुपया कमाता है, स्त्री बारह आना, लड़का आठ आना और लड़की चार आना, तो यह सारी कमाई सारे घर की मानी जाती है। लड़की चार आना कमाती है, इसलिए चार आने का खायेगी और पुरुष एक रुपये का खायेगा—यह कानून हम घर में नहीं लागू करते। घर में प्रेम का कानून चलता है, जिसमें सारी कमाई सारे घर की मानी जाती है। उसमें तो जो नहीं कमा सकता, उसका भी हक है। इस तरह घर में हम बाँट कर खाते हैं। जैसी व्यवस्था घर में है, वैसी ही गाँव में करनी है, यही अहिंसा का सन्देश है।

[ऋषभदेव (राजस्थान)
२७-७-'५९]

हिंदुस्तान मुक्त-चिंतन का पक्षपाती

हिंदुस्तान में हमने किसी एक पुरुष के नाम से धर्म नहीं चलाया। यह इस देश के लिए अभिमान की बात हो सकती है। अगर हम उनका नाम लेकर, उनके कार्य को आगे बढ़ाने की प्रतिज्ञा करते हैं, तो उनके नाम का गौरव हो सकता है। फिर भी हमने किसी भी महापुरुष के नाम के साथ अपने विचार को नहीं बाँधा, जैसे कि ईसा ने ईसाई धर्म को 'क्राइस्ट' के साथ बाँध दिया है। हम ईसा का भी नाम गौरव के साथ लेते हैं, क्योंकि महापुरुषों में हम फर्क नहीं करते। फिर भी वे कितने भी बड़े हों, हम यह मानने को राजी नहीं कि किसी एक महापुरुष के जरिये ही हम भगवान् के पास पहुँच सकते हैं। हमारा और भगवान् का सीधा सम्बन्ध हो सकता है। हमारे बीच ऐसी किसी 'एजेन्सी' की आवश्यकता नहीं। अतएव हम भारतीयों ने हमेशा मुक्त-चिन्तन किया है। हिन्दुस्तान के दर्शन ने विज्ञान के साथ कभी झगड़ा नहीं किया। शंकराचार्य ने तो यहाँ तक कह रखा है कि यदि साक्षात् श्रुति भी 'अग्नि ठंडी है' ऐसा कहे, तो हम उसे मानने के लिए बाध्य नहीं। अर्थात् विज्ञान की प्रत्यक्ष अनुभव की जो बात होगी, उसके विरुद्ध वेद भी नहीं बोलते और न बोलना चाहते हैं।

[सर्वोदयनगर, अजमेर,
२८-२-'५९]

विचार-संकलन

विनोबा

दूसरों पर विश्वास : महान् शस्त्र

आज भाई-भाई में अविश्वास है, मित्र-मित्र में अविश्वास है। विभिन्न पक्षों, दलों और गुटों में अविश्वास है। किन्तु हम कहना चाहते हैं कि अविश्वास अब इस जमाने की चीज नहीं है। आज मानव के हाथों में इतने भयानक शस्त्रास्त्र आ गये हैं कि यदि एक-दूसरे पर अविश्वास करते रहेंगे, तो मानव-समुदाय मिट जायगा। हिन्दुस्तान और पाकिस्तान में किस तरह अविश्वास चलता है! अविश्वास से बात बनती नहीं, बिगड़ जाती है। अगर हमारा दारोमदार केवल लाठी पर होता, तो अविश्वास के परिणामस्वरूप कुछ सिर फुटौवल होकर ही रह जाती। लेकिन आज हमारे हाथों में हाइड्रोजन बम है। इसलिए अब अविश्वास के कारण सर्वनाश हुए बिना नहीं रहेगा।

इसलिए जैसे हम मित्रों पर विश्वास करते हैं, वैसे ही प्रतिपक्षी पर भी विश्वास करना सीखें। विश्वास रखने से हम कुछ खायेंगे नहीं। खोयेगा वही, जो विश्वासघात करेगा। बाबा के पास यही जादू है कि वह सब पर विश्वास रखता है। आज की सभा आरंभ करते समय कुछ शोरगुल हो रहा था। तब मैंने कहा कि शांति मैं धीरे-धीरे बोलूँगा। लेकिन जैसे ही बोलना शुरू किया, शोर बन्द! अगर धीरे बोलने से काम न चलता, तो मैं मौन रहता। जैसे हिंसा में शस्त्र तीव्र से तीव्रतम हो जाते हैं, वैसे ही अहिंसा में सौम्य से सौम्यतम होते हैं। सर्वोदय की पद्धति में दूसरों पर विश्वास रखना ही बहुत बड़ा शस्त्र है।

[बलाचौर, पंजाब, ७-५-'५९]

अहिंसा और अनुशासन

अहिंसावालों की कमियाँ कहाँ हैं, यह समझना चाहिए। वे किसी एक क्षण में किसी एक स्थान पर इकट्ठे होकर काम नहीं करते, इसलिए उनके सारे विचार मन में ही रह जाते हैं, काम नहीं आते। जो अनुशासन हिंसा में बनता है, उससे अधिक अनुशासन अहिंसा में होना चाहिए। कुछ लोगों का खयाल है कि अहिंसा में अनुशासन नहीं है। वस्तुतः अहिंसा का अर्थ ही अनुशासन है। अहिंसा में अन्दर से अनुशासन होता है। जहाँ अन्दर से अनुशासन आता है, वहाँ बाहर से अनुशासन तो सहज ही आ जाता है। हिंसक सेना में कृत्रिमता से अनुशासन लाना पड़ता है। अहिंसा में वह स्वयं प्रेरणा से होगा। हिंसक सेना में यंत्रवत् कार्य होता है, कृत्रिम अनुशासन लादते हैं। अहिंसा में हृदय-परिवर्तन होता है। इसलिए अनुशासन सहज होना चाहिए।

[कुन्दुर, धारवाड़, १३-१-'५८]

कार्यकर्ताओं— आत्म-निरीक्षण की वेला में

सौ वर्षों तक स्वराज्य की लड़ाई लड़ी गयी है। लड़ने वाले बहादुरों का स्वागत ही है और शहीदों को श्रद्धांजलि देनी ही है। अब आया जमाना नई पीढ़ी का। उसको अपने को देखना है। स्वराज्य की लड़ाई लड़ने वाले हमारे बुजुर्गों के सामने कौनसा चिराग था, जिसे देख कर वे आगे बढ़े? अंधकार में पड़ कर, खतरा उठा कर उन्होंने रास्ता बनाया और इतनी बहादुरी पर भी हमें संतोष नहीं, या तो हम लालची हैं या निकम्मे!

रेलगाड़ी में जिसका टिकट जहाँ का होता है, वहाँ पर वह उतर जाता है। इसमें हम कहें कि क्यों भाई, मैं आगे जा रहा हूँ, तुम क्यों नहीं मेरे बराबर चलते? तो पहला मुसाफिर यही कहेगा कि अरे भाई, तुम आगे जाओ, इसमें एहसान क्या! क्योंकि जितना सफर आपको आगे करना है, उससे कहीं अधिक मेरा सफर पूरा हो गया है। अब जरा रुक-कर देखेंगे।

मौजूदा क्रांतिकारियों की दृष्टि अगर आज ऐसी नहीं रही, तो काम नहीं बनेगा। दूसरे पर आक्षेप करके अपनी कमजोरी को छिपाने जैसी बात यह जमाना अब नहीं सुनने वाला है। इसलिए हमें कोई हक नहीं, दूसरे की टीका-टिप्पणी और आलोचना करने का।

ये लोग मेरे मार्गदर्शक नहीं हैं और न होने ही चाहिए और मैं भी इनका मार्गदर्शन क्या कर सकूँगा? संभव भी नहीं, इसलिए हमें तो इनकी अर्चना ही करनी है—जैसे अपने स्वर्गवासी पिता की, क्योंकि इन्हीं के संस्कार से हमें बढ़ना है! हमें तो पता नहीं चलता कि कौन बड़े हैं और कौन छोटे हैं! और अगर हम ऐसा नहीं करते तो हम कर्जदार होंगे, लापरवाह होंगे और गैरजिम्मेदार साबित होंगे। देखिए न, ये तो सौ वर्षों तक लड़ते रहे हैं, जिसमें कोई बीस वर्ष, कोई तीस वर्ष, कोई अस्सी वर्ष और हम अभी सन् '५१ से क्रांति के लिए निकले! कितने दिन हुए! कुल सिर्फ दस वर्ष!

जब तक नदी में प्रवाह है, प्रवाह में गति है, शरीर में प्राण है—चरैवेति-चरैवेति!

जिला सर्वोदय-मंडल
वाराणसी
—अलखनारायण

चरखों के बीच में मिल!

अखबारों से जानकारी मिली है कि कपड़े की एक नई मिल भीलवाड़ा (मेवाड़, राजस्थान) में खुली। उसका उद्घाटन राजस्थान के मुख्य मंत्री ने किया।

देश के अन्य स्थानों की तरह मेवाड़ की जनता भी देहातों में ही विशेषतया रहती है और किसानी ही एकमात्र धंधा प्रायः सब लोगों का है। खूब कष्टपूर्वक सिंचाई आदि कृषि-काम करते हुए भी वहाँ के लोगों को साल में करीब छह मास थोड़ा-थोड़ा करके बेकार बैठना पड़ता है। उन दिनों फुरसत के समय लोग अपना कपड़ा खुद अपने घरों में तैयार कर लें तो अतिरिक्त आमदनी हो सकती है, जिससे खाने पीने में दिक्कत नहीं होगी।

इसी मेवाड़ के एक क्षेत्र, बिजौलिया में महात्मा गांधी ने कुछ कार्यकर्ता १९२५ में भेजे थे। उन्होंने चार साल वहाँ रह कर कपास से कपड़े तक की सब क्रियाएँ लोगों को सिखा दीं। बुनना, पींजना, कातना, रंगना व छापना भी घर-घर सिखा दिया था। इस क्रियाओं में लगने वाले औजार भी वहीं बना देना बहुतों को सिखा दिया था। वहाँ के अनेक गाँवों के आबाल वृद्ध, स्त्री-पुरुषों के मिल के नहीं होते थे। आज उन्हीं के बीच ऐसी मिल खड़ी की जाती है, जो हजार में से दो को तो काम देती है और सारे वस्त्र को बेकार रख कर उनकी रूखी-सूखी रोटी छीन लेती है। यह भी ऐसे हाथों द्वारा, जो 'गांधीजी की जय' बोलते हैं, जयन्ती मानते हैं और उनके सिद्धांत समझने का दावा करते हैं। ऐसा ही चलता रहेगा क्या!

कलकत्ता
—जेठालाल गोविंदजी

इससे प्रचण्ड विद्युत प्रवाह होगा

"बिहार के बारे में हमारे कार्यकर्ताओं का आकलन होने के लिए इतने दिन कैसे लगे, इसका मुझे आश्चर्य लगता है। वह एक हमारी इस समय की बहुत महत्त्व की 'फट' है।...इस काम से भारत में एक प्रचण्ड विद्युत् प्रवाह शुरू होगा। ता० ३ सितम्बर ६१ तक काम पूरा न हुआ तो मई तक (अवधि) बढ़ाई जा सकेगी। राजेन्द्र बाबू मई महीने में दिल्ली से छूटेंगे। शेक्सपीयर का वाक्य है: "देयर इज ए टाइड इन दि एफेयर्स आफ मैन"—वैसी यह भरती की वेला है। मैंने लेकिन ३ दिसम्बर ६१ तक बिहार न पहुँचने का तय किया है। यह मेरा निश्चय भी उस भरती को मदद देने के लिए ही है।

—विनोबा का जय जगत्"

श्री ठाकुरदास बंग को लिखे पत्र से

पुलिस शताब्दी !—राजस्थान में हरिजनों को बसाने के लिये सुविधा—जनसंघ और खादी-ग्रामोद्योग—स्टालिन का स्मारक !—शेरकोट में सर्वोदय-पात्र—ग्रामस्वराज्य साधक आश्रम—शांति-सैनिक बाढ़पीड़ित क्षेत्र में—बिहार में गोसंवर्धन सप्ताह—रायपुर जिले में अर्थसंग्रह अभियान—दिल्ली में विनोबा-जयंती तक की सर्वोदय गतिविधियाँ—कानपुर के तैराकों का सराहनीय प्रयास—इन्दौर में नशाबंदी सम्मेलन।

कम्युनिस्ट पार्टी की पंजाब शाखा की कार्यकारिणी ने अपने एक प्रस्ताव में पुलिस-विभाग की स्थापना की शताब्दी के सिलसिले में जिस प्रकार पुलिस-विभाग की प्रशंसा की जा रही है, उस पर खेद प्रकट किया है। प्रस्ताव में कहा गया है कि पिछले १०० साल में ८५ साल का अरसा वह था, जबकि देश पर विदेशी हुकूमत थी और शताब्दी समारोह के सिलसिले में कितने ही भाषणों और लेखों में इस अवधि के पुलिस के कारनामों का भी इस प्रकार वर्णन किया गया है, जो आजादी की लड़ाई और उसमें भाग लेने वाले लोगों के प्रति अपमानसूचक है। ●

अखिल भारतीय हरिजन सेवक संघ की वार्षिक सभा को सम्बोधित करते हुए राजस्थान के मुख्यमन्त्री ने यह घोषणा की कि राजस्थान के हर क्षेत्र में सरकार १००० परिवारों को जमीन देकर बसायेगी, जिनमें ७५ फीसदी परिवार हरिजन और आदिवासी होंगे। हरिजन सेवक संघ की सभा अक्तूबर के आखिरी सप्ताह में सीकर में हुई थी। ●

राजस्थान प्रांतीय जनसंघ की कार्यसमिति ने दल का जो चुनाव सम्बन्धी घोषणा पत्र प्रकाशित किया है, उसमें कहा गया है कि जनसंघ "खादी-बोर्ड" को समाप्त करेगा और खादी उद्योगों को आजकल 'सबसिडी' और छूट के रूप में जो "गलत संरक्षण" दिया जा रहा है, उसका भी अन्त करेगा। साथ में घोषणा-पत्र में यह भी कहा गया है कि मौजूदा घरेलू उद्योगों को संरक्षण और अधिक विकास का अवसर दिया जायगा। ग्रामोद्योग, पंचायत समितियों को सौंप दिये जायेंगे। घोषणा पत्र में यह भी वायदा किया गया है कि अगर जनसंघ सत्तारूढ़ हुआ तो वह "श्रमदान, सहकारी खेती, समाज-कल्याण बोर्ड" आदि का अन्त करेगा और अनिवार्य सैनिक शिक्षण लागू करेगा। ●

मास्को शहर के मध्य में साम्यवाद के प्रणेता कार्ल मार्क्स के स्मारक का उद्घाटन करते हुए रूस के प्रधान मन्त्री श्री ख्रुश्चेव ने यह सुझाया कि सोवियत राजधानी में एक और स्मारक उन बेकसूर लोगों की स्मृति में खड़ा किया जाना चाहिए, जो स्तालिन के शासन काल में उसके कोप के शिकार हुए हैं। अपने भाषण के दौरान में ख्रुश्चेव ने कहा : "स्तालिन के शासन काल में हजारों बेगुनाह लोगों के मुंह से विदेशी जासूस होने और विदेशियों के हिमायती होने के अपराध की स्वीकृति जबरदस्ती करवायी गयी और उनकी हत्याएँ की गयीं।" ●

शेरकोट, जि० बिजनौर की एक बहन, श्रीमती न्यायवती देवी ने अपने गाँव में सर्वोदय-पात्र रखवाये। संगृहीत राशि में से १० रु १२ न पै अ भा सर्व सेवा संघ को भेजे। गांधी जयन्ती के अवसर पर उन्होंने भंगी-बस्ती और कुओं की सफाई की, जिसमें श्री गांधी आश्रम के कार्यकर्ताओं ने सहयोग दिया। ●

सारठ (मधुपुर) जि संथाल परगना के ग्रामस्वराज्य साधक आश्रम का पंचम वार्षिक समारोह मनाया गया। ●

सारण जिले के दस शांति सैनिक मुंगेर जिले के बेराई गाँव के आसपास बाढ़पीड़ित क्षेत्रों में सेवा कार्य कर रहे हैं। ●

बिहार राज्य में इस वर्ष कृषि-मंत्रालय के केंद्रीय गो सवर्धन परिषद के राज्य पशुपालन विभाग के संरक्षण में राज्य गोशाला पिंजरापोल संघ ने गोवर्धन-पूजा, ९ नवम्बर से गोपाष्टमी, १५ नवम्बर तक गो संवर्धन सप्ताह मनाने का आयोजन किया है। ●

रायपुर जिला सर्वोदय-मण्डल ने अर्थ-संग्रह अभियान में २१८० रु संगृहीत किये। विनोबा जयन्ती के अवसर पर नगर पदयात्रा में ७०० रु का साहित्य बेचा गया। 'भूदान यज्ञ' के ८ ग्राहक बनाये। वैसे ९० अंक फुटकर हमेशा बिकते हैं। ●

दिल्ली के सर्वोदय मण्डल के कार्यकर्ताओं द्वारा विनोबा जयन्ती से गांधी-जयन्ती तक सर्वोदय साहित्य सभी तक पहुँचाने का प्रयत्न किया गया। गांधी-मेला-प्रदर्शनी में सर्वोदय साहित्य का स्टाल प्रचारार्थ लगाया। स्टाल पर प्रधान मन्त्री श्री जवाहरलाल नेहरू निरीक्षण के लिए आये। उन्होंने स्टाल पर सर्वोदय साहित्य की पुस्तकों को देखा और स्टाल में लगे पोस्टरों को बड़े ध्यान से पढ़ा। इस अवसर पर उन्हें 'पोस्टर आन्दोलन' पुस्तक भेंट दी गयी। श्री सी० ए० मेननजी ने 'गांधी-जयन्ती' का १०० दिवसीय एक विशेष कार्यक्रम बनाया, जो दिल्ली शाखा-केन्द्रों पर आयोजित हुआ। दो अक्तूबर से १०० दिन पहले तक जितने रविवार पड़े, प्रत्येक रविवार को प्रभात फेरी, सामूहिक सफाई, जन सम्पर्क, कार्यकर्ता गोष्ठी और सूत्रयज्ञ तथा सभा आदि के कार्यक्रम रखे गये। इस कार्यक्रम में सभी स्थानीय संस्थाओं ने भाग लिया। ●

लखनऊ में गोमती नदी के भयंकर बाढ़ में मनुष्यों को बचाने के लिए कानपुर के तैराकों की संस्था के सदस्य दो जत्थों में सहायता के लिए लखनऊ गये। उन्होंने वहाँ पर कई लोगों में बाढ़ के खतरे से निकाल कर सुरक्षित स्थान पर पहुँचाया। ●

इन्दौर में मध्यप्रदेश नशाबन्दी सम्मेलन होने जा रहा है। सम्मेलन के लिए विसर्जन आश्रम में तैयारियाँ की जा रही हैं। ●

बम्बई सर्वोदय-मंडल की गतिविधियाँ

बम्बई में 'विनोबा-जयंती' कई जगह विभिन्न प्रकार से मनायी गयी। श्री वल्लभाई मेहता ने ११ से १३ सितंबर तक कुल १५ सभाओं द्वारा सर्वोदय विचार का प्रचार किया। विद्यार्थियों के बीच हुए उनके प्रवचन परिणामकारक रहे। सर्वोदय-संस्कार मंडल, दादर और अन्य क्षेत्रों में भूदान चित्रपट द्वारा प्रचार किया गया। एक सभा में बम्बई के महापौर श्री वरलीकर और श्री बाहू मोडक ने अपने भाषण में विनोबाजी के कार्य की उपयुक्तता बतायी।

'विनोबा और भूदान' विषय पर हुई भाषण प्रतियोगिता में १४ माध्यमिक पाठशालाओं के छात्र छात्राओं ने भाग लिया। पाँच छात्रों को पारितोषिक दिये गये। 'गीताई' का एक अध्याय मुखोद्गत कर सुनाने के कार्यक्रम में १०० छात्र-छात्राओं ने भाग लिया।

सितंबर माह में विभिन्न क्षेत्रों में कुल २४५२ रु० २४ नये पैसे की साहित्य-बिक्री हुई। भागवत सप्ताह में स्टाल, दादर, गीता-दर्शन की प्रदर्शनी, कालेज-स्कूल तथा व्यक्तिगत प्रचार द्वारा कार्यकर्ताओं ने सर्वोदय-साहित्य का विभिन्न क्षेत्रों में काफी प्रचार किया। डा० यशवंतराव कुलकर्णी ने करीब ३०० रु० का साहित्य बेचा। इस माह में भूदान पत्रों के कुल १६९ ग्राहक बने। हर सप्ताह ९९ अंकों की फुटकर बिक्री होती है। बंबई की 'सर्वोदय साधना' मासिक पत्रिका के कुल ४११ नियमित ग्राहक हैं और ५२९ अंक फुटकर प्रचारित किये जाते हैं। बंबई शहर में अर्थ-संग्रह अभियान में सितंबर में ७५ व्यक्तियों से ८९४ रु० २५ न० पै० मिले। सितंबर अंत तक कुल २६,६३७ रु० ९४ न० पै० संग्रहीत हुए हैं।

सितंबर माह में कालबादेवी, कुर्ला, घाटकोपर, विलेपार्ले, मालाड के कुल ८०७ सर्वोदय-पात्रों से ३६५ रु ८ न पै संग्रहीत हुए।

बंबई के सर्वोदय-कार्यकर्ता उपयोगी साहित्य का नियमित अध्ययन मनन करते रहते हैं। हर शनिवार को साप्ताहिक बैठक होती है। उसमें कार्य के अनुभव, साहित्य-प्रचार के तरीके आदि विषयों पर विचार-विमर्श होता है। माह के आखिरी शनिवार को सर्वोदय प्रेमी लोगों को बुला कर उनको पिछले कार्य की जानकारी देना और आगे के कार्यक्रम के बारे में चर्चा करने का सोचा गया है।

जीवन-शुद्धि यज्ञ

बम्बई में अर्थसंग्रह का काम चल रहा था। अर्थसंग्रह के साथ सज्जनों का भी संग्रह हुआ है।

श्री धारिया नाम के एक व्यापारी दाता ने भूदान-यज्ञ सिर्फ दान नहीं है, यह तो जीवन-शुद्धि का आंदोलन है, जान कर गलत ढंग से पैसा कमाना छोड़ दिया है। घर के नौकर कम कर दिये हैं और पति पत्नी रोज दो घंटे शरीर परिश्रम करते हैं।

भूदान-समिति चित्रकूट, बांदा के द्वारा
२१५१ परिवारों में ५३७६ एकड़ भूमि वितरित

भूदान-यज्ञ आन्दोलन में बांदा जिले के अन्तर्गत बांदा, बबेरु, नरैनी, करवी और मऊ तहसीलों के २०० ग्रामों में २१५१ भूमिहीन परिवारों को जमीन वितरित की गई है, जिसमें बांदा में २२, बबेरु में ४१, नरैनी में ४०, करवी में ४० और मऊ में ५६ गाँवों में भूमि बाँटी गयी है। ये सभी भूमिहीन परिवार इस भूमि पर खेती कर रहे हैं। इन २१५१ भूमिहीन परिवारों में ५३७६ एकड़ भूमि वितरित की गयी है, जिसमें १५०० परिवार हरिजनों के हैं। इन परिवारों को ३५०० एकड़ भूमि दी गयी है।

इसके साथ ही भूदान समिति के बड़े-बड़े प्लाटों में सामूहिक सहकारी खेती का भी प्रयोग चल रहा है। १००० एकड़ भूमि के चार बड़े प्लाटों में ११० परिवारों को बसाया जा रहा है। बबेरु तहसील के अन्तर्गत कमासिन ग्राम में 'विनोबानगर' नामक एक नई बस्ती बसायी जा रही है, जिसमें ४५ हरिजन परिवार बसेंगे, जहाँ पर ४०० एकड़ भूमि में सहकारी खेती का प्रयोग शुरू है। इसी प्रकार नरैनी तहसील के कटरा कालींजर ग्राम में २०० एकड़ भूमि पर और मऊ तहसील के कपुरी ग्राम में ५० एकड़ और करवी तहसील के मडैयन ग्राम में ३२९ एकड़ में सामूहिक कृषि सहकारी समितियों का संगठन किया जा रहा है।

महाराष्ट्र प्रदेश के समाचार

महाराष्ट्र के ग्रामदानी गाँवों में कार्य करने वाले कार्यकर्ताओं की हर दो तीन माह में बैठक होती है। इस बार यह बैठक रत्नागिरी जिले के कुडाल गाँव में १० से १३ अक्टूबर तक हुई। इसमें पूरे महाराष्ट्र के कुल ५० कार्यकर्ता उपस्थित थे। खादी कमीशन की विकास-योजना के उपनिर्देशक श्री नानासाहब धर्माधिकारी ने ग्राम इकाई योजना की जानकारी दी। तात्यासाहब शिरसे और श्रीराम देशपांडे ने भी मार्गदर्शन किया। कार्यकर्ताओं ने अपने कार्य के विवरण सुनाये। पूना के बाढ़पीड़ितों की सेवा में सब कार्यकर्ता गये थे। उसके बाद मुख्यतया खेती का काम हुआ। कई ग्रामों में सुधरी हुई और सामूहिक खेती के प्रयोग शुरू किये गये हैं। प्राप्त अनुभव और कठिनाइयों के बारे में चर्चा हुई। स्थानिक स्वराज्य-संस्थाओं के और सार्वत्रिक चुनाव आदि के लिए ग्रामीणों का कैसे मार्गदर्शन किया जाय, इस पर भी काफी चर्चा हुई।

पूना और माधान में विनोबा और गांधी-जयंती

पूना के महाराष्ट्र सेवा संघ-कार्यालय के कार्यकर्ताओं ने ११ सितम्बर से २ अक्टूबर तक हर रोज सुबह छह बजे से शाम के छह बजे तक अखंड सूत्र-यज्ञ चलाया। १५-२० कार्यकर्ता बारी-बारी से सतत अंबर चरखा चलाते रहे। कुल २८२ गुंडियाँ सूत काता गया। रुई आदि का खर्च कम करके श्रमदान के रूप में ५३ रु० ८८ न० पै० जमा हुए।

अमरावती जिले के माधान स्थित कस्तूरबा ट्रस्ट के विद्यालय के शिक्षक और छात्र छात्राओं ने 'गांधी-जयंती' के निमित्त ४० गाँवों में पदयात्रा की। इन ४० गाँवों में सघन कार्यक्षेत्र का प्रयोग चालू है। ८ केंद्रों में ये सारे गाँव बँटे हैं। १६ सेविकाएँ यहाँ कार्य कर रही हैं। इनमें कुछ आदिवासियों के भी गाँव हैं। सेविकाओं के मार्गदर्शन के लिए हाल ही में ८ दिन का एक शिविर हुआ।

बाढ़पीड़ितों की सेवा में कार्यकर्ता

वर्धा नदी की बाढ़ से काटोल (नागपुर) तहसील के कुछ गाँवों में काफी नुकसान हुआ, ऐसा समाचार पाते ही सर्वोदय-कार्यकर्ता उस तहसील की नियोजित भूदान-पदयात्रा का काम स्थगित कर बाढ़पीड़ित गाँवों में पहुँचे। वहाँ रास्तों की दुरुस्ती, सफाई आदि कार्य करते रहे। चरखा-संघ का अम्बर केन्द्र जमीन में धँस गया था, उसे खोद कर चरखे बाहर निकाले गये। जनता का अच्छा सहकार मिला। जलालखेडा गाँव के लोगों ने कार्यकर्ताओं के कार्य के प्रति संतोष प्रकट किया।

वैनगंगा और वर्धा नदी की बाढ़ से चांदा और वर्धा जिले में क्षतिग्रस्त जनता की सहायता के लिए भी कार्यकर्ता गये। श्री रा० कृ० पाटिल और चांदा जिले के सर्वोदय-मंडल के संयोजक श्री श्यामसुन्दर शुक्ल ने बाढ़पीड़ित गाँवों में पहुँच कर प्रत्यक्ष सहायता-कार्य में भाग लिया।

—श्री अप्पासाहब पटवर्धन की पदयात्रा विदर्भ में चल रही है। २१ अक्टूबर से एक माह तक चांदा जिले में पदयात्रा होगी। पूर्वतैयारी के रूप में कार्यकर्ता गाँव-गाँव घूम रहे हैं।

—श्री अण्णासाहब सहस्रबुद्धे ११ मार्च '६३ तक के लिए खादी-ग्रामोद्योग कमीशन के उपाध्यक्ष बनाये गये।

—अ०भा० पंचायत परिषद की कार्यकारिणी समिति में महाराष्ट्र के प्रतिनिधि के रूप में श्री गोविंदराव शिंदे की नियुक्ति हुई। इस परिषद के अध्यक्ष श्री जयप्रकाश नारायण हैं।

पूना की बाढ़पीड़ित रचनात्मक संस्थाओं को सहायता

पानशेत बाँध के टूटने के कारण आयी हुई भयंकर बाढ़ में पूना की रचनात्मक संस्थाओं का काफी नुकसान हुआ। ता १६ सितम्बर से २६ अक्टूबर तक विभिन्न संस्थाओं तथा रचनात्मक कार्यकर्ताओं की ओर से सहायता-स्वरूप निम्न रकम मिली।

		रु. न पै.
१.	तमिलनाड सर्वोदय संघ, गांधीनगर, तिरुपुर	५०१-००
२.	श्री आचार्य ब. ग. दवण, गागोदे	२५-००
३.	श्री जीननेश्वर सिंह, मिथिला खादी भण्डार, कचहर (दरभंगा)	५-००
४.	अ भा सर्व सेवा संघ, वाराणसी	७७५-५५
५.	रचनात्मक समिति, नरसिंहपुर	५०१-००
६.	सह० खादी-ग्रामोद्योग भंडार, नंदुरबार (महाराष्ट्र)	३००-००
७.	सर्वोदय आश्रम, सादाबाद (मथुरा)	१०१-००
८.	खादी-समिति, मुजफ्फरपुर	१०१-००
९.	ग्रामोदय आश्रम नानगल, अक्खू (मेरठ)	१०१-००
१०	महाराष्ट्र सेवा संघ के कार्यकर्ताओं की ओर से	२१५१-०३
	ता. १६ सितम्बर तक की प्राप्त रकम	५०९९-९८
	कुल	९,५६१-६०

जापान में सर्वोदय-केंद्र की स्थापना

अन्य एशियाई देशों में महात्मा गांधीजी के तत्त्वज्ञान का अभ्यास और प्रचार होने के लिए भारत के बाहर सर्वोदय-केन्द्रों की स्थापना होना आवश्यक है। इस दृष्टि से शिजूका प्रिफेक्चर, मध्य जापान स्थित योशिवारा में प्रथम सर्वोदय केन्द्र की स्थापना हुई। जापान के राजदूत श्री लालजी मेहरोत्रा ने ६ अक्टूबर '६१ को इस केन्द्र का उद्घाटन किया।

जापान के मशहूर बौद्ध भिक्षु श्री निटात्सुफूजी के अथक प्रयत्न से इस केन्द्र की स्थापना हो सकी। श्री निटात्सुफूजी द्वितीय महायुद्ध के पूर्व काफी समय तक गांधीजी के साथ सेवाग्राम में रहते थे।

उद्घाटन के अवसर पर भेजे गये सन्देश में श्री जवाहरलाल नेहरू ने कहा है कि—'श्रद्धेय फूजी के नेतृत्व में जापान में चल रहे सर्वोदय कार्य की जानकारी श्री महेश कोठारी और जापान के भूतपूर्व राजदूत श्री च० प्र० ना० सिन्हा से मुझे मिली। यह बहुत ही अच्छा कार्य है और यह भारत जापान की मित्रता का प्रतीक है।'

एअर इंडिया इंटर नेशनल, दि बैंक ऑफ इंडिया और न्यू इंडिया एश्युरन्स कम्पनी ने केन्द्र की सहायता के लिए हर-एक ने दस हजार रुपया सहायता-रूप दिये हैं।

इन्दौर नगर में शांति-सेना के प्रशिक्षण-वर्ग

गत ता० १९ से २६ अक्टूबर तक कस्तूरबा शांति सेना विद्यालय की संचालिका कु० श्री निर्मला देशपाण्डे तथा नगर की सुप्रसिद्ध डा० श्रीमती शकुंतला देशपाण्डे के सद्प्रयत्नों से बहनों के लिए इन्दौर नगर में शांति सेना के प्रशिक्षण वर्ग चलाये गये, जिसका उद्देश्य था कि इन्दौर की स्त्री शक्ति शान्ति रक्षा और शील-रक्षा के लिए जागृत हो। इन वर्गों का उद्घाटन १९ अक्टूबर को विजयादशमी के शुभ पर्व पर श्री शंकरराव देव ने किया। इन वर्गों में ५० बहनों ने भाग लिया। एक हफ्ते के इन प्रशिक्षण-वर्गों में प्रशिक्षणार्थियों को देश में शान्ति-सेना की आवश्यकता और महत्त्व एवं कार्यक्रम, लोकतंत्र और साम्यवाद, अशोभनीयता निवारण, सर्वोदय-विचार, सब प्रमुख धर्मों की सामान्य जानकारी, घरेलू उपचार तथा सर्वोदय-नगर अभियान के सम्बन्ध में जानकारी दी गयी।

इन्दौर में नशाबंदी

एक समाचार के अनुसार मध्यप्रदेश की सरकार इन्दौर शहर में पूर्ण शराबबन्दी लागू करने के प्रश्न पर विचार कर रही है।

इस अंक में

श्रीकृष्णदत्त भट्ट, अ० भा० सर्व सेवा संघ द्वारा भार्गव भूषण प्रेस, वाराणसी में मुद्रित और प्रकाशित। पता : राजघाट, वाराणसी-१, फोन नं० ४१९१
वार्षिक मूल्य ६) पिछले अंक की छपी प्रतियाँ ९३५० : इस अंक की छपी प्रतियाँ ९५०० एक अंक : १३ नये पैसे

भारत की भावनात्मक एकता : २

दादा धर्माधिकारी

आज तक हमारे सामने भाषा-विवाद के समाधान के लिए तीन नमूने रखे गये : पहला अमेरिका का, दूसरा स्वीटझरलैंड का, और अब तीसरा 'लेटेस्ट माडल' है रूस का। ये हमारे सामने तीन 'पेटर्नस्' हैं। इनमें से अमेरिका का नमूना, उसका आदर्श हमारे लिए बिलकुल लागू नहीं हो सकता, क्योंकि अमेरिका एक 'आधुनिक, मानव-कृत, संकल्पपूर्वक निर्मित राष्ट्र है। लेकिन एक सबक जो अमेरिका ने हमको सिखाया है, वह महान् सबक है। लोगों ने हमसे आज तक यह कहा था कि "लैंग्वेज 'इज एलीमेन्टल"—भाषा मनुष्य की प्रकृति है। लेकिन अमेरिका ने तो यह सिद्धांत असिद्ध कर दिया। अमेरिका में भिन्न भाषीय लोग हैं। एक प्रकार की भाषा बोलने वाले लोग अमेरिका में नहीं गये। उन लोगों ने संकल्पपूर्वक यह निश्चय किया कि अंग्रेजी हमारी भाषा है। अब सोचिये कि उनकी भावनाओं और विचारों की अभिव्यक्ति किस देश से, किस लेखक से कितनी कम है? अगर भाषा मनुष्य की प्रकृति होती तो अमेरिका में अभिव्यक्ति शून्य होनी चाहिए थी या कम-से-कम उनकी अभिव्यक्ति विफल होनी चाहिए थी, पर वह नहीं हुई।

अमेरिका ने हमको पाठ पढ़ाया कि मनुष्य और पशु में अन्तर यह है कि पशु अपनी भाषा बदल नहीं सकता, मनुष्य अपनी भाषा बदल सकता है। इसलिए मनुष्य की भाषा का भाषान्तर होता है।

मनुष्य में और पशु में यह अन्तर है कि मनुष्य भाषा को ग्रहण कर सकता है, मनुष्य भाषा को छोड़ सकता है, मनुष्य दूसरे की भाषा का अनुवाद कर सकता है, मनुष्य दूसरों की भाषा सीख कर रस ग्रहण कर सकता है। यह मनुष्य की मनुष्यता का गौरव है। और यही भाषाओं के विकास की दिशा है। भाषाओं के विकास की दिशा केवल अभिव्यक्ति की कुशलता में नहीं। अभिव्यक्ति बहुत कुशल हो सकती है। लेकिन अभिव्यक्ति कुशल होने से भाषा का विकास नहीं होता।

भाषा का विकास विचार के विकास के साथ होता है, भाषा का विकास तत्त्वज्ञान के विकास के साथ होता है। भाषा का जो उपादान हो, यानी जिस वस्तु को, जिस द्रव्य की अभिव्यक्ति हम भाषा के द्वारा करना चाहते हैं, उससे भाषा का विकास होता है। केवल भाषिक कुशलता में भाषा का विकास नहीं। वह तो एक शब्द-कुशलता है।

यह एक पहलू है, जिस पहलू का विचार मेरे मन में अमेरिका के उदाहरण से आया। जब लोगों ने हमारे सामने अमेरिका का 'मॉडल' रखा कि अमेरिका ने अपनी भाषिक समस्या का समाधान कैसे किया, तो मैंने कहा कि हमारे लिए यह इसलिए नहीं हो सकता है कि वह तो संकल्पपूर्वक बनाया गया राष्ट्र है। पर हमारा यह राष्ट्र संकल्पपूर्वक बनाया गया राष्ट्र नहीं है। यहाँ एकता की भावना और पवित्रता की भावना सब से स्मरण है, सब से विद्यमान है। इसलिए इस देश के लिए अमेरिका का नमूना लागू नहीं होता।

दूसरा उदाहरण स्वीटझरलैंड का दिया जाता है। स्वीटझरलैंड में तीन मुख्य भाषाएँ हैं। वैसे कुल चार भाषाएँ हैं, उनमें से एक गौण है। तीन भाषाएँ तो लगभग सबको आती हैं, इतनी आती हैं कि सब समझ सकते हैं। वहाँ की पार्लियामेन्ट में जब कोई अपनी भाषा में बोलने लगता है तो दूसरे सब उसकी भाषा को समझ लेते हैं, इसलिए वहाँ तीनों भाषाएँ पूरे स्वीटझरलैंड की भाषा है।

हमारे एक मित्र ने मुझसे कहा था कि यहाँ भी ऐसा कर देना चाहिए कि सारी चौदह भाषाएँ अखिल भारतीय भाषा हों। मैंने कहा, यहाँ की सब चौदह भाषाएँ अखिल भारतीय भाषाएँ तो हैं, लेकिन तब 'बेबिलोन' का 'टावर' हो जायेगा! यहाँ की पार्लियामेन्ट में अगर हर आदमी अपनी भाषा में बोलने लगेगा तो किसी की बात किसी की समझ में नहीं आने वाली है! स्वीटझरलैंड में हो सकता है, इसका कारण है—तीन ही भाषा और तीनों भाषाओं का शिक्षण स्वीटझरलैंड के सारे बालकों और बालिकाओं को दिया जा सकता है। इसलिए हमारे लिए यह दृष्टान्त लागू नहीं हो सकता।

तीसरा दृष्टांत रूस का है। इसकी ओर हमारा ध्यान केवल समाजवादियों या साम्यवादियों ने नहीं दिलाया, दूसरों ने भी उनकी बहुत प्रशंसा की। भारतवर्ष की मूलभूत एकता का प्रतिपादन करने वाले राधाकुमुद मुकर्जी, जयकर और बहुत से विचारक इस देश में हैं, जिन्होंने यह माना कि रूस का दृष्टान्त हमारे लिए लागू हो सकता है। और यहीं से साथियों के साथ मेरे मतभेद का प्रारम्भ हुआ। कॉंग्रेस ने पहले भाषानुसार प्रान्त-रचना को मान लिया और फिर उसका अगला कदम, भाषा के आधार पर राज्य-रचना भी मान लिया।

मेरा मतभेद यह रहा है कि इस देश की चौदह भाषाओं में जो कौटुम्बिक साधर्म्य है, वह रूस की भाषा में नहीं है। नर्मदा के उत्तर की जितनी भाषाएँ हैं उनमें केवल कौटुम्बिक नहीं, व्यावहारिक साधर्म्य भी है। कोई साधारण चतुर मनुष्य द्वारिका में सार्वजनिक भाषण सुने और गोहाटी में भी सुने, और थोड़े उच्चारणों के कारण जो अन्तर है, उसको समझ ले तो उसे इस देश की किसी भी भाषा का व्याख्यान समझ लेने में अधिक कठिनाई नहीं होगी। और वे सारी भाषाएँ एक लिपि में लिखी जायें तो आसानी से मालूम होंगी। केवल इतना है कि कहीं 'च' का 'स' होता है, कहीं 'स' का 'श' होता है, 'व' का 'ब' होता है, 'स' का 'ष' होता है, कहीं 'स' का 'ह' हो जाता है, इतना-सा सीख ले, तो बहुत कुछ उसे विचार नहीं करना पड़ता। यहाँ की भाषाओं में इतना कौटुम्बिक साधर्म्य है कि रूस की मिसाल इस देश के लिए लागू नहीं हो सकती और इसीलिए उस वक्त बहुत बड़ी गल्ती हुई, जब इस देश के समाजवादी, साम्यवादी और अन्य भाषावादी लोगों ने भाषा के नाम पर पाकिस्तान का भी समर्थन कर दिया था। पर बाद में उनको मालूम हुआ कि यह गल्ती हुई!

क्या भाषा का, सम्प्रदाय के साथ कोई संबंध हो सकता है? मैं आपका ध्यान इस तरफ दिलाना चाहता हूँ कि इस देश में शुद्ध भाषिक प्रश्न है ही नहीं। जब हम यह कहते हैं कि पाकिस्तान का एक अलग राज्य होना चाहिए, तब किस आधार पर कहते हैं? क्या भाषा के आधार पर कहते हैं? क्या पंजाब के मुसलमानों और हिन्दुओं की भाषा एक नहीं थी? क्या बंगाल के हिन्दुओं और मुसलमानों की भाषा एक नहीं थी? फिर किस आधार पर हमने यह कहा कि एक पंजाब के दो पंजाब होने चाहिए और एक बंगाल के दो बंगाल होने चाहिए! और उस वक्त यह केवल मुसलमानों ने नहीं कहा, बल्कि उस वक्त जो मुसलमानों के प्रतिस्पर्धी भाषावादी थे, उन लोगों ने भी यही कहा।

इसका परिणाम यह हुआ कि हमारे देश में भाषा का संबंध सम्प्रदाय के साथ जुड़ गया।

केवल ईसाइयों का सम्प्रदाय ऐसा है, जिसका भाषा के साथ संबंध नहीं है। दूसरा एक और इस देश में रहता रहा है, जो हमेशा सम्पूर्ण राष्ट्रीय रहा है। लेकिन वह बहुत अल्पसंख्यक रहा, इसलिए उसकी बहुत कदर नहीं—वह है पारसियों का। पारसियों की कभी अपनी अलग भाषा नहीं रही। गुजराती ही उनकी भाषा रही और आज भी उनकी भाषा वही गुजराती है। 'अवेस्ता' की भाषा गुजराती नहीं है, 'बाइबल' की भाषा कोई इस देश की भाषा नहीं है, लेकिन ईसाइयों की भाषा इस देश की भाषा है। पारसियों की भाषा गुजराती भाषा है। दूसरे सम्प्रदायों ने भाषा और लिपि के साथ अपने सम्प्रदायों को मिला दिया।

थोड़ी देर के लिए समझ लीजिये कि कल अगर मैं मुसलमान हो गया तो मुझे नाम बदलना पड़ेगा। तब इस देश की जो परम्परा है, वह मेरी परम्परा नहीं है। इस देश की परम्परा में जो महान् विभूतियाँ हुईं, वे मेरी कोई नहीं हैं। योरोप में चाहे रूस का योरोपियन हो, आज उसे योरोपियन नहीं कहते हैं। मैं कहता हूँ, जो रूस का चाहे योरोपियन हो, इंग्लैंड का हो या अमेरिका का हो, इन्होंने ग्रीस और रोम के प्राचीन साहित्य और इतिहास से इन्कार नहीं किया। उनके वे देवता, उनकी आख्यायिकाएँ, वे सारे के सारे उनके साहित्य में भरे हुए हैं। लेकिन यहाँ का जो मुसलमान है, उस मुसलमान के लिए यहाँ की परम्परा के लिए कोई आत्मीयता नहीं! इसलिए उसकी एक भारत-बाह्य निष्ठा है।

यह भारत बाह्य "एक्स्ट्रा टेरीटोरियल" निष्ठा जिस सम्प्रदाय में होगी वह सम्प्रदाय राष्ट्रीयता के विकास के लिए, राष्ट्रीय एकता के विकास के लिए महान् भयानक है। उन्होंने इस देश के इसलिए दो राष्ट्र और राज्य किये कि जिसके लिए धर्म और सम्प्रदाय मुख्य होता है, उसके लिए राष्ट्र धर्म मुख्य नहीं होता। सम्प्रदाय अन्तर्राष्ट्रीय, व्यापक होता है। एक तरह से, वह भौगोलिक सीमा को नहीं मानता। इसीलिए जो सम्प्रदाय निष्ठ व्यक्ति होगा, उसमें राष्ट्रीयता की भावना कम होती है। उसके सम्प्रदाय का बाहर का जो व्यक्ति होगा, वह उसके लिए यहाँ के भिन्न सम्प्रदाय के व्यक्ति से अधिक निकटतम होता है। इसलिए बाहर का मुसलमान यहाँ के मुसलमान से उसके लिए ज्यादा निकट का हो जाता है। इसके साथ भाषा और भाषा लिपि को मिला लिया गया।

दूसरा सम्प्रदाय सिक्खों का है। वे यह नहीं कहते कि सिक्ख धर्म का हमारा कोई राज्य हो। वे यह भी नहीं कहते कि सिक्खों का अलग कोई मुल्क हो। ये दोनों बातें वे नहीं कहते। इसके लिए उनको बधाई है, अभिनन्दन है! लेकिन कल अगर मैं सिक्ख हो जाऊँ, तो क्या पंजाबी और गुरुमुखी मेरी भाषा होगी? क्या गुरुमुखी मेरी लिपि और पंजाबी मेरी भाषा होगी? हिन्दू धर्म के चले कुछ दिन पहले सिक्ख बने हैं! अब उनकी भाषा क्या होगी? क्या वे 'ग्रन्थसाहब' गुरुमुखी में पढ़ेंगे?

ब्रह्म सत्यं जगत् स्फूर्तिः जीवनं सत्यशोधनम्

भूदानयज्ञ

लोकनागरी लिपि •

जरूरत है सेवकों की

हमने गाय को मानव-कुटुम्ब का हिस्सा माना है, अिसका अर्थ यह है कि हमने अेक अैसे समाजवाद की कल्पना की कि जिसमें गाय और बैल ग्रामीण अर्थशास्त्र के केन्द्र बन जाते हैं। अिस चीज का भान अुन लोगों को नहीं है, जो सिर्फ दुग्धपादी के लोभ से गोपालन और गोसंवर्द्धन की बात करते हैं। अिन्हीं के बैल के खिलाफ, जिन्हें भूमें बेकार करने वाला कोभी औजार अिस्तेमाल नहीं किया जाना चाहिये। निकम्मे जानवर पैदा न हों, अिस तरह का विज्ञान सोचना चाहिये। बैलों को भी अुनकी सेहत सुधारने के वास्ते कुछ काम देने की योजना करनी चाहिये। अलावा अिसके, अुनसे हमको दूध मिलता है, कमजोर जानवरों के लिये गोसदन न सिर्फ सरकार की ओर से, बल्कि महाजनों की ओर से भी चलने चाहिये। जानवरों के मल-मूत्र, हड्डी, चरम आदि का पूरा अुपयोग होना चाहिये। श्रीकृष्ण भगवान के समान कार्यकर्ता के हाथ गोबर से लिप्त रहने चाहिये। यह सब करेंगे, तभी गोपालन और संवर्द्धन हो सकेगा।

मुख्य जरूरत है, लगन से और ढंग से काम करने वाले सेवकों की। आशा करता हूं कि ऐसे सेवक अधिकाधिक मिलते जायेंगे।

—विनोबा

लिपि-संकेत: ि = ी ; ी = ी, ख = ख, संयुक्ताक्षर हलंत चिह्न से।

सम्पादकीय

राजनैतिक पार्टियों की पैंतरेबाजी

केरल की मुस्लिम लीग ने वहाँ की कांग्रेस और प्रजा-समाजवादी पार्टी के साथ मिल कर बनाये हुए "त्रिगुट" से निकल जाने का जो फैसला किया है, उससे और कुछ नहीं तो कम-से-कम राजनैतिक क्षेत्र की एक विसंगति और अस्पष्टता तो समाप्त होगी। साधारण नागरिक के लिए यह समझना मुश्किल था कि जब कांग्रेस एक ओर इस बात का बार-बार ऐलान करती थी कि वह किसी भी "साम्प्रदायिक दल" से गठबन्धन नहीं करेगी तो वह केरल की राजनीति में मुस्लिम लीग के साथ समझौता कैसे कायम रखे हुए है। मुस्लिम लीग ने अब इस दुविधा की स्थिति को दूर करके कांग्रेस पर एक तरह का उपकार ही किया है। अभी पाँच महीने पहले ही केरल की विधान सभा के अध्यक्ष पद के चुनाव को लेकर कांग्रेस और मुस्लिम लीग दोनों ने अजीब अवसरवादिता का परिचय दिया था। कांग्रेस ने यह जाहिर किया था कि वह किसी ऐसे उम्मीदवार का समर्थन नहीं करेगी, जो किसी साम्प्रदायिक दल से सम्बन्धित हो, पर मुस्लिम लीग के श्री मोहम्मद कोया ने चुनाव के कुछ घण्टे पहले ही जब मुस्लिम लीग से इस्तीफा दिया तो कांग्रेस के समर्थन से ही वे विधान सभा के अध्यक्ष चुने गये। हमने उस समय इस बात पर आश्चर्य प्रकट किया था कि एक व्यक्ति जो चन्द घण्टे पहले तक उस पद के लिए अस्वीकार्य था, वह अपने दल की औपचारिक सदस्यता छोड़ देने मात्र से कैसे समर्थन योग्य हो गया? अब मुस्लिम लीग का यह फैसला होते ही कि वह त्रिगुट से अलग हो रही है, श्री कोया ने भी विधान सभा के अध्यक्ष-पद से इस्तीफा देने का और "वापस" मुस्लिम लीग में शामिल होने का फैसला जाहिर किया है। क्या यह इस बात का सबूत नहीं है कि श्री कोया ने मुस्लिम लीग की सदस्यता नाम-मात्र के लिए ही छोड़ी थी? राजनैतिक पार्टियाँ और राजनैतिक लोग किस प्रकार पैंतरा बदलते हैं, यह वास्तव में साधारण नागरिक के लिए एक हैरानी का विषय है। ऐसी स्थिति में यह स्वाभाविक ही है कि राजनैतिक व्यक्तियों के वचन पर से आम लोगों की श्रद्धा उठ गयी है।

शर्मनाक रवैया

जिस व्यक्ति का नाम दुनिया के इतिहास के बड़े-से-बड़े नामवर लोगों की श्रेणी में लिया जाता था, और करोड़ों लोगों की नजरों में जो एक देवता ही था, उसकी मृत्यु के सिर्फ आठ वर्ष बाद ही जिस तरह न केवल उसके नाम की छीछालेदार की जा रही है, बल्कि उसकी 'मिट्टी' भी 'पलीद' की जा रही है, वह आश्चर्यजनक तो है ही, साथ ही अत्यन्त अशोभनीय भी है। स्तालिन का शव लेमलिन के खास मकबरे में रहे या साधारण कब्रिस्तान में। उससे न दुनिया के लोगों को बहुत वास्ता है, न मृत व्यक्ति पर खुद पर कोई असर हो सकता है। लेकिन जिन लोगों ने यह सारा नाटक खेला है, उनको जरूर वह दुनिया की नजरों में नीचा गिराने वाला है। सामान्य तौर पर दुनिया के लोग यह जानते ही थे कि साम्यवादी रूस में 'बड़प्पन', 'नेतृत्व' और 'सत्ता' का एक ही आधार है और वह है निरा पशुबल। जब तक स्तालिन जीवित था और रूस की सैनिक-शक्ति उसके काबू में थी तब तक ख्रुश्चेव या दूसरे लोग जो आज स्तालिन के 'अन्यायों' का भण्डाफोड़ कर रहे हैं, चूं तक नहीं कर सकते थे। स्तालिन की मृत्यु के बाद जब तक सैनिक-शक्ति और हिंसा की ताकत मेलेन्कोव और बेरिया दोनों लोगों के पास बराबर बँटी रही, तब तक दोनों पक्के 'क्रांतिकारी,' 'साम्यवादी' और 'देशभक्त' थे, पर जरा-सा सन्तुलन पलटा कि बेरिया 'गद्दार' और 'साम्यवाद का शत्रु' घोषित किया गया और गोली से उड़ा दिया गया। क्या दुनिया के लोग आज भी इतना नहीं समझते होंगे कि ख्रुश्चेव भी आज जो कुछ कर रहा है वह हिंसा की ताकत के बल पर ही, और उसके समर्थन करने वाले लोगों में अधिकांश इसीलिए वैसा कर रहे होंगे कि उसके विपरीत कुछ भी करना जान के लिए खतरनाक है? कोई ताज्जुब नहीं अगर ख्रुश्चेव के मरने के बाद उसके 'अन्यायों' का भी इसी तरह भण्डाफोड़ हो और उसे सम्मान के शिखर से इसी तरह गिराया जाय।

—सिद्धराज

एकता-सम्मेलन : एक शुभ लक्षण

सर्व सेवा संघ का प्रस्ताव

अखिल भारत सर्व सेवा संघ की प्रबन्ध-समिति ने ता० २ से ४ नवम्बर, '६१ की अपनी बैठक में राष्ट्रीय एकता-सम्मेलन के सिलसिले में स्वीकृत अपने एक प्रस्ताव में एकता-सम्मेलन बुलाये जाने पर हार्दिक सन्तोष प्रकट किया है। प्रस्ताव में आगे चल कर प्रबन्ध-समिति ने कहा है कि राष्ट्र के नेताओं द्वारा इस प्रकार का कोई कदम उठाया जाना अत्यन्त समयानुकूल था।

"भारत के लोगों में राजनैतिक, धार्मिक, जातीय, भाषागत या दूसरे जो कोई भी भेद हों, कम-से-कम एक चीज ऐसी है, जिसके बारे में सभी को एकमत होना चाहिए—वह है देश की एकता और उसकी अखण्डता की रक्षा। किसी भी प्रकार का मतभेद राष्ट्रीय-एकता के प्रयत्नों में बाधक नहीं होना चाहिए। अतः सर्व सेवा संघ की प्रबन्ध समिति इस बात को भविष्य के लिए एक अच्छा लक्षण मानती है कि दिल्ली-सम्मेलन में भिन्न-भिन्न राय रखने वाले और भिन्न-भिन्न हितों का प्रतिनिधित्व करने वाले व्यक्ति आजादी के बाद पहली बार इकट्ठे मिले और कई बातों पर बहुत हद तक एकमत हुए।

प्रबन्ध-समिति को इस बात की विशेष प्रसन्नता है कि नागरिकों द्वारा शांति-प्रतिज्ञा लिये जाने का सर्व सेवा संघ का सुझाव सम्मेलन ने मान्य किया है। सत्य और प्रेम के सिद्धान्तों की, और अपनी शक्ति की, मर्यादा में समिति राष्ट्रीय एकता परिषद (कौंसिल) को आश्वासन देती है कि शान्ति-प्रतिज्ञा सम्बन्धी तथा उसके अन्य कार्यक्रमों में सर्व सेवा संघ का और, अगर वह उनकी ओर से बोलने की धृष्टता करे तो, देश के रचनात्मक कार्यकर्ताओं का सम्पूर्ण सहयोग उसे मिलेगा।"

काँग्रेस का चुनाव-घोषणापत्र

सुरेश राम

आगामी फरवरी १९६२ में आम चुनाव होने वाला है। उसकी तैयारी की धूम मची है। विभिन्न राजनीतिक दल अपने घोषणा-पत्र देश के सामने पेश कर रहे हैं। यहाँ हम कांग्रेस पार्टी के घोषणा-पत्र पर संक्षेप में विचार करेंगे। गत ४ अक्टूबर को दक्षिण भारत की सुप्रसिद्ध नगरी मदुरा में अखिल भारत कांग्रेस कमेटी की एक बैठक में यह घोषणा-पत्र जाहिर कर दिया गया।

यह घोषणा-पत्र मूल अंग्रेजी में है, जिसमें साढ़े छह हजार से ऊपर शब्द हैं। खासा लम्बा है। लेकिन खुशी की बात कि इसकी भाषा में संयम और नम्रता है। व्यर्थ की डींग नहीं मारी गयी है और न काँग्रेस ने अपनी कोई तारीफ ही की है। ज्यादा श्रेय का भी अपने लिए दावा नहीं किया है। देश में जो आज आम तौर से जन-मानस दुःखी है, *उसकी झलक भी उसमें मिलती है। इससे पता चलता कि काँग्रेस अपनी* जिम्मेदारी को महसूस कर रही है।

साथ ही, इसमें चार चाँद लग जाते, यदि काँग्रेस अपनी भूलें भी दिल खोल कर *सामने रखती और उन्हें कबूल करती।* कम-से-कम उस एक चीज का तो जिक्र उसे करना ही चाहिए था—केरल में चुनाव के लिए मुसलिम लीग के साथ गठ-बन्धन। देश का हर नागरिक जानता है, काँग्रेसमैन तो बखूबी जानते हैं और रह-रह कर महसूस भी करते हैं कि अगर केरल में काँग्रेस ने केवल सत्ता की खातिर वह दुःखद कदम नहीं उठाया होता, तो आज देश में साम्प्रदायिक समस्या यह रूप नहीं लेती और हमारी एकता इतने बड़े संकट में न पड़ जाती। शायद काँग्रेस ने यह समझा कि इस तरह भूल मानने से पार्टी को नुकसान पहुँचेगा। मगर इससे देश को तो जरूर फायदा पहुँचता। मजबूर होकर यह कहना पड़ता है कि आज काँग्रेस के चिन्तन और प्रयत्नों में, काँग्रेस पार्टी पहले आती है, भारत देश बाद में।

नियोजन और विकास

काँग्रेस के चुनाव-घोषणापत्र का काफी हिस्सा, लगभग तीन-चौथाई हिस्सा देश की आर्थिक गतिविधि से सम्बन्ध रखता है और नियोजन तथा विकास की सफलता, आवश्यकता और सम्भावनाओं पर रोशनी डाली गई है। उसमें कहा गया है कि अनेक खतरों और चट्टानों का सामना करते हुए काँग्रेस, राज्य का जहाजी बेड़ा सावधानी से खेती रही है। प्रगतिशील समाजवादी अर्थनीति का इसका लक्ष्य रहा है और व्यक्ति के विकास व स्वतंत्रता पर उसने पूरा जोर दिया है। घोषणा-पत्र के शब्दों में :—

> "सामने जो काम है, वह बहुत मुश्किल है और इस अरसे में बहुत सी नाउम्मेदियाँ और नाकामयाबियाँ भी हुई हैं। लेकिन गलतियों और भूलों के बावजूद और हर साल होने वाली प्राकृतिक मुसीबतों के बावजूद और विश्वव्यापी शीत-युद्ध व संघर्षों से पैदा होने वाली कठिनाइयों के बावजूद, हिंदुस्तान की जनता के कदम अपनी महान् दीर्घयात्रा की अगली मंजिल की तरफ लगातार बढ़ते रहे हैं।"

इससे कौन इन्कार करेगा? मगर दुःख यह है कि इस 'तीर्थयात्रा' का भान खुद उसके अधिकांश यात्रियों को नहीं हो रहा है। अजीब स्थिति है कि यात्रा की गाड़ी को चलाने वाले तो महसूस करते हैं कि हम आगे बढ़े, मगर जो शेष मुसाफिर हैं उनको ऐसा लगता है कि हम वहीं के वहीं पड़े हैं।

आर्थिक विषमता और बेरोजगारी

भारत के संविधान में इस तथ्य पर बड़ा जोर दिया गया है कि देश का आर्थिक नियोजन इस पद्धति से हो कि विषमता कम हो और लोग एक-दूसरे के ज्यादा निकट आयें। इस चुनाव घोषणा-पत्र में भी कहा गया है कि भारत की बुनियादी समस्या केवल यह नहीं है कि लोगों की रहन-सहन का स्तर उठाया जाये, बल्कि यह है कि तेजी के साथ सामाजिक और आर्थिक समानता स्थापित हो। उसमें चेतावनी दी गई है कि व्यक्ति को प्रोत्साहित करने के लिए साधन व सुविधा तो मिलनी चाहिए, मगर वे इस प्रकार से न दिये जायें कि समाज में ज्यादा विषमता बढ़ जाये और कुछ लोग दूसरों का शोषण करते रहें। यह सिद्धान्त बड़ा सुन्दर है और आवश्यक है।

लेकिन दुःख की बात है कि घोषणा-पत्र ने इस बात पर कोई ध्यान नहीं दिया कि गत दस वर्षों में देश में, नियोजन के बावजूद, आर्थिक विषमता बढ़ी है। यही नहीं है, जो हमारे दीन-दुःखी भूमिहीन मजदूर हैं, उनकी दशा और भी ज्यादा कमजोर पड़ गई है। कैसे आश्चर्य की बात है कि

> देश में जो औद्योगिक कम्पनियाँ हैं, उनमें जो पूँजी लगी है, उसका ६७ प्रतिशत, केवल दस परिवारों के हाथ में है। चाय, काफी और रबर के बागान गिने-चुने लोगों को करोड़पति बनने जा रहे हैं। देश की आमदनी में जो वृद्धि होती है, उसका लाभ थोड़ों तक ही सीमित है।

घोषणा पत्र में कहा गया है कि टैक्सों द्वारा शहर की आमदनी पर पाबन्दी लग रही है और आर्थिक विषमता भी कम होगी। मगर सच यह है कि पिछले दस साल में, प्रत्यक्ष टैक्स (डाइरेक्ट टैक्स) में कमी आई है और परोक्ष टैक्स (इनडाइरेक्ट टैक्स) बढ़े हैं। इसका प्रमाण यह है कि

> १९५१-५२ में देश की आमदनी जहाँ ९,९७० करोड़ रुपये थी, १९६०-६१ में १४,५०० करोड़ रुपये हो गई। लेकिन इस दौरान में इन्कम टैक्स की आमदनी की प्रतिशत टैक्स की आमदनी की प्रतिशत १९६ से घट कर १८३ रह गयी! फिर, "आय और सम्पत्ति" पर १९५१-५२ में प्रत्यक्ष टैक्स द्वारा कुल टैक्स आय का जहाँ ३२ ६ प्रतिशत थी, १९६०-६१ में वह २९५ प्रतिशत ही रह गई !! और परोक्ष टैक्स की आमद ५९·३ से बढ़कर ६२७ प्रतिशत पर पहुँच गई !!!

नियोजन के दौरान में खेतिहर मजदूरों की जो हालत हुई है, उस बारे में सरकार की ओर से दूसरी खेतिहर मजदूर जाँच-समिति की रिपोर्ट ही निकल गई है। उसके अनुसार इन मजदूरों के काम के दिन घटे हैं, इनकी औसत मजदूरी कम हुई है और कर्ज का बोझ ज्यादा बढ़ गया है। आर्थिक विषमता की वृद्धि की भयानकता का अन्दाज इससे हो सकता है।

और जहाँ तक बेरोजगारी का सवाल है, वह लगातार बढ़ रही है। पहली और दूसरी योजनाओं के बीच उसकी स्थिति इन आँकड़ों से पता चलती है।

(१) दूसरी योजना के आरम्भ (लाखों में) में पुराने बेरोजगारों की संख्या— ५२

(२) योजना के दौरान में काम करने वालों की वृद्धि— १००

(३) दूसरी योजना में काम पाने वालों की संख्या— ६५

(४) योजना के अन्त में बेकारों की संख्या— ८८

(५) कम काम पानेवाले की संख्या—१५०

ऊपर से बढ़ती हुई महँगाई है। साथ ही देहात में लाखों-करोड़ों ऐसे पड़े हैं, जिनका नाम-लेवा, पानी-देवा भी कोई नहीं है, जिन्हें एक जून भरपेट खाना भी नसीब नहीं होता। घोषणा-पत्र में इस रोग के निराकरण का कोई आश्वासन नहीं मिलता।

खेती और भूमि-सुधार

हमारा देश देहात में रहता है और उसका आधार खेती है। इसलिए खेती भारतीय अर्थनीति का सबसे महत्त्वपूर्ण अंग है। घोषणा-पत्र में उसको मान्यता दी गई है। यह भी बतलाया गया है कि अनाज के उत्पादन का दूसरी योजना में लक्ष्य ८०५ लाख टन था। सौभाग्य से इसमें पूरी सफलता मिली और उत्पादन ७९३ लाख टन हुआ। लेकिन विदेशों से अनाज अभी तक आ रहा है और आता रहेगा।

> बड़े खेद की बात है कि अन्न-स्वावलम्बन की महत्ता नहीं महसूस की जाती और उस पर आवश्यक जोर भी नहीं दिया जा रहा है। तम्बाकू, ईख और पटसन आदि पर ज्यादा जोर देना हमारे लिए घातक सिद्ध हो रहा है।

उत्पादन निर्भर करता है भूमि वितरण पर। आज देखते क्या हैं कि जो जमीन के मालिक हैं, वे आम तौर से खुद जोतते बोते नहीं और जो जोतते-बोते हैं, उनके पास जमीन नहीं है, या बहुत थोड़ी है। भूमि का यह असमान वितरण उत्पादन में सबसे बड़ी बाधा है। यह सही है कि विभिन्न प्रदेशों में जोत की जमीन की उच्चतम सीमा (सीलिंग) के कानून बन गये हैं। लेकिन उन पर अगर ठीक से अमल हो तो मुश्किल से नौ-दस लाख एकड़ जमीन निकलेगी। इससे क्या पथ्य होगा उस देश का, जहाँ एक करोड़ भूमिहीन परिवार हैं?

इस दिशा में काँग्रेस खुद उदासीन दीखती है। भूमि समस्या को लेकर काँग्रेस घर घर पहुँच सकती थी और जनता जनार्दन को अपना संदेश दे सकती थी। लेकिन घोषणा पत्र से ऐसा नहीं लगता कि वह दरिद्रनारायण की खातिर कोई तकलीफ उठाने को राजी है। आज वह लाचारी की हालत में फँसती जा रही है और उसका काम यही होता जा रहा है कि सरकार के कारनामों का समर्थन करे। यह सच है कि समाजवादी ढाँचे का लक्ष्य सरकार ने काँग्रेस के ही कारण स्वीकार किया, मगर उस लक्ष्य पर सरकार को पहुँचाने के लिए काँग्रेस को अगुवाई करनी चाहिए। ऐसा न कर, वह उलटे सरकार के पीछे चलती है तो उसमें प्राणवान शक्ति कहाँ से आ सकेगी!

राष्ट्रीय एकता

आज सबसे बड़ा सवाल राष्ट्रीय एकता का है। अगर एकता रहती है, तो देश टिकता है और हम सबका जीवन सार्थक है। कई तरह से, इस एकता को आज चोट पहुँच रही है। घोषणा-पत्र में इसके अनेक पहलुओं पर विचार किया गया है। उसमें कहा गया कि जातिवाद राजनीतिक क्षेत्र में आ घुसा और चुनाव में उसने गुटबन्दी का रंग लिया। फिर,

राजनीतिक सत्ता के प्रलोभन के कारण भेद-भाव खड़े हो गये और अनेक राजनीतिक दल बन गये और लोगों के अन्दर से जो शक्ति फूटी, वह अक्सर गलत दिशा में चली गई। सम्प्रदायवाद और जाति-पाँत ने अपना सिर दुबारा उठाया और लोगों की प्रगति में बाधा आई। कांग्रेस के इस स्पष्ट कथन पर हम उसे बधाई देते हैं। लेकिन जैसा हम पहले ही संकेत कर चुके हैं, उसको अपना दोष भी स्वीकार करना चाहिए था और ऐलान करना चाहिए था कि केरल में मुस्लिम लीग के साथ कंधे से-कंधे मिला कर चुनाव लड़ने में उसने गलती की।

घोषणा पत्र में कहा गया है कि कांग्रेस एक संयुक्त, असाम्प्रदायिक और धर्मनिरपेक्ष भारत को सदा मानती रही है और आज भी मानती है। उसे विश्वास है कि इसी आधार पर देश बढ़ सकता है और महान् बन सकता है। एकदम ठीक। लेकिन सवाल यह है कि अपने इस विश्वास की खातिर सन् १९४६-४७ तक तो कांग्रेस बड़ी-से-बड़ी कीमत चुकाती थी, हर तरह के बलिदान के लिए तैयार थी, मरने मिटने को राजी थी। मगर आज वह सत्ता नहीं छोड़ेगी, खुद कोई कीमत नहीं देगी, बलिदान से कोसों दूर है। तब फिर उसके शब्दों में तेज कहाँ से प्रकट होगा? वह कैसे विरोधी शक्तियों से टक्कर ले सकेगी? वह कैसे देश का आवाहन कर सकेगी?

कांग्रेस कसौटी पर

सचमुच आज कांग्रेस कसौटी पर है। जाहिर बात है कि चुनाव में वह जीत ही जायेगी। लेकिन इससे उसका सत्ता का नशा बढ़ेगा, वह अपने में ही केन्द्रित होती जायेगी, जन मानस की वह और उपेक्षा करेगी। और अगर वह हारती है तो वह अपनी खुद की दृष्टि में दीन हीन बनती है। साँप-छछुन्दर की सी गति है—हारने में भी खतरा, जीतने में भी खतरा है। राष्ट्रपिता महात्मा गांधी को यह सब दर्शन हो गया था और इसीलिए उन्होंने कांग्रेस को सलाह दी थी कि अपने को समेट ले और जन-सेवा के लिए लोक-सेवा संघ का रूप ले। अभी तक उसे यह आरोहण मान्य नहीं है।

बड़ी उत्सुकता से दुनिया भारत की तरफ देख रही है। हमारे बड़े-बड़े दावे हैं और ऊँचे-ऊँचे सिद्धान्त हैं। कांग्रेस उनका प्रतीक बन कर सामने खड़ी है। मगर उसके पैर लड़खड़ा रहे हैं और बदन काँप रहा है। प्रभु से यही विनती है कि उसे सुबुद्धि और साहस प्रदान करे, ताकि वह भारत की जनता में अपने को विलीन कर दे और इस प्रकार संसार को एक अद्भुत शक्ति का दर्शन करा सके।

कई भाषाएँ पढ़ने-पढ़ाने का आसान ढंग

कुमारी रमारानी शर्मा

भारत में अनेक भाषाएँ हैं। प्रमुख १४ भाषाएं तो शासन-विधान में स्वीकार की गई हैं। इस समय की बहती हुई हवा से तो ऐसा लगता है कि प्रत्येक भारतीय को दो-तीन भारतीय भाषाएं सीखना अनिवार्य होगा, सिकुड़ती हुई दुनिया से सम्पर्क बनाये रखने के लिए दो-एक विदेशी भाषाएँ भी जानना आवश्यक होगा। इस प्रकार प्रत्येक शिक्षित भारतीय को चार-पाँच भाषाएँ सीखनी होंगी।

कई भाषाओं का सीखना हमें अभी अजीब-सा लग रहा है, पर विदेशों में ऐसा हो रहा है और इस ढंग से किया जा रहा है कि विद्यार्थियों को बोझ नहीं लगता तथा वह आसानी से उनमें निपुणता प्राप्त कर लेते हैं। पूर्वी योरोप के एक छोटे देश, हंगरी में भी कई विदेशी भाषाएँ सिखाने का कार्य हाल ही में शुरू किया गया है।

"जितनी भाषाएँ आप जानते हैं, उतनी ही अधिक आपकी कीमत है"—ऐसा हंगरी में प्रायः कहा जाता है। यह बात सन् १९५० से कही जाने लगी। जब वहाँ के चुने हुए, प्राइमरी स्कूलों के चार ऊँचे दर्जों में विदेशी भाषाओं का पढ़ाना चालू किया गया और तब से कई भाषाओं का ज्ञान सभी सुसंस्कृत स्त्री पुरुष के लिए आवश्यक हो गया है।

१० वर्ष से १४ वर्ष की आयु वाले बालकों को विदेशी भाषाएँ पढ़ायी जाती हैं और इन्हें पढ़ाने के लिए काफी अध्यापक होते हैं। हजारों अध्यापकों ने विभिन्न भाषाएँ पढ़ाने का ढंग सीखना प्रारम्भ किया। विदेशी भाषाओं के अध्यापकों की कमी को दूर करने के लिए अवकाश प्राप्त अध्यापक एक बार फिर काम पर आ गये। रूस व जनवादी जर्मन गणतंत्र से अनेक अध्यापक हंगरी में विदेशी भाषाओं को पढ़ाने का ढंग अध्यापकों को सिखाने के लिए आ गये और कितने ही हंगेरियन अध्यापक विदेशी भाषाओं के अपने ज्ञान को सुधारने के लिये विदेश गये। इन जोरदार प्रयत्नों का फल यह हुआ कि इस समय ६,५०,००० विद्यार्थी रूसी भाषा सीख रहे हैं, जो अनिवार्य कर दी गयी है। अन्य ७०,००० विद्यार्थी अंग्रेजी, फ्रेंच और जर्मन भाषाएँ सीख रहे हैं।

सप्ताह में दो घंटे अंग्रेजी पढ़ाई जाती है और तीन घंटे रूसी भाषा। प्राइमरी स्कूलों में ४ वर्ष तक विदेशी भाषाएँ पढ़ाने से बच्चे ५०० शब्द सीख जाते हैं (रूसी भाषा के १०००)। इनके आधार पर वह उनको बोलने लगते हैं और सेकंडरी स्कूलों में अपनी पढ़ाई जारी रख सकते हैं। विदेशी भाषा का पढ़ना मनोरंजक बनाने के लिए कई साधन इस्तेमाल किये जाते हैं, जिनमें दिखाने वाली व यांत्रिक चीजें भी होती हैं। अनेक स्कूलों में टेप रेकार्डर होते हैं, जो पाठों को विद्यार्थियों के सामने सुनाते हैं। शुद्ध बोलने वाले विशेषज्ञ ही बोलते हैं। शब्दों, वाक्यों आदि को बार बार कहने से—जिनका बिल्कुल शुद्ध तरीके से उच्चारण किया जाता है, बच्चों को शुद्ध उच्चारण करने को प्रेरित करते हैं। बच्चों के लिये उपयुक्त कहानियाँ, कविताएँ, जो शुद्ध तरीके से बोलना सिखाती हैं, उनके सामने सुनाई जाती हैं। अध्यापक नये शब्दों और वाक्यों का अर्थ समझाता जाता है।

बुडापेस्ट के एक स्कूल में अध्यापकों और विद्यार्थियों ने मिल कर एक 'इलेक्ट्रो-मैग्नेटिक बोर्ड' बनाया है, जिसमें अनेक बल्ब लगे हैं, जो बटन दबाने से जलते हैं। अध्यापक एक शब्द को छोड़ कर एक जुमला लिखता है और छूटे शब्द को विद्यार्थी बताते हैं। जो छात्र ठीक शब्द बता देता है, वह दबाने का हक प्राप्त करता है। जो नहीं बता पाता, उसे खेल से हटना पड़ता है। अंग्रेजी के विद्यार्थी पहेलियाँ याद कर लेते हैं, गुब्बारे ले लेते हैं और पाठ के समय अंग्रेजी खेल खेलते हैं। वे आस्ट्रेलिया के भौगोलिक बातें पढ़ते हैं, इंग्लैण्ड के रीति-रिवाजों या महापुरुषों के जीवन से परिचय प्राप्त करते हैं। क्लास में सारी कार्यवाही अंग्रेजी में होती है। इनमें हंगेरियन भाषा का इस्तेमाल नहीं होता।

हंगरी की सरकार का शिक्षा विभाग भाषाएँ सिखाने वाला एक सचित्र मासिक पत्र अंग्रेजी, रूसी, जर्मन तथा फ्रेंच में प्रकाशित करता है। यह विद्यार्थियों में अत्यधिक लोकप्रिय है। प्रसिद्ध महाग्रन्थों का सरल रूप, कहानियाँ, हास्यचित्र आदि जो इसमें प्रकाशित किये जाते हैं, स्कूलों में विदेशी भाषाएँ सीखने को प्रोत्साहन देते हैं। यह पत्र इतना लोकप्रिय है कि इस समय उसकी ८० हजार प्रतियाँ छपती हैं।

अगले वर्ष वहाँ विद्यार्थियों के लिये विशेष प्रकार से तैयार किये हुए अंग्रेजी, फ्रेंच, जर्मन आदि के कोश प्रकाशित किये जायेंगे। जो विद्यार्थी विदेशों में पत्रव्यवहार के द्वारा मित्र कायम करने के लिये उत्सुक हैं, उनके लिये अलग से छोटी-छोटी पुस्तिकाएँ प्रकाशित की गई हैं। इनमें आम प्रचलित वाक्यों को दिया गया है। इनसे हजारों विद्यार्थियों को सहायता मिलती है, जब वे अपने कलम के दोस्तों (पेन-फ्रेंड्स) को लन्दन, पैरिस, बर्लिन, मास्को आदि में पत्र लिखते हैं।

इस प्रकार बच्चों के लिये विदेशी भाषाएं सीखने का कार्य सरल हो जाता है और उन्हें उसमें रुचि उत्पन्न हो जाती है। इससे उन्हें उनका अच्छा ज्ञान प्राप्त करने के लिये प्रोत्साहित करता है। जो कई भाषाएँ जानते हैं, उनको वेतन आदि अच्छा मिलता है और तरक्की की सुविधाएँ भी अधिक होती हैं।

क्या भारत में भी इस प्रकार के ढंग अपना कर हम यह अति कठिन मालूम पड़नेवाले कार्य को आसान और व्यावहारिक रूप नहीं दे सकेंगे?

['नई तालीम' से]

साहित्य-समीक्षा

मैं इनका ऋणी हूँ: ले० इन्द्र विद्यावाचस्पति, पृष्ठ ११४, मूल्य २ रुपया। प्रकाशक: सस्ता साहित्य मंडल, कनाट सर्कस, नई दिल्ली।

संस्मरणों का यह संग्रह तिलक, बापू, नेहरू, मालवीय, लाजपतराय, पटेलजी, आजाद जैसे आजादी के सेनानियों को जहाँ अपने क्रोड में समेटे हुए है, वहाँ प्रेमचन्द, देवदास गांधी जैसे साहित्यकार और पत्रकार तथा लेखक के पिता जैसे समाज-सेवी के संस्मरणों से भी यह पुस्तक बड़ बोलता जादू सिद्ध हुई है। लेखकों की सहृदयता, संयम, निष्ठा तथा तटस्थ होकर अध्ययन करने और उसे निर्भीकता के साथ व्यक्त करने की सशक्त शैली उनकी मौलिकता की कुछ विशेषताएँ हैं, जिनके कारण इन संस्मरणों को आदरणीय स्थान दिया जायगा। भाषा सरल, मुहावरेदार और चित्रात्मक है, जिससे ये चित्र सजीव हो गये हैं।

बापू के कारावास की कहानी: ले० सुशीला नैयर, पृष्ठ ४०२, मूल्य रु. २-५० प्रकाशक—उपर्युक्त।

इस पुस्तक में गांधीजी के आगाखाँ महल (दिल्ली) के निवास-काल का वर्णन डायरी के रूप में किया गया है। यह डायरी स्वयं गांधीजी द्वारा देखी गयी और संशोधित है। इसी कारण इसका इतना अधिक महत्त्व स्वीकार किया गया है कि इसे इतिहास के साथ रखा गया है। आज बापू के आदर्शों को अधिकाधिक व्यापक और व्यवहार्य बनाने की आवश्यकता है। आशा है, इस दिशा में मदद मिलेगी।

—मथुराम्ल

गोधन का महत्त्व और विकास • उच्छंगराय नवलशंकर ढेबर

[अ० भा० सर्व सेवा संघ की कृषि-गोसेवा समिति और केन्द्रीय गोसंवर्धन परिषद के अध्यक्ष श्री ढेबर भाई ने भारतीय समाज और संस्कृति में गाय की उपयोगिता की चर्चा करते हुए, उसके विकास के लिये सुझाव और कार्यक्रम प्रस्तुत किये हैं, जिन्हें हम गोपाष्टमी सप्ताह के निमित्त सादर प्रकाशित कर रहे हैं।—सं०]

भारतीय संविधान के अंतर्गत राज्य इस बात के लिये वचनबद्ध है कि भारत के पशुधन का परिरक्षण और विकास करे, और विशेष रूप से गाय और उसकी संतति की व्यवस्था करें। बहुधा सवाल पूछे जाते हैं कि इस दिशा में क्या किया जा रहा है और दूसरे, तथाकथित रूढ़िग्रस्त भावनात्मक लोग जिस परंपरागत पद्धति पर जोर देते हैं, क्या उस पद्धति से गाय को बचाना सम्भव है? इन सवालों के जवाब विवादास्पद हैं। केंद्रीय गोसंवर्धन परिषद तो रचनात्मक और ठोस काम पर ही जोर देना चाहेगी।

गोरक्षा मुझे मनुष्य के सारे विकास-क्रम में सबसे अलौकिक चीज मालूम हुई है। गाय का अर्थ मैं इन्सान के नीचे की सारी मूक दुनिया से करता हूँ। इसमें गाय के बहाने इस तत्त्व द्वारा मनुष्य को सभी चेतन-सृष्टि के साथ आत्मीयता अनुभव कराने का प्रयत्न है।

* * *

मेरी गहरी-से-गहरी दो मनोकामनाएँ हैं: एक अस्पृश्यता-निवारण और दूसरी गोसेवा। इनकी सिद्धि में ही मुझे मोक्ष दिखाई देता है।

—महात्मा गांधी

हमारे पशुधन के विकास और परिरक्षण के क्षेत्र में तीन तत्त्व चिन्तन और कार्य कर रहे हैं। सब से पहला तत्त्व है, गोशाला कार्यकर्ता। भारत में करीब ३००० गोशालाएँ और पिंजरापोल हैं। यह नहीं कहा जा सकता कि इन सभी में प्राचीन और अप्रचलित पद्धति के अनुसार कार्य किया जा रहा है। कुछ गोशालाएँ वैज्ञानिक पद्धति के मुताबिक चलायी जा रही हैं और सरकारी 'डेअरी फार्म' तक उन्हें कुशल पशु-प्रजनन की अच्छी मिसाल के रूप में स्वीकार कर सकते हैं। महाराष्ट्र राज्य में पूना के पास उरुलीकांचन में गोशाला है, जिसमें हुई प्रगति के नतीजे, किसी भी स्तर और कसौटी के आधार पर बहुत शानदार हैं। इस गोशाला की गायें, प्रतिदिन ३० से ५० पौंड तक दूध देती हैं और ब्यात-काल के दौरान का इनका औसत ५ और ७ हजार पौंड के बीच का है।

पर्याप्त ज्ञान के अभाव के कारण गोशाला-कार्यकर्ता को भावुक और भावनात्मक व्यक्ति कह कर जो उसकी निन्दा करते हैं, उन्हें आँकड़ों से ज्ञात हो जायगा कि गोशाला-कार्यकर्ता की भी अपनी एक दृष्टि है। वह महसूस करता है कि गाय और उसकी संतति को राष्ट्र के न सिर्फ आध्यात्मिक विकास में, बल्कि उसके आर्थिक विकास में भी योगदान करना है। उसका विचार है *कि प्रकृति के नियमों की योजना में एक* सन्तुलन है, जिसमें स्वार्थ और संकुचित हितों की वजह से स्वेच्छाचारी तरीके से दखल दिया जा रहा है।

दूसरा तत्त्व है, पशुपालन कार्य के प्रशासन से सम्बन्धित व्यक्ति। वह भी संविधान की धाराओं को क्रियान्वित करने का भरसक प्रयत्न कर रहा है। उसकी कार्य प्रगति के नतीजे भी प्रभावशून्य नहीं है। किसान के रूढ़िवाद और पशु-प्रजनन के पिछड़ेपन और निरक्षरता के बीच, पशुपालन कार्यकर्ता दिन-प्रतिदिन अपनी जिम्मेवारियों को पूरा करने में निरन्तर लगा रहता है। सरकारी अधिकारियों में बहुत-से ऐसे हैं, जिनकी गाय और गाय की संतति में उतनी ही दिलचस्पी है, जितना कि गोशाला-कार्यकर्ताओं की है।

तीसरा तत्त्व है, विशेषज्ञ। नीतियाँ निर्धारित करना उसका काम नहीं है। नीति निर्धारित करने वालों को सही निर्णयों पर पहुँचने में मदद करना, उसका कार्य है। विशेषज्ञ उनके सामने अपना वैज्ञानिक और प्राविधिक, समस्त ज्ञान रख देता है। ऐसे भी विशेषज्ञ हैं, जो भारतीय पृष्ठभूमि पर व्यावहारिक दृष्टि से विचार करने के लिये तैयार हैं और देश के हित में, सामान्य उद्देश्य की परिपूर्ति में योगदान करने के लिए प्रस्तुत हैं—यदि वैज्ञानिक पद्धति के अनुरूप गोधन का विकास और परिरक्षण किया जाय।

इन तीनों तत्त्वों का अलग-अलग दृष्टिकोण है। परन्तु केन्द्रीय गोसंवर्धन परिषद के तत्वावधान में वे इस समझौते पर सहमत हो गये हैं कि परिरक्षण और विकास के मुख्य उद्देश्य की पूर्ति में परस्पर-सहयोग करेंगे; क्योंकि वे यह मानते हैं कि जहाँ तक भारत का सवाल है, संविधान ने यह बात हमेशा के लिये तय कर दी है कि गाय और उसकी संतति के वध पर पाबन्दी होनी चाहिए। कभी-कभी विभिन्नताओं की वजह से कार्यक्रमों के निर्माण में कठिनाइयाँ तो पैदा होती हैं, परन्तु एक-दूसरे में यह करारित होने की वजह से कि विकास की कार्य-पद्धति पर गलत असर न पड़े, इसलिए विभिन्न दृष्टिकोणों के अच्छे तत्त्वों का समन्वय कर ही लिया जाता है। यह पहला फायदा है, जिसे पिछले डेढ़ साल के दौरान में इन तीनों तत्त्वों के सर्वमान्य स्तर पर कार्य करने से केन्द्रीय गोसंवर्धन परिषद हासिल कर सकी है।

नीति सम्बन्धी पहलुओं पर कुछ स्वीकृत निर्णय लिये गये हैं। देश को ऐसे दो क्षेत्रों में विभाजित किया जा रहा है, जहाँ गायों की समृद्धि हो सकती है और जहाँ जलवायु, भौतिक तथा भौगोलिक परिस्थितियों के कारण उनकी समृद्धि नहीं हो सकती। दूसरी स्थिति में भी विदेशी नस्लों से प्रजनित पशुओं को प्रयोग किया जा रहा है। बाद का क्षेत्र ऐसा इलाका है, जहाँ की जलवायु संबंधी परिस्थितियाँ, बड़ी सख्त हैं या वे क्षेत्र पर्वतीय और पहाड़ी प्रदेश हैं।

जिस क्षेत्र में गायों की समृद्धि हो सकती है, उसे फिर तीन उपक्षेत्रों में बाँटा जा रहा है:

(१) ऐसे प्रदेश, जहाँ *आर्थिक* प्रस्थाप्य के रूप में अभी भी गाय पर आश्रित रहा जाता है और वह अपने पाँवों पर खड़ी है।

(२) ऐसे प्रदेश, जिनमें भैंस उसकी प्रतियोगिता में शामिल हो ही गई है और उसके स्थान को नुकसान पहुँचा रही है।

(३) ऐसे क्षेत्र, जहाँ न भैंस है और न गाय, और वह हैं भी तो उनका अस्तित्व, दूध या दूध के उत्पादन तथा कामकाज के लिए शक्ति उपलब्ध कराने के बजाय किन्हीं अन्य उद्देश्यों पर आधारित है।

केन्द्रीय गोसंवर्धन परिषद ने इन तीनों क्षेत्रों में एकसाथ कार्य प्रारम्भ कर दिया है, परन्तु पहले क्षेत्र पर ज्यादा जोर दिया गया है। ऐसा इस दृष्टि से किया गया है कि *अब भी जहाँ तक आर्थिक प्रस्थाप्य के रूप* में गाय पर आश्रित रहा जाता है, उसकी मदद की जाये और उसे सम्बल प्रदान किया जाय। बुनियादी विचार यह है कि ज्यादा दूध देने वाली और कामकाज की दृष्टि से बेहतर नस्ल विकसित हो। लक्ष्य है कि एक ऐसा द्विउद्देश्यीय पशु विकसित किये जायें जो आर्थिक दृष्टि से पूरी तरह फायदेमन्द हो।

इस उद्देश्य को ध्यान में रखते हुए प्रजनन, चारा और नस्ल-नियन्त्रण को जहाँ भी सरकारी दूध योजनाएँ हों, उनसे सम्बद्ध रखा गया है, पशु-प्रजनन को सहकारी समितियों में संगठित किया जा रहा है। विकास, उत्पादन और स्वास्थ्य के समन्वित कार्यक्रम के आधार पर प्रयोगात्मक परियोजनाएँ शुरू की जा रही हैं। काम अभी भी प्रारम्भिक स्तर पर है, परन्तु पूरी उम्मीद और पूरे जोश के साथ यह काम जारी है।

कार्यक्रमों के अन्तर्गत निम्नलिखित कार्य किये जाते हैं:—

(१) उत्पादक सहकारी समितियों द्वारा गाय का दूध इकट्ठा किया जाना और दूध को सरकारी डेअरियों या निजी डेअरियों को—

(क) बाजार-भाव पर दिया जाना, जहाँ सरकारी डेअरी केवल गाय का दूध ही प्राप्त कर रही हो या

(ख) जहाँ सरकारी डेअरियाँ गाय और भैंस दोनों का दूध लेती हैं, वहाँ गाय का दूध भी समान कीमत पर खरीदा जाय, या

(ग) दूध से चिकनाई सहित ठोस तत्त्वों के आधार पर जो डेरी मुनासिब समय में गाय का दूध इस्तेमाल करना शुरू करने वाली है और भैंस का दूध केवल दुग्ध-उत्पादनों के लिए इस्तेमाल करेगी।

(२) सहकारी समितियों के लिए उपयुक्त दर पर चारे की व्यवस्था करना या चारा खरीदने के लिए समितियों को ऋण जुटाना।

अगर हिन्दुस्तान में हम गोरक्षा नहीं कर सके तो आजादी के कोई मानी ही नहीं होते। अगर गोरक्षा नहीं होती है तो हमने अपनी आजादी खोयी और उसकी सुगन्ध गँवायी, ऐसा कहना होगा।

* * *

गाय को बचाना बड़ी भारी समस्या है। कत्ल से बचाना मेरे ख्याल से आसान है, लेकिन कत्ल का कारण हटाना और गाय को सब तरह से समर्थ बनाना बड़ा मुश्किल है।

—विनोबा

---

(३) उत्पादकों की गायों के लिए सहकारी समितियों को, परीक्षित और उन्नत किस्म के साँडों का इन्तजाम करना।

(४) क्षेत्र में से अनुपयुक्त साँडों का हटाया जाना और सम्बन्धित क्षेत्र में गायों को केवल प्रमाणित साँडों से अभिजनित कराना।

(५) क्षेत्र में गो-पशुओं की चिकित्सा-सेवाओं के साथ-साथ अन्य प्रकार की वैज्ञानिक और प्राविधिक सहायता

विदेशों में शांति-प्रयोग

• हैन्स कंदास्की (जर्मनी)

वे दो शत्रु एक-दूसरे के मित्र बन सकते थे

वह जर्मन सैनिक !

बेल्जियम के ब्रुसेल्स नगर में एडिथ कावेल नामक एक अंग्रेज महिला को जर्मन सेना ने १९१६ में इस अपराध के कारण गोली मार दी कि उसने कुछ बेल्जियम के सैनिकों को वहाँ से फ्रान्स भागने में मदद की थी। कुमारी कावेल बड़ी सेवापरायण थी। वह घायलों की सेवा शुश्रूषा बड़ी तन्मयता से करती थी। मुझे जब इस घटना का पता चला तो मैंने इस विषय में खोज आरंभ की। इस घटना का सच्चा आँखों देखा विवरण ३० वर्ष बाद मिला और मेरा हृदय द्रवीभूत हो गया।

कुमारी कावेल को एक 'सिविलियन' कब्रिस्तान में ले जाया गया। वहाँ उसको एक कुर्सी में बैठा कर बाँध दिया गया। गोली तथा बन्दूकों से लैस वे सैनिक जिन्होंने उसकी हत्या की थी, उससे केवल १५ कदम पर खड़े थे। उस फौज की टुकड़ी के अफसर ने सैनिकों को बन्दूकें दागने का आदेश दिया। ग्यारह बन्दूकें उठ गईं, लेकिन एक नहीं उठी।

अफसर क्रोध से जल उठा और चिल्लाया, "रैमलर, तुम क्या 'आर्डर' का पालन नहीं करोगे?"

रैमलर बोला, "श्रीमान, मैं एक महिला की हत्या नहीं कर सकता!"

अफसर ने पिस्तौल की गोली से रैमलर को समाप्त कर दिया और वह चिल्लाया, "गोली चलाओ!"

मिस एडिथ कावेल का शरीर उन ग्यारह बन्दूकों की गोलियों से बींध दिया गया।

रैमलर ने अपनी आत्मा की आवाज सुन ली थी। वह जानता था कि अफसर की आज्ञा पालन न करने का अर्थ है मृत्यु! उसने आत्मा की आज्ञा शिरोधार्य की। देवत्व ने आसुरी शक्ति पर विजय पाई। उसने जान देकर भी इन्सानियत नहीं छोड़ी।

इस घटना के पूरे विवरण को जब मैंने लन्दन से निकलने वाली की प्रसिद्ध शान्ति-पत्रिका 'पीस न्यूज' में भेजा, तो इसके छपते ही मेरे पास इंग्लैण्ड से बहुत-से पत्र आने प्रारम्भ हो गये। कोई रैमलर के परिवार के विषय में जानना चाहता था, कोई पूछता था कि क्या उसके नाम से कोई यादगार जर्मनी में बनी हुई है?

कु० कावेल के नाम से इंग्लैण्ड के किसी स्थान पर उनकी बहुमूल्य सेवाओं के कारण एक यादगार बनी हुई है, ऐसा मेरे अंग्रेज मित्रों ने मुझे लिखा। रैमलर के परिवार के विषय में मुझे कुछ पता नहीं चल सका, यद्यपि मैंने बहुत चेष्टा की थी।

* * *

वह फ्रान्सिसी सैनिक !

दक्षिणी जर्मनी के 'ब्लैक-फोरेस्ट' क्षेत्र में सन् १९४२ के प्रारम्भ में फ्रान्स की सेना घुस गई। एक छोटे-से गाँव में जिसके सारे पुरुष सेना में भर्ती होकर कहीं बाहर चले गये थे, फ्रान्सिसी सेना के आगमन पर, गाँव की सारी स्त्रियाँ और बच्चे अपने नये शासकों के देखने के लिये बाहर निकल पड़े। गाँव के बाहर फौज की गाड़ियों की कतार खड़ी थी। फौजी इधर-उधर चहलकदमी कर रहे थे। एक सैनिक गाड़ी से उतर कर गली में घुसा। उसकी कमर में एक हथगोला लटक रहा था। गली बच्चों तथा स्त्रियों से ठसाठस भरी हुई थी। अकस्मात् उस हथगोले में आग लग गई। वह सैनिक जानता था कि कुछ ही क्षणों में वह गोला फट जायगा और उसके साथ वे स्त्री और बच्चे भी काल के ग्रास बन जायेंगे। वह सैनिक जोर से चिल्लाया, "सावधान"। पर वे ग्रामीण फ्रान्सिसी भाषा नहीं समझते थे। वह सैनिक अब भी उस हथगोले को फेंक कर अपनी जान बचा सकता था, यद्यपि इससे अनेक स्त्रियों की तथा बच्चों की जान जाती, जो उस सकरी गली में खड़े थे। उसने उन निरपराध महिलाओं की तथा मासूम बच्चों की जान कीमती समझी और गोले को नहीं फेंका। वह ऐसे स्थान पर इस प्रकार खड़ा हो गया कि सारी स्त्रियों तथा बच्चों की जान बच गई, यद्यपि उसके शरीर के टुकड़े-टुकड़े हो गये।

उस फ्रान्सिसी सैनिक का नाम नहीं मालूम, पर उस गाँव के लोग उसकी बहादुरी को नहीं भूलेंगे। फ्रान्सिसी तथा जर्मन कई पीढ़ियों से एक-दूसरे के दुश्मन रहे हैं, पर यदि इन दो देशों के ये दो अमर सैनिक, जिन्होंने अपनी आत्मा की आवाज को पहचान लिया था, कभी एक दूसरे को मिलते तो एक दूसरे को गले से लगा लेते। •

• 'टू हू कुड हेव बीन फ्रेन्ड्स' का—"सर्वोदय" मासिक से अनूदित। अनुवादक : हरिश्चन्द्र पन्त, गांधी आश्रम, पट्टी कल्याणा (जि० करनाल)।

पहुँचाना।

दूसरी ओर हम गोशालाओं और पिंजरापोलों को ले रहे हैं, जैसा कि इस लेख में पहले कहा गया है, इनमें से कुछ तो वैज्ञानिक तरीकों के आधार पर चलायी जाने वाली डेअरियों के शानदार नमूने हैं। अन्य गोशालाओं की कार्यकुशलता बढ़ाने के लिए माध्यम के रूप में हम इन शानदार गोशालाओं से लाभ उठाना चाहेंगे।

यह कहना मुश्किल है कि हम आगे कैसे बढ़ेंगे। काम बहुत बड़ा है। गांधीजी के शब्दों में यह एक ऐसा काम है, जो देश में सबसे मुश्किल है। तथापि हमें लगता है कि

तीनों तत्त्वों के परस्पर-सहयोग से यह सम्भव हो सकेगा कि तीसरी योजना के दौरान में ही ऐसा असर पैदा हो कि गाय दायित्व मात्र और भार के बजाय लाभदायक अंग हो जाय, गाय सिर्फ भावनात्मक अस्तित्व न रह कर देश की खेतीबाड़ी की अर्थ-व्यवस्था में महत्त्वपूर्ण सहयोगी बन जाय, गाय बोझ न रहे, बल्कि भारतीय व्यवस्था की अंतरंग और उपयोगी सदस्य के रूप में राष्ट्र के स्वास्थ्य और उसकी शक्ति में निरन्तर योगदान करती रहे।

गढ़वाल में शराब-बन्दी

उत्तराखण्ड में देश के कोने-कोने से आने वाले हजारों तीर्थयात्री केवल बद्रीकेदार [illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

मोटर दुर्घटनाओं के बाद शराबबन्दी की ओर सरकार का ध्यान नहीं गया, बल्कि इसका व्यापक प्रचार करने के लिए शराब की दुकानों पर निम्नलिखित सूचना-पट लगाये गये हैं।

"हर व्यक्ति कानूनी तौर पर देशी शराब की आठ बोतल एक बार ले जा सकता है और अपने पास रख भी सकता है।

१-४-'६१ आज्ञा से—"एक्साइज कमिश्नर, इलाहाबाद"

गढ़वाल में शराब-बन्दी के लिए सब राजनैतिक पक्षों व सार्वजनिक संस्थाओं ने माँग की है। चमोली जिले में तो सरकार द्वारा निर्मित जिला सलाहकार-समिति ने इसके लिए प्रस्ताव किया है। कुछ उत्साही लोक सेवकों ने, जिनके दिलों में इसके लिए भारी उत्कटता है, प्रत्यक्ष आन्दोलन भी प्रारंभ किया है।

जिला सर्वोदय मंडल के अध्यक्ष श्री सोहनलाल भूभिक्षु ने ९ अक्टूबर '६१ से शराब की सब दूकानों पर उपवास और मौन का कार्यक्रम रखा और शराब-बन्दी के पक्ष में लोकमत जाग्रत करने की चेष्टा कर रहे हैं। उनके व्रत में २ अक्टूबर को हल्दूखाता में कई महिलाएँ भी शामिल हुईं।

परन्तु अब इस आन्दोलन ने एक नया ही मोड़ ले लिया है। कई वर्षों के प्रवास के बाद गढ़वाल के वयोवृद्ध नेता श्री सकलानन्द डोभाल गढ़वाल लौटे और वे अवरिम जिला-परिषद् के अध्यक्ष निर्विरोध निर्वाचित हुए हैं। १४ अक्टूबर को जब उनसे अध्यक्ष-पद की शपथ दिलाने के समारोह में जिले के समस्त अधिकारी और सार्वजनिक कार्यकर्ता उपस्थित थे (साप्ताहिक 'कर्मभूमि' की रिपोर्ट के अनुसार) तब उन्होंने कहा :

"मैं यहाँ पद-लोलुपता तथा साढ़े तीन सौ रुपये कमाने नहीं आया हूँ। मेरी एकमात्र कामना यह है कि जिले में तुरन्त शराब-बन्दी की जाये। मैंने ३ तारीख को भाई चन्द्रभानु गुप्त, पं० जवाहरलाल नेहरू और भाई राजेन्द्रप्रसादजी को पत्र द्वारा सूचना दे दी है कि यदि शराब-बन्दी के बारे में मुझे संतोषजनक आश्वासन न मिला तो १५ अक्टूबर '६१ से मार्च '६२ तक मैं किसी भी समय सत्याग्रह तथा अनशन प्रारंभ कर दूँगा। मुझे पूरी आशा है कि इस मिशन में सफलता प्राप्त करूँगा, मैं सारे जिले के प्रतिनिधियों तथा जनता से अपील करता हूँ वे इस कार्य में मुझे पूर्ण सहयोग दें।"

टिहरी गढ़वाल, —सुन्दरलाल बहुगुणा

विनोबा पदयात्री-दल से

कुसुम देशपांडे

दिल्ली में जब से 'नेशनल इंटीग्रेशन कान्फरेन्स' हुई, तब से विनोबाजी बार-बार उसका जिक्र करते हैं। एक दिन शाम को वे घूमने के लिये निकले। करीब मील-डेढ मील तक चलने के बाद एक खेत में सब साथियों के साथ बैठे और उन्होंने कहा, "दिल्ली में जो परिषद हुई, उसका कुछ काम तो सरकार के जरिये होगा। शिक्षण के बारे में या अल्पसंख्यकों को सहूलियतें वगैरह देने का काम तो सरकार करेगी। लेकिन जनता की तरफ से जो *काम होना चाहिये, उसकी तरफ कौन ध्यान देगा ? अब तो आम चुनाव के दिन आ रहे हैं।* उसमें झगडे बढाने की बातें होंगी, घटाने की नहीं !

जनता में इतनी निष्क्रियता आयी है कि कभी-कभी वह बर्दाश्त नहीं होती है। गाँव में हम जाते हैं तो देखते हैं कि लोग सरकार की ओर ताकते रहते हैं। सब इन्तजाम सरकार करती ही है। खुद को कुछ करना ही न पड़े। बाल-बच्चे पैदा करे, नौकरी करे, घर-संसार करे, भोग-विलास करे, बस, और कुछ करने की इच्छा भी नहीं रखते। बहुत हुआ तो कहीं गाँव में थियेटर की, कुएँ की या स्कूल की मांग करते हैं! कहीं पानी का बांध चाहते हैं, कहीं रास्ता। बाकी तालीम, शादी के कानून, रक्षण आदि सब सरकार करे यह चाहते हैं। सरकार ने पचपन लाख नौकर रखे हैं। आज प्रभावशाली संगठन, यदि कोई है तो वह सरकार का और व्यापारियों का। और कोई संगठन नहीं दीखता। इसलिए अब हमें सोचना चाहिए। कुछ लोग सरकार में गये हैं, कुछ संस्था में जकड़े हैं। वहाँ मानो उनका संसार ही बसा है! अलग-अलग पार्टियाँ हैं, लेकिन उनको फुरसत नहीं है।

इसलिए हम सोचते हैं कि दस-दस हजार की बस्ती लेकर एक-एक कार्यकर्ता बैठे। इस तरह सारे प्रान्त में फैल जायँ। भूदान, सर्वोदय का विचार घूमते हुए लोगों को समझाते रहें। शान्ति का विचार लोगों को दें, और इसके साथ साथ नेशनल इन्टीग्रेशन के बारे में लोगों को जानकारी दें। छोटे-छोटे लोगों को अब अपनी शक्ति बढानी चाहिए। यही है ब्रह्मविद्या।

> ब्रह्मविद्या के मानी यह नहीं है कि समाज से अलग पड़ें, हिमालय में या जंगल में जायें, बल्कि समाज में ही रह कर समाज की सेवा करें।"

नाजीरा शहर के कुछ प्रतिष्ठित नागरिक विनोबाजी से मिलने आये थे। उन्होंने आज की स्थिति का वर्णन करते हुए कहा कि हमारे मन में एक भय-सा है कि कहीं प्रांतों का विघटन (डिस्-इंटीग्रेशन) न हो। विनोबाजी ने कहा-उसके लिए पहली बात यह करनी चाहिए कि सब भाषाएँ नागरी लिपि में छापना शुरू करें। हमने यह काम तीन साल पहले से ही शुरू किया है और "गीताप्रवचन" करीब करीब सब भाषाओं में नागरी में छापा है। इसका मतलब यह नहीं है कि दूसरी लिपि न हो। जैसे आपकी असमी है तो वह चले, पर साथ-साथ नागरी भी चले। आपका 'नामघोषा' अप्रतिम ग्रंथ है। वह नागरी में छापा जाय, तो भारत को उसका लाभ मिलेगा। आज तो भारत उसके बारे में जानता ही नहीं है। अब यहाँ की लड़कियों को मैं मराठी सिखाता हूँ। वे हिन्दी जानती हैं। इसलिए मराठी के लिए नयी लिपि सिखनी नहीं पड़ती।"

...इतना कहने के बाद विनोबाजी ने नागरिकों के सामने अलग-अलग भाषाओं की नागरी में छपी हुई कन्नड, सिन्धी, बंगला आदि की भूदान पत्रिकाएँ रखीं और कहा कि 'नेशनल इन्टीग्रेशन' का काम मैं बहुत पहले से करता हूँ।

अपने साथियों को विनोबाजी कई बार कहते हैं कि असमी इतनी उत्तम आनी चाहिए कि गौहाटी और शिलांग में आपके व्याख्यान होने चाहिए। असम के भाई और बहनों को वे कहते हैं, तुम लोगों को उत्तम मराठी और हिन्दी सीखनी चाहिए और तुम्हारे व्याख्यान पूना और दिल्ली में होने चाहिए। इसके सिवाय नेशनल इन्टीग्रेशन कैसे होगा? बाहर के व्यापारी दूसरे प्रान्तों में जाते हैं तो उस-उस प्रान्त की भाषा सीखते हैं। लेकिन यह 'नेशनल इन्टीग्रेशन' नहीं है, वह 'हंगर-इन्टीग्रेशन' है। दूसरे प्रान्तों में जाकर नौकरी वगैरह करने वाले कुछ लोग उस प्रांत की भाषा को सीखने की कोशिश नहीं करते हैं। वे अपनी भाषा का अभिमान रखते हैं बहुत उद्धत होते हैं। वे इस तरह से बरताव रहा तो 'इन्टीग्रेशन' नहीं होगा।

ऐसा हम लोग मानते हैं कि अपने इर्द-गिर्द लोगों से जो दोष होते हैं इसके लिए हम जिम्मेवार हैं। कर्मयोगी की जो भावावस्था है, उसमें तो वह अपने आसपास के ही नहीं, बल्कि विश्व के भी पाप-पुण्य के लिए जिम्मेदार होते हैं। अब इस शोधन-शक्ति के कारण वह वातावरण को शुद्ध भी करता है। अपने संन्यस्त वृत्ति के कारण उन दोषों से अलिप्त भी रहता है, पर कर्मयोगी की साधना की अवस्था में उसके सम्बन्धियों के दोषों का वह कहाँ तक जिम्मेदार हो सकता है, इस विषय की चर्चा एक दिन रास्ते में हो रही थी। एक कार्यकर्ता ने सवाल पूछा कि सामने वाले को हम पर जो गुस्सा आता है वह हमारे ही दोषों का रूप होता है। हमारा दोष उस स्वरूप में प्रकट होता है। ऐसी हालत में उसका वह क्रोध नष्ट हो जाय, इसलिए हम क्या करें?

इस विषय का सूक्ष्म विश्लेषण करते हुए विनोबाजी ने कहा, "सूक्ष्म दृष्टि से तो हम साथ रहनेवाले एक दूसरे के गुण-दोषों के कुछ जिम्मेदार हैं ही, पर जहाँ इस क्रोध को दूर करने के यत्न का प्रश्न आता है वहाँ हमें इसका विश्लेषण करना पड़ता है। यदि मुझे क्रोध आया तो वह मुझे क्यों *आया? मेरी मानसिक अवस्था* क्या थी, क्या है, इसका गहरा विश्लेषण मैं अपने लिए कर सकता हूँ। हो *सकता है कि इस विश्लेषण में मेरा मेरे* लिए तटस्थ भाव, अनासक्ति कम हो। पर वह मेरा ही आन्तरिक भाव होने के *कारण मैं उसके कारण जानने में सफल* हो सकता हूँ। दूसरे के विषय में हम तटस्थ तो रह सकते हैं, पर उसके कारण जानने की आन्तरिक स्थिति में पैठना होता है, वह शक्ति हममें नहीं है। फिर उसे दूर करने का प्रश्न जब आता है, तब तो उसी के मनः *शक्ति पर ही आधार है। वह आधार कितना* और कैसा उपयोगी है, इस पर सारा निर्धारित है। इसलिए सामने वाले व्यक्ति *के दोषों के हम सूक्ष्म दृष्टि से कुछ जिम्मे*दार हैं, ऐसा मानने पर भी उसकी शोधन-क्रिया में हमारी कुछ लाचारी होती है। *इसलिये इसमें यह विवेक करना पड़ता है।* हाँ, हमारी पुण्य-प्रक्रिया बढ़े, इसलिये हम हमारी तपस्या बढायें। उस कारण से जो *सुधार होगा सो होगा। पर विश्लेषण में* जो फर्क होता है वह भी साधना में ध्यान में रखने की बात होती है।"

एक मिशनरी भाई जो शिलांग कालेज में प्रोफेसर हैं, यात्रा में दो दिन शरीक हुए थे। रास्ते में उन्होंने कुछ सवाल पूछे। *उनमें से एक यह था कि क्या* आप संपत्ति (प्रापर्टी) को निषेध-'आब्जेक्ट'-करेंगे, अगर वह ठीक ढंग से बँटी हो और *ठीक ढंग से उसका उपयोग किया* जाय?

विनोबाजी ने कहा, "*प्रापर्टी के लिये मुझे कोई 'आब्जेक्शन' नहीं है, अगर* वह 'प्रापर', उचित हो। मैं मानता हूँ कि संपत्ति कभी 'इमप्रापर', अनुचित नहीं होती। लेकिन यह जरूर है कि उत्पादन के जो साधन हैं, उन पर व्यक्तिगत मिल्कियत नहीं होनी चाहिये। देहातों में जमीन है, जो उत्पादन का साधन है। वह गाँव की मिल्कियत हो जाय—यही मैं कहता हूँ।"

उन्होंने एक और सवाल पूछा कि क्या आप नागा लैंड में या दूसरे पहाड़ी जिलों में जायेंगे?

विनोबाजी ने तुरत कहा कि दस साल से मैं इस देश में इस कोने से उस कोने तक घूम रहा हूँ—दक्षिण से उत्तर और पश्चिम से पूरब। मैंने सारा देश लिया है। *लोगों की स्थिति क्या है*, यह देखा है। अब मैं पूर्व में देश के एक कोने में आया हूँ। अब मैं वहाँ जाना नहीं चाहता हूँ, *जहाँ मैं जाना चाहूँगा; बल्कि जहाँ* लोग मुझे बुलायेंगे वहाँ जाने का मैंने तय किया है। इसलिये अगर नागा लैंड के लोग मुझे आमंत्रण देते हैं, तो मैं जा सकता हूँ। लेकिन बगैर बुलाये मैं कहीं भी नहीं जाऊँगा।

नाजीरा शहर में *विनोबाजी का तीन* दिन निवास रहा, जहाँ शिवसागर सब-डिवीजन के लोकसेवक और शांतिसैनिक इकट्ठा हुए थे। शांति सैनिकों से चर्चा करते हुए विनोबाजी ने कहा, "*आपकी* सेवा का काम ऐसा होना चाहिये कि *लोगों के आप प्रियभाजन हों और गाँव* में आपके आगमन की लोग उत्सुकता से राह देखते हों। एक बात यह भी है कि गुरुद्वारा और मस्जिदें आंदोलन के स्थान होते हैं; लेकिन ऐसी राजनैतिक आंदोलन के स्थान मंदिर या मस्जिद बनें, यह हम नहीं चाहेंगे। *लेकिन 'मॉरल* मुवमेन्ट' (नैतिक आंदोलन) के स्थान वे बन सकते हैं। आपके कुल के कुछ *'नामघर' इस काम के लिये आपके* स्थान बन सकते हैं।

> हमें मामूली सेवा का काम नहीं करना है, मामूली *निर्माण* नहीं करना है। दुखियों को सुखी बनाना इतना ही काम नहीं है। हम चाहते हैं *कि हिंसा का* मुकाबला अहिंसा से करने की शक्ति लोगों में आये-यही हमारे काम की कसौटी होगी। ऐसा एक क्षेत्र हम बनाना चाहते हैं, सामनेवाला पिस्तौल दिखायेगा तो वहाँ का बच्चा उसकी ओर देखकर हँसेगा! ऐसी शक्तिशाली जमात हम बनाना चाहते हैं।

इस सब-डिवीजन में करीब चालीस शांति-सेविकाएँ बनी हैं। उनसे विनोबाजी ने कहा कि कर्म शक्ति के साथ-साथ ज्ञान हो तो उस कर्म में विशेष प्रकाश होता है। लेकिन कर्म और ज्ञान के साथ भक्ति या प्रीति न हो, तो सेवा अच्छी नहीं होगी। इसलिये कर्म-शक्ति, ज्ञान और प्रीति या भक्ति आवश्यक है। दूसरी बात यह है कि जिनसे हमारा नाता-रिश्ता नहीं

ग्रामस्वराज्य की दिशा में

नया मोड़ के लिए हम क्या करें ?

• निर्मल चंद्र

"प्रेम और करुणा" अब व्यक्तिगत साधना और आध्यात्मिक चर्चा का मंत्र नहीं रहा, यह सर्वनाश से मुक्त होने का एक मात्र रास्ता रह गया है। संसार जीवन के इस तत्त्व को समझते हुए भी इस मूल्य के अनुरूप संयोजन में असफल है। जब तक ऐसी जीवन-कला हाथ नहीं आती है, जिससे संघर्ष का लोप हो जाय, तब तक भय-मुक्ति सम्भव नहीं। बिना भय के लोप हुए युद्ध की आशंका एवं स्पर्धा का छिछलापन नहीं मिट सकता। यांत्रिक जटिलताएँ बढ़ती जा रही हैं। इनमें से युग-परिवर्तन का कोई विकल्प नहीं सूझ रहा है। खेती के औजार, उद्योग के साधन से लेकर जब तक चूल्हा चक्की जैसी छोटी वस्तु का परिवर्तन नहीं होता तब तक युग परिवर्तन नहीं होता है।

निःसन्देह सर्वोदय-आन्दोलन ने "प्रेम और करुणा" की इस युगवाणी की परिमार्जित व्याख्या की है। इससे अधिक इस आन्दोलन की विशेषता यह रही कि इसने छोटी-बड़ी सभी समस्याओं का रचनात्मक सुझाव दिया है, फिर रचनात्मक सुझाव में वे सभी गुण नहीं हैं, जो संसार को सुव्यवस्थित मार्ग दर्शन दे सके। एक ओर मानवता विध्वंस की आशंका से भयभीत है, यांत्रिकता से ऊबी हुई है तो दूसरी ओर हमारे विकल्प में सभ्यता से पीछे हटने की आशंका है। इस आशंका को निर्मूल करने के लिए हमें व्याप्त होना है। हम उतना ही व्याप्त हो सकते हैं, जितनी हमारी नींव की गहराई एवं सुदृढ़ता होगी।

मिल का विकल्प देना है तथा ग्राम-स्वराज्य के लिए स्वावलम्बन का आधार भी। खादी को बापू ने रचनात्मक कार्यक्रम के सौर्य-मंडल के मध्य में रखा था। आज खादी त्रिशंकु की स्थिति में है। जो प्रचलित खादी है, उसमें न तो ग्राम स्वावलम्बन की गहराई है और न बाजार में टिकने का व्यापारिक आधार। हर्ष का विषय है कि इस ओर भरपूर प्रयास किया जा रहा है, लेकिन तीव्रता एवं एकाग्रता के कारण हमारा कहीं कोई गलत कदम हो गया तो सारी बनी बिगड़ जाने की सम्भावना है।

कुटीर उद्योग में विद्युत् शक्ति का उपयोग, खादी को लोक वस्त्र बनाने की चर्चा आदि एक महत्त्व का विषय है। दूसरी ओर ग्राम इकाई के लिए कुछ अलग तर्क भी है। हमारा मुद्दा ग्राम-स्वावलम्बन के द्वारा लोक शक्ति जाग्रत करने का है। यदि हम विस्तार में आधार शून्य हो गये तो बाजार में विलुप्त हो जायेंगे। एक ओर यांत्रिक एवं तकनीकी सुधार का प्रश्न है, दूसरी ओर संगठन एवं संयोजन की समस्या। प्रयोग की एक व्यवस्थित शृंखला नियोजित ढंग से यांत्रिक एवं तकनीकी सुधार में लगी है, पर इसकी सफलता हमारे संयोजन पर निर्भर है।

कुछ चिन्तकों के विचार से वर्तमान संगठन में क्रान्ति एवं पुरुषार्थ का अभाव ही नहीं, बल्कि बाधा का भी अनुभव होता है। खादी को व्यापार को एजेन्टों के हाथ सौंपने का भी सुझाव सामने आया है। यहाँ पुनः यह दुहराना चाहूँगा कि खादी का विस्तार एवं व्यापार स्वावलम्बन के लिए संरक्षण प्रस्तुत करता है। दोनों एक-दूसरे के पूरक हैं। जिन लोगों ने खादी को एजेन्टों के हाथ देने का विचार दिया, उन्हें बाजार की खादी में क्रान्ति एवं पुरुषार्थ का अभाव दीखता है। उन्हें यह नहीं भूलना चाहिए कि खादी वस्त्र के रूप में बाजार में एक दिन भी नहीं टिक सकती, चाहे कितना भी सरकारी संरक्षण क्यों न मिलता रहे। बाजार में खादी का खड़ा रहना ही उसकी प्रामाणिकता सिद्ध करता है। एजेन्टों में नैतिक बल एवं क्रान्ति की प्रतिध्वनि विरले आ सकती है।

एक एक कार्यकर्ता हमारे पूर्ण संगठन की इकाई है। उनकी व्यक्तिगत सीमा जो भी हो, पर संगठन के प्रवाह में उनका पुरुषार्थ बढ़ता है। इसे नजरअन्दाज नहीं किया जा सकता। इस संगठन के टिमटिमाते दीप ने आन्दोलन को आलम्बन दिया है। प्रकाश-स्तंभ का काम किया। आजादी की आँधी के समय जब सत्ता की घुड़-दौड़ मची थी, चेतन ने संगठन के शरीर में अपनी आत्मरक्षा की सामान्य कार्यकर्ता पुरुषार्थ भी कम नहीं गिना जा सकता। बिहार में पूसा ने खादी जगत् को नया रास्ता दिया, बेराई ने ग्रामदान का आदर्श नमूना दिया, असम के दंगों में शान्तिदूत की परीक्षा हुई तथा हाल के बाढ़ग्रस्त क्षेत्र में छोटे कार्यकर्ताओं की सेवा ने आन्दोलन को गौरव दिया। क्रान्ति की चेतना के स्पन्दन ने सामान्य कार्यकर्ताओं में जो शक्ति उत्पन्न की यह सब उसी का प्रतिफल है। यह उनके हृदय का प्रतिबिम्ब है।

दूसरा यह भी तर्क आता है कि हमारा व्यापार कार्यकर्ताओं के विकास में बाधक है। वास्तव में यदि इसमें दोष है तो सामान्य कार्यकर्ता का नहीं। दोष दीखने का एक यह भी कारण है कि हम ऊँचाई से कार्यकर्ताओं को देखते हैं तो अत्यधिक न्यूनता दीखती है। सामान्य कार्यकर्ताओं को सामान्य नागरिक की ऊँचाई से तौलना होगा। यदि उस दृष्टि से देखेंगे तो काफी भरोसा होगा। व्यापारिक जाल से परिवेष्टित कार्यकर्ता अपने अभाव की स्थिति में जिस मर्यादा का पालन करते हैं उससे अच्छा उदाहरण कम ही दृश्य है। आन्दोलन की प्रतिष्ठा में उनकी प्रतिष्ठा यदि बाधक हुई होती तो पूरा आन्दोलन आधार-शून्य हो जाता।

हाँ, यदि उनमें अधिक शालीनता एवं व्यवहार शुद्धि लाना है, नयी दिशा में मोड़ना है, तो चेतन को आगे आना है। आगे कौन आये ? आन्दोलन संत की श्रद्धा, विचारकों के अन्वय एवं व्याख्या तथा अनुयायियों की भक्ति भावना पर आधारित है। संतों के हृदय में सहज ढंग से सत्य का सूत्र आता है। उस सत्य की जैसी व्याख्या होगी, वैसा अन्वय होगा सामान्य कार्यकर्ताओं का कार्यक्रम उतना ही पाक एवं पवित्र होगा।

जिस प्रकार सत्य का पूर्ण दर्शन असम्भव है। उसी प्रकार ग्राम-स्वराज्य आदि का पूरा चित्र कार्यकर्ताओं को तभी आकर्षित करता, जब उनके बूते का मालूम होता है। अधिक ऊँचाई की बात जब आती है तो समझ में भी नहीं आती तथा हीनभाव की सृष्टि पैदा होती है। सामान्य भक्तों के लिए उपनिषद् के बाद पुराण की रचना की गई। कार्यक्रम का आकर्षण तथा नेताओं का मार्ग-दर्शन सहज भाव से उसे अपनी ओर खींच ले तभी कार्यक्रम सफल होगा।

पुनः प्रश्न है कि आगे आये कौन राम या भरत ? भरत की इच्छा होते हुए भी अयोध्या के लिए उन्हें राज-काज में लगा रहना पड़ा। राम के कष्ट का अनुभव कर सत्ता में भी साधना करनी पड़ी। अर्थ यह है कि खादी के व्यापार में लगे जो बड़े लोग हैं वे मेरुदण्ड के समान हैं। हठात् अपनी दूसरी पंक्ति पर काम का जिम्मा देकर यदि गाँव-स्तर पर उतर आयेंगे तो जिस गाड़ी को मोड़ना चाहते हैं वह गाड़ी इतनी बोझ से लदी है कि मुड़ने के क्रम में उलट जायगी। प्रत्येक मोड़ लेने के पहले चुस्त होना आवश्यक होता है। इसीलिए आदरणीय ध्वजा बाबू को बिहार खादी-ग्रामोद्योग-संघ का प्रत्यक्ष जिम्मा लेना पड़ा।

पूरे आन्दोलन का प्रत्यक्ष दर्शन हमारा कार्यक्रम है, इसी के द्वारा मशाल जलायी जा सकती है।

समझ में नहीं आता कि क्या करना चाहिए। स्वावलम्बन का संकल्प हो गया, पर गाँव पुनः व्यापार की पुरानी लीक पर चला जाता है। ऐसा इसलिए होता है कि प्रकाश लुप्त हो जाता है। यदि प्रकाश सामने रहे तो खादी, खेती, सहकार सहज ही ग्राम-स्वराज्य का ताना-बाना तैयार कर देगा।

जैसा कि पहले कहा गया है कि आज की परिस्थिति में रचनात्मक काम को नई दिशा देने के लिए इसके आगे चेतन वर्ग को आना है। मोड़ पर गाड़ी का जूआ पकड़ कर अलग से सबल हाथ से मोड़ना होता है। वैसे चेतन का आवाहन है, जो नया मोड़ दे सकें उन्हें व्यापार के समीप आना होगा। संगठन की यदि कोई सड़ांध उनको महसूस होती है तो उसे कबूल करना होगा। यदि व्यावहारिक धरातल पर आ सकेंगे तभी उतना विचार प्रयोगवादी होगा। इसे परिपक्व करने के लिए काफी धैर्य की आवश्यकता है।

है, उनकी सेवा आत्मीय भाव से करनी चाहिये।

यहाँ आस-पास कई चाय बागान हैं। वहाँ के मजदूर और मजदूरों के प्रतिनिधि विनोबाजी से मिले। उनसे विनोबाजी ने कहा—

भूदान हिंदुस्तान का एक सबसे बड़ा मजदूर-आंदोलन है। यह दस साल से चल रहा है, लेकिन तुम लोग ऐसे ही तमाशा क्यों देखते हो ? तुम्हारा शहर का जो आंदोलन है, उसकी बुनियाद ही यह गाँव का आंदोलन है। इसमें हम भूमिहीन मजदूरों के लिये काम करते हैं। मैं आपसे यह चाहूँगा कि आप लोग साल भर में एक दिन की तनख्वाह दें। ऐसी तनख्वाह इकट्ठी करके अमलप्रभा बहन के पास दे दें तो इसका परिणाम शहरों पर होगा, सारे प्रदेश पर होगा। आपका मजदूर आंदोलन एक छोटा बच्चा है और गाँव के भूमिहीन मजदूरों का आंदोलन आपकी माँ है, उसकी ताकत बढ़ेगी तो आपकी ताकत बढ़ेगी।'

शिवसागर सब-डिवीजन में विनोबाजी की यात्रा करीब-करीब अज्ञातयात्रा के समान हो रही है। सिर्फ पाँच छह दिन का कार्यक्रम बनता है। अब तक विनोबाजी बीच-बीच में एक-एक गाँव में दो या तीन दिन रहते थे और कार्यकर्ता आसपास घूमते थे। यात्रा का फासला भी कभी तीन मील, कभी पाँच मील रहता था। अब विनोबाजी की इच्छा के अनुसार रोज एक दिन एक गाँव में मुकाम और औसत दस मील का फासला तथा आगे के सात दिन का कार्यक्रम तय हुआ है। बकीदर मौजे में मौजादान की कोशिश हो रही है और फिलहाल विनोबाजी वहीं घूम रहे हैं।

नार्थ लखीमपुर में विनोबाजी के जाने के बाद ४२ ग्रामदान हुए हैं। श्री खगेश्वर भुइयाँ, रमेश शर्मा और सोमेश्वर फूकन वहाँ दुबारा यात्रा कर रहे हैं और खबरें भेज रहे हैं कि वहाँ के वातावरण में काफी उत्साह है। ग्रामदानी गाँववालों पर दूसरे गाँववाले अपने विचारों का असर डालने की कोशिश कर रहे हैं। इसलिये वहाँ बाहर के कार्यकर्ताओं को आना चाहिये, इसका महत्त्व कार्यकर्ताओं के ध्यान में आया है।

बिहार की चिट्ठी

बाढ़पीड़ित क्षेत्रों में सहायता-कार्य

'बीघा-कट्ठा अभियान' का सिंहावलोकन करने एवं आगे का कार्यक्रम बनाने के लिए १० अक्टूबर को बिहार सर्वोदय-मंडल की कार्य-समिति के सदस्यों एवं विशेष आमंत्रितों की बैठक महिला चरखा-समिति, पटना में हुई। निश्चित कार्यक्रम के अनुसार बैठक में कार्यालय-मंत्री ने गत बैठक की रिपोर्ट पढ़ कर सुनायी, जिसे बैठक ने सर्वसम्मति से स्वीकार किया। गत बैठक के निर्णयानुसार किये गये कामों का लेखा-जोखा बैठक में प्रस्तुत किया गया। बिहार सर्वोदय-मंडल के संयोजक, श्री रामनारायण सिंह ने—जो बैठक शुरू होने के कुछ देर बाद बाढ़पीड़ित क्षेत्र से सीधे बैठक में शामिल हुए—बाढ़ एवं तूफान की विभीषिका का वर्णन कर लक्खीसराय के नदियावाँ एवं मसौढा गाँव की स्थिति का हृदयद्रावक वर्णन किया, जहाँ क्रमशः ९४ और १५५ व्यक्ति बाढ़ की चपेट में पड़ कर मर गये!

आपने विस्तारपूर्वक बतलाया कि गाँव में धान के खेत, बाँस के झाड़ एवं रेलवे लाइन के आसपास सैकड़ों मनुष्यों एवं हजारों जानवरों की लाश सड़ रही है, जिसे छूने वाला कोई नहीं है। बैठक में श्री रामनारायण बाबू के आने के पहले किसी को भी बाढ़ की संहार-लीला का थोड़ा भी भान नहीं था। लोगों को इस साल की बाढ़ प्रतिवर्ष की बाढ़ से कुछ अधिक जैसी ही लगती थी। रामनारायण बाबू ने जब बाढ़ से जान और माल की क्षति का आँखों देखा वर्णन किया, तब श्री जयप्रकाश नारायण ने बड़े मार्मिक शब्दों में बैठक से बाढ़पीड़ितों की सहायता करने का निवेदन किया।

बैठक ने सर्वसम्मति से 'बीघा-कट्ठा अभियान' को तत्काल स्थगित कर बाढ़-पीड़ितों की सेवा एवं सहायता करने का निश्चय किया। निश्चयानुसार चंपारण से २, मुजफ्फरपुर से ८, सारण से १०, दरभंगा से ४५, सहरसा से ६, पूर्णियाँ से ७३, संथाल परगना से १३, गया से १६, हजारीबाग से ३ एवं धनबाद से ६ कार्यकर्ता मुंगेर एवं भागलपुर में पीड़ितों की सेवार्थ जुट गये। इसके अतिरिक्त मुंगेर जिले के ५२ एवं भागलपुर जिले के ३ कार्यकर्ता अपने-अपने जिले में सेवा-कार्य में लगे थे।

पटना जिले के ११ कार्यकर्ता बाढ़ एवं बिहार सबडिवीजन में सेवा कार्य करने लगे। जिला खादी-ग्रामोद्योग संघ, मुंगेर के २१ कार्यकर्ताओं ने तो शुरू से ही पीड़ितों की सेवा का व्रत ले लिया था।

बिहार सर्वोदय-मंडल के निवेदन पर बिहार राज्य से बाहर के कार्यकर्ता भी 'बीघा-कट्ठा अभियान' में सहायता करने आये थे। बाढ़-पीड़ित क्षेत्र में सेवा करने के लिए जब बीघा-कट्ठा अभियान कुछ दिन के लिए स्थगित किया गया तो उनमें से कुछ कार्यकर्ता लौट कर चले गये। लेकिन उत्तर प्रदेश से २४, गुजरात से ९, मैसूर से २, दिल्ली से १, बंगाल से ५ एवं उड़ीसा के २, कुल ४३ कार्यकर्ताओं ने बाढ़पीड़ितों की सेवा करने का निश्चय किया और पीड़ित क्षेत्र में चले गये।

इस प्रकार बिहार के २६८ एवं बिहार के बाहर के ४३, कुल ३११ कार्यकर्ता बाढ़-पीड़ितों की सेवा करने में लग गये।

इन कार्यकर्ताओं ने दर्जनों मनुष्य-लाशों एवं सैकड़ों पशु-लाशों को जलाया एवं दफनाया। सड़ी लाश से इतनी दुर्गन्ध निकल रही थी कि सरकार द्वारा भेजे गये डोम भाई ने भी लाश छूने से आनाकानी की, लेकिन सर्वोदय-कार्यकर्ताओं ने सेवा-भाव से प्रेरित होकर बिना किसी आनाकानी के लाशों को जलाया एवं दफनाया, जिसमें जिला खादी-ग्रामोद्योग संघ, लक्खीसराय के कार्यकर्ताओं का प्रयास विशेष प्रशंसनीय है।

बाढ़-पीड़ितों की सहायता करने के लिए श्री जयप्रकाश नारायण ने बिहार सरकार के मुख्य मंत्री से मिल कर गैर-सरकारी स्तर पर बाढ़-पीड़ित सहायता समिति बनाने का सुझाव दिया। श्री जयप्रकाश नारायण को अत्यावश्यक कार्य से दिल्ली जाना अनिवार्य था। अतः आपने १७ अक्टूबर से बाढ़-पीड़ित क्षेत्रों की यात्रा करने का निश्चय किया। निश्चय के अनुसार १७ अक्टूबर से २९ अक्टूबर तक मुंगेर जिले के बड़हिया, लक्खीसराय, सूर्यगढा, तारापुर, खड़गपुर, खगड़िया, बेगुसराय, बरबीघा, सिकन्दरा; भागलपुर जिले के सुल्तानगंज और नारायणपुर, पूर्णियाँ जिले के बरारी और मनिहारी, पटना जिले के बाढ़, मोकामा, अस्थवाँ, सरमेरा और बिहार तथा गया जिले के नवादा, वारसलीगंज और गोविन्दपुर थाने के बाढ़-पीड़ित क्षेत्रों की यात्रा की।

यात्रा के सिलसिले में सामाजिक एवं राजनीतिक कार्यकर्ताओं के अतिरिक्त अधिकारियों से भी सेवा कार्य सम्बन्धी विस्तारपूर्वक बातें की। कांग्रेस, प्रजासमाजवादी एवं कम्यूनिस्ट पार्टी के कुछ विधायक भी उनकी यात्रा में साथ थे। आपने पैदल, रिक्शा, नाव, जीप, ट्रेन एवं हवाई जहाज से बाढ़-पीड़ित क्षेत्र का निरीक्षण किया। साथ में कर्मठ समाज-सेविका श्रीमती प्रभावती देवी बराबर साथ थीं। बिहार-सरकार के संसदीय सचिव एवं केन्द्रीय बाढ़पीड़ित सहायता-समिति के संगठन-मंत्री श्री लालसिंह त्यागी ने भी अधिकांश क्षेत्रों की यात्रा आपके साथ की।

पीड़ितों की हालत देख कर बात करते समय श्री जयप्रकाशजी का गला भर आता था तथा आवाज रुक जाती थी! दूर देहात में चले जाने के कारण व समय पर मुकाम पर नहीं लौटने के कारण कई बार चार बजे शाम तक खाना नहीं मिला। समय पर भोजन आदि नहीं मिलने एवं कठिन परिश्रम करने के कारण सर्दी और खाँसी हो गयी, फिर भी आपने अपनी यात्रा जारी रखी। कई दिन तो रात में बुखार भी आ गया। मित्रों ने बुखार के कारण यात्रा स्थगित करने का निवेदन किया, फिर भी बाढ़-पीड़ितों की हृदयद्रावक तकलीफ ने उन्हें अपनी यात्रा जारी रखने के लिए मजबूर किया और आपने यात्रा जारी रखी।

बाढ़-पीड़ित क्षेत्र की यात्रा के बीच से ही आपने समाचार पत्रों में अपना वक्तव्य प्रकाशित किया, जिसमें बिहार, विशेषकर पटना की जनता से बाढ़पीड़ितों की सहायतार्थ नगद रुपये, नये और पुराने कपड़े एवं अन्य सामग्री इकट्ठा करने का निवेदन किया। उनके निवेदन पर बिहार की जनता ने टोली बना कर पीड़ितों की सहायता के लिए चन्दा इकट्ठा करना शुरू किया।

बिहार सर्वोदय मंडल की ओर से श्री वैद्यनाथ प्रसाद चौधरी 'रिलीफ' के 'इंचार्ज' बनाये गये और आपने भी पीड़ित-क्षेत्रों की सघन यात्रा की। बिहार सर्वोदय मंडल के संयोजक श्री रामनारायण सिंह, भूतपूर्व संयोजक श्री श्यामसुन्दर प्रसाद, श्री त्रिपुरारि शरण, श्री श्याम बहादुर सिंह, श्री महावीर झा, श्री रघुनाथ शर्मा आदि भी सहायता-कार्य में जुट गये। सर्वश्री आचार्य राममूर्ति सिंह, गोखले चौधरी, निर्मल कुमार सिंह आदि ने तो शुरू से ही पीड़ित क्षेत्रों का दौरा शुरू कर दिया था। इस प्रकार कार्यकर्ताओं ने लाश जलाने एवं दफनाने के अतिरिक्त कुओं उड़ाहना, मलबे की सफाई, गृह-निर्माण आदि कार्य भी किया, जिसका असर पीड़ितों एवं अन्य समाजसेवियों पर काफी पड़ा।

श्री जयप्रकाश नारायण से बिहार-सरकार के मुख्य सचिव श्री मजूमदार, रिलीफ इंचार्ज श्री टी० पी० सिंह, पटना-कमिश्नर श्री सोढ़ी एवं भागलपुर के कमिश्नर श्री वैद्येश आदि ने भेंट की और रिलीफ सम्बन्धी कार्यक्रम पर विस्तारपूर्वक चर्चा की। आपने अनुभव के आधार पर सरकार को कई सुझाव भी दिये, जिसे सरकार ने तो मान लिया, लेकिन तंत्र के केन्द्रीकरण के कारण, समय पर उचित अधिकारियों को आदेश नहीं मिलने के कारण राहत-कार्य में कई प्रकार की दिक्कतें बराबर बनी रहीं।

बिहार सर्वोदय-मंडल की कार्य-समिति के सदस्यों एवं विशेष आमन्त्रितों की दूसरी बैठक २५ अक्टूबर को जिला सर्वोदय-मंडल मुंगेर के कार्यालय में हुई, जिसमें आगे के कार्यक्रम पर विचार विमर्श किया गया। पीड़ित क्षेत्र में काम करने वाले कार्यकर्ताओं के अनुभव के आधार पर ३१ दिसम्बर, '६१ तक पीड़ितों की सेवा करने एवं सामूहिक भावना जगाने के लिए मुंगेर जिले में लक्खीसराय, बड़हिया, सिमरी, बरियारपुर, असरगंज, खगड़िया और बेगुसराय; भागलपुर जिले में सुल्तानगंज और नारायणपुर; गया जिले में नवादा और पकरीबरावाँ और पटना जिले में बाढ़ और बिहार तथा पूर्णियाँ जिले में कुरसैला, इस तरह कुल १५ सेवा-केन्द्रों का आयोजन करने का निश्चय किया गया, जिसमें पाँच कार्यकर्ता रहेंगे। इन पाँच कार्यकर्ताओं में से गांधी स्मारक निधि बिहार शाखा के दो, पंचायत-परिषद् के एक एवं बिहार सर्वोदय मंडल के दो कार्यकर्ता रहेंगे। गांधी स्मारक निधि बिहार शाखा ने तत्काल दस हजार रुपये सहायता-कार्य एवं कार्यकर्ता-खर्च के लिए स्वीकृत किये हैं। निधि के संचालक श्री सरयू प्रसाद ने निधि द्वारा संचालित ग्राम-सेवा केन्द्र, मजदूर सेवा-केन्द्र एवं प्रचार-केन्द्र से कार्यकर्ताओं को बाढ़-पीड़ित क्षेत्र में सेवा करने का निर्देश दिया।

पीड़ितों के सेवार्थ तो करोड़ों रुपये की जरूरत है और बिहार सरकार के अतिरिक्त कई गैरसरकारी संस्थाएँ भी इस काम में जुटी हुई हैं, लेकिन सर्वोदय मंडल ने शरीर-सेवा के अतिरिक्त छोटी-छोटी जरूरत की चीजों द्वारा पीड़ितों की सहायता करने का निश्चय किया है। इन जरूरत की चीजों में रोशनी के लिए मिट्टी का तेल एवं ढिबिया, घर खड़ा करने के लिए रस्सी, 'ट्रेन्च' पाखानों के लिए चट्टी आदि शामिल हैं। पीड़ितों की जो क्षति हुई है उसकी पूर्ति न तो सरकार कर सकती है, न दूसरी कोई संस्था ही। अपनी क्षति-पूर्ति जनता स्वयं कर सकती है।

श्री जयप्रकाश नारायण ने पीड़ितों के बीच जो भाषण दिया, उसका मुख्य सार यही था कि सरकार एवं अन्य संस्थाओं की सहायता तो दही जमाने के लिये गरम दूध में जामन जैसा है। गरम दूध जन-शक्ति है और बाहरी सहायता जामन। श्री जयप्रकाश बाबू के भाषण का असर बाढ़-पीड़ितों को 'भगवान भी उन्हीं की सहायता करता है, जो अपनी सहायता आप करता है,' यह वचन स्मरण करायेगा और वे अपने घर-खेत, आदि के निर्माण-कार्य में तत्परता से जुट जायेंगे, ऐसी आशा है।

—रामनन्दन सिंह

'कास्ट' और 'सेक्ट' का उल्लेख नहीं होगा—म० प्र० में जोत की अधिकतम सीमा—राजस्थान में बिहार के बाढ़-पीड़ितों की सहायता—मोदीनगर सर्वोदय-मित्र मंडल—नौगाँव में क्षेत्रीय सर्वोदय-सम्मेलन—दातारामजी का लेखा-जोखा—वाराणसी में राष्ट्रीय पुस्तक-समारोह।

केंद्रीय सरकार के गृह-मंत्रालय के सुझाव पर प्रान्तीय सरकारों ने यह मान लिया है कि सरकारी नौकरियों के लिए, शिक्षण-संस्थाओं में दाखिले के लिए और न्यायालयों की कार्रवाई में जो रजिस्टर व फार्म इत्यादि इस्तेमाल होते हैं, उनमें जाति या सम्प्रदाय 'कास्ट' और 'सेक्ट' का उल्लेख आगे से नहीं किया जायगा। केंद्रीय शिक्षा विभाग के अन्तर्गत दिल्ली, अलीगढ़, बनारस और शान्ति निकेतन के जो चार विश्वविद्यालय हैं, उन्हें भी इस प्रकार की सिफारिश की गयी है। ●

मध्य प्रदेश सरकार ने घोषणा की है कि खेत की अधिकतम सीमा के सम्बंध में जो कानून राज्य-सरकार ने बनाया है, वह १९ नवम्बर '६१ से सारे राज्य में लागू होगा। इस कानून के अनुसार मध्य-प्रदेश में खेती वाली जमीन की अधिकतम सीमा एक व्यक्ति के लिए २५ 'स्टैण्डर्ड' एकड़ मानी गयी है। ●

जयपुर में बिहार के बाढ़ पीड़ितों की सहायता के लिए राजस्थान समग्र सेवा-संघ द्वारा ता० ४ नवम्बर को प्रदेश के प्रमुख रचनात्मक संस्थाओं के प्रतिनिधियों की बैठक हुई, जिसमें निश्चय किया गया कि बाढ़-पीड़ितों के लिए प्रांत में जगह-जगह अनाज, कपड़ा, साधन और धन संग्रहीत किया जाय।

इस अवसर पर राजस्थान समग्र सेवा संघ के अध्यक्ष श्री जवाहिरलाल जैन ने एक अपील में प्रदेश की जनता से बिहार के बाढ़पीड़ितों की सहायता करने के लिए निवेदन किया। ●

मोदीनगर, मेरठ के सर्वोदय मित्र मंडल के तत्वावधान में ६ सितम्बर को शरणार्थियों के लिए सार्वजनिक सभा हुई।

पथरगामा, गया में १ सितम्बर को श्री मोतीलालजी केजरीवाल के मार्गदर्शन से सर्वोदय मित्र मण्डल की स्थापना हुई। मित्र मण्डल ने सर्वप्रथम बाढ़पीड़ित भाइयों के लिए झोली फैला कर अर्थसंग्रह अभियान का आयोजन किया। उसमें १४४ रु० ५० नये पैसे प्राप्त हुए, जो बिहार राज्यपाल के बाढ़पीड़ित कोष, पटना को भेजे गये। ●

नौगाँव, जिला छतरपुर के प्राथमिक सर्वोदय मण्डल द्वारा आयोजित सर्वोदय-सम्मेलन श्री चतुर्भुज पाठक की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ। सम्मेलन का उद्घाटन श्री काशिनाथ त्रिवेदी ने किया। श्री त्रिवेदीजी ने अपने भाषण में लोकनीति पर प्रकाश डाला। सम्मेलन में श्री महेन्द्र कुमार 'मानव' का भी भाषण हुआ। सम्मेलन में ५० भाई-बहनों ने भाग लिया। २५ की संख्या में बहनों ने भाग लिया, यह इस क्षेत्र के लिए बड़ी बात है। इसके कारण बहनों में अच्छी जागृति हुई।

कलकत्ता के सुप्रसिद्ध लोकसेवक श्री दातारामजी मकरंड ने एक पत्र में पिछली दिवाली से इस दिवाली तक के एक वर्ष के कार्य की जानकारी आँकड़े देते हुए लिखा है :—६०५२ रु. ८९ न पै की साहित्य बिक्री; १८१२ रु. ७ न पै की भूदान-पत्र पत्रिकाओं की बिक्री हुई। ८२७ रु ६० न पै का सम्पत्तिदान मिला और पत्र पत्रिकाओं के ७३ ग्राहक बने। ●

अ. भा. पुस्तक प्रकाशक संघ की ओर से वाराणसी में 'इंडियन नेशनल बुक फेस्टिवल' कमेटी द्वारा नागरी प्रचारिणी सभा, काशी के भवन में १४ नवम्बर से २१ नवम्बर तक प्रथम राष्ट्रीय पुस्तक समारोह मनाया जायेगा। इस अवसर पर पुस्तकों की एक प्रदर्शनी भी होगी। ●

गया जिले के बाढ़पीड़ित क्षेत्रों में दिवाली !

गया जिले के नवादा सबडिवीजन में अतिवृष्टि और तूफान के कारण क्षेत्र में जो क्षति हुई है, उसके लिए गया नगर के नागरिकों ने यथाशक्ति पूरी-पूरी मदद करने की कोशिश की है। शायद ही कोई ऐसा वर्ग रहा हो, जिसने अपने पीड़ित भाइयों के लिए कपड़ा, पैसा और अनाज आदि के रूप में कुछ न कुछ दिया न हो।

राजस्थान युवक संघ, जैन युवक क्लब, दुर्गाबाड़ी, रोटरी क्लब, लाइन्स क्लब, बाढ़पीड़ित सहायता समिति, कांग्रेस रिलीफ कमेटी आदि गया की संस्थाओं ने संग्रह का काम किया। गया के महन्त ने पाँच सौ मन अनाज वितरण करने का जिम्मा लिया। हिन्दुस्तान कोल्ड स्टोरेज, बिहारशरीफ ने दो हजार रुपये के दान दिया।

दिवाली के अवसर पर विपदाग्रस्त भाइयों के लिए उपरोक्त संस्थाओं द्वारा की गयी मदद विशेष महत्त्व रखती है। यद्यपि सब लोगों की पूरी मदद तो नहीं की जा सकी, किन्तु टूटे-फूटे झोपड़ों में भी दिवाली के दीपक देख कर संतोष अवश्य किया जा सकता है।

गांधी स्मारक निधि की ओर से नवादा, पकरी बरावाँ के 'रिलीफ कैम्प' में दस-बारह कार्यकर्ता काम कर रहे हैं।

इस प्रकार गया नगर में यद्यपि दीवाली फीकी ही रही, फिर भी अपनी पीड़ित भाइयों की सेवा और मदद के कारण यह दीवाली मानवीय भावनाओं का प्रतीक बन कर अद्वितीय थी।

बाढ़पीड़ित सहायता समिति, गया —रविशंकर शर्मा

विलेपार्ले बंबई का 'सहयोग संघ'

(सन् १९५७ के अन्त में बम्बई शहर के विलेपार्ले क्षेत्र के करीब ६०-६५ मित्रों ने मिल कर 'सहयोग संघ' की स्थापना की। यह एक प्रकार का भाईचारा है, जिसमें हिन्दुस्तान के विभिन्न भागों के विविध लोग सहयोगी भावना से काम करते हैं।)

श्रमदान, बच्चों के संस्कार-केन्द्र, सांस्कृतिक कार्यक्रम, शैक्षणिक वर्ग, खेल, पिकनिक आदि गतिविधियों से क्षेत्र में नवजीवन आया और धीरे धीरे अपने 'पड़ोसी की मदद' करने की भावना का विकास हुआ।

चिकित्सा-योजना का विकास

शुरुआत में बीमारियों के टीके, स्वच्छता, बच्चों की स्वास्थ्य परीक्षा आदि निरोधक कार्यक्रम लिये गये। जरूरतमंदों को विटामिन की गोलियाँ भी दी गयीं। कभी-कभी मौकों पर 'पाक्षिक बैठक' में सर्वसम्मत निर्णय लेकर थोड़े खर्च में कुछ गम्भीर बीमारियों का भी इलाज भी किया गया। संघ के पास चिकित्सा के लिए एक कोष है और उसको सदा सर्वदा-सदस्य डा. कर्णिक की सेवाएँ उपलब्ध होती रहती हैं।

संघ की स्थापना के एक साल के भीतर ही काफी सोच विचार के बाद निम्न योजना बनायी गयी। जिन परिवारों की आमदनी सौ रुपया है वे एक रु., जिनकी दो सौ हो वे दो रु, जिनकी तीन सौ हो वे तीन रु, जिनकी चार सौ हो वे चार रु माहवार चंदा देते हैं। बदले में सदस्य-परिवारों की निःशुल्क चिकित्सा की जाती है। डाक्टर को बुलाने पर 'विजीट फी' दो रु देनी पड़ती है। करीब ५० परिवारों ने इस योजना में भाग लिया। दो माह पहले रकम पेशगी के तौर एकत्रित कर दी जाती है। योजना में जो कुछ भी परिवर्तन करना हो वह पाक्षिक बैठक में किया जाता है।

योजना के तीन साल के अन्त में निम्नलिखित तथ्य मालूम हुए।

(१) यह योजना व्यावहारिक, आर्थिक दृष्टि से लाभप्रद और फायदेमन्द है।

(२) इसके द्वारा सब सदस्य परिवारों को बिना आर्थिक भेदभाव के समान चिकित्सा की सुविधा मिलती है।

(३) डॉक्टर और बीमार के बीच आर्थिक सम्बन्ध के स्नेहसम्बन्ध बढ़ते हैं।

(४) योजना में अतिरिक्त खर्च करना नहीं पड़ता।

(५) संघ की सामुदायिक भावना ने चिकित्सा योजना को बढ़ावा दिया और चिकित्सा-योजना ने सामुदायिक भावना को और बढ़ाया।

(६) योजना में राष्ट्रीयकरण की सब अच्छी बातें आ गयी हैं। इसमें साधारण जन-अभिक्रम जगता है। योजना में न तो अफसरशाही है और न व्यापारवादी मनोवृत्ति भी।

योजना को सफल बनाने में सदस्यों की सहकारी भावना के अतिरिक्त सदस्य डॉक्टर डी एम कर्णिक की योग्यता और सहयोग, ये मुख्य कारण हैं। संघ चाहता है कि इस योजना का और भी विस्तार किया जाय, जिससे लोगों को विशेष चिकित्सा की सुविधा मिल सके।

बिहार में 'बीघा-कट्ठा अभियान'

भागलपुर जिले में ६ सितंबर से १२ अक्टूबर तक चलाये गये 'बीघा-कट्ठा अभियान' में ८९१ कट्ठा भूमि प्राप्त हुई। ७५ रु का सर्वोदय-साहित्य बिका। कुल ७८ गाँवों में १६५ मील की पदयात्रा हुई। मुजफ्फरपुर गाँव में 'ग्राम-परिवार' बनाया गया। इस अभियान में महाराष्ट्र के ४ और उड़ीसा के २ कार्यकर्ताओं ने भाग लिया।

शाहाबाद जिले के अन्तर्गत राजपुर थाने में प्रा० सर्वोदय मण्डल तियरा द्वारा साप्ताहिक पदयात्री टोली चली। उस समय कुल १९९ कट्ठा भूदान मिला।

श्री रामनरेशजी दिवंगत !

'बीघा-कट्ठा अभियान' तथा खादी-फेरी करते हुए ता० २९ अक्टूबर को श्री रामनरेश मिश्र बीमार पड़े और ७ नवम्बर को इस संसार को छोड़ कर चल बसे। श्री मिश्रजी का स्थान सारण जिले के प्रमुख कार्यकर्ताओं में था। वे बड़े ही कर्मठ तथा निर्भीक—कार्यकर्ता थे। १९३० से लेकर आज तक वे सार्वजनिक कार्य करते रहे। इस बीच इन्हें कई बार जेल भी जाना पड़ा। उन्होंने अपने परिवार की चिन्ता कभी नहीं की। फिलहाल वे भूदान तथा सर्वोदय सम्बन्धी कार्य में संलग्न थे।

विश्वशांति-सेना की आवश्यकता और महत्त्व

वाराणसी में श्री जयप्रकाश नारायण का भाषण

विश्वशांति-सेना के संगठन के लिये २८ दिसम्बर '६१ से १ जनवरी '६२ तक ब्रुमाना (बेरुत, लेबनान) में अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर चर्चा होने वाली है। इस अन्तर्राष्ट्रीय परिषद् के भारतीय आमंत्रकों में सर्वश्री विनोबा, जयप्रकाश नारायणजी, रामचन्द्रन् और श्रीमती आशादेवी आर्यनायकम् हैं। विश्वशांति-सेना के विभिन्न पहलुओं पर विचार-विनिमय करने के लिये ३१ अक्टूबर और १ नवम्बर को साधना केन्द्र, काशी में भारतीय पूर्वचर्चा सभा हुई।

१ नवम्बर की शाम को काशी के टाउनहाल में विश्वशांति सेना पर एक सार्वजनिक सभा सर्व सेवा संघ के अध्यक्ष श्री नवकृष्ण चौधरी की अध्यक्षता में हुई। सर्वप्रथम श्री नारायण देसाई ने संक्षेप में विश्वशांति-सेना के विचार का किस प्रकार विकास हुआ इस पर प्रकाश डाला। श्री जयप्रकाश नारायणजी प्रमुख वक्ता थे। यद्यपि वे अस्वस्थ थे, फिर भी विस्तार से इस विषय पर प्रकाश डालते हुए आपने शांति-सैनिकों के एक ऐसे अन्तर्राष्ट्रीय संघटन की आवश्यकता पर जोर दिया जो दुनिया में कहीं भी अशांति या संघर्ष की स्थिति पैदा होने पर वहाँ जाकर अहिंसक ढंग से शान्ति कायम कर सके।

"आज दुनिया में जहाँ भी अशांति पैदा होती है वहाँ शांति कायम करने के लिए संयुक्त राष्ट्रसंघ को भी हिंसा का सहारा लेना पड़ता है, वह वहाँ अपनी सशस्त्र फौजें भेजता है; किन्तु मेरे विचार से संयुक्त राष्ट्रसंघ को सशस्त्र फौजें रखनी ही नहीं चाहिए। उसका यह कार्य अन्तर्राष्ट्रीय शांति-सेना के लोग (उसका गठन होने पर) कहीं अधिक अच्छी तरह से कर सकेंगे।

आज यह विचार अव्यावहारिक और काल्पनिक मालूम पड़ सकता है, किन्तु शांति-सेना का अन्तर्राष्ट्रीय संघटन बन जाने पर यह संभव हो जायगा।

जब तक ऐसा संघटन नहीं बनता तब तक विश्व में वस्तुतः निरस्त्रीकरण हो सकेगा, इसमें मुझे सन्देह है।"

अन्तर्राष्ट्रीय शान्ति सेना के संघटन की रूपरेखा पर प्रकाश डालते हुए श्री जयप्रकाशजी ने आगे बताया—"आज भी दुनिया में शान्ति के लिए कार्य करने वाली बहुत-सी संस्थाएँ और संगठन हैं और शान्ति के लिए खतरा पैदा होने पर उन्होंने जोरदार ढंग से अपनी आवाजें भी उठायी हैं, जैसा कि अभी हाल में ब्रिटेन में परमाणु परीक्षणों के विरोध में भी बर्ट्रेण्ड रसेल के नेतृत्व में हुआ है और सहारा में फ्रान्स के परमाणु-परीक्षण के समय किया गया है।

इसी प्रकार की एक संस्था शांति परिषद् भी है, जिसका संगठन कम्युनिस्टों द्वारा संचालित है। इसमें काफी अच्छे और उच्च कोटि के लोग भी हैं।

ये संस्थाएँ शांतिवादी हैं, युद्ध रोकना चाहती हैं, किन्तु ये अहिंसा में भी विश्वास नहीं करतीं। हमें इन सभी संघटनों तथा शांति के लिए काम करने वाली अन्य सभी संस्थाओं के सहयोग से दुनिया के सभी देशों में शांति-सेना का संगठन करना है, फिर इसमें से ऐसे लोगों का चुनाव कर एक ऐसा अन्तर्राष्ट्रीय दल बनाया जायगा, जो आवश्यकता पड़ने पर दूसरे देशों में जाकर शांति-स्थापन का कार्य कर सकें।

दिसम्बर के अन्त में बेरुत (लेबनान) में इस सम्बन्ध में शांतिवादियों का जो सम्मेलन बुलाया गया है, उसमें २० देशों के लगभग सौ-डेढ़ सौ व्यक्तियों के शामिल होने की आशा है। इसी सम्मेलन में अन्तर्राष्ट्रीय शांति-सेना के संगठन, उनके नाम तथा उसके प्रधान कार्यालय के स्थान के बारे में विस्तृत रूप से विचार किया जायगा।

यदि यह संगठन बन गया तो दुनिया में यह एक नयी घटना होगी और अन्तर्राष्ट्रीय झगड़ों को तय करने में यह एक नयी शक्ति का संगठन होगा, जो अहिंसा में विश्वास रख कर काम करेगी।"

भारत की स्थिति की चर्चा करते हुए श्री जयप्रकाश नारायण ने बताया—"भारत के शांतिवादी तो यहाँ तक मानते हैं कि देश में फौजों की कोई जरूरत नहीं। हमें शान्ति-सेना का संगठन ही इतना मजबूत बनाना चाहिये कि यह विदेशी आक्रमण होने पर अहिंसात्मक ढंग से उसका मुकाबला कर सके।"

आपने जबलपुर, आसाम और अलीगढ़ की हाल की घटनाओं की चर्चा करते हुए कहा—"ये घटनाएँ हमारे लिए लज्जाजनक हैं। दुःख है कि सरकार भी ऐसे अवसरों पर हिंसा को दबाने के लिए हिंसा का ही सहारा लेती। अहिंसक ढंग से शान्ति स्थापन पर ही वास्तविक शांति स्थापित हो सकती है।

आपने कहा कि भारत सरकार इस समय-समय पर की जाने वाली फौजी कार्रवाइयों और बालकों को एन० सी० सी० आदि की शिक्षा देकर फौजी वातावरण तैयार किये जाने की विदेशी शक्तियाँ जो आलोचना करते हैं, उसमें कुछ तथ्य है। भारत में यह आवाज उठायी जानी चाहिये कि फौजी खर्च कम किया जाय।

युद्ध रोकने के लिए युद्ध की तैयारी करने का नारा चाहे कुछ लोग ठीक समझते हों, किन्तु भारत के लिए यह उपयुक्त नहीं है। इसमें वास्तविक शान्ति कायम नहीं हो सकती।"

इस सिलसिले में आपने राष्ट्रीय ऐक्य परिषद् के गठन की चर्चा करते हुए कहा कि वास्तविक कार्य यह परिषद् नहीं करेगी। यह कार्य तो देश के प्रत्येक नागरिक और संस्था को करना है।

आपने कहा कि यदि देश के सभी लोग अपने को एक देश का नागरिक समझने लगें तो आसाम जैसी घटनाओं की पुनरावृत्ति न हो।

खादी-ग्रामोद्योग ग्राम-स्वराज्य समिति की बैठक

ता० ३ और ४ दिसम्बर '६१ को असम में विनोबाजी के पड़ाव पर सर्व सेवा संघ की खादी-ग्रामोद्योग ग्राम-स्वराज्य समिति की बैठक रखी गयी है। इसमें अ० भा० खादी-ग्रामोद्योग बोर्ड के सदस्य तथा अन्यान्य प्रमुख कार्यकर्ता भी आमंत्रित हैं। इस बैठक में रूरल इण्डस्ट्रियलाइजेशन कमीशन, टैक्सटाइल्स और अंबर सूत, खादी के रिबेट की नई पद्धति, ग्राम-इकाई आदि प्रमुख विषयों पर चर्चा होगी।

काशी में सफाई-शिविर

३ नवम्बर से १४ नवम्बर तक साधना केन्द्र, काशी में सफाई-शिविर चला, जिसमें शांति विद्यालय के शांति-सैनिक और सेवापुरी विद्यालय के छात्रों ने भाग लिया। शिविर का मार्गदर्शन श्री कृष्णदास शाह ने किया और व्यवस्था श्री अलखनारायण, संयोजक भंगी-मुक्ति अभियान, काशी ने की।

इस अंक में

गुरुदेव !

"जीवन साहित्य" मासिक पत्र के 'रवीन्द्र-अंक' के लिए दो शब्द लिखते हुए विनोबाजी ने कहा :

"गुरुदेव तो पूर्ण अर्थ में 'गुरुदेव' थे। उन्होंने हमको इतना विविध मार्गदर्शन दिया है कि उस पर अमल करते-करते हमारा सारा जीवन बीत जायेगा। उनकी विशाल व्यापक प्रतिमा में जिसका समावेश नहीं हुआ, ऐसा विषय ही नहीं। इधर हमने 'जय जगत्' मंत्र सुनाया, उसके भी वे द्रष्टा हैं और हमारा ग्राम जो ग्रामदान बन रहा है, मैं मानता हूँ, उनका 'विश्व भारती' हृदय उसको आशीर्वाद देता होगा।"

"विनोबा का सान्निध्य"

कस्तूरबा ट्रस्ट ने विनोबा के कस्तूरबाग्राम (इन्दौर) के साप्ताहिक निवास के प्रवचनों और अन्य चर्चाओं पर आधारित 'विनोबा का सान्निध्य' पुस्तक प्रकाशित की है। वह सीमित मात्रा में छपी है, इस लिए वह बाजार में बेचने के लिए उपलब्ध नहीं है। यदि कोई जिज्ञासु प्राप्त करना चाहें तो २ रुपये ८५ नये पैसे भेज कर कार्यालय-मंत्री, कस्तूरबा ट्रस्ट पो० कस्तूरबाग्राम, इन्दौर से प्राप्त कर सकते हैं।

श्रीकृष्णदत्त भट्ट, अ० भा० सर्व सेवा संघ द्वारा भार्गव भूषण प्रेस, वाराणसी में मुद्रित और प्रकाशित। पता : राजघाट, वाराणसी-१, फोन नं० ४२९१
वार्षिक मूल्य ६) पिछले अंक की छपी प्रतियाँ ९५०० : इस अंक की छपी प्रतियाँ ९३५० एक अंक : १३ नये पैसे

संपादक : सिद्धराज ढड्ढा

वाराणसी : शुक्रवार | २४ नवम्बर '६१ | वर्ष ८ : अंक ८

विश्व शांति-सेना की प्रयोग-भूमि

विनोबा

इन दिनों विश्व-शान्ति की भी बात होती है। हम सोचते थे कि हम खुद कांगो में जायें। वहाँ शान्ति की जरूरत है। हम वहाँ क्या करें, यह अपने लिये मैं सोचता था। मैं तो वहाँ की भाषा नहीं जानता हूँ। मेरी प्रत्यक्ष जानकारी वहाँ के लोगों को नहीं है। मेरा जीवन कैसे गया, मैं कौन हूँ, मेरा काम क्या है, यह सब वे जानते नहीं और मैं वहाँ गया तो विश्व-शान्ति की संघटना का 'बैज' मेरे पास होगा, उसकी प्रतिष्ठा है। मेरी प्रतिष्ठा वहाँ नहीं है। जागतिक शान्ति-सेना की प्रतिष्ठा है, इसलिये काम होगा।

लेकिन कोई अगर विश्व नागरिक हो और जिसका सारी दुनिया के साथ सम्बन्ध हुआ है, उसको भी आप लोग जानते हैं ऐसा नहीं। बर्ट्रेण्ड रसेल को पढ़ने वाले लोग जानते हैं। वे बहुत विद्वान हैं। फिर भी आम जनता उनको जानती है? झगड़ा करने वाले, दंगा करने वाले लोग उनके जाने से रुक जायेंगे ऐसा नहीं। लेकिन उनके पास भी 'बैज' होगा। यह तो मैंने बड़े मनुष्य का नाम लिया। विश्व-शांति-सैनिक के नाते वे जायेंगे तो क्या होगा, यह मैंने सोचा।

विश्व-शांति-संस्था के प्रतिनिधि के तौर पर हम जाते हैं। विश्व शांति के माने हुए सैनिक वहाँ जाते हैं, तो उनकी भी वहाँ पर उतनी परीक्षा होगी। वहाँ जाने के बाद मनुष्य व्यवहार कैसे करता है, सहन करने की उसमें शक्ति है या नहीं, अथवा क्या वह चिढ़ जाता है? यह सब कुछ लोग देखेंगे। यदि इसमें वह फेल होगा तो आरम्भ में जाने पर जो प्रतिष्ठा होगी, वह उतनी ही नहीं रहेगी।

अब यहाँ हम काम करते हैं या करेंगे तो हमें प्रतिष्ठा कौनसी होगी? क्या एक अखिल भारतीय सेना है? उसकी प्रतिष्ठा है या उसके हम सैनिक हैं तो हमारी प्रतिष्ठा है? अर्थात् यह हमारी अपनी ही प्रतिष्ठा है। ऐसे तो भारतीय शांति सेना में अच्छे-अच्छे शांति-सैनिक हैं। लेकिन मान लीजिये कि यहाँ का शांति-सैनिक तमिलनाड में जायेगा। उसकी जो प्रतिष्ठा होगी, वह यही होगी कि यह भारतीय शांति-सेना का सैनिक है। कुछ ऐसे लोग होते हैं, जैसे जयप्रकाशजी वगैरह हैं; उनकी अपनी ही प्रतिष्ठा है, याने उनको लोग पहले से ही जानते होंगे। लेकिन मान लीजिये कि यहाँ का कोई सामान्य कार्यकर्ता तमिलनाड में जाय तो उसकी अपनी प्रतिष्ठा ऐसी नहीं होगी, जैसी जयप्रकाशजी की अपनी प्रतिष्ठा है। लेकिन सामान्य कार्यकर्ता की जो प्रतिष्ठा होगी वह भारतीय शांति-सेना का सैनिक है, इस नाते होगी। वहाँ जाने के बाद काम करते हुए अपने व्यवहार से वह अपनी प्रतिष्ठा बढ़ायेगा। उसके अपने व्यवहार से उसकी प्रतिष्ठा घट भी सकती है, बढ़ भी सकती है। आपके अपने प्रांत में आपकी ही प्रतिष्ठा होगी। और आपके कारण याने आपको लोग जानते होंगे, इसलिए आपके कारण भारतीय शांति-सेना को प्रतिष्ठा मिलेगी। आप यहाँ काम करेंगे, तो लोग यही समझेंगे कि भारत की शांति-सेना में कितने अच्छे लोग काम कर रहे हैं। यह विश्लेषण इसलिए दिया कि

जो मनुष्य जहाँ है, वहाँ वह अपनी भी प्रतिष्ठा बढ़ाने वाला या घटाने वाला हो सकता है और भारतीय शांति सेना की भी प्रतिष्ठा बढ़ा या घटा सकता है।

शांति-सैनिक के जीवन की स्थिति क्या है, यह देखना चाहिए। उसका रोजमर्रा का जीवन लोगों के सामने है। कुछ स्थानों में मैंने यह सुना है कि एक ही क्षेत्र में बार-बार भूदान माँगने के लिए जब कार्यकर्ता घूमते हैं तो लोग उनसे ऊब जाते हैं और पूछते हैं कि आप बार-बार क्यों आते हैं? आपके लिए भी लोग ऐसा ही कहेंगे।

शान्ति-सैनिक के आगमन की वे उत्सुकता से प्रतीक्षा करें, यह कब बनेगा? आपकी सेवा की सतत जरूरत जब वे महसूस करेंगे तब ही ऐसा होगा। इसमें आपको भी ऐसा काम करना और ऐसा व्यवहार रखना होगा, जिससे कि आप लोगों के प्रियभाजन बन सकें। जैसे दूध के लिये गाय अनिवार्य मानी जाती है, वैसे आप भी अनिवार्य माने जायेंगे, तो आप निस्संकोच सेवा करते हैं और निस्संकोच भाव से लोग आपसे सेवा माँग सकते हैं।

यहाँ एक 'एरिया' में पन्द्रह लोग हैं। ये पंद्रह लोग डेढ़ लाख को 'कवर' कर सकते हैं। पहले मैं पाँच हजार के लिए एक शांति सैनिक, ऐसा कहता था। लेकिन देखा कि वह होने वाला नहीं है। इसलिए दस हजार में एक, यह बात करने लगा। यह छोटी चीज नहीं है। सारा का सारा शिवसागर सबडिवीजन 'कवर' करना हो तो पन्द्रह भी कम संख्या नहीं है।

अगर लोगों की सेवा अच्छी चलती है और लोगों से आपका नाता अच्छा है, तो लोगों के आप प्रिय बन सकते हैं और काम में यशस्वी हो सकते हैं। फिर आपमें से किसी की माँग बाहर से भी आयेगी। याने आपमें से कुछ लोग दूसरे जिले में भी जा सकते हैं। तात्पर्य यह है कि यह जमात बिल्कुल छोटी नहीं मानी जायगी।

लोक सेवकों की जमात अलग है। लेकिन वे इस विचार का अध्ययन करते हैं और अपने जीवन में भी विचारों को लाते हैं। लेकिन शांति-सैनिकों से अपेक्षा यह है कि पूरी दृष्टि से पूरा समय सेवा में लगाया जाय। उस क्षेत्र में हमारा बहुत काम बन सकता है और हम उस क्षेत्र को अपने काम से प्रभावित कर सकते हैं। उस क्षेत्र को हम अपना बना सकते हैं।

शांति-सैनिक के अलावा दूसरे भी लोक सेवकों की जरूरत है। उनका काम अलग होगा। उनकी इतनी विविध सेवा लोगों को मिल सकती है और उनके पास विविध प्रकार का ज्ञान और सेवा के इतने साधन हों कि वे कई कारणों से लोगों में प्रिय हों। उनकी एक शक्ति बन सकती है। वे सेवा ही जानते हैं और कुछ नहीं। कहीं भी गये तो बीमारों की सेवा करने लगें। प्राकृतिक उपचार और वनस्पति का उपयोग भी वे जरूर जानें। इस तरह से जहाँ जाते हैं वहाँ लोगों को थोड़ी मदद देते हैं, ऐसा होना चाहिये।

कितने ही ढंग से हम लोक-हृदय में प्रवेश पा सकते हैं। अनेक प्रकार की शक्तियाँ हैं, उनमें एक सेवा है। गाने गाते हुए भी आप विचार दे सकते हैं। सबको एकत्र करके कवायद सिखाना, अनुशासन सिखाना आदि तथा और भी जितने ज्ञान जरूरी हैं वे ज्ञान दिये जा सकते हैं।

ट्रेनिंग-प्रशिक्षण की व्यवस्था होनी चाहिये। यह एक असीम क्षेत्र है। उसमें भाई और बहनें भी आ सकती हैं। स्त्रियों का प्रवेश घर में सहज होता है। पुरुषों और स्त्रियों का भजन 'नामघर' में होता है, वहाँ आप उनको कई बातें समझा सकते हैं; दुनिया भर की जानकारी दे सकते हैं।

कुल के कुल 'नामघर' आपके खास स्थान हो सकते हैं, और हैं भी। इसलिए आप ट्रेनिंग का कोर्स भी बना सकते हैं।

आपको यह कोशिश करनी चाहिये कि हर गाँव की सेवा होती रहे। हिंसा का मुकाबला अहिंसा से करने योग्य क्षेत्र बनायें, इसी में हमारी कसौटी होगी। मामूली निर्माण का काम नहीं करना चाहते। दुःखियों को सुखी बनाना, इतना ही काम नहीं है। ये लोग दूसरे के लिये त्याग करने के लिए कितने तैयार हैं और अहिंसा से काम करने की प्रेरणा कितनी है, यह देखना है। किसी का आक्रमण हम बर्दाश्त नहीं कर सकते। किसी के जुल्म के हम वश नहीं होते, इस प्रकार की जनता हम तैयार कर रहे हैं।

ऐसा स्थान भारत में हो, तो भारत के जरिये दुनिया की सेवा होगी और ट्रेनिंग के लिए दुनिया भर के लोग आयेंगे। सवाल है कि जागतिक शांति-सेना की ट्रेनिंग कहाँ हो? अलग-अलग देश के चंद अच्छे-अच्छे लोग ट्रेनिंग के लिए कहाँ जायँ? जहाँ कहीं भी ट्रेनिंग हो, हमारी यही कसौटी होगी। हर हालत में ऐसा क्षेत्र बनता है कि वहाँ के लोग झगड़ा नहीं करते या झगड़ा हुआ तो एक-मत से फैसला करते हैं, जहाँ सब तरह की सेवा होती है, जहाँ का बच्चा-बच्चा निर्भय है। किसी प्रकार का डर नहीं है। न किसी को वे डराते हैं, न किसी से डरते हैं। ऐसे स्थान में हम भी चार-छह महीने काम कर सकते हैं। ऐसा क्षेत्र जहाँ होगा, वहाँ के लोग विश्व शांति सेना के साधक बनेंगे, यह दृष्टि रख कर आप काम कीजिये।

(नाजीरा, असम, २२-१०-'६१)

साहित्य का मूल्य : १

• जैनेन्द्र कुमार

हम यहां देश की सभी भाषाओं के लोग इकट्ठे हो गये है। हिन्दी भाषा को आधार में लेकर अक्सर ऐसा नहीं हुआ करता है। समूचे देश की सभाएँ होती हैं, तो अंग्रेजी भाषा से काम लिया जाता है। उसी में सुविधा समझी जाती है। अंग्रेजी अंग्रेजों की भाषा है और अभी कुछ वर्ष पहले तक अंग्रेजी का यहां राज्य था। वह राज्य सारे देश पर छाया हुआ था और इसलिए अंग्रेजी से यह सुविधा थी कि लोग भाषा-प्रदेश की सीमाओं से बाहर अपना व्यवहार फैला सकते थे। उस समय ऐसा बताया जाता था, समझा भी जाने लगा था, कि राष्ट्र-भाव इस भारत देश में अंग्रेजी से आया है, अन्यथा भारत बिखरा और बँटा हुआ था और उसमें राष्ट्रैक्य न था।

अंग्रेजी भाषा और राज्य के सहारे ही इस देश में जो अपने को एक मानने की चेतना देखी तो गान्धीजी को इसमें खटका मालूम हुआ। उन्हें प्रतीत हुआ कि यह आत्मा की एकता नहीं होगी, यह तो विदेशी और नकली एकता हो जायगी। उन्हें यह आवश्यक मालूम हुआ कि भारत अपना विकास भारत रह कर करे; उन्नति स्वदेशी उन्नति हो और आत्मा को कीमत में देकर अमुक विधान या राज्य की एकता उसे खरीदनी न पड़े। इसलिए शुरू में ही उन्होंने यहाँ सुदूर दक्षिण में हिन्दी प्रचार की नींव डाली और पुत्र देवदास को इस काम के लिए अर्पण किया। हिन्दी गांधीजी की मातृभाषा न थी। भाषा उनकी गुजराती थी और अंग्रेजी में जो लिखना पड़ता, उसे छोड़ कर अपने अन्तर मर्म की सब बात वह गुजराती में ही प्रकट करते थे।

लेकिन भारत पर प्रेम के नाते हिन्दी से गांधीजी का अनन्य प्रेम और उस पर अनन्य आग्रह रहा। कारण, भारत के सम्बन्ध में उनकी आकांक्षा इतनी ही नहीं थी कि वह राजनीतिक रूप से स्वाधीन देश होगा, बल्कि उसमें यह भी शामिल था कि स्वाधीनता का भारत ऐसा उपयोग करेगा कि उसकी विशेषता का दान दुनिया के लिए एक प्रकाश बन सकेगा।

आत्मता की एकता

मानव-जाति के इतिहास में अगर संस्कृति की कोई परंपरा आदिम प्राचीन से संप्रति वर्तमान तक अविच्छिन्न मानी जा सकती है, तो वह भारतीय ही है। यह आरोप कि भारत अंग्रेज से पहले राष्ट्र के रूप में एक न था, अगर सच्चा भी हो, तो आवश्यक होता है कि इस ऐतिहासिक तथ्य के प्रकाश में स्वयं राष्ट्र-भाव की जाँच-पड़ताल की जाए। कारण, यदि राजनीतिक राष्ट्र के रूप में भारत अपने इतिहास-भर में कभी एक नहीं रहा तो कुछ वह सत्यतर और अमोघतर ही होगा, जिससे सहस्राब्दियों से अजस्र और अभिन्न भाव से वह आज तक जीवंत और स्वस्थ बना रहा है।

यह एकता व्यवस्था या शासन की नहीं; भाव की, मूल्य की, आत्मता की थी कि काल उसका कुछ बिगाड़ नहीं सका। इस चमत्कार के प्रकाश में शायद हमें स्वयं राष्ट्र और राष्ट्रवाद के संबन्ध में फिर से सोचने की आवश्यकता हो सकती है। यह विचार और पुनर्विचार इसलिए भी जरूरी है कि विश्व का आज का संकट इन्हीं धारणाओं पर दुर्ग बाँध कर खड़ा हुआ है।

राष्ट्र में जितनी भाषाएँ हैं, सभी राष्ट्र-भाषाएँ हैं। किन्तु यदि उनमें से एक भी ऐसी नहीं है, जिसमें राष्ट्र एक हो और केवल एक विदेशी अर्थात् अंग्रेजी भाषा ही उस एकता को धारण करने के लिए बच जाती है, तो यह एकता के भविष्य के लिए शुभ संवाद नहीं है। आपका यह प्रयत्न इसलिए और भी साधुवाद के योग्य है कि अंग्रेजी की निर्भरता आज काफी स्वयं-सिद्ध और फैशनेबुल-सी बनी हुई है।

यह भाषावाद !

भाषाओं के संबन्ध में विचार करते हुए अजीब मालूम होता है, जब भाषावाद का भी एक संकट बताया जाता है। भाषा एक कहता है, दूसरा समझता है, एक लिखता, तो दूसरा उसे पढ़ता है। अर्थात् उसकी सृष्टि स्व से परस्पर से होती है। परस्परता का विस्तार और इतिहास अनिवार्य है। काल और इतिहास का इसके सिवा और दूसरा अर्थ क्या है कि वे परस्परता का उत्तरोत्तर उत्कर्ष साधें। यह प्रक्रिया जब रुकती है, तब अवरोध और संकट जान पड़ता है। अन्य कुछ तो शायद स्वत्व बन भी सकता हो और उसको तिजोरी की सुरक्षा में रखने की भी सोच सकते हों, पर भाषा वह तत्त्व है, जिसे किसी सीमा के भीतर बंद या पाबन्द नहीं किया जा सकता। उसका लेन-देन बाहर की ओर और अन्यान्य के साथ होता ही रहता है। इस प्रक्रिया में, भाषा में समय के साथ इतना फेर-बदल हो सकता है कि पहचानना मुश्किल हो। संस्कृत तो प्रकृत भाषा नहीं है, वह नियमों द्वारा सँवारी और साधी गयी भाषा है। उस तक में कितना अन्तर आ गया है। इस प्रदेश की तमिल प्राचीनतम भाषाओं में से है। उसकी परम्परा सजीव है और साहित्य अत्यन्त समृद्ध है। लेकिन आधुनिक तमिल प्राचीन से क्या कुछ भिन्न नहीं है?

हिन्दी की विलक्षणता

...स्वत्व को सर्वत्व की ओर उन्मुख ही रहता है। इसीमें से वह स्वत्व परस्परता के विस्तार द्वारा विराट् और विराट् से विराटतर होता जाता है। भाषाओं के विकास की कहानी में यह सत्य और भी प्रकाशित दीखेगा।

भारतीय भाषाओं के बीच हिन्दी की विलक्षण स्थिति है। वह उस रूप में बोली-चाली नहीं जाती या बहुत सीमित प्रदेश में बोली जाती होगी। लगभग सब कहीं कुछ न-कुछ इसका जनपदीय रूपान्तर हो जाता है। अनेकानेक प्रादेशिक बोलियों, यहाँ तक की भाषाओं ने मिल-जुल कर उसे रूप दिया है। वह एक सम्मिश्र नागरिक भाषा है, जिसको लोग हाट-बाट में काम में लाते हैं; और घर-द्वार पहुँच कर फिर अपनी मूल बोलियों से काम लेने लग जाते हैं। हिन्दी का इतिहास उस अर्थ में सबसे कम प्राचीन और बदलती हुई परिस्थिति एवं राजनीति के सबसे अधिक अधीन रहा है। उसके सृष्टि निर्माण में बाह्य धाराओं का बड़ा प्रभाव है। उसने मानों फैलती हुई परस्परता में से उदय पाया है। अभी हाल तक खड़ी बोली हिन्दी को उर्दू से अलग पहचानना मुश्किल था। 'उर्दू' तो कहते ही लश्कर और छावनी को हैं। अर्थात् विग्रह और संघर्ष में से रूप और विकास पाते हुए जीवन की आवश्यकता में से उसका जन्म और पोषण हुआ है। इस तरह उसका रूप कम-से-कम सुनिश्चित है और अधिक-से-अधिक उसमें अवकाश है। राजनीतिक बल शायद उसमें विशेष है और सांस्कृतिक गहनता अपेक्षाकृत कम हो सकती है। व्यापकता का गहराई के साथ अनिवार्य संबन्ध भी नहीं है। हिन्दी का उदय और उत्थान उसका विस्तार और रूप-निर्माण मानों विकासशील राष्ट्र-जीवन के तर्क से ही हुआ और होता रहा है।

बनती और बहती हुई भाषा

फिर भी, यह हिन्दी किसी बाहरी प्रसाधन या प्रयोजन में से ही नहीं उपज आयी। यह भारत देश मानों धर्मप्राणता द्वारा सदा से एक बना चला आ रहा है। और नाना मत, सम्प्रदाय उसमें समावेश पाते गये हैं। पुण्य भावना से साधु-सन्त और यात्री गिरस्ती, तीर्थ धामों की प्रदक्षिणा करते हुए, एक से दूसरे देश में सदा घूमते रहे हैं। भारतीय मानस और मानव की यह यात्रा इतिहास में कभी नहीं रुक पायी है। उसको अवश्य किसी न किसी भाषा का सहारा रहा है और वह भाषा व्यवहारोपयोगी रूप में हमेशा बनी रही है, कभी नष्ट नहीं हुई है। अंग्रेजों के आने पर अवश्य ऐसा मालूम हुआ कि उसे धरती में मुँह ढकना और फैशन के चलन से बाहर हो जाना पड़ा है।

जिसे हम 'हिन्दी' कहते हैं, उसके मूल आधार में वह सीधी उस प्राकृत या प्राकृतिक—या अपभ्रंश की धारा से जुड़ी हुई है। इस भाँति जन भाषा हिन्दी के मूल को इतिहास में गहरा गया हुआ भी देखा जा सकता है। किन्तु यह जन भाषा 'हिन्दी' कोई ऐसी निर्दिष्ट और नियन्त्रित भाषा नहीं है कि अमुक वर्ग या प्रान्त उसके सम्बन्ध में स्वत्व-गर्व रख सके। वह खुली भाषा है, बल्कि बनती और बहती हुई भाषा है, उसमें राष्ट्र से कम कोई अस्मिता नहीं जुट सकती है। सभी भाषाओं का अनुदान उसमें आ सकता और उसके स्वत्व, निर्माण में अपने भरपूर प्रभाव का योग दे सकता है।

यह निश्चित है कि सब भारतीय भाषाओं का भविष्य एक और एकसाथ है। एक की उन्नति में सबका उत्कर्ष है। ऐसा हो नहीं सकता कि एक की श्रीवृद्धि दूसरे को प्राप्त न हो। यह अनिवार्यता वस्तुस्थिति में ही गर्भित है और असम्भव है कि सब भाषाओं की परस्परता अधिकाधिक निविड़ न होती जाए। बाधा तब पड़ती है, जब हम एक-दूसरे के निकट आते हैं और अपनी-अपनी निजता और निज-भाषा को छोड़ कर आते हैं। वह संपर्क जो अंग्रेजी के द्वारा सिद्ध हो पाता है, मानों काम-काज तक ही रहता है, उसके आगे दोनों को अलग-अलग किनारों पर छोड़ जाता है। परस्पर के आदान-प्रदान से प्राप्त होने वाली हार्दिकता से वह सूखा रह जाता है और भावात्मक ऐक्य की स्थिति नहीं पैदा होने देता। भाषा के रूप में अंग्रेजी को तमिल या हिन्दी क्या दे सकती है? अंग्रेजी की प्रकृति ही अलग है।

किन्तु भारतीय भाषाओं की बहुत दूर तक एक ही प्रकृति है। उन सबका अधिष्ठान भी एक ही संस्कृति है। इस तरह वे भाषाएँ यदि सीधे परस्पर सम्बन्ध में आयें तो एक-दूसरे में उतरे और रंगे बिना नहीं रह सकती। आवश्यकता है कि हम इस तत्त्व को जल्दी-से जल्दी पहचान लें कि सब भारतीय भाषाएँ एकसाथ हैं और एक भवितव्य में बंधी हैं। अपने आपसी सम्पर्क के लिए जब वे पराया सहारा लेती हैं तो मानों अपने बीच अन्तर और अजनबीपन को मजबूत और सारे देश को कमजोर करती हैं। ●

ता० १४-१५ अक्टूबर '६१ को तिरुचिरापल्ली में समारोहित तमिलनाड हिन्दी प्रचार-सभा द्वारा आयोजित अखिल भारतीय भाषा-सम्मेलन में किये गये 'युगप्रभात' में छपे अध्यक्षीय भाषण से।

॥ सत्यं जगत् स्फूर्तिः जीवनं सत्यशोधनम् ॥

भूदानयज्ञ

लोकनागरी लिपि *

ग्रामदान ही क्यों ?

लोग पूछते हैं कि एक ही चीज दस साल से समझाते हुए आप घूम रहे हैं, तो आपको थकान कैसे नहीं आती ?

असम प्रदेश के आप लोग जन्म से सतत भात खाते आये हैं। फिर भी भात की अरुचि तो आपको नहीं हुई। भात खाने वालों को और कुछ भी मिले तो संतोष नहीं होता है, जितना वह प्रीय होता है। मुझे भूदान और ग्रामदान-विचार के लिए उतना ही प्रेम है। हम समझते हैं कि भात के बिना असम के लोगों का नहीं चलेगा। आप समझते होंगे कि हमारा तो चल ही रहा है !

असम में चार सौ ग्रामदान हुए। इतने से क्या होगा ? असम में गांव तो पचीस हजार हैं। पचीस हजार गांवों में लोग भात खाते हैं। इसलिए ग्रामदान की भात की उपमा कैसे दें ? भात के बिना तो नहीं होता है, पर ग्रामदान के बिना तो चल ही रहा है—ऐसा आप समझते होंगे। लेकिन हमारी राय में ग्रामदान के बिना सिर्फ असम के ही नहीं, हिन्दुस्तान के गांवों का भी नहीं चलेगा, गांवों का उद्धार नहीं होगा। अगर यह विचार आपको जंचेगा तो घर जाकर भात पका कर खाइये और ग्रामदान-पत्र लिख दीजिये। यह असम के लिए भात है। इस भात के बिना असम का नहीं चलेगा।

(लांगपतोला, असम) —विनोबा

* लिपि-संकेत ि = ी ; ी = ई, ख = ख, संयुक्ताक्षर हलंत चिह्न से।

सम्पादकीय

दस रुपये से कम में गुजर करनेवाले हम !

हाल में उत्तरप्रदेश सरकार के अर्थशास्त्र और आँकड़ा-विभाग की तरफ से एक जाँच सर्वे की गयी थी। उससे हमारी दरिद्रता पर भरपूर प्रकाश पड़ता है। सर्वे में बताया गया है कि उत्तरप्रदेश की एक-चौथाई जनता—जिसमें देहातवालों की संख्या अधिक से अधिक है—हर माह अपने भोजन और जीवन की अन्य आवश्यकताओं पर हर व्यक्ति पर दस रुपया या उससे भी कम रुपया खर्च करती है।

शहरों की अपेक्षा देहातों में विभिन्न स्तर वाली जनता की क्रयशक्ति में बहुत अधिक विषमता है। साथ ही यह भी है कि जिन लोगों की आमदनी बहुत कम है, वे अपनी दो तिहाई से भी अधिक रकम भोजन पर खर्च करते हैं। आखिर पेट तो भरना ही है। कहीं-कहीं तो लोग अपनी ८२ फीसदी रकम भोजन पर खर्च करते हैं। और ये भोजन पर ८२ फीसदी रुपया खर्च करने वाले लोग १० रु० या उससे भी कम रकम भोजन की मद में खर्च करते हैं। उनका कपड़ा भी उसीमें शामिल है। कम आयवाले लोग दूध तथा ताकत देने वाली अन्य चीजों पर ६ से लेकर १० फीसदी तक ही खर्च कर पाते हैं। कपड़ों पर केवल उतना ही पैसा खर्च किया जाता है, जिसके बिना किसी तरह लज्जा नहीं ढकी जा सकती ! देहात में जिन लोगों की हालत कुछ अच्छी है, वे भोजन पर २३ फीसदी रकम खर्च करते हैं। शहरों में भोजन की अपेक्षा अन्य वस्तुओं पर अधिक पैसा खर्च किया जाता है।

हमारी राष्ट्रीय आय १९४५-४६ में २०४ रु० प्रति व्यक्ति कूती गयी थी, १९४८ में २२८ रु० और १० साल बाद १९५८-५९ में २९३ रु०। इस अनुमान में मोटी मोटी आमदनियाँ भी शामिल हैं। इसका स्पष्ट परिणाम यह है कि हमारी देहाती जनता की आय बहुत ही कम, उत्तरप्रदेश की सर्वे के अनुसार वह १५० रु० सालाना से अधिक नहीं मानी जा सकती। उत्तरप्रदेश के देहातों की जो हालत है, वही या उससे मिलती जुलती हालत देश के अन्य अंचलों में है। उड़ीसा, कोंकण आदि प्रदेशों में तो शायद उससे भी गयी-बीती हालत है।

हमारी यह भयंकर दरिद्रता विश्व में अपना सानी नहीं रखती। आस्ट्रेलिया में आज से १२ साल पहले जहाँ हर व्यक्ति की आय २६५७ रु०, कनाडा में ३२२५ रु०, ब्रिटेन में २५७७ रु०; स्विटजरलैंड में २९२७ रु० और अमेरिका में ५११९ रु० थी, वहाँ आज १२ साल के बाद हमारे देश में हर व्यक्ति की सालाना आमदनी है २९३ रु० और देहात के गरीबों की आमदनी है १५० रु० सालाना !

भोजन वस्त्र पर १० रुपये मासिक से भी कम खर्च करने वाले इन देहातवालों से एकाकार होना और इनकी दशा सुधारना ही तो गांधी की पुकार थी। वही पुकार विनोबा की है।

काश, हम इस दिशा में बढ़ सकें !

एक अनुकरणीय बलिदान !

जमीन जहाँ की तहाँ पड़ी रहती है, फिर भी जमीन की बात को लेकर आज तक लाखों आदमियों की जानें जा चुकी हैं।

अभी कुछ ही दिन पहले रोहतक जिले के मातनहेल गाँव में दो किसान जमीन की बात को लेकर आपस में उलझ गये। बात बढ़ते-बढ़ते हाथापाई की नौबत आ गयी। स्थिति बिगड़ते देख कर रामानन्द नाम का एक भाई बीच में कूद पड़ा और उसने दोनों से यह प्रार्थना की कि आप लोग आपस में न लड़ें।

'तू कौन होता है हमारे बीच में बोलने वाला ?' ऐसा कह कर उत्तेजित किसान ने उस ७० वर्ष के बूढ़े के सिर पर तीन लाठियाँ जमा दीं। घण्टे भर में रामानन्द का देहान्त हो गया। दो भाइयों की अशांति मिटाने के लिए रामानन्द शहीद हो गया। उसने शान्ति सेना में अपना नाम नहीं लिखाया था सही, पर वह कहा करता था—'मैं शांति सैनिक तो हूँ ही—मौका आने पर देख लेना !' उसने अपने बलिदान द्वारा अपनी यह भविष्यवाणी सत्य सिद्ध कर दी।

और उसकी विधवा पत्नी ?

पुलिस जब उन दोनों झगड़ने वाले किसानों को बाँध कर ले जाने लगी तो पुलिस से वह बोली—'मेरा पति तो अब जाता ही रहा है, अब आप इन लोगों को रिहा कर दीजिये।'

विनोबा ने इस बलिदान की सराहना करते हुए इस क्षमाशीला बहन को धन्यवाद दिया है और कहा है कि इस घटना से शांति-सैनिकों को निश्चय ही बड़ा बल मिलेगा !

सचमुच ! हमें इस बहन के शब्दों में ईसा के उन शब्दों की ही प्रतिध्वनि सुनाई पड़ती है, जो उन्होंने क्रूस पर लटकाने वालों के लिए कहे थे—'हे परम प्रभु, तू इन लोगों को क्षमा करना। वे नहीं जानते कि वे क्या कर रहे हैं।'

दोनों को हमारे कोटि-कोटि प्रणाम !

बाबा की तीव्रता

बिहार में 'बीघा कट्ठा अभियान' बड़े उत्साह से चालू है। बाबा इसे अत्यन्त महत्त्व का मोरचा मानते हैं। उनका विश्वास है कि इस अभियान से सारे देश में एक प्रचण्ड विद्युत् प्रवाह शुरू होगा। ३ दिसम्बर तक काम न पूरा हो तो वे मई तक—राजेन्द्र बाबू के आने तक—उसकी अवधि बढ़ाने के लिए भी तैयार हैं। हाल में उन्होंने श्री नगजी को लिखे एक पत्र* में शेक्सपीयर का एक वाक्य उद्धृत किया है—'देयर इज ए टाइड इन दि एफेयर्स आफ मैन !' वैसी यह भरती की बेला है। बाबा ने ३ दिसम्बर तक बिहार में न आने का तय किया है, वह भी इसी भरती में मदद देने के लिए है। बाबा के हृदय की इस तीव्रता से हमारे कार्यकर्ताओं को निश्चय ही प्रेरणा मिलेगी, ऐसा हमारा विश्वास है।

—श्रीकृष्णदत्त भट्ट

* देखें 'भूदान यज्ञ,' ता० १०-११-६१

प्रादेशिक भाषाएँ नागरी लिपि में भी लिखी जायें

असमी में छपा हुआ मैं पढ़ सकता हूँ, लेकिन लिखा हुआ पढ़ने में जरा तकलीफ होती है। लिखा हुआ नागरी में हो तो पढ़ने में आसान होता है। इसीलिये राष्ट्र के नेताओं ने सुझाया है कि हिंदुस्तान की हरएक भाषा नागरी में भी लिखी जानी चाहिये।

कुछ लोग समझते हैं कि नागरी उन पर लादी जा रही है, पर ऐसा नहीं है। एक लिपि हटा कर उसकी जगह दूसरी नहीं रखी जा रही है। सुझाव यह है कि नागरी में भी लिखा जाय और जिस लिपि में आज लिखा जाता है, उसमें भी लिखा जाय। मेरे पास 'नामघोषा' नागरी लिपि में आयी है। एक प्रति असमी लिपि में भी है। दोनों लिपियों में भाषा लिखी जाय तो आसान होगा। उसी तरह से तमिल, तेलुगु, कन्नड का भी हो। अपनी अपनी लिपि तो भले चले। उसके साथ-साथ नागरी में भी लिखा जाय तो सारे भारत को एक-दूसरे की भाषा पढ़ने में सुविधा होगी। 'नामघोषा' नागरी में लिखी जाय तो पंजाब वाले और मथुरा वाले भी पढ़ेंगे, याने उसका प्रचार बाहर होगा। असम प्रदेश में असमिया में छपे। इसीलिये राष्ट्र-नेताओं ने कहा कि दोनों लिपियों में छापने से देश को लाभ होगा।

[नाजीरा, असम, २२-१०-'६१] —विनोबा

भारत की भावनात्मक एकता : ३

दादा धर्माधिकारी

'भाषिक प्रेम' एक अलग चीज है और 'भाषिक राज्यवाद' एक बिल्कुल अलग चीज है। हर मुसलमान चाहे जहाँ का हो, कहता है कि उर्दू मेरी भाषा है, जिसको वह आती भी नहीं है! पंजाब का हिन्दू कहता है कि हिन्दी मेरी भाषा है। मैं दिल्ली में जब संविधान-परिषद में था, तो पंजाब के कई हिन्दू सिक्ख मित्रों के लड़के और लड़कियाँ मेरे पास नागरी में लिखे हुए कागज लाती थीं। मैं पूछता कि क्यों लाये तो कहते कि इसमें हमारी भाषा के विषय में हमारी राय लिखी हुई है। मैं कहता कि तुम पढ़ कर सुनाओ, तो कहते कि हम नागरी नहीं पढ़ सकते! ऐसा क्यों? तो जवाब मिला कि उस भाषा के प्रति अभिमान है! अभिमान तो है, लेकिन क्या वह तुम्हारी अपनी भाषा है? उत्तर मिला कि वह हमारी अपनी भाषा नहीं है, पर होनी चाहिए। इसलिए भाषा को मनुष्य स्वीकार कर सकता है। यह मनुष्य और पशु में अन्तर है।

आज हमारे पूरे देश में जब से 'राज्यवाद' और सत्तावाद की विभीषिका आतंक फैलाने लगी, तब से मनुष्यों में असल में भाषिक संवेदना या भाषिक प्रेम उतना नहीं है, जितना भाषिक राज्यवाद है। इसमें से भाषा धीरे-धीरे निकल जायगी और शुद्ध राज्यवाद शेष रहेगा। भाषा जिस दिन सिंहासन पर बैठ जाती है, उस दिन वह रानी बन जाती है, माँ नहीं रहती। और जो रानी होती है, वह सम्राज्ञी बन सकती है, जगत्माता नहीं बन सकती।

जितने सम्प्रदायवादी, समाजवादी लोग हैं, उन लोगों के पास 'एक लोक-भाषा' का नारा है—"पीपल्स लैंग्वेज"—'दि पीपुल मस्ट बी एबुल टु एक्सप्रेस देम-सेल्व्ज इन दि ओन्ली लैंगवेज दे नो।'—जो भाषा जनता को आती है, उस भाषा में अपने आपको अभिव्यक्त करने की आजादी, स्वतंत्रता उसको होनी चाहिए। उसके लिए संयोग, अवसर होना चाहिए।

एक हैं महाराष्ट्र में बापूजी अणे, दो या तीन पीढ़ियों के पहले इनकी भाषा मराठी नहीं थी। महाराष्ट्र राज्य के मंत्री हैं फलमवार। मध्यप्रदेश के भूतपूर्व अन्न-मंत्री, भारत के फुडकमिश्नर श्री आर. के. पाटिल और उत्तर प्रदेश के नाम लेने हों तो स्व० गोविन्द वल्लभ पन्त, उ० प्र० विधान सभा के अध्यक्ष श्री आत्माराम गो० खेर। उ० प्र० में जितने पंत, जोशी वगैरह हैं, ये किसी वक्त महाराष्ट्रीय थे, पर आज मराठी बिल्कुल समझते नहीं! मालवा के कई ब्राह्मण महाराष्ट्र में आज बसे हुए हैं, जो *मालवी भाषा बिल्कुल* नहीं समझते।

इस देश में आज तक कभी भाषा का प्रश्न ही नहीं उपस्थित हुआ था और जब उपस्थित हुआ तो इस रूप में हुआ कि एक भाषा बोलने वाला दूसरी भाषा के प्रदेश में निर्वासित हो गया हो! इतिहास में यह अभूतपूर्व घटना है। ऐसा कहीं भी कभी नहीं हुआ। पहले निर्वासित हुए सम्प्रदायवादी, उसके बाद निर्वासित हुए भाषिक और गांधी-हत्या के समय निर्वासित हुए जातिवादी।

जब आसाम और बंगाल का झगड़ा चला तो कलकत्ता के बहुत-से मारवाड़ी भागने लगे। एक रिश्तेदार ने पूछा कि भाई, तुम क्यों भाग रहे हो? कहा कि हम टालीगंज, भवानीपुर में रहते थे, अब बड़े बाजार में आ गये हैं। बड़े बाजार में क्यों आये? इसलिए कि यहाँ मारवाड़ियों की संख्या अधिक है। यहाँ से क्यों आ गये? कहा कि इन बंगालियों के, आसामियों के कारण यह भावना पैदा हो रही है कि यहाँ भी गैरबंगाली नहीं चाहिए, इसीलिए हम यहाँ से भाग कर आये।

नतीजा क्या होगा? बंगालीस्तान, मारवाड़ीस्तान, आसामीस्तान वगैरे। एक पाकिस्तान हुआ, पर यहाँ अनन्त भाषीयस्तान बने! और इसे हमने प्रगति कहा है! यह दैवदुर्विलास है। और इस देश के पढ़े-लिखे व्यक्ति के चित्त में इसके लिए वेदना नहीं है। सबसे भयानक वस्तु यहाँ यह है कि जितने भाषिक संघर्ष हुए, उनमें कर्णार्जुन इस देश के विद्यालयों, कालेजों और विश्वविद्यालयों के विद्यार्थी और प्रोफेसर रहे, राजनैतिक पार्टियाँ रही हैं और हैं भी। एक कालेज के लड़के से डिब्रूगढ़, आसाम में मैंने पूछा था कि फर्स्ट क्लास आ गये हो, तो अब आगे क्या विचार है? उसने कहा, अमेरिका जाने वाला हूँ। मैंने कहा कि तुम वहाँ ऐसा करना कि असमिया में ही बोलना। तो बोला, नहीं-नहीं, असमिया में नहीं, मैं अंग्रेजी में बोलूँगा। मेरी 'मीडियम' ही अंग्रेजी है। मैंने कहा कि तुमने लड़ाई किसके लिए की थी—असमिया मीडियम के लिए, पर अपने लिए लिया अंग्रेजी मीडियम। क्यों? तो अमेरिका जाना है!

इस तरह की 'स्प्लिट परसनालिटी' हमारे इस देश के आदमी की है। और 'स्प्लिट परसनालिटी' का नाम मेडिकल शास्त्र में 'सिजोफ्रेनिया' है। जिसे 'सिजोफ्रेनिया' हो जाता है, उसे पागलखाने से बाहर नहीं रहने देते। लेकिन आजकल परिस्थिति ऐसी है कि जिसे वह न हुआ हो, उसे मेंटल हास्पिटल में जाना पड़ता है!

विघटनकारी तत्त्वों में सबसे अधिक भयानक तत्त्व भाषावाद है। किसी क्रान्तिकारी ने, चाहे समाजवादी या साम्यवादी ने भाषा को वर्गनिष्ठ नहीं माना है।

स्टालिन की एक छोटी-सी किताब है—"मार्क्सिज्म इन लिंग्विस्टिक्स"। उसमें जो बहुत-से सिद्धांत स्थापे उनको छोड़ दें। एक सिद्धांत उसमें स्थापना कि भाषा वर्गनिष्ठ नहीं होती, भाषा किसी वर्ग की नहीं होती। एक भाषा उस सबकी होती है—जिस क्षेत्र की भाषा होती है, वह उस सारे क्षेत्र की होती है। लेकिन भाषाओं का विकास किस तरह होता है? भाषिक साम्यवाद की तरफ, सारी भाषाएँ एक-दूसरे की तरफ प्रगति करती है। कोई एक भाषा दूसरी भाषा पर आक्रमण करती है, तो कोई भाषा दूसरी भाषा पर आक्रमण नहीं करती। लेकिन सारी भाषाएँ एक-दूसरे से अनुवाद लेती चली जाती हैं। हर भाषा सम्पन्न होती है और इसमें से एक अखिल जागतीय भाषा निष्पन्न होती है। इस प्रकार एक वैज्ञानिक विवेचन उसमें है।

लेकिन यह अखिल जागतीय भाषा तब निष्पन्न होती है, जब भिन्न भाषिक लोग एकसाथ रहने लगते हैं। आज हम इस देश में भिन्न भाषिक लोगों का एकसाथ रहना ही बन्द कर देना चाहते हैं। यूनिवर्सिटी में हमारी भाषा वाला होगा, दूसरा कोई न होगा। क्या बात है, ये सारे मारवाड़ी आ गये हैं, गुजराती आ गये हैं। ये शोषण करते हैं, इन सबसे 'गो बैक' कहना चाहिए, वापस भेज देना चाहिए। प्रान्तीय लोग होने चाहिए व्यापार में। सर्विस में हमारे प्रान्त के लोग होने चाहिए। विश्वविद्यालय में हमारे प्रान्त के लोग, नौकरियों में हमारे प्रान्त के लोग। मिनिस्ट्री में तो दूसरे हो ही नहीं सकते, हमारे ही प्रान्त के लोग होने चाहिए। यह सब क्या बताता है?

ऐसा अगर होगा तो अखिल भारतीयता का विकास कहाँ होगा? शून्य में, अन्तरिक्ष में, पृथ्वी में झगड़ा ही झगड़ा है। इसलिए अमेरिका और रूस, दोनों चन्द्रमा में जा रहे हैं। क्या हमारी यही स्थिति होने वाली है? जवाहरलालजी का शान्ति का संदेश इस देश से बाहर के लोग सुनते हैं। पर देश में एक दिन भी शान्ति नहीं। इस पर विचार करने की आवश्यकता है। अन्त में प्रान्तीय जीवन का क्या कोई क्षेत्र बचेगा? संविधानात्मक नहीं रह सकता। आप मानते हैं कि दिल्ली में जो जाकर बैठेगा वह अखिल भारतीय बन जायेगा, पर यह असम्भव है। दिल्ली में जो जाकर बैठेगा वह अखिल भारतीय तो नहीं, दिल्लीवाला हो सकता है। जवाहरलाल नेहरू तो अखिल भारतीय हैं। लेकिन आज के प्रान्तों के चीफ मिनिस्टरों में क्या कोई हो सकता है अखिल भारतीय?

हड़ताल और उसका औचित्य?

ब्रह्मलोचन दुबे

श्री शंकरराव देव का एक विचार-प्रेरक लेख 'भूदान-यज्ञ' के ता० २५ अगस्त, '६१ के अंक में प्रकाशित हुआ था। हड़ताल के समय उन्होंने जनता को संगठित होकर सारा काम खुद कर लेने की सलाह उस लेख में दी है। पर प्रश्न यह है कि हड़तालें क्यों होती हैं और हमारा प्रयत्न हड़ताल को सर्वथा समाप्त करना है या नहीं?

हड़ताल आर्थिक विषमता मिटाने और हर तरह की परेशानी तथा अन्याय के खिलाफ लड़ने का एक शान्तिपूर्ण अस्त्र है। यह संभव है कि मजदूर इस अस्त्र का गलत प्रयोग करें। पर आज की हालत में, जब कि आर्थिक विषमता अपनी चरम सीमा पर है, हड़ताल का प्रयोग गलत नहीं कहा जा सकता।

समाज में दो वर्ग हैं: (१) व्यवसायिक और पूँजीपति, दूसरे शब्दों में अश्रम-जीवी और (२) श्रम-जीवी। चाहे केन्द्रीय सरकार का कर्मचारी हो, चाहे प्रान्तीय सरकारों का या स्वायत्त संस्थाओं का हो या औद्योगिक संस्थानों का हो या दैनिक मजदूरी पाने वाला खेतिहर मजदूर हो अथवा कड़ी मेहनत करने पर भी पेट भर अन्न न पाने वाला किसान हो—सब एक ही, श्रम-जीवी वर्ग में आते हैं, और चूँकि ये सब करीब-करीब असंगठित हैं, इसलिए इनमें से कुछ कभी हड़ताल करते हैं और कुछ कभी। ये कभी एक ही समय हड़ताल नहीं करते हैं और वस्तुतः अगर ये सब एक ही समय में हड़ताल करें तो अवश्य ही इनके श्रम पर आधारित जो वर्ग, है वह एक बारगी ही धड़ाम से नीचे आ जायेगा।

धनिक और अधनिक की खाई जैसी ऊँच-नीच विचार-भेद की परिस्थितियाँ समाज में व्याप्त रहेंगी—फिर व्यवस्था चाहे पूँजीवादियों के हाथ में रहे, चाहे समाजवादियों के रहे या साम्यवादियों के। इसीलिए इन सारी व्यवस्था प्रणालियों में हड़ताल सर्वथा संभव है। अगर श्रमिक-वर्ग परेशान है, तो अवश्य ही उसे अपनी तकलीफों के निराकरण के लिए हड़ताल करनी चाहिए।

हड़ताल विषमता की विभीषिका मिटाने का एक माध्यम है, इसलिए प्रचलित विषम व्यवस्था में उलट-फेर होना अनिवार्य है। इसके स्थान पर कोई नई व्यवस्था

, जिसमें स्थिति वैषम्य की ओर से साम्य की ओर उन्मुख हो। किन्तु प्रचलित वितरण-प्रणाली में सुविधा-सम्पन्न वर्ग अपनी सुविधाओं को न छोड़ने के ध्येय से मूल्य बढ़ाता है, टैक्स बढ़ाता है और अन्य सभी प्रयत्नों से पूर्व स्थिति कायम रखता है। इस हालत में हड़ताल की आवश्यकता सदा बनी ही रहती है।

स्मरणीय है कि सुविधा-सम्पन्न वर्ग परम संगठित है और उसने अपनी सम्पत्ति और सुविधाओं की रक्षा के लिए 'कल्याणकारी राज्य' के नाम पर खर्चीला लोकराज्य इतना मजबूत किया है कि जिसका सारा भार गरीबों पर है, जब कि उससे लाभ तो सुविधा-सम्पन्न वर्ग ही उठाता है। ऐसी दशा में प्रश्न यह उठता है कि श्री शंकरराव देव हड़ताल के समय किनसे तटस्थ होने को कहते हैं और इसका असर किसके खिलाफ पड़ेगा?

इसका असर क्या श्रमाधारित वर्ग पर ही नहीं पड़ेगा? और इससे क्या अश्रमाधारित अधिक मजबूत नहीं होंगे? उन्होंने तटस्थ वृत्ति से ऐसा करने की सलाह दी है। वृत्ति तटस्थ भले ही हो जाय, पर उसका असर कभी भी तटस्थ *नहीं रह सकता।* एक सबल और निर्बल की लड़ाई में अगर पुलिस न्याय की माँग पर भी निर्बल की सहायता न करे और सबल को दण्ड न दे एवं अपने को तटस्थ वृत्ति वाला कहे, *तो क्या वास्तव में वह वृत्ति तटस्थ हुई? ऐसी स्थिति में असली शान्ति कैसे होगी? श्रमाधारित समाज के* निर्माण के लिए किसे महत्त्व देना होगा? इसलिए यह अच्छी तरह समझने की जरूरत है कि तटस्थता के नाम पर हमारे कदम कहीं हमारे लक्ष्य की विपरीत दिशा में तो नहीं चल पड़े हैं!

अगर समाज में निज श्रमाधारित और पर-श्रमाधारित, ऐसे दो वर्गों के स्थान पर उच्च वर्ग (*व्यवस्थापक सहित*), मध्यम वर्ग और हीन वर्ग या निम्न वर्ग मान लिया जाय—जिसे धीरेन्द्रभाई के शब्दों में 'सुखिया दुखिया और भुखिया' भी कह सकते हैं—तो उच्च वर्ग हड़ताल नहीं करेगा। अगर मध्यम वर्ग हड़ताल करता है, तो उसके दो विचार हो सकते हैं—उच्च वर्ग जैसी सुविधाएँ प्राप्त करना और दूसरा हीन वर्ग का शोषण करना। स्पष्ट ही वे दूसरी विचार-धारा से प्रभावित नहीं होते। यह हो सकता है कि उसका आर्थिक बोझ हीन वर्ग को ही भुगतना पड़े। पर इस प्रक्रिया का मूलाधार केन्द्रित प्रणाली का उत्पादन है तथा वितरण की विषमता है।

ऐसी स्थिति में तटस्थ बने रहने का अर्थ है मध्यम वर्ग को उच्च वर्ग की ओर प्रगति करने में सहायक होना और उनका भी भार, अन्य उच्च वर्ग के लोगों की भाँति अपने सिर पर ले चलना। जान पड़ता है कि इसीके विकल्प के रूप में संगठित होने की बात कही गई है और सारा काम खुद करने को कहा गया है। किन्तु इस काम करने की प्रवृत्ति से व्यवस्थापक-वर्ग मजबूत होगा और मध्यम वर्ग हारेगा। इस खींचातानी का सारा दुष्परिणाम हीन वर्ग को ही भोगना पड़ता है, अतः मेरी नम्र राय में हड़ताल के समय ही नहीं, सामान्य दशा में हीन वर्ग को संगठित होना चाहिए और अपना स्वतंत्र अभिक्रम जगाना चाहिए। देश का सारा सामाजिक, आर्थिक और राज्य-व्यवस्थापक ढाँचा समाप्त करके नये सिरे से शासन और शोषणरहित समाज का निर्माण करना चाहिए। मेरी समझ में सर्वोदय का सारा कार्यक्रम इसी प्रक्रिया को लाने के लिए है।

तटस्थ वृत्ति के तीन परिणाम हो सकते हैं: (१) दोनों लड़ने वाले दलों में निर्बल यानी हड़ताली हार जाएँ। (२) सबल हार जायँ। (३) या फिर दोनों समाप्त हो जाएँ और हीन वर्ग का प्रभुत्व स्थापित हो जाय।

अगर तीसरे विकल्प का आना निश्चित हो, तब तो तटस्थ वृत्ति उपादेय है, अन्यथा तटस्थ-वृत्ति बिना अपने उद्देश्य की तरफ बढ़े एक मनमाना कदम है। यह तो तभी साध्य होगा जब हड़ताल चालू हो और *हीन वर्ग या दूसरे अर्थों में श्रम*जीवी वर्ग संगठित होकर उन समस्त अश्रम जीवियों को—चाहे व्यवस्थापक के हों उच्च वर्गीय हों या उच्च मध्यमवर्गीय हों जो दूसरों के श्रम पर आधारित हैं, समाप्त कर दें और सारी व्यवस्था अपने हाथों में ले लें और फिर उनको कभी भी अपने पास न फटकने दें। हाँ, अगर वे श्रमाधारित जीवन बिताना चाहें तो उन्हें इसकी सुविधाएँ प्रदान कर दें।

यह तो हुआ सैद्धान्तिक विवेचन। अगर काशी की हड़ताल को ही लें, जिसे भंगियों ने किया था, तो बात कुछ और स्पष्ट हो जायेगी।

काशी के भंगियों ने हड़ताल की। वहाँ के अन्य नागरिकों ने—जिनमें गरीब भी थे और अमीर भी थे, सुविधारहित भी थे और सुविधासम्पन्न भी थे—सारा काम तटस्थ वृत्ति के नाम पर कर लिया (ऐसा मान ले रहे हैं), जिससे हड़ताल असफल हो गई और भंगियों को कुछ नहीं मिला। उनकी तकलीफें पूर्ववत ही रहीं! तो क्या हमारा ध्येय वास्तव में यही है। क्या हमारी तटस्थता से भंगियों की तकलीफें दूर हो गईं? अवश्य ही हमें 'जनता' शब्द में छिपी सारी गूढ़ताओं का विश्लेषण करना चाहिए।

अन्यथा हम न चाहते हुए भी और अपनी श्रद्धा की पूरी पवित्रता के होते हुए भी गरीबों को गरीबों के ही खिलाफ खड़ा करेंगे और मौलिक क्रान्ति को अपनी राह के विरुद्ध कदम उठायेंगे।

एक शांति-सैनिक की शहादत

झगड़ा मिटाने के लिए आत्मबलिदान!

मारने वाले को क्षमा करने वाली विधवा

'इस शहादत से शांति-सैनिकों को बहुत बल मिलेगा'—विनोबा

पंजाब के भक्त हृदय लोकसेवक श्री फूलिया भगत ने विनोबाजी को एक पत्र में प्रसिद्धि से दूर चुपचाप काम करने वाले एक शांति-सेवक के बलिदान का जिक्र किया। उनका पत्र और विनोबाजी का उत्तर इस प्रकार है :

हमारे मारोत ग्राम के पास ही एक मातनहैल ग्राम है। उस ग्राम के अन्दर एक सहायक शान्ति सैनिक रामानन्द था। उसने वैसे शान्ति-सैनिक का फार्म नहीं भरा था, लेकिन जिस समय मैं उससे शान्ति-सैनिक के विषय में बातचीत करता था, तब कहता था कि 'मैं शान्ति-सैनिक तो हूँ ही, चाहे कभी मौके पर देख लेना!'

आज से एक महीने चार दिन पहले की बात है। इस ग्राम के अन्दर दो किसान अपनी जमीन के विषय में झगड़ा कर रहे थे। झगड़ा बहुत ही ज्यादा बढ़ गया था। देखने वालों की भीड़ काफी थी। उन दोनों में आपस में पिटाई या हाथापाई शुरू हो गई। इतने में उधर से सहायक शान्ति-सैनिक रामानन्द भी आ निकला। वह उनको छुड़ाने ही लगा था कि उनमें से एक *आदमी ने सोचा कि यह नीच* जाति का हमारे अन्दर ऐसा घुसने वाला कौन है! ऐसा सोच कर उसने रामानन्द के सिर पर तीन लाठियाँ मारीं। रामानन्द कुम्हार जाति का लगभग ७० साल का वृद्ध था। वह एक घंटे के बाद मर गया।

लड़ने वाले दोनों को थाने में पुलिस ने पकड़ *रखा। रामानन्द* की घरवाली कहती है कि मेरा आदमी मर गया है, अब इसे छोड़ दो। इस तरह रामानन्द के घर में शांति-विचार का पूरा प्रभाव है।

ता० २७-१०-६१ —फूलिया भगत

ग्राम मारोत, पो० गवालिस

जिला रोहतक

श्री फूलियाजी,

ता० २७-१०-'६१ का पत्र मिला। श्री रामानंदजी की घरवाली को धन्यवाद है कि उन्होंने अपने पति को मारने वाले के लिए भी क्षमा चाही। मुझे उनकी पवित्र भावना से बड़ा ही आनंद हुआ। रामानंदजी का जीवन तो सार्थक ही हुआ! उनकी शहादत से हमारे शान्ति-सैनिकों को बहुत बल मिलेगा।

असम-यात्रा, ८-११-'६१ —विनोबा

ईसा की अन्तिम मृत्यु!

ईसा के गिरजे में भीड़ थी, ईसा के उपासकों की। ईस्टर जो था, ईसा के पुनर्जीवन का दिवस! प्रार्थनाएँ की गयीं—विश्वबन्धुत्व की, प्रेम की, शान्ति की। दान और उपवास में बिताये दिन—विगत सारा मास—मानों इकट्ठा होकर पुण्य कर रहे थे आज, पूर्णाहुति थी। पादरी का संदेश यथोचित महानता लिये था।

प्रातः हो ही रहा था। उपासक बाहर आये, सड़क की ठंड—शरीर ठिठुर उठे। ऐसे में एक क्षीण वाणी नंगे भूखे की—दीनता के पुतले की। पर कौन सुने! "यह ढोंग है जी"—किसी ने कहा। सड़क सुनसान हो गयी। उसकी शान्ति को वही क्षीण ध्वनि कभी-कभी भंग करती!

और सूर्य की किरणों के साथ नगरपालिका के कर्मचारियों ने देखा—नग्न वृद्ध का शिथिल, जर्जर और निष्प्राण शरीर!

यह ईसा की अन्तिम मृत्यु थी! —वेदप्रकाश 'वटुक'

विज्ञान एवं अध्यात्म की संयोग-वेला

लक्ष्मीनारायण भारतीय

श्री जवाहरलाल नेहरू ने विज्ञान का महत्त्व प्रतिपादन करते हुए पिछले दिनों मदुराई के एक भाषण में कहा था कि 'जनता आध्यात्मिक पहलू को भी न भूले।' इसी प्रसंग में विनोबाजी के एक वक्तव्य को उन्होंने प्रस्तुत किया, जिसमें विनोबाजी ने कहा है कि 'राजनीति एवं धर्म के दिन अब लद चुके हैं। विज्ञान एवं अध्यात्म ने उनका स्थान ले लिया है।'

राजनीति की भूमिका : भेदमूलक

वस्तुतः राजनीति भी अब विज्ञान की एक शाखा मानी जाने लगी है, भले ही भौतिक विज्ञान के सदृश उसका स्थान न हो। समाज में जब से संगठन की प्रेरणा जाग्रत हुई, तब से राजनीतिक संगठन की नींव पड़ी एवं राज्य-सत्ता का उदय हुआ। इसके साथ-साथ राजनीति-शास्त्र का भी उदय हुआ एवं राजनीति आज के सामाजिक, राजनीतिक संगठन का एक अनिवार्य अंग बन गई है।

*राजनीतिक संगठन के, अर्थात् राज्य-*सत्ता के निर्माण-संगठन प्रचलन आदि का निर्माता 'राजनीति-शास्त्र' यदि नहीं, तो नियामक, नियंत्रक, प्रेरक आदि के रूप में उसने अपना हविर्भाग कम नहीं लिया है। विभिन्न राजनीतिक तत्त्वज्ञों ने तो दुनिया को हमेशा ही एकानेक विशिष्ट दिशाएँ भी प्रदान की हैं एव यह सिलसिला आज भी जारी है। ऐसी स्थिति में राजनीति का स्थान समाज-संगठन में न रहना एक विचित्र स्थिति का ही निदर्शक होगा, जब कि राजनीति ने बिखरे समाज को राजनीतिक संगठन में बाँधने में एवं उसके द्वारा समाज में व्यवस्था, नियंत्रण आदि स्थापित करने में पूर्ण योग दिया तथा अराजक की स्थिति न आने दी।

परन्तु इस चित्र का दूसरा भी एक पहलू है। *राजनीति-शास्त्र ने जो कुछ* किया हो, स्वय राजनीति ने ऐसे खेल अब तक खेले हैं एवं खेल रही है कि समाज में उससे न केवल विभेद की ही *सृष्टि हुई है, अपितु नैतिकता के ह्रास का* भी सामान उसने जुटाया है। वैसे, राजनीति के अर्थ एवं व्याख्याएँ इतनी अधिक हैं कि उसके किस भाग को विभेदकारक मानना एवं किसको संगठनकारक मानना, यह तय करने में काफी पशोपेश हो सकता है; तथापि राजनीति से विभेद बढ़ाने में सहायता ही मिली है, बल्कि राजनीति विभेद पर ही खड़ी है, ऐसा कहा जाय तो अतिशयोक्ति नहीं होगी। आज तो, कम से कम उसका यह विभेद-दर्शन बहुत तीव्र हो चला है, क्योंकि सत्ता उसकी मुख्याग बन गयी है। उसमें राजनीति यह मानी जाती रही है कि किसी एक मुद्दे पर सबको एकत्र लाकर सबकी शक्ति का संयोजन करना। पर आज जितने भी विभेद हो रहे हैं, उसकी जड राजनीति बन रही है। पश्चिम की प्रणाली ने तो विभेद की यह सृष्टि बहुत ही तीव्र रूप से बढ़ा दी है। राजनीति के सारे गुणावगुण आज एक ही चीज पर आकर टिक गये हैं एवं वह है विभेद की सृष्टि! प्रणाली, तत्त्वज्ञान, उसका व्यवहार में अनुसरण, सत्ता प्राप्ति के मार्ग, विभिन्न पद्धतियाँ एवं उनके रूप आदि सब कहीं आकर टिकते हैं, तो विभेद पर।

राजनीति राष्ट्र को राष्ट्र से, समाज को समाज से, दल को दल से एवं व्यक्ति को व्यक्ति से तोड़ कर असंख्य विभेद इस प्रकार खड़ी कर रही है कि मानव की सहजीवन की एवं एकात्म-भावना की बुनियाद ही ढह रही है और जनता शक्ति-हीन होती जा रही है, फलतः लोकतंत्र फौरन ही सैनिक तानाशाही के अधीन होता जा रहा है। और यह सब हो रहा है, नैतिकता की कीमत पर, क्योंकि लक्ष्य येन-केन प्रकारेण प्रभुत्व-स्थापना, सत्ता-प्राप्ति आदि तक ही सीमित रह गया है।

धर्म का विघटक स्वरूप

धर्म भी समाज की धारणा के लिए ही हो रहा है। सभी धर्मों के अंतर-तत्त्व ऐसे शाश्वत सत्यों का पुरस्कार करते रहे हैं कि वे मानव-जीवन के उत्थान की ही बात बता सकते हैं। स्वयं अध्यात्मवाद भी धर्म के अनेक तत्त्वज्ञानों में से जन्मा है। महापुरुषों एवं सन्तों ने भी धर्माधारित सिद्धान्तों द्वारा ही मानव जाति के हित साधना की है। क्या व्यक्ति जीवन के लिए, एवं क्या समूह-जीवन के लिए, धर्म अनिवार्य रहा है *तथा उपासनाओं* का आधार रहा है। सारी मानव जाति की एकता का ही नहीं, सृष्टि की एकता का भी सत्य धर्म ने प्रतिपादन किया है।

परन्तु आन्तरिक एकता का सन्देश देते हुए भी जो बाह्य भेद, धर्मों के कारण, प्रबल हो उठे, उन्होंने उस सन्देश को ऐसा दफना दिया कि अब धर्मभेद ही प्रमुख हो चले एवं उनमें भी पन्थ भेद, सम्प्रदाय-भेद आदि बढ़ने लगे। स्थिति मानव ने आज यह कर डाली है कि अनेक धर्म एवं उनके अनेक भेदोपभेद मानव पर आक्रमण करके उसके ही टुकड़े-टुकड़े कर रहे हैं! सभी धर्म महान् तत्त्वों का उद्घोष करते हुए भी विभेद की ही सृष्टि वे बना चुके एवं मानव-मानव के बीच की खाई न पाट सके। इसीलिए धर्म, सम्प्रदाय, पंथ आदि के नाम पर आज भी कम संघर्ष नहीं होता है, कम मनमुटाव नहीं होता है एवं कम भेद नहीं होते हैं। कथनी एवं करनी में इस कारण अद्भुत खाई आ पड़ी है।

विज्ञान का महत्त्व

इसके विपरीत विज्ञान इतनी तेजी से, सृष्टि में एकता की वृद्धि कर रहा है कि अब कोई अपना-अपना ही सोच नहीं सकता! फिर करना तो अलग ही रहा। एक क्षण में मानव अंतरिक्ष में पहुँचता है। एक सिरे की कृति का असर दूसरे सिरे पर तत्काल होता है। सारे मानव समाज को तेजी से विज्ञान निकट ला रहा है। इसके साथ-साथ सत्य के दर्शन की एक-विधियाँ भी ऐसी खुल रही हैं कि बुद्धि अब अज्ञान के सहारे जरा भी काम नहीं कर सकती एवं *ज्ञान विज्ञान के बिना उसका* कोई अस्तित्व ही नहीं माना जा सकता। सत्य की खोज में विज्ञान ने इतनी प्रगति कर रखी है कि जीवन की एक भी शाखा-प्रशाखा अब उससे अछूती नहीं रह पा रही है और सृष्टि एवं सृष्टि के निवासियों को एक रूप देकर यह सब हो रहा है एवं इस तरह एकता की सुदृढ़ भित्ति विज्ञान ने खड़ी कर दी है।

ऐसी हालत में विज्ञान का महत्त्व बढ़ना अनिवार्य है। उसके सामने धर्म तथा राजनीति का महत्त्व घटना स्वाभाविक है, क्योंकि *'एकता एवं 'संगठन'* का संदेश देने वाले 'धर्म' व 'राजनीति' विभेद की सृष्टि में लग गये; पर विज्ञान उनके अंगीकृत कार्य को खुद ही उठा चुका है। इसलिए आज विज्ञान सर्वेसर्वा है एवं धर्म तथा राजनीति उसके अधीन है। वह एकता एवं सत्य की खोज की सामग्री जुटाता है, ये विभेद की एवं कल्पनाओं की सृष्टि में ही रमते हैं। विज्ञान उनसे इतना आगे बढ़ गया कि अब विज्ञान की कसौटी पर वे ही कसे जाने लग गये हैं! यद्यपि धर्म एवं राजनीति अब भी प्रबल दिखाई देते हैं, क्योंकि उनका प्रभुत्व हमारे दिल एवं मन पर जम गया है, तथापि विज्ञान के सम्मुख यह प्रभुत्व भी विवश होता जा रहा है। राजनीति आज समझौते के लिए यदि राजी नहीं होती है, तो विज्ञान ही उसे मजबूर कर रहा है, कि 'आपस में समझौता करो, अन्यथा सर्वनाश मौजूद है। इंग्लैंड में करीब ८९० अणु शस्त्र आज तैयार हैं, जो इंग्लैंड को संभालने की शक्ति से बहुत ज्यादह हैं। जरा सी गलती से विस्फोट होता है तो इंग्लैंड बरबाद हो जाता है, क्योंकि हिरोशिमा के ऊपर गिरे हुए बमों से सैकड़ों गुना शक्ति वाले ये आयुध हैं। इसलिए इंग्लैंड के सामने सतत यह भय खड़ा है कि कहीं गलती से, भूल से, दुर्घटना से या 'सैबोटेज' से कहीं कोई विस्फोट होकर इंग्लैंड को ही बरबाद न कर दे! महायुद्ध द्वारा विनाश की नौबत आना तो उससे सर्वथा भिन्न भय है। ५० मेगाटन के बम की परीक्षा ही जहाँ त्राहि-त्राहि करा रही है, वहाँ उसके प्रयोग की कल्पना ही हाहाकार मचा देती है। ऐसी हालत में स्पष्ट है कि *राजनीति को झुकना पड़ेगा, समझौता* करना पड़ेगा, विभेद की सृष्टि की राह छोड़नी होगी एव इस तरह अपने जमे-जमाये स्थान से हटना पड़ेगा। या तो वह एकता के मिशन में विज्ञान की मदद करे या खत्म हो जाय। यही 'राजनीति के दिन लद चुके' का व्यावहारिक पहलू है।

विज्ञान की दिशा आध्यात्मिक हो

विज्ञान की नकेल किसी-न-किसी के हाथ में तो चाहिए ही, अन्यथा वह भस्मासुर के समान सर्वनाश पर तुल सकता है, यह आज स्पष्ट दिख रहा है। राजनीति पर वह अपनी महत्ता जता रहा है एवं धर्म में अब वह शक्ति नहीं रही है, क्योंकि वह विभेदों का आगार बन कर अपना 'स्वधर्म' खोता जा रहा है। फलतः विज्ञान की नकेल केवल अध्यात्म के ही हाथ में रखी जा सकती है, क्योंकि दोनों के लक्ष्य एक ही हैं। *विज्ञान के समान ही अध्यात्म भी* सार्वभौम एकता के संदेश का वाहक है। सबको 'एक हृदय' मान कर वह 'आत्मौपम्य' भाव की उपासना सिखाता है, साथ ही धर्मों या उपासनाओं या पंथों, फिरकों का आधार नहीं लेता है। वह एक भावना है, एक वृत्ति है, एक प्रेरणा है। उसको आकार देता है, रूप देता है, शरीर देता है—'विज्ञान', एवं विज्ञान को आत्मा, हृदय मिलता है, 'अध्यात्म' से। इस तरह दोनों परस्पर के पूरक हैं, एक ही मार्ग के पथिक हैं, एक ही लक्ष्य के उपासक हैं एवं सबसे बड़ी बात है, दोनों महान् शक्तिशाली होने के कारण दोनों को दोनों की आवश्यकता है, क्योंकि विज्ञान के बिना अध्यात्म भावना व्यापक रूप धारण नहीं कर सकती एवं अध्यात्म के बिना विज्ञान की शक्ति को नकेल नहीं मिल सकती! इतना ही नहीं, दोनों के संयुक्त शक्ति महान् से महान् 'सुपर बम' का मुकाबला भी कर सकती है, क्योंकि एक आंतरिक शक्ति से, दूसरा बाह्य शक्ति से परिपूर्ण है!

इसीलिए विनोबाजी, जवाहरलालजी, राधाकृष्णन् एवं दुनिया के नेता विज्ञान के साथ अध्यात्म को अनिवार्य मान कर राजनीति एव धर्म से ऊपर उन्हें रख रहे हैं। इस तथ्य को हम कब अमल में लायेंगे!

साहित्य-प्रचार के कुछ अनुभव : संस्मरण

• शकुंतला पांडेय

[शांति-सेना विद्यालय, कस्तूरबाग्राम की बहनों ने इन्दौर शहर में 'विनोबा-जयन्ती' और 'बापू-जयन्ती' के अवसर पर सात दिन साहित्य प्रचार किया था। इससे इन्दौर के नागरिकों और विशेष तौर से वहाँ की बहनों में नवचेतना आयी। एक शांति-सैनिक बहन के शब्दों में कुछ संस्मरण यहाँ प्रस्तुत हैं। —सं०]

मन में बड़ी बेचैनी हो रही थी, प्रकृति के प्रकोप पर। भीषण वर्षा रात-दिन, निरन्तर एक-सी हो रही थी, छात्रावास के आगे-पीछे पानी ही पानी! क्या हम नहीं जा सकेंगे?—यह प्रश्न मन में परेशानी पैदा कर देता था! पानी में भीगने का भय न था, पर साहित्य भीगने से कैसे बचा सकेंगे? जिनके घर भीगे कपड़ों और कीचड़ से सने पाँवों जायेंगे उन्हें कैसा लगेगा? इन विचारों से बहन हतोत्साह हुई थी।

"मैं कुछ नहीं करता, परमात्मा को मुझसे जो कराना होता है वही वह कराता है"—बाबा की इस भावना के प्रत्यक्ष दर्शन उस दिन हमें हुए, जब अनायास ही सूर्यदेव के दर्शन हुए और वर्षा बन्द हो गई। फिर क्या था, नाच उठीं हम हर्ष से!

१० सितम्बर '६१ की शाम को 'मार्चिंग' करती हुई शान्ति सेना आखिर निकल ही तो पड़ी, अपने विविध विचार रूपी अस्त्र शस्त्रों से सुसज्जित हो, इन्दौर शहर पर हमला करने! बाबा द्वारा आदेश जो मिला था 'साहित्य पखवारा' मनाने का, फिर भला शुभ कार्य में प्रभु कैसे सहायक न होते? शान्ति सेना का सैनिक अपने अस्त्र-शस्त्र से सुसज्जित हो, बिखर गया इन्दौर के कोने कोने में, चारों ओर से घेर लिया था इन्दौर शहर को।

कुछ परिवारों को तो हमारे आक्रमण की पूर्वसूचना थी और वे मोर्चे के लिये पहले से ही अपने दरवाजों में उपस्थित थे। पर शहर के अन्य लोगों को तो हमारे इस अनायास के हमले ने कुछ क्षणों के लिये चकित कर ही दिया होगा!

वैसे तो शांति-सेना हफ्ते में एक बार शहर जन-सम्पर्क के लिये जाया ही करती थी, पर वह हमारा सीमित क्षेत्र था। इस बार तो पूरे शहर में शांति सेना का पड़ाव था। जिसे जहाँ ठिकाना मिला, वहाँ बहनें एक एक, दो दो होकर शहर के एक एक घर में निवास के लिये पहुंच गईं। हम जहाँ गईं वे विभिन्न श्रेणी के परिवार थे—अत्यन्त वैभव सम्पन्न, मध्यम तथा निम्न कोटि के। अधिकांश जिन घरों में हम रहे, उनमें जैन, मुसलमान, सिक्ख तथा हिन्दू भाई थे। सम्पर्क तो सभी जाति धर्मों के लोगों से हुआ। बहनों के मन में नये नये घर में जाने से कुछ संकोच और भय था, जिनके घरों में गये उन्हें भी कुछ संकोच था। पर वह कुछ क्षणों में ही काफूर हो गया। बहनें उन घरों में ऐसे घुल-मिल गईं, जैसे सदा से उन्हीं घरों में रह रही हों, जिसका दर्शन विदाई के आँसुओं ने दिया। पुरस्कार दे विदाई पा सकीं। कुछ बहनों को कुछ कटु अनुभव भी हुए, पर इससे वे हताश या निराश नहीं हुईं।

धनी-मानी कहलाने वाले परिवारों में हमारी बहनों को गन्दी सी एक फटी दरी विश्राम को मिली और कहीं स्प्रिंग के पलंग और गद्दे भी। पर हम सैनिकों को इसकी अपेक्षा ही कहाँ थी? एक कहावत है—"नींद न जाने टूटी खाट।" सारे दिन के थके, पड़ते ही नींद की गोद में खुर्राटे भरने लगते थे। प्रातः चार बजे जागरण, सात बजे नित्य कर्म से निपट कर चल देते थे। दिन में हम दस घंटे से लेकर बारह घंटे तक घूमे।

कहीं-कहीं शहर के सम्भ्रांत धनी-मानी प्रतिष्ठित परिवारों की महिलाओं ने हमें काफी सहयोग दिया। उनके साथ रहने से हमारी साहित्य बिक्री अधिक हो सकी। कदम-कदम पर मोटर से ही चलने वाली बहनें जब हाथ में झोला लटकाये पैदल हमारे साथ घूमती थीं तो लोग स्तम्भित रह जाते थे, उन्हें देख कर! लोगों पर उनका अच्छा प्रभाव पड़ा और वह हमें सहायक हुआ साहित्य बिक्री में।

व्यापारी वर्ग की रुचि तो साहित्य की ओर बिल्कुल नहीं थी। हमारी बहनें जब किसी दूकान में चढ़ जाती थीं, तब दूकानदार यह समझ कर कि लेने आई हैं, हमें आदर से बिठलाता, पर उसे जब पता चलता कि ये लेने नहीं, देने आई हैं तो उस समय उसका चेहरा देखने योग्य ही बनता था!

हमारी कुछ बहनें एक डाक्टर के घर पहुँचीं। डाक्टर साहब भोजन पर थे, समझे कि हमारे मरीज आये हैं तो जल्दी से भोजन से निवृत्त हो मन में मुदित होते होंगे, अच्छी रकम हाथ लगेगी। बाद में जब पता चला कि ये पुस्तक बेचने वाली हैं, मरीज नहीं, तो झुँझला उठे मन ही मन, पर कहते क्या! उनका मन का भाव उनके चेहरे ने दरशाया। पर उन्होंने हमारी पुस्तकें खरीदीं।

साहित्य प्रचार के जरिये काफी साहस बढ़ा तथा नूतन अनुभव प्राप्त हुए। इन अनुभवों का सम्बल पा हम अपने कार्य-क्षेत्र में निधड़क बढ़ सकेंगे। हमारी एक बहन पर तो शिकारी कुत्ता छोड़ दिया, यह कह कर कि निकल जाओ यहाँ से, हमें कहाँ फुरसत है तुम्हारे इस साहित्य को पढ़ने की। एक बहन की बड़ी इच्छा थी 'स्त्री शक्ति' पुस्तक खरीदने की, पर उसकी शिक्षित बेटी ने नहीं खरीदने दी।

कई घरों में हमें अत्यन्त हेय दृष्टि से देखा गया, हम पर तरह तरह के अपवाद लगाये गये। पर ऐसे घर गिनती में दो एक ही थे। अन्य घरों में तो स्नेह मिला, अपनत्व मिला, और हमारे कार्य के प्रति देखी लोगों के मन में श्रद्धा। कई भाइयों ने तो हमसे प्रश्नों की झड़ी-सी लगा दी, मानों वे हमारे परीक्षक ही बन कर आये हैं! पर हमारी बहनों ने भी विनम्रता से ऐसे जवाब दिये कि उन भाइयों का समाधान हो गया। अन्य भाषा-भाषी बहनें जो ठीक जवाब न दे सकती थीं, उन्होंने कहा, आपके संशय का निवारण हमारी अन्य बहनें करेंगी।

कहीं कहीं तो पढ़े लिखे घरों में हमारी बहनों को बड़े ही दुःखद अनुभव मिले। पति की आज्ञा के बिना, घर की यह धार्मिक घरवाली कुछ नहीं कर सकती, अबला जो ठहरी! हम पर व्यंग किया गया कि आपकी तरह हम आजाद नहीं! हमारा धर्म तो पति सेवा, पुत्रों का लालन-पालन तथा गृह-कार्य है, इसीसे फुरसत नहीं मिलती तो कौन पढ़े आपका साहित्य?

इस पर उस बहन से काफी वार्तालाप हुआ। 'गृहकार्य, बच्चों का लालन-पालन तो गृहिणी का कर्तव्य तो ठीक ही है बहन, पर केवल इतना ही कर्तव्य करने के लिये आपका जन्म नहीं हुआ। भारत की परंपरा चली आयी है कि ऐसे ऐसे स्त्री रत्न, तेजस्विनी माताएँ हमारे देश में हुईं कि वे भी पति पुत्र के साथ अपना कर्तव्य निभाती थीं। पति-पत्नी, दोनों का कर्तव्य है, इसमें कोई हेय नहीं, कोई श्रेष्ठ नहीं, दोनों सहचर या सहचरी हैं।'

हममें जब तक आध्यात्मिक शक्ति नहीं जाग्रत होगी, हम वासनाओं और कामनाओं के गुलाम बने रहेंगे, यों ही पीसे जायेंगे। स्वेच्छा से स्वीकृत गुलामी से हमें कौन मुक्त कर सकता है? उस बहन को ये सद्विचार रुचे। उन्होंने 'स्त्री-शक्ति' पुस्तक भी खरीदी।

हमारा साहित्य लगभग दो हजार रु० का ही बिका, पर जन-सम्पर्क तो बहुत बढ़ा। जहाँ साहित्य खरीदा नहीं जाता था, उन घरों में भी बहनें गईं अवश्य। करीब करीब सभी घरों में हमारी बहनें विचार प्रचार के हेतु गई हैं। विनोबाजी का 'गीता-प्रवचन' ग्रंथ तो पहले से ही अधिकांश घरों में मौजूद है। जनरुचि अधिकतर आध्यात्मिकता की ओर देखी गयी। हमारी आध्यात्मिक पुस्तकें अधिक संख्या में बिकीं। 'स्त्री शक्ति' तथा बच्चों के साहित्य की बिक्री अधिक हुई। 'स्त्री-शक्ति' बहनों को रुची। आखिर में लोगों की, जब साहित्य के लिए माँग थी, वह साहित्य हमारा पहले ही बिक चुका था।

हमारे साथ हमारी संचालिका, श्री निर्मला देशपांडे तथा श्री अन्नपूर्णा दास भी थीं, जो साहित्य बिक्री में इतनी तन्मय थीं कि किसी किसी दिन प्रातः का नित्य-कर्म तथा स्नान भोजन आदि भी भूल जाती थीं हमारी शांति सैनिक बहनों में भी बहिनें निर्जलाव्रत किये थीं, पर उनमें इतनी लगन थी कि भूख तथा क्लेश का उन्हें पता ही न चला।

शहर की बहनों को जब यह ज्ञात हुआ कि हमारी बहनें त्याग की भावना से प्रेरित हो, त्याग का जीवन बिताने की लालसा में गृह मोह तथा सन्तान मोह छोड़ विभिन्न प्रान्तों से शिक्षण के लिए आई हैं, तो उन्हें बड़ा कौतूहल हुआ, बहनों के प्रति बड़ी सहानुभूति दरशाई।

सर्वोदय-विचार के प्रति हमने लोगों के मन में बड़ी आस्था पाई। यह विचार जन साधारण के हृदय में घर कर गया है। हम जिस मुहल्ले में पहुँचे, वहाँ "शांति-सेना की बहनें हैं", यह कह कर अधिकांश घरों से हमें बहुत ही अधिक सम्मान मिला। बाबा जो विचार-बीज बो गये थे, वह पूर्ण रूप से विकसित हुआ ऐसा तो हम नहीं कह सकते, पर पल्लवित हुआ है, इसके हमें प्रत्यक्ष दर्शन हुए।

एक बहन अनेक प्रश्नों के बाद बोली—'सर्वोदय असम्भव है, उसमें तो भले-बुरे सभी भरे हैं! जब सभी अच्छे बनेंगे तभी तो सर्वोदय होगा।'

हमने उस बहन को समझाया कि इस विश्व-माली की वाटिका के सभी पुष्प सुन्दर हैं, सभी कुछ-न-कुछ गुण से भूषित हैं। प्रभु का अंश मानव बुरा कैसा? वह बुरा तो तब बनता है, जब अपने को भूल जाता है और आसुरी प्रवृत्ति उस पर हावी होती है। आपने यदि बाबा विनोबा के संबंध में "चम्बल के बेहड़ों में" पुस्तक पढ़ी होती तो आपको पता चलता कि बाबा के उपदेशों से उन क्रूर-डाकुओं का मन कैसे पलटा और उन्होंने कैसे आत्म-समर्पण किया! बाबा नारी-शक्ति जाग्रत करना चाहते हैं। नारी विलासिता के प्रसाधनों में तो स्वतंत्र है, पर जीवनोपयोगी ज्ञान-प्राप्ति के लिये अपने को बन्धनग्रस्त मानती है, मानों उसका स्वतंत्र अस्तित्व ही नहीं! हम माँ दुर्गा का अंश हैं। शक्तिरूपिणी माता का तेज हममें है, पर यह सब तब पता चलेगा जब कि वासनाओं से मुक्त हो, हम अपना तेज सम्हालेंगे।'

यह सब सुन कर वह बहन भावातिरेक में डूब गई और रो उठी। उसने कई पुस्तकें पढ़ीं और खरीदीं।

एक स्थान पर तो हमारी एक बहन को कुछ फैशनपरस्त बहनों का सामना करना पड़ा। उन बहनों ने इसको अपढ़ देहाती गँवार समझा था, 'थोड़ा उपहास भी किया उनके पास य बाह्य शृङ्गारिक प्रसाधन, यहाँ हमारी बहन सुसज्जित थी, उन आभूषणों, अलङ्कारों से जो सारा जीवन ही सजा देते हैं। जब गपशप हँसी-मजाक

से मन मर गया, तो स्वभावतः ही उठा ली पुस्तकें। क्या करती, आखिर खाली बैठें! बहन ने पहले से ही एक टेबिल पर अपनी दूकान सजा दी थी। पढ़ने पर उन सबमें रस आया, रुचि पैदा हुई; फलस्वरूप काफी साहित्य खरीदा उन बहनोंने।

हमारे एक वृद्ध भाई ने, जो अधिक जब्र न कर सके थे कह ही उठे, 'अच्छा धंधा निकाला है, जिसे कुछ काम न मिला लटकाया झोला और बन गये देश-सुधारक! पेट को रोटी तो चाहिये न! आज के ये शब्द 'क', 'ख', 'ग' अधिक प्रयोग में आते हैं—'कमाना, खाना, गहना!'

मैंने कहा—आप अनुभवी हैं। आपके शब्द बड़े ही गूढ़ार्थी हैं। सत्य ही है 'क' 'से काम में आना।' पर बिना इस शरीर की मशीन में कुछ डाले चलेगा कैसे! इसलिए 'ख' याने खाना और नित्य *गुरुजनों द्वारा जो ज्ञानलाभ होता है* उसे खो न देना, बल्कि 'ग' याने गहना, ज्ञान-ग्रहण करना।

हमने उन वृद्ध भाई के आगे श्रद्धा से मस्तक झुकाया, तो कुपित भाई हँस पड़े और हम भी चल पड़े भगवान बुद्ध देव के 'धम्मपद' का श्लोक गुनगुनाते हुए अपने कार्य-हेतु।

"अक्कोधेन जिने कोधम्
असाधुम साधुना जिने।
जिने कदरियम दानेन्
सच्चेना लीक-वादिनम्॥"

* * *

इन सात दिनों में ऐसे अनेक अवसर आये, जब मान-अपमान दोनों द्वारा हमें *पूजा मिली! कुछ क्षणों के लिये* तो हम अवश्य तिलमिला उठी, हमें नैराश्य का दर्शन हुआ, सोचा कि यह काम हमारे बूते का नहीं! पर उसी क्षण अन्तर की आवाज सुनाई दी कि भीरु, सम्मान की चाह थी तो घर बैठती! उसी समय याद आया सायंकालीन प्रार्थना का वह मंत्र, जिसका नित्य पाठ हम करते हैं:

"यः सर्वत्रानभिस्नेहः तत्
तत् प्राप्य शुभाशुभम्।
नाभिनन्दति न द्वेष्टि
तस्य प्रज्ञा प्रतिष्ठिता॥"

बाबा का स्मरण हो आया, कितनी-कितनी आशाएँ रखते हैं बाबा अपनी शांति-सेना से! उस दिन बाबा यहाँ होते तो देखते कि चारों ओर इन्दौर में 'विनोबा-जयन्ती' पर स्त्री-शक्ति ही काम कर रही थी। जहाँ गली-कूचों में देखो, दोनों कंधों पर झोला लटकाये कौन जा रही हैं? शांति-सेना की बहनें। उन दिनों पुरुष-कार्यकर्ता कोई नहीं दिखता था।

अपमानित होने पर बाबा की स्मृति ने बड़ा बल दिया, और बढ़ चली नवस्फूर्ति पा शांति-सैनिक अपूर्व उत्साह और उमंग से लक्ष्य की ओर, वे सब अब अपमान का दुःख भूल आह्लाद में भर उठी थीं।

हम इच्छा का प्राबल्य होते हुए भी अधिक समय नहीं दे सकी, क्योंकि हमारा कस्तूरबाग्राम दूर पड़ता था। कुल सात दिन ही हम इस पुण्य कार्य में लग सकी। चार दिन 'विनोबा-जयन्ती' पर तथा तीन दिन 'बापू-जयन्ती' में।

पर अपने आत्मविश्वास के बल पर हम अपने प्रेमाक्रमण द्वारा सफलता पा सकी। मन में तो हम यह ठान ही चुकी थे कि कुछ भी हो, हमें इन्दौर के घर-घर यह प्रेम-प्रसाद तो वितरण करना ही है। *यही समय हमारे जीवन की सच्ची कसौटी* का है, और यही क्षण है शांति-सेना की प्रथम परीक्षा का! यदि हम इसमें उत्तीर्ण हुई तो सफलता हमसे पल्ला छुड़ा-कर कहाँ भाग सकती है!

बिहार का हदबन्दी बिल एवं सर्वोदय

रामनन्दन सिंह

"भारत जैसे कृषिप्रधान देश में जब तक भूमि-समस्या का सही समाधान नहीं होता, तब तक इसका आर्थिक, राजनीतिक, सांस्कृतिक विकास एक सीमा से आगे नहीं बढ़ सकता है। भारत की कुल आबादी की अस्सी प्रतिशत जनता पाँच लाख गाँवों में रहती है। इसलिए भारत के लिए अन्य खेतिहर मुल्कों के समान भूमि-समस्या एक ज्वलंत प्रश्न है। भारत की आजादी के साथ अन्न का परावलम्बन भी विरासत के रूप में मिला है। प्रतिवर्ष करोड़ों रुपये का अन्न आयात करना पड़ता है! अन्न का परावलम्बन भारत के लिए न केवल लज्जाजनक ही है, बल्कि राष्ट्रीय स्वतंत्रता के लिए खतरनाक भी है।"

यही हालत हमारे बिहार राज्य की है। बिहार की ४ करोड़ ४० लाख जनता के ८८ लाख परिवारों में से लगभग १३ लाख परिवार भूमिहीन हैं, जिनके पास जोतने की जमीन नहीं है। विनोबाजी प्रथम बार १९५२ में जब बिहार आये थे, तो लगभग सवा दो वर्ष रहे और *उनके प्रयास से लगभग २१ लाख भूमि* एकड़ भूदान में मिली। बिहार ने विनोबाजी की प्रथम यात्रा के समय ही बिहार में भूमिहीनता मिटाने के लिए ३२ लाख एकड़ जमीन इकट्ठा करने का संकल्प किया। कार्यकर्त्ताओं के प्रयास से २१ लाख भूमि एकड़ भूदान में मिली, जिसमें से ९ लाख एकड़ का बँटवारा हुआ। इस ९ लाख एकड़ में से साढ़ेछह लाख एकड़ जमीन नदी, पहाड़ एवं झूठ की थी और बाकी अढ़ाई लाख एकड़ जोत की थी, जो भूमिहीनों को दे दी गयी। उस जमीन में से लगभग ५० हजार एकड़ जमीन पर भूमिवान एवं अन्य लोगों ने फिर से दखल कर लिया, लेकिन २ लाख एकड़ जमीन पर अभी भी आदाताओं का अधिकार है।

जब विनोबाजी ने दूसरी बार असम जाते समय ४७ दिनों तक बिहार की यात्रा की, तो बिहार-प्रवेश के प्रथम दिन २५ दिसम्बर, १९६० को दुर्गावती में बिहार के तत्कालीन मुख्यमंत्री स्व० डा० श्रीकृष्ण सिंह ने विनोबाजी से मिल कर बिहार में भूमिवानों की जमीन का बीसवाँ भाग 'लेवी' के रूप में लेने का बिहार-सरकार का संकल्प बताया। २५ दिसम्बर को ९ बजे दिन में दुर्गावती डाकबंगले में बाबा और स्व० श्री बाबू की बात हुई और उसी दिन ४ बजे शाम की प्रार्थना सभा में विनोबाजी ने बिहार-सरकार का निश्चय बताते हुए कहा कि बिहार सरकार भूमिवानों से उनकी जमीन का बीसवाँ भाग लेने वाली है।

"सरकार तो लेगी याने 'लेवी' लगायेगी, लेकिन अहिंसात्मक आन्दोलन की तो अपनी प्रक्रिया है। अतः मैं तो भूमिवानों से देने के लिए ही कहूँगा।" और इस देने की पद्धति का विनोबाजी ने विनोद में "देवी" नाम रखा।

ऐसे तो बिहार विधान-सभा में भूमि-हदबन्दी बिल २२ अक्टूबर १९५९ को पेश हुआ, जिसमें 'लेवी' का जिक्र नहीं था। प्रवर-समिति ने पाँच एकड़ से अधिक जमीन रखने वालों की जमीन का बीसवाँ भाग 'लेवी' के रूप में लेने की सिफारिश की थी, लेकिन विधान-सभा ने एक एकड़ से अधिक और पाँच एकड़ तक जमीन रखने वालों से उनकी जमीन का बीसवाँ हिस्सा, पाँच एकड़ से अधिक और बीस एकड़ से कम जमीन रखने वालों से दसवाँ हिस्सा एवं बीस एकड़ और इससे अधिक जमीन रखनेवालों से छठा हिस्सा 'लेवी' के रूप में लेने के लिए बिल स्वीकार किया है, जो विधान-परिषद् में स्वीकृत होने के बाद राज्यपाल एवं राष्ट्रपति के हस्ताक्षर से कानून बनने वाला है।

'लेवी' कानून ने भूदान के मूल सिद्धान्त को स्वीकार कर लिया है, ऐसा मानना चाहिए। भूदान का मूल सिद्धान्त क्या है? 'जमीन किसी व्यक्ति की नहीं है, भगवान की है, समाज की है' और इस मूलभूत सिद्धान्त के आधार पर ही भूदान के प्रणेता विनोबाजी ने सर्वप्रथम भूमिवानों से उनकी जमीन का छठा भाग भूदान में *माँगा था और इस बार की बिहार-यात्रा में* बीसवाँ भाग। विनोबाजी ने जिनके पास अधिक जमीन थी केवल उनसे ही भूमि की माँग नहीं की है, बल्कि जिनके पास थोड़ी भी है उनसे भी माँग की है। थोड़ी जमीन वालों से जमीन माँगने का क्या अर्थ है? अर्थ स्पष्ट है कि जिनके पास जो भी है वह उनका नहीं, पूरे समाज का है और विधान-सभा ने भी 'लेवी बिल' द्वारा इसकी मान्यता दी है। विधान-सभा ने बिल में साफ स्वीकार किया है कि २५ दिसम्बर, १९६० या उसके बाद जो भूमिवान भूदान यज्ञ कमिटी या विनोबाजी को जितनी जमीन देंगे उतनी जमीन उन्हें 'लेवी' में बाद कर दी जायगी।

इस लेवी-कानून से ११ लाख एकड़ जमीन मिलने वाली है, ऐसा बिहार-सरकार के राजस्व-मंत्री ने विधान सभा में बताया है और डेढ़ लाख *एकड़ जमीन भूमि हदबन्दी कानून से* मिलने वाली है। इस प्रकार लगभग १३ लाख एकड़ जमीन बिहार के भूमिहीनों के लिए मिलने वाली है।

बिहार हदबन्दी-कानून एवं लेवी कानून से जो जमीन मिलने वाली है, उसे सरकार सम्बन्धित ग्राम पंचायतों को व्यवस्था के लिए देगी। ग्राम-पंचायत खेतिहर भूमिहीनों की सहयोग-समिति बना कर खेती करेगी। यदि किसी कारण से सहयोगी खेती संभव न हो सकी तो जिला सत्ता हर्त्ता ग्राम-पंचायत की व्यवस्था से जमीन लेकर उस गाँव के भूमिहीनों को जोतने के लिए जमीन दे सकते हैं, जिस गाँव में जमीन पड़ती है, याने सरकार द्वारा ली गयी जमीन के बँटवारे में भूमिवानों का कोई अधिकार नहीं रहेगा। लेकिन भूदान की जमीन का बँटवारा भूमिवान स्वयं कर सकते हैं। भूदान में जो भूमिवान अपनी जमीन देंगे, उस जमीन का बँटवारा जमीन जोतने वाले भूमिहीनों को वे स्वयं दे सकते हैं। बँटवारे की इस पद्धति में सर्वोदय का मूल दर्शन, हृदय जोड़ने का *दर्शन सन्निहित है। जिस भूमिहीन को* भूदान की जमीन भूमिवान देंगे उनके हृदय में भूमिहीनों के प्रति अधिक प्रेम जगेगा तथा भूमिहीनों को भूमि देने वाले *भूमिवानों के प्रति श्रद्धा होगी। बिहार के* भूमिवानों को देश और काल की गति पहचान कर भूदान-गंगा में स्नान करने का प्रयास करना चाहिए।

विनोबा-पदयात्री दल से

असम में शांति-सेना शिविर—कर्म के साथ ज्ञान और भक्ति भी आवश्यक—यह सवाल सब पार्टी-नेताओं से पूछिये—सत्य-संकल्प पूरा ही होता है—क्रांति के लिए जीवन-समर्पण की आवश्यकता है—चुनाव जीतने का नुस्खा—माधवदेव का 'नामघोषा'—पाप पुण्य की व्यवस्था—कार्यकर्ता संस्थामुक्त होकर सूर्यवत् काम करें—असम का दोष : आलस्य—ग्रामदान : उद्योग की दीक्षा—विनोबा का पलायनवाद—जय जगत् लक्ष्यबिंदु और ग्रामदान प्रत्यक्षबिंदु, बीच का रास्ता सर्वोदय।

● कुसुम देशपांडे

शिवसागर जिले में श्री माणिक भाई साइकिया और उनकी पत्नी रेणुबहन उत्साह से विनोबाजी की यात्रा का लाभ उठा रही है। रेणुबहन ने बहनो मे प्रचार करके शांति-सेविकाओ की संख्या बढ़ायी है। पिछले सप्ताह में कुछ ग्रामदानी गाँवों की और कुछ अन्य गांवो की तीस शांति-सेविकाओ का शिविर गड़गांव में हुआ था। वहां से डेढ़ मील पर नाजीरा शहर में विनोबाजी का निवास था। इसलिये शिविर का उद्‌घाटन विनोबाजी ने वहीं किया। यह शिविर चार दिन चला, जिसमें पदयात्री दल के भाई-बहनो ने भी हिस्सा लिया था।

अपने मांगलिक प्रवचन में विनोबाजी ने कहा कि जैसे बीमार की सेवा करने के लिए हाथों में कला होनी चाहिये, उसके बगैर काम नहीं होगा; उसी तरह से सेवा-कार्य को कर्म-शक्ति पर निर्भर रहना पड़ता है। कर्म की योग्यता ज्ञान से और भक्ति से बढ़ती है। कर्म-शक्ति के साथ-साथ ज्ञान हो, तो उस कर्म में विशेष प्रकाश होता है। इसलिये सेवा में कर्म-शक्ति के साथ ज्ञान और प्रीति, दोनों चाहिये। भक्ति होगी तो प्रीति भी होगी। दूसरी बात यह है कि जिनसे आपका कोई नाता, रिश्ता नहीं है उनकी भी सेवा आत्मीय भाव से करनी चाहिये।

इधर कई बार गाँवों में विनोबाजी को एक सवाल पूछा जाता है कि आपका यह ग्रामदान, भूदान का काम कब खतम होगा? इसकी चर्चा करते हुए विनोबाजी ने एक दिन कहा, "यह सवाल आप मुझे क्यों पूछते हैं? यह सवाल तो मुझे आपसे पूछना चाहिये। आपको मालूम होगा कि १९५७ में सितंबर महीने में कुल पार्टियों के नेता इकट्ठे हुए थे, उसमें सर्वोदय-कार्यकर्ता भी थे। उन सबने मिल कर एक प्रस्ताव पास किया था कि ग्रामदान, भूदान के काम को मदद देना, बढ़ावा देना, देश का कर्तव्य है। और अब बाबा को ही पूछा जा रहा है कि आपका काम कब खत्म होगा? लेकिन आप ही इसका जवाब दे सकते हैं।

आत्मा सत्य-काम और सत्य-संकल्प होता है। अगर आप तय करते हैं कि यह काम नहीं होगा तो भी आत्मा सत्य-काम है, यह सिद्ध होता है। अगर आप कामना करते हैं कि ग्रामदान हो और ग्रामदान होता है, तो भी आत्मा सत्य-काम है, यह सिद्ध होता है। उपनिषद् का सिद्धान्त सिद्ध होगा। अन्तर में जो सत्य कामना होती है, वह पूर्ण होती है। आप ऐसा सवाल पूछते हैं कि मानों बाबा ही गुनाहगार है और उसकी 'क्रास एक्जामिनेशन' आप ले रहे हैं। वास्तव में तो आप ही गुनाहगार हैं। चोर ही कोतवाल को दंड दे रहा है! इसलिये मेरी आपको विनती है कि शंका-कुशंका छोडो। आपके नेताओं ने यह तय किया है कि ग्रामदान होना चाहिये। कब तक शंका-कुशंका करते रहेंगे? उसका कोई अंत नहीं है।

बाबा आपके प्रांत में आया, उसने यहाँ समय दिया, लेकिन आपने इसमें कितना समय दिया? बाबा की आयु तो अब छासठ साल की हो गयी है। उसको तो परलोक का 'पासपोर्ट' मिल गया है। वह यहाँ से परराष्ट्र में भी जा सकता है, विष्णुलोक में भी जा सकता है। इसलिये अब बाबा के पास कितना समय है, यह आप ही देखिये और आप काम में लग जाइये। दो दिन घूमने से काम नहीं होगा। क्या लेनिन और गांधीजी ने क्रांति को दो दिन का समय दिया था? १९०८ में गाँधीजी ने 'हिन्द स्वराज्य' पुस्तक लिखी और कहा कि यह मेरा स्वप्न है, उसमें मेरे प्राण समर्पण हैं। चालीस साल लगातार वे उसमें रहे और जब स्वराज्य आया, दिल्ली में उसका समारोह हो रहा था, तब बापू नोआखाली में थे।

क्रांति के लिये जीवन समर्पण करना पड़ता है, चाहे वह हिंसा की क्रांति हो, चाहे अहिंसा की।

असम में तीस-चालीस ऐसे लोग निकलें, जो इसमें जिंदगी खतम करने के लिये तैयार हैं। उनके अलावा कॉंग्रेस, पी० एस० पी० वगैरह सब पार्टी वाले हमारे प्यारे हैं, सहानुभूति रखने वाले हैं। हम उनको कहते है कि आपको कौन रोकता है? आइये काम करने के लिए। वे चिंता में हैं कि चुनाव कैसे जीतेंगे? चुनाव क्या हरि-जप से होगा? खूब काम करो और कहो लोगों से कि हमने ग्राम दान किया। आपका नसीब होगा तो आप चुन कर आयेंगे। मैं आपको रोकने वाला नहीं हूँ। मैं न भिक्षा चाहता हूँ, न वोट माँगता हूँ। यह समझ लीजिये कि जिस किसी के हाथ में सत्ता आयेगी उसके पीछे बाबा लगा रहेगा यह कुत्ता भौंकता ही रहेगा, जब तक वह मालिक जागता नहीं। जब तक मालिक नहीं जागते, कुत्ते को नहीं भगाते, तब तक यह प्रभु-भक्त कुत्ता भौंकता ही रहेगा।"

असम के महापुरुष माधवदेव ने 'नामघोषा' नाम का जो ग्रंथ लिखा है, उसे मानने वाले लोग यहाँ ज्यादा हैं। विनोबाजी का कहना है कि ग्रन्थ के आधार से असम बच सकता है, बच सकता है। उसका अध्ययन विनोबाजी असम में आने के पहले ही कर चुके हैं। कभी-कभी सभा में अपने भाषण में उसका जिक्र वे करते हैं, तो स्वाभाविक ही असम के लोगों को खुशी होती है। उस ग्रंथ को लेकर कई बार रास्ते में चर्चा होती है। एक भाई ने रास्ते में सवाल पूछा कि धर्म के साथ भक्ति का क्या संबंध है? विस्तार से धर्म और भक्ति का विश्लेषण करते हुए विनोबाजी ने कहा—

"पाप न करना, बुरे काम न करना, अच्छे काम करना, प्रेम करना, सहयोग करना, झूठ न बोलना, झगड़ा न करना, दुखियों की मदद करना—यह धर्म है। उस तरह से धर्म का आचारण जब मनुष्य करता है, तब उसे केवल स्वार्थ में और विषय भोग में अरुचि पैदा होती है। उसे 'वैराग्य' कहते हैं। उसके बाद भक्ति का उदय होता है। भूदान, ग्रामदान की बातों में हम यही समझाते हैं कि अन्याय मत करो, दूसरे को मत लूटो, व्यापार में दगा मत करो। गाँव में जो दुखी हैं उनका मान रखो। तुम्हारे पास जमीन है तो उसका हिस्सा देना चाहिये। यह धर्म-विचार है। फिर हम सब गाँव को परिवार के समान एक होने को कहते हैं। मतलब यह कि भोग वासना को थोड़ा थोड़ा सीमित करने का, कम करने का यह मार्ग है। भोग कम करो तो वैराग्य आयेगा।

'नामघर' में भगवान् का नाम लेने के लिए सब इकट्ठे होते हैं। सब भगवान् की संतान हैं, यह समझना, सब पर प्रेम करना, भक्ति भाव रखना यह भक्ति है। भक्ति में गति बढ़ती है, तो भगवान् की कृपा से ज्ञान बढ़ता है, आत्मबोध होता है। ज्ञान से आसक्ति, माया छूटती है और उससे परमानन्द होता है। हम लोगों के सामने यह सब नया नहीं रख रहे हैं: पाप निवृत्ति, पुण्य प्रवृत्ति, वैराग्य और भक्ति। ज्ञान से वासना का छेद होता है और आनन्द प्राप्ति होती है।

हमारे आंदोलन का शिक्षा-क्रम इस प्रकार है—पहले क्लास से मैट्रिक, बुनियादी तालीम है। इतनी तालीम सबको मिलनी चाहिये। ज्ञान से वासना-क्षय और फिर परमानन्द, यह कालेज की शिक्षा है। उसके लिये हम ब्रह्मविद्या मंदिर जहाँ खोल सकते हैं, वहाँ खोलें। जिनके हाथ में पहली चीजें आयी वे दूसरी भी चीजें प्राप्त करते हैं।"

श्रीमती शकुन्तला चौधरी असम प्रांत की कस्तूरबा ट्रस्ट की प्रतिनिधि हैं। जब से विनोबाजी असम में आये वे उनके साथ हैं और विनोबाजी के भाषणों का अनुवाद करने का काम करती हैं। भूदान, ग्रामदान और शांति सेना के काम के लिये एक साल के लिये वे संस्था से मुक्त रहने का सोच रही हैं। उनके साथ चर्चा करते हुए एक दिन विनोबाजी ने कहा:

"संस्थाओं की मर्यादा होती है। व्यक्ति में जो 'गैल्वनाइजिंग' शक्ति होती है, वह संस्था में नहीं होती। हम कभी-कभी कहते हैं कि संस्थाओं को 'पावर हाउस' जैसा होना चाहिये, लेकिन 'करंट' ही नहीं होगा तो 'पावर हाउस' किस काम का? संस्थाओं में ऐसी शक्ति भरने का काम व्यक्ति कर सकता है। लेकिन सूर्य कभी घर में नहीं रहता है। फिर भी अपनी किरणें घरों के अन्दर पैठाता है। ऐसे सूर्यवत् व्यक्ति बनें संस्था के बाहर रहे और उसे मार्गदर्शन करें। ऐसी कोशिश काम हमारा होना चाहिए, जिससे आत्म-तत्त्व निखर उठे। हमारे इस आंदोलन में वैसी शक्ति है। उसका भान हो जाय तो इस आंदोलन से भी ऐसे व्यक्ति निर्माण हो सकते हैं।"

असम की सौम्य और सुन्दर प्रकृति की सराहना विनोबाजी हमेशा करते हैं। उनकी आँखों को उसी सुन्दर प्रकृति का प्रतिबिम्ब लोगों के हृदय में दीखता है। लेकिन उनकी राय में असम में एक बहुत बड़ा दोष है, जिसके कारण असम के गुणों का योग्य विकास नहीं हो सका है। इसके बारे में वे बार-बार लोगों को चेतावनी देते हैं। एक दिन जिस रास्ते से यात्रा हो रही थी, उस रास्ते की कहानी एक भाई ने बतायी, कहा कि यहाँ अहम राजाओं का राज चलता था। उनमें से एक राजा ने देखा कि यहाँ के लोग बहुत आलसी हैं तो उनको काम में लगाना चाहिये। इसलिये उनसे यह रास्ता बनाने का काम लिया। इस रास्ते को 'आलसी रास्ता' कहते हैं। विनोबाजी कहते हैं कि "यहाँ जमीन बहुत अच्छी है, इसलिये जमीन में सिर्फ दाने फेंक देते हैं और कुछ

चम्बल घाटी शान्ति-समिति की डायरी

(माह जून '६१ से अक्टूबर '६१ तक)

चम्बल घाटी की शांति समिति की देखरेख में क्षेत्र के आत्म-समर्पणकारी बागी भाइयों की पैरवी का कार्य तो ठीक से चल रहा था। सभी बागी भाइयों की भूमि तो पिछले साल ही जुतवा दी गई थी, लेकिन समिति के कार्यकर्ताओं के सामने खोहरी पुरवांव की समस्या ज्यों की त्यों बनी हुई थी। इसलिये कुछ चिंतनशील कार्यकर्ता सतत उस समस्या को हल करने का उपाय सोच रहे थे, दोनों पक्षों के लोगों से सतत सम्पर्क जारी था, लेकिन समाधान दृष्टिगोचर नहीं हो रहा था।

समिति की बैठक में तय किया गया कि खोहरी में बदनसिंह और रामदयाल की भूमि इस वर्ष जुतवाने के लिए समिति के कुछ कार्यकर्ता वहीं पर आश्रम बना कर जमीन स्वय जुतवाने का प्रबन्ध करें। निश्चय को कार्य रूप में परिणत करने के सकल्प की बुनियाद गंगा दशहरा के पुनीत पर्व पर पड़ना तय हुई। बदनसिंह के खेत में गाँव से कुछ ईंटें लेकर एक झोपड़ी खड़ी करने के लिए दीवाल बनाना प्रारम्भ कर दिया गया।

अभी-अभी बुनियाद ही डाली गई थी, ईंटों का ढेर खेत में पड़ा हुआ था, कार्यकर्ता गर्मी से बचने के लिए और भोजन के लिए बाह के कार्यालय पर चले आये थे, तभी ता० २८ जून '६१ की सुबह रास्ते में ही सुना कि आश्रम की ईंटों को किसी ने तोड़ कर कुँए में पटक दी हैं। साथियों को बड़ा आश्चर्य हुआ! जब सभी साथी मौके पर पहुँचे तो सुना हुआ सब आँखों से देखा। कुँए में ईंटें ही नहीं, सारे भुसे के ढेर को भी पानी खराब करने की दृष्टि से उसी में फेंक दिया गया था।

इस घटना से गाँववालों में बड़ा आतंक छा गया। उनके मन में यह जानने का कौतूहल जागृत हुआ कि देखें, बाबा के लोग अब क्या करते हैं! हम लोगों पर हुई प्रतिक्रिया के सम्बन्ध में जानने के लिए सुबह ही लोग चुपचाप आकर हम लोगों की गतिविधि देखने लगे, साथ ही कुछ प्रश्न भी पूछने लगे कि अब आप लोग क्या करेंगे, आपके साथ तो बड़ा अन्याय हुआ! तब हम लोगों ने कहना शुरू किया—"हमारे साथ कोई अन्याय नहीं हुआ है, बल्कि ईंटें तोड़ने वाले भाइयों ने तो हमारे कार्य में मदद ही पहुँचाई है, क्योंकि हम लोगों को भी तो ईंटें तोड़ कर ही काम करना पड़ता।" इस पर लोगों को बड़ा आश्चर्य हुआ! उन्होंने तो ऐसा कभी सुना ही नहीं था। वे तो यही जानते थे कि अभी रिपोर्ट होगी और अभी पुलिस आकर कुछ लोगों की पकड़-धकड़ करेगी, जैसा कि वे लोग आपस के झगड़ों में देखते रहे थे। लेकिन आज बिल्कुल उलटा व्यवहार देख कर गाँववाले बड़े आश्चर्य में पड़ गये। इस छोटे-से विचार-परिवर्तन के प्रयोग ने हम लोगों के कार्य को बड़ा ही सरल बना दिया, उन्हीं दिनों श्री लल्लू दद्दा बीमारी की दशा में भी उसी जगह लू से बचने के लिये कपड़ा तान कर अपना कार्य-सचालन कर रहे थे।

एक दिन उन्होंने देखा कि एक भाई बन्दूक लिये हुए आ रहे हैं, जब पास आये तो बन्दूक पटक कर बोले—"दद्दा, आप हमारी शिकायत भेज रहे हैं। यह लीजिए बन्दूक, यह पड़ी हुई है। मैंने आपका कोई नुकसान नहीं किया है।" इस पर दद्दा ने कहा कि मैंने किसी की भी शिकायत नहीं भेजी है, बल्कि हम तो अपने प्राइवेट पत्र ही लिख कर डाल रहे हैं।

लेकिन उन्हें विश्वास न हुआ। वे बराबर यही कहते रहे कि दद्दा मैंने आपका कोई अपराध नहीं किया है। आप हमसे नाराज क्यों हैं? हमारी बंदूक बाहर पड़ी है, अगर आप चाहें तो मैं बन्दूक छोड़ सकता हूँ।

इस तरह की और भी आकस्मिक कही जाने वाली घटनाएँ हम लोगों के समक्ष उपस्थित हुईं, जिससे विचार परिवर्तन की प्रक्रिया में काफी बल प्राप्त हुआ। जो गाँव के लोग भय के कारण आश्रम के छप्पर को उठाने आने में भी भय करते थे, वे ही लोग काफी सख्या में आश्रम पर आने लगे, अपनी-अपनी निजी समस्याएँ सुलझाने में सहायता माँगने। स्वयं एक परिवार की भावना पैदा होने लगी।

खेत जुतने लगे। बागी विरोधी भाइयों के द्वारा खेत जुतवाने में भी मदद मिली। उनकी देखरेख में ही खेती का कार्य शुरू किया। इससे उनके मन का द्वेष उभड़ा नहीं, बल्कि शांत हो गया।

इसी प्रकार विचार विनिमय और सतत सम्पर्क साधते हुए कार्यकर्ता अपने लक्ष्य की ओर बढ़े और ११ सितम्बर 'विनोबा जयन्ती' के पुण्य अवसर पर एकत्रित होकर २ अक्टूबर 'गांधी जयती' तक का कार्यक्रम तय करके काम में लगे।

आश्रम में 'विनोबा-जयती' के अवसर पर सभी प्रकार के लोग इकट्ठे हुए। बाबा के सम्बंध में चर्चा हुई, चरखा-कताई हुई, सामूहिक प्रार्थना और भजन हुए। कनेरा ग्राम में, जहाँ बाबा के समक्ष आत्मसमर्पण हुआ था, लल्लू दादा के सान्निध्य में गीता-प्रवचन व बाबा पर चर्चा, कताई, भजन-कीर्तन और बाल-सभा का आयोजन किया गया।

११ सितम्बर से २ अक्टूबर के कार्यक्रम के अतर्गत लल्लू दद्दा ने भिण्ड और मुरैना जिलों की शिक्षा-सस्थाओं में अपने कार्यक्रम रखे, जिनमें से मुख्य शिक्षा-संस्थाएँ निम्नलिखित हैं: (१) बिजली हायर सेकेन्डरी और (२) बेसिक ट्रेनिंग कालेज, (३) अटेर हायर सेकेन्डरी स्कूल, (४) सबलगढ़ बेसिक ट्रेनिंग कालेज, भिण्ड शहर के सभी कालेज और स्कूलों में श्री राजनारायण त्रिपाठी, श्री भवानी भाई व श्री सुन्दरलाल ने अपने कार्यक्रम चलाये और साहित्य बिक्री भी की।

लहरौली हायर सेकेंडरी स्कूल तथा उदोतगढ़ हायर सेकेन्डरी स्कूल में श्री चरणसिंह तथा श्री सुन्दरलाल ने कार्यक्रम पूरा किया तथा साहित्य बिक्री की।

बाह क्षेत्र के सभी जूनियर हाईस्कूलों में भवानी भाई ने कार्यक्रम पूरा किया और श्री दयाशकर चौबे के साथ साहित्य-बिक्री भी की।

ता० २७ सितम्बर की सुबह ही श्री ई० डब्ल्यू० आर्यनायकम्‌जी तथा श्रीमती आशादेवी का इस क्षेत्र में पदार्पण हुआ। २७ सितम्बर की शाम को बाह कालेज के अध्यापक और कस्बे के लोगों से नई तालीम के सम्बन्ध में श्री आर्यनायकम्‌जी ने चर्चा की।

ता० २८ सितम्बर की सुबह ही सर्वश्री आर्यनायकम्‌जी, आशादेवी, मित्तलजी, लल्लू दद्दा, महावीर भाई खोहरी आश्रम के लिए पैदल ही रवाना हुए। स्थान करीब ५ मील दूर था। श्री आर्यनायकम्‌जी से बहुत कहा गया कि आप बैलगाड़ी में बैठ लीजिये, लेकिन वे लगातार बिना थके आश्रम तक चलते गये। उसी दिन शाम को खोहरी ग्राम में बागी-पीड़ित भाइयों के परिवारों से मिलने आर्यनायकम्‌जी और आशादेवी गयीं। वहाँ के कारुणिक दृश्य को देख कर आशादेवी बहुत प्रभावित हुईं। उनका मन क्षेत्र में सतत कार्य करने को हुआ, लेकिन कार्याधिक्य के कारण असमर्थ हो गईं। उसी रात को पुरा-गुमानसिंह पर लोगों से कताई-बुनाई के सम्बन्ध में आर्यनायकम्‌जी ने चर्चा की।

ता० २९ सितम्बर की सुबह खेड़ा राठौर को आर्यनायकम्‌जी के साथ सभी साथी पैदल ही चले। खेड़ा में कुछ परिवारों में आपसी अनबन चल रही थी। लेकिन आर्यनायकम्‌जी के पहुँचने के पहले ही विरोधी लोगों के सहयोग से ही आपस के मनमुटाव दूर हो चुके थे। इस प्रकार की घटना से आर्यनायकम्‌जी के मन पर बड़ा अच्छा प्रभाव पड़ा। दोपहर वहाँ से चल कर आर्यनायकम्‌जी और पूरा दल महुआ ग्राम पहुँचा। वहाँ दोपहर को घरों में जाकर लोगों ने भोजन किया। गाँव के काफी लोग इकट्ठे हो गये, ऐसी स्थिति में आर्यनायकम्‌जी ने विश्राम करना उचित नहीं समझा। लोगों से बराबर दोपहर भर वे चर्चा करते रहे। श्रीमती आशादेवी ने घरों में जाकर पीड़ित परिवारों से सम्पर्क किया। गाँव के लोग इस प्रेम-व्यवहार से काफी प्रभावित हुए। उन्हें काफी संतोष हुआ। आर्यनायकम्‌जी तथा पार्टी पैदल चल कर ही आश्रम पर पहुँचे। शाम को ग्रामवासियों ने आर्यनायकम्‌जी से आश्रम में पचायत की भूमि देने का प्रस्ताव किया, लेकिन आर्यनायकम्‌जी इस प्रस्ताव से सहमत नहीं हुए। उन्होंने कहा कि लोग अपनी शक्ति से जमीन का लाभ उठा कर कोई कार्यक्रम अपने आप उठायें, तो उसमें हम सभी सहयोग देने को तत्पर रहेंगे। इस प्रकार के कार्य से लोगों में आत्मबल पैदा होगा, जिससे नई समाज-रचना को बल मिलेगा। करीब दस बजे साथी कार्यकर्ताओं की चर्चा हुई। आर्यनायकम्‌जी ने समिति के कार्य की सराहना करते हुए कहा कि वास्तव में आप लोग महान् कार्य कर रहे हैं। यह केवल विचार का कार्य नहीं, बल्कि विचार को आचार में बदलने का कार्य है। ऐसे कार्य में बाबा का मार्गदर्शन ही आप लोगों के लिए उचित पथ-प्रदर्शन होगा, हम लोग अपनी शक्ति भर इसमें सहयोग करते रहेंगे।

श्री आर्यनायकम्‌जी ने इस क्षेत्र के ४० पीड़ित बच्चों को साढ़ेसोलह रुपये प्रतिमाह से पोषण और शिक्षण हेतु सहायता देने का भी वचन दिया, जिसमें से २० बच्चों की सहायता बाँट दी गई।

ता० ३० सितम्बर को आर्यनायकम्‌जी तथा आशादेवी की विदाई के लिए सभी साथी बाह तक गये। दिसम्बर में आर्यनायकम्‌जी से इस क्षेत्र में पुनः आने का वादा लेकर सभी लोग बाह से आश्रम वापस आये।

कनेरा में आश्रम बनाने के लिये वातावरण पैदा हो, ताकि आसपास के बागी परिवारों से सतत सम्पर्क बनाये रखने में मदद मिले। इसके लिये श्री गुप्तेश्वर भाई, श्री चरणसिंहजी, श्री सुन्दरलालजी तथा श्री दुर्गाभाई इस क्षेत्र में बराबर सम्पर्क हेतु पदयात्रा कर रहे हैं।

क्षेत्र के ग्रामों में शांति-स्थापना में सहायता पहुँचाने के लिए कार्यकर्ता गाँवों के झगड़ों को आपस में तय कराने का प्रयत्न करते रहते हैं।

भिण्ड क्षेत्र के ग्राम जोरी अहीर में एक भूमि सम्बन्धी झगड़ा चल रहा था, जिसको श्री चरणसिंह शांति-सैनिक ने काफी प्रयास करके शांत कराया।

बाह क्षेत्र के उमरेठा ग्राम में आपस में ५ मुकदमे चल रहे थे, जिनमें करीब ७० व्यक्ति फँसे हुए थे। दो दिन तक प्रयास करके श्री मित्तलजी, स्वामी कृष्णस्वरूपजी तथा श्री महावीर सिंह ने गाँव के लोगों में आपस में प्रेम पैदा किया। फिर सभी लोग मिल कर आगरा गये, वहाँ अदालत में सभी मामले तय करवाये। इसी प्रकार के छोटे छोटे झगड़े गाँव में तय कराने का प्रयास भी सभी शांति-सैनिक करते रहते हैं।

—गुरुशरण

पचास करोड़ व्यक्ति पोषणाभाव से पीड़ित—पंचवर्षीय योजनाएँ अवैज्ञानिक—बच्चों के शिक्षण की जिम्मेदारी महिलाओं पर—राष्ट्रीय पुस्तक-समारोह वाराणसी में महादेवी वर्मा—उ० प्र० में तीन भाषाएँ पढ़ाई जायेंगी—कक्षा तीन से अंग्रेजी शुरू करने का विरोध—मानव-इतिहास की बेमिसाल क्रूरता—अलीगढ़ विश्वविद्यालय में गांधी-जीवन पर प्रदर्शनी—गोवध की मांग साम्प्रदायिक नहीं—छात्र का अनुकरणीय निर्णय—अलीगढ़ में शांति-सेना का केन्द्र—ग्रामइकाई कार्यकर्ता-प्रशिक्षण केन्द्र—विश्वशांति-सेना में सर्व सेवा संघ के कार्यकर्ता—पंजाब में शिविर—शांतिवादियों का भारत आगमन—पंचायत राज के लिये केरल में सघन क्षेत्र।

संयुक्त राष्ट्र-संघ के खाद्य-कृषि-संगठन के आँकड़ों से मालूम हुआ है कि दुनिया में तीस से पचास करोड़ व्यक्ति 'विकट पोषणाभाव' से पीड़ित हैं और एक अरब व्यक्ति 'कुपोषण' की विभिन्न मात्राओं से ग्रस्त हैं। ●

बंबई में एक सभा में भाषण करते हुए आचार्य कृपलानी ने कहा है कि भारत की पंचवर्षीय योजनाएँ अवैज्ञानिक हैं और उनसे आयोजकों में 'पूर्वविचार के अभाव' का दिग्दर्शन होता है। ●

बाल-दिवस के अवसर पर संदेश देते हुए उपराष्ट्रपति डा० राधाकृष्णन् ने कहा कि बच्चों के शिक्षण-कार्य में माताओं की जिम्मेदारी बहुत अधिक है, क्योंकि बच्चे अधिकतर अपनी माताओं की प्रवृत्तियों और विचारों का अनुकरण करते हैं। ●

वाराणसी में राष्ट्रीय पुस्तक समारोह के अवसर पर उद्बोधन करते हुए श्रीमती महादेवी वर्मा ने भाषण में कहा कि आज देश को ऐसी पुस्तकें चाहिए, जो इस पीढ़ी के मनुष्य को मनुष्य बना सकें; भावी पीढ़ी को रागात्मक तादात्म्य की अमूल्य निधि प्रदान कर सकें और नैतिक दृष्टि से पंगु और विकलांग न होने दें। हमें मनुष्य के अतरंग को विराट् बनाने वाली पुस्तकें चाहिए।

इस अवसर पर आपने कहा कि केवल अच्छी छपाई, चित्रमयता और सज्जा से पुस्तकें अच्छी नहीं हो जाती। आज विकसित होते हुए राष्ट्र की आवश्यकता को देख कर पुस्तकें और ग्रंथ निकलने चाहिए। ●

उत्तरप्रदेश-सरकार ने विद्यालयों में तीन भाषाएँ पढ़ाई जाने की योजना जारी करने का निश्चय जाहिर किया है। उक्त भाषाओं में एक मातृभाषा, दूसरी क्षेत्रीय भाषा और तीसरी कोई विदेशी भाषा होगी। ●

उ० प्र० सरकार ने अपनी तीन भाषाओं की पढ़ाई की शिक्षा-योजना के अन्तर्गत अंग्रेजी की शिक्षा कक्षा तीन से शुरू करने का निश्चय किया है। इस योजना का विरोध कई विरोधी पार्टियों एवं सार्वजनिक कार्यकर्ताओं द्वारा किया जा रहा है। ●

राजगोपालचारी ने रूस द्वारा किये गये अंतिम दो पारमाणविक बम-विस्फोटों को 'मानव इतिहास की बेमिसाल क्रूरता' करार दिया है। ●

अलीगढ़ विश्वविद्यालय में श्री जयप्रकाश नारायण ने मौलाना आजाद पुस्तकालय में गांधीजी के जीवन और दर्शन से सम्बद्ध एक प्रदर्शनी का उद्घाटन किया। प्रदर्शनी में गांधीजी के बारे में तथा उनकी लिखी हुई पुस्तकों के अलावा जन्म से लेकर मृत्यु तक के गांधीजी के चित्रों का प्रदर्शन किया गया। ●

गोपाष्टमी के अवसर पर कलकत्ता से दस मील दूर, सोदपुर में भाषण करते हुए सेठ गोविन्ददास ने कहा कि गोवध बन्दी की माँग साम्प्रदायिक नहीं है। ●

एक छात्र ने पूर्वी रेलवे को दस रुपये पोस्टल आर्डर से भेजे हैं और लिखा है कि ये रुपये मैं 'आत्मकष्ट से निवारण पाने के लिए भेज रहा हूँ।' उसने यह भी लिखा है कि मैंने उपयोग किये हुए टिकट पर १४५ मील की पुनर्यात्रा की थी।

अ० भा० सर्व सेवा संघ की प्रबंध समिति ने साधना केन्द्र, काशी में हाल ही में हुई अपनी बैठक में पश्चिमी उत्तर प्रदेश में हुए पिछले दंगों पर चिंता व्यक्त की और मेरठ अथवा अलीगढ़ में शांति-सेना का केन्द्र श्रीमती आशादेवी और मास्टर सुंदरलालजी के मार्गदर्शन में शुरू करने का सुझाव दिया। ●

खादी-विद्यालय और ग्राम-इकाई के कार्यकर्ताओं के प्रशिक्षण के लिए खादी-ग्रामोद्योग ग्रामस्वराज्य-समिति द्वारा खादी-ग्रामोद्योग कमीशन के सहयोग से देश में पाँच केन्द्र शुरू किये जायेंगे। उत्तरप्रदेश में सेवापुरी, बिहार में पूसा रोड, पंजाब में पट्टी कल्याणा और बंगाल में बलरामपुर तथा एक केन्द्र असम में रहेगा। ●

— बेरूत में होने वाले शांति-सम्मेलन में विश्व शांति-सेना की स्थापना के गठन और तत्संबंधी विचार-विनिमय करने के लिए हिंदुस्तान की ओर से सात व्यक्ति भाग लेंगे : (१) श्री जयप्रकाश नारायण, (२) श्रीमती आशादेवी, (३) श्री जी० रामचन्द्रन्, (४) श्री नारायण देसाई, (५) श्री एस० जगन्नाथन्, (६) श्री सिद्धराज ढड्ढा और (७) श्री देवी प्रसाद (जो आजकल यूरोप में ही हैं)। ●

पंजाब सर्वोदय-मंडल के तत्वावधान में माह नवम्बर के १९ से २९ ता० तक एक कार्यकर्ता-प्रशिक्षण-शिविर मड्डकलाँ, हिसार में हो रहा है। श्री दादा धर्माधिकारी शिविर के मुख्य वक्ता हैं। ●

अमेरिका के प्रमुख शांतिवादी श्री ए० जे० मस्ती आगामी जनवरी माह में हिंदुस्तान आ रहे हैं और आप एक महीना यहाँ रहेंगे। उसी प्रकार ऑस्ट्रिया के शांतिवादी श्री और श्रीमती रिचर्ड होवर भी तीन हफ्ते के लिए हिंदुस्तान आकर तीन श्रम-शिविरों में भाग लेंगे। ●

केरल में कोझिकोड जिला सर्वोदय मंडल ने आशिविलम, दानी-ग्राम और तिरुपुरम् में निर्दलीय पंचायत राज की स्थापना के लिए सघन काम करने का सोचा है। मंडल ने इस संबंध में प्रशिक्षण के लिए शिविर आयोजित करने का भी निर्णय लिया है। ●

शिवदासपुरा में कार्यकर्ता-अभ्यासक्रम

लोक-भारती, शिवदासपुरा में १५ दिसम्बर, '६१ से अम्बर ट्रेण्ड कार्यकर्ता का अभ्यास-क्रम प्रारम्भ होगा। जिन्होंने ६ माह और ९ माह का अभ्यास-क्रम पूरा किया है, वे १४ महीने के इस कार्यकर्ता-अभ्यासक्रम में प्रवेश कर सकेंगे। इस ट्रेनिंग में भाग लेने वाले कार्यकर्ताओं को ४५ रुपया मासिक छात्रवृत्ति दी जायगी तथा खादी के यंत्र-तंत्र, गणित एवं प्रत्यक्ष कार्य, कताई-बुनाई तथा दो अन्य ग्रामोद्योगों का पूरा ज्ञान कराया जायगा। खादी-कार्यकर्ता उनके तकनीकी ज्ञान से पूरे जानकार हों, इसी दृष्टि से यह अभ्यास-क्रम चलाया जा रहा है। इस ट्रेनिंग में प्रवेश लेने वाले छात्रों के आवेदन-पत्र श्री संचालक, लोक-भारती, पो० शिवदासपुरा, जयपुर (राजस्थान) के पास १ दिसम्बर '६१ तक अवश्य पहुँच जाने चाहिए।

साबुन-प्रशिक्षण भी प्रारम्भ

साथ ही यहाँ पर साबुन-प्रशिक्षण का काम भी निकट भविष्य में ही प्रारंभ होने वाला है। उसमें भी प्रति विद्यार्थी ४५ रुपया मासिक छात्रवृत्ति दी जायगी। इसके लिए भी आवेदन-पत्र आमंत्रित किये जाते हैं। इच्छुक उम्मीदवार संचालक, लोक-भारती, पो० शिवदासपुरा से या रीजनल आर्गेनाइजर, तेल-साबुन उद्योग विभाग, खादी ग्रामोद्योग कमीशन, हीराबाग सवाई रामजी सड़क, जयपुर से पत्र-व्यवहार करें।

इस अंक में

सूचना :

सेवापुरी में चर्मोद्योग-प्रशिक्षण

श्री गांधी आश्रम सेवापुरी, वाराणसी में खादी-ग्रामोद्योग आयोग की ओर से चर्म-शोधन का १ वर्ष का प्रशिक्षण आगामी १ जनवरी से प्रारम्भ होने जा रहा है। प्रार्थना-पत्र ३० नवम्बर '६१ तक व्यवस्थापक श्री गांधी आश्रम, सेवापुरी वाराणसी के पास आ जाने चाहिए। विद्यार्थी को प्रशिक्षण-काल में ४५ रु० मासिक छात्रवृत्ति दी जायगी। प्रार्थना-पत्र में नाम, पूरा पता, जन्म तिथि और अनुभव यदि कोई हो तो, प्रमाण पत्रों की सच्ची प्रतिलिपि के साथ भेजना चाहिए। प्रार्थी को मार्ग-व्यय आदि के लिए कोई मार्ग-व्यय नहीं दिया जायगा। योग्यता हाईस्कूल या उसके समकक्ष, आयु २० से ३० वर्ष हो। संस्था से आने वाले उम्मीदवारों को प्राथमिकता दी जायगी।

श्रीकृष्णदत्त भट्ट, अ० भा० सर्व सेवा संघ द्वारा भार्गव भूषण प्रेस, वाराणसी में मुद्रित और प्रकाशित। पता : राजघाट, वाराणसी-१, फोन नं० ४३९१
वार्षिक मूल्य ६) पिछले अंक की छपी प्रतियाँ ९५१० : इस अंक की छपी प्रतियाँ ९३५० एक अंक : १३ नये पैसे

संपादक : सिद्धराज ढड्ढा

वाराणसी : शुक्रवार | १ दिसम्बर '६१ | वर्ष ८ : अंक ९

विद्यार्थी अध्ययन-परायण हों

विनोबा

यहाँ पर हम छह महीने से घूम रहे हैं। हम बहुत काम करते हैं। रोज दो-चार घंटे रास्ते में जाते हैं, तो घंटा डेढ़ घंटा चलते-चलते हमारा गीता का वर्ग चलता है, और उसके अलावा घंटा भर और एक वर्ग चलता है। असमी भाषा के अध्ययन में भी कुछ समय जाता है। इस तरह प्रतिदिन हमारा अध्ययन चलता है। यह किसी पर कुछ उपकार नहीं, लेकिन हम अपना धर्म पालन करते हैं। निरंतर विद्या प्राप्त करते रहना यह विद्यार्थियों का धर्म है। हर नागरिक का धर्म है कि कुछ अध्ययन रोज करना चाहिए। जैसे हम रोज स्नान करते हैं, वैसा रोज अध्ययन करना चाहिए। उससे चित्त की शुद्धि होती है। जैसे हम रोज खाते हैं, वैसा रोज अध्ययन करते रहेंगे तो चित्त को पोषण और शांति मिलेगी। चित्त को शुद्धि चाहिये, चित्त को शांति चाहिए, चित्त का पोषण हो, ये चित्त की तीन आवश्यकताएँ हैं, जो अध्ययन से मिलती हैं।

इसलिए हमारे अनुभवी ऋषियों ने आदेश दिया है, अनेक कर्तव्य सिखाये हैं। "ऋतं च स्वाध्याय प्रवचने च, सत्यं च स्वाध्याय प्रवचने च"—सत्य का पालन। दूसरा कर्तव्य तप करना, "तपश्च स्वाध्याय प्रवचने च"। स्वाध्याय याने सीखना और प्रवचन याने सिखाना। पहला कर्तव्य सत्य पालन, दूसरा तप करना। "दमश्च स्वाध्याय प्रवचने च" इंद्रियों का दमन यह तीसरा कर्तव्य है। फिर से कहा, "स्वाध्याय प्रवचने च"। चौथा कर्तव्य है "शमश्च स्वाध्याय प्रवचने च" शांति रखना याने चित्त की शांति रखना यह कर्तव्य है। उसके बाद फिर से कहा, "स्वाध्याय प्रवचने च"। इस तरह से एक एक कर्तव्य का नाम लेकर उसके साथ 'स्वाध्याय, प्रवचन' करने को कहा है। अब यह ऋषियों के शब्दों में सुनिये।

"ऋतं च स्वाध्याय प्रवचने च।
सत्यं च स्वाध्याय प्रवचने च।
तपश्च स्वाध्याय प्रवचने च।
दमश्च स्वाध्याय प्रवचने च।
शमश्च स्वाध्याय प्रवचने च।
अग्नयश्च स्वाध्याय प्रवचने च।
अग्निहोत्रं च स्वाध्याय प्रवचने च।"

हर कोई कर्तव्य बताया है। उसके साथ स्वाध्याय प्रवचन, हरएक के बाद दूसरा ऐसी रट लगायी। और यह मानी हुई बात है कि भारत में उस जमाने में भी अध्ययन प्रवचन चलता था, जिस जमाने में दुनिया में और जगह अंधकार था।

इसलिये गुरुदेव ने बहुत प्रेम से कहा, 'प्रथम सामरव तव तपोवने प्रथम प्रभात उदित तव गगने'—यह कोई अभिमान की बात नहीं, लेकिन यह उन्होंने वास्तविक स्थिति लिखी है। इसमें हमारे अध्ययन, अध्यापन का आदर दीखता है। अध्ययन करने के लिए स्वतन्त्र आश्रम माना—ब्रह्मचर्य आश्रम। लेकिन सर्वसामान्य, आम लोगों का आश्रम है, गृहस्थाश्रम। उसमें भी अध्ययन का कर्तव्य रखा है। कुटुम्ब में एक पवित्र स्थान रखना चाहिए और वहाँ बैठ कर स्वाध्याय करना चाहिए और आसपास की जनता को धार्मिकता की शिक्षा देना यह गृहस्थाश्रम का कर्तव्य माना गया।

लेकिन इन दिनों क्या होता है? 'एज्युकेशन' समाप्त हुआ कि सब विद्या समाप्त मानते हैं! बहुत हुआ तो एकाध अखबार पढ़ते हैं। डाक्टर, वकील, प्रोफेसर कोई भी हों, अपने अपने विषय के अलावा कुछ पढ़ते नहीं। उनकी विद्या वहीं समाप्त हो जाती है। एक बार हमको पंजाब में प्रोफेसरों के सामने व्याख्यान देने का मौका आया। व्याख्यान के आरंभ में हमने कहा कि आज हमको व्याख्यान देना मुश्किल लगता है, क्योंकि आज मुझे अनपढ़ जमात के साथ बोलने का मौका मिला है। प्रोफेसरों को कुछ बातें समझायी तो उनको कबूल करना पड़ा कि जो बातें समझायी उनमें वे अनपढ़ ही हैं!

इस देश के लोग भी लगभग अध्ययन-शून्य हैं, विद्या प्राप्ति के बाद कर्तव्यारंभ होता है, कर्तव्य समाप्ति नहीं। स्वतंत्रता के पहले हमारा कर्तव्यारंभ ही नहीं हुआ था। जहाँ स्वाधीनता नहीं, आजादी नहीं, गुलाम हैं, शास्त्रकार कहते हैं कि गुलामों के लिए कर्तव्य धर्म नहीं, स्वतन्त्र मनुष्य को कर्तव्य है। पाणिनी ने लिखा है—"स्वतंत्रः कर्ता"—जहाँ स्वाधीनता नहीं, वहाँ कर्तव्य नहीं, नीति की व्यापकता नहीं। जहाँ पराधीनता है, वहाँ लोग अपना कर्तव्य नहीं कर सकते हैं। जिसको स्वतन्त्रता से कार्य करने की आजादी नहीं वहाँ, वह दीन नीतिशास्त्र कहाँ जानेगा? यह हालत थी, स्वराज्य के पहले।

स्वराज्य प्राप्ति के बाद अब हमें स्वराज्य को सर्वांग सुन्दर बनाना है, इसलिये स्वराज्य विचार दुनिया में फैलाना होगा। पहले 'जय हिन्द' का नारा लगाना था, स्वराज्य के बाद वह 'जय जगत' में परिणत हुआ। इंग्लैंड में जनता काफी जाग्रत है, फिर भी वहाँ स्वतन्त्रता नहीं, लाचारी है। राज्य लोगों में से ही चुने हुए लोगों का चलता है। लेकिन लोग स्वतन्त्र नहीं, उनको करने को कुछ काम ही नहीं है। उनके सामने बहुत बड़ी समस्या है। क्या है यह समस्या? समस्या का न होना ही उनके लिए समस्या हो गया है! नयी कार्यप्रेरणा क्या हो, यह सारे देश को मालूम नहीं हो रहा है।

हमारे एक मित्र कहते थे कि इंग्लैंड में पिछले इलेक्शन में क्या हुआ? भिन्न-भिन्न पार्टीवाले अपनी अपनी बातें रखते थे, लोगों के सामने। लेकिन लोगों ने पुरानी पार्टी को चुना। क्यों चुना? वे कहते थे, "वी हैव नेवर हैड इट बेटर"—आज हमारा अच्छा चल रहा है। और अच्छा क्या करेगा? वहाँ सुबह आठ बजे नाश्ते का समय होता है। ठीक पौने सात बजे स्टीमर आती है, उसमें पके हुए अच्छे केले भरे रहते हैं। पन्द्रह मिनट के बाद वे आपको मिल जायेंगे और आप नाश्ता करेंगे! ऐसे सुन्दर चलता है। वहाँ जीवन में पुरुषार्थ पैदा हो, ऐसी चीज नहीं रही।

हमारे संत पुरुषों ने कहा है, स्वर्ग में देव होते हैं, वे लालसा करते हैं मृत्यु-लोक में जन्म पाने के लिये। स्वर्ग में भोग भोग कर उनको उसकी अरुचि पैदा हो जाती है, मीठा खाकर अरुचि पैदा होती है, वैसे ही स्वर्ग के देवता को स्वर्ग की भोग से अरुचि पैदा होती है। यही हालत आज इंग्लैंड की है। स्वतन्त्रता है, पर प्रेम नहीं कर सकते, करुणा नहीं कर सकते, वहाँ हर चीज सामूहिक तौर पर होगी। किसी को जरूरत ही नहीं कि वह सेवा करे। सेवा करने के लिए वहाँ संस्थाएँ हैं, प्रेम करने के लिए वहाँ संस्थाएँ हैं। तरह तरह की वहाँ संस्थाएँ हैं और तरह-तरह की व्यवस्था है। व्यक्तिगत गुणविकास के लिए वहाँ मौका ही नहीं। इससे बदतर हालत क्या हो सकती है? सच्ची स्वतन्त्रता किसी के भी पास है नहीं। भारत को स्वराज्य मिला। हमारे स्वराज्य को सच्चा स्वराज्य बनाना होगा। सर्वांग सुन्दर स्वराज्य की स्थापना के लिए ही हमें जय-जगत् और समत्व के लिये प्रयास करना होगा। यह सब अध्ययन बिना होगा नहीं। गृहस्थाश्रमी को भी अध्ययन करना चाहिये और विद्यार्थियों को तो करना ही चाहिये।

आज विद्यार्थियों के साथ हमने बातें कीं। उन्होंने अपनी समस्याएँ हमारे सामने रखीं। बहुत प्रेम से चर्चा हुई। अभी विद्यार्थियों ने हड़ताल की थी। उस सिलसिले में बात हो रही थी। हमने विद्यार्थियों में सौजन्य पाया। हमने सब जगह यही अनुभव पाया। असम में हमारे छः जिले पूरे हो गये। सभी जिलों में हमने यही अनुभव पाया। विद्यार्थियों में हमने सौम्यता देखी, सौजन्यता देखी, गलती का पश्चात्ताप देखा, बहुत सुन्दर चर्चा हुई। हमने कहा, भगवान की प्रार्थना में मान लीजिये तुम्हारी श्रद्धा है। तुम अपना धर्म समझते हो। अब सरकार के काम के लिये मन में दुःख पैदा हुआ और निषेध करना चाहते हो, और तुमने ऐसा किया कि जब तक सरकार हमारी मांग पूरी नहीं करती, हम भगवान की प्रार्थना पूरी नहीं करते! तो क्या यह भला होगा कि जो अपना धर्म माना वह छोड़ा? सरकार के गलत काम का विरोध करने के लिए आपने अपने 'अध्ययन' की हड़ताल की। इसका मतलब क्या हुआ? आपने आपके धर्माचरण को छोड़ा। विद्यार्थियों का अध्ययन यह धर्म है। विद्यार्थी और बातें कर सकते हैं, अपने अहिंसा के मर्यादा में रह कर। 'प्रोटेस्ट'-विरोध के तौर पर अपने भोजन को छोड़ सकते हैं। हमने उनको यह समझाया और हमें कहने में खुशी होती है, उन्होंने माना कि 'हड़ताल' करना उनकी दृष्टि से गलत है। हमको उनकी निर्मलता देख कर उनके प्रति प्यार पैदा हुआ। प्यार तो पहले ही था, लेकिन अब वह बढ़ गया। विद्यार्थियों ने माना, अध्ययन हमारा धर्म है, उसको हम नहीं छोड़ सकते।

अभी हमने पढ़ा कि गोहाटी युनिवर्सिटी में 'सौ में से पैंतीस' प्रतिशत विद्यार्थी

सत्यं जगत् स्फूर्तिः जीवनं सत्यशोधनम्

भूदानयज्ञ

लोकनागरी लिपि •

सहअस्तीत्वका आदर्श

हीन्दुस्तान आक्रमण में नहीं, प्रेम में वीश्वास रखता है। भारत में शक, हूण, आर्य, यहूदी, पारसी ओसाओ, चीनी, जापानी, सभी आये। हमने सबको कबूल कीया, सबको बसाया, सब का प्यार कीया, सबको 'अेडजस्ट' कीया। हमने 'सह-अस्तीत्व' की कल्पना हीन्दुस्तान में चलायी। आज हीन्दुस्तान के 'पंचशील' का नाम सारी दुनीया में बोला जा रहा है। पंचशील का अर्थ है, जीवन में वीवीधता को सहन करना। यही भारतीय संस्कृती है। ब्राह्मण, क्षत्रीय, वैश्य और शूद्र के अपने-अपने अलग जीवन हैं। कीन्तु भारतीय संस्कृती बता रही है की वैश्य या शूद्र को मुक्त होने के लीये ब्राह्मण बनने की जरूरत नहीं। नीष्काम भावना से जो अपने-अपने कर्म में रत रहेंगे, वे अुसी कर्मयोग से परमेश्वर को प्राप्त कर सकते हैं। 'स्वे स्वे कर्मण्यभीरतः संसीद्धीं लभते नरः'—अपने-अपने कर्म में तत्पर रहकर नीष्काम भावना से भगवत्-प्रेम-आज्ञा समझकर व्यापार करने वाले व्यापारी भी मुक्त हो सकते हैं। हमारा धर्म बतलाता है की व्यापारी अपने लीये नहीं, दूसरों के लीये पैसा रखे और स्वयं अुसके ट्रस्टी बने। अीस तरह यदी ट्रस्टी बन कर अुसका अुपयोग करते हों, तो व्यापार और धन-संग्रह करते हुओ भी वे मोक्ष पा सकते हैं।

भीलवाड़ा, १२-२-'५९ —वीनोबा

लिपि-संकेत ि = ी; ी = ी, ख = ख, संयुक्ताक्षर हलंत चिह्न से।

सम्पादकीय

गढ़वाल में शराबबन्दी

भारत सरकार के संदर्भ-ग्रन्थ "इण्डिया" (१९६१) में उत्तर प्रदेश में शराबबंदी की चर्चा करते हुए पृष्ठ १३२ पर लिखा है कि "वृन्दावन, हरिद्वार और ऋषिकेश—इन तीन तीर्थ स्थानों में तथा बदायूँ, एटा, फर्रुखाबाद, फतेहपुर, जौनपुर, कानपुर, मैनपुरी, प्रतापगढ़, रायबरेली, सुलतानपुर और उन्नाव—इन जिलों में मुकम्मिल शराबबन्दी है।"

गत १७ नवम्बर १९६१ के 'भूदान-यज्ञ' में 'गढ़वाल में शराबबंदी' शीर्षक समाचार में बताया गया है कि इस वर्ष से ऋषिकेश से दो मील पर ढालवाला में शराब की एक नयी दुकान खोली गयी है। उत्तराखण्ड के मार्ग में, बद्रीकेदार, गंगोत्री और जमनोत्री के तीर्थ यात्रियों के रास्ते में कोटद्वार, सतपुली, पौड़ी, श्रीनगर, लैंसडौन, चमोली, नरेन्द्रनगर और टिहरी में तो शराब की दुकानें पहले से हैं ही। इन सभी दुकानों पर इलाहाबाद के आबकारी कमिश्नर का १ अप्रैल १९६१ का यह आदेश सूचना-पट्ट पर लगा दिया गया है कि "हर व्यक्ति कानूनी तौर पर देशी शराब की आठ बोतलें एक बार ले जा सकता है और अपने पास रख भी सकता है।"

इसे अद्भुत ही मानना चाहिए कि एक ओर हमारी सरकार सारे देश में जल्दी से जल्दी शराबबन्दी करने के लिए कृतसंकल्प है और तीर्थों में विशेष रूप से शराबबन्दी का डंका पीटती है और दूसरी ओर 'निषिद्ध' क्षेत्र के बगल में नयी दुकानें खोल कर आठ आठ बोतलें खरीदने, रखने और पीने के लिए बाकायदा प्रचार करती है!

गढ़वाल के सभी राजनीतिक पक्ष और वहाँ की सभी सार्वजनिक संस्थाओं ने इस बात की जोरदार मांग की है कि गढ़वाल में पूरी शराबबन्दी की जाय। चमोली जिले में सरकार द्वारा बनायी गयी जिला सलाहकारी समिति ने भी शराबबन्दी का प्रस्ताव किया है। हाल में गढ़वाल के वयोवृद्ध नेता श्री सकलानन्द डोभाल—अध्यक्ष, अंतरिम जिला परिषद् ने अध्यक्ष-पद की शपथ लेते समय यह घोषणा की है कि वे अपने जिले में तुरत शराबबन्दी चाहते हैं। यदि शीघ्र ही उचित कार्रवाही न होगी तो उन्होंने शराबबन्दी के लिए सत्याग्रह और अनशन करने का भी निश्चय व्यक्त किया है।

हम समझते हैं कि गढ़वाल की जनता की यह उचित मांग सरकार को अविलम्ब स्वीकार करनी चाहिए। केवल आर्थिक लाभ ही सरकार का लक्ष्य नहीं होना चाहिए, जनता की मांग और उसके व्यापक प्रभाव की ओर भी उसे ध्यान देना चाहिए। अच्छा हो, सरकार इसके लिए सत्याग्रह की नौबत न आने दे।

नगीन भाई पारेख !

हमें यह जान कर अत्यन्त दुःख हुआ कि गत १९ तारीख को हमारे नगीन भाई पारेख का देहावसान हो गया! गुजरात के सम्पन्न परिवार के नगीन भाई इंग्लैण्ड तथा यूरोप के अन्य देशों से उच्च शिक्षा प्राप्त कर जब भारत लौटे तो वे विनोबा के पास पहुँचे। भूदान और ग्रामदान का विचार उन्हें इतना जँचा कि उन्होंने कोरापुट के आदिवासियों के लिए अपना जीवन ही समर्पित कर दिया। श्री अण्णासाहब सहस्रबुद्धे के मार्गदर्शन में वे कोरापुट जिले के वैपारीगुडा क्षेत्र में ग्राम निर्माण के काम में निष्ठा से जुट पड़े। अपने प्रेमिल और सेवापरायण व्यवहार से उन्होंने कोरापुट के आदिवासियों के हृदय में अत्यन्त स्नेहपूर्ण स्थान बना लिया था। भूदान के ऐसे कर्मठ सेवक के उठ जाने से कोरापुट की ही नहीं, हम सबकी भारी क्षति हुई है। हम नगीन भाई के शोक-संतप्त व्यापक परिवार के प्रति हार्दिक समवेदना प्रकट करते हैं और परमप्रभु से प्रार्थना करते हैं कि वह दिवगत आत्मा को शांति प्रदान करें!

ये खेतिहर मजदूर !

पश्चिमी बंगाल के खेतिहर मजदूरों के सम्बन्ध में भारत सरकार के श्रम मंत्रालय की ओर से हाल में ही एक रिपोर्ट प्रकाशित हुई है। उससे यह बात साफ जाहिर होती है कि खेतिहर मजदूरों की हालत दिन दिन गिरती जा रही है। १९५०-५१ में जहाँ ५३.७१ फीसदी खेतिहर मजदूर परिवार थे, १९५६-५७ में उनका अनुपात बढ़कर ६३.४९ हो गया। पश्चिमी बंगाल में ५०-५१ में ऐसे परिवारों की संख्या १०,७८,००० थी, ५६-५७ में वह बढ़कर ११,६३,१०० हो गयी। देहाती परिवारों में लगभग चौथाई परिवार खेतिहर मजदूरी पर ही निर्भर करते हैं। एक ओर तो खेतिहर मजदूरों की संख्या बढ़ रही है, दूसरी ओर उनकी आमदनी घट रही है! १९५०-५१ में उनकी औसत मजदूरी १ रुपया ६६ नये पैसे थी, १९५६-५७ में १ रुपया ४३ नये पैसे रह गयी। पहले से वह २३ नये पैसे घट गयी। इतना ही नहीं, साल में काम मिलने के दिन भी पहले से घट गये। पहले २३० दिन काम मिलता था, ६ साल बाद २२७ दिन ही काम मिलने लगा। पहले जहाँ उन्हें साल में ९३ दिन बिलकुल बेकार बैठना पड़ता था, वहाँ ६ साल बाद उन्हें ११३ दिन बेकार बैठना पड़ रहा है। इन सब बातों का स्वाभाविक परिणाम यह हुआ कि १९५०-५१ में जहाँ सालाना ३९० रुपया ९४ नये पैसे आमदनी थी, वहाँ १९५६-५७ में वह घट कर ३६९ रुपया ४८ नये पैसे रह गयी। अर्थात् आमदनी में २६ रु. ४६ नये पैसे की कमी हो गयी है।

खेतिहर मजदूरों को १९५६-५७ में पहले की अपेक्षा काम कम, मजदूरी कम, आमदनी कम तो हुई ही, खर्च उल्टे बढ़ने लगा। उनके सालाना खर्च में ६८ रु की वृद्धि हो गयी। यह घाटा कैसे पूरा हो? उसके लिए ऋण लेना पड़ता है। १९५०-५१ में जहाँ ३३ प्रतिशत परिवार ऋणी थे, वहाँ १९५६-५७ में ६९ प्रतिशत परिवार ऋणी हो गये। १९५०-५१ में प्रति परिवार पर जहाँ ४४ रु० औसत कर्ज था, वहाँ ५६-५७ में वह ९६ रु० हो गया। संचित ऋण का औसत पहले १५ रु० था वो ५६-५७ में बढ़ कर ३९ रु० हो गया। अर्थात् उसमें १६० फीसदी वृद्धि हो गयी।

उत्तर प्रदेश और मध्यप्रदेश को छोड़ कर भारत के सभी राज्यों में १९५६-५७ में खेतिहर मजदूरों की संख्या में वृद्धि हो गयी है। उड़ीसा, केरल और पंजाब को छोड़ कर सभी राज्यों में खेतिहर मजदूरों की मजदूरी की दर पहले से घट गयी है। प्रति व्यक्ति की आमदनी १०४ रु० से घट कर ९९ रु ४० नये पैसे रह गयी है।

उत्तर प्रदेश, उड़ीसा, पश्चिमी बंगाल, केरल, मद्रास और बिहार के खेतिहर मजदूरों के ऋण की मात्रा में विशेष रूप से वृद्धि हुई है।

खेतिहर मजदूरों की यह दयनीय स्थिति केवल पश्चिमी बंगाल में नहीं है। सारे भारत में लगभग यही स्थिति है। दिन दिन बिगड़ने वाली यह स्थिति इस बात का संकेत है कि इसे तुरत सुधारना आवश्यक है। खेती और ग्रामोद्योगों के विस्तार से ही इसमें कुछ सुधार किया जा सकता है। सरकार को इस दिशा में उचित कदम उठाना चाहिए स्थायी रूप से इसके निराकरण का एक ही उपाय है और वह है—ग्रामदान।

—श्रीकृष्णदत्त भट्ट

के लिए भी दो-तीन माह तक ऐसे बांधों से लिया जा सकेगा। यदि बारिश का पानी तुरन्त ही बह जाता है, तो वह जमीन को काट डालता है, खाद और मिट्टी के उपजाऊ स्तर को धो डालता है और इससे भूमि के आन्तरिक स्तर तो सूखे ही रह जाते हैं। यह सब रोकने के लिए छोटे छोटे बांध बहुत उपयोगी हैं।

सर्वेक्षण करके चश्मे, नाले, नालियाँ आदि को रोकने के लिए छोटे मोटे बांध बांधना, उसमें कितना पानी आयेगा, उसका हिसाब निकालना, संभव हो तो उसमें से सिंचाई, नाली निकाल कर या यांत्रिक रीति से करने की योजना बनाना, यह देहात के लिए बहुत आवश्यक काम है।

ऐसी आबपाशी की योजना सफल करना, किसी एक आदमी का काम नहीं है। इस काम के लिए एक व्यक्ति का खेत भी इकाई नहीं हो सकती है। कम-से-कम एक गाँव का आयोजन आवश्यक हो जाता है। जरूरत पड़ने पर दो-पाँच गाँव भी साथ हो सकते हैं।

ऐसे ग्रामीण इन्जिनीयरींग की आज बहुत जरूरत है। बड़ी नहर-योजना होते हुए भी यह काम महत्त्व में किसी तरह से कम नहीं है।

(५) जरूरत के नये कृषि-औजार

जब कृषि-पद्धति ही सारी की सारी बदल जाती है, तो उसके लिए नये ढंग के औजारों की बहुत जरूरत पड़ने वाली है। मिसाल के तौर पर कपास की खेती के लिए सारे के सारे खेत की फसल को एक ही रीति से जोतने के बदले में शुरू से ही पौधे-पौधे के लिए स्थान तय किया जाय और जैसे कि मधुमक्खी, छत्ते के एक एक खंड में अंडा और उसकी बड़े होने तक की जरूरी खुराक भर कर उस खंड को बंद कर देती है, वैसे ही जमीन में गोल गड्ढा खोद कर एक घमेला खाद भर कर, उसे मिट्टी से ढँक कर उस स्थान पर दो या तीन 'बिनौले' रखे जाय, तो वह पौधा निश्चित अवधि तक बहुत पुष्ट बन सकता है और फसल भी बढ़िया हो सकती है। तो इन सब क्रियाओं के लिए हाथ के औजार होना जरूरी हो जाता है।

बोआई, गुड़ाई और खेती की सभी क्रियाओं के लिए बिल्कुल नये ढंग से औजार सोचे जा सकते हैं और बनाये भी जा सकेंगे। इन नये औजारों में दृष्टि यह रहे कि वे 'कमर-तोड़' न हों, इन्सान शान के साथ काम कर सके, काम जैसा चाहिए वैसा ही उससे हो सके, ऐसी आवश्यकताएँ पूर्ण करने वाले वे औजार होने चाहिए।

ऊपर बताई पाँचों बातों का शिक्षण हमारे देहाती नवयुवकों को देना देश के विकास में बहुत बड़ा लाभदायी होगा, ऐसा हम मानते हैं।

जैसे कि "डेन्मार्क के फोक स्कुल्स" के बारे में हमने सुना है, वैसे ही भारत में हर जिले में ऐसा एक एक बुनियादी ग्राम-विज्ञान केन्द्र हो तो ग्रामीण युवकों को अपना खोया हुआ उत्साह वापस मिल सकेगा। अपने पेशे में बहुत कुछ वे कर सकेंगे और जब वे महसूस करने लगेंगे कि उनके जरिये कृषि की और गाँव की तरक्की हो रही है, तो वे भी देश प्रेमी पुरुषों की तरह गौरव वाली भारत के नागरिक बनेंगे।

शहरों और देहातों में आज माध्यमिक शालाएँ शुरू करने की होड़ लगी है! हमारे एक बुजुर्ग नेता कहते हैं—"माध्यमिक शालाएँ बेकारों को उत्पन्न करने का कारखाना बन गयी हैं।" न युवक कुछ करना चाहते हैं, न वे कुछ करना जानते भी हैं। देश में ऐसे बेकाम मनुष्य बढ़ाने का पाप क्यों किया जाता है, इसका किसी को पता नहीं है। पहिया चलता जाता है, देश पिसता जाता है। विज्ञान-युग में यह कैसे चल सकेगा? कौन इसे बरदाश्त कर सकेगा?

हम चाहते हैं कि देश के नवनिर्माण के इस काल में ऐसे बुनियादी ग्राम विज्ञान केन्द्र काफी मात्रा में शुरू किये जायँ। स्कुल, कोलेज वगैरह तो हैं ही, उनके साथ इसका कोई वास्ता नहीं। उससे एकदम भिन्न, स्वतंत्र तौर पर ही ये चलें, किसी भी युवक को इस केन्द्र में प्रवेश मिल सकेगा। जब चाहे तब किसान अपनी समस्या लेकर केन्द्र के संचालक के पास आ सकेगा। आज स्पष्ट है कि इस केन्द्र का खर्च सरकार की ओर से दिया जायेगा, पर आगे चल कर हो सकता है कि लोग स्वयं प्रेरणा से ही उसे निभा सकेंगे।

शांति-सैनिकों से अपेक्षा

शान्ति सैनिक भविष्य में कहीं भी अशांति न हो, इसलिए वर्तमान में काम करें। जहाँ अशांति होगी वहाँ प्रत्यक्ष 'फ्रन्ट'–मोर्चे–पर मिलीटरी के तौर पर काम में आयेंगे। जहाँ अशांति नहीं है, वहाँ सेवा का काम करेंगे। यही हमारी 'सिविल' है और यही हमारी 'मिलीटरी' है। सामान्य समय में सेवा सेना और विशेष समय में शांति-सेना। सामान्य समय में गाँव-गाँव जाकर सेवा करेंगे। गाँव के लोगों को ये प्रिय होंगे। इनकी सेवा के कारण गाँववालों के दिल में सौहार्द और प्रेम पैदा होना चाहिए। उनके ज्ञान के कारण लोग इनको चाहते हैं, ऐसा होना चाहिये। इनके कारण लोग प्रत्यक्ष सेवा पाते हैं और ज्ञान पाते हैं, इसलिए उनके आगमन की उत्सुकता गाँव में होनी चाहिए। ऐसी अपेक्षा शांति-सैनिकों से है।

[नाथीरा, २२-१०-'६१]

—विनोबा

कार्यकर्ताओं— रेलवे की 'तृतीय श्रेणी'!

भारतीय रेलवे की तृतीय श्रेणी के प्रति व्यवहृत 'तीसरी श्रेणी के' दृष्टिकोण पर विचार करना आवश्यक है। 'तृतीय श्रेणी' के प्रति उचित दृष्टिकोण की तथा इसमें पर्याप्त सुविधा और आराम की व्यवस्था अपेक्षित है। तीसरी श्रेणी के प्रति व्यवहृत 'तीसरी श्रेणी के' दृष्टिकोण से सामाजिक दोष पनपता है। 'तीसरी श्रेणी के' लिए टिकट घर अलग, निकास (एक्जिट) अलग, प्रतीक्षालय अलग, 'तीसरी श्रेणी की' व्यवस्था और 'तीसरी श्रेणी का' व्यवहार अलग, यह सब एक स्वाभिमानी स्वतंत्र देश के नागरिक के लिए अनुकूल नहीं लगता।

भारतीय रेल्वे की, तीसरी श्रेणी के यात्री के प्रति एक छोटे रेल्वे कर्मचारी से लेकर एक बहुत उत्तरदायी अधिकारी तक का दृष्टिकोण 'तीसरी श्रेणी का' होता है। छोटे से बड़े तक में यह भ्रांति इसलिये है कि 'प्रथम,' 'द्वितीय' और 'तृतीय' श्रेणी के भेद को प्रश्रय मिल रहा है।

ऐसे विचारों के पोषक तत्त्वों से सामाजिक वातावरण दूषित होता है। सीमेंट, लकड़ी, लोहे और पत्थर के बेंचों, कुर्सियों व बैठकों के 'तृतीय श्रेणी के' एक ओर रेल्वे प्लेटफार्म से हट कर दूर बनाये गये अलग प्रतीक्षालय, ये वर्ग भेद के प्रतीक-से लगते हैं। प्राय: वहीं आस पास बनाये गये तांगे, रिक्शे, टैक्सियों के स्टैण्ड और प्रतीक्षालयों के ही कुछ भाग में लगायी गयी होटल व पान-बीड़ी की दूकानें तथा इनसे उत्पन्न गन्दगी वर्ग भेद के इस प्रतीक को सुस्पष्ट करती है।

तृतीय श्रेणी के टिकट घरों पर लम्बी कतारें होती हैं। झगड़े, घूस और जेबकटी यहाँ होती रहती है! आने-जाने वाले यात्रियों की तृतीय श्रेणी के निकास के स्थान पर भीड़ लग जाती है। तृतीय श्रेणी के टिकट घर, निकास और प्रतीक्षालय समुचित व्यवस्था के अभाव से ग्रसित हैं। कहा जा सकता है कि किसी असमर्थतावश ही तृतीय श्रेणी में यात्रा करनी पड़ती है!

आर्थिक बुनियादी दृष्टिकोण से तो स्पष्ट है कि 'तृतीय श्रेणी' मुख्य आय का स्रोत है। केवल प्रथम और केवल द्वितीय श्रेणी की पृथक् पृथक् गाड़ियाँ यदि चलायी जायँ तो वे आयप्रद नहीं हो सकती। तृतीय श्रेणी की गाड़ी के साथ ही प्रथम और द्वितीय श्रेणी के डिब्बे लगाये जाते हैं।

आर्थिक दृष्टिकोण से उचित यही है कि जहाँ से अधिक आय हो वहाँ पर्याप्त व्यवस्था की जाय। इस दृष्टि से रेलवे की तृतीय श्रेणी में यह अभाव दिखाई देता है।

प्रथम, द्वितीय और तृतीय; इस प्रकार रास्तर से वर्ग भेदद्योतक सामाजिक विभाजन अंग्रेज शासकों ने प्रचलित कर रखा था। शासन की रेल्वे कही जाती थी। स्वदेशी शासन में तो यह भेद समाप्त कर दिया जाना चाहिये था। जनता के शासन में वर्ग-भेद को प्रश्रय नहीं मिलना चाहिये। तृतीय श्रेणी के यात्री जनता की सुविधा और आराम के प्रति उपेक्षा और उदासीनता नहीं होनी चाहिये। आशा है कि रेल्वे शासन तृतीय श्रेणी की वर्तमान व्यवस्था में समुचित सुधार का प्रयत्न कर सकेगा।

वाराणसी, —बनवारीलाल दुबे

मिल के बीच में चरखा!

श्री छेदालाल गोविन्दजी ने कलकत्ता से दु:ख भरी भाषा में १० नवम्बर '६१ के 'भूदान यज्ञ' में लिखा कि भीलवाड़ा (मेवाड़-राजस्थान) में मिल खोलने से वहाँ के कत्तिन भाई-बहनों की रूखी-सूखी रोटी भी छीनी जायगी। इसका ठीक जवाब सर्वोदयवालों के पास नहीं होगा।

परन्तु मैं उनको आशा दिलाना चाहता हूँ कि अब इस एटम बम के युग में ऐसा चरखा भी तैयार हो रहा है कि जो मिल की स्पर्धा में भी टिक सकेगा। और वह चरखा तैयार भी हो गया।

मैंने २५ तकुवे का एक छोटा चरखा बनाया है। इसमें अम्बर चरखे की जैसी ऊँचे तकुवे व नागज के खाविन की झंझट बिल्कुल नहीं है। चरखा पाँवों से घुमाया जाता है और दोनों हाथ टूटे धागों को जोड़ने के लिये खाली रहते हैं। चरखा चलने में हल्का व कातने में आरामदेह है। एक कत्तिन आठ घंटे में एक सौ गुंडी से १२० गुंडी तक कात सकता है। उसके लिये आवश्यक पूनी अधिक गति से तैयार करने की संयुक्त धुनाई बेलनी भी तैयार हो रही है।

ऊपर बताये गये 'जनता-चरखा' द्वारा कत्तिन को सम्मानजनीय जीवन बिताने के लिए आवश्यक जीवन वेतन मिल सकता है, खादी की कीमत मिल के कपड़े के बराबर ला सकते हैं। आवश्यकता इस बात की है कि ऐसे नये सुधारों को जनता तक पहुँचाने वाले कार्यकर्ता चाहिए।

इस पचीस तकुवे वाले 'जनता चरखा' द्वारा खादी का प्रचार विदेशों में भी हो सकता है। आज के सर्वोदयवालों का अब खादी के सिद्धान्तों की अपनी मान्यता में भी बदल करना पड़ेगा।

सर्व सेवा आश्रम, तोलुमत्तम्
आल्वाय (केरल) —सत्यन्

साहित्य का मूल्य : २

• जैनेन्द्र कुमार

भाषाओं को लेकर यदि कहीं स्वत्व का गर्व-अहंकार देखा जाता हो तो यह राजकारण की देन है। अस्तित्व के क्षेत्र में स्वत्व की चिन्ता रखनी होती है और वहां शक्तिमूलक स्पर्धा-प्रतिस्पर्धा की वासना भी काम करती है। किन्तु हम जानते हैं कि स्व और पर के बीच संघर्ष है तो वह सामयिक है, इसलिए है कि स्व-पर भाव में धीरे-धीरे परस्पर-भाव जाग्रत हो।

आवश्यक यह है कि निष्ठावान साहित्यिक राजनीतिक मतावेशों के अधीन होकर तत्काल पर ही समाप्त न हों, बल्कि वर्तमान को भावी की दिशा में निर्माण देने की, अर्थात् मूल्यों की भाषा में सोचें। भविष्य की श्रद्धा लेकर वर्तमान के प्रति व्यवहार करने से ही हम विकास के अंगभूत हो सकेंगे, अन्यथा विघ्न और बाधा समझे जायेंगे। वह राजकारण, जो तत्काल को ही प्रधानता देकर चलता है, शायद समस्या उलझाता जाता है। संभव है कि राजकारण के पास वही काम हो और उसकी औषधि साहित्य के पास ही बच जाती हो। जो हो, दूरदर्शन की सुविधा साहित्य को ही है और उसकी यह बड़ी जिम्मेदारी है।

कानूनी एकता का खतरा

किन्तु भारतीय साहित्य न इस भाषा में है, न उस भाषा में है; न मेरी भाषा में है, न आपकी भाषा में। इस तरह भारत के पास एक साहित्य नहीं है, अनेक साहित्य हैं। उतने ही साहित्य हैं जितनी कि भाषाएँ हैं। राज्य अवश्य एक है, कानून एक है, विधान एक है, केंद्रीय सेवाएँ एक हैं। साहित्य यहाँ कम से कम चौदह तो हैं ही। यदि साहित्य चौदह हैं तो भारतीय मनोभाव चौदह विभागों में खंडित बने तो क्या आश्चर्य है! कानून और कानूनीपन के जोर से देश को अगर एक बना दिखाया या बना रखा जाता है तो निश्चय जानिए कि वह एकता भ्रामक है, उसमें फूट के बीज हैं। दलों और वर्गों के ही नहीं, बल्कि अलग-अलग व्यक्तियों और स्वार्थों के बीच में भी वहाँ खिंचाव और तनाव हुआ करता है। अनेक वहाँ इकट्ठे मालूम होते हैं, लेकिन एक एक अपने-अपने नक्शे रखता है। वहाँ हेतु या आदर्श की एकता नहीं होती, हरएक अपने दाँव और दूसरे के घात में रहता और केवल अपने लिए अवसर देखता हुआ अमुक अनुशासन में चलता प्रतीत होता है।

साहित्य एक है

साहित्य ठीक इसी राजनीति से भिन्न है। वहाँ मूल इसी स्वत्व का विसर्जन है और हर परत्व का स्वीकार और सत्कार है। इसलिए यद्यपि भाषाएँ चौदह हैं, लेकिन साहित्य एक है। सच पूछिए तो भारत का ही साहित्य एक नहीं है, समूचे विश्व का साहित्य एक है। भाषाओं के भेद से साहित्य में भेद नहीं पड़ता। कारण, साहित्य का सत्य मनुष्य है और साहित्य में उस भाव की ही प्रतिष्ठा है। इस दृष्टि से देखेंगे तो जान पड़ेगा कि राष्ट्र और राष्ट्रवाद के आधार पर बने हुए अभिनिवेशों और मतावेशों से उद्धार यदि मानव जाति को कभी मिलने वाला हो तो, वह साहित्य के मूल्यों के स्वीकार पर ही मिलेगा। अन्यथा अहंकारों में मुठभेड़ ही होगी, उनमें परस्पर विसर्जन का भाव नहीं जागेगा।

ऊपर से नहीं, मूल से

आत्मा की ओर से भारतीय साहित्य एक हो, लेकिन इस कारण और भी आवश्यकता है, घटना और यथार्थ में उसके ऐक्य को प्रकट और पुष्ट किया जाय। राजकीय स्तर पर इस सम्बन्ध में काफी कुछ किया जा रहा है। विद्यमान शासक-वर्ग कल्पनाशील है और इस ओर बहुत कुछ आगे भी करना चाहता है। किन्तु शासन और शासक की मर्यादाएँ हैं। शक्ति के आसन से आकर उसका कर्तृत्व मानव-हृदय पर दबाव डाले बिना नहीं रह सकता।

इसलिए एकता का काम स्वयं जन-मन और जन-शक्ति के संबल से किया जाना चाहिए। उसके अभिक्रम को ऊपर के बजाय मूल से आना है और विभिन्न भाषाओं के साहित्यकारों को स्वयं अपने हित में इस दायित्व की ओर ध्यान देना और उसकी पूर्ति में लगना है।

यह दुःख की बात है कि भाषाओं में साहित्य के बारे में परस्पर घोर अपरिचय है। संस्थाओं द्वारा होने वाला काम इस विषय में हमेशा अधूरा रहता है। व्यावसायिक कौशल को आगे आना चाहिए, जो प्रणालियों का निर्माण करे और आदान-प्रदान के प्रवाह को परस्पर सहज कर दे। वर्तमान में सिनेमा और कला आदि के क्षेत्र सांस्कृतिक एकसूत्रता की दिशा में काम करते हैं तो वह अपर्याप्त रहता है। उनका स्तर विचार की गम्भीरता तक नहीं उठ पाता। शब्द का माध्यम वह है जो भाव के साथ विचार का भी वहन करता है।

गम्भीर भावना के स्तर पर यदि भारत को एक और समर्थ बन कर विश्व के समक्ष आना हो तो वह देश की साहित्यिक और नैतिक समता के साधन और गठन से ही हो सकता है।

राजनीति का प्रयत्न

उस समता का गठन कैसे हो? स्पष्ट है कि स्वत्व मान में हम बंटे हुए हैं और एक यदि होते हैं तो किसी मदद्भाव में ही हो सकते हैं। इसीलिए राजनीति में से एकता पाना अशक्य बना रहता है। अनेकता को काटने से तो एकता आती नहीं है; और राजनीति का प्रयत्न कुछ उसी दिशा में हुआ करता है। वहाँ शक्ति की भूमिका है और बहुमत के आधार व्यवस्था और एकता होती है। उसमें अल्पमत को अकृतार्थ रहना पड़ता है। इसीलिए यह एकता विकासशील नहीं हुआ करती, संरक्षणशील हो जाती है। साहित्यिक समता के गठन के लिए आवश्यक है कि प्रत्येक विविधता के लिए आदर हो और सबसे केवल उस परस्पर आदर की ही माँग हो। इस सहृदयता के बिना गठन, दल-सगठन बन जाता है और राजनीतिक समस्या पैदा करने लगता है।

मातृलिपि के साथ नागरी भी

हमारी भाषाएँ आपस में जितनी दूर लगती हैं, असल में वे उतनी दूर हैं नहीं। सभी में संस्कृत के तत्सम और तद्भव शब्दों की बहुतायत मिलेगी। क्रियापद आदि में कुछ भेद हो सकता है। लेकिन अधिक भेद और अन्तर लिपि भेद के कारण होता है। संस्कृत के कारण देवनागरी लिपि सबके लिए पहले से ही परिचित है। वर्णमाला की आकृति भिन्न हो सकती है, आधार सब जगह लगभग अभिन्न है। सब भाषाएँ यदि अपनी विशिष्ट लिपि के साथ नागरी लिपि को भी अपनाने लग जायें तो आपस की खाई काफी कम हो सकती है।

देवनागरी लिपि यदि भारतीय बनती है तो आज के वेग का सामना और साथ देने के लिए उसमें आवश्यक सुधार भी जल्दी किये जा सकते हैं। यदि वह लिपि हिन्दी की ही हो, तो स्वत्व-भाव को आवश्यक राष्ट्रभाव की राह में बाधक बना कर खड़ा किया जा सकता है।

कुछ सुझाव

विभिन्न भाषाओं में आपसी परिचय ही काफी नहीं है, बल्कि उन्नयन की दिशा में सहभाव और सहमति भी आवश्यक है। इसके लिए एक मासिक पत्रिका की व्यवस्था होनी चाहिए, जो भारत के आलोचकों की प्रतिनिधि हो। भारतीय वाणी का, इतर देशों के प्रति मानों वह आलोकद्वार बने।

एक केन्द्रीय पुरस्कार भी इसमें सहायक होगा। उसकी प्रतिष्ठा नोबेल पुरस्कार के समान होनी चाहिए। उसके द्वारा श्रेयपूर्ण साहित्य का पुरस्कार हो। उसमें भाषा का प्रश्न न हो और प्रतिवर्ष एक ऐसी भारतीय कृति सबके समक्ष आती रहे, जिसके उत्कर्ष से सभी साहित्य स्फूर्ति और दिशा प्राप्त करें।

उत्कृष्ट कृतियों के चुनाव और उनके अनुवाद की व्यवस्था आवश्यक है, जिसमें सरकार का हाथ न हो। अनुवादों के प्रकाशन और वितरण आदि की व्यवस्था सरकारी सहायता से की जा सकती है।

अधिकाधिक ऐसे समागम होने चाहिए, जहाँ विविध भाषाओं के साहित्यकार निकट परिचय में आयें।

सबसे मुख्य बात यह है कि साहित्य बाजार की विवशता और विकार से मुक्त हो। साहित्य-रचना यदि पेशा बन जाता है तो उसकी गति नीचे को खिसकती है, ऊपर नहीं उठ पाती।

यह एक बहुत बड़ा प्रश्न है और उसका सम्बन्ध मानों समाज-व्यवस्था से ही हो जाता है। आर्थिक सभ्यता साहित्य को अनुरंजन तक नीचे खींच लायेगी और दायित्वपूर्ति तक न उठने देगी। यदि अपने लिखे को खुले बाजार में बेच कर जीविका चलाने का मार्ग ही साहित्यकार के पास रह जाता है, तो कोई कारण नहीं है कि माँग और उत्पादन का सिद्धांत न चल निकले और वे सब दोष इस क्षेत्र में भी न आ जायें, जो निरे व्यापार के माने जाते हैं।

कागज इतना धन और छपा रहा है कि उसी के कारण शब्द की शक्ति क्षीण हुई जा रही है। उसी क्षीणता को रोकना और समाप्त करना है और समता की प्रतिष्ठा करनी है तो आवश्यक है कि साहित्यकार समाज व्यवस्था के प्रश्नों के बारे में असावधान न रहें और वे आगामी क्रांति के अध्वर्यु बनें। कारण, अणुयुग आने पर इस बार वह मूल्य-क्रांति ही होने वाली है।

अन्त में इस आशा के साथ अपने वक्तव्य का समाहार करूं कि साहित्य पर निर्भरता छोड़ेगा और भारतीय भाव में आत्मप्रतिष्ठ बन कर समय को उत्तर देगा। (समाप्त)

साम्प्रदायिकता : एक विश्लेषण : १ • दादा धर्माधिकारी

सम्प्रदायवाद का अंग्रेजी में शब्द है 'कम्यूनलिज्म'। इसके भाषान्तर के लिए बहुत-से पर्याय शब्द सुझाये गये हैं, जैसे जमातवाद आदि। 'जमातवाद' से 'सम्प्रदायवाद' अधिक उपयोगी शब्द है। यह वैसे बहुत उपयोगी शब्द तो नहीं है, पर फिर भी 'कम्यूनलिज्म' से जो मतलब होता है, उसको व्यक्त करने के लिए हमारे अपने काम के लिए 'सम्प्रदायवाद' शब्द उपयोगी है। 'सम्प्रदाय' पहले समझ लें, बाद में 'सम्प्रदायवाद' को भी समझें। सम्प्रदाय एक विचार के पक्ष को कहते हैं। जिस विचार का एक पक्ष हो और उसकी परम्परा चले उसे सम्प्रदाय कहते हैं। अंग्रेजी में 'स्कूल आफ थाट्स' का अर्थ है, सम्प्रदाय। एक विचार-प्रणाली की परम्परा हो जाती है। किसी व्यक्ति के अनुगामियों में गुरु-शिष्य की परम्परा भी सम्प्रदाय कहलाती है। ऐसे बहुत सम्प्रदाय आज भी दुनिया में हैं, पहले भी थे।

हमारे यहाँ ऋषियों के गिरोहों के सम्प्रदाय रहे। वेदों में जो अनेक शाखाएँ हैं, उनके भी सम्प्रदाय रहे। ये सम्प्रदाय अपने में पूरे नहीं माने जाते थे और पूरे थे भी नहीं। एक विचार की परम्परा चल पड़ती थी, किसी गुरु की एक परम्परा चल पड़ती थी, उसका एक सम्प्रदाय बन जाता था। परन्तु साम्प्रदायिक अभिमान का परिणाम साम्प्रदायिक विग्रह में उस वक्त भी होता था। जैसे वशिष्ठ और विश्वामित्र के कुछ सम्प्रदाय हुए तो इनका परिणाम यह हुआ कि वे एक दूसरे के मन्त्र भी नहीं पढ़ते थे। यह सम्प्रदाय अभिमान है।

अपने गुरु के लिए निष्ठा होना, एक अलग चीज है और सम्प्रदाय का अभिमान होना बिलकुल अलग चीज है। इससे साम्प्रदायिक कलह पैदा हुआ और फिर साम्प्रदायिक विग्रह का विचार भी उससे आगे चला। परन्तु सम्प्रदाय अपने प्रारम्भिक स्वरूप में कोई हानिकारक वस्तु नहीं माने जाते थे। शंकराचार्य ने अपने भाष्य में यहाँ तक कहा है कि चाहे षड्दान सम्पन्न हो, लेकिन वह किसी सम्प्रदाय का नहीं है तो मूर्खवत् उपेक्षणीय है; क्योंकि उसके पीछे कोई शिष्य-परम्परा नहीं है। तो जहाँ जहाँ गुरु प्रामाण्य और ग्रन्थ प्रामाण्य होता है, वहाँ परम्परा का महत्त्व होता है। जितने धर्म हैं और जितने धार्मिक व्यक्ति हैं, वे या तो ग्रन्थ प्रामाण्यवादी होते हैं या गुरु-प्रामाण्यवादी होते हैं। ये गुरु-प्रामाण्यवादी और ग्रन्थ प्रामाण्यवादी अक्सर आग्रही और अभिमानी व्यक्ति बन जाते हैं और साम्प्रदायिक आग्रह में से साम्प्रदायिक आवेश पैदा होता है। साम्प्रदायिक आवेश में से ही आगे चल कर साम्प्रदायिक उन्माद पैदा होता है, जिसे अंग्रेजी में 'फेनोटीसिज्म' कहते हैं और वही सम्प्रदायवाद का मूल कारण है।

गुरु की निष्ठा, ग्रन्थ की निष्ठा अगर मर्यादित रहे, तो उसमें से कोई बुराई पैदा नहीं होगी, किसी प्रकार का कलह पैदा नहीं होगा, लेकिन गुरु की निष्ठा और ग्रन्थ की निष्ठा जब अभिमान, आवेश और उन्माद का रूप ले लेती है तो उसमें से आक्रमक सम्प्रदायवाद पैदा होता है। जितने प्रचलित धर्म हैं, इन धर्मों में पारसियों का धर्म, हिन्दुओं का धर्म और एक हद तक आज का यहूदियों का धर्म अगर छोड़ दिया जाय, तो दुनिया के करीब करीब सभी धर्म 'सम्प्रदाय' हैं।

सम्प्रदाय के दो मुख्य लक्षण होते हैं। एक लक्षण उसका यह होता है कि वह दूसरों को अपने में दाखिल करना चाहता है। यह उसका प्रमुख लक्षण है, जिसे धर्म परिवर्तन या धर्मान्तर कहते हैं। सम्प्रदाय धर्मान्तर कराता है। जितने नये लोगों को वह अपने में शामिल कर सके, उनको शामिल कराता है। उसका दूसरा लक्षण, यह है कि उसमें तत्त्वज्ञान या विचार का उतना महत्त्व नहीं होता, जितना समाज या जमात का होता है। इसलिए सम्प्रदाय परिवर्तन असल में समाज-परिवर्तन का रूप ले लेता है। जिस दिन आप किसी तत्त्वज्ञान, गुरु या ग्रन्थ का स्वीकार कर लेते हैं, उस दिन समाज परिवर्तन करना होता है, इसलिए इसमें एक और तीसरा लक्षण आ जाता है।

हर सम्प्रदाय का एक दीक्षा-चिह्न, संस्कार चिह्न होता है। यह हर सम्प्रदाय का लक्षण है। शैव सम्प्रदाय का एक लक्षण है त्रिपुण्ड चन्दन। वैष्णव सम्प्रदाय का लक्षण है मुद्रा। इस तरह हर सम्प्रदाय के कुछ चिह्न होते हैं। इस तरह से जो सम्प्रदाय होता है, वह चिह्नांकित होता है। इसके साथ-साथ जब समाज परिवर्तन होता है तो दूसरे लक्षण पैदा होते हैं। नाम बदलता है, भेष बदलता है और हमारे देश में मनुष्य अपनी भाषा भी बदलता है। इतने सारे लक्षण इससे पैदा होते हैं। यह है शुद्ध सम्प्रदायवाद। अब यह शुद्ध-सम्प्रदायवाद जब राजनैतिक क्षेत्र में प्रवेश करता है तब वह सत्तावादी सम्प्रदायवाद बन जाता है या राज-वृत्ति सम्प्रदायवाद बन जाता है। अपने इस शुद्ध रूप के सम्प्रदायवाद में जितने कुलक्षण हो सकते हैं, वे सबके सब आ गये। जब वह राजनीति के अखाड़े में दाखिल हो गया, तो उसमें जो आखिरी बुराई आनी चाहिए थी, वह भी आ गयी। यह हमारे देश के 'कम्यूनलिज्म' का आज का स्वरूप है।

अब इसका लक्षण क्या है? यानी अभी तक जितने लक्षण बतलाये, इनकी अगर व्याख्या करनी हो तो कैसे की जाय? अन्त में जितने सामाजिक प्रश्न होते हैं, इनकी कोई तर्कशुद्ध व्याख्या नहीं की जा सकती है, इनकी कोशिश भी नहीं की जानी चाहिए। किसी सामाजिक समस्या की व्याख्या नहीं हो सकती। फिर भी उसको समझने की आवश्यकता होती है, इसलिए अधिक से अधिक अचूक व्याख्या क्या हो सकती है, इसका प्रयत्न किया जाय।

लाहौर में पुराने जमाने में एक मुसलमान बैरिस्टर थे—मुहम्मद आलम। राष्ट्रीय वृत्ति के थे, काफी देशभक्त थे। मुहम्मद आलम ने एक व्याख्या की और अब तक मैं समझता हूँ कि उससे और अधिक अचूक व्याख्या उसके बाद किसीने नहीं की। उन्होंने व्याख्या यह की कि जब मैं अपने धर्म या सम्प्रदाय को अपनी नागरिकता या राष्ट्रीयता का आधार बनाता हूँ तब मैं सम्प्रदायवादी बनता हूँ। इसका क्या रूप होगा? मैं मुसलमान हूँ, इसलिए मेरी विशिष्ट नागरिकता है, मैं हिन्दू हूँ, इसलिए मेरी विशिष्ट नागरिकता है, मैं सिख, पारसी, यहूदी, बौद्ध, जैन, अमुक धर्म का हूँ या अमुक सम्प्रदाय का हूँ, इसलिए मेरी विशिष्ट नागरिकता है; अतएव मुझे कुछ नागरिकता के विशेष अधिकार प्राप्त होना चाहिए या मेरी नागरिकता दूसरे की नागरिकता से भिन्न प्रकार की होनी चाहिए, अलग होनी चाहिए अथवा पृथक् होनी चाहिए या विशिष्ट होनी चाहिए। इसलिए होनी चाहिए कि हम ऐहिक जीवन को और पारलौकिक जीवन को दो नहीं मानते। हमारे लिए जीवन अखण्ड है, इसलिए यह राजनीति है और यह धर्मनीति है, ऐसा भेद हम नहीं करते। जीवन समूचा है, समग्र है। तो इधर स्वतन्त्रता के बाद मुसलमानों का एक सम्प्रदाय चला, एक संस्था आगे आयी—'जमायते इस्लाम'। जमायते इस्लाम ने यह कहा कि हमको इस देश में इलाही की सल्तनत कायम करनी है। अब 'इलाही की सल्तनत' एक कहता है, दूसरा कहता है हमको 'रामराज्य' कायम करना है, तीसरा कहता है कि 'किंगडम् आफ गाड' यानी ईश्वर का राज्य या 'किंगडम् आफ हेवन' यानी स्वर्ग का राज्य कायम करना है।

अब तीनों का लक्ष्य यह हो कि हमको अपने सम्प्रदाय के अनुरूप ईश्वर का राज्य स्थापित करना है। इन तीनों के तीन ईश्वर हो गये। हर सम्प्रदाय का ईश्वर उसके ग्रन्थ में वर्णित ईश्वर होता है। मैं हिन्दुओं के रामराज्य की बात कर रहा हूँ, गांधी के रामराज्य की नहीं। गांधी ने राम शब्द का प्रयोग व्यापक अर्थ में किया था और इस देश में जितने सम्प्रदाय हैं, वे कर सकते हैं। इलाही या अल्लाह का सम्बन्ध अगर कुरान से न हो या इस्लाम से न हो, 'किंगडम् आफ गाड' का मतलब बाइबिल में जिस राज्य का वर्णन है, वह राज्य न हो, जैसे गांधी के रामराज्य का मतलब केवल अच्छा राज्य, सुराज्य, एक आदर्श राज्य से था; उनका तो इतना ही मतलब था। पर इस्लाम का राज्य, ईसाई धर्म का राज्य, इस प्रकार का कोई साम्प्रदायिक मतलब न हो, तब तो तीनों का राज्य एक हो जायगा, केवल भाषा का फर्क रहेगा। परन्तु सम्प्रदायवाद में ऐसा नहीं होता।

सम्प्रदायवाद में ईश्वर भी सम्प्रदाय प्रणीत होता है। हर सम्प्रदाय ने ईश्वर को जिस रूप में देखा हो और बतलाया हो, उसी रूप में ईश्वर के राज्य की उनको आवश्यकता होती है। यह इसलिए होता है कि सारी ऐहिक व्यवस्था धर्म के आचरण के लिए ही है। ऐहिक व्यवस्था का एकमात्र उद्देश्य यह है कि हम अपने धर्म का आचरण सुचारु रूप से भलीभाँति कर सकें। यह सारे धार्मिक पुरुषों ने कहा, जो साम्प्रदायिक थे और जो साम्प्रदायिक नहीं थे, दोनों ने कहा। सारी ऐहिक व्यवस्था यानी व्यावहारिक व्यवस्था इसलिए है कि मनुष्य को आत्मचिन्तन के लिए और ईश्वर चिन्तन के लिए अधिक से अधिक सुविधाएँ मिलें, यह सारी व्यवस्था का मकसद माना गया है। किन्तु सम्प्रदायवादी कहता है कि मेरे लिए वह व्यवस्था सबसे अच्छी है, जिसमें सम्प्रदाय के अनुरूप आचरण के लिए ज्यादा से ज्यादा मुझे सुविधा मिलती है। यहाँ तक भी शायद समाज सह लेता, क्योंकि इसमें अविरोध होता, परन्तु वह कहता है कि मैं अपने सम्प्रदाय का प्रतिपादन कर सकूँ, मैं उसका प्रचार कर सकूँ, मैं उसका आचरण कर सकूँ और अन्त में मत परिवर्तन कर दूसरों को अपने सम्प्रदाय में दाखिल कर सकूँ इतना ही नहीं वह इसे मूलभूत अधिकार मानता है।

सर्व-मित्र मंडल

'सर्वोदय मित्र मण्डल' यदि केवल सर्वोदय का ही हो तो उसका खुलापन चला जायगा। प्रार्थना, जयन्ती और बैठक आदि तो उसके बाह्य रूप हैं। उसका अन्तरंग इतना महान् और मुक्त बने कि अन्त में वह 'सर्व मित्र-मण्डल' बन जाय। अगर हम बाह्य क्रियाओं में बँधेंगे तो एक पद्धति बना लेंगे। उससे प्रेरणा नहीं मिलेगी। प्रेरणा तो मुक्तता से ही मिलेगी।

—नारायण देसाई

[प्र]काशन प्रस्तुत करेगी। वैसे आम [पा]ठकों के लिए भी यह पठनीय है।

कुछ पुरानी चिट्ठियां : ले० जवाहरलाल नेहरू, पृष्ठ ५००, [मू]ल्य दस रुपया।

जवाहरलालजी की कुछ पुरानी [चि]ट्ठियों का यह संग्रह भारत की स्वाधी[न]ता के इतिहास में दिलचस्पी रखने वाले [प्र]त्येक व्यक्ति के लिए पठनीय है। जवाहर[ला]लजी का संबंध पहले से ही अत्यंत [व्या]पक रहा है। देश विदेश के सार्वजनिक [जी]वन के प्रमुख व्यक्तियों से जो इनका [प]त्र-व्यवहार हुआ है, उसका यह एक सुंदर [सं]ग्रह है। चिट्ठियाँ पढ़ कर हम उस [दु]निया में पहुँच जाते हैं कि जब भारत [को] आजाद होना है और उसके लिए [ल]ड़ी जाती है। गांधीजी, सुभाष बोस [र]वि बाबू, बर्नार्ड शा, बर्ट्रेण्ड रसेल [आ]दि अनेकविध व्यक्तियों के साथ का [प]त्र-व्यवहार इसमें है। कुल मिल कर ३६८ पत्र इस संग्रह में हैं।

भारतीय स्वाधीनता-संग्राम का इतिहास : ले० इन्द्र विद्यावाच[स्प]ति, पृष्ठ ४१८, मूल्य साढ़े पाँच रुपया।

स्व० इन्द्रजी ने अत्यन्त परिश्रमपूर्वक भारत की आजादी का इतिहास लिखा है। सन् १८५७ की क्रांति से लेकर स्वाधीनता [प्रा]प्ति की प्रमुख सभी घटनाओं तथा आंदो[ल]नों का सिलसिले से इस पुस्तक में समा[वे]श किया है। लेखक स्वयं भारत के [स्वा]धीनता-संग्राम का एक प्रमुख सैनिक [र]ह चुका, इसलिए विवरण अनुभूत और प्रामाणिक बन सका है। इतिहास की [दृ]ष्टि से लिखी गई पुस्तक है।

सुभाषित सप्तशती : संकलन-कर्ता और संपादक—मंगलदेव शास्त्री, पृष्ठ १८६, मूल्य ढाई रुपया।

वैदिक, संस्कृत तथा पाली वाङ्मय से नित्य पठन और मनन करने योग्य प्रेरणा-दायी सुभाषितों का संग्रह इस पुस्तक में संस्कृत के विद्वान डा० मंगलदेव शास्त्री ने किया है। संस्कृत में सुभाषितों का बहुत [ब]ड़ा संग्रह है, उसका सार-सार चुन कर इस पुस्तक को गागर में सागर के समान बना दी है।

विद्यार्थियों और शिक्षकों से : दादा धर्माधिकारी, प्र० सर्वोदय साहित्य भण्डार, ठक्कर बापा छात्रावास, सुमन-नगर, टिहरी, उ० प्र०। पृष्ठ २८, मूल्य पचीस न० पै०।

विद्यार्थियों और शिक्षकों को संबोधित करते हुए दादा धर्माधिकारी ने पिछले दिनों उत्तराखंड की यात्रा में जो प्रेरणादायी प्रवचन किये थे, उनका सुंदर संकलन श्री सुंदरलाल बहुगुणा ने इस पुस्तिका में किया है। निस्संदेह दादा के ये प्रवचन शिक्षा जगत् के लिए विचारोत्तेजक और पथप्रदर्शक साबित होंगे।

—मधुराम्ल

जयप्रकाश नारायण समिति की रिपोर्ट की प्रतिक्रियाएँ

देश की आत्मा का आवाहन

कई वर्षों से भारतवासियों की अंतरात्मा के विरोध में यह सतत कहा जाता रहा है कि वे अपने ही साथियों के प्रति अन्धों की तरह अमानवीय व्यवहार करते हैं। भारत के शिक्षित एवं विचारशील लोगों को इस निन्दात्मक रवैये से सदा क्षोभ हुआ है, क्योंकि विश्वासपूर्वक यह समझते हुए भी कि गरीबी एवं लाचारी के खिलाफ विद्रोह करना एक बहुत बड़ी बात है, वे मानते हैं कि देश के करोड़ों लोगों पर जो लाचारी एवं गरीबी लाद दी गयी है, उस भयानक अमानवीय क्षति को दूर करना शक्ति से परे है।

मगर हमारे ऊपर इस प्रकार का आरोपण आसानी से नहीं किया जा सकता, विशेष कर ऐसी स्थिति में, जबकि हम बराबर निर्धनों के साथ धन न बँटाने की बात पर धनी वर्गों की आलोचना करते आ रहे हैं, यह मान कर कि धन बंटाना समस्या का एक शक्तिशाली समाधान है। ग्रामीण समुदाय के कमजोर वर्गों की कल्याण सम्बन्धी समस्याओं के लिए नियुक्त अध्ययन दल की हाल ही में प्रकाशित रिपोर्ट के पहले भाग में—यद्यपि वह कुछ अपूर्ण रूप से—सामने आयी है? यह प्रश्न उठना चाहिए कि राष्ट्रीय निर्धनता के प्रति हमारी जो भावनाएँ हैं, वे ही भावनाएँ भारतीय जनता के "निर्धन एवं कमजोर वर्गों" के प्रति दूसरों की भी हैं या नहीं? और फिर राष्ट्रीय एकता सम्बन्धी अपने सारे प्रस्तावों के बावजूद क्या वास्तव में हम भारत के गाँवों में बसने वाली जनता की स्थिति में पायी जाने वाली भयंकर असमानताओं के प्रति सचेत हैं?

एक रचनात्मक रुख

श्री जयप्रकाश नारायण की अध्यक्षता में अध्ययन दल द्वारा तैयार की गयी रिपोर्ट को भूदान-आन्दोलन से सम्बन्धित एक कल्पनात्मक आदर्शवाद का प्रयोग कह कर टाला नहीं जा सकता, जबकि उसके सदस्य कई सरकारी अधिकारी और तीन संसद्-सदस्य भी हैं। रिपोर्ट काफी गहरी विवेचना के बाद तैयार की गयी है। हो सकता है कि इसमें प्रस्तुत की गयी कुछ बातों से कहीं कहीं मत-भेद हो, फिर भी इसमें निष्पक्ष रूप से एक समस्या का विश्लेषण करके उसका रचनात्मक रुख उपस्थित किया गया है और वास्तव में इसे राष्ट्रीय आधार पर स्वीकार किये गये ध्येय को ध्यान में रख कर बनाया गया है। यह रिपोर्ट गहरे विश्लेषण व ठोस समाधानों से रहित तथा न्याय की इच्छा से पूर्ण राष्ट्र की निर्धनता का एक-मात्र वर्णन ही नहीं है। सारे देश में रिपोर्ट को विस्तार के साथ समझने की आवश्यकता है। लेकिन महत्व की बात है कि देश इस बात को पहचाने कि यह भारतवासियों को उनकी जिम्मेदारियाँ सुपुर्द करने की दिशा में एक मुख्य कदम है और कम-से-कम उन जिम्मेदारियों को पूरा करने में यह एक साहसिक दस्त होगा। ग्रामीण जनता की निर्धनता मिटाने तथा समिति के शब्दों में कमजोर वर्गों के रक्षण का कार्य केवल दस या बीस वर्षों में ही पूरा नहीं हो जायगा। यह तो एक लम्बी यात्रा है। लेकिन कम से कम भारत के लोगों के सामने वह लम्बा रास्ता तो आ गया है, जिसे उन्हें तय करना है और वे यह भी समझ गये हैं। ग्रामवासियों की हीनावस्था को समझौते से नहीं, वरन् संघर्ष करके ही सुधारा जा सकता है और उन्हें सामान्य मानवीय मान्यता दी जा सकती है।

एक कर्मशील कार्यक्रम

जनसंख्या के सबसे ज्यादा कमजोर वर्गों की विभिन्न परिभाषाएँ दी गयी हैं, लेकिन उन्हें दो प्रकार के परीक्षणों द्वारा प्रस्तुत किया गया है। पहला है—भूमि की सीमा का, दूसरा है—आय की सीमा का। ऐसा कहा गया है कि ग्रामीण परिवारों में से २० प्रतिशत परिवारों के पास जमीन बिल्कुल नहीं है और २५ प्रतिशत के पास एक एकड़ से भी कम भूमि है। इसका प्रतिबिम्ब आय में उठता है, क्योंकि जैसा कि बताया गया है, ३५ से ५० प्रतिशत तक ग्रामीण परिवारों की वार्षिक आय ५०० रु० से भी कम है और लगभग ८० प्रतिशत १,००० रु० से कम है। जन संख्या के कमजोर वर्ग वे माने गये हैं, जिनकी वार्षिक आय १,००० रु० से कम है। जिनकी आय २५० रु० सालाना है, वे अत्यन्त हीनावस्था में हैं, जिसके सुधार के लिए राज्य सरकार द्वारा फौरन अनुदान दिया जाना जरूरी है। रोजगारी के लिए एक बड़ा आन्दोलन और साक्षरता, निवास स्थान व्यवस्था, औद्योगिक सह-कारिता आदि उन सभी बातों को, जो कल्याण योजना के साथ लागू की जाती हैं, विस्तार के साथ दिया गया है और जो स्वयं अपनी सिफारिशें प्रस्तुत करता है। लेकिन मुख्य बात है, कमजोर वर्गों की सहायता के लिए मापदण्ड के परीक्षण से राज्य सरकार द्वारा दिये गये अनुदान की आवश्यकता को समझना। इस उद्देश्य के लिए समिति का कहना है कि हम एक साधारण सिद्धान्त का सुझाव देते हैं कि वे जिन परिवारों की वार्षिक आय १,००० रु० से कम है, उन्हें दीर्घ-कालीन या स्थायी आर्थिक पिछड़ेपन का एक मामला समझा जाय। दूसरा सुझाव है, गांधीजी के अंत्योदय के सिद्धान्त का अनुकरण करने की दृष्टि से इस निम्न आय वर्गीकरण में सहायता की? प्राथमिकता उन परिवारों को दी जाय, जिनकी सालाना आमदनी ५०० रु० से कम है। हम यह महसूस करते हैं कि सबसे नीची सीढ़ी से कार्य आरंभ करना ठीक होगा। अन्त में हमारे विचार से जिन परिवारों की आय २५० रु० सालाना से कम हो, उन्हें अत्यन्त निर्धन माना जाय। सबसे पहले इसी वर्ग के लिए कल्याण के उपाय किये जायँ, जिनकी जिम्मेदारी पंचायती राज समितियों पर हो या इनके माध्यम से और कोई संस्था इस जिम्मेदारी को पूरा करे। राज्य द्वारा इन समितियों की सहायता के लिए उचित सहायता-अनुदान दिया जाय।

एक बड़ी चुनौती

जो चुनौती इन प्रस्तावों में दी गयी है, उससे पीछे हट जाना भी सम्भव हो सकता है। इस ओर भी सदा ध्यान रखा जाता है कि राजस्व विभाग पर इतना अधिक भार है कि निकट भविष्य में यह बहुत ज्यादा बढ़ाने की बात सोची नहीं जा सकती। यह भी माना जाता है कि इस प्रकार के अनुदान अत्यधिक स्फीति-कारी होंगे। इन सभी बातों पर कुछ विस्तार के साथ विचार करना होगा। लेकिन यह सुझाव इस बीच दिया जा सकता है कि संविधान के अनुच्छेद २७५ के अंतर्गत सहायता अनुदान के लिए अपनी सिफारिशें तैयार करते समय वित्त कमीशन को जयप्रकाश नारायण समिति द्वारा दी गयी निर्धनों की परिभाषा के आधार पर विभिन्न राज्यों के दावों को भी ध्यान में रखना चाहिए। यह सम्भव नहीं कि निर्धनता और हीनावस्था को आर्थिक नीति के एक झटके के साथ समाप्त कर दिया जाय। पर अगर इस दिशा में धीरे धीरे काम किया जाय, तो जनता के कमजोर वर्गों में आशा पैदा की जा सकेगी और उन्हें यह विश्वास भी दिलाया जा सकेगा कि समाजवादी ढाँचे को शिक्षित एवं प्रभावशाली लोगों के अधिकार बढ़ाने के लिए नहीं, वरन गरीबों के संरक्षण के लिए लागू किया गया है।

'ईस्टर्न इकानामिस्ट' पत्र के २० अक्टूबर '६१ के अंक में 'अवेकनिंग इंडियाज कान्शियंस'—भारत की आत्मा जाग रही है—शीर्षक सम्पादकीय लेख; 'जागृति' से साभार।

हवाई-कार—साहित्यकार ऐक्य और शांति की भावना पैदा करें—बाढ़ों के कारण महान् क्षति—मानवता को विभाजित न करने का संकल्प—सं० राष्ट्र संघ में 'सहकार वर्ष' का प्रस्ताव—संतति-नियोजन पर २७ करोड़ रुपया खर्च होगा—'एस्पेरिन' से 'गैस्ट्रो' और आँखों में अप्रकट रक्तस्राव—अंतरिक्ष यात्री गागारिन भारत में आयेंगे—शाहबाद जिला सर्वोदय-मंडल—वाराणसी जिले में ग्रामइकाई—पंजाब खादी-ग्रामोद्योग संघ—दिल्ली की एक लाख की खादी-बिक्री—भीलवाड़ा में शराबबंदी आंदोलन—आगरा में गांधी तत्त्व-प्रचार और मतदाता-मंडल—बाढ़-पीड़ितों की सहायता—मेरठ में शान्ति-कार्य—इन्दौर जिला खादी-संघ—अमृतसर में नशाबंदी—मलयपुर की ग्राम-पंचायत का प्रस्ताव—मथुरा सर्वोदय मंडल—विसर्जन आश्रम, इन्दौर द्वारा कताई शिक्षण—रोहतक जिले में पदयात्रा—२५०० कट्ठा जमीन संथाल परगना में—भीड़ पर गोली न चलाने का आदेश—चम्बल घाटी में साहित्य-प्रचार—फिरोजाबाद में गांधी विचार केन्द्र—बिलासपुर सर्वोदय सम्मेलन—वनस्थली विद्यापीठ—गोराजी की पदयात्रा—टीकमगढ़ में सर्वोदय-प्रवृत्तियाँ—पहुती में सर्वोदय पात्र—पंजाब-हिमाचल कार्यकर्ता-शिविर—ग्वालियर में गांधी-विचार प्रचार।

अमेरिका के एक डाक्टर ने बरसात में अपने मरीजों को देखने जाने में कीचड़ की परेशानी के अनुभव से एक 'हवाई कार' का निर्माण किया है। यह 'हवाई कार' ऐसी गाड़ी है, जिसमें न पहिये हैं और न पहिये। फिर भी वह 'हवा की गद्दी' पर प्रति घंटे साठ मील की रफ्तार से दौड़ती है। यह भूमि के ऊपर लगभग एक फुट की ऊँचाई पर से चलती है। भविष्य में ये कारें ऐसे प्रदेशों के लिए उपयोगी होंगी, जहाँ पर सड़कें नहीं होंगी और जमीन उबड़-खाबड़ होगी। ●

अखिल भारतीय लेखक सम्मेलन में भाषण करते हुए पंजाब के राज्यपाल न० वि० गाडगिल ने कहा कि विश्व में साहित्यकार ही ऐक्य और शांति कायम रखने की दृढ़ इच्छा उत्पन्न कर सकते हैं। ●

भारतीय लोकसभा में बताया गया है कि इस वर्ष देश में बाढ़ों से ९६२ व्यक्ति और ३,१९८ पशुओं की मृत्यु हुई है। कुल आर्थिक क्षति २१ करोड़ रु० की हुई है। सबसे अधिक क्षति बिहार में हुई है। ●

गुरु नानक जयंति के अवसर पर प्रवचन करते हुए डा० राधाकृष्णन् ने कहा है कि मनुष्य-मनुष्य में भेद करने का तथा मानवता को विभाजित न करने का संकल्प जनता को अब लेना चाहिए। ●

संयुक्त राष्ट्र-संघ में एक साल तक 'सहकार वर्ष' मनाने का भारतीय प्रस्ताव सर्वसम्मति से स्वीकार कर लिया गया। यह सहयोग राजनीतिक, आर्थिक और सामाजिक क्षेत्र में होगा। खयाल रहे, पिछले दिनों अपनी अमेरिका यात्रा के सिलसिले में श्री नेहरू ने संयुक्त राष्ट्र संघ में 'भूभौतिकी वर्ष' की तरह अन्य क्षेत्रों में 'सहकार वर्ष' मनाने का सुझाव दिया था। ●

भारत में संतति नियोजन के लिए २७ करोड़ रु० तीसरी पंचवार्षिक योजना में खर्च होगा। ●

'एस्पेरिन' अधिक या साधारण मात्रा में सेवन करने से 'गैस्ट्रो' और आँखों में अप्रकट रक्त-स्राव भी हो जाता है, यह बात 'मेडिकल जर्नल' में प्रकाशित हुई है। ●

रूसी अंतरिक्ष यात्री मेजर गागारिन ने भारतीय जनता के नाम एक पत्र में कहा है कि पृथ्वी के अमरत लोगों को हमारी अंतरिक्ष उड़ानें समर्पित हैं। श्री गागारिन २९ नवम्बर को भारत आ रहे हैं। ●

'भूदान तहरीक'
उर्दू पाक्षिक
अ० भा० सर्व सेवा संघ
राजघाट, काशी

शाहबाद जिले के प्राथमिक सर्वोदय मंडल राजपुर, तिवरा के श्री कामता प्रसाद राय की पदयात्रा में ७ नवम्बर को छतवना में दो दाताओं से ५० कट्ठा भूमि मिली, जो उसी समय तीन परिवारों में वितरित कर दी गयी। ●

वाराणसी जिले के सैयदराजा क्षेत्र में भतीजा ग्राम में ग्राम इकाई का प्रारम्भ श्री करणभाई द्वारा किया गया। ●

पंजाब खादी ग्रामोद्योग संघ, करौल बाग, दिल्ली में २ अक्टूबर से ९ नवम्बर तक १ लाख रुपये से अधिक की खादी बिक चुकी है। भंडार पर काफी भीड़ रोज बनी रहती है। ●

राजस्थान के भीलवाड़ा जिले में शराबबंदी आंदोलन तेजी पर है। भीलवाड़ा तहसील के ४० पंचायत क्षेत्रों की अधिकांश ग्रामसभाओं ने अपने यहाँ से शराब की दूकानें हटाने और 'बियर हाउस' को तत्काल बंद कराने के लिए राज सरकार से माँग की। ●

आगरा में गांधी तत्त्व प्रचार केंद्र की विभिन्न गतिविधियों में विचार गोष्ठी, गांधी जयंती, सर्वोदय-पात्र की स्थापना आदि कार्यक्रम हुए। केन्द्र के तीन व्यक्ति साम्प्रदायिकता निवारण के लिए अलीगढ़ गये। आगरा में सर्वोदय युवक-सम्मेलन द्वारा ११ अक्टूबर, विजयादशमी को श्री जयप्रकाश नारायण का जन्म-दिन मनाया गया, जिसमें नगर के गण्यमान्य नागरिक उपस्थित थे।

आगरा के सर्वोदय मंडल के एक मतदाता मंडल की विचार प्रचार समिति ने एक पत्रक में जनता से मतदाता-मंडल बना कर अपने पसंद के उम्मीदवार खड़ा करने का अनुरोध किया है। साथ-साथ यह भी बताया है कि चुनाव पार्टी के आधार पर न होकर सर्वसम्मति से हो। ●

सारण जिले के सर्वोदय-युवक-सम्मेलन ने एक निवेदन द्वारा जनता को बाढ़पीड़ितों की सहायता के लिए धन, अन्न, वस्त्र देने का अनुरोध किया। ●

मेरठ में सांप्रदायिक दंगों के अवसर पर जिला सर्वोदय मंडल ने शांति-स्थापना का कार्य किया। १० से १५ अक्टूबर तक, पाँच दिन शांति कार्य चलता रहा। नगर में एक नगर शांति सेना समिति बनी है। इस अवसर पर श्रीमती आशादेवी आर्यनायकम् का बीच बीच में आना जाना चलता रहा। ●

इंदौर जिला खादी-संघ द्वारा २१ से २८ नवम्बर तक ग्रामइकाई शिविर इंदौर के निकट के पालिया गाँव में सम्पन्न हुआ है। ●

अमृतसर सर्वोदय मंडल ने नशाबंदी-आंदोलन के लिए जोरदार प्रचार शुरू कर दिया है। गाँव-गाँव से नशाबंदी के खिलाफ प्रस्ताव पास किये जायेंगे। ●

मलयपुर, मुंगेर में श्री रमावल्लभ चतुर्वेदी ने जो शराब बंदी के खिलाफ पिकेटिंग किया था, उसकी सफलता पर मलयपुर की ग्राम पंचायत ने एक प्रस्ताव में श्री चतुर्वेदीजी और बिहार की सरकार को धन्यवाद दिया कि यहाँ से शराब की दूकान हटा ली गयी। ●

मथुरा जिला सर्वोदय मंडल की एक बैठक में शिक्षण संस्थाओं में सर्वोदय-साहित्य प्रचार, डेम्पीयर नगर में सर्वोदय-पात्र के माध्यम से सघन कार्य और सन् '६१ के अंत के पूर्व जिले की समस्त भूमि का वितरण करने का निर्णय लिया है। ●

इंदौर के विसर्जन-आश्रम के श्री मूलचन्द अग्रवाल ने प्राथमिक शालाओं में कताई शिक्षण की उचित व्यवस्था के लिए विविध प्रयत्न किये। विनोबा के एक पत्र के अनुसार म० प्र० खादी ग्रामोद्योग परिषद् के मुख्य कार्यालय में यज्ञ-रूप में सामूहिक कताई का आयोजन होगा। ●

रोहतक जिले के मारोत ग्राम के लोकसेवक श्री फूलिया भगत ने अक्टूबर मास में लगभग १६० मील की १० ग्रामों में पदयात्रा की। पाँच रुपये की साहित्य बिक्री हुई। तीन सेर सूत-कताई की। ●

संथाल परगना के पोड़ै यहार थाने में 'बीघा कट्ठा अभियान' के सिलसिले में १५ नवम्बर तक २५०० कट्ठा जमीन मिली है। पूरे थाने में १ लाख कट्ठा जमीन प्राप्त करने का प्रयत्न किया जा रहा है। ●

श्रीनगर में पुलिस अधिकारियों के एक सम्मेलन में इस बात का आदेश दिया गया है कि 'उग्र उत्तेजन की स्थिति में भी' पुलिस (कश्मीर की) भीड़ पर गोली न चलायें। ●

चम्बल घाटी क्षेत्र में विनोबा-जयन्ती' से 'गांधी-जयन्ती' तक १३० रु० की साहित्य बिक्री हुई। 'भूदान-पत्रों' के ग्राहक बनाये गये। २००० रु० की खादी-बिक्री भिण्ड खादी-भंडार की हुई। ●

आगरा के गांधी स्मारक निधि, तत्त्व प्रचार केन्द्र के अंतर्गत फिरोजाबाद में गांधी विचार-केन्द्र का उद्घाटन श्री बनारसीदास चतुर्वेदी ने १६ नवम्बर को किया। ●

बिलासपुर में १४ अक्टूबर को क्षेत्रीय सर्वोदय कार्यकर्ताओं का सम्मेलन हुआ। सम्मेलन में सर्व श्री दादाभाई नाईक, रामानंद दुबे, दीपचन्द जैन ने भाग लिया। इसी अवसर पर महिलाओं की एक सभा हुई, जिसमें आंगणवाड़ी चलाने और सर्वोदय पात्र रखने का निश्चय किया गया। ●

वनस्थली विद्यापीठ का २६ वाँ वार्षिकोत्सव २ दिसम्बर '६१ को डा० चिं० द्वा० देशमुख की अध्यक्षता में मनाया जायेगा। ●

प्रो० गोराजी की पदयात्रा मध्य-प्रदेश में चल रही है। ५ दिसम्बर को ग्वालियर जिले में प्रवेश करेंगे। ●

टीकमगढ़ में सर्वोदय स्वाध्याय योजना एवं कताई मंडल ने एक प्रस्ताव में वाचनालय, विचार गोष्ठी, सर्वोदय-साहित्य बिक्री आदि प्रवृत्तियों को संचालित करने के लिए उपसमितियाँ बनायीं और सदस्यता बढ़ाने एवं चन्दा प्राप्त करने का निर्णय लिया। ग्राम गणेशगंज में २१ सर्वोदय-पात्रों की स्थापना हुई। ●

पहुती ग्राम, फैजाबाद में अक्टूबर '६१ से सितम्बर ६१ तक सर्वोदय पात्रों से कुल ७६ रु० संग्रहीत हुए। इसमें २० २० की दवा २,२४५ रोगियों को वितरित की गयी। गाँव के सामूहिक मिलन-केंद्र में बैठ कर गाँव के लोग पत्र-पत्रिकाएँ पढ़ते और सुनते हैं। दुर्गाष्टमी को गाँव में प्रतिवर्ष वार्षिकोत्सव मनाया जाता है। इस बार अन्य कार्यक्रमों के अतिरिक्त 'सत्य हरिश्चन्द्र' नाटक खेला गया। ●

हिमाचल के सिरमौर जिले के पौंटा साहिब में गांधी स्मारक निधि पंजाब तथा हिमाचल के रचनात्मक कार्यकर्ताओं के शिविर पटियाला की महारानी ने उद्घाटन करते हुए कहा कि इन्सान की सेवा ही परमात्मा की पूजा है। शिविर में १५० कार्यकर्ताओं ने भाग लिया। ●

ग्वालियर में ८ अक्टूबर को गांधी-तत्त्व प्रचार केन्द्र की एक सभा में सर्वश्री गुरुशरण, प्रो० आचार्य डा० कोमल सिंह, गोपीकृष्ण कटारे और ह० रा० दिवेकर ने गांधीजी के जीवन पर चर्चा की और विचार किया कि अब मौका आ गया है कि 'सामान्य लोग' गांधी-विचार पर अमल करें। ●

संपादक : सिद्धराज ढड्ढा
वाराणसी : शुक्रवार | ८ दिसम्बर '६१ | वर्ष ८ : अंक १०

जिस परिस्थिति में गांधीजी गये, वह परिस्थिति अब भी बनी है

—नवकृष्ण चौधरी

राजनैतिक स्वतंत्रता तो आई, स्वराज्य हुआ, मगर आप और हम जानते हैं कि कैसे स्वराज्य हुआ, किस परिस्थिति में स्वराज्य हिन्दुस्तान में आया। स्वराज्य के पहले दो तीन साल और उसके बाद जो अनुभव आप और हमको हुए, खास करके किस तरह बापू का प्रयाण हुआ, यह सब जब हम परिवार में बैठते हैं तो याद आता है! आप और हम कभी भूल नहीं सकेंगे कि किस अवस्था में बापू का इस देश से प्रयाण हुआ। जो शख्स सवा सौ साल जीने की बात हमेशा करता था, उसीने स्वराज्य के बाद दिल्ली की अनेक प्रार्थना-सभाओं में अपने हृदय की बातें, जो उद्गार निकाले, जो बातें दुनिया के सामने सुनाई, उसमें उन्होंने साफ साफ जाहिर किया कि अब वे १२५ साल जीना नहीं चाहते। उनके मन में कुछ दूसरी ही भावनाएँ आ गयी। वे सोचते, उनके लिए हिन्दुस्तान में कोई खास जगह नहीं रही है, कुछ देने को उनके पास नहीं है। इसके कारण क्या थे, क्या आपने कभी यह सोचा?

जब नोआखाली में वे गये और अकेले वहाँ शान्ति सैनिक बने, उस समय को आप लोग याद कीजिये। किस परिस्थिति में वे अकेले वहाँ गये थे? तत्कालीन गवर्नर जनरल माउन्टबेटन ने उनके लिए कहा था कि अकेला गांधी हमारी फौज का काम कर रहा है। उस दिन और आज के दिन में क्या अन्तर पड़ा? गांधीजी मर गये नहीं, जान-बूझ कर मारे गये, इस विचार से मारे गये कि जो विचार गांधीजी देश के सामने रख रहे हैं उनके वे विचार हिन्दुस्तान के लोगों के लिये खतरनाक हैं! इसलिए भारत के भविष्य को सुरक्षित करने के लिए और भारत को गांधीजी के आदर्शों से बचाने के लिए उनको जान बूझ कर हटाया गया। तो यह सवाल आज भी हमारे सामने है, क्योंकि हम बापू के बताये मार्ग पर सर्वोदय कायम करना चाहते हैं।

हिन्दुस्तान में विभिन्न धर्मों के लोग बसे हुए हैं, विभिन्न जातियाँ हैं, तो ये सब मिलजुल कर कैसे रहें यह 'चैलेन्ज' आज हम सर्वोदयी लोगों के सामने है। कुछ दिन पहले उत्तर प्रदेश में व अन्य जगहों में दंगे-फसाद की घटनाएँ हुईं। यों हमारे सर्वोदय-आंदोलन के विचार का अच्छा स्वागत हुआ है, जो विचार लोग सुनते हैं तारीफ करते हैं, सरकारी अधिकारी भी उनकी तारीफ करते हैं, राष्ट्रीय नेता भी तारीफ करते हैं। हमारे राष्ट्रीय जीवन में, शासन के क्षेत्र में, एक हद तक इस विचार को मान्यता भी दी जाती है। 'खादी-कमीशन' बना हुआ है। आज हम 'रूरल इण्डस्ट्रीलाइजेशन' की बात कर रहे हैं, तो मुझे लगता है कि आगे चल कर यह भी हो जायगा। अभी पंचायती राज की बात चल रही है, जगह-जगह पंचायत-समितियाँ कायम की गई हैं। जिला-परिषदें व पंचायत समितियों को बहुत सारी सत्ता दी गयी है, जो पहले अधिकारियों के हाथ में थी, वे पंचायतों के हाथ में आ रही है। मगर कुल मिला कर जो देश की परिस्थिति है, वह क्या सर्वोदय की तरफ है? जैसा समाज हम चाहते हैं—मिलजुल कर सब रहें, प्रेम का राज्य रहे, विचार का शासन रहे, उस तरफ क्या हम आगे बढ़ रहे हैं? कहाँ देखने में आता है यह सब? कहाँ है प्रेम?

अलीगढ़ में क्या हुआ? स्वाधीनता के पहले हिन्दू मुसलमानों के मोहल्लों में सुरक्षित थे, मुसलमान भी सुरक्षित थे। आजादी के बाद क्या हुआ? चारों तरफ दंगे हुए, आजादी के पहले जिन मुसलमानों ने हिन्दुओं की रक्षा की थी, उनको दुःख है कि वे मुसलमानों की रक्षा न कर सके। यह हालत है और हम अब तक चेते नहीं। आज स्वराज्य आ गया, किन्तु निरपराधों पर अत्याचार हो रहा है। वे लोग दीनतापूर्वक कहते हैं कि आखिर हमारा क्या कसूर है। स्वराज्य, समाजवाद, सर्वोदय, लोकतंत्र के माने क्या? जिस देश में बिल्कुल निरपराध लोग बाल-बच्चों को लेकर नहीं रह सकते हों, उसमें इन सबके क्या माने?

यह हिन्दू मुसलमानों की ही समस्या नहीं है, यह रोग बहुत गहरा है। दक्षिण

राजस्थान प्रांतीय नवम सर्वोदय-सम्मेलन, टोंक में १८ नवम्बर को दिये गये अध्यक्षीय भाषण से।

जनता से सर्वोदय की अपेक्षा

सर्वोदय का विचार अब सर्वोदय-कार्यकर्ताओं के १०-१२ वर्षों के सतत प्रयत्न के बाद सर्वमान्य हुआ है। लोगों की सर्वोदय से अपेक्षाएँ बढ़ी हैं। लेकिन लोगों को यह समझना बाकी है कि सर्वोदय की भी उनसे अपेक्षा है। इधर असम में मैं लोगों को यही समझा रहा हूँ और लोग भी समझ रहे हैं। गांव-गांव के लोग तय करते हैं कि हम आसपास के गांवों में घूम कर व्यापक ग्रामदानी क्षेत्र बनायेंगे। बाबा यह सब देख रहा है और साक्षीरूपेण उनके बीच रह कर मदद दे रहा है। ऐसा ही हर जगह होना चाहिये और हो सकता है।

—विनोबा

[राजस्थान सर्वोदय सम्मेलन को दिये गये संदेश से। शिवसागर, ८ नवम्बर, '६१]

एक निःस्पृह सेवक !

लाला अचिन्तराम सचमुच एक सेवक थे। यहाँ तक जीवन के अपने ४० वर्षों में निरन्तर वे सार्वजनिक सेवा में लगे रहे। सेवक तो और भी बहुत-से हैं, क्योंकि 'सेवा' आज का चलता हुआ सिक्का है, पर अधिकतर सेवक सेवा के इस सिक्के को भुनाते रहते हैं। ऐसे सेवक बहुत कम हैं, जिनके लिए सेवा एक सहज धर्म है। लाला अचिन्तराम ऐसे सेवकों में से थे।

अपने जीवन की जवानी और प्रौढ़ावस्था उन्होंने आजादी की लड़ाई में गुजारी। उनके दिल में उस समय भी सिर्फ राजनैतिक आजादी की तमन्ना ही नहीं थी, असली चाह उनके दिल में सेवा की थी—आजादी की कोशिश भी जन सेवा का ही एक प्रकार था। इसी भावना से उन्होंने लाला लाजपतराय और श्री पुरुषोत्तमदास टण्डन के साथ मिल कर 'सर्वेन्ट्स आफ पीपल सोसाइटी' की स्थापना की और आजीवन उसके सदस्य रहे। आजादी के बाद आजादी की लड़ाई के अन्य प्रमुख सैनिकों की भाँति वे भी लोकसभा में गये और मृत्यु पर्यन्त उसके सदस्य रहे, पर वहाँ भी वे दलितों के एक समर्थक और प्रतिनिधि के रूप में ही काम करते रहे। सत्ता या पद की होड़ में वे कभी नहीं पड़े।

जब भूदान आन्दोलन शुरू हुआ तो वे स्वाभाविकतया उसकी ओर आकृष्ट हुए और अपनी सारी शक्ति उस आन्दोलन में लगा दी। पंजाब में भूदान के काम को खड़ा करने और जमाने का श्रेय लालाजी को ही था। उन्होंने बहुत से सेवकों को अपने आसपास इकट्ठा किया और सबको इस काम में लगाया। हालाँकि वे अन्त तक एक राजनैतिक पक्ष के—कांग्रेस के—सदस्य रहे, पर उनकी पक्ष निष्ठा आजादी के बाद पक्षों में दाखिल होने वाले लोगों की सी निष्ठा नहीं थी, बल्कि जवानी में जिस मातृ-संस्था की गोद में वे खेले और बड़े हुए, उसके प्रति भक्ति के रूप में थी। इसलिए वे पक्ष में होते हुए भी एक तरह से सच्चे निःस्पृह लोकसेवक ही थे। लालाजी के अवसान से न केवल भूदान-आन्दोलन की, बल्कि देश के सार्वजनिक जीवन की क्षति हुई है। हमें विश्वास है कि देश भर में फैले हुए सैकड़ों हजारों सेवक और कार्यकर्ता लालाजी के प्रति विनम्र श्रद्धांजलि व्यक्त करने में हमारे साथ हैं।

—सिद्धराज

॥सत्यं जगत् स्फूर्तिः जीवनं सत्यशोधनम्॥

भूदानयज्ञ

लोकनागरी लिपि *

सहकार : असहकार

सहकार जीवन का नीत्य तत्व है। लेकीन जब वह स्वेच्छापूर्वक और ज्ञानपूर्वक कीया गया हो, तभी वह अुपयोगी, तभी अहींसक, यानी तभी यथार्थ सहकार हो सकता है। अन्यथा लाचारी से और अज्ञानवश कीया सहकार अुत्तम राज्यव्यवस्था के लीअे अुपयोगी नहीं। अुसकी शकल देखने में सहकार जैसी भले ही लगती हो; लेकीन अुसमें नीत्यत्व न होने के कारण वह ज्यादा दीन टीक न सकेगा। पहले तो वह गुप्त हींसा के रूप में और बाद में प्रकट हींसा में अवश्य परीणत हो जायगा। अिसलीअे जनता के प्रत्येक व्यक्ती को यह प्रतीत होना चाहीअे की कानून हम ही ने बहुमत से बनाया है और हम अुसे बदल भी सकते हैं और जब तक हम अुसे नहीं बदलते, तब तक हमें व्यक्तीशः वह पसंद न होने पर भी नीती-नीयमों के वीरुद्ध न हो, तो हम स्वेच्छा से, आनंदपूर्वक तथा खुले दील से अुसका पालन करते रहेंगे। जीन का मतवीरोध हो, अुनकी वृत्ती सहकार करते समय यदी अुपर्युक्त प्रकार की हो तो वह सहकार अहींसक कहलायेगा। जो व्यक्ती अिस तरह का सहकार नीत्य करता है, अुसीको यथावसर आवश्यक असहकार और प्रतीकार करने का अधीकार होता है। अैसे ही व्यक्ती अहींसक प्रतीकार करने का सामर्थ्य रखते हैं और अुन्हीं का वह कर्तव्य होता है।

['स्वराज्य-शास्त्र' से] —वीनोबा

* लिपि-संकेत: ि = ी, ु = ू, ख = ख, संयुक्ताक्षर हलंत चिह्न से।

संपादकीय

कार्यक्रम की नयी दिशा

राजस्थान प्रान्तीय सर्वोदय-सम्मेलन के निर्णय

राजस्थान प्रांत का नौवाँ वार्षिक सर्वोदय सम्मेलन अभी हाल ही में टोंक में सम्पन्न हुआ। सर्व सेवा संघ के अध्यक्ष श्री नवकृष्ण चौधरी इस सम्मेलन के सभापति थे। सम्मेलन तथा उससे पहले कार्यकर्ता शिविर में प्रांत भर से करीब २०० भाई-बहन कार्यकर्ता एकत्र हुए थे।

भूदान ग्रामदान आन्दोलन ने ग्राम-स्वराज्य की दिशा में बढ़ने की अहिंसक प्रक्रिया देश के सामने रखी। यह प्रक्रिया एक हद तक आकर रुकी है। लड़ाई के मैदान में बढ़ती हुई फौज के सामने जब रुकावट आती है तो पैंतरा बदल कर अगल-बगल से आगे बढ़ना और लक्ष्य पर आक्रमण करना पड़ता है। स्वराज्य की लड़ाई में गांधीजी ने कभी असहयोग और बहिष्कार का कार्यक्रम सामने रखा, कभी नमक-सत्याग्रह का, पर मुख्य उद्देश्य जनशक्ति को जाग्रत करना और जनता को निर्भय बना कर विदेशी सत्ता के मुकाबले में खड़ा करने का था। अन्त में वह काम सफल हुआ। आज भूदान ग्रामदान आन्दोलन के संदर्भ में भी हम इसी प्रकार से ऐसे कार्यक्रम की तलाश में हैं, जिससे जन शक्ति को फिर से प्रेरित और संगठित करके ग्राम स्वराज्य की सिद्धि की ओर मोड़ा जा सके।

ऐसे किसी भी कार्यक्रम के लिए सन्दर्भ और परिस्थितियाँ अनुकूल होनी चाहिए। कार्यक्रम ऐसा होना चाहिए, जो समाज के हर व्यक्ति को छूता हो और जिसमें हर व्यक्ति सक्रिय रूप से हिस्सा ले सके। ऐसा होने पर ही कोई कार्यक्रम जन-आन्दोलन का रूप ले सकता है, अन्यथा वह थोड़े से लोगों तक सीमित रह जाता है। इस दृष्टि से राजस्थान प्रान्तीय सर्वोदय सम्मेलन ने जो कार्यक्रम स्वीकार किया है, वह महत्वपूर्ण है और देश के अन्य प्रदेशों के लिए उसका अनुकरण उपयोगी हो सकता है।

आज देश के वातावरण में सर्वोदय-विचार की दृष्टि से दो बातें का सन्द प्रमुख रूप से हमारे सामने है—एक पंचायती राज और दूसरा नये मोड और ग्राम इकाई के रूप में गाँवों के आर्थिक पुनर्निर्माण का कार्यक्रम। आज का प्रमुख कार्यक्रम ऐसा होना चाहिए, जिसमें भूदान ग्रामदान के तत्त्व तो मौजूद हों ही, साथ ही पंचायती राज और ग्रामीण आर्थिक विकास के लिए भी जिसका महत्त्व हो। राजस्थान प्रान्तीय सर्वोदय सम्मेलन ने "गाँव में सबको सम्मानपूर्वक और सामाजिक न्याय के आधार पर काम मिले", इस कार्यक्रम को ग्राम समाज की प्रमुख जिम्मेदारी के तौर पर उठाये जाने का जो निर्णय किया है, वह इन सब शर्तों को पूरा करता है। ग्राम स्वराज्य हमारा मुख्य लक्ष्य है। गाँव-गाँव के लोग अपनी शक्ति से अपनी किस्मत का फैसला अपने हाथ में ले लें, तभी शोषणविहीन और शांतिमय व प्रेममय समाज की स्थापना सम्भव है। इसके लिए गाँव में परिवार-भावना और एक दूसरे के दुःख सुख में हिस्सेदारी की वृत्ति जाग्रत होना आवश्यक है। परिवार का पहला लक्षण यह है कि परिवार में कोई भूखा न रहे। यह सबकी सम्मिलित जिम्मेदारी होती है। और सब जिम्मेदारियाँ इसके बाद आती हैं। पंचायती राज का हमारा नारा अगर वास्तविक है और हम सचमुच जनता के हाथ में उसकी अपनी व्यवस्था सौंप देना चाहते हैं तो ग्राम-समाज का अर्थात् ग्रामसभा का सबसे पहला कर्तव्य यह होता है कि गाँव में कोई भूखा न रहने पाये, अर्थात् गाँव में सबको काम मिले। परिवार का यह भी लक्षण है कि परिवार में रोटी जो मिलती है, वह सम्मानपूर्वक मिलती है और उसके पीछे मानवीय न्याय होता है। गाँव में भी सबको रोटी रोजी मिले, इतना ही काफी नहीं है, बल्कि जो कुछ मिले, वह भी सम्मानपूर्वक और न्याय के आधार पर मिले। गाँव की पंचायत या ग्राम सभा गाँव गाँव का 'राज' चलाने के लिए बनती है। सही माने में अगर गाँव का राज गाँव वाले के हाथ में है तो इस जिम्मेदारी से कोई भी गाँव वाला इन्कार नहीं कर सकता कि उस क्षेत्र में रहने वाले सब लोगों को काम और भोजन मिले, इसकी जिम्मेदारी ग्राम-समाज पर है। इस जिम्मेदारी को पूरा करना ग्राम समाज का सबसे पहला कर्तव्य है।

आज पंचायती राज के रूप में लोकतांत्रिक विकेन्द्रीकरण का जो कदम उठाया गया है, उसमें और ग्रामस्वराज्य की कल्पना में अन्तर है, यह तो स्पष्ट है। जैसा कि राजस्थान प्रांतीय सर्वोदय सम्मेलन के निवेदन में कहा गया है :

"ग्राम-स्वराज्य गाँव के अपने अभिक्रम, संकल्प और योजना से ही सम्भव है। उसका मूल आधार परस्पर प्रेम और सहकार है, न कि कानून या ऊपर से अधिकारों का वितरण।" पर यह भी सही है कि पंचायती राज के मौजूदा ढाँचे का उपयोग उस दिशा में हो सकता है। इतना ही नहीं, बल्कि यह आवश्यक है कि वैसा होना चाहिए। क्योंकि, अगर पंचायती राज ग्राम स्वराज्य की दिशा में—अर्थात् सामाजिक न्याय, परस्पर प्रेम और सहकार की दिशा में—नहीं बढ़ा तो वह सफल नहीं हो सकेगा। पिछले दो वर्षों में पंचायती राज के प्रारम्भिक दिनों में ही उसका जो अनुभव सर्वत्र हुआ है, उस पर से भी यह स्पष्ट होता है। गाँव में परस्पर प्रेम, सहयोग और भाईचारे की भावना के अभाव में ग्राम पंचायत और पंचायती राज जनता की भलाई का नहीं, शोषण और दमन का ही साधन बना है। अगर पंचायती राज इसी प्रकार चला तो मुल्क में जनतंत्र को ही खतरा पैदा होने की सम्भावना है, इसलिए देश का हर शुभ चिन्तक स्वीकार करेगा कि पंचायती राज को सच्चे ग्राम स्वराज्य में परिणत करने का काम योजनापूर्वक, सचाई से और तत्परता के साथ किया जाय, यह आवश्यक है।

गाँव में सबको सम्मान और न्यायपूर्वक काम मिले, ताकि कोई भूखा न रहे, यह पंचायती राज को उपर्युक्त दिशा में मोड़ने के लिए भी पहला और बुनियादी कदम है। इसी प्रकार सर्व सेवा संघ की खादी ग्रामोद्योग समिति और खादी ग्रामोद्योग कमीशन की प्रेरणा से खादी जगत् ने ग्राम इकाई और नये मोड का जो कार्यक्रम स्वीकार किया है, उसको आगे बढ़ाने के लिए भी यह कदम आवश्यक है। गाँव में सबको सम्मान और न्यायपूर्वक काम देना है तो इसके लिए "गाँव को भूदान ग्रामदान की प्रक्रिया द्वारा भूमि व उत्पादन के अन्य साधनों के ग्रामीकरण तथा खेती व उद्योग धन्धों के समन्वित संयोजन" की ओर बढ़ना होगा। इस दृष्टि से यह काम सर्वोदय तथा खादी आदि कामों में लगे हुए कार्यकर्ताओं के लिए ही नहीं, बल्कि गाँव-गाँव के पंचों सरपंचों तथा अन्य सेवकों और कार्यकर्ताओं के लिए भी एक प्रेरणादायी और आवश्यक कार्यक्रम है। इसके लिए सबको प्रेरित किया जा सकता है और सबका सहयोग लिया जा सकता है। गाँव-गाँव से इसका सम्बन्ध होने से यह कार्यक्रम एक व्यापक जन आन्दोलन का रूप ले सकता है। हर व्यक्ति द्वारा इसमें सक्रिय सहयोग देने की गुंजाइश है। अतः अगर इस कार्यक्रम को केन्द्र बिन्दु मान कर हम काम में लगते हैं तो थोड़े समय में ही देश के गाँव गाँव में एक नयी चेतना जाग्रत कर सकते हैं।

राजस्थान के कार्यकर्ताओं ने शराबबन्दी के कार्यक्रम को हाथ में लेने का भी निर्णय किया है। यह कार्यक्रम भी महत्त्वपूर्ण है, देश-हित की दृष्टि से अत्यन्त आवश्यक है और जन शक्ति को जाग्रत करने की सम्भावना से पूर्ण है। तात्कालिक दृष्टि से इसी प्रकार "शान्ति प्रतिज्ञा" और "आचार संहिता" के नैमित्तिक कार्यक्रम भी महत्त्व के और आवश्यक हैं। हम आशा करते हैं कि सभी सर्वोदय-कार्यकर्ता गम्भीरतापूर्वक इस सारे कार्यक्रम पर विचार करेंगे। —सिद्धराज

"दान दो इकट्ठा-बीघे में कट्ठा"

• श्रीकृष्ण

बिहार को यह नारा विनोबाजी ने अपनी द्वितीय बिहार-यात्रा के प्रथम दिन २५ दिसम्बर, '६० को दुर्गावती (शाहाबाद) पड़ाव पर दिया। सवा आठ वर्ष पहले विनोबाजी जब पहली बार बिहार आये थे, तब इसी दुर्गावती के प्रथम पड़ाव पर बिहार के प्रमुख जनसेवक उनके स्वागतार्थ हजारों एकड़ जमीन के दानपत्र लेकर जमा हुए थे। बिहार के ८५ लाख खेतिहर मजदूरों और भूमिहीन किसानों की भूमिहीनता मिटाने के लिए विनोबाजी ने ३२ लाख एकड़ भूदान की मांग की थी और कहा था कि हर बिहारवासी अपनी भूमि का छठा हिस्सा भूदान में दे। इस लक्ष्य को पूरा करने का संकल्प बिहारवासियों की ओर से वहां उपस्थित जनसेवकों ने किया था।

उस अधूरे संकल्प की याद दिलाते हुए, दृढ़संकल्पी विनोबा ने कहा—"बिहार में अभी तक करीब २२ लाख एकड़ का भूदान प्राप्त हुआ है। संकल्प पूर्ति में लगभग १० लाख एकड़ बाकी है। संकल्प पूरा नहीं होने से आत्मा कुंठित होती है। 'प्राण जाय बरु वचन न जाई'—यह हमारी पुरानी संस्कृति है।

बिहार को अपना संकल्प पूरा करना चाहिए। इस बार हम बिहार से छठे हिस्से की माग नहीं करते। बीघे में एक कट्ठा देने से ही संकल्प पूरा हो जायगा। इसलिए हमारा निवेदन है कि बिहार का प्रत्येक भूमिवान प्रति बीघा एक कट्ठा भूदान अवश्य करे।"

विनोबाजी ४७ दिनों तक इस बार बिहार में रहे। नियमित रूप से अपनी प्रत्येक प्रार्थना-सभा में 'दान दो इकट्ठा-बीघे में कट्ठा' का नारा बुलन्द करते हुए बिहारवासियों के हृदय में प्रसुप्त सत्य, प्रेम, और करुणा की सद्भावना को उन्होंने जगाया। इस शुभ संकल्प की पूर्ति के लिए एक पवित्र दिन भी उन्होंने निर्धारित कर दिया। वह दिन है हमारे राष्ट्रपति डा० राजेन्द्र प्रसादजी का ७८ वाँ जन्म दिवस—३ दिसम्बर, १९६१।

विनोबाजी ने कहा—"राजेन्द्र बाबू 'राष्ट्रपति' की गद्दी छोड़ कर अब हमारे बीच आ रहे हैं। ऐसे अवसर पर उनके स्वागतार्थ दरिद्रनारायण के निमित्त अपनी जमीन के बीघे में कट्ठे के दानपत्र से बढ़कर दूसरी कोई चीज बिहारवासियों के पास समर्पण करने लायक नहीं है।"

विनोबाजी की यह वाणी बिहार में गूँज उठी। सभी राजनीतिक दलों के लोग, रचनात्मक संस्थाओं के कार्यकर्ता, शान्ति-सैनिक, लोकसेवक, पंचायत-परिषद् के प्रतिनिधि और अन्य लोगों ने जगह-जगह विनोबाजी से मिल कर इस संकल्प पूर्ति का उन्हें आश्वासन दिया। इस आश्वासन पर पूरा भरोसा कर वे ९ फरवरी, '६१ को बिहार से आसाम गये।

बिहार का संकल्प पूरा हो और १० लाख एकड़ जमीन जमा हो जाय, केवल इसीलिए विनोबाजी ने बीघे में कट्ठा देने का नारा नहीं दिया है; भूमि प्राप्ति का काम तो कानून के जरिये भी हो जा सकता है और बिहार के स्व० मुख्य मंत्री डा० श्रीकृष्ण सिंहजी ने उसी दुर्गावती पड़ाव पर विनोबाजी को यह सूचना दी थी कि बीघे में कट्ठा भूशुल्क (लैंड लेवी) प्राप्त करने के लिए बिहार सरकार शीघ्र ही एक विधेयक विधान-सभा में पेश करने जा रही है। अब बिहार विधान-मंडल द्वारा अधिकतम भूमि-सीमा निर्धारण विधेयक स्वीकृत हो चुका है। उसमें १ एकड़ से ५ एकड़ तक भूमि रखने वालों से प्रति बीघा एक कट्ठा, ५ से २० एकड़ तक वालों से प्रति बीघा दो कट्ठा और २० एकड़ से अधिक जमीन वालों से छठा हिस्सा जमीन ले लेने की व्यवस्था की गयी है। इससे लगभग १५ लाख एकड़ जमीन मिलने की संभावना है।

विनोबाजी येनकेन प्रकारेण जमीन बटोरना नहीं चाहते। किस तरीके से वह जमीन भूमिहीनों के लिए जमा होती है वे इसको अधिक महत्व देते हैं। वे इस पवित्र काम के लिए पवित्र साधन का ही उपयोग करना चाहते हैं। वे एक से दूसरे के दिल को जोड़ देना चाहते हैं। वे चाहते हैं कि लोगों में परस्पर प्यार बढ़े, लोग एक-दूसरे के सुख-दुख को बाँट लें, एक-दूसरे की मदद करें, पारस्परिक प्रेम और करुणा पर आधृत एक नये सहयोगी समाज का निर्माण हो, जिसमें कोई किसी का शोषण नहीं करे, कोई किसी पर शासन नहीं करे, सब स्वावलम्बी हों, और अपने जीवन की जरूरी चीजें अपनी मिहनत से लोग पैदा करें और आपस में बाँट-चूट कर खायें तथा सुख-शान्ति से रहें। यह कार्य कानून के द्वारा संभव नहीं है। इसलिए

> विनोबाजी ने कहा—मैं 'लैंड लेवी' नहीं चाहता, 'लैंड देवी' चाहता हूँ, अर्थात् कानून से बीघा-कट्ठा जमीन ली जाय, वे यह नहीं चाहते; बल्कि समझ-बूझ कर अपने भूमिहीन पड़ोसी भाई के लिए प्रत्येक भूमिवान प्रेम से दे, वे यही चाहते हैं।

विनोबाजी के इस संकल्प की पूर्ति स्वेच्छा बीघे में कट्ठा देने से ही होगी और यह सबके लिए आसान है भी। अब तक छठा हिस्सा दान देने में कठिनाई मालूम होने के कारण जो इस पुण्य कार्य में भाग लेने से वंचित रह गये हैं, इस बार उनको भी पूरा मौका मिला है। हाँ, पिछली बार विनोबाजी हर हालत की कठोर ले लेते थे, पर इस बार उनका इस बात पर विशेष जोर है कि दाता भूमिहीनों को आबाद जमीन ही दे। इसके साथ इस बार जमीन बाँटने का काम भी भूदान-कमिटी पर नहीं सौंपना चाहते, क्योंकि पिछली बार जो २२ लाख एकड़ जमीन मिली है, वह अब तक नहीं बँट सकी है। उनका कहना है कि

> "दाता स्वयं ही अपने यहाँ काम करने वाले किसी खेतिहर मजदूर या किसी भूमिहीन पड़ोसी को जमीन दे दें और दानपत्र पर उसका उल्लेख कर भूदान-कमिटी को या अपने किसी निकटस्थ भूदान-कार्यकर्ता को दे दें।"

बिहार में करीब दो करोड़ एकड़ जमीन जोत-आबाद की जाती है। यदि सभी भूमिवान बीघे में कट्ठे के हिसाब से अपनी जमीन का दानपत्र भर दें और अपने किसी पड़ोसी भूमिहीन को प्रेम-पूर्वक बाँट देते हैं तो आसानी से १० लाख एकड़ जमीन भूमिहीनों को मिल जाती है। इससे न केवल बिहार के भूमिहीनों की भूमिहीनता मिट जायगी, बल्कि पारस्परिक अविश्वास, छट-खसोट और विनाशकारी अणुआयुधों से परिपूर्ण संत्रस्त विश्व के सामने प्रेमपूर्ण तरीके से भूक्रांति की एक नयी मिसाल उपस्थित होगी, जिससे एक नयी दिशा मिलेगी, और वह दिशा होगी सत्य, प्रेम और करुणा द्वारा सभी मानवीय समस्याओं के समाधान की।

बिहार से विनोबाजी को गये करीब दस महीने हो रहे हैं। वे आसाम में घूम तो रहे हैं, पर उनका ध्यान बिहार की ओर ही लगा हुआ है। समय-समय पत्र देकर वे हमारे नेताओं का इस ओर ध्यान भी खींचते हैं। इसलिए हर लोकसेवक, शान्ति-सेवक, भूदान और सर्वोदय कार्यकर्ता, सभी राजनीतिक दलों के कार्यकर्ता, सभी रचनात्मक संस्थाओं के कार्यकर्ता, मुखिया सरपंच और अन्य सभी सेवाभावी व्यक्तियों का यह पुण्य कर्तव्य है कि वे तन-मन से राष्ट्र निर्माण के इस काम में लग जायँ। इसके साथ ही बिहार के हर भूमिवान का भी यह कर्तव्य है कि देश में सुख, शान्ति और समृद्धि की स्थापना के लिए, बिहार के ८५ लाख भूमिहीनों की भूमिहीनता मिटाने के लिए और साथ, प्रेम तथा करुणा पर आधृत शोषणरहित, शासनहीन एक नये सर्वोदयी समाज के निर्माण के लिए बीघे में कट्ठे का दान देकर इस महान पुण्य के भागी बनें।

[बिहार भूदान-कमिटी, पटना]

'बीघे में कट्ठा' अभियान में अब तक प्राप्त भूमि के कुल दानपत्र राष्ट्रपति डा० राजेन्द्र प्रसाद को उनके जन्म-दिवस, ३ दिसम्बर के अवसर पर बिहार के प्रमुख कार्यकर्ताओं एवं राजनीतिज्ञों के मंत्री हाथों से समारोह समर्पित किए।

मद्रास के मंत्रियों का अनुकरणीय निश्चय

किसी भी खेल या स्पर्धा का यह सामान्य नियम होता है कि उसमें भाग लेने वाले 'प्रतिस्पर्द्धियों' की स्थिति सामान्य तौर पर बराबर होनी चाहिए। स्पर्द्धा के दौरान में किसी को कम सुविधा और किसी को ज्यादा सुविधा नहीं होनी चाहिए। चुनाव भी एक तरह से खेल ही है, पर यह खेल जरा गम्भीर है। आज की स्थिति में चुनाव से देश की हुकूमत का फैसला होता है। इसलिये यह और भी जरूरी है कि चुनाव में भाग लेने वाले व्यक्तियों में से कोई ऐसी सहूलियतों का उपयोग न करें, जो दूसरों को प्राप्त न हो सकती हों। जब आम चुनाव आते हैं तो उसमें वे लोग भी खड़े होते हैं या खड़े हो सकते हैं, जो उस समय मन्त्रि-मण्डल में या शासन में हैं। इसलिए यह सर्वथा उचित है कि मौजूदा मन्त्रिगण जो चुनाव में खड़े हों, वे ऐसी किसी प्रकार की सुविधाओं का उपयोग चुनाव के काम के लिए न करें, जो उन्हें पद की हैसियत से प्राप्त हैं, और इसलिए उनके दूसरे प्रतिस्पर्द्धियों को जो प्राप्त नहीं हैं।

अतः मद्रास राज्य के मन्त्रियों ने इस सम्बन्ध में जो फैसला किया है, उसका हम स्वागत करते हैं। उन लोगों ने यह तय किया है कि १५ दिसम्बर के बाद आम चुनाव तक वे तीन मर्यादाओं का पालन करेंगे। पहली बात तो यह कि इस अरसे में वे मद्रास शहर के बाहर सरकारी मोटर-गाड़ियों का उपयोग नहीं करेंगे। दूसरा यह कि वे किसी भी सरकारी समारोह में भाग नहीं लेंगे और तीसरी मर्यादा यह कि दौरे के समय सरकारी निजी अधिकारियों को वे अपने साथ नहीं रखेंगे। हम आशा करते हैं कि मद्रास के मन्त्रियों के इस निश्चय का अनुकरण अन्य राज्य के और केन्द्रीय सरकार के मन्त्रिगण भी करेंगे। स्वच्छ प्रशासन के लिए इस प्रकार की कुछ परम्पराओं का कायम करना अत्यन्त आवश्यक है।

—सिद्धराज

कुटुम्ब-संस्था आध्यात्म-शास्त्र के लिए व्यापक प्रेम की पूर्व-भूमिका है। अतः वह अबाधित रहनी चाहिए।

[स्त्रियों को निवेदन से] —विनोबा

निधि-मुक्ति और जनाधार के दृष्टिकोण में कार्यकर्ता

काका अत्रे

मैं जब महाराष्ट्र के परभणी जिले में जिला-निवेदक के रूप में जनवरी '४७ में काम करने आया, तब सर्व सेवा संघ के उस समय पारित निधि-मुक्ति और जनाधार के प्रस्ताव के अनुसार मैंने वहाँ कार्य करने का निश्चय किया। शुरू में निधि-मुक्ति और जनाधार से संबंधित कल्पनाएँ अधिक स्पष्ट नहीं हुई थीं, लेकिन मैंने तय किया कि अपने सफर, भोजन आदि का कोई भी खर्च संचित निधि से न लेकर काम करके देखूँ। संयोग से मुझे जिस जिले में भेजा गया, वहाँ के लोगों से मेरा परिचय तक नहीं था! लेकिन मराठवाड़ा के मशहूर कार्यकर्ता श्री अच्युतभाई देशपांडे ने स्वयं मेरे साथ आकर परभणी गाँव के कुछ सज्जनों से परिचय करा दिया। उसी तरह हैदराबाद खादी-समिति द्वारा—हाल ही में वहाँ काम शुरू होने के कारण उसका भी आधार मुझे मिला।

शुरू में चार-आठ दिन तक परभणी के एक-दो मित्रों के घर भोजन करता था, लेकिन धीरे-धीरे अन्य लोगों से भी भोजन के लिए निमंत्रण मिलने लगे, इसलिए उनके घर जाता था। मन में कोई स्पष्ट चित्र न होने पर भी किस दिन किसके घर भोजन किया, इसकी नोंध मैं डायरी में करता रहा। इस तरह गत साढ़े चार साल से किस गाँव में और सुबह-शाम किसके घर भोजन हुआ इसकी नोंध मेरे पास है। पहला वर्ष समाप्त होने पर उस नोंध को यों ही देख रहा था, तो सहज ही मन में विचार आया कि जिनके घर मैंने भोजन किया, वह भोजन मुझे वहाँ किस निमित्त से मिला, इसका साधारण वर्गीकरण तैयार किया जाय।

मेरे जैसे जिन अन्य व्यक्तियों ने अपने-अपने क्षेत्र में जनाधार प्रस्ताव सकल्प के अनुसार चलने की कोशिश की होगी, उनसे अनुभवों का आदान-प्रदान करना चाहिए, इस उद्देश्य से दो चार सम्मेलनों में मैंने कुछ प्रयत्न भी किया, लेकिन अभी तक वैसा मौका नहीं आया।

सबसे पहले यह दिलचस्प बात ध्यान में आयी कि जिस जिले में मेरे काम करने की अपेक्षा है, उस जिले में साल के ३६५ दिनों में से लगभग १५० दिन ही मैं रह सका और बाकी दिन जिले के बाहर सभा सम्मेलनों, बैठकों के आयोजनों में, मित्रों और रिश्तेदारों के यहाँ बीते।

जिन सज्जनों ने भोजन दिया, उनका साधारणतया नीचे दिये अनुसार वर्गीकरण किया गया है—

(१) सर्वोदय कार्यकर्ता को भोजन देना सामाजिक जिम्मेवारी का एक अंग है ऐसा मानने वाले सज्जनों के घर किया गया भोजन।

(२) इस कार्य से उन असंबंधित, लेकिन पूर्व सम्बन्धों के कारण बने हुए मित्रों के घर प्राप्त भोजन।

(३) रिश्तेदार। (४) मित्र-जन।

(५) कार्य के हेतु परस्पर बाहर के सभा शिविरों में हुआ भोजन।

(६) मेरे द्वद्र गृहस्थ, ब्राह्मण होने के नाते प्राप्त भोजन।

(७) भोजन न मिलने से पैसे देकर भोजनालय में किया हुआ भोजन।

उसी तरह राजनीतिक वर्गीकरण से विभिन्न राजनीतिक दलों के लोगों से मिला भोजन।

जाति और धार्मिक दृष्टि से किये हुए वर्गीकरण में भी इसी तरह का अजीब अनुभव नजर आया। सुशिक्षित-अशिक्षित, धर्म भेद, जाति भेद, गरीब-अमीर और विचार-भेद आदि भेदों को न मानने वाले मुझे, मेरे अधिकतर भोजनों का अनुपात यह बता रहा था कि मैं ब्राह्मण जाति का एक सुशिक्षित, मध्यमवर्गीय, काँग्रेस की विचारधारा वाला कार्यकर्ता हूँ और यह चित्र जब आँखों के सामने खड़ा रहा, तब मुझे अपने पर हँसी आयी! फिर मन में विचार आया कि हम संकुचित वृत्ति से बाहर निकलने की कोशिश में हैं, पर अनजान में ही उसी लीक में फँस रहे हैं।

ऐसा क्यों होता है, इस पर चिंतन करते समय मेरे ध्यान में आया कि इस संकुचित वृत्ति से मैं खुद ही बाहर नहीं पड़ा अथवा मेरा अपना अहं जिस संकुचित मनोवृत्ति का परिपाक है उस अहं का त्याग मुझसे नहीं हो रहा है, अर्थात् ऐसा होने के लिए मुझे कई तरह का तर्कसंगत समर्थन प्राप्त होता है। अतः अगर ऐसा नहीं होगा तो इसके बारे में मुझे जागृत रह कर काम करना आवश्यक है। इसलिए नीचे दिये अनुसार अपने कुछ विचार प्रस्तुत किये

(१) साल के ३६५ दिनों में से कम-से-कम दो तिहाई दिन जिस जिले में मैं काम करता हूँ, वहीं बिताये जायँ।

(२) एक माह मित्र जनों के बीच।

(३) एक माह प्रान्त और वहाँ के स्थानीय क्षेत्र में।

(४) एक माह प्रांत से बाहर और

(५) एक माह रिश्तेदारों और अपने परिवारिकजनों के बीच।

इसी जिले का निवासी होने से मित्र-जनों, रिश्तेदारों के लिए मुझे अलग दिन देने पड़े हैं। अगर ऐसा नहीं होता तो जिले से बाहर दो माह से अधिक समय बिताना उचित नहीं होता।

मैंने ऐसा अनुभव किया कि साल में एक बार अखिल भारतीय सम्मेलन के लिए बाहर जाना पड़ता है। वैसे ही एक बार विनोबाजी की मुलाकात के लिए भी जाना आवश्यक लगता है। अखिल भारतीय सम्मेलन के लिए कम से कम दो बार जाना जरूरी माना जाता है। प्रान्तीय सभाओं के लिए साल में चार बार अनिवार्य रूप से जाना पड़ता है। क्षेत्रीय चर्चा सभाओं के लिए साल में छह बार तो एकत्र होना ही चाहिए और जिले की बैठक महीने में एक बार तो होनी ही चाहिए न! इन दूर सुदूर के सभा-सम्मेलनों के लिए आते जाते समय रास्ते में पड़ने वाले सांस्कृतिक, धार्मिक और पूर्व परिचित स्थानों में गये बिना सफर खर्च का सदुपयोग हुआ, ऐसा नहीं महसूस होता। इसलिए सफर के बारे में भी ऐसा एक स्वरूप सामने रखने की मुझे आवश्यकता महसूस हुई कि अगर पदयात्रा विचार-प्रचार का एक मुख्य अंग हो, तो पैदल घूमने, मोटर से जाने, रेल से सफर करने और हवाई जहाज की यात्रा में कुछ संतुलन रखना चाहिए। इस दृष्टि से मैंने जो एक योजना तैयार की, वह यहाँ दे रहा हूँ।

मैं जिसे 'जनाधारित भोजन' कहता हूँ, उसमें ऊपर किये वर्णन के अनुसार उसका जो संकुचित स्वरूप है, उसे दूर करने की दृष्टि से, मैं जिस क्षेत्र में रहूँगा वहाँ के नजदीक के घरों में भोजन मिलेगा, इस दृष्टि से मेरा प्रचार कार्य होना चाहिए। मुझे अधिकतर मेरी वृत्ति के अनुकूल होने वाले लोगों के घर ही भोजन करना चाहिए। याने जाति, वर्ण, वृत्ति आदि के कारण महसूस होने वाली आत्मीयता के बदले पड़ोसी धर्म के कारण आत्मीयता पैदा होनी चाहिए।

फिर चाहे वे पड़ोसी किसी भी जाति, धर्म, वृत्ति के हों, भोजन मिलता रहना चाहिए। इस तरह होता है या नहीं, यह सवाल मेरे सामने उपस्थित हुआ। तब ध्यान में आया कि सर्वोदय के कार्य का स्वरूप सर्वोदय-कार्यकर्ता और समाज के सामने स्पष्ट नहीं हुआ है। जैसे, घर में अगर कोई बीमार हुआ तो डाक्टर को बुलाना चाहिए अथवा किसी रोग का प्रसार हुआ तो डाक्टर को दौड़े जाकर उपचार करना चाहिए। लड़का न पढ़ रहा हो तो मास्टर रखना चाहिए और शिक्षा की आवश्यकता है, इसलिए सरकार को स्कूल खोल कर शिक्षा का प्रबंध करना चाहिए; मकान बाँधना हो तो इंजीनियर को बुलाना चाहिए और बाँध के टूटने से मकान बह गये हों तो इंजीनियरों को दौड़े जाना चाहिए। इच्छा पूर्ति के लिए सत्यनारायण करना हो, तो ब्राह्मण को बुलाना चाहिए और अवर्षण जैसी विपत्ति आ पड़ी हो तो यज्ञ के लिए पुरोहित लोगों का आवाहन करना चाहिए। परस्पर सम्बन्ध के कार्य का यह स्वरूप सब जानते हैं, लेकिन सर्वोदय कार्यकर्ताओं को लोग कब बुलायें अथवा लोगों को सर्वोदय-कार्यकर्ता कब बुलायें, यह बात अब तक किसी को भी स्पष्ट नहीं हुई है।

मेरी समझ में सर्वोदय-कार्यकर्ता का काम माता के काम के जैसा है। जैसे माता पुत्र को सिखाती है, लेकिन वह शिक्षिका नहीं; औषधोपचार करती है, लेकिन डाक्टर नहीं; सेवा-शुश्रूषा करती है, लेकिन नर्स नहीं; खाना खिलाती है, लेकिन रसोइया नहीं; कभी मारती भी है, लेकिन पुलिस नहीं; उसी तरह सर्वोदय-कार्यकर्ता औषधि देते हों, खेती-सुधार का काम करते हों, शिक्षण देने का काम करते हों, खादी-बिक्री, साहित्य-बिक्री करते हों, तब भी उनका यह काम 'धंधा' नहीं, बल्कि वह तो जीवन की एक प्रेरणा है। पुत्र को जिस तरह माता के कामों में दूसरा कुछ नहीं, केवल प्रेम ही दिखाई पड़ता है, उसी तरह कार्यकर्ता के हृदय में निहित प्रेम का अनुभव समाज को हो, यही सर्वोदय विचार साधना का सूचक है।

कई बार सर्वोदय कार्यकर्ताओं के काम की तुलना मिशनरी लोगों की कार्यपद्धति के साथ की जाती है। मिशनरी लोग दवाखाना, शिक्षण संस्था, धन्धोद्योग की शाला आदि के जरिये जन सेवा करते हुए लोगों को स्वधर्म में लाने की दृष्टि रखते हैं; लेकिन सर्वोदय समाज व्यवस्था की किसी धार्मिक पंथ से तुलना करना उचित नहीं होगा, क्योंकि

सर्वोदय विचार ऐसी समाज-व्यवस्था की अपेक्षा करता है कि जिसमें व्यक्ति-व्यक्ति के आपस के सम्बन्ध—फिर चाहे वे व्यक्ति भिन्न जाति, भिन्न वंश, भिन्न उद्योग, भिन्न देश और भिन्न धर्मों के हों, तब भी उनके परस्पर-सम्बन्ध शांति, प्रेम और सहकार्य के हों।

इसलिए कार्यकर्ता अपनी दैनिक जीवन पद्धति में जिस अनुपात में इस मूल्य-परिवर्तन के दर्शन करायेगा और देगा, उसी अनुपात में सर्वोदय-विचार का प्रसार और प्रचार होगा। लेकिन मुख्य समस्या यह है कि 'कुएँ में ही न हो तो बाल्टी में कहाँ से आयेगा!' असल में सारा मामला इसी जगह रुका हुआ है!

(मूल मराठी से)

—

गरीब दिन-दिन गरीब हो रहे हैं !

• विद्यासागर पांडे

उद्धरणों व आँकडों से अमीर अधिक अमीर होते-से जान पड रहे हैं, उसी प्रकार भारत के करीब साढ़े पाँच लाख ग्रामों में उत्पादक-गरीब अधिक गरीबी की ओर बढ रहे हैं—ऐसा आभास आँकड़े प्रस्तुत करते जान पडते हैं :

(क) *भारत की कुल करीब ४३ करोड जनसंख्या में से शहरी जनसंख्या* १७.३ प्रतिशत है व ग्रामीण जनसंख्या ८२.७ प्रतिशत है।

(ख) जनसंख्या का घनत्व (डेन्सिटी आफ पापूलेशन) जहाँ भारत में ३१२ व्यक्ति प्रति वर्गमील है, वहाँ हालेन्ड में प्रति वर्गमील ८२५.३; बेलजियम में ७३४.४; जापान में ५७५.४ और इंग्लैण्ड में ५३७.८ व्यक्ति हैं।

(ग) भारतीय ग्रामीण विशेषकर तीन क्षेत्र में कार्य करते हैं : (१) ग्रामीण कारीगर व व्यापारी (२) कृषक और (३) भूमिहीन कृषि-मजदूर।

ग्रामीण क्षेत्र

ग्रामीण कारीगरों व व्यापारियों के क्षेत्र से सम्बन्धित भारतीय योजनाओं का रुख कहीं तो अत्यधिक आशाजनक व कहीं खेदजनक लगता है। जैसे :—

(१) सामुदायिक योजनाओं पर कुल ग्रामीण भारत के विकास का योजित *खर्च आशाजनक ही कहा जायेगा।* परन्तु · ·

(२) औद्योगिक स्टेटों की स्थापना के क्षेत्र में ग्रामीण क्षेत्रों को योग्य न्याय नहीं मिल जान पडता है, क्योंकि जहाँ *दूसरी योजना में कुल २० औद्योगिक स्टेटें ग्रामीण क्षेत्र में बनायी गयी हैं,* वे बढाकर इस क्षेत्र में तीसरी योजना के अन्त तक करीब २०० कर दी जायेंगी, जब कि शहरी क्षेत्र में कुल औद्योगिक स्टेटें ८०० के करीब बन जायेंगी; क्योंकि श्री मनुभाई शाह के 'नवभारत टाइम्स', १२ अप्रैल १९६१ के वक्तव्य के अनुसार तीसरी योजना के अन्त तक भारत में कुल १००० औद्योगिक बस्तियाँ (इन्ड-स्ट्रियल स्टेट्स) बनेंगी।

(३) ग्रामीण औद्योगीकरण के लिए तीसरी योजना में अतिरिक्त खर्च के बतौर सिर्फ २ अरब रुपयों की ही पूंजी विनियोजित (खर्च) करने का आश्वासन श्री शाह ने हाल में ही दिया है, जब कि शहरी बड़े उद्योग में करीब तीसरी योजना में ही २४०० करोड की पूंजी सरकारी व निजी क्षेत्र से विनियोजित करने की योजना बनायी गयी है, जिससे कि सिर्फ १०,००० ग्रामों का ही औद्योगीकरण हो पायेगा, जब कि भारत में कुल साढ़े पाँच लाख ग्राम हैं।

(४) योजनाओं में ग्रामीण भवन निर्माण *के लिए रखे गये रुपये प्रारम्भ से ही* निम्न थे और हैं, जैसे कि तीसरी योजना-काल में ग्रामीण आवास के लिए सिर्फ १३,४०,००,००० रुपया रखा गया है, जब कि कुल खर्च १,८२,००,००,००० (एक अरब बयासी करोड) रुपया कुल भारत में भवन-निर्माण के लिए योजित किया गया है।

ग्रामीण भवन निर्माण खर्च :

१२ करोड ७० लाख रुपया

बागान मजदूर-भवन निर्माण-खर्च :

७० लाख रुपया

कुल खर्च ग्रामीण क्षेत्र में :

१३ करोड ४० लाख रुपया

(५) ग्रामीण क्षेत्रों में न्यूनतम-जीवन-*मजदूरी (फिक्सेशन आफ मिनीमम लिविंग वेजेज)* निर्धारण का कार्य भी राष्ट्रपति के निर्देशन (डायरेक्टिव इन्स्ट्रक्शन्स) के बावजूद अछूता ही पडा-सा जान पडता है और हालत कहीं-कहीं तो यह हो गयी है कि योजना के अन्तर्गत जेल-सुधार के कार्यक्रमों में गुनहगार व सजायाफ्ता कैदी मजदूरों को सामान्य मजदूरों से अधिक मजदूरी व जीवन की अन्य प्रयत्न सुविधाएँ अधिक दी गयी जान पडती हैं। यानी कैदी बन कर हमारे स्वतन्त्र भारत में सरकारी काम पा सकते हैं, अन्यथा ग्रामीण बेकारी से ही भूखे मरने के लिए स्वतन्त्र व योजनाहीन अवस्था में छोड दिये गये हैं। ' यह आर्थिक स्थिति समाज को गुनाहों की राह पर डाल सकती है।

कृषकों के क्षेत्र में

हमारी योजनाओं के कार्य व नतीजे अजीबोगरीब जान पडते हैं :—

(१) कृषि-विकास का खर्च (अलाटमेन्ट) भी योग्य नहीं है। करीब एक सौ करोड रुपयों का वार्षिक *अन्न हम विदेशों से हर वर्ष आयात* कर रहे हैं। २५ करोड रुपया तो हम विदेशी जहाजों के किराये के बतौर तीसरी योजना-काल में ही अन्न लाने के लिए अमेरिका के ४८० पी० एल० करार की पूर्ति मात्र दे देंगे। *अगर अन्न की* प्राथमिक माँग के क्षेत्र में राष्ट्र विदेशों पर परावलम्बी रहते रहे तो हमारा स्वावलम्बन व राष्ट्रीय सुरक्षा का सवाल रेत पर बने मकान या कागज के पत्तों के बनाये हुए भवन जैसी कमजोर नींव पर खडा जान पडता है।

उपर्युक्त पृष्ठभूमि में क्या भारत के देशी व विदेशी दृष्टकोणकार यह नहीं कह सकते *कि जिस राष्ट्रीय परिवार में खाने तक* को अन्न नहीं हो, वह लोहे के ४०० वर्षों तक को टिकने वाले स्थापत्य को कैसे सराह सकता है! तभी तो जन सहयोग की दृष्टि से भी योजना को पूर्ण करने के लिए भूखे, नंगे, अशिक्षित व असुरक्षित भारतीय भाई से त्याग व दिलचस्पी की माँग और हार्दिक व पारिवारिक सहयोग की अपेक्षा रखना कहाँ तक योग्य माना जायगा व कहाँ तक सफलता प्राप्त करेगा, ऐसा सवाल योजना-कारों के सम्मुख भी उपस्थित होगा ही।

ऐसी हालत में कृषि-क्षेत्र को प्रथम-प्राथमिक महत्व का क्षेत्र बना कर भी भारतीय योजनाओं का कुल खर्च बड़े उद्योगों व उनके सहायक-उद्योग, व्यापार तथा संचार और औद्योगिक शक्ति व्यवस्था पर प्रथम योजना में करीब ११३, दूसरी योजना में ३१२ व तीसरी योजना में करीब ३१३ खर्च योजित करना कहाँ तक भारतीय कृषि-उद्योगों की महत्वपूर्ण पृष्ठभूमि में *योग्य आवंटन (अलाटमेन्ट)* या खर्च *कहा जायेगा! (जब कि रोजी के आँकडों* की दृष्टि से भारत के कुल १००० व्यक्तियों में से ७०६ व्यक्तियों को कृषि रोजी देती है और सिर्फ १५२ व्यक्तियों को उद्योगों में *रोजी मिलती है और बाकी के व्यक्ति अन्य* व्यापार या व्यवसाय करते हैं।)

(२) भारतीय कृषि की वर्तमान विशेषताएँ ये हैं :—

७६ प्रतिशत कृषक १ से १० एकड तक ही सीमित भूमि पर कृषि करते हैं।

१०० करोड रुपयों का औसत वार्षिक अनाज आजादी के बाद से विदेशों से भारत में आयात किया जा रहा है।

जनसंख्या-वृद्धि हर रोज १२ हजार *नये खाने वालों को बढ़ा देती है।*

देश की उपर्युक्त स्थिति में भारतीय कृषि की उन्नति निम्न दो तरीके से ही की जा सकती है :—

(अ) वैज्ञानिक कृषि के माध्यम से : उन्नत बीज, खाद, शक्ति, क्रय-विक्रय और पशु योजना आदि को लागू करके इस क्षेत्र में सरकारी बड़े खाद-कारखानों व सामुदायिक विकास-योजनाओं के अन्तर्गत काफी सन्तोषजनक प्रयत्न हुए हैं और *योजना-खर्च व जन-सहयोग भी सरकारी* आँकडों के द्वारा सन्तोषजनक रखा जा रहा है।

(आ) कृषि मूल्यों की समस्या : भारतीय कृषि-समस्या का दूसरा अत्यधिक महत्वपूर्ण पहलू है, "कृषि-उत्पादन के मूल्य-नियंत्रण सम्बन्धी नीति व कार्य।" कृषि-उत्पादन की मूल्य नियंत्रण सम्बन्धी सरकारी नीति पूर्ण रूप से तीनों योजनाओं तक अछूती ही रही है। इस कारण से इस क्षेत्र में अजीब हालत पायी जाती है, जैसे कि एक अनुसंधान-पत्र (रिसर्च पेपर) के उद्धरण व प्रोफेसर अन्डरवुड की विश्व कृषि-संस्था में (एफ० ए० ओ०) की गई सिफारिश से समझा जा सकता है :—

"एशिया के ग्रामीण छोटे उत्पादकों को आर्थिक उच्च मूल्यांकन व प्रोत्साहन देकर एशिया में कृषि-उत्पादन बढ़ाया जा सकता है।"

(प्रो० अन्डरवुड, एफ०ए०ओ०)

भारत में जमीन के बटन का आकार :—

प्रति किसान की जमीन का आकार	कुल किसानों का अनुपात : प्रतिशत में
१ एकड से कम	३१.[illegible]
१ एकड से ५ एकड तक	२[illegible]
५ एकड से १० एकड तक	२[illegible]
१० एकड से ऊपर	सिर्फ [illegible]

यानी भारत के ,७६ प्रतिशत काश्तकारों के पास १० एकड से कम ही भूमि है।

उपर्युक्त स्थिति में अगर अन्न की खेती में राष्ट्र को आत्म-निर्भर करना है तो इन ७६ प्रतिशत छोटे किसानों (मार्जिनल लेण्डहोल्डर्स) की आर्थिक स्थिति ठीक करनी है तो इनके द्वारा इनकी पारिवारिक आवश्यकता से अतिरिक्त अन्न के उत्पादन को उच्च कीमतों पर ग्राम पंचायतें या योग्य ग्रामीण संस्थाओं के माध्यम से राज्य सरकारें खरीद कर इन छोटे कृषकों को प्रत्यक्ष उच्च कीमतों का प्रोत्साहन दे सकती हैं।

शहरी जनसंख्या को भी वर्तमान साधारण मूल्यों पर पर्याप्त देशी व आवश्यक *होने पर विदेशी अन्न प्राप्त हो, ऐसी व्यवस्था* सरकार प्रत्यक्ष सहकारी संस्थाओं, प्रमाणित व्यापारियों व अन्य समाज सेवी संस्थाओं के माध्यम से प्राप्त करायें। उपर्युक्त प्रयत्न में जो प्रान्तीय व केन्द्रीय सरकारों को आर्थिक हानि हो उसे अनुदान माना जाय, जैसा कि प्रान्तीय व केन्द्रीय सरकारें व खादी बोर्ड, खादी उत्पादन व खादी बिक्री के प्रोत्साहन पर अधिक राष्ट्रीय [illegible] बनाये रखने के लिए देती हैं।

उपर्युक्त कदमों से कृषि उद्योग जो कि भारत में आँकडों की दृष्टि से व रोजी की दृष्टि से कुल भारत के १००० व्यक्तियों में से ७०६ व्यक्तियों को रोजगार देता है, सही माने में उत्पादक रोजगार आर्थिक मूल्यों की दृष्टि से भी माना जा सकेगा। "[illegible] आदि व गरीब उत्पादक कृषक अपनी व्यक्तिगत आर्थिक उन्नति के लिए सरकारी "अधिक अन्न उपजाओ," व "वैज्ञानिक कृषि-आन्दोलनों" को जन आन्दोलनों में परिणत करने में [illegible] से सहयोग करेंगे।

इस प्रकार तीसरी योजना से ही अन्न के क्षेत्र में आत्मनिर्भर बनने की सही दिशा में प्रगति की जा सकेगी। अन्यथा अन्न से

साम्प्रदायिकता : एक विश्लेषण : २

• दादा धर्माधिकारी

[पिछले अंक में साम्प्रदायिकता का विश्लेषण करते हुए दादा ने बताया था कि सम्प्रदायवादी अपने सम्प्रदाय का प्रतिपादन, प्रचार और अन्य व्यक्तियों को अपने सम्प्रदाय में दाखिल करना मूलभूत अधिकार मानता है। मानवतावादी इसे गलत मानते हैं। क्यों ? यह इस अंक में पढ़िये। –सं०]

मानववादियों का कहना यह है कि सारे के सारे मूलभूत अधिकार नहीं हो सकते। उदाहरण के लिए अस्पृश्यता का आचरण। एक व्यक्ति कहता है कि उन्नति के लिए आवश्यक है कि कुछ मनुष्यों को अस्पृश्य माना जाय। इसे हम मूलभूत अधिकार कैसे मान सकते हैं ? यह मानवता के मूल में ही कुठाराघात करना है। यह चाहे किसी के भी धर्म का विधान हो, हम उसे मूलभूत अधिकार नहीं मान सकते और यह किसी धर्म का मूलभूत अधिकार नहीं है। जो धर्म ऐसा मानता है, उस धर्म में हमें हस्तक्षेप करना होगा।

अब तक राज्य के विषय में कहा गया था कि राज्य का हस्तक्षेप धर्म में नहीं होना चाहिए। रामराज्य-परिषद और दूसरी संस्थाएँ अंग्रेजों की कुछ प्रशंसा इसीलिए करती हैं कि उन्होंने धर्म में हस्तक्षेप नहीं किया। पर कोई स्वतन्त्र या स्वदेशी सरकार इस प्रकार धर्म के विषय में तटस्थ नहीं रह सकती—इतनी तटस्थ कि वह मानवीय अधिकारों को भी पद दलित होने दे।

इसी प्रकार दूसरा मूलभूत अधिकार है गाय की कुर्बानी–'गवालम्भ'। गाय की 'कुर्बानी' यह मैंने मुसलमानों का शब्द ले लिया। 'गवालम्भ' संस्कृत शब्द है और इसी रूप में पुराणों व ग्रन्थों में आता है। किसी जमाने में मनुष्य की भी बलि दी जाती थी ! अभी केदारनाथ के रास्ते में गुप्त काशी में एक सज्जन मिले थे। पण्डा थे, विद्वान भी थे। वे वहाँ का किस्सा बता रहे थे कि यह जो केदारनाथ का मन्दिर बना हुआ है, यह नकुल की छाती पर बना है। वहाँ की जमीन ऐसी थी कि वहाँ पर नींव नहीं जमती थी। जब पाण्डव लोग इधर आ रहे थे, उस समय नकुल वहाँ पर सोये और उनकी छाती पर यह मन्दिर बनाया गया। यह बात अगर सही हो, तो इसका मतलब यह है कि नर-बलि की आवश्यकता थी।

उत्तराखण्ड के बारे में कहा जाता है कि वहाँ एक नहर है। वह बनती नहीं थी तो राजा को स्वप्न हुआ कि तू अपने बड़े लड़के को बलिदान में दे देगा, तो उसके रक्त से यह नहर बन जायगी। इस प्रकार का एक नरमेध भी पहले होता था। अब यदि कोई कहे कि यह 'फण्डामेण्टल राइट' यानी मूलभूत अधिकार है, तो इसको हम मूलभूत अधिकार मानने को तैयार नहीं होंगे। उसी प्रकार जो पशु समाज के लिए उपयोगी हो उन्हें मारना, यह किसी का 'फण्डामेण्टल राइट' नहीं हो सकता। जब वह पशु पूजनीय हो, तब तो और भी नहीं हो सकता। कोई धर्म यह कहे कि जो पशु दूसरे के लिए पूजनीय है, वही पशु मेरे लिए वध्य है, उसी को बलि चढ़ा सकता हूँ, तो यह किसी का मूलभूत अधिकार नहीं हो सकता। इन चीजों को हमें खूब समझ लेना चाहिए। इस देश में किसी ने भी इसको गहराई के साथ सोच कर समझने की कोशिश नहीं की है।

पहले इस बात को हमें समझ लेना चाहिए कि अस्पृश्यता का आचरण किसी का मूलभूत अधिकार नहीं हो सकता। गांधी ने इस पर बहुत गहराई से विचार किया और अस्पृश्यता निवारण का आन्दोलन बहुत महत्व का आन्दोलन बना दिया तथा उसको प्राथमिकता दी। पहले यह होना चाहिए, उसके बाद गोवध-बन्दी का आन्दोलन करें। अगर हिन्दू यह समझ लेता है कि अस्पृश्यता किसी का मूलभूत अधिकार नहीं हो सकता तो उसकी नैतिक शक्ति तो बढ़ेगी ही, लेकिन नैतिक शक्ति से भी अधिक उसका सामाजिक सामर्थ्य बढ़ेगा।

इस देश में सम्प्रदायवाद का प्रतिकार करने की उसकी क्षमता आज की अपेक्षा हजार गुना बढ़ेगी। कांग्रेस, प्रजा-समाजवादी पक्ष, साम्यवादी पक्ष और निष्पक्ष सर्वोदय में मुझे कुछ ऐसी बात है कि कुछ ऐसे लोग हैं, जो सामाजिक व्यवहार में अछूतों को अपना नहीं समझते। अभी मेरे साथ कुछ ऐसे सर्वोदय कार्यकर्ता थे, जो सारे काम कर लेते थे, लेकिन जहाँ मैं भोजन करता था, वहाँ वे भोजन नहीं करते थे ! उस वक्त कहीं चले जाते थे। आप जहाँ जायेंगे, वहाँ हिन्दू समाज में गाँव-गाँवों और शहरों में यह दिक्कत हमेशा ही पैदा होगी कि सार्वजनिक सेवक अस्पृश्यों को अपनाते हैं, यह गाँव वाले सह नहीं सकते। परन्तु यह बिल्कुल वस्तुस्थिति है और यह सत्य है कि

> अगर हिन्दू समाज में अस्पृश्य नहीं होंगे तो भारत में से सम्प्रदायवाद का अन्त हो जायगा। जिस दिन व्यावहारिक रूप में अस्पृश्यता का अन्त हो जायगा, उस दिन भारत में सम्प्रदायवाद नहीं रहेगा। सम्प्रदाय तो रहेंगे, लेकिन आज जो इसका उग्र रूप है, वह नहीं रहेगा। इसमें हम सबको अपना अपना मन टटोलना चाहिए।

जब अप्पासाहब पटवर्धन कहते हैं कि समाज में भंगी नहीं रहना चाहिए, तो क्या हमारे हृदय में वैसी ही प्रतिध्वनि निकलती है, जैसी जब यह कहा जाय कि समाज में या देश में कोई गरीब न रहे, उस वक्त प्रतिध्वनि निकलती है ? और अगर नहीं निकलती है, तो आपको और हमको अपना शुद्धिकरण करने की आवश्यकता है। यह शुद्धि मानसिक है। विधान, संविधान और कानून जितना कर सकता था, उतना तो हो गया। यहाँ अब हृदय-परिवर्तन की बात आ गयी।

अस्पृश्यता मिटाने पर हममें यह कहने की शक्ति पैदा होगी, जो कि आज नहीं है कि किसी भी पशु की कुर्बानी करना किसी का मूलभूत धार्मिक अधिकार नहीं हो सकता। मान लें कि कल सारे राष्ट्र ने निःशस्त्रीकरण का प्रस्ताव किया कि अब हमारे देश में कोई शस्त्र नहीं धारण करेगा। अब सिक्ख अगर कहे कि यदि मैं कृपाण नहीं रखूँगा तो मैं तो नरक में जाऊँगा, यह तो हमारा मूलभूत अधिकार है। संयोग कुछ ऐसा है कि हमारे भारतवर्ष का वर्तमान संविधान इस मूलभूत अधिकार को मान्यता देता है। सिक्खों को यह अधिकार संविधान में माना गया है। मास्टर तारासिंह विनोबा की सभा में आकर शांति सैनिक बनते हैं और वे कहते हैं कि कृपाण के साथ शांति सैनिक हूँ, तो सुस्वेल कहता है कि मैं एटम बम को साथ लेकर शांति सैनिक बनता हूँ और कैनेडी कहता है कि मैं सारी सेना को साथ लेकर शांति सैनिक बनता हूँ !

मेरा मतलब यह है कि धार्मिक दृष्टि से जिनको हमने मूलभूत अधिकार माना है, उन पर समग्र मानवता की दृष्टि से विचार करने की आवश्यकता आज है। उससे इन सम्प्रदायों से विरोध और संघर्ष पैदा होता है। किन्तु ऐसा स्पष्ट कहने का साहस हममें होना चाहिए। पर यदि हिन्दू, मुसलमान से कहता है कि यह तेरा मूलभूत अधिकार नहीं है और मुसलमान सिक्ख से कहता है कि यह तेरा मूलभूत अधिकार नहीं हो सकता, तो इसमें से झगड़ा पैदा होता है। इसलिए पहले हमें कहना चाहिए कि

> अस्पृश्यता किसी का मूलभूत अधिकार नहीं है, इसके बाद हम कह सकते हैं कि गोवध किसी का मूलभूत अधिकार नहीं हो सकता।

आखिर हमारे देश की समस्या क्या है ? क्यों यह इतना उग्र रूप धारण कर रही है ? इसके दो कारण हैं। पहला यह कि हर धार्मिक मनुष्य धर्म परायण होता है। हिन्दुओं के बारे में एडगार ने लिखा है कि हिन्दू खाता धार्मिकता से है, नहाता भी धार्मिकता से है, पेशाब भी धार्मिकता से करता है, थूकता भी धार्मिकता से है और पाप भी धार्मिकता से ही करता है ! तो ये सारे व्यक्ति धर्मपरायण होते हैं। इसका मतलब है कि वे जीवन को अखण्ड और समग्र मानते हैं, इसलिए वे कहते हैं कि राज्य भी धर्मराज्य ही होना चाहिए। चर्च और स्टेट, धर्म-संस्था और राज्य संस्था, दो अलग-अलग चीजें नहीं हो सकतीं। ये जितने पुराने पुराणमतवादी लोग हैं, सबके लिए यह लागू होता है। इस बात से आपके चित्त की कटुता कम हो जायगी। आप यह समझेंगे कि उनकी मनोवृत्ति ऐसी क्यों बनी ? वे समाज के किसी अंग को धर्म से अलग नहीं कर सकते। परन्तु दोष कहाँ है ?

दोष यह है कि उन्होंने धर्म को सम्प्रदाय बना दिया। धर्म व्यापक नहीं है। एक ही धर्म होता तो उनके इस कहने में सत्यांश था, तथ्यांश था। परन्तु जब धर्म अलग अलग अनेक सम्प्रदायों में परिणत हो गये हैं, तब ऐसी अवस्था में एक के लिए जो धर्म है, वह दूसरे के लिए अधर्म हो जाता है, एक के लिए जो सदाचार है, वह दूसरे के लिए दुराचार हो जाता है। एक के लिए जो सुसंस्कार है, वह दूसरे के लिए कुसंस्कार हो जाता है। इस प्रकार धर्म-संकीर्ण हो जाता है और संकीर्ण होने के कारण उग्र सम्प्रदायवादी बन जाता है। (समाप्त)

[शांति सैनिकों के बीच का भाषण, काशी; ११-१०-'६१]

...कृषि उद्योग की हालत विकट होती जा रही है।

जहाँ १ के १० दाने पैदा हों वह कृषि उद्योग हानिकर समझा जावे व कृषकों को, गरीबी वरदान में दे, परन्तु जिन उद्योगों में एक मुश्किल से 'एक' उत्पादन प्रक्रिया में रह सके, ऐसे उद्योग व उनके उद्योगपति अमीरी की ओर तीव्रता से बढ़ें... कैसी अजीबो-गरीब समस्या है ! यही ग्रामीण भारत की दरिद्रता की करुण व हास्यास्पद कथा है और यही लाखों शहरियों के हित में करोड़ों ग्रामीणों की बलि का नमूना है।......इसी स्वतन्त्र व्यापारवाद के अप्रत्यक्ष, परन्तु कानूनी कत्ले-आम में भारतीय कृषक का खुशहाल भावी प्राकृतिक जीवन मरणासन्न हो रहा है।

यों हम देखते हैं कि एक ओर हमारे देश में अमीर दिन दिन अमीर बनते जा रहे हैं और दूसरी ओर गरीब दिन दिन गरीब बनते जा रहे हैं।

हरिजन सेवक संघ के निर्णय

प्रेम और सेवा से अस्पृश्यता-निवारण

अखिल भारत हरिजन-सेवक-संघ के केन्द्रीय बोर्ड ने सीकर (राजस्थान) में अपनी सालाना बैठक में इस महत्त्वपूर्ण सवाल पर, हरएक पहलू को ध्यान में रख कर विस्तार से चर्चा की कि पिछले २८ वर्षों में *अस्पृश्यता-निवारण का काम किस प्रकार और किस हद तक हुआ, और जड़मूल से अस्पृश्यता नष्ट करने* के लिए मौजूदा परिस्थितियों में किन साधनों को लेकर कदम उठाना चाहिए।

इस प्रश्न पर भी विचार हुआ कि केन्द्रीय सरकार और राज्य-सरकारों द्वारा हरिजनों को ऊपर उठाने और समान स्तर पर लाने की दिशा में जो काम हो रहा है, उसमें संघ अपना क्या योग दे सकता है तथा स्वतंत्र रीति से भी वह उनके उत्थान के लिए कितना क्या काम कर सकता है। इन प्रश्नों पर जो लम्बी चर्चा हुई, उससे केन्द्रीय बोर्ड इन परिणामों पर पहुँचा :—

"अस्पृश्यता का जैसा भयंकर और व्यापक रूप कुछ वर्ष पहले जहाँ तहाँ देखने में आता था, उसमें फर्क पड़ा है। लेकिन यह मान लेना सही नहीं है कि अस्पृश्यता का प्रश्न अब रहा नहीं, उसे दूर करने के लिए कोई खास प्रयत्न करने की जरूरत नहीं है। अस्पृश्यता की जड़ें हिल जरूर गयी हैं, कमजोर पड़ गयी हैं, पर अभी वे उखड़ी नहीं हैं, जमीन को छोड़ नहीं रही हैं। अक्सर ऐसे प्रसंग देखने और सुनने में आते हैं, जो इस सच्चाई को सिद्ध करते हैं कि अस्पृश्यता एक-न-एक रूप में न सिर्फ ग्रामों में, बल्कि शहरों में भी मौजूद है।

शिक्षा-प्रसार से और विचार-प्रचार से चूँकि हरिजन बहुत कुछ जाग गये हैं, इसलिए अस्पृश्यता से पैदा हुआ अपमान उनको दिन-पर-दिन महसूस होने लगा है।

गांधीजी ने अस्पृश्यता को हिन्दू-धर्म पर लगा हुआ कलंक माना था। वे मानते थे कि अस्पृश्यता के साथ धर्म का, यानी सत्य और अहिंसा का मेल कभी बैठ नहीं सकता। इसलिए अस्पृश्यता-निवारण का आन्दोलन धर्म-शुद्धि की भावना से गांधीजी ने चलाया था। यह भावना, वह प्रेरणा और वह दृष्टि, ऐसा लगता है कि आज सामने से हटती जा रही है और इस आन्दोलन में जो तेज था वह मन्द पड़ गया है।

अनुभव में आया है कि सरकार की मदद से बहुत करके उसी के कार्यक्रमों को चलाया जा रहा है, और अपनी खुद की प्रेरणा और खुद का पुरुषार्थ पहले के जैसा नहीं दीख रहा है। ऐसी स्थिति किसी भी रचनात्मक संस्था और कार्य के हक में अच्छी नहीं है, इसलिए इस स्थिति को बदल देने और अस्पृश्यता निवारण-कार्य को प्राणवान और तेजस्वी बनाने की आवश्यकता से इन्कार नहीं किया जा सकता।

सरकार चूँकि अपने आपको कल्याणकारी (वेलफेयर) सरकार मानती है, (मगर गांधीजी के दिखाये रास्ते पर पूरी तरह चलने वाली नहीं), इसलिए कुछ खास मदों पर खर्च करने के लिए आर्थिक सहायता उससे सम्मानपूर्वक ली जा सकती है, परन्तु केवल उसी की सहायता पर सारा आधार रखना उचित और वांछनीय नहीं है।

गांधीजी ने अपनी आखिरी वसीयत में जो लिखा था, उसे ध्यान में रख कर मूल आधार तो अस्पृश्यता-निवारण का काम चलाने व बढ़ाने के लिए घर-घर से संग्रह किये हुए पैसे का माना जाना चाहिए। विचार-प्रचार और जन-सम्पर्क का सबसे अच्छा प्रभावकारी साधन यही माना जा सकता है।

चूँकि अस्पृश्यता एक अधर्ममूलक विचार है, एक बहुत बड़ा पाप है, इसलिए प्रायश्चित्त की धर्म-भावना से ही उसका समूल नाश किया जा सकता है। इसके लिए जरूरी है कि अपनी खुद की जीवन-शुद्धि और प्रेम और सेवा के द्वारा अस्पृश्यता मानने वाले विरोधियों के दिलों को जीता जाय।

कुछ खास और कठिन प्रसंगों में हरिजन अगर अस्पृश्यता (अपराध)-कानून का उपभोग करना चाहें, तो ऐसा वे कर सकते हैं, इतना ही नहीं, बल्कि उनको उचित सलाह और सहायता भी दी जा सकती है, यह ध्यान में रख कर कि आपस में कटुता न बढ़ने पाये।

संघ के कई सघन क्षेत्रों में अस्पृश्यता-निवारण का काम अच्छा चला है, इसलिए ऐसे क्षेत्र कुछ और भी बनाये जा सकते हैं, जहाँ अस्पृश्यता अधिक भयंकर रूप में देखने में आये, और जहाँ लगन वाले परिश्रमी कार्यकर्ता तथा इस काम में दिलचस्पी रखने वाले और अनुकूल साधन जुटाने वाले कुछ मित्र सुलभ हो सकें। ऐसे सघन क्षेत्रों की कसौटी यह मानी जाय कि अगर वहाँ का काम चलाने के लिए आगे चल कर आर्थिक सहायता न भी मिले, तब भी काम बन्द न हो, और वह क्षेत्र सिर्फ कार्यकर्ताओं पर निर्भर न रह कर काम को अपने ऊपर उठा ले।"

ऊपर के निष्कर्षों को ध्यान में रख कर केन्द्रीय मंडल ने आगे के कार्यक्रमों की इस प्रकार की रूप-रेखा बनायी :

"चाय की दुकानों, भोजनालयों, कुओं व दूसरे जलाशयों, नाई की दुकानों और मन्दिरों पर सामाजिक व धार्मिक रुकावटों को, जो हरिजनों के रास्ते में आती हैं, तेजी से दूर कराया जाय, ताकि वे सबके साथ समान रूप से सब स्थानों *का उचित उपयोग कर सकें।* इसके लिए विरोध करने वालों को दलीलें देकर प्रेमपूर्वक समझाया जाय, साथ ही हरिजनों में अपने जन्मजात अधिकारों का उपभोग करने के लिए साहस बढ़ाया जाय। जो सार्वजनिक स्थान हरिजनों के लिए खुल गये हों, उनमें बार-बार उनको ले जाया जाय।

संघ की प्रादेशिक शाखाओं के अध्यक्ष और मंत्री सघन क्षेत्रों में बार-बार जायें, और कार्यकर्ताओं को प्रेरणा दें और उनमें उत्साह भरें और अपने प्रभाव से वहाँ के लोगों में और सरकारी अधिकारियों में अस्पृश्यता निवारण कार्य के प्रति दिलचस्पी पैदा करें और उनका समय-समय पर सहयोग भी लें।

बड़े चन्दों के साथ-साथ छोटी छोटी सहायताओं को अधिक महत्त्व दिया जाय। निश्चय कर लिया जाय कि प्रादेशिक शाखाओं को साधारण जनता के साथ सम्पर्क करके अमुक धनराशि साल में अवश्य इकट्ठी करनी है।

'भंगी कष्ट-मुक्ति' और उससे भी अधिक "भंगी-मुक्ति" की समस्या हल करने पर जोर दिया जाय। इसके लिए संघ के कार्यकर्ता तथा अधिकारी बार-बार सफाई-कर्मचारियों, म्युनिसिपल अधिकारियों और आम जनता के साथ अपना सम्पर्क जोड़ें।

हरिजनों की शिकायतें सुनी जायें, उनकी जाँच करायी जाय और उनकी तकलीफें और ज्यादतियों को दूर करने की, जितनी भी हो सके, कोशिश की जाय।

ग्रामों में भूमिहीन हरिजनों को खेती के लिए जमीन सरकार से व भूदान के कार्यकर्त्ताओं से दिलवाने का प्रयत्न किया जाय। नयी जमीन तोड़ने के साधन, और समय पर बीज और तकावी दिलाने का भी प्रयत्न किया जाय।

हरिजनों को मकान बनवाने के लिए भी सरकार से जमीन दिलायी जाय और वह जमीन, जहाँ तक हो, आम आबादी के नजदीक हो, जिससे कि छुआछूत मिट सके। इसके लिए गृह-निर्माण-सहकारी समितियाँ भी संगठित करायी जायें।

ऊपर के कार्यक्रमों में से जितना भी काम प्राप्त साधनों और शक्ति के अनुसार *हाथ में लिया जा सके, उतना अवश्य लिया* जाय और उसकी रिपोर्ट नियमित रूप से, सही आँकड़ों और तथ्यों के साथ संघ के प्रधान कार्यालय को भेजी जाय व समाचार-पत्रों में प्रकाशित करायी जाय।

संघ का केन्द्रीय बोर्ड २७ और २८ सितम्बर, '६१ को लम्बी चर्चाओं के बाद ऊपर के परिणामों पर पहुँचा और उनके आधार पर आगे का यह कार्यक्रम बनाया गया।

आशा की जाती है कि संघ की तमाम प्रादेशिक शाखाएँ और कार्यकर्ता समाज-संशोधन के इस महान् कार्य पर पूरा ध्यान देंगे, इसके लिए संकल्प लेंगे और इस प्रकार का प्रयत्न करेंगे, जिससे जल्द-से-जल्द अस्पृश्यता के लज्जाजनक कलंक से हमारा समाज, हमारा धर्म और हमारा राष्ट्र मुक्त हो जाय।

—वियोगी हरि, उपाध्यक्ष —रामेश्वरी नेहरू, अध्यक्षा

इन्सान की सेवा ही परमात्मा की पूजा है !

पंजाब में आनन्दपुर साहिब क्षेत्र पर मुगलों ने आक्रमण किया। दोनों पक्ष के सैनिक जख्मी होते थे और मरते थे। श्री घनैया भाई गुरु साहिब के अनन्य भक्त थे। वे शत्रु तथा मित्र के भेद से ऊपर उठ कर मरहमपट्टी किया करते थे। लोगों ने दशमी पादशाही श्री गोविन्द सिंहजी महाराज से शिकायत की कि यह घनैया भाई हमसे द्रोह करता है। जिनको हम बड़ी मुश्किल से मारते हैं, यह उन जख्मी सिपाहियों की मरहमपट्टी करके उन्हें स्वस्थ कर देता है और अगले दिन वे सिपाही हमारे साथ लड़ने के लिए आ जाते हैं।

घनैया भाई को बुलाया गया और जवाब माँगा गया। उसने नम्रता से कहा—"गुरु महाराज, जब मैं सेवा करता हूँ तो मुझे यह नजर नहीं आता कि कौन शत्रु है, कौन मित्र है। कौन हिन्दू है, सिक्ख है या मुसलमान है। मुझे तो केवल सबमें आपका रूप ही नजर आता है और मैं सबको आपका रूप समझ कर भक्ति-भाव से सेवा करता हूँ।"

यह सुन कर गुरु महाराज गद्‌गद हो गये और उन्होंने घनैया भाई को अपनी छाती से लगा लिया। उसकी आत्मा में परमात्मा का प्रवेश है। इन्सान की सेवा ही परमात्मा की पूजा है।

—श्रीमती महेन्द्र कौर

विनोबा-पदयात्री दल से

• कुसुम देशपांडे

दूर नहीं, नजदीक ही नीले नागा-पहाड़ों की कतार खड़ी है, उन पहाड़ों के और हमारे बीच कहीं चावल के खेत फैले हुए हैं, तो कहीं हरे भरे चाय बागान। इस गाँव का नाम बरहाट है। कुदरत की गोद में बसा हुआ छोटा-सा गाँव है। दोपहर में खिड़की से बाहर दीख रहा था—कुछ अजीब तरह के लोग बोझा ढोते हुए आ रहे थे। अमलप्रभा बहन ने बताया, "देखो! ये ही हैं नागा-लोग। आज यहाँ बाजार है, इसलिए आ रहे हैं। क्या जाओगी बाजार में उन्हें देखने?"

पता चला कि इस गाँव से दस-पन्द्रह मील दूरी पर ही नागा-भूमि की सीमा है। शिवसागर जिले के इन छोटे से गाँवों में भी याने मैदान में भी कुछ नागा लोग रहते हैं। अपने नाम के जैसे ही हैं वे, नंगे बदन! एक लंगोटी के सिवाय और कुछ भी नहीं है बदन पर। कमर में बेंत के पट्टे हैं। कहते हैं, पहाड़ चढ़ने के लिए उसका सहारा लेते हैं। उसे काला रंग दिया हुआ था। कान में बड़े-बड़े छेद हैं—किसी ने उस छेद में जंगल का फूल रखा है, किसीने सेफ्टीपीन ही रखी है। किसी के सिर पर काली टोपी है, तो किसी के सिर पर कुछ नहीं। एक दो बहनें थीं, उनके शरीर पर भी नाममात्र का ही कपड़ा था। साढ़े ग्यारह बजे विनोबा बाजार में गये।

कई नागा लोग अपनी छोटी छोटी दुकानें लगाये बैठे थे। ये दुकान याने क्या! एक मैले कपड़े पर थोड़ी हरी और लाल मिर्चें, थोड़े अरबी के कंद, जिसे यहाँ की भाषा में 'कोचू' कहते हैं, बस! विनोबाजी एक दुकान के सामने खड़े हो गये और पूछा—"सारी दुकान यदि मैं खरीदना चाहूँ तो कितने पैसे देने होंगे?" वह भाई पहले तो जरा संकोचवश बोले नहीं। दूसरे क्षण उसने देखा तो विनोबाजी के चेहरे पर स्नेह और सहानुभूति थी, तब फिर उसने कहा, "१ रु० ७ आना।" अब उतना माल तो बिकेगा नहीं। उन १०-१२ आनों के लिए यह आठ मील से आया था और उतनी ही दूर वापस जाने वाला था। ऐसे बाजार के बीच एक सजी हुई मोटर से फिल्मी गीत की रेकार्ड सुनाई देती थी। इर्दगिर्द १०-१५ युवक पान खाते हुए खड़े थे, हँसी मजाक हो रही थी। बीच-बीच में मोटर में बैठा हुआ भाई चिल्लाता था—"यही सिगरेट पीओ—यह सर्वोत्तम है!"

इसका दुःख से जिक्र करते हुए विनोबा ने शाम को कहा—"हमने इन भाइयों की कितनी उपेक्षा की है! इन गाँवों में हम नहीं गये हैं। इनकी सेवा हमने नहीं की है। यह है हमारे देश की हालत! मैं राह देख रहा हूँ उस दिन की कि जब ऐसे छोटे छोटे गाँवों के हर बाजार में सर्वोदय-सेवक घूम रहे हैं, साहित्य बेच रहे हैं; कहीं ग्रामोद्योग की अच्छी-अच्छी चीजें बेच रहे हैं। बाजार में ही सर्वोत्तम, स्वच्छ स्थान बना कर वहाँ सेवक समझा रहे हैं कि नशाखोरी छोड़ो! अच्छी रसोई कैसे बनाना यह ज्ञान भी वे दे रहे हैं। मैंने देखा है कि ऐसे छोटे बाजारों में मिशनरी लोग बाइबिल बेचते हैं। जहाँ जमाव होता है, वहाँ वे पहुँच जाते हैं। खुशी होती है यह देख कर! पर हमारे पास पहले से ही अच्छी अच्छी किताबें हैं, वह हम कहाँ पहुँचाते हैं! सर्वोदय सेवकों को सब दूर फैलना चाहिये।"

आसपास चाय के बागान बहुत दीखते हैं। वहाँ हजारों मजदूर अपना जीवन बसर रहे हैं। उनमें हमारा विचार अभी तक हम नहीं पहुँचा सके हैं, क्योंकि हमारे कार्यकर्ता उनमें पहुँचे नहीं या पहुँच नहीं सके हैं। एक दिन सुबह बहुत सारे मजदूर अपनी-अपनी टोकनियाँ उठा कर बागान की तरफ जा रहे थे। उसी रास्ते से विनोबाजी गुजर रहे थे। मजदूरों में से कुछ प्रणाम करते थे और कुछ ऐसे ही आश्चर्य से या कुतूहल से देखते थे और अपनी राह पकड़ते थे। उनमें से एक के पास जाकर मैंने सहज पूछा—"जानते हो, हरी टोपी पहन कर कौन जा रहा है?" उनमें से एक ने कहा, "हाँ! महात्मा गांधी जा रहे हैं!"

दो दिन पहले नागाओं की बस्ती वाले गाँव में पड़ाव था। घना जंगल और पहाड़ की तराई में दोनों की, 'पाम' पत्तों की दो छोटी झोंपड़ियों में रहना हुआ था। वहाँ कोयले की एक खदान है। इसलिये बाहर के प्रांत के मजदूर भी उस गाँव में हैं। हमारे निवास के सामने पगडंडी थी और उसके सामने ही जंगल था। खदान के मैनेजर बता रहे थे कि यहाँ से ३२ मील पर ब्रह्मदेश की सीमा है।

उस दिन खदान के मजदूरों के सामने बोलते हुए विनोबाजी ने कहा, "आप खदान में जो काम करते हैं, वह बहुत कठिन काम है। लेकिन आपके काम से देश मजबूत बनता है। आपकी सेवा इतनी मूल्यवान है कि कभी हम उसे भूल नहीं सकते हैं। आप देश की सेवा करते हैं और देश के आप नागरिक हैं। आपको सब हक हासिल हैं। इस देश में किसका राज होगा, यह आप तय कर सकते हैं। इसलिये आप यह मत समझिये कि आप नीच हैं। हमने देहातों के खेत-मजदूरों का आंदोलन उठाया है। वही देश के मजदूर-आंदोलन की जड़ है। हम जड़ पर प्रहार कर रहे हैं। इसलिए आपकी तरफ बाबा का ध्यान नहीं है, ऐसा मत समझें। हम आपकी प्रतिष्ठा बढ़ाना चाहते हैं। आप अपनी कीमत, प्रतिष्ठा नहीं जानते हैं। भूदान-ग्रामदान आंदोलन से मजदूरों की प्रतिष्ठा बढ़ेगी।"

उसी गाँव में चंद नागा भाई बाबा से मिलने आये थे। पत्तों की छोटी-सी कुटिया में जैसे-तैसे वे लोग बाबा की खटिया के पास बैठे। इधर मैदान में रहते हुए इन नागाओं में वैष्णव धर्म का—जिसे असम में "एक-शरणीया" कहते हैं—प्रचार कुछ गुसाईं लोगों ने किया था। एक जमाने में असम के महापुरुष शंकरदेव तथा माधवदेव ने भी इन लोगों की सेवा की थी। उनके ग्रंथों में इन लोगों का जिक्र भी आया है।

इतना होते हुए भी आज इन नागा भाइयों की हालत सुधरी हुई नहीं दीखती है। बाबा ठीक कहते हैं—उनकी उपेक्षा ही हमने की है, सेवा नहीं। उन लोगों से बाबा ने स्नेह से बातें की। उन बातों से पता चला कि उनके पास जमीन बहुत कम है। किसी के पास एक एकड़, तो किसी के पास आधा। उसमें धान बहुत कम पैदा होता है। ज्यादातर कंदमूल ही, जिसे यहाँ असम में 'कोचू' कहते हैं, पैदा करते हैं। बाँस की टोकनी वगैरा बनाने का काम उनमें से कुछ करते हैं। नजदीक के याने आठ मील के गाँव में जाकर वे बेचते हैं। उसी पर उनका गुजारा होता है।

> बाबा ने उन्हें समझाया कि पर-स्त्री से संबंध न रखना, शराब न पीना और मांसाहार न खाना, ये तीन बातें शरणीया धर्म में बतायी गयी हैं।

दोपहर में तीन बजे प्रार्थना सभा में गाँव की बहनें आयी थीं। बहनों का लिबास 'असमिया' ही था। 'चादर और मेखला' उसे कहा जाता है। बताया गया कि इन लोगों में इतना यह सुधार हुआ है। बाबा ने छोटे से भाषण में कहा, "कश्मीर भी हिंदुस्तान का एक सिरा है। पर वहाँ मुझे यह भास नहीं हुआ कि मैं एक सिरे पर आया हूँ। उसका कारण यह हो सकता है कि मेरी जबान वहाँ के लोग सीधी समझते थे। यह भी हो सकता है कि वहाँ के पहाड़ हम लाँघ सके, पहाड़ों ने हमें रोका नहीं। तीसरा यह भी हो सकता है कि दिल्ली वहाँ से नजदीक थी। लेकिन केरल में भी मुझे यह महसूस नहीं हुआ कि हम एक सिरे पर आ पहुँचे हैं। वहाँ तो सामने एक प्रचंड समुद्र था। पर इन दिनों समुद्र तोड़ता नहीं है। परदेश के साथ संबंध, आना-जाना होता ही है। यहाँ हम आते हैं तो भास होता है कि हम भारत के एक सिरे पर आ पहुँचे हैं। इसलिये यहाँ एक और ही दर्शन हुआ। आज यहाँ के लोगों से बात करते हुए ध्यान में आया कि ये लोग पुनर्जन्म नहीं मानते हैं। उनको उसका भान ही नहीं है। सारे भारत में यह नहीं देखा था। अलग-अलग धर्म के अलग-अलग विश्वास होते हैं। मुसलमान धर्म में यह विश्वास है कि पुनर्जन्म नहीं है, पर बौद्ध, जैन, ईसाई और पारसियों ने भी यह नहीं माना है कि मनुष्य मरने के बाद सब खत्म होता है। अब यहाँ के लोग ईश्वर का नाम तो लेते हैं। मैंने पूछा कि नाम क्यों लेते हो, तो बोले कि जीवन सुखी हो इसलिये, याने ईश्वर एक एक 'डी सी' की हैसियत में आ गया! हमें सुख-सहूलियत मिले, इसलिए उसके साथ परिचय रखें। इस तरह अपने काम मात्र के लिए ईश्वर का नाम लेना। इसमें इन लोगों का दोष नहीं है। यहाँ का सारा कारोबार जिनके हाथों में है, उनका दोष है। यहाँ का व्यापार, राज्य-कारोबार, तालीम इन लोगों के हाथ में नहीं है। सद्विचार का प्रचार सिर्फ बोलने से नहीं होता है, सेवा से होता है।"

* * *

सिलोन में पैदा हुई, लेकिन अब आस्ट्रेलिया की नागरिक बनी 'रोजमेरी' नाम की २४ वर्षीया एक इंग्लिश नवयुवती तीन सप्ताह यात्रा में रह कर वापस लौटी है। उसने बताया कि तीन साल से वह विनोबा और सर्वोदय के बारे में सुनती रही। भारत में आने की अपनी तीव्र इच्छा पूरी करने के लिए उसने अपनी कमाई का थोड़ा-थोड़ा पैसा दो ढाई साल इकट्ठा किया और अब वह चार महीने से भारत के भिन्न भिन्न सर्वोदय-केन्द्रों में रह कर यात्रा में पहुँची थी। सुबह दो बजे उठ कर तीन बजे यात्रा के लिए निकलना और वह भी बिना चाय के और बिना कुछ खाये! रोजमेरी को आदत तो नहीं थी। पहले ही दिन उसको बारह मील का लंबा फासला तय करना पड़ा, तब आठ मील के बाद ही वह थक गयी। कहने लगी—"मुझे बहुत भूख लगी है। चाय पीने का मन होता है।" बाबा आगे निकल गये थे, साथी भी। धीरे धीरे पीछे से उसके साथ मैं चल रही थी। इतने में सुंदरपुर के चाय के बागान दीखने लगे। वह चाय के पौधों के पास गयी और दो चार कोमल पत्ते तोड़ कर खाने लगी। फिर कहने लगी, "अब जरा ताजगी मालूम होती है!" मुझे हँसी आयी। हम आगे चलीं। तो उसने कहा—"सुनो, मुझे याद आता है ईसा के बारे में मैंने कहानियाँ पढ़ी हैं। उसमें एक कहानी ऐसी है कि अपने काफिले के साथ ईसा खेतों से गुजरते थे तो भूख लगने पर उनके साथी इसी तरह अनाज के खेतों की फसल में से कुछ खाते थे।"

पड़ाव पर पहुँचने के चिह्न दीखने लगे। दो फर्लांग दूरी पर स्वागत के लिए बाँस तथा केले के पत्तों से और जंगली फूलों से सजाया द्वार दीखता था, ढोल बज रहे थे। मैंने उससे कहा, "चलो, दौड़ो! स्वागत देखोगी तुम!" उसका हाथ पकड़ कर मैं दौड़ने लगी। द्वार पर देखा बहनों ने बाबा की मंगल आरती उतारी थी, फूलों

की माला दी और अक्षत चढ़ाया। चावल के दाने जो रास्ते पर फैले थे, उन्हें देख कर रोजमेरी के मन में एक सवाल पैदा हुआ। बाद में बाबा से पूछा, "बाबा क्या यह चावल का 'वेस्ट' नहीं है?"

बाबा ने हँसते हुए कहा, "यह तो हमारे देश की भावना है। लोग चाहते हैं कि बाबा के स्वागत में पक्षी भी आनंद लूटें! उनके लिये यह 'फिस्ट' (भोजन) हो जाती है!" यह स्पष्टीकरण सुन कर रोज खुश हो गयी।

* * *

बरहाट गाँव में विनोबाजी का दस दिन निवास रहा। रोज सुबह और शाम आस-पास के गाँवों में बाबा जाते थे और वहाँ सभा होती थी। अलावा असम के अन्य भाई-बहन मिलकर २२ सेवक भी इर्दगिर्द घूमते रहे। उन सबके काम के परिणाम-स्वरूप चालीस गाँवों में भूदान-ग्रामदान का विचार पहुँचा।

उनमें से पाँच गाँवों ने ग्रामदान दिया। ३०० सर्वोदय-पात्रों की स्थापना हुई। २६ सर्वोदय-मित्र बने।

इन्हीं दिनों महाराष्ट्र सर्वोदय-मंडल के मंत्री श्री एकनाथ भगत बम्बई शहर के संयोजक श्री राम देशपांडे, रत्नागिरी जिले में काम करने वाले श्री रमाकान्त पाटील, गुजरात सर्वोदय-मंडल के अध्यक्ष डा जोशी और बडौदा शहर के काम संयोजक श्री जगदीश लाखिया; ये पाँच भाई विनोबाजी से मिलने आये थे। वे एक सप्ताह साथ रहे। उनके लिए विनोबाजी का एक ही गाँव में रहना लाभदायी हुआ। उन पाँचों ने मिल कर विनोबाजी के *सामने एक 'प्रश्न पत्रिका'* रखी और फिर चार दिन विनोबाजी ने उन प्रश्नों पर उनके सामने चर्चा की। 'प्रश्नपत्रिका' के कुछ सवाल नगर में काम के बारे में थे और कुछ कार्यकर्ताओं के बारे में, कुछ आध्यात्मिक और सर्वसामान्य थे।

उस चर्चा में एक दिन विनोबाजी ने कहा, "आपको भविष्य का समाज तैयार करना है, इसलिए आपको तालीम के बारे में सोचना चाहिये। तालीम ऐसी हवा में तो नहीं होती है। उसके लिए 'प्रोजेक्ट' चाहिए। हमारी राय में भूदान और ग्रामदान तो आपके लिए 'प्रोजेक्ट' ही है।

दूसरी बात होगी, समाज के पुराने मूल्यों को बदलना, नये मूल्यों का प्रचार करना।

तीसरी बात समाज में दिलों को जोड़ने का काम भी आपको करना होगा। 'नेशनल इंटीग्रेशन', का यह काम दूसरे लोग भी करेंगे। उसमें सरकार, अन्य समाज सेवक भी आयेंगे। लेकिन शांति सेना का काम आप ही करेंगे। यह काम दूसरे नहीं कर सकेंगे।

कार्यकर्ताओं को शिक्षण देने का काम आप तीन तरह से कर सकते हैं: (१) चलते फिरते और काम करते हुए कर सकते हैं, (२) शिविरों में कर सकते हैं और (३) ब्रह्मविद्या के आधार से कर सकते हैं।"

"ब्रह्मविद्या याने क्या?"—जगदीश-भाई ने पूछा।

बाबा ने कहा, "साधक लोग साधना का बहुत ज्यादा बोझ चित्त पर क्यों उठाते हैं, समझ में नहीं आता है। सब साधनाओं का सार यही है कि चित्त प्रसन्न, निर्मल हो। *यही कसौटी है। निर्मल चित्त का लक्षण* यही है कि सर्वत्र हरिरूप देखें। दोष देह के हैं, गुण आत्मा के, यह भान हो। झोंपड़ी जर्जर है, इसलिए मनुष्य जर्जर है ऐसा नहीं कहेंगे। गुण-ग्रहणता होनी चाहिए। सामने इतने लोग बैठे हैं, उनमें ईश्वर का अंश है या नहीं? लोहचुम्बक के समान ये आपको खींचेंगे, अगर आप में थोड़ा लोहा हो।"

त्रिपुरा के गांधी-स्मारक निधि के एक भाई बीच में यात्रा में आकर गये। उन्होंने अत्याग्रहपूर्वक बाबा से विनती की कि त्रिपुरा में बाबा आयें। वे कहते थे कि *'त्रिपुरा' पाड़ों से वर्जित देश कहलाता* है। पर फिलहाल असम की वादी (वैली) छोड़ कर वहाँ जाने का बाबा का इरादा नहीं दीखता है। बाबा ने विनोद में कहा, "तुम्हारे नेता आते हैं तो हवाई जहाज में बैठ कर आते हैं, दो दिन या चन्द घंटे देते हैं। बाबा को तो ४०० मील पैदल जाना होगा और उतना ही वापस आना *होगा! खैर, यदि कोई 'टेंडर' आप देते* हैं—१०० ग्रामदान करेंगे ऐसा कहने की हिम्मत करेंगे, तो हम सोच सकते हैं। फिलहाल आपका निमन्त्रण हम अपनी फाइल में रखते हैं!"

राजस्थान नवम् सर्वोदय शिविर सम्मेलन

इस बार राजस्थान समग्र सेवा संघ का वार्षिक सर्वोदय-शिविर संमेलन टोंक नगर में १७ नवम्बर से १९ नवम्बर '६१ तक आयोजित किया गया। शिविर का कुलपतित्व श्री सिद्धराज ढड्ढा तथा सम्मेलन की अध्यक्षता श्री नवकृष्ण चौधरी, अध्यक्ष, अ० भा० सर्व सेवा संघ ने की। शिविर के प्रथम दो दिनों में पू[र्व] निश्चित निम्न विषयों पर सामूहिक रूप से तथा टोलियों में गहराई से चर्चा की गयी।

प्रथम बैठक में श्री जवाहिरलालजी जैन ने ग्राम स्वराज्य के संदर्भ में पंचायती-राज के स्वरूप विषय का प्रवेश किया तथा श्री केसरपुरीजी गोस्वामी ने सर्वोदय-आन्दोलन के भावी कार्यक्रम का विषय-प्रवेश किया। इन दोनों विषयों पर श्री पूर्णचन्द्रजी जैन, श्री बद्रीप्रसादजी स्वामी, श्री मनोहरसिंहजी मेहता ने प्रकाश डाला। विशेष उल्लेखनीय है कि शिविर की प्रथम सभा में राजस्थान विधान-सभा के अध्यक्ष श्री रामनिवासजी मिर्धा ने भाग लिया और अपने विचारों से शिविरार्थियों को लाभान्वित किया।

शिविर की दूसरी बैठक में उपस्थित सभी कार्यकर्ताओं ने पाँच टोलियों में विभक्त होकर उक्त दोनों विषयों पर गहराई से चर्चा की। इन टोलियों का भार इन साथियों ने उठाया था: (१) श्री पूर्णचन्द्रजी जैन (२) श्री रामसहायजी पुरोहित (३) श्री छीतरमलजी गोयल (४) श्री महेशचन्द्रजी व्यास (५) श्री केसरपुरीजी गोस्वामी (६) श्री मोहनलालजी शर्मा (७) श्री जवाहिरलालजी जैन (८) डा० चन्द्रकला बहिन (९) श्री राधाकृष्णजी बजाज (१०) श्री बद्रीधरजी नैण्णर। इसमें करीब-करीब सभी साथियों ने भाग लिया। ये चर्चाएं सबके लिए उपयोगी और उत्साहवर्धक रहीं।

दूसरे दिन ता० १८ को प्रातः बैठक में टोली-चर्चाओं का सार इन टोलियों के संयोजकों ने प्रस्तुत किया। इसके बाद *चर्चाओं के सार के सम्बन्ध में कई लोगों* ने अपने विचार प्रकट करते हुए कुछ सुझाव दिये। १८ ता० की दोपहर को ३ बजे से श्री नवकृष्ण बाबू की अध्यक्षता में नवम् सर्वोदय-सम्मेलन प्रारम्भ हुआ। *श्री जवाहिरलालजी जैन के स्वागत भाषण* के बाद संघ के मन्त्री ने प्रान्त के पिछले १० वर्षों के सर्वोदय आन्दोलन की प्रगति की जानकारी दी।

उसके बाद श्री नवकृष्ण चौधरी का अध्यक्षीय भाषण हुआ, जिसमें उन्होंने कार्यकर्ताओं को अपने स्वयं के जीवन की ओर ध्यान देने और सहयोगी जीवन का प्रयोग करने पर अत्यधिक बल दिया। अध्यक्षीय भाषण के बाद सम्मेलन की प्रथम सभा सर्वोदय भजन द्वारा समाप्त की गयी। रात्रि को ८ बजे इस बार संघ का अधिवेशन भी आयोजित किया गया। संघ के अध्यक्ष श्री जवाहिरलालजी जैन की अध्यक्षता में अधिवेशन *की कार्यवाही संघ के मंत्री श्री बद्रीप्रसादजी* स्वामी ने प्रारम्भ की। सर्वप्रथम उन्होंने साल भर के कार्य व हिसाब का प्रकाशित लेखा-जोखा प्रस्तुत किया। इसके बाद भावी कार्यक्रम और सम्मेलन में प्रस्तुत किये जाने वाले निवेदन पर विचार किया गया।

ता० १९ को प्रातः संघ-अधिवेशन पुनः प्रारम्भ हुआ, जिसमें निवेदन पर कई लोगों ने सुझाव प्रस्तुत किये और तदनुसार उसमें संशोधन किये गये। दोपहर को १ बजे टोंक जिले के सरपंचों का सम्मेलन श्री गोकुलभाई भट्ट की अध्यक्षता में आयोजित किया गया, जिसमें पंचायत-मंत्री श्री हरिभाऊजी उपाध्याय व राजस्व-मंत्री श्री दामोदरलालजी व्यास भी शामिल हुए। *पंचायत के विभिन्न पहलुओं* पर जिला प्रमुख, राजस्व मंत्री तथा कई सरपंचों ने प्रकाश डाला तथा अध्यक्ष का महत्त्वपूर्ण भाषण हुआ, जिसमें उन्[हों]ने ग्राम-सभाओं के *संगठन तथा ग्राम* [के] सभी निवासियों को सम्मानपूर्वक दे[कर] यतों द्वारा रोटी, रोजी दिये जाने प[र] बल दिया।

इस पचायत राज-सम्मेलन के तुर[न्त] बाद सर्वोदय-सम्मेलन का समाप्ति-समारो[ह] हुआ, जिसमें प्रान्त के मुख्य मंत्री श्री मोहनलालजी सुखाड़िया भी सम्मिलि[त] हुए। सर्वप्रथम निवेदन के सम्बन्ध [में] श्री पूर्णचन्द्रजी जैन, आगामी चुनाव [की] आचार-मर्यादा के सम्बन्ध में श्री गोकु[ल]भाई भट्ट, नशा-बन्दी के सम्बन्ध में श्री मनोहरसिंहजी मेहता के तथा शांति सेना, शांति प्रतिज्ञा के सम्बन्ध में श्री बद्री प्रसाद स्वामी के भाषण हुए।

इनके बाद पंचायत मंत्री श्री हरिभाऊ उपाध्याय तथा मुख्य मंत्री श्री मोहनलालजी सुखाड़िया के शिविर-सम्मेलन में हुई चर्चाओं से सम्बन्धित महत्त्वपूर्ण भाषण हुए। दोनों ने ही इस बार के शिविर-सम्मेलन में हुई चर्चाओं के आधार पर निर्धारित कार्यक्रम को पंचायती राज की सफलता के लिए महत्त्वपूर्ण बताया।

अन्त में अध्यक्ष ने अपने सारगर्भित संक्षिप्त भाषण द्वारा सबको सर्वोदय विचार को व्यावहारिकता में परिणत करने के लिए *आग्रह करते हुए समारोह को* समाप्त किया। इस प्रकार इस बार शिविर सम्मेलन बड़े उत्साह के साथ तथा बड़े महत्त्वपूर्ण व सामयिक निर्णय लेकर सम्पन्न हुआ।

इस बार के शिविर में प्रान्त के करीब २०० रचनात्मक कार्यकर्ताओं ने भाग *लिया। सम्मेलन में रचनात्मक कार्य*कर्ताओं के अलावा टोंक जिले व नगर के लगभग हजार बारह सौ नागरिकों ने भाग लेकर लाभ उठाया।

इस बार सम्मेलन के अन्तिम दि[न] *१९ ता० को प्रातः प्रान्तीय शान्ति-सैनि[कों]* की एक रैली भी आयोजित की गयी, जि[समें] शांति और प्रेम के जयघोष करते हुए [तथा] प्रयाण-गीत गाते हुए नगर-भ्रमण कि[या], जिसका नगर-निवासियों पर अच्छा अ[सर] हुआ। इसके अलावा इस सम्मेलन की [एक] विशेषता यह रही कि टोंक नगर के म[स]जिदों द्वारा ईश्वर-भक्ति से पूर्ण क[व्वा]*लियों का कार्यक्रम स्वागत-समि[ति]* द्वारा आयोजित हुआ। कुल मिला क[र] शिविर-सम्मेलन आशातीत सफलता [के] साथ सम्पन्न हुआ।

राष्ट्रपति डा० राजेन्द्र प्रसाद को 'बीघा-कट्ठा अभियान' के दानपत्र समर्पित

बिहार और अन्य प्रदेशों के प्रमुख सर्वोदय-कार्यकर्ताओं और शांति सैनिकों ने नयी दिल्ली में एक समारोह में राष्ट्रपति डा० राजेन्द्र प्रसाद को उनके अठहत्तरवें जन्मदिवस के अवसर पर बिहार में २५ दिसम्बर '६० से अब तक प्राप्त कुल जमीन के दान-पत्र समर्पित करते हुए एक निवेदन में उनके स्वास्थ्य की शुभ कामना प्रकट की और उम्मीद की कि वे जब राष्ट्रपति-पद से निवृत्त होंगे, तब सर्वोदय-कार्यकर्ताओं को सक्रिय मार्गदर्शन देंगे।

बिहार में 'बीघा-कट्ठा अभियान' विनोबा की प्रेरणा से बिहार के २२ लाख एकड़ भूमि प्राप्त करने के संकल्प की पूर्ति के लिए एक नया कार्यक्रम है। विनोबा ने इस कार्यक्रम को आगे मई '६२ तक चलाने का सुझाव दिया है। और यह वह वक्त होगा, जब कि बिहार के प्रिय नेता राजेन्द्र बाबू राष्ट्रपति-पद से निवृत्त होकर बिहार में आकर रहेंगे।

इसी अवसर पर शांति-सैनिकों की एक रैली दिल्ली में हुई, जिसमें श्री जवाहरलाल नेहरू, श्री जयप्रकाश नारायण आदि के भाषण हुए। डा० राजेन्द्र प्रसाद ने सर्वोदय और शांति-सेना के कार्य के प्रति शुभकामना प्रकट करते हुए कहा कि अब जीवन का शेष काल मुख्यतया इसी कार्य में लगाने की कोशिश करूँगा।

आदमपुर दुआबा में खादी-ग्रामोद्योग का 'स्थापना-दिवस'

आदमपुर दुआबा, पंजाब में १७ नवम्बर को पंजाब खादी-ग्रामोद्योग का 'स्थापना-दिवस' मनाया गया। इस अवसर पर डा० गोपीचंद भार्गव ने सर्वोदय-लाइब्रेरी का उद्घाटन किया। जब विनोबाजी पंजाब यात्रा में आदमपुर आये थे, तब यहाँ के निवासियों ने इक्कीस सौ रुपया लाइब्रेरी के लिए इकट्ठा किया था। इस प्रसंग पर पंजाब के राज्यपाल श्री न. वि. गाडगिल ने 'गांधी भवन' का उद्घाटन किया और कहा कि संसार में दो तरह से काम चलते हैं—दंड से और प्रेम, स्वयंप्रेरणा से। खादी का काम प्रेम और स्वयंप्रेरणा का काम है। उन्होंने हार्दिक इच्छा प्रकट करते हुए कहा कि यह काम इतना बढ़ना चाहिए, जिससे समाज दंडशक्ति का प्रयोग करने की जरूरत न रहे।

जिला सर्वोदय मंडल, हिसार का कार्यविवरण

हिसार जिला सर्वोदय-मंडल के कार्यकर्ताओं ने अक्टूबर माह में ८८६ रु. ५० न. पै. की साहित्य-बिक्री की। ६४ सम्पत्तिदान-दाताओं से १७५ रु. और ६ सर्वोदय-मित्रों से ६३ रु. का संग्रह हुआ। मंडी, डबवाली, सिरसा और हाँसी के ३०० सर्वोदय-पात्रों से करीब सौ रुपये संगृहीत हुए। चार गाँवों में १२३ बीघा, १४ बिस्वा भूमि वितरित की गयी। २४ ग्रामों में पदयात्राएँ हुईं। सिरसा में कार्यकर्ताओं के प्रयत्नों से सिरसा जनरल मर्चेन्ट्स ने अशोभनीय तस्वीरों को न बेचने का तय किया। यहाँ पर नशाबंदी-समिति भी बनी है। हिसार में नशाबंदी के सम्बन्ध में प्रचार किया गया।

बिहार प्रान्तीय पदयात्रा-टोली का परिभ्रमण

भागलपुर जिले में बिहार प्रादेशिक अखण्ड सर्वोदय-पदयात्रा टोली द्वारा क्रमशः श्री मोतीलाल केजरीवाल, श्री ब्रजमोहन शर्मा एवं श्री देवानन्द मिश्र के नेतृत्व में २८५ मील की पदयात्रा पाँच थानों में हुई। भयंकर तूफान, वर्षा एवं प्रलयकारी बाढ़ के समय भी यात्रा अखण्ड रूप से चलती रही, बल्कि २ अक्टूबर को सबसे अधिक, चार सौ कट्ठे का दान-पत्र मिला। कहरा गाँव थाने के बाढ़पीड़ित किसान—जिनकी फसल बरबाद हुई है, घर गिर गये हैं—वे भी प्रेमपूर्वक उदारता से दान दे रहे हैं। उस थाने के पाँच पंचायतों में लगभग पन्द्रह सौ कट्ठे के दान-पत्र मिले हैं। इस अवधि में 'भूदान-यज्ञ' के ३५ ग्राहक बने तथा तीन हजार रुपये के दान-पत्र मिले हैं।

१ दिसम्बर को टोली का प्रवेश मुंगेर जिले के बरियार ग्राम में हुआ। मुंगेर की यात्रा समाप्त कर टोली दरभंगा जिले में प्रवेश करेगी। टोली के संयोजक के एक पत्र के उत्तर में विनोबाजी ने अखण्ड रूप से पदयात्रा करने का आदेश दिया है, जो सभी कार्यकर्ताओं के लिए उपयोगी होगा।

"श्री शर्माजी,

ता० २५-८-६१ का पत्र मिला। ब्रह्मचर्य के विषय में आपने पूछा। मेरा जवाब है कि अखण्ड पदयात्रा उस काम में आपको सतत मदद करेगी। नित्य नये स्थान में जाना, प्रेम का प्रचार करना, वहीं भी आसक्ति की गुंजाइश नहीं, नित्य आकाश का सेवन, इससे बढ़कर ब्रह्मचर्य के लिए और क्या साधन हो सकता है! "सियाराममय सब जग जानी"—घूमते रहो, उसकी थकान महसूस मत करो। 'गीता प्रवचन' तो पढ़ते ही होंगे। रामायण का भी पाठ करते होंगे। सीता, राम, लक्ष्मण के पीछे-पीछे हम जा रहे हैं, ऐसी भावना मन में किया करो।

—विनोबा का "जय जगत्"

मद्यनिषेध के निमित्त
श्री साधु सुब्रह्मण्यम् का उपवास

श्री वे कृष्णय्या अपने २८ नवंबर '६१ के पत्र में लिखते हैं :

"श्री साधु सुब्रह्मण्यम्जी ने विशाखापट्टणम जिले के कोठगीर गाँव में श्रीमाणिक प्रभु के मन्दिर में ता० २२ नवंबर '६१ को कार्तिक पूर्णिमा के दिन उपवास शुरू कर दिया है।

उसी दिन आपकी '६२ वीं वर्षगाँठ समारोह के साथ मनायी गयी। ६२ घरों पर लगातार आठ घण्टों तक यज्ञ हुआ।

ग्राम की शोधन-समिति के सरपंचों और अन्य सज्जनों की, जिनमें बहनें ज्यादा तादाद में थीं, एक सभा हुई। इस सभा में श्री साधु ने उपवास शुरू करने के पहले तेलंगाना में दुरंत मद्य-निषेध का कानून पास करने की जरूरत बतायी है।"

आसाम के शांति-सैनिकों से

शिवसागर और नार्थ लखीमपुर, इन दो विभागों में सघन क्षेत्र यानी सर्वोदय के लिए व्यापक क्षेत्र बना सकते हैं। इन दोनों विभागों में ग्रामदान भी हैं और शान्ति-सैनिक भी हैं। दूसरी जगह के शान्ति-सैनिकों को यहाँ बुला सकते हैं। वे न आ सकें तो न आयें। लेकिन आ सकते हैं, तो आ ही जायें।

—विनोबा

[नाजीरा, आसाम, २२-१०-'६१]

इस अंक में

साम्प्रदायिक एकता के निमित्त
श्री ओमप्रकाश गौड़ का उपवास

गत २५ नवम्बर को साम्प्रदायिक समस्या के सम्बन्ध में श्री ओमप्रकाश गौड़ (भूतपूर्व मंत्री, उत्तर प्रदेश प्रादेशिक सर्वोदय-मंडल) ने आत्म-शुद्धि उपवास शुरू किया। गौड़जी चंदौसी (जिला मुरादाबाद) में उपवास कर रहे हैं।

विदित हो कि गौड़जी कई सालों से मुरादाबाद जिले में सर्वोदय-कार्य कर रहे हैं। हाल में अलीगढ़, चंदौसी तथा पश्चिमी उत्तर प्रदेश के अन्य भागों में जो दंगे हुए उनसे उनको बहुत कष्ट हुआ और परिणामस्वरूप इस उपवास का निश्चय किया।

श्रीकृष्णदत्त भट्ट, अ० भा० सर्व सेवा संघ द्वारा भार्गव भूषण प्रेस, वाराणसी में मुद्रित और प्रकाशित। पता : राजघाट, वाराणसी-१, फोन नं० ४३९१
पिछले अंक की छपी प्रतियाँ ९५०० : इस अंक की छपी प्रतियाँ ९४२०
वार्षिक मूल्य ६) एक अंक : १३ नये पैसे

संपादक : सिद्धराज ढड्ढा

वाराणसी : शुक्रवार | १५ दिसम्बर '६१ | वर्ष ८ : अंक ११

अपराध : कारण और निवारण

• दादा धर्माधिकारी

सार्वजनिक कार्यकर्ता का जीवन ही ऐसा होता है कि उसकी जन्मपत्री मे क्या-क्या लिखा है, इसका उसे पता नही होता। सार्वजनिक जीवन मे सफाई से लेकर भागवत तक उसे सोचना और बोलना पडता है। बहुत-से विषयो मे ज्ञान के साथ-साथ उसका समान अज्ञान भी रहता है। मुझे भी अपराध-शास्त्र के सम्बन्ध में कोई 'टेक्निकल' ज्ञान नही है। वैसे विरासत के दावे करना चाहूं तो कर सकता हूं कि पिताजी जज थे, भाई और बेटे वकील हैं, धर्माधिकारी परिवार मे जन्म हुआ है, जिसकी परपरा धर्म कार्यों में व्यवस्था देना रही है। लेकिन धर्माधिकारी, शास्त्री और पडित ये सभी सतो और क्रातिकारियो के विरोध मे रहे हैं। ईसा, सुकरात, ज्ञानदेव, शकराचार्य आदि का मुख्य विरोध उस समय के धर्माधिकारी, शास्त्री और पडितो ने ही किया।

यूरोप में भी सुधार का विरोध उस समय के न्यायाधीशों ने किया। 'दि फंक्शन आफ जुडिशियरी इज टू इन्टरप्रेट दि लॉ एड नॉट टू क्रियेट दि लॉ।'—कानून की व्याख्या मात्र ही 'जुडिशियरी' का काम माना गया है, जब कि क्रांति में सदैव घटनाएँ पहले अघटित होती हैं, जिनका शास्त्रों में प्रमाण नहीं मिलता। चूँकि घटनाएँ अघटित होती हैं, इसलिए उनका कोई केस 'लॉ' भी नहीं होता, कोई नजीर नहीं होती। जो कभी हुआ ही नहीं वह 'लॉ और आर्डर' का विषय नहीं हो सकता। अंग्रेजों के समय में हम सभी देशद्रोही थे, उनके कानून के तहत गुनाहगार थे। लेकिन इस प्रकार गुनाहगार होने पर भी हमें गर्व था। अस्पृश्यता-निवारण कानून बनने से पहले हरिजनों का मन्दिर-प्रवेश एक गुनाह था, लेकिन मानवता की दृष्टि से वह कानून ही अपने में गलत था।

विनोबा की असफलता भी सफलता

कानूनी दृष्टि से पैरवी करने वाला बचाव पक्ष में हमेशा यही कहता है कि यह कानून इस पर लागू नहीं होता। लोकमान्य बाल गगाधर तिलक पर जब राजद्रोह का अभियोग अंग्रेजों ने चलाया तो वकीलों ने यही कहा कि लोकमान्य पर यह अभियोग लागू नहीं होता। लेकिन कालान्तर में गांधीजी व उनके अन्य साथियों के मुकदमे में दूसरी ही भूमिका रही। उन्होंने स्पष्ट कहा कि हमने कानून समझ-बूझ कर तोड़ा है। नमक-सत्याग्रह आदि सब इसी भावना का सकेत करते हैं। कानून तोड़ने वालों ने खुल कर कहा कि आपके कानून में जो भी सजा हो, वह हमको मिलनी चाहिए। आज न तो यह आत्म समर्पणकारियों की ही भूमिका है, न समाज की, और न सरकार ने ही इसे समझा है।

गांधीजी ने कहा था कि 'तुम यह समझते हो कि मैंने गुनाह किया है तो न्यायाधीश, तुम्हारा यह कर्तव्य है कि तुम मुझे सख्त से-सख्त सजा दो; अगर सजा नहीं देना चाहते तो मुझे छोड़ दो।' आज हमारी यह हालत नहीं है। हम त्रिशंकु की तरह बीच में लटके हैं। हमारी पुलिस कहती है कि विनोबा असफल हुआ, पर विनोबा का चिराग तो छोटा था, वह एक छोटी-सी टिमटिमाती हुई ज्योति लेकर चला था, कोई मशाल उसके पास नहीं थी। इसलिए यह नहीं सोचना चाहिए कि वह असफल हुआ। असफल तो तब होता, जब कि वह कोशिश करने की हिम्मत ही नहीं करता, तब दुःख होना चाहिए था। दुनिया में समय-समय पर ऐसे बेवकूफ आते हैं, जो मुश्किल काम करने की कोशिश करते हैं और असफल होते हैं। उनकी असफलता से ही प्रगति का कदम आगे बढ़ता है।

> *मनुष्यों का अन्त कर देने से समस्या का हल नहीं होता। मनुष्य का हल हो जाता है, समस्या ज्यों की त्यों बनी रहती है।*

नैतिक प्रेरणा

एक मित्र ने कहा कि वह फेल हो गया, तो उसका दूसरा साथी बोला कि वह तो कभी फेल ही नहीं हुआ। पर जब मित्र ने पूछा कि आपने कौनसी परीक्षा पास की है? तो उसके साथी का उत्तर था कि वह परीक्षा में कभी बैठा ही नहीं। ऐसी ही कुछ बात इस आत्म समर्पण के विषय में दिखती है। आर्थर कोस्लर ने भारत की प्रशंसा में पहले बहुत कुछ लिखा है, परन्तु हाल में उन्होंने अपनी पुस्तक, 'दि लोटस एण्ड दि रोबट' में भारत की तीखी आलोचना की है। इस पुस्तक में गांधी विनोबा पर एक अध्याय है, जिसमें उन्होंने लिखा है कि गांधी-विनोबा असफल हुए, लेकिन उन्होंने सिद्ध कर दिया कि करोड़ों लोग नैतिक भावना से प्रेरित हो सकते हैं, अनुप्राणित हो सकते हैं। लोगों के दिलों में नैतिक प्रेरणा की झाँकी दिख सकती है। सत्ता और सम्पत्ति की प्रेरणा के अलावा भी दूसरी कोई प्रेरणा हो सकती है।

कोई शिकायत नहीं

हमें शासन और पुलिस से कोई शिकायत नहीं। लेकिन हम यह कहना चाहते हैं कि समाज का नैतिक सञ्जीवन पुलिस से सम्बद्ध नहीं है। हमें जो शिकायत अपने से और आपसे है, जिन्होंने इस अपराध-समस्या को नैतिक और सामाजिक समस्या नहीं माना है। अभी तक इसे केवल सामान्य प्रशासन और सुप्रबन्ध—'लॉ एण्ड आर्डर'—की समस्या माना है। क्या शासन सामाजिक समस्याओं का हल कर सकता है? इसका उत्तर हम नहीं देंगे। जो साधारण अपराध होते हैं उनकी भूमिका अलग होती है, जो असाधारण होते हैं उनकी भूमिका कुछ अलग होती है।

भ्रष्टाचार हमारे देश में एक समस्या है। सिंधिया स्कूल के प्रिंसिपल ने हमसे पूछा कि विनोबा भ्रष्टाचार क्यों नहीं बन्द कर रहे हैं, तो मैंने कहा कि विनोबा के परदादा भी आयेंगे, तो भी भ्रष्टाचार खत्म नहीं होगा! इसका क्या कारण है? जब मैं आसाम गया था, तो विनोबा ने मुझसे कहा कि यह भ्रष्टाचार तो शिष्टाचार हो रहा है। जब सभी लोग उसे करने लगे हों, तो वह भ्रष्टाचार नहीं कहलाता, बल्कि शिष्टाचार हो जाता है। भ्रष्टाचार तब तक रहता है, जब तक वह एक ही आदमी करे, लेकिन जब उसे सभी करने लगते हैं तो वह शिष्टाचार ही होता है।

शरीर चंगा तो मन चंगा

चोर के लिए दुनिया में कोई आदर नहीं होता, पर डाकुओं की जीवनी पर उपन्यास लिखे जाते हैं, कहानियाँ लिखी जाती हैं, पुस्तकें लिखी जाती हैं। बीमारी के कीटाणु मनुष्य के दुश्मन नहीं होते, मनुष्य की मूर्खता, उद्दामता और उद्दण्डता ही उसके दुश्मन हैं। जितनी बीमारियाँ होंगी, उनके उतने उपचार भी होने चाहिए। मनुष्य की बेवकूफी ही उसकी दुश्मन है। जहाँ स्वच्छता है, वहाँ पवित्रता होगी। अगर शरीर चगा होगा, तो मन चगा जरूर होगा। अमेरिका आदि देशों में स्वच्छता चरम सीमा पर है, लेकिन डाक्टरों का कहना है कि वहाँ शरीर तो स्वस्थ हो गया, मगर मानसिक बीमारियाँ बढ़ रही हैं, इसलिए 'मेन्टल हास्पिटल' में ज्यादा लोग हैं। हमारे सामने बड़ी समस्या यह है कि स्वच्छता से सुख तो बढ़ रहा है, लेकिन उसके साथ तरुणों के अपराध भी बढ़ रहे हैं।

वीरता बनाम क्रूरता

मनोवृत्ति को लेकर आज सारी समस्याओं का विचार मनोवैज्ञानिक स्तर पर होने लगा है। अपराध समस्या का विचार भी मनोवैज्ञानिक स्तर पर होना चाहिए। अपराध प्रवृत्ति का उपचार मनोवैज्ञानिक ही हो सकता है, होना चाहिए, बल्कि आध्यात्मिक होना चाहिए।

ता० १९ अगस्त '६१ को चम्बल घाटी शांति-समिति, भिंड द्वारा सबकर, ग्वालियर में आयोजित "अपराध चिकित्सा" परिसंवाद का उद्घाटन-भाषण।

अब हम जरा इस पर सोचें कि क्यों हम इन लोगों को वीर पुरुष समझने लगते हैं, इन्हें वीर पुरुष क्यों मानते हैं ? ये बन्दूक लेकर आते हैं, निहत्यों को डराते हैं, किसी का घर जला देते हैं, किसी की सम्पत्ति लूट लेते हैं, जो सामने आता है उसे मार डालते हैं। कोई ऐसी वीरता तो इन सारे कामों में है नहीं। विचार कीजिये तो यह क्रूरता है। यह तो शायद आप नहीं कहेंगे कि क्रूरता और वीरता एक ही चीज होती है। अपराधियों को हमें यह बात समझानी है कि यह क्रूरता है, वीरता नहीं है। हमने पुलिस को और सरकार को अभी तक समझाने की कोशिश की है कि बदला लेने में बहादुरी कम है, चित्त की हीनता व क्रूरता अधिक है। जहाँ क्रूरता अधिक होती है, वहीं वीरता कम होती है।

अपराध की बुनियादें

कुछ समय पहले भिंड-मुरैना के क्षेत्र में भूदान के सिलसिले में जब मैं घूमता था तब बस में, रेलगाड़ियों में और रास्तों में जो लोग मिलते थे, हेडमास्टर और प्रिंसिपल से लेकर पंडित तक, वे सब डाकुओं के बहुत प्रशंसक थे। अब मुझे बतलाइये कि जिन्हें समाज में पहले से ही इतनी बड़ी प्रशंसा प्राप्त हो, जो वीर पुरुष समझे जाते हैं, उनके अपराध का निराकरण करने की शक्ति उस समाज में कैसे रह सकती है ? इस प्रकार के समाज में अपराध के निराकरण की शक्ति रह नहीं जाती। सरकार कुछ नहीं कर पायी, यह सही है, पुलिस और भी कुछ नहीं कर पायी यह उससे भी अधिक सही है, विनोबा नाकामयाब हुआ, यह उससे भी कहीं अधिक सही है। लेकिन इन सबकी बुनियादें कहाँ हैं ?

इनकी बुनियादें मेरे और आपके भीतर बैठी हैं। सजा से बचना और टैक्स से बचना, ये दो चीजें बड़ी चित्त की समझी जाती हैं ! केवल गुनहगार ही नहीं, साधारण नागरिक भी यह मानता है कि आप स्टेशन पर उतरे और चुंगी नाके के पास आये, चुंगी बाबू ने आपका सामान नहीं देखा तो निकल गये, यदि देखा तो और आपके पास कोई नया कपड़ा हुआ भी तो आपने कह दिया कि कुछ नहीं है, रोज के इस्तेमाल की चीजें हैं और उसने भी कह दिया कि आप ले जाइये। आप बड़े होशियार निकले ! हमारे एक मित्र ने कहा कि हमारे यहाँ सार्वजनिक संस्थाएँ हैं, जो दो-दो बहीखाते रखती हैं। जो टैक्स से बच सकता है वह होशियार समझा जाता है। जो सजा से बच सकता है, जो कैदी जेल से भाग सकता है वह कहीं अधिक अक्लमन्द समझा जाता है ! जिसने जेलर की अक्लमन्दी को मात कर दिया उस कैदी को सब लोग होशियार मानते हैं।

इसका मुख्य कारण यह है कि

हमने संगठित सामाजिक शक्ति को हमेशा अपना विरोधी ही माना है। उसको अपना मित्र नहीं माना, दुश्मन माना है।

पुलिस का सिपाही हमारा मित्र नहीं है, कौन चाहता है कि वह हमारे घर पर आये। किसी दिन पड़ोसी के घर पर देख लिया तो हम चौकन्ने हो जाते हैं। इसके यहाँ पुलिस का सिपाही क्यों आया होगा ! मेरे मित्र ने कहा कि

गुनाह भी एक बड़ी बीमारी है, लेकिन डाक्टर साहब जब पड़ोसी के घर में आते हैं तो मन में सहानुभूति होती है, पुलिस वाला आता है तो अपनी चीज सँभालने लगते हैं।

इन दोनों की भूमिका में कितना अन्तर आज पड़ गया है !

पुलिस के विषय में जितना आदर, अविश्वास मनता में बनेगा, उस समाज

[शेष पृष्ठ १० पर]

नयी तालीम और सर्व सेवा संघ

[सर्व सेवा संघ के सहमंत्री श्री राधाकृष्ण ने श्री धीरेन्द्र भाई को एक पत्र में पूछा कि सर्व सेवा संघ का नयी तालीम के प्रति क्या 'रोल' हो ? वह और श्री धीरेन्द्र भाई ने जो जवाब दिया है। वे दोनों पत्र हम नीचे प्रकाशित कर रहे हैं। —सं०]

प्रिय धीरेन्द्रदा,

पचमढ़ी नयी तालीम-सम्मेलन में जो चर्चाएँ हुईं और जो निष्कर्ष हुए उनको मैंने सुनाया है। पिछले दो साल से सर्व सेवा संघ की तरफ से नयी तालीम के क्षेत्र में काम आगे कैसे बढ़े, इसकी चर्चा बराबर होती आ रही है। जब से बलिया में आपने जनाधारित समग्र नयी तालीम का प्रयास प्रारम्भ किया है। इससे कुछ रास्ता निकल रहा है, ऐसा दीख पड़ता है। इस तरफ सौभाग्य से खादी-आन्दोलन भी नया मोड़ तक पहुँच गया है, जिसमें समग्र नयी तालीम के प्रयोग का अनुकूल वातावरण और क्षेत्र खुल जाता है। मैंने अपने मन में ऐसा ही मान लिया है कि यही सर्वोदय-प्रवृत्तियों में नयी तालीम का रंग चढ़ाना है।

अब सवाल बार-बार मन में उठता है और सभी लोग जब एकत्रित होते हैं तो चर्चा भी होती है कि आज जो संस्थाएँ नयी तालीम का काम करती हैं वह काम आगे कैसे बढ़े, उनकी समस्याएँ हल कैसे हों और स्वतंत्र संस्थागत नयी तालीम का काम उत्तरोत्तर विकसित कैसे हो ?

इसके साथ संबंधित सवाल यह भी है कि आज सरकार बुनियादी तालीम के नाम से जो व्यापक कार्यक्रम चलाती है, उसको दुरुस्त करने में क्या साधन और *कार्यक्रम हमारे पास हैं ? लाजिमी तौर पर तालीम के नाम पर सरकार शिक्षण* का प्रसार खूब तेजी से बढ़ा रही है। इसको सही रास्ते पर ले जाने के लिए कुछ हमको सोचना पड़ेगा। तालीमी संघ का यह एक पुराना कार्यक्षेत्र रहा, जो आज भी उतना ही महत्त्व रखता है।

इन दोनों बातों को लेकर कई साथी सोचने लगे हैं कि संगम के बाद यह सारा काम संकुचित क्यों हो रहा है ? श्री आर्यनायकम्‌जी ने पिछली प्रबंध समिति में यह कहा था कि संगम से ऐसा लगता है कि दोनों नदियाँ समुद्र में न जाकर कुएँ में गिर गयी हैं। यह कई लोगों की मन की भावना है। इस बारे में आप क्या सोच रहे हैं और प्रबन्ध समिति को क्या सलाह देते हैं ?

ग्रामभारती, खादीग्राम

२० ११-'६१

आपका

राधाकृष्ण

* * * *

प्रिय राधाकृष्ण,

तुम्हारा पत्र मिला। नयी तालीम से जो अपेक्षा निर्माण हुई है, वह स्वाभाविक है। लोकतंत्र का विकास संभव ही नहीं है, जब तक तालीम को पूर्ण मानव के विकास का आधार नहीं माना जायगा।

इस तरह का एहसास जैसे-जैसे बढ़ेगा, हमको उस माँग की पूर्ति का उपाय सोचना होगा। तुम लोग जब उसकी व्यूह-रचना के बारे में सोचते हो, प्रायः पुरानी परिस्थिति के सन्दर्भ में विचार करते हो। इसलिए सर्व सेवा संघ के संगठन को इसके लिए नाकाफी देखने लगते हो, लेकिन वस्तुतः ऐसी बात नहीं है। यह जरूर है कि सर्व सेवा संघ का जो देश में स्थान है, उसके सन्दर्भ में समस्या के समाधान का अभिक्रम उसी को लेना होगा। इसका मतलब यह नहीं है कि संघ का तंत्र ही उसका वाहन बने।

इसके लिए संघ के 'रोल' के बारे में सफाई होनी चाहिए। संघ एक ऐसी संस्था है, जो नित्य परिवर्तनशील परिस्थिति के संदर्भ में जो समस्याएँ उपस्थित होती हैं, उनका समाधान ढूँढ़े तथा जब तक संघ की मान्यता के अनुसार समाधान को समाज या राज्य मान्य नहीं करता है, तब तक उसका प्रयोग भी करे। जब और जिस हद तक समाज या राज्य उसे मान्य कर ले, तब उस हद तक कार्यक्रम का चालक समाज या राज्य ही होगा ऐसा मानना चाहिए।

खादी का उदाहरण ले लो। शुरू-शुरू में जब देश आजाद हुआ उस समय देश के राज्यकर्ता राष्ट्रीय विकास में उसका स्थान विशेष है, ऐसा नहीं मानते थे। उस समय चरखा-संघ ही सारा खादी का काम चलाता था। लेकिन जब राज्य ने यह स्वीकार कर लिया कि राष्ट्रीय विकास में चरखा आवश्यक है, तो चरखा-संघ के सलाह से उन्होंने 'खादी-बोर्ड' बनाया और उतना हिस्सा यानी खादी की उत्पत्ति और बिक्री खादी बोर्ड के ही मार्फत चलने लगा और चरखा-संघ तथा बाद में सर्व सेवा संघ बोर्ड को सलाह देता रहा। लेकिन चरखा ग्राम-स्वराज्य का माध्यम है, इस विचार को जब तक खादी-बोर्ड ने स्वीकार नहीं किया, तब तक ग्रामोद्योग संघ का काम सर्व सेवा संघ की ओर से चलाया गया। आज जब उस काम को भी 'कमीशन' ने मान्य कर लिया तो उसके भी संयोजन का काम 'कमीशन' ही कर रहा है। सर्व सेवा संघ का सहकार और मार्गदर्शन उनके लिए भरपूर है। सर्व सेवा संघ से संबंधित खादी-संस्थाओं का सीधा संबंध भी उन्हीं का है।

उसी तरह जब तक सरकार ने बुनियादी शिक्षा को पूरा पूरा मान्य नहीं किया था, तब तक हम लोग सीधे उसका प्रयोग करते रहे। प्रयोग के परिणाम से एक चित्र खड़ा हुआ। आज सरकार सामान्यतः उसे मान्य कर रही है, तो उसे चलाने का काम भी सरकार एक बोर्ड बना कर चलाये, यह इष्ट है। सर्व सेवा संघ का संबंध बुनियादी शिक्षा बोर्ड से वही होना चाहिए जो खादी-कमीशन से है तथा सर्व सेवा संघ से सम्बन्धित नयी तालीम-संस्थाओं का सम्बन्ध इस बोर्ड से वही रहे, जो खादी संस्थाओं का खादी-कमीशन से है।

अब प्रश्न यह है कि नयी तालीम के लिए सर्व सेवा संघ का सीधा कोई कार्यक्रम है क्या ? जरूर है। उतना काम सर्व सेवा संघ को सीधा करना होगा जितने के लिए उसे समाज से या राज्य से मान्य कराना है। मेरी समझ में वैसे दो काम हैं : (१) सन् '५७ के दिल्ली प्रस्ताव के अनुसार समग्र नयी तालीम के चित्र की खोज करना तथा (२) रचनात्मक कार्यक्रमों को नयी तालीममूलक बनाने का तरीका ढूँढ़ना।

अतएव तुम लोगों को सरकार को यह सलाह देनी चाहिए कि वे एक 'बेसिक एजूकेशन कौंसिल' बना कर इस काम को उठायें। संघ की सारी शक्ति उपर्युक्त दो कार्यक्रमों को सफल बनाने में ही लगानी चाहिए। मैं मानता हूँ कि इसमें जितनी जिम्मेदारियों की बात की है उन्हें पूरा कर सकोगे।

तुम्हारा

धीरेन्द्र भाई

सत्यं जगत् स्फूर्तिः जीवनं सत्यशोधनम्

भूदानयज्ञ

लोकनागरी लिपि

ग्रामदान जीवन का कार्यक्रम है

लोग हमें सावधान करते हैं, कहते हैं कि सब ग्रामदान होंगे, अैसी बात मत बोलो, जरा अपनी संख्या कम करो। हम पूछते हैं कि कम क्यों करें? हिंदुस्तान के कुल लोग मरेंगे, अिसमें किसी शंका है? कोअी आज मरेगा, कोअी कल, कोअी परसों। ग्रामदान तो जीवन का कार्यक्रम है। यह सौ के सौ प्रतिशत क्यों नहीं? अिसलिअ हमारे मन में शंका नहीं है। जैसे हर गांव में लोग जीवन जीते हैं, वैसे हर गांव ग्रामदान होगा और फिर सरकार का रंग बदलेगा। अेक जगह डी० सी० ने हमसे पूछा कि अितने ग्रामदान हो रहे हैं, अब अिनको संभालेगा कौन? वे समझे थे कि ग्रामदान को मैं संभालूंगा। अब मैं यानी मेरे कार्यकर्ता। मेरे कार्यकर्ता हैं—ये डी० सी०, सरकार के दूसरे अफसर, कांग्रेसवाले, मंत्री और ग्रामदान करने वाले लोग आदि सब हमारे नौकर हैं। अिनको अिसीलिअ वेतन दिया जा रहा है। अिसलिअ डरो मत और सब ग्रामदान दे डालो, तो सरकार का रंग बदलेगा, नीति बदलेगी, भारत का नक्शा बदलेगा, अिसमें संदेह नहीं है। दस साल पहले जितनी स्फूर्ति हममें थी, अुससे कम स्फूर्ति अगर होती तो हम कहते कि यह नहीं होने वाला है। लेकिन यह होने वाला है, यह तो परमेश्वर बोल चुका है।

शिवसागर, २३-९-६१ —विनोबा

लिपि-संकेत ि = ि, ी = ी, ख = ख, संयुक्ताक्षर हलंत चिह्न से।

संपादकीय

सत्ता की होड़ और लोकशाही

आगामी चुनावों को लेकर गुजरात प्रांतीय कांग्रेस में जो विवाद खड़ा हुआ है, उसमें एक ओर से 'हरिजन' पत्रों के भूतपूर्व सम्पादक, श्री मगनभाई देसाई और दूसरी ओर से गुजरात के वर्तमान मुख्य मंत्री, डा० जीवराज मेहता ने सार्वजनिक रूप से अखबारों में बयान दिये हैं। इस विवाद में एक ओर श्री मोरारजी भाई और दूसरी ओर श्री ढेबरभाई के नाम भी लिये जाते रहे हैं। किसी भी चीज की जब होड़ लगती है तब अच्छे-अच्छे लोग भी उस होड़ के परिणाम से बच नहीं सकते, फिर सत्ता की होड़ तो और भी जीवनग्राही होती है!

चुनाव तो जब आयेंगे, तब आयेंगे और चुनाव में किसको वोट मिले, यह दूसरी बात है; पर अभी तो मुख्य होड़ इस बात की है कि चुनाव में खड़े होने को पासपोर्ट-टिकिट-किसको मिले! करीब-करीब हर प्रांत में कांग्रेस के टिकिटों के लिए एक अजीब तरह की होड़ लगी हुई है। गुजरात देश उन चन्द प्रांतों में से था, जहाँ पे सार्वजनिक जीवन में गुटबंदी सामने नहीं आयी थी। पर अब जब वह सामने आयी है, तब मालूम होता है कि पहले भी अन्दर अन्दर वह रही होगी। खैर, यह सब कांग्रेस संगठन का आन्तरिक मामला है और हमें इसमें कोई विशेष दिलचस्पी नहीं है।

लेकिन गुजरात के इस सार्वजनिक विवाद में एक चीज कही गयी है, जिसकी ओर लोगों का ध्यान जायगा। श्री मगन भाई देसाई के इस आरोप का कि डा० जीवराज मेहता ने गुजरात प्रदेश चुनाव समिति के निर्णयों का जो विरोध किया, उससे न केवल कांग्रेस संस्था की प्रतिष्ठा को धक्का लगेगा, बल्कि "श्री मोरारजी भाई के नेतृत्व" को भी आँच आयेगी, जवाब देते हुए डा० जीवराज ने जो बयान दिया है, उसमें उन्होंने कहा है :

> 'मुख्य मुद्दा यह है कि (कांग्रेस पार्टी में) कुछ लोग जो मन्तव्य या राय रखते हों, उस मन्तव्य से भिन्न दूसरे प्रकार का मन्तव्य रखने का मुझे या दूसरों को अधिकार है या नहीं? श्री मोरारजी भाई के मन्तव्य से भिन्न, पर कांग्रेस के विधान की मर्यादा के अन्तर्गत मत रखने की बात को श्री मोरारजी की नेतागिरी को चुनौती देने या कांग्रेस को निर्बल करने जैसा गिना जाय, तो मेरे नम्र मत के अनुसार वह प्रामाणिक मत-भेद को दबा देने के बराबर होगा। इतना ही नहीं, अन्ततोगत्वा वह कांग्रेस के लोकशाही स्वरूप को भी कमजोर बनाने का कारण होगा।"

डा० जीवराज की तरह बहुत-से पुराने सार्वजनिक सेवकों को ऐसा लगता है कि कांग्रेस संगठन आज ऐसी स्थिति में जा रहा है जहाँ प्रामाणिक मतभेद की भी गुंजाइश कम रह गयी है और 'नेता' के अनुसरण या अनुगमन को ही तरजीह दी जाती है। इन लोगों को इस बात से दुःख होना स्वाभाविक है। पर हमारे ख्याल से सत्ता-प्राप्ति की होड़ में लगे हुए किसी भी संगठन के लिए उसके "लोकशाही स्वरूप" को टिकाये रखना सम्भव नहीं है। लोकशाही का नाम हम भले ही रटते रहें, पर आर्थिक और राजनैतिक केंद्रीकरण और केंद्रित व्यवस्था के इस जमाने में लोकशाही की आत्मा को कायम रखना सम्भव नहीं है, यह डा० जीवराज जैसे अनुभवी लोगों की समझ में आ सकना चाहिए। लोकशाही की आत्मा यह है, और उसका सीधा सादा अर्थ भी यह है कि लोग एक-दूसरे के मत का आदर करें और भिन्न राय होते हुए भी एक-दूसरे को अपनी राय प्रकट करने का और उसके अनुसार काम करने का मौका रहे। पर सत्ता प्राप्ति की होड़ में लगे हुए संगठन के लिए इस प्रकार की लोकशाही अन्ततोगत्वा एक विलास ही साबित होगी। लोकशाही का चेहरा कायम रखने के लिए हम वोटों का, चुनाव का और बहुमत-अल्पमत का खेल भले ही खेलें—और भोले लोगों को इस धोखे में रखें कि यही सच्ची लोकशाही है—पर पिछले दस-पन्द्रह वर्षों के अनुभव से अब सभी समझ गये हैं कि यह चेहरा दिखावटी है। अन्दर ही अन्दर जिस तरह से कुचक्र चलते हैं उससे ये सब चीजें बेमानी हो जाती हैं। सत्ता की होड़ को और केंद्रित व्यवस्था को स्वीकार करना और फिर लोकशाही की आत्मा के हनन पर दुःख प्रकट करना, इसका कोई अर्थ नहीं है। सच्ची लोकशाही को अगर जीवित रखना हो तो हमें सत्ता के केंद्रों का विघटन करना होगा, जिससे उसकी होड़ भी समाप्त हो और फिर सामान्य लोगों के मतों को खरीदने, बराबर वाले जबरदस्त लोगों के मतों को दबाने, साथियों को गिराने, आदि का यह सारा कुचक्र चलाने की आवश्यकता न पड़े। दूसरे के मत का आदर निःस्पृह समाज में ही सम्भव है, ऐसे केंद्रित और प्रतिस्पर्धा मूलक समाज में नहीं, जहाँ अपने को आगे लाने के लिए, बल्कि टिकाने के लिए भी दूसरे को धक्का देकर गिराना जरूरी हो। अगर लोकशाही से हमें वास्तव में प्रेम है, तो आज की रचना को आमूल बदलना होगा और समाज की आर्थिक और राजनैतिक व्यवस्था को सच्चे माने में विकेंद्रित करना होगा।

—सिद्धराज

अस्पृश्यता का कलंक

"अस्पृश्यता के साथ धर्म का, सत्य और अहिंसा का कभी भी मेल नहीं बैठ सकता"—ऐसा मान कर आज से कोई तीस वर्ष पहले महात्मा गांधी ने अस्पृश्यता मिटाने का देशव्यापी आन्दोलन चालू किया था। यह आन्दोलन आज भी चल रहा है। उसका परिणाम यह है कि तीस-चालीस साल पहले हमें छुआछूत का जैसा भयंकर रूप दिखाई पड़ता था, वैसा आज नहीं है। भारत के स्वतंत्र होने के बाद संविधान से भी हमने अस्पृश्यता को निकाल बाहर कर दिया है। हरिजनों के प्रति दुर्व्यवहार करना कानूनन अपराध है। इस बात में सन्देह नहीं कि देशव्यापी आन्दोलन, लोक जागृति और कानून के कारण अस्पृश्यता की जड़ें हिल गयी हैं और वे कहीं कमजोर पड़ गयी हैं।

इतना सब होने पर भी इस बात से इनकार नहीं किया जा सकता कि अस्पृश्यता अभी जड़मूल से नष्ट नहीं हो सकी। शहरों में तो कम, देहातों में आज भी वह कायम है, हालांकि उसकी उग्रता में धीरे धीरे कमी आती जा रही है।

केन्द्रीय सरकार, प्रान्तीय सरकारें और हरिजन सेवक संघ तथा कितनी ही रचनात्मक संस्थाएँ हरिजन-सेवा का काम कर रही हैं। परन्तु जैसा कि अभी अखिल भारतीय हरिजन सेवक संघ ने सीकर की अपनी सालाना बैठक में कहा कि गांधीजी ने धर्म शुद्धि की जैसी भावना से यह आन्दोलन चलाया था, वह भावना, वह प्रेरणा और दृष्टि, ऐसा लगता है कि आज सामने से हटती जा रही है और इस आन्दोलन में जो तेज था, वह मन्द पड़ गया है।

यह स्थिति अच्छी नहीं है। सरकारी सहायता से अथवा कानून से अस्पृश्यता में कमी आ सकती है अवश्य, आयी भी भी है, पर इससे समस्या का निराकरण होना सम्भव नहीं। अस्पृश्यता की समस्या के जड़ मूल से निराकरण के लिए आवश्यकता इस बात की है कि जिन लोगों के हृदय में इसका कुसंस्कार घुस बैठा है, उनके हृदयों से उसे निकाला जाय। और यह कुसंस्कार निकाला जा सकता है केवल प्रेम, सेवा और सद्भाव द्वारा ही।

हमारे कार्यकर्ताओं की कसौटी है—अस्पृश्यता! जीवन-शुद्धि और प्रेम, सेवा और सद्भाव द्वारा ही इस कलंक को मिटाया जा सकता है। प्राणवान और तेजस्वी कार्यकर्ता ही भारत और मुख्यतः हिन्दू धर्म पर लगे इस कलंक को मिटा सकते हैं। अस्पृश्यता के रहते भारत का मस्तक ऊँचा नहीं उठ सकता। हमें इस कलंक को मिटाने की प्राणपण से चेष्टा करनी चाहिए। —श्रीकृष्णदत्त भट्ट

श्रमभारती में श्रमाधारित जीवन और कौटुम्बिकता

• रामचंद्र

श्री धीरेन्द्र भाई के निर्देशानुसार सर्व सेवा संघ के निर्णय से, आचार्य राममूर्ति भाई के संयोजन में १ मई '६१ से 'श्रमभारती' खादीग्राम, जि० मुंगेर में स्वावलंबन का प्रयोग वर्तमान रूप में चल रहा है। हम सबने यह महसूस किया कि श्रमाधारित जीवन और कौटुम्बिकता का विकास श्रमभारती का स्वधर्म है, इसके पालन में ही इसकी सार्थकता है।

शुरू में इस प्रयोग के लिए पाँच साथी तैयार हुए। इनके अलावा खादीग्राम की खेती में काम करने वाले स्थानीय स्थायी मजदूर, जिन्हें हम कर्मचारी कहते हैं, आठ थे; जिन्हें प्रयोग में शरीक करना था, लेकिन उनकी कोई पूर्वतैयारी नहीं थी। इसलिए स्वावलंबन की कोई भी शर्त उनके लिए इस साल नहीं लागू करनी थी। सोचा गया कि १ साल बाद जब इनको विश्वास हो जायगा, हम लोगों के प्रयास से इनके सामने स्वावलंबन का कोई अधूरा चित्र भी आ जायगा, तब ये भी उसकी भूमिका स्वीकार कर सकेंगे।

इस प्रयोग द्वारा उत्पादक समाज की नयी जीवन-पद्धति विकसित की जाय, ऐसी कल्पना के साथ हम अपने प्रयास में जुटे, क्योंकि हम यह मानते हैं कि पूंजीवाद, व्यक्ति-वैशिष्ट्यवाद और दण्ड-शक्ति से मुक्त जीवन का अभ्यास क्रांति की बुनियाद को ठोस बनाने वाला कार्यक्रम है। समाज-परिवर्तन के लिए जन-समूह की शक्ति पैदा हो, इसके लिए यह अनिवार्य है कि समाज के सामान्य नागरिकों में क्रमशः क्रांति की आकांक्षा, प्रेरणा और शक्ति का संचार हो। परिवर्तन की आकांक्षा, विकल्प की तलाश और व्यक्ति-विशेष की जगह आपस के सख्य भाव (कामरेडशिप) की शक्ति को लेकर हमने अपना प्रयास शुरू किया। इसलिए प्रयोग की दिशा स्पष्ट रखने के लिए जो कुछ भी बाद में सूझता गया, एक के बाद एक को अपनाते गये।

प्रथम प्रयास में हमने अपनी तीन बुनियादें बनायीं :—

(क) जीविका के साधन लेंगे और उसके द्वारा जितना उत्पादन कर सकेंगे, अपने उपभोग की वही मर्यादा होगी। किसी भी हालत में हम अपनी जीविका के लिए 'सबसिडी' नहीं लेंगे।

(ख) उपर्युक्त मर्यादा के पालन के लिए यह अनिवार्य है कि परिवार का हर उपभोक्ता सदस्य उत्पादक बने।

(ग) स्पष्ट है कि इस प्रयोग में स्वावलंबी जीवन का अभ्यास ही तालीम का स्वरूप होगा। उत्पादक कार्य के साथ ही आवश्यकतानुसार अन्य विषयों का शिक्षण सम्भव हो सकेगा।

प्रारम्भ में ही जब हमने अपनी साल भर की उत्पत्ति का अनुमान लगाया, तो इस नतीजे पर पहुँचे कि अपने उपभोग के लिए स्थानीय मजदूरी की दर साढ़े तीन किलोग्राम अनाज प्रति व्यक्ति प्रति दिन प्राप्त कर सकेंगे। एक कार्यकर्ता के साथ एक और आश्रित की जिम्मेदारी शुरू में स्वीकार की गयी। बहनों का कार्यकाल ६ घंटे प्रति दिन का माना गया और मजदूरी साढ़े तीन किलोग्राम ही रखी गयी। अन्य आश्रितों के लिए रोजगार देने का प्रयास करते रहे हैं, लेकिन उसकी बाध्यता नहीं स्वीकार की जा सकी। यद्यपि हमारे पास शिक्षण की कोई स्पष्ट योजना नहीं है, लेकिन

> यह विश्वास है कि स्वावलंबन और कौटुम्बिकता के विकास की प्रक्रिया से ही जीवन-शिक्षण और नित्य नयी तालीम की दिशा स्पष्ट होगी।

जितना कमायेंगे उतने ही में बाँट कर खायेंगे, इस तैयारी के साथ प्रयोग में शरीक होने वाले हर इच्छुक और उत्साही व्यक्ति का स्वागत करने को हम तैयार रहे। ६ मई से ही हमारे साथ एक और मित्र आ गये। हमने उनका स्वागत किया। 'सबसीडी' नहीं लेने की बुनियाद कायम रखने के लिए हम सबकी मजदूरी साढ़े तीन किलोग्राम से पौने तीन किलोग्राम कर दी गयी। अब हम कार्यकर्ताओं की संख्या आश्रितों को छोड़ कर छह हो गयी। विनोबाजी छह भाइयों में से एक भाई को भूदान-आन्दोलन के लिए माँगते हैं। अपने प्रयोग को प्रत्यक्ष आन्दोलन के साथ जोड़ने के लिए हमने आचार्य राममूर्ति भाई का पूरा समय आन्दोलन को समर्पित किया। शेष हम पाँच साथियों ने अब तक यह प्रयास किया कि :

(१) अपनी उत्पादक क्षमता बढ़े
(२) कार्यकर्ता-कर्मचारी के बीच की दीवार ध्वस्त हो और
(३) आपस में एक-दूसरे को अधिक-से-अधिक समझें और कौटुम्बिकता की भावना के विकास के साथ एक-दूसरे को शक्ति दें।

हमने देखा कि उपर्युक्त भावना के विकास के लिए यह अनिवार्य है कि हम खुले दिल और विमुक्त बुद्धि से एक दूसरे की भावना को स्वीकार करें।

प्रयोग के साथ साथ [illegible]। खेती के साथ गोपालन, तेलघानी और अम्बर कताई उद्योग चल रहा है। हमने जितना उत्पादन किया, इसका महत्व तो है ही। प्रथम रूप से हमने इसी को अपनी जीविका का आधार भी बना रखा है, लेकिन अनाज, दूध, तेल, [illegible] के उत्पादन के साथ ही हम यह देखने का प्रयास करते हैं कि पूँजीवाद, व्यक्ति वैशिष्ट्यवाद और दण्ड-शक्ति से मुक्त होकर अपने बीच मानवीय मूल्यों को कहाँ तक प्रतिष्ठित कर सके। प्रतिकूल संस्कार, परिस्थिति और वातावरण के कारण काफी गिरते-पड़ते आगे बढ़ना होता है, लेकिन यह तो अनिवार्यता है। खुशी है कि अपने उत्साह की लौ को हम और प्रज्वलित करने का ही प्रयास करते जा रहे हैं।

आनुसंगिक प्रश्न

शुरू में हमने समाज-परिवर्तन की सामाजिक शक्ति (सोशल फोर्स) का जिक्र किया है। हम सबके मन में ये प्रश्न उठते हैं कि—

(१) क्या संस्था के इस प्रयोग में 'सोशल डायनेमिक्स' है? क्या संस्था के कृत्रिम समाज में भी इस प्रकार के प्रयोग द्वारा बुनियादी समस्याओं का हल ढूंढा जा सकता है?

(२) श्रमिकों को उत्पादन का उचित हिस्सा कैसे प्राप्त हो? उनके अन्दर शोषण न करने और शोषित न होने की भावना कैसे जाग्रत हो?

(३) क्रान्तिकारी उत्पादक कैसे बनें, ताकि उनका प्रयास अर्थ और दण्डशक्ति से मुक्त होकर मानवीय मूल्यों की प्रतिष्ठा के लिए बुनियाद का काम कर सके?

(४) वर्तमान बाजार-भाव (मार्केट-वैल्यु) के कारण जितना उत्पादन उतना ही उपभोग की सिद्धि के लिए अधिक-से-अधिक समय और शक्ति उत्पादन के कार्य में ही लगानी पड़ती है। इस स्थिति में प्रयोग को सजीव बनाये रखने और प्रत्यक्ष आन्दोलन से जोड़ने के लिए क्या करें?

जहाँ तक 'सोशल डायनेमिक्स' का सवाल है, हम यह मानते हैं कि मानव समाज में जहाँ चेतना है, गलत या सही अपने हित अहित की पहचान है, वहाँ का कोई भी प्रयोग सिद्ध गुर (फार्मूला) वहाँ का वहीं समाज की किसी समस्या का हल नहीं निकाल सकता। मनुष्य के संस्कार, मान्यताएं, उसकी भावनाएं हिसाब की तरह जमा नाम करके संतुलित, 'फिट' नहीं की जा सकतीं।

हमें ऐसा लगता है कि स्वाभाविक और कृत्रिम समाज का जो आधार माना जाता है, वह मूल में ही गलत है। स्वाभाविकता और कृत्रिमता का सम्बन्ध स्थान और स्थायी परिस्थिति नहीं, भावना का [illegible] है। [illegible] गाँव या [illegible] मालिक नगर या कृत्रिम संस्था, हर जगह आज एक ही मान्यता काम कर रही है। उत्पादन के लिए कम-से-कम पसीना बहाना पड़े, उपभोग की अधिक-से-अधिक सुविधा प्राप्त की जाय, इस मूल मान्यता पर प्रहार करने के लिए "जितना उत्पादन उतना ही उपभोग", "शोषण नहीं करेंगे और शोषित नहीं होंगे"—जैसे संकल्प के साथ प्रयास, समाज के किसी भी अंश में क्यों न हो, यह क्रान्ति का बुनियादी कार्यक्रम है।

इसके विपरीत अगर हम शुरू से [illegible] में भी अपने पसीने की ही कमाई को जीवन का आधार नहीं बनाते हैं, तो अपने अस्तित्व की रक्षा के लिए कृत्रिमता, अस्वाभाविकता अथवा स्वार्थवाद को कायम रखना होगा, इससे हम मुक्त हो ही नहीं सकते। हमारे व्यक्तित्व और जीवन से 'सोशल डायनेमिक्स' सम्बद्ध हो, इसके लिए श्रमाधारित जीवन और कौटुम्बिकता की भावना का विकास अनिवार्य है। अन्यथा हमारे कार्यक्रम से उत्पादन के लिए कम-से-कम पसीना बहाने और उपभोग की अधिक से अधिक सुविधा प्राप्त करने की मान्यता को धक्का भी नहीं लग सकता।

संस्था अवश्य कुछ [illegible] क्योंकि यहाँ पर ऐसे और विशिष्ट व्यक्तित्व का चमत्कार है। हम यह नम्रतापूर्वक कहना चाहते हैं कि जिस प्रकार समाज को पूंजीवाद से मुक्त होना है, उसी प्रकार व्यक्ति की विशिष्टता से भी मुक्त होना है। मात्रा का फर्क भले हो, दोनों अपनी जगह सामाजिक शक्ति को दबाये हुए हैं। किसी भी पद्धति से अपने लिए बिना [illegible] उत्पादन किये देश के सामान्य (ऐसे ही तो कम से कम) [illegible] मजदूरी अधिक उपभोग की सुविधा प्राप्त कर [illegible] विशिष्ट व्यक्तित्व का [illegible] प्रचलित मान्यता के अनुसार [illegible] एकत्रित पूंजी द्वारा मनुष्य की भावना को कुछ देर के लिए [illegible] उसको लोभ में डाल कर कुछ [illegible] जा सकता है, लेकिन उसके अन्दर परिवर्तन की शक्ति नहीं पैदा की जा सकती। क्रान्ति के आरोहण की प्रक्रिया के लिए व्यक्ति के अन्दर क्रान्ति की [illegible] होनी चाहिये और शायद यही [illegible] नित्य नयी तालीम की कल्पना भी है। ऐसा लगता है कि इसकी प्रेरणा [illegible] व्यक्ति का प्रभाव नहीं, [illegible] पुरुषार्थ ही [illegible] सकता है।

आज [illegible] हर जगह [illegible] है, जिसमें [illegible] है, [illegible] परोपजीवियों की [illegible] नहीं [illegible]। लेकिन आज की [illegible] के [illegible] की [illegible] हर जगह [illegible]

। क्या असंतोष की इस भावना को आकांक्षा में परिवर्तित किया जा सकता है ?

स्वाभाविक गाँव और गाँव वालों से स्थान की दूरी भले हो, हमने अपने श्रम को जीवन का आधार बना कर गाँव की स्वाभाविक भूमिका और उनकी समस्याओं को अपने जीवन का अंग बना लिया है, और इसीलिए हम कह सकते हैं कि अपने सामूहिक प्रयास से अपनी समस्याओं का हल जितना भी ढूँढ़ पाते हैं, सहज ढंग से असंतोष का आकांक्षा में परिवर्तन वहीं से प्रारम्भ हो जाता है। खादीग्राम में पत्थर तुड़वा कर धान उगाने का प्रयास हुआ, सफलता मिली। आसपास के गाँवों में इसका अल्प ही सही, लेकिन ठोस प्रभाव देखा जा सकता है। जीवन की बुनियाद जीविका से सम्बन्धित होने के कारण इस काम को लोगों ने सहज ही अपना लिया।

वर्ग-संघर्ष को जन्म देने वाली मालकियत की भावना तब तक समाप्त नहीं हो सकती जब तक सामूहिक सुरक्षा की पूर्ति नहीं होती। श्रमाधारित जीवन और कौटुम्बिकता के प्रयोग द्वारा सहउत्पादन और सहयोग का अभ्यास कर हम सामूहिक सुरक्षा की पद्धति विकसित करना चाहते हैं। प्रचलित मूल्यों के प्रतिकूल आगे बढ़ने के लिए 'टीम' और उत्पादन के समुन्नत साधन आवश्यक हैं, जिससे कि जीविका के लिए 'सबसीडी' न ली जाय।

सर्वथा क्रान्तिकारी कार्यक्रम

शोषण नहीं करेंगे इस सत्याग्रह और शोषित नहीं होंगे इस प्रतिकार के प्रयोग को सत्ता की दीवालें नहीं रोक सकती। इसकी चिनगारी फैलेगी ही, क्योंकि इसमें पूँजी और व्यक्ति विशिष्ट द्वारा निर्मित ईश्वरवाद नहीं, स्वाभाविक जीवन के मानवीय मूल्य प्रतिष्ठित हैं। 'सोशल डायनेमिक्स' का अभाव हमारे चरित्र में हो सकता है, जिसे हम दूर नहीं कर पा रहे हैं, पर ऐसे प्रयोगों को हम क्रान्ति के आरोहण की प्रक्रिया के रूप में ही देख रहे हैं।

अपने सामने आये प्रश्नों पर हमने अब तक जो कुछ अनुभव किया, आपस में चर्चा की, सोचा और समझा उसे व्यक्त करने की कोशिश इन पंक्तियों द्वारा मैंने की। बावजूद अपने प्रयासों के हम अपनी उत्पादन-क्षमता बढ़ा कर और कर्मचारियों की व्यवस्था शक्ति तथा पूर्ण जिम्मेदारी की भावना का विकास कर समान धरातल पर नहीं पहुँच सके हैं। कार्य योजना, उसकी जिम्मेदारी आदि को सम्मिलित बैठकों में सबकी राय से निश्चित कर इस ओर बढ़ने का हमारा प्रयास हो रहा है। उपर्युक्त समस्याओं का हल नहीं निकाल पाते, इसीलिए हमें मजबूर होकर पूँजी और सत्ता की शरण लेनी पड़ती है, जहाँ जाकर क्रान्ति का तेज क्षीण होता है। नयी तालीम को अगर वर्ग-संघर्ष का विकल्प पैदा करना है तो इन समस्याओं का हल ढूँढ़ना है, नयी तालीम के विद्यार्थी के नाते हम इस दिशा में गुरुजनों से मार्गदर्शन और साथियों के सुझाव की अपेक्षा करते हैं।

गांधीजी का अवतार-कार्य

• झवेरभाई पटेल

गांधीजी की प्रतिभा अनेकविध थी। जीवन के हरएक पहलू में उनकी प्रतिभा का तेज प्रगट होता रहा और समाज का शायद ही कोई ऐसा क्षेत्र रहा हो, जो उनकी विश्वतोमुखी प्रतिभा से प्रभावित न हुआ हो। यह सब होते हुए भी गांधीजी का अवतार-कार्य तो था 'स्त्रियो वैश्यास्तथा शूद्रा'—इन श्रमजीवी वर्गों के उद्धार का। श्रमजीवी वर्गों की भलाई का, उनके उद्धार का काम तो श्रीकृष्ण का जीवन-कार्य रहा। पर उनकी यह सेवा कार्यारम्भ ही साबित हुई। श्रमजीवी वर्गों के उद्धार का सवाल समाज का सनातन सवाल रहा है। इस सनातन सवाल को हल करने का बीड़ा गांधीजी ने उठाया।

समाज चाहे समाजवादी हो या साम्यवादी या सर्वोदयवादी, जब तक बहुसंख्यक श्रमजीवी समुदाय बुद्धिहीन बना रहेगा, तब तक अल्पसंख्यक बुद्धिजीवी वर्ग उसे दबायेगा ही। व्यक्तित्व के इस बुनियादी भेद को जब तक न मिटाया जाय तब तक सामाजिक या कानूनी नियन्त्रण से पूरी या सच्ची समानता स्थापित नहीं की जा सकती। आर्थिक समानता कुछ हद तक कानूनी नियन्त्रण से स्थापित की जा सकती है। पर बौद्धिक और सांस्कृतिक समानता यानी व्यक्तित्व की समानता ही असली सच्ची ठोस समानता है। यह समानता तभी स्थापित हो सकती है जब श्रमजीवी व्यक्ति का प्रत्येक कार्य बुद्धिवर्धक और उन्नतिकर बने, उसका कार्य केवल स्थूल क्रिया न रह कर ज्ञानमय और कौशल्ययुक्त बने, ज्ञान और कर्म का सामंजस्य हो।

श्रमजीवी वर्ग का प्रत्येक कार्य इस तरह यदि ज्ञानमय हो जाता है तो वह श्रमजीवी वर्ग बुद्धिजीवी भी बन जाता है। या दूसरे शब्दों में कहें तो केवल श्रमजीवी और केवल बुद्धिजीवी वर्ग का भेद ही मिट जाता है। अभी अभी भी ख्रुश्चेव ने रूस में २० साल की योजना के मार्फत आर्थिक तथा बौद्धिक एवं सांस्कृतिक समानता स्थापित करने का बीड़ा उठाया है। उसमें भी काम यानी श्रम को उन्नत बना कर ही बौद्धिक समानता स्थापित की जायगी, ऐसा स्पष्ट निर्देश है। इसमें ख्रुश्चेव ने इस बात को स्वीकार किया है कि बौद्धिक समानता के बगैर आर्थिक समानता अधूरी रह जाती है।

मानव के अभ्युदय के लिए समाज-संगठन की मजबूती तथा व्यक्ति की साधना, ये दोनों रास्ते प्रमाणित हैं। दोनों रास्ते एक-दूसरे के पूरक हैं, एक के बगैर दूसरा रास्ता कारगर नहीं हो सकता। कोई भी सामाजिक संगठन अपने आपमें इतना परिपूर्ण नहीं हो सकता कि उस संगठन के आधार पर ही हर व्यक्ति परिपूर्ण बन जाय या उसे अपनी साधना करने की जरूरत न रहे। अच्छा समाज-संगठन व्यक्ति की साधना में सहायक हो सकता है, साधना का स्थान नहीं ले सकता। उसी तरह यदि केवल व्यक्ति की साधना अच्छी चली, पर समाज संगठन खराब रहा तो वह संगठन साधना में बाधक साबित हो सकता है, क्योंकि उसमें "ए गुड मैन इन ए बैड सोसाइटी' का किस्सा खड़ा होता है। इसलिए अच्छा समाज भी चाहिए और व्यक्ति की उत्कट साधना भी चाहिए। अच्छे समाज से कानूनी समानता आती है और व्यक्ति की साधना से बौद्धिक समानता आती है। इसलिए समाजवादी, साम्यवादी या सर्वोदयवादी समाज में भी व्यक्तित्व की समानता स्थापित करने की आवश्यकता रहती है।

अक्सर पूछा जाता है कि हिन्दुस्तान में स्वराज्य सरकार ने गांधीजी के सारे रचनात्मक कार्यक्रम को अपनाया है और उनको आगे बढ़ाया है। तब रचनात्मक कार्य का कोई अलग क्षेत्र रह जाता है ? यदि व्यक्तित्व की समानता स्थापित करने का गांधीजी का 'अवतार कार्य' दृष्टि के सामने रखा जाय तो ऐसा सवाल ही नहीं उठना चाहिए, बल्कि श्रमजीवी वर्ग को बुद्धिजीवी बनाने के तथा उसके द्वारा व्यक्तित्व की अच्छी समानता स्थापित करने के गांधीजी के अधूरे रहे अवतार-कार्य को आगे बढ़ाने का अवसर मिला है, ऐसा प्रतीत होना चाहिये। व्यक्तित्व की समानता स्थापित करने में खुद के व्यक्तित्व के सारे अंगों (शरीर, आत्मा, मन) के समान विकास की जीवनकला तथा दूसरों के प्रति समान भाव बढ़ाने की तालीम निहित है। व्यक्तित्व की समानता इस तरह यदि स्थापित हुई तो उससे समाज में से वर्ग-विग्रह या गिरोह विग्रह की जड़ ही उखड़ जाती है।

अब सवाल यह है कि श्रम या काम को उन्नत कैसे किया जाय, ताकि श्रमजीवी वर्ग बुद्धिशाली बने और उनके व्यक्तित्व का विकास हो। गांधीजी का जवाब था "नयी तालीम" से, जो ज्ञान और कर्म का अनुबन्ध स्थापित करती है। यानी श्रम या कर्म केवल स्थूल क्रिया न रह कर 'विज्ञान पुर्नित क्रिया' बन जाती है। हर कोई क्रिया उसके विज्ञान के ज्ञानपूर्वक की जाय तो जितनी बार वह क्रिया की जाय, उतनी बार वह ज्ञानवर्धक साबित होगी।

हर क्रिया के दो मूल्य होते हैं—एक आन्तरिक मूल्य और दूसरा बाह्य मूल्य। केवल स्थूल क्रिया करने से वस्तु का बाह्य मूल्य पैदा होता है। ज्ञानमय क्रिया करने से आन्तरिक और बाह्य, दोनों मूल्य पैदा होते हैं। स्थूल क्रिया की प्रतिक्रिया व्यक्ति पर थकान की होती है। ज्ञानमय क्रिया की प्रतिक्रिया व्यक्ति की संवेदना को सूक्ष्म बनाती है। इसीलिए स्थूल क्रिया व्यक्ति को श्रमजीवी बनाती है। ज्ञानमय क्रिया उसे उभयजीवी बनाती है।

आज हमारे देहात में चाहे स्त्रियों का गृह कार्य देखें, किसान की खेती देखें, कारीगर का उद्योग देखें या मजदूर का परिश्रम देखें—ये सारे काम बाह्य मूल्य देने वाली स्थूल क्रियाएँ बन गयी हैं। वे ऐसी जड़ क्रियाएँ बन गयी हैं कि उनसे कोई आन्तरिक मूल्य नहीं मिल सकता। ये सारी क्रियाएँ आदत से होती हैं, इनके पीछे विज्ञान नहीं है। हालाँकि इनमें से हरएक का अपना शास्त्र तो है ही। गृहकार्य का तो आज एक विशाल विज्ञान बन गया है और उसके लिए लम्बे अरसे की तालीम लेनी पड़ती है।

वैज्ञानिक खेती के मातहत कई शास्त्रों का समावेश होता है—जमीनशास्त्र, वनस्पतिशास्त्र, अर्थशास्त्र, यन्त्रशास्त्र तथा पशु शास्त्र इत्यादि अनेक शास्त्र खेती के अंगरूप हैं। खेती ज्ञानपूर्वक करनी हो, तो इन सारे शास्त्रों की जानकारी जरूरी है। कारीगरों के उद्योग के क्षेत्र में तो आज के विज्ञान ने जादू की सी तब्दीली कर डाली है और विज्ञान को समझ कर ही तथा उसे हजम करके ही आज के उद्योग चलाये जा सकते हैं। मजदूरों का समाज शास्त्र तथा उनकी कुशलता की तालीम का शास्त्र आज कहीं आगे बढ़ गया है।

इस तरह गाँव के प्रत्येक वर्ग के कार्य में शास्त्रीय-ज्ञान और विज्ञान की बहुत बड़ी अपेक्षा है और उस ज्ञान विज्ञान को पाकर ही सफलता मिल सकती है। इस तरह परिश्रम को उन्नत करके श्रमजीवी वर्ग का उद्धार करने में आधुनिक विज्ञान सर्वोत्तम योग दे सकता है। सम्पूर्ण ग्राम-जीवन में शास्त्रीय ज्ञान-विज्ञान का प्रवेश कराना—यही अब रचनात्मक कार्यक्रम का हार्द यानी प्रेरणासूत्र है।

['मंगल प्रभात' से]

शोषण-मुक्ति का सरल इलाज : नश्वर पैसा

• अप्पा पटवर्धन

जमीन का स्वामित्व पुराने जमाने से दूसरों पर प्रभुत्व चलाने और उनका शोषण करने का साधन रहा है। जमीन की निजी मालकियत अन्याय है। इस सार्वत्रिक अन्याय के निवारण के लिए भूदान-यज्ञ आन्दोलन निकला। उसका उद्देश्य है, शोषण-मुक्त समाज।

लेकिन इस जमाने में जमीन की मालकियत, और उसके द्वारा हासिल होने वाली जमीन की कीमत, या फसल की बटाई, इनकी अपेक्षा पूंजी शोषण का कुछ ज्यादा प्रभावी साधन बन बैठी है। सिर्फ जमीन का बँटवारा शोषण-निवारण के लिए न पर्याप्त है, न वह अकेला लोक-सम्मति हासिल कर सकेगा। शोषण के सारे जरिये एक-साथ बंद करने होंगे। म्युनिसिपालिटी शहर में दाखिल होने वाले एक ही रास्ते पर चुंगी नाका रखेगी, तो वह अन्यायी ठहरेगी और उसको तनिक भी चुंगी हासिल नहीं होगी, लोग दूसरे रास्तों से ही माल लायेंगे। अतः सब रास्ते एकसाथ ही रोकने होंगे।

पूंजीशाही के हाथ

पूँजीशाही अनेक हाथों से अपहरण या शोषण करती है, लेकिन उसका प्रधान हाथ है, ब्याज-बट्टा। बटाई लेना मुफ्त-खोरी है, वैसे ही ब्याज बट्टा भी मुफ्तखोरी है। कर्ज में जो मूल धन है, वह साहूकार की अपनी कष्टार्जित कमाई हो सकती है। उस पर साहूकार का पूरा अधिकार हो, मूल धन साहूकार को वापस लौटाया जाय, यह उचित और आवश्यक है। लेकिन साहूकार जो ब्याज लेता है वह अनुचित है। मूल धन जितना ब्याज वसूल होते ही कर्जदार ऋणमुक्त होना चाहिए।

पूँजीशाही का दूसरा हाथ है, किराया। एक लाख रुपयों का मकान चालीस किरायेदारों को किराये से दिया जाय तो माहवार एक हजार रुपये किराया हासिल होता है। पक्का-मकान कम-से-कम सौ सालों तक चलता है। उस मुद्दत में उसका किराया, चालू या विशेष मरम्मत वगैरह बाद करने पर भी, दस लाख रुपये हो जाता है। बाल-बच्चों को "कायम आमदनी" रख छोड़ने के लिए ही तो ऐसे मकान बाँधे जाते हैं। लेकिन मुफ्त की आमदनी के मानी ही शोषण है। मिहनत एक की, आमदनी दूसरे की। किराये की उचित मात्रा है मकान की छीजन या 'डिप्रिशिएशन'। हर संस्था को अपने वार्षिक हिसाबों में एक "डिप्रिशिएशन फंड" अलग रखना पड़ता है। वही है उचित किराया। वार्षिक छीजन का ठीक मूल्यांकन करना मुश्किल है सही, लेकिन छीजन कभी मकान की मूल कीमत से ज्यादा नहीं हो सकती। अर्थात् मूल धन जितना कुल किराया चुकाने पर किरायादार मकान का मालिक बने, यह उचित है।

शोषण का तीसरा जरिया है, डिव्हिडेंड या "हिस्सा"। किसी कारखाने की लागत पूंजी का मैं एक हिस्सा (शेअर) दूँ तो मुझे अमर्याद भविष्य काल के लिए मुनाफे के हिस्से के तौर पर हजार रुपये पर सौ से डेढ़ सौ रुपये हासिल होते रहेंगे। यह तो ब्याज ही का और एक तरीका है। ब्याज जैसे मूल धन जितना ही लेना उचित है, वैसे ही 'डिव्हिडेंड' भी शेअर की रकम जितना ही लेना होगा। वह पूरा होने के बाद वह कारखाना कामगारों की सामूहिक मिल्कियत बनेगी। उनकी तनख्वाहों में कटौती करने ही से हिस्से-दारों को 'डिव्हिडेंड' हासिल होता है।

चौथा तरीका है, व्यापार में नकद मुनाफा। अनाज जब सस्ता होता है तब खरीदने से और महँगा बनने के बाद बेचने से हजार रुपयों के पंद्रह सौ रु० बन जाते हैं। ढुलाई, संग्रह और बिक्री इत्यादि उचित खर्चों के अलावा व्यापारी को तेजी-मंदी में से जो मुनाफा या घाटा हुआ करता है वह अकेले व्यापारी का होने के बजाय सारे समाज का हो यही उचित है। अर्थात् थोक (होलसेल) व्यापार समाज या सरकार के मातहत चले और चाहे तो नियंत्रित फुटकर व्यापार खानगी तौर पर चले यह उचित होगा, फिर वह सरकार चाहे ग्राम-पंचायत हो या लोकल बोर्ड, प्रादेशिक सरकार या केंद्रीय सरकार हो।

ये तो शोषण के मोटे या खालिस तरीके हैं। इसके अलावा सौदा, जो विक्रेता और ग्राहक के बीच या किसी भी प्रकार की सेवा का मुआवजा तय करते समय होता है, वह भी शोषण का जरिया हो सकता है। दोनों पक्ष एक-दूसरे को कम-से-कम देकर उससे ज्यादा से ज्यादा खींचना चाहते हैं। कभी एक जीतता है, कभी दूसरा; शायद कभी कुश्ती अनिर्णीत भी रहती होगी। बड़े अफसर, वकील, डाक्टर, इंजीनियर आदि बड़ी-बड़ी तनख्वाहें या फीस लेते हैं। लेकिन उचित तनख्वाहें या फीस, या चीजों के उचित दाम निश्चित करने का कोई स्पष्ट तरीका हमारे पास नहीं होता। वैसे ही उस खींचातानी में कौन जीता और कौन हारा यह कहना भी मुश्किल होता है। इसलिए हम अभी उस तरीके को छोड़ देते हैं।

बटाई और ब्याज बिलकुल गैर-मुनासिब हैं। किराया और डिव्हिडेंड अंशावार अनुचित हैं और उचित-अनुचित के बीच की रेखा सुस्पष्ट है। तनख्वाह कितनी हो यह विवाद्य विषय है, लेकिन बटाई, ब्याज तो बिलकुल ही असमर्थनीय हैं। इसलिए हम पहले इन्हीं का निवारण करें। ऐसे सुस्पष्ट विषयों में सर्वसम्मति प्राप्त करना भी मुश्किल नहीं है, अतः सर्वसंमति से कानून बना कर हम शोषण-निवारण कर सकेंगे।

समग्रता

शोषण के सारे प्रकार एकसाथ बंद करने में सहूलियत भी होगी। जैसा ऊपर बताया गया है, एक एक तरीका अलग-अलग से मना करने में पक्षपात का आरोप किया जायेगा। उससे विशिष्ट वर्ग का नुकसान भी हो सकेगा। लेकिन सारे तरीके एकसाथ बंद करने से किसी का भी नाहक नुकसान नहीं हो सकेगा, बशर्ते कि जो सहूलियत एक प्रकार में दी जायेंगी वे ही औरों में भी दी जायें। साहूकार को हम मूल धन लौटाने वाले ही हैं, तो फिर जमीन में लगायी गयी पूंजी भी लौटानी होगी।

भूदान-ग्रामदान से हस्तांतरित होने वाली जमीन में पहले मालिक का बनाया हुआ कुआँ या बाग हो तो उसकी उचित कीमत पाने का वह अधिकारी है। अगर वह उसका भी दान करे तो वह उसकी उदारता होगी। उदारता स्वय-प्रेरित होनी चाहिए। उसके लिए हम किसीको बाध्य नहीं कर सकते, जैसे कि ज्यादा जमीन का कब्जा छोड़ने पर बाध्य करना उचित और आवश्यक है।

समग्र शोषण-बंदी के बाद कोई ग्राम-वासी अपनी खेती छोड़कर शहर में दूकान खोले तो उसको अपने खेत की बटाई (कीमत की किस्तें) कुछ सालों तक मिलेंगी, फिर बंद होंगी। लेकिन उसी दरमियान उसके किराये से लिये हुए मकान का किराया भी पूरा होगा और मकान उसका हो जायेगा। खेत गया, मकान मिला। उस मकान के मालिक का भी नुकसान नहीं होगा। मकान बनाने के लिए उसने अगर कर्ज लिया था तो वह कर्ज भी वार्षिक ब्याज के जोड़ से पूरा हो जायगा और वह ऋणमुक्त होगा।

धर्म-पुरुषों द्वारा निषेध

मनु, महंमद, ईसा मसीह आदि धर्म-पुरुषों ने ब्याज की सख्त मनाही ही की है। उनके जमाने में ब्याज के परोक्ष–किराया और डिव्हिडेंड–मौजूद नहीं थे। होते तो वे उनका भी निषेध ही करते। फिर भी महंमद ने "रिबा" मना किया है। बताया जाता है कि 'रिबा' के मानी ब्याज के बजाय "वृद्धि" है। अर्थात् उनको अतिरिक्त किराया और डिव्हिडेंड का निषेध अभिप्रेत ही है। हर मुस्लिम का—और "मुस्लिम" के मानी हैं ईमानदार आदमी—फर्ज है कि वह सब तरह की रिबा से परहेज करे।

महंमद साहब ने ब्याज देना भी हराम ठहराया है, वह भी दुरुस्त ही है। साहूकार को ढूँढ़ कर उसको ब्याज के लालच में फँसाने वाले कर्जदार ही होते हैं! मेनका ने विश्वामित्र को भ्रष्ट किया; वह खुद पहले ही भ्रष्ट थी!

पैसे का अवतार

पैगंबरों ने जो बतलाया वह भगवान् ही का पैगाम था। भगवान् के राज में ब्याज के लिए स्थान नहीं था। भगवान् के राज्य में सिक्के, नोट, चेक वगैरह नहीं थे; सिर्फ अनाज, दाल, जानवर, दूध, फल, सब्जी, कपास, ऊन, रेशम, शहद, गन्ना, लकड़ी जैसी चीजें थीं और वस्तु-विनिमय हुआ करता था, वस्तु से वस्तु खरीदनी पड़ती थी। उन दिनों भी अक्सर अनाज चलन का, अर्थात् विनिमय के साधन का काम किया करता था। आदमी की सम्पत्ति का नाप अनाज से होता था, लेकिन वह धन नश्वर था। उसका ज्यादा संग्रह करना बेकार था। इसलिए उन दिनों मालदार लोग अपनी अतिरिक्त सम्पत्ति दान धर्म में लगा देते थे। दान प्रवृत्ति आदमी में सहज थी। उस परिस्थिति में कोई पड़ोसी अनाज उधार माँगने आता तो मालदार को लगता मानो भगवान् ही मेरी सहायता के लिए आ पहुँचा है! उसको वह अपने पास का अनाज बिना सवाई के सहर्ष उधार दिया करता। उधार अनाज अगले साल नया ताजा बन कर लौट आया करता, जब कि ढोले में भरा हुआ सड़ जाता!

उन दिनों में भी एकाध लोभी आदमी अपने गरजमंद पड़ोसी से सवाई वसूल किया करता। लेकिन वह नीच, दुष्ट कहलाता; समाज में उसकी इज्जत नहीं होती थी।

लेकिन आज ब्याज-बट्टा सबसे प्रतिष्ठित व्यवसाय बन बैठा है! इसकी वजह है अमर पैसा!

पैसा न मरा होता है, न वह सड़ कर भी ज्यादा रोकता है। उसका संग्रह आसान होता है। लेकिन मार्के की बात यह है कि वह अमर है! भगवान् की बनायी हुई असली संपत्ति सारी नश्वर, और आदमी की बनायी हुई यह कृत्रिम या सांकेतिक संपत्ति अमर, ऐसा अजीब न्याय आज जारी है! पैसे का अवतार हुआ और "चाँद न बदला, सूरज न बदला, नहीं बदला आसमान। कितना बदल गया इनसान!!" आदमी एकाएक बिलकुल बदल गया। उसकी दानवृत्ति गायब हुई। दान की जगह लोभ आया। दान तो दूर, अब वह पड़ोसी को बगैर उधार भी नहीं देता। अगर शोषण का आसान तरीका मनुष्य के हाथ में आया। पैसा असल में निकम्मा खरीदी-बिक्री की सुगमता के लिए। लेकिन आज ही

"करन्सी" (बहने वाला) या "चलन" है, लेकिन व्यवहार में संग्रह के लिए उसका दुरुपयोग होने लगा। मूल दानुत्वशील आदमी लोभी बना और "लोभमूलानि पापानि" इस वचन के अनुसार पैसे के लोभ को लेकर ही चोरी, डकैती, रिश्वतखोरी, काला बाजार जैसे पाप दुनिया में बढ़ते चले। पड़ोसी धर्म मिट गया और अधर्म बढ़ा। "पड़ोसी की आफत वह मेरी आफत," ऐसा कलियुग शुरू हुआ।

दुनिया में आज जो हर तरह की कशमकश जारी है और तीव्र से तीव्रतर बनती जा रही है, उसके मूल में यह अमर पैसा है।

नश्वर पैसा!

जाहिर है कि इस संघर्ष को शांत करने का इलाज भी पैसे को मर्त्य बनाना है। सन् १९६१ के रुपये-नोट सन् १९६२ में न चलें, याने बासी बनें! उनको सरकारी खजाने में लौटा कर नये साल के नोट रुपये बदले में लेना होगा। लेकिन पिछले साल के सौ रुपये के बदले में अगले साल के पचानवे मिलेंगे। पैसे में हर साल पाँच फी सदी कटौती होती जायगी। सरकार नया चलन हर साल छपवा कर तैयार रखेगी, जैसे बुकसेलर नया साल शुरू होने के पहले ही नयी डायरियाँ तैयार रखते हैं।

यह जो पाँच फी सदी कटौती होगी, वह खानगी पैसे पर होगी। सरकार तो चाहे जितने नोट छपवा कर खर्च कर सकती है। ज्यादा नोट छपवाने से महँगाई बढ़ती है और लोगों में असंतोष बढ़ता है, इसलिए सरकार को संयम से काम लेना पड़ता है, यह अलग बात है।

इस मुद्रा ह्रास से ब्याज अपने आप खत्म पड़ेगा! छिटपुट ब्याज-बट्टा बचेगा भी, लेकिन वह समाज में निंदित होगा और कानून से भी मना होगा। ब्याज बंद होने से किराया जैसे शोषण के दूसरे जरिये भी फीके पड जायेंगे। जमीन की बुराई बचेगी भी, लेकिन तो वह अकेली बाने के बाद उसको मिटाना, अर्थात् जमीन को किसान के हवाले कर डालना आसान हो जायेगा।

लोक-संमत कानून

जाहिर है कि यह मुद्रा-ह्रास कानून से ही हो सकेगा। कानून सर्वसंमत हो। ऐसे कानून के लिए सबकी संमति हासिल करना असंभव नहीं है। आज पूँजीशाही को मिटाने के लिए तीव्र संघर्ष चल रहे हैं, लेकिन मुद्रा-ह्रास के जितना सरल, उज्ज्वल, निर्दोष मत्सररहित इलाज अन्य नहीं हो सकता। वह अपने में निसर्गानुसारी भी है। आज का पैसा ही नैसर्गिक है। मुद्रा ह्रास सत्य है, न्याय्य है, हितकारी है, उसका फल, शोषण निवारण आवश्यक है। इससे संघर्ष के मूल ही उखड़ जायेंगे, प्रेम ऐक्य बढ़ेगा। श्रम को पूरा मुआवजा मिलेगा, उद्योगशीलता बढ़ेगी और समाज का कल्याण ही कल्याण होगा। इससे साम्ययोग का एक अनूठा नमूना भारत दुनिया के सामने प्रस्तुत कर सकेगा।

कुछ स्पष्टीकरण

(१) मुद्रा ह्रास से पैसा नष्ट हो जायगा ऐसी बात नहीं है। आदमी को पैसे की जरूरत बढ़ते परिमाण में रहने वाली है, और उसकी पूर्ति के लिए सरकार हर साल ज्यादा नोट छापती जायेगी। एक तरफ मुद्रा-ह्रास और दूसरी तरफ चलन में वृद्धि (पिछले साल दस हजार करोड़ रुपयों से लेन देन बिना रोक टोक के हो सका तो अगले साल ग्यारह हजार करोड़ रुपयों की आवश्यकता होगी।) इनके द्वारा सरकार को अनायास आमदनी होती रहेगी और कर वसूली में कटौती हो सकेगी।

(२) इससे शोषण के मोटे जरिये लुले पड़ेंगे, फिर भी सौदा जैसे सूक्ष्म जरिये बचेंगे ही। उनका इलाज फिर सूझेगा।

(३) इससे संग्रह और लोभ हलका होगा, लेकिन संग्रह बिलकुल असंभव नहीं होगा। संग्रह चाहे जितना बढ़ाया जा सकेगा, लेकिन उसका जरिया होगा लोक-सेवा। पैसा उधार देने से कटौती टलेगी। वैसे ही मैं एक मजबूत मकान बाँध कर उसको किराये पर दे दूँ तो उसकी छीजन जितना किराया मुझको और मेरे पुत्र-पौत्रों को सौ डेढ़ सौ सालों तक, या जितनी उस मकान की आयु हो, तब तक मिलता रहेगा। वरना मेरी पूँजी बीस सालों में खतम होगी। इस तरह पुश्तों के सतत परिश्रम और बचत से करोड़ों की मिल्कियत खड़ी की जा सकेगी, लेकिन वह निर्दोष, निरुपद्रवी, समाजोपकारी मिल्कियत रहेगी।

(४) आर्थिक विषमता भी रहेगी, लेकिन वह शोषणमूलक नहीं, गुणमूलक—उद्यम और बचत को लेकर—होगी। ऐसी विषमता मारक नहीं, प्रेरक होगी। सारे विद्यार्थियों के मार्क्स इकट्ठे करके सब विद्यार्थियों को समान बाँट देने से सारे विद्यार्थी अभ्यास छोड़ बैठेंगे।

(५) मुद्रा ह्रास मंजूर होने के बाद जमीन के बँटवारे में पिछले मालिकों को उनकी जमीन का मुआवजा उदारता से देने में भी आपत्ति नहीं रहेगी। सतत (इटरनल) शोषण से बचने के लिए मुआवजे की किश्तें दो-चार साल ज्यादा भी देनी हों, तो उसका रंज नहीं होना चाहिये। इससे जमीन मालिक भी इस भारी क्रान्ति के लिए अनुकूल हो सकेंगे।

आइये, जमीन का बँटवारा और मुद्रा-ह्रास के द्वारा हम इस साम्ययोग को सिद्ध करें। इसके लिए इस कार्यक्रम को चाहने वाले सारे सज्जन इकट्ठे हों, सक्रिय हों और प्रचारशील हों; स्वयं भरसक पालन करें, अकेले करें और सामूहिक रूप में भी करें और दूसरों को समझायें।

मद्य-पान के विरुद्ध श्री साधु सुब्रह्मण्यम् की पदयात्रा

ता० ११ सितम्बर को विनोबा की 'जन्म जयन्ती' के दिन तेलंगाना के मेदक जिले के तूप्रान नामक गाँव से श्री साधु सुब्रह्मण्यम् की पद यात्रा शुरू हुई। श्री साधु के साथ "गांधीदल" में श्री माणिक्य राव, श्री रंगारेड्डी, श्री मूर्तिराज, योगगिरि आदि कार्यकर्ता शामिल थे। करीब २०० मील चल कर यह यात्रा विजया दशमी के दिन बोधन तालुका के कोटगीर गाँव में समाप्त हुई। उसी दिन गांधीदल सत्याग्रह शिक्षण शिविर का उद्घाटन हुआ। कोटगीर के सरपंच श्री के० रामचन्द्र राव के सभापतित्व में स्थानिक एम० एल० ए०, श्री माधवराव देशपांडे ने शिविर का उद्घाटन किया। पाँच सौ लोगों की सभा में साधुजी का मर्मस्पर्शी भाषण हुआ। इस सभा का उपस्थित जनता पर भारी प्रभाव पड़ा।

चालीस दिनों की यात्रा में श्री साधु को पैंतालीस गाँवों का अनुभव प्राप्त हुआ। अक्सर गाँवों के सरपंच ही सभा के अध्यक्ष बनते थे। ताड़ी, शराब की बुराइयों के बारे में श्री साधुजी का हृदयस्पर्शी भाषण होता था। मद्य निषेध का कानून बनाने के प्रस्ताव पास होते थे। मद्य-पान के विरुद्ध मुक्त कंठ से नारे लगा कर मद्य निषेध की माँग करते हुए सभा विसर्जित होती थी।

मद्यनिषेध के इस आंदोलन के लिए निजामाबाद जिला ही क्यों चुना गया? इसलिए कि तेलंगाना के नौ जिलों में निजामाबाद की जिला परिषद् ही पहली है, जिसने मद्य-निषेध की माँग करते हुए प्रस्ताव पास किया है। श्री साधु ने अपनी तपस्या के लिए इसी जिले को चुना और जन शक्ति को जगा कर सरकार की गफलत दूर करना चाहा।

बोधन और मदनूर की समितियों के प्रमुखों का सक्रिय सहयोग प्राप्त हुआ। पोतंगल गाँव की सभा में बोधन समिति के प्रमुख श्री किशनराव ने अध्यक्षपद ग्रहण किया और श्री साधु की पदयात्रा का स्वागत किया।

२ अक्टूबर को श्री साधु का परिवार मदनूर में था। उनकी कोशिश और प्रचार से वहाँ की ताड़ी की दूकान के साथ कसाई की दूकानें भी बन्द हो गईं। बापू की पुण्य जयन्ती मनायी गई। शाम को बड़ी सभा हुई, जिसमें साधु के द्वारा शराब का एक घड़ा फोड़ा गया।

२ अक्टूबर से आत्म शुद्धि के लिए साधु ने पदयात्रा में भी उपवास जारी रखा। सात-आठ मील का फासला चल कर शाम को साधु का भाषण हर दिन होता था। एक तो बरसाती मौसम, दूसरे काली जमीन के कच्चे रास्ते, तिसपर काँटे और कीचड़!

शिवूर गाँव में यात्री दल को एक नाले के प्रवाह ने घेर लिया। देखते ही देखते पूरा गाँव जल मग्न हो गया। गाँव के हरिजन निराश्रित हो गये। उन बेचारों के मकानों में पानी घुसने की वजह से उन्हें सवर्णों के मकानों में आश्रय लेना पड़ा। मालूम हुआ कि हर साल इस गाँव की यही हालत रहती है। यात्रा आगे बढ़ी। शिरिपुर गाँव पहुँची, तो वहाँ की नदी में जो कि गोदावरी नदी की एक बड़ी शाखा है, बाढ़ थी। नदी पार करके बोधन तालुका के पोतंगल गाँव पहुँचना था। कद्दुओं की मदद से तीन मील तक तैर कर श्री साधु ने बड़ी हिम्मत से उसको पार किया। इस घटना ने श्री साधु की हिम्मत और आत्म समर्पण की एक मिसाल प्रस्तुत की है। श्री साधु ने नदी में अपने एक साथी श्री शायन्ना को साथ लेकर बाकी साथियों को लौटा दिया।

मदनूर के सब-इन्स्पेक्टर ने जिस भक्ति और श्रद्धा से श्री साधु को नदी पार कराया है, उसकी कितनी भी तारीफ की जाय, थोड़ी ही है। वे खुद श्री साधु के साथ तीन मील अपने चार कान्स्टेबलों को लेकर तैरते हुए आये। एक देशभक्त सत के साथ उन्होंने अपने कर्तव्य का पालन किया है।

उस दिन शाम को पोतंगल में बड़ी सभा हुई। उसमें भाषण करते हुए श्री साधु ने नदी पार करने के अपने अनुभव को यों व्यक्त किया—

> प्रवाह युक्त ऐसी गहरी और चौड़ी नदी को मैं कद्दुओं की सहायता से पार कर सका, तो भव-सागर को पार करने में भगवत् भक्ति का सहारा क्यों नहीं लिया जाय? उस भगवत् भक्ति को हासिल करने में ताड़ी, शराब आदि मादक द्रव्य अत्यन्त बाधक हैं।

मदिरालय के पुजारियों पर साधु के इस भाषण का काफी प्रभाव पड़ा। सभा के अन्त में कई पियक्कड़ भाई सामने आये और साधु से मिल कर विनती की कि ताड़ी की यहाँ से दूकानें ही उठा देनी चाहिए।

कोटगीर, —कृष्णराव

बिहार के बाढ़-पीड़ित क्षेत्र में श्री जयप्रकाश नारायण

• रामनन्दन सिंह

बिहार सर्वोदय-मंडल की कार्य-समिति के सदस्यों एवं विशेष आमंत्रितों की १० अक्टूबर की बैठक के निर्णयानुसार सर्वोदय-कार्यकर्ता 'बीघा-कट्ठा अभियान' स्थगित कर बाढ़-पीड़ितों की सेवा में जुट गये। श्री जयप्रकाश नारायण ने भी बाढ़-पीड़ित क्षेत्रों में दौरा करने का निश्चय किया। अत्यावश्यक कार्य से उन्हें दिल्ली जाना अनिवार्य था। अतः बिहार सर्वोदय-मंडल ने १६ अक्टूबर से उनकी यात्रा का कार्यक्रम बनाया, लेकिन श्री जयप्रकाश नारायण के सुझाव के अनुसार बिहार के राज्यपाल ने १६ अक्टूबर को ही पटना 'राजभवन' में बिहार के कुछ प्रमुख लोगों की बैठक बाढ़-पीड़ितों की सहायता करने के कार्यक्रम पर विचार करने के लिए बुलायी थी, इसलिए यात्रा एक दिन के लिए बढ़ा दी गयी।

पीड़ित क्षेत्रों के दौरे में श्री जयप्रकाशजी के साथ श्रीमती प्रभावती बहन, जिन्हें श्रद्धा से हम लोग 'दीदी' कहते हैं, सुनयना बहन और मैं लगातार था। १७ अक्टूबर को हम रेल द्वारा पटना से किउल गये और आगे किउल से बड़हिया आये। बड़हिया डाक-बंगले में सामान रख कर हम लोग पास के मुसहरों के टोले गये। एक-एक कर उनका मकान गिर गया था और वे स्थानीय धर्मशाला एवं उच्च विद्यालय में समय बिता रहे थे। कई बीमार व्यक्तियों को भी देखा जो स्थानाभाव से बरामदे के एक कोने में पड़े थे। हरिजनों ने जयप्रकाशजी से शिकायत की कि जिस जमीन पर वे पचीस वर्ष से मकान बनाये हुए थे, उस जमीन पर अब जमीन-मालिक मकान बनाने से रोकते हैं। साथ में बड़हिया क्षेत्र से बिहार विधान-सभा के सदस्य श्री कपिलदेव सिंह, जिला कांग्रेस-कमिटी, मुंगेर के अध्यक्ष श्री रामगुलाम शर्मा, बिहार सर्वोदय-मंडल के संयोजक श्री रामनारायण सिंह के अतिरिक्त कुछ राजनीतिक एवं सामाजिक कार्यकर्ता थे।

बड़हिया के प्रखंड विकास पदाधिकारी ने बताया कि 'गृह-आवास कानून' अधिसूचित क्षेत्र में लागू नहीं होता है, फिर भी वे जमीन-मालिकों से मकान बनाने की सुविधा प्रदान कराने का प्रयास कर रहे हैं। श्री जयप्रकाश नारायण के सुझाव पर बड़हिया के प्रमुख व्यक्तियों की बैठक में सर्वदलीय बाढ़-पीड़ित सहायता-समिति का गठन किया गया, जिसके संयोजक स्थानीय सर्वोदय-कार्यकर्ता श्री यमुना प्रसाद सिंह बनाये गये।

चार बजे संध्या हम लोगों ने बड़हिया से छह मील दूर बड़पुरा घाट के लिए प्रस्थान किया। जगह-जगह सड़क टूटी हुई थी। सड़क के दोनों किनारे बाढ़-पीड़ित अनाथ जैसे पड़े थे। न रहने का ठिकाना, न खाने की व्यवस्था। इन्दुपुर, घुसरचक, उफरौल, गंगासराय, जैतपुर, तेहरिया, प्रतापपुर, पहाड़पुर, हरियापुर होते हुए बगोदरघाट आये। दो नाव का इंतजाम था। जैसे ही नाव खुलने लगी कि त्यागीजी को दौड़ कर आते हुए देखा। श्री लाल सिंह त्यागी, बिहार सरकार के संसदीय सचिव तो हैं ही, बिहार राज्य पंचायत परिषद् के प्रधान मंत्री एवं अखिल भारतीय पंचायत परिषद् के उप-सभापति हैं। त्यागीजी के साथ हम लोग नाव पर चल पड़े। रास्ते में कई जानवरों की लाश एवं एक मनुष्य की लाश मिली, जिससे दुर्गन्ध आ रही थी। मनुष्य-लाश की केवल हड्डी बच रही थी। रामनडीह में नाव लगी, जहाँ स्थानीय समाज-सेवी श्री कामेश्वर पंडित ग्रामीणों के साथ मिले। आपने श्री जयप्रकाशजी से बस्ती में चल कर बाढ़ से हुई क्षति का निरीक्षण करने का आग्रह किया। रामनडीह गाँव शक्तिपुर पंचायत क्षेत्र में पड़ता है, जिसके मुखिया श्री बजरंगी बाबू थे, लेकिन अब श्री कामेश्वर पंडितजी ही हैं। फिर नाव आगे चली और गाँव को देखते हुए हम लोग शक्तिपुर पहुँचे, जहाँ से दो मील पैदल चल कर लक्खीसराय अम्बर विद्यालय में आना था। रात में लक्खीसराय अम्बर विद्यालय में भोजन एवं विश्राम किया।

हम १८ अक्टूबर को सुबह लक्खीसराय से जीप द्वारा प्रस्थान कर सर्वप्रथम नदियावाँ गये। वहाँ के सामाजिक कार्यकर्ता श्री संत प्रसादजी पहले से ही उपस्थित थे। सर्वप्रथम उस स्कूल का भग्नावशेष देखे, जिस स्कूल की शरण से ९४ हरिजन शरणार्थी बाढ़ की धारा में बह गये। उनके घरों की जगह एक-दो बाँस के खंभे नजर आये। उनके डूबने की करुण कहानी सुन कर आँखों में आँसू के अलावा आ ही क्या सकता था। जयप्रकाश बाबू को यह दृश्य बर्दाश्त नहीं हुआ और वे आगे बढ़ गये। पूरा गाँव मालूम पड़ता था कि मानों किसीने गिरा दिया हो। उस ईंट के पक्के मकान को भी देखा, जिस पर पूरी बस्ती के निवासियों ने चढ़ कर अपनी जान की रक्षा की थी। बाढ़ के समय कुओं में पानी इकट्ठा हो गया था, जो अब सड़ रहा था। लोग वही गंदा और सड़ा हुआ पानी पीकर जान की रक्षा कर रहे थे। ग्रामीणों की हिम्मत पस्त थी। सूझ नहीं रहा था कि वे क्या करें।

श्री जयप्रकाशजी के पूछने पर लोगों ने बताया कि कुओं को उड़ाहने के लिए उन्हें 'पंपिंग सेट' चाहिए। एक सप्ताह से अधिक हुए एक पंपिंग सेट सरकार की ओर से भेजा गया था, लेकिन उसके कुछ पुर्जे खराब थे। मिस्त्री पुर्जे लाने मुंगेर गया है, वह अभी तक नहीं लौटा है। २०० घरों में से केवल छह घर बचे हैं, बाकी बिलकुल पस्त हो गये हैं। श्री जयप्रकाशजी ने ग्रामीणों को बताया कि "यदि पंपिंग सेट आने में विलम्ब हो तो स्वयं कुएँ का उड़ाह कर लेना चाहिए। पंपिंग सेट के आविष्कार हुए कितने दिन हुए हैं! इसके पहले भी बाढ़ आती थी और लोग कुआँ उड़ाह कर पानी पीते थे। अपने में छिपे हुए पुरुषार्थ को जगाना अत्यावश्यक है।"

मालूम हुआ कि उस बस्ती में जोरों से 'टायफायड' का ज्वर फैला है। एक डाक्टर साहब का कैम्प है, लेकिन दवा नहीं है! डाक्टर साहब ने बताया कि साधारण दवा तो है, लेकिन 'टायफायड' की दवा अभी तक नहीं आयी है। कल मुंगेर जाकर लाना है, लेकिन कीमती होने के कारण जरूरत के अनुसार मिलने में कठिनाई होती है। गाँव वालों ने बताया कि रेलवे लाइन में छोटा पुल होने के कारण ही उनकी दुर्गति ऐसी हुई है। पहले केवल सीमे नदी की धारा थी, इसलिए छोटे पुल से काम चल सकता था, लेकिन अब किउल, कोल्हारी, नारी और सीमे, ये चार नदियाँ मिलने से धारा बढ़ गयी है। सबने एक स्वर से रेलवे में बड़ा पुल बनाने का सुझाव दिया। लक्खीसराय से नदियावाँ तक साथ में बिहार सरकार की ओर से लक्खीसराय के 'रीलिफ इंचार्ज' एक 'आइ० ए० एस०' अधिकारी थे। वे नदियावाँ से ही लौट गये।

नदियावाँ से जीप द्वारा हम लोगों ने *मसौढ़ा के लिए प्रस्थान किया।* खादी-ग्रामोद्योग संघ के मंत्री श्री निर्मल कुमारजी पहले से ही सड़क पर खड़े थे। सड़क से दो फर्लांग की दूरी पर मसौढ़ा गाँव दूर से ही ध्वस्त नजर आता था। मसौढ़ा जाते समय सिखमा गाँव के हरिजन टोली को देखा, जहाँ से तीन व्यक्ति नदी की धारा में बह गये। ध्वस्त मकान की खुदाई शान्ति-सैनिक एवं मुसहर कर रहे थे। दल के पहुँचने के समय बकरियों की दो लाशें निकलीं। हरिजनों की करुण कहानी सुन कर हम लोग पानी और कीचड़ में तैरते हुए मसौढ़ा पहुँचे।

सर्वप्रथम मसौढ़ा उच्च विद्यालय का ईंटों का वह मकान देखा, जो नीचे गिरा पड़ा था। लगता था कि किसी होशियार कारीगर ने अपनी कारीगरी से सजा कर नीचे डाल दिया हो। दुर्गापूजा की छुट्टी के कारण विद्यालय बन्द था। अतः छात्रावास में केवल सात छात्र रह गये थे और छात्र आने पर चढ़ गये थे। दो छात्र तो किसी तरह विद्यालय के गिरने पर विद्यालय से लगे हुए पुस्तकालय के पक्के छत पर चले गये और बाकी पाँच एक सूखे की मोटी लकड़ी के साथ धारा में बह चले! कुछ दूर जाने पर लकड़ी छात्रों के साथ रेलवे पुल से टकरायी और एक छात्र को पुल पर चढ़ जाने का मौका लगा, बाकी चार बह गये, जिनका कोई पता नहीं चला। संकट की घड़ी में विषधर साँप भी किसी को नहीं काटते, इसका स्वरूप उदाहरण पुस्तकालय-भवन पर चढ़े उन दो छात्रों को मिला। उस भवन पर वे छात्र और कई विषधर साँप साथ-साथ अपनी-अपनी जान की रक्षा में एक-दूसरे को मारने एवं काटने को भूल गये थे!

श्री जयप्रकाशजी के साथ हम लोगों ने गाँव में प्रवेश किया। वहाँ उत्तर प्रदेश के २४ सर्वोदय कार्यकर्ताओं के साथ बिहार के कुछ कार्यकर्ता रास्ते की सफाई, गिरे हुए घर से सामान निकालने एवं अन्य सेवा कार्य में लगे थे। सड़े हुए अनाज एवं चारे की दुर्गन्ध से दम घुट रहा था। जगह-जगह सड़े हुए अनाज की रोटी बनती नजर आयी, पूरा गाँव भयभीत था। जिस किसान के घर सैकड़ों मन अनाज था वह आज पाव भर दाने के अभाव में भूख से तड़प रहा है। सरकार की ओर से निःशुल्क राशन का भी इन्तजाम किया गया था। उस गाँव के निवासी जो सरारी रेलवे स्टेशन के कर्मचारी थे, उन्होंने गाँव की क्षति, आबादी आदि का पूरा आँकड़ा श्री जयप्रकाशजी को पढ़ कर सुनाया। मसौढ़ा गाँव का टोला मसौढ़ा से सटा है। रामनगर तेजपुर तीन वर्षों से बसा था। ६० परिवार उस टोले में थे। वह टोला बिलकुल रेत बना हुआ दीखता है। कहीं-कहीं टूटे हुए बर्तन एवं पक्के बाँस के खंभे नजर आते हैं। इस टोले से एक ५० वर्षीय महिला गाँव में काम करने गयी, जो बाढ़ के कारण न आ सकी थी, वही जीवित थी। टोले के बाकी सभी निवासी बाढ़ में बह गये। जानवरों की बात तो कहनी ही क्या है! उस अभागे स्थान पर जाकर जयप्रकाशजी ने रो दिया।

मसौढ़ा गाँव के निवासी श्री [illegible] सिंह ने रो-रोकर जब अपनी करुण कहानी सुनाते समय बताया कि उनके परिवार के छह व्यक्ति बाढ़ में बह गये और वे देखते रह गये, तो उपस्थित सभी व्यक्तियों की आँखों से आँसू निकल पड़े। मसौढ़ा गाँव की आबादी लगभग २१०० थी, जिनमें २०० परिवार थे। कुल १५५ व्यक्ति बाढ़ में बह गये हैं और एक मकान को छोड़ कर बाकी सबके सब ध्वस्त हैं। मसौढ़ा से सरारी उच्च विद्यालय के लिए पैदल ही प्रस्थान किया। रास्ते में मसौढ़ा ग्राम-पंचायत के कुकरहा गाँव के तीन चार

, जिन्होंने बताया कि पुलइया गाँव के १०४ मकानों में से केवल दो बचे हैं, बाकी १०२ का भग्नावशेष ही देखने को मिलेगा। इन लोगों ने अन्य लोगों के अतिरिक्त मसौदा से पुलइया को मिलाने के लिए नदी में पुल की माँग की।

श्री जयप्रकाश नारायण ने अपने भाषण अथवा लोगों से बातचीत में बराबर स्पष्ट किया कि वे न तो सरकारी अधिकारी हैं, न राजनीतिक नेता। वे तो सर्वोदय का एक सेवक हैं। बाढ़ पीड़ितों को उनसे अधिक आशा करनी नहीं चाहिए। हाँ, जो हालत उन्होंने देखी सुनी है और पीड़ितों की ओर से जो माँग है उसे वे बिहार और भारत सरकार तक अवश्य पहुँचा देंगे और प्रयास करेंगे कि उचित मात्रा में उन्हें सहायता मिले, लेकिन सरकारी सहायता तो गरम दूध में जामन जैसी होगी। गरम दूध तो जनता की अपनी शक्ति है।

> अतः केवल राज्य शक्ति के भरोसे चुपचाप बैठे रहने से न वे अपने पैरों पर खड़े होंगे, न देश बनेगा। पीड़ितों को हिम्मत बाँध कर अपनी सहायता आप करनी चाहिए।

हरारी उच्च विद्यालय में भोजन के बाद सर्वोदय कार्यकर्ताओं की बैठक में शामिल हुए। बैठक ने बाढ़-पीड़ितों की सेवा शरीर से करने का निश्चय तो किया ही था, पर आगे से निम्न पाँच कार्यक्रमों को सघन रूप से करने का निर्णय किया।

(१) क्षति की सही जानकारी का आँकड़ा तैयार करना।

(२) पीड़ितों को हिम्मत बँधा कर सामूहिक भावना के आधार पर ग्राम-निर्माण करने के लिए तैयार करना।

(३) राशन एवं अन्य सहायता के उचित बँटवारे में सहायता करना।

(४) आसपास के व्यक्तियों से सामान आदि इकट्ठा कर जरूरतमंद व्यक्तियों के बीच वितरण करना।

(५) बीमारियों के बीच औषधि वितरण-कार्य करना।

बैठक में शेखपुरा थाना के सुल्तानगंज गाँव से भी कुछ भाई आये थे। बताया कि

> सुल्तानपुर ग्राम के १२० परिवारों में से ६२ परिवारों के घर तो बिलकुल ध्वस्त हो गये हैं तथा सैकड़ों पशु बाढ़ में बह गये हैं।

सिरारी में तीन बजे दिन में हम लोग लक्खीसराय लौटे। रास्ते में सिसमा गाँव को देखा, जहाँ २२६ घरों में से २१५ तो बिल्कुल नेस्तनाबूद थे। उस गाँव में 'टायफायड' बड़े जोरों से शुरू हो गया था और लोगों ने बताया कि उस समय भी लगभग १०० व्यक्ति टाइफायड से पीड़ित थे। सीसवाँ गाँव की आबादी १२८ है, जिनमें से तीन व्यक्ति की मृत्यु बाढ़ में बह जाने के कारण हुई। गाँव के लोगों ने श्री सूर्यप्रसादजी के मकान पर चढ़ कर अपनी जान की रक्षा की। सीसवाँ के बाद बिल्कुल नेस्तनाबूद गाँव विहटा मिला। वहाँ के सामाजिक कार्यकर्ता श्री वासुदेव रायजी ने बताया कि १६२ परिवारों के घरों में से केवल दो मकान बचे हैं, बाकी बिल्कुल गिर गये हैं। देखने से लगता था जैसे किसी ने बम गिरा कर पूरी बस्ती को ही बर्बाद कर दिया है। विहटा में ही गरसंडा के लोग आये हुए थे, जिन्होंने बताया कि

> उस गाँव में दो व्यक्तियों एवं २५५ मवेशियों की मृत्यु बाढ़ के कारण हुई है। १६० मकानों में से १५७ बिल्कुल ध्वस्त हो गये और पूरी बस्ती के लोगों ने श्री रामगुरुक सिंह के मकान पर अपनी जान बचायी।

१० अक्टूबर की सुबह में श्री त्यागीजी पटना लौट आये और हम लोग श्री जयप्रकाशजी के साथ लक्खीसराय से खड़गपुर के लिए चले। लक्खीसराय खड़गपुर जाते समय लक्खीसराय से कुछ दूर रामपुर गाँव में श्री जयप्रकाश बाबू के आगमन के अवसर पर सूर्यगढ़ा अंचल के पंचायतों के मुखिया एवं समाज सेवियों की आम सभा का आयोजन प्रजा सोशलिस्ट नेता श्री गीता प्रसाद सिंह ने की थी। सूर्यगढ़ा अंचल के चौबीस पंचायतों की आबादी एक लाख दस हजार की है। श्री गीता प्रसाद सिंह एवं अन्य लोगों ने सिंगारपुर सूरजीचक, नवाबगंज, बननिया, खरना, किशनपुर आदि गाँवों की चर्चा में बाढ़ से हुए नुकसान का वर्णन किया। सोढ़बीचर में बड़े जोरों का हैजा शुरू हो गया है और अन्य स्थानों में भी हैजा एवं टायफायड आदि शुरू होने की आशंका है। अतः अस्थायी रूप से एक डाक्टर की नियुक्ति की माँग लोगों ने की। रामपुर, मानो, सिंगारपुर, जगदीशपुर, अमरपुर, अलीनगर राहनपी आदि पंचायतों की ओर से आम सभा में क्षति का वर्णन ग्राम पंचायत के मुखिया ने किया। श्री जयप्रकाश बाबू ने उपस्थित जनसमूह को जनशक्ति के महत्त्व पर प्रकाश डाला और लोगों से योजना बना कर पूरे गाँव में ईंट के मकान बनाने की सलाह दी।

स्त्रियाँ अधीनता से कैसे मुक्त होंगी?

• विनोबा

आज स्त्रियों को पुरुषों के अधीन रहना पड़ता है। यह आज की ही बात नहीं है; बल्कि बीच के जमाने में तो आज से भी अधिक अधीनता थी। बहुत पुराने जमाने में याने वेद के काल में स्त्रियों को आजादी थी। यह दस हजार साल पहले की बात है। उसके बाद जितना काल गया, खास करके बाहर से देश पर आक्रमण हुए उस काल में, स्त्रियों की रक्षा करनी पड़ी। तब से स्त्रियों की अधीनता का आरंभ हो गया—स्त्री का कोई स्वामी हो, ताकि वह उसका बचाव करे। यह हिन्दुस्तान की गुलामी का आरम्भ है। यह गुलामी हजार बारह सौ सालों से चली आयी है।

बीच बीच में और आज भी कहीं-कहीं देखते हैं कि स्त्रियाँ परदे में रहती हैं। असम में तो बहुत आजादी है। लेकिन बिहार में जरा देखिये। मेरी सभा में तो बहनें वहाँ आती हैं, लेकिन दूसरी सभाओं में नहीं आती हैं। मुझ पर एक निष्ठा बैठी है, इसलिए वे आती हैं। फिर भी कुछ स्त्रियाँ जो नहीं आती, रात में आठ-नौ बजे आती हैं, दर्शन चाहती हैं और देख कर चली जाती हैं। असम और खास करके केरल में स्त्रियाँ आजाद हैं। उसका कारण यह है कि ये प्रदेश मुसलमानों के आक्रमण से बचे हैं। मुसलमानों में महिलाओं को परदे में रखने का रिवाज है। जहाँ जहाँ मुसलमानों का राज हुआ, वहाँ की बहनें परदे में रहा करती थीं। अब जैसे अंग्रेजों का अनुकरण करते हैं, वैसे उन दिनों मुसलमान राजाओं का अनुकरण किया जाता था।

इस स्वाधीनता के साथ-साथ ज्ञान और वैराग्य चाहिये। बहनों में प्रेम तो भरा है, भाइयों में भी है, लेकिन बहनों में विशेष है। यह अच्छा गुण है। लेकिन

> **प्रेम के साथ ज्ञान और वैराग्य नहीं होगा तो स्वाधीनता पूरी नहीं होगी।**

मैंने बहुत दफा कहा है कि स्त्रियों में शास्त्रकार नहीं हुईं, भक्त स्त्रियाँ हुई हैं। मीराबाई का नाम तो सब जानते हैं। इस प्रदेश में सती का नाम लिया जाता है। ऐसी मिसालें तो हैं, लेकिन ऐसी मिसाल अभी तक नहीं मिली है कि कोई महिला शास्त्रकार है और उसका असर समाज पर है, समाज का नियमन उसके हाथ में है। इसका कारण यही है कि ज्ञान और वैराग्य का अभाव है। प्रेम से कुछ काम बनता है, घर में आनन्द और सौख्य होता है। पर इतने से स्वाधीनता नहीं होती। देह से अलग होकर, आत्मा का स्वरूप क्या है, यह सोचने की आदत होनी चाहिये।

'पुरुषों के अधीन होने के लिए ही स्त्री का जन्म हुआ', ऐसी तालीम आज स्त्रियों को बचपन से मिलती है। वास्तव में स्त्रीपन देह का है। स्त्री और पुरुष, दोनों आत्म-स्वरूप हैं। पर हमारे समाज में उलटा है। लोग समझते हैं कि नारी तो माया का अवतार है। नारी प्रकृति है और पुरुष आत्मा। यह आत्म-देवता और वह प्रकृति। मनुष्य पुल्लिंग याने आत्मा। यह है शंकर और वह पार्वती। यह है विष्णु और वह लक्ष्मी। ऐसी कल्पनाएँ हमारे लोग करते हैं। विष्णु तो पुरुष-देह में भी है और स्त्री-देह में भी है। लक्ष्मी दोनों के देह में है। स्त्रियों में भी उतने ही विष्णु हैं, जितने पुरुषों में; बल्कि यह समझते नहीं हैं, इसलिए लड़की का नाम लक्ष्मी होता है, पार्वती होता है। पर लड़की का नाम कभी विष्णु, नारायण, हरि नहीं होता। ये नाम पुरुषों ने अपनाये हैं।

स्त्रियों को यह नहीं सिखाया गया कि स्त्री-देह में उतना ही विष्णु है, जितना पुरुष देह में। यह शिक्षण हमारे देश में होना चाहिये। यह ज्ञान स्त्रियों और पुरुषों को भी मिलना चाहिये।

> **यह पराधीनता तभी जायेगी जब हम हम विष्णु स्वरूप हैं, आत्म स्वरूप हैं यह भान होगा। जब स्त्रियाँ अपने को लक्ष्मी स्वरूपा समझेंगी, तब तक उनकी पराधीनता नहीं जायेगी।**

मराठी में बोलते हैं—'लक्ष्मी' घर में नहीं है। खेत का मालिक बोलता है—काम करने के लिए चार 'लक्ष्मियों' को बुलाओ। अर्थात् चार स्त्रियों को। इस तरह से 'स्त्री' को 'लक्ष्मी' के साथ जोड़ा है। अब स्त्रियाँ स्वाधीनता चाहती हैं तो अपनी लड़कियों के नाम नारायण, हरि, विष्णु रखने चाहिये। भेद मिटाना है तो यहीं से आरम्भ करना चाहिये। कोई लड़का नारायण है और कोई लक्ष्मी भी है। कोई लड़की लक्ष्मी भी है, कोई लड़की नारायण भी है। पुरुष अपने को कभी लक्ष्मी नहीं कहेंगे—राम, कृष्ण, हरि कहेंगे और स्त्रियाँ लक्ष्मी, पार्वती कहेंगी। लेकिन जो आजादी चाहती हैं, वे इस तरह नाम रखें।

> **यह विनोद नहीं है। समझने की जरूरत है कि आत्म-तत्त्व का आरोपण पुरुष पर और प्रकृति-तत्त्व का आरोपण स्त्री पर है। यह बिल्कुल गलत विचार है। जो देह-अंश है, चाहे पुरुषों का हो, चाहे स्त्रियों का, दोनों प्रकृति के अंश हैं और अन्तर-तत्त्व दोनों का जो है, वह है आत्म-तत्त्व। यह ज्ञान और वैराग्य स्त्रियों को होना चाहिये। गुलामी से, अधीनता से छुटकारा पाने का यही एकमात्र उपाय है।**

[दौलतखरिया, शिवसागर,
१५-१०-'६१]

[अपराध : कारण और निवारण पृष्ठ २ से]

में दण्ड-नीति उतनी ही अधिक प्रबल होगी। दंड को, सजा को अगर आज हम समाज में कम चाहते हैं तो समाज में पुलिस के लिए विश्वास व प्रतिष्ठा बननी चाहिए। समाज में पुलिस के लिए जितनी इज्जत ज्यादा होगी, उसके लिए जितना विश्वास अधिक होगा, दंड का प्रयोग उतना ही कम होगा। जितना पुलिस के लिए विश्वास कम होगा, दंड का प्रयोग भी उतना ही अधिक होगा। इंग्लैण्ड का पुलिस वाला सबसे ज्यादा अच्छा है। लेकिन लोगों को उस पर विश्वास कम है। इसका एक कारण है कि इंग्लैंड का मनुष्य हमेशा पुलिस से डरता रहा है, संगठित पुलिस की शक्ति कहीं मेरी राजनैतिक व व्यक्तिगत स्वतंत्रता का अन्त न कर दें, इसलिए वह पुलिस से डरता रहता है। पुलिस की संगठित शक्ति मनुष्य की राजनैतिक स्वतंत्रता के विरोध में खड़ी हो सकती है, इसका मतलब यह हो जाता है कि आगे चल कर पुलिस की शक्ति जितनी बढ़ती है, नागरिक की स्वतंत्रता उतनी ही क्षीण होती है। इसलिए इंग्लैण्ड में पुलिस की शक्ति का ज्यादा विकास नहीं हो सका। दूसरे देशों में पुलिस का विकास व उसकी स्थापना बहुत पहले हुई, इंग्लैंड में १८२९ में हुई। असल में पुलिस का 'फंक्शन' क्या है? पुलिस किसलिए आयी? फौजों का उपयोग कम-से-कम हो, इसलिए पुलिस आयी। पुलिस 'सिविल' है, 'मिलिट्री' नहीं। पुलिस हमारे सिविल समाज में रहती है, सैनिक समाज में नहीं। सेना के सिपाही का उपयोग कम-से-कम हो, शस्त्र का और दंड का उपयोग कम-से-कम हो, इसके लिए पुलिस की जरूरत है।

आदमी का अन्त समस्या का हल नहीं

पुलिस वाले कहते हैं कि विनोबा असफल हुआ। क्या आप सफल हुए? आप किस बात में सफल हुए? कितने डाकुओं को अपराध से मुक्त कराया आपने? अपराध से मुक्त नहीं कराया, जीवन से ही मुक्त करा दिया, तो समस्या थोड़े ही हल हुई, आदमी ही हल हो गये! आदमियों का हल होना क्या कोई समस्या का हल होना है?

> मनुष्यों का अन्त कर देने से समस्या का हल नहीं होता। मनुष्य हल हो जाता है, समस्या ज्यों की त्यों बनी रहती है!

आपका व मेरा यह काम है कि समाज में इस बुद्धि का बीजारोपण करें कि जहाँ अपराध है वहाँ दंड से बचने में होशियारी नहीं होनी चाहिए। मनुष्य पुण्य तो चाहता है अच्छे कामों का, पर अच्छे काम नहीं करता। पाप का फल नहीं चाहता, पर पाप करना चाहता है।

दूसरे के दुःख को अपना दुःख समझो, दूसरे के सुख को अपना सुख मानो—यहाँ तक तो हमको सबने पहुँचा दिया था; लेकिन गांधी ने एक चीज और हमको सिखाई कि दूसरे की गलती को अपनी गलती समझो, दूसरे के अपराध को अपना अपराध मानो। समाज विज्ञान में गांधी की यह हमें विशिष्ट देन थी। जब तक अपराध दूसरे का है, हम सब न्यायाधीश हैं और जब अपराध अपना है तो हम सब हाथ जोड़ कर खड़े हैं, माफी के उम्मीदवार हैं, क्षमा प्रार्थी हैं! तो गांधी ने एक मंत्र सिखाया कि अपने लिए न्याय और दूसरे के लिए क्षमा। साधारण नीति क्या है? अपने लिए क्षमा, दूसरे के लिए न्याय। गांधी ने कहा कि इसे उलट दो, दूसरे के लिए क्षमा और अपने लिए न्याय माँगो।

यह अहिंसक अपराध-चिकित्सा कहलाती है। अपराध की चिकित्सा हो और अहिंसा से हो तो किस प्रकार हो, यह हमें इससे विदित होता है। जब हम दूसरे के अपराध को अपना अपराध समझने लगेंगे तो अपराध धीरे-धीरे कम होकर मिट जायेंगे।

गलती मनुष्य कर सकता है, पशु नहीं

पुराने जमाने में इंग्लैण्ड के एक न्यायाधीश ने न्यायाधीश की परिभाषा की थी कि, न्याय करने वाला कैदी का दोस्त है—'दि जज दि फ्रेंड आफ दि प्रिजनर।' दूसरे के लिए न्याय, अपने लिए क्षमा, यह असभ्य समाज का सूत्र है। कम्युनिज्म में जो कम्युनिस्ट नहीं है उसके लिए अलग न्याय है—जैसे मुसलमानों में काफिर के लिए अलग न्याय, हिन्दुओं में ब्राह्मण के लिए अलग, भद्र के लिए अलग। इससे चिढ़ कर डॉ० अम्बेडकर ने 'मनुस्मृति' ही जला दी थी।

अंग्रेज, हिन्दुस्तान से जाते वक्त बहुत सी बेशकीमती चीजें विरासत में छोड़ गये। उनमें से कौस्तुभ मणि से भी अधिक मूल्यवान रत्न यह हमारे लिए छोड़ गये हैं कि कानून के सामने सब बराबर हैं।

राजनीति में क्या होता है? सारे मनुष्य बराबर हैं, पर कांग्रेस के आदमी कुछ ज्यादा बराबर हैं! सारे मनुष्य बराबर हैं, पर पी. एस. पी. के लोग कुछ अधिक बराबर हैं। सब बराबर हैं, लेकिन कम्युनिस्ट पार्टी के साथी सर्वोपरि समान हैं।

रूस में जहाँ कानून लोगों तक पहुँचाया गया, न्याय सुलभ हो गया; वहीं रूस की न्याय-नीति का एक सूत्र है "दि जज विल बी इम्पर्सनल बट ही शाल नॉट बी हर्टलेस"—न्यायाधीश निष्पक्ष होगा, लेकिन हृदयहीन नहीं होगा, पत्थर नहीं होगा। उसके हृदय में मानवता होनी चाहिए। गलती मनुष्य कर सकता है, पशु नहीं। जिसमें बुद्धि कम होगी, गलती के लिए अवसर कम होगा।

जब आप अपराध का विचार करते हैं और न्याय दान का विचार करते हैं तो हमको और आपको यह समझ लेना चाहिए कि अपराध का आरम्भ मनुष्य की स्वतंत्रता में से होता है। पशु स्वतंत्र नहीं है। किसी काम को करने न करने की या दूसरी तरह से करने की आजादी मनुष्य को ही है। कर्म-स्वातंत्र्य मनुष्य की विशेषता है। इसी को हम मनुष्य की स्वतंत्रता कहते हैं। इसमें से अपराध का आरम्भ कैसे होता है, अपराध की दुनि-

अपराधी भी बदल सकते हैं!

हम जिनको 'दादाजी' के रूप में पहचानते हैं, ऐसे एक सज्जन के साथ मुझे पंढरपुर जाना पड़ा। उनके हमेशा के ठहरने के स्थान पर हम ठहरे थे। दूसरे दिन हम नदी पर स्नान करने गये और भीगे कपड़े से विठोबा के दर्शन कर हमारे निवास स्थान पर वापस आये। कपड़े बदलते समय दादाजी को पता चला कि उनकी कीमती घड़ी और 'पार्कर' पेन गुम हो गयी। दादाजी ने वहाँ के निवास-स्थान के व्यवस्थापक को इस घटना की जानकारी देने के अलावा और कुछ नहीं किया। जैसे कुछ भी न हुआ हो, ऐसे स्वस्थ चित्त से दादाजी ने अपना काम पूरा किया और हम बम्बई लौटने के लिए स्टेशन आये।

हम सब स्टेशन पर वेटिंग रूम में बैठे थे, तो प्लेटफार्म पर घूमने वाले एक गृहस्थ की ओर दादाजी का ध्यान गया। उनकी जेब में अपने पार्कर पेन जैसी पेन देख कर दादाजी ने लिखने के बहाने अपनी डायरी खोल कर संदेह मिटाने के लिए उस गृहस्थ के पास पहुँचे और लिखने के लिए विनयपूर्वक पेन की माँग की। दादाजी का संदेह सही निकला। उस पेन पर उनका नाम लिखा हुआ था। उन्होंने सभ्यतापूर्वक उस गृहस्थ को बताया कि पेन उनकी है, और पूछा कि यह पेन आपके पास कैसे पहुँची? पहले गृहस्थ ने कहा, पेन आपकी है तो आप ले लीजिये।

दादाजी ने पेन अपनी होने का सबूत दिया। उस गृहस्थ ने बताया कि यह पेन उन्होंने सुबह एक लड़के से पंद्रह रुपये में खरीदी थी। दादाजी ने तुरंत उनको पंद्रह रुपया गिन कर दिया। पेन वापस मिली, अब तो शायद घड़ी भी मिल जायगी, ऐसा सोच कर और उस गृहस्थ को हमारी गाड़ी में ही जाना था, तो उनको भी हमारे साथ वहाँ के निवास-स्थान आने के लिए विनती की। वहाँ पहुँच कर व्यवस्थापक को सब बातें बतायी गईं। उन्होंने सब नौकरों को बुलाया। हमारे साथ आये हुए गृहस्थ ने उन सबमें से एक लड़के को पहचान कर कहा कि इसी ने सुबह पेन बेची थी।

लड़के से पूछताछ करने पर उसने कबूल किया और घड़ी किसको बेची थी, यह भी बताया। थोड़ी कठिनाई से घड़ी भी मिल गयी। खरीददार द्वारा लड़के को दी हुई रकम दादाजी ने उनको चुकता कर घड़ी वापस ली। अठारह वर्ष के इस छोकरे से चोरी करने का कारण पूछा तो करुणाभरी आवाज में रोते-रोते उसने बताया कि उसकी बूढ़ी माँ बहुत बीमार है और डाक्टर तथा दूध वाले की रकम समय पर न करने पर उसकी माँ का इलाज रुक जायेगा, इस डर से उसने घड़ी और पेन की चोरी की!

लड़के की बात की सचाई जानने के लिए हम उसके घर गये। रास्ते में छोकरे ने दादाजी से प्रार्थना की कि इस घटना के बारे में उसकी माताजी से कृपया कुछ न कहें, क्योंकि इसे सुन कर उसके मन को धक्का पहुँचेगा और इसके कारण शायद उसकी मृत्यु भी होगी! हम उसके घर पहुँचे तो देखा कि सचमुच ही उसकी क्षीणकाय बूढ़ी माँ बहुत बीमार थी!

दादाजी ने सब तरह से पूछताछ करके उस लड़के को पचीस रुपया देकर उसकी माँ का इलाज चालू रखने के लिए कहा। उन्होंने पंढरपुर में ही रहने वाले अपने एक मित्र से उस लड़के का परिचय करा दिया, ताकि अगर कोई तात्कालिक कुछ मदद की आवश्यकता हो तो मिलती रहे। आखिर में दादाजी ने अपना बंबई का पता उसको देकर कहा, 'तुम्हारी माताजी ठीक होने पर बंबई आकर मुझसे मिलना।'

कुछ दिनों में उस लड़के की माँ की मृत्यु होने पर वह बंबई आकर दादाजी से मिला। दादाजी ने उसे अपने पास नौकरी दी, इतना ही नहीं, आगे चल कर उसकी शादी भी करा दी। आजकल वह दादाजी के पास खास विश्वास-पात्र आत्मीय के रूप में काम करते हुए पत्नी और बच्चों के साथ आनंदपूर्वक जीवन बिता रहा है।

['अखंड आनंद' से]

—स्वामी कृष्णानंद

बुनियादें कहाँ हैं, यह हमें समझ लेने की आवश्यकता है।

राज्य-सत्ता हमारी मित्र नहीं

परिस्थितियों का सामना हमको करना पड़ता है। जो किसी चीज को जानता नहीं है, पढ़ नहीं सकता, और परिस्थिति का सामना करना ही होता है, तो फिर सोचना पड़ता है और कोई न कोई हिकमत खोजनी ही होती है, तो विचार भी करना होता है। हमारी कुछ ऐसी ही हालत है।

अपराध क्या है? उसकी चिकित्सा क्या है? यह सब हम कुछ नहीं जानते। लेकिन विनोबा कूद पड़ा, तो इन सारी बातों को सोचना पड़ा। अब हम इस खोज में हैं कि आखिर यह अपराध क्या वस्तु है? यह समाज में, खास तौर पर हमारे समाज में कहाँ से आयी और क्यों आयी? इसकी बुनियादें क्या हो सकती हैं? मनोवृत्तियों में छिपी हुई जो बुनियादें हैं, उन बुनियादों में से एक बुनियाद यह है कि हमने संगठित सत्ता और संगठित शक्ति को अपना मित्र नहीं माना। मनुष्य ने राज्य-सत्ता बना ली, लेकिन राज्य सत्ता को अपना मित्र कभी नहीं माना। इस देश में ही नहीं, दुनिया भर में यह बात लागू होती है। पुलिस का निर्माण हमने किया, उसके लिए टैक्स, कर भी दिये; लेकिन पुलिस वाले को अपना मित्र किसी ने नहीं माना। उसको हमने अपनी संगठित शक्ति का प्रतिनिधि नहीं माना, वरन् सत्ता को संगठित शक्ति का प्रतिनिधि माना है; संगठित सत्ता, संगठित आतंक का प्रतिनिधि माना है। असल में वह 'आथॉरिटी' का प्रतिनिधि होना चाहिए। इसको आप खूब समझ लीजिये कि सत्ता अलग चीज है, 'आथॉरिटी' अलग चीज। 'पावर' अलग चीज है, 'आथॉरिटी' बिलकुल अलग चीज है। 'आथॉरिटी' है—प्रामाण्य, 'पावर' है—सत्ता। प्रामाण्य में विश्वास होता है, सत्ता में भय। सत्ता को स्वीकार करते हैं भय के कारण। प्रामाण्य को स्वीकार करते हैं विश्वास के कारण। सत्ता को मानना पड़ता है, क्योंकि नहीं मानेंगे तो पिटेंगे। सत्ता में विवशता है, प्रामाण्य में विश्वास। इंग्लैंड में पुलिस वर्ग का वर्णन है। उसकी सहनशीलता का अंत नहीं, सभ्यता ऐसी है जो बेमिसाल बन सकती है, क्योंकि 'दि पुलिसमैन रिप्रेजेन्टस आथॉरिटी'—इंग्लैंड में पुलिस प्रामाण्य की प्रतिनिधि है, हमारे यहाँ सत्ता की प्रतिनिधि है। जब सत्ता का प्रतिनिधि होता है, तो संगठित आतंक का प्रतिनिधि हो जाता है। इसलिए जहाँ अगर बच्चा रो रहा है और उसे चुप करना हो तो दो ही प्रतिनिधि हैं—एक तो साधु, वैरागी और दूसरा पुलिस वाला। माँ कहती है, देख अगर चुप नहीं रहेगा तो बाबाजी ले जायेगा या कहेगी कि सिपाही ले जायेगा। एक तो परलोक का सिपाही है और दूसरा है इहलोक का।

समाजवाद का एक बहुत बड़ा प्रवक्ता फ्रांस में हुआ। सेन्ट साइमन नाम था उस आदमी का। आज तक समाजवाद में जो मूल पुरुष हुए हैं, उनमें से वह एक था। उसका एक बहुत बड़ा सूत्र है—'कन्टेम्प्ररी सोसायटी केन पनिश क्राइम-इट केन नाट प्रिवेन्ट इट।' आज का समाज अपराध के लिए दंड दे सकता है। अपराध का प्रतिबन्ध नहीं कर सकता है। अपराध की सजा कर सकता है, उसको रोक नहीं सकता। उसका नतीजा क्या हुआ? 'दि हैंगमैन इज दि प्रोटेक्टर एण्ड आबजरवर आफ अवर सोसायटी।' 'मोरल' नीति हमको कौन सिखायेगा? जल्लाद सिखायेगा! आप समझते हैं कि हमको नीति सिखाने वाले धर्माचारी हैं, कोई पंडा, मौलवी, आचार्य, पण्डित और पुरोहित है! हमको नीति सिखाने वाला इहलोक में 'हैंगमैन'—जल्लाद है और परलोक में यमराज। यमराज का ही नाम धर्मराज है। उसके हाथ में गदा है, वह आपको कड़ाही में डाल सकता है, तवे पर भून सकता है, आरी से चीर सकता है, कोल्हू में पेर सकता है। उसके हाथ में सत्ता है। उसके सारे चित्र ही आपको ये पंडित दिखा देंगे। बच्चा आँखें खोलो, धर्म नहीं करोगे तो यह सब होने वाला है। पुलिस और न्यायाधीश धर्म के अधिष्ठाता हैं! समाजवादी इस परिणाम पर पहुँचा, इसीलिए समाजवादी क्रान्तिकारी बना। उसने संकल्प किया कि समाज की बुनियादों को ही बदलना होगा। वह क्रान्तिकारी इसलिए बना कि उसने यह निश्चय किया कि जब तक समाज की बुनियादें नहीं बदलेंगी, अपराध के कारणों का निवारण भी नहीं होगा। तो जितने ये प्रश्न हैं और जितनी समस्याएं हैं, उन सबका एक ही उत्तर है, समाज की बुनियाद को बदलना। इन बुनियादों को बस एक तरफ से बदलते चले जाय और दूसरी तरफ से अपराध का निवारण करते जायँ।

उ० प्र० सर्वोदय-कार्यकर्ता सम्मेलन

आगामी १६ और १७ दिसम्बर '६१ को हरदोई में उत्तर प्रदेश के सर्वोदय कार्यकर्ताओं का एक महत्वपूर्ण सम्मेलन होने जा रहा है, जिसमें प्रांत की सर्वोदय-प्रवृत्तियों को एक सूत्र में पिरोने तथा विकास की समस्याओं पर विचार-विनिमय किया जायगा। अ० भा० सर्व सेवा संघ के अध्यक्ष श्री नवकृष्ण चौधरी सम्मेलन की अध्यक्षता करेंगे।

रायपुर में चुनाव के लिए आचार-संहिता

रायपुर जिला सर्वोदय-मंडल के तत्त्वावधान में रायपुर शहर में कांग्रेस, समाजवादी, कम्यूनिस्ट पार्टी के कार्यकर्ताओं की सम्मिलित बैठक २२ नवम्बर को हुई, जिसमें चर्चा होकर निम्न मुद्दों पर सर्वसम्मत निर्णय लिया गया।

(१) जहाँ संभव हो, राजनैतिक दल एक ही मंच से अपने सिद्धान्तों की घोषणा व प्रचार करें।

(२) चुनाव संबंधी प्रचार में व्यक्तिगत आरोप प्रत्यारोप, छींटाकशी न हो।

(३) निम्न चरित्र की दृष्टि से हीन व्यक्ति को सामाजिक प्रतिष्ठा के स्थान पर न बैठाया जाय।

(४) सोलह वर्ष से कम आयु के बालक एवं विद्यार्थियों का चुनाव में उपयोग न हो।

(५) भय तथा प्रलोभन आदि के अशुद्ध व्यवहार—जैसे शराब पिलाना, पैसा बाँटना, झूठे आश्वासन देना आदि काम में न लाये जायें।

(६) किसी को भी एक दल उम्मीदवार बनाने योग्य न समझें और टिकिट न दें, तो दूसरा दल भी उसे टिकिट न दे।

(७) चुनाव के बाद एक पक्ष के टिकिट पर चुने गये व्यक्ति को बिना अपनी जगह का त्यागपत्र दिये दूसरा पक्ष अपने पक्ष में प्रवेश न दें।

(८) राजनैतिक पक्षों को चाहिये कि अन्य पक्षों की सभा, जुलूस आदि कार्यक्रमों में बाधा पैदा न करें या दंगा करके अस्तव्यस्त न करें।

(९) चुनाव के समय पालन योग्य आचार-मर्यादा भंग हो जाय, तो उस पार्टी को स्वयं ही प्रकट कर देना चाहिये तथा उसकी पुनरावृत्ति न हो, ऐसा उसे ध्यान रखना चाहिये। ●

सर्वोदय-मंडल, दिल्ली

सर्वोदय मंडल दिल्ली की ओर से ता० ३० नवम्बर '६१ को नजफगढ़ में एक विराट सभा हुई, जिसकी अध्यक्षता श्री वैद्य किशनलालजी ने की। राजनीतिक क्षेत्र में कार्य करने वाली सभी पार्टियों को सलाह देते हुए दिल्ली सर्वोदय मंडल के लोक सेवक श्री वैद्य किशनलालजी ने कहा कि जनसाधारण का भला चाहने वाली सभी पार्टियाँ जनता में अपना प्रचार एक ही प्लेटफार्म से करें। यदि वे एक दूसरे की बुराइयों को जता कर जनमत संग्रह करना चाहते हैं तो वे दूषित भावनाओं का प्रचार कर एक बहुत बड़ी बुराई कर रहे हैं। आपने एक नेता के उस पत्र का जिक्र भी किया, जो उन्होंने बहुत से पुराने कांग्रेस कार्यकर्ताओं को लिख कर चुनावों में जीतने के लिए मदद मांगी है। कांग्रेस-कार्यकर्ता केवल चुनाव जीतने के लिए ऐसा प्रयास करें, यह कोई बहुत ऊँची और अच्छी राष्ट्रीय भावना नहीं है।

सभा में सर्वसम्मति से निश्चय हुआ कि आगामी आम चुनाव में सभी राजनैतिक पार्टियाँ एकमत होकर अपने अपने उम्मीदवारों से घोषणा-पत्र, कार्यक्रम आदि मतदाताओं के सामने रखें और प्रचार में व्यक्तिगत आरोप प्रत्यारोप न करें और व्यक्तिगत छींटाकशी भी न होने देने का प्रयत्न करें।

श्री मदन 'विरक्त' ने नजफगढ़-वासियों को अपने विचार समझाते हुए बताया कि आज के इस युग में बुद्धि का आपसी संघर्ष चल रहा है। उसमें जनसाधारण को अपना स्थान चुनना है और आत्म निरीक्षण कर सत्य, प्रेम और करुणा को हृदय में अपनाना है। सर्वोदय विचार ही एक ऐसा विचार है, जिसके अपनाने से दुनिया का कल्याण हो सकता है और विश्व शांति कायम हो सकती है।

इन्दौर में मध्यप्रदेशीय नशाबन्दी सम्मेलन

इन्दौर नगर में ता० २३, २४ और २५ दिसम्बर '६१ को म० प्र० सर्वोदय-मंडल के अभिक्रम से मध्यप्रदेश नशाबन्दी सम्मेलन आयोजित किया जा रहा है, जिसमें सामाजिक कार्यकर्ताओं के अतिरिक्त प्रांत के प्रमुख शहरों की नगरपालिकाओं, नगर निगमों, मंडल-पंचायतों, जनपदों तथा अन्य सार्वजनिक संस्थाओं के लगभग एक हजार प्रतिनिधियों के भाग लेने की आशा है।

सम्मेलन के लिए नगर के सुप्रसिद्ध सेवक श्री एन० डी० जोशी की अध्यक्षता में ४१ सदस्यीय एक स्वागत-समिति का गठन किया जा चुका है और विभिन्न उप समितियाँ सम्मेलन की तैयारी में कार्यरत हैं।

सम्मेलन में शराबबन्दी की समस्याओं और निराकरण के सम्बन्ध में विचार किया जायगा, जिनमें गैरकानूनी तरीके से शराब बनाने, शासन द्वारा ठेके पर दूकानें उठाने, बिरादरी में सामूहिक शराब-पान इत्यादि प्रश्न प्रमुख हैं। लोक शिक्षण की दृष्टि से शराब-बन्दी के उपायों पर भी विचार किया जायगा। म० प्र० की सरकार भी इन्दौर शहर में सम्पूर्ण नशाबन्दी करने का सोच रही है। स्मरण रहे कि श्री विनोबाजी ने पिछले वर्ष इन्दौर को सर्वोदयनगर की दृष्टि से चुना था और तब नगर में सम्पूर्ण नशाबन्दी करने का सुझाव दिया था।

सम्मेलन के मौके पर प्रांत में शराबबन्दी की समस्याओं और उनके हल की जानकारी से युक्त एक "सोविनियर" भी प्रकाशित करने का निश्चय किया है। ●

अविवाहितों की आय बढ़ी—गागारिन भारत में—दक्षिण अफ्रीका की नीति मानवता के लिए कलंक—प्रधानमंत्री की तत्परता—मास्टर तारासिंह को दण्ड—व्यावसायिक कोठियाँ—पानी पर चलने वाली साइकिल—टांगानिका स्वतन्त्र—शान्ति विद्यालय, कस्तूरबाग्राम—सर्वोदय स्वाध्याय मण्डल, टीकमगढ़—रानीपतरा में राजेन्द्रबाबू का जन्म-दिन मनाया गया—कुँवरगढ़, रायपुर में अंत्योदय शिविर—वीरापांडी विद्यालय द्वारा साहित्य प्रचार—सेवापुरी ग्राम-इकाई प्रशिक्षण सम्पन्न—बीटड़ी में वानप्रस्थाश्रम—दरभंगा में नेत्रयज्ञ—शाहदरा लोकसेवक समाज—राजस्थान द्वारा बिहार के बाढ़पीड़ितों की सहायता—पंजाब सर्वोदय मंडल की बैठक स्थगित—मेरठ में शराबबंदी के लिए सभा।

लंदन प्रेस-एक्सचेंज के अनुसंधान विभाग के निर्देशक ने एक वक्तव्य में कहा है कि ब्रिटेन में १५ से २५ आयु के बीच के अविवाहित लोगों की आमदनी गत दो वर्षों में दुगुनी हो गयी है। ब्रिटेन के ऐसे लोगों की सन् '५९ में कुल आय ८३ करोड़ पौंड थी और वह सन् '६० में ९५ करोड़ हो गयी है।

रूस के अंतरिक्ष-यात्री गागारिन २९ नवम्बर को भारत पहुँच गये। आप नई दिल्ली, लखनऊ, बंबई, कलकत्ता आदि स्थानों में गये और ९ दिनों के बाद लंका रवाना हुए।

संयुक्त राष्ट्रसंघ की महासभा ने २८ नवम्बर को दक्षिण अफ्रीका की वर्णभेद नीति की 'मानवता के लिए कलंक' के रूप में निंदा की और इसे बदल देने के प्रयास में सदस्य राष्ट्रों से पृथक् पृथक् और संयुक्त रूप से कार्रवाई करने का अनुरोध किया।

लोकसभा में विरोधी सदस्यों ने कहा कि प्रधानमंत्री नेहरू अन्य मंत्रियों की अपेक्षा पत्र के उत्तर देने में ज्यादा तत्पर हैं।

अकाली सभा के पंचप्यारों ने अकाली सरत के सामने ली गयी शपथ का पालन न करने के अभियोग में मास्टर तारासिंह और उनको अपराध-कर्म में सहायता पहुँचाने के लिए अकाली दल के उपाध्यक्ष सन्त फतेहसिंह तथा अन्य सात सदस्यों को जूतों की रखवाली, गुरुद्वारे के बर्तन साफ करने की सजा दी है।

अशोक मेहता ने कोयम्बटूर में पत्र-प्रतिनिधियों को बताया कि भारत में दस व्यावसायिक कोठियों ने गत दस वर्षों में अपनी सम्पत्ति ४ से ७ गुनी बढ़ा दी है। उनमें से कोठियाँ ३५० औद्योगिक प्रतिष्ठानों का नियंत्रण करती हैं तथा उनकी कुल सम्पत्ति ५ अरब ८० करोड़ रुपयों से अधिक है।

लोकसभा में ६ दिसम्बर को भारत के उद्योग-मंत्री ने बताया कि अमृतसर में एक व्यक्ति ने ऐसी साइकिल का आविष्कार किया, जो पानी पर चल सकती है। किन्तु यह झीलों, तालाबों और शान्त धारा में ही चल सकती है। इस साइकिल में दो ड्रम हैं, जो छह फीट लम्बे एक-दूसरे के समानान्तर हैं और कोई पहिया नहीं है। पैडल मारने से साइकिल आगे बढ़ती है। साइकिल की कीमत डेढ़ सौ रुपया है।

अफ्रीका का २९वाँ राज्य, टांगानिका गत ८ दिसम्बर को ४२ वर्ष के बाद ब्रिटिश-शासन से स्वतन्त्र हो गया।

शांति-सेना विद्यालय, कस्तूरबाग्राम, इंदौर के द्वितीय सत्र का समारोह २९ नवंबर को सर्व सेवा संघ के मंत्री श्री पूर्णचन्द्र जैन ने किया। विद्यालय में कुल तीस बहनों ने शांति-सेना का प्रशिक्षण लिया।

टीकमगढ़ सर्वोदय स्वाध्याय मंडल ने महाकवि कालिदास-जयंती मनायी। इसके अतिरिक्त नगर से तीन मील दूर एक जैन-मेले में सफाई की व्यवस्था गांधी स्मारक निधि और हरिजन सेवक संघ के सहयोग से की गयी।

रानीपतरा, जिला पूर्णिया के सर्वोदय आश्रम में राष्ट्रपति डा० राजेन्द्र प्रसाद का जन्म-दिन मनाया गया और उनकी दीर्घायु की कामना की गयी।

ग्रामसेवा केन्द्र, कुँवरगढ़, डूंडा, जिला रायपुर में ता. १७ से २१ नवंबर तक पंचदिवसीय अंत्योदय शिविर मनाया गया। विभिन्न रचनात्मक कार्यक्रमों पर चर्चा हुई और पाँचों दिन हरिजन भाइयों के साथ सहभोज हुआ। 'गांधी-घर' का शिलान्यास और ग्राम इकाई योजना का उद्घाटन भी उस अवसर पर हुआ। २४ नवंबर को हरिजन सेवक संघ के उपाध्यक्ष श्री वियोगी हरि भी वहाँ आये थे।

तमिलनाड में वीरापांडी के खादी-ग्रामोद्योग विद्यालय में हर साल की तरह इस साल भी ११ सितम्बर से १८ सितम्बर तक तिरुपुर में साहित्य प्रचार किया। इस अवधि में १,०११ रु० ४७ न० पै० की साहित्य-बिक्री हुई।

सेवापुरी, वाराणसी में ग्राम-इकाई के २५ कार्यकर्ताओं के प्रशिक्षण-सत्र का समाप्ति-समारोह ३० नवम्बर को हुआ।

राजस्थान के बीटड़ी ग्राम (सीकर) में एक वानप्रस्थाश्रम 'शांति-मंदिर' के नाम से २२ नवम्बर को संत हरवंशसिंहजी द्वारा उद्घाटित किया गया।

दरभंगा के 'कामेश्वरी प्रिया पुअर होम' के तत्वावधान में १२ दिसम्बर '६१ से अठारहवाँ 'नेत्र-दान यज्ञ' मनाया जायगा, जिसमें नेत्र रोगों के आपरेशन आदि निःशुल्क चिकित्सा होगी।

शाहदरा, दिल्ली में लोकसेवक समाज की सभा में पदाधिकारियों के चुनाव के अतिरिक्त निम्न तीन प्रस्ताव पास हुए : (१) प्रत्येक सदस्य के घर शांति पात्र हो। (२) शाहदरा में रैनबसेरा खुले और (३) गांधी विचार पुस्तकालय प्रारंभ हो।

राजस्थान समग्र सेवा संघ के निवेदन पर राजस्थान की विभिन्न संस्थाओं और सरकार द्वारा बिहार की बाढ़पीड़ित जनता के लिए उत्साहवर्धक सहयोग मिला। राजस्थान के 'मुख्य मंत्री कोष' से २५,०००) के कम्बल और रजाइयाँ बिहार भेजी गयीं। विभिन्न खादी-संस्थाओं ने भी ५०० कम्बल और रजाइयाँ भेजी हैं। जयपुर के समाज संघ ने १५ दिनों का अभियान शुरू किया है। ४.. सूती और ऊनी ५०० कपड़े संग्रहीत हो चुके हैं।

पंजाब सर्वोदय-मंडल के [illegible] श्री ओमप्रकाश त्रिखा ने सूचित [illegible] लाला अचिंतरामजी के देहावसान के कारण सर्वोदय-आश्रम, पठानकोट में होने वाली सर्वोदय मंडल की बैठक स्थगित की गयी है। पट्टीकल्याणा में हुई २ दिसम्बर की बैठक में लाला अचिंतरामजी की मृत्यु पर श्रद्धांजलि अर्पित की गयी।

मेरठ में २६ नवम्बर को शराबबंदी के लिए मोदीनगर क्षेत्र के नागरिकों की सार्वजनिक सभा हुई। इस सभा में निश्चय हुआ कि मोदीनगर के शराब के ठेके के साथ-साथ मुरादनगर का भी ठेका बंद हो। १४ भाई बहनों की एक कार्यकारी समिति भी बनायी गयी।

'खादी-ग्रामोद्योग' : कार्तिक

सं० सुभाषचन्द्र सरकार, प्र० खादी-ग्रामोद्योग आयोग, ग्रामोदय भवन, [illegible] पार्ला रोड, बंबई-१। वार्षिक मूल्य २) ५० नये पैसे, इस विशेषांक का २ रुपये।

खादी-ग्रामोद्योग आयोग के मासिक मुखपत्र "खादी-ग्रामोद्योग" ने आठवें वर्ष की शुरुआत में वार्षिक अंक प्रकाशित किया है। इस अंक में खादी ग्रामोद्योगों के संबंध में अधिकारिक और प्रामाणिक जानकारी देने का प्रयास किया गया है। विभिन्न उद्योगों के अलावा विकेन्द्रीकरण, बेकारी, तीसरी योजना और ग्रामोद्योग के बारे में विचारोत्तेजक लेख भी इसमें हैं।

भूल-सुधार

'भूदान-यज्ञ' के ता० १७ नवंबर '६१ के अंक में कलकत्ता के [illegible] श्री [illegible] रामजी मकड़ का हिसाब प्रकाशित हुआ है। वह पिछली दिवाली तक का था और संपत्ति-दान दूसरे का उनके पास जमा नहीं हुआ है, बल्कि उनके गुरु के संपत्ति दान की रकम उस साल उन्हीं, इसमें कुल ८०० रु. १० नये पैसे हुए हैं।

श्री साधु सुब्रह्मण्यम् का उपवास समाप्त
तेलंगाना में नशाबंदी के लिए सरकार का आश्वासन

आंध्र सरकार और विशेषतः विधान-सभा के अध्यक्ष के इस अनुरोध पर कि सरकार नशाबंदी के लिए विशेष ध्यान देगी, श्री साधु सुब्रह्मण्यम् ने १६ दिनों के बाद ८ दिसम्बर '६१ को अपना उपवास समाप्त कर दिया। श्री साधु ने नशाबंदी के लिए पहले पदयात्रा की थी और बाद में सब प्रकार से जनमत जागृत करने पर भी सरकार की उदासीनता पर २२ नवम्बर से उपवास शुरू किया था।

इस अंक में

श्रीकृष्णदत्त भट्ट, अ० भा० सर्व सेवा संघ द्वारा भार्गव भूषण प्रेस, वाराणसी में मुद्रित और प्रकाशित। पता : राजघाट, वाराणसी-१, फोन नं० ४३९१
वार्षिक मूल्य ६) पिछले अंक की छपी प्रतियाँ ९४८० : इस अंक की छपी प्रतियाँ ९४५० एक अंक : १३ नये पैसे

संपादक : सिद्धराज ढड्ढा

वाराणसी : शुक्रवार | २२ दिसम्बर '६१ | वर्ष ८ : अंक १२

मंगल-स्नान

• सिद्धराज ढड्ढा

प्रातःकाल जब हम उठ कर स्नान करते हैं तो पिछले दिन और रात की अस्वच्छता दूर होकर शरीर निर्मल और प्रसन्न हो जाता है, जीवन-व्यापार रोज चलता रहता है, और हम इसी प्रकार हर दिन शरीर को स्वच्छ कर लेते हैं। रोजमर्रा के जीवन-व्यापार में न सिर्फ शरीर, बल्कि मन और बुद्धि भी मैले होते रहते हैं। तरह-तरह के प्रसंग आते हैं, जिनमें मन और बुद्धि पर अनुकूल-प्रतिकूल प्रतिक्रियाएँ और विकारों के हमले होते रहते हैं। मन और बुद्धि के मैल को धोने के जो कई उपाय हैं, उनमें "सत्संगति की महिमा" बुद्धिमानों ने बार-बार गायी है।

विनोबा के पास जब जब भी आने का मौका मिलता है तो इसकी प्रत्यक्ष अनुभूति होती रहती है। उनसे होने वाली बातचीत और चर्चा से, दूसरों के साथ की चर्चा को सुनने से, दिन भर के उनके कार्यक्रम भाषण, प्रवचन, प्रश्नोत्तर आदि से मन का मैल धुलता रहता है, बुद्धि के आवरण खुलते रहते हैं। कई शंकाओं का समाधान अपने आप हो जाता है,—"गुरोस्तु मौनं व्याख्यानम्, शिष्यास्तु छिन्न-संशयाः"—पूछने की भी जरूरत नहीं पड़ती। इस तरह मन और बुद्धि का मानो स्नान हो होता रहता है। शरीर की तरह, मन और बुद्धि पर भी विकारों का मैल चढ़ता रहता है और अतः बार-बार ऐसे *"स्नान" की जरूरत होती है। उधर विनोबा के चिन्तन का प्रवाह भी निरन्तर बहता* रहता है और उसमें हमेशा ताजगी बनी रहती है। इसलिए अगर हर दो चार महीने में एक बार विनोबा के पास आकर इस झरने में गोता लगाने का मौका मिलता है तो आने वाले के दिल और दिमाग की ताजगी भी बनी रहती है।

× × ×

इस बार ता० ८, ९, १० दिसम्बर—तीन दिन विनोबा के साथ रहने का मौका मिला। ता० ९ का पड़ाव जोरहाट शहर में था, इसलिए वह दिन बाबा का कुछ *विश्राम* था। स्थूल दृष्टि से देखें तो बाबा आजकल देश के एक "कोने" में हैं, पर वहाँ वे हैं वह सर्वोदय कार्यकर्ताओं के लिए तो "केन्द्र" ही हो जाता है। यात्रा में इस समय गुजरात सर्वोदय मंडल के मंत्री किशन त्रिवेदी, बाबा की पदयात्रा में वर्षों तक साथ रहने वाली मीरा और उनके "सहधर्मी" अरुण के अलावा, उत्तरप्रदेश के निवासी बस्ती ही अवकाश प्राप्त होने वाले एक "सूबेदार मेजर" और आन्ध्र के तथा राजस्थान के एक-एक कार्यकर्ता भी थे। सर्वोदय-कार्यकर्ताओं के लिए तो विनोबा का पड़ाव केन्द्र है ही, पर विनोबा ने अपने ढंग से जोरहाट को प्रार्थना-सभा में इस शहर को "आधे विश्व" का ही केन्द्र सिद्ध कर दिया। उन्होंने कहा, "पहले जब हिमालय दुर्लंघ्य था, तब आसाम और जोरहाट भारत के एक कोने में पड़ते थे, पर अब जब कि विज्ञान की प्रगति ने हिमालय को एक छोटा "टीला" बना दिया है और चीन व भारत का इस ओर से सीधा सम्पर्क आया है, तब जोरहाट दुनिया की लगभग आधी आबादी वाले इस प्रदेश का मध्यबिन्दु बन गया है।"

विनोबा का तर्क भले ही अकाट्य हो, फिर भी आवागमन की असुविधा और खर्च की दृष्टि से आसाम पहुँचना कार्यकर्ताओं के लिए जरूर मुश्किल होता है। पिछली ५ मार्च को विनोबा ने आसाम में प्रवेश किया था। अब उन्हें इस प्रदेश में नौ महीने से अधिक हो चुके हैं। आशा है जल्दी ही वे इस "पूर्वांचल" प्रदेश से बाहर आ सकेंगे, ताकि देश भर में फैले हुए हजारों सर्वोदय सेवकों के लिए वे "दुर्गम" न रहें।

× × ×

आसाम का प्रदेश जहाँ प्राकृतिक दृष्टि से रमणीय है वहाँ इस क्षेत्र के निवासी भी सरल और सौम्य हैं। उड़ीसा के कोरापुट क्षेत्र में बड़ी संख्या में ग्रामदान हुए, पर वे अधिकतर आदिवासियों के गाँव थे। आसाम में भी विनोबाजी की पदयात्रा के सिलसिले में काफी ग्रामदान हुए हैं, पर ये गाँव अधिकतर "औसत" गाँव हैं। इनके निवासियों में शिक्षक, व्यापारी आदि मध्यम वर्ग के लोग भी हैं। यहाँ के कार्यकर्ताओं ने भी—जिनमें स्त्रियों की बहुलता है—ग्रामदान के काम को तत्परता के साथ उठा लिया है। जैसा विनोबा ने फिर से उत्तर लखीमपुर में प्रवेश करते हुए कहा, यह सन्तोष की बात है कि इस क्षेत्र में जहाँ उनकी उपस्थिति में ७०० ग्रामदान हुए थे, वहाँ उनके चले आने के बाद भी पिछले तीन महीनों में कार्यकर्ताओं ने घूम-घूम कर ७० ग्रामदान और प्राप्त किये हैं। उत्तर लखीमपुर में आगे भी काम की सम्भावना के कारण ही अब फिर विनोबा ता० ११ को ब्रह्मपुत्र का दक्षिण किनारा छोड़ कर उत्तर की ओर बढ़े हैं।

× × ×

आज दस बरस बाद भी विनोबा का चिन्तन सर्वस्व भूदान ग्रामदान पर लगा है। बीच में उन्होंने सर्वोदय पात्र और शांति-सेना पर अधिक जोर देना शुरू किया था। नतीजा यह हुआ कि कार्यकर्ताओं ने भूदान-ग्रामदान की बात ही करीब करीब छोड़ दी। सर्वोदय-पात्र (शान्ति-पात्र) और शांति-सेना की बात *तो आज भी कायम है, पर विनोबा देखते* हैं कि भूदान ग्रामदान पर मुख्य शक्ति लगाये बिना सर्वोदय आन्दोलन को ही खतरा है। कई लोगों को लगता है कि भूदान का जो वेग एक बार कम हुआ है, उसे फिर से तीव्र बनाना सम्भव नहीं है। अब लोक मानस को आकर्षित और सक्रिय करने के लिए किसी और कार्यक्रम के जरिये उनके पास पहुँचना होगा। पर विनोबा को ऐसा नहीं लगता। उन्होंने कहा कि भूदान ग्रामदान, अर्थात् गाँव गाँव में परिवार भावना फैलाने और उन्हें अपने पाँवों पर खड़ा करने का काम अगर हम नहीं करते हैं तो सर्वोदय विचार टिक नहीं सकेगा। विनोबा ने यों तो एक से अधिक बार कहा है कि हमारी उत्तरी पूर्वी सीमा पर चीन के साथ जो हमारा "सम्पर्क" आ रहा है, उससे घबराने की आवश्यकता नहीं है। आज वह सम्पर्क भले ही कटु हो, पर हम उसे मधुर भी बना सकते हैं और हमें वैसी कोशिश करनी भी चाहिए, क्योंकि विज्ञान की प्रगति के कारण अब यह सम्पर्क टाला नहीं जा सकता, इसलिए इसे मधुर बनाना ही बुद्धिमानी का काम है। यह सम्पर्क सचमुच में परिणत हुआ तो सैकड़ों हजारों वर्षों तक न केवल इन दो मुल्कों के लिए, बल्कि सारी मानव-जाति के लिए वह अभिशाप सिद्ध हो सकता है। योरप में दो छोटे छोटे राष्ट्रों—फ्रांस और जर्मनी—के आपसी वैमनस्य ने भी दो दो महायुद्धों को जन्म दिया था। पर चीन भारत के इस "सम्पर्क" का एक विचारणीय पहलू यह है कि उत्तरी-पूर्वी सीमा पर चीन की छेड़खानी बराबर जारी रह सकती है। ऐसी स्थिति में अगर हमने भूदान-ग्रामदान के जरिये गाँव-गाँव को मजबूत और स्वावलम्बी नहीं बनाया तो देश में बढ़ती जाने वाली सैनिक तैयारी की माँग को हम रोक नहीं सकेंगे। और फलस्वरूप सर्वोदय विचार पनप नहीं सकेगा। लेकिन लोग उसकी बात सुनने को भी तैयार नहीं होंगे। विनोबा ने आज से चार वर्ष पहले येलवाल ग्रामदान परिषद् में देश के नेताओं के सामने जोर देकर कहा था कि वे भूदान-ग्रामदान को "डिफेन्स मेजर"—रक्षण की एक योजना—मानते हैं। आज भी विनोबा उतनी ही तीव्रता के साथ उस बात को महसूस करते हैं।

उन्हें लगता है कि बिहार में "बीघा-कट्ठा" को लेकर हम फिर से भूदान ग्रामदान की एक लहर देश में पैदा कर सकते हैं और वह हमें करनी चाहिए। बिहार हमारी लड़ाई का "स्टालिनग्राड" ही है। अगर इस मोर्चे को हम जीत लेते हैं तो लड़ाई जीत लेंगे। सारे देश की सम्मिलित शक्ति इस मोर्चे पर लगनी चाहिए। चुनावों के कारण राजनैतिक पार्टियों के तथा दूसरे कार्यकर्ताओं का सहयोग नहीं मिलेगा, यह दलील सुन कर विनोबा ने कहा—"नदी आसपास के नालों के आकर मिलने का इन्तजार नहीं करती है, वह बहती रहती है। नाले अपने-अपने समय से आकर उसमें मिलते रहते हैं। हमारा प्रवाह भी बहते रहना चाहिए। फिर चुनाव के बाद जिन नदी-नालों को आकर मिलना होगा, वे उस प्रवाह में मिल सकेंगे, उस समय सारे देश में और भी तेजी के साथ काम चल सकता है। मार्च में "मार्च" (कूच) होना चाहिए। अगर हम यह सब नहीं कर पाते हैं तो शायद हमारे लिए कहा जायगा कि "दे वेयर वेड एण्ड फाउण्ड वान्टिंग—कसौटी पर वे खरे नहीं उतरे।"

× × ×

ता० ९ दिसम्बर की शाम को प्रार्थना-सभा के बाद जोरहाट में कुछ चुने हुए साहित्यिक और विचारक विनोबा से मिलने

भूदान-आंदोलन के प्रसाद-चिह्न

दान में मुआवजे का सवाल ही नहीं उठता। कानून में वह योग्य हो सकता है। भूदान जितना मिल सके उतना प्राप्त कर उसे फौरन बाँटना चाहिए। 'स्वल्पमप्यस्य धर्मस्य त्रायते महतो भयात्।' कानून पर जोर देना और कानून बनाने के लिए लोकमत तैयार करना, इस विचार का अहिंसा से विशेष संबंध नहीं है।

समूचा भारत-दान जिस किसी को मिलेगा, उसे मिलेगा; लेकिन मुझे सारा काश्मीर-दान पहले ही दिन बख्शीसाहब ने बख्शिश दे दिया, तो भी मेरा लोभ समाप्त नहीं हुआ और रोजाना कुछ-न-कुछ प्राप्ति न हुई तो मेरा दिन जाया हुआ ऐसा मेरा गणित ज्ञान एवं अगणित ज्ञान मुझे कहता है। रामतीर्थ ने एक शब्द दिया 'नकद-धर्म'। बचपन में ही मुझे यह शब्द मालूम हो गया था। वह गाँठ मैंने पक्की बांध ली है। जिसका व्याख्यान पर विश्वास रहा, उसका कार्यभाग समाप्त हुआ, जो भूदान-प्राप्ति करता गया, वही भला।

बिहार के बारे में मेरा अभिप्राय स्पष्ट है। वहाँ क्रांति हो सकती है। वहाँ से वह भारत में फैल सकती है। असम सरीखे प्रदेश में, जहाँ कार्यकर्ताओं की संख्या अल्पतम है और भाषावाद का चरम सीमा तक पहुँचा हुआ बुद्धिभेद है, वहाँ भी ग्रामदान की हवा बन सकी है।

सर्वोदय को कभी नहीं था इतना अनुकूल वातावरण आज भारत में उपलब्ध है। दस साल का भूदान-आंदोलन, ग्रामदान की अद्भुत कल्पना, ग्राम-स्वराज्य का सिद्धांत, अंबर चरखा और ग्राम-संकल्पमूलक खादी का नया अवतार, काश्मीर में प्रेम-संदेश, तथाकथित डाकुओं की शरण का सुन्दरकाण्ड, नयी तालीम एवं सर्व सेवा संघ का संगम, शान्ति-सेना की आवश्यकता और सर्वोदय से उस बारे में अपेक्षा, कस्तूरबा ट्रस्ट की शान्ति सेना को मान्यता, 'बीघे में कट्ठा, दान दो इकट्ठा', दशवार्षिक भूदान-यात्रा से निर्माण हुआ 'नेशनल-इंटिग्रेशन,' राजनीति एवं धर्मपंथ तोड़ कर विज्ञान एवं आत्मज्ञान का समन्वय, इत्यादि प्रसाद-चिह्न स्पष्ट होते हुए जिसके हृदय में उत्साह का संचार नहीं होता है, उसे हृदय का दान ही ईश्वर से उतना कम मिला ऐसा मानना पड़ेगा।

"मया हतांस्त्वं जहि मा व्यथिष्ठा: युध्यस्व जेतासि रणे सपत्नान्।"

[शिवसागर, असम, १७-११-'६१] —विनोबा का जय जगत्

* श्री ठाकुरदास बंग को लिखे गये पत्र से।

आये। आसाम के वयोवृद्ध साहित्य-सेवी और कवि नीलमणि फूकन जो जोरहाट की स्वागत-समिति के अध्यक्ष ही थे। जोरहाट और शिवसागर का क्षेत्र असम का सांस्कृतिक और साहित्यिक केन्द्र माना जाता है। इस सभा में विनोबा का भाषण एक घण्टे से ऊपर चलता रहा। उस दिन का उनका भाषण अनुपम था। साहित्यिकों के सामने उन्होंने साहित्यिक भाषा में ही अपना दिल खोल कर रख दिया। वह भाषण अपने आप में साहित्य की एक उत्तम कृति थी। सुनने वाले भी विभोर थे। उत्तम साहित्य की कसौटी बतलाते हुए विनोबा ने कहा कि ऐसे साहित्य के अवगाहन से लगता है, मानो "मंगल-स्नान" किया हो। उस दिन का विनोबा का भाषण जिन्होंने सुना, उनका सचमुच मंगल स्नान ही हुआ। विनोबा ने साहित्यिकों को नम्रतापूर्वक याद दिलाया कि आज शब्द-शक्ति कुंठित हुई है, और "जब शब्द-शक्ति कुंठित होती है तब शस्त्र-शक्ति के सिवाय गति नहीं है।" तब साहित्यिक भी निस्तेज हो जाता है, साहित्यिकों का धर्म है कि वे शब्द-शक्ति को कुंठित न होने दें।

× × ×

रोज सबेरे की पदयात्रा को लोगों ने अक्सर चलते फिरते विश्वविद्यालय का नाम दिया है। पदयात्रा में रोज दो-तीन घंटे विनोबा के साथ चल कर उनकी बातचीत को जो सुनता रहे, उसे विभिन्न विषयों के बारे में बहुत-सी उत्तम जानकारी मिलती है। आकाश के सितारों से लेकर जमीन के पेड़-पौधों तक उस ज्ञान-गोष्ठी का विस्तार होता है, "विद्यालय" से भी अधिक इस गोष्ठी को एक उत्तम "गप्" ही कही जा सकती है। कार्यकर्ताओं से प्रश्नोत्तर तो होते ही हैं, लेकिन विनोबा अपनी ओर से भी अक्सर कई विषयों पर बातचीत चलाते रहते हैं। अपने जीवन के कई प्रसंग भी ऐसे मौके पर सहज ही विनोबा के मुँह से सुनने को मिलते हैं। उस दिन सबेरे पदयात्रा के बाद विनोबा ने खुद ही पूछा कि कांची में भी हम सब एक-दो घंटे गप्प चलाते थे या नहीं। धीरेन्द्रभाई तो गप्प को अपना 'मूल उद्योग' बतलाते ही हैं। पर इस प्रकार की गप्प भाग्य से ही नसीब होती है!

स्व० नगीन पारेख की स्मृति में

वैकुण्ठभाई मेहता

लगभग ढाई वर्ष पूर्व मेरी भेंट श्री नगीन भाई पारेख से हुई थी। वैसे विषय में मैं सुनता तो १९५६-'५७ से ही था। जब आचार्य विनोबा भावे ने की यात्रा की तथा उसके फलस्वरूप वहाँ सघन ग्रामदान-आन्दोलन चला, श्री अण्णासाहब सहस्रबुद्धे के साथ, जिन्हें विनोबाजी ने कोरापुट की जिम्मेदारी थी, जिस प्रमुख व्यक्ति का लोग जिक्र करते थे, वह थे श्री नगीन पारेख। तायां जिन्किन, प्रो० धनंजयराव गाडगिल, श्री इवल्मिबुड तथा अन्य लेखों तथा स्मृति-पत्रों में मैंने इस नाम का बहुधा उल्लेख पाया है। नौजवान से मिलने तथा उसके विषय में कुछ अधिक जानने के लिए किन्तु कोरापुट न पहुँच सकने के कारण मैं श्री नगीन पारेख के दर्शन कर सका था।

भेंट का अवसर मुझे उस समय प्राप्त हुआ, जब सर्व सेवा संघ की तरफ से श्री अण्णासाहब सहस्रबुद्धे ने खादी तथा ग्रामोद्योग-कमीशन के कार्यालय में मई '५९ में इस कार्य से सहानुभूति रखने वाले कुछ मित्रों की एक बैठक का आयोजन किया। इस बैठक के विषयों के लिए तैयार की गयी टिप्पणियाँ बनाने में श्री नगीन भाई का ही अधिकांश हाथ था और उन्होंने ही कार्यवाही की रिपोर्ट भी तैयार की। विचार विनिमय में आपने मूल्यवान सुझाव दिये, जो कि स्पष्ट तथा संक्षिप्त थे। इस बैठक के एक या दो दिन के पश्चात्, जैसा कि मुझे याद है, मैंने उनसे तथा श्री अण्णासाहब से उक्त मीटिंग में निश्चित किये गये सुझावों के प्रति कदम उठाये जाने के विषय में बातचीत की। इसी समय मैंने यह महसूस किया कि जो दूसरों ने देखा, उस पर जो मैंने जो समझा, वह प्रत्यक्ष अनुभव से सही निकला।

श्री नगीन पारेख को मैंने बहुत विचारवान पाया। उनमें विचारों की नियमबद्धता और विचारों का संतुलन देखा। इस सर्वोदयी कार्यकर्ता से मिल कर मुझे लगा कि उनकी बुद्धि शिक्षित थी, वे कितने नम्र थे। सत्य की खोज करने वाले कार्यकर्ता में विचारयुक्त विनम्रता ही उसका श्रेष्ठ गुण है।

जिस प्रकार से १९१६ से लेकर '४८ तक गांधीजी ने बड़ी संख्या में उत्साही नौजवानों को सारे देश से ढूँढ कर देश-सेवा में लगा दिया, इसी प्रकार उनके पश्चात् श्री विनोबाजी ने भी नयी पीढ़ी के अनेक नौजवानों को सर्वोदय के कार्यों के लिए प्रेरणा दी। परिस्थितियाँ भिन्न होने के कारण कदाचित् उतनी ही बड़ी संख्या में नौजवान आगे नहीं आये, जैसे कि वे गांधीजी की पहले दशक में आये थे। किन्तु जिस प्रेरणा से नवयुवक स्था नव युवतियाँ आगे आयीं, वह समान थी। बल्कि एक लेखक के उन्होंने कहा, "जिस भावना से प्रेरित होकर कोई की सेवा के लिए अग्रसर होता है, भावना, उसकी शुद्ध संस्कृति की होती है।" हम भारतवासी उस पर एकाधिकार की मांग नहीं कर फिर भी इन निष्ठावान कार्यकर्ताओं भारत का सामाजिक ढाँचा बनाने सहायता प्राप्त हुई है और यह अनमने हृदय से नहीं, बल्कि हृदय के उत्साह से तथा आत्मसन्तोष के साथ दी गयी है।

> श्री नगीन पारेख कोरापुट में काम करते-करते गये—इससे उनकी प्रतिष्ठा तो बढ़ी ही—पर गुजरात की भी प्रतिष्ठा बढ़ी है। —विनोबा

भारत सेवकों श्री नगीन की में से श्री नगीन पारेख का स्थान बहुत ऊँचा था। श्री नगीन ने अपनी समस्त योग्यता, जो कि उच्च कोटि की थी, समाज के सबसे नीचे व्यक्तियों की सेवा में, अर्थात् अन्त्योदय के लिए या सर्वोदय में लगा दी। और उसी कार्य को वे अन्त समय तक करते रहे।

भारत के कमजोर वर्गों में कोरापुट के आदिवासी सर्वाधिक पिछड़े हुए हैं। एक बार उन्होंने इस क्षेत्र में जब ५ वर्ष पूर्व अपनी सेवाएँ श्री अण्णासाहब तथा सर्व सेवा संघ के सुपुर्द कर दीं, तो फिर वे उससे कभी विमुख नहीं हुए।

आपको जो कार्य सुपुर्द किया गया, उसे आपने जिस निष्ठा, लगन तथा त्याग से किया, उससे एक कार्यकर्ता के रूप में आपकी प्रतिष्ठा बढ़ी। लोगों को विश्वास हो गया कि आपमें किसी भी उत्तरदायित्वपूर्ण काम करने की क्षमता है और अपने काम के प्रति पूरी निष्ठा है, जो कि बहुधा कार्यकर्ताओं में नहीं देखी जाती है।

ऐसा व्यक्ति जब हमारे बीच से अचानक उठ जाय और युवावस्था में ही उसका असामयिक निधन हो जाय, उससे अनेक दिल-दिमाग का दुःखी होना स्वाभाविक है।

('जन्मभूमि' से)

शान्ति-सेना

• गांधीजी

"हिंसक सेना सिर्फ उपद्रवों के समय ही कार्यप्रवृत्त रहती है। लेकिन शान्ति-सेना उपद्रवों के समय तथा शान्ति के समय भी कार्यप्रवृत्त रहती है। शान्ति-काल में शान्ति-सेना रचनात्मक कार्यों में लगी रहती है, जिससे दंगों का हो जाना ही असम्भव हो जाता है। वह ऐसे मौके के फिराक में रहती है कि दोनों लड़ने-झगड़ने वाली जातियां सम्पर्क में लायी जायें, शान्ति-प्रचार किया जाय और इस प्रकार के कार्य किये जायें, जिससे हर व्यक्ति, पुरुष और स्त्री, प्रौढ़ और बच्चे, आपस में एक-दूसरे के सम्पर्क में शान्ति से रहें। ऐसी शान्ति-सेना किसी भी खतरे का सामना करने के लिए तैयार रहनी चाहिए और जनता के क्रोध को शान्त करने के लिए आवश्यक मात्रा में उन्हें अपनी जान तक जोखिम में डाल देनी चाहिए। इस प्रकार के कुछ सौ या कुछ हजारों का ही शुद्ध बलिदान इन दंगों को हमेशा के लिए दफना देगा।"

"साधारणतः आँधी आने के चिह्न पहले ही नजर आते हैं। अगर इनका पता लग जाय, तो शान्ति-सेना आग भभकने तक नहीं ठहरेगी, किन्तु पहले से ही परिस्थिति पर काबू पाने का प्रयत्न करेगी। अगर यह आन्दोलन अधिक फैल जाता है, तो यह अच्छा होगा कि कुछ कार्यकर्ता अपना पूरा समय दें। लेकिन बिलकुल ऐसा ही हो, यह आवश्यक नहीं। मूल उद्देश्य यह हो कि इस विचारधारा के अधिक-से-अधिक अच्छे और सच्चे स्त्री-पुरुष निर्माण हों।"

सैनिक की शिक्षा

जिस प्रकार किसी को हिंसा की तालीम पाने के लिए हत्या करने की कला सीखनी पड़ती है, उसी प्रकार अहिंसा की तालीम पाने के लिए आत्म-समर्पण की कला सीखनी ही पड़ेगी।

मैंने इस विचार का विरोध किया कि अहिंसा सिर्फ बहुत ही ऊँचे दर्जे के लोगों के लिए सम्भव है और मेरा दावा है कि अगर उचित शिक्षा दी जाय तथा ठीक नेतृत्व किया जाय, तो सर्वसाधारण लोग भी अहिंसा का अभ्यास कर सकते हैं।

हिंसक सेना की प्राथमिक शिक्षा का कुछ थोड़ा-सा हिस्सा शान्ति-सेना के लिए भी आवश्यक है। वह है अनुशासन, कवायद, 'कोरस' में गाना, ध्वजारोहण आदि।

घायल को अच्छा कैसे ले जाना, यह हर स्वयंसेवक को जानना चाहिए। प्राथमिक चिकित्सा के लिए उसे अपने साथ पट्टी, कैंची, सुई, धागा, शल्य-क्रिया का चाकू आदि ले चलना चाहिए। आग कैसे बुझाना, बिना जले अग्नि के क्षेत्र में कैसे घुसना, सामग्री के साथ या उसके बिना बचाव के लिए ऊँचाई पर कैसे चढ़ना और सुरक्षापूर्वक कैसे उतरना, यह सब उसे मालूम होना चाहिए।

शान्ति-सेना की शिक्षा में यह अत्यावश्यक है कि ईश्वर के प्रति अटल श्रद्धा हो, शान्ति-सेना के प्रमुख की आज्ञा का पालन स्वेच्छापूर्वक तथा पूर्ण रूप से हो और शान्ति-सेना के विभागों में आन्तरिक एवं बाह्य सहयोग पूर्ण रूप से हो।

लेकिन एक बात इन सब सवालों में सर्वसाधारण रहेगी और वह है, ईश्वर में अटल श्रद्धा। बिना उसमें विश्वास हुए ये शान्ति-दल मृतवत् हैं।

हमें देखना चाहिए कि जिस शान्ति-सेना की हमने कल्पना की है, उसके सदस्यों की क्या योग्यताएं होनी चाहिए।

(१) शान्ति-सेना का सदस्य पुरुष हो या स्त्री, अहिंसा में उसका जीवित विश्वास होना चाहिए। अहिंसक व्यक्ति तो ईश्वर की कृपा और शक्ति के बगैर कुछ कर ही नहीं सकता। इसके बिना उसमें क्रोध, भय और बदले की भावना न रखते हुए मरने का साहस नहीं होगा। ऐसा साहस तो इस श्रद्धा से ही आता है कि सबके हृदयों में ईश्वर का निवास है और ईश्वर की उपस्थिति में किसी भी भय की जरूरत नहीं। ईश्वर की सर्वव्यापकता के ज्ञान का यह भी अर्थ है कि जिन्हें विरोधी या गुण्डे कहा जा सकता हो, उनके प्राणों का भी हम खयाल रखें। यह इरादतन दस्तन्दाजी उस समय मनुष्य के क्रोध को शान्त करने का एक तरीका है, जब कि उसके अन्दर का पशु-भाव उस पर हावी हो।

(२) शान्ति के इस दूत में दुनिया के सभी खास-खास धर्मों के प्रति समान श्रद्धा होनी जरूरी है। इस प्रकार अगर वह हिन्दू हो, तो वह हिन्दुस्तान में प्रचलित अन्य धर्मों का आदर करेगा। इसलिए देश में माने जाने वाले विभिन्न धर्मों के सामान्य सिद्धांतों का उसे ज्ञान होना चाहिए।

(३) यह काम अकेले या अन्यों में हो सकता है, इसलिए किसी को इन्तजार करने की जरूरत नहीं। फिर भी आदमी स्वभावतः अपनी बस्ती में से कुछ साथियों को ढूँढ कर स्थानिक सेना का निर्माण करेगा।

(४) शान्ति का यह दूत व्यक्तिगत सेवा द्वारा अपनी बस्ती या किसी चुने हुए क्षेत्र में लोगों के साथ ऐसे सम्बन्ध स्थापित करेगा, जिससे जब उसे बुरी स्थितियों में काम करना पड़े, तो उपद्रवियों के लिए वह बिलकुल ऐसा अजनबी न हो, जिस पर वे शक करें या जो उन्हें नागवार मालूम पड़े।

(५) यह कहने की तो जरूरत ही नहीं कि शान्ति के लिए काम करने वाले का चरित्र ऐसा होना चाहिए, जिस पर कोई उंगली न उठा सके और वह अपनी निष्पक्षता के लिए मशहूर हो।

(६) आम तौर पर दंगों से पहले तूफान आने की चेतावनी मिल जाया करती है। अगर ऐसे आसार दिखाई दें, तो शान्ति-सेना आग भड़क उठने तक का इन्तजार न कर तभी से परिस्थिति को सम्भालने का काम शुरू कर देगी, जब से कि उसकी सम्भावना दिखाई दे।

(७) अगर यह आन्दोलन बढ़े, तो पूरे समय काम करने वाले कुछ कार्यकर्ताओं का इसके लिए रहना अच्छा होगा, लेकिन यह बिलकुल जरूरी नहीं कि ऐसा ही हो। खयाल यह है कि जितने भी अच्छे स्त्री-पुरुष मिल सकें, उतने रखे जायें। लेकिन ये सभी मिल सकते हैं, जब कि स्वयंसेवक ऐसे लोगों में से जो जीवन के विविध कार्यों में लगे हों, पर उनके पास इतना ... कि अपने इलाकों में रहनेवाले लोगों साथ मित्रता का सम्बन्ध पैदा कर तथा उन सब योग्यताओं को रखते जो कि शान्ति-सेना के सदस्य में चाहिए।

(८) इस सेना के सदस्यों की खास पोशाक होनी च... न्तर में उन्हें बिना किसी कठिनाई ... चाना जा सके। ये सिर्फ आम ... हैं। इसके आधार पर हरएक ... अपना विधान बना सकता है।

सबसे अच्छा, सबसे जल्द ... मार्ग नींव से लेकर इमारत तक ... करने का है। जन समूह का मन ... उसके लिए तैयार है। गाँवों में लौट... सभी दृष्टियों से जरूरी हो गया है। ... के उत्पादन और वितरण का कार्य थोड़े केन्द्रों में ही चलाने के बदले उसे लाखों गाँवों में फैला देने का समय आज है। हरएक गाँव को एक एक स्वयंपूर्ण प्रजासत्ताक राज्य बनाना जरूरी है। इसके लिए बहादुरी से भरे प्रस्तावों की जरूरत नहीं है। इसके लिए तो हिम्मत, बहादुरी और ज्ञानपूर्वक कार्य करने की जरूरत है।

प्रथम शान्ति-सैनिक

शांति-सेना के बारे में सोचता था। मैं एक महाभ्रम में था कि बापू की आखिरी इच्छा थी शांति-सेना की स्थापना, जो पूरी नहीं हो सकी थी, शांति-सेना नहीं बन सकी थी। लेकिन एक दिन मेरा भ्रम दूर हो गया। दस साल तक मेरे दिमाग में जो बात बैठ न सकी थी, वह एक दिन में बैठ गयी। इस साल गांधीजी के स्मृति-दिवस पर मैंने कहा—"शांति-सेना बन चुकी। उसका प्रथम सेनापति बन चुका। उसका प्रथम सैनिक बन चुका। वह अपना काम करके चला गया। अब हमें उसके पीछे जाना है। गांधीजी शांति-सेना के प्रथम सेनापति थे और प्रथम सैनिक भी थे। सेनापति के नाते उन्होंने आदेश दिये और सैनिक के नाते उनका पालन करके वे चले गये। इसलिए इस भ्रम में नहीं रहना चाहिए कि शांति-सेना नहीं बन सकी। हमें समझना चाहिए कि शांति-सेना की स्थापना हो चुकी। एक बड़ा शांति-सैनिक बन चुका। अपना काम कर चुका और हमारा मार्ग-दर्शन कर चुका।" [पंढरपुर, ३०-५-'५८]

—विनोबा

विशेषांक-परिचय

'जीवन साहित्य' : रवीन्द्र अंक

सं० हरिभाऊ उपाध्याय, यशपाल जैन, प्र० सस्ता साहित्य मंडल, नई दिल्ली। विशेषांक मूल्य डेढ़ रु, वार्षिक चार रु.।

'जीवन-साहित्य' ने अक्टूबर-नवम्बर का अंक 'रवींद्र अंक' के रूप में प्रकाशित किया है। इस अंक में एक ओर जहाँ रवि बाबू की चुनी हुई रचनाएं हैं, वहाँ दूसरी ओर उनके बारे में विभिन्न क्षेत्रों के—साहित्यिक, सामाजिक कार्यकर्ता और उनके निकट सम्पर्क में आये हुए—व्यक्तियों के संस्मरण हैं। पिछली बार 'जीवन साहित्य' ने टालस्टाय पर विशेषांक प्रकाशित किया था। रवि बाबू और टालस्टाय ऐसे साहित्यिक हैं, जो आने वाली कई सदियों तक दुनिया को प्रकाश देते रहेंगे। कुल मिला कर अंक अच्छा और संग्रहणीय है।

'उद्यम' : गृहोद्योग विशेषांक, सं०-प्र० वि. ना. वाडेगाँवकर, धर्मपेठ एक्सटेंशन, नागपुर-१। वार्षिक मूल्य ७ रु; इस अंक का १ रु ५० न पै।

'उद्यम' मासिक पत्र ने दीपावली अंक 'गृहोद्योग विशेषांक' के रूप में प्रकाशित किया है। केले की पाउडर, बेड बनाना, खड़िया व प्लास्टर ऑफ पेरिस, सोडा वाटर, पेन्सिल आदि गृहोद्योगों की जानकारी प्रस्तुत अंक में दी गयी है।

—मधुराम

विनोबा-पदयात्री दल से

प्रदक्षिणा का महत्त्व—जनसम्पर्क के लिए भक्ति की आवश्यकता—ईश्वर का अस्तित्व—ग्रामदान को मेथी के लड्डू की उपमा—चित्त में निश्चय हो—पहले विचार और फिर आचार—कब तक शंका करते रहोगे?—प्रशिक्षण में तंत्र नहीं, वात्सल्य की आवश्यकता—एकत्र जीना सीखोगे—श्री नीलमणि फूकन का उत्साह।

• कुसुम देशपांडे

शरत्काल प्रसन्नता लेकर आया है, हवा आह्लाददायक बनी है! ब्राह्म मुहूर्त पर यात्रा का आरंभ होता है, तब घना कुहरा वातावरण को व्याप्त किये रहता है। उसमें कृष्ण पक्ष का चंद्रमा भी ढँक जाता है! उसका धुंधला प्रकाश उसके अस्तित्व का भान करा देता है। सारी सृष्टि एक महीन परदे के पीछे छिपी रहती है। विनोबा के आगे बीस-पचीस कदमों पर चलने वाले 'नेताजी' के हाथ में लालटेन की बत्ती मात्र दीखती है! ज्योति आगे-आगे जा रही है, पर उसे हाथ में लेने वाली व्यक्ति नहीं दीखती है। धीरे-धीरे पौ फटने लगती है। कभी सामने, तो कभी बाजू में खड़ी पर्वतमाला के पीछे गुलाबी आभा बिखरती जाती है और शुक्र तारा अपनी शान में चमकता हुआ नजर आता है। फिर दिन के प्रकाश में दीखता है कि हरएक साथी के बालों पर ओस के मानो मोती चमक रहे हैं! रात के ओस-बिंदुओं के कारण घास और पौधे, वृक्ष आदि इतनी गीले हो जाते हैं कि मानो रात में वर्षा ही हुई हो!

सूर्यदेव का आगमन होता है, तो विनोबाजी ओढ़ी हुई अपनी शाल हटा देते हैं। कभी मोजे पहने हुए रहते हैं, तो वह भी निकाल देते हैं। एक दिन कहते थे—"चलो अब 'अवतार-विसर्जन' करेंगे!" याने क्या? तो देखा कि खड़े होकर वे अपनी गरम शाल हटाने लगे थे और गुनगुनाते थे—"नाहीं आवाहन, कैसे विसर्जन, स्वरूपीत लीन ज्ञानदेव!" धूप का लाभ उठाने के लिए वे कई बार खुले बदन ही चलते हैं!

एक दिन विनोबाजी कहते थे, "ठंड के दिनों में मुझे प्रदक्षिणा याद आती है। उसमें कुल शरीर को समान धूप मिलती है। अभी सूरज मेरे पीछे है तो पीठ को गरमी मिलती है, पेट को ठंड। पीठ को पूछो कि कौनसा महिना है तो कहेगी 'अप्रैल' और पेट कहेगा 'डिसम्बर'! प्रदक्षिणा की कल्पना जिसने ढूँढ़ निकाली, उसने कुशलता का काम किया है।"

× × ×

उड़ीसा के श्री अनादिभाई, जो इन दिनों कटक शहर में विद्यार्थियों में काम कर रहे हैं, दो सप्ताह यात्रा में रह कर वापस लौटे हैं। वे बाबा के साथ बातचीत करते थे तो बाबा कभी-कभी 'नामघोषा' का "अनादि अनंत हे भगवन्त" यह गुनगुनाते थे और पूछते थे—"क्यों भाई अनादि, तुम्हारे तो अनंत सवाल होंगे!"

एक दिन विनोबाजी ने उनको भजन गाने के लिए कहा, तो अनादिभाई ने कहा, "मैं गाना नहीं जानता!"

बाबा: "तुम्हारी जगह कोई बंगाली होता तो जरूर गाता!"

अनादिभाई ने कहा, "मैं भजन नहीं गाता!"

बाबा ने पूछा, "तो क्या सिने-गीत गाते हो?"

अनादिभाई: "लोकगीत गाता हूँ।"

बाबा: "लोकगीत याने क्या!"

और फिर बाबा खुद जोर से गाने लगे—"अरे पंछी उड़ जा रे उड़ जा; मेरे खेत की फसल मत खा रे मत खा!" यह सुन कर सब हँसने लगे।

बाबा कह रहे थे, "देखो, तुम्हारे लिए यह लोकगीत बनाया मैंने।"

अनादिभाई: "बाबा, भजन मैं इसलिए नहीं गाता कि लोग समझेंगे कि यह कोई साधु सन्तों का गीत है, यह भाई हमसे अलग है, ऐसा मानेंगे।"

बाबा: "तुम यह ध्यान में रखो कि जो भगवान की भक्ति में मस्त नहीं होगा, वह भारत में क्रांति नहीं कर सकेगा। एक कम्युनिस्ट भाई ने बीड़ी पीना शुरू किया तो मैंने पूछा कि यह तुम क्या करते हो! तो वह बोले कि जनसम्पर्क के लिए करना पड़ता है! जनसम्पर्क के लिए वे बीड़ी पी सकते हैं और तुम भजन नहीं गा सकते हो!"

इस तरह थोड़ी देर विनोद चला और फिर अनादिभाई ने ओड़ीया भाषा के दो भजन अच्छी तरह से गाये। दोनों बाबा के प्रिय भजन थे। भजन खत्म करने पर अनादिभाई ने कहा, "ईश्वर में मेरा भरोसा नहीं है। ईश्वर तो एक बड़ा क्वेश्चन मार्क—प्रश्नचिह्न—है।"

बाबा ने झट कहा—"तो हम कौन 'फुलस्टाप'—पूर्णविराम—है? बल्कि हम तो अल्पविराम ही हैं; क्योंकि पाँच-पचीस साल में मरने वाले ही हैं!"

आगे अनादिभाई ने कहा, "जब दर्शन नहीं होता है, तब लगता है कि अगर वह है तो दीखता क्यों नहीं?"

बाबा ने समझाया, "तुमने लंदन देखा है? नहीं! पर तुम्हें मालूम है कि लंदन नाम का कोई शहर है; क्योंकि जिन्होंने लंदन देखा है, उन्होंने तुमसे कहा और तुमने वह मान लिया है, उन पर विश्वास किया है। अब जिन्होंने ईश्वर को देखा है ऐसे लोग हैं और वे कह रहे हैं कि भाई, ईश्वर है! तो उन पर भरोसा क्यों नहीं करते हो? जगन्नाथदास, चैतन्य आदि क्या ये सब ठग थे? बेवकूफ थे? क्या उन्होंने अपने अनुभव नाहक ही लिखे हैं? हाँ, लंदन जाने की एक 'प्रोसेस'—पद्धति—है। और उससे भी कठिन 'प्रोसेस' है ईश्वर को जानने की। यह जानना हो तो जान लो।

× × ×

बीच में तीन दिन असम सर्वोदय मंडल की कार्यकारिणी के सदस्य विनोबाजी से मिले। उसमें मुख्यतया असम वैली के भूदान-कार्य की चर्चा हुई।

ग्रामदान की चर्चा में विनोबाजी ने कहा, "इस काम में बहुत सावधानी होनी चाहिए। उन गाँवों में फौरन जमीन बाँटने का काम हो जाना चाहिए। जहाँ ऐसा अनुभव आता हो कि गाँव के लोग जमीन-वितरण के लिए तैयार नहीं हैं वे गाँव आपकी संख्या से कम कर देने चाहिए। ऐसी निस्पृहता होनी चाहिए। संख्या का लोभ नहीं होना चाहिए। ग्रामदान याने मेथी का लड्डू है। उसमें गुड़ का मीठा अंश होता है, तो कर्तव्य का अंश कड़आ होता है। लेकिन यह लड्डू पौष्टिक होता है। गाँव वालों को समझाते समय सिर्फ 'गुड़' का ही अंश उनके सामने नहीं रखना चाहिए, बल्कि साथ-साथ कर्तव्य का भान भी कराना चाहिए।

× × ×

उत्तर लखीमपुर में दिसंबर के दूसरे सप्ताह में विनोबाजी प्रवेश करेंगे। कुल असम में फिलहाल शिवसागर और उत्तर लखीमपुर में ग्रामदान पर जोर लगाने का निश्चित किया है। अब उत्तर लखीमपुर में करीब ४० कार्यकर्ता भेजने का तय किया गया था। विनोबाजी ने कहा कि "कार्यकर्ता परखे हुए होने चाहिए। जैसे फौज के हर सिपाही की हरकतों के लिए 'कमांडर' और सरकार जिम्मेदार होती है, वैसे हम और आप उनके काम के लिए जिम्मेदार होंगे, यह बात ध्यान में रखनी होगी।"

× × ×

श्री हेमाबहन असम की उत्साही, शक्तिशाली नवजवान सेविका हैं। इन दिनों खादी कमीशन में धानकुटाई के कार्य की इन्स्पेक्ट्रेस हैं, कस्तूरबा ट्रस्ट में रह चुकी हैं। शरणीया आश्रम और श्री अमलप्रभा बहन के साथ उनका दिली रिश्ता है। विनोबाजी की यात्रा में वह आगे-पीछे की व्यवस्था का, स्थानिक लोगों को जुटाने का काम करती हैं। खादी कमिशन के काम से वह सर्वथा मुक्त होना चाहती हैं और यात्रा के काम में समय लगाना चाहती हैं।

उनके साथ चर्चा करते हुए एक बार विनोबाजी ने कहा, "एक लकड़ी नदी के प्रवाह में गिरी और प्रवाह के साथ समुद्र को मिली, तो यह नहीं कह सकते कि वह तर गयी। प्रवाह के साथ काम करना अलग बात है और खुद संकल्प करके काम करना दूसरी बात है। उनका चित्त इधर उधर दौड़ता नहीं है। कलियुग में चित्त का निश्चय होना ही कठिन बात है, इसलिए हमारे कार्यकर्ताओं को अपने चित्त का निश्चय करना चाहिए।"

हेमाबहन का कहना था कि शांति सेना के काम के लिए लियाकत चाहिए। उनके साथ इसी विषय की चर्चा करते हुए विनोबाजी ने कहा, "हर चीज का एक नाप होता है। जहाँ आकार आया वहाँ फल हो गया। फूल का फल हुआ—कच्चा या पक्का यह अलग बात है। आम पहले तो नहीं था, बाद में आया, याने फल का आकार आया। आगे वह मीठा बनता जायेगा। पहले वह कच्चा होता है, बाद में पक्का और मीठा होता है। पर वह है फल ही, फूल नहीं। वैसे ही शांति सैनिक फल है, आकार है, धीरे-धीरे वह पकेगा।"

× × ×

नीले आसमान के नीचे मुक्त होकर फली-फूली हरी सृष्टि! यहाँ तो सिर्फ दो ही रंग दीखते हैं—नीला और हरा। नीले आकाश को देख कर हमारे बाबा को प्रभु की नीली अंगकांति का स्मरण होता है, हरा रंग तो फकीरी की याद दिलाता है।... और शांत भक्ति और प्रखर वैराग्य सिखाते हुए यात्रा चली है।

हमारे एक साथी ने आज कहा "ब्रह्मविद्या का नाम हम सुनते हैं, करुणा की बातें सुनते हैं, और हम बोलते हैं तोते की तरह। हमारे जीवन में वह कब प्रकट होगा?

बाबा को माधवदेव याद आया। माधवदेव ने 'नामघोषा' में जो कहा है, वही बाबा गाने लगे—"कर्ण-पथे भकत हियात प्रवेशि हरि। दुर्वासना हरे समस्तय।"

और कहने लगे—"हरि का प्रवेश पहले कान से ही होगा। फिर वह अंतर में जायेगा, बाद में वाणी में आयेगा, फिर हाथ में आयेगा और आपके हाथों से सेवा होगी। फिर पाँवों में भी उसका प्रवेश होगा और सेवा के लिए आपके पाँव आपको ले जायेंगे। आरंभ होगा कान से ही। याने हरि का—भक्ति और

का-प्रवेश काम के मार्ग से होगा।

× × ×

गाँव के एक भाई को शंका थी : "आबादी बढ़ रही है और जमीन तो कम है। लोगों को अनाज काफी नहीं होता है, तो क्या ग्रामदान इसका इलाज है ?"

बाबा ने कहा, "ग्रामदान नहीं होगा तो क्या यह सवाल हल होगा ? ग्रामदान होने पर सब मिल कर काम करेंगे तो कुछ रास्ता मिल सकता है। पर आबादी बढ़ने का, जमीन कम पड़ने का प्रश्न मुझको क्यों पूछते हैं ? यह प्रश्न तो आपको सरकार को पूछना चाहिए—जिसे आपने 'वोट' दिये हैं, सारी सत्ता सौंपी है, करोड़ों रुपयों का टैक्स देते हैं ! मुझे तो आप मुट्ठी भर अनाज भी नहीं दे रहे हैं और सवाल भी पूछ करते हैं—जो सवाल सरकार से पूछने चाहिए, ऐसे सवाल मुझे पूछ रहे हैं !"

कभी-कभी विनोबाजी यह भी कहते हैं कि "तुम कब तक शंका ही करते रहोगे ? दिल्ली तक जाने का रास्ता हमने निश्चित कर लिया है। उस रास्ते पर चलोगे ही नहीं और उस रास्ते के बारे में शंका ही करते रहोगे तो इसमें दोष रास्ते का नहीं है ! चल कर तो देखो जरा !"

× × ×

कार्यकर्ताओं के ट्रेनिंग-प्रशिक्षण-के बारे में रास्ते में चलते हुए एक कार्यकर्ता ने कहा : "जब हम ट्रेनिंग की बात सोचते हैं, तो मन में आता है कि क्या हम उन को मदद नहीं कर रहे हैं !"

विनोबाजी ने कहा, "उन की क्या बात है ? क्या तुम यह सोचते हो कि तुम्हें पक्का, बना-बनाया तैयार माल मिलने वाला है ? कॉलेज में पढ़े हुए, नौकरी करने वाले, सब छोड़ कर इस काम में आये तो हैं। पर उनकी दशा कितनी है ? उन्हें भी ट्रेनिंग तो देना ही पड़ता है और बने-बनाये माल की ऐसी अपेक्षा करते हो ? तुम तो ग्रामोद्योगी हो न ? कच्चे माल का पक्का माल बनाना हमारा काम ही है। तुम अपने बच्चों के लालन-पोषण, शिक्षण का जिम्मा उठाते ही हो। परिवार में तब कहाँ आता है ? हमारा तो परिवार है। जहाँ गाय और बछड़ा एकत्र आता है, वहाँ श्रम कैसा ? हाँ, जहाँ गाड़ी को खींचने वाले दो बैल एक-दूसरे के साथ बात न करते हुए समानान्तर (पैरलल) चलते हैं, वहाँ श्रम आता है। इन दिनों कैबिनेट में कुछ मंत्रियों की हालत ऐसी होती है कि साथियों से दिली लगाव नहीं होता है। साथ मिल कर काम खींचते हैं, क्योंकि खींचना पड़ता है, पर उससे प्रेम बढ़ता है, ऐसा नहीं।

तब अलग है, वात्सल्य अलग है। ट्रेनिंग में वात्सल्य-भाव होना चाहिए। मेरे पास तो ऐसे भी लड़के आते थे, जो मुझसे सिर्फ दस ग्यारह साल छोटे थे। आज भी वे वात्सल्य पा रहे हैं।"

× × ×

टीयोक एक छोटा-सा शहर है। यहाँ के नागरिक सुबह ग्यारह बजे बाबा से मिले। एक ने कहा कि "ग्रामदान की ग्रामसभा में एकमत से काम होगा ?"

विनोबाजी ने कहा, "कौए भी एकमति से काम करते हैं। देखते नहीं हो, कहीं खाद्य पड़ी हो और एक कौआ उसे देखेगा तो का-का-का-का चिल्ला कर सब कौओं को इकट्ठा करेगा। सब आकर सहयोग और सहभोग करते हैं, खाद्य का भी विभाजन करके खाते हैं। दीमक भी घरों के किनारे या जंगल में पंद्रह पंद्रह फुट के ऊँचे मकान बनाती हैं। उनमें सुन्दर कमरे जैसे हिस्से होते हैं, कोने आदि होते हैं। ऊपर से बारिश भले गिरती हो, दीमक अंदर चैन से रहती हैं। आपके घर में चूता होगा, पर उनके घर में नहीं चूता है। ताजमहल बनाने के लिए जितने मजदूरों ने काम किया, उनसे भी ज्यादा संख्या में दीमक अपने मकान बनाने का काम करती हैं। तो जो काम कौए और दीमक भी करते हैं, वह क्या मनुष्य नहीं करेंगे ?"

यहाँ 'नामघरों' में लोग इकट्ठा होकर कीर्तन करते हैं। विनोबाजी कहते हैं, "तुम लोग एकत्र गाते तो हो, पर एकत्र जीना सीखो। एक ध्वनि से नहीं होगा, 'एक प्राण' होना पड़ेगा।"

× × ×

ता० २ दिसम्बर से जोरहाट सब डीविजन की यात्रा हो रही है। जोरहाट के श्री नीलमणि फूकन आसाम के श्रेष्ठ साहित्यिक हैं और ग्रामदान के काम में वे 'हाल' देखते हैं। ८२ साल की उम्र में भी उनका काम का उत्साह ताजा है ! अमृतसर में साहित्यिकों की मंडली विनोबाजी से मिली थी। उसमें वे शरीक हुए थे। उनके आग्रह के वश होकर इस सबडीविजन में दस दिन देने का विनोबाजी ने तय किया है। तीन ग्रामदान देकर प्रथम दिन श्री नीलमणिजी ने विनोबाजी का स्वागत किया। कल और आज भी एक-एक ग्रामदान मिला है। ११ दिसम्बर से विनोबाजी फिर से उत्तर लखीमपुर जिले में प्रवेश करेंगे।

बिहार में 'बीघे में कट्ठा' आंदोलन को बढ़ावा देने के लिए अलग-अलग प्रांतों से कार्यकर्ताओं की टोलियाँ वहाँ पहुँची थीं। वहाँ काम करके कुछ कार्यकर्ता यहाँ विनोबाजी से मिलने आये हैं। उनमें गुजरात सर्वोदय मण्डल के मंत्री श्री किसन त्रिवेदी, महमंत्री श्री अरुण भट्ट, मीरा भट्ट तथा श्री करसन भाई हैं। एक सप्ताह यात्रा में रह कर वे वापस गुजरात लौटेंगे।

(२ दिसम्बर '६१)

भारत की राजधानी में शांति-सैनिक

३ दिसम्बर, '६१ भारतवासियों के लिए और विशेषतया बिहार-वासियों के लिए एक विशेष दिन था। बिहार की भूमि ने आज तक अगणित रत्न पैदा किये हैं। उनमें से एक रत्न आज भारतमाता के मुकुट-मणि के रूप में विराजमान है ! भारत के राष्ट्रपति का सर्वोच्च पद विभूषित करने वाले देशरत्न राजेन्द्र बाबू का जन्म-दिन इस बार बिहार के शान्ति-सैनिकों ने समर्पण और संकल्प के साथ मनाया।

दोपहर को बारह बजे दिल्ली में राजघाट पर बापू समाधि की सन्निधि में हरियाली पर पीले रूमाल बांधे हुए १८० शांति-सैनिक खड़े थे, जिनमें २१ महिलाएँ थीं। अधिकांश महिलाएँ कस्तूरबा शांति-सैनिक विद्यालय, इन्दौर से आयी हुई थीं। शनिवार का, छुट्टी का दिन। बापू-समाधि के दर्शन के लिए आये हुए देश विदेश के यात्री कौतूहल से देख रहे थे, फोटो खींच रहे थे। यात्रा आरम्भ करने से पहले शांति-सैनिकों ने बापू के चरणों में मूक अभिवादन किया और फिर गगनभेदी ध्वनि निकली—'महात्मा गांधी की जय !' शांति-सैनिक 'राष्ट्रपति भवन' की दिशा में आगे बढ़ने लगे। पाँच मील का रास्ता तय करना था। कवि दुलायल तथा उनके साथी जोश के साथ गा रहे थे—

'शांति के सिपाही चले
क्रांति के सिपाही चले।'

बीच-बीच में नारे लगाये जाते थे :

'जय जगत् है ..मंत्र हमारा।'
'विश्वशांति है ..ध्येय हमारा।'
'अणुपरीक्षण ..बंद करो।'
'हम चाहते हैं सम्पूर्ण निःशस्त्रीकरण।'

दिल्ली के नागरिक देख रहे थे, शांति-सैनिकों की उस टोली को जिसमें सबसे आगे बहनें थीं, जो प्रभावतीजी के नेतृत्व में आगे बढ़ रही थीं। जयप्रकाशजी, ध्वजा-बाबू आदि सब उनके पीछे चल रहे थे। दुलायलजी गा रहे थे-'जय जगत् पुकारे जा, सर अमन पे वारे जा।'

'राष्ट्रपति भवन' दिखाई देने लगा। नियत समय से कुछ पहले ही शांति-सैनिक अपने उद्दिष्ट स्थान पर पहुँचे थे। एक जमाने में यहाँ इंग्लैंड के बादशाह का प्रतिनिधि रहता था, उसी प्रासाद में ग्रामवासी शांति सैनिकों ने प्रवेश किया, ग्रामीण राष्ट्रपति को अपनी श्रद्धांजलि समर्पण करने के लिए। राष्ट्रपति के दर्शन होते ही सबके मुख से प्रार्थना के शब्द निकले : 'राष्ट्रपति राजेन्द्रबाबू ..दीर्घायु हों !'

श्री ध्वजाबाबू ने सूत की माला समर्पण की। बिहार सर्वोदय मंडल की ओर से श्री रामनारायण बाबू ने छः हजार बीघे के दान-पत्र समर्पण किये, जो गत 'बीघे में कट्ठा' आन्दोलन में प्राप्त हुए थे। श्री जयप्रकाशजी ने मानपत्र पढ़ा, जिसमें दान प्राप्ति का लक्ष्यांक पूरा न होने के कारण खेद व्यक्त किया गया था और पू० राजेन्द्रबाबू से आशीर्वचन की याचना की गयी थी।

पू० राजेन्द्रबाबू ने आशीर्वाद देते हुए कहा कि आज जब कि मानव के हाथ में संहारकारी अस्त्र आ गये हैं, शांति की विशेष ही आवश्यकता महसूस हो रही है। राष्ट्रपति-पद से निवृत्त होने के बाद सर्वोदय का कार्य करने के अपने संकल्प को पुनः घोषित करते हुए राजेन्द्र बाबू ने बताया कि अपनी शारीरिक अवस्था को देखते हुए विशेष काम नहीं कर पायेंगे, फिर भी सहानुभूति इस काम के साथ रहेगी।

राष्ट्रपति के आशीर्वाद पाकर शांति-सैनिक कॉन्स्टीट्यूशन क्लब की ओर बढ़े, जहाँ पर आम सभा में प्रधान मंत्री पं० नेहरू का भाषण होने वाला था। सभा का आयोजन गांधी स्मारक निधि की ओर से किया गया था। प्रधान मंत्री के आगमन के बाद, भजन तथा शांति-सेना के गीत गाये गये। फिर जयप्रकाशजी ने शांति-सेना की जानकारी देते हुए कहा—

"शांति-सेना की कल्पना गांधीजी की है। यह शब्द भी उन्हीं का है। गांधीजी की मृत्यु के बाद विनोबाजी ने वर्धा में स्थानीय कार्य के लिए शांति-सेना का संगठन किया था। उसके बाद सन् '५७ में केरल की यात्रा में उन्होंने आठ कार्यकर्ताओं को दीक्षा देकर शांति-सेना की पुनः स्थापना की। .....अंदरूनी शांति की प्रस्थापना में शांति-सेना अब तक विशेष कार्य नहीं कर सकी है, इसका हमें दुःख है। लेकिन हम मानते हैं कि अहिंसा में दुनिया के सारे मसले हल करने की शक्ति है। हम थोड़े हैं, छोटे हैं, कमजोर हैं, लेकिन अहिंसा में महान शक्ति है। सीमा का प्रश्न, दो देशों के बीच चलने वाले झगड़ों का प्रश्न हल करने की शक्ति भी उसमें है। इस दिशा में सोचने के लिए विश्व के कुछ शांतिवादी अभी बेरुत में मिलने वाले हैं। वहाँ पर वे विश्वशांति-सेना के निर्माण तथा कार्यक्रम के विषय में चर्चा करेंगे।

आज का मुख्य भाषण तो आदरणीय पंडितजी का होगा। मैं उनसे प्रार्थना करता हूँ कि वे हमें आशीर्वाद दें।"

इसके पश्चात् प्रधानमंत्री पं० नेहरू का भाषण हुआ। (यह भाषण इसी अंक में अन्यत्र दिया गया है। —सं०)

—निर्मला देशपांडे

शांति-विद्यालय, काशी का दूसरा सत्र

विद्यालय का दूसरा सत्र-१५ अगस्त '६१ से प्रारंभ हुआ। इस सत्र में देश के विभिन्न प्रदेशों से कुल १७ शांति-सैनिक आये। प्रदेशवार संख्या इस प्रकार है : उत्तरप्रदेश ५, बिहार १, बंगाल १, असम १, उत्कल २, मध्यप्रदेश १, महाराष्ट्र ३, कर्नाटक २ और पंजाब १।

इस सत्र में कालावधि पाँच महीनों के बदले चार महीने कर दी गयी थी। उसके कारण समय की थोड़ी कमी महसूस हुई, लेकिन फिर भी चार महीनों की प्रगति काफी संतोषप्रद है।

विद्यालय के पाठ्यक्रम में एक बहुत महत्त्वपूर्ण अंग है समूह जीवन का। विभिन्न भाषाएँ बोलने वाले, विभिन्न संस्कार-संपन्न, विभिन्न स्वभाव के लोगों का एक स्थान में रहना अपने में ही एक तालीम है। परस्पर के व्यवहार में उत्पन्न होने वाली समस्याओं की बीच-बीच में शांति-सेना की दृष्टि से समीक्षा होती रही, अन्यथा विद्यालय की ओर से कोई अनुशासन सैनिकों पर नहीं लगाया गया। पूरे सत्र में सैनिक अच्छी तरह स्वशासित रहे। कभी कभी थोड़ी रगड़-झगड़ या तड़क-भड़क जरूर हुई, किन्तु कुल मिला कर सब में एक-दूसरे के प्रति स्नेह और सम्मान बढ़ा। साथियों के गुण दर्शन के कारण सैनिक अपने गुणों में भी वृद्धि कर सके।

अध्ययन के विषयों में मुख्य तीन उद्देश्य थे :—

(१) व्यवस्थित अध्ययन करने की आदत पड़ना। (२) दृष्टिकोण व्यापक बनाना। (३) जीवन की समस्याओं के बारे में विवेक, बुद्धि का विकास करना।

समयाभाव के कारण अधिकांश वर्ग व्याख्यान-पद्धति से ही लिये गये। व्याख्यानों के बाद रोज प्रश्नोत्तरी होती थी। श्री शंकरराववजी तथा मेरे वर्गों में मुक्त चर्चा की भी परंपरा रही, लेकिन विद्यार्थियों को विषय में प्रवृत्त करने के अन्य बहुत सारे तरीके इस्तेमाल नहीं किये जा सके। इसमें एक कारण यह भी था कि छात्रों को अन्य पद्धतियों से अध्ययन करने की पहले से आदत भी नहीं थी। व्याख्यान की नोंद लेना, निरीक्षण का विवरण लिखना, निबंध के लिए प्रश्नावलि तैयार करना, निबंध के लिए उपयुक्त साहित्य ढूँढ़ना, मार्गदर्शक की सलाह लेना, निबंध लिखना, मासिक पत्रिका के लिए लेख, कविता, चित्र आदि देना, डायरी लिखना इत्यादि शिक्षण पद्धतियों का उपयोग अच्छा हुआ। पुस्तकालय का उपयोग साधारण हुआ।

अधिकांश सैनिकों ने यह महसूस किया कि सत्र के अन्त तक उनका दृष्टिकोण थोड़ा व्यापक हुआ। कम-से-कम इतना तो अवश्य जाना कि हर प्रश्न के विषय में वे जो राय रखते हैं वही परम सत्य नहीं है, सत्य का दूसरा पहलू भी हो सकता है। उसकी ओर हमें आदर-भाव से देखना चाहिए। इसके अनुभव जीवन के हर क्षेत्र में मिले और इसके बारे में समय-समय पर शास्त्रीय चर्चा भी हुई।

विद्यालय के समूह जीवन में अनेक समस्याएँ ऐसी आती रहीं, जिनके बारे में विवेक दृष्टि की आवश्यकता महसूस हो। इसके अलावा नगर के प्रश्नों तथा राष्ट्र की समस्याओं का अध्ययन करना, उनके बारे में विवेक-दृष्टि का विकास हो, इसका भी ध्यान किया गया। अलबत्ता हर विषय ऐसा है कि जो केवल परस्पर की बातचीत से नहीं होता। इसमें शिक्षकों की स्नेह-दृष्टि, कार्यक्रम में मिले हुए सहयोग के मौके तथा शिक्षकों के चरित्र का असर पड़ता है। जिस प्रमाण में ये गुण परिस्थिति में थे, उस प्रमाण में उनका असर शान्ति-सैनिकों पर पड़ने का सम्भव है।

शिक्षण का एक और प्रमुख माध्यम रहा प्रत्यक्ष सेवा-कार्य का। प्रथम सत्र की अपेक्षा इस सत्र में इस विषय में अधिक प्रगति हो सकी। सामूहिक जीवन में आने वाली परिवार सेवा की प्रवृत्तियों के अलावा 'फाउंडेशन फार न्यू एजुकेशन' के दवाखाने में जाकर छात्रों ने प्रत्यक्ष चिकित्सा का निरीक्षण किया तथा उसका सामान्य शिक्षण भी लिया। श्री कृष्णदास शाह द्वारा संचालित दस दिन का सफाई-शिविर सेवा-कार्य की तालीम की दृष्टि से अत्यन्त उपयोगी रहा। शांति-सैनिकों ने दस दिन ग्रामवासियों के बीच रह कर ग्राम-सफाई के विभिन्न अंगों की प्रत्यक्ष तथा तात्त्विक तालीम पायी। साहित्य-प्रचार सत्र तथा शांति-प्रतिज्ञा पर दस्तखत करवाने के निमित्त वाराणसी नगर का भी अच्छा परिचय हुआ। शहर की एक हरिजन-बस्ती से बनाया हुआ संबंध टिकाया गया। शहर की प्रायः सभी प्रमुख व्यक्तियों से विद्यालय का प्रत्यक्ष या परोक्ष सम्पर्क हुआ।

नीचे दिये हुए विषयों का अध्ययन हुआ :—

जीवनाधार

मूल्य-मीमांसा, एकादश विचार सविस्तार, स्थितप्रज्ञ-लक्षण विवेचन सहित। ग्यारह प्रमुख उपनिषदों से चुने हुए १२० मंत्रों का स्वाध्याय। गीता-प्रवचन, मंगल-प्रभात, आत्मकथा, दक्षिण अफ्रीका के सत्याग्रह का इतिहास, शांति-सेना, हृदयपरिवर्तन(?)... स्थितप्रज्ञ-दर्शन; इन पुस्तकों का गहराई से परिचय हुआ। कुछ चुने हुए भजन तथा शांति-गीत, साधना केन्द्र के जीवन के विभिन्न पहलुओं की समीक्षा। श्री कृष्णमूर्ति की विचारधारा, श्री अरविन्द का दर्शन, पारस्परिकता का महत्त्व।

समाज में तनाव

हिन्दू, बौद्ध, जैन, ईसाई, इस्लाम धर्मों तथा उनके दर्शनों के मूल तत्त्वों के बारे में जानकारी, सर्व धर्मों के समान तत्त्व। हमारी मानसिक समस्या का तालीम से अध्ययन : सांप्रदायवाद तथा जातिवाद का गहराई से अध्ययन। आर्थिक समस्या तथा उसका निराकरण।

वर्तमान परिस्थिति में तनाव : पंजाबी सूबा, काश्मीर, जबलपुर, अलीगढ़, नेपाल, भारत-पाक और पाक-अफगान संबंध, भारत-चीन संबंध, गोआ, तिब्बत, बर्लिन, अफ्रीका के प्रश्न, क्यूबा, लाओस, निःशस्त्रीकरण का प्रश्न।

शराब की समस्या, वेश्याओं का प्रश्न, छात्रों में अशांति। तनाव के मनोवैज्ञानिक कारण, भीड़ और अपराध का मनोविज्ञान।

समाज शांति शास्त्र

सत्याग्रह-शास्त्र की मीमांसा काफी विस्तार से हुई। गांधी के पूर्व युग में, गांधी-युग में तथा गांधी के बाद अहिंसा। दक्षिण अफ्रीका का सत्याग्रह, वीरमगाँव सत्याग्रह, इन्डेंचर्ड लेबर, चम्पारण, एक धर्म-युद्ध, खेड़ा असहयोग आंदोलन, बोरसद, वायकोम, बारडोली, नमक-सत्याग्रह, १९३०-३१, १९३२ से ३४, व्यक्तिगत सत्याग्रह, १९४२ का आंदोलन, नोआखाली, कलकत्ता और दिल्ली के उपवास का इतिहास तफसील से। विश्व में शांति-आन्दोलन, नयी तालीम की नयी दृष्टि और श्रमनिष्ठा।

सामान्य ज्ञान

प्राथमिक उपचार, सामान्य औषधियों का ज्ञान, सफाई शास्त्र, भारत तथा संसार का भूगोल, भारत में शिक्षण, राष्ट्रीय एकता के प्रश्न की समीक्षा।

नीचे लिखे व्यक्तियों के जीवन के बारे में जानकारी दी गयी : सॉक्रेटीस, गेलिलियो, संत फ्रांसिस, सारे सिक्ख गुरु, मार्टिन लूथर, पाश्चर, मेडम क्यूरी, टालस्टाय, गणेशशंकर विद्यार्थी, ईसा, मुहम्मद, रामकृष्ण, गांधी, विनोबा।

अर्थशास्त्र, राज्य-शास्त्र और मनोविज्ञान के सामान्य सिद्धान्त बतलाये गये। गुजराती और मराठी भाषा के कुछ प्रमुख ग्रंथों का परिचय दिया गया।

अलीगढ़ के दंगों के समय शांति विद्यालय से तीन शांति-सैनिक तथा एक कार्यकर्ता वहाँ शांति कार्य के लिए गये। यद्यपि इनकी संख्या कम थी, फिर भी उनकी उपस्थिति का परिणाम अल्पसंख्यक जनता को शांति दिलाने में हुआ।

इस सत्र में विद्यार्थियों ने भाषा सीखने का प्रयत्न किया। एक को इस कालावधि में भाषा-प्रवेश हुआ है। वे यदि प्रयत्नशील रहेंगे तो इस को अपने स्थानों पर भी चालू रख सकते हैं।

निम्नलिखित विषयों पर निबंध लिखे गये :—(१) उत्कल में शराब की समस्या (२) बेकारी (३) ग्राम-स्वावलम्बन की दिशा में (४) अस्पृश्यता (५) सर्वोदय (६) निर्माण-कार्य (७) संयुक्त राष्ट्रसंघ और विश्व-शांति (८) गढ़वाल में शराब की समस्या (९) वेश्या-वृत्ति (१०) शांति सेना (११) अशांति के कारण (१२) गांधीजी के बाद सर्वोदय सिद्धान्त और व्यवहार (१३) सत्याग्रह (१४) नयी तालीम (१५) उत्तर प्रदेश की विद्यार्थी-समस्या (१६) जातिवाद (१७) भाषिक समस्या।

अध्यापन काल में निम्नलिखित सज्जनों ने वर्ग लेकर हमें सहायता दी—(१) दादा धर्माधिकारी, (२) शंकरराव देव, (३) कृष्णराज मेहता, (४) धीरेन्द्र मजूमदार, (५) आर्यनायकम्, (६) आचार्य कृपालानी, (७) मार्जरी साइक्स (८) निर्मला देशपांडे, (९) मार्लोरी(?), (१०) कृष्णदास शाह, (११) अच्युत पटवर्धन, (१२) दत्तोबा दास्ताने, (१३) राधाकृष्णन्, (१४) फड़के शास्त्री, (१५) आचार्य हरिहर दास (१६) पंडित कैलाशचन्द्र शास्त्री, (१७) मनमोहन चौधरी, (१८) अप्पु भाई सुरती(?), (१९) जगन्नाथन्, (२०) गांगुली, (२१) डा० प्रसाद, (२२) प्रो० भीमराव देशपांडे, (२३) डा० कल्ले, (२४) सुन्दरम्, (२५) जगदीश कश्यप, (२६) जगदीश थवानी, (२७) सरदार दस्तावर सिंह, (२८) सतीशचन्द्र दुबे।

इस सत्र में मुख्य त्रुटियाँ ये रहीं :

(१) वक्त की पाबंदी के संस्कार नहीं दिये जा सके।

(२) लोक-सम्पर्क के विविध टेक्नीक नहीं सिखाये जा सके।

(३) कोई प्रवास नहीं हो सका।

इनमें से पहली त्रुटी का कारण मेरी कमजोरी है और बाकी का कारण समय का अभाव था।

सत्र में हमारे काम में जिन भाई बहनों ने सहायता दी है, उनका मैं ऋणी हूँ।

—नारायण देसाई

शांति-सेना प्रशिक्षण

शांति-सैनिकों के प्रशिक्षण के लिए सर्व सेवा संघ द्वारा काशी में श्री नारायण देसाई और कस्तूरबा-ट्रस्ट द्वारा इन्दौर में श्री निर्मला बहन देशपांडे के संचालन में शांति विद्यालय चल रहे हैं। अब तक दोनों विद्यालय के दो सत्र पूरे हो चुके हैं।

...के बारे में कुछ सवाल

[पृष्ठ ५ का शेष]

...वे कैसी। एक आदमी भी पक्के तौर ... रास्ते पर हिम्मत के साथ चलता और उसका दिल शुद्ध हो तो उसका असर होता है। गांधीजी का बहुत ज्यादा असर हुआ। हम छोटे हैं, इसलिए हमारा काम अगर होगा, लेकिन होगा जरूर। मैं मानता हूँ कि अहिंसा में शक्ति है। वह महज कहने की चीज नहीं है। अभी अध्यक्षजी ने कहा कि अहिंसा एक 'पॉजिटिव' चीज है। वह सही है। डर से पैदा होने वाली अहिंसा महज हानिकारक ही नहीं, बल्कि बहुत हानिकारक चीज है। डर असल दर्जे की हानिकारक चीज है। वह कौम को, व्यक्ति को खराब करने वाली चीज है। सबसे बड़ा गुनाह डर है और कोई भी गुनाह उससे कम गुनाह है। अहिंसा और शांति के नाम पर डर हो तो वह अहिंसा, वह शांति नहीं चलेगी।

मैं अगर पूरी तरह से शांति-सेना की बात मानता तो मैं प्रधानमंत्री रह ही नहीं सकता। और अगर रहता, तो मुझे फौज अपनी फौज, वायुदल, नौकादल और पुलिस, सबको बरखास्त करना पड़ता। यह एक पेंच है। इसलिए दिक्कत पैदा होती है कि मैं आपको कैसे आशीर्वाद दूँ कि यह काम अच्छा है। मैं मानता हूँ कि यह काम अच्छा है, लेकिन सब जानते हैं कि मैं वह कदम नहीं उठा सकता हूँ। इसलिए नहीं कि मुझे प्रधानमंत्री पद का लालच है, बल्कि मैं प्रधानमंत्री न रहूँ, तो भी मेरा दिमाग साफ नहीं है। मेरे सामने पचासों तरीके हैं। मैं यह नहीं कह सकता हूँ कि मैं केवल शांति के ही तरीके से काम करूँगा। जो जिम्मेवारी मुझ पर है, महज प्रधानमंत्री के नाते नहीं, बल्कि एक नागरिक के नाते, उसे देखते हुए मैं अपने को बाँध नहीं सकता कि मैं शांति-सेना का ही तरीका अख्तियार करूँगा। मैं नहीं मानता कि इस रास्ते से हम हिंदुस्तान के सवाल हल कर सकते हैं। फिर बाहर के सवाल तो दूर ही हैं। लेकिन बावजूद इन कठिनाइयों के मैं मानता हूँ कि जो गांधीजी ने कहा था और जो विनोबाजी कह रहे हैं, उसमें बुनियादी सचाई है और उससे देश का और दुनिया का लाभ होगा। गांधीजी ने अंदरूनी झगड़ों के लिए जो कहा था, उसे भी हम पूरा नहीं कर सकें तो दुनिया में लड़ाई न हो, यह न हो, वह न हो, यह कहना छोटे मुँह बड़ी बात होगी। यह बात तो सही है, लेकिन जब तक हम देश में कुछ नहीं कर पाते हैं, तब तक कुछ कहना ठीक नहीं होगा। गांधीजी दूसरे देशों में नहीं जाते थे। वे कहते थे कि जब तक हम देश में काम नहीं कर रहे हैं, तब तक बाहर कैसे जायेंगे। और हम छोटे आदमी देश-देश में घूमते हैं। हर आदमी को अपना-अपना ढंग ढूँढ़ना पड़ता है। हम अगर कहें कि हम गांधीजी जैसा करेंगे तो नहीं कर सकते और अपना कर्तव्य भी नहीं कर सकते हैं। हर आदमी को अपना कर्तव्य ढूँढ़ना पड़ता है औरों से सीखना होता है, नकल भी करनी पड़ती है।

ये सब दिक्कतें मैंने बतायीं। मन में सवाल उठते रहते हैं। बावजूद इन बातों के, जिस तरह आप शांति सेना की तरफ देखते हैं वह मुझे अच्छा लगता है। मैं कहता हूँ कि वह सही है, इसलिए इसका असर होगा। इसीलिए मैं आपको अपनी सहानुभूति और शुभकामना बड़ी खुशी से देता हूँ।

महामना से एक मुलाकात

[पृष्ठ ३ का शेष]

उन्होंने लिख दिया : "धर्म पर दृढ़ रहो।" उस समय भी महामना की आँखें सजल थीं, कृतज्ञता के आँसुओं से।

* * *

जयपुर लौटा तो भाई से पूछा। उन्हें भी इस रहस्य का कुछ पता न था। पिताजी का देहान्त हुए बीसों वर्ष हो चुके थे।

तब मैंने जाकर पकड़ा पिताजी के वयोवृद्ध मित्र श्री गौरीशंकर जैतली को।

बोले : तुझे पता नहीं। तेरे पिता ने मालवीयजी महाराज को जयपुर नरेश महाराज माधव सिंह से बड़े आदर सहित दिलवाये थे।

'सो कैसे ?'—मैंने पूछा 'मुझे तो इतना ही पता लग सका है कि मालवीयजी महाराज जब दरबार से मिलने यहाँ पधारे थे तो किसी ने उन्हें मिलने नहीं दिया था। शास्त्रीजी (पिताश्री) ने किसी प्रकार दरबार से उनकी भेंट करा दी थी।'

'भेंट तो दरबार से उन्होंने करायी ही थी, यह भी शर्त कर दिया था कि अभी विश्वविद्यालय के लिए कुछ मत मांगिये। हाल में ही जब दरबार हरिद्वार जायेंगे तो हरि की पैड़ी पर स्नान करते समय संकल्प करायेंगे। योजना के अनुसार सारा काम किया गया। दरबार जब हरि की पैड़ी पर स्नान कर रहे थे तभी मालवीयजी महाराज उनके पास जा पहुँचे—"करो महाराज, हिन्दू विश्वविद्यालय के लिए दान का संकल्प! तुम-सा दाता और मुझ-सा ब्राह्मण कहाँ मिलेगा!" शायद पाँच लाख का उन्होंने संकल्प कर दिया।'

यह था महामना की कृतज्ञता का कारण। शास्त्रीजी ने कभी इस घटना की घर पर किसी से चर्चा नहीं की। पर महामना भला उन्हें कैसे भूलते ? यही तो महापुरुषों की विशेषता है।

धन्य मालवीयजी! धन्य उनकी उदारता! धन्य उनकी सरलता!!

श्री गोराजी की दिल्ली सत्याग्रह-पदयात्रा

आज तक हमारी पदयात्रा वर्धा, नागपुर, सिवनी, जबलपुर, दमोह, सागर, झाँसी और दतिया, इन ८ जिलों में चली। कल ५ दिसम्बर को ग्वालियर जिले में प्रवेश करेंगे। इन आठ जिलों में ५८ दिनों में ५७१ मील की यात्रा हुई है। सब स्थानों पर पदयात्रा-टोली का प्रबंध अच्छा रहा, सभाएँ भी अच्छी हो रही हैं। लोग काफी मात्रा में आ रहे हैं और निर्देन्यता, निराडम्बरता तथा सत्याग्रह के विचारों के प्रति कौतूहल ही नहीं, सहानुभूति भी दिखा रहे हैं।

सागर विश्वविद्यालय के विद्यार्थियों ने सभा स्थल पर ही ७१ रु० २५ न० पै० चन्दा इकट्ठा करके दिया। सागर में सहानुभूति रखने वाले एक मित्र ने २०० रु० का गुप्त दान दिया। झाँसी की तीन सभाओं में नागरिकों ने १०४ रु० भेंट दिये। सभाओं में आये हुए लोग अक्सर अपनी जेब से चार आना-आठ आना, एक एक, दो दो रुपया निकाल कर दे रहे हैं। विचारवान लोग और अच्छे अच्छे कार्यकर्ता दिल्ली के सत्याग्रह में भाग लेने की इच्छा प्रकट कर रहे हैं। २७-२८ दिसम्बर को जब हम आगरा रहेंगे, उस समय कार्यकर्ताओं की बैठक होगी, जिसमें दिल्ली का कार्यक्रम तय करेंगे।

पदयात्रा में सागर से गोराजी एक नया सुझाव जनता के समक्ष रख रहे हैं कि

"पंडित नेहरू सन् '६२ के चुनाव में पार्टी के उम्मीदवार के रूप में भाग न लें, बल्कि जनता के उम्मीदवार के नाते स्वतंत्र रूप से भाग लें। नेहरू राष्ट्र के जनप्रिय नेता ही नहीं, अंतर्राष्ट्रीय ख्यातिप्राप्त नेता हैं। उनके लिए पार्टी बहुत छोटी हो जाती है। अपने व्यक्तित्व को पार्टी के संकुचित दायरे में सीमित करना न उनके लिए और न राष्ट्र के लिए उचित है।"

अतः गोराजी जनता से आह्वान कर रहे हैं कि स्थान स्थान से नेहरूजी को इस प्रकार के पत्र भेजें और संस्थाएँ भी प्रस्ताव पास करके भेजें कि

"उनको पार्टी के उम्मीदवार के नाते नहीं, बल्कि जनता के प्रतिनिधि के नाते ही स्वतंत्र रूप से चुनाव में भाग लेना चाहिए।"

यह सुझाव गाँवों की जनता, शहरों के बुद्धिजीवी लोग, सबको बहुत जँच रहा है। फलस्वरूप जहाँ हमारी टोली जाती है वहाँ इस कार्यक्रम को उठा लेने के लिए सामान्य लोग कार्यकर्ता बन कर आगे आ रहे हैं।

"मंत्री हमारे नौकर हैं—हम उनके मालिक हैं", यह लिखा हुआ 'बैनर' और विभिन्न राजनैतिक दलों में बिना झंडे का डंडा रख कर बाँधा हुआ बंदल—जो पार्टियों के अंदर और बाहर रहने वाली सारी जनता के प्रतिनिधित्व का प्रतीक है—यह सभी को बहुत आकर्षित कर रहा है।

आज आठ से एक साथी हमारी टोली में सम्मिलित हुए, जो आगरा तक साथ रहेंगे। भांडेर जिले के एक कार्यकर्ता झाँसी में टोली में शामिल हुए। सागर, झाँसी और दतिया जिलों से दिल्ली में टोली में भाग लेने के लिए ६ कार्यकर्ता तैयार हो रहे हैं।

पत्र व्यवहार का पता : ता. २७ दिसम्बर तक:-मार्फत-ब्रज ग्रामसेवा-मंडल, घटिया, मामू भानजा, आगरा, (उ० प्र०)

[श्री रूपनारायण के उपरांत, जि० दतिया के ४-१२-६१ के पत्र से]

स्व० श्री रमण बिहारी सिंह

पटना जिला सर्वोदय-मंडल के कर्मठ कार्यकर्ता श्री रमण बिहारी सिंह का देहान्त पिछले पखवारे में हृदय-गति रुक जाने के कारण अपने निवास स्थान, फतहपुर में हो गया। श्री सिंह अपने जीवन के प्रारंभिक काल से ही समाज सेवा में लगे थे। राष्ट्र की स्वतंत्रता के संग्राम में वे बराबर आगे थे और तत्कालीन सरकार ने जेल आदि के अतिरिक्त अन्य कई यातनाएँ भी उन्हें दीं, जिसे हिम्मत और धैर्य से उन्होंने सहन की। प्रदेश की स्वतंत्रता के बाद राष्ट्रपिता महात्मा गांधी की कल्पना के अनुसार आप सर्वोदय समाज की स्थापना में लगे थे। हाल में बाढ़ पीड़ितों की सहायतार्थ सप्ताहों पटना जिले के बाढ़ थाने के गाँवों की आपने पैदल यात्रा की और पीड़ितों की सहायता सर्वोदय मंडल द्वारा भेजे गये कपड़े आदि का वितरण करके की। वर्षों से फतहपुर पंचायत के मुखिया थे और मुखिया के चुनाव में बराबर निर्विरोध चुने गये। इनकी मृत्यु से पटना जिला सर्वोदय मंडल को एक कर्मठ कार्यकर्ता की क्षति हुई है।

* * *

स्व० श्री तुलसीराम येलणे

भंडारा जिले के ग्राम करनी के लोकसेवक श्री तुलसीरामजी येलणे की ५ दिसंबर '६१ को आकस्मिक मृत्यु हुई। श्री येलणेजी ने श्री अण्णासाहब पटवर्धन की पदयात्रा के स्वागत की तैयारी के निमित्त २ दिसंबर को श्रमदान और सफाई के कार्यक्रम में भाग लिया था। भारी वजन की टोकरियाँ उठाने से उनके स्वास्थ्य पर विपरीत परिणाम हुआ। फलस्वरूप उनका देहावसान हो गया। सारे गाँव ने उनके परिवार के साथ-साथ शोक मनाया और ६ दिसम्बर को अपना सब कारोबार बंद रखा। उनके परिवार में उनकी पत्नी और बारह साल का पुत्र है।

भूदान-यज्ञ रजिस्टर्ड नंबर ए. ३५४. [पहले से डाक-महसूल दिये बिना भेजने का परवाना प्राप्त, लायसेन्स नं० ए ३४] २२ दिसम्बर, '६१

ब्रिटेन में परमाणु-विरोध प्रदर्शन—मद्रास में असहाय वृद्धों को पेन्शन' देने की योजना—लंका में नागरिकों को परिचय-पत्र जारी होंगे—विश्व-समाज का विकास ही आज के जीवन की मौलिक समस्या—पाकिस्तान में अंबर चरखा—जमालपुर सर्वोदय मित्र-मंडल द्वारा बाढ़पीड़ितों की सहायता—रेवाड़ी की 'सर्वोदय-पात्र जयंती'—अमृतसर में शराबबंदी के लिए विचार-प्रचार—तेनाली में सर्वोदय बाल समाज की स्थापना—बबलाई में सर्वोदय शिविर—स्व० लाला अचिंतरामजी के लिए शोक।

ब्रिटेन में ९ दिसम्बर को परमाणु-विरोधी प्रदर्शन के सिलसिले में सैकड़ों व्यक्ति गिरफ्तार कर लिये गये। कई जगह प्रदर्शन होने के संवाद मिले हैं। प्रदर्शन के समय सर्वत्र पुलिस का कड़ा पहरा था।

मद्रास के वित्तमंत्री ने १९६२-६३ का अंतिम बजट उपस्थित करते हुए पेशेवर भिक्षुओं को छोड़ कर ६५ वर्ष से अधिक उम्र के सभी निराश्रितों को २० रु. मासिक सहायता देने की नयी सरकारी घोषणा की है। दृष्टिहीन, पंगु तथा कुष्ठरोगियों के लिए यह उम्र-मर्यादा ६० वर्ष तक की रखी गयी है।

लंका सरकार इस आशय का एक कानून तैयार कर रही है कि जिसके अंतर्गत देश के समस्त नागरिकों को परिचय-पत्र जारी किये जायेंगे। इन परिचय पत्रों पर फोटो भी चिपके रहेंगे। प्रधानमन्त्री श्रीमती भंडारनायके ने बताया कि देश में इस समय एक लाख अवैध आप्रवासी हैं। सरकार इनके विरुद्ध कड़ी कार्रवाई करने वाली है।

संस्कृति विश्व-परिषद् के सातवें अधिवेशन में उपराष्ट्रपति डा० राधाकृष्णन् ने १५ दिसम्बर को कहा—"विश्वसमाज का विकास ही आधुनिक जीवन की मौलिक समस्या है। मनुष्यता में एकात्मक का भारतीय दृष्टिकोण अपनाये बिना विश्व की सुरक्षा खतरे में है।"

एक समाचार के अनुसार पाकिस्तान में बढ़ती हुई बेकारी का सामना करने के लिए पाकिस्तान ने भारत सरकार से अम्बर चरखे की माँग की है। यह रहस्य जबलपुर में म. प्र. खादी ग्रामोद्योग बोर्ड के अध्यक्ष श्री लक्ष्मणसिंह चौहान ने प्रकट किया है। यह भी बताया कि विदेशों में खादी की बिक्री कैसे निश्चित की जाय, इसके लिए भारत सरकार ने पाँच सदस्यीय समिति का भी गठन किया है।

मुंगेर जिले के जमालपुर के सर्वोदय-मित्र मंडल ने बाढ़पीड़ितों की सहायतार्थ १००४ रु० ८७ न० पै० नगद, ४० मन गल्ला, १८० नये सूती कम्बल और करीब ३ हजार धोती-साड़ियाँ इकट्ठी की। इसके अलावा ८८८५ रु० २५ न० पै० के ९९५ कम्बल खरीद कर बाढ़-पीड़ित गाँवों में वितरित किये गये हैं। सहायता का कार्य आगे चालू है।

रेवाड़ी (गुड़गाँव) के जिला सर्वोदय-मंडल ने पिछले साल की तरह इस साल भी ३ दिसम्बर को राजेन्द्र बाबू का जन्म-दिन 'सर्वोदय-पात्र जयन्ती' के रूप में मनाया।

अमृतसर जिला सर्वोदय-मंडल ने शराबबंदी के आंदोलन के निमित्त निम्न दो बातों पर ध्यान दिया है : (१) घर-घर जाकर शराब पीने वालों से शराब न पीने की प्रतिज्ञा करवाना (२) शहर की सब संस्थाओं से मिल कर मद्यनिषेध के अनुकूल वातावरण तैयार करना।

तेनाली में 'बाल दिवस' के अवसर पर सर्वोदय बाल समाज का उद्घाटन डा० चेंपटि सूर्यनारायण ने किया। हर रविवार की शाम को चार से पाँच बजे तक इस समाज के सदस्य तेनाली के सर्वोदय केन्द्र में मिलेंगे। इस समाज के सदस्यता के लिए नौ नियम बनाये गये हैं।

निमाड़ जिले की बबलाई (मंडलेश्वर) के ग्रामसेवा-केन्द्र में सर्वोदय-विचार शिविर ४ से ६ दिसंबर तक हुआ। शिविर में क्षेत्र के ग्रामसेवक, पंच, कार्यकर्ता, विद्यार्थी और गाँवों के लोगों ने भी भाग लिया। शिविर का कुलपतित्व श्री काशिनाथ त्रिवेदी ने किया। इसमें सर्वश्री दादाभाई नाईक, वि० स० खोड़े, अक्षयचन्द्र जैन आदि का शिविरार्थियों को लाभ मिला।

खादी ग्रामोद्योग विद्यालय, समालखा (करनाल), जिला सर्वोदय मंडल, हिसार और जिला सर्वोदय-मंडल, रेवाड़ी ने अपनी बैठकों में स्व० लाला अचिंतरामजी की मृत्यु पर शोक प्रकट किया।

हिन्दू-मुस्लिम एकता और सौहार्द के लिए

चन्दौसी में श्री ओम्प्रकाश गौड़ का उपवास समाप्त

श्री ओम्प्रकाशजी गौड़ ने उ० प्र० के साम्प्रदायिक दंगों के निराकरण के निमित्त चन्दौसी में १५ रोज का जो उपवास किया था, वह १० दिसम्बर '६१ को समाप्त किया। इस अवसर पर उस दिन प्रातःकाल चन्दौसी में सार्वजनिक सभा हुई। सभा में श्री बलदेव वाजपेयी ने अध्यक्षता करते हुए कहा कि आज देश में विघटन की शक्तियाँ बढ़ रही हैं। देश में और कौमों में एकता और सौहार्द हो, इसके लिए हमारे साथी श्री ओम्प्रकाश गौड़ ने उपवास किया। परमात्मा की कृपा से यह शांतिपूर्वक समाप्त हुआ। यह उपवास कोई दबाव के लिए नहीं, बल्कि आत्म-शोधन के लिए किया गया था। हम लोग भी अपने हृदय में साम्प्रदायिक एकता और सद्भाव के लिए मंथन करेंगे।

इनके अलावा सर्वश्री प्रभुदास गांधी, प्रो० रामशरण, प्रजा-सोशलिस्ट नेता श्री बुद्धि सिंह, कम्यूनिस्ट नेता श्री दुल्हा खाँ, समाजवादी नेता श्री देवेन्द्र गुप्त, प्रो० बनर्जी, श्री त्रिवेणी सहायजी और प्रो० के० पी० गुप्ता ने भी अपने विचार प्रकट किये।

अंत में श्री गौड़जी ने कृतज्ञता प्रकट करते हुए कहा कि इस उपवास में उनको ज्ञात और अज्ञात अनेक लोगों की शुभकामनाएँ और आशीर्वाद मिले हैं।

श्री गौड़जी ने कहा कि देश या प्रदेशों में जो झगड़े होते हैं, वे आदर्श या सिद्धांतों के कारण नहीं, बल्कि पारस्परिक संदेह और भय के कारण होते हैं। अल्पमत वालों की सुरक्षा की जिम्मेवारी बहुमत वालों की है और उन्हें इस जिम्मेवारी को निभाना चाहिए। आपने जोर देकर कहा कि हम आगे किसी का अपमान नहीं करेंगे ऐसा संकल्प लेना चाहिए।

अंत में चंदौसी की घटनाओं की ओर इशारा करते हुए कहा कि वहाँ जिन लोगों का नुकसान हुआ उनकी मदद नागरिकों को साधन जुटा कर स्वयं करनी चाहिए, न कि सरकारी सहायता की प्रतीक्षा करें।

गांधी के अंतिम दिनों की ब्रिटिश फ़िल्म

एक नयी ब्रिटिश फ़िल्म 'नाइन आवर्स टु राम' का निर्माण भारत में प्रारम्भ हो गया है। महात्मा गांधी के दुःखद निधन के विभिन्न चरित्रों पर पड़ने वाला प्रभाव इस चलचित्र का विषय है।

चित्र में भाग लेने के लिए अभिनेतागण और टेक्निशियन विमान द्वारा नयी दिल्ली पहुँच गये हैं, जहाँ उसे फ़िल्माया जा रहा है। फ़िल्म की नायिका के रूप में देश की सुप्रसिद्ध युवा अभिनेत्री वेलरी गिरीन काम कर रही हैं। जिस उपन्यास के आधार पर उक्त चित्र बनाया जा रहा है। उसके लेखक श्री स्टैनले वाल्पर्ट, कैलिफोर्निया विश्वविद्यालय (अमेरिका) में एशियाई इतिहास के लेक्चरर हैं। यद्यपि उपन्यास अभी अप्रकाशित है, फिर भी उस पर 'लिटरेरी गिल्ड और रीडर्स डाइजेस्ट पुरस्कार' घोषित किये गये हैं। श्री० वाल्पर्ट इस समय अवकाश पर लन्दन में हैं और भारतीय इतिहास पर अनुसंधानात्मक कार्य कर रहे हैं।

इस अंक में

श्रीकृष्णदत्त भट्ट, अ० भा० सर्व सेवा संघ द्वारा भार्गव भूषण प्रेस, वाराणसी में मुद्रित और प्रकाशित। पता : राजघाट, वाराणसी-१, फोन नं० ४१९१
वार्षिक मूल्य ६) पिछले अंक की छपी प्रतियाँ ९४५० : इस अंक की छपी प्रतियाँ ९३५० एक अंक : १३ नये पैसे

संपादक : सिद्धराज ढड्ढा

वाराणसी : शुक्रवार | २९ दिसम्बर '६१ | वर्ष ८ : अंक १३

गोआ पर सैनिक कार्रवाई

शांति-सैनिकों के लिए चुनौती

जयप्रकाश नारायण

प्रत्येक भारतीय नागरिक गोआ की मुक्ति से स्वतन्त्रता आन्दोलन की पूर्णता और भारत भूमि पर उपनिवेशवाद के अंतिम अवशेष की परिसमाप्ति पर आनन्द प्रकट करेगा। वे सब लोग, जिन्होंने उपनिवेशवाद से मुक्ति पायी है और उम्मीद है कि पाकिस्तान के लोग भी एवं वे लोग जो उपनिवेशवाद से मुक्ति के लिए संघर्ष कर रहे हैं, इस आनन्द में हिस्सा बँटायेंगे। अगर स्वतंत्रता को सच्चा महत्त्व देना है और उपनिवेशवाद से घृणा करनी है, तो दुनिया के सब राष्ट्रों को भारत के साथ खुशी में शामिल होना चाहिए। ब्रिटेन और अमरीका की सरकारों ने भारत द्वारा की हुई सैनिक कार्रवाई पर जो खेद प्रकट किया है, वह उनकी उपनिवेशवाद के प्रति लगी-लपटी ममता की अभिव्यक्ति है। दुनिया में ऐसी कोई सरकार नहीं है, जिसने गांधीजी की अहिंसा को माना है और फौज का उपयोग कभी न करने की शपथ ली हो। सब देशों से स्वीकृत राजनीतिक नीति शास्त्र के अनुसार बल-प्रयोग इससे अधिक वांछनीय भी नहीं है, जितना भारत ने गोआ में किया है। भारत चौदह साल तक धीरज से प्रतीक्षा करता रहा और अंत में उसको बल-प्रयोग करना पड़ा, इसका मुख्य कारण विशेष तौर से ब्रिटेन और 'नाटो' की शक्तियाँ, जिन्होंने स्वतंत्रता के आदर्श की प्राप्ति के दायित्व की ओर से आँखें मूंद ली और जिस स्वतंत्रता की घोषणाएँ बड़ी जोर से 'मुक्त संसार' के नेताओं के नाम से वे करते थे।

इतना कहने के बाद, अच्छे कामों के लिए भी हिंसा को अनैतिक और मानवता के लिए घातक मानने वाले मुझ जैसे व्यक्ति को इस बात के लिए खेद है कि उसके अपने ही देश को हिंसा का सहारा लेना पड़ा। केवल चौदह साल पहले ही ऐतिहासिक परिस्थितियों की सहायता से हमने अपने देश के अधिकांश भाग को विदेशी शासकों के प्रति शस्त्र उठाये बिना मुक्त किया था और अब जबकि हम बहुत अधिक मजबूत हैं तथा ऐतिहासिक परिस्थितियाँ और भी अधिक अनुकूल हैं, तब हम अपनी मातृभूमि के एक छोटे-से अंश को अहिंसक साधनों से मुक्त करने में असफल रहे। मैं भारत के प्रधान मंत्री अथवा भारत की सरकार पर कोई आरोप नहीं लगा रहा हूँ। वे निस्सन्देह सचाई के साथ शांति के सिद्धांत को मानते हैं, किन्तु उन्होंने कभी भी हिंसा का उपयोग न करने की शपथ नहीं ली है, भारतीय सेना का अस्तित्व ही इस बात की बार-बार याद दिलाता है। यह सच है कि भारत ने स्पष्ट रूप से और बार बार अंतर्राष्ट्रीय झगड़ों में हिंसा को छोड़ने पर जोर दिया है और हमेशा शांतिपूर्ण तरीकों की वकालत की है, इसलिए गोआ की कार्रवाई से उन पर असंगतता का आरोप लगता है और उनकी प्रतिष्ठा में कमी आने की आशंका उत्पन्न होती है। किन्तु वास्तविक राजनीति की इस दुनिया में यह एक ऐसी क्षति नहीं है, जो स्पष्टतः पुर्तगाल और उसके वैधानिक हितों के प्रति ठीक और करुणापूर्ण व्यवहार से पूरी नहीं हो सकती है।

अगर इस मामले में कोई दोष-भागी हैं तो हम लोग हैं, जो कि प्रेम के आधार पर एक अहिंसक समाज और एक विश्व व्यवस्था कायम करने का दावा करते हैं। इसका दोष मुख्यतः शान्ति-सेना के सेनापति विनोबा पर और हम शांति-सैनिकों पर है। हमने जानबूझ कर अपने देश से सम्बद्ध अंतर्राष्ट्रीय समस्याओं के प्रति यह दलील देकर अपना मुँह मोड़ लिया है कि हममें अहिंसक हल पेश करने की पर्याप्त सामर्थ्य नहीं है।

मैं यह सोचना गलत मानता हूँ कि इस प्रकार की समस्याओं का हल ईश्वरीय शक्तियों की गोद में छिपा हुआ है। जरूरत इस बात की है कि जो उचित समझा जाय, उस पर अमल किया जाय। घटनाएँ शान्ति पात्र और भूदान ग्रामदान के लक्ष्य की पूर्ति की प्रतीक्षा नहीं कर सकतीं। अगर एक भी सत्याग्रही होता तो उसको गोआ जैसी स्थिति में सक्रिय होना चाहिए था। *सक्रियता ही हमको मजबूत बना सकती है, न कि निष्क्रियता।* ऐसा मानने का कोई कारण नहीं है कि हजारों लाखों लोग अहिंसक सत्याग्रह के लिए तैयार न होते, अगर उनको समय पर आवाहन किया जाता। कमी है नेतृत्व की। मैं उम्मीद करता हूँ कि इस विषय में हम अपने हृदय को टटोलेंगे और इस समस्या पर पुनर्विचार करेंगे। युद्ध और शान्ति का मामला केवल सरकारों पर नहीं छोड़ा जा सकता। किसी सरकार से अहिंसा को मानने की अपेक्षा नहीं की जा सकती। अगर कोई अहिंसक कदम उठाना है तो केवल जनता ही उठा सकती है और दुनिया में इस काम के लिए भारतीय जनता से अधिक योग्य किसी दूसरे देश की जनता नहीं है।

—

गोआ में सैनिक कार्रवाई के सिलसिले में दिये गये श्री जयप्रकाश नारायण का ...।

साहित्यिकों से

शब्द-शक्ति की प्रतिष्ठा से साहित्य तेजस्वी होगा

—विनोबा

'साहित्य' शब्द क्या सुझाता है? शब्द ही अपनी व्याख्या प्रकट करता है। वह कहता है कि मैं सहित चलने वाला हूँ। किसके साथ जायेगा? मनुष्य की बुनियाद में सत्य है। जो 'आसे' [असमी शब्द]—जो 'है', वही सत्य है। सत्य का अर्थ ही है कि वह है। सत्य के साथ जो चलेगा, वह है 'साहित्य'। रामजी के साथ लक्ष्मण जाते हैं, वैसे सत्य के साथ साहित्य जायेगा। जितना व्याप राम का, उतना ही लक्ष्मण का। इतना ही है कि उसके पीछे-पीछे जायेगा। सत्य जितना व्यापक होगा उतना ही साहित्य व्यापक होगा। ऋग्वेद में एक वाक्य आया है: "यावत् ब्रह्म वेष्ठितं तावती वाक्।" ब्रह्म जितना व्यापक है, उतनी वाणी व्यापक है।

इन दिनों भारत में एक भाषा समस्या पैदा हुई है। वह लगभग हल हो गयी है। उसके बारे में हमसे पूछा गया था। हमने कहा कि मनुष्य को भगवान ने भाषा नहीं दी, वाणी दी है। श्री अरविन्द बचपन में इंग्लैंड गये थे—शायद सात साल की उम्र में ही वे गये थे। वहाँ उन्होंने अंग्रेजी, फ्रेंच, लैटिन, ग्रीक सीखी। चारों भाषाओं के पंडित हुए। लेकिन उसके साथ साथ बंगला भाषा कतई भूल गये। वापस भारत आये तो बड़ौदा स्टेट में गायकवाड़ के पास उनको नौकरी मिली। वहाँ गुजराती, बंगला और हिंदी सीखे, माने बंगला भाषा फिर शुरू से सीखनी पड़ी। उसके बाद बंगाल में उन्होंने [illegible]

वे बंगला सीखे, लेकिन सर्वोत्तम ज्ञान उनको अंग्रेजी भाषा का था। जितना लिखा, सब अंग्रेजी में लिखा, लेकिन बहुत अच्छा लिखा। आखिर में उन्होंने 'सावित्री' नाम का महाकाव्य लिखा है, वह भी अंग्रेजी में लिखा। यदि भाषा ईश्वरदत्त होती तो मनुष्य उसे इस तरह नहीं भूलता। मातृभाषा के समान दूसरी भाषा मनुष्य सीख सकता है।

यह तो मैंने सहज उदाहरण दिया। इससे ध्यान में आयेगा कि भाषा एक बात है और वाणी दूसरी।

साहित्य का संबंध वाणी से आता है। मनुष्य की वाणी जितनी विकसित होगी, उतना उसका जीवन विकसित होगा। कुल जीवन का आधार वाणी है।

शब्द-शक्ति कुंठित हुई, तो शस्त्र-शक्ति के बिना गति नहीं

इसलिए भक्तों ने नाम-स्मरण की महिमा बतायी। तुलसीदास ने लिखा है : "राम से राम का नाम बड़ा है।" यही बात माधवदेव ने लिखी है : "बिना सेतु-बंध करि नरे अपार संसार-समुद्र होवे पार।"—राम के नाम के बिना संसार सागर पार नहीं कर सकते। संसार-सागर पार करने के लिए रामनाम एक सेतु है। राम से उसका नाम श्रेष्ठ है। ऐसा नाम-गौरव ऋषि ने गाया है।

हम मातृभाषा का अभिमान रखते हैं। लेकिन मातृभाषा में हम एक-दूसरे को गाली भी देते हैं! आपस-आपस में मातृभाषा में ही गाली दे सकते हैं, दूसरी भाषा में नहीं। मातृभाषा की उन्नति गाली देने से तो नहीं होगी। उन्नति वाणी से, विश्वास से होगी। वाणी सत्यमय और संयमशील हो तो वाणी में शक्ति आती है। इन दिनों भारत में हमने शब्द-शक्ति खोयी है। जहाँ शब्द-शक्ति खोते हैं, वहाँ शस्त्र शक्ति के सिवाय गति नहीं होती है।

गांधीजी आये, उनके पहले अच्छे नेता हिन्दुस्तान में थे, जिन्होंने आजादी की तरफ जनता का ध्यान खींचा। लेकिन लोगों में यह भावना थी कि नेता जो बोलते हैं उससे दूसरा अर्थ उनके मन में होगा, याने वे द्व्यर्थी बोलते हैं! उन दिनों अंग्रेज सरकार थी, इसलिए कानून में बैठने वाली भाषा के लिए शायद वे वैसा बोलते होंगे। मतलब, नेताओं के शब्दों के अर्थ के विषय में लोगों के मन में भ्रम था। गांधीजी आये तो नया तरीका आरम्भ हुआ। उन्होंने जैसा मन में है वैसा बोलना शुरू किया, याने दोनों में कोई भेद नहीं। अहिंसा की महिमा गांधीजी बताते थे। *शहर में उन दिनों दंगे हुए। उससे* भारत की जनता में क्रोधाग्नि भड़क उठी। उसके परिणामस्वरूप अहमदाबाद में भी घर जलाये गये। तब गांधीजी को बहुत दुःख हुआ। उन दिनों हम साबरमती में थे। उस वक्त हम छोटे थे। सन् १९१८ की बात है। २३ साल की हमारी उम्र थी। हमारे साथ दूसरे भाई भी थे। वे भी इसी प्रकार जवान थे। हमने शहर में *जाकर गांधीजी का कहना लोगों को सम*झाना शुरू किया। लोगों से हम कहते थे—"आपने यह काम किया, देश में अशांति फैली है; पर ऐसा काम गांधीजी को पसंद नहीं है। उनको इसका दुःख होता है। गांधीजी आपको ऐसा काम करने के लिए नहीं कहते हैं।" लेकिन लोग हमसे कहते थे कि "तुम बच्चे हो! 'धर्मराज बोले छे एनो अर्थ भीम जाणे छे। तमे शुं जाणो?' वे बोलते तो हैं अहिंसा-अहिंसा लेकिन उनके मन में दूसरा ही अर्थ होगा!"

उसके बाद गांधीजी साबरमती पहुँचे और इन घटनाओं के लिए उन्होंने उपवास किये। जब उपवास ही किये, तब लोग समझे कि गांधीजी जो बोलते हैं वही अर्थ उनके मन में होता है। शब्द शक्ति की *प्रतिष्ठा नहीं थी, नेताओं के* शब्द पर लोगों का विश्वास नहीं था—याने वे जो बोलते हैं उससे भिन्न अर्थ उनके मन में होता है, ऐसा लोग समझते थे। परन्तु गांधीजी ने तप करके शब्द की प्रतिष्ठा बढ़ायी, कायम की। "यद्यदेव वदति तत्तद् भवति।" ऐसा मनुष्य जो-जो बोलता है वही होता है। वह दैवी वाणी कहलाती है। गांधीजी के बारे में ऐसा ही हुआ। लेकिन आखिर-आखिर में गांधीजी के शब्द में सबका विश्वास नहीं रहा, याने कुछ लोगों का विश्वास नहीं रहा। उसका परिणाम आपने देखा। स्वराज्य तो अहिंसा *से आया, लेकिन उसके बाद जो हिंसा* हुई वह किसी युद्ध से कम नहीं हुई। पचासों लाख लोग इधर से उधर गये और उधर से इधर आये! तो आखिर-आखिर में गांधीजी के शब्द की शक्ति कम हुई।

उसके बाद १४ साल हुए हैं। आज भारत में कोई नेता नहीं है, जिसके शब्द पर लोगों का पूरा विश्वास है। जो बोलेगा वही अर्थ अगर मन में हो तो 'पालिटिक्स' (राजनीति) में वह मूर्खता साबित होगी! ऐसा मनुष्य मूर्ख माना जाता है। जो मन में है वही बोलना है, तो राजनीति का पेंच क्या रहा? छिपाने की कला होनी चाहिये! अंग्रेजी में हम जिसे 'कैमाउफ्लाज' कहते हैं। दीखाना एक बात, करना दूसरी बात और मन में तीसरी बात होगी, तो वह उत्तम राजनीतिज्ञ है, ऐसा आज माना जाता है! इसलिए शंकरदेव ने वर्णन किया है—प्रह्लाद का गुरु शंडामर्क उसे राजनीति सीखाता है, राजनीति याने 'राक्षस शास्त्र', 'राक्षस क्रिया' है। ऐसा शंकरदेव का अभिप्राय है। मेरा भी अभिप्राय इसके अनुकूल है। लेकिन मैं शंकरदेव के नाम से कहता हूँ, ताकि उसमें जरा वजन आवे।

जहाँ शब्द-शक्ति गयी, वहाँ अमोघता नहीं रही। फिर वहाँ शस्त्र-शक्ति के बिना गति नहीं रही। यह समझना चाहिये कि

> जहाँ शब्द-शक्ति कम हुई, वहाँ शस्त्र-शक्ति जोर करेगी और वहाँ साहित्यिक फीके हो जायेंगे; क्योंकि साहित्य का सारा दारोमदार शब्द पर होता है। शब्द ही शस्त्र है और शब्द ही रत्न है। इसलिए शब्द-शक्ति कुंठित हो तो साहित्य निस्तेज होगा।

यह एक महत्त्व का विचार है। साहित्यिक का लक्षण क्या है? जिसका संपूर्ण चिंतन यथावत् शब्दों में प्रकट होता है, उसका एक-एक शब्द याने प्राण होता है। यह शब्द-शक्ति कुंठित होगी तो साहित्यिक के जीवन में रस नहीं रहेगा।

शंकराचार्य कहते हैं : "केयममोघ वचनम् ?" किनकी वाणी की शक्ति अमोघ होती है? "ये च पुनः सत्य-मौन-शमशीलाः"—जिनमें सत्य होता है, जो मौन रहते हैं, जो शांति रखते हैं, उनकी वाणी अमोघ होती है। प्रश्नोत्तर के रूप में उन्होंने लिखा है :—

> "केयममोघ वचनम् ?
> ये च पुनः सत्य-मौन-शमशीलाः।"

वाणी में सत्य रहेगा। तो उस वाणी का फल प्रत्यक्ष प्रकट होता है। जहाँ *नहीं बोलना है, वहाँ मौन की शक्ति होनी* चाहिये। ऐसी शक्ति नहीं होगी तो वहाँ शब्द व्यर्थ जायेगा। जहाँ क्षोभ का मौका है, वहाँ चित्त में शम नहीं रहा तो वाणी गड़बड़ करती है, सम्यक् नहीं रहती है। वाणी तो रामबाण जैसी होनी चाहिये। "रामो द्विशरन् नाभिसंधत्ते"—राम दो बार बाण नहीं छोड़ता है। एक बार बाण छोड़ता है और वह सफल ही होना चाहिये, होता है। राम दो बार नहीं बोलता है—"रामो द्विर्नाभिभाषते।" यह शक्ति साहित्यिक की है।

अब साहित्य की खूबी किसमें है? शक्ति तो सत्य में, संयम में और शांति में है। यह उसकी शक्ति है। लेकिन साहित्यिक की खूबी किसमें है? लोक-हृदय में प्रवेश की कला कौनसी है? वह है 'अहिंसा'। आप कहेंगे, बाबा जहाँ-तहाँ अहिंसा लाता है। जाहिर सभा में भी अहिंसा की बात की और साहित्यिकों की सभा में भी अहिंसा की बात करता है! साहित्य की खूबी व्यंजना में, लक्षणा में है, सुझाने में है। आज्ञा में नहीं है, साक्षात् उपदेश में नहीं है। जहाँ साक्षात् उपदेश होता है, वहाँ वह परिणाम नहीं करता है। जहाँ अप्रत्यक्ष उपदेश होता है, सुझाते हैं, साक्षात् आज्ञा नहीं करते, 'सजेस्टिव' होता है, वहाँ वह सर्वोत्तम साहित्य माना जाता है। इसकी मिसाल है 'वाल्मीकि रामायण' है। वह अप्रतिम कलाकृति है। वह आपको प्रत्यक्ष आज्ञा नहीं देता है, अप्रत्यक्ष रूपेण सुझाता है। ऐसी सृष्टि उसने निर्माण की है कि आपके चित्त में कारुण्य, सहानुभूति उत्पन्न होती है और सहज भाव से अनायास ऊँचे पहाड़ पर आप चढ़ जाते हैं। जैसे इंजीनियर करता है। चार हजार फीट ऊपर जाना है तो वह आहिस्ता-आहिस्ता ऊपर जाने वाला रास्ता बनायेगा। वह इतना सहज होगा कि इतने ऊपर हम चढ़े हैं, इसका भान नहीं होगा और आखिर चार-पाँच हजार फुट ऊपर हम चढ़ेंगे। जिस तरह इंजीनियर कुशलता से आपको ऊपर ले जाता है, वैसे ही आप पर उपदेश का आक्रमण किये बिना कुशलता से आपके हृदय में सहानुभूति उत्पन्न करके आपको ऊपर ले जाते हैं।

'महाभारत' में ... कहना मुश्किल है। कथा, उपन्यास, आदि में मुख्य कौन है, यह तो स्पष्ट होता है। लेकिन 'महाभारत' की प्रतिभा देखेंगे। कभी इच्छा होती है ... को मुख्य पात्र कहने की, तो कभी ... मुख्य है, ऐसा भास होगा। कभी होगा कि अर्जुन मुख्य पात्र है, युधिष्ठिर के लिए, कभी भीष्म के ... भास होगा। कभी भास होगा ... मुख्य है। आप निर्णय नहीं कर ... उस-उस वक्त जैसा अनुभव आयेगा आप कहेंगे। इतनी विशाल ... बना कर आपको अनुकूल बनाया ... दुर्योधन पर भीम गदा का प्रहार करता ... मरते मरते दुर्योधन कहता है, "जिंदगी भ[र] तेरे सामने मैंने सिर नहीं झुकाया है। ध[न्य] है मेरा जीवन!" और फिर वह मर गया। वहाँ कृष्ण, युधिष्ठिर और अर्जुन खड़े ... और उनके सामने उसके ये उद्गा[र] निकले हैं। इस पर व्यास 'कमेंट'-राय नहीं प्रकट करता है। उसने इतना ही लि[खा] है कि यह सुन कर आकाश से देवताओं ने पुष्पवृष्टि की! यह पढ़ कर आपकी स[हा]नुभूति दुर्योधन की तरफ जाती है। ... प्रसंगों में दुर्योधन की तरफ तो ... प्रसंगों में दूसरों की तरफ आपकी सहानुभूति जाती है। याने व्यास यह बता[ता है] कि विश्व में जहाँ-जहाँ गुण है, वहाँ-वहाँ से लेकर उसने चित्र खड़े किये हैं। महा[भारत] भारत का नाम ही है 'गुण-समूह'। ... हरएक के दोष भी बतायेगा। ऐसा कु[छ] सामने नहीं रखेगा, जो केवल गुणमय या जो केवल दोषमय है। दुर्योधन के गुण भी बतायेगा और युधिष्ठिर के दोष भी *बतायेगा*। जब जहाँ दोष है, चाहे छोटा सा है—वह किसी महापुरुष में है तो वह भी बतायेगा और छोटे के गुण भी बतायेगा। इस तरह जगह-जगह उपदेश दिया ... लेकिन अप्रत्यक्ष रूप में, प्रत्यक्ष उपदे[श] नहीं दिया है। जैसे *पिस्तौल दिखाना* ... ही आज्ञा करना एक हिंसा है। अहिं[सा] ऐसी ही आती है। हम बहुत नम्रता से आपको सुझाते हैं। शास्त्रकार आज्ञा [कर] सकता है। मास्टर सीधी आज्ञा देते हैं। माँ कुशलता से सलाह देती है और सुझाती है तो वह माँ का शब्द हृदय में पैठता है। इसकी मिसालें मैं दे सकता हूँ, लेकिन ... लम्बा फासला होगा। सार इतना ही है कि

> अनाक्रमणकारी शब्द-रचना ही अहिंसा होती है। इसलिए काव्य ध्वनिरूपेण प्रकट होता है। यह ध्यान में आना चाहिये कि साहित्य में हृदय-प्रवेश करने की जो अप्रत्यक्ष शक्ति है, वह है मधुरता में, मार्दव में, अहिंसा में, नम्रता में और प्रत्यक्ष शक्ति है सत्य में। सत्य और अहिंसा के बिना साहित्य समर्थ साबित नहीं होगी।

[आरह : ३-१२-'६१, असूर्य]

जगत् स्फूर्तिः जीवनं सत्यशोधनम्

भूदानयज्ञ

लोकनागरी लिपि *

प्रत्येक भारतीय शांति-सैनिक बने

हम चाहते हैं कि भारत का समझदार मनुष्य अपने को शांति-सेना का सैनिक महसूस करे। अगर भारत ने यह दीक्षा दी कि शांति से मसले सुलझते हैं, तो भारत की नैतिक शक्ति बहुत बढ़ेगी। यह सिर्फ 'शांति-शांति' का जप करने से नहीं होगा; क्योंकि यह तो शस्त्रास्त्र वाले भी कह रहे हैं। उसके लिए हमें सारे भारत में उसका प्रचार करना होगा। अिस विचार को मानने वाला अेक व्यक्ति भी नहीं बचना चाहिये, जिसने शांति-सेना में अपना स्थान नहीं समझा। हिन्दुस्तान को अिस समय अिसकी बहुत जरूरत है। हिन्दुस्तान के पास फौजी ताकत नगण्य है और जो कुछ है, उससे देश का अहित हो सकता है। उससे देश का कोई लाभ होने वाला नहीं है। अिसलिये अगर सेना हटा सकते हैं, तो हम सारे देश के लोग स्वराज्य-प्राप्ति के बाद कार्य करने की बात कर सकते हैं। लेकिन सेना हटा लो, अैसा कहने से कैसे चलेगा? उसकी जरूरत ही देश को नहीं है, यह हमें दीखाना होगा। यह जिम्मेदारी सारे भारत की है, लेकिन उसमें भी सर्वोदय को मानने वालों की विशेष जिम्मेदारी है। उनको अेक आवाज से अहिंसा और अिस विचार में अपने को शरीक करना चाहिये। —विनोबा

[कुमनूर, धारवाड़, १३-१-५८]

* लिपि-संकेत: ि = ी, ि = ी, अ = अ संयुक्ताक्षर हलंत चिह्न से।

असम के वैष्णव-कवि श्री शंकरदेव

• गणेशचन्द्र साहा

असम के वैष्णव धर्म-प्रचारक तथा सुप्रसिद्ध वैष्णव-कवि श्री शंकरदेव का जन्म १४६३ ईसवी में अक्टूबर माह में हुआ था। उनके पिता कुसुम्बर भूइयाँ असम राज्य के नवगांव जिले में एक सामान्य जमीदार थे। कुसुम्बर भूइयाँ वंश-परम्परागत देवीपूजक थे। अनेक वर्षों तक उनको कोई सन्तान नहीं हुई। अन्तिम जीवन में शिवपूजा के फलस्वरूप पुत्र होने के कारण उसका नाम शंकर रखा गया। जन्म-राशि के अनुसार शंकरदेव का दूसरा नाम गंगाधर है। स्थानीय चतुष्पाठी में संस्कृत का अध्ययन समाप्त करते ही उनके पिता कुसुम्बर ने उनका विवाह कर दिया। एक पुत्री को जन्म देने के बाद उनकी पत्नी इस संसार से चल बसी।

इस समय से ही उनके मन में विराग उत्पन्न हुआ और संसार त्याग कर तीर्थ पर्यटन के लिए निकल पड़े। बारह वर्षों तक तीर्थ परिक्रमा कर वे अपने गाँव लौट आये। यहाँ आत्मीय स्वजनों ने शंकरदेव को द्वितीय बार विवाह करने के लिए बाध्य किया, फिर भी उन्हें चैन नसीब नहीं हुआ। राजनैतिक कारणवश उन्हें देश छोड़ना पड़ा और ब्रह्मपुत्र के उत्तर भाग में रहने लगे। वहाँ उन्होंने भागवत चर्चा तथा उसका अनुवाद प्रारम्भ किया। इस तरह से असम साहित्य को समृद्ध करने लगे।

अहोम राज्य के अन्तर्गत ब्रह्मपुर के उत्तर भाग में उन्होंने सर्वप्रथम वैष्णव धर्म का प्रचार आरंभ किया। इससे अहोम राजा के मन में असन्तोष पैदा हुआ, क्योंकि वे ब्राह्मण धर्म के मानने वाले थे और दूसरे धर्मावलम्बियों के धर्माचरण बरदाश्त नहीं करते थे। उन्होंने शंकरदेव के ऊपर अत्याचार करना प्रारम्भ कर दिया। शंकरदेव अहोम राज्य से कोच राज्य में चले गये। वहाँ की राजसभा में उन्हें प्रतिष्ठा मिली। कुछ दिनों के बाद फिर वे तीर्थ-पर्यटन के लिए निकले। इस उपलक्ष्य में श्री क्षेत्र अर्थात् पुरी में महाप्रभु चैतन्यदेव के साथ उनका साक्षात्कार हुआ; किन्तु कोई बातचीत नहीं हुई।

असम में भी एक बार वे चैतन्यदेव से मिले थे। कहा जाता है कि एक समय महाप्रभु चैतन्यदेव वृन्दावन से वापस आते समय असम में पधारे थे। असम में हयग्रीव माधव का मन्दिर विख्यात है। मणिकूट पहाड़ के नीचे एक गुफा "चैतन्य गोफा" के नाम से परिचित है। यहीं शंकरदेव के साथ चैतन्यदेव का मिलन हुआ था। इस मिलन के सम्बन्ध में असम के विख्यात कवि दैत्यारि ठाकुर ने लिखा है—

प्रभात उठिया नित्य गमन करन्त।
कृष्ण चैतन्यर गिया थानक पाइलन्त॥
पथत चलन्ते शिशु विलन्त लोकक।
ना करिबा केहों नमस्कार चैतन्यक॥
जिटो जने नमस्कार करु चैतन्यक।
उलटाया तेहों प्रणमन्त सिजनक॥
मनें नमस्कार ताङ्क करिबा एतेके।
एहि बुलि शिखालन्त लोक समस्तके॥
कृष्ण चैतन्य आछा मठर भितर।
ब्रह्मचारी कहलन्त आसिछा शंकर॥
शंकरेर नाम शुनि कृष्ण चैतन्यर।
मिलिल आनन्द बाज भैलन्त मठर॥
दुयार मुख चाहि आछिलन्त चाई।
दुयो नयनर नीर धीरे बहि जाइ॥
शंकरेरो नयनर नीर बहे धीरे।
पथ हन्ते निरखिया आछन्त सावरे॥
कतोखण दुइको दुई चाइ प्रेम मने।
धरिलन्त मठत गिया श्रीकृष्ण चैतन्ये॥
ना मातिला दुइको दुइ ना दिला उत्तरे।
परम हरिष मने चलिला शंकरे॥

शंकरदेव ने हरिलीला के सम्बन्ध में छह एकांकी नाटकों की रचना की है। ये नाटक असम में "अंकिया नाटक" के नाम से प्रसिद्ध हैं। इसके अतिरिक्त उन्होंने १७२ कीर्तन गीतों के माध्यम से संक्षेप में सम्पूर्ण श्रीमद्भागवत का अनुवाद किया है। असम में "पद" को कीर्तन कहते हैं।

श्रीमद्भागवत का गुणकीर्तन करते हुए उन्होंने कहा है कि किरात, खासिया, गारो, मिरि, यवन, चण्डाल चाहे किसी जाति के हों, इन पदों को पढ़ने या गाने से उनका मन पवित्र हो जाता है और स्वर्ग में स्थान सुरक्षित सा रहता है—

किरात कछारि खासि गारो
मिरि यवन कंक गोपाल।
आसाम मुलुक रजक
तुरुक कुवाच म्लेच्छ चण्डाल॥
अनो पापीनर कृष्ण सेव-
कर संगत पवित्र हय।
भकति लभिया संसार
तरिया बैकुण्ठे सुखे चलय॥

श्री शंकरदेव राधाकृष्ण के उपासक थे या नहीं, यह निश्चित रूप से नहीं कहा जा सकता। फिर भी हिन्दी या बंगला पदों की तरह उनके पदों में भी राधा कृष्ण-लीलाओं की झाँकी मिलती है। उदाहरण-स्वरूप शंकरदेव के कुछ पद उल्लेख किये जाते हैं।

हरि की महिमा का कीर्तन करते हुए उन्होंने कहा है कि इस संसार में जीवन, यौवन, धन, जन, पुत्र, परिवार सभी असार हैं, अतः हे मन! हरि का भजन कर तभी इस भव-संसार से मुक्ति प्राप्त होगी—

अथिर धन जन जीवन यौवन
अथिर एहु संसार
पुत्र परिवार सबहि असार
करबो काहेरि सार
कमल दल जल चित्त चंचल
थिर नहे तिल एक
नाहि भयो भव भोगे हरि हरि
परम पद परतेक
कहतु शंकर ए दुख सागर
पार करु हृषिकेश
गुरु गति मति बेहु श्रीपति
तत्त्व पन्थ उपदेश

शंकरदेव द्वारा चित्रित बाल गोपाल का रूपक वर्णन अतुलनीय है—

नील तनु पीत पट घटि लटि लोर।
नव घन धन जैंचे बिजुली उजोर।
शिरे शिखण्डक दोले गले गजमति।
कोटि मदन मनोमोहन मूरति॥
चरने मंजीर मूरे उरे हेम हार,
शंकर कह ओहि हरिका बिहार॥

शंकरदेव के एक पद में नयी भावना की झलक मिलती है। जब वसुदेव ने कंस के कारागार से श्रीकृष्ण को लेकर नन्द-भवन की ओर यात्रा की, तब ममतामयी छह पुत्रों से वंचिता देवकी की दशा की ओर भारत के किसी कवि का ध्यान नहीं गया, किन्तु शंकरदेव के एक पद में उसका मार्मिक चित्रण मिलता है—

हरि वयन हेरि माइ,
कोकारय श्वास नीर नयन झुरइ॥
आजु जनमि सुत, गैयो परदेश।
कतना विहिल विधि अभागीक क्लेश॥
दिने दुहे स्तन्य, जीवन नाहि मोइ।
कह शंकर कृष्ण बल सब लोइ॥

शंकरदेव ने उद्धव-संवाद पद में गोपी विरह का हृदय विदारक चित्र अंकित किया है, हिन्दी के पदों के साथ इसकी तुलना की जा सकती है—

कहरे उद्धव कह प्राणेर बान्धव हे
प्राण कृष्ण कबे आवे।
पूछये गोपी प्राण आकुल भावे
नाहि चेतन गावे,
बांसरी ध्वनि सुनि गो वत्स देखि।
लागि आछि गाये उद्धव सखि॥
कालिन्दी देखि सखि फूटये बुक॥
हेयाये खेलाय छिला से चान्दमुख॥
हरिल नयन सुख॥
विरिन्दावन बैरी हामारि भेलि।
देखते ना बिछरौं गोपाल केलि॥
ध्वज, वज्र, यव, पंकज चारि।
तथाये कान्दो हाम् लोटा या कारि।
गुण गोविन्द गायि॥
कृष्ण सूर्य बिने बज्र आंधार।
ने देखों ए दुख अम्बुधि पार॥
आर कि देखबो गोपाल प्राण।
कृष्ण किंकर शंकर एहु भाण॥
हरिक हृदये जान॥

असम के सुप्रसिद्ध साहित्यकार श्री राजमोहन तत्त्वभूषण ने शंकरदेव के अनेक पद "श्री शंकरदेवर बर गीत" नामक सङ्कलन में प्रकाशित किये हैं। इसे पढ़ने से असम के वैष्णव-पद का सामान्य परिचय प्राप्त होता है। असम के इस महान कवि की मृत्यु १५६८ ईसवी में अगस्त माह में कूचबिहार में हुई थी। ('राष्ट्रभारती' से)

शांति-सेविकाओं का कर्तव्य

• विनोबा

प्रश्न : जो बहनें शांति-सेविका बनी हैं, उनका काम क्या होगा ?

विनोबा : (शान्ति-सेविकाओं में पुरुषों के गलत व्यवहार रोकने की हिम्मत होनी चाहिये। २५ सालों में पुरुषों ने दो विश्व-युद्ध किये और तीसरे की तैयारी हो रही है। सारा कारोबार पुरुषों ने बिगाड़ा है। झगड़ा मिटाना है तो शस्त्र-शक्ति के बिना दूसरी शक्ति उनको नहीं सूझती है। इसलिए अब उस मैदान में स्त्रियों को आना चाहिये। जहाँ-जहाँ झगड़े होते हों वहाँ भी जाना चाहिये।)

शराब की दूकान पर 'पिकेटिंग' करने के लिए स्त्रियाँ जायें, यह विचार महात्मा गांधी ने चलाया। तीस साल हो गये जब गांधीजी ने इस काम के लिए स्त्रियों का नाम सुझाया था। लोगों ने पूछा कि शराब की दूकान पर तो बुरे लोग होते हैं, बदमाश और दिमाग खोये हुए लोग होते हैं, वहाँ स्त्रियाँ कैसे जायेंगी ? गांधीजी ने जवाब दिया कि हमारी सर्वश्रेष्ठ शक्ति हम वहाँ भेजेंगे। वहाँ दुर्जनता है तो हमारी सज्जन शक्ति, सौजन्य-शक्ति वहाँ भेजनी चाहिये। स्त्रियों ने उस जमाने में 'पिकेटिंग' का काम किया। जब अंग्रेज सरकार 'लाठी-चार्ज' करती थी तो वह भी स्त्रियों ने सहन किया।

लाठी की मार सहन करने की यह जो हिम्मत है, वह शांति-सैनिक बहनों में आनी चाहिये।

अभी तक माना गया था कि स्त्री भीरु होती है, बल्कि संस्कृत में तो गौरव के साथ स्त्री को 'भीरु' कहा गया है। पर बात उल्टी है। स्त्री एक शक्ति है। वह हिम्मतवाली होनी चाहिये। लेकिन होता क्या है कि स्त्रियाँ गहनें पहनती हैं, इसलिए डरपोक बनती हैं। हाथ-पाँव में बेड़ियाँ डालती हैं। ये चीजें सोने की हैं, इसलिए वे खुश हैं। समझती हैं कि हम अच्छी सजी हैं। पुरुष भी समझते हैं कि हाँ, अच्छी दीखती हैं। परिणाम यही होता है कि वे रात में अकेली नहीं जा सकती, पर समझते हैं कि इसमें सौंदर्य है, शोभा है। इसमें भी एक सत्य है। पुराने जमाने में संपत्ति का अधिकार स्त्री को नहीं था, इसलिए उनको गहने देते थे और अक्सर वे गहने पुरुष नहीं लेते थे। याने कितना भी विपत्ति का काल आया, तो भी गहने नहीं लेते थे। आज वह काल नहीं रहा है, पुरुष गहने लेते हैं। पुराने जमाने की संपत्ति, गहने आज विपत्ति हो गयी है! ये बेड़ियाँ कौन तोड़ेगा ? इसके लिए वैराग्य चाहिये।

प्रश्न : यहाँ एक रिवाज है कि गहने पहने बिना रसोई या कोई भी खाने की चीज स्त्री बना नहीं सकती है।

यह अच्छा ही है। स्त्रियों को कहना चाहिए कि हम अपना खाना बनायेंगी, तुम अपना बना लो। यह बड़ी विचित्र बात है। रसोई करने के लिए अग्नि चाहिये, लकड़ी चाहिये, बर्तन चाहिये। लेकिन सोना क्यों चाहिये ? यह व्यर्थ है। इसमें मान्यता यह है कि स्त्री अलंकारविहीन है तो वह अशुभ है। कोई स्वामी है तो उसका चिह्न स्त्री के पास होना चाहिये। देखने से मालूम होना चाहिये कि स्त्री का कोई स्वामी है।

वास्तव में ऐसा होना चाहिये कि पुरुषों के पास ऐसा चिह्न होना चाहिये कि उसका रक्षण करने वाली पत्नी है, यह मालूम होना चाहिये। संस्कृत में 'पति' शब्द का अर्थ 'रक्षणकर्ता' होता है। 'पत्नी' का भी 'रक्षण करने वाली,' ऐसा अर्थ होता है। पत्नी का अर्थ 'रक्षिता' नहीं है। वेद में वर्णन आया है—'भुवनस्य पत्नी' *याने भुवन का पालन करने वाली।* आज होता क्या है कि पुरुष कवि है और स्त्री कवि है तो उसे कवयित्री कहा जाता है। संस्कृत में पुरुष गृहस्थ है, तो उसके लिए "गृही" शब्द है याने घर में रहने वाला। स्त्री गृहस्थ है तो "गृहिणी," याने घर में रहने वाली। पति *का अर्थ पालन करने वाला और पत्नी का* भी वही अर्थ है, याने दोनों एक-दूसरे का पालन करते हैं ऐसा अन्योन्य है। इसलिए सौभाग्य-चिह्न अगर हो तो दोनों के ही पास होना चाहिए।

प्रश्न : आजकल विधवा-विवाह प्रचलित है। वह ठीक है या गलत ?

ठीक है भी और नहीं भी। किस दृष्टि से विवाह करते हैं, उसी पर यह निर्भर है। स्त्री पर वैधव्य लादा गया है। वह विवाह करना चाहती है तो भी उसे ऐसा अवसर नहीं मिलता। यह बंधन उस पर लादा गया है, जो पुरुषों पर नहीं है। एक पत्नी मरने के बाद पुरुष दूसरी शादी कर सकता है। वह तो एक, दो, तीन पत्नियाँ रख ही सकता है। उस हालत में स्त्रियों को जबरदस्ती से मना करना ठीक नहीं है। लेकिन स्त्री विधवा होने पर स्वयं खुशी से दूसरी शादी नहीं करती है तो ठीक है। समझ ले कि ईश्वर की इच्छा थी, उतना वैवाहिक जीवन हो गया। अब विरक्त होकर परमेश्वर की और समाज की सेवा करेंगे। यूरोप में ऐसी अनेक स्त्रियाँ हैं। इस तरह सेवा का विचार स्त्री करे, यह मैं पसंद करता हूँ। ऐसा विचार पुरुष करे तो भी मैं बहुत पसंद करूँगा। लेकिन स्त्रियों के विधवा होने पर जबरदस्ती से दूसरे विवाह के लिए सम्मति न देना गलत होगा। इससे उनके हृदय में संतोष नहीं होता और वे दुःखी भी होती हैं। इसलिए इस दृष्टि से विधवा-विवाह अच्छा है।

प्रश्न : सर्वोदय-पात्र का उद्देश्य क्या है ?

सर्वोदय-पात्र में एक प्रतिज्ञा है। अपने घर से अशांति का काम हम नहीं करेंगे, यही प्रतिज्ञा लेकर सर्वोदय-पात्र रखा जाता है। हर घर में यह होगा तो हिंदुस्तान में शांति-स्थापना के लिए कुछ नहीं करना पड़ेगा। हिंदुस्तान में शांति होगी तो विश्व में भी शांति होगी। सवाल यह है कि उसका उपयोग क्या किया जायगा ?

अगर कहीं झगड़ा नहीं है, अशान्ति नहीं है तो वहाँ बहनें सेवा का काम करेंगी, घर-घर के साथ परिचय रखेंगी। सामान्य वक्त में वे शान्ति सेविका होंगी और असामान्य वक्त में शान्ति-सैनिका होंगी। हिंसा की सेना में यही होता है। जब युद्ध होता है तब सैनिक लड़ते हैं और जब युद्ध नहीं होता है, तब उनको खेती के काम में, रास्ता बनाने के काम में लगाया जाता है। कठिन प्रसंग में, बीच में खड़ी होकर वह प्रसंग टालने की हिम्मत स्त्रियों को करनी होगी।

हम चाहते हैं कि असम में हर स्त्री और पुरुष शान्ति सैनिक बनें। उस काम में सर्वोदय पात्र के अनाज का उपयोग होगा। यह काम अमलप्रभा "बाईदेव", कस्तूरबा-ट्रस्ट की संस्था और मंडल, ये सब मिल कर करेंगे।

अभी दिल्ली में हमारे राष्ट्र के ... की परिषद् हुई थी। उसमें उन्होंने प्रस्ताव पास किया था कि हर घर ... हर व्यक्ति शान्ति की प्रतिज्ञा ले। ... खतम हुई और तुरन्त बाद ही अलीगढ़ में विद्यार्थियों का दंगा हुआ! बाद में वह शहर शहर में फैला और मेरठ वगैरह दूसरे शहरों में भी फैला। यह ... दुःखदायक घटना है। इस परिषद् के राष्ट्रीय एकता विषयक प्रस्ताव गाँव-गाँव में पहुँचाने की जरूरत है।

लेकिन यह काम कौन करेगा ? कांग्रेस वाले और दूसरी पार्टी के जो लोग हैं, उन सबको अपना-अपना चुनाव का काम है। उनको फुरसत कैसे मिलेगी ? तो फिर यह काम कौन करेगा ? अपने देश में एक बेकार जमात है—सर्वोदय जमात। वह यह काम करेगी। वह किसी चुनाव में नहीं है। सिवाय इसके कि सेवा करना, दूसरा काम वह नहीं जानती है।

सर्वोदय-कार्यकर्ताओं का काम है कि घर-घर जायें और यह प्रतिज्ञा समझायें। पांच या दस हजार घरों के शहर पहले ले लें। उनमें पहले सर्वोदय-पात्र की स्थापना करें, इसके लिए एक-एक सेवक तैयार करें। ऐसा कुछ विचार और कार्यक्रम बनाइये। ग्रामदान के लिए जहाँ-जहाँ लोग जाते हैं, वहाँ भी ऐसी शान्ति सेना बनाइये।

[पड़ाव : दोलासरिया, जि. शिवसागर, असम १५-१०-'६१]

• 'सत्य की खोज' : महात्मा भगवानदीन •

महात्मा भगवानदीन अपनी पुस्तक 'सत्य की खोज' के बारे में कहते हैं। 'खुले दिल और खु... ...से यह लिखी ग... है ... और इस बात ... ... पुस्तक का ... ...ता है।

इस पुस्तक में सत्य की आड़ में चलने वाले असत्य और सचाई की ओट में छिपे बाले दगा और मक्कारी पर कस कर चोट की गयी है। इसमें दी गयी हर घटना, हर अध्याय आदमी के झूठे विश्वासों, बनावटी उसूलों, गलत रूढ़ियों और झूठी वफादारी को खोल कर रख देता है। इसको पढ़ कर हर उस आदमी को—जो अपना जीवन सत्य पर नहीं चला रहा है—लगता है जैसे उसने अपने को अपने ही घटिया और नकली माल के बदले बेच डाला है। यह उन लोगों के लिए—जो विनय को कमजोरी, दया को डरपोकपन और जुल्म को ताकत समझते हैं और उन गुरुओं के लिए, जो सत्य के एक ही टुकड़े को पाकर उसके ठेकेदार बन जाते हैं—एक भारी चुनौती है। टाइप मोटा, छपाई सुन्दर, पृष्ठ २८८; फिर भी मूल्य रु० १-५० नये पैसे मात्र।

पुण्य स्मरण

मुमुक्षु स्व० श्री गारदीभाई !

● काशिनाथ त्रिवेदी

पुण्यात्माओं का स्मरण और गुणगान हमारी एक पवित्र परम्परा रही है। मनुष्य इसी तरह अपने लिए आश्वासन पाता आया है और अपने को पुण्यात्माओं का नम्र अनुयायी मान कर उसने सदा ही सुख और सन्तोष का अनुभव किया है। स्व० श्री गारदीभाई ऐसे ही एक पुण्यात्मा थे। उनका पुण्य स्मरण हममें से हरएक के लिए सदा ही स्फूर्तिदायक रहेगा, इसमें सन्देह नहीं। गत १६ नवम्बर '६१ को श्री गारदीभाई ने इहलोक की अपनी यात्रा समाप्त की! उनके मासिक-श्राद्ध के निमित्त से यह स्मरणांजलि उन्हें सादर-सस्नेह समर्पित है!

श्री गारदीभाई का पहला परिचय आज से कोई आठ साल पहले पश्चिम निमाड के निवाली गाँव में हुआ था। कस्तूरबा ट्रस्ट की ओर से सन् '५३ के मार्च महीने में, रामनवमी के दिन, निवाली में एक आरोग्य-केन्द्र और कन्या-आश्रम का श्रीगणेश हुआ। बड़ी कठिन और विपरीत परिस्थिति में केन्द्र की सेविकाओं को शुरू के सालों में काम करना पड़ा। बिल्कुल अनजाना प्रदेश था और अनजाने ही लोग थे। राष्ट्रीय दृष्टि से सेवा का काम करने वाला कोई केन्द्र इससे पहले निवाली-क्षेत्र में खुला नहीं था। लोकमानस नये विचार और नयी कार्य-पद्धति के लिए तैयार नहीं था। आदिवासी क्षेत्र होने से आम लोगों में शिक्षा और संस्कार का भी कोई वातावरण नहीं था। विचार-प्रवाह सारा राष्ट्रीयता की भावना से सूना और अछूता था।

ऐसे क्षेत्र में जिन भाइयों ने ट्रस्ट की सेविका बहनों का खुले दिल और उदार भाव से सहर्ष स्वागत किया, उनमें श्री गारदीभाई सबसे पहले और श्रेष्ठ थे। उस समय तक निवाली-क्षेत्र में रहने वाले 'बारेला' समाज का जीवन पुराने रीति-रिवाजों, अंधविश्वासों और संकुचित भावनाओं से घिरा हुआ था। अज्ञान की भी कमी नहीं थी। शोषण तो चारों दिशाओं से होता रहता था। शुद्ध सेवा की भावना से कोई दूर देहात में जाकर आदिवासी समाज की निश्छल भाव से, उत्तम सेवा कर सकता है, इसका किसीको न तो विश्वास था और न इस तरह का कोई अनुभव ही किसी की गाँठ में था। बाहर से आने वालों के साथ समरस होने की और उन्हें अपने सुख-दुख का साथी बनाने और मानने की बात तो किसीके ध्यान में थी ही नहीं।

ऐसे कठिन क्षेत्र में दया की देवी और सेवा की मूर्ति बन कर जिन दो बहनों ने निवाली-क्षेत्र में अपना आसन जमाया और धूनी रमाई, उनके सदा प्रसन्न रहने वाले और कठिन-से-कठिन परिस्थिति में भी कभी विचलित न होने वाले मुखड़ों को देख-देख कर जिन आदिवासी भाई-बहनों ने अपने जीवन में पहली बार सेवा के रस का स्वाद चखा और सेवामय जीवन बिताने का व्रत लिया, उनमें श्री गारदी-भाई अग्रणी रहे।

मूलतः श्री गारदीभाई एक सत्प्रवृत्त और सत्संग-सेवी सज्जन थे। आश्रम की सेविका बहनों के सम्पर्क से उनका सुप्त सेवा भाव प्रबल रूप से जागा। उनकी मुमुक्षु आत्मा ने अपने असल स्वरूप को पहचाना और फलतः वे कमर कस कर अपने क्षेत्र और अपने समाज की सेवा के लिए खड़े हो गये। अच्छी कमी-कमाई वैसी थी। खुद अच्छे, मेहनती और कुशल किसान थे। अपने क्षेत्र में उन्होंने खेती के अनेक प्रयोग किये थे और उनमें पर्याप्त सफलता भी प्राप्त की थी। निवाली में सेवा-केन्द्र खुल जाने के बाद उनकी जीवनधारा धरती की खेती की दिशा से मुड़ कर मन की खेती की दिशा में बहने लगी। उन्होंने बड़ी तत्परता से अपने मन को मांजना शुरू किया और जीवन को अधिक से-अधिक उज्ज्वल तथा सेवापरायण बनाने का व्रत ले लिया।

एक एक करके अपने सारे व्यसन उन्होंने छोड़ दिये। शराब, बीड़ी, तम्बाकू, चाय आदि व्यसनों से मुक्त होने में उन्हें देर न लगी। मांसाहार भी छोड़ दिया। खादी पहनने लगे। चरखा चलाना सीख लिया। खुद सीखने के बाद अपनी पत्नी को सिखाया। छोटे बेटे को भी सिखाया। जब क्षेत्र में अम्बर चरखा पहुँचा, उन्होंने अपने घर में उसका भी बड़े प्रेम से स्वागत किया। सारे परिवार में चरखे का एक वातावरण बना। सेरों सूत कतने लगा। पूरा परिवार वस्त्रस्वावलम्बी बन गया। स्वयं इतना करने के बाद उन्होंने आसपास के गाँवों में रहने वाले अपनी बिरादरी के 'बारेला' भाइयों को भी नये विचार और नयी रहन सहन का मर्म समझाया। धीरे धीरे अनेक परिवारों के कर्ता धर्ता लोग उनके साथी बन गये। कोई चालीस पचास परिवारों ने अपना जीवनक्रम बदला, खादी धारण की। सेवा के रसिया बने। गांधी विचार और विनोबा-विचार में उनकी श्रद्धा जमने लगी। इन परिवारों के मुखियाओं ने भूदान में अपनी जमीनें दीं, साधन दान और सम्पत्तिदान भी दिया। समय दान में भी पीछे न रहे। सर्वोदय-पात्र को भी अपनाया। सर्वोदय-मेलों में और सर्वोदय-सम्मेलनों में बिना नागा पहुँचने का और दल-बल पहुँचने का एक सिलसिला ही चल पड़ा। जिस बारेला समाज के लोग अपने गाँव और क्षेत्र से कभी बाहर नहीं निकले थे, उन्होंने इस निमित्त से आधे हिन्दुस्तान की यात्रा कर ली। कांजीवरम्, जगन्नाथ-पुरी, पढरपुर, अजमेर, सेवाग्राम आदि स्थानों में हुए सर्वोदय सम्मेलनों में निवाली क्षेत्र के कई भाई बहन बड़े उत्साह से सम्मिलित हुए। देश दर्शन का और सत्संग का जो लाभ इस निमित्त से उन्हें मिला, उससे नये रास्ते पर चलने का उनका उत्साह बढ़ा और श्रद्धा बराबर दृढ़ होती चली गयी। निवाली क्षेत्र के बारेला समाज में यह जो भारी और क्रांति-कारी परिवर्तन आया, उसके मूल में गारदीभाई की प्रखर साधना और अटूट प्रेरणा ही मुख्य थी।

निवाली के कन्या-आश्रम परिवार के साथ तो वे इतने घुलमिल गये थे कि जिसका कोई हिसाब नहीं। अपने घर परिवार से भी अधिक लगाव उन्हें आश्रम परिवार से हो गया था। उनकी जीवन-यात्रा के अन्तिम दिन भी आश्रम परिवार के बीच ही बीते। आश्रम की संचालिका श्रीमती कान्ताबहन त्यागी को वे अपनी सगी बहन और बेटी से भी अधिक मानते थे।

पिछले ढाइ तीन साल से वे अपने क्षेत्र में गांधी निधि के ग्रामसेवक बन गये थे और अपने गाँव, कुजरी से लगे हुए मोगरीखेड़ा गाँव में चल रहे ग्रामसेवा केन्द्र में ही अपना अधिक समय और अधिक शक्ति लगाते थे। निधि के दूसरे ग्रामसेवक श्री विष्णुप्रसादजी व्यास के वे बड़े भाई बन गये थे। दोनों ने मिल कर उस क्षेत्र में लोकसेवा का जो अलख जगाया, उसकी सुवास चारों ओर फैलने लगी थी। उनके अचानक उठ जाने से कन्या-आश्रम और ग्रामसेवा-केन्द्र की ही नहीं, पूरे निमाड की और विशेषकर निमाड के बारेला समाज की भारी क्षति हुई है। उनके जैसा साधक और सेवक निवाली-क्षेत्र में फिर जल्दी ही खड़ा हो, इसकी आज तो कोई सम्भावना नहीं दीखती!

४ नवम्बर की शाम को श्री गारदी-भाई मोगरीखेड़ा से पैदल निवाली आये, कन्या आश्रम में श्री कान्ताबहन से मिले। कहा कि कमर में कुछ दर्द है। रात को प्रार्थना के बाद आश्रम की कन्याओं से देर तक बातचीत करते रहे। बहुत ही प्रसन्न थे। रात वहीं सोये। उसी रात उन्हें ठंड देकर बुखार आया। दूसरे दिन से इलाज शुरू हुआ। धीरे-धीरे बुखार बिगड़ता गया। मुन्ती बुखार-सा लगने लगा, इलाज बराबर चलता रहा। डाक्टरों ने भी देखा और इलाज किया। ९-१० नवम्बर तक तबियत कभी अच्छी, कभी खराब चलती रही। १४ नव-म्बर के आसपास तबियत ने गम्भीर रूप धारण कर लिया। बेहोशी रहने लगी। बुखार १०६° डिग्री तक पहुँच गया। हालत बेकाबू हो गयी। उन्हें आश्रम से हटा कर श्री बाबूभाई के घर ले जाया गया। मित्रों और परिवार वालों के आग्रह पर अतीर-अम्बीर में झाड़फूँक भी हुई। परन्तु तबियत सम्हल नहीं सकी। बेहोशी बनी रही। १६ नवम्बर की रात को ९॥ के लगभग श्री गारदीभाई ने अपनी देह लीला समाप्त की। वे साधक थे और मुक्ति की भावना रखते थे। भगवान ने उनकी सुनी और उन्हें इहलोक से मुक्ति मिली।

उनके मन में अपने समाज की सेवा की बड़ी लगन थी। शिविरों और सम्मेलनों द्वारा लोकशिक्षा और लोकजागृति कर करने की उत्कट भावना उनके मन में बनी रहती थी। अपने क्षेत्र में उन्होंने बहनों और भाइयों के अनेक शिविर किये-कराये थे। पदयात्राएँ भी की थीं। ग्राम-स्वराज्य के लिए अपने क्षेत्र को तैयार करने के मनसूबे वे बाँधा करते थे। उनकी चलती, तो वे अभी बहुत वर्षों तक सेवा-मय जीवन ही बिताना पसन्द करते। सेवामूर्ति वे थे ही। उनके जैसा बालवत्, निर्दोष, निश्छल, निर्द्वन्द्व और सदा प्रसन्न सेवक दूसरा कोई देखने को नहीं मिला। अपनी मिसाल वे आप ही थे। यों लग-भग निरक्षर थे, पर बड़े ज्ञानी थे। भजन-कीर्तन में गहरा रस रखते और कई सद् वचन और भजन उनकी जीभ पर सदा खेला करते थे।

वे अपने पीछे अपनी पत्नी, चार पुत्र और तीन पुत्रियाँ छोड़ गये हैं। सबसे छोटा पुत्र चि० जगदीश ११ वीं में पढ़ रहा है। होनहार है। मृत्यु के समय उनकी उमर कोई ५६ साल की थी।

स्व० श्री गारदीभाई की मृत्यु के समाचार सुन कर मुझे जितना दुःख हुआ, उतना पिछले २५ ३० वर्षों में किसी आत्मीय की मृत्यु पर भी नहीं हुआ था। दो अलग अलग परिवारों में जन्म लेने पर भी पिछले आठ वर्षों में हम दोनों के बीच इतनी निकटता और आत्मीयता आ गयी थी कि न कभी गारदीभाई को लगा कि मैं उनसे भिन्न हूँ और न मुझे ही लगा कि वे मुझसे भिन्न हैं। उनको खोकर हमने न केवल एक सन्मित्र और सुबन्धु को खोया है, बल्कि एक मुमुक्षु आत्मा के पावन संस्पर्श की सन्निधि से हम सदा के लिए वंचित हुए हैं। श्री गारदीभाई का यह पुण्यस्मरण हमें अधिक नम्र, पवित्र और अन्तरमुख बनाये, यही प्रार्थना है!

——

...नहीं रहेगा, विज्ञान के साथ मानवता जुड़ने का अर्थ होगा कि केवल अपराध करने को ही समाज में न हो रहने दे, नहीं, बल्कि इस समाज-व्यवस्था में मनुष्य के व्यक्तित्व का विकास कितना हो, यह भी देखना होगा। अपराध का मौका हो तो भी अपराध की प्रवृत्ति न हो, यही सज्जनता का पैमाना है। जिनको अनन्य सहायता मिले, वे सहज अपराधी हो जायें ऐसा न हो! उनके लिए कोई मौका ही नहीं है। अपराध के लिए समाज में कारण न हो, यह शासन कर सकती है—करना भी चाहिए। पर अपराध की प्रवृत्तियाँ नष्ट हो जायें, यह उससे बड़ा काम है और इसको लोक-शिक्षण द्वारा ही किया जा सकता है। इस दृष्टि से जब विचार करते हैं तो सारे के सारे दण्ड विधान के बारे में नये मोड़ की आवश्यकता महसूस होती है।

आज का दण्ड विधान मानता है कि मनुष्य जो अच्छा या बुरा कर्म करता है, उसका फल उसे मिलना ही चाहिये, पर एक तरह देखें तो इस कर्म सिद्धान्त को भी उस तरह मनुष्य ने माना नहीं—न इहलोक में, न परलोक में। परलोक में इस प्रकार की गुंजाइश रखी है, इहलोक में भी क्षमा का विशेष अधिकार किसी को दिया है। क्यों? क्योंकि गुनाहगार को सजा मिलनी ही चाहिये, यह एक दकियानूसी विचार है। जुर्म करने वाला मुखबिर बन जाता है तो उसे आप माफ कर देते हैं, क्योंकि उसने कानून की सहायता की, पर जिसने पश्चात्ताप किया वह भी तो कानून में सहायक है, पश्चात्ताप करने से उसकी वृत्ति का परिवर्तन सम्भव है। गुंजाइश रहती है उसके सुधरने की। पश्चात्ताप का मतलब ही है कि वह पुराने कर्मों को भूल जाता है। हर वाल्मीकि कभी डाकू था और हर डाकू कभी वाल्मीकि हो सकता है। आज का बुरा मनुष्य कल का अच्छा नागरिक बन सकता है, यही मान कर चलने वाले क्रान्तिकारी हो सकते हैं। जो हृदय परिवर्तन में विश्वास नहीं करता, वह क्रान्तिकारी नहीं हो सकता। ऐसा विश्वास न हो तो क्रान्ति की संभावना ही नहीं रहती। क्रान्तिकारी जब परिवर्तन में विश्वास करता है तो साथ साथ यह नहीं मान सकता कि दुनिया में कुछ मनुष्य ऐसे होते हैं, जिनका कभी उद्धार ही नहीं हो सकता। केवल परिस्थिति बदलने से मनुष्य बदल सकता है यह भी मानें तो और मानना गलत होगा कि कुछ लोग परिस्थिति बदलने पर भी नहीं बदलते। दोनों बातें एक-दूसरे की विरोधी हो जाती हैं। इसलिए दण्ड का विचार इस भूमिका से करना ही नहीं चाहिये। अपराध को रोकने के लिए दण्ड की दहशत पैदा करो, यह कहने वाला तो यह मानेगा कि जो मेरी एक आँख फोड़े उसकी दोनों फोड़ दो और जिसने मेरी उंगली काटी उसका सर काट डालो, परन्तु यह है जंगलीपन! सजा से दहशत की मात्रा भी धीरे धीरे कम हो जाती है। यहाँ भी 'डिमिनिशिंग रिटर्न' का सिद्धान्त लागू होता है और इस प्रकार की 'क्रीमिनल बार्बेरिटी' से 'कामन बार्बेरिटी' बढ़ती है—नैतिक बर्बरता से सार्वजनिक बर्बरता पैदा होती है। जितनी सख्ती ज्यादा होगी उतनी सख्ती की तरफ से उसकी लापरवाही बढ़ती है। मनुष्य को ज्यादा दण्ड देने से उसकी मनोवृत्ति का विकास नहीं होता, ह्रास ही होता है; वह भग्न नागरिक कभी नहीं बन सकता।

मनोवृत्ति के विकास का एक नमूना हमने चंबल में देखा। यह एक संत के स्पर्श का परिणाम है। बिजली की तरह हुए इस परिवर्तन को आप झूठा भी समझ लीजिये, क्षणिक समझ लीजिये। लेकिन यह झूठा और क्षणिक परिवर्तन भी उन बागियों को क्यों करना पड़ा? कहते हैं "हाइपोक्रेसी इज ए ट्रिब्यूट दैट वाइस पेज टु वर्चु"—मनुष्य सद्गुण का ढोंग क्यों करता है, क्योंकि उसने सद्गुण के मूल्य को पहचान लिया है। विनोबा के कारण यह चीज हो गयी। उसकी तफसील में नहीं जाऊँगा, पर इतना समझना होगा कि हर मनुष्य स्वातंत्र्य का पात्र है, उसकी मनःस्थिति में परिवर्तन आ सकता है।

इसलिए जहाँ एक ओर परिस्थिति ऐसी बने कि वैज्ञानिक ढंग से विचार कर जुर्म की गुंजाइश कम करने का प्रयत्न हो, वहाँ दूसरी ओर मनःस्थिति बदलने का प्रयत्न होना चाहिए। यह सम्भव तभी है जब कानून की जगह करुणा को मौका दिया जाय। मनुष्य का हृदय पत्थर न हो जाय, यह करुणा से ही सम्भव है। समाज में योजना ऐसी होनी चाहिए कि दण्ड देने वाला मनुष्य करुणा से ओतप्रोत हो। शेक्सपियर ने पोर्शिया से कहलाया है कि करुणा ऐसा गुण है कि पाने वाला भी धन्य होता है और देने वाला भी। दण्ड ऐसी ऐसी योजना है कि देने वाला भी पतित होता है और पाने वाला भी। दण्ड यदि समाज में रहना अनिवार्य ही है तो भी ऐसी स्थिति पैदा होनी चाहिए कि उसका प्रयोजन कम-से-कम हो। समाज में विकास सम्पन्नता का होना चाहिए, और सभ्यता कानून से नहीं लायी जा सकती। जो कानून नहीं कर सकता, जिससे कानून को मदद मिलती है, ऐसी कोशिश हम कर रहे हैं।

इस कोशिश में हमेशा सफलता नहीं मिलेगी। सफलता का सेहरा आपके और मेरे सर पर नहीं बंधेगा, जिसके सर पर बंधेगा वे बाद में आयेंगे। आपकी और हमारी यही प्रार्थना है कि उनको ज्यादा कष्ट न उठाना पड़े, ज्यादा त्याग न करना पड़े। हमारा दृढ़ विश्वास होना चाहिये कि आज की दुनिया में जब कि अन्तर्राष्ट्रीय क्षेत्र में भी निःशस्त्रीकरण की बात चल रही है, राष्ट्र के अन्तर्गत किसी क्षेत्र में सशस्त्र क्रांति का कोई स्थान नहीं रहा है—यह वैज्ञानिकता है, इसको हमें पहचान लेना चाहिए। अगर मान भी लें कि विनोबा एक बार असफल हुआ, फिर रहा तो हजार बार असफल होगा। सन् '४८ तक गांधी और सन् '८३ तक मार्क्स असफल ही रहे। शिवाजी धोखे से जीत गया, पर उससे पहले असफल ही रहा था। राणा प्रताप और लक्ष्मीबाई तो असफल होकर ही मरे। निवेदन इतना ही है कि इनकी असफलता दूसरों की सफलता से कहीं उज्ज्वल है और उत्साहक है। यह शांति की मनोवृत्ति है, शांति का विचार है।

स्व० नगीनभाई पारेख !

• शैलेशकुमार बन्द्योपाध्याय

उस युवक की उल्लासपूर्ण मुस्कान हरएक को उसका मित्र बना सकती थी। उसकी चमकती हुई आँखों में, जो ऐनक के पीछे से दिखायी पड़ती थीं, अत्यन्त आकर्षण था। उसकी चमक से उसके मैत्रीभाव तथा बुद्धि का आभास होता था। जिस किसी व्यक्ति को कोरापुट में यात्रा करने का अवसर प्राप्त हुआ होगा, जहाँ कि इस शताब्दी के पिछले भाग में विनोबाजी का ग्रामदान-आन्दोलन चलता रहा है, उस युवक के सम्पर्क में अवश्य आया होगा और विशेषकर लिम्बागुडा के कार्य-क्षेत्र को देख कर हर्षित हुआ होगा, जहाँ श्री नगीनभाई मुख्यतः कार्य करते थे।

अक्टूबर १९५८ में मेरी जब नियुक्ति सर्व सेवा संघ के द्वारा प्राप्त किये हुए ग्रामदान के गाँव में कार्य देखने के लिए हुई, तो मुझे इस युवक के बारे में जानने का विशेष अवसर मिला। यद्यपि मैंने उनका नाम पहले सुना था, यह मेरा पहला अवसर था कि मैंने उनको उनके कार्यक्षेत्र में संलग्न देखा। हम लोग जयपुर से लिम्बागुडा के लिए चले और साठ मील की यात्रा सड़क से तय करते हुए वहाँ पहुँचे। इस समय पिछले तीन वर्षों के बीच में कोरापुट के गाँवों की दशा बहुत परिवर्तित हो गयी है, फिर भी मुझे इस बात को कहने में कोई सन्देह नहीं है कि श्री नगीनभाई का लिम्बागुडा का क्षेत्र अत्यन्त उन्नतशील था।

यहाँ का कार्य भी अण्णासाहब सहस्रबुद्धे के नेतृत्व में हो रहा था। कोरापुट में जो कुछ कार्य ग्राम-सुधार के संबंध में हो रहा था और उसमें जो कुछ सराहनीय भाग उन्होंने लिया था, उसके अतिरिक्त उनमें दो विशेष गुण थे, जिनका प्रभाव मुझ पर विशेष रूप से पड़ा। पहला यह कि उनमें हर बातों को विश्लेषणपूर्ण तर्क द्वारा समझने की क्षमता थी, यद्यपि वे भूदान के एक सेवक के रूप में थे। वे स्वतंत्र रूप से काम करने वाले थे और अन्य नेताओं तथा विनोबाजी के सुझाव के अधीन न रह कर स्वतन्त्र रूप से काम करते थे और भूदान-कार्य की त्रुटियों को भली भाँति समझ सकते थे।

परन्तु यह सब होते हुए भी वे भूदान के सिद्धान्त में अटल विश्वास रखते थे। उनका विश्वास था कि गांधीजी के देहान्त के बाद भूदान ही एकमात्र ऐसा कार्य है, जिससे भारत की जनता के लिए सामाजिक न्याय प्राप्त हो सकता है। यही कारण था कि उन्होंने अपना जीवन इस कार्यक्षेत्र में समर्पित कर दिया और सफलता के साथ कार्य में लीन थे। एक सुशिक्षित तथा सम्पन्न गुजराती कुटुम्ब में पैदा होते हुए और आक्सफोर्ड व अन्य पाश्चात्य स्थानों की शिक्षा प्राप्त करने पर भी उन्होंने अपने जीवन के पाँच अमूल्य वर्ष उड़ीसा के अत्यन्त निर्धन जातियों के साथ बिताये। श्री नगीनभाई एक अतुलनीय व्यक्ति थे, जिनके व्यक्तित्व में वैज्ञानिक विश्लेषण प्रखरता के साथ साथ श्रद्धापूर्ण काम करने की मर्यादा थी।

कोरापुट में बहुत-से आश्रम के कुशल कार्यकर्ता भूदान कार्य के लिए गये थे, परन्तु वे असफल होकर लौट आये। लेकिन ये गुजराती युवक उस क्षेत्र में कैलाश शिखर की भाँति अटल रहा और अपने कर्तव्य से विचलित नहीं हुआ। यहाँ तक कि उन्होंने अपना शरीरत्याग किया। गत १९ नवम्बर को सर्व सेवा संघ के रायगड़ा के केन्द्र पर उनका देहावसान हुआ। इस समय वे अपने निजी कुटुम्बियों से बहुत दूर थे और केवल भूदान के दो-एक साथी उनकी मृत्यु शय्या के निकट उपस्थित थे। उनका अंतिम समय इतना अचानक आया कि चिकित्सा का कोई उचित प्रबन्ध भी न हो सका।

ऐसे अच्छे कुल के युवक होते हुए भी और हरएक प्रकार के उन्नतिशील क्षेत्र में कुशलता प्राप्त करते हुए भी श्री नगीनभाई को किसी प्रकार धन का लोभ नहीं था और न पद की अभिलाषा थी। भूदान के कार्य में स्नेहपूर्वक कार्य करते हुए जनता की सेवा करना और उनमें शक्ति का संचालन करना ही उन्होंने अपना कर्तव्य समझा। उनके जीवन से हम लोगों को शिक्षा प्राप्त करनी चाहिए और संसार के अंधकार और निराशा से निकलने के लिए साहस प्राप्त करना चाहिए।

गांधीवादी अर्थशास्त्री श्री जे० सी० कुमारप्पा

एम० विनायक

Dr. J. C. KUMARAPPA

गांधी-आंदोलन ने जिन नये सिद्धान्तों और विचारधाराओं को जन्म दिया, उनसे भारतीय अर्थ-व्यवस्था के क्षेत्र में बड़ी भारी क्रांति की स्थिति आ गयी। स्वदेशी धर्म के प्रति गांधीजी की प्रबल आस्था, विवेक और मुक्त विचारों के परिणामस्वरूप ही खादी-आंदोलन का जन्म हुआ। उन्होंने लिखा है: "समाज के प्रति स्वदेशी धर्म के निर्वाह का सर्वप्रथम और अनिवार्य साधन है खादी का प्रयोग। स्वदेशी के भक्त का कर्तव्य है कि अपने आसपास की अवस्थाओं का अध्ययन करे और जहां तक सम्भव हो, स्थानीय उत्पादनों को, भले ही वे हीन कोटि के और महँगे हों, बाहर की सस्ती और उत्तम वस्तुओं के मुकाबले तरजीह देकर, अपने पड़ोसियों की सहायता करे। उसको चाहिए कि स्थानीय उत्पादनों में आये दोषों में सुधार करवाये और उनको प्रयोग के योग्य बनवाये, न कि उन खराबियों के कारण उनका त्याग करके विदेशी चीजें अपनाये।" ('यरवदा-मन्दिर,' पृष्ठ ६५ से)

विदेशी वस्तुओं के बहिष्कार का आंदोलन छिड़ जाने पर यह आवश्यक हो गया कि स्वदेशी वस्त्र उसका स्थान ग्रहण करे। इस आवश्यकता की पूर्ति खादी ने की। फलतः खादी-आंदोलन का जन्म हुआ। किन्तु खादी-आंदोलन आधुनिक औद्योगीकरण की वेग से बढ़ती विचारधारा के एकदम विपरीत पड़ता था।

सुप्रसिद्ध विचारक और शोधकर्ता रिचर्ड बी० ग्रेग ने, जो बापू के साथ काफी समय तक साबरमती आश्रम में रहे, इस विषय पर गम्भीरतापूर्वक विचार किया है। उन्होंने इस सम्बंध में एक पुस्तक लिखी है, जिसका नाम है, "इकानामिक्स आफ खद्दर"—खद्दर का अर्थशास्त्र। यह पुस्तक जब १९२८ में प्रकाशित हुई तो लेखक के विषय-प्रतिपादन के ढंग को देख कर गांधीजी बहुत प्रसन्न हुए और उन्होंने श्री ग्रेग को बहुत साधुवाद दिया। इस पुस्तक में खादी के बारे में प्रथम बार शास्त्रीय दृष्टि से विचार किया गया था। इसके पश्चात् गांधीजी ऐसे व्यक्ति की खोज करने लगे, जो उनकी क्रान्तिकारी आर्थिक विचारधारा का गहराई और बारीकी से अध्ययन कर इस विषय को आगे बढ़ाये, जिससे इस पर और भी अनुसन्धान हो सके।

उन दिनों भारतीय अर्थ-व्यवस्था के बारे में कुछ थोड़ी-सी पुस्तकें प्राप्त थीं। कुछ पुस्तकें ग्रामीण अर्थ-व्यवस्था पर भी थीं। इनके लेखक सुयोग्य व्यक्ति थे, जिनमें से कुछ तो विदेशों से अध्ययन करके लौटे थे। किन्तु इन सुशिक्षित और पठित विद्वानों तथा अन्य लोगों के बीच सबसे बड़ा अन्तर यह था कि ये विद्वान लोग व्यावहारिक ज्ञान से सर्वथा शून्य थे और वास्तविक ग्रामीण अवस्थाओं का उन्हें कोई अनुभव नहीं था।

इन विद्वानों की इन पुस्तकों का प्रकाशन बड़ी-बड़ी ब्रिटिश फर्मों द्वारा हुआ था। समान्यतया इन फर्मों की प्रवृत्ति भारतीय ग्रामीण क्षेत्रों की वास्तविक स्थिति प्रकट करने के विरुद्ध थी, क्योंकि उनकी आर्थिक अवस्था का सही स्वरूप सामने आने पर ब्रिटिश शासन की खराबी जाहिर होती और इससे उन्हें ब्रिटिश सरकार का कोप-भाजन बनना पड़ता। इसलिए इन पुस्तकों के लेखक आम तौर पर सरकारी आँकड़ों पर निर्भर रहते तथा अपनी धारणाएँ भी इन आँकड़ों के आधार पर बना लेते। भारत की आर्थिक स्थिति का ठीक-ठीक परिज्ञान इन आँकड़ों को आधार मान कर चलने से कभी नहीं हो सकता था, अतः यह स्पष्ट था कि गांधीजी को इनसे कभी सन्तोष नहीं हुआ।

ग्रामीण अर्थ-व्यवस्था का समुचित और विस्तृत अध्ययन प्रस्तुत किये जाने के लिए गांधीजी कितने उत्सुक थे, यह श्री कुमारप्पा से हुई उनकी पहली बातचीत से मालूम पड़ता है। ३० मई, १९२९ को साबरमती-आश्रम में जब गांधीजी से कुमारप्पा की भेंट हुई तो दोनों एक-दूसरे के लिए अपरिचित थे। दोनों की इस मुलाकात का आधार था श्री कुमारप्पा का निबन्ध—"पब्लिक फाइनेन्स एण्ड अवर पावर्टी' (सार्वजनिक वित्त और हमारी निर्धनता)। इस प्रबन्ध से गांधीजी *अत्यंत प्रसन्न हुए। उन्हें लगा कि* भारतीय, विशेषकर ग्रामीण अर्थ-व्यवस्था विषयक हमारे विचारों की प्रतिध्वनि इसमें मिल रही है। "यंग इंडिया" में उसे प्रकाशित करने की बात गांधीजी ने स्वीकार कर ली और श्री कुमारप्पा से जानना चाहा कि क्या आप हमारे कहने पर गुजरात के ग्रामीण क्षेत्रों का दौरा कर सही आर्थिक स्थिति का विवरण उपस्थित करने को तैयार होंगे?

गांधीजी ने कुमारप्पा को यह कह कर साधुवाद दिया कि अर्थ-व्यवस्था के सम्बंध में आपकी विचारधारा ठीक मेरे जैसी है तथा मेरे आर्थिक विचारों को आधार मान कर अर्थ व्यवस्था का अध्ययन करने वाले आप पहले व्यक्ति हैं। "गुजराती भाषा की जानकारी के बिना यह काम कैसे हो सकता है," यह कह कर कुमारप्पाजी ने जान बचानी चाही; किन्तु गांधीजी ने उनकी एक न सुनी और गुजरात-विद्यापीठ के कर्मचारियों तथा विद्यार्थियों की सेवाएँ उनके सिपुर्द कर दीं।

इस प्रकार के सर्वेक्षण के लिए गांधीजी काफी समय से व्यग्र थे। ऐसी हालत में भला कुमारप्पा के मिल जाने पर उन्हें वे कैसे छोड़ सकते थे! चाहे जिस कीमत पर हो, कुमारप्पा की सेवाओं से लाभ उठाने का निश्चय गांधीजी ने कर लिया था। अतः उनकी कोई भी बहानेबाजी बापू के सामने न चल पायी। काकासाहब कालेलकर ने लिखा है—"गांधीजी ने मुझे एक रुक्का दिया, जिसमें उन्होंने यह इच्छा प्रकट की थी कि भारतीय अर्थ-व्यवस्था का ढाँचा खड़ा करते समय हमें बुनियादी तथ्यों का संग्रह करने पर जोर देना चाहिए और उन तथ्यों के आधार पर ही विवेकयुक्त वैज्ञानिक निष्कर्ष निकालना चाहिए, जिसमें आँकड़ों के भ्रमजाल के कारण कोई गड़बड़ी पैदा हो जाने की शंका न रहे।

अब गाड़ी आगे बढ़ी। कुमारप्पा ने बहुत ही श्रम और धैर्य के साथ स्वयं किसानों से सारे विवरण प्राप्त किये। सारी सूचनाओं का संग्रह करने में उन्हें तीन महीने का समय लग गया। विद्यापीठ के नौ विद्यार्थी दिन-रात उनकी सेवा में लगे रहे। इनके अतिरिक्त दो प्राध्यापक भी आँकड़ों के संग्रह में समय-समय पर उनकी सहायता करते रहे। इसके बाद श्री कुमारप्पा ने करीब डेढ़ वर्ष तक उन आँकड़ों की छानबीन की, सारी सामग्री को व्यवस्थित रूप दिया और अपने निष्कर्ष अनेक प्रश्नों के बारे में निकाले और तब गुजरात के एक तालुके की आर्थिक स्थिति के बारे में यह अधिकारिक विवरण तैयार हुआ। काकासाहब अपने एक पत्र में लिखते हैं—"मातर तालुका के बारे में जो रिपोर्ट आप तैयार कर रहे हैं, उसमें आप विस्तृत रूप से अपने निष्कर्ष निकालें और सुझाव लिखें। इससे एक नयी दिशा का संकेत मिलेगा। आप इसे निश्चय ही रोचक बनाने जा रहे हैं, इसलिए विस्तार से हमें कोई परेशानी न होगी।"

श्री कुमारप्पा की रिपोर्ट को इस दिशा में किया गया सबसे महत्त्वपूर्ण और सफल प्रयास कहना चाहिये। गांधीजी को इस रिपोर्ट से बड़ा सन्तोष हुआ। उन्होंने २५ अगस्त, १९३१ को श्री कुमारप्पा को लिखा—"आप अपना काम जारी रखें। यदि समय मिले तो मद्यपान की समस्या पर भी विचार करें और तथ्यों तथा आँकड़ों के आधार पर बतायें कि इससे रुपयों की बरबादी के अतिरिक्त अन्य किस तरह की बरबादी और किस हद तक होती है। आप इस बात की भी छानबीन कर सकते हैं कि निरोधक रोगों, आहार के गलत तथा मानव-मल का खाद के रूप में उपयोग न करने से कितनी आर्थिक क्षति होती है। इस प्रश्न पर श्री पुई ने कुछ विचार किया। आश्रम में कदाचित उनकी पुस्तक मौजूद है। आहार का ढंग गलत होने से दूनी बरबादी होती है। उस पर विटामिनों के लाभ की चर्चा करने वाले कर्नल मेकानिस्टर अथवा इसी नाम के किसी व्यक्ति ने विशेष रूप से विचार किया है। यह तो मैंने कुछ संकेत भर कर दिया है। आप इनके आधार पर अपना मार्ग निर्धारण कर विस्तृत रूप से छानबीन कर सकते हैं। इस ढंग से यदि अर्थ-व्यवस्था तथा आर्थिक स्थिति पर विचार किया जाय तो विषय तो रोचक और आकर्षक होगा ही, जनता के लिए यह पर्याप्त रूप से लाभदायक भी होगा। आप जैसे अर्थ शास्त्रवेत्ता के लिए इस प्रकार का अध्ययन प्रस्तुत करना कोई श्रमसाध्य और कठिन कार्य भी नहीं है।"

ग्राम्य जीवन की वास्तविक अवस्थाओं के व्यावहारिक अध्ययन और उनकी पेचीदगियों पर विचार करने के कारण श्री कुमारप्पा को जो सही ज्ञान प्राप्त हुआ वह वर्षों तक भी आधुनिक विश्वविद्यालयों में अनुसन्धान कार्य करने के बाद किसी को नहीं प्राप्त हो सकता था। यही कारण है कि मालवीयजी ने गांधीजी को ऐसा सुयोग्य शिष्य प्राप्त कर लेने के लिए बधाई दी। विषय की तह तक पहुँच जाने में कुमारप्पा की बुद्धि इतनी कुशाग्र थी और उनके निर्णय इतने सटीक होते थे कि जब इन दोनों महान् देशभक्तों बीच "सही स्वदेशी" के प्रश्न पर विवाद छिड़ा तो श्री कुमारप्पा को निष्पक्ष निर्णायक के रूप में चुनना पड़ा।

जेल-प्रवास के समय श्री कुमारप्पा ने "इकानामी आफ परमनेंस" (स्थायित्व की अर्थव्यवस्था) नामक जो प्रबन्ध लिखा था, उससे प्रसन्न होकर गांधीजी ने उन्हें 'डी० वी० आई०' (डाक्टर आफ विलेज इण्डस्ट्री) की उपाधि से विभूषित किया।

राष्ट्र के पुनर्निर्माण के सिलसिले में इस बात की आवश्यकता अनुभव की जा रही थी कि राष्ट्र के सर्वांगीण विकास के लिए एक बुनियादी योजना बनायी जाय। जब कांग्रेस ने शासन भार संभाला और यह बात निश्चित हो चली कि अंग्रेज अब भारत छोड़ रहे हैं तो कुमारप्पा ने मंत्रियों के एक सम्मेलन में देश के पुनर्निर्माण और विकास का एक खाका प्रस्तुत किया। इस सम्मेलन में गांधीजी भी उपस्थित थे। अपने उद्घाटन-भाषण में उन्होंने मंत्रियों पर इस बात के लिए जोर दिया कि यह योजना बहुत ही उपयुक्त है, अतः आप लोग इस सम्बन्ध में यथोचित विचार कर इसका काम आगे बढ़ाने की चेष्टा करें।

इन अनुभवों के बाद गांधीवादी आर्थिक विचारधारा का अनेक रूपों में विकास हुआ। इसकी जो व्याख्या श्री कुमारप्पा ने की, वह काफी जोरदार थी। आगरा विश्वविद्यालय ने इस विषय पर कुमारप्पाजी के व्याख्यानों की व्यवस्था की। इन व्याख्यानों का बाद में संग्रह और सम्पादन कर इन्हें "गांधीयन इकानामिक थॉट"(गांधीवादी आर्थिक विचारधारा) नामक पुस्तक का स्वरूप प्रदान किया गया। बम्बई विश्वविद्यालय के "स्कूल आफ इकानामिक्स एण्ड सोशियोलाजी" के संचालक प्रोफेसर सी० एन० वकील ने भारतीय अर्थशास्त्र सम्बन्धी प्रथम पुस्तक के रूप में 'लाइब्रेरी आफ इंडियन इकानामिक्स सिरिज' में प्रकाशित किया। पुस्तक की भूमिका में वे लिखते हैं—"श्री जे० सी० कुमारप्पा गांधीजी के ऐसे विश्वस्त शिष्य के रूप में प्रसिद्ध हैं, जिन्होंने उनके आर्थिक विचारों को व्यावहारिक रूप प्रदान किया तथा इस क्रम में उनके विचारों को भलीभाँति हृदयंगम करने में सफलता प्राप्त की। अतः यह अच्छा ही रहा कि श्री कुमारप्पा ने यह पुस्तक, जिसमें गांधीवादी आर्थिक विचारधारा को सक्षम और प्रभावपूर्ण भाषा में प्रस्तुत किया गया है, लिखना स्वीकार किया।"

आगे चल कर आगरा और राजस्थान के विश्वविद्यालयों ने गांधीवादी आर्थिक विचारधारा को अपने यहाँ अनुसन्धान और शोध के विषय के रूप में स्वीकृत किया। इस विषय में रुचि रखने वाले कुछ प्राध्यापकों ने श्री कुमारप्पा से प्रार्थना की कि आप इस अनुसन्धान-कार्य में हमारा पथ प्रदर्शन करें। श्री कुमारप्पा ने विषय के व्यावहारिक अध्ययन का महत्व समझा, क्योंकि इसके बिना सारा ज्ञान अधूरा रहता। अतः उन्होंने लिखा—

"हमें ऐसा लगता है कि कोरे शास्त्रीय ज्ञान से वास्तविकता तक पहुँचना कठिन है। प्रत्यक्ष अनुभव से जो ज्ञान प्राप्त है, उसमें ही वस्तुतः सचाई रहती है। इसलिए हमारी राय है कि यदि आप अपने अध्ययन को उपयोगी बनाना चाहते हैं तो पहले गांधीवादी जीवन-पद्धति का व्यावहारिक प्रशिक्षण प्राप्त करें। इसके लिए यह जरूरी है कि इसे आश्रम में आकर एक वर्ष तक रहें तथा आश्रमवासियों का-सा जीवन व्यतीत करें। गांधीवादी आर्थिक विचारधारा पर सामाजिक कार्यकर्ताओं तथा ग्राम सेवकों के साथ आपके लिए सैद्धान्तिक पक्ष समझाने के उद्देश्य से व्याख्यानों की व्यवस्था की जा सकती है। आप अपना कुछ समय मेरे साथ अध्ययन और परामर्श में भी व्यतीत कर सकते हैं।"

यह घटना १९५९ के उत्तरार्ध की है, जब कि श्री कुमारप्पा रक्तचाप तथा अन्य रोगों से आक्रान्त होकर 'गांधी निकेतन' (दक्षिण भारत) में आकर बस गये थे। ऐसी हालत में गांधीवादी आर्थिक विचारधारा पर शोधकर्ताओं को प्रशिक्षित करने की उनकी इच्छा अपूर्ण ही रह गयी!

जनतंत्र को बचाना नागरिक-धर्म है

• गोरा

सारी जनता की रोटी, रोजी और सुख के बारे में सोचने और काम करने वाली पद्धति स्वराज्य है। अंग्रेजों के शासन-काल में यह नहीं था, इसलिए हमने उनके विरुद्ध अहिंसक लड़ाई लड़ी और सत्य के आग्रह से उनको बाध्य किया कि वे मुट्ठी भर लोग हमारी छाती पर और अधिक मूंग न दलें। लेकिन १५ अगस्त, '४७ के बाद भी हम देखते हैं कि व्यक्ति बदले हैं और पद्धति अभी बदस्तूर है!

बिहार में भीषण बाढ़ आयी, लाखों परिवार तबाह हो गये, धन और जन की अपार क्षति हुई, जिसके लिए राज्यपाल के कोष में मुक्त हस्त से दूसरे-दूसरे प्रदेशों ने लाखों रुपया दिया, पर वहाँ के विधायक और मंत्रीगण, उनके अफसर, बाबू और चपरासी अपना पूरा वेतन ही नहीं लेते रहे, वरन् बाढ़ग्रस्त क्षेत्रों का दौरा करने जाने पर भत्ता भी लेते रहे! यह कैसा जनतंत्र है और उसमें हमारे जन प्रतिनिधियों की कैसी आस्था है!

आन्ध्र की विधान सभा में विधायकों के दैनिक भत्ते को साढ़े बारह रुपये प्रति दिन से बढ़ा कर सोलह रुपये प्रति दिन करने के लिए कांग्रेस, कम्युनिस्ट, प्रजा-समाजवादी, सबने एक स्वर से हाँ में हाँ मिलायी! वेतन भत्ता और सत्ता के लिए सब कुछ हो सकता है—कांग्रेस, गणतंत्र परिषद् मिल सकती हैं, केरल में प्रजा-समाजवादी और मुस्लिम लीग से मेल हो सकता है; पर देश को बचाने के लिए नहीं ये सब मिल सकते।

आज जब कि देश की सीमाओं पर खतरा है तो ओजपूर्ण भाषणों और सैन्य संगठन से वह नहीं हटने वाला है। जनता में दिनों दिन बढ़ रही निस्सहायता और मजबूरी की भावना मेटने से वह मिट सकता है। देश आज विभिन्न राजनैतिक दलों में विभक्त है। एक को दूसरा फूटी आँख भी नहीं सुहाता है! उसे उतार कर खुद सत्ता को कुर्सी पर बैठने का प्रयत्न है। उसी के लिए सत्याग्रह है, पर इस सत्य को इन सबने आँखों से ओझल कर दिया है कि देश को बनाने में सबका सहयोग अपेक्षित है। हालत यहाँ तक बिगड़ गयी कि देश में राष्ट्रीय एकता के लिए सब दलों की राष्ट्रीय परिषद् बुलाने की जरूरत पड़ी। उस परिषद् में इतना ही हुआ कि कुछ प्रस्ताव और पास हो गये! जरूरत है आज अमल करने की, इसलिए मेरा नारा है—'दिखावा नहीं, दल-बन्दी नहीं।'

जो प्रतिनिधि चुनाव के समय हमसे आकर कहते हैं कि जनता मालिक है, वे ही चुने जाने के बाद 'पार्टी ब्लाक्स' में बैठते हैं, 'पार्टी ह्विप' के संकेत पर मतदान करते हैं। वहाँ वे एक दल, बल्कि एक गुट के होकर रह जाते हैं। इसलिए मेरी माँग है कि इस पद्धति को बदल कर संसद् के सभी सदस्य अपने निर्वाचन क्षेत्र के क्रम के अनुसार बैठें और बिना किसी बन्धन में बँध कर स्वेच्छा से मत प्रकट करें। जनता में एक गलत धारणा फैल गयी है कि 'पार्टी लीडर' प्रधान मंत्री या मुख्य मंत्री होता है। संविधान में ऐसा नहीं है। उसमें स्पष्ट उल्लेख है कि जिस व्यक्ति में सदन का विश्वास है, वही प्रधान मंत्री या मुख्य मंत्री बन सकता है।

जनता जर्जर झोंपड़ियों में भूखों मर रही है और जनसेवक बड़ी-बड़ी तनख्वाहें लेकर वैभवयुक्त बंगलों में रह रहे हैं और उनका कहना है कि हमें जनता की सेवा के लिए ही इनमें रहना पड़ता है, जनता के काम से ही प्रथम श्रेणी में सफर करना पड़ता है, क्योंकि पहले का साहब भी ऐसा करता था, अब वह न करने से जनता की इज्जत में बट्टा लगेगा!

आज यह कैसी विडम्बना है कि जो मंत्रीगण किसान की वार्षिक आय की सीमा ३,००० रुपये निश्चित करते हैं, वे स्वयं ६०,००० रुपये वार्षिक अपने लिए निर्धारित करने में संकोच का अनुभव नहीं करते हैं! उनका कहना है कि पहले के जमाने से अब खर्च बढ़ गये हैं। तो उनसे निवेदन है कि विधायक-निवास या संसद्-सदस्यों के निवासों में वे रहें तो कुछ खर्च तो स्वाभाविक रूप से कम हो जायेगा। सुरक्षा के नाम पर अलग रहने की बात शोभा नहीं देती। जन-प्रतिनिधियों को जनता से ही जान का खतरा लगे तो यह बड़ी सोचनीय स्थिति है। इस वैभव और विलास ने ही स्पर्धा और ईर्ष्या को जन्म दिया है। यह निकल जाय तो बहुतेरे मनाने पर भी मंत्री बनना पसन्द नहीं करेंगे।

आज तो चुनाव में खड़ा होना धन्धा बन गया है! सेवक बनने के लिए लोग बीस बीस, तीस तीस हजार रुपया खर्च करते हैं। जब सेवा सौदा हो जाये तो उस देश के स्वराज्य की क्या स्थिति होगी! इसलिए मैंने सभी राजनैतिक दलों के झंडों का एक बंडल और एक बिना झंडे का डंडा लेकर अपनी सत्याग्रह-पदयात्रा प्रारम्भ की है। मेरा मानना है कि जिस तरह बिना डंडे के झंडा नहीं फहर सकता, उसी तरह बिना जनता के दल नहीं जी सकता, इसलिए जनता है डंडा और सब दल केवल झंडा मात्र हैं।

हम अपने इसी प्रतीक के साथ दिल्ली पहुँच कर वहाँ मोहल्ले मोहल्ले में जाकर चार दिन तक अपनी बात समझायेंगे और प्रतीक रूप में प्रधानमंत्री के निवास की ओर बढ़ेंगे कि वे संसद्-सदस्यों के निवास में आयें तभी दूसरे मंत्रीगण अनुसरण करेंगे।

जिस तरह घने अंधकार में भी सत्य की एक छोटी सी ज्योति जीवित और जाग्रत रहती है, उसी तरह मुझे विश्वास है और अपनी पदयात्रा में हमें हजारों लोगों ने सत्य के इस विचार-दीप में अपने स्नेह-समर्थन का जो तेल दिया है, उससे इसके सतत जलते रहने में कोई आशंका नहीं रह जाती। जनतंत्र में सत्याग्रह धर्म हो जाता है। सच्ची बात को कहने की शक्ति इस देश में क्षीण नहीं होनी चाहिये, इसीलिए हम ललकार कर कह सकते हैं—"मंत्री हमारे नौकर हैं—हम उनके मालिक हैं।"

जनतंत्र को मजबूत करने के लिए गांधीजी की तरह आज जरूरत है कि जवाहरलालजी भी कहें कि वे केवल कांग्रेस के नहीं, सबके हैं। उन जैसे नेता की देश को निस्सन्देह जरूरत है, पर आगामी निर्वाचन में दल के 'टिकट' के साथ नहीं, वरन् निर्दलीय स्वतन्त्र नागरिक की हैसियत से उन्हें खड़े होना चाहिये, ताकि हर नागरिक को लगे कि उनके बीच का एक व्यक्ति आज उनका अपना है, किसी राजनैतिक टुकड़े (पार्टी) का नहीं।•

---

*ग्वालियर के भूदान-टेकरू भाषण के हिन्दी अनुवाद से श्री गुरुशरण द्वारा लेख में रूपान्तरित।

- कड़प्पा जिले में ग्रामोदय-समितियाँ
- पांडिचेरी में सोलह 'कम्यून'
- महाकोशल क्षेत्र की भूदान-स्थिति
- आगरा में सर्वोदय-पात्र

आन्ध्र प्रदेश के कड़प्पा जिले में वर्गविहीन समाज बनाने के लिए २१५ ग्रामदानी गाँवों को चुना गया है। वहाँ जिले की ग्राम निर्माण समिति द्वारा कताई-बुनाई, खादी, शिक्षा, गो सेवा, ग्रामोद्योग आदि की प्रवृत्तियाँ चालू की गयी हैं। अब तक वहाँ २२६ ग्रामों में "ग्रामोदय-समितियाँ" बन चुकी हैं। पिछले दिनों वहाँ छह 'ग्रामदान सर्वोदय सहकारी समितियाँ' भी सरकार से पंजीकृत हुई हैं। वहाँ अस्पृश्यता-निवारण और नशाबन्दी का कार्य भी शुरू किया गया है।

अखिल भारत सर्व सेवा संघ वाराणसी द्वारा भारत के समस्त राज्यों की ग्राम पंचायतों के चुनावों के बारे में जानकारी एकत्रित की जा रही है। इसके लिए सब जिलों के ग्रामपंचायत-अधिकारियों को लिखा गया है। पांडिचेरी के आडर सेक्रेटरी श्री जे० एम० बिनोयट ने सूचित किया है कि वहाँ पंचायतों के बजाय सोलह 'कम्यून' हैं, जिनकी व्यवस्था फ्रांसीसी ढंग से होती है।

म० प्र० भूदान-यज्ञ मंडल के महाकोशल क्षेत्र में माह अक्टूबर '६१ तक १०,७१२ एकड़ भूमि मिली, जिसमें ६५,६७१ एकड़ भूमि वितरित की गयी। बाकी भूमि में से सब प्रकार की छँटनी करके कुल ३१,०९४ एकड़ भूमि अब वितरित होना बाकी है।

सर्वोदय विचार केंद्र सदारी, आगरा कार्यकर्ता वैनालो के सर्वोदय-पात्र के प्रयोग के आधार पर कुछ काम करने की दिशा में आगे बढ़ रहे हैं। अगस्त '६१ से मिढ़ाकुर, आगरा में काम शुरू किया गया है। दो कार्यकर्ता इसके आधार पर काम करते हैं। चार घंटे पात्र संकलन और चार घंटे आंदोलन संबंधी अन्य कार्यों में समय देते हैं। वहाँ अनुभव यह आया है कि एक कार्यकर्ता करीब चार सौ पात्रों का संकलन कर सकता है। सौ पात्रों का औसत बीस से तीस रुपये तक आता है। इस काम को और व्यापक आधार पर बनाने का सोचा जा रहा है।

सर्व सेवा संघ की प्रबंध-समिति और संघ का अधिवेशन

अखिल भारत सर्व सेवा संघ की प्रबंध-समिति की बैठक असम के नार्थ लखीमपुर जिले में विनोबाजी की उपस्थिति में रंगुआगाना ग्राम में ता० १०-११ जनवरी '६२ को होगी। संघ का छह माही अधिवेशन ता० १७,१८ और १९ जनवरी को मैत्री-आश्रम में होना निश्चित हुआ है।

गोआ मुक्ति-अभियान

पिछले दिनों गोआ की स्थिति दिन पर दिन बिगड़ने की खबरें मिल रही थीं। इसी बीच में अंजदीव टापू से भारतीय जहाज 'साबरमती' पर गोली चलायी गयी, जिससे एक मछुआ और एक अधिकारी मारा गया तथा एक अधिकारी घायल हुआ। उसके बाद गोआ में राष्ट्रवादी ज्यादा सक्रिय हुए और पुर्तगाली सरकार का दमन-चक्र चलने लगा। अंत में स्थिति यह हो गयी कि गोआ में पुर्तगालियों का प्रशासन करीब-करीब भंग हो गया और एक प्रकार से अराजकता की स्थिति उत्पन्न हो गयी। ऐसी स्थिति में १७ दिसम्बर '६१ की रात को भारतीय नौसैनिक तथा नौसेना के साथ भारतीय सेनाएँ तीन ओर से गोआ में प्रविष्ट हुईं।

गोआई जनता द्वारा स्वागत

सैनिक जिस समय आगे बढ़े, उसके साथ ही वायुयानों ने गर्जना के साथ हजारों पर्चे गिराये, जिसमें यह लिखा हुआ था कि जनता शांति और साहस रखे, भारतीय सेनाएँ गोआ की जनता का दमन और उत्पीड़न न होने के लिए आयी हैं। भारतीय सेना ने ३६ घंटे की कार्रवाई में गोआ, दामन, दीव पर अधिकार कर लिया। पुर्तगाल की सेना ने करीब-करीब कोई मुकाबला नहीं किया और सर्वत्र गोआई जनता ने भारतीय सेना का 'मुक्ति दूत' के रूप में हार्दिक स्वागत किया।

शांति के लिए पर्चे गिराये गये

गोआ में प्रवेश करने के पहले भारतीय सेना को भारतीय सरकार ने कड़ा आदेश दिया कि वह कम से कम हिंसा का सहारा ले और इस तरह प्रवेश करे कि वह अपने ही इलाके में जा रही है। न केवल भारतीयों के साथ, अपितु विदेशियों के साथ और विशेष तौर से पुर्तगालियों के साथ सद्व्यवहार किया जाय।

१९ दिसम्बर की शाम तक पुर्तगाली कमांडर ने भारतीय सेना के दक्षिणी कमांड के जनरल आफिसर जनरल जे० एन० चौधरी के समक्ष सविधि समर्पण समारोह में किया गया। समर्पण करते हुए पुर्तगाली कमांडर ने कहा, "हम लोग अब आपके समक्ष आत्मसमर्पण करते हैं। हमारे सैनिकों को रात में आदेश मिला है कि भारतीय सेना के समक्ष आत्मसमर्पण कर दिया जाय, अतः हम लोग हथियार डाल रहे हैं।"

आठ सैनिक हताहत

प्रतिरक्षा मंत्रालय के एक प्रवक्ता ने बताया कि सैनिक कार्रवाई के कारण आठ सैनिक मारे गये, जिनमें चार तो अंजदीव टापू में पुर्तगाली सैनिकों के धोखा देने से मारे गये।

परराष्ट्र मंत्रालय के प्रवक्ता ने बताया कि इस अभियान में इतना समय इसलिए लग गया कि पुर्तगालियों ने सर्वत्र सड़कों पर सुरंगें बिछा रखी थीं और नदी नालों के पुल उड़ा दिये थे। कुछ स्थानों में तो सड़कें बीस फुट गहराई तक खोद दी गयी थीं। अफसरों और जवानों को मशीनों तथा हथियारों को लाद कर तीस मील तक पैदल चलना पड़ा।

नये प्रशासकों की नियुक्ति

भारत सरकार ने मध्यप्रदेश के वर्तमान एडिशनल चीफ सेक्रेटरी श्री नरोन्हा को गोआ का प्रमुख प्रशासक और मेजर जनरल के० पी० कैंडेथ को सैनिक गवर्नर नियुक्त किया है। सैनिक गवर्नर ने अपनी प्रथम घोषणा में कहा है कि सभी व्यक्तियों की और सम्पत्ति की सुरक्षा एवं संरक्षा करना मेरा कर्तव्य होगा। किसी भी राष्ट्रीयता का कोई व्यक्ति क्यों न हो, उन सबका हमारा प्रशासन पूर्ण संरक्षण करेगा और किसी भी प्रकार की हिंसा नहीं चलने दी जायेगी।

गोआ का स्वतंत्र अस्तित्व

भारत सरकार ने अपनी एक घोषणा में बताया, जैसा कि हमने पहले ही स्पष्ट किया है कि मुक्ति के बाद गोआ, दामन, दीव को पांडिचेरी की तरह भारतीय संघ के अन्तर्गत अपना अलग अस्तित्व बनाये रखने की पूरी सहूलियत मिलेगी। भारत सरकार की ओर से संसद में भी यह स्पष्ट किया जा चुका है कि इन बस्तियों की सांस्कृतिक विशेषता बनायी रखी जायगी।

देश-विदेश की प्रतिक्रियाएँ

गोआ की मुक्ति के सिलसिले में देश-विदेश से जहाँ एक ओर बधाई-संदेश का ताँता लग गया है, वहाँ दूसरी ओर ब्रिटेन और अमेरिका ने भारतीय कार्रवाई की आलोचना की है। भारत में देश के समस्त दलों ने और उनके नेताओं ने भारत-सरकार को भारत की भूमि पर अन्तिम वैदेशिक उपनिवेश के अन्त पर बधाई दी और हर्ष प्रकट किया है। विदेश में केवल अमरीका, ब्रिटेन और कनाडा आदि राष्ट्रों में कुछ मिश्रित प्रतिक्रियाएँ हुईं।

१९ दिसम्बर को पुर्तगाल के अनुरोध पर सुरक्षा-परिषद् की विशेष बैठक में अमरीकी प्रतिनिधि श्री स्टिवेन्सन ने कहा कि भारत की सशस्त्र कार्रवाई राष्ट्रसंघ पर प्रहार है, जिसका अस्तित्व झगड़ों अथवा विवादों को निपटाने के लिए बना है।

ब्रिटिश प्रतिनिधि श्री पैट्रिक डीन ने कहा कि हमारा पुर्तगाल और भारत से गहरा सम्बन्ध है, इसलिए गोआ में भारतीय कार्रवाई से हम दुःखी और स्तब्ध हैं।

रूस के प्रतिनिधि श्री जोरिन ने गोआ में भारत की कार्रवाई का समर्थन किया और कहा कि सुरक्षा परिषद् को पुर्तगाली अतिक्रमण पर विचार करना चाहिए।

राष्ट्रसंघीय महासभा की यह घोषणा है कि सभी उपनिवेशों की समाप्ति हो जानी चाहिए, पुर्तगाल ने अवज्ञा की है। अतः सुरक्षा-परिषद् को पुर्तगाल के विरुद्ध प्रतिबन्ध लगाने की आवश्यकता है।

अन्त में ब्रिटेन, अमरीका आदि राष्ट्रों के इस प्रस्ताव पर कि गोआ में लड़ाई बन्द करने की माँग भारत से की गयी, रूस ने अपना 'विटो' के अधिकार का प्रयोग किया है।

पुर्तगाल ने गोआ में भारतीय कार्रवाई के खिलाफ अपने सब उपनिवेशों में सभी भारतीयों को नजरबन्द और सम्पत्ति जब्त करने का आदेश दिया है।

चीन, बर्मा, पेरू, मिस्र, चेक, मोरक्को, जापान, घाना, ट्यूनिशिया, इंडोनेशिया, संयुक्त अरब गणराज्य, नेपाल आदि देशों ने भारत की कार्रवाई का पूर्ण समर्थन करते हुए हर्ष प्रकट किया है।

प्रधान मंत्री श्री नेहरू ने एक वक्तव्य में कहा कि बहुत सावधानी से कार्य

गोआ कहाँ और कैसे ?

गोआ : गोआ, दामन, दिव से मिल कर 'गोआ' कहलाता है।
क्षेत्रफल : १४३७ वर्गमील।
जनसंख्या : ६,३७,५९१ (१९५० की जनगणना के अनुसार)
राजधानी : सिडेडडी 'गोआ' अथवा पंजिम।
गोआ : कोंकण समुद्र तट पर, बम्बई से लगभग २०० मील दक्षिण में।
दामन : छोटा सा टापू, लगभग १५० मील। दामन से उत्तर-पश्चिम में क्षेत्रफल ४१३ वर्गमील, आबादी १९,७३१।

इसीके पास पहले के जूनागढ़ क्षेत्र से घिरा एक परिवृत्त (एनक्लेव) गोगोला तथा समेर खाड़ी में एक छोटा-सा टापू, उस पर पानी कोटो का किला है।

इनके अलावा दामन के समीप दादरा और नगरहवेली (क्षेत्रफल १९१ वर्गमील, आबादी २९,०००) जो पुर्तगाली अधिकार में थे, पर उन्होंने अपने को पहले ही मुक्त कर भारत में मिला गये।

आंध्र सर्वोदय साहित्य-मंडल की स्थापना

तेनाली में २६ नवम्बर '६१ को "सत्ययोगम्" पत्र के कार्यालय में आंध्र के सर्वोदय-साहित्यकार मंडल का आंध्र के सुप्रसिद्ध राष्ट्रीय कवि श्री तुम्मल सीताराम मूर्ति की अध्यक्षता में तेलुगु के प्रख्यात कवि श्री शिवशंकर स्वामी ने उद्घाटन किया। आंध्र प्रदेश के विभिन्न स्थानों से कुल २२ साहित्यकारों ने इसमें भाग लिया। इनके अलावा १३ साहित्यकारों ने सदस्यता की अपनी स्वीकृति भेजी। इसके लिए १५ सदस्यों की एक कार्यसमिति भी बनायी गयी।

इस मंडल के नीचे दिये हुए आदर्श माने गये हैं :

(क) इस मंडल के सदस्य यह विश्वास रखते हैं कि मानव-समाज को सन्मार्ग पर चलाने के लिए साहित्य एक सर्वोत्तम साधन है।

(ख) इसके सदस्य यह मानते हैं कि वर्तमान समाज में भौतिक विज्ञान की प्रबलता के कारण जो ईर्ष्या, द्वेष, हिंसा-वृत्ति आदि बढ़ गये हैं, उनका इलाज सत्साहित्य का प्रचार करना ही है।

(ग) यह साहित्य सर्वोदय की साधना के लिए, अर्थात् सर्वजनों की सर्वतोमुखी उन्नति की साधना के लिए सहायक हो।

(घ) "अनुद्वेगकरं वाक्यं सत्यं प्रियहितं", यह गीता-वाक्य रचना-शैली का आदर्श हो।

(ङ) यह साहित्य जाति, धर्म, कुल, वर्ग आदि सब प्रकार के वर्ग-विभेदों से परे तथा सबमें सामंजस्य की वृद्धि करने में सहायक हो।

इस अवसर पर एक कवि-सम्मेलन की योजना भी की गयी। डा० श्री वेंकट सूर्यनारायणजी ने सभी साहित्यकारों को शाल की शाल तथा चंदन तांबूल आदि देकर सत्कार किया।

—चर्ल जनार्दन स्वामी

सूचनाएँ

● इन्दौर का म० प्र० नयी तालीम-सम्मेलन जो २३-२४ व २५ दिसम्बर को होने वाला था, वह चुनाव के कारण मार्च '६२ में किया जायेगा।

● सेवापुरी, वाराणसी में १९,२० और २१ दिसम्बर को अ० भा० सर्व सेवा संघ की ओर से होने वाला नई तालीम परिसंवाद स्थगित किया गया।

पंजाब शान्ति-सेना समिति

पंजाब शांति सेना समिति की बैठक २ दिसम्बर को सर्वोदय आश्रम पठानकोट में हुई। बैठक में लाला अचिंतराम और रोहतक में शांति स्थापनार्थ बलिदान होने वाले स्व० रामानंद के लिए दो मिनट खड़े होकर श्रद्धांजलि अर्पित की गयी। गत छह मास के कार्य की जानकारी देते हुए समिति के संयोजक श्री यशपाल मित्तल ने बताया कि इस दौरान में भटिंडा, फिरोजपुर, होशियारपुर, अमृतसर, करनाल और हिसार जिले में शांति सेना-संगठन बन चुके हैं।

श्री सत्यम् भाई ने बताया कि विनोबा की इच्छा है कि प्रादेशिक शांति विद्यालय पठानकोट आश्रम में चलाया जाय। फिलहाल यह तय किया गया कि प्रादेशिक विद्यालय न चला कर काशी और इंदौर के अखिल भारतीय विद्यालय में प्रशिक्षार्थी भेजे जायें।

बैठक में तय किया कि २ लाख सर्वोदय-पात्र पंजाब में स्थापित करने के संकल्प की ओर ध्यान देकर इसे एक आंदोलन का रूप दिया जाय। २६ से ३० जनवरी तक व्यापक स्तर पर शांति-प्रतिज्ञा-पत्र भरवाने का भी निर्णय लिया गया।

मध्य भारत क्षेत्र की भूदान-स्थिति

म. भा. भूदान-यज्ञ बोर्ड के अवैतनिक मंत्री श्री गाडगिल ने बताया कि भूदान-आन्दोलन के अन्तर्गत अब तक मध्यभारत क्षेत्र के १६ जिलों में कुल २,७५,५०५ एकड़ भूमि प्राप्त हुई है, जिसमें तत्कालीन म. भा. शासन द्वारा प्रदत्त २,१७,६६८ एकड़ भूमि भी शामिल है। शेष भूमि जनता से प्राप्त हुई है, जो ,९,९६९ दान-पत्रों द्वारा समर्पित हुई है। १,४५७ गाँवों में प्राप्त भूमि में से १,१४,९४२ एकड़ भूमि नाकाबिल काश्त अथवा पहाड़, नदी होने के कारण छँटनी कर दी गयी है। इसमें शासन द्वारा प्रदत्त भिण्ड, मुरैना, शिवपुरी तथा गुना जिले के बीहड़ जंगलों की भूमि शामिल है। शासन इसके बदले में अन्य जिलों में उपलब्ध अच्छी जमीन देने की बात सोच रहा है। ४७,५३० एकड़ भूमि २,५४७ गाँवों के ११,१.. भूमिहीन परिवारों में नियमानुसार वितरित की जा चुकी है। अधिकांश भूमि हरिजन एवं आदिवासी परिवारों को मिली है। छँटनी की गयी भूमि के अतिरिक्त २१,५२७ एकड़ भूमि दाता की रजामंदी न होने अथवा अन्य कारणों से शासन द्वारा निरस्त कर दी गयी है। इस प्रकार अब ८१,५०६ एकड़ भूमि वितरण होने को शेष है। पता चला है कि दान में प्राप्त भूमि का शासन द्वारा तहसीलों में प्रमाणीकरण शीघ्र नहीं हो रहा है और बगैर प्रमाणीकरण के भूमि वितरण करना कठिन है। योग्य कार्यकर्ताओं का अभाव भी एक कारण है। शेष भूमि सामूहिक शक्ति के आधार पर आगामी वर्ष में वितरित कर दी जायेगी।

नई तालीम के लिए विनोबाजी के सुझाव

१७-११ का पत्र मिला। ......आपने तीन समस्याएँ पेश की हैं।

(१) हमारी स्वतन्त्र संस्थाएँ किस तरह आगे बढ़ें? 'नौकरी' में जाने की इच्छा न रखनेवालों के लिए संस्थाएँ हों—भले उसमें थोड़े विद्यार्थी आयें, आदर्शप्रेम से ...

(२) सरकारों पर असर अवश्य होगा, ऐसा मैं मानता हूँ। खास करके अब नयी तालीम का बोर्ड भी बनने वाला है। इसलिए काम ठीक चलेगा, ऐसा मानना चाहिए।

(३) हमारी संस्थाओं को नयी तालीम का रंग देने की बात। रंग तो वह है जिस पर रंग चढ़ा हो। ऐसे लोग सर्व सेवा संघ, खादी-कमीशन और अन्य नयी तालीम-बोर्ड आदि में अनेक हैं। उनके द्वारा उनका एक कमवार कार्यक्रम बन जाय तो अमल में आ सकेगा।

—विनोबा का जय जगत्

[असम-यात्रा, २८-११-'६१]

उत्तर प्रदेश सर्वोदय-कार्यकर्ता-सम्मेलन

उत्तर प्रदेश के सर्वोदय-कार्यकर्ताओं का सम्मेलन १६ और १७ दिसम्बर १९६१ को हरदोई में सम्पन्न हुआ। उसमें प्रदेश की समस्याओं पर विचार-विमर्श हुआ और श्री त्रिवेणी सहाय (देवरिया) उत्तर प्रदेश सर्वोदय-मण्डल के अध्यक्ष और श्री तेजसिंह (मेरठ) मंत्री सर्वसम्मति से निर्वाचित हुए। सम्मेलन की अध्यक्षता श्री नवकृष्ण चौधरी ने की। अ० भा० सर्व सेवा संघ के मंत्री श्री पूर्णचन्द्र जैन भी उसमें सम्मिलित हुए। उपस्थित कार्यकर्ताओं ने उत्तर प्रदेश में सर्वोदय कार्य को उत्तेजन देने के लिए विविध निर्णय भी किये।

...का समापन हो जाना तथा उभय पक्षों के लोगों का अत्यल्प संख्या में हताहत होना इस बात का परिचायक है कि भारत ने स्थिति का अन्दाज बिल्कुल ठीक लगाया था, अर्थात् औपनिवेशिक प्रशासन के दिन पूरे हो चुके थे और वहाँ की जनता भारत में मिलने के लिए आतुर थी।

राष्ट्रसंघ में या अन्यत्र भारत के विरोध में की गयी आलोचना के प्रसंग में श्री नेहरूजी ने कहा कि राष्ट्रसंघ अथवा अन्यत्र आलोचना करने वाले व्यक्ति आज और दस बारह वर्षों पहले के तथ्यों से अवगत नहीं हैं।

इस अंक में

जोरहाट में २३ ग्रामदान

विनोबा-पदयात्रा की फलश्रुति

जोरहाट सबडिविजन में ता० ... दिसम्बर से ११ दिसम्बर तक विनोबाजी की पदयात्रा में जो फलश्रुति हुई है, वह इस प्रकार है :—

ग्रामदान २३
भूमिदान २८ बीघा, २ कट्ठा, १५ लोचा
दाता १८ शांति-सेना ...
लोक-सेवक ४ संपत्ति दाता ...
एक कालीन दान २८२६ रु० ६१ नये पैसे
साहित्य-बिक्री १७६५ रु० ८७ न० पै०
पत्रिका-ग्राहक २८ शिविर १
पदयात्रा ८५ मील

श्रीकृष्णदत्त भट्ट, अ० भा० सर्व सेवा संघ द्वारा भार्गव भूषण प्रेस, वाराणसी में मुद्रित और प्रकाशित। पता : राजघाट, वाराणसी-१, फोन नं० ४३९१
पिछले अंक की छपी प्रतियाँ ९३५०: इस ...
वार्षिक मूल्य ६) एक अंक : १३ नये पैसे